सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

सृष्टि सम्वत १९७०९४९०८८ | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष ४७४७७१

वर्ष २३ अंक १] | पौष शु० १५ स० २०४४ रविवार ३ जनवरी १९८८ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

वेदसुधा

बलधेहि तनूषुनो बल
इन्द्र अनडुत्सु नः।
बल तोकाय तनयाय
जावसे त्वहि बलदा असि ॥
ऋग्वेद ३ ५३ १८॥

अर्थ—हे ईश्वर हमारे शरीरो मे बल दो, हमारे बैलादि पशुओ मे बल दो। पुत्र पौत्र के जीवन के लिए बल दो (क्योंकि) तुम ही बल के देने वाले हो।

व्याख्या—शरीर बल सब बलो की बुनियाद है। शरीर की इन्द्रियो के स्वामी को इन्द्र कहते है। परमात्मा का नाम इन्द्र भी है। उससे शारीरिक बल के लिए प्राथना की गई है। स्वस्थ और मजबूत व्यक्ति राष्ट्र की सबसे बडी दौलत है। शासन, व्यवस्था और राष्ट्र की सुरक्षा का बडा आधार यही बल है। शुद्ध पवित्र भोजन, व्यायाम और ऊचा चरित्र शरीर बल के कारण हैं। पशुधन भी मानव समाज की दौलत है। हमारे बैल, घोड, साड गौए, भेड-बकरिय इत्यादि पशु स्वास्थ्य, जीवन, व्यापार खेती और रक्षा के लिए बेहद उपयोगी हैं। इन सबके स्वास्थ्य और बल के लिए इस मन्त्र मे प्राथना की गई है। पूर्ण, स्वस्थ, सुशिक्षित और बलवती माताए ही सबल और स्वस्थ सन्तान पैदा कर सकती हैं। नशीली चीजो और सिगरेट तम्बाकू के सेवन पर कानूनी रुकावट लगाना जरूरी है। वेदादि शास्त्रो मे ईश्वर के दिए आदेशो को मानने से बल प्राप्त होता है। इस तरह सर्व-शक्तिमान् सर्वव्यापक और [illegible] दयालु ईश्वर से ही सब बल प्राप्त [illegible] है।

[illegible] (लदन)

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की विराट् शोभा यात्रा

दिल्ली का जगमगाता जुलूस : आर्यसमाज का वैभव पूर्ण प्रदर्शन

आर्यसमाज संगठित रूप से समस्याओं का सामना करे

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

दिल्ली २५ दिसम्बर। देश के महान् नेता अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी की बलिदान जयन्ती दिल्ली मे विशाल शोभायात्रा व विराट जनसभा के रूप मे मनाई गई। दिल्ली की सकडो आर्यसमाज बालगृह, विद्यालय गुरुकुल के आय बन्धुओ, आर्य महिलाओ छात्र छात्राओ की मनोहर झाकिया देखते ही बनती थी। शोभायात्रा मे पचासो मेटाडोर, टैम्पो, कार, बस भाग ले रही थी। दो हाथियो पर विराजमान सन्यासी मण्डल की शोभा निराली ही थी। शोभायात्रा का नेतृत्व सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी कर रहे थे। उनके पीछे दिल्ली के वरिष्ठ आर्य नेताओ का दल पैदल चल रहा था।

शोभायात्रा का प्रारम्भ श्रद्धानन्द बलिदान भवन श्रद्धानन्द बाजार से आयोजित 'महायज्ञ' म हुआ। १० बजे से १ बजे मध्याह्नोत्तर तक श्रद्धानन्द बाजार नया बास लालकुआ हौजकाजी चावडी बाजार, नई सडक, चादनी चौक दरीबा होती हुई लालकिले के सामने मदान मे पहुची जहा एक विराट सभा हुई।

सभा की अध्यक्षता श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की। सर्वप्रथम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित प्रधान श्री डा० धर्मपाल जी का सभी उपस्थित वरिष्ठ आर्यजनो द्वारा पुष्पमालाओ से स्वागत किया गया। सभा मे भूतपूर्व सासद श्री हरदयाल देवगुण सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री, हिसार डी०ए०वी० कालेज के प्रवक्ता श्री सर्वानन्द जी, म०प्र० सभा प्रधान प० राजगुरु शर्मा स्वामी अग्निवेश जी ने अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी श्रद्धाञ्जलिया भेट कीं।

अपने अध्यक्षीय भाषण में स्वामी आनन्दबोध जी ने कहा आज देश पर गहराते हुए राजनीतिक व सामाजिक सकटो को देखते हुए आर्यजनो का यह कर्त्तव्य है कि वे अपने सभी मत-भेदो को भुलाकर आर्यसमाज को सक्रिय व सुदृढ बनावे, जिससे आर्यसमाज अपनी पूरी शक्ति से वर्तमान समस्याओ के समाधान मे प्राणपण से जुटजाए। आर्यसमाज की ओर सारे देश की निगाहें लगी रहती हैं। देश की रक्षा व अखण्डता के लिए आर्यसमाज के अतिरिक्त और कोई प्रबुद्ध व जागरूक संस्था दिखाई नही देती। सगठन मे बडी शक्ति है। अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी को हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि यही हो सकती है कि हम उन द्वारा छोड हुए समाज सेवा के कार्यों मे सच्चे हृदय से जुट जावे। दिवराला की घटना पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए स्वामी जी ने कहा—गृहमन्त्रालय ने राजस्थान सरकार से पूछा है कि आर्यसमाज की पदयात्रा मे रुकावट क्यो डाली गई। स्वामी जी ने आर्यसमाज द्वारा किए गए कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा अभी बहुत कार्य बाकी हैं। [illegible] कर शपथ ले कि आपस मे कदम से कदम मिलाकर हम महर्षि के मिशन को पूरा करें।

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल द्वारा उपराष्ट्रपति को ज्ञापन

महामहिम,

अपने गृह नगर भोपाल में प्रथम बार पदार्पण पर भोपाल नगर की आर्य समाजें आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए देश हित में विनम्र ज्ञापन प्रस्तुत करते हैं।

महामहिम- आर्य समाज ने हमेशा देशोपकार को प्रमुखता देते हुए बिना किसी जाति-पाति, ऊंच नीच, रंग रूप, लिंग भेद के मानव जाति की सेवा की है तथा आजादी की लड़ाई में ८० प्रतिशत आर्य समाज के सेवकों ने बलिदान दिया है। जिसके इतिहास से महामहिम भली भांति परिचित हैं।

धर्मान्तरण के नाम पर राष्ट्रान्तरण

(१) महोदय, आज समूचे देश में और खास तौर से म० प्र० में विदेशी धन पर विदेशी मिशनरीज भारत की आदिवासी जनता की गरीबी और अज्ञानता से लाभ उठाकर सेवा के नाम पर धर्मान्तरण की आड़ में राष्ट्रान्तरण में संलग्न हैं। यदि यही हालत रही तो देश विभाजन के कगार पर पुन खड़ा होगा। उदाहरणार्थ—रायगढ़ जिले में १९५१ में एक हजार ईसाई आबादी थी, १९८१ में ३८ हजार हो गई है। मध्य प्रदेश में २५०० ईसाई संस्थाएं पंजीकृत हैं जिनमें ८२ विदेशी हैं जो बीस जिलों में पहुंच चुकी हैं। कुछ मिशन हैं जिसने विदेशों से भोपाल गैस काण्ड के नाम पर पैसा लिया और आज तक हिसाब पेश नहीं किया।

अजीत जोगी जैसे भ्रष्ट शासकीय अधिकारियों पर से शासन द्वारा मुकदमे उठाकर रातों रात राज्य सभा के सदस्य बनाकर मिशनरीज को शासन ने यौवन दान दिया है।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती द्वारा विद्यालय भवन का उद्घाटन

श्री सत्यप्रकाश कपूर बम्बई वालों का सात्विक दान

आर्य समाज नामनेर आगरा द्वारा संस्थापित विद्यालय भवन का उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा किया गया, इस अवसर पर बम्बई के श्री सत्यप्रकाश कपूर ने १ लाख रुपये की राशि दान में भी दी। स्मरण रहे कि इस भवन का निर्माण श्री कपूर सा० के ससुर श्री वेणीसिंह वर्मा द्वारा कराया गया था। श्री सत्यप्रकाश कपूर ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को धर्मरक्षा अभियान कोष निमित्त ५००१) रु० की राशि भी भेंट की। साथ ही श्री पूरनचन्द्र आर्य ट्रस्ट सिकन्दरा द्वारा भी स्वामी जी को इस कोष में १०००) रु० भेंट किए गए।

गौ राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाय, म०प्र० में गोवंश की निकासी पर प्रतिबन्ध लगाया जाए

मध्य प्रदेश में गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध है परन्तु निकासी पर नहीं। परिणामत म० प्र० से गोधन लाखों की संख्या में केवल वध के लिए महाराष्ट्र तथा अन्य प्रांतों में जाता है, गोवध भारत की आत्मा की हत्या है। आज भारत वासी दूध और घी को तरस गये हैं।

राष्ट्रभाषा हिन्दी की उपेक्षा पर अंकुश लगाया जाए

आज ४० वर्ष हमको आजाद हुए हो गये परन्तु आज तक मध्यप्रदेश जैसे हिन्दी भाषी प्रांत में भी हिन्दी को न्यायोचित स्थान नहीं मिला सचिवालय, न्यायालय, तथा अन्य कार्यालयों का कार्य अंग्रेजी में ही होता है। हिन्दी की उपेक्षा हो रही है।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

आर्य समाजों के लिए वर्ष १९८८ (संवत् २०४४-२०४५) के पर्वों की सूची

स०	नाम पर्व	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी तिथि	वार
(१)	मकर सक्रान्ति	माघ बदी १०, २०४४	१४-१ १९८८	बृहस्पतिवार
(२)	बसंत पंचमी	माघ सुदी ५ २०४४	२३-१-१९८८	शनिवार
(३)	सीताष्टमी	फा० बदी ८, २०४४	११-२ १९८८	बृहस्पतिवार
(४)	दयानन्दबोधरात्रि	फा० बदी १४, २०४४	१६ २ १९८८	मंगलवार
(५)	वीर लेखराम तृतीया	फा० सुदी ३, २०४४	२० २-१९८८	शनिवार
(६)	नव सस्येष्टि (होली)	फा० सुदी १५, २०४४	३ ३-१९८८	बृहस्पतिवार
(७)	दुलैण्डी	चैत्र०बदी १, २०४४	४ ३ १९८८	शुक्रवार
(८)	आर्यसमाज स्थापना दिवस	चैत्र०सुदी १, २०४५	१९ ३-१९८८	शनिवार
(९)	रामनवमी	चैत्र०सुदी ९, २०४५	२६-३-१९८८	शनिवार
(१०)	हरि तृतीया	श्रावण सुदी ३, २०४५	१५ ८ १९८८	सोमवार
(११)	श्रावणी उपाकर्म	श्रावण सुदी १५, २०४५	२७-८ १९८८	शनिवार
(१२)	श्री कृष्ण जन्माष्टमी	भाद्र० बदी ८, २०४५	३ ९-१९८८	शनिवार
(१३)	विजयादशमी	आश्विन सुदी १०, २०४५	२०-१०-१९८८	बृहस्पतिवार
(१४)	गुरु विरजानन्द दिवस	आश्विन सुदी १३, २०४५	२३ १०-१९८८	रविवार
(१५)	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस	कार्तिक बदी १५, २०४५	९-११-१९८८	बुधवार
(१६)	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष० सुदी १५, २०४५	२३-१२-१९८८	शुक्रवार

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

श्रद्धानन्द बलिदान-स्मृति समारोह का एक मास का कार्यक्रम देहरादून जनपद में

देहरादून, १७ दिसम्बर। आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, जिला देहरादून ने जनपद में १३ दिसम्बर से १७ जनवरी तक, एक मास से भी अधिक समय तक चलने वाले स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान स्मृति समारोह का आयोजन किया है। १३ दिसम्बर को आर्य समाज नत्थनपुर से यह कार्यक्रम आरम्भ हुआ। ग्राम भोगपुर में हुई सभा के अतिरिक्त आगामी दिनों में आर्य समाज लक्ष्मण चौक, करनपुर, डाकपत्थर, विकासनगर, ऋषिकेश, वीरभद्र, सुभाषनगर में समारोह होंगे दिनांक ३ जनवरी रविवार को देहरादून नगर से ४ किलोमीटर की दूरी पर स्थित ग्राम जोगीवाला में आर्य समाज की स्थापना की जायेगी। उस दिन वहां दिन में २ बजे से ४ बजे तक यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन किया जा रहा है।

(देवदत्त बाली) प्रधान
आर्य उप-प्रतिनिधि सभा,
जिला देहरादून

सम्पादकीय

समाज सुधार की समस्याऐं

राजस्थान में दिवराला सती काण्ड ने समाज के अन्ध विश्वासों, पाखण्डी धर्माचार्यों के कुत्सित व्यवहारों, शासन की कठिनाइयों समाज सुधारकों की विवशताओं व परेशानियों के नए नए रूप उजागर किए हैं।

यह परेशानियां नई नहीं हैं। सन १७७० में कृष्णनगर बंगाल में जन्मे राममोहन राय को भी इन पीड़ाओं में ही जीवन बिताना पड़ा। महर्षि दयानन्द की भांति राममोहन राय ने भी (शिव) लिंग पूजा के विरुद्ध पुस्तक लिखकर अपने पिता को नाराज कर दिया और उन्हें पैतृक घर छोड़ कर ७ वर्ष तक भारत वर्ष के तीर्थों स्थलों व साधु सन्तों की खोज मे तिब्बत तक भटकना पड़ा। धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझने के लिए उन्होंने वेद, उपनिषद्, त्रिपिटिक, कुरान व बाइबिल का अध्ययन किया। इसी निमित्त उन्होंने अरबी, हिब्रू और अंग्रेजी भाषाओं का अध्ययन किया। अन्त में आवारगी जीवन छोड़कर रंगपुर में सरकारी कार्यालय में सरिश्तेदारी की नौकरी कर ली।

उनकी आत्मा उद्वेलित थी अतः १८१४ में सरकारी नौकरी छोड़कर कलकत्ता आकर हिन्दू समाज में व्याप्त घोर अन्धविश्वासों व पाखण्डपूर्ण रीति रिवाजों के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दिया इसी निमित्त ब्रह्म समाज की उन्होंने स्थापना की। इसी आन्दोलन से रवीन्द्रनाथ टैगोर के पिता महर्षि देवेन्द्र नाथ, माइकेल मधुसूदन दत्त और केशवचन्द्र सेन जैसे मनीषी विद्वान समाज में उत्पन्न हुए।

१८२९ में गवर्नर विलियम बैंटिक के सहयोग से सती प्रथा विरोधी कानून बनवाया तो १८३१ में देश के तथाकथित हिन्दू धर्म के ८०० महन्तो, मठाधीशो व मण्डलेश्वरों ने मिलकर इस कानून के विरुद्ध उस समय की सबसे बड़ी अदालत "प्रिवी कौंसिल" में इस कानून के विरुद्ध अपील दायर कर दी प्रिवी कौंसिल के जज उन दिनों ब्रिटिश पार्लमिंट के लार्ड ही हुआ करते थे। उनके सामने जाने के लिए अपने केस का समर्थन करने के लिए उसी स्तर का व्यक्ति जाना चाहिए था।

अतः दिल्ली के निर्वासित बादशाह बहादुर शाह जफर ने राम मोहन राय को "राजा" की पदवी प्रदान की ताकि वे प्रिवी कौंसिल में सती प्रथा विरोधी कानून की वकालत कर सके। राजा राम मोहन राय अपनी बीमारी की हालत में भी समुद्री यात्रा कर इंग्लैंड पहुंचे व प्रिवी कौंसिल में दायर अपील खारिज करवाई। कानूनी लड़ाई तो राजा राममोहन राय जीत गए परन्तु जिन्दगी की लड़ाई हार कर मृत्यु के ग्रास बने। जिन अंग्रेजों व ईसाई मित्रों का उन्हें सहयोग प्राप्त था उनके कारण हिन्दू होते हुए भी राजा राममोहन राय को कबर में दफनाया गया आज भी ब्रिस्टल के ईसाई कब्रिस्तान में राजा राममोहन राय की कब्र पर हिन्दू शैली का बना स्मारक उस महान सुधारक की अमर गाथा गा रहा है।

प्रभु की महान कृपा से उसके तत्काल पश्चात ही भारत के आकाश पर एक ऐसे महान प्रकाश स्तम्भ का उदय हुआ जिसने अन्धकाराच्छादित आकाश में अपने आलौकिक ज्ञान प्रकाश से न केवल पाखण्ड व मिथ्या आडम्बरों के दुर्गों पर अपने तर्क के तीरों से वर्षा की देश की, देश में व्याप्त असत्य पाखण्ड रूपी रूढ़ियों की जड़ें ही हिलादी अपितु एक नए प्रकाश युग का निर्माण कर दिया। राजा राममोहन संस्कृत के विद्वान न होने के कारण वेदो उपनिषदों के मूल तत्वों से अनजान ही न रहे जबकि देवदयानन्द तो संस्कृत व्याकरण व वेद विद्या के सूर्य थे। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने नवयुग के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

आज के इस प्रकाश युग में घटित देवराला की दुर्घटना ने न केवल राजस्थान में अपितु सारे देश मे विरोध की लहर उत्पन्न करदी। विरोधी धर्माचार्यों की भी बोलती बन्द है। राज्य अपने बनाये कानूनों का सम्पूर्ण समर्थन करता हुआ भी सती प्रथा के समर्थकों का साथ देने को विवश है क्योंकि अभी देश की अनपढ़ व रूढ़िवादी प्रजा में सुधार व शिक्षा से वे तत्व नहीं पहुंच पाए है जिन्हें कानूनो से नहीं समुचित सुधारवादी आन्दोलनो के द्वारा ही पहुंचाना हितकर व लाभकारी हो सकता है।

आर्य समाज ने इसमे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने धर्माचार्यों को उनके घरों तक पहुंच कर भी शास्त्रार्थों के चैलेंज दिये देश भर में अनेक रैलियां आयोजित हुईं। सारे देश भर का पत्रकार समूह एक स्वर से आर्य समाज के स्वर में स्वर मिलाकर इस अमानवीय घटना पर रोष व्यक्त किया। परन्तु राजस्थान सरकार ने सन्यासियों की पद यात्रा के समय जो रुख अपनाया उसने कई प्रश्न चिन्ह खड़े कर दिए हैं।

आज नारी जाति मान सम्मान, उसके जीवन के ज्वलंत प्रश्नों पर जिस पर निरपेक्षता का जामा पहन सरकार किंकर्तव्य विमूढ बन गई है उससे एक बात तो स्पष्ट हो गई है कि २१ वी शताब्दी मे जाने के सपने देखने वाला भारत अभी मध्यकालीन बर्बर रूढ़ियों व पाखण्डो से मुक्त नहीं हो पाया है। अभी दयानन्द के स्वप्न साकार करने के लिए घोर परिश्रम व जनजागरण अभियान चलाना अनिवार्य है। आर्य समाज की प्रचार प्रणाली फिर वही क्रान्तिकारिता का स्वर गुंजना आवश्यक है जिसे महर्षि दयानन्द के प्रखर तेज व सत्य शोधक मानस ने देश भर में जगाया था। अभी रूढ़िवादिता की जड़ें गहरी हैं जिन्हें निहित स्वार्थ अपने बल बल पर जिन्दा रखना चाहते हैं। आर्य समाज उठे और अपना कर्त्तव्य पहचाने।

उत्तिष्ठ जागृत प्राप्यवरान्नि बोधत

स्वामी दर्शनानन्द जयन्ती समारोह पूर्वक मनायें

आर्य समाज के महान दार्शनिक, शास्त्रार्थ महारथी, अनेकों गुरुकुलों के संस्थापक अनेक ग्रन्थों के प्रणेता मनीषी सन्यासी श्री स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती की जन्म जयन्ती १४ जनवरी १९८८ को सर्वत्र मनाई जाएगी।

आर्य समाजों से सविनय निवेदन है कि वे आर्य जगत के महानतम स्वा० दर्शनानन्द जी की जयन्ती समारोह पूवक मनावें। उनके सेवा कार्यों को स्मरण कर जनता को उनके द्वारा दिखाये गये मार्गों पर चलने पर जनता का मार्गदर्शन करें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री, महामन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली

हैडमास्टर की आवश्यकता

सहायता तथा मान्यता प्राप्त आर्य उच्च माध्यमिक विद्यालय के लिए एम० ए०/बी० एड० तथा हायर सैकेण्डरी कक्षाओं के शिक्षण का पांच वर्ष का अनुभव अथवा सैकण्डरी विद्यालयों में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्य करने का पांच वर्ष के अनुभवी योग्य प्रशासक तथा निष्ठावान आर्य समाजी हैडमास्टर प्रारम्भिक वेतन १७२०/- वेतन श्रृंखला १७२० ३३२० में आवश्यकता है। विस्तृत आवेदन मन्त्री, आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर (राजस्थान) को शीघ्र प्रस्तुत करें।

दिल्ली जामामस्जिद के इमाम बुखारी द्वारा पाकिस्तान में भारत विरोधी विषवमन

इस्लामाबाद २३ दिसम्बर। दिल्ली की जामा मस्जिद के इमाम सैयद अब्दुल्ला बुखारी ने पिछले हफ्ते लाहौर में हिन्दुस्तान के खिलाफ जमकर जहर उगला। उन्होंने पाकिस्तान के लोगों से कहा कि वे अपने मतभेद मिटा दें और इस्लामी झण्डे तले एक होकर भारत के मुसलमानों को 'निजात' दिलाए।

आम तौर पर सरकार की हिमायत करने वाले अखबार 'नवा ए वक्त' ने इमाम की बहकी बहकी बातों से शह लेकर हिन्दुस्तान के खिलाफ एक जेहाद-सा छेड़ दिया है। उसने अपने एक सम्पादकीय में लिखा है– "इस सर जमीन पर मुसलमानों के लिए पाकिस्तान खुदा का एक बेशकीमती तोहफा है। अगर किसी ने इसका सबूत देखना हो तो वह सरहद के पार हिन्दुस्तानी मुसलमानों की हालत देखे और उन मुसलमानों की तरफ भी देखे जो बर्मा, लाओस, थाईलैंड, लेबनान, इथीयोपिया, बुल्गारिया, युगोस्लाविया, अफगानिस्तान और रूस के एशियाई हिस्से में रहते हैं।"

करीब-करीब सभी उर्दू अखबारों ने सैयद बुखारी के बयानों को [illegible] छापा है लेकिन अंग्रेजी के जिम्मेवार [illegible] को नजरअन्दाज सा कर दिया। हां, वहां के [illegible] में इसकी काफी चर्चा रही।

सैयद बुखारी पाकिस्तान में एक हफ्ता रहे इस दौरान उन्होंने कई जगह भाषण किए। लाहौर की बादशाही मस्जिद में भी उनकी तकरीर हुई। उन्होंने कई मजहबी और सियासी लीडरों से बातचीत की।

दो बड़े अखबारों जंग' और नवा ए वक्त' में छपी खबरों के मुताबिक सैयद बुखारी ने अपनी तकरीरों और मुलाकातों में हिन्दुस्तान के मुसलमानों का रोना रोया और कहा कि 'हिन्दुस्तान के मुसलमान पहले तो अंग्रेजों के गुलाम थे, बाद में १९४७ में कांग्रेस के गुलाम हो गए।' लेकिन दिलचस्प बात यह है कि उन्होंने कहीं कुछ कहा कहीं कुछ और अपने ही बयानों को काटते रहे।

मिसाल के तौर पर जजों की एक मीटिंग में सैयद बुखारी ने कहा—हम अपने लिए पाकिस्तान जैसा अलग इलाका लेकर आजादी की बरकतों से अपने आपको महरूम (वंचित) नहीं करना चाहते क्योंकि हम पाकिस्तान का तजुर्बा देख चुके हैं। हिन्दुस्तान में ही हम इज्जत से रहना चाहते हैं।'

साथ ही उन्होंने कहा—(हिन्दुस्तान के) मुसलमानों पर हो रहे जुल्मो-सितम को बन्द करने के लिए पाकिस्तान सरकार की तरफ से भारत पर डाला गया कोई भी दबाव अन्दरूनी मामलों में दखलन्दाजी नहीं समझी जाएगी, नेहरू-लियाकत अली समझौते के तहत ऐसा किया जा सकता है। बांग्लादेश के बन जाने के बावजूद यह समझौता लागू है।

इमाम ने धर्म पर कम और राजनीति पर ज्यादा जोर दिया। उन्होंने कहा—'अल्लाह ताला के फजल से हिन्दुस्तान के २० करोड़ मुसलमानों ने अब इतनी ताकत हासिल कर ली है कि अगर वहां चुनावों में कांग्रेस के खिलाफ बगावत करने का फैसला कर लें तो भारत में कांग्रेस कभी भी नहीं जीत सकती। अपनी तादाद के जोर से हम किसी भी पार्टी को गद्दी पर बैठा सकते हैं।'

सैयद अब्दुल्ला बुखारी ने कहा—'अगर भारत सरकार मुझे गिरफ्तार करेगी तो मैं जमानत की अर्जी नहीं दूंगा और सच्चाई की खातिर फांसी के फंदे को चूम लूंगा। मैं खुले तौर पर ऐलान करता हूं कि अदालत में नहीं जाऊंगा और गिरफ्तारी का खैर मकदम (स्वागत) करूंगा।

उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दुओं से मेरी सीधी दुश्मनी नहीं है। सते सताए हिन्दुओं को हम अपने भाई-बन्द समझते हैं।

'नवा ए-वक्त' ने लिखा है कि पाकिस्तान के लोगों को दिल्ली के इमाम की वार्निंग पर ध्यान देना चाहिए और खां अब्दुल वली खां और जय सिन्ध के जी०एम० सैयद जैसे लीडरों से खबरदार रहना चाहिए।

धन्य-धन्य तू ! हे संन्यासी !

धर्म सत्य के अहे ! प्रणेता !
लोभ मोह मद मत्सर जेता !
मानवता के थे उद्धारक—
काल जयी थे विश्व-विजेता।
ऋणी तुम्हारा सदा रहेगा—
भारत क्या, सब भूमि निवासी।
धन्य-धन्य तू ! हे सन्यासी ॥

तुम सच्चे थे ऋषि अनुयायी,
जग में वैदिक धार बहायी।
वेदों के पावन पथ चल कर—
तुमने जाग्रत ज्योति जगायी।
जामा मस्जिद के मिम्बर से—
सौम्य सिखाया काबा काशी।
धन्य-धन्य तू ! हे सन्यासी ॥

गुरुकुल का खोला विद्यालय,
धन्य हुआ था महा हिमालय,
तेरी ललकारों को सुनकर—
जाग उठे गिर भूमि शिवालय,
श्रद्धानन्द' तुम्हीं ने फूंका—
मन्त्र जगे जिससे जग-वासी।
धन्य धन्य तू ! हे सन्यासी !!

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

स्वामी श्रद्धानन्द : चरित्र विश्लेषण

—डा० भवानीलाल भारतीय—

स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन अध:पतन के गहरे गर्त से निकलकर सार्थकता के सर्वोच्च सोपान पर चढ़ जाने की एक गौरवमयी कथा है। अपनी किशोर और युवा अवस्था में चारित्रिक पतन की विभीषिकाओं ने उन्हें समय-समय पर ग्रस्त और भयभीत तो किया, किन्तु उन पर विजय प्राप्त करने की उनकी चेष्टायें भी निरन्तर चलती रही और अन्तत पर्याप्त प्रयास के पश्चात ही सही, वे अपनी इन क्षुद्र इन्द्रियजन्य दुर्बलताओं को नियन्त्रित कर सके। उनके जीवन मे एक महत्वपूर्ण परिवर्तन तब आया जब बरेली मे उन्हें ऋषि दयानन्द के तेजोपूत, ब्रह्मचर्य की गरिमा से उद्दीप्त, लोकहित के प्रति पूर्णतया समर्पित, सत्य और धर्म के लिए सर्वथा सकल्पित व्यक्तित्व को जानने का अवसर मिला। यूरोप के प्रखर चिन्तकों और तार्किक दार्शनिको के विचारों के रग मे रगे मुन्शीराम को प्रथम बार ज्ञात हुआ कि भारत का यह साधु जो सर्वथा निरासक्त जीवन व्यतीत करते हुए भी समाज और राष्ट्र की कल्याण कामना करता है तथा लोगो के बौद्धिक क्षितिज के विस्तार के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है, कोई काम की बात कह सकता है। अन्यथा दयानन्द की वक्तृता सुनने से पहले तक तो उसे विश्वास ही नही था कि भारत का भिक्षोपजीवी सन्यासी वर्ग भी कोई अक्ल की बात करता है।

दयानन्द का यह सम्पर्क ही मुन्शीराम के जीवन को पतन की कारा से मुक्त करा सका और उसके पश्चात् उनकी जीवनधारा जिस दिशा की ओर उन्मुख हुई उससे वे निरन्तर श्रेय साधना मे ही लगे रहे। श्रद्धानन्द का जीवन श्रद्धा और विश्वास के दो सूत्रो से सतत ओतप्रोत रहा। जिन नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यो मे उनकी आस्था रही, उनको स्वय में धारने तथा अन्यो मे प्रचारित करने मे वे सदा तत्पर रहे। इसी प्रकार जिन विचारो और कार्यक्रमों के प्रति उनकी आस्था समाप्त होती गई, उनको त्यागने मे भी उन्हें कोई सकोच नही हुआ। लाहौर मे रहते समय वे ब्रह्मसमाज तथा आर्य समाज के प्रति समान रूप से आकर्षण का अनुभव करते थे, किन्तु जब अपनी पुनर्जन्म विषयक जिज्ञासा का समाधान उन्हे सत्यार्थप्रकाश मे मिला, तो वे दयानन्दीय विचारधारा के प्रति पूर्णतया अनुरक्त और समर्पित हो गये तथा अपने अवशिष्ट जीवन को आर्यसमाज के प्रचार प्रसार मे ही लगा दिया।

श्रद्धानन्द का सार्वजनिक जीवन निरन्तर विवेकशील रहा किन्तु उनका केन्द्र बिन्दु आर्य समाज ही था जो धर्म समाज और राष्ट्र के कल्याण के साथ विराट मानवहित जैसे लोकोत्तर आदर्श को लक्ष्य बनाकर जनमानस को आन्दोलित और प्रभावित करता था। उन्नीसवी सदी के अन्तिम दशक से वे अपने जन्म प्रान्त पजाब की आर्यसामाजिक गतिविधियों के सूत्रधार बने रहे। जालन्धर और लाहौर दोनों स्थान उनके शक्ति केन्द्र थे। आर्य समाज जालन्धर के प्रधान पद पर रहकर उन्होने धर्म प्रचार की मस्ती को अनुभव किया तथा अपने आचार्य देव के स्वप्नो का साथक बनाने हेतु अविकल त्याग, परिश्रम अध्यवसाय और पुरुषार्थ का जीवन जिया। लाहौर के उनके सामाजिक जीवन ने उन्हें आर्यसमाज के एक दल के गौरवशाली नेता के पद पर प्रतिष्ठित किया, जो इतना ही अधिक चुनौती भरा भी सिद्ध हुआ। जब मासाहार के विरोध तथा पाश्चात्य शिक्षा को प्रधानता न देकर गुरुकुलीय शिक्षा के प्रवर्तन जैसे मुद्दो पर उनका विपक्षी दल से टकराव हुआ, तो मुन्शीराम की चारित्रिक दृढ़ता, सिद्धान्त निष्ठा तथा वैदिक धर्म के प्रति उनके अनन्य प्रेम की ही परीक्षा हुई। दलीय सघर्ष की इस अग्नि ने तपाकर मुन्शीराम को कुन्दन बना दिया और अब वे मात्र आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के ही प्रधान नही रहे, किन्तु सम्पूर्ण आर्य जगत के बेताज बादशाह बन गये। उनके समक्ष विरोध पक्ष के साधारण नेता तो बौने ही लगते थे। महात्मा हसराज और लाला लाजपतराय की ख्याति तथा प्रसिद्धि के तो कुछ अन्य कारण भी थे।

लाला मुन्शीराम के आर्य समाज मे प्रविष्ट होते समय लाहौर आर्य समाज के पितामह तुल्य लाला साईदास ने कहा था कि आज एक नई शक्ति का आर्य समाज में प्रवेश हो रहा है, पता नही, यह आर्य समाज तो तारेगी या डुबावेगी। श्रद्धानन्द चरित का पूर्ण अवगाहन करने के पश्चात् हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचते है कि मुन्शीराम नाम का जो व्यक्ति उस दिन आर्यसमाज लाहौर का सभासद बना था, उसने ऋषि दयानन्द की इस दिव्य सस्था के गौरव को चार चाद ही लगाये हैं। आज आर्य समाज के ११२ वर्ष के इतिहास मे दयानन्द के पश्चात श्रद्धानन्द से भिन्न हमे कोई ऐसी हस्ती दिखाई नही देती, जिसने धर्म, समाज, राष्ट्र तथा अखिल मानव जाति के हितचिन्तन मे अपने आपको इस प्रकार सर्वथा निमज्जित और समर्पित किया हों।

भारत की शिक्षा प्रणाली में पुरातन तत्वों को पुन प्रविष्ट कराना तथा उसे नैतिकता, चरित, धर्म, त्याग और बलिदान की सिद्धि मे विनियोजित करना महात्मा मुन्शीराम का एक अन्य ऐतिहासिक कार्य था। जो लोग श्रद्धानन्द का एक आर्यसमाजी नेता के रूप मे मूल्याकन नही करते, वे भी मानते हैं कि भारत की शिक्षा मे नैतिक मूल्यो का प्रवेश उनके द्वारा ही सम्भव हुआ। महामना मालवीय जी द्वारा स्थापित हिन्दू विश्वविद्यालय तो अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय की प्रतिद्वन्द्विता में स्थापित पाश्चात्य प्रणाली की एक शिक्षण सस्था ही बनकर रह गई किन्तु गुरुकुल कागड़ी तो भारत की पुरातन शिक्षा व्यवस्था को ही पुनरुज्जीवित करने का एक सार्थक प्रयास था, जिसका उल्लेख प्राचीन सस्कृत साहित्य तथा आर्ष ग्रन्थो मे तो उपलब्ध होता है, किन्तु विगत अनेक शताब्दियो तक उसके अनुरूप कोई सस्था यथार्थ भारत में पनप सकी है, यह कहना कठिन है। गुरुकुल की शिक्षा पद्धति को देखकर यदि देश भक्त एण्ड्रूज तथा इग्लैंड के रैमजे मैकडानल्ड जैसे राजनीतिज्ञों को आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता हुई, तो महात्मा गाधी जैसे भारत के राष्ट्रीय नेताओ ने भी उसकी प्रशसा करने मे कजूसी नहीं दिखाई। यह दूसरी बात है कि कालान्तर मे वही गुरुकुल कागडी अपने सस्थापक के आदर्शों से च्युत होकर पश्चिम की प्रणाली पर सचालित भारत की उन सैकड़ों यूनिवर्सिटियो मे एक बनकर रह गया और उसकी सारी विशिष्टतायें उसके सचालको की अक्षमता, दृष्टिहीनता तथा गुरुकुलीय आदर्शों के प्रति आस्था के अभाव के कारण एक-एक कर नष्ट होती गई। (क्रमश:)

इन तथाकथित प्राच्यविद्या विशारदों से समाज को बचाओ

— डा० रामेश्वर दयाल गुप्ता हरिद्वार—

(गतांक से आगे)

दो सौ लाख वर्ष (प्लेसेन्टल मैमल्स नाल वाले बच्चो को दूध पिलाने वाले प्राणी से लेकर दांत से चबाने वाले जैसे कछुआ मगर आदि जो पानी व खुश्की दोनो मे रह सके,। फिर हाथी की शक्ल के दानव जीवन जीव अति शक्तिशाली ६० लाख वर्ष तक बन चुके थे और अन्त में मानव का (एवोल्युशन) विकसित उत्पत्ति हुआ। डविन थ्योरी भी इन आंकडो से मेल खाती है।

श्रीराम की जो परम्परागत जन्मकुण्डली प्राप्त है उससे भी यही काल सिद्ध होता है। राहु और केतु बिना शेष ग्रहो की स्थिति बाल्मीकि मुनि ने अपनी रामायण मे लिखी है। राम जन्म के समय जिन ग्रहो का योग था वह कितने वर्ष पूर्व हो सकता था इसे (एस्ट्रोनोमी) के अनुसार देखना है। यह दस लाख वर्ष पहले हुआ। और रामायण की भीतर व बाहर की साक्षियां भी इसी परिणाम की ओर संकेत करती है। इस प्रकार हम भारतीय सभ्यता के एक बड़े महत्वपूर्ण काल की गणना कर सकते हैं। फलत जन्मकुण्डली में स्थिति राशि तथा उनका सम्पूर्ण सहयोग का विश्लेषण करने से भी राशियो का स्थान व योग वियोग तथा बृहस्पति की विशिष्ट स्थिति यह स्पष्ट करती है कि राम के दस लाख वर्ष पहले जन्म की बात सही है।

आज का इतिहास लेखक सभ्यता का उदय विज्ञान की प्रगति के आधार पर दस लाख वर्ष नही मानता। बात विचारणीय है। राम के समय की इ जीनियरी, शस्त्र-अस्त्र भूषा का स्तर और पेचीदा ज्योतिष विद्या का सिद्धान्त जो रामायण मे मिलता है उससे हमे पूर्ण विश्वास हो जाता है कि वह एक अद्वितीय सभ्यता थी।

बाल्मीकिय रामायण की अन्तः साक्षी

बाल्मीकि रामायण का प्रारम्भ ही बाल्मीकि और नारद सम्वाद से प्रारम्भ होता है। महर्षि बाल्मीकि के आश्रम मे देवर्षि नारद आये तो उन से बाल्मीकि ने पूछा—

> कोन्वस्मिन्साम्प्रत लोके गुणवान् कश्चवीर्यवान्।
> धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्सवाक्यो दृढव्रत ॥

अर्थात् इस समय ससार मे गुणवान्, शूरवीर, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवादी और दृढप्रतिज्ञ कौन है? इसी प्रकार से अन्य कुछ बात भी पूछी रामायण में इससे आगे के श्लोको मे वर्णित है। महर्षि नारद ने न केवल इन समस्त गुणो से युक्त राम को बतलाया अपितु उनकी अन्य भी अनेक प्रकार से प्रशंसायें की।

उक्त श्लोक के 'अस्मिन् साम्प्रत लोके' यह शब्द ध्यान देने योग्य है। "साम्प्रत-अस्मिन् लोके" इस समय ससार मे इन शब्दो मे बाल्मीकि जी ने अपने और नारद जी के सम्वाद के समय का समाचार पूछा इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि राम उस समय थे। यह ऐतिहासिक वर्णन है, न कि काल्पनिक और बाल्मीकि नारद सम्वाद का यह सन्दर्भ इसकी ऐतिहासिकता का प्रबल प्रमाण है।

नारदजी के जाने के बाद महर्षि बाल्मीकि स्नान के लिये तमसा नदी के तट पर पहुचे। वहा उन्होने क्रौंच पक्षी के जोडे को काम क्रीडा करते देखा। साथ ही उन्होने यह भी देखा कि एक व्याध ने उस जोडे पर निशाना लगाया तथा जोड में से नर पक्षी मर गया, जिससे क्रौंची विह्वल हो गई। तब बाल्मीकि के मुह से यह श्लोक निकला—

> मानिषाद प्रतिष्ठा त्वमगम शाश्वती समा।
> यत्क्रौंच मिथुनादेकमवधी काममोहितम् ॥

अर्थात् हे निषाद! तूने इस कामोन्मत्त नर पक्षी को मारा है, अत तुझे बहुत काल-पर्यन्त सुख, शान्ति प्राप्त न हो। यही श्लोक महर्षि के रामायण को इसी (अनुष्टुप्) छन्द मे लिखने का आधार बना। इस विषय में भी बाल्मीकि रामायण का ही प्रमाण है। महर्षि बाल्मीकि के एक शिष्य जो उस समय उनके साथ मे थे उसने यह श्लोक कण्ठस्थ कर लिया। स्नान से लौटकर ऋषिवर अपने शिष्यो को कुछ कथायें सुना रहे थे, तभी वहां ब्रह्मा जी आये और उन्होने बाल्मीकि से कहा कि जैसा आपने नारद जी से सुना है—वर्णन करो।

महर्षि ने राम के जीवन की घटनायें एकत्र कीं और तब उन्हें श्लोकबद्ध इतिहास का रूप प्रदान किया। महर्षि बाल्मीकि राम जीवन की घटनाओ का एकत्र करना और महर्षि ब्रह्मा द्वारा उनसे उनसे रामचरित्र के वर्णन की माग करना भी रामायण के इतिहास होने के अकाट्य और प्रबल प्रमाण हैं। इसमें बाल्मिकी रामायण के ही निम्न श्लोक प्रमाण के लिए प्रस्तुत है—

> श्रुत्वासस्तु समग्र तद्धर्मार्थ सहित हितम्।
> व्यक्तमन्वेषते भूयो सद्वृत्त तस्य धीमत ॥
> तत पश्यति धर्मात्मा तत्सर्व योगमास्थित ।
> पुरा यत्र निवृत्त पाणावामलक यथा॥
> तत्सर्व तत्वतो दृष्टवा धर्मेण स महामति ।
> अभिरामस्य रामस्य तत्सर्वं कर्तुमुद्यत ॥
> प्राप्त राज्यस्य रामस्य बाल्मीकि भगवानृषि ।
> चकार चकरतं कृत्स्न विचित्र पदमर्थवत् ॥

अर्थात् नारद जी से सुने हुए राम के चरित्र को महर्षि बाल्मीकि ने धर्म अर्थ से युक्त सर्वजन हितकारी राम के जीवन की घटनाओ का उत्तम प्रकार से अन्वेषण प्रारम्भ किया। उसके पश्चात् उन्होने एकाग्रचित होकर उन सब चरितो को जो एकत्र कर लिये थे, हथेली पर रखे आवले की भाति देखा अर्थात् उनका एक बार सामान्य दृष्टि से अध्ययन किया। उन सब वृतातो का ठीक प्रकार जानकर महामति बाल्मीकि सर्वप्रिय राम के चरित को श्लोकबद्ध करने को उद्यत हुए। राम के राज्य सिहासन पर आरुढ होने के पश्चात उन्होने विचित्र पद से युक्त इस सम्पूर्ण ऐतिहासिक काव्य की रचना की।

इन प्रमाणो को होते हुए रामायण का ऐतिहासिकता का विरोध करना और उसे बौद्ध साहित्य के आधार पर रचा गया तथा बाल्मीकि द्वारा विस्तार दिया गया ग्रन्थ बताना भ्रान्त विस्तार है। उपयुक्त प्रमाणो का निष्कर्ष यही है कि रामायण पुराना इतिहास है और उसके मूल लेखक महर्षि बाल्मीकि जी ही थे।

बौद्ध साहित्य के अन्तर्गत "दशरथ जातक" के आधार पर ही ही आपने दशरथ की दो रानियां कौशल्या और कैकेई बताई। यद्यपि दशरथ की तीन रानियां कौशल्या सुमित्र और कैकेई थी। दशरथ की राजधानी भी आपने वारणसी को बताया किन्तु वह इतिहास प्रसिद्ध अयोध्या नगरी थी। आपने राम के बनवास में हिमालय पर जाना बताया। यद्यपि राम दक्षिण की ओर अयोध्या से प्रयाग, चित्रकूट आदि स्थानो पर होते हुए विन्ध्याचल के क्षेत्र मे जाकर पचवटी में कुटी बनाकर रहे। आपने सीता को राम की बहन बतलाया, जिनका राम के इतिहास प्रसिद्ध शिव धनुष टूटने के कारण विधिवत विवाह सस्कार हुआ था।

जातक एव जैन आगमो ने वास्तव में रामकथा को लेकर विकृत या बदले के रूप में प्रस्तुत किया है। वे तो ऋषभदेव को दशरथ का भाई भी लिख डाले है। और अयोध्या के बजाय वारणसी की बात शहाबुद्दीन ने बौद्ध ग्रन्थों के आधार तो राम जन्मभूमि पर बलात बनी मस्जिद निराकरण का मामला खटाई में पड जायेगा।

कुछ लेखको के द्वारा रामायण को काल्पनिक उपन्यास बताये जाने की बात को उछालता हुआ वह कहता है कि जब रामचन्द्र जी वास्तविक व्यक्ति थे ही नही तो उनका जन्म और जन्मस्थल पर बने मन्दिर की मात्र कपोल कल्पित है।

ईश्वर इन प्राच्य विद्या विशारदों से देश व समाज को बचाये।

जन-संख्या विस्फोट

(कर्मनारायण कपूर दिल्ली)

१- सन १९१८ में विश्व की जन संख्या २८९५०००० थी जो बढ़ कर १९९८ में ३४८१०००००० हो गई। अब यह बढ़ते-बढ़ते लगभग ७ अरब हो गई होगी। विश्व के मनीषियों के लिये यह एक बहुत गम्भीर समस्या बन गई है।

इस जन संख्या विस्फोट के कारण अन्वेषणीय है। तत पश्चात ही इस समस्या का हल निकल सकेगा।

२—ईसाई, मुसलमान, हिन्दू तथा बौद्ध आत्मा के अस्तित्व को मानते हैं। वे सब स्वीकार करते हैं कि प्रत्येक मनुष्य मे आत्मा रहती है। ईसाई और मुसलमानो के विचार मे गर्भाधान के समय ईश्वर आत्मा की रचना करता है और तत पश्चात आत्मा अमर रहती है। हा देह के अवसान के पश्चात आत्मा कबर में अचेतन पड़ी रहती है। वह निर्णय दिवस को कबर से उठेगी और ईश्वर के आदेशानुसार सदा के लिये स्वर्ग व नरक मे भेजी जायेगी।

इसके विरुद्ध हिन्दुओं का विश्वास है कि आत्मा अजन्मा और अमर है। शरीर की मृत्यु के उपरान्त आत्मा या उसी ही योनि मे अन्य नवीन देह को प्राप्त करती है।

३—जन-संख्या की वृद्धि का प्रत्यक्ष कारण मनुष्यों और स्त्रियो मे अधिक मैथुन है जिसकी अधिकतर जिम्मेवारी आधुनिक सभ्यता के प्रमुख प्रचारक है —

सिनेमा, रेडियो, टेलीविजन, पत्र, पत्रिकायें, सहशिक्षा और पुरुषो और स्त्रियो का अधिक मेल मिलाप। सभ्यता के इस दूषित वातावरण मे फैमली प्लानिंग पगु बन कर रह गई है जिसका मुख्य आधार गर्भ निरोध तथा गर्भपात बन गया है। सयम तो मजाक बन गया है और असभ्यता का चिन्ह समझा जाने लगा है।

४—अर्थशास्त्रियो Economists का सिद्धान्त रहा है कि जन संख्या वृद्धि को रोकने के लिये प्रकृति ने युद्ध, महामारिया, दुर्भिक्ष, अति वृष्टि, भूकम्प आदि प्रकोपो द्वारा प्रयत्न किया हुआ है। परन्तु स्मरण रहे कि पिछले दो विश्व युद्धों, महामारियो, दुर्भिक्षो, भूकम्पो, अति वृष्टियो के होते हुए भी जन-संख्या की बहुत वृद्धि हो गई है। अत यह स्वीकार करना होगा कि यह सिद्धान्त भी निष्फल हो चुका है।

५—अमरीका को एक प्राणी-विद्या विशेषज्ञ Bionlogist ने फलो की मक्खियो Briut Bleis पर अनुसधान करके यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया है कि जन-संख्या वृद्धि चक्र के समान सामयिक Periodical होती है। इस सिद्धान्त की पुष्टि इस लिये नही हो सकती कि विश्व की जन-संख्या का लेखा केवल एक दो शताब्दियों का ही मिलता है। उसके पूर्व का लेखा सम्भवत बनाया ही नही गया। किन्तु यह सिद्धान्त ठीक होता है। यह प्रत्यक्ष देखा जाता है कि वर्षा ऋतु तथा ग्रीष्म बहुत से कीट, पतग आदि की सख्या बढ जाती है किन्तु शरद ऋतु मे स्वत कम हो जाती है टिड्डी दल पचीस-साठ वर्षों के पश्चात भूमि को ग्रसित करता दिखाई देता है।

६—हिन्दू विचारधारा के अनुसार आत्मा का आवागमन मनुष्य और मनुष्य इतर योनियो मे होता रहता है। मनुष्य और मनुष्य-इतर योनियो की सख्या का अनुमानक अनुपात एक सौ पचास होगा। इसकी पुष्टि प्रत्येक घर में रहने वाले व्यक्तियो तथा घर मे बसने वाले कीट पतग, पक्षी आदि की तुलना करने से हो जाती है। पुराणकारो ने ससार के प्राणियो की सख्या चौरासी लाख कल्पना करके उनका वर्गीकरण इस प्रकार किया है :—

३० लाख स्थावर (वृक्षादि)
२० लाख पशु
११ लाख कृमि
१० लाख पक्षी
९ लाख जलचर
४ लाख मनुष्य

(ॐ गीता रहस्य-तिलक-पृ० १८५ फुट नोट)

(७) मनुष्य का जीव पश्वादि में और पश्वादि का मनुष्य के शरीर में आता जाता है, क्योंकि जब पाप बढ़ जाता है और पुण्य न्यून होता है तब मनुष्य का जीव पश्वादि नीच शरीर और जब धर्म अधिक तथा अधर्म न्यून होता है तब देव अर्थात विद्वानों का शरीर मिलता है और पाप पुण्य बराबर होता है तब साधारण मनुष्य जन्म होता है जब अधिक पाप का फल पश्वादि शरीर ने भोग लिया है पुन पाप पुण्य के तुल्य रहने पर मनुष्य शरीर मे आता है (स० प्र० पृ० २३५। २३१)

सक्षेप मे कर्म सिद्धान्त की यह रूप रेखा है।

(८) कर्म सिद्धान्त ही अप्रत्यक्ष रूप में जन-संख्या मे वृद्धि तथा ह्रास का कारण है। इस सदर्भ में यह कहना उचित होगा कि आत्माओ का आवागमन अन्य लोक लोकान्तरो से भी होता रहता है। अन्य लोकों मे भी जीवन है। (ऋ० स० प्र० पृ० २१७)

९ यह तो सर्वविदित है कि राजा-महाराजो, विद्वानों, बुद्धि जीवियो के घरो मे सन्तान कम होती है और निर्धन, अज्ञ और मूर्खों के घरो मे सन्तति अधिक उत्पन्न होती है। इसका मुख्य कारण यह है कि राजा-महाराजो विद्वानो आदि के घरो मे उत्पन्न होने वाली पुण्य आत्माए बहुत कम होती हैं। इसके प्रतिकूल जो आत्माए निम्न योनियों से मनुष्य योनी मे आती है और जिनकी सख्या बहुत अधिक होती है वह निर्धन और अविद्वान घरो मे जन्म लेती है। वे जीवन के सोपान की नीचे की सीढी से मनुष्य जन्म प्रारम्भ करती है।

स्मरण रहे कि सन्तानोत्पत्ति, केवल दम्पति के हाथ मे नही होती। कई व्यक्तियो के जीवन पर्यन्त सन्तान नहीं होती। कइयो के घरो मे एक या दो और कईयो के घरो मे दस बीस वर्ष पश्चात सन्तान होती है। सन्तान उत्पत्ति का नियम नही जाना जा सकता। पूर्व जन्मो के कर्मों के फल ही इस नियम को नियमित करते हैं।

श्री वीरेन्द्र जी का भ्रामक लेख

सती प्रथा का समर्थन करके श्री वीरेन्द्र सम्पादक प्रताप जालन्धर भटक गये

श्री वीरेन्द्र जी प्रताप जालन्धर के 'विवादास्पद' लेख पर हमारे पास पाठकों के अनेक पत्र आए हैं जिन्हें हम प्रकाशित कर रहे हैं।

—सम्पादक

सार्वदेशिक साप्ताहिक ६ दिसम्बर १९८७ में एक लेख छपा है जिसका शीर्षक है—"औरत जलाई तो जा सकती है सती नहीं हो सकती"। इसके लेखक हैं श्री वीरेन्द्र (प्रताप) जालन्धर। इनके लेख को ध्यान से पढने पर ऐसा निष्कर्ष निकलता है कि इनको चमगादड की तरह न तो पौराणिकों में शरण मिलेगी और न ही आर्यसमाज में। चमगादड की तरह यह किसी ओर के नहीं रहे।

इस लेख से समाज में भ्रम अवश्य फैलेगा अतः उस भ्रम को दूर करने के लिए इस लेख का मुंह तोड उत्तर दिया जा रहा है—

(१) वीरेन्द्र – एक ओर वे लोग हैं जो कहते हैं कि सती की रस्म को कानूनी तौर पर बन्द किया जाए और जो लोग रूपकुंवर के सती होने के लिए उत्तरदायी है उनके विरुद्ध कार्यवाही की जाए। दूसरी ओर वह लोग हैं जो यह कहते हैं कि सती पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप होगा। यह दोनों प्रकार के लोग गलत हैं।

उत्तर—यह तो सिद्ध है कि सती प्रथा वेद विरुद्ध है तथा साथ ही यह अमानवीय एवं कुप्रथा है। यह महिलाओं पर बर्बर अत्याचार है। अतः जो लोग इस कुप्रथा का समर्थन करते हैं वे दण्डनीय हैं परन्तु जो लोग इस कुप्रथा के विरोधी हैं वे तो पूज्य हैं उन्हें गलत बताकर अपनी दुर्भावना का परिचय क्यों दे रहो हो? अंग्रेजों के जमाने में सन १८२९ में राजाराम मोहन राय ने इस कुप्रथा को बन्द करवाने में कानून बनवाकर स्तुत्य कार्य किया था। क्या आप श्री जगन्नाथपुरी के शंकराचार्य की तरह उन्हें पापी एवं गलत बताने का दुस्साहस करेंगे?

(२) सती प्रथा से हम राजस्थान की महिलाओं में बलिदान एवं वफादारी की जो भावना हुआ करती थी उसका कुछ अनुमान लगा सकते हैं।

उत्तर—क्या महिलाओं में बलिदान एवं वफादारी की भावनाओं का मापदण्ड यही है कि महिला जीवित अपने मृत पति के साथ जल जाय? क्या आप की पूज्या माता जी बलिदान एवं वफादारी की भावना नहीं है? यदि हैं तो क्या यह चाहोगे कि आपकी जीवित माता जी आपके पिता के मरने पर उनके साथ जलकर मर जाय? क्या यह दुहरा शोक नहीं होगा? और आपकी धर्मपत्नी भी तो आपसे ज्यादा प्रेम करती होंगी तो क्या आपके मरने पर आपकी पत्नी भी आपके साथ जलकर मर जाय? और आपके नन्हें मुन्हें बच्चों का एक सहारा बचा था वह नष्ट हो जाय? ईश्वर आपको सद्‌बुद्धि दे।

(३) जिन्होंने सीता सावित्री जैसी देवियों की कहानी सुनी हो और उनके दिमाग में अपने पति से वफादारी की वही भावना है जो सीता और सावित्री में थी तो फिर सती होने से उन्हें कौन रोक सकेगा?

उत्तर—हां, कानून और शिक्षा से अवश्य रोक सकते हैं। क्या सीता व सावित्री अपने पति के साथ जल गई थीं? क्या पति के साथ वफादारी का मापदण्ड आपकी बुद्धि में यही है कि माता जीवित अपने मृत पति के साथ जल जाय? क्या पति के साथ जलना ही मानवता एवं धर्म है? अपने नन्हें मुन्हें बच्चों के साथ उसका क्या कर्तव्य है? पति का पत्नी के साथ वफादारी का क्या कर्तव्य है? क्या पति को भी पत्नी के साथ जल जाना चाहिए? आप तो अपनी पत्नी को बहुत मानते हो वफादारी की कोई हद नहीं तो क्या आप भी अपनी पत्नी के मरने पर उसके साथ जल जाओगे? यदि नहीं तो क्यों नहीं? ईश्वर सद्‌बुद्धि दें आपको?

(५) जो कुछ उसने किया उसका अनुमोदन तो नहीं किया जा सकता क्योंकि यह भी मालूम नहीं कि उसका पति इस योग्य भी था या नहीं?

उत्तर—अरे मूर्ख भांग के नशे में तो नहीं लिख रहे हो? क्योंकि इससे पहले चौथे नम्बर में तुम उसका समर्थन कर चुके हो और अब कहते हो कि उसका अनुमोदन नहीं किया जा सकता। पति के योग्य या अयोग्य होने से क्या मतलब? क्या आपके पिता योग्य हैं तो आप भी अपनी माता जी को पिता के साथ जलाने का पाप करोगे? याद रखें। यदि कहीं तेरी दुर्भावना का पता आपके भाइयों को ज्ञात हो गया तो आपके साथ वे क्या व्यवहार करेंगे। इसका ज्ञान है।

(६) रूप कुंवर को किसी ने जलाया नहीं वह स्वयं जली है। फिर क्या कारण है कि जब लड़कियों को (दहेज के कारण) जलाया जाता है तो उतना शोर नहीं होता जितना कि अब हो रहा है?

उत्तर—यदि रूपकुंवर जली है तो भी यह गलत हुआ है। आगे ऐसी गलती कोई न हो इसके लिए कानून और समाज में जागृति लाने के लिये शोर जरूरी है। रही दहेज वाली बात तो वह भी जब किसी चीज का विरोध होता है तब जोर पकडना स्वाभाविक है।

(७) रूप कुंवर स्वयं सती हुई या उसे सती होने के लिए विवश किया गया यह अभी तक बहस योग्य प्रश्न है।

उत्तर—जैसे प्रश्न ५ व ६ में परस्पर विरुद्ध बात लिखी थी वही गलती फिर प्रश्न ६ व ७ में की है। अतः सिद्ध हो गया कि आपने वास्तव में नशे में लेख लिखा है। प्रश्न ६ में लिखा है कि रूपकुंवर स्वयं जली है परन्तु यहां तुम कहते हो कि अभी तक यह बहस योग्य प्रश्न है।

अन्त में सम्पादक महोदय से भी निवेदन है कि कृपया ऐसे लेखों को न दिया करें जो समाज एवं देशद्रोही हो।

मैं रामकृष्ण सदैव सत का प्रकाश करूंगा।
ढोंगी व पाखंडियों का सदैव पर्दाफाश करूंगा।

—डा० रामकृष्ण आर्य
ग्राम—माधोपुर, पो० बरसीपुर, जिला—वाराणसी (उ० प्र०)

सीताराम आर्य का पत्र

श्री सीताराम आर्य हिसार से लिखा है।

६ दिसम्बर की सार्वदेशिक में वीरेन्द्र जी सम्पादक प्रताप जालन्धर का लेख पढ़कर अत्यन्त दुःख हुआ एक तरफ तो आप सती प्रथा का डटकर विरोध कर रहे हैं दूसरी ओर सती महिमा के लेख अपने ही पत्र में छपवा रहे हैं आप जैसे आर्य समाज के सजग प्रहरी को चाहिये तो यह था कि वीरेन्द्रजी को सारे भारतकी समाजों से बहिष्कार करवाते और उनके खिलाफ सती महिमा मण्डित के अधीन केस चलवाते। साप्ताहिक सार्वदेशिक में तो प्रत्येक लेख को बड़े सोच पढ, समझ कर प्रकाशित करने चाहिये।

वीरेन्द्र जी का लेख औरत जलाई जा सकती है सती नहीं हो सकती ६ दिसम्बर को साप्ताहिक सार्वदेशिक में पढकर अत्यन्त दुःख हुआ विरेन्द्र जी के पिता जी व वीरेन्द्र जी स्वयं सारी उम्र आर्य रहे अब वृद्ध अवस्था में ना जाने उनकी बुद्धि को क्या हो गया है जिस तरह उन्होंने सती दाह की हिमायत की है वह पढ़कर शरम से सिर झुक जाता है। वे अपने लेख में मानते हैं।

१—१८ वर्षीय रूप कंवर सती हुई है। २—वहां के लोग सती प्रथा के समर्थन के लिये भड़क उठे हैं। ३—सती को अत्यन्त श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है। ४—सती प्रथा का विरोधी और समर्थक दोनों गलत है। ५ इसे आत्म बलिदान मानते हैं। जबकि यह प्रमाणित हो चुका कि उसे जलाया गया है फिर भी वीरेन्द्र जी अपने लेख में रूप कंवर अत्यन्त श्रद्धा के कारण सती हुई ऐसा मानते हैं। ६—सती का रिवाज हमारे देश में नया नहीं। ७—सीता और सावित्री से जिसने प्रेरणा ली हो उसे सती होने से कौन बचा सकता है। ८—उस घटना को केवल कानूनी दृष्टि से नहीं देखना चाहिये अपितु उस युवा लड़की की भावनाओं का सम्मान करना चाहिये जिससे इस प्रकार अपने आपको इस प्रकार पति के साथ सती कर दिया। ९—रूप कंवर को किसी ने जलाया नहीं स्वयं जली है। १०—उसने वहां से निकलने का प्रयास नहीं किया आदि-आदि।

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्यसमाज और राजनीति

लेखक : डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री

आर्य समाज महर्षि दयानन्द सरस्वती से लेकर अब तक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में व्यष्टि या समष्टि के रूप में या। ऐसा ही रहा है। अंग्रेजों के शासन काल में महर्षि दयानन्द जब स्वराज्य के लिये प्रयत्नशील थे उनके दिल में भारत के हित में एक टीस सी उठती थी। सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में स्वामी जी लिखते हैं—"अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य प्रमाद परस्पर विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है।"

आर्याभिविनय में महर्षि ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि 'हे प्रभो हम चक्रवर्ती राजा बनें। हमारे देश मे स्वराज्य हो।"

एक बार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के सामने स्वामी जी ने अपना लक्ष्य स्पष्ट करते हुए कहा था—"राष्ट्र का संगठन एवं दृढीकरण ही मेरा लक्ष्य है।" इसी प्रकार सत्यार्थ प्रकाश के छटे समुल्लास में राजनीति-प्रकरण को विस्तार से लिखना भी यही स्पष्ट करता है कि स्वामी जी किस तरह का स्वराज्य चाहते थे।

महर्षि के बाद उनके शिष्यों में स्वामी श्रद्धानन्द जी सक्रिय राजनीति में भाग लेते रहे। महर्षि के भक्त लाला लाजपतराय राजनीति में सक्रिय रहे आर्य समाज सम्पूर्ण शक्ति के साथ कूद पड़ा। भजनोपदेशक, उपदेशक, नेता, सभी देश की आजादी का लक्ष्य बना कर चले इसके बदले में उन्हे यातनाएं भी सहनी पड़ीं मुझे पता है हमारे गांव अरनिया मे कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर को जेल में डालने के साथ उनके घर के बर्तन भी कुड़की मे सरकार ने छिनवा दिये थे परन्तु वह शेर फिर भी दहाड़ता रहा था। ऐसी अनेकों घटनाएं आर्य समाजियो के साथ घट रही थी।

आजादी के बाद आर्य समाज ने अपनी कोई स्वतन्त्र राजनैतिक पार्टी न बना कर एक बहुत बड़ी भूल की थी। जनसंघ और आर. एस एस की तरह आर्य समाज के राजनैतिक संगठन एवं धार्मिक संगठन मे समन्वय हो सकता था। उस समय कांग्रेस के टिकट पर ही व्यक्तिगत रूप में आर्य अपनी राजनैतिक प्यास को बुझाते रहे। आगे चलकर जनसंघ मे, लोक दल में जनता पार्टी मे तथा स्वतन्त्र रूप में भी अपनी राजनैतिक तृप्ति करते रहे।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द के द्वारा प्रतिपादित राजनैतिक सिद्धान्तों की मान्यताओं से हटकर दो अन्य पार्टियो मे भी जो कि आर्यसमाज के सिद्धान्तों से सर्वांश में मेल नहीं खाती थी उनमे भी अवसरवादिता का लाभ उठाकर प्रवेश किया।

इस प्रवृत्ति से आर्य समाज मे ऐसी पार्टियों के व्यक्तियों का प्रवेश आर्य समाज में हुआ जो अपनी राजनैतिक पार्टी को प्राथमिकता देकर आर्य समाज को दूसरे नम्बर पर रखते थे। इसमें अधिकार की लोलुपता में कांग्रेसी भी आ गये तथा जनसंघी भी आये। ऐसे लोगो ने बाहर राजनैतिक अखाड़े की तरह आर्य समाज तथा उसकी संस्थाओ को भी राजनैतिक अखाड़ा बना दिया।

आर्य समाज का सभासद बनना यद्यपि आसान नहीं था। परन्तु जब से आर्य सदस्य और आर्य सभासद बनाने के नियमों को एक तरफ रखकर केवल चार आने, आठ आने, या एक रुपये मात्र मासिक चन्दे के द्वारा सदस्य बनने लगे और एक वर्ष में ही उन नये सदस्यों को चुनाव में भाग लेने का और अधिकारी बनने का अधिकार मिलने लगा तब से आर्य समाज में पदों की लड़ाई गुटबाजी में संघर्ष तथा संस्थाओं पर अधिकार की भावना प्रबल हुई। हर एक राजनैतिक पार्टी चाहती है कि इस संस्था में प्रवेश बहुत आसान है बस चले चलाए हलुवे को खाने में कोई कठिनाई नहीं है।

यही कारण है कि आज आर्य समाज उस बूढ़ी गऊ के समान बनता जा रहा है जिसको राजनैतिक दल चारों तरफ से दोह दौंच कर खाना चाहते हैं। आर्य समाज के आर्य समाज मन्दिरों एवं स्कूलों पर अवैध रूप से कब्जा कर लिया है। उनसे संस्थाओं का छुड़वाना भी एक कठिन समस्या बन गई है। लोगों ने आर्य संस्थाओं को कई स्थानों पर व्यक्तिगत सम्पत्ति मानना प्रारम्भ कर दिया है।

आज ऐसी स्थिति बन गई है कि उपदेशक और प्रचारक जब राष्ट्रहित में किसी एक पार्टी की आलोचना करते हैं तो उस पार्टी के समर्थक आर्य-समाजी नाराज होकर ऐसे उपदेशकोंको बोलने पर पाबन्दी लगाते हैं। बेचारा प्रचारक चिमगादड़ की तरह दरिन्दों में परिन्दा और परिन्दों में दरिन्दा बन कर मार खाता है।

आज राष्ट्र हित में बड़े २ आन्दोलन आर्य समाज इसलिये प्रारम्भ नहीं कर पा रहा कि कहीं तो डर रहे हैं कि कांग्रेस नाराज न हो जाए क्योंकि उनकी सहानुभूति और स्वार्थ कांग्रेस के साथ जुड़े हुए हैं और कहीं यह डर है कि कहीं विरोधी पार्टियां नाराज न हो जावे महर्षि दयानन्द की तरह आज सत्य के लिये निर्भय होकर संघर्ष करने की शक्ति आर्य समाज में क्षीण होती हुई दिखाई देती है।

आर्य समाज वर्तमान युग में भ्रष्ट राजनैतिक पार्टियों की तरह एक पृथक अवसरवादी राजनैतिक पार्टी बनाकर नहीं चल सकता। राजार्य सभा भी कुछ लोगों ने हरियाणा में बना कर देखली और बिखरे तो ऐसे बिखरे कि देश अनेक क्षेत्रों में बिखर गया और समाप्त प्राय हो गया। राजार्य सभा को जनता पार्टी चाट गई। या तो आज आर्य समाज राजनैतिक उठक पटक को एक तरफ रख कर एक अपना राजनैतिक मंच बनाए वहां पर अपना राष्ट्रीय दृष्टिकोण निर्भय होकर स्पष्ट करे और राष्ट्र विरोधियों का खुल कर विरोध करे, देशभक्ति के मानदण्डों को तथा अपनी नीति को स्पष्ट और अटूट बनावे। अथवा स्वयं को राजनैतिक पार्टियों के सम्पर्क से पृथक करके अपना धार्मिक सामाजिक और राजनैतिक चिन्तन का स्वरूप खड़ा करे।

अपनी संस्थाओ की चुनाव प्रणाली मे ऐसे कठोर नियम बनाए, जिससे कि असामाजिक, अधार्मिक, राजनैतिक पार्टियो के स्वार्थी और अवसरवादी लोग इनके किले मे प्रवेश न पा सकें। लोग आर्य वैदिक सिद्धान्तों को सुने सहानुभूति भी रखें तथा सच्चे अर्थों में आर्य बने जब उनमें राजनैतिक स्वार्थ का अभाव देखें एवं आर्यसमाज के सिद्धान्तोंकी परिपक्वता एवं लगन देखें तब उनकी नियुक्ति अधिकार पदो पर कार्यकर्ता के रूप में भी हो सकती है।

इसके लिये आर० एस० एस० की सी चुनाव प्रणाली आर्य समाज को अपना लेनी चाहिये। वोटों की राजनीति आर्य समाज को खोखला कर रही है। आर० एस० एस० के इस किले में कोई भी अवाञ्छित व्यक्ति प्रवेश नहीं पा सकता और वहां अधिकार के लिए संघर्ष और हुल्लड़ बाजी नही चलती यह दूसरी बात है कि आर्य समाज एवं सनातन धर्म जैसी संस्थाओ मे वे लोग इन संस्थाओ की दुलमुल चुनाव प्रणाली का फायदा उठाकर इन संस्थाओ पर कब्जा कर रहे हैं। आर्य समाज ने यदि कोई दृढ़ नीति न अपनाई तो यह बना बनाया सुरम्य बगीचा रक्षकों के हाथ में न होकर भक्षकों के हाथो मे चला जायेगा।

आर्य जगत् के समाचार

दिवराला पदयात्री चौमू जिले में

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती २५० पदयात्रियों सहित गिरफ्तार व रिहा

दिवराला को चल रही पद यात्रा के यात्रियों का दल जब जयपुर से २५ किलोमीटर दूर रेणुका नदी के तट पर पहुंचे तो राजस्थान सरकार द्वारा लगाई गई निषेधाज्ञा के कारण २१ दिसम्बर से विशाल महायज्ञ में संलग्न हो गए जिसकी पूर्णाहुति २३ दिसम्बर को हो गई। यज्ञ के ब्रह्मा ज्वालापुर के प्रख्यात योगाचार्य, व्याकरणाचार्य स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज थे। यज्ञोपरान्त एक विशाल सभा अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की बलिदान जयन्ती के रूप में आयोजित हुई जिसकी अध्यक्षता दिल्ली से विशेष रूप से इसी निमित्त आए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की। सभा में केन्द्रीय आर्य सभा दिल्ली के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री, आर्य वीर दल के सेनापति श्री बाल-दिवाकर हंस ने भी भाग लिया। इस समारोह में सैकड़ों व्यक्तियों ने सभा को सम्बोधन दिया। यात्रा के नेता स्वामी अग्निवेश जी ने विस्तार पूर्वक अपनी भावी योजनाओं का वर्णन किया।

इसके पश्चात् पदयात्रियों के दल के २५० व्यक्तियो ने जिनमें स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सहित स्वामी अग्निवेश जी, श्रीमती प्रमिलाचण्डवते आदि अनेक प्रमुख नेता सन्यासी व स्वयंसेवक थे जब चौमू तहसील के गांव सैतपुरा की सीमा में घुसने की कोशिश की पुलिसने सबको गिरफ्तार कर लिया। पद-यात्रियों ने शांतिपूर्वक अपनी गिरफ्तारी दी।

अजमेर के एस० डी० एम० श्री ज्ञानप्रकाश शुक्ला ने चौमू क्षेत्र में आज ही धारा १४४ लगा दी थी जो १० दिसम्बर तक लागू रहेगी। गिरफ्तार पदयात्रियों को बाद में रिहा कर दिया गया।

बसन्त पंचमी मेला

हिमालय की सुरम्य घाटियो मे गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम (कोटद्वार) मे दिनाक २२, २३ २४ जनवरी १९८८ को आर्य रत्न प० सत्यदेव जी भारद्वाज की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। विदेशों में अपने अद्भुत शारीरिक व यौगिक प्रदर्शनों से धूम मचाने वाले ब्रह्मचारी विश्वपाल जयन्त इसके मुख्य आकर्षण होंगे। विद्वान महात्माओं व भजनोपदेशकों के प्रवचन व भजनोपदेशक, विशाल दंगल, व्यायाम प्रदर्शन नवीन छात्रावास का शिलान्यास युवा सम्मेलन आर्य सम्मेलन आदि महत्व पूर्ण कार्यक्रम होंगे। दिल्ली से मेरठ बिजनौर नजीबाद होती हुई कोटद्वार बस उपलब्ध है जहां से स्पेशल बसें कण्वाश्रम पहुंचाएगी।

सीताराम आर्य का पत्र

(पृष्ठ ८ का शेष)

वीरेन्द्र जी ने सती प्रथा की वकालत की है उनको आर्य समाज से तुरन्त निष्कासित कर सती महिमा मण्डित के अन्तर्गत मुकदमा चलाया जाना चाहिये या वीरेन्द्र जी शास्त्रार्थ करके सती प्रथा को सिद्ध कर दें। वीरेन्द्र जी आगे लिखते हैं कि सती काण्ड पर तो इतना बवेला मचाया जा रहा है जबकि लड़कियां दहेज के लिये जिन्दी जला दी जाती हैं तो कोई शोर क्यों नहीं मचाता ऐसा लगता है वीरेन्द्र जी को ना आंखों से दिखता है ना कानों से सुनता है। आज दहेज का लालची जिसने अपनी बहु जलाई है ना समाज से बच पाया न कानून से बड़ी भारी आवाज उसके विरुद्ध उठती है। हो सकता है वीरेन्द्र जी जैसे कुछ मन्द बुद्धि आवाज ना भी उठाते हों फिर दहेज के लिये लड़की जलाना और सती प्रथा को प्रोत्साहन देना बराबर नहीं है। दहेज के लिए जलाई गई लड़की का कोई मन्दिर नहीं बनाता पूजा नहीं करता चुन्दड़ी रस्म पर लाखो लोग इकट्ठे नहीं होते बल्कि निन्दा करते हैं वह रिवाज का रूप नहीं ले सकता। सती प्रथा को वीरेन्द्र जी जैसे लोगों का प्रथा मानने का पीढ़ी दर पीढ़ी भय है।

आर्य समाज विराट नगर नेपाल का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

१६ से २१ नवम्बर तक बड़ी धूमधाम से वार्षिकोत्सव मनाया गया डा० धीरदेव वेदालंकार, ब्र० अखिलेश्वर व्याकरणाचार्य, आचार्य छविलाल पोखरेली श्रीमती धर्मशीला जी ठा. वीरेन्द्रपालसिंह ने अनेक प्रवचनों से जनता को आर्य समाज के प्रति आकर्षण प्रदान किया। उद्घाटन श्री महेश्वर प्रसाद शर्मा सहन्यायाधीश कोशी अ चल नेपाल ने किया आपने कहा कि संसार का कल्याण वैदिक धर्म व आर्यत्व के प्रचार से ही सम्भव है। आज के मानव पतन के युग में यही आशा की किरण है। सिलीगुड़ी के कर्मठ कार्यकर्ता श्री रतिराम शर्मा का सहयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा।

—पीताम्बर शर्मा, संयोजक

कन्या गुरुकुल, हाथरस (उ० प्र०)

(१) कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों एवं अधिकारियों ने कुछ समय के लिये घी खाना छोड़कर उसका मूल्य तथा अन्य चन्दा एकत्रित कर २०००) प्रधान मन्त्री सूखा राहत कोष के लिए एकत्रित कर सम्बन्धित अधिकारियों को भेज दिये हैं।

(२) कन्या गुरुकुल, हाथरस की स्नातिका पंजाब निवासी श्रीमती सत्यवती की धर्मपत्नी श्री वीरसेन आयुर्वेदालंकार मुजफ्फरनगर निवासी ने कन्या गुरुकुल को छात्रवृत्ति स्थायी कोष के लिए ५०००) दान दिए। गुरुकुल परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद दिया जाता है।

आर्य समाज कालकाजी नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

दिनाक २१ से २७ दिसम्बर तक बड़े समारोह पूर्वक मनाया जाएगा स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प० राजगुरु शर्मा, यशपाल जी सुधांशु व बालदिवाकर जी हंस भाग लेंगे।

जिसके घर में वेद नहीं, वह आर्यसमाजी नहीं

समाज सुधार आदि के जो कार्य महर्षि दयानन्द या आर्यसमाज ने किये उनके करने वाले महापुरुष और संगठन पहले भी हो चुके थे और आज भी हैं। एक ही बात ऐसी है जिसे करना तो दूर न किसी ने पहले कहा और न आज कहता है और वह है आर्यसमाज का तीसरा नियम—"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है—"यही दयानन्द की विशेषता है और इसी से आर्यसमाजी की पहचान होती है। वेद को पढ़कर उसके अनुकूल आचरण करने वाला ही आर्यसमाजी कहला सकता है। और यह तब तक सम्भव नहीं जब तक उसके घर मे वेद न हो। जिनके घर में वेद नहीं उनसे मिलकर बना संगठन, और कुछ भी हो, आर्यसमाज नहीं कहला सकता। इसलिये प्रत्येक आर्यसमाज का कर्त्तव्य है कि अपने रजिस्टर मे अंकित प्रत्येक सदस्य के घर में कम से कम एक वेद तो पहुंचाये ही। मैं इसे आन्दोलन का रूप देना चाहता हूं आर्य समाजो के सहयोग है। जहां जाता हू, इसकी प्रेरणा करता हूं। लोग मेरी बात मानते हैं। प्रत्येक समाज स्वामी जी के भाष्य वाले यजुर्वेद की सौ-सौ प्रतियों का आर्डर देती है।

—विद्यानन्द सरस्वती

घोडा-डोगरी (मध्यप्रदेश) बनवासी निधन बन्धुओ के हिताथ चश्मा दान शिविर का उदघाटन करते हुए श्री बालदिवाकर हस प्रधान सचालक सावदेशिक आय वीर दल बराबर मे शिविर आयोजक ब्रह्मचारी जितेन्द्र जी दिखाई दे रहे हैं।

घोडा डोगरी मे सार्वजनिक सभा को सम्बोधित करते हुए श्री प० बालदिवाकरहस प्रधान सचालक सावदेशिक आर्य वीर दल, मच पर ब्रह्मचारी जितेन्द्र, दानवीर सेठ तुलसीराम जी एव अन्य सम्भ्रान्त नागरिक दिखाई दे रहे हैं।

नेत्र-रक्षा के समान ही पुण्य प्रदाता है

घोड़ा डोगरी मे चश्मादान शिविर का श्री बालदिवाकरहंस द्वारा उद्घाटन

ब्र० जितेन्द्र एव सेठ तुलसीराम अग्रवाल के साहचर्य का अनुपम सुफल

घोडा डोगरी (म०प्र०) १३ दिसम्बर

आय जगत् के प्रसिद्ध युवा ब्रह्मचारी श्री जितेन्द्र आय की पुन्य मयी प्रेरणा और सेठ तुलसीराम घोडा डोगरी के अपूव सहयोग से अग्रवाल भवन घोडा डोगरी मे आयसमाज के तत्वावधान मे निधन बनवासी बन्धुओ के लिये नि शुल्क चश्मादान शिविर का उद्घाटन सावदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बालदिवाकर जी हस ने यज्ञानुष्ठान के पश्चात् तुमुल जयघोषो के मध्य किया। इस अवसर पर नगर के लब्ध प्रतिष्ठित नागरिक सवश्री सेठ तुलसीराम अग्रवाल रामकृष्ण वाजपेयी हरेराम अग्रवाल, डा० अशोक पाण्डे श्री चन्द्रगोपाल तिवारी, रमाकान्त चौधरी सी०के० चौधरी, आदि अनेक गणमान्य नागरिक वनवासी बन्धुओ के मध्य शोभायमान हो रहे थे।

श्री हस ने ब्रह्मचारी जितेन्द्र की ओर इगित करते हुए कहा नेत्र रक्षाथ आपने जो चश्मादान महायज्ञ सेठ तुलसीराम अग्रवाल और डा० मुगलानी (गुजरात) के सहयोग से करने का शुभ निणय लिया है मेरी दृष्टि मे नेत्र रक्षा जीवनरक्षा के समान ही पुण्य प्रदाता है आपने महर्षि दयानन्द का स्मरण करते हुए करतलध्वनि के मध्य कहा उन्होने ज्ञान नेत्र देकर वैदिक धम द्वारा मानव मात्र का उत्थान किया आप लोग वन जाति बन्धुओ के हितार्थ निर्धन बन्धुओ को नि शुल्क चश्मा देकर महती सेवा द्वारा उनका अनुगमन कर रहे हैं। नि सन्देह धन्यवाद के पात्र हैं। यज्ञानुष्ठान के पश्चात् श्री हस ने डा० मुगलानी द्वारा जाच किये नेत्र वाले एक निर्धन वनवासी को चश्मा पहिनाकर शिविरका विधिवत् उदघाटन किया। शिविर मे ४७५ वनवासी एव अन्य लोगो को चश्मे दिये गये। आर्थिक दृष्टि से समर्थ लोगो को भी मात्र २०) शुल्क लेकर चश्मे दिये। इस क्षेत्र मे पहली बार यह पुण्य कार्य सम्पन्न हुआ।

बम्बई निवासी श्री मूलशकर उसका भाई ने तीन एकड भूमि आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश को बखतपुर स्टेशन के सामने दान दी है जिसमे महर्षि दयानन्द धर्मार्थ औषधालय के निर्माणार्थ श्री बालदिवाकरहस ने शिलान्यास किया। भवन निर्माण का कार्य तुरन्त शुरु हो गया है। यह सारा कार्य ब्रह्मचारी जितेन्द्र और उनके सहयोगियो के कारण सफल हो रहा है।

१४ दिसम्बर को साय सेठ तुलसीराम जी के निवास के सामने वाले चौक मे ब्रह्मचारी सत्येन्द्र जी ने सार्वजनिक रूप से शक्ति प्रदर्शन कर जनता को मन्त्र मुग्ध कर दिया। सभा की अध्यक्षता सावदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक जी ने की उनका स्वागत् सेठ तुलसीराम जी ने किया। ब्रह्मचारी जी के सुदृढ शरीर और उनके कौशल पर मुग्ध होकर जनता ने उन्हे पुरस्कृत किया। शीघ्र ही इस क्षेत्र मे आर्ष आश्रम घोडा डोगरी (बेतुल) मध्यप्रदेश की भी स्थापना की जा रही है जिसके द्वारा मानव मात्र को सन्मार्ग दिखाने का वैदिक धर्म के माध्यम से सतत् प्रयास किया जायेगा।

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २३ अंक २] माघ कृ० ६ सं० २०४४ रविवार १० जनवरी १९८८ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

संस्कृत भाषा को बचाने का अभियान तीव्र हो

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

नई दिल्ली, ३ जनवरी। अखिल भारतीय संस्कृत रक्षा समिति ने संस्कृत को आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में मान्यता देने की माग की है। समिति ने इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर आन्दोलन छेड़ने का फैसला किया है।

आज यहा सार्वदेशिक सभा की ओर से की गई विशेष बैठक मे समिति के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि संस्कृत भाषा के लिए घातक सरकारी नीति के विरुद्ध चल रहे, सघर्ष को अब और तेज किया जाएगा।

इस मौके पर विशेष रूप से आमन्त्रित शिक्षाविद कमला रत्नम् ने बताया की संस्कृत को तथाकथित' भाषा बताकर सरकार इसके साथ अन्याय कर रही है और यह किसी तरह से सहन नही किया जाएगा।

श्रीमती रत्नम ने कहा कि नई शिक्षा नीति मे बडी चतुराई से संस्कृत जैसी राष्ट्रीय भाषा को निकाल कर अंग्रेजी को अनिवार्य कर दिया गया है।

श्रीमती कमला रत्नम ने एक सवाददाता को बताया कि १९६८ की शिक्षा नीति में जो भाषा स्कूल कालेजो मे ऐच्छिक विषय के रूप मे स्वीकार की गई थी उस भाषा की ऐसी उपेक्षा हमारा राष्ट्रीय अपमान है।

१० मार्च को ८७ संस्कृत को मान्यता दिलाने के लिए ही यह समिति बनी थी। १० मई को विद्वानो का एक प्रतिनिधि मण्डल केन्द्रीय मानव ससाधन विकास मन्त्री नरसिह राव से भी मिला था। श्री राव ने जल्दी ही एक कार्यक्रम तैयार करने और उसे संस्कृत के विद्वानो को दिखाकर लागू करने का आश्वासन दिया था मगर आज तक इस सम्बन्धमे कुछ नही किया गया।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान की सिंगापुर यात्रा

श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् का सिंगापुर का प्रबोधन !

दक्षिण पूर्व एशिया के प्रवेश द्वार रूप में माने गए सिंगापुर द्वीप महानगर की २५ लाख जनसख्या में ७५ प्रतिशत चीनी नागरिकों की बस्ती है। वहा भारतीय मूल के नागरिक भी पर्याप्त मात्रा में निवास करते हैं।

२२ दिसम्बर को सध्या समय सोवियत विमान वहा के विमान पत्तन पर दिल्ली से आए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् का आर्यसमाज सिंगापुर के प्रधान श्री ओमप्रकाश राय एव पुरोहित श्री विजयमित्र शास्त्री ने फूलमालाओ से स्वागत किया। वन्देमातरम जी की धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी भी उनके साथ थी।

आर्यसमाज सिगापुर का ६१ वा वार्षिकोत्सव २६ व २७ दिसम्बर को बड समारोह पूर्वक मनाया गया। २६ को प्रात ओमध्वजा श्री सोहनचन्द शर्मा द्वारा फहराई गई। वृहदयज्ञ मे सभी आर्य बन्धुओ ने भाग लिया।

सायकाल सुसज्जित आर्यसमाज के मन्दिर में प्रधान श्री ओमप्रकाश जी ने आगत अतिथियो का स्वागत किया। इस अवसर पर सिगापुर शासन के गृहमन्त्री श्री डा० ली० बून यग ने उत्सव का उद्घाटन किया। श्री गृहमन्त्री ने अपने

(शेष पृष्ठ १२ पर)

वेदामृत

परिवार में हार्दिक एकता हो

संज्ञपनं वो मनसः,
अथो संज्ञपनं हृदः।
अथो भगस्य यच्छ्रान्तं,
तेन संज्ञपयामि वः ॥
अथर्व० ६।७४।२ ॥

हिन्दी अर्थ—तुम्हारे मन की एकता हो (तुम्हारे मन एक हो)। तुम्हारे हृदय एक हो। ऐश्वर्य के देव भग का जो श्रम-जनित तेज है, उससे तुम्हे एकता के भाव से युक्त करता हूं।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िए

सम्पादक—
सच्चिदानन्द शास्त्री

समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं के नाम परिपत्र

मान्यवर महोदय,

सादर नमस्ते ।

आगामी १६ फरवरी १९८८ को ऋषि बोध दिवस है। हम चाहते हैं कि इस कार्यक्रम को दूर दर्शन द्वारा राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तगत पूरा स्थान दिया जावे। इसके लिए मैंने सूचना एव प्रसारण मन्त्री श्री अजीत पाजा को पत्र लिखा है। प्रतिलिपि सलग्न हैं। आप भी इसी आधार पर अपने क्षेत्रीय अधिकारियो एव नेताओ को इस कार्यक्रम को उचित स्थान देने के लिए प्रयत्न करे और अपनी सभा, आर्य समाजो तथा सभ्रान्त महानुभावो की ओर से ऐसे ही हजारो पत्र केन्द्रीय सूचना प्रसारण मन्त्री भारत सरकार को लिखवाकर शिवरात्रि के दिन ऋषि बोध कार्यक्रम को व्यापक रूप से प्रसारित करने की माग करें।

आगामी १६ फरवरी को आपकी सभा की ओर से और नगर की सभी आर्य समाजो की ओर से मिलकर ऋषिबोध दिवस के उपलक्ष्य मे कोई भव्य कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाना चाहिए ताकि दूर दर्शन वाले उसे फिल्मा सकें। मैं सभी प्रान्तीय सभाओ को इस विषय मे उचित निर्देश दे रहा हूँ। इससे पूर्व निर्वाण दिवस समारोह के अवसर पर ऐसी प्रेरणा की गई थी किन्तु एक दो समाजो ने ही इस आदेश का पालन किया था। मैं चाहता हूँ कि आगामी १६ फरवरी को होने वाले ऋषि बोध दिवस के लिए आप हर प्रकार से प्रयत्न करके दूर दर्शन पर इसे राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित कराने मे सहयोग करेंगे। कृपया की गई कार्रवाई अवगत करावें।

भवदीय
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान

सभा प्रधान का सूचना एवं प्रसारण मन्त्री को पत्र

माननीय श्री अजीत पाजा जी
सूचना एव प्रसारण मन्त्री-भारत सरकार
नई दिल्ली

सादर नमस्ते ।

आपकी सेवा में निवेदन है कि १९ वी सदी मे महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सामाजिक कुप्रथाओं रूढ़िवाद, अधविश्वास, आडम्बर, बाल विवाह, छूत-छात जैसी प्रथाओ का घोर विरोध करते हुए वेद प्रतिपादित सिद्धान्तो के आधार पर विश्व के मानव मात्र में भाई-चारा, राष्ट्रप्रेम, सद्भाव, धार्मिक जागृति के सन्दर्भ में सर्व व्यापक एक ईश्वर की उपासना तथा प्राचीन वैदिक धर्म की स्थापना के साथ १८७५ मे आर्यसमाज की स्थापना करके देश को अग्रेजी पराधीनता से मुक्त कराने का उद्घोष किया था। स्वामी दयानन्द ने ही स्वराज्य शब्द को भारतीय जनता के समक्ष रखा था। उनके इस महान कार्य की प्रशसा दादा भाई नैरोजी तथा महात्मा गाधी ने भी की थी।

शिवरात्रि का पावन पर्व हिन्दुओं द्वारा विभिन्न रूपो मे मनाया जाता है। किन्तु आर्य जगत की ओर से यह पर्व महर्षि दयानन्द बोध दिवस के रूप मे मनाया जाता है। शिवरात्रि पर्व पर ही उन्हे बोध हुआ था और शिव मन्दिर से निकलकर वह सच्चे शिव की खोज मे घर छोडकर चले गए थे।

आगामी १६ फरवरी १९८८ को शिवरात्रि (महर्षि बोध दिवस) पर्व है। हमारा निवेदन है कि इस दिन आर्य समाज द्वारा सचालित बोध दिवस के कार्यक्रमो को राष्ट्रीय स्तर पर दूर दर्शन से प्रसारित किया जावे। इसके लिए जो सामग्री आदि अपेक्षित होगी, वह हम देंगे।

इस विषय मे आर्य समाज का एक शिष्ट मण्डल आपसे मिलना चाहता है, कृपया तिथि व समय की सूचना देकर अनुगृहीत करें।

भवदीय
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान
पूर्व नाम रामगोपाल शालवाले

धर्म धुन के धनी दर्शनानन्द जी

पण्डित विष्णुदास जी ने 'प्रकाश' में अपने एक लेख मे लिखा था कि एक बार स्वामी दर्शनानन्द जी को सूचना दी गई कि एक बहुत बडा तालुकादार अपनी बिरादरी समेत ईसाई बनने जा रहा है। स्वामी जी तब बहुत रुग्ण थे, चारपाई पर पडे थे। आपने आर्य भाइयों से कहा, मेरी चारपाई उठाकर किसी प्रकार से मुझे वहा पहुचा दो।

लगनशील आर्यों ने ऐसा ही किया। वहा जाकर धर्म धन के धनी दर्शनानन्द जी स्वामी ने ईसाईयो के साथ चारपाई पर लेटे-लेटे ही शास्त्रार्थ किया। इसका परिणाम वही हुआ जो होना था। उस तालुकादार तथा उनकी बिरादरी ने स्वामीजी महाराज के शास्त्रार्थ को सुनकर ईसाई बनने से इन्कार कर दिया।

सम्पादकीय

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती के भक्तों से ?

१४ जनवरी ८८ को आर्यसमाज ऐसे महापुरुष का जन्म दिवस मनाने जा रहा है जिसके बहुमुखी प्रतिभापूर्ण व्यक्तित्व को परमात्मा ने आर्यसमाज की अनुपम सेवा के लिए ही वरदान स्वरूप भेजा था। आर्य समाज के नियम उपनियम प्रजा तान्त्रिक पद्धति से सगठित होने के कारण समाज का ढाचा ऐसा बन रहा था जिसमें सत्ता व सम्पत्ति को विशेष महत्व प्राप्त होता जा रहा था। आर्य सिद्धातों व जनता मे आर्यत्व की ज्योति जगाने का कार्य वे निष्काम कर्मठ सेवक कर रहे थे जिनके शिरोमणि अमर शहीद प० लेखराम आर्य मुसाफिर व स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती महाराज थे। आर्य मुसाफिर प० लेखराम ने अपने बलिदान के समय एक स्वर्णिम भविष्यवाणी की थी—

मेरे बाद आर्य समाज से वाणी व लेखनी का कार्य बन्द न हो जाए। स्वामी दर्शनानन्द जी यद्यपि प० लेखराम जी के समकालीन ही थे परन्तु आर्य मुसाफिर की अन्तिम इच्छा ने उनके अन्दर एक उत्कट अभिलाषा का जन्म लिया जिसने उनके सेवा कार्यों में एक विचित्र जादू पैदा कर दिया। विधर्मियो से शास्त्रार्थ करने की उनकी प्रवृत्ति के कारण सेकडो शास्त्रार्थ उन्होंने किए। वैदिक वाङमय के उद्धार के लिए काशी को अपनी पैतृक सम्पत्ति का उपयोग उन्होंने वैदिक साहित्य के प्रकाशन में व्यय किया। संस्कृत की एक पाठशाला उन्होंने खोली ताकि आर्य विचारो के विद्यार्थियों को शिक्षा की सुविधा हो सके। इस पाठशाला में काशी के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान प० काशीनाथ शास्त्री अध्यापन कार्य करते थे। विद्यार्थियो को संस्कृत के ग्रन्थ सुलभ कराने के लिए उन्होने काशी मे ही प्रेस स्थापित किया व अपने ही धन से, सामवेद, अष्टाध्यायी काशिकावृत्ति, अष्टाध्यायी महाभाष्य, वैशेषिक उपस्कार, न्यायदर्शन का वात्सायन भाष्य, सांख्यदर्शन का विज्ञान भिक्षुकृत प्रवचन भाष्य व अनिरुद्ध वृत्ति, ईशादिदशोपनिषद् श्रीमद्भगवद् गीता, तर्कसग्रह मूल, तर्क न्याय बोधिनी व्याख्या शब्द रूपावली, मीमांसा दर्शन आदि अनेक ग्रन्थ मुद्रित कर विद्यार्थियो को सुलभ व कभी कभी नि शुल्क भी उपलब्ध कराये।

काशी में ही आपने काशी के उद्भट विद्वान महामहोपाध्याय प० शिव-कुमार शास्त्री से शास्त्रार्थ मे विजय प्राप्त की।

आर्य समाज के प्रचार के छोटे मोटे लगभग १३० ग्रन्थो व ट्रक्टो की रचना की जो वर्षों तक देशभर में आर्य प्रकाशको द्वारा प्रकाशित होते रहे व आर्य विद्वानों, शास्त्रार्थ महारथियो व उपदेशको का मार्ग दर्शन करते रहे। फिर देश के आर्य उपदेशक बनाने की दिशा मे अपने अद्भुत व स्थायी सेवा की। गुरुकुल सिकन्दराबाद, गुरुकुल बदाऊ, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर गुरुकुल पोटोहार (रावलपिण्डी) गुरुकुल विरालसी आपके द्वारा ही स्थापित यशस्वी संस्थाऐ थीं। जिन्होने देश को उच्चकोटि के संस्कृत विद्वान, शास्त्रार्थ कर्ता व आर्योपदेशक, उच्चकोटि के वक्ता सम्पादक लेखक व अध्यापक प्रदान किए।

अनेक वर्षों तक आर्य समाज का सैद्धान्तिक मार्ग स्वामी जी के ही मार्ग-दर्शन में चला।

आज राजनीतिक हलचलों व समाज की प्रचार प्रणाली में अन्तर हो जाने के कारण आर्य समाज के प्रचार काय मे आई शिथिलता को दूर करने के लिए फिर स्वामी दर्शनानन्द जी के महान सेवा कार्यों का पुनरुत्थान उनके अमर साहित्य के पुन: प्रकाशन की बडी आवश्यकता है। आर्य सिद्धान्तो के प्रचार के अभाव में आर्यसमाज की शास्त्रार्थ प्रणाली का लोप हो जाने से देश भर मे फिर अनेक मिथ्या मतमतान्तर धर्म के नाम पर अनेक भ्रान्त विचार धाराऐ सिर उठा रही हैं। सत्य धर्म की जगह भाति भाति की व्यक्ति पूजा, पत्थर पूजा, प्रतीक पूजा पनप रही है। आर्य समाज के शुभ-चिन्तकों के सामने एक चुनौती के रूप मे खडी इन समस्याओ का समाधान खोजने के लिये हम स्वामी दर्शनानन्द का साहित्य पर्याप्त प्रेरणा प्रदान कर सकता है।

सौभाग्य वश स्वामी जी द्वारा स्थापित संस्था गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर ने स्वामी जी के सम्पूर्ण साहित्य को प्रकाशित करने का प्रस्ताव रखा है। आर्य समाजों मे पुराने पुस्तकालयों में जहां कहीं भी स्वामी जी महाराज के ट्रैक्ट व अन्य ग्रन्थ हो कृपया वे हमे सूचित कर आभारी बनायें।

आर्यसमाज साहित्य द्वारा सार्थक सेवा कर सकता है। साहित्य का स्थायी प्रभाव होता है। आज के शिक्षित समाज को वैदिक धर्म की ओर आकर्षित करने के लिए यह एक अचूक उपाय है।

आर्य समाजें अपने कर्तव्य का पालन करें यही स्वामी दर्शनानन्द जी को हमारी सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

श्रद्धाञ्जलि

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा

महर्षि दयानन्द सरस्वती के वैदिक धर्म प्रचार के मिशन को जन जन तक पहुचाने वाले स्वर्गीय स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज की जन्म जयन्ती १४ जनवरी १९८८को सर्वत्र मनाई जाएगी।

स्वामी जी का विशाल साहित्य आज भी आर्य मिशनरियों के लिए प्रेरणा स्रोत है। गुरुकुलों की शृ खला उन्होंने स्थापित की जो उनके यश को अमर बनाए है। शास्त्रार्थों की परम्परा मे उन्होंने विधर्मियों से सैकडों शास्त्रार्थ कर शास्त्रार्थ प्रणाली को नूतन दिशा निर्देश किया। आर्यजन उनके साहित्य से वैदिक धर्म प्रचार का भरपूर लाभ उठा सकते हैं। ऐसे वन्दनीय महात्मा को शतशत श्रद्धाञ्जलि।

महर्षि न आते तो

आर्य‚‚वर्त्ताच्छादित - अविद्या - अन्धकारमय,
गई सब वेद - विद्या गुरुडम मानता।
सत्य-ज्ञानी, धर्म मर्यादा जो पत्ताल पैठी,
मन-मत्त, पन्थी पन्था, चली थी अज्ञानता ॥
वेद-विद्या-लुप्त हुई, सन्ध्यादि यज्ञ को भूला,
केवल - प्रतिष्ठा रखो, पूजते - पहानता।
आते न महर्षि जब, जगाते व वेद ज्योति,
किये उपकार आज, ऋषि की महानता ॥
मानव, मानवता मे, भेद भ्रान्तियो का भ्रम,
स्वय की उचाई थोपी, आपकी बडाई मे।
ईश्वर को है ठुकराये पाखिण्डयों ने।
दीन-हीन शिक्षा बिना रखते पढाई मे ॥
गायत्री औ वेद मन्त्र-यज्ञ नहीं ओम् जप।
बने धर्म ठेकेदार लगे थे ठगाई में ॥
दयानन्द, आते न तो, बताते न वेद-विद्या,
भारत-गारत होता- झूठी जगताई मे ॥
साम्प्रदायें चली अति, वेद-पथ छोड सत्य,
भेद-भावना की दृढ नीव गहरी गाढ़दी।
ईश्वर का वैराट वेश, हिरण्यगर्भ रहें सब,
गामी-भोगी सभी, अधिकारी पोल काढ दी ॥
प्रभु के सभी हैं पुत्र, समानता एकसी है।
ढागियों ने ढाव रच, विरुद्ध गति चाढदी ! !
स्वामी जी न आते तो निकालते न पोल कोई,
बचाते न बहुबाते, भारत को वति-बाढदी ॥
स्वतन्त्रता यही खास, परतन्त्रता भेद-भाव,
मानव समानता का, रूप दरशाया था।
रीति-नीति-गति-मति, एकसी वेदो में गाई,
अधिकार पाया गया, भ्रम को भगाया था ॥
गुण-कर्म-विशद-विशद सब वेद-विद्या,
दिव्य-देव गुण वही, देव बतलाया था।
व्यर्थ है कलापते सो, मुह-मोड मोन गई,
'जनसार' आये जब, ऋषि ने बचाया था।

कवि कस्तूरचन्द 'जनसार'
कवि कुटीर पीपाड शहर (राज०)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का अधिवेशन

प्रधान	डा० धर्मपाल आर्य,
उपप्रधान	श्री महाशय धर्मपाल, श्री रतनचन्द सूद, प्रो० भारत मित्र शास्त्री, श्री ईश्वरदेवी सबल,
महामन्त्री	श्री सूर्यदेव
मन्त्री	श्री मूलचन्द गुप्ता, श्री वेदव्रत शर्मा, श्री रामशरणदास आर्य, श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री मांगेराम आर्य, श्री श्यामसुन्दर बिरमानी
कोषाध्यक्ष	श्री पुरुषोत्तमलाल गुप्ता
प्रतिष्ठित सदस्य	श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती श्री तीर्थराम आहूजा, श्री श्यामसुन्दर आर्य, श्री डा० महेश विद्यालंकार, श्री हरबक्शसिंह कोर, श्री डा० शिवकुमार शास्त्री, श्री नेतराम शर्मा, इन्द्रदेव
प्रधान जी द्वारा मनोनीत	श्री डा० धर्मनाथ, श्री रोशनलाल गुप्ता, श्री गोपालदास छपरा, श्री ऊधोदास आर्य, श्री राजेन्द्र दुर्गा
समूह प्रतिनिधि	श्री राजसिंह भल्ला, श्री ओम्प्रकाश गुप्ता, श्री विमलकान्त शर्मा, श्री लाजपतराय निझावन, श्री वैद्य कर्मवीर श्री भगवान लाहोटी, श्री विजय गुप्ता रामकृष्ण सतीजा, श्री रामसिंह शर्मा नीतराम कटारिया, श्री अजय मित्र बजाज श्री पुरुषोत्तम शर्मा, श्री आर० सी० कपूरिया,

विशेष आमन्त्रित सदस्य :—

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती श्री किशोरीलाल,
श्री इन्द्रनारायण, श्री जयप्रकाश आर्य,
श्री तीर्थराम टण्डन, श्री हरवंसलाल कोहली,
श्री बटेश्वर दयाल, श्री प्रेमचन्द गोयल,
श्री रघुनन्दनदास गुप्ता श्री खैरातीलाल भाटिया,
श्री गयाशरण, श्री श्रद्धानन्द, डा० ओमप्रकाश मान,
डा० रघुवीर वेदालंकार डा० यशपाल सबदेवा,
श्री महेन्द्रपाल शर्मा, श्री बी० बी० सिंगल,
श्री नन्दकिशोर भाटिया, श्री वीरमल 'वीर"
श्री लायकराम श्री अजयकुमार भल्ला,
श्री अशोक आनन्द, श्री बृजपाल आर्य।
श्री मनोहरलाल, श्री विश्वम्भर नाथ भाटिया,
श्री बी० एम० शर्मा, श्री सरदारीलाल सहगल,
श्री जयप्रकाश शास्त्री, श्री कृष्णचन्द्र शर्मा,
श्री महावीरसिंह राणा, श्री रणवीरसिंह,
श्री योगेश्वरचन्द्र, श्री डा० जे० पी० गुप्ता,
श्री श्रीराम निझावन, श्री जगदीशचन्द्र,
श्री सुशीलकुमार, श्री सत्यदेव गुप्ता,
श्री ओमप्रकाश गुप्ता, श्री अमरीशचन्द्र आर्य,
श्री रामप्रकाश दास, श्री अटलकुमार गर्ग

विविध समितियां :—

अधिष्ठाता आर्य वीर दल	श्री प्रियतमदास रखवन्त
संयोजिका महिला समिति	श्रीमती रामचमेलीदेवी
संयोजक प्रचार माध्यम	श्री विमलकान्त शर्मा
संयोजक विद्वत परिषद	श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती
संयोजक संस्कृति रक्षा	डा० रघुवीर वेदालंकार
संयोजक स्वास्थ्य समिति	वैद्य महेन्द्रपाल आर्य
प्रस्तोता आर्य शिक्षा परिषद	प्रि० चन्द्रदेव
संयोजक राजार्य सभा	श्री ओम प्रकाश आर्य
संयोजक ग्राम प्रचार	प्रि० होशियारसिंह

—सूर्यदेव, महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

गोरक्षा हेतु हरियाणा सरकार से प्रार्थना

खेत ही जहां बूचड़खाने बन गये हैं। इस विनाशलीला को सरकार रोके।

जिस देश में गाय बैल की हत्या होती है, वहा राजा और प्रजा दोनो का नाश होता है। —महर्षि दयानन्द सरस्वती

आज मेवात क्षेत्र मे हजारो गाय प्रतिदिन कत्ल होती हैं मेवात क्षेत्र मे सैकड़ों अवैध कत्लखाने बने हुए हैं जिसमे लाखों गायो की खाल निकाली जाती है। हड्डियों के ढेर जगह-जगह दिखाई देते हैं। यह गौ हत्या इतने बडे पैमाने पर है शायद मुस्लिम काल व अंग्रेजी शासन काल में नही हुई होगी। राजस्थान से अकाल के कारण अधिकतर गाय मेवात मे आती है। कत्ल होने पर गाय की कीमत १०-१५ गुणी हो जाती है। अधिकतर आज गौ हत्या व्यापार दृष्टि से भी हो रही है। गौ हत्यारो मे गौ हत्या करने की एक दौड लग रही है। रातो रात मे गौ हत्यारे माला माल हो रहे हैं। मनुष्य की आसुरी वृति हो रही हैं। गौ भक्ता को मेवात क्षेत्र की गौ हत्या से बेचैनी होने लगी है। और गौ भक्त यह सोचने लगे हैं कि हरियाणा की पवित्र भूमि मे गौ माता का खून बह रहा है। इसको किस प्रकार बन्द किया जावे और यह अत्याचार कब तक सहन करेंगे। गौ भक्त सोचने लगा है कि गौ मा की रक्षा कैसे हो मेवात क्षेत्र के सीमा वर्ती क्षेत्रो मे गौ रक्षा का प्रश्न उठ रहा है। हरियाणा से गौ हत्या का कलंक दूर किया जावे। यह गौ हत्या का पाप समस्त हरियाण को भारी नुकसान पहुचा रहा है।

हिन्दू समाज गाय को मा की दृष्टि से देखता है यह समाज अब अधिक दिन मा पर अत्याचार सहन नही करेगा हरियाणा सरकार से अनुरोध है कि मेवात क्षेत्र के जिला गुडगावा के तावडू थाने, नूह, फिरोजपुर झिरका पुन्हाना, नगीना, व थाना हथीन, जिला फरीदाबाद आदि मे भी हत्या को बन्द करने हेतु स्पेशल पुलिस लगाय। स्थानीय पुलिस यदि प्रयत्न भी करती है तो भी दिनो दिन यह अत्याचार काबू से बाहर होता जा रहा है। इसके अनेक कारण हैं, यदि सरकार ने मेवात क्षेत्र की गौ हत्या पर कड़ी रोक नही लगाई तो हिन्दू मुस्लिम उपद्रव खड़ा हो जाएगा और हरियाणा मे अशान्ति रूप धारण कर जाएगी जो हरियाणा प्रान्त को ही नही, बल्कि विभिन्न प्रातोमे फैलकर राष्ट्र को भारी नुकसान पहुचायेगी। इस सम्बन्ध हरियाणा के मुख्यमन्त्री चौ० देवीलाल जी को भी पत्र भेजा गया है। तथा हरियाणा लोकदल के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश चुटाला से भी मेवात का शिष्टमण्डल मिला है। और लिखित रूप मे प्रार्थना पत्र भी हमने गौ रक्षा संघर्ष समिति मेवात की ओर से सरकार को दिया है लेकिन अभी तक हरियाणा सरकार ने गौ रक्षा हेतु कोई ठोस कदम नही उठाया है। इससे गो-भक्तो मे बेचैनी फैल रही है।

महामन्त्री सुन्दरलाल आर्य
गौ रक्षा संघर्ष समिति मेवात

वन्दनीय महात्मा : दर्शनानन्द सरस्वती

—स्व० वीतराग स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती—

स्वामी दर्शनानन्द जी के स्वभाव मे एक प्रकार की विचित्र मस्ती थी प्रकृति हर समय मन्द-मन्द हंसती थी न कभी स्वार्थाभिमुखी अपने पूरे बल से मन मे जागती और न कभी निराशा ही सताने के लिए कमर कसता। उनकी तबियत सदा शोक मोह से बरी थी, किसी समय भी फिक्र मे मे न पड़ना उचितानुचित शब्दो को सुनते हुए जोश में आकर कभी किसी से न लड़ना यह आदत उनमे बहुत ही खरी थी। इसलिए लापरवाही की सत्ता हर समय हरी थी। लोग उनके पास बैठे हुए भी निर्भयता पूर्वक हर समय प्रश्नोत्तर करते रहते थे। परन्तु अपरिचित पुरुष उनके रहन-सहन को देखकर उनके पास बैठने को वाञ्छित हो जाता और उसका मन सुख पाता था।

उनके स्वभाव मे सकोच का अभाव था, विमल मन मे उदारता का प्रभाव था। जो कुछ कहना जनहित को सामने लाकर और जो कुछ लिखना लोकमत के मार्ग में आकर उनका पुरुषार्थ सवथा परहित के ही निमित्त था। उनका उपदेश तो हमेशा था फिर उसमे शास्त्रार्थ का अखाड़ा व टैक्ट का झमेला विशेष था।

स्वामी दर्शनानन्द जी मे ईश्वर विश्वास गुण बड़ा विशाल था बात-चीत करते-करते सुख दुख के आते जाते ईश्वर विश्वास की चमक हर समय दमकती रहती थी। वे शास्त्रार्थ के दिल दादह थे। इस काम के आते ही अन्य सभी काम छोड़ देते थे जैसे एक ओजस्वी पहलवान को अखाड़े मे आकर रग चढ़ जाता है। स्वामी जी इस कार्य को न्याय शास्त्र की रीति का सहारा लेकर ही बड़ी ही सुन्दरता से निर्वाह करते थे सुनने वाले समझते थे कि जैसा इस महात्मा ने शास्त्रार्थ के नियमो को जाना है वैसे जानने वाले बिरले ही मनुष्य ससार मे होते हैं। दर्शनो के व्यवस्था विधान में बड़े ही चतुर थे यही तो कारण है कि उस प्रकार की युक्ति रखने वाला पुरुष समाज मे फिर प्रकट नही हुआ। उनमे विचित्रता यह थी कि कुरान इन्जील आयत या वेद मन्त्रो को कभी नही पकड़ते थे केवल युक्ति का सहारा और सब बात से किनारा था। सर्वतन्त्र सिद्धात का सहारा लेने को बड़ा ही उपयोगी समझते थे।

परलोक यात्रा के घण्टो पहले अलौकिक दृश्य जो गुण मनुष्य मे घर कर जाता है वही मृत्यु के समय भी उसको घबराहट से बचाता है। उनका अन्त हाथरस हस्पताल मे हुआ। मैं स्वय दर्शन नही कर सका। मैं स्वय बीमार था। लोगो द्वारा समाचार सुना। स्वामी जी ने कहा कि हमको उत्सव स्थल मे ले चलो। डाक्टर ने व अन्य पुरुषो ने मना किया स्वामी जी आपकी अवस्था ठीक नही है। सत्य ही है फकीर अपनी हठ कब छोड़ता है। वह जीवन मृत्यु की असलियत को समझता है। अधिक ममता से सम्बन्ध कहा जोड़ता है। अन्त में सहारे से वहा जा ही पहुँचे। आस्थायिका पीछे लगी हुई थी। तन्द्रा की हालत मे कभी नेत्र खुलता है कभी बन्द हो जाता है। लोग टकटकी लगाए निहार रहे हैं जिनकी तबियत कुछ ऊंची है प्रसन्न है। जो दुनियादारी के प्रभाव मे है वे हिम्मत हारते हैं परन्तु स्वामी दर्शनानन्द जैसे एक बहादुर मैदान मे जाते समय निराली उमग को दिखाते हैं वैसी ही शोभा दिखा रहे हैं जरा मूर्च्छा आई तो यह बात कह सुनाई कि यदि किसी को शास्त्रार्थ करना है तो कर लो फिर पीछे से मत कहना। इस बात को सुनकर लोगो मे जल लहर मारने लगा। कितनी विचित्र बात है कि ६ घण्टे बाद ही मृत्यु दामनगीर है थोड़े समय बाद आत्मा राहेअदम का राहगीर है परन्तु बना हुआ स्वभाव मृत्यु को कैसे सहार रहा है। अपनी मर्यादा को जताने के लिए कठिन समय मे भी कसे उभार रहा है। रोग का प्रभाव शरीर पर था पर मन प्रसन्न है। दोनो नेत्र इस बात की गवाही देते थे।

मेरे मित्र! स्वभाव को अच्छा बनाओगे, दुर्गुणो से पीछा छुड़ाओगे फिर ससार सुधार मे आगे बढ जाओगे। स्वामी जी का जीवन यह शिक्षा दे रहा है—

मैंने अन्तिम उपदेश स्वामी जी का काशीपुर मे सुना। उस समय रोग का भारी आघात हो रहा था कुछ शास्त्रार्थ होने के पश्चात् प्रसगवश यह शब्द मुख से निकले कि स्मरण रहे जिस बाजार में भेप व भेड का कृष्ण वण होने से एक ही मूल्य पड़ेगा उस मण्डी में भेस का आना रुक जाएगा। यदि कोई भूल कर ले आएगा तो पछताएगा। हस कर कहने लगे कि समाज की मार्कीट मे समझदार व बेसमझ का मूल्य एक हो गया है। देखना आगे को बुद्धिमान का आना इसमें रुक जाएगा और ऋषि का कार्य इनके हाथो से बिगड़ जाएगा इस लेख को लिखते हुए स्वामीजी का चित्र मेरे मनोव्यापार के सामने खड़ा है। सम्प्रति समाज की अवस्था और उनकी दूरदर्शिता मे सच्ची समानता प्रकट हो रही है। महात्माओ का अनुभव व आर्यों का तसव्वर ठीक ही होता है।

श्रद्धाञ्जलि

स्वर्गीय पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न

तुम त्याग मूर्ति तुम तेज पुञ्ज, तुम पावन पुण्य प्रभाकर थे।
ऋषि दयानन्द के परम भक्त, तुम वैदिक धर्म दिवाकर थे॥
तुमने अपना उज्ज्वल जीवन, मानव मख में लगा दिया।
प्रेरक कल्याणी वाणी से, सोती जनता को जगा दिया॥

तुम धर्म वीर तुम कर्म वीर दे दे दलील समझाते थे।
भावन मे भव्य भाव भर कर, सब को सन्मार्ग सुझाते थे॥
तुम परमपिता के विश्वासी, तुम मोम भावना पालक थे।
तुम स्वय सक्षम सत्या स्वरूप, वैदिक पथि पति सचालक थे॥

सबसे पहला गुरुकुल खोला, निःशुल्क वेद की शिक्षा दी।
भूले भटकों को मोह मेंट, विज्ञान ज्ञान की भिक्षा दी॥
रच रच कर छोटे बड़े ग्रन्थ, किरणें प्रकाश की फैलाईं।
वैदिक मन्त्रो की रम्य रश्मि, जन भाषा में भर छिटकाईं॥

तुम शास्त्रार्थ समरसिंह, निर्भय प्रतिवादि भयकर थे।
तुम धम धाम तुम कृपाराम, 'दर्शनानन्द' शिव शकर थे॥
तुम स्वर्ग सिधारे हे स्वामी, भौतिक शरीर का अन्त हुआ।
शिक्षा स्वरूप जो छोड़ गए, वह गौरव ज्ञान अनन्त हुआ॥

पंजाब को ईसाईकरण से बचाने वाले : स्वा० दर्शनानन्द जी

(पूर्वनाम पं० कृपारामशर्मा)

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना का उद्देश्य वैदिक धर्म की रक्षा निश्चित किया था। वैदिक धर्म की उपेक्षा के कारण एव मिथ्या मत-मतान्तरो में प्रवर्तमान दोषपूर्ण विचारो का लाभ उठाकर पादरी ईसाई हिन्दू जाति को सरलता से विधर्मी बना लेते थे। अंग्रेजी शासन का उन्हे सहारा था इसी निमित्त महर्षि ने मुसलमान ईसाइयो से शास्त्रार्थ करने की परिपाटी प्रचलित की थी। इसी मार्ग पर चलते हुए महर्षि ने हिन्दुओ को विधर्मी बनने से रक्षा की थी। स्वामी दर्शनानन्द जी ने महर्षि के ग्रन्थो का अध्ययन करने के साथ ही ईसाई मत व इस्लाम मत का भी भरपूर अध्ययन किया था।

महर्षि दयानन्द के व्याख्यानो से प्रभावित होकर युवावस्था मे ही वैरागी बन गए थे व ऐसे सन्यासी प० कृपाराम शर्मा दीनागर में ईसाइयो से टक्कर ले चुके थे जहा पहचान लिए व पुन गृहस्थ मे फसा दिए गए लगभग सन् १८६४ की बात है जब पादरियो के ऊपर अंग्रेज अधिकारियो की विशाल छत्रछाया थी एव उनकी परोक्ष प्रेरणा से ईसाई मत का प्रचार जोगो से चल रहा था।

नारोवाल जिला स्यालकोट के १४६ हिन्दू व मुसलमान विद्यार्थी ईसाई धर्म का बप्तिस्मा लेने को तैयार बैठे थे प० बरकतराम जी नारोवाल कस्बे के पुरोहित प० कृपाराम के सत्सग से कुछ समय पहले ही आर्य विचारो के बन गए थे। कस्बे के निवासी उनके यजमानो ने उनसे कभी कहा था कि या तो आप आर्यसमाज मे रहें या गाव की पुरोहिताई पौराणिक पद्धति से कर इस पर प० बरकत-राम जी ने पुरोहिताई छोड दी व स्वतन्त्र वैद्यक आदि से अपना निर्वाह करने लगे थे। जब १४६ हिन्दू मुसलमान बच्चे ईसाई बनने लगे तो घबराकर लडको के सरक्षक प० बरकतराम जी की शरण मे पहुचे जो कि उनके पुराने यजमान थे। बोले पण्डित जी हम आपके ही हैं आप हमारे ही हैं। यद्यपि हमने आपको त्यागा था परन्तु आज हमारी रक्षा आप ही कर सकते है। आप कुछ भी खर्च करे। पर किसी प्रकार इन सब लडको को ईसाई बनने से बचाइए। आर्य हृदय प० बरकतराम जी बोले मैं तुम से कुछ खर्च नही लू गा अपने ही खर्च से यह सेवा सम्भाल लू गा आप लोग धैर्य रखे।

प० बरकतराम जी ने बटाला आदि कई स्थानो को तार दिए। आर्य मुसाफिर प० लेखराम जी को भी तार दिया। उस समय प० कृपाराम जी (स्वामी दर्शनानन्द जी का पूर्व नाम) बटाला में ही आर्य धर्म के प्रचार मे लगे हुए थे। सयोगवश वहा तागा कुछ भी वाहन उपलब्ध नही था। वहा से नारोवाल २२ मील दूर था। प० कृपाराम जी रात में ही चल पड। क्योकि वार शुक्रवार था। रवि-वार को बच्चो को बप्तिस्मा (ईसाई बनाने का काम) किया जाना था ऐसा निश्चय हो चुका था केवल ३२ घण्टे का ही समय शेष था। प० कृपाराम जी रात मे ही नारोवाल पहुच गए। वहा एक तालाब के किनारे बैठकर एकान्त मे कुछ युक्ति सोचने लगे। सोचते-सोचते प० बरकतराम जी को बुलाकर उनसे कहा कि एक लडका जो मुझे दो जो मुझ पादरी साहब का घर बतला दे। इस प्रकार प० कृपाराम जी पादरी के मकान पर पहुचे। उनसे बोले मैं धर्म का जिज्ञासु हू। धर्म का लक्षण समझाइए। पादरी साहब ने समझाना शुरू किया। वह बाइबिल के आधार पर था। प० जी कहा मे भूल जाऊ गा जरा यह लिखकर दे दीजिए। पादरी साहब ने वह लक्षण लिखकर दे दिया उसके अनन्तर ४-५ दिन के बाद लौटा देने का वचन देकर पादरी साहब से उनकी धर्म पुस्तक बाइबिल मागी। पादरी साहब ने उन्हें बाइबिल दे दी।

प्रामाणित बाइबिल व उसमें वर्णित पादरी साहब का लिखा हुआ धर्म का लक्षण जब इस प्रकार दो वस्तुए प० कृपाराम जी के हाथ मे आ गई। तब उन्होंने कस्बे के बाजार मे खडे होकर बडे जोर-शोर से एक लम्बा व्याख्यान दिया परिणाम स्वरूप जनता में हर्ष व उत्साह फैल गया। तब उस समय कई छोटे पादरी घबरा गए और वह लेख व पुस्तक मागने लगे। प० जी ने उत्तर दिया कि मैं यह अपने वचनानुसार ४-५ दिन में लौटा दू गा। इस प्रकार इस धुआधार प्रचार से (प० कृपाराम) स्वामी दर्शनान्द जी ने १४६ युवको को ईसाई होने से बचा लिया।

व्याख्यान मे प० कृपाराम जी ने तुलनात्मक ढग से सिद्ध किया किया कि या तो यह धर्म व्याख्या गलत है या बाइबिल गलत है। दोनो वस्तुए एक ही की सन्तति हैं। इस व्याख्यान का यह परिणाम हुआ कि उन १४६ लडको का एव सर्व सामान्य जनता का साहस खूब बढ गया। सबके ऊपर ईसाई मत की पोल खुलने का बहुत गहरा असर पडा। वे लडके ईसाई तो क्या बनते उन्होने मिशन स्कूल जाना बन्द कर दिया।

इसके पश्चात् वार्तालाप करते हुए प० जी ने नागरिको से कहा कि इस प्रकार लडको के धर्म भ्रष्ट होने मे उनका दोष नही किन्तु आप लोगो का है जो कि तुम इनको विधर्मियो से शिक्षा दिलाते हो। तुम अपने धर्म की शिक्षा दो। इसका परिणाम यह हुआ कि वहा के ख्वाजा मुसलमानो ने झट चन्दा करके अपना एक स्कूल खोल दिया और दूसरी ओर आर्यसमाज द्वारा तत्काल प्रबन्ध न हो पाने के कारण प० कृपाराम जी ने स्वय वहा अध्यापक का कार्य प्रारम्भ कर दिया।

अब इसकी प्रतिक्रिया सुनिए।

ईसाई पादरी वहा के तेहसीलदार के पास पहुचे और रोना रोने लगे कि हमारे स्कूल में सात ही लडके रह गए हैं। स्कूल टूट जाएगा। सरकार के नमक हलाल तेहसीलदार साहब ने कुछ तहकी-कात शुरु की और आर्य पाठशाला मे पहुचे। उस समय प० कृपा-राम शर्मा ने बेधडक उत्तर दिया कि लडको को ईसाइयो की विषैली शिक्षा से बचाने के लिए स्कूल खोला है।

तेहसीलदार—किसने खोला है

प० कृपाराम—आर्यसमाज ने

तेहसीलदार साहब—खर्च कौन करता है

प० कृपाराम—आर्य समाज

इसके पश्चात् वहा कलक्टर साहब भी आए। उन्होने फरमाया कलक्टर साहब बोले—साबित कर सकते हो कि यह शिक्षा विषैली है। इतने में ही कमिश्नर साहब को साथ लेकर पहुच गए। अब प०कृपाराम की बहस पादरियो से चल पडी कि यह शिक्षा जहरीली है। पादरी साहब से इसका उत्तर तो बन न सका पर उन्होने झूठे ढोग से रोना रोया कि इसके बिना इनको कौन तारेगा। अब कृपा-राम जी ने कहा कि—'ईश्वरीय विद्या बच्चो का खेल नहीं" रोने से काम नही चलेगा। दलील दीजिए। तब ईसाइयों से कुछ उत्तर नहीं बन पडा और चलते बने और बाजार में यह गाना गाते फिरे—

ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।
मुख से ईसाई सा बोल तेरा क्या लगेगा मोहन॥ इत्यादि

इसके उत्तर मे प० कृपाराम शर्मा का पजाबी गद्य में गीत गली गली मे गूज उठा—

सच्ची बात हमारी भाइयो सुन लो जरा खलोके।
यह क्या तुमको मुक्ति दे सी, जो मर्या रो-रो के॥
फल बोवा दा किसने खाया कीकर दा वी बोके।
आर्य धर्म निकाला ईश्वर दुनिया दुध बिलोके॥
गुन्हेगार को मारे खालिक सूली नाल पिरोके।
जो मुर्दों को पूजे मूरख मर दा काफिर होके॥

पजाब महर्षि की लहर में प्रवाहित हो गया। वह प्रकाश स्तम्भ ही हिन्दू समाज का मार्ग दर्शक है।

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती का जीवन-दर्शन

प्रस्तोताः आचार्य शिवराज शास्त्री एम. ए. मौलवी फ़ाज़िल

स्वामी दर्शनानन्द जी का जन्म पजाब के लुध्याना जिलान्तर्गत कस्बा जगरावाँ, जो पजाब केसरी लाला लाजपतराय जी की भी जन्मभूमि है, उसमें उच्चकोटि के ब्राह्मण परिवार में प० रामप्रताप जी शर्मा के घर माघ-कृष्ण दशमी सम्वत १९१८ विक्रमी को हुआ। पिता प० रामप्रताप शर्मा अपने वैभवशाली परिवार के कारण अपने क्षेत्र मे प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित थे। जन्म का नाम प० कृपाराम शर्मा रखा गया। परिवार कट्टर धार्मिक था। परिवार की ओर से काशी में भी विशेष सम्पत्ति व अन्न क्षेत्र खुला हुआ था। पिता उच्चकोटि के संस्कृत व फारसी के विद्वान थे।

बाल्यपन से ही फारसी भाषा के शिक्षक मियां मोलशाह से उन्होंने फारसी की शिक्षा तथा अपने पिता जी से संस्कृत व्याकरण की सिद्धान्त कौमुदी पढ़ ली।

तत्कालीन पुराण परम्पराओं के अनुसार कृपाराम जी का विवाह ११ वर्ष की आयु में ही अमृतसर के धीरो वाल ग्रामवासी प० सुन्दरलाल जी सूरी की सुपुत्री पार्वती से विवाह कर दिया गया। स्वामी जी की इच्छा के विरुद्ध ही परिवार जनों ने उन्हें गृहस्थ के बन्धन में बांध दिया परन्तु उनकी आत्मा उन्हें कहीं और खिंचा मे ले जाने को व्याकुल थी।

उनका नवजीवन बड़ी विचित्र प्रवृत्तियों से भरा हुआ था। उदारता व औघड़पन उनके स्वभाव में थी साथ ही विद्याध्ययन उनकी उत्कट रुचि से वे ज्ञानार्जन में भी जान से जुटे रहते थे।

वही समय था जब महर्षि दयानन्द का पजाब दौरे कर रहे थे स्वभावत कृपाराम जैसे सत्यान्वेषी का उनके प्रति श्रद्धाभाव उत्पन्न होना अनिवार्य था। सन्यास ग्रहण करने के पश्चात् स्वामी दर्शनानन्द जी जीवन के अन्तिम दिनों में कहा करते थे कि "मैंने" ऋषि दयानन्द के ३ व्याख्यान सुने है। ऋषि ऋण उतारने के निमित्त ३७ वर्ष तक आर्य समाज की सेवा कर दी। वास्तव मे उन्होंने ऋषि ऋण उतारा।

यद्यपि सन्यास धारण के समय आपके विचारों का रुख नवीन वेदान्त की ओर था परन्तु महर्षि के सत्सग से आपके ऊपर महर्षि का वह रग चढ़ा कि आपने आर्य समाज के महाधन के रूप में जीवन बिताया।

आपने-अपनी पैतृक सम्पत्ति संस्कृत भाषा, वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार व आर्य समाजों की उन्नति व विकास में ही लगा दी। गुरुकुल पद्धति के तो आप इतने उन्नायक थे कि आपने ही सर्वप्रथम सन १८९८ मे गुरुकुल सिकन्दराबाद की स्थापना की।

फिर तो जैसे गुरुकुल खोलना आपका व्यसन बन गया। गुरुकुल बदायू, महाविद्यालय गुरुकुल ज्वालापुर, गुरुकुल विरालसी गुरुकुल पोठोहार, उनकी महान यशस्वी यादगार है।

आर्य समाज के साहित्य वृद्धि निमित्त उन्होंने अनेकों पत्र प्रारम्भ किए अनेक छोटे मोटे ग्रन्थ लिखे। अमर शहीद प० लेखराम जी की स्मृति मे सत्यवती नावल लिखा। चार दर्शनो पर भाष्य किए। वैदिक धर्म विरोधियो से अनेकों शास्त्रार्थ किए। शास्त्रार्थों की उनकी अपनी विशेष शैली थी। आर्य समाज में महर्षि दयानन्द के प्रताप से यद्यपि, आर्य मुसाफिर प० लेखराम, प० तुलसीराम स्वामी, स्वा० नित्यानन्द जी प० भीमसेन शर्मा (इटावा वाले) सम्पादकाचार्य प० रुद्रदत्त जी, प० गणपति शर्मा प० मुरारीलाल शर्मा प० भोजदत्त जी जैसे शास्त्रार्थ महारथी स्वामी जी के समकालीन थे, व उसके बाद भी आर्य समाज ने प० कालीचरण जी प० रामचन्द्र देहलवी, प० महेशचन्द्र जी प० आनन्दभिक्षु जी और प० देवेन्द्र शास्त्री व प० व्यासदेव शास्त्री जैसे उच्चकोटि के शास्त्रार्थ कर्ता उत्पन्न किए। परन्तु उपनिषदों व दर्शनो के तैराक श्रीब पराचार्य, शकराचार्य कुमारिल भट्टाचार्य आदि की भाष्य शैली तथावाद शैली के अवगाहनकर्ता आलोचक समालोचक तथा तत्ववेत्ता स्वा० दर्शनानन्द जी सरस्वती महाराज जैसा सिद्ध हस्त, वाग्भट्ट आर्य समाज में अपनी उपमा आप ही थे। उन्होंने सैकड़ों सफल व चिर स्मरणीय शास्त्रार्थ किए। इन शास्त्रार्थों में स्वामी जी महाराज के धवनार बन्द की शोभा देखते ही बनती थी। वह वाणी प्रवाह का आनन्द अलौकिक था। स्वर्गीय प० रामचन्द्र देहलवी व उनके समकालीन शास्त्रार्थ महारथी पढे पढे श्रद्धेय स्वामी दर्शनानन्द के उदारसीन से जन-सन्तोष उत्पन्न करते थे।

आर्य समाज का वह स्वर्ण युग था। उसी युग में आर्य समाज को अमर व दिग्विजयी बनाया। वैदिक धर्म पर आलोचनाकर सकने वाले सभी पण्डितों मौलवियों व पादरियो की बोलती सदा के लिए बन्द कर दी।

काश ! कि आर्य समाज आज भी नए सिरे से सर उठा रहे मिथ्या मतमतान्तरो के सम्बन्ध में स्वामी जी की प्रचार प्रणाली का अनुसरण करता जिससे वैदिक सूर्य का प्रकाश ससार को आर्य बनाने का साधन बनता। वेद प्रचार की शिथिलता से ही देश अतीत काल में घोर सकट ग्रस्त रह चुका है। कहीं यह कमजोरी हमारे भविष्य को भी धुधला न बना दे। आर्य बन्धु अपने कर्त्तव्य को पहचानें।

वैदिक विद्वान डा०. पं० मंगलदेव शास्त्री उपकुलपति बनारस संस्कृत विश्व विद्यालय

पूज्य स्वामी दर्शनानन्द जी के अनोखे व्यक्तित्व की गुण गरिमा का वर्णन लक्षे। मे करना असम्भव है। वैदिक धर्म में उनको असीम श्रद्धा थी ऋषि दयानन्द के वे अनन्य भक्त थे। ईश्वर विश्वास उनके रोमरोम मे व्याप्त था। एषणा-त्रय से वे ऊपर थे प्राणो का मोह चिरकाल से छोड चुके थे। पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों तथा अन्ते वासियो के थोडे से कष्ट को भी न देख सकते थे। तपस्या की मूर्ति थे। उनका दर्शनानन्द नाम पूर्ण तथा सार्थक था छोटी अवस्था में ही हम लोगो को तुलनात्मक (संस्कृत व अरबी) तर्क व दर्शन की शिक्षा देने में उन्हे बहुत आनन्द आता। एक-एक दिन मे टैक्टों का लिखते जाना छपवाते जाना उनकी नैत्यिक दिनचर्या थी। शास्त्रार्थ महारथी तो वे प्रसिद्ध ही थे। लेखनी के धनी थे। शास्त्रार्थी व उपदेशकों के लिए उन्हें एक चलता फिरता विद्यालय ही कहना चाहिए। उनके लिए उनका सम्पर्क ही मात्र पर्याप्त था। स्वभाव से ही वे सच्चे सन्यासी थे। गुरुकुल पद्धति का सच्चे अर्थों मे विस्तार हो इसकी लगन उनके हृदय मे सदा धधकती रहती थी वे चाहते थे देश मे उसका जाल बिछ जाए। उस वीतराग महात्मा के प्रति मेरी यही विनम्र श्रद्धाञ्जलि है।

आर्य जगत के शिरोमणि विद्वान अनेक ग्रन्थों के रचयिता श्री पं० भगवद्दत्त जी की श्रद्धाञ्जलि

स्वामी दर्शनानन्द जी जैसा तत्वदर्शी व्यक्ति यदि यूरोप में देश मे उत्पन्न हुआ होता तो वहां वह फिलास्फरो का शिरोमणि करके पूजा जाता और सबभूमण्डल से उसे वैसा ही प्रतिष्ठित मानता।

स्वामी श्रद्धानन्द : चरित्र विश्लेषण (२)

—डा० भवानीलाल भारतीय—

गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता और आचार्य पद पर अपने जीवन के कुछ न्यून दो दशक व्यतीत करने के पश्चात स्वामी श्रद्धानन्द को लगा कि अब उन्हें गुरुकुल की प्राचीरों से बाहर निकलकर देश की स्वाधीनता के यज्ञ में भी अपनी आहुति देनी है। दक्षिण अफ्रीका में कुछ ठोस सेवा करके लौटने वाले जिस कर्मवीर गांधी का उन्होंने गुरुकुल में उस समय स्वागत किया था जबकि देश के अधिकांश लोग उसे भलीभांति जानते भी नहीं थे, और जिसे उन्होंने महात्मा कहकर पुकारा था, सौराष्ट्र का वही बरिस्टर मोहनदास गांधी अब भारत के जन मन की आशाओं और आकांक्षाओं का प्रतीक बन देश में सर्वत्र देवता की भांति पूजा और आराधना का पात्र बना हुआ था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अनुभव किया कि देश के लिए भी कुछ करने का समय अब आ गया है। १९१७ से १९२२ तक के पांच वर्ष राष्ट्रदेव की सेवा में उन्होंने सिपाहियों की संगीनों के प्रहार के लिए अपनी छाती को खोला, जामामस्जिद की प्रवचन वेदी से परम पिता की पुनीत महिमा का आख्यान करते हुए हिन्दू और मुसलमानों को देश के लिए सर्वस्व निछावर करने की प्रेरणा की। कांग्रेस की उच्चकमान के एक महत्वपूर्ण अंग बन कर इस राष्ट्रीय संस्था की नीतियों का संचालन किया और समकालीन राष्ट्र नेताओं के आदरास्पद बने। राजनीति में धर्म, नैतिकता तथा आध्यात्मिकता के पावन मूल्यों को समाविष्ट कराने का श्रेय महात्मा गांधी को तो निश्चय ही दिया, किन्तु इसके लिए इतिहासकार स्वामी श्रद्धानन्द को भी विस्मृत नहीं कर सकेंगे, क्योंकि उन्होंने ही सत्याग्रह को धर्मयुद्ध की संज्ञा दी तथा जिन्हें अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के पद को स्वीकार करने का अनुरोध करते समय महात्मा गांधी जी ने लिखा था 'यदि आप स्वागत समिति के सभापति हो जायेंगे तो आप कांग्रेस में धार्मिक भाव पैदा करने में समर्थ हो सकेंगे।"

कांग्रेस के कार्यक्रम में स्वदेशी के महत्व, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार तथा अछूतोद्धार जैसे रचनात्मक मुद्दों को स्थान दिलाने के लिए स्वामी जी का कर्तृत्व सदा याद किया जाता रहेगा। महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन में उनकी कितनी जबरदस्त आस्था थी, यह हम उनके उस पत्र में देखते हैं, जो उन्होंने २५ सितम्बर १९२० को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान लाला रामकृष्ण जी को लिखा था। इसमें उन्होंने स्पष्ट स्वीकार किया कि "इस समय में मेरी सम्मति में असहयोग की व्यवस्था के क्रियात्मक प्रचार पर ही मातृभूमि का भविष्य निर्भर है। यदि यह आन्दोलन अकृत कार्य हुआ और महात्मा गांधी को सहायता न मिली तो देश की स्वतन्त्रता का प्रश्न ५० वर्ष पीछे जा पड़ेगा। यह जाति के जीवन व मृत्यु का प्रश्न हो गया है।" राष्ट्र की आजादी की लड़ाई के सैनिक बनने में यदि उन्हें गुरुकुल या आर्य समाज का काम थोड़े समय के लिये छोड़ना भी पड़ा तो उसका उन्हें कोई खेद नहीं था, क्योंकि उन्हें देश की स्वतन्त्रता का यह युद्ध सर्वोपरि दीखता था।

किन्तु जब उन्होंने देखा कि आजादी की लड़ाई का यह कर्णधार (गांधी जी) खुद कभी कभी सनक में आकर ऐसे फैसले कर जाता है जिसमें सारे देश को परेशानी का सामना करना पड़ता है और देशवासियों की संघर्ष करने की शक्ति और वृत्ति को आघात पहुंचता है, तो उन्होंने गांधी जी के समक्ष भावना और आवेश में लिए उनके इन फैसलों का प्रतिवाद भी किया। गांधी जी ने तो स्वयं अपने कतिपय निर्णयों को हिमालय जैसी भूल माना ही था। गांधी जी की मुस्लिम तोषिणी नीति से भी वे सहमत नहीं थे। यदि महात्मा गांधी हिन्दुओं और मुसलमानों को समान स्तर पर रखकर उनकी किसी आपत्तिजनक बात की आलोचना या टीका करते तो वह समझ में आने वाली बात थी। किन्तु मुसलमानों की साम्प्रदायिक विद्वेषयुक्त बातों को सहन करना एवं उनकी संकीर्ण मनोवृत्ति के प्रति अकारण उदारता दिखाना स्वामी श्रद्धानन्द को कदापि पसन्द नहीं था।

अन्ततः वे कांग्रेस से भी दूर हट गये। उनके विचार में देश में हिन्दू समाज का बहुमत है। देश के हित भी तभी तक सुरक्षित हैं जब तक हिन्दू यहां रहकर सम्मान और गौरव का जीवन बिताते रहें। किन्तु सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से अस गठित हिन्दुओं को जब तक एकता के सूत्र में आबद्ध नहीं किया जाता, तब तक वे देश की स्वाधीनता, उन्नति और प्रगति के लिए अपना समुचित योगदान करने में असमर्थ हैं। ऐसी स्थिति में स्वामी श्रद्धानन्द ने हिन्दुओं को संगठित होने की प्रेरणा दी। संगठन अपने आप में तो एक निराकार विचार सा ही है। जातियों को संगठन का लाभ तभी मिलता है जब वे अपनी सामाजिक दुर्बलताओं को दूर करती हैं तथा भाव, भाषा, विचार, संस्कृति और जीवन दर्शन में समरसता रखती हैं। हिन्दू जाति का संगठन तभी संभव था यदि उसके नेता दलित वर्गों की समस्याओं और कठिनाइयों का तत्काल समाधान ढूंढते और शताब्दियों से पीड़ित तथा ठुकराये गए इन लोगों को उनके अधिकार प्रदान करते। इसी प्रकार कारणवश अन्य मतों में चले गए लोगों को अपने धर्म में प्रविष्ट करने के लिए चलाये गये शुद्धि आन्दोलन की सफलता भी संगठन का एक साधन बन सकती थी। अतः अब स्वामी श्रद्धानन्द का समस्त ध्यान, शुद्धि, अछूतोद्धार तथा सामाजिक कुरीतियों के निवारण जैसे कार्यक्रमों पर ही लगा उनके प्रयासों को तब-धक्का लगा, जब उन्होंने देखा कि संकीर्ण बुद्धि वाले सनातनी समाज को न तो अछूतों को उनका प्राप्य देना ही पसन्द है और न वे शुद्ध होकर हिन्दू धर्म में प्रविष्ट लोगों को ही दिल खोलकर अपनाने के लिए तैयार हैं। यद्यपि पं० मदनमोहन मालवीय जैसे उदार नेताओं के प्रभाव में आकर अधिकांश हिन्दुओं ने अछूतोद्धार तथा शुद्धि के कार्यक्रम को माना तो अवश्य किन्तु यहां भी भारतीय कृष्ण तीर्थ तथा अन्य पौराणिक नेताओं ने आर्य समाज के प्रति अपनी मात्सर्य वृत्ति का ही परिचय दिया। उन्हें आशंका थी कि इन कार्यक्रमों को सफल बना कर आर्य समाज अपने प्रभाव की वृद्धि कर रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द के लिए यह सर्वथा अनपेक्षित था और अब वे हिन्दू महासभा से भी निराश हो गये।

अन्ततः उन्होंने कवि गुरु की 'एकला चलो' की नीति ही अपनानी पड़ी। अब वे अपने कार्यक्रमों के लिये आर्यसमाज के लोगों पर ही निर्भर हो गये और उन्हीं के सहयोग से उन्होंने शुद्धि और संगठन का शंखनाद किया। इन कार्यक्रमों में महात्मा हंसराज के नेतृत्व में कालेज दल ने भी उन्हें पूरा पूरा सहयोग दिया और एक बार पुनः संसार को दिखा दिया कि महर्षि दयानन्द के अनुयायी धर्म और समाज के व्यापक हित में कंधे से कंधा मिला कर आगे बढ़ सकते हैं। ऐसे कर्मयोगी श्रद्धानन्द का जीवन जितना शानदार था, उनकी मृत्यु भी उतनी ही गौरवशालिनी थी, जिस पर महात्मा गांधी को भी ईर्ष्या करनी पड़ी।

सती काण्ड के विरुद्ध

अत्याचार अन्याय, जलाई सभ्य अबला को,
देश में अधर्म ये, कुठाराघात चाले हैं।
देख ऐसा अधर्म को, स्वामी आगे आय खड़े,
वेदों के विरुद्ध ऐसा, करे पाप पाले हैं॥
स्वामी अग्निवेश जी के, सहमत देश सारा,
आर्य लोग साथ में, सन्यासी वेद वाला है।
पोप-पाखण्डी ऐसा, बनाया है पाप पथ,
नारियों के शत्रु जिन, गौरव को खाने हैं॥
सन्यासी न होते कौन? मान देते नारियों को,
नरकस्थ 'नारी बोझ', करते असमानता।
कृतघ्न 'धर्म सब', पैरों की पैजार जाने,
रत्नों की खान जिन, नर्क-सी बखानता॥
आर्य देव पुण्यवर, सन्यासी बढ़ाया मान,
देवियों न होतो कौन? देवतों को जानता।
अबला न जानो कोई, सबला सपोट करो,
जिनकी आये हैं कोख, महर्षि मेघावानता॥

कवि कस्तूरचन्द 'घनसार'
कवि कुटीर-पीपाड़ शहर (राज०)

आर्य जगत् के समाचार

आर्य बालगृह के छात्रों का एतिहासिक दौरा

विगत दिनों आर्य बालगृह पटोदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली-२ के ५० छात्रों का दल श्री हमीरसिंह रघुवंशी के कुशल नेतृत्व में माउण्ट आबू के एतिहासिक दौरे पर गया।

स्वामी श्री कान्तिवेश जी के ओ३म् के झण्डे के तले एवं श्री बालमुकुन्द जी दीक्षित तथा श्री सुरेन्द्रसिंह चौहान संरक्षक इसके साथ सभी बच्चों ने वहां की एतिहासिक एवं प्रसिद्ध सिद्ध पुरुष श्री जनोपदास की झोपड़ी नामक भवन में १५ दिनों तक रुककर, इस नगर के प्रमुख भवनों के साथ २ ही रैलियां जागरण अभियान द्वारा आर्य समाज की प्रगति में विशेष योगदान का कार्य किया। इन बच्चों ने वहां का विश्वप्रसिद्ध दिलवाड़ा के जैन मन्दिरों से प्राचीन वास्तुकला, चित्रकला आदि से भी विशेष शिक्षा ली तथा नित्यप्रति वहां के आर्य समाज मन्दिर में स्वामी धर्मानन्द जी के मार्गदर्शन में सुबह शाम नित्य यज्ञ एवं हवन द्वारा मन्त्रोच्चारण के ही सुहावने वातावरण में सम्पूर्ण नक्कीझील के आसपास के माहौल को सुरम्य बना देते थे—जो कि वहां के हजारों नागरिक बड़े ध्यान से सुनते थे।

माउण्ट आबू आर्य समाज के प्रधान मास्टर श्री गौरीशंकरजी ने उपरोक्त कार्यहेतु बच्चों की बड़ी सराहना की एवं सहयोग दिया।

इन बच्चो के पन्द्रह दिनो के क्रमवार कार्यक्रम से स्थानीय नागरिक अधिकारी एवं प्रतिष्ठित व्यापारी गण इतने प्रभावित हुए कि उनका जगह २ पर हार्दिक स्वागत करते हुए अपने घरो पर विशेष दावतों का भी प्रबन्ध किया गया। हमारी विदाई के वक्त इन नागरिकों की आंखो में भावपूर्ण आंसुओं की झलक देखने पर ज्ञात हुआ कि हमारे बच्चो के आर्य समाज रूप वृक्ष की जड़ें उनके दिलो दिमाग मे बैठकर स्थान बना दिया था।

(हमीरसिंह रघुवंशी)

उपप्रबन्धक आर्य बालगृह, पाटोदी हाउस, दरियागंज नई दिल्ली।

आर्य समाज देवबन्द वार्षिक उत्सव

देवबन्द—स्थानीय आर्य समाज का वार्षिक उत्सव ११ से १६ दिसम्बर तक बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया मे उत्सव राष्ट्र रक्षा, महिला व आर्य महासम्मेलन बड़े सफल रहे। इस अवसर पर आर्य समाज के मूर्धन्य शास्त्रार्थ महारथी प० बिहारीलाल शास्त्री व अमर स्वामी व समाज के भू० पू० कोषाध्यक्ष श्री बाबूराम जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

आर्यसमाज हिवरखेड (रूपराव) अकोला में वेद प्रचार

दि० १२ दिसम्बर को आर्यसमाज भवन में बिहार से आए प० सियाराम निर्भय व प० सुरेन्द्रपाल आर्य तथा प० सेवकराम आर्य भजनोपदेशक द्वारा स्थानीय म० फुले कन्या कनिष्ठ महाविद्यालय की छात्राओं के निमित्त वैदिक धर्म की महानता व महर्षि के नारी जाति पर उपकार के प्रति प्रद्बोधन प्रदान किया। १३ दिसम्बर को श्री प्र०म० ढोकले के गृहप्रवेश के अवसर पर धर्म प्रचार किया। रात्रि को विशाल सभा मे समारोहपूर्वक आर्य समाज का सदेश श्रोताओं को सुनाया। जनता प्रचार से अत्यन्त प्रभावित हुई।

डाक्टर की आवश्यकता

आवश्यकता है एक होम्योपैथिक डिग्री प्राप्त डाक्टर की। कार्य का समय प्रात: तीन घण्टे। वेतन योग्यता और अनुभव के अनुसार। प्रार्थना पत्र १५ दिन के अन्दर—मन्त्री आर्यसमाज पंजाबी बाग, नई दिल्ली-११००२६ पर भेजें।

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में जापानी शिष्टमंडल का जोशीला स्वागत

२०-१२-८७ दिसम्बर में गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, में आगमन पर जापानी शिष्ट मण्डल टूर दर्शन विभाग का जोशीला स्वागत किया गया। गुरुकुल वृन्दावन के ब्रह्मचारियों व अध्यापकों ने वैदिक मन्त्रोच्चारण सहित हवन आदि किया व ब्रह्मचारियों ने योगासन, वेदपाठ, श्लोक अन्त्याक्षरी, संस्कृत मे भाषण आदि का बड़े ही अनुशासित ढंग से प्रदर्शन किया। टीम के डाइरेक्टर श्री-श्री इति रोहिमा ने योगासन, वेद पाठ, यज्ञ एवं कक्षा आदि करते ब्रह्मचारियो एवं दिनचर्या पर वीडियो रिकार्डिंग टी०वी० कैमरे द्वारा किया एवं जापानी दल ने यहां की सुन्दर एवं एकान्त यमुना किनारे बसे गुरुकुल की व ब्रह्मचारियो के अनुशासन, व्यवस्था, सत्कार की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

श्री भगवद्भिक्षु जी वानप्रस्थ द्वारा सहायता

पिछले कई वर्षों से श्री भगवद्भिक्षु जी (पानीपत वाले) उड़ीसा के गुरुकुल आम सेना तथा मध्यप्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों तथा आसाम के दयानन्द सेवाश्रम संघ के विद्यालयो में वस्त्रो, कम्बलो अनाज तथा धन द्वारा सहायता कर रहे हैं। उनकी निष्काम सेवा धर्म प्रेमियों के लिए अनुकरणीय है।

—पृथ्वीराज शास्त्री

मन्त्री, दयानन्द सेवाश्रम संघ

वार्षिक क्रीडा महोत्सव सम्पन्न

उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर मे स्थित डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल का वार्षिक क्रीडामहोत्सव ९ व १० दिसम्बर को सोल्लास सम्पन्न हो गया है। इस अवसर पर राज्य-क्रीडा निर्देशक 'श्रीमान अनादि साहू' आई० पी० एस० ने अनुष्ठानिक रूप मे उद्घाटन करते हुए क्रीडा की उपयोगिता के ऊपर छात्र-छात्राओं को उद्बोधन दिया।

परिचालना समिति के चेयरमैन 'श्रीमान वीरेन्द्र मोहन पटनायक' ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए छात्र छात्राओं को पुरस्कृत किया।

आर्यसमाज की गतिविधियां

आर्य वीर दल आर्यपुरा सिरोरा (बुलन्दशहर) प्रगति पथ पर

आर्यपुरा। यहां आर्यवीर दल अपनी साहित्य सभा का आयोजन प्रति सप्ताह करता है। दीवारों पर सुभाषित लिखकर वैदिक दृष्टिकोण से जनता को प्रभावित किया जा रहा है। आर्यवीरों सन् १९८८ के लिए श्री सोरीलाल जी को दल संचालक, श्री रामकिशन आर्य को नगर नायक श्री श्यामप्रकाश आर्य को मन्त्री, श्री नारायण सिंह को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया।

संक्षेप में आर्य वीर दल समिति आस पास के ग्रामो में ग्रामीणों के हितार्थ भी कई योजनाए प्रारम्भ करने जा रही है। जैसे प्रौढ शिक्षा, नशा निवारण, स्वच्छता सप्ताह आदि।

युवको मे यौगिक व्यायाम, सैनिक शिक्षा, लाठी, भाला, तलवार के प्रशिक्षण देने के भी प्रयास जारी है। संक्षेप में युवाशक्ति को देशभक्ति का पाठ पढाना है।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज चांदपुर (बिजनौर) का ६० वां वार्षिकोत्सव १२ से १४ दिसम्बर तक बडे समारोह पूर्वक मनाया गया। डा० देवेन्द्र दत्त द्विवेदी, प० रामप्रसाद वेदालंकार, प० जयप्रकाश आर्य के ओजस्वी प्रेरणात्मक भाषण हुए। उपस्थिति हजारों की संख्या मे रही।

—देवेन्द्र कुमार त्यागी, मन्त्री

अन्तर्जातीय दहेज रहित विवाह

आर्य समाज जोगबनी पूर्णिया बिहार में श्री रामनारायण जी उपप्रधान आर्य समाज के सुपुत्र धर्मेन्द्र कुमार आर्य का अन्तर्जातीय विवाह संस्कार श्री जयदेव चन्द्र घोष की पुत्री पूर्णिमा कुमारी से आर्यसमाज के तत्वावधान मे हुआ।

महर्षि दयानन्द गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) बृहद् यज्ञ व ऋषि मेला

गुरुकुल भूमि मे २० से २२ फरवरी ८८ तक समारोह पूर्व बृहद् यज्ञ व ऋषि मेला का आयोजन किया गया है आर्यजगत के मूर्धन्य सन्यासी विद्वान व भजनोपदेशक इसमे भाग लेंगे।

—आचार्य चन्द्र देव शास्त्री, कुलपति

निर्वाचन

आर्य समाज नागौर के वार्षिक निर्वाचन मे प्रधान श्री राधाराम पीली व मन्त्री श्री चन्द्रशेखर व्यास चुने गये।

—आर्य समाज अमरनगर मेनरोड मवडी प्लाट राजकोट के चुनाव मे प्रधान श्री लक्ष्मणदेव आर्य मन्त्रिणी श्रीमती सुशीला आर्य चुनी गई।

शोक समाचार

आर्य समाज बक्सर के कर्मठ कोषाध्यक्ष श्री गौरीशंकर लाल आर्य की मृत्यु दिनांक १९-१२-८७ शनिवार को रात १० बजे हृदय गति रुक जाने से हो गई। उनकी उम्र ७० साल की थी उनका अन्त्येष्टी कार्यक्रम रविवार दिनांक २०-१२-८७ को दिन में ११ बजे बक्सर चरित्रवन गंगा तट पर पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार किया गया उनके शव के साथ शहर के गणमान्य व्यक्ति एव अन्य लोग हजारो की संख्या मे घाट पर गए उनके पुत्र श्री अशोक कुमार ने आर्य समाज बक्सर को १०००) का दान स्थिर निधि के रूप मे दिया।

—राजेश्वरी प्रसाद केसरी आर्य

वीरसेन वेदश्रमी नहीं रहे

—आर्य जगत को यह जानकर दुःख होगा कि वेदश्रमी प० वीरसेन जी का इन्दौर मे देहावसान हो गया है आप यज्ञ सम्बन्धी अन्वेषण के सम्बन्ध मे आर्य समाज में प्रसिद्धि पा चुके थे। सार्वदेशिक की ओर से उनके परिवार के लिए शोक सम्वेदना।

—सम्पादक

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

निम्न स्थानों पर श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया—

—आर्य समाज आवास विकास कालोनी काशीपुर (नैनीताल)

—आर्य समाज जवाहरलाल रोड सिकली पोखर मुजफ्फरपुर

—आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई में २३ दिसम्बर ८७ को मप्पू समाचार मे अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस बडे धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर महानगर पालिका के महापौर श्री रमेश प्रभु जी मुख्य अतिथि रहे।　　—मन्त्री

—दयानन्द बाल मन्दिर ज़ाफ़राबाद जौनपुर के प्रांगण में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया।

—महर्षि दयानन्द ट्रस्ट टंकारा (राजकोट) सौराष्ट्र की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस श्री सत्यदेव जी (निवृत्त अभियन्ता) अवैतनिक प्रबन्धक की अध्यक्षता मे उत्साह पूर्वक मनाया गया। ब्रह्मचारी प्रकाशस्वरूप भारद्वाज ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

—आर्य समाज रीवा के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर श्री गणेशप्रसाद आर्य तथा श्री रामदेना एडवोकेट द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई।

—आर्य टंकारा द्वारा श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में बालकों का टूर्नामेन्ट आयोजित किया गया। श्री अरुणकुमार विदर्भीय व रंजन बहन पण्ड्या ने भाषण व गीतो से श्रद्धाञ्जलि भेंट की।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कुठिया जनपद हरदोई उ० प्र० का वार्षिकोत्सव दिनांक ७, ८, ९ फरवरी ८८ ई० को बडी धूमधाम से मनाया जायेगा। जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान पधार रहे है।　　— सुरेशचन्द्र, प्रधान

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस शोभा यात्रा

शोभायात्रा का नेतृत्व करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती चित्र मे केन्द्रीय आर्यसमाज के प्रधान म० धर्मपाल जी, मन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल व श्री सूर्यदेव जी आदि दिखाई दे रहे हैं।

श्रीमद्दयानन्द वेदविद्यालय ११९ गौतम नगर नई दिल्ली ४९ को डीजल जीप भेंट समारोह एवं आर्य गोशाला तथा उपाध्यायकक्षों का उद्घाटन

पवित्र यज्ञ की ज्वालाओं के साथ रविवार १७ १ ८८ को प्रात ९ बजे से १ बजे तक विशेष समारोह के साथ सम्पन्न होगा।

इस अवसर पर राजधानी की समस्त आर्य समाजें व सभी धार्मिक सगठनों के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। यह संस्था आपकी अपनी संस्था है। इसकी उन्नति मे आपने हमेशा योगदान दिया है जिसके परिणामस्वरूप यह संस्था दिन प्रतिदिन उन्नति की ओर अग्रसर है।

अत आभार व्यक्त करते हुए हम सभी गुरुकुलवासी करबद्ध प्रार्थना करते हैं कि पूर्व कार्यक्रमों की भांति इस अवसर पर भी अपने इष्ट मित्रों सहित पधार कर विद्यालय की शोभा बढ़ायें तथा ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद दें।

प्रधान	संयोजक	आचार्य
चौ० दिलीपसिंह	रामनाथ सहगल	हरिदेव आचार्य

महात्मा सुरेन्द्र मुनि चल बसे

कानपुर। आर्य समाज वेदमन्दिर गोविन्दनगर के संस्थापक सदस्य तथा 'गुरुकुल आश्रम ब्रह्मावर्त बिठूर के कोषाध्यक्ष महात्मा सुरेन्द्रमुनि (पं० सुरेन्द्र नाथ गुप्त) ७३ वर्ष की आयु मे २३ दिसम्बर १९ ७ (श्रद्धानन्द बलिदान दिवस) को चल बसे। ताड़ीखेत अल्मोड़ा और पिथौरागढ़ के आर्यसमाज मन्दिर मे दिवगत आत्मा की शान्ति तथा परिजनों के धैर्य हेतु शान्तियज्ञ सम्पन्न किया गया।

शुद्धि समाचार

दिनांक २१ १२ ८७ को आर्य समाज मन्दिर समालखा मे एक परिवार मुसलमान नट को उसकी इच्छा के अनुसार वैदिक धर्म मे दीक्षित किया गया और यज्ञ हवन मे श्री मांगेराम उपदेशक और श्री कर्मसिंह आदि ने भाग लिया ये कार्यवाही हिन्दू शुद्धि संरक्षण समिति हरियाणा के महामन्त्री स्वामी सेवानन्द सरस्वती के द्वारा कार्यवाही की गई।

पुराना नाम	नया नाम	स्थान	संख्या
लियाकत अली	प्रदीप कुमार	सालनी	८

शोक समाचार

आर्य समाज दरियागंज की माननीया सदस्या श्रीमती माता शोभवती जी, धर्मपत्नी श्री लाला जयकिशन दास जी २१ अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली का ८५ वर्ष की अवस्था मे अपने निवास स्थान पर निधन हो गया है। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं। सार्वदेशिक सभा दिवंगत आत्मा के प्रति पुनीत श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

—२३ दिसम्बर ८७ को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आर्य समाज मुगल सराय के तत्वावधान मे मनाया गया। इस अवसर पर विशेष यज्ञ के पश्चात बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं इण्टर कक्षाओं की छात्राओं द्वारा नारी और समाज विषय पर व्याख्यान प्रतियोगिता हुई।

व्याख्यान प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान कुमारी शिखा गुप्ता (केन्द्रीय विद्यालय) द्वितीय कुमारी भीमा एवं तृतीय कुमारी मंजू उपाध्याय एवं कु० उर्मिला ने प्राप्त किया। छात्राओं ने नारी समस्या व समाधान पर विशेष प्रकाश डाला। सफल प्रतियोगियों को प्रमाण पत्र के साथ पुरस्कृत किया गया। कु० शिखा गुप्ता को लायंस क्लब एवं बुद्धिजीवी मंच की ओर से १५०) रुपए का विशेष पुरस्कार दिया गया।

आशीष कुमार गोस्वामी आ स मन्दिर मुगलसराय

सुन्दरगढ़ मे विशाल शुद्धि समारोह

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे २९ दिसम्बर ८७ को राउरकेला से ७ किलोमीटर दूर ग्रामीण वन ञ्चल मे लगा लता पंचायत के पचुपड़ा ग्राम मे १७१ परिवारों के ७०० से अधिक ईसाई मत स्वीकार किये मुण्डा उरांव खड़िया जाति के वनवासी बन्धुओं ने पुन वैदिक धर्म को स्वीकार किया। इस समारोह को देखने दो हजार से अधिक ग्रामीण जनता उपस्थित थी। इस कार्यक्रम का संचालन स्वामी धर्मानन्द जी ने किया।

पचुपड़ा ग्राम मे हुई शुद्धि समारोह, जनेऊ संस्कार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८) | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष २७४७७१

वर्ष २३ अंक ३] | माघ कृ० १३ सं० २०४४ रविवार १७ जनवरी १९८८ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

विदेशोंमें आतंकवादी सिखोंसे सरकारें परेशान

गुरुद्वारों पर निरन्तर छापे मारे जा रहे हैं

सामान्य सिखों में बेचैनी

नई दिल्ली, १० जनवरी १९८८

विदेशो मे गुरुद्वारो पर पडने वाले छापो से यहा रह रहे सिखो में नाराजगी फल रही है। यह सकट वास्तव में विदेशी सरकारें विशेषतया ब्रिटेन, कनाडा और पश्चिम जर्मनी के सामने न्याय व व्यवस्था की भारी समस्या के तौर पर उत्पन्न हो रहा है। केन्द्रीय गृह मन्त्रालय के सूत्रो के अनुसार इन सरकारो ने भारत सरकार से पूछा है कि वे इस समस्या को कैसे हल कर।

पजाब के आतकवादियो के विरुद्ध कडी कार्यवाही होने के बाद विदेशो में २० से २५ साल तक के सिख भागकर पहुचे हैं। ब्रिटेन और कनाडा की सरकार का रवैया सख्त होने से वे पश्चिम जर्मनी जा पहुचे हैं। ब्रिटेन व कनाडा के साथ भारत की प्रत्यावर्तन सन्धि है जब कि पश्चिम जर्मनी के साथ नही। इस बात का आतकवादियो ने लाभ उठाया। परन्तु पश्चिम जर्मनी सरकार इस सधि के बगैर ही भारत सरकार से सहयोग कर रही है।

आतकवादियो की विदेशो मे बढती हुई हरकतो से वहा के सिख भाई दो गुटो मे बट गए हे। बहुमत में वे लोग हैं जो अमन चैन के साथ अपना धन्धा करना चाहते हैं और एक छोटा सा गुट जो खालिस्तानी सपने मे जी रहा है। उन्ही के समर्थन से, इन्टर नशनल यूथ फैडरेशन, सिख यूथ फारवड, सिख आगनाईजेशन और कौंसिल आफ खालिस्तान अपनी गतिविधिया बनाए हुए हैं। इनके चगुल मे वे सिख युवक फस गए हैं जो एक दो वारदात करके पकडे जाने के भय से विदेश भाग गये थे।

इन खालिस्तानी समथको की पनाह के लिए गुरुद्वारे ही सुरक्षित नजर आते हैं। ऐसे मे उनकी रणनीति यह हो गई है कि गुरुद्वारो की प्रबन्ध कमेटियो पर जैसे तैसे कब्जा किया जाए। अभी तक इन पर उदारवादियो का कब्जा है। उदारवादियो की ओर से विरोध होने पर पिछले साल ब्रिटेन व कनाडा मे तीन हत्याएं भी की गई। इसके बाद वहा के प्रशासन ने गुरुद्वारो पर छापे मार कर इन युवको को पकडा और भारत सरकार से सन्देह के क्षेत्र में आने वाले युवको के चित्र मगाकर उन्हे निकाल भगाया।

आतकवादी अपनी गतिविधियो को चलाने व भारत को हथियार भेजने के उद्देश्य से इन गुरुद्वारो के फण्ड का प्रयोग अपनी इच्छानुसार करना चाहते हैं।

पश्चिम जर्मन की पुलिस का १० जून १९८७ को फ्रेंकफुट के गुरुद्वारे में मारा गया छापा ऐसी एक मिसाल है जिससे सिखो मे बेचैनी बढी है तब से छापो का क्रम लगातार चल रहा है। ३० नवम्बर १९८७ को मारे गए छापे मे वहा से २० सिख युवक पकडे भी गए जो अवैध पासपोर्ट से आए थे और राजनीतिक शरण चाहते थे। इसके बाद वहा की सरकार ने पुलिस को पूरी छूट दे दी है कि वह गुरुद्वारो पर लगातार निगरानी रखे और न्याय व व्यवस्था को बिगडने न दे।

इन्हीं सिख युवको मे से एक जसवन्तसिह को भारत वापिस भेजा गया है जो होशियारपुर निवासी है। जर्मनी के प्रमुख शहर कोलोन मे नवम्बर में सिख आर्गेनाइजेशन और बब्बर खालसा ने समागम भी किया जिसमे जसवन्तसिंह ढिल्लो ने उत्तेजनात्मक, भाषण दिया उसके बाद ऐसे समागमो पर रोक लगा दी गई। ये आतकवाद समर्थक अब ट्रवलिंग ऐजेसियो या सोने के रूप में भारत में सहायता राशि भेज रहे हैं। कई ऐसे मामले पकडे गए है। एक बलकारसिंह कनाडा से आते समय पकड़ा गया जिसके पास से भारी मात्रा मे सोना बरामद हुआ। हाल ही मे दिल्ली मे राजस्व निर्देशालय द्वारा पकडे गए दो करोड़ रुपए के सोने के बारे मे भी सन्देह है कि उसे भी आतकवादियो ने भेजा था।

वेदामृत

परिवार स्वावलम्बी हो

स्वतवांश्च प्रघासी च,
सान्तपनश्च गृहमेधी च।
क्रीडी च शाकी चोज्जेषी।

यजु० १७-८५

हिन्दी अर्थ—(हे गृहस्थ तुम) स्वावलम्बी सुन्दर भोजन करने वाले, तपस्वी जीवन व्यतीत करने वाले, गृहस्थ धर्म के पालक, क्रीडाशील शक्तिशाली और सदा विजयी हो।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िए

सम्पादक—
सच्चिदानन्द शास्त्री

वेदश्रमी पंडित वीरसेन जी : समाज को अपूर्णीय क्षति

वेद मूर्ति श्री पं० वीरसेन जी वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य का देहावसान मंगलवार २२ दिसम्बर १९८७ को हो गया।

उन्होंने वेदो पर अनुसंधान कर ३० से भी अधिक पुस्तकें लिखी, जिनमे प्रमुख है, 'वैदिक सम्पदा', यज्ञ महाविज्ञान, सध्या योग रहस्य, याज्ञिक आचार सहिता वेद कथा आदि। उन्हे अपनी पुस्तको पर अनेक पुरस्कार एव सम्मान प्राप्त हुए।

आपने याज्ञिक वृष्टि विज्ञान एव याज्ञिक चिकित्सा विज्ञान के विशेषज्ञ के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की, पं० वीरसेन वेदश्रमी जी का जन्म ५ दिसम्बर १९०८ को देवास मे हुआ था, गुरुकुल वृन्दावन मथुरा से आयुर्वेद शिरोमणि की उपाधि प्राप्त की। वे वेद विश्व परिषद के भी अध्यक्ष रहे।
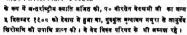
२३ दिसम्बर १९८७ को उनकी अन्त्येष्टि सस्कार में भारी सख्या मे नागरिको ने हिस्सा लिया।

२५ दिसम्बर को ४ बजे उनके सम्मान में श्रद्धाजलि अर्पित की और डा० मधुकर वोलप का यह प्रस्ताव सभी ने स्वीकार किया कि उनकी स्मृति मे एक ट्रस्ट बनायी जावे। जो उनके द्वारा रचित प्रकाशित एव अप्रकाशित ग्रन्थो के प्रकाशन की व्यवस्था करे तथा उनके विचारों के आधार पर वेद एव यज्ञ सम्बन्धी अनुसधान कार्य करेगा।

आर्य समाज द्वारा सूखा पीड़ित राहत केन्द्रों का कार्य संतोषजनक

आर्य प्रादेशिक सभा का सन्तोषजनक योगदान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि गत वर्ष वर्षात के अभाव से जो भयंकर सूखा देश के कई भागो मे फैला हुआ है। आर्य समाज ने सूखा पीडितों की सहायतार्थ कुछ केन्द्रो का सचालन विगत कई महीनों से अपने हाथ में लिया हुआ है। इस समय तक कई लाख रुपयों का अन्न वस्त्र का वितरण विभिन्न केन्द्रो से किया जा चुका है

१—बासवाडा — आदिवासी बहुल तथा गरीब क्षेत्र मे सार्वदेशिक सभा द्वारा अन्न वस्त्र और औषधि वितरण का कार्य किया गया है। इसके अन्तर्गत कुशलगढ़, बासवाडा तथा आसपास के क्षेत्रो मे कार्य किया जा रहा है। वहा विद्यालय, छात्रावास और बालवाडिया भी धर्म प्रचार के कार्य मे लगी हुई हैं।

२-रतलाम क्षेत्र — इसके अन्तर्गत बाजना, झाबुआ आदि आदिवासी क्षेत्र है। सार्वदेशिक सभा की ओर से अब तक कई सौ मन अन्न वितरित किया जा चुका है वस्त्र व औषधि भी वहा भिजवाई गई है। इन क्षेत्रो में भी औषधालय, छात्रावास, विद्यालय, तथा बालवाडिया धर्म प्रचार के कार्य में लगी हुई हैं।

३— उडीसा — गुरुकुल आमसेना, कालाहाण्डी में स्वामी धर्मानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में केन्द्र का सचालन हो रहा है। इसमें सार्वदेशिक सभा के अतिरिक्त आर्य प्रादेशिक सभा ने भी आर्थिक सहयोग स्वामी जी को दिया है।

४—राजस्थान — ब्यावर क्षेत्र मे श्री [illegible] मन्त्री आर्य समाज ब्यावर के द्वारा कार्य किया जा रहा है।

५—गुजरात — गुजरात के टंकारा, राजकोट में भी सत्यदेव की ओर श्री [illegible] कुमार के नेतृत्व में प्रादेशिक सभा की ओर से [illegible] की जा रही है।

यद्यपि इस प्रकार के सूखा पीडित सहायता केन्द्रों की देश के सभी क्षेत्रों मे आवश्यकता है किन्तु आर्य समाज के विशेषकर उन क्षेत्रों में इन केन्द्रों को खोलना है, [illegible] इस स्थिति का लाभ [illegible] आदिवासियों के [illegible] में फिर लगाते हैं। स्वामी जी [illegible] बनाते [illegible] है। उन्होंने उन सभी आर्य समाजों, [illegible] का [illegible] प्रकट किया जिन्होंने अन्न, [illegible] आर्थिक सहायता देकर [illegible] दिया। —[illegible], सार्वदेशिक सभा

पं० वीरसेन जी वेदश्रमी वेदविज्ञानाचार्य के दिवंगत होने पर श्रद्धांजलि सभा

मध्यप्रदेश इन्दौर नगर को ही यह गौरव प्राप्त है कि उसमें पं वीरसेन जी जैसा वेदश्रमी व वेद विज्ञान के आचार्य का जन्म हुआ। पंडित जी का आकस्मिक निधन दिनांक २२ १२ ८७ को साय ७। बजे ८० वर्ष की आयु मे इन्दौर मे ही हो गया और उसके साथ ही देवास मे एक आर्य परिवार में जन्मे वे सदा सर्वदा के लिये अनन्त मे विलीन हो गये।

पं० वीरसेन जी की अन्त्येष्टि उनके सुपुत्रो द्वारा (विक्रमादित्य, विश्वावसु, विभावसु) बड़े ही श्रद्धा से जूनी इन्दौर के श्मशान घाट पर, पूर्ण वैदिक रीति से दिनांक २३ १ ८७ को ५ बजे दिन में की गयी। नगरके अधिकतम आर्यबन्धु इसमे सम्मिलित हुए पं० जी ने दयानन्द वैदिक मिशन की स्थापना कर क्षेत्र मे महत्वपूर्ण शुद्धि कार्य किया। तथा आपने वेद प्रचार निमित्त सन १९५१ मे मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का रजिस्ट्रेशन भी करा लिया। पत्रो द्वारा इसका प्रचार किया गया व इस सभा को सार्वदेशिक सभा से भी मान्यता प्राप्त हुई। पं० वीरसेन जी इस म० भा० आर्य प्रति० सभा के प्रथम मन्त्री थे। उन्होंने वेदो का गूढ अध्ययन कर महर्षि के सिद्धांतों का अक्षरश प्रतिपादन किया।

अनेक शिविर आयोजितकर सस्वर वेदपाठ सिखाया वेद विज्ञान सम्बन्धी अनेक ग्रन्थ लिखे जिनके प्रकाशन के लिए विधिवत एक ट्रस्ट की स्थापना का निर्णय हुआ है। जगदीश प्रसाद वैदिक ने उनके अनेक गुणो का वर्णन करते हुए उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने की कामना की है।

—गणपति वर्मा
योग साधना केन्द्र आर्य समाज
मल्हारगंज इन्दौर

सूखा राहत कोष की दान सूची

दिनांक १-१२-८७ से ८-१-८८ तक

दानदाता	राशि
श्री मन्त्री आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली	५०००)
श्री मन्त्री आर्य समाज २४८ नानापेठ पुणे (महा०)	६११)
श्रीमती चमन देवी सोनी आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर	५००)
कुमार टेवर ५१ दरियागंज नई दिल्ली-२	९०)
श्री शिवशंकर लाल सर्राफ आर्य समाज तिलहर शाहजहांपुर	१०००)
श्री राजकला वर्मा द्वारा „ „ „	१००)
श्री मन्त्री आर्य समाज सीताफल मन्डी सिकन्दराबाद	३५०)
मैसर्स धर्मचन्द डोडेजा एण्ड को० फोर्ट बम्बई	२०००)
श्री जयभगवान गर्ग भोलानाथ नगर शाहदरा दिल्ली	५१००)
श्री शिवराम गुप्ता शुक्ल कुण्ड रोड [illegible]	५०)
श्री शान्ति प्रकाश प्रेम डी/१२६ मोतीबाग नई दिल्ली	२००)
श्री इन्दूलाल मोतीलाल सापला सुरेन्द्रनगर	१०)
श्री रामकिशोर विश्व आर्य प्रतिनिधि सभा गुना (म० प्र०)	५१)
श्री मन्त्री आर्य समाज रेलवे कालोनी रतलाम	२१)
श्री धर्मदास आनन्द प्रकाश अम्बहटा जि० सहारनपुर	५०)
महिला आर्य समाज दयानन्द नगर गाजियाबाद	५००)
श्री मन्त्री आर्य समाज कोरबा बिलासपुर	५०१)
श्री रामशरण जी शास्त्री एम० आई० जी० १८ बोदाबाग रीवा	२००)
श्री श्यामसुन्दर गुप्त धारेश्वर चौक धार (म० प्र०)	११)
श्री मन्त्री आर्य समाज गुहाना बुलन्दशहर (उ० प्र०)	२०)
श्री मन्त्री आर्य समाज नैनीताल (उ० प्र०)	१२५)

सभी दानदाताओ का धन्यवाद।

सच्चिदानन्द शास्त्री
[illegible]

सम्पादकीय

नारी जन्म अभिशाप क्यों ?

यौरोप में शरीर विज्ञान पर प्रयोगशालाओं मे आश्चर्यजनक प्रयोग हुए है। गर्भवती नारी का भ्रूण पुरुष है। या नारी, इस तथ्य का पता लगाने के लिए एम्नियोसेंटिसिस नाम का एक परीक्षण का प्रयोग प्रचलित किया गया जिसके आधार पर भ्रूण के आस पास रहने वाले द्रव पदार्थों के परीक्षण द्वारा यह पता लगाया जा सकता है कि गर्भ में लड़का है या लड़की। १९७७ में प्रकाश में आने वाले इस प्रयोग के आधार पर ऐसे हजारों डाक्टरों ने क्लिनिक स्थापित कर कन्या की भ्रूण हत्या कर पुत्र के इच्छुक दम्पत्तियों की जेबें काटने का धन्धा विधिवत चालू कर दिया।

इस देश का दुर्भाग्य ही कहा जाए कि जिस देश मे वेद उपनिषद व आध्यात्मिक तत्वज्ञान के उच्चतम ग्रन्थों से मानव जीवन की महानता की शिक्षा दी गई। जहा विवाह में नारी को 'श्वसुरे साम्राज्ञीभव' का आदेश दिया गया। वहा विगत १ हजार वर्षों की दासता की दीनतापूर्ण दशा में जनता का दृष्टिकोण पुरुष प्रधान बन गया। नारी जाति हीन व हेय बन कर रह गई।

दहेज के क्रूर कुचक्र ने नारी को इतनी दुर्दशा मे स्थापित कर दिया कि कन्या का जन्म अभिशाप माना जाने लगा। महर्षि दयानन्द ने महान नारी जाति के अस्तित्व व सम्मान की रक्षा के लिए जब जनता को बताया कि विवाह के समय कन्या वर समान रूप से वेद मन्त्रों का सस्वर पाठ करे व अपने जीवन के मूल्यो को पहचानते हुए जीवन पथ पर दो पहियों की गाड़ी के समान समानता व सम्मानपूर्वक जीवन बिताए।

परन्तु वैदिक शिक्षाओं के अभाव में आज भी नारी नर के भोग विलास की वस्तु मान कर उसका मूल्यांकन सही न कर के एक साधन के रूप में किया गया है। निश्चय ही कन्या का पिता बनना एक संकट का स्वरूप बनता गया अतः कन्या से मुक्ति पाने के लिए पाश्चात्य प्रयोग द्वारा कन्या भ्रूण हत्या की कुत्सित प्रक्रियाए अपनाई जा रही हैं।

एम्नियो सेन्टिसिस के भ्रूण हत्यारे प्रयोगों पर रोक लग जाने के पश्चात् अब एक और नया प्रयोग अल्ट्रासोनोग्राफ आ गया है जिससे पता लगाया जा सकता है कि गर्भवती को लड़का होगा या लड़की।

समाज के प्राय प्रत्येक व्यवसाय की भान्ति आयुर्विज्ञान को भ्रष्ट उपायों से प्रयोग कर पैसा कमाने वाले लोगो की कमी नही है।

प्रमाणिक डाक्टरो के अलावा ऐसे हजारो जाली डिग्रीयां लेकर व्यवसाय वाले डाक्टर है जो दिन रात अपराधियों की भांति भ्रूण हत्याए करके इस वैभव मे फल फूल रहे है।

महाराष्ट्र में पनपते इस अपराध का देख कर देश में पहली बार कोई प्रान्तीय सरकार सावधान हुई है और महाराष्ट्र सरकार ने भ्रूण की लिंग परीक्षा जाच को अवैध घोषित कर दिया है। यह अत्यन्त स्तुत्य प्रावधान है परन्तु केवल राजकीय आदेश से समस्या का समाधान कदापि सम्भव नही। डाक्टरी पेशे के द्वारा उचित अनुचित रूप से धन कमाने वाले वर्ग विशेष पर जब तक कठा नियन्त्रण न किया जायेगा यह जघन्य पाप पनपता रहेगा। आवश्यकता है कि समाज का जागृत व बुद्धिजीवी समुदाय इस घोर घृणित प्रवृत्ति के विरुद्ध कदम उठावे व जन जन के हृदयमे नारी जाति की महानता का बोध कराए। नारी को नर की खान कहा है हीनावस्था में पहुची नारी से पुरुष लालो की प्राप्ति को कैसे आशा की जा सकती है। नारी मातृ शक्ति है। माता निर्माता भवति माता के आदर्शों पर ही पुरुष का निर्माण होता है। यदि माता का दरजा घटेगा तो पुरुष का ही कैसे उच्च बन सकेगा। तिकड़म व अवैध साधनों से बड़प्पन पाने के लोभ मे नारी की प्रभु प्रदत्त महिमा को घटाने से तो पुरुष समाज मे महान व आदर्श गुणों का संचार हो ही नहीं सकता। दहेज आदि के भय से नारी का अपमान भगवान की रचना का ही अपमान समझा चाहिए।

हम यहां महाराष्ट्र सरकार को [illegible] धन्यवाद करते है कि उसने प्रबुद्ध महिला स्वयं सेवी संस्थाओं व [illegible] पर उपचारात्मक का प्रावधान किया है वहाँ देश की [illegible] की भावना व आशा करते है कि वे भी इस दिशा में अपने कर्तव्यों का पालन करें। प्रान्तीय सरकारो को जाली डिग्रियों के आधार पर जनता को लूटने वाले लुटेरे चिकित्सकों की खबर लेनी चाहिए जो प्रजा के स्वास्थ्य व जीवन से खिलवाड़ करती अपनी जीविका कमा रहे हैं। आयुर्विज्ञान एक पवित्र व पुण्यमय व्यवसाय है। चिकित्सक परमात्मा का प्रतिनिधि ही होता है जो प्रभु प्यारे के रचित मानव शरीर रूपी मन्दिर का पुजारी ही कहा जा सकता है जो शरीर के प्रत्येक व्यापार का सम्यक ज्ञान प्राप्त कर उसकी रक्षा व संभाल करता है। डाक्टरो के हाथों प्रभु के बनाए जा रहे शिशु शरीर की हत्या तो न केवल जघन्य अपराध है और पाप भी है। इस पाप से छूटने से समुचित उपायों की चिन्ता करना समाज के हितैषियो का परमावश्यक कर्तव्य है।

आर्यसमाज की प्रचार पद्धति

अपने जन्म काल से ही आर्य समाज को अनेक संघर्षों शास्त्रार्थों व सब प्रकार विपरीत आन्दोलनों का सामना करना पड़ा है। प्रारम्भिककाल में आर्य समाज ने ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के विद्वान वक्ता प्रचारक व शास्त्रार्थकर्ता उत्पन्न किए थे। जिनकी योग्यता बहुत गम्भीर हुआ करती थी। अमर शहीद पं० लेखराम जी अपनी प्रचार यात्राओ में अपना बोझ उठाकर यात्राए किया करते थे। वे लेखनी व वाणी दोनो के ही धनी थे। उनकी लगन का यह रूप था कि चलती गाड़ी से कूद कर भी वे प्रचार स्थल पर पहुचे व हिन्दुओं को मुसलमान बनने से बचाया। उसी परम्परा मे स्वनाम धन्य स्वामी दर्शनानन्द जी थे जिन्होंने वैदिक धर्म प्रचार में तन, मन, और धन तीनो की ही सर्वात्मना आहुति दी। उनका शास्त्र ज्ञान अपार था उनकी लेखनी कभी नहीं रुकती थी असंख्य ग्रन्थों की रचना उन्होंने की अनेक शास्त्रार्थ उन्होंने किए। अनेक संस्थाए उन्होने स्थापित की। वे जिए तो आर्य समाज के लिए मरे तो भी आर्य समाज की सेवा करते करते ही। उसके बाद आर्य समाज मे उच्चकोटि के विद्वान प्रचारको की एक लम्बी शृंखला है वे बड़े अनुशासित रहते थे। न समाज की निन्दा कभी करते थे न निन्दा सहन कर सकते थे। उनके द्वारा जिन आर्यों का निर्माण हुआ वे भी निराले ही धुन के धनी निकले जिनके द्वारा लगाया हुआ पौधा आज विशाल वट वृक्ष के रूप मे वर्तमान है।

आज आर्य मन्दिरों, आर्य विद्यालयो आर्य गुरुकुलो आर्य कालेजों की भरमार है परन्तु ईंट पत्थर के भवनो मे वेस्वर नही गूंज रहे जो पुरातन पीढ़ी के प्रचारकों के प्रचारकाल मे गूंजा करते थे। कारण आज का उपदेशक ४,६ व्याख्यानो पर ही सन्तुष्ट है उसे स्वाध्याय का शौक नही। व्याख्यान देने के अतिरिक्त उसके सामने कोई समाज की रचनात्मक कल्पना नहीं। ऐसा नही कि लोग तुलनात्मक गम्भीर प्रवचन सुनना नही चाहते परन्तु वक्ता का स्वयं का अध्ययन गम्भीर हो उसकी प्रवचन प्रणाली में आकर्षण व तेज हो तो श्रोता आज भी मन्त्रमुग्ध होकर सुनते है।

समाजो मे गिने चुने लोग सत्संगो या कार्यक्रमो मे आते हैं। वर्तमान सदस्य नए श्रोताओं का बुलाना अपना कर्तव्य नही समझते। कहीं कहीं तो १०, १५, २५, ५० से अधिक श्रोताओ की उपस्थिति भी बड़ी सन्तोषजनक मानी जाती है। प्रति सप्ताह ५० हजार मुसलमान यदि बिना किसी झिझक या बिना किसी निमन्त्रण के मस्जिद में सम्मिलित रूप से नुमाज पढ़ने को एकत्रित हो सकते हैं तो क्यो नही आर्यसमाज मे भक्तजन बिना किसी भेद-भाव के सन्ध्या हवन व धार्मिक सत्संग मे सम्मिलित हो सकते। सच्चाई यह है कि इस दिशा मे समाज के प्रचार को व कार्यकर्ताओ की कर्तव्य हीनता व आकर्षण हीनता ही एक मात्र कारण है। समाजो के उत्सवो मे आज से पूर्व भारी भीड़ जुटा करती थी अब वे केवल औपचारिक सम्मेलन मात्र रह गए हैं। आध्यात्मिक आकर्षण नही रह गया है।

> कई चौंक के सुन रहा था जमाना,
> हमी सो गए दास्ता कहते कहते।

आवश्यकता है कि आर्यबन्धु इस कमजोरी पर विचार करें व आर्यसमाज के विकास व उसकी शिथिलता को दूर करने के उपाय खोजें। लगनशील वक्ता व लगनशील कार्यकर्ता ही समाज में नवजीवन उत्पन्न कर सकते है। आर्य समाज के प्रचार व सच्चे आर्य दर्शन की आज अतीव आवश्यकता अनुभव की जा रही है। आर्य बन्धु अपने कर्तव्य को पहचानें।

जनता की भाषा में ही न्याय देने की मांग

नई दिल्ली, ७ जनवरी। केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद की ओर से आज यहां हुए सेमिनार में हिन्दी की जोरदार वकालत की गई और जनता को उसी की अपनी भाषा में न्याय देने की मांग की गई।

सेमिनार का विषय था "विभिन्न न्यायाधिकरणों में हिन्दी का इस्तेमाल"। इसमें कुछ गैर हिन्दी भाषी वक्ता थे। उन्होंने भी हिन्दी के प्रचार प्रसार की जरूरत बताई। कुछ लोगों का कहना था कि हिन्दी देश की भाषा है, सभी को यह भाषा अपनानी चाहिए। इसके प्रचार प्रसार का कोई सवाल ही नहीं उठता। कल रात हुए इस सेमिनार का उद्घाटन पूर्व न्याय मूर्ति टी० माधव रेड्डी अध्यक्ष केन्द्रीय प्रशासकीय अधिकरण ने किया। अध्यक्षता पंजाब, हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति जगमोहन लाल टंडन ने की। न्यायमूर्ति रेड्डी ने इस बात पर दुःख जाहिर किया कि हिन्दी को लागू करने वाला संविधान अंग्रेजी में है जो कि हिन्दी में होना चाहिए। हिन्दी शब्दकोष आसान हिन्दी में होने चाहिए। तमिलनाडु में भी हिन्दी के इस्तेमाल में परेशानी नहीं होनी चाहिए। जरूरत इस बात की है कि वहां के लोगों को आसान हिन्दी बोलना और समझना सिखाया जाए।

न्यायमूर्ति रेड्डी ने हैदराबाद का जिक्र करते हुए बताया कि वहां पहले वहां उर्दू में सारा काम होता था। धीरे-धीरे उर्दू की जगह अंग्रेजी ने ले ली। यह जगह हिन्दी को मिलनी चाहिए थी। पहले वहां उर्दू फिल्में पसन्द की जाती थी, इसके उलट आज हिन्दी फिल्में लोगों में लोकप्रिय हैं। इससे जाहिर है कि जनता ने हिन्दी को स्वीकारा लेकिन सरकारी स्तर पर ऐसा नहीं हुआ। न्यायमूर्ति जगमोहन लाल टंडन ने कहा कि जब हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है तो इसके प्रचार की क्या जरूरत है। यह बहुत दुःख की बात है कि बोलचाल की भाषा होने के बावजूद हिन्दी के प्रचार प्रसार की बात की जाती है।

केन्द्रीय आयकर अपील अधिकरण के सदस्य कृष्णचन्द श्रीवास्तव ने कहा कि आयकर का हिन्दी शब्दकोष तैयार हो चुका है। इसी अधिकरण के सदस्य आनन्द प्रकाश ने कहा कि सभी न्यायाधिकरणों में हिन्दी का इस्तेमाल होना चाहिए। आदेश भी हिन्दी में ही दिये जाने चाहिए। राष्ट्रभाषा समिति के संयुक्त सचिव शम्भूदयाल ने कहा कि जिन न्यायाधिकरणों में हिन्दी के इस्तेमाल की इजाजत नहीं है वहां इसे मंजूरी मिलनी चाहिए। समझौता आयोग के सदस्य सुधाकर द्विवेदी ने कहा कि जनता की मांग को देखते हुए जनभाषा का इस्तेमाल जरूरी है। रिटायर्ड कृषि सचिव महादेव ने कहा कि हिन्दी के इस्तेमाल की संविधान में पहले से ही व्यवस्था है। फिर हमें इसके इस्तेमाल में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए। रिटायर्ड जज एडवोकेट जनरल बोसेगा पन्नालाल शर्मा ने एक अनुवाद एजेंसी बनाने का सुझाव दिया।

अंग्रेजों से तो मुक्ति मिल गई मगर अंग्रेजी की दासता बनी हुई है : शर्मा

नई दिल्ली, ६ जनवरी। उपराष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा ने कहा कि हिंदी को उसका उचित स्थान दिलवाया जाना चाहिए लेकिन उसके लिये इस प्रकार ठोस कार्य किया जाना चाहिए ताकि कोई भी पक्ष हिन्दी को लेकर किसी प्रकार आशंकित नहीं हो।

श्री शर्मा आज शाम यहां एक समारोह में पण्डित गोपाल प्रसाद व्यास द्वारा रचित और सम्पादित ब्रज के सांस्कृतिक ग्राम कोष 'ब्रज विभव' का लोकार्पण कर रहे थे। दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता वित्तमन्त्री नारायण दत्त तिवारी ने की।

श्री शर्मा ने कहा कि देश को अंग्रेजों की दासता से तो मुक्ति मिल गई लेकिन अंग्रेजी की दासता देश में आज भी बनी हुई है। उन्होंने कहा कि जितना सम्भव हो हमें हिन्दी को अपनाना चाहिये। उन्होंने कहा कि हिन्दी की बात सभी जगह फैले इसके लिए हमें ठोस प्रयत्न करने होंगे।

उन्होंने हिन्दी में 'सरस्वती' जैसी अच्छी पत्रिकाओं की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि ऐसी संस्थाओं के लिये सरकार को कुछ करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिन्दी के प्रसार में इन पत्रिकाओं का बहुत योगदान रहा है।

नौ सौ पृष्ठों का यह ग्रन्थ १५ वर्षों की मेहनत के बाद तैयार किया है, जिसमें १०० से अधिक लेखकों के लेख संग्रहीत हैं। समारोह में दिल्ली के कार्यकारी पार्षद (शिक्षा) कुलानन्द भारतीय, प० श्री नारायण चतुर्वेदी, डा० नामवर सिंह, डा० नगेन्द्र और हिन्दी के अनेक साहित्यकार तथा बड़ी तादाद में ब्रज प्रेमी उपस्थित थे।

अदालतों में काम हिन्दी में कराने को लेकर आमरण अनशन

लखनऊ, ६ जनवरी। न्यायालयों में सभी कार्य हिन्दी में कराने की मांग को लेकर एक स्थानीय अधिवक्ता ने आज यहां उच्च न्यायालय परिसर में आमरण अनशन शुरू कर दिया।

श्री शर्मा को कल उच्च न्यायालय की खण्डपीठ की अवमानना के आरोप में उस समय कोर्ट उठने तक के लिये हिरासत में रखा गया था जब उन्होंने न्यायालय की कार्रवाई के दौरान यह कहा कि हिन्दी के अलावा किसी अन्य भाषा में न्यायालय का कार्य नहीं होने दिया जाएगा।

प्रकाशवीर शास्त्री पुरस्कार वितरित

नई दिल्ली ३० दिसम्बर। प्रसिद्ध उपन्यासकार एवं चिन्तक श्री यज्ञदत्त शर्मा को आज यहां केन्द्रीय रक्षामन्त्री श्री के सी पन्त ने प्रकाशवीर शास्त्री पुरस्कार से सम्मानित किया। इसका संचालन कल्पांत साप्ताहिक द्वारा किया जा रहा है।

इस अवसर पर बोलते हुए रक्षामन्त्री श्री के० सी० पन्त ने कहा कि स्व. श्री प्रकाशवीर शास्त्री हिन्दी के बहुत अच्छे कवि एवं वक्ताओं में थे। उनके विचारों में सफाई के साथ साथ अटूट दृढ़ता भी थी। श्री पन्त ने कहा कि हालांकि वे हिन्दी के प्रबल समर्थक थे, किन्तु उन्होंने अंग्रेजी का कभी विरोध नहीं किया। प्रकाशवीर शास्त्री जी ने आर्यसमाज के लिये काफी काम किया। उनमें देश के प्रति गहरी आस्था थी। एक अच्छे समाज सुधारक के रूप में लोग उन्हें हमेशा याद करते रहेंगे।

प्रसिद्ध कवि श्री रमानाथ अवस्थी ने कहा कि स्व० प्रकाशवीर शास्त्री जी भारतीय हिन्दी जगत की ऐसी हस्ती थे जिन्हें हिन्दी जगत की धरोहर कहा जा सकता है। वे बहुत ही सहज व्यक्ति थे। प्रकाशवीर जी के जन्म दिन पर श्री यज्ञदत्त शर्मा जी द्वारा कई सोपानों में रचित पुस्तक "सम्राट अशोक" का विमोचन एक प्रशंसनीय कृत्य है।

समारोह की अध्यक्षता श्री क्षेमचन्द्र सुमन ने की।

स्वर्ण मंदिर पर आतंकवादियों का ही शिकंजा

अमृतसर ३० दिसम्बर। 'स्वर्ण मन्दिर' के सरोवर का जल आज भी शान्त और स्वच्छ है। उसके मध्य में गुरु अर्जुन देव द्वारा निर्मित 'हरिमंदिर' में आज भी भोरवेला में नित्य प्रति शुरू होने वाले शब्द-कीर्तन की सुमधुर स्वर-लहरियां मनुष्य मात्र को उसके जीवन के असली लक्ष्य की याद दिलाती हैं किन्तु पिछले सात सालों में इस पवित्र स्थल में जो कुछ होता रहा और उसके कारण पंजाब में सब तरफ जो हिंसात्मक लीला जारी है, उससे इस प्रदेश का जन मानस 'त्राहि-त्राहि' कर उठा है। उसे शान्ति और सुरक्षा की आश्वस्ति देने की स्थिति में अभी कोई नहीं है।

अमृतसर आकर 'दरबार साहेब' के दर्शनों का पुण्य लाभ प्राप्त करने की अभिलाषा न केवल सिखों की अपितु कितने ही ऐसे गैर सिखों की रहती है जो गुरु ग्रन्थ साहेब की मान-मर्यादा में आस्था रखते हैं किन्तु पिछले कुछ सालों के माहौल के कारण अब वे वहां जाने में अपने आप को असमर्थ पाते हैं। अपनी श्रद्धा के फूल चढ़ाने के लिए यह संवाददाता अमृतसर स्थित अपने एक केशधारी पत्रकार बन्धु के साथ स्वर्ण मन्दिर में प्रवेश करने से पहले उसके बाहरी भाग में स्थित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति के सूचना केन्द्र में पहुंचा। पूछताछ पर पता चला कि जब से सुरक्षाकर्मियों ने भीतर जाने वालों की तलाशी लेना छोड़ दिया है तब से श्रद्धालुओं की संख्या में वृद्धि हुई है। वह इसका अनुमान चढ़ावे के लिये खरीदे जाने वाले 'कड़ाह-प्रसाद' से लगाते हैं। सूचना अधिकारी श्री नरेन्द्रजीत सिंह नन्दा बताते हैं कि पहले 'कड़ाह प्रसाद' नित्य प्रति केवल छ हजार रुपये का बनने लगा था किन्तु अब उसकी बिक्री २० से २५ हजार रुपये की होने लगी है।

स्वर्ण मन्दिर के भीतर प्रवेश करने पर श्रद्धालुओं की 'भीड़भाड़' देखने में नहीं आई। मुश्किल से माथा टेकने के लिए आए व्यक्तियों की संख्या उस समय १५० के लगभग होगी जिनमें गैरकेशधारी केवल २-३ थे। 'परिक्रमा' में ब्लू स्टार आपरेशन के पश्चात पुलिस केवल दो बार दाखिल हुई है। कहने को स्वर्ण मन्दिर का प्रबन्ध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के हाथ में है किन्तु तथ्य यह है कि वहां असली शासन उग्रवादियों का चलता है जो स्वयं को 'खाड़कू' या 'जुझारू' कहलाना अधिक पसन्द करते हैं।

पता चला कि वह यह महसूस करने लगे हैं कि स्वर्ण मन्दिर में यात्रियों की संख्या घटने से उनको भी नुकसान रहता है। वहां 'हरिमन्दिर' का चढ़ावा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति को जाता है, वहां अकाल तख्त की कार-सेवा पेटी में डाले हुए धन और आभूषणों का हिसाब किताब वह खुद रखते हैं। अतः दिन के समय स्वर्ण मन्दिर में वह प्रकट रूप में कार्य नहीं करते।

दरवाजे दिन में बन्द

परिक्रमा में बने हुए अधिकांश कमरे उग्रवादियों के कब्जे में बताये जाते हैं। प्राय सभी कमरों के दरवाजे दिन के समय बन्द नजर आते हैं। उग्रवादियों के कुछ प्रतिनिधियों से मिलने की मेरी इच्छा बलवती थी। अतः पत्रकार मित्र मुझे एक ऐसे कमरे में ले गये जो थोड़ा सा खुला था। कमरे के आधे हिस्से में नीचे फर्श बिछा रखा था जबकि शेष आधा हिस्सा परदे के कारण हमारी दृष्टि से ओझल था। वहां पर उस समय उपस्थित लगभग आधा दर्जन व्यक्तियों में से दो जो स्वयं को उग्रवादियों के प्रवक्ता बतला रहे थे। उनमें से एक की आयु १६ वर्ष के करीब रही होगी। वह अपेक्षाकृत छरहरे बदन का था और उसने सिर पर पीला पटका पहन रखा था। दूसरे की आयु मुश्किल से २३-२४ वर्ष की होगी।

हमारे कमरे में प्रवेश करते समय वह एक ४५-४६ वर्ष की आयु की स्त्री से बात कर रहे थे। हमें देख कर उसे कहने लगे, 'भाई, अखबार वाले आ गये हैं। अब हमें उनसे बात करनी है। तुम उससे कह देना कि अगर खून बख्शवानी है तो वह हमारा काम कर देवे।' इसके बाद वह हमारी तरफ सम्बोधित हुए और प्रारम्भिक परिचय के बाद बात चीत का सिलसिला शुरू हुआ। ज्यादातर जवाब पहले व्यक्ति ने दिये जिसके बारे में बाद में पता चला कि वह खालिस्तान की घोषणा करने वाली पंथिक समिति का आजकल प्रवक्ता है। उसका नाम है जागीर सिंह। दूसरे नवयुवक का नाम है निरवैर-सिंह जिसे जत्थेदार जसवन्त सिंह की गिरफ्तारी के बाद उग्रवादियों ने तख्त दमदमा साहेब का जत्थेदार घोषित कर रखा है।

निरवैर सिंह मुझसे पूछता है—आपको बाहर स्वर्ण मन्दिर में कोई आतंकवादी नजर आया।' मैं जवाब देता हूं, 'बिल्कुल नहीं।' इस पर वह कहता है—'है न सरकार का झूठा प्रचार। यहां सब बिना किसी भेदभाव के आ जा सकते हैं।' कुछ दिन पहले पंथिक समिति की तरफ से दिये गये उस बयान की मैं चर्चा करता हूं जिसमें कहा गया था कि निर्दोष लोगों की हत्याएं नहीं की जानी चाहिए और सिख चाहे वह कोई राजनीतिक विचारधारा क्यों न रखता हो, और निरंकारी, नामधारी अथवा राधास्वामी सम्प्रदाय को मानने वाला भले ही क्यों न हों, उनका भाई है। जागीर सिंह ने कहा 'सिख निर्दोष व निहत्थे व्यक्ति पर वार करना उचित नहीं समझता। जो व्यक्ति हत्या करके छिप जाए या वार करने की ताक में हो, उस पर वार करना धर्म के अनुकूल है।' वह अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोला, 'एक बात साफ हो जानी चाहिए कि जो खालिस्तान का विरोध करता है, वह हमारा दुश्मन है। 'खालिस्तान सिखों का जन्मसिद्ध अधिकार है। दसवें पातशाह (गुरु) ने इस विषय में जो हुक्म दिया है, उसकी पालना अब शुरू हुई है। ५० प्रतिशत सिख भी मारे गये हैं। इसलिए कि वह दोषी हैं।'

केन्द्र के प्रति शत्रु भाव

जागीर सिंह हिन्दुओं के प्रति बहुत कटु था। उसका कहना था कि केन्द्र की सरकार हिन्दू सरकार है और वह सिखों की दुश्मन है। जब उससे यह पूछा गया कि बिना किसी पूर्व शर्त के केन्द्र के साथ बातचीत की सम्भावना हो सकती है तो निरवैर सिंह ने उत्तर दिया—'कौंसिल आफ खालिस्तान हमारी सरकार है। उसके मुखिया गुरमीत सिंह औलख आजकल अमरीका में हैं। एक सरकार जैसे दूसरी सरकार से बातचीत करती है, वैसे ही बातचीत हो सकती है और उसका एजण्डा खालिस्तान होगा।' निरवैर सिंह ने आगे कहा, 'हिन्दुस्तान के विधान को हम नहीं मानते। सिख अकाल तख्त की मर्यादा के अनुसार राज करना चाहते हैं। भारत के संविधान को मानने वाला जो कोई हमारी राह में 'रोड़ा' बनेगा, उसे हम साफ कर देंगे।'

अकाली नेता श्री प्रकाश सिंह बादल के बारे में पूछे गये एक सवाल के जवाब में जागीर सिंह ने कहा—'बादल को पता होना चाहिए कि केन्द्रीय सरकार अकालियों को चमचों के तौर पर इस्तेमाल करती रही है। बादल अगर चमचा नहीं बना तो उसे फिर गिरफ्तार कर लिया जाएगा। जागीर सिंह जोर देकर कहता है—अगर भारत है तो सिखों के कारण है। अगर सिख नहीं रहेंगे तो भारत भी नहीं रहेगा। भाई जसबीर सिंह (जिसे उग्रवादी अकाल तख्त का जत्थेदार घोषित किये हुए हैं) हमारा असली नेता है, अगर सरकार सही नीति पर चलना चाहती है तो उसको छोड़ें, जोधपुर जेल के नजरबन्दों को छोड़ें। सरकार की नेकनीयती पर हमें कैसे यकीन हो जबकि वह खालिस्तान के समर्थकों को जेलों से निकाल कर मार रही है। जोधपुर जेल से भी सिर्फ उनको छोड़ा जाएगा जिनको सरकार सही मानेगी, औरों को वह नहीं छोड़ेगी।' जागीर सिंह आगे कहता है—'निर्दोषों के कत्ल सरकार आप करवा रही है ताकि उसकी कुर्सी बनी रहे। केन्द्र को नीति बदलनी पड़ेगी, नहीं तो नुकसान बहुत होगा। केन्द्र की नीति हिन्दू के लिए और भी घातक सिद्ध होगी।'

इतने में एक सेवादार ने बाटियों में चाय ला कर हमारे सामने रख दी। चाय पीते पीते जागीर सिंह से मैं पूछता हूं—आप हिन्दुओं के इतना खिलाफ क्यों हैं और मुसलमानों को सिखों के असली हितैषी किस आधार पर मान रहे हैं?' वह बोला, 'पांच सौ सालों से सिख जब से पृथक अस्तित्व में रहते रहे हैं तो मुसीबत पड़ने पर मुसलमानों ने सिखों का साथ दिया जबकि हिन्दुओं ने उनसे विश्वासघात किया—इस सिलसिले में इतिहास से कितने ही उदाहरण दिये जा सकते हैं। अगर ऐसा न होता तो गुरु अर्जुनदेव हरिमंदिर साहेब की नींव मुस्लिम फकीर मियांमीर से न रखवाते'।

मैंने किसी बहस में उलझने से संकोच करते हुए केवल इतना कहा, 'क्या यह सचाई नहीं कि ज्यादातर सिख हिन्दुओं से ही बने हैं? आज से ५०-६० साल पहले क्या अनेक हिन्दू परिवारों में यह परम्परा नहीं थी कि बड़े बेटे को केशधारी बना दिया जाता था। इसके उलट आप बताइये कि मुसलमानों

(शेष पृष्ठ १० पर)

आजादी के दीवाने, अमर शहीद

श्री रामप्रसाद बिस्मिल

(लेखक—कविरत्न जगदीश प्रसाद एरन, नीमच)

छिलने पर मोम भी आचाल हो जाता है दोस्त।
टूटने पर आइना भी काल हो जाता है दोस्त॥
मत करो ज्यादा दमन तुम आदमी के खून का।
जलके काला कोयला भी लाल हो जाता है दोस्त॥

जननी जन्म भूमि के बन्धन कटवाने मे अनेक माताओ के सपूतों ने सर पर कफन बाधे, अनेकों ने अपनी जवानिया जेल के सींखचो में बिता दी तथा अनेको ने हसते हसते फासी के फन्दे का पुष्प हार की तरह वरण किया। उन्ही हुतात्माओ मे अमर शहीद प० श्री रामप्रसाद बिस्मिल का नाम भी बड़े गौरव के साथ लिया जाता रहेगा।

श्री रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल ११ सवत् १९५४ को शाहजहापुर मे एक साधारण परिवार में हुआ था। आपके पिता जी का नाम श्री मुरलीधर तिवारी था। माता पिता के लाडले होने से आप बचपन से ही नटखट रहे 'माता पिता का प्यार व ठीक सगत न मिलने से आपकी शिक्षा केवल आठवी कक्षा तक ही हुई तथा आप कई गन्दी आदतो के शिकार हो गये।

भारत माताके इस सपूतके भाग्य ने पलटा खाया उनके मकान के पास ही आर्यसमाज मन्दिर था। वे वहाके एक सच्चरित्र पडितजी के पास बैठने लगे। धीरे-धीरे उनकी सब बुरी आदतें छूट गई व उनका अधिकाश समय ईश्वर स्तुति, भजन पूजन व पढने में लगने लगा। महाशय मुन्शी इन्द्रजीत जी ने आपको सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने को दिया, जिसे पढकर आपका जीवन ही बदल गया। ये कट्टर आर्य समाजी हो गये, तथा काया कुन्दन की तरह निखर उठी। आपने एक आर्य कुमार सभा की स्थापना की, जिसके माध्यम से सभाए तथा शेरो शायरी करने लगे।

इन्ही दिनो वहा एक आर्य महोपदेशक प० सोमदेव जी पधारे। इन्हे आप अपना गुरु मानने लगे। उस समय आर्य समाज देश के स्वतन्त्रता सग्राम सेनानियो की सस्था बन चुकी थी। महात्मा गाधी ने कई बार कहा भी है कि आर्य समाज के रूप में उन्हे आजादी के दीवानो की बनी बनाई मिशनरी मिल गई। ऐसे समय में आर्य समाज के सम्पर्क में आकर भला 'बिस्मिल' कैसे चुप रह सकते थे।

सन् १९१६ में लाहौर षडयन्त्र के कारण भाई परमानन्द जी को फासी की सजा सुनाई गई तो आपने गुरु के चरणों मे मस्तक रख कर अग्रेजो को अच्छा सबक सिखाने की शपथ खाई। आपको एक सम्पन्न तरुण से पिस्तोल भी प्राप्त हो गया। जिसे पाकर आप प्रसन्न हुए किन्तु वह खराब निकला। इस समय आपकी आयु केवल १८ वर्ष की थी, किन्तु आर्य कुमार सभा व काग्रेस के अधिवेशन मे भाग लेने आप लखनऊ गये तथा वहा कई महीने नेताओ से परिचय किया। एक नव परिचित सज्जन के माध्यम से आप क्रान्तिकारी सस्था के सदस्य बन गये। कुछ दिन छोटी बहन के विवाहोत्सव पर आप घर आये तथा पिस्तोल खरीदने के लिये माता से १२५) रु० लेकर ग्वालियर चले गये। वहा आपने एक छर्रे वाली टोपीदार बन्दूक खरीदी, किन्तु जानकारी न होने से एक बार फिर धोखा खा गये। फिर आपने काफी रुपया बचाकर एक पुलिस अधिकारी की पिस्तोल खरीद ली तथा एक अग्रेज पुलिस अधिकारी को गोली से उड़ा दिया। इस प्रकार आपने और भी कई अस्त्र शस्त्र एकत्रित किये।

गुप्त सस्था की भनक खुफिया पुलिस को लग गई। पण्डित रामप्रसाद को एक (पुलिस अधिकारी) सिपाही शस्त्र दिलाने के बहाने एक पुलिस अधिकारी के बगले पर ले गया, किन्तु सन्देह होने पर ये वहा से भाग गये। थोड़े समय बाद इनके अस्त्रो शस्त्रो की मरम्मत करने वाले मिस्त्रीको पुलिस ने जा घेरा तथा उसने सारा भेद बता दिया। पुलिस अधिकारी सतर्क हो गये व नाका बन्दी शुरु हो गई। इसी समय दल का एक सदस्य भी पुलिस से मिल गया। क्रान्तिकारियो की पकड़ा धकड़ी शुरू हो गई। जिससे जिधर बना वह उधर भाग गया। श्री बिस्मिल भी उत्तर प्रदेश की सीमा लाघ मध्य प्रदेश मे आकर एक किसान के रूप में कार्य करने लगे। यहा इनका स्वास्थ्य ठीक हो गया तथा रग काला पड़ गया।

थोड़े दिन बाद २१ मील पैदल चलकर आप अपनी मातृ भूमि शाहजहापुर पहुचे। किन्तु पुलिस वालों द्वारा पहचान लिए जाने पर उन्हें धकमा देकर फिर ३५ मील पैदल चलकर गायब हो गये। कुछ वर्षों बाद जब गुप्त सस्था पर से सभी प्रकार के प्रतिबन्ध हटा लिया तो वे वापस शाहजहापुर पहुचे तथा एक कारखाने मे मैनेजर के स्थान पर नौकरी कर ली।

कुछ दिन बाद आपने नवयुवको के सहयोग से पुन हिन्दुस्तान रिपब्लीकन एसोसिएशन के नाम से एक क्रान्तिकारी सगठन बनाया। सारे उत्तर प्रदेश में उसकी शाखाए खोली गई एक अखबार भी निकाला जाने लगा। इस सब काम के लिए धन की आवश्यकता थी। अत ९ अगस्त सन १९२५ की अधेरी काली रात में सहारनपुर लखनऊ पैसेन्जर को लखनऊ के निकट काकोरी नामक स्थान पर रोककर आपके दल ने लूट लिया। इससे बारह हजार रुपया हाथ लगा।

पुलिस को इस सरकारी खजाने के लूटने वालो का पता लग गया। कानपुर, लखनऊ, वाराणसी, आगरा, इलाहाबाद आदि में कई गिरफ्तारियां हुई हमारे दल नायक श्री बिस्मिल भी गिरफ्तार हो गये। ४३ लोगों के नाम वारन्ट थे जिनमे से ४२ गिरफ्तार हो गये केवल आजादी के परवाने श्री चन्द्रशेखर आजाद फरार थे।

४ जनवरी १९२६ से मुकदमा शुरु हुआ व ६ अप्रेल सन् १९२७ को फैसला सुना दिया गया। रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खा, राजेन्द्र लाहिड़ी व रोशनसिह को फासी की सजा हो गई। १५ अभियुक्तों को ३-१ साल की सजा हुई। बाकी प्रमाण के अभाव में छोड़ दिये गये। अपील करने पर कुछ लोगों की सजा और बढ़ा दी। श्री राजेन्द्र लाहिड़ी को व बिस्मिल आदि को १७ दिसम्बर को फासी दे दी गई।

अन्तिम समय में फासी की काल कोठरी में लिखित अपनी आत्म कथा में श्री बिस्मिल ने लिखा था।

मरते बिस्मिल, रोशन लाहिड़ी अशफाक अत्याचार से।
होगे पैदा सैकडो इनके हो, रुधिर की धार से॥

आज भी भारत माता के सीने मे इन बलिदानी वीर हुतात्मा अमर शहीद का बलिदान एक प्रेरणा के रूप मे धडक रहा है।

दहर विद्या निरूपण

लेखक—जीवानन्द नैलवाल एम०ए०बी०एड० अल्मोड़ा

दहर का अर्थ है सूक्ष्म। सबसे सूक्ष्म कौन ? परमात्मा। परमात्मा ही क्यों जीवात्मा भी तो सूक्ष्म है,। सूक्ष्म नहीं, महान भी तो है। महान को यानी-स्थूलाकार को थोड़ा-थोड़ा सभी देख रहे हैं, भले ही ध्यान न पा रहे हों। लेकिन सूक्ष्म का ज्ञान तो तत्वदर्शी ही बता सकते हैं या फिर समझा सकते हैं। सूक्ष्म आत्मा में परमात्मा किस प्रकार रहता है। और मनुष्य शरीर में आत्मा का स्थान कहां है। इन प्रश्नों का उत्तर दहर विद्या के उपदेश से जाना जा सकता है।

दहर, ब्रह्मपुर, कमल, वेश्म आदि नाम सभी पर्याय हैं। परमात्मा को पाने की इच्छा तो सभी की होती है, परन्तु पाते तो विरले ही हैं। कठोपनिषद्कार ने तो स्पष्ट शब्दों में कहा —

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम् ॥
कठो० १।२।२३

अर्थात् वह परमात्मा उपदेश से नहीं मिल सकता। न वह बुद्धि से प्राप्त होता है और न उसे शास्त्रों के अध्ययन से पा सकते हैं। लेकिन जिसे परमात्मा स्वीकार कर लेता है, उसी को वह प्राप्त होता है। वह प्रभु उसी पर अपना रूप प्रकाशित करता है।

इसी उपनिषद् में आया है, "अन्तोर्निहितो गुहायाम्।" अर्थात् वह परमात्मा इस मनुष्य के देह के भीतर हृदय गुफा में छिपा है। तो इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि हृदय में ध्यान करके आत्मा और परमात्मा का साक्षात्कार होता है। बाहर की चमक-दमक में आत्मा-परमात्मा के साक्षात् दर्शन सम्भव नहीं। भले ही परमात्मा बिना शरीर के ही सर्वत्र व्याप्त है। परमात्मदर्शन का स्थान तो हृदय ही है। वेद इस बात की पुष्टि यानी निम्न प्रकार से कर रहा है —

धामन्ते विश्वं भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि।
अपामनीके समिथे आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम् ॥
ऋ० ४।५८।११

अर्थात् हे प्रभो ! सारे संसार में तेरा ठिकाना है। समुद्र समान विशाल हृदयमें तथा जीवन धारने भी तेरा धाम आश्रित है। जल राशिमें और संग्राम में जो लाया गया है। तेरे उस मधुर लहर (ज्योति) को हम प्राप्त करें।

उपरोक्त वेद मन्त्र की व्याख्या छान्दोग्योपनिषद्कार ने छान्दोग्य-उपनिषद् में बहुत ही सुन्दर ढंग से की है और विद्या को दहरविद्या का नाम दिया है। जिसका विवेचन निम्न प्रकार से किया —

"अथ यदिदमस्मिन् ब्रह्मपुरे दहरं पुण्डरीकं वेश्म दहरोऽस्मिन्नन्तराकाशस्तस्मिन् यदन्तस्तदन्वेष्टव्यं, तद्वाव विजिज्ञासितव्यमिति ॥१॥ तं चेद् ब्रूयुर्यदिदमस्मिन् ब्रह्मपुरे दहरं पुण्डरीकं वेश्म दहरोऽस्मिन्नन्तराकाश किं तदत्र विद्यते यदन्वेष्टव्यं यद्वाव विजिज्ञासितव्यमिति ॥२॥ स ब्रूयाद्यावान् वा अयमाकाशस्तावानेषोऽन्तर्हृदय आकाश, उभे अस्मिन् द्यावापृथिवी अन्तरेव समाहिते उभावग्निश्च वायुश्च सूर्याचन्द्रमसावुभौ विद्युन्नक्षत्राणि यच्चास्येहास्ति यच्च नास्ति सर्वं तदस्मिन् समाहितमिति ॥"
छा० अष्टम प्रपाठक

संक्षेप में महान परमात्मा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड सहित इस हृदय गुफा में समा रहे हैं। परमात्मा की मधुर लहरी का तरंग का आनन्द ही मोक्ष की दशा है। कि हृदय गुहा में प्राप्त होता है। वेद इन्हीं तरंगों की ओर इशारा कर रहा है :—

समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदारदुपांशुना सममृतत्वमानट्।
ऋ० ४।५८।१

अर्थात् हृदय समुद्र में उठी मधुमय तरंगों में मोक्ष का आनन्द छिपा दिया। लेकिन ये आनन्दमयी तरंगें तभी उठती हैं जब हृदय को वास्तव में समुद्र बना दिया जाता है। इसके लिए इन्द्रियों को भी अन्तरमुखी बनाना पड़ता है। अन्दर की आंखों को खोलना पड़ता है। किसी ने ठीक ही कहा है :—

बाहिर की नज़रों से तमाशा करे था कोई।
देखना हो तो दीदये दिल वा करे कोई ॥

हृदय देश में परमात्मा की स्थिति कहने वाले वचनों का यह आशय नहीं कि परमात्मा परिच्छिन्न होकर हृदयदेश में स्थित है। (यह इसलिए लिखा कि वेदान्त दर्शन में एक सूत्र में आया है, "अर्भकौकस्त्वात्तद्व्यपदेशाच्च नेति चेन्न निचाय्यत्वादेवं व्योमवच्च।" वेदान्त० १।२।७

सूत्रानुसार आकाश के समान व्यापक होने से ईश्वर हृदयदेश में नहीं रह सकता है। ईश्वर हृदयदेश में परिच्छिन्न न होने पर भी हृदय में निश्चय अथवा साक्षात् करने योग्य है, परन्तु हृदय से बाहर भी। आकाश की तरह सर्वत्र है। जो हृदयदेश में परमात्मा का साक्षात् करता है, उस मनुष्य के बारे में उपनिषद् कह रही है —यथा :—

यो योनिं योनिमधितिष्ठत्येको यस्मिन्निदं सं च वि चैति सर्वम्।
तमीशानं वरदं देवमीड्यं निचाय्येमां शान्तिमत्यन्तमेति ॥
श्वेत० ४।११

अर्थात् जो अकेला ही प्रत्येक योनि में अधिष्ठाता होकर रहता है। जिसमें सम्पूर्ण जगत् उत्पन्न और प्रलय को प्राप्त होता है, उस वरदायक स्तुतियोग्य देव परमेश्वर को हृदयदेश में साक्षात् करके अत्यन्त इस शान्ति को पाता है। वही उपनिषद्कार थोड़ा आगे चल कर जोर देकर कह रहा है, 'हृदा हृदिस्थं मनसा य एनमेवं विदुरमृतास्ते भवन्ति। ४।२०
यानि उस हृदय में रहने वाले को हृदय और मन से जानो और मुक्ति प्राप्त करो।

पतञ्जलि महाराज के योगसूत्र "विशोका वा ज्योतिष्मती।" १।३६ पर महर्षि व्यास जी ने भाष्य करते हुए लिखा है —

"हृदयपुण्डरीके धारयतो या बुद्धिसंवित्। बुद्धिसत्वं हि भास्वरमाकाशकल्पं। तत्र स्थिति वैशारद्यात् प्रवृत्ति। सूर्य इन्दु-ग्रह-मणि-प्रभारूपाकारेण विकल्पते। तथाऽस्मितामात्र भवति। यत्रेदमुक्त '' '' '।"

अर्थात् हृदयपुण्डरीक में धारण करते हुए योगी को मानस दिव्य प्रज्ञा की सिद्धि होती है। वह बुद्धिसत्व मानस भास्वर=सूर्य के समान प्रकाशमान विशाल आकाश के समान व्यापक प्रभा-पटल साक्षात् होता है, उस दशा में योगी का चित्त अति आनन्दमय, स्थिर स्थिति को प्राप्त होता है। आदि-आदि ....।

इस प्रकार से दहर विद्या अर्थात् आत्म व परमात्म विषयक अतिसूक्ष्म तत्व का विवेचन संक्षिप्त रूप से इस आलेख में करने का प्रयास किया है। सद् शास्त्रों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि, "व्यापक व सूक्ष्म परमात्मा हृदयदेश में साक्षात् किया जा सकता है।" यही बात महर्षि दयानन्द जी ने भी ऋ० भा० भूमिका के उपासना प्रकरण में स्पष्ट रूप से लिखी है।

वेदोक्त समाजवाद : वेदोक्त सामाजिक जीवन

—स्वर्गीय विद्यामार्तण्ड श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी—

(१) व्यक्तियो के समूह का नाम समाज है। जैसे शब्दो के समूह का नाम वाक्य है। केवल शब्दो का समूह ही नहीं। किन्तु उसमें क्रिया का होना आवश्यक है। जैसे षड् दाडिमानि, दशापूप पञ्चाम्राणि, दशकदलीफलानि, यह बिना क्रिया के शब्द समूह निरर्थक है वाक्य नही। जब इन शब्दो के समूह के साथ क्रिया लग जाती है— वितर' या 'भक्षय' तो वह वाक्य बन जाता है। ऐसे ही व्यक्तियो के समूह का नाम समाज है। जब कि क्रिया के साथ युक्त हो जिससे समाज का साफल्य हो। अन्यथा भीड या झुण्डहै। व्यक्ति की शक्ति भिन्न है। समाज की शक्ति भिन्नहै। जैसे एक अ केवल शब्द का अर्थ भिन्न है। वाक्य का अर्थ भिन्न है। एक शब्द है वत्स, इसका अर्थ है बच्चा, किसी का भी बच्चा हो। दूसरा शब्द है पण्डित, कोई भी विद्वान् है। तीसरा शब्द है 'जल' कैसा भी जल हो। परन्तु जब यह शब्द ‹आनय क्रिया से जुड जाते हैं तो उनके अर्थों मे विशेषता आ जाती है। जैसे वत्स पण्डिताय जलमानय'। इस वाक्य मे वत्स जिसका अपने साथ सम्बन्ध हो, उस अर्थ मे है अर्थात् अपने पुत्र के अर्थ में। यहा पण्डित का अर्थ जो उपस्थित विद्वान है उसके लिए है और जल शब्द का अर्थ पेयजल है। इस प्रकार व्यक्तियो का समूह समाज कहलाता है किन्तु क्रिया के साथ अन्यथा पशुओ की भीड का नाम समाज है। किसी क्रिया के साथ बन्ध जाने से व्यक्तियो के समूह में शक्ति आ जाती है। बडे से बडे काम करने की। रूई का तन्तु जिसे क्षणभर पहले तोड सकते हैं जब उनका सगीत रस्सी बन जाता है रस्सी के रूप मे हो जाते हैं तो बलवान हाथियो को बाध लेते हैं। सामाजिक जीवन बनाने के लिए वेद का आदेश है।

सगच्छध्व स वदध्व स वो मनासि जानताम्।
देवा भाग यथा पूर्वं सजानाना उपासते॥

ऋग्वेद १० १९१ २॥

मन्त्र मे प्रथम पद है—'स गच्छध्वम' इसका अर्थ किया जाता मिलकर चलो, परन्तु यह अर्थ ठीक नही है। क्योंकि यह पद सम् पूर्वक गम धातु का आत्मने पद है। अकर्मक में 'समोगम्यृच्छिभ्याम्' सूत्र से। जैसे ऋषि दयानन्द ने अर्थ किया है—हे मनुष्यों सगताभव' हे मनुष्यो! तुम सब सगत होओ, मिलो। सम् पूर्वक गम धातु मिलने अर्थ मे आती है। जैसे सगच्छते दूरे जलम्। दूर में जल मिल जाता है यहा जाना अर्थ नही। तथा समति और सगम मेल को कहते हैं। यह मन्त्र समाज शास्त्र का मूल है। क्यो मिल अगले पद मे इसका उत्तर है। अत सवदध्वम् जिससे तुम लोग सवाद कर सको। बिना मिले सवाद नही होता। सवाद क्यो करे ? इसका उत्तर आगे है। स वो म मनासि जानताम्' जिससे तुम्हारे मन एक हो जावें। बिना सवाद किए मन एक नहीं होते। मनो को एक बनाने की आवश्यकता क्या है ? इसका उत्तर निम्न पक्ति में देते हैं— 'देवा भाग यथा पूर्वे सजानाना उपासते" यत तुम से पूर्व विद्वान एक मन हो करके अपने भाग—अधिकार को सेवन करते थे तुम भी कर सको। यहा चार बाते मन्त्र मे समाज शास्त्र की बताई गई हैं—

(१) मिलकर बैठने की। जो लोग मिलते नही उनका समाज नही बन सकता है,

(२) सवाद करने की मिलकर बैठने पर भी सम्वाद न हो, विवाद हो जाए तो उनका भी समाज नही बनता। सवाद हो जाने पर भी मनो का एक बनाना आवश्यक है। जिनके मन एक न हो तो समाज बन नहीं सकता। मनो के एक होने पर भी कार्य क्षेत्र में तुरन्त न उतरना। आज नही कल करेंगे, कल नही परसों करेंगे विचार वालो का भी समाज सूख जाता है।

यह तीसरी व चौथी बाते हैं। इस प्रकार समाज बनाने का यह प्रथम वचन है। शरीर वाणी, मन और आत्मा को एक लक्ष्य में जोड देना या जुड जाना यह समाज का स्वरूप बतलाया गया है। हिन्दुओं में इस एक मन्त्र का आचरण नही घटता। उदाहरण के रूप मे—एक हिन्दू रेल मे यात्रा कर रहा है और वह ब्राह्मण है। दूसरा हिन्दू उसमे और आ बैठा। ब्राह्मण उससे पूछता है—आप कौन हैं? दूसरा कहता है मैं हिन्दू हूं। उसे सुनकर प्रसन्न होना चाहिए कि एक साथी हमें और मिला। किन्तु वह पूछने लगता है हिन्दुओ में कौन है ? उत्तर मिलता है ब्राह्मण हूं। इस पर भी उसे प्रसन्नता न हुई, पूछता है कौन ब्राह्मण है ? पूछने वाला गौड है उत्तर देने वाला भी गौड निकल आया फिर भी उसे शान्ति नहीं। फिर पूछता है कौन गौड ? कौन गोत्र ? कौन शाखा? कौन डाबी? कौन पत्ता? अपने प्रश्नो की झडी वह ऐसे स्थान पर समाप्त करेगा जहा पर उससे अपना भिन्नत्व सिद्ध हो जाएगा और अपने को उससे पृथक् समझेगा। अपेक्षाकृत मुसलमानों मे इस मन्त्र का आचरण अधिक है। अल्पसख्यक मुसलमान भारत में आए। पाकिस्तान अलग बन गया। वहा कोई हिन्दू नही रहता। यहा जो कुछ मुसलमान रहते हैं उनका पूरा सगठन है। सोमनाथ के मन्दिर जीर्णोद्धार करने के लिए सरदार बल्लभ भाई पटेल ने कहा था—ये मुसलमानो को अभीष्ट नही है। अलीगढ विश्व विद्यालय मुसलमानो का मुस्लिम विश्वविद्यालय है। वहा एक मासिक पत्रिका विद्यार्थियों की निकलती है उस पत्रिका के मुख पृष्ठ पर उस समय ये वाक्य लिखे गए थे—

आकाश मे गूंजी है अब फिर से सदाए सोमनात।
फिर किसी गजनी से कोई गजनवी पैदा करो॥

(२) 'समानो मन्त्र समिति समानी।' ऋग्वेद १०।१९१।३॥

हे मनुष्यो तुम्हारा मन्त्र दीक्षा मन्त्र अर्थात् गायत्री मन्त्र या धर्म ग्रन्थ (वेद) समान अर्थात् एक हो, हिन्दुओ में इसका आचरण भी नहीं है किसी का मन्त्र सीताराम, किसी का राधेश्याम किसी का जयगणेश किसी का जय महेश। प्रणाम करने की पद्धति भी एक नही हैं। नम शब्द के अनेक प्रकार है। नम नमो नम, नमो नारायण, नमस्कार, नमस्ते यथा राम, राम, सीताराम जयराम, कोई कहता है बा० बायोकी। एक पद्धति नहीं है।

समिति समान होनी चाहिए। समिति सभा को कहते हैं। "सामानायत्र सर्वे भान्ति सा सभा।" सभा मे बैठे हुए सब लोगो का आसन एक हो। एक समिति सभा की कहलाती है। सबके पैरो का गति सचार एक हो। वाणी की ललकार एक हो और शास्त्र एक हो अधिक तो क्या दो मनुष्य भी समान वेश मे और समान वेश में और समान गति से बाजार के एक कोने से दूसरे कोने तक चले जायें तो उनका रास्ता कोई नहीं काटेगा। हिन्दुओ के जुलुसो मे साधारण साईकिल वाले को रास्ता काटने का साहस हो जाता है। मुसलमान आदियो के जुलूसो में समानता का व्यवहार अधिक होता है पुलिस का भी साहस उनकी भीड में घुसने का नही होता।

"समानी प्रपा सवोऽन्नभाग। समाने योक्त्रे स वो युनज्मि।"

अथर्व० ३।३०।६॥

हे लोगो! तुम्हारे पीने का स्थान एक हो। तुम्हारा अन्न भाग भोजनालय एक हो समान जुए में तुम्हें मैं जोडता हूं।" जब तक खान-पान एक न होगा समाज नही जुडगा। हिन्दुओं मे छुआछूत अधिक होने से पृथक्-पृथक् दल बने हुए हैं। कानपुर के आस-पास आर्यसमाज का उत्सव था महात्मा हसराज जैसे नेता आए थे। भोजन के लिए आठ भी बज गए भोजन ही आया। पता लेने के लिए किसी को भेजा कि क्या बात हुई कि अब तक भोजन नहीं,

आया तो देखने वाले ने देखा कि भोजन आ रहा है और आगे पानी छिड़का जा रहा है। ऋषि दयानन्द ने इस चौका-चाकी के सम्बन्ध में लिखा था इस चौका चाकी ने भारत के वैभव पर चौका लगा दिया।

गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था वेद में बताई है। जो सामाजिक जीवन को बनाने वाली होती है।

> ब्राह्मणोस्य मुखमासीत् बाहू राजन्य कृत ।
> उरु तदस्य यद्वैश्य पद्‌भ्या शूद्रो अजायत ॥
>
> ऋग्वेद १०।९०।१२ ॥

अथर्ववेद में मध्य तदस्य यद्वैश्य पाठ है। समाज मे जो मुख से आचरण करते हैं वे ब्राह्मण हैं। मुख मे तीन बात पाई जाती हैं। त्याग, तपस्या और ज्ञान। मुख में कितना ही बढ़िया पदार्थ खाने को आए वह थोड़ी ही देर अपने मे रखता है फिर त्याग देता है। मुख प्रत्येक ऋतु में नग्न रहता है तपस्या करता है। समस्त ज्ञानेन्द्रियां मुख मे ही हैं। जिस मनुष्य के अन्दर त्याग तपस्या और ज्ञान हो उसे ब्राह्मण समझना चाहिए। यह तो ब्राह्मण का लक्षण हुआ। किन्तु जो ब्राह्मण बनना चाहे उसे त्याग तपस्या और ज्ञान की ओर चलना चाहिए। यह कर्त्तव्य हुआ। बाहुओ के समान समाज मे जो आचरण करे वह क्षत्रिय है। बाहुओ अर्थात् भुजाओ में तीन बातें मिलती हैं। शोधन रक्षण त्राण। मल मूत्र की सफाई करना भुजाओ का काम है। राष्ट्र मे जो बुराया हैं उनका शोध निकालना क्षत्रिय का काम है। टैक्स लगाकर प्रचार करना नही। दूसरे अंग मे कहीं फोड़ा फुंसी हो तो मरहम पट्टी करना भुजाओ का काम है। ऐसे ही राष्ट्र मे पीडितों की सेवा करना क्षत्रियो का काम है। तीसरे त्राण (बचाव) कोई अपने शरीर पर प्रहार करे तो बचाव हाथों से किया जाता है। चाहे हाथो में कितनी ही चोट लग जावे। ऐसे ही राष्ट्र में आक्रमणकारियो से बचाव करना क्षत्रिय का काम है।

'उरु तदस्य यद् वैश्य' जो शरीर के मध्य भाग अर्थात् उदर के समान आचरण करता है वह वैश्य है। उदर अर्थात् पेट मे भोजन का संग्रह और उसका विभाजन होना है। वैसे ही राष्ट्र मे धन-धान्य का जो संग्रह करते हैं और यथायोग्य जो विभाजन करते हैं वे वैश्य हैं। 'पद्‌भ्या शूद्रोऽजायत' पैरो के समान जो आचरण करते हैं वे शूद्र हैं। पैरो का काम है दौड़ धूप करना। राष्ट्र मे कहीं आग लग जाए तो दौड़ जाए बुझाने के लिए कोई छत से पेड़ से गिर जाए तो दौड़ जाए बचाने के लिए। तथा वेद मे कहा है—

> ब्राह्मणे ब्राह्मण क्षत्राय राजन्य मरुद्‌भ्यो वैश्य तपसे शूद्रम् ॥

जहां ब्रह्म अर्थात् विद्या का प्रसग हो वहा ब्राह्मण को प्रमाण मान लो अर्थात् उसे नियुक्त करो।

'क्षत्राय राजन्यम्' राष्ट्र का प्रसग जहा हो वहा क्षत्रिय को नियुक्त करो।

'मरुद्‌भ्यो वैश्यम्' अन्न वैमरुत, पशवो वैमरुन, जहा अन्न व पशुओ का प्रसग हो वैश्य को प्रमाण मानो या नियुक्त करो।

तप से शूद्रम जहा तप अर्थात् परिश्रम का प्रसग हो वहा शूद्र को प्रमाण मानो या नियुक्त करो।

लोग शूद्र को नीच कहते हैं। वेद तो उसके लिए तप का विधान कहते हैं। लोक मे तपस्वी को ब्राह्मण से भी ऊंचा मानते हैं। इसलिए शूद्र नीच नहीं। समाज रूपी छप्पर को सम्भालने वाले ब्राह्मण आदि चार खम्भे हैं। उनमे कोई नीच नही। दिशायें भिन्न-भिन्न हैं। सब सम्मान के योग्य हैं। वेद मे कहा है—

> रुचन्नो ब्राह्मणषु धेहि, रुच राजसु न स्कृधि ।
> रुच वैश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम् ॥
>
> ऋग्वेद १०।१२८।११॥

हे परमात्मन् ! मुझे ब्राह्मण मे रुचि दे, मुझ क्षत्रिय मे रुचि दे, मुझे वैश्यो में रुचि दे, मुझे शूद्रों में रुचि से भी अधिक रुचि दे। वेद तो शूद्रों में अधिक से अधिक रुचि दिखाने का उपदेश देता है और हिन्दू शूद्रो से घृणा करते हैं। अनेक शूद्र ऋषि हो गए हैं। कवषऐलूष ऋग्वेद के एक सूक्त का ऋषि था। ऐतरेय महीदास ने ऋग्वेद पर ऐतरेय ब्राह्मण लिखा। ताण्डय ने सामवेद पर ताण्डय महाब्राह्मण लिखा।

हिन्दुओ ने जो थोडे से मुसलमान अन्य देशो से भारत मे आए थे उनकी सख्या को बढ़ा दिया। शूद्रो से घृणा करके। फलत मुसलमानों की सख्या बढी और पाकिस्तान की आवाज उठी और उठी ही नही फलीभूत भी हुई। कभी उनको जब हिन्दू बनाने का अवसर आया तो पौराणिक ब्राह्मणो ने नकार दिया। महाराजा रणवीरसिंह कश्मीर ने हिन्दुओ से मुसलमान बने लोगो को शुद्ध करके फिर हिन्दुओ में प्रवेश होने के लिए ब्राह्मणो से अनुमति मागी तो ब्राह्मणो ने नकार दिया। महाराजा "रणवीर शुद्धि' नामक पुस्तक लिखकर मर गए।

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने ऋषि निर्वाण दिवस पर राम लीला मैदान मे अपने भाषण मे कहा था—यद्यपि मैं रोगी हूं परन्तु ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध में मुझे श्रद्धाञ्जलि देनी है। उनकी एक बात अपूर्व थी। आर्यों से इतर धर्म वालो को भी 'आर्य धर्म मे प्रवेश करने का उन्होंने अधिकार दिया था। यदि यह बात पहले मान ली जाती तो हमारे सामने काश्मीर का प्रश्न न उठता। ऐसे ही अकबर बादशाह ने बीरबल से कहा था—तुम्हारा धर्म हमे अच्छा लगता है क्या हमे हिन्दू बना लोगे तो बीरबल ने एक धोबी को तैयार किया और अकबर बादशाह को साथ लाया। धोबी गधी को साबुन लगा रहा था तब अकबर ने धोबी को देखकर कहा—तुम्हारा काम कपडे में साबुन लगाने का है गधी को क्यो लगाते हो। बीरबल के सिखाए धोबी ने उत्तर दिया—मैं गधी को गाय बना रहा हूं। अकबर बादशाह ने कहा—अरे कही गधी भी गाय बन सकती है। तो बीरबल अकबर से कहने लगा—यदि गधी से गाय नही बन सकती तो मुसलमान से हिन्दू भी नही बन सकता। हिन्दू जन्म जन्म से ब्राह्मण आदि मानते हैं। पर मैं कहता हू नही मानते, यदि मानते हैं तो जब कोई ब्राह्मण मुसलमान या ईसाई बन जाता है तो वे लोग उसे मुसलमान ब्राह्मण या ईसाई ब्राह्मण कहा जाना चाहिए। शूद्रो पर वेद पढने और वेद मन्त्र सुन लेने पर श्री शकराचार्य जैसे विद्वान ने लिख डाला। उसका जिह्वा छेदन व कानो मे शीशा पिघला कर भर देना चाहिए। इस प्रकार ऊंचे वर्ण से छोटी सी त्रुटि हो जाने पर उसे जाति से बाहर कर देना और शूद्रो को जान-बूझकर अपने से अलग कर देना बीच का शरीर धड मात्र ही हिन्दुओ का शेष बचा। जिस तालाबमे पानी निकालने की दो नालिया हो जाए और जल का आगमन न हो तो तालाब का सूखना ही तो होगा। इस प्रकार मानव का सामाजिक जीवन ऊंचा हो जाने पर परस्पर मेल से रहेगा तो सुख शान्ति का लाभ होगा।

शोक

श्री गोकुलचन्द जी आहूजा के देहावसान से आर्यसमाज की अपूर्णीय क्षति

दिल्ली ३ जनवरी । सुप्रसिद्ध आर्य समाजी श्री गोकुलचन्द आहूजा के देहावसान पर सतभ्रावा आर्य कन्या विद्यालय के प्रांगण में एक शोक सभा हुई । प्रारम्भ में यज्ञ किया गया तदुपरान्त स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में एक विराट शोक सभा हुई । सभा में प० ओम प्रकाश शास्त्री प० पृथ्वीराज शास्त्री, श्री शान्ति लाल करवन्दा, श्री सूर्यदेव जी, डा० धर्मपाल जी श्री शारदा प्रसाद जी आदि नेताओं ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्वर्गीय ला० गोकुलचन्द जी आहूजा महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त और वैदिक धर्म के तथा आर्य समाज के निष्ठावान कार्यकर्ता थे ।

उनके आर्योचित गुणों की चर्चा करते हुए स्वा० आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि लाला जी के दिवंगत होने से आर्यसमाज की महान क्षति हुई है । शोक सभा का आयोजन श्री रामलाल मलिक ने किया ।

महात्मा बलदेव जी का देहान्त

आर्य जगत के लिए यह समाचार अत्यन्त शोकप्रद है कि परम वेद भक्त वेदमन्दिर चान्दपुर बिजनौर के संस्थापक संचालक महात्मा बलदेव जी का २२ नवम्बर ८७ को चान्दपुर (बिजनौर) में हो गया, महात्मा बलदेव जी ने मुल्तान (पाकिस्तान) से आर्य समाज का कार्य आरम्भ किया और युवावस्था में कानपुर पंजाब नेशनल बैंक मे प्रबन्धक रहे पश्चात वेदमन्दिर एवं दयानन्द सरस्वती शिशु मन्दिर के संस्थापक संचालक रहे तथा ज्योतिष आश्रम देहरादून के भी अध्यक्ष रहे । उनके देहान्त से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है, प्रभु उनकी आत्मा को सद्गति दे ।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा-प्रधान

—आर्य समाज आर्य पुरा सब्जी मण्डी दिल्ली के पूर्व प्रधान श्री राजेन्द्र प्रसाद जी के निधन पर आर्यसमाज द्वारा शोक सम्वेदना प्रकट की गई ।

श्री शिवशंकर प्रसाद जी नहीं रहे

यह जानकर दुःख हुआ कि चम्पारण बिहार के प्रसिद्ध उच्चकोटि के आर्यनेता श्री शिवशंकर प्रसाद का मझाही (चम्पारण) में देहावसान हो गया है । बिहार प्रतिनिधि व सार्वदेशिक सभा के भी आप अन्तरंग सदस्य रहे हैं । आपके परिवार की ओर से आपकी स्मृति मे अनेक संस्थाओं को दान दिया गया ।

आतंकवादियों का ही शिकंजा

(पृष्ठ ५ का शेष)

है अपनी इच्छा से सिख बनने वालो की गिनती कितनी होगी ?' हम उन से यह कहकर विदा लेते है कि इस तरह विचारो का आदान-प्रदान हमें करते रहना चाहिए । इससे एक-दूसरे के दृष्टिकोण समझने में आसानी होती है ।

हिन्दुओं का विरोध

मेरी तरफ से सवाल पूछने का क्रम लगभग बन्द हो चुका था और हम वहा से उठना चाहते थे किन्तु इतने में हमारे लिये चाय बनाने का निर्देश दिया जा चुका था । जागीर सिंह मुझसे पूछता है, 'हिन्दू को आप क्या धर्म मानते हैं ?' मैं कहता हूं, 'बिल्कुल नही । जिस अर्थ मे सिख, ईसाई इत्यादि को धर्म कहा जाता है, उस अर्थ में हिन्दू धर्म नहीं बल्कि एक समाज है जिसके एक ही परिवार में आस्तिक और नास्तिक और नास्तिक भी परस्पर विरोधी निष्ठा रखने वाले हो सकते हैं । हिन्दू शब्द से जागीर सिंह की चिढ़ सी लगी । वह पूछता है, 'हिन्दू शब्द कैसे बना।' शायद वह फारसी में इसके बुरे अर्थ के तौर पर प्रयोग किये जाने की तरफ संकेत कर रहा था ।'

मैं ऐतिहासिक सदर्भ में सिन्धु नदी　　　पर रहने वाले लोगों को ईरानियों द्वारा 'हिन्दू' की संज्ञा दिये जाने की चर्चा करता हूं । वह कहता है 'लेकिन इस देश का असली नाम भारत है, हिन्दुस्तान तो नही ।' मैं जवाब देता हूं, 'हिन्दुस्तान शब्द तो गुरु नानक देव ने भी इस्तेमाल किया है ।' इसी क्रम में मैं आगे कहता हूं, 'नाम का आखिर क्यो विरोध किया जाए । आप पंजाब को खालिस्तान कह लीजिए, मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं होगी । देखना यह है कि खालिस्तान देश के भीतर रहता है या बाहर ।'

सुन्दरगढ़ में विशाल शुद्धि समारोह

२१ दिसम्बर ८७ को राउरकेला से ७० कि०मी० दूर ग्रामीण वनाञ्चल लगालता पचायत के पत्थपड़ा ग्राम में १७५ परिवारो के ७०० से अधिक ईसाईमत स्वीकार किये मुण्डा उराव खडिया जाति के वनवासी व उन्होने पुनः वैदिक धर्म को स्वीकार किया। इस समारोह को देखने दो हजार से अधिक ग्रामीण जनता उपस्थित थी। समारोह अतीव उत्साहमय वातावरण मे सम्पन्न हुआ यज्ञ का सचालन तथा दीक्षा कार्य श्री प०अखिलेश जी आचार्य ग्रामसेना एव श्री योगेन्द्र कुमार शास्त्री आर्यसमाज भुवनेश्वर ने सम्पन्न कराया। श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने दीक्षित बन्धुओ को नवीन वस्त्र देकर स्वागत किया तथा अपने मार्मिक उदबोधन में उनके पूर्वजो के अपने सनातन धर्म के लिये त्याग तप तथा बलिदान का उल्लेख किया। जिससे सभी में उत्साह भर गया।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

आर्य वीर दल की ओर से आर्यसमाज आरा (भोजपुर) मे समारोह पूर्वक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर आर्य समाज आरा के प्रधान श्री इन्द्रदेव नारायण और बिहार प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भूरनारायण भी उपस्थित थे।

सम्पादक के नाम पत्र

आवश्यकता है एक और रामायण की

प्रति रविवार दूरदर्शन पर रामायण का प्रदर्शन उल्लेखनीय लोकप्रियता अर्जित कर रहा है। इसके माध्यम से घर घर मे रामलीला के दर्शन हो जाते है। यदि इसे सन्ध्या समय मे दिखाया जाता तो अधिक व्यक्ति लाभ उठा सकते। इस प्रस्तुति के बाद भी एक शुद्ध रामायण के प्रदर्शन की आवश्यकता बनी हुई है जो शेष रह गए अन्धविश्वासो को दूर कर सके। बालि सुग्रीव आदि वानर रूप मे दिखाए गए हैं और उनके पूछ लगाई गई है। जबकि इनकी पत्नियो तारा रूमा आदि साधारण नारियो के मानवेश मे हैं। सुग्रीव के दरबार मे होने वाले सामूहिक नृत्य की नर्तकियों मे एक भी वानरिया दिखाई नहीं दी। दैनिक हिन्दुस्तान दिनांक २६ १२ ८७ मे श्री गिरिजा किशोर माथुर की टिप्पणी युक्तियुक्त लगी। इक्कसवी सदी की ओर अग्रसर इस वैज्ञानिक युग मे [illegible] पर वर्मी युग को यदि हम नहीं [illegible] है मर्यादा पुरुषोत्तमराम की शुद्ध ऐतिहासिक [illegible] प्रस्तुतीकरण की। —श्रीमती दमन [illegible] ए-४२ मानसरोवर कालोनी, रामघाट रोड, अलीगढ़

समालोचना

हिन्दुत्व के रक्षक : महर्षि दयानन्द

मूल लेखक स्वनाम धन्य प० गगा प्रसाद उपाध्याय
भाषान्तर श्रीमती राज आर्या
प्रकाशक क्रान्ति प्रकाशन तपोवनाश्रम देहरादून, २४८००८
मूल्य २० रुपए

उक्त पुस्तक आर्यसमाज के मनीषी विद्वान स्व० प० गगाप्रसाद उपाध्याय की अग्रेजी पुस्तक 'Swami Dayanands Contribution to Hindu Solidarity' का हिन्दी भाषान्तर है। उपाध्याय जी ने हिन्दू पक्ष का सुन्दर विवेचन कर सिद्ध किया है कि हिन्दू समाज के पुनर्जीवन पुनर्निर्माण मे महर्षि दयानन्द ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उपाध्याय जी की अध्ययन मनन व बहुमुखी विश्लेषण शैली की यह अनूठा उपहार है। पाठक अधिक से अधिक इस रचना से लाभान्वित हो।

ऋषि बोधोत्सव तक मगाने वालो को रियायती मूल्य केवल १५) मे, पोस्ट व्यय अलग। धन २०) अग्रिम भेजें।

सार्वदेशिक सभा का नया प्रकाशन

(१) वेद का इस्लाम पर प्रभाव मूल्य — १)
लेखक—प० रामचन्द्र देहलवी

(२) कल्याण मजरी „ १२)
लेखक—स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज

(३) प० लेखराम जी का चित्र , ४)
डाक व्यय ६) अलग होगा।
बिना वी० पी० से नही भेजा जाएगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली २

रोड अम्बाला नगर की बैठक मे दिनाक ३ १ ८८ अम्बाला नगर के विधायक एव आर्य समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ता मास्टर शिवप्रसाद जी पर दिनांक १ १-८८ को हुई कातिलाना हमले की सर्वसम्मति से घोर निन्दा की गई। उग्रवाद के पंजाब से बाहर हरियाणा आदि प्रान्तो मे फैलने पर चिन्ता प्रकट की। इस हमले में मारे गये नौकर हरिबहादुरसिंह की वीरता की प्रशंसा की गई उसने उग्रवादियो को पकडने का जो साहस दिखाया और अन्त में अपने प्राणो की आहुति भी दे दी। निश्चित रूप से यह उसकी अनुपम वीरता एव साहस का प्रमाण है।

यह सभा उस वीर की आत्मा की शान्ति एव सद्गति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

परमात्मा की कृपा से मास्टर शिवप्रसाद जी की प्राण रक्षा हुई है। अब पी० जी०आई० चण्डीगढ मे उपचाराधीन है। सभा उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ एव दीर्घायु की प्रार्थना करती है।

इसके सभा ही हरयाणा सरकार से निवेदन करती है कि इस काण्ड के अभियुक्तो को शीघ्रातिशीघ्र पकडकर सख्त दण्ड दें तथा इस प्रकार के प्रशासनिक पग उठाए कि भविष्य में इस प्रकार की घटनाए हरियाणा में न हो सकें।

...प्रकाश, मन्त्री
आर्यसमाज रेलवे रोड अम्बाला शहर

दिल्ली के स्थानीय विक्रेता :—

१) म० इन्द्रप्रस्थ आयुर्वेदिक स्टोर ३७७ चादनी चौक, (२) म० ओम आयुर्वेदिक एण्ड जनरल स्टोर सुभाष बाजार कोटला मुबारकपुर (३) मैं० गोपाल कृष्ण भजनामल चड्ढा मेन बाजार पहाड़गंज (४) मैं० शर्मा आयुर्वेदिक फार्मेसी गडोदिया रोड आनन्द पर्वत (५) मैं० प्रभात कैमिकल्स क०, गली बताशा, खारी बावली (६) मैं० ईश्वर दास किशन लाल मेन बाजार मोती नगर (७) श्री वैद्य भीमसेन शास्त्री, ५३७ लाजपतराय मार्किट (८) दि सुपर बाजार, कनाट सर्कस, (९) श्री वैद्य मदन लाल ११ शकर मार्किट, दिल्ली।

शाखा कार्यालय :—
६३, गली राजा केदार नाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
फोन नं० २६१८७१

...प्रेस ... नई दिल्ली से मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८८] वर्ष २३ अंक ५] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | माघ शु० १३ सं० २०४४ रविवार ३१ जनवरी १९८८ | दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष २७४७७१ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

सरकार पंजाब में सैनिक शासन स्थापित करे

सार्वदेशिक सभा द्वारा अपने प्रस्ताव पर जोर

दिल्ली। २४ जनवरी आज सार्वदेशिक सभा द्वारा एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव में कहा गया है कि पंजाब में आतंकवादियों की गतिविधियां पिछले कुछ समय से फिर तेज हो गई हैं। इसके लिए सार्वदेशिक सभा सरकार की हठधर्मी को दोषी मानती है। यदि सरकार ने वहां कम से कम ५ वर्ष के लिए सैनिक शासन लागू कर दिया होता। भूतपूर्व सैनिकों को परिवार सहित सीमावर्ती क्षेत्र में बसाने की योजना पर अमल किया होता और सीमा के साथ साथ एक ५ मील चौड़ी सुरक्षा पट्टी बना दी होती तो आतंकवाद पर नियन्त्रण हो सकता था। आज पंजाब में जो निरन्तर निरपराध व्यक्तियों का नर संहार हो रहा है वह न होता।

सार्वदेशिक सभा इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाना चाहती है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद ही निजामशाही के विरुद्ध पुलिस कार्यवाही के पश्चात् "सैनिक प्रशासन" की स्थापना के कारण ही भूतपूर्व हैदराबाद रियासत में व्यवस्था व सामान्य स्थिति स्थापित हो सकी थी।

अब यह सभा सरकार से प्रार्थना करती है कि लगभग १ वर्ष पूर्व जो सुझाव इस विषय में प्रधानमन्त्री को दिए गए थे उन पर पुनः विचार करके पंजाब का शासन शीघ्र से शीघ्र सेना को सौंप दिया जाए तथा सीमावर्ती क्षेत्रों में भूतपूर्व सैनिकों को बसाकर सीमा के साथ-साथ एक सुरक्षापट्टी का निर्माण किया जाए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की बैठक दिल्ली में सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा का अधिवेशन दिल्ली में २४ जनवरी १९८८ को सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में हैदराबाद से पं० रामचन्द्रराव बन्देमातरम्, बंगाल से श्री बटुकृष्ण वर्मन, बिहार से पं० वासुदेव शर्मा, उत्तर प्रदेश से श्री इन्द्रराज, श्री जयनारायण अरुण, महाराष्ट्र से श्री दौलतराम चड्ढा, मध्य प्रदेश से पं० राजगुरु शर्मा, श्री जगदीशप्रसाद वैदिक, राजस्थान से श्री छोटूसिंह एडवोकेट, हरियाणा से प्रो० शेरसिंह, हिमाचल से श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती के अतिरिक्त डा० सोमनाथ मरवाह, श्री सेठ ओम्प्रकाश गोयल, महाशय धर्मपाल, सत्यदेव भारद्वाज, पं० पृथ्वीराज शास्त्री, आचार्य दत्तात्रय आर्य (अजमेर) डा० धर्मपाल तथा श्री सूर्यदेव आदि प्रमुख आर्य जन उपस्थित थे।

सम्मेलन में एजेण्डा के विषयों के अतिरिक्त निम्न प्रस्ताव भी पारित हुए —

(१) पंजाब में आतंकवादियों की गतिविधियों के विषय में।

(२) आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग, अन्तरंग बैठकों तथा अधिवेशन की बैठकों में शोक प्रस्ताव के पश्चात् केवल शान्ति पाठ किया जावे।

(३) आर्यसमाज के अन्तर्गत चलने वाली शिक्षण संस्थाओं का नाम केवल दयानन्द आर्य वैदिक विद्यालय अथवा महाविद्यालय ही रखना चाहिए।

(४) आर्य समाज के भावी कार्यक्रम के सम्बन्ध में गत अन्तरंग २०-९-८७ में जो निर्णय हुए हैं, उन पर सभी आर्य समाजें प्रभावी रूप से कार्रवाई करें।

इस अधिवेशन में दो मुख्य निर्णय निम्न प्रकार हुए —

(१) श्री भगवानदेव शर्मा को संगठन विरोधी कार्रवाइयों के कारण आर्य समाज की प्राथमिक सदस्यता से निष्कासित किया गया।

(२) आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में श्री सेठ योगेन्द्रपाल जी को वैधानिक प्रधान घोषित किया गया।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

अन्तरंग सभा में पारित अन्य प्रस्ताव

(२) दक्षिण भारत में प्रचार कार्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण भारतीय आर्य बन्धुओं को बधाई देती है जिन्होंने वहां ईसाई तथा मुस्लिम धर्म प्रचारकों के विघटनकारी कार्यों का सफलता पूर्वक सामना करके आर्य धर्म का प्रचार एवं प्रसार किया।

यह सभा प्रत्येक परिस्थिति में विघटनवादी तत्वों से लड़ने के लिए अपने दक्षिण भारतीय आर्य बन्धुओं को सहयोग का आश्वासन देती है।

(३) संस्कृत

सार्वदेशिक सभा इस बात पर खेद प्रगट करती है कि सरकार ने संस्कृत भाषा को अपनी नई शिक्षा नीति में उचित स्थान देने की दिशा में अभी तक कोई प्रयत्न नहीं किया है। सभा इस दिशा में अपना प्रयत्न जारी रखने का संकल्प करती है।

(४) धारावाहिक टी०वी० सीरीज़ तमस

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तमस चलचित्र [टी०वी० धारावाहिक सीरीज] को दिखाए जाने का विरोध करती है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अन्य प्रस्ताव

[पृष्ठ १ का शेष]

साम्प्रदायिकता को नष्ट करने के स्थान पर ऐसे चलचित्र बीते हुए काल की हिंसा की घटनाओ को दिखाती है जो स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व व उसके पश्चात् घटी। इस प्रकार के प्रदर्शन से निश्चय ही देश की स्थिरता व अखण्डता को आघात पहुंचता है।

सार्वदेशिक सभा भारत सरकार से माग करती है कि वह इस प्रकार के धारावाहिक टी०वी० अथवा अन्य किसी भी माध्यम से प्रदर्शन पर रोक लगा देवे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में श्री योगेन्द्रपाल सेठ प्रधान तथा श्री ऋषिपालसिंह एडवोकेट मन्त्री घोषित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक दिनाक २४ १-८८ को आर्य समाज दीवान हाल मे सम्पन्न हुई।

जिसमे पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के विवाद तथा विगत हुए निर्वाचन पर गम्भीरतापूर्वक विचार विमर्श किया गया।

पक्ष-विपक्ष की युक्ति सगत बातो को सुनने के उपरान्त सभा ने एक प्रस्ताव पारित कर नवनिर्वाचित अधिकारी श्री योगेन्द्रपालसिंह सेठ प्रधान तथा श्री ऋषिपाल जी एडवोकेट मन्त्री की सभा को मान्यता प्रदान करने का निर्णय लिया। और श्री वीरेन्द्र जी को आर्य समाज के किसी भी पद पर निर्वाचित नही किया जायगा होगे ३वष के लिये अयोग्य घोषित किया गयाहै।

और श्री वीरेन्द्र जी को किसी भी पद के लिए निर्वाचित होन के लिए तीन वर्ष के अयोग्य घोषित किया गया।

भगवानदेव शर्मा आर्य समाज से गम्भीर आरोपो के कारण निष्कासित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक दिनाक २४ १-८८ को आय समाज दीवान हाल मे सम्पन्न हुई। जिसमे श्री प० राजगुरु जी शर्मा के पत्र पर विचार किया गया। उन्होने भगवानदेव शर्मा पर सार्वदेशिक सभा तथा इसके सम्माननीय अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के विपरीत इनकी छवि को धूमिल करने का गम्भीर आरोप, उन्ही के पत्रो के आधार पर लगाया।

प० भगवानदेव शर्मा ने पहले भी सार्वदेशिक सभा के विपरीत छवि धूमिल की थी, उस समय जब इन पर कार्यवाही की गई। तब शर्मा जो ने कहा भविष्य मे ऐसी गलती नही करूगा। ऐसा लिख कर खेद व्यक्त किया था।

सभा ने इनके कार्यकलापो को गम्भीरता से सुना और इनके विपरीत सर्वसम्मति से निन्दा का प्रस्ताव पारित कर आर्य समाज से निष्कासित करने का निणय किया।

सीमान्त गांधी नहीं रहे

दिल्ली २१ जनवरी।

आर्य समाज के सर्वोच्च सगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने सीमात गाधी अब्दुल गफ्फार खां के निधन पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे मध्य से आज अखण्ड भारत का युगदृष्टा व्यक्तित्व उठ गया है। उन्होने जीवन मे जो सोचा वही किया और कहा था। वह गाधी जी के सच्चे अनुयायी रहे और भारत के बटवारे को उन्होने कभी भी उचित नही कहा। हमारी दृष्टि मे वे सच्चे महामानव थे। उनका अभाव मानवतावादी लोगो को सदैव खटकता रहेगा।

मन्त्री सार्वदेशिक सभा

कोई बतादे विश्व में भारत सरीखी नारियां

पिण्डी जिले का पिण्ड था जिसका तुरन्त नाम था।
निज धर्म को त्यागो मुसलमा बनने का फर्मान था॥
जलते कड़ाहे तेल मे सब बाल जन फेंके गये।
इस भाति निर्मम दुष्ट जन इस्लाम के देखे गए॥
या तो मुसलमा बन रहो वर्ना इन्हें भक्षण करो।
इस भाति अपने तन बदन का तुम यहा रक्षण करो॥
सब ही छलागे मार कर उस तेल के अर्पण हुई।
वीभत्स कैसा दृश्य था इतिहास का दर्पण हुई॥
पद्मिनी अनुगामिनी सब धर्म रक्षा कर चली।
इतिहास के पन्नो मे अपना नाम अकित कर चली॥
काश्मीर के राजौरी मे भी एक घटना आ घटी।
यवनों ने घेरा डाल करके बात की थी अटपटी॥
सख्या अधिक यवनो की थी ये न्यूनता को थे लिए।
फिर भी इन्होने मृत्यु तक कर तब अनोखे थे किये॥
अन्त मे शहतीर दर्वाजे इकट्ठे कर लिये।
ज्वाला के अर्पण हो गई और प्राण अपने हर लिए॥
आज फिर चित्तोड का अद्भुत नजारा आ गया।
वे हाथ मलते रह गये कैसा तमाशा छा गया॥
मीरपुर की देवियों का भी नजारा देख लो।
पर्वत शिखर से कूदकर निज धर्म रक्षा सीख लो॥
नारी मुजफ्फराबाद की कैसा तमाशा कर गई।
वे किशन गगा कूद कर निज धर्म रक्षा कर गई॥
कोटली की युवतियां तो रानी झासी बन गई।
मोरचे सबने सभाले शेरनी सी ठन गई॥
इन देवियो ने आज फिर अपना पता जग को दिया।
हम आर्य नारी हैं यही यह विश्व को बतला दिया॥
वीरत्व की चिनगारियॉ भारत की हम हैं नारिया।
चारित्र्य से भरपूर हैं केसर की हम हैं क्यारिया॥
कोई बतादे विश्व में भारत सरीखी नारिया।
वे वीरता की मूर्तियां क्या क्या हैं वे कुर्बानियां॥

— ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति
शास्त्री सदन ११/१२४ पश्चिम आजादनगर दिल्ली-५१

सम्पादकीय

गणतंत्र के स्वराज्य की रक्षा का प्रश्न ?

भारत संसार का प्राचीनतम देश है। इसके इतिहास की कड़ियां लाखों करोड़ों वर्ष तक जुड़ी हुई है। लाखो वर्ष में इसने अनेक उत्थान व पतन देखे हैं। विदेशियों के हमलों से भी इसको उलझना पड़ा तो देश की आन्तरिक समस्याओं ने भी इसे समय समय पर झकझोरा है।

मुसलमान आक्रान्ताओं के तीर जिस वीरता से इस देश ने झेले हैं ऐसे संघर्षों में भी अपना अस्तित्व बनाए रखना यह भी इसी देश की हिम्मत है—

हमको मिटाने वाले सब मिट गए जहां से
बाकी मगर है अब तक नामो निशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन यह आस्मां हमारा

अंग्रेजी शासन से संघर्ष करते हुए भारतीय युवकों का आत्मबल चरित्र बल देखने ही लायक था। सरदार भगतसिंह व रामप्रसाद बिस्मिल, सुभाष चन्द्र बोस, लाला लाजपतराय, बालगंगाधर तिलक और फिर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जिन्होंने जिन हथियारों से लड़े उनकी खोज करनी परमावश्यक है। कारण कि स्वतन्त्रता के पिछले चालीस वर्षों में ही देश का नैतिक धरातल इतना चरमरा गया है कि चिन्तित होना अनिवार्य हो गया है कि इस देश का भविष्य क्या होगा।

सर्वोच्च हमारा गणतन्त्र, विभिन्न विचारों वाले, विभिन्न भाषाएं बोलने वाले, विभिन्न मतमतान्तरों में विश्वास रखने वाले लोगों का भानमती का पिटारा है। इसीलिए कहीं से भाषावाद के नाम पर पृथक पहचान बनाई जा रही है, कहीं पृथक सम्प्रदाय के नाम पर पाकिस्तान के आधार पर खालिस्तान का नारा लगाया जा रहा है। कहीं किसी पृथक क्षेत्र के लोगों के दिमाग में अलगाव वाद कुलबुला रहा है। केवल वोट के लिए हर बुराई के साथ समझौता कर लेने वाले आज के सत्तासीन राजनीतिज्ञों के सामने एक नहीं अनेक ऐसी मुश्किलें खड़ी है जिन्होंने उनकी नींद हराम कर रखी है। इन सब समस्याओं से निपटा जा सकता था यदि भारत के राजनीतिज्ञों में चरित्रबल होता।

एक बार ऐसी ही संकट की घड़ियों में देश का नेतृत्व महामति चाणक्य ने संभाला था। विदेशी आक्रामकों का मुंह तोड़ उत्तर देने के साथ जब देश को विकास की दिशा देने का समय आया तो महामति चाणक्य ने ही सफल नेतृत्व किया।

एक बार जब किसी राजनीतिज्ञ ने चाणक्य से पूछा कि संसार में फैले हुए जीवन संघर्षों, मानव जाति की इस ऊहापोह दौड़धूप में खींचातानी का रहस्य क्या है। मनुष्य शांति से नहीं बैठता निरन्तर दौड़धूप में लगा है क्यों ? चाणक्य ने दो शब्दों में उत्तर दिया—

कि मानव की दौड़ सुख की तलाश में है। सुख से जीवन बिताने की ख्वाहिश ने उसे बैचेन कर रखा है। व्यक्ति हो या राष्ट्र, चरित्र बल से ही मानव की गति हो सकती है चाणक्य ने आगे कहा—

सुखस्य मूलं धर्मः, धर्मस्य मूलम् अर्थः, अर्थस्य मूलं वाणिज्यं,
वाणिज्यं मूलम् स्वराज्यम्, स्वराज्यस्य मूलं चारित्र्यम्

इस एक सूत्र पर हजारों पृष्ठ लिखे जा सकते हैं। संसार के बड़े से बड़े राजनीति शास्त्री इससे ऊंची बात आज तक नहीं कह पाए हैं। हमें चाणक्य के सूत्र के अन्तिम भाग की ही चिन्ता है जिसमें उन्होंने कहा है कि चरित्र के बिना स्वराज्य की रक्षा नहीं हो सकती।

हम अपना गणतन्त्र प्रतिवर्ष मनाते हैं। अंग्रेजों के चले जाने के बाद हमारा ध्यान देश में सड़कें बनाने पर गया है। बड़े बड़े बांध बनाने पर गया है। अन्न की उपज बढ़ाने पर गया है। कल कारखाने बढ़ाने पर गया है। परन्तु क्या हमने कभी सोचा है कि जिस मानव के निर्माण के लिए यह सारी योजनाएं बनाई जा रही हैं उस मानव का निर्माण कहां किस कारखाने में हो रहा है। दैनिक पत्रों के समाचार पढ़ने वाले सामान्य व्यक्ति को भी यह सहज ही अनुमान हो सकता है कि हमारा देश स्वतन्त्रता के इन चालीस वर्षों में कहां से कहां पहुंच गया है। क्या इसी देश ने भगवान राम को जन्म दिया था, योगिराज कृष्ण को जन्म दिया था महर्षि दयानन्द व महात्मा गांधी को जन्म दिया था जिनके जयकारों में ही यह जीवन्त तत्व है कि हम मुर्दों की जान में भी नवजीवन की झलक दिखाई दे जाती है। वे पुण्यात्माएं अगर फिर लौटकर इस देश में आ जाएं और हमारे आज के जीवन के ढांचे को हमारे जीवन व्यवहार को, हमारे तेजी से गिरते हुए आत्मबल व चरित्रबल को देखें तो उनकी आत्मा को कितनी पीड़ा होगी। केवल भौतिक सुख की तलाश में हम अपना सब कुछ खो बैठे हैं चरित्र बल नामक का अमृत तत्व हमारे कोष से ही निकाला गया है। जब हम न्याय पालिका के कारनामों पर विचार करते हैं तो सिर धुनते हैं कि यह स्वतन्त्रता हम कैसे सम्भाल सकेंगे। चरित्र बल के बिना देश कैसे टिकेगा।

महर्षि दयानन्द ने इसी निमित्त युवकों के चरित्र निर्माण के लिए गुरुकुल प्रणाली का आदेश दिया था। आज की लूली लंगड़ी शिक्षा पद्धति से क्लर्क तो उत्पन्न हो सकते हैं। चरित्रवान राष्ट्रनायकों के उत्पन्न होने की कोई सम्भावना दिखाई नहीं देती।

पुरानी पीढ़ी के सभी राष्ट्र नेता महर्षि दयानन्द की शिक्षा से न केवल प्रभावित थे। राष्ट्रीय निर्माण की प्राय सभी योजनाओं का मार्गदर्शन वे महर्षि की वैदिक शिक्षाओं से ही लेते थे। हमारे सैन्य बल, समाज बल व राष्ट्र बल के पीछे यदि चरित्र बल नहीं होगा तो स्वराज्य की रक्षा कैसे होगी यह चिन्ता आज प्रत्येक निष्पक्ष व विवेकी बुद्धिजीवी के मन को मथ रही है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

प्रजातन्त्रवादी दयानन्द

१ सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिये, किन्तु राजा, जो सभापति तदधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राजसभा के अधीन रहे।

(स०प्र०समु० ६ पृष्ठ ८१)

२ जो प्रजा में स्वतन्त्र स्वातन्त्र स्वाधीन राजवर्ग रहे तो राज्य में प्रवेश करके प्रजा का नाश किया करे, जिस लिये अकेला राजा स्वाधीन व उन्मत्त होके प्रजा का नाशक होता है। अर्थात् वह राजा प्रजा को खाये जाता है। इसलिये किसी एक को राज्य में स्वाधीन न करना चाहिये।

(स० प्र० समु० ६ पृष्ठ ८५)

३ जैसे सिंह वा मांसाहारी हृष्ट-पुष्ट पशु को मार कर खा लेते हैं, वैसे स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है अर्थात् किसी को अपने से अधिक न होने देना। श्रीमानों को लूट-खसूट, अन्याय से दंड दे के अपना प्रयोजन पूरा करेगा। (स०प्र०स० पृ० ८१,८६)

४. जैसे मांसाहारी मनुष्य पुष्ट पशु को मारके उसका मांस खा जाता है, वैसे ही एक मनुष्य राजा हो के प्रजा का नाश करने हारा होता है, क्योंकि वह सदा अपनी ही उन्नति चाहता रहता है।

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका भाष्यकरण शंकासमाधान विषय)

५ हे सभापते ! विद्यामय ! न्यायकारिन् ! सभासद् सभाप्रिय, सभा हो। हमारा राजा न्यायकारी हो। ऐसी इच्छा वाले आप हमको कीजिये। किसी एक मनुष्य को हम लोग राजा कभी न मानें।

(आर्याभिविनय, द्वितीय प्रकाश, मन्त्र ५२ भाष्य)

हनुमान वेदों के ज्ञाता थे

श्री कर्मनारायण कपूर

१—वाल्मीकी रामायण राम-रावण युद्ध की सब से प्रामाणिक तथा प्राचीन पुस्तक है। उसके किष्किन्धा काण्ड (३-२८-२९) मे लिखा है कि जब सीता जी की खोज करते राम लक्ष्मण हनुमान से मिले तो हनुमान ने उनके साथ संस्कृत भाषा में वार्तालाप की। उसकी भाषा की सराहना करते हुए श्री राम ने लक्ष्मण से कहा—

"जिस व्यक्ति ने ऋग्वेद के अध्ययन से अपने को ज्ञानी नहीं बनाया, जिसने यजुर्वेद के पारायण से कुशलता प्राप्त नही की और जो सामवेद में प्रवीण नही वह ऐसी सुन्दर भाषा नही बोल सकता है।"

२—अशोक वाटिका मे हनुमान की सीताजी के साथ भेंट तथा वार्तालाप युद्ध के पूर्व, युद्ध के मध्य तथा युद्ध के पश्चात हनुमान के सफल कार्य इस बात का द्योतक है कि वह एक बुद्धिमान, चतुर तथा वीर योद्धा था जिस पर श्री राम को पूर्ण विश्वास था।

३—इस स्थिति मे यह महान आश्चर्य है कि ऐसे योद्धा को चित्रों में पूंछ-युक्त बन्दर दर्शाया गया है। क्या ऐसे आदर्श व्यक्ति का यह अपमान नहीं है?

४—हनुमान पवन-पुत्र के नाम से जाना जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह नाम उसे इसलिये दिया गया कि वह वायु (पवन) मे उड सकता था। या तो उसने वायु मे उडने की सिद्धी प्राप्त की हुई थी अथवा उसके पास अकेले उडने वाला यन्त्र था जो पीठ पर बांधा जाता था और जिसमें नाली द्वारा व्यर्थ धुएं का निष्कासन होता था। आधुनिक युग मे भी वायुयानों तथा मोटर गाड़ियो आदि में नालियां होती हैं जिसके द्वारा दूषित वायु का निष्कासन होता है। चित्रकारों ने अज्ञानता के कारण नाली को पूंछ बना दिया है। हनुमान के बन्दर रूपी बनाने का रहस्य यह है कि उडान के समय वह मुख पर आवरण (Mask) लगा लेता था जिससे उसे श्वास लेने मे सुविधा रहे और कीटाणुओ के आंखो मे पडने मे बाधा रहे। इस सन्दर्भ मे किष्किन्धा काण्ड मे ही अति सार्थक उल्लेख है कि जब हनुमान राम-लक्ष्मण को मिलने गया तो उसने अपना कपि रूप त्याग दिया और सामान्य तपस्वी का रूप धारण कर लिया।

यह स्मरण रहे कि उन दिनो में भी वायु-यान होते थे। रावण के पास पुष्पक विमान था जिसमे बैठकर राम, लक्ष्मण सीता, हनुमान आदि युद्ध की समाप्ति पर अयोध्या आये थे।

५—श्री राम को अपना परिचय देते हुए हनुमान ने कहा था कि वह वानर जाति का है और उसका नेता सुग्रीव वानर राज है। वनो मे रहने वाले व्यक्ति वानर कहलाते थे जैसेकि आज कल वे वनवासी कहलाते हैं।

यह विचार कितना अज्ञानता पूर्वक है कि राम लक्ष्मण ने राक्षसों के राजा रावण को सुग्रीव की बन्दर सेना से पराजित किया था?

६—अन्त मे इतना कहना पर्याप्त होगा कि आज कल व्यंग-चित्रकार (Cartoonists) मनुष्यो के मुखो की आकृति गधो, सिंहो आदि पशुओ के समान चित्रित करते हैं। इन व्यंग चित्रो के आधार पर आने वाली पीढी मे कोई व्यक्ति सत्यता पूर्वक नही कह सकेगा कि उसके पूर्वजो के मुखो की आकृतियां जानवरो के सदृश्य भी होती थीं। ठीक यही बात हनुमान के बन्दर रूपी चित्रो की है। —कर्मनारायण कपूर बी० ए० एल० एल० बी०

६ ए/३१, W E A करोल बाग दिल्ली-५

महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द

डा० भवानीलाल भारतीय की अनुपम कृति

प्रस्तुत पुस्तक में महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द के मन्तव्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

विद्वान् लेखक ने दोनों महापुरुषों के अनेक लेखों, भाषणों और ग्रन्थों के आधार पर प्रमाणित सामग्री का संकलन किया है।

मूल्य : केवल १२ रुपये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला राजकोट का ऋषि बोधोत्सव पर निमन्त्रण पत्र

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव १५, १६ १७ फरवरी १९८८ तदनुसार सोम, मंगल, और बुधवार को ऋषि जन्म स्थान टंकारा में भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा। देश देशान्तर से पधारे ऋषि भक्त आर्य विद्वान इस शुभवसर ऋषि के चरणो में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। इन सभी कार्यों के सम्पन्न करने हेतु धन की आवश्यकता होती है। आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी ओर से, अपनी आर्यसमाज व अपनी शिक्षण संस्थाओ की ओर से अधिक से अधिक राशि भेजकर ऋषि ऋण से उऋण हों और पुण्य के भागी बनें।

संस्कृत सीखना बहुत सरल है

भारत सरकार द्वारा संस्कृत पठन-पाठन का शिक्षा मे जो निरादर हुआ है, उससे भारतवासी कुछ जाग्रत हो रहे हैं और संस्कृत का पठन-लेखन सीखना चाहते हैं। लोक-भाषा प्रचार समिति, दिल्ली ने दस सूत्री कार्यक्रम भी इस विषय में आरम्भ किया है। यह प्रशंसनीय है।

सामान्य भारतीय संस्कृत को बहुत कठिन भाषा समझते हैं। इसी कारण उनकी रुचि को विकृत किया गया है। अगर आप हिन्दी भाषा जानते हैं तो आप बहुत ही थोडे प्रयास से संस्कृत बोलना-लिखना सीख सकते हैं। इसके निम्न कारण है—

१—संस्कृत के तद्भव और तत्सम शब्द हिन्दी भाषा मे ८० प्रतिशत से ९० प्रतिशत हैं। पुस्तक, द्वार, मार्ग, सरल, सीखना, त्याग, प्रिय, आदेश, स्थान, अभाव, जल, विद्युत्, वायु, आकाश आदि शब्दो को स्मरण करने का कष्ट आपको नही करना। थोडे से क्रियावाचक शब्द सीखने होंगे। अर्थात् आपके पास शब्द-भण्डार है।

२—संस्कृत भाषा की वाक्य रचना और हिन्दी की वाक्य रचना समान रूप है। वाक्य के आदि मे कर्त्ता और अन्त में क्रिया तथा मध्य मे अन्य कारक वाली संज्ञाएं रखी जाती हैं। जैसे हिन्दी मे— "राम पुस्तक पढता है" का संस्कृत वाक्य है—"राम पुस्तकम् पठति।"

३—क्रिया के रूप और कारक (विभक्ति) के रूप मात्र सीखने शेष हैं। कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण और सम्बोधन अर्थ में संज्ञाओ के रूप बदल जाते हैं। इसी प्रकार भूत, भविष्यत् वर्तमान काल में क्रियावाची शब्दो के रूप भी बदलते हैं। इन रूपो को ही मात्र सीखना है, जो कठिन नही है। ये रूप तो किसी भी भाषा को सीखते समय सीखे ही जाते हैं। परन्तु संस्कृत मे इनका सीखना सरल है। क्योंकि इसका व्याकरण सभी अन्य भाषाओ के व्याकरण की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिक है। यह मन्तव्य विश्व के सभी भाषा-विज्ञानियो का है। पाणिनी की अष्टाध्यायी और महर्षि यास्क के निरुक्त से श्रेष्ठ ग्रन्थ विश्व में अभी तक नहीं लिखा गया।

आशा है कि आपके थोडे प्रयत्न का परिणाम सुखद एवं आनन्द-दायक तथा आश्चर्यजनक होगा। —आचार्य धर्मवीर जिज्ञासु

५, अशोकनगर, पीलीभीत

वधू चाहिए

एक २५ वर्षीय (ठाकुर कुलोत्पन्न) कद साढे ५ फुट, रंग गेहुआ स्नातकोत्तर, वैदिक संस्कार युक्त, व्यवसायरत, मासिक आय चार अंको में, हेतु सुन्दर, सुशील शिक्षित कन्या की आवश्यकता है। जाति एवं दहेज रहित।

—प० रघुवीर शरण

आर्य समाज मन्दिर अचल मार्ग, अलीगढ (उ०प्र०)

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

—आचार्य रामकिशोर शास्त्री, खुर्जा—

अपने साहित्य में युग शब्द से कृत युग, त्रेता, द्वापर और कलियुग का ग्रहण होता है। ये चारों युग सृष्टि के प्रारम्भ से अब तक क्रमश: आते जाते हैं। महाप्रलय के पश्चात पुन: सृष्टि की रचना पहली सृष्टि के समान ही होती है। यही नियम अनादि काल से चला आ रहा है। इस कथन में "सूर्याचन्द्रमसौधाता यथा पूर्व मकल्पयत्" विधाता ने पूर्व की भांति ही सूर्य चन्द्र आदि की रचना की, यह वेद वचन प्रमाण है। सृष्टि की रचना होते ही युगों का आना जाना प्रारम्भ हो जाता है। इन्हीं के आधार पर सृष्टि की आयु की गणना की जाती है। सकल्प में बोला जाने वाला "अष्टाविंशतितमे कलियुगे" यह वाक्यांश इस समय अट्ठाइसवां कलियुग है, यह बोधित करता है। युगों की इसी शृंखला को आधार मानकर इस सृष्टि की आयु का आकलन किया जाता है। किन्तु प्रस्तुत लेख में युग शब्द से यह अर्थ नहीं लिया गया, जैसे एक युग के पश्चात दूसरा युग आने पर पूर्व स्थिति में परिवर्तन हो जाता है वैसे ही सहज सी कभी राष्ट्रीय जीवन पद्धति में किसी व्यक्ति विशेष द्वारा युग बोध की दृष्टि से किये गये परिवर्तन को युग परिवर्तन मान लिया जाता है। 'युग बदल गया" यह लोकोक्ति ऐसी ही परिस्थिति में प्रयुक्त की जाती है। यह युग शब्द का परिवर्तन रूप सादृश्य सम्बन्ध से बदली हुई जीवन पद्धति वाले समय को लक्षित करने हेतु किया गया लाक्षणिक प्रयोग है। यही अर्थ यहां अभिप्रेत है। इस प्रकार के युग निर्माण में जिनकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है, उन्हे ही युग प्रवर्तक कहा जाता है। परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से अपने देश में समय-समय पर ऐसे अनेक महापुरुष जन्म लेते रहे हैं, जिन्हे उक्त गौरव प्राप्त हुआ है। इनमें से कुछ धार्मिक कुछ सामाजिक कुछ राजनैतिक क्षेत्र में ही सक्रिय रहे हैं। किन्तु उन्नीसवी सत शती में यहां एक ऐसे महापुरुष ने भी जन्म लिया जिसने उक्त सभी क्षेत्रों में मार्ग दर्शन कराकर जनमानस में नवचेतना का सचार किया। परमात्मा के दिव्यज्ञान वेद के प्रकाश से जनता में व्याप्त अज्ञानान्धकार मिटाने में सतत् प्रयत्नशील रहा। जो स्ववेद, स्वभाषा, स्वधर्म और स्वदेश प्रेम की दृष्टि से सर्वथा अनुपम व्यक्तित्व का धनी था। उसका नाम था महर्षि दयानन्द सरस्वती। आओ उनके उक्त क्षेत्रों में किये गये कार्यों का मूल्यांकन करें।

धार्मिक क्षेत्र—महर्षि दयानन्द के आविर्भाव काल में हिन्दू जनता धर्म के वास्तविक स्वरूप को भूलकर किसी के हाथ का छुआ भोजन न करने को ही धर्म मान बैठी थी। "आठ कनवजिया नौ चूल्हे" यह किवदन्ती सर्वत्र प्रचलित थी। धर्म के नाम पर मन्दिरों तथा यज्ञों तक में निरपराध मूक प्राणियों की हत्या की जाती थी। धर्म के मूल स्रोत वेदों के विषय में विधर्मियों तथा उनके क्रीतदास भारतीयों द्वारा नाना प्रकार की भ्रान्तियां फैलाई जा रही थी। ऐसे अज्ञान तिमिराच्छन्न समय में महर्षि ने अपनी विलक्षण विद्वता तथा वाग्मिता से धर्म के उक्त कल्पित स्वरूप का खण्डन किया। 'वेदोऽखिलोधर्म मूलम्" सम्पूर्ण वेद धर्म का मूल है। "वेद प्रतिपादितोधर्मोऽधर्मस्त द्विपर्य" वेद बोधित कर्म धर्म तथा तद्विरुद्ध कर्म अधर्म है। "चोदनालक्षणोऽर्थोधर्म" वेद जिन कार्यों को करने की प्रेरणा दें, वे कार्य धर्म हैं। "आचार परमोधर्मः श्रुत्युक्त स्मृति एव च" वेदोक्त तथा स्मृति प्रतिपादित आचरण परम धर्म है। 'धर्म जिज्ञास मानानां प्रमाण परमश्रुति' धर्म के जिज्ञासुओं को सर्वोत्तम प्रमाण वेद हैं। 'श्रुति स्मृति. सदाचार स्वस्य च प्रियमात्मन। एतच्चतुर्विध प्राहुः साक्षात् धर्मस्य लक्षणम्॥" वेद तदनुकूल स्मृति वेद वेत्ताओं का आचरण तथा अपने लिए प्रिय सत्य भाषणादि ये चार धर्म के साक्षात् स्वरूप है। "यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धि सधर्म" जिससे भौतिक तथा पारमार्थिक अभ्युन्नति हो वह धर्म है। धर्म के इस यथार्थ स्वरूप को जन जन में प्रचार किया। किसी के छुवे हुए भोजन से नही, चोरी आदि दुर्गुण तथा मदिरापान और मांस भक्षणादि दुर्व्यसनों से धर्म नष्ट हो जाता है। इस रहस्य का उद्घाटन किया। जिसके फलस्वरूप छुआछूत के भूत से मुक्त हिन्दू जाति में सगठन की भावना पैदा हुई। निरपराध मूक प्राणियों की हत्या 'मित्रस्यत्वाचक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्" सम्पूर्ण प्राणियों को मित्र की (प्रेम पूर्ण) दृष्टि से देखो, इस वेद वचन के विरुद्ध होने से धर्म नहीं अधर्म है। यह तत्व हिन्दू जाति को अवगत कराया, विधर्मी योजना बद्ध ढग से हिन्दू जाति को गडरियो का गीत बताकर वेदो से विमुख कर रहे हैं। महर्षि ने उनके आक्षेपो को निर्मूल सिद्ध कर "वेद सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है।" यह नियम बनाया तथा वेद के पठन पाठन को आर्यों का परम धर्म बताया। महर्षि की प्रबलतम युक्तियों तथा प्रमाणों से शास्त्रार्थ में विधर्मियों का मुखमुद्रण देखकर हिन्दू जाति अपनी सस्कृति की सर्वश्रेष्ठता से परिचित हो गई।

सामाजिक क्षेत्र—महर्षि के कार्यकाल से पूर्व अपने देश की सामाजिक स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। शिक्षा के अभाव में पाखण्ड तथा अन्ध विश्वास देश को जर्जर बना रहे थे। "स्त्री शूद्रोनाधीयातामितिश्रुते" स्त्री व शूद्र नहीं पढें यह वेद का आदेश है, इस प्रकार का प्रचार किया जा रहा था। शूद्रों द्वारा वेद मन्त्रों का उच्चारण तथा श्रवण करने पर उन्हे कठोर दण्ड देने का नियम बना लिया था महर्षि ने उक्त श्रुति को कपोल कल्पित घोषित कर—"यथेमां वाच कल्याणी मावदानि जनेभ्य। ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय स्वाय चारणाय च॥" यजुर्वेद के इस मन्त्र से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र अपने भृत्य स्त्री आदि तथा शूद्रों को भी प्रभु की कल्याणी वाणी वेद पढ़ने का अधिकार है, यह सिद्ध किया है। यह युक्ति भी दी कि जैसे परमात्मा ने सूर्य, चन्द्र, अग्नि, जलवायु पृथ्वी और अन्नादि पदार्थ बिना पक्षपात के सबके लिए बनाये हैं वैसे ही वेद भी सबके लिए प्रकाशित किये हैं। श्रौत सूत्रादि में "इम मन्त्र पत्नी पठेत्" इस मन्त्र को पत्नी पढे, तथा विवाह सस्कार में इस मन्त्र को वधू पढे, इत्यादि निर्देश स्त्री जाति को वेद पढने का अधिकार है, इसके प्रमाण हैं। अपने देश में गार्गी, मैत्रेयी आदि वेदशास्त्रों की विदुषी अनेक महिलाऐ हुई हैं। महर्षि की प्रेरणा से स्त्री शिक्षा के निमित्त अनेक कन्या विद्यालयों की स्थापना की गई, पिछडी कही जाने वाली जातियों में उत्पन्न अनेक बन्धु वेद शास्त्रों का विधिवत् अध्ययन कर पण्डित तथा महोपदेशक बने। उन्हें सभी क्षेत्रों में सर्वसाधारण के समान सम्मान प्राप्त हुआ। बाल विवाह की कुरीति के कारण अनेक बालायें युवावस्था से पूर्व ही विधवा होकर नारकीय जीवन व्यतीत करती थी। नारियों के प्रति सम्मान भाव विनष्ट प्राय था। कोई उन्हें ताडन का अधिकारी कोई नरक का द्वार तथा कोई भोग्य पदार्थ बता रहे थे। ऐसी स्थिति में महर्षि ने "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।" जहां नारियों का सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं। 'न शोचन्ति तु यत्रैता वर्द्धते तद्धि सर्वदा।' जहां स्त्रियां प्रसन्न रहती हैं वह कुल सदा उन्नति करता है। महर्षि ने मनु के इस

सिद्धान्तानुसार नारी जाति की समादरणीयता का प्रतिपादन किया तथा पुनर्विवाह का प्रचार किया, जिससे अनेक विधवाओं का जीवन सुखमय बन गया। उन्हीं की प्रेरणा से बने अनाथालय वनिताश्रम तथा नारी निकेतन आदि संस्थान आज भी निराश्रितों की सेवा कर रहे हैं। समाज के सभी वर्गों मे दोषों के स्थान पर गुणों को प्रतिष्ठापित करने का महर्षि ने आजीवन प्रयत्न किया।

राजनैतिक क्षेत्र—महर्षि के जन्म के समय हमारा यह भारत वर्ष परतन्त्र था। १८५७ के स्वाधीनता संग्राम की असफलता के कारण भारतवासी अपनी सभ्यता को भूलकर पाश्चात्य सभ्यता के मायापाश में फंसते जा रहे थे। उन दिनो स्वतन्त्रता का नाम लेना भी महान अपराध समझा जाता था। स्वतन्त्रता के विषय में लेख लिखना तथा प्रचार करना अत्यन्त दुस्साहस का कार्य था। ठीक ऐसे समय मे महर्षि ने 'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रन्थ की रचना की। जिससे भारतवासियों में स्वदेश प्रेम की तथा सामाजिक एवं राजनैतिक स्वाधीनता की अमर भावनायें जाग उठी। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है—आर्यावर्त्त में भी आर्यों का अखण्ड स्वतन्त्र निर्भय राज्य इस समय नही है। जो कुछ है सो भी वह भी विदेशियो के पदाक्रान्त हो रहा है। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियो को अनेक प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं। कोई कितना भी करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रह से रहित अपने और पराये के पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता के समान कृपा और न्याय के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नही। उन्होंने यह भी विश्वास दिलाया कि तुम दीन हीन नहीं, अपितु उन आर्यों की सन्तान हो, जिनका सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल तक सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य था। उनके इस प्रयत्न से देश में नई चेतना, नई शक्ति तथा नए उत्साह का जन्म हुआ। अतः यह भी स्पष्ट हो गया है कि १९४७ मे जिस स्वाधीनता यज्ञ की पूर्णाहुति महात्मा गांधी ने दी, उसका प्रारम्भ महर्षि दयानन्द ने किया। एक बार दयानन्द निर्वाण दिवस के अवसर पर तत्कालीन लोक सभाध्यक्ष श्री अनन्तशयन आयंगर ने कहा "भारत देश के राष्ट्रपिता गांधी जी हैं तो महर्षि दयानन्द राष्ट्र के पितामह हैं। वे हमारी राष्ट्रीय प्रवृत्तियो तथा स्वाधीनता आन्दोलन के आद्यप्रवर्तक थे। उन्हीं के चरण चिन्हो पर चलकर गांधी ने आगे चलकर कार्य किया। महर्षि की प्रेरणा से ही श्री श्याम जी कृष्णवर्मा, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द जी, मदनलाल ढींगरा, लाला हंसराज साहनी, भाई परमानन्द जी, श्री रामप्रसाद बिस्मिल आदि आर्य वीरो ने देश की स्वतन्त्रता के निमित्त अपना सब कुछ समर्पित कर दिया। इन्ही सब प्रयासो के द्वारा आज हमारा देश स्वतन्त्र है। विश्व के रंगमंच पर हमे भी सम्मान पूर्ण स्थान प्राप्त है। महर्षि ने राष्ट्र की एकता अखण्डता तथा शक्तिमत्ता के लिए किसी भी कारण से सही अपने से बिछुड़कर ईसाई और मुसलमान बने हुए बन्धुओं को शुद्धि द्वारा पुनः अपने गले लगाने का आह्वान किया था। यदि उसी समय तदनुसार कार्य प्रारम्भ कर दिया जाता तो देश का विभाजन ही नही होता और न ही विभाजन के कारण नई साढ़े सात लाख जानें जाती और न डेढ़ करोड़ व्यक्ति बेघरबार होते।

महर्षि का प्रयास सफल हुआ धर्म के यथार्थ स्वरूप से आज सर्वसाधारण व्यक्ति भी प्रायः परिचित है। एक ही भोजनालय में सभी वर्णों के व्यक्ति बिना भेदभाव के भोजन कर लेते हैं। केवल स्वच्छता होनी चाहिए। किस वर्ण का व्यक्ति भोजन परोस रहा है इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता ही नहीं रही। धर्म के नाम पर होने वाली पशु हत्या में भी काफी कमी हुई है। वेद विषयक भ्रान्तियों का भी निराकरण हो गया। वेद की महत्ता तथा स्वतः प्रमाणिकता के विषय में भी अब कहीं सन्देह नहीं है। सभी वर्णों के व्यक्ति समान रूप से वेदों को पढ़ने पढ़ाने का कार्य कर रहे हैं। आकाशवाणी से भी वेद मन्त्रों के पाठ का प्रसारण होता है। अनेक देवियां वेदों की विदुषी बनकर वेद प्रवचन तथा वेदों के विषय में शोध कार्य कर रही है अनेकों उच्चतम शिक्षा पाकर विभिन्न क्षेत्रों में सफलता पूर्वक अपने कर्त्तव्य का पालन कर रही हैं। जो मानव समुदाय महर्षि के समय स्त्री शिक्षा के घोर विरोध मे था, उन्हीं के द्वारा अनेक कन्या विद्यालयों की स्थापना तथा व्यवस्था की जा रही है। प्रबुद्ध भारतवासियों के हृदय में अपनी संस्कृति और सभ्यता की सर्वोत्कृष्टता का अभिमान है। नारियों को सर्वत्र सम्मान पूर्ण स्थान प्राप्त है। जिन धर्माचार्यों ने महर्षि की शुद्धि योजना का अनेक वर्षों तक समर्थन नही किया आज उन्ही के उत्तराधिकारी तथा अनुयायी अपने बिछुड़े हुए बन्धुओं को पुनः अपने में लाने हेतु भगीरथ परिश्रम कर रहे हैं। इस समय अपना देश भी स्वतन्त्र है। महर्षि ने जिस युग के निर्माणार्थ आजीवन परिश्रम किया तथा दारुण यातनाएं सही आज उस युग का साक्षात दर्शन उन्हें सर्वथा युग प्रवर्तक सिद्ध कर रहा है। महर्षि की इच्छा थी कि अपने देश का शासन अपनी शासन पद्धति से किया जाय। सम्पूर्ण देश में अपनी भाषा, अपनी वेशभूषा, अपनी संस्कृति, तथा अपनी सभ्यता प्रतिष्ठापित हो, किन्तु दुर्भाग्यवश जिन हाथो में देश का शासन गया, वे इस दिशा मे चाहे कारण कुछ भी रहे हो, ध्यान न दे सके। इसीलिए आज भी यहां सुख और शांति का अभाव है। भोग लिप्सा तथा व्यक्तिगत स्वार्थपरता का प्रतिक्षण विकास हो रहा है। यह सब राष्ट्र के लिये अत्यन्त घातक है। अतः हम सभी को महर्षि की अपूर्ण इच्छाओं को पूर्ण करने का संकल्प लेना चाहिए, तभी हम स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण रखकर उसका पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

गुरुकुल कांगड़ी अपने पुराने गौरव की ओर

—श्री नरेन्द्रकुमार कनखल, हरिद्वार—

प्रबन्ध परिवर्तन

आज से कुल चार मास पूर्व गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रशासन में एक महान् परिवर्तन आया और प्रथम बार वहाँ का सर्वोच्च प्रशासन वहीं के तीन प्रसिद्ध विद्वान स्नातकों के हाथ में आया। अब तो विद्यालय विभाग का प्रबन्ध भी कुछ अन्य प्रसिद्ध विद्वान् स्नातकों के हाथ आ गया है। इस प्रकार कदाचित् गुरुकुल के इतिहास में प्रथम बार ऐसा हुआ है कि विजिटर, वाइसचांसलर, कुलपति, उपकुलपति, मुख्याधिष्ठाता, आचार्य एवं व्यवसायाध्यक्ष सभी गुरुकुल कांगड़ी स्नातक हैं, व अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध एवं अधिकारी विद्वान् हैं। डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार रामप्रसाद वेदालंकार एवं डा० सत्यकाम वेदों के प्रसिद्ध विद्वान् हैं। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार एवं वर्तमान् कुलपति डा० सत्यकाम ,प्राचीन भारतीय इतिहास के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् हैं। आचार्य निरूपण विद्यालंकार डा० हरिप्रकाश की सेवाएं फार्मेसी को बचाने और बढ़ाने में प्रसिद्ध हैं।

नई आशाएं

इनके प्रबन्ध में आते ही जहां एक ओर पुराने पदाधिकारी अपने स्वार्थों के कारण इनके विरुद्ध अनर्गल प्रचार करने लग गए और सम्पूर्ण आर्य जगत् एवं यू०जी०सी० आदि के समक्ष नए प्रशासन को बदनाम करके यह सिद्ध करने का प्रयास करने लगे कि जैसे इनके हाथ से सत्ता निकलते ही गुरुकुल की दशा बिगड़ने लगी हो, वहीं उन गुरुकुल प्रेमियों की आशाएं आसमान को छूने लगीं, जो पिछले प्रशासन की स्वार्थान्ध नीतियों से तंग और निराश होकर गुरुकुल के पुराने गौरव के लौटने की आशा ही छोड़ चुके थे। यद्यपि पुराने प्रशासन के खिसियाए हुए प्रशासक गुरुकुल के 'पूर्णत विनाश" की अपनी योजनाओं को असफल होता देखकर बहुत ही ओछे और नीच प्रहार पर उतर आए हैं, इस पर भी गुरुकुल कांगड़ी एवं विश्वविद्यालय में इस छोटे से अरसे में जो कुछ हुआ है, उसकी एक झांकी मात्र ही यह विश्वास दिलाने में यह समर्थ हो जाएगी कि गुरुकुल की पुरानी आत्मा लौटने लगी है और पुराना गौरव फिर से अंगड़ाई लेकर जागने लगा है। यथा —

वेद और संस्कृत की पुनः प्रतिष्ठा :

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार गुरुकुल विश्वविद्यालय को प्राचीन भारतीय ज्ञान विज्ञान का फिर से केन्द्र बनाने की अपनी धुन में जुट गए। अन्ततः सफल हुए और उन्होंने कुलपति को आदेश दिया कि इस योजना को तुरन्त लागू करने की दिशा में कदम उठाए जाएं। इस दिशा में कुलपति जी ने पहला कदम यह उठाया कि अब तक के चले आ रहे विश्वविद्यालय ढांचे में परिवर्तन की घोषणा की। अब तक विश्वविद्यालय केवल दो महाविद्यालय एवं एक कन्या गुरुकुल या महाविद्यालय के रूप में विभाजित होकर चल रहा था, यद्यपि कहने को 'वेद एवं कलामहाविद्यालय" दो पृथक् इकाइयां भी गिनीं जाती थी। कुलपति जी ने अपने एक आदेश द्वारा सम्पूर्ण विश्वविद्यालय ढांचे को पांच फैकल्टियों या संकायों में विभाजित किया। वेद एवं तुलनात्मक धर्म विज्ञान संकाय, २. संस्कृत एवं भारतीय विद्या संकाय, ३ भाषा एवं भाषाविज्ञान संकाय, ४ विज्ञान संकाय एवं ५ प्राचीन भारतीय विज्ञान संकाय। इसका एक लाभ तुरन्त यह हुआ कि अब से सारा भविष्य चिन्तन इन विविध संकायों के अध्यापकों के हाथ में आ गया। वे अपने-अपने संकाय की प्रगति के उपाय सोचने को स्वतन्त्र हो गए। साथ ही इससे यह भी स्पष्ट हो गया कि गुरुकुल की भावी दिशा क्या होगी। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के इच्छानुसार अब नई बनी योजना के आरम्भ से कुलाधिपति एवं कुलपति जी का स्वप्न साकार होगा। नई योजना में वेद, तुलनात्मक धर्म विज्ञान एवं संस्कृत, व्याकरण तथा भाषा विज्ञान, हिन्दी एवं प्राचीन भारतीय विज्ञान पर आशातीत रूप में अधिक बल दिया गया है। इससे भी बड़ी बात है कि अब से विद्यार्थियों की संख्या पर ही बल न देकर अनुसन्धान एवं प्रकाशन पर भी बल दिया जायेगा।

दिशा सूचक संगोष्ठियां

पांच विभिन्न संगोष्ठियां आयोजित की गई।

नए पाठ्यक्रम

कुलपति जी ने गुरुकुल को नए पाठ्यक्रम का निर्माण किया। जिसका लक्ष्य पाठ्यक्रमों को हर स्तर पर जीवन एवं उपयोगिता से जोड़ना है। हर पाठ्यक्रम संस्कृत और वैदिक शिक्षा एवं उसके आदर्शों से जुड़ा होना।" बी०एड्०बी० फार्मा (आयुर्वेद) आदि कुछ पाठ्यक्रमों को विद्यालंकार या बी०ए० आनर्स के पाठ्यक्रमों के साथ समन्वित करने का प्रयास करने के साथ हर विद्यार्थी को कुछ व्यावसायिक एवं आजीविकापरक पाठ्यक्रमों से गुजरना पड़ेगा।

इसके साथ ही समस्त विज्ञान-पाठ्क्रमों में भी प्राचीन भारतीय विज्ञान को सम्मिलित किया जा रहा है। इस दिशा में रसायनशास्त्र के नए पाठ्यक्रम में कुछ सुधार किया भी गया है। अन्य विभागों ने भी अपने पाठ्यक्रमों को इस दिशा में परिचालित किया है।

प्रकाशन : लक्ष्य

सर्वप्रथम पुष्प 'श्रद्धानन्द एक विलक्षण व्यक्तित्व" के रूप में शीघ्र ही सामने आने वाला है। यह ग्रन्थ स्वामी जी के जीवन के जीवन के सम्बन्ध में विलक्षण होगा। इसके अतिरिक्त गुरुकुल के स्नातकों एवं अध्यापकों के प्रकाशनों को बढ़ावा देने के लिए भी विविध योजनाएं चलाई गई हैं। पुरानी परम्परा को पुनर्जीवित करने की दृष्टि से 'स्वाध्यायमाला" का प्रकाशन भी नए सिरे से आरम्भ करने की योजना है।

नए निर्माण

कुछ नए निर्माणों की योजना की गई है।

आश्रम

नए कुलपति ने सर्वप्रथम विज्ञान-आश्रम को खाली करवाया और बाद में विश्राम भवन को। इस प्रकार लगभग चालीस विद्यार्थियों के लिए आश्रम में रहने की व्यवस्था हो गई। अतः नए निर्माणों में सर्वाधिक प्राथमिकता आश्रम निर्माण दी गई है।

संकाय भवन :

विभागों के चलाए जाने के कारण नए भवन की आवश्यकता होगी। इस दृष्टि से नए संकाय भवन की आवश्यकता होगी यह हमारी दूसरी प्राथमिकता है। इसी प्रकार विद्यालय विभाग के लिए आश्रमों की आवश्यकता होगी।

झूठे आरोप : बौखलाहट

एक ओर इतनी सारी बात थोड़े समय में की गई हैं, तो दूसरी ओर पुराने अधिकारियों ने ईर्ष्या और जलन के मारे तथा अपनी हार की खीज को मिटाने के लिए नए अधिकारियों के मार्ग में बाधा डालने के लिए न केवल ओछे आरोप लगाने आरम्भ कर दिये हैं, बल्कि अन्य बाधाएं भी डालनी शुरु कर दी हैं। स्पष्ट है कि गुरुकुल से न तो ऐसे लोगों को कभी मोह था न प्यार। वे तो इसे आजीविका का एक साधनमात्र मानने लगे थे। उनके अपने जीवन के राग द्वेष उन्हें गुरुकुल से अधिक आत्मीय लगते थे। इस समय उनकी बौखलाहट इस सीमा तक पहुंच गई है कि वे स्वयं ही इस संस्था को ही हर तरह से हानि पहुंचाने पर तुल गए हैं।

काव्य सुधा

अंग्रेजो का बन्धन तोड़ो

पर्वतराज हिमालय बोलो, घाटी के फूलो तुम बोलो,
खेतों खलयानो तुम बोलो, चप्पे-चप्पे धरती के कण बोलो।
गगा यमुना गोदा बोलो, महानदी कावेरी बोलो,
सतलुज व्यास नर्मदा बोलो, ब्रह्मपुत्र कृष्णा तुम बोलो।
लालकिले के वैभव बोलो, तात्या की सास तुम बोलो,
सूर्य-मन्दिर मुदरै बोलो, अजन्ता और अलोरा बोलो।
सागर की लहरो तुम बोलो, हुगली, पूरी, बम्बई बोलो,
मद्रास, रामेश्वरम् बोलो, उठो कुमारी कन्या बोलो।
चला गया अग्रेजी शासन, हम अग्रेजी नही सहेगे,
हम शिक्षा में अपनी भाषा, मैं ही सब कुछ पढा करेंगे।
अनिवार्य विदेशी भाषा का, बोझ क्यो अपने सिर लादे ?
स्वतन्त्र देश के रहने वाले, निज भाषा मे भाव सुना दे।
भाषाओ की जननी सस्कृत, प्रबल सयोजक सूत्र हमारा।
इसको शिक्षा से हटा रहे, ममता सिर घूमा तुम्हारा।
अपनी सस्कृति की रही वाहिका, इतिहास पुरातन बतलाती।
जो भाषा है सारे जग मे, भारत मा का शीष उठाती।
जिसमें ज्ञान-विज्ञान भरा है, जिसमें गहरा वैदिक दर्शन,
जिसे सजाया श्रेष्ठ काव्य से, नैतिकता निर्मल दर्पण।
सन्त विनोबा गाधी नेहरू, तिलक राजेन्द्र प्रसाद जी भी,
मालवीय अरु राधाकृष्णन, थके न कर गुणगान कभी।
उस सस्कृत को हटा रहे ये, नेता शिक्षा से नही सोचते,
देश का मूलाधार निकाल, भारत-आत्मा कहां खोजते ?
है पहचान स्वतन्त्र देश की, उसकी अपनी प्यारी भाषा,
उससे ही उन्नति सम्भव है, वही बनी जन जन की आशा।
अग्रेजी का ज्ञान अधूरा, अग्रेजी का ज्ञान उधारा,
निज भाषा से सब सम्भव है, यदि हो निश्चय प्रबल हमारा।
बोलो पत्थर नदिया बोलो, धरती और गगन तुम बोलो,
हटाओ शिक्षा से अग्रेजी, अब तो मुख अपना तुम खोलो।
न्यायालय से अग्रेजी को जाना होगा जाना होगा।
ऊची शिक्षा नौकरियो मे, अग्रेजी को जाना होगा।
अपनी धरती पर सबको ही, वहा की वायु पर अधिकार,
स्वच्छन्द श्वास लें साथ विचार, जो जाय मन से एकाकार।
जन जन की भाषा मे बोलो—मन की दासता नही चलेगी,
काले बाबू की गिटपिट की, अग्रेजी अब नहा चलेगी।
चालीस बरस हुए अभी भी स्वतन्त्रता रह अधूरी है,
अग्रेजी को नही छोडते, ऐसी भी क्या मजबूरी है ?
उठकर मेरे युवको बोलो—और दासता नही सहेगे,
अग्रेजी का रोडा अब तो, नही सहेगे नही सहेगे।
निकाल अग्रेजी शासक को, स्वतन्त्र पताका, फहराई।
तोडो अग्रेजी के गढ को, सुखद हवा देखो फिर आई।
स्वच्छन्द मस्तिष्क से सोच, रटना नही पड़े कुछ भी फिर,
उन्नति के कैसे शिखरो पर, अपनी भाषा से जाता शिर।
अपना देश अरु अपना वेश, अपनी भाषा ही श्रेयस्कर,
आओ कर प्रतिज्ञा भाई, अपने ध्वज के नीचे आकर।
अपने गौरव के लिये सभी अपनी भाषा अपनायेगे
झूठी आशा अग्रेजी की, उसको हम दूर भ

—रचयिता डा० कृष्णलाल आचार्य
सस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

विजय बोधन

नही विजय के लिए आज तो शब्दों का ज्योद्गार चाहिए।
विजय-वरण के लिए साथियो! पौरुष का अवतार चाहिए॥
वीर विहीन सतो को देखे जनक उदास न हो जायें।
जनक-सुता का पावन परिणय दिवस प्रश्न नहि बन जाये॥
इसके लिए यती लक्ष्मण की निर्मय नव ललकार चाहिए॥१॥
कहीं खन्दकों में क्लीबो ने भी जब मगल के वाद्य बजाये।
कहो श्रृगाल सुतो ने कब कब मदमाते गजराज भगाये॥
निडर बनो मे विचरण को तो हिम्मत का हकदार चाहिए॥२॥
मातृभूमि विषय विभाजन की हाला जो पिये हुए हैं।
सतलुज व्यास नदी की धारा को भी रक्तिम किए हुए हैं॥
उनको सन्धि सुधा क्या देना, दण्ड देव का द्वार चाहिए॥३॥
जो बैरो के सकेतो पर अब भी नगा नाच रहे हैं।
दमो की आगो मे इसके स्वर्ण धैर्य को जाच रहे हैं॥
"शठेशाठ्यम्" कृष्ण नीति का उनको तो उपहार चाहिए॥४॥
नाग देवता मार कुण्डली जो चुपचाप पडा ही रहता।
प्रखर प्रहार सदा दुष्टो के क्षमा क्षमा कह जो है सहता।
उसको जगती मे जीने को तेजस्वी फूंकार चाहिए॥५॥
भूतल क्या गगनागण मे भी रही सदा से ये ही चर्चा।
सीधे सादे गोल चन्द्र को ग्रहण लगा है हुई न अर्चा॥
राहु-ग्रास से बचने को तो द्वितीया की सी धार चाहिए॥६॥
उग्रवाद का दुर्ग कभी भी समझौते से ढह न सकेगा।
बिना विचारे सहन-सृजन तो विजय कहानी कह न सकेगा॥
इसके लिए प्रथा ही यह है ढाल और तलवार चाहिए॥७॥

—कविवर 'प्रणव' शास्त्री एम०ए० महोपदेशक
शास्त्री सदन, रामनगर (कटरा) आगरा-६

श्रद्धांजलि

आर्यसमाजी पत्रकार तथा स्वाधीनता सेनानी–वि० स० विनोद

श्री वि०स० विनोद एक मिशनरी तथा सिद्धान्तनिष्ठ पत्रकार तथा कट्टर हिन्दुत्वनिष्ठ व्यक्तित्व के धनी थे धार्मिक दृष्टि से वे जहां दृढ़ आर्य समाजी थे वही राजनीतिक क्षेत्र में वे वीर सावरकर जी द्वारा प्रेरित हिन्दू महासभा के अनन्य समर्थक थे। हिन्दी, हिन्दू तथा हिन्दुस्तान की सर्वांगत भावना से सेवा करते वे ३१ दिसम्बर को ८३ वर्ष की आयु में दिवंगत हो गए।

मेरठ जनपद के छोटे से गांव में साधारण अग्रवाल परिवार में १५ फरवरी १९०५ को जन्मे विनोद जी का परिवार ही आर्य समाजी था। आर्य समाज के संस्कारों के कारण ही उनके परिवार जनों ने उन्हे कानपुर के डी० ए० वी० कालेज में भर्ती कराया था। वहा वे वहा अनेक आर्य समाजी नेताओं के सम्पर्क में आए वही पत्रकार शिरोमणि श्री गणेश शंकर विद्यार्थी के भी निकट आए। उन्ही से उन्हें पत्रकारिता की प्रेरणा मिली। सन १९२६ में गोहाटी में आयोजित कांग्रेस के राष्ट्रीय सम्मेलन की उन्होने रिपोर्टिंग की थी। कानपुर मे कांग्रेसी तथा आर्यसमाजी नेता श्री अलगूराम शास्त्री ने उन्हें बहुत प्रोत्साहन दिया।

सन १९२६ में वे लखनऊ चले गए तथा उस समय की एकमात्र राष्ट्रीय संवाद समिति 'फ्री प्रेस आफ इंडिया' के संवाददाता बन गए बाद मे डा० सम्पूर्णानन्द जी की प्रेरणा पर वे उनके द्वारा सम्पादित 'आज' के अंग्रेजी संस्करण 'टु डे' के उप सम्पादक रहे। काशी में उन्हें डा० सम्पूर्णानन्द जी से पत्रकारिता के बहुत से गुर सीखने का सौभाग्य मिला।

दो वर्ष बाद ही सन १९३० मे विनोद जी को दिल्ली के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में रिपोर्टर का नियुक्ति पत्र मिल गया। उन्होने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त 'मेरठ षड्यन्त्र' केस की कुशलता के साथ रिपोर्टिंग की। अगले ही वर्ष उन्होंने अपनी जन्म स्थली मेरठ मे रहकर पत्रकारिता का श्री गणेश शुरू कर दिया। उन्होने 'सण्डे टाइम्स' प्रेस लगाया तथा अंग्रेजी मे 'मेरठ टाइम्स' नाम से साप्ताहिक शुरू किया। बाद में उसका नाम 'सण्डे टाइम्स' हो गया। सन १९४४ में उन्होने हिन्दी 'प्रभात' शुरू किया जो आज तक उ० प्र० का प्रमुख हिन्दी दैनिक है।

बाइबिल केस

'सण्डे टाइम्स' ने बाइबिल में आए अश्लील अंशों के विरुद्ध लेख प्रकाशित किया तो एक पादरी ने विनोद जी पर मुकद्दमा चलवा दिया। हिन्दू महासभा के तत्कालीन अध्यक्ष तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विधिवेत्ता श्री एन० सी० चटर्जी ने मेरठ आकर विनोद जी के बचाव में न्यायालय में ऐसी अकाट्य दलीलें दी कि वे ससम्मान बरी कर दिए गए।

मेरठ में अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन चला तो विनोद जी ने उसका नेतृत्व किया। उन्हें अंग्रेजी के बोर्ड पोतते हुए गिरफ्तार किया गया। शेखअब्दुल्ला ने मेरठ आकर साम्प्रदायिक वातावरण बनाने का प्रयास किया तो विनोद जी विरोध मे थे। हिन्दुत्व की रक्षा के प्रश्न पर वे बड़े से बड़ा संकट उठाने को भी तत्पर रहते थे।

विनोद जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुचिरा विनोद भी उन्ही की तरह आर्य समाजी विचारधारा की परम विदुषी महिला थी। वे वर्षों तक मेरठ महिला आर्य समाज की प्रधान भी रही। १९६७ मे हुए गोरक्षा आन्दोलन में उन्होंने भी सत्याग्रह कर महीनों तक तिहाड़ जेल मे यातनाएं सही थी।

आर्य समाज द्वारा सम्मान

विनोद जी का देश के मूर्धन्य आर्य नेता भी सम्मान करते थे। महात्मा आनन्दबोध सरस्वती जी (लाला रामगोपाल शालवाले) महाशय स्व० श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री ओम्प्रकाश त्यागी, महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती, 'मिलाप' के सम्पादक श्री रणवीर आदि उन्हें बहुत आदर देते थे।

आर्य समाज शताब्दी समारोह के अन्तगत कानपुर मे हुए सम्मेलन मे एक निर्भीक आर्यसमाजी पत्रकार के रूप मे प्रकाशवीर शास्त्री जी ने विनोद जी को सम्मानित कराया था। उस समारोह में मुझे भी उनके साथ जाने का अवसर मिला था।

पत्रकारिता के वे मेरे गुरु ही थे। उनके श्री चरणो मे बैठकर ही मैंने पत्रकारिता सीखी थी। श्री जयप्रकाश भारती (सम्पादक 'नन्दन', जैसे अनेक विख्यात लेखको को उन्ही से प्रेरणा और प्रशिक्षण मिला था।

महर्षि दयानन्द–सावरकर जी के अनन्य भक्त

वे वर्षों से अस्वस्थ थे। पिछले साल एक दिन अपने पुत्र सुबोध से बोले "मेरे कमरे में महर्षि दयानन्द तथा वीर सावरकर जी का चित्र लगाओ।" दूसरे दिन चित्र न देखे तो नाराज हो उठे" दोनो विभूतियां ही मेरी प्रेरक रही हैं। मैं चाहता हूं कि अन्तिम श्वास महर्षि दयानन्द तथा सावरकर जी के दर्शन करते हुए निकले।" सुबोध जी ने प० इन्द्रराज जी से दयानन्द जी का चित्र मंगवाया। सावरकर जी का चित्र भी लग गया। मुझसे बोले—शिवकुमार जी, मेरी अटूट आस्था इन दो महापुरुषो में ही रही है। महर्षि दयानन्द से मुझे जहा हिन्दू समाज में व्याप्त अस्पृश्यता जैसी कुरीति का विरोध करने की प्रेरणा मिली वही वीर सावरकर जी से हिन्दू संगठन तथा 'हिन्दू राष्ट्र' की कल्पना मिली।

दैनिक 'प्रभात' विनोद जी का सच्चा स्मारक है।

उ०प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पंडित इन्द्रराज जी ने उन्हे अन्तिम श्रद्धांजलि देते हुए ठीक ही कहा था— वे आर्य समाज तथा हिन्दुत्व के सजग प्रहरी थे। उनके अभाव की पूर्ति संभव नही है।'

—शिवकुमार गोयल

आर्य जगत् के समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की विज्ञप्ति
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का है

दैनिक ट्रिब्यून दिनांक ५ जनवरी ८८ में प्रकाशित वक्तव्य में स्वामी अग्निवेश ने गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की सम्पत्ति बताया है। यह उनका वक्तव्य भ्रामक है। वास्तविकता यह है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का १९७५ में राजकीय सीमाओं के अनुसार बटवारा हो चुका है। इसी प्रकार इन्द्रप्रस्थ गुरुकुल जिला फरीदाबाद में स्थित होने के कारण हरियाणा सभा की सम्पत्ति बन चुका है। श्री वीरेन्द्र को गुरुकुल के संचालन का किसी को अधिकार पत्र देने का अधिकार नहीं है। क्योंकि पंजाब सभा की अधिकार क्षेत्र केवल पंजाब राज्य की वर्तमान सीमाओं तक है।

आर्य समाज की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा ने आर्य समाज के धन का दुरुपयोग करने तथा अनुशासन भंग करने के आरोप में अग्निवेश को पूर्व ही आर्य समाज की प्राथमिक सदस्यता से निकाला हुआ है और गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का धन राजनैतिक तथा निजी कार्यों में खर्च करने के आरोप में हरियाणा सभा की ओर से उनके विरुद्ध फरीदाबाद न्यायालय में अभियोग चल रहा है।

—वेदव्रत शास्त्री, मन्त्री

अखिल भारतीय संस्कृत संगठन की स्थापना

गण्यमान्य संस्कृत विद्वानों का एक सम्मेलन माडल टाऊन में स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसारार्थ, "अखिल भारत संस्कृत महासम्मेलन" के नाम से केन्द्रीय संगठन की स्थापना की गई।

निम्नलिखित महानुभाव संयोजन-समिति के सदस्य मनोनीत हुए।

१. सत्यव्रत शास्त्री दिल्ली, २. स्वामी विद्यानन्द सरस्वती दिल्ली।
३. डा० कृष्णलाल दिल्ली, ४. श्री अशोक कौशिक दिल्ली,।
५ ठाकुर ओम्प्रकाश दिल्ली, ६. पं० रामदत्त शास्त्री दिल्ली।
७. विमलदेव भारद्वाज दिल्ली, ८. धनीराम शास्त्री जम्मू काश्मीर दिल्ली।
९. आचार्य प्रभुदास कड़वानी गुजरात, १०. श्री रामदेव जी राजस्थान
११. डा. मिथिलेश कुमारी बिहार, १२ मा त्रिभुवननाथ पाठक असम
१३ डा० कृष्णनारायण पाण्डेय उत्तर प्रदेश। —वेदव्रत शास्त्री, मन्त्री

डा० आनन्द सुमन (महोपदेशक सभा) द्वारा सिंगाही (खीरी) (नेपाल बार्डर) में आर्य समाज की स्थापना

सिंगाही। सार्वदेशिक सभा के महोपदेशक डा० आनन्द सुमन ने २४ २५ २६-२७ दिसम्बर को सिंगाही में अनेक सभाओं में उपदेश दिये तथा आर्य समाज की उपयोगिता बताई उनके प्रभाव से सिंगाही नगर के प्रबुद्ध नागरिकों ने आर्य समाज की स्थापना की।

श्री शिव कल्याण आर्य को समिति का संयोजक मनोनीत किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का वार्षिक निर्वाचन

२७-१२-८७ को बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री बटुकृष्ण बर्मन एडवोकेट उपप्रधान श्री फूलचन्द आर्य श्री मुल्कराज मल्होत्रा श्री जनकलाल गुप्ता श्री जमीलाल आर्य एवं श्री सत्यपालसिंह तथा मन्त्री श्री जगदीश प्रसाद शुक्ल तथा ६ उपमन्त्री एवं कोषाध्यक्ष श्री नुबहाल आर्य चुने गए।

निर्वाचन

—नूतन गठित आर्यसमाज मधोवा पोस्ट छतरास तेहसील पट्टी जिला प्रतापगढ़ का निर्वाचन निम्न हुआ। प्रधान श्री कन्हैयालाल आर्य मन्त्री श्री शिव कुमार निर्वाचित हुए।

—आर्यसमाज जमालपुर मुंगेर बिहार के निर्वाचन में श्री महादेवप्रसाद यादव प्रधान व श्री हरिहर प्रसाद मन्त्री चुने गए।

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा रामपुर उत्तर प्रदेश के निर्वाचन में प्रधान श्री रामस्वरूप आर्य विशारद तथा मन्त्री श्री महेन्द्र प्रतापसिंह आर्य चुने गए।

—आर्य समाज नेमदारगंज नवादा (बिहार) के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री नन्दलाल साहु व मन्त्री श्री रवीन्द्र प्रसाद निर्भय चुने गए।

स्वामी श्रद्धानन्द के बताए मार्ग पर चलें

नई दिल्ली १९ जनवरी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि महान स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द ने न केवल दलितोद्धार समाज सुधार के लिए अद्वितीय कार्य किए थे अपितु गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर हिन्दी एवं आर्य संस्कृति का भी प्रचार प्रसार किया था।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती आर्य समाज बोट क्लब द्वारा आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर बोल रहे थे।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल महामन्त्री श्री सूर्यदेव मुख्य अतिथि श्री जयप्रकाश आर्य बोट क्लब के प्रधान श्री रामशरण दास आर्य आदि ने स्वामी श्रद्धानन्द की सेवाओं का स्मरण करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की एवं उनके बताये मार्ग के अनुसरण करने का अनुरोध किया। उल्लेखनीय है कि गत दस वर्षों से भोजनावकाश समय में बोट क्लब पर प्रतिदिन सभा सत्संग का आयोजन किया जाता रहा है।

आर्यसमाज लातूर में योग एवं आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
डा० देवव्रत का महाराष्ट्र भ्रमण सफलतापूर्वक सम्पन्न

लातूर। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उपप्रधान संचालक डा० देवव्रत व्यायामाचार्य लातूर आर्यसमाज के तत्वावधान में १० जनवरी से प्रतिदिन २ सत्र योग शिविर के जिसमें १२५ अभ्यार्थी प्रशिक्षण ले रहे हैं सफलता पूर्वक संचालन कर रहे हैं।

सायकाल आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर चलाते हैं जिसमें ४५ युवक योजनानुसार प्रशिक्षण प्राप्त कर कर रहे हैं। २० जनवरी को समापन समारोह होगा और इसके बाद डा० देवव्रत कलकत्ता चले जायगे।

डा०देवव्रत २५ फरवरी के करीब दिल्ली पधारेंगे। तब पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, पंजाब आदि में शिविरों का संचालन करेंगे। स्मरण रहे इस समय सारे देश में अनेक शिविर आयोजित किये जायगे।

जुल्म ना होने देंगे

नारी की पूजा करो, कहते चारों वेद।
महा मूढ माने नहीं, ये है भारी खेद॥
　ये है भारी खेद, "जगत जननी है नारी।"
　राम, भरत, हनुमान, कृष्ण की है महतारी॥
जो बच्चों को महावीर, बलवान बनाती।
दुर्गा बनकर युद्ध, क्षेत्र में तेग बजाती॥
　अभिमन्यु पर किया, जिन्होंने था गुणगाना।
　दयानन्द सा पूत, जिन्होंने गोद खिलाया॥
क्यों फिर उनको नर्क द्वार बतलाया जाता।
पग की जूती समझ, उन्हें ठुकराया जाता॥
　क्यों जलवों में उन्हें, जलाया जाता जाता।
　आर्यवर्त में रही, वह क्यों उलटी गंगा॥
करते हैं हम प्रण, जुल्म ना होने देंगे।
मां बहिनों को प्राण, व्यर्थ ना खोने देंगे॥

सभी दुष्ट मारे जायेंगे

सती काण्ड ने कर दिया, "दिवराला" बदनाम।
हुआ सती का अन्त में, सचमुच बद अन्जाम॥
　सचमुच बद अन्जाम, गए सब पकड़े पापी।
　मानवता के शत्रु, दुराचारी, सन्तापी॥
दीख रहा है साफ, नहीं बचने पायेंगे।
नन्दलाल कह 'दुष्ट सभी मारे जायेंगे।"

—पं० नन्दलाल "निर्भय" भजनोपदेशक
ग्राम पो० बहीन (फरीदाबाद)

आर्यसमाज की गतिविधियां

आर्य वीर दल अलीगढ़
कार्यकर्ता सम्मेलन

अलीगढ़ जिले के आर्य वीर दल मण्डल समिति के अन्तर्गत कार्यकर्ता शिविर दिनांक १४ से १६ फरवरी ८८ तक स्थान मातृ मन्दिर भवन जय महल के सामने सासनी गेट आगरा रोड अलीगढ़ पर होगा। २६ जनवरी से १० फरवरी तक तक प्रदर्शनी में आर्य वीर दल कार्य करेगा। जिसमें महर्षि दयानन्द चित्रावली तथा वैदिक साहित्य विक्रय हेतु उपलब्ध रहेगा।

आगर मे आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

दिनांक २४ दिसम्बर से २८ दिसम्बर तक ८७ आर्य वीर दल का जिला प्रशिक्षण शिविर वैजनाथ महादेव आगर मे सम्पन्न हुआ। जिसमे मालवा सहित १२ नगरो के १०० प्रशिक्षणार्थियो ने प्रतिनिधित्व किया। शिविर के प्रशिक्षार्थियो को मार्गदर्शन हेतु मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रान्तीय सचिव श्री यशपालजी आर्य भी पूरे समय शिविर में उपस्थित रहे। शिविरार्थियों ने शारीरिक, बौद्धिक आध्यात्मिक एवं सैनिक शिक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री मेहलाल जी श्री जैन (संयोजक) ने वर्तमान समय में आर्य समाज को सुदृढ़ बनाने की महती आवश्यकता पर जोर दिया। क्षेत्र के सांसद श्री बापूलाल जी मालवीय ने प्रशिक्षार्थियो को शाश्वत एवं बौद्धिक उन्नति के लिए आह्वान किया।

नगर आर्य समाज के अध्यक्ष श्री ... ने व्यायाम प्रदर्शन किया तथा संचालन श्री गोरधनलाल जी पलीवाल ने किया।

शिविर मे वेद वेदांग गुरुकुल चोपा के उपअधिष्ठाता श्री ... सरस्वती भी पूरे समय उपस्थित रहे। नगर के शिविरार्थियो का पद मार्च प्रमुख मार्गो से निकाला गया जिसमे करीब २०० आर्य वीरो ने भाग लिया।

—कन्हैयालाल अजमेरा
एडवोकेट आगर (मालवा)

निर्वाचन

आर्य समाज झालरा पाटन नगर (राजस्थान) के वार्षिक निर्वाचन मे प्रधान श्री गोवर्धनलाल शिल्पकार व मन्त्री श्री ओमप्रकाश राठौर चुने गए।

आर्य समाज मुगलसराय वाराणसी के वार्षिक चुनाव मे प्रधान श्री शंकरलाल पोद्दार व मन्त्री श्री आशीष कुमार गोस्वामी चुने गए।

आर्य समाज बगही बघम्बरपुर (चम्पारण) के वार्षिक चुनाव मे प्रधान श्री सिंहासन प्रसाद तथा मन्त्री श्री सुनील कुमार कुशवाहा चुने गए।

आर्य समाज शक्ति नगर (मिर्जापुर) के वार्षिक निर्वाचन मे प्रधान श्री अजयकुमार श्रीवास्तव व श्री ... सिंह मन्त्री चुने गए।

संथाल परगना जिला आर्य सभा मधुपुर (बिहार) के चुनाव मे अध्यक्ष श्री ... वानप्रस्थ मन्त्री श्री तारकेश्वर प्रसाद चुने गए।

आर्य समाज आर्यपुरा मण्डी सब्जी मण्डी दिल्ली
देशभक्ति गीत प्रतियोगिता

आर्यसमाज आर्यपुरा सब्जी मण्डी दिल्ली द्वारा २४ जनवरी प्रातः १० बजे देशभक्ति गीत व भाषण प्रतियोगिता श्री जगदीश प्रसाद मित्तल की अध्यक्षता मे होगी। डा० धर्मपाल प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ध्वजारोहण करेंगे।

आर्य समाज लाडनूं (राजस्थान)
शोक प्रस्ताव

आर्य समाज लाडनूं (राजस्थान) के स्तम्भस्वरूप श्री हरिश्चन्द आर्य के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित कर आर्य समाज ने उनके निधन की बडी क्षति बताया।

श्री रणवीर भाटिया (लुधियाना) को शोक

आर्य समाज दाल बाजार (लुधियाना) के कर्मठ कार्यकर्ता श्री रणवीर भाटिया की धर्मपत्नी श्रीमती रमेशरानी का स्वर्गवास होने से आर्य समाज की बहुत क्षति पहुंची है।

श्री इन्द्रराज जी
प्रधान उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा

डा० धर्मपाल जी
प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

समालोचना

संस्कृतामृतम् (मासिकम्)

प्रकाशन कार्यालय १४१८ बाजार गुलियान दिल्ली ११०००६
प्रधान सम्पादक श्री रामरत्न शास्त्री साहित्याचार्य एम० ए०
वार्षिक शुल्क २०) मात्र

संस्कृत भारतियो की सांस्कृतिक व धार्मिक भाषा है। राजधानी से अनेक भाषा के पत्रो का प्रकाशन होता है जब कि संस्कृतामृत देवभाषा की एकमात्र नियमित पत्रिका है। जिसकी सरल ज्ञान वर्धक भाषा से संस्कृत के प्रति रुचि बढती है। इस साहसिक प्रयोग के लिए श्री रामरत्न शास्त्री प्रशंसा के पात्र हैं।

आज जब कि संस्कृत भाषा पर देश व्यापी संकट छाया है संस्कृत प्रेमियो का कर्तव्य है कि वह इस पत्रिका के द्वारा अपने परिवारो मे देव भाषा के प्रति रुचि बढावे ताकि पत्रिका और अधिक उपयोगी बन सके।

(पृष्ठ १ का शेष)

क्या सत्ता की दौड मे बेलगाम व उसूल तोडने वाले राजनीतिज्ञो को कभी इस ओर विचारने का अवकाश मिलेगा। कि वे देखें आज के युवक का चरित्र बल क्यो गिर रहा है। राष्ट्र की बडी से बडी योजनाऐं भी क्यों असफल होकर रह जाती है।

हम गणतन्त्र दिवस की चकाचौंध मे कही मौलिक प्रश्नो से मन हटाकर आकाश पुष्प की तलाश मे हो तो नही दौड रहे हैं।

आज चाणक्य की आत्मा इस सवाल का जबाब चाहती है हमारे पास स्वराज्य की रक्षा के लिए चरित्र बल कितना है। संकटो का तो पहाड हमारे मस्तकों पर झूल रहा है। कैसे समस्याओ का समाधान होगा प्रत्येक विचारक को बडी गम्भीरता पूर्वक मनन कर राष्ट्र की समस्याओ के समाधान मे तन-मन-धन से जुट जाना चाहिए तभी हमारा गणतन्त्र दिवस मनाना सफल हो सकेगा।

आर्य समाज : लाला लाजपतराय के शब्दो में

१९०९ मे देश निकाले से वापिस आने के बाद जो व्याख्यान मैंने लाहौर आय समाज के प्लेट फाम से दिया था उसमें मैंने कहा था कि मेरे जीवन म जो हिस्सा खराब है, वह मेरा अपना है वह या तो मुझको विरासत में मिला है मेरे पूवज म के सस्कारो का फल है। लेकिन मेरे जीवन का जो हिस्सा अच्छा व और लोगों मे प्रशसा के या य है वह सब आय समाज की बदोलत है आयसमाज ने मुझे वैदिक धमसे प्यार करना सिखलाया। आयसमाज ने मुझे प्राचीन सभ्यता का मान करना सिखाया। आय समाज ने प्राचीन आर्यो से मेरा सम्बन्ध जोड़ा और मुझे उनका सेवक और भक्त बनाया।

आय समाज ने मुझे अपनी जाति से प्यार करना सिखलाया था आय समाज ने मेरे अन्दर स याय और स्वत त्रता की रूह फूकी। आय समाज ने मुझे सगठित करने का पाठ सिखलाया। आय समाजा ने मुझे यह शिक्षा दी कि समाज धम और देश की पूजा और सेवा करनी चाहिए। और उसकी सेवा मे जो बलिदान करता है और दुख पाता है उसे स्वग का राज मिलता है। मतलब यह है कि मैंने आय समाज मे रहते हुए तमाम सबक आयसमाज से सीखे। आय समाज के क्षत्र मे मैंने अपने प्यारे मित्र बनाए। आय समाज के क्षत्र में ही मैंने सावजनिक जीवन मे पवित्रता के नमूने देखे। आय समाज के उपकार मेरी गदन पर अनगिनत और असीम है। अगर मेरा बाल बाल भी आर्य समाज पर निछावर हो जाए तो भी मैं उसके उपकार से उऋण नही हो सकता।

अगर मैं आय समाज मे दाखिल न होता तो ईश्वर ही जाने क्या होता लाला जी ने लिखा है कि मेरे पिता नुमाज नियमित पढते थे। कुरान कई बार उन्होंने पढाया है यह आश्चय ही है कि वे क्यो मुसलमान नही बन सके। मगर यह सच है कि मैं आज जो कुछ हूँ वह न होता।

लाला जी की आत्म कथा से

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि० सहारनपुर (उ० प्र०)

आ फरवरी
तक सम विद्वान
सन्यासी व भजन पद

आय समाज औरैया (इटावा) का हीरक जयन्ती समारोह

आय समाज औरैया (इटावा) अपने वार्षिकोत्सव के ७५ वष पूण करके १६ से २१ फरवरी तक हीरक जय ती समारोह सोल्लास मनाने जा रहा। वेद पारायण यज्ञ व अनेक सम्मेलनो का आयोजन किया जाएगा। उच्च कोटि के विद्वान स यासी व भजनोपदेशक पधारगे।

आर्य समाज बगही बघम्बरपुर (चम्पारण) नई समाज स्थापित

श्री ध्रुव जी शास्त्री के उपदेशो से प्रभावित आय समाज प्रमियो द्वारा विधिवत् समाज की स्थापना व निवाच किया गया।

आर्य समाज गगपुर (पीलीभीत) आय सम्मेलन व यौगिक प्रदर्शन

आय समाज गगपुर (पीलीभीत) मे ९, १० जनवरी को विधायक श्री तेजबहादुर की अध्यक्षता मे विशाल आय सम्मेलन हुआ। यज्ञ व वेद प्रचार के स थ ब्रह्मचारी विश्वपाल जय त का यौगिक शक्ति प्रदशन हुआ। हजारो की सख्या मे जनता आय जग रो से प्रभावित हुई। चित्रकार दशनदेव शास्त्री के प्रयास सराहनीय रहे

स्वामी ... ० ओरिय न्ट नई दिल्ली व मुद्रित ... ओमप्रकाशन शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा महर्षि दयान द भवन नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

वर्ष २२ अंक ... | फरवरी १९८८ ... | वार्षिक मूल्य ...

पंजाब में आतंकवादियों की गतिविधियां तेज

हत्याओं का सिलसिला जारी : अकाली नेता खालिस्तान समर्थक

सभा प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती का प्रधानमन्त्री को पत्र

सेवा मे
माननीय श्री राजीवगाधी
प्रधानम त्री भारत सरकार
नई दिल्ली

सादर नमस्ते !

इस पत्र के साथ दनिक हिन्दुस्तान दिनाक २७ जनवरी १९८८ मे प्रकाशित समाचार उग्रवादियो ने खालिस्तान का नक्शा जारी किया विषयक कटिग सलग्न है

इस लेख के अनुसार

(१) खालिस्तान के नक्शे मे जम्म का मीर को पाक अधिकृत क्षत्र दिखाया गया है शेष मव ख लिस्तान दिखाया गया है

( ) दिल्ली प नाम दशमेश नग चण्ड ग का नाम नव तनगर और दिग गाधी अन ा टोर ह ई प्रन्न को बअ मिह एवं ई अन्न क रूप म दिखाया गया है

सु न व रगह का म ाव्दा फाम ा ह रग गया है

४ अपत्ति जनक पोस्टर छ पकर नान वा ा को वत अन ना ी के रूप मे दर्शाया गया है

) अमृतसर स ण म द म आनन्द नि ोन न व लि ान झण े के नार के साथ गणन्त्र दि मनाया और इसी अव सर पर खालिस्तान का नक्शा ा ी किय

पज मे राष्ट्रपति शासन के बावजूद आतकवादियो की गति विधियो म नो मी ही ई है अर ाज ा ि ि ब जा ा है स ी अ ा नेता चाहे ह वादल हो या अ य खालिस्तान समथक है और बरनाला सरकार तथा अदलती कार वाही से जो आतकवादी जेलो से छोड गए है वह सब पुन इस इस काय मे लग गए है।

१७ जुलाई, १९८६ को आयसमाज के एक शिष्टमण्डल के साथ हमने आपसे मुलाकात की थी और पजाब की परिस्थितियो के सम्बन्ध मे आपको ज्ञापन भी दिया था। आपसे विस्तृत चर्चा भी हुई थी और आपने हमारे सुझावो पर विचार करने का आश्वासन भी दिया था। हमारी मुख्य माग निम्न प्रकार थी —

१ पजाब को ५ वष के लिए सेना के हवाले कर दिया जावे और पजाब मे आपात स्थिति घोषित की जावे।

२—पाकिस्तान के साथ लगी पूरी सीमा पर सुरक्षा पटटी का निर्माण किया जावे।

३—सीमा क्षत्रो मे भूतपूव सैनिको को बसाया जावे।

अत भारत सरकार से पुन हमारी माग है कि पजाब को तुरन्त ५ वष के लिए सेना के हवाले किया जावे और देश के किसी भी भाग मे जहा अ तकवादी तथा उग्रवादी गतिविधिया देश की अखण्डता व एकता के विरुद्ध चल रही है वहा आपात्कालीन स्थिति लगा दी जावे। ससद मे आपका प्रबल बहुमत है यदि आप यह काम इस समय न करा सके तो भविष्य मे देश को इसकी बडी भारी कीमत चकानी पडगी।

आशा है आप हमारे इस निवेदन पर विशेष ध्यान देकर उचित कायवाही कर अनुगहीत करगे। शुभकामनाओ सहित

भवदीय
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा प्रधान

"तमस" टी० वी० सीरियल भ्रष्ट अनगल व मन घडन्त है

सार्वदशिक सभा प्रधान का वक्तव्य

इ ग ी जनवरी सावदशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अ ा एक वक्तव्य मे तमस सीरियल को भ्रष्ट असम्बद्ध और अनाप वत ते हुए इस पर प्रतिब ध लगाने की माग की है।

स्वामी जी ने अपने वक्तव्य मे कहा कि यह सीरियल हिन्दू स ज ा अपनी सस्था आयसमाज जो भ ा ीय स कृति और सभ्यता की उ नायक है को बदनाम करने के लिए एक गहरा षडय त्र है आयसमाज मन्दिर मे यज्ञ के बाद मुर्गा काटते हुए दिखाया जाना एक जघन्य पाप और झूठी कल्पना है जिससे सारे आय जगत् मे रोष है। टी०वी० सरकारी त त्र है तथा सरकार द्वारा इसे दिखाना और भी खेदजनक है। यह स्पष्टत उनकी भावनाओ से खिलवाड है। सरकार देश का इतिहास जिस प्रकार का लिखवा रही है उसी का यह एक नमूना है।

स्वामी जी ने कहा कि हिन्दू मुस्लिम सौहाद इतिहास को झुठलाने से स्थापित नही किया जा सकता। विभाजन एक ऐति हासिक सत्य है तथा उसकी माग मुस्लिम लीग ने की थी। यह भी सत्य है परन्तु इस सीरियल में यह दिखाया गया है कि विभाजन के लिए हिन्दू उत्तरदायी हैं तथा इसके कारण जो रक्तपात हुआ वह भी हिन्दुओ ने किया। सीरियल का जो उददेश्य बताया गया है उसका परिणाम उससे एक दम उलटा हो रहा है।

श्री स्वामी जी शीघ्र ही इस सम्बन्ध मे केन्द्र मन्त्रियो से मिलगे।

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

ये समाधियां, बनाम कब्रिस्तान

—चन्द्रवती सेठी शास्त्री

जब मकान या कोई पवित्र मन्दिर गिर जाता है तो मलबे को इधर-उधर कचरा समझ कर फेंक दिया जाता है क्योकि गिरने के पश्चात उसका कोई महत्व नही रहता इसी प्रकार जब आत्मा शरीर को छोड देती है तो निर्जीव शरीर भी मलबे की तरह बेकार प्रतीत होता है, बेकार गन्दा और अशुद्ध जिसको छूने से नहाना पड़ता है। इसलिए कई लोग अपने अपने विश्वास के अनुसार इसे गाड देते हैं कई जला देते है और कई बहा देते हैं मेरा हृदय तो चाहता है कि यदि इस मृतक शरीर को पशु पक्षियों के निमित्त जगल मे फेंक दिया जाए तो कितना उपकार हो। पर मेरा दिमाग इससे सहमत नही होता क्योकि इससे दुर्गन्ध फैलेगी और वातावरण दूषित होगा न मालूम यह बात किस सिरफिरे व्यक्ति के मन मे आई या किन व्यक्ति पूजक या मूर्तिपूजक अन्ध भक्तों को सूझी कि मृतक के शरीर मलबे के फलो हड्डी राखादि को कलशो मे भरकर जगह जगह ले जाया जाए, और नदियो तथा जगह जगह के वायु मडल और वातावरण को दूषित किया जाए इसके अतिरिक्त धन और समय का अपव्यय हो, समाधियो के नाम पर कब्रिस्तान कायम करके अन्ध परम्परा को जन्म दिया जाए क्या जब कोई पवित्र मन्दिर गिर जाता है तो क्या उसकी कोई पूजा करता है। मुझे भय है कि ये राजघाटादि समाधियां हमारे देश मे कभी कब्रिस्तान का, या नये ढग की मूर्ति पूजा का रूप धारण न कर ले।

यू तो मैं अपने पूज्य देशभक्तो, सेवको और बलिदानी महापुरुषो तथा देवियो की पूजा करती हूँ देवी इन्दिरा की मेरे हृदय मन्दिर मे परम पवित्र प्रतिमा है। भगवान स्वरूप राष्ट्रपिता गाधी, युगस्रष्टा नेहरू लौह पुरुष शास्त्री पटेलादि नेता हमारे राष्ट्र मन्दिर के परम आराध्य देवता है। मेरी उनमे अगाध और अनन्य भक्ति है पर मझमे उनके निर्जीव प्राणहीन शरीर फलव राख पूजा मात्र एवं और दीपदानादि नही देखे जाते यदि वे जीवित होते तो मेरा विश्वास है कि वे भी मेरे विचारो का समर्थन करते मेरा अन्तःकरण मुझे मजबूर करता है कि यदि अपने विश्वास के अनुसार इस प्रथा के विरोध मे आवाज न उठाऊ तो अपने आर्य धर्म एकेश्वर पूजावाद, और पत्र मिट्टी नबार्गी अन्य सस्था के प्रति न केवल विद्रोही विश्वासघाती और अपराधिनी सिद्ध होऊगी बल्कि पाप भागिनी भी बनूगी।

इस लेख के लिखने का मेरा यह तात्पर्य नही कि पाठक मेरे विचारो का समर्थन अनुमोदन ... अनुसरण कर मेरा तात्पर्य यह है कि लोग सोचें कि मेरा ऐसा सोचना ठीक या युक्ति सगत है। मुझे विश्वास है कि मेरे विचार विरोधी पाठक मेरी स्पष्टवादिता के लिए मुझे क्षमा करेंगे।

सार्वदेशिक सभा का नया प्रकाशन

(१) वेद व इस्लाम पर प्रभाव लेखक प० रामचन्द्र देहलवी	मूल्य	१)
(२) ... मजरी लेखक—स्वामी ब्रह्मुनि जी महाराज	"	१२)
(३) प० लेखराम जी का चित्र	,	४)

डाक खर्च ६) अलग होगा।

चित्र वी० पी० से नही भेजा जाएगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली २

श्रीमती कमलेश रानी का दुःखद निधन

दिल्ली, २९ जनवरी १९८८ आर्यसमाज दीवान हाल के प्रतिष्ठित सदस्य श्री ओकारनाथ शालवाले (सुपुत्र श्री रामगोपाल शालवाले वर्तमान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती) की धर्मपत्नी व कर्मठ युवक श्री मजय कुमार की माता श्रीमती कमलेश रानी का आज अपराह्न मे ४५ वर्ष की आयु मे देहान्त हो गया। आप अपने पीछे २ पुत्र व २ पुत्रियां छोड गई हैं श्रीमती कमलेश मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध आर्यसमाजी श्रीवीरसेन दुसाज की पुत्री थी। उनकी दोनो पुत्रियो का विवाह हो चुका है। पुत्र श्री मजय व अजय अभी अविवाहित है। एक आर्य परिवार की यह अपूरणीय क्षति है।

आर्यसमाज दीवानहाल द्वारा शोक प्रस्ताव मे प्रभु से दिवगत आत्मा की सद्गति व शोक मग्न परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

यह देश धर्म वरो का है
यह देश कर्म वीरो का है

जब जब हमने पन्ने उठाये अपने भू इतिहास पढ़े।
दिया दधीचि ने अपना अग उठा तराजू स्वय चढ़े।
शरणागत की रक्षा करके अभय दान अर्पण करके।
स्वर्णाक्षरो मे नाम लिखाया मर्यादा तर्पण करके॥
यह आत्म दान वीरो का है।

रण स्थल मे दमकी जब रण उठ मोना ताड़ा।
घिसट घिसट कर पत्थर लाए दान त ड कण का जोड़ा॥
दिया विप्र को दान मगर अपना प्रण कभी नही छोड़ा।
अन्त समय में कष्ट उठाए लेकिन नहा नियम तोड़ा॥
यह अध्य दान वीरो का है॥

जब प्रताप की नही बटो भूख से होश गवा बठी
सारे सनिक भूख पूरित अनत ओर गव बैठा॥
भामा शाह ने थैली खोली फिर से आशाए जागी।
फिर से नई चेतना जागी आशाए फिर से लौटी।
यह दान दान वीरो का है॥

इसी शृखला मे बध कर कितने वीरो ने प्राण दिए।
जहर पिये फासी मे लटके निज पुत्रो के दान दिये।
वीर वरागी बाल हकीकत दयानन्द ऋषिवर ज्ञानी।
लेखराम, गुरुदत्त, आरतो श्रद्धानन्द से बलिदानी॥
यह देश धर्म वीरो का है॥

कितने नाम गिनाऊ कब तक वाणी को विश्राम नही।
कितने वीर असख्य अनगिनत, कैसे लिखू विराम नही॥
केवल एक लालसा मन मे, भारत को स्वर्णिम कर दू।
कुण्ठा और निराशा भागे, सुख तल मे अग्रिम कर दू॥
यह देश कर्म वीरो का है॥

—सावित्री रस्तोगी, जवाहर नगर मेरठ

सार्वदेशिक सभा का निर्णय

अन्तरंग सभा : दिनांक २४ जनवरी १९८८
समय : प्रातः १०-३० बजे से
स्थान : आर्यसमाज मन्दिर दीवानहाल दिल्ली

एजेण्डा का विषय सं० १४ (निश्चय संख्या १४) :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशों को नहीं मानने और उन आदेशों का उल्लंघन करने, तथा अनुशासन भंग करने के अपराध में १२ जून १९८६ की अन्तरंग सभा की बैठक में पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र जी के विरुद्ध निम्न कार्यवाही करने का निश्चय किया गया था—

'श्री वीरेन्द्र जी को अनुशासन भंग करने के आरोप में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पद से पृथक करते हुए आगामी ३ वर्षों के लिए आर्य समाज के किसी भी पद के लिए चुनाव के अयोग्य घोषित किया गया था। निर्णय के क्रियान्वयन का अधिकार सभा प्रधान जी को दिया गया था।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने पंजाब की विशेष परिस्थितियों को दृष्टिगत करते हुए श्री वीरेन्द्र जी के प्रति उदारता का व्यवहार करते हुए अंतरंग सभा के निर्णय को कार्यान्वित नहीं किया और श्री वीरेन्द्र जी को अपने व्यवहार को सुधारने के लिए पर्याप्त समय दिया।

श्री सभा प्रधान जी द्वारा प्रदत्त इस पर्याप्त समय का श्री वीरेन्द्र जी ने दुरुपयोग तथा निरन्तर सभा के आदेशों का उल्लंघन किया। साथ ही दिनांक २६-९-८६ को श्री वीरेन्द्र जी की लिखित सहमति के आधार पर सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विवाद के प्रत्येक पहलू पर विचार करने हेतु अपना निर्णय देने के लिए नियुक्त किया गया। श्री वीरेन्द्र जी ने उनके निर्णय को अक्षरशः पालन करने का लिखित रूप से आश्वासन भी दिया।

वरिष्ठ उप प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने यथोचित रूप से विवाद के विषय में सभी सम्बन्धित पक्षों को श्री वीरेन्द्र जी के साथ अपने पक्ष को रखने के लिए पूर्ण समय भी प्रदान किया। फिर दि० ३० ९ १९८६ को अपना निर्णय (एवार्ड) दिया। श्री वीरेन्द्र जी अपने आश्वासन का पालन न करते हुए निरन्तर रूप से सभा के आदेशों व अनुशासन को न मानकर सदा अनुशासन भंग करते रहे और अदालत की कानूनी कार्यवाहियों में उलझाये रहे। एक वर्ष के लम्बे समय तक निरीक्षण के उपरान्त भी जब श्री वीरेन्द्र जी अपने अनुचित कार्यों से बाज नहीं आये तो अन्तरंग सभा के निर्णय के पश्चात सभा प्रधान जी ने २४ ९ १९८७ को निम्न आशय का पत्र श्री वीरेन्द्र जी को भेजा।

"सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा दि० २० सितम्बर १९८७ को आर्य समाज मन्दिर दीवानहाल दिल्ली में पारित प्रस्ताव के अनुसार सभा प्रधान को यह अधिकार दिया गया है कि वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विभाजन सम्बन्धी आदेशों के उल्लंघन करने के जिम्मेवार व्यक्तियों को उचित दण्ड देने की व्यवस्था करें।

इस प्रस्ताव पर गम्भीरता पूर्वक विचार विमर्श करने के अनन्तर मैंने आपको निम्नलिखित तथ्यों पर दोषी पाया है।

१—आपने संयुक्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विभाजन सम्बन्धी २६ २७ अप्रैल १९७५ के मूल प्रस्तावों तथा सार्वदेशिक सभा द्वारा विभाजन के निर्णयों की खुली अवहेलना की है।

२—श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् द्वारा दिये गये फैसले (एवार्ड) के विरुद्ध कार्य किया है जबकि इस निर्णय को मानने के लिए आपने लिखित आश्वासन दे रखा था। इतना ही नहीं आपने उस फैसले को निष्प्रभावी बनाने के लिए प्रयत्न किये और उसे मानने से इन्कार भी किया है। तथा आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री डा० धर्मपाल जी को अपने ३ सितम्बर १९८७ के पत्र में स्पष्ट रूप से प्रकट किया है।

३—आपने न्यायालय में मुकदमें दायर करने भी बन्द नहीं किये।

४—आपने बराबर अनुशासनहीनता पूर्ण कार्य करके आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन की अवहेलना की है।

५—पंजाब सभा के विभाजन सम्बन्धी प्रस्ताव पर सार्वदेशिक सभा १० जुलाई १९७५ को दिए गए आदेश और पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव द्वारा दिए गए निर्णय के विरुद्ध आपने आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की अनुमति के बिना स्वेच्छाचारिता करते हुए हरिद्वार में हरिराम इण्टर कालेज तथा लक्कर आश्रम की जमीनें बेचने का कार्यक्रम प्रारम्भ कर रखा है, जबकि विभाजन के निश्चय के अनुसार पंजाब, हरियाणा और दिल्ली की राजकीय सीमा से बाहर जो भी सम्पत्ति तथा संस्थाएं हैं उन पर तीनों प्रतिनिधि सभाओं का समान अधिकार है।

६ सार्वदेशिक सभा के विगत २२ जून, १९८६ के प्रस्ताव तथा २० सितम्बर १९८७ के प्रस्ताव की छाया में तथा उपरोक्त तथ्यों को देखते हुए आपको आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पद से हटाने के अतिरिक्त मेरे पास और कोई विकल्प नहीं रहा। साथ ही आप आर्य समाज से सम्बन्धित किसी भी संस्था के चुनावी पद के लिए अयोग्य घोषित किये जाते हैं।

अतः सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा तथा सभा के विधान द्वारा प्रदत्त अधिकार से आपको आज दिनांक २४ सितम्बर १९८७ से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (जिसका कार्यालय गुरुदत्त भवन कृष्णपुरा चौक जालन्धर है) के प्रधान पद से मुक्त किया जाता है और आपके स्थान पर सभा के वरिष्ठ उपप्रधान सभा के आगामी चुनाव तक कार्यभार सम्भालेंगे। आपने बार-बार हमारे अनुरोध की अवहेलना की है, अतः विवश होकर पांच वर्षों के पश्चात् उपरोक्त निर्णय लेना पड़ा है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान

किन्तु उपरोक्त आदेश पत्र का भी श्री वीरेन्द्र जी ने उल्लंघन किया।

अतः यह अन्तरंग सभा प्रधान जी के उक्त पत्र की सम्पुष्टि करते हुए यह आदेश देती है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की साधारण सभा दिनांक ४ अक्टूबर १९८७ में श्री वीरेन्द्र जी द्वारा सार्वदेशिक सभा के आदेश के विरुद्ध प्रधान पद के लिए खड़ा होना अवैध कार्य था। ऐसी अवस्था में श्री योगेन्द्र पाल सेठ ही प्रधान पद के लिए एकमात्र प्रत्याशी थे और प्रधान निर्वाचित हुए। अतः प्रधान के रूप में उनका निर्वाचन वैध है और उनके द्वारा बनी पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा को मान्यता दी जाती है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
नई दिल्ली

भगवानदेव शर्मा के सम्बन्ध में

सार्वदेशिक सभा की २४-१-८८ की अन्तरंग द्वारा निर्णय

निश्चय संख्या ८

प० रामगुरु शर्मा का पत्र दिनांक २८-१२-८७ पर विचार का विषय प्रस्तुत होने पर पत्र पढ़कर सदन को सुनाया गया। श्री भगवानदेव शर्मा द्वारा सभा प्रधान जी को भेजे गये पत्र दिनाक ४-११-८७ और १३-११-८७ भी पढ़कर सदन को सुनाए गए। इनके अतिरिक्त श्री भगवानदेव शर्मा के सम्बन्ध में डा० गोविन्दराय चौधरी और श्री मदनसेन चोपड़ा के पत्र भी पढ़े गए। सदन ने गम्भीरता पूर्वक इस मामले पर विचार किया। प० रामगुरु शर्मा, श्री जयनारायण अरुण, प्रो० शेरसिंह, प० बटुकृष्ण वर्मन, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, श्री छोटूसिंह एडवोकेट तथा पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव आदि ने अपने अपने विचार प्रकट किये।

सदन ने सर्वसम्मति से प्रकट किया कि भगवानदेव शर्मा ने अनुशासन-हीनता की पराकाष्ठा कर छल-कपट युक्त व्यवहार द्वारा सार्वदेशिक सभा एव सभा प्रधान के विरुद्ध असत्य, मनगढ़त पत्र लिखकर सार्वदेशिक सभा को दिया एव इस पर सार्वदेशिक सभा द्वारा विचार होने से पूर्व ही उस पत्र की प्रतियां सभा के सदस्यों को ही नहीं अपितु सारे देश की समाजो एव आर्य समाचार पत्रों में प्रकाशित करने हेतु प्रसारित की। कुछ पत्रों में इसका प्रकाशन भी हुआ। इतना ही नहीं अपितु इन पत्रो को उसने देहली प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियो को भी समाज के सर्वोच्च संगठन को बदनाम करने की दृष्टि से भेजा। इस प्रकार उक्त पत्रो के माध्यम से सार्वदेशिक सभा द्वारा किये गये सैकड़ो सेवा कार्यों को धूलिसात कर आर्यसमाज की उज्जवल छवि को नष्ट करने का दु.साहस किया है।

इससे पूर्व भी भगवानदेव शर्मा को ऐसे ही अनुशासन हीन कार्यों के कारण १५-७-७१ की अन्तरग सभा द्वारा आर्य समाज से निष्कासित करने का निर्णय किया गया था। किन्तु भगवानदेव शर्मा द्वारा खेद व्यक्त करने तथा यह लिखित मे विश्वास दिलाने पर कि वे भविष्य मे ऐसी गलती नही करेंगे, उन्हें क्षमा किया गया था। इस बार पुन अपनी दूषित मनोवृत्ति के कारण उसने सगठन की छवि को धूमिल करने का घोर अपराध किया है। डा० गोविन्दराय चौधरी एम० एस० सी० संस्थापक प्रधानाचार्य स्वामी श्रद्धानन्द कालेज द्वारा सभा प्रधान जी के नाम लिखे गए उनके २२-११-८७ के पत्र से भगवानदेव शर्मा के चारित्रिक दोषों को दृष्टिगत कर यह स्पष्ट है कि वह आर्य समाज के सगठन हेतु कलक है।

अत भगवानदेव शर्मा को चरित्रहीनता एव आर्यसमाज के निर्मल चरित्र की छवि को धूमिल करने तथा सगठन के हितो को आघात पहुँचाने तथा पहले भी ऐसा लिखित आश्वासन देने के बाद कि वे भविष्य में ऐसी गलती नहीं करेंगे, किन्तु उन्होंने पुन यह दूसरी बार अनुशासनहीनता एव सगठन को बदनाम करने का कार्य किया है। अत. भगवानदेव शर्मा को आर्य समाज की प्राथमिक सदस्यता से पृथक किया जाता है।

सैकड़ों वर्षों की गुलामी के बाद स्वतन्त्रता का बीज कब और किसने बोया

स्वतन्त्रता का बीज भारत में महर्षि दयानन्द जी ने सर्वप्रथम १८५४ में बोया था। ऋषि की जीवनी पढ़ने से पता चलता है कि १८४६ से १८५४ तक सारे भारत की तत्कालीन परिस्थितियों का अध्ययन किया और हजारों वर्षों की गुलामी को उखाड़ फेंकने की दृढ प्रतिज्ञा कर सार्वजनिक जीवन से लुप्त हो गये। १८५४ से पहले कहां थे क्या किया १८५७ के बाद कहां कहां रहे किन्तु बीच के इन तीन सालों का जीवनी से पता नहीं चलता। क्योंकि इन तीन सालों मे स्वतन्त्रता का बिगुल बजाने के लिये तांत्या टोपे, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, राव तुलाराम आदि राजाओं को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध युद्ध के लिये तैयार करते रहे। जिसके परिणाम स्वरूप अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध १८५७ का गदर हुआ जिसे ब्रिटिश सरकार ने अपने दमन चक्र से दबा दिया। किन्तु महर्षि द्वारा सुलगाई गई आग बुझ नही पाई। आग का शोला लोगो के दिलो में सुलगने लगा। कुछ दिनों के लिये राख रूपी काई की परत हवा के झोंको का इन्तजार करती रही। १८५७ से १८७५ तक महर्षि ने सारे देश में विचारिक क्रांति का शंखनाद फूका उस क्रांति को स्थाई रूप देने के लिये १८७५ में भारत की महानगरी बम्बई में आर्य समाज (१८५७ का बचा हुआ अग्नी का शोला) की स्थापना की प्रथम आवाज खुले रूप में ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश में लिपी बद्ध कर दिया। विदेशी राज्य चाहे कितना ही अच्छा क्यों ना हो अपने राज्य से अच्छा नही हो सकता। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़-पढकर देश के कोने-कोने से अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह की आग सुलगने लगी। इस विद्रोह से घबरा कर लंदन में गोरों की एक सभा हुई जिसमें मि० ह्यूम ने इस विद्रोह को असफल करने की जिम्मेवारी अपने ऊपर ली। मि० ह्यूम ने बागी भारतीयों की अन्दरूनी भावना (आवाज) को सुनने के लिये भारतीयों के लिये १८८५ (यानी आर्य समाज की स्थापना के दस वर्ष बाद) में कांग्रेस की स्थापना की ताकि इस मच से बुला बुला कर बागियों का पता लगाया जा सके और उन्हें कुछ को प्रलोभन से पदों से या सख्ती से दबाया जा सके। कांग्रेस की स्थापना आजादी लेने के लिये नहीं बल्कि गुलामी पर गुलामी की एक ओर परत चढाने के लिये की थी। हुआ भी ऐसा ही १८८५ से लेकर १९१४ तक प्रत्येक वार्षिक सम्मलनों के अध्यक्षीय भाषणों में ब्रिटिश सरकार की भूरी-भरी प्रसंशा की गई थी। १९१४ के बाद स्वामी श्रद्धानन्द लाला लाजपतराय आदि आर्य नेताओं ने मि० ह्यूम की असलियत को पहचाना और उनकी बदौलत १९१९ में महात्मा गाधी को असहयोग आन्दोलन पास करना पड़ा फिर क्या था। तांता लग गया भारत मां के आर्य सपूतों के बलिदानों का। जिनमें रामप्रशाद बिस्मिल चन्द्र शेखर आजाद भगतसिंह आदि जिनके कारण गोरी चमड़ी सफेद पड़ने लगी। एक दिन वह भी बचानी मुश्किल हो गई। आखिरकार १५ अगस्त १९४७ दिन पूंछ दबा कर भागना पड़ा।

आज हमारी जुम्मेवारी है इस आजादी को कायम रखने की है। सावधान फिर न इस धरती को लाल होना पड़े। माताओं के लाल बहनों के संदूर बच्चों का दूध छिनने ना पाये। आज देश के अन्दर ही देश के दुश्मन ताक लगाये बैठे हैं।

सीताराम आर्य
हिसार।

महर्षि का ब्रह्मचर्य सन्देश

डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम. ए. एल. टी. आर्य समाज गोरखपुर

सत्यार्थ प्रकाश एक ऐसा अमर ग्रन्थ है जिसने न केवल हिन्दुओं बल्कि विश्व के समस्त राष्ट्रों में एक नई चेतना और बौद्धिक परिवर्तन किया है। सत्यार्थ प्रकाश में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के सुधार एवं उद्धार का विवेचन किया है। राजनीति शास्त्र या नागरिक शास्त्र में बतलाया गया है कि व्यक्तियों से समुदाय बनते हैं और समुदायों से समाज और राष्ट्र में अन्तर नहीं। राष्ट्र भी नागरिक शास्त्र की दृष्टि से समाज से भिन्न कोई वस्तु नहीं। महामना मदन मोहन मालवीय ने राष्ट्र और राष्ट्रीयता का बड़ा प्रेरक और सुन्दर विश्लेषण किया है। वे कहते है—

राष्ट्र क्या है ? राष्ट्र के निवासियों का शरीर ही तो राष्ट्र है।

राष्ट्र क्या है ? राष्ट्र के निवासियों का मन ही तो राष्ट्र है।

राष्ट्र क्या है ? राष्ट्र के निवासियों की आत्मा ही तो राष्ट्र है।

अतः यदि राष्ट्र निवासियों का शरीर दुर्बल है तो राष्ट्र दुर्बल होगा।

अत यदि राष्ट्र निवासियों का मन दुर्बल है तो राष्ट्र भी दुर्बल है।

अतः यदि राष्ट्र निवासियों की आत्मा दुर्बल है तो राष्ट्र भी दुर्बल है।

शरीर को सयम, पौष्टिक भोजन और व्यायाम से सशक्त बनाना चाहिए।

मन को सात्विक विचार, शुद्ध सकल्प और सदाचार से सशक्त बनाना चाहिए।

आत्मा को सत्सग, श्रद्धा और प्रार्थना से सशक्त बनाना चाहिए।

स्वामी दयानन्द ने जो उपदेश दिये उनका साराश यह ही है कि व्यक्ति और राष्ट्र के सम्बन्ध को देखते हुए सारे राष्ट्र को सुधारने की जिम्मेदारी ओढने के बजाय यदि हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने तथा अपनी सन्तानों के लिए कर्त्तव्य पालन करता रहे तो वह गर्वपूर्वक कह सकता है कि वह राष्ट्र की सोलह आने सेवा कर रहा है। इस प्रकार राष्ट्र की सेवा के लिए प्रथम आवश्यक वस्तु है शरीर रक्षा। शरीर रक्षा के लिए महर्षि दयानन्द ने सबसे आवश्यक वस्तु ब्रह्मचर्य को माना है। शरीर में विविध प्रकार के बलों का विकास ब्रह्मचर्य द्वारा ही सम्भव है। ब्रह्मचर्य अनन्त शक्तियों का स्रोत है। वेद मे कहा है—

> ब्रह्मचारी ब्रह्म भ्राजद् बिभर्ति,
> तस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदु । अथर्ववेद।

ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करने वाला ही तेजमय ब्रह्म को धारण करता है, उसको सभी देवताओं की शक्ति और प्रकाश प्राप्त होता है।

जर्मनी के वेद व्यास गेटे ने जो महान् कवि और मनीषी के साथ-साथ महान् शासक भी था कहा है—"प्रजा का आरोग्य राष्ट्र का ऐसा खेत है, जिसमें शौर्य और यश की फसलें सोना बिखेरती हैं—जो राष्ट्र रोगी है, वह जहा शरीर से पगु है वह मन से अन्धा भी है। रोगों के चगुल में फसा राष्ट्र अपनी दुर्बलता के कारण न तो समृद्धि की सीढियां चढ सकता है और न समृद्धि की योजनायें सोच सकता है। मैं आरोग्य को जिसका आधार ब्रह्मचर्य है शक्ति बीज मानता हूं, ऐसा बीज जो अपने आप उगता है अपने आप बढता है, अपने आप फलता फूलता है।

महर्षि का विचार है कि ब्रह्मचर्य जीवन रूपी वृक्ष का वह सुगन्धित पुष्प है जिसके चहु ओर स्वास्थ्य, आरोग्य, पवित्रता, मेधा और धैर्य रूपी मधुमक्खियां चक्कर लगाया करती हैं। जो ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं उन्हे उपर्युक्त सभी गुणों की प्राप्ति होती है। महर्षि दयानन्द ने ब्रह्मचर्य की महिमा का बखान करते हुए कहा है—"ब्रह्मचर्य से यह बात होती है कि जब मनुष्य बाल्यावस्था में विवाह न करे, उपस्थ इन्द्रियों का सयम रखे, वेदादि शास्त्रों को पढता पढाता रहे, विवाह के बाद भी ऋतुगामी बना रहे और परस्त्री गमन आदि व्यभिचार को, मन, वचन और कर्म से त्याग देवे तब दो प्रकार का वीर्य अर्थात् बल बढता है। एक शरीर का और दूसरा बुद्धि का। उसके बढने से मनुष्य अत्यन्त आनन्द में रहता है। (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका)

उपनिषदों में ब्रह्मचर्य की महिमा बताने वाली एक कथा आती है। एक शिष्य ने अपने गुरु से पूछा कि 'लोक सिद्धि का साधन क्या है ?' गुरु ने कहा—"ब्रह्मचर्य ही वह साधन है जिससे लोक-सिद्धि होती है।" शिष्य ने पुन पूछा—"परलोक सिद्धि का साधन क्या है ?" गुरु अपने पहले उत्तर को दोहराते हुए कहते हैं कि परलोक सिद्धि का भी एकमात्र साधन ब्रह्मचर्य ही है। इस साधन के बिना न लोक सिद्धि हो सकती है न परलोक।

'वीर्यमेव बल बलमेव वीर्यम्' वीर्य ही बल है और बल ही वीर्य है।

> ब्रह्मचारी न काश्चनार्तिमृच्छति।
> शतपथ ११।३।६।२

ब्रह्मचर्य धारण करने से किसी प्रकार का दुख प्राप्त नहीं होता।

> ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायां वीर्यलाभः । योग २।३८

ब्रह्मचर्य को धारण करने से वीर्य=बल की प्राप्ति होती है।

ऋषि दयानन्द का व्याख्यान हो रहा था। उनकी तेजस्वी मुख मुद्रा और दिव्य वाणी से प्रभावित श्रोता वर्ग मन्त्र मुग्ध सा बैठा था। स्त्रियों की कतार एक ओर थी और पुरुषों की दूसरी ओर। स्वामी जी बता रहे थे कि जीवन मे भक्ति का बड़ा महत्व है। किन्तु प्रत्येक प्रकार की भक्ति के मूल में शक्ति का योग होना चाहिए चाहे वह भक्ति ईश्वर भक्ति हो या देश भक्ति। भक्ति-मात्र मे बल ही मेरुदड है। बलवान् जातियों की ही भक्ति निभती है, निर्बलों की नहीं। क्योंकि भक्ति को कदम-कदम पर अपनी परीक्षा देनी पडती है। यह परीक्षा कभी मनोबल की होती है तो कभी शरीर बल की। (शेष पृष्ठ ८ पर)

वैदिक गणित को आश्चर्यजनक सफलता

अथर्ववेद गणित का भण्डार

कम्प्यूटर के लिए संस्कृत ही अनुकूल भाषा

नई दिल्ली, २० जनवरी। कम्प्यूटर से भी तेज गणना कर सकते हैं संस्कृत में लिखे गणित के सोलह सूत्र। ये दावा किसी ढोंगी, पुरातनपंथी या अन्धविश्वासी का नहीं है। रुड़की विश्वविद्यालय के सिविल इन्जीनियरिंग के प्रोफेसर डाक्टर नरोत्तम पुरी का है।

ऐसा दावा करने वाले डा० पुरी अकेले भी नहीं हैं। बल्कि आई आई टी दिल्ली के और लन्दन अमेरिका के तमाम वैज्ञानिक हैं। ये सब लोग बरसों से गणित के इन अद्भुत सूत्रों के अध्ययन में लगे हैं। इनसे सामान्य गुणा, भाग, जोड़-घटाना ही नहीं त्रिकोणमिति, ज्यामिति, और आधुनिक गणित की गुत्थियां भी सैकिंडों में सुलझ जाती हैं। इतना ही नहीं बल्कि ये हल सुगमतम होते हैं।

फिर आज तक ये सूत्र कहां थे? पूछने पर डाक्टर पुरी ने बताया "अथर्ववेद के अन्तिम अध्याय में वर्णित इन सोलह सूत्रों की फिर से खोजने का श्रेय स्वामी भारती कृष्णतीर्थ गोवर्धन पीठ के शंकराचार्य को है। स्वामी जी ने २५ बरस पहले अंग्रेजी में एक मोटी पुस्तक 'वैदिक गणित' के नाम से लिखी थी। उस समय देश के वैज्ञानिकों ने इस पुस्तक का उपहास उड़ाया था। बाद में जब इस किताब पर विलायती नजर पड़ी और पुस्तक वहीं छपकर हाथों से हाथ गणित के विद्वानों के अध्ययन कक्षों तक पहुंचने लगी तो लोगों के कान खड़े हुए।"

इसके बावजूद भारत में तीन बरस पहले तक इस पुस्तक की ज्यादा जानकारी नहीं थी। इक्का दुक्का लोग अपने शौक और कोशिश से इसमें जुटे रहे। ये तमाम गणितज्ञ इस पुस्तक में बताये गये सूत्रों की शक्ति और उनसे मिलने वाले नतीजों से दंग रह गये। डा० पुरी भी इनमें से एक हैं। उन्होंने अध्ययन ही नहीं किया बल्कि अपने आध्यात्मिक अध्ययन संस्थान के जरिए इसके प्रसार का बीड़ा उठाया। इसमें रुड़की इन्जीनियरिंग विश्वविद्यालय के छात्रों और प्रोफेसरों ने रुचि दिखाई। "जल्दी ही हमने बच्चों के उपयोग वाली सरल पुस्तकें तैयार की। वैदिक गणित की इन पुस्तकों को स्कूली बच्चों और अध्यापकों ने हाथों हाथ लिया। डा० पुरी बड़े उत्साह से बताते हैं।

उनके इर्द गिर्द खड़े छात्र इन पुस्तकों की प्रतियां दिखाने लगते हैं। 'पुष्प १', 'पुष्प-२', नाम से दो पुस्तकें सूत्रों को समझाने के लिए बड़े स्तर पर भी छापी जा चुकी हैं। हर पुस्तक एक सूत्र पर है। चौदह अभी और छपेंगी। ये पुस्तकें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में हैं।

डा० पुरी का संस्थान विश्वविद्यालय परिसर में ही नहीं बाहर के लोगों के लिए भी वैदिक गणित के पाठ्यक्रम चला रहा है। अब तक ३२ कोर्स चलाये जा चुके हैं। इनमें १८५० लोगों ने पिछले दो बरस में हिस्सा लिया। दूसरे शहरों में रहने वालों के लिए पत्राचार पाठ्यक्रम भी है। इस पूरे काम में इन्हें अभी तक विश्वविद्यालय से कोई वित्तीय मदद नहीं मिली। अलबत्ता सहयोग जरूर मिला। विश्व विद्यालय के कुलपति प्रो० नरेश चन्द्र माथुर का कहना है कि, "मैं खुद डा० पुरी के प्रयासों और इस गणित की क्षमता से प्रभावित हुआ हूं। पर जब तक डा० पुरी कोई ठोस प्रस्ताव नहीं देते विश्वविद्यालय अपनी तरफ से क्या कर सकता है?" पर क्या इसे पाठ्यक्रम में शामिल करने में कोई अड़चन आएगी। पूछने पर प्रो० माथुर का उत्तर था, "अगर बोर्ड स्तर के पाठ्यक्रम की पुस्तकें तैयार कर ली जाएं तो बिल्कुल दिक्कत नहीं आएगी।" उन्होंने बताया कि वे जल्दी ही संस्कृत भाषा के अध्ययन की व्यवस्था भी विश्वविद्यालय में करने जा रहे हैं। क्योंकि आज दुनिया भर के वैज्ञानिकों को लग रहा है कि संस्कृत ही ऐसी भाषा है जो कम्प्यूटर के 'गणित' में फिट बैठती है। इसके अलावा संस्कृत, पाली और प्राकृत की लाखों प्राचीन पुस्तकों में छिपे ज्ञान को बाहर निकालने की भी जरूरत है।

उधर डा० पुरी को कुछ रोचक अनुभव दिल्ली स्थित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र (एनसीईआरटी) में हुए हैं। उन्होंने बच्चों में तेजी से लोकप्रिय होते वैदिक गणित को स्कूलों के पाठ्यक्रम में अतिरिक्त पाठ के रूप में शामिल करने की पेशकश की थी। ताकि बच्चे खुद ही तुलना कर सकें कि किन फार्मूलों से गणित पढ़ना आसान हो जाता है। उन्होंने बताया कि इस पर एनसीईआरटी के सचिव का जवाब था कि देश भर के शिक्षकों को इस गणित की जरूरत का अहसास कराने पर दो करोड़ रुपये खर्च करके सेमिनार कराना पड़ेगा। "क्यों नहीं आप इसका नाम बदलकर कुछ और गणित कर देते", उन्होंने डा० पुरी को यह सुझाव भी दिया।

फिलहाल रुड़की के वैज्ञानिक बिना ज्यादा तामझाम के सस्ती-सस्ती किताबों से इस गणित को हर इच्छुक तक भेज रहे हैं। दो चार रुपए मूल्य की ये किताबें वैदिक गणित के सूत्रों के उदाहरण और प्रयोग को बतलाती हैं। इस काम में उन्होंने देश के कई शहरों दिल्ली, कानपुर, कलकत्ता, जोधपुर, मोहाली, लखनऊ वाराणसी, रांची और इन्दौर के जागरूक वैज्ञानिकों का सहयोग मिल रहा है।

वैदिक गणित पर मलयालम भाषा में डा० राजू ने त्रिवेन्द्रम में एक पुस्तक अभी छपवाई है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में एस० के० कपूर (ज्यूडीशियल मजिस्ट्रेट रोहतक) ने भी एक मोटी थीसिस जमा की है। डा० पुरी को विश्वास है कि आने वाले दिनों में देश के वैज्ञानिक इसे अपनी रोजमर्रा की जरूरत बनाकर प्रयोग करेंगे। 'पर तब तक लगातार ऐसे छिपे हुए ज्ञान के भंडार को खोजते रहने की जरूरत है।" वे कहते हैं।

(जनसत्ता से साभार)

भारत मां के लाल—

लाला लाजपतराय

श्री भवदत्त स्नातक दिल्ली

हर बच्चा मा का लाल होता है। यह विशेषता तो मा की ही है, कि वह अपनी कोख से जन्मे हर शिशु को लाल समझकर उससे प्यार करती है। 'लाला-लाला' कहकर या 'आ मेरे लाल' कहकर बुलाती है, दुलराती है और चाहे वह कितना ही बडा हो जाय, औरो के लिए कैसा ही हो, मा का वह लाल ही बना रहता है। हम और तुम सब ही।

पर भारत मा का भी एक लाल, सच्चा सपूत हुआ है। वह नाम से भी लाल ही था, सारे देशवासी उसे लाल कहकर पुकारते थे। यशोदा माई जैसे अपने नन्द लाला पर निछावर हो जाती थी और लाला-लाला कहकर पुकारती अघाती नही थी,जनता भी अपने इस लाल को उसी प्यार से रखती थी। लाला लाजपतराय नाम के इस मा के सपूत का नाम जनता ने ही "लाल" यानी हीरा रत्न छोडा था। अपने युग के लोकमान्य बाल गगाधर तिलक, बगाल के मुकुट विपिन चन्द्रपाल के साथ ही मिलकर बने 'लाल-बाल-पाल' नाम से प्रसिद्ध इस तिगड्ड का मणिसूत्र लाला लाजपतराय ही थे।

१२२ साल पहले आज के दिन (२८ जनवरी) पजाब के फिरोजपुर जिले में ढुडके नामक गाव मे उनका जन्म एक बहुत ही साधारण से परिवार में हुआ था। उसके पिता राधाकृष्ण जी मिडिल स्कूल के अध्यापक तो थे ही, एक स्वतत्र विचारक और लेखक भी थे। १७ वर्ष की आयु मे हाई स्कूल पास करके वे लाहौर के गवर्नमेंट कालेज मे दाखिल हो गए। १८ वर्ष की आयु में अम्बाला आर्य समाज में हिन्दी का पक्ष लेकर जो उन्होने अपना जोशीला और युक्ति-युक्त भाषण दिया था वही उनके सार्वजनिक जीवन की शुरुआत थी।

वीरता के धनी लाला जी

वीरो का जीवन और वीरो की स्तुति करना उनका परम प्रिय लक्ष्य था। उनकी लिखी पुस्तके श्रीकृष्ण चरित्र, शिवाजी, देश भक्त मेजिनी गैरी बाल्डी, दयानन्द आदि पुस्तक आज भी बच्चो और युवको मे नवजीवन और उत्साह भर देती है। उनका कथन था कि 'अपमानजनक जीवन की तुलना मे वीरोचित मौत पाना कही अच्छा है'। अपनी इसी भावना के अनुरूप ब्रिटिश सार्जेन्ट साण्डर्स के हाथो मारे गये और १७ नवम्बर १९२६ को उनको वीरगति प्राप्त हुई। उनके अन्तिम शब्द थे मेरे शरीर पर किया गया प्रत्यक प्रहार ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील साबित होगा। उनकी भविष्यवाणी सच होकर रही। महात्मा गाधी जी ने उनके बलिदान पर ठीक ही कहा था—भारतीय आकाश पर जब तक सूर्य चमकता रहेगा, लाला जी का नाम अमर रहेगा।

अन्य कर्मठ कार्यकर्त्ता भारत के ८ राज्यो मे इसी लोक सेवक समाज के माध्यम से देश की सेवा कर रहे है।

इस प्रकार की श्री जवाहरलाल नेहरू के निधन के बाद दूसरा वेदी प्यमान लाल श्री लालबहादुर शास्त्री के रूप मे देश को देने का श्रेय लाल-बाल पाल तिगड्ड के अगुवा लाला जी को ही मिलता रहेगा। वे भारत मा के सच्चे लाल थे। वे स्वय गुदडियो जैसे लाल बनकर निकले और लाल बनाकर राष्ट्र को एक दूसरा स्व० नेहरू जी के उत्तराधिकारी के रूप में भेट दे दिया।

आदर्श पिता और आदर्श पुत्र

माडले (बर्मा) में जब लाला जी नजरबन्द थे, वहा से उन्होने अपने सबसे बडे लडके प्यारेलाल को जो पत्र लिखा उसकी पक्तियां स्वर्णक्षरो मे लिखने योग्य हैं। शब्द इस प्रकार हैं 'मैं अपने पैरो पर खडे होने का स्वणमत्र तुम्हारे हृदय मे बैठाना चाहता हू। ससार मे इस जैसी कोई वस्तु नही हैं। मेरे अपने भाव तो यह हैं कि किसी का भी उपकृत नही होना चाहिए। मेरी दृष्टि मे जो भी व्यक्ति किसी की भी सहायता के बिना अपनी रोटी कमा सकता है वह सर्वथा श्रेष्ठ पुरुष है। केवल अपने ही पुरुषार्थ से मामूली दाल रोटी कमा लेने मे जो नैतिक बल प्राप्त होता है, वह आजीवन तुम्हारे काम आएगा। मैं नही चाहता कि तुम मेरे किसी भी मित्र का उपकार अपनी आजीविका के लिए लो। हरेक पुत्र के लिए कितने प्रेरणादायक शब्द हैं ये?

अपनी मां की स्मृति में

अपनी माता की स्मृति में १ लाख रुपया स्वय दान देकर और १ लाख रुपया चन्दा जमा करके उन्होने एक महिला अस्पताल स्थापित किया जो अब जालधर में चल रहा है। और अपने पिता के नाम पर जगराबा मे उन्होने एक हाईस्कूल बनवाया। यह उनकी माता पिता के प्रति अपार श्रद्धा का नमूना है।

अंग्रेजी का बन्धन तोड़ो हिन्दी, संस्कृत से नाता जोड़ो

पर्वतराज हिमालय बोलो, घाटी के फूलो तुम बोलो,
खेतों खलिहानों तुम बोलो, घर घर धरती के कण बोलो।

गंगा, यमुना, गोदा बोलो महानदी कावेरी बोलो,
सतलुज व्यास नर्मदा बोलो, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा तुम बोलो।

लालकिले के वैभव बोलो, तांत्या की सांसें तुम बोलो,
सूर्य-मन्दिर मुदरै बोलो, अजन्ता और एलोरा बोलो।

सागर की लहरो तुम बोलो, हुबली, पुने, बम्बई बोलो,
मद्रास, रामेश्वरम् बोलो, उठो कुमारी कन्या बोलो।

बहुत सह्य अंग्रेजी शासन, हम अंग्रेजी नहीं सहेंगे।
हम शिक्षा में अपनी भाषा, में ही सब कुछ पढ़ा करेंगे।

अनिवार्य विदेशी भाषा का, बोझा क्यों अपने सिर लादें ?
स्वतन्त्र देश के रहने वाले, निज भाषा में भाव सजा दें।

भाषाओं की जननी संस्कृत, प्रबल संयोजक सूत्र हमारा।
इसको शिक्षा से हटा रहे, लगता सिर घूमा है तुम्हारा।

अपनी संस्कृति की रही वाटिका, इतिहास पुरातन कहलाती,
जो भाषा है सारे जग में, महक सं का सौरभ उठाती।

जिसमें ज्ञान-विज्ञान भरा है, जिसमें गहरा वैदिक दर्शन,
जिसे सजाया श्रेष्ठ काव्य से, नैतिकता का निर्मल दर्पण।

सन्त विनोबा, गांधी, नेहरू, तिलक राजेन्द्र प्रसाद जी भी।
मालवीय अरु राधाकृष्णन्, थके न कर गुणगान कभी भी।

उस संस्कृत को हटा रहे ये, नेता शिक्षा से नहीं सोचते।
देश का मूलाधार निकाल, भारत-आत्मा कहां खोजते ?

है पहचान स्वतन्त्र देश की, उसकी अपनी प्यारी भाषा।
उससे ही उन्नति सम्भव है, वही बनी जन जन की भाषा।

अंग्रेजी का ज्ञान अधूरा, अंग्रेजी का ज्ञान उधारा।
निज भाषा से सम्भव है, यदि हो निश्चय प्रबल हमारा।

बोलो पत्थर, नदियां बोलो, धरती और गगन तुम बोलो,
हटाओ शिक्षा से अंग्रेजी, अब तो मुख अपना तुम खोलो।

न्यायालय से अंग्रेजी को, जाना होगा, जाना होगा।
ऊंची शिक्षा नौकरियों से, अंग्रेजी को जाना होगा।

अपनी धरती पर सबको ही, वहां की वायु पर अधिकार।
स्वच्छन्द सांस ले साथ विचारे, हो जाये मन से एकाकार।

जन-जन की भाषा में बोलो-मन की दासता नहीं चलेगी।
काले बाबू की गिटपिट की, अंग्रेजी अब नहीं चलेगी।

चालीस बरस हुए अभी भी, स्वतन्त्रता रही अधूरी है।
अंग्रेजी को नही छोड़ते, फिर भी क्या मजबूरी है ?

उठकर मेरे युवकों बोलो-और दासता नहीं सहेंगे,
अंग्रेजी का रोड़ा अब तो, नहीं सहेंगे, नहीं सहेंगे।

निकाल अंग्रेजी शासक को, स्वतन्त्र पताका फहराई।
तोड़ो अंग्रेजी के गढ़ को सुखद हवा देखो फिर आई।

स्वच्छन्द मस्तिष्क से सोचे, रटना नहीं पड़े कुछ भी फिर।
उन्नति के कैसे शिखरों पर, अपनी भाषा से जाता सिर।

अपना देश अरु अपना वेष, अपनी भाषा ही श्रेयस्कर।
आओ करें प्रतिज्ञा भाई, अपने ध्वज के नीचे आकर।

अपने गौरव के लिये सभी अपनी भाषा अपनायेंगे।
झूठी आभा अंग्रेजी की, उसको हम दूर भगायेंगे।

डा० कृष्णलाल आचार्य
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

ब्रह्मचर्य सन्देश

(पृष्ठ ५ का शेष)

इसी बीच वहां दो सांड लड़ते हुए आए। वे सीधे औरतों की कतार में घुसे। श्रोताओं में भगदड़ मच गई, सबको अपनी पड़ी थी। स्त्रियों की तरफ किसी का ध्यान ही नहीं गया। मगर स्वामी जी मंच से कूदे और दोनों सांडो के सींग पकड़कर उन्हें ऐसे अलग कर दिया जैसे कोई सयाना दो बच्चों को जुदा करता हो। दोनों सांडों ने अपने लाल-लाल नेत्रों से स्वामी जी को घूरा, फिर दोनों नीची गर्दन किए विभिन्न दिशाओं को चले गये।

इसी तरह स्वामी जी एक स्थान पर टिके हुए थे। शौचादि से निवृत्त होने जा रहे थे। रास्ते में चौराहे पर दो सांड भयंकर रूप में लड़ रहे थे। उन्हें लड़ते देख भीड़ एकत्र हो गई। अचानक स्वामी जी ने यह देखा और निर्भीक रूप में वहां गए और दोनों के दोनों हाथों से सींगों को पकड़कर अलग कर दिया। यह भी उनकी ब्रह्मचर्य शक्ति का बल था।

स्वामी जी ने प्राचीन भारतीयों की शौर्य शक्ति और आधुनिक भारतीयों की आत्मविनाशी दौर्बल्य स्पष्ट करते हुए कहा—"जिस जाति के सिंह गर्जन से सातों समुद्र निनादित हो उठते थे, जिस जाति के भृकुटि संकोचन से दिशायें कांप उठती थीं उस जाति ने शक्ति बीज ब्रह्मचर्य का परित्याग कर आज सियारों सी अधम और निन्दनीय जिन्दगी अख्तियार कर ली है।

स्वामी दयानन्द के सुपुष्ट शरीर और तेजोदीप्त मुखमण्डल से प्रभावित होकर एक जर्मनी के विद्वान ने उनसे इस स्वास्थ्य और तेजस्विता का रहस्य पूछा—"स्वामी जी महाराज, यह बतलाइए कि क्या प्रत्येक व्यक्ति आप जैसा सुन्दर शरीर और प्रदीप्त प्रतिभा प्राप्त कर सकता है ?"

स्वामी जी मुस्कराये और बोले—"जो जैसा चाहता है वैसा बन जाता है। दुःख यही है कि मनुष्य केन्द्रित भाव से कुछ चाहता नही। तुम संकल्प करो, एकाग्रभाव से मन में सुस्वास्थ्य एवं सुबुद्धि की तेजोमयी मूर्ति प्रतिष्ठापित करो, उस मूर्ति के अनुरूप ही तुम्हारा तन मन बन जाएगा।

शरीर के स्वास्थ्य का मूल ब्रह्मचर्य है। स्वस्थ शरीर से स्वस्थ मन या संकल्प का निर्माण होता है और स्वस्थ संकल्प से स्वस्थ राष्ट्र बनता है। स्वस्थ शरीर के लिए ब्रह्मचर्य की आवश्यकता है और ब्रह्मचर्य का मतलब है भोगविलास और इन्द्रियों के वश में न रहकर ब्रह्म की ओर बढ़ना ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य का अर्थ है (क) ईश्वर चिन्तन (ख) वेद अध्ययन (ग) ज्ञान उपार्जन (घ) वीर्य रक्षा है। गांधी जी का 'राम राज्य' 'काम राज्य' में परिवर्तन हो रहा है। ऐसे समय में आर्यसमाज का कर्तव्य है राष्ट्र में चरित्र निर्माण। चरित्र ही किसी राष्ट्र का मेरुदण्ड है। यह बिन्दु जहां ओझल हुआ राष्ट्र की तमाम कड़ियां बिखर जाती हैं। चरित्र के खूंटे से ही बंधा होता है—राष्ट्र का स्वातंत्र्य। चाणक्य ने लिखा है—"अति प्रवृद्धा शाल्मली वारणस्तम्भो न भवति' अर्थात् शाल्मली पेड़ चाहे जितना घना और लम्बा चौड़ा हो उसे हाथी का खूंटा नहीं बनाया जा सकता।

अतः ऋषि बोध के दिन आर्य समाज को राष्ट्र के मानस में चरित्र की ज्योति प्रतिष्ठापित करके राष्ट्र को अजेय बनाना होगा। यही महर्षि का आदेश है।

मध्यप्रदेश का थांदला (झाबुआ) क्षेत्र ईसाइयत के शिकंजे में

—श्री जगदीशप्रसाद वैदिक, वैदिक सदन, भंवर कुंआ इन्दौर—

गत अक्तूबर १९९७ में मैंने झाबुआ क्षेत्र के लगभग १५ ग्रामों में ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों का जायजा लिया। मेरे साथ अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के क्षेत्रीय सचिव श्री रामकृष्ण बजाज भी थे। हम वाहन साधनों के अभाव में बड़ी कठिनाई से १५ ग्रामों में गए और वहां पर जो कुछ देखा उसका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

गांव-चैनपुरी में सभी आदिवासियों को एकत्रित करके ईसा मसीह की प्रार्थना कराई जाती है और उसके बदले में प्रतिमाह उनको ५०० ग्राम तेल और एक पाव दूध का पाउडर दिया जाता है। गांव देवीगढ़ में जहां दयानन्द सेवाश्रम संघ की ओर से बाल-वाड़ियां चल रही हैं, वहां ईसाई अपना केन्द्र स्थापित करने में लगे हुए हैं वहां मरियम के मन्दिर का भवन बन गया है। गांव भापा-दरा का भी एक भाग पूरी तरह ईसाई बन चुका है वहां पर गिरजाघर है और उपचार कार्य हेतु एक नर्स है। स्कूल भी बना हुआ है जिसमें २०० बालक पढ़ते हैं। पक्का कुआं भी बनाया गया है। ईसाई आदिवासियों की हर प्रकार की सहायता कर रहे हैं। गांव के दूसरे हिस्से में सब आदिवासी हिन्दू हैं। देवीगढ के उप सरपंच श्री सुरजीतसिंह आदिवासी हैं वह चाहते हैं कि हिन्दू संस्थाओं की ओर से वहां स्कूल व छात्रावास खुल जावे तो ईसाई वहां कुछ नहीं कर पायेंगे। गांव मन्नूपुरा में ईसाई घुसनेकी कोशिशमें हैं किन्तु वहां आयसमाज की बालवाडिया और दो सरकारी स्कूल चल रहे हैं। श्री मानसिंह यहां आर्यसमाज और दयानन्द सेवाश्रम संघ के जागरूक कार्यकर्त्ता हैं। गांव काकनवाडी में ७० प्रतिशत लोग ईसाई हो चुके हैं इस क्षेत्र में ५० के करीब आदिवासी गांव हैं। ईसाइयो का ओर से उनको दूध, दलिया मिलता है और रहने के झोपडे बनवाए जाते हैं और कुए खुदवाते हैं। छोटी-छोटी नदियो पर बांध बधवाते हैं। उस गांव के कन्हैयायालाल का कहना था कि यदि ईसाइयों की तरह हिन्दू संगठन भी यहा छात्रावास व अन्य सुविधाओ की व्यवस्था करा सके तो ईसाइयत को रोका जा सकता है। गांव डुंगरीपाडा में गिरजाघर है। उनका छात्रावास है २५० बालक रहते हैं विद्यालय में ५०० विद्यार्थी पढते हैं। यहा पादरी मैथ्यू रहते हैं। ग्राम रसोडी मे भी गिरजाघर व विद्यालय हैं। रवि-वार को पादरी आते हैं। १०० बालक भी पढ़ते हैं। रविवार को आदिवासियो को वहां से सामान देकर मदद की जाती है। ग्राम बोलवाड़ा में सरकारी विद्यालय है अभी ईसाई वहा कुछ नही कर पाए हैं। ग्राम मदरानी भी अभी ईसाइयों से बचा हुआ है। ग्राम बोपाल खूटा क्षेत्र का प्रसिद्ध गाव है। यहां महतजमनादास का आश्रम है। जिन्होने कभी ११२५ और दूसरी बार २१२५ कुण्डो का यज्ञ कराया था। अब उनके शिष्य श्री रामदास आश्रम चला रहे हैं। यहां पर साधु, वृद्ध महिलाए और कुछ गाये हैं।

दान लाकर इस आश्रम की व्यवस्था चलती हैं। यह आश्रम बहुत बड़ा है यहां पर ५०० छात्रो के लिए छात्रावास खोला जा सकता है। ग्राम पचकुइया में विशाल गिरजाघर है यह १९२५ में स्थापित हुआ और १९७५ में इसकी स्वर्ण जयन्ती मनाई गई थी। ईसामसीह के जन्म से लेकर फांसी पर चढाने तक की सजीव कहानी का चित्रण मूर्तिया लगाकर किया गया है। यहा ट्रैक्टर से खेती होती है, बगीचे बने हुए हैं। मोटर लगी हुई है। ५०० बालको का विद्यालय, २५० बालको का छात्रावास भी है। गौशाला के रूप में १४ भैंस और ५ गाये भी पाली जा रही हैं। ग्राम मेघनगर में भी गिरजाघर है। छात्रावास में ५० बालक रहते हैं। यह केन्द्र अभी २ वर्ष पूर्व ही स्थापित हुआ है। थांदला मे भी गिरजाघर छात्रा-वास में ४०० बालक रहते हैं और हाईस्कूल विद्यालय में ११०० बालक पढ़ते हैं। यहां ईसाइयों ने १९२२ में कार्य प्रारम्भ किया था। रविवार को ४०० आदिवासियो की भीड़ देखी। उन्हे तेल बांटा जा रहा था। चाईल्ड वैल फेयर के नाम से प्रत्येक परिवार को प्लास्टिक कवर में परिचय दिया हुआ है। इस गिरजाघर से अनेक केन्द्र सचालित होते हैं। ग्राम बामनियां में भी गिरजाघर हैं। छात्रावास में ७० बालक रहते हैं। ईसाइयों ने यहां न्यू लाइफ सैण्टर के नाम से सस्थापित की हुई है। इसके आसपास बहुत सारे गांव हैं वहां ईसाइयों ने बहुत कार्य किया हैं इस क्षेत्र मे भी लगभग ६० प्रतिशत लोग ईसाई हो चुके हैं। यहां विद्यालय भी चल रहा है। छोटी घमनी गांव की यह स्थिति है और बड़ी घमनी में गिरजा-घर और विद्यालय भी हैं पूरा गांव ईसाई है।

भीमकुंड, सुखापुरा, मुरलीपाड़ा आदि ग्रामो में आर्यसमाज व दयानन्द सेवाश्रम संघ की ओर से कार्यक्रम चल रहे हैं। इन गांव में बालबाडियां अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम की ओर से चलाई जा रही हैं। झाबुआ में ईसाइयो का विशाल विद्यालय है ११०० बच्चे पढ रहे हैं और ५०० छात्रों का छात्रावास भी चल रहा है।

इस पूरे क्षेत्र में आर्यसमाज की ओर से अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के रूप में लगभग २० बालवाडिया ३ छात्रा-वास, २ विद्यालय और एक औषधालय चल रहा है। लेकिन सीमित साधनों के कारण यह कार्य बहुत थोड़ा है। यदि अन्य हिन्दू संगठन और राष्ट्रवादी सस्थायें हिन्दू जाति और धर्म की रक्षा के नाम पर मगर के आंसू न बहाकर सीधे रचनात्मक कार्यक्रमों को हाथ में लें तो बहुत कुछ हो सकता है। आज बिहार का राची क्षेत्र, मध्यप्रदेश का झाबुआ क्षेत्र, राजस्थान का बांसवाड़ा क्षेत्र, मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र का अरावली पर्वत क्षेत्र तथा उडीसा का कालाहाण्डी तथा बालगीर क्षेत्र ईसाइयों के जाल में फसा हुआ है। उत्तर पूर्व भारत के कई राज्य पहले ही ईसाई बहुत बन चुके है। केरल में भी यही स्थिति है।

हम राष्ट्रवादी लोगों को इस पर चिन्तन करके रचनात्मक कार्य लेकर आगे बढना होगा, तभी हम जाति, धर्म और राष्ट्र की रक्षा कर पायेंगे।

स्वामी गोरक्षानन्द द्वारा गोरक्षा सम्बन्धी कार्य

हरियाणा में आर्य समाज तथा शुद्धि सभा के प्रमुख कार्यकर्ता स्वामी गोरक्षानन्द जी महाराज ने अभी पिछले दिनो हरियाणा के यमुनाघाट के क्षेत्र पर कसाइयों से सैकड़ो बछड़ों को छुड़ाकर गोसदन बराईपुरा (जरौदा) में रखवा दिया है। लगभग २०० गायो पर २०००) रु० प्रतिदिन व्यय किया जा रहा है।

इसके अतिरिक्त स्वामी गोरक्षानन्द जी ने उस क्षेत्र में नवयुवकों में जनजागृति और चरित्र निर्माण के लिए सराहनीय कार्य किया है। उनकी प्रेरणा पर सैकड़ों नवयुवकों ने भविष्य में शराब, मांस तथा बीडी, सिगरेट छोड़ देने का संकल्प किया है। वैदिक धर्म के प्रचार तथा गोरक्षा के कार्य मे वे सब स्वामी जी को अपना सहयोग देने मे जुटे हुए हैं।

स्वामी जी ने हरियाणा सरकार से गोरक्षा के सम्बन्ध मे जम्मू कश्मीर जैसे कानून को हरियाणा में भी लागू किया जाये क्योंकि हरियाणा में इस समय अपराधी को तीन महीने की सजा होती है जब कि कश्मीर में दस वर्ष की सजा का प्रावधान है।

देश की विषम स्थिति हेतु राजनीतिज्ञ जिम्मेदार

विगत दिनों गोडाडोगरी में हुए चढ्ढा शिविर एवं योग शक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम के अवसर पर अखिल भारतीय आर्य वीर दल के अध्यक्ष श्री बाल दिवाकर 'हंस' ने सम्बोधित करते हुए कहा कि देश की विषम स्थिति के लिए वर्तमान राजनीतिज्ञ ही जवाबदार है। उन्होंने कहा कि आजादी के ४० वर्षों बाद भी हम आदिवासी भाइयों को अपने समकक्ष नहीं ला पाए हैं।

श्री हंस ने विदेशी ईसाई मिशनरियों पर आरोप लगाते हुए कहा कि वे भारत की राजनीति में दखलंदाजी कर रही हैं तथा वे स्वप्न देख रहे हैं कि एक दिन ऐसा आएगा कि हिन्दू अल्पसंख्यक रह जाएगा तथा उन्हें इस देश पर शासन करने का अवसर मिल जाएगा। ये सारी कार्रवाइयां विदेशी डालर के दम पर चल रही हैं जो कि देश के लिए घातक हैं। सरकार का मौन आश्चर्य का विषय है। सरकार को इन विदेशी मिशनरियों की गतिविधियों पर रोक लगाना चाहिए। आपने भारतवर्ष में मौजूद लाखों आर्य वीर दल के जवानों को आवाहन करते हुए कहा कि जब तक आर्य वीर दल का एक भी जवान जिन्दा रहेगा, मिशनरियों के नापाक इरादों को कामयाब नहीं होने देंगे।

श्री हंस ने कहा कि समाज का ढांचा बदलने के लिए शारीरिक उत्थान, आत्मिक उत्थान तथा समाज सेवा में आना ही आर्य समाज का उद्देश्य है। हम जैसे भीतर हैं वैसे ही बाहर भी दिखें, इसके लिए हमें योगशक्ति एवं प्राणायाम के महत्व को जानना होगा। ब्रह्मचर्य की शक्ति तथा शारीरिक उत्थान द्वारा ये सारे कार्य सम्भव हैं। अन्त में अपने सन्देश में आपने कहा कि हम अपने अन्दर इतनी योग्यता पैदा करें कि समग्र मानवता को प्रेम कर सकें।

कार्यक्रम का संचालन श्री जितेन्द्र ब्रह्मचारी ने किया तथा मुख्य अतिथि तथा अध्यक्ष श्री बाल दिवाकर 'हंस' का स्वागत आर्य कन्या आश्रम गोडाडोंगरी के अध्यक्ष श्री तुलसीराम अग्रवाल ने किया। तत्पश्चात आचार्य वीरपाल जी द्वारा योगशक्ति का प्रदर्शन किया गया।

श्री हंस जी द्वारा विधिवत् आर्य वीर दल का गठन किया गया। आर्य वीर दल की यहां उन्नति होने की पूरी सम्भावना है।

दो सौ रुपये मासिक की चालीस छात्र-वृत्तियां

स्वामी केवलानन्द निगमाश्रम गज दारानगर जिला बिजनौर में स्वाध्याय प्रेमी, कमठ आर्य समाजी कार्यकर्त्ताओं के लिये दो वर्ष का तथा वैदिक विद्वान बनकर धर्म प्रचार में जीवन लगाने के इच्छुक आर्य युवकों के लिये पांच वर्ष का प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम आरम्भ हो रहा है।

दो वर्ष के पाठ्यक्रम में वैदिक कर्मकाण्ड, अष्टांग योग साधना, आयुर्वेद तथा वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान प्रामाणिक विद्वानों के सानिध्य में कराया जायेगा। इस प्रशिक्षण में गृहस्थ की जिम्मेदारी से निवृत्त वानप्रस्थ आर्य उपदेशक बनने के इच्छुक व्यक्तियों को ही अवसर प्रदान किया जायेगा।

पांच वर्ष के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में दसवीं कक्षा उत्तीर्ण अथवा तत्समकक्ष योग्यता वाले आर्य युवकों को अष्टाध्यायी महाभाष्य दर्शन उपनिषद तथा वैदिक साहित्य का गम्भीर अध्ययन अन्य सम्प्रदायों का तुलनात्मक अध्ययन संस्कृत, अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं का ज्ञान कराके प्रवचन एवम् शास्त्रार्थ की योग्यता पैदा करके देश-विदेश में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ भेजा जायेगा।

इस वर्ष चालीस व्यक्तियों को दो सौ रुपया मासिक छात्रवृत्तियां दी जायेंगी। अपना खर्च स्वयं वहन करके अन्य व्यक्ति भी प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे।

किसी आर्य सन्यासी विद्वान आर्य भजनोपदेशक अथवा आर्य समाज के अधिकारी की संस्तुति के साथ पन्द्रह मार्च, १९८८ तक अधिष्ठाता स्वामी केवलानन्द निगम आश्रम गज दारानगर, जिला बिजनौर (२४६ ७०१) (उ० प्र०) के पते पर आवेदन करें। साक्षात्कार के पश्चात् ही प्रवेश हो सकेगा।

—स्वामी केवलानन्द निगमाश्रम; गज दारानगर
बिजनौर (२४६ ७०१)

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के परिवार में शोक

दिल्ली : ३० जनवरी प्रसिद्ध आर्यसमाजी परिवार सार्वदेशिक सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती पूर्व नाम श्री रामगोपाल शालवाले की पुत्रवधू श्रीमती कमलेश रानी आर्या का कल अचानक ४६ साल आयु में निधन हो गया है। अन्त्येष्टि संस्कार आज यमुना किनारे शवदाहगृह में ज्येष्ठ पुत्र संजय कुमार आर्य द्वारा सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर दिल्ली के हजारों गणमान्य आर्य नर-नारियों ने दिवंगत आत्मा के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में शोक सभा का आयोजन करके दिवंगत आत्मा के प्रति सद्गति के लिए प्रार्थना की गई और दुखी परिवार के प्रति हार्दिक सम्वेदना प्रकट की गई।

एक बसन्त-जब एक फूल मसल दिया गया

प्रतिवर्ष बसन्त आता है—ऋतुराज बसन्त-नई उमंगों से भरपूर शिशिर की उदासी के बाद उत्साह लेकर आता बसन्त मानों संसार में जीवन का संचार कर देता है। पर आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व एक बसन्त ऐसा भी आया था, जब भारत माता के आंगन का एक खिलता फूल "वीर हकीकत" बर्बर, अत्याचारी शासकों के क्रूर हाथों से मसल दिया गया, जो यौवन का मदमाता बसन्त न देख सका। एक ऐसा फूल जो खिल के साथ ही टूट गया—पूर्ण न हुआ, पर पूर्णता को प्राप्त कर गया।

इस देश में एक से एक क्रांतिकारी एवं महान वीर हुए, जिनकी परस्पर तुलना करना ठीक नहीं—परन्तु उस धर्मवीर के बलिदान का उदाहरण नहीं मिलता, जिसकी मां ने शिक्षा दी "स्वधर्मे निधनं श्रेयः।" हे पुत्र! अपने धर्म में रहकर मर जाना भी अच्छा है—अपना धर्म छोड़कर, वैभवपूर्ण जीवन भी बेकार है।"

बाल वीर हकीकत को गले तक जब दीवार में चुन दिया गया, तो मुसलमान काजी ने कहा "यदि तुम मुसलमान हो जाओ, तो तुम्हें जानबख्श दी जायगी, और बड़े २ इनाम दिए जाएंगे" पर धन्य था वह वीर जिसने प्राण छोड़ना स्वीकार किया और अन्यायी धर्मान्ध काजी की बात पर थूक दिया।

पिता ने आंसू बहाए, बेटा तेरी मां और पत्नी का क्या होगा? वह रो २ कर मर जाएगी" 'तू मुसलमान होकर हमारे सामने तो रहेगा।" परन्तु अन्याय के पहाड़ से टकरा जाने वाले आदर्शवादी बहादुर मौत से नहीं डरते, क्योंकि उनका जीवन सिद्धान्तों की रक्षा में निहित है।" हकीकत को गीता का वह श्लोक याद था 'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि" यह आत्मा तो अमर है, उसे वह अत्याचारी काजी कैसे मारेगा?

दीवार पूरी चुन दी गई, दिव्य सुगन्धों से भरा फूल मसल दिया गया। मुस्लिम धर्मान्धता ने एक और घिनौना उदाहरण रूपी पत्थर इतिहास की दीवार में चुन दिया, जिस पर खड़ा हुआ, एक दिन, पाकिस्तान का काला महल।

उस बसन्त का स्मरण कर मन और मस्तिष्क एक दिव्य एवं विचित्र स्वर्गिक गन्ध से महक उठता है जो हमें ऊंचाइयों का रास्ता दिखाती है।

—आचार्य विमलदेव भारद्वाज

१४ १ ८८ को ग्राम ... (फुनवाणा) में यज्ञोपवीत लेने हुए ... होने वाले ... का एक समूह। बीच में श्री स्वामी धर्मानन्द जी

चित्र में श्रीमती अनसुइया ता... श्रीमती उमा बाई को सिलाई मशीन प्रदान क त हुये। सा ... श्रीमती श ... खण्डेलवाल श्रीमती गोपीदेवी आर्य डा ... चन्देल मजुला देवी मुछाल, श्रीमती प्रमिला सोनी दृष्टिगोचर हो रही हैं।

श्रीमती सावित्री देवी खण्डेलवाल ... ती नन्दा मडलोई श्रीमती चन्द्रकान्ता पालीवाल श्रीमती गोरीदेवी आर्य

आर्य समाज पनसल्ला बेगूसराय आर्य सम्मेलन आयोजित

आर्य समाज पनसल्ला बेगूसराय के तत्वावधान मे २८ से ३० दिसम्बर तक गायत्री महायज्ञ के साथ ही आर्य सम्मेलन आयोजित किया गया। सर्वश्री ...नारायण, सीताराम आर्य श्रीमती सिद्धेश्वरी आर्या ... रामसखा आर्य श्री नवलकिशोर शास्त्री श्री सत राम शास्त्री, श्री दयानन्द सत्यार्थी व श्री योगेन्द्र ... ब्रह्मचारी ने अपने प्रवचनो से जनता को वैदिक धर्म की महानता का सन्देश दिया।

आर्य समाज विन्दापुर (उत्तम नगर) दिल्ली राष्ट्र रक्षा यज्ञ व राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

आर्य समाज बिन्दापुर (उत्तम नगर) दिल्ली द्वारा चौ० सुल्तानसिंह मैमोरियल ट्रस्ट के तत्वावधान मे २६ जनवरी को राष्ट्र रक्षा यज्ञ व राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया प्रमुख अतिथि प० स च्चिदानन्द शास्त्री (महा मन्त्री सार्वदेशिक सभा) थे इस अवसर पर स्वामी आनन्दबोध जी की अध्यक्षता मे सम्मेलन हुआ ड० धर्मपाल जी श्री ओमप्रकाश आर्य ... ने समाज को उद्बोधन प्रदान किया। इस अवसर पर स्कूल के बच्चो के सुन्दर कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

श्री सीताराम बहल रायपुर का देहावसान

आर्य समाज रायपुर के पूर्व प्रधान व खालसा स्कूल के प्रिंसिपल श्री बलराज बहल के पिता श्री सीताराम जी ब ... का ९५ वर्ष की आयु मे १८ १ ८८ को देहावसान हो गया। आर्य समाज रायपुर ने एक शोक प्रस्ताव द्वारा इसे आर्य समाज की महान क्षति बत ... । सार्वदेशिक पत्र की ओर से भी हम शोक सवेदना प्रकट करते है

—शिवराज शास्त्री

श्री जयदत्त आर्य (हिसार) नहीं रहे

हिसार के कर्मठ कार्यकर्ता आर्य समाज के अत्यन्त उत्साही श्रद्धालु भक्त श्री जयदत्त आर्य का उनके निवास ... नव ... मण्डी हिसार मे हृदयगति रुकने से देहान्त हो गया। जयदत्त जी आर्य की बहुमुखी सेवाओ से वे अपने क्षेत्र के अत्यन्त लोकप्रिय सेवक जाने जाते थे। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति व शोक सतप्त परिवार को महन शक्ति प्रदान करे।

सूखा पीडित गुरुकुल आम सेना को सभा द्वारा ग्यारह हजार रुपए की सहायता

गुरुकुल आमसेना (कालाहाडी उडीसा) मे भयकर सूखा पड रहा है। वहा सभा द्वारा सूखा राहत केन्द्र खोला गया है। जिसका सचालन स्वामी धर्मानन्द जी महाराज कर रहे हैं। यह क्षेत्र आदिवासी है। यहा पर विदेशी मिशनरियां कार्य कर रही हैं उनके मुकाबले आर्य समाज द्वारा कार्य किया जा रहा है। सभा द्वारा पहले भी अन्न, वस्त्र आदि की सहायता प्रदान की गई थी अब सभा की ओर से स्वामीजी को ग्यारह हजार रुपए की राशि भेजी गई है। सार्वदेशिक सभा का मध्य प्रदेश के रतलाम झाबुआ बासवाडा क्षेत्रो में भी सूखा राहत सेवा का विशाल स्तर पर कार्य चल है

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] वर्ष २३ अंक ७] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र फाल्गुन कृ० १' सं० २०४४ रविवार १४ फरवरी १९८८ | दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष २७४७७१ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

ऋषिबोधोत्सव का पुण्यपर्व उत्साहपूर्वक मनायें

वेद सुधा

इच्छन्ति देवाः सुन्वतं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति यन्ति प्रमादं अतन्द्राः ।

ऋग्० ८।२।१८ अथर्व० २०।१८।३

अर्थ—दिव्य पुरुष शुभ कर्म करने वाले को चाहते हैं सपने देखने वाले (आलसी) को नही चाहते। वे (स्वयं) आलस रहित (देवजन) भूल (अपराध) करने वाले को सजा देते हैं।

व्याख्या—आलसी लोग अपने लिए और दूसरो के हानिकारक हुआ करते है। अपनी सुस्ती के कारण वे पाप कर्म करते रहते हैं। कई बार किसी अच्छे काम को शुरु करके पूरा किए बिना ही छोड़ दिया करते है। इस तरह वे जीवन मे सफल नही हो पाते। वे परमात्मा के प्यारे विद्वान् लोगों के सर्वहित कार्यों मे अपना सहयोग नही देते। ससार में अनुशासन पूर्ण व्यवस्था और नियमन सदा उत्तम पुरुषों द्वारा स्थापित किया जाता है। पाप, अपराध और भूलों का नियमों के अनुसार दड मिलता रहता है। रोग, शोक, मृत्यु, वियोग, गरीबी और धन-हानि सजा के कई रूप हैं। देवजन या ज्ञानी लोग स्वय आलस रहित हैं। भूल चूक और अपराध रहित होने से ईश्वर के आदेशो का पालन किया करते हैं। वे कभी भी आलसी लोगो को पसद नही करते। आलस के कारण पाप करने वालो को बार-बार सजा देकर वे उन्हे आलस की नीद से जगाते रहते हैं।

—प्रोफेसर सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का आर्यसमाजों को सन्देश

आगामी १६ फरवरी ८८ को महर्षि दयानन्द का बोधोत्सव देश-विदेश मे पूरे उत्साह से मनाने की तैयारियां हो रही हैं।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य जनो के नाम एक सन्देश प्रसारित कियाहै। स्वामी जी ने कहा कि बोधोत्सव के पावन पर्व पर आर्य समाजें आर्य शिक्षण संस्थाऐं तथा आर्य जन महर्षि के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने का कार्यक्रम बनाकर जनसम्पर्क स्थापित करें। इस अवसर पर वैदिक यज्ञ ध्वजारोहण तथा मौखिक प्रचार एव सार्वजनिक सभाए,प्रभातफेरियां करके बोधोत्सव के महान उद्देश्य को जनता तक पहुचाया जावे।

आर्य समाजो के सभासद् बनाऐं जावें ग्राम प्रचार तथा पारिवारिक सत्संगों की योजना बनाकर आर्य समाज के कार्यक्रम को सर्वसाधारण तक पहुचाया जावे।

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

एम. डी. एच. सत्संग भवन कीर्ति नगर, दिल्ली

१२ फरवरी १९८८ शुक्रवार सायं ४॥ से ६॥ बजे

अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

वक्ता —श्री स्वा० रामेश्वरानन्द सरस्वती घरौंडा, डा० धर्मपाल प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा डा०शिवकुमार शास्त्री महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, श्री नवीनपुरी सम्पादक दैनिक मिलाप

इस समारोह में आप सपरिवार एव इष्ट मित्रो सहित सादर आमन्त्रित हैं।

महाशय धर्मपाल प्रधान | सालीग्राम शर्मा वेदप्रचार अधिष्ठाता

वेद प्रचार विभाग महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट

९/४४ औद्योगिक क्षेत्र कीर्ति नगर नई दिल्ली १५

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

अद्भुत बोध

प्रस्तोता श्री सत्यानन्द आर्य

"मैं सच्चे शिव के दर्शन करूंगा" ऐसा दृढ़ निश्चय कर १४ वर्षीय बालक मूलशंकर घर से क्यों निकल पड़ा, ऐसी कौन सी घटना थी जिससे वे प्रेरित हुए शिव को जानने को। स्वामी दयानन्द ने स्वयं वर्णन किया है उस अमर घटना का जिसने युग प्रवर्तक दयानन्द को अद्भुत बोध प्रदान किया। वर्णन इस प्रकार है—

"पिता की आज्ञा के अनुसार मैं उस दिन रात्रि के समय अन्यान्य लोगों के साथ सम्मिलित होकर शिवमन्दिर में गया। शिवरात्रि का जागरण चार पहरों में विभक्त होता है, दो पहरों के पश्चात् जब निशीथ काल आया तब पुरोहित और अन्यान्य लोग मन्दिर से बाहर आकर सो गये। मैं बहुत दिन से सुनता था कि यदि वह मनुष्य जिसने व्रत धारण किया है शिवरात्रि को सो जायेगा तो वह अभिलाषित फल की प्राप्ति से वंचित रहेगा। इसीलिए बीच-बीच में निद्रा के वेग से अभिभूत होने पर भी मैं पुनः पुनः आंखों में जल सिंचन करके जागरित रहा। पिताजी भी मुझको जागने का आदेश देकर निद्राविष्ट हो गये। तभी मैंने साश्चर्य देखा कि कुछ चूहे शिवपिण्डी पर खेलने खाने लगे। उस समय विचार पर विचार आकर मेरे हृदय पर अधिकार जमाने लगे।

मेरे मन में नाना प्रकार के प्रश्न उठने लगे फलतः मैं चिन्ता स्रोत से विचलित हो गया। मैं आप ही अपने से जिज्ञासा करने लगा कि शास्त्र में कहा गया है कि "महादेव विचरण करते हैं, भोजन करते हैं, सोते हैं, पीते हैं, त्रिशूल धारण कर सकते हैं, डमरु बजाते हैं और मनुष्य को शाप प्रदान कर सकते हैं" तो क्या वह महादेव यही वृषवाहन पुरुष हैं जो मेरे सामने हैं। क्या यही वह पुराण कथित कैलाशपति परमेश्वर हैं? इस चिन्ता से अत्यन्त अस्थिर चित्त होकर मैंने पिता को जगाकर जिज्ञासा की कि क्या यह निकट शिवमूर्ति ही वह शास्त्रोल्लिखित महादेव हैं? उसके उत्तर में पिता ने कहा—'तू यह बात क्यों पूछता है?" मैंने कहा कि यदि वह मूर्ति ही सर्वशक्तिमान् जीवन्त परमेश्वर है तो यह अपने शरीर के ऊपर चूहों को दौड़ता हुआ देखता हुआ और चूहों के सम्पर्क से अपवित्र होता हुआ भी उनको क्यों नहीं भगा देता। तब पिता ने मुझे समझाने की चेष्टा की कि कैलाशपति महादेव की इस प्रस्तरमय मूर्ति ने पवित्र चित्त ब्राह्मणों द्वारा की हुई प्रतिष्ठा के कारण देवत्वलाभ कर लिया है। विशेषतः इस पापमय कलियुग में महादेव का साक्षात्कार होना असम्भव है। इसलिए पाषाणादि की मूर्ति में ही उनकी सत्ता कल्पित की जाती है। पिता की इन बातों से मेरी तृप्ति नहीं हुई। अस्तु श्रान्त और क्षुधित होने के कारण मैंने घर लौटने की आज्ञा मांगी। पिता ने आज्ञा देकर मेरे साथ एक सिपाही कर दिया और इस विषय में कि मैं भोजन करके व्रत भंग न करूं बारम्बार मुझसे कह दिया, परन्तु घर में आकर जब मैंने माता से क्षुधा की कथा को प्रकाशित किया, तब उन्होंने जो कुछ मुझे आहार के लिए दिया उसको मैं बिना खाये नहीं रह सका। भोजन के पश्चात् मुझे गहरी नींद आ गई। दूसरे दिन पिता ने घर में आकर सुना कि मैंने व्रत भंग किया है, यह सुनकर वे मेरे ऊपर बड़े क्रोधित हुए और मुझको वह यह समझाने लगे कि मैंने व्रत भंग करके महापाप किया है। परन्तु मैं उस पाषाण की मूर्ति को परमेश्वर भाव से विश्वास न कर सका और मन में सोचने लगा कि फिर मैं उसकी कैसे उपासना करूंगा और उसके लिए उपवास रखूंगा?

हैदराबाद सत्याग्रह के सत्याग्रही

भारत सरकार द्वारा निम्न सत्याग्रहियों के सम्बन्ध में प्रान्तीय सरकारों को पेंशन देने की सिफारिश की गई है।

(१) श्री राधाराम पुत्र श्री कलासिंह मकान नं० ११६ वार्ड ४ मोहल्लापुर बिवानघट्टी पानीपत (करनाल) हरियाणा।
(२) श्री पोलूराम पुत्र श्री कान्हाराम बाण्डाखेड़ी तहसील हांसी जिला हिसार (हरियाणा)।
(३) श्रीमती ज्ञानोदेवी पत्नी श्री रामचन्द्र पो० सिराई तहसील हांसी (हिसार) हरियाणा।
(४) श्रीमती श्यचाम देवी पत्नी श्री बाडूराम, पो० बुडाना तहसील हांसी (हिसार) हरियाणा
(५) श्री मानसिंह पुत्र श्री रामरिछपाल ग्राम पोस्ट छारा जि. रोहतक (हरि.)
(६) श्री भरतसिंह पुत्र श्री गोकुल ग्राम पो० कसांधा तेहसील गोहाना जिला सोनीपत (हरियाणा)
(७) श्री मानसिंह पुत्र श्री मुगलसिंह ग्राम पो० बुडाना तेहसील हांसी जिला हिसार (हरियाणा)
(८) श्री हरीसिंह पुत्र श्री दीवानचन्द मकान न० ७८४ वार्ड ७, प्रेमबस्ती न्यू रविदास भवन पानीपत करनाल हरियाणा
(९) श्री कपिलदेव पुत्र श्री बबलूराम ग्राम पो० बरवाला तहसील गोहाना जिला सोनीपत (हरियाणा)
(१०) श्री जयसिंह पुत्र श्री बयराम ग्राम पो० बुवाणा तहसील पानीपत जिला करनाल (हरियाणा)
(११) श्री बालचन्द पुत्र श्री मूलचन्द ग्राम पो० भापरोदा जि. रोहतक (हरि.)
(१२) श्री जयदेव पुत्र श्री झम्मनदास ग्राम बन्नौर जिला सोनीपत हरियाणा
(१३) श्री सीसराम पुत्र श्री मोहीराम ग्रा. पो० मिरचपुर जि० हिसार (हरि०)
(१४) श्री स्वरूपसिंह पुत्र श्री रतनसिंह ग्राम पो० मिलकपुर तहसील हांसी (हिसार) हरियाणा
(१५) श्री नफासिंह पुत्र श्री हरफूल सिंह ग्राम पो० पाकसमा जिला रोहतक हरियाणा
(१६) ईश्वरचन्द्र पुत्र श्री फताचन्द द्वारा श्रीमती लीलावती आर्य पी. एच. एस. १ ग्राम पो० टौकरा तहसील पटौदी जिला गुड़गांव (हरियाणा)
(१७) श्री हंसराज पुत्र मुंशीराम मकान न० ३४८/१ थावला गेट कैथल जिला कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
(१८) श्री मनतराम पुत्र श्री मसाम्या ग्रा. पो. बाल्याना जि. रोहतक (हरि०)
(१९) श्री देवताराम पुत्र श्री लच्छीराम द्वारा श्री बनारसी दास हलवाई निकट अग्रवाल धर्मशाला कैथल जि० कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
(२०) श्री सत्यदेव वर्मा पुत्र श्री धर्मवीर ९५१ माडलटाउन यमुनानगर अम्बाला (हरियाणा)
(२१) श्री मुंशीराम पुत्र श्री भियाराम ग्रा. पो. मिरचपुर जि. हिसार (हरि.)
(२२) श्री दयाराम पुत्र श्री रामचन्द मकान १२०/१२ कोठ मण्डी जिला
(२३) श्री करतार कृष्ण शास्त्री पुत्र श्री रघुनाथ राममन्दिर विजयनगर गाजियाबाद।
(२४) श्री हरचन्द पुत्र तोताराम ग्रा०पो० उमरा तेहसील हांसी (हिसार) हरियाणा।
(२५) श्री देसराज प्रेम पुत्र दरबारी राम २८४ बड़ी मोहल्ला रोहतक (हरियाणा)।
(२६) श्री तेजपाल सिंह पुत्र श्री कृष्णसहाय कौसाली बल्लभगढ़ (फरीदाबाद) हरियाणा।
(२७) श्री छोटाराम पुत्र श्री अविनाश ग्रा० पो० मिरचपुर तहसील हांसी जिला हिसार (हरियाणा)
(२८) श्री सास्तु गुप्ता पुत्र श्री रामफल गुप्ता पुरानी अदालत रोड आरा चौक भोजपुर (बिहार)
(२९) श्री वेद प्रकाश पुत्र श्री रामचन्द्र ४३०१/१३ पंजाबी मोहल्ला अम्बाला छावनी।
(३०) श्री रामचन्द्र पालीवाल पुत्र श्री बुधराम पालीवाल निवास जी० टी० रोड पानीपत जिला करनाल हरियाणा।

सम्पादकीय

संगठन व अनुशासन

महर्षि दयानन्द ने वैदिक धर्म के प्रचार व आर्य (हिन्दू जाति) के पुनरुद्धार व पुनर्जीवन को लक्ष्य मे रखकर आर्य समाज का सगठन आज से लगभग ११२ वर्ष पूर्व किया था। स्वय महर्षि का जीवन न केवल तप त्याग का जीवन था। उन्हे समय समय पर जो उनके भक्तो से श्रद्धा पूर्वक धन राशि प्राप्त होती रही व जिसका उपयोग वे अपने अमर साहित्य के प्रकाशन मे लगाते रहें उस सबका एक ट्रस्ट "परोपकारिणी सभा के नाम से उन्होने निर्माण कर दिया जिसके ट्रस्टी उन्होंने सम्भ्रान्त व विश्वसनीय ट्रस्टियो को मनोनीत कर दिया जो आज तक उनके मिशन का प्रचार निःस्वार्थ भाव से कर रहे है। यह सगठन महर्षि की अमर स्मृति है।

आर्य समाज के नियम उपनियमो के आधार पर सामान्य आर्य जनता को भी समाजो के सचालन का उत्तरदायित्व वे सौंप गए जिसकी पुरानी व प्रथम पीढी ने तन मन धन से आर्य समाज के विकास के लिए अहर्निश प्रयत्न किया। स गठन में कही कोई मतभेद भी उत्पन्न हुए तो वे विचारो व कार्य पद्धति के ही थे उनमें स्वार्थ व सत्ता के दुरुपयोग की कही गध भी दृष्टिगोचर नही होती है। तपोमूर्ति महात्मा हसराज व अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द दोनो ही त्याग तपस्या की मूर्ति थे। यही कारण था जहा महात्मा हसराज की द्वारा निर्मित सस्थाऐं अहर्निश उन्नति के चर्मोत्कर्ष पर थी वहा स्वामी श्रद्धानन्द जी की शिक्षण व प्रचार स स्थाओं ने भी उच्चकोटि के वैदिक धर्म के प्रचारक उत्पन्न किए स्वय उन्होंने भी सत्ता का दुरुपयोग नही होने दिया। वे अपने आप में एक महान स स्था थे। उनके बलिदान ने भी आर्यसमाज को जीवन प्रदान किया वह आज तक समाज का एक गौरवशाली इतिहास बना रहा है। देश उन्हें कभी भुला नही सकता।

गत १०० वर्ष से अधिक काल मे जहा आर्य समाज की सगठन शक्ति बढी है वहा समाजों के मंदिरो की सम्पत्ति के रूप मे व अन्य स स्थाओ के भवनो के रूप मेव अन्य स स्थाओं के भवनो के रूप में समाज का स गठन अपार सम्पत्ति का स्वामी बन गया है।

सम्पत्ति जहा कार्य स चालन को सुगम बनाती है वहा अनधिकारी सदस्यों के हाथों में आने पर विनाश व हानि का कारण भी बन जाती है। किसी कवि ने इस स कट का सुन्दर वर्णन किया है

कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय
वह खाए बौरात है वह पाए बौराय

कनक सोना, कनक धतुरे से सौगुना नशा उत्पन्न कर देता है धतूरा तो खाने से पागलपन आता है परन्तु सोना सम्पत्ति पाते ही मनुष्य पर पागल पन छा जाता है।

कवि के इस भाव को हम हमारे सगठनो मे भी प्रवतमान पाते हैं। समाजों की सदस्यता येन केन प्रकारेण प्राप्त करके सदस्य लोग सत्ता का जब दुरुपयोग करते हैं व समाज को अपनी वैयक्तिक प्रतिष्ठा व व्यक्तिगत सम्पत्ति मानकर जब परस्पर वैर विग्रह के शिकार होते हैं जो निश्चय ही समाज की हानि व अप्रतिष्ठा होती है।

आर्य समाज का प्रजातांत्रिक सगठन आज इस मानवीय दुर्बलता के कारण कई बार समाज की भयकर बर्बादी व अप्रतिष्ठा का कारण बनता जा रहा है। समाज के नियमो का अनुशासन पूर्वक पालन करने वालो को त्याग भाव से सेवा करना कर्तव्य है उसके बजाय पदों की लालसा व पद प्राप्ति के लिए उचित अनुचित उपायो का अवलम्बन समाज की भीषण हानि का कारण बनता है। शायद इसी भाव को आर्य समाज के महान मिशनरी कुवर सुख लाल जी आर्य मुसाफिर ने अपनी पीडा मे व्यक्त किया था—

जिन्हें ससार मे ससार का उपकार करना था
जिन्हें दुनिया में वैदिक धर्म का प्रचार करना था
जिन्हे निज देश और जाति का बेडा पार करना था
अनाथो और अछूतो का जिन्हें उद्धार करना था
उन्हे देखो कि बाहम बरसरे पैकार बैठे हैं
वजूद अपना मिटाने के लिए तैयार बैठे हैं
समाजो मे सदा वह सगठन के गीत गाते हैं।
बडी बाते बनाते हैं बडे सरमन सुनाते हैं
खुदाई का वह खुद को बेगरज खादिम बताते हैं
जो उनके दिल टटोलो तो खुदी से स्याह पाते हैं।
यही नेता रहे तो हो चुका उद्धार वेदों का
इन्हे तो खून करना है दयानन्द की उम्मीदो का

आज जबकि देश व समाज पर अनेक स कटो के बादल छाए हैं। जिन दोषो के कारण देश को १००० वर्ष तक दासता की दयनीय जजीरों में असहाय रूप से तडपना पडा है वे ही दोष व दुर्गुण समाज मे बढ रहे हैं। जिनके निवारण के लिए देव दयानन्द को इस दिव्य स स्था का निर्माण करना पडा। यदि इसी पवित्र स स्था में कही अनुशासन हीनता व व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओ के लिए समाज को हानि पहुचाने के समाचार सुनाई देते हैं तो कितनी पीडा व चिन्ता का अनुभव होता है कि समाज नष्ट हुआ तो देश का क्या बनेगा ?

विश्व हिन्दू संघ (नैपाल) द्वारा काठमण्डू में हिन्दू सम्मेलन की जोरदार तैयारियां

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा निमन्त्रण स्वीकार

आर्य जगत् को यह समाचार देते हुए प्रसन्नता हो रही है कि आगामी २४ से २४ मार्च १९८८ तक नैपाल के पशुपतिनगर काठमण्डू मे विश्व हिन्दू सघ का सम्मेलन समारोह पूर्वक किया जा रहा है। इसमे अनेक धर्माचार्य भी पधारेंगे। सम्मेलन का उद्घाटन समारोह २६ मार्च को हिन्दू सम्राट श्री ५ वीरेन्द्र वीर विक्रम शाह देव जी द्वारा होगा। नैपाल के भू०पू० प्रधान मन्त्री श्री नगेन्द्र प्रसाद जी रिजाल व पश्च विश्व हिन्दू सघ तथा सगठन के सभी कार्यकर्ता व अधिकारी जोर शोर से इस आयोजन की सफलता के लिए प्रयत्नशील हैं।

इस सम्मेलन मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया है। स्वामी जी ने यह निमन्त्रण स्वीकार कर लिया है और पटना रक्सौल के रास्ते आर्य समाज का प्रचार प्रसार करते हुए काठमण्डू जाने का कार्यक्रम बनाया रहा है।

इस अवसर पर श्री स्वामी जी श्री ५ महाराजाधिराज सरकार के साथ भेंट और नैपाल मे आर्य सम्मेलन को भी सम्बोधित करेंगे।

क्या मन्त्री व प्रधान बने बिना हम महर्षि के महान मिशन की सेवा नही कर सकते फिर सत्ता व पदलोलुपता की दौड मे समाज के गौरव को घटाने वालो को किस कोटि मे रखा जाए। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं की असयमित दौडने ही तो पहले देश की दुर्दशा करदी थी। इसीलिए महर्षि ने इस महारोग का इलाज अपने समाज के १०वें नियम मे कितने मार्मिक शब्दों में प्रस्तुत किया था जिनका पालन करना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है।

प्रत्येक को सामाजिक व सर्वहितकारी नियमो को पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए। प्रत्येक हितकारी नियम मे सब स्वतन्त्र रहें।

हमे स गठन के नियमों व मर्यादाओं के पालन में स गठन की प्रतिष्ठा व गौरव के लिए यदि स्वय को बलिदान करना पड़े तो भी कर्तव्य का पालन करना हमारा धर्म है। यदि इस उच्चकोटि की महर्षि की शिक्षा का पालन समाज के सदस्य करने लगे तो समाज का स गठन चिरतन लोक कल्याण के मार्ग पर चलता रहेगा। यदि मैं आज पदाधिकारी हूं और इसे मैं जीवन भर व्यक्तिगत सम्पत्ति के रूप मे उपभोग करता रहूं यह तामसिक व हानिकारक भाव मन में आते ही समाज मे विनाश के बीज बोने प्रारम्भ हो जाएगे।

यत्र तत्र जहा समाजो में वैर विग्रह के उदाहरण पाए जाते हैं वे इसी मानवीय दुर्बलता के लक्षण हैं। महर्षि की महान स स्था को इन मानवीय दोषों से बचाकर अनुशासन व मर्यादा के दैवीय मार्ग पर अग्रसर करना प्रत्येक सच्चे आर्य का परम धर्म है। व्यक्ति से समाज मूल्यवान होता है। एक कवि ने बडा सुन्दर कहा है—

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सर्वतोमुखी क्रान्ति के अग्रदूत :

महर्षि दयानन्द

श्री शिवकुमार शास्त्री

प्रसिद्ध इतिहासकार रोम्यांरोला ने युग प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में अपने उदगार प्रकट करते हुए कहा था—"आर्य समाज सब मनुष्यों एवं सब देशों के प्रति न्याय और स्त्री पुरुषों की समानता को सिद्धान्त रूप में स्वीकार करता है। यह जन्मना जात-पांत का विरोधी है और गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर वर्ण-व्यवस्था को मानता है। इस विभाजन से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं। अस्पृश्यता से आर्यसमाज को घोर घृणा है। स्वामी दयानन्द से बढ़कर हरिजनो के हितों का रक्षक दूसरा कोई कठिनाई से ही मिलेगा। स्त्रियों को दयनीय स्थिति से उभारने, समान अधिकार दिलाने और शिक्षा की उपयुक्त व्यवस्था कराने में दयानन्द जी ने बड़ी उदारता और बहादुरी से काम लिया।

भारत में जो इस समय राष्ट्रीय पुनर्जागरण दीख रहा है उसमें भी स्वामी दयानन्द ने प्रबल शक्ति के रूप में काम किया। दयानन्द संगठन और पुनर्निर्माण का उत्साही मसीहा था। मैं समझता हूं राजनीतिक जागरण को बनाए रखने और सही दिशा देने में उनका प्रमुख हाथ रहा है।

इतिहास साक्षी है कि जिस समय देव दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ उस समय प्राचीन वैदिक धर्मी नाना प्रकार के मत-मतान्तरों की मदिरा से मत्त होकर पथभ्रष्ट हो चुके थे। एक ईश्वर के स्थान पर अनेक मनमाने ईश्वर बना लिए गये थे, श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ हिंसा का शिकार हो रहा था, वेदो के भाष्य के नाम पर अनर्गल प्रचार हो रहा था, विधर्मी वेदों को गडरियों के गीत कहकर हमारे धर्म की खिल्ली उड़ा रहे थे, अन्धविश्वास और पाखण्ड चरम सीमा पर था, गुरु को ईश्वर से बड़ा समझा जाता था, स्वार्थी और पाखण्डी पण्डितो ने "स्त्रीशूद्रौनाधीयताम्" का फतवा देकर इनके लिए वेदों का द्वार सदा के लिए बन्द कर रखा था, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह और बहु-विवाह पर जहां कोई प्रतिबन्ध नहीं था वहां विधवा विवाह तथा पुनर्विवाह की चर्चा तक करना अपराध माना जाता था, हरिजन देव मन्दिरों में नहीं जा सकते थे, वे सवर्णो के कुंओ से पानी नहीं भर सकते थे, सतीप्रथा एव यज्ञों में पशुबलि जैसी बुराइयां धर्म के नाम पर पनप रही थी, हिन्दू समाज प्याज के छिलकों की तरह सारहीन बना हुआ था, राजनैतिक दृष्टि से हम परतन्त्र तो थे ही आपस में भी राजा-महाराजा एक दूसरे का विरोध कर अंग्रेजी सत्ता के हाथ मजबूत कर रहे थे, अनाथों एवं विधवाओं का क्रन्दन समाज के लिए अभिशाप बना हुआ था, विदेशी शिक्षा चिन्तकों, विचारकों एवं मनीषियों के स्थान पर केवल क्लर्क बना रही थी, सन् १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम के बाद सभी के मन बुझ हुए थे, उस समय के शासक सुरा और सुन्दरी के पाश में जकड़े हुए थे, सम्पूर्ण भूमण्डल पर सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित करने वालों की सन्तान अपने गौरव को भूलकर अंग्रेजोंकी चाटुकारिता करने में ही अपने को धन्य समझने लगी थी, राणा और शिवा की सन्तान अन्याय के खिलाफ बोल नहीं पा रही थी। ऐसी विषम से विषमतर और विषमतर से विषमतम परिस्थितियों में देव दयानन्द ने आर्य जाति को झकझोरा। आज देश में जो शुभ लक्षण दिखाई दे रहे हैं उनके मूल में दयानन्द का अथक परिश्रम विद्यमान है।

स्वराज्य शब्द का बोध कराने वाले महर्षि दयानन्द की कृपा से हमारे देश में नई चेतना और जागृति आई थी। स्वामी जी ने हिन्दू धर्म को,जो प्याज,के छिलको की तरह बटा हुआ था—संगठित करने के लिए एकेश्वरवाद, त्रैतवाद एवं पंचमहायज्ञों का विधान किया।

हिन्दी भाषा के वे प्रबल समर्थक थे। संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित और अहिन्दी भाषी होते हुए भी उन्होंने अपने ग्रन्थ आर्य भाषा (हिन्दी) में लिखे, सभी आर्यसमाजियों के लिए हिन्दी व्यवहार करना आवश्यक बताया।

नारी जो कि पैरों की जूती और नरक का द्वारा समझी जाती थी देव दयानन्द के लिए पूजा एवं श्रद्धा के योग्य थी। उन्होंने मनु के डिण्डिम घोष का पुनरुदघोष करते हुए कहा—"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्तेतत्र देवता:।"

स्वराज्य और स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग के लिए तत्कालीन राजा-महाराजाओं को प्रेरित किया।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को जन्म देकर उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में सबको समान अधिकार देने का प्रयास कर ऊंच-नीच की भावना को समाप्त किया। गौ को भारत की समृद्धि का कारण बताते हुए उनकी हत्या पर रोक लगाने की ब्रिटिश शासन से जोरदार मांग की।

मजहबी जुनून से हटकर स्वामी जी ने कहा—

"मेरा कोई नवीन कल्पना वा मत-मतान्तर चलाने का लेश-मात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त्त में प्रचलित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता।"

आपस की फूट के भयंकर परिणामों की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने चेतावनी दी—

"जब भाई-भाई आपस में लड़ते हैं तब तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।"

"आपस की फूट के कारण कौरवों, पाण्डवों एवं यादवों का सत्यनाश हो गया सो तो हो गया परन्तु वह भयंकर राक्षस अब भी आर्यों के पीछे लगा है। न जाने कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःख सागर में डुबा मारेगा।"

शिवरात्रि का यह महान् पर्व हमारे आत्मनिरीक्षण का पर्व है। जिस ऋषि ने बोध प्राप्ति से लेकर जीवन के अन्त तक अपना प्रत्येक क्षण संसार के उपकार में व्यतीत किया, जिसने विष पीकर अमृत प्रदान किया उस महान् ऋषि के बोधोत्सव को मनाते हुए हम सभी प्रतिज्ञा करें कि देव दयानन्द के अधूरे कार्यों को पूरा करने का संकल्प करतेहुए कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के नारे को सार्थक सिद्ध करेंगे।

संगठन और अनुशासन

(पृष्ठ ३ का शेष)

त्यजेत् एक कुलस्यार्थे। यदि एक व्यक्ति के त्यागने से कुल की रक्षा होती है तो व्यक्ति का मोह छोड़कर कुल की रक्षा धर्म है। समाज बचेगा तो व्यक्ति और भी पैदा हो जायेंगे। यदि हम व्यक्तिगत रागद्वेष मे समाज को ही नष्ट करने पर उतर आयेंगे तो व्यक्ति ही कैसे बच सकेंगे।

संगठन व अनुशासन के इस महान मन्त्र को समझकर ही समाज की रक्षा की जा सकती है। पद लोलुपता व अनुशासन हीनता के आज के इस बर्बर युग में देवदयानन्द के दिव्य व महान संगठन की प्राण पण से रक्षा करना प्रत्येक आर्य को अपना परम धर्म मानकर समाजों को विघटन व अनुशासन हीनतासे बचाने काप्रयास करना चाहिए। आज समर्पो व देवासुर संग्राम की सी असमंजस्य दु:खद घड़ियो मे क्या ऋषि भक्त अपनी जननी आर्यसमाज व उसके संगठन की रक्षा का दृढ़ संकल्प लेंगे। ऋषि ने कर्तव्यों व सेवा का महान उत्तरदायित्व हमें सौंपा है। यदि हमी दोषों व हीनताओं में ग्रसित हो गये तो बताओ फिर—

और आएगा हमें कौन बचाने के लिए।
जमाना ताक में बैठा है मिटाने के लिए॥

आर्यो जागो, सच्चे आर्य बनो। महर्षि का यह अमर स्मारक तुम्हारी कर्तव्य परायणता व सजग सूझबूझ की बाट देख रहा है। समाज के हितों की परवाह न करके व्यक्तिगत स्वार्थों की दौड़ में दौड़ने वालों से स्वयं सावधान रहो व जनता को सावधान करो।

संस्कृत भाषा का पुनरुद्धार :
महर्षि दयानन्द का महान् संकल्प

—डा० प्रशान्त वेदालंकार—

संस्कृत के विरोध में सबसे बड़ा तर्क यह दिया जाता है कि यह एक अप्रचलित भाषा है, और इसका आज कुछ भी महत्व नहीं है। इसी कारण शिक्षा-सूत्र और नयी शिक्षा-नीति में संस्कृत की सर्वथा उपेक्षा की गयी है। पर यह धारणा संस्कृत के महत्व को न समझने के कारण है। दयानन्द का मत था कि संस्कृत का महत्व अनेक दृष्टियों से है, विशेष रूप से इसमें विद्यमान आध्यात्मिक विद्या से सुलाभ लेने के लिए इसका अध्ययन आवश्यक है। स्वामी विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त महर्षि सर्वप्रथम आगरा पहुंचे। वहां सुन्दरलाल उनके शिष्य बने। एक दिन आदित्यवार के दिन सुन्दरलाल जी ने स्वामी जी से निवेदन किया कि—'संस्कृत भाषा तो मृत मानी जाती है, कहीं व्यवहार में नहीं आती तो आपने इस पर इतना परिश्रम क्यों किया? स्वामी जी ने उत्तर दिया—'इससे अपना परलोक सुधारेंगे। स्पष्टतः दयानन्द का संकेत संस्कृत में विद्यमान अध्यात्म विद्या की ओर था।

किन्तु दयानन्द संस्कृत का महत्व केवल उसमें विद्यमान अध्यात्म विद्या के ही कारण नहीं मानते थे। उनके मत में अनेक भौतिक विद्याओं की दृष्टि से भी संस्कृत का महत्व किसी भाषा से कम नहीं है। विशेष रूप से प्राचीन भारत के ज्ञान के किसी भी क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए संस्कृत का अध्ययन आवश्यक है। इसके लिए महर्षि ने दाराशिकोह का उदाहरण दिया है। दाराशिकोह का निश्चय था कि जैसी पूरी विद्या संस्कृत में है वैसी किसी भाषा में नहीं है। वे उपनिषदों के भाषान्तर में लिखते हैं कि मैंने अरबी आदि बहुत सी भाषा पढ़ी परन्तु मेरे मन का सन्देह छूटकर आनन्द न हुआ, जब संस्कृत पढ़ी और सुनी तब निःसन्देह मुझको बड़ा आनन्द हुआ है।

(सत्यार्थप्रकाश, एकादशसमुल्लास)

इसके अतिरिक्त भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से संस्कृत का महत्व संसार की प्रत्येक भाषा के लिए है। अलीगढ़ में मुसलमानों से वार्तालाप के मध्य दयानन्द ने कहा कि संस्कृत भाषा एक स्वाभाविक और ईश्वरप्रदत्त भाषा है। इसके स्वरों को लीजिए, इनकी ध्वनि सब देशों में पाई जाती है। सब प्रचलित भाषाओं में इसी की अक्षर माला नैसर्गिक है। छोटा सा बच्चा भी अ, इ, उ का उच्चारण बिना सिखाए करने लग जाता है। क, ख आदि व्यंजनों का उच्चारण भी ऐसा ही सुगम और स्वाभाविक है। जो भाषा स्वाभाविक ध्वनि के अक्षरों से बनी है वही भाषा स्वाभाविक और आदिम होनी चाहिए। ईश्वरीय आदेश उसी भाषा में होने उचित हैं।

६ सितम्बर १८७२ को आगरा से होकर आरा के तत्कालीन मजिस्ट्रेट जिला मिस्टर एच० डब्ल्यू अलेक्जेण्डर से स्वामी जी का मिलना हुआ। स्वामी जी ने उनसे संस्कृत में सम्भाषण किया, जिसे रघुजी बाबू अनुवाद करके समझाते जाते थे। मजिस्ट्रेट स्वामी जी के कथन को बहुत ध्यान से सुनता था। उसने स्वामी जी से संस्कृत बोलने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि भारत वर्ष में द्राविड़ प्रभृति अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। तब मैं किस भाषा में बोलूं? इसके अतिरिक्त संस्कृत सारे हिन्दुओं की भाषा है, और समस्त भाषाओं का मूल है। अतः संस्कृत बोलना ही अच्छा है।

दयानन्द ने संस्कृत भाषा के उक्त महत्व के कारण उसका प्रचार व प्रसार करना अपना एक कर्तव्य निश्चित किया था। दयानन्द संस्कृत की कितनी आवश्यकता अनुभव करते थे, यह उनके एक विज्ञापन से पता चलता है। दयानन्द ने लिखा— 'आर्यावर्त देश का राजा इंगरेज बहादुर से यह मेरा विज्ञापन है कि संस्कृत विद्या की ऋषि मुनियों की रीति से प्रवृत्ति कराए इससे राजा और प्रजा को अनन्त सुख लाभ होगा। और जितने आर्यावर्त-वासी सज्जन लोग हैं, उनसे भी मेरा यह कहना है कि इससे इस सनातन संस्कृत विद्या का उद्धार अवश्य करें व इससे अत्यन्त आनन्द होगा और जो यह संस्कृत विद्या लुप्त हो जाएगी तो सब मनुष्यों की बहुत हानि होगी। इसमें कुछ सन्देह नहीं।

दयानन्द जहां भी जाते वहां संस्कृत का प्रचार करते और स्वयं लोगों को संस्कृत सिखाते। आगरा में दयानन्द ने संस्कृत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यदि कोई अन्य पुरुष भी स्वकल्याण करना चाहे तो सहायता देने के लिए उद्यत हूं। उन्हीं की प्रेरणा से पं० सुन्दरलाल जी और बालमुकन्द जी ने अष्टाध्यायी का अध्ययन आरम्भ किया था। लाहौर में उन्होंने संस्कृत के महत्व पर प्रकाश डाला तो प्रायः सभी सभासद् संस्कृत पढ़ने लग गए थे। स्वामी जी के पास भी बहुत से लोग अध्ययन करने आया करते थे। उनके सारगर्भित उपदेशों को सुनकर अनेक लोगों के हृदय में संस्कृत भाषा सीखने के लिये उत्साह उत्पन्न हुआ। स्वामी जी को जब भी अवसर मिला उन्होंने स्वयं अनेक लोगों को संस्कृत पढ़ानी आरम्भ कर दी।

महर्षि दयानन्द ने जहां कुछ व्यक्तियों को संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा दी, वहां पाठशाला आदि खोलकर भी संस्कृत का विकास किया। सन १८७८ में अपने एक विज्ञापन में उन्होंने लिखा कि जैसा आर्यावर्तवासी आर्य लोग आर्य-समाजों के सभासद् करते और कराना चाहते हैं कि संस्कृत विद्या के जानने वाले स्वदेशियों की बढ़ती के अभिलाषी, परोपकारक निष्कपट हो के सबको सत्यविद्या देने की इच्छा युक्त, धार्मिक विद्वानों की उपदेशक मण्डली और वेदादिसत्य शास्त्रों के पढ़ने के लिए पाठशाला किया चाहते हैं।

१६ मार्च १८७९ को दीनापुर (दानापुर) के आर्य समाज के मन्त्री को लिखा कि मुझे यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप आर्य-संस्कृत-पाठशाला खोलने का प्रयत्न कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द के ही प्रयत्नों से फर्रुखाबाद में पाठशाला आरम्भ हुई थी, उसमें भी दयानन्द संस्कृत की शिक्षा पर ही विशेष बल देना चाहते थे। २३ मई १८८१ को सेठ निर्भयराम जी को एक पत्र में उन्होंने लिखा—आप लोगों की पाठशाला में आर्यभाषा संस्कृत का प्रचार बहुत कम और अन्य भाषा अंग्रेजी व उर्दू, फारसी अधिक पढ़ाई जाती है। इससे वह अभीष्ट जिसके लिए यह शाला खोली गई है सिद्ध होता नहीं दीखता। वरन् आपका यह हजारों मुद्रा का व्यय संस्कृत की ओर से निष्फल होता जान-

है। हमने कभी परीक्षा के कायदात वा आज तक की परीक्षा का फल कुछ नहीं देखा। आप लोग देखते हैं कि बहुत काल से आर्यावर्त में संस्कृत का अभाव हो रहा है। वरन् संस्कृत रूपी मातृभाषा की जगह अंग्रेजी लोगों की मातृभाषा हो चली है। अंग्रेजी का प्रचार तो जगह-जगह सम्राट की ओर से जिनकी यह मातृभाषा है, भली प्रकार हो रहा है। अब इसकी वृद्धि में हम तुम को इतनी आवश्यकता नहीं दीखती। और न सम्राट् के सवाय कुछ कर सकते हैं। हां, हमारी अति प्राचीन मातृभाषा संस्कृत जिसका सहायक वर्तमान मे कोई नहीं है। यही व्यवस्था देखकर संस्कृत के प्रचारार्थ आप लोगो ने यह पाठशाला स्थापित की है। तो यह भी उचित कर्तव्य अवश्य है कि सदैव पूर्व इष्ट की सिद्धि पर दृष्टि रखी जावे।'

१२ मई १८८१ को लाला कालीचरण जी रामचरण जी को लिखा—इस (फर्रुखाबाद की) पाठशाला मे अधिक करके संस्कृत की उन्नति होनी चाहिए, सो इस पर अच्छी प्रकार ध्यान रहे। १७ जून १८८१ को दुर्गाप्रसाद जी को फिर लिखा—पाठशाला मे संस्कृत का काम ठीक-ठाक होना चाहिए। जैसे मिशन स्कूलों मे लड़के अपनी अन्य स्वार्थ सिद्धि के लिए बाइबिल सुन लेते हैं, और कुछ ध्यान नहीं देते वैसे जो संस्कृत सुन लिया तो क्या लाभ होगा? इस पाठशाला मे मुख्य संस्कृत जो मातृभाषा है, उसकी ही वृद्धि होनी चाहिए। फारसी का होना कुछ आवश्यक नहीं। केवल संस्कृत का ही पठन-पाठन होना आवश्यक है।

दिसम्बर १८८२ को बाबू दुर्गाप्रसाद जी को पत्र लिखकर पूछा कि पाठशाला में संस्कृत पढ़के कितने विद्यार्थी समर्थ हुए, अथवा अंग्रेजी फारसी में ही व्यर्थ धन जाता है, सो लिखो, जो व्यर्थ ही हो तो क्यो पाठशाला रखी जाए? २५ अप्रैल १८८३ को लिखा—इससे विदित होता है कि तुम्हारी पाठशाला में अलिफ, बे, और कैट, रैट की भरमार है जो कि आर्यसमाजो को विशेष कर्तव्य नहीं।

इन सब पत्रो से महर्षि की संस्कृत प्रचार की ललक सूचित होती है। कलकत्ते में प्रसन्न कुमार ठाकुर ने मूला जोड़ मे एक संस्कृत कालेज स्थापित किया था। स्वामी जी ने यहां जाकर प्रस्ताव किया कि केवल इसका नाम ही संस्कृत न हो, प्रत्युत इसमें संस्कृत की शिक्षा भी होनी चाहिए।

उन्होंने भारतीय ही नहीं वरन् विदेशियों को भी संस्कृत सीखने की प्रेरणा दी। २६ मार्च १८७६ के एक पत्र मे उन्होंने लिखा—अमरीका वालों से अति प्रेम से हमारा नमस्कार कहना और उनसे कुशलता पूछना कि लाहौर आदि के समाज में आप लोगों के लिए तैयारी कर चुके हैं। यहां कब तक आवेंगे और उन्होने संस्कृत पढ़ना आरम्भ किया किया है वा नहीं? ३० जून १८७९ को श्याम जी कृष्ण वर्मा को आक्सफोर्ड मे दयानन्द ने पत्र लिखा और पूछा—संस्कृत विद्या का वहां कैसा प्रचार है? और आर्यसमाजो के बाबत वे लोग क्या कहते हैं? ८ अक्तूबर १८८० को एच० पी० ब्लैवत्स्की को उन्होंने लिखा प्रथम संस्कृत पढ़ने, शिक्षा लेने, सोसायटी को आर्य समाज की शाखा करार देने आदि के लिए लिखा था, और वे चिट्ठियां छप के सर्वत्र प्रसिद्ध भी हैं और जो मैंने वहां पत्र भेजे थे उसकी नकल भी मेरे पास उपस्थित है।'

दयानन्द की निश्चित मान्यता थी कि भारत विश्व को संस्कृत और संस्कृत में निहित ज्ञान के रूप में बहुत कुछ दे सकता है। सत्यार्थ प्रकाश मे वे लिखते हैं कि जितनी विद्या भूगोल में फैली है वह सब आर्यावर्त देश से मिस्र वालों, उनसे यूनानी, उनसे रोम और उनसे यूरोप देश में, उनसे अमेरिका आदि देशों में फैली है। अब तक जितना प्रचार संस्कृत विद्या का आर्यावर्त देश मे है उतना किसी अन्य देश में नहीं। जो लोग कहते हैं कि जर्मनी देश मे संस्कृत विद्या का बहुत प्रचार है और जितनी संस्कृत मोक्षमूलर साहब पढ़े हैं उतनी कोई नहीं पढ़ा। यह बात मात्र कहने की है, क्योंकि 'यस्मिन्देशे द्रुमोनास्ति तत्र एरण्डोऽपि द्रुमायते'—अर्थात जिस देश में कोई वृक्ष नहीं होता उस देश मे एरण्ड ही को बड़ा वृक्ष मान लेते हैं। वैसे ही यूरोप देश मे संस्कृत विद्या का प्रचार न होने से जर्मन लोगो और मोक्षमूलर साहब ने थोड़ा सा पढ़ा, वही उस देश के लिए अधिक है। परन्तु आर्यावर्त देश की ओर देखें तो उनकी बहुत न्यून गणना है, क्योंकि मैंने जर्मनी देश निवासी एक प्रिन्सिपल के पत्र से जाना कि जर्मनी देश मे संस्कृत चिट्ठी का अर्थ करने वाले भी बहुत कम हैं। (सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास, पृष्ठ २७५-२७६) आदि लिखकर दयानन्द ने वस्तुत उन लोगो को सावधान करने की कोशिश की जिन्होंने सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान का ठेकेदार पश्चिम को मान लिया था और यहां तक कि संस्कृत मे भी अपने को जर्मनी पिछड़ा हुआ मानने लगे थे। आज भी यह दुर्भाग्य की बात है कि किसी विदेशी विश्वविद्यालय से प्राप्त संस्कृत उपाधि को भारतीय विश्वविद्यालय की तुलना मे अधिक महत्व दिया जाता है। किसी विदेशी विद्वान द्वारा संस्कृत विषय पर विदेशी भाषा में लिखी पुस्तक को अधिक महत्व दिया जाता है। दयानन्द ने इस कुरुचि से बचने के लिए आज से सौ वर्ष पूर्व ही सावधान किया था। वे लिखते हैं कि मोक्षमूलर साहब के संस्कृत साहित्य और थोड़ी-सी वेद की व्याख्या देखकर मुझको विदित होता है कि मोक्षमूलर साहब ने इधर-उधर आर्यावर्तीय लोगों द्वारा की हुई टीका देखकर कुछ-कुछ यथा-तथा लिखा है। जैसा कि युञ्जन्ति ब्रह्मपुरुष चरन्त परितस्थुष। रोचन्ते रोचना दिवि, इस मन्त्र का अर्थ घोड़ा किया है, इससे तो सायणाचार्य ने सूर्य अर्थ किया है सो अच्छा है। परन्तु इसका ठीक अर्थ परमात्मा है, सो मेरी बनाई ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में देख लीजिये। उसमें इस मन्त्र का अर्थ यथार्थ किया है, इतने से जान लीजिए कि जर्मनी देश और मोक्षमूलर साहब मे संस्कृत का कितना पाण्डित्य है। (सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास, पृ० २७६)

वस्तुत पश्चिमी ज्ञान की ओर अन्धभक्ति यहां तक कि संस्कृत व वैदिक ज्ञान के विषय मे उन्हीं को प्रमाण मानने की गलत प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए दयानन्द को ये सब स्पष्ट बातें लिखनी पड़ी थी।

दयानन्द का मत था कि प्रयोग में अत्यन्त सरल संस्कृत आनी चाहिए। संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित होते हुए भी जन-सामान्य तक अपने विचार पहुंचाने के लिए वे स्वयं अत्यन्त सरल संस्कृत का प्रयोग किया करते थे। यह उल्लेखनीय है कि सन १८७२ से पहले वे संस्कृत में ही भाषण दिया करते थे। पर उनकी संस्कृत समझने में किसी को कठिनाई नहीं होती थी।

सन् १८७२ में कलकत्ता मे श्री केशवचन्द्र सेन ने अपने आवास पर स्वामी जी का व्याख्यान कराना निश्चित किया अंग्रेजी और बंगला में विज्ञापन बांटे गये। नियत समय पर सहस्रों नर-नारी एकत्रित हो गए। उस समय कलकत्ते के गणमान्य सज्जन प्राय सभी वहां उपस्थित थे। यद्यपि व्याख्यान संस्कृत भाषा मे था परन्तु दयानन्द की कथन शैली इतनी सरल थी कि उनका कथन सर्वसाधारण की समझ मे आ जाता था।

सन् १८७४ मे भड़ौच मे वकील जेठालाल जी ने दयानन्द से कहा—आपकी संस्कृत अति सुगम होती है। पण्डित जैसी कठिन भाषा मैंने आपसे नहीं सुनी। दूसरे, जब आप पण्डितो से शास्त्रार्थ करते हैं तब भी उनका

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज एक क्रान्तिकारी आन्दोलन

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

"युग पुरुष महर्षि दयानन्द के स्वरूप को साकार करने हेतु सामाजिक कुरीतियो के उन्मूलन एव समस्त ससार के उपकार के लिए स्थान-स्थान पर आर्य समाज की स्थापना की जानी चाहिए।" ये उदगार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने गणतन्त्र दिवस पर चौ० सुलतान मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा बिदापुर मे आर्य समाज मन्दिर" की स्थापना के अवसर पर व्यक्त किये। श्री आनन्द बोध सरस्वती ट्रस्ट द्वारा आयोजित रक्षा सम्मेलनमें मुख्य अतिथि के रूपमें बोल रहेथे।

स्वामी आनन्द बोध ने आगे कहा कि आर्यसमाज कोई मत, मजहब या सम्प्रदाय नही है अपितु यह एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है और ऋषि दयानन्द ने रूढिवाद को समाप्त करने के लिए सत्य सनातन वैदिक कार्य के पुनरुद्धार हेतु आर्यसमाज की स्थापना की थी। स्वामी आनन्द बोध ने देश निर्माण मे यज्ञो की महत्ता तथा राष्ट्र की एकता व अखण्डता को सुदृढ करने पर भी बल दिया। स्वामी जी ने आगे कहा कि स्वतन्त्रता सेनानी चौ० सुल्तानसिंह की स्मृति में आर्यसमाज की स्थापना कर उनके मित्रो ने सुल्तानसिंह के नाम को अमर कर दिया है।

महान् क्रान्तिकारी व स्वाधीनता सेनानी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री,रामचन्द्र राव वन्देमातरम् ने इस पुनीत अवसर पर राष्ट्र की एकता व अखण्डता को बनाये रखने का सकल्प लेने का आह्वान किया। उन्होने आगे कहा कि भारत हमारा राष्ट्र है और हम सब सर्वप्रथम भारतीय हैं और बाद मे कुछ और। उन्होने भाषा, सस्कृति, व भौगोलिक इकाई जैसे तत्वो के आधार पर राष्ट्र के सच्चे स्वरूप को पहचानने का अनुरोध किया। श्री वन्देमातरम् ने कहा कि आर्य भारत के मूल निवासी थे और सच्चे ऐतिहासिक ज्ञान द्वारा बच्चो का निर्माण करना चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि अग्रज स्वामी दयानन्द को एक ऐसा विद्रोही सन्यासी मानते थे जो देश की स्वतन्त्रता के लिए लोगो में क्रान्ति की ज्वाला प्रज्ज्वलित करता था। श्री शास्त्री जी ने आगे कहा कि स्वामी दयानन्द ने अन्ध विश्वास, कुरीतियो के कीचड से राष्ट्र की गाडी को निकाला था और आज हमें आचरण मे आर्यत्व लाकर परिवार समाज व राष्ट्र का निर्माण करना चाहिए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल आर्य ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज राष्ट्र को न केवल विदेशी शक्तियो से खतरा है अपितु बाहरी ताकतो की शह पर आन्तरिक अस्थिरता पैदा करने वाले तत्वो से भी सघर्ष करने में योगदान देना चाहिए। उन्होने पेट्रो डालर द्वारा धर्म परिवर्तन पर भी चिन्ता व्यक्त की तथा इस दिशा मे आर्यसमाज द्वारा किये जा रहे श्रेष्ठ कार्यों का भी जिक्र किया।

इस अवसर पर चन्ननदेवी ट्रस्ट के मन्त्री श्री ओमप्रकाश आर्य, प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द आदि ने भी विचार व्यक्त किये। राष्ट्रीय एकता विचार मच के प्रधान श्री अशोककुमार ने मच सचालन किया। इससे पूव प० ब्रजपाल शास्त्री के ब्रह्मत्व मे यज्ञ का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर केन्द्रीय सभा के मन्त्री श्री विमल कान्त शर्मा, श्री सुरेन्द्र कुमार हिन्दी श्रीमती ईश्वरी देवी प्रधाना स्त्री आय समाज शालीमार बाग, आदि अनेक महानुभाव भी उपस्थित थे। इससे पूर्व ब्रह्मचारी वीरेन्द्र कुमार ने तथा ब्रह्मचारिणी रामप्यारी के नेतृत्व मे आर्य युवतियो ने योग के रोमाचकारी प्रदर्शनो द्वारा उपस्थित जनसमुदाय को मन्त्रमुग्ध कर दिया। नवजीवन माडल स्कूल के बच्चो ने अनेकता मे एकता भाषण में प्ररिक विचार प्रस्तुत किये।

संस्कृत भाषा का पुनरुद्धार

(पृष्ठ ६ का शेष)

मुझ आप केवल युक्तियों और प्रमाणों से ही खण्ड करते हैं। पण्डित लोग तो एक-एक शब्द पर ही सारा-सारा दिन बिता देते हैं। वैसा आप भी क्यों नहीं करते ? दयानन्द ने उत्तर दिया—मैं सुगम संस्कृत इसलिए बोलता हूँ कि सुनने वालों को समझने में सुगमता हो मेरा उद्देश्य जनता को समझाना है, न कि अपना पाण्डित्य छांटना, परन्तु यह भी विश्वास रखिए कि सुगम भाषा बोलने की रीति किसी भाषा के अल्पज्ञान से नहीं प्राप्त हुआ करती। सच तो यह है कि भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लेने पर ही व्यक्ति सरल भाषा बोल सकता है।

अहमदाबाद में तो एक शास्त्री ने यहां तक कह दिया—महात्मा जी, केवल मवति, भवति मात्र से काम न चलेगा। आज आपको दक्षिणी पण्डितों से पाला पड़ा है। कोई शास्त्रीय महत्व दिखाना होगा। प्रतिपक्षियों की प्रबल प्रेरणा पर अपनी प्रकृति के प्रतिकूल होते हुए भी दयानन्द ने अप्रसिद्ध शब्द पूर्ण समासबहुल व अनेकार्थ-बोधक ऐसी जटिल संस्कृत बोलनी आरम्भ की कि प्रतिवादी देखते रह गये। वे दयानन्द की धाराप्रवाह संस्कृत के वाक्यों को समझ ही न सके। इस प्रकार स्पष्ट है कि कठिन संस्कृत बोल सकने पर भी दयानन्द सरल संस्कृत का ही व्यवहार जन-सामान्य के लिए आवश्यक समझते थे।

१५ दिसम्बर १८७२ को दयानन्द कलकत्ता गये। उनकी संस्कृत के सम्बन्ध में पताका पत्रिका के सम्पादक ने लिखा था—हमने जब पहले पहल स्वामी जी की वक्तृता सुनी तो हमने एक नवीन बात देखी कि संस्कृत भाषा में ऐसी सरल और मधुर वक्तृता हो सकती है। वह ऐसी सरलतम संस्कृत में व्याख्यान देने लगे कि संस्कृत से जो महामूर्ख है वह भी उनके व्याख्यान को समझने लगा। इसी प्रकार धर्मतत्व ने मार्च के अंक में दयानन्द सरस्वती शीर्षक देकर इस प्रकार लिखा था—वह एक विख्यात पण्डित हैं। वह हिन्दू शास्त्र विशारद हैं। संस्कृत भाषा इनके आयत्ताधीन है विशेष कर इनकी संस्कृत भाषा इतनी प्राञ्जल, श्रुतिमधुर और सरल है कि संस्कृत से अनभिज्ञ पुरुष भी उसे अनायास बहुत कुछ समझ सकते हैं।

दयानन्द ने २० अगस्त १८७६ को वेदभाष्य बनाना आरम्भ किया। तब उनके एक विज्ञापन से भी यह प्रकट होता है कि वे सरल भाषा के पक्ष में थे। उस विज्ञापन में उन्होंने लिखा—यह भाष्य संस्कृत और आर्य भाषा जो कि काशी प्रयाग आदि मध्यदेश की है, इन दोनों भाषाओं में बनाया जाता है। इसमें संस्कृत भाषा भी सुगम रीति की लिखी जाती है। और देशी आर्यभाषा भी सुगम लिखी जाती है। संस्कृत ऐसा सरल है कि जिसको साधारण संस्कृत को पढ़ने वाला भी वेदों का अर्थ समझ ले। तथा भाषा को पढ़ने वाला भी सहज में समझ लेगा इससे दयानन्द का सरल भाषा रखने का उद्देश्य और अधिक प्रकट हो जाता है।

स्वामी जी ने अपने परमशिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा को संस्कृत में एक पत्र लिखा। श्याम जी कृष्ण वर्मा ने यह चिट्ठी प्रो० मोनियर विलियम्स को दिखाई जिसकी सरल, सुबोध और ललित संस्कृत को देखकर वह इतने मोहित हुए कि उन्होंने उसका अंग्रेजी अनुवाद एथिनियम नाम के पत्र के २३ अक्तूबर सन् १८८० के अंक में प्रकाशित कराया और उस चिट्ठी को आदर्श मानते हुए लिखा कि संस्कृत भाषा अभी तक आर्यावर्त के पत्र व्यवहार और दैनिक बोलचाल की भाषा है। आर्यावर्त भर के शिक्षित मनुष्यों के बीच में यही भाषा विचार-विनिमय का माध्यम है। आर्यावर्त में लगभग २०० भाषाएं बोली जाती हैं। यदि यह माध्यम न होता तो एक प्रान्त के मनुष्य से बातचीत करने में अत्यन्त कठिनता होती। ऐसी दशा में जो लोग यह कहते हैं कि संस्कृत भाषा अप्रयुक्त और अवनत दशा में है, वह भूल करते हैं।

महर्षि दयानन्द के संस्कृत सम्बन्धी विचारों को जानने के बाद हम यह कह सकते हैं कि हमें विशेषतः उनके अनुयायियों को राष्ट्र में संस्कृत भाषा के प्रचार और प्रसार को अपना एक मुख्य कार्य समझना चाहिए। आर्य-समाज को इसके लिए अनेक रचनात्मक आन्दोलन चलाने होंगे। इस समय देश में जितने भी संस्कृत की उच्च उपाधि प्राप्त नवयुवक और नवयुवतियां हैं उनके लिए कार्य की एक-समान योजना बनानी होगी। साथ ही भारत सरकार की नयी शिक्षा नीति में संस्कृत स्थान दिलाने के लिए हमें कुछ आन्दोलन भी चलाने होंगे। यह बोध पर्व मनाना तभी सार्थक होगा जब हम महर्षि दयानन्द की भावनाओं के अनुरूप संस्कृत के प्रति अपने को समर्पित कर दें।

महिमा महान है

सत्य के प्रचारक की, वेदों के उद्धारक की।
पाखण्ड विनाशक की, महिमा महान है ॥१॥

वीरों में हिमालय की, टंकारा महालय की।
शिवजी के शिवालय की, महिमा महान है ॥२॥

मासों में बरसात की, जन्मभूमि गुजरात की।
बोध शिवरात की, महिमा महान है ॥३॥

अटल व्रतधारी की, शिव के पुजारी की।
पिता आज्ञाकारी की, महिमा महान है ॥४॥

मूलशंकर तात की, अम्बरच की रात की।
चूहों के उत्पात की, महिमा महान है ॥५॥

ऋतुओं में बसन्त की, मन्दिर के महन्त की।
वीतराग सन्त की, महिमा महान है ॥६॥

सुख सुविधा ठुकराने की, घर त्याग जाने की।
वेदों के दीवाने की, महिमा महान है ॥७॥

कविता में छन्द की, पूर्णिमा के चन्द की।
स्वामी दयानन्द की, महिमा महान है ॥८॥

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द
अध्यक्ष वेद प्रचार दिल्ली

सत्यार्थ प्रकाश के दर्पण से

—श्री गजानन्द आर्य, कलकत्ता

पोप

जिस देश पर विदेशी शासक बनता है उस शासक की सभ्यता संस्कृति का प्रभाव और प्रसार बहुत सुगमता से शासित जनता पर छा जाता है। चाटुकारिता और चोंचापन इस प्रकार के प्रसार में सहायक होते हैं। यह एक ऐसा मौन विष है कि साधारण जनता विदेशी प्रभाव को समझ ही नहीं पाती और धीरे-धीरे पूरा देश विष से आक्रान्त हो जाता है। देश के बुद्धिजीवी भी इसका निराकरण करने में असफल हो जाते हैं। विदेशी सत्ता से छुटकारा पाने के संघर्षरत नेताओं के पास भी इस प्रकार के छुटकारे की कोई व्यवस्था नहीं हो पाती बल्कि वे स्वयं उस जंजाल से निकल नहीं पाते। अपने देश में जितने विदेशी शासक आये समयान्तर में उनकी समाप्ति होती गई। किन्तु उनके रीति रिवाज और अन्धविश्वास अपनी जड़ जमा गये। मुस्लिम काल में पनपी कब्रों की पूजा, ताजियों का स्वागत, डोरे तावीज में विश्वास, स्त्रियों में परदा प्रथा इत्यादि कुप्रथायें आज भी प्रचलित हैं। महाभारत युद्ध के पश्चात् देश का पतन जो ही होता जा रहा था कि विदेशियों द्वारा पदाक्रान्त भी कम नहीं हुआ। मुसलमान अपने साथ अपना मजहब लाये और मजहब लाने वाले उनके धर्म गुरु थे जिनको वे लोग अपना काजी-नबी आदि कहते थे। काजियों का फतवा हर किसी शासित को दबा देने में सक्षम होता था। वीर हकीकत राय और गुरु गोविन्द सिंह के दो छोटे बच्चों को मौत के घाट उतारने वाले काजी लोग ही थे। मुस्लिम शासन के कार्यकाल में नाजियों और काजियों का धार्मिक हस्तक्षेप भारत के निवासियों के विश्वासों को बहुत हद तक प्रभावित करता रहा।

मुस्लिम शासन के पश्चात् देश का शासक अंग्रेज बना। अंग्रेजों का मजहब ईसाइयत और धर्म गुरु पोप था। पोप के कारनामों से इंगलैंड का इतिहास साक्षी है। भारत का १८५७ का सैनिक विद्रोह का कारण हिन्दू-मुस्लिम की धार्मिक भावनाओं पर कुठाराघात करने का षड्यन्त्र था।

ऐसे पोप से देश को बचाने की एक युक्ति महर्षि दयानन्द ने निकाली। उन्होंने पोप के पाखंड को और पोप के धर्मग्रन्थ बाइबल का बहुत गहराई से अध्ययन किया। उस अध्ययन से हिन्दू जाति में चले आ रहे अन्धविश्वासों और पाखंडों से जब तुलना की गई तो उनको लगा कि पाखंडों के रूप भिन्न-भिन्न होने पर भी मूलभूत अविद्या एक जैसी है। अविद्या का खंडन करने के लिये और पोप की लीला से देश को सतर्क करने के लिये उन्होंने देशवासी पाखंडियों का नाम ही 'पोप' रख दिया। इस नामकरण की घोषणा उन्होंने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में निम्न प्रकार की है।

प्रश्न—तो हम कौन हैं ?

उत्तर—तुम पोप हो।

प्रश्न—पोप किसको कहते हैं ?

उत्तर—रोमन भाषा में तो बड़ा और पिता का नाम पोप है। परन्तु छल-कपट से दूसरे को ठगकर अपना प्रयोजन साधने वाले को पोप कहते हैं। जिस देश के शासन में सूर्य नहीं डूबता हो, जिस शासक के राज्य में सन्‌ ५७ की राज्य क्रान्ति की विफलता से भारतीय जनता पददलित असहाय और पराधीनता की कड़ी दासता में आबद्ध हो गई हो ऐसी विकट स्थिति में एक भारतीय सन्यासी की ओर से धार्मिक पोप को छली-कपटी और ठगों के समकक्ष बिठा देना एक बहुत बड़ा साहस कहा जायेगा। पोप को इस प्रकार से मानना उस सन्यासी की ओर से विध्वंसात्मक और निराधार भी नहीं था। सत्यार्थ प्रकाश में अनेकों उदाहरण इस सन्दर्भ में दिये गये हैं।

पोप की ओर से फैलाये जाने वाले पाखंड का एक चित्रण सत्यार्थ प्रकाश की भाषा में—सुना है कि रोम के 'पोप' अपने चेलों को कहते थे कि तुम अपने पाप हमारे सामने कहोगे तो हम क्षमा कर देंगे। बिना हमारी सेवा और आज्ञा के कोई भी स्वर्ग में नहीं जा सकता। जो तुम स्वर्ग में जाना चाहो तो हमारे पास जितने रुपये जमा करोगे उतने ही की सामग्री स्वर्ग में तुमको मिलेगी, ऐसा सुन कर जब कोई आँख के अन्धे और गांठ के पूरे स्वर्ग में जाने की इच्छा करके 'पोप जी' को यथेष्ट समझा देता था, तब वह 'पोप जी' ईसा और मरियम की मूर्ति के सामने खड़ा होकर इस प्रकार की हुंडी लिख कर देता था 'हे खुदावन्द ईसामसीह ! अमुक मनुष्य ने तेरे नाम पर लाख रुपये स्वर्ग में आने के लिए हमारे पास जमा कर दिये हैं। जब वह स्वर्ग में आवे तब अपने पिता के स्वर्ग के राज्य में पच्चीस हजार रुपयों में बाग बगीचा और मकानात, पच्चीस सहस्र में सवारी शिकारी और नौकर चाकर पच्चीस सहस्र रुपयों में खाना पीना कपड़ा लत्ता और पच्चीस सहस्र रुपये इसके इष्ट मित्र भाई बन्धु आदि के जियाफत के वास्ते दिला देना। फिर उस हुण्डी के नीचे पोप जी अपनी सही करके हुंडी उसके हाथ में देकर कह देते थे कि जब तू मरे तब इस हुण्डी को कबर में अपने सिरहाने धर लेने के लिए अपने कुटुम्बको कह रखना। फिर तुझे ले जाने के लिए फरिश्ते आयेंगे तब तुझे और तेरी हुंडी को स्वर्ग में ले जाकर लिखे प्रमाणे सब चीजें तुझ को दिला देंगे। अब देखिए जानो स्वर्ग का ठेका पोप जी ने ही ले लिया हो।

इसी प्रकार की ठेकेदारी भारत में तथाकथित ब्राह्मणों ने चला रखी थी। मृतकों के नाम पर भोली जनता को ठग लेने का उनका व्यवसाय चला हुआ था। ऐसी अन्ध परम्परा में सरकारी पोप की दुकानदारी बहुत आसानी से जम सकती थी। ऋषि को उपाय सूझा अंग्रेजों के पूज्य ब्राह्मण अर्थात् पोप को इस श्रेणी में ला बैठाया कि उसके प्रति आकर्षण और श्रद्धा भारत में नहीं बन पायेगी। जहां कहीं भी सत्यार्थ प्रकाश पहुंच गया पोप का जाल बिछ नहीं सका। धार्मिकता की आड़ में पनपने वाला धर्म पोप फैला नहीं सका। पोप के नाम से लोगों के मस्तिष्क में पाखंडी का सा चित्रण होने लगा। बड़ा पवित्र नाम ईसाई जगत् में माने जाने वाला यहां 'राम नाम सत्य है' की तरह संकुचित बन गया।

सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से ईसाई पादरी के धर्मगुरु 'पोप' नाम को निम्न स्तर पर लाने की आवश्यकता क्यों हुई इस प्रश्न का उत्तर सत्यार्थ प्रकाश में ही उद्धृत एक ऐतिहासिक घटना से मिलता है। घटना है २५०० वर्ष पहले की। देश के वैदिक धर्म में विकृति आ गई थी। वेद के नाम पर पशु हिंसा और मृतक श्राद्धों का बोलबाला था। पशु हिंसा के विरोध में जैन मत और बौद्ध मत का जन्म हो गया। वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति जैसे अनार्य मान्यताओं के स्थान पर अहिंसा परमोधर्म का सुन्दर सिद्धान्त उच्चारण किया जाने लगा। मूर्तिपूजा और नये-नये देवताओं के पूजन का आरम्भ हो गया। वेद और ईश्वर को तिलाञ्जलि दी जाने लगी। ऐसे समय में गोरखपुर के एक राजा ने तथाकथित ब्राह्मणों से अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया जिसमें अन्य के साथ महारानी का समागम कराया गया और महारानी की मृत्यु हो गई। पश्चाताप स्वरूप गोरखपुर का वह राजा जैनी हो गया। राजा को जैनी होने पर प्रजा भी जैनी होने लगी। यद्यपि वैदिक मान्यतायें विकृत हो चली थी। किन्तु जैन और बौद्धमत की विकृतियां और अधिक भयंकर थीं। यह भयंकरता कहां तक पहुंची इसका चित्रण सत्यार्थ प्रकाश की भाषा में इस प्रकार है—"जब बहुत से राजा भूमिये उनके मत में हुए तब पोप जी भी उनकी ओर झुके, क्योंकि इनको गप्फा मिला अच्छा मिले वहीं चले जावें। झट जैन बनने चले। जैन में भी और प्रकार की पोप लीला बहुत हैं। ठौदी वेद का अर्थ न जानकर बाहर की पोप लीला को भ्रान्ति से वेद पर मानकर वेदों की भी निन्दा करने लगे। उसके पठनपाठन, यज्ञोपवीतादि और ब्रह्मचर्यादि नियमों को भी नाश किया। जहां जितने पुस्तक वेदादि के पाये नष्ट किये। आर्यों पर बहुत सी राजसत्ता भी चलाई दुःख दिया। जब उनको भय शंका न रही तब अपने मत वाले गृहस्थ और साधुओं की प्रतिष्ठा और वेदमार्गियों का अपमान और पक्षपात से दंड भी देने लगे। आप सुख आराम और घमण्ड में आ फूलकर फिरने लगे। परमेश्वर का मानना न्यून हुआ, पाषाणादि मूर्तिपूजा में लगे। ऐसा तीन सौ वर्ष आर्यावर्त में जैनों का राज रहा। प्राय आर्य लोग उनमें मिल कर सूत्रप्राय वेदार्थ ज्ञान से शून्य हो गये थे।"

(क्रमश)

देश द्रोह की पराकाष्ठा

स्वर्ण मन्दिर में खालिस्तानी नक्शे व झण्डे लहराए

अमृतसर, (भाषा) गणतन्त्र दिवस के अवसर पर स्वर्ण मन्दिर परिसर के परिक्रमा क्षेत्र मे खालिस्तानी नक्शे बंटे दिखाई पड़े। इन नक्शों मे दिल्ली को दशमेश नगर, दिल्ली हवाई अड्डे को इन्दिरा गांधी के हत्यारे के नाम पर 'बेअन्त हवाई अड्डा और चण्डीगढ़ को एक अन्य हत्यारे के नाम पर 'सतवन्त नगर' के रूप मे दर्शाया गया है। बन्दरगाह का नाम 'कमाण्डोफोर्स' बन्दरगाह दर्ज किया गया है। इसी तरह कई अन्य नये नाम नक्शे मे लिखे हैं, लेकिन इनमे किसी शहर या कस्बे की पहचान नहीं होपाई। नक्शे मे जम्मू-कश्मीर कलकत्ता के पूर्व व उत्तर पूर्व का हिस्सा छोड़कर भारत की सरहद चित्रित की गई है।

इसके पहले पाच सदस्यीय पथक कमेटी की ओर से जारी एक बयान में कहा गया कि आजादी की लड़ाई और उसके बाद देश के विकास में सिखों ने अपार योगदान किया है। इसलिये समूचा देश सिखोंका है और वही इसके शासक होंगे।

पिछले गणतन्त्र दिवस की तरह नक्शो के अलावा उग्रवादियो ने परिसर की कुछ प्रमुख इमारतो और अकाल तख्त पर 'खालिस्तानी' झण्डे फहराये। हालांकि पुलिस ने हस्तक्षेप न करने का फैसला किया, लेकिन एक वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि पाच सदस्यीय पथक कमेटी के खिलाफ मामला दर्ज किया जायेगा। उन्होने बताया कि मन्दिर परिसर मे कड़ी निगरानी रखी जा रही है।

आतंकवादियों ने स्वर्ण मन्दिर परिसर के अन्दर तथाकथित खालिस्तानी झण्डे फहराए और पत्रकारो तथा अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति मे झण्डे को सलामी दी।

अमृतसर के नागरिको ने आकाश में असख्य गुब्बारे भी उड़ाते हुए देखे जिन्हे आतंकवादियो ने आकाश में छोड़ा आतंकवादियों ने बाद मे बताया कि इन गुब्बारों के साथ तथाकथित खालिस्तानी नक्शे और झण्डे भी छोड़े गए।

जिले के पुलिस प्रमुख मुहम्मद इजहार आलम से जब पूछा गया कि इन तत्वो के खिलाफ क्या कारवाई की जाएगी तो उन्होने कहा कि दोषियो के खिलाफ आवश्यक कारवाई होगी। श्री आलम ने कहा कि स्वर्ण मन्दिर के भीतर की घटनाओ पर कड़ी नजर रखी जा रही है।

इस बीच पजाब सरकार अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर में तथाकथित 'खालिस्तानी' झण्डे फहराये जाने तथा मन्दिर परिसर मे खालिस्तान समर्थक नक्शे चिपकाए जाने और सिख छात्र सगठन के भूमिगत नेता गुरनामसिंह के अचानक वहा पहुंचने के बारे मे मिली सूचनाओं तथा वहा उत्पन्न स्थिति का अध्ययन कर रही है।

आर्य जगत् के समाचार

दिल्ली में ऋषि बोधोत्सव

युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती का बोध-दिवस महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में मंगलवार १६ फरवरी ८८ को प्रात ८ से साय ४ बजे तक फिरोजशाह कोटला मैदान में ऋषि मेला के रूप में समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। श्री आनन्दबोध सरस्वती, स्पीकर श्री बलराम जाखड़, श्री कृष्णचन्द्र पन्त रक्षामन्त्री, डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, आचार्य विष्णुकान्त मिश्र, श्रीमती कमला रतनम्; श्री विनोद मिश्र सम्पादक हिन्दुस्तान भाग लेंगे।

महाशय धर्मपाल　　　　डा० शिवकुमार शास्त्री
प्रधान　　आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली　　महामन्त्री

'तमस' धारावाहिक पर अविलम्ब प्रतिबन्ध लगाने की मांग

कानपुर। केन्द्रीय आर्य सभा के अध्यक्ष, आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने दूरदर्शन की अदूरदर्शिता तथा तुष्टीकरण की नीति की आलोचना करते हुये एक वक्तव्य मे कहा कि दूरदर्शन पर दिखाये जानेवाले धारावाहिक 'तमस' पर अविलम्ब प्रतिबन्ध लगाया जाए। 'तमस' के अनेक आपत्तिजनक दृश्यों जैसे आर्य समाजियों द्वारा दंगे भड़काने की योजना बनाना मुर्गा काटना, नेकर पहन कर मुसलमान की हत्या करना आदि अनेकानेक आपत्तिजनक दृश्य मुस्लिम तुष्टीकरण के द्योतक है तथा हिन्दू मुस्लिम सद्भाव पर कुठाराघात करते हैं।

श्री आर्य ने दूरदर्शन के अधिकारियों के बौद्धिक दिवालियापन पर आश्चर्य प्रकट करते हुये कहा कि विभाजन के तथ्य को तोड़ मरोड़ कर पेश करने वाले इस धारावाहिक को स्वीकृत करके दूरदर्शन ने निश्चित रूप से एक ऐसा अपराध किया है जिसे हिन्दू जनमानस कभी माफ नही कर सकता। श्री आर्य ने तमस' को झूठ का पुलिन्दा बताते हुए इसे अविलम्ब रोक लगाने की माग की।

—श्यामप्रकाश, मन्त्री

वयोवृद्ध आचार्य राम शास्त्री का सफल आप्रेशन

सस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित, प्रसिद्ध आयुर्वेद चिकित्सक प्रज्ञाचक्षु ६७ वर्षीय, आचार्य राम शास्त्री वैद्य के अचानक घर मे फिसल जाने से कूल्हे की हड्डी टूट गई थी। जिनका सफल आप्रेशन शनिवार ३० जनवरी को डा० पी० के० दवे ने किया। आचार्य जी के पुत्र श्री सुरेन्द्र भारद्वाज के अनुसार लोक सभा अध्यक्ष डा० बलराम जाखड़ आप्रेशन से पूर्व उनका कुशलक्षेम पूछने मैडिकल पहुंचे। उनसे भेंट करने वालों मे वरिष्ठ पत्रकार एव स्वतन्त्रता सेनानी श्री क्षितिश वेदालंकार, कांग्रेस नेता डा० योगानन्द शास्त्री, राव महिपालसिंह आदि प्रसिद्ध भजन गायिका शान्ति हीरानन्द, एव प्रसिद्ध उद्योगपति श्री गजानन्द आर्य एव सत्यानन्द आर्य आदि थे। सम्प्रति वे आल इण्डिया मैडिकल इंस्टिट्यूट के प्राइवेट वार्ड में गत १० जनवरी से स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

—कल्याकर शर्मा

आर्य समाज भवन व यज्ञशाला ग्राम भसीना तहसील सुजानगढ़ (राज०) का शिलान्यास

दिनांक १-१२-१९८७ को श्री सत्यनारायण बाहेती मैनेजिंग ट्रस्टी आर्य समाज सुजानगढ़ चैरीटेबल ट्रस्ट के करकमलों द्वारा ग्राम भासीना तहसील सुजानगढ़ मे आर्य समाज भवन व यज्ञशाला का शिलान्यास सम्पन्न हुआ। भवन व यज्ञशाला के लिये भूमि श्री मानाराम चौधरी भासीना द्वारा प्रदान की गई है। भवन व यज्ञशाला का निर्माण भी श्री मानाराम चौधरी करवायेंगे। बहुत खुशी की बात है कि श्री मानाराम चौधरी ने निर्माण कार्य शुरू करवा दिया है।

देश की जनता व सरकार गम्भीरता से विचार करें

अकाली नेताओं के मिथ्या प्रचार की असलियत

अकाली नेता बार-बार यह कह रहे हैं कि सिखो पर अत्याचार हो रहे हैं। साथ ही यह भी कहते हैं कि कांग्रेस ने सिखो के साथ जो वचन दिये थे वह उसने पूरे नहीं किये। अकाली नेता एक ओर अंग्रेजो के साथ दूसरी ओर मुहम्मद अली जिन्ना के साथ कभी स्वतन्त्र पंजाब कभी खालिस्तान के लिए समझौते करने का प्रयत्न करते रहे हैं। यह महत्वाकांक्षा पूरी न हुई। क्योंकि पं० जवाहरलाल नेहरू कोई भी ऐसी बात मानने को तयार नही थे जिसके कारण भारत में दो प्रकार के शासन चलते। जब अकालियो ने देखा कि उनकी बात नही बन रही तो उन्होंने अपना भला इसी में समझा कि पाकिस्तान का विरोध करें और भारत में सम्मिलित हो जावें।

१९४७ में देश स्वतन्त्र हुआ तब से लेकर आज तक भारत सरकार ने सिखो को किसी प्रकार की शिकायत का एक भी अवसर नही दिया। उनके कहने पर पंजाब का विभाजन भी कर दिया गया। उन्ही के कहने पर हिन्दी (जो कि राष्ट्र की स्वीकृत भाषा मानी गई थी) को देश निकाला देकर पंजाबी व अंग्रेजी को राजभाषा बना दिया गया। केवल यही नही जो कुछ भारत सरकार ने उनके लिए किया वह निम्न प्रकार है —

(१) भारत का राष्ट्रपति एक सिख ज्ञानी जैलसिंह को बनाया गया।

(२) ससद का अध्यक्ष सरदार हुकमसिंह व सरदार गुरदयालसिंह ढिल्लो को बनाया गया।

(३) केन्द्रीय मन्त्री सरदार बलदेवसिंह, सरदार स्वर्णसिंह, ज्ञानी जैलसिंह, सरदार बूटासिंह, सरदार इकबाल सिंह, सरदार रघुवीर सिंह प बहुचारी सरदार प्रकाश सिंह बादल, व सरदार सुरजीत सिंह बरनाला को बनाया गया।

(४) प्रान्तो के गवर्नर, सरदार हुकमसिंह, सरदार उज्ज्वलसिंह, सरदार जुगिन्दर सिंह, सरदार गुरमुख निहालसिंह सरदार हरचरन सिंह बार कर्नल प्रतापसिंह डा० गोपालसिंह को बनाया गया।

(५) विदेशों में भारत के राजदूत, सरदार हरिदत्तसिंह मलिक, सरदार दोपाल सिंह दर्दी, सरदार गुरदयाल सिंह ढिल्लो सरदार गुरनामसिंह, कनल विर बल सिंह मिष, महाराज यादवेन्द्र सिंह को बनाया गया।

(६) सुप्रीम कोर्टों व हाईकोर्टों के जज सरदार आर० एस० सरकारिया, स० एम० एस० गुजराल, स० एस एस सिन्धवालिया, स० महरसिंह, सरदार एस० एस० नरूला।

(७) वायु सेना के ऐयर चीफ मार्शल स० अर्जुनसिंह व स० दिलबाग सिंह को बनाया गया।

(८) समुद्री सेना में स० बलवन्तसिंह, स० प्रीतम सिंह व स० हरपाल सिंह को बनाया गया।

(९) रिजर्व बैंक आफ इण्डिया गवर्नर डा० मनमोहन सिंह जो आज भी योजना आयोग के डिप्टी चैयर मैन भी रहे।

जब से देश स्वतन्त्र हुआ है पंजाब के हिन्दुओ का कोई प्रतिनिधि केन्द्रीय मन्त्री मण्डल में नहीं लिया गया।

जब से पंजाबी सूबा बना है कोई हिन्दू पंजाब का मुख्य मन्त्री नही बना। पंजाब के तीन विश्वविद्यालयो में किसी का भी वाइस-चांसलर हिन्दू नहीं बना।

इसके अतिरिक्त हमारे सेना के उच्च पदो पर कितने ही सिख हैं। वह बहुत बड़ी संख्या है।

इससे भली भान्ति सिद्ध हो जाता है कि सरदार प्रकाशसिंह बादल या दूसरे अकाली नेता जब यह कहते हैं कि सिखो के साथ अन्याय हो रहा है तो वे कितना बड़ा झूठ बोल रहे हैं। कोई बड़े से बड़ा पद ऐसा नहीं जो सिखों को न मिला हो। जो तथ्य व आकडे हमने प्रस्तुत किए हैं वे तो बहुत थोड़े हैं। यदि विस्तार से बताया जाए तो ज्ञात होगा कि कोई क्षेत्र या विभाग ऐसा नही जिसमें सरकार ने सिखों को वरीयता प्राप्त प्राथमिकता प्रदान न की हो। इस पर भी अकाली प्रतिदिन यही करते फिरते हैं कि सिखो के साथ अन्याय हो रहा है। सरकार भी इस सम्बन्ध में दोषी है कि वह इस सम्बन्ध में कुछ बोलती नही है। आकडे बता रहे हैं कि सिखो का प्रचार निराधार व झूठा है।

सिख भाई ईमानदारी से विचार करें। ●

दर्शन एवं उपनिषदादि ग्रन्थों के अध्ययन के इच्छुक ब्रह्मचारी स्वामी सत्यपति से सम्पर्क करें

दर्शन एवं उपनिषदादि ग्रन्थो के अध्ययन एवं योग प्रशिक्षण प्राप्त करने के इच्छुक ब्रह्मचारी फाल्गुन बदी, १३, १४, १५ (१५, १६, १७ फरवरी १९८८ के दिनो टकारा) में मनाये जाने वाले ऋषि बोधोत्सव में शिविर हेतु सम्पर्क करें।

पता

स्वामी सत्यपति परिव्राजक
आर्य वन विकास यापरी रोजड़ साबरपुर
साबर काठा गुजरात पिन-३८३३०७

आर्यों का रोष

दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले तमस कार्यक्रम में आर्य समाज को साम्प्रदायिक दंगे आदि कराने का वृथा आरोप दिखाये जाने पर समाज के सभी सदस्यो ने इसकी कटु आलोचना की तथा सरकार से शीघ्र इसे बन्द करवाने की अपील की है।

कार्यालय मन्त्री
चन्द्र भूषण शास्त्री

पं० जयप्रकाश जी का अभिनन्दन

आर्य समाज खेड़ा अफगान (सहारनपुर) की क्षेत्रीय समाजो की ओर से हिसार के पं० जयप्रकाश जी का अभिनन्दन किया गया व उन्हें १०००) भेंट किया गया। —आदित्य प्रकाश, मन्त्री

आर्य समाज बागपत

आर्य समाज बागपत (मेरठ) की ओर से सभी पर्व मकर सक्रान्ति बसन्त पंचमी व रविदास जयन्ती समारोह पूर्वक मनाया गया। डा० मुरारीलाल जी, श्री वीरेन्द्र राणा व मलखानसिंह जी के प्रवचन व श्री हरीहर स्नेही के कविता पाठ हुए।

—सत्यप्रकाश गौड़, मन्त्री

शान्ति यज्ञ

गाव कुशावली, सरधना (मेरठ) में २२ जनवरी १९८८ शुक्रवार को स्व० श्री भरतसिंह जी आर्य का शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। आप आर्य समाज ग्राम कुशावली के अग्रणी सदस्य थे तथा आर्य युवक डाक्टर रमेश आर्य के पिता जी थे। ग्राम आर्य समाज की ओर से एक शान्ति यज्ञ एवं शोक सभा का आयोजन किया गया। श्रद्धाञ्जलि देने वालो में मैडीकल कालेज के डाक्टर, ग्राम के सम्भ्रान्त व्यक्ति, आशाराम वर्मा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के प्रधान श्री इन्द्रराज जी भी थे।

पुस्तक समालोचना

१—नाम पुस्तक	वैदिक मन्त्र
२—अंग्रेजी अनुवाद एवं रूपान्तरकार	श्रीमती उमा सैनी, एम० ए० (संस्कृत) अमेरिकन विश्वविद्यालय, वाशिंगटन
३—प्रकाशक एवं विक्रेता	यू० एण्ड के० पब्लिशिंग कम्पनी ८०६, कार्टर रोड, राकविल मेरी लैण्ड, २८८५२ (यू० एस० ए०)
४—पुस्तक का मूल्य	अमेरिकन डालर १०.००

नोट—भारत में आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं की सुविधा के लिए यह पुस्तक रियायती मूल्य पर केवल ८० रुपये में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, से प्राप्त की जा सकती है।

आर्य समाज सरस्वती बिहार दिल्ली
सत्संग भवन का शिलान्यास

आर्य समाज मन्दिर सरस्वती बिहार के प्रांगण में विशाल सत्संग भवन का शिलान्यास श्री स्वामी विद्यानन्द जी की अध्यक्षता में समाजसेवी दानवीर श्री खेमचन्द मेहता के करकमलो से हुआ। इस अवसर पर जनता ने उदार हृदय से १ लाख रुपये का दान दिया इससे क्षेत्र की बहुत सेवा हो सकेगी।

—आर्य समाज सीहोर भोपाल क्षेत्र म० प्र० के वार्षिक चुनाव मे प्रधान श्री जगमोहन आर्य मन्त्री श्री नरेन्द्र कुमार आर्य चुने गए।

आर्य समाज खुर्जा (बुलन्दशहर) के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद मित्तल व मन्त्री श्री प० भगवदेव शर्मा चुने गए।

—आर्य समाज शिवाजी पार्क कालू भवन १ सामाला लेडी जमशेद जी रोड बम्बई १६ के वार्षिक निर्वाचन मे अध्यक्ष डा० वशिष्टबल से मन्त्री श्री काशीप्रसादसिंह निर्वाचित हुए।

—आर्य समाज फोकस प्वाइट लुध्याना के निर्वाचन मे प्रधान श्री शिवदयाल जी टुटेजा व मन्त्री श्री बलदेवराज जी चुने गए।

—आर्य समाज मोदी नगर (मेरठ) के वार्षिक चुनाव मे प्रधान श्री डा० जयवीरसिंह व मन्त्री श्री महेशचन्द्र आर्य (सत्यार्थ शास्त्री) चुने गए।

— आर्य समाज बिन्द की (फतेहपुर) के वार्षिक निर्वाचन मे प्रधान श्री रघुनाथसिंह आर्य व मन्त्री श्री श्रीचन्द्र आर्य चुने गए।

वीर हकीकतराय दिवस

कानपुर। आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर द्वारा वीर हकीकतराय दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। श्री देवीदास आर्य ने बड़े भावुक शब्दों में श्रद्धाञ्जलि भेंट की। श्री जगन्नाथ शास्त्री, श्री मदनलाल चावला, श्री दीवानचन्द खन्ना व श्रीमती वक्षमा कपूर व सीमा छन्नन के उद्बोधक भाषण हुए।

आर्य समाज मन्दिर रामकृष्ण पुरम

बुधवार, १७ फरवरी, १९८८ से रविवार, २१ फरवरी, १९८८,
प्रात ७ से ९, साय ५ से ७ बजे तक
श्री स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती, वेद मन्दिर हरिद्वार

आर्य समाज रामकृष्ण पुरम सैक्टर ६ के नवनिर्मित हाल के उद्घाटन समारोह के शुभावसर पर चतुर्वेद शतक महायज्ञ प्रारम्भ होने जा रहा है। १७ फरवरी प्रात ७ बजे से प्रारम्भ होने वाले इस महायज्ञ की पूर्णाहुति २१ फरवरी को प्रात दस बजे होगी। —ओम्प्रकाश कपूर, मन्त्री

लखनऊ न्यायालय मे वैदिक धर्म का प्रचार

नगर आर्य समाज के तत्वावधान में दिनांक २३ १ ८८ को बसन्त उत्सव गतवर्षों की भांति दीवानी न्यायालय लखनऊ मे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें विशाल यज्ञ किया गया। प० राम चरित पाण्डे तथा श्री पवनकुमार शास्त्री का प्रवचन श्री मुन्नालाल के भजनों द्वारा वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार हुआ।

कार्यक्रम का सचालन श्री रेवतीरमण एडवोकेट द्वारा किया गया तथा भारी सख्या मे वैदिक साहित्य का वितरण भी किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग १००० वकील व मुन्शी तथा न्यायालय के सभी वर्ग लोग सम्मिलित हुए सभी ने कार्यक्रम की सराहना की।

सार्वदेशिक प्रैस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा श्री ... शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष २७४७७१

वर्ष २३ अंक ८] फाल्गुन शु० ४ स० २०४४ रविवार २१ फरवरी १९८८ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

देश को बचाना है तो आर्यसमाज को सुदृढ़ बनाओ

सार्वदेशिक सभा प्रधान का गढ़वाल क्षेत्र का तूफानी दौरा

दिल्ली १४ फरवरी। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती मेरठ, बिजनौर नजीबाबाद होते हुए २॥ बजे कोट द्वारा पहुंचे जहां हजारों लोगों ने स्वामी जी का हार्दिक स्वागत किया। श्री नेगी जी ने उन्हें मानपत्र भेंट किया। स्वामी जी खुली जीप में चौक पहुंचे जहां विशाल जन समूह को सम्बोधित करते हुए श्री स्वामी जी महाराज ने अपने उद्बोधक भाषण में पर्वतीय प्रजा की विशुद्ध वैदिक भक्ति व प्रखर देश भक्ति के मार्मिक उदाहरण जनता को सुनाए। स्वामी जी ने कहा कि चन्द्रसिंह गढ़वाली को पेशावर में खान अब्दुल गफ्फार खां व डा० खान साहब पर गोली चलाने को अंग्रेजी कमांडर ने आदेश दिया था परन्तु चन्द्रसिंह ने गोलियां चलाने से इन्कार कर दिया, फलस्वरूप उन्हें अमर कैद का दण्ड भुगतना पड़ा। अपनी सफाई में चन्द्रसिंह ने कहा कि मैंने महर्षि रचित सत्यार्थप्रकाश से देशभक्ति का पाठ पढ़ा है। इसी प्रकार आर्यवीर जयानन्द भारती ने गवर्नर द्वारा निषेधाज्ञा घोषित करने पर भी अपने पेट से तिरंगा बांधकर पौड़ी गढ़वाल की राष्ट्रीय सभा में तिरंगा झण्डा फहराया। आर्यसमाज ने राष्ट्र की स्वतन्त्रता में महान बलिदान किए फिर भी हमने उसके बदले में कभी सरकार से कुछ नहीं मांगा जबकि सिखों ने अपनी राजनैतिक मांगों के आधार पर देश में हा हाकार मचा रखा है। प्रकाश सिंह बादल ने बयान दिया है कि वे मौलाना बुखारी से मिलकर राम मन्दिर व बाबरी मस्जिद के विवाद को उठावेंगे। यह हिन्दुओं के लिए बलिदान करने वाले सिख गुरुओं के शिष्यों की मनोवृत्ति है। स्वामी जी ने कहा है आज देश को बचाने के लिए केवल आर्यसमाज ही प्राणपण से संलग्न है। आर्य समाज मजबूत होगा तभी देश बचेगा।

स्वामी जी के इस तूफानी दौरे में बिजनौर कुम्हेड़ी कीरतपुर नजीबाबाद व दर्जनों गांवों में झण्डों व वैदिक धर्म के जयघोषों से स्वामी जी का स्वागत किया गया। स्वामी जी के साथ सभा मन्त्री श्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री व श्री जयनारायण अरुण भी थे। रात को स्वामी जी ने गुरुकुल कांगड़ी में लौटकर संस्था का निरीक्षण किया व रात्रि विश्राम किया।

सार्वदेशिक सभा का प्रतिनिधि मंडल सूचना मन्त्री से मिला

तमस के प्रदर्शन पर रोष व्यक्त

दिल्ली १६ फरवरी। सार्वदेशिक सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में आज आर्य समाज का एक प्रतिनिधि मंडल भारत सरकार के सूचना व प्रसारण मन्त्री श्री अजीत पांजा से मिला। मंडल में श्री सूर्यदेव श्री डा० धर्मपाल श्री लक्ष्मीचन्द सम्मिलित थे। स्वामी जी महाराज ने सूचना मन्त्री को बताया कि जनता में दूरदर्शन के प्रसारण के सम्बन्ध में तीव्र रोष है। तमस सीरियल में यह दिखाना कि आर्य समाज मन्दिर में हवन करते हुए मुर्गी काटा गया इतना बड़ा झूठ व दूरदर्शन पर कलंक है कि समाज इसे कभी भी क्षमा नहीं कर सकता। तमस की कहानी सच्चाई से सर्वथा उल्टी है। यह सत्य है कि पाकिस्तान व मुस्लिमलीगी मुसलमानों ने बनवाया उन्होंने ही अत्याचारों के द्वारा पंजाब सिंध बिलोचिस्तान से हिन्दुओं को भगाया व नरसंहार किए। हिन्दू तो इसके घोर विरोधी थे। देशभर में इसे भड़काए गए हिन्दू समाज को बदनाम करने के इस कुत्सित षड्यन्त्र से, इतिहास भ्रष्ट होता है।

आर्यसमाज को यह शिकायत है कि उसके महत्वपूर्ण समाचारों को भी दूरदर्शन पर नहीं दिखाया जाता जबकि आर्यसमाज राष्ट्रीय दृष्टिकोण वाली शुद्ध असाम्प्रदायिक संस्था है।

वेदामृत

सद्गुणों को अपनावें

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव॥

ऋग्० ५।८२।५ यजु० ३०।३ तैत्ति० ब्रा० २।४।६।३।

हिन्दी अर्थ—हे संसार के उत्पादक देव! आप हमारे सारे दुर्गुणों को दूर कीजिए और जो कल्याणकारी गुण हों, उन्हें हमें दीजिए (उनको हमारे अन्दर प्रेरित कीजिए)।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िए

सम्पादक—

सच्चिदानन्द शास्त्री

युग पुरुष-दयानन्द जिन्हें देश भूल नहीं सकता

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा—

आज देश विदेश में महर्षि दयानन्द का बोधोत्सव बड़े उत्साह व समारोह के साथ मनाया जा रहा है। टंकारा के शिव मन्दिर में शिवरात्रि के अवसर पर रात्रि में जो प्रकाश मूलशंकर को मिला था, उसकी वास्तविकता की खोज में उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया। मूल शंकर घर से निकलकर योगियों की तलाश में देश के प्रमुख तीर्थ स्थलों पर घूमते हुए, बीहड़ वनों और जंगलों को छानते हुए, बर्फानी नदियों को पार करते हुए अनेक प्रकार के कष्टों को सहन करते हुए सच्चे शिव की खोज में उच्चकोटि के महात्माओं के दर्शन करके उनसे परमात्मा के सच्चे स्वरूप की जानकारी का मार्ग तलाश करते रहे, जिस पर योगीजन अष्टांग योग द्वारा मानव जीवन को सफल करते हुए उस सिद्धि को प्राप्त करते हैं जिससे परमात्मा का साक्षात्कार होने के पश्चात मनुष्य जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है।

मूल शंकर इसी खोज में जंगल व पहाड़ों पर घूमते हुए स्वामी पूर्णानन्द जी से मिले और उनसे ही सन्यास की दीक्षा ग्रहण की और स्वामी दयानन्द कहलाए। नव दीक्षित दयानन्द को स्वामी पूर्णानन्द जी ने दण्डी स्वामी विरजानन्द का नाम बताया। दयानन्द मथुरा नगरी मे पहुंचे और ३ वर्ष की सतत् तपस्या के पश्चात गुरु विरजानन्द ने अपना सम्पूर्ण ज्ञान दयानन्द के हृदय मे अंकित कर दिया। गुरु विरजानन्द दण्डी ने दीक्षान्त के समय प्रतिज्ञा कराई कि दयानन्द-मेरी दक्षिणा यही है कि तुम अपना सारा जीवन मानव मात्र को अविद्या, अन्धकार से निकालकर आत्मबोध कराकर परमात्मा का मार्ग बताओ। आज वेद ग्रन्थों का लोप हो गया है, हिन्दू समाज अपने स्वरूप और संस्कृति को भूल चुका है, मुट्ठी भर विदेशियों ने आज भारत सन्तान को गुलाम बना रखा है। इस अन्धकार से देश को निकालो और वेद विद्या और आर्ष ग्रन्थों का प्रचार करो।

स्वामी दयानन्द ने गुरुदेव से विदा लेकर जीवन पर्यन्त अपनी प्रतिज्ञा को सफलीभूत करने का प्रयत्न किया। इस महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्हें अनेक कष्ट सहन करने पड़े। उनका अपमान किया गया और भर्त्सना भी की गई। यहां तक कि १९ बार उन्हें विषपान भी करना पड़ा। किन्तु दयानन्द अपने लक्ष्य पर अटल व अडिग रहे।

वह एक योद्धा थे। देश की दासता उनके हृदय से देखी नहीं जाती थी। दासता के बन्धनों को तोड़ने के लिए महर्षि दयानन्द ने १८५७ की क्रान्ति में अपना नाम व रूप छिपाकर चुपचाप काम किया। तांत्याटोपे, रानी लक्ष्मीबाई (झांसी) आदि सभी क्रान्तिकारियों से उनके सम्पर्क थे। वह हर प्रकार से इस क्रान्ति को सफल कराने मे लगे किन्तु किन्हीं कारणों से यह क्रान्ति सफल न हो पाई थी। तब महर्षि दयानन्द ने अंग्रेजों के दिल्ली दरबार के मौके पर एक सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन किया जिसमे सर सैयद अहमद खां तथा हिन्दुओं और ईसाइयों के बड़े-बड़े विद्वानों ने भाग लिया। दयानन्द का कहना था कि ईश्वर एक है यही सत्य है और हम सबको इसी अनुसार मानव जाति का कल्याण करना चाहिए। किन्तु उपस्थित सभी धार्मिक नेता जानते थे कि महर्षि के वेद सिद्धान्तों के आगे वे नहीं टिक सकते हैं। उन्होंने स्वामी जी का साथ छोड़ दिया और सम्मेलन सफल न हो सका।

१८७२ मे महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका संस्कार विधि, और वेदों के भाष्य तथा अन्य अनेक ग्रन्थो को लिखकर हिन्दू समाज की बिखरी हुई शक्ति को एक सूत्र में बांधने का बीड़ा उठाया। देश की आजादी के वह प्रबल समर्थक थे। वह जानते थे कि विदेशी राज्य के रहते देश का कल्याण नहीं हो सकता। इसीलिए उन्होंने सर्वप्रथम स्वराज्य शब्द का उद्घोष किया। पूना में महादेव गोविन्द रानाडे से स्वामी दयानन्द का साक्षात्कार हुआ। रानाडे ने महर्षि के मन्तव्यों को बड़ी गहराई से हृदयंगम किया और अपने परम शिष्य श्री गोखले को स्वामी दयानन्द के बारे में जानकारी देकर सत्यार्थ प्रकाश दिया। गोखले पहले महापुरुष थे जो इस ग्रन्थ को सदैव अपने सिरहाने रखते थे। उनका कहना था कि देश की आजादी के सम्बन्ध मे जब जब उनके मन में कमजोरी आती है वह इस ग्रन्थ को देखने से दूर हो जाती है। वह महर्षि दयानन्द को स्वराज्य का प्रथम उद्घोषक मानते थे। गोखले के शिष्य महात्मा गांधी थे। उन्होंने महर्षि दयानन्द के उन सूत्रों को अपनाया जिनमें छूआ-छूत निवारण, स्त्री शिक्षा, राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार तथा उसको राष्ट्र भाषा के सिंहासन पर आसीन करने का संकल्प और स्वदेशी का प्रचार प्रसार प्रमुख थे।

स्वामी दयानन्द पहले महापुरुष थे जिन्होंने वेद विद्या का प्रचार करते हुए जहां सायण, महीधर, उव्वट आदि वेद के भारतीय भाष्यकारों की आलोचना की वहीं इन्हीं भाष्यकारों को आधार मानकर विदेशी वेद भाष्यकार मैक्समूलर-ग्रिफ्थ आदि के वेद सम्बन्धी उनकी निर्मूल धारणाओं के तारतम्य को तोड़ने का प्रयत्न किया।

महर्षि दयानन्द जानते थे कि अंग्रेजी शिक्षा से भारत का कल्याण नहीं हो सकता है, इसीलिए उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को जन्म दिया। संस्कृत के उद्भट विद्वान होते हुए भी बंगाल के नेता श्री केशवचन्द्र सेन के कहने पर महर्षि दयानन्द ने अपने भाषण हिन्दी में देने और पुस्तकें हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया।

नारी जाति के उत्थान के लिए महर्षि दयानन्द ने हजारों वर्षों के बाद आवाज उठाई। उन्होंने ही समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र को बराबर का दर्जा दिया। छूत छात और ऊंच-नीच के भेदभाव को वह समाज के लिए कलंक समझते थे। इसे मिटाने के लिए ही उन्होंने शूद्र और स्त्री जाति को भी समाज मे बराबर का दर्जा देने का प्रयत्न किया। हिन्दू समाज की भूलो से जो लोग स्वधर्म छोड़कर विधर्मी बन गए थे उन्हें भी शुद्धि आन्दोलन द्वारा वैदिक धर्म में वापस में आने लिए पुनरागमन का रास्ता खोल दिया।

आज के सन्दर्भ मे महर्षि दयानन्द के विचारों की बड़ी सार्थकता है। देश व समाज को बचाने के लिए उनके उपदेशों की जरूरत है। ऊंच-नीच की दीवारों को तोड़ने तथा नारी जाति के उत्थान से ही देश का उत्थान हो सकता है।

आज यह कहना सार्थक है कि महर्षि दयानन्द ने विशाल हिन्दू जाति को ही आर्य जाति घोषित किया था और वेद प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी।

आज हम सबको आपसी भेदभावों को मिटाकर महर्षि दयानन्द के सन्देश व शिक्षाओं से नई प्रेरणा लेकर मानव मात्र के कल्याण के कार्य में जुट जाना चाहिए।

तीन बातें समझें

—श्रद्धा वार्ष्णेय—

तीन चीजें कभी छोटी न समझें . शत्रु, कर्जा, बीमारी।
तीन चीजें किसी की प्रतीक्षा नहीं करती : समय, मृत्यु, ग्राहक।
तीन चीजें भाई को भाई का दुश्मन बना देती हैं : जर जमीन जोरू।
तीन चीजें याद रखना जरूरी है : सच्चाई, कर्तव्य, मौत।
तीन चीजें असल उद्देश्य से रोकती हैं : बदचलनी, गुस्सा, लालच।
तीन चीजें कोई दूसरा नहीं चुरा सकता विद्या, चरित्र, योग्यता।
तीन चीजें निकल कर वापस नहीं आतीं : तीर कमान से, बात जुबान से, प्राण शरीर से।
तीन चीजें समय पर पहचाने जाते हैं : दोस्त, भाई, स्त्री।
तीन चीजें जीवन में एक बार मिलती हैं : माता-पिता, यौवन।
तीन चीजें पर्दे योग्य हैं धन, स्त्री, भोजन।
तीन चीजें इनसे बचना चाहिये : पर स्त्री, निन्दा, कुसंगत।
तीन चीजें इनमें मन लगाने से उन्नति होती है : ईश्वर, मेहनत, सेवा।
तीन चीजें कभी नहीं भूलनी चाहिये : कर्ज, फर्ज, मर्ज।
इन तीनों का सम्मान करो : पिता, गुरु, मातृ।
इन तीनों को हमेशा वश में रखो : मन, काम, क्रोध।
इन तीनों पर दया करो : बालक, भूखे, पागल।

सम्पादकीय

ऋषि के बोध का महत्व

संसार की रचना को ध्यान से देखने पर यह निश्चय करना सर्वथा सरल है कि इसका रचयिता सर्वज्ञ एक ही परमात्मा है। उसकी सत्तास्वरूप को अनादि काल से सब एक सर्वव्यापक व निराकार सत्ता के रूप में ऋषियों ने अपने अमर ग्रन्थों में प्रतिपादित किया है।

वैदिक धर्म के लोप हो जाने से प्रभु के प्यारों को जब कोई मार्ग दर्शन नहीं मिल रहा था तो स्वार्थ लोलुप पण्डितों ने परमात्मा के स्वरूप का जो वर्णन अपनी लौकिक वाणी से किया था, उसी में पार्थिव शंकर की पूजा का विधान भी एक था। शंकर के नाम से पूजी जाने वाली मूर्ति के सम्बन्ध में जो कथा पुराणों में वर्णनकी गई है। उसकी कथाएं बालक मूलशंकर ने अपने परिवार में सुनी थी। उन्हीं से प्रेरित मूल जी ने शिवरात्रि का व्रत धारण किया था। परन्तु चूहे जैसे छोटे जीव से हुआ वह केवल एकाकी बोध नहीं था, उस बोध ने इतना विराट रूप धारण किया कि आज महर्षि दयानन्द का बोध संसार भर के स्थायी बोध के रूप में परिवर्तित हो गया है।

प्रभुसत्ता के आधार पर सचालित नियमों के अध्ययन से संसार में जो महान् बौद्धिक क्रान्ति हुई है उसका इतिहास लिखने को हजारों पृष्ठ के लेख भी कम पड़ेंगे। उन्हीं नियमों के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के प्रथम नियम में इन शब्दों में उद्बोधन प्रदान किया —

सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदिमूल परमेश्वर है।

सब सत्य विद्याओं के स्वामी जो प्रभु की सन्तान ईंट पत्थरों में पूजती फिरे, यह पीड़ा ऋषि को होने के कारण मानव जीवन को सभी विघ्नबाधा दुर्बलताओं से निकालकर कल्याण पथ पर अग्रसर करने के लिए उन्होंने मानव जीवन की सम्पूर्ण आचार संहिता अपने अमर साहित्य द्वारा विश्व को प्रदान की व समाज का उद्देश्य एक देशीय एक जातीय अथवा एकाकी बनाने के बजाय अपने नियमों में घोषणा की —

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। संसार की बात कह कर ऋषिवर ने जैसे मानव जाति पर जो प्रेम करुणा व कृपा की वर्षा की है उसका मूल्यांकन संसार अभी नहीं कर पाया है परन्तु समय आएगा जब संसार अपनी समस्याओं व पीड़ाओं से निपटने के लिए किसी शाश्वत विचारधारा व यथार्थ दर्शन की तलाश करेगा तो महर्षि का सम्मान किसी भी नबी पैगम्बर अथवा किसी भी महान विचारक व चिन्तक से भी अधिक करेगा।

ऋषि के जीवन काल में ही योरोपीय विद्वानों को संसार के प्राचीनतम ग्रन्थ वेद के सम्बन्ध में जिज्ञासा जागी थी। जर्मन व इग्लेंड के कोटि के विद्वानों ने वेद के सम्बन्ध में खोज प्रारम्भ की थी। अनेक ग्रन्थ लिखे गये जिनमें जर्मन के मैक्समूलर का नाम तो विश्व विख्यात है। महर्षि दयानन्द ने मैक्समूलर से पत्रव्यवहार भी किया था। थियोसोफिस्ट सोसायटी के संस्थापक भी ऋषि से मार्गदर्शन के लिए भारत आए थे। परन्तु सत्य के सम्बन्ध में महर्षि का आग्रह इतना प्रबल था कि उन्होंने कभी असत्य से समझौता नहीं किया व सत्य का प्रचार करने के लिए उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की जिसके नियमों में मुख्य उद्देश्य यह बताया—

सत्य के ग्रहण करने व असत्य के छोड़ने के लिए सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

प्रभु की सत्य सत्ता व सत्यज्ञान के नियमों व व्यवस्थाओं के आधार पर ही वे संसार की समस्याओं का हल खोजते थे। महर्षि का दृष्टिकोण कितना उदार व अन्तर्राष्ट्रीय था कि उन्होंने कभी एकाकी या एक पक्षीय मत व्यक्त नहीं किया। विदेशी राज्य के भारत में विरोध को वे राज्य के अन्दर प्रवर्तमान दोषों के कारण ही करते थे। अपनी प्रचार यात्राओं के समय देश के तेजी से घटते पशु धन विशेषतया गोधन के ह्रास पर उन्होंने चिन्ता व्यक्त की थी परन्तु जब उन्होंने अपने प्रयास में असफलता देखी तो विदेशी राज्य के विरुद्ध स्वतन्त्रता का शंख फूंका। यह किसी जाति या देश विशेष का विरोध नहीं था अपितु अंग्रेज जिस प्रकार भाई भाई को लड़ाकर राज्य कर रहे थे जिस प्रकार पशु धन का वध कराकर भारत को दरिद्र व संकट ग्रस्त बना रहे थे उसका उपाय केवल स्वतन्त्रता के मन्त्र में ही सन्निहित था। मिथ्या मतान्तरों के विरोध से वे किसी व्यक्ति अथवा समुदाय विशेष का विरोध नहीं करते थे उनके हाथों से स्थापित प्रथम बम्बई समाज मन्दिर का दानदाता एक सम्पन्न मुसलमान था। मुसलमानों की दुदर्शा का कारण वे धर्म के नाम पर फैले मिथ्याचार को ही मानते थे। हिन्दू धर्म में वर्तमान अन्धविश्वासों व कुप्रथाओं का भी उन्होंने डटकर विरोध किया। वे सत्य के उपासक थे व संसार भर में सत्य की स्थापना ही उनका महान मिशन था।

महर्षि के विचारों का प्रभाव निश्चय ही संसार पर पड़ा है आज सभी धर्मों व धर्माचार्यों के चिन्तन में मौलिक परिवर्तन आया है और यदि यह कहा जाए वे प्रायः महर्षि के ही सत्य दृष्टिकोण से विचार करने लगे हैं तो कोई आश्चर्य नहीं क्योंकि 'सत्यमेव जयते नानृतम' विजय सत्य की ही होती है झूठ की नहीं।

आज भी मानव समाज, संसार के राष्ट्रों व संसार के अन्दर विद्यमान जीवन संघर्षों के प्रश्नों को गम्भीरता से विचार किया जाए तो, उसका कारण धार्मिक भिन्नता, भाषा भिन्नता व विचार भिन्नता के रूप में मिलेगा।

भारत व पाकिस्तान में एक ही प्रभु के बनाए मनुष्य हैं परन्तु धर्म के भेद ने उन्हें कितना दूर कर दिया है। फिलस्तीन का युद्ध क्या है केवल विचारों का संघर्ष, ईरान इराक की लड़ाई भी दो विपरीत विचारधाराओं का टकराव है, यदि सब एक ही मानवीय दृष्टिकोण से सोचने लग जाएं तो सारे विश्व की समस्त मानवजाति के संकट निवारण हो जाएं। सारा संसार एक ही महान परमात्मतत्त्व की शरण में शान्ति प्राप्त करे जैसा कि वेदमाता का संदेश है।

यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्

महर्षि की बोधरात्रि का यही महान सन्देश है।

बढ़ो सपूतों !

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ. प्र.)

बढ़ो सपूतो ! बोध रात्रि से, लेकर प्रेरक शक्ति महान।
वैदिक धर्म पथों पर चलकर, निखरें जीवन के प्रतिमान ॥

सत्य-धर्म हित जीवन अपना, हर्षित होकर करें समर्पित।
संजोए निज अन्तस्तल में, सारी मानवता का हित ॥

पाखण्डों के गढ़ पर फिर से, वीर जयी बन करें प्रहार।
राम कृष्ण के वंशज हम हैं, करें दनुजता का संहार ॥

दयानन्द के पद चिन्हों पर, चलने का लें हम संकल्प।
मानवता की रक्षा का है, बचा न कोई अन्य विकल्प ॥

सैनिक हैं हम दयानन्द के ! निर्भय होकर करें प्रयाण।
क्रन्दन करती, हुई मनुजता, को दें हम नवजीवन-प्राण ॥

भारत के हम वीर सिपाही, मां का मान बढ़ायेंगे।
सारी जगती के कष्टों को, निश्चय हमी मिटायेंगे ॥

कृण्वन्तोविश्वमार्यम स्वर, गूंजेगा भू पर अविरल।
महिमण्डल ज्योतित कर देगी, वेद-भानु से रश्मि विमल ॥

आओ ! आर्य सपूतो ! आओ ! ! त्यागें।
'आर्य' पुत्र हम ? सब आपस के, छोड़ें अपना सभी विवाद ॥

भू मण्डल पर वेद-ध्वजा फिर,, हो सम्मानित तथा समादृत।
वैदिक-पथ इस जगती तल पर, मानव में हो जागृत ॥

बन अजेय हम बढ़ें सुपथ पर, जो वेदों का दिव्य महान।
सत्य सनातन धर्म हमारा, इस पर हों हम सब बलिदान ॥

क्रान्तदर्शी-दयानन्द

श्री स्व० पं. वीरसेन वेदश्रमी, इन्दौर

वेदों का भूमण्डल में प्रचार

वेदों का भूमण्डल में प्रचार महर्षि दयानन्द का प्रधान लक्ष्य था, इसके लिए प्राथमिक कार्य यह महर्षि ने घोषित किया था कि—वेदों का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना सुनाना आर्यों का परम धर्म है, इसको ध्यान में रखकर प्रयत्न करने चाहिए, जब विद्याओं का ज्ञान होगा, वेद की विद्याओं के ज्ञान से उनके उपयोग की विधियों का अनुसंधान प्रारम्भ होगा, विधियों के अनुसंधान के आधार पर विद्या और शिल्प, कला यन्त्रों का निर्माण होगा और मानव जाति की आवश्यकताओं की पूर्ति वेद के विज्ञान से होगी, तभी वेदों का पठन-पाठन प्रचलित हो सकेगा।

वेदों का भूमण्डल में प्रचार यज्ञ विज्ञान से संभव

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। अतः इस बात की भी नितान्त आवश्यकता है कि वेद में से उन सब सत्य विद्याओं को या उनमें से कतिपय सत्य विद्याओं को संसार के सम्मुख प्रस्तुत किया जाये, उन विद्याओं से संसार को लाभान्वित किया जाये और उन विद्याओं को व्यवहारोपयोगी बनाकर विश्व के जीवन के इतने निकट स्थापित कर दिया जाये कि मानव जाति को अपने ज्ञान एवं प्रेरणा के स्रोत के लिए वेद को ही अंगीकार करना होगा और अपने समस्त व्यवहारों के लिए वैदिक यज्ञ विज्ञान पर ही आश्रित होना होगा। "सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है" अतः वेद की विद्या और उसको व्यवहारोपयोगी बनाकर मानवमात्र को आदि मूल परमेश्वर के निकट लाने का जो भी प्रयत्न हम करेंगे तो वह निःसंदेह चतुर्विधफल धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सिद्ध करने कराने वाला ही होगा, अन्य सब योजनाओं एवं कार्यों को प्राथमिकता न देकर वेद के यज्ञ-विज्ञान के अनुसंधान को ही पूर्ण महत्व देते हुए इसके लिए प्रयत्न करना चाहिए। संसार का उपकार करने का यही सर्वोत्कृष्ट कार्य है; इसके लिए उदासीनता या उपेक्षा-भाव आत्मघात के तुल्य है।

वैदिक विज्ञान की उपयोगिता का प्रतिपादन हो

क्या वर्तमान वैज्ञानिक युग में वेद की विद्या और उसका यज्ञ-विज्ञान उपयोगी हो सकेंगे? क्या यज्ञ के विज्ञान द्वारा कुछ ऐसे भी कार्य किये जा सकते हैं, जिससे उनका प्रभाव आज के विश्व के मस्तिष्क एवं हृदय पटल पर पड़ सके? क्या वेद के विज्ञान के उपयोग से ऐसे भी कार्य हो सकते हैं जिनको वर्तमान विज्ञान अभी तक नहीं कर सका है? यदि इसका उत्तर हां में दिया जा सकता है तो उसके लिए हमें अवश्य प्रयत्न करना चाहिए और उसके लिए सर्व प्रकार से सहयोग भी देना चाहिए।

यज्ञशाला—यज्ञ वेदी ही है

वेद विद्याओं एवं विज्ञान से पूर्ण है—और उन विद्याओं एवं विज्ञान की सबसे उत्कृष्ट प्रयोगशाला यज्ञ वेदी-यह मानव देह ही है। जब इस देह रूपी प्रयोगशाला से विश्व में प्रयोग किये जाते हैं तो उसका प्रभाव विश्व पर भी पड़ता है। जब तक ये प्रयोग पंच तन्मात्राओं के ऊपर की शक्तियों द्वारा किये जाते हैं तब तक संकल्प शक्ति के आधार पर सफलता को प्राप्त करते हैं, यह वैदिक विज्ञान की सूक्ष्म एवं उच्च स्थिति है, परन्तु जब वैदिक विज्ञान का स्थूल रूप, स्थूल जगत् के पदार्थ एवं उनकी शक्तियों के आश्रय से सम्पन्न किया जाता है तो उसकी प्रयोग-शाला बाह्य यज्ञ-वेदी को ही बनाना पड़ता है, उसमें सर्वप्रकार के क्रियाकलापों की सिद्धि के लिए अग्नि स्थापन करके द्रव्यों की आहुतियों द्वारा उनको सूक्ष्म करके संयोग, वियोग एवं विभाग क्रियाओं द्वारा विश्व में यथा-स्थान, यथाशक्ति तत्वों की वृद्धि एवं ह्रास द्वारा इच्छित क्रिया की जाती है जो कि इष्ट प्राप्ति कराती है, यदि इसके साथ मानसिक शक्तियों का भी प्रयोग किया जाता है तो और भी शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।

समस्त कामनाओं की पूर्ति यज्ञ से

वैदिक विज्ञान की इस प्रक्रिया को यज्ञ कहते हैं, इसीलिए वेद ने यज्ञ को "कामधुक" कहा। गीता में भी यज्ञ को "कामधुक" कहा गया है अर्थात् सर्वकामनाओं की प्राप्ति, दोहन कार्य यज्ञ से हो सकती है। कामनानुकूल इष्ट प्राप्ति के लिए जो विविध प्रकार के प्रयत्न एवं क्रिया समूह हैं वे ही पृथक्-पृथक् यज्ञों के रूप में विविध नाम व रूप से कहे जाते हैं, इस प्रक्रिया को समझ कर यज्ञ द्वारा अनुसंधान कार्य बड़ी सफलता से सम्पन्न हो जाता है इसी यज्ञ-विज्ञान के आधार पर—

यज्ञों द्वारा असमय में अन्तरिक्ष में सोम भरा जा सकता है और उससे मेघों का निर्माण इच्छित समय पर हो सकता है। यज्ञ निर्मित इन मेघों को अपेक्षित स्थानों पर बरसाया भी जा सकता है। आज बड़े-बड़े बांध बने हुए हैं, यदि वर्षा न हो तो वे शीघ्र ही निष्फल हो सकते हैं, अतः इच्छित रूप से वर्षा कराने के सुलभ यज्ञ-विज्ञान द्वारा संसार को लाभान्वित किया जा सकता है जिससे कृषि एवं उद्योग विकसित बने रह सकते हैं।

अतिवृष्टि को रोकने के प्रयत्न वर्तमान विज्ञान नहीं कर सका; परन्तु अवर्षण की स्थिति निर्माण करने या अतिवृष्टि को रोकने की क्रिया भी यज्ञ द्वारा सम्पन्न होती है और उसमें सफलता भी दृष्टिगोचर हुई है। इस क्रिया द्वारा वर्षा पर सन्तुलन एवं नियन्त्रण स्थापित होने से नदियों की बाढ़ समस्या को नियन्त्रित किया जा सकता है और देश को जन, धन, अन्नादि की हानि से मुक्त किया जा सकता है।

यज्ञ द्वारा वर्षा कराने एवं वर्षा रोकने की यज्ञ प्रक्रिया तथा विज्ञान के आधार पर ही ऋतु विज्ञान पर भी इच्छित नियन्त्रण स्थापित हो सकता है। अर्थात यज्ञ द्वारा ऋतुओं के तापमान में न्यूनता एवं वृद्धि की जा सकती है। शीत ऋतु में यदि आवश्यकता से अधिक शीत लहरें वातावरण को अति शीतल बना दें अथवा ग्रीष्म ऋतु में ग्रीष्म की प्रचण्डता से जनहानि की सम्भावना हो तो दोनों अवस्थाओं में अपने अनुकूल वातावरण में परिवर्तन यज्ञ के द्वारा सम्भव है अथवा ऋतुओं की स्थिति क्षीण, प्रभावहीन एवं असमर्थ हो तो उसको समर्थ एवं प्रभावयुक्त भी यज्ञ के द्वारा किया जा सकता है।

यज्ञ द्वारा मरुभूमि को उर्वरा भूमि में परिवर्तित करने की क्रिया भी की जा सकती है। आज मरुभूमि को रोकने के उपायों में बबूल के वनों को लगाने का उपाय व्यवहार में लाया जा रहा है, कांटों को बोने का फल कांटे के रूप में ही भोगना पड़ता है मरुपन पृथिवी का क्षय रोग है। इस क्षय की चिकित्सा यज्ञ द्वारा हो सकती है, यदि नियत क्षेत्र में ५ वर्ष परीक्षण का अवसर प्राप्त हो तो इसमें सफलता प्राप्त हो सकती है। पृथिवी के तत्वों में जो विपरीत क्रिया विघटनात्मक प्रारम्भ हो गई है उस क्रिया के प्रति विपरीत रूप क्रिया करने से मरुभूमि में अनुकूल परिवर्तन होने लगेंगे।

यज्ञ द्वारा विश्व के मानस क्षेत्र में शान्ति, प्रेम, आस्तिकता, अभ्युदय अनुशासन आदि की भावनाओं को जागरित किया जा सकता है और सुबुद्धि तथा सत्कर्मों की वृद्धि की जा सकती है।

इसी प्रकार के अनेक कार्य यज्ञ-विज्ञान से सम्पन्न हो सकते हैं तभी भूमण्डल में वेद प्रचार हो सकेगा। यज्ञ द्वारा वृष्टि कराने, वृष्टि रोकने रोग दूर करने, आरोग्यता प्रदान करने, बुद्धि की वृद्धि सम्पादन करने, सन्तान वृद्धि, वाक्शक्ति के विकास आदि में लाभ होते देखा गया है, और अधिक परीक्षण करने का अवसर और एतदर्थ सहयोग प्राप्त हो तो यज्ञ-विज्ञान के अनेक कार्यों में सफलता से विज्ञान का विकास करने में समर्थ हो सकेंगे।

महर्षि दयानन्द के गोवध-निषेध हेतु वैधानिक प्रयत्न

—डा. रामेश्वरदयाल गुप्त, ज्वालापुर

दयानन्द सरस्वती ने गोकरुणा निधि पुस्तक लिखी। उसका अंग्रेजी अनुवाद करने के लिए राव बहादुर एम० ए० को ता० २५ दिसम्बर १८८१ को एक पत्र में लिखा कि "आपने जो गोकरुणा निधि पुस्तक को इंगलिश में भाषान्तर कर देना स्वीकार किया, उससे बहुत आनन्द हुआ।"

महर्षि की योजना थी दो करोड़ भारतीयों के हस्ताक्षर से युक्त एक आवेदन पत्र ब्रिटिश साम्राज्ञी महारानी विक्टोरिया की सेवा मे प्रस्तुत किया जावे।

इस आवेदन पत्र पर सही कराने के लिए महर्षि ने फार्म छपवाये थे। यह फार्म डा० रूप सिंह जी आर्य समाज दानापुर को भेजते हुए महर्षि ने ता० १५ मार्च सन १८८२ को एक पत्र में यों लिखा था—

"मैं आप परोपकार प्रिय धार्मिक जनों को सब जगत् के उपकारार्थ गाय, बैल और भैंस की हत्या के निवारणार्थ दो पत्र एक तो सही करने और दूसरा जिसके अनुसार सही करना है, भेजता हूँ। इसको आप प्रीति और उत्साह-पूर्वक स्वीकार कीजिये, जिससे आप महाशय लोगों की कीर्ति इस संसार में सदा विराजमान रहे। इस काम को सिद्ध करने का विचार इस प्रकार किया गया है कि दो करोड़ से अधिक राजे महाराजे और प्रधान आदि महाशय पुरुषों की सही कराके आर्यावर्तीय श्रीमान गवर्नर-जनरल साहेब बहादुर के पास भेजकर की अर्जी करके इनसे निवेदन गाय आदि पशुओं की हत्या को छुड़वा देना। मुझको दृढ़ निश्चय है कि प्रसन्नतापूर्वक आप लोग इस महोपकारक कार्य को शीघ्र करेंगे।"

"ऐसा कौन मनुष्य जगत् में है, जो सुख के लाभ होने में प्रसन्न और दुःख की प्राप्ति में अप्रसन्न न होता हो, जैसे दूसरे के किए अपने उपकार में स्वयं आनन्दित होता है, वैसे ही परोपकार करने में सुखी अवश्य होना चाहिये। क्या ऐसा कोई भी विद्वान भूगोल में था, है और होगा, जो परोपकार रूप धर्म और परहानिस्वरूप अधर्म के सिवाय धर्म व अधर्म की सिद्धि कर सके। धन्य वे महाशय जन हैं, जो अपने तन, मन और धन से संसार का अधिक उपकार सिद्ध करते हैं। निन्दनीय मनुष्य वे हैं जो अपनी अज्ञानता से स्वार्थ-वश होकर अपने तन, मन धन से जगत् में परहानि करके बड़े लाभ का नाश करते हैं। सृष्टिक्रम से ठीक २ यही निश्चय होता है कि परमेश्वर ने जो-जो बनाया है, वह पूर्ण उपकार लेने के लिए है। अल्प लाभ से महा हानि करने के अर्थ नहीं। विश्व में दो ही जीवन के मूल हैं एक अन्न और दूसरा पान। इसी अभिप्राय से आर्यवर शिरोमणि राजे महाराजे और प्रजाजन महोपकारक गाय आदि पशुओं को न आप मारते और न किसी को मारने देते थे। अब भी इन गाय, बैल और भैंस को मारने और मरवाने देना नहीं चाहते हैं। क्योंकि अन्न और पान की बहुताई इन्हीं से होती है। इससे सबका जीवन सुख से हो सकता है। जितना राजा और प्रजा का बड़ा नुकसान इनके मारने और मरवा देने से होता है, उतना अन्य किसी कर्म से नहीं। इसका निर्णय गोकरुणा निधि पुस्तक में अच्छे प्रकार प्रकट कर दिया है अर्थात् एक गाय के मारने और मरवाने से ४,२०,००० चार लाख बीस हजार मनुष्यों के सुख की हानि होती है। इसलिए हम सब लोग स्वप्रजा की हितैषिणी श्रीमती राज राजेश्वरी क्वीन विक्टोरिया की न्याय प्रणाली में जो यह अन्याय रूप बड़े बड़े उपकारक गाय आदि पशुओं की हत्या होती है इसको इनके राज्य में से प्रार्थना से छुड़वा के अति प्रसन्न होना चाहते हैं। यह हमको पूरा विश्वास है कि विद्या, धर्म, प्रजा-हित प्रिय श्रीमती राज राजेश्वरी महारानी विक्टोरिया पार्लियामेंट सभा और सर्वोपरि प्रधान आर्यावर्तस्थ श्रीमान गवर्नर-जनरल साहिब बहादुर सम्प्रति इस बड़ी हानिकारक गाय, बैल तथा भैंस की हत्या को उत्साह और प्रसन्नता पूर्वक शीघ्र बन्द करके हम सब को परम आनन्दित करें। देखिये कि उक्त गाय आदि पशुओं को मारने मरवाने से दूध, घी और किसानों की कितनी हानि होकर राजा और प्रजा की बड़ी हानि हो गई और नित्य प्रति अधिक अधिक होती जाती है। पक्षपात छोड़ के जो कोई देखता है तो वह परोपकार ही को धर्म और परहानि को अधर्म निश्चित जानता है। क्या विद्या का यह फल और सिद्धांत नहीं है कि जिस-जिस से अधिक उपकार हो उस उस का पालन, वर्धन करना और नाश कभी न करना। परमदयालु न्यायकारी सर्वान्तर्यामी सर्वशक्तिमान् परमात्मा इस जगदुपकारक काम करने में ऐकमत करे।

विज्ञापनपत्रमिदम्

"सब आर्य पुरुषों को विदित किया जाता है कि जिस पत्र के ऊपर (ओम्) और नीचे (हस्ताक्षर) ऐसा वचन लिखा है, वही सही करने का है। उस पर सही इस प्रकार करनी होगी कि जिसके स्वराज्य व देश में ब्राह्मण आदि मनुष्यों की जितनी संख्या हो उतनी संख्या लिख के अर्थात् इतने सौ, हजार लाख व करोड़ मनुष्यों की ओर से मैं अमुकनामा पुरुष सही करता हूँ। इस प्रकार एक श्रीयुत महाशय प्रधान पुरुष की सही में सर्वसाधारण आर्य पुरुषों की सही आ जावेगी। परन्तु जितने मनुष्यों की ओर से एक मुख्य सही करे वह उनसे सही लेके अपने पास अवश्य रखे। और जो मुसलमान व ईसाई लोग इस महोपकारक विषय में दृढ़ता और प्रसन्नता से सही करना चाहें तो दें। मुझको दृढ़ निश्चय है कि आप परम उदार महाशयों के पुरुषार्थ उत्साह और प्रीति से यह सर्व उपकारक महापुण्य कीर्तिप्रदायक कार्य यथावत् सिद्ध हो जावेगा।'

चैत्र कृष्णा ९ सं० १९३९ तदनुसार १४ मार्च १८८२ मुंबई

—दयानन्द सरस्वती

गोरक्षा सम्बन्धी उक्त दोनों पत्र महर्षि ने उस समय के समाचार पत्रों मे भी प्रकाशित कराये, विशिष्ट आर्य जनों को भेजे तथा शाहपुरा, जोधपुर, उदयपुर आदि नरेशों को इसमें सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया था।

शाहपुराधीश राजाधिराज श्री सर नाहर सिंह जी को एक पत्र में महर्षि ने लिखा कि—

"जो आपसे और मुझसे गोरक्षा के विषय में सम्वाद हुआ था उसके वास्ते भी एक एक चिट्ठी छपवाके श्रीमानमहाराणा दिवाकर उदयपुराधीश आदि राजे महाराजों के पास भेजे हैं, वे ही आपके पास भी दो पत्र भेजते हैं। इसका प्रबन्ध ऐसा किया गया है कि अपने राज्य और मित्रों के राज्य में जो ब्राह्मणादि मनुष्य हों उनकी ओर से राजे महाराजे और प्रधान पुरुष उस छापे के नीचे व बगल में उन सही करने वालों की संख्या लिखकर अपनी सही करें।'

महर्षि के इस गोरक्षा आन्दोलन से उदयपुर के महाराणा अत्यन्त प्रभा-वित हुए और उन्होंने जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह जी को गोरक्षा के सम्बन्ध मे पत्र लिखा जिसका उत्तर उन्होंने इस प्रकार दिया था—

'म्हारी प्रजा १४ ६१, १५२ हिन्दू ने १, ३४, १०९ मुसलमान या तीनु पशु (गाय, बैल भैंस) नहीं मारिवा वावतरा प्रबन्ध में खुशी है। ओर मैं पिण रजावन्द हा।

पौष बदी ९ सं० १९३९ दस्तखत महाराजाधिराज खास मुहर जसवन्तसिंह।

इस हस्ताक्षर आन्दोलन की सफलता का ज्वलन्त प्रमाण यह हुआ कि अकेले शाहपुराधीश ने ४० हजार मनुष्यों के हस्ताक्षर कराकर महर्षि के पास भेजे थे।

राजस्थान के पोलिटिकल एजेण्ट कर्नल ब्रुक के रिटायर्ड होकर के इंगलैंड लौटते समय स्वामी जी महाराज ने उन्हें निम्न पत्र लिखा था—

ध्यान देकर सुनिये कि जैसा दुःख सुख अपने को होता है, वैसा ही औरों को समझा कीजिये। और यह भी ध्यान में रखिए कि पशु आदि और मनुष्यों के अधिक पुरुषार्थ ही से राजा का ऐश्वर्य अधिक बढ़ता और न्यून से नष्ट हो जाता है। इसलिए राजा प्रजा से कर लेता है कि उनकी रक्षा यथावत करे, न कि राजा और प्रजा के जो सुख के कारण गाय आदि पशु हैं उनका नाश किया जावे। इसलिए आज तक जो हुआ, सो छोड़कर सबके हानिकारक कर्मों को न कीजिए और न करने दीजिये हां, हम लोगों को भलाई बुराई के

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सत्यार्थ प्रकाश के दर्पण से (२)

–श्री गजानन्द आर्य, कलकत्ता

राजसत्ता का मत कितना शक्तिशाली होता है यह इस विवरण से भली भांति जाना जा सकता है। कोई कारण नहीं था कि अंग्रेजी शासक का पोप यहां अपना प्रभुत्व नहीं बना लेता। ध्यान रहे प्रेम का पाठ पढ़ाने वाला ईसाई मत अहिंसा के प्रचारक जैन मत से अधिक सहिष्णु नहीं हो सकता था। जब जैन का यह हाल रहा तब पोप पता नहीं क्या क्या करता।

जैन मत का यह शासन तीन सौ वर्ष तक चलता रहा। उज्जैन का राजा सुधन्वा हुआ। यद्यपि सुधन्वा राजा जैन मत में था किन्तु सत्य असत्य की जानकारी के लिए सदैव तत्पर रहता था। उस शासन काल में शंकराचार्य का प्रादुर्भाव हुआ। स्वामी शंकराचार्य के विषय में सत्यार्थ प्रकाश में लिखा- "बाइसौ वर्ष हुए कि एक शंकराचार्य द्रविड़ देशोत्पन्न ब्राह्मण ब्रह्मचर्य से व्याकरणादि सब शास्त्रों को पढ़कर सोचने लगे कि अहह! सत्य आस्तिक वेद मत का छूटना और जैन नास्तिक मत का चलना बड़ी हानि की बात हुई है, इनको किसी प्रकार हटाना चाहिए। शंकराचार्य शास्त्र तो पढ़े ही थे परन्तु जैन मत के भी पुस्तक पढ़े थे और उनकी युक्ति भी बहुत प्रबल थी। उन्होंने विचारा कि इनको किस प्रकार हटावें। निश्चय हुआ कि उपदेश और शास्त्रार्थ करने से ये लोग हटेंगे। ऐसा विचार कर उज्जैन नगरी में आये। वहां उस समय सुधन्वा राजा था जो जैनियों के ग्रन्थ और कुछ संस्कृत भी पढ़ा था। राजा से मिलकर कहा कि जैनियों के पंडितों से मेरा शास्त्रार्थ कराइये। इस प्रतिज्ञा पर कि जो हारे सो जीतने वाले का मत स्वीकार करले और आप भी जीतने वाले का मत स्वीकार कीजियेगा। राजा ने शंकराचार्य की यह बात सुनी और बड़ी प्रसन्नता के साथ बोले कि हम शास्त्रार्थ कराके सत्यासत्य का निर्णय अवश्य करावेंगे। जैनियों के पंडितों को दूर दूर से बुलाकर सभा कराई उसमें शंकराचार्य का पक्ष वेदमत की स्थापना और जैनियों का खण्डन और जैनियों का पक्ष अपने मत की स्थापना और वेद का खण्डन था। बहुत दिन तक शास्त्रार्थ होता रहा अन्त में युक्ति और प्रमाण से जैनियों का मत खंडित और शंकराचार्य का मत अखंडित रहा। जैनियों के पंडितों और सुधन्वा राजा ने वेद मत को स्वीकार कर लिया।

सत्यार्थ प्रकाश में यह विवरण बहुत विस्तार से है। शंकराचार्य को दोबारा जैनमत के साथ शास्त्रार्थ करना पड़ा इससे हुआ यह कि समस्त देश में पुनः वेद मत का स्थापन हो गया। शंकराचार्य ने अपना पक्ष ईश्वर को एकमात्र अनादि सत्ता को सत्य मानने पर रखा जोकि सर्वांश में ठीक न था। तीन अनादि सत्ता के स्थान पर केवल एक सत्ता अनादि मान लेने से 'अहं ब्रह्मास्मि' सब बन गये। सत्यार्थ प्रकाश में इस विषय को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है—अब इसमें विचारना चाहिए कि जीव ब्रह्म की एकता जगत् मिथ्या शंकराचार्य का निजमत था तो वह अच्छा मत नहीं और जैनियों के खंडन के लिए उस मत को स्वीकार किया हो तो कुछ अच्छा है।

इतने लम्बे विवरण को प्रस्तुत करने का प्रयोजन है कि स्वामी शंकराचार्य ने जिस योग्यता से देश में पुनः वेदमत की स्थापना की थी उसी प्रकार की युक्ति सत्यार्थ प्रकाश में 'पोप' शब्द को पाखण्ड पर्यायवाची बना देने की रही है। युक्ति बड़ी सफल रही। इस एक शब्द ने पोप के धार्मिक प्रसार को बहुत सीमा तक रोका है। ग्रन्थ के लेखक ने ईसाइयों के धर्मग्रन्थ पर भी अपनी कलम चलाई है। सत्यार्थ प्रकाश के १३ वें समुल्लास में बाइबिल के एक वाक्य की समीक्षा करते हुए लिखा गया है कि "ईसा ने मनुष्यों के फसाने के लिए एक मत चलाया है कि जाल में मच्छी के समान मनुष्यों को स्वमत जाल में फसाकर अपना प्रयोजन साधें। जब ईसा ही ऐसा था तो आजकल के पादरी लोग अपने जाल में मनुष्यों को फसावें तो क्या आश्चर्य है। क्योंकि जैसे बड़ी-बड़ी और बहुत मच्छियों को जाल में फसाने वाले की प्रतिष्ठा और जीविका अच्छी होती है ऐसे ही जो बहुतों को अपने मत में फसाले उसकी प्रतिष्ठा और जीविका होती है। इसी से ये लोग जिन्होंने वेद और शास्त्रों को न पढ़ा न सुना उन बिचारे भोले मनुष्यों को अपने जाल में फसाके उसके मां, बाप, कुटुम्ब आदि से पृथक कर देते हैं। इससे सब विद्वान् आर्यों को उचित है कि स्वयं इनके भ्रमजाल से बचकर अपने भोले भाइयों के बचाने में तत्पर रहें।'

वेद मत को बचाने के लिए जो बलिदान स्वामी शंकराचार्य ने दिया, लगता है वैसा ही बलिदान देश को विदेशी संस्कृति से बचाने के लिए सत्यार्थ प्रकाश के लेखक ने दिया है। तुलना कीजिए सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित स्वामी शंकराचार्य के अन्त की—

"जब वेद मत का स्थापन हो चुका और विद्या प्रचार करने का विचार करते ही थे उतने में दो जैन ऊपर से कथन मात्र वेदमत और भीतर से कट्टर जैन अर्थात् कपट मुनि थे। शंकराचार्य उन पर अति प्रसन्न थे। उन दोनों ने अवसर पाकर शंकराचार्य को ऐसी विषयुक्त वस्तु खिलाई कि उनकी क्षुधा मन्द हो गई। पश्चात् शरीर में फोड़े फुन्सी होकर छः महीने के भीतर शरीर छूट गया।'

गौवध-निषेध

(पृष्ठ ५ का शेष)

कामों को जता देवें, और आप लोगों का यही काम है कि पक्षपात छोड़ सबकी रक्षा और बढ़ती करने में तत्पर रहें। सर्वशक्तिमान जगदीश्वर हम और आप पर पूर्ण कृपा करें कि जिससे हम और आप लोग विश्व के हानिकारक कर्मों को छोड़ सर्वोपकारक कर्मों को करके सब लोग आनन्द में रहें। इन सब बातों को सुन मत डालना किन्तु सुन रखना, और इन अनाथ पशुओं के प्राणों को शीघ्र बचाना।"

अन्त में स्वामी जी ने परम पिता परमेश्वर के सामने अपना हृदय खोलकर रख दिया और विनती की थी कि "महाराजाधिराज जगदीश्वर इनको कोई न बचावे तो इनकी रक्षा करने और हमसे कराने में शीघ्र उद्यत हूजिये।'

अन्तिम वाक्य में उनका देशवासियों को आशा और आदेश है।

मानव निर्माण गुरुकुल शिक्षा से ही सम्भव है

श्री कमलमित्र शास्त्री

"मानव का जन्म लेना सरल है परन्तु मानवता आनी कठिन है।" महर्षि पाणिनि के अनुसार मनु शब्द से अण प्रत्यय करके मानव की निष्पत्ति हुई तत्पश्चात् 'तल' प्रत्यय लगाकर मानवता शब्द का निर्माण हुआ। प्रत्येक प्राणी ८४ लाख योनियो को भोगकर अपनी मा की पवित्र गोद मे जन्म लेता है तब हम उसको नवजात शिशु की सज्ञा प्रदान करते हैं जब वही बालक बडा होता है तब उसको मानव की सज्ञा से अलकृत करते हैं।

ससार में ३ प्रकार के मनुष्य पाये जाते हैं, पहले वे हैं जो खाओ और मौज उडाओ इसको ही जीवन समझते हैं और वे कहते हैं कि यह विश्व हमें नाचने गाने के लिए विधाता ने बनाया है। दूसरे वे लोग जो कामवासना को पूर्ण करना और सुरापान करते हुए मर जाना ही मुक्ति समझते हैं। तीसरे वे लोग जो इन उपर्युक्त दोनो बातो से पृथक् एव सयमी हैं। ये लोग दु ख से अत्यन्त निवृत्ति को ही मुक्ति समझते हैं। इनमें पहले और दूसरे प्रकार के लोग दानव की श्रेणी में आते हैं। तथा तीसरे प्रक र के लोग जो देवत्व की गणना में आते हैं। मनुष्य बीच की स्थिति मे है। मानवता से गिरा तो दानव बन गया तथा मानवता से युक्त हो गया तो देवता बन गया।

दानव को मानव बनाने वाले आर्यसमाज के १० नियम हैं। पहले के दो नियम ईश्वर के सम्बन्ध मे हैं बीच के ३, ४ ५ मनुष्य के निर्माण के लिए है जिसके अनुसार स्वय बनना है। तथा अन्तिम के पाँच नियम, हमें दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए यह सिखाते हैं। बस उन नियमों पर चलना और जीवन मे ढालना ही मानवता के लिए हितकारी है।

महाभारत के पहले विद्याजंन के लिए एकान्त मे आश्रम हुआ करते थे उसको गुरुकुल ऋषिकुल, आर्यकुल इत्यादि नामो से पुकारते थे। वहा राजा महाराजा से लेकर निर्धन कुल के सभी बालक विद्यार्थी के रूप मे शिक्षा ग्रहण करते थे। सोलह सस्कारों मे उपनयन और वेदारम्भ सस्कार आचार्य कराकर शिक्षा देता था और शिक्षा जब पूर्ण हो जाती थी तब उसको राज्य सेवा, समाज सेवा आदि के लिए अनुमति देकर घरों को भेज देता था परन्तु विशाल महाभारत युद्ध के कारण प्राचीन ऋषि-मुनियो की परम्पराए नष्ट हो गयी जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय शिक्षा एव सस्कृति दोष पूर्ण हो गयी।

कालान्तर में अनेक प्रकार की वैदेशिक शिक्षाए सस्कृतिया एव सभ्यताए यत्र तत्र प्रचारित हुई। परमेश्वर की कृपा से भारत की धरती गुजरात प्रान्त में महर्षि देव दयानन्द का आविर्भाव हुआ जिन्होने घूम घूम कर सभी प्रकार की समस्याओ का अध्ययन कर इतिहासो में वर्णित ऋषि परम्पराओ का सिहावलोकन किया एव वेदादि शास्त्रो के लिए गुरुकुलो की स्थापना की बात कही और जनमानस को यह सन्देश दिया कि मानवता हमारे प्राचीन गुरुकुलो की ही देन है।

किन्तु आज अन्यान्य शिक्षाओ से प्रभावित होकर अधिकाश लोग अपने बच्चो को गुरुकुल मे भेजते हिचकते हैं। यदि उनसे प्रश्न किया जाय कि क्या आप महाराजा दशरथ आदि राजाओ से भी अधिक व्यक्तिवादी हैं। महाराज दशरथ भी अपने बालको को समाज के हित गुरुकुल में भेजकर मर्यादा पुरुषोत्तम राम एव योगीराज कृष्ण यश के भागी बने हैं एव मानव बनकर सत्य सिद्धान्तों की रक्षा कर सकते हैं। यदि बच्चो मे मानवता एव सदाचार का निर्माण करना है तो उत्तम शिक्षा हेतु अपने बच्चो को गुरुकुलो मे भेज। क्योंकि ऋग्वेद का वचन हमे यह बताता है कि—

"मनुर्भव जनया दिव्य जनम्।"

हे मानव! तू मनुष्य बन और अपने सन्तान को मनुष्य बना। इसलिए सबसे पहले हमे मनुष्य बनने की साधना करनी पडेगी फिर मानवता का सचार होगा।

पाणिनि मुनि ने (तल) प्रत्यय लगाकर मानवता शब्द का निर्माण किया है जिसका अभिप्राय है कि सदाचार सदभाव आदि शुभ गुणों से युक्त होकर मानवता का विकास करना होता है। अत यह उक्ति सर्वथा सिद्ध है कि—

'मानव निर्माण गुरुकुल शिक्षा से ही सम्भव है।"

राजनीति का भारतीयकरण

डा० भवानीलाल भारतीय

उपर्युक्त शीर्षक युक्त एक विचारोत्तेजक लेख डा० हर्षनारायण का विगत आर्य-जगत् के १३ दिसम्बर के अंक में प्रकाशित हुआ है। लेख के पूर्वार्द्ध में भारतीय अल्पमत और बहुमत की समस्या का लेखक ने तर्कपूर्ण विवेचन किया है, जिससे असहमत होने की कोई बात नहीं है। उत्तरार्द्ध में मेरे एक लेख में उठाये कतिपय बिन्दुओं पर डा० नारायण ने टिप्पणी की है जिसका स्पष्टीकरण आवश्यक है। जब मैंने आर्य समाज के प्रत्येक सभासद को अपने मनपसन्द राजनैतिक दल में जाने की छूट की बात कही तो मेरा यह कदापि अभिप्राय नहीं था कि वह किसी ऐसे दल में भी जा सकता है, जहां जाकर उसे वैदिक सिद्धान्तों की अवहेलना या हनन करने की छूट मिले। यदि कोई आर्य समाजी कोई-सी जनकर अजमेर के ख्वाजा साहब की दरगाह पर चादर चढ़ाने या अहमदाबाद के मणिनगर में जेल की पत्थर या मिट्टी की प्रतिमा पर फूल चढ़ावे, तो मेरी दृष्टि में वह दयानन्द का अनुयायी कहलाने का अधिकारी नहीं है। इसी प्रकार कोई आर्य समाजी मार्क्सवादी कम्युनिस्ट बनकर ईश्वर और धर्म का उपहास करे तो वह आर्य-समाजी ही कहां रहेगा? अतः निश्चय ही उसे ऐसे दल को चुनना होगा, जिसका आर्य समाज की धार्मिक मान्यताओं से विरोध न हो। अब भारत में ऐसे दल कौन से हैं, यह मेरे विचार की परिधि में नहीं आता, क्योंकि मैं स्वयं एक गैर राजनैतिक व्यक्ति हूं।

हिन्दू सभा और भारतीय जनता पार्टी की विशेषता और वास्तविकता पर टिप्पणी करना भी मेरे लेख के दायरे में नहीं आता। हां, यह सच है कि स्वामी श्रद्धानन्द और लाला लाजपतराय जैसे तेजस्वी आर्य पुरुष कांग्रेस द्वारा अपनाई गई हिन्दू-विरोधी और मुस्लिम तुष्टिकरण की नीतियों से खिन्न होकर ही हिन्दू सभा की ओर उन्मुख हुए थे। किन्तु वहां भी उन्हें निराशा ही हाथ लगी। जब स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि के कार्यक्रम को हिन्दू महासभा द्वारा मान्यता प्रदान करवाई तो पुरी के तत्कालीन शंकराचार्य स्वामी भारती कृष्णतीर्थ ने मद्रास में भाषण देते हुए कहा कि शुद्धि को हिन्दू सभा में मान्यता दिलवाकर आर्य समाज अपनी शक्ति का ही प्रसार कर रहा है। मालवीय जी जैसे उदार सनातनी नेता भी शूद्रों को वेदाधिकार देने, उन्हें यज्ञोपवीत देने अथवा उनके मन्दिर प्रवेश जैसे मसलों पर कट्टर रूढ़िवादी दृष्टिकोण अपनाये हुए थे। अतः स्वामी श्रद्धानन्द का हिन्दू महासभा से शीघ्र ही मोह भंग हो गया।

कांग्रेस के प्रति विकल्पस्वरूप लोगों का आक्रोश यदि है, तो उसे हम आर्य समाज के दृष्टिकोण से समझें, न कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक या विश्व हिन्दू परिषद् के दृष्टिकोण से। मेरी तो यह मान्यता है कि इन संस्थाओं का बटा टोप ही जबकर है, वे वास्तविक अर्थ में जो हिन्दू हितों की कितनी रक्षा कर सकती है, या कर सकेंगी, यह सर्वथा सन्दिग्ध है। स्वामी दयानन्द का अनुयायी होने के नाते रामायण के पात्रों का जुलूस निकलवाने और राम जन्म-भूमि के लिए राम और सीता के रथों को देश भ्रमण कराने में मेरा कोई विश्वास नहीं है। मेरे जैसे लाखों आर्य समाजियों के लिए राम और कृष्ण की जन्मभूमि का ऐतिहासिक स्मारक से अधिक महत्व नहीं है। वहां राम मन्दिर बनाए जायें और राम जानकी की मूर्तियों का षोडशोपचार पूजन आरम्भ हो, कम से कम कोई सच्चा आर्य समाजी तो यह कदापि नहीं चाहेगा। अब प्रश्न है बाबरी मस्जिद और राम-जन्मभूमि पर हिन्दू धर्म का स्वत्व रहे? निवेदन है कि शताब्दियों से हिन्दुओं की निर्बलता के कारण उनके मठों, मन्दिरों, तीर्थों और पुण्य स्थानों का विध्वंस हो रहा है, उसके लिये रोना धोना हमने बहुत कर लिया। हमें इस समस्या का कोई तर्कयुक्त समाधान अवश्य निकालना चाहिए। मुस्लिम साम्प्रदायिकता और सैयद शहाबुद्दीन के तानाशाही रवैये के आगे आत्मसमर्पण की तो बात ही नहीं उठती। कांग्रेसी सरकार में जो हिन्दुओं का बहुमत है, उसका विवेक क्यों नहीं जागृत होता और उन नेताओं को तथा विचारशील हिन्दुओं का विशाल मतदाता वर्ग अपने इन प्रतिनिधियों को इस बात के लिये विवश क्यों नहीं करता कि वे ऐसे धर्म को छूने वाले विस्फोटक प्रश्नों का कोई तर्कसंगत समाधान ढूंढें। राष्ट्रवाद करने वाली किसी संस्था में यदि कोई आर्य सज्जन प्रविष्ट होता है, तो उसे संरक्षण देने का भी कोई प्रश्न नहीं है।

देश में यदि राजनीति का महाशून्य उत्पन्न हो गया है तो इसकी जिम्मेदारी इस देश के विशाल हिन्दू बहुमत पर ही है, आर्य समाज तो संख्याकी दृष्टि से कुछ निर्विवाद में है हां, उसकी चिन्तनकी-अपेक्षा निर्विवाद है। किन्तु इस समय के लोगों की राजनैतिक आस्थायें भी सर्वथा विभक्त हैं। अतः वे इस महाशून्य को कैसे भरें? डा० नारायण जी इस भ्रम को मन से निकाल देना चाहिए कि मैंने आर्य समाज को सङ्कुचित अर्थ में धार्मिक संस्था कहा है, मेरा तो समग्र जीवन ही ऋषि दयानन्दके विचारों के अध्ययन, मनन चिन्तन तथा आर्य समाज के इतिहास के अनुशीलन में लगा है। दयानन्द के प्रखर राष्ट्रवाद, उनकी राजनैतिक सूझबूझ तथा दूरदर्शिता को मैंने अपने ग्रन्थों और व्याख्यानों में भूरिशः उद्धृत और व्याख्यात किया है। आर्य समाज यदि अपने राजनैतिक दायित्वसे मुंह मोड़ लेता तो वह श्रद्धानन्द लाजपतराय, भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, भाई परमानन्द जैसे देश के लिये सर्वस्व बलिदान करने वालों की जमात को ही पैदा नहीं कर सकता था। सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास और उसमें वर्णित राजधर्म प्रकरण से विमुख होने का भी कोई प्रश्न नहीं है। मैंने जो बात कही, वह अतीत के कुछ तथ्य और वस्तु स्थिति की यथार्थता के आधार पर कही थी। यदि भारत के आर्य समाजी इस देश के हित के लिये अपना कोई राजनैतिक मंच बनायें, तो उन्हें रोकता कौन है? विगत कालमें ऐसे प्रयोग हुए, किन्तु सभी असफल हो गये। आपात के पहले प० बुद्धदेव विद्यालंकार की अध्यक्षता में भारतीय लोक संघ बना। उसके विधान की प्रति और उसके संस्थापक सदस्यों के नाम मेरे पास हैं। यह विशुद्ध आर्य समाज का प्रयास था। उसके पश्चात् यदि मैं भूलता नहीं हूं तो इस सदी के छठे दशक में भारतीय लोक समिति बनी। इसमें भी प० रामचन्द्र देहलवी और प० रामगोपाल शास्त्री (वैद्य) जैसे अनेक सक्रिय आर्य समाजी थे। राजार्य सभा बनाने के तो न जाने कितने प्रस्ताव पास हुए, समितिका बनी और उसका क्या परिणाम रहा, यह किसी से अविदित नहीं है। मेरे विचार से आर्य समाज के वे लोग जो राजनीति में रुचि रखते हैं, उनके अपने स्वार्थ भिन्न-भिन्न राजनैतिक दलों में रहने से ही पूरे होते हैं। अतः वे स्वयं नहीं चाहते कि आर्य समाज के विचारों के अनुयायी कोई अपना पृथक् वजनपूर्ण राजनैतिक मंच बनायें।

हरयाणा में कुछ वर्ष पहले बनी आर्यसभा और उसके हश्र को भी सभी लोग जानते हैं। उस संस्था के संस्थापक नैष्ठिक सन्यासी लोग, जिन्होंने आर्य समाज के राजनैतिक दर्शन के व्याख्याता और प्रवक्ता होने का दर्प

(शेष पृष्ठ १० पर)

महर्षि दयानन्द और शिवरात्रि

[वीरेन्द्र कुमार आर्य, सम्पादक आर्य पुनर्गठन, अजमेर]

उन्नीसवी सदी में जब समस्त भारत अज्ञान-अन्धकार से आच्छादित था, विदेशी शासकों के अत्याचारो से मुक्ति और त्राण पाने को जब भारत के प्राण अकुला उठे थे, राष्ट्रीय भावना को मिटाने के सभी सम्भव उपाय किये जा रहे थे, मातृशक्ति को तिरस्कृत किया जा रहा था, ऐसी निराशा की घड़ी में स्वामी दयानन्द का राष्ट्र के क्षितिज पर प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने अपनी ओजस्विनी वाणी एव निर्भीक लेखनी के प्रखर प्रकाश से मिथ्यात्व के साम्राज्य को छिन्न- भिन्न करके समस्त ससार को सत्य ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर डाला।

शिवरात्रि की घटना

बालक मूलशकर को महर्षि दयानन्द मे परिवर्तित करने वाली यह महाक्रान्तिकारी घटना आज से लगभग डेढ़ सौवर्ष पूर्व गुजरात प्रान्तीय राज्य के टकारा ग्रामके शिवमन्दिर मे शिवरात्रिको घटी थी। विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के शब्दो में, भारत मे जो कुछ नवीन जागृति सामाजिक, सांस्कृतिक बौद्धिक एव राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न हुई, उसका आदि मूल वह मूलशकर ही था।

ज्ञान-बोध और साधारण घटना

एक अति साधारण घटना से दयानन्द को ज्ञान-बोध होना कोई अभूतपूर्व घटना नही थी। इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि राजकुमार गौतम को महात्मा बुद्ध बनाने वाली ऐसी ही एक घटना थी। वृक्ष के नीचे गिरते फलों को किसने नही देखा ? किन्तु विलक्षण मेधा वाले सर आइजक न्यूटन का देखना अद्भुत सिद्ध हुआ। जेम्सवाट ने पतीली पर रखें हुए ढक्कन को अन्दर से आती हुई पानी की भाप के द्वारा उठता हुआ और हिलता हुआ ही तो देखा था और हम सब प्रतिदिन ऐसी घटनाए देखते रहते हैं, परन्तु हमें कोई प्रेरणा प्राप्त नही होती, लेकिन जेम्सवाट ने उससे भाप की शक्ति को पाया जो जार्ज स्टीफेन्सन द्वारा विकसित रेलवे इन्जन के रूप में हमारे समक्ष आई और जिससे आज औद्योगिक क्षेत्र का अधिकांशत सचालन होता है।

जर्मनी के मार्टिन लूथर को प्रोटेस्टेंटधर्म के प्रवर्तक के रूपमें एक छोटी सी घटना ने ही तो महापुरुषो की कोटि मे लाकर खड़ा किया था।

शिवरात्रि का सन्देश

शिवरात्रि का जो सन्देश मूलशकर ने सुना, वह समस्त भारत के लिए ही नहीं अपितु समस्त मानव समाज के लिए एक वरदान सिद्ध हुआ। इसी शिवरात्रि की महिमा के विषय में कविवर लखन ने कितना सुन्दर लिखा है —

कामना जागे किसी में तो यही जागे,
मागना चाहे मनुज तो बस यही मांगे,
बोध हो तो, मूलशकर मात्र जैसी हो,
प्रात हो, ऋषि-बोध को उस प्रात जैसी हो,
रात हो, तोबस उसी शिव रात जैसी हो।

यह दिन युग प्रवर्तक दयानन्द का बोध दिवस है, जिसने मृतप्राय राष्ट्र को जिलाया, भूले-भटके मानव को सत्यपथ दिखाया, स्वाधीनता, प्रेम समानता का पाठ पढ़ाया। जो अकेला होते हुए भी कभी घबराया नही एव जीवन भर पाखण्ड, ढोंग, शोषण, अन्याय एव भ्रष्टाचार के विरुद्ध प्रत्येक मोर्चे पर लड़ता रहा। जिसने एक दिन विश्व हित मे ही अपने प्राणों की बलि दे दी।

अतएव आओ, हम सभी भारतीय इन पावन दिवस पर राष्ट्र की अखण्डता गौरव को अक्षुण्ण रखने एव भ्रष्टाचार मिटाने की शपथ लें।

पाकिस्तान का अन्धा कानून

—: वी टी जोशी :—

इस्लामाबाद, ४ फरवरी। १२ वर्षीय जहान मीना आजकल तीन वर्ष की बामुशक्कत कैद की सजा भोग रही है। उसका जुर्म है कि उसके साथ बलात्कार हुआ था और वह गर्भवती भी हो गयी थी। और तो और बच्चे के दो वर्ष के होते ही जहान मीना पर १०० कोड़े भी बरसाए जाए गे।

यह मामला असम्भव भले ही लगता हो लेकिन है सच्चा। जहान मीना को १९७९ में सेना के शासन के दौरान लागू हुदूद अध्यादेश के तहत यह सजा दी गई है।

यहा जागरूक लोगो की एक समिति ने इस अध्यादेश के खिलाफ अभियान छेड़ा है कि क्रूरता को कानून से स्वीकृति नही मिलनी चाहिए। समिति के अनुसार मुल्तान कारागार में १८० महिलाए ऐसी हैं जो इस 'विवादास्पद' अध्यादेश के तहत अपराधी करार दी गई है।

समिति के अनुसार कराची केन्द्रीय कारागार मे ४४ महिलाए अभी भी अदालती कार्रवाई की राह देख रही है। लाहौर जेल की ४० और सक्खर जेल की १० महिलाओं को भी अभी तक न्याय नही मिला है। इन सभी पर ऐसे 'विवादास्पद' अपराधो में लिप्त होने का आरोप है।

राष्ट्रपति जियाउलहक ने स्वय लाहौर मे पजाब प्रान्त के विधानमण्डल की स्वर्ण जयन्ती के समारोह में बताया कि पाकिस्तान मे २० हजार कैदी ऐसे हैं जिन्हे अभी तक अदालत में पेश नही किया गया है।

हुदूद अध्यादेश के खिलाफ अभियान छेड़ने वाली समिति के अनुसार यह अध्यादेश जनता के बीच हिंसक भयो को स्वीकृति देकर हमारे समाज को पाशविक बनाता है। महिलाओं के लिए शादी और तलाक जैसे मामलों में भी खुद निर्णय लेने को खतरनाक बनाता है और उनके खिलाफ हिंसा को बढ़ावा देता है। बलात्कारों के शिकारो को इसके तहत सजा मिलती है जबकि बलात्कारी को कुछ नही कहा जाता।

कराची में बनी इस समिति ने 'पाकिस्तानके सभी न्यायसगत नागरिकों' से अपील की है कि वे इस अध्यादेश के खिलाफ आवाज उठाए और इसको खारिज करने के लिए ज्ञापन पर दस्तखत करें। समिति द्वारा जारी ज्ञापन में कहा गया है, हमारी माग है कि हुदूद अध्यादेश (१९७९) को तुरन्त खारिज किया जाए और उसके तहत सभी इल्जाम और आरोप वापस लिए जाए।

उल्लेखनीय है कि लाहौर में आज हुई एक अन्तराष्ट्रीय गोष्ठी में प्रधानमन्त्री जियाउलहक ने इस्लाम के तहत मर्द औरत की बराबरी पर जोरदार भाषण दिया।

कुछ भी हो, राष्ट्रपति जिया के सैनिक शासन के दौरान लागू यह अध्यादेश उनके द्वारा व्यक्त मनोभावों से बिलकुल मेल नही खाता।

आर्य जगत् के समाचार

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णापुर मञ्झना फर्रुखाबाद में शान्ति यज्ञ व ऋषि मेला

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णापुर मञ्झना फर्रुखाबाद के १७वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में एक विश्व शान्ति यज्ञ व विराट ऋषि मेले का आयोजन दिनांक २०,२१,२२ फरवरी ८८ को गुरुकुल के प्रांगण में समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। जिसमें उच्च कोटि के महात्मा विद्वान संन्यासी भजनोपदेशक भाग लेंगे।

—आचार्य चन्द्रदेव कुलपति

राजनीति का भारतीयकरण

(पृष्ठ ८ का शेष)

किया था, उनके स्वार्थ का ही परिणाम था कि आर्य सभा तो छिन्न भिन्न हुई ही, उनमें से एक सन्यासी लोकदल में गये, दूसरे जनता पार्टी में जाकर चन्द्रशेखर से टकराव कर बैठे और तीसरे कांग्रेस (आई) के अनुयायी बनकर किसी निगम की अध्यक्षता ले पड़े, किन्तु आचार्य दयानन्द को मूल शिक्षाओं से दूर हट जाने का ही परिणाम निकला कि आज इन तीनों सन्यासियों की न तो अपनी मातृसंस्था आर्यसमाज में ही कोई अच्छी प्रतिष्ठा है और तदुपरान्त राजनैतिक दलों ने तो इन्हें दूध की मक्खी की भांति निकाल बाहर किया है। अब हालत यह है कि इन्हीं में से एक सज्जन कभी तो बन्धुआ मजदूरों के अधिकारों की लड़ाई लड़ते हैं और कभी देवराला की सती के प्रतिरोध में पदयात्रा आयोजित करते हैं, जब कि तथ्य यह है कि न तो सती काण्ड ही बार-बार होते हैं और केवल पदयात्राओं से सती विषयक अन्धविश्वास भी नहीं छूट ये जाते।

आर्यसमाज अपना राजनैतिक मंच अवश्य स्थापित करे, किन्तु वह विशुद्ध भारत की राजनैतिक समस्याओं के समाधान के लिये ही होगा और वह आर्यसमाज के सार्वदेशिक संगठन से भी पृथक् होगा। किन्तु हमारे आर्यसमाजी प्रचारकों के अज्ञान को क्या कहा जाय? वे जब मारिशस या अफ्रीका के आर्यसमाजों की वेदी पर प्रवचन करने बैठते हैं तो वहां भी वे पंजाब के उग्रवाद या काश्मीर की ३७०वीं धारा की ही बात करते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि मारिशस, अफ्रीका या सिंगापुर के आर्यों को न तो पंजाब से मतलब है और न फारूख अब्दुल्ला से। वे तो दयानन्दीय विचारधारा को जानना और समझना चाहते हैं। किन्तु एक बात मैं अवश्य कहूँगा। आर्यसमाज का यह राजनैतिक मंच स्वयं के बलबूते पर खड़ा होना चाहिए। क्योंकि यदि हम इसमें राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ या विश्व हिन्दू परिषद् का सहयोग लेंगे तो इन संस्थाओं के संकीर्ण हिन्दुत्ववाद का अजगर आर्यसमाज को ही निगल लेगा। इस सम्बन्ध में जो अनेक कटु अनुभव आर्यसमाज के हुए हैं उन्हें हमें ध्यान में रखना होगा। डा० नारायण ने मेरे लेख से जिन दो वाक्यों को पसन्द कर उद्धृत किया है, मेरे आलोच्य लेख के भी वे ही मूलभूत मुद्दे थे। और वह वाक्य मेरे नहीं अपितु महर्षि दयानन्द के ही हैं, जिन्होंने एक उपास्य देव, उपासना पद्धति, एक भाषा, एक वेशभूषा और एक ही वैचारिक पद्धति के बिना राष्ट्र की एकता को स्वप्न तुल्य माना था। सुरसा की भांति मुंह फैलाये हमारे राष्ट्र के निगल जाने वाली भयंकर का निदान न तो वह कांग्रेस कर सकती है जो एकता में अनेकता की बात करती है और न राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ही उसका समाधान कर सकता है जो स्वामी विवेकानन्द की ही भांति हिन्दूधर्म और समाज में मौजूद दुर्बलताओं की चामत्कारिक व्याख्या तो करता है, किन्तु दयानन्दकी भांति जिन्हें ठुकराने का उसमें साहस नहीं है। सड़ी-गली पौराणिक अवधारणाओं से तो मुक्ति पानी ही होगी।

हम भी यह चाहते हैं कि आर्यसमाज हिन्दू जाति का राजनैतिक नेतृत्व ग्रहण करे, किन्तु क्या उसके पीछे वे पदलोलुप हिन्दू आयेंगे जो सत्तासीन बने रहने के लिए कांग्रेस के दुमछल्ले बने रहने में ही अपना हित मानते हैं, क्या आर्यसमाज का नेतृत्व वे मठाधीश, सन्त, महन्त और जगद्गुरु धर्माचार्य कभी स्वीकार करेंगे जो आज भी अपने करोड़ों अनुयायियों की भेड़ बकरों के समान हांकते हुए तो हैं किन्तु उनमें न तो विवेक शक्ति को ही जागृत करते हैं और न राष्ट्रभक्ति के भावों को ही बढ़ावा देते हैं। पुरी का जो शंकराचार्य सुधारक-विरोधिक, राममोहनराय और दयानन्द को भी पापी कहने का दुस्साहस करे,उसे धर्माचार्य के इस पद से च्युत न करे, उस हिन्दू समाज का यदि बेड़ा गर्क हो जाये, तो इसमें आश्चर्य ही क्या?

५०० नरनारियों का यज्ञोपवीत संस्कार
यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

नयापुर सिटी। आर्य समाज नयापुर सिटी के तत्वावधान में आयोजित यजुर्वेद पारायण यज्ञ ३१ जनवरी से ७ फरवरी तक चलता रहा। इस यज्ञ के वक्ता सार्वदेशिक सभा के महोपदेशक डा० आनन्द सुमन थे, डा० आनन्द सुमन के प्रवचनों से प्रभावित होकर लगभग ५०० नर-नारियों ने यज्ञोपवीत धारण किये—इनमें महिलाओं का उत्साह प्रशंसनीय था।

विराट सभाओं में हजारों लोगों की उपस्थिति में डा० सुमन ने आर्य-समाज वैदिक धर्म एवं राष्ट्रीय विषयों पर अपने सारगर्भित एवं क्रान्तिकारी प्रवचनों से जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया। सौ नये नर-नारियों ने आर्य-समाज की सदस्यता के फार्म भरे।

डा० सुमन के आह्वान पर आर्य समाज के भवन निर्माण हेतु लगभग १७ हजार रुपयों का दान प्राप्त हुआ और अन्य बन्धुओं ने सहयोग का आश्वासन दिया।

कुल मिलाकर यह प्रचार उत्तम रहा।

अन्तिम दिन कुछ मुस्लिमों ने सभा में विघ्न डालने का प्रयत्न किया किन्तु उनके कुचक्र सफल न हुए।

—पूरणचन्द्र [illegible]
मन्त्री आर्य समाज, नयापुर सिटी,
राजस्थान

पाकिस्तान में अहमदियों पर अत्याचार के विरुद्ध भारतीय नेताओं से अपील

नई दिल्ली। सैयद तनवीर अहमद संयुक्त मन्त्री प्रेस कमेटी अध्यक्ष अहमदी कादयानी संगठन की एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार पाकिस्तान में अहमदियों का अत्याचार निरन्तर जारी है और उनका जीना दूभर कर दिया गया है। हाल ही में पाकिस्तान से आने वाले समाचार में कई घटनाओं का उल्लेख किया गया है। १८ जनवरी को एक अहमदी मित्र नासिर अहमद पुत्र गुलाम रसूल निवासी गोठ वाहदीन (सिंध) पर दो व्यक्तियों ने छुरे से प्राण घातक आक्रमण किया। स्मरण रहे कि इस गोठ में केवल १२ अहमदी हैं, २४ जनवरी को रात ग्यारह बजकर पांच मिनट में जेहलम नगर की मस्जिद से वेषधारी पुलिस ने मौलवियों की शिकायत पर कलमा मिटा दिया है। इससे पूर्व पुलिस ने उन्हें कहा था कि वे स्वयं मस्जिद से कलमा मिटा दें। उन्होंने डी०एस०पी० से बात की और फिर कलमा मिटाने की कार्यवाही कार्यान्वित की गई। इस मध्य मस्जिद में विद्यमान अहमदी सज्जन दुआओं में व्यस्त रहे।

करांची से नई सूचनाओं के अनुसार २० दिसम्बर को चौधरी हमीद अहमद अध्यक्ष अहमदी संगठन बहावलपुर सिंध को धारा २९५ पाकिस्तानी कानून के अनुसार गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया। उनके विरुद्ध मुकद्दमा मौलवी अहमदमियां की प्रार्थना पर हुआ है कि चौधरी हमीद अहमद सा० ने फर्वरी ८७ का मासिक पत्र अन्स उल्ला किसी वकील को पढ़ने के लिए दिया था। इस पत्र में मौलवी सा० के दावे के अनुसार रसूल करीम का अपमान किया गया है। पाकिस्तान के मौलवियों का प्रयत्न होता है कि अहमदियों के विरुद्ध शिकायत में किसी न किसी प्रकार धारा २९५ लगवाई जाए जिससे अपराधी मृत्यु दण्ड का पात्र बन सके। पाकिस्तान सरकार ने मौलवियों को इस बात की आज्ञा दे रखी है कि वे जितना चाहें गन्दा छापें और अहमदियों के विरुद्ध गन्दी भाषा का प्रयोग करें। दूसरी ओर यदि अहमदी पवित्र कलमा या दरूद पढ़ें तो उन्हें क्रोध आता है। प्रेस नोट में कहा गया है कि अहमदी मुख्यालय कादियान की ओर से भारत की सभी शान्ति-प्रिय अहमदियों पर किए जा रहे बर्बरता पूर्ण घृणित अत्याचार व अमानवीय कृत्यों की घोर निन्दा की जाती है व शान्ति प्रिय भारतीय राजनैतिक नेताओं से भी प्रार्थना है कि वे अहमदियों पर होने वाले अत्याचारों की निन्दा करें।

प्रवेश की सूचना

१—दर्शन एवं योग प्रशिक्षण शिविर (तीन वर्ष की नवीन योजना) में भाग लेने वाले ब्रह्मचारियों के लिये चैत्र शुक्ल १। सम्वत् २०४५ (१८।३।८८) को प्रवेश प्रारम्भ है। प्रवेशार्थी की योग्यता पूर्व प्रकाशित विज्ञप्ति के अनुसार होनी चाहिये।

२—प्रारम्भिक प्रवेश करने के पश्चात् तीन मास तक प्रवेशार्थी की सब प्रकार से परीक्षा की जावेगी। पुन सुयोग्य सिद्ध होने पर ही उसको स्थायी प्रवेश दिया जावेगा, अन्यथा नहीं।

३—हमने पूर्व प्रकाशित सूचना में मीमांसा दर्शन के सम्पूर्ण अध्यापन के पश्चात् नवीन ब्रह्मचारियों को प्रवेश देने का निर्णय किया था परन्तु अब अनेक बाधाओं के कारण इसे परिवर्तित करके चैत्र शुक्ल १ सं० २०४५ कर दिया है।

स्वामी सत्यपति दर्शन एवं योग प्रशिक्षण शिविर
आर्यवन विकास फार्म रोजड़ पो० सागपुर
जिला साबरकांठा (गुजरात) ३८३३०७

शुद्धि समाचार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में ग्राम खरकट्टा थाना पत्थल गांव जिला रायगढ़ मध्यप्रदेश में २५ परिवारों के १२७ ईसाइयों को वैदिक धर्म में प्रविष्ट कराया गया। श्री उपमन्यु शास्त्री ने यज्ञ के पश्चात् यज्ञोपवीत धारण कराया। हरियाणा के स्वा० सेवानन्द ने कार्य सम्पादन किया व वस्त्र वितरित किए।

आचार्य विश्व बन्धु शास्त्री की स्मृति में शोक सभा

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान एवं वेदों के प्रकाण्ड पण्डित आचार्य विश्व बन्धु शास्त्री का निधन दिनांक २६ जनवरी १९८० को हो गया था दिनांक ७ २ ८८ को दोपहर १ बजे यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन नारायण भवन निकट वानप्रस्थ आश्रम आर्य नगर ज्वालापुर (हरिद्वार) में किया गया जिसमें वक्ताओं ने आचार्य जी के जीवन पर विचार रखें और परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

निर्वाचन

आर्य समाज हरजेन्द्रनगर (लाल बंगला) कानपुर के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री सीताराम आर्य व मन्त्री श्री शंकरलाल आर्य चुने गए।

—आर्यसमाज पूंजलानयापुरा जोधपुर में प्रधान श्री सुरजीत सिंह गहलौत व मन्त्री श्री जगदीशसिंह आर्य चुने गए।

—आर्यसमाज सैनी (सिराथू) इलाहाबाद में नवगठित समाज का अध्यक्ष श्री कपूरचन्द एडवोकेट को मनोनीत किया गया। इस अवसर पर पं० अमलमित्र शास्त्री के श्रद्धानन्द बलिदान के सम्बन्ध में प्रेरक प्रवचन हुए।

—आर्यसमाज बीसलपुर (पीलीभीत) के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री डा० पूर्णानन्द व मन्त्री श्री रामस्वरूप शास्त्री चुने गए।

—आर्यसमाज बारा कोटा के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री भगवती प्रसाद तथा मन्त्री श्री श्रवणलाल आर्य चुने गए।

हमारी प्रचार पद्धति

मोहनलाल शारदा शाहपुरा भीलवाड़ा

दिनांक १७ जनवरी सन् ८८ के सार्वदेशिक के सम्पादकीय में विचार देते हुए कहा गया है "समाजों के उत्सव औपचारिक सम्मेलन मात्र रह गये हैं।" इस परिपाटी में सुधार करना है। हमारे पास भवन, साधन, साहित्य, संस्थान, सभी प्रचुर मात्रा में हैं। और सच्चे लगनशील कार्यकर्ता भी हमारे पास उस समय से कई गुना ज्यादा हैं। जब आर्यसमाज का शैशव काल था। तब केवल २५० समाजें थी। कार्यकर्ता अति न्यून थे। लेकिन ५० वर्ष में ही समाजों की संख्या दुगुनी हो गई। इसका क्या कारण है। इसी पर विचार करना है।

इतिहास साक्षी है। महर्षि की प्रचार शैली क्या थी। जीवन चरित्रों से आता है। भगवान दयानन्द का १२ या २ या ४ बजे जैसी सुविधा हो दरबार लग जाता। श्रद्धालु भक्त जन अमृत पान करने हेतु समय पर पधारते। देखते देखते एक अच्छा सा मेला लग जाता। वह संख्या कहीं कहीं तो इतनी बढ़ जाती के खोमचे वाले भी माल बेचने आ जाते। खाद्य पदार्थ बिकना शुरू हो जाता। कुछ नाश्ता कर के पुनः सुनते सुनते थकते ही न थे। आखिर ६ बजे स्वयं महर्षि फरमाते कि बच्चा, बच्चा, तब कहीं लोग जाते।

अब हमें कुछ आगे बढ़कर सुधार कर उत्सवों के स्थान पर महर्षि कृत ग्रन्थों से ही शिविर योजना बना कर आर्यों में फैले हुए वकालतन विषयों पर महर्षि कृत ग्रन्थानुसार उन्हीं के पत्रों विज्ञापनों से तथा जीवन चरित्रों, आख्यानों एवं महर्षि के प्रवचनों से ही समाधान करना है। महर्षि ने एक प्रश्न के उत्तर में राजा जीवनसिंह को जोधपुर में कहा है कि मैंने सत्यार्थ प्रकाश संस्कारविधि बना दी है। मेरा काम पूरा होचुका है। रहा वेद भाष्य का काम भी यदि इस जन्म न भी हो सकेगा तो पुन अगले जन्म में पूरा करूंगा। तब मेरा कोई विरोध भी नहीं होगा।"

यह म … में
स्वत प्रमाण … गन
कर प्रचार' … है।
चाहिए यह … विट
सतत् सम्प … भेद,
बहुत प्रकार … ुकर
हम प्रकाश … समय
पर सन्ध्या … । हम
महर्षि के जीवन चरित्र को ऐसे ढंग से पेश कर … ुषी
प्रतिभा अभूतपूर्व सिद्ध हो सकें के महर्षि ने सम्पूर्ण शास्त्रों, वेदों से लेकर सभी महर्षि जैमनी पर्यन्त के ग्रन्थों का पढ़ने के ग्रन्थों के अ… बाद के भी सभी ग्रन्थ बौद्ध जैन, तांत्रिक, चार्वाक, के साथ सर्व अनेक… वादों में अन्ध विश्वास से फैले नाना प्रकार के सम्प्रदायों की पुस्तकों के साथ किरानी कुरानों के पर्यन्त भी पढ़े सोचे समझे थे।

ऐसे महान विद्वान व्यक्ति को पूर्व वक्त, आर्य राष्ट्र निर्माण के पुजारी जिसने जगह जगह पर वर्षा अपने नग्न शरीर पर सहकर हमें सही सच्चा मार्ग दिखाया। इसी महान आत्मा को २७ बार जहर दिया। सैकड़ों बार प्राणहरण की चेष्टा की। और इसी ने हमको आर्य राष्ट्र चक्रवर्ती या माण्डलिक राज्य करने की छठे समुल्लास में राजनैतिक ग्रन्थ पढ़कर राज्य करने की प्रेरणा दी।

आओ हम जगह जगह शिविर लगाकर दो दिन में २० घण्टे तक मन्त्रों का उच्चारण शुद्ध करावें। विधि बतलावें। वर्णोच्चारण शिक्षा से क्रमवार पढ़ाने की कहे तभी हम अपनी खोई हुई शक्ति प्राप्त कर पुन गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकते हैं।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली से मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८) | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २३ अंक ६) | फाल्गुन शु० ११ स० २०४४ रविवार २८ फरवरी १९८८ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

हैदराबाद स्वतन्त्रता सेनानी सम्मान पेन्शन

सलाहकार समिति को बैठक का महत्वपूर्ण निर्णय

अनेक सत्याग्रहियों को पेंशन के आदेश

भूमिगत आर्य सत्याग्रहियों को पेंशन की सिफारिश

दिल्ली, २० फरवरी १९८८

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, महर्षि दयानन्द भवन में सलहाकार समिति की बैठक हुई। इस बैठक की अध्यक्षता सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की। सभा के उपप्रधान, श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, सभा कोषाध्यक्ष, बाबू सोमनाथ मरवाह, प० शिवकुमार शास्त्री, चौधरी रणवीरसिंह भूतपूर्व ससद सदस्य प्रो० शेरसिंह तथा गृह मन्त्रालय की ओर से श्री एच० एस० गावा सहित अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे।

शोलापुर आदि कैम्पो के भूमिगत कार्यकर्त्ताओं तथा हैदराबाद मुक्ति सग्राम के उन सेनानियो को पशन देने की, सिफारिश की जिन्होंने जेल न जाकर भूमिगत रहकर निजामशाही के विरुद्ध सग्राम किया था। उन सत्याग्रहियो की नामावली भी सुनाई गयी जिन्हे भारत सरकार ने पशन देना स्वीकार किया है। अन्डर ग्राऊण्ड रहकर काम करने वाले आय सत्याग्रहियो को पशन देने के विचार हेतु सभा का एक शिष्ट मण्डल गृहमन्त्री श्री बूटासिंह एव गृह राज्यमन्त्री श्री पाणोगृही से मिलेगा।

समिति ने बैठक में यह आदेश जारी करने के लिए गृह मन्त्रालय के अधिकारियो को कहा कि जिन सत्याग्रहियो को जेल के प्रमाण-पत्र नही मिले हैं। उनके लिये गृहमन्त्रालय सम्बन्धित जेल अधिकारियो को लिख। जेलो को जो पत्र लिखे उनकी प्रतिलिपि समिति के चेयरमैन को भी भेजी जावे।

वेदामृत

स्वयं अर्जित धन का उपभोग करें

ईशा वास्यमिदं सर्व,
यत् किं च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा,
मा गृधः कस्यस्विद् धनम्॥
यजु० ४०।१॥

हिन्दी अर्थ—इस गतिशील ससार में जो कुछ भी गतिशील या चरात्मक है, वह सब कुछ परमात्मा से व्याप्त है। उस परमात्मा के द्वारा दिए हुए जगत् को त्याग-भाव से भोगो। किसी के धन को लालच की भावना से मत चाहो।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िए

सम्पादक—

महर्षि दयानन्द पर भारत सरकार द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी पुस्तक पर आपत्ति

भारत सरकार के सूचना प्रसारण मन्त्रालय ने महर्षि दयानन्द पर अंग्रेजी में पुस्तक प्रकाशित की है। उसमे कुछ आपत्ति जनक घटनाओं को हटाने के विषय में सूचना-प्रसारण मन्त्री श्री एच०के०एल० भगत से सभा का एक शिष्ठ मण्डल मिला है। जिसमे सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती एवं सभा उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव थे।

आर्य सत्याग्रह हैदराबाद के सत्याग्रहियों को केन्द्रीय पेंशन की स्वीकृति

इससे पूर्व ३४ सत्याग्रहियों की सूची प्रकाशित की जा चुकी है, जिन्हें भारत सरकार ने सम्मान पेंशन देना स्वीकार कर लिया है। पुन ३० सत्याग्रहियों की सूची निम्न प्रकार है जिन्हें भारत सरकार की गैर सरकारी स्क्रीनिंग कमेटी की सिफारिश पर सम्मान पेंशन देना स्वीकार किया है और राज्यों के महालेखाकारों को भी सूचना भेज दी है—

(१) श्री बाब्धराव पुत्र श्री मार्तण्डराव गोपाल तँवर, जि० गुलबर्गा
(२) श्री शिव शरनप्पा चादेश्वर कालोगी, शहापुर, जि० गुलबर्गा
(३) ,, सुरतिधर पुत्र श्री जमफीलाल जी० टी० रोड इटावा
(४) ,, रामपुत्र श्री जगन्नाथ प्रसाद, बिलासपुर जि० पीलीभीत
(५) ,, मथरैलाल आर्य पुत्र श्री धनेशराम ३८४११ किशियवन गज, माली मोहल्ला, अजमेर
(६) श्री भूदेव शास्त्री, ६० गोवर्धनदास पाठक, अम्बाला
(७) श्री इन्द्रजीत शर्मा पुत्र माधोराम जी, ई एल ५७ कलोवाली मोहल्ला जालन्धर शहर
(८) श्री बलवन्त सिंह पुत्र श्री रत्नसिंह केसरगंज पुलिस चौकी के पास राजस्थान बैंड कम्पनी अजमेर
(९) श्रीमती सीता देवी पत्नी स्व० तुलसीचन्द, मकान न० ३०१/२४ चाद बावरी केसरगंज, अजमेर
(१०) श्रीमती रामप्यारी पत्नी स्व० महावीर प्रसाद आर्य ग्राम पो० हिलसा वार्ड न० २ जिला नालन्दा (बिहार)
(११) श्री पृथ्वीनाथ सुपुत्र श्री बसन्तलाल जी मकान न० ६३२/२८ महावगंज, अजमेर
(१२) डा० शालिग्राम सुपुत्र श्री बोधाराम, राधारमन मन्दिर के पास बदलचन्द मार्ग, भरतपुर (राज०)

सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म ४ नियम ८

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन आफ बुक ऐक्ट)

प्रकाशन का स्थान—	महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली २
प्रकाशन का समय—	प्रति बृहस्पतिवार और शुक्रवार
मुद्रक का नाम—	सच्चिदानन्द शास्त्री
राष्ट्रीयता—	भारतीय
पता—	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली २
सम्पादक—	सभा मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री
राष्ट्रीयता—	भारतीय
पता—	पूर्ववत्
प्रकाशक का नाम—	सच्चिदानन्द शास्त्री
राष्ट्रीयता—	भारतीय
जो व्यक्ति पत्र के स्वामी है, भागीदार या हिस्सेदार है, सम्पूर्ण पूंजी, १ प्रतिशत से अधिक हिस्सेदार हैं उनके नाम व पते	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पत्र की स्वामिनी है।

मैं सच्चिदानन्द शास्त्री इस पत्र के द्वारा घोषणा करता हूँ। कि उपर्युक्त विवरण जहा तक मेरा ज्ञान एवं विश्वास है, सही है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रकाशक व मुद्रक

(१३) श्री रामेश्वर चौधरी ग्राम पो० सिंहिया चौरास्ता थाना सिंहिया जि० भोजपुर (बिहार)
(१४) श्रीमती छोटाबाई पत्नी स्व० परसराम, हनुमान भाकारी पुजारी जी का गोहरा जोधपुर (राज०)
(१५) श्री शंकरलाल सुपुत्र श्री भवानीलाल पीपल वाली हवेली लोहामण्डी, ग्वालियर (म प्र)
(१६) श्री भीमसिंह सुपुत्र श्री रायसिंह भाटी ग्राम बगोरिया, तह० भोपालगढ़ जि० जोधपुर
(१७) श्री बसवण्णप्पा सुपुत्र वीराभद्रप्पा शेरकर गांव निडवाचा जि० बीदर (कर्नाटक)
(१८) श्री वेंकटराव पुत्र गोविन्दराव, गांव जानापुर तालुक बसवकल्याण जिला बीदर (कर्नाटक)
(१९) श्री हंसराज पुत्र गोपीराम गांव पो टिब्बा जिला कपूरथला (पंजाब)
(२०) श्री बसन्तराम पुत्र काशीराम गांव पो टिब्बा जि० कपूरथला (पंजाब)
(२१) श्रीमती प्रकाशवती पत्नी स्व० देवदत्त मकान न० बी १ स्ट्रीट न० ६ पठानकोट (पंजाब)
(२२) श्री सोमदेव पुत्र श्री तुलसीराम १५ स्पेशल विंग, प्रेमनगर देहरादून
(२३) श्री धर्मभानु पुत्र स्व० मेहरचन्द ग्राम पो खानपुर कलां, जि सोनीपत
(२४) श्री धर्मपाल पुत्र श्री लखमीराम, ग्राम पो० खानपुर कलां, जिला सोनीपत
(२५) श्री हरीश्चन्द्र आचार्य पुत्र श्री लहरी सिंह, मकान न० २५५ दिल्ली रोड माडल टाउन रोहतक
(२६) श्री सीताराम आर्य पुत्र श्री गोविन्दराम आर्यसमाज मन्दिर छोटा माडल टाउन, यमुनानगर (अम्बाला)
(२७) श्री सुखपाल सिंह पुत्र श्री परसुराम उसद, पोस्ट बेहट जिला सहारनपुर (उ० प्र०)
(२८) श्री उमाशंकर पुत्र स्व० श्री हीरालाल, आर्य समाज उरई जिला जालौन (उ० प्र०)
(२९) श्री रामकिशन उर्फ डा० स्वामी, आर्यसमाज टीलर हस्तिनापुर (मेरठ)
(३०) श्री रामचन्द्र पुत्र श्री लक्ष्मीनारायण, जे० ८/९८ ई० शिवाला जैतपुरा जि० वाराणसी (उ० प्र०)

डी. ए. वी. स्कूल अजमेर शताब्दी समारोह का शुभारम्भ

दि० १० फरवरी १९८८ ई० को डी ए वी को स्थापित हुए १०० वर्ष पूरे हो गये हैं। इस उपलक्ष्य में बुधवार दि० १० फरवरी ८८ ई० को शताब्दी शुभारम्भ समारोह का प्रारम्भ प्रातःकाल यज्ञ एवं ध्वजारोहण से प्रारम्भ हुआ। यज्ञ डा० बाबूराम जी शास्त्री, प्रो० देव शर्मा वेदालंकार, प्रो० कृष्णपाल सिंह, प्रो० बुद्धिप्रकाश आर्य एवं आचार्य गोविन्दसिंह के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। बैंडो की धुन के बीच ध्वजारोहण उत्तर प्रदेश के भू०पू० गृहमन्त्री एवं डी, ए वी के ही भू०पू० छात्र श्री जगनप्रसाद रावत ने किया।

इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध सन्यासी एवं परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, आर्य समाज ब्यावरा के प्रधान एवं स्वाधीनता सेनानी श्री गोकुल जी शर्मा आर्यसमाज अजमेर के प्रधान श्री दत्तात्रेय जी आर्य दयानन्द कालेज अजमेर के भू पू आचार्य तथा आर्यसमाज शिक्षा सभा के मन्त्री श्री कृष्णराव जी वाल्डे एवं आर्य समाज के अन्य समस्त पदाधिकारी गण विशेष रूप से उपस्थित थे।

सायंकाल ४ बजे राजस्थान के कृषि, स्वास्थ्य एवं आबकारी मन्त्री श्री गोविन्दसिंह गुजर की अध्यक्षता श्री जगनप्रसाद जी रावत भू पू गृहमन्त्री (उ० प्र०) के मुख्य आतिथ्य तथा राज० विधान सभा के उपाध्यक्ष श्री किशन मोटवानी के विशिष्ट आतिथ्य में विशेष शुभारम्भ समारोह हुआ जिसमें विद्यालय के कई प्रतिष्ठित भू०पू० छात्र तथा नगर के गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

—रासासिंह, मन्त्री

सम्पादकीय

हैदराबाद-सत्याग्रह और उसका परिणाम ?

सन १९४२ में हुई क्रान्ति के समय यह कोई नहीं जानता था कि आजादी इतनी आसानी से मिल जायगी। ठीक उसी प्रकार हैदराबाद सत्याग्रह जिस सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, इसकी भी कोई कल्पना तक नहीं करता था। हैदराबाद में सन्ध्या हवन, विवाह और विवाहमयम प्रत्येक हिन्दू रीति रिवाज स्टेट के अन्दर रहने वाले हिन्दू नाम पर न करने का प्रतिबन्ध लगा था। आर्य समाज की सर्वोच्च सभा सार्वदेशिक सभा ने निजामशाही से संघर्ष करने का निश्चय किया। लम्बी वार्ता और बन्दीग्रह तक की लम्बी यात्रा तय करने के उपरान्त समझौता हुआ और सत्याग्रही विजय की दुन्दुभि बजाते नेताओं के साथ अपने अपने घरों को लौटे। यातनाओं की चर्चा क्या करें। किन्तु हां, २८ आर्यवीरों ने अपनी आहुति इस महायज्ञ में दी और परम पद प्राप्त कर यश के भागी बने।

किसी को स्वप्न में भी यह विश्वास नहीं था कि ४५ वर्षों के बाद भारत सरकार सत्याग्रहियों को स्वतन्त्रता संग्राम सैनिकों का स्थान देगी।

अब से १९-२० वर्ष पूर्व एक बार पं० प्रकाशवीर शास्त्री ने इसे लोक-सभा में उठाया था। किन्तु यह बात वहीं की वहीं धरी रह गई। स्वर्गीय इन्दिरा गांधी (प्रधान मन्त्री) के समक्ष पुन विषय उठाया गया जिसका श्रेय था, तत्काल के नाम वाले लाला रामगोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक सभा दिल्ली। भारत सरकार हैदराबाद सत्याग्रह को राजनैतिक आन्दोलन न मानकर एक धार्मिक आन्दोलन के रूप में मानती थी।

श्री ला० रामगोपाल शालवाले की सूझबूझ

वस्तुत निजामशाही के विरुद्ध संघर्ष करना, स्टेट को स्वतन्त्र कराने का जो रूप वहां के आर्य नेताओं ने उठाया था वह राज्य को स्वतन्त्र-प्रभुसत्ता सम्पन्न कराने की ही एकमात्र योजना थी। सत्याग्रह के बाद आजादी की प्राप्ति पर निजाम को समाप्त करने का जो कार्यक्रम आर्यसमाज ने बनाया था, सरदार पटेल के पुलिस ऐक्शन की सफलता का एक महत्वपूर्ण अ ग था। भारत सरकार इससे परिचित थी। परन्तु सम्प्रदायवाद के भय ने सरकार के दिल में आर्यसमाज को राजनीति का प्रमुख तत्व नहीं बनाया चाहती थी।

लाला रामगोपाल शालवाले ने श्रीमती इन्दिरा गांधी को आर्य समाज की समस्त देश व राज्यों की राजनीति के स्वरूप को बताया। श्रीमती गांधी के मन और मस्तिष्क ने भी गवाही दी कि इनकी बात को सत्याग्रह की राज-नीति का अ ग मानना चाहिये।

परन्तु सरकार उलझन में नहीं पड़ना चाहती थी अत इसे टाल रही थी।

लाला रामगोपाल शालवाले ने श्रीमती गांधी के समक्ष आर्यसमाज के पक्ष और विरोध पक्ष को प्रस्तुत किया।

गुलामी के समय में सिन्ध में मोपला विद्रोह हुआ जिसमें हिन्दुओं की धन-जन की हानि हुई थी। राजनीतिक प्रभाव से इसे राजनीतिक आन्दोलन के रूप में मानकर स्वतन्त्रता सैनिक पेन्शन दी गई। प बाद में अकाली आन्दोलन को भी राजनीति की हवा दी गई और उन्हें भी पेन्शन योजना के तहत रखकर पेन्शन दी गई।

फिर क्या बात है कि हैदराबाद सत्याग्रह जो देखने में धार्मिक था परन्तु था राज्य की स्वतन्त्रता का सिंहनाद।

आज हम उस आजादी के मुहाने पर खड़े है जहां सरकार हमें धार्मिक मानकर राजनीति का मूलतत्व मानती है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद श्री राजीव गांधी भारत के भाग्य विधाता बने। जब इनके समक्ष हैदराबाद सत्याग्रह का विषय प्रस्तुत किया गया तो प्रधान मन्त्री राजीव जीने भी इसे गम्भीरता से लिया और श्री रामगोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता मे एक सात सदस्यीय समिति का गठन कर दिया। इस समिति का काम था कि हैदराबाद सत्याग्रह मे गये जेल यात्रियों के प्रमाण पत्रों को देखकर सरकार के सामने अपनी संस्तुति देकर उन्हें राजनैतिक पेन्शन दिलाने में मदद करें। श्री शालवाले जी अब गृहस्थ धर्म छोड़कर विरक्त सन्यास आश्रम की दीक्षा ले चुके थे और स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती के नाम से विख्यात हुए।

प्रधान मन्त्री ने इस विरक्त व्यक्तित्व का स्वागत किया और इनकी बातों को महत्व देकर सत्याग्रह पेन्शन योजना को गति दी। दो हजार से ऊपर प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए परन्तु सत्याग्रहियों की ढील से न जेल के प्रमाण-पत्र मिले और न फार्म ही भरकर सभा के कार्यालय में या लोकनायक भवन, गृहमन्त्रालय दिल्ली में दिये गये। अस्तु आज तक सरकारी समिति की ६-७ बैठकें हो जाने के बाद भी सभा अभी तक सन्तोषजनक स्थिति तक नहीं पहुच सकी है कारण कि कुछ हम ढीले, कुछ सरकारी दफ्तर ढीला, बाकी सत्याग्रही हमारे ऊपर भरोसा करके चुप बैठ गये। कि सभा सब कुछ कर रही है, बस हमें तो केवल पेन्शन लेना भर ही है।

इस प्रकार सभा के अधिकारी जहां इस प्रयत्न में हैं कि सबको ही पेन्शन स्वीकार होकर मिले, वहां अपने कार्य पर कुछ असन्तोष भी है।

अभी तक हमने जो मंजिल तय की है उसमें भारत सरकार से लगभग एक सौ व्यक्तियों को निर्णायक दौर तक पहुचाया है। बाकी, को प्रदेशीय सरकार के द्वारा पेन्शन मिलनी है। सभा उनकी भी कई लम्बी सूचियां प्रका-शित कर चुकी है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अथक प्रयास में सरकार जागेगी तो सही, पर समय लगेगा।

हमारे सामने समस्या है कि गुप्त रूप से काम करने वालो को तथा जिन जिन जेलों से रिकार्ड गायब है या जला दिया गया है उन पर शीघ्र निर्णय लेने की। इन विषयों पर—

सरकार तथा समिति में तालमेल बैठाकर कार्य को और आगे बढ़ाया है।

आज ४८ साल के बाद आर्य समाज के नेतृवर्ग को जो सफलता मिली है वह सराहनीय है। समय ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहा है त्यों त्यों हमारी प्रगति में आशातीत सफलता के चिन्ह दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

सभा चाहती है कि हम आगे बढ़ें-तो सत्याग्रहियों को भी चाहिए कि वे जेल के प्रमाण-पत्र लाने में शीघ्रता करें।

प्रमाण पत्र लेने मे देखना यह है कि हम कब गिरफ्तार हुए, कब छूटे। कहां गिरफ्तार हुए, कहां से मुक्त हुए।

इसमें समय थोड़ा लगेगा, किन्तु सफलता शीघ्र ही सामने दिखाई देगी।

आभार प्रकट

मेरी पूज्या माता श्रीमती कमलेश आर्या (धर्मपत्नी श्री ओकार-नाथ शालवाले) के असामयिक निधन पर अनेक महानुभावो से हमे सीधे तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान पू० स्वामी आनन्दबोध जी के द्वारा जो सैकड़ो पत्र प्राप्त हुए हैं, उनसे हमें धैर्य और सबल प्राप्त हुआ है। मैं आप सभी महानुभावो की सवेदना व सान्त्वना के लिए अपने परिवार की ओर से हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूं।

—सजयकुमार शालवाले (पुत्र)
बी० ३-४ मन्दिर मार्ग,
कृष्णनगर, दिल्ली-५१

मोक्ष मार्ग दर्शन

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका से)

प्रस्तोताः श्री पुष्करलाल आर्य कलकत्ता

इस मनुष्य को क्या होता है ? (ततः प्र०) अर्थात् उस अन्तर्यामी परमात्मा की प्राप्ति, और (अन्तराय) उसके अविद्यादि क्लेशों तथा रोगरूप विघ्नों का नाश हो जाता है ॥१८॥

वे विघ्न नव प्रकार के हैं—(व्याधि०) एक (व्याधि) अर्थात् धातुओं की विषमता से ज्वर आदि पीड़ा का होना। दूसरा (संस्त्यान) अर्थात् सत्य कर्मों में अप्रीति। तीसरा (संशय) अर्थात् जिस पदार्थ का निश्चय किया चाहे, उसका यथावत् ज्ञान न होना। चौथा (प्रमाद) अर्थात् समाधिसाधनों के ग्रहण में प्रीति और उनका विचार यथावत् न होना। पांचवां (आलस्य) अर्थात् शरीर और मन में आराम की इच्छा से पुरुषार्थ छोड़ बैठना। छठा (अविरति) अर्थात् विषय सेवा में तृष्णा का होना। सातवां (भ्रान्तिदर्शन) अर्थात् उलटे ज्ञानका होना, जैसे जड़ में चेतन और चेतन में जड़ बुद्धि करना, तथा ईश्वर मे अनीश्वर और अनीश्वर में ईश्वरभाव करके पूजा करना। आठवां (अलब्धभूमिकत्व) अर्थात् समाधि की प्राप्ति न होना। और नववां (अनवस्थितत्व) अर्थात् समाधि की प्राप्ति होने पर भी उसमें चित्त स्थिर न होना। ये सब चित्त की समाधि होने में विक्षेप अर्थात् उपासनायोग के शत्रु हैं ॥१९॥

अब इनके फल लिखते हैं—(दु:खदौर्म०) अर्थात् दुःख की प्राप्ति, मन का दुष्ट होना, शरीर के अवयवों का कांपना, श्वास और प्रश्वास के अत्यन्त वेग से चलने में अनेक प्रकार के क्लेशों का होना, जो कि चित्त को विक्षिप्त कर देते हैं। ये सब क्लेश अशान्त चित्तवाले को प्राप्त होते हैं, शान्त चित्तवाले को नहीं ॥२०॥

और उनके छुड़ाने का मुख्य उपाय यही है कि—(तत्प्रतिषेधा०) जो केवल एक अद्वितीय ब्रह्मतत्त्व है उसी में प्रेम, और सर्वदा उसी की आज्ञापालन में पुरुषार्थ करना है, वही एक उन विघ्नों के नाश करने को वज्ररूप शस्त्र है, अन्य कोई नहीं। इसलिये सब मनुष्यों को अच्छी प्रकार प्रेमभाव से परमेश्वर के उपासनायोग में नित्य पुरुषार्थ करना चाहिये, कि जिससे वे सब विघ्न दूर हो जाय ॥२१॥

आगे जिस भावना से उपासना करनेवाले को व्यवहार में अपने हैं चित्त को प्रसन्न करना होता है, सो कहते हैं—

अर्थात् इस संसार में जितने मनुष्य आदि प्राणी सुखी हैं, उन सबों के साथ मित्रता करना। दु:खियो पर कृपादृष्टि रखनी। पुण्यात्माओ के साथ प्रसन्नता। पापियो के साथ उपेक्षा, अर्थात् उनके साथ प्रीति न रखना और वैर ही करना। इस प्रकार के वर्तमान से उपासक के आत्मा में सत्यधर्म का प्रकाश और उसका मन स्थिरता को प्राप्त होता है ॥२२॥

(प्रच्छर्दन०) जैसे भोजन के पीछे किसी प्रकार से वमन हो जाता है वैसे ही भीतर के वायु को बाहर निकाल के सुखपूर्वक जितना बन सके उतना बाहर ही रोक दे। पुन: धीरे धीरे भीतर लेके पुनरपि ऐसे ही करे। इसी प्रकार बारम्बार अभ्यास करने से प्राण उपासक के वश में हो जाता है। और प्राण के स्थिर होने से मन, मन के स्थिर होने से आत्मा भी स्थिर हो जाता है। इन तीनों के स्थिर होने के समय अपने आत्मा के बीच में जो आनन्दस्वरूप अन्तर्यामी व्यापक परमेश्वर है, उसके स्वरूप मे मग्न हो जाना चाहिये। जैसे मनुष्य जल में गोता मारकर ऊपर आता है. फिर गोता लगा जाता है, इसी प्रकार अपने आत्मा को परमेश्वर के बीच मे बारम्बार मग्न करना चाहिये ॥२३॥

(योगाङ्गानु०) आगे जो उपासनायोग के आठ अंग लिखते हैं, जिनके अनुष्ठान से अविद्यादि दोषों का क्षय, और ज्ञान के प्रकाश की वृद्धि होने से जीव यथावत् मोक्ष को प्राप्त हो जाता है ॥२४॥

(यमनियमा०) अर्थात् एक (यम), दूसरा (नियम), तीसरा (आसन) चौथा (प्राणायाम), पांचवा (प्रत्याहार), छठा (धारणा), सातवां (ध्यान) और आठवां (समाधि) ये सब उपासनायोग के अंग कहाते हैं। और आठ अंगों का सिद्धान्तरूप फल संयम है ॥२५॥

(तत्राहिंसा०) उन आठों में से पहिला 'यम' है। सो पांच प्रकार का है:—एक (अहिंसा) अर्थात् सब प्रकार से, सब काल में, सब प्राणियों के साथ, वैर छोड़ के प्रेम प्रीति से वर्तना। दूसरा (सत्य)—अर्थात् जैसा अपने ज्ञान में हो, वैसा ही सत्य बोले, करे और माने। तीसरा (अस्तेय)—अर्थात् पदार्थ वाले की आज्ञा के बिना किसी पदार्थ की इच्छा भी न करना, इसी को चोरीत्याग कहते हैं। चौथा (ब्रह्मचर्य)—अर्थात् विद्या पढ़ने के लिये बाल्यावस्था से लेकर सर्वथा जितेन्द्रिय होना, और पच्चीसवें वर्ष से लेके अड़तालीस वर्ष पर्यन्त विवाह का करना, परस्त्री, वेश्या आदि का त्यागना, सदा ऋतुगामी होना, विद्या को ठीक ठीक पढ़ के सदा पढ़ाते रहना, और उपस्थ इन्द्रिय का सदा नियम करना। पांचवा (अपरिग्रह)—अर्थात् विषय और अभिमानादि दोषों से रहित होना। इन पांचों का ठीक ठीक अनुष्ठान करने से उपासना का बीज बोया जाता है ॥२६॥

(शौच०) पहिला (शौच)—अर्थात् पवित्रता करनी सो भी दो प्रकार की है—एक भीतर की, और दूसरी बाहर की। भीतर की शुद्धि धर्माचरण, सत्य भाषण, विद्याभ्यास, सत्संग आदि शुभगुणों के आचरण से होती है। और बाहर की पवित्रता जल आदि से शरीर स्थान मार्ग वस्त्र खाना पीना आदि शुद्ध करने से होती है। दूसरा (सन्तोष)—जो सदा धर्मानुष्ठान से अत्यन्त पुरुषार्थ करके प्रसन्न रहना, और दुःख में शोकातुर न होना। किन्तु आलस्य का नाम सन्तोष नहीं है। तीसरा (तपः)—जैसे सोने को अग्नि में तपा कर निर्मल कर देते हैं, वैसे ही आत्मा और मन को धर्माचरण और शुभगुणों के आचरणरूप से निर्मल कर देना। चौथा (स्वाध्याय)—अर्थात् मोक्ष विद्याविधायक वेद शास्त्र का पढ़ना पढ़ाना, और ओंकार के विचार से ईश्वर का निश्चय करना कराना। और पांचवां (ईश्वर प्रणीधान)—अर्थात् सब सामर्थ्य, सब गुण, प्राण, आत्मा और मन के प्रेमभाव से आत्मादि सत्य द्रव्यों का ईश्वर के लिये समर्पण करना। ये पांच नियम भी उपासना का दूसरा अंग हैं ॥२७॥

अब पांच यम और पाच नियमों के यथावत् अनुष्ठान का फल कहते हैं—(अहिंसाप्र०) अर्थात् जब अहिंसा धर्म निश्चय हो जाता है, तब उस पुरुष के मन से वैरभाव छूट जाता है, किन्तु उसके सामने वा उसके संग से अन्य पुरुष का भी वैरभाव छूट जाता है ॥२८॥

(सत्यप्र०) तथा सत्याचरण का ठीक ठीक फल यह है कि जब मनुष्य निश्चय करके केवल सत्य ही मानता, बोलता और करता है, तब वह जो जो योग्य काम करता और करना चाहता है, वे वे सब सफल हो जाते हैं ॥२९॥

चोरीत्याग करने से यह बात होती है कि—(अस्तेय०) अर्थात् जब मनुष्य अपने शुद्ध मन से चोरी के छोड़ देने की प्रतिज्ञा कर लेता है, तब उसको सब उत्तम उत्तम पदार्थ यथायोग्य प्राप्त होने लगते हैं। और चोरी इसका नाम है कि मालिक की आज्ञा के बिना अधर्म से उसकी चीज को कपट से वा छिपाकर ले लेना ॥३०॥

(ब्रह्मचर्य०) ब्रह्मचर्य सेवन से यह बात होती है कि जब मनुष्य बाल्यावस्था में विवाह न करे, उपस्थ इन्द्रिय का संयम रखे, वेदादि शास्त्रों को पढ़ाता रहे, विवाह के पीछे भी ऋतुगामी बना रहे, और परस्त्रीगमन आदि व्यभिचार को मन कर्म वचन से त्याग देवे, तब दो प्रकार का वीर्य अर्थात् बल बढ़ता है—एक शरीर का, दूसरा बुद्धि का। उसके बढ़ने से मनुष्य अत्यन्त आनन्द में रहता है ॥३१॥

(अपरिग्रहस्थै०) अपरिग्रह का फल यह है कि जब मनुष्य विषयासक्ति से बचकर सर्वथा जितेन्द्रिय रहता है, तब मैं कौन हूं, कहां से आया हूं, और मुझको क्या करना चाहिये, अर्थात् क्या काम करने से मेरा कल्याण होगा; इत्यादि शुभ गुणों का विचार उसके मन में स्थिर होता है। ये ही पांच यम कहाते हैं। इनका ग्रहण करना उपासकों को अवश्य चाहिये ॥३२॥

परन्तु यमों का नियम सहकारी कारण है, जो कि उपासना का दूसरा अंग कहाता है, और जिसका साधन करने से उपासक लोगोंका अत्यन्त सहाय होता है। सो भी पांच प्रकार का है। उनमे से प्रथम शौच का फल लिखा जाता है।

(शेष पृष्ठ १० पर)

महर्षि के बलिदान ने राष्ट्रनिर्माण किया

आज भी आर्यसमाज ही देश को बचा सकेगा

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

गुड़गांव, १६ फरवरी। गुड़गांव की सभी आर्य समाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से ऋषि बोधोत्सव आर्य समाज अर्जुननगर में बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने भाषण देते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द ने १८-१८ घण्टे की समाधि व मोक्ष प्राप्त की महत्त्वाकांक्षा को लात मार कर समाज सेवा का कठोर तपस्यामय संकल्प किया। प्रभुवाणी वेद के भाष्य के साथ ही अनाधिकारी पण्डितों व विदेशी विद्वानों के वेदों पर लगाए आक्षेपों का निराकरण किया।

आर्यसमाज के रूप में लोक कल्याणकारी संस्था का निर्माण कर भारत राष्ट्र को अनेक संकटों से बचाया। आज ४० वर्ष के स्वाधीनता के पश्चात भी देश संकटों से घिरा है। जिन सिख गुरुओं ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए गुरु तेग बहादुर व गुरु गोविन्द सिंह के रूप में अतुलित बलिदान किये उन्हीं के तथाकथित पंथधारी हिन्दुओं के विनाश पर तुले हैं। प्रकाशसिंह बादल कट्टर मुस्लिमलीगी सैयद बुखारी से हाथ मिलाकर हिन्दू महापुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि हिन्दुओं से छीनकर मुसलमानों की झोली में डालने का षडयन्त्र कर रहे हैं। आज राष्ट्र के संकटों की जितनी वास्तविक चिन्ता आर्यसमाज को है औरों को नहीं। देश को वोट की राजनीति ने घोर भ्रष्टाचार के मार्ग पर अग्रसर कर दिया है। आर्यसमाज को सुदृढ़ बनाओ ताकि देश को विनाश से बचाया जा सके।

बलिदान

बलिदानों की अमर कहानी।
कभी नहीं मिट जाती है॥
बलिदानों की गाथायों को।
धरती हंस हंस गाती है॥१॥

नन्हीं जो बीज धरा की गोदी में सो जाता है।
गर्मी का सहयोग प्राप्त कर अंकुर बन कर जो जाता है॥
उस अंकुर पर फूल फलों की।
नयी फसल उग आती है॥२॥

सदा सजाने औरों को ही जिसने जीना सीखा है।
शैल शिला पर मर मिटने को अनुपम एक तरीका है।
मेंहदी रंग रंगीला लाती है।
ज्यों ज्यों पिसती जाती है॥

घृत, शाकल्य, कपूर, जिहते आते उहवर शाला में।
नाच-नाच कर समिधा बढ़ती है अग्नि ज्वाला में॥
तब मनमोहन सुरभि सजीली।
चतुर्दिशा महकती है॥४॥

प्रण के लिए प्राण का देना कोई मुश्किल बात नहीं है।
राष्ट्र स्वत्व में रक्त बहाने से बढ़कर सौगात नहीं है॥
वीरों की यह भव्य भावना।
गंगा सी लहराती है॥५॥

बलिदानों की परम्परा में स्वार्थ आवशालेश नहीं।
आत्म समर्पण में होता है, किञ्चित् भी तो क्लेश नहीं॥
यह तो निर्भय त्याग साग की।
राग रागिनी गाती है॥६॥

बलिदानी बागों में आता है, पतझर का राज नहीं।
वीरानी रानी को सजता है, गीतों का साज नहीं॥
रहा सदा शृङ्गार सजीली।
बसन्ती मुसकाती है॥७॥

—कविवर अजय शास्त्री एम०ए०

दिल्ली में ऋषि बोधोत्सव व ऋषि मेला समारोह

दिल्ली १ फरवरी दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा के तत्त्वावधान में ऋषि बोधोत्सव व ऋषि मेला बड़े समारोह पूर्वक मनाया। दिल्ली की सभी समाजों से सदस्यगण अपने वाहनों पर आकर उत्सव में हजारों की संख्या में सम्मिलित हुए। प्रातःकाल आचार्य यशपाल सुधांशु जी के ब्रह्मात्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ तदन्तर ध्वजारोहण आर्य समाज के विद्वान संन्यासी स्वामी दिव्यानन्द जी ने किया परन्तु अस्वास्थ्य के कारण वे बोल नहीं पाये उनके स्थान पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने ओ३म् ध्वज की महिमा पर प्रकाश डाला। तदनन्तर विभिन्न आर्य संस्थाओं के छात्र व छात्राओं के द्वारा शारीरिक प्रदर्शन व भाषण प्रतियोगिताएं हुई जिनमें विजयी छात्र छात्राओं को पुरस्कार वितरित किए गए। दो बजे से यह समारोह महर्षि श्रद्धाञ्जलि के रूप में परिवर्तित हो गया। इस समारोह की अध्यक्षता गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने की। सभा में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि मूर्ति पूजा के द्वारा भारत के विनाश का इतिहास इतना विकट है कि हिन्दुओं ने उससे कोई भी शिक्षा न लेकर देश को घोर संकटों में पड़ जाने दिया। हमारी एक हजार वर्ष की गुलामी इस महारोग के कारण ही हुई। महर्षि पहले महापुरुष हैं जिन्होंने छोटी सी घटना से ही बोध लेकर युग परिवर्तन कर दिया। बम्बिष के विहारी श्री अमरेश जी ने आर्य समाज को महान क्रान्तिकारी रूप पर प्रकाश डालते हुए कहा आर्य समाज ने दक्षिण में जो चमत्कार किया है उसका हम मूल्यांकन करें तो आश्चर्य होता है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि—

महर्षि की महिमा को समझने के लिए हमें आर्य समाज द्वारा किए गए युग परिवर्तन की घटनाओं पर दृष्टिपात करना आवश्यक है। आर्य समाज अपने जीवन काल से ही संघर्षशील रहा है आज भी आर्यसमाज के सामने विशाल सेवा का क्षेत्र है। हमें संगठित होकर देश की समस्याओं से जूझना है। आप अपने आपको सुदृढ़ बना लें। राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान चौधरी छोटसिंह ने अपने भाषण में कहा—आर्यसमाज निरन्तर उन्नति कर रहा है ऋषि के विचारों को प्रत्येक क्षेत्र में अपनाया जा रहा है, कड़ियां टूट रही हैं। बुद्धिजीवी वर्ग महर्षि के विचारों से अत्यधिक प्रभावित हो रहा है। हमें कभी निराशा की बात सोचनी भी नहीं चाहिए।

इका कांग्रेस के कोषाध्यक्ष श्री सीता राम केसरी ने कहा मुझे १३ वर्ष की आयु में ही महर्षि के तत्त्वज्ञान ने राष्ट्रभक्त व समाज सेवक बना दिया। महर्षि के मार्गदर्शन में ही राष्ट्र का कल्याण होगा।

वेदों के राजनीतिक सिद्धांत पर विचार विमर्श

डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, अमेठी

ऋषि निर्वाण शताब्दी पर वेदमार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति की महत्वपूर्ण कृति "वेदों के राजनीतिक सिद्धांत" का प्रकाशन हुआ। इस ग्रन्थ-रत्न के प्रकाशन से पूर्व डा० रामनाथ वेदालंकार ने अपने एक लेख में आचार्य प्रियव्रत जी की इस रचना का पूर्व परिचय आर्य जगत् को दिया था। स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती जी ने ऋषि निर्वाण शताब्दी पर आयोजित वेद-सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण में (जो लिखित रूप में छपा था और बाद में आर्य पत्रों में भी छपा) भी इस ग्रन्थरत्न की चर्चा की थी। इस पुस्तक पर और कोई चर्चा आर्य पत्रों में नहीं हुई। एक लम्बे अन्तराल के बाद डा० प्रज्ञा देवी जी का इस ग्रन्थ की समीक्षा से सम्बन्धित एक निबन्ध अक्टूबर नवम्बर में विविध आर्य पत्रों में 'क्या वेदों के आधिदैविक अर्थ उपेक्षणीय हैं ?' शीर्षक से छपा। आचार्य प्रियव्रत जी ने डा० प्रज्ञा देवी जी की उक्त समीक्षा के सन्दर्भ में अपना स्पष्टीकरण 'वेदों के आधिदैविक अर्थ उपेक्षणीय नहीं हैं शीर्षक से आर्य पत्रों में प्रकाशित कराया है। जुलाई १९८७ में श्री रामकृष्ण आर्य का एक लेख आर्य संसार में 'क्या वेद केवल राजनीतिक सिद्धान्तों के ही ग्रन्थ हैं ?' छपा था। इस लेख का समर्थन देते हुए पुन डा० प्रज्ञा देवी जी का एक निबन्ध 'वेद राजनीति के ही नहीं समस्त विद्याओं के आकार ग्रन्थ हैं'' 'आर्य मित्र' में छपा है।

इस ग्रन्थ को आर्य समाज के अनेक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत भी किया गया है। पुनरपि मेरी समझ से इस ग्रन्थ की जितनी अधिक चर्चा (प्रशंसा या समीक्षा भी) होनी चाहिए थी, उतनी नहीं हुई। आर्यसमाज में स्वाध्याय-शीलता की वर्तमान शोचनीय स्थिति ही सम्भवत इसका कारण है। आर्य विद्वानों द्वारा वैदिक साहित्य की सेवा में लिखे गये—'वैदिक इतिहासार्थ निर्णय' (प० शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ), 'वैदिक सम्पत्ति (प० रघुनन्दन शर्मा) प्रभृति अमूल्य ग्रन्थ हैं, ऐसा मेरा मानना है, जो आचार्य जी के वेदों पर सुदीर्घ चिन्तन, मनन और आलोडन का ही सुपरिणाम है। अस्तु।

किसी भी कृति के प्रथम संस्करण में संशोधन और परिमार्जन की गुंजा-इश रहती ही है। ग्रन्थ छपने के बाद ग्रन्थ की त्रुटियों, न्यूनताओं, भूलों और संशोध्य स्थलों की ओर ध्यान स्वयं लेखक का और समालोचकों का जाता है। 'वैदिक सम्पत्ति' में भी ऐसे स्थल थे और 'वैदिक इतिहासार्थ निर्णय' में भी। प्रस्तुत समालोच्य ग्रन्थ भी इसका अपवाद नहीं है। इसी दृष्टि से कुछ विचार प्रस्तुत कर रहा हूँ। आचार्य जी अन्यथा न लेंगे।

इस ग्रन्थ में सर्वाधिक खटकने वाली बात यह है कि आचार्य जी वेद के अग्नि, इन्द्र, वरुण रुद्र, मरुत्, सोम नर आदि शब्दों के स्व अभीष्ट अर्थ लिखने के बाद अन्य अर्थ निषेधक वाक्य भी लिख चलते हैं। मेरी समझ से अन्य अर्थों के निषेधक वाक्यों को इस ग्रन्थ से निकाल देना चाहिए। डा० प्रज्ञा देवी जी की भी प्रमुख आपत्ति यही है कि आचार्य जी स्वकृत अर्थों का प्रतिपादन करने के बाद यह क्यों लिखते हैं- कि 'इस मन्त्र या पद का अन्य कोई अर्थ नहीं हो सकता।' आचार्य जी ने प्रज्ञा बहिन जी की इस आलोचना के उत्तर में लिखा है—'लिखते समय मेरा ध्यान उन शब्दों के सायणाचार्य आदि के अर्थों की ओर था। इन लोगों के अर्थ मुझे संगत नहीं लगे। इस-लिए अपनी बात पर जोर देने के लिए मैंने ऐसा लिख दिया है।' किन्तु आचार्य जी को मन्त्रों का अर्थ लिखते समय उन मन्त्रों या मन्त्रोपात्त शब्दों का सायणाचार्य के अतिरिक्त ऋषि दयानन्द कृत अर्थों की ओर भी ध्यान रहा होगा। सायण के अर्थ असंगत दीखे होंगे यह तो माना किन्तु ऋषि दया-नन्द के अर्थों में कौन सी असंगति दिखायी पड़ी जो आचार्य जी को अपनी बात पर जोर देने के लिए—'ये लोग उन विशेषणों को आग में घटा देते हैं यह हम कभी नहीं समझ सके', 'इन स्थलों में अग्नि का अर्थ साधारण आग कभी संगत नहीं हो सकता', 'अग्नि के ये तीन कर्म जड़ आग में संगत नहीं हो सकते।' (खण्ड १, पृ० ७९, ८०, ८२) जैसे वाक्य लिखने पड़े। इस ग्रन्थ में इस प्रकार की पंक्तियों को हम उचित नहीं समझते। आचार्य जी द्वारा उद्धृत मन्त्रों में ऋग्वेद के वे मन्त्र भी हैं जिन पर ऋषि दयानन्द का भाष्य उपलब्ध है। उदाहरणार्थ—ऋग्वेद के "अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम् (ऋ० १ १२ २) कविमग्निमुपस्तुहि सत्यधर्माणम् (ऋ० १-१२ ७)। इन मन्त्रों को आचार्य जी ने अपने ग्रन्थ के प्रथम खण्ड (पृ० ७९-८०) पर दिया है और इन मन्त्रों में आये अग्नि शब्द का "सम्राट्" अर्थ करते हुए 'यहां अग्नि का प्रसिद्ध भौतिक आग अर्थ नहीं हो सकता' यह भी लिख देते हैं। जबकि इन मन्त्रों में आये 'अग्नि' शब्द का अर्थ महर्षि दयानन्द ने क्रमश परमेश्वर, प्रसिद्ध भौतिक अग्नि तथा बिजली ऋ० १ १२-२ में तथा ज्ञाता और दाहक अग्नि ऋ० १-१२ ७ में किया है। आचार्य जी ने अपने स्पष्टी-करण में यह लिखा है—'मेरे ग्रन्थ का विषय तो मन्त्रों में वर्णित राजनीति विज्ञान को दिखाना है। इसलिए मैंने राजनीति विज्ञान विषयक अर्थ मन्त्रों के किये हैं, आधिदैविक नहीं।' फिर आधिदैविक, आधिभौतिक आदि अर्थों प्रत्याख्यान या अपलाप करने की क्या आवश्यकता थी? आचार्य जी के अनुसार जब विषय भेद या क्षेत्र भेद से मन्त्रों के विविध अर्थ हो सकते हैं तब सैकड़ों बार यह लिखने का क्या औचित्य है? 'यहां अग्नि का अर्थ सम्राट् ही लेना चाहिए (खण्ड १) 'राजा का चुनाव' अनुच्छेद पृ० २३), यहां अग्नि का अर्थ आग न लेकर शरीरधारी सम्राट ही लेना चाहिए (पृ० २४), आग अर्थ में सारा सूक्त सुन्दर ढंग से घट ही नहीं सकता (पृ० २५), अग्नि का अर्थ इन मन्त्रों में तथा पूर्व मन्त्रों में सम्राट् ही करना होगा आग नहीं (पृ० २६), अग्नि विषयक सूक्त के वर्णन सम्राट पर ही अधिक संगत रीति से लग सकते हैं आग पर नहीं (पृ० २७), आग अर्थ में इनकी संगति दु:साध्य है (पृ० २८), आग अर्थ में ये विशेषण चरितार्थ नहीं हो सकते (पृ० २९), अग्नि का अर्थ राजा ही लिया जा सकता है आग नहीं (पृ० ३०), आग में ये वर्णन संगत नहीं हो सकते (पृ० ३१), इत्यादि अग्नि के विशेषण भी आग में संगत नहीं हो सकते (पृ० ३२, अग्नि के ये सारे ही कार्य राजा परक अर्थ

(शेष पृष्ठ ८ पर)

शराब पिलाने में पंजाब और हरयाणा में होड़

—प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा—

भोली जनता को शराब पिलाकर अधिक से अधिक राजस्व बटोरने की राज्य सरकारो मे होड लगी हुई है। विडम्बना यह है कि चाहे कांग्रेस की सरकार हो या किसी और दल की महात्मा का नाम सभी लेते हैं। महात्मा गांधी ने कहा था कि यदि भारत का शासन आध घण्टे के लिये भी उनके हाथ मे आ जाये तो वे सबसे पहला काम यही करेगे कि शराब बनाने वाली फैक्टरियो और शराब बेचने वाली दुकानो को बिना कोई मुआवजा दिये ही बन्द कर द।

आदरणीय नेता सी० आर० दास के नवासे श्री सिद्धार्थ शकर राय बडे गव के साथ कह रहे हैं कि आतकवादियो से लोहा लेकर उन्होने पजाब मे जो २७६ ठके नीलाम नही हो सके थे और १४१ ठेके बन्द पडे थे वे नीलाम करवा दिये और खुलवा दिये, तथा आबकारी से मिलने वाले राजस्व मे १३ प्रतिशत की वृद्धि करवा दी। आतकवादी बेगुनाह लोगो की नित्यप्रति जाने ले रहे हैं उसमे तो कमी नहीं हुई, उनमे तो अब फिर से वृद्धि हो रही है। आतकवादी देश को तोडने और बेगुनाहो की दिनधाडे हत्या करने के जो जघन्य पाप कर रहे हैं, उनके लिये तो भारत के सभी नागरिको को मिलकर उनकी भर्त्सना करनी चाहिये और उनको सख्ती से कुचलना चाहिये। परन्तु जो पुण्य का काम (शराब और मास की दुकाने बन्द करवाने का) वे कर रहे थे उसका तो स्वागत करना चाहिए था। 'कञ्चन होवे कीच मे विष मे अमृत होय।"

परन्तु पजाब की पुलिस और प्रशासन के कुछ लोग हत्याओ लूटमार और अलगाववाद मे तो आतकवादियो का साथ देते हैं, इस पुण्य के काय मे वे उनका साथ नही दे रहे। शराब की दुकानो की सख्या बढाने मे पूरी लगन से लगे हुए हैं। यही लगन यदि आतकवाद को समाप्त करने मे दिखाई होती तो पजाब की हालत सुधर गई होती।

हरियाण(मे चौ० देवीलाल किसान की उन्नति और समृद्धि का राग अलापते नही थकते, परन्तु जिस शराब के कारण हरयाणा का किसान सर्वनाश के रास्ते पर आगे बढता जा रहा है। उसका स्वास्थ्य और चलन चौपट होता जा रहा है। उससे बचाने की बजाय ठेके बन्द करना तो दूर रहा उल्टा उनकी सख्या बढाने मे लगे हैं और देशी शराब के साथ बीयर का भी लाइसेन्स देने लगे हैं। १९९२ के कानून के तहत जो पचायते सितम्बर के अन्त तक प्रस्ताव पास करके अक्तूबर में सरकार को अपनी प्रार्थना भेज दे। कि उनके गाव मे ठेका बन्द कर दिया जाये या नया न खोला जाये, तो सरकार को उस गाव का ठेका बन्द करना पडेगा और नया ठेका नहीं खोला जा सकेगा। चौ० हुकमसिंह ने जो देवीलाल जी के मन्त्रीमण्डल मे सदस्य है यह घोषणा की थी कि जो पचायत दिसम्बर के अन्त तक भी अपेक्षित प्रस्ताव भेज देगी उनके गाव मे ठेका बन्द कर दिया जायेगा और नया नही खोला जायेगा उनकी इस घोषणा का बहुत स्वागत किया गया था। परन्तु यह सुनकर बडा दुःख हुआ कि हरयाणा सरकार मार्च के पहिले सप्ताह मे ही ठके नीलाम करने लगी है और देसी शराब के ठको की सख्या ६७३ से बढाकर ७०० और अग्रेजी शराब की दुकानो की सख्या ३३६ से बढाकर ३५० करने जा रही है। यदि शराब की दुकान बन्द करके, उनका घाटा पूरा करने के लिये बसो का किराया बढाते या दूसरे करो मे थोडी बहुत बढोत्तर करते तो वह सहन किया जा सकता था और मेरे जैसे लोग तो उनका स्वागत भी कर सकते थे। परन्तु बसो का किराया और दूसरे कर तो बढा ही दिये शराब भी २८ करोड का अतिरिक्त राजस्व कमाने के लिए शराब और बियर की गली-गली मे नदिया बहाई जाने लगी हैं।

चौ० चरणसिंह तो स्वामी दयानन्द और महात्मा गाधी को अपना गुरु मानते थे और शराब तथा अश्लील नाटक और स्वागो आदि पर कडी पाबन्दी लगाने के लिए सदा अग्रसर रहे। क्या चौ० चरणसिंह को किसानो का मसीहा मानने वाले चौ० देवीलाल जी अपने नेता की आख बन्द होते ही शक्ति हाथ मे आने पर शराब की नदिया बहायगे तथा अश्लील नाटको और स्वागो को प्रोत्साहन दगे। मुझे कई लोगो ने बताया कि पिछले दिनो देवीलाल सरकार के मुखिया ने अश्लील स्वागो के प्रदर्शन का सार्वजनिक रूप से समर्थन किया और उन्हे करवाने के लिए अधिकारियो को आदेश दिया।

मेरा उद्देश्य श्री सिद्धार्थ शकर राय को सी० आर० दास और महात्मा गांधी की याद दिलाना है और चौ० देवीलाल जी को चौ० चरणसिंह और महात्मा गाधी की। मैं इन दोनो से ही अपने अतीत को याद करने और अपने कामो पर पुनर्विचार करने के बाद सही कदम उठाने की आशा रखता है।

वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त

(पृष्ठ ६ का शेष)

मे सगत नहीं हो सकते हैं आग परक अर्थ में नहीं (पृ० ३३), यहा अग्नि का अर्थ आग न लेकर राजा ही लेना चाहिए (पृ० ३६), मन्त्र गत वर्णन तथा पूर्व लिखित प्रमाणों के आधार पर यहा अग्नि का अर्थ सम्राट ही करना चाहिए मन्त्र गत वर्णन चेतन सम्राट् में ही हो सकता है, जड आग में नहीं (पृ० ३७)। इसी प्रकार इसके आगे 'इन्द्र' का अर्थ करते हुए आचार्य जी लिखते हैं—इन्द्र शब्द का अर्थ सम्राट ही ऐसे स्थलों मे लेना उचित है (पृ० ३९), इसलिए इन्द्र का अर्थ सम्राट् लेना ही अधिक उपयुक्त है (पृ० ४३), मन्त्रगत वर्णन यह सिद्ध करता है कि यहा इन्द्र का अर्थ सम्राट ही लेना चाहिए, (पृ० ४५), यहा इन्द्र का अर्थ सम्राट् ही लेना अधिक सुसगत है (पृ० ४६), इन्द्र का यह विशेषण भी यही सूचित करता है कि यहा इन्द्र का अर्थ सम्राट या भूपति करना चाहिए (पृ० ४६), यहा इन्द्र का अर्थ सम्राट ही लेना चाहिए, यह मन्त्रगत वर्णन से स्पष्ट है (पृ० ४७), यह सारा वर्णन और यह सारे विशेषण सम्राट अर्थ मे अधिक उचित रीति से सगत होते हैं। इसलिए अर्थ-निर्णय के प्रमुख निर्णायक औचित्य के आधार पर हमें यहा इन्द्र का अर्थ सम्राट ही करना होगा (पृ० ४९), जो अर्थ हमने ऊपर किया है वही करना होगा और उस अर्थ मे इसकी सगति सम्राट अर्थ मे ही हो सकती है (पृ० ५१), इस सारे सूक्त में जो इन्द्र का वर्णन हुआ है उससे भी यही स्पष्ट प्रतीत होता है कि यहा इन्द्र का अर्थ सम्राट करना चाहिए। सूक्त गत इन्द्र के ये सारे वर्णन सम्राट अर्थ में ही अधिक सुन्दर रीति से सगत होते हैं (पृ० ५१), ऐसी अवस्था मे इस सूक्त तथा सूक्तान्तरों की साक्षी के आधार पर हमें इन्द्र का अर्थ सम्राट ही करना चाहिए पृ० ५२) मन्त्र गत वर्णन तथा पूर्व प्रमाणो के आधार पर यहा इन्द्र का अर्थ राष्ट्र मे ऐश्वर्य देने वाला सम्राट ही करना चाहिए (पृ० ५३), इसी प्रकार अग्नि और इन्द्र नामक चतुर्थ अनुच्छेद मे भी आचार्य जी लिखते हैं—इन कर्मों को करने वाला अग्नि कभी आग नही हो सकता (पृ० ८४) यह लक्षण आग मे नही घट सकता (पृ० ८७) इन मन्त्रों में भी अग्नि का जो वर्णन है वह किसी सगठित और व्यवस्थित राज्य के अधिपति में ही घट सकता है लोक प्रसिद्ध आग मे नही (पृ० ९१)।

इस प्रकार हम देखते है कि आचार्य जी अपने ग्रन्थ मे उद्धृत इन्द्र और अग्नि सूक्तों मे आए इन्द्र और अग्नि शब्द का अर्थ राजा या सम्राट करते हुए भौतिक अग्नि आदि अन्य अर्थों का प्रत्याख्यान करते हैं। आचार्य जी की इस मान्यता से हम सहमत नही हो सकते, क्योंकि इन्हीं अग्नि और इन्द्र सूक्तो में आये अग्नि और इन्द्र शब्द का क्रमश भौतिक अग्नि और परमात्मा आदि अर्थ स्वामी दयानन्द तथा अन्य आर्य विद्वानों ने किया है और उसकी सगति भी लगायी है। यथा-ऋषि दयानन्द ने ऋग्वेद के प्रथम सूक्त मे अग्नि शब्द का परमेश्वर और भौतिक अग्नि अर्थ किया गया है। पचम और षष्ठ मण्डल के प्रथम सूक्त मे अग्नि शब्द से भौतिकाग्नि और सप्तम मण्डल के प्रथम सूक्त में अग्नि शब्द से विद्युत की व्याख्या ऋषि की है। अन्यत्र अपने वेदभाष्य में ऋषि दयानन्द ने अग्नि शब्द के अनेक अर्थ किये हैं। जैसे—अग्नि का अर्थ-जठराग्नि (यजु० ५।१९), सूर्य (यजु ५।१९), युद्ध जन्य क्रोधाग्नि (यजु ६।१८) सर्वविद्या प्राप्त विद्वान (यजु० ६।१६), न्याय मार्ग मे चलाने वाला विद्वान (१ १०।३) तथा सब विद्या का जानने वाला और बताने वाला विद्वान (ऋ० १।१०५।१४)।

आचार्य जी अपने बचाव में लिखते हैं कि 'मैंने अपने [ग्रन्थ] की भूमिका मे 'वेद में विविध ज्ञान-विज्ञान' शीर्षक में स्पष्ट किया है कि वेद के शब्दों के क्षेत्र भेद से विविध प्रकार के अर्थ हो जाते हैं। वेद मे इन्द्र शब्द के परमात्मा जीवात्मा, राजा और विद्युत तथा अन्य अनेक अर्थ हो जाते हैं। इस भांति वेद के कितने ही स्थलो पर इन्द्र के विशेषणो और वर्णनो से स्पष्ट प्रतीत होता है कि वहा इन्द्र का अर्थ विद्युत है। 'आचार्य जी ने अपनी पुस्तक के प्रथम खण्ड के पृ० ९३ पर भी लिखा है—'प्रकरण के अनुसार उसका (इन्द्र और अग्नि आदि शब्दों का) अर्थ कहीं परमात्मा, कहीं सम्राट और कहीं कुछ और करना चाहिए।

आचार्य जी द्वारा स्पष्टीकरण में लिखे गये इन वाक्यों का यह तात्पर्य नहीं है कि उन्होने जिन स्थलों में अग्नि और इन्द्रादि शब्दों का सम्राट अर्थ किया है उन्हीं स्थलो मे अग्नि और इन्द्र शब्द का परमात्मा, जीवात्मा या विद्युत आदि अन्य अर्थ भी हो सकते हैं। अपितु वे यह कहना चाहते हैं कि उनके द्वारा उद्धृत मन्त्रों से आये अग्नि और इन्द्रादि शब्दों का परमात्मा जीवात्मा या विद्युत आदि अर्थ होगा। आचार्य जी के उपरिलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों से यही ध्वनि निकलती है। आचार्य जी ने अग्नि और इन्द्र सूक्त से सम्बन्धित जो स्थल उद्धृत किये हैं वहा उनके अनुसार मन्त्रगत वर्णनों विशेषणो, प्रकरण और औचित्य के आधार पर अग्नि इन्द्रादि शब्द का सम्राट या राजा अर्थ ही सगत हो सकता है अन्य अर्थ नहीं। इसीलिए उन्होंने उन मन्त्रो का स्व अभीष्ट अर्थ लिखते हुए यह भी लिख दिया है कि यहां अन्य अर्थ सगत नही हो सकता। उनके इस अन्य अर्थ निषेधक पचासों वाक्यों को ऊपर मैंने उद्धृत कर दिया है। यदि आचार्य जी उन मन्त्रो मे अपने अभीष्ट अर्थों से भिन्न अर्थों की भी सगति समुचित समझते तो उन्हे इस प्रकार के अन्य अर्थ निषेधक वाक्यों को सैकड़ों बार बल पूर्वक लिखने की क्या आवश्यकता थी। यह तो सभी जान रहे हैं कि आप वेदों मे राजनीतिक विज्ञान पर अर्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। अधिदैव, अधिभूत या अधियज्ञ परक विषय और अर्थ का विचार आपके ग्रन्थ का उद्देश्य नहीं है। अत अधिराष्ट्रपरक अर्थ के प्रतिपादन के बाद अन्य अर्थ निषेधक वाक्यो का तात्पर्य उन स्थलो में राष्ट्र या राजनीतिपरक अर्थ से भिन्न अध्यात्मक अधिदैव, अधियज्ञ या अधिभूत परक अर्थ के प्रत्याख्यान से ही है। आचार्य जी अपने लेख मे लिखते हैं कि सायणादि के असगत अर्थों के प्रत्याख्यान से मेरा तात्पर्य है। जबकि आचार्य जी के ग्रन्थ से उन मन्त्रो के राष्ट्रपरक अर्थ के प्रत्याख्यान का स्पष्टत और सतत उल्लेख है, और उन मन्त्रों का भौतिक जड़ अग्नि परक अर्थ ऋषि दयानन्द ने किया है। (क्रमश)

सच्चे शिव की खोज

—कविरत्न जगदीश प्रसाद एरन नीमच

आज उस युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द का बोधोत्सव है जिसने मृतप्राय राष्ट्र को जिलाया, भूले भटके मानव को सत्य पथ दिखाया। स्वाधीनता प्रेम दयालुता का पाठ पढ़ाया। जो अकेला होते हुए भी घबराया नहीं एवं जीवन भर पाखण्ड, ढोंग शोषण के विरुद्ध प्रत्येक मोर्चे पर लड़ता रहा तथा एक दिन विषपान में अपनी बलि दे दी)।

आज से ठीक १४७ वर्ष पूर्व आज ही की रात्रि को मोरवी राज्य के टंकारा ग्राम के शिवालय में १२ वर्ष के एक बालक मूलशंकर के मन में सच्चे शिव को जानने की ललक पैदा हुई थी। नन्हा सा बालक बड़ी श्रद्धा के साथ हाथ जोड़े भगवान शंकर के दर्शन की लालसा संजोये आंखों पर पानी के छींटे मार-मार कर शिवरात्रि की घोर अंधकारमय रात्रि को निराहार रहकर जागने का उपक्रम कर रहा था। उसके पिताजी उस मन्दिर के मठाधीश थे तथा जिन्होंने कि बालक के अविकसित हृदय में भगवान शंकर के दर्शन के विश्वास को भर दिया था, स्वयं निद्रा देवी की गोद में विश्राम करने लगे थे। किन्तु बालक जाग रहा था तथा जब उसने अर्धरात्रि के समय देखा कि कुछ चूहे शिव की पिण्डी पर उछल कूदकर उस पर रखे मिष्ठान को खा रहे हैं तथा पिण्डी को गन्दी कर रहे हैं, तो उसका विश्वास डगमगाया। उसने पिता को जगाकर सच्चे शिव का पता पूछा। उनके न बता सकने पर संकल्प लिया कि वह आजन्म ब्रह्मचारी रहकर सच्चे शिव का पता लगाकर रहेगा, तथा वास्तव में उसने उस रात्रि को जगकर सारे राष्ट्र को जगा दिया। वह शिवरात्रि बोधरात्रि बन गई जिसने कि युगों-युगों से अज्ञान अन्धकार के द्वार महर्षि दयानन्द के रूप में मूलशंकर से खुलवा दिये।

सच्चे शिव की खोज के संकल्प ने ही यह अद्भुत कार्य करवाया। महान राष्ट्रीय एवं समाज सुधारक तथा धार्मिक संस्था "आर्य समाज" की स्थापना की। जिसकी कि आज ७० हजार शाखाएं देश-विदेश में क्रियाशील हैं। महान क्रान्तिकारी तथा वैचारिक ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका जैसे ग्रन्थों की रचना की। गोरक्षा हित वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित "गोकरुणानिधि" नामक पुस्तिका लिखी। अछूतोद्धार और नारी शिक्षा का शंखनाद सबसे पहले महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किया। पराधीनता के समय जबकि लोग अंग्रेजों के विरुद्ध जुबान खोलने से डरते थे, स्वामी जी ने स्वराज्य तथा स्वदेशी वस्त्रों के नारे को बुलन्द किया।

भारत वर्ष की दशा उस आटे के दीपक के समान थी जिसे कि घर में रखें तो चूहे खा जायें तथा बाहर रखें तो कौए उठा ले जायें। देश जाति-पांति, छुआ-छूत, ऊंच नीच आडम्बरों, रूढ़ियों, मत मतान्तरों अवतारवाद आदि के चक्कर में ऐसा रमा हुआ था कि हम सब आपस में मिल बैठकर बात भी नहीं कर सकते थे। दूसरी ओर विदेशी सत्ता इस देश को खोखला किए जा रही थी। स्वामी जी ने एक ईश्वर की सत्ता को सर्वव्यापक बताकर तथा गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था का बोध कराकर इस देश को एक सूत्र में पिरो दिया। महात्मा गांधी कई बार कहा करते थे 'महर्षि की कृपा से आर्य समाजियों के रूप में मुझे देशभक्तों की बनी बनाई सेना मिल गई' वे महर्षि को स्वतन्त्रता संग्राम का गुरु व आर्य समाज को माता मानते थे। यह महर्षि दयानन्द की ही कृपा का फल है कि आज हम सभी भारतवासी उनकी इस क्रान्तिकारी एवं वैचारिक तथा समाज सुधारक विचारधारा के कारण स्वाधीन होकर भेदभावों की दीवारों को गिराकर भाई-भाई की भांति रह रहे हैं।

प्रात स्मरणीय महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम उनके इन उपकारमय कार्यों के लिए इतिहास के प्रथम पृष्ठ पर स्वर्णाक्षरों में सदा के लिए अंकित रहेगा।

धर्म के बिना राष्ट्रीय एकता असम्भव

भारत वर्ष एक महान् देश है और अतीत में यह वैदिक राष्ट्र के रूप में रहा। जहां से सम्पूर्ण विश्व को मानवता का सन्देश दिया जाता था, परन्तु आज सम्पूर्ण देश में अशान्ति फैल रही है। कहीं जातिगत, कहीं दलगत, कहीं सम्प्रदायगत विद्वेष विषधर राष्ट्रीय एकता की आत्मा को डस रहा है। इसलिए सम्पूर्ण देश में राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के लिए सभी चिन्तित हैं, परन्तु एकता स्थापित करने की जितनी चिन्ताय हो रही है उतना ही भटकाव पैदा हो रहा है। क्योंकि देश में सहिष्णुता के स्थान पर असुहिष्णुता शान्ति के स्थान पर उग्रवाद, अशान्ति, मानवता के स्थान पर दानवता बढ रही है। क्योंकि धर्म को मानने वाले वे राजनीतिज्ञ आत्मायें आज कहां है—जैसे महात्मा गांधी, लाला लाजपतराय, सरदार पटेल, पुरुषोत्तमदास टंडन, नेताजी सुभाष बाबू, लाल बहादुर शास्त्री, जिनके दर्शन मात्र के लिए जन मानस श्रद्धा से नत मस्तक होता था तथा देश की एकता के लिए अपने जीवन का सर्वस्व बलिदान करने को तैयार रहता था। क्योंकि उस समय एकता, समानता और बन्धुता का आदेश देदीप्यमान हो रहा था।

राष्ट्रीय एकता के महर्षि दयानन्द कितने अधिक समर्थक थे, यह इसी से ज्ञात होता है कि उन्होंने देश की एकता के लिए समस्त देशवासियों के परस्पर व्यवहार में हिन्दी को अपनाने को जोर दिया तथा एकता सम्मेलन का आयोजन देहली दरबार के समय किया था। वह हमेशा ही देश की एकता के कट्टर समर्थक रहे। परन्तु आज हमारे देश में भय, एक दूसरे के प्रति आक्रोश, घृणा बढ़ती जा रही है, इसके चिन्तन से हमें एक ही उत्तर मिलता है कि आज देश के शासक व नागरिक सभी अपने-अपने धर्म से दूर हो रहे हैं। राष्ट्र रक्षा के लिए हमें अपने पूर्वजों की भान्ति ही अपना राष्ट्र धर्म सुनिश्चित करना होगा। हमें वही कार्य अपनाना होगा जिसमें सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति दिखाई पड़े। अत हमें पश्चिमीय वेशभूषा, चकाचौंध से हटकर भारतीय संस्कृति तथा भारतीय संस्कृति तथा भारतीय दर्शन को देखना, समझना और अपनाना होगा।

आओ आज हम जन-जन में धर्म तथा स्वदेशी के सच्चे स्वरूप को पहचानने तथा राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील रहें।

ओ३म् सगच्छध्व सवदध्व स वो मनांसि जानताम्।
देवा भाग यथापूर्वे सजानाना उपासते॥
प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो॥

— वेद मित्र हापुड़ वाले
अम्बाला छावनी

आर्य जगत् के समाचार

धर्मगुरु चन्द्रास्वामी धोखेधड़ी में गिरफ्तार

दिल्ली १५ फरवरी।

देश-विदेश के धनवानो को अपनी पाखण्डपूर्ण तन्त्र विद्या के नाम पर ठगकर सन्यास व भारतीय संस्कृति को कलंकित करने वाले प्रसिद्ध उडन सन्यासी चन्द्रास्वामी आखिर जालसाजी व धोखेधड़ी के मामले मे गिरफ्तार हो गए हैं। उन्होने सकाशहर इग्लैंड के अपने एक भक्त से ४ वर्ष पूर्व १॥ लाख डालर लगभग १५ लाख रुपया) किसी व्यापार के नाम पर ले लिया था। वह २ वर्ष से उनसे रुपया माग रहा था। परन्तु स्वामी जी द्वारा उसे ठेंगा दिखाने पर व्यापारी सकमाई पाठकने मामला सी०बी०आई को सौंप दिया। सी०बी० आई ने उन्हे दक्षिण दिल्ली साउथ ऐक्सटेंशन के एक नर्सिग होम मे गिरफ्तार कर लिया है जहा वे डा० जैन से अपना इलाज करा रहे बताए जाते हैं नर्सिग होम की जेल गार्ड व पुलिस की निगरानी मे रखा जा रहा है।

भारत की महान् आध्यात्मिक संस्कृति के माथे पर पहले भी विदेशों में जाने वाले कई तथा कथित भारतीय गुरु कलंक के टीके लगाने में संकोच नही करते रहे हैं। रजनीश की घटना अधिक पुरानी नही है। भारत सरकार को ऐसे रोजगारी धर्म गुरुओ को भारत से बाहर जाने की कदापि आज्ञा प्रदान नहीं करनी चाहिए। इससे भारत की विदेशो में न केवल बदनामी होती है। भारत की महान् आध्यात्मिक विरासत के प्रति भी विदेशियो में दुर्भावनाएं उत्पन्न होती हैं।

श्री बाबा दुलारीदास मेला सिंगाजी में वैदिक धर्म प्रचार

आर्यसमाज शिवाजी चौक, खडवा ने दिनाक ८-२-८८ को श्री ठा० शंकरसिंह जी आर्य एवं सुखराम आर्य पुरोहित द्वारा मेले में निराकार और साकार पूजा का महत्व आर्य समाज क्या मानता है, ईश्वर सर्वव्यापक है, वैदिक धर्म की विशेषता आदि विषयो पर ग्रामीण जनता मे प्रचार किया गया। शिक्षाप्रद धार्मिक साहित्य प्रचारार्थ नि शुल्क वितरण किया गया। श्रोताओं पर अच्छा प्रभाव पडा।

मोक्ष मार्ग दर्शन

(पृष्ठ ४ का शेष)

(शौचात्स्वा०) पूर्वोक्त दो प्रकार के शौच करने से भी जब अपना शरीर और उसके सब अवयव बाहर भीतर से मलीन ही रहते हैं, तब औरों के शरीर की भी परीक्षा होती है कि सबके शरीर मल आदि से भरे हुए हैं। इस ज्ञान से वह योगी दूसरे से अपना शरीर मिलाने में घृणा अर्थात् संकोच करके सदा अलग रहता है ॥३३॥

और उसका फल यह है कि (सत्व०) अर्थात् शौच से अन्तःकरण की शुद्धि मन की प्रसन्नता और एकाग्रता, इन्द्रियों का जय तथा आत्मा के देखने अर्थात् जानने की योग्यता प्राप्त होती है ॥३४।

तदनन्तर (सतोषाद०) अर्थात् पूर्वोक्त सतोष से जो सुख मिलता है, वह सबसे उत्तम है। और उसी को मोक्षसुख कहते हैं। ३५।

(कार्येन्द्रिय०) अर्थात् पूर्वोक्त तप से उनके शरीर और इन्द्रियां अशुद्धि के क्षय से दृढ़ होके सदा रोगरहित रहते हैं। ३६॥

तथा (स्वाध्याय०) पूर्वोक्त स्वाध्याय से इष्टदेवता अर्थात् परमात्मा के साथ सम्प्रय म अर्थात् साक्ष होना है। फिर परमेश्वर के अनुग्रह का सहाय, अपने आत्मा की शुद्धि सत्याचरण, पुरुषार्थ और प्रेम के सम्प्रयोग से जीव शीघ्र ही मुक्ति को प्राप्त होता है ॥३७॥

तथा (समाधि०) पूर्वोक्त प्राणिधान से उपासक मनुष्य सुगमता से समाधि को प्राप्त होता है ॥३८॥

दो मुस्लिम लड़कियां बचाई गईं

कानपुर। केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान तथा प्रख्यात महिला उद्धारक श्री देवीदास आर्य के सद प्रयत्नों से दो मुस्लिम लडकियां असामाजिक तत्वो से मुक्त करायी गई।

इनमें एक १८ वर्षीय कु० फिमी उर्फ कमला (ग्वालियर) की रहने वाली है। हिन्दू माता पिता के निधन के बाद उसकी बडी बहन ने एक मुस्लिम से विवाह कर लिया था। वह भी उसके साथ रहती थी। घर में झगडा होने पर कानपुर से भाग आयी थी। तब उसको असामाजिक तत्वो से श्री आर्य ने मुक्त करा कर घर भिजवा दिया। परन्तु घर वालो ने उसे स्वीकार नहीं किया। तब पुन, उसको श्री देवीदास आर्य के पास भेज दिया। श्री आर्य ने उसे महिला आश्रम में भेज दिया।

दूसरी लडकी लखनऊ निवासिनी नाजनी १४ वर्ष की है उसके पगाथ देखकर कार द्वारा अपहरण किया गया था। उसको भी किसी प्रकार श्री आर्य ने मुक्त कराया। गोविन्दनगर पुलिस ने जांच पडताल के बाद एक नि सन्तान हिन्दू महिला के सुपुर्द कर दिया जिसने उसको गोद ले लिया। नाजनी ने भी सहर्ष स्वीकार किया।

कन्या गुरुकुल खरल का १३वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

कन्या गुरुकुल खरल (जींद) का १३वा वार्षिकोत्सव १२,१३,१४ फरवरी ८८ को सम्पन्न हुआ। प्रो० धर्मदेव विद्यार्थी अधिष्ठाता हरियाणा आर्य वीर दल के प्रयासों से प० सत्यदेव भारद्वाज विद्यालंकार ने विद्यालय भवन का शिलान्यास किया और एक लाख रुपये का दान दिया। इसके अतिरिक्त एक लाख ग्यारह हजार रुपए और दानस्वरूप प्राप्त हुए। गुरुकुल की छात्राओ ने लाठी, तलवार एव बन्दूको का प्रदर्शन किया।

—ओमस्वरूपार्य, सहायक मुख्याधिष्ठाता

आर्यसमाज गया बिहार का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज गया बिहार का वार्षिकोत्सव ३१ मार्च से ३ अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। आर्य नेता भूपनारायण शास्त्री श्री रामाज्ञा बैरागी, प० रामानन्द शास्त्री आर्य सत्यदेव शास्त्री आचार्य, डा० पुष्पावती आदि उच्चकोटि के वक्ता व भजनोपदेशक भाग लेंगे।

निर्वाचन

आर्यसमाज रांची के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री शत्रुघ्न लाल गुप्ता मन्त्री श्री दयाराम पोद्दार चुने गए।

आर्य समाज सान्ताक्रुज (पश्चिम) बम्बई का ४३वां वार्षिकोत्सव तथा वेद वेदांग पुरस्कार एवं वेदोपदेशक पुरस्कार समारोह सम्पन्न

आर्य समाज सान्ताक्रुज का ४३ वा वार्षिकोत्सव २० से २६ जनवरी १९८८ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ डा० सोमदेव जी शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। यज्ञ की पूर्णाहुति २६ जनवरी १९८८ को प्रात हुई। वार्षिकोत्सव मे पूजनीय स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती, प० शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी, श्री पन्नालाल जी पीयूष, श्री सतीश मूटानी, श्री सत्यपाल जी पथिक, प० सत्यकाम जी विद्यालंकार, श्री प्रभुदास जी यादव आदि अनेक वक्ताओ के प्रवचन तथा भजनोपदेशो से आर्य जनता लाभान्वित हुई।

वेद वेदाग पुरस्कार समारोह का सयोजन महामन्त्री श्री विमल स्वरूप सूद ने किया। यह समारोह पूजनीय स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुआ। माननीय अध्यक्ष जी का परिचय कैप्टिन देवरत्न जी आर्य ने कराया।

स्मरण रहे वेद वेदाग पुरस्कार से वैदिक विद्वानो के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए कैप्टिन देवरत्न जी आर्य के सुझाव पर ही प्रारम्भ किया गया है। श्री कैप्टिन साहब ने १९८५ मे वैदिक विद्वानो को सम्मानित करने की यह योजना आर्य समाज के समक्ष प्रस्तुत की थी। जिसके फलस्वरूप आर्य समाज सान्ताक्रुज ने ३ लाख रुपए का स्थायी कोष स्थापित किया। इसके ब्याज से वेद वेदाग पुरस्कार तथा वेदोपदेशक पुरस्कार दिया जाता है।

डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती का स्वागत श्री ओंकारनाथ जी आर्य ने किया। आचार्य प्रियव्रत जी विद्यावाचस्पति का जीवन परिचय श्री प० सत्यकाम जी विद्यालकार ने कराया तथा डा० सोमदेव जी शास्त्री ने आचार्य प्रियव्रत जी को भेंट किया जाने वाला अभिनन्दन पत्र पढकर सुनाया। आचार्य प्रियव्रत जी अकस्मात रुग्ण हो जाने के कारण समारोह मे उपस्थित नहीं हो सके। उन्हे वेद वेदाग पुरस्कार की राशि २१०००/- का ड्राफ्ट, रजत ट्राफी, अभिनन्दन पत्र तथा शाल उनके निवास स्थान पर पहुचा दिया जायगा। पण्डित शांतिप्रकाश जी को ११०००) रुपये एव अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया।

—महामन्त्री

आर्य समाज सूखा राहत केन्द्र

गत ३ वर्ष से उडीसा में भयकर अकाल की स्थिति है। भूख से मौतो की सख्या बढती जा रही है। इस दुरावस्था से लोगों की रक्षा करने के लिये उडीसा मे आर्य समाज की तरफ से अकाल सहायता केन्द्र गत नवम्बर ८७ से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तथा अन्य समाजों सहयोग से गुरुकुल आश्रम आमसेना के माध्यम से चलाये जा रहे हैं।

इस केन्द्र का विधिवत् उद्घाटन गुरुकुल आमसेना के महोत्सव के अवसर पर ८ फरवरी को श्री स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता में इस क्षेत्र के सासद श्री जगन्नाथ पटनायक ने किया। श्री महात्मा प्रेमप्रकाश जी पुरी, श्री देव शर्मा जी वानप्रस्थी आदि ने ५०० लोगो को अपने हाथों से अन्न वितरण किया। डी० डी० ओ० कोमना एव बी० डी० ओ० बोडेन को १००० से अधिक नयी साड़िया व धोती उनके क्षेत्र में बाटने के लिए दी गई सासद श्री जगन्नाथ पटनायक के साथ श्री प्र० वीरेन्द्र कुमार जी १०० धोती १०० साडिया बांटकर आये।

इतने विशाल स्तर पर सहायता कार्य देखकर उत्सव मे आये विद्वानो एव आर्य जनता ने अत्यन्त हर्ष एव आश्चर्य प्रकट किया। और श्री स्वामी धर्मानन्द जी को अनेकश धन्यवाद दिया। इस सहायता कार्य पर लगभग ७० हजार रुपया खर्च हो चुका है, प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग नई दिल्ली का इस कार्य में विशेष सहयोग मिल रहा है। इसे आगामी सितम्बर ८८ तक चलाना है। आशा है सभी दानी महानुभाव इस कार्य में मुक्त हस्त से सहयोग करेंगे।

जयदेव आर्य

समस्त आर्य जनता से अपील

समस्त आर्यजनो से अनुरोध है कि आर्यसमाज कोटद्वार के सेवक श्री वेदप्रकाश आर्य का १४ वर्षीय पुत्र श्री हरीश कुमार कद ४ फुट ६ इच लगभग रग गेंहुआ दिनाक १८ ७ १९८७ से कोटद्वार (पौडी गढवाल) से लापता है। जिस किसी सज्जन को मिले कृपया मन्त्री आर्य समाज कोटद्वार को सूचित करें या कोटद्वार पहुचाने की कृपा करे मार्ग व्यय के अतिरिक्त उचित इनाम भी दिया जायेगा।

आनन्दप्रकाश आर्य मन्त्री
आर्य समाज कोटद्वार (पौडी गढवाल)

आवश्यक निवेदन

समाज के अधिकारियो तथा पुस्तक विक्रेताओ से निवेदन है कि सभा से पुस्तकें मगाते समय V P द्वारा भेजने के आदेश के साथ २ सभा के नियमानुसार २५ प्रतिशत अगाऊ धन भेजना भी न भूलें) ताकि पुस्तकें यहां से भेजने मे विलम्ब न हो।

सभा मन्त्री

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक पत्र के ग्राहको से निवेदन है कि वह अपना वार्षिक शुल्क शीघ्र भेजने का कष्ट करें। वार्षिक शुल्क भेजते समय मनिआर्डर कूपन पर अपना पूरा पता साफ २ अक्षरो मे लिखें। ग्राहक सख्या भी अकित करें। कुछ सदस्यो की ग्राहक सख्या नीचे दी जाती है वह कृपया दो वर्ष का वार्षिक, शुल्क सन १९८७ ८८ का ५० रुपये मनि० शीघ्र भिजवा दें।

ग्राहक सख्या —१, ३ ६, १२, ३६, ४१, ६५, ७६, ९१, १००, १३४, १५९, १६७ २००, २११, २१८ २२१ २४३, २४५, २७१, ३२१, ४०८, ५५७, ५५८ ८६७ ७३१ ७९८, ८८५, ८९९, १००८, १०६३, १०८५, १०९४, ११५४ ११७४, ११९६ ११९७, १२२९, १२३२, १२५३, १२३४, १२८३, १३५४, १३६५, १३७२, १४५०, १४६६, १४७२, १४७४, १४९०, १५०२, १५०५, १५१० १६०१, १६३०, १६५३ १६६२, १६६९, १७११, १९१२, १९२२ २००६।

प्रबन्धक सार्वदेशिक पत्र

नेपाल में विश्व हिन्दू सम्मेलन का विराट आयोजन

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामाज्ञा बैरागी ने नेपाल में आर्य समाज के प्रचार प्रसार की सम्भावनाओं पर आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए नेपाल का दौरा किया। इस क्रम में आपने विश्व हिन्दू संघ के अध्यक्ष श्री नागेन्द्र प्रसाद रिजाल (नेपाल के भू० पू० प्रधानमन्त्री) से सम्पर्क भी स्थापित किया। रिजाल सम्प्रति २५ से २८ मार्च ८८ तक तक आयोजित नेपाल में होने वाले विश्व हिन्दू सम्मेलन के व्यापक आयोजन में अपने सहकर्मियों के साथ अहर्निश सेवामें संलग्न हैं। उन्होंने ६० देशों को आमन्त्रित किया है जिसमें ४० देशों के प्रतिनिधियों के आने की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। हजारों प्रतिनिधि सम्मिलित होंगे। सम्मेलन का उद्घाटन २५ मार्च को महाराजाधिराज वीरविक्रमशाह देव के यशस्वी करकमलों द्वारा सम्पन्न होगा। सम्मेलन में वर्तमान अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर गम्भीरता से विचार होगा। संघशक्ति कलीयुगे के अनुसार आज विश्वभर के हिन्दुओं को संगठित होकर अपने अस्तित्व एवं संस्कृति की रक्षा के लिए सन्नद्ध होने की परम आवश्यकता है।

केन्द्रीय आर्य सभा इलाहाबाद में माघ मेला प्रचार

प्रयाग के प्रसिद्ध माघ मेले पर शिविर लगाकर केन्द्रीय आर्य समाज इलाहाबाद द्वारा निरन्तर १७ दिन तक वेद प्रचार धूमधाम से किया गया। निःशुल्क चिकित्सा शिविर द्वारा रोगियों की सेवा भी की गई इस अवसर पर जिला आर्य सम्मेलन का भी आयोजन किया गया।

शोक समाचार

चम्पारण के कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ता श्री शिवशंकर बाबू का असामयिक निधन हो गया है। नेपाल व चम्पारण क्षेत्र की जनता की उन्होंने बहुत सेवाएं की।

...पाडा बरवीघा का उत्सव

आर्यसमाज काजरापाडा बरवीघा का वार्षिकोत्सव २२ जनवरी से २६ जनवरी तक समारोह पूर्वक मनाया गया प० भूपनारायण शास्त्री, स्वामी मोक्षानन्द जी आचार्य वसुमित्र शास्त्री आदि अनेक विद्वानों के प्रवचन व भजनोपदेशकों के प्रेरक भजनोपदेश हुए।

आचार्य कुललोवाकला का वार्षिकोत्सव

आचार्य कुललोवा कला (कन्या महाविद्यालय) का वार्षिकोत्सव ५, ६ मार्च ८८ को समारोह पूर्वक मनाया जाएगा।

चुनाव

—आर्य समाज वारसिया कालोनी बड़ौदा के वार्षिक चुनाव में प्रधान श्री ज्ञानचन्द आर्य व मन्त्री श्री श्रीचन्द सबोरोमला सरसक चुने गए।

—आर्य समाज बालको नगर कोरबा मध्य प्रदेश के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री योगेश्वर कुमार व मन्त्री श्री श्रीपाल आर्य चुने गए।

—आर्य समाज ग्राम टीला शहबाजपुर पो० लोनी जिला गाजियाबाद के वार्षिक चुनाव में प्रधान हरकेशसिंह आर्य व मन्त्री श्री सूरजमल आर्य चुने गए।

—आर्यसमाज नगला मुहीउद्दीनपुर जि० बुलन्दशहर के चुनाव मे प्रधान प्रो० डा० भद्रपालसिंह व मन्त्री श्रीचन्द्रपालसिंह चुने गए।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली से मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए

ओ३म्

राष्ट्र देवो भव

राष्ट्र को देवता मानो।

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् — सारे संसार को आर्य बनाओ

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष : २७४७७१
वर्ष २१ अंक १०] | चैत्र कृ० ३ सं० २०४४ रविवार ६ मार्च १९८८ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

राष्ट्रीय एकता अखंडता के लिए आर्य वीर अग्रणी

राजस्थान आर्यसमाज के गौरवशाली कीर्तिमानों का गढ़

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

अलवर २५ फरवरी। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री छोटूसिंह एडवोकेट के सानिध्य में वैदिक विद्यालय में एक बहुत बड़ा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें २५०० कन्याओं ने वेद पाठ, संध्या व यज्ञ किया। सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री सत्यदेव भारद्वाज ने सपत्नीक इसमें भाग लिया। इसके उपरान्त दयानन्द भवन में एक बड़ा भारी समारोह हुआ जिसमें हजारों लोगों ने भाग लिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा— राजस्थान आर्यसमाज के गौरवशाली कीर्तिमानों का गढ़ रहा है। श्री छोटूसिंह एडवोकेट ने इस विद्यालय की स्थापना करके राजस्थान में आर्यसमाज के कीर्तिमान को बढ़ाया है। भव्य यज्ञशाला हमारी वैदिक परम्पराओं को नयी शक्ति दे रही है। सती प्रथा के विरोध में राजपूताना में प्रथम बार जो ऐतिहासिक रैली हुई है, उसका श्रेय भी श्री छोटूसिंह को जाता है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने नोआखली हत्याकाण्ड की चर्चा करते हुए कहा कि— महात्मा आनन्द स्वामी जी ने जब यह प्रस्ताव किया कि आर्य समाज के आर्य वीरो का जत्था वहां जाना चाहिए तो श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी को सार्वदेशिक सभा की ओर से सेनानायक बनाकर उनके साथ १०१ आर्य वीरो को कलकत्ता भेजने का निर्णय लिया गया था। उस अवसर पर जब मै अलवर आया तो श्री छोटूसिंह द्वारा अलवर में आर्य वीर दल का प्रभावशाली सगठन बना हुआ था। यहां से आर्य वीरों को तैयार करके श्री त्यागी जी के नेतृत्व में नोआखली भेजा गया जहां उन्होंने ४०,००० हजार बगाली हिन्दुओं को जो जबरदस्ती मुसलमान बनाए गए थे, पुनः वैदिक धर्म में वापस लाने का सराहनीय कार्य किया। उन्ही दिनों महात्मा गांधी भी नोआखली में पहुंच चुके थे। जब उनको श्री त्यागी जी के कार्यों का पता चला तो उन्होंने ठक्करबाबा के माध्यम से त्यागी जी को अपने पास बुलाया और कहा कि सुचेता कृपलानी को कुछ मुसलमान गुण्डे जबरदस्ती मुसलमान बनाना चाहते है और उनके अपहरण की चेष्टा की जा रही है। आपको उसकी रक्षा करनी है। त्यागी जी ने महात्मा जी को विश्वास दिलाया कि जब तक हमारा एक भी आर्य वीर जीवित रहेगा, सुचेता पर कोई हाथ नहीं लगा सकेगा। रात्रि के २ बजे जब मुसलमानों ने सुचेता जी के अपहरण की चेष्टा की तो जागरूक आर्य वीर बमों व रिवाल्वरों के साथ मुसलमान गुण्डों पर टूट पडे। जोरदार संघर्ष के पश्चात मुसलमान गुण्डे भाग खड़े हुए। जब महात्मा जी को यह समाचार दिया गया तो उन्होंने प्रसन्नता प्रकट करते हुए आर्य वीरों को धन्यवाद दिया। आज राष्ट्रीय एकता, अखण्डता के लिए आर्य वीरो के उस कीर्तिमयी परम्परा को दोहराने का पुनः वक्त आ गया है।

श्री सत्यदेव भारद्वाज ने कहा वैदिक धर्म ही सर्वोत्तम धर्म है, यही मानव जीवन के विकास का आधार है। विदेशों में आर्य समाज की प्रगति का विस्तार से उन्होंने चर्चा की।

अन्त में श्री छोटूसिंह एडवोकेट ने कार्यक्रम के समापन पर सबका आभार प्रकट किया।

वेदामृत

आजीवन कर्म करते रहें

कुर्वन्नेवेह कर्माणि,
जिजीविषेच्छतं ७ समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति,
न कर्म लिप्यते नरे॥
यजु० ४०।२॥

हिन्दी अर्थ—इस ससार में मनुष्य कर्म करता हुआ ही सौ वर्ष जीने की इच्छा करे। इस प्रकार से तुम्हारी मुक्ति होगी। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से मुक्ति नहीं होती है। निष्काम भाव से किया हुआ कर्म मनुष्य लिप्त नहीं होता है, अर्थात निष्काम भाव से कर्म करने वाला व्यक्ति कर्म बन्धन में नहीं पडता।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िए

सम्पादक—
सच्चिदानन्द शास्त्री

गुरुकुल और संस्कृत विद्यालय राष्ट्रीय जीवनधारा के प्राण है

श्रीमद दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ, गदपुरी (पलवल)के ५१वें वार्षिकोत्सव पर विशाल जन सभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा—गुरुकुल और संस्कृत विद्यालय राष्ट्रीय जीवन धारा के प्राण हैं। यही हमारी संस्कृति और परम्पराओ को पुनर्जीवित रखने का आधार रहे हैं। स्वामी जी ने हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री देवीलाल से अपील की कि उनकी सरकार गुरुकुलो और संस्कृत विद्यालयों को अधिक से अधिक अनुदान देकर इनके कठिन कार्य को सुगम बनाने मे सहायता करे।

स्वामी जी ने भारत सरकार द्वारा नई शिक्षा नीति में संस्कृत की उपेक्षा पर गहरा दु ख प्रकट किया और कहा कि सार्वदेशिक सभा शीघ्र ही अखिल भारतीय स्तर पर संस्कृत प्रेमियों का एक सम्मेलन बुलाने का कार्यक्रम बना रही है। इससे पूर्व १० मार्च को लखनऊ मे संस्कृत विद्वानो की एक गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

हरियाणा के आवास एव डेयरी विकास राज्यमन्त्री श्री सुभाषचन्द्र कल्याण ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा—आर्य समाज केवल एक संस्था नही अपितु एक आंदोलन है जिसने समाज से अन्धविश्वास, अज्ञानता, आडम्बर और छुआ छूत जैसी कुरीतियो को दूर करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने लोगो से अपील की कि वे संकीर्णता, क्षेत्रीयवाद तथा जातिवाद की भावनाओ से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता, अखण्डता तथा प्रगति के लिए मिलकर कार्य करें।

श्री कल्याण ने इस अवसर पर गुरुकुल की सहायतार्थ ११ हजार रुपए देने की भी घोषणा की। समारोह में क्षेत्र के हजारों नर नारियो ने भाग लिया।

वे पुण्य आत्माएँ कहां है

—कर्मनारायण कपूर, दिल्ली—

(१) इतिहास इस बात का साक्षी है कि पूर्वकाल मे अनेकों महात्मा, ज्ञानि, ऋषि, मुनि, तत्ववेत्ता तथा विद्वान हो चुके है। वैदिक विचारधारा के अनुसार मृत्यु उपरान्त आत्मा नवीन देह को प्राप्त करती है। इन दिवंगत आत्माओं के सदृश ससार भर मे तो कोई व्यक्ति दिखाई नहीं देता है। तो स्वभावत प्रश्न उत्पन्न होता है कि वे आत्माऐ कहा है।

(२) वेद, उपनिषदो तथा अन्य धर्म ग्रन्थो में अन्य लोको का उल्लेख निम्न प्रकार हुआ है—

(क) अमर आत्मा सातों लोकों को प्राप्त होता है।
(ऋ० १०। २२२। ३)

(ख) आत्मा समस्त देहों में प्रविष्ट हुआ अपने को स्वच्छ करता हुआ वहा जाता है जहा मुक्तात्माऐ विराजती हैं।
(ऋ० ९। २५। ४)

(ग) भू भुव स्व महः, जन तप सत्यम् सात लोक हैं।
(सुबाला अ० १०। १)

(घ) असुर्य लोक (यजु० ४०। ३)

(ङ) ब्रह्म लोक (छा० उ० ८। ४। १, २ मु० ऊ० २।२।६, ३।२।६)

(च) अमृत लोक (ऋ० ९।१२३।७)

(छ) स्वर्ग लोक (कठ. उ १।२२)

(ज) पुण्य कृत लोक (गीता ६।४१)

(झ) अमल लोक (गीता १४। १४)

(३) अन्य लोको मे मनुष्यादि सृष्टि के सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास मे लिखते हैं

"और जैसे परमेश्वर का यह छोटा सा लोक मनुष्यादि सृष्टि से भरा हुआ है तो क्या ये सब लोक शून्य होगे? परमेश्वर का कोई भी काम निष्प्रयोजन नही होता तो क्या इतने असंख्य लोको में मनुष्यादि सृष्टि न हो तो सफल कभी हो सकता है। इस लिए सर्वत्र मनुष्यादि सृष्टि है"

(४) इस सम्बन्ध मे पाश्चात्य विद्वानों के मत सक्षेप से इस प्रकार है—

(क) ज्योतिर्विदो का मत है कि आकाश गगा में पृथिवी सदृश जीवन धारक ग्रहों की गणना अरबो में होगी, (इन रिच बाम डेनीकन कृत 'दी गोल्ड आफ गाडस' पृ० ६३

डा रेना के अनुसार ईसा से १००० वर्ष पूर्व भारतीयो ने पृथिवी पर जल प्लावन के भय से बचने के लिए शुक्र ग्रह में सुरक्षा प्राप्त करने के हेतु अन्तरिक्ष में उड़ानें आरम्भ की थी। यह मत संस्कृत पुस्तकों पर आधारित है जिसका अनुवाद पजाब विश्वविद्यालय में हुआ था।
(वही पृ० २०७ २०८)

(ख) डा सलेटन "आपालो" नामी अन्तरिक्ष यान का एक चालक था जिसने रूस के अन्तरिक्ष यान 'सोयुज" के साथ १९७५ में अन्तरिक्ष मे समागम किया था। वह कहता है कि उसने अन्तरिक्ष में 'कुछ' देखा था किन्तु दीर्घ काल चिन्तन करने पर भी वह किसी निर्णय पर नहीं पहुच सका। उसने यह भी कहा कि मनुष्य एक तुच्छ सा जीव है अन्तरिक्ष में अनेकों लोक हैं जो मनुष्य से महान हैं"
(लोका अनकी न्यूज (जापान) जून १९८० पृ० ५/६)

(५) 'पृथिवी से लेकर सूर्य लोक तक का मार्ग प्रकाशमय है ही। उसके आगे चन्द्र नामक नक्षत्र का प्रकाश मिलता है। यह चन्द्र वह चन्द्र नही है जो पृथिवी का उपग्रह है। ज्योतिष शास्त्र में सूर्य के आगे ऐसे तारे माने गए हैं। जिनका प्रकाश चन्द्रमा की तरह घटता-बढ़ता है। सूर्य लोक से आगे यही चन्द्र लोक मिलता है। उसके बाद विद्युत लोक है। विद्युत लोक के बाद ब्रह्म लोक है। (सत्यव्रत कृत एकादशोपनिषत पृ० ११०)

(ख) सकाम-कर्मी पितृ लोक मे पहुचते हैं, पितृ-लोक से आकाश को, फिर चन्द्रलोक को। उस लोक में वे अपने पुण्य कर्मों का भोग करते हैं।
[छान्दोग्य उ० ५ १० ४]

(ग) यदि जीव अधिक धर्म करता है और अधर्म न्यून तो उसे उत्तम पञ्चभूतों से युक्त स्वर्ग में सुख प्राप्त होता है। (मनु० १२ २०)

(घ) अन्य ग्रहो में मनुष्यादि जीवों का अस्तित्व तर्क से भी सिद्ध होता है। इस ससार में मनुष्य तथा इतर योनियो का अनुपात एक या सौ, दो सौ के लगभग होगा, यद्यपि पुराणो मे यह अनुपात एक ता इक्कीस निम्न प्रकार दिया हुआ है—

जल-चर ९ लाख पक्षि १० लाख, कृमि ११ लाख, पशु २० लाख, और मनुष्य ४ लाख [ज़ गीता रहस्य लोकमान्य तिलक कृत पृ० १८५], सम्भव है यह अनुपात सृष्टि उत्पत्ति के समय जीवों का हो।

[शेष पृष्ठ १२ पर]

मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए धार्मिक तथा सामाजिक सूक्तियां

आलस्य हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान रिपु।
भर्तृ० नी० ८६

आलस्य मनुष्य के शरीर का सबसे बड़ा शत्रु है।

सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डितः।
पच० अप० ४१

सर्वनाश की स्थिति उत्पन्न होने पर बुद्धिमान व्यक्ति आधा हिस्सा त्याग देने के लिए तैयार हो जाता है।

न कश्चिच्चण्ड कोपानामात्मीयो नाम भूभुजाम्।
होतारमपि जुह्वानं स्पृष्टो दहति पावकः॥
भर्तृ० नी० ५७

क्रोधी राजाओ का अपना कोई नहीं होता, जिस प्रकार हवन में आहुति देने वाले हाथ यदि आग से छू जाए तो आग उसे भी जला देती है।

१९वीं शती के अन्तिम और २०वीं शती के प्रथम चरण का सांस्कृतिक सर्वेक्षण

--प्रो० विजयेन्द्र स्नातक--

"स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली"

भारत में राजनैतिक पुनर्जागरण और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की लहर उन्नसवीं शती के प्रथम चरण में आई और उसका व्यापक प्रभाव इस शताब्दी के अन्तिम चरण में ही लक्षित हुआ। इस शताब्दी के राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक क्षितिज अपने भीतर उन सब परिवर्तनों को समेटे हुए हैं जिनमें जन-जीवन को आंदोलित और उद्वेलित करने की अद्भुत शक्ति निहित होती है। इस शताब्दी में भारत में अनेक मेधावी, प्रतिभाशाली, तेजस्वी, एवं जातीय अस्मिता के आग्रही व्यक्ति उत्पन्न हुए जो अपने राष्ट्रीय उद्धार के कार्यों की छाप भारत के इतिहास में छोड़ गये हैं। इन्हीं तेजस्वी और मेधावी महापुरुषों में स्वामी श्रद्धानन्द की गणना सम्मानपूर्वक की जाती है।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारत के धार्मिक क्षेत्र में जो कार्य किये उनका प्रभाव समाज और राजनीति पर भी पड़ा। सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना के बाद उत्तर भारत में सामाजिक क्रान्ति का ज्वार उमड़ पड़ा और उस प्रवाह में अनेक महानुभाव शामिल हो गये। स्वामी श्रद्धानन्द भी उनमें से एक प्रतिभा-सम्पन्न विद्वान् पुरुष थे जो स्वामी दयानन्द के उपदेशों से प्रभावित होकर अपने परिवार की रूढ़िवादिता को छोड़कर प्रगतिशील विचारों के साथ आर्यसमाज के सदस्य बने थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने आर्यसमाज की विधिवत सदस्यता तो बहुत बाद में स्वीकार की, किन्तु स्वामी दयानन्द के प्रति भक्ति-भावना का उदय उन्हें अपनी युवावस्था में ही हो गया था। शैशवावस्था में इनका नाम मुन्शीराम था। इनके पिता उत्तरप्रदेश में पुलिस की नौकरी में थे और उत्तर प्रदेश के बनारस, बरेली, बदायूं, मथुरा, बुलन्दशहर आदि अनेक नगरों में शहर-कोतवाल आदि उच्च पदों पर रहे थे। बाल मुन्शीराम की स्कूली शिक्षा पिता के स्थान-परिवर्तन के कारण एक जगह पर व्यवस्थित रूप से नहीं हो सकी। पुलिस-विभाग में इनके पिता की अच्छी प्रतिष्ठा थी, इसलिए बालक मुंशीराम को सुख-सुविधाओं का तो कोई अभाव नहीं था, किन्तु शिक्षा के प्रति मुंशीराम के मन में उत्साह नहीं था। पिता के संस्कार सनातनी, पौराणिक परम्परा के थे। मूर्तिपूजा, व्रत, उपवास आदि रूढ़ियों में उनकी आस्था थी। बालक मुंशीराम का परिवेश घर में तो पिता के साथ था, किन्तु घर से बाहर वह अपने को नास्तिक कहने में गर्व का अनुभव करता था। नास्तिकता के साथ खान-पान में भी वह किसी प्रकार के निषेध को नहीं मानता था। मांस-मदिरा आदि सेवन में रुचि होने के कारण वह एक सीमा तक उच्छृंखल स्वभाव का हो गया था। पाठ्य-पुस्तकों में उसकी रुचि नहीं थी। अंग्रेजों के उपन्यास-साहित्य में गहरी रुचि होने से अंग्रेजी भाषा और साहित्य का उसने अच्छा ज्ञान अर्जित कर लिया था। बालक मुन्शीराम ज्यों-ज्यों बड़ा होता गया उसका मानसिक क्षितिज भी विस्तृत होता गया। वह लाला मुंशीराम से महाशय मुंशीराम, महात्मा मुन्शीराम और अन्त में स्वामी श्रद्धानन्द के रूप में समाज में प्रतिष्ठा और सम्मान का भाजन बना।

इसी महापुरुष, महात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की सम्पूर्ण गाथा ग्यारह खण्डों में संकलित "स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली" है। यह ग्रन्थावली स्वामी जी के निर्वाण के बासठ वर्ष बाद प्रकाशित हुई। इसका पहला खण्ड 'कल्याण मार्ग का पथिक' शीर्षक से इस ग्रन्थमाला में है। यह ग्रन्थ सम्वत् १९८१ विक्रमी में ज्ञानमण्डल काशी से प्रकाशित हुआ था। वस्तुतः यह ग्रन्थ स्वामी जी की अपनी आत्मकथा है जो उन्होंने अपने जीवन की पेंतीस वर्षों की घटनाओं के आधार पर स्वयं लिखी थी। इस आत्मकथा में स्वामी जी ने अपने जीवन की उन घटनाओं का बड़े स्पष्ट रूप में वर्णन किया है जिन्हें सामान्यतः मनुष्य अपनी नैतिक दुर्बलता मानकर छिपाया करता है। निस्सन्देह यह एक वास्तविक सच्ची आत्मकथा है जिसमें न तो आत्म-गोपन है और न पर-छिद्रान्वेषण का दोष। ऐसी वस्तुपरक आत्मकथा लिखना बड़े साहस और संयम का काम है। कल्याण-मार्ग का पथिक बनने वाला सच्चा साधक ही ऐसी आत्मकथा लिख सकता है। 'स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली' में इसे प्रथम खण्ड के रूप में रखकर सम्पादक महोदय ने सूझ-बूझ का अच्छा परिचय दिया है। इस आत्मकथा तथा अन्य रचनाओं के आधार पर ग्यारहवें खण्ड में सम्पादक महोदय ने स्वामी जी की जीवनी प्रस्तुत की है। जीवनी को पढ़ने से विदित हुआ कि जो तथ्य आत्मकथा में नहीं थे उनको अन्य स्रोतों से एकत्र कर जीवनी को प्रामाणिक बनाया गया है। यह भी एक उत्तम कोटि की जीवनी है। सम्पादकों का श्रम इसे लिखकर सार्थक हुआ है।

ग्रन्थमाला के द्वितीय खण्ड में स्वामी श्रद्धानन्द जी के समय-समय पर दिये गए प्रवचन और उपदेश संकलित हैं। लाला मुन्शीराम ने सन् १८८९ ई० में जालन्धर से 'सद्धर्म प्रचारक' नाम से एक साप्ताहिक पत्र उर्दू में निकाला था किन्तु कुछ काल बाद उसे हिन्दी में प्रकाशित करना शुरू किया। इस साप्ताहिक पत्र में मुंशीराम जी अपने स्वाध्याय के विषयों का चयन कर लेखरूप में इन्हें प्रकाशित करते थे। वेद, उपनिषद्, मनुस्मृति, गीता आदि विषयों पर जो लेख और भाषण मुंशीराम जी ने लिखे थे वे इस द्वितीय खण्ड में सम्पादित कर प्रकाशित किये गए हैं। इन्हें पढ़कर मुंशीराम जी की स्वाध्याय-प्रियता और विषय-प्रतिपादन-क्षमता का अच्छा परिचय मिलता है। अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त की बड़ी सटीक व्याख्या इस खण्ड में उपलब्ध होती है।

तीसरा खण्ड शोध की दृष्टि से पठनीय है। स्वामी दयानन्दकृत सत्यार्थप्रकाश के मूल संस्करण और परवर्ती संस्करणों में किये गए परिवर्तनों पर गवेषणात्मक दृष्टि से विचार किया गया है। आर्यों के नित्य कर्म, संध्या-वन्दन आदि पर विस्तारपूर्वक दृष्टि-निक्षेप है। ईसाईमत और आर्यसमाज के सिद्धान्तों के परिप्रेक्ष्य में ईसाईधर्म की त्रुटियों और अनर्गल मान्यताओं पर प्रकाश डाला गया है। (क्रमशः)

मध्य प्रदेश सरकार ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों को सम्मान पेंशन हेतु

स्वतन्त्रता सेनानी माना

मध्यप्रदेश के हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मध्यप्रदेश शासन ने अपने ५ फरवरी १९८८ के आदेश क्रमांक ५४१-८८-१ एक-एफ०एफ० द्वारा मध्य प्रदेश स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक सम्मान निधि नियम १९७२ में संशोधन कर लिया है और हैदराबाद आर्यसमाज आंदोलन को स्वीकार कर लिया है। अतः उपरोक्त आंदोलन से सम्बन्धित सत्याग्रहियों को सूचित किया जाता है कि वह विधिवत आवेदन फार्म भरकर सम्मान पेंशन हेतु चीफ सैक्रेटरी, मध्य प्रदेश प्रशासन, भोपाल के पास भेज देवें।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती चैयरमैन
गैरसरकारी समिति

सियाचिन के लिए भारत और पाक में चौथा युद्ध होगा?

वाराणसी १३ फरवरी। भारत और पाकिस्तान के बीच चौथा युद्ध क्या सियाचीन हिम ग्लेशियर को लेकर लड़ा जायेगा? रक्षा विशेषज्ञों के इस आम सवाल के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी खडकवासला के प्रोफेसर सी, डी घस्माना ने सियाचिन के सामरिक महत्व का लेखा-जोखा किया है।

श्री घस्माना के अनुसार सियाचिन विवाद केवल भारत और पाकिस्तान के ही नही बल्कि सोवियत संघ और चीन के सामरिक हितो पर भी दूरगामी असर डालेगा। यही कारण है कि पाकिस्तान चीन के साथ सैनिक तालमेल कर इस हिमनद को हथियाने की भी तोड़ कोशिश कर रहा है, जबकि दूसरी ओर भारत जम्मू-कश्मीर की सुरक्षा के लिये इसे किसी कीमत पर हाथ से निकलने देना नही चाहता।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आयोजित 'भारतीय भूगोलवेत्ता संस्थान' के नए अधिवेशन में श्री घस्माना ने कराकोरम क्षेत्र के सामरिक पर्यावरण पर अपना शोधपत्र पढ़ा।

सियाचीन ग्लेशियर लद्दाख के उत्तर मध्य क्षेत्र का हिस्सा है तथा कराकोरम पर्वत शृंखला में स्थित है। इस ग्लेशियर के पश्चिम मे पाक अधिकृत कश्मीर तथा पूर्व में अक्साई चीन है। उत्तर में यह ग्लेशियर उस भूभाग को छूता है जो पाकिस्तान ने अवैध रूप से चीन को हस्तांतरित कर दिया है।

सियाचीन ग्लेशियर संसार का दूसरा सबसे बड़ा हिमनद है। यह ७४ किलोमीटर लम्बा है तथा नबरा नदी से शुरू होकर उत्तर मे 'इन्दिरा कोल' तक गया है।

इस ग्लेशियर की चौड़ाई दो से लेकर आठ किलोमीटर तक है तथा यह दोनो ओर से बर्फीली चोटियों से घिरा हुआ है। इन चोटियो की ऊंचाई २८ हजार फुट तक है। स्वयं ग्लेशियर की ऊंचाई कही १२ हजार तो कही १८ हजार फुट तक है।

हालांकि दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र मे स्थित सियाचिन ग्लेशियर आर्थिक रूप से एकदम अनुपयोगी है तथा वहां की सामान्य आबोहवा में आदमी का जिंदा रह पाना असम्भव है। फिर भी पाकिस्तान १९८४ से इस क्षेत्र में बहुत दिलचस्पी ले रहा है। इस दिलचस्पी का कारण यह है कि भारतीय उपमहाद्वीप की छत पर स्थित यह ग्लेशियर जम्मू कश्मीर की सुरक्षा की कुंजी सिद्ध हो रहा है।

प्रो० घस्माना के अनुसार पाकिस्तान सियाचिन ग्लेशियर के साथ सीधे जुड़ना चाहता है, ताकि भारत के साथ सीधे जुड़ना चाहता है, ताकि भारत के साथ भविष्य मे किसी युद्ध के दौरान चीन के साथ बेहतर सैनिक तालमेल किया जा सके।

पाकिस्तान का मंसूबा 'इन्दिरा कोल' को जीतने का भी है, ताकि कारगिल, लेह तथा कराकोरम दर्रा के बीच मुख्य सम्पर्क सूत्र 'पामिक सोसेर कराकोरम राजमार्ग' को अवरुद्ध किया जा सके। ऐसा होने पर पाकिस्तान काश्मीर घाटी और लद्दाख के बीच के प्रमुख सम्पर्क मार्ग को छिन्न भिन्न भी कर सकता है।

सामरिक दृष्टि से सियाचिन चीन के लिए कम महत्व का नही है। सियाचिन पर आवागमन की सुविधा उपलब्ध होने पर अक्साई चीन और चीन के उत्तर भाग की दूरी कम हो जाएगी। इसके अलावा चीन पाक अधिकृत कश्मीर मे भी स्वच्छन्द रूप से प्रवेश कर सकेगा तथा भारतीय उपमहाद्वीप मे नियन्त्रण की स्थिति में पहुंच जायगा।

प्रो० घस्माना के अनुसार सियाचिन हथिया लेने की स्थिति में चीन वाया पाकिस्तान अरब देशों तक पहुंच सकता है। साथ ही वह इस क्षेत्र में सोवियत प्रभाव को भी काबू में कर सकता है।

चीन और सोवियत संघ के बीच सम्बन्धो मे बिगाड़ के बाद चीन के सिंकियांग सीमा क्षेत्र मे बड़ी संख्या में सोवियत सेना तैनात है। चीनी रणनीति के अनुसार पाक अधिकृत कश्मीर और अक्साई चीन के बीच सियाचिन होकर मार्ग बनने पर सोवियत प्रभाव को कम किया जा सकेगा।

चीन के सिंकियांग क्षेत्र मे बड़ी संख्या मे मुस्लिम धर्मावलम्बी रहते हैं तथा वे सांस्कृतिक, भाषाई एवं प्रजातीय दृष्टि से स्वयं को सोवियत मध्य एशिया के लोगों के निकट पाते हैं वे लोग चीन सोवियत सीमा के पार जाते रहते हैं। सिंकियांग के लोगों को अपने साथ जोड़े रखने के लिए चीन के अनेक रणनीतियां अपनाई हैं।

सैनिक महत्व का तिब्बत सिंकियांग मार्ग सियाचिन के पूर्व में उस भूभाग से गुजरता है जिस पर चीन ने १९६२ के पूर्व कब्जा कर लिया था। इसी तरह इस क्षेत्र से चीन का एक दूसरा राजमार्ग है जो खंजेराब दर्रे से होकर गुजरता है। यह राजमार्ग भारत की कश्मीर घाटी एवं लद्दाख के क्षेत्र के लिए फंदे के समान है। यदि चीन सियाचिन हासिल कर लेता है तो वह नुबराघाटी के रास्ते भारत के ऊपर कुठाराघात कर सकने की स्थिति में पहुंच जाएगा।

यही कारण है कि भारत सियाचिन ग्लेशियर और नुबराघाटी की रक्षा के लिए कृतसंकल्प है।

भारत और पाकिस्तान के बीच सियाचिन को लेकर छिड़े विवाद का मूल कारण यह है कि इस क्षेत्र मे सीमा रेखांकन का काम नही हो पाया है। १९४८ में भारत पाक युद्ध के बाद ७६५ किलोमीटर सीमा पार का रेखांकन किया गया था जिसे युद्ध विराम रेखा कहा जाता है। लेकिन यह रेखा एन, जेनजी हुक्म बिन्दु पर आकर खत्म हो जाती है, इस बिन्दु के आगे की सीमा रेखा के बारे में कराची समझौते और शिमला समझौते मे कोई चर्चा नही है।

सियाचीन क्षेत्र मे रेखांकन का काम नहीं हुआ है। इसी का फायदा उठाकर पाकिस्तान इसे तथाकथित आजाद कश्मीर का उत्तरी हिस्सा बताता है। पाकिस्तानी नक्शों मे आजकल नुबराघाटी और सियाचिन को पाक इलाके के रूप में दर्शाया जा रहा है।

पाकिस्तान अपने दावे के पक्ष मे पश्चिमी प्रचार माध्यमों का भी उपयोग कर रहा है। इसका कारण यह है कि कराकोरम पर्वत शृंखला में अनेक ऐसी पर्वत चोटियां हैं जिन पर विजय अभियान के लिए विदेशी पर्वतारोही दल जाते रहते हैं। पाकिस्तान इन दलों को अनुमति पत्र जारी करता रहा है। विदेशी नक्शों में भी इन क्षेत्रों को पाकिस्तानी इलाका ही दर्शाया जाता है।

इस क्षेत्र मे सीमा रेखांकन न हो पाने का एक कारण यह था कि कराकोरम क्षेत्र में भारत व पाकिस्तान के बीच कभी युद्ध नहीं लड़ा गया। दूसरी बात यह थी कि यह इलाका इतना दुर्गम व आर्थिक दृष्टि से अनुपयोगी और जलवायु के लिहाज से इतना खराब है कि इस पर किसी ने ज्यादा ध्यान नही दिया।

सियाचिन में तापमान शून्य के नीचे रहता है। गर्मियो में यह शून्य से १० से २० डिग्री सेल्सियस नीचे सर्दियों मे शून्य से ४० से ५० डिग्री सेल्सियस नीचे रहता है।

इस क्षेत्र मे तैनात भारतीय सैनिकों को शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से बहुत प्रतिकूल स्थिति का सामना करना पड़ता है। समुद्र तल से अधिक ऊंचाई के कारण यहां वायु का दबाव कम हो जाता है। तथा हवा में आक्सीजन की मात्रा घट जाती है। मैदानी समाज से दूर इस क्षेत्र में सैनिकों को अकेलेपन की पीड़ा भी झेलनी पड़ती है।

धर्म संस्कृति एवं राष्ट्र रक्षार्थ हैदराबाद में आर्य समाज का संघर्ष

लेखक—श्री लक्ष्मणार्य 'विद्यावाचस्पति' उप-प्रधान आर्य समाज वरंगल आन्ध्र

उन्नीसवी शताब्दी ने जिन महान् आत्माओं को जन्म दिया है उनमें महर्षि दयानन्द को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उसी महान् आत्मा के कारण भारत में धार्मिक पुनर्जीवन का प्रारम्भ हुआ। महर्षि दयानन्द ने जिस सार्वभौम संस्था की नींव डाली थी। वह आर्यसमाज के नाम से एकजी चित तथा शक्तिशाली संगठन के रूप में भारत और भारत के बाहर के अनेक देशों में अपनी सत्ता तथा प्रभाव जमा चुकी है। मानव मात्र से स्नेह तथा उसकी सेवा आर्य-समाज का अन्तिम उद्देश्य है तथा संसार को सन्मार्ग पर चलाना उसका सर्वोत्तम लक्ष्य है।

हैदराबाद में आर्यसमाजी आन्दोलन महर्षि दयानन्द के उपरान्त उनके लाखों अनुयायी बड़े उत्साह और लगन के साथ उनके कार्य को आगे बढ़ाते आर्यसमाज की स्थापना करके अविद्या और अन्ध विश्वास को समाप्त करने तथा विद्या एवं शिक्षा यथार्थ प्रसार करके ईश्वरोपासना, दया; प्रयत्नशील बनाये। यद्यपि भारत के दो राज्यों में सबसे बड़ा होने के कारण हैदराबाद का स्थान प्रमुख था, तथापि अविद्या अन्ध-विश्वास तथा अविवेकता ने वहां भी अपनी सत्ता जमा रखी थी, जिनके उन्मूलन के लिए आवश्यकता थी हैदराबाद में आर्य समाज की स्थापना की गयी।

हैदराबाद राज्य में आर्यसमाज के आन्दोलन के अल्प रूपरेखा मात्र रखूं गा हैदराबाद मे आर्यसमाज के आन्दोलन को दो कालो में विभक्त किया जाता है। प्रथम काल १९३१ से १९४० तक का है। द्वितीय काल १९४१ से १९४८ तक का है। १९३१ से १९४० तक का काल हैदराबाद राज्य के आर्यसमाज के आन्दोलन को निजामशाही के अन्याय, अत्याचार का सामना कर धर्म एवं संस्कृति की रक्षा करनी पड़ी। १९४१ से १९४८ तक का द्वितीय काल मे आर्यसमाज को एक क्रान्ति आंदोलन का रूप लेकर हैदराबाद की स्वतन्त्रा के संघर्ष में प्रमुख भाग लेकर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। तथा हैदराबाद राज्य को स्वतन्त्र भारत का अविच्छिन्न भाग बना दिया।

१९३१ से १९४० तक सभी धार्मिक कार्यों पर कानूनी प्रतिबन्ध लगा दिये गये। कांग्रेस अवैध घोषित कर दी गयी, जिसका कार्यक्रम शान्तिपूर्वक, अहिंसा नीति पर चल रहा था। केवल सदस्यो की भर्ती की जा रही थी। किन्तु शासन इसको भी सहन न कर सका, अन्त मे आर्य नेता प० नरेन्द्र जी के अथक प्रयत्नों से कांग्रेस ने कुछ काम करना आरम्भ किया था। १९३३ में निजाम की सरकार ने हवन कुण्ड बनाने, उत्सवों, जलूसों, नगर कीर्तनों, महान् पुरुषों के जन्म दिवस अथवा मृत्यु दिवस की सभाओं संस्कार अथवा ऐतिहासिक भाषणों धार्मिक ग्रन्थों तथा ओ३म्ध्वज फहराने आदि पर प्रतिबन्ध लगाये। तो इनके विरुद्ध आर्य समाजी जनता ने डटकर मुकाबला किया। राज्य के विभिन्न स्थानों पर अनेक मुसलमान गुण्डों ने आर्य समाजियो तथा हिन्दू जनता पर अत्याचार, दुकानें लूटना, आदि से दंगा करना शुरू किये। हैदराबाद के आर्य प० विनायकराव जी के निवास स्थान पर, हैदराबाद नगर तथा राज्य के विभिन्न स्थानों पर सरकार की सहायता से धर्मान्ध गुण्डों ने धावा बोल दिया। अनेक मुख्य २ व्यक्तियों को (अनेक) कोई न कोई अभियोग लगा कर बन्दी बनाए। इस प्रकार आर्यों के विरुद्ध पुलिस और हुकूमत के निरन्तर बढ़ते हुए अन्याय तथा अत्याचार से प्रेरित होकर राज्य भर के विभिन्न प्रांतो मे धर्मान्ध गुण्डो ने रक्तपात, लूटमार सतीत्वनष्ट करना जारी की। प० विनायकराव तथा नरेन्द्र जी के नेतृत्व मे स्थित आर्य प्रतिनिधि सभा ने इन अत्याचारों तथा अपने उचित अधिकारों की ओर निरन्तर सरकार का ध्यान आकर्षित करती रही। किन्तु उसका कोई परिणाम नहीं निकला। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली ने भी बहुत कुछ प्रयत्न किया किन्तु अत्याचार, अन्याय तो होते ही गये। फलस्वरूप आर्य सत्याग्रह प्रारम्भ किया गया। इस सत्याग्रह का सर्व प्रथम नेता महात्मा नारायण स्वामी जी बने। इस प्रकार भारत के विभिन्न प्रान्तों से आर्यसमाजी कार्यकर्ता सत्याग्रह करके जेलों मे गए। इस प्रकार हजारों आर्य वीर सत्याग्रह करके जेलों में बन्दी बनाये गये। अनेक स्थानों पर सत्याग्रहियों पर पुलिस की उपस्थिति में ही मुसलमान गुण्डो ने आक्रमण किये और उन्हें घायल किया। श्री रामचन्द्रराव नामक सत्याग्रही केवल 'वन्देमातरम्' के उच्चारण मात्र पर दो दर्जन बेतो की सजा दी गयी। सत्याग्रही ने हर बेंत पर वन्देमातरम् कहा तो उसे बेहोश होने तक निर्दयता से पीटा गया। इन अत्याचारों का यह परिणाम हुआ कि सत्याग्रह की समाप्ति तक अनेक आर्य समाजियों का स्वर्गवास होगया। अन्त मे शहीदों के खून ने रंग दिखाया तो हैदराबाद की सरकार को झुकना पड़ा। यहां उल्लेखनीय है कि आर्य सत्याग्रह को राजनीतिक दृष्टि से इतना महत्व प्राप्त हुआ कि इंगलैंड की विधान सभा में भी इसके बारे मे प्रश्न उठे। फलस्वरूप ७ अगस्त १९३९ को आर्य समाज की सभी मांगों को सरकार ने स्वीकार किया और सत्याग्रह बन्द करने की घोषणा की गयी। इस प्रकार इस आन्दोलन से धर्म और संस्कृति की रक्षा हुई है।

१९४१ से १९४८ में निजाम सरकार का अत्याचार अपनी सीमा सेबाहर हो गया। आर्य समाज को प्रत्येक अग्नि परीक्षा से होकर उस अन्तिम द्वन्द्व के लिए तैयार होना पड़ा जो हैदराबाद में जनतन्त्र तथा स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए हुआ। धर्मान्ध मुसलमान गुण्डो तथा पुलिसों द्वारा गोलियां चलाई गयी थी, दुकानें व मकान जलाये गये और वरंगल मे भी १९४७ मे हिन्दुओं के घरो, दुकानो को लूट लिया गया तो आर्य वीर दल के नायक श्री मधुसूदन राव जी के नेतृत्व मे आर्य वीर ने इनका सामना किया। इस अवसर पर वरंगल नगर मे डा० नारायण रेड्डी, मुनलय्या जी, और तीन आर्य वीरो की हत्या की गई। इस प्रकार हैदराबाद सरकार तथा मुसलमान गुण्डो द्वारा अत्याचार होते रहे थे आर्य वीर उनका मुकाबला करते ही रहे। जब १५ अगस्त १९४७ को वर्षों की दासता के बाद भारत स्वतन्त्र हुआ तो समस्त देश में आशाओं और अभिलाषाओं पर एक प्रकार झलक पड़ा, पर हैदराबाद राज्य पर कुछ काल तक अन्धकार वहां की जनता पर छा गई क्योंकि इस राज्य को भारत से सर्वथा अलग रखने और फासिस्टी सिद्धान्तों पर एक स्वतन्त्र सार्वभौम सत्ता प्राप्त राज्य का स्वरूप देने की योजना बनायी गयी। जिससे नवाब मीर उस्मानअली खां ने १५ अगस्त १९४७ को हैदराबाद आजादी की घोषणा कर दी। इससे हैदराबाद राज्य एक इस्लामी राज्य और उस्मानी खां को अपनी स्वतन्त्र राजनीतिक सत्ता का प्रतीक समझती थी। वास्तव में ८५ प्रतिशत हिन्दू १५ प्रतिशत मुसलमान थे। इसके कारण यहां की जनता निजाम सरकार की इस नीति के सर्वथा विपरीत थी। इस नीति को राज्य वासियो के लिये घातक समझा गया। जनता मे आजाद हैदराबाद के नारों से अशान्ति उत्पन्न हो गयी। बहुसंख्यक जनता के मत को कुचल कर निजाम सरकार ने जहां अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हाथ पांव मारना शुरू किये, वहां मजलिस इत्तेहादुलमुसलमीन ने तीन चार लाख रजाकार गुण्डों की भर्ती कर उन्हें सैनिक शिक्षा देकर चारों ओर लूटमार और आतंक फैला दिया। यह काल आर्यसमाज तथा अन्य सभी देश भक्त संगठनों के लिए अत्यन्त कठिन समय था क्योंकि निजाम सरकार ने राज्य मे समस्त स्वाधीनता तथा लोकतन्त्र प्रिय शक्तियों को पद्दलित करने का भीषण चक्र चला रही थी। आर्यसमाज ने आजाद हैदराबाद नामक हुकूमत के आन्दोलन को डटकर विरोध किया और उनके विरुद्ध युद्ध करने मे अपनी पूर्ण शक्ति लगा दी। आर्यसमाज के नेतागण सर्वश्री विनायकरावजी, नरेन्द्रजी, वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी आदि ने अत्यन्त स्पष्ट शब्दों मे घोषित किया कि हैदराबाद स्वतन्त्र भारत का एक अंग बनकर समृद्ध बन सकता है। इस हैदराबाद सरकार ने आर्य समाजो के अधिकारियों को गिरफ्तार करके जेलों में भेज दिया। और रजाकारो को पूर्ण छुट्टी दे दी कि हैदराबाद की आजादी को जो कोई विरोध करेगा उसे गोलियो से उड़ा दिया जाए। इसके लिये कासिमरिजवी के नेतृत्व में रजाकारों की सेना खड़ी कर दी गई थी। राज्य के भोली-भाली जनता को खत्म करने का प्लान भी बनाया गया था। इसके

[शेष पृष्ठ ९ पर]

वेदों के राजनीतिक सिद्धांत पर विचार विमर्श (२)

डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, अमेठी

आचार्य जी अपने ग्रन्थ के प्रथम खण्ड मे अग्नि सूक्त से सम्बन्धित अनेक मन्त्रो को उद्धृत कर मन्त्रगत 'विश्पतिम्' 'चर्षणीनाम्', 'चर्षणि' इत्यादि शब्दो के आधार पर अग्नि शब्द का सम्राट अर्थ करते हुए यह लिखते हैं—"इन स्थलों मे अग्नि का अर्थ साधारण आग कभी सगत नही हो सकता' (पृ० ८०)। जबकि इन्ही सूक्तों मे अनेक मन्त्रो का अर्थ करते हुए ऋषि ने 'अग्नि' का अर्थ सूर्य किया है। विश्पतिम्, चर्षणीनाम् और चर्षणि का अर्थ भी क्रमश 'प्रजाया पालकम् सूर्यम्' 'ऐश्वर्येण प्रकाश-मानानाम्', 'धायिता आदित्य' किया है। यही स्थिति 'सोम वायु औषधि और अहि' आदि शब्दों की है। आचार्य जी ने इन शब्दो का अर्थ क्रमश स्नातक, मनुष्य, शिक्षा-सस्था और बल निरोधक पदार्थ' किया है और अन्त मे लिख दिया है कि मेरे द्वारा उद्धृत इन स्थलो में आये इन शब्दों का अर्थ इसके भिन्न नहीं हो सकता है। अन्य अर्थ दूसरे स्थलो में प्रकरणानुसार होंगे। इसी शृ खला में 'वेदो के राजनीतिक सिद्धांत' के द्वितीय भाग में 'राष्ट्र मे नहरें खुदवाई जावें' अनुच्छेद ५, पृ० २८, २९ पर ११ मन्त्र आचार्य जी ने प्रस्तुत किए हैं। उनमें से प्रथम तीन मन्त्रो ऋ० १, ३२, १, २, ११ का अर्थ करते हुए मन्त्रगत अहि शब्द का अर्थ 'जिसा भूमि आदि जल के प्रति निरोधक पदार्थ' करते हैं। यह तो ठीक है किन्तु सर्वाधिक आपत्तिजनक बात यह है कि इसी स्थल पर 'अहि शब्द का अर्थ' शीर्षक के अन्तर्गत पृ० ३० पर आचार्य जी लिखते हैं—'आम तौर से इसका (अहि का) अर्थ मेघ किया जाता है। कई जगह इसका अर्थ मेघ होता भी है। पर प्रस्तुत मन्त्रो मे मेघ अर्थ नही लिया जा सकता। ऐसे प्रसगो मे प्रचलित टीकाकार अहि और पर्वत शब्दों का अर्थ प्राय मेघ ही किया करते हैं।

स्पष्ट है कि आचार्य जी ऋग्वेद के १ ३२, २, ११ मन्त्रो मे अहि शब्द का मेघ अर्थ गलत समझते हैं। इतना ही नही अहि का मेघ अर्थ क्यो गलत है इसका कारण बताते हुए आचार्य जी लिखते हैं—'यदि पर्वत का मेघ अर्थ हो लें तो भला मेघ मे रहने वाला यह मेघ कौन होगा ?" जबकि ऋषि दयानन्द ने इन मन्त्रों में आये अहि शब्द का मेघ अर्थ किया है। मेघ में रहने वाला मेघ की असम्भावनापरक आपत्ति का उत्तर ऋषि दयानन्द ने यह दिया है—"फिर वही मेघ आकाश में से नीचे गिर के पर्वत अर्थात् मेघ मण्डल का पुन आश्रय लेता है" (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका)।

इस सम्बन्ध मे आचार्य जी की आपत्ति का युक्ति युक्त और तर्कपूर्ण परिहार डा० प्रज्ञादेवी जी ने ऋषि दयानन्द के ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के आलोक में अपने प्रथम निबन्ध में किया है। आचार्या प्रज्ञा जी के द्वारा की गई समीक्षा के इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर आचार्य जी अपने स्पष्टीकरण (द्र० "वेदो के अधिदैविक अर्थ उपेक्षणीय नहीं है) मे सर्वथा मौन साध लिए हैं।

कोई आर्य विद्वान वेदों में रूढि शब्द है ऐसा नही मानता। आचार्य जी मन्त्रार्थ की यौगिक पद्धति को नि सन्देह मानते हैं। तभी तो राजनीति प्रभृति विविध ज्ञान-विज्ञान परक वेदो का अर्थ हो सकेगा जैसा कि उन्होंने अपने स्पष्टीकरण वाले लेख में भी लिखा' है। इसी प्रकार अपनी पुस्तक के प्रथम खण्ड के (पृ० ७) (विषय प्रवेश) पर लिखा है—"इस प्रकार वेद में रूढ़िवाद का स्थान नही रहने देना चाहिए।" इसके बावजूद "वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त" मे आचार्य जी द्वारा वेदों में रूढ़िशब्द भी होते हैं ऐसा लिखा गया है। उदाहरणार्थ—(१) "जब वेद और लोक में विद्युत का अर्थ बिजली होता है तो "विद्युत" मे भी उसका अर्थ बिजली ही क्यों न करें ? दयानन्द के अनुयायी वेद में यौगिक अर्थ वहा करते हैं जहां वैसा किये बिना वेद निरर्थक और विज्ञान विरुद्ध बात कहता हुआ प्रतीत हो। जहा रूढ़ अर्थ मान मानकर भी वेद शिक्षाप्रद वैज्ञानिक अर्थ देता हो वहा हम यौगिक वाद का सहारा नही लेते हैं।" (खण्ड २, पृ० १६७)

(२) "दयानन्द के अनुयायी यौगिकवाद का वही आश्रय लेते हैं जहा वैसा करने से अर्थ मे चमत्कार उत्पन्न होता है और वह अधिक शिक्षाप्रद बनता हो। हम सर्वत्र यो ही बिना हेतु के यौगिकवाद का सहारा नही लेते हैं। प्रस्तुत मरुत सम्बन्धी मन्त्रो में नर का सुप्रसिद्ध और रूढ अर्थ मनुष्य करने पर अर्थों मे चमत्कार उत्पन्न होता है और वह राष्ट्रोपयोगी व्यावहारिक शिक्षा देने वाले बन जाते हैं। अत यहा हमें नर का रूढ़ अर्थ मनुष्य ही करना चाहिए।" (खण्ड ३, पृ० १७)

हम यह नहीं समझ सके कि विद्युत और नर: का बिजली और मनुष्य अर्थ करने मे क्या आपत्ति हुई वेदों मे रूढ़ि शब्द और रूढ़िवाद परक अर्थ मानने की आवश्यकता पड़ गई। आचार्य जी के उपर्युक्त दो उद्धरण उनके ग्रन्थ की भूमिका में लिखी गई स्वय उनकी मान्यताओ के भी विरुद्ध है ऋषि दयानन्द वेद के एक शब्द को भी रूढ़ि नहीं मानते। विद्युत शब्द का बिजली अर्थ उसके यौगिक अर्थ (द्युत-द्योतने-चमकने वाली) के आधार पर ही किया जाता है। नर शब्द निम्न धातुओ से बनता है—(१) नॄ नये (ले जाना) क्र्यादि गण, परस्मैपदी नृणाति-पाणिनि कृत धातुपाठ। (२) नॄ नये (स्वादि, नरयति) द्र० क्षीर-तरगिणी पृ० ११६, द्वितीयावृत्ति, रा०क०ट्र०, वि० स० २०४२)।

(३) नॄ नये विनये (स्वादि, नरति, नरयति नयतो भवति नर:, नृ० नरक, नर्ता – चत्वारो विनमू) द्र-काशकृत्स्न धातुव्याख्यानम् पृ० १०२, भारतीय प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान अजमेर, वि० स० २०२२, अत नर का अर्थ नेता, ले चलने वाला और विनीत पुरुष हो सकता है। साथ ही नर का मनुष्य अर्थ करना भी रूढ़िवाद या कदार्थ नही है। लौकिक साहित्य मे भी शक्र, इन्द्र, और पुरन्दर शब्द एक अर्थ में प्रयुक्त होते हुए भी इनके प्रवृत्ति के निमित्त भेद होते हैं। जैसा कि आचार्य धनिक न धनञय कृत दशरूपक की अवलोक टीका में लिखा है—' एकस्मिन्नर्थे प्रवर्तमानस्य शब्दमयस्य इन्द्र पुरन्दर शक्र इतिवत् प्रवृत्तिनिमित्तभेदो दर्शित।" इसी प्रकार नर, मनुष्य मानव मर्त्य आदि शब्द एक अर्थ में प्रवृत्त होते हुए भी इनके निमित्त भेद तो होंगे ही। फिर वैदिक शब्द तो सभी आचार्यों के मत में यौगिक (धातुज) हैं फिर इन्हें (एकाध शब्द को भी) रूढि कैसे माना जा सकता है ? जैसा कि निरुक्त शास्त्र के प्रवक्ता यास्क आदि और व्याकरण शास्त्र के प्रवक्ता शाकटायन आदि का मत है —

(शेष पृष्ठ ७ पर)

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का

स्वामी दयानन्द विषयक संकीर्ण एवं पूर्वाग्रहग्रस्त दृष्टिकोण

—डा० भवानीलाल भारतीय

इस समय मेरे समक्ष 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ एक सही चित्र' शीर्षक ६ पृष्ठों का मुद्रित प्रचार पत्र है। इसका मुद्रण आनन्द आर्ट प्रिंटर्स निमाय हाउस, अजमेर से हुआ है। इसमें संघ पर लगाये जाने वाले कतिपय आक्षेपों का निराकरण संघीय दृष्टिकोण से किया गया है, जिसके बारे में हमें कुछ नहीं कहना। संघ की आर्यसमाज और उसके प्रवर्तक ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध में जो विरक्ति, जिसे हम दुर्भावना भी कहे तो अनुचित नहीं होगा, सर्वविदित है। संघ वाले दयानन्द और आर्यसमाज के गौरव और वर्चस्व के प्रति अत्यन्त असहिष्णु है, इसे मूरिश. प्रमाणित किया जा सकता है। उपर्युक्त चर्चित पत्रक में विवेकानन्द, अरविन्द और तिलक को श्रेष्ठ राष्ट्र निर्माता के रूप में उल्लिखित किया गया है, जब कि संघ की दृष्टि में मानो दयानन्द राष्ट्र निर्माता कहलाने के योग्य ही नहीं है। इससे भी अधिक आपत्तिजनक बात यह कही गई है—यहां जातपात छुआ छूत आदि सामाजिक बुराइयों को उखाड़ फेंकने वाले समाज सुधारकों मे राजाराममोहनराय, मदनमोहन मालवीय और महात्मा गांधी को तो गिनाया है परन्तु यहां भी समाज सुधारकों के शिरोमणि स्वामी दयानन्द का नाम जान बूझकर हटाया गया है।

राममोहनराय को समाजसुधारक मानने मे हमें कोई विपत्ति नही है किन्तु अस्पृश्यता और जन्मगत जातिप्रथा का विरोध करने वालो मे दयानन्द ही शीर्षस्थ है। राममोहनराय द्वारा प्रवर्तित ब्राह्मसमाज के प्रारम्भकालीन अधिवेशनों में केवल बांग्लादेशीय ब्राह्मण ही पर्दे के पीछे बैठकर वेद पाठ करते थे। दयानन्द ने वेदाधिकार के द्वार स्त्रियो और शूद्रो सबके लिए खोले। अस्पृश्यता निवारण के लिए मदनमोहन मालवीय को श्रेय देना सत्य का अपलाप करना है। मालवीय जी कट्टर सनातनी थे। उनके नेतृत्व में हिन्दू सभा के अधिवेशनों मे दलित वर्ग के वक्ताओं को अपनी बात कहने का भी अधिकार नहीं दिया गया, जिसकी शिकायत स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने लेखों और संस्मरणों में की है। (द्रष्टव्य श्रद्धानन्द ग्रन्थावली का ११ वा चौथवी खण्ड] जहां तक अस्पृश्यता का प्रश्न है मालवीय जी तो भयंकर किस्म की छूतछात मानते थे। १९२४ मे वे जब गोलमेज सम्मेलन मे भाग लेने दिल्ली गये तो अपने साथ पीने के लिए गंगाजल और हाथ धोने के लिए संगम की मिट्टी भी साथ ले गये। इस प्रकार की संकीर्ण दृष्टि वाले लोग तो संघ के विचार मे समाज सुधारक हैं और दयानन्द को इस श्रेणी में रखने में उन्हे संकोच है। महात्मा गांधी के जाति प्रथा विषयक विचार चाहे कितने ही उदार थे, किन्तु वे वर्ण-व्यवस्था को जन्मना ही मानते थे। (द्रष्टव्य-महर्षि दयानन्द और महर्षि दयानन्द और महात्मागांधी ले० धर्मदेव विद्यावाचस्पति)

अतः मेरी समस्त आर्य जगत से पुरजोर अपील है कि वह अपनी पूरी शक्ति से संघ की इस दयानन्द विरोधी नीति का खुल कर विरोध करे। अन्यथा हिन्दुत्व की बर्बर विचारधारा के पोषक ये लोग दयानन्द की क्रान्तिकारी विचारधारा के प्रति अपना प्रत्यक्ष या परोक्ष विरोधभाव प्रकट करने से कभी विरत नहीं होंगे।

राष्ट्रीय एकता और वेद विषयक संगोष्ठी

सागर विश्वविद्यालय मे गत १९ जनवरी को राष्ट्रीय एकता मे संस्कृत साहित्य का योगदान विषय पर आयोजित संगोष्ठी के वैदिक सत्र मे डा० भवानीलाल भारतीय ने अपना शोधपत्र प्रस्तुत करते हुए पृथ्वी सूक्त के आधार पर वेदोक्त राष्ट्रवाद का निरूपण किया।

—डा० लक्ष्मीनारायण दुबे
प्राध्यापक हिन्दी विभाग
डा०-हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म० प्र०)

वेदो के राजनैतिक सिद्धान्त

(पृष्ठ ६ का शेष)

'नामानि सर्वाण्याख्यातजानि इति शाकटायनो नैरुक्तसमयश्च।

(निरुक्त १, १३)

नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोकम्।"

(महाभाष्यम् ३, १३)

ऋग्वेद १०, १२५, वागाम्भृणी सूक्त के सम्बन्ध मे आचार्य जी लिखते हैं — "हम प्रचलित वागाम्भृणी को सूक्त का देवता मानने के लिये बाधित नहीं हैं। क्योंकि यह पद सूक्त मे नहीं आता है। हमारी सम्मति मे सूक्त का देवता "राष्ट्री संगमनी" होना चाहिए।······पर "वागम्भृणी" का अर्थ इस सूक्त मे (परमेश्वर) नहीं लिया जा सकता। क्योंकि वागाम्भृणी का अर्थ निर्णय करने मे हमें उसके सूक्तगत वर्णन को भी ध्यान मे रखना होगा। इसलिए वागम्भृणी ऐसी वाणी होनी चाहिए जिसमे "राष्ट्री संगमनी" पदो का अर्थ भी संगम हो सके। अर्थात् वह ऐसी वाणी होनी चाहिए जो "राज्य सम्बन्धी इकट्ठा होने की जगह मे" बोली जाती हो। परमात्मा की वाणी मे यह बात संगत नहीं हो सकती। अत हमे वागाम्भृणी का अर्थ बहुतों की वाणी (सत्यागम महत्त्व में) ऐसा करना होगा। बहुतो की वाणी राष्ट्र के लोगो की वाणी ही हो सकती है।" (खण्ड १, पृ० २११, २२२)

यह सम्पूर्ण सन्दर्भ ही विचारणीय है। किसी मन्त्र या सूक्त का देवता होने के लिए उस देवता वाचक शब्द का मन्त्रो मे उल्लेख होना आवश्यक नही है। जैसे ऋग्वेद १०, १९०, के अघमर्षण सूक्त मे अघमर्षण या भाववृत्त शब्द नहीं है पुनरपि इस सूक्त को अघमर्षण सूक्त कहा जाता है और इस सूक्त का देवता भाववृत्त है।

"राष्ट्री और संगमनी शब्द का अर्थ क्रमशः तात्पर्य के आधार पर (राज् ष्ट्रन् ङीप्) 'प्रकाशित करने वाली' और (सम गम्लृ ल्युट्-ङीप्) 'मेल कराने वाली' भी हो सकता है। कुछ आचार्यों ने राष्ट्री का अर्थ 'विश्व सम्राज्ञी' अर्थात् परमात्मा और संगमनी का अर्थ (ऐश्वर्यों को, लोको को) 'प्राप्त कराने वाली' किया है। (द्र० यजुर्वेद भाष्यकार स्व० प० जयदेव विद्यालंकार का ऋग्वेद भाष्य भाग ७ पृ० ५१८, प्रथमावृत्ति) इस प्रकार वागाम्भृणी का अर्थ उस महान प्रभु की वाणी (गुणगत और परिमाण गत महत्त्व मे) हो सकता है। डा० रामनाथ वेदालंकार ने भी इस मन्त्र का परमेश्वर परक अर्थ किया है (द्र० वेद मंजरी, पृ० २३७, प्रथम संस्करण) क्या इन विद्वानो के परमेश्वर अर्थ गलत हैं?

वेदार्थ में ऊहा और तर्क अनन्य सहायक होते हैं, इसमें कोई सन्देह नही है। किन्तु पूर्वकृत आचार्यों द्वारा किये गये आर्ष और वैदिक प्रमाणो को सर्वथा अनदेखा करके केवल तर्काधारित अर्थ प्रामाणिक नही हो सकता ऐसी स्थिति मे अर्थ बहुधा असंगत भी हो जाता है। यथा—आचार्य जी ने प्रस्तुत ग्रन्थ के दूसरे खण्ड के पृ० १७१ पर "आवा रथोऽविथवा ······ (ऋ० १०, १, ११८, १) तथा "त्रिवन्धुरेण त्रिवृता" (ऋ० १, ११८, २) मन्त्रो को उद्धृत किया है। प्रथम मन्त्र मे "त्रिवन्धुर" का अर्थ करते हुए आचार्य जी लिखते हैं—"त्रिवन्धुर. शब्द का क्या भाव है यह चिन्तनीय है। ऊपर उड़ते हुए विमान के तीन प्रधान अंग दो पंख और एक धड़ ही दिखते हैं। सम्भवत इस विचार से उसे त्रिवन्धुर कहा गया है।"

(खण्ड २ पृ० १७७-१७८)

यहां इस मन्त्र मे 'त्रिवन्धुर' शब्द का अर्थ रथ में सारथी के बैठने का तीन स्थान है, जैसा कि महाभारत में लिखा है—

अन्ये छत्रं वरूथं च बन्धुरं च तथा परे।
गन्धर्वा बहुसाहस्रास्तिलशो व्यधमन् रथम्॥

अर्थ - हजारो संख्या वाले गन्धर्वों ने रथ के टुकड़े-टुकड़े उड़ा दिये किन्ही ने छत्र तोड़ दिया, किन्ही ने वरूथ छत्र के ऊपर के भाग को तोड़ दिया, अन्यों ने बन्धुर सारथी के बैठने के स्थान को नष्ट कर दिया।

इस प्रकार वेदो के राजनीतिक सिद्धान्त के थोड़े से स्थलो पर इस लेख मे मैंने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। आशा है आप भी और अन्य आर्य वैदिक विद्वान इस पर गम्भीरता से विचार करेंगे।

लाहौर में पंजाब विधान सभा की स्वर्णजयन्ती

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा—

मेरी पाकिस्तान यात्रा

पजाब मे १९३७ से पहिले विधान परिषद थी। १९३५ के कानून के आधीन प्रान्तीय विधान सभायें बनीं। पजाब की विधान सभा १९३७ में बनी। पश्चिमी पजाब की सरकार और विधान सभा ने २ फरवरी १९८८ को अपनी स्वर्ण जयन्ती मनाई। इस अवसर पर उन्होने पुराने विधायकों को तो बुलाया ही, पाकिस्तान की दूसरी विधान सभाओ के अधिकारियो तथा मुख्यमन्त्रियों को भी बुलाया। इगलैण्ड, तुर्की, मलेशिया, ईरान, मौरिशस तथा भारत के भी विधायको को बुलाया। मैं १९४६ मे पजाब विधान सभा का सदस्य बन गया था, इसलिये मैं भी उस समारोह मे सम्मिलित हुआ। इस समारोह में "विधान सभाओ की कार्य विधि तथा परम्परायें" 'विकासशील देशो मे लोकतन्त्र का स्थायित्व'' तथा "विधायको के कर्त्तव्य" आदि विषयों पर व्याख्यान हुए। सभी देशो में आये हुए प्रतिनिधि बोले तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति जियाउलहक प्रधानमन्त्री जुनेजो, पजाब तथा अन्य प्रदेशो के मुख्यमन्त्री, विधान सभा अध्यक्ष तथा विरोधी दल के नेता आदि भी बोले। भारत के प्रतिनिधि के रूप मे मैं भी बोला। प्रतिनिधियो को आपस में मिलने और परिचय प्राप्त करने के लिये मुख्यमन्त्री, राज्यपाल तथा अध्यक्ष की ओर से भोज दिये गये और लाहौर के मेयर की ओर से भी एक स्वागत समारोह का आयोजन किया गया।

चार पाच दिनो मे पाकिस्तान के राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री मुख्यमन्त्रियो, विधान सभा अध्यक्षों तथा विधायको से मिलने का अवसर तो मिला ही, विदेशी प्रतिनिधियो तथा कुछ अन्य नागरिको से भी मिलने और विचार विनिमय करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। समय निकालकर कुछ जगह घूमकर पुराने और नये लाहौर को भी देखा। रेडियो, टेलीवीजन, भी प्रश्नो द्वारा कुछ विषयो पर मेरी प्रतिक्रियाए जानने के लिये मिले।

उर्दू दैनिक जग के प्रतिनिधि ने भी मुलाकात की। प्रेस रेडियो तथा टेलीवीजन के इलावा अलग से भी मिलने वालों ने पुराने और नये लाहौर मे कितना अन्तर दिखाई दिया, भारत साईचीन पर क्यो अडा हुआ है, परमाणु पनडुब्बी आदि नये हथियार लेकर भारत पाकिस्तान को चुनौती क्यो दे रहा है, पजाब की क्या स्थिति है, कश्मीर के प्रश्न का हल क्यो नहीं किया जा रहा, स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर जो विचार लोकतन्त्र के सम्बन्ध में व्यक्त किये गये उन पर क्या प्रतिक्रिया है आदि प्रश्न किये जाते रहे।

पहिले दिन जिया उलहक ने और अगले दिन जुनेजो ने लोकतन्त्र मे अपनी गहरी निष्ठा दिखाते हुए कहा कि पाकिस्तान मे वे लोकतन्त्र को इतना स्थायित्व प्रदान कर देना चाहते हैं कि उसे कभी कोई हिला न सके और फिर कभी भी तानाशाही पाकिस्तान मे न आ सके। परन्तु वह लोकतन्त्र इस्लामी लोकतन्त्र होगा, जो जो कुरान और हदीस पर आधारित होगा, पश्चिम का दिया हुआ लोकतन्त्र पाकिस्तान के लिये उपयुक्त नहीं है। उन्होने कहा कि पाकिस्तान का मतलब है 'लाइला हल ल्ला'' उन्होने अपनी बात के समर्थन में जिन्नाह के वक्तव्यो का हवाला भी दिया। मेरे साथ बैठे सरदार शौकतहयात खा ने कहा कि यह जिन्नाह का हवाला गलत दे रहे हैं, जिन्नाह तो पाकिस्तान में धर्मनिपेक्ष राज्य के पक्षधर थे। उन्होने इसे एक राजनैतिक स्टट कहा। मैंने अलग से कुछ मन्त्रियो और विधायको से भी पूछा उन्होंने भी शौकतहयात खा की बात का समर्थन किया। तुर्की के प्रतिनिधियो से भी मेरी बात हुई और उन्होने बताया कि उनके देश में ९९ प्रतिशत मुसलमान है, फिर भी वहा पर धर्म निपेक्ष राज्य है उसमें इस्लाम और मजहब का कोई दखल नहीं। मौलिक अधिकारों का हनन और लोकतन्त्र की जानी मानी प्रक्रियाओ और मान्यताओं की खुली अवहेलनाओं को लोगो के गले उतारने के लिये ही वे कुरान और हदीस का सहारा लेना चाहते हैं और अपनी मनमानी पर मोहर लगवाना चाहते हैं। परन्तु ऐसा लगा कि उनकी बहुत सी बातें लोगो के गले के नहीं उतर रही। मैंने भी दूरदर्शन की मुलाकात में यही कहा कि इस्लाम का मुलम्मा चढी हुई जमहूरियत का क्या स्वरूप होगा यह कोई नहीं जान सका।

परमाणु पनडुब्बियो की खरीद के बारे मे जग के प्रतिनिधि तथा अन्य लोगो ने प्रश्न पूछे। मैंने स्पष्ट कहा कि हथियारो की दौड तो अमरीका से मिलकर पाकिस्तान ने ही आरम्भ की है। भारत तो विकासशील देशो में इस दौड को हानिकारक मानता है और विकास में बडी भारी रुकावट। पाकिस्तान एक ओर युद्ध न करने की बात करता है और दूसरी ओर नये से नये हैलीकोप्टर, लडाकू हवाई जहाज, रडार, पनडुब्बियो, प्रक्षेपास्त्र आदि लेने में लगा हुआ है। भारत तो मित्रता और सहयोग का प्रस्ताव रख चुका है। भारत तो निरस्त्रीकरण और मित्रता मे विश्वास रखता है। पाकिस्तान का भी इसी मे भला है। साईचीन के बारे मे भी प्रश्न किये गये कि भारत वहा क्यो लड रहा है, उस पर मैंने कहा कि वह इलाका तो भारत का है, पाकिस्तान छेडछाड करता है तो जवाब तो देना ही होगा। कश्मीर के प्रश्न के हल के लिये भी सवाल किए गए। मैंने कहा कि सभी मामलो का हल शिमला समझौते के अनुसार आपस मे बातचीत करके हो सकता है, बयान बाजी से नही हो सकता। पजाब समस्या के बारे में भी सवाल पूछे। मैंने कहा कि सिखो को कोई शिकायत नही हो सकती, उनसे कोई वर्ग अधिक खुशहाल है और न ही किसी जगह उनका प्रतिनिधित्व कम है बल्कि बहुत अधिक है। विदेशी शक्तियो और भारत विरोधी तत्वो ने आतकवाद को जन्म दिया है। यह पूछने पर कि क्या पाकिस्तान को भी दोषी मानते हैं, मैंने कहा यह बात तो आम है कि पाकिस्तान आतकवादियो को प्रशिक्षण और साधन दे रहा है।

(क्रमश)

हैदराबाद में संघर्ष

[पृष्ठ ८ का शेष]

लिए एक पिरेट सिडनी काटन नामक अंग्रेज के द्वारा पाकिस्तानी तथा गोवा के रास्ते हथियारों की खेपें लाया करता था। यह जहाज कभी हैदराबाद, बीदर और वरंगल में हथियारों की पेटियां उतार कर लौट जाया करता था तो सर्वश्री विनायकराव, नरेन्द्र जी वन्देमातरम् जी, आदि के आदेश से कुछ आर्य वीर अपने वेशभूषा रूप बदल कर गुप्तचर बन कर भूमिगत कार्य गुप्त रूप में जा कर हवाई अड्डे के निकट साधारण व्यक्तियों के वेश में जाकर रातों में बराबर जागकर प्राण हथेली पर रख कर इस जहाज का नम्बर, पेटियों के नम्बर हथियारों की संख्या क्वालिटी तथा उन्हें विभिन्न स्थानों तक पहुंचाने वाले ट्रकों के नम्बर ठीक-ठीक ज्ञात करते थे। जब सारी जनता निद्रादेवी की गोद मे विश्राम करती थी तब ये रात भर जागकर जान हथेली में रख कर ये भूमिगत देश भक्त उसकी टोह लेते थे और भारत सरकार के द्वारा नियुक्त प्रतिनिधि हैदराबाद मे कोठी में रहने वाले के० एम० मुन्शी तक ठीक-ठीक समाचार पहुंचाने मे सफल होते थे।

इतना ही नही बल्कि अपनी जान पर खेलकर और कुछ देशभक्त, निजाम की आर्डिनेंस फैक्टरी में प्रवेशकर वहा की सारी गुप्त जानकारी लेकर जनता को सचेत करते थे। उस समय सरकारी निजाम हैंडग्रेनेड तथा जापानी टाइप थ्री नाट थ्री की जानकारी अपेक्षित थी। इस प्रकार भूमिगत आर्य वीर रजाकार गुण्डो के प्लान को जान कर जनता पर होने वाले अत्याचारों से जनता एव स्त्रियो के मान की रक्षा करते थे। साथ साथ वन्देमातरम्, विनायकराव आदि नेता गण के आदेशों से भूमिगत इन वीरो ने मिलटरी वर्दी पहन कर निजामी सेना के कुछ को साथ लिये निषिद्ध क्षेत्रों मे सेना निर्धारित कोडवर्ड, शब्द का प्रयोग कर प्रवेश पा लिया और कुछ घण्टे इधर-उधर घूमकर सारी जानकारी लेकर, इनके अत्याचारों से साधारण जनता की रक्षा की।

इन सब अत्याचारों के मुख्य मीर उस्मानअली खा को समझ कर वरंगल नगर निवासी श्री नारायणराव पवार श्री मीर उस्मानअली खा पर बम्ब फेंके थे। और गिरफ्तार किया जाकर जेलकी अन्धेरी कोठरी मे रखे गये। निजाम सरकार की सेना, रजाकार गुण्डे आदि स्थान स्थान पर अत्याचार, लूटमार, सतीत्व नष्ट आदि दुष्कार्य करते रहते तो भूमिगत आर्य वीरों ने उन सभी का रक्षा में प्रशंसनीय कार्य किये। जब निजाम गुप्त रूप से स्वतन्त्र भारत की सरकार से युद्ध करने की अन्दर ही अन्दर जो जोरदार तैयारिया कर रहा था उसका सारा भेदभाव इन भूमिगत आर्य वीरो ने जाना और के एम मुन्शी को इन जानकारियों को भेज दिया करते थे। दूसरी ओर भूमिगत कार्यकर्ता कुछ साधारण जनता एव सतीत्व नष्ट की रक्षा में जान हथेली मे लेकर लगे रहते थे। १९४७ के जून, जुलाई मे निजाम राज्य के विभिन्न स्थानो पर रजाकारों एव पुलिसो ने मिलकर हिन्दुओं पर फायरिंग कर दी तो अनेक हिन्दू जनता की हत्या हुई जिनमें वरंगल के पांच व्यक्ति भी शिकार बने। रजाकारों द्वारा ग्रामो को उजाड़ दिया गया। बेटियां भस्म की गई। स्त्रियों के शरीर से आभूषण उतरवा लिये गये और उनके सतीत्व पर हाथ डाला गया। ऐसी भीषण स्थिति पर आर्यसमाजी वीरों ने निजाम सरकार से सविनय प्रार्थना की कि हैदराबाद तुरन्त ही स्वतन्त्र भारत में विलीन हो गया। अबतक हैदराबाद के नियन्ता मीर उस्मानअली खा भारत मे विलीन होने की अपनी सम्मति प्रकट न की तबतक आर्य वीर अन्य देशभक्त वीरों ने पुलिस की आख बचाकर हिन्दू जनता और स्त्रियों के मान रक्षा के लिए अपने वेशभूषा को बदल कर भूमिगत कार्य जान हथेली में रखकर किया है। उसका वर्णन करना कठिन ही है। जेल में रहने वालों की अपेक्षा में बाहर भूमिगत रहकर कार्य करने वाले आर्य वीर बेहतर ही समझ गए। इस प्रकार आर्य समाज के कार्यकर्ता एव आर्य वीरो ने रजाकार गुण्डो एव निजाम सरकार के अत्याचारो का विरोध किया और साथ-साथ इसका विवरण वन्देमातरम् तथा विनायकराव आदि के द्वारा श्री के एम मुन्शी को भेज देते थे, तो के. मुन्शी इन विवरणों को भारत के उप-प्रधान मन्त्री सरदार पटेलको पहुचा देते थे। फलस्वरूप भारत सरकार ने निजाम राज्य पर १४ सितम्बर १९४८ को सैनिक कार्यवाही करना शुरूकी तो भूमिगत कार्य करनेवाले आर्य वीर भारत की सेना की बहुत कुछ सहायता की जिससे तीन ही दिन मे भारतीय भारतीय सेना ने आजाद हैदराबाद पर विजय पाई। इसके श्रेय भूमिगत आर्योंको मिलना चाहिए। इसके कारण मेजर जनरल जे एन चौधरी को मिलटरी गवर्नर पद पर नियुक्त किया गया।

जब भारत के उपप्रधानमन्त्री सरदार पटेल ने हैदराबाद राज्य मे आगमन के अवसर पर कहा था कि "यदि पहले आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने भूमिगत रहकर भूमिका न निभाते तो भारत की सेना को तीन ही दिन में हैदराबाद पर अधिकार करना सम्भव न था। इस प्रकार भूमिगत आर्यों का महत्व है। इस महत्व को भारत सरकार के गृहमन्त्री को अपनी दृष्टि मे रखनी चाहिए और उन्हें पेंशन देने मे पीछे कभी भी न हटना चाहिए। मानवता की दृष्टि से सोच विचारकर उन्हे भी पेंशन दिलाने के लिए श्री, जो (प्रकाशित) जारी करें ताकि उन्हे पेंशन एव अन्य सुविधाए भी सरलता से प्राप्त हो सकें।

आर्य वीर दल के प्रान्तीय अधिकारी एवं आर्य समाजों के अधिकारी ध्यान दें

समस्त भारत के आर्य वीर दल के प्रान्तीय अधिकारियो से निवेदन है कि मार्च मास से जुलाई मास के मध्य मे लगने वाले आर्य वीर दल शिविरो की तिथियों आदि का निर्धारण कर केन्द्र से स्वीकृति प्राप्त करें जिससे योग्य शिक्षकों का समुचित प्रबन्ध करना सम्भव हो सके। बिना केन्द्र की स्वीकृति से लगाये गये शिविरो को पजीकृत नही स्वीकारा जायेगा।

बालदिवाकर हंस, प्रधान सचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

शुद्धि समाचार

दिनांक ७ २ ८८ को ग्राम रजपुरी में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में यज्ञ हवन किया गया, यज्ञ हवन के पश्चात ईसाई परिवार लोगों ने अपनी स्वइच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया। ये संस्कार उपमन्यु शास्त्री के द्वारा किया गया, और स्वामी देवानन्द सरस्वती हिन्दू शुद्धि संरक्षण समिति हरयाणा के महामन्त्री के प्रयत्नों द्वारा किया गया इस संस्कार में निम्न व्यक्तियों ने सहयोग दिया, श्री देशराज आर्य उपदेशक हिन्दू शुद्धि संरक्षण समिति हरयाणा, भगवदेव वानप्रस्थी, करणदेव सोमनाथराम, सेवक कार श्री ग्राम रजपुरी।

शुद्ध हुए व्यक्तियों की सूची

क्रमांक	नाम	पिता का नाम	आयु	संख्या
१	चमन	करमा	३५	५
२	नानसाय	मन्छरीरम	४५	४
३	मिमो	हरिराम	५५	३
४	छोतीबाई	बल्देव	३६	१
५	बोहरा	पचका	३५	५
६	किशोराम	रहनुराम	४५	१
७	धरमेव	मिरम	२५	४
८	सुमिया	पति पतसाय	१६	३
९	जुबनी	करमा	४१	३
१०	मुनिबाई	किरसी	३६	४
११	भडकाराम	मिशोराम	३५	४
१२	सोमारी	सोमोराम	१८	३
१३	तन्दी बाई	सुखु	४२	६
१४	मनारो	रुपसाय	३५	१
१५	मनियारो	दनसाय	३६	५
१६	ममरा	गहनु	७०	६
१७	सागर	सुखा	२५	४
१८	ममाराम	ममरा	२७	४
१९	जुगुल	बोधा	२५	३
२०	ठुमरी	सुखाराम	५०	१
२१	बुलाराम	टिहुल	८०	१
२२	रणवीर	ठुहना	२५	५
२३	नयोराम	बन्धन	६०	५
२४	सनीराम	चमरु	६०	१
२५	रमको	बगम	४०	१
२५	सिहाली	सोनसाय	३५	४
२७	कुमनी	रमा	६५	१
३०	सनियारो	पिकाराम	३५	१
२९	सनियारो	बलराम	६५	१
३०	सुखाराम	ममरा	३५	५
३१	माघो	मठमा	२५	५
३२	बीरसिंह	मठमा	४०	६
३३	जुगन	मानठोरी	२५	३
३४	सुरोपाई	बीराराम	३५	१
३५	तितरो	बघठो	४१	१
३६	सनियारो	सोहन	५५	३
३७	जुगुल	मन्छरी	४१	५
३८	समनिया	बिरसाय	२५	१
३९	मनिबाई	रोपोसिंह	४७	२
४०	बिहारो	सुखुराम	४६	१
४१	कलसा	रघु	४१	१
४२	कुन्दोबाई	पति सुमि	४०	३
४३	फुल्दरी	पति कादरा	३५	१
४४	हरिसाय	मयो	३५	४
४५	केन्दाराम	रघुराय	४५	३
४६	फिरो	पति कुन्दक	२५	५
४७	अमृतलाल	केशोराम	१९	३

ग्राम हुमीबन्दली में शुद्धि कार्यक्रम का दृश्य।

सत्संग के अन्तिम दिन यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर प्रधान श्री गुलजारीलाल जी सपत्नीक मु० यजमान योगराज अग्रवाल एवं वेदप्रकाश अग्रवाल के साथ।
स्त्री आर्यसमाज की प्रधाना माता श्री ...वाली जी महात्मा आर्य भिक्षुजी के बाईं ओर।

गुरुकुल आमसेना के अन्न सहायता केन्द्र में सासद जगन्नाथ पटनायक अन्न वितरण करतेहुए।

५७ परिवारों के २२१ ईसाई वैदिक धर्म में

८ फरवरी को गुरुकुल आमसेना के महोत्सव पर १५ परिवारो के ४१ ईसाइयो तथा १० फरवरी को ग्राम हुंमी बन्दली [सम्बलपुर] मे ४१ परिवार को १८० ईसाईयो ने पुन वैदिक धर्म मे प्रवेश किया। इस अवसर पर श्री महात्मा प्रेम प्रकाश जी पूरी, श्री स्वामी ओमानन्दजी हरिद्वार श्री वानप्रस्थी देव वर्मा जी दयानन्द मठ दीनानगर आदि अनेक साधू सन्यासी इन्हे आशीर्वादो देने के लिए उपस्थित थे। सस्कार समारोह अत्यन्त उल्लासमय वातावरण में श्री प० विधि केशन शास्त्री ने कराया। ग्राम हुंमी बन्दली मे कुछ ईसाई प्रचारको ने बहुत बाधा डालने की चेष्टा की परन्तु ग्राम वासियो के प्रयत्न से उनका षडयन्त्र असफल हो गया। ध्यान रहे इस समारोह का आयोजन ठीक चच के सामने उत्साही ग्राम वासियों ने किया था।

ध्यान रहे गत कई वर्ष से शुद्धि का यह आन्दोलन श्री स्वामी धर्मानन्दजी सरस्वती प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रयत्न और पुरुषार्थ से चल रहा है। इस महत कार्य मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी उपमन्त्री पृथ्वीराज जी शास्त्री श्री महात्मा प्रेम प्रकाश जी पूर्व आदि का पूर्ण आशीर्वाद एव सहयोग मिल रहा है।

महर्षि दयानन्द बोध रात्रि एवं शिवरात्रि

भानूसाली प्रधान आर्यसमाज की अध्यक्षता में दयानन्द बोधरात्रि एव शिवरात्रि पर्व समारोह मनाया गया। साय ५ बजे से महिला आर्यसमाज की ओर से पव पद्धति अनुसार बृहद् यज्ञ प्रार्थना के पश्चात् पर्व कि विशेषता पर सर्वप्रथम श्रीमान प्रो० डा० निकम ने अपने विचार रखे। आर्य वीर पेसूराम चन्दवानी ने कविता पाठ परमानन्द आर्य के भाषण के पश्चात् श्री लक्ष्मी नारायण जो भागवमन्त्री आयसमाज श्री जगदम्बा प्रसाद जी मिश्र एव समाज के पुरोहित सुखराम आय सिद्धान्त शास्त्री के सारगर्भित ओजस्वी भाषण हुए शान्ति पाठ के बाद कायक्रम समाप्त हुआ।

लक्ष्मीनारायण भागव मन्त्री
आर्यसमाज खडवा

आदर्श एवं समाज के लिये अनुकरणीय विवाह

दिनाक १८ २ ८८ को स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर शिवाजी चौक खण्डवा मे कु० मजुलता एव बृजमोहन अग्रवाल का अन्तर्जातीय विवाह सस्कार सम्पन्न हुआ। विशेष बात यह है कि वर एव वधु के पिता नही है, परन्तु कन्या की ओर से पिता का दायित्व निभाया श्री रमेश कुमार दुबे एव वर की ओर से श्री प्रहलादसिंह जी चौहान ने उत्तरदायित्व का निर्वाह किया।

दोनो ने ही तन मन धन से कार्य सम्पन्न कराया। कार्यक्रम मे मोहल्ले के लगभग दो सौ महिलाओ एव पुरुषो ने सहयोग देकर अनूठा कार्य किया।

—मन्त्री

पंजी० नं० डी० (सी०) १८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (६ ३ १९८८) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licens No U 93 Post in D P S O on 3 3-1988

आर्य समाज अजमेर में ऋषि बोधोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

स्थानीय आर्य समाज भवन में केसरगंज मे प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी 'महर्षि दयानन्द बोधोत्सव दयानन्द शोधपीठ के चेयरमैन तथा सुप्रसिद्ध विद्वान डा० बाबूराम जी शास्त्री की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रो० दत्तात्रेय आर्य, डा० वेद शर्मा वेदालंकार तथा आचार्य गोविन्दसिंह एव स्वामी धर्मानन्द जी ने महर्षि दयानन्द द्वारा समा राष्ट्र और धर्म के लिये किये गये महान कार्यों पर अपने विचार व्यक्त क हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धा सुमन अर्पित किये। सघन तथा विद्य सब के बा बालिकाओ ने मधुर गीत तथा भजन प्रस्तुत किये। प्रारम्भ में आचार्य गोविन्दसिंह जी के संयोजन में बृहद पर्वयज्ञ सम्पन्न हुआ। कार्यवाही का संचालन तथा आभार प्रदर्शन आर्य समाज के मन्त्री रासासिंह ने किया।

शुभ विवाह सम्पन्न

—श्री रामदुलारे शाक्य नि० छोटी कुरावली मैनपुरी के सुपुत्र चि० अवधेश कुमार शाक्य का वैदिक विवाह सस्कार कुमारी कमलेश सुपुत्री श्री रामलाल शाक्य नि० बढेपुर मानपुर हरी, मैनपुरी के साथ पंडित श्री वृषभानदेव आर्य के पौरोहित्य मे वैदिक पद्धति द्वारा दिनांक १३ २ ८८ को सम्पन्न हुआ।

—श्री शंकरराम जी आर्य पथिक प्रधान आर्य समाज विष्णुगढ के सुपुत्र चि० प्रमोद कुमार का शुभ तिलकोत्सव दिनांक १६ फरवरी ८८ को सम्पन्न हुआ चूंकि इस तिथि पर बोध दिवस होने के कारण बोधोत्सव भी आर्य समाज विष्णुगढ की ओर से प्रधान के निवास पर मनाया गया। जिसमें आर्य समाज विष्णुगढ के समस्त सभासदो ने भाग लिया।

आर्य समाज मढ़पा का उत्सव

गोंडा जिले के मढ़पा ग्राम मे आर्य समाज का वार्षिकोत्सव बड़ धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी ब्रह्मानन्द श्री सत्यव्रत न वप्रस्थ, श्रीमती राजबाला देवेन्द्र सत्यार्थी एव दयानन्द के प्रवचन हुए।

[पृष्ठ २ का शेष]

मनुष्य कृत पाप और पुण्य का अनुपात मनुष्य और इतरयोनियो के अनु... नहीं रखता। अत कर्मफल तथा पुनर्जन्म की ... पृथिवी एक बृहत कारागार है जिसमें ... पाप पुण्य का फल भोगने के लिए आती रहती हैं। इस न्याय से यह अवगत हो जाता है कि इस संसार की जीवात्माएं भी अपने पुण्य कर्मों के कारण पुण्य कृत लोको में जाया करती हैं।

अत यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पूर्वकाल के महात्माओं, ऋषियों मुनियों, तत्वदर्शियो तथा विद्वानो की आत्माएं पुण्य लोकों मे अपना जीवन व्यतीत कर रही होंगी। इनमें से कई आत्माएं निर्मल और पूर्ण पवित्र होकर ब्रह्मलोक मे ब्रह्मानन्द का आस्वादन कर रही होंगी।

आर्य हवन सामग्री

फोन ५८६५४५

वैदिक विद्वानो द्वारा प्रशंसित रोग नाशक पौष्टिक और सुगन्धित हवन सामग्री से ही नित्य यज्ञ करें।

१—स्पेशल चन्दन गुग्गल मेवायुक्त आर्य हवन सामग्री का भाव २१) किलो
२—सुगन्धित आर्य हवन सामग्री का भाव १०) किलो
३—सामान्य आर्य हवन सामग्री का भाव ८) किलो है।

आर्डर आज ही भेजें

अपना पूरा पता रेलवे स्टेशन देवनागरी हिन्दी भाषा में लिखें।

वेदपथिक धर्मवीर आर्य भण्डाधारी

अध्यक्ष आर्य हवन सामग्री निर्माणशाला १८५७ अहाता ठाकुरदास सराय रुहेला नई दिल्ली ५

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली से मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष : २७४७७१
वर्ष २३ अंक ११] | चैत्र कृ० १० सं० २०४४ रविवार १३ मार्च १९८८ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

सरकार द्वारा प्रकाशित महर्षि दयानन्द के जीवन पर आधारित पुस्तक की बिक्री पर रोक

नई दिल्ली २ मार्च १९८८

भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय द्वारा प्रकाशित "महर्षि दयानन्द की जीवनी" के कुछ आपत्तिजनक अंशों पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने विरोध प्रकट करते हुए सरकार का इस ओर ध्यान आकृष्ट किया था। पुस्तक में एक स्थल पर स्वामी जी को तत्कालीन जयपुर के महाराजा के अधीनस्थ व्यक्ति के रूप में दिखाया गया है और एक अन्य स्थल पर उन्हें किन्हीं विशेष परिस्थितियों में, गोमांस भक्षण का समर्थक भी कहा गया है। दोनों ही प्रसंग एकदम गलत और भ्रामक हैं तथा महर्षि दयानन्द के उज्ज्वल चरित्र को धूमिल करने वाले हैं।

इस विषय में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती तथा श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव दिनांक १९ फरवरी १९८८ को सूचना एवं प्रसारण मन्त्री श्री हरिकिशनलाल भगत से मिले और उनका ध्यान इन विसंगतियों की ओर आकृष्ट किया। प्रसन्नता की बात है कि सभा के विरोध को स्वीकार करते हुए मन्त्री महोदय ने अपने दिनांक २९ फरवरी १९८८ के पत्र द्वारा सूचित किया है कि पुस्तक के आपत्तिजनक अंशों पर पुनर्विचार करने के लिये उन्होंने मन्त्रालय के सम्बोधित अधिकारियों को आदेश जारी कर दिये हैं और साथ साथ इस विषय में अन्तिम निर्णय लेने तक पुस्तक की बिक्री पर भी रोक लगा दी है।

> महर्षि दयानन्द के जीवन पर भारत सरकार ने अंग्रेजी में एक पुस्तक प्रकाशित की है—पुस्तक के कुछ भ्रामक एवं सिद्धान्त विरोधी अंशों को लेकर १९-२-८८ को सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा प० वन्देमारतम् रामचन्द्रराव सूचना प्रसारण मन्त्री श्री एच० के० एल० भगत को मिले—श्री भगत के अपने पत्र द्वारा सभा प्रधान जी को आश्वासन दिया है कि वे जांच करा रहे हैं और अन्तिम निर्णय तक पुस्तक की बिक्री पर रोक लगा दी गई है।

सार्वदेशिक सभा प्रधान को सूचना प्रसारणमन्त्री का पत्र

संसदीय कार्य एवं
सूचना और प्रसारण मन्त्री
भारत
नई दिल्ली-110001
MINISTER OF PARLIAMENTRY AFFAIRS &
INFORMATION & BROADCASTING
INDIA
NEW DELHI-110001
29 February 1988

D O No/17/73 Ed (part)

Reepected Swamiji,

Thank you for your letter dated February 19 1988 regarding the biography of Swami Dayananda Saraswati brought out by Publications Division of my Ministry under its "Builders of Modern India" series

2 I am glad that you have liked this book

3 As regards some lapses pointed out by you, I am getting the matter examined in consultation with the author of the book Meanwhile, I have asked the concerned officials to withhold the sale of the book with immediate effect till a final decision is taken in the matter

With respectful regards

Yours Sincerely
(H K L BHAGAT)

Swami Anand Bodh Saraswati

वेदामृत

परिवार में प्रेम और सद्भाव हो

सहृदयं सांमनस्यम्,
अविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत,
वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥
अथर्व० ३-३०-१॥

हिन्दी अर्थ—मैं (परमात्मा) सहृदयता, सामनस्य और द्वेष हीनता तुम्हारे लिए उत्पन्न करता हूं। नवजात बछड़े को जैसे गाय प्रेम करती है, उसी प्रकार तुम सब परस्पर प्रेमभाव रखो।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िए

भारत, पाकिस्तान और अमेरिका

एक अमेरिकन दृष्टिकोण

हालांकि अमेरिका दबाव के नीचे आकर पाकिस्तान कोशिश कर रहा है कि अफगान समस्या को सुलझाने के लिये सोवियत कदम सफल न हो फिर भी यह आशा की जा सकती है कि इस दुखद समस्या का अन्त शीघ्र हो सकेगा। इस सम्भावना ने भारत के लिए कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न उठाये हैं। सबसे पहला यह कि अफगान समस्या का समाधान उपमहाद्वीप में सत्ता और सुरक्षा के प्रश्न को लेकर भारत और पाकिस्तान की समानता पर क्या प्रभाव पड़ेगा? विशेष रूप से क्या अफगान समस्या के समाधान होने से अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को मिलने वाली भारी सैनिक सहायता कम हो जाएगी और दक्षिण पश्चिमी एशिया में अफगानिस्तान से सोवियत सेनाओं की वापसी के बाद अमेरिकन सैनिक में पाकिस्तान का रोल क्या रह जाएगा?

शायद एक आम प्रेक्षक को इन तीनों प्रश्नों के उत्तर आशावादी दिखाई दें क्योंकि अमेरिकन शासक हमेशा यही धारणा बनाते रहे हैं कि पाकिस्तान को दी जाने वाली अमेरिकन सहायता का एक मात्र कारण अफगानिस्तान में सोवियत संघ की मौजूदगी है। लेकिन हकीकत इससे बिल्कुल उल्टी है। इसका प्रमाण अमेरिका के प्रसिद्ध सैनिक मामलों के विशेषज्ञ और सलाहकार एयनी कार्डसमैन द्वारा तैयार किया पेपर है। एयनी कार्डसमैन अमेरिकन प्रशासन और विदेश मन्त्रालय के बहुत निकट बताये जाते हैं।

कार्डसमैन ने अपने विस्तृत अध्ययन में जिसका नाम उन्होंने 'अमेरिका के महत्वपूर्ण हित और भारत पाकिस्तान सैनिक सन्तुलन (यू एस स्ट्रैटेजिक इण्टरेस्ट एण्ड द इण्डिया पाकिस्तान मिलिट्री बैलेंस) का नाम दिया है। यह अध्ययन जून १९८७ में अमेरिकन कांग्रेस की सब कमेटी के सामने पेश किया गया और इससे उपमहाद्वीप के विषय में अमेरिकन दृष्टिकोण के स्पष्ट संकेत मिलते हैं। स्वयं एयनी कार्डसमैन ने अपने शब्दों में कहा है कि —

'अमेरिका पाकिस्तान के सामरिक महत्व को अच्छी तरह से समझता है। ईरान में शाह के गिरने से पहले भी दक्षिण पूर्व एशिया तथा निकट के एशियाई देशों में पाकिस्तानको ही सबसे अधिक सहायता अमरिका से मिलती थी ^४० और १९८०के दरमियान अमेरिका ने पाकिस्तान को ६५० मिलियन डालर ... दिये।'(स्मरण रहे कि एक मिलियन दस लाख के बराबर होता है।)

कॉर्डसमैन रिपोर्ट ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि पाकिस्तान अमरिका के लिये अपना भौगोलिक महत्व बनाये रखेगा। इस पर अफगानिस्तान पर होने वाले सोवियत आक्रमण का कोई भी असर नहीं पड़ेगा।

दूसरे शब्दों में अमेरिका दुनिया को इस बात के लिए तैयार कर रहा है कि अफगान समस्या के समाधान हो जाने के बाद भी पाकिस्तान में अमेरिका की उपस्थिति स्थाई रहेगी। इसके लिए दक्षिण और दक्षिणपूर्वी एशिया की स्थिति का बहाना बनाया जा रहा है। स्मरण रहे कि पाकिस्तान खाड़ी क्षेत्र में अमेरिकन सैनिक योजनाओं में सक्रियता से भाग ले रहा है।

दक्षिण पश्चिमी एशियाई परिस्थितियों का जायजा लेते हुए कॉर्डसमैन ने कहा है कि अमेरिका के प्रशासक अच्छी तरह से समझते हैं कि पाकिस्तान को किस तरह से सोवियत चुनौती मिल रही है और अमेरिकन सैनिक सहायता का भारत पाकिस्तान सैनिक सन्तुलन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। इसके साथ अमेरिका को यह अहसास भी है कि अमेरिकन सैनिक सहायता का इस सारे क्षेत्र की शान्ति पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। लेकिन अमेरिका कोई भी पुरानी गलती नहीं दोहराएगा क्योंकि अगर वह पाकिस्तान को अपनी सहायता कम कर देगा तो पाकिस्तान पश्चिमी देशों से अलग कर जाएगा।

वह अफगान स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करनेवालों को मदद नहीं दे पाएगा।' इसके साथ ही कार्डसमैन ने रिपोर्ट में यह कहा कि अगर अमेरिका ने पाकिस्तान को भारी सैनिक सहायता न दी तो वह अन्य सूत्रों का सहारा लेगा।

यह क्या तर्क है कि अमेरिका पहले पाकिस्तान को इतनी भारी सहायता दे रहा है कि वह एक अणु शक्ति बन सके। और फिर उससे भी अधिक सहायता इस दलील के साथ दी जाती है कि यह सहायता इसलिए जरूरी है कि पाकिस्तान को अणु शक्ति बनाने से रोका जा सके।

इससे यह साबित हुआ कि अगर अफगान समस्या का समाधान हो भी जाये तब भी पाकिस्तान को अणु शक्ति बनाने की चुनौती के बहाने को लेकर अमेरिकन सहायता ज्यों की त्यों रखी जाएगी और शायद उसे बढ़ा भी दिया जाएगा।

फिर पाकिस्तान का अणु प्रोग्राम एयनी कार्डसमैन के लिए अमेरिका-पाक सम्बन्धों को अधिक मजबूत बनाने का एकमात्र बहाना नहीं है। अमेरिका यह प्रोपेगण्डा कर रहा है कि पाकिस्तान को एक स्थाई खतरा सोवियत संघ भारत को सैनिक सहायता दे रहा है।

भारत का बहाना

भारत का बहाना बनाकर अमेरिका भारत और पाकिस्तान को सैनिक दृष्टिकोण से सन्तुलन में समान रखना चाहता है। इसलिए एयनी कार्डसमैन जैसे विशेषज्ञ ये दुहाई दे रहे हैं कि अमेरिका पाकिस्तान को उतनी सहायता नहीं दे रहा जितनी कि उसे मिलनी चाहिए। स्वयं अपनी रिपोर्ट में कार्डसमैन ने लिखा है हमें खतरा दिखाई देता है कि अमेरिका पाकिस्तान को उतनी सहायता नहीं देगा जितनी कि उसे मिलनी चाहिए। भारत की सैनिक शक्ति पाकिस्तान के मुकाबले में कहीं बेहतर बड़ी और ऊंची है। अब सोचना यह है कि किस तरह अमेरिकन सहायता पाकिस्तान को इस लायक बना सकती है कि भारत के सैनिक हमलों का मुकाबला कर सके।

इस तरह बिना किसी युद्ध के ही अमेरिका ने भारत को हमलावर बना दिया है जिसकी पुष्टि एयनी कार्डसमैन की रिपोर्ट से होती है। इस रिपोर्ट का उद्देश्य अमेरिकन कांग्रेस के मेम्बरों को लेकर एक खौफ पैदा करना है। कार्डसमैन ने यह कहा है कि भारत इसलिए सैनिक सन्तुलन में पाकिस्तान से कहीं ऊंचा और बड़ा है क्योंकि १९८३ से सोवियत संघने उसे सैनिक सहायता बड़े पैमाने पर देनी शुरू कर दी है।

समझ में नहीं आता कि पश्चिमी देशों के शस्त्र व्यापारी अमेरिकन प्रशासन के जाने माने महत्वपूर्ण विशेषज्ञ एयनी कार्डसमैन द्वारा कही गई बातों से सम्बन्धित इस हकीकत को किस तरह स्वीकार करेंगे। क्योंकि जो बातें एयनी कार्डसमैन ने अपनी रिपोर्ट में प्रोपेगण्डा के लिए कही हैं और जिनका एकमात्र उद्देश्य पाकिस्तान को दी जाने वाली अमेरिकन सहायता को उचित ठहराना है उसे पश्चिमी देशों के शस्त्र व्यापारी किस तरह से स्वीकार कर सकते हैं।

(प्रेस एशिया इण्टरनेशनल)

सम्पादकीय

क्या सत्य है कि पहरेदार सो रहा ?

पहरेदार की एक जिम्मेदारी होती है कि वह अपने समय का पाबन्द हो। इस पहरेदार पर समय की मांग है कि वह सोवे नहीं और सबको जगाकर सावधान करता रहे। कि घर में चोर उसके सेंध लगा रहे हैं देखना कहीं घर का सामान चला न जाये।

आजादी से पूर्व की जो लोग दुहाई देते हैं कि पहले आर्यसमाज अधिक सावधान था। इसके पहरेदार जागरूक थे किन्तु आज पहरेदार सो रहे हैं। हमें गम्भीरता पूर्वक इस पर विचार करना है कि हम कहां पर खड़े हैं और पहरेदार पर जो स्वयं सोया हुआ है वह कहां तक सही आपत्तियां कर रहा है।

पहले हम ८० प्रतिशत प्रचार में इतने सिद्धहस्त थे वह आज नहीं पहले आर्यों में श्रद्धा अधिक थी पर आज नहीं है। हमारी रोने की आदत ही पड़ गई या सोते हुए स्वयं बड़बड़ाने की आदत हो गई है। क्या बात है। पहले हमारे कार्य का ठेका ओसा महान था पर वह आज नहीं है। ऐसी दशा को सुनकर हर व्यक्ति का चिन्तित होना स्वाभाविक है। पहले के प्रचारकों को प्रभाव इतना था कि हम अश्वपति के उदाहरण से जनता को आश्वस्त करते थे। कहने में क्या लगता है टके भर जुबान हिला दी, पर आंखों से बिना देखे ही बकना शुरू कर दिया।

क्या पहले महर्षि के ग्रन्थ को पण्डित इन्द्रमणि जी ने नहीं हड़प लिया था क्या पंजाब सभा ने म० मुन्शीराम पर गबन का झूठा इल्जाम लगाकर छानबीन नहीं की इस प्रकार उस स्वर्ण युग में भी झूठे-भ्रष्टाचार का बोलवाला था म० कृष्ण ने प्रकाश, उर्दू में तथा प्रकाश पार्टी के द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द का विरोध नहीं किया।

जब हम धर्म शिक्षा की बात करते हैं तो हम किस पर दोष देते हैं क्यों नही हम अपने बच्चों को धर्म की शिक्षा देते हैं। किन्तु ऐसा नहीं है तब की भांति आज भी हजारों विद्यार्थी गुरुकुलों, शिक्षण, संस्थाओं में धर्म की शिक्षा उन्हें दी जाती है।

नारी जाति पर यदि पहले अत्याचार था और आज भी है तो जागरूक व्यक्ति उससे युद्धरत है चौटाला-कांड हो या जलकर स्वयं मरना।

विधर्मी आज भी आर्यसमाज का लोहा मानता है जहां-जहां भी विधर्मियों ने धार्मिक कृत्य किये हैं वहां पर आर्य समाज का पहरेदार सामने खड़ा है।

हैदराबाद या सिन्ध सत्याग्रह की बात करते हैं पर क्यों भूल जाते हो कि हिन्दी आन्दोलन, गौरक्षा आन्दोलन, भाषा का प्रश्न, मद्य निषेध जैसे प्रश्नों पर आर्यसमाज युद्धरत रहा है।

पहले प्रचारक विद्वान् देश से यदा-कदा विदेश जाते थे किन्तु स्मरण रहे कि क्या कभी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन भी बाहर हुए थे।

मारीशस, कीनिया (नैरोबी) लन्दन, दक्षिण अफ्रीका में हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन इतिहास की वस्तु बन चुके हैं। जहां तक प्रचारकों की बात है वह तब की भांति अब भी समय-समय पर प्रचारार्थ जाते ही रहते हैं।

आर्यसमाजों की स्थापना की बात छोड़िये, अब तो प्रतिनिधि सभाओं का भी रूप लिया है।

यदि भारत में पहले कितने सम्मेलन हुए थे। उनके सामने तुलना करें तो अकेले उत्तर प्रदेश में मेरठ, कानपुर, वाराणसी इत्यादि के साथ शताब्दियों की धूम मच गई। कलकत्ता, बम्बई, हैदराबाद, उदयपुर, अजमेर की तरह दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों को क्यों भूल जाते हैं।

पहले विद्वान् थे आज नहीं है क्या हास्यास्पद बात है—

पं० उदयवीर शास्त्री, आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, श्री मीमांसक जी और न जाने कितने गुरुकुलों के स्नातक व प्रोफेसर आज भी आर्यसमाज के मंच की शोभा बढा रहे हैं। श्री करपात्री जी की पुस्तक जो महर्षि की ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, के विरुद्ध अनर्गल प्रलाप किया था श्री पं० विशुद्धानन्द जी ने सही उत्तर देकर सा० सभा ने पुस्तक प्रकाशित कराई है।

आर्यसमाज का इतिहास लिखकर जनता को देना यह भी एक उपलब्धि है। इस प्रकार नाना विद्वान् अपनी बुद्धि का प्रयोग मौखिक व लिखित रूप में कर रहे हैं।

अगर वेदों के भाष्य पहले विद्वानों ने किये थे जो आज की मांग को पूरा करना आज के विद्वानों ने इसकी पूर्ति की है। हिन्दी अंग्रेजी में भाष्य आज उपलब्ध है। आज जो स्वयं अनर्गल प्रलाप करते हैं उन्हीं के परिवार भ्रष्ट है सबके नहीं ? सरकार को क्यों कोसते हो, अपनी-अपनी जिम्मेदारियों से बचकर मुह क्यों छिपाते

आर्य समाज एक आन्दोलन है बीमारी के पैदा होते ही उसके उपचार हेतु पहुंचता है। आज सार्वदेशिक सभा द्वारा नागालैण्ड म०प्र० आदि अंचलों में अपने कार्य क्षेत्र बनाकर मोर्चा लिया है। लाखों रुपये का व्यय ईसाई प्रचार के विरोध कर, सूखा पीड़ित क्षेत्र हो या बाढ़ पीड़ित क्षेत्र अपनी ड्यूटी पर हर समय सन्नद्ध है। पर कार्य उतना ही होगा जितनी शक्ति है यदि हमारी ही कुल्हाड़ी दूसरे पेड़ के टुकड़े से मिल जाय, तो जड पर प्रहार होगा ही।

मैंने पहले ही कहा था कि चोर घर में घुसे हैं—

देश को विघटन कराने पर दगे जगह-जगह कराना, छोटा पाकिस्तान की मांग करना यह बीते युग की चाह उत्पन्न हुई है। स्थान-स्थान पर दंगे कराना यह पहले की ही परम्परा में एक पग है। परन्तु सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती मेरठ, मुरादाबाद का दगा हो या अलीगढ सम्भल दिल्ली में लगी हो, नेता अपनी शक्तिभर कराहती मानवता के त्राण को हरने उन स्थानों पर विद्यमान रहे हैं और लाखों रुपये सहायतार्थ व्यय किये हैं।

अभी बाबरी मस्जिद को लेकर कश्मीर में एक सौ से ऊपर मन्दिर तोड़े गये। कोई मां का लाल था जो उस आग में कूदता। हां ब्राह्मणों के शिष्टमण्डल ने अपनी बात कही सभा के नेता ने प्रधानमन्त्री को जो रिपोर्ट दी। उस एक करोड़ रुपये की सहायता से उन मन्दिरों की मरम्मत की गई।

जहां तक प्रश्न है आर्यसमाज का ? उस पर प्रत्येक इकाई जिम्मेदार है। यदि पंजाब में आग लगी है तो वहां के नेता घर में सरक्षण लेकर छिपे बैठे हैं। दोष अपनी करनी का सार्वदेशिक सभा पर थोपते हैं। पीड़ित पंजाब की दशा पर स्वामी आनन्दबोध तीन बार पजाब के उन क्षेत्रों में गए, जहां आज तक कोई संस्था न गई।

आर्यसमाज का नेतृ वर्ग सजग है किसी भी अंचल में यदि कहीं टीस होती है तो पहरेदार सावधान होकर संरक्षण करते हैं। सत्ता से काम करना भीरुता, कायरता नहीं है।

समय-समय की करुण पुकार पर जो नेता सावधान होकर कार्य करें, वही नेता सफल है। कार्य कराना कायरता नहीं है। समय-समय पर आने वाले यदि सकटों की गणना की जाय, तो एक पृथक से पुस्तक छापी जा सकती है फिर भी हमारे नेता श्री स्वामी जी दैनिक पत्रों आर्यसमाज के पत्रों और वार्षिक विवरणों में प्रकाशित करते ही रहते हैं। चेतना उनमें चली गई है जो स्वयं अंधेरे

(शेष पृष्ठ ६ पर)

खालिस्तानियों को पाकिस्तान की सहायता

पाकिस्तानी दूसरे दिन इस बात का खण्डन कर देते हैं कि वे खालिस्तानियों की कोई सहायता कर रहे हैं। किन्तु सारा संसार जानता है कि खालिस्तान का फितना कब का समाप्त हो चुका होता अगर पाकिस्तान इन आतंकवादियों को आर्थिक और दूसरे प्रकार की सहायता और शरण न दे रहा होता। इसलिए पाकिस्तान के निरन्तर इन खण्डनों को आज कोई महत्ता नहीं दी जा रही। इस बात की पुष्टि इससे भी हो जाती है कि आए दिन कोई न कोई सिख नवयुवक पकड़ा जाता है जो यह बता देता है कि उसे पाकिस्तान ने क्या क्या सिखाया है और क्या क्या दिया है। पिछले दिनों एक सिख नवयुवक को बार्डर सेक्योरिटी स्टाफ ने पाकिस्तान जाते हुए पकड़ा और अब वह अमृतसर जेल में है। उसने बताया कि वह दो वर्ष पाकिस्तान में रहा है। उसने जो रहस्योद्घाटन किए हैं उनसे पता चल जाता है कि पाकिस्तान किस प्रकार आए दिन इस सम्बन्ध में झूठ बोलता रहता है।

उसने बताया कि अधिकतर नवयुवक सिख पाकिस्तान चले जाते हैं उन्हें गुरिल्ला ट्रेनिंग दी जाती है किन्तु इस ट्रेनिंग से पहले कई बातें होती हैं। जो भी सिख भारत की सीमा पार कर के पाकिस्तान जाता है उसे पाकिस्तान रेंजर गिरफ्तार कर लेते हैं। इन रेंजरों के साथ पाकिस्तानी गुप्तचर पुलिस के जवान होते हैं। जो यह बात जानना चाहते हैं कि यह नवयुवक भारतीय एजेन्ट तो नहीं। और कि वह किसी दिन उनके काम भी आ सकता है। जिन नवयुवकों को काम का समझा जाता है उन्हें लाहौर छावनी ले जाया जाता है। वहां जनरल इस्लाम बेग के लोग दोबारा इससे पूछताछ करते हैं। जिन सिख नवयुवकों को अस्वीकृत किया जाता है उन्हें दो सौ रुपया देकर वापिस भेज दिया जाता है। जिन नवयुवकों को स्वीकार कर लिया जाता है उन्हें अपने बाल काटने के लिए कहा जाता है और इनके इस्लामी नाम रख दिए जाते हैं, इन्हें प्रत्येक मास पन्द्रह सौ रुपया वेतन भी दिया जाता है। इससे पहले कि इन्हें ट्रेनिंग के लिए कहीं भेजा जाए इनके रिश्तेदारों और मित्रों के नाम व पते प्राप्त कर लिए जाते हैं। इन ट्रेनिंग सेन्टर एबटाबाद छावनी, स्वात की घाटी, सरगोधा और फैसलाबाद में स्थापित हैं। इन सिख नवयुवकों को तरह तरह के शस्त्रों और बमों के प्रयोग की ट्रेनिंग दी जाती है। यह ट्रेनिंग काफी कठोर होती है। सब से पहले इन्हें रिवाल्वरों, पिस्तौलों स्टेनगनों के चित्र दिखाए जाते हैं। इसके बाद इन्हें यह बताया जाता है कि इनमें कारतूस कैसे डाले जाते हैं और इसके बाद इन्हें निशाना लगाने की ट्रेनिंग दी जाती है। इसके साथ ही इन नवयुवकों के दिमाग में विष भरने का सिलसिला भी प्रारम्भ हो जाता है। इन्हें केवल ट्रेनिंग देना ही काफी नहीं समझा जाता इन्हें जनूनी भी बनाया जाता है। कई जनूनी सिख कम्पी नवयुवकों को लाकर इनके सम्मुख इनके भाषण कराए जाते हैं। कहा जाता है कि केन्द्र की हिन्दू सरकार सिखों को समाप्त करने पर तुली हुई है। इसी ने सन्तभिंडरांवाले की हत्या करने के लिए सेना का प्रयोग किया। अकाल तख्त को अपने पांवों पर गिराया। इसके बाद १९८४ के दंगों सिख दंगों के चित्र दिखाए जाते हैं। सिख नवयुवकों के गले में जलते हुए टायर दिखाए जाते हैं। कमजोर विधवाओं और यतीम बच्चों को दिखाया जाता है। इसके बाद इन नवयुवकों को कहा जाता है कि वे बदला लेने की कसम खाएं और खालिस्तान की स्थापना के लिए लड़ें और आवश्यकता हो तो अपने प्राण भी दे दें। जितना और शस्त्रों की ट्रेनिंग पर दिया जाता है उतना ही इनका दिमाग बिगाड़ने पर दिया जाता है।

एक वर्ष की ट्रेनिंग के बाद इन नवयुवकों को सिन्ध में लाया जाता है। वहां इनकी अन्तिम परीक्षा होती है। इन्हें यह भी कहा जाता है कि वापिस जाकर अपने रिश्तेदारों और मित्रों से कोई सम्पर्क स्थापित नहीं करना। वहां से इन्हें लाहौर ले जाया जाता है। वहां उन्हें सुरक्षित घरानों में रखा जाता है। उदाहरण के रूप में पार्लियामेंट के एक सदस्य का घर इस कार्य के लिए प्रयोग किया जाता है इस प्रकार ट्रेनिंग समाप्त हो जाने पर इन्हें सीमा पार करने के लिए कहा जाता है और इन्हें यह भी बता दिया जाता है कि इन्हें किस को अपना निशाना बनाना है। यह भी कहा जाता है कि या तो वे अपने निशानों की हत्या कर दें वर्ना इनके रिश्तेदारों और मित्रों को समाप्त कर दिया जाएगा। इन सब के नाम व पते इन पाकिस्तानियों के पास पहले से ही होते हैं।

कुछ नवयुवकों को पाकिस्तान में प्रयोग किया जाता है जब सिख यात्री दूसरे देशों से आते हैं। उदाहरण के रूप में भारत, अमेरिका, कनेडा आदि से तो खालिस्तान के पक्ष में नारे लगाये जाते हैं और इन्हें विद्रोहात्मक साहित्य वितरित किया जाता है। कई बार इन लोगों की उपस्थिति में भारत डिप्लोमेन्टों पर आक्रमण भी हो चुके हैं। यह भी कहा जाता है कि पाकिस्तानी प्रायः गुरुद्वारों में जाते और बाहर से आए हुए सिखों के सामने भाषण करते हैं। और लाहौर से ५० मील दूर विस्तृत विचार विमर्श के लिए ले जाया जाता है। भारत सरकार की ओर से अपने डिप्लोमेन्टों पर आक्रमण की गिरफ्तार कर लिया जाता है किन्तु इन्हें दूर ले जाकर रिहा कर दिया जाता है। कुछ सिख नवयुवक जिन्हें भारतीय जहाज के अपहरण के मामले में गिरफ्तार किया गया था और जिन्हें न्यायालय से सजा भी हो गई थी वे आज बड़े मजे से स्वतन्त्रता पूर्वक पाकिस्तान में घूम रहे हैं। सिख नवयुवक दलजीतसिंह बब्बर सिख आर्गेनाइजेशन का मन्त्री है इसी प्रकार पाकिस्तान आया। कहने को वह गुरुद्वारों के दर्शन को आया था। इसे एक पाकिस्तानी सेवादार से मिलाया गया। इसने दलजीतसिंह को स्टेनगनें खरीदने में सहायता की और बाद में इन्हें भारत में प्रवेश करा दिया। परन्तु बाद में इसे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। इस समय खालिस्तानी आतंकवादी जो चीनी रायफलें प्रयोग कर रहे हैं वे भी पाकिस्तानी इन्हें देकर दे रहे हैं। फरवरी सन १९८७ में लुधियाना में जो डाका पड़ा था जिसमें आतंकवादी ५ करोड़ से अधिक लूट कर ले गये थे इसमें से एक नवयुवक गुरनामसिंह बराड़ को २५ लाख दिया गया। इस राशि में से काफी धन पाकिस्तान में शस्त्र खरीदने पर लगा। लाहौर में सब से बड़ा सम्पर्क एक सुनार है जो पाकिस्तानी स्मगलरों का प्रमुख है। यह इन सिख नवयुवकों को अफगान विद्रोहियों से मिलाता है। जो चीनी रायफल बीस बीस या तीस तीस हजार रुपए में बेचते हैं। आज पंजाब में जितने दल हैं इन सब के पास ये चीनी रायफलें हैं।

पाकिस्तानी भारत में बेचैनी जारी रखने के लिए समय-समय पर कान्फ्रेंसें करते रहते हैं। १९ नवम्बर सन १९८७ को एक मीटिंग की गई जिसमें भारत, अमेरिका और कनेडा के आतंकवादी सम्मिलित हुए। इनमें खालिस्तान कौंसिल का प्रधान गुरमीतसिंह बरमन, इन्टरनेशनल बब्बर खालसा का तरसेमसिंह, कनेडा की इन्टरनेशनल यूथ फोर्स का लखपालसिंह गिल, पब्लिक कमेटी का मेम्बर मासबसिंह आल इण्डिया सिख स्टूडेन्ट फैडरेशन का कुलदीप सिंह सम्मिलित हुए। पाकिस्तान की गुप्तचर पुलिस के अफसरों ने भी इस मीटिंग में भाग लिया और बताया कि कौन कौन निशानों पर वार किया जाएगा। इन लोगों को यह भी कहा गया कि वे सब आतंकवादी दलों को सांझे कार्यक्रम पर व्यवहार करने को कहें। इससे पहले २४ अप्रैल १९८७ में जब पंथिक कमेटी ने दरबार साहब के अन्दर से खालिस्तान की मांग का समर्थन किया तो वह भी पाकिस्तानियों के कहने पर था। आल इण्डिया सिख स्टूडेन्ट्स फैडरेशन के गुरजीतसिंह यह चाहता था कि यदि ऐसी घोषणा दरबार साहब के अन्दर से न की गई तो पाकिस्तान आगे सहायता न करेगा।

इस समय दरबार साहब पर आतंकवादियों का पूर्ण कन्ट्रोल है। पंजाब की पुलिस उच्च दर्जे के आतंकवादियों को गिरफ्तार करने और कत्ल करने में सफल हुई है किन्तु इसका कहना है कि ७५ प्रतिशत गड़बड़ पाकिस्तान के कारण से है। पाकिस्तान से मिलती हुई सीमाओं पर कन्ट्रोल करने के कई प्रयास किए गए हैं। किन्तु यह सीमा ऐसी है कि इस पर कन्ट्रोल करना वास्तव में असम्भव है। इसके साथ ही केन्द्रीय सरकार का किसी प्रकार राजनैतिक हल पेश न करना ही आतंकवाद को जारी रख रहा है रहा है।

—के० नरेन्द्र

सभी भाषाओं की लिपि देवनागरी हो

आज देश की एकता और अखण्डता को तोडने के लिए इस पर चारो ओर से प्रहार किये जा रहे हैं। यहा तक कि सरकार की नीतिया भी इसे तोडने में ही सहायक सिद्ध हो रही हैं। प्रत्येक बुद्धिजीवी देशभक्त यह सोचने पर विवश है कि इसकी रक्षा कैसे की जाए, किन्तु उसे कोई मार्ग दिखाई नही दे रहा है। आजादी के बाद से ४० सालो मे हमारी सरकार ने जो नीतिया अपनायी हैं उनसे अलगाववादी तत्वो को ही बढावा मिला है। इन नीतियो में विशेषकर सविधान की धारा ३७० जिससे कश्मीर को विशेष दर्जा प्राप्त है, विशेष सम्प्रदायो को आरक्षण आदि की सुविधाये देना, सविधान में अल्पसख्यक, बहुसख्यक शब्दो का समावेश करना विभिन्न सम्प्रदायो के लिए अलग-अलग कानून बनाना और हिन्दी को राजभाषा का स्थान न देना आदि प्रमुख हैं। भाषा के आधार पर प्रदेशो का गठन भी इसमे पूरा योगदान प्रदान करता है। इन नीतियो से पृथकतावादी तत्वो को विशेष बल मिला है।

आज विशेषत भाषा पर आधारित प्रदेशो के गठन तथा अपने देश की अपनी भाषाओ में से किसी का भी राजभाषा न होकर वह स्थान अग्रजी भाषा को देना इस एकता और अखण्डता को समाप्त करने का मुख्य कारण है। इसी कारण आज अलग अलग भाषा-भाषी, अपनी भाषा के आधार पर प्रदेशो के गठन की माग कर रहे हैं। इसके लिए सर्वप्रथम भाषा विवाद को समाप्त करना होगा। भाषाओ का विवाद हल करने के लिए देश के सभी लोगो को अपनी भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओ को सीखना भी आवश्यक है जिससे परस्पर भावनात्मक एकता स्थापित हो सके।

हमारे देश की अधिक भाषाओ में सस्कृत के शब्दो का काफी समावेश है, किन्तु लिपि देवनागरी न होने के कारण उसे पढना, सीखना और समझना कठिन है, क्योकि सस्कृत की लिपि भी देवनागरी ही है। यदि वही भाषा देवनागरी लिपि मे लिखी जाए तो उसे पढने और समझने मे सुविधा होगी और देश की विभिन्न भाषाओ को सीखने मे सरलता हो जायेगी। ऐसा करने से उत्तर दक्षिण और पूर्व पश्चिम का भेदभाव समाप्त होकर भावनात्मक एकता को साकार रूप दिया जा सकता है।

देश की अधिकाश भाषाओ को यदि एक ही लिपि मे लिखा जाए तो उसे समझने और पढने मे सभी को सुविधा होगी। इसलिए देश मे सभी भाषाओ की एक ही लिपि होनी अनिवार्य है। इसके लिए हमे चीन से पाठ सीखना चाहिए। चीन एक बहुत विशाल देश है और वहा भी बहुत सारी भाषाये है, किन्तु उन सभी की लिपि एक ही है। यही कारण है कि वहा भावनात्मक एकता पाई जाती है। इसी प्रकार यूरोप के भी सभी देशो की भाषाए भिन्न भिन्न हैं, किन्तु उन सभी की लिपि एक ही 'रोमन' है। किन्तु हमारी सरकार तथा वर्तमान प्रधानमन्त्री देश की एकता और अखण्डता की सुरक्षा की बात तो करते हैं किन्तु जिन नीतियो से सुरक्षा की जा सकती है उन्हे न अपना कर उसके विपरीत ऐसी नीतिया अपनाते हैं जिनसे देश टूट जाए। उनकी करनी और कथनीमें जमीन-आसमान का अन्तर है। वे बात करते हैं एकता की रक्षा की और नीति अपनाते हैं एकता को तोडने की। विशेष सम्प्रदायों की तुष्टीकरण की नीति अपनाने के कारण ही शाहबानो के केस मे इन्ही प्रधानमन्त्री ने सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का स्वागत करने की बजाए उसे रद्द करने के लिए ससद में एक विधेयक प्रस्तुत कर उसे रद्द कर दिया।

इससे मुस्लिम सम्प्रदाय में अलगाववाद को बढावा मिला है। यह कार्यपालिका के कार्य क्षेत्र मे सीधा हस्तक्षेप ही है।

अब प्रश्न आता है कि देश की ऐसी कौन सी भाषा है जिसकी लिपि सभी भाषाओ के लिए उपयुक्त हो सकती है और वह वैज्ञानिक

आज विशेषत भाषा पर आधारित प्रदेशो के गठन तथा अपने देश की अपनी भाषाओ में से किसी का भी राजभाषा न होकर वह स्थान अग्रेजी भाषा को देना, इस एकता और अखण्डता को समाप्त करने का मुख्य कारण है। इसी कारण आज अलग अलग भाषा-भाषी, अपनी भाषा के आधार पर प्रदेशो के गठन की माग कर रहे हैं। इसके लिये सर्वप्रथम भाषा विवाद को समाप्त करना होगा। भाषाओ का विवाद हल करने के लिये देश के सभी लोगो को अपनी भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओ को सीखना भी आवश्यक है जिससे परस्पर भावनात्मक एकता स्थापित हो सके।

दृष्टि से भी सम्पन्न हो। हमे अपने देश की सभी भाषाओ की लिपियो का अध्ययन करने से पता लगता है कि केवल देवनागरी लिपि ही एक ऐसी लिपि है जो जैसी लिखी जाती है वैसी ही बोली जाती है और वैसा ही इसका अर्थ होता है। इसके अतिरिक्त देश की सभी भाषाओ की लिपियो मे यह बात नही है। इसके अतिरिक्त देश की सभी भाषाओ की लिपिया का उदगम भी इसी देवनागरी लिपि के अक्षरो को तोड-मरोड कर तथा उनके उच्चारण और अर्थ बदल कर ही हुआ है। चाहे वह पजाबी हो, गुजराती हो मराठी हो या बगाली हो। इसलिए देवनागरी लिपि ही सभी भाषाओ की लिपि बनने मे समर्थ हो सकती है। हिन्दी और सस्कृत भाषाओ में तो यह प्रयोग की जाती है। हिन्दी बोलने वाले लोगो की सख्या भी अन्य भाषाओ के बोलने वालो से कही अधिक है। देवनागरी का ही दूसरा नाम नागरी है। साधारणत लोग नागरी शब्द का ही प्रयोग करते हैं। (क्रमश)

दैनिक हिन्दी मिलाप" हैदराबाद से साभार

लाहौर में पंजाब विधान सभा की स्वर्णजयन्ती (२)

–प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा–

४० वर्ष पुराने लाहौर से नया लाहौर दस गुना हो गया है। पाकिस्तान के आम तौर पर और पजाब के खास तौर पर अरब देशो में काम करने वाले १६ लाख पाकिस्तानियो द्वारा कमाए हुए धन से खुशहाली आई है। अमरीका आदि से भी मदद आ रही है। खाने पीने की चीजें आम तौर पर सस्ती है (चीनी को छोडकर) और मजदूरी महगी है। आयातित कीमती कार ही सडको पर नजर आती हैं। सुजूकी के पुर्जे जोडकर कार बनाने का काम कराची मे शुरू हुआ है, इसलिए वह भी नजर आती है। पुरानी बस्तिया तो कम बदली हैं, परन्तु बहुत सी नई बस्तिया बस गई है। शहरो का विस्तार जैसे भारत मे हुआ,वैसे ही पाकिस्तान मे भी हुआ है, परन्तु उद्योग भारत के मुकाबले मे बहुत कम है। बातो से पता चला कि लोग या तो अमीर है या फिर गरीब, मध्यम श्रेणी के लोग बहुत कम हैं। गरीब सन्तुष्ट नही हैं। रिश्वत की शिकायत तो आम है, लोगो की धारणा यह थी कि भारत से वहा रिश्वत अधिक है।

हिन्दुओ की सख्या पजाब मे तो दो लाख के लगभग है और उनका एक सदस्य पजाब की प्रान्तीय विधान सभा मे है। सिन्ध विधान सभा में ६ हिन्दू सदस्य हैं और राष्ट्रीय विधान सभा में चार हिन्दू सदस्य हैं। अहमदिया तो इस्लाम मे एक अल्पसख्यक वर्ग बन गया है। शिया सुन्नी के भी काफी मतभेद और झगडे हैं। मुहाजिरो और पाकिस्तान के मूल निवासियो मे भी झगडे हैं। कराची में तो उनके फिसाद होते ही रहते हैं। हरयाणा से गए हुए मुहाजिर भी पजाबियो से घुल-मिल नही पाए वे उन पर भरोसा भी नही करते। वास्तव मे पजाबियो से दूसरे लोग सन्तुष्ट नही हैं और वे पाकिस्तान की सरकार को पजाबियो की सरकार मानते हैं। कुछ लोगों ने यहा तक भी कहा कि भारत का बटवारा ठीक नहीं था, हम अपने घरो को छोडकर खुश नही है। हरयाणा से गए हुए लोगो के अतिरिक्त और भी कुछ लोगो ने यही बात कही। मैंने उनसे कहा कि अब फिर से एक देश बनना निकट भविष्य मे तो असम्भव है। परन्तु यदि हम प्यार से भाई-भाई की तरह रह सके तो भी सब आनन्द से रह सकते हैं। अलग-अलग हो गए तो क्या है, आखिर तो भाई, भाई हैं, एक ही खून है। कुछ लोगो ने अपने पूर्वजो के बनाए चित्तौडगढ के किले को देखने की तीव्र इच्छा प्रकट की। हथियारो की दौड और साम्राज्यवादी शक्तियो की दोनो देशो को लडाने की साजिश को भी लोग दिल से नापसन्द करते हैं। बात बातो मे कुछ महानुभावों ने यह भी कहा कि समय है जब दोनों देशो के दूरदर्शी नेता बैठकर तनाव और परस्पर अविश्वास की भावना को दूर करें और दोनो देशो मे,ऐसा जनमत बनाय कि दोनो ही सरकारो को भी उस पर फूल चढाने पडें। लोगो ने मुझे यहा तक भी कहा कि पाकिस्तान का न अमीर लडाई चाहता है और न गरीब। भारत बडा देश है शक्तिशाली है वह पहल करे। मैंने बताया कि भारत तो दोस्ती और सहयोग का प्रस्ताव कर चुका है। ऊपर से इस क्षेत्र में शान्ति की बात करते हुए भी कुछ विदेशी शक्तिया हमको लडाना चाहती हैं, और वही हथियारो की होड शुरू करवा देती हैं और फिर क्रिया और प्रतिक्रिया का दुश्चक्र शुरू हो जाता है, जिसे एक नही, दोनो मिलकर ही तोड सकते हैं।

मैं तो जुलाई १९४७ के बाद अब लाहौर मे गया था, पाकिस्तान बनने के बाद पहली बार। मैं जुलाई के अन्तिम सप्ताह मे गया उस दिन शाहआलमी दरवाजे के पास आग की लपटें उठ रही थीं। मैं बहुत बचपन के पीपल्स (विधायक होस्टल) मे पहुचा था और डा० गोपीचन्द भार्गव (जो बटवारा कमेटी के सदस्य थे) मुझे उसी दिन रात को स्टेशन पर छोडकर गये थे, क्योकि वहा रहना खतरे से खाली नही था। सरदार श्योकतहयात खा तो आज भी यही कह रहे हैं कि हिन्दू सिख अपने आप पजाब छोडकर इसलिये गये थे कि पाकिस्तान आर्थिक दृष्टि मे दीवालिया होकर दम तोड जाये। परन्तु यह एक सत्य है कि न तो पाकिस्तान की सरकार और न ही मुस्लिम जनता हिन्दुओ और सिखो के मन मे यह भरोसा पैदा कर सकी, कि यदि वे अपने घरो मे ही बैठ रहे तो सुरक्षित रहेंगे और निर्भय होकर अपना कारोबार चला सकेंगे। यह भी सत्य है कि बीच में ऐसे लोग भी थे जो अपने पडौसी की सुरक्षा और दुःख मे उसका साथ देने के लिये आगे बढे। ऐसे उदाहरण भी हैं कि कुछ लोगो ने पडौसी का रक्षा की और उन परिवारो को गाडी तक सुरक्षित छोडने आये। एक सज्जन ने मुझे बताया कि स्टेशनो पर पानी नही मिलता था और बच्चे पानी के लिये बिलख रहे थे तब वे सज्जन जो उस समय ज्वान थे पानी की बाल्टी लेकर पहुचे, परन्तु अविश्वास इतना था कि उन्होने इस डर के मारे वह पानी पीने से इन्कार कर दिया, कि कही यह लडका जहर मिलाकर न ले आया हो। यह बात उन्होने बडे दुःखी हृदय से सुनाई। बटवारे के समय तो लोगो की मानसिकता ही ऐसी बना दी गई थी, और घृणा का ऐसा वातावरण बन गया था, कि उसमे वही हुआ जो होना था और जो उस समय का शासक अग्रेज भी चाहता था। मैं यह नहीं कहता कि आज साम्प्रदायिक भावना है ही नहीं, आज अपने ही दीन के लोगो से भी घृणा का वातावरण देखने को मिलता है। परन्तु क्योकि आज पाकिस्तान में हिन्दू मुसलमान का टकराव नहीं है, हिन्दू हैं ही उगलियों पर गिनने लायक, इसलिये उनसे घृणा की भावना पैदा होने का और टकराव का अवसर ही नहीं आता। अब तो हिन्दू भारत से मेहमान बनकर जाता है और उसे मेहमान वाला ही सलूक मिलता है। हम जितने दिन ठहरे, चार भोज तो सरकार थे, वहा शाकाहारी भोजन का मेज अलग रहता था। चार बार हमने घरो मे भोजन ही बनाया। पाच दिनो मे जो स्वागत सरकार मिला, उसकी हम मीठी याद ही लेकर आये हैं। मेरे साथ मेरी धर्मपत्नी श्रीमती प्रभातशोभा भी गई थी, वे तो १९७८ में भी हो आई थी और अपने नाना जी के घर जहा उनका बचपन बीता वहा होकर आई थी। उस घर मे जो सज्जन आजकल रह रहे हैं वे

(शेष पृष्ठ ८ पर)

१९वीं शती के अन्तिम और २०वीं शती के प्रथम चरण का सांस्कृतिक सर्वेक्षण (२)

—प्रो० विजयेन्द्र स्नातक—

स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली

चतुर्थ खण्ड में स्वामी जी लिखित पं० लेखराम की जीवनी को ही प्रस्तुत किया गया है। पं० लेखराम को एक मुसलमान ने मार डाला था। उनके शहीद होने से आर्य जगत् में जो धार्मिक उत्तेजना का वातावरण उत्पन्न हुआ उसका सुन्दर चित्र इस जीवनी में अंकित हुआ है। इस खण्ड की दूसरी विशेषता है स्वामी जी के जेल जीवन के अनुभव सन् १९२२ में अमृतसर के गुरुद्वारा के समीप की "गुरु का बाग" की भूमि को लेकर सिखों और सरकार के बीच विवाद उठ खड़ा हुआ। सिखों ने अहिंसात्मक आन्दोलन का आह्वान किया। इस आह्वान पर स्वामी श्रद्धानन्द ने सिखों का पक्ष लिया और गुरु का बाग परिसर में जाकर जनता को सम्बोधित किया। उनके जोशीले भाषण से सरकार नाराज हुई और स्वामी जी को सोलह मास के कारावास का दण्ड घोषित कर दिया। स्वामी जी चार मास अमृतसर तथा मियांवाली जेल में रहे। जेल-जीवन के बड़े प्रेरणाप्रद अनुभव इस सन्दर्भ में लिखे गए हैं। आज का सिखसमाज स्वामी जी के सौहार्दपूर्ण भाईचारे से अनभिज्ञ है।

पंचम खण्ड का प्रामाणिक राजनैतिक दस्तावेज है। इसमें स्वामी जी के राजनैतिक विचार तथा राष्ट्रप्रेम की पूरी झलक मिलती है। कांग्रेस की स्थापना के तीन वर्ष बाद स्वामी जी कांग्रेस के सम्पर्क में आए और उसे राष्ट्रहित की संस्था मानकर उसके सक्रिय सदस्य बने। इस खण्ड में 'इनसाइड कांग्रेस' शीर्षक से प्रकाशित स्वामी जी की पुस्तक समाविष्ट है। इस खण्ड में स्वामी जी के कांग्रेस सम्पर्क की तीस वर्ष की कटु-तिक्त अनुभवों कहानी है जो आज के सन्दर्भ में पठनीय एवं मननीय है। हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य की प्रतिमूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द ने दिल्ली की ऐतिहासिक जामा मस्जिद की व्याख्यान-वेदी पर खड़े होकर मुस्लिम जनसमूह को सम्बोधित किया था। रोलेट एक्ट के समय दिल्ली की हड़ताल और उसे दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार की गोरखा सैनिक जवानों के आगे अपनी छाती खोल कर खड़े होने वाले स्वामी श्रद्धानन्द के अपूर्व देश प्रेम और साहस की कहानी है। इस प्रकरण को पढ़ कर आज हमारे नवयुवकों को देशभक्ति की शिक्षा लेनी चाहिए। राजनीति और राष्ट्रप्रेम का रिश्ता आज टूट गया है। उसे सही परिप्रेक्ष्य में देखना हो तो पाठक इस खण्ड को मनोयोगपूर्वक पढ़ें।

खण्ड छह में वेद और आर्यसमाज विषयक लेख हैं। इसके साथ ही मातृभाषा के उद्धार के विषय में स्वामी जी ने जो प्रयत्न किये वे आधुनिक युग में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। हिन्दी माध्यम से विज्ञान की शिक्षा का प्रबन्ध सबसे पहले गुरुकुल कांगड़ी में स्वामी जी के निर्देशन में ही प्रारम्भ हुआ। विज्ञान की पाठ्य पुस्तकों का आज से पिचहत्तर वर्ष पूर्व स्वामी जी ने ही प्रकाशन कराया था। सन १९१३ ई० को भागलपुर में चतुर्थ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अध्यक्ष-पद उन्हें हिन्दी सेवा के कारण ही प्रदान किया गया था। इस अध्यक्षीय भाषण में राष्ट्रभाषा हिन्दी और नागरी लिपि की महत्ता पर जो विचार स्वामी जी ने व्यक्त किये वे आज भी प्रासंगिक और उपादेय हैं

स्वामी जी ने अछूतोद्धार की दिशा में जो कार्य किया वह 'जाति के दीनों मत को भूलो' शीर्षक से इस खण्ड में संकलित है। उन दिनों ईसाई पादरी अछूत कही जाने वाली जातियों के लोगों को नाना प्रकार के प्रलोभन देकर ईसाई बना रहे थे। स्वामीजी ने उन दीनों को अपनाकर ईसाई होने से बचाया। गोपालकृष्ण गोखले का एक मार्मिक संस्मरण भी इसी खण्ड में संकलित है। सप्तम खण्ड में सद्धर्म प्रचारक अखबार पर चल रहे गए मानहानि के अभियोग की कहानी है। यह कहानी रोचक होने के साथ एक सत्य को उजागर करने वाली भी है।

अठावें खण्ड में सम्पादक महोदय ने स्वामीश्रद्धानन्द के लेखों तथा प्रवचनों को 'जीवन-सन्देश' शीर्षक से एकत्र किया है। उर्दू भाषा में लिखा स्वामीजी का अधिकांश साहित्य 'कुलियाते सन्यासी' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है, उसे नागरी लिपि में इस खण्ड में प्रस्तुत किया है। खण्ड नौ में तीन शीर्षक है — 'आशा की ऊषा', 'युगविधाता तत्त्ववेत्ता दयानन्द' और 'पत्र-व्यवहार'। इस खण्ड की सामग्री के संकलनकर्ता, अनुवादक और सम्पादक श्री राजेन्द्र जिज्ञासु हैं। पत्र व्यवहार-विषयक सामग्री में महात्मा गांधी के साथ स्वामी जी का पत्राचार तत्कालीन भारतीय राजनीति और समाज पर प्रकाश डालने वाला है। इसमें कुछ पत्र अंग्रेजी भाषा में भी है। निश्चय ही यह दुर्लभ सामग्री है और इसे संकलित करने के लिये राजेन्द्र जिज्ञासु बधाई के पात्र हैं।

खण्ड दस में सम्पादक महोदय ने आर्य समाज-विषयक कुछ अति दुर्लभ सामग्री जुटाई है। उस समय भारतीय संस्कृति और सभ्यता का पक्ष लेना अपराध था। सेना में एक मुसलमान धार्मिक विचार का सिपाही था। उसे लोग आर्यसमाजी कहने लगे और लेफ्टिनेंट से उस जमादार की शिकायत कर दी। कमांडिंग अफसर ने उस मुस्लिम जमादार को बुलाकर डांटा और कहा, "बदमाश आर्यसमाजी, तुम अपने अफसर से गुस्ताखी न बोलते हो।' जमादार ने उत्तर दिया, 'हुजूर, मैं तो मुसलमान हूं।" इस उत्तर को सुनकर कर्नल बोला "अच्छा तो तुम मुसलमान आर्यसमाजी हो।" इसी प्रकार उन दिनों अनेक स्पष्टवादी सज्जन सिखों को भी आर्यसमाजी कहा जाता था। प्रारम्भ के दिनों में तो कई सिख सज्जन आर्यसमाज के मन्त्री और प्रधान पद पर भी आसीन रहे थे। आज पंजाब में हिन्दू और सिख दो पृथक् जाति बन गई हैं जो आज से पचास वर्ष पूर्व एक ही घर की सन्तान थी।

"स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली" के ग्यारह खण्डों के अनुशीलन से पाठक के मन पर पहला प्रभाव पड़ता है कि स्वामी जी का जीवन विविध प्रकार के अनुभवों से परिपूर्ण था। निर्भीकता, दृढ़ता, कर्तव्यपरायणता आत्मविश्वास और आस्तिकता उनके जीवन के सबल थे। इन्हीं गुणों के आधार पर उन्होंने अपनी युवावस्था की दुर्बलताओं पर विजय पाई थी और इन्हीं गुणों के द्वारा वे 'महात्मा' पद के अधिकारी बने थे। दूसरा प्रभाव जो ज्ञानवर्धक है, पचास वर्ष के भारत की धार्मिक सामाजिक और राजनैतिक हलचल की आभ्यन्तर जानकारी है। यह ग्रन्थावली इतिहास नहीं है किन्तु इतिवृत्त के अनेक सूत्र इसमें अनुस्यूत हैं जिनसे अर्धशती का सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिवेश प्रत्यक्ष होता है। तीसरा प्रभाव आर्यसमाज की संगठन शक्ति और क्षमता से सम्बन्ध रखता है। आर्यसमाज अपने स्थापना-काल से पचपन वर्ष तक देश की एक सर्वोच्च शक्तिशाली धार्मिक एवं सामाजिक संस्था रही है। भारत की राजनीति को भी उसने प्रभावित किया है और उच्चकोटि के दूरदर्शी राजनेता दिये हैं। भारत की वैदिक संस्कृति का पुनरुत्थान जिस निष्ठा और आस्था से आर्यसमाज ने किया वैसा पचास वर्षों में कोई और संस्था नहीं कर सकी। भारतीय कांग्रेस को भी प्रचार के अनेक कार्य आर्यसमाज ने दिये इसका ब्यौरा भी इस ग्रन्थावली में सुलभ है। सम्पादक महोदय ने प्राञ्जल भाषा और रोचक शैली में इसे संकलित किया है। अनेक गुप्त प्रसंग, घटना, व्यक्ति, संस्था आदि पर इस ग्रन्थावली के प्रकाशन से प्रकाश पड़ा है। सम्पादक और प्रकाशक दोनों ही बधाई के पात्र हैं।

पंजाब विधान सभा

(पृष्ठ ६ का शेष)

वास्तव में देवता स्वरूप ही हैं हमने नया पुराना शहर को घूमकर देखा हम गुरुदत्त भवन में भी गये उसका चित्र भी लेकर आये हैं, वहां बालिकाओ का सरकारी हाई स्कूल चल रहा है जिसमें २५०० छात्राय पढती हैं। वहा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के कार्यालय के साथ एक आर्य विद्यालय भी चलता था। जहा शिक्षा सस्थाय थी वहीं आज भी शिक्षा सस्थाय ही चल रही हैं।

पाकिस्तान मे आज न तो कहने को फौजी शासन है और न ही आपातकालीन स्थिति परन्तु पूर्ण रूप से लोकतन्त्र स्थापित हो गया हो ऐसा भी नही लगा। हमारी भेट जब राष्ट्रपति से हुई तो उन्होंने औपचारिकता के लिये हमसे इस्लामाबाद आने और उनके साथ ही ठहरने को कहा। प्रधानमन्त्री ने भी भोज के समय ढूंढकर हमे बुलवाया। पजाब के मुख्यमन्त्री और विधान सभा अध्यक्ष ने भी बहुत ध्यान रखा। राष्ट्रपति द्वारा पजाब विधान सभा का निशान भी भेट करवाया और स्वय भी छोटी छोटी भेटे दी। इन सबकी मीठी याद तो रहेगी ही। पजाब के मुख्यमन्त्री और विधान सभा अध्यक्ष की सब लोग ही प्रशसा कर रहे थे। सभी प्रदेशो से आये हुए विधायक विधान सभा अध्यक्ष मुख्यमन्त्री आदि बडे प्यार से स्वय पहल करके मिलते रहे और सिन्ध के विधान सभा अध्यक्ष ने तो इसी प्रकारके महोत्सवमे आने का अगाऊ निमन्त्रण भी दिया। हरयाणा के मूल निवासी विधायको ने तो फिर पाकिस्तान आने और घूमकर हरयाणा से आये लोगो से मिलने को कहा। उन्होंने जो भोजन खिलाया, खीर और मीठे चावल बनवाये उनमे चावल कम और मेवे अधिक थे। ऐसे वातावरण मे एक बार भावविभोर होना स्वाभाविक है।

कुछ बातो की मैं प्रशसा किये बिना नही रह सकता। (१) पाकिस्तान में शराब सर्वथा बन्द है और शराब पीने या बनाने वाले को कडी सजा दी जाती है इसी कारण लोगो का स्वास्थ्य आम तौर पर बहुत अच्छा है।

(२) विधायको ने ही नहीं बल्कि साधारण नागरिको ने भी यह बताया कि कालिजो और विश्वविद्यालयो में प्रवेश नम्बरो से ही होता है अपवाद कोई नही होता। परीक्षाओ मे नकल करने की परिपाटी जो चल पडी थी अब बिल्कुल बन्द हो गई है।

(३) प्रत्येक विधायक को अपने क्षेत्र मे छोटी छोटी योजनाय चलाने के २० लाख रुपये मिलते हैं तथा राष्ट्रीय विधान सभा के प्रत्येक सदस्य को ५० लाख रुपये अपने क्षेत्र में योजनाये चलाने के लिये मिलते हैं। इससे विकास के कामो में कार्यों में भेदभाव कम हो जाता है। कुल मिलाकर पाकिस्तान की पांच दिन की यात्रा बहुत अच्छी रही। स्वर्णजयन्ती समारोहके कारण एक ही जगह पाकिस्तान के सभी प्रदेशों के शासको और विधायकों से मिलने का अवसर मिला। यदि वसे ही घूमने के लिये जाते तो यह "सब कुछ" सम्भव नहीं हो सकता था। बहुत अच्छा हो यदि दोनो देशो का भाईचारा निहाल हो जाये, हथियारो की दौड खत्म हो जाये, व्यापार और सास्कृतिक सम्बन्ध तेजी से बढ लोगो का आना जाना भी अधिक हो। अफगानिस्तान का मामला सुलझने से शायद अमरीका पाकिस्तान को थोडे हथियार दे और उससे इस क्षेत्र में और भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव समाप्त होने में मदद मिले। जनता की तो यह इच्छा स्पष्ट रूप से देखने को मिली। पाकिस्तान के शासक भी अपना रुख बदले तो उसमें भारत और पाकिस्तान दोनो का भला है।

(समाप्त)

शरीयत ने महिला को वैधानिक समानता से वंचित रखा है

(अमरेश आर्य, अपजुल उन्मा), हैदराबाद

एक ज्वलन्त उदाहरण

पाकिस्तान के एक न्यायालय ने शाहिदा परवीन नामी महिला को 'संगसार' पत्थरो से आहत कर प्राण लेना) के द्वारा मृत्यु दण्ड की शिक्षा दी गयी है। इस प्रकरण ने समूचे पाकिस्तान में हलचल मचा दी है।

१९७९ ई० में संवैधानिक रूप से पाकिस्तान एक इस्लामी गण तन्त्र राष्ट्र घोषित किया गया है। राष्ट्रपति जियाहुल हक के अध्यादेश द्वारा यह प्रचलन में आया इस प्रकार पाकिस्तान में इस्लामी शरीयत राज्य नियम का रूप धारण किया। समस्त राष्ट्रो के मुसलमान तथा भारतीय मुसलमानो ने इस उपलक्ष्य में अत्यन्त हर्ष एव आनन्द की अभिव्यक्ति की है। उत्सव तथा बडे-बडे समारोह हर्षोल्लास के साथ आयोजित किए गए, किन्तु उसी शरीअत नें न्याय के उज्ज्वल मुख पर एक निन्दनीय कालिमा लगाई है।

पच्चीस वर्षीय शाहिदा परवीन अपने पति के साथ वैवाहिक जीवन व्यतीत कर रही थी। इस अवधि मे किसी साधारण घटना पर उसका पति उस पर कुपित हुआ। बिना सोचे समझे अदूरदर्शितापूर्ण ढग से निरपराध शाहिदा से वैवाहिक सम्बन्ध विच्छेद (तलाक) किया।

सामान्य प्रथा के अनुसार यह तलाक' भी मौखिक रूप से दी गयी। इस प्रकार उसके पति ने उसे परित्याग कर अपने घर से निष्कासित कर दिया। विवश होकर वह उस घर से चली गयी और पृथक् रहने लगी। दीर्घ काल के अनन्तर दूसरा व्यक्ति स्वेच्छा से विवाह करने के लिए उद्यत हुआ। शरीअत के अनुसार उन दोनो का विवाह सम्पन्न हुआ और प्रसन्नता के साथ जीवन व्यतीत करने लगे। इसी अवधि में उसे एक सुन्दर पुत्र-रत्न हुआ। अकस्मात शाहिदा के पूर्व पति को पुनश्च उसे अपने सदन में लाने के लिए उत्कट इच्छा हुई। उसने न्याय मन्दिर का आश्रय लेकर अनुरोध पूर्वक न्यायाधीश के समक्ष यह निवेदन प्रस्तुत किया कि उसने कदापि शाहिदा को तलाक नही दिया है। अत शाहिदा को अपने वैवाहिक जीवन मे प्रवेशानुमति दी जाए। अदालत ने उसके वक्तव्य को सत्य माना तथा शाहिदा के साथ द्वितीय पति के वैवाहिक जीवन को व्यभिचार का निणय दिया और अति अमानुषिक 'संगसार' का दण्ड देकर उसके प्राण हरण करने का क्रूरतम आदेश दिया। "विवाहित प्राणी चाहे पुरुष हो या स्त्री उससे व्यभिचार कृत्य करने' पर शरीअत का यही दण्ड-विधान है। इसे इस्लामी शरीअत में 'हद्द' कहा जाता है।

शरीअत के इस कानून के अन्तगत समाहित अन्याय का अनुमान इस कथन से की जा सकती है कि जिस शरीअत के आधार पर न्यायालय ने शाहिदा को व्यभिचार के आरोप में मृत्यु दण्ड का निर्णय किया है। उसी शरीअत के आधार पर उसी न्यायालय ने शाहिदा के साथ लैंगिक सम्बन्ध स्थापित किए हुये दोनो पुरुषो को निरपराध घोषित करते हुए व्यभिचार दण्ड से उन्हें विमुक्त कर दिया। इसके समथन में यह प्रमाण प्रस्तुत करते हुये न्यायालय ने इस प्रकार प्रकाश डाला कि उसके प्रथम पति के द्वारा दिए गए अभियोग को सत्य मान लिए जाने से वह कानूनन निरपराधी है। और द्वितीय वर का विवाह शरीअत के अनुसार होने के कारण वह निरपराधी माना गया है।

लैंगिक सम्बन्ध चाहे अवैधानिक केवल एक स्त्री अकेली नही कर सकती। स्वाभाविक लैंगिक वासना की पूर्ति के लिए स्त्री और पुरुष दोनो की आवश्यकता होती है। शाहिदा का लैंगिक सम्बन्ध द्वितीय पति से स्थापित करना न्याय दृष्टि मे यदि व्यभिचार है, तो उसकी भांति उससे लैंगिक सम्बन्ध रखने वाला द्वितीय पुरुष भी अपराधी ही नही वरन महापराधी है। आश्चर्य की बात है कि शरीयत ने शाहिदा को व्यभिचारिणी सिद्ध किया है, किन्तु उसके लैंगिक सम्बन्ध रखने वाले दोनो पुरुषो को व्यभिचार से निर्लिप्त होने का निर्णय दिया है। शरीयत की न्याय रचना भी कितनी लज्जास्पद है।

पाकिस्तान के महिला सगठन ने शरीयत के स्त्री घातक न्याय-विधान को जीर्ण-शीर्ण कर कूडे कचरे की पेटी मे फेंक देने के लायक समझकर इसके विरोध में घोर विप्लव मचाने की सुसगठित रूप से योजना बनाई है इस प्रकार की घटनाएं ये सिद्ध कर रही हैं कि इस्लामी शरीयत के विधि विधान का बहुमूल्य भाग इस युग के लिए अयोग्य हैं। भारत में इस्लामी राज के स्वप्न दृष्टा कों इससे सचेत होना चाहिए।

पहरेदार सो रहा है

(पृष्ठ ३ का शेष)

में हाथ मार रहे हैं उन्हें नही दिखाई देता है कि आर्यसमाज क्या कर रहा है। हा समय समय पर कार्य में १९-२० होना ही रहता आन्दोलन रोज की वस्तु की नही है। प्रत्येक वस्तु का उपाय आन्दोलनकारी बनकर अपनी मर्म को रखना है गौ का कटना तो रुका है प्रान्तीय सरकारो द्वारा परन्तु हमने कसाइयो के हाथ बेचना बन्द नही किया है।

विद्रोह की आग में पडोसी पर भी आंच आती है। पर-मुकाबला बहादुरी से करना है किन्तु कायरता से पलायन वाद का नारा नही देना है। आप पजाब को रोते हो, इतनी हत्याय भिण्ड के क्षेत्र में डकैतो द्वार ही हो जाती थी। विशाल देश की समस्याये भी विशाल हैं फिर हमारी नैतिक मान्यताओ का मूल्याकन भी क्या है।

मैंने कहा—आर्यसमाज में सदा ही अपने कर्त्तव्य का पालन यथा समय किया है? किन्तु उल्लू को यदि दिन में दिखाई न दे तो सूरज का क्या दोष?

हमारी आदत है कि अपने कार्यों की चर्चा का 'महत्व न जानकर' हीन भावना का शिकार हो रहे हैं।

आर्य समाज के पहरेदार जाग रहे हैं केवल नपुसक कायर घर मे बैठे कुत्सित व्यक्ति अपने कार्यों का अवलोकन न करके हाय हम मर रहे हैं। रुदन कर रहे हैं।

लिखने से दरिन्दे नहीं भाग जायेंगे, यदि शक्ति है तो हाथ मे शस्त्र और शास्त्र को ग्रहण करो, कोरी बकवाद से काम नहीं चलेगा। पहले हम क्या थे पर आज हम क्या हैं और क्या बनने जा रहे हैं इस पर गम्भीरता से विचार करो। रोने से काम नहीं चलेगा। आर्यसमाज का नेतृ वर्ग चाहे सार्वदेशिक सभा हो या प्रान्तीय व प्रादेशिक सभाये हो? अपने-अपने कर्त्तव्य पालन मे सन्नद्ध है। चिन्तन करोगे तो चिन्ता से मुक्ति अवश्य मिलेगी आलोचना प्रत्यालोचना या हाथ पर हाथ धर कर निकम्मे बैठने से कार्य पूर्णता को कभी प्राप्त नहीं होगा। बस फिर यू ही चिल्लाते रहना कि हिन्दुओ का चौकीदार सो रहा है?

आर्य जगत् के समाचार

गुरुकुल आश्रम में वानप्रस्थ संस्कार

कानपुर। गुरुकुल आश्रम ब्रह्मावर्त बिठूर में 'शिवरात्रि' १९८८ ई० को सुन्दरलाल जी (अग्रवाल) के संयोजकत्व में स्वामी गुरुकुलानन्द फलाहारी द्वारा चन्द्रिकाप्रसाद जी चौबे परवासी को चन्द्रमुनि के रूप में वानप्रस्थ की दीक्षा दी गई। प० शिवदत्त मिश्र एडवोकेट ने वानप्रस्थ आश्रम पर प्रकाश डाला। डा० रामकृष्ण ने १६ संस्कारो की व्याख्या की। स्वामी जी द्वारा अब तक ७ को सन्यास व १६ को वानप्रस्थ की दीक्षा दी गई है तथा एक सौ से अधिक का लक्ष्य है। ज्ञातव्य है कि ९ बीघे भूमि पर आनन्दराज जी की देख रेख मे गुरुकुल आश्रम निर्माण हो रहा है। —गुरुकुलानन्द सरस्वती

आर्य समाज पुनपुन की स्वर्ण जयन्ती सम्पन्न

४, ५, ६, ७, ८ फरवरी ८८ को पुनपुन आर्य समाज की स्वर्ण जयन्ती बड़े धूमधाम से मनाई गयी इस अवसर पर पुनपुन के वृद्ध समाजसेवी श्री रामेश्वर प्रसाद गुप्ता का अभिनन्दन रुपयों की थाला से किया गया। श्री गुप्ता जी स्वतन्त्रता सेनानी भी है। इस अवसर पर डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा स्वामी ब्रह्मानन्द जी नैष्ठिक तपोवन बहन रामबाला जी हरियाणा के ओ३म् प्रकाश शास्त्री, बहन विद्यावती जी पटना ठाकुर महावीर सिंह पटना एव दयानन्द सत्यार्थी समस्तीपुर के कार्यक्रम होते रहे।

मुसाढ़ी आर्य समाज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नालन्दा जिले के हिलसा प्रखण्ड स्थित मुसाढी आर्य समाज का वार्षिकोत्सव बडे धूमधाम से १, २ एव ३ फरवरी ८८ को मनाया गया इस अवसर पर वेद सम्मेलन मजदूर किसान सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन का आयोजन सफल रहा सभा को सम्बोधित करने वालो में श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी नैष्ठिक तपोवन बहन रामबाला हरियाणा श्री ओ३म प्रकाश शास्त्री, दयानन्द सत्यार्थी एव ठाकुर महावीरसिंह जी पटना का नाम उल्लेखनीय है संयोजन का कार्य डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी ने किया।

बाढ़ आर्य समाज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

१० ११, १२, १३ फरवरी ८८ को बाढ़ आर्य समाज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी, स्वामी ब्रह्मानन्द बहन रामबाला प० ओ३म प्रकाश एव दयानन्द सत्यार्थी के कार्यक्रम हुए।

स्टेशन रोड बाढ़ आर्य समाज का उत्सव

१०, ११, १२ एव १३ फरवरी को स्टेशन बाजार के उत्सव पर स्वामी मोक्षानन्द जी ने टेलिविजन पर चल रहे तमस फिल्म की कड़ी निन्दा की। आर्य समाज के बारे में गलत धारणा का प्रचार करके यह देशवासियों के अन्दर भटकाव पैदा किया जा रहा है इसका सवत्र तीव्र विरोध करो।" स्वामीजी के प्रस्ताव का उपस्थित जन समूह ने सर्वसम्मति से समर्थन किया।

सिखो को पूर्ण आजादी चाहिए : रिहाई के बाद मुख्य ग्रन्थियों की घोषणा

अमृतसर, ४ मार्च। आज रिहा किए गए चार सिख मुख्यग्रन्थियों ने कहा है कि अन्तिम उद्देश्य 'पूर्ण आजादी' है और वे उससे कम किसी समझौते को स्वीकार नहीं करेगे। यह तय करना सरकार का काम है कि यह देश के भीतर सम्भव है या बाहर। ग्रन्थियो ने दर्शनी ड्योढी मे आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में यह बात कही

इससे पूर्व तिहाड जेल से आज सुबह रिहा किये गये इन चार मुख्यग्रन्थियो के एक विशेष विमान से यहा पहुंचने पर स्वर्णमन्दिर परिसर में उग्रवादियो ने हवा में गोलिया दागी और 'खालिस्तान जिंदाबाद', 'भिंडरावाला जिंदाबाद' के नारे भी लगाये। मुख्यग्रन्थियों हवाई अड्डे पर एकीकृत अकाली दल के नेता बाबा जोगिन्दरसिंह और पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेता मौजूद थे।

मुख्यग्रन्थियो ने कहा कि केवल "पूरी आजादी" ही सिखों की आकांक्षाओ को पूरा कर सकती है। यह पूछे जाने पर कि 'पूर्ण आजादी' से उनका क्या अभिप्राय है, श्री जसबीरसिंह ने कहा कि सिखो के लिए ऐसा स्थान होना चाहिए जहा वे अपने आपको स्वतन्त्र महसूस कर सके और जहा सिख धर्म और उनके धार्मिक संस्थानो की पवित्रता बनी रह सके। उन्होंने स्पष्ट किया कि पंजाब समस्या पर यदि कोई भी बातचीत की जाए तो वह स्वर्ण मन्दिर परिसर मे ही होनी चाहिए जिसमे पूरे सिख पन्थ के प्रतिनिधि शामिल हो।

एक प्रश्न के उत्तर में श्री जसबीरसिंह ने कहा कि रिहाई के लिए उन्होने सरकार से कोई वायदा नही किया है। उन्होने कहा कि आचार्य सुशील मुनि और सरकार ने उनसे सम्पर्क अवश्य किया। सरकार को हमारी गिरफ्तारी की गलती का अहसास हो गया था। उसने बिना शर्त हमे रिहा कर अपनी गलती सुधार ली है। उन्होंने कहा कि पंजाब समस्या ऐसी अवस्था मे पहुंच गई है कि कोई भी अकेला सिख नेता इसके समाधान की दिशा में कुछ नहीं कर सकता।

होली

होली सो होली भले, दिल से देओ भुलाय।
पुन परस्पर प्रेम से, मिलिये मन हरसाय॥
मिलिये मन हरसाय, ईर्ष्या, द्वेष बिसारो।
जीवन का सुख पूर्ण इसी में, सद्गुण धारो॥
गाओ खुशी के गीत मलो माथे पर रोली।
सारे दुर्व्यसनों की आज जला दो होली॥
होली का त्योहार यह, करिये कुछ परमार्थ।
तन मन धन अर्पण करो देश राष्ट्र रक्षार्थ॥
देश राष्ट्र रक्षार्थ, संगठन सुदृढ़ बनाओ।
यज्ञादि शुभ कर्म करो त्योहार मनाओ॥
भेदभाव छल कपट त्याग दो मारो गोली।
कहे स्वरूपानन्द, सहर्ष मनाओ होली॥
—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

डा० शिवगुलाम जी को विदाई

मारीशस निवासी डा० शिव गुलामजी चिकित्सा शास्त्र में उच्च अध्ययन के लिये भारत पधारे थे। उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के चिकित्सा विज्ञान संस्थान मे तीन वर्ष रहकर एम० एम० (नेफ्रोलोजी) की उपाधि प्राप्त की। भारत मे प्रवास के दौरान ही उन्होंने देहरादून स्थित वन अनुसन्धान संस्थान के उप निदेशक श्री रणजीतसिंह आर्य की पुत्री अनीता से विवाह किया सम्प्रति अनीता जी काशी हिन्दू विश्व विद्यालय के संगीत विद्यालय मे पी० एच० डी० कर रही हैं। डा० शिव गुलाम जी मारीशस में आर्य प्रतिनिधि सभा (आर्य सभा) के वरिष्ठ उपप्रधान रहे हैं और आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के प्रति उनकी अटूट निष्ठा है। हम विश्व विद्यालय मे रहते हुये वे अन्तर्राष्ट्रीय छात्रावास में प्रति सप्ताह यज्ञ और सत्संग करते रहे तथा उन्होंने अनेक व्यक्तियों को आर्य समाज के कार्य में प्रेरित किया। इतनी लगन और समर्पण के उच्च शिक्षित व्यक्ति विरले ही हुआ करते हैं उल्लेखनीय है कि उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के शताब्दी समारोह में भी भाग लिया था गत २ फरवरी को महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्थल पर उन्हें जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा वाराणसी एवं काशी शास्त्रार्थ स्मृति ट्रस्ट की ओर से विदाई दी गयी उसी अवसर पर कुछ प्रमुख व्यक्तियों के साथ डा० शिव गुलाम दम्पत्ति का चित्र

बैठे हुये —डा० शिव गुलाम दम्पत्ति [illegible] विद्योत्तमा (मन्त्राणी [illegible]) शास्त्रार्थ स्थल महिला आर्यसमाज [illegible] प्रोफेसर वीरेन्द्रकुमार वर्मा डा० आनन्द प्रकाश [illegible] प्रिय वानप्रस्थी।

आर्य वीर दल लातूर (महाराष्ट्र) मे १० से ३० जनवरी १९८८ तक उप०व्यायाम शिक्षक शिविर आयोजित हुआ। उपप्रधान सचालक डा० देवव्रत व्यायामाचार्य अपने सहयोगियो सहित उपशिक्षको के मध्य बैठे हैं। नीचे कुछ बाल आर्य वीर बैठे अपने भविष्य के लिये आश्वास्त हैं।

पंजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१३-३-१९८८) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No U 93 Post in D P S O on 10-3-1988

यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

गंगापुर सिटी, ७ फरवरी। स्थानीय आर्य समाज द्वारा १ फरवरी से ७ फरवरी तक आयोजित यजुर्वेद पारायण यज्ञ डा० आनन्द सुमन। तपोवन आश्रम, देहरादून के आचार्यत्व मे बड़े ही हर्षोल्लास पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य जगत् के ख्यातिप्राप्त विद्वान शास्त्रार्थ महारथी प० शान्ति प्रकाश (जयपुर), प्रसिद्ध भजनोपदेशक प० सत्यपाल 'सरल', भूपेन्द्रसिंह एवं श्री केशवदेव शर्मा द्वारा शिक्षाप्रद प्रवचन एवं भजनोपदेश भी हुए। श्री ओम्प्रकाश शास्त्री एवं श्रीमती सत्यवती स्नातिका (बयाना) द्वारा मधुर स्वरो से वेद पाठ किया गया।

मन्त्री आर्य समाज गंगापुर

के अन्दर वार्षिकोत्सव ...

प्रकाश जी शास्त्री हरयाणा ...

श्री वीरेन्द्र जी गाजीपुर डा० देवेन्द्रकुमार सत्यार्थी नालन्दा एवं प० हरिप्रसाद जी शास्त्री के कार्यक्रम हुए।

महाराष्ट्र मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल की गरिमापूर्ण गतिविधियां

लातूर। इस वर्ष सार्वदेशिक आर्य वीर दल के ... देवव्रत व्यायामाचार्य ने महाराष्ट्र मे केजली, परली, मुरुडा (लातूर), ... स्मारक उदगीर, मांजलगांव (बीड) आर्यसमाज लातूर में पांच आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर लगाकर सारे महाराष्ट्र में दल की गति विधियों को प्रसारित किया।

डाक्टर ... महाराष्ट्र आर्य वीर दल के संचालक नियुक्त किये गये। इन शिविरों में क्रमश आर्य श्री सुभाषचन्द्र, डा सुदीव काले, उत्तमराव कोबरे, कुलकर्णी (फोटोग्राफर), प्रो० विश्वम्भरराव होलिकर, अर्जुनराव सोमवंशी, भाऊराव ... स्वामी स्वात्मानन्द सरस्वती, ... ने अपूर्व सहयोग दिया।

—संवाददाता

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २१ अंक (५)] | चैत्र शु० १ स० २०४५ रविवार २० मार्च १९८८ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

वैदिकविद्वान आचार्यवैद्यनाथशास्त्री कानिधन

दिल्ली के निगमबोध घाट पर वेदमन्त्रों के साथ अन्त्येष्टि

दीवानहाल दिल्ली में शोकसभा व दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि

आर्य जगत् के प्रकाण्ड वैदिक विद्वान् आचार्य वैद्यनाथजी शास्त्री का ११ मार्च ८८ की रात्रि मे फालेज के प्रकोप तथा हृदय गति रुक जाने से श्यामलाल नर्सिंग होम, दिल्ली मे निधन हो गया है। १२ मार्च को उनका अंत्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से दिल्ली के निगमबोध घाट पर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के प्रधान श्री एस० रामभरोस, आर्य सभा मारीशस के प्रधान श्री मोहनलाल मोहित, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के प्रधान श्री आर्यभिक्षु, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान डा० धर्मपाल तथा सार्वदेशिक सभा के मन्त्री पण्डित सच्चिदानन्द शास्त्री, वरिष्ठ उपप्रधान प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् तथा प० सत्यदेव भारद्वाज, सभा कोषाध्यक्ष बाबू सोमनाथ एडवोकेट उपमन्त्री पण्डित पृथ्वीराज शास्त्री और श्री जयनारायण अरुण तथा सैकडो आर्य नर नारी वहां उपस्थित थे।

१३ मार्च १९८८ को सार्वदेशिक सभा की ओर से आर्य समाज दीवानहाल मे एक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सैकडो आर्य नर-नारियो ने दिवंगत विद्वान के प्रति अपनी भाव-भीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आचार्य जी की आर्यसमाज के प्रति की गई मूल्यवान सेवाओ का उल्लेख करते हुए कहा कि वह राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन मे प० जवाहरलाल नेहरू के साथ नाभी जेल मे रहे थे। आचार्य जी का प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानियो मे नाम था। उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन महर्षि दयानन्द के सैनिक के रूप मे आर्यसमाज की सेवा में लगा दिया था। वह संस्कृत हिन्दी और अंग्रेजी के प्रकाण्ड विद्वान थे। सार्वदेशिक सभा के साथ उनका विगत तीन दशाब्दियो से सम्बन्ध रहा। वह दयानन्द ब्राह्ममहाविद्यालय लाहौर मे आचार्य पद पर भी रह चुके थे। इस समय वह सार्वदेशिक सभा के धर्माधिकारी तथा आर्ष गुरुकुल एटा के कुलपति थे। उन्होने सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत वैदिक अनुसन्धान विभाग के अध्यक्ष के रूप में लगभग ६० पुस्तक हिन्दी अंग्रेजी मे लिखी थी। वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए वह मारीशस, पूर्वी अफ्रीका दक्षिण अफ्रीका और अमेरिका भी गए थे।

माननीय आचार्य जी के निधन से आर्यसमाज का एक शक्तिशाली स्तम्भ एवं महर्षि दयानन्द के मिशन का एक सितारा टूट गया है जिसकी पूर्ति कभी नहीं हो सकेगी।

आचार्य जी इस समय सभा की ओर से यजुर्वेद का अंग्रेजी भाष्य कर रहे थे। इससे पूर्व उन्होने अथर्ववेद का भी अंग्रेजी भाष्य किया था। वह गत अगस्त ८७ में बड़ौदा से दिल्ली आए थे किन्तु सितम्बर में उन पर फालिज का आक्रमण हुआ। तब से लगातार

(शेष पृष्ठ ११ पर

आर्यसमाज और राजनीति

—बलराज मधोक—

प्रस्तुत लेख प्रसिद्ध हिन्दुत्ववादी राजनैतिक नेता श्री बलराज मधोक जी ने लिखा है। उक्त लेख मे अनेक समाचार पत्रों में चल रहे विषय क्या आर्यसमाज को राजनीति में भाग लेना चाहिए। लेखक महोदय ने बड़े स्पष्ट शब्दों उक्त विषय का विवेचन किया है। क्योंकि वर्तमान समय में देश की अनेक पार्टियां राजनीति में सक्रिय भाग ले रही हैं। आज की राजनीति पैसे के ऊपर चल रही है। क्या ऐसी स्थिति आर्यसमाज को राजनीति में भाग लेना चाहिए।

गत कुछ समय से आर्य समाज की पत्र पत्रिकाओ मे स्वतन्त्रता से पूर्व भारत की राजनीति मे आर्य समाज की भूमिका और स्वतन्त्र देश की राजनीति को आर्य समाज के सिद्धान्तो के अनुरूप ढालने, इसका भारतीयकरण करने और राजनैतिक क्षेत्र मे भी हिन्दू समाज को दिशा देने सम्बन्धी लेख छप रहे है। डा० हर्षनारायण और डा० भवानीलाल भारतीय के 'राजनीति का भारतीय करण सम्बन्धी लेख विशेष रूप से विचारणीय है।

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती राष्ट्र के जीवन मे राजनीति के महत्व को समझते थे। इसलिए उनके द्वारा चलाए गए राष्ट्रोत्थान के अभियान मे राजनैतिक चेतना पैदा करने और देश की राजनीति को राष्ट्रहित के अनुरूप दिशा देने की ओर विशेष ध्यान दिया गया था। वर्तमान युग मे आर्यावर्त मे आर्य राजनीति अथवा हिन्दुस्तान मे हिन्दू राजनीति के वे प्रथम व्याख्याता और अग्रदूत थे। उन्होने न केवल १८५७ के सशस्त्र स्वतन्त्रता संग्राम मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की अपितु उसके विफल हो जाने के बाद भी जब सारा देश कुछ समय के लिए हतप्रभ हो गया था उन्होने स्वतन्त्रता की आकांक्षा को जीवित रखा। १८५७ मे अंग्रेजो की विजय के बाद सबसे पहले महर्षि ने ही हिन्दुस्तान मे राजनैतिक चेतना और राष्ट्रीयता की भावना जगाने और इसे पुन स्वतन्त्र कराने के लिए आवाज उठाई थी। राष्ट्रचेतना के आधार के रूप मे राष्ट्रीय संस्कृति के सम्बन्ध मे जागरूकता पैदा करना, राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाना, राष्ट्रीय एकता के मूल सूत्र के रूप मे हिन्दी को राष्ट्रभाषा और देवनागरी लिपि को राष्ट्रीय लिपि के रूप मे प्रस्तुत करना, राष्ट्रीय हिन्दू समाज को सुदृढ करने के लिए उसम व्याप्त छुआछूत आदि कुरीतियो को मिटाकर समाज मे एकरूपता पैदा करना उनके द्वारा शुरू की गई सर्वतोमुखी समग्र क्रान्ति के प्रमुख अंग थे। उन्होने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष कुछ देशी नरेशो के जीवन और चिन्तन को बदलने और उन्हे भावी स्वतन्त्रता संग्राम म प्रभावी भूमिका अदा करने हेतु तैयार करने मे बिताए। वे इस बात को समझते थे कि बिना प्रबल शक्ति और संघर्ष के देश को स्वतन्त्र नही किया जा सकता। वे देशी नरेशो की शक्ति का उस दिशा मे प्रयोग करना चाहते थे। सत्यार्थ प्रकाश म भी पूरा छठा समुल्लास राजनीति पर लिखकर उन्होने इसका महत्व दर्शाया और अपने द्वारा प्रस्थापित आर्यसमाज के सभासदो और अपने को राजनीति की उपेक्षा न करने का सन्देश दिया।

यह महर्षि दयानन्द के जीवन और चिन्तन का ही प्रभाव था कि उनके निधन के बाद आर्य समाज को ब्रिटिश शासक एक क्रान्तिकारी और बगावती (सडिशियस) आन्दोलन मानने लगे। आर्य समाज से प्रभावित लोगो के देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन म दिए गए योगदान को आर्यसमाज के कट्टर आलोचक भी नकार नही सकते। महात्मा गाधी का कांग्रेस पर वर्चस्व कायम होने तक कांग्रेस की नीति-रीति पर महर्षि दयानन्द के चिन्तन का प्रभाव और आर्य समाज की छाप स्पष्ट दिखती थी। परन्तु जब गाधी जी ने खिलाफती मुल्लाओ के प्रभाव मे आकर कांग्रेस की नीति-रीति को मुस्लिम पोषक रूप देना और हिन्दुओ मे हीन भावना पैदा करना शुरू किया तो भाई परमानन्द लाला लाजपतराय और स्वामी श्रद्धानन्द जैसे अनेक प्रमुख आर्य समाजी नेताओ ने उस नीति के विरोध स्वरूप कांग्रेस को छोड दिया, परन्तु स्वतन्त्रता आन्दोलन म उनका योगदान बना रहा। राजर्षि, पुरुषोत्तमदास टण्डन और लाल बहादुर शास्त्री जैसे अनेक आर्य समाजी बन्धु तब भी कांग्रेस के अन्दर स कांग्रेस की नीतियो को प्रभावित करने का प्रयत्न करते रहे। सरदार पटेल का यथार्थवादी और राष्ट्रवादी चिन्तन महर्षि दयानन्द के चिन्तन के निकट था। इसलिये उनके रहते हुए गाधी नेहरू और मौलाना आजाद की तिकडी के बावजूद कांग्रेस मे एक प्रभावी, राष्ट्रवादी हिन्दुत्ववादी 'लाबी' बनी रही।

१९५० मे सरदार पटेल के निधन के बाद कांग्रेस दल और कांग्रेस शासन पर प० नेहरू और मौलाना आजाद पूरी तरह हावी हो गए। इनकी पाकिस्तान और खण्डित भारत मे रह गए मुसलमानो की हिन्दुस्तान और हिन्दुओ के हितो की कीमत पर तुष्टीकरण की नीति के कारण आर्यसमाजी और अन्य प्रबुद्ध हिन्दुओ मे व्यापक रोष फैलाने लगा। डा० श्यामा प्रसाद मुकर्जी ने इस नीति के विरोध मे ही प० नेहरू के मन्त्रिमडल को छोडा था। वे आर्य समाज के भी अति निकट थे। वे एक आर्य सम्मेलन की अध्यक्षता भी कर चुके थे। इसलिए वे आर्य समाज से सम्बन्धित तथा अन्य राष्ट्रवादी हिन्दुत्व वादी तत्वो की आशा का केन्द्र बन गए।

भारतीय जनसंघ का निर्माण इस परिस्थिति का परिणाम था। इसके बनाने मे उस काल के प्रमुख आर्य समाजी बन्धुओ—महाशय कृष्ण, आचार्य रामदेव, लाला योधराज, लाला बलराज, वैद्य गुरुदत्त इत्यादि ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। भाई महावीर और मैं उस समय राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ के साथ सम्बन्धित थे। परन्तु हमारी भी पृष्ठभूमि आर्य समाज की ही थी। इसलिये मेरे द्वारा लिखे गये जनसंघ के प्रथम घोषणा पत्र पर महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के चिन्तन की भी छाप थी।

राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ के कर्णधार भी परिस्थिति से क्षुब्ध थे। परन्तु वे डाक्टर मुकर्जी को समर्थन देने के मामले मे एकमत नही हो पा रहे थे। जब डाक्टर मुकर्जी ने उनके निर्णय की प्रतिक्षा किये बिना समान विचार वाले अन्य लोगो के सहयोग से राजनैतिक हिन्दुत्ववादी संगठन बनाने का फैसला कर लिया तब संघ के नेताओ ने उन्हे संघ का भी समर्थन देने का निर्णय कर लिया।

जनसंघ की गाडी को चलाने के लिए पहली बडी आर्थिक सहायता महात्मा हंसराज के सुपुत्र लाला योधराज से मिली। जनसंघ की पहली कार्य समिति म आर्य समाज से सम्बन्धित बन्धुओ की संख्या अधिक थी। जनसंघ को एक प्रभावी हिन्दुत्ववादी संगठन बनाने मे आर्य समाज का योगदान किसी तरह भी संघ के योगदान से कम नही था। यह स्थिति १९६७ तक बनी रही। उस समय मै भारतीय जनसंघ का अखिल भारतीय अध्यक्ष था। भारत और भारतीय राजनीति का भारतीयकरण और हिन्दूकरण १९६७ के लोकसभा के चुनाव मे जनसंघ के मुख्य मुद्दे थे। उस चुनाव मे लाला रामगोपाल शालवाले (स्वामी आनन्दबोध सरस्वती), स्व० श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी, श्री यज्ञदत्त शर्मा, श्री शिवकुमार शास्त्री, श्री जगदेव सिद्धान्ती, स्वामी रामेश्वरानन्द, स्व० श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री निरन्जन वर्मा इत्यादि अनेक प्रमुख आर्य समाजी बन्धु जनसंघ के टिकट पर या जनसंघ के समर्थन से चुनकर संसद मे पहुँचे थे और उन्होने देश की राजनीति को प्रभावी ढग से आर्य समाज के चिन्तन के अनुसार प्रभावित भी किया था।

१९६७ के अन्त मे मेरे द्वारा जनसंघ का अध्यक्ष पद छोडने और मेरे उत्तराधिकारी श्री दीनदयाल उपाध्याय की १९६८ के शुरू मे रहस्यमय हत्या के बाद जनसंघ की बागडोर ऐसे तत्वो के हाथ आ गई जिनके प्रेरणा स्रोत न महर्षि दयानन्द थे और न वीर सावरकर और डा मुकर्जी और डा हेडगेवार। उसके बाद जनसंघ का भी वही हाल हुआ जो गाधी जी के जाने के बाद कांग्रेस का हुआ था। फलस्वरूप वैद्य गुरुदत्त और मेरे जैसे अनेक आर्य समाजी व हिन्दुत्ववादियो ने या जनसंघ को छोड दिया और या जनसंघ के नये नेतृत्व ने उन्हे निकाल दिया। फलस्वरूप जनसंघ अपना वैचारिक आधार खो बैठा। यही कारण था कि १९७७ मे बनी जनता सरकार का सबसे बडा घटक होने के बावजूद जनसंघ उसकी नीति-रीति को राष्ट्रवादी और हिन्दुत्ववादी दिशा देने मे पूरी तरह विफल हुआ। यदि इसके नेताओ ने अपना वैचारिक न छोडा होता तो वे वैचारिक स्तर पर चौधरी चरणसिंह जैसे आर्य समाजी के साथ तालमेल कर के भारत की राजनीति के भारतीयकरण कर के भारत की आंतरिक व बाहरी नीतियो को राष्ट्रवादी दिशा दे पाते।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादकीय

क्या वस्तुतः आर्य समाज सो रहा है ? (२)

सोते को जगाया जा सकता है पर जागते हुए को क्या कहे ? अभी तक हम यह निश्चय नही कर सके, कि वस्तुत हम सो रहे हैं। मैंने पिछले अक मे कुछ स्पष्टीकरण किया था—इस अक मे मुझे कहना है कि समय समय पर जो भी सकट सामने आये है उनका सामना सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान जी ने किया है। प्रत्येक व्यक्ति नेतृत्व करने मे सक्षम नही होता है। व्यक्तित्व के निखरने मे भी समय लगता है। फिर भी सजग पहरेदार या जागरूक पुरोहित का कार्य है कि वह सावधान होकर राष्ट्र रक्षा मे तत्पर रहे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् समय समय पर जो सकट आये है तब तब पुरोधा तत्पर रहे है।

(१) यहा दिल्ली की प्रसिद्ध घटनाक्रमो की चर्चा करने म अपना नैतिक दायित्व समझता हूँ। स्मरण रहे कि जब दिल्ली मे राज शर्मा काण्ड हुआ था और सिकन्दरबख्त के साथ शादी होने का चक्र चला। उस समय कोई भी माई का लाल नेता नही निकला। विवाह रुकवाने का पराक्रम किया उस समय के लाला रामगोपाल शालवाले ने। घटना प्रसिद्ध है कि उसी समय श्री शालवाले जी गिरफ्तार कर लिए गए। उस समय दिल्ली तीन दिन बन्द रही थी। दिल्ली खुली तब, जब शालवाले जी जेल से मुक्त किये गये।

(२) सम्भवत आप सभी को स्मरण होगा कि राष्ट्रपति भवन मे श्री जाकिर हुसैन साहब जब राष्ट्रपति थे तब वहा एक मस्जिद निर्माण के लिये सरकार की योजना थी। कुछ प्रमुख राष्ट्रीय नेताओ ने यह बात जागरूक प्रहरी लाला रामगोपाल जी शालवाले से कही ? उन्होने जिस तत्परता व सूझबूझ से काम लिया, कि राष्ट्रपति भवन मैं मस्जिद बनने से रुक गई। अगले दिन बा० जयजीवन राम जी जब लोकसभा मे मिले, तो तुरन्त आकर बोले कि आज आपने वह काम किया है कि आपके चरण रज को माथे पर लगा लू। राष्ट्रीय स्तर के सभी समझदार इस घटनाक्रम से प्रसन्न थे और श्री शालवाले जी को अन्तरात्मा से बधाई दे रहे थे। समय बीतते देर नही लगती है।

इसी घटना को किसी ने आज के सर सघ चालक श्री बाला साहब देवरस को सुनाया। वह इस घटना की सत्य जानकारी हेतु इतने उत्सुक थे कि एक बार उन्होने श्री शालवाले जी को अपने स्थान पर आमन्त्रित किया। शालवाले जी जब श्री देवरस के यहा पहुँचे तब जहा और बहुत सी बाते हुई, वहा उन्होने राष्ट्रपति भवन मे मस्जिद बनने के रुकवाने पर आपसे पूरी जानकारी प्राप्त की। इस घटना को सुनने के बाद उन्होने श्री लाला जी से कहा कि आप सारे जीवन मे कोई भी महान कार्य न करे। केवल यह एक ही घटना इतनी महत्वपूर्ण है कि आप सदा सदा ही यश के भागी रहगे।

(३) बात बहुत पुरानी नही है स्व० चौ० चरणसिह के समय चादनी चौक के सर्राफे मे बनी मस्जिद और उसके पीछे मिट्टी मे दबा मन्दिर जब खुदाई मे निकला तब साम्प्रदायिक तत्वो ने हमला करके सर्राफा लूटने व मन्दिर पर कब्जा करने के लिए भयकर हमले किये। उस समय सर्राफो के बडे बडे करोडपति श्री लाला जी के पास आए। श्री लाला जी ने उन सबको लेकर चौ० चरणसिह से मिलाया, उन्होने सारी व्यथा कथा सुनने के बाद जो व्यवस्था की उस पर बडे बडे करोडपति भी लाला जी के आगे नतमस्तक थे।

(४) महरौली के पास गौ-शाला के भूखण्ड को सरकार ने वापस ले लिया। श्री शालवाले जी तुरन्त श्रीमती इन्दिरा गाधी से मिले, जब उन्हे वस्तु स्थिति से अवगत कराया तब देवी इन्दिरा जी ने सार्व० सभा को गौ-शाला व चारागाह के लिए पृथक से बिना मूल्य भूमि दी और ६ लाख रुपए को भी वापस दे दिया।

(५) धर्म परिवर्तन का चक्र विगत वर्षों मे तूफान की तरह चला स्थान स्थान पर हरिजनो को प्रलोभन देकर धर्मपरिवर्तन की लहर तेजी से चली। तभी मीनाक्षीपुरम नामक गाव को पूरा मुस्लिम बना लिया परन्तु सजग पहरेदारो के होने पर अपने भाइयो को गले लगाया विधर्मियो की चाल को विफल कर कुछ अच्छे पढे लिखे मौलवियो को शुद्ध कर लिया जो आज देश मे वैदिक धर्म का नाद बजाकर प्रचार कर रहे है ?

(६) सार्वदेशिक सभा के द्वारा लाखो रुपये का साहित्य प्रकाशित कर नयी परम्परा को जन्म दिया साथ ही सभा आर्थिक दृष्टि से कमजोर थी उसमे लाखो रुपया की निधिया स्थिर की। सभा आज आर्थिक दृष्टि से काफी समर्थ हैं।

(७) कई आर्य समाज के विवादो मे दिल्ली के जजो ने श्री लाला जी को विवाद तय करने के लिये मध्यस्थ निर्णीत किया। इसी प्रकार एक बडी रोचक घटना का भी स्मरण कराता हूँ।

दो शकराचार्यो के पारस्परिक विवादो का हल करने के लिए पचास के लगभग व्यक्तियो के नाम चुने गये, उन नामो म श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले का नाम भी था। निश्चय यह हुआ कि दोनो आचार्य जिस व्यक्ति को निर्णायक माने वही पच बनाया जायगा। आश्चर्य तब हुआ जब दोनो आचार्यों ने श्री लाला जी के नाम पर पृथक-२ चिन्ह लगाया। सभी का विश्वास आप पर ही था। सत्य सिर चढकर बोलता है घर म आपसी आर्य सभाओ व आर्य समाजो के विवादो को भी आपने बडी शालीनता से निपटाया है।

कहा तक कहे—जागरूक प्रहरी का एक एक क्षण चिन्तनीय है।

आदर्श धर्म प्रचारक पं० लेखराम जी

आर्य पथिक की मौखिक प्रचार म धूम मची हुई थी। आर्य समाज म उन धर्म प्रचारको की सख्या अगुलियो पर गिनी जा सकती है। जो लेखर म के समीप इस अश मे पहुँच सके। गृहस्थी होते हुए भी सन्यास की तितिक्षा तथा धारना हम अनेक आचरण मे देखते है। विरोधी लोग प्रसिद्ध करते है कि पण्डित लेखराम बदजबान था यद्यपि वह खण्डन सर्वमतो का एक सा करते थे परन्तु हिन्दुओ, जैनियो, सिक्खो ने उनकी कभी शिकायत नही की। इसका कारण तो यह हो सकता है कि यद्यपि इन मतो के सशोधन के लिए इन मतावलम्बियो को हिलाते थे। तथापि आर्य जाति विरोधियो के आक्रमणो से इनको भी बचाने का ठेका लेखराम ने ही ले रखा था। एक बार स्वामी श्रद्धानन्द और पण्डित लेखराम इकट्ठे दिल्ली से लौट रहे थे कि मार्ग मे सनातन धर्म सभा के पण्डित दीनदयाल जी मिल गये। बातचीत आरम्भ होने पर पण्डित लेखराम ने कहा—'आप हमे कोसने के लिये बडे बहादुर हो लेकिन इस्लाम धर्म आपके धर्म की जडे खोद रहा है और आप चुप बैठे है।' पण्डित दीनदयाल जी ने उत्तर दिया— यह काम तो हम सबने आपके सुपुर्द कर छोडा है, जब तक आर्य मुसाफिर जीवित है हमारे धर्म की जड कौन खोद सकता है ?"

हाजिर जवाबी में कमाल

जो पुरुष किसी बडे काम म कृतकार्य होना चाहे उनके लिए हाजिर जवाबी एक अपूर्व सम्मिलित अस्त्र शस्त्र है। जिस बात को दलील से काटने मे घण्टो का नाश हो उस बात का 'हाजिर जवाबी' मिनटो म सफाया बोल देती है।

लेखराम बचपन से हाजिर जवाबी' के लिए प्रसिद्ध थे। मदरसे म पहले साल परीक्षक इनकी हाजिर जवाबी से प्रसन्न हुए थे। इनके पहले उस्ताद तुलसी राम जी इसी हाजिर जवाबी से तग थे। जिसके कारण इनको अकल की शिकायत किया करते। इस कहानी मे भी कई स्थानो पर मैने उनकी हाजिर जवाबी के नमूने दिए है। परन्तु उनकी हाजिर जवाबी को पढकर ऐसा आनन्द आता है और हमारे चरित्र नायक के इनमे गुण का पता लगता है कि उनमे से कुछ और का उल्लेख करना मनोरञ्जक ही न होगा प्रत्युत शिक्षादायक भी सिद्ध होगा।

हरद्वार मे सवत् १९४८ के कुम्भ मेले पर स्वामी आत्मानन्द जी ने सयुक्त प्रान्तो के छूतछात वाले उपदेशको का चौका स्थिर रखने के लिए यह

(शेष पृष्ठ ९ पर)

आर्य मुसाफिर पं० लेखराम

—कविरत्न, जगदीशप्रसाद शरन, नीमच—

धर्म के मार्ग में अधर्मी से कभी डरना नहीं।
चेत कर चलना कुमारग में कदम धरना नहीं॥
शुद्ध भावों में भयानक भावना भरना नहीं।
बुद्धि वर्धक लेख लिखने में कमी करना नहीं॥
दे गये हमको मुनासिब राय पं० लेखराम।
तर गये 'जगदीश' के गुण गाय पं० लेखराम॥

महर्षि दयानन्द के बाद उनके कार्यों को पूरा करने के लिए निडर होकर अन्धविश्वास और मिथ्यावाद को समाप्त करने के लिए जिन धर्म वीर दीवानों ने सब पर कफन बांधे, उनमें पं० लेखराम का नाम अग्रणी है। उनकी लोह लेखनी झूठे सम्प्रदायों के खलिहानों को जलाकर खाक कर देती थी। जिसकी सिंह गर्जना से विरोधी कांप जाते थे, उन्हीं धर्मवीर प० लेखराम का जन्म सन् १८५८ तदनुसार चैत्र संवत १९१५ को पंजाब के जेहलम जिले के सैदपुर नामक ग्राम में एक सारस्वत ब्राह्मण कुल में हुआ था।

आप बाल्यकाल से ही धार्मिक संस्कारों में पले थे। बुद्धि तीव्र थी ही। अपने चाचा गण्डामल की सहायता से सार्जेन्ट बने, तब वे गुरमुखी में लिखी गीता का पाठ करते थे। २१ वर्ष की अवस्था ही उन पर मुंशी अलखधारी के लेखों का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के भक्त बन गये।

पं० लेखराम ने ही सीमाप्रान्त के पेशावर नगर में आर्यसमाज स्थापित किया। जीव और ब्रह्म सम्बन्धी संशय मिटाने के लिये अजमेर १७ मई सन् १८८० में महर्षि दयानन्द के दर्शन किये तथा कई शंकाओं का समाधान किया। इसके बाद ही आर्योपदेशक नामक पत्र जारी किया तथा जुलाई।१८८४को सरकारी नौकरी छोड़ दी तथा वैदिक धर्म प्रचार के लिये निकल पड़े। इसी समय से उनका नाम आर्य मुसाफिर प्रकाशित हो गया।

पण्डित जी का धार्मिक वाद-विवाद कादियां (जिला गुरुदासपुर) के मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी के साथ खूब हुआ। आर्यसमाज पर आक्षेप करने वाली 'बुरहान ए अहमदिया' पुस्तक के खण्डन में उन्होंने "तकजीब ए बुरहान ए अहमदियां" लिखी। मिर्जा ने "सूर्य ए चश्मा आर्य" लिखी तो आपने उत्तर में 'नुस्खे खब्त अहमदिया' लिखी। प० जी ने शास्त्रार्थ में मिर्जा को पराजित किया तथा उनके चमत्कारों की पोल खोली। इस पर उन्हें धमकियां दी जाने लगी। उत्तर में पण्डित जी ने कहा करते थे "सभी धर्म शहीदों के रुधिर से सींचे जाकर फूले फले हैं, इसी से मैं अपनी जान हथेली पर लिए फिरता हूं।"

उन दिनों कई युवक विधर्मी बन रहे थे। आपने उन्हें शुद्ध किया और पुन: पावन वैदिक धर्म की दीक्षा दी।

३६ वर्ष की आयु में लक्ष्मीदेवी नामक एक सुन्दर व सुसंस्कारी कन्या से आपका विवाह हुआ। वे अपनी पत्नि को भी प्रचारक बनाना चाहते थे। उनका केवल एक ही पुत्र था। एक बार यह पुत्र बीमार पड़ा। ये दीवाने उसकी उपचार व्यवस्था कर प्रचार के लिये चल पड़े। पीछे से आपके पुत्र का देहावसान हो गया। उस समय बालक केवल ६ वर्ष का था। आपने इसे भी ईश्वरीय इच्छा मान कर सन्तोष किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आपको महर्षि दयानन्द सरस्वती का प्रामाणिक जीवन चरित्र लिखने का काम सौंपा। उन्होंने कई राज्यों में घूम घूमकर खूब अनुसन्धान किया व जीवन चरित्र लिखा।

विधर्मियों ने उन पर कई मुकदमे चलाए, किन्तु अन्त में सब खारिज हो गये। तब चिढकर विधर्मी आपके प्राण लेने पर उतारू हुए। फरवरी १८९७ में पण्डित जी के पास काले रंग व नाटे कद का एक व्यक्ति शुद्ध होने के बहाने आया। पण्डित जी ने उसे अपने ही घर में रख लिया। उसका उद्देश्य पण्डित जी की हत्या करने का था। पंडित जी ६ मार्च को मुलतान से लौटे। वह व्यक्ति कम्बल ओढ़े पण्डित जी के पास ही बैठ गया। पण्डित जी महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र की अन्तिम पंक्तियां लिख रहे थे। इतने में माता ने कहा "मां भूल गया, अभी लाता हूं।" यह कहकर जैसे ही वे उठे तथा अंगड़ाई ली कि घातक ने छुरा निकाल कर पण्डित जी ने एक हाथ से छुरा पकड़ लिया तथा दूसरे हाथ से अंतड़ियां। घातक ने इनकी पत्नि तथा माता पर भी वार कर दिया। घर में कुहराम मच गया।

६ मार्च की ही रात्रि को २ बजे गायत्री मन्त्र का जाप करते हुए इस राष्ट्र भक्त, धर्म के दीवाने ने पंच भूत से निर्मित नश्वर शरीर को छोड़ दिया। उनका अन्तिम आदेश था—

"लेख का काम बन्द नहीं होना चाहिये।"

इस प्रकार अमर हुतात्मा आर्य मुसाफिर पण्डित लेखराम ने धर्म व राष्ट्र की बलिवेदी पर अपने आपको चढ़ा दिया।

एक वेदमन्त्र के अनेकार्थ स्वाभाविक हैं

एक वेद मन्त्र के अनेक अर्थ स्वाभाविक हैं। महर्षि यास्क कृत "निरुक्त" की निर्वाचन शैली के अनुरूप भी हैं। जैसे "इन्द्र" शब्द का अर्थ ऐसा स्वामी है, जिसके पास सम्पत्ति, उसके रक्षार्थ शक्ति, एवं उसके उपयोग का ज्ञान (बुद्धि) है। इस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में "इन्द्र" के विभिन्न अर्थ लिए जा सकते हैं। प्रथम अर्थ है, विश्व का स्वामी विश्वपति ईश्वर, दूसरा राष्ट्र का स्वामी राजा तीसरा परिवार का अधिनायक गृहपति गृहस्थ, चौथा शरीर का अधिष्ठाता आत्मा। पांचवा अर्थ विद्युत् भी है, क्योंकि विद्युत् के ताप और प्रकाश, शक्ति और ज्ञान के प्रतीक हैं। वेद में जहां भी "इन्द्र" शब्द का प्रयोग हुआ है, वहां पर ईश्वर, राजा, गृहपति, आत्मा और विद्युत् अर्थ किये जाते हैं और वेदभाव के अर्थ में अभिन्नता होते हुए भी भावार्थ अथवा व्याख्या भिन्न हो जाती है। इसमें न तो पाखण्ड है, न हो विद्वता का व्यर्थ गई। इसमें महर्षि यास्क की निर्वचन शैली का और महर्षि दयानन्द के "देवता" अर्थ का विरोध नहीं है। वेद में जहां भी देवता "इन्द्र" है वहां उस वेदमन्त्र में इन्द्र सभी अर्थों के अनुसार अर्थ होना स्वाभाविक है। उसे मति-विभ्रम उत्पन्न करके मन्त्र के अर्थ को लिकोहित करने का दुष्प्रयास कहना उचित नहीं।

इसी शैली के अनुसार "सविता" का अर्थ ईश्वर भी है, सूर्य भी है। वेदमन्त्र का ईश्वर परक अर्थ कर सकते हैं और सूर्य परक भी। "अग्ने नय सुपथा" में अग्नि का अर्थ ईश्वर और भौतिक अग्नि दोनों किए जा सकते हैं। भावार्थ व्याख्या भिन्न होगी। इससे विविध ज्ञान प्राप्ति ही विशेष उपलब्धि हैं। इसी शैली से से आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक अर्थ होते हैं।

वैदिक संस्कृत या लौकिक संस्कृत या लौकिक संस्कृत का यही गुण वैशिष्ट्य कि अनेकार्थ का माधुर्य, चमत्कार और सौन्दर्य भाव इसी भाषा में—पाया जाता है। विश्व की अन्य किसी भाषा में नहीं है। इस गुण के कारण परेशान होने की नहीं अपितु प्रसन्न होने की आवश्यकता है।

सम्पादकीय

क्या वस्तुतः आर्य समाज सो रहा है ? (२)

सोते को जगाया जा सकता है पर जागते हुए को क्या कहे ? अभी तक हम यह निश्चय नही कर सके, कि वस्तुत हम सो रहे है। मैंने पिछले अक मे कुछ स्पष्टीकरण किया था—इस अक मे मुझे कहना है कि समय समय पर जो भी सकट सामने आये है उनका सामना सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान जी ने किया है। प्रत्येक व्यक्ति नेतृत्व करने मे सक्षम नही होता है। व्यक्तित्व के निखरने मे भी समय लगता है। फिर भी सजग पहरेदार या जागरूक पुरोहित का कार्य है कि वह सावधान होकर राष्ट्र रक्षा मे तत्पर रहे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् समय-समय पर जो सकट आये हैं तब-तब पुरोधा तत्पर रहे हैं।

(१) यहा दिल्ली की प्रसिद्ध घटनाक्रमो की चर्चा करने मे अपना नैतिक दायित्व समझता हूँ। स्मरण रहे कि जब दिल्ली मे राज शर्मा काण्ड हुआ था और सिकन्दरबख्त के साथ शादी होने का चक्र चला। उस समय कोई भी माई का लाल नेता नही निकला। विवाह रुकवाने का पराक्रम किया उस समय के लाला रामगोपाल शालवाले ने। घटना प्रसिद्ध है कि उसी समय श्री शालवाले जी गिरफ्तार कर लिए गए। उस समय दिल्ली तीन दिन बन्द रही थी। दिल्ली खुली तब, जब शालवाले जी जेल से मुक्त किये गये।

(२) सम्भवत आप सभी को स्मरण होगा कि राष्ट्रपति भवन मे श्री जाकिर हुसैन साहब जब राष्ट्रपति थे तब वहा एक मस्जिद निर्माण के लिये सरकार की योजना थी। कुछ प्रमुख राष्ट्रीय नेताओ ने यह बात जागरूक प्रहरी लाला रामगोपाल जी शालवाले से कही ? उन्होने जिस तत्परता व सूझबूझ से काम लिया, कि राष्ट्रपति भवन मैं मस्जिद बनने से रुक गई। अगले दिन बा० जगजीवन राम जी जब लोकसभा मे मिले, तो तुरन्त आकर बोले कि आज आपने वह काम किया है कि आपके चरण रज को माथे पर लगा लू। राष्ट्रीय स्तर के सभी समझदार इस घटनाक्रम से प्रसन्न थे और श्री शालवाले जी को अन्तरात्मा से बधाई दे रहे थे। समय बीतते देर नही लगती है।

इसी घटना को किसी ने आज के सर सघ चालक श्री बाला साहब देवरस को सुनाया। वह इस घटना की सत्य जानकारी हेतु इतने उत्सुक थे कि एक बार उन्होने श्री शालवाले जी को अपने स्थान पर आमन्त्रित किया। शालवाले जी जब श्री देवरस के यहा पहुँचे तब वहा और बहुत सी बाते हुई, वहा उन्होने राष्ट्रपति भवन मे मस्जिद बनने के रुकवाने पर आपसे पूरी जानकारी प्राप्त की। इस घटना को सुनने के बाद उन्होने श्री लाला जी से कहा कि आप सारे जीवन मे कोई भी महान कार्य न करे। केवल यह एक ही घटना इतनी महत्वपूर्ण है कि आप सदा सदा ही यश के भागी रहेगे।

(३) बात बहुत पुरानी नही है स्व० चौ० चरणसिह के समय चादनी चौक के सर्राफे मे बनी मस्जिद और उसके पीछे मिट्टी मे दबा मन्दिर जब खुदाई मे निकला तब साम्प्रदायिक तत्वो ने हमला करके सर्राफा लूटने व मन्दिर पर कब्जा करने के लिए भयकर हमले किये। उस समय सर्राफो के बड़े बड़े करोड़पति श्री लाला जी के पास आए। श्री लाला जी ने उन सबको लेकर चौ० चरणसिह से मिलाया, उन्होने सारी व्यथा कथा सुनने के बाद जो व्यवस्था की उस पर बड़े-बड़े करोड़पति भी लाला जी के आगे नतमस्तक थे।

(४) महरौली के पास गौ-शाला के भूखण्ड को सरकार ने वापस ले लिया। श्री शालवाले जी तुरन्त श्रीमती इन्दिरा गाधी से मिले, जब उन्हे वस्तु स्थिति से अवगत कराया तब देवी इन्दिरा जी ने सार्व० सभा को गौशाला व चारागाह के लिए पृथक से बिना मूल्य भूमि दी और ६ लाख रुपए को भी वापस दे दिया।

(५) धर्म परिवर्तन का चक्र विगत वर्षों मे तूफान की तरह चला स्थान स्थान पर हरिजनो को प्रलोभन देकर धर्मपरिवर्तन की लहर तेजी से चली। तभी मीनाक्षीपुरम नामक गाव को पूरा मुस्लिम बना लिया परन्तु सजग पहरेदारो के होने पर अपने भाइयो को गले लगाया विधर्मियो की चाल को विफल कर कुछ अच्छे पढे लिखे मौलवियो को शुद्ध कर लिया जो आज देश मे वैदिक धर्म का नाद बजाकर प्रचार कर रहे है ?

(६) सार्वदेशिक सभा के द्वारा लाखो रुपये का साहित्य प्रकाशित कर नयी परम्परा को जन्म दिया साथ ही सभा आर्थिक दृष्टि से कमजोर थी उसमे लाखो रुपयो की निधिया स्थिर की। सभा आज आर्थिक दृष्टि मे काफी समर्थ है।

(७) कई आर्य समाज के विवादो मे दिल्ली के जजो ने श्री लाला जी को विवाद तय करने के लिये मध्यस्थ निर्णीत किया। इसी प्रकार एक बडी रोचक घटना का भी स्मरण कराता हूँ।

दो शकराचार्यों के पारस्परिक विवादा को हल करने के लिए पचास के लगभग व्यक्तियो के नाम चुने गये, उन नामो मे श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले का नाम भी था। निश्चय यह हुआ कि दोना आचार्य जिस व्यक्ति को निर्णायक माने वही पच बनाया जायगा। आश्चर्य तब हुआ जब दानो आचार्यों ने श्री लाला जी के नाम पर पृथक-२ चिन्ह लगाया। सभी का विश्वास आप पर ही था। सत्य सिर चढकर बोलता है घर मे आपसी आर्य समाजो व आर्य समाजो के विवादो को भी आपने बडी शालीनता से निपटाया है।

कहा तक कहे—जागरूक प्रहरी का एक-एक क्षण चिन्तनीय है।

आदर्श धर्म प्रचारक पं० लेखराम जी

आर्य पथिक की मौलिक प्रचार मे धूम मची हुई थी। आर्य समाज मे उन धर्म प्रचारको की सख्या अगुलियो पर गिनी जा सकती है। जो लेखराम के समीप इस अश मे पहुँच सके। गृहस्थी होते हुए भी सन्यास की तितिक्षा तथा धारना हम अनेक आचरण मे देखते है। विरोधी लोग प्रसिद्ध करते है कि पण्डित लेखराम बदजबान था यद्यपि वह खण्डन सर्वमता का एक सा करते थे, परन्तु हिन्दुओ, जैनियो, सिक्खो ने उनकी कभी शिकायत नही की। इसका कारण तो यह हो सकता है कि यद्यपि इन मतो के सशोधन के लिए इन मतावलम्बियो को हिलाते थे। तथापि आर्य जाति विरोधियो के आक्रमणो से इनको भी बचाने का ठेका लेखराम ने ही ले रखा था। एक बार स्वामी श्रद्धानन्द और पण्डित लेखराम इकट्ठे दिल्ली से लौट रहे थे कि मार्ग मे सनातन धर्म सभा के पण्डित दीनदयाल जी मिल गये। बातचीत आरम्भ होने पर पण्डित लेखराम ने कहा—'आप हमे कोसने के लिये बडे बहादुर हो लेकिन इस्लाम धर्म आपके धर्म की जडे खोद रहा है और आप चुप बैठे है।" पण्डित दीनदयाल जी ने उत्तर दिया—'यह काम तो हम सबने आपके सुपुर्द कर छोडा है, जब तक आर्य मुसाफिर जीवित है हमारे धर्म की जड कौन खोद सकता है ?"

हाजिर जवाबी में कमाल

जो पुरुष किसी बडे काम मे कृतकार्य होना चाहे उनके लिए "हाजिर जवाबी" एक अपूर्व सम्मिलित अस्त्र शस्त्र है। जिस बात को दलील से काटने मे घण्टो का नाश हो उस बात का "हाजिर जवाबी" मिनटो मे सफाया बोल देती है।

लेखराम बचपन से 'हाजिर जवाबी" के लिए प्रसिद्ध थे। मदरसे मे पहले साल परीक्षक इनकी हाजिर जवाबी से प्रसन्न हुए थे। इनके पहले उस्ताद तुलसी राम जी इसी हाजिर जवाबी से तग थे। जिसके कारण इनकी अकल की शिकायत किया करते। इस कहानी मे भी कई स्थानो पर मैंने उनकी हाजिर जवाबी के नमूने दिए हैं। परन्तु उनकी हाजिर जवाबी को पढकर ऐसा आनन्द आता है और हमारे चरित्र नायक के इनमे गुण का पता लगता है कि उनमे से कुछ और का उल्लेख करना मनोरञ्जक ही न होगा प्रस्तुत शिक्षादायक भी सिद्ध होगा।

हरद्वार मे सवत् १६४८ के कुम्भ मेले पर स्वामी आत्मानन्द जी ने सयुक्त प्रान्तो के छूतछात वाले उपदेशको का चौका स्थिर रखने के लिए यह

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य मुसाफिर पं० लेखराम

—कविरत्न, जगदीशप्रसाद एरन, नीमच—

धर्म के मार्ग में अधर्मी से कभी डरना नहीं।
चेत कर चलना कुमारग में कदम धरना नहीं॥
शुद्ध भावों में भयानक भावना भरना नहीं।
बुद्धि वर्धक लेख लिखने में कमी करना नहीं॥
दे गये हमको मुनासिब राय पं० लेखराम।
तर गये 'जगदीश' के गुण गाय पं० लेखराम॥

महर्षि दयानन्द के बाद उनके कार्यों को पूरा करने के लिए निडर होकर अन्धविश्वास और मिथ्यावाद को समाप्त करने के लिए जिन धर्म वीर दीवानों ने सब पर कफन बांधे, उनमें पं० लेखराम का नाम अग्रणी है। उनकी लोह लेखनी झूठे सम्प्रदायों के खलिहानों को जलाकर खाक कर देती थी। जिसकी सिंह गर्जना से विरोधी कांप जाते थे, उन्हीं धर्मवीर पं० लेखराम का जन्म सन् १८१८ तदनुसार चैत्र सवत १९१५ को पंजाब के जेहलम जिले के सैदपुर नामक ग्राम में एक सारस्वत ब्राह्मण कुल में हुआ था।

आप बाल्यकाल से ही धार्मिक संस्कारों में पले थे। बुद्धि तीव्र थी ही। अपने चाचा गण्डामल की सहायता से सार्जेन्ट बने, तब वे गुरमुखी में लिखी गीता का पाठ करते थे। २१ वर्ष की अवस्था ही उन पर मुंशी अलखधारी के लेखों का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के भक्त बन गये।

पं० लेखराम ने ही सीमाप्रान्त के पेशावर नगर में आर्यसमाज स्थापित किया। जीव और ब्रह्म सम्बन्धी संशय मिटाने के लिये अजमेर १७ मई सन् १८८० में महर्षि दयानन्द के दर्शन किये तथा कई शंकाओं का समाधान किया। इसके बाद ही आर्योपदेशक नाम क पत्र जारी किया तथा जुलाई१८८४को सरकारी नौकरी छोड़ दी तथा वैदिक धर्म प्रचार के लिये निकल पड़े। इसी समय से उनका नाम आर्य मुसाफिर प्रकाशित हो गया।

पण्डित जी का धार्मिक वाद-विवाद कादियां(जिला गुरुदासपुर) के मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी के साथ खूब हुआ। आर्यसमाज पर आक्षेप करने वाली 'बुरहान ए अहमदिया' पुस्तक के खण्डन में उन्होंने "तकजीब ए बुरहान ए अहमदियां' लिखी। मिर्जा ने "सूर्य ए चश्मा आर्या" लिखी तो आपने उत्तर में 'नुस्खे खब्त अहमदिया' लिखी। पं० जी ने शास्त्रार्थ में मिर्जा को पराजित किया तथा उनके चमत्कारों की पोल खोली। इस पर उन्हें धमकियां दी जाने लगीं। उत्तर में पण्डित जी ने कहा करते थे "सभी धर्म शहीदों के रुधिर से सींचे जाकर फूले फले हैं, इसी से मैं अपनी जान हथेली पर लिए फिरता हूं।"

उन दिनों कई युवक विधर्मी बन रहे थे। आपने उन्हें शुद्ध किया और पुनः पावन वैदिक धर्म की दीक्षा दी।

३६ वर्ष की आयु में लक्ष्मीदेवी नामक एक सुन्दर व सुसंस्कारी कन्या से आपका विवाह हुआ। वे अपनी पत्नि को भी प्रचारक बनाना चाहते थे। उनका केवल एक ही पुत्र था। एक बार यह पुत्र बीमार पड़ा। ये दीवाने उसकी उपचार व्यवस्था कर प्रचार के लिये चल पड़े। पीछे से आपके पुत्र का देहावसान हो गया। उस समय बालक केवल ६ वर्ष का था। आपने इसे भी ईश्वरीय इच्छा मान कर सन्तोष किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आपको महर्षि दयानन्द सरस्वती का प्रामाणिक जीवन चरित्र लिखने का काम सौंपा। उन्होंने कई राज्यों में घूम घूमकर खूब अनुसन्धान किया व जीवन चरित्र लिखा।

विधर्मियों ने उन पर कई मुकदमे चलाए, किन्तु अन्त में सब खारिज हो गये। तब चिढ़कर विधर्मी आपके प्राण लेने पर उतारू हुए। फरवरी १८९७ में पण्डित जी के पास काले रंग व नाटे कद का एक व्यक्ति शुद्ध होने के बहाने आया। पण्डित जी ने उसे अपने ही घर में रख लिया। उसका उद्देश्य पण्डित जी की हत्या करनी का था। पंडित जी ६ मार्च को मुलतान से लौटे। वह व्यक्ति कम्बल ओढ़े पण्डित जी के पास ही बैठ गया। पण्डित जी महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र की अन्तिम पंक्तियां लिख रहे थे। इतने में माता ने कहा "मां भूल गया, अभी लाता हूं।" यह कहकर जैसे ही वे उठे तथा अगड़ाई ली कि घातक ने छुरा निकाल कर पण्डित जी ने एक हाथ से छुरा पकड़ लिया तथा दूसरे हाथ से अंतड़ियां। घातक ने इनकी पत्नि तथा माता पर भी वार कर दिया। घर में कुहराम मच गया।

६ मार्च की ही रात्रि को २ बजे गायत्री मन्त्र का जाप करते हुए इस राष्ट्र भक्त, धर्म के दीवाने ने पंच भूत से निर्मित नश्वर शरीर को छोड़ दिया। उनका अन्तिम आदेश था—

"लेख का काम बन्द नहीं होना चाहिये।"

इस प्रकार अमर हुतात्मा आर्य मुसाफिर पण्डित लेखराम ने धर्म व राष्ट्र की बलिवेदी पर अपने आपको चढ़ा दिया।

एक वेदमन्त्र के अनेकार्थ स्वाभाविक हैं

एक वेद मन्त्र के अनेक अर्थ स्वाभाविक हैं। महर्षि यास्क कृत "निरुक्त" की निर्वाचन शैली के अनुरूप भी हैं। जैसे "इन्द्र" शब्द का अर्थ ऐसा स्वामी है, जिसके पास सम्पत्ति, उसके रक्षार्थ शक्ति, एवं उसके उपयोग का ज्ञान (बुद्धि) है। इस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में "इन्द्र" के विभिन्न अर्थ लिए जा सकते हैं। प्रथम अर्थ है, विश्व का स्वामी विश्वपति ईश्वर, दूसरा राष्ट्र का स्वामी राजा तीसरा परिवार का अधिनायक गृहपति गृहस्थ, चौथा,शरीर का अधिष्ठाता आत्मा। पांचवा अर्थ विद्युत् भी है, क्योंकि विद्युत् के ताप और प्रकाश, शक्ति और ज्ञान के प्रतीक हैं। वेद में जहां भी "इन्द्र" शब्द का प्रयोग हुआ है, वहां पर ईश्वर, राजा, गृहपति, आत्मा और विद्युत् अर्थ किये जाते हैं और वेदभाव के अर्थ में अभिन्नता होते हुए भी भावार्थ अथवा व्याख्या भिन्न हो जाती है। इसमें न तो पाखण्ड है, न ही विद्वता का व्यर्थ गर्व। इसमें महर्षि यास्क की निर्वचन शैली का और महर्षि दयानन्द के "देवता" अर्थ का विरोध नहीं है। वेद में जहां भी देवता "इन्द्र" है वहां उस वेदमन्त्र में इन्द्र सभी अर्थों के अनुसार अर्थ होना स्वाभाविक है। उसे मति-विभ्रम उत्पन्न करके मन्त्र के अर्थ को लिकोहित करने का दुष्प्रयास कहना उचित नहीं।

इसी शैली के अनुसार "सविता" का अर्थ ईश्वर भी है, सूर्य भी है। वेदमन्त्र का ईश्वर परक अर्थ कर सकते हैं और सूर्य परक भी। "अग्ने नय सुपथा " में अग्नि का अर्थ ईश्वर और भौतिक अग्नि दोनों किए जा सकते हैं। भावार्थ व्याख्या भिन्न होगी। इससे विविध ज्ञान प्राप्ति ही विशेष उपलब्धि है। इसी शैली से से आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक अर्थ होते हैं।

वैदिक संस्कृत या लौकिक संस्कृत या लौकिक संस्कृत का यही गुण वैशिष्ट्य कि अनेकार्थ का माधुर्य, चमत्कार और सौन्दर्य मात्र इसी भाषा में—पाया जाता है। विश्व की अन्य किसी भाषा में नहीं है। इस गुण के कारण परेशान होने की नहीं अपितु प्रसन्न होने की आवश्यकता है।

आर्य जगत् के समाचार

दक्षिण दिल्ली में ऋषिबोधोत्सव

रामकृष्णपुरम सैक्टर-६ नई दिल्ली-२२ के सत्संग भवन के स्वामी आनन्द बोध द्वारा रविवार दिनाक २१-२-१६८८ को उद्घाटन के शुभ अवसर पर दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान मे ऋषिबोधोत्सव दक्षिण दिल्ली की समस्त आर्य समाजो की ओर से आर्य समाज मन्दिर रामकृष्णपुरम सैं०-६ नई दिल्ली-२२ मे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। दिनाक १७-२-८८ से २०-२-८८ तक प्रात साय स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती (वेद मन्दिर हरिद्वार) ने रामकृष्णपुरम नई दिल्ली की सरकारी कालोनी के निवासियो को यजुर्वेद शतक महायज्ञ द्वारा वेद अमृत की वर्षा से तृप्त किया २१-२-८८ को यजुर्वेद शतक महायज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात श्रीमती कान्ता सिक्का ने ध्वजारोहण किया और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पश्चात् स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने ओ३म् ध्वज की महिमा पर प्रकाश डाला और आर्य समाज रामकृष्णपुरम सैं०-६, नई दिल्ली के नव निर्मित सत्सग भवन का उद्घाटन किया। १०-३० बजे से यह समारोह ऋषिबोधोत्सव के रूप मे परिवर्तित हो गया जिसमे स्वामी आनन्द बोध सरस्वतीके पश्चात सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी, डा० धर्मपाल प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री सूर्यदेव जी महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, डा० शिव कुमार शास्त्री, डा० महेश विद्यालकार, श्रीमती सुशीला त्यागी उपप्रधान द० दि० वे० म० श्रीमती बजाज ने महर्षि दयानन्द की महिमा को दर्शाते और ऋषि को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए समस्त आर्यो का मार्ग दर्शन किया।

—ओ३मप्रकाश कपूर, मन्त्री

संस्कृत सीखना सरल है

शब्दरूप और धातुरूप को अगर कठिन प्रतीत होता हो और संस्कृत सभाषण शीघ्र करने की प्रबल इच्छा हो तो एतदर्थ एक पुस्तक 'संस्कृत वाक्य प्रबोध' को पढ़कर आप तुरन्त ही संस्कृत मे बात करना आरम्भ कर सकते हैं। इस पुस्तक मे विभिन्न विषया क्षेत्रो के लिए प्रयुक्त होने वाले वाक्य संस्कृत तथा हिन्दी मे दिए गए हैं। यह पुस्तक ऐसी है जैसी अग्रेजी सम्भाषण के लिए बाजार मे मिलती हैं। इसका मूल्य मात्र एक रुपया है। इसे वैदिक यन्त्रालय अजमेर सार्वदेशिक सभा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ, आर्य समाज चौक इलाहाबाद ने भी छापा है। आप आश्चर्य करेंगे कि इसके लेखक हैं— महर्षि दयानन्द सरस्वती। आज से लगभग ११५ वर्ष पूर्व महर्षि ने यह पुस्तक लिखी थी।

—धर्मवीर

ऋषि मेला एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द आर्य गुरुकुल कृष्णपुर मझना फर्रुखाबाद (उ० प्र०) का २०-२१ २२ फरवरी को विभिन्न सम्मेलनो के साथ वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। वार्षिकोत्सव मे हरियाणा, पजाब राजस्थान, उडीसा आन्ध्रप्रदेश दिल्ली, बिहार के लोगो ने भाग लिया।

स्वामी चन्द्रवेश जी, प्रो० प्रभूदयाल जी चौ० नत्थासिह तथा महात्मा नारायण स्वामी क्रान्तिकारी एव प० शिववीर जी शास्त्री आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री प्रमुख वक्ता थे। ऋषि मेला का उद्घाटन श्री आचार्य यशपाल जी (अलीगढ) ने किया। इस अवसर पर आर्य वीरो का कार्यक्रम रखा गया। जिसका निर्देशन श्री राजकुमार (कानपुर) ने किया।

—डा० शिवरामसिह आर्य मन्त्री

आर्य दम्पति को पुत्री शोक

प० हरिदास 'ज्वाल' भू० पू० मन्त्री बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना एव डा० सम्पत्ति आर्याणी डी० लिट् (पटना विश्वविद्यालय) की बेटी पुत्री प्रतिभा आर्याणी धर्म पत्नी श्री भुवनेश्वर प्रसाद का असामयिक निधन उनके राची निवास पर हो गया। शान्ति यज्ञ दिनाक ७ मार्च १६८८ ई० सोमवार को रखा गया। परमात्मा दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—वीरेन्द्र कुमार
आर्य समाज, जहानाबाद

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज एव महिला आर्य समाज रेलवे रोड अम्बाला नगर की यह सभा दिनाक २८-२-१६८८ को हुई विशेष बैठक अपनी आर्यसमाजके वयोवृद्ध एव कर्मठ सदस्य लाला बाबूराम जी गुप्ता एडवोकेट के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। लाला जी आर्य समाज के लम्बे समय तक सम्पर्क मे रहे तथा इस समाज के प्रधानमन्त्री तथा अन्य महत्वपूर्ण पदा पर कार्य करते रहे।

इस सभा की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान करे तथा उनके सन्तप्त परिवार को यह असह्य दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—हरबसलाल मन्त्री

यज्ञ एवं वेद कथा

आर्य समाज दरियागज ने होली के उपलक्ष्य म २७ फरवरी स ६ मार्च तक यज्ञ एव वेद कथा का आयोजन किया यज्ञ नित्य प्रात प० शिववीर शास्त्री जी ने तथा शाम ७ बजे से ८ बजे तक कथा से पूर्व प० प्रेमचन्द्र जी शास्त्री के भजन हुये और ८ बजे से ६ बजे तक वेद कथा श्री प० यशपाल सुधाशु जी ने की। २७ फरवरी को वेद कथा का उद्घाटन विधिवत पुरोहित सभा ने किया। अन्त मे मन्त्री श्री वीरेन्द्रपाल एव प्रधान श्री बी० बी० सिगलने सभी का धन्यवाद किया।

वीरेन्द्रपाल मन्त्री — श्री बी० बी० सिगल प्रधान

पं० लेखराम

(पृष्ठ ३ का शेष)

प्रबन्ध किया कि पजाबियो से पहले वह चौके मे भोजन कर लिया करे। पण्डित लेखराम उनसे भी पहले भोजन के लिए जा बैठे। अब पजाबियो का अपवित्र किया हुआ चौका फिर से लगाया गया। दूसरे दिन भी पण्डित लेखराम पाचक (रसोइए) के साथ वाली क्यारी मे जा बैठे परन्तु जब रोटी को बिना अधिक सेके उसने चूल्हे मे से खीचा तो आपने उसकी पीठ पर हाथ ठोका और उसके हाथ से चिमटा लेकर उसे रोटी सेकना बताने लगे। अब सयुक्त प्रान्तीय दल मे खलबली मच गई परन्तु कुछ सयुक्त प्रान्ती उस समय आर्य पथिक के चेले बन गये और सखरी निखरी के भेदभाव को उडा दिया।

दिल्ली के जलसे पर एक आदमी केशर का चन्दन सब भाइयों के माथे पर लगाता आता था। जब आर्य पथिक के समीप आया तो उन्होने डाट कर कहा—"मेरे सिर पर दर्द नही है।" उत्तर मिला महाराज! सुगन्धित के लिए लगाते हैं। आर्य पथिक ने दाहिने हाथ का पृष्ठभाग सामने करके कहा— तो यहा लगाओ' और जब वहा चन्दन लगाया तो नाक के पास ले जाकर सूघने लगे। जिस पर सब उपस्थित सज्जन मुस्कुरा दिये।

एक अन्य सज्जन ने भोजन के पश्चात समस्त आर्य भाइयों को ताम्बूल (पान) बाटे। जब आर्य पथिक के सामने पान दान पेश किया तो बोले— देखते नही हो मैं मनुष्य हूँ, बकरा नही कि पत्ते खाऊ। गुजरात आर्य समाज मे आर्य पथिक का व्याख्यान हो रहा था। मुसलमानो के हराम हलाल के मसले पर बोल रहे थे। समाप्ति पर प्रश्नोत्तर का समय दिया गया। दो मौलवियो को तो यो ही भिभ्काड दिया परन्तु अन्त म मौलवी बाकर हुसैन उठे जिनकी ऋषि दयानन्द के साथ भी बातचीत हो चुकी थी। मौलवी साहब ने कहा—"पण्डित साहेब! आपने जो हमारे हराम हलाल के मसले पर एतराज (आक्षेप) किये है, क्या आपने यह भी सोचा है कि हमारे मजहब मे चुहिया हराम है। क्या वह भी इसी लिए हराम कर दी गई कि जबरदस्त थी? आर्य पथिक ने पूछा कि मौलवी साहेब सुन्नी है या शिया। यह उत्तर पाने पर कि मौलवी साहब शिया है। पण्डित लेखराम ने उत्तर दिया - मौलवी साहेब! मुझे आपका कथन सुनकर हसी आती है। आप शिया होकर चूहे की बुजुर्गी और जबरदस्ती से इन्कार करते ह। यही नामुराद चूहा था जिसने मैदान कर्बला में सब पानी की मशके काट दी, और बेचारे इमाम हुसन को प्यासा मरवाया। अगर ऐसे दो तीन और जबरदस्त पैदा हो जाये तो अरब और ईरान मे कई कर्बला की सी घटनाये हो जाये।' श्रोतागण खिलखिलाकर हस पडे और मौलवी साहेब चुप हो गये।

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः

विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता लोकतन्त्र का प्राण है। किसी सीमा तक आज की अपेक्षा तो ब्रिटिश काल मे ही यह स्वतन्त्रता अधिक थी। तभी बरेली मे स्वामी दयानन्द ने मि० एडवर्डस कमिश्नर, मि० रीड कलेक्टर तथा लगभग १५, २० अन्य अंग्रेज अधिकारियों की उपस्थित में ईसाई मत की आलोचना करते हुए कहा था, "लोग कहते हैं कि सत्य को प्रकट न करो कलक्टर क्रोधित होगा, अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे! चक्रवर्ती राजा भी क्यो न अप्रसन्न हो हम तो सत्य ही कहेंगे।" और कहीं कुछ भी उल्लेखनीय न हुआ।

स्वामी दयानन्द ने एक ऐतिहासिक पत्र संस्कृत भाषा (गद्य-पद्य) मे अपने शिष्य एवं विदेश म उनके वैदिक संस्कृति के प्रथम दूत प० श्याम जी कृष्ण वर्मा को लन्दन मे भेजा था। इस पत्र मे स्वामी जी ने उन्हे इंग्लैंड की पार्लियामेंट मे जाकर वहा के सदस्यो को यह बताने का निर्देश दिया कि भारत मे मुंशी इन्द्रमणि द्वारा इस्लाम मत पर लिखी गई पुस्तक भारत सरकार ने जब्त करके किस प्रकार लोकतन्त्र एवं ब्रिटिश सरकार द्वारा घोषित नीति का गला घोटा है। यह पत्र ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन" प्रथम भाग पृष्ठ ४१२ पर प्रकाशित है।

स्वामी जी ने इसको लेकर पूरे भारत मे एक चेतना जगायी मुन्शी इन्द्रमणि पर जो ५०० रु० का आर्थिक दण्ड न्यायालय लगाया गया था। दो बार अपील करके उसे समाप्त कराया गया। यही नहीं भविष्य मे ऐसी स्थिति का मुकाबला करने के लिए उन्होंने एक कोष की भी स्थापना कर दी।

दिल्ली निवासी सुधी विचारक श्री रामस्वरूप की पुस्तक 'इस्लाम मू हदीस" जो सन १९८३ मे अमेरिका तथा १९८४ मे भारत मे प्रकाशित हो चुकी है। विगत चार वर्षो मे इस पुस्तक मे किसी विद्वान को कोई आपत्ति जनक सामग्री नही मिली। ११ दिसम्बर १९८७ को इसी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने के अपराध (?) मे वरिष्ठ लेखक एवं प्रकाशक सीताराम गोयल को उनके निवास दिल्ली से भारतीय दण्ड संहिता २९५ के अन्तर्गत पुलिस ने बन्दी बना कर कारागार मे डाल दिया। यह भी ज्ञात हुआ है कि लेखक की आलोच्य पुस्तक की सारी प्रतिया पुलिस ने अपने कब्जे मे बुक बाइन्डर के पास से ही ले ली है। प्रस्तुत पत्र लेखक के ज्ञान के अनुसार इस्लाम मू हदीस" म कुछ भी आपत्तिजनक नही है। लेखक ने जो कुछ भी लिखा है सारा प्रमाणिक हदीसो के आधार पर लिखा है। यदि फिर भी लोगो/सरकार को इसमे कुछ आपत्तिजनक लगता है तो उन्हे चाहिए उसे मूल स्रोत से ही निकाल दिया जाये। ताकि उसे कोई पढ ही न सके।

लेखक को बन्दी बनाकर कारागार मे डाल कर बौद्धिक स्तर पर आतक पैदा करना कितना उचित है सभी विचारक इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचारें एव तत्काल उचित समाधान निकालें। जिस देश या समाज का बुद्धिजीवि कर्तव्यच्युत होकर उदासीन बन बैठ जायेगा। वह देश या समाज स्वाभिमानपूर्वक अधिक दिन तक जी न सकेगा। फिर आर्य समाज का तो जन्म ही क्रांति अर्थात् सत्य की स्थापना के लिए हुआ है यदि वह राष्ट्र मे व्याप्त इस प्रकार के आतक को समाप्त करने मे सक्रिय होगा तभी उसका आदर्श 'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहित' का उद्घोष पूरा होगा।

—जयदेव शर्मा

मन्त्र गीत

[पृष्ठ १ का शेष]

तुझे देखते हुए भी नहीं देख पाते, जो भोगों के दल-दल में फसे हुए हैं।
न वे मूक हैं पर कहां बोल पाते, अविद्या की कीचड़ में धंसे हुए हैं॥

श्रवण शक्ति है पर सुनते नहीं हैं, रागों के रंगों में भूले हुए हैं।
पापों के कीचड़ में सने हुए जो, मृत्यु के झूले पे, झूले हुए हैं॥

हे ईश, कण-कण में व्यापक तुम्हीं हो, नक्षत्र मण्डल में आभा तुम्हीं हो।
खग कुल के कलरव में संगीत जैसी, मन-मोहनी सी सभा तुम्हीं हो॥

तुझे देख पाते हैं केवल वही जन, कृपा तुम्हारी हो जाती जिन पर।
सतत योग में तल्लीन जो मन, वही वास तेरा हो जाता सत्वर॥

जिन्हें आश केवल तुम्हारी लगी है, वे स्वयं के सुखों को भूले हुए हैं।
पराई भलाई को अपनी भलाई, समझकर कर्म में तत्पर हुए हैं॥

प्रभो तेरी विद्या का प्रकाश प्यारा, प्रिया और प्रीतम संयोग जैसा।
वही 'वेदभिक्षु' प्रभावान होता' निरंतर साधना-साधता योग ऐसा॥

—स्वा० ब्रह्मानन्द 'वेद भिक्षु' गुन्नौर

आर्य जगत् के समाचार

दक्षिण दिल्ली में ऋषिबोधोत्सव

रामकृष्णपुरम सैक्टर-६ नई दिल्ली-२२ के सत्सग भवन के स्वामी आनन्द बोध द्वारा रविवार दिनाक २१-२-१९८८ को उद्घाटन के शुभ अवसर पर दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान मे ऋषिबोधोत्सव दक्षिण दिल्ली की समस्त आर्य समाजो की ओर से आर्य समाज मन्दिर रामकृष्णपुरम सै०-६ नई दिल्ली-२२ मे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। दिनाक १७-२-८८ से २०-२-८८ तक प्रात साय स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती (वेद मन्दिर हरिद्वार) ने रामकृष्णपुरम नई दिल्ली की सरकारी कालोनी के निवासियो को चतुर्वेद शतक महायज्ञ द्वारा वेद अमृत की वर्षा से तृप्त किया २१-२-८८ को चतुर्वेद शतक महायज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात श्रीमती कान्ता सिक्का ने ध्वजारोहण किया और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पश्चात् स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने ओ३म् ध्वज की महिमा पर प्रकाश डाला और आर्य समाज रामकृष्णपुरम सै०-६, नई दिल्ली के नव निर्मित सत्सग भवन का उद्घाटन किया। १०-३० बजे से यह समारोह ऋषिबोधोत्सव के रूप मे परिवर्तित हो गया जिसमे स्वामी आनन्द बोध सरस्वतीके पश्चात सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी, डा० धर्मपाल प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री सूर्यदेव जी महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, डा० शिव कुमार शास्त्री, डा० महेश विद्यालकार, श्रीमती सुशीला त्यागी उपप्रधान द० दि० वे० म० श्रीमती बजाज ने महर्षि दयानन्द की महिमा को दर्शाते और ऋषि को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए समस्त आर्यो का मार्ग दर्शन किया।

—ओ३मप्रकाश कपूर, मन्त्री

संस्कृत सीखना सरल है

शब्दरूप और धातुरूप को अगर कठिन प्रतीत होता हो, और सस्कृत सभाषण शीघ्र करने की प्रबल इच्छा हो तो एतदर्थ एक पुस्तक "सस्कृत वाक्य प्रबोध" को पढकर आप तुरन्त ही सस्कृत मे बात करना आरम्भ कर सकते है। इस पुस्तक मे विभिन्न विषय, क्षेत्रो के लिए प्रयुक्त होने वाले वाक्य सस्कृत तथा हिन्दी मे दिए गए है। यह पुस्तक ऐसी है, जैसी अग्रेजी सम्भाषण के लिए बाजार मे मिलती है। इसका मूल्य मात्र एक रुपया है। इसे वैदिक यन्त्रालय अजमेर सार्वदेशिक सभा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ आर्य समाज चौक इलाहाबाद ने भी छापा है। आप आश्चर्य करेंगे कि इसके लेखक है—"महर्षि दयानन्द सरस्वती"। आज से लगभग ११५ वर्ष पूर्व महर्षि ने यह पुस्तक लिखी थी।

—धर्मवीर

ऋषि मेला एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द आर्य गुरुकुल कृष्णपुर मभना फर्रुखाबाद (उ० प्र०) का २०-२१-२२ फरवरी को विभिन्न सम्मेलनो के साथ वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। वार्षिकोत्सव मे हरियाणा, पजाब, राजस्थान, उडीसा आन्ध्रप्रदेश दिल्ली, बिहार के लोगो ने भाग लिया।

स्वामी चन्द्रवेश जी, प्रो० प्रभुदयाल जी, चौ० नत्थासिह तथा महात्मा नारायण स्वामी क्रान्तिकारी एव प० शिववीर जी शास्त्री, आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री प्रमुख वक्ता थे। ऋषि मेला का उद्घाटन श्री आचार्य यशपाल जी (अलीगढ) ने किया। इस अवसर पर आर्य वीरो का कार्यक्रम रखा गया। जिसका निर्देशन श्री राजकुमार (कानपुर) ने किया।

—डा० शिवरामसिह आर्य, मन्त्री

आर्य दम्पति को पुत्री शोक

प० हरिदास 'ज्वाल' भू० पू० मन्त्री बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना एव डा० सम्पत्ति आर्याणी डी० लिट् (पटना विश्वविद्यालय) की बडी पुत्री प्रतिभा आर्याणी धर्म पत्नी श्री भुवनश्वर प्रसाद का असामयिक निधन उनके राची निवास पर हो गया। शान्ति यज्ञ दिनाक ७ मार्च १९८८ ई० सोमवार को रखा गया। परमात्मा दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—वीरेन्द्र कुमार
आर्य समाज, जहानाबाद

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज एव महिला आर्य समाज रेलवे रोड अम्बाला नगर की यह सभा दिनाक २८-२-१९८८ को हुई विशेष बैठक अपनी आर्यसमाजके वयोवृद्ध एव कर्मठ सदस्य लाला बाबूराम जी गुप्ता एडवोकेट के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। लाला जी आर्य समाज के लम्बे समय तक सम्पर्क मे रहे तथा इस समाज के प्रधानमन्त्री तथा अन्य महत्वपूर्ण पदो पर कार्य करते रहे।

इस सभा की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान करे तथा उनके सन्तप्त परिवार को यह असह्य दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—हरबसलाल, मन्त्री

यज्ञ एवं वेद कथा

आर्य समाज दरियागज ने होली के उपलक्ष्य म २७ फरवरी स ३ मार्च तक यज्ञ एव वेद कथा का आयोजन किया यज्ञ नित्य प्रात प० शिववीर शास्त्री जी ने तथा शाम ७ बजे से ८ बजे तक कथा से पूर्व प० प्रेमचन्द्र जी शास्त्री के भजन हुये और ८ बजे से ९ बजे तक वेद कथा श्री प० यशपाल सुधाशु जी ने की। २७ फरवरी को वेद कथा का उद्घाटन विधिवत पुरोहित सभा ने किया। अन्त मे मन्त्री श्री वीरेन्द्रपाल एव प्रधान श्री बी० बी० सिंगलने सभी का धन्यवाद किया।

वीरेन्द्रपाल, मन्त्री श्री वी० बी० सिगल, प्रधान

पं० लेखराम

(पृष्ठ ३ का शेष)

प्रबन्ध किया कि पजाबियो से पहले वह चौक मे भोजन कर लिया करे। पण्डित लेखराम उनसे भी पहले भोजन के लिए जा बैठे। अब पजाबियो का अपवित्र किया हुआ चौका फिर से लगाया गया। दूसरे दिन भी पण्डित लेखराम पाचक (रसोइए) के साथ वाली क्यारी मे जा बैठे, परन्तु जब रोटी को बिना अधिक सेके उसने चूल्हे मे से खीचा तो आपने उसकी पीठ पर हाथ ठोका और उसके हाथ से चिमटा लेकर उस रोटी सेकना बताने लगे। अब सयुक्त प्रान्तीय दल मे खलबली मच गई, परन्तु कुछ सयुक्त प्रान्ती उस समय आर्य पथिक के चेले बन गये और सखरी निखरी के भेदभाव को उठा दिया।

दिल्ली के जलसे पर एक आदमी केशर का चन्दन सब भाइयों के माथे पर लगाता आता था। जब आर्य पथिक के समीप आया तो उन्होने डाट कर कहा—"मेरे सिर पर दर्द नही है।" उत्तर मिला 'महाराज ! सुगन्धित के लिए लगाते है।' आर्य पथिक ने दाहिने हाथ का पृष्ठभाग सामने करके कहा—"तो यहा लगाओ" और जब वहा चन्दन लगाया तो नाक के पास ले जाकर सूघने लगे। जिस पर सब उपस्थित सज्जन मुस्कुरा दिये।

एक आर्य सज्जन ने भोजन के पश्चात् सम्मान आय भाव से तांबूल (पान) बाटे। जब आर्य पथिक के सामने पान दान पेश किया तो बोले—देखते नही हो मैं मनुष्य हूँ बकरा नही, कि पत्ते खाऊ।' गुजरात आर्य समाज म आर्य पथिक का व्याख्यान हो रहा था। मुसलमानो के "हराम हलाल' के मसले पर बोल रहे थे। समाप्ति पर प्रश्नोत्तर का समय दिया गया। दो मौलवियो को तो यो ही भिझाड दिया, परन्तु अन्त मे मौलवी बाकर हुसैन उठे जिनकी ऋषि दयानन्द के साथ भी बातचीत हो चुकी थी। मौलवी साहब ने कहा—"पण्डित साहेब ! आपने जो हमारे हराम हलाल के मसले पर एतराज (आक्षेप) किये हैं, क्या आपने यह भी सोचा है कि हमारे मजहब मे चुहिया हराम है। क्या वह भी इसी लिए हराम कर दी गई कि जबरदस्त थी ? आर्य पथिक ने पूछा कि मौलवी साहेब सुन्नी है वा शिया। यह उत्तर पाने पर कि मौलवी साहब शिया है। पण्डित लेखराम ने उत्तर दिया--' मौलवी साहेब ! मुझे आपका कथन सुनकर हसी आती है। आप शिया होकर चूहे की बुजुर्गी और जबरदस्ती से इन्कार करते है। यही नामुराद चूहा था जिसने मैदान कर्बला मे सब पानी की मशकें काट दी, और बेचारे इमाम हुसन को प्यासा मरवाया। अगर ऐसे दो तीन और जबरदस्त पैदा हो जाये तो अरब और ईरान मे कई कर्बला की सी घटनाये हो जाये।' श्रोतागण खिलखिलाकर हस पड़े और मौलवी साहेब चूप हो गये।

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः

विचारो की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता लोकतन्त्र का प्राण है। किसी सीमा तक आज का अपेक्षा तो ब्रिटिश काल में ही यह स्वतन्त्रता अधिक थी। तभी बरेली मे स्वामी दयानन्द ने मि० एडवर्डस कमिश्नर मि० रीड कलेक्टर तथा लगभग १५ २० अन्य अंग्रेज अधिकारियो की उपस्थित मे ईसाई मत की आलोचना करते हुए कहा था, लोग कहते हैं कि सत्य को प्रकट न करो कलक्टर क्रोधित होगा अप्रसन्न होगा गवर्नर पीडा देगा। अरे ! चक्रवर्ती राजा भी क्यो न अप्रसन्न हो हम तो सत्य ही कहेगे।' और कही कुछ भी उल्लेखनीय न हुआ।

स्वामी दयानन्द ने एक ऐतिहासिक पत्र संस्कृत भाषा (गद्य पद्य) मे अपने शिष्य एव विदेश म उनके वैदिक संस्कृति के प्रथम दूत प० श्याम जी कृष्ण वर्मा को लन्दन म भेजा था। इस पत्र मे स्वामी जी ने उन्हे इग्लैंड की पार्लियामेंट मे जाकर वहा के सदस्यो को यह बताने का निर्देश दिया कि भारत मे मुशी इन्द्रमणि द्वारा इस्लाम मत पर लिखी गई पुस्तक भारत सरकार ने जब्त करके किस प्रकार लोकतन्त्र एव ब्रिटिश सरकार द्वारा घोषित नीति का गला घोटा है। यह पत्र ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन प्रथम भाग पृष्ठ ४१२ पर प्रकाशित है।

स्वामी जी ने इसको लेकर पूरे भारत मे एक चेतना जगायी मुन्शी इन्द्र मणि पर जो ५०० रु० का आर्थिक दण्ड न्यायालय लगाया गया था। दो बार अपील करके उसे समाप्त कराया गया। वही नही भविष्य मे ऐसी स्थिति का मुकाबला करने के लिए उन्होने एक कोष की भी स्थापना कर दी।

दिल्ली निवासी सुधी विचारक श्री रामस्वरूप की पुस्तक इस्लाम थ्रू हदीस' जो सन १९८३ मे अमेरिका तथा १९८४ मे भारत मे प्रकाशित हो चुकी है। विगत चार वर्षो मे इस पुस्तक मे किसी विद्वान को कोई आपत्ति जनक सामग्री नही मिली। ११ दिसम्बर १९८७ को इसी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने के अपराध (?) मे वरिष्ठ लेखक एव प्रकाशक सीताराम गोयल को उनके निवास दिल्ली से भारतीय दण्ड संहिता २९५ के अन्तर्गत पुलिस ने बन्दी बना कर कारागार मे डाल दिया। यह भी ज्ञात हुआ है कि लेखक की आलोच्य पुस्तक की सारी प्रतिया पुलिस ने अपने कब्जे मे बुक बाइन्डर के पास से ही ले ली है। प्रस्तुत पत्र लेखक के ज्ञान के अनुसार इस्लाम थ्रू हदीस म कुछ भी आपत्तिजनक नही है। लेखक ने जो कुछ भी लिखा है सारा प्रमाणिक हदीसो के आधार पर लिखा है। यदि फिर भी लोगो/सरकार को इसमे कुछ आपत्तिजनक लगता है तो उन्हे चाहिए उसे मूल स्रोत से ही निकाल दिया जाये। ताकि उसे कोई पढ ही न सके।

लेखक को बन्दी बनाकर कारागार मे डाल कर बौद्धिक स्तर पर आतक पैदा करना कितना उचित है सभी विचारक इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचारे एव तत्काल उचित समाधान निकाले। जिस देश या समाज का बुद्धि जीवि कर्तव्यच्युत होकर उदासीन बन बैठ जायेगा। वह देश या समाज स्वाभिमानपूर्वक अधिक दिन तक जी न सकेगा। फिर आर्य समाज का तो जन्म ही क्रांति अर्थात् सत्य की स्थापना के लिए हुआ है यदि वह राष्ट्र मे व्याप्त इस प्रकार के आतक का समाप्त करने मे सक्रिय होगा तभी उसका आदर्श व्य राष्ट्र जागृयाम पुरोहित का उद्घोष पूरा होगा।

—जयदेव शर्मा

मन्त्र गीत

[पृष्ठ ६ का शेष]

तुझे देखते हुए भी नहीं देख पाते, जो लोभों के दल-दल में फसे हुए हैं।
न वे मूक हैं पर कहाँ बोल पाते, अविद्या के कीचड़ में धंसे हुए हैं ॥

श्रावण शक्ति है पर सुनते नही हैं, रागो के रगों में भूले हुए हैं।
पापों के कीचड़ में सने हुए जो, मृत्यु के झूले पे, झूले हुए हैं ॥

हे ईश, कण कण में व्यापक तुम्हीं हो, नक्षत्र मण्डल में आभा तुम्ही हो।
खग कुल के कलरव में संगीत जैसी, मन-मोहनी सी समा तुम्ही हो ॥

तुझ देख पाते हैं केवल वही जन, कृपा तुम्हारी हो जाती जिन पर।
सतत योग में तल्लीन जो मन, वही दास तेरा हो जाता सत्वर ॥

जिन्हे आश केवल तुम्हारी लगी है, वे स्वयं के सुखों को भूले हुए हैं।
पराई भलाई को अपनी भलाई, समझकर कर्म मे तत्पर हुए हैं ॥

प्रभो तेरी विद्या का प्रकाश प्यारा, प्रिया और प्रीतम संयोग जैसा।
वही 'वेदभिक्षु' प्रभावान होता' निरतर साधना-साधता योग ऐसा ॥

—स्वा० ब्रह्मानन्द वेद भिक्षु' गुन्नौर

आर्य वीर दल जनपद अलीगढ द्वारा वैदिक साहित्य प्रदर्शनी स्टाल एवं शोभा यात्रा सानन्द सम्पन्न

अलीगढ। ऋषि बोध उत्सव के उपलक्ष मे आर्य वीर दल जनपद अलीगढ द्वारा १४, १५ १६ फरवरी८८ को कार्यकर्ता शिविर का आयोजन किया गया तथा १६ फरवरी ८८ को १२ बजे वैदिक आश्रम, अलीगढ से एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गयी जो दुबे का पडव, अचल, हरिकापुरी, हाथरस अड्डा, खिरनीगेट जयगज व सासनीगेट होतीहुई आवास कालोनी स्थिथ कार्यकर्ता शिविर स्थल पर सम्पन्न हुई। इस विशाल अभूतपूर्व शोभायात्रा में आर्य वीर दल के अतिरिक्त जिले भर की आर्य समाजो के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। कार, थ्रीव्हीलर, ट्रको, तथा रिक्शाओ पर सजी चित्रो की लम्बी कतार के आगे जिले की आर्य समाजो के प्रतिनिधि, कन्या गुरुकुल,सासनो की कन्याय, आर्य वीरों की विशाल टोली तथा जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्यगण चल रहे थे सबसे आगे दो घुडसवार आर्य वीर इस शोभायात्रा का सचालन कर रहे थे। श्री जयनारायण जी आर्य, सचालक,आर्य वीर,दल आगरा कमिश्नरी के सरक्षण में चल रही इस शोभायात्रा का नगर की जनता ने कई स्थानों पर पुष्प वर्षा से तथा चन्दन आदि से स्वागत किया। सारे नगर मे बेंड और फैली लाउडस्पीकर लाइन से प्रात से ही महर्षि दयानन्द के गुण गान ने नगर का वातावरण दयानन्दमय बना दिया। अत में आर्य वीरांगना (गुरुकुल कन्याओ) एव आर्य वीरो द्वारा ध्वजगान तथा सैनिक प्रकार के कायक्रम का समापन ऋषि लगर के साथ सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व १५ दिन वदिक साहित्य विक्रय स्टाल एव चित्र प्रदर्शनी अलीगढ प्रदर्शनी मे लगी जिसमें आम जनता ने भारी संख्या मैं वदिक साहित्य क्रय किया। जिलाधीश महोदय ने स्वय पधार कर स्टाल का निरीक्षण किया तथा सहयोगियो ने साहित्य खरीदा। जनता ने आर्य वीर दल के इस आयोजन को मुक्त कण्ठ से सराहना की। और साहित्य खरीदकर लाभ उठाया।

गजेन्द्रपालसिंह आर्य एडवोकेट
मन्त्री आर्य वीर दल

अलीगढ प्रदर्शनी मे, आर्य वीर दल जनपद ने आदर्श चित्र प्रदर्शनी और वैदिक साहित्य विक्रय-स्टाल प्रथम बार लगाकर, जन सामान्य को आकर्षित किया श्री जयनारायण आर्य श्री भूदेव जी श्री सुरेन्द्र आजाद अपने सहयोगियो सहित स्टाल पर खडे हैं। कलेक्टर महोदय सहित अनेक प्रदर्शनी अधिकारियो ने स्टाल पर पधारकर साहित्य खरीदा और चित्र प्रदर्शनी की सराहना करते हुए उनके बराबर स्टाल लगाने का आमन्त्रण दिया।

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

चिकित्सा मे ही चल रहे थे और काफी स्वस्थ हो चुके थे। अचानक ११ मार्च की रात उन्हे दूसरा दौरा पडा और ७२ वर्ष की आयु मे वह सदैव सदैव के लिए हममे अलग हो गए।

शोक सभा की ओर से दिवगत की आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करते हुए उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उर्मिला शास्त्री तथा बेटी व उनके परिवार को इस महान् दुःख को सहन करने की शक्ति जुटाने के लिए परमात्मा मे प्रार्थना की गई।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक 'लस न० U ६१
R N 626/57 Licensed to post without prep 18 3-1988

आर्यसमाज और राजनीति

(पृष्ठ २ का शेष)

जनता पार्टी के विघटन के बाद जनसघ के नये कर्णधारो ने जनसघ नाम केसरिया भण्डे विचारधारा और प्रेरणा स्रोतो का परित्याग कर के भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नाम से काग्रेस का अनुकरण करना शुरू कर दिया राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के श्री गोलवलकर के मृत्यु के बाद और नये नेतृत्व ने सघ की मूल विचारधारा से वैसे ही मुह मोडना शुरू कर दिया था जब जनसघ के नये नेतृत्व ने जनसघ का विचारधारा से मुह मोडा था नये नेतृत्व ने तब सघ का पूर्ण समर्थन भाजपा को देना शुरू कर दिया

भारतीय जनता पार्टी के नये विचारधारा के हिन्दूवाद राष्ट्रवादी लोगो के लिये कोई स्थल नहीं मगर सघ के समर्थन के कारण यह जनसघ के नाम के बल पर अपनी रोटी सेक रहा है। परन्तु इसका अवसरवादिता और हिन्दू हितो के उपेक्षा के कारण सघ और जनसघ के बहुत से पुराने कार्यकर्त्ता उसमे घुटन महसूस करने लगे है। सघ के नेतृत्व के दबाव के बावजूद भाजपा से उनका मोह भग हो रहा है। कोई विचारवान और सिद्धान्तवादी आर्य समाजी भाजपा का समर्थन नहीं कर सकता।

दूसरी ओर देश का परिस्थितिया जो मोड ले रही है उसके कारण जनसघ या जनसघ जैसे हिन्दूवादी राष्ट्रवादी विकल्प का आवश्यकता और प्रामाणिकता १६५१ से भी अधिक महसूस होने लगी है। मुसलमानो का बढता हुआ आक्रान्ता रूख इसाईयो पर सानिया गाधी का वरदहस्त अकाल उग्रवादियो को पाकिस्तान का शह और राजीव गाधी की चहुमुखी विफलता और चमक गिरनी इस साल एस बेट वास्तविकताए है जिनसे कोई विचारवान व्यक्ति आख नही मूद सकता

इसकी नीतिया और हिन्दुस्तान के का हरावल दस्ता का अस्तित्व भी जुडा हुआ है समिय विचारवान इस स्थिति से चिन्तित होना और आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित राजनैतिक सगठन के अभाव की आवश्यकता महसूस करना स्वाभाविक है।

आर्य समाज के मार्ग अपने जन्म काल से जुडे हुये एक राष्ट्रवादी व हिन्दूवादी होने के नाते मैं भी उस स्थिति से चिन्तित हूँ मेरा यह सुविचारित मत है कि यदि आर्य समाजी बन्धु जनसघ को पुन सबल और प्रभावी बनाने की ओर ध्यान दे तो इस स्थिति को सम्हाला जा सकता है। आर्य समाज एक शक्ति है इसकी विचार स्वतन्त्रता और उत्कृष्ट विचारधारा इसका सम्बल है। इसके व्यस्क सदस्य राजनीति से अलिप्त नही रहे और देश की राजनीति को वैदिक हिन्दू सिद्धान्तो के अनुरूप प्रभावित करना भी आर्य समाज का लक्ष्य है। जिस रास्ते पर काग्रेस और भाजपा समेत देश की अन्य राजनैतिक पार्टिया चल रही है और उनका जो मूल चिन्तन है वह राष्ट्रहित के लिये घातक सिद्ध हो रहा है। उनको अन्दर से प्रभावित करने की बात मृगमरीचिका मात्र है। आवश्यकता उनका विकल्प तयार करने की है। यदि कोई राष्ट्रवादी विचारधारा वाला दल उभरेगा तब शायद उनको भी अपनी नीति रीति में परिवर्तन करने को बाध्य होना पडेगा।

चुनाव के कारण घर को आग न लगाओ

-आनन्दबोध सरस्वती-

कुछ दिनो से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव के अवसर पर कतिपय लोगो ने आर्य समाज के भवन में निर्वाचित कार्यकर्ताओ के विरुद्ध पचबाजे ... आर्य समाज के निष्ठावान कार्यकर्ताओ को बदनाम करने का अभियान छेड रखा है ... मुझे अपने ... आवश्यकता नही ... एक क्षण आर्य समाज को प्राण ... लगाया है ... जानता हू या सर्वान्तर्यामी परमपिता परमात्मा मुझे सेवा कोई पुरस्कार नही चाहिए

इस अभियान में जो धन खर्च किया गया है यदि उस आर्य समाज के प्रचार प्रसार मे किया जाता तो कितना अच्छा होता।

कुछ अनाम लोगो ने हमारे परम स्नेही मित्र श्री बाबू सोमनाथ मरवाह जी एडवोकेट के सम्बन्ध में भी अनर्गल आक्षेप कर के प्राय: अनेक आर्य बन्धुओ के चरित्र पर भी कीचड़ उछालनेका दुष्प्रयास किया है। मतभेद तो होते है किन्तु मनभेद नहीं होने चाहिए। जो लोग स्वय कुछ नहीं करते, वे ही आपसी मतभेदो को हवा देकर वातावरण को दूषित करते है।

मैं बडी नम्रता से निवेदन करना चाहता हूँ कि आर्य जन इस प्रकार के पचबाजो मे विचलित न हो

महात्मा गाधी ने कहा था कि आर्य समाज के लोग बडे जुझारू है किन्तु जब इन्हे दूसरो से लडाई का अवसर नही मिलता है तो वह आपस मे लडते है महात्मा हसराज जी से पूछा गया कि आपके विरोधी आपके सम्बन्ध मे गलत प्रचार करते है आप जवाब क्यो नही देते ? महात्मा जी ने कहा कि मैं ऐसे दुष्प्रचार पर कोई ध्यान नही देता मुझे काम से ही फुरसत नही—स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्बन्ध मे भी ... दिल की दास्ता मे पता चलता है कि उन्हे भी गुरुकुल कागडी से निकालने के लिए इसी प्रकार के दोषारोपण किए गए किन्तु आज स्वामी श्रद्धानन्द को ... उनका विरोध करने वालो का कोई नाम भी नही लेता है।

महर्षि दयानन्द को जनता की निगाहो मे गिराने के लिए आर्य समाज से निष्कासित प० अखिलानन्द कविरत्न ने— ... महर्षि सवाद छपवाया जनी जियालाल ने दयानन्द छलकपट दर्पण लिखा—स्वामी करपात्री ने वेदार्थ पारिजात मे महर्षि के सत्य सिद्धान्तो की खिल्ली उडाई तो आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री ने दयानन्द कल्पद्रुम लिखकर करपात्री के गलत प्रलाप को तार तार करके तोड दिया। इस ससार मे अनादि काल से आर्य और दस्यु का युद्ध होता रहा है इससे घबराने की कोई बात नही।

अत आर्य जनता से मेरा निवेदन है कि मिलजुल कर काम करे।

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती दिनाक ५० ३ ८८ से २४ ३ ८८ तक बिहार के दौरे पर प्रस्थान करेगे। उनका अनेक स्थानो पर भव्य स्वागत होगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६३ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २३ अंक १३] चैत्र शु० १० सं० २०४५ रविवार २७ मार्च १९८८ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

औरंगाबाद हवाई अड्डे पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का जोरदार स्वागत

वेदामृत

माता-पिता सुखी रहें

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नोअस्तु
स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः।
विश्वं सुभूत सुविदत्र नो अस्तु
ज्योगेव दृशेम सूर्यम् ॥
अथर्व० १.३१।४॥

हिन्दी अर्थ—हमारे माता और पिता का कल्याण हो। गायो समस्त ससार और सभी पुरुषो का कल्याण हो। हमारे लिए सभी ऐश्वर्य और उत्तम ज्ञान हो। हम चिरकाल तक सूर्य को देखें।

--डा० कपिलदेव द्विवेदी

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िए

औरगाबाद [महाराष्ट्र] १८ मार्च।

दिल्ली से वायुयान द्वारा सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ११ बजे यहा पहुचे। हवाई अड्डे पर नगर निवासियो तथा आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ ने वैदिकधर्म की जय-जयकार से स्वामी जी का स्वागत किया। प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री दौलतराम चड्ढा तथा औरगाबाद आर्यसमाज के अधिकारियो के साथ स्वामी सन्तोषानन्द जी तथा सैकडो आर्य वीर तथा देविया उपस्थित थी। औरगाबाद आर्यसमाज तथा आस पास की आर्य समाजो के सैकडो आर्य बन्धुओ ने कार्य कर्त्ता सम्मेलन मे भाग लिया।

रात को ८॥ बजे से सार्वजनिक सभा मे आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष में हिन्दू चेतना अभियान पर स्वामी जी का सारगर्भित भाषण हुआ। इसके अतिरिक्त पत्रकार सम्मेलन मे स्वामी जी ने देश की वर्तमान स्थिति और पजाब समस्या पर आर्यसमाज की गतिविधियों से पत्रकारो को सम्बोधित किया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की पटना से नेपाल तक प्रचार यात्रा

हिन्दू सघ के इस सम्मेलन का उद्घाटन नेपाल नरेश करेंगे

दिल्ली २० मार्च।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती पटना के लिये आज रात की गाडी से प्रस्थान कर चुके हैं। वे पटना से मुजफ्फरपुर, रामनगर बेतिया, नरकटियागज तथा रक्सौल आदि स्थानो पर वैदिक धर्म प्रचार करते हुये २४ मार्च को नेपाल पहुचेगे। २४,२५ मार्च को नेपाल मे विश्वहिन्दू सम्मेलन में भाग लेगे।

आर्यसमाज के वयोवृद्ध नेता वैद्य प्रह्लाददत्त जी का निधन

शोकसभा ३०-३-८८ को साय ४ बजे म.नं. ४६०२ डिप्टीगंज सदर बाजार दिल्ली मे होगी

दिल्ली के प्रसिद्ध वयोवृद्ध नेता, वैद्य प्रह्लाददत्त जी की गत १९ मार्च १९८८ को नर्सिंग होम में ९३ वर्ष की आयु में निधन हो गया। अन्तिम सस्कार दिल्ली के निगमबोध घाट पर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कई हजार श्रद्धालुओ ने इस महान नेता को अन्तिम श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने शोक सन्देश में कहा कि वैद्य जी का जन्म सवत् १९५४ में रोहतक के जैतपुर गाव में हुआ था। स्वामी सर्वानन्द जी की प्रेरणा पर उन्होने गुरुकुल मे अध्यापक का कार्य किया था। आजसे ६५ वर्ष पूर्व दिल्ली मे आकर वे वैद्य का काम करने लगे थे। प० रामचन्द्र देहलवी की प्रेरणा पर वे आर्य समाज मे आए और जीवन पर्यन्त समाज के लिए ही कार्य करते रहे। गोरक्षा आन्दोलन, पजाब रक्षा आन्दोलन, शिवमन्दिर रक्षा आदि अनेक आन्दोलनो व कार्यक्रमो मे उन्होने सक्रिय भाग लिया था। देश विभाजन का आपने बडा विरोध किया था और पजाब बटवारे पर आपने अनशन भी किया था। भारतीय जनसघ की स्थापना के समय भी आपने बहुत कुछ कार्य किया था। ज.सघ के यशस्वी नेता श्यामाप्रसाद मुखर्जी की मृत्यु के पश्चात् दिल्ली में जो विशाल जलूस निकला था, उसका नेतृत्व वैद्य जी ने ही किया था। इसमे आपको गिरफ्तार करके कैद

भारतीय आदर्शों के प्रतीक--राम

डा० भवानीलाल भारतीय

भारतीय आदर्शों का पूर्ण परिपाक हमे मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम मे दृष्टिगोचर होता है। मानव जीवन को सम्पूर्ण एव सर्वागीण बनाने मे जिन गुणो की आवश्यकता होती है, उसका समग्र परिपाक राम के जीवन मे दिखाई देता है। राम-कथा के अमर गायक महर्षि वाल्मीकि ने महर्षि नारद से जिज्ञासा करते हुए एक ऐसे व्यक्ति के बारे मे पूछा था जो अत्यन्त गुणवान, शक्ति सम्पन्न, धर्मज्ञ, सत्यवक्ता, दृढप्रतिज्ञ, चरित्रवान्, प्रियदर्शन आत्मज्ञान तथा जितक्रोध हो। इस प्रश्न के उत्तर मे देवर्षि नारद ने इक्ष्वाकु वंश मे उत्पन्न राम का ही नाम लिया जो उनके विचार मे बुद्धिमान नीतिज्ञ, धर्म के ज्ञाता, सत्यनिष्ठा वाले तथा प्रजाहित मे लगे रहते हैं। राम मे विद्यमान विभिन्न गुणो का उल्लेख करने के पश्चात् नारद ने उन्हे समुद्र के तुल्य गम्भीर, धैर्य मे हिमालय के तुल्य पराक्रम मे विष्णु के समान तथा क्षमाशीलता मे पृथ्वी के तुल्य बताया। सक्षेपत वे आर्य गुणो की समष्टि के रूप मे वाल्मीकीय रामायण मे उल्लिखित हुए हैं।

राम-कथा की व्यापकता

राम-कथा की लोकप्रियता और व्यापकता का इससे बढकर और क्या प्रमाण हो सकता है कि अत्यन्त प्राचीनकाल से ही समुद्र पार के दक्षिण पूर्वी ऐशिया के देशो मे रामकथा अत्यन्त लोकप्रिय रही है। वहा के निवासियो का धर्म चाहे इस्लाम है किन्तु वे राम-कथा को अत्यन्त श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं तथा अपने नाम भी रामायणके पात्रोंके अनुकरण करने मे सकोच नही करते। मारीशस मे तुसलीदास रचित रामचरितमानम अत्यन्त श्रद्धा से पढा जाता है। लगभग १० वर्ष पूर्ण जब मानस की रचना की चतु शताब्दी मनाई गई तो मारीशसवासियो ने लाखो की सख्या मे रामचरितमानम ग्रन्थ भेजने की माग भारत के पुस्तक प्रकाशको से की थी।

राम-चरित मानस की महिमा

वस्तुत राम ने अपने गुण, कर्म एव स्वभाव से मानव की परिपूर्ण छवि हमारे सामने प्रस्तुत की है। लोकरजन के लिए वे बडे से बडा त्याग करने के लिये भी तैयार रहते है। अत्याचार और अन्याय का प्रतिकार करने मे वे सदा आगे रहते हैं। अत्यन्त सौम्य, कोमल एव मृदु स्वभाव वाले राम अवसर आने पर अत्यन्त कठोर भी बन जाते हैं। उत्तर—रामचरितकार भवभूति के शब्दो म—

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि

वज्र से भी कठोर तथा पुष्प से भी कोमल राम का लोकोत्तर चरित समझना सामान्य बुद्धि के व्यक्ति के लिए सम्भव ही नही है। जीवन के प्रारम्भिक काल मे हम उन्हे माता पिता, गुरु आदि पूजनीय व्यक्तियो की आज्ञापालन मे तत्पर देखते हैं। कर्तव्य पालन मे उनकी उपमा किसी अन्य से नही दी जा सकती। जनकपुर मे शिव धनुष भग के समय उनकी शक्ति-मत्ता धैर्य तथा गाम्भीर्य का परिचय मिलता है। तात्कालिक पिता की आज्ञा का एकान्त पालन उन्हे अत्यन्त प्रिय है, इसलिए वे अपने राज्याभिषेक के आमोदजनक क्षणों की भी उपेक्षा कर बनवास के लिए प्रस्थान करते है। कवि के शब्दो मे—

"आहूतस्याभिषेकाय वनाय च गमनाय च।
न मया लक्षित कश्चित् स्वल्पप्याकार विभ्रम ॥"

राज्यारोहण के लिए बुलाये जाने पर तथा थोडी देर पश्चात् वन के लिए जाने के आदेश पर भी राम की मुखाकृति मे थोडा भी विकार नही आया। सुख-दुख हानि लाभ तथा निन्दा-स्तुति मे समत्व बुद्धि रखने वाले ऐसे ही महापुरुषो को स्थितप्रज्ञ कहा जाता है। भारतीय परिवार के आदर्शो को रामायण के पात्रो मे जीवन्त रूप मे रूप मे देखा जा सकता है। यहा भी राम ही अन्य पात्रो मे आदर्श मर्यादा तथा कर्तव्य पालन का भाव जागृत करने मे दत्तचित दिखाई पडते हैं। अपने आदर्शो अनन्य प्रेम और अनुराग एक आदर्श पति की मर्यादा स्थापित कर एक आदर्श पति की मर्यादा स्थापित कर एक पत्नीव्रत की गरिमा प्रतिष्ठित करता है। इसी प्रकार गुरु-शिष्य सम्बन्ध, स्वामी सेवक सम्बन्ध, मित्रो का पारस्परिक सौहार्द भाव, यहा तक कि शत्रु के प्रति भी न्यायपूर्ण आचरण का दृष्टान्त राम के चरित्र मे दृष्टिगोचर होता है। महर्षि वाल्मीकि ने राम के इसी सर्वगुणान्वित चरित्र को ध्यान मे रखकर उन्हे धर्म का विग्रहवान रूप कहा।

शताब्दियां व्यतीत हो गई, किन्तु राम के लोकोत्तर चरित का गान भारत मे निरन्तर होता रहा। चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी इसी महापुरुष के जन्म की तिथि है। रामनवमी को मना कर हम एक बार पुन भगवान् राम के मर्यादा पूर्ण आदर्शों से शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

सूखा राहत कोष

(९-१-८८ से १०-२-८८ तक की दान सूची)

(१) परसराम कौशल अपियाना जालन्धर	३००)
(२) मन्त्री आर्य समाज सदर बाजार लखनऊ	१००)
(३) महिला आर्य समाज सदर बाजार लखनऊ	५०)
(४) मन्त्री आर्य समाज नानापेठ पुणे	१११)
(५) मन्त्री आर्य समाज चौखडी मेरठ	५१)
(६) लीलावती पृथ्वीचन्द आर्य, प्रागपुर कागडा	५००)
(७) सुखदा आर्य	१००)
(८) विद्यादेवी शर्मा २२-हार्डमिक रोड लन्दन	३९८)
(९) प्रमव्रत अरल अस्सोसी प्रखिल कार्नेश्नुलिकल्स बदायू	५०)
(१०) चन्द्रा देवी जिला अधीक्षक (राज)	३०)
(११) मागीलाल गुप्ता, शापिंग सेण्टर कोटा	२००)
(१२) श्री किशनलाल हैदराबाद	४३४०)
(१३) विद्यावती जी मरवाह देशबन्धु गुप्ता रोड नई दिल्ली	२५१)
(१४) वेद प्रचार मडल पावर हाउस पीलीभीत	५१)
(१५) महिला आर्य समाज स्याना बुलन्दशहर	४७३)
(१६) श्री पी भोपवानी आर्य समाज पिपरी पुणे	२५०)
(१७) आर्य प्रतिनिधि सभा डरबन द० अफ्रीका	५०००)
(१८) दमयन्ती देवी, बदर घाट पटना	५००)
(१९) धनवन्तर सिह जी, कोहनूर भवत डलहौजी चम्बा	१५०)
(२०) आर्य समाज दयानन्द मार्ग शकूरबस्ती दिल्ली	२००)
(२१) जे एम दुबे, पलहाम यू०एस०ए०	१६५०)

सभी दानदाताओ का धन्यवाद।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

निधन

[पृष्ठ २ का शेष]

आपने आर्य वीर दल, सूखा पीडित सहायता कार्यक्रम, पजाब विस्थापितो की सहायता कार्य तथा अन्य अनेक जनोपयोगी कार्यों मे सदैव भाग लिया। वह पुरानी पीढी के एक महान् योद्धा थे जो महर्षि दयानन्द के सन्देश को जीवन पर प्रचारित करते रहे। वह अपने पीछे ६ पुत्र और ५ पौत्र सहित भरापूरा परिवार छोड गए हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भी शोक सभा के अनन्तर दिवगत नेता को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए उनकी आत्मा की सदगति के लिए प्रार्थना की गई।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

सम्पादकीय

आर्य जीवन की आवश्यकता

जो पुरुष नित्य सन्ध्या तथा हवन करता हो, आर्यसमाज मे आता हो, समय समय पर दान देता हो और वेदो का अध्ययन करता हो उनके लिए प्राय कहा जायगा कि उसका आर्य जीवन है परन्तु यह आर्य जीवन का एक पक्ष है और आवश्यक पक्ष है ? परन्तु इससे भी अधिक आवश्यक एक और पक्ष है जिस पर आर्य जनो को विशेष ध्यान रखना होता है।

महर्षि दयानन्द ने कर्मकाड के विशेष अर्थ लिए है। पौराणिक जगत मे जो अर्थ कर्मकाड के लिये जाते हैं वह ऋषि को प्रायश. ग्राह्य नही। इसे केवल कर्मकाड का एक अग समझते है। पौराणिक स्थिति क्या है ? जो पुरुष नित्य प्रात काल उठता, सन्ध्या, गायत्री या किसी देवता विशेष की नियत स्तुति करता या समयानुकूल यज्ञ करता है उसको लोग कर्मकाडी कहते है चाहे उसका अन्य जीवन कैसा ही क्या न हो। ऐसे पण्डित और कर्मकाडी सज्जन बहुत से मिलेगे जिनका अधिकाश जीवन जप, तप तथा यज्ञ की भेट हो जाता है परन्तु उनके शेष जीवन मे धार्मिकता प्रकाशित नही होती।

महर्षि दयानन्द ऐसे जीवन को कर्मकाडी न कहकर पाखण्डी कहते हैं। पाखण्ड क्या है ? रूढियो को मानना और उनके तत्व को ग्रहण न करना। इस प्रकार के पाखण्डियो को मनु ने काठ का हाथी कहा है। क्योकि इनसे कोई काम नही लिया जा सकता।

धर्म का अर्थ चिन्ह मानने या समझने से इस प्रकार के पाखण्डो से धर्म की और मानवता की जो दुर्गति अपने विविध प्रभिप्रायो के साथ हुई है या हो रही है, वह सर्वविदित है वस्तुत चिन्ह केवल चिन्ह है इससे अधिक कुछ नही, यदि चिन्ह के साथ तत्व भी है तो चिन्हो की कोई विशेषता हो सकती और उनसे अभीष्ट काम किया जा सकता है। परन्तु यदि तत्व न हो तो ये चिन्ह आडम्बर और पाखण्ड हो जाते है।

पौराणिको मे रूढि सर्वोपरि समझी जाती है और धार्मिकता का मान उन्ही के आधार पर किया जाता है। हमारी स्मृति मे एक पण्डित जी का उदाहरण ताजा है। वह पवित्रता के पाबन्द थे। उनकी गाडी भी धुला करती थी परन्तु साथ मे एक वेश्या भी रहती थी। हम सोचा करते थे कि पवित्रता का असली स्वरूप क्या है ?

पवित्रता का असली स्वरूप धर्म तत्वो का जीवन मे क्रियान्वयन है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश ६६६ मता का वर्णन करते हुए धर्म के मुख्य तत्वों पर ही बल दिया है। आर्य समाज के साम्प्रदायिकता से बचे रहने का यत्न करते रहने से ही उसके वास्तविक धार्मिक स्वरूप की रक्षा हुई और होती रहेगी।

सच्चा आर्य कौन है ? उसकी पहचान सन्ध्या हवन से नहीं हो सकती ? ये आवश्यक है तथापि केवल बाह्य चिन्ह है और पाखण्डियो मे भी पाये जा सकते हैं। प्रश्न यह है कि क्या तुम्हारा व्यवहार अपने और परायो के साथ धार्मिक है ? क्या तुम्हारे व्यवहार से तुम्हारी स्त्री तुम्हारे नौकर चाकर सन्तुष्ट है ? क्या तुम्हारा व्यवहार ऐसा तो नही है कि तुम्हारी स्त्री को किसी शिकायत का अवसर हो। यदि तुम्हारे माता पिता वृद्ध हैं तो क्या तुम उनसे वह व्यवहार करते हो जिससे उनको यह विश्वास हो जाय कि मेरे लडके का आर्य होना अनार्य होने की अपेक्षा अधिक हितकर हुआ ?

यदि आप दुकानदार हैं तो क्या आपके ग्राहक वृन्द आप पर अन्यो की अपेक्षा अधिक भरोसा रखते हैं ? क्या आपके मुहल्लेवालो को पता है कि आपके आर्य होने के कारण उनको अधिक आराम पहुँच रहा है ? यदि आप किसी के अधीन नौकर हैं तो क्या आपका अफसर समझता है कि यत आप आर्य समझते हैं कि आर्य होने के कारण आपको रिश्वत देना असम्भव है ? क्या मुहल्ले की देवियां समझती हैं कि आपकी शरण में आने से उनका किसी प्रकार का अहित न हो सकेगा ? क्या आप समझते हैं कि आपकी गवाही को न्यायाधीश झूठी नही ? ये है ? धर्म तत्वा की कुछेक झाकिया।

एक आर्य श्रेष्ठि ने जब स्वामी दर्शनानन्द जी ने यह पूछा कि वे आर्यसमाज मे क्योकर आए तो उन्हाने एक घटना की चर्चा करके जो कारण बताया था वह उन्ही के शब्दो मे इस प्रकार है—

'मेरे नगर मे एक बजाज था वह था आर्य समाजी। मैं कपडा लेने गया। उसन एक बात कह दी। मैंने कम देना चाहा। उसने कहा मैं आर्य हू झूठ नही बोलता।' मैं चला आया और एक पुरुष को भेजा। आर्य परीक्षा मे उत्तीर्ण हो गया। मैंने सोचा कि जिस आर्य समाज मे ऐसे धर्मात्मा व्यक्ति है उसको अवश्य देखना चाहिए। अन्त मे मैं आर्य हो गया।"

बिजनौर मे बल्ली नाम का एक आर्य पल्लेदार था। लोग जानते थे कि वह आर्य हैं। मार्ग मे अनाज चुरा नही सकता अत आर्यसमाजी बन्धु उसको रुपया देकर चले जाते थे। साथ मे चलने की जरूरत नही होती थी। बल्ली पर सभी विश्वास करते थे।

बहुत से आर्य है जो सन्ध्या हवन करते समाज मे प्रतिष्ठा के पात्र होते। मन्त्री प्रधान बनते तथा व्याख्यान आदि भी देते हैं। परन्तु और तो क्या उनमे से अनेक की धर्म पत्निया भी उनके आर्यत्व को सराहने के लिए तय्यार नही होती। कई स्त्रियो को यह कहते सुना गया है कि आर्य समाज

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के प्रचार यात्रा का कार्यक्रम

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती इन दिनो धर्म प्रचार के दौरे पर बहुत व्यस्त है। उनका १८ मार्च ८८ से ३१ मार्च तक का कार्यक्रम निम्न प्रकार है—

१८ मार्च	हवाई जहाज से आर्य समाज रूडकी (औरगाबाद)
१६ मार्च	औरगाबाद से दिल्ली।
२० मार्च	बिहार दौरे पर मगध एक्सप्रेस से पटना के लिए प्रस्थान
२१ मार्च	पटना मे कार्यक्रम सायकाल आर्य समाज मुजफ्फरपुर मे धर्म प्रचार।
२२ मार्च	मुजफ्फरपुर से आर्य समाज मेहसी, आर्य समाज मोतीहारी, आर्य समाज बेतिया का दौरा करते हुए रात्रि आर्य समाज रामनगर (हरिनगर सुगरमिल) मे समारोह
२३ मार्च	रामनगर से नरकटियागज आर्य समाज, चनपटिया आर्यसमाज, रामगढवा चौक, आर्य समाज रक्सौल आदि मे धर्म प्रचार सायकाल बीरगज (नेपाल) मे विश्राम
२४ मार्च	बीरगज से वायुयान द्वारा काठमाडू विश्व हिन्दू सम्मेलन मे भाग लेने के लिए प्रस्थान विश्व हिन्दू सम्मेलन की धर्म सभा
२५ मार्च	विश्व हिन्दू सम्मेलन का उद्घाटन कार्यक्रम।
२६ मार्च	विभिन्न सम्मेलन काठमाडू से दिल्ली प्रस्थान
२७ मार्च	दिल्ली मे विभिन्न कार्यक्रम और आर्य समाज दीवानहाल का उत्सव
२८ मार्च	दिल्ली मे
२६ मार्च	आर्य समाज औरगाबाद (गोदी) स्वर्ण जयन्ती कार्यक्रम मे दिल्ली से हवाई जहाज द्वारा प्रस्थान
३० मार्च	औरगाबाद का दौरा
३१ मार्च	औरगाबाद से दिल्ली वापस

नोट —इसके उपरान्त हिमाचल प्रदेश का दौरा और आर्य समाज आवला (बरेली) की हीरकजयन्ती समारोह मे जायेंगे।

दिवंगत आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री: कुछ संस्मरण

–डा० भवानीलाल भारतीय–

आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री के निधन (१३ मार्च) के साथ साथ आर्य समाज के शास्त्रज्ञ विद्वानो की श्रृंखला की एक और कड़ी टूट गई। मेरा उनसे वर्षों पुराना सम्बन्ध था। जब मैं आर्य समाज जोधपुर का सक्रिय कार्यकर्ता था उस प० वैद्यनाथ जी प्रचारार्थ हमारे नगर मे आए और उनके भाषण गुलाब सागर मे हुए। उस समय वे नासिक में रहते थे। उनकी पुस्तक वैदिक ज्योति प्रकाशित हो गई थी। उसके पश्चात् सम्भवत १९५९ मे वे पुन जोधपुर आए और मेरे निवास पर भोजन के लिए भी उनका आगमन हुआ। उन दिनो मुझे आर्य समाज के विद्वानो नेताओ तथा विचारको के इण्टरव्यू लेने और उन्हे पत्रो मे प्रकाशित कराने का शौक था। ऐसे इन्टर्व्यू प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु प० नरदेव शास्त्री प० गगाप्रसाद उपाध्याय तथा स्वामी ध्रुवानन्द जी जैसे शीर्षक आर्य विद्वानो के लिए और उन्हे पत्र-पत्रिकाओ मे छपाया था। आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री का यह साक्षात्कार भी छपा।

मैं सार्वदेशिक सभा मे आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रतिनिधि के रूप मे द्वितीय बार १९६८ मे सम्मिलित हुआ। उसके पश्चात तो अनेक वर्षो तक आचार्य जी से दयानन्द भवन मे भेंट होती रही। वे सार्वदेशिक सभा के अनुसधान विभागाध्यक्ष थे। उन्ही की देखरेख म सभा ने चारो वेदो के भाष्यो का प्रकाशन कराया। आचार्य जी की लेखनी से प्रसूत लगभग सभी लेखो को पढने का अवसर मिला है। रामचन्द्र यक्ता नामक एक पौराणिक लेखक द्वारा स्वामी दयानन्द की आलोचना मे लिखित एक ग्रन्थ का युक्तियुक्त उत्तर शास्त्री जी ने दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश शीर्षक से दिया। जैन विद्वान प० अजितकुमार शास्त्री के सत्यार्थ प्रकाश दपण का उत्तर भी अत्यन्त तर्कपूर्ण शैली मे दिया था। दर्शनशास्त्र पर लिखा गया उनका ग्रन्थ तथा यज्ञ विषयक विवेचनात्मक कृति उनके शास्त्रज्ञान तथा वैदुष्य का ज्वलन्त प्रमाण है। अग्रेजी म लिखे गए उनके ग्रन्थो का तो पृथक महत्व है ही। उन्होने सस्कार विधि का अग्रेजी अनुवाद किया। अथर्ववेद का सरल आग्ल अनुवाद उनकी सारस्वत साधना का एक मनोज्ञ फल है। लगभग ३ वर्ष पूर्व जब दयानन्द भवन मे उनसे भेंट हुई थी तो उन्होने सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल जी से निवेदन किया कि सभा की ओर से अथर्ववेद का उनके द्वारा किया गया अग्रेजी अनुवाद वे मुझे भेंट करे। यह ग्रन्थ पाकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई थी। शास्त्री जी की विद्वता सूक्ष्मदर्शिता तथा विवेचन शक्ति अद्वितीय थी किन्तु लेखन मे अपेक्षित सरसता एव प्रवाह की न्यूनता थी। यही कारण है कि उनके ग्रन्थो के पाठक सीमित ही थे।

शास्त्री जी से मेरी अन्तिम भेंट उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी समारोह म १९८६ के अक्तूबर मास मे लखनऊ मे हुई थी। उन्होने वेद सम्मेलन की अध्यक्षता की थी। गत ३१ दिसम्बर को जब मेरे द्वारा सम्पादित श्रद्धानन्द ग्रन्थावली का दिल्ली मे विमोचन हुआ तभी शास्त्री जी की अस्वस्थता का समाचार मिला था। किसे पता था कि वे इतने अल्प समय मे ही इस लोक का परित्याग कर देंगे। उनकी स्मृति मे मेरी प्रणत श्रद्धाजलि।

आर्य जगत के महान विद्वान व स्वतन्त्रता सेनानी आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री का दुखद निधन

पूज्य आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री आर्य जगत के महान वैदिक विद्वान रिसर्च स्कालर अनेक मूल्यवान ग्रन्थो के रचयिता सार्वदेशिक सभा की धर्मार्य सभा के अध्यक्ष कई भाषाओ के पडित तथा स्वतन्त्रता सग्राम सेनानियो के अग्रज एव महान विचारक थे विगत २० वर्षों से आचार्य जी के साथ सार्वदेशिक सभा के सगठन मे कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आचार्य जी जहा उच्चकोटि के विद्वान थे वही उनके हृदय मे आर्य समाज के छोटे से छोटे कार्यकर्ता के प्रति अटूट प्रेम तथा वात्सल्य भरा था। विगत ६ माह से सार्वदेशिक सभा भवन मे ही उनके रोगोपचार की व्यवस्था चल चल रही थी। धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य सुधार की ओर था एव आशा थी कि आचार्य जी शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थ हो जायेंगे किन्तु अकस्मात ही दिनाक ११ ३-८८ को आचार्य जी का देहावसान हो गया।

आचार्य जी की सेवा मे गुरुकुल ऐटा के दो ब्रह्मचारी अहर्निश सेवा मे लगे रहे एव सार्वदेशिक सभा की ओर से आचार्य जी की चिकित्सा आदि सम्पूर्ण व्यवस्था की गई किन्तु आचार्य जी एकाएक हम सब को छोडकर दिवगत हो गए। आचार्य जी के रिक्त स्थान की पूर्ति निकट भविष्य मे सभव नही है। वे सार्वदेशिक सभा के मार्ग दर्शक भी थे व उनकी मूल्यवान सम्मति सबको मान्य होती थी। ऐसे महान व्यक्ति के चरणो म अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को मोक्ष प्रदान करें तथा पूज्या माता जी एव परिवार को इस महान दु ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। इति

—रामगुरु शर्मा

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री की स्मृति में शोक प्रस्ताव

आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री के देहावसान से वैदुष्य के क्षेत्र में ऐसा अभाव उत्पन्न हो गया है, जिसकी पूर्ति अत्यन्त दु साध्य है। ६० से अधिक ग्रन्थो के प्रणेता पूज्य आचार्य जी वैदुष्य एव सुचिन्तन के साकार रूप थे। वैदिक साहित्य के गहन रहस्यो को उदघाटित करने वाले उनके ग्रन्थ आगामी अनुसन्धाताओ के लिये प्रकाशस्तम्भ का कार्य करेंगे। उनके द्वारा किया गया सामवेद का भाष्य प्राचीन आर्ष प्रणाली के अनुसार है तथा सामवेद के विस्तृत अनुसन्धान का मार्ग प्रशस्त करता है। दर्शन एव वैदिक वाङमय के विभिन्न विषयो से सम्बद्ध उनके सभी ग्रन्थ अदभुत हैं तथा गहरे चिन्तन एवं सुदीर्घ अनुसधान का परिणाम है। उनके दर्शन तत्वविवेक दर्शन तत्व विवेक नामक ग्रन्थ का एक भाग प्रकाशित है, दूसरे भाग का प्रकाशन पूज्य आचार्य जी कर रहे थे तथा उसका पर्याप्त अंश लिखा जा चुका था किन्तु काल के क्रूर हाथो ने उन्हे हम से छीन लिया। दर्शनतत्वविवेक के दूसरे भाग के उपसहार में वे जो दार्शनिक सूत्र प्रस्तुत करना चाहते थे, उन्हें अब सम्भवत कभी न जाना जा सके, किन्तु उनका दार्शनिक चिन्तन जितना भी उपलब्ध है, वह भी दर्शन के क्षेत्र की अमूल्य सम्पत्ति है। यदि वे कुछ समय और हमारे मध्य विद्यमान रहते तो दर्शन एव वैदिक साहित्य के कुछ दिग्दर्शक महत्वपूर्ण सूत्र उनकी ऋतम्भरा प्रज्ञा के द्वारा हमें प्राप्त हो सकते थे।

पूज्य आचार्य जी आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ, एटा के कुलपति थे। आर्ष गुरुकुल एटा का सस्कृत साहित्य एव वैदिक वाङ्मय के अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान है। आचार्य जी के कुलपति पद पर विद्यमान होने से गुरुकुल की उन्नति में महान् प्रगति हुई है। आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ, एटा के सस्थापक पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी ने विश्व की अप्रतिम यज्ञशाला का निर्माण कर गुरुकुल को यज्ञतीर्थ का रूप दिया तो पूज्य आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री ने वैदिक यज्ञ-दर्शन नामक ग्रन्थ का प्रणयन कर यज्ञ के विज्ञान एव दर्शन को सुविशद एवं प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत किया। इस प्रकार इन दोनों विभूतियों के ये कार्य परस्पर पूरकता के साथ प्राचीन वैदिक सस्कृति के स्वरूप को बोधगम्यता एवं प्रसस्य प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करने वाले सिद्ध हुए।

हम सभी कुलवासी उनकी पुण्यस्मृति में उनके प्रति श्रद्धावनत होते हुए उनके द्वारा सौंपी गयी महती ज्ञानसम्पदा के रक्षण एवं प्रसारण के लिये सभी के प्रयत्न एवं सहयोग की अपेक्षा करते हैं।

—देवराज शास्त्री

आर्य समाज के लिए चुनौतियां ही चुनौतियां

-श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती-

आज से लगभग १११ वर्ष पूर्व महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। इसके पीछे उनके त्याग और तपस्या की लम्बी कहानी है। महर्षि ने पहले स्वय गुरु विरजानन्द के चरणो मे बैठकर वैदिक सिद्धान्तो का गहन अध्ययन और चिन्तन किया। जब वे स्वय इन सिद्धान्तो की मौलिकता और चिरन्तन सत्यता से आश्वस्त हुए उसके बाद ही इन सिद्धान्तो के प्रचार एव प्रसार के कार्यक्षेत्र मे उतरे।

उन्नीसवी सदी के प्रारम्भ मे जब महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ, हमारा देश विनाश के दलदल मे बुरी तरह फसा हुआ था। भारत का हिन्दू समाज धीरे-धीरे राजनीतिक और मानसिक रूप से अग्रेजो का गुलाम होता जा रहा था। एक ओर राजनीति दासता, और दूसरी ओर धार्मिक भ्रष्टाचार ने उसे पगु बना दिया था। अबलाये अशिक्षा, बाल-विवाह वृद्ध-विवाह आदि की चक्की मे पिसकर करुण विलाप कर रही थी। युवावर्ग सत्य से भटक कर मत-मतान्तरो से दिग्भ्रमित हो किकर्त्तव्यविमूढ होता जा रहा था। हिन्दू जाति मे छुआछूत का विष फैलकर उसे विनाश की ओर धकेल रहा था। स्वार्थी अर्थलोलुप और मदान्ध मठाधीशो ने वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था को लेकर अर्थ का अनर्थ मचा रखा था। देश की ऐसी दुरवस्था के समय ही परमात्मा ने हिन्दू जाति को 'अन्धकार से ज्योति की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर' ले जाने के लिए ऋषि दयानन्द को इस भारत भूमि पर भेजा। उन्होने अनुभव किया कि हिन्दू जाति को इस दुरवस्था से निकालने के लिए यह परमावश्यक है कि उसे सर्वप्रथम वैदिक सिद्धान्तो की सत्यता से परिचित कराया जाय। जब तक असत्य पर सत्य की विजय नही होगी, इसका उद्धार होना असम्भव है। इस कार्य को पूरा करने के लिये उन्होने बडे परिश्रम से ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेदभाष्य, सस्कार विधि और अपना सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखा। इस ग्रन्थ मे जैसा कि इसके नाम से ही परिलक्षित है, स्वामी जी ने वैदिक सिद्धान्तो के सार-तत्व को भारत की जनता के समक्ष उपस्थित किया। उन सिद्धान्तो की मूल सत्य भावनाओ को प्रकाशित किया। मानव जीवन का शायद ही कोई पक्ष बचा होगा जिस पर स्वामी जी के इस ग्रन्थ मे प्रकाश न डाला हो। सत्यार्थ-प्रकाश को यदि हम न केवल हिन्दू जाति, बल्कि समस्त मानव जाति का पथ-प्रदर्शक कहे तो कोई अत्युक्ति नही होगी।

स्वामी जी ने अपने मन्तव्यो के प्रचार एव प्रसार के लिए देश मे घूम-घूमकर अपने व्याख्यानो, शास्त्रार्थों और प्रवचनो के द्वारा जनता का सही मार्ग दर्शन किया। इस कार्य मे उन्हे अनेक कठिनाइयो और समाज मे घुसे स्वार्थी तत्वो की दुरभिसधियो का सामना करना पडा। लेकिन उन्होने कभी हिम्मत न हारी। सत्य के प्रचार और असत्य के खण्डन से वे कभी पीछे नही हटे। गुरु विरजानन्द को दक्षिणा मे दिये हुए अपने वचन को पूरा करने मे वे प्राण-प्रण से लगे रहे। अन्तत ऋषि का श्रम सफल हुआ जनता ने वेदो के सत्य अर्थ को पहचाना। अनेक कार्यो को आगे चलाने के लिए ऋषि ने एक सगठित समाज की आवश्यकता का अनुभव किया और अन्तत सन १८७५ ई० मे, बम्बई मे इस प्रकार के समाज की, जिसका नाम उन्होने "आर्य समाज" रखा था, स्थापना की। महर्षि के प्रयास और उनके समर्थको के सतत् प्रयत्न से धीरे धीरे देश के सभी भागो मे आर्य समाज की स्थापना होने लगी और उसने एक आन्दोलन का रूप ले लिया।

शिक्षा का महत्व

आज का यह दिन बडा महत्वपूर्ण है। उतना ही महत्व है जितना एक व्यक्ति के जीवन मे अपने जन्मदिवस का होना है। इस अवसर पर वह अपने कर्मों का लेखा-जोखा अपने मन मे तैयार करता है। विगत जीवन मे उसने क्या किया, क्या खोया, क्या पाया, अब क्या कर रहा है और आगे क्या करना है ? आज हमे भी आर्य समाज के बारे मे यही सोचना है। विगत सौ वर्षों से अधिक समय मे आर्य समाज ने मानव समाज, हिन्दू जाति और देश के पुनरुत्थान के लिए बहुत कुछ कार्य किया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती युगद्रष्टा थे। उन्होने देख लिया था कि समाज और देश को अज्ञान के अन्धकार से बाहर निकालना है, तो समाज के सभी वर्गो को शिक्षित करना आवश्यक होगा। इसी कारण से उन्होने स्त्री-शिक्षा पर अधिक बल दिया। स्त्री-जाति मनुष्य जाति का आधा भाग है वे जानते थे कि यदि हमारे समाज का यह अर्द्धा ग अविद्या और अज्ञान के अन्धकार में डूबा रहा तो इस समाज का उद्धार होना असम्भव है। उनके प्रयत्नो से जगह-जगह कन्या पाठशालाओ और स्कूलो की स्थापना हुई। युवाओ के लिए वैदिक प्रणाली के आधार पर गुरुकुल तथा डी० ए० वी० स्कूल और कालेज खोले गए जहा अपनी प्राचीन भारतीय सस्कृति और परम्परा के अनुकूल शिक्षा की व्यवस्था की गई। स्वामी जी उस समय देश मे अग्रेजो के द्वारा निर्धारित शिक्षा-पद्धति के विरुद्ध थे। लार्ड मैकाले ने भारतीयो के लिए जो शिक्षा-नीति बनाई थी, उसकी जड मे छिपी हुई अग्रेजी की कूटनीतिक भावना को वे पहचान गए थे। अग्रेज जानते थे कि यदि भारत को गुलाम रखना है तो भारत की जनता को उसके साहित्य सस्कृति और धर्म मे काटना होगा। इसीलिए उन्होने स्कूल और कालेज के लिए ऐसी शिक्षा-प्रणाली की योजना बनाई, जो इस देश के युवा वर्ग को पाश्चात्य साहित्य और सस्कृति के प्रति आकर्षित और प्रभावित कर सके। कारण भारत का बुद्धिजीवि एक बार यदि मानसिक रूप से गुलाम हो गया तो देश को राजनीतिक गुलामी मे जकडे रहना कठिन नही होगा। खेद की बात है कि अग्रेज अपनी इस कूटनीति चाल मे काफी हद तक सफल हुए।

महर्षि दयानन्द उनकी इस चाल को समझ गए थे, अत. उन्होने हिन्दू जाति का पुन वेदो की ओर लौटने का आवाहन किया और अग्रेजी की बनाई हुई शिक्षा-प्रणाली का खुला विरोध किया। देश की स्व-भाषा, स्व-राज्य और स्व-धर्म के प्रति प्रेरित करने का सतत् प्रयत्न किया। आर्यसमाज और आर्य समाज से सम्बन्धित शिक्षण सस्थाओ ने महर्षि के इस कार्य को पूरा करने मे एक पुष्ट भूमिका निभाई।

जन्मना जाति का विरोध

आर्यसमाज के द्वारा अछूतोद्धार और शुद्धि के क्षेत्र मे भी बहुत अच्छा काम हुआ है, इसमे कोई सन्देह नही। स्वामी जी ने जन्मजात वर्ण-व्यवस्था का घोर विरोध किया। उन्होने सिद्ध किया कि ऐसी वर्ण-व्यवस्था वेद-सम्मत नही है। स्वार्थी पण्डितो और मठाधीशो ने वेदमन्त्रो की व्यवस्था करने मे अर्थ का अनर्थ किया है। वे सब अमान्य है। ईश्वर ने मनुष्य-मनुष्य मे कोई भेद नही किया उसकी दृष्टि म सब एक है। इसलिए आर्यसमाज ने तथा-कथित हरिजनो को सदा ही सवर्ण हिन्दुओ के समकक्ष माना और उनको समाज मे सम्मानित स्थान और मर्यादा प्रदान करने के लिए कठिन प्रयत्न किया। महर्षि के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने हिन्दू जाति से बिछडे और पिछडे लोगो को पुन हिन्दू समाज की पावन-धारा मे लाने का जो प्रयत्न आजीवन किया वे आप सब जानते ही है। अपने इसी प्रयत्न मे वे शहीद भी हो गए। आर्य समाज के इतिहास मे उनका नाम सदा अमर रहेगा।

पिछले सौ वर्षों के कार्यकाल मे आर्यसमाज की उपलब्धिया कम नही कही जा सकती। उन पर हमे गर्व है। लेकिन कार्यक्षेत्र की विशालता को देखते हुए वे अल्प ही है। जितना कार्य आर्य समाज को करना चाहिए था, उतना नही हुआ। इसके लिए हम स्वय, जो अपने आप को महर्षि दयानन्द का वीर सैनिक कहलाने का दावा करते है जिम्मेदार है। इस समय की अवस्था तो और भी खराब है। यह दुख की बात है कि जिस वटवृक्ष को महर्षि दयानन्द ने आज से सौ वर्षों से अधिक समय पहले इस भारत भूमि पर आरोपित कर आजीवन अपने स्वेद-कणो से सीचा था, जिसे स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, लेखराम आदि ने अपना खून देकर परिपुष्ट किया, आज उसमे पतझड लगा हुआ है। सौ वर्षों मे तो इस वट-वृक्ष को फैलाकर यही देश नही, विदेशो के भी एक बडे भू-भाग को ढक देना चाहिए

चुनौतियां ही चुनौतियां

था। लेकिन आज जो कुछ हो रहा है वह इसके विपरीत है। इसका कारण क्या है ?

कारण यह है कि आज हम स्वयं ही अपने मार्ग से भटक गए हैं। व्यक्तिगत, पारिवारिक और जातिगत स्वार्थों ने हमे अन्धा बना दिया है। हम अपने लक्ष्य को ही भूल गए है, तो जाए कहा। आज हम सब, जो अपने-आप को 'आर्यसमाजी' कहते हैं, आपस मे एक-दूसरे से लड रहे हैं, कही कुर्सी के लिए तो कही अधिकार लिप्सा के लिए। एक-दूसरे की टाग खीच कर उसे गिराने की चेष्टा कर रहे हैं। इस समय शायद ही कोई ऐसा सौभाग्यशाली आर्यसमाज या आर्य-सस्था होगी, जहा इस प्रकार के अखाडे न खुले हुए हो। हमारी सस्थाए सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रम भूलकर राजनीतिक उठा पटक का क्षेत्र बन गई है। यह बडी शोचनीय स्थिति है। हम सबको मिलकर इसका हल ढूढना होगा, हमे निश्चित कार्यक्रम निर्धारित करके उस पर पूर्ण निष्ठा से अमल करना होगा।

पहले स्वयं आर्य बनें

महर्षि दयानन्द ने हमे 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा दिया था। "समस्त विश्व को आर्य बनाओ" उनकी केवल मात्र परिकल्पना ही नही थी, एक ध्येय था। आज वही ध्येय, वही लक्ष्य हमारा है लेकिन विश्व को आर्य बनाने से पहले हमे स्वय 'आर्य' बनना होगा। इसके लिये शुरूआत हमे अपने घर से ही करनी होगी। पहले तो हम यही समझे कि हम क्या हैं ? हमारा धर्म क्या है ? इसके लिए हम सबको वैदिक सिद्धातो का ज्ञान होना परमावश्यक है, और यह ज्ञान प्राप्त होगा वैदिक वाड्मय के निरन्तर अध्ययन, मनन और चिन्तन से। तभी हम वैदिक धर्म की मूल भावना को समझ सकेंगे। हमारे जीवन मे अध्ययन और चिन्तन के साथ-साथ वैदिक कर्मकाण्ड का भी बडा महत्व है। यह हमे अच्छी तरह समझना चाहिए। प्रत्येक आर्य परिवार मे नित्य सध्या, हवन यज्ञादि की व्यवस्था होनी चाहिए जिसमे परिवार के सभी सदस्य, आबाल वृद्ध और नारी सम्मिलित हो। इससे परिवार मे, विशेषकर बच्चो और युवाओ मे, अपने धर्म के प्रति श्रद्धा और जिज्ञासा बढेगी और आगे चलकर वे स्वय आर्यपथ के पथिक बनेगे। एक बात और ! हमे धर्म के विषय मे कट्टर होना चाहिए। कट्टरता से हमारा तात्पर्य मुसलमानो की धार्मिक मतान्धता से नही है। हम दूसरे धर्मो के प्रति सहिष्णु रहे, यह ठीक है, लेकिन अपने धार्मिक विश्वासो और सामाजिक मान्यताओ पर अडिग रहे। आज हममे से कितने है, जो वास्तविक रूप से वैदिक सिद्धान्तो को पूर्ण रूप से मानकर उन पर आचरण करते है ?

चारित्रिक प्रदूषण

हमारी सरकार आजकल पर्यावरण के प्रदूषण से बहुत चिन्तित है। उससे बचने के लिए सरकारी वातानुकूलित कार्यालयो मे उपाय सोचे जा रहे है। मैं मानता हू कि मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए पर्यावरण का प्रदूषण हानिकारक होता है लेकिन उससे भी हानिकारक होता है समाज मे फैला चारित्रिक प्रदूषण। सरकार का ध्यान इसकी तरफ क्या नही जाता ? देश भर मे आज आर्थिक नैतिक और सामाजिक भ्रष्टाचार महामारी की तरह फैला हुआ है। सरकार को इस प्रदूषण के निराकरण का भी उपाय सोचना चाहिए। बात लौटकर फिर वही—शिक्षा पर चली आती है। जब तक हमारे देश की शिक्षा-प्रणाली वैदिक सिद्धातो पर आधारित नही होगी, तब तक देश म भ्रष्टाचार का रोग पनपता रहेगा। यह निश्चित है। मानव-जीवन का कोई भी ऐसा अग नही है जो वैदिक शिक्षा से अछूता रहा हो। साहित्य, कला, ज्ञान, विज्ञान, दर्शन मर्गोल, गणित, भूगोल, खगोल, कौन-सा ऐसा विषय है, जिसका वेदो मे उल्लेख और आदेश नही है। यहा तक कि राजनीतिशास्त्र का भी वेदो मे विस्तृत वर्णन है। राजा कैसा हो प्रजा कैसी हो, राजा-प्रजा के सम्बन्ध कैसे हो एक देश के दूसरे राजाओ के साथ कैसे सम्बन्ध हो' यह सब 'ज्ञान के भण्डार" वेदो मे उल्लिखित हैं। फिर क्यो हमारी सरकार का ध्यान इसकी तरफ नही जाता ? यदि नही जाता, तो हमे सरकार का ध्यान इस तरफ खीचना होगा। वेद सार्वभौम है; सार्वकालिक हैं, उनमे दी गई शिक्षायें मानव मात्र के लिये हैं, किसी जाति या वर्ग-विशेष के लिए नही। यह हमारे शिक्षाशास्त्रियो के लिए समझने और सोचने की बात है।

राजनीतिक प्रेरणा

महर्षि दयानन्द को हम अधिकाश मे एक समाजसुधारक के रूप मे ही जानते है। लेकिन वे एक राजनीतिज्ञ भी थे, यह बात शायद बहुत कम लोग जानते होगे। भारत के स्वतन्त्रता-सग्राम मे उन्होने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। सन १८५७ ई० मे स्वतन्त्रता की प्रथम लडाई लडी गई। उसमे स्वामी जी ने जो योगदान किया, उसका विस्तृत वर्णन "आर्यसमाज के इतिहास" मे उल्लिखित है। इसके बाद भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने जो स्वतन्त्रता आदोलन अग्रेजी शासन के विरुद्ध आरम्भ किया था, उसमे भी आर्य नेताओ तथा आर्य जनता ने सक्रिय रूप से भाग लिया, और बहुत से आर्य वीरो ने तो उसमे अपने प्राणो की आहुति भी दी। हम इस सन्दर्भ मे सरदार भगतसिह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, श्यामजी कृष्ण वर्मा, मदनलाल ढीगरा, रोशनसिह आर्य, गेंदालाल दीक्षित तथा अन्य आर्य वीरो का नाम बडे गर्व से लेते हैं। उन्होने क्रान्तिकारियो की वेशभूषा मे "ओम् वन्देमातरम्" पार्टी बनाकर अग्रेजी साम्राज्यवाद को जड से उखाडने मे अपने जीवन का उत्सर्ग कर दिया।

महर्षि दयानन्द ही पहले भारतीय थे जिन्होने अग्रेजो के इस प्रचार का पर्दाफाश किया कि आर्य लोग मध्य एशिया से भारत आए थे। स्वामी जी ने इस झूठे प्रचार को चुनौती देकर घोषणा की कि आर्यों ने ही सर्वप्रथम आर्यभूमि को बसाया। सृष्टि का आदि स्थान त्रिविष्टप (तिब्बत) है और उसी भूमि पर चारो वेदो का आविर्भाव हुआ।

दूसरा महत्वपूर्ण कार्य, जो भारत के इतिहास में हमेशा अमर रहेगा, वह है महर्षि द्वारा वेद के शुद्ध स्वरूप का दिग्दर्शन और 'ईश्वरीय ज्ञान' के गौरवमय इतिहास का प्रकाशन। स्वामी जी ने कतिपय भारतीय और

(शेष पृष्ठ ६ पर)

भारत का नया साल कब और क्यों ?

—डा० राजेन्द्रप्रसाद आर्य

भारत ऐसे विशाल एवं प्राचीनतम देश में राष्ट्र भाषा के समान ही नव-सम्वत्सर का प्रश्न भी अत्यधिक जटिल एवं महत्वपूर्ण है। यहां प्रत्येक मतावलम्बी अपनी संस्कृति अपने विशिष्ट गुरुओं एवं अन्य महत्वाकांक्षी राजाओं के चिरस्मरणीय प्रचार व प्रसार के लिए अलग-अलग सम्वत्सर चलाये। जो अब भी अलग-अलग प्रांतों में प्रचलित है।

(१) **विक्रम-सम्वत्**—यह महाराज विक्रमादित्य के शासनारूढ़ से सम्बन्धित है। इसके मास चैत, वैशाख, ज्येष्ठ, अषाण, श्रावण, भाद्रपद, कार्तिक, अग्रहायण, पौष, माघ, फाल्गुन है। चैत को दो भागों में बांटकर नया साल सृष्टि सम्वत् के अनुसार चैत सुदी प्रतिपदा को मानते हैं। मांसों के नाम प्रत्येक पूर्णमासी को नक्षत्रानुसार वैदिक मास के नामों को बदलकर रख दिए गये हैं। इसकी गणना चन्द्रमा के अनुसार होता है। अतः कभी एक ही तिथि दो दिनों तक चलती रही है तथा कभी बीच-बीच में एक तिथि लुप्त हो जाती है। कभी मलमास के कारण एक ही मास दो वार आ जाते हैं। अतः यह दैनिक व्यवहारिक जीवन के लिए अनुपयुक्त है। आजकल सम्वत् २०४४ चल रहा है। इससे पूर्वकाल के लिए यह बिल्कुल मौन है। अतः भारतीय राष्ट्रीय सम्वत् के लिए यह सर्वथा अनुपयुक्त है।

(२) **शक सम्वत्**—शकों के भारत पर आक्रमण कर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के पश्चात इस वंश का महा प्रतापी राजा शालिवाहन द्वारा यह सम्वत् प्रचलित किया गया है। यह सरल व गणना के लिए सुगम है। इसके मास भी वही हैं जो विक्रम सम्वत् के हैं। शकों का अब नामोनिशान नही है। वे लोग यहां के प्राचीन लोगों में घुल-मिल गये। आजकल १६०८ सम्वत् चल रहा है। यह राष्ट्रीय सम्वत् के लिए अनुपयुक्त है। क्योंकि यह हमें गुलामी व पराभव की हमारे हृदय में चुभन उत्पन्न करती रहती है। यह अधिकतर दक्षिण में प्रचलित है।

(३) **प्रविष्टा सम्वत्**—पंजाब प्रान्त में वैसाखी के दिन (जो मेष सक्रान्ति को पड़ता है) नया संवत्सर मनाया जाता है। ये महातपस्वी व महात्यागी गुरु गोविन्दसिंह द्वारा प्रचलित किया गया है।

(४) **बंगाब्द संवत**—यह बंगाल प्रान्त में प्रचलित है। आजकल १४०४ संवत चल रहा है।

(५) **हिजरी सम्वत्**—यह मुस्लिम मतावलम्बियों का संवत्सर है। मुहम्मद साहब की यादगार में मनाया जाता है। आजकल १४०७ चल रहा है। इसके केवल १० मास होते हैं।

(६) **ईसवी संवत्**—यह विश्व के अधिकतर भागों में प्रचलित है। क्योंकि ईसाई मतावलम्बी और उनके राज्य बहुत अधिक थे एवं है। भारत में भी अंग्रेजी राज्य [ईसाई मतावलम्बी] स्थापित होने के बाद से प्रचलित है। यह उनके पैगम्बर ईसामसीह की याद दिलाता रहता है और ईसाई मत एव उसके प्रवर्तक ईसामसीह का प्रचार एव प्रसार करता है। आजकल १६८८ ए०डी० है। इसके पूर्व के काल को बी०सी० कहकर अनुमानित किया जाता है।

इस संवत को भारतीय राष्ट्र संवत स्वीकार करना विशेष समुदाय से सम्बन्धित होने के नाते साम्प्रदायिक और धर्म निरपेक्षता के विरुद्ध है। यह भारत मां को गुलामी की बेड़ियों में बांधने व उससे छुटकारा पाने वाले तथा सिर उठाने वालों को निर्ममता पूर्ण दमन के बारे में ठेस उत्पन्न करती है। अत. यह भारतीय राष्ट्रीय सम्वत के बिलकुल ही अनुपयुक्त है।

(७) **सृष्टि संवत्**—यह हमारे भारतीय राष्ट्रीय संवत के लिए उपयुक्त है। यह असाम्प्रदायिक ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है उनके एवं वेदानुकूल हैं। इसकी सम्पूर्ण विश्व प्रशंसा करता है और अनुकरण करने एवं समझने में प्रयत्नशील है।

वैदिक काल में मासों के नाम मधु, माधव, शुक्र, शुचि, नभ, नभस्य, ईश, उर्ज, सह सहस्य तप, तपस्य है। [यजुर्वेद १३।२५] आजकल १,६७,२६,४६,०८७ चल रहा है। सुविधानुसार हम लोग ४६८७ को कह सकते हैं। गणना गणितीय है। सृष्टि की उत्पत्ति हेमाद्रि ग्रन्थ द्वारा प्रमाणित चैत्र सुदी प्रतिपदा से आरम्भ है, उसी समय मेष संक्रान्ति भी था। समय बीतते इनमें अन्तर होने लगा।

भारत के अधिकतर प्रान्त विशेष कर दक्षिण भारत शक सम्वत मेष सक्रान्त को नववर्ष मनाता है। पंजाब और बंगाल उसी समय वैशाखी व बंगाब्द सम्वत् नया साल मनाते हैं। हम लोग भी यदि अपना नया सृष्टि सम्वत मनाना आरम्भ कर दें तो क्या हर्ज है। इससे पूरे भारत वर्ष में एक साथ नया सम्वत् मनाने की परिपाटी चल पड़ेगी। बात सर्वसम्मति की है। बिना किसी सैद्धान्तिक मतभेद के।

हम क्या थे क्या हो गये हैं ?

—गजानन्द आर्य—

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त की देश की स्थिति पर एक कविता है, उस कविता का प्रारम्भ है—

हम कौन थे क्या हो गये है ।

आओ सब मिलकर विचारे वे समस्यायें सभी ॥

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ के माध्यम से हम कौन थे ? का उत्तर विस्तार से प्राप्त है। क्या हो गये ? का उत्तर भी सत्यार्थ प्रकाश ने दिया है। यह उत्तर बडे मार्मिक शब्दो मे है। एक स्थान पर आर्यों के चक्रवर्ती साम्राज्य की चर्चा करते ऋषि लिखते हैं—,

अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशो के राज्य करने की कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त मे भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नही है। जो कुछ है तो भी विदेशिया के पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोडे राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियो को अनेक प्रकार का दुख भोगना पडता है।"

स्मरण रहे सत्यार्थ प्रकाश की रचना अग्रेजी शासन काल मे हुई है अत देश की स्थिति का परिचय तत्कालीन परिस्थितियो के घेरे मे दिया गया है।

इसी प्रसग को पुन लिखा गया है—"सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त चक्रवर्ती सार्वभौम राजा आर्य कुल में ही हुए थे, अब इनके सन्तानो का अभाग्योदय होन से राजभ्रष्ट होकर विदेशियो के पादाक्रान्त हो रहे हैं।"

विदेशिया द्वारा पादाक्रान्त होने के कारणो पर प्रकाश डालते हुए सत्यार्थ प्रकाश लिखता है—

'आपस की फूट मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या का न पढना व बाल्यावस्था मे अस्वयवर विवाह विषयासक्ति, मिथ्या भाषणादि कुलक्षण, वेद विद्या का अप्रचार आदि कुकर्म हैं। जब आपस मे भाई-भाई लडते है, तभी तीसरा विदेशी आकर पच बन बैठता है। आपस की फूट से कौरव पाडव और यादवो का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयकर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्यों को सब सुखो स छुटाकर दुखसागर मे डुबा मारेगा। उसी दुष्ट दुर्योधन गोत्र हत्यारे स्वदेश विनाशक नीच के दुष्ट मार्ग मे आर्य लोग अब तक भी चलकर दुख बढा रहे हैं। परमेश्वर कृपा करे कि यह राजरोग हम आर्यों म से नष्ट हो जाय।"

आर्यो के पतन का एक मुख्य कारण आपस की फूट रहा है। एक दूसरा बडा कारण भाजन के छूनछात का रहा है। प्रस्तुत है सत्यार्थ प्रकाश का विश्लेषण-क्या हम सब बुद्धिमानो ने यह निश्चय नही किया है कि जो राजपुरुषो मे युद्ध समय मे भी चौका लगाकर रसोई बनाके खाना अवश्य पराजय का हेतु है ? इसी मूढता से इन लोगो ने चौका लगाते लगाते विरोध करत कराते सब स्वातन्त्र्य आनन्द धन, राज्य विद्या और पुरुषार्थ पर चौका लगाकर हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं और इच्छा करते है कि कुछ पदार्थ मिले तो पका कर खाये। परन्तु वैसा न होने पर जानो सब आर्यावर्त देश भर मे चौका लगाके सर्वथा नष्ट कर दिया है।

देश के पतन मे गोहत्या का कारण जताते हुए, ग्रन्थकार लिखता है—"जब से विदेशी मासाहारी इस देश मे आके गौ आदि पशुओ के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमश. आर्यों के दुख की बढती होती जाती है, क्योकि— नष्टे मूले नैव फल न पुष्पम्" जब वृक्ष का मूल ही काट दिया जाय तो फल फूल कहा से हो ?"

देश को सबसे अधिक क्षति वेद विद्या के छूटने और अनार्ष ग्रन्थो के पठन पाठन से हुआ। एक प्रसग मे ऋषि लिखते हैं—

भला वेदादि सत्य शास्त्रा को माने बिना तुम अपने वचनो की सत्यता और असत्यता की परीक्षा और आर्यावर्त की उन्नति भी कभी कर सकते हो ? जिस दश को रोग हुआ है उसकी औषध तुम्हारे पास नही और यूरोपियन लोग तुम्हारी अपेक्षा नहीं करते और आर्यावर्तीय लोग तुमको अन्य मूतियो के सदृश समझते हैं। अब भी समझकर वेदादि के मान्य से देशोन्नति करने लगो तो भी अच्छा है।"

वेदो की रक्षा का मुख्य दायित्व ब्राह्मणो और सन्यासियो का था। इनको लक्ष्य करके लेखक लिखता है—देखो ! तुम्हारे सामने पाखण्ड मत बढते जाते है। मुसलमान तक हो जाते हैं। तनिक भी तुमने अपने घर की रक्षा और दूसरो को मिलाना नही बन सकता। बने तो तब जब तुम करना चाहो। जब लो वर्तमान और भविष्यत् मे सन्यासी उन्नतिशील नही होते तब लो आर्यावर्त और अन्य देशस्थ मनुष्यो की वृद्धि नही होती। जब वृद्धि के कारण वेदादि सत्यशास्त्रो का पठन-पाठन ब्रह्मचर्यादि आश्रमो के यथावत् अनुष्ठान, सत्योपदेश होते है, तभी देशोन्नति होती है। देशोन्नति के लिए सन्यासियो के कर्म और दायित्व को ऋषि ने निम्न प्रकार झकझोरा है—

'कितने ही मठधारी गृहस्थ होकर भी सन्यास का अभिमान मात्र करते हैं, कर्म कुछ नही। जो कोई अच्छा उपदेश करे उसके भी विरोधी होते हैं। ये सन्यासी लोग ऐसा समझते हैं कि हमको खण्डन मण्डन से क्या प्रयोजन ? हम तो महात्मा हैं ऐसे लोग भी ससार मे भार रूप है। जब ऐसे हैं तभी तो वेदमार्ग विरोधी वाममार्गादि सम्प्रदायी ईसाई मुसलमान जैनी आदि बढ गये अब भी बढते जाते है और इनका नाश होता है तो भी इनकी आख नही खुलती। खुले कहा से ? जो कुछ उनके मन मे परोपकार बुद्धि और कर्तव्य कर्म करने मे उत्साह होवे, किन्तु वे लोग अपनी प्रतिष्ठा खानेपीने के सामने अन्य अधिक कुछ भी नही समझते और ससार की निन्दा से बहुत डरते है। जब अपने अपने अधिकार के कर्मों को नही करते, पुन सन्यासादि नाम धराना व्यर्थ है।

राष्ट्रकवि ने ब्राह्मणो (जिनको ब्राह्मण नाम देना भी अयुक्त है) की पोपलीला पर व्यग करते हुए लिखा —

'वे तीर्थ पडे है जिन्होने स्वर्ग का ठेका लिया।

है नीद कर्म न एक ऐसा हो न जो उनका किया ॥

वे है अविद्या के पुरोहित अवधि के आचार्य हैं।

लडना झगडना और अडना मुख्य उनके कार्य हैं ॥

कवि के इस भावको सत्यार्थ प्रकाश मे देखा जा सकता है। ऐसा लगता है कि कवि ने भी सत्यार्थ प्रकाश से इस विषय की अधिक जानकारी प्राप्त की है। सत्यार्थ प्रकाश लिखता है—

'जब ब्राह्मण लोग विद्याहीन हुए तब क्षत्रिय वैश्य और शूद्रो के अविद्वान् होने मे तो कथा ही क्या कहनी ? जो परम्परा से वेदादि शास्त्रो का अर्थसहित पढने का प्रचार था वह भी छूट गया। केवल जीविकार्थ पाठमात्र ब्राह्मण लोग पढते रहे तो पाठमात्र भी क्षत्रिय आदि कोष पढाया। क्योकि जब अविद्वान हुए गुरु बन गये तब छल कपट, अधर्म भी उनमे बढता चला। ब्राह्मणो ने विचारा कि अपनी जीविका का प्रबन्ध बाधना चाहिए। सम्मति करके यही निश्चय कर क्षत्रिय आदि का उपदेश करने लगे कि हम ही तुम्हारे पूज्यदेव है, बिना हमारी सेवा किये तुमको स्वग वा मुक्ति नही मिलेगी, किन्तु जो तुम हमारी सवा न करोगे तो घोर नरक मे पडोगे। जो-जो पूर्ण विद्यावाले धार्मिका का नाम ब्राह्मण और पूजनीय वेद और ऋषि मुनियो के शास्त्र मे लिखा था उनको अपने मूर्ख विषयी, कपटी, लम्पट अधर्मियो पर घटा बैठे। भला वे आप्त विद्वानो के लक्षण इन मूर्खों मे कब घट सकते है ? परन्तु जब क्षत्रियादि यजमान सस्कृत विद्या से अत्यन्त रहित हुए तब उनके सामन जो जो गप्प मारी, सो सो विचारो से सब मानली। जब मान ली तब इन नाममात्र ब्राह्मणो की बन पडी। सबको अपने वचन जाल मे बाधकर वशीभूत कर लिया। और कहने लगे "ब्रह्म वाक्य जनार्दनः।"

(क्रमश.)

सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन सदस्यों की सूची

१३८४६ अशोक कुमार शर्मा होम फर्निशिंग गुरसाम स्ट्रीट हाथरस
१०८०९ ओमप्रकाश झापड़िया ट्रान्स सिक्योरिटी एजेन्सीज कोटा (राजस्थान)
१०६७० चैनाराम वर्मा सीसविया ग्राम पो० धावी जिला जोधपुर (राज०)
१३८८९ मदनप्रसाद आर्य, वर्तन दुकान ऊ टारी पलामू (बिहार)
१३८९० लखनलाल आर्य, प्रेस संवाददाता अकबरपुर राजघट नवादा (बिहार)
१४०१२ देशबन्धु सरीन, एफ १/१७ कृष्ण नगर दिल्ली-५१
६५५६ सुनीराम जी २१ स्टेट बैंक कालोनी जी टी रोड दिल्ली
१४०२७ केदार नाथ आयुर्वेदिक भण्डार सिराथू इलाहाबाद (उ० प्र०)
६९९५ जगदीशचन्द्र मेहरा १-२६ लोधी लेवल होटल, नरीमन प्वाइ ट बम्बई
१२५२० अरोड़ा किराना स्टोर्स रामपुरा कालोनी यमुना नगर अम्बाला
१२६०२ ब्रजनसिंह सहा० यन्त्री लोक स्वास्थ्य यान्त्रिका विभाग शिकारपुरा खण्डवा
१२८५८ गुलाब चन्द्र बसल १९ सिविक सेन्टर भिलाई नगर (म प्र)
१०२०३ जानकी दास नारायण सहाय खण्डेलवाल कल्लन गज खण्डवा
१४४ मन्त्री जी आर्यसमाज खुर्जा, बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश)
१४०८० मन्त्री जी आर्यसमाज मन्दिर हरिहर रोड रायचूर (कर्नाटक)
१२२०८ जयभगवान जी पठानपुरा शाहदरा दिल्ली-३२
१२०१२ प्रधानाचार्य, डी ए वी इन्टर कालेज नवाबगज गोण्डा
१०७१४ मन्त्री जी आर्य समाज पथरोट जि० अमरावती (महा०)
१४१११ महेन्द्र आर्य द्वारा धर्मपाल शर्मा, मटीली रोड अबोहर
१५१८७ डी आर नागपाल १९/९९६ लोधीरोड नई दिल्ली
१४०९० माताप्रसाद रमेशचन्द सर्राफ फतेहाबाद जि० आगरा (उ० प्र०)
१४११० ईश्वरी प्रसाद आनन्द कुमार, निकट फायर स्टेशन महबूब नगर
३८६४ मूलचन्द्रसिह ३८ अर्जुन गली भीम मण्डी कोटा
१३४८७ सुदर्शन प्रसाद, नेताजी चौक जोगबनी पूर्णिया (बिहार)
६६२१ राधेश्याम जी मन्त्री आर्य समाज मुगल सराय वाराणसी (उ प्र)
१४११६ विमला जवाहर आहूजा म०न० ई २०७ गोपालपुरी कच्छ
१२४५४ के० मालपानी अफजलगढ बिजनौर
९६७० जोधराज बिहारी लाल बसल विजनवारी दार्जिलिग
१४१४४ आर्य समाज नया बास नई दिल्ली-६
९८१२ चन्द्रभान आर्य, ग्राम मोषपुर पो० मसूरपुर (गुज०)
१४१७१ नन्दलाल जैसवाल गाजा माग ठेकेदार मडौली बाजार सिंगरौली
८२६७ एस डी प्रसाद २१ ए बी क्लब रोड जमालपुर जि० मुगेर (बिहार)
१२७८६ मन्त्री जी, आर्य समाज नगीना जि० बिजनौर (उ० प्र०)

आर्य जीवन की आवश्यकता

(पृष्ठ ३ का शेष)

मे तो ऐसो की ही भरमार है। भरमार न सही परन्तु तालाब तो एक मछली से भी गन्दा हो सकता है।

ऐसे पुरुषा को चुपचाप अपनी आत्मा से पूछना चाहिए कि क्या हम आर्य हैं ? यह आत्म-परीक्षा ही सबको सच्चे आर्यत्व की ओर प्रेरित कर सकती है।

इस प्रसग मे एक आर्य नेता के उदगार द्रष्टव्य है। मेरे बचपन मे एक बुजुर्ग का तकिया कलाम था कि आर्यत्व का व्यवहार करो। कई वर्ष हुए जब बुजुर्ग ने मुझे एक काम के लिए पत्र लिखा। उसमे अन्त मे लिखा था कि यदि न कर सको तो आर्यत्व के साथ लिख दो। तात्पर्य यह था कि जो बात सत्य है कह दो ! शरमाओ मत। मैं अब भी सोचता हू कि क्या केवल मूर्ति पूजा न करना, सबके साथ खा लेना, सन्ध्या हवन करना, वेदो का पढना, नित्य आर्यसमाज के प्रचार के लिए व्याख्यान देना या लेख लिखना ही आर्यत्व है आत्मा से उत्तर मिलता है कि यह सब सुगम है आर्यत्व कठिन है तभी तो वेद कहता है—

'जो सत्य को नही जानता वह वेद से क्या लाभ उठा सकेगा।'

प्रभु हम सच्चा आर्यत्व दे।

चुनौतियां ही चुनौतियां

(पृष्ठ ६ का शेष)

विदेशी विद्वानो द्वारा किए गए वेद-भाष्य को खुले रूप मे अस्वीकार करके घोषणा की कि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है और वेद मे सभी प्रकार के प्राचीन और आधुनिक विज्ञान का वर्णन है, जो ईश्वरीय ज्ञान मे आवश्यक है। उन्होने सायण, महीधर, उव्वट तथा विदेशी विद्वानो के वेद-भाष्यो को अमान्य करके कहा कि वेद विज्ञानमूलक भाष्य ही ईश्वरीय ज्ञान की पहचान है। उन्होने इसी आधार पर 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' लिखने का कार्य आरम्भ किया। योगीराज अरविन्द तथा अन्य विद्वानो ने महर्षि द्वारा रचित वेदभाष्य को ही वेदद्वार मे प्रवेश करने की कुजी सज्ञा देकर स्वामी जी के वेदभाष्य की सराहना की है।

विदेशियो का कुचक्र

इस समय देश मे विदेशी शक्तियोका एक कुचक्र बडी तेजी से चल रहा है। पश्चिमी देशो से आए हुए ईसाई मिशनरी और पाकिस्तान समर्थक मुसलमान मुल्ला-मौलवी, जिन्हें अन्य मुस्लिम देशो का भी आर्थिक सहयोग प्राप्त है, हिन्दू जाति के एक बड़े अग, हरिजनो और आदिवासियो का धर्म-परिवर्तन करने मे जी-जान से लगे हुए हैं। मीनाक्षीपुरम् की घटनाए अभी बहुत पुरानी नही पडी हैं। आर्यसमाज ने इस प्रकार के धर्म-परिवर्तन का खुला विरोध किया है जिसके परिणामस्वरूप दक्षिण भारत मे हरिजनो के धर्मान्तरण पर रोक लगी है। लेकिन हमे इस विषय मे आगे भी सतर्क रहना होगा। यदि यह कुचक्र चलता रहा तो वह दिन दूर नही जब अपने ही देश मे हिन्दू अल्पसख्यक हो जाये। उस समय हिन्दू जाति की क्या दशा होगी, यह कल्पनातीत है। आर्यसमाज को इस दशा मे और भी अधिक सक्रिय बनना पड़ेगा। विदेशी शक्तियो द्वारा देश के नैतिक विभाजन की यह चाल बहुत गहरी है। हमे उनकी हर चाल को नाकाम करना होगा इसके लिए हमे सगठित होकर अपने-आपको तैयार करना होगा।

यह कार्य बहुत कठिन नही है। केवल लगन और दृढ निश्चय की आवश्यकता है। हम अपने समस्त स्वार्थो और दुष्प्रवृत्तियो को छोडकर महर्षि के बताए मार्ग पर चलते रहे। तभी हम अपना, अपने समाज और अपने देश का कल्याण कर तथा महर्षि के "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का स्वप्न साकार कर सकेंगे।

आर्य जगत् के समाचार

उत्सव समाचार

—आर्य समाज मुरैना का ३४वा वार्षिकोत्सव दिनाक १४-१५-१६ मार्च को म० प्र० विद्युत मण्डल के कार्यालय के सामने हुआ।

—आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात के तत्वावधान मे स्वामी शान्तानन्द वैदिक आश्रम का वार्षिकोत्सव दिनाक १२, १३, मार्च को हुआ। जिसमे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान एव सन्यासी गण पधारे।

—पतरा खुर्दम आर्य सम्मेलन दिनाक २९-३० अप्रैल वा १ मई ८८ को मनाया जा रहा है। इस सम्मेलन प रामकृष्ण जी, प जयप्रकाश जी हिसार कु वर महिपाल विजेन्द्र आर्य गाजीपुर ठाकुर महेन्द्रपाल आदि पधार रहे हैं।

दयानन्द मठ चम्बा द्वारा अपील

दयानन्द मठ चम्बा हिमाचल प्रदेश मे रावी नदी के सुरम्य तीर पर पर्वत श्रृखलाओ के मध्यमे स्थित एक छोटा-सा किन्तु सुन्दर रमणीय आश्रम है। मठ द्वारा सचालित दयानन्द सस्कृत महाविद्यालय एव आयुर्वेदिक फार्मेसी से आर्य जन सुपरिचित है। शुद्ध जडी बूटियो से निर्मित यहा की आयुर्वेदिक औषधियो यथा च्यवनप्राश, आयुर्वेदिक चाय, चन्द्रप्रभा वटी एव स्वर्ण मिश्रित औषधियो को लोग बडे विश्वास के साथ लेते हैं।

अब मठ मे एक भव्य यज्ञशाला निर्माणाधीन है। इस समय भौतिक विलास के अड्डे यथा होटल, क्लब एव सिनेमाघर तो भव्यतम बन रहे हैं किन्तु हा हन्त! जहा से वेद का नाद निनादित होना था एव लोक कल्याण के साधन यज्ञ की सुगन्धि प्रभावित होनी थी उन उपासना स्थल एव यज्ञ शालाओ के लिए धन नही मिल पाता। मेरी मान्यता है कि हमारे उपासना स्थल, हमारी यज्ञ शालाए भी भव्यतम बननी चाहिए।

अत देश भर के आर्य भाई बहिनो से मेरी प्रार्थना है कि हिमाचल प्रदेश की इस यज्ञशाला के निर्माणार्थ दिल खोलकर दान दीजिए। रावी के तीर पर यह यज्ञशाला सबका प्रेरणा स्रोत बनें। कम से कम तीन लाख रुपये व्यय का अनुमान है। दानियो के नाम का शिलालेख भी स्थापित किया जाएगा। जहा इस यज्ञशाला मे हमारा यज्ञो पर शोध करने का विचार है, वही यह भी अभिलाषा है कि यह दर्शनीय स्थल बनें।

अत सन्यासी की अपील है कि उदारता से दान दे ताकि यज्ञशाला शीघ्र बनकर तय्यार हो सके। अपने दान की राशि का चेक ड्राफ्ट 'दयानन्द मठ चम्बा इस नाम से भेजे। प्रभु आपका कल्याण करे।

—स्वामी सुमेधानन्द

मुखर महानता

प्रथम राष्ट्रपति भारत के, श्री बाबू थन्य थे निर्विवाद।
भारत माता के आत्म भक्त थे देव धन्य राजेन्द्र प्रसाद॥
उनके जीवन की एक बात, जिसे खुब सच्ची सुन लेना।
है छोटी बात बडी कितनी कितनी देती हमे प्रेरणा॥
देश जागरण कार्य भ्रमण से घर लौटे स्टेशन पर उतर पडे।
स्टेशन से घर जाने को थे, तागा पुकार क्षण पकड चढे॥
निज नाम सुयश हुगामे से उपचार और सत्कारों से।
सचमुच वे बहुत डरा करते, नित रोज रोज जयकारों से॥
बतलाया घर सकेतो से, फिर मार्ग मध्य सकेत किया।
तागे वाले ने पथिक जान, सकेतो का अनुकरण किया॥
चलो इधर फिर मुडो उधर को, बायें से मुड कर फिर दायां।
क्षण क्षण मे राह बता करके, बाबू जी ने निज घर पाया।
जब तागा रुका द्वार सम्मुख, कर रहा क्षोभ तागे वाला।
इधर उधर तो बहुत कहा, जी नही बताया बगला आला॥
कहते घर राजन बाबू का, तो आप पहुँचते बैठ मौन।
तागे वाले को ज्ञात कहा, सम्मुख उसके है बडा कौन॥

रचयिता—देवनारायण भारद्वाज

मुस्लिम युवक व युवती ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया

कानपुर। आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर मे समाज के प्रधान प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने एक मुस्लिम युवक आफताप खा तथा एक मुस्लिम युवती यासमीन ने की उनकी इच्छानुसार वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) मे प्रवेश कराया।

फरुखाबाद निवासी २३ वर्षीय आफताप खा का शुद्धि के बाद एक हिन्दू लडकी सुनीता देवी के साथ तथा ३० वर्षीय यासमीन का उनकी इच्छानुसार श्री घनश्याम गुप्त के साथ विवाह करा दिया गया। आफताप खा का नाम अमित कुमार आर्य तथा यासमीन का नाम निशा रखा गया।

इस अवसर पर देवीदास आर्य ने कहा वैदिक धर्म ही ईश्वरी धर्म है। दूसरे मत मनुष्यकृत है। समारोह मे उपस्थित लोगो ने दोनो जोडो का का स्वागत किया तथा आशीर्वाद दिया।

आर्य समाज, मन्त्री

गुरुकुल आमसेना के स्नातक विजयी

१५ जनवरी को (रायपुर) मे विवेकानन्द मिशन की ओर से आयोजित मध्य प्रदेश महाविद्यालय प्रान्तीयस्तर तत्कालिक भाषण प्रतियोगिता मे गुरुकुल आमसेना के स्नातक चन्द्रशेखर शास्त्री ने सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया।

उन्हे मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री ने प्रमाण पत्र तथा पारितोषिक देकर सम्मानित किया।

—आचार्य अखिलेश्वर एम ए
स्नातक आमसेना

आर्यसमाज दीवानहाल का १०३वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज दीवानहाल का १०३वा वार्षिकोत्सव लालकिला मैदान मे २५ मार्च से २७ मार्च तक होने जा रहा है। इस अवसर पर २१ मार्च से २४ मार्च तक रात्रि ८ बजे से प० शिवाकान्त उपाध्याय की कथा होगी। उत्सव पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया है जिसके ब्रह्मा होगे प० राजगुरु शर्मा। यज्ञ पर प्रथम दिन आहुति प्रदान करने दिल्ली के उपराज्यपाल पधार रहे हैं।

२५ मार्च को ध्वजारोहण स्वामी दीक्षानन्द करेगे। रात्रि मे वेद सम्मेलन होगा। २६ मार्च को आर्य मर्यादा सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन तथा कवि सम्मेलन होगे। २७ मार्च को यज्ञ की पूर्णाहुति, स्वामी दीक्षानन्द का प्रवचन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन और स्वामी आनन्द बोध की अध्यक्षता मे आर्य सम्मेलन होगा, जिसका उद्घाटन श्री बलराम जाखड अध्यक्ष लोकसभा करेगे। इसके मुख्य वक्ता—श्री सीताराम केसरी, डा० वाचस्पति उपाध्याय, प० जयप्रकाश आर्य, डा० वेदप्रताप वैदिक, प० शिवकुमार शास्त्री आदि होगे।

ऋषिबोधोत्सव एवं सीताष्टमी

प्रातीय महिला सभा के तत्वावधान मे आर्य समाज दीवानहाल मे ऋषि बोधोत्सव पर्व बहुत धूमधाम से श्रीमती प्रभात शोभा जी की अध्यक्षता मे मनाया गया। दिल्ली की १०० से अधिक स्त्री समाजो ने अधिक से अधिक संख्या मे भाग लिया। यज्ञ द्वारा कार्यक्रम आरम्भ हुआ श्रीमती सरला महता ने स्वागत भाषण पढा। श्रीमती राजेन्द्रकुमारी बाजपेयी ने अपने विचार देते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द ने स्त्रियो को अज्ञान अन्धकार से बाहर निकालने का कार्य किया, वह अद्भुत था। सत्यार्थ प्रकाश मे भी कुरीतियो से ऊपर उठने की बात कही, उन्होने वेदो की ओर ध्यान दिलाया, और हमारी वास्तविक संस्कृति को बताया। आज १९८८ मे स्त्री सती हो रही हैं यह कितना निर्मम है, सती का मतलब आदर्श नारी है। महर्षि दयानन्द ने अन्धविश्वास और कुरीतियो को दूर किया और स्त्रियो मे जागृति पैदा की।

श्रीमती किरण वेदी पुलिस उप कमिश्नर ने बोलते हुए कहा कि मुझे नारि जाति पर गर्व है, मैं अपनी छोटी बहना को कहती हूँ कि राष्ट्र देश के काम से पीछे मत हटना और कर्म मे अपना जीवन लगाना। माता पिता अच्छे संस्कार देते हैं, उनमे उत्तम विश्वास पैदा करते हैं और निष्ठा सिखाते है, मा के प्यार से बच्चे बनते हैं, लडके, लडकियो को गुणवान बनाओ, और जेवर, कपडो को छोडकर उन्हे पैरो पर खडा करो। आज मुझे अपने माता पिता के द्वारा ही संस्कार दिये गये थे। उन्होने सभा का तथा सभी बहिनो का आभार प्रकट किया।

श्री आनन्दबोध जी सरस्वती ने किरण वेदी को आशीर्वाद देते हुए कहा हमे रानी झासी जैसी बेटी पर गर्व है, सारा आर्य समाज आपके साथ है।

श्रीमती प्रभात शोभा पडित ने अपने विचार देते हुए कहा कि ऋषि दयानन्द ने नई प्रेरणा दी, साहस तथा बल का प्रसार किया।

श्रीमती सरला महता और प्रकाश आर्या ने धन्यवाद किया।

—कृष्णा चड्ढा, मन्त्रिणी प्रातीय महिला सभा

अध्यापिकाओं की आवश्यकता

"कन्या गुरुकुल गणियार, त० कनौल, जिला महेन्द्रगढ (हरियाणा) के लिए व्याकरणाचार्य, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन विषयो को पढाने तथा छात्रावास के लिए महिला अध्यापिकाओ तथा वृद्ध पुरुषो की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार दिया जायेगा। अपनी योग्यता, जन्मतिथि, अनुभवसहित आवेदन-पत्र प्रस्तुत करे।

—आचार्य

ऋषिमेला १९८८ के अवसर पर आर्यसमाज फुलेरा द्वारा श्री डा० भवानीलाल भारतीय का अभिनन्दन

वैदिक धर्म एव आर्यसमाज के प्रति की गई श्लाघनीय सेवाओ के फलस्वरूप तथा वैदिक साहित्य की विशिष्ट पुस्तको की रचना करने वाले आर्य विद्वान् को प्रति वर्ष आर्यसमाज फुलेरा की ओर से ११०१ रुपये का महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार, उत्तरीय तथा प्रशस्ति पत्र अभिनन्दन स्वरूप प्रदान किया जाता है। इस वर्ष १९८८ के महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार के लिए श्री डा भवानीलाल भारतीय का नाम चयनित किया गया है। अतः महर्षि दयानन्द सरस्वती के १०५वे निर्वाण दिवस पर श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्वावधान मे आयोजित होने वाले ऋषि मेला १९८८ के अवसर पर आर्यसमाज फुलेरा जिला जयपुर द्वारा श्री डा० भवानीलाल भारतीय एम० ए० पी० एच० डी० अध्यक्ष दयानन्द शोधपीठ, पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ को महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार से सम्मानित किया जावेगा।

श्री डा० भवानीलाल जी भारतीय के षष्टि पूर्ति समारोह के अवसर पर आर्यसमाज फुलेरा की ओर से हार्दिक शुभ कामनाये।

चिरंजीलाल	भवरलाल
प्रधान	मन्त्री
आर्यसमाज, फुलेरा (राजस्थान)	आर्यसमाज, फुलेरा (राजस्थान)

२६ मार्च को रानी बाग में शहीद दिवस

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् सुभाष शाखा रानीबाग दिल्ली ने आर्यसमाज, रानी बाग मे २६ मार्च साय ६ ३० बजे 'शहीद दिवस' पर सास्कृतिक व देशभक्ति पूर्ण कार्यक्रम होगा।

—वीरेन्द्र आर्य
शाखा नायक, रानी बाग

कर्पूरी ठाकुर का श्राद्ध कर्म

बिहार के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री, श्री कर्पूरी ठाकुर जिनका देहावसान, उनके देशरत्न मार्ग, पटना स्थित आवास पर १७ फरवरी को हो गया था, का श्राद्धकर्म वैदिक रीति से २७ फरवरी को प्रात ८ बजे उनके आवास पर आर्य पुरोहित प० बनारसीसिंह 'विजयी', मन्त्री, संस्कार प्रशिक्षण विद्यालय, यारपुर पटना द्वारा सम्पन्न कराया गया।

—बनारसीसिंह 'विजयी'
संस्कार प्रशिक्षण विद्यालय
यारपुर, पटना-८०००००

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सरदारपुरा जोधपुर का वार्षिकोत्सव दि० १७ फरवरी तक गाधी मैदान मे विशाल स्तर पर मनाया गया। सर्वश्री स्वामी सत्यप्रकाश जी, स्वामी दीक्षानन्द जी, डा० भवानीलाल जी भारतीय तथा प० सत्यानन्द जी वेदवागीश के प्रवचन तथा श्री पन्नालाल जी पीयूष के भजन होते रहे। शिवरात्रि के दिन महर्षि दयानन्द के जीवन और विचारो पर डा० भारतीय की वार्ता आकाशवाणी के जोधपुर केन्द्र से प्रसारित की गई। इस अवसर पर युवक सम्मेलन वेद सम्मेलन तथा महिला सम्मेलन के भी आयोजन हुए।

क्षेमेन्द्र स्नातक, मन्त्री

प्रवेश सूचना

कन्या गुरुकुल गणियार मे १ अप्रैल १९८८ से पहली कक्षा से दसवी कक्षा का प्रवेश आरम्भ है। भोजन शुल्क मात्र ६०) साठ रुपये मासिक प्रवेश का पूर्ण विवरण-पत्र द्वारा प्राप्त करे।

प्रधानाचार्य कन्या गुरुकुल गणियार
तह० नारनौल जिला महेन्द्रगढ, (हरियाणा)

मड़पा के ईमाम हिन्दू बने ग्यारह मुसलमानो की शुद्धि

आर्य समाज मड़पा (भागलपुर) मे वार्षिक उत्सव के शुभ अवसर पर १८ फरवरी १९८८ को हजरत मौलाना करीमुद्दीन ईमाम मड़पा (भागलपुर) ने अपनी स्वेच्छा से अपने परिवार के ११ व्यक्तियो सहित सनातन वैदिक धर्म को स्वीकार किया। शुद्धि के उपरान्त मौलाना करीमुद्दीन का नाम प० कर्मवीर, रईस अहमद का नाम प० राजेन्द्र, नुरूनेसा का नाम नर्मदा, अंजुन निस्सा का नाम जयदेवी। इसी तरह बच्चो का नाम भी वैदिक धर्म के अनुसार रक्खा गया। शुद्धि के पश्चात प० कर्मवीर जी ईमाम मड़पा ने अपने एक घण्टे के ओजस्वी भाषण मे बताया की प जयप्रकाश पूर्व ईमाम की शुद्धि के बाद मैंने विरोध प्रकट करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश को पढना शुरू किया और जय प्रकाश जी से कई बार पत्र व्यवहार भी किए। परन्तु सत्यार्थ प्रकाश ने मेरी आखे खोल दी और मैंने महसूस किया। मुझे अपने-आप को कीचड और दलदल से निकालकर एव कुरान के अन्ध विश्वास वाले अन्धकार से निकालकर सत्यार्थ प्रकाश की प्रकाश मे आना चाहिए। मेरा विश्वास है कि सत्यार्थ प्रकाश की तुलना मे किसी मजहबी ग्रन्थ को महत्व नही दिया जा सकता। सत्यार्थ प्रकाश से हर मजहब के बारे मे जानकारी प्राप्त हो चुकी है। अब पूरी जीवन आर्य समाज एव वैदिक धर्म की सेवा करता रहूँगा। मुझे उम्मीद है कि आज मेरे दो सम्बन्धी जो किसी कारण से अपना शुद्धि सस्कार नही करा सके, वे भी जल्दी ही वैदिक धर्म के प्रकाश मे आ जायेगे।

—गोविन्द सिंह, मन्त्री
आर्य समाज मड़पा, भागलपुर (बिहार)

आर्य

कोटा। नगर आर्य स... कोटा ... दिनाक १३-२-८८ से १६-२-८८ त... मा गया समारोह मे मथुरा से पधारे प्रेम भिक्षु, प्रो ... तपालजी भजनोपदेशक दिल्ली एव शिवानन्द जी मस्ताना के भ... य स्वामी उपदेशको ने भजन एव उपदेश दिये।

दिनाक १३-२-८८ से १६-२-८८ तक प्रतिदिन प्रात ७ ३० से ११,०० बजे तक यज्ञ एव उपदेशो के अलावा रात्रि को ७ से ११ तक भजन उपदेश १३-२ ८८ को नगर शोभा यात्रा निकाली गई। १४-२-८८ को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन चरित्र विषय पर वाक प्रतियोगिता सम्पन्न हुई।

—अधिष्ठाता
आर्य वीर दल आर्य समाज, कोटा (राज)

आर्य समाज नगरा झांसी में वेद कथा

आर्य समाज नगरा झासी मे 'वेद कथा' एव यज्ञ का कार्यक्रम दिनाक १४-२-८८ से २१-२-८८ तक समारोहपूर्ण आयोजित किया गया कार्यक्रम मे श्री ओकार मिश्र "प्रणव" शास्त्री आगरा एव श्री महेशचन्द्र सगीतरत्न अलीगढ को आमन्त्रित किया गया।

—महेश श्रीवास्तव, मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८]
वर्ष २१ अंक १४]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र
वैशाख कृ० १ सं० २०४५ रविवार ३ अप्रैल १९८८

दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

'गद्दारों, असामाजिक तत्वों का डटकर सामना करें

नई दिल्ली २७ मार्च। आर्य समाज दीवान हाल के १०३ वें वार्षिकोत्सव पर लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने मानव जाति के सर्वांगीण विकास के लिए जो मार्ग दिखाया है, यदि उस पर चला जाए तो समाज के सारे विकार दूर हो सकते हैं और देश को नई गति मिल सकती है।

उन्होंने कहा कि आज की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि हम साम्प्रदायिकता को जड़ से उखाड़ फेंके। हर नागरिक का यह कर्त्तव्य है कि वह देश के गद्दारों से सतर्क रहे और असामाजिक तत्वों का निडर होकर सामना करे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि आर्यसमाज ने हमेशा राष्ट्रीय एकता, नारी सम्मान और शिक्षा के प्रसार को प्रमुखता दी है।

इस अवसर पर 'भाषा' के सम्पादक डा० वेद प्रताप वैदिक ने अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन का आह्वान किया। अन्य कई गणमान्य आर्य नेताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

आर्य समाज दीवान हाल के १०३वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर देश की शान्ति के लिए महायज्ञ का भी आयोजन किया गया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बताया कि आर्यसमाज ने समाज के कल्याण के लिए ही जन्म लिया है। यह निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता जाएगा। आर्य समाज किसी व्यक्ति विशेष की धरोहर नहीं है। यह तो एक सामाजिक संगठन है। स्वामी दयानन्द ने सामाजिक कुरीतियों को दूर कर एक सशक्त समाज के गठन की कल्पना की थी। सभी आर्यों का दायित्व है कि स्वामी दयानन्द की इस कल्पना को साकार बनाए।

उत्तरी बिहार में वैदिक धर्म की जय जयकार

पटना से नेपाल सीमा तक व्यापक प्रचार यात्रा

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का तूफानी दौरा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती २१ मार्च से २४ मार्च तक बिहार के अनेक नगरों के तूफानी प्रचार यात्रा पर रहे। २१ मार्च को पटना रेलवे स्टेशन पर पहुंचते ही आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री, मन्त्री श्री रामाज्ञा वैरागी, श्री श्यामनन्दन शास्त्री तथा सैकड़ो आर्य वीरों ने स्वामी जी का पुष्पमालाओं से जोरदार स्वागत किया।

पटना से इसी दिन कार द्वारा स्वामीजी सायं ५॥ बजे मुजफ्फरपुर पहुंचे, जहां उनका जोरदार स्वागत हुआ। आर्यसमाज मन्दिर में हजारों आर्य नर-नारियों की उपस्थिति में स्वामी जी का सारगर्भित भाषण हुआ। नगर भर में आर्य समाज के कार्यकलापों की जोरदार चर्चा हो रही थी। मुजफ्फरपुर के सम्भ्रान्त आर्य श्री पन्नालाल जी इस सभा में उपस्थित थे। रात्रि भोज का आयोजन श्री रामगोपाल अग्रवाल के निवास स्थान पर किया गया था।

२२ मार्च को प्रातः स्वामी जी मुजफ्फरपुर से चलकर बेतिया पहुंचे। रास्ते में महसी और मोतीहारी आर्य समाज के सदस्यों ने सड़क पर तोरणद्वार सजा कर सभा प्रधान जी का स्वागत किया। स्वामी जी ने गाड़ी से उतरकर सड़कों पर ही सैकड़ों की संख्या में जनसमूह को सम्बोधित किया। वहां से बेतिया पहुंचने पर, जहां सारे नगर को तोरणद्वारों से सजाया गया था, सायं ४ बजे बेतिया के मैदान में एक विशाल सार्वजनिक सभा में स्वामी जी को नगर वासियों की ओर से सम्मान पत्र भेंट किया गया। बेतिया के इमाम खुरशीद आलम मौलवी फाजिल, जो वैदिक धर्म स्वीकार करने के बाद पं० जयप्रकाश आर्य बन चुके हैं, बेतिया की जनता में आर्य समाज के कार्यकलापों के प्रति प्रगाढ़ आस्था उत्पन्न हो चुकी है।

इस अवसर पर नगर की सभी स्वयं सेवी संस्थाओं की ओर से भी जोरदार स्वागत किया गया। स्वामी जी ने वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज की आवश्यकता पर प्रभावशाली भाषण दिया। चारों ओर जय जयकार की गूंज के साथ स्वामी जी बिहार सभा के प्रधान, मन्त्री तथा उपमन्त्री के साथ सायंकाल हरिनगर (रामनगर) के लिए रवाना हो गए।

हरिनगर आर्यसमाज तथा शुगर मिल में भव्य स्वागत समारोह

सायं ६-३० बजे हरिनगर शुगरमिल के मालिक प्रसिद्ध उद्योगपति राजा मधुसूदनलाल पित्ति तथा उनके बड़े भ्राता श्री बालकिशन जी पित्ति परिवार सहित विशेष रूप से इस स्वागत समारोह में शामिल होने के लिए बम्बई से यहां पधारे थे—इस अवसर पर हरिनगर के समस्त क्षेत्रों को तोरणद्वारों और ओ३म् पताकाओं

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

वैदिक धर्म की जयजयकार

(पृष्ठ १ का शेष)

से सजाया गया था । राजा मधुसूदनलाल जी पित्ति ने डेढ लाख रुपए की लागत से आर्य समाज मन्दिर तथा सुन्दर यज्ञशाला का निर्माण कराया है।

अपार जनसमूह के मध्य स्वामी जी ने आर्यसमाज मन्दिर का उद्घाटन किया। एक अत्यन्त सजे हुए पडाल में चम्पारन जिले के दूरस्थ स्थानो से पधारे हुए हजारों युवको तथा आर्य पुरुषों ने अत्यन्त उत्साह के वातावरण में आर्य नेता के विचार सुने। यहां भी रात के ११ बजे तक स्वामी जी का प्रभावशाली भाषण हुआ। स्वामी जी ने पजाब के हिन्दुओं पर किए जा रहे अत्याचारो का लोमहर्षक उल्लेख करते हुए आर्यसमाज द्वारा की जा रही सेवा सहायता कार्यक्रमो का भी उल्लेख किया। उन्होंने वर्तमान स्थिति में महर्षि दयानन्द द्वारा बनाये गए मार्ग पर चलने की विशेष रूप से अपील की।

२३ मार्च को हरिनगर से चलकर—लौरिया, रामगढ़वा आर्य समाजों द्वारा मार्ग में अनेक स्थानों पर स्वागत समारोहो का आयोजन किया गया। ठीक १ बजे नरकटियागज पहुचे। सारे नगर में लाउडस्पीकर लगाए थे। नरकटियागज के मैदान में आर्यसमाज के उत्सव मे भाग लेकर स्वामी जी रक्सौल के लिए चल दिए।

सायकाल ८ बजे रक्सौल रेलवे फाटक पर अपार जनसमूह के साथ आर्य वीरो ने स्वामी जी का स्वागत किया।

रात्रि ९ बजे आर्य समाज रक्सौल के तत्वावधान में भारी सख्या मे जनता को सम्बोधित कर आर्य जनो को सगठित होकर वैदिक धर्म के प्रचार में जुट जाने की प्रेरणा देकर रात्रि विश्राम के पश्चात् स्वामी जी ने २४ मार्च को प्रात. रक्सौल से वीर गज की ओर प्रस्थान किया आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री, मन्त्री श्री रामाज्ञा बैरागी तथा उपमन्त्री प्रो० साहब इस यात्रा में काठमण्डू तक स्वामी जी के साथ रहे। राजा मधुसूदनलाल जी पित्ति के शुगर मिल के वरिष्ठ अधिकारी श्री मालवीय जी भी स्वामी जी पूर्ण सुरक्षा के लिए इस यात्रा में अपनी जीप के साथ चल रहे थे।

२४ को प्रात १० बजे वीरगज के गीता मन्दिर में नगर की जनता ने स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का भावभीना स्वागत किया। स्वामी जी ने एक घण्टे के धार्मिक उपदेश में वैदिक धर्म की सार्थकता पर प्रभावशाली व्याख्यान दिया।

वीर गज से चलकर नेपाल सरकार के सिमरा हवाई पट्टी से छोटे जहाज द्वारा स्वामी जी बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो के साथ काठमण्डू के लिए प्रस्थान किया। दोपहर दो बजे नेपाल की राजधानी काठमाण्डू हवाई अड्डे पर पहुँचे।

[नेपाल सम्मेलन का विवरण अगले अक में देखिये]

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

आर्य वीर दल के प्रान्तीय अधिकारी एवं आर्य समाजों के अधिकारी ध्यान दें

समस्त भारत के आर्य वीर दल के प्रातीय अधिकारियों से निवेदन है कि मार्च मास से जुलाई मास के मध्य में लगने वाले आर्य वीर दल शिविरो की तिथियों आदि का निर्धारण कर केन्द्र से स्वीकृति प्राप्त करे जिससे योग्य शिक्षकों का समुचित प्रबन्ध करना सम्भव हो सके। बिना केन्द्र की स्वीकृति से लगाये गये शिविरो को पंजीकृत नही स्वीकारा जायेगा।

बालदिवाकर हस, प्रधान सचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री अभिनन्दन समारोह

समस्त वेदभक्त आर्य पुरुषो को यह जानकर अतीव प्रसन्नता होगी कि आर्य-साहित्य प्रचार ट्रस्ट के अन्तर्गत स्व० श्री दीपचन्द जी आर्य की पुण्य-स्मृति मे एक "विद्वदभिनन्दन योजना" बनाई गई है। जिसके लिए एक स्थायीनिधि बनाई है। जिसके ब्याज से प्रतिवर्ष किसी ऋषिभक्त विद्वान को "आर्यरत्न" की उपाधि, स्वर्णपदक, नकदराशि एव शाल इत्यादि से सम्मानित किया जायेगा।

इस वर्ष ट्रस्ट की समिति के निर्णयानुसार यह सम्मान पुरस्कार श्री विशुद्धानन्द जी मिश्र (बदायू) को, आर्यसमाज नया बास (दिल्ली) के वार्षिकोत्सव पर ३ अप्रैल १९८८ रविवार को दिया जायेगा।

आपन अपना जीवन सस्कृत भाषा के अध्यापन, प्रसारण, सरक्षण मे तथा वैदिक वाङ्मय के अध्यापन मे ही समर्पित किया हुआ है और पौराणिक साधु करपात्रि द्वारा महर्षि के ग्रन्थ-विरोध मे लिखे 'वेदार्थ परिजात' पुस्तक का सप्रमाण उत्तर "वेदार्थ कल्पद्रुम" लिखकर बहुत ही विद्वता के साथ दिया है, जिसकी समस्त आर्य विद्वानो ने भूरि भूरि प्रशसा की है। हम ऐसे आर्य विद्वान का जहा सम्मान कर रहे हैं, वही उनके उत्तम स्वास्थ्य तथा चिरजीवन की कामना करते हैं।

—धर्मपाल आर्य, मन्त्री
आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली

शहीद भगतसिंह

'शहीद दिवस' पर तुम्हे 'सुनाऊं', भगतसिंह की कथा बताऊं।
१९०७ मे हुआ था पैदा, आर्य परिवार मे सिंह के जैसा॥
डी ए वी मे की उसने पढाई, और लाला के सग सिखाई।
कालेज मे थे क्रान्तिकारी, उनके सग हुई फिर यारी॥
करने मन से देश की सेवा, उसने छोडा घर का मेवा।
भाग कर वो फिर दिल्ली आया, सम्पादन का कार्य समाला॥
सुख देव व चन्द्र से मिलकर 'नौजवान भारत सभा' बनाई।
पुस्तक पढकर खुद फिर उसने, विस्फोटक की विधि अपनाई॥
अक्टूबर के दिन बीच सभा मे, उसने यह बम्ब जोरका फोडा।
हुए गिरफ्तार भगतसिंह, पर बेकसूर कह उनको छोडा॥
१९२८ मे साइमन आया, लाजपत जी ने जुलूस निकाला।
पुलिस ने उनको इतना मारा, लाला जी का प्राण निकाला॥
देख कर ऐसी निर्मम हत्या, भगतसिंह ने की प्रतिज्ञा।
१७ दिसम्बर को लिया फिर बदला, सैंडर्स पर कर गोली बरखा॥
८ अप्रैल को असेम्बली मे, भगतसिंह ने किया धमाका।
बम्ब फैंककर बीच सभा मे, फहराई भारत की पताका॥
१९३१ की २२ मार्च, फासी को उसने गले लगाया।
हसते हसते हो गये शहीद, पर हाय ! हमने उसे भुलाया॥
आओ हम भी करें प्रतिज्ञा, भारत मा की करेंगे रक्षा।
तन मन धन करके अर्पण, करेंगे इसका सच्चा तर्पण॥

—सदीप आर्य

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाएं

लेखक : आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद

१०) की पुस्तक ६) में दी जायगी

श्री पंडित रामचन्द्र देहलवी

यों तो इस खल्के जहां में लाखों ही आये गये।
किन्तु रोशन बस गुलिस्तां देहलवी ही कर गये ॥

आर्यजगत के महान् तार्किक शास्त्रार्थ महारथी पण्डित रामचन्द्र देहलवी प्राय देहलवी जी के नाम से सम्बोधित किये जाते थे। आर्य जगत् में ही क्या सारे भारत में आपकी विद्वत्ता, तार्किक शैली, मीठी जुबानी, अथक परिश्रमी व धुन के धनी होने के कारण प्रसिद्धि थी। आप अंग्रेजी हिन्दी, संस्कृत, अरबी तथा फारसी के पूर्ण विद्वान थे। आपने वैदिक साहित्य के साथ साथ हिन्दू व जैन, सनातनी, मुस्लिम व ईसाई धर्म का भी पूर्ण मन्थन किया था।

इस महान विभूति का जन्म सन् १८८१ में रामनवमी के पवित्र दिन नीमच केन्ट (म० प्र०) में हुआ था। आपके पूज्य पिताजी श्री मुंशी छोटेलाल जो धार्मिक प्रवृत्ति के थे। आपकी माता श्रीमती रामदेई दिल्ली की रहने वाली थी। पण्डित रामचन्द्र जी को आर्य समाजी बनाने का श्रेय इन्हीं को है। आपने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा नीमच में ही की तथा बाद में उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु इन्दौर चले गये।

१८वर्ष की अल्पायु में ही आपका विवाह दिल्ली निवासी श्रीमती कमला देवी नामक विदुषी कन्या से हुआ। जीविकोपार्जन के लिये आपने नीमच में ही एक प्रायमरी स्कूल में अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया, किन्तु परमात्मा को जिस विभूति से महान् कार्य करवाने हो वह एक जगह कैसे ठहर सकती है। गृह कलह के कारण कुछ दिन बाद आप अपनी ससुराल देहली आ गये।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी न थी फिर भी धर्म प्रचार के लिये जहां कहीं भी जाते तांगा खर्च अपनी जेब से दे देते थे। धर्म प्रचार की ऐसी लगन थी कि लगातार १५ वर्ष (सन् १९१० से १९२५) तक दिल्ली के फव्वारे तथा गांधी ग्राउण्ड पर आप वैदिक धर्म के सत्य स्वरूप को बतलाते रहे। प्रतिदिन हजारों की संख्या में उपस्थिति रहती। धुन के इतने पक्के थे कि पुत्र तथा पत्नि के देहावसान के दिन भी आपने कथा बन्द न रखी। इस काल में पण्डित जी की तार्किक शैली, तुरन्त बुद्धि व कार्य प्रणाली का बोलबाला सारे भारत में हो गया।

नीमच में आपने व आपके परम मित्र श्री रामनिवास एरन जिन्हें कि लोग बाद में मौलवी साहब (लेखक के पिता श्री) ही कहने लगे थे, जुम्मा मस्जिद के एक बूढ़े मौलवी से बड़ी कठिनाई से उर्दू व कुरान पढ़ी। उस समय कुछ लोग अन्य मत वालों को कुरान पढ़ने देने के पक्ष में नहीं थे। इसी प्रकार बड़ी कठिनाई से आपने बाईबिल का भी अध्ययन किया। आप जब सस्वर आयत पढ़ते थे तो अच्छे अच्छे मौलवी दांतो तले ऊंगली दबा लेतेथे। फिरोजपुर के वार्षिकोत्सव पर तो इसी लिए एक पठान लड़की ने आपके स्वर पर लट्टू होकर १००) भेंट किये।

आपका पहला शास्त्रार्थ बाड़ा हिन्दू राव में मुसलमानों से हुआ, जिसके निर्णायक न्यायाधीश रेवेरेण्ड मिस्टर जुडारा थे। विजय का सेहरा आपके मस्तक पर बधा। आप वैदिक शास्त्रार्थसमर में "भीम" नाम से विख्यात हुए। इसके बाद आपने जीवन समर में भारत के प्रत्येक शहर में घूम-घूमकर विविध मतावलम्बियों से शास्त्रार्थ किये। आपकी सफलता के तीन मुख्य कारण थे।

[१] आपका सभी सिद्धान्तों का सही व गम्भीर अध्ययन था, [२] आप विपक्ष के महापुरुषों अथवा धार्मिक पुस्तकों का नाम सम्मान सूचक शब्दों से लेते थे [३] आप अपने व्यवहारिक जीवन में वैदिक सिद्धान्तों के अनुकूल आचरण करते थे। आपका व्यक्तित्व भी बड़ा आकर्षक था। गौरवपूर्ण पूरे ऊंचे कद के सर पर साफा घुटनों तक की अचकन, चूड़ीदार पायजामा जरीदार जूतियां, आंखों पर सुनहरी फ्रेम की ऐनक जेब घड़ी व हाथ में मुठदार छड़ी रखते थे। आपके चेहरे पर रौनक व मुख पर मुस्कराहट सदा खेलती रहती थी। खड़े होते थे तो हजारों में एक ही नजर आते थे। वाणी में ठोस ओजस्विता व हृदय में विशालता ईश्वरीय देन थी।

लगभग ८० वर्ष की आयु तक घूम घूमकर सारे भारत में धर्म-ध्वजा लहराते रहे। हैदराबाद निजाम का राष्ट्रीय सत्याग्रह आंदोलन आप ही की देन था। इसके बाद एक रिक्शा दुर्घटना के कारण आपके हाथ में कम्पन हो गया था, तभी से पण्डित जी लगातार कमजोर होते चले गये।

सन् १९६७ में आपको सार्वदेशिक के वर्तमान प्रधान श्री आनन्दबोध जी महाराज ने देहली अस्पताल में भर्ती कराया। लगातार ३ माह तक मृत्यु से संघर्ष करते रहने के बाद २ फरवरी को यह ज्योतिर्मय दीप बुझ गया। सारे संसार को ३ फरवरी को आकाशवाणी से यह सूचना मिल गई।

वैदिक धर्म का प्रबल प्रहरी, शास्त्रार्थ केसरी महर्षि के अनन्य भक्त ओम का जाप करता हुआ 'ओ३म्' में विलीन हो गया। निगमबोध घाट पर पूर्ण वैदिक पद्धति से आपका अन्तिम संस्कार किया गया।

—'कविरत्न' जगदीशप्रसाद एरन, नीमच

विज्ञान भी पुनर्जन्म की सम्भावना को नहीं नकार सका

ब्यावर। हिन्दू, जैन और बौद्ध धर्म की मूल मान्यता इस बात पर टिकी हुई है कि जीव मरता नहीं बल्कि उसकी अजर-अमर आत्मा पुनः नये शरीर को धारण कर जन्म लेती है। आस्था के इन्हीं बीजों को वैज्ञानिक सांचे में तर्क की कसौटी पर कसकर प्रमाणित करने के सिलसिलेवार पहली बार प्रयास किये गये और यह तथ्य सामने आया कि विज्ञान स्वयं पुनर्जन्म की सम्भावना को नकार नहीं सका है।

यह महत्वपूर्ण ब्यौरा गत दिनों राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा पुनर्जन्म की सम्भावना विषय पर किये गये प्रथम शोध-कार्य से सामने आया है।

डा० कीर्ति स्वरूप रावत ने इस अध्ययन में विश्व के तमाम सम्भावित पुनर्जन्म प्रकरणों से गुजरते हुए इस पर उठाई गई आपत्तियों का विवेचन किया और पाया कि अभी तक तार्किक अथवा अनुभाविक रूप से ऐसा कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया जा सका जो पुनर्जन्म को असम्भव सिद्ध करता हो।

श्री रावत ने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि तमाम भौतिक वैज्ञानिक अपने विस्तृत अध्ययनों में एक भी ऐसा प्रमाण नहीं जुटा पाये जो पुनर्जन्म को अमान्य ठहराता हो इसके बावजूद इनकी इस अवधारणा के प्रति निर्ममता से अस्वीकृति इनकी सीमित शोध एवं पूर्वाग्रह को जाहिर करती है।

किसी भी अवधारणा की व्यापकता सत्यता का आधार नहीं होती किन्तु पुनर्जन्म पर विभिन्न, धर्मों, जनजातियों एवं विश्व के विभिन्न अध्ययनों से एकत्रित साक्ष्यों का मूल्यांकन इस बात की पुष्टि हेतु काफी प्रमाण उपलब्ध कराता है। अलबत्ता पुनर्जन्म का कोई ठोस सिद्धान्त अभी भी प्रतिपादित किया जाना शेष है।

आर्यजगत् के महान् जागरूक विद्वान् पं० वैद्यनाथ शास्त्री असमय में चले गये

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री आर्य जगत के उन तेजस्वी मनस्वी यशस्वी विचारको मे थे जिन्हे भूल कर भी नही भुलाया जा सकता। सौम्य स्वभाव और उनकी दृढ धारणावती मेधाबुद्धि गहन से गहन समस्याओ का सहज समाधान खोजने मे अप्रत्याशित परिणाम सुलभ करती थी, उन्होने अपने जीवन के प्रति क्षण को सुघडता के साथ अपनी मनस्विता का सहज परिचय देते हुए जिया सामवेद का यह मन्त्र अग्निर्जागार तमृच कामयन्ते, अग्नि-र्जागार तमु सामानि यन्ति। अग्निर्जागार तमय सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योका।

अग्नि (तेजस्वी व्यक्ति) जागता है उसको ही ऋचाए चाहती है। अग्नि जागता है उसके पास ही सामवेद की ऋचाए आती है अग्नि जागता है उससे साम कहता है कि, मै तुम्हारी मित्रता मे सुख पूर्वक निवास करता हूँ।

नि सन्देह आचार्य जी का व्यक्तित्व उक्त मन्त्र का सजीव चित्रण था। वे बडे मृदुभाषी, हरेक छोटे बडे के साथ स्नेहिल भाव मे बरतते थे। मैं उन्हे लम्बे समय से जानता हूँ, नान जी भाई काली दास महत्ता की मुख्य कर्म स्थली पोरबन्दर मे गाधी जी की स्मृति मे कीर्ति मन्दिर कन्या गुरुकुल पोरबन्दर गुरुकुल सोनगढ आदि की स्थापना के सुविचार और उन सस्थानो का सफल सरक्षण इनकी अद्भुत कर्म कौशल एव प्रतिभा के परिचायक रहे है और उनकी ब्राह्मशक्ति की उपादेयता ने ता अनका जीवनो को प्राणवान बनाया, वे उच्चकोटि के शिक्षक, ओजस्वी वक्ता तो थे ही साथ अनेक सद-गृहस्थो को अपने सहज सम्पर्क से उच्च स्तर बनाये रखने मे योगदान देते रहते थे।

आचार्य जी सस्कृत यूनीवर्सिटी बनारस मे लम्बे समय तक लायब्रेरियन रहे। दयानन्द ब्राह्म विद्यालय लाहौर के प्रिंसिपल रहे। वही रहकर इन्होने सामवेद भाष्य किया ऋग्वेद के नवम् मण्डल का भाष्य इनकी अनुपम योग्यता का परिचायक हैं।

राष्ट्रीय आन्दोलन मे इन्हे प० जवाहरलाल नेहरु विजय लक्ष्मी पडित के साथ नैनी जेल मे कारावास भोगने का सुअवसर प्राप्त हुआ। विद्वता के कारण पडित जी इनका बहुत सम्मान करते थे।

हैदराबाद धर्म युद्ध के भी एक प्रतिभाशाली य डिक्टेटर रहे। इन्होने जोधपुर आर्य समाज के जागरूक अधिकारियो एव आर्य वीरो से प्राप्त सूचना के आधार पर सरदार पटेल को सूचित किया कि निकट भविष्य मे ही जोधपुर और जामनगर की स्टेटे पाकिस्तान म विलय होने का चुपके चुपके षडयन्त्र कर रही है। फलत सरदार पटेल ने त्वरित कार्यवाही कर इन दोनो शासको को भारत विलय के लिये तैयार किया। इनकी देश भक्ति महर्षि दयानन्द के विचारो से आपूरित रही।

इन्होने लगभग छोटी बडी साठ पुस्तके लिख कर अपनी अद्भुत विद्या व प्रतिभा का परिचय दिया, जिनमे तत्वार्थ-दर्श, वैदिक इतिहास विमर्श, कर्म मीमासा, दर्शन तत्व विवेक, वैदिक यज्ञ-दर्शन और आग्ल भाषा मे आर्य समाज इफ कर्ट एण्ड प्रीट सादूल इन दी वेदाज आदि हैं। सार्वदेशिक सभा से निकलने वाली वैदिक लाइट पत्रिका मे लम्बे समय तक सम्पादक रहे।

अनुसधान के क्षेत्र मे इन्होने सैकडो विद्यार्थियो का पी० एच० डी० करने मे मार्ग दर्शन किया।

सक्षेप म यही कहना होगा इनकी बहुमुखी प्रतिभा के लाभ से आर्य-जगत् अब अपने अन्दर एक ऐसी रिक्तता अनुभव करेगा जिसकी पूर्ति होना कठिन है। पडित जी ने मुझे सदैव अपने लघु भ्राता के समान स्नेह दिया। इससे मेरा हृदय उनका स्मरण कर सहसा विह्वल हो उठता है प्रभु हमे उनके दिखाये मार्ग पर बढने की शक्ति दे जिससे देव दयानन्द का यह मिशन आगे ही आगे बढता रहे। —बालदिवाकर हस

मांसाहार मानव आहार नहीं है

दैनि० हिन्दुस्तान दिनाक २६ फरवरी १९८८ पृष्ठ ३ कालम ७ मे "प्राचीन भारतीय मासाहारी थे आकार मे छोटा किन्तु विकार मे खोटा समाचार पढकर मन उद्विग्न हो उठा। मैसूर के द्वितीय श्राप परम्परा सम्मेलन मे श्री के० टी० आचार्य द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र मे जो यह अनीति अपरम्परा व असामयिक बात कही गई इसीलिए उसे प्रचार मिल गया गया। मानव ने जब से होश सभाला तब से निरन्तर मासाहार को घृणित व त्याज्य मान कर इसका विरोध किया जाता रहा है। ससार के पुस्तकालय मे प्रतिष्ठित सर्व प्रथम ग्रन्थ वेद इसके प्रमाण हैं, जिसमे कठोरता पूर्वक मासाहार का निषेध किया गया है। अरबावर्ष पूर्व श्रुत वैदिक साहित्य से पुरानी कौन-सी सभ्यता आचार्य जी बता सकते है।

खुदाई मे प्राप्त पत्थरो के उपकरण मासाहार की पुष्टि नही करते प्रत्युत सिंह वन्यपशुओ से रक्षा का सकेत करते है। आज के यन्त्र उपकरण व आग्नेय अस्त्र तो अत्यन्त महारक है, उन्हे मासाहार के साधन के ही रूप मे नही प्रयोग किया जाता है, बचाव व सुरक्षा मे भी प्रयोग किया जाता है। वर्तमान मे तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी मासाहार को त्याग कर शाकाहार की प्रेरणा के लिए सगठन कार्यरत है, अस्तु आचार्य जी को यह भ्रामक प्रचार निष्प्रभावी रहेगा क्योकि धर्म-सस्कृति से पृथक मानव स्वास्थ्य हेतु भी मासाहार एव अण्डाहार अनुपयुक्त ठहराये जा रहे हैं।

—दर्शनदेवी भारद्वाज
एच-४२ मानसरोवर कालोनी
राजघाट मार्ग, अलीगढ

तमिलनाडु में हरिजनों द्वारा सामूहिक धर्म परिवर्तन का निर्णय रद्द

एम० नारायण स्वामी द्वारा विशेष प्रयत्न

पिछले दिनो तमिलनाडु क मुच्चनेन्दल ग्राम के १४० हरिजन परिवारो के लगभग ९०० सदस्यो द्वारा इस्लाम धर्म मे परिवर्तित होने के निर्णय का समाचार कई समाचार-पत्रो म प्रकाशित हुआ था। सार्वदेशिक सभा से इस विषय मे दक्षिण भारत मे कार्य कर रहे आर्य समाज के प्रचार सयोजक श्री एम० नारायण स्वामी को तुरन्त कार्यवाही करने का निर्देश दिया गया था। श्री एम० नारायणस्वामी न उक्त ग्राम के हरिजनो से मिले और उनकी समस्याये सुनी। जाच के दौरान पता चला कि हरिजनो को लेकर जाति के लोग गाव से पानी नही लेने देते थे और बाहरी क्षेत्र से पानी लाने के लिए भी कोई रास्ता नही था। वर्षो से यह समस्या हरिजनो की बनी हुई थी इसलिए उन्होने ने धर्म परिवर्तन कर लेने का निर्णय लिया था।

यह प्रसन्नता की बात है कि एम० नारायण स्वामी इस सम्बन्ध मे जिलाधिकारियो से मिले और सरकार को ओर से यह आश्वासन मिलने पर कि हरिजनो की उक्त शिकायत को तुरन्त दूर कर दिया जाएगा।

हरिजनो ने इस्लामीकरण का निर्णय त्याग दिया है। इसका श्रेय आर्य-समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री एम० नारायण स्वामी को जाता है।

—प्रचार विभाग

महात्मा हंसराज दिवस

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो के अधिकारियो से विनम्र प्रार्थना है कि १७ अप्रैल ८८, रविवार को तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम मे प्रात ९ से १ बजे तक मनाए जाने वाले महात्मा हसराज दिवस समारोह मे अपनी अपनी समाजो से अधिक से अधिक सख्या मे पहुँचने की कृपा करे।

महात्मा हसराज डी० ए० वी० आन्दोलन के सूत्रधार, श्वेत वस्त्रो मे सन्यासी त्याग एव विनम्रता की मूर्ति, प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री तथा आर्यसमाज एव देश के प्रति समर्पित व्यक्ति थे।

निवेदक :—

महाशय धर्मपाल   डा० शिवकुमार शास्त्री
आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

हम क्या थे क्या हो गए हैं ?

—गजानन्द आर्य, कलकत्ता—

(गतांक से आगे)

ब्रह्म वाक्य जनार्दन. का अस्त्र लेकर तथाकथित ब्राह्मणो ने देश को किस स्थिति मे पहुँचा दिया ? छोटी-छोटी कन्याओ का विवाह शास्त्र सम्मत बताकर बाल-विवाहो का प्रचार बढता गया, जिसके कारण देश का नागरिक कमजोर और अपरिपक्व होता गया। ब्रह्मचर्य का महत्व गौण हो गया। वाममार्ग जैसे-मद्य-मास और मैथुन के प्रचारक मत पनपने लगे। विधवाओ और भ्रूण हत्याओ की सख्या बढने लगी। अल्पायु कन्याओ के विवाह को शास्त्र सम्मत बताने वालो को सत्यार्थ प्रकाश का करारा उत्तर देखते ही बनता है।

प्रश्न—अष्ट वर्षा भवेद् गौरी, नववर्षा च रोहिणी।
दशवर्षा भवेत्कन्या तत ऊर्ध्वं रजस्वला॥
माता चैव पिता तस्या ज्येष्ठो भ्राता तथैव च
त्रयस्ते नरक यान्ति दृष्ट्वा कन्या रजस्वलाम्॥

ये श्लोक पाराशरी और शीघ्रबोध मे लिखे है। अर्थ यह है कि कन्या की आठवें वर्ष मे गौरी, नवे वर्ष रोहिणी, दशवे वर्ष कन्या और उसके आगे रजस्वला कन्या को माता पिता और उसका बडा भाई ये तीनो देख के नरक मे गिरते है।

उत्तर—ब्रह्मोवाच—
एक क्षणा भवेद् गौरी द्विक्षणेयन्तु रोहिणी।
त्रिक्षणा सा भवेत्कन्या ह्यत ऊर्ध्वं रजस्वला॥
माता पिता तथा भ्राता मातुलोभगिनी स्वका।
सर्वे ते नरक यान्ति दृष्ट्वा कन्या रजस्वलाम्॥

यह सद्योनिर्मित ब्रह्मपुराण का वचन है।

अर्थ—जितने समय मे परमाणु एक पलटा खावे उतने समय को क्षण कहते हैं। जब कन्या जन्मे तब एक क्षण मे गौरी दूसरे मे रोहिणी, तीसरे मे कन्या और चौथे मे रजस्वला हो जाती है। उस रजस्वला को देखके उसके माता-पिता भाई, मामा और बहिन सब नरक को जाते है।

प्रश्न—ये श्लोक प्रमाण नही।

उत्तर—क्यो प्रमाण नही ? क्या जो ब्रह्माजी के श्लोक प्रमाण नही तो तुम्हारे प्रमाण नही हो सकते।

प्रश्न—वाह वाह ! क्या पाराशर और काशीनाथ का भी प्रमाण नही करते ?

उत्तर—वाह जी वाह। क्या तुम ब्रह्मा जी का प्रमाण नही करते, पाराशर काशीनाथ से ब्रह्माजी बडे नही है। जो तुम ब्रह्माजी के श्लोको को नही मानते तो हम भी पाराशर काशीनाथ के श्लोको को नही मानते।

प्रश्न— तुम्हारे श्लोक असम्भव होने से प्रमाण नही, क्योकि सहस्रो क्षण जन्म समय मे ही बीत जाते है तो विवाह कैसे हो सकता है ? और उस समय विवाह करने का कुछ फल भी नही दीखता।

उत्तर—जो हमारे श्लोक असम्भव है तो तुम्हारे भी असम्भव है, क्योकि आठ, नौ और दशवें वर्ष मे भी विवाह करना निष्फल है, क्योकि सोलहवे वर्ष के पश्चात् चौबीसवे वर्ष पर्यन्त विवाह होने से पुरुष का वीर्य परिपक्व, शरीर बलिष्ठ, स्त्री का गर्भाशय पूरा और शरीर भी बलयुक्त होने से सतान उत्तम होते हैं। जैसे आठवें वर्ष की कन्या मे सन्तानोत्पत्ति का होना असभव है, वैसे ही गौरी, रोहिणी नाम देना भी अयुक्त है। यदि गौरी कन्या न हो किन्तु काली हो तो उसका नाम गौरी रखना व्यर्थ है और गौरी महादेव की स्त्री, रोहिणी वसुदेव की स्त्री थी, उसको तुम पौराणिक लोग मातृसमान मानते हो। जब कन्यामात्र मे गौरी आदि की भावना करते हो तो फिर उनसे विवाह करना कैसे सम्भव और धर्मयुक्त हो सकता है ? इसलिये तुम्हारे और हमारे दो-दो श्लोक मिथ्या ही हैं क्योकि जैसा हमने ब्रह्मोवाच करके श्लोक बना लिए हैं, वैसे वे भी पाराशर आदि के नाम से बना लिये है। इसलिए इन सबका प्रमाण छोडके वेदो के प्रमाण से सब काम किया करो।

बाल विवाह के समर्थन मे तथाकथित ब्राह्मणो के तर्क को नहले पर दहले की भाषा मे दिया गया है। एक और उत्तर इसी प्रकार का सत्यार्थ प्रकाश मे जो मिलता है वह है स्त्री और शूद्रा को वेद पढने के अधिकार से वचित कर देने के विरोध मे।

प्रश्न—क्या स्त्री और शूद्र भी वेद पढें ? जो ये पढेगे तो हम क्या करेंगे और इनके पढने मे प्रमाण भी नही है। जैसा यह निषेध है—स्त्री शूद्रौ नाधीयातामिति श्रुते.। स्त्री और शूद्र वेद न पढें यह श्रुति है।

उत्तर—सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्यमात्र को पढने का अधिकार है। तुम कुआ मे पडो और यह श्रुति तुम्हारी कपोलकल्पना से हुई है। किसी प्रामाणिक ग्रन्थ की नही। सब मनुष्यो के वेदादि शास्त्र पढने सुनने के अधिकार का प्रमाण यजुर्वेद के छब्बीसवे अध्याय मे दूसरा मन्त्र है।

देश की नारी जाति को पढने से वचित रखा जाने लगा तभी तो सत्यार्थ प्रकाश के लेखक को लिखना पडा—

"भला जो पुरुष विद्वान और स्त्री अविदुषी और स्त्री विदुषी और पुरुष अविद्वान हो तो नित्यप्रति देवासुर सग्राम घर मे मचा रहे, फिर सुख कहा ? इसलिए जो स्त्री न पढे तो कन्याओ की पाठशाला मे अध्यापिका क्योकर हो सके तथा राजकार्य, न्यायाधीशादि, गृहाश्रम का कार्य जो पति को स्त्री और स्त्री को पति प्रसन्न रखना, घर के सब काम स्त्री के अधीन रहना इत्यादि काम बिना विद्या के अच्छी प्रकार कभी ठीक नही हो सकते।

बच्चो के निर्माण मे पहला कर्त्तव्य माता का होता है। "माता निर्माता भवति" की उक्ति चरितार्थ कैसे हो ? जब माताये अशिक्षित हो जाय ? सत्यार्थ प्रकाश का द्वितीय समुल्लास इस प्रभाव को इगित करता है—

ऋषि ने वहा प्रत्येक माता पिता को सन्तानो को सुसभ्य बनाने के उपदेश के साथ साथ भूत प्रेत डाकिनी आदि भ्रमजालो का वर्णन किया है। डोरा तावीज के नाम से मिथ्या तन्त्र मन्त्र से बचने को प्रेरणा दी है। जन्म-पत्र और ग्रहो के नाम पर आज भी अन्धविश्वास खूब फैला हुआ है ऐसा यह अन्धविश्वास परिवारो मे यथायोग्य शिक्षा दीक्षा की कमी का कारण है। अन्धविश्वास फैलाने मे दो प्रकार के तर्क बहुत आगे आये है परम्परा और सनातन। जिनका ग्रन्थकार ने डटकर विरोध किया है। ऋषि ने जहा इस बात पर विशेष बल दिया है कि वर्णव्यवस्था का मानना जन्म के आधार पर नही है कर्म के आधार पर है। यहा प्रतिपक्षी ने प्रश्न किया है कि क्या तुम परम्परा का भी खण्डन करोगे। इसके उत्तर मे लेखक लिखता है—

'तुम पाच सात पीढियो के वर्तमान को सनातन व्यवहार मानते हो और हम वेद तथा सृष्टि के आरम्भ से आज पर्यन्त की परम्परा मानते है।" इसी चर्चा को बढाते हुए ऋषि लिखते है—'जो परमेश्वर की प्रकाशित वेदोक्त बात है वही सनातन और जो उसके विरुद्ध हैं, वह सनातन कभी नही हो सकती, ऐसा ही सब लोगो को मानना चाहिए। किसी का पिता दरिद्र हो और उसका पुत्र धनाढ्य होवे तो क्या अपने पिता की दरिद्रावस्था के अभिमान से धन को फेंक देवे ? क्या जिसका पिता अन्धा हो उसको पुत्र भी अपनी आखो को फोड लेवे ? जिसका पिता कुकर्मी हो क्या उसका पुत्र भी कुकर्म ही करे ? नही, नही, किन्तु जो-जो पुरुषो के उत्तम कर्म हो उनका सेवन और दुष्ट कर्मो का त्याग कर देना सबको अत्यावश्यक है।"

जन्म के आधार पर वर्णव्यवस्था मानने वालो को ग्रन्थकार एक व्यावहारिक कठिनाई प्रस्तुत करते है, जिनका उत्तर जन्म से वर्ण मानने वालो के पास नही है। 'जो कोई रज वीर्य के योग से वर्णाश्रम व्यवस्था माने और गुण कर्मो के योग से न माने तो उससे पूछना चाहिए कि जो कोई अपने वर्ण को छोड नीच अन्त्यज अथवा क्रिश्चियन मुसलमान हो गया हो, उसको भी ब्राह्मण क्यो नही मानते ? यहा यही कहोगे कि उसने ब्राह्मण के कर्म छोड दिए, इसलिए वह ब्राह्मण नही है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि जो

(शेष पृष्ठ ८ पर)

ईश्वरवाद व मानवता के अमर पुजारी—

मुनिवर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

कविरत्न जगदीश प्रसाद एरन, नीमच (म०प्र०)

फूल तो दो दिन ही खिलकर, बहारें जाफना दिखला गये।
हसरत उन गुन्चों से है जो बिन खिले मुरझा गये॥

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध से प्रबल नास्तिक बन चुके थे। महर्षि दयानन्द का ही दिव्य बलिदान ऐसा था जिसने इन्हें दृढ़ आस्तिक तथा वैदिक धर्मानुयायी बना दिया।

आपका जन्म २६ अप्रैल सन् १८६४ ई० को हुआ था। बचपन से ही आप सुसंगठित एवं विलक्षण बुद्धि के थे। छोटी आयु में ही आपका विचार भक्ति भावना से प्रेरित हो गया। स्वाध्यायी तो थे ही कहीं से महर्षि दयानन्दकृत ईश्वर भक्ति का अनुपम ग्रन्थ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आपके हाथ लग गया। बस फिर क्या था, आपको संस्कृत पढ़ने का शौक लग गया तथा स्वयमेव परिश्रम से कई महर्षि कृत ग्रन्थों का अध्ययन कर डाला।

सन् १८८० में आपने आर्य समाज में प्रवेश किया। सन् १८८३ में एम०ए० करते ही आपको पाश्चात्य विद्वानों के दर्शन पढ़ने का शौक लगा। सन् १८८४ से ही आपने वैदिक सिद्धान्तों की सत्ता की पुष्टि प्रारम्भ कर दी तथा विज्ञान के बल पर ईश्वर के अस्तित्व को समझने लगे। आपने इसी वर्ष "दि रीजन आफ आर्यावर्त्त" नामक एक समाचार पत्र का भी प्रकाशन किया।

महर्षि दयानन्द के भयंकर रुग्णावस्था में होने पर १९ वर्ष की अवस्था में ही आपको व लाला जीवनदास जी को लाहौर आर्य समाज की ओर से ऋषि की सेवा में भेजा गया। आप महर्षि के जीवन के अन्तिम दृश्य को देखकर चकित रह गये। इनके ब्रह्मचर्य व योग बल तथा ईश्वर विश्वास के गौरव को देखकर आपने नवीन जीवन धारण किया तथा आप उनके अनन्य भक्त बन गये। यह वह समय था जब घोर नास्तिक गुरुदत्त कट्टर आस्तिक बन गये। उन्होंने ऋषि के जीवन में ईश्वर की अनुपम छवि देखी। आप उसी समय से ऋषि के जीवन को अपने जीवन में ढालने का प्रयत्न करने लगे।

आप डी०ए० वी० कालेज के कर्णधारों में से एक थे। कालेज के लिए धन एकत्रित करने व वार्षिकोत्सव पर अपील करने का कार्य आपके ही सुपुर्द था। सन् १८८६ में सर्वाधिक अंकों से आपने एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा गवर्नमेन्ट कालेज में प्रोफेसर बना दिये गये। सिद्धान्तों के पालन में आप कट्टर थे। शास्त्रार्थ में आप भीष्म पितामह कहलाते थे।

आपने कुछ उपनिषदों का अनुवाद भी किया तथा वेद के शब्द-कोष के नाम से एक पुस्तिका प्रकाशित करवाई जो आक्सफोर्ड में पाठ्य पुस्तक बन गई। आपने उपनिषद अनुवाद का अंग्रेजी संस्करण भी प्रकाशित करवाया था। अष्टाध्यायी द्वारा संस्कृत पढ़ाने हेतु विद्यालय खोला। उसमें बड़ी आयु वाले जिज्ञासु भी शिक्षा प्राप्त करते थे। अद्वैतवादी स्वामी अच्युतानन्द जी आपके ही प्रभाव से द्वैतवादी बने तथा महान सन्यासी आर्य जगत के बने। इसी प्रकार उस युग के महान दार्शनिक स्वामी महानन्द पर आर्य समाज की छाप बिठाने का श्रेय आपको ही है। आपने १८ बार सम्पूर्ण सत्यार्थ प्रकाश का पाठ किया तथा हर बार किसी न किसी नई बात का ज्ञान प्राप्त किया।

सन् १८८९ में पण्डित जी ने वैदिक मेगजिन नाम का मासिक पत्र निकालना प्रारम्भ किया। इसके लेख अंग्रेजी के विद्वानों को बहुत पसन्द आते थे। योरोप में संस्कृतज्ञ वैदिक साहित्य के विषय में जो असबद्ध व अप्रमाणिक लेख लिखते थे उसकी समालोचना पण्डित जी ही किया करते थे।

महर्षि के दिव्य बलिदान की आप पर ऐसी छाप पड़ी थी कि उसी समय से दिन रात आर्य समाज के काम में संलग्न रहने लगे। अधिक परिश्रम के कारण आपको क्षय रोग ने आ दबाया तथा अनेक उपचार करने पर भी १९ मार्च सन् १८९० को प्रातः ७ बजे महर्षि का यह अनन्य भक्त केवल २६ वर्ष की अल्पायु में सदा-सदा के लिये सो गया। नश्वर शरीर पंच तत्व विलीन हो गया। जगद् गुरु स्वामी शंकराचार्य जी की भांति आपने भी इस छोटी सी आयु में अनेक जन्मों का कार्य पूर्ण कर लिया।

वैदिक गगन का यह नक्षत्र आज भी हमारे लिए, भावी पीढ़ी के लिए व पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित नवयुवकों के लिए प्रेरणास्रोत है।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज

–स्वामी वेदमुनि परिव्राजक: नजीबाबाद–

६ मार्च के सार्वदेशिक मे श्री डा० भवानील ल जी भारतीय का लेख "राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ का स्वामी दयानन्द विषयक सकीर्ण एव पूर्वाग्रह ग्रस्त दृष्टिकोण" लेख प्रकाशित हुआ है। बहुत दिनो से इस विषय मे कुछ लिखने को इच्छुक था किन्तु इस लेख को पढकर लिखने बैठ ही गया। वास्तविकता यह है कि यह सगठन नितान्त अन्धविश्वासी तथा परम्परावादी है, इसी कारण महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज का परम विरोधी है किन्तु यह है कि इतने पर भी कुछ आर्य समाजी इनकी न केवल प्रशसा करते अपितु प्रबल पक्षपाती हैं। नीचे की पक्तियो मे इनकी आर्यसमाज विरोधिनी गतिविधियो की चर्चा करने लगा हू।

सन् १९६४ की बात है, राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के सरसघ चालक श्री गोलवलकर जी का जम्मूनगर मे भाषण होना था। मेर प्रवचन कार्यक्रम जम्मू की पुरानी मण्डी आर्यसमाज में चल रहा था। उस आर्य समाज के तात्कालिक प्रधान श्री मोहनलाल जी मोतियाल गोलवलकर जी के भाषण की स्वागत समिति के उपाध्यक्ष थे, इसी कारण मुझे भी उक्त भाषण की सभा मे सम्मिलित होने का निमन्त्रण आया। प्रातःकाल नित्य ही मैं सभा स्थल की ओर भ्रमण करने जाता था। सभास्थल का जो द्वार बनाया गया था, उसमें सन्त कबीर, दादू नानक, गुरु गोबिन्दसिंह आदि के चित्र द्वार की दोनो दायी और बायी पक्षवाइयो पर लगे थे और स्वामी विवेकानन्द का चित्र सबसे उन पर द्वार के मध्य में लगा था किन्तु ऋषिवर दयानन्द का चित्र कही नही था।

मैंने उसी दिन मोतियाल जी से कहा वह बोले—'मैंने ध्यान नही दिया।" उन्होंने जाकर कहा होगा तो उसी दिन कही से ऋषिवर का एक छोटा सा चित्र बायी पर सबसे नीचे लाकर लगा दिया गया। इसी प्रकार रा० स्व० सघ के राजनीतिक मोर्चे जनसघ करौल बाग जनपदीय सम्मेलन यदि मैं भूलता नही हू तो सन् १९६१ में नई दिल्ली के करौल बाग अजमल खा पाक में होने वाला था। पजाब से आकर करौल बाग क्षत्र में बसे हुए आय बन्धुओ ने जब वहा के चित्रो के विषय पर चर्चा करते हुए ऋषि दयानन्द का चित्र न होने पर आपत्ति की तो कही से एक टूटे फ्रेम का मैला सा चित्र लाकर लगा दिया गया।

रही बात स्वामी विवेकानन्द जी की, जिन्हे प्रत्येक स्थान पर यह लोग उछालते रहते हैं उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य को भारत के लिये 'वरदान' बताया था जब कि महर्षि दयानन्द ने उसे आर्य जाति और आर्यावर्त्त के लिये दुर्भाग्य बताया था तथा उन्नीसवी शताब्दी के वह ही ऐसे महामानव थे, जिन्होने हिन्दी साहित्य मे सबसे पहले स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया। परन्तु सभी बन्धुओ को पराधीनता को भारत के लिये 'वरदान' बताने वाले व्यक्ति मे सर्वगुण सम्पन्नता दृष्टि गोचर होती है और स्वराज्य' का उदघोष करने वाले तथा 'अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद परस्पर के विरोध से अन्य देशो के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त्त मे भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नही है। जो कुछ है सो भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोडे राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है, तब देशवासियो को अनेक प्रकार का दुख भोगना पडता है। कोई कितना ही करे जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता माता के समान के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नही है।' (सत्यार्थ प्रकाश समु० ८) इस प्रकार के शब्द पराधीनता की स्थिति और स्वाधीनता की तुलना में प्रयोग करने वाले और उस पराधीनता के युग में महान् शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध लिखित देने वाले युगपुरुष नरपुगव को यह वर्ग सहन नही कर सकता।

कभी-कभी जब कोई आर्य समाजी सघ का अन्धसमर्थक मिल जाता है तो मैं यह सोचने को बाध्य हो जाता हू कि यह सुन्नी आर्य समाजी हैं अन्य समाज को समझता लेश भी नहीं और या फिर छद्म सघी है, जो आर्य समाज के भीतर घुसकर सघ का प्रचार करना तथा आर्यसमाज की शक्ति को सघ के पक्ष में प्रयोग करना चाहता है। मुझ पता है कि इस शताब्दी के सातवे दशक मे रा० स्व० सघ ने योजनाबद्ध ढग से आर्यसमाज मे घुसकर उसकी शक्ति का अपने पक्ष मे प्रयोग करने का निश्चय किया था। उसी समय से बहुत से सघी आर्य समाजो में घुसे हुए है। इस कार्य मे उन्हे पूर्ण सफलता नही मिली तो "विश्व हिन्दू परिषद्" बनाकर और 'सरस्वती शिशु मन्दिर' खोलकर हिन्दुओ के घर-घर तक पहुचने की योजना बनाई।

आर्य समाजो मे इन्हे घुसने का और कही कही तो बिल्कुल ही आर्यसमाज को हाथ मे ले लेने का अवसर आया पाकिस्तान से निष्क्रमण करके आये हुए आर्य बन्धुओ के कारण।

पाकिस्तान बनने के पश्चात् हिन्दू सभा तो मृत प्राय हो चुकी थी। पाकिस्तान बनने के परिणाम स्वरूप अपनी बर्बादी और अपनी मा-बहनो के सतीत्व लुटते देखकर काग्रेस और गाधी नेहरू के प्रति उन बन्धुओ को घृणा हो गयी थी अत युवको का सगठन देखकर अपने मन की टीस को लिये काग्रेस के विरोध मे प्रतिक्रिया स्वरूप अपने बन्धु बाधवो सहित उन निष्क्रमणार्थियो ने रा० स्व० से० सघ को अपना लिया था। बाद में सन् १९५१ में जनसघ बन जाने के कारण वह लोग उसमे भी सम्मिलित हुए किन्तु धीरे धीरे और विशेषकर सन् १९६१ में पजाब की अकाली सरकार में दो कुर्सियो के लिये सम्मिलित होकर हिन्दू हितो की जो बलि इन लोगो ने दी, उससे पजाब के आर्य बन्धुओ की मोह निद्रा कुछ भग हुई।

वास्तविकता यह है कि इस सगठन की आधारशिला रक्खी हुई है घोर पौराणिकता यथास्थिति वाद तथा मराठा साम्राज्यवाद पर। इस रहस्य को समझने की महती आवश्यकता है। प्रत्यक्ष में बाह्य रूप से उनका उद्देश्य हिन्दू सगठन है अतएव उन्होंने हिन्दू शब्द को आधार बना रक्खा है। इस विचार से भी आर्यसमाज के प्रबल विरोधी हैं क्योकि आर्य शब्द के सामने आने से उनका आधार समाप्त हो जाता है। कारण कि सम्पूर्ण गौरवपूर्ण इतिहास तो आर्यो का है। रामकृष्ण, ऋषि, महर्षि सभी आर्य हैं। हिन्दुओं का इतिहास तो लगभग बारह तेरह सौ वर्ष की पराधीनता का है। महाभारत और उससे पहले सभी राष्ट्र पुरुष और प्रमाण पुरुष आर्य शब्द के साथ बधे हैं। हिन्दू के साथ तो पराधीनता, दुर्दिन और घोर पतनावस्था के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नही है।

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर विशिष्ट व्यक्तियों के उद्गार

नई दिल्ली। आर्य समाज कोई मत, मजहब या सम्प्रदाय नहीं है बल्कि यह एक सत्य सनातन वैदिक धर्म है जिसने न केवल देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है अपितु राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को सुदृढ करने के लिए भी सदैव आगे बढकर आह्वान किया है। यह उद्गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा मावलकर हाल, नई दिल्ली में १९ मार्च को आयोजित ११३वें आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर व्यक्त किये। स्वामी आनन्द-बोध ने पंजाब व देश की स्थिति का जिक्र करते हुए आर्यसमाज को चौकन्ना रहने की सलाह दी और वेद प्रचार पर बल दिया।

इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि दिल्ली के महापौर श्री महेन्द्रसिंह साथी ने कहा कि आज हम आर्यसमाज के झण्डे के नीचे आकर ही विदेशी शक्तियो के इशारे पर देश को तोडने वाली ताकतों स लोहा ले सकते हैं क्योंकि यह केवल आर्यसमाज ही है जो देश की एकता व अखण्डता को बचा सकता है। श्री साथी ने आगे कहा कि आर्यसमाज ने स्वाधीनता आन्दोलन को भी नई दिशा प्रदान की थी।

सांसद श्री रामचन्द्र विकल ने कहा कि विश्व इतिहास मे महर्षि दयानन्द सरस्वती एक ऐसे महामानव हुए हैं जिन्होंने मानव मात्र के कल्याण एव मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए आज से ११२ वर्ष पहले चैत्र शुक्ला प्रतिपदा सन १८७५ को आर्यसमाज की स्थापना की थी। उन्होने आगे कहा कि आज सारी दुनिया बारूद के ढेर पर खडी है और वैदिक मार्ग पर चल कर सच्ची शान्ति स्थापित की जा सकती है।

पूर्व केन्द्रीय मन्त्री एव आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज खालिस्तान की माग के पीछे विदेशी शक्तिया काम कर रही हैं और आर्य जनो को सजग रहकर कार्य करना है। उन्होने आगे कहा कि स्वामी दयानन्द ने पूरे विश्व के मानव समाज की समस्याओं के हल के लिए आर्यसमाज बनाया था और सभी मनुष्यो को आर्यसमाज के माध्यम से एक मंच पर लाना चाहते थे। ससार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य लक्ष्य है, यह उन्होने आर्य समाज के नियमो मे प्रतिपादित किया। उन्होने इस बात पर बल दिया कि कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का स्वप्न पूरा करने के लिए हमे दयानन्द के मार्ग पर ही चलना होगा।

दैनिक मिलाप सन्देश के सम्पादक एव महात्मा आनन्द स्वामी के पौत्र श्री नवीन सूरी ने कहा कि आर्य अर्थात् श्रेष्ठ होना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और भारत में रहने वाला प्रत्येक नागरिक आर्य है। उन्होने आगे कहा कि वेद हमे सच्ची मानवता की शिक्षा देते हैं और आज मानव समाज को पुन वेदो की शरण में आकर ही लोक व परलोक का सुधार करना होगा।

स्वामी अग्निवेश ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य समाज ने कुरीतियो के उन्मूलन के लिए आगे बढकर काम किया है और आज सतीप्रथा जैसी कुरीति को जड से उखाड फेंकने के लिए काम करना है।

समारोह की अध्यक्षता पूर्व सांसद एव गुरुकुल घरौंडा के आचार्य स्वामी रामेश्वरानन्द ने की। उन्होने आर्यसमाज के गौरवशाली इतिहास एव गतिविधियों पर प्रकाश डाला। डा० महावीर मीमांसक ने कहा कि आत्मा, ईश्वर, धर्म, जीवन, मृत्यु आदि गूढ तत्वो को स्वामी दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थप्रकाश के माध्यम से ही सरलता से समझा जा सकता है और आर्य समाज को चाहिए कि भारत के गावो मे अपना प्रचार कार्य तेजी से करें। इस अवसर पर डा० प्रशान्त वेदालंकार, पूर्व महानगर पार्षद, श्रीमती शकुन्तला आर्या आदि ने भी आर्य समाज के उज्ज्वल अतीत एव भावी योजना पर प्रकाश डाला। सभा महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने कुशलता से मच संचालन किया।

हम क्या थे

(पृष्ठ ५ का शेष)

ब्राह्मणादि उत्तम कर्म करते हैं वे ही ब्राह्मणादि और जो नीच भी उत्तम वर्ण के गुण कर्म और स्वभाव वाला होवे तो उसको भी उत्तम वर्ण मे और जो उत्तम वर्णस्थ होके नीच काम करे तो उसको नीच वर्ण मे गिनना अवश्य चाहिए।'

परम्परा और सनातन के शब्दो का बहुत दुरुपयोग हुआ है। मनमाने ढग से अपनी मान्यताओ को पुराने ऋषि मुनियो के नाम से प्रचलित करने का धन्धा बहुत जोरो से चला है। अर्वाचीन पुराणो को महर्षि वेदव्यास के नाम से चला दिया गया। नवीन वेदान्तियो ने अपनी मान्यता का योग वशिष्ठ महर्षि वशिष्ठ के नाम से बना डाला। इस प्रकार असली चीज के नाम पर नकली चलाने वालो ने विभिन्न प्रकार के सम्प्रदाय खडे कर दिए। जिस देश का विज्ञान और आत्मज्ञान बहुत उन्नत था वही देश विदेशियों के तथाकथित पाडित्य पर मुग्ध हो गया। तभी तो ग्रन्थकार को लिखना पडा —

अपने देश की प्रशसा वा पूर्वजो की बडाई करनी तो दूर रही, उसके स्थान म पेट भर निन्दा करते हैं। व्याख्यानो मे ईसाई आदि अंग्रेजो की प्रशसा भरपेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियो का नाम भी नही लेते प्रत्युत ऐसा कहते है कि बिना अंग्रेजो के सृष्टि मे आज पर्यन्त कोई भी विद्वान नही हुआ। आर्यावर्तीय लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं इनकी उन्नति कभी नही हुई।

किसी भी देश भक्त के लिए इस प्रकार के विचार घोर अपमानित हो जाने के हैं। अपने अतीत का गौरव भुलाकर शासको की प्रशसा करना भौतिक परतन्त्रता से भी कडी दासता है। ऐसा सब हो गया था तो ऋषि को लिखना पडा।

देखो यूरोपियन लोग अपने देश के बने जूते को कार्यालय और कचहरी म जाने देते है इस देशी जूते का नही। इतने मे ही समझ लेओ कि अपने देश के बने जूतो का भी कितना मान प्रतिष्ठा करते है उतना भी अन्य देशस्थ मनुष्यो का नही करते। देखो! कुछ सौ वर्ष से ऊपर इस देश म आये यूरोपियनो को हुए और आज तक यह लोग मोटे कपडे आदि पहिरते है जैसा कि स्वदेश म पहिरते थे, परन्तु उन्होने अपने देश का चाल-चलन नही छोडा और तुमम से बहुत से लोगो ने उनका अनुकरण कर लिया इसी से तुम निर्बुद्धि और वे बुद्धिमान् ठहरते हैं। अनुकरण करना किसी बुद्धिमान का काम नही।

उपरोक्त पक्तिया लिखते समय लेखक को महाराज मनु का वह गौरव गान अवश्य ही मस्तिष्क म रहा होगा—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

हम क्या हो गये? की करुण कथा बहुत लम्बी है। प्रत्येक क्षेत्र मे गिरावट का बोलबाला और आपाधापी का नाच चल रहा था। सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से पता लगता है एक ओर चूल्हे चौके का और सखरी निखरी का शास्त्र चलता था तो दूसरी ओर अंग्रेजो व मुसलमानो की तरह एक साथ खाने पीने के पक्ष प्रबल हो रहे थे। एक ओर यज्ञोपवीत का अधिकार छीना जा रहा था तो दूसरी ओर यज्ञोपवीत छोडकर विदेशी शासक के तमगा से शोभा मानी जा रही थी। इस प्रकार के विरोधाभासो का सकेत यथोचित उत्तर और ताडने के उदाहरणो से सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाश समस्त पुस्तक मे प्रकाशित है।

आर्यसमाज की गतिविधियां

५ मुसलमानों की शुद्धि

ग्राम नीमचना जि० बुलन्दशहर के वार्षिक उत्सव के शुभ अवसर पर अलीगंज एटा निवासी ५ व्यक्तियों ने अपनी स्वेच्छा से वैदिक हिन्दू धर्म स्वीकार किया। यह शुद्धि प० जयप्रकाश जी आर्य भूतपूर्व इमाम की देख-रेख में उनकी इच्छा अनुसार हुई। उक्त अवसर पर श्री बलवीरसिंह जी उपदेशक, स्वामी ओमानन्द सरस्वती एवम् अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। उनके नाम इस प्रकार हैं।

रसमुअली	=	रसमपालसिंह	२८ साल
मानो बेगम	=	मानो देवी	२२ साल
रईस खा	=	रेपालसिंह	१५ साल
	=	सोरपालसिंह	१ साल

शुद्धि संस्कार के उपरान्त श्री बलवीरसिंह प० जय प्रकाश एवम् अन्य विद्वानों ने इन व्यक्तियों को हर तरह सम्मानित किया।

स्वामी सोमानन्द सरस्वती
आर्य समाज नीमचना
जि० बुलन्द शहर (उ०प्र०)

शुद्धि कार्य २८ फरवरी १९८८ को सम्पन्न हुआ।

विदेशी मेहमानों को सत्यार्थ प्रकाश भेंट

नई दिल्ली १ मार्च आज अशोका होटल के कन्वेंशन हाल में देश-विदेश से आए हुए ५०० से अधिक हृदय रोग विशेषज्ञों को। आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट एवं महाशय चुन्नीलाल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजी०) की ओर से युग प्रणेता महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया।

इस अवसर पर प्रसिद्ध समाज सेवक तथा महाशय चुन्नीलाल ट्रस्ट के प्रधान महाशय धर्मपाल एवं आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट के मन्त्री श्री धर्मपाल आर्य ने उपस्थित हृदयरोग विशेषज्ञों का अभिनन्दन कर उन्हें ग्रन्थ की प्रतियां भेंट की। इस शुभ कार्य में आर्य समाज न्यू मोतीनगर के प्रधान श्री तीरथराम आर्य का योगदान सराहनीय रहा। इस पुनीत कार्य में आर्य समाज दीवानहाल की ओर से अंग्रेजी के सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां के लिए ५००) रुपए की सहयोग राशि दी गयी। —तीर्थराम आर्य

शुभ विवाह

१—चि० विनेश कुमार शाक्य सुपुत्र श्री श्रीकृष्ण आर्य कोषाध्यक्ष आर्य समाज विष्णुगढ का वैदिक विवाह संस्कार कुमारी सन्ध्या तनया श्री राधेश्याम निवासी चितायन (मैनपुरी) के साथ दिनांक २३-१-८८ को सम्पन्न हुआ जिसमें कोषाध्यक्ष ने १०१) रु समाज को दान दिया।

२—चि० प्रमादकुमार स्नातक सत्यार्थ भूषण सुपुत्र श्री बालकराम आर्य पथिक प्रधान आर्य समाज विष्णुगढ का वैदिक विवाह संस्कार कुमारी उर्मिलार्य तनया श्री छगेलाल यादव नि भसरा (फर्रुखाबाद) के साथ दिनांक २६-२-८८ को सम्पन्न हुआ। तथा जिसमें उन्होंने १०१) रु दान आर्य समाज को दिया। उपयुक्त दोनों संस्कारों में प बृषभानुदेव आर्य का पौरोहित कार्य सराहनीय रहा। —बालकराम आर्य पथिक

समालोचना

मैं हिन्दू क्यों बना ?
डा० आनन्द सुमन (वैदिक प्रवक्ता)
पृष्ठ ३२ मूल्य २-०० १२५/- सैकड़ा
क्रान्ति प्रकाशन तपोवन आश्रम देहरादून-२४८००

डा० आनन्द सुमन सात वर्षपूर्व सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के संरक्षण में वैदिक धर्म में दीक्षित हुए तबसे निरन्तर स्वाध्याय कर महर्षि के मिशन में लगे हुए है।

इस पुस्तक में उन्होंने आत्म उद्गार प्रस्तुत किये। पुस्तक पठनीय है एवं आर्य समाज के प्रचार के लिये उत्तम माध्यम है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री, सम्पादक

नव वर्ष की शुभकामनायें

भारतीय नव वर्ष विक्रमी सम्वत् २०४५ के लिये
समस्त आर्य जगत के प्रति
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की
हार्दिक शुभ कामनायें

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती
प्रधान

सच्चिदानन्द शास्त्री
महामन्त्री

आर्य समाज देशराज कालोनी पानीपत का प्रथम वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज देशराज कालोनी पानीपत का प्रथम वार्षिकोत्सव दिनांक २७ व २८ फरवरी ८८ शनि० व रविवार को ला० आदित्य प्रकाश जी आर्य की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हो गया।

जिसमें निम्न विद्वानों ने भाग लेकर जनता का मार्ग दर्शन किया सर्वश्री पूज्य स्वा० निगमानन्द जी सरस्वती स्वा० वरुणवेश जी प्रो० वेद सुमन जी वेदालंकार डा० नारायणदत्त जी वैद्य विद्यालंकार श्रीमती राजरानी आर्य बहन सविता जी प्रि० सच्चिदानन्द जी आर्य प्रादेशिक सभा से ठा० दुर्गासिंह जी तूफान, अमरसिंह आर्य पूना से श्री प० नन्दलाल जी आर्य आदि विद्वानों संन्यासियों व भजनोपदेशकों ने भाग लिया।

—मन्त्री

आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री शान्तियज्ञ

आर्य समाज मन्दिर पिथौरागढ (उ० प्र०) में २१ फरवरी १९८८ को भोलानाथ चटर्जी की अध्यक्षता में आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री (निधन २६ जनवरी ८८) भूतपूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा की दिवंगत आत्मा हेतु शान्तियज्ञ सम्पन्न हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द कन्चाहारी ने परमात्मा से शान्ति एवं धैर्य हेतु प्रार्थना की।

—गुरुकुलानन्द सरस्वती

अनेकों क्षेत्रों में सैकड़ों नर-नारियों का यज्ञोपवीत संस्कार

नई दिल्ली सार्वदेशिक सभा के महोपदेशक डा० आनन्द सुमन ने विगत् एक माह में बागरमऊ उन्नाव, कोटद्वार, देहरादून क्षेत्र में वैदिक धर्म का प्रचार किया तथा ३०० से अधिक व्यक्तियों को यज्ञोपवीत धारण कराये, तथा अनेक युवक युवतियों को आर्य समाज की सदस्यता के लिए प्रेरित किया।

आर्यजगत् के समाचार

चुनाव समाचार

आर्यसमाज बगहा मिरजापुर (उत्तर प्रदेश) बेचनसिंह प्रधान बसन्तीसिंह मन्त्री ज्वाला प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज नामनेर आगरा (उ० प्र०) वृजमोहनलाल खण्डेलवाल प्रधान दीवान व्रतपाल मन्त्री कैलाशनाथ गर्ग कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज देशराज कालोनी पानीपत करनाल प्रभुदयाल जी गुलाटी प्रधान प० जगदीशचन्द्र वसु मन्त्री ला० ओमप्रकाश जी गोयल कोषाध्यक्ष चुने गये।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बेगूसराय नाथ साहु प्रधान कृष्णप्रसाद मन्त्री विजयकुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज कैलाश ग्रेटर चमनलाल आनन्द प्रधान गणेशदास जी ग्रोवर मन्त्री बोधराज एब्रोल कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज विष्णुगढ बालकराम प्रधान गंगाराम मन्त्री श्रीकृष्ण आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज शिवाजीनगर नन्दकिशोरसिंह प्रधान रामसुन्दरसिंह मन्त्री अशर्फीसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज लालबाग लखनऊ ओमप्रकाश प्रधान ई सत्यदेव सैनी मन्त्री विश्वमित्र अरोडा कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज मवाना मेरठ दयाप्रकाश प्रधान कांतिप्रकाश मन्त्री प्रेमप्रकाश कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज चांदपुर डा० रामेश्वरप्रसाद जी मित्तल प्रधान चन्द्रपाल अग्रवाल मन्त्री ओमप्रकाश कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज कृष्णनगर मथुरा (उ०प्र०) कन्हैयालाल जी प्रधान जनकराज सैनी मन्त्री श्रीमती लज्जावती कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज हैवी इलैक्ट्रिकल्स पिपलानी भोपाल सी० के० मरदाना प्रधान सुभाष मनचन्दा मन्त्री विनोद आर्य चुने गये।

आर्यसमाज सावली पचपुरी राजेसिंह प्रधान वासुदेव जी मन्त्री देशबन्धु कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज शाहगंज जौनपुर सन्तप्रसाद प्रधान दयाशंकर मन्त्री राधेश्याम कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज नकुड जिला सहारनपुर माधुराम प्रधान भूपेन्द्रकुमार गोयल मन्त्री मोहनलाल आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज पिथौरागढ हिमाचल लक्ष्मीदत्त मल्ला प्रधान लक्ष्मीचन्द मित्तल मन्त्री डा० सावलसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज अफजलाबाद बिजनौर चौ० विजयपालसिंह त्यागी प्रधान यतीशकुमार आर्य मन्त्री सुशील कुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य केन्द्रीय सभा गुडगावा चन्दनसिंह प्रधान विद्याभूषण शास्त्री मन्त्री ओमप्रकाश कोषाध्यक्ष चुदानी चुने गये।

नगर आर्यसमाज रकाबगंज लखनऊ श्रीमती मनोरमा जी प्रधान शान्तिप्रकाश जी मन्त्री रेवतीरमण कोषाध्यक्ष चुने गये।

नगर आर्यसमाज गुलाब सागर जोधपुर महेन्द्रसिंह जी देवडा प्रधान डा० प्रेमप्रकाश मन्त्री मानमल जी सटोक कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज राजामण्डी आगरा (उ०प्र०) दयाचन्द जी प्रधान सुदेव शर्मा मन्त्री उमेशचन्द गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज कंकर खेडा मेरठ (उ० प्र०) टी० सी० सेठिया केप्टेन प्रधान आर० एस० विमल मन्त्री रामसरन कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज लोधी रोड जोरबाग दिल्ली मदनगोपाल खोसला प्रधान विजयकुमार बत्रा मन्त्री रतनप्रकाश गुप्त कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज बक्सर भोजपुर सुरेन्द्रनाथ जायसवाल प्रधान राजेश्वरीप्रसाद आर्य मन्त्री ओमप्रकाश कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज जौनपुर अयोध्याप्रसाद प्रधान सुरेन्द्रकुमार मन्त्री पन्नालाल कोषाध्यक्ष चुने गये।

धर्म सन्देश

प्रेम से मिलकर सभीजन धर्ममय जीवन बनाओ।
धर्म का सन्देश पावन आज जन जन को सुनाओ॥
धर्म ही वह तत्त्व जिससे दूर होते दोष जन के,
और मिट जाते सभी के राग और द्वेषादि मन के।
भव्यतम भ्रातृत्व की सद्भावना सम्भव इसी से,
धर्म पथ के पथिक की नहीं शत्रुता होती किसी से।
इसी पथ पर आज चलने हेतु मानव को मनाओ॥१॥

धर्म का बस नाम ही है शेष प्राय आज जग में,
पाप का ही आज नाटक चल रहा प्रत्येक मग में।
मोह सत्ता का धरा पर आज इतना जम गया है,
बन्धु ही अब बन्धु के संहार में यहां लग गया है।
इन क्रियाओं के दु:खद परिणाम जनताको जनाओ॥२॥

धर्म से सबमें मनोहर प्रेम का संचार होगा,
बढ़ेगा सहयोग सबमें दूर दुर्व्यवहार होगा।
नहीं केवल मनुज सारे मुदित होंगे जीव जग के,
कष्टप्रद कण्टक स्वयं ही नष्ट होंगे शीघ्र जग के।
धर्म के य लाभ सब ससार को सस्वर गिनाओ॥३॥

धर्म से ही स्वार्थ दानव का झटिति संहार होगा,
फिर सभी में सभी के प्रति सुखद सात्विक प्यार होगा।
प्यारमय पीकर सुधा जिससे अमर हो विश्व सारा,
कह उठे फिर एक स्वर से वृद्ध भारत गुरु हमारा।
पूर्वजों का वही पालन मन्त्र सन्तत गुनगुनाओ॥४॥

आचार्य रामकिशोर शर्मा प्राचार्य
राधाकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय खुरजा (उ० प्र०)

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सैक्टर-७ ए० में समस्त फरीदाबाद क्षेत्र की समस्त आर्य-समाजों की ओर से बडी धूम-धाम तथा उल्लास मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा प० श्री ब्रह्म प्रकाश वागीश विद्यावाचस्पति. थे। समारोह के मुख्य अतिथि प्रधानाचार्य श्री आर्य वीर भल्ला डी ए वी विद्यालय सैक्टर-१४ फरीदाबाद थे। अध्यक्षता श्री भीमसैन जी वेदालंकार बल्लभगढ़ ने की। मुख्य वक्ता श्री महेश विद्यालंकार दिल्ली तथा प० ब्रह्म प्रकाश शर्मा वागीश आदि थे। अनेक छात्र छात्राओं ने प्रभावशाली कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

—कृते ब्रह्मप्रकाश वागीश

डा० भवानीलाल भारतीय षष्टि पूर्ति स्मारिका

आर्यसमाज के प्रसिद्ध साहित्यकार, शोध विद्वान् तथा सुपरिचित लेखक डा० भवानीलाल भारतीय जून १६८८ ई० मे अपने जीवन के ६० वर्ष पूरे कर रहे है। इस अवसर पर "डा० भवानीलाल भारतीय षष्टि पूर्ति स्मारिका" का प्रकाशन किया जा रहा है। डा० भारतीय ऋषि जीवनी साहित्य के अनथक अध्येता तथा प्रामाणिक ज्ञातकार है। ऋषि दयानन्द आर्यसमाज तथा आर्य साहित्यकारो से सम्बन्धित लगभग ४ दर्जन ग्रन्थो का लेखन और सम्पादन इन्होने किया है। आर्यसमाज क पत्र-पत्रिकाओ मे वे निरन्तर लिखते रहते है और अभी भी उनकी लेखनी अजस्र गति से प्रवाहित हो रही है। आर्य समाज के लेखको, पाठको, सम्पादको, गवेषको तथा आर्य महानुभावो से निवेदन है कि वे इस स्मारिका के निमित्त अपना लेख, सन्देश शुभकामनायें तथा सहयोग प्रेषित करें श्री भारतीय का अभिनन्दन करे।

पत्र-व्यवहार का पता— निवेदक—
आर्यसमाज अमेठी डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, सम्पादक
पिन-२२७४०८ (उ० प्र०) डा० भवानीलाल भारतीय षष्टि पूर्ति स्मारिका

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून
प्रातः २७ अप्रैल से १ मई १६८८ सायं तक
तपोवन की यात्रा

तपोवन आश्रम देहरादून के कार्यकर्ताओ एव महात्मा दयानन्दजी की हार्दिक इच्छा है कि प्रतिवर्ष की भाति दिल्ली से भाई एव बहने इस यज्ञ मे भाग ले।

तपोवन जाने के लिए निम्न प्रोग्राम बनाया गया है।

१. **२७ अप्रैल** प्रात ६ बजे प्रस्थान आर्य समाज, करौल बाग, से दोपहर को वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, गुरुकुल कागडी, फार्मेसी, हर की पौडी हरिद्वार से होते हुए रात्रि को मोहन आश्रम ठहरेगे।

२. **२८ अप्रैल** प्रात काल हर की पौडी हरिद्वार, ऋषिकेश, लक्ष्मण झूला, गीता भवन से होते हुए दोपहर का तपोवन आश्रम पहुँचेगे।

३. **२६ अप्रैल** यज्ञ एव नाश्ता के पश्चात् मसूरी के लिए प्रस्थान करेगे। मसूरी की आर्य समाज एव ऐतिहासिक स्थान देखते हुए रात्रि को तपोवन लौट आयेगे।

४. **३० अप्रैल** यज्ञ के पश्चात् जलूस मे सम्मिलित होगे जो तपोवन आश्रम से पहाड पर जायेगा, महात्मा नारायण स्वामी, महात्मा आनन्द स्वामी, महात्मा प्रभु आश्रित जी की कुटियाय बनी हुई हैं। वहा से लौट कर खाना खाने के पश्चात् सहस्र धारा एव देहरादून के ऐतिहासिक स्थान देखने जाये। रात्रि को वापस तपोवन आयेगे।

५. **१. मई** प्रात यज्ञ की पूर्णाहुति महात्मा दयानन्दजी द्वारा १० बजे सभा १२ बजे ऋषि लगर १ बजे प्रस्थान दिल्ली के लिए ८ बजे रात्रि वापसी आर्य समाज, करौल बाग, इस समारोह म पाचो दिन विद्वान भजनीक भाग लेगे।

आने जाने का किराया बस द्वारा रु० १५०/- होगा। सीट सुरक्षित कराने का स्थान आर्य समाज, करौल बाग मे होगा, सीट बुक कराने की तिथि १५-४-१६८८ तक सीट का न० क्रम सख्या से होगा। अगर पहले सीट बुक हो गई, तो बाद मे आने वाले के रु० वापिस कर दिय जायेगे

नोट —२७ अप्रैल दोपहर का खाना आर्य गुरुकुल ज्वालापुर हरिद्वार मे होगा। रात्री का खाना मोहन आश्रम हरिद्वार मे होगा। २८ अप्रैल से १ मई तक का खाना तपोवन आश्रम की ओर से होगा।

सवर्द्धक

अजय कुमार मल्ला	रामलाल मलिक	ओमप्रकाश सुनेजा
प्रधान	सयोजक	मन्त्री
	दूरभाष : ५७२२५१०	
शान्ति मलिक	दयालचन्द गुप्ता	कृष्णा वडेरा
प्रधाना	सहसयोजक	मन्त्रिणी

आर्य समाज, करौल बाग, नई दिल्ली-५
फोन ५७२७४५८

स्वर्ण मन्दिर परिसर एक और पाकिस्तान

भटिंडा, २८ मार्च। अकाली दल लोगोवाल के उपाध्यक्ष जीवन सिह उमरानागल ने अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर परिसर को भारतीय क्षेत्र के भीतर बनाय गये एक और पाकिस्तान की सज्ञा देते हुए आरोप लगाया कि वहा पाकिस्तान मालिको' द्वारा उपलब्ध कराये गये हथियारो के बल पर निदेशो का पालन कराया जा रहा है।

श्री उमरानागल ने कल यहा सवाददाताओ से कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का अब स्वर्णमन्दिर परिसर पर कोई नियन्त्रण नही रहा। क्योकि उसने परिसर मे प्रवेश करने से डर कर अपनी कार्य समिति की बैठक आनन्दपुर साहिब मे बुलाई है।

श्री उमरानागल ने पजाब समस्या को जटिल बनाने के लिए केन्द्र तथा अकाली नेतृत्व दोनो को ही दोषी ठहराते हुए कहा कि अकाली नेता 'गद्दी' के पीछे भाग रहे है। उन्होने कहा कि अकाली नेता जनादेश प्राप्त करने के बाद पथ तथा सिख धर्म के प्रति अपने कर्तव्यो को ही भूल गये थे।

श्री उमरानागल ने सिख समुदाय से अनुरोध किया कि वह पवित्र हरमन्दिर साहिब को समाज विरोधी 'तत्वो के शिकजे से मुक्त' कराए।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार का उत्सव

८८वा वार्षिकोत्सव एव दीक्षान्त समारोह दिनाक १० अप्रैल से १६ अप्रैल तक १६८८ तक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्दजी द्वारा पुण्य सलिला पावनी भागीरथी के पुण्य तट पर संस्थापित एव राष्ट्रीय महत्व की सस्था गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार का वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी उपर्युक्त तिथियो मे हो रहा है।

अर्जुनदेव, मुख्याधिष्ठाता

रजि० नं० डी० (सी०) १७७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (३ ४ १९८८) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No U 93 Post in D P S O on 1-4-1988

मसूराश्रम (बम्बई) में शुद्धियां

केरल की कुमारी जे जे थामस (कैथोलिक ईसाई) हिन्दुत्व में विश्वास करते हुए शुद्धि द्वारा हिन्दू बनी। उसका नाम राधिका रखा गया। उसका विवाह एक व्यापारिक संस्थान के आफीसर, ब्राह्मण परिवार के श्री पी० पी० सुब्रह्मण्यम के साथ सम्पन्न हुआ

मध्यप्रदेश की एक रोमन कैथालिक युवती एम एम बी केलेम्रा ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया। उनका विवाह बम्बई के हिन्दू गौड सारस्वत ब्राह्मण श्री सजय दिवाकर तेंदलकर स्नातक के साथ हुआ। इस कार्यक्रम में भारी संख्या में लोग उपस्थित थे। नवयुवती का नाम शारदा रखा गया।

एक सुन्नी मुस्लिम नवयुवती रहमुतुन्निसा शेख ने हिन्दू धर्म स्वीकार किया। उसका विवाह हिन्दू गुजराती युवक श्री राजेश प्रताप राय कुकाडिया के साथ हुआ। नवयुवती का नाम सशीला रखा गया उस नवयुवती के सम्बन्धियों ने कुछ विघ्न और रूष्टता उत्पन्न की थी। परन्तु कानून और साहसी हिन्दू नवयुवकों की सहायता से वे कुछ नहीं बिगाड सके

बम्बई की एक सुन्नी मुस्लिम कुमारी ने हिन्दू धर्म स्वीकार किया। उसका विवाह बम्बई के हिन्दू गौड ब्राह्मण स्नातक के साथ हुआ नवयुवती का नाम सीमा रखा गया।

एक सुन्नी मुस्लिम नवयुवती एम एस शेख ने हिन्दू धर्म स्वीकार किया। उसका विवाह नाला सोपार (वासाई) के हिन्दू ब्राह्मण के साथ हुआ। नवयुवती का नाम मीनाक्षी रखा गया।

एक सन्नी मुस्लिम नवयुवती रहमत एम एस शेख ने हिन्दू धर्म स्वीकार किया। उसका विवाह श्री उल्हास गणपति काले के साथ म हुआ। युवती का नाम प्रीति रखा गया।

...गढ़ में आर्य...

...अलीगढ मण्डल के ... वक्तव्य में घोषणा की कि अल... स्थापित किया जावेगा। उन्होंने कहा देश भ... का चरित्र मुक्त किया जाय। यह काय अब हम करेंगे। हमें अपने प्रधान सचालक श्री प० बालदिवाक जी हम पर गर्व है उनकी रहनुमाई और डा० देवव्रत का व्यायाम प्रशिक्षण यथाशक्ति का प्राणवान बनाने में सफल है।

श्री शास्त्री ने धानोतजा उत्सव में महाशय नत्थीलाल व थपुर पा० पारण महेन्द्र गिरि एव गसूपुर में श्री नरेशकुमार का आर्य वीर दल का सरक्षक घोषित किया और प्रधान सचालक जी को दिल्ली आर्य वीरों की सूची भेज दी। आपने दाखो (अलीगढ) श्योदानसिंह को सरक्षक घोषित किया।

—सम्वाददाता

आर्य समाज मन्दिर, करोल बाग; नई दिल्ली का ५६वां वार्षिक महोत्सव

१७ अप्रैल रविवार से ८ मई रविवार १९८८ तक बड़ी धूम-धाम से मनाया जाना निश्चित हुआ है। इस शुभावसर पर आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली २ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१

वर्ष २३ अंक १५] वश व कृ० ८ स० २०४५ रविवार १० अप्रैल १९८८ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

हमारी नेपाल यात्रा

हिन्दू महा संघ द्वारा आयोजित हिन्दू महा सम्मेलन

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

२१ मार्च १९८८ प्रातः पटना रेलवे स्टेशन से कार द्वारा हम लोग मुजफ्फरपुर के लिये चल दिये इस यात्रा में बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री मन्त्री श्री रामाज्ञा वैरागी तथा उपमन्त्री प्रो० साहब के साथ सायं ३ बजे मुजफ्फरपुर पहुंचे। दूसरे दिन बेतिया, महेसी नरकटियागंज हरिनगर, रामनगर शुगर मिल्स होते हुये तीसरे दिन सायं रक्सौल पहुंच गये आर्यसमाज रक्सौल के विशाल प्रांगण में सार्वजनिक सभा को सम्बोधित किया।

२४ मार्च को प्रातः रक्सौल से वीरगंज गीता मन्दिर में भाषण के अनन्तर समरला हवाई पट्टी से एक छोटे वायुयान द्वारा जिसमें केवल १८ सवारियां बैठ सकती हैं केवल २० मिनट में काठमाण्डो पहुंच गये। काठमाण्डो हवाई अड्डे पर आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने हमारा स्वागत किया। उनके साथ नेपाल टी० वी० दूरदर्शन ने हमारे चित्र लिये जो रात को नेपाल टेलीविजन के राष्ट्रीय कार्यक्रम में दिखाये गये।

हमारी सब प्रकार की रहने एवं यातायात का प्रबन्ध नेपाल सरकार की ओर से किया गया था। हमें एक होटल में ठहराया गया।

२४ मार्च को प्रातः १० बजे से नेपाल स्टेडियम में महाराजाधिराज पांच सरकार ने सम्मेलन का विधिवत उदघाटन किया महारानी नेपाल तथा देश विदेश के धर्माचार्य अपनी अपनी वेष भूषा में उपस्थित थे। सम्मेलन के उदघाटन के पश्चात् हम लोग श्री सीताराम अग्रवाल प्रधान आर्यसमाज विराटनगर के घर पर भोजन के लिये गये। हमारे साथ श्री प्रकाशचन्द्र व सुवेदी प० पीताम्बर शर्मा श्री रत्तीराम जो सिलीगुड़ी तथा बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारीगण भी थे। इसके पश्चात् हम लोग आर्य समाज के जागरूक प्रहरी शहीद प० शुक्रराज शास्त्री को जिस वृक्ष पर लटकाकर फांसी दी गई थी उसे देखने गये यह स्थान काठमाण्डो नेपाल गंज बड़ बाजार में है।

श्री शुक्रराज शास्त्री नेपाल में सत्यार्थप्रकाश की शिक्षाओं का प्रचार करने के अपराध में राणा सरकार के दमनकारी शासन का विरोध करने के कारण फांसी पर लटका दिये गये थे। श्री शुक्रराज शास्त्री ने फांसी का फंदा गले में डालने से पूर्व घोषणा की थी कि सत्य सनातन वैदिक धर्म के पुनीत प्रचार के कारण क्रूर राणा सरकार मुझे फांसी पर चढ़ा रही है। मैं घोषणा करता हूं कि इस अत्याचारी शासन का जल्दी नाश होगा। शहीद की घोषणा सत्य सिद्ध हुई। और राणा सरकार का पतन होने पर वर्तमान महाराजाधिराज ५ सरकार ने शुक्रराज शास्त्री की यादमें उस पेड़ के चारों ओर लोहे का जंगला लगादिया। शहीद का स्मारक बना दिया और नेपालगंज में शुक्रराज शास्त्री का स्टैच्यु लगाकर उनका सम्मान किया। एक विद्यालय भी शहीद शुक्रराज शास्त्री के नाम पर चल रहा है।

इस प्रकार हम सायंकाल नेपाल एयरवेज के जहाज से दिल्ली लौट आये।

✿

वैदिक सूक्तियां

सर्वे भवन्तु सुखिन।

सारा संसार सुखी हो। सभी प्राणी सुखी हो॥

सर्वस्य लोचन शास्त्रम्।

शास्त्र सबके लिए दृष्टि का काम देते हैं।

अर्थो ही कन्या परकीय एव।

कन्या दूसरे को सौंपी जाने वाली सम्पत्ति है।

अर्थस्य पुरुषो दासो दासस्त्वर्थो न कस्यचित्। अतोऽर्थाय यतेतैव सर्वदा यत्नमास्थितः॥

मनुष्य धन का दास है परन्तु धन स्वयं किसी का दास नहीं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को धन की प्राप्ति के लिए सदा प्रयत्न करते रहना चाहिए।

प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्यो देवोऽपि तं लंघयितुं न शक्तः। तस्मान्न शोचामि न विस्मयो मे यदस्मदीयं न हि तत्परेषाम्।

मनुष्य को जिस वस्तु प्राप्ति होनी है वह अवश्य होगी उसमें भाग्य भी बाधा नहीं डाल सकता इसलिए न मुझ कोई चिन्ता है और न आश्चर्य जो मेरा है वह किसी अन्य का नहीं हो सकता।

सम्पादक—
सच्चिदानन्द शास्त्री

वेदों में कहीं भी सती प्रथा नहीं है

इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

पुरी महादेव मे महारुद्रयज्ञ के अवसर पर पुरी के पीठाधीश्वर शकराचार्य श्रीयुत निरञ्जनदेव तीर्थ एव श्री माधवाश्रम शुकदेव जी महाराज के वक्तव्य पढने पर बडा खेद हुआ कि जब आज हिन्दू पजाब मे मारा जा रहा है। देश के पूर्वाञ्चल प्रदेश मे हिन्दू भारी सख्या मे धर्म परिवर्तन कर चुका है। मीनाक्षीपुरम और रामनाथपुरम मे बड़े पैमाने पर धर्म परिवर्तन का षडयन्त्र किया गया। दारजिलिग मे गोरखा लैण्ड को लेकर भयकर हिसा हो रहा है। जब भारत को अमेरीका के इशारे पर पाकिस्तान की फौजो ने घेर लिया है। एक तरफ चीन भारत को समाप्त करने का षडयन्त्र कर रहा है। भारत के अन्दर ईसाई पादरी बडे सक्रिय हैं तथा पाकिस्तान की ओर से भारत के इसलामीकरण के षडयन्त्र चल रहे है। अमेरीका भारत को तोड़ने का भरसक प्रयत्न कर रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति मे देश भर से आए हुए २०० माने हुए विद्वान सती प्रथा का प्रछिन्नरूप से समर्थन, बाल विवाह का समर्थन और आर्य समाज की वेद सम्बन्धी मान्यताओ पर आक्रमण जैसी बातो का प्रदर्शन कर के हिन्दू सगठन मे विघटन की स्थिति को पैदा कर रहे हैं। छूआछात, ऊच नीच की भावना, जातिपाति आदि के आधार पर घृणा के प्रदर्शन के विरुद्ध महारुद्रयज्ञ मे विचार कर के हिन्दू जाति को समानता, सद्भावना, सगठन और प्रेम का एक सन्देश और आदेश देना चाहिए था। वहा हिन्दू जाति के प्रहरी आर्य समाज को ही एक विशेष केन्द्र बिन्दू बना कर उसकी मान्यताओ को झुटलाने का प्रयास करना हिन्दू जाति की हत्या करना जैसा है। हर निष्पक्ष हिन्दू इस बात को स्वीकार करता है कि यदि स्वामी दयानन्द न होते तो आज यज्ञोपवीत और चोटी भी दिखलाई न देती और भारत कुछ और ही होता।

स्वामी दयानन्द जी ने चार वेद माने हैं जो कि प्राचीन काल से ही ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद के नाम से सर्वसम्मत एव निर्विवाद रूप से माने गये है परन्तु वेदो की सख्या ११३१ बताना कितना हास्यास्पद है। शास्त्रो मे तो "अनन्ता वै वेदा" "वेद अनन्त है" लिखा मिलता है। इसका क्या अर्थ करेगे? क्या ११३१ वेदो को दिखा सकेगे? वेदो के व्याख्यान ग्रन्थो को वेद मानना कितना विभिन्न है। इस विषय मे पहले बहुत शास्त्रार्थ हो चुके है। और वेदो का विषय निर्विवाद रूप से स्पष्ट है कि वेद चार है। इन चारो वेदो मे स्त्री के सती होने की बात कही भी नही लिखी है। इस विषय मे शास्त्रार्थ का चैलेन्ज करना हिन्दुओ मे एक तनाव और विघटन पैदा करना यदि कोई मन्त्र सती होने की बात कहता हुआ किसी विद्वान को दृष्टिगोचर हो तो उसका समाचारपत्रो के माध्यम मे उल्लेख कीजिए। उसका उत्तर दिया जाएगा और जनता मध्यस्थ के रूप मे अपने आप समझ जाएगी कि सत्य क्या है? सती होकर जलना या जलाना अमानवीय वेद विरुद्ध और धर्म विरुद्ध है। जिस ऋग्वेद मे माधवाश्रम मे सती प्रथा के समर्थन की बात कहते है उसको उद्धृत करना उपयुक्त होगा। मन्त्र निम्न लिखित है —

इमा नारीरविधवा सुपत्नीराञ्जने न सर्पिषा सविशन्तु।
अनश्रवोऽनमीवा सुरत्ना आ रोहन्तुजनयो योनिमग्रे॥
(ऋग्वेद १०। १८। ७)

इस मन्त्र का अर्थ सायणाचार्य के अनुसार निम्नलिखित है —

जीवद्भर्तृका शोभनपतिका इमा. नार्य सर्वतोऽञ्जनसाधनन घृतेन अक्तनेत्रा सत्य स्वगृहान् प्रविशन्तु। अरुदत्य मानसदु वर्जिता शोभन धन सहिता जनयन्त्यपत्य भार्या। ता सर्वेषा प्रथमत एव गृह आगच्छन्तु।"

अर्थात्—जीवित पति वाली सधवा सुपत्निया सभी प्रकार की स्त्रियोचित अञ्ज आदि प्रसाधनो से अलकृत होकर अपने घरो मे प्रवेश करे, सुन्दर धनो से युक्त होकर सुसन्तान उत्पन्न करे तथा सब से पहले ही अपने घरो मे आए।

इस मन्त्र को शकराचार्य जी सती प्रथा के समर्थन मे प्रस्तुत करते हैं। सायणाचार्य के इस प्रामाणिक भाष्य से विधवा की तो चर्चा ही नही है। इस मन्त्र मे पद है अविधवा' (नारी अविधवा = नारीरविधवा) आश्चर्य है कि इतना स्पष्ट मन्त्र होते हुए और आचार्य सायण का उक्त अर्थ होते हुए भी मध्यकालीन पण्डितो और शकराचार्य जी ने इस मन्त्र का अर्थ 'विधवा स्त्री के लिए अग्नि मे जल जाना" कैसे किया। कुछ लोगो का यह कहना है कि मन्त्र के अन्तिम पद मे अग्रे के स्थान पर अग्ने शब्द है। इस फेर बदल से भी 'अग्ने' का अर्थ सस्कृत व्याकरण के अनुसार 'हे अग्नि' होगा। अग्नि मे जलना कदापि नही हो सकता। अग्नि शब्द का सप्तमी विभक्ति मे 'अग्नौ' रूप बनता है 'अग्ने' नही।

वैदिक धर्म मे जैसे स्त्री के लिए पतिव्रत धर्म है वैसे ही समान रूप से पुरुषो के लिए पत्नीव्रत धर्म है। इसमे मर्यादा पुरुषोतम राम का विमल चरित्र साक्षी है। क्या वेदो मे पुरुष के सती होने का भी विधान है? क्या वेद शास्त्रो मे ऐसा लिखा हुआ है कि पति चाहे जो करे परन्तु स्त्री को नही करना चाहिए। व्रत की बात तो दोनो के लिए एक समान है। इसलिए केवल स्त्री का वेदशास्त्रो से सती होने का समर्थन धर्म विरुद्ध, न्याय विरुद्ध, बुद्धि विरुद्ध, अमानवीय और पूर्णतया पक्षपातपूर्ण है।

इस युग मे शकराचार्य जी का बाल विवाह को ठीक बताना भी अस्वाभाविक आयुर्वेद के विरुद्ध अनुचित, वेद विरुद्ध और हिन्दू धर्म के पतन का बहुत बडा कारण है। मैं बडे विश्वास से कह सकता हूँ कि ऋग्वेद के किसी मन्त्र मे सती होने का विधान नही है। यह तो जगद्गुरु जी भी जानते है कि चारो वेदो मे सती प्रथा को कोई स्थान नही है। इस कमजोरी को बचाने के लिए वे वेदो ११३१ सख्या पर आ जाते है। यह बडी दुखद है।

यह समय इन बातो का नही है यदि हम इन्ही बातो मे उलझे रहे तो विदेशी षडयन्त्र के हम शिकार हो जाएगे। इस समय सारी शक्ति इस बात पर लगाना चाहिए कि ऐसी छोटी-सी समान सहिता बनाई जाए जिस पर हिन्दू मात्र चले परस्पर प्रेम करे तथा हिन्दुओ की रक्षा हो। इस समय हिन्दू का अस्तित्व खतरे मे है। इसको किसी प्रकार से बचाना आवश्यक है।

आर्य समाज हिन्दू मुसलमान ईसाई के लिए समाज कानून का समर्थक है। इसमे परिवार नियोजन भी अपने आप ही आ जाता है। परिवार नियोजन केवल हिन्दुओ के लिए ही नही अपितु सब के लिए अनिवार्य होना बहुत आवश्यक है। विदेशो की ओर से भारत को तोडने का भरपूर प्रयत्न चल रहा है। बाहर से नशे की गोलियो का युवा पीढी मे खुलकर प्रयोग, मद्यपान एव मासाहार का प्रचार, गोहत्या, अश्लील साहित्य, जूए का राज्य की लाट्रियो के रूप मे बहुतायत से प्रचलन, सिनेमा जगत् मे नग्नता हत्या, हिसा और बलात्कार का प्रदर्शन, दहेज हत्याए और दहेज आत्म हत्याए इस समय हिन्दू धर्म और भारत के पतन कारण है। महारुद्र यज्ञ मे इन्ही विषयो पर गम्भीर विचार होना चाहिए था। परन्तु इस तरफ ध्यान न होकर हिन्दू विघटन का अनायास ही प्रचार हो रहा है।

अत आर्य समाज मेरठ शहर का अनुरोध है कि आपस मे टकरा कर शक्ति नष्ट न कर अपितु भारत को ईसाईकरण और इसलामीकरण एव नास्तिकता से बचाने के उपायो पर विचार करे। इसमे आर्य समाज भी हृदय से सहयोग करने का प्रयास करेगा। यदि इन सामयिक बातो की उपेक्षा की गई तो न हिन्दु रहेगा न कोई गुरु और न ही कोई जगद्गुरु। ●

सम्पादकीय

आवश्यकता है बुद्धिवाद की ?

प्रश्न है कि आज की सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिये आवश्यकता है कि बुद्धिवाद की। सच्चाई के गुण दोषों को निर्णय करने का अधिकार-प्राचीन धर्मशास्त्र माने है। परन्तु समय २ पर बुद्धिवादियों ने स्वार्थ को आगे रखकर धर्म के नाम पर पुरातन किताबों को आधार माना है। लेकिन धार्मिक मूल्यों को समझने की आवश्यकता है।

आर्य समाज ने बुद्धि विरुद्ध विषयों को सदा आगे रखा है और उनका तिरस्कार किया है। आर्य जाति को शास्त्रा सिद्धान्तों के नाम पर आज भी ऐसे तथाकथित विद्वान पैदा हो गये हैं जो अन्धश्रद्धा की ओर धकेल रहे हैं।

हम यज्ञों के विरुद्ध नहीं, परन्तु यज्ञों के साथ-साथ यज्ञों के धुए के साथ बौद्धिक ज्योति भी फैलती रहे। पुरानी बीमारी झूठ का आश्रय लेकर ढोंग को पनपा रहे हैं। यदि पुरातन पुस्तकों का आधार-सामाजिक मूल्यों और मानवतावादी दृष्टिकोण के आधार पर होगा। चारों वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ दर्शनों उपनिषदों जिन्हें आज के शंकराचार्य वेद मानना चाहेंगे। अन्ध विश्वास के समर्थन को सीधे तो क्या, प्रकारान्तर से भी तलाशा जा सकेगा।

पुरातन-चार्वाक आदि के समय की बीमारी आज भी प्रबुद्ध शंकराचार्य उन्हीं गलत मान्यताओं के रूप किस वेद को मान रहे हैं। धार्मिक विद्वान जिन्हें वेद मानती है उन चार वेदों में प्राणी मात्र के साथ दया का बर्ताव ही दिखाया है। इस ग्रन्थ परम्परा के विपरीत ही म० बुद्ध ने शखनाद किया था और कहा था कि यदि वेदों में बुद्धिवाद के विपरीत है तो मैं ऐसे वेदों को नहीं मानता लोगों ने कहा था महाराज यह ईश्वर की वाणी है तब बुद्ध ने कहा था कि मैं ऐसे ईश्वर को नहीं मानता हूँ।

अत. स्वामी दयानन्द ने बुद्धि की कसौटी पर कसकर ही धर्मग्रन्थ को मान्यता दी है। हिन्दुत्व की विशेषता है कि वह किसी एक पैगम्बर या मसीहा पौराणिक धर्मग्रन्थ के मानने पर पूजा विधि को प्रश्रय नहीं देता है।

इसके मायने में हिन्दुत्व एक धर्म ही नहीं है। वह क्या है इस पर बड़े २ शास्त्रार्थ चलते रहे हैं। हां वह एक पक्तिवद्ध धर्म नहीं है। इसी लिये समय २ पर आचार्य शंकर से लेकर स्वामी दयानन्द तक अपने अन्दर पैदा होने वाली बुराई से लड़ने के लिए प्रेरित हुए थे। आज के शंकराचार्य उस आदि शंकर के प्रयास को भूल गये हैं और उन अवैदिक मान्यताओं के लिये जूझ रहे हैं जिन्हें वैदिक धर्म की परम्परा में कोई स्थान नहीं है। बुद्धि हीन परम्परायें और सभी मुक्ति दिलाने वाले हमारे दावे बहुत बढ़िया हैं यदि वह सफल होने लग जाये, तो संसार की सारी सरकारें उन याज्ञिकों के चरणों में आ गिरेंगी। धर्म के नाम पर बलिदान, यज्ञों में हिंसा धर्म के नाम पर गलत मान्यतायें देना। यज्ञ के प्रभाव से शत्रु भाग जायेंगे देश सब प्रकार से निर्भय, समृद्ध और समुन्नत होगा। देश में शत्रु गरज रहे है—हम उन्हें झूठे प्रलोभनों से वह बहका रहे हैं—यज्ञ से पशु हिंसा से, शत्रु नाश से क्या सम्बन्ध है। शत्रु यज्ञ धुए से नहीं भागेंगे, वह जायेंगे तोपों के गोलों से।

यज्ञ धर्म कर्म ईश, प्रार्थना आदि तो मानव में उत्साह भरने के लिये है। यज्ञ धर्म कर्म सीधे युद्ध के शस्त्र नहीं हैं। जहां जिसकी उपयोगिता है वहां वह कर्म करना चाहिये।

यह विश्वास वैसे ही है जैसे कि जब सोमनाथ मन्दिर पर गजनवी ने चढ़ाई की। पुजारियों ने क्षत्रियों को भागने व लड़ने से मना कर दिया। कि भगवान शंकर स्वयं महमूद को नष्ट कर देंगे। आज भी मूर्खों की कमी नहीं है। इस विषय पर महर्षि दयानन्द के विचार पढ़ें।

सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास में कहा है कि जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है वैसे ही उसे वर्तना चाहिए। अर्थात् पुरुषार्थ उपरान्त प्रार्थना करनी योग्य है। ऐसी प्रार्थना नहीं करनी चाहिए जैसे दो शत्रु परस्पर में विनाश की प्रार्थना करें तो परमात्मा किसकी प्रार्थना सुनेगा।

प्रार्थना उत्साह वर्धन तो करेगी। परन्तु गलत यज्ञों से परिणाम भी गलत ही होंगे। ऋषि की मान्यता है कि बुद्धि की मान्यता पुरुष ही पुरुषार्थ होना चाहिए। यज्ञ व धर्मों-कर्मों की अपनी सीमा है तप की अपनी मर्यादा है, पुरुषार्थ का अपना क्षेत्र है। वेदों की भी अपनी मान्यताएं है।

व्यर्थ के कार्यों से धन का नाश व समय की बरबादी, पुरुषार्थ का नाश और विवेक के कार्य नष्ट होकर जहालत बढ़ेगी।

आज यज्ञ-धर्म कृत्या के नाम पर विधि विहीनता, अशुद्ध मन्त्रोच्चारण हो रहे हैं इससे धर्म की रक्षा नहीं होगी।

राष्ट्रभृत यज्ञ करना है जो पहले राष्ट्र के विवेकशील व्यक्तियों की रक्षा करके ही शास्त्रों की रक्षा होगी।

आर्य समाज एक जीवित-जागृत समाज है उसका नैतिक दायित्व है कि वह वेद और धर्म की रक्षार्थ अपने को सावधान रखे।

स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़नी चाहिए। शास्त्रार्थ भी होने चाहिए। मलिन बुद्धि निर्मल करके मर्यादाओं का पालन करायेंगे तो हजारों वर्षों की कुण्ठा धीरे-धीरे भागेगी जरूर। समय लगेगा।

सड़ा-गला सनातन धर्म पहले मानवतावादी कोई दृष्टिकोण मानने को नहीं तैयार था। बड़े बड़े पोंगा पन्थी आये दिन वेदों के उद्धरण देकर शास्त्रार्थ करते थे। पर समय चोट में उन गलत अवधारणाओं को उखाड़ फेंका, तथा कुंठित बुद्धियुक्त मानव में नयी चेतना का संचार हुआ। आज वह उतना रूढ़िवादी नहीं है जितना एक सौ वर्ष पूर्व था। यदि वह मूर्खता छोड़ने को तैयार नहीं है तो विवेकशील व्यक्तियों को अपनी ज्ञान के विद्यालयों को भी बन्द करना चाहिए।

समय की मांग है कि वह अपने अनुरूप मानव को स्वयं ही बना लेगा। हां बात तो कुछ बदली है और बदलेगी, पर रस्सी जल गई ऐंठन अभी बाकी है यह भी खुल जायेगी। बुद्धिजीवी अपने संघर्ष में लगा रहे बस।

वैद्य प्रह्लाद दत्त-एक मधुर स्मृति

आस्था के प्रतीक

—पं० यशपाल सुधांशु—

आर्यसमाज के भव्य महल का निर्माण करने में हजारों जाने अनजाने व्यक्तियों का योगदान रहा है जो इस महल की नींव के पत्थर बने पर उनकी शक्ल बाहर दिखाई नहीं पड़ रही। कृतज्ञ समाज उन्हें सदा सिर झुकाकर याद करेगा। वैदिक धर्म के मस्तानों ने कभी मान अपमान, हानि-लाभ, सुख-दुःख, उन्नति अवनति पर ध्यान न देकर अपना सर्वस्व अर्पण किया है आर्यसमाज पर और जनसेवा पर। वे बढे तो धर्म के लिए, वे डटे तो चुनौतियों को ललकारने के लिए, वे मरे तो धर्म की आन-बान और शान के लिए।

ऐसे ही मस्ताने, धर्म के दीवाने थे वैद्य प्रह्लाददत्त। जो आर्य समाज का चलते-फिरते इतिहास थे। जो आर्यसमाज के जग में फैलते ज्ञानरूपी प्रकाश के साक्षी थे। उनके मुख पर सदा सरलता झलकती रहती थी। उन्होंने अपने जीवन का कोई क्षण अकर्मण्य होकर नही बिताया। कर्मठता एवं कर्तव्य परायणता उनके जीवन का अंग थी।

वैद्य प्रह्लाददत्त का जन्म ३ मार्च १८६५ में हरियाणा के रोहतक जिले के जैतपुर ग्राम, तहसील झज्जर में हुआ था। जाट हाई स्कूल रोहतक से मैट्रिक करने के बाद वे गुरुकुल झज्जर से जुड़ गए। इस गुरुकुल की स्थापना में उनका भी उल्लेखनीय योगदान रहा। एक वर्ष तक उन्होने गुरुकुल झज्जर में निःशुल्क अध्यापन कार्य किया। आयुर्वेद भी उन्होने गुरुकुल में ही पढा। वे अपने ग्राम से १५ मील पैदल चलकर गुरुकुल आया करते थे। प्रारम्भ से ही उनका आर्य-समाज मे प्रभाव दिखाई पड़ने लगा था। आर्य प्रतिनिधि सभा के लाहौर अधिवेशन में वे प्रतिनिधि के रूप में रोहतक से भाग लेने गये थे। चिकित्सा के साथ-साथ आर्यसमाज के संगठन, प्रचार, प्रसार में निरतर लगे रहे। दिल्ली में आने के बाद उन्होने बड़े भाई वैद्य मूलचन्द के साथ आर्यसमाज की गतिविधियों मे जोर शोर से भाग लेना प्रारम्भ किया। शीघ्र ही वे अपने कार्यों से पहचाने में आने लगे। उन दिनों स्वामी श्रद्धानन्द जैसे कर्मयोगी हिन्दू संगठन की आवश्यकता महसूस करने लगे थे। दिल्ली में हिन्दू सगठन दृढ होने लगे। अपने समय में वैद्य जी ने राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ की दिल्ली की शाखा की स्थापना की।

हैदराबाद सत्याग्रह के समय आर्यसमाज ने समय की चुनौती का पुरजोर उत्तर दिया। वैद्य जी ने उसमें बढ-चढकर भाग लिया। दयानन्द मठ रोहतक से वे मस्तानों की टोली लेकर गये थे। हिन्दी रक्षा आंदोलन के समय भी उन्होंने अपने दायित्व को निभाया। आर्यसमाज और आर०एस०एस० दोनों जगह वे बढ-चढकर कार्य करते रहे। गांधी हत्याकांड के समय आर०एस०एस० पर प्रतिबन्ध लगा, वैद्य जी प्रतिबन्ध हटाने के लिए मचल उठे। कार्यकारिणी को उदघोषणा से सत्याग्रह घोषित किया गया। उस सत्याग्रह के प्रथम डिक्टेटर वे चांदनी चौक क्षेत्र से बने और हिन्दू समाज के अधिकारों के लिए लड़े। भारत विभाजन के समय विस्थापितों की व्यवस्था, रक्षा सुरक्षा के काम को भी उन्होंने बखूबी निभाया। शरणार्थियों को बसाने का काम उन्हें बड़ा रुचिकर था। वह समय इतिहास की उथल-पुथल का समय था, पाकिस्तान से रोते-बिलखते, लुटे-पिटे नर-नारियों का क्रन्दन असहनीय हो रहा था। वैद्य जी सेवा में लगे रहे। शहर की शान्ति समिति के कुछ खिताब प्राप्त लोग जो राय साहब और राय बहादुर लोग थे, उन्होंने समिति में एस०पी० के सामने वैद्य जी पर दगे भड़काने का आरोप लगया। वैद्य जी बोले, एस०पी० साहब अपने लुटे-पिटे, बरबाद हुए भाइयों की सेवा करना ही यदि दगे भड़काना है तो मैं यह काम जरूर करूंगा, इससे पीछे नहीं हटूंगा। आप मुझे गिरफ्तार करना चाहते हैं तो कृपया कर लीजिये। लोग सुनते ही दंग रह गये। एस०पी० ने कहा, वैद्य जी आप मानव हित का काम कर रहे हैं करते रहिए, गलत बोलने वालों की परवाह मत कीजिये। शुद्धि के कार्यक्रम को आर्यसमाज ने आन्दोलन के रूप में प्रारम्भ किया। वैद्य जी ने उसमें विशेष रुचि दिखाई। ग्राम-ग्राम में वे शुद्धि के लिए भाग-दौड़ करने लगे। इसके साथ विधवा विवाह, विधवा अनाथ रक्षा में अपना सहयोग दिया।

वैद्य जी जब ४१ वर्ष के थे तभी उनकी पत्नी का असामयिक निधन हो गया। वैद्य जी की ६ सन्तानों थी सब किशोर वय की थीं रिश्तेदारों ने जोर दिया विवाह करने के लिए, लेकिन उन्होंने विवाह नहीं किया। अपने बेटों को माता-पिता दोनों का स्नेह देकर योग्य बनाया। चिकित्सा द्वारा रोजी कमाना, सन्तान की देखरेख करना और फिर समाज सेवा करना और ऐसी अवस्था में खतरों से खेलना कितने साहस का कार्य था। ऐसे कार्य विरले जन ही कर सकते हैं।

वैद्य जी को स्वामी श्रद्धानन्द जैसे महामानव के साथ काम करने का, उन्हें करीब से देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। रोलेट एक्ट के विरोध में निकाले गये स्वामी श्रद्धानन्द के उस जलूस में वैद्य जी भी शामिल थे। उन्होंने स्वामी जी की उस बहादुरी को अपनी आंखों से देखा था जब उन्होने अपनी छाती के बटन खोलकर गोरे सिपाहियों से चलाओ गोली, मैंने सीना तान दिया है, यह कहा था।

पं० रामचन्द्र देहलवी की वैद्य जी के ऊपर भारी कृपा रही, उन्हीं के साथ वे दक्षहस्त बनकर चलते थे।

काश्मीर में डा० मुखर्जी के बलिदान के बाद वैद्य जी ने दिल्ली में जलूस निकालकर गिरफ्तारी दी। गोरक्षा सत्याग्रह में वैद्य जी ने जिस प्रकार कार्य किया वह आंदोलन के इतिहास में सदा याद किया जायेगा।

वैद्य जी को महर्षि दयानन्द के मिशन के प्रति इतनी गहरी निष्ठा थी कि उन्होंने सारा जीवन आर्य मर्यादा में ही व्यतीत किया अपने सुपुत्रों को भी उन्होने गुरुकुल में पढ़ने भेजा था, यह उनकी निष्ठा का परिचायक है। १९४२ के अंग्रेजों भारत छोड़ो के गांधी जी के नारे के साथ देश ने स्वाधीनता की अंगड़ाई ली। वैद्य जी भी अपने को कैसे पीछे रख सकते थे, उन्होंने भी विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। स्वदेशी के प्रति आकर्षित वे शुरू से ही थे इसलिए उन्होंने सदा सादा जीवन उच्च विचार को अपनाया।

पं० रामचन्द्र देहलवी के साथ अनेक शास्त्रार्थों में प्रबन्ध व्य-वस्था के लिए वे गये। सदर बाजार डिप्टीगंज में उन्होंने अनेक शास्त्रार्थ आयोजित किये। वैद्य जी दैनिक यज्ञ करते थे। स्वाध्याय सत्सग उन्हें प्रिय था। विद्वानों की सेवा को धर्म समझते थे। विधर्मी हमलों से सुरक्षा के लिए उन्होने अखाड़े तैयार करवाये। वे भारतीय जनसंघ के संस्थापकों में से एक थे। इसीलिए वे प्रथम कमेटी के सदस्य रहे। स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान के बाद उन्हें इतना जोश आया कि दोनों भाई बदला लेने कूद पड़े थे। राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ के कैम्प में निःशुल्क चिकित्सा के लिए जाते थे।

आर्य वीर दल के प्रान्तीय अधिकारी एवं आर्य समाजों के अधिकारी ध्यान दें

समस्त भारत के आर्य वीर दल के प्रांतीय अधिकारियों से निवेदन है कि मार्च मास से जुलाई मास के मध्य में लगने वाले आर्य वीर दल शिविरों की तिथियों आदि का निर्धारण कर केन्द्र से स्वीकृति प्राप्त करें जिससे योग्य शिक्षकों का समुचित प्रबन्ध करना सम्भव हो सके। बिना केन्द्र की स्वीकृति से लगाये गये शिविरों को पंजीकृत नही स्वीकारा जायेगा।

बालदिवाकर हंस, प्रधान संचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

भारत में शराब के बढ़ते कदम

—धर्मेन्द्र सिंह आर्य; एडवोकेट—

आजादी मिलने के बाद हिन्दुस्तान के आम लोगों की शराब पीने की रुझान की सीमा साथ गई है, यहा तक कि जो कमजोर तबका है उसे भी हर दिन शराब चाहिए, चाहे रोटी मिले या न मिले, बच्चे पढने की जगह चाहे भीख मागे या जेब काटे। सरकार की ओर से इनको विकास के लिए जो धन दिया जाता है वह भी अधिकतर शराब मे ही खर्च हो जाता है। इसी तरह चलता रहा तो सैकडा वर्ष तक इनका कल्याण नही हो पायेगा।

मध्यम श्रेणी के लोग जो धार्मिक भावना से शराब नही पीते थे वे लोग भी किसी न किसी बहाने शराब प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से घर या बाहर पीते हैं। पैसे के लिये इनके पास साधन हैं, या व्यापार मे नम्बर दो का पैसा हो।

उच्चवर्ग के लोगो का हाल तो यह है कि (समर्थ को नही दोष गुसाई) शराब पीने के कारण बडे बडे घराने मिट गये। बम्बई के एक्टरो मे से हर वर्ष कितनी बडी-बडी हस्तिया उठती रही हैं। यही हाल सारे हिन्दुस्तान के हर वर्ग की मृत्यु दर है। जबकि उस व्यक्ति को मरने का कोई अधिकार नही।

शराब के कारण

हजारो बच्चो के बाप बिछडे,
व बेग किस्मत से होकर ठुकडे
सुहागनो के सुहाग उजडे
घरो मे ताले पडे हुए है।"

शराब भोजन नही एक लत है जिससे पेट नही भरता, जो पीने वाला को आहिस्ता आहिस्ता अपना गुलाम बनाकर बरबादी की ओर अग्रसर कर मृत्यु के निकट पहुँचा देती है।

शराब पीते ही वह आदमी की बुद्धि एव विवेक पर कब्जा कर मनुष्य की वास्तविक शक्ति से १० गुना, २० गुना बढा देती है। मनुष्य के पास जेब मे पैसा न हो फिर भी वह हजारो की बात करने लगता है। जमीन से उठ सकता नही, चाद पर पहुँचन की बात करने लगता है, हमारा ख्याल है कि हम सबने अपने आसपास ऐसी हरकतें देखी है।

भ्रष्टाचार पर यदा कदा चर्चाए होती रहती है किन्तु शराब पर नही, जो भ्रष्टाचार की जननी है अधिकतर गलत काम करने पर आदमी की अन्तरात्मा उसको धिक्कारती है, इसलिए मनुष्य अपने भुलावे के लिये शराब का सहारा लेता है फिर लत पड गई तो उसका सब कुछ शराब हो जाती है जिससे अज्ञानतावश हजारो परिवार मिटते रहते है।

गाधी जी ने हिन्दुस्तान को अपनी आखो देखा समझा और पाया कि आजादी होन के लिए विदेशी शासन को हटाना जितना जरूरी है उतना ही जरूरी शराब हटाना भी है, इसलिए गाधी जी द्वारा चलाये गये सत्याग्रह आन्दोलनो म शराब की दुकानो पर महिलाओ द्वारा धरना दिलवाया जाता था पुलिस के डडे रोज उन्हे खाने पडते थे।

यही बात आज से पचासो वर्ष पहले गाधी जी ने महसूस कर ली थी। गाधी जी को एक वक्त उनके किसी अनुयायी ने पूछा था, 'बापू आपको हिन्दुस्तान का डिक्टेटर बना दिया जाय तो आप किस काम को करने को प्राथमिकता देग ? गाधी जी ने तुरन्त कहा था, मै सबसे पहले बिना मुआवजा दिए शराब की दुकानो को बन्द कराऊगा।'

भारत सरकार के कर्णधार रोज कहत है कि हम गाधी जी की बतलाई नीतियो पर चल रहे है। सन १९७७ मे जनतापार्टी सरकार मे आयी तो वे लोग भी गाधी जी की समाधि पर कसम खाने गये कि हम तेरी नीतियो पर चलेंगे और फिर जहा के तहा।

गाधी जी के अनुयायी शराब की दुकाने चलाए तो यह हमारी सोच के बाहर है, हमे सोचना पडेगा कि गाधी जी सही थे या हम सही है।

आजादी मिलने पर हम यहा जश्न मना रहे थे और गाधी जी नौवा खली के कत्लेआम के बीच भटक रहे थे वहा जब कुछ शात हुआ तो वहा विस्थापितो की समस्याओ मे उलझे रहे और ३०-१-१९४८ को हमारे बीच से उस दिव्य ज्योति को ईश्वर न वापस बुला लिया।

इतने बडे हिन्दुस्तान मे दूसरा गाधी पैदा हुआ नही जो शराब के दुर्गुणो से क्या-क्या हानिया हो रहा है, सरकार को सोचने के लिए बाध्य करता, हम जैसे हजारो छुटभैया की गाधी जैसी तपस्या नहीं जिसमे इतनी शक्ति होती कि सरकार बाध्य हो।

भारत के आम निवासी किसी-न किसी धर्म से सम्बन्धित है और हर धर्म मे शराब को पीना निषेध माना गया है फिर हम क्यो पीते हैं ? लगता है हमने धर्म के लेवल अपने पर जरूर चिपका रखे हैं किन्तु मन से हमारी अपने धर्म पर कोई आस्था नही अन्यथा शराब एक दिन मे स्वत ही बन्द हो जाती।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

हिन्दू कब तक पिटते रहेंगे ?

—श्री विजेन्द्र शर्मा, ६ हेसवली क्लोस, लोमिंग, पश्चिमी आस्ट्रेलिया—

लम्बे मुसलमानी शासन काल में हर सम्भव उपायों के द्वारा हिन्दू समाज को नष्ट कर देने के प्रयत्न होते रहे और हिन्दू समाज कटता रहा, पिटता रहा और घटता रहा। भारत के कई प्रांतों में हिन्दू घटकर अल्पसंख्या में हो गए और भारत के वे अंग आज भारत से अलग होकर शत्रु बने बैठे हैं। पूर्वी बगाल में किसी समय केवल हिन्दू ही रहते थे परन्तु आज वहां कितने हिन्दू बचे हैं ? पूर्वी बगाल में मुसलमानो का बहुमत हो जाने से पूर्वी पाकिस्तान बना और भारत की सहायता से मुक्त होकर आज आए दिनों अपने मुक्तिदाता भारत को ही आंखे दिखाया करता है। पश्चिम भारत जो आज पाकिस्तान है, वहां भी कभी हिन्दू ही रहते थे और भारत का वह अग आज पाकिस्तान बना हुआ भारत को ही,नष्ट कर देने पर तुला हुआ है। कश्मीर भी कभी हिन्दुओ का देश था जहां हिन्दू ही रहते थे परन्तु वहां भी हिन्दुओ की संख्या घट गई और वे अल्प सख्या में हो गए।

सदियों परतन्त्रता की बेड़ियों में बधे रहने के पश्चात् जब भारत परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्त होकर स्वतन्त्र हुआ तब हिन्दुओं पर और अधिक प्रहार होने लगे और हिन्दू अपने ही देश में दूसरों की आघातों का सामना करने लगे। भारत के सभी प्रांतों में साम्प्रदाय-वादी दगे होते रहे जिनको रोकने में भारत सरकार असफल रही और भारत का शासन करने वाले अनेक नेता अल्पसंख्यकों को तुष्ट करके उनके "वोटों" को प्राप्त करने की लालच में बहुमत की अवज्ञा कर हिन्दुओं पर आक्रमण करने वालो को ही प्रसन्न रखने में अपना हित समझते रहे। इस तुष्टीकरण की नीति के कारण दंगाइयों और भारत विघटनकारी तत्वों को और अधिक हिम्मत और प्रोत्साहन मिल रहा है।

भारत सरकार की दोरंगी चाल हिन्दुओ के लिए ही नहीं पूरे भारत के लिए अति घातक प्रतीत हो रही है। हिन्दुओं के लिए सतति-निग्रह और मुसलमानों को इसकी छूट, हिन्दुओं के लिए कानूनी रूप से एक पत्नी और मुसलमानों को चार-चार पत्नियों को रखने की छूट आदि क्या भारत सरकार की दोरंगी और बेतुकी नीति नहीं है ?

कश्मीर के लिए अलग विधान और अलग झण्डा भारत को कभी भी स्वीकार नही करना चाहिए था। यह कटु सत्य है कि देर-सबेर भविष्य में कश्मीर मुस्लिम बहुमत के कारण भारत से अलग होकर वह पाकिस्तान की गोद में जा बैठेगा और तब हाथ मलने और पछताने से क्या होगा। वर्तमान समय में ही अगर जनमत लिया जाए तब बहुमत पाकिस्तान के पक्ष में मिलेगा। पाकिस्तन से आए हुए मुसलमानों को कश्मीर की नागरिकता देकर कश्मीर में बसाया जाए और भारत विभाजन के समय से कश्मीर में पाकिस्तान से जान बचाकर आने वाले हिन्दुओं को इस सुविधा से वंचित रखना किस बात की ओर सकेत दे रहा है ? निश्चय ही यह भविष्य के सकट की ओर संकेत है। भारत सरकार में क्या इतना भी समर्थ नही है कि वह हिन्दुओं के साथ कश्मीर में न्यायपूर्ण व्यवहार करने के लिए कश्मीर की सरकार पर दबाव डाले ?

जम्मू और लद्दाख को कश्मीर से अलग कर पाकिस्तन से प्राण बचाकर आए हुए हिन्दुओं को बसाना चाहिए जिससे कश्मीर के साथ भारत के ये दो भाग भी भारत से अलग न हो सके अन्यथा कश्मीर तो भारत के हाथ से निकल ही जाएगा और साथ ही जम्मू और लद्दाख को भी लेता जाएगा। कश्मीर में हिन्दुओं पर अत्याचार होते ही रहते हैं। हमारे मन्दिर, पाठशाला आदि जलाए गए, हिन्दूओं पर आक्रमण होते रहते हैं और उनको मारा-पीटा और लूटा गया, मेरठ जला, मलियाना आदि अनेक स्थानों पर क्या हुए, ये सब क्या संकेत दे रहे हैं। इस तरह के हरकतों को हिन्दू कब तक सहन करते रहेंगे। अगर यही स्थिति रही तब अपने ही देश में हिन्दू अल्पमत होकर रह जायेंगे। तब क्या हमारे मन्दिर आदि बचे रह जायेंगे ? हमारे हजारों मन्दिर आज मस्जिद और खण्डहर बने पड़े हैं।

यह समय और परिस्थितियों की मांग है कि सारा हिन्दू समाज संगठित होकर वर्तमान सरकार को सीख दे और उसे हटाकर एक नई सरकार की स्थापना करे जो तुष्टीकरण की नीति को त्यागकर उचित नीति को अपनाए और भारत में हिन्दू समाज की रक्षा कर सके और गैर हिन्दू समाज से कह सके कि अगर हिन्दुओ के देश में रहना है तब हिन्दुओं से मिलकर रहो, उनको मत छेड़ो वरना भारत से निकल कर चले जाओ और उस देश में जाकर बसों जिस देश के प्रति तुम अनुराग रखते हो।

समय और परिस्थितियों की मांग है कि सभी हिन्दू एकमत वाले संगठित होकर अपनी रक्षा के लिए राजनीति में प्रवेश हों और भारत को प्रबल शक्तियुक्त देश के रूप में ससार में रगमच पर खड़ा कर दे। भारत सदैव रामनाम की माला फेरता रहा है कि हम अणु बम तैयार कर लिया हर एक हिन्दू को हिन्दू भावना को लेकर हिन्दू धर्म की भावना वालों का साथ देना चाहिए। इस काम में आर्यसमाज को आगे आना चाहिए। मेरा यह कहना नही है कि सार्वदेशिक सभा को राजनीति में उतर आना चाहिए, परन्तु सार्वदेशिक सभा के निर्देशन के अन्तर्गत अलग से एक राजनीति संगठन की स्थापना हो जो सनातनियों, सिखों, जैनियों आदि से सम्पर्क करके सबको हिन्दू ध्वज के नीचे ला सके और एक ऐसी सरकार की स्थापना कर सके जो हिन्दुओं की रक्षा कर सके। आज भारत को प्रकाशवीर शास्त्री, स्वर्गीय श्यामाप्रसाद मुकर्जी, गुरुगोविन्दसिंह और शिवाजी की जरूरत है।

इस समय सारे देशभर में सिखो को अपना पराया समझाने के लिए गुरुगोविन्दसिंह के बच्चो और सिख गुरुओं के बलिदान दिन मनाने चाहिए।

अगर सगठित होकर वर्तमान सरकार के नेताओं को जो अल्प-संख्यकों को तुष्ट कर उनके वोट की लालच में अपने देश और बहुमत हिन्दू समाज की उपेक्षा और विशाल भारत की उपेक्षा कर रहे हैं, पाठ नही पढ़ाया तब हिन्दू अपने ही देश में अल्पमत में होकर ऐसी खाई में गिर पड़ेंगे जहां से ऊपर निकलना सम्भव नही होगा। शिवसेना, आर्यवीर हिन्दू महासभा आदि को और अधिक बलवान और दृढ़ करके उनकी शाखाओं को सभी प्रांतों में विस्तार करना चाहिए जिससे ईंट का उत्तर पत्थरों से दिया जा सके। हिन्दुओं का कल्याण है।

योग शिक्षा और समाज

—आचार्य अशर्फीलाल शास्त्री एम. ए.—

योग की शिक्षा किसी व्यक्ति विशेष के लिए नही, किसी वर्ग विशेष या किसी देश विशेष के लिए नही अपितु मनुष्य मात्र के लिए उपयोगी है। चाहे वह किसी वर्ण का, किसी देश का निवासी हो, किसी सम्प्रदाय को मानने वाला हो। योग की शिक्षा समाज मे प्रत्येक नागरिक स्त्री पुरुष को अत्यन्त लाभकारी है। योग शिक्षा के अभाव मे मनुष्य उसी प्रकार निरकुश रहता है जैसे घोडा बिना लगाम के, ऊट बिना नकेल के हाथी बिना अकुश के, मोटर आदि वाहन बिना ब्रेक के रहते है।

योग की शिक्षा जितनी प्राचीन काल मे उपयोगी थी उतनी अब भी उपयोगी है और सभवत उससे भी कहीं अधिक आज उपयोगी सिद्ध होगी यदि उसका कुछ भी अश जीवन मे उतार लिया जाय और उसका अभ्यास किया जाये। जीवन व्यवहार म आते आते गन्दा हो जाता है। राग द्वेष रूपी तरगो मे बहता-बहना जल की तरह प्रदूषण से युक्त हो जाना है। जैसे बहते जल को प्रदूषण से बचाना आवश्यक है वैसे ही भिन्न भिन्न प्रकार के व्यवहारो मे प्रवाहित जीवन को भी स्वच्छ सदाचार मय बनाते रहना आवश्यक है।

प्रकृति के तीन गुणो से निर्मित यह शरीर स्वभावत सासारिक वस्तुओ की ओर खिचते है क्याकि प्राकृतिक पदार्थों के पोषण से यह शरीर पुष्ट होता है और उन्ही प्राकृतिक पदार्थो के अभाव स यह शरीर ह्रास को भी प्राप्त होता है। इसलिए यह स्वभावत आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी शारीरिक उन्नति के लिए और मानसिक सन्तुष्टि के लिए प्राकृतिक पदार्थों का सचय करता रहे और उनका बुद्धिमानी से उपयोग करता रहे।

सोचना यह है कि योग की शिक्षा समाज के लिए क्या आवश्यक है ? क्या आज शिक्षित समाज जो आचरण कर रहा है उसम योग शिक्षा का कुछ अश है। इन दोनो प्रश्नो के उत्तर हमे समाज के लिए खोजना है।

आज से कुछ समय पूर्व अर्थात् स्वतन्त्रता प्राप्ति स पहले जो देश के अधिकाश व्यक्तियो मे सदाचार और सयम का जीवन देखने और सुनने मे आ रहा था उसका पचास प्रतिशत भी आज समय मे सदाचार और सयम व्यावहारिक जीवन व्यक्तियो मे देखने मे नही मिल रहा है। उसका कारण वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बढती हुई आकर्षक वस्तुओ के अधिकाधिक उपभोग मे तीव्र लालसाए ही है और साथ ही राजनैतिक महत्त्वाकाक्षाये भी जिसको योग शिक्षा के परिप्रेक्ष्य मे रजोगुण का मनुष्य पर प्रभाव बढता हुआ कहा जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति आज उसी प्रकार से अपने को भौतिकवाद की ओर बढाता जा रहा है जैसे पतगे रात्रि मे अग्नि की चमक को देखकर अग्नि की ओर भागने लगते हैं और अपने जीवन का दु खद अन्त कर लेते है।

यहा यदि कोई व्यक्ति ऐसा कहने लगे कि आप विज्ञान के आविष्कार के प्रति हेय भावना को जन्म दे रहे हैं और वैज्ञानिको द्वारा आविष्कार किये गये साधनो का उपभोग करने मे उचित दृष्टिकोण नही अपना रहे है तो उनके उत्तर मे मैं यह कहना चाहता हूँ कि सम्पूर्ण सासारिक वस्तुए चाहे वे प्रकृति एव परमपिता के द्वारा बनाई जा रही है। अथवा वे प्रकृति और वैज्ञानिको के द्वारा आविष्कृत की जा रही हो उनका सयम पूर्ण ढग से उपयोग किया जाना ही उचित है। देखने मे आता है लोग वस्तुओ का सही उपयोग नही करते हैं। बल्कि वस्तुओ के उपभोग मे प्रवृत्त हो जाते है। यहा उपभोग एव उपयोग मे यह अन्तर है कि उपभोग करने मे किसी भी वस्तु के प्रति तल्लीनता परिलक्षित होती है और जीवन के अन्तिम क्षणो तक भी उसके उस वस्तु के प्रति त्याग की भावना जागृत नही होती है इस कारण से वह भोग की अपेक्षा योग की ओर अग्रसर नही होता। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि पदार्थो को भोगता हुआ उनमे सदैव लगाव रखने की भावना को भी त्यागते रहना चाहिए। जो व्यक्ति ऐसा करता है उसे ऐसा समझना चाहिए कि वह वस्तुओ का उपयोग कर रहा है उपभोग नही।

आज लोग सभाओ मे भाषण देते हैं, रेलो मे बैठकर चर्चाए करते हैं। होटलो में बैठकर विचार करते हैं। बडे बडे राजनैतिक लोग रैलिया आयोजित करते है। पत्रकारो के प्रश्नो का उत्तर देते हैं। गाधी के आदर्शों की चर्चाए करते हैं। पञ्चशील एव गुटनिरपेक्ष होने की बात करते हैं। एक सम्प्रदायवादी दूसरे सम्प्रदायवादी की आलोचना करता है किन्तु यह सब कुछ होते हुए भी अपने अन्दर भोग प्रवृत्ति की लालसा पूर्ति हेतु बडे से बडे झूठ बोलने की त्याग भावना को स्थान नही द सकते।

महात्मा गाधी के आदर्शों को यदि सामने रख लें स्वामी दयानन्द के उपदेशो को ही स्वीकार करलें,स्वामी विवेकानन्दजी की विचारसरणि अपना लें यदि अशोक सम्राट की विचारधारा अन्दर बहाले तो ही इस देश के नागरिक व शासक गण अपने मे सन्तोष का अनुभव कर सकेंग तथा दूसरे का हित कर सकेंगे।

योग का अर्थ होता है आत्मसयम, इन्द्रिय चचलता को सीमित करना, अल्प प्रतिष्ठा एव थोडे सुख साधनो मे भी सन्तोष की भावना और दूसरो का अहित न करता हुआ अपना हित करने की कुशलता। इसी को योग कर्मसुकौशलम्' गीता मे श्रीकृष्ण जी महाराज ने अर्जुन स कहा था। सन्त कबीर ने भी इसी प्रकार के भाव को व्यक्त करते हुए कहा था—

> कबिरा आप ठगाइए और ठगिए कोय।
> आप ठगे सुख उपजै और ठगे दुख होय ॥

कबीर ने इस पद्य मे योग शिक्षा के ऊचे स्तर की बात कही है कि दूसरे को ठगना नही चाहिए। इसका कारण है कि दूसरे की वञ्चना करने से अपनी आत्मा दूषित होती है बुरे सस्कार आत्मा पर पडने आरम्भ हो जाते हैं। इसके विपरीत यदि स्वय को कोई दूसरा ठग लेता है तो हमारी जड एव नश्वर वस्तुए ही तो गई हैं जो दुबारा प्राप्त की जा सकती है आत्मा तो शुद्ध बनी रही। उस पर बुरा सस्कार नही पडा यह बहुत बडा लाभ है। योग शिक्षा मे आत्म शुद्धि को बहुत बडी उपलब्धि माना गया है। आत्मन प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत्। अपनी आत्मा द्वारा न चाहे हुए व्यवहार को दूसरे के साथ नही करना चाहिए क्योकि उससे दूसरो को कष्ट होगा और अपनी आत्मा भी द्वेष की अग्नि म सन्तप्त होगी। जिससे समाज मे तनाव बढेगा। जिससे अशान्ति तथा क्रोध का वातावरण तैयार होगा। प्राय वस्तुओ मे मिलावट करना तेल, घृत, बीज आदि सभी आवश्यक समाजोपयोगी पदार्थों मे मिलावट करना कुछ लोगो का धर्म बन गया है। यदि लोगो मे भोग के साथ साथ सयम सन्तोष की सद्भावना जाग जाये तो अल्प वेतन भोगी तथा देहातो मे रहने वाले किसानो का भी भला हो सकता है।

समाज म एक वर्ग अध्यापको का एक वर्ग डाक्टरो का एक वर्ग वकीलो का एक वर्ग इन्जीनियरो का एक सार्वजनिक निर्माण विभाग का एक ठेकेदारो का तथा एक वर्ग साधु सन्तो का भी पृथक पृथक है। ये सभी वर्ग अपने अपने स्थान पर कार्य करते हुए यदि मात्र भोगवाद का ध्यान न रखकर सयम सन्तोष त्याग भाव सदाचार आदि का थोडा-थोडा भी ध्यान रखे तो भ्रष्टाचार का उन्मूलन अपने आप मे धीरे-धीरे हो सकता है। यही आत्म सयम सन्तोष त्याग-भाव और सदाचार इस देश मे स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले विद्यमान था। उस समय अन्य समस्याए थी किन्तु भोगवाद रूपी मर्कट आज जैसा उस समय नहीं था और भ्रष्टाचार का नाम यत्र-तत्र सुना जाता था। प्रत्येक व्यक्ति मे घुसा हुआ नही था। किन्तु खेद है कि भौतिकवाद का प्रवाह तथा झझावात ऐसा समाज मे प्रवाहित है कि सभी बहे जा रहे है और सभी इसी मे उडे जा रहे हैं।

हमारे भारतीय पूर्वज मनीषी विद्वान ऋषि मुनि बहुत दूरदर्शी थे। उन्होने समाज की इन विषम अधोगामी तिरस्कारणी परिस्थितियो का पहले से ही अनुभव कर लिया था। इसलिए योगदर्शन जैसे अप्रतिम ग्रन्थ की रचना की और श्रीकृष्ण जी महाराज द्वारा किया गया प्रवचन वेदव्यास जी द्वारा श्लोको की रचना मे आबद्ध किया गया ग्रन्थ गीता को आज कौन नही जानता है।

शराब के बढ़ते कदम

(पृष्ठ ५ का शेष)

यह सही है कि शराब से प्रान्तीय सरकारो को कई-कई करोडो रुपयो का लाभ होता है पर यह भी सही है कि इस लाभ से कई गुना ज्यादा शराब से हानि है। जैसे—लड़ाई-झगड़े, गुण्डागर्दी, बलात्कार, मुकदमेबाजी भ्रष्टाचार एव शराब पीकर मोटर ड्राइवरो द्वारा एक्सीडेंट जिसमे न मालूम कितने करोडो रुपये की कीमत के इकलौते बेटे मरते रहते हैं, शराब के खिलाफ यहा तक उतर आये कि जहरीली शराब से थोक के हिसाब से मृत्यु रोज कहीं न कहीं होती रहती है इस पर दो राय नही है कि सारे भ्रष्टाचार की मा शराब ही है, इसको जितना जल्दी हिन्दुस्तान से विदा कर दिया जाय तो मुल्क का विकास होगा।

शराब सम्बन्धित कारोबार मे जो हमारे स्वजन लगे हुए है उनकी समस्या कुछ हजारो लोगो की है जबकि शराब से बीसियो करोड देशवासी दुष्प्रभाव से ग्रस्त है।

अग्रेज विदेशी शक्ति थी जो हर प्रकार हमारा शोषण कर रही थी इसलिए उन्हे यहा से हटाया गया। इसी तरह शराब भी हमारा व हमारे बच्चो का शोषण कर रही है उसका हटाना अनिवार्य हो गया। आजादी की लडाई मे हम निहत्थे लोग अग्रेजो को यहा से भगा सकते हैं तो शराब भगाना सम्भव नही हो सकता जो पीने वाले हैं हमारे ही स्वजन हैं, इनमे काफी लोग ऐसे निकल आयेगे जो देश-राष्ट्र जनहित मे स्वेच्छा से पीना छोड देंगे जैसे उनके करोडा भाई आज भी नही पीते है।

यह भी अपनी जगह सही है कि आज की हालत मे चाहते पर भी सरकार अकेले इसका उन्मूलन नही कर सकती, इसके लिए सामाजिक सगठन धार्मिक सगठन व बुद्धिजीवि वर्ग एक जुट होकर शराब बन्दी का सकल्प लेकर काम करे तो शराब बन्द करना असमव नही अन्यथा जो आज इस शराब की बुराई से बचे हुए हैं किसको पता कि उनके बच्चे बचे रह सकेंगे।

९० प्रतिशत लोग मन से चाहते हैं कि हमारे बच्चा को शराब पीने की लत न पडे किन्तु बच्चे बचना भी चाहे तो यार दोस्त नही बचने देते इस पर गम्भीरता से हर मा बाप का सोचना पडेगा अन्यथा क्या होगा अन्तरआत्मा काप जाती है।

ऐसी हालत मे भारत सरकार एव आम बुद्धिजीविया व सामाजिक सगठन व धार्मिक सगठना का दायित्व बनता है कि इस विषय को अनदेखा करना अपने एव भावी पीढी को धोखा देना होगा।

शराब पीन स जो कोहराम रोज गली-मौहल्लो-सडको, घरो-गावो मे मचता है उसे उन लोगो को भी झेलना पडता है जो शराब पीना तो दूर छूते भी नही है जिसस उनके मूलभूत अधिकारो का हनन होता है जिसकी रक्षा की जिम्मेदारी सरकारी तन्त्र की है।

गाधी जी की प्रथम एव अन्तिम इच्छा को देखते हुए शराब बन्दी पर सकारात्मक उद्देश्यपूर्ण व्यवस्था जैसे शिक्षा नीति पर आम बहस कराकर नीति तय की गई है ऐस ही कोई ठोस व्यवस्था शराब बन्दी पर करा दी जाय अन्यथा हिन्दुस्तान को कोई भी बाहर की शक्ति नही मार सकती हम मरगे तो शराब ही उसका कारण होगी।

आओ ! मां के वीर सपूतो !!

आज हमारी स्वतन्त्रता पर, सकट के घन छाए हैं।
आज राष्ट्र की अखण्डता पर, भी बादल घिर आए हैं॥
उग्रवाद के चगुल में फस, गुरुओ का जलता पजाब।
हुआ कलकित आतको से, रावी सतलुज का मृदु आब॥

बन बैठा भाई ही भाई, का है निर्मम हत्यारा।
भारत मां की पुण्य अस्मिता को पुत्रो ने ही ललकारा॥
भगत,बोस,बिस्मिल,सावरकर का शोणित है व्यर्थ हो रहा।
गोबिन्दसिंह के बलिदानो का उल्टा है अब अर्थ हो रहा॥

निर्दोषों को हत्या करना, आज बना है युग का धर्म।
अनाचार, हिंसा, पशुता ही, मान रहे हैं अपना कर्म॥
उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम जलता भारत चारों ओर।
अराजकता का ही साम्राज्य छाया भारत में है घोर॥

नही सुरक्षित रहा हमारा, जीवन तथा सुपावन देश।
अपनो से ही होता क्षत है, ऋषियो का प्यारा स्वदेश॥
है विद्वेष बढा साम्प्रदायिक, लडते हैं अब भाई-भाई।
आपस मे लड रहे निरन्तर, हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई॥

ऐसी स्थिति मे अनाथ सी बिलख रही है भारत माता।
मानवता चीत्कार कर रही, त्राण मागती स्वतन्त्रता॥
आओ! मा के वीर सपूतो! अपना भेद-भाव सब त्यागे।
पुरखो से प्रेरणा प्राप्त कर, राष्ट्र एकता का वर मांगे॥

अमर शहीदो के पद चिह्नो के हम बने सतत अनुरागी।
आपस के सब दुखो-सुखो मे, बने सदा हम सब सहभागी॥
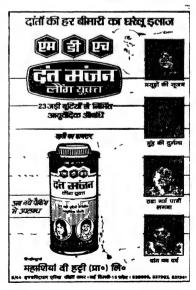
—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

अमर शहीद, वीर श्रेष्ठ महान राष्ट्र भक्त—

सरदार भगतसिंह

(कवि रत्न जगदीश प्रसाद एरन, नीमच)

वह खून कहो किस मतलब का जिसमें उबाल का नाम नहीं।
वह खून कहो किस मतलब का आ सके देश के काम नहीं॥
वह खून कहो किस काम का है जिसमें जीवन न रवानी है।
जो स्वतन्त्र हो बह न सके वह खून नहीं है पानी है॥

शहीद राष्ट्र के आधार होते हैं। इन्हीं के बल पर राष्ट्र उठता और बनता है। जो जाति-जाति अथवा राष्ट्र अपने शहीदों का सम्मान करते हैं वे अजेय होते हैं। और शहीदों को भुला देने वालों को धरती भी भूला देती है।

"जननी जने तो भक्त जन क दाता क शूर।"

राष्ट्र को स्वतन्त्र कराने में जिन शहीदों ने सर पर कफन बांधे उनमें सरदार भगतसिंह का नाम अग्रणी है। आपका जन्म सन् १९०७ में लायलपुर के एक देशभक्त परिवार में हुआ था। आपके पिताजी का नाम सरदार किशनसिंह जी था। जिस दिन आपका जन्म हुआ उसी दिन आपके चाचा श्री स्वर्णसिंह व अजीतसिंह देश-भक्ति के आरोप में जेल से छूटकर आये थे। इसीलिए आपका नाम भगता अर्थात् भाग्यशाली रखा गया था।

आपकी शिक्षा लाहौर के डी०ए०वी० कालेज में हुई। पूरा परिवार कट्टर आर्य समाजी होने से क्रान्तिकारी विचार धारा का था। डी०ए०वी० कालेज में आपका परिचय सुखदेव, भगवती चरण व यशपाल आदि से हुआ। उस समय इस कालेज के प्राध्यापक लाला लाजपतराय व भाई परमानन्द जैसे महान् राष्ट्र भक्त थे। फिर भला कौन स्वाभिमानी नवयुवक क्रान्ति की दीक्षा लेने से बच सकता है। मैट्रिक की परीक्षा पास करके आपने डी०ए०वी० कालेज छोड़ दिया तथा लाला लाजपतराय के नेशनल कालेज में भर्ती हो गये। यहां उन्होंने श्री जयचन्द जी विद्यालंकार की सरक्षता में एक क्रान्तिकारी संगठन बनाया, किन्तु विद्यालंकार जी के खुलकर सामने न आने के कारण सरदार जी उनसे अलग हो गये। सन् १९२३ में माता-पिता ने आपका विवाह करना चाहा। किन्तु भला जिस वीर को भारत माता के बन्धन पाशों व करुण क्रन्दन का स्वर सुनाई दे रहा हो वह रगरेलियों व शहनाइयों से क्या रीझने वाला था। आप घर से भाग खड़े हुए।

यहां से चलकर आप दिल्ली पहुंचे तथा "अर्जुन" में पत्रकार के रूप में कार्य करने लगे व कुछ दिन बाद आप कानपुर चले गये। वहां आप गणेश शंकर विद्यार्थी के "प्रताप पत्र" में गुप्त नाम "बलवन्त" के नाम से कार्य करते रहे। उन दिनों उत्तर प्रदेश में 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' नाम का एक संगठन सक्रिय था। सन् १९२३ में ही विद्यार्थी जी ने आपके संगठन के संस्थापक श्री योगेश चटर्जी से मिला दिया। इस संस्था में आप क्रान्तिकारी पर्चे बांटने के अतिरिक्त कुछ न कर सके।

पिताजी की भीषण अस्वस्थाता का तार पाकर आप लाहौर चले गये। तथा बाद में आपने उपनाम जसवन्तसिंह के नाम से "कीर्ति" नामक पत्र का सम्पादन किया आपने एक "नौजवान भारत" नामक संस्था भी बनाई। इसके बाद आप पुनः लाहौर चले गये तथा श्री सुखदेव से मिलकर क्रान्तिकारी संगठन में शामिल हो गये। काकोरी काण्ड के पश्चात् सन् १९२६ में श्री चन्द्रशेखर आजाद भी इनसे आ मिले। यहां से आपके क्रान्तिकारी कार्य पूरी शक्ति से प्रारम्भ हुए।

अक्तूबर १९२६ में ही दशहरा मैदान में लोगों के बीच एक बम फटा। जिसमें "नव जवान भारत सभा" के कई सदस्य बन्दी बनाये गये। निर्दोष सिद्ध होने पर सरदार भगतसिंह छूट गये।

९ सितम्बर सन् १९२८ को दिल्ली में संगठन की कार्यकारिणी समिति की गुप्त बैठक हुई। इसमें इस संगठन का नया नाम "हिन्दुस्तान रिब्लिकन आर्मी" रखा गया बंगाल से बम बनाने वाले कुछ उत्साही नवयुवकों को लाकर कलकत्ता, आगरा सहारनपुर व लाहौर में बम बनाने के कारखाने स्थापित किए गये।

जनरल साण्डर्स ने जब लाला लाजपतराय पर निर्मम लाठी प्रहार किया तो आपने उसे मौत के घाट उतारने का प्रण किया। किन्तु जयगोपाल की गलत शिनाख्ती के कारण मि० स्काट तथा हेड कान्सटेबल चाननसिंह इनके शिकार बने। पुलिस के तगड़े पहरे में से आप मूंछ डाढ़ी कटवा कर यूरोपियन साहब के रूप में राजगुरु इनके अर्दली के रूप में श्री आजाद तीर्थ यात्रा में पण्डे के वेश में लाहौर से बाहर निकल गये। अंग्रेज सरकार हाथ मलती रह गई।

सरदार भगतसिंह का कथन था कि "अंग्रेज सरकार के बहरे कान खोलने के लिए धड़ाके की आवश्यकता है तथा इसके लिए कुरबानी देनी होगी। आपने एक महान् योजना बनाई। ८ अप्रैल १९२८ को जब असेम्बली सभा हो रही थी आपने व बटुकेश्वरदत्त ने वहां बम फेंके तथा "इन्कलाब जिन्दाबाद" व साम्राज्य वाद का नाश हो" के नारे लगाये। आप चाहते तो भगदड़ में वहां से भाग जाते किन्तु आपने क्रान्ति की मशाल को प्रज्ज्वलित करने हेतु अपने आपको पुलिस के सुपुर्द कर दिया। इन्हीं दिनों लाहौर बम काण्ड के अन्य सदस्य भी गिरफ्तार कर लिए गए। आप पर पहले असेम्बली बम कांड का मुकदमा चला तथा बाद में लाहौर बम कांड और हत्या कांड के मुकदमे चले। इसके बाद ये क्रमशः मियांवाली तथा लाहौर जेल में के जाये गये।

अन्त में ७ अक्तूबर १९३० को फैसला सुनाया गया तथा सरदार भगतसिंह, राजगुरु व सुखदेव को फांसी व अन्य देशभक्तों को ३ साल से लेकर आजन्म कारावास तक की सजा दी गई। जनता के प्रबल विरोध करने पर भी २२ मार्च १९३१ को आपको व आपके साथियों को सेन्ट्रल जेल लाहौर में फांसी दे दी गई व लाशों को गुप्त रूप से अधजली कर फिरोजपुर के निकट रावी नदी में बहा दिया गया।

फिरंगी सरकार ने उस महान् शहीद के अन्तिम चिह्न मिटाने की लाख कोशिश की किन्तु हमारे दिलो दिमाग में "शहीद आजम" भगतसिंह आज भी जिन्दा है। ऐसे वीर पुत्र को जन्म देने वाली माता को पंजाब की राज्य सरकार ने "पंजाब माता" की उपाधि से विभूषित किया है। पर नहीं, वे पंजाब माता नहीं "राष्ट्र माता" है।

आर्यजगत् के समाचार

शुद्धि संस्कार

ग्राम रजपुरी में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में शुद्धि

दिनाक ७-२-८८ को ग्राम रजपुरी मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे यज्ञ हवन किया गया, यज्ञ हवन के पश्चात ईसाई उराव लोगो ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया। ये संस्कार अभिमन्यु शास्त्री के द्वारा किया गया, और स्वामी सेवानन्द सरस्वती हिन्दू शुद्धि संरक्षणी समिति हरियाणा के महमन्त्री के प्रयत्नो द्वारा किया गया।

आर्य समाज बहेड़ी में शुद्धि

—दिनाक २१-१-८८ को गणतन्त्र दिवस के पुनीत पर्व पर 'आर्य समाज' बहेड़ी (बरेली) के सौजन्य से श्री दीनमुहम्मद ने अपनी पूर्ण आस्था से इस्लाम धर्म त्याग कर हिन्दू धर्म स्वीकार किया। जिसका नाम पूर्व निर्धारण के अनुसार चैतन्य गिरि रखा गया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। जिनमे श्री कुन्दनलाल धींगरा का योगदान विशेष सराहनीय रहा।

एक सौ पांच ईसाइयों ने स्वेच्छा से वैदिक हिन्दू धर्म स्वीकार किया

दिनाक १३-२-८८ भारतीय शुद्धि सभाके उपदेशक श्री अमृतलाल नागर के अथक प्रयासो सर्व प्रयत्नो के फलस्वरूप ग्राम भटौली जिला बदायू के एक सौ पाच ईसाई भाइयो ने स्वेच्छा से वैदिक हिन्दू धर्म स्वीकार किया शुद्धि सस्कार सभा उपदेशक श्री अमृतलाल नागर ने स्वय ही सम्पन्न कराया। शुद्धि सस्कार पर श्री शिवचरणलाल अध्यक्ष भारतीय बाल्मीक रामायण सभा (रजि० शिक्षा शाखा बदायूं) व श्री बालकराम (पूर्व शुद्धि खुदा) कोषाध्यक्ष अखिल भारतीय सफाई मजदूर (रजि०) नगर शाखा दातागज भी उपस्थित थे। अस्सी वर्ष के श्री रुसई मसीह (कथक चईलाल) ने बताया कि उनकी शादी देश की आजादी से पूर्व ग्राम बरखिन खतौआ जिला पीलीभीत से हुई थी तथा जो निकाह के साथ सम्पन्न हुई थी उसमे हमारे पादरी व वहा के पादरी ने संयुक्त रूप से सम्पन्न करायी थी।

एटा और बदायूं के गांवों में ५०० ईसाई वैदिक धर्म में

ग्राम सरायनवाब जिला एटा मे शुद्धि सभा के प्रचार के फलस्वरूप १३५ पुरुष, स्त्री, बच्चो ने वैदिक हिन्दू धर्म स्वीकार किया। ग्राम बीनापुरा कला के १५० ईसाईयो ने ईसाई मत छोड़ने की शपथ ली। मदारपुर जिला बदायूं मे ५६ ईसाई भाइयो को वैदिक धर्म मे दीक्षित कराया गया।

ग्राम गढी खानपुर जि० बदायूं मे १२५ ईसाई स्त्री पुरुष और बच्चो ने वैदिक धर्म स्वीकार किया। प० दीपचन्द शर्मा, श्री अमृतलाल नागर व श्री हरिओम वानप्रस्थ के प्रयत्न और सहयोग से ये शुद्धिया हुई।

७४६ ईसाई वैदिक धर्म में इतवारीलाल द्वारा दीक्षित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से श्री इतवारीलाल ने २०-२-८८ को ग्राम भोपाल गढी जिला अलीगढ मे एक शुद्धि की योजना बनाई, जिसके फलस्वरूप ६१ ईसाई भाइयो ने स्वच्छा से वैदिक धर्म की दीक्षा ली शुद्धि सस्कार इतवारीलाल ने सम्पन्न कराया।

दूसरा गाव नाई नगला तारहपुर (जिला अलीगढ मे २१-२-८८ को शुद्धि सस्कार किया जिसमे ८५ ईसाइयो ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म की दीक्षा ली और वायदा किया कि अब हम पादरियो को कोई चन्दा नही देंगे और अपने मुर्दे जलायेंगे।

आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज, केसरगज मे आर्य समाज का ११३वां स्थापना दिवस दयानन्द कालेज, अजमेर के प्राचार्य श्री डा० दिनेशसिंह जी की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक मनाया गया, जिसमें प्रो० दत्तात्रेय जी आर्य, डा० कृष्णपालसिंह जी, प्रो० बाबूराम जी शास्त्री तथा कर्नाटक के स्वतन्त्रता सेनानी श्री नरसिंहाराव जी ने आर्य समाज के पुनर्गठन, गौरवपूर्ण इतिहास शतवर्षीय सेवा कार्य आदि पर प्रकाश डालते हुए देश की वर्तमान विषम परिस्थिति में महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की शिक्षाओ की महत्ती आवश्यकता प्रतिपादित की।

—रासासिंह, मन्त्री
आर्य समाज, अजमेर

हावड़ा आर्य समाज का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हावड़ा का वार्षिकोत्सव दिनाक २४-२-८८ से २८-२-८८ तक सम्पन्न हुआ। इस उत्सव मे स्वामी जगदीश्वरानन्द जी एवं भजनोपदेशक दिनेश कुमार महेश कुमार पधारे थे। स्थानीय विद्वानो का भी प्रवचन हुआ। विशेष कार्य सूची मे वेद गोष्ठी का आयोजन एव राष्ट्र रक्षा सम्मेलन थे। वेद गोष्ठी मे कलकत्ता के सस्कृत महाविद्यालय के प्रिंसिपल एव अन्य विद्वानो ने भाग लिया था। —आनन्द आर्य, मन्त्री

नेपाल में आर्य समाज

शुक्रराज शास्त्री का बलिदान

—प्रकाशचन्द सुवेदी

धर्मवीर आचार्य शुक्रराज शास्त्री के पिता श्री माधव राव जोशी ने विक्रम सवत १९५५ ई० मे पाटन (नेपाल) मे आर्य समाज की स्थापना की थी उन्होने आर्य समाज का नेपाल मे व्यापक प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य अपने लडको को गुरुकुल महाविद्यालय सिकन्दराबाद (उ० प्र०) मे भेज दिया।

शुक्रराज शास्त्री ने गुरुकुल की शिक्षा प्राप्त कर नेपाल मे आर्यसमाज का प्रचार प्रसार करना चाहा। जगह-जगह प्रवचन का कार्यक्रम करना शुरू कर दिया एक दिन काठमाडा नगर के सबसे बडे चौक (इन्द्रचौक) मे श्री शास्त्री जी ने बालविवाह, वृद्ध विवाह एव बहुविवाह का खण्डन करते हुए नेपाल देश की सारी कुरीतिया, कुप्रथाओ, पशु पक्षियो और कन्याओ पर अत्याचारो, पशुबलि, मास भक्षण आदि सभी बुराइया का वर्णन किया तब ही नेपाल के तत्कालीन क्रूर राणाशाही ने शुक्रराज शास्त्री को गिरफ्तार करने एव फासी की सजा तक सुना दी। इस प्रकार शुक्रराज शास्त्री माघ १ गत अर्थात् २१ जनवरी को धर्मवीर आचार्य शुक्रराज शास्त्री अमर शहीद हो गए।

शुक्रराज शास्त्री ने फासी के फन्दे को अपने हाथो मे बाधते हुए ऊचे स्वर मे कहा था कि तुम मुझे बिना अपराध के फासी की सजा दे रहे हो इस कलक के पाप को लाखो मन साबुन और हजारो समुद्र के जल से भी नही धुलेगा, तुम्हारा शीघ्र अन्त होगा।

शुक्रराज शास्त्री के कथन मुताबिक नेपाल मे सन १९५० ई० मे राणाशाही का अन्त हो गया।

शुक्रराज शास्त्री के स्मृति मे काठमाण्डा मे शहीद शुक्र माध्यमिक विद्यालय, ललितपुर मे शहीद शुक्र मार्ग और कुमन्डलि मे शुक्रराज स्मारक और शहीद नगर मे शुक्रराज शास्त्री की प्रतिमा अब भी बनी हुई है।

शुक्रराज शास्त्री को जहा पर फासी दी गयी थी, उस पेड एव जगह को सुरक्षित रूप मे सजाकर शहीद स्मारक बना हुआ है।

शुक्रराज जी के पश्चात राणाशाही का अन्त होते ही नेपाल मे पुन आर्य समाज का अभ्युदय होने लगा, नेपाल के कई विद्यार्थी गुरुकुल एटा, हरिद्वार, सिकन्दराबाद, हाथरस आदि जगहा पर जाकर, अध्ययन शुरू कर दिया। फल स्वरूप आज काठमाडो, बियरनगर, वीरगज, इरहरी, उर्वशा, रगेली, झापा, सुरुगा, बाहुरेडागी आदि जगहा पर विस्तारपूर्वक आर्यसमाज ने पैर गाडा हुआ है। झापा, उर्वशा और विराटनगर मे प्रतिवर्ष आर्यसमाज का उत्सव मनाया जाता है हजारो की सख्या म लोग उपस्थित होते है वैसे अब नेपाल सरकार भी आर्य समाज से पूर्ण सहमत हो गयी है विगत दो वर्ष पूर्व विराटनगर के वीरेन्द्र समागृह मे एक विशाल आर्य महा सम्मेलन का आयोजन हुआ था जिसमे नेपाल मे कई भूतपूर्व प्रधान मन्त्री अञ्चलाधीश, सी डी ओ. सहित सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी की भी उपस्थिति थी।

अभिनन्दन समारोह

दिनाक २८-२ ८८ रविवार को चम्पारण जिला आर्य समाज की अन्तरग की आवश्यक बैठक आर्य समाज बेतिया मे जिला उप प्रधान श्री जगतनारायण आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। जिसमे आचार्य रामानन्द शास्त्री जी का अभिनन्दन समारोह १० अप्रैल ८८ को सम्पन्न कराने का निश्चय किया गया साथ ही उन्हे एक अभिनन्दन पुष्पाजलि (ग्रन्थ) भी भेट किया जायेगा।

—मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ का ८२वां वृहदधिवेशन दि० ३१ जनवरी १९८८ अकोला में निर्वाचित पदाधिकारी व अंतरंग सदस्यों की सूची

श्री रमेश चन्द्र श्रीवास्तव
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र०

श्री सत्यवीर शास्त्री
मन्त्री, आ प्र सभा, म०

पदाधिकारी—

प्रधान श्री रमेशचन्द्र श्री वास्तव, क्वार्टर-४ ए, सडक-१, सैक्टर-८, भिलाई नगर (म प्र)

उप प्रधान सर्वश्री (१) प्रो० इन्द्रदेव सिंह आर्य, १८८ शिवाजी नगर, सीमेंट रोड, नागपुर-१०, (२) रामचन्द्र आर्य, भारत आइस फैक्टरी खण्डवा (म प्र), (३) गणेश प्रसाद माहा, शक्ति प्रेस, रीवा (म प्र), (४) मोहनलाल गुप्त, एम आई जी ३७८, पदम नागपुर, दुर्ग (म प्र.)

मन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री, अब विद्यालय के निकट, अमरावती (महा)

उपमन्त्री सर्वश्री (१) अशोक पवार, मु पो पथरोट, जि अमरावती (महा) (२) विजयसिह गायकवाड, गायकवाड कुटी नरमदा पथ, जबलपुर (म प्र) (३) श्रीपाल सिह आर्य, ३७८/सी, सैक्टर-१ बालकोनगर, कोरबा (बिलासपुर) म प्र, (४) सुशील वर्मा पूमू की टाल, रीवा (म प्र) (५) सगतराम आर्य, २२३-अ, वेद भवन, जरीपटका, नागपुर (महाराष्ट्र)

कोषाध्यक्ष श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, शाति भवन, मुकुन्दराज लेन, बाकर रोड, महल नागपुर

पुस्तकाध्यक्ष श्री नारायण आर्य, ७६६ ओमनगर सक्करदरा चौक, नागपुर

अन्तरग सदस्य—

(१) श्रीमती कौशल्यादेवी मिधवानी, जोरापारा, रायपुर (म प्र) (२) श्री विश्वम्भर प्रसाद शर्मा, शाति सदन १३७ मालवीय नगर भोपाल (म प्र) (३) श्री साहिबराम बतरा सुभाष मिल्स, निकट पुलिस लाइन, बिलासपुर (म प्र) (४) श्री देवदत्त शर्मा, आर्यन इलैक्ट्रीकल्स, मोर्शी रोड, अमरावती (५) श्री कैलाशचन्द्र पालीवाल, अकुश पेपर, हरीगज, खण्डवा (म प्र) (६) श्री शातिकुमार जाधव गोरक्षण सस्थान, अकोला (महाराष्ट्र) (७) श्री यज्ञेन्द्र आर्य वजरीया मोहल्ला इतवारा होशगाबाद (म० प्र०) (८) श्री नथमल वर्मा तिलक राड, गवलीपुरा, बाबाजी मठ के पास अकोला (महा) (९) श्री वृन्दावन राय, झामी फाटक वजरीया बीना जिला-सागर (म प्र) (१०) श्री राजाराम तिवारी, छोटा तालाब छिन्दवाडा (म० प्र०) (११) श्री नारायणसहाय खण्डेलवाल टाउन हाल के पीछे, खण्डवा (म०प्र०) (१२) श्री खेमचन्द सिसौदिया, १ वो सडक ३२, सैक्टर-६, भिलाईनगर (म० प्र०) (१३) श्रीमती स्नेहलता चन्देल, टैगोर कालोनी, खण्डवा (म० प्र०)

आन्तरिक लेखा परीक्षक—

श्री लक्ष्मीनारायण चौरे, हरीगज, खण्डवा (म० प्र०)

—मन्त्री

शम्भुदयाल दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद का ३१वां वार्षिक यज्ञ-महोत्सव

गाजियाबाद। शम्भुदयाल दयानन्द वैदिक आश्रम का यज्ञ महोत्सव मिति वशाख कृष्णा ११ मगलवार स वैशाख शुक्ला १ रविवार २०४५ तदनुसार १२ अप्रैल से १७ अप्रैल १९८८ तक आश्रम के प्रागण मे समारोह पूवक सम्पन्न होगा।

इस शुभ अवसर पर मवश्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती स्वामी मनीश्वरानन्दजी त्रिवेदतीर्थ स्वामी यज्ञानन्दजी सरस्वता स्वामी च द्रदेवजी सरस्वती एव प० सत्यानन्द जा वेदवागीश के वेदापदेश तथा श्र सत्यदेव जी स्नातक आदि सगातज्ञो के मनोहर भजन सुनन को मिलगे।

यज्ञ के ब्रह्मा स तस्वभाव श्री प० सत्यानन्दजा वेदवागीश अलवर हाग।

कृपया आप अपने परिवार एव इष्ट मित्रा सहित इस आध्यात्मिक सत्सग म पधार कर धम लाभ उठाव तथा यज्ञ महोत्सव म तन मन धन से पूण सहयोग प्रदान कर पुण्य के भागी बन।

—स्वामा प्रमानन्द सरस्वती आचाय

आर्य समाज मन्दिर के निर्माण हेतु अपील

आर्य समाज रलवे काल ना समस्तीपुर एक नवीन सस्था है। जिसका निर्माण गत २९-७-८४ स ही हुआ है। तब से यहा पर निरन्तर साप्ताहिक यज्ञ एव आय पर्वों का उत्साह पूवक ढग म मनाया जा रहा है। हमार सदस्या का सख्या अभी थाडी है जिसस हमे मन्दिर बनाने म आर्थिक सकट है। आयसमाज का प्रचार कम है। इसलिए हम चाहत है। एक आयसमाज भवन हो जहापर बैठकर यज्ञ स सग एव धार्मिक काय सम्पन्न होसके। मेरी आय जगत दानी महानुभावा से विनम्र निवेदन है कि हमारी आय समाज क निर्माण म धन का सहयाग प्रदान कर। ५००) रुपय देने वाले दानी महानुवो क नाम पत्थर पर अकित किय जायग। अपनी धन राशि भज।

—अजय कुमार आय

दिनाक २६ एव २७ फर० ... नगर जिला समस्तीपुर (बिहार) के श्री शत्रुघ्न ... स स्थान पर दो दिवसीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इस ... आय जगत के निम्न विद्वाना क सारगर्भित प्रवचन हुए। ध्रुवनारायण आय (सिवान जिला) प० रामशखा जी आय (रोसडा) हरेकृष्ण जी आय (डकारी) नन्दकिशोरसिंह जी आय शिवाजी नगर आदि विद्वानो न भाग लिया।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

पाकिस्तान के बारूद भंडार में भीषण धमाकों से १०० मरे और एक हजार घायल

राकेट और गोलों के टुकड़ों की इस्लामाबाद और पिंडी पर वर्षा, काहुटा परमाणु केन्द्र पर हमले की अफवाह

इस्लामाबाद १० अप्रैल इस्लामाबाद के बाहरी क्षेत्र में गोला बारूद के एक गोदाम में आज हुए विस्फोटों में कम से कम १०० व्यक्ति मर गये और लगभग १००० व्यक्ति घायल हुये मरने वालों में भूतपूर्व कैबिनेट मन्त्री खाकान अब्बासी भी है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। सरकारी समाचार समिति एसोसिएटेड प्रेस आफ पाकिस्तान ने कहा खाकान अब्बासी आजकल सांसद थे।

प्रत्यदर्शियों के अनुसार रावलपिंडी तथा इस्लामाबाद में युद्ध स्थल जैसा दृश्य प्रदर्शित कर रहे थे। बमों व राकेटो से घटना के निकट स्थित कई बहुमंजिला इमारतें ध्वस्त हो गई। कान फाड़ डालने वाले धमाको से लोग घबरा कर अपने घरो से निकल आए तथा उतावले होकर इधर उधर भागने लगे बताया गया है कि राकेटों बमों व गोलों के टुकड़े उड उड कर १५ कि०मी० दूरी तक जाकर गिरे, जिससे कई व्यक्तियों की मृत्यु हो गई।

प्राप्त समाचार के अनुसार पाकिस्तान सरकार ने तीन दिवसीय राष्ट्रीय शोक की घोषणा की है। रक्षामन्त्री रानामसूद ने गोला बारूद के इस भंडार मे हुई इस घटना को केवल एक दुर्घटना बताया है। उन्होंने इस बात पर टिप्पणी नही की कि रावलपिण्डी के इतनी घनी आबादी वाले क्षेत्र में गोला बारूद का डिपो क्यो स्थापित किया गया था। सरकारी तौर पर मृतको की ठीक संख्या नही बताई गई है। सैनिक सूत्रो ने बताया है कि जिस समय यह दुर्घटना हुई उस समय इस क्षेत्र मे लगभग ५०० व्यक्ति मौजूद थे बताया गया है कि इस डिपो मे कुछ सैनिको के परिवार भी रहते हैं।

अधिकारियो के अनुसार पहला विस्फोट पाकिस्तानी समयानुसार प्रात नौ बजकर ५५ मिनट पर हुआ और शीघ्र ही आग की १५० मीटर ऊंची दीवार प्रकट हो गई। कुछ ही मिनट बाद राजधानी के ऊपर राकेट दनदनाते दिखाई दिये और गोले धडाधड फटने लगे।

रक्षा मन्त्रालय के अधिकारियों के हवाले से समाचार एजंसी ने जानकारी दी है कि ज्यादातर राकेट राजधानी इस्लामाबाद के दक्षिणी और पश्चिमी क्षेत्र मे गिरे जहां अधिकतर सरकारी कर्मचारी रहते है।

विस्फोटों के धमाके लगभग १५ मिनट तक सुनाई पडते रहे और लोग अपने बच्चो को स्कूलो से घर लाने के लिये घर बार छोडकर स्कूलो की तरफ दौड पड़े।

इस्लामाबाद के इर्द गिर्द पुलिस वालो को तैनात कर दिया गया ताकि रावलपिंडी के लोग घर नही आयें। डिपो के इर्द गिर्द के क्षेत्र को घेर लिया। डिपो पांच घण्टे तक जलता रहा।

राष्ट्रपति जिया उल हक ने गोला बारूद के एक डिपो मे आज प्रात हुए विस्फोटों के कारण जान माल की हानि पर गहरा दुख तथा मृतकों के परिवारो के प्रति सहानुभूति प्रकट की है। राष्ट्रपति जिया उल हक इन दिनो कुवैत मे हैं जहां वह इस्लामी सम्मेलन में भाग लेने गये हुए है। सरकारी समाचार एजंसी ए पी पी ने कहा कि राष्ट्रपति ने एक वक्तव्य जारी करके पीडित परिवारो की भरपूर मदद करने के लिये कहा है।

आर्यसमाज सामाजिक कुरीतियां मिटाने के लिये कार्य करे: स्वामी आनन्दबोध

नई दिल्ली १० अप्रैल। आर्यसमाज को सती प्रथा एवं दहेज जैसी कुरीतियो के उन्मूलन के लिए आगे बढकर कार्य करना होगा और राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को भी सुदृढ करने के लिए उद्यत रहना होगा। ये विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्यसमाज किरण गार्डन (मटियाला रोड) की स्थापना दिवस पर आयोजित आर्य महासम्मेलन में व्यक्त किये।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने उत्तम सन्तान के निर्माण पर बल दिया। सभामन्त्री श्री सूर्यदेव ने आर्य समाज को राष्ट्र का सजग प्रहरी बताया। इस अवसर पर श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, डा [illegible] शास्त्री श्री ओमप्रकाश आर्य व श्रीमती कृष्णा [illegible] ने भी जीवन मे आर्यत्व लाने का आह्वान किया।

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाज का भावी कार्यक्रम

आर्य समाज के भावी कार्यक्रम विषयक, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित उपसमिति की कई बैठको के पश्चात समिति के संयोजक आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने जो रिपोर्ट सार्वदेशिक सभा को प्रस्तुत की थी, उस पर १६ सितम्बर १६८७ को सार्वदेशिक सभा के अन्तरग सदस्यो, प्रतिनिधि सभाओ के प्रधान और मन्त्रियो तथा समिति के संयोजक तथा सदस्यो एव अन्य विद्वानों के सम्मेलन मे विचारार्थ रखा गया और सम्मेलन द्वारा स्वीकृत निर्णयो पर सार्वदेशिक सभा की २० सितम्बर ८७ को बैठक मे विचार करके भावी कार्यक्रम समिति के केवल चार बिन्दुओ पर अन्तरग सभा ने अपना निर्णय निम्न प्रकार दिया .

बिन्दु (क) आर्य समाज के किसी भी सदस्य व अधिकारी द्वारा जाति सूचक शब्दो का अपने नाम के आगे प्रयोग न करने के प्रस्ताव पर निर्णय हुआ कि सार्वदेशिक सभा पहले से ही इस विषय मे उचित प्रेरणा करती रही है।

बिन्दु (ख) आर्य समाज मे सदस्यो की दो श्रेणिया होती हैं। समासद तथा आर्य सभासद्। साधारण समासदो को उपरोक्त सिद्धान्त सम्बन्धी नियमो के अन्तर्गत प्रवेश दिया जाय। आर्य सभासद बन जाने के उपरान्त वे समाज द्वारा सचालित कार्यक्रमो मे से किसी एक या अधिक मे नियमित रूप से कार्य करते रहने पर 'सक्रिय सदस्य' समझे जायेगे।

इस बिन्दु पर गम्भीरता से विचार विमर्श के उपरान्त निश्चय हुआ कि आर्य समाज के नियम सशक्त और सार्वभौम है। शब्दो की व्याख्या का प्रश्न नही है, बल्कि उन्हे जीवन म धारण करने और आचरण करने की बात आवश्यक है। इस लिए आर्य समाज के नियमो मे वर्णित सदाचार के नियमो का पूर्णत. पालन करने वाला को ही २ वर्ष पश्चात आर्य समासद घोषित किया जाय और उस समय उनसे एक शपथ पत्र भरवाया जाय जिसका प्रारूप निम्न प्रकार हो .

प्रतिज्ञा पत्र (आर्य सभासद्)

मैं ईश्वर के प्रतीक स्वरूप किसी मूर्ति पूजा या जड वस्तु अथवा व्यक्ति की पूजा नही करूगा ना ही मृतक श्राद्ध या स्थान विशेष को तीर्थ मानूगा। तथा किसी अवैदिक या पौराणिक विधि विधान को नही मानूगा। अर्थात्—वेद विरुद्ध आचरण नही करूगा। मैं जन्मगत जाति-पाति या छुआ-छूत को नहीं मानूगा। मैं किसी भी सम्प्रदाय विशेष या जाति सगठन का सदस्य या अधिकारी नही बनूगा तथा आर्य समाज के नियमोपनियो मे वर्णित सदाचार के नियमो का पूर्णत. पालन करूगा।

यदि मैं इसके विपरीत आचरण करू तो मेरी आर्य सभासदी समाप्त कर दी जावे।

ह० आर्य समासद्

नोट—प्रतिज्ञापत्र का यह प्रारूप आर्य समाज के प्रवेशपत्र (फार्म) के दूसरी ओर मुद्रित किया जावे अथवा अलग से प्रकाशित करा लिया जावे)।

बिन्दु (ग). आर्य समाज के पदाधिकारी सक्रिय सदस्यो मे से ही निर्वाचित हो सकेगे।

निश्चय हुआ कि सक्रिय सदस्यता का कोई औचित्य नही है, आर्य सभासद् बनते समय प्रतिज्ञा-पत्र द्वारा इसकी पूर्ति हो जाती है।

बिन्दु (घ): किसी राजनैतिक दल का पदाधिकारी तथा उसका सासद या विधान सभा मे निर्वाचित व्यक्ति आर्य समाज, आर्य प्रतिनिधि सभा या सार्वदेशिक सभा का पदाधिकारी नही हो सकेगा। इस विषय पर गम्भीरता से विचारान्तर निम्न निर्णय हुआ .

"आर्य समाज के किसी भी सदस्य को जो किसी राजनीतिक पार्टी का निर्वाचित प्रतिनिधि अथवा पदाधिकारी हो तो आर्य समाज का पदाधिकारी बनने पर यदि वह राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्य समाज अथवा सम्बन्धित सस्था को प्रभावित करना चाहता हो, या कर रहा हो तो ऐसे पदाधिकारी को पद से अन्तरग सभा द्वारा पृथक कर दिया जावे।"

नोट—आर्य समाज के भावी कार्यक्रम विषयक सार्वदेशिक सभा की अन्तरग सभा २०-९-८७ द्वारा स्वीकृत तथा २४-१-८८ की अन्तरग द्वारा पुष्ट उपरोक्त निर्णय तत्काल समूचे आर्यजगत पर लागू समझे जाएंगे।

आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान

हा-हा ! दिवालयमगुर्वर वैद्यनाथाः

[आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री विद्यावारिधिः दर्शनवाचस्पतिः]

आम्नाय मर्म सुविदश्च विपश्चिदग्रा, शास्त्रार्थ सगरधरास्थिर सन्मनीषा ।
भूमि विहाय सहसा सुररञ्जनाय, हा-हा ! दिवालयमगुर्वर वैद्यनाथा. ॥१॥
आजीवन निगमसाधुमत व वाणा, धर्मार्यसमद इतोऽपि प्रिया. प्रधाना ।
नाके प्रदातुमपि धर्म निधेर्व्यवस्थाम, आकारिता किमु बृहस्पतिना सुरेभ्य. ॥२॥
विद्याविलामपरिभूपितमानमाम्त, शास्त्रार्थ-चिन्तन-पवित्र मतिप्रसारा ।
गीर्वाणवागनुपम प्रतिभा घनाढया, हाऽस्मान्विहाय सहसाऽभरसद्म याता ॥३॥
धैर्य यथाकथमपि श्रयना मनीषिन् श्रद्धाऽभिभूतहृदयोऽपि च बन्धु वर्गा ।
किन्तु त्वदीयविरहे क्षणमप्यमह्यम्, हा-हा ! भविष्यति पुनस्तव धर्मपत्न्या ॥४॥
याम् जातु नो व्यरहयत् क्षणमद्वितीयाम्, त्यक्त्वा तु निष्ठुरतयाऽप्यनुगामिनी स्वाम्
एकाकिनी परवशाम् व्यथितामकाले, हा प्रस्थितोऽकरुण नो पुनरागमाय ॥५॥
अह नु मन्ये यतन, स्वजीवने, समन्वतिष्ठतु भवान् पर बुध ! ।
विधेर्नियोगा दयमन्तकोऽदय असूनहार्षी दति निष्ठुरोरसा ॥६॥
अरे यम त्व व्रतधर्म कारिणो, निरागसो देव दयानिधेरपि ।
अकाल एवापजहार तानसून्, क्व ते कृपा क्रूर कुकर्मवर्त्मन ॥७॥
सुकर्म सौन्दर्य-सुवोध सङ्कृति, सुकीर्तिता पल्लविता यशोलता ।
न रोचते तेऽह्यययाय दुर्मते !, समक्षमागत्य समुत्तर क्षणम् ॥८॥
इतीव तीक्ष्णाऽमितकर्कश—समुत्थितप्रश्न तति प्रशङ्कित ।
अगोचरोऽसून् निभृत प्रमूर्च्छितात् कलेवरात् हर्तुमचेष्टतान्तक. ॥९॥
यमेष्वहिंसा प्रथम हि गण्यते, तथापि हिंसा प्रथम त्वया वृता ।
अयोगवृत्तेश्च कृत कुयोगत, यमेति नामाऽविदुषा तवान्तक ! ॥१०॥
भवत्प्रयातेऽग्रज ! निर्जरालयम्, प्रणष्टमेवाऽस्ति सदावलम्बनम् ।
व्यलीयत क्वापि मतिर्विवेचिका, निरावलम्बा ह्यभवत् सरस्वती ॥११॥
सभा गरिम्णा खलु सार्वदेशिकी, विपश्चिताऽभूत् भवता प्रमण्डिता ।
बृहत् समस्या समुपस्थितौ मुदा, सदा समाधानमकारि सक्षमम् ॥१२॥
कदाचिदेव विषमस्थिताविमे, आर्या स्मरिष्यन्ति वरेण्यसन्निधिम् ।
तदा तदा तेऽगतिका निरन्तरम्, समर्चयिष्यन्ति भवन्तम श्रुभि ॥१३॥
मदीयवाणी हृदयस्य वेदनाम्, पुरो निधातु भवता यदोद्यता ।
तदा गल गद्गदमाशुरुध्यते, वियोगवह्निप्रशमीक्षवारिभि ॥१४॥
भवच्चिताग्निर्जनयेत्समुष्णताम्, आर्यप्रसुप्तासु शिरासु सन्ततम् ।
भवेम चानृण्यमित जनाः समे, वय दयानन्द मुने रसशयम् ॥१५॥

अर्थ

१—वेदो के मर्मवेत्ता, विद्वानो के अग्रणी, शास्त्रार्थ समर भूमि के स्थिर, मनस्वी, आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री इस भूमि को छोडकर देवरञ्जन सहसा दिवगत हो गये।

२—वे आजीवन वेद के उत्तम मत का उपदेश करते रहे, धर्मार्य सभा के प्रधान रहकर, धर्म विषयक व्यवस्थाये देते रहे, क्या आज द्यौलोक मे देवताओ के लिये धर्मविधि की व्यवस्था देने के लिये स्वर्ग रूप बृहस्पति ने उन्हे बुला लिया है। (शेष पृष्ठ १५ पर)

काव्य सुधा

जागृहि बन्धो !

जागृहि बन्धो, मृशमस्वाप्सी अद्य भवागतसञ्ज ।
अद्य-विधेय कुरुते सम्प्रति योऽसौ भवति प्रज्ञ ॥

पञ्चनदादुत्तिष्ठति धूम सरयावन्तस्ताप ।
स्थान नाऽस्ति किमपि तद् यत्र प्रशमो भवतु सुखाय ॥

क्वचित् पतति रक्त पातस्य क्वचिन्नित्यमाशका ।
पदे-पदे प्रच्छन्न-दानवैर्हन्त ? निर्मिता लका ॥

कम्पमान मासन माध्यक्ष शासनमास्या शेषम् ।
भग्न चाप शिव इव सत्तेशो जनना सहते क्लेशम् ॥

क्षितिज पारतोऽसित घन पटली व्युच्छ्रयते बहुबारम् ।
को वेत्तु शक्नोति कुत्र सा मुञ्चेद् वज्रा सारम् ॥

तमसाद् वाञ्छति योऽत्र प्रकाश किम सौ नास्ति विमूढ ।
दुराशयोऽस्मिन् दुर्णयनीतो वेधो मृश निगूढ ॥

सत्ताया शाखाभि पृक्तास्तिमिरोपासन रतय ।
निशा स्वागमन निपुणा ह्येते सदा सन्ति दुर्मतय ॥

कोशकार एतान् दिवान्धत किन्नु वदिष्यति भिन्नम् ।
योगदान मेषा हि विधास्यति सहतमपि विच्छिन्नम् ॥

तरिर्नाविका यस्याश्चैते कथमेष्यति सा पारम् ।
यतिष्यते प्रतिभङ्ग स्तस्या कर्तुं त्वरित निगारम् ॥

विधिर्हन्त न स्थिति मनुदिवस नयत्य धाज्य क्रूर ।
वक्षसि सहता यस्तु भुशुण्डि नाऽसौ सम्प्रति शूर ॥

उत्तिष्ठत शूरा: धरणी कि सत्य वन्ध्या जाता ।
किं साहस-सकल्प धृतीना मम्प्रति सन्ध्याऽऽयातो ॥

मानवताया स्तत सर्वतो हाहाकार शृणु हे ।
सुतिमका लोकार्थमात्मन स्वाहाकार चिनु हे ॥

कथयोच्चैर्हें, यावज्जीवत्येकोऽप्यार्य समाजो ।
तावद् भूयो देशखण्डने कृत कार्यो न नमाजी ॥

देशभक्ति शून्याना दशे मान्य कथमधिकार ।
समरे जय तानद्य परन्तप श्वस्ते यत्नोऽसार ॥

मत्वाऽऽत्मान देश सद्य कुरु तद् रक्षोद्योगम् ।
देशद्विषा दुरभि सन्धि मो ? विदधीथा खलु मोघम् ॥

हिन्दी काव्यानुवाद

जागो भाई !

जागो भाई, बहुत सो चुके, अब तो होश सभालो,
आज करो, अब करो कार्य को कल के लिए न टालो ।

धुआ पञ्चनद से उठता है सरयू सुलग रही है,
अब कौन-सा महानाश का डर अब जहा नही है ।

कही खून गिरता गिरने की कही नित्य आशका,
कदम कदम पर छिपे दानवो ने रचदी है लका ।

डोल रहा सिहासन, शासन कहने भर को बाकी,
खण्डित धनुष लिए फिरता है सत्ता प्रमुख पिनाकी ।

क्षितिज पार से उभर रहे है बादल काले-काले,
किसे विदित कब कौन कहा से वज्रपात कर डाले ।

बोकर 'तमस' उजाले की जो फसल काटना चाहे,
वज्रमूर्ख वह उस जैसा ही वह जो उसे सराहे ।

सत्ता की टहनी से चिपके ये तम के शैदाई,
उत्सुक रहते सदा रात की करने को पहुनाई ।

कोशकार इनको दिवान्ध के सिवा नाम क्या देगा,
योगदान इनका विनाश से भिन्न काम क्या देगा ।

नाविक हो जिसके ऐसे वह नौका कहा चलेगी,
उसे लहर हर एक लीलने को प्रतिपल मचलेगी ।

पहले से हर रोज देश की दशा बिगडती जाती,
सगीनो को झेल सके जो नही आज वह छाती ।

उठो सूरमाओ, धरती क्या सचमुच बाझ हुई है,
साहस सत्सकल्प शौर्य की या फिर साझ हुई है ।

मानवता का व्याप्त चतुर्दिक हाहाकार सुनो हे,
एक मात्र पथ जनहित निज का स्वाहाकार चुनो हे ।

देश तुम्हारा खुल कर कह दो जब तक आर्यसमाजी,
जीवित तब तक कर न सकेगे खण्डित इसे नमाजी ।

देशभक्ति जिसमे न, देश पर झूठा उनका दावा,
जूझो उनसे आज, अन्यथा बाकी फिर पछतावा ।

तुम्ही देश हो यही सोचकर जागो आगे आओ,
दुरभिसन्धि स देशद्रोहिया की निज देश बचाओ ।

—धर्मवीर शास्त्री
बी १/५१ पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६३

गीत जरा हम गाएं

छाया था पाखण्ड सघनतम चारो तरफ अधेरा,
छल, प्रपच ने बना लिया था घर-घर अपना डेरा ।

सत्य घिर गया था असत्य के तम से, नही सवेरा,
सिसक रहे थे वेद, दिलो मे भ्रम का बना बसेरा ।

झूठ, फरेब मचा था भीषण प्रबल अन्ध-विश्वास,
लुप्त हो रहा था भारत की सस्कृति का इतिहास ।

डोल रही थी धरती 'भुभ' की सबको सबसे डर था,
धर्म-महन्तो का अबोध जन पर घनघोर कहर था ।

मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारो, गिरजो मे लगते मेले,
ठगते थे ले सदा चढौने क्रूर पुजारी, चेले ।

उगा एक दिनकर ऐसे मे चीर जगत के तम को,
आया दयानन्द मेटने भू के सबल भरम को ।

आओ इस दिनकर के आगे, सब मिल शीश झुकाए,
सत्य साधना के तन-मन से गीत जरा हम गाएं ।

—डा० हीरानन्द सिंह हीरा'
व्याख्याता अर्थशास्त्र गोड्डा महाविद्यालय
जिला गोड्डा (पिन कोड--८१४१३४)

आभार व्यक्त

मेरे पूज्य पति माननीय आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री के आकस्मिक निधन पर कई महानुभावो के पत्र, तार तथा फोन द्वारा मुझे सवेदनाए प्राप्त हुई है और कई सुहृद बन्धु स्वय मेरे पास भी आए है । मैं आप सब मित्रो, सहयोगियो तथा धर्म प्रेमियो का हार्दिक आभार प्रकट करती हू कि इस महान दु:खद घडी मे आपने मुझे साहस और हिम्मत बधाई है ।

कई महानुभावो ने सार्वदेशिक सभा के माध्यम से अपनी सवेदना प्रकट की है, मैं उन सबका भी आभार प्रकट करती हू। भविष्य में भी आपका सहयोग मुझ अबला को साहस व मार्गदर्शन देता रहेगा, ऐसी कामना करती हू ।

--उर्मिला शास्त्री धर्मपत्नी स्व० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री
वर्तमान पता द्वारा अजयकुमार शास्त्री श्रीकृष्ण माईस फैक्टरी तपोवन रोड पचवटी, नासिक (महाराष्ट्र)

उत्तरी भारत का सामाजिक न्यायालय : सर्वखाप पंचायत

ओमप्रकाश पत्रकार, फरमाणा, (सोनीपत)

आज देश बडी विकट, विषम तथा विकराल परिस्थितियो से गुजर रहा है। आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक ढाचे का शक्ति सन्तुलन बिगड ही नहीं गया है बल्कि ढह गया है। चौतरफा अशाति, निराशा और अनिश्चितता का वातावरण व्याप्त है। कर्तव्यनिष्ठा, न्याय प्रियता और सत्यता का दायरा सिकुड कर बिल्कुल तग होता जा रहा है। धार्मिक आस्थाए और सामाजिक मान्यताए प्राय लोप हो चली हैं। सदविचार और सदाचार नामक शब्द अब केवल शब्द कोष के पन्नो से ही पढे जा सकते हैं, आचरण मे इनका कही नामोनिशान दिखाई नही देता। लोग गर्व और गौरव से जीने की बजाए हीन, हेय और हैरानकुन परिस्थिति में दिन काट रहे हैं। सामाजिक मर्यादाए और न्याय की शृखलाए टूट ही नही रही है बल्कि चूर चूर हो गयी हैं। शराबखोरी तथा अन्य नशो से मदहोश मस्तिष्को से व्यभिचार पनप रहा है। दुराचार, अशान्ति और अराजकता दनदना रही है तथा न्याय व सामाजिक मान्यताए असमजस मे फसकर दोराहे पर खडी है। समाज में सामाजिक मौलिकताओ और मान्यताओ की गिरावट से प्रत्येक अमीर व गरीब, हर खास व आम और यहा तक कि हर तपके का प्रत्येक व्यक्ति दुखी है। घूस खोरी शराब खोरी व्यभिचार से पनपा भ्रष्टाचार, दहेज प्रथा मुकदमेबाजी कत्लोगारत ससुराल से छोडी लडकियों के कारनामों ने समाज को जजर कर दिया है। सामाजिक कुरीतियो, रूढीवाद और धर्मान्धता के विरुद्ध सरकार समय समय पर कानून तो बनाती है परन्तु वह अमल व प्रयोग मे न लाया जा कर सरकारी दस्तावेज के तौर पर न्यायालयो की अलमारियो में बन्द होकर रह जाता है। दहेज प्रथा, सती प्रथा बाल विवाह, तलाक, अस्पृशता आदि अनेक सरकारी कानूनो की सरे आम धज्जिया तथा खिल्लिया उड रही हैं। सरकारी शासन व प्रशासन ने सामाजिक आस्थाओ से बिल्कुल मुह मोड लिया है।

सरकार की सामाजिक समस्याओं के प्रति उदासीनता और उपेक्षावृति को देखते हुए सामाजिक सगठनो की अनिवार्यता एवम उपयोगिता को हम नजर अन्दाज नही कर सकते। इतिहास साक्षी है कि सामाजिक सगठनो और समाज सुधारको ने समय समय पर समाज से कुरीति, भूखमरी, अन्याय और अभाव को मिटाने के लिए बेजोड भूमिका निभाई है। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, आर्थिक विषमता, सामाजिक कुरीति से उथलपुथल और ऊबड खाबड कुमार्ग को समतल बनाने, सरकार द्वारा बिगाडी गई या बिगडी हुई परिस्थिति में सुधार लाकर सरकार का कार्यभार हल्का करने मे, हमारे देश के सामाजिक सगठन और समाज सुधारक, हमेशा अग्रणीय रहे हैं। सामाजिक सगठनो और समाज सुधारको ने जिस दौर को चाहा उस दौर को बदल डाला और वे जिस दौर को चाहेगे उसी दौर को बदल डालगे। मानवीय मूल्यो का आकलन केवल सामाजिक तौर तरीको से ही सम्भव हो सकता है। सरकारी अदालतो मे कई-कई सालो तक हजारो रुपये और समय बरबाद करने पर भी न्याय नहीं मिलता क्योंकि अदालतो के न्याय का आधार गवाहो की गवाही पर आधारित है। अदालतो मे जजो की अपनी सूझबूझ, निष्पक्ष राय, मानवीय एव नैतिक आधार, धर्म, कर्म तथा रहम आदि का नगण्य स्थान है। वे वास्तविकता को जानते हुए भी, झूठी सच्ची गवाही के बिना किसी मुकदमे का फैसला नही दे सकते। अदालतें देशकाल और सामाजिक वातावरण की कोई परवाह नहीं करती। उन्हें तो केवल अपने घिसे-पिटे कायदे कानूनों की रोशनी में निर्णय देने पर विवश होना पडता है। इस प्रकार के फैसले न्याय सगत, तर्क सगत और निष्पक्ष न होकर सामाजिक अन्याय को बढावा देने में मददगार साबित होते हैं। गवाह न मिलने या अपूर्ण गवाही के कारण चोर डाकू, कातिल साफ बच जाते हैं और फिर वे समाज मे बेखटके बेधडक होकर भ्रष्ट और घिनौने अत्याचार करते है तथा भ्रष्ट तौर तरीको की परिपाटी डालकर भ्रष्टाचार को पनपाने तथा बढावा देने व अन्यो को प्रोत्साहित करने की भूमिका अदा करते हैं। इस प्रकार सरकारी कानून और सरकारी अदालतो द्वारा उनके कर्तव्य की औपचारिक प्रक्रिया मात्र से जाने या अजाने ढग से, सामाजिक भ्रष्टाचार दूर करने या बढावा देने का देखा या अनदेखा खेल खेला जा रहा है। जब कि दूसरी ओर मानवीय आधारो पर सामाजिक सगठन, पचायत, समाज सेवक व समाज सुधारको की समाज में एक निराली, अनोखी और अदभूत पठ हैं, एक अलग भूमिका है समाज की किसी भी समस्या पर यदि हम मानवीय तौर तरीको से विचार कर, सदभावना और भाई-चारे का सन्देश दे, विशुद्ध पचायती ढग अपनाए, इन्सान के मर्म और उसकी आत्मा छूए, धार्मिक कार्यकलापो का सहारा ले तो निश्चित तौर पर हमे समस्या का समाधान खोजने तथा उसे स्थाई रूप देने मे दिक्कत पेश नही आएगी।

उदाहरण स्वरूप सर्व जातीय सर्वखाप पचायत जो उत्तरी भारत का डेढ हजार साल पुराना पचायती सामाजिक सगठन है, ने पिछले पाच सालो मे सकडो नही हजारो ऐसे अदभूत और प्रभावशाली निर्णय लेकर यह सिद्ध कर दिया है कि सरकारी अदालतो से सर्वखाप पचायत, कही अधिक न्याय सगत, स्थाई और बढिया निर्णय ले सकती है। जहा सरकार का दहेज विरोधी कानून बेअसर हो जाता है, जहा सरकार के बाल विवाह, तलाक और अस्पृशता के कानून धरे रह जाते हैं वहा सर्वखाप पचायत मैदान में आकर, उन्हे क्रियान्वित रूप देकर समाज मे लागू करवाती है। दहेज लोभियो द्वारा दस-दस वर्ष से अपने घर बैठी विवाहित लडकियो को सर्वखाप पचायत ने अपने प्रभावशाली पच फैसलो द्वारा दहेज के लालचियों को पचायत से सरे आम दण्डित कर अबलाओ को उनकी ससुराल भिजवाया। बीस बीस साल पुरानी कत्लोगारत की पुरानी दुश्मनी, जिसके माध्यम से दजनो कत्ल हो चुके थे, सर्वखाप पचायत ने उसे दोस्ती और भाईचारे मे बदल दिया। इसी प्रकार लाखो रुपये की भूमि के झगडो को जिनका फैसला झूठी गवाहियो के आधार पर उच्चतम न्यायालय से हो चुका था, सर्वखाप पचायत ने सच्चाई को उजागर कर उसे भाईचारे तथा पचायती न्याय का रूप देकर उजडे हुए लोगो को फिर से बसाया। ((शेष पृष्ठ १३ पर)

साहित्य-समीक्षा

श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (११ खण्डों में)

सम्पादक—प्रो भवानी लाल भारतीय तथा प्रो राजेन्द्र जिज्ञासु, प्रकाशक—गोविन्दराम हासानन्द, नई सडक-दिल्ली, मूल्य—६६०) रुपए, रियायती मूल्य—४०० रुपए।

आर्यसमाज के तेजस्वी सन्यासी तथा भारत की शिक्षा प्रणाली मे क्रान्तिकारी परिवर्तन कर उसमे पुरातन नैतिक मूल्यो की स्थापना करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन बहुआयामी था। एक साथ ही समाज सुधारक धर्म प्रचारक, शिक्षा शास्त्री, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सग्राम के वीर सेनानी तथा कुशल सगठक थे। इस प्रकार बहुविध प्रवृत्तियो मे सतत लगे रहने पर भी उन्होने प्रचुर मात्रा मे लेखन कार्य किया था। सुप्रसिद्ध आर्य साहित्य प्रकाशक श्री गोविंदराम हासानन्द ने स्वामी श्रद्धानन्द के प्राय सभी हिन्दी, अ ग्रेजी और उर्दू ग्रन्थो को ११ खण्डो मे एक सुन्दर ग्रन्थावली मे प्रकाशित कर उस महान आत्मा का समुचित साहित्यिक श्राद्ध किया है। इस ग्रन्थावली मे जहा स्वामी जी द्वारा लिखित हिन्दी ग्रथ अपने मूल रूप मे दिए गए हैं वहा अ ग्रेजी और उर्दू ग्रन्थो का अनुवाद देकर राष्ट्रभाषा के लाखो पाठको के लिए इस दुर्लभ किन्तु ऐतिहासिक सामग्री को पुन सुलभ बना दिया गया है।

स्वामी श्रद्धानन्द एक कुशल एव प्राणवान् लेखक थे, इस तथ्य का पता हमे उनकी लेखनी से प्रसूत 'कल्याण मार्ग का पथिक' तथा 'प० लेखराम की जीवनी' जैसी साहित्यिक गुणसम्पन्न कृतियो से लगता है।

स्वामी श्रद्धानन्द ने यद्यपि किसी सस्कृतज्ञ गुरु या आचार्य के चरणो मे बैठ कर न तो देववाणी का व्यवस्थित अभ्यास ही किया था और न उन्हे उनसे विभिन्न शास्त्रो के विधिवत अध्ययन करने का ही अवसर मिला था। तथापि आर्यसमाज के सदस्य बनने के उपरान्त उन्होने स्वाध्याय को अपने जीवन का नियमित अ ग बना लिया। उनका यही विस्तृत शास्त्राभ्यास ससार के समक्ष तब प्रकट हुआ जब उन्होने स्वसम्पादित 'सद्धर्मप्रचारक' मे नियमित रूप से धर्मोपदेशक शीर्षक स्तम्भ के अन्तर्गत वेद, उपनिषद् गीता मनुस्मृति आदि शास्त्र के प्रेरणादायी मन्त्रो वाक्यो और श्लोको की सार गर्भित व्याख्यायें लिखी।

स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व, विचार एव मन्तव्या का निगूढ अध्ययन किया था। उनका दयानन्द विषयक चिन्तन और मनन उनके अनेक ग्रन्थो मे प्रतिफलित हुआ हैं। 'आदिम सत्यार्थप्रकाश और आर्य समाज के सिद्धात लिखकर उन्होन दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश के आद्य सस्करण (१८७५ मे प्रकाशित) की कतिपय विशेषताओ को तो उद्घाटित किया ही है, उसके विषय मे प्रचलित या जान बूझकर फैलाई जाने वाली अनेक भ्रान्तियो का भी सतर्क निराकरण किया है। इसी प्रकार वेद और आर्य समाज, ईसाई पक्षपात और आर्य समाज आदि उनके लघु ग्रन्थ ऐसे प्रयास हैं, जिनसे आर्य समाज के सम्बन्ध मे प्रचलित नाना मिथ्या आरोपों का निवारण हो सका है। ईसाई प्रचारक और लेखक पादरी जे० एन० फर्कुहर ने अपने चर्चित ग्रन्थ 'माडर्न रिलिजियस मूवमेंट्स इन इण्डिया' मे आर्य समाज विषयक विवेचन मे जो जानबूझ कर गलतबयानी की थी, उसका तर्क पूर्ण उत्तर स्वामी जी के उक्त ग्रन्थ मे दिखाई पडता है। स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वामी दयानन्द रचित ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा पूना मे प्रदत्त 'उपदेश मजरी शीर्षक प्रवचनो का उर्दू रूपान्तर भी किया था।

स्वामी श्रद्धानन्द का अ ग्रेजी साहित्य भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। इसके अन्तर्गत उनकी चतुर्विध रचनाए आती हैं। [१] हिन्दू सगठन विषयक [२] इस्लाम और ईसाइयत की प्रचार प्रणाली विषयक [३] आर्य समाज पर किये जाने वाले आक्षेपा का समाधान प्रस्तुत करने वाली कृतिया तथा [४] तत्कालीन राजनीति से सम्बद्ध उनके लेख। यह अत्यन्त सन्तोष का विषय है। कि ग्रन्थावली के ६ खण्डो के सम्पादक और लेखक डा०" भवानीलाल भारतीय ने स्वामी जी की उक्त सभी अ ग्रेजी कृतियो को अनूदित कर राष्ट्रभाषा के पाठका के लिए सुलभ कर दिया है। 'इनसाइड कांग्रेस' मे स्वामी जी के वे २५ लेख अनूदित किए गए हैं जो 'दि लिबरेटर' नामक साप्ताहिक पत्र में श्रद्धानन्द जी के जीवन के अन्तिम वर्ष—१९२६ में छपे थे। १८९३ से लेकर १९२२ तक वे कांग्रेस से लगातार जुडे रहे। प्रारम्भ मे तो वे कांग्रेस के अभिवेशनो मे एक तटस्थ दर्शक अथवा सामयिक राजनीतिक के एक जिज्ञासु के रूप मे ही सम्मिलित होते थे, किन्तु १९१९ मे रौलेट एक्ट के विरुद्ध महात्मा गांधी के सत्याग्रह के आह्वान को सुनकर स्वामी जी देश की राजनीति से पूर्णतया जुड गए। इसी दौरान दिल्ली की जनता को उनका नेतृत्व प्राप्त हुआ। चांदनी चौक मे घण्टाघर के निकट गोरखा सिपाहियो की सगीनो के आगे उन्होंने अपनी छाती खोली और दिल्ली की जामा मसजिद की धर्मवेदी पर आरूढ होकर उन्होने राजधानी के मुसलमानों को साम्प्रदायिक सद्भाव और देशभक्ति का पाठ पढाया। धीरे-धीरे कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति से स्वामी जी का इस सस्था के प्रति मोह भग होना तथा हिन्दू-सगठन, पतितो की शुद्धि आदि कार्यक्रमों में उनकी रुचि को भी इन लेखो मे देखा जा सकता है।

स्वामी श्रद्धानन्द के वे ग्रन्थ तो आर्य समाज के साहित्य के इतिहास मे सर्वाधिक महत्व रखते हैं जिनमे उन्होंने इस सस्था पर अ ग्रेजी नौकरशाही ईसाई प्रचारक वर्ग तथा ऐंग्लोइण्डियन पत्रो के द्वारा लगाये गये उन आक्षेपो का सटीक उत्तर दिया है जो १९०७ से लेकर १९१६ तक निरन्तर लगाये जाते रहे। पटियाला षडयन्त्र अभियोग, लायलपुर और रावलपिण्डी मे चलाये गये किसान आन्दोलन और उसमें कतिपय आर्य समाजी नेताओ की भूमिका, गुरुकुल मे दी जाने वाली राष्ट्रीयता की शिक्षा, लाला लाजपतराय और प० श्यामजी कृष्णवर्मा जैसे आर्यसमाजी राजनीतियो की गतिविधियो से उत्पन्न शक, शुबहा और भ्रान्तियोसे उत्पन्न कुहासे को छिन्न-भिन्न कर आर्यसमाज आन्दोलन को सर्वथा निर्दोष साबित करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने जो ग्रन्थ लिखे तथा जो व्याख्यान दिये उनको ग्रन्थावली के दशम खण्ड मे प्रस्तुत किया गया है।

श्रद्धानन्द ग्रन्थावली के ११वें खण्ड मे प्रस्तुत स्वामी जी की मौलिक और शोधपूर्ण जीवनी तो इस साहित्यमाला का सुमेरु ही है। पुस्तक के तीन चौथाई भाग मे लिखी गई जीवनी यद्यपि तथ्यो और घटनाओ के लिए अपने से पूर्व के जीवन चरितो पर ही निर्भर है किन्तु चरित लेखक की साहित्यिक शैली, उसके सुष्ठु, शब्दचयन तथा प्राञ्जल वाक्य रचना ने इस कृति को अपूर्व लावण्य और चमत्कार प्रदान किया है। कथानायक के चरित्र विश्लेषण और-उसकी साहित्यिक साधना के दो अध्यायो को जोडकर इस जीवनी को चारुतर और पूर्ण बनाया गया है। ६० पृष्ठो मे सगृहीत ९ परिशिष्टो का सकलन डा० भारतीय की शोध क्षमता तथा उनके ऐतिहासिक परिज्ञान का नमूना है। स्वामी जी के पत्रव्यवहार को यद्यपि ९वें खण्ड मे पूरित सकलित किया गया है किन्तु प० युधिष्ठिर मीमासक तथा उनके पिता प० गौरीलाल आचार्य द्वारा स्वामी जी से किया गया पत्रव्यवहार अपनी विशिष्टता रखता है।

राष्ट्रपुरुष श्रद्धानन्द की साहित्यि सम्पदा को सुरक्षित कर भावी पीढी के लिये उसे उपलब्ध कराने का यह प्रयास एक महान सारस्वत सत्र की परिपूर्ण निष्पत्ति है।

२२०० पृष्ठो से भी अधिक विस्तार वाली यह ग्रन्थावली हुतात्मा श्रद्धानन्द की अमर आत्मा के प्रति सम्पादक एव प्रकाशक की अमर श्रद्धांजलि है।

पूजा किसकी और क्यों

—श्री धर्मनारायण कपूर—

१—ससार के अधिकाश व्यक्ति किसी न किसी की पूजा करते हैं, चाहे वे हिन्दू हों, ईसाई हो, मुसलमान हो, सिख हो अथवा किसी अन्य मतावलम्बी हो। कारण यह है कि हर व्यक्ति को बाल्यकाल से ही पूजा पद्धति की दीक्षा दी जाती है जिसका सस्कार प्राय जीवन पर्यन्त उसके हृदय पटल पर पड़ा रहता है। इस सस्कार को मिटाना अथवा परिवर्तन करना कठिन हो जाता है।]

यह तो सत्य है कि ससार के अधिकाश बुद्धिजीवी पिता-पुरखो से चली आयी हुई मतो की तर्क-रहित मान्यताओ और विचारो की जजीरो से जकडे रहते हैं। वे अपने बुद्धि की खिडकियो को बन्द कर प्रकाश को अन्दर आने से रोक कर अन्ध विश्वासों मे ही सन्तुष्ट रहते हैं।

२—ज्ञानी तथा तत्ववेत्ता जन निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी अजन्मा, सर्वाधार, नित्य और परिपूर्ण परमेश्वर की पूजा, आराधना तथा उपासना करते हैं। वेद उसी को ही एक मात्र आराध्यदेव कहते हैं। वह देवो का भी देव है, अत उस परमेश्वर की ही पूजा करनी चाहिये, अन्य किसी की नहीं।

३—अबोध तथा अज्ञानी जन भिन्न-भिन्न देवी-देवताओ, पदार्थों तथा मनुष्यो की पूजा करने मे अपने आपको कृत्यकृत मान लेता है। वह उपार्जित सस्कारो से प्रेरित होकर किसी को अपना अराध्यदेव मान कर उसके प्रतीक की पूजा करता है। यह प्रतीक पत्थर का हो, धातु का हो अथवा चित्र हो वह प्रतीक ही है सत्य परमेश्वर इस प्रतीक मे नही है (वेदान्त सूत्र ४-१-४) "यह मनुष्यो की अत्यन्त शोचनीय मूर्खता का लक्षण है कि वे इस सत्य तत्व को तो नही पहचानते कि ईश्वर सर्वव्यापी, सर्वसाक्षी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और उनके भी परे अर्थात् अचिन्त्य है, किन्तु वे ऐसे नाम-रूपात्मक व्यर्थ अभिमान के आधीन हो जाते हैं कि ईश्वर ने अमुक समय, अमुक देश मे, अमुक माता के गर्भ में, अमुक वर्ण का, नाम का या आकृति का जो व्यक्त स्वरूप धारण किया, वही केवल सत्य है" (गीता रहस्य लोकमान्य तिलक चौथा सस्करण पृ० ४२३)।

इनमे अज्ञानता के कारण अन्ध विश्वास होता कि यह अराध्यदेव ही सब सुख ऐश्वर्य प्रदान करता है और उनके दु खो को दूर रखता है। इनको इतनी बुद्धि तो होनी चाहिये कि तुलसी, पीपल, जल, चन्द्र, जड मूर्तिया तथा चित्रो मे सुख ऐश्वर्य देने की शक्ति कहा हो सकती जब कि वह अपनी रक्षा करने मे असमर्थ होते है।

गीता (५-१५) मे स्पष्ट कहा है कि परमात्मा किसी के पाप और किसी ; पुण्य को नहीं लेता है। वह तो पूर्ण न्यायकारी है।

४—यह सत्य है कि निराकार परमेश्वर की पूजा करने मे मन नही, लगता। मन का स्वभाव चचल है। पर स्मरण रहे कि निराकार ईश्वर की पूजा बाह्य आडम्बरो से नही हो सकती उस सूक्ष्म से भी सूक्ष्म तत्व की सच्ची पूजा केवल सूक्ष्म मन से ही हो सकती। ईश्वर सब के हृदय मे बसता है और आत्मा का निवास स्थान मन है और आत्मा मन का निवास हृदय में है। गीता (१८ ६१) मे भी कहा है कि ईश्वर सब प्राणियो के हृदयो मे रहता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि ईश्वर और मन का सान्निध्य है। वे दोनो एक ही स्थान मे है अत मन के द्वारा ईश्वर की पूजा सम्भव तथा सरल है। इसके पूजा करने वाले का मन तो उसके शरीर के अन्तर्गत हृदय में रहता है और प्रतीक मे व्याप्त ईश्वर प्रतीक मे होता है। दोनो पृथक पृथक स्थान में स्थित है उनका मिलन नही हो सकता। प्रतीक पूजा केवल आडम्बर है वह पूजा करने वाले के हृदय मे भक्ती तथा आध्यात्मता की झूठी भावना उत्पन्न करके उस सच्चे पथ भ्रष्ट कर देती है।

५—"स्वार्थ-बुद्धि को मन मे रख कर किसी विशेष हेतु के लिये परमेश्वर की भक्ति करना निम्न श्रेणी की भक्ति है।" (गीता रहस्य पृ० ७२२) रोग से पीडित, ज्ञान प्राप्त कर लेने की इच्छा रखने वाले, द्रव्य आदि काम्य-वासनाओ को मन मे रखने वाले और ज्ञानी ईश्वर की भक्ति तथा पूजा करते हैं (गीता ७-१६) ईश्वर की भक्ति निष्कामभाव से करनी चाहिये। भक्ति के तीन अग है —

स्तुति प्रार्थना और उपासना। स्तुति करने से ईश्वर के गुणो का स्मरण करते हुए उन गुणो को अपनी आत्मा मे धारण करना चाहिये। ईश्वर दयालु है। हमे भी दूसरो पर दया करनी चाहिये। ईश्वर न्यायकारी है हमे भी दूसरो के प्रति न्याय करना चाहिये, इत्यादि। ईश्वर से सद्गुणो की प्राप्ति के लिये प्रार्थना करनी चाहिये और बुराईयो से बचने के लिये। उपासना (समीप बैठना) से उपासक के मन मे आनन्द, उल्लास आदि का वैसे सचार होता है जैसे ग्रीष्म ऋतु मे पर्वतो की शीत वायु मे रहने।

६—ईश्वर का अव्यक्त रूप ही सत्य है। मूर्ख अव्यक्त रूप को व्यक्त अर्थात मनुष्य देहधारी मानते है (गीता ७-२४-९-१०) "न केवल भगवद्गीता मे ही वरन् महाभारतान्तर्गत नारायणीय या भगवतधर्म और उपनिषदा मे भी परमात्मा का अमव्यक्त स्वरूप ही व्यक्त स्वरूप से श्रेष्ठ जाना गया है गीता रहस्य-तिलक पृ० २०८) अत केवल ईश्वर की ही उपासना पूजा करनी चाहिये।

७—अब एक जटल प्रश्न उत्पन्न होता है कि जब प्रत्येक प्राणी को उसके कर्मानुसार सुख दु ख मिलता है तो पूजा प्रार्थना आदि की आवश्यकता ही क्या है ? यह तो निर्विवाद है कि सुख दु ख कर्मों के अनुसार मिलता है। किन्तु ससार मे रहते हुए जीवन यात्रा को भली प्रकार सफल बनाने के लिये कई एक गुणो की आवश्यकता रहती है। उनमे सद्बुद्धि, धैर्य, साहस, पराक्रम आत्म विश्वास आदि की प्राप्त के लिये हमे ईश्वर से ही प्रार्थना व याचना करनी होती है जब हम सुपात्र बन कर ईश्वर से प्रार्थना करेंगे तो वे अवश्य हमारी सहायता करेंगे। अकेले अपने बल व सामर्थ के आश्रय पर ससार के द्वन्द्वो और झमेला से पार नही हो सकते। गर्मियो मे हम पर्वतो की शीत वायु के निमित्त, सर्दिया मे सूर्य के समीप उष्णता प्राप्त करने के लिये जाते है। वैसे ही हमे आनन्द प्राप्त करने के लिये आनन्द स्वरूप परमेश्वर की उपासना करते हैं।

८—सच्ची भक्ति करने वाला को निम्न महा वाक्य को सदैव स्मरण रखना चाहिये —

"इससे अधिक शोचनीय यह है कि ईश्वरीय ज्ञान को प्रकट करने वाले व्यक्तियों द्वारा स्थापित सब धर्मों मे जो ईश्वर मे आस्था रखते है धर्म प्रवर्तक स्वयमेव अपने जीवन काल मे, इच्छा न होते हुए भी, पूजा के पात्र बन जाते है और ईश्वर (उच्चतम सत्ता) का स्थान ले लेते हैं जिसमे वे विश्वास रखते है।

धर्म के विकास मे अगला पग यह होता है कि पूज्य देव के स्थान पर पूजा विधि अधिक महत्ता रखने लगती है। कालान्तर धर्म अवश्यमेव सस्थानीय बन जाता है और पूजा विधि (सस्कार) भक्तो के मानसिक पटल पर प्रभाव डालने के कारण विजय प्राप्त कर लेता है और पूर्ण सत्य (ईश्वर) दृष्टि से लोप हो जाता है।

(फ्रेडरिक स्पीगल बर्ग कृत "लिविंग रिलिजन्स आफ दी वर्ल्ड पृ० १०३)

राम जन्मभूमि मस्जिद नहीं हो सकती

-- डा० श्री अमरेश आर्य 'अफजल उलमा' एम०ए०पी०एच०डी०—

प्रमाणित आधार—

आजकल रामजन्मभूमि के सम्बन्ध में उसको मस्जिद सिद्ध करने हेतु तथा मस्जिद का रूप देने के लिए बडे पैमाने पर कोशिश चल रही है। हगामी जुलूस, जेल भरो आन्दोलन निरन्तर क्रियाशील हैं। साधारण जनता अधिकाशत शिक्षित नही होती और जो मजहब के बहुत बडे दिलदादा लोग हैं, ऐसी अशिक्षित और सीधी-सादी जनता को रामजन्मभूमि को मस्जिद का रूप दिलाने के लिए अपना कीमती खून बहाने के लिए भडका रहे हैं। हजारों मुस्लिम नवजवानो को अपने खून से हस्ताक्षर कराते हुए एक महीना पूर्व हैदराबाद में 'बाबरी सेना' के नाम से एक सेना भी तैयार की गयी है। इन सब हालातो को देखते हुए हमें यह भय और आशका है कि यह बाबरी मस्जिद की समस्या हमारे पवित्र देश में एक नई बर्बरी समस्या को जन्म देने जा रही है।

मैंने २४ अप्रैल ८६ से लेकर २८ अप्रैल १९८६ तक अयोध्या एव फैजाबाद में रहकर 'कथित बाबरी' मस्जिद जो कि वास्तविक रूप मे श्री रामचन्द्र जी का जन्म स्थान है, का बडे गम्भीर रूप से अध्ययन किया है और उसी के आधार पर यह रिपोर्ट प्रकाशित करने को दे रहा हू।

राम जन्मभूमि पर किसी भी आधार से एक मस्जिद का रूप लागू नही किया जा सकता, क्योकि—

(१) इस इमारत का रुख स्वय बता रहा है कि सचमुच यह इमारत मस्जिद के रूप मे निर्मित ही नही है क्योकि इसमें मेहराब' (वह स्थान जहा पर नमाज में इमाम साहब खडे होते हैं) का रुख ठीक तरह से 'किबला' (मक्के का वह घर जिसकी तरफ नमाजी को नमाज में अपना मुह करना अत्यन्त आवश्यक है) की ओर नही है।

(२) इस इमारत के अन्दर और बाहर की दीवारों पर जो दस्तकारी पायी जा रही है, वह किसी भी रूप में एक मस्जिद में नही पायी जाती, यह दस्तकारी तो सिर्फ हिन्दू मन्दिरो में ही पायी जाती है।

(३) इस इमारत के आस-पास 'वजू' करने के लिये वह स्थान नही है और न ही ऐसे स्थान का कोई निशान है।

(४) इस इमारत के आस-पास की आबादी उपासनागृह एव अन्य इमारते यह साबित कर रही हैं कि यहा पर किसी मस्जिद का वजूद ही नही था।

(५) इस इमारत में लगे पत्थर में खुले रूप मे नक्श किया गया है कि 'इस इमारत को मस्जिद मे रूपान्तर करने से पूर्व यह एक उपासना गृह था, जहां पर श्रीराम, सीता और हनुमान की पूजा की जाती थी। किसी पीर या मुर्शिद को खुश करने के लिये इस इमारत के ऊपरी हिस्सो में थोडा सा रूपान्तर करके अधूरा मस्जिद का रूप दिया गया है।

(६) इस इमारत में पायी जाने वाली दस्तकारियों एव अन्य तमाम प्रमाणो से यह साफ जाहिर है कि बाबरी मस्जिद का नाम जिस इमारत को दिया गया था, वह वास्तव में एक मन्दिर था जो जबरदस्ती मस्जिद में रूपान्तरित किया गया है। इस्लामी शरियत के प्रामाणिक पुस्तकों में साफ लिखा गया है कि जबरदस्ती 'कब्जा किये हुए इमारत को यदि मस्जिद में रूपान्तरित किया जाय तो ऐसे मस्जिद में नमाज पढना निषेध है। ऐसी इमारत को किसी भी आधार पर मस्जिद की पवित्रता नहीं दी जायेगी। [आलम गीरिया में मुजम्मात एव बहुब्ब सईक के हवाले से]।

इस्लामी शरियत के नियमो के अनुसार 'बाबरी मस्जिद' का दावा जिस इमारत पर किया जा रहा है, वह मस्जिद बन ही नहीं सकती। यदि किसी के अन्दर यह हिम्मत है कि वह खुले मञ्च पर इस इमारत को मस्जिद के रूप में सिद्ध कर सके तो हमारी तरफ से उसे खुला चैलेञ्ज है कि वह आये और अपनी सच्चाई जनता के सामने रक्खे। जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक साधारण मुस्लिम जनता को मजहब के नाम से भडकाना एक ऐसा अत्याचार है, जिसको न खुदा, न रसूल और न ही नेक लोग कभी पसन्द करते हैं।

सार्वदेशिक सभान्तर्गत स्थिर निधियां

ये निधियां २१ फरवरी सन् १९८८ तक स्थापित हुई है

श्री रामशरण बाली स्थिर निधि २ हजार रुपए
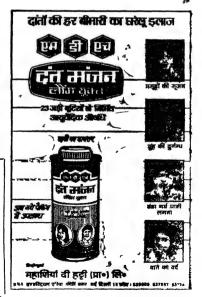
(अन्तरग ३ जून ८४ द्वारा स्वीकृत)

(सस्थापक—श्री रामशरण बाली एम० जी० न० १८
बोदा बाग कालोनी (रीवा)

इस निधि का ब्याज वैदिक धम के प्रचार प्रसार मे खच किया जायगा।

श्री हनुमान प्रसाद स्थिर निधि २६ हजार रुपए

अन्तरत ३ जून १९८४ द्वारा स्वीकृत)

(सस्थापक—स्व० हनुमान प्रसाद जी—गाजीपुर)

श्री हनुमान प्रसाद जी ने सभा को १३ हजार रुपए दिए थे। बाद मे उनका देहान्त हो गया। आय समाज गाजीपुर के मन्त्री श्री नारायण प्रसाद जी ने सभा को सूचित किया कि इस राशि को सभा ६ वष के लिए फिक्सड डिपोजिट मे रख दे। उसके बाद यह राशि जब २६ हजार हो जायेगी तो इसकी स्थिर निधि—स्व० हनुमान प्रसाद स्थिर निधि के नाम से सभा बना दे और इस निधि के ब्याज को सभा धर्म प्रचार आदि जिसमे भी उचित समझे व्यय करे। स्व० हनुमान प्रसाद जी की यही इच्छा थी।

स्व० श्री सुरेशचन्द एवं श्रीमती शकुन्तला नरूला वनवासी उपकार स्थिर निधि ५ हजार रुपए

(सस्थापक—श्रीमती शकुन्तला नरूला)

अन्तरग ३ जून ८४ द्वारा स्वीकृत

इस निधि का ब्याज अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ द्वारा वनवासी क्षत्रो मे नवयुवक और नवयुवतियो मे वैदिक धम के प्रचार प्रसार तथा उन्हे आय वीर और वीरागना बनाने मे शिक्षाथ व्यय किया जावे। यह धन अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के खाते मे जमा रहेगा। प्रति वष १४ माच को स्व० सुरेशचन्द्र के जन्म दिवस पर पति पत्नी का फोटो सार्वदेशिक पत्र मे प्रकाशित करना अनिवाय होगा।

श्री मोलाराम कृष्णा कुमारी ग्रोवर स्थिर निधि पचास हजार रुपए

(सस्थापक—श्रीमती कृष्णा कुमारी ग्रोवर)

अन्तरग ३ जून ८४ द्वारा स्वीकृत

यह निधि ५० हजार रुपए के मूलधन से सैन्ट्रल बैंक मे जमा का गयी है। इस निधि का ब्याज तिमाही लेकर आय वीर आय वीरागना दल वनवासी क्षेत्रो मे वनवासी विद्यार्थियो धार्मिक पुस्तको के प्रकाशन अथवा शुद्धि (पुनर्मिलन) कार्यों पर व्यय किया जाव। ८ नवम्बर को प्रतिवष दोनो (पति पत्नी) के चित्र सावदेशिक साप्ताहिक मे प्रकाशित किए जाव। यह पत्र श्रीमती कृष्णा कुमारी ग्रोवर ७२२ गली मस्जिद वाली छोटी बजरिया रेलवे रोड गाजियाबाद तथा क्रमश चन्द्रभान ग्रोवर गाजियाबाद आनन्द स्वरूप मलिक नई दिल्ली तथा श्री सुमन रामकुमार बत्रा नई दिल्ली को उनके पता पर भेजा जावे।

श्री कृष्णदत्त शर्मा तथा आनन्दीबाई स्मृति स्थिर निधि तीन हजार रुपए

(अन्तरग १५ १२ ८४)

निधिकर्ता—श्री शरदचन्द शर्मा ओऋषि परफ्यूमरी बक्स धार मध्य प्रदेश

शर्तें

निधि का ब्याज अनाथ बच्चो के विद्याध्ययन धार्मिक ट्रैक्टो के नि शुल्क वितरण अथवा वेद प्रचाराथ ट्रैक्टादि के प्रकाशन पर सभा व्यय करेगी।

श्री जे० नारायणराव स्थिर निधि दस हजार रुपए

सस्थापक—श्री जे० नारायणराव २५ वेद मन्दिर के० आर० रोड
बसवान गुडी बगलौर

यह निधि कन्नड सत्याथ प्रकाश के लिए है। इसके ब्याज से कन्नड सत्याथ प्रकाश पढने वालो को एक प्रति पर ५) रुपए की छूट सभा दे। यदि ब्याज बच जावे तो ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका यदि कन्नड मे हो तो उसके पढने वालो को भी ५) रु० रुपए प्रति छूट दी जावे। (अन्तरग १५ १२ ८४ द्वारा स्वीकृत)।

श्री मांखनसिंह परमार स्थिर निधि एक हजार रुपए

(निधिकर्ता—माखन सिह परमार खाटसूर जिला साजापुर मध्य प्रदेश)

यह राशि ६ वर्ष के लिए फिक्सड डिपाजिट मे रखी जावे तदुपरान्त इस निधि का ब्याज वानप्रस्थाश्रम मे सहायता के पात्र व्यक्तियो को सभा देवे। (अन्तरग १५ १२ ८४ द्वारा स्वीकृत)

श्री ओमप्रकाश परमार स्थिर निधि दो हजार एक रुपए

(सस्थापक श्री प्रह्लादसिंह परमार पो० खाटसूर
(जिला साजापुर मध्य प्रदेश)

शर्तें

यह राशि पहले छ वष के लिए फिक्सड डिपाजिट मे रखी जावे। तदुपरान्त स्थिर निधि बनाकर इसका ब्याज सन्यासियो व वानप्रस्थियो की सहायताथ सभा व्यय करे। (अन्तरग १५ १२ ८४ द्वारा स्वीकृत)

मास्टर मेहरचन्द मेहन होशियारपुर स्मृति स्थिर निधि २०४००) रुपए

(सस्थापक—श्री शान्ति स्वरूप मेहन)

शर्तें

प्रत्येक ५१००) के निधि के हिसाब से इसका ब्याज (क) टकारा मे किसी विद्यार्थी की विद्या पर (ख) मोहन आश्रम मे दवाई हेतु (ग) किसी गुरुकुल के योग्य और निधन विद्यार्थी की सहायता पर (घ) किसी कन्या गुरुकुल की योग्य एव समाज प्रचार मे लगनशील कन्या के अध्ययन पर सभा इन चार कामो मे हिसाब से खच करे। (अन्तरग १५ १२ ८४ द्वारा स्वीकृत) इस वष ४१६)१० व्यय किए गए।

श्रीमती सुशीला देवी स्थिर निधि ६ हजार रुपए

सस्थापक—श्री रामकृष्ण नैय्यर १/३५१ सर्विस आफीसर
फ्लैट सरदार पटेल माग नई दिल्ली

शर्तें

इस निधि का ब्याज सभा द्वारा वेद प्रचार तथा शुद्धि काय पर व्यय किया जावे। (अन्तरग १५ १२ ८४ द्वारा स्वीकृत)।

श्रीमती चननदेवी ज्वालापुर स्थिर निधि १३ हजार रुपए

यह निधि प्रारम्भ म ४०००) रु० से स्थापित की गई थी तथा आगे बढाने की स्वीकृति भी दी गई थी। (स्वीकृति अन्तरग १६ १० ८२)

शर्तें

इस निधि के ब्याज से वृद्ध सन्यासी वृद्ध उपदेशक एव असहाय विद्यार्थियो की सहायता की जावे। इस वष २७६०) रुपए व्यय किए गए।

श्रीमती छाया अरोडा स्थिर निधि ६१००)

यह निधि प्रारम्भ मे ५०००) रुपय से स्थापित की गई थी। बाद मे ११००) की वृद्धि की गई। (अन्तरग १३ ५ ८७ द्वारा स्वीकृत)

शर्तें

इस निधि के ब्याज की राशि आय अनाथालय बरेली को भेजी जावे।

स्थिर निधियां

श्री मेजर विश्वम्भर दयाल दमयन्ती देवी स्थिर निधि ५ हजार रुपए

(अन्तरग दिनाक १६-१०-८२ द्वारा स्वीकृत)

शर्तें

ब्याज राशि सभा वेद प्रचारार्थ व्यय करेगी।

श्री शम्भूसिंह सूबेदार स्थिर निधि ५०००)

इस निधि का ब्याज वेद प्रचारार्थ सभा व्यय करेगी। (अन्तरग दिनाक १६-१०-८२ द्वारा स्वीकृत)।

स्व० श्रीमती चन्द्रवती नई दिल्ली स्थिर निधि (३ लाख २५ हजार रुपए मात्र)

सभा द्वारा यह निधि स्थापित की गई। अन्तरग दिनाक १५-१२-८४ द्वारा स्वीकृत हुई। जिसका ब्याज आर्य कन्याओ की शिक्षादि की व्यवस्था आदि पर व्यय किया जायेगा।

६०००) वीर विद्यासागर शुद्धि एवं दलितोद्धार स्थिर निधि देवेन्द्रनाथ शास्त्री द्वारा स्थापित

यह निधि श्री विद्यासागर जी के ज्येष्ठ भ्राता श्री देवेन्द्रनाथ शास्त्री १५ आर्य कुटीर नरेला ने अपने कनिष्ठ भ्राता की स्मृति मे स्थापित की। १-६-८३ की अन्तरग द्वारा स्वीकृति दी गई। इस वर्ष ६५०) रुपए व्यय किए गए।

श्री चौधरी टोपनदास व श्रीमती रामदेवी सहायता स्थिर निधि

(सस्थापक—चौ० भगवानसिंह पुत्र और श्री विजय कुमार नाती पौत्र)

इस निधि का ब्याज, भूकम्प, बाढ, सूखा आदि से पीडितो की सेवा, सहायता एव रक्षा कार्य पर व्यय किया जायेगा।

६-४-८३ की अन्तरग द्वारा स्वीकृति हुई। इस समय तक ६०००) रुपए प्राप्त हुआ है। आगे धन बढाने की स्वीकृति दी गई।

५०००) श्री कन्यालमल मांगीलाल तापड़िया साहित्य प्रकाशन स्थिर निधि

शर्तें

१ इस निधि का ब्याज ही वैदिक साहित्य के प्रकाशनार्थ खर्च होगा। मूल राशि नही।

२ इस राशि को कभी भी निधिकर्ता अथवा उसके किसी सम्बन्धी को वापस लेने का अधिकार न होगा।

१०००००) श्रीमती रामजीबाई श्री मूलचन्द भूटानी धर्मार्थ औषधालय स्थिर निधि

(सस्थापक—श्री गोविन्दराम भूटानी)

शर्तें

१ इसका ब्याज ही व्यय होगा। मूल राशि नही।

२ इस निधि मे वृद्धि करने का भी दानी को अधिकार होगा।

३ औषधालय ग्रेटर कैलाश मे खोला जायेगा।

४ ब्याज श्री गोविन्दराम मन्त्री आर्य समाज ग्रेटर कैलाश द्वारा प्रमाणित औषधियो के बिलो के भुगतान मे खर्च होता रहेगा। यह निधि १५-१२-८३ की अन्तरग द्वारा स्वीकृत हुई।

४०००) श्रीमती यशोदा देवी सहायता स्थिर निधि

इस निधि का ब्याज अनाथ बच्चो की पढाई पर खर्च होगा और सभा को खर्च करने का अधिकार होगा। निधि कर्ताओ या उसके किसी सम्बन्धी को मूल राशि वापस लेने का अधिकार न होगा। (१५-१२-१९८३ की अन्तरग द्वारा स्वीकृत)।

श्री हरिकिशन लाल स्मृति (गाजियाबाद) स्थिर निधि १ लाख रुपए

(सस्थापक श्रीमती इन्द्रावती आर्या)

५००००) बैंक मे फिक्सड डिपाजिट में जमा है जो सात वर्ष मे ब्याज द्वारा दूना होकर १ लाख हो जाएगा तभी निधि की शर्तों के अनुसार ब्याज खर्च किया जायेगा।

इस निधि का ब्याज निम्न प्रकार खर्च होगा।

१०००) वार्षिक अनुदान उपदेशक विद्यालय टकारा।

५००) वार्षिक अनाथालय पटौदी हाउस दरियागज दिल्ली। विकलागो की सहायतार्थ।

५००) आर्य अनाथालय फिरोजपुर की लडकियो की शादियों के लिए।

१००००) वेद प्रचार, आर्य वीर दल, दयानन्द सेवाश्रम सघ मुख्यत. बासवाडा, नागालैंड आसाम पर्वतीय क्षेत्रो के पिछड़े वर्गों के उत्थान एवं रक्षा महाभियान, मीनाक्षीपुरम आदि के सेवा कार्यार्थ, अथवा यदि कभी किसी पुस्तक के प्रकाशन मे इस निधि के ब्याज का उपयोग आवश्यक हो तो पुस्तक मे मेरे पतिदेव के साथ मेरा चित्र भी निधि के ब्याज से प्रकाशित करने के विवरण के साथ निधि का उल्लेख किया जाये।

प्रति वर्ष १७ सितम्बर को मेरे पूज्य पतिदेव हरिकिशन लाल जी की स्मृति मे चित्र सहित सक्षिप्त जीवन परिचय भी निधि के उद्देश्य के उल्लेख सहित सार्वदेशिक साप्ताहिक मे प्रकाशित किया जाए।

इस निधि के सचालन आदि पर सार्वदेशिक सभा का पूर्ण स्वत्व होगा।

जिस पत्र मे इस निधि के विवरण का उल्लेख हो उसकी ३ प्रतिया निम्न पते पर भेजी जाती रहे—

१—श्री दयाराम गोयल एडवोकेट (नोटरी) रमतेराम रोड, गाजियाबाद

२—श्री जयकिशन गुप्त १६/४१ पजाबी बाग, नई दिल्ली

३—श्रीमती जयश्री दीवान द्वारा बी के दीवान गुजरात रोड लश्कर ग्वालियर।

यशोवर्धन स्थिर निधि ६ हजार रुपए

(सस्थापित द्वारा श्री म० बनवारी लाल आर्य गाजियाबाद)

(पुत्र की पुण्य स्मृति मे)

शर्तें इस प्रकार हैं :

१—कम से कम सार्वदेशिक पत्र निर्धन व अधिकारी व्यक्तियो को नि शुल्क हर वर्ष बदलते रहकर भेज दिया जाया करे।

२—इस निधि के ब्याज से मुख्यत स्व प० रामचन्द्र जी देहलवी तथा स्वामी वर्तमानानन्द जी महाराज कृत साहित्य प्रकाशित करके उसका लाभ इस निधि मे जमा करके उन्नत किया जाय।

दानी महोदय ने इस निधि की राशि बढाने की भी स्वीकृति चाही थी जो दी गई। प्रारम्भ मे यह राशि ३१००) थी। इस निधि की स्वीकृति ३० ५-८१ की अन्तरग बैठक ने दी। यह निधि अब ६०००) की हो गई है।

श्री सरदारी लाल आर्य नय्यर स्थिर निधि ५ हजार रुपए

शर्तें

१—इस निधि का ब्याज ही खर्च किया जायेगा। मूल नहीं।

२—इस निधि का ब्याज प्रतिवर्ष गुरुकुल महा विद्यालय ज्वालापुर मे अध्ययन कर रहे किसी निर्धन होनहार व मेधावी वेदपाठी छात्र के अध्ययन पर छात्रवृत्ति के रूप मे व्यय किया जायेगा। यदि किसी अन्य गुरुकुल मे भी ऐसे ही वेदपाठी को सहायता की आवश्यकता हो तो सभा को अधिकार होगा कि वह ब्याज की पूरी राशि दूसरे विद्यार्थियो को देकर उक्त निधि से सहायता कर दे। ऐसा न होने पर ब्याज की पूरी राशि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के छात्रो को ही दे दी जाय।

स्थिर निधियां

३—इस निधि के ब्याज से सभा प्रतिवर्ष २ प्रतिशत का दत्तांश ले सकेगी।

४—इस निधि की मूल राशि दानी को वा उनके किसी उत्तराधिकारी को वापस लेने का अधिकार न होगा।

५—दानी अपनी इच्छानुसार इस निधि मे राशि को बढा सकेंगे। इस वर्ष ८००) व्यय हुए।

श्री चिरंजीलाल मल्ला गोसंवर्धन स्थिर निधि १ लाख रुपए

(चिरजीलाल मल्ला चैरिटेबिल ट्रस्ट अध्यक्ष श्री मुल्कराज मल्ला द्वारा स्थापित।)

१—सभा अधिक से अधिक आय प्राप्त करने के लिए अपनी इच्छा से इस राशि का विनिमय करेगी।

२—इस निधि से प्राप्त आय गोवंश की रक्षा, नस्ल सुधार उसके हित पालन-पोषण आदि मे व्यय तथा अन्य किसी ढग से प्रयुक्त की जा सकेगी जिससे कि गो-संवर्द्धन तथा दुग्ध उत्पादन मे वृद्धि हो और सर्वसामान्य जनता विशेषत पिछडी जातियो के स्वास्थ्य मे सुधार हो।

३—पशुओ की बीमारियो की रोकथाम के लिए अनुसधान कार्य मे व्यय करना।

४—इस निधि की आय सम्पूर्ण अथवा आशिक धन राशि का उपयोग पशु चिकित्सालय पशुओ के रोगो पर अनुसधान नस्ल सुधार शोध केन्द्रो की स्थापना पर इस शर्त के साथ किया जा सकेगा कि इस प्रकार के केन्द्र (चिकित्सालय) का नाम 'लाला चिरजीलाल मल्ला' रखना होगा।

५—इस निधि की राशि को चिरजीलाल मल्ला' चैरिटेबिल ट्रस्ट को वापिस लेने का अधिकार न होगा।

इस निधि की स्वीकृति १२-९-८१ की अन्तरग सभा ने दी इस वर्ष १५०००) रुपए व्यय हुए।

स्त्री आर्य समाज (पारिवारिक सत्सग मडल) डी ब्लाक **सुदर्शन** पार्क नई दिल्ली ने १८९३८)६४ (अठारह हजार नौ सो अडतीस रुपये चौसठ पैसे) की एक **स्थिर निधि** कायम की है। इस निधि के ब्याज का उपयोग निम्न कार्यों मे होगा।

धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशन, गरीब छात्र छात्राओ को छात्रवृत्ति। प्रकाशित पुस्तकों पर श्रीमती ईश्वरी देवी जी आर्य समाज डी० ब्लाक सुदर्शन पार्क नई दिल्ली की स्थिर निधि के ब्याज से प्रकाशित किए जाने का उल्लेख हो। इस निधि के धन को कोई भी कभी वापिस लेने का अधिकारी नही होगा। २१-२-८२ की अन्तरग सभा ने इसकी स्वीकृति दी।

श्री चननलाल शर्मा एव श्रीमती पुरुषोत्तम देवी ५०००)

श्री चननलाल शर्मा एव श्रीमती पुरुषोत्तम देवी वेद प्रचार हिन्दी भाषा प्रचार निधि। इस निधि का ब्याज ही खर्च किया जा सकेगा। श्री चननलाल जी कमेरकला (सुल्तानपुर) के निवासी हैं।

२६-१२-८० की अन्तरग बैठक मे यह निधि स्वीकार की।

श्रीमती विद्यावती कौडा स्थिर निधि

५०००) पाच हजार रुपये की स्थिर निधि श्रीमती विद्यावती कौडा धर्मपत्नी श्री निरजन देव जी विद्यालकार बी० ५/१५८ सफदरजग इन्क्लेव नई दिल्ली ने अपने ज्येष्ठ पुत्र स्व फ्लाइट लेफ्टिनेंट श्री प्रियदेव कौडा की पुण्य स्मृति मे १-४-७८ को सभा मे स्थापित की थी। इस निधि के ब्याज का आधा भाग हवन आदि हेतु सम्भूदयाल वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद को श्री जनार्दन भिक्षु जी को जब तक उनका इस आश्रम से सम्बन्ध रहेगा दिया जायेगा। इस वर्ष १७५) व्यय हुए।

श्री भवानी लाल गज्जूमल शर्मा स्थिर निधि

विश्वकर्मा कुलोत्पन्न स्व० श्रीमती तिज्जो देवी भवानी लाल शर्मा ककुहास को पुण्य स्मृति मे स्व० भवानीलाल शर्मा (कानपुर) अमरावती विदर्भ निवासी ने सार्वदेशिक पत्र के हितार्थ पाच हजार रुपए की स्थिर निधि १९५९ मे स्थापित की थी जिसके ब्याज का आधा सार्वदेशिक को दिया जाता है तथा आधा असल राशि मे जमा कर दिया जाता है। इस वर्ष २ हजार प्रति आर्य समाज के दस नियम की व्याख्या छपाई गई।

शर्मा जी ने ५०००) रुपए के दान से एक दूसरी निधि सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशनार्थ कायम की थी। इस निधि से गतवर्ष तक सत्यार्थ प्रकाश के ४ अच्छे सस्करण ५ ५ १० तथा २० हजार की सख्या म छप चुके थे।

चन्द्र भानु वेदमित्र स्मारक निधि

यह निधि स्व० श्री चन्द्रभानु जी रईस तीतरो (सहारनपुर उत्तरप्रदेश) निवासी की पुण्य स्मृति मे उनके सुपुत्र स्व० श्री म० वेदमित्र जी जिज्ञासु द्वारा प्रदत्त ५ हजार के दान से १९२५ में मथुरा शताब्दी के अवसर पर स्थापित हुई थी। दानी की इच्छानुसार इस राशि के ब्याज से आर्य साहित्य प्रकाशित किया जाता है।

इस निधि के ब्याज से अब तक कर्त्तव्य दर्पण आदि २० पुस्तके छप चुकी हैं।

गगाप्रसाद गढ़वाल प्रचार ट्रस्ट

सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान स्व० श्री गगाप्रसाद जी चीफ जज ने २ हजार के दान से एक स्थिर निधि स्थापित की थी जिसका ब्याज दानी महोदय तथा उनके बाद आर्य समाज टिहरी [गढवाल] की अनुमति से उक्त समाज के कार्यों पर खर्च किए जाने का प्रावधान किया गया था।

श्री मूलचन्द बखरणलाल डीडवानी पीलवा (राजस्थान) स्थिर निधि

स्व० श्री प० मूलचन्द जी ने अपने जीवन काल मे ५ हजार की राशि सभा को दान की थी जो उपर्युक्त निधि के नाम से जमा है। इसके ब्याज से महर्षि दयानन्द कृति ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश तथा अन्य साहित्य के प्रकाशन का प्रावधान हुआ था। इस निधि के ब्याज से दयानन्द दी मैन एण्ड हिज मिशन ट्रैक्ट छप चुका है। इस वर्ष इस निधि से वेद का इस्लाम पर प्रभाव पुस्तक छपाई गई।

श्री डा० सूर्यदेव शर्मा स्थिर निधि

श्री डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए० डी० लिट् (अजमेर) ने सत्यार्थ प्रकाश के १ वा १॥ रुपए मूल्य के सस्करण के प्रकाशनार्थ १० हजार रुपए की स्थिर निधि कायम की थी जिसके ब्याज से यह ग्रन्थ छपा करेगा। पहले ४हजार रुपये की स्थिर निधि सार्वदेशिक की सहायतार्थ कायम की थी जिसकी स्वीकृति २३-४-६३ की अन्तरग बैठक ने दी थी। श्री शर्मा जी ने ६ हजार रुपए की राशि प्रदान करके इस स्थिर निधि के स्थान मे सत्यार्थ प्रकाश निधि कायम की है। इसकी स्वीकृति १४-११-७६ की अन्तरग बैठक ने दी।

श्री देवव्रत धर्मेन्दु एवं श्रीमती जाविश्रीदेवी आर्य साहित्य प्रकाशन स्थिर निधि

दिल्ली निवासी श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु के दो हजार के दान से ११-२-१९६३ की अन्तरग की स्वीकृति से यह स्थिर निधि कायम हुई थी, जिसके ब्याज से उनकी दयानन्द वचनामृत वैदिक सूक्ति सुधा और वेद सन्देश नामक पुस्तको के प्रकाशन का प्रावधान किया गया था। अब यह राशि १२ हजार कर दी गई है।

गतवर्ष दयानन्द वचनामृत व वेद सन्देश पुस्तके छपाई गई। १० ११ ७९ की अन्तरग के निश्चयानुसार इस निधि का नाम देवव्रत धर्मेन्दु जावित्रीदेवी पुस्तक प्रचार निधि रखा गया। इस वर्ष ऋषि दयानन्द वचनामृत पुस्तक छपवाई गई।

स्थिर निधियां

श्री जगतराम महाजन १०० दयानन्द नगर अमृतसर

यह निधि १९६५ मे श्री स्व० लाला जगतराम जी अमृतसर निवासी द्वारा प्रदत्त ४०००) के दान से स्थापित हुई और अन्तरग मे इसकी २९ १२ १९६५ की बैठक मे स्वीकृति प्रदान की। इस निधि के ब्याज से उडीसा के स्वामी ब्रह्मानन्द जी, केरल मे आर्य युवक समाज द्वारा वहा की क्षेत्रीय भाषाओ मे बारी-बारी से फ्री वितरण के लिए ट्रैक्टो के प्रकाशन की व्यवस्था हुई है। इस व्यवस्था के भग होने की अवस्था मे ईसाई मत खण्डन विषयक साहित्य के प्रकाशन के लिए सार्वदेशिक सभा अधिकृत की गई।

श्री लाला लब्भूराम जालन्धर स्मारक वैदिक साहित्य वितरण निधि

यह निधि लाला लब्भूराम जी ने ५ हजार की राशि से कायम की थी। इसके ब्याज से सत्यार्थ प्रकाश एव अन्य वैदिक साहित्य देश देशान्तर मे फ्री वितरण किए जाने की व्यवस्था की गई है। विदेशी भाषाओ मे प्रकाशित साहित्य के लिए भी इस निधि का ब्याज प्रयुक्त हो सकेगा।

देश मे हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओ का भी आवश्यकतानुसार साहित्य वितरित हो सकेगा। यह सहायता योग्य व्यक्तियो को मुफ्त वा आधे मूल्य पर दी जायेगी।

दानी महोदय के पश्चात् इसके क्रियान्वयन की सूचना उनके सुपुत्र श्री विश्वमित्र जी कपूर जालन्धर को दी जाया करेगी और वे यथासमय अपना प्रतिनिधि नियुक्त करगे। इस प्रकार परम्परागत प्रथा चलती रहेगी। प्रचुर साहित्य नि शुल्क देश देशान्तर मे वितरित किया गया।

श्री मोहनलाल जी मोहित मोरिशस स्थिर निधि

यह निधि १३ १ १९६५ को अन्तरग के निश्चयानुसार ३ हजार रुपए के प्रारम्भिक दान से स्थापित हुई थी। सन १९७५ मे यह राशि ५० हजार रुपय की गई। वर्ष १९८६ मे यह राशि ७० हजार रुपए कर दी गई है। इस निधि का ब्याज किसी आर्य विद्वान द्वारा लिखित और सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृत ग्रन्थ के प्रकाशन मे सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रयुक्त होगा। साथ ही मोरिसश के उन आर्य विद्यार्थियो को आवश्यकतानुसार सहायता दी जायगी। जो गुरुकुल व आर्य महाविद्यालय आदि मे आर्य समाज की सेवार्थ उपदश का प्रशिक्षण प्राप्त करते हो।

श्री स्व० बनवारीलाल पचेरी वाला (साहिब गंज बिहार) स्थिर निधि

यह निधि तीन हजार रुपए से कायम की गई थी। इसके ब्याज को अग्रजी साहित्य व सत्याथ प्रकाश के भारतीय भाषाओ क प्रकाशन व वितरण पर व्यय किए जाने की व्यवस्था की गई है।

उपयुक्त व्यक्तियो एव सस्थाओ को साहित्य मुफ्त दिए जाने की भी एक शर्त निर्धारित की गई थी और इसका निर्णय सार्वदेशिक सभा पर छोडा गया था। इस निधि की राशि मय ब्याज के सन १९८६ मे ५९२५) रुपए बैंक से मिलनी थी जिसके लिए बैंक से पत्राचार जारी है शीघ्र ही धन प्राप्त हो जाएगा।

श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती स्थिर निधि

श्री स्वामी दिव्यानन्द जी १९ सिविक सेक्टर भिलाई (म० प्र०) ने ४० हजार रुपए (चालीस हजार) दान देकर स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती स्थिर निधि स्थापित की थी जिसकी स्वीकृति १४-१०-१९७३ की अन्तरग बैठक ने दी। श्री स्वामी जी ने यह राशि ५० हजार कर दी है।

इस निधि के ब्याज से सत्यार्थ प्रकाश और आर्याभिविनय पुस्तक हिन्दी तथा देश विदेश की विविध भाषाओ म छपा करेगी। प्रत्येक प्रकाशन पर अच्छे स्थान पर इस निधि का उल्लेख करना होगा। गत वर्ष इसी निधि के ब्याज से सस्कृत सत्यार्थ प्रकाश छपवाया गया था।

श्रीमती कौशल्या देवी (अमृतसर) स्थिर निधि

श्रीमती कौशल्या देवी (१६ मजीठा रोड अमृतसर) ने (दस हजार रुपया मात्र) के दान से यह स्थिर निधि कायम की है। इसके ब्याज से वेदाध्ययन करने वाले छात्र छात्राओ को छात्रवृत्तिया दी जाया करेगी। २१-३-१९७६ की अन्तरग बैठक ने इसकी स्वीकृति दी। बाद मे इस निधि को बढ़ाकर इन्होने १२०००) रुपए कर दिया। इस वर्ष ब्याज का छात्रवृत्ति के रूप मे ३२०) रुपए व्यय हुआ।

स्व० राजवैद्य मूलचन्द जी आर्य (दिल्ली) स्थिर निधि

६५००) (छ हजार पाच सौ रुपए मात्र) के दान से स्व० राजवैद्य मूलचन्द आर्य स्थिर निधि स्थापित की गई है। इसके ब्याज से आर्य गुरुकुल एटा (उ० प्र०) मे पढ़ने वाले छात्र को सहायता दी जाया करेगी। २७ ३ ७७ की अन्तरग बैठक ने इसकी स्वीकृति दी। इस वर्ष ब्याज के ५२०) जमा हुए। गत शेष १०६८)८० था आर्य गुरुकुल एटा को पाच सौ बीस रुपए दिए गए।

श्री माधोप्रसाद तथा श्रीमती विद्यावती स्थिर निधि

यह निधि श्री माधोप्रसाद आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (सहारनपुर) ने दस हजार के दान से कायम की है। इसकी स्वीकृति १६-११-१९७५ की अन्तरग बैठक ने दी। इस निधि का ब्याज वैदिक धर्म के प्रचार एव समाज कल्याण पर खर्च होगा। बाद मे बढ़ाकर यह राशि २० हजार रुपए कर दी गई। इसके अतिरिक्त उन्होने १५ हजार रुपए धरोहर रूप मे जमा कराया था जो बढाकर ६० हजार रुपए कर दिया गया, तथा यथा समय स्थिर निधि मे परिवर्तित होगा। इस वर्ष सहायता रूप में २४००) रुपए व्यय किया गया।

स्व० लाला बाबूराम शाहदरा दिल्ली स्मारक स्थिर निधि

दिल्ली शाहदरा के प्रसिद्ध एव वयोवृद्ध आर्य स्व० लाला बाबूराम जी ने एक वसीयत के द्वारा जो दान किया था उसमे से इस सभा को लगभग ४५ हजार नकद १ मकान, १ प्लाट २ सौ वर्ग गज का प्राप्तव्य था। ४६०५१)५३ नकद रुपए प्राप्त हुआ तथा शहादराका मकान ४हजार रुपएमे बेच दिया गया। १९ ३ ६४ की अन्तरग ने यह दान स्वीकृत किया था। दान से सभा शाहादरा मे बाबूराम आर्य औषधालय के नाम से एक आयुर्वेदिक औषधालय चलाती रही है जो अब अनिवार्य कारणो से बन्द है।

दयानन्द आश्रम

२२५०) की यह निधि शुद्ध हुए मुसलमान बन्धुओ (नव मुस्लिमो) की सहायतार्थ १९२७ मे कायम की गई थी। इसका ब्याज इसी कार्य मे व्यय होता है।

श्री घरियालाल जी का दान

श्री घरियालालजी जानकीगज लश्कर ग्वालियर निवासी ने वेद प्रचारार्थ ५ हजार रुपए की राशि २९-१ १९६० को सभा को दान मे दी थी।

श्री लाला जगन्नाथ जी का दान

स्व० श्री लाला जगन्नाथ जी दिल्ली निवासी ने अपनी पाच हजार रुपए की पोस्ट आफिस की जीवन बीमा पालिसी इस सभा को दान मे दी थी। इसमें से दो हजार रुपए दानी के निर्देशानुसार सर्वदानन्द साधु आश्रम हरदुआगज को दे दिए गए थे, शेष ५३०५)८६ सभा को प्राप्त हुए थे। इसका ब्याज वैदिक साहित्य के प्रकाशन पर व्यय किया जाता है। शेष ५३०५)८६ पर गत वर्ष तक ब्याज के ३७९५)९६ जमा थे। इस वर्ष ब्याज के २९५) जमा हुए।

इस ब्याज से श्री स्व० वैद्य रामगोपाल शास्त्री जी की 'आर्य धाम वार' नामकी पुस्तक २ हजार छपवाई थी। (शेष पृष्ठ १४ पर)

सर्वखाप पंचायत

(पृष्ठ ५ का शेष)

सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत

"सर्व" का अर्थ है व्यापक या अधिक। "सर्व जातीय" का अर्थ जहां बहुत सारी बिरादरियां बिना किसी भेदभाव के, धर्म व मजहब से ऊपर उठकर अपने देशकाल और रीति रिवाज, अनुसार एक साथ रहती और सोचती हो और जिनका कार्यकलाप तथा समस्याए एक जैसी हो उन्हें "सर्वजातीय" नाम से लक्षित किया जाता है। 'खाप" संस्कृत का शब्द है। ख+आप=खाप, 'ख" का अर्थ है आकाश या व्यापक है और "आप" का अर्थ हैं, जल, पवित्र और शान्तिदायक पदार्थ। 'पंचायत' : जहां पांच या पांच से अधिक निष्पक्ष, सत्यवादी, व्यवहारिक न्यायप्रिय, घटित समस्या से परिचित व्यक्तियों के समूह को पंचायत कहते हैं।

अतः 'सर्व जातीय सर्वखाप पंचायत' का शाब्दिक अर्थ है कि जो संगठन सबका सामूहिक, आकाश की भांति व्यापक, जल की भांति पवित्र तथा शान्तिदायक हो और जो सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक समस्याओं अथवा कुरीति एवं बुराइयों को निष्पक्ष सत्यप्रिय, व्यवहारिक और न्याय संगत तौर तरीकों से ईश्वर को सर्वत्र व्यापक मानकर उचित ढंग से सुलझाए तथा अपना फैसला देकर लागू करे, उस सर्वोच्च सामाजिक संगठन को समाज में, 'सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत' कहते हैं।

जन्मः—

ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर प्राचीन काल में चक्रवर्ती महाराजा शिव के पुत्र गणेश ने गणों की स्थापना की थी। इसीलिए उनका नाम गणेश पड़ गया काफी लम्बे समय तक सामाजिक क्रिया कलापों में गण चलते रहे। तत्पश्चात् महाभारत के समय में योगीराज श्री कृष्ण जी महाराज ने इन गणों को संगठित कर गणराज्य की स्थापना की और इन गणों के मुखियाओं को लेकर उस समय की विभिन्न सामाजिक समस्याओं को सुलझाते रहे। बाद में इस न्याय प्रणाली का श्री गणेश सर्वखाप पंचायत के रूप में महाराजा हर्षवर्धन ने वर्ष सात सौ एक में किया था। उस वर्ष इलाहाबाद में कुम्भ का पर्व था उसी में उन्होने इस संगठन एवं संस्था के गठन की घोषणा की। तब से लेकर अब तक यह संगठन एवं संस्था समाज से प्रत्येक प्रकार की कुरीतियां मिटाने, सामाजिक एवं धार्मिक समस्याएं सुलझाने, न्यायोचित ढंग से पंच फैसले करने शोषण के विरुद्ध लड़ने तथा आर्थिक गुलामी से मनुष्य मात्र को मुक्ति दिलाने में संघर्षरत रही है।

संगठनात्मक ढांचाः—

इस संस्था का गठन गांव की ईकाई से लेकर इसके पूरे कार्य क्षेत्र तक होता है। 'सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत की शृंखला गांव में परिवार, ठोला, पाना [पट्टी] अथवा पूरे गांव के बाद तपे, बारहे, बाम्बे, खाप [पाल] और फिर सर्वखाप तक व्याप्त है। गांव में परिवार की जमात के कुछ कुनबों को मिलाकर ठोला, कई ठोलों को मिलाकर पाना [पट्टी] कई पानों (पट्टियों) को मिलाकर गांव, कई गांवों को मिलाकर तपा (बारहा, बाम्बा] कई तपों को मिलाकर खाप और सब खापों को मिलाकर सर्वखाप होती है। सर्वखाप के नियम, कार्यों तथा मान्यताओं के आधार पर गांव में परिवार से लेकर सार्वखाप की उच्चतम ईकाई तक समस्याओं तथा झगड़ों के निपटाने का वही क्रम चलता है जो सरकारी अदालतों को निर्धारित हैं। यानि जैसे निचली साधारण अदालत से लेकर देश के उच्चतम न्यायालय तक। इसी प्रकार कोई समस्या या झगड़ा गांव में परिवार के बड़े, बूढ़ों से न निपटे तो उसे भाई चारे के ठोले, पाने गांव, तपा, खाप तथा सर्वखाप तक पहुंचाया जाता है। जिस प्रकार सरकार के उच्चतम न्यायालय के बाद कोई अपील नही होती और उसका निर्णय अन्तिम होता है इसी प्रकार सर्वखाप पंचायत के इस सामाजिक न्यायालय का निर्णय भी अन्तिम और सवमान्य होता है। सर्वखाप पंचायत का फैसला न्याय संगत, सत्य पर आधारित और सर्वोपरि माना जाता है।

कार्य क्षेत्रः—

हालांकि शिवाजी के पुत्र गणेश से श्री कृष्ण महाराज और तत्पश्चात् महाराजा हर्षवर्धन ने इस संस्था का कार्यक्षेत्र हरियाणा, दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दक्षिणी राजस्थान और मध्यप्रदेश का कुछ दक्षिणी-पश्चिमी क्षेत्र रहा है। क्योंकि भारत के अन्य भागों की अपेक्षा यह भू-भाग अधिक शिक्षित जागरूक, जुझारू, संगठित, कृषि के आधार पर अधिक उपजाऊ तथा संस्कृति के आधार पर इसके रीति-रिवाज, बोलचाल, रहन-सहन, पहनावा, रंग रूप, विवाह-शादियो के रस्मोरिवाज, भाषा आदि सभी बातों में अधिक समन्वय है।

इस संस्था ने अपने सामाजिक कार्य-कलापों के अतिरिक्त देश की आजादी की जंग में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सन् १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम से लेकर सन् १९४७ तक यह संस्था बराबर आजादी की जद्दोजहद में जूझती रही है। सर्वखाप के हजारों योद्धाओ के बलिदान तथा जेल यातनाएं सहने की कहानियों से भारत का इतिहास भरा पड़ा है।

हालांकि इस संगठन ने कभी राजनैतिक पार्टी का रूप धारण नही किया परन्तु फिर भी यह संस्था राजनैतिक घटनाओं एवं परिस्थितियों का मूल्यांकन कर, समय-समय पर सरकार को सामाजिक तथा धार्मिक मन्त्रनाओं के आधार पर, सामाजिक समस्याओं के निराकरण हेतु, सहयोग प्रदान करती रही है। देश की वर्तमान बिगड़ी हुई सामाजिक परिस्थिति को मद्दे नजर रखते हुए तो सर्वखाप पंचायत की महता, अनिवार्यता तथा उपयोगिता और भी अधिक बढ गयी है।

पंचायती न्याय सभा बनाम सरकारी न्यायलयः—

यदि हम अपने देश की सरकारी अदालतों के निर्णयों तथा सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत के फैसलों की सार्थकता, न्यायप्रियता, सत्यता और निष्पक्षता, पर नजर डाले तो हम इन दोनों सरकारी तथा सामाजिक अदालतों के निर्णयो में रात-दिन का अन्तर देख सकते हैं। सरकारी अदालतों की प्रक्रिया इतनी जटिल, देरपा, महगी और निरर्थक है जिससे जनसाधारण उब ही नहीं जाता बल्कि निराश, हताश, निढाल और बेहाल हो जाता है। एक लम्बे समय तक वादी न्याय की टोह में अदालतों की खाक छानता रहता है। हर पन्द्रह बीस दिन के बाद पेशी पर पेशी साल दर साल और कई केसो में तो पन्द्रह और बीस साल तक मुकदमा चलता रहता है। पीढ़ियां गुजर जाती हैं परन्तु न्याय उपलब्ध नहीं होता। वादी झूठे-सच्चे गवाह बनाने और प्रतिवादी उन्हें तोड़ने में, दोनों अक्सर उलझे रहते हैं। सालों लम्बा समय नष्ट होने तथा हजारों रुपयों की बरबादी के बाद भी निष्पक्ष न्याय की आशा संदिग्ध बनी रहती है। इन्सान के जीवन का मूल्यवान समय अदालतों की भेंट चढ जाता है। इनके अतिरिक्त सरकारी अदालतों का सबसे बड़ा आश्चर्य यह है कि उनके निर्णयों का सारा आधार गवाहों की गवाही पर टिका हुआ है। वादी को अपने केस की सत्यता सिद्ध करने के अदालत में गवाह जुटाने पड़ते हैं चाहे वे घटनास्थल पर हाजिर थे या नहीं। यदि गवाही ठीक न दी गई हो तो केस चाहे कितना ही सच्चा क्यों न हो उसे खारिज होते देर नही लगती। जजों की निष्पक्षता और न्यायप्रियता कानूनी पेचीदगियों के दायरे में घिरी

रहती है। जजो को मुकदमें के रिकार्ड के अनुसार जो कानून की पाबन्द है, अपना निर्णय देना पडता है। देश की न्याय पालिका जिस फरसूदा कानून के घेरे में बन्द है उससे न्याय की आशा कम और निराशा अधिक है।

जब कि दूसरी तरफ हम सर्वजातीय सर्वखाप पचायत की न्याय प्रक्रिया पर नजर डाल तो हमें न्याय की मजिल करीब नजर आयेगी। सरकारी अदालतो की अपेक्षा यदि पचायत के न्याय को सस्ता सरल, उचित, न्यायसगत, स्थाई और निष्पक्ष कहें तो गलत न होगा। जहा सरकारी अदालतो का न्याय महगा और देरपा है वहा पचायत अपनी एक दो बैठकों में ही निर्णय दे देती है। जहां तक खर्चे का सवाल है वह पूर्ण रूपेण नि शुल्क है। इसके अतिरिक्त अदालतों की तरह पचायत में कोई झूठा गवाह पेश नहीं हो सकता। क्योकि भरी पचायत में लोगो को सच और झूठ का परीक्षण करते देर नही लगती। पचायत मामले की तह तक पहुँच कर दूध और पानी छ नती हैं। पचायत का फैसला, अदालत की बन्द कोठरी की अपेक्षा खुलेआम होता है। समाज की मान्यताओ से बन्धे हुए प्रत्येक सामाजिक प्राणी को समाज की लोक लाज और मर्यादाओ का पाबन्दी का लिहाज करना पडता है। यही कारण है कि पच फैसलो का समाज मे आदर और सम्मान है। लोग पचायत के निर्णय को सामाजिक वरदान मानकर स्वीकार करते हैं। अपराधी व दोषी को जब भरी पचायत मे दडित किया जाता है और वह हाथ जोडकर निर्णय स्वीकार करता है तो फिर वह उसका पाबन्द भी रहता है। इस तरह पचायत का निर्णय स्थायी होता है। दोषी अपना सामाजिक बहिष्कार और मु ह काला करने तक के दण्डों को पचायत मे सिर झुकाकर और हाथ जोडकर स्वीकार कर लेता है।

अब सर्वजातीय सर्वखाप पचायत के प्रधान स्वामी कर्मपाल ने, पचायत के केन्द्रीय कार्यालय गौमठ मन्दिर मैदान गढी, नई दिल्ली मे दिनाक ५ मार्च १९८८ को सर्वखाप पचायत बुलाई है ताकि दहेज और दहेज के नाम पर पनपी कुरीतियों को पूरी तरह समाप्त किया जा सके, दहेज या किसी भी झगडे के कारण विवाहित छोडी हुई लडकियों को सम्मान पूर्वक उनकी ससुराल भिजवाया जा सके, नवयुवको में नैतिक कर्तव्य की भावना उत्पन्न कर उन्हें पचायती चरित्र मे ढाला जा सके और पचायत के फैसलों को समाज में पूरी दृढता से लागू किया जा सके। स्वामी कर्मपाल के कथनानुसार उस दिन चारो प्रान्तो के लाखो पच ऐतिहासिक फैसले लेकर उन्हें समाज में कडाई से लागू करने का सकल्प लेगे ●

स्थिर निधियां

(पृष्ठ १३ का शेष)

श्री मोहनलाल लखोटिया स्थिर निधि

श्री मोहनलाल जी लखोटिया, लखोटिया निकेतन १/ए, नन्दलोक प्रेस कलकत्ता द्वारा प्रदत्त (पाच हजार रुपए मात्र) के दान से यह स्थिर निधि कायम की गई। २१ ३ १९७८ की अन्तरग बैठक ने इसकी स्वीकृति दी।

श्री स्व० रामकुमायापुरी साहित्य प्रचार तथा सहायता निधि

श्री रामकुमायापुरी दिल्ली में दस हजार के दान से श्री रामकुमायापुरी साहित्य प्रचार तथा सहायता निधि के नाम से यह निधि स्थापित हुई। १६ ११ १९७५ की अन्तरग ने इसकी स्वीकृति दी। निधि मे इस वर्ष वेद और आर्य शास्त्रो मे नारी तथा ब्रह्म कुमारी सस्था नामक पुस्तक छपवाई गई।

अमोलकराम स्थिर निधि

श्री अमोलकराम जी दिल्ली ने दस हजार के दान से स्थिर निधि कायम की है। गत वर्ष एक हजार रुपए बढाकर ११०००) कर दी गई। जिसका ब्याज आर्य साहित्य के प्रकाशन में खर्च होगा। इस निधि से अमर शहीद प० लेखराम के चित्र छपवाए गए हैं।

१ ३ १९७६ की अन्तररग ने इसकी स्वीकृति दी।

श्रीमती जानकीदेवी ज्योति प्रसाद (दिल्ली) स्थिर निधि

१२६७२५) (एक लाख छब्बीस हजार सात सौ पच्चीस रुपए मात्र) के दान से यह निधि स्थापित की गई है जिसका ब्याज मुख्यत सस्कृत के प्रचार तथा छात्र छात्राओ की सहायता में व्यय हुआ करेगा। अन्तरग दिनाक २७ १० ७४ ने स्वीकृति दी।

महात्मा शिवचरणदास शोध ग्रन्थ प्रकाशन स्थिर निधि

श्री महात्मा शिवचरणदास जी दरियागज दिल्ली के ५०११) (पाच हजार ग्यारह रुपए) के दान से वैदिक सिद्धान्तो एव आर्यसमाज के विषयो पर लिखे गए शोधग्रन्थो के प्रकाशनार्थ १९७५ में स्थापित की गई।

इस निधि से ए क्रीटिकल स्टडी आफ दी कन्ट्रीब्यूशन आफ आर्यसमाज टु दी इण्डियन एजूकेशन शोधग्रन्थ छप चुका है। (क्रमश)

अकेला खाने वाला महापापी

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत् स तस्य ।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी ॥

ऋग्० १०-११७-६, तैत्ति० ब्रा० २-८-८-३॥

हिन्दी अर्थ— मूर्ख व्यक्ति को व्यर्थ ही अन्न समृद्धि प्राप्त होती है मैं सच कहता हूं कि उसके लिए वह अन्न समृद्धि मृत्यु ही है। वह न अपने घनिष्ट मित्रों की सहायता करता है और न सामान्य मित्रों की। अकेला खाने वाला पापी होता है।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] मार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २३ अङ्क १७] वैशाख शु० ८ सं० २०४५ रविवार २४ अप्रैल १९८८ वार्षिक मूल्य ५) एक प्रति ६० पैसे

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का त्याग-पत्र सर्वसम्मति से अस्वीकार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा का निर्णय

गुरु शिष्य के आदर्शों के पालन पर स्वामी सर्वानन्द जी और आनन्दबोध सरस्वती को बधाई

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा अपने गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को दिए गए त्याग-पत्र पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की १७ अप्रैल की अन्तरग सभा की बैठक में गम्भीरता पूर्वक विचार किया गया। इस बैठक की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प० रामचन्द्रराव बन्देमातरम ने की। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सीनेट की बैठक मे भाग लेने गुरुकुल कागडी गए हुए थे।

अन्तरग सभा ने स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के त्यागपत्र और उस पर विभिन्न आर्य नेताओ द्वारा स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के प्रति निष्ठा, और आर्यसमाज के लिए उनकी अपरिहार्य आवश्यकता सम्बन्धी पत्रो तथा स्वामी सर्वानन्द जी महाराज द्वारा स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी को लिखे गए २३ ३ ८८ के पत्रो को भी ध्यान से सुना।

अन्त मे लगभग ४ घण्टे के विचार विमर्श के पश्चात् अन्तरग सभा ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया –

निश्चय स० ११ स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने गुरु श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के केवल एक सकेत मात्र से कि वे सभा के प्रधान पद से त्याग पत्र दे दे, गुरु शिष्य परम्परा को ध्यान में रखते हुए उनके आदेश का पालन किया। स्वामी आनन्दबोध जी का यह कार्य एक ऐतिहासिक घटना है, जिससे यह विदित होता है कि उनमे प्राचीन परम्पराओ के प्रति कितनी अगाध श्रद्धा है। इसके लिए स्वामी सर्वानन्द जी महाराज और स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती दोनो ही बधाई और धन्यवाद के पात्र हैं।

परन्तु प्रधान जी का यह कार्य—

(१) न वैधानिक है और न ही आर्यसमाज के लिए हितकर है।
(२) न ही सभा-सस्थाओं के विधान के अनुकूल है।

क्योंकि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैधानिक रीति और सर्वानुमति से प्रधान जी को अपने मतदाताओ की सहमति के बिना ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए था।

स्वामी जी ने सिर्फ त्यागपत्र दिया है। पद त्याग नहीं किया है। अपने गुरु के आदेशानुसार अन्तरग सभा के निर्णय तक अध्यक्ष के नाते कार्यरत रहने का न सिर्फ वायदा ही किया, अपितु उस नाते प्रधान पद पर कार्य भी करते रहे हैं।

प्रधान जी के त्यागपत्र देने के पश्चात् लोगों में जो प्रतिक्रिया हुई है, सम्भवत उसी कारण स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती ने दिनाक २३ ३ ८८ को प्रधान जी के नाम एक पत्र भेजा है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रधान जी सभा के हित मे जो उचित है, उस प्रकार ही निर्णय ले।

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नाम पत्र

दयानन्द सस्कृत विद्यालय,
दयानन्द मठ दीनानगर
दिनाक २३ ३-८८

सेवा में,
श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी महाराज

सादर नमस्ते !

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद से त्यागपत्र देने के लिए एकान्त में प्रेम से मैंने कहा था जिसे प्रेम से आपने तुरन्त स्वीकार किया। अब आप आर्य समाज के हित को दृष्टि मे रख जैसा आपका आत्मा स्वीकार करे, कीजिए। इतिशम्।

भवदीय
ह० सर्वानन्द सरस्वती

अत अन्तरग सभा की यह बैठक निर्णय करती है कि स्वामी

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा नियुक्त तदर्थ समिति स्वीकार

तदर्थ समिति के कार्यों के निरीक्षण व कार्यान्वयन हेतु ५ सदस्यीय उच्च समिति का गठन

१७-१८ अप्रैल दो दिन के गम्भीर विचार विमर्श के पश्चात सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा का निर्णय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा १७अप्रैल ८८ को आर्य समाज दीवान हाल मे हुई, जिसकी अध्यक्षता सभा के वरिष्ठ उप प्रधान प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव ने की।

एजेण्डे के विषय सख्या ६ जो आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा २० मार्च ८८ को नियुक्त तदर्थ समिति की पुष्टि सम्बन्धी था। उस पर गम्भीर विचार विमर्श हुआ। १७ अप्रैल को पजाब के दोनो पक्षो को सुनने के उपरान्त भी कोई निर्णय नही लिया जा सका और अन्तरग सभा की बैठक की कार्यवाही १८ अप्रैल को भी जारी रखने का निर्णय सुनाते हुए अध्यक्ष महोदय ने बैठक स्थगित की।

१८ अप्रैल को अन्तरग सभा की बैठक पुन. सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान सभा की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुई।

निश्चय सं० ६ (विषय सं० ६)

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के सम्बन्ध मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान द्वारा निर्मित तदर्थ समिति का विषय प्रस्तुत हुआ, जिस पर प्रधान सभा के दोनो पक्षों श्री अश्विनी कुमार एडवोकेट और श्री ऋषिपाल सिंह एडवोकेट को विस्तार से सुना गया।

सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि—

(१) सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने रामचन्द्रराव वन्देमातरम और श्री सोमनाथ एडवोकेट से परामर्श करके जो तदर्थ समिति गठित की तथा उसके लिए जिन कार्यों का निर्देश किया है, उन कार्यों के निरीक्षण एव कार्यान्वयन के लिए एक पाच सदस्यीय समिति बनाई गई। इस समिति के पाच सदस्य, श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम, श्री [illegible]सिंह एडवोकेट, प्रो० शेरसिंह, श्री वीरेन्द्र एव श्री ऋषिपाल सिंह एडवोकेट होगे।

(२) यह भी निश्चय किया गया कि त्रिशासन सम्बन्धी सभी मुद्दो को प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम के ३०-६-८६ के ओरिजनल एवार्ड (निर्णय) के अनुसार दो महीने के अन्दर क्रियान्वित किया जाएगा।

(३) आगामी छ महीने के अन्दर इस समिति के निर्देशन मे ही आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का निर्वाचन कराया जाएगा। प्रतिनिधि फार्म आदि मगवाना, उनकी अर्हता निर्धारित करना तथा अन्य सम्बन्धित प्रक्रियाओ को अपनाना इसी समिति का दायित्व होगा।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती द्वारा २० मार्च ८८ को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के सम्बन्ध मे जो निर्णय दिया गया था वह निम्न प्रकार है

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संबन्ध में निर्णय

पिछले कुछ समय से पजाब के प्रमुख आर्य समाजियो के आपसी मतभेद व वैमनस्य ने एक गम्भीर स्थिति उत्पन्न कर दी है। पजाब की राजनीतिक स्थिति पहले से ही गम्भीर हो चुकी है। इन परिस्थितियो मे आर्य समाजियो मे एकता व पारस्परिक सद्भावना की अत्यधिक आवश्यकता है। इसलिए सार्वदेशिक सभा के विधान की धारा १० (ग) के अन्तर्गत प्रदत्त अधिकार के आधार पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के दोनो पक्षो की आर्य प्रतिनिधि सभाओ की अन्तरग सभाओ को भग कर नए सिरे से एक तदर्थ समिति (एढाक कमेटी) बनाई जाती है।

१—यह तदर्थ समिति त्रिशासन सम्बन्धी सभी मुद्दो को जिन्हे श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम एवार्ड दिनाक ३०-६-१९८६ मे निर्देशित किया गया है, उन्हे दो मास के अन्दर कार्य रूप मे परिणत करके छ मास के पश्चात सभा का निर्वाचन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन मे सम्पन्न किया जायगा। यह अत्यन्त आवश्यक है कि तीनो सभाओ की चल-सम्पत्ति के बटवारे के सम्बन्ध मे जो विवाद बार-बार उठाये जाते हैं, उनके समाधान के लिए पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के बैंक खातो मे जो रुपया अथवा एफ० डी० रसीदें अथवा चालू खाते मे जमा हैं, उसकी सूची प्रकाशित की जाय और एक प्रति सार्वदेशिक सभा को दी जाय।

२—गुरुकुल कागडी, गुरुकुल कागडी फार्मेसी, कन्या गुरुकुल देहरादून, मायापुर, हरिद्वार (ज्वालापुर) के दोनो आर्य इण्टर कालिज तथा अन्य सस्थाओ का सचालन विद्या सभा करेगी। जो आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, हरियाणा और दिल्ली क ६-६ प्रतिनिधियो तथा सार्वदेशिक सभा के २-मनोनीत प्रतिनिधियो से कुल २६ सदस्यो की विद्या सभा होगी।

३—उक्त विद्या सभा द्वारा पारित प्रस्तावो के आधार पर ही कोई फेर-बदल, परिवर्तन किया जा सकेगा। कोई अधिकारी स्वेच्छा पूर्वक कोई ऐसा कार्य नही करेगा, जिसकी अनुमति विद्या सभा ने न दी हो।

४—उपरोक्त सस्थाओ की किसी भी अचल सम्पत्ति को बेचने या खरीदने का निर्णय विद्या सभा के प्रस्ताव के बाद ही हो सकेगा। इससे पूर्व नही।

५—यदि विद्या सभा चाहे तो कुछ अन्य व्यक्तियो को भी ले सकेगी।

६—यह सब कार्यवाही प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव के एवार्ड के अनुसार की जायेगी, जिससे तीनो सभाओ मे किसी को भी कोई आपत्ति न हो।

७—जो भी मुकद्दमे जालन्धर कोर्ट मे चल रहे है, वे तुरन्त वापस कर लिए जायेंगे।

८—मैंने जो आदेश सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग के निर्णय स० १४ (दिनाक २४-१-१९८८) के अनुसार २५ जनवरी १९८८ को जारी किया था, उन्हे रद्द किया जाता है। इस नए निर्णय को पुष्टि सार्वदेशिक सभा की आगामी अन्तरग सभा से कराई जायगी।

९—तदर्थ समिति के अधिकारियो व अन्तरग सदस्यो की सूची निम्न-प्रकार होगी —

१—श्री वीरेन्द्र — प्रधान
२—सेठ योगेन्द्रपाल — उप प्रधान
३—श्री दीवान राजेन्द्र कुमार — "
४—श्री सरदारीलाल आर्य रत्न — "
५—डा० रामनाथ शर्मा — "
६—श्रीमती कमला आर्या — महामन्त्री
७—श्री ऋषिपाल एडवोकेट — मन्त्री
८—श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट — "
९—श्री ओमप्रकाश पासी — "
१०—श्री सुभाष भाटिया — "

(शेष पृष्ठ १२ पर)

विश्व हिन्दू महासम्मेलन (काठमाण्डू)

—प्रो० शेर सिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा —

२४ मार्च से २८ मार्च तक काठमांडू (नेपाल) में विश्व हिन्दू महासम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन मे २० देशों से हिन्दू प्रतिनिधि बनकर आए। इसमें हिन्दुओं के काफी जाने माने धर्माचार्य और साधु आए। विश्व भर नेपाल के लोग तो सारा प्रबन्ध ही कर रहे थे। विश्व हिन्दू परिषद, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

आर्य समाज के प्रतिनिधि के रूप मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा दो उपप्रधान भी निमन्त्रित किये गये। अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ के अध्यक्ष के नाते मैं भी वहा चला गया। वेदपीठ के संरक्षक श्री मोहनलाल मोहित (मोरिशस) का यह आग्रह था। बौद्ध, जैन तथा सिखों के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए। महासम्मेलन का यह मन्तव्य था कि बौद्ध, जैन तथा सिख सब हिन्दू हैं। वे विशाल हिन्दू समाज और हिन्दू धर्म के अ ग हैं। चारो की अलग-अलग प्रार्थनाए होती थी, उनको उन्होंने वैदिक बौद्ध, जैन तथा सिख के नाम से याद किया। हिन्दू धर्म की चार शाखाये मानी गई। भारत के संविधान के अनुच्छेद २५ के अनुसार बौद्ध, जैन और सिख हिन्दू समाज का अ ग माने गये हैं। इस अनुच्छेद को लेकर अकालियो ने १९८४ मे बहुत हल्ला किया। अपने आपको हिन्दुओ से अलग बताया, 'पर्सनल ला' भी अलग मानने का आग्रह किया और अनुच्छेद २५ को जलाया, जेल भी गए। थोडे दिन के पश्चात किन्हीं कारणो से उन्हाने अपनी माग एक प्रकार से छोड दी। मैं उसके कारणो की व्याख्या नही करूगा, परन्तु अकाली नेताओ ने इस माग को छोडने मे ही अपना हित समझा। अलग कौम की बात आज भी आतकवादी ही नही, उदारवादी अकाली भी करते रहते हैं जैन सम्प्रदाय के भाइयो मे भी अलगपन की बात उठती रही है और बौद्ध भी कभी-कभी अलगपन की बात करते हैं।

महासम्मेलन का यह प्रयास है कि अलगपन की बात समाप्त हो और तीनो सम्प्रदाय अपने आपको हिन्दुओ का ही अ ग मानकर सद्भावना के साथ मिलकर काम करें, अत्यन्त सराहनीय है। चाहे बौद्ध तथा सिख सम्प्रदाय के छोटे और स्थानीय नेता ही इस महासम्मेलन मे शामिल हुए, परन्तु एकता की ओर यह एक ठोस कदम है।

वैदिक और हिन्दू नामो का जिन अर्थों मे उपयोग किया गया, उसमे आवश्यक परिवर्तन और संशोधन करना बहुत जरूरी है, क्योंकि वे आर्य तथ्यो और मान्यताओ के प्रतिकूल हैं। वेदो को अपौरुषेय और सभी सत्य विद्याओ का पुस्तक मानने वाले लोग उसे एक सम्प्रदाय मान सकते हैं। महासम्मेलन के आयोजको के सामने एक समस्या थी और वह यह कि वे बौद्ध, जैन तथा सिख सम्प्रदायो की तरह बाकी हिन्दुओ को किस नाम से पुकारे। यदि हिन्दू के नाम से पुकारते हैं तो चारो को मिलाकर क्या नाम दे। यदि यह कहे कि चारो को मिलाकर हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज बनना है तो उसकी एक शाखा को कोई अलग नाम देना पडेगा। उन्होने अधिक बार उसे वैदिकधर्म के नाम से पुकारा तो कभी सनातन धर्म के नाम से। यदि वैदिक धर्म के हिन्दू धर्म की एक शाखा बनायें तो वह हमारी मान्यताओ और तथ्यो के विरुद्ध पडता है। क्योकि वेद मे किसी प थ या सम्प्रदाय के लिये कोई स्थान नही है, वह तो मानवमात्र के कल्याण के लिए दिया हुआ ईश्वरीय ज्ञान है। उसमें कही संकीर्णता तो है ही नहीं। आर्य समाजियो ने न तो बोलने की उत्सुकता दिखाई और न ही उनसे आग्रह किया गया।

नेपाल क्योंकि हमारा मित्र देश है और सांस्कृतिक रूप से भारत से जुडा हुआ है। यहां होने वाले समारोह मे विवादास्पद मुद्दे उठाना न तो वांछनीय ही था और न ही दोनो देशो के हित मे। इसलिये उस वातावरण मे ठीक बात कहने से भी विवाद उत्पन्न होने की सम्भावना हो, वहा चुप रहना ही अच्छा था।

इस आयोजन को करने वाले महानुभावो पर महाराजा साहब नेपाल का वरद हस्त था। वास्तव मे महासम्मेलन का अधिकतर भार नेपाल सरकार ने ही उठाया था। सम्मेलन का उद्घाटन महाराजा साहब ने किया और समापन महारानी साहिबा ने। बीच मे रामनवमी भी मना ली गई और युवराज का उपनयन संस्कार भी हो गया। उद्घाटन समारोह मे अपने-अपने देशो के झण्डे लेकर महिलाओ ने मार्च किया और सब सम्प्रदायो तथा छात्र-छात्राओ की झांकिया भी निकली।

ऐसे सम्मेलनो मे जैसे होता है, वक्ताओ ने एक से एक बढकर महाराजा साहब को उपाधियो से अलकृत करना आरम्भ कर दिया। किसी ने ७० करोड हिन्दुओ का सम्राट, किसी ने एकमात्र हिन्दू राष्ट्र का नरेश और ७० करोड हि दुओ का हृदय सम्राट् और किसी ने धर्म सम्राट की उपाधि भी दे डाली। शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी ने धर्मसम्राट् की उपाधि दिये जाने पर टिप्पणी करते हुए कहा कि वे धर्मरक्षक या धर्म-सेवक तो हो सकते है, धर्म सम्राट् नहीं हो सकते। हिन्दुओ की एकता के लिए यह महासम्मेलन क्योकि महाराजा साहब की छत्रछाया मे हुआ, इसलिए भावनाओ मे बहकर लोगो ने उपाधियो की झडी लगादी।

महासम्मेलन स्थल से बाहर आने पर एक दिन एक नवयुवक ने हमे देखकर अपनी गाडी रोक ली और हमको हिमालय होटल मे जहा हम ठहरे थे छोड आया। उस नवयुवक ने कहा कि उसने केवल शिष्टाचार के नाते यह नही किया उसके मन मे कुछ प्रश्न उठे। उनके समाधान के लिए ही गाडी रोकी और रास्ते मे बात करने की सोची। उस नवयुवक ने प्रश्न किया कि आप भारत के प्रतिनिधि अपने देश मे तो प्रजातन्त्र की बात करते हैं और बात-बात पर प्रजातन्त्र की दुहाई देकर थोडे-से प्रतिबन्ध को भी प्रजातन्त्र के खून के नाम से याद करते हो और यहा आकर आप लोगो ने नेपाल के महाराजा को हमारा सम्राट ही नही, बाईस देशो मे बसे हुए ७० करोड हिन्दुओ को सम्राट कहा है। मैंने उनसे कहा कि कुछ लोग भावविभोर होकर ऐसा कह रहे है और यहा आकर हम लोग प्रजातन्त्र के खून की बात इसलिए भी नही कह सकते, क्योकि हम दोनो पडौसी देशो के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो को सुदृढ करना चाहेगे, बिगाडना नही। उसने कहा कि आप यहा आलोचना न करें और उनके लिये आदर के शब्द जरूर कहे, परन्तु सारे हिन्दुओ का सम्राट् कहकर आप यह स्पष्ट कर देते हैं कि आपके देश के इन प्रतिनिधियो का प्रजातन्त्र मे विश्वास नही हैं। वे तो अपने विरोधी पर वार करने के लिए इसको हथियार के तौर पर इस्तेमाल करते है। मैं उसकी बात से सहमत था। उसने यह भी कहा कि एक परिवार के शासन पर जनता द्वारा चुने जाने के बाद भी आपके देश के लोग उ गली ही नही उठाते कडी आलोचना करते हैं। फिर यहा आकर एक ही परिवार के तानाशाही शासन को, जिसको जनता ने कभी नही चुना, रामराज्य की संज्ञा क्या दे डालते है। क्या यहा की जनता हिन्दू नही, केवल महाराजा ही हिन्दू है क्या? उस युवक ने ये सब इसलिए कहा कि शंकराचार्य अपने भाषण मे यह कह दिया था कि नेपाल की जनता मे कोई दु खी नही है, यहा सुख का साम्राज्य है। ऐसा प्रजाप्रेमी राजा संसार की हिन्दू मात्र का सम्राट है। वह युवक भारत मे शिक्षा प्राप्त करता रहा है और आधा घण्टा वह जो हमसे बातें करता रहा, उसकी बातें तर्क संगत थी।

भारतवासियो की एक बहुत बुरी आदत बन चुकी है कि वे जन सभाओ मे या उत्सवो मे जब किसी अग्रणी व्यक्ति का स्वागत करने लगते हैं तो झूठी प्रशंसा मे जमीन आसमान एक कर देते हैं और हर प्रबुद्ध व्यक्ति की कोफ्त होने लगती है और यदि वहा परस्पर प्रशंसा का दौर चल पडे तो सारा खेल कृत्रिम और बेमायने लगने लगता है। प्रबुद्ध व्यक्ति यह सोचने लगता है कि लाखा लोगो को उन्होने इसी काम के लिए एकत्रित किया था क्या?

नेपाल नरेश ने, इस आयोजन का सारा भार सम्भाला तो उनके मनमे हिन्दुओ के सभी सम्प्रदायो को मिलाकर हिन्दू एकता की भावना जरूर रही होगी, परन्तु उसके साथ-साथ यह दिखाने की भी कि उनका आदेश नेपाल देश से बाहर भी चलता है और इसलिए भी कि नेपाल शांति क्षेत्र घोषित कराने के लिये मैदान तैयार किया जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र से जुड़े सभी

(शेष पृष्ठ १० पर)

सती प्रथा: क्या कहते हैं और क्या नहीं कहते हैं शास्त्र

—डा० [illegible] त्रिपाठी, वाराणसी

शास्त्रीय दृष्टि से प्रथा के दो पक्ष होते हैं—विरासत में प्राप्त और देश, काल, पात्र सापेक्ष ऐतिहासिक क्रम से मान्य। विरासत से प्राप्त प्रथा का आधार शास्त्र अर्थात् आम्नाय होता है या इसके होने का अनुमान किया जाता है। अनुमान समाज में स्थापित होने पर स्मृति का रूप धारण कर लेता है। जो प्रथा स्थिति विशेष की उपलब्धि है और उसका आधार आम्नाय नहीं बनता तो इसे निराधार परम्परा या अन्धपरम्परा माना जाता है। चूंकि इस परम्परा का आधार वेद नहीं है इसलिए शास्त्रीय भाषा में यह अन्ध परम्परा है। निहित स्वार्थी वर्ग किराए के भाष्यकारों का इसमें प्रयोग कर सकते हैं किन्तु इसे शास्त्रीय नहीं माना जा सकता है।]

इस विषय पर पहली बहस वेद से जुड़ी हुई है। विगत सदी में यह प्रश्न समाज में उठा था और इस पर सारे शास्त्रीय प्रमाणों पर खुलकर बहस हो चुकी है। वे प्रमाण विपुल मात्रा एकत्र किए जा चुके हैं और वही बहस नए सन्दर्भ में पुन दुहराई जा सकती है। वस्तुत यह मरी हुई बहस पुन कैसे उठ गई, यह प्रश्न धर्मशास्त्र से अधिक समाजशास्त्र का है किन्तु उसे उठाने के पहले इसका रिश्ता धर्मशास्त्र से क्या है ? इस पर बात कर लेनी आवश्यक है।

ऋग्वेद और अथर्ववेद में अनेक ऋचाएं आती हैं जिनके आधार पर तीन बातें सिद्ध की जाती हैं। इन ऋचाओं से नियोग पुनर्विवाह या सती होने का समर्थन होता है। ऋग्वेद (१०।१८।७ ८) और अथर्ववेद (१२।३।३१, १८।३।३७) में मृत पुरुष के दाह कर्म का वर्णन है जिसमें अविधवा स्त्रियों को शव के सामने बैठने के लिए कहा गया है। सायण ने इन ऋचाओं को पुनर्विवाह के साथ जोड़ा है।

आश्वलायनगृह्य सूत्र (४।६।११-१२ में अविधवा स्त्रियों द्वारा विधवा के विशिष्ट कर्म का उल्लेख मिलता है। इसमें विधवा के अग्निदाह का उल्लेख नहीं है। इसी गृह्यसूत्र के (४ २ ११ १८) में मृत पति के शवदाह के बाद विधवा के लिए कर्मकाण्ड का विधान है जिसमें सती होने जैसी कोई बात है।

ऋग्वेद (१०।१८।७) के आधार पर अथर्ववेद (१८।३ १) और तैत्तिरीयारण्यक (६।१) की ऋचाएं हैं जिनमें मृत पति से प्रार्थना की गई है कि वह 'पुराण' व्यवस्था का पालन कर रही है उसे द्रविण और प्रजा प्राप्त हों। स्पष्ट है कि सम्पत्ति और प्रजा सती और प्रजा सती हो जाने पर प्राप्त नहीं होंगे। सती होने में ऋग्वेद के मन्त्र (१०।१८।७ ८) का प्रयोग दो स्तरों पर किया गया है। प्रथम मन्त्र का उच्चारण विधवा पति के साथ जब चिता पर बैठती है और दूसरे मन्त्र का प्रयोग पति के साथ चिता पर बैठने के बाद पुन चिता से उठ जाने के लिए किया गया है। यह प्रक्रिया बृहद्देवता में अत्यन्त स्पष्ट की गई है।

ऋग्वेद में विधवा के पति के साथ अग्निसात होने की विधि' नहीं, मात्र 'उल्लेख' है कि जिसमें वह पति के साथ मृत्युद्वार अर्थात् चिता तक जाकर पुन लौट आती है। वस्तुत यह विधि नहीं निषेध है। इस पर आधुनिक विद्वान मानते हैं कि पुरा काल में विधवा का पति के साथ अग्निसात होने की परम्परा थी जिसका निषेध वेद में किया गया है। इस प्रक्रिया में चिता तक पति के साथ बैठने की प्रक्रिया चलती है। यही उत्तरवर्ती काल में सती होने की विधि का आधार बना। वस्तुत ऋग्वेद (१०।१८।७-८) की ऋचाओं से विधवा के 'सती' होने की विधि तो कदापि नहीं बनती इनका प्रयोग नियोग के समर्थन में कुछ विद्वान करते हैं। गृह्यसूत्र बृहद्देवता तो स्पष्ट रूप से सती होने का निषेध करते हैं।

ऋग्वेद (४ १८।२२ १०।१८।७ १०।४० २,८) में विधवा शब्द का विपुल प्रयोग किया गया है। लेकिन कहीं सती शब्द का प्रयोग कहीं नहीं मिलता। विधवा के नियम, दिनचर्या, सामाजिक सम्बन्ध, कर्मकाण्ड आदि के विवरण वैदिक संहिताओं से धर्मशास्त्रों तक में व्यापक रूप में प्रस्तुत हैं। स्मृतियों में सर्वाधिक प्रमाण मनुस्मृति का है। इसे 'वेदज्ञानमय' मनु द्वारा प्रणीत माना जाता है। इसमें सती का कोई विधान नहीं है।

टीकाकारों में दो सम्प्रदाय हैं। एक सम्प्रदाय सती होने का विधान करता है और उसका पुण्य गान करता है और दूसरा इसे अस्वीकार करता है। टीकाकारों से सती होने का सशक्त विरोध मेधातिथि ने किया है अपरार्क ने विरोध ज्यादा किया है। किन्तु कहीं कहीं उन्होंने सती होने के इतिहास का भी उल्लेख किया है। मेधातिथि ने अनुमरण अर्थात् सती होने को आत्महत्या जैसा पाप माना है।

अपरार्क ने ब्रह्मपुराण का उद्धरण देते हुए स्पष्ट किया है कि स्त्री को आत्म घातिनि न होना चाहिए—'शाप्ती न भवेदात्मघातिनी।' स्मृति चन्द्रिका ने विष्णुधर्मसूत्र की विकल्प व्यवस्था को अरुचिमूलक और 'अधम' कहा है।

सती शब्द का प्राय रूढ विशेषण पार्वती के लिए है। उन्होंने पति के सम्मान में अपना शरीर पिता के अग्नि कुण्ड में समर्पित कर आत्महत्या की थी जिसका दण्ड पिता को प्राप्त हुआ। यह सती धर्म की विशिष्टता में है। सती धर्म की मर्यादा भारतीय समाज एवं धर्म का मूल हो सकती है। लेकिन सतीप्रथा और सती धर्म दोनों सर्वथा दो बात हैं उन्हें एक करना कूटजाल है।

रामायण में एकाध प्रयोग सती होने का आया है। महाभारत में इसके उल्लेख ज्यादा हैं। (आदि ९५।६५, १२५।२९, विराट-२३।८)। विष्णुपुराण (५।३८।२) में पांडु, वसुदेव, कृष्ण की पत्नियों ने अग्नि का वरण किया है। शान्तिपर्व में तो कपोत के लिए कपोती के सती होने का भी उल्लेख है लेकिन अध्याय २६ में युद्ध में मारे गए शूरमाओं की पत्नियां युद्ध क्षेत्र में आती हैं, किसी ने अपना अग्निदाह नहीं किया है। यहां तक कि द्रोण की पत्नी कृपी (स्त्रीपर्व २३) मुक्तकेश होकर युद्ध क्षेत्र में द्रोण को देखने आती है, सती नहीं होती।

जिस प्रकार सती होने की जड़ वेद में खोजने और उसे गौरवान्वित करने का प्रयास कुछ लोग करते हैं उसी प्रकार पुरुष द्वारा की जाने वाली आत्महत्या का पुण्य भी वेदों से ही प्रारम्भ हो जाता है। ऐसे उल्लेख सती प्रथा में दिए वचनों से ज्यादा स्पष्ट हैं। राजतरंगिणी में तो इस पुण्य कार्य' के लिए एक स्वतन्त्र विभाग था जिसका अधिकारी इसकी उचित व्यवस्था करता था।

वस्तुत सतीप्रथा का वैदिक आधार नहीं है, न तो यह शास्त्रों की विधि है। जिस प्रकार इतिहास में त्याग बलिदान का महत्व प्रशस्त होता है उसी प्रकार पति के लिए त्याग करने वाली स्त्रियों की प्रशस्ति की गई है न कि उसकी विधि। इस व्यवस्था का तीन स्थानों पर विशेष प्रयोग हुआ राजस्थान, बंगाल और विजयानगरम में। इतिहास के विशाल फलक में यह प्रयोग अपवाद के रूप में मिलता है किन्तु इसका प्रचार हो, ऐसा कुछ नहीं है। बंगाल में इस व्यवस्था में सामन्ती व्यवस्था का जुड़ जाना रहा है। दायभाग के अनुसार स्त्री यदि विधवा हो जाय तो वही पति की सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी होती है। सामन्ती मिजाज के विकास में वृद्ध सामन्तों के साथ सम्पत्ति लोभ से 'कन्या' की जो शादी लोग इस उद्देश्य से करते थे कि शव में पास लटकाए 'सरकार' की पलक झपकते ही सम्पत्ति के डर कन्या पिता के घर आ जायगी। लेकिन

(शेष पृष्ठ-[illegible] पर)

सार्वदेशिक सभान्तर्गत स्थिर निधियां

(गतांक से आगे)

वसीयत

१-२-६६ की अन्तरंग सभा मे दो वसीयतें स्वीकृत हुई ।

एक वसीयत के अनुसार जो श्री प० देवव्रत धर्मेन्दु जी आर्योपदेशक ने की सभा को एक मकान गाजियाबाद मे प्राप्त होना है जिसका मूल्य लगभग ४० हजार है। इसके अतिरिक्त बैंको मे जमा रुपया भी प्राप्त होगा।

दूसरी वसीयत के अनुसार सभा को ४० हजार के मूल्य के मकान के अतिरिक्त जेवर तथा बैंकों व डाकखाने मे जमा रुपया भी प्राप्त होना है। यह वसीयत स्व० प० साधुराम जी शाहदरा ने की थी।

पहली वसीयत से प्राप्त धन आर्य कुमारों और कुमारियो के लाभार्थ वैदिक साहित्य के प्रकाशन मे व्यय होगा तथा दूसरी से प्राप्त धन,धर्म कार्यों, विद्वानो-तथा- सन्यासी महात्माओ को वृद्धावस्था मे सहायता देने मे व्यय होगा ।

१८-७-७० की अन्तरंग के निश्चयानुसार शाहदरा की एक और वसीयत स्वीकृत हो गई थी जिसके अनुसार सम्पत्ति का विवरण इस प्रकार है ।

१—३ प्लाट जिनका क्षेत्रफल १ हजार वर्ग गज से अधिक है। वर्तमान मूल्य लगभग एक लाख रुपया ।

२—३ मकान जिनकी कीमत लगभग ३० हजार रुपया। १७८) मासिक किराया प्राप्त हो रहा है।

वसीयतकर्त्री श्रीमती गंगादेवी का देहान्त हो जाने से इस वसीयत की सम्पत्ति को अधिकृत किए जाने के लिए कानूनी कार्यवाही की जा रही है। सम्पत्ति पर उसके रिश्तेदारो ने अवैध कब्जा किया हुआ है।

जोधपुर की सम्पत्ति

आर्य समाज जोधपुर की निम्नलिखित सम्पत्ति सभा के नाम है—

१—५६५० वर्ग गज भूमि प्रताप हाई स्कूल के सामने श्री रणछोड मन्दिर के पास।

२—आर्य श्मशान भूमि २७७२ वर्ग गज।

३—गुरुकुल मारवाड मण्डोर ७ मकान कुल भूमि २५३६६ वर्ग गज।

४—गोशाला मारवाड मण्डोर ५ कोठरी (चारे की) ४ अन्य कोठरिया, ३० हजार वर्ग गज।

रणछोड मन्दिर के पास जो प्लाट था उसे सरकार ने हस्तगत करके उसके बदले ३ प्लाट अन्यत्र दे दिये थे।

इस सम्पत्ति पर कुछेक व्यक्तियो ने अवैध कब्जा किया हुआ है। जिसकी मुक्ति के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के तत्वावधान म समुचित कार्यवाही की जा रही है।

महर्षि दयानन्द विदेश प्रचार स्थिर निधि

श्रीयुत प० हरदयाल शर्मा (फिजी) द्वारा प्रदत्त ५० हजार (पचास हजार) के दान से महर्षि दयानन्द विदेश प्रचार के नाम से एक स्थिर निधि कायम की गई थी जिसकी स्वीकृति ३०-३ ६८ की अन्तरंग बैठक ने दी थी। इस निधि के ब्याज से भारत से बाहर मुख्यत फिजी मे प्रचारार्थ एक उपदेशक रखने का प्रावधान किया गया था।

वर्ष के प्रारम्भ मे २२९७२)६३ जमा था। इस वर्ष ४०००) जमा हुए। निधि से एक ही मार्ग पुस्तक का प्रकाशन किया गया।

सभा फिजी मे किसी सुयोग्य प्रचारक को भेजने के लिए प्रयत्नशील है।

श्रीमती रत्नादेवी मनुमित्र वेद प्रचार निधि

यह निधि हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) के श्री प० मुन्नालाल जी ने ११२००) की राशि से स्थापित कराई है। यह राशि सभा के नाम मे कैनारा बैंक दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली मे जमा है जो १९८६ मे १० वर्ष के बाद ३० हजार के ऊपर हुई। पुन १० वर्ष के लिए रख दी गई है। इसका ब्याज सभा जहा भी उचित समझेगी वैदिक धर्म के प्रचारार्थ खर्च किया जायेगा। १० जुलाई १९७७ की अन्तरंग ने इसकी स्वीकृति दी।

श्री मुन्ना लाल जी ने इस निधि मे वृद्धि कर ६७५७)०६ का १ कैश सर्टिफिकेट क्रय करके दिया है जिसका धन आन्ध्र प्रदेश महेश कोआपरेटिव अरबन बैंक लिमिटेड बेगम बाजार हैदराबाद मे जमा है और सभा को २-४ १९९१ मे २० ०००) प्राप्त होगा।

इन राशियो को पुन फिक्स डिपोजिट मे रखना होगा और जनवरी २००१ मे यह राशि १,८००००) (एक लाख अस्सी हजार मात्र) हो जायेगी। उसके पश्चात् सभा उक्त शर्तों के अनुसार इसका ब्याज खर्च कर सकेगी।

इस सर्टिफिकेट के परिवर्तन की स्वीकृति २१-२-८२ की अन्तरंग बैठक ने दी।

श्री बख्शी खुशहाल स्वास्थ्यानन्द स्थिर निधि

यह स्थिर निधि ५०००) (पाच हजार रुपया मात्र) की राशि से बख्शी खुशहाल जी ने स्थापित की है। जिसकी १७ १-७७ की अन्तरंग बैठक ने स्वीकृति दी। इस निधि के ब्याज से बख्शी जी की निजी पुस्तकें छपा करेंगी।

दयानन्द दलितोद्धार निधि

यह निधि ३०००) की है जो स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने दलितोद्धार के कार्यार्थ १९२१ म स्थापित की थी। इसका ब्याज दलित कहे जाने वाले बन्धुओ एव छात्र छात्राओ की सहायता पर खर्च किया जाता है।

स्वामी ब्रह्ममुनि जी की वसीयत

१९८० मे निधन से पूर्व श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी ने अपनी धन राशि पुस्तको के स्टाक तथा उनके प्रकाशन के अधिकार की वसीयत इस सभा के नाम मे की थी। इस वसीयत के अनुसार नकद (बैंको मे जमा) धन पुस्तको का स्टाक वा बिक्री की राशि प्राप्त करने का अधिकार सभा को है। सहारनपुर मे एक कोर्ट से प्रोबेट प्राप्त कर लिया गया तथा डाकखाना व बैंको आदि से १,०१७३०)०५ रु० प्राप्त हुए थे। कोर्ट की फीस आदि पर ६५९७)३५ व्यय हुए। शेष ९५१३२)७० रु० जमा हैं। जो वर्ष के अन्त मे ब्याज की राशि मिलाकर १४६५०४)४० हो गए हैं।

डा० नन्दलाल व श्रीमती सावित्री देवी स्थिर निधि

१० हजार की यह स्थिर निधि १६-११-७९ की अन्तरंग सभा द्वारा स्वीकृत हुई थी। इस निधि के दो भाग है। प्रथम ५०००) की निधि के ब्याज से आर्य सन्यासियो उपदेशको तथा भजनीको के रोगग्रस्त होने पर चिकित्सा कराई जायेगी। दूसरी ५०००) की निधि का ब्याज पहाडी क्षेत्रो वा नेत्र रोग की रोकथाम पर खर्च किया जायेगा।

श्री रामरखामल व मथुरा देवी कलेरकला स्थिर निधि तीन हजार रुपए, श्री नानकचन्द मथुरादेवी स्थिर निधि पाच हजार रुपए

ये निधिया वेद प्रचार, हिन्दी भाषा प्रचार व समाज कल्याण कार्यो के सम्पादनार्थ स्थापित की गई है। इनकी स्वीकृति १०-११-७९ की अन्तरंग द्वारा हुई।

श्री मनोहर सिंह पनगडिया बनेडा (राजस्थान) स्थिर निधि

यह निधि श्री गुमान सिंह जी (पूर्व एकाउन्टेन्ट जनरल लाईफ इन्श्योरेन्स कम्पनी) ११ दरियागज, नई दिल्ली तथा लेखा निरीक्षक देहली राज्य आर्य केन्द्रीय सभा ने ५ हजार रुपए के दान से अपने अग्रज श्री मनोहरसिंह के नाम से १९६७ मे स्थापित की थी। ५-१ ६७ को अन्तरंग सभा ने इसकी स्वीकृति दी थी।

इसका ब्याज निर्धन छात्र-छात्राओ को, जिनके अभिभावको की अथवा माता-पिता की मासिक आय ७५०) या इससे कम होगी और पुस्तकें खरीदने मे जो असमर्थ होंगे उनकी पुस्तको के क्रय कराने मे व्यय होना निश्चित हुआ है। सहायता प्राप्त करने वाले छात्र को नियत फार्म पर आवेदन पत्र देना

स्थिर निधियां

होता है जिसकी स्वीकृति अब श्री गुमानसिंह जी के सुपुत्र श्री प्रतापसिंह पनगड़िया, ए० ४३ मानसरोवर टोकरोड, जयपुर देते हैं। यदि ब्याज की राशि पुस्तकों के रूप में खर्च न हो तो दो वर्ष बाद यह राशि श्री प्रतापसिंह जी पनगड़िया की अनुमति लेकर सभा किसी दीन, हीन विधवा अथवा अबला आदि की सहायता में खर्च कर सकेगी।

श्री धन्नाराम कुकरेजा वेद प्रचार स्थिर निधि

श्री सेठ प्रीतमदेव कुकरेजा ने अपने पिता श्री धन्नाराम कुकरेजा की स्मृति में ११००) की स्थिर निधि सभा में कायम की थी जिसकी स्वीकृति १-४-७८ की अन्तरग बैठक ने दी थी। इसका ब्याज आर्य समाज के प्रचारका अथवा उनकी आर्थिक सहायता पर खर्च किया जायेगा।

दानी को इस राशि में वृद्धि करने की भी अनुमति दी गई थी। वर्ष के अन्त में इस निधि का ५१००) जमा थे।

स्त्री आर्यसमाज लोहगढ अमृतसर स्थिर निधि

यह निधि १०,०००) की है। २६ ११-७८ की अन्तरग द्वारा स्वीकृति हुई। इस निधि का ब्याज निर्धन छात्रा की छात्र वृत्ति पर व्यय होगा।

श्रीमती विद्यावती बहल (लन्दन निवासी) स्थिर निधि ५०००)

यह निधि महाविद्यालय ज्वालापुर के छात्रों की छात्रवृत्ति के लिए है इसकी स्वीकृति २६-४-८० की अन्तरग द्वारा हुई। इस वर्ष ११००) रु० व्यय हुए।

वैदिक आश्रम ऋषिकेश

यह आश्रम ऋषिकेश में रेलवे रोड पर है। यह आश्रम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की मिलकियत है। आजकल आश्रम की सेवा कार्य के लिए पत्रमुनि प्रबन्धक है यात्रियों के ठहरने के लिए सभी प्रकार की सुख सुविधायें उपलब्ध है। वैदिक यज्ञ व भजन नित्य होता है। इसके अलावा श्री लालीभाई सोनीभाई धर्मशाला में जो एक कमरा और एक रसोई-घर श्री लाला केदार नाथ जी की धर्मपत्नी गेंदादेवी जी सहारनपुर मो० चिताला का स० १९८८ में बनवाया था वैदिक आश्रम ऋषिकेश को दान में प्राप्त हुआ है। यह इस आश्रम की अचल सम्पत्ति है और इस समय परमेश्वरी देवी को आश्रम ने ११) मासिक किराये म दे रखा है और आदर्श नगर ऋषिकेश स्थित प्लाट न० ८७८ पर सार्वदेशिक सभा की ओर से मुकदमा चल रहा है।

श्री अर्जुन लाल आचार्य का दान

श्री स्वर्गीय अर्जुन लाल जी आचार्य रिटायर्ड रेलवे गार्ड ने अपना मकान जो सदर बाजार नीमच छावनी में स्थित है जिसका म्यूनिसिपल नम्बर १०३७ तथा मूल्य लगभग दस हजार रुपया है आर्यसमाज नीमच छावनी के उपयोग के लिए सार्वदेशिक सभा को दान किया हुआ है। इस मकान का उपयोग आर्यसमाज नीमच छावनी करता है।

श्री किशोरीलाल पुरी की वसीयत

इस वसीयत से सभा को नकद और विविध कम्पनियों तथा संस्थानों के ५२८३)६० के शेयर्स प्राप्त होने थे जिसका डिस्ट्रिक्ट जज दिल्ली की अदालत से प्रोबेट मिल गया। निम्न प्रकार नकद धन मिला और सभा के नाम शेयर्स परिवर्तित हुए।

१—मोहिनी शुगर मिल्स कलकत्ता	१०००)१०० शेयर्स
२—अपर इण्डिया पेपर कू पर मिल लखनऊ	१००)१ शेयर्स
३—यूनाइटेड कर्माशियल बैंक दिल्ली	६१७)०४ नकद
४—पंजाब नेशनल बैंक, करोलबाग नई दिल्ली	२२१)२४ नकद
५—हिन्दुस्तान कर्माशियल बैंक कानपुर	२१०)५ शेयर्स ५० प्रतिशत भुगतान

६—वाल्कन इन्श्योरेंस कम्पनी से १५०) मिलने थे २६०)२० मिले। यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल इन्श्योरेंस कम्पनी से ७५) मिलने थे १८७)८५ प्राप्त हुए। अब कोई शेयर नहीं रहा।

७—प्रीमियर आटो मोबिल लिमिटेड बम्बई का १००) का एक शेयर १२ शेयर्स पूरे भुगतान तथा १० शेयर्स ३/४ भुगतान ९५०) अब इस वसीयत का कोई धन तथा शेयर प्राप्तव्य नहीं रहा।

एक वसीयत

एक सज्जन ने चार हजार रुपए की अपनी जीवन बीमा पोस्टल पालिसी इस सभा को दान में दी है। ब्याज से आर्य गर्ल्स हायर सेकेण्डरी स्कूल करोल बाग, नई दिल्ली की ९वी १०वी और ११वी श्रेणियों की उन छात्राओं को छात्रवृत्ति दी जाया करेगी जो धर्म, शिक्षा आदि विषयों में सर्वप्रथम रहा करेगी।

दक्षिण अफ्रीका वैदिक साहित्य सीरीज

७ ८-१९५० की अन्तरग बैठक के निश्चयानुसार यह निधि श्री स्वर्गीय पंडित गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के १३३५) के दान से स्थापित हुई थी जिसमे वर्ष के अन्त में ७६४)०६ शेष थे। यह धन श्री उपाध्याय जी को दक्षिण अफ्रीका में वहा के आर्य बन्धुओं की ओर से निजी व्यय के लिए भेंट किया गया था। इस निधि से अब तक 'सनातन धर्म और आर्य समाज' लाइफ आफ्टर डैथ तथा दी सेन्टरी टीचिंग्स आफ हिन्दूइज्म पुस्तकें छप चुकी हैं। यह निधि अन्तरग सभा के निश्चयानुसार अन्य निधियों के साथ महानिधि में सम्मिलित की गई।

श्री नन्दलाल कत्याल तथा श्रीमती चांदकौर उर्फ भगवान देवी सहायता स्थिर निधि आठ हजार रुपए

यह निधि श्री नन्दलाल कत्याल, मकान न० १७९६ गली बजीर सिंह, चूना मण्डी पहाड़गंज, नई दिल्ली-५५ द्वारा स्थापित की गई है। निधि के ब्याज को गरीबों, विधवाओं धन या और असहायों की सहायतार्थ अनाथ तथा अनाथ बच्चों को पुस्तक देने पर व्यय किया जाएगा। वर्ष में एक बार सार्वदेशिक साप्ताहिक में निधि का उल्लेख करना आवश्यक होगा। निधि के सम्बन्ध में समस्त पत्र व्यवहार के लिए श्री नन्दलाल कत्याल के बाद उनके सुपुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार कत्याल उत्तराधिकारी होंगे।

(यह निधि ११-८ ८५ की अन्तरग में स्वीकृत की गई)

श्री मोतीलाल आर्य एवं श्रीमती स्वरूपी देवी सहायता स्थिर निधि दस हजार एक रुपया

यह निधि श्री मोतीलाल आर्य ने दस हजार एक रुपए की स्थापित की है। निधि के ब्याज को अनाथ, असहाय, निर्धन छात्र-छात्राओं, बच्चों की सहायतार्थ व्यय किया जावेगा। इसके अतिरिक्त कन्या गुरुकुल सासनी में शिक्षा प्राप्त कर रहे किसी असहाय व होनहार छात्रा के भरण-पोषण निमित्त भी सहायता दी जा सकती है। ब्याज का विवरण इस प्रकार होगा। ५००)०० पांच सौ रुपया प्रति वर्ष आर्य अनाथालय फिरोजपुर को छात्रवृत्ति अथवा सहायता पर व्यय किया जावेगा। निधि के सम्बन्ध मे पत्र व्यवहार के लिए श्रीमती ओमवती गुप्ता ई० ५/४ कृष्ण नगर दिल्ली-५१ को अधिकृत किया गया है।

(यह निधि २१-१२-८५ की अन्तरग में स्वीकृत की गई।)

श्रीमती सरस्वती देवी शर्मा स्मृति स्थिर निधि दस हजार रु०

इस निधि की स्थापना उनके सुपुत्रों श्री अमरनाथ शर्मा व श्री विचित्र देव शर्मा द्वारा की गई है। इस निधि का ब्याज शम्भू दयाल वैदिक सन्यास आश्रम को देना होगा। यदि वह बन्द हो जाय तो दयानन्द संस्कृत गुरुकुल महाविद्यालय पटेल मार्ग गाजियाबाद को यदि वह भी न रहे तो सार्वदेशिक सभा अपनी इच्छानुसार व्यय करेगी। अन्तरग दिनांक २१-१२-८५ द्वारा स्वीकृत।

नई स्थिर निधियां

१—श्री जयकिशन दास सर्राफ एवं श्रीमती शोभावती स्थिर निधि

यह निधि ३० हजार रुपए की श्री जयकिशन दास सर्राफ लाहौर वाले, २१ दरियागंज, नई दिल्ली मकान न० ४६७५ अन्सारी रोड नई दिल्ली द्वारा स्थापित की गई है। इस निधि का ब्याज गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (सहारनपुर), गुरु विरजानन्द आश्रम करतारपुर (पंजाब) तथा कन्या गुरुकुल चम्बा (हि० प्र०) को देने का प्रस्ताव है। अन्तरंग सभा १५-३-१९८६ से स्वीकृत।

२—श्री राम रतन जोशी (ग्वालियर) स्थिर निधि

यह निधि १० हजार रुपये की श्री रामरतन जोशी, मोलपाडा सियाराम सदन ग्वालियर ३ द्वारा स्थापित की गई है। इसका ब्याज आर्ष गुरुकुल एटा (उ०प्र०) में अध्ययन करने वाले निर्धन निराश्रित मेधावी छात्रा के लिए देने का प्रस्ताव है। अन्तरंग सभा २२ जून ८६ द्वारा स्वीकृत।

३—श्रीमती ललिता देवी शुद्धि सहायक निधि

यह निधि श्री कृष्ण प्रसाद केसरी लोहा विक्रेता खड़गपुर जिला मुंगेर द्वारा अपनी मां की स्मृति में स्थापित की गई है। इस निधि का ब्याज शुद्धि के कार्य में व्यय किया जाना है। अन्तरंग सभा २२ जून ८६ द्वारा स्वीकृत।

४—श्रीमती सुशीला रस्तोगी स्मृति स्थिर निधि

यह निधि डा० भगवत रस्तोगी अखिलेश फार्मेस्यूटिकल्स कानसैन रोड, चूना मण्डी बदायूं द्वारा अपनी पत्नी की स्मृति में ५०००-०० रुपये से स्थापित की गई है। इसका ब्याज आर्य अनाथालयों तथा गोशालाओं में दान देने का प्रावधान है। बाद में इस निधि को बढाकर १० हजार कर दिया गया है। अन्तरंग सभा १४ दिसबर ८६ द्वारा स्वीकृत।

५—स्व० श्रीमती कृष्णा शर्मा धर्मपत्नी रमेश चन्द्र शास्त्री स्थिर निधि

यह निधि २१ हजार रुपये की श्री रमेश चन्द्र शास्त्री १९/१००९ लोधी कालोनी नई दिल्ली द्वारा स्थापित की गई है। इस निधि का ब्याज संस्कृत पढने वाले गुरुकुल ज्वालापुर में अध्ययन कर रहे योग्य छात्रों को छात्रवृत्ति रूप में दिया जाएगा और आवश्यकता पडने पर किसी ग्रन्थ के प्रकाशन में भी व्यय किया जा सकेगा। अन्तरंग सभा १३ जून १९८७ द्वारा स्वीकृत।

६—श्रीमती दयावती स्मारक स्थिर निधि

यह निधि श्री विद्या प्रकाश ४८ चन्द्रलोक इन्क्लेव, दिल्ली-३४ द्वारा अपनी पत्नी की स्मृति में स्थापित की गई है। यह निधि ५० हजार रुपये की है। इस निधि का ब्याज आदिवासियों के कल्याण हेतु उनके ही क्षेत्र में व्यय करने का प्रस्ताव है। अन्तरंग सभा १३ जून ८७ द्वारा स्वीकृत।

७—श्री वेदरत्न आर्य (ग्रोवर) तथा श्रीमती चन्द्रवती आर्या जामपुर निवासी स्थिर निधि

यह निधि श्री वेदरत्न आर्य एम० ३४ए० मालवीयनगर, नई दिल्ली-१७ द्वारा पांच हजार रुपए की स्थापित की गई है। निधि का ब्याज प्रतिवर्ष ५१-०० रुपये आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी, शेष राशि अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम द्वारा चलाए जा रहे केन्द्रों पर व्यय किया जाएगा। प्रतिवर्ष विवरण श्री पंकज कुमार ग्रोवर बी० ४१९८ अमर कालोनी लाजपत नगर, नई दिल्ली-२४ को भेजना है। अन्तरंग सभा १३ जून ८७ द्वारा स्वीकृत।

८—महाशय लेखराम सत्यार्थ प्रकाश प्रचार स्थिर निधि

यह निधि महाशय लेखराम, मदोला, रिवाडी जिला मोहिन्द्रगढ द्वारा दो हजार रुपये की स्थापित की गई है। इसका ब्याज सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन व प्रचार पर व्यय किया जाएगा। स्वीकृति अन्तरंग सभा १३ जून ८७ द्वारा।

९—श्रीमती कमला देवी स्थिर निधि

यह निधि श्री सूबीराम गुप्ता २९ स्टेट कालोनी जी०टी० करनाल रोड, दिल्ली द्वारा पांच हजार रुपये की स्थापित की गई है। इसका ब्याज संस्कृत के विद्यार्थियों की छात्रवृत्ति या धर्म रक्षा अभियान या किसी ट्रस्ट पर व्यय किया जाना है। १३ जून ८७ की अन्तरंग से स्वीकृत।

१०—वैद्य प्रहलाद दत्त (दिल्ली) सहायता स्थिर निधि

यह स्थिर निधि वैद्य इन्द्रदेव ३३/४७४६ डिप्टीगंज, सदरबाजार दिल्ली द्वारा १० हजार रुपये की अपने पिता जी के नाम से स्थापित की गई है। इस निधि का ब्याज गुरुकुल नरेला (दिल्ली) की छात्राओं के अध्ययन में व्यय करना है। अतरंग सभा १३ जून १९८७ द्वारा स्वीकृत।

११—श्रीमती जमुना देवी स्मृति स्थिर निधि

यह स्थिर निधि श्री राम प्रसाद बिलासी प्रसाद बोरले आर्य, जय स्तम्भ के पास मु०पो० तालुका कारंजा जिला अकोला (महाराष्ट्र) द्वारा अपनी स्व० माता जी की स्मृति में स्थापित की गई है। निधि ८ हजार रुपये की है। इसका ब्याज महिला उत्थान के साहित्य प्रकाशन में व्यय किया जाना है। मुद्रित साहित्य की एक प्रति निधि कर्ता को भेजनी है। स्वीकृति अन्तरंग सभा २० सितम्बर १९८७ द्वारा।

१२—स्व० वजीर चन्द्र डावर तथा स्व० लक्ष्मीदेवी स्मृति स्थिर निधि

यह निधि श्री मलकराज डावर डी० २७ अमर कालोनी लाजपत नगर, नई दिल्ली द्वारा अपने स्व० माता-पिता की पुण्य स्मृति में १० हजार रुपये की स्थापित की गई है। १० हजार और देकर बीस हजार किया जाएगा। इस निधि का ब्याज भूकम्प, बाढ पीडित तथा सूखा राहत आदि सहायता कार्यों में व्यय किया जायेगा। अन्तरंग सभा २० सितम्बर १९८७ द्वारा स्वीकृत।

१३—स्व० चुन्नीलाल भसीन एवं श्रीमती सुहागवती स्मृति स्थिर निधि

यह निधि श्री रामवीर भसीन द्वारा अपने स्व० माता पिता की पुण्य स्मृति में पांच हजार रुपए की स्थापित की गई है। इसका ब्याज दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम, गाजियाबाद में दैनिक यज्ञ सामग्री के लिए उपयोग में लाया जाएगा। आश्रम न रहने की अवस्था में सभा आर्य अनाथालय के बच्चों के वस्त्र भोजन आदि पर व्यय कर सकेगी। इस निधि में वर्ष १९८८ से ब्याज लगेगा। अन्तरंग सभा २४ जनवरी १९८८ से स्वीकृत।

१४—स्व० रघुनाथ प्रसाद पाठक स्मृति स्थिर निधि

स्व० प० रघुनाथ प्रसाद जी पाठक जो कि सार्वदेशिक सभा के बौद्धिक बल थे और ६० वर्ष तक सार्वदेशिक सभा में कार्यरत रहे के निधन पर उनकी स्मृति में स्थिर निधि ८३८४) रुपए की स्वीकृत की गई। अन्तरंग सभा ११ अगस्त १९८५ द्वारा स्वीकृत।

१५ श्रीमती विद्यावती मदनलाल छोटडा स्थिर निधि

श्री मदन लाल (आश्रमवासी) ने ५ हजार रुपए की एक निधि अपने व अपनी स्व० धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती के नाम पर, सन्यास आश्रम गाजियाबाद में स्थापित की हुई थी। श्री रामवीर लखनऊ वासी की प्रार्थना पर श्री जनार्दन भिक्षु ने यह राशि इस सभा में जमाकर उक्त निधि स्थापित करा दी है। इस निधि का ब्याज आश्रम को दिया जाता रहेगा।

(समाप्त)

अन्धी गलियों का चक्रव्यूह खालिस्तान (२)

—डा० सुरेन्द्र सिंह कादियान—

पंजाब क्या है

पंजाब धरती का टुकड़ा भर नहीं है, न ही यह भाषा विशेष की चौखट में जड़ा शोपू है। न ही यह पंथ विशेष में समाया धर्मग्रन्थ है और न ही जाति विशेष की जागीर है। इन सबके विपरीत पंजाब एक विराट् परम्परा का वारिस है, एक गहन ज्ञान-सरिता का उद्गम स्रोत है, एक महान् सभ्यता का आदि पुञ्ज है और जो विराट्, गहन, महान् और विशाल होता है उसे हम पंथ, जाति, क्षेत्र, भाषा के संकीर्ण वृत्तों में आबद्ध करके नहीं रख सकते। व्योम-विहारी पक्षी अपनी स्वतन्त्र और ऊंची उड़ान से पक्षी कहलाता है और जब उसे पिंजरे में कैद कर दिया जाता है उसके पर काट दिए जाते हैं तो वह अपनी पहचान भूलकर जानवर की चाल चलने लगता है। ऐसा ही भ्रम पंजाब के कुछ लोगों में पैदा हो गया है और वे इन्सान का चोला उतार कर हैवान की भाषा बोलने लगे हैं और वैसा ही आचरण दिखा रहे हैं।

खालिस्तान का विचार ही पंजाब को विस्मृति के गह्वर में डालने की दुश्चेष्टा है। पंजाब को उसके सही और आदर्श सन्दर्भ में न सोचने की चूक ही खालिस्तान का विचार मन में उठा सकती है। गुरु नानक और गुरु गोविन्द सिंह ने कभी अलगाव की भाषा नहीं बोली। उनका चिन्तन और दर्शन तोड़ने का नहीं जोड़ने का रहा है। तोड़ने के संस्कार धर्म नहीं अपितु व्यक्ति समाज या पंथ की मूल भावना को न समझने वाले कायर और निर्बल लोग ही दे सकते हैं। सोचने के लिए दिमाग होता तो वे बेचारे तर्क के बजाय हथियारों में इतना विश्वास कैसे जताते? जिन हथियारों को बेकार मानते हुए अशोक ने कलिंग में फेंक दिया था, गौतम महावीर, नानक, दयानन्द और गांधी ने जिन हथियारों में मनुजता के हरण का आकलन किया उन हथियारों से लैस होकर न जाने ये मरजीवड़े किस सभ्यता का निर्माण करने में जुटे हैं? इतिहास का यह अखण्ड सत्य है कि दानव-सभ्यता का लक्ष्य इस पृथ्वी तल पर कभी फलीभूत नहीं होता। मरजीवड़े जिस औंधी सोच का परिचय दे रहे हैं वह बेस अधिक चलने वाला नहीं क्योंकि पाप का घड़ा जब भर जाता है तो उसे फोड़ने के लिये लाठी नहीं चलानी पड़ती कुदरत खुद ही उसे फाड़ देती है। टी० सी० गुजराती ने अपनी एक पंजाबी बैंत में सही लिखा है

> दाल दिल इस कदर न हो उच्चा
> मारे जाण सिर जेहड़े उठावदे ने
> बहुते आ जावन जो हंकार अन्दर
> दिल दी कदे मुराद न पावदे ने
> टोए साम लैंदे, धर्म-करम ताईं
> टिब्बे खड़े ई पए कुरलावदे ने
> दो भड़ी कारण खिड़के फुल्ल टी० सी०
> वेगा विच पए अर्क खिचवावदे ने।

पंजाब की दुर्दशा

शताब्दियों से पंजाब पंजाबियों का मन लुभाता रहा है किन्तु उस पंजाब की छवि आज दिल दिमाग से धुलने लगी है। गत ४-५ वर्षों के पंजाब पर दृष्टिपात करें तो इतिहास का पंजाब बड़ा ही अजनबी, बेगाना और कल्पित सा लगने लगता है। जिस धरती पर नानक के शान्ति संदेश की फुहार पड़ती रही वहां आज वैमनस्य, द्वेष और घृणा के अंगारे बरस रहे हैं। नानक ने उपदेश दिया था कायर मत बनो जीवन से जूझो लेकिन आज पंजाब में जीवन है कहां, श्मशान जाग रहा है वहां। गुरु तेग बहादुर का बलिदान नसीहत देता रहा है कि महानता किसी की जान लेने में नहीं अपनी जान कुर्बान करने में है लेकिन दानवी मरजीवड़ों की भूख उतनी ही बढ़ रही है जितने नर-कंकाल वे पचाते हैं। गुरु गोविन्द सिंह ने आह्वान किया था कि सर पर कफन और हथेली पर जान रखकर मरना ही चाहते हो तो अपने लिए नहीं देश, धर्म और समाज के लिए मरो। इन गुरुओं के सामने सिखों ने ही नहीं मुसलमानों और हिन्दुओं ने भी सिजदा करने में गौरव अनुभव किया क्योंकि इन गुरुओं ने इन मुरीदों को ईश्वर के सामने खड़ा करके यह नहीं कहा कि मेरी जय बोलो, मेरे बाबा-परदादा की जय बोलो। जय बुलती है गुणों की, तपस्या की, महत्ता की न कि कायरता, क्रूरता और दानवता की।

खालिस्तान कैसा होगा खालिस्तानियों की प्रवृत्ति से अनुमान लगाना कठिन नहीं। जिसकी नींव ही अविश्वास, अत्याचार और विश्वासघात पर रखी जा रही हो वह किसे क्या सुख-शान्ति की गारण्टी दे सकता है? लेकिन भ्रम जब तक टूटता नहीं वह भरमाता रहता है और इसलिये खालिस्तानियों को पंजाब में खड़े होने का आधार मिला हुआ है। इस भ्रम को प्रशासनिक आदेशों से नहीं तोड़ा जा सकता, इसके लिए बुद्धिजीवियों को पंजाब में मोर्चे खोलने होंगे। खालिस्तान समर्थकों को समझाना होगा कि राष्ट्र की मुख्य धारा से कटकर वे कितना भारी अहित कर रहे हैं। मरजीवड़े दया के पात्र हैं दुतकार के नहीं क्योंकि वे धर्मसत्ता द्वारा बरगलाए गये हैं, यह इच्छा, यह सोच उन पर लादी गई है। पंजाब की उदात्त परम्पराओं, धार्मिक सहिष्णुता और भाई चारे को एक बार फिर से मुखर करना होगा और यह कार्य बुद्धिजीवी वर्ग ही अधिक शालीनता, संयम और ईमानदारी से कर सकता है।

मरजीवड़े ही दोषी नहीं

बुद्धिजीवियों को एक सावधानी रखनी होगी। केवल मरजीवड़े ही पंजाब की दुर्दशा के दोषी नहीं है। राजशक्ति और धर्मशक्ति समय रहते हस्तक्षेप करती तो ये मरजीवड़े विदेशी षडयन्त्र का शिकार होने से बच सकते थे। मरजीवड़े बदनाम इसलिये हैं कि उनका अपराध जग-जाहिर हो चुका है, आवेश में आकर वे राज-सत्ता और धर्म-सत्ता को खुली चुनौती दे बैठे हैं, निहत्थे निरपराध लोगों पर कहर ढा रहे हैं, राष्ट्रीय धारा से विलग हो चुके हैं और सरकार तथा प्रेस उन्हें नंगा और जलील कर रही है। यह सब ठीक है किन्तु यह ठीक नहीं है कि केवल मरजीवड़ों को कोसा जाए और जो परदे की ओट में पंथ की ओट में राजनीति की ओट में बैठकर गोटियां बिखेर रहे हैं, षडयन्त्र रच रहे हैं उन्हें बख्श दिया जाए।

मरजीवड़ों के यदि कुछ स्वार्थ हैं तो पंथ और राजनीति के ठेकेदारों के भी दलगत स्वार्थ हैं। यदि देश की धर्मशक्ति और राजशक्ति पाक-साफ होती तो देश भ्रष्टाचार और साम्प्रदायिकता की चक्की में क्यों दला जाता? मरजीवड़े अजेय नहीं हैं, सर्वव्यापी नहीं हैं, सर्वभक्षी नहीं हैं क्योंकि उनकी कोई अपनी शक्ति नहीं है। उन्हें आधार प्रदान किया है पंथ ने और हथियार उठाने की सूझ दी है दलगत राजनीति ने। बहाने गढ़े जा रहे हैं कि उन्हें पाकिस्तान शह, प्रशिक्षण और हथियार दे रहा है लेकिन अपनी कमजोरियों के गवाक्षों में कोई नहीं झांकना चाहता। किसी व्यक्ति पर बाह्य रोगाणु तभी सफल आक्रमण करते हैं जब वह बदपरहेजी करता है, उसके जीवाणु रोगाणुओं से लड़ने की सामर्थ्य खो देते हैं। आखिर पाकिस्तान प्रतिशोध की भावना से कैसे मुक्त रह सकता था जबकि भारत उसकी दृष्टि में उसका विभाजन कराने का अपराधी रहा है। पंजाब में जो हो रहा है वह समस्त देश का कर्मफल ही है, यह फल पंजाब को न भुगतना पड़ता यदि राजसत्ता और धर्मसत्ता दूरदर्शिता से काम लेतीं।

आज भी वे इस खतरे का अहसास नहीं कर रही हैं और एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने में ही अपने कर्तव्य की इतिश्री मान बैठी हैं। यह रुख आत्मघाती ही नहीं राष्ट्रघाती भी है। इसके रहते पंजाब संकट से उभर नहीं सकता बल्कि उत्तरोत्तर मझधार में नीचे ही उतरता जाएगा। बुद्धिजीवी सामने आकर जनता को आन्दोलित करें तो भ्रष्ट युवा-शक्ति, राजशक्ति और धर्म-शक्ति की नाक में नकेल डाली जा सकती है।

आर्यसमाज की गतिविधियां

दयानन्द शिक्षा दैनन्दिनी (अनुशासन) डायरी

प्रत्येक वैदिक तथा आर्य संस्थाओं के लिए ही नहीं अपितु प्रत्येक विद्यालय में विद्यार्थियों को अनुशासन सिखाने के लिए अत्यन्त आवश्यक डायरी। गुरुकुल विश्वविद्यालय के मुख्य अधिष्ठाता आचार्य बृहस्पति शास्त्री एवं प्रोफेसर जयकुमार मुद्गल श्री डी एस राघव प्रधान आर्य प्रति० सभा भोपाल द्वारा सम्पादित अनोखी डायरी जो बालक बालिकाओं को अनुशासन बद्ध एवं सचरित्र बनाती हैं करीब १५० पृष्ठ प्लास्टिक आवरण सहित मूल्य ४) रुपए भरपूर चित्रों सहित ५०० डायरियां लेने पर विद्यालय का नाम छापने की सुविधा।

—विद्या रत्न

उपप्रधान आर्य विद्या सभा (उ० प्र०)

गत दो मासों में डा. भवानीलाल भारतीय का धर्म प्रचार, प्रवास तथा साहित्य लेखन कार्य

१—जनवरी १९८८ मे गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के वेद विभाग की शोध समिति मे सम्मिलित हुए तथा वेद मन्दिर ज्वालापुर मे प्रवचन किया।

२—सागर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित संगोष्ठी मे वेद प्रतिपादित राष्ट्रीय एकता पर अपना शोधपत्र पढ़ा तथा आकाशवाणी छतरपुर द्वारा आयोजित संस्कृत साहित्य और राष्ट्रीय चेतना परिचर्चा मे भाग लिया।

३—गुरुकुल प्रभात आश्रम द्वारा मकर संक्रान्ति पर आयोजित वेद गोष्ठी की अध्यक्षता की तथा वेदो की ऋषि कार्य विषय पर प्रास्ताविक निबन्ध वाचन किया।

४—आर्य समाज सेक्टर ७ चण्डीगढ मे साप्ताहिक वेद कथा प्रवचन प्रस्तुत किये। फरवरी २२ से २८ तक।

५—दयानन्द ब्राह्म महा विद्यालय हिसार के छात्रो के समक्ष दयानन्द जीवन पर प्रवचन तथा शंका समाधान।

६—आर्य समाज नागोरी गेट हिसार के साप्ताहिक अधिवेशन मे १३ मार्च को विशेष प्रवचन।

७—अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ द्वारा आयोजित गोष्ठी मे निबन्ध पाठ तथा आर्य समाज काकड़वाडी बम्बई के वार्षिकोत्सव मे प्रवचन।

८—आर्य समाज पलवल के वार्षिकोत्सव मे प्रवचन (२६ २७ मार्च)

दक्षिण भारत मे आर्य समाज का प्रचार कार्य

दक्षिण भारत (तमिलनाडु) मे आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री महात्मा नारायण स्वामी द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार कार्य निरन्तर प्रगति कर रहा है। इस प्रदेश के सुदूर गांवों और कस्बो मे जाकर वे हवन यज्ञादि तथा प्रवचनो का आयोजन करते हैं। साथ ही साथ शुद्धि कार्य को भी धीरे-धीरे आगे बढ़ा रहे हैं। गत मार्च १९८८ मे उन्होने ३३ ईसाइयो और २ मुसलमानो को वैदिक धर्म मे दीक्षित किया। इस महीने मे अपने कार्य की सबसे महत्वपूर्ण सफलता के रूप मे उन्होने १४० हरिजन परिवारों (लगभग ६०० व्यक्तियो) को मुसलमान होने से बचाया। अपने गावो के सवर्ण हिन्दुओं द्वारा किये गये दुर्व्यवहार के कारण वे लोग सामूहिक रूप से इस्लाम धर्म स्वीकार करने का निश्चय कर चुके थे। श्री नारायण स्वामी के सत्प्रयत्नो से उनका धर्म परिवर्तन सम्प्रति रुक गया है।

आर्य नेता का निधन

आर्य जगत के ख्याति प्राप्त व्यक्ति प०-श्री देवदत्त जी आर्य ग्राम कुढा म० प्र० निवासी का ८० वर्ष की आयु में निधन हो गया है। आप अपने कार्य से सन्तुष्ट थे।

उत्सव

आर्य समाज मधुपुर का ३८वा वार्षिकोत्सव दिनाक १० मार्च ८८ से से १३ मार्च ८८ तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न। डा आनन्द सुमन देहरादून के द्वारा १०० व्यक्तियो का उपनयन सस्कार कराया गया। अतिथि मे डा० सुमन सीताराम आर्य स्वामी सरलानन्दजी इन्द्रदेव शास्त्री ऋषीराम अनुशील वीरेन्द्रसिंह।

यज्ञशाला का उद्घाटन

—दिनाक ३ ४ ८८ को वेद मन्दिर आर्य समाज ब्रह्मपुरी भगतसिंह मौहल्ला, न्यु उस्मानपुर दिल्ली ५३ की नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन आदरणीय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने किया। यज्ञशाला का निर्माण दानवीर महाशय कल्याणदास जी ने अपनी शुभ कमाई से कराया। शाहदरा क्षत्रीय आर्य प्रतिनिधि उपसभा द्वारा यहा पर आर्य समाज स्थापना दिवस भी मनाया गया। जिस मे सभी क्षेत्रीय आर्य समाज उपस्थित थी।

इस अवसर पर आदरणीय श्री सच्चिदानन्द शास्त्री श्री सत्यप्रिय आदि आदि विद्वानो ने भी वेद की महत्ता पर प्रकाश डाला श्री वेदव्यास जी के मधुर भजन हुए।

—श्रीकिशन आर्य मन्त्री

विश्व हिन्दू महासम्मेलन

(पृष्ठ ९ का शेष)

राष्ट्रों को गम्भीरता से सोचना चाहिए कि वे कब कौन आर्थि-और म कोशिश करने मे क्या हानि-लाभ हो सकते हैं। वहा सभी राष्ट्रो को अपना निर्णय करने मे स्वतन्त्रता है वहा प्रत्येक राष्ट्र को अपना हित साधने में दूसरे राष्ट्रो का सहयोग और सद्भावना ग्रहण करने का भी पूरा अधिकार है। हिन्दू एकता के उद्देश्य को आगे बढाते हुए यदि नेपाल राष्ट्र का हित भी सध तो इसमे कोई बुराई नहीं है। मैंने उस नवयुवक को यह भी कहा और उसने भी मेरी बात को सुना और बहुत हद तक माना भी। ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनो मे चिन्तन और कथन सन्तुलित रहें, तभी अच्छा रहता है, उसके ठोस परिणाम भी निकलते हैं। चिन्तन और कथन भावना रहित हो यह हम नही कहना चाहते। भावना सहित होने से वे अधिक प्रभावशाली होते हैं परन्तु केवल भावना ही भावना हो और ठोस भाव न हो तो सारा प्रयास व्यर्थ हो जाता है। मेरा भाव यही है कि अच्छे और ठोस परिणामो के लिए सन्तुलित ढग से सब कार्य करना लाभ दायक होता है।

मैंने जो ऊपर लिखा उसका यह अर्थ कदापि नही निकालना चाहिए कि सम्मेलन अपने उद्देश्य मे सफल नही रहा। मैं यह मानता हूं कि चाहे इस महासम्मेलन मे हिन्दुओ के सभी सम्प्रदायो के शीर्षस्थ नेता न आये हो परन्तु हिन्दू एकता की मधुर गुज २० से अधिक देशो के प्रतिनिधियो के साथ थोडी-थोडी ही सही सब महाद्वीपो के देशो और द्वीपो मे गई है। इस दिशा मे यह एक ठोस कदम था और इस उद्देश्य को प्राप्ति के लिए सब कमियो को दूर करके और आगे बढना चाहिए और पूरी सद्भावना के साथ इस दिशा मे एक के बाद एक ठोस कदम उठने चाहिए। इस सम्मेलन की एक उपलब्धि यह भी रही कि जो शकराचार्य पिछले दिनो मे छुआछूत और जन्म के आधार पर जातपात को हिन्दू धर्म का अभिन्न अग मानते थे और उसे वेदानुकूल भी कहते थे उन्होने खुलकर छुआछूत और जातपात को हिन्दू धर्म से निकालने की अपील की। काची कामकोटि पीठ के शकराचार्य हरिजनो की बस्ती मे जाकर मिले आशीर्वाद दिया और नाथ सम्प्रदाय के महन्त तो हरिजनो से गले लगाकर मिले। स्वामी दयानन्द का नाम तो किसी ने नहा लिया परन्तु दयानन्द का जादू सिर चढकर बोल रहा था। हिन्दू एकता और मानव एकता तो दयानन्द के मन्तव्यो से ही सम्भव है। उनका उल्लेख न करना कृतघ्नता तो है ही। यह दकियानूसी सामन्तो का षडयन्त्र भी है। यह मैं इसलिए कहता हूं क्योकि महर्षि दयानन्द तो सामन्तो महन्तो के पाखण्ड और लूट के घोर विरोधी थे।

मेरी तथाकथित धर्माचार्यो तथा शकराचार्यो से यह करबद्ध प्रार्थना है कि वे हर गलत बात और वर्जित प्रथा को बिना वद के पढे और समझे वेदानुकूल न कहा करे। उन धर्माचार्यों के गलत फतवा के कारण ही भारत को दास बनाने वाले विदेशी लोगो को वेदो के लिए अपमानजनक बात कहने का अवसर मिला है। [illegible] प्रकार शुद्धि सभी विदेशी विद्वानों को भी वेदविरुद्ध और मानव कल्याण की भावनाओं [illegible] और जीवन-दर्शन के सामने नतमस्तक होना पडा। दो शकराचार्यों ने तो काठमाण्डू मे अपनी गलती का सुधार कर लिया, [illegible] परन्तु पुरी के शकराचार्य तो अभी भी सती प्रथा' को वेदानुकूल [illegible] बैठे हैं। शकराचार्यों की गद्दी की परम्परा [illegible] है और गम्भीर चिन्तन और अनुभवी विवेकशील व्यक्ति इस गद्दी को सुशोभित करते रहे हैं। अभिमान हठी और विषमता से दूषित बुद्धि के लोगो की गद्दी यह नहीं है। हम यह आशा करेंगे कि पुरी के शकराचार्य भी स्वामी [illegible] जी तथा स्वामी जयेन्द्र सरस्वती की भाति अपनी गलती का सुधार करेंगे।

सती प्रथा

(पृष्ठ ३ का शेष)

ससुराल के लोग चाहते थे कि यह सम्पत्ति नही रह जाए। इसका एकमात्र तरीका था कि अबोध बालिका पति के साथ सहमरण करे। इसी आर्थिक व्यवस्था ने बगाल में सती प्रथा या विधवा की आतृसिद्धि का विस्तार किया।

जाहिर है कि मध्ययुग में ऐसी मान्यता को भी धर्म के साथ जोड दिया गया। राजनीतिक कारणों से यह प्रथा राजस्थान और विजयनगरम् में भी प्रचलित और गौरवान्वित हुई। जहा तक इस प्रथा के शास्त्रीय आधार का प्रश्न है, यह वैदिक नही है और जहा इसे स्वीकार भी किया गया है उसमे दो बाते मुख्य हैं। पहली बात तो यह है कि यह विकल्प व्यवस्था है अर्थात् स्वेच्छामूलक। दूसरी बात यह है कि विकल्प व्यवस्था प्रशस्त नही अरुचिपूर्ण मानी जाती है। शास्त्रकारो ने इस व्यवस्था का निषेध कर इसे आत्महत्या जैसा पाप बताया है।

परिमल एकेडमी बम्बई योग शिविर में स्टेज पर बैठे हुए बाएं से— श्रीमति मेघा विनी बहुन मेहता, एकेडमी के अध्यक्ष कु० सविता दीदी मेहता शिविर के संचालक स्वामी श्री जितेन्द्र ब्रह्मचारी जी, प्रभपुरी आश्रम के ट्रस्टी स्वामी श्री माधवानन्द जी।

परिमल एकेडमी द्वारा योग शिविर का आयोजन

परिमल एकेडमी बम्बई जिसके अध्यक्ष है योग शिरोमणी कु० सविता दीदी ना० मेहता ने एक योग शिविर का आयोजन ता० १० फरवरी से ता० २० फरवरी तक बम्बई मे प्रभपुरी आध्यात्म विद्याभवन मे किया था। इस शिविर का सम्पूर्ण आयोजन आदरणीया श्रीमती मेघाविनी बहन मेहता ने तथा सम्पूर्ण संचालन गंगोत्री धाम के स्वामी जितेन्द्र ब्रह्मचारी जी ने किया था। शिविर मे स्त्री पुरुष मिलकर ८० लोगो ने हिस्सा लिया था शिविर का उद्घाटन एकेडेमी के अध्यक्ष कु० सविता दीदी ने किया था उन्होने योग के बारे म योग का अपने रोज के ज वन मे क्या स्थान है हमारे पव और उसके साथ जुड क्रियाओ मे योग ध्यान मन्त्र और साधना का सम्ब ध है उसके बारे म अति विद्वत्तापूर्ण संभाषण दिया था। उनकी वाक छटा स प्रभावित उनके हर एक का सत्य का प्रश्न मानते हुए सभी ने सविता दीदी को तालियो के गडगडाट से नवाजा था।

शिविर मे योग के कई आसन और कसरत बताई गई थी जिसमे नेति धोती शख प्रक्षालन त्र तमन अजपा जप योगनिन्दा कु डल नेत्र ज्योति सूक्ष्म व्यायाम प्राणायाम धारणा ध्यान शामिल थे और कई रोगो के निवारण के उपाय बताए गए थे जिसम डायाबिटिस ब्लडप्रेशर ओबेसिटि कान्स्टीपेशन ह्रदय अस्थमा चमडी के रोग पाचन क्रिया के रोग गले के रोग सिर दर्द—आर्थराइटिस इन्सोम्निया साईनस मिग्रेन डिप्रेशन किडनीका तकलीफ वीर्यस्खलन और व ध्यत्व जसे रोगो के बारे मे योग क आधार पर सलाह सूचना दी गई थी।

शाम को लेक्चर के द्वारा सभा आसना क बारे म और योग के बारे मे जानकारी दी गई था। शिविर दस दिन तक चली थी और उसका पूर्णाहुति के लिए एक यज्ञ का आयोजन किया गया था पूर्णाहुति कार्यक्रम मे एकेडमी के अध्यक्ष कु० सविता दीदी ने अपने विद्वत्तापूर्ण संभाषण से योग के द्वारा परमात्मा की प्राप्ति के विषय को समझाया था प्रभपुरा आश्रम के ट्रस्टी स्वामी श्री माधवानन्द जी ने भी अपने सन्देश मे योग के द्वारा शरीर और मन के ऊपर काबू पाना और आत्मा के द्वारा परमात्मा से मिलन करना कसे सभव है वह समझाया था। स्वामी श्री जितेन्द्र ब्रह्मचारी जी ने प्राणायाम से प्राप्त शक्तियो के बारे मे प्रत्यक्ष प्रयोग द्वारा अपनी छाती पर अतिशय वजन वाले पत्थर को बडा हथौडा से ताडा था तोडने का और बिजली के बल्ब के काच को हथली मे तोडकर पिसने की क्रियाए करके बताई थी। स्वामी श्री माधवानन्द जी के हाथो से शिविर म भाग लेने वाले सभी को प्रमाणपत्र दिए गए थे और बाद मे शिविरार्थियो ने अपने अनुभव बयान किए थे। ऐसी शिविर बार बार हो ऐसा अनुरोध किया था।

शिविर का सब काम व्यवस्थित रूप से निपटने म श्रीमती मेघाविनी बहन मेहता ने बहुत ही कष्ट उठाया था।

प्रधान निर्वाचित

श्री एम० एल० लाहोटी

कलकत्ता के सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री एम० एल लाहोटी बी काम एल एल बी एफ सी ए साधारण सभा के वार्षिक चुनाव म इंडियन प्लास्टिक्स फेडरेशन के प्रधान हुए है।

श्री लाहोटी आर्य समाज के एक प्रमुख कार्यकर्ता और प्रसिद्ध समाज सेवी हैं।

नागरिक अभिनन्दन के बदले में लोगो का हार्दिक धन्यवाद करते हुए श्री मोहनलाल जी मोहित'। मच पर उनके साथ बैठे हैं बाय से श्री मगलसेन जी चोपडा श्री काशीराम राणा (मेयर सूरत महानगर) श्री पूर्ण कृष्ण बन्सल (पुलिस कमिश्नर सूरत) डा० नवीनचन्द्र नगर सेठ।

अन्तरग सभा का निर्णय

(पृष्ठ १ का शेष)

आनन्दबोध सरस्वती यथावत सभा प्रधान के नाते कार्यरत रहें। उनका त्यागपत्र अवध है और सभा की दृष्टि मे उसका कोई औचित्य नही है। प्रधान जी के नेतृत्व मे हमें पूर्ण विश्वास है और आज की परिस्थिति में उनका प्रधान पद पर स्थिर रहना अनिवार्य है।

इन कारणो से प्रधान जी से अनुरोध किया जाता है कि वह अपना त्यागपत्र जिसकी कोई उपयोगिता नही है वापस ले।

इसके अतिरिक्त सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष बाबू सोमनाथ जी एडवोकेट ने सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती को ४-२-८८ को अपना त्यागपत्र दिया था। उस पर अन्तरग सभा १७-४-८८ में उनकी अनुपस्थिति पर विचार विमर्श के पश्चात् अन्तरग सभा ने उनका त्यागपत्र सर्वसम्मति से अस्वीकार करते हुए उनसे प्रार्थना की यह सगठन के हित मे अपना त्यागपत्र वापस लेले।

—सच्चिदानन्द शास्त्री सभा मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] वर्ष २३ अङ्क १८] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र वैशाख शु० १५ स० २०४५ रविवार १ मई १९८८ | दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

आपसी प्रेम और देश की एकता बनाये रखने के लिए भारतीय भाषाओं की एक लिपि जरूरी

देवनागरी ही सबसे ज्यादा वैज्ञानिक और प्यारी लिपि

केन्द्रीय शिक्षा राज्यमन्त्री श्री ललितेश्वर प्रसाद साही के उद्गार

नई दिल्ली। केन्द्रीय शिक्षा राज्यमन्त्री ललितेश्वरप्रसाद साही ने कहा कि जैसे सोवियत संघ, इण्डोनेशिया जापान और तुर्की आदि देशों मे कई भाषाओ की एक ही लिपि है वैसे ही सभी भारतीय भाषाओ की एक लिपि का होना बहुत जरूरी है।

श्री साही यहा नागरी लिपि परिषद के ११ वे अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन का उद्घाटन कर रहे थे। दो दिन के इस सम्मेलन मे देश के सभी हिस्सो से आए सैकडो भाषाविद भाग ले रहे थे। आचार्य विनोबा भावे की शिष्या और जानी मानी समाज सेविका निर्मला देशपाडे ने मुख्य भाषण दिया।

श्री साही ने कहा कि आपसी प्रेम और देश की एकता और अखण्डता बनाए रखने के लिए यह लिपि महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। उन्होने कहा कि आदिवासी बोलियो मे और दूसरी भारतीय भाषाओ का साहित्य नागरी लिपि मे मुहैया कराया जाना चाहिए।

इस अवसर पर निर्मला देशपाडे ने कहा कि आज सरकार जितना कानून व्यवस्था पर खर्च कर रही है उसका एक फीसदी भी नागरी लिपि विकास पर लगा दे तो देश की कानूनी व्यवस्था की समस्या ही खत्म हो जाएगी। उन्होने कहा कि यदि सभी आदिवासी बोलियो का साहित्य नागरी मे उपलब्ध कर दिया जाए तो देश मे एक रचनात्मक आन्दोलन खड़ा हो जाएगा। उन्होने अफसोस जाहिर किया कि आज आदिवासी साहित्य रोमन लिपि में तो उपलब्ध है पर नागरी मे नही उन्होंने आरोप लगाया कि अंग्रेजी भाषी ही देश को तोडने में सबसे अधिक योगदान कर रहे हैं। वे कोई और भाषा नही सीखते जिससे दूसरे भाषी लोग हिन्दी और नागरी को शक की नजर से देखते हैं।

देवनागरी सबसे ज्यादा वैज्ञानिक और प्यारी लिपि है। यही सबको प्यार और एकता के सूत्र में बाध सकती है। इसी के माध्यम से सब देशवासी अपनी भावनाए सही ढग से प्रगट कर सकते हैं और एक दूसरे के नजदीक आ सकते हैं।

भारत भूमि और भारतीय संस्कृति की महानता का पता इस बात से लगता है कि इण्डोनेशिया के भूतपूर्व राष्ट्रपति सुकर्ण से जब उनका नाम भारतीय होने के बारे में पूछा गया तो उन्होने कहा कि इण्डोनेशिया मे बच्चो को पाचो पाडवो की तस्वीर दिखाई जाती है। छठा कर्ण था। उन्होने जब अपना नाम कर्ण चुना तो उनके पिता ने उन्हे बताया कि कर्ण कौरवो में शामिल हो गया था। इसलिए तुम अपना नाम 'कर्ण' तो जरूर रखो किन्तु उसके आगे 'सु' लगा लो।

सम्मेलन के शुरू में नागरी लिपि परिषद के अध्यक्ष प्रो० मलिक मोहम्मद ने परिषद के कामो का ब्यौरा दिया। ●

आर्यसमाज का फार्मूला ही पंजाब समस्या का हल

देश के नव निर्माण में आर्यसमाज की अहम् भूमिका

विशाल जनसभा में स्वामी आनन्दबोधसरस्वती के उद्गार

न्यू कालोनी गुडगावा, २४ अप्रैल।

न्यू कालोनी आर्य समाज गुडगाव द्वारा आयोजित राष्ट्ररक्षा सम्मेलन मे हजारो जन समूह के मध्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने घोषणा की कि देश की वर्तमान परिस्थितिया दिन प्रतिदिन गम्भीर होती जा रही हैं। पजाब की समस्या पहले से भी विस्फोटक बन गई है। पजाब समस्या का एकमात्र हल आर्य समाज द्वारा डेढ वर्ष पूर्व दिए गए फार्मूले से ही सभव है, जिसमे प्रधानमन्त्री जी से कहा गया था—

१—समूचे पजाब को सेना के हवाले कर दिया जावे। अथवा मार्शल ला लागू कर दिया जावे।

(शेष पृष्ठ २ पर)

राम के आदर्शों पर चलने से ही रामराज्य की स्थापना का स्वप्न साकार होगा

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

दिल्ली २३ अप्रैल। हिमाचल भवन मे श्री रामराज्याभिषेक दिवस समारोह का उद्घाटन करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा—ससार मे एक भी उदाहरण ऐसा नही है कि राम राज्य छोडकर वन को आ रहे हो और भरत राज्य लेने को तैयार न हो। आज सत्ता की प्राप्ति के लिए रक्त बहाया जाता है किन्तु भरत ने १४ वर्ष रामचन्द्र की खडाऊ को सिहासन पर रखकर अयोध्या का राजसिहासन चलाया। वास्तव मे राम जीवन की घटनाए हमारे जीवन को छू जाती है। आज हमे उनके आदर्शो को अपनाने की आवश्यकता है। केवल राम का नाम लेने से कुछ नही होगा। रघुकुल के आर्य साम्राज्य मे कही भी शोषण, अत्याचार व व्यभिचार का नामोनिशान नही था। चोर-डाकूओ का भय नही था। ऊच नीच व जात पात का भेदभाव नही था। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती और राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के स्वप्नो का आधुनिक भारत रामराज्य के इन्ही आदर्शो पर आधारित था।

समारोह का आयोजन सस्कार भारती सस्थान की ओर से नई दिल्ली के हिमाचल भवन म सम्पन्न हुआ। इसमे दिल्ली के पूर्व महापौर श्री केदारनाथ साहनी श्री भाऊराव देवरस डा० वेद प्रताप वैदिक आदि मुख्य अतिथि महानुभाव उपस्थित थे।

पंजाब समस्या का हल

(पृष्ठ १ का शेष)

२—कच्छ से पजाब व जम्मू काश्मीर तक पाकिस्तानी सीमा पर सुरक्षा पट्टी का निर्माण किया जावे।

३—सुरक्षा की दृष्टि से भू० पू० सैनिक परिवारो को सीमा क्षेत्र मे बसाया जावे।

स्वामी जी ने कहा देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन से लेकर नव निर्माण मे वर्तमान समय तक आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। १९६७ ६८ मे जब मैं लोकसभा सदस्य था डा० जाकिर हुसैन ने राष्ट्रपति भवन मे मस्जिद बनाने की सरकार से स्वीकृति मागी थी और इदिरा जी ने ५ वर्ग गज जमीन देने का प्रस्ताव कर लिया था। जब मुझे पता चला तो मैने तुरन्त इसका विरोध किया और मस्जिद के निर्माण को रुकवाया। जब बाला साहब देवरस सघ के सरसघ सचालक बनकर दिल्ली आए तो उन्होने त्यागी जी से फोन पर बात करके मुझे अपने कार्यालय मे बुलाया। मै वहा गया तो उन्होने कहा—रामगोपाल जी आपने राष्ट्रपति भवन म मस्जिद निर्माण के कार्य को रोककर धम रक्षा का बहुत बडा कार्य किया है। यदि आप प्रयत्न न करते तो रामजन्म भूमि कृष्ण जन्मस्थल और काशी विश्वनाथ मन्दिर के स्थान पर जैसे मस्जिदे बनाई हैं उसी प्रकार राष्ट्रपति भवन मे भी मस्जिद बन जाती।

स्वामी जी ने कहा आर्यसमाज के सैकडो कार्यो का तो अधिकाश लोगो को पता भी नही है। उत्तर पूर्वी भारत और मध्य प्रदेश, राजस्थान आदि मे ईसाई करण की घटनाओ को रोकने के लिए आर्य समाज न दयानन्द सेवाश्रम स्थापित किए हुए है। मीनाक्षीपुरम सारा गाव मुसलमान बना दिया गया था, इसके विरुद्ध आर्य समाज ने वहा जोरदार सम्मेलन ही नही किया अपितु दक्षिण भारत मे इस्लामीकरण के विरुद्ध हिन्दू जाति मे जागृति पैदा कर दी है। जम्मू काश्मीर मे गत वर्ष सैकडो मन्दिरो को तोड दिया गया था, जिनको आर्य समाज की माग पर ही सरकार को ठीक करना पडा और दगो से प्रभावित हिन्दुओ को मुआवजा भी दिलवाया गया।

पंजाब से पलायन ने फिर जोर पकड़ा

नई दिल्ली, १९ अप्रैल। आतकवादी गतिविधियो से त्रस्त लोगो के पजाब से देश के अन्य लोगो की तरफ पलायन का सिलसिला फिर जोर पकड रहा है। पलायन करने वाले कुछ परिवार यहा भी पीरागढी शिविर व अन्य स्थानो पर पहुँचे है।

जो परिवार पीरागढी मे भी शरण नही पा सके व अन्य स्थाना की तलाश मे भटक रहे है। भटकने वाले परिवारो मे से कुछ कल रात चादनी चौक स्थित आर्य समाज दीवान हाल मे भी पहुँचे। यहा कल रात तीन परिवार पहुँचे जबकि लगभग १० परिवार वहा पहले से ही है।

अमृतसर जिले की पुतलीगढ बस्ती से आने वाले ४० वर्षीय ब्रजमोहन फिलहाल दिल्ली मे सिर छिपाने की जगह ढूढने मे परेशान रहे है। इस समस्या का हल निकल आने पर वे अपने छः सदस्यीय परिवार की रोजी-रोटी के लिए कुछ कामकाज शुरू करने की सोच रहे है।

पजाब से पलायन का कारण यहा का महौल तो है ही इसके साथ ही पिछले दिना वहा लगे पोस्टरा से वहा के हिन्दू और भी आतकित हो गए। इन पोस्टरो मे हिन्दुओ को चेतावनी दी गई कि वे बैसाखी से पहले वहा से चले जाए वर्ना उन्हे मार डाला जाएगा।

श्री ब्रजमोहन ने हालातको देखकर फैसला किया— वहा मरन से अच्छा है दिल्ली मे मरेंगे इस लिए वे चले आए। दिल्ली आकर वे पीरागढी, मगोलपुरी आदि के चक्कर काटते रह परन्तु कोई पूछता नही है। उन्हाने कुछ समय रेलवे स्टेशन पर भी काटा तभी उन्ह किसी न आर्य समाज मे जाने की सलाह दी।

इसी तरह से पक्खी मे फलो की रेहडी लगाकर जीवन यापन करनेवाले २८ वर्षीय सुभाषचन्द न भी अपनी पत्नी व तीन बच्चो के साथ दिल्ली आना बेहतर समझा।

पूला निवासी २१ वर्षीय जयपाल ने भी अपनी माता जी व दो बहनो के साथ दिल्ली आना सुरक्षित समझा। उनकी मान्यता है कि पजाब म सरकार का प्रचार कुछ भी हो हिन्दू अपने को असुरक्षित अनुभव करत है। आतकवादियो का समर्थन न करनवाले सिख भी उनकी गोलिया का निशान बन जाते है। जयपाल न बताया कि हिन्दुओ को पजाब छोडने की कहने वाले पोस्टर खालिस्तान कमाडो फोर्स व भिडरावाले फोर्स की तरफ से जारी किए गए है।

आर्य समाज मन्दिर म ठहरे परिवारा म अमृतसर जिले के लोग भी शामिल है।

आर्य गुरुकुल होशंगाबाद (म० प्र०) का हीरक जयन्ती समारोह

भारत के मध्य मे स्थित आर्य कालीन शिक्षा सस्कृति एव सभ्यता का ज्वलन्त उदाहरण। आश्रम व्यवस्था के प्रशिक्षण का एक मात्र स्थान, महर्षि दयानन्द सरस्वती के वैदिक राष्ट्र निर्माण को साकार बनाने वाला पवित्र नर्मदा के पावन तट पर अप्रैल १९१२ मे स्थापित आर्य गुरुकुल होशगाबाद को स्थापित हुए ७५ वर्ष पूर्ण हो चुके हैं।

इस गुरुकुल मे पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर अनेक छात्र विविध कार्य क्षेत्रो मे सस्था का यश फैला रहे है। गुरुकुल के ६० स्नातक आज भी देश के विभिन्न स्थाना मे कार्यरत है। गुरुकुल की इस दीर्घ कालीन सफल यात्रा पूर्ण करने के उपलक्ष्य मे दिनाक २५ से २९ मई १९८८ तक होशगाबाद मे विशाल रूप मे हीरक जयन्ती समारोह मनाने का निश्चय किया गया है।

इस अवसर पर एक विराट वैदिक महायज्ञ के साथ, बौद्धिक सम्मेलन गुरुकुल सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन सस्कृत सम्मेलन तथा यति मण्डल सम्मेलन का आयोजन किया गया है। समारोह मे देश के अनेक प्रमुख महात्मा, विशिष्ट आर्य नेता और विद्वान पधार रहे हैं।

सम्पादकीय

संस्कृत रक्षा सम्मेलन लखनऊ एक विचार !

अखिल भारतीय सस्कृत महासम्मेलन विगत दिवसों मे उ०प्र० की राजधानी लखनऊ में सम्पन्न हुआ। इस महासम्मेलन में सम्मिलित सभी सस्कृत के प्रेमियो ने राज्य में प्रचलित किया गया त्रिभाषा फार्मूले का विरोध किया और कहा कि इस फार्मूले के कारण देश व प्रान्तों के विद्यालयो में सस्कृत के पठन पाठन की जो उपेक्षा पर धारणा बन रही है। पढाई की वर्तमान पाठ्यक्रम योजना के अन्तगत सस्कृत की जो उपेक्षा हो रही है। इस पर संस्कृत प्रेमी जनों का चिन्तित होना स्वाभाविक है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मान्य प्रधान स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती एक डपुटेशन के साथ प्रधानमन्त्री व शिक्षामन्त्री से मिलकर इस त्रिभाषा फार्मूले में सरकार द्वारा सस्कृत की उपेक्षा पर गहरा रोष प्रकट किया था सरकार ने स्वामी जी को पूण आश्वासन दिया था कि सस्कृत प्रमियों की भावना का पूण सम्मान करते हुए सस्कृत को उचित स्थान दिया जायेगा किन्तु इस ओर भारत सरकार ने अभी तक कोई समुचित कार्यवाही नही की है।

प्रश्न है ? कि क्या त्रिभाषा फार्मूले मे स्कूलों की पढाई मे संशोधन कर लेने मात्र से सस्कृत का सम्मान नही हो जावेगा। इसके लिये आन्दोलन का सा रूप यह होना चाहिये ? कि हम अपने बालक-बालिकाओं को सस्कृत विषय दिलवाकर पढ़ाने को उद्यत हों।

पर क्या हम प्राचीन काल की भाति जब सस्कृत पर सकट था, तब हमारे सस्कृत प्रेमियो मन्दिरों मठो, तथा लघु विद्यालयों की स्थापना कर संस्कृत की रक्षा की थी।

ठीक इसी प्रकार आज मुसलमान भी अपनी उर्दू की रक्षार्थ मस्जिदो मकतबो में विद्यालय खोलकर सम्पूण भारत में उर्दू की रक्षा हेतु जुटरत हैं। पर आज प्रश्न है कि हम इतने सगठित हैं। किसी आन्दोलन को चलाने से पूर्व हमें अपने पूर्वापर पर विचार कर लेना चाहिये। क्या आन्दोलन सरकार के खिलाफ करने में संस्कृत भाषा को उचित स्थान मिल जावेगा।

फिर क्या किसी आन्दोलन को चलाने मे हम आज सक्षम हैं ? यह कोई नहीं सोचता है कि आज सस्कृत पढने वालो का अनुपात क्या है ? अत गलत आंदोलन न चलाकर ऐसा जनता को आंदोलित कर। कि वह सस्कृत मय बनने का सकल्प लेकर खडी हो जाय। आज जनमत सस्कृत को नही बल्कि अग्र जी शिक्षा का समथन करती है। इसी ओर उसका रुझान भी है। आजादी के उपरान्त हम सस्कृत से थोडा हटे ही है। आजादी से पहले केवल केवल वाराणसी में सस्कृत कालिज से हजारो नही लाखो विद्यार्थी शास्त्री आचार्य उत्तीर्ण करते थे। परन्तु जब कि वह कालिज अब विश्व विद्यालय सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त कर चुका है। तब हमारी सस्कृत पढने की जिम्मेदारी अधिक हो जाती है। सम्पूण भारत में सस्कृत के विश्व विद्यालयो की स्थापना सभी प्रान्तो में की गई है और अन्य भी विश्वविद्यालय खोलने की योजना है। परन्तु सस्कृत पढ़ने वाले ही यदि नही मिलेंगे तो सस्कृत के विश्व विद्यालयो का क्या होगा।

सस्कृत के महासम्मेलनो के अवसर पर प्रस्ताव मात्र पास करना तथा ओजस्वी भाषणों से लोगों को आह्वान करना सरल है। बैठें भी भरी जा सकती हैं। परन्तु समस्या का समाधान इससे नहीं हो सकता है और इन आन्दोलनो से राजभाषा या जनता की भाषा नही बनाया जा सकता है। यह स्थान हिन्दी का है और वह उस पर प्रतिष्ठित है। हमें अपने मे सस्कृत को आत्मसात करके लोकप्रिय भाषा बनाने का प्रयास करे। अन्यथा इसे हम वैज्ञानिक व तकनीकी शिक्षा का माध्यम भी नही बना सकते हैं। यह हमे मानकर चलना चाहिये।

जिस प्रकार हमारे पूवजो ने भारी बलिदान व त्याग तपस्या से इस भाषा को जीवित रखा है। आज भी हमारे धर्माचार्यों को कुछ अश में धम को भाषा मानकर एक समृद्ध भाषा बनाने का प्रयास करना चाहिये। किमा ऐसे आन्दोलन चलाने से जिससे भाषा का अहित हो जैसे हिन्दी का हुआ है।

सस्कृत को ऐच्छिक विषय विद्यालयों में मानकर पहले हमारे बच्चे तो पढ दूसरो को क्या पढायगे।

आवश्यकता एक आन्दोलन चलाने की है जिसके द्वारा हिन्दू मात्र सकल्प लेकर खड़ा हो जाय। कि हम सस्कृत पढने तो ६० करोड़ मे से यदि २० करोड जनता ने भी सस्कृत को अपनाया तो बड़ा भारी उपकार सस्कृत की रक्षा का होगा।

अत सस्कृत प्रेमियो को चाहिये कि वे गैर सरकारी क्षेत्र में सस्कृत शिक्षा की उत्तम व्यवस्था करे। इस काय में पुरातन परम्परा का पालन व सम्वर्धन होना चाहिये। केवल सरकार का मुंह न देखकर अपने पैरो पर खडे होने मात्र से काम चलेगा। सरकार पर प्रभाव डाल कि वह भी हमारे साथ चल। यह तभी होगा जब कि हमें स्वय सस्कृत का सम्मान लोक मे करगे।

केवल ऐसे आन्दोलन चलाने से नही, जिससे हानि होने का भय हो ?

असामाजिक तत्वों के कुप्रचार से आर्य जनता विचलित न हो

सार्वदेशिक सभा का आवश्यक प्रस्ताव

दिनाक १८ ४ ८४ की अन्तरग सभा

पिछले दिनो दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन के अवसर पर कतिपय समाज विरोधी तत्वो द्वारा सावदशिक आय प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो पर झूठे और निराधार आरोप लगाकर सावदेशिक सभा और आय समाज की स्वच्छ छवि को धूमिल करने का प्रयास किया गया है।

सावदशिक सभा की यह अ तरग सभा पूण छानबीन और गहन विचार विमश के उपरा त इस निष्कष पर पहुँची है कि ये सब आरोप मिथ्या निराधार मनघड त और शरारत पूण है। यह प्रहार सावदेशिक सभा के अधिकारियो पर नही अपितु समूचे आय जगत पर किया गया है। ऐसे असामाजिक तत्वो का यह कुकृ य घोर नि दनीय है और दूषित भावना से किया गया है। यह अ तरग सभा ऐसे त वो की घोर नि दा करती है। और सवसम्मति से आय जनता से अपील करती है कि वे इस प्रकार के कुप्रचार से विचलित न हो और आय समाज के काय मे उत्साह पूवक लगे रहे।

गुरुकुलीय शिक्षा की विशेषताएं

—गंगाप्रसाद विद्यार्थी, [illegible]

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' मे लिखा है कि 'मातृमान् पितृमान आचार्यवान पुरुषोवेद'। लोग कह सकते हैं कि माता-पिता वाले तो सभी होते हैं और जो पढ़ता है वह आचार्य वाला भी हो जाता है। इसी को ध्यान मे रखकर स्वामी जी ने व्याख्या की कि 'प्रशस्ता धार्मिकी माता विद्यते यस्य स मातृमान्' अर्थात् माता वाला तो वही होता है जिसकी मा विदुषी व धार्मिकी हो और जो अपने बच्चे को गर्भाधान से लेकर (केवल जन्म से नहीं), जब तक पूरी विद्या न हो तब तक लगातार सुशीलता का उपदेश करती रहे। इसी प्रकार पिता भी विद्वान व धार्मिक होवे तथा अपने बच्चो को भी धार्मिक, सुशील व विद्वान बनावे तभी वह सच्चा पिता वाला कहलाता है। आचार्य केवल पढ़ाने वाले को नही कहते वह तो उपाध्याय या शिक्षक भी कहला सकता है। आचार ग्राहयति स आचार्य अर्थात आचार्य उसको कहते हैं जो न केवल सदाचार की शिक्षा देता है बल्कि वह जो शिष्य को साम दाम, दण्ड, भेद सभी प्रकारो से सदाचार ग्रहण कराता है। ऐसा आचार्य प्राप्त होने पर ही शिष्य आचार्यवान कहलाता है।

२—गुरुकुलो मे विद्या के साथ साथ सदाचार की शिक्षा ही नही दी जाती बल्कि आचार्य अपने सदाचार का आदर्श प्रस्तुत करके प्रेरणा पूर्वक शिष्य को सदाचार ग्रहण करवाता है। आर्य गुरुकुल की यही विशेषता है कि न केवल सदाचार का बलपूर्वक पालन बल्कि सदाचार में रुचि, सदाचार से प्रेम, और सदाचार के परिपालन की आदत डलवाई जाती है, जिससे कि छात्र सदाचार के प्रेम पूर्वक पालन का अभ्यासी हो जाय और फिर वह उससे जीवन भर न छूटे। जीवन मे चाहे जितने प्रलोभन आवें या कठिनाइयाँ आवे गुरुकुल का विद्यार्थी सत्य से नहीं डिगता बल्कि प्राणो की बाजी लगाकर भी सदाचार जो वस्तुत: सत्याचरण ही है, उसको कभी नहीं छोड़ता। परीक्षा की घड़ी आने पर वह ईश्वर से सहायता मांगता है और सदैव विजयी होता है।

३—बोर्डिंग हाउस अर्थात् छात्रावास वाले विद्यालयो रेजिडेंशियल स्कूल जिनमे छात्र का चौबीसो घटे विद्यालय परिसर मे ही रहना अनिवार्य है, बहुत से हो सकते हैं वह भी। वहा पर अच्छी पढ़ाई के साथ-साथ अच्छा भोजन पान, व्यायाम व मनोरजन आदि तो हैं परन्तु वहां सदाचार पर उतना ध्यान व जोर नही है, जितना कि गुरुकुलो मे होता है, इसलिये वे गुरुकुलो से भिन्न हैं।

४—गुरुकुलो की दूसरी विशेषता यह है कि छात्रो को विलासिता, प्रमाद व उच्छृंखलता तथा आलस्य से दूर रखकर उन्हें सुदृढ़ व परिश्रमी बनाया जाता है। उन्हे बिना जूते व बिना छाते के कम से कम वस्त्रो मे आतप वर्षा व शीत झेलने व सहने तथा कठोर जीवन जीने का अभ्यासी बनाया जाता है। फिर वे जीवन के किसी भी विषम मोड पर न झिझकते हैं और न घबराते हैं।

५—जीवन मे सभी प्रकार की ऋद्धियो व सिद्धियो को प्राप्त करने का मूल साधन है अखण्ड ब्रह्मचर्य, जिसके द्वारा शरीर व मन को स्वस्थ सबल व सुदृढ़ बनाया जाता है कि वे किसी भी वज्राघात को सह सकें। ब्रह्मचर्य व्रत पालन गुरुकुलो मे ही सम्भव है, अन्यत्र तो उस पर चर्चा तक नहीं होती।

६—गुरुकुलों के छात्र सोना, चांदी, हीरा, मोती के आभूषणो की कौन कहे पुष्पों तक के आभूषण धारण नहीं करते। उनके अपने आभूषण तो विद्या सुशीलता व सदाचार ही हैं। विलासिता से दूर है उनके मन मलिन नही होते। सत्याचरण के तेज व वेदज्ञान के प्रकाश से वे सदा प्रकाशित व प्रस्फुरित रहते हैं।

७—गुरुकुलो मे सह शिक्षा अर्थात लड़को व लड़कियो की एक साथ शिक्षा का तो प्रश्न ही नही उठता। इसलिए विपरीत लिंग के विषय मे उनके मन मे न तो उत्कट जिज्ञासा उठती है न उत्सुकता। उनके मन शान्त, निर्मल व विषय रस विमुख रहते हैं।

८—गुरुकुलो के सभी छात्र एक समान जीवन बिताते हैं। न तो वहा अमीर या गरीब की सन्तान होने का भान होता है और न ब्राह्मण या अब्राह्मण की सन्तति होने का। हरिजन या गिरिजन, आदिवासी या वनवासी, मुसलमान या ईसाई, बौद्ध या जैन की सन्तान होने का भी वहा कोई बोध नहीं रहता। जैसा कि स्वामी जी ने लिखा है कि, "सबको तुल्य वस्त्र खान पान, आसन दिए जायें चाहे वह राजकुमार या राजकुमारी हो चाहें दरिद्र के सन्तान हो, सबको तपस्वी होना चाहिए।

९—गुरुकुलो मे नित्य दोनो समय का सन्ध्योपासन, अग्निहोत्र, व्यायाम योगासन, प्राणायाम, ध्यान तथा खेलकूद व गुरुकुल के जीवनोपयोगी व्यवहारो कृषि, बागवानी, पशुपालन, भोजनशाला का प्रबन्ध व अतिथि सत्कार की भी शिक्षा दी जाती है। इस बहाने से छात्र स्वावलम्बन का भी पाठ पढ़ते हैं।

१०—भारत के अधिकाश गुरुकुलो मे अर्थाभाव व विपन्नता की एक विषम समस्या है क्योकि उन्हे पर्याप्त राजाश्रय प्राप्त नही है। और न उनके पास इतना अधिक धन ही है कि वे उसे बैंको मे रखकर केवल उसके ब्याज से गुरुकुल का सारा खर्च चला सकें। वे तो धनिको के तात्कालिक दान पर ही निर्भर करते हैं और उनकी स्थिति ऐसी रहती है कि 'रोज कुआ खोदो, तब पानी पिओ'। यदि देश के धनपति अपनी तिजोरियो गुरुकुलो के लिए खोल दें और अपने नाम से लाखो करोड़ो रुपयो के ट्रस्ट बनाकर उनकी ब्याज गुरुकुलो को समर्पित कर दे तो उनकी दशा सुधर सकती है। जब तक धनपति ऐसा नही करते, तब तक यह काम प्रतिनिधि सभाओ व सार्वदेशिक सभा को करना चाहिए। राज्य सरकारो को भी गुरुकुलो को पर्याप्त मासिक अनुदान देना चाहिए और ऐसी निधियो की स्थापना करनी चाहिए।

११—यदि ऐसा हो जाय और गुरुकुलो की शिक्षा बहुआयामी व उत्कृष्ट हो जाय, तो इन गुरुकुलो के स्नातक देश के प्रशासनिक अधिकारी व राजनेता बनकर देश मे सुशासन ला सकेंगे और भ्रष्टाचार मिटा सकेंगे तथा विदेशो मे जाकर वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए वहा वेदो की दुन्दुभी बजा सकेंगे। तब वहा से ऐसे समाचार आयेंगे कि 'गुरुकुल का ब्रह्मचारी हलचल मचा रहा है। परमात्मा वह दिन शीघ्र लावे।

अन्धी गलियों का चक्रव्यूह खालिस्तान (३)

डा० सुरेन्द्रसिंह कादियान एम०ए०, पी०एच०डी० पंजाब की विरासत

खालिस्तान के उद्‌घोष में यदि किसी को आकर्षण, चमत्कार और लाभ दिखाई देता है तो यह इस तथ्य की ठोस प्रतीति है कि कुछ लोग पंजाब की विरासत से अनभिज्ञ हैं। इस अनभिज्ञता का उन्मूलन करके ही आतंकवाद के पख काटे जा सकते हैं। यह विरासत आखिर है क्या ? यह विरासत है पंजाब का इतिहास, धर्म, दर्शन, अध्यात्म, लोक संस्कृति और लोक-जीवन के विविध आयाम जो सदियों से पंजाब के गुलशन को महका रहे थे और आज सब झुलस रहे हैं।

गीतों की धरती

सरिता के कलकल निनाद और पक्षियों के कलरव के समान पंजाब के हर दिन की शुरुआत और हर शाम का अन्त उमंग भरे गीत से होता था। मैना, कोयल, पपीहे और दादुर के राग हर घर, हर चौपाल में गूंजते थे। अमृतवेला में मन्दिर से उठी शंख ध्वनि, मस्जिद की अजान और गुरुद्वारों की वाणी और शब्द हर मन, हर आत्मा को अध्यात्म रस का पान कराती थी। गोधूलि में बैलों और गायों की घण्टियां समवेत स्वर में एक ऐसे वातावरण का सृजन करती थीं कि सुनने वाले का मन अनायास झूम उठता था। पनघट पर पानी भरती, चरखा कातती, कढ़ाई-सिलाई करती, दरी-गलीचे बुनते, धान बाजरा कूटते त्रिजना कोई न कोई मधुर गीत गुनगुनाती रहती थी। शादी-विवाह, तीज-त्योहार और अन्य समारोहों पर नाचने-गाने की अद्‌भुत छटा चहुं ओर बिखर जाती थी। भंगड़ा, लुड्डी, झूमर, झोला, गिद्दा आदि नृत्यों से पंजाब की लोक-संस्कृति खिल उठी थी। किसान अपनी थकान खेतों की मेंड पर माहिया गा-गाकर मिटाते थे और मुटियारें कीकली खेलकर रग-रग में स्फूर्ति पैदा करती थीं।

पूरन भक्त, गोपीचन्द, हकीकत राय, राजा रसालू, सुच्चासिंह सूरमा, जिओना मोर की धार्मिक और वीर कथाएं जनमानस को प्रेरित किया करती थीं। हीर-रांझा, सोहनी-महिवाल, मिर्जा-गालिब, मिर्जा-साहिबां, शीरीं फरहाद, ससी-पुन्नू, लैला मजनू न जाने कितने युगल-प्रेमियों की प्रेम-कथाएं राह चलते मुसाफिर के कदम रोक लेती थीं। किन्तु यह सब अब कहां दीखता है ? ऐसा लगता है जैसे क्रूर काल बुहारी मारकर सब कुछ साफ कर गया है। बर्बर हत्याओं और सनसनीखेज डकैतियों ने वहां के वातावरण में चीत्कार, नीरवता और जहर घोल दिया है। ऐसा करने वाले क्या पंजाब और पंजाबियत का हितैषी समझे जा सकते हैं ?

पंजाबी व्यक्तित्व

पंजाब अपनी मेहनत, सादगी, ईमानदारी, बहादुरी, देश प्रेम, बलिदान, त्याग और चारित्रिक निर्दोषता में बेजोड़ समझा जाता था। इन जन्मजात गुणों के कारण वह देश-विदेश के विभिन्न भागों में रचा-बसा मिलता है। भीख मांगने के बजाए वह मरना बेहतर समझता था, इसीलिए छोटे-से-छोटा काम करने में भी उसे संकोच नहीं रहा। एक कर्मयोगी के रूप में उसने हर कर्म में वृद्धि की। सामान्य जीवन में वह शान्ति का उपासक और युद्ध काल में साक्षात् काल देवता बन जाता था। पंजाबी महिला वात्सल्य, ममता और धैर्य की प्रतिमूर्ति थी। लेकिन आज इन माताओं की कोख से कौन पैदा हो रहे हैं ? हत्यारे पुत्रों को कौन अपने घरों में शरण दे रही है।

जिन लोगों पर देश में गद्दार होने का ठप्पा लग रहा है उन पर विदेश में कौन विश्वास करेगा ? अपने गर्हित स्वार्थों की पूर्ति के लिए पंजाबी नौजवान .... कर रहे हैं, देश को तोड़ना-बांटना चाहते हैं, किसी मां की गोद को सूना किया जा रहा है, किसी बहन का सुहाग उजाड़ा जा रहा है और किसी का भाई मारा जा रहा है। त्याग, बहादुरी, बलिदान और सादगी के सभी मानदण्ड बड़ी बेरहमी से नष्ट किए जा रहे हैं। यह सारी की सारी हैवानियत क्या कभी पंजाबियत कहला सकती है ?

खेलों का मैदान

विभिन्न क्रीडाओं ने भी पंजाबियों के चारित्रिक निर्माण में विशेष योगदान दिया है। वैदिक काल से ही पंजाब में घुड़दौड़, तीरन्दाजी, मल्ल-युद्ध तैराकी, सैनिक प्रशिक्षण, रथों की दौड़ आदि का प्रचलन रहा। खेलों के प्रति यह प्रशस्त रुचि आधुनिक काल में भी बनी रही। पंजाब का गत १५० वर्षों का इतिहास स्वर्णिम रहा है। मल्लयुद्ध में भारत का प्रथम विश्व-विजेता करीम बख्श पंजाबी ही था जिसने १८९२ में यह खिताब जीता। १९१० में विश्व विजेता जेबिस्को और डाक्टर रोलर को पटकी देकर गामा पहलवान ने लन्दन में रुस्तम-ए-जमां का खिताब जीता। इस विश्व मल्लयुद्ध स्पर्धा में सम्मिलित होने के लिए गामा ने वहां लंगर घुमा दिया था और पहले दिन तीन तथा दूसरे दिन बारह पहलवानों को धराशायी किया था। मल्लयुद्ध की इस विजय पताका को बाद में अनेक पहलवानों ने थामा जिनमें दारासिंह का नाम आज विशेष उल्लेखनीय है। कुश्तियों में रुचि होने के कारण गांव-गांव में अखाड़े होते थे जहां प्रातः-सायं युवक जोर करते थे। युवक लंगोट के पक्के होते थे और अपने ब्रह्मचर्य को भंग करने वाले युवक को अनादर की दृष्टि से देखा जाता था। अपनी सन्तान को हृष्ट-पुष्ट बनाने की होड़ गृहस्थियों में लगी रहती थी और हर रविवार को कहीं-न-कहीं दंगल का आयोजन रहता था।

भारत में जिमनास्टिक स्पर्धाएं आरम्भ करने का श्रेय पंजाब को ही जाता है। ओलम्पिक खेलों (१९२४) में भाग लेने वाला पहला भारतीय खिलाड़ी ब्रिगेडियर दलीपसिंह पंजाब का ही था। पंजाब में हाकी का इतिहास १९०१ से शुरू होता है और १९२१ से वह विश्व-हाकी में भाग लेने लगा। आगे चलकर इस खेल में पंजाब ने विशेष ख्याति अर्जित की। पंजाब में क्रिकेट की शुरुआत पटियाला नरेश राजेन्द्रसिंह के प्रयास से हुई। उन्होंने ही विश्व का सबसे ऊंचा क्रिकेट मैदान चैल (शिमला) में बनवाया था। पंजाब के पुरातत्व विभाग के भूतपूर्व निदेशक डा० बख्शीशसिंह ने सिद्ध किया है कि चौपड़ का जन्म पंजाब में हुआ था। इन खेलों के अतिरिक्त कबड्डी- शतरंज, चौगान, शिकार, बैलगाड़ियों की दौड़, कबूतर-बाजी, पतंगबाजी, मुर्गा युद्ध, पीर-कण्डो, मुगदरबाजी, वैनी पकड़ना, गुल्ली डण्डा, दाई-मिच्चया, खिद्दो-खुंडी, पिड़कौडी, बालीवाल, पोलो, दौड़, गोला फेंकना, डिस्क और भाला फेंकना आदि अनेक खेल पंजाब के लोक-जीवन में ताजगी, स्फूर्ति और जीवन्तता का संचार करते रहे हैं।

इन खेलों के कारण पंजाबियों में अनुशासनप्रियता पारस्परिक सौहार्द, साहसी भावना, अग्रणी और विजेता बनने की उत्कंठा विकसित हुई। खेल के मैदान में ही नहीं अपितु आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, राजनीतिक और जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी इन गुणों के कारण पंजाब की अपनी अलग पहचान बनी। खेलों के प्रति पंजाब में आज भी रुचि है लेकिन ये खेल बस खेल बनकर रह गए हैं और इस खेल में किसका बेटा मरता है, किसका भाई मरता है, किसका पति मरता है कोई नहीं जानता समझता। इन्सानों को ऐसे मारा जा रहा है जैसे हाकी के मैदान में निरीह गेंद हाकियों से पिटती है या क्रिकेट के मैदान में गेंद उछाली जाती है और बैट से

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सिद्धान्त का सूर्य अस्त हो गया

हा—मेरे एक मात्र सिद्धान्त साथी

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

लेखकः—आचार्य विश्वश्रवा व्यास

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री दिवगत हो गये। यह समाचार मेरे घर बरेली आने पर मेरी पत्नी ने इस समाचार को दिन भर मुझसे छिपाया और रात्रि का भोजन सन्ध्या से पूर्व दिन मे कर लेने को कहा। यह कह कर कि आज मुझे विशेष काम है। मैंने दिन मे भोजन कर लिया। भोजन के पश्चात उन्होंने सूचना दी कि आचार्य वैद्यनाथ दिवगत हो गये। यह सुनते ही मैं रोने लगा। पर्याप्त समय तक यही दशा रही। समझ में नही आता था कि अब मैं क्या करू। आचार्य जी मेरे एकमात्र साथी थे। हम दोनो समस्त ऋषि विरोधियो का उत्तर देने मे समर्थ रहते थे। आज मैं अकेला रह गया। आचार्य जी भारतीय दर्शन और पाश्चात्य दर्शन दोनो के विद्वान थे। चारो वेदो पर उन्हे पूर्ण अधिकार था। अग्रेजी और सस्कृत भाषाओ के वे पण्डित थे और दोनो भाषाओ मे ग्रन्थ लिखने की उनकी योग्यता थी। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के सम्बन्ध मे उनकी बड़ी जानकारी थी। कोई व्यक्ति स्वामी जी के साहित्य और सिद्धान्तो पर प्रश्न करता था तो आचार्य जी के उत्तर को सुनकर वह चकित हो जाता था। आचार्य जी का और मेरी विचारधारा एक जैसी थी। कोई व्यक्ति बरेली मे मुझसे प्रश्न करे जो मैं उत्तर देता उसमे और बड़ौदा जाकर आचार्य जी से वही प्रश्न करे तो उनके उत्तरमे और मेरे उत्तरमे कोई अन्तर न होता था। आचार्यजी कुछ दिन अमेरिका मे रहे उनके बाद मैं भी अमेरिका मे गया और दो मास वहा रहा। वहा के व्यक्ति कुछ प्रश्न मुझसे पूछते थे, मैं जो उत्तर देता था उसको सुनकर अमेरिका मे लोग यह कहते थे कि यही उत्तर आचार्य वैद्यनाथ जी देते थे। अब ऐसा हमारा साथी ससार मे कोई नहीं रहा।

सार्वदेशिक सभा मे मैं धर्मार्यसभा का दस वर्ष प्रधान मन्त्री रहा। उस समय धर्मार्य सभा मे लगभग दो सौ विद्वान समस्त भारत तथा विदेशो के प्रतिनिधि थे। अपने मन्त्री काल मे हमने सन्ध्या और यज्ञ की प्रमाणिक पद्धति प्रकाशित की। ब्रह्म पारायण यज्ञ और साप्ताहिक सत्सग की पद्धति भी छापी और अपने मन्त्री काल मे ही हमने स्वामी दयानन्द की जन्म तिथि क्या है' राजकोट आदि के व्यक्तियो को बुला कर और गणितज्योतिष के आधार पर निर्णय किया। और इसका भी एक ट्रैक्ट छापा और आर्य-समाज की स्थापना तिथि क्या है इसका निर्णय बम्बई से विजय शकर जी को बुलाकर और बम्बई समाज के रिकार्ड को मगाकर और बम्बई जाकर स्वामी जी द्वारा स्थापित आर्य समाज भवन पर लगे शिला लेख का देखकर किया कि आर्य समाज की स्थापना तिथि चैत्र शुक्ला पञ्चमी नही है प्रत्युत सृष्टि सवत का प्रथम दिन जो चैत्र शुक्ला प्रतिपदा है वह आर्य समाज की स्थापना तिथि है। उसका भी एक ट्रैक्ट छापा। मेरे बाद आचार्य वैद्यनाथजी शास्त्री धर्मार्य सभा के धर्माधिकारी बने तब मैंने उनसे कहा कि इतने निर्णय मैने अपने मन्त्री काल मे किये हैं। आप इन सब को दुबारा देख लें। और जो सशोधन करना उचित समझें, कर के अगले सस्करण अपने नाम से छापें। आचार्य जी ने सब को देख कर यह कहा कि इन सब मे एक अक्षर सशोधन की आवश्यकता नही है। सब सस्करण उन्होने अपने नाम से छापने आरम्भ कर दिये।

आचार्य जी का तथा मेरा सदा साथ रहा। लाहौर मे दयानन्द ब्राह्म महा विद्यालय मे वे भी रहे उसके पूर्व मैं भी वहा रहा था। आचार्य जी सस्कृत युनिवर्सिटी बनारस मे रहे, मैं भी उसी युनिवर्सिटी की कौंसिल में रहा। बम्बई मे प्रताप भाई सूर्य वल्लभदास ने एक महीने का यज्ञ रचा। उसमें सौ विद्वान थे जो अनेक वेदियो पर यज्ञ कराने को बैठे। प्रताप भाईजी ने मुख्य वेदी पर मुझे और आचार्य वैद्यनाथ जी को बैठाया। हम दोनो सब वेदियो के यज्ञो का सचालन करते थे। अभी कुछ वर्ष पूर्व स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता मे पानीपत में शताब्दी मनाई गयी। जहाँ जहा हम दोनो ठहरे हुये थे वहा से यज्ञशाला दूर थी, हम दोनो साथ-साथ जाते थे और यज्ञशाला मे एक ही चौकी पर दोनो बैठते थे। वहा दोनो प्रवचन करते थे। साथ-साथ लौटकर टहलते हुये आते थे। हम दोनों की राम लक्ष्मण की सी जोड़ी थी। हम दोनो की धर्म पत्नियां भी वहा थीं। लाहौर में प० भगवतदत्त जी और मैं माडल टाउन मे एक ही कोठी मे रहते थे। प० भगवतदत्त जी के साले प० ऋषिदेव की पुत्री के साथ आचार्य जी का विवाह हुआ अत हमारे पारिवारिक सम्बन्ध भी थे। आचार्य जी बीमार होकर दिल्ली आकर सार्वदेशिक सभा भवन मे रहे। उनकी लम्बी बीमारी के दिनो मे कुछ लेख आर्य विद्वानो के समाचार पत्रो मे छपे। एक ने लिखा कि स्वामी जी के वेदभाष्य मे स्वरो की अशुद्धिया हैं। एक और विद्वान ने अपने लेख मे यह छापा कि स्वामी जी के ग्रन्थो मे अशुद्धियो की भरमार है। इनसे प्रभावित होकर परोपकारिणी सभा ने मुझे पत्र लिखा कि जो अशुद्धिया हो उन्हे देख लें और परोपकारिणी सभा को लिखकर भेज दें जिनका हम सशोधन कर दें। मैंने परोपकारिणी सभा को स्पष्ट लिख दिया कि परोपकारिणी सभा ऋषि की उत्तराधिकारिणी सभा है अनुसन्धानशाला नहीं। मैंने उन्हे चेतावनी दी कि परोपकारिणी सभा ने पडितो के बहकावे मे आकर बार बार भूलें कीं और फिर पछतायी। वह सारा इतिहास मैंने उनको लिख कर भेज दिया। मैं सोचता था कि मेरे परम साथी आचार्य वैद्यनाथ जी स्वस्थ हो जाये तो हम दोनो उन विद्वानो की बातो का उत्तर देवे। पर भगवानको वह दिन इष्ट नहीं था। आचार्यजी की बीमारी के दिनो मे मैं उनके पास जाना चाहता था परन्तु आंखो से न देख सकने के कारण बहुत दिन दिल्ली नहीं जा सका। मेरा लड़का वेदश्रवा अमेरिका से घर आया, कुछ दिन रहा और जब वह वापस जाने लगा तो मैं उसके साथ हवाई अड्डे तक उसे छोड़ने परिवार बरेली से दिल्ली को चला। दिल्ली पहुँचते पहुँचते रात हो गयी। मैं रात मे ही सार्वदेशिक सभा भवन पहुँचा। आचार्य जी सब से ऊपर वाले कमरे मे थे मैं भी इस कमरे मे बहुत वर्ष रह चुका था। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और आचार्य जी की पत्नी वहा थे। आचार्य जी मुझे देखकर प्रेम से विह्वल हो गये। उन्हे ठीक तरह से बोल नही मिलता था, फिर भी उन्होने अपनी बीमारी का हाल आदि से अन्त तक सुनाया और इस समय मुझे क्या कष्ट है यह भी बताया। मैं नही समझ रहा था कि यह मेरा व उनका अन्तिम मिलन है। मैं अपने लड़के को हवाई अड्डे पर छोड़कर बरेली आ गया। बरेली मुझे समाचार आया कि आचार्य जी दिवगत हो गये। मैं इस कष्ट को सहन नहीं कर सका। हमारी जोड़ी बिखर गयी। मैंने अपना त्यागपत्र सार्वदेशिक सभा को भेज दिया। यह कह कर कि हमारा युग समाप्त हो गया। जैसे द्वापर के अन्तिम दिन भगवान कृष्ण की मृत्यु का समाचार जो इन्द्रप्रस्थ में आया उसी समय युधिष्ठिर ने राज गद्दी छोड़ दी। अब हम दोनो के बाद आर्य समाज में हमसे अधिक विद्वान आयेंगे और ऋषिके काम को सभालेंगे परन्तु इस समय तो हमे ऐसा लग रहा है कि समालोचना करनेवाले अधिक हैं। भीष्म पितामह ने कहा था कि —

> श्वः श्व पापिष्ठ दिवस पृथिवी गतयौवना।
> पृथिवी का यौवन समाप्त हो गया है दिन बुरे आ रहे हैं॥

क्या आर्य समाज के रहते हुए यह अनर्थ होगा ?

—आचार्य श्री धर्मेन्द्र महाराज

वर्षों पहले की पुरानी बात है, आर्य समाज के एक वरिष्ठ सन्यासी सत ने पूज्य गुरुदेव श्रीमन्महात्मा रामचन्द्र वीर महाराज से बातो-बातो मे कहा—'वीरजी महाराज ! आप सनातनी हिन्दुओ से कहिये कि वे प्रतिदिन मन्दिर मे दर्शन करके ही भोजन किया करें, गुरुदेव ने चकित होकर पूछा—"स्वामी जी ! एक आर्य सन्यासी होकर आप ऐसा कैसे कहते हैं ?" स्वामी जी ने कहा—"मैं दुखी होकर कह रहा हूँ और सत्य कह रहा हू, ये अभागे हिन्दू न तो नियमपूर्वक हवन ही करते हैं न मन्दिरो मे ही जाते है यदि कोई आर्यसमाजी है तो हवन करे, गायत्री जप, सध्या करे और सनातनी है तो मन्दिर मे जाकर दर्शन आरती करे, चरणामृत ले, कुछ तो करे ! ये अभागे तो व्यर्थ ही वितण्डावाद मे अपनी शक्ति नष्ट कर रहे हैं, न हवन सन्ध्या, न मन्दिर दर्शन ईश्वर का किसी भी ढग से स्मरण नही ? इस हिन्दू जाति मे शक्ति का सचार होगा तो कैसे ?"

यह पीडा थी एक सच्चे सन्यासी की जो इन शब्दो मे व्यक्त हुई, गुरुदेव के नयन उस पवित्रात्मा सत के इन शब्दो को सुनकर छलछला उठे।

आर्यसमाज मूर्तिपूजा को अन्धविश्वास और अज्ञान मानता है और ईश्वर के देह धारण करने अथवा अवतार लेने के सिद्धात पर विश्वास नही करता किन्तु किसी आर्य समाजी की आखो के आगे न तो किसी मन्दिर का कोई ककर हिला सकता है और न ही किसी अवतार का अपमान कर सकता है, मन्दिरो और मठो की रक्षा के लिए आर्य समाज के कर्मवीर योद्धा सदा प्राणो को हथेली पर रखकर सघर्ष करते रहे हैं। दिल्ली का ऐतिहासिक शिव मन्दिर सत्याग्रह आर्य समाज के उज्ज्वल स्वरूप का ज्वलन्त उदाहरण है। आर्यवीरो ने ही प्राणो की बाजी लगाकर ब्रिटिश साम्राज्य और मुस्लिम कठमुल्लाओ की दुरभि सधि को निष्फल करके उस नष्ट होते देवालय का कायाकल्प किया था।

हिन्दू धर्म पर जब जब कोई बडी विपत्ति आयी, आर्य समाज उससे जूझने के लिए रणक्षेत्र मे कूदता रहा। हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान की मर्यादा की रक्षा का ऐसा कौन सा सग्राम है, जिसमे आर्य समाज की धर्मरक्षिणी सेना अग्रिम पक्ति मे न रही हो ! आर्यसमाज पिछली एक शताब्दी से हिन्दू समाज और हिन्दू धर्म की, भारत और भारतीयता की रक्षा के लिए अनवरत लडता रहा है, भारत के स्वाधीनता सग्राम मे, जिसे मैं हिन्दुओ का स्वाधीनता सग्राम कहता हूँ। आर्यसमाज सदा सबसे आगे रहा है। धर्म के मर्म को आर्य समाज का हृदय भली भाति समझता है इसलिए जब और जहा धर्म पर आघात होता है, आर्य समाजी तिलमिला उठते हैं, दार्शनिक सिद्धातो के मतवैभिन्न्य की बात पृथक है किन्तु आर्य समाज हिन्दूधर्म और जाति का सुदृढ कवच है, यह तथ्य निर्विवाद सिद्ध है, आर्य समाजी भले ही मन्दिरो मे आकर पूजा आरती न करें कि सहस्रो और तीर्थों की आर्य समाज ने रक्षा की है, इसे कैसे भुलाया जा सकता है। पिछले दिनो कश्मीर म साम्प्रदायिक उन्माद की आधी मे जब सैकडो हिन्दू मन्दिर ध्वस्त कर दिए गए तब किसी सनातनी धर्माचार्य ने नही, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष, सर्वोच्च आर्यनेता स्वामी श्री आनन्दबोध सरस्वती महाराज ने अपने सहयोगियो के साथ नितान्त विपरीत वातावरण और परिस्थितियो मे कश्मीर जाकर प्रत्येक भग्न देवालय का निरीक्षण किया और प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी को हिन्दू मन्दिरो तथा हिन्दू जनता की दुर्दशा से अवगत ही नही कराया वरन केन्द्र शासन और राज्य शासन को ध्वस्त देवालयो के जीर्णोद्धार की तुरन्त व्यवस्था करने पर विवश भी किया। हिन्दू देवालयो और देवप्रतिमाओ की ऐसी चिन्ता आर्यसमाज के अतिरिक्त और कौन कर सकता है ?

पूज्य गुरुदेव द्वारा छेडे गये हिन्दुत्व हिन्दू और गोवश की रक्षा के प्रत्येक आन्दोलन मे आर्य समाज का अयाचित सहयोग सदा मिलता रहा। १९८० मे उज्जयनी के सिंहस्थ पर्व में जब मैंने मेले की अवधि तक उज्जयनी महानगर से मदिरा और मास की दुकाने हटाने के लिए व्यक्तिगत सत्याग्रह और अनशन किया और दो-चार सनातनी सतो के अतिरिक्त विराट साधुसमाज में से किसी ने भी मेरा साथ नही दिया तब आर्य समाज ही पूरी शक्ति के साथ मेरे पीछे आ खडा हुआ था और म० प्र० शासन को मेरी न्यायोचित मागें माननी पडी थी, आर्य समाज का इतिहास ऐसे ही उज्ज्वल उदाहरणो से परिपूर्ण है।

इसलिए आज जब 'सतीनिवारण कानून' की तलवार देश के सहस्रो सती मन्दिरो पर लटक रही है तब मेरे मन मस्तिष्क मे पुन पुन एक ही प्रश्न गूज रहा है—'क्या आर्य समाज के होते हुए यह अनर्थ सम्भव है ? क्या भगवान दयानन्द, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, अमर बलिदानी महात्मा लेखराम और महाशय राजपाल जैसी विभूतियो की धर्मरक्षिणी परम्परा के विद्यमान होते हुए भारत मे हिन्दू मन्दिर तोड़ें जाए गे ?

यह प्रश्न पिछले ३ मासो से मुझे व्यग्र और व्यथित कर रहा है। मैं इस पीडा को अपने तक ही रखने मे असमर्थ हूँ। इसलिए मैं इसे अपने आर्य बन्धुओ तक पहुँचाना चाहता हूँ, वे ही इस अत्यन्त जटिल स्थिति पर शान्तचित्त से गम्भीर विचार करें।

हिन्दू समाज मे वैचारिक स्वातन्त्र्य सबके लिए सदा सुलभ रहा है, पूजापद्धति और दार्शनिक मान्यताओ की भी सबको स्वतन्त्रता रही है, इसलिए हमारे बीच असख्य उपासना पद्धतिया उत्पन्न होती रही हैं। दार्शनिक मतभेदो और उपासना विधि की विभिन्नता के अनन्तर हिन्दुत्व की मूल भावना अखण्ड और अविच्छिन्न रूप मे सम्पूर्ण समाज मे व्याप्त रही है, आर्य समाज हिन्दुत्व की उन्हीं मूल भावनाओं और शाश्वत मूल्यो का सरक्षक है। भगवान मनु ने धर्म के जो दस लक्षण बताए हैं, उनमे तो कही ईश्वर का भी उल्लेख नही है, इसलिये जिस समाज ने ईश्वर को भी पृथक रखकर धर्म की धारणा की उसमे ईश्वर के स्वरूप या उसकी उपासना को लेकर कोई विघटन उत्पन्न हो ही नही सकता। दुर्भाग्यवश दिवराला के प्रसग को लेकर हिन्दू समाज दो भागो में विभक्त हो गया है एक वे लोग है जो सहस्राब्दियो से पतिपरायणा सती साध्वियो की पूजा करते रहे हैं और दूसरी ओर वे हैं जो सती पूजा को अन्धविश्वास और सती हो जाने को हत्या या आत्महत्या मान रहे हैं, किसी नारी पर बलात अत्याचार और उसके क्रूरतापूर्ण दाह की दारुण कल्पना ने सहृदय आर्य समाज को भी उद्वेलित, उत्तेजित और आन्दोलित कर दिया है किन्तु उत्तेजना मे कभी सत्यासत्य का निर्णय नही होता। मेरा निर्भ्रान्त मत है कि जिनकी हिन्दू धर्म मे ही आस्था है, किन्तु आर्य समाज की स्थिति उनसे भिन्न है, आर्य समाज को हिन्दू धर्म और समाज की किसी भी रीति, मान्यता या परम्परा पर विचार करने और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने का जन्म सिद्ध अधिकार है क्योकि आर्य समाज हिन्दू समाज के मस्तिष्क का ही एक अकाट्य अश है वह हिन्दू समाज का मस्तिष्क भी है और हृदय भी मस्तिष्क और हृदय का शात रहना ही निरापद है इनके उत्तेजित होने की स्थिति विनाशकारिणी हो सकती है।

इसलिए उत्तेजना को छोडकर आर्य समाज को हिन्दू धर्म, सस्कृति और समाज मे गहराई से पैठी हुई पातिव्रत, और सतीत्व की परम्परा के उद्गम, विकास और स्वरूप पर विचार करना चाहिए, यह विचार वही कर पायेंगे जो आर्य समाज की दिव्य परम्परा के उत्तराधिकारी तथा मन, वचन, कम से पूर्णतया हिन्दुत्वनिष्ठ हैं।

जलियांवाला बाग काण्ड के बाद देशभक्तों पर मुकदमे की एक झलक :

मलिक अब्दुल अजीज—(जलियांवाला कांड के एक अभियुक्त)

हमारा मुकदमा उस विशेष अदालत में पेश हुआ जो 'अमृतसर लीडर्स केस' की सुनवाई के लिए नियुक्त की गई थी।

इस अदालत मे तीन न्यायाधीश थे और इसके अध्यक्ष थे न्यायमूर्ति ब्राडवे। अमृतसर के सेशन जज ब्राउन और गुजरांवाला के डिप्टी कमिश्नर शेख रहीमबख्श अन्य दो न्यायाधीश थे। हम देशभक्तो को डराने के लिए विशाल स्तर पर वातावरण को आतंकपूर्ण बनाने का प्रयत्न किया गया था।

पूरे दस बजे हमे उस कमरे मे दाखिल कर दिया गया जहा हमारी जिन्दगी और मौत का फैसला होने वाला था। आवेश मे तमतमाते चेहरे, हृदय तूफानी भावनाओ से ओतप्रोत, तरह-तरह के विचार दिमाग मे उमड रहे थे। हम नम्बरवार एक लम्बी बैंच पर बैठा दिए गए। हमे बैठे हुए अधिक देर नही हुई थी कि एक मनहूस घण्टी सी बजी। यह इशारा था कि मौत के फरिश्ते' पधार रहे हैं। आगे आगे एक लम्बे कद का चोबदार और इसके पीछे पीछे तीन न्यायाधीश प्रकट हुए उनको देखकर हम मे से किसी ने दबे स्वर मे कहा "गौरे जुल्म की मशिनो के आढती आ गये।' मैंने कहा, जी हा, जिसमे इ साफ के इजारेदार तशरीफ ले आए।'

डाक्टर किचलू ने हमसे कहा, भई यो कहो कि अदलो-इसाफ के तिजारती और तहजीब और इन्सानियत के दावेदार आ गय।" उन्होंने बडा सशक्त व्यग किया था। न्यायाधीश कुर्सियो पर बैठ चुके तो ब्राडवे ने घ टी बजायी और मुकदमे की कार्यवाही आरम्भ हो गयी। हमारे हितैषियो ने जिन वकीलो का प्रबन्ध कर रखा था, उनमें से कुछ नाम याद रह गए हैं—बैरिस्टर सैय्द हसन अमृतसरी, लाला प्रतापराय, बैरिस्ट गुलाम रसूल (अफ्रीका वाले), पीर ताजुद्दीन साहब सरकार की ओर से पंडित जगन्नाथ, जो एक बहुत चालाक धूर्त और अनुभवी वकील था, मुकदमे की पैरवी के लिए नियुक्त किया गया था।

जिन अठारह राष्ट्रीय कार्यकर्ताओ पर मुकदमा चलने वाला था, उनके नाम भी सुन लीजिए—डा० सैफुद्दीन किचलू, डा० सत्यपाल, डा० हाफिज, मुहम्मद बशीर, लाला कोटोमाल, लाला नारायणदास खन्ना, लाला मोतीराम, डा० गुरुबख्शराय, लाला दीनानाथ दर्द, बैरिस्टर बदरुस्सलाम, अब्दुल अजीज गुलाम मुहम्मद अजीज हिन्दी, मुहम्मद इस्लाम हिन्दी, स्वामी अनुभवानन्द कवि साहब, बैरिस्टर गुरदयाल सिंह, लाला मदन गोपाल, हसराज मल्होत्रा, (सुलतानी गवाह) अठारहवा नाम इस समय याद नही आ रहा।

सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल मे है।
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल मे है॥

मुकदमे की कार्यवाही यो शुरू हुई कि हमारे हाथो मे अपराधो की छपी हुई सूची थमा दी गई और पढ डालने के लिये पाच मिनट का समय दे दिया गया। हम पर बगावत, कत्ल, डाकाजनी, साजिश, आग लगाना, हुजूम को भडकाना आदि-आदि अभियोग लगाये गये थे।

ठीक पाच मिनट के बाद ब्राडवे ने अपराधियों से पूछना शुरू किया कि उन्होने ये अपराध किये है या नहीं। सबसे पहले डा० किचलू से पूछा जुर्म किया है या नही ? डाक्टर साहब ने कडककर जवाब दिया, "मैं कौम और वतन का मुजरिम हूं कौम और वतन की इज्जत पर कुर्बान न हो सका, बाकी इस अदालत ने जिन जुर्मों का मुझे मुजरिम ठहराया है, वे जुर्म मुझसे कभी नही हुए।"

सबके जवाब तो मुझे याद नहीं। मगर इस दौरान सभी अभियुक्तो और न्यायाधीशो मे बहुत दिलचस्प नोक झोक होती रही। जब स्वामी अनुभवानन्द से प्रश्न किया गया कि जुर्म किया है या नही, तो जवाब मे उन्होने केवल हिन्दू-मुसलमान की जय का नारा लगा दिया। ब्राडवे ने आपे से बाहर होकर कहा, 'तुम पर अदालत के अपमान का मुकदमा क्यो न चलाया जाए ? स्वामी जी ने जवाब दिया, "हा, अवश्य चलाया जाए मगर मेरी लाश को जवाबदेही के लिए कैसे मनवाया जायेगा जो जलकर राख का ढेर हो चुकी होगी ?" (उस समय हमे यकीन हो चुका था कि हमे फासी से कम सजा न मिलेगी।)

मुख्य न्यायाधीश ब्राडवे ने मेरी ओर इस तरह देखा मानो वे समझते हो कि इधर से भी कोई तीर ही छूटेगा। मैंने उनकी इस आशा को पूरा कर दिया। संयोगवश मुझे मौलाना मुहम्मद अली की गजल का एक शेर याद आ गया—

सरकश नही, बागी नही गद्दार नही हम
पर हम पर तकाजाए वफा और ही कुछ है

मेरे साथ मुहम्मद इस्माद खड़े थे। उन्होने मेरा दामन खींच कर धीरे से कहा, अरे अरे ! यह कोई महफिल है ? सीधी तरह हा या ना क्यो नही कहते ? मगर उनकी आवाज कहकहो मे दब कर रह गई, क्योकि मैंने हाथ बाधकर और मसकीन सूरत बनाकर वह शेर इस तरह पढा था कि श्रोता अपनी हसी जब्त न कर सके। और तो और, शेख रहीमबख्श भी होठो मे मुसकराने लगे।

मुकदमे के दौरान का यह लतीफा भी वर्णनीय है कि जेल की तग अधेरी फासी की कोठरियो मे सख्त गर्मी के दिनो मे रात भर नींद नही आती थी। जब हम अदालत मे आते तो बिजली के पखो की हवा मे नींद आ जाती। मुकदमे की कार्यवाही से बेपरवाह होकर मैं और गुलाम मुहम्मद अजीज हिन्दी फर्श पर ही सो जाते। एक हिन्दू बजाज जो करमू ड्योढी मे सोदागरी करता था, अजीज हिन्दी के खिलाफ बहुत कुछ कह गया। ब्राडवे ने अजीज हिन्दी को जगाकर कहा, "क्या तुम गवाह से कुछ कहना चाहते हो ?" (मतलब था कि कुछ जि ह करना चाहते हो) अजीज हिन्दी ने कहा 'जी हा ! उन्हें कह दीजिये कि बाहर जाकर ठण्डे पानी का एक गिलास भिजवा दे। सख्त प्यास लग रही है।

इस तरह आसन्न मौत की छाया मे भी देशभक्त मुसकराते रहे। ●

अन्धी गलियों का चक्रव्यूह

(पृष्ठ ५ का शेष)

हिट कर दी जाती है। आज वहां भाले आकाश में नहीं फेंके जाते बल्कि सीधे इन्सानो के दिल मे उतारे जाते हैं। खेलो में जहां सद्गुण विकसित होते थे वहां अब दुर्गुण पैदा हो रहे हैं। जिस पंजाब ने खेलों में कीर्तिमान स्थापित किए वही पंजाब अब हैवानियत के चौके-छक्के और सेंचुरी मार रहा है। वहां अब जगली जानवरो का नही अपने ही मा जाए भाइयों का शिकार किया जा रहा है। मांस से नाखूनों को अलग होते यदि देखना हो तो एक ही बार पंजाब जाना पर्याप्त है।

(क्रमशः)

अपने ही देश में पराये हुए ये लोग !

नई दिल्ली १९ अप्रैल। हम तो अपने ही देश मे पराये हो गए हैं पंजाब में आतंकवादियो की गोलियो के सामने बच्चो को मरने को लिए कब तक छोड सकते हैं, अब तो पुलिस अधिकारी भी कहने लगे हैं कि यहा से चले जाओ हम भी आपको नहीं बचा सकते। अब केवल बहू बेटियों की इज्जत नीलाम होने से बची है। उपरोक्त कथन अमृतसर जिले की पट्टी तहसील के गाव भिखीविंड से पलायन करके दिल्ली आये तीन परिवारो के सदस्यों ने कहा।

गाव भिखीविंड से परिवार सहित पलायन करके आये सुभाषचन्द ने जब अपनी व्यथा व्यक्त की तो उनकी २८ वर्षीय पत्नी श्रीमती प्रवीण की आँखें नम हो गई। उन्होंने कहा कि हम अपने ही देशमें पराये से लगते हैं।

आर्य समाज दीवान हाल मे कल तीन और परिवारो के दिल्ली पहुँचने के साथ ही दीवानहाल मे शरण लिए विस्थापियो की सख्या १७ हो गई है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध ने बताया कि उपराज्यपाल श्री कपूर से वह इन विस्थापितो को सहायता दिलाने हेतु लगभग एक सप्ताह मुलाकातें कर चुके हैं। श्री कपूर ने शरणार्थियों की मदद के आश्वासन भी दिए हैं किन्तु लगातार आ रहे विस्थापितो के लिए कोई प्रशासनिक प्रबन्ध नहीं हो पाए हैं। सार्वदेशिक आर्य समाज ने इन शरणार्थियों को अस्थायी मदद व आवास देने का निर्णय लिया है।

दीवान हाल समाज के प्रधान श्री सुखदेव ने बताया कि इनके भोजन व आवास का प्रबन्ध समाज की ओर से किया गया है।

सुभाषचन्द सूट का धन्धा करते थे उन्हे सेहरे बाने का शौक था। पडोस मे राजकुमार बलविन्दर भाईया कुल्फी वाले की हत्या के बाद वह उस दिन बहुत डर गया जब अमृतसर मे एक विवाह समारोह में सेहरा बांधने गये। खालसा कालेजके छात्रो ने उनकी हत्याका प्रयास किया। वहा आतंकवादियो ने जानकारी के आधिकी में जाने पर रोक लगा दी है। इसके बाद सुभाष ने पंजाब छोडने का फैसला कर लिया।

सावरा गाव के अकेले सहजधारी डा जयपाल भी अपने परिवार सहित दिल्ली आने वालो म से एक हैं। डा जयपाल के अनुसार शहरो व गावो मे इस्तहार लगे हैं। हिन्दुओं एवों चले जाओ नई ता सोच देखाये।

डा जयपाल की १७ वर्षीय बहन सन्तोष विकलाग है, १४ वर्षीय बहन प्रोमिला पढाई छोड कर चली आई है। मा श्रीमती सुहागरानी विधवा है। गाव फूला मे अपनी डेढ एकड जमीन म खडी फसल छोडकर आई श्रीमती सुहागरानी कहती है जिनका मुकाबला सरकार भी नही कर सकती भला उनकी गोलियो के सामने निहत्थे बच्चो को कब तक मरने से लिये छोडगे। डा जयपाल ने यह भी बताया कि आतंकवादियो द्वारा टी वी धारावाहिक रामायण को न देखने की धमकियों के बावजूद लोग चोरी छिपे रामायण देखते रहते हैं। अब तो वरिष्ठ पुलिस अधिकारी भी कहते हैं कि चले जाओ तुम्हारी रक्षा हम नहीं कर सकते।

अमृतसर पुतली घर पर गुप्ता ढाबा चला रहे रामप्रकाश भी अपनी पत्नी व तीनों बच्चों सहित आ गए हैं। सिख स्टूडेंट्स फैडरेशन छात्रों की हरकतो से तग आकर ढाबा बन्द किया तथा फेरा लगाकर कपडा बेचने लगे। गाव चौबाल में चार युवको ने लाठिया मार कर उनका हाथ तोड दिया व सारा माल छीन लिया। फिर धमकियां मिलने लगीं। फलतेतो इलाका छोडकर दिल्ली चले आये। राजीव गाँधी से इन्हें बडी उम्मीद है। पत्नी उमारानी कहती है कि अब पंजाब में बहू बेटियो की इज्जत भी खतरे मे है। चौक पुतली घर मे पाच हत्यायें हुई एक भी गिरफ्तारी नहीं हुई। पुलिस भी डरती है। डा जयपाल ने बताया कि कस्बा बटाला के समीप गांवो से अब तक ११०० परिवार पलायन कर चुके हैं। लगभग ५०० परिवार पटानकोट पलायन कर गए हैं। लुधियाना मे आ बसे। १२०० परिवार अब दिल्ली की ओर आने की तैयारी में हैं। फतेहगढ चूडियां मे आ बसे १०० परिवार भी सूँघ के सूले मे भी रहे हैं।

आर्य समाज ही हिन्दुओं की रक्षा कर सकता है

—डा० आनन्द सुमन

नई दिल्ली। आर्य समाज सनातन वैदिक संस्कृति का रक्षक एव वैदिक धर्म का प्रचारक है आज सारा देश पाखण्डवाद चमत्कारवाद साम्प्रदायिकता एव अराजकता की अग्नि में जल रहा है ऐसे सकट के समय मे केवल आर्य समाज ही हिन्दुओं को बचा सकता है एव भारत की एकता व अखण्डता की सुरक्षा कर सकता है। अत सभी हिन्दू आर्य समाज के मच पर आए और अपनी संस्कृति की रक्षा मे आर्य समाज के साथ कार्य करे। यह विचार हैं सार्वदेशिक सभा के महोपदेशक एव युवा आर्य नेता डा० आनन्द सुमन के।

डा० आनन्द सुमन ने १० मार्च १९८८ से १० अप्रैल १९८८ तक एक माह मे बिहार पश्चिम बंगाल पूर्वी व पश्चिमी उ० प्र० के मधुपुर देवघर कलकत्ता कुल्टी बर्द्धमान लखनऊ देहरादून मसूरी विकास नगर डाक पत्थर क्षेत्रो मे सघन प्रचार प्रवास किया एव इस प्रवास मे मधुपुर मे १०० कुल्टी मे १०० एव कलकत्ता में २२० नरनारियो को यज्ञोपवीत धारण कराये गये। १०० युवक व युवतियो को आर्य समाज की सदस्यता के लिए प्रेरित किया गया। विकास नगर के निकट अम्बाडी के कालेज के आग्ल भाषा प्रवक्ता प्रो० जमील अहमद एम०ए०बी०एड० ने डा० आनन्द सुमन के विचारो एव पुस्तको से प्रभावित होकर वैदिक धर्म स्वीकार किया उनका नया नाम शैलेन्द्र सिंह रखा गया है।

डा० आनन्द सुमन सात वर्ष पूर्व सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी की प्रेरणा पर वैदिक धर्म मे दीक्षित हुए थे। तभी से वैदिक ग्रन्थो का अध्ययन कर निरन्तर आर्य समाज एव वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे समर्पित रूप से लगे हुए हैं।

आर्यसमाज की गतिविधियां

शुद्धि समाचार
शाजिदअली सुरेश कुमार बने

आज दिनांक २४-३-८८ को जमुई आर्य समाज का वार्षिक उत्सव के शुभ-अवसर पर राम नगर महरखे के मौलाना शाजिदअली सत्यार्थ प्रकाश एव प० जय प्रकाश (भूतपूर्व-इमाम, बिहार) के प्रभाव में आकर सनातन वैदिक धर्म को स्वेच्छा से स्वीकार किया और शपथ लिया कि अपनी पूरी जीवन वैदिक धर्म सत्यार्थ प्रकाश और आर्य समाज के प्रचार व प्रसार मे लगाऊगा शुद्धि का स्थानीय तौर पर बड़ा जबरदस्त प्रभाव पड़ा। जनता ने आर्य समाज के जयकार के नारे लगाये। शुद्धि के पश्चात शाजिद अली का नाम सुरेश कुमार, जैबुल निस्सा का नाम निर्मला आर्य एव उनके सातो बच्चो का सस्कार किया गया।

—राम जीवन साहु आर्य
प्रधान, आर्य समाज जमुई (मुंगेर)

आर्य समाज वैदिक विचार मंच सोनपुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सोनपुर (उडीसा) का वार्षिकोत्सव दिनाक ११-४-८८ से १३-४-८८ तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सामवेद भाष्यकार स्वामी विश्वामित्रानन्द सरस्वती और डा० स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती पधारे थे। प्रात और शाम हवन एव रात्री प्रवचन कार्य किया गया। स्थानीय विद्वानो का भी प्रवचन हुआ। योगाचार्य स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती न शरीर को निरोग रखने के लिए योग की आवश्यकता क्यो है इसके बारे मे प्रत्यक्ष कर के दिखलाया।

—आर्य कुमार रामकृष्ण
उपप्रधान आर्य समाज, सोनपुर

आर्य समाज देश सेवा में अग्रणी

भारत की आजादी के सघर्ष मे, शिक्षा के क्षेत्र मे और समाज सेवा के क्षेत्र मे जिन आन्दोलनो मे अनेक सस्थाओ ने भाग लिया, उनमे आर्य समाज और डी० ए० वी० सस्थाये अग्रणी रही हैं। आर्य समाज समन्वयवादी और समाज को जोडने वाली शक्ति है, तोडने वाली नही। आर्य समाज देश की एकता अखण्डता के लिए जो कार्य करता रहा है वह स्वर्णाक्षरो मे लिखने योग्य है। महात्मा हसराज जी का जीवन त्याग और तपस्या का जीवन रहा। सर सईयद अहमद का कहना था कि उनके पास पर्याप्त धन और भूमि है परन्तु सस्था चलाने के लिए कोई हसराज नही है। महात्मा हसराज जी ने अपने समय की पीढी को देशभक्ति और नैतिकता के ढाचे मे ढाला है और भावी पीढी को इसके लिये दिशा निर्देशन दिया है।

आज समाज के सम्मुख विभिन्न क्षेत्रो मे जो चुनौतिया हैं, उन सबका निराकार करने मे आय समाज डी० ए० वी० सस्थाये सक्षम हैं।

उक्त विचार आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी० ए० वी० सस्थाओ के तत्वावधान मे आयोजित एव स्वामी सत्यप्रकाश जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न महात्मा हसराज दिवस के उपलक्ष मे केन्द्रीय मन्त्री श्री के० सी० पन्त, श्री एच० के० एल० भगत, प्रख्यात न्यायविद् ड० लक्ष्मीमल सिघवी, प्रो० वेदव्यास आदि महानुभावो ने व्यक्त किये।

इस अवसर पर आर्य समाज एव डी० ए० वी० की जिन लोगो ने वर्षों तक अनथक सेवा की है ऐसे १० महानुभावो को पुरस्कृत व सम्मानित किया गया आर्य जगत् के हसराज विशेषाक एवं स्वामी विद्यानन्द सरस्वती लिखित पुस्तक "भूमिका भास्कर" का विमोचन भी किया गया।

"आर्य व्रत" गुजराती मासिक पत्रिका

आर्य समाज को सूचित करते हर्ष हो रहा है कि आर्य समाज, सैजपुर बोघा, अहमदाबाद जो इस समय तक गुजराती व सिंधी भाषा मे सैकडो नमूने के ट्रैक्ट व पुस्तके लाखो की सख्या में प्रकाशित कर चुका है, अब गुजराती मासिक पत्रिका "आर्य व्रत" का प्रकाशन आरम्भ कर रहा है। प्रथम अक "आर्य समाज स्थापना दिवस" पर प्रकाशित हो रहा है।

आर्य समाज अशोक नगर दिल्ली का ३३वां उत्सव

—आर्य समाज अशोक नगर दिल्ली ३३वा उत्सव दिनांक ४ अप्रैल से १० अप्रैल तक मनाया गया है। इस अवसर स्वाति राष्ट्र कल्याण यज्ञ का आयोजन हुआ।

—आर्य समाज मथुरा रेल्वे कालोनी का ४२ वां वार्षिक उत्सव दिनांक २२-४-८८ से २५-४-८८ तक मनाया गया।

—आर्य समाज गरथना का वार्षिक उत्सव ११ अप्रैल से १४ अप्रैल तक मनाया गया।

आर्य समाज कतरी सराय स्थापना दिवस

आर्य समाज स्थापना दिवस एव नवसम्वत्सरोत्सव का पावन पर्व आर्य-समाज एव महर्षि दयानन्द आर्य कन्या प्राथमिक एव उच्च विद्यालय के तत्वावधान मे शनिवार १९-३-८८ को समारोह पूर्वक मनाया गया।

प्रात काल यज्ञ, ओ३म ध्वजारोहण के पश्चात यज्ञ शेष (प्रसाद) का वितरण किया गया। सन्ध्या के समय विद्यालयो के छात्र-छात्राओ के द्वारा नगर मे शोभा यात्रा निकाली गई, जिसमे वैदिक मन्त्रो से आकाश मण्डल गू ज उठा।

—कृष्ण मोहनलाल गुप्तार्य
आर्य समाज कतरीसराय एव विद्यालय

सम्मानित वैदिक विद्वान आचार्य– पं० विशुद्धानन्द जी शास्त्री

आर्य समाज के वैदिक विद्वान संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान आचाय विशुद्धानन्द जी शास्त्री एक सरल स्वभाव वाले सात्विक ब्राह्मण पडित है अब से पहले इन्हे आय समाज के मच पर कुछ ही पठित जन जानते थे। भला हो उन विद्व मण्डली का जिन्होंने महर्षि दयानन्द लिखित 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के खण्डन व स्वामी दयानन्द पर तीव्र प्रहार किया। इस समय आवश्यकता थी उस रचित ग्रन्थ स्वामी करपात्री जी के वेदाथ पारिजात के उत्तर देने की।

आचाय विशुद्धानन्द ने सावदेशिक सभा की प्राथना को स्वीकार कर उत्तर लिखना प्रारम्भ किया। एक भाग लिखकर सभा को दिया। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अविलम्ब पुस्तक प्रकाशित कराकर जनता के हाथो मे सौंप दी। पुस्तक का नाम दिया— वेदाथ कल्पद्रुम जनता ने इस काय को सराहा और विद्वन्मण्डलो ने आचाय जी का साधुवाद दिया

अब क्या थी उस अकिञ्चन पडित विशुद्धानन्द की गणना गण्य मान्य विद्वन्मण्डल मे प्रमुखता से जाने लगी। यत्र तत्र आचाय जी सम्मान के पात्र बने। इस एक लघु ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद सावदशिक सभा आपके लिखित द्वितीय भाग को भी प्रकाशित कराने जा रहा है।

आचाय जी का सच्चा सम्मान तो तब था जबकि आयजन व उनके भक्त उनकी रचना को आय समाज व विद्यालयो के पुस्तकालयो मे शोभा को बढाते तथा आय जन उसे पढकर पण्डित जी की प्रखर प्रतिभा के पारखी बनते।

सावदेशिक सभा ने उन्हे सम्मानित करने मे जो उदारता दिखाई है उसी का परिणाम है कि आज आचाय जी जनता द्वारा कृपा की कृपणता के पात्र न सौम्य सुमना की गुथी मालाओ के भार से वैसे ही लादे जा रहे है जैसे स्वामी दयानन्द सरस्वती की विद्या के भार से लद होने पर भी थकान का अनुभव न करके आनन्द का अनुभव ही कर रहे है।

मै समझता हूँ आपके आनन्दातिरेक से जन मानस और अति आल्हादित होगा। तभी आप यशस्वी तेजस्वी मनस्वी बनगे।

प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व वाले आचाय जी बाल्यकाल से ही माता पिता के सस्कारो से पूरित होकर गुरुकल बदायू सूय कुण्ड म सस्कृत वाङ मय का सरस अध्ययन करने लग। स्नातक होकर आचाय परक्षा वाराणसी से भी उत्तीर्ण की।

श्रीमती एव श्री आचार्य विशुद्धानन्द जी शास्त्री

इनके सौभाग्य से इन्ही जैसी सौभाग्य शालिनी देवी जी भी जीवन सगिनी बनी। बगिया मे कमल और कमिलिनी भी खिले इन सुमना के सुवास वातावरण ऐसा महका कि लोग आश्चय चकित रह गए।

आज आप अध्ययन काल से निवृत होकर स्वाध्याय प्रवचनाभ्या न प्रमदितव्यम् की सरल रेखा पर अप्रमाद होकर स्वाध्याय मे सलग्न है। लेखन काय भी अनवरत चल ही रहा है।

आज हम धन्य है ?

वैदिक विद्वान सम्मानित

शाल व २१०००) की थैली भेंट

स्वर्गीय श्री दीपचन्द आय जी की पुण्य स्मृति मे नई दिल्ली ३ अप्रैल १९८८ का सस्कृत के प्रचारक प्रसारक वदाथ कल्पद्रुम के सुप्रसिद्ध मनीषी लेखक प० विशुद्धानन्द मिश्र का आय समाज नया बास के वार्षिकोत्सव स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे आय साहित्य प्रचार टस्ट के प्रधान प० राजवीर शास्त्री व मन्त्री श्री धमपाल आय द्वारा आय रत्न से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर इक्कीस हजार रुपय एक शाल एव अभिनन्दन पत्र भेट किया गया। समारोह मे श्री प० अभिविनय भारती श्री शिवराज शास्त्री प्रो० सुरेन्द्र कुमार प्रो० रत्नसिंह श्री सच्चिदानन्द शास्त्री श्री रामनाथ सहगल और अनको आर्य समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हए।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में दयानन्द पीठ बन्द कराने का संकेत

आर्य समाज मे गम्भीर प्रतिक्रिया

नई दिल्ली २२ अप्रैल।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अन्तगत विगत १२ वर्षो से चलते आ रहे दयानन्द वेद पीठ और उस पर नियुक्त दयानन्द प्रोफसर के पद को समाप्त किया जा रहा है। इस पद पर काय करत हुए डा० श्रीनिवास शास्त्री और डा० कपिलदेव शास्त्री जैसे विद्वानो ने वैदिक साहित्य और ऋषि दयानन्द के वेद विषयक दृष्टिकोण पर अनेक ग्रन्थो की रचना की थी और यह ग्रथ विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित भी किए गये थे। साथ ही अनेक शोध छात्रो न भी यहा शोध काय को सम्पन्न किया।

सावदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती न बताया कि डा० कपिलदेव शास्त्री के अवकाश ग्रहण करने के बाद इस पद पर किसी नए विद्वान की नियुक्ति करने पर आनाकानी की जा रही है।

स्वामी जी ने कहा कि इस समाचार स समूचे आर्य जगत म उत्तेजना फैलना स्वाभाविक है। उन्होन कहा कि हरियाणा प्रान्त आय समाज के काय कलापो का गढ माना जाता है। यदि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के सचालको ने इस प्रकार की गलती की तो देशभर मे इसकी जोरदार प्रतिक्रिया होगी।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने हरियाणा के मुख्यमन्त्री चौधरी देवीलाल जो विश्वविद्यालय के कुलपति भी है तथा हरियाणा के शिक्षामन्त्री को पत्र लिखकर अवगत कराया है कि एक और तो भारत सरकार देश के सभी विश्वविद्यालयो मे शाकर विद्या पीठ स्थापित करने की घोषणा कर रही है और दूसरी ओर हरियाणा सरकार द्वारा महर्षि दयानन्द विद्यापीठ को समाप्त करने का दुष्प्रयास हो रहा है। उन्होने कहा कि आयसमाज के जागरूक प्रहरी देवीलाल सरकार की इस मूखतापूण गलती का देशव्यापी विरोध करगे।

इस विषय मे आर्य समाज का एक शिष्टमण्डल जल्दी ही चौधरी देवीलाल से मिलेगा और उसके पश्चात अन्तिम निर्णय करेगा।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
महामन्त्री

अत्यावश्यक सूचना

उत्तर प्रदेश की सभी आर्य समाजो, जिला समाओ एव प्रतिनिधि सदस्या अधिकारियो को यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ने १९८८ वर्ष आर्य युवा वर्ष घोषित किया है अत आपसे निवेदन है कि प्रत्येक आर्य समाज एव जिला सभा अपना वार्षिक चुनाव करते समय एक प्रतिनिधि आर्य वीर दल का अधिष्ठाता अवश्यमेव चुने तथा उसके नाम की सूचना मुझे प्रेषित करने की कृपा करे।

अपने वार्षिक महोत्सव पर १ समयका सुविधानुसार आर्य वीर सम्मेलन किया करे ताकि युवक उसमे रुचि से भाग ले। अपने समाज की आय का १० प्रतिशत भाग युवको को पुरस्कार गोष्ठी प्रतियोगिता के लिए खर्च करे ताकि आपकी भावी पीढी ऋषि जीवन एव आर्य समाज से परिचित होकर देश सेवा कर सके। विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करे—

—धर्मपाल आचार्य
द्वारा गुरुकुल ततारपुर
ततारपुर (निकट हापुड)
जिला गाजियाबाद

आचार्य श्री वैद्यनाथ शास्त्री का दुःखदनिधन

हमे बडे दु खित हृदय से लिखना पड रहा है कि सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के अध्यक्ष आचार्य श्री वैद्यनाथ शास्त्री का (जैसा कि समाचार-पत्रों मे प्रकाशित हो चुका है) दि० ११ मार्च की रात्रि मे पक्षाघात से निधन हो गया। मेरा (इन पक्तियो के लेखक का) स्व० आचार्य जी से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है।

वे व्यक्तिगत परिचय होने के बहुत पहिले से मेरे लेखो के प्रशसक व समर्थक रहे हैं। सन १९८० मे मैं धर्मार्य सभा का सदस्य मनोनीत किया गया। तभी से मैं स्व० आचार्य जी के व्यक्तिगत सम्पर्क मे आया, और तब से अब तक धर्मार्य सभा का सदस्य बना चला आ रहा हूँ।

यो तो जाना सब को है परन्तु दु ख इस बात का है कि आर्य समाज के पुराने उच्च कोटि के विद्वान एक के बाद एक चले जा रहे है किन्तु उनके रिक्त स्थान की क्षति पूर्ति नही हो पाती।

हम दिवगत आत्मा की शाश्वत शाति की तथा उनके दु खित स्वजनो को धैर्य प्रदान करने की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते है।

—काशीनाथ शास्त्री
आर्य निवास राजेन्द्र वार्ड
गादिया (महाराष्ट्र)

शोक समाचार

आर्य समाज जौनपुर की यह सभा आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान श्री वैद्यनाथ जी शास्त्री के निधन पर शोक प्रकट करती है। और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करे। आचार्य जी का आर्य समाज जौनपुर से बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध था।

—सुरेन्द्र प्रधानमन्त्री

आर्य समाज मोती बाग का निर्वाचन

दिनाक २४ ४ ८८ को श्री शान्ति प्रकाश जी प्रेम की अध्यक्षता मे आर्यसमाज साऊथ मोती बाग का चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। जिसमे प्रधान श्री खुशहाल मणि ध्यानी, मन्त्री श्री जयप्रकाश शास्त्री कोषाध्यक्ष श्री मनीराम सिंघल चुने गये।

—जयप्रकाश मन्त्री

शोक समाचार

स्वतन्त्रता सेनानी (निजाम हैदराबाद सत्याग्रह) एव आर्य जगत् के विशेषकर निमाड क्षेत्र के) एक जगमगाते सितारे का अस्त। दिनाक १ मार्च ८८ को ग्राम कुआ निवासी (स्वर्गीय) श्री दयदत्त झापडू आर्य अपनी आयु के ८३ वर्ष पूर्णकर अन्वत अपने जीवन की अन्वत-महायात्रा की ओर (कूच कर गये।

१९३७ ३९ म आपने निजाम हैदराबाद सत्याग्रह म सक्रीय भाग लेकर स्वतन्त्रता सेनानी का खिताब प्राप्त किया। आपने हिन्दी रक्षा आन्दोलन मे भी सक्रिय भाग लिया।

पदक विजेता

क्रास कन्ट्री टीम का कप्तान
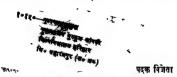
फरीदाबाद मे गतवर्ष ७ ८ दिसम्बरको जिला योग प्रतियोगिता मिश्रित प्रशासन क्रीडा स्थल मे सम्पन्न हुई जिसमे ओमप्रकाश आर्य वीर ने अपने आयु वर्ग मे द्वितीय स्थान प्राप्त किया और नगर मजिस्ट्रेट श्री एल एन मण्डा ने पुरस्कार और प्रमाण पत्र दिया, और जिला योग टीम मे इनका चयन किया गया।

चतुर्थ हरयाणा टीम प्रतियोगिता हिसार मे गत १३ से १६ दिसम्बर ८७ को सुशीला भवन मे सम्पन्न हुई। जिसमे कि आपने दूसरा स्थान प्राप्त किया और हिसार के आयुक्त श्री एम ए राठी ने रजत, पदक व प्रमाणपत्र दिया और हिसार के ही ऐड मिनिस्टटर श्रीमती प्रभावहल ने कैश अवार्ड भी दिया। और हरयाणा योग टीम मे इनको लिया गया।

१२ वी राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता रांची बिहार मे ७ से १० जनवरी ८८ को रांची जिला स्कूल मे सम्पन्न हुई जिसमे इन्होने राष्ट्रीय योग भाषा प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान प्राप्त किया और भारतीय योग फैडरेशन ने इनको स्वर्ण पदक व प्रमाण पत्र प्रदान किया। श्री ओमप्रकाश आर्य का निवास स्थान जवाहर कालोनी नगला रोड नजदीक विशाल पब्लिक स्कूल के पास है। वहा पर एक आर्य व्यायाम शाला भी है जहा बच्चो को शारीरिक, व्यायाम जैसे दण्ड, बैठक, योग आसन, नैति धोती, न्यौली, कुञ्जल क्रिया, लाठी चलाना लाठी पर आसर करना आसना के द्वारा स्तूप दिखाना, इसके साथ ५ नतिक व बौद्धिक शिक्षा भी नि शुल्क दी जाती है यहा पर लडको की सख्या ५० से ७० तक रहती है सभी रुचि के साथ भाग लेते हैं।

पूज्य गुरु जीवनदेव जी शास्त्री ने यह सब करने की प्रेरणा दी। जून १९७८ मे आर्य वीर दल ब्रह्मचार्य प्रशिक्षण शिविर पलवल मे १० दिन ट्रेनिंग ली उसके बाद बौद्धिक ज्ञान, [illegible] १९८६ मे बरनावा जिला मेरठ मे १५ दिन तक रहे उसके बाद १९८७ [illegible] महाविद्यालय गुरुकुल भज्जर म [illegible] न सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर व प्रशिक्षण लिया और अब जवाहर कालोनी म ही आर्य [illegible] प्रचार सस्थान के माध्यम से बच्चो को नि शुल्क शिक्षा दी जाती है। श्री ओमप्रकाश आर्य कल्वी नेटर आफ इण्डिया लिमिटेड [illegible]। आर्य वीरो को इन पर गर्व है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
ओ३म्
राष्ट्र देवो भव
सार्वदेशिक
साप्ताहिक
राष्ट्र को देवता मानो।
सारे संसार को आर्य बनाओ
DUPLICATE 4/6/88

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८८] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष ४ १
वर्ष २३ अङ्क १६] | य० कृ० ७ स० ०४५ रविवार ८ मई १९८८ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६ पैसे

फूलवानी (उड़ीसा) जिले में १२५ परिवारों के ५००से अधिक ईसाई वैदिकधर्म में दीक्षित

विशाल शुद्धि समारोह सम्पन्न

उडीसा के फूलावानी जिला जो निर्धन वनवासियों का पिछडा हुआ क्षेत्र है, वर्तमान समय मे भी यहा के अधिकांश निवासी नंगे ही देखे जा सकते हैं। इनकी निर्धनता का लाभ ईसाई पादरियों ने उठाकर एक बडे भूभाग के निवासियो को ईसाई बना लिया था। परन्तु जब से सार्वदेशिक सभा तथा उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा ने संयुक्त रूप से शुद्धि कार्य को हाथ मे लिया है तब से अब तक कई बार शुद्धि कार्यक्रम सम्पन्न हो चुके हैं और इनकी प्रेरणा पर अनेक ईसाई जो पहले हिन्दू ही थे पुन वैदिक धर्म में वापस आने लगे हैं। जनवरी १९८८ में भी कुछ शुद्धिया इन्ही क्षत्रो मे हुई थीं। परन्तु उस समय मार्ग की कुछ कठिनाई के कारण दुर्गम घाटियो में जाना सम्भव नही हुआ था, क्योंकि यह क्षत्र जगलो से भरा हुआ है। यहा के प्राकृतिक दृश्य मनमोहक एव बहुत ही आकर्षक लगते हैं परन्तु यातायात साधन बहुत ही कम हैं। जो हैं भी दुगम हैं और घाटियो से होकर निकलते हैं। इस कार्यक्रम में जाते समय हमारी गाडी एक घाटी मे ' स गई थी, बडी मुश्किल से हम वहां से आगे निकल सके।

अस्तु शुद्धि के इच्छुक बन्धुओ द्वारा अनेक बार स्वामी धर्मानन्द जी से आग्रह करने पर, इस प्रार्थना को स्वामी जी ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती तक पहुचाया तो उन्होने सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री प० पृथ्वीराज जी शास्त्री को वहा इस कार्य के लिए भेजना सहर्ष स्वीकार किया। तदनुसार श्री शास्त्रीजी वहां जाने के लिए १६अप्रैल को दिल्ली से चलकर २० को गुरुकुल (आम सेना कालाहाण्डी) में पहुच गए। यद्यपि यह शुद्धि की संख्या बहुत बडी नहीं थी परन्तु उन लोगों की श्रद्धा भावना, उत्साह एव उस क्षेत्र की महत्ता को देखते हुए श्री शास्त्री को बडा कष्ट सहना पडा।

गुरुकुल में आर्य समाज की ओर से जैसा कि आप जानते हैं कि अकाल सहायता कार्यक्रम भी चल रहा है। अत २२ अप्रैल को शास्त्री जी ने गुरुकुल मे निर्धन लोगों को १६ क्विटल चावल बाटा। २२ को प्रात एक बजे हम गुरुकुल भूमि से चले। रास्ते मे एक दो घाटी पार करने मे बडी परेशानी हुई। जैसे तैसे करके मध्याह्नोत्तर ४ बजे रायपतली ग्राम मे पहुचे वहां बडी संख्या में लोग स्वागत समारोह के लिए प्रतीक्षा में बैठे थे। जाते ही उन लोगो ने अपनी परम्परा के अनुसार स्वागत प्रारम्भ किया। प्रत्येक घर के सामने श्री पृथ्वीराज शास्त्री एव श्री स्वामी धर्मानन्द जी अपना चरण रखते तो फूलमाला पहना कर उनका स्वागत किया जाता था। इस प्रकार विशाल शोभायात्रा निकालीगई जिसमें चारो ओर से फूल एव अक्षत की वर्षा हो रही थी। इस प्रकार एक अभूतपूर्व उल्लास-मय वातावरण बन गया। वे लोग इतनी श्रद्धा दिखा रहे थे कि

(शेष पृष्ठ १२ पर)

उडीसा में श्री पृथ्वीराज शास्त्री द्वारा वैदिक धर्म मे प्रविष्ट बन्धुओ में चावल वितरण।

८ मई १९८८ को समस्त आर्य समाजें पंजाब रक्षा दिवस मनायें

भारत की समस्त आर्य समाजों से निवेदनहै कि आगामी ८ मई को पंजाब रक्षा दिवस का आयोजन करें और कश्मीर की तरह पंजाब को विशेष दर्जा देने का कडा विरोध करें और वहां मार्शल ला लगाने, सेना को शासन सौंपने तथा सीमा सुरक्षापट्टी के निर्माण और भू०पू० सैनिको को सीमा क्षेत्र मे बसाने के समर्थन मे प्रस्ताव पारित कर प्रधानमन्त्री, गृहमन्त्री भारत सरकार को भेजें।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान सार्वदेशिक सभा

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

पंजाब को विशेष दर्जा देना देश की अखंडता पर कुठाराघात

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, सनातन धर्म के नेता गोस्वामी गिरधारीलालजी तथा पूर्व सांसद श्री हरदयालदेवगुण का संयुक्त वक्तव्य

१ मई, १९८८।

पंजाब को विशेष दर्जा देने का केन्द्रीय सरकार द्वारा, चर्चा से देश की अखण्डता, सुरक्षा और धर्म निरपेक्षता पर भीषण कुठाराघात होगा और इसे कदापि सहन नहीं किया जायगा। श्री नेहरू ने कश्मीर को विशेष दर्जा देकर जो भयकर भूल की थी, उसका परिणाम पूरा देश आज तक भुगत रहा है। उसकी पुनरावृत्ति किसी कीमत पर सहन नहीं करेंगे। पंजाब की स्थिति में तो विशेष दर्जा देने का अर्थ होगा खालिस्तान की नींव रखना। इस प्रकार के समाचारों के प्रकाशित होने मात्र से पंजाब से व्यापक रूप से पलायन शुरू हो गया।

पंजाब में इस समय केन्द्र के विरुद्ध खुली बगावत चल रही है। केन्द्रीय सरकार ने पहले ही उग्रवादियों को जेल से मुक्त करके देशद्रोही शक्तियों को निर्दोष हिन्दू-सिखों की हत्या करने, लोगों से धमकियां देकर रूपए एठने वाले, देश के विभाजन का प्रचार करने और कट्टरपंथी भावनाएं फैलाने की खुली छूट दे दी है। व्यास नदी से उत्तर में अमृतसर और गुरुदासपुर जिले के सभी सीमावर्ती गांव हिन्दुओं से खाली हो चुके हैं और उनमें केवल उग्रवादियों का ही सिक्का चल रहा है।

वस्तुतः पंजाब में कतिपय गद्दारों, पथभ्रष्ट कट्टरपंथियों की सहायता से खालिस्तान की आड़ लेकर पाकिस्तान ने भारत पर अघोषित आक्रमण कर रखा है जिसका प्रतिरोध तुष्टीकरण से नहीं अपितु केवल सैनिक कार्रवाई से ही किया जा सकता है। सरकार ने अभी तक तुष्टीकरण के लिए जितने भी पग उठाये हैं, उनका परिणाम उल्टा ही निकला है।

हमारे मत में पंजाब की स्थिति का एक ही हल है कि पंजाब के तीन सीमावर्ती जिलों में मार्शल-ला लगा दिया जाए और पूरे पंजाब को सेना के सुपुर्द कर दिया जाय और जैसलमेर से लेकर कश्मीर तक सीमा के साथ सुरक्षा पट्टी लागू कर भूतपूर्व सैनिक परिवारों को उस पट्टी में बसाया जाए और पंजाब में कम से कम पांच वर्ष तक हर प्रकार की राजनीतिक गतिविधि और चुनाव इत्यादि स्थगित रखे जायें।

इसके अतिरिक्त स्वर्णमन्दिर से उग्रवादियों, हत्यारों और समाज विरोधी तत्वों से मुक्त करके इसकी पवित्रता को पुनः स्थापित किया जाए और उग्रवादियों के अथियों को खालिस्तान और पूर्ण आजादी से प्रचार की खुली छूट बन्द कर दी जाए।

हम देश की समस्त देशभक्त जनता और विशेष रूप से आर्य समाजों, सनातन धर्म सभा और हिन्दू संस्थाओं से अनुरोध करते हैं कि वह ८ मई, १९८८ को विशेष रूप से पंजाब रक्षा दिवस मनावें और उसमें पंजाब को विशेष दर्जा देने का विरोध, मार्शल-ला लगाने तथा अन्य मांगों के समर्थन में प्रस्ताव पारित करके प्रधान मन्त्री और गृह मन्त्री को भेजें और जन-जागरण और संगठन के अन्य उपाय भी करें।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रही जिनको केन्द्रीय सम्मान पेंशन स्वीकृत हुई

तृतीय सूची :

१—श्री सजान सिंह ग्राम हेतू पो० सेन्धात, तहसील जोगिन्दर नगर, मण्डी (हि० प्र०)
२—श्री सत्यदेव जी, आयु नगर, एटा (उ० प्र०)
३—श्री विश्वनाथ प्रसाद गुप्ता, ग्रा पो. मोती, जि गाजीपुर (उ० प्र०)
४—बलवन्त सिंह, पर्वदा हर्षा, जिला मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)
५—श्री अतरसिंह त्यागी, ग्रा मुबारिकपुर, पो -दवास बच्चा खेजरा, मेरठ
६—श्री बलबीर सिंह, ग्रा पो जवाहरा, तह० गोहाना, जि० सोनीपत
७—श्री विशम्भरनाथ रावत, बी-५ म न० ६६ भिवानीस्टैंड, रोहतक (हरि)
८—श्री बन्शीलाल सोनी, मार्फत प्रकाश स्टुडियो, पो० श्याहपुरा, जिला-भीलवाडा (राज०)
९—श्री उत्तमचन्द्र शरर, म०न० ३० वार्ड न० ८ जिला पानीपत
१०—श्री लाला प्रसाद, मो० सराय रहमान, जी० टी० रोड, जिला अलीगढ (उ० प्र०)
११—श्री जोगेन्द्र भटनागर, नयानन्द निवास, आर्य सदन, सिविरलाइन, फैजाबाद (उ० प्र०)
१२—श्री मारुती जी म न० ८-६८४, अय्यरवाडी गुलवर्गा,
१३—श्री रूकमण S/० तुकाराम, गुलवर्गा
१४—श्री ओम प्रकाश, राणा प्रताप बाग, -१६/१ दिल्ली-७
१५—श्री विद्यारत्न म न० ४००, नया बाँस दिल्ली-६
१६—श्री जयदेव ६३ गांधी मार्ग, बहादुरगढ, जिला रोहतक (हरियाणा)
१७—श्री राजेन्द्र शम्मा जी, निजामाबाद, म न-१—३० कोल्ज बैस, तालुकामन्डनूर, निजाम
१८—श्री धर्मवीर आय, सराय रूहेला, नई दिल्ली-५
१९—श्री सरदार सिंह नरेला दिल्ली-४०
२०—श्री असीरा सिंह, मु० नगर (उ० प्र०)
२१—श्री ज्ञान चन्द्र, रोहतक
२२—श्री नाथूराम मिश्र, ग्वालियर-३
२३—श्री रामचन्द्र, सहारनपुर (उ० प्र०)

नोट—इससे पूर्व दो सूचियां ३४ और ३० की छप चुकी हैं, यह तीसरी सूची है।

अब तक कुल—३४+३०+२३=८७

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

आर्य वीर दल हरयाणा द्वारा कुरुक्षेत्र में सूर्य ग्रहण के मेले पर सेवा कार्य

समस्त हरयाणा प्रान्त के ६० आर्य वीर सूर्य ग्रहण के मेले पर सेवा हेतु आये उन्होंने डी, सी महोदय से लिखित रूप में आदेश लेकर सेवा कार्य किया १६-३-८८ की रात के १२ बजे तक पुलिस दल के साथ कार्य किया, इसी प्रकार १७-३ ८८ को सभी आर्य वीर गान करते हुए उस तालाब पर पहुँचे जहां लाखों की भीड़ उमड़ रही थी वहां घाट पर आर्य वीरों ने अपने कर्तव्य का पालन पुलिस अधिकारियों की देख रेख में बड़े अच्छे ढंग से किया। सायंकाल भी जब भीड़ अधिक बढ़ चुकी थी उस समय पुलिस के साथ भीड़ को नियन्त्रण करने में बड़ी अच्छी भूमिका निभाई प्रात.काल १७-३-८८ को आर्य वीरों ने ध्वज लगाकर लोगों के सामान तथा अन्य कीमती सामान रखवाते और जब लोग स्नान करके वापिस आते तो उनको सम्भाल दिया जाता, इस प्रकार स्टैंडों पर जाकर लोगों का सामान बसों पर चढ़ाया तथा लोगों की सेवा की। तीनों दिन सुबह प्रभात फेरी निकाली गई। सभी आर्य वीरों ने डा० देवव्रत आचार्य के नेतृत्व में आर्य समाज का प्रचार करते हुए सारे स्थानों पर भ्रमण किया। १८-३-८८ को सायंकाल नववर्ष उत्सव कुरुक्षेत्र में व्यायाम आचार्य डा० देवव्रत जी की अध्यक्षता में मनाकर आर्य वीरों को देश धर्म जाति की रक्षा हेतु प्रेरणा दी गई। इस प्रकार शान्ति पाठ के साथ यह कार्य पूर्ण हुआ।

—उम्मेदसिंह शर्मा
संचालक . आर्य वीरदल (हरयाणा)

सम्पादकीय

आखा तीज के अवसर पर शारदा कानून की धज्जियां उड़ा दी

क्या सदियों पुरानी, आडम्बर युक्त मान्यताओं को अनिष्ट निवारणार्थ अचूक विधि मानकर करते हैं या कुप्रभाव की चिन्ता किये बिना रस्म अदायगी हेतु पुरानी स्मृतियों को साल में एक दिन मिल बैठकर मनाते हैं।

"आखातीज (अक्षय तृतीया)के मुहूर्त्त को इतना शुभ और मगलकारी माना जाता है कि इस विषय में किसी भी पडित पुरोहित से से पोथी-पत्रा-पूछे बगैर काम किया जाता है।

अभी हाल मे, देश के समाचार-पत्रो द्वारा) परम मगलकारी मुहूर्त्त में सम्पन्न बाल-विवाहों के अनेक चित्र छापे गये हैं। कुछ चित्रों मे दूल्हे व दुल्हन इतने अबोध थे कि उनकी माताओ ने स्तन पान कराते हुए गोदी में लेकर विवाह-वेदी की परिक्रमा (फेरे)किये।

१९२९ में शारदा ऐक्ट पास कर सरकार ने बाल विवाह पर प्रतिबन्ध लगाया था पर आज वीसवी सदी के समस्त ज्ञान-विज्ञान और आधुनिक कहलाने की आकाक्षा भी इन कुप्रथाओ के सामने इन कुप्रथाओ के सामने सिर धुनती प्रतीत होती है। महान् आश्चर्य की बात है कि आज विकासशील समाज के अग होते हुए हम उतने ही सकुचित विचारों वाले साबित हैं जितने कि सौ दो सौ वर्ष पीछे थे।

राजस्थान में प्रतिवर्ष इस तिथि पर हजारों दूध पीते बालक-बालिकाओं के विवाह-समारोह देखने वालो के मन में भी प्रश्न उठ सकते हैं। शारदा कानून की धज्जिया उडाने वाले इन बाल-विवाहों को बड़े समारोह पूर्वक प्रतिवर्ष मनाया जाता है। निश्चय ही ऐसे समारोह जहा भारतीय जनमानस की कु ठित मनोवृत्ति को प्रकट करते हैं, वही पर विदेशियों की दृष्टि मे समाज को उपहास का पात्र भी बनाते हैं।

एक ओर हमारा कानून १८वर्ष की कन्या और २१ वर्ष से ऊपर आयु का वर का विवाह वैधता प्रदान करता है। दूसरी ओर इस दिन की शुभ पर्व का स्वरूप देकर अबोध-बच्चों को विवाह की वेदी पर बैठने को मजबूर कर रहे हैं। कही-कही पर भ्रूण-विवाह तक किये जाते देखे गये हैं। अजन्में गर्भस्थ शिशुओ के विवाह के बाद शेष रह ही क्या जाता है।

अभी १९ अप्रैल को जयपुर जिले के ५० पचास गांवो में एक हजार बाल-विवाह सम्पन्न हुए हैं। पूरे राजस्थान में ५० हजार बाल-विवाह किये जाते हैं। शारदा ऐक्ट बनते समय अन्धविश्वासी जनता द्वारा बगावत किये जाने से बाल-विवाहो पर अकुश नही लगाया गया सामाजिक विद्रोह की आशका के कारण यह कानूनी ढोल आज देश में यह लोक परम्परा बन गई। स्वतन्त्रता प्राप्ति के चार दशक बाद भी यह कुप्रथा जारी रहना और इन कार्यक्रमों में अफसरो व मन्त्रियों तक का सम्मिलित होना किसकी असमर्थता समझी जाय।

ऐसे गैर-कानूनी विवाहों के करने के आरोप में राजस्थान के दो मन्त्रियों को अपने पद का त्याग तक करना पड़ा है।

इन बाल-विवाहों का उद्गम मध्य कालीन भारत में हुआ। विदेशियों के हमलों से उठाकर के जाने या बलात्कार करने के बाद वैश्या बनने के लिये ऐसी हरकता से बचाने के लिये माता-पिता के पास एक ही रास्ता बचा था बाल-विवाह—

कही-कही पर आर्थिक कारणो से भी बाल-विवाह किये जाते बीकानेर के पुष्करण समाज, हाडौती समाज में इस परम्परा का खूब निर्वहन हुआ हे। किसी को कानून का कोई भय नही है। कुछ पढ़ें लिखे शिक्षित व्यक्तियो में अब ऐसी शादियो को अच्छा नही मानते हैं पर घर परिवार समाज के आगे उनकी क्या ताकत—

इनको क्या पता—

जिन मासूम बच्चो के विवाह बाल्यावस्था में किये गये । उन्हे क्या पता है इस जिन्दगी का इन मासूम बच्चों को अपनी जिन्दगी का बोझ ढोना है वह बच्चे-विधवा या विधुर भी हो गये होते हैं। होश आने पर उन्हे बताया गया, कि विधुर हो या तुम विधवा हो। अब उनसे कोई पूछे कि क्या तुम्हे कुछ पता है कि तुम्हारे उभरते हुए जीवन के साथ खिलवाड की गई है। ऐसी दशा में ही समाज में भ्रष्टाचार पनपता है।

यह ठीक है कि प्रत्येक समाज में या समुदाय वर्ग और परिवार के अपने कुछ रीति-रिवाज व परम्पराये होती हैं। लेकिन एक लोकतान्त्रिक देश के सामाजिक परिवेश को दूषित व निर्बल करने वाली प्रथाओ को धर्म का नाम देकर उन्हे क्या छूट देना उचित है।

देश का विधि-विधान, जिस प्रथा को समाज के व्यापक हित में अहितकर समझता है। उस पर अकुश लगाया ही जाना चाहिये। इस जागृत समय में जब नारी जाति काफी आगे बढ चुकी है और अपने अधिकारो के प्रति जागृत है। जो सती प्रथा जैसे आचरण पर विरोध स्वरूप आगे खडे होकर कर्त्तव्य की पुकार कर रही है। फिर वही नारी अपने भविष्य को पौढो पर चिन्तातुर क्यो नही है। आर्यसमाज जैसी अनेक-सस्थाओ के होने पर भी ऐसी कुप्रथाओ पर कठोर प्रहार क्यो न किया जाय।

देश बदला है समाज बदला है एक ठोकर और दो कि ऐसी घिसी पिटी मान्यताए स्वयं दम तोड़कर हमारे लिए सुन्दर मार्ग प्रशस्त करे।

प्रान्तीय सम्मेलनों तथा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन

सार्वदेशिक सभा का महत्त्वपूर्ण निर्णय

१४--निश्चय (विशेष-२) सर्व सम्मति से यह भी निर्णय किया गया कि सार्वदेशिक सभा की ओर से एक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जावे। पहले आर्य महासम्मेलन प्रान्तीय स्तर पर सभी प्रान्तीय सभाए आयोजित करे उसके बाद अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे दिल्ली मे किया जावे। यह भी निश्चय हुआ कि अ ग्रेजी हटाओ सस्कृत लाओ, अ ग्रेजी हटाओ- हिन्दी लाओ आदि कार्यक्रम भी आयोजित किए जावे। इन्दौर से इस कार्यक्रम को शुरू करने सम्बन्धी श्री जगदीश प्रसाद वैदिक ने प्रस्ताव रखा जिसे स्वीकार किया गया।

(ख) इसी अवसर पर प० ब्रह्मदत्त स्नातक सयोजक अखिल भारतीय हैदराबाद (आर्य समाज) स्वतन्त्रता सेनानी समिति के ११-४-८८ के पत्र पर भी विचार किया गया जिसके अनुसार १९८८ ८९ मे हैदराबाद आर्यसमाज सत्याग्रह की स्वर्ण जयन्ती समारोह के आयोजन का प्रस्ताव किया गया है।

निश्चय हुआ कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर ही हैदराबाद आर्य समाज सत्याग्रह के स्वर्ण जयन्ती समारोह का कार्यक्रम भी रखा जावे।

मुनिजी, क्या अभी कोई कसर बाकी है

—श्री विजय, सम्पादक पंजाब केसरी

जैन आचार्य सुशील मुनि, जिनके परामर्श पर पिछले दिनो कुछ नई पहल पजाब में हुई है, अब अपनी पहली योजना फेल हो जाने के बाद एक नई योजना बना रहे बताए जाते हैं जिसके अन्तर्गत उग्रवादी गुटो को सगठित करके उन्हें अकाल तख्त के प्रमुख जत्थेदार जसबीरसिंह रोडे की छत्रछाया मे लाना है। इस नई योजना के अन्तर्गत सरकार पर यह दबाव डाला जा रहा है कि आल इण्डिया सिख स्टूडटस फैडरेशन के दो नेताओ भाई मनजीतसिंह और हरमिन्दरसिंह सन्धू क्रमश अध्यक्ष व महासचिव (आप्रेशन ब्ल्यू स्टार से पूर्व) को रिहा कर दिया जाए ताकि ये नेता आकर कमान सम्भाल और युवको को सगठित कर।

यहा यह बात उल्लेखनीय है कि फैडरेशन के ये दोनो नेता इस समय जोधपुर जेल मे बन्द हैं। १९८५ में भी सरकार ने इन दोनों से बातचीत की थी और बाद में सन्त हरचन्दसिंह लौंगोवाल से समझौता किया था। उस समय पजाब के राज्यपाल श्री अर्जुनसिंह के आग्रह पर इन दोनो को तीन बार विशेष विमानो के जरिए दिल्ली लाकर इनसे बातचीत की गई थी मगर बाद में सन्धू ने दिल्ली के एक अखबार मे यह खबर छपवा दी कि अर्जुनसिंह ने उनसे कुछ वायदे किए थे जो पूरे नही किए गए।

कहा जाता है कि आचार्य सुशीलमुनि और भाई जसबीरसिंह रोडे यह महसूस करते हैं कि वर्तमान परिस्थितियों में सरकार श्री सिमरनजीतसिंह मान को रिहा करने की बात नही मानेगी। यदि पजाब में हत्याए कम हुई होती तो शायद सरकार उनकी रिहाई के बारे में सोचती। इसलिए सरकार पर अब इन दो नेताओ को रिहा करने के लिए दबाव डाला जा सकता है क्योकि एक धारणा इनके बारे में यह रही है कि ये दोनो खालिस्तान की माग के पक्षधर नही थे और भारतीय सविधान के दायरे मे रहकर ही पजाब समस्या का समाधान करना चाहते थे।

इस सिलसिले मे हम यह लिखना चाहेगे कि हमारा स्टेंड तो आरम्भ से ही बिल्कुल सीधा और स्पष्ट रहा है कि यदि कोई व्यक्ति निर्दोष है तो उसे पकड़ा ही क्यो गया और अगर गलती से पकड़ भी लिया गया तो उसे छोडा जाना चाहिए परन्तु यदि कोई व्यक्ति अपराधी है तो कानूनी कार्रवाई उसके विरुद्ध होनी ही चाहिए।

बहरहाल, जहा तक श्री सुशील मुनि के परामर्श पर हुई 'पहलो' का सम्बन्ध है उन पर भारत भर के प्रेस मे और राजनीतिक क्षेत्रो में किन्तु' अवश्य लगा है और वह इसलिए नही कि जोधपुर के नजरबन्द क्यो छोडे गए, बल्कि इसलिए कि ऐसे लोग भी इन पहलो के अन्तर्गत रिहा कर दिए गए जिनकी रिहाई की माग हो किसी ने नही की थी और जिनका आचरण खुले तौर पर गिरफ्तारी से पहले भी पृथकतावाद की जडो को सींचने वाला रहा है और आज भी उसी डगर पर वह चल रहे हैं।

जहां तक श्री सुशील मुनि द्वारा प्रस्तावित नए परीक्षण का सम्बन्ध है उसके बारे में हम यह नही कहेंगे कि यह न किया जाए क्योकि हमारे मना करने से वह रुकने वाला नही है—होना तो वही है जो पिया मन भाएगा' अत यह परीक्षण भी अगर करना है तो जरूर करो और जितना खून और बहाना है वह भी बहाओ बेचारे पजाबी के खून की आखिर कीमत ही क्या है? पाठक जानते ही हैं कि हम तो रह-रह कर यह लिखते रहे हैं कि नित्य नए परीक्षण न किए जाए क्योकि जब-जब भी कोई नया परीक्षण होता है तब-तब पजाब में खाक और खून का खेल जोर पकडता है अगर तथ्य साक्षी हैं कि हमारी आवाज कभी भी सुनी नहीं गई और क्रियात्मक रूप से इस अभागे प्रदेश को एक ऐसी प्रयोगशाला बनाकर रख दिया गया है, जिसमें हर नया परीक्षण पिछले से अधिक दु खदायी और रक्तिम सिद्ध ही रहा है।

अलबत्ता श्री सुशील मुनि से हम यह अवश्य कहेगे कि अब कोई भी नई 'पहल' करने से पहले और करने के बाद वह विदेश न जा बैठे बल्कि पजाब के जिला अमृतसर और जिला गुरदासपुर में उन सैकडो गावों का दौरा जरूर करे, जहा सिक्का सरकार का नही आतकवादियो का चलता है दूर दूर तक कोई अल्पसख्यक जहा नजर नही आता, बहुसख्यक समुदाय भी अपने आपको असुरक्षित महसूस करता है, बहू बेटियो की इज्जत बेबस बुजुर्गों की आखो के सामने लूट ली जाती है, रात को भौक सकने वाले कुत्ते तक जहा मार दिये गए हैं और मौत के साए कदम-कदम पर लोगो का पीछा करते हैं। इसके अतिरिक्त उन्हे उन हजारो पलायनकर्ता परिवारो से भी अवश्य मिलना चाहिए जो अपने ही देश मे शरणार्थी बनकर अमृतसर, गुरदासपुर, बटाला, पठानकोट और अन्य स्थानो पर कैम्पो में बैठे हैं और तरह तरह के दु ख भोग रहे हैं।

श्री सुशील मुनि को चाहिए कि अब किसी भी 'नई पहल या परीक्षण' का सुझाव देने से पहले वह कुछ दिन तक स्वय जिला अमृतसर या गुरदासपुर के किसी भी उपरोक्त गाव मे डेरा डालकर बैठे और यह देख कि उनके द्वारा कराई गई पहलो के कितने दु खद परिणाम लोगो को भोगने पडे हैं और पड रहे हैं और मौत का किस तरह नगा नाच उन पहलो के बाद यहा हुआ है। जितने भी खून पजाब में इन पहलो की वजह से हुए हैं और हो रहे हैं सुशील मुनि इनकी जिम्मेदारी से किसी भी तरह बच नही सकते। ●

उपेक्षित जनजाति उत्थान हेतु आर्य समाज सक्रिय

देहरादून २२ अप्रैल। निकटस्थ ग्राम मोथरोवाला की बसली बस्ती मे बसे कजर जनजाति के लगभग एक सौ लोग पिछडी दशा मे और उपेक्षित तथा प्रताडित सामाजिक अवस्था मे पडे रहे हैं। आर्य समाज ने इनके नैतिक तथा सामाजिक उत्थान का कार्यक्रम हाथ मे लिया है। इससे उक्त गाव के लोगो ने अब वहा पर आर्य समाज की स्थापना भी कर दी है। रविवार दिनाक १७ अप्रैल को इस नव स्थापित आर्य समाज के सत्सग मे क्षेत्र के विधायक श्री किशोरी लाल सकलानी तथा खण्ड विकास अधिकारी श्री नवानी को भी आमन्त्रित किया गया ताकि उनसे मार्गदर्शन प्राप्त किया जाए कि सरकार की योजनाओ के अन्तर्गत इन दलित लोगो की कैसे सहायता की जा सकती है।

यज्ञ की समाप्ति पर जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री देवदत्त बाली का प्रेरक प्रवचन हुआ। श्री बाली ने अपने भाषण के अन्त मे कहा कि ये पिछडे बन्धु अब आर्य समाज से सयुक्त हो गये है अत अब ये पिछडे नहीं रहेगे। उन्होने कहा कि यह इनकी समस्याओ के अन्त का श्रीगणेश है क्योकि अब आर्य समाज ही नही अपितु प्रशासन तथा विधायक महोदय भी इनकी समस्याओ को जान गए हैं।

श्री बाली ने बताया कि विदेशी मिशनो के एजेण्ट पादरी इस क्षेत्र के गरीब लोगो को बहकाकर इनके बच्चो को नि शुल्क पालन-पोषण, शिक्षा आदि का लोभ दिखाकर ले जाते हैं और फिर इन अवयस्क बच्चो का गैर कानूनी धर्मान्तरण कर लिया जाता है। आपने कहा कि यह धर्म प्रचार नहीं है बल्कि अहिन्दुओ की सख्या वृद्धि करके इस देश मे उनके लिए अलग क्षेत्र की माग की भूमि तैयार करना है।

आर्य सत्याग्रह हैदराबाद के सत्याग्रहियों का सम्मान पेंशन का मामला

अब तक का संक्षिप्त विवरण

भारत सरकार के आफिस आर्डर स० ८/३४/८५ (फ्रीडम फाइटर पी) दिनाक १३-११-८६ द्वारा जो गैर सरकारी स्क्रीनिंग कमेटी स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षतामे गठित की गई है उसकी अब तक १२-१२-८६, १७ व १८, फरवरी ८७, २३-३-८७, मई १९८७ १८-९-८७ और १६, १७ और १८ दिसम्बर १९८७ की बैठके हो चुकी हैं। [इसके अतिरिक्त कई मामलो पर विचार करने के लिए अनौपचारिक बैठके भी हुई हैं।

गैर सरकारी कमेटी की ओर से ६ अप्रैल ८७ को एक विस्तृत अन्तरिम रिपोर्ट गृह मत्रालय के सयुक्त सचिव श्री अरुण कुमार को दी गई थी। २६ पृष्ठ की इस रिपोर्ट मे सभी सत्याग्रहियो को सम्मान पैशन देने की प्रार्थना सहित विशेष रूप से निम्न बातो पर जोर दिया गया था—

(१) कमेटी १९८० मे सम्मान पैशन एक्ट के प्रावधान के तहत आर्य सत्याग्रह हैदराबाद के सभी सत्याग्रहियो को सम्मान पेशन देने की सिफारिश करती है।

(२) ३० जून ८६ के पश्चात् भी जो आवेदन पत्र सरकार को मिले हैं, उन पर भी विचार किया जाय।

(३) सत्याग्रहियो के कोर्ट ट्रायल की अवधि को भी सजा मे सम्मिलित किया जावे।

(४) नागपुर-हैदराबाद अदालत के फैसले के अनुसार जिन्हे ६ महीने की सजा सुनाई गई और जेल मे उन्हे ४ महीने रखा गया, जिस प्रकार उन्हे सम्मान पैशन देने का निर्णय हुआ उसी प्रकार हैदराबाद के सत्याग्रहियो को भी माना जावे।

(५) सार्वदेशिक सभा द्वारा,३० जून ८६ से पूर्व २१४२ सत्याग्रहियो की जो सूची गृहमन्त्रालय को दी गई है, उसमे ३३२ विधवाओ के आवेदन पत्र हैं, उनको तुरन्त सम्मान पैशन दी जावे और उनके मामले मे जेल अवधि की सीमा ३ महीने स्वीकार की जावे।

(६) सार्वदेशिक सभा द्वारा जो सूची आवेदको की भेजी गई है, उन सबके आवेदन ३० जून ८६ से पूर्व सरकार द्वारा प्राप्त समझे जावें और उनके मामले मे कार्यवाही की जावे।

४ मई १९८७ को कमेटी की बैठक राज्य गृहमत्री श्री चिन्तामणि पाणिग्रही के कार्यालय नई दिल्ली मे हुई। उसमे विशेष रूप से निम्न मुद्दो पर विचार हुआ—

(१) भूमिगत सत्याग्रहियो को भी सम्मान पैशन दी जावे।

(२) गाधी-इर्विन पैक्ट के अनुसार सत्याग्रहियो की सुनाई गई सजा को सम्मान पैशन प्राप्त करने का आधार माना जावे।

(३) सार्वदेशिक सभा से भेजी गई सूची को सभी सत्याग्रहियो द्वारा ३० जून से पूर्व आवेदन किए जाने की अवधि माना जावे और उनके मामलो में विचार किया जावे।

२५ मई १९८७ को स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षता मे कमेटी के सदस्य प्रधान मत्री श्री राजीव गाधी से मिले और उन्हे सत्याग्रहियों के मामले मे एक ज्ञापन दिया। जिसमे कहा गया था कि गाधी-इर्विन पैक्ट के तहत ही हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियो को सम्मान पैशन दी जावे और अगस्त १९३९ मे समझौते के बाद जिन सत्याग्रहियो को रिहा कर दिया गया था, उन सबको जेल मे रहने की अवधि का विचार किए बिना पैंशन के योग्य माना जावे। प्रधानमत्री जी ने आश्वासन दिया था कि वह इस मामले को गृहमत्रालय के सामने रखेंगे।]

गृहमन्त्रालय के सयुक्त सचिव श्री एस०एस० शर्मा ने अपने १० जुलाई ८७ के पत्र द्वारा प्रधानमत्री को दिए गए उक्त ज्ञापन पत्र के सन्दर्भ मे गैर सरकारी कमेटी के अध्यक्ष को, पत्र द्वारा सूचित किया कि—जिन सत्याग्रहियो के आवेदन पत्र ३० जून से पूर्व सार्वदेशिक सभा को प्राप्त हो चुके थे, उन्हे जाच पडताल के लिए गृहमन्त्रालय मे भेज दिया जावे। कमेटी के विचारार्थ भेजे जाने वाले आवेदन पत्रो की श्रेणी के सबध मे उन्होने लिखा कि—वे प्रार्थना पत्र जिनमे कारावास की यातना का कोई रिकार्ड नही मिल रहा है चाहे वह बहुत समय बीत जाने के कारण या अन्य कारणो से हो, ऐसे मामले कमेटी के सामने रखे जाएगे। इसके अनुसार हमने सम्बन्धित राज्य अधिकारियो को लिखकर जेल रिकार्डों की सम्पुष्टि का काम हाथ मे लिया हुआ है। परन्तु यह केवल यहा हमे समय पर प्राप्त आवेदन पत्रो के बारे मे किया गया है। इसके साथ ही हम उन मामलो पर भी जाच कर जिनमे यातनाओ के अभिलेख मिल गये है और कुछ मामलो मे जिनमे कारावास का दण्ड ६ मास या उससे अधिक रहा हो। वस्तुत ५ मास या उससे अधिक जेल मे रहे हो, ऐसे मामलो पर तेजी से निर्णय लिए जायेगे। इसके अलावा जिन मामलो मे जेल के रिकार्ड नही मिल रहे है या अधूरे हैं ऐसे मामला की जाँच और सिफारिश के लिए आपकी कमेटी को भेजने योग्य मामलो को अलग से छटवा रहे है।

इसके पश्चात् २७-७ ८७ को स्वामी आनन्द बोध सरस्वती और पडित वन्देमातरम् जी और सोमनाथ जी मरवाह सायक ल ६ बजे सयुक्त सचिव से उनके कार्यालय मे मिले और इस अनौपचारिक बैठक मे सत्याग्रहियो के मामले मे विभिन्न मुद्दो पर विचार किया। १८ सितम्बर १९८७ को सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक हुई जिसमे गृहमन्त्रालय द्वारा १५४ सत्याग्रहियो के मामले विचारार्थ प्रस्तुत किये गए।

इन सभी सत्याग्रहियो के आवेदन फार्मों की जाच का कार्य श्रा०सोमनाथ मरवाह को सौंपा गया। उन्होने उक्त १५४ आवेदको की पूरी फाईलो का अध्ययन रात-दिन करके सबके नोट तैयार कराकर और एक प्रोफार्मा अलग से बनाकर कमेटी के अध्यक्ष को लगभग २० दिन की मेहनत के बाद लौटा दिया। कमेटी के सभी सदस्यो ने उक्त १५४ सत्याग्रहिया के मामलो को सम्मान पैशन देने के लिए स्वीकृति दे दी और १४-१०-८७ को इन फाईलो को गृहमन्त्रालय को सौप दिया गया।

हैदराबाद के भूमिगत सत्याग्रहियो के मामले मे पुन स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती और वन्देमानरम् जी २२-९-८७ को गृह राज्यमत्री श्री चिन्तामणि पाणिग्रही से मिले और २८-९-८७ को सयुक्त सचिव श्री एस० एस० शर्मा से मिले और उन्हे भूमिगत सत्याग्रहियो के विषय मे लिखित जानकारी दी गई। ४ नवम्बर ८७ को श्री स्वामी जी तथा वन्देमानरम् जी फिर श्री एस०एस० शर्मा से मिले और एक ज्ञापन दिया जिसमे लिखा था कि—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आपसे डिफैन्स लीग जो हैदराबाद के निजाम के विरुद्ध सीधी कार्यवाही करने के लिए गठित की गई थी—उसका नाम डायरेक्ट एक्शन कमेटी रखा गया था। इसमे डिक्टेटर महात्मा नारायण स्वामी, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, देशबन्धु गुप्ता, प० रामचन्द्र देहलवी, प० व्यास देव शास्त्री, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, प०विनायकराव विद्यालकार, लाला खुशहाल चन्द, राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री, चादकरण शारदा, महाशय कृष्ण और रामगोपाल शाल वाले थे। सत्याग्रहिया की दो श्रेणिया थी—(१) जेल भरो सत्याग्रही और (२) सत्याग्रहियो के लिए सब प्रकार की सहायता व्यवस्था करने का कार्य। ऐसा कार्य भूमिगत सत्याग्रहियो की श्रेणी मे आता था।

इसके अतिरिक्त इस ज्ञापन मे विधवाओ के मामले मे कम से कम २

महीने की छूट मागी गई थी।

कमेटी की १६, १७ और १८ दिसम्बर १९८७ की बैठकें हैदराबाद के आनन्द निलायम् गैस्ट हाऊस मे हुई जिसमें गृहमन्त्रालय की ओर से १७२ मामले विचारार्थ प्रस्तुत किए जिनमे से ११४ मामले वही थे,जिन पर कमेटी पहले ही सिफारिश कर चुकी थी। उक्त सभी मामलो पर कमेटी ने वहा एक-एक फाईल देखकर अपने नोट सहित सम्मान पेंशन देने की सिफारिश की। शेष ४५ पर भी सिफारिश करके लौटा दी है। स्क्रीनिंग कमेटी की २०-२-८८ की बैठक मे २२ फाईले नई आई थी, उन पर भी कमेटी ने स्वीकृति दे दी है। कमेटी के पास अब तक २०० के करीब मामले आए है, जिन्हे वह स्वीकार कर चुकी है।

कमटी के अध्यक्ष स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की इस प्रार्थना पर कि जिन सत्याग्रहियो के मामले केन्द्रीय सरकार की सम्मान पेंशन के लिए" अपर्याप्त हो, ऐसे मामलो को सरकार सम्मान पेंशन देने के लिए राज्य सरकारो को अपने निर्देश के साथ यथाशीघ्र भिजवा दे।

गृहमन्त्रालय ने अब तक लगभग २५० से ऊपर मामले सम्बन्धित राज्य सरकारो को भिजवा दिए हैं। जिनकी सूची सार्वदेशिक मे प्रकाशित हो रही है।

भारत सरकार ने अब तक १० सत्याग्रहियो को सम्मान पेंशन जारी कर दी है।

सत्याग्रहियो के सम्मान पेंशन के मामलो मे सार्वदेशिक सभा का कार्यालय पूरी तरह कार्यरत है और प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी की देखरेख मे सभी सत्याग्रहियो को उनके मामलो मे उचित मार्ग दर्शन दिया जा रहा है, कमेटा तो अपना यत्न कर ही रही है, किन्तु पेंशन देने का निर्णय करना सरकार का अधिकार है हमारी कोशिश जारी है।

सरकार द्वारा सत्याग्रहियों के मामले में १ महीने की कैंप अवधि की छूट

भारत सरकार ने अपने आदेश न० १३५ (१) /पालिसी/१/८६/आर्य समाज सैल के अन्तर्गत दिनाक ११ जनवरी १९८८ के द्वारा हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियो को स्वतन्त्रता सम्मान पेंशन स्कीम १९८० के अन्तर्गत १ महीने की कैंप अवधि की छूट दे दी है, इससे काफी सत्याग्रहियो को सम्मान पेंशन मिलने मे सहायता मिल सकेगी, ऐसी आशा है।

मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आर्य सत्याग्रहियों को मान्यता

मध्य प्रदेश सरकार ने—मध्य प्रदेश स्वतन्त्रता सग्राम सैनिक सम्मान निधि नियम १९७२ के अन्तर्गत आर्य समाज सत्याग्रह आदोलन को मान्यता देकर १० फरवरी १९८८ के राजकीय गजट मे इसकी घोषणा कर दी है। हरियाणा सरकार ने भी मान्यता दे दी है। महाराष्ट्र, गुजरात और कर्नाटक द्वारा भी मान्यता दिए जाने की आशा है। उत्तर प्रदेश, बिहार, बगाल, पजाब, आन्ध्र प्रदेश, राजस्थान तथा अन्य प्रान्तो की स्थिति स्पष्टनही हुई है। स्क्रीनिंग कमेटी केन्द्र सरकार से इस विषय मे प्रयत्न कर रही है कि सभी राज्य सरकार, आर्यसमाज आदोलन को प्रदेशीय स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन निधि नियमो के अन्तर्गत स्वीकार करे। ●

प्रार्थना

हे जगदीश्वर अब आर्यों पर होवे कृपा तुम्हारी।
आपस मे वे हिल मिल बैठें सब विरोध बिसराई॥
पदों मात्र के रहे न भूखे, सेवा काज सुनाई।
जाति मात्र की करें वे सेवा 'स्वयं सेवक' कहलाई॥
सत्य अहिंसा का व्रत धारें, कपट जाल बिसराई।
अस्तेय और अपरिग्रह लेवें ये अति ही अपनाई॥
इनसे पद होवे अलकृत शोभा अति अधिकाई।
अधिकारी बनने की खातिर पद न ले ललचाई॥
नित स्वाध्याय करें ये रुचि से, वेदो में मन लाई।
पञ्च यज्ञ हो इनका भूषण, प्रेम उमग सदा ही॥
ऋषियो का सा जीवन होवे त्याग भाव अधिकाई।
नीरसता की बदली हटकर प्रेम बारि सरसाई॥
इनका भीतर इनका बाहर एक रूप दरसाई।
जो कुछ कहें वही कर लेवें बिना गहु मन लाई॥
मन मे कुछ, वाणी मे कुछ है, कर्म अन्य ही भाई।
यह तो रीति अनार्यों की है, तुमने क्यों अपनाई॥
ईश भजन यदि मन से होवे सभी पाप छूट जावें।
अन्त करण पवित्र बने अरु बाधायें हट जावें॥
अब तो आश तुम्ही से प्रभुवर, देहु दान हर्षाई।
आर्य समाज की करें सब सेवा हिल मिल प्रीति बढाई॥

सूक्तियां

ज्ञान घटै जड मूढ की सगत, ध्यान घटै बिन धीरज लाए।
प्रीति घटै जो कठोरो बोली, रीत घटै मुह नीच लगाए॥
मान घटै जबही कुछ मागो, चाह घटै नित के घर जाए।
उद्यम से दारिद्र घटै, पाप घटै प्रभु के गुन गाए॥

—गंगाप्रसाद विद्यार्थी, जबलपुर-२

शंकराचार्य के सृष्टि-सिद्धान्त पर एक विचार

श्री तुलसीराम शर्मा

भारत मे सृष्टि की उत्पत्ति को लेकर शुरू से ही कई दार्शनिक मत-मतान्तर रहे हैं। विश्व की दार्शनिक प्रणालियां अपने-अपने ढंग से सृष्टि की उत्पत्ति के बारे में अपनी बात कहती रही हैं। भारत के संदर्भ में हम पाते हैं कि शांकर वेदान्त में एक अजीब बात यह कही गई है कि ब्रह्म अपने अज्ञान द्वारा (जिसे अविद्या या माया-शक्ति भी कहा जाता है) समस्त ब्रह्माण्ड की रचना करता है।

इस कथन का विश्लेषण करने पर कहीं न-कहीं इस स्थापना में गड़बड़ी नजर आती है। आम आदमी के गले यह बात उतर नहीं कि ब्रह्म का सम्बन्ध किसी भी स्थिति में अज्ञान से कैसे हो सकता है? यानी शांकर वेदान्त यह कह रहा है कि अज्ञानी ब्रह्म इस सृष्टि की रचना करता है। क्या ऐसा मानने पर हमें अपने आगम-शास्त्रों में कोई दोष नजर नहीं आता है?

प्राचीन उपनिषदों ने सृष्टि उत्पत्ति की समस्या पर गहराई से विचार किया है। तैत्तिरीयोपनिषद कहती है कि आत्मा से आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी एवं पृथ्वी से भिन्न-भिन्न प्रकार की औषधियां उत्पन्न हुई। यह भी कहा है कि जब ब्रह्म अकेला था तो उसने सोचा कि मैं अनेक रूप धारण करू। उसने तप किया जिससे यह सारी सृष्टि पैदा हुई।

भारत की सभी दार्शनिक पद्धतियां सृष्टि की उत्पत्ति को अपने-अपने तरीके से समझाने की कोशिश करती हैं। बौद्ध-दर्शन मे इस पर बहुत गहराई से विचार किया गया है। यह बात सर्वविदित है कि बुद्ध स्वयं प्रत्येक ऐसे मत के विरोधी थे जो किसी स्थाई तत्व के अस्तित्व का प्रतिपादन करता हो। बौद्धदर्शन के अनुसार प्रतीक प्रतीत्यसमुत्पाद का ऐसा सिद्धान्त है जो सृष्टि की उत्पत्ति मे थोड़ा प्रकाश डालता है। इसका सीधा और सरल अर्थ यह है कि प्रत्येक चीज की उत्पत्ति के लिए कोई-न-कोई कारण अवश्य होता है। सामान्यतया इसे कारणता का सिद्धान्त कहा जाता है। बस यही उनका सृष्टि की उत्पत्ति का सिद्धान्त है। जैन दर्शन के अनुसार प्रत्येक द्रव्य स्वभाव से ही गतिमय है। सृष्टि स्वचालित है, अत इसकी रचना के लिए किसी सृष्टा की आवश्यकता नहीं है। न्याय-वैशेषिक के अनुसार भिन्न भिन्न परमाणुओं से मिलकर सृष्टि की उत्पत्ति होती है। सांख्य योग के अनुसार प्रकृति एवं पुरुष के संयोग से सृष्टि की उत्पत्ति होती है।

ब्रह्मसूत्र के शांकर भाष्य से यह तो बात साफ हो ही जाती है कि उस काल मे भारतवर्ष मे वेदान्त के विभिन्न प्रस्थानों में उत्पत्ति के बारे में अलग-अलग मत थे। कुछ वेदान्त आकाश की उत्पत्ति बतलाते थे जब कि दूसरे यह बात मानने को तैयार ही नहीं थे कि आकाश जैसा पदार्थ पैदा भी हो सकता है। इसी तरह कुछ लोग वायु की उत्पत्ति की चर्चा करते थे। ऐसा मालूम पड़ता है कि यह सारा विवाद केवल दार्शनिक ऊहापोह हो था और आम आदमी इस ऊहापोह से अछूता ही रहा। शंकराचार्य ने ब्रह्मसूत्र के भाष्य में सांख्यसूत्रों के रचयिता कणाद ऋषि की यह कहकर खिल्ली उड़ाई है कि अब तक आकाश की उत्पत्ति सम्भव नहीं है क्योंकि हर पदार्थ के कारणों की जांच पड़ताल किए बिना आगे नहीं चलते और आकाश का कोई स्पष्ट कारण दिखाई नहीं देता।

विभिन्न दार्शनिक सम्प्रदायों और वेदान्त के मत-मतान्तरों के बीच शंकर ने घोषणा की कि ब्रह्म अपने अज्ञान से सृष्टि पैदा करता है। शंकर के बाद सदानन्द और इनके परवर्ती आचार्यों ने भी यही बात दोहराई है। चौदहवीं-पन्द्रहवीं शताब्दी में वेदान्तसार के लेखक सदानन्द का मत है कि जब ब्रह्म अज्ञान की उपाधि से युक्त होकर सर्वज्ञ सर्वेश्वर, नियन्ता एवं अन्तर्यामी बनता है तो वह ईश्वर रूप में जगत का कारण बनता है क्योंकि उसमे तमाम प्रकार का अज्ञान अवभासित होता है या अज्ञान चमकने लगता है। उपाधि से यहां मतलब है उसके खास तरह के एक गुण से, जिसके बिना वह अधूरा माना जाता है। ठीक उसी प्रकार जैसे साधारण आदमी का स्वभाव है कि वह अज्ञानी है। इसका मतलब यह है कि अज्ञान उसकी एक खास विशेषता ही है। वेदान्त परम्परा में यह अज्ञान उस ब्रह्म की विक्षेप शक्ति का एक महत्वपूर्ण अंग माना गया है। वेदान्त दर्शन के अनुसार अज्ञान या माया की दो शक्तियां मानी गई हैं—आवरण और विक्षेप। आवरण का नाम है अज्ञान को ढके रखना। इसका सीधा मतलब यह होता है कि माया की आवरण शक्ति जीव पर अज्ञान का आवरण डाल देती है जिसका नतीजा यह होता है कि जीव, अपने स्वरूप अर्थात् परमार्थ सत्यरूप ब्रह्म को समझ नहीं पाता है। माया की दूसरी ताकत विक्षेप है जो सारे ब्रह्माण्ड की रचना करने वाली है। विचारणीय यह है कि विद्वानों की बात तो दूर साधारण आदमी के गले यह बात नहीं उतरती कि ब्रह्म जैसी शक्ति कैसे अपने अज्ञान द्वारा इस सृष्टि को पैदा कर देती है? भला ब्रह्म का अज्ञान से क्या लेना-देना? ब्रह्म तो निराकार होता हुआ इन सब बातों से परे माना गया है।

यहीं से उलझन शुरू होती है और वेदान्त का सारा सिद्धान्त खोखला मालूम पड़ने लगता है। शंकराचार्य के भक्तों का कहना है कि कुछ भी हो, शास्त्र गलत हो ही नहीं सकता है। पर मजबूरी यह है कि यह सिद्धान्त समझ मे नहीं आता क्योंकि अज्ञान से युक्त ब्रह्म ही खोखला नजर आता है। सारी बात ही बेबुनियाद मालूम पड़ती है। आम आदमी अज्ञानी माना जा सकता है। पर ब्रह्म को अज्ञानी मानना वैसा ही है जैसे दिन को रात कहना फिर क्यों किया जाए?

ऐसी स्थिति में महज सामान्य ज्ञान ही इस समस्या का समाधान प्रस्तुत कर सकता है क्योंकि लोक व्यवहार को भी शास्त्रों में उतना ही महत्व दिया गया है जितना कि आगम शास्त्र की मर्यादा को। इसलिए एक साधारण ल। शाम के अंधेरे में हम एक पुरुष एवं महिला को जाते देखते हैं। हम उनके आपसी सम्बन्धों से अपरिचित हैं पर अपने अज्ञान द्वारा एक छोटी सी सृष्टि का निर्माण करते है कि निश्चित ही ये पति-पत्नी या प्रेमी प्रेमिका होंगे। यह सृष्टि निश्चित ही अज्ञान पर आधारित है। शास्त्र की भाषा मे कहे तो यह जीवात्मा अज्ञान से युक्त होकर अपनी सृष्टि कर रही है। एक और उदाहरण ले। हम एक बड़े मकान को देखते हैं। तुरन्त हमारे मन मे विचार आता है कि निश्चित ही यह आयकर की चोरी के दो नम्बर के पैसे से बनाया गया होगा। मकान में जाने के बाद हमारा अज्ञान दूर होता है और पता चलता है कि इसका मालिक तो नितान्त ईमानदार आदमी है। यानी हमारी पहली अज्ञान की सृष्टि तहस-नहस हो जाती है और ज्ञान का उदय होता है। शास्त्रीय भाषा में कहें तो यहां अज्ञान का ज्ञान से नाश होता होता है। हम एक आते हुए इन्सान को देखकर अपनी राय बना बना लेते हैं कि आदमी बदमाश होगा—बस यही हमारी एक छोटी सी माया-सृष्टि है क्योंकि बाद मे बातचीत करते ही उस इन्सान का सही रूप हमारे सामने आता है और हमारी पहली सृष्टि नष्ट हो जाती है। शंकर के अनुसार ब्रह्म भी यही काम निरन्तर अलग-अलग युगों में करता है।

निष्कर्ष यह है कि ब्रह्म भी अज्ञान नामक उपाधि से युक्त है और जीवात्मा यानी साधारण मानव भी। पर जिस ही सृष्टि को

(शेष पृष्ठ ८ पर)

नेपाल आर्यसमाज की चिट्ठी

विश्व का एकमात्र हिन्दू अधिराज्य नेपाल में आर्यसमाज का प्रचार प्रसार करने के जुल्म में शुक्रराज शास्त्री को तत्कालिन क्रूर राणाशाही ने फांसी की सजा देकर आर्यसमाज का नामोनिसान मिटाना चाहा परन्तु कुछेक लगनशील आर्य नेपालियों में सक्रिय सहयोग कर काठमांडों, विराटनगर, झापा, वीरगंज, रगेली आदि स्थानों पर आर्यसमाज का विधिवत स्थापना और यथा शक्तिप्रचार प्रसार किया। विगत दो वर्ष पूर्व आर्य समाज विराटनगर के प्रधान श्री सीताराम जी अग्रवाल के सहयोग से विराटनगर में प्रथम आर्य महासम्मेलन का आयोजन कर नेपाल में आर्य समाज के प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान मिला, विराटनगर सम्मेलन के पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक प० पीताम्बर शर्मा के पुरुषार्थ से दर्जेसा रगेली, गौतमनगर, वीरगंज, झापा आदि स्थानों में भव्यरूप में आर्य समाजों का उत्सव सफल रूप में सम्पन्न हो चुका है, इसी सिलसीले में अब नेपाल में आर्य समाज हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के सक्रियता से नेपाल में आर्य समाज का व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु दो केन्द्र का स्थापना कर पूर्वाञ्चल केन्द्र (विराटनगर) में श्री पं० पीताम्बर शर्मा एव पश्चिमांचल केन्द्र (काठमाण्डों) में नेपाल आर्यसमाज के केन्द्रीय कार्यालय स्थापना कर मुझे (प्रकाशचन्द्र सुवेदी) को नियुक्त कर दिया है और दोनों केन्द्रों पर नेपाल आर्य समाज का विधान तैयार करके श्री ५ को सरकार जिल्हा कार्यालय में पेश भी हो चुका है, आशा है शीघ्र ही रजिस्ट्रेशन का कार्य सम्पन्न होगा।

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री के सहयोग से अब शीघ्र ही काठमाण्डों में आर्य समाज का कार्यालय भवन किराये पर लिया जायेगा और विधिवत कार्यालय संचालन होगा।

इसी सिलसीले में काठमाण्डों में ११ अप्रैल १९८८ को अपराह्न २ बजे नेपाल आर्य समाज काठमाण्डों का प्रथम बैठक अमर शहीद शुक्रराज शास्त्री वध वृक्ष की छत्र छाया में आर्यसमाज अलवर के प्रधान श्री विद्यासागर शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ शुरु हुए उक्त बैठक में नई कार्यकारिणी समिति का चयन किया गया सल्लाहकार में भूतपूर्व प्रधानमन्त्री द्वय श्री नगेन्द्रप्रसाद रिजाल एवं श्री मातृका प्रसाद कोइराला के अलावा हिन्दू धर्म सेवा समन्वय समिति के सभापति प्रा० खेमराज केशव शरण, के साथ प्रा० छविलाल पोखेल के साथ श्री कृष्ण बहादुर लखी को चयन किया गया और अध्यक्ष पद पर गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक डा० वीरदेव विष्ट एव उपाध्यक्ष पद पर ५ जनो को (श्री प्रयागराज जोशी, श्री सीताराम अग्रवाल, श्री नित्यानन्द वशिष्ठ, श्री कृष्णगोपाल टण्डन और विष्णु शिवाकोटी) नियुक्त किया गया है साथ ही महासचिव पद पर मुझे (प्रकाशचन्द्र सुवेदी) और सह सचिव हेतु पण्डित पीताम्बर शर्मा को चयन किया गया। इसी तरह कोषाध्यक्ष, प्रचार सचिव और कार्यालय सचिव हेतु क्रमश: श्री अरुण अग्रवाल, श्री नरपति उप्रेती एवं श्री राजबाबू पांडे को नियुक्ति के साथ ही झापा, विराटनगर, वीरगंज एवं काठमांडों के समाजों के ११ सदस्यों को कार्यकारिणी समिति में समावेश किया गया है, उक्त बैठक में काठमांडों में कार्यालय स्थापना एव विराटनगर में राष्ट्रव्यापी आर्य गोष्ठी करने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। बैठक में विश्व हिन्दू संघ के पदाधिकारी एवं स्थानीय पत्रकारों की उपस्थिति थी।

आगामी महिनो में विराटनगर में होने वाले राष्ट्रव्यापी आर्य गोष्ठी में नेपाल में विश्व आर्य महासम्मेलन करने एव नेपाल में आर्य समाज के व्यापक प्रचार प्रसार हेतु विभिन्न योजनाएं तैयार की जाएगी, गोष्ठी की व्यापक तैयारी के लिए नेपाल भर के आर्य समाजों से निवेदन है कि अपने-अपने गतिविधि के साथ पदाधिकारी एवं सदस्यों का नामावली केन्द्रीय कार्यालय काठमांडों को भेज दें तो गोष्ठी की तैयारी करने में सुविधा होगी, इसी क्रम में भारतभर के आर्य समाजें, आर्य प्रतिनिधि सभाये एवं समस्त सदस्यों से नेपाल आर्य समाज साग्रह निवेदन करता है कि नेपाल में व्यापक प्रचार प्रसार हेतु टैक्ट, पुस्तक सत्यार्थप्रकाश महर्षि दयानन्द जी महाराज का चित्र एवं अन्य प्रचार सामाग्री के यथा सहयोग देकर अमर शहीद शुक्रराज शास्त्री की शान्ति के लिए प्रार्थना करें।

हमारा पता—प्रकाशचन्द्र सुवेदी महासचिव नेपाल आर्यसमाज
वेद विद्याश्रम, वनकाली पशुपति क्षेत्र काठमांडों

श्री शुक्रराज शास्त्री को सन् १९४२ को काठमाण्डू नेपाल में 'मतली' नामक स्थान पर 'खरी' नामक वृक्ष पर 'फांसी' सरेआम दी गई थी। उक्त (काठमाण्डू) स्थान उक्त वृक्ष 'खरी' के नीचे मार्बल पत्थर पर नेपाली भाषा में एक शिलालेख निर्मित है। उसका हिन्दी अनुवाद:—

जन्म सम्वत् १९५० भाद्रगते बनारस, शहीद होने की तिथि १९९७ साल माघ १० गते मतली १९९७ साल के काण्ड को तहकीकात की दृष्टि से राणा सरकार की दृष्टि में इन्द्रचोक में आम भाषण करने की बावत जेल में कैद भोग रहे शुक्रराज ने कई वर्षों से देश विदेशों में खेले भूमिका से (नाम के नेता) बनने बावत फांसी की सजा हुई थी। २०१५ साल माघ काठमाण्डू नगर पचायत।
शहीद सप्ताह।

नोट (१) शहीद सप्ताह प्रतिवर्ष मनाने का समय माघ १० गते से १६ गते तक है।
(२) विद्यासागर शास्त्री ६४, आर्यनगर अलवर द्वारा खींचा शिलालेख (नेपाली का भाषा) का हिन्दी अनुवाद।

—विद्यासागर शास्त्री, ६४ आर्यनगर अलवर

सृष्टि सिद्धान्त पर एक विचार

(पृष्ठ ७ का शेष)

उत्पत्ति को लेकर सारी उलझन तो ब्रह्म के अज्ञान से शुरू हुई थी। वैसे आम आदमी के अज्ञान की सृष्टि में ही ब्रह्म द्वारा अज्ञान से सृष्टि पैदा करने की उलझन की कुंजी निहित है। ब्रह्म बड़ा है इसलिए बड़ी सृष्टि का निर्माण करता है। जीवात्मा अर्थात् साधारण मानव छोटा है इसलिए वह अपनी छोटी सृष्टियों का निर्माण करता है। पर दोनों के मूल में अज्ञान विद्यमान है। यहां यह महत्वपूर्ण है कि शास्त्र में मिथ्यात्व को बतलाने वाले अविद्यान ईश्वर की सृष्टि के लिए प्रयुक्त हुए हैं—जैसे ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या वगैरह—वे सभी मानव द्वारा अज्ञान पर आधारित सृष्टि पर भी लागू होते हैं। ब्रह्म की सृष्टि अनादि और अनन्त है। उसी प्रकार मानव की उपयुक्त प्रक्रिया द्वारा सकेंतित अज्ञान पर आधारित सृष्टि भी अनादि एवं अनन्त है।

ऋषि दयानन्द के ये 'सरकारी' जीवन चरित (१)

—डा० भवानीलाल भारतीय

महापुरुषो के जीवन चरितो के लेखन मे अत्यन्त सावधानी बरती जानी चाहिए। विशेषत ऐसे युग पुरुष धर्माचार्यों का चरित लेखन तो अत्यधिक सतर्कता की अपेक्षा रखता है जिसके प्रति लाखो करोडो व्यक्तियो की आस्था, निष्ठा तथा विश्वास के भाव जुडे रहते हैं। वर्तमान काल का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जाने अनजाने इस्लाम के प्रवर्तक हजरत मुहम्मद के जीवन के प्रति की गई गलत बयानियो तथा प्रमादपूर्ण उल्लेखो के परिणाम स्वरूप ऐसे लेखको और प्रकाशको को ही नही अपितु सरकार को भी क्षमा याचना करनी पडी है और अपनी प्रत्यक्ष भूला या प्रमादो का खमियाजा भुगतना पडा है। किन्तु आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द का जीवन चरित भी सरकारी लेखको के द्वारा इसी प्रकार की असावधानी । शिकार हो और उसका किसी को गिला न हो, यह बहुत दुख की बात है। कहावत है गरीब की जोरू सबकी भाभी। स्वामी जी के चरित्र को विकृत करने मे जैनी जियालाल, प० अखिलानन्द, देवसमाज का प्रवर्तक सत्यानन्द अग्निहोत्री, मुन्शी इन्द्रमणि के दुष्ट चेले जगन्नाथ दास, एफ के खान दुर्रानी आदि कुख्यात तथा मात्सर्य भावना युक्त लेखको की जो भूमिका रही, उसे तो भुलाना सम्भव ही नही है, किन्तु यह जान कर और भी दुख है कि स्वतन्त्र भारत मे स्वामी दयानन्द के जो जीवनचरित केन्द्रीय सरकार के प्रकाशन विभाग तथा नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित हुए है वे भी निर्दोष नही हैं। अपितु इन चरित लेखको ने दयानन्द जैसे राष्ट्र के विधाता महापुरुष का वृत्त लिखते समय अक्षम्य प्रमाद, चरम दायित्वहीनता तथा कही कही तो समझ बूझकर गलत बयानिया की हे। प्रस्तुत लेख मे भारत सरकार द्वारा प्रकाशित किये गये ऐसे दो जीवनचरितो की चर्चा की जा रही है।

यह और भी खेद की बात है कि आर्यसमाज मे स्वाध्याय की प्रवृत्ति सर्वथा लुप्त हो चुकी है। सामान्य आर्यसमाजियो का तो कहना ही क्या, हमारे नेता, उपदेशक और विद्वान भी ऋषि दयानन्द के चरित विषयक अध्ययन और विश्लेषण के प्रति नितान्त उपेक्षा वृत्ति धारण किये रहते है। परिणाम स्वरूप सरकारी प्रकाशन के रूप मे दयानन्द के ये विकृत जीवन-चरित लाखो अंग्रेजी पठित पाठको के हाथो मे जाते हैं और उन्हे पढकर ऋषि दयानन्द का एक गलत चित्र लोगो की नजरो मे उभरता है। "आधुनिक भारत के निर्माता' शीर्षक ग्रन्थमाला के अन्तर्गत डा० धनपति पाण्डेय लिखित जीवनचरित भारत सरकार के सूचना और प्रसारण विभाग की प्रकाशन शाखा के द्वारा फरवरी १९८५ मे छपा। मैंने इसे दो वर्ष पूर्व ही पढा था किन्तु श्रद्धानन्द ग्रन्थावली के सम्पादन तथा अन्यान्य कार्यो मे व्यस्त रहने के कारण इस आपत्ति जनक पुस्तक पर मेरी लेखनी नही चली। इस सरकारी जीवन चरित की कुछ भूलें स्थाली पुलाक न्याय से पाठको के आगे पेश है—

(१) पूना मे स्वामी दयानन्द का आत्मचरित परक व्याख्यान ४ अगस्त १८७५ को हुआ किन्तु सरकारी चरित मे इसका सन् १८७४ बताया गया है। लेखक को पूना प्रवचन देखने की फुरसत ही नही थी।

(२) ऋषि दयानन्द को बोध कुबेरनाथ महादेव के मन्दिर मे हुआ। सरकारी चरित ने इस मन्दिर को विश्वनाथ का बताया है।

(३) यह जीवन चरित लेखक वाराणसी और काशी को भिन्न भिन्न मानता है अत लिखा है—Varanasi the second kashi is the rome of Hindus पृ० १७

(४) कोट धयारा को कोटा नगर लिख दिया। पृ० १९

(५) स्वामी दयानन्द को संन्यासाश्रम की दीक्षा देने वाले स्वामी पूर्णानन्द थे। सरकारी लेखक उन्हे परमानन्द कहता है।

(६) द्रोणसागर को द्रोणनगर बना दिया। पृ० २१।

(७) स्वामी विरजानन्द की मृत्यु ९० वर्ष की आयु मे हुई थी। (जन्म-१७७८, मृत्यु १८६८) सरकारी लेखक ने उन्हे ७१ वर्ष की आयु मे ही परलोकवासी बना दिया। दण्डी जी का जीवन चरित पढने का कष्ट कौन करे ?

(८) स्वामी दयानन्द का सर्वप्रथम प्रकाशित ग्रन्थ सस्कृत मे लिखित भागवत खण्डन था। सरकारी लेखक ने इसे देखने का तो कष्ट किया ही नही, जबकि रामलाल कपूर ट्रस्ट ने इसे बीस वर्ष पूर्व ही प्रकाशित कर दिया था। उसने लिखा 'दयानन्द ने इस पुस्तक मे 'भागवत की पवित्र शिक्षाओ का उल्लेख किया है।' लेखक ने विनायक की जगह बन्दर बना दिया। ऋषि की दृष्टि मे तो भागवत की शिक्षायें सदा ही आपत्तिजनक रही है।

(९) प्रसिद्ध काशी शास्त्रार्थ मगलवार को हुआ। लेखक इसे रविवार को हुआ बताता है। पृ० ४३ काशी शास्त्रार्थ का विवरण पढने की तकलीफ कौन गवारा करे।

(१०) कलकत्ता के गोराचाद दत्त को गुरुचरणदत्त लिखा है। इसी पृष्ठ ४७ पर ताराचरण को ताराचन्द लिखा है। व्यक्ति के नाम को अशुद्ध लिखना अक्षम्य भूल मानी गई है।

(११) उदयपुर नरेश 'महाराणा' कहलाते हैं 'महाराजा' नही।

(१२) ऋषि दयानन्द को गोमास भक्षण का समर्थक बताना सरकारी लेखक का सबसे बडा और अक्षम्य अपराध है। देखे इसी पुस्तक का पृष्ठ-४९ In the first edition of the Satyarth Prakash Published in 1874, he approved of beefeating under certain conditions.

अर्थात् सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम सस्करण मे स्वामी जी ने कुछ परिस्थितिया मे गोमास भक्षण का समर्थन किया है। सत्यार्थप्रकाश के प्रथम सस्करण के इस लेखक ने दर्शन ही नही किये और व्यर्थ ही स्वामी जी पर एक भयकर लाछन लगा बैठा।

(१३) लेखक की बेसमझी की कोई मिसाल नही। उसके अनुसार स्वामी जी ने गोकरुणानिधि इसीलिए लिखी ताकि गायो और बैलो की हत्या करने वाले ईसाई और मुसलमानो के खिलाफ हिन्दुओ की भावनाओ को भडकाया जाये। पृ० ४९ उसके अनुसार स्वामी जी हिन्दुओ को अन्य मतावलम्बियो के विरुद्ध करना चाहते थे इसी लिए उन्हाने गोरक्षा की उपयोगिता बताई। यह कथन गैर जिम्मेदारी की पराकाष्ठा है।

(१४) सरकारी लेखक के अनुसार सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम सस्करण मे मृतक श्राद्ध और मासाहार के समर्थन की सूचना जब ऋषि को मिली तो उन्होने इस ग्रन्थ की सारी पुस्तके नष्ट करा दी। पृ० ५१ यह सर्वथा मिथ्या है। प्रथम सस्करण वर्षों तक पाठको को बेचा जाता रहा।

(१५) ऋषि का जन्म शताब्दी की समारोह १९२५ मे मथुरा मे मनाया गया। लेखक के अनुसार यह १९२४ मे हुआ।

(१६) वेदाग प्रकाश के १४ खण्ड है। लेखक इसे १६ खण्डो का बताता है। पृ० ५३

(१७) स्वामी दयानन्द ने अद्वैतमत खण्डन शकर के अद्वैतवाद (Monism) के खण्डन मे लिखा। लेखक इसे (Pantheism) के खण्डन मे लिखा मानता है। सच तो यह है उसे Monism (अद्वैतवाद) और Pantheism (सर्वेश्वरवाद) का अन्तर ही मालूम नही है। वह वेदान्त-ध्वान्ति निवारण को भी Pantheism के खण्डन मे लिखा ग्रन्थ मानता है। पृ० ५३,

(१८) स्वामी जी ने भ्रान्ति निवारण मे प० महेशचन्द्र न्यायरत्न के वेदार्थसिद्धात का खण्डन किया। सरकारी लेखक के अनुसार इस पुस्तक मे ब्राह्मणो की आपत्तियो का जवाब दिया गया है।

(१९) गुजरात मे पिता का नाम साथ मे प्रयुक्त करने की रीति है। प्रासगिक व्यक्ति का वास्तविक नाम है छबीलदास लल्लूभाई। लेखक इसे केवल लल्लूभाई लिखता है जो कि स्पष्ट ही प्रचलित रीति के प्रतिकूल है। पृ० ६२,

(क्रमश)

वैदिक दर्शन और धर्माचार्य !

हिन्दू समाज मे व्याप्त जन्म से वर्णव्यवस्था, मृतक श्राद्ध, मूर्ति पूजा, विधवा दहन जैसी बुराइयो को यदि सनातन मानकर चला जाए तो इससे भारतीय सस्कृति और दर्शन के पास दुनिया के मानव-वर्ग या सार्वभौमिक धर्म की बात करने को कुछ नही बचेगा। ऐसी बुराइयो से नही रहने के कारण ही भारत ने जगद्गुरु का गौरव प्राप्त किया था। जैसे-जैसे धर्म साधन सवत्र मतो और मन्दिरो मे रहने वाले कथित धर्माचार्यो के साथ मे सिमट गया तभी से वेदो की आर्ष-परम्परा समाप्त प्राय समाप्त हो गई और बन गई केवल जडता और कट्टरता। भारतीय सस्कृति और दर्शन का सार्वभौमिक स्वरूप बिल्कुल निर्दोष और निर्भ्रांत है। लेकिन वैभवशाली पदो पर रहने वाले कथित धर्माचार्यो को समाज के आदर्श निर्माण की चिन्ता नही उन्हे केवल माथा टेकने वाले भक्तो को भीड की चिन्ता है।

वेद और वैदिक दर्शन आदमी को विभिन्न मतो और सप्रदायो मे बाट कर नही देखते। ईमानदारी से देखा जाए तो भारत मे कितनी भी साप्रदायिक भित्रताए पैदा हुई हैं उनका एकमात्र कारण यह रहा है कि हम वेदो को आम आदमी से जोड कर देखने के बजाय अपने-अपने ढग से देखने लगे हैं। वेद वास्तव मे मानव-मात्र के लिए हैं और उनकी सभी व्यवस्थाए व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए उच्चतम आदर्श प्रस्तुत करती हैं। वेद तो हमे समाज और देश के लिए प्रत्येक क्षण जागते हुए रहने को पुकार रहे है—वय राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता।

इसके बिना कोई भी समाज अपना कल्याणकारी स्वरूप नही बना सकता। कम से कम उन व्यक्तियो को तो ऐसे तत्वो का परित्याग करना ही होगा जो कल्याणकारी नही हैं। (ऋग्वेद १०।५३।८)। इसी कारण आदि शकराचार्य को भी शास्त्रार्थ प्रिय था और दयानन्द को भी। जो ऐसा नही चाहते वे सृष्टि के इस रहस्य को नहीं जानते कि विराट के कण-कण मे जडता और कट्टरता नही बल्कि लगातार चलते रहने का स्पन्दन है। रहस्यमयी लगने वाली प्रकृति की सभी दिव्य शक्तिया सदा कृपालु और स्वभाव से अहिंसक हैं। (ऋग्वेद १।३।४)। जो वेदो को आम आदमी से काट कर देखते हैं। उनकी यह भयकर भूल है, न कोई जन्मजात बडा है न छोटा (यजुर्वेद १६।१५)। यह उन्हे ही पता चलेगा जो जागते हुए अपनी ज्ञान दृष्टि खुली रखते हैं। यदि हमारे धर्माचार्य चाहते हैं कि समाज वेदो की पावन ऋचाओ का लाभ उठा सके तो उन्हे दुराग्रह छोडने ही होगे।

—राजेन्द्र प्रसाद, वेद सदन, डालटनगज, पलामू (बिहार)

आर्य समाज क्या मानता है

सार्वदेशिक सभा के भूतपूर्व मन्त्री श्री कविराज हरनाम दास की लिखित पुस्तक आर्य समाज क्या मानता है। आर्य समाज के उत्सवो पर तथा साधारण जनता मे वितरण करने के लिए बगैर मूल्य मे जितनी इच्छा हो मगावे।

—सुखदाता फार्मेसी, चादनी चौक दिल्ली-६

वधू की आवश्यकता

आर्य युवक, आयु २४ वर्ष, पत्रकार शिक्षा—बी एस सी (मैथ्स) एम ए राजनीति शास्त्र पत्रकारिता डिप्लोमा भारतीय जन सचार सस्थान नई दिल्ली राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर प्रथम श्रेणी विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण गौर वर्ण कद ५ फुट ४ इच इकहरा शरीर, भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल हेतु सुयोग्य स्नातकोत्तर पठित (गुरुकुल की स्नातिका भी विचारणीय) आर्य कन्या चाहिए।

युवक दैनिक पत्र, साप्ताहिक सभी मे लेखन कार्य के साथ-साथ सम्पादन कला मे दक्ष है। जयपुर मे व्यवस्थित है।

पत्रोत्तर—कार्यालय सचिव, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ को पूर्ण विवरण के साथ दें।

उत्सव

स्वामी अमरानन्द जी सरस्वती के प्रयास से महर्षि दयानन्द वैदिक आश्रम ग्राम—भादस, जिला-गुडगावाँ (हरियाणा) मे आर्य समाज का उत्सव दिनाक २८ व २९ मई १९८८ शनिवार व रविवार को बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है। बडे-बडे साधु सन्यासी, विद्वान, उपदेशक, भजन पार्टिया पधार रही है कृपया सभी धर्म प्रेमी बहन भाईयो से प्रार्थना है कि अपने सपरिवार एव इष्ट मित्रो सहित आकर इस अवसर पर उत्सव की शोभा बढावे।

—स्वामी अमरानन्द सरस्वती
महर्षि दयानन्द वैदिक आश्रम भादस (हरि०)

योग्य आर्य कन्या चाहिए

प्रतिष्ठित परिवार के आकर्षक व्यक्तित्व वाले, ग्रेजुएट, भारत भर मे मार्केटिंग वाले उच्च व्यापार मे सलग्न, सम्पत्ति, २६॥/१६७, पजाबी अरोडा युवक के लिए सुन्दर, स्वस्थ, सुशील, शाकाहारी, गृहकार्य मे दक्ष, सुशिक्षित उच्च व्यापारिक, औद्योगिक घराने की कन्या चाहिए। लिखें—

पोस्ट बाक्स न० ६००२, नई दिल्ली-११०००८

उत्सव

आर्य समाज बाजार सीताराम का ६८ वा वार्षिकोत्सव ४ से १० अप्रैल १९८८ तक समाज भवन मे बड़े समारोह के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री पण्डित यशपाल जी सुधांशु एम० ए० सम्पादक आर्य मर्यादा ने सोमवार से शुक्रवार ८ अप्रैल तक वेद प्रवचन किया। विशेष कार्यक्रम ९ से १० अप्रैल को समाज मन्दिर मे आयोजन किया गया। श्री गुलाबसिंह राघव के भजन के साथ उद्घाटन हुआ। तत्पश्चात श्री प्रकाशचन्द शास्त्री का वेदोपदेश हुआ।

मध्यान्ह मे आर्य स्त्री समाज का ४३ वा वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ जिसमे श्रीमती शकुन्तला जी दीक्षित ने महर्षि दयानन्द जी के उपकारो का जिक्र करते हुए स्त्रियो को अपने कर्तव्यो के प्रति जागरूक किया प्रधान श्रीमती रूप देवी गुप्ता ने अध्यक्षता की।

१० अप्रैल को प्रातः डा० महेशकुमार दिल्ली यूनिवर्सिटी का जोरदार भाषण हुआ तत्पश्चात श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज का प्रवचन हुआ।

श्रीमान लाला श्यादर मल जी गुप्ता बी ए एल एल बी (एक्स म्युनिसिपल कमिश्नर तथा आनररी मजिस्ट्रेट) श्री प० धर्मेन्द्र नाथ जी शास्त्री तथा श्री रामचन्द्र जी मिस्त्री तीनो महानुभावो को अभिनन्दन पत्र तथा एक एक शाल भेट किया गया। देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए राष्ट्ररक्षा सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज ने की। सार्वदेशिक सभा के प्रधान माननीय श्री आनन्दबोध सरस्वती ने राष्ट्रीय एकता अखण्डता के लिए आर्यो को अपने कर्तव्य के प्रति संगठित होकर सजग रहने के लिए सम्बोधित किया।

वक्ता—(१) श्री सच्चिदानन्द शास्त्री महामन्त्री सा आ प्र नि सभा
(२) श्री रामचन्द्र जी विकल' सांसद
(३) प्रोफेसर श्री बलराज जी मधोक
(४) श्री प्रकाशचन्द शास्त्री
(५) श्री मामचन्द रिवारिया ने भाषण दिये।

अध्यक्षीय भाषण मे श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज ने कहा कि महर्षि दयानन्द के बनाये हुए आधार पर राष्ट की उन्नति हो सकती है।

प्रतिष्ठित व्यक्तियो मे श्री रामनाथ सहगल प्रधान मन्त्री आ प्रा सभा (२) श्री चन्द्रभान खण्डेलवाल (३) श्री शंकरलाल गुप्ता प्रधान मन्त्री वैश्य सभा (४) डा० सुमित्रा गुप्ता एक्सरे स्पेलिस्ट (५) श्री ओमप्रकाश मन्त्री आर्य समाज नया बास। प्रधान श्री श्यादरमल गुप्ता ने सम्मानित होने पर आभार प्रगट किया। श्री वैद्य नरेन्द्र नाथ गुप्ता श्री राजेन्द्र शास्त्री व श्री सुज्जन सिंह का धन्यवाद किया।

—बाबूराम आर्य
मन्त्री आ स मन्दिर बाजार सीताराम दिल्ली ६

आर्यसमाज सीताराम बाजार दिल्ली के उत्सव के मंच पर दिखाई दे रहे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती श्री रामचन्द्र विकल श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती

आर्यसमाज सीताराम बाजार द्वारा सम्मानित व्यक्ति श्री श्यादरमल गुप्ता, श्री प० धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री श्री रामचन्द्र जी मिस्त्री।

मंजुला शर्मा को पी. एच. डी

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर मे मंजुला शर्मा को उनके शोध प्रबन्ध भारत (विशेष कर मध्य प्रदेश) मे आर्य समाज की शैक्षणिक गतिविधियो का समालोचनात्मक अध्ययन पर पी० एच० डी० की उपाधि प्रदान की है। आप आर्य समाज जी सी एफ क्वार्टस जबलपुर के स्तम्भ व कर्मठ कार्यकर्ता स्व० डा० श्रीराम शर्मा भूतपूर्व प्रधान आर्यसमाज जी सी एफ क्वार्टस जबलपुर की पोती व डा० रवीन्द्र नाथ शर्मा भूतपूर्व मन्त्री आर्यसमाज जी०सी०एफ क्वार्टस जबलपुरी की पुत्री है। यह शोध प्रबन्ध उन्होने डा० सुश्री सुशीला वैद्य भूतपूर्व प्रोफेसर शिक्षा विभाग शासकीय शिक्षण महाविद्यालय जबलपुर के निर्देशन मे सम्पन्न किया।

विशाल शुद्धि समारोह

(पृष्ठ १ का शेष

माना उसके घर मे कुछ अत्यन्त विशेष काय है। यह शोभा यात्रा ग्राम के बाहर एक स्थान पर बनी यज्ञशाला के पास आकर स्थगित हो गई अगले दिन २३अप्रैल को प्रात बजे शुद्धि समारोह प्रारम्भ हुआ इसे देखने के लिए लोग अत्यन्त उत्साहित और लालायित थे। वातावरण मे सब ओर प्रसन्नता छाई हुई था।

इस अवसर पर श्री पृथ्वीराज शास्त्री ने मार्मिक शब्दों मे धर्म का स्वरूप एवं वेदो का महत्व बतलाते हुए सभी नव दीक्षितों का स्वागत करते हुए उन्हे आशीर्वाद दिया और नवीन वस्त्र भेंट किए। मध्य मे ही अकाल सहायता के अन्तर्गत ५ किलो चावल प्रत्येक व्यक्ति को बाटा। इस प्रकार यहा का कार्य पूरा करके हम दूसरे कार्यक्रम हेतु ग्राम आरगुडो के लिए चलकर सायं ५ बजे वहा पहुचे। उस क्षेत्र के १५ १६ प्रमुख कार्यकर्त्ता भी हमारे साथ वहा से यहा आए थे। इस ग्राम मे भी उसी प्रकार उत्साह के साथ स्वागत किया गया। यहा भी सायंकाल ही से शुद्ध होने वाले लोग बाहर से आने शुरू हो गए थे।

२४ को श्री शास्त्री जी द्वारा ओ३म पताका उत्तोलन के साथ शुद्धि संस्कार का प्रारम्भ हुआ। यहा भी हजारो दर्शक इस अद्भुत समारोह को देखने के लिए उपस्थित थे। चारो ओर का मैदान दर्शको से भर गया था। सभी अत्यन्त श्रद्धा भक्ति से शान्तिपूर्वक समारोह को देख रहे थे। सारा का सारा ग्राम ही व्यवस्था मे जुटा हुआ था। ग्राम की नवयुवतिया पंक्तिबद्ध हो पानी लाने मे श्रद्धा पूर्वक जुटी हुई थी। मानो उनके ही घर मे कोई महान् अनुष्ठान होने जा रहा हो। यहा भी ५ किलो चावल प्रति व्यक्ति श्री शास्त्री

जी ने अपने कर कमलो से निर्धन लोगो को अकाल सहायता के अन्तर्गत बाटा तथा दीक्षित बन्धुओ को धर्म पर स्थिर रहने हेतु उत्साहित किया। इस दौरान मंत्र मे इस समारोह के आयोजन के लिए श्री स्वामी प्रेमानन्द जी तथा उनके सहयोगी प० विशिकेशन शास्त्री के तप एवं उत्साह की भी प्रशसा करते हुए श्री शास्त्री जी ने उन्हे धन्यवाद दिया। स्थानीय कार्यकर्त्ता श्री नारायण प्रधान श्री राशरश्मि प्रधान श्री प्रान्तमेन नायक आदि को भी अनेकश धन्यवाद दिया। इस प्रकार एक बजे यह समारोह समाप्त हुआ।

कार्यक्रम के सम्पन्न होते ही भगवान इन्द्र ने अत्यन्त प्रसन्न हो अपने कोष के द्वार खोल दिये। देखते ही देखते सारा क्षेत्र जोरदार वर्षा से मानो सभी शाप ताप और पाप से मुक्ति पा रहा था। परन्तु हमारे लिए यह वर्षा कठिनाई का कारण बन गई। जब तीसरे कार्यक्रम के लिए चले तो हमारी गाडी (जीप) दुर्गम घाटी में फस गई। नीचे अथाह गहराई और ऊपर सीधी चढाई। ऊपर से जोरदार वर्षा। परन्तु गुडुरिकिया के उत्साही कार्यकर्त्ताओ ने घण्टो परिश्रम करके हमारी जीप को निकाल ही दिया। परन्तु इस परेशानी के कारण तीसरा कार्यक्रम स्थगित करना पडा। वहां से अगले दिन यानि २५ मई को प्रात ३ बजे वापिस गुरुकुल भूमि मे लौट सके। इस प्रकार अत्यन्त उल्लासमय वातावरण में यह कार्य सम्पन्न हुआ

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८]
वर्ष २३ अङ्क २०]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
ज्येष्ठ कृ० १५ स० २०४५ रविवार १५ मई १९८८

दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

अमेठी के राजा राजर्षि रणञ्जय सिंह का आर्य जनता को सन्देश

आर्यसमाज में अनार्यत्व एवं व्यक्तिवाद को कोई स्थान नहीं है

यह एक महान् संन्यासी द्वारा संस्थापित विश्व की महान् पुण्यमयी संस्था है इसे राजनीति का अखाड़ा मत बनाओ—विद्वानों में मतभेद होते हैं पर—ऋषिवर्य के अनुसार बहुमत का सदैव सम्मान करना होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के भूतपूर्व प्रधान एव सासद आर्य जगत् के वयोवृद्ध नेता राजर्षि रणञ्जयसिंह ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती एव उ०प्र० के वर्तमान प्रधान श्री प० इन्द्रराज एव मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी के विरुद्ध कतिपय व्यक्तियो द्वारा सुनियोजित ढग से चलाए जा रहे निन्दनीय एव मिथ्या आरोपो से युक्त अभियान पर अपनी दु खमयी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए 'आर्यमित्र' के विशेष सम्वाददाता से भेटवार्ता मे कहा—

"उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा देश की मान्य प्रतिनिधि सभा मानी जाती है। इसका अतीत अत्यन्त गौरवपूर्ण रहा है—मैं स्वय इसका कई वर्षों तक प्रधान रहा। अतीत का विश्लेषण करते हुए उन्होंने बताया कि एक समय था जब कि सारा प्रदेश अवैदिक रूढ़ियो से जकड़ा हुआ था। मेरे राजघराने (अमेठी) मे ही दशहरे के अवसर पर बकरो का काटा जाना पुण्य समझा जाता था। यह आर्यसमाज की ही प्रेरणा थी कि आज से ५० वर्ष पूर्व मेरे अग्रज राजकुमार रणवीरसिंह ने "अज रक्षिणी सभा" की स्थापना की और पशुबलि को बन्द कराया।

उस समय सारे देश में उर्दू का बोलबाला था। ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश से प्रेरणा लेकर हमने "उर्दू उन्मूलनी सभा" का निर्माण किया और हिन्दी का प्रचार किया। प्रतिनिधि सभा के समर्पित कार्यकर्त्ताओ एव प्रचारको के अकथनीय प्रयास का ही यह परिणाम है कि प्रदेश से अनेको कुरीतियो का उन्मूलन हो चुका है। इसी प्रकार सार्वदेशिक सभा के महान् अतीत को स्मरण करते हुए वयोवृद्ध नेता ने बताया कि जब-जब आर्य धर्म पर कोई सकट आया है इसी शिरोमणि सभा के निर्देशन में आर्य लोगो ने इकट्ठे होकर अपने बलिदानों से आर्यसमाज के इतिहास को अमर बनाया है। इस शिरोमणि सस्था को सदैव महान् सन्यासियो महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी स्वतन्त्रतानन्द आदि का वरद आशीर्वाद प्राप्त रहा है।

राजर्षि ने कतिपय क्षुद्र विचारो वाले तथाकथित आर्य सामाजिको द्वारा पत्रिकाओ आदि के माध्यम से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती एव उ०प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी के विरुद्ध निम्न स्तर का झूठा प्रचार करने की दूषित भावना को तिरस्कृत करते हुए कहा—कि आर्यसमाज की इस सकट की घडी मे मैं देख रहा हूँ दो नक्षत्रो का उदय हुआ है एक सूर्य है तो दूसरा चन्द्र। स्वामी आनन्दबोध जी सूर्य के समान हैं, सन्यासी हैं मेरे मस्तक पर उनका स्थान है। उन्होने अपनी कर्मठता से आर्य समाज को नव ज्योति प्रदान की है तो दूसरे उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान उदीयमान मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी

(शेष पृष्ठ ११ पर)

स्व० ओम् प्रकाश त्यागी

सार्वदेशिक सभा के भूतपूर्व महामन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी को दिवगत हुए १० मई ८८ को दो वर्ष पूरे हो चुके हैं। उनकी याद सदैव आर्य समाज मे बनी रहेगी। वह आर्यसमाज व हिन्दु जाति के अग्रणीय नेता थे। जब तक मानव जाति के सेवा सहायता कार्य आर्य समाज व दयानन्द सेवाश्रम सघ के माध्यम से सचालित होते रहेगे, तब तक रचनात्मक कार्य शैली के इस व्यक्तित्व की स्मृति हमे प्ररणादेती रहेगी।

द्वितीय पुण्य स्मृति दिवस पर पूरा आर्य जगत् उन्हे अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करता है।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

शिक्षां प्रवक्ष्यामः

सत्यार्थप्रकाश द्वितीय समुल्लास से

मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद ।
(तुलना-शतपथ ब्राह्मण का० १४। प्रपा० ३।
ब्रा० ८। कं० २॥ तथा छा० उ० प्रपा० ६।
खं० १४) ॥

यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य ! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान् ! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है, उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम- उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता। इसीलिये (मातृमान्) अर्थात् 'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्' धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करें।

माता और पिता को अति उचित है कि गर्भाधान के पूर्व, मध्य और पश्चात् मादक द्रव्य, मद्य दुर्गन्ध रूक्ष, बुद्धिनाशक पदार्थों को छोड़ के जो शान्ति, आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता से सभ्यता को प्राप्त करावे, वसे घृत, दुग्ध, मिष्ट, अन्नपान आदि श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन करे कि जिससे रजस-वीर्य भी दोषों से रहित होकर अत्युत्तमगुणयुक्त हो। जैसा ऋतुगमन का विधि अर्थात् रजोदर्शन के पांचवे दिवस के लेके सोलहवें दिवस तक ऋतुदान देने का समय है उन दिनों में से प्रथम चार दिन त्याज्य हैं, रहे १२ दिन, उनमें एकादशी और त्रयोदशी को छोड़ के बाकी १० रात्रियों में गर्भाधान करना उत्तम है। और रजोदर्शन के दिन से लेके १६वीं रात्रि के पश्चात् न समागम करना। पुनः जब तक ऋतुदान का समय पूर्वोक्त न आवे तब तक और गर्भस्थिति के पश्चात् एक वर्ष तक संयुक्त न हों। जब दोनों के शरीर में आरोग्य,परस्पर प्रसन्नता, किसी प्रकार का शोक न हो। जैसा चरक और सुश्रुत में भोजन-छादन का विधान और मनुस्मृति में स्त्री-पुरुष की प्रसन्नता की रीति लिखी है, उसी प्रकार कर और वर्तें। गर्भाधान के पश्चात् स्त्री को बहुत सावधानी से भोजन-छादन करना चाहिये। पश्चात् एक वर्ष पर्यन्त स्त्री पुरुष का संग न करे। बुद्धि, बल, रूप,आरोग्य, पराक्रम, शान्ति आदि गुणकारक द्रव्यों ही का सेवन स्त्री करती रहे कि जब तक सन्तान का जन्म न हो।

जब जन्म हो तब अच्छे सुगन्धियुक्त जल से बालक को स्नान, नाडीछेदन करके सुगन्धियुक्त घृतादि का होम* और स्त्री को भी स्नान, भोजन का यथायोग्य प्रबन्ध करे कि जिससे बालक और स्त्री का शरीर क्रमशः आरोग्य और पुष्ट होता जाय। ऐसा पदार्थ उसकी माता वा धायी खावे कि जिससे दूध में भी उत्तम गुण प्राप्त हों। प्रसूता का दूध छः दिन तक बालक को पिलावे। पश्चात् धायी पिलाया करें। परन्तु धायी को उत्तम पदार्थों का खान-पान माता-पिता करावें। जो कोई बुद्धि, पराक्रम, आरोग्य करने हारी हों उनको शुद्ध जल में भिजा, औटा, छान के दूध के समान जल मिला के बालक को पिलावें। जन्म के पश्चात् बालक और उसकी माता को दूसरे स्थान जहां का वायु शुद्ध हो वहां रक्खे, सुगन्ध तथा दर्शनीय पदार्थ भी रक्खे, और उस देश में भ्रमण कराना उचित है कि जहां की वायु शुद्ध हो, और जहां धायी, गाय, बकरी आदि का दूध न मिल सके, वहां जैसा उचित समझें वैसा करें। क्योंकि प्रसूता स्त्री के शरीर के अंश से बालक का शरीर होता है, इसी से स्त्री प्रसव के समय निर्बल हो जाती है, उस समय उसके दूध में भी बल कम होता है, इसलिये प्रसूता स्त्री दूध न पिलावे। दूध रोकने के लिये स्तन के छिद्र पर उस औषधी का लेप करे जिससे दूध स्रवित न हो। ऐसे करने से दूसरे महीने में पुनरपि युवती हो जाती है। तब तक पुरुष ब्रह्मचर्य से वीर्य का निग्रह रक्खे। इस प्रकार जो स्त्री वा पुरुष करेगा, उनके उत्तम सन्तान, दीर्घायु, बल पराक्रम की वृद्धि होती रहेगी कि जिससे सब सन्तान उत्तम, बल पराक्रमयुक्त, दीर्घायु, धार्मिक हों।

बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करे, जिससे सन्तान सभ्य हों और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावें। जब बोलने लगें तब उसकी माता बालक की जिह्वा जिस प्रकार कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सके वैसा उपाय करे कि जो जिस वर्ण का स्थान, प्रयत्न अर्थात् जैसे 'प' इसका ओष्ठ स्थान और स्पष्ट प्रयत्न दोनों ओष्ठों को मिलाकर बोलना, ह्रस्व, दीर्घ' प्लुत अक्षरों को ठीक-ठीक बोल सकना। मधुर, गम्भीर, सुन्दर स्वर, अक्षर, मात्रा, पद वाक्य, संहिता, अवसान भिन्न-भिन्न श्रवण होवे। जब वह कुछ-कुछ बोलने और समझने लगे तब सुन्दर वाणी और बड़े, छोटे, मान्य पिता, माता, राजा, विद्वान आदि से भाषण, उनसे वर्तमान और उनके पास बैठने आदि की भी शिक्षा करें, जिससे कहीं उनका अयोग्य व्यवहार न हो सर्वत्र प्रतिष्ठा हुआ करे। जैसे सन्तान जितेन्द्रिय, विद्याप्रिय और सत्संग में रुचि करें। वैसा प्रयत्न करते रहें। व्यर्थ क्रीड़ा, रोदन, हास्य, लड़ाई, हर्ष, शोक, किसी पदार्थ में लोलुपता, ईर्ष्या, द्वेषादि न करें। सदा सत्यभाषण, शौर्य, धैर्य, प्रसन्न-वदन आदि गुणों की प्राप्ति जिस प्रकार हो, करावें। जब पांच-पांच वर्ष के लड़का-लड़की हों तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी। उसके पश्चात् जिनसे अच्छी शिक्षा, विद्या, धर्म, परमेश्वर, माता, पिता, आचार्य, विद्वान, अतिथि, राजा, प्रजा, कुटुम्ब, बन्धु, भगिनी, भृत्य आदि से कैसे वर्तना, इन बातों के मन्त्र, श्लोक, सूत्र, गद्य, पद्य भी अर्थ सहित कण्ठस्थ करावें। जिनसे सन्तान किसी धूर्त के बहकाने में न आवें। और जो-जो विद्याधर्म विरुद्ध भ्रान्तिजाल में गिराने वाले व्यवहार हैं, उनका भी उपदेश कर दें, जिससे भूत, प्रेत आदि मिथ्या बातों का विश्वास न हो।

—पुष्करलाल आर्य, कलकत्ता

*बालक के जन्म समय में "जात कर्म संस्कार" होता है उसमें हवनादि वेदोक्त कर्म होते है वे श्री स्वामी जी ने 'संस्कार विधि" में सविस्तार लिख दिये है।

सम्पादकीय

आर्यसमाज का कार्य और उसके विचारक

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने अपने गुरु के आदेशानुसार जो वैदिक धर्म का प्रचार प्रारम्भ किया। वह एक त्याग तपस्या एवं बलिदान मे अपना एक विशेष स्थान रखता है।

आज भी जब हम प्रेरणा लेते हैं तो विगत इतिहास के पन्ने देखकर जीवन मे नयी प्रेरणा लेते हैं। उससे ऋषि के कार्य मे नव चेतना आई, उसमे समयानुसार—

गुरुदत्त विद्यार्थी, प० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दर्शनानन्द महाराज थे। जो आगे पीछे के उखाड़-पछाड़ होने के बाद भी मिशन के कार्य से भागे नही। आलोचना प्रत्यालोचना भी चलती रहीं। इस युग मे आजादी की लड़ाई भी लड़ी गई और संस्कृत व संस्कृति धर्म के बचाने के लिए शिक्षणालयो की स्थापना करके हजारो लाखो नव जवानो को पैदा किया। देश मे घूम-घूमकर व्याख्यान शास्त्रार्थो युग को बदला भी। गृहस्थ धर्म का पालन करने के साथ-साथ तथा घर को छोड़कर भी पुन घर मे घुसे नही।

जब आर्य समाज के मच पर अपमान के घूट पीए, तो यह शिकायत भी नही की कि मुझे आर्य समाजियो ने पूछा तक नही। हमारा अपमान किया। इसलिए मैं घर लौट आया। इसी युग को स्वर्ण युग भी कहा गया। स्मरण करो—स्वामी सर्वदानन्द जी व स्वामी आत्मानन्द जी, म० नारायण स्वामी जैसे व्यक्तित्व को।

इसके बाद उत्थान का दूसरा दौर प्रारम्भ हुआ। जिसमे बड़े-बड़े सन्यासी, विद्वान्, त्यागी-तपस्वियो की एक लम्बी शृखला प्रारम्भ हुई। जिसमे—

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति, प० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, प० पद्मसिंह शर्मा प० गणपति शर्मा, प० मुरारीलाल शर्मा, जैसे सैकडो योद्धा वक्ता लेखक, व सस्थाओ के सचालक बने, नानाप्रकार के सकटो के आने पर भी रास्ते से मुख नहीं मोडा।

इस पीढी ने लगाए गए महावृक्षो को पानी देकर सींचा और पल्लवित पुष्पित व फलवाला बनाया।

इसके बाद मे नए कर्णधारो का सृजन होता है। प० रामचन्द्र देहलवी, प० बिहारीलाल शास्त्री, ठा० अमरसिंह, कु० सुखलाल जैसे महारथियो का जिले-जिले मे हजारो कार्यकर्ता पैदा करके ऋषि के आदेश का सिंहनाद किया।

इस समय तक इनके सामने कार्य था, कागज पर कवल योजनायें नही थी। समाज को अच्छा साहित्य भी दिया, तिल-तिल जलकर दूसरो को प्रकाश भी दिया। प० ग गा प्रसाद उपाध्याय कहा करते थे यदि काम करोगे, तो तुमसे प्रेरणा पाकर तुम्हारे परिवार व गाव समाज के लोग भी तुम्हारा अनुसरण करेंगे।

इन्हीं के साथ प० ओम्प्रकाश शास्त्री, रुद्रदत्त शास्त्री, वाचस्पति शास्त्री प० शिवकुमार शास्त्री, प० प्रकाशवीर शास्त्री का नया युग आया। नयी पीढी के प्रणेता ओम्प्रकाश त्यागी, डा० रामगोपाल शालवाले—प० नरेन्द्र जैसे मैदान मे खरे उतरे।

गुरुकुलो के स्नातको की एक लम्बी लाइन पत्रकारिता के क्षेत्र मे लग गई। महोपदेशको मे भी अपना एक स्थान बनाया। कहने का मतलब था—सम्मान मिले या न मिले ऋषि के मिशन का मैदान मिले और क्या चाहिए।

कभी घी घना, कभी मुट्ठी चना, कभी वह भी मना ? तब हुआ आर्य समाज का काम। आज के युग की माग हैं कि काम नही करना, लम्बी-लम्बी योजनायें लिखकर देना। ऐसे काम करो, जब उनसे कहा कि आगे चलकर काम में लगो, तो बोले, मुझे तो (हार्ट) हृदय रोग की बीमारी है मैं कुछ नहीं कर सकता। आज ऐसे "गेहे शूरा." सन्यासियो की ही धूम मची है। गलत प्रचार का भी प्रभाव पड़ता है सौ बार झूठ बोलने पर वह झूठ भी सच हो जाता है।

चर्चिल ने जर्मनी के खिलाफ खूब झूठ बोला--दुनिया ने झूठ को सच माना। हिटलर बदनाम हो गया।

आज का युग—काम करने का नही गाल बजाने का है और जो काम करे, उसकी टाग खींचकर पीछे घसीटने की बात है।

सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान उस युग की देन है जहाँ पर सघर्ष से जीवन प्रारम्भ होता था और अन्तिम क्षण तक चलता था।

किसी भी सस्था के सचालक यदि त्यागी-तपस्वी निष्ठावान नही हैं, तो वह सस्था मृतप्राय हो जायगी। व्यक्तित्व एक दिन मे नही बना करते।

नेतृत्व का यह काम है कि वह देखे कि कहा पर अनैतिक तत्व पैदा हो रहे हैं उन पर दृष्टि पात कर उनका शमन करे। शमन करने पर अराजक तत्व अप्रसन्न जरूर होगे। उनके साथ कुछ ऐसे तत्व भी सम्मिलित हो जायेगे। जिनका समाज मे कोई स्थान नही और ऐसे तत्व समाज मे काम भी नही करना चाहते हैं। उनका काम केवल नुक्ता चीनी करना मात्र ही है। आर्य समाज की स्थापना से लेकर आज तक काम करने वालो के प्रति दुर्भाव ही प्रकट किए हैं।

लेकिन क्रियाशील व्यक्ति भी सजग होकर निश्चिन्त कार्य करता है। वह जानता है कि अकर्मण्य व्यक्ति एक दिन कर्मठ व्यक्ति का साथ ही देते हैं।

जो व्यक्ति स्वय नही काम करता है वही दूसरो पर दोषारोपण करता है। आज ऐसे (गेहेशूरो) की कमी नही है।

काम करना है निर्भीकता से डटकर काम करना है। किसी के कुछ कहने से मैदान से भागना नही है यह ससार ऐसा ही है जिससे सघर्षरत रहकर ही कर्मक्षेत्र मे लगना है।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की दयानन्द चेयर क्यों खत्म की जा रही है ?

आर्य जगत मे यह समाचार सर्वत्र दुख और क्षोभ के साथ सुना जायगा कि विगत १५ वर्षो से कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय मे वैदिक शोध के लिय स्थापित दयानन्द प्रोफेसर का पद और दयानन्द चेयर को समाप्त किया जा रहा है। इस पद पर ३१ दिसम्बर १९८७ तक कार्यरत डा० कपिलदेव शास्त्री के अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् विश्वस्त सूत्र से पता लगा है कि इसी विश्वविद्यालय का वेद व्यास पीठ के वे एक पौराणिक प्रोफेसर ने सरकार को लिख कर दे दिया है कि आगे दयानन्द प्रोफैसर के पद को भरना आवश्यक नही है। ध्यातव्य है कि दयानन्द प्रोफेसर के पद पर रह कर विगत काल डा० श्रीनिवास शास्त्री और डा० कपिलदेव शास्त्री ने उच्चस्तरीय ग्रन्थो का निर्माण किया किन्तु दयानन्द चेयर के बाद स्थापित वेदव्यास चेयर के प्रोफेसर को स्वामी दयानन्द के नाम पर शोध कार्य का जारी रहना अच्छा नही लगा और उन्होने इस पद और विभाग को अनावश्यक मान कर उसे समाप्त करने की संस्तुति कर दी जब कि हरयाणा सरकार इस विभाग को आगामी वर्षो तक जारी रखने के लिए समुचित वित्त राशि देने के लिये तैयार है।

मैंने इस समस्या की ओर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी, स्वामी ओमानन्द जी तथा हरयाणा के आर्य नेता प्रो० शेरसिंह जी का ध्यान आकर्षित किया है। यदि हरयाणा के कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से ही दयानन्द चेयर को हटा दिया गया तो क्या वेद पर शोध करने के लिये हमे नागालैण्ड और मिजोरम की सरकारो से कहना पड़ेगा ? निश्चय ही दयानन्द चेयर को समाप्त किया जाना आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के अपमान और अवमानना से कम नही है। अत इस विज्ञप्ति के द्वारा मैं देश की समस्त आर्य समाजो से अनुरोध करूगा कि वेद उक्त विश्वविद्यालय के इस दुष्कृत्य का प्रबल प्रतिरोध करते हुए प्रस्ताव पारित करें तथा हरयाणा के मुख्य मन्त्री श्री देवीलाल, शिक्षा मन्त्री श्री खुर्शीद अहमद तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति को प्रस्ताव की प्रतिलिपि तथा विरोध रूप मे तार भेज कर उनसे अनुरोध करें कि वे सनातनी प्रोफेसर के षडयन्त्र का शिकार बन कर दयानन्द चेयर को समाप्त न करें अन्यथा आर्य समाज को अपने आचार्य के गौरव की रक्षा के लिये समुचित वैधानिक कदम उठाने मे कोई सकोच नहीं होगा।

—भवानीलाल भारतीय

नैरोबी में दो मास

श्यामसुन्दर स्नातक आर्य महोपदेशक

दस वर्ष के अन्तराल के पश्चात् मैं पुनः इस क्षेत्र में आया हूं। इससे पूर्व मैं चार वर्ष १९७३ से १९७६ यहां प्रचारार्थ रह चुका हूं। किसी भी देश में दस वर्ष में जो परिवर्तन आ जाते हैं वे यहां पर भी हैं। स्वाभाविक भी है यह निर्माण के क्षेत्र में राजनीतिक, सामाजिक क्षेत्रों में सर्वत्रपरिवर्त्तन हैं। इस बार मैं बच्चों से मिलने के लिए दो मास के लिए आया हूं। एक उपदेशक के नाते आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में नित्य जाता हूं। वयोवृद्ध महानुभवों के दर्शन अब कम हैं। कर्मठ कार्य कर्ताओं के रूप में प्रमुख रूप से श्री बलदेव जी कपिला, एवं कुछ अन्य दस पन्द्रह परिवारों के दर्शन अनायास हो जाते हैं।

एक बात अत्यन्त सन्तोषजनक है कि साप्ताहिक सत्संग के यज्ञ में आठ दस परिवार निष्ठा एवं श्रद्धा से आते हैं—सुन्दर सत्संग भवन में अभी पहले जैसी बात नजर नहीं आई जिसकी अपेक्षा थी। भगवान करे यह न्यूनता भी पूर्ण हो जावे। अस्तु। आर्यसमाज नैरोबी के प्रधान श्री डी०डी० सूद एवं उनके सहयोगी सात-आठ परिवार अवश्य उत्साह से कार्य कर रहे हैं। एक बात मैंने अनुभव की है। तीन व्यक्ति या हो सके तो पांच व्यक्ति इस बात के लिए पक्के होने चाहिये जो सत्संग के बाद सायंकाल उनके घर जायें जो प्रायः सत्संग आया करतेहैं-या जिनके आनेसे सत्संग की शोभा बढ़ती है, वे आ नहीं सके। इन महानुभावों के उनके घरों पर जाने पर उनका मनोबल, उत्साह बढ़ेगा। ये उनसे घरों में जाकर पूछें—आपके आज दर्शन नहीं हुए क्या कारण है—कोई कष्ट हो बताइये, कोई हमारे योग्य सेवा हो तो कहें—इस प्रकार करने से आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग की उन्नति होगी।

पिछली यात्रा के संस्मरणों में मैंने यह लिखा था कि आर्यसमाज नैरोबी के पूर्वज आर्यों ने तप एवं कठोर परिश्रम से यहां पर कीनिया में आर्यसमाज और वैदिक धर्म की नींव रखी थी। उस समय आर्यों में जो उत्साह, त्याग और निष्ठा होगी। उसकी कल्पना यहां की शिक्षण संस्थाओं को देखकर आसानी से की जा सकती है। वे निर्माता थे आज की पीढ़ी उपभोक्ता है। दादा लोगों ने जो निर्माण के कार्य, प्रचार प्रसार के तय किये थे। पोतों को उनका सही मूल्यांकन करना चाहिये। ये सभी क्षेत्रों में एक समान घटने वाली बात है। भले ही Palitical क्षेत्र हो Sorial हो या Domestic हो।

मुझे यहां आने पर विशेष प्रसन्नता हुई। जहां पर कोई कुछ समय भी रह चुकता है। वहां के समाज सेवी व गुण ग्राही परिवारों का निश्छल व्यवहार मनुष्य मात्र को सुखदाई हुआ करता है। उनके दर्शन से उभय पक्षीय प्रसन्नता प्रस्फुटित होती है मेरी प्रसन्नता का एक और भी कारण है—वह है कुछ नवयुवकों का आर्यसमाज की गतिविधियों में पदार्पण यह एक समयानुकूल अच्छा चिह्न है।

एक बात चिन्ता की भी है। भारतीय लोगों की यहां पर कीनिया में वीस पच्चीस शिक्षण संस्थाएं हैं। इनमें धर्म शिक्षा का पाठ्यक्रम बनने जा रहा है— मैं इसे यहां के प्रशासन की उदारता ही मानता हूं। इसका प्रभाव तभी पड़ेगा बच्चों पर जब पाठ्यक्रम बनाने वाले पहले अपने को भारतीय संस्कृति के वाहक, प्रचारक समझें सदाचार और धर्म शिक्षा का पाठ्यक्रम बनाते समय हमें आर्यों की उच्चतम जीवन व्यवस्था जो महाभारत से पूर्व परिलक्षित होती थी। दर्शाने से हम बच्चों को लाभान्वित कर सकेंगे। पांच-चार आधुनिक महापुरुषों तक ही पाठ्यक्रम को सीमित रखने से हम न्याय नहीं कर सकेंगे।

अन्त में एक बात आवश्यक है सार्वदेशिक सभा यहां पर उच्च मानसिक उन्नति वाले समर्पित भावना से कार्य करने वाले कुछ वानप्रस्थी, संन्यासी इन क्षेत्रों में यात्रा करते रहें तो वे यहां के लिए सदा ही लाभ प्रद रहेंगे।

साहित्य समीक्षा

वैदिक साहित्य का इतिहास

प्रकाशक : साहित्य भण्डार, मेरठ-२५०००२

लेखक : डा० कर्णसिंह अध्यक्ष; संस्कृत विभाग मेरठ कालिज, मेरठ

डिमाई साईज, पृ० सं० १५०, मूल्य १० रुपये

लेखक

डा० कर्णसिंह विरचित 'वैदिक साहित्य का इतिहास, अपना वैशिष्ट्य रखता है, प्रस्तुत ग्रन्थ को लिखने में विद्वान् लेखक का उद्देश्य यह रहा है कि यह ग्रन्थ विशुद्ध इतिहास हो, वैदिक संस्कृति और सभ्यता का मिश्रण न हो, किसी अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद मात्र हो और इन सबके ऊपर छात्रोपयोगी हो इन दृष्टियों से प्रस्तुत पुस्तिका निस्सन्देह छात्रोपयोगी है।

विद्वान् लेखक ने पूर्व पीठिका में वैदिक भाषा का सामान्य परिचय दिया है, यह वैदिक भाषा संस्कृत भाषा से भिन्न है, जो कि कालक्रम से पाणिनि, पतञ्जलि आदि विद्वानों के प्रयत्नों से नियमबद्ध हो गई, इसी प्रकार वैदिक साहित्य और लौकिक संस्कृत साहित्य में भी भाषा शैली और विषयवस्तु की दृष्टि से पर्याप्त अन्तर है।

भूमिका में लेखक ने छात्रों को वैदिक साहित्य की सर्वतः प्राचीनता से अवगत कराना है, वैदिक साहित्य ही सम्पूर्ण भारतीय साहित्य का मूलस्रोत है वेदों की अपौरुषेयता की धारणा धार्मिक और प्राचीन ग्रन्थों के प्रति श्रद्धा के कारण हैं।

ग्रन्थ में लेखक के द्वारा अनेक स्थापित और स्थाप्यमान अवधारणाओं की पुष्टि और आधार दिये गये हैं 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' 'प्रामाण्यबुद्धिर्वेदेषु, इत्यादि धारणायें धार्मिक महत्त्व की पुष्टि करती है 'विद्' धातु से निष्पन्न वेद शब्द ज्ञान की महत्ता को स्वयमेव व्यक्त करता है, 'कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः' आदि वेद वाक्य कवि को मूर्धन्य स्थान पर स्थापित करते हैं।

इसके अतिरिक्त वैदिक एवं ब्राह्मण साहित्य, आरण्यक उपनिषद वेदांग, अनुक्रमणी साहित्य पर लेखक ने अपने विचारों को बड़े ही साररूप में प्रस्तुत किया है, सम्पूर्ण वैदिक साहित्य का परिचय और साथ ही पूर्ववर्ती विद्वानों के विचारों से परिचित कराने में विद्वान् लेखक को पूर्ण सफलता मिली है और निस्सन्देह वे तदर्थ बधाई के पात्र हैं।

ग्रन्थ में कुछ छापे की अशुद्धियां रह गई हैं कहीं पुनरुक्तियां भी हो गई हैं—ऋग्वेद का विषय और रचनाविन्यासक्रम पृ० ३२ में पुनरुक्तियां दृष्टिगत होती हैं। १८ वे पृष्ठ पर ऋग्वेद की देव-भावना के विस्तार का क्या विभाजन स्पष्ट नहीं है।

प्रत्येक अध्याय के अन्त में तालिका देकर लेखक ने छात्रों का बड़ा उपकार किया है भगवान् लेखक को दीर्घजीवन दे, जिससे कि वे संस्कृत जगत् और सरस्वती की सेवा में कुछ पुष्पाञ्जलियां अर्पित कर सकें।

वैवाहिक विज्ञापन

ऋषि दयानन्द के ये 'सरकारी' जीवन चरित (१)

—डा० भवानीलाल भारतीय

२०—सेठ मथुरादास लवजी ने वेद से मूर्तिपूजा सिद्ध करने वाले को १००० रुपये पुरस्कार देने की घोषणा की थी। लेखक ने इसे घटाकर मात्र १०० रुपया कर दिया है। कारण स्पष्ट है कि वह बिना प्रामाणिक सामग्री को देखे ही कलम घिसता जा रहा है।

२१—महाराष्ट्र में स्वामीजी जिन लोगों से मिले उनमें निम्न दो नाम आते हैं (१) विष्णु परशुराम शास्त्री, (२) विष्णु शास्त्री चिपलूणकर लेखक इन दोनो के नामों को ठीक-ठीक समझ नहीं सका है।

२२—भारत सरकार के प्रकाशन विभाग से यह अपेक्षा की जाती है कि जो भी ग्रन्थ वहा से छपे वह तथ्यो की दृष्टि से पूर्णतया प्रामाणिक हो। इस पुस्तक का हाल यह है कि सनातन धर्म के सगठन भारत धर्म महामण्डल को यहा हिन्दू धर्म महामण्डल लिखा है।

२३—स्वामी दयानन्द के प्रवास क्रम तथा तत्सम्बद्ध तिथिक्रम के अज्ञान का तो कोई पारावार ही नही है। पूना मे प्रदत्त व्याख्यानो के तत्काल बाद वह उन्हे दिल्ली और जोधपुर मे व्याख्यान देते हुए बताता हैं। जब कि महाराज का जोधपुर प्रवास तो उनकी जीवन यात्रा का अन्तिम पडाव ही था। पृ० ८४

२४—महाशय कृष्ण को लेखक १९०१ मे भी 'राधाकृष्ण'' नाम से अभिहित होना बताता है जब कि सचाई यह है कि महाशय जी आर्यसमाज मे प्रविष्ट होने के साथ ही 'कृष्ण''नाम से जाने गये थे।

२५—सती प्रथा के समर्थन मे सनातनी पण्डित ऋग्वेद के जिस मन्त्र को प्रस्तुत करते हैं उसके वास्तविक अर्थ को बताने का कोई प्रसग स्वामी दयानन्द के जीवन में कभी नही आया था,अत पृ० ११२ पर एतद विषयक उल्लेख अनावश्यक और इतिहास विरुद्ध है।

२६—आर्यसमाज द्वारा स्थापित एग्लो सस्कृत हाई स्कूल अम्बाला नगर में है न कि लुधियाना में। पृ० ११७ पर यही भूल है।

२७—पृ० १५७ पर भाई परमानन्द के साथ हसराज की गिरफ्तारी का उल्लेख है। बताना चाहिए कि ये हसराज कौन थे ? महात्मा हसराज तो कभी गिरफ्तार नही हुए।

२८—लेखक के अनुसार (पृ० १६०) सत्यार्थप्रकाश तथा महात्मा मुन्शीराम एव रामदेव लिखित पुस्तक दि आर्यसमाज एण्ड इट्स डिट्रेक्टर्स एविण्डिकेशन को सरकार ने जब्त कर लिया था। सचाई यह है कि सिंध की मुस्लिम लीगी सरकार ने अवश्य ही सत्यार्थप्रकाश के १४व समुल्लास के प्रकाशन पर पाबन्दी लगाई थी किन्तु मुन्शीराम और रामदेव लिखित उपर्युक्त पुस्तक कभी जब्त नही की गई।

२९—लेखक के अज्ञान का एक और नमूना। पृ० १६७ पर, वह लिखता है—घर से निकल कर उन्होने अद्वैत का अध्ययन किया और इससे उन्हे ब्रह्म तथा आत्मा के बारेमे विश्वास हुआ। ध्यातव्य अद्वैतवाद का अर्थ ब्रह्म तथा आत्मा का एकत्व है न कि मात्र उनका ज्ञान।

३०—स्वामी दयानन्द द्वारा त्याज्य ग्रन्थों में लेखक ने अपने अज्ञान वश तन्त्रों और पुराणो के साथ-साथ महाभारत तथा उपनिषदो को भी गिनाया है। सचाई यह कि स्वामीजी प्रक्षेप छोडकर महाभारत को प्रामाणिक मानते थे और उपनिषद तो उन्हें मान्य थे ही।

ऋषि दयानन्द के सरकारी जीवनचरित मे आई ये ३० भयकर भूलें घुणाक्षर न्याय से ही बताई गई है। लेखक ने इसे लिखने में असम्य प्रमाद तथा असावधानी बरती है। इस पुस्तक में छपाई की भूलों की तो कोई सीमा ही नहीं है। इस प्रकार की मुद्रण अन्य त्रुटियों की ओर मैंने प्रकाशन विभाग के निदेशक का ध्यान बहुत पहले ही आकृष्ट किया था तथा उनके अनुरोध पर इस पुस्तक का आद्यन्त शोधन भी किया था। देखना यह है कि सरकार अपनी भूल को कैसे सुधारती हैं ?

आखिर ऐसा होता क्यों है ?

क्या कारण है कि ऋषि दयानन्द का जीवन चरित तैयार कराते समय इस तरह की गफलत होती है। मेरे विचार से तो सरकार की दृष्टि में आर्यसमाज का सगठन ही कोई इतना महत्वपूर्ण नही है कि उसके प्रवर्त्तक के सम्बन्ध में कुछ लिखने से पूर्व इस समस्या को इतनी गम्भीरता से लिया जाय। फिर सरकारी नौकरशाही ऐसे ग्रन्थको लिखवाने के लिये उपयुक्त व्यक्तिका ही चुनाव नहीकरती। वह अपने सम्पर्क मे आने वाले व्यक्ति को ही यह कार्य सौंप देती है चाहे वह कितना ही अपात्र या अनधिकारी क्यो न हो ? सरकार से प्रकाशित ग्रन्थो पर लेखक को प्रचुर पुरस्कार तथा रायल्टी आदि मिलती है इसलिये ऐसे काम को हाथ में लेने के लिये हर कोई तैयार रहता है। वह यह नही सोचता कि दयानन्द चरित को लिखने की योग्यता भी उसमें है या नही।

इस पुस्तक के लेखक डा० धनपति पाण्डय से मेरा व्यक्तिगत परिचय विगत कई वर्षो से है। इस लिये मुझे और भी अधिक पीडा हुई जब उनकी लेखनी से लिखी गई इस आपत्तिजनक पुस्तक को मैंने पढा। अच्छा होता यदि ऋषि के जीवन पर कलम चलाने के पहले वे मुझ से या अन्य किसी प्रामाणित व्यक्ति से परामर्श लेते तथा प्रकाशन विभाग को भी चेतावनी दे देते कि पुस्तक के मुद्रण में भी प्रमाद नही होना चाहिए। लेखक से मेरी वैयक्तिकमित्रता होने पर मुझे यह इसीलिये लिखना पडा क्योकि मैं अनुभव करता हू कि स्वामी दयानन्द के जीवन चरित को इस प्रकार की लापरवाही से लिखना मेरी दृष्टि मे अपराध से कम नही है और यदि मैं व्यक्तिगत परिचय की ओट मे इसे दरगुजर करता हू, तो यह मेरा भी अपराध ही होगा।

अन्तिम बात, डा० धनपति पाण्डय तो स्वय भुक्त भोगी हैं। उन्होने इतिहास की कोई ऐसी पाठय पुस्तक लिखी थी जिसमें पैगम्बर का गलत चित्रण करने पर बिहार सरकार नें उन पर मुकदमा चलाया और मुसलमान उनके खून के प्यासे हो गये। ऐसी घटना घट जाने पर तो उन्हे और अधिक सावधान हो जाना चाहिए था। क्या दयानन्द का जीवन ही बिगाडने के लिये है अथवा दयानन्द के अनुयायी ही इतने हीनवीर्य हैं कि वे अपने आचार्य के बारे में जो कुछ गलत सलत लिख डाला जाये, उसे सहन कर लेते है। हमे यह जान कर प्रसन्नता हुई कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी के अनुरोध पर भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मन्त्री श्री हरकिशनलाल भगत ने इस पुस्तक की बिक्री तथा प्रसारण पर रोक लगा दी है, किन्तु इसका पूर्ण परिमार्जन तो तभी होगा जब उपर्युक्त त्रुटिपूर्ण उल्लेखो का समग्र रूप से निराकरण कर पुस्तक को पूर्णरूपेण सशोधित करने के पश्चात् ही प्रकाशित किया जाय। स्वामी दयानन्द के एक अन्य जीवन चरित डा० बी०के० सिह द्वारा लिखित नेशनल बुक ट्रस्ट प्रकाशित के बारे में मैं अगले लेख मे लिखू गा। ●

अन्धी गलियों का चक्रव्यूह खालिस्तान (४)

डा० सुरेन्द्रसिंह कादियान एम०ए०, पी०एच०डी०

पंजाब की विरासत

भारत की ढाल

गीत, नृत्य और खेल ही पजाब के लोक-जीवन की पूर्ण अभिव्यक्ति नही हैं। पजाब जिस विशेष बात के लिए जग में जाना जाता है वह है इसका जुझारूपन, इसकी युद्ध-प्रियता बलिदान और शहादत देने की इसकी वीर परम्परा। भारत पर होने वाले हर विदेशी आक्रमण को अपनी छाती पर झेलकर इसने देश की अखडता और स्वाभिमान को बचाया है। विश्व-विजेता सिकन्दर को धूल चटाने वाला और वापस खदेडने वाला पजाब ही था। चगेज और हलाकू को भारत की सरहदो की ओर आख उठाने की हिम्मत नहीं हुई। पजाब के रास्ते भारत पर हमला करने वाले आक्रमणकारी ने या तो मुह की खाई या फिर उसे भारतीय बनने पर विवश होना पडा। पजाब ने मातृभूमि के लिए अपना खून पानी की तरह बहाया है, इसका चप्पा-चप्पा देश-भक्तो के गरम खून से सिंचित है। हर पजाबी को सैन्य वृत्ति परम्परा से मिली है, जन्म-घुट्टी मे मिली है।

सदियो तक मौत से भिडते-भिडते पजाबी मौत को ही मजाक करने लग गए। पजाब के हर गाव हर घर मे दीवार पर भाले, तलवारे और ढालें लटकी मिलती थी। पजाबी पेशेवर सैनिक नही थे क्योकि मौत से जूझना उनका व्यापार नही प्रवृत्ति थी अत जब भी जग का आह्वान होता था, नगाडे पर चोट पडती थी तो हर घर का एक एक आदमी स्वेच्छा से शस्त्रबद्ध होकर युद्ध-भूमि में पहुच जाता था।

सत्याग्रही पंजाबी

मौत से खिलवाड करने वाले पजाबियो का एक दूसरा रूप सत्याग्रही का भी दिखाई देता है। ब्रिटिश-काल के गुरुद्वारो को महन्तो के कब्जे से छुडवाने के लिए अकाली आन्दोलन चला। सरकार महन्तो की पक्षधर थी। इस आन्दोलनो में सिखो ने शस्त्र नही उठाए बल्कि धैर्य, सहनशीलता, तर्क, प्रेम और सौहार्द के शस्त्र धारण किए। सरकार इन सत्याग्रहियो पर लाठी बरसाती, कोडे मारती, कुत्ते छोडती, घोडे दौडाती और महन्तो के गुण्डे उन पर गोलिया चलाते लेकिन सत्याग्रही इन सब अत्याचारो को अत्यन्त सयम, धैर्य और शान्ति से सहते, मुख से उफ तक न निकालते किसी को गाली, दुर्वचन और अपशब्द तो क्या कहते। उनके मुह मुह से यदि कोई शब्द निकलता था तो वह था—वाह गुरु! वाह गुरु!!

तलवार का खेल खेलने वाले पजाबियों का यह अहिंसक रूप देखकर गांधी जी भी दग रह गए थे। अहिंसात्मक सत्याग्रह का एक सफल प्रयोग 'गुरु का बाग' मे किया गया और महन्त को गद्दी छोडनी पडी। अहिंसा के इन सफल प्रयोगों से यह आशा बलवती हुई कि हथियारों से जो प्राप्त नहीं किया जा सकता वह सत्याग्रह के अनूठे शस्त्र से हासिल किया जा सकता है। हिंसा से किसी लक्ष्य की पूर्ति सम्भव है लेकिन वह अपने पीछे नफरत, अविश्वास और प्रतिशोध का बीजारोपण कर जाती है जिसके अकुर तत्काल अथवा कुछ क्षण पश्चात् फूटने लगते हैं। इसके विपरीत अहिंसा अपने पीछे प्रेम, सौहार्द और विवेक छोड जाती है जिससे प्रतिहिंसा स्थायी रूप से मिट जाती है। सिखों के जीवन दर्शन से आए इस परिवर्तन का श्रेय गांधीवाद को जाता है लेकिन पजाब के इतिहास में इस सत्याग्रह की शानदार परम्परा गुरु अर्जुनदेव और गुरु तेग बहादुर के अमर बलिदानों में मिलती है इन गुरुओं के बलिदान से पजाब जिस चेतना और विवेक का सूत्रपात हुआ उसने आगे अनेक विविध भूमिका निभाई। किन्तु आज का सिख समाज सैन्य-वृत्ति के विपरीत आचरण कर रहा प्रतीत होता है। जो सिख सैनिक ब्रिटिश सेना में रहकर देश के लिए अनुशासन भग न कर सके वे सैनिक स्वतन्त्र भारत में अपने ही राष्ट्र के विरुद्ध हथियार उठाकर विद्रोही बन गए। इस अनुशासनहीनता और विद्रोह ने उसकी विश्वसनीयता को झुलसा दिया है। गुरु गोबिन्दसिंह ने अन्याय, शोषण और अत्याचार के विरुद्ध शस्त्र प्रयोग का आह्वान किया था किन्तु आज उनके ही अनुयायी बेगुनाह लोगो पर शस्त्र-प्रहार कर शस्त्रो का और सैन्य धर्म का अपमान कर रहे हैं। यह क्षत्रियत्व नही कायरता है, धर्म नही अधर्म है इससे वीरता नपुसक होती है और बलिदान भावना का मजाक उड रहा है।

धर्मों की पुण्य स्थली

पजाब भले ही शताब्दियो तक रण क्षेत्र बना रहा और हर पंजाबी को भले ही योद्धा के रूप में गौरव की अनुभूति हुई हो किन्तु युद्ध की विभीषिका और शस्त्रो के मोह ने उसे आततायी, अन्यायी और नृशस कभी नही बनाया। उसके शस्त्र स्वभिमान की और राष्ट्र रक्षा हितार्थ उठे स्वार्थ उठे स्वार्थ उठे स्वार्थ पूर्ति के लिए नही। शस्त्रो की झकार उसकी युद्धप्रियता का नैतिक आधार होता था। शस्त्र उसके साधन भर रहे साध्य नही बन सके अर्थात् वह शस्त्रो का गुलाम बनकर नही रहा अपितु इन्हें चेरी बनाकर रखा। इसी कारण यह यह सम्भव हुआ कि पजाब विविध धर्मों, मजहबो, सम्प्रदायो और पथो की पुण्य भूमि बन सका।

राजनीति ने भले ही यहा हिन्दू और मुसलमानो को लडाया हो लेकिन मन्दिर, गुरुद्वारे और मस्जिद सबके साझे रहे। दरगाहो और मजारों पर मुसलमान ही नहीं हिन्दू भी सिजदा करते रहे, चादरे चढाते रहे। हिन्दू, सिख और मुस्लिम औरतें अपने उपासना स्थलो से लौटते हुए फकीरों की मजारो और साधुओं की समाधी पर माथा टेकतीं और सीधा चढाती थी। पजाब में एक और तलवारें खटखटाती थीं तो दूसरी ओर साधु सन्तो, पीर-पैगम्बरों की अमृत-वाणी गूजती थी, जो युद्ध की ज्वाला शान्त करती थी और घायलो की पीडा को हरती थी। पजाब के लोक गीतों में अनेक धार्मिक कथाए और सन्तो के उपदेश जीवन्त रह कर लोक-मानस को सस्कारित करते रहे हैं।

पंजाब में गुरु नानक का आविर्भाव और सिख धर्म का उदय एक युगान्तरकारी घटना सिद्ध हुई। इस वेगवती धर्म-धारा में हिन्दु धर्म की अनेक विकृतिया बह गई जिससे उसे नव-जीवन प्राप्त हुआ। सिख धर्म की अनेक विलक्षण उपलब्धिया रही हैं जिससे पंजाब में नवोदय, पुनर्जागरण और अभ्युदय का सूत्रपात हुआ। सिख धर्म ने समाज में यह सोच पैदा की कि सभी धर्म हमें एक ही सत्य की ओर ले जाने वाले भिन्न भिन्न मार्ग हैं। सिख धर्म किसी धर्म का तना सस्करण नही था लेकिन उसकी घनिष्ठता वैदिक धर्म से अधिक बनी प्रतीत होती है। यही कारण है कि हिन्दू जन मानस ने उसे तीव्रता और एकाग्रता से ग्रहण किया मुसलमान नहीं कर सके। सिख धर्म में जब गिरावट आने लगी और वह महन्तो के चगुल में जा फसा तो गुरु सिंह सभा और अकाली लहर ने उसे उबार लिया। पतन-के-इसी काल में नामधारी आन्दोलन का जन्म हुआ जिसने हिन्दू आचारण पर विशेष बल दिया और सिख दर्शन की स्वीकारा।

(क्रमशः)

शरीर में जीवात्मा का स्थान

डा० योगेन्द्रकुमार, जम्मू

पूर्व लेखों में मैं प्रमाण सहित जीवात्मा मस्तिष्क में सिद्ध कर चुका हूँ। पाच ज्ञानेन्द्रियो मन और बुद्धि भी मस्तिष्क में ही है यह सप्रमाण हो चुका है। मेरे प्रमाणो का खण्डन न करके राजवीर शास्त्री ने केवल अपशब्दो का सहारा अधिक लिया है। यह सही है कि छोटा बच्चा जब पिटाई के समय अपने को असमर्थ पाता है तो गालियो पर उतर आता है। यही हाल राजवीर शास्त्री का है। उनकी दृष्टि मे मैं और उदयवीर शास्त्री महामूर्ख योग का क, ख, ग जानने वाले तथा दयानन्द विद्रोही हैं।

वस्तुत देखा जाय तो दयानन्द सन्देश पत्रिका के सम्पादक पद का राजवीर शास्त्री दुरुपयोग कर रहे हैं। दयानन्द सन्देश के नाम पर पौराणिक सन्देश दे रहे है। जैसे पौराणिक क्षेत्र में हनुमान जी अपना सीना फाडकर दोनो स्तनो के बीच में राम सीता का चित्र दिखाते हुए कलेण्डरो में नजर आते है उसी प्रकार ठीक दोनो स्तनो के मध्यभाग में जीवात्मा की स्थिति राजवीर शास्त्री मानते हैं। पूर्व लेखों में मैं सिद्ध भी कर चुका हू कि दोनो स्तनो के मध्य में जीवात्मा की मान्यता पौराणिक है। राजवीर शास्त्री की तो पाचो ज्ञानेन्द्रिया, मन, और बुद्धि भी दोनो स्तनो के बीच में ही है। सिर तो इनकी दृष्टि मे केवल मास, रक्त, नस नाडिया एव गोलको का पिटारा ही है। राजवीर शास्त्री सीने के मासपिण्ड एव रक्त प्रक्षेपक हृदय को भी जीवात्मा माने बैठे हैं वह हृदय क्या वस्तु है इस विषय मे वे स्वय भी कुछ नही जानते। अपना हृदय स्थान आमाशय है या पित्ताशय है या पसलियों के बीच मे जो हड्डी सी लटक रही है यह हृदय है कुछ तो कहिये। आयुर्वेद के विद्वान वीरेन्द्रसिह पवार से अथवा किसी शल्य चिकित्सक से ही जाकर पूछिये। या कि शास्त्र का प्रमाण देकर ही उस कपोल कल्पित हृदय की सीद्धि कीजिये। केवल आपके अकेले के द्वारा दयानन्द सन्देश पत्रिका के माध्यम से थोथो गालियो दागने से काम नहीं चलेगा। राजवीर शास्त्री को मान्यता के समथन मे एक भी विद्वान् ने लेख नही लिखा है। जब कि हमारे समर्थन में अनेको लेख निकल चुके हैं।

हमारी मान्यता स्पष्ट है हम मष्तिक को मस्तिक भी मानते हैं और इसका एक नाम हृदय भी मानते हैं। रक्त प्रक्षेपक मास पिण्ड का नाम भी आगे चलकर हृदय पडा परन्तु जीवात्मा का स्थान मस्तिष्क रूपी हृदय ही है। इस हृदय में मूर्धा नामक स्थान है। वैयाकरणों ने लिखा है ऋ ट् र षाणा मूर्धा अर्थात् इन वर्णों का स्थान मूर्धा है। यह मूर्धा-स्थान मस्तिष्क का एक भाग है।

ब्राह्मण ग्रन्थों मे स्पष्ट लिखा है कि मूर्धा हृदय मे है देखिये—

"मूर्धा हृदये" और वही लिखा है 'आत्मा हृदये' देखिये तैत्तिरीय ब्राह्मण ३।१०।८।।

इस प्रमाण से सिद्ध है कि मूर्धा हृदय (मस्तिष्क) में हैं और इसी मस्तिष्क हृदय में आत्मा है। वही पर लिखा है—

वाक् हृदये। प्राणो हृदये। चक्षुहृदये। मनोहृदये। श्रोत्रम् हृदये। रेत हृदये। मन्युर्हृदये।

कपोल कल्पित हृदय मे तो यह एक भी तत्व सिद्ध नहीं हो सकता। हमने तो वेद के प्रमाणो से यह सिद्ध किया था कि पाच ज्ञानेन्द्रियो और मन शीर्ष सञ्ज्ञक हृदय मे स्थित है। हम तो इन गोलको के भीतर जो देखने सुनने आदि की शक्तियो हैं उन्हे ज्ञानेन्द्रिया मानते हैं परन्तु आपके गोलको को ही ज्ञानेन्द्रिया मान बैठे हैं। और जिन मन और बुद्धि का स्थान हृदय (मस्तिष्क) तो लिखा मिलता है परन्तु इनके गोलक किसी भी शास्त्र मे लिखित नही है यह अशास्त्रीय मान्यता राजवीर शास्त्री की है। इसी बलबूते पर अपने को महाविद्वान् माने बैठे हो और मुझे भी उदयवीर शास्त्री जी को एव श्री युधिष्ठिर मीमांसक जी आदि को अविद्वान घोषित करते हो।

जीवन का सार

मनुष्य ससार में आया है और भी प्राणी ससार में आते हैं और चले जाते हैं। एक मनुष्य प्राणी ही है जिसमें प्रभु ने सोचने समझने की शक्ति प्रदान की है यदि हम मनुष्य भी हर प्राणी की तरह आए और खा पीकर चले गए तो मनुष्य और पशु मे कोई अन्तर नही। इन विचारो को सामने रखते हुए कि मनुष्य क्यो आया है और उसका सार क्या है मे थोडे से शब्द प्रश्न उत्तर के सम्बन्ध मे प्रस्तुत करता हू—

प्रश्न—मनुष्य के जीवन का सार क्या है ?

उत्तर—अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए दो बातो का विशेष ध्यान रखता है। (१) सबसे मीठा बोलता है। (२) सदा परोपकार करता है।

प्रश्न—मनुष्य को परोपकार कैसे करना चाहिए ?

उत्तर—जैसे बादल जितना जल समुद्र से लेकर आता है वह सारा का सारा पृथ्वी पर बरसा देता है अपने पास कुछ नही रखता पृथ्वी हरी भरी हो जाती है उपजाऊ होती है हर प्राणी मात्र के काम आती है इसी तरह मनुष्य सौ हाथो से कमाए और हजार हाथो से दान करे जिससे जिसका कल्याण हो।

प्रश्न- सज्जन मनुष्य अपनी सम्पत्ति का व्यय कैसे करता है ?

उत्तर- जैसे वृक्ष अपना फल स्वय नही खाते, नदी अपना जल स्वय नही पीती दूसरों के उपकार के लिए होता है इसी तरह सज्जनो का धन परोपकार और कल्याण के लिए होता है।

प्रश्न—मनुष्य को अपने दोषो की जानकारी कैसे होती है ?

उत्तर—कोई भी मनुष्य अपनी भूल स्वय नही जान सकता, दूसरो की आख से अपनी भूल की जानकारी हो सकती है।

प्रश्न—क्या मनुष्य को दूसरो के अपराधो को क्षमा कर देना चाहिए?

उत्तर—दूसरो के अपराधो को क्षमा करना ही वीरता है। परन्तु उसके अपराधो को हमेशा भूल जाना ही महानता है।

प्रश्न—दूसरो के क्रोध से बचने का क्या उपाय है ?

उत्तर—जो मनुष्य क्रोध आने पर सहन करता है वह व्यक्ति दूसरो के क्रोध से बच सकता है।

प्रश्न—नास्तिक कौन होता है ?

उत्तर—जो ईश्वर पर विश्वास नही रखता वह नास्तिक नही परन्तु जो आत्म विश्वासी नही वह सबसे बडा नास्तिक है।

प्रश्न—मनुष्य को उन्नति प्राप्त करने के लिए क्या आवश्यक है।

उत्तर—जो व्यक्ति केवल दूसरो को उपदेश करता है वह उन्नति नहीं कर सकता उन्नति वही कर सकता है जो अपने आपको उपदेश करे।

—लक्ष्मी नारायण जी पोपली आर्य

बाल-विवाह विरोधी कानून को ठेंगा दिखाकर कई बच्चे विवाह सूत्र में बंधे

जयपुर २४ अप्रैल। विवाह मण्डप मे दूल्हा दुल्हन के वेश मे सजेधजे नन्हे मुन्नो से पण्डित जी फेरों की रस्म करवा रहे हैं। दूल्हे राजा नींद मे हैं और पण्डित जी बार-बार उन्हे जगा रहे हैं। परेशान दूल्हे राजा पण्डित पर टूट पडते हैं और पण्डित के लगातार नींद से जगाए जाने से झल्लाए दूल्हे राजा आखिरकार दहाड कर रोने लगते हैं।

ऐसा यह दृश्य एक ही नही अपितु हजारो की सख्या मे आखातीज १९ अप्रैल पर राज्य के कई हिस्सो मे देखने को मिला है। दूल्हे की उम्र कोई सात साल और दुल्हन की चार साल। इसी उम्र के आसपास के कितने ही बच्चे बाल विवाह का रोकने सम्बन्धी कानून को ठगा दिखाते हुए आखातीज पर विवाह सूत्र मे बंध। अनुमान है कि इनकी सख्या लगभग पच्चीस हजार होगी।

जयपुर से चालीस किलोमीटर दूर एक गाव नाम मलिकपुर गाव के थोडी दूरी पर ही एक खुले खेत मे रग बिरगा शमियाना तना है। दूल्हे राजा आईसक्रीम के लिए झगड रहे हैं। दूल्हे राजा को ललचाया जाता है। पहले पण्डित जी जैसा कहते है वैसे चक्कर (फेरे) लगाओ तभी आईसक्रीम मिलेगी। दूल्हे को विवाह से ज्यादा आईसक्रीम प्यारी है झल्ला कर बोला रहते दो मुझे नही करनी शादी। यह कहता हुआ दूल्हा तुनक कर चल दिए। दूल्हा दूसरी कक्षा मे पढता है। शादी के बारे मे कुछ नही जानता।

पास मे दूसरी ढाणी मे भी एक टैंटलगा है। लाउडस्पीकर पर मारवाडी विवाह गीत बज रहा है। दूल्हा बना हुआ कन्या एक कुर्सी पर बैठी है। हसी ठिठोला मे दूल्हा कमरे मे बधी कटार लेकर अपने हमउम्र साथिया के पीछे भाग रहा है।

किसी को कानून का काई डर नही। कई तो अपने दुधमु हे बच्चो की सगाई भी तय करने मे लगे है। कानून प्रिय कुछ दूल्हे की उम्र अठारह साल से ज्यादा बताते है दूल्हन दस साल की है मगर किसे फिक्र है। कुछ पढ लिखे लडके भी है बारात म। वे इन शादियो को अच्छा नही मानते पर घर परिवार समाज के आगे उनका क्या बिसात। दसवी कक्षा मे पढने वाला कामू ऐसे विवाह का विरोधी है। उसे विवाह की कुछ धु धली सी याद नही बचपन मे ही सब निपट गया था।

ज्यादातर लोग मानते हैं कि कम उम्र मे दहेज कम देना पडता है। शादी विधिवत निपट जाती है। बड पैमाने पर क्या पता कौन से दिन आए। एक बोझ से मुक्ति मिल जाती है। ठीक कोतवाली के सामने से तीन साल के दूल्हो की बारात निकाली लेकिन मुकद्दमा दर्ज नही।

इसी तरह बीकानेर कोटा जोधपुर आदि शहरा के आसपास इस दिन न जाने कितने बाल विवाह हुए। कही किसी तरह का विराध नही। बीकानेर मे पुष्करणा समाज मे बाल विवाह का प्रचलन है। पर इस बार इनकी सख्या काफी कम रही।

कोलायत के पास सियाणा गाव के सरपच हनुमान राम मेघवाल ने बताया कि यहा दूल्हा और दूल्हन को थाली मे बिठाकर या गोद मे लेकर फेरे डालने की रस्म नही के बराबर रह गई हैं। आखीज के दिन बीकानेर मे जगह जगह ट्रैक्टर ट्रालियो मे नाबालिग दूल्हे जगह जगह कन्या के घरो की तरफ जाते हुए मिले जिनकी उम्र दस साल से भी कम होगी।

बिश्नोई समाज बाल विवाह करने वालो का सामाजिक बहिष्कार करने लगा है। सम्भवत तभी यह प्रथा अब कम हुई है।

हाडौती सभाग मे इस परम्परा का खूब निवहन हुआ। छ वष से चौदह तक के बच्चा ने लडडू जलेबी और आईसक्रीम खाते हुए दाम्पत्य जीवन मे प्रवेश किया।

उदयपुर जिले मे बहुत कम बाल विवाह हुए। इस बार पहले की तुलना मे काफी कम बाल विवाह हुए। इसकी वजह शिक्षा के साथ स्वास्थ्य के प्रति बढी समझदारी प्रमुख कारण है। अब दो वर्ष से पाच वष के बच्चो की बजाए चौदह से सत्रह वष के दूल्हे दुल्हनें देखने को मिलती हैं। वैसे बाल विवाह रोकने के लिए नारदा एक्ट बना हुआ है लेकिन कानून का डर अब भी बहुत कम है।

शुद्धि समाचार

आर्य समाज शिकारपुर (बुलन्दशहर) में शुद्धि

दिनांक २४४८८ को जिला आर्य प्रतिनिधि सभा (रजि०) के तत्वावधान मे एक मुस्लिम परिवार ने आर्य समाज मन्दिर शिकारपुर जि० बुलन्दशहर मे यज्ञवेदी पर विधिवत् वैदिक धर्म की दीक्षा लेकर वैदिक (हिन्दू)धर्म मे प्रवेश किया। दीक्षा सस्कार जिला सभामन्त्री जी द्वारा सम्पन्न कराया गया।

नामकरण इस प्रकार हुआ —

पूव नाम		वर्तमान नाम
१—अब्दुल नईम	३१ वष	श्री नवीन कुमार
२—सायराबानो	१८ वष	श्रीमती कुसुमलता
३—गुड्डू	५ वष	चि० नरेन्द्र कुमार
४—राजू	३ वष	चि० राजेन्द्र कुमार

—विजयपालसिंह, मन्त्री

स्वधर्म में वापसी

श्री जौन महोदय जिनका परिवार पचास वष पूर्व आन्ध्र प्रदेश मे हिन्दू (आय) था।

गुलामी के काल मे जबरन धम परिवतन होकर ईसाई मजहब मे शामिल हो गये थे। उस परिवार का होनहार युवक जौन साहब वैदिक धम के उच्च सिद्धान्तो से प्रभावित होकर स्वेच्छा से यज्ञकी साक्षी मे अपने पुराने परिवार क धम वैदिक धम म वापिस आगये हैं। उनका शुभ नाम उनकी इच्छानुसार श्री जयप्रकाश आय रखा गया। तथा उनका शुभ विवाह कुमारी मन्जू आहूजा से सादगी पूण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

—मन्त्री

आर्यसमाज के समाचार

आर्य अनाथालय में श्री डा० राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी का आगमन
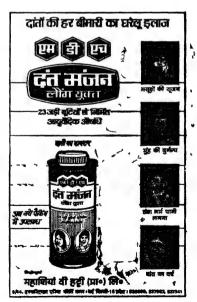
आर्य बाल गृह व आर्य कन्या सदन का ६५वां वार्षिकोत्सव बृहस्पतिवार, दिनांक १२ मई १९८८ को आर्य अनाथालय, पटौदी हाऊस, दरियागंज, के प्रांगण में सांय ५-३० बजे से मनाया जायेगा। कल्याण राज्य मन्त्री भारत सरकार, डा० राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी समारोह की मुख्य अतिथि होंगी।

—हमीरसिंह रघुवंशी
प्रबन्धक

उत्सव सम्पन्न

—डी० ए०वी० उच्च माध्यमिक विद्यालय अजमेर का १००वा वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ इस अवसर पर वर्षभर की विभिन्न शैक्षणिक सास्कृतिक साहित्यिक प्रतियोगिताओ मे भाग लेने वाले छात्रो को पुरुस्कार प्रदान किये गये।

—आर्यसमाज मरवधा का ६२वां उत्सव सम्पन्न हुआ जिसमे श्री रमेश चन्द प० जयप्रकाश बेतिया एव राजदेव आचार्य जी ने अपने विचार रखे।

—आर्य समाज नई बाजार बसनर भोजपुर का नवम् वार्षिकोत्सव दिनाक २५ मार्च से २७ मार्च तक मनाया गया जिसमें स्वामी सत्यानन्द जी एव श्री सुदर्शनसिंह का धर्मोपदेश हुआ, श्री वीरेन्द्र व इन्द्रदेव जी के भजन हुए।

—आर्य समाज शिवानन्द नगर मे दिनांक ७-४-८८ से धर्म प्रचार का कार्यक्रम मनाया गया जिसमे पं० कमलेश शास्त्री, पं० नरदेव जी भजनीक, स्वामी नर्मदा जी सरस्वती आदि ने भाग लिया।

—आर्य समाज गया ६५वा वार्षिकोत्सव ३१ मार्च से ३ अप्रैल तक मनाया गया जिसमे आचार्य रामानन्द शास्त्री, प० सत्यप्रकाश शास्त्री, पं० सत्यदेव शास्त्री वाराणसी स्वा० ब्रह्मानन्द सरस्वती आदि पधारे।

शोक समाचार

श्री इन्द्रराज जी को मातृशोक

उत्तर प्रदेश प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री इन्द्रराज जी की पूज्य माता श्रीमती हरदेवी जी का निधन २२ अप्रैल १९८८ को हो गया है। उनके निधन पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने गहरा दुःख प्रकट करते हुए। दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए कामना और शोक सतप्त परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट की।

आदिवासी क्षेत्र में यज्ञोपवीत संस्कार

पश्चिमी बंगाल के २४ परगना जिले मे श्याम नगर स्टेशन के पास काऊगाछी, आदिवासी पाड़े मे आर्य समाज के प्रचार का पुरोग्राम १७ एवं १८ मार्च को रक्खा गया स्वामी ब्रह्मानन्द नैष्ठिक, देहरादून, डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी बिहार पं० सत्यनारायण शर्मा कलकत्ता के प्रवचन हुए प्रभावित होकर दर्जनो आदिवासियो ने जनेऊ पहना और वैदिक धर्म की दीक्षा ली। असम के विद्वान श्री विद्युत वाहन के भी पुरोग्राम हुए।

साकेत आर्य समाज द्वारा निःशुल्क चिकित्सालय का संचालन

दिल्ली की प्रसिद्ध आयंसमाज साकेत में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने दिनांक २४ अप्रैल १९८८ को लगभग १०-११ लाख की लागत से तैयार निःशुल्क ऐलोपैथिक औषधालय का उद्घाटन किया। स्वामी जी ने इस अवसर पर सभी आर्य बन्धुओं को बधाई देते हुए कहा कि आर्यजनों को आपसी मतभेदों से ऊपर उठकर मानव मात्र की सेवा के लिए ठोस रचनात्मक कार्यक्रमों को हाथ में लेना चाहिए। आर्यसमाज साकेत का यह सुन्दर कार्य आर्य जनों के सुदृढ संगठन का प्रतीक है।

हैदराबाद-स्वतन्त्रता सेनानी दिवंगत

आर्यसमाज देवबन्द की यह शोकसभा श्री स्व० जगराम जी पुत्र रोडा जी के अकस्मात निधन पर शोक व्यक्त करती है। जगराम जी की पेन्सन लेने की बड़ी अभिलाषा थी। वृद्ध अवस्था में भी उनमें उत्साह था। आर्यसमाज की ओर से गुलबर्गा जेल से प्रमाण पत्र मगाकर सार्वदेशिक तथा राज्य और केन्द्रीय पेन्सन विभाग को नियमित रूप से आवेदन पत्र भेजे। ७५ वर्षीय जगराम स्वर्गवासी हो गये। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

आर्य समाज की गतिविधियां

डा० भवानीलाल भारतीय का दयानन्द शोध पीठ के अध्यक्ष एवं प्रोफेसर पद से औपचारिक रूप से अवकाश ग्रहण

तीन वर्ष के लिए पुनः नियुक्ति

चण्डीगढ । ४ अप्रैल विगत साढे सात वर्षों से पजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोध पीठ के प्रोफेसर एव अध्यक्ष पद पर कार्यरत आर्य समाज के यशस्वी विद्वान डा० भवानीलाल भारतीय अपने जीवन के ६० वर्ष तथा एक आदर्श शिक्षक जीवन की ३० वर्षीय कार्यावधि को पूरा कर औपचारिक रूप से ३० अप्रैल को अवकाश ग्रहण कर रहे हैं। किन्तु उनकी योग्यता एव शोध प्रवृत्ति को ध्यान मे रख कर विश्वविद्यालय ने आगामी तीन वर्षों के लिए उनके कार्यकाल मे वृद्धि कर प्रोफेसर पद पर ही उनकी पुन नियुक्ति की है। इस प्रकार वे १९९१ पर्यन्त दयानन्द शोध पीठ, के अन्तर्गत कार्य कर सकेंगे।

साथ ही पजाब विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० आर० पी० बाम्बा ने उन्हे होशियारपुर स्थित विश्वेश्वरानन्द विश्वबन्धु सस्कृत तथा प्राच्यविद्या सस्थान का आदरी निदेशक भी नियुक्त किया है जिसका कार्यभार उन्होने गत १६ मार्च को सम्भाल लिया। स्मरण रहे कि उपर्युक्त शोध सस्थान प्राच्य विद्या विषयक अध्ययन एव शोध का एक विश्वविख्यात केन्द्र है जहा विश्वविद्यालय की एम० ए० पी० एच० डी० आदि उपाधियो के पठन पाठन के अतिरिक्त द उच्चतर वैदिक शोध की व्यवस्था है तथा इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सहस्रो पाण्डुलिपियो तथा महत्वपूर्ण ग्रन्थोसे सुसज्जित विश्वेश्वरानन्द पुस्तकालय भी विद्यमान है।

नशाबन्दी के लिए विशाल शोभायात्रा

नई दिल्ली २३ अप्रैल। राजधानी दिल्ली मे आर्य समाज ने नशा बन्दी के पक्ष मे तथा दहेज व सतीप्रथा के विरुद्ध जोरदार अभियान शुरू किया है।

आर्य नेता स्वामी आनन्दबोध और पुरा महादेव ख्याति के स्वामी दिव्यानन्द ने आज करोलबाग क्षेत्र मे एक विशाल जलूस का नेतृत्व कर इस बुराई की ओर लोगो का ध्यान खींचा। क्षेत्र के सनातन धर्म सभा, विश्व हिन्दू परिषद् और व्यापार मण्डल के प्रतिनिधि भी इसमे सम्मिलित हुए। स्वामी आनन्दबोध ने बताया कि इस तरह के जलूस व सेमिनार दिल्ली के और भागो मे भी होंगे। हजारो स्कूली छात्र व छात्राओ ने भी नारे लगाते और हाथो मे पताकाए लिए इस शोभायात्रा मे सम्मिलित थे।

—चन्द्रमोहन आर्य
प्रेस सचिव केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्
दिल्ली प्रदेश

भूमिगत रहने वालों को स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन देने की मांग

नयी दिल्ली २६ अप्रैल राज्य सभा में भारत छोडो ' आन्दोलन के दौरान जो आदोलन कारी भूमिगत हो गए थे। उन्हें भा स्वतन्त्रता सेनानी पशन देने की माग की गयी।

श्री मोहम्मद रफीक किदवई ने कहा कि इन स्वतन्त्रता सेनानियों के लिए एक अलग वर्ग बनाना होगा क्योंकि वे सेनानी जेल जाने का प्रमाण-पत्र प्रस्तुत नही कर सकते। योजना के अनुसार सिर्फ उन लोगो को ही स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन दी जाती है जो जेल जाने का प्रमाण-पत्र प्रस्तुत कर सकते है। उन्होने कहा कि जो लोग इस दौरान भूमिगत हो गए थे वे भी स्वतन्त्रता सेनानी थे पर वे जेल जाने का प्रमाण पत्र नही दे सकते।

कांग्रेस (इ) के वी नारायण स्वामी जनता पार्टी की सरोजिनी महिषी तथा लोकदल के श्री रामअवधेश सिंह ने भी इस माग का समर्थन किया।

(२७ अप्रैल के मिलाप सन्देश से साभार)

श्री राजेन्द्र दुर्गा को पितृ शोक

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के पूर्व महामन्त्री श्री राजेन्द्र दुर्गा के पिता श्री लोढिन्दा रामजी का २२ अप्रैल १९८८ को स्वर्गवास हो गया।

२५ अप्रैल को आयोजित एक श्रद्धाञ्जलि सभा में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री पार्षद चौ० सूरतसिंह, पूर्व महानगर पार्षद डा० प्रशान्त वेदालंकार, श्री वीरभान वीर, प्रधान आर्यसमाज तिलक नगर एव अनेक धार्मिक व सामाजिक सगठनो के के प्रतिनिधियो ने श्री दुर्गा जी को भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। श्री लोढिन्दा राम जी दुर्गा अनेक सस्थाओ से सम्बन्धित रहें उनके कार्य में बढ़-चढ कर भाग लेते रहें। श्री दुर्गा में सेवा एव परोपकार की भावना कूट-कूट कर भरी थी।

श्री लोढिन्दा राम जी दुर्गा ७३ वर्ष के थे। उनके परिवार मैं धर्मपत्नी के अतिरिक्त ५ पुत्र एव २ पुत्रियां हैं।

—बिमल कान्त शर्मा

नेत्रहीन विद्वान् को वैदिक विषय में डाक्टरेट

देहरादून २२ अप्रैल। देहरादून के नेत्रहीन शोध-विद्वान् श्री रामनारायण रावत को गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय में १९ अप्रैल को हुए दीक्षान्त समारोह में डाक्टर आफ फिलासफी की उपाधि दी गई है। इनकी शोध का विषय था—'वैदिक तथा औपनिषद दर्शन एक तुलनात्मक अध्ययन (महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य में) विभिन्न विद्वानों ने डा० रावत के कार्य को उपयोगी बताया है और इसे पुस्तकाकार में प्रकाशित किए जाने योग्य बताया है।

जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा वैदिक साधन आश्रम तपोवन के मन्त्री प० देवदत्त बाली ने कहा है कि तपोवन के मेले मे यज्ञ की पूर्णाहुति वाले दिन श्री रावत जी का सार्वजनिक सम्मान किया जाएगा।

देवदत्त बाली, मन्त्री

आर्यसमाज, आसन सोल का वार्षिकोत्सव

आसनसोल आर्यसमाज के वर्तमान अधिकारियों एव सदस्यो के अथक प्रयास द्वारा इस समाज का ७८वा वार्षिकोत्सव समाज द्वारा सचालित डी०ए०वी० हायर सेकेन्डरी स्कूल के प्रागण में दिनांक २८ मार्च से ११ मार्च ८८ को सम्पन्न हुआ।

रामसागरसिंह, मन्त्री

आर्य वीर दल शिविर समाचार

१९८८ में आर्य वीर दल के शिविरों का वर्णन

जो अभी तक सूचनायें प्राप्त हुई हैं उन्हे केन्द्र से स्वीकृति प्राप्त हो गई। माननीय श्री बालदिवाकर जी हंस प्रधान संचालक द्वारा मनोनीत कृपया अपनी अपनी तैयारी व्यवस्था ठीक करें।

व्यवस्थापक जनपद तिथि स्थान

(१) श्री जयनारायण आर्य, अलीगढ़, २५ मई से ५ जून, हाथरस। (२) श्री जनेश्वर प्रसाद आर्य, सहारनपुर, २१ से ३१ मई तक, डी ए वी इन्टर कालेज अबरेडा। (३) श्री फूलसिंह जी आर्य, मेरठ, २५ मई से ५ जून तक डी० ए० वी० इण्टर कालेज टटीरी। (४) श्री धर्मेन्द्र शास्त्री, बुलन्दशहर, ३ जून से १२ जून तक, डी० ए० वी० इटर कालेज बुलन्दशहर। (५) श्री पूर्ण प्रकाश मित्तल, बिजनौर, २ जून से १० जून तक, आर्य समाज झालू। (६) श्री भास्कर आर्य, मुरादाबाद, १२ से २० जून तक, आर्य समाज अमरोहा। (७) श्री विद्याराम आर्य, रामपुर, २२ से ३० जून तक, आर्य समाज रामपुर। —मुख्य संचालक, सा आ वी द०उ०प्र०

समस्त हरियाणा में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन महत्वपूर्ण

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री प० बालदिवाकर जी हंस ने हमारे संवाददाता को बताया कि इस वर्ष समस्त हरियाणा मे चरित्र निर्माण आन्दोलन के अन्तर्गत युवा पीढी को सन्मार्ग दिखाने के लिए अनेक शिविरो का आयोजन किया जा रहा है। श्री उम्मेद शर्मा एम एस सी संचालक आर्य वीर दल हरियाणा और श्री धर्मदेव विद्यार्थी अधिष्ठाता आर्य वीर दल हरियाणा एवं श्री वेद प्रकाश जी रोहतक मन्त्री आदि महानुभावो के सतत प्रयत्नो का परिणाम है कि—

आर्य वीर दल हरियाणा के शिविरो का आयोजन निम्न स्थानो पर होगा। १६ मई से २१ मई तक माढवा भिवानी २२ मई से २९ मई तक नीमडवाली भिवानी २३ मई से २९ मई तक यमुना नगर अम्बाला तथा इन्ही दिनो गुडगावा मे भी ३० मई से ५ जून तक (करनाल) ६ जून से १२ जून तक पलवल (फरीदाबाद) जीद तथा नीलाखेडी (करनाल) १२ जून से १६ जून तक नरवाना (जीद) राज्य स्तरीय प्रतिक्षण शिविर का आयोजन १२ जून से २६ जून तक झज्जर (रोहतक) मे किया जायेगा।

मध्य प्रदेशीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का सफल आयोजन समाजों का अपूर्व सहयोग

विदिशा। शाजापुर अचल मे एक पाच दिवसीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर बैजनाथ धाम आगर मे लगाया गया जिसमे ६० आर्य वीर प्रशिक्षित हुए। शिविर प्रभारी क्षेत्रीय उपसंचालक श्री काशीराम आर्य रहे।

आगामी २२ मई से २९ मई १९८८ तक गुरुकुल होशगाबाद मे आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर गुरुकुल होशगाबाद को हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य मे आमन्त्रित किया गया है शिविर को अन्तिम दिन सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री प० बालदिवाकर हंस सम्बोधित करेगे।

नारायणगढ मन्दसौर मे आर्य वीर दल मध्य भारतीय प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन के साथ २ अपने कर्म कौशल का प्रदर्शन करेगे। इस क्षेत्र मे सर्वाधिक आर्य वीर दल की शाखाए चलती है।

—बाबूलाल एम ए, संचालक

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का व्यायाम शिक्षक शिविर १२ से २६ जून १९८८ ई० तक

स्थान—गुरुकुल झज्जर, जि० रोहतक हरयाणा

इस शिविर मे आर्य वीर दल की प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण या जहा शाखा लगती है वहा के आर्य वीरो को ही प्रवेश मिलेगा। प्रवेश शुल्क ५० रुपये। दल का गणवेश लाठी, नोटबुक, लगोट, काला कच्छा खाकी हाफ पैन्ट, सैण्डो बनियान, ब्राउन जूते, सफेद मौजे थाली, लोटा बिस्तर आदि साथ लाये। अपने आर्य समाज या आर्य वीर दल के मन्त्री प्रधान या अन्य प्रतिष्ठित सदस्य का संस्तुति पत्र भी साथ लावे। प्रवेश स्वीकृति के लिये सार्वदेशिक कार्यालय से पत्र व्यवहार करे।

—डा० देवव्रत आचार्य
उपप्रधान संचालक

उडीसा मे—श्री पृथ्वीराज शास्त्री द्वारा फूलवानी के पर्वतीय क्षेत्र मे शुद्धि के अवसर पर ओ३म् ध्वजारोहण।

उडीसा, फूलावनी क्षेत्र मे वैदिक धर्म मे प्रवेश करते हुए बन्धुओं द्वारा यज्ञोपवीत ग्रहण।

सम्पादक के नाम पत्र

सार्वदेशिक (रविवार २७ मार्च १९८८) के सम्पादकीय को पढकर आर्य जीवन की आवश्यकता पर आपके विचार विदित हुए, इस सामयिक सम्पादकीय के लिये आपको मेरा बहुत-बहुत धन्यवाद।

अब एक और निवेदन है मुझे आपसे आशा है आप मुझे निराशा नही करेंगे 'हिन्दू कब तक पिटत रहेगे ?' श्री विजेन्द्र शर्मा के इस युक्तियुक्त, सत्यपूर्ण व ओजस्वी लेख के लेखन के लिय उन्हे व सम्पादन हेतु आपको धन्यवाद। उनका पता पत्र मे हिन्दी मे दिया है, इस प्रकार है 'श्री विजेन्द्र शर्मा, ६ हण्डली क्लोस, पश्चिमी आस्ट्रेलिया जो कि हिन्दी मे होने के कारण पत्र व्यवहार मे कार्यहीन है आप इसे कृपया अग्रेजी मे आगामी पत्र मे मुद्रित करने का कष्ट करे मुझ पर इतनी कृपा करे। विदेश प्रवासी भारतीयो के पूर्ण पते (अग्रेजी मे) अवश्य दे जब कभी उनके लेख आप सम्पादित करे, जिससे हम पत्र-व्यवहार कर सके, एवम् भारत के बाहर वैदिक जगत के विषय मे हमे समाचार मिलते रहे। —रामकिशन, जोधपुर

राजा रणञ्जयसिंह का सन्देश

(पृष्ठ १ का शेष)

हैं जिनका स्थान मेरे हृदय मे है। इनकी कार्यशैली और क्षमता को मैं बखूबी जानता हू। मुझे विश्वास है इन दोनों हाथो में आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल है। इस अवसर पर उन्होने कानपुर से प्रकाशित पत्रिका "खद्दरधारी" में डा० प्रशस्यमित्र के उस लेख की अत्यन्त भर्त्सना की जिसमें मिथ्या मनघडन्त आरोप लगाकर प्रदेशीय सभा की छवि को धूमिल करने का कुत्सित प्रयास किया है। उन्होने सार्वदेशिक तथा उ० प्र० सभा के वर्तमान नेतृत्व के प्रति शुभ कामनाए प्रकट करते हुए अपना अमर आशीर्वाद प्रदान किया है।

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१९८७-१९८८) बिना टिकट भेजने का लाइसस न० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepay ment License No U 93 Post in D P S O on 13-5 1988

विवाह सम्पन्न

श्री स तोष कुमार सुमन सुपुत्र श्री कुलेश्वर यादव आर पी एच मोटीपाडा कटिहार बिहार की शादी कुमारी रेणु सुपुत्री श्री भूपेन्द्र नाथ यादव ग्राम महाराज गज टेमा मधेपुरा बिहार के साथ दिनाक ११ को वैदिक रीतीयानुसार विवाह सस्कार श्री राजेश्वर प्र० आय पु आयसमाज बरदेला पूर्णिया द्वारा सम्प न हुआ।

श्री राजेश्वर प्र० आय (पुरो
आय समाज बरदेला

आवश्यकता

आय समाज पखा रोड सी ३ ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली निम्नलिखित पदो के लिए ३१ मई १९८८ तक आवेदन पत्र आमन्त्रित है

१. आय पुरोहित नाम आयु शैक्षणिक योग्यताए पुरोहित पद का अनुभव जहा जहा काय किया उन समाजो का नाम विवाहित एव गुरुकुल के स्नातक को वरीयता अन्य विशेष विवरण। योग्यतानुसार मानदेय एव आवास की सुविधा समाज की ओर से दी जाएगी।

२ वैद्य धर्मार्थ औषधालय के लिए समाज सेवा मे अभिरुचि रखने वाले सेवा निवृत्त २ घण्टे प्रतिदिन के लिए (अ शकालीन) सुयोग्य मान्यता प्राप्त डिग्री प्राप्त वैद्य की आवश्यकता है। उचित मानदेय दिया जाएगा।

(रामकृष्ण सतीजा) मन्त्री
आय समाज प खा रोड सी ३ ब्लाक
जनकपुरी नई दिल्ली ११००५८

...नन्द सरस्वती जा की ...त्व पर आयोजित वेद ...यज्ञीय भाषण मे वेदो पर ...र विहगम दृष्टिपात करते हुए वेदो के महत्व पर प्रकाश डाला।

विषय प्रवतन करते हुए शोध निदेशक डा० फतहसिंह ने अथववेद के व्रात्यकाण्ड के प्रतीकवाद को स्पष्ट करते हुए बताया कि किस प्रकार इस काण्ड मे निहित जीवन दशन हमारे गणराज्य को वास्तविकता प्रदान कर सकता है।

—योगेन्द्र बधवा जन प्रचारमन्त्री

मांगलिक समाचार

दरभगा चिकित्सा महाविद्यालय के प्रक्षा गृह के प्रागण मे दिनाक १० ४ ८८ रविवार को साय ६ बजे से ९ बजे रात्रि तक सुनीता नाम्नी एक अनाथ लडकी का पाणिग्रहण सस्कार शुभकरपुर (दरभगा) निवासी स्व० राजेन्द्र सिंह के सुपुत्र आयुष्मान हीरानन्द सिंह के साथ पूणतया वैदिक विधि से आय समाज लहेरिया सराय के महामन्त्री श्री ध्रुव नारायण आय एव सजौली निवासी प० अजु न प्र० शास्त्री के पौरोहित्य मे सानन्द सम्पन्न हुआ।

—प्रधान आय समाज

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] वर्ष २३ अङ्क २३]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
ज्येष्ठ कृ० ७ स० २०४५ रविवार ५ जून १९८८

दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

श्रीमती सत्यवती शालवाले का निधन

आर्य समाज को अपूरणीय क्षति

वैदिक परम्परा से अन्तिम संस्कार सम्पन्न

दिल्ली २९ मई १९८८। दिल्ली की प्रसिद्ध समाज सेवी तथा दिल्ली आर्य महिला सभा की प्रमुख कार्यकर्त्ता श्रीमती सत्यवती शालवाले का आज दिल्ली के लोकनायक जयप्रकाश नारायण अस्पताल में प्रातः १० बजे ७० वर्ष की आयु मे निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार सायंकाल ६ बजे निगमबोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियो एव वैदिक विद्वानो के वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ सम्पन्न हुआ।

उनके सुपुत्र श्री ओंकारनाथ ने वैदिक मन्त्रो के साथ चिता में अग्नि प्रज्वलित की।

इस अवसर पर आर्य समाजो विभिन्न राजनीतिक दलो, हिन्दू महासभा तथा अन्य धार्मिक सगठनो के नेता तथा कार्यकर्त्ता और परिवार के सदस्य तथा सम्बन्धी बड़ी सख्या में वहा उपस्थित थे जिनमे महाशय धर्मपाल जी डा० सोमनाथ जी एडवोकेट, श्री रामनाथ सहगल, श्री सूर्यदेव आदि मुख्य थे।

श्रीमती सत्यवती शालवाले

माता सत्यवती शालवाले ने हिन्दी आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया था। पहले आप रोहतक मे सत्याग्रह करने पर गिरफ्तार हुई वहां एक मास जेल मे रहीं। गौरक्षा सत्याग्रह मे भी सक्रिय रूप से भाग लिया। एक महिला जत्थे का नेतृत्व करते हुए आपको गिरफ्तार करके दिल्ली की तिहाड़ जेल में रखा गया था। आप अपने पति श्री लाला रामगोपाल शालवाले के साथ प्रत्येक सामाजिक कार्यक्रमो मे पूरा सहयोग देकर कार्य करती रही। आपने दिल्ली आर्य महिला सभा को सक्रिय सहयोग प्रदान किया। आपका जीवन त्याग एव तपस्या का साक्षात् उदाहरण था।

वह विगत कई महीनो से बीमार चल रही थी। श्रीयुत लाला रामगोपाल शालवाले द्वारा सन्यास दीक्षा लेने के ठीक दो वर्ष के बाद वह साधनामय जीवन व्यतीत करते हुए परम पिता परमात्मा की गोद में चली गई।

सार्वदेशिक सभा तथा सम्पूर्ण आर्य जगत् दिवगत आत्मा की सद्‌गति की प्रार्थना करते हुए शोक सतप्त परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट करता है।

—सभा मन्त्री

अब कभी नहीं जाऊंगा स्वर्ण मन्दिर —एक श्रद्धालु

अमृतसर, २९ मई लगातार ३५ साल से चाहे आंधी हो, चाहे तूफान, गर्मी हो, चाहे सर्दी, "मैं प्रतिदिन स्वर्ण मन्दिर में प्रात. ४ बजे अपने घर से ३ किलोमीटर दूर नगे पाव माथा टेकने जाता था। बस आप्रेशन ब्लू स्टार या आप्रेशन ब्लैक थडर में जब कर्फ्यू लगा था तभी नही जा सका।" ये शब्द भवानी नगर मजीठा रोड के सरदार किशनसिंह (७५) के हैं। उन्होने आगे कहा कि अब जितने भी दिन जिन्दा हूँ स्वर्ण मन्दिर की तरफ कदापि नहीं जाऊंगा। आतकवादियो ने जिस तरह हरमन्दिर साहब मे शौच इत्यादि करके उसे अपवित्र किया है वह बात याद करके ही मेरी आंखो में आसू आ जाते हैं। धार्मिक प्रवृत्ति वाले सरदार किशनसिंह से जब बात की गई तो वह बहुत क्रोध में थे। उन्होने कहा, 'आतकवादियों ने वाहेगुरु कदे माफ नही करेगा।' इसदी सजा ओहना नू सच्चे पातशाह जरूर देवेगा।"

गुरुकुल होशंगाबाद का हीरक जयन्ती महोत्सव

हजारो की संख्या में प्रान्तभर से आर्य बन्धुओं ने भाग लिया

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा अनेक आर्य संन्यासियों तथा विद्वानों का पदार्पण

होशगाबाद २५ मई। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश विदर्भ के तत्वावधान मे गुरुकुल होशगाबाद का हीरक जयन्ती महोत्सव

(शेष पृष्ठ २ पर)

रूप कंवर के पति की मौत जहरीली चीज खाने से हुई

रूप कवर के पति माल सिंह की मृत्यु जहर खाने से हुई थी। इस मामले मे गिरफ्तार डाक्टर मगन सिंह ने पूछताछ के दौरान पुलिस को यह जानकारी दी आप जानते ही हैं कि रूप कवर पिछले साल चार सितम्बर को अपने पति की चिता के साथ ही जल गई थी।

डा० मगन सिंह उन दिनो अजीतगढ प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के इंचार्ज थे और उसने ही शुरू मे माल सिंह का इलाज किया था। वे इस परिवार के फैमली डाक्टर है। उसने माना कि माल सिंह का वही इलाज हुआ था जो शरीर मे जहर फैंसने के बाद किया जाना चाहिए। मगन सिंह से जब मामला नही सभला तो माल सिंह को सीकर अस्पताल ले आया गया जहा उसने दम तोड दिया। सीकर अस्पताल मे उस समय तैनात डा० मोदी ने मेडिकल रपट मे दर्ज भी किया है कि 'मालसिंह की मृत्यु का कारण जहरीला पदार्थ है।' खुफिया अधिकारी डा० मोदी की मेडिकल रपट की जाच विशेषज्ञो से जल्दी ही करवाएंगे।

पुलिस अधीक्षक (अपराध) गणपत राज माथुर ने बताया कि डा० मगन सिंह ने तब मालसिंह के पिता सुमेर सिंह भी इस सदेह के बारे मे बता दिया था। लेकिन सुमेर सिंह को भरोसा नही हुआ। सुमेर सिंह ने कहा कि उसने मेरे साथ खाना खाया था। हालाकि तब माल सिंह के लक्षण जहर खाने के ही दिख रहे थे। मगन सिंह ने यह भी माना कि 'माल सिंह काफी दिनो से परेशान था, लेकिन उसकी परेशानी का कारण मुझे नही मालूम।"

मगन सिंह ने यह भी कबूला कि रूप कवर के ससुर सुमेर सिंह को मैंने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र अजीत गढ मे फर्जी दाखिल बताया था, जबकि हकीकत मे वे उस समय दिवराला मे थे। मगन सिंह ने अस्पताल के रिकार्ड मे हेरा-फेरी कर चार सितम्बर को सुमेर सिंह को अस्पताल मे दाखिल दिखाया था। रूप कवर ने उसी दिन आत्मदाह किया था। उन्होने सुमेर सिंह को फर्जी दाखिल का पर्चा दोपहर बारह बजे तैयार करके अपने परिचित व्यक्ति को दी थी जिसने पर्ची अस्पताल मे देकर सुमेर सिर को फर्जी दाखिल दिखाया। मगन सिंह ने सुमेर सिंह को दाखिले का पक्का सबूत दिलाने के लिए अस्पताल के पास के एक मेडिकल स्टोर से दवाइयो की [illegible] मेडिकल स्टोर के मालिक से सच्चाई का पता लगा लिया है।

डा० मगन सिंह पिछले चार सितम्बर से फरार था।

(जनसत्ता से साभार)

प्रवेश सूचना,

[सन १९८८-८९]

डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान

(अन्तर्गत आर्य विद्या सभा डी ए वी कालेज प्रबन्धक समिति, नई दिल्ली)

पद — धर्म शिक्षक

प्रवेश योग्यता — एम ए (सस्कृत अथवा आचार्य। हिन्दी, अग्रेजी भाषा तथा वैदिक सिद्धान्तो का ज्ञान आवश्यक।

पाठ्यक्रम अवधि — एक वर्ष

सुविधाऐ — शिक्षा, आवास, पानी व बिजली सर्वथा नि शुल्क योग्य छात्रो को [illegible] रु० मासिक छात्रवृत्ति।

पाठ्यक्रम पूरा करने के बा[illegible] [illegible]र्थियो को डी ए वी शिक्षण सस्थाओ मे धर्म शिक्षक पद प[illegible] [illegible] जी टी वेतनक्रम मे नियुक्ति की गारण्टी।

केवल निष्ठावान आर्य समाजी ही पूर्ण विवरण (आयु, शैक्षिक योग्यता अनुभव आदि) सहित आवदन पत्र २० जून, १९८८ तक निम्न पते पर भेजें।

—प्रो० रत्नसिंह आचार्य
डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान
आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-११०००१

न्यायालय अतिरिक्त मुन्सिफ-७, गोरखपुर का महत्वपूर्ण निर्णय

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज तथा मन्त्री श्री मोहन तिवारी ही अधिकृत प्रधान व मन्त्री घोषित

मुकदमा न० १४१७/८६ भीमचन्द आदि बनाम डा० विनय प्रताप आदि न्यायालय अतिरिक्त मुन्सिफ-७ गोरखपुर के कोर्ट मे सस्थित था। उक्त वाद भीमचन्द्र आदि ने यह घोषित करने के लिए दायर किया था कि "वे लोग आर्य समाज गोरखपुर के मन्त्री तथा प्रधान हैं और उनके निर्वाचन को आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० के तथाकथित प्रधान कैलाशनाथ सिंह, तथा मत्री, राजपाल आर्य ने मान्यना प्रदान की है, तथा डा० विनय प्रताप आदि जो वर्तमान मे आर्य समाज गोरखपुर के अधिकारी हैं तथा जिनके निर्वाचन को आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० के मत्री के रूप मे श्री मनमोहन तिवारी ने मान्यता प्रदान की है—वे लोग अवैध हैं"। इस वाद मे उक्त भीमचन्द्र आदि ने सशपथ बयान देकर कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० के प्रधान कैलाश नाथ सिंह है तथा प० इन्द्रराज व मनमोहन तिवारी कुछ भी नही।

उक्त वाद मे विद्वान मुन्सिफ मजिस्ट्रेट ने दोनो पक्षो के बयान सुनने, सभी प्रमाणो को देखने तथा लगातार तीन दिन की बहस सुनने के पश्चात् अपना महत्वपूर्ण निर्णय दिया कि डा० विनय प्रताप तथा उनका अधिकारी मडल ही आर्य समाज गोरखपुर का वास्तविक वैध अधिकारी मडल है तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान प० इन्द्रराज तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी हैं।

अत आर्य जनता की सेवा मे सूचनार्थ निवेदन किया जाता है कि जिन समाजो एव सस्थाओ मे इस प्रकार के झूठे तथा धोखाधडी पर आधारित मुकद्दमे चल रहे हो, वे यदि आवश्यक समझें तो उक्त निर्णय की प्रति कार्यालय आर्य समाज गोरखपुर (बख्शीपुर) गोरखपुर से प्राप्त कर अपने वाद मे नजीर के तौर पर सम्बन्धित कोर्ट मे दाखिल कर सकते हैं।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

गुरुकुल होशंगाबाद

(पृष्ठ १ का शेष)

बडी सजधज के साथ कुल भूमि में महायज्ञ के मन्त्रोच्चारण के साथ प्रारम्भ हुआ।

प्रांतीय सभा के प्रधान श्रीवास्तव जी तथा माता कौशल्या देवी के सदप्रयासों से प्रान्त दूरस्थ स्थानो से हजारों आर्य नर नारी आबाल वृद्ध इस उत्सव में बडी श्रद्धा और प्रेम से शामिल हुए।

२५ मई को प्रात ९॥ बजे यज्ञोपरान्त स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने ओ३म् पताका फहराई, रात्रि को आठ बजे से नर्मदा घाट पर हजारों श्रोताओं को स्वामी जी ने सम्बोधित किया।

सभा की समस्त सस्थाओं की ओर से स्वामी जी का अभिनन्दन हुआ।

सम्पादकीय

जीवन का एक पहलू

हमारे कार्यों में कुछ व्यावहारिक दोष !

किसी भी कार्य के करने मे हमे अपने आचारण के साथ साथ व्यवहार पर भी ध्यान करना चाहिए। मनुष्य की बहुत कुछ सफलता सद्व्यवहार पर और विफलता दुर्व्यवहार पर अवलम्बित रहती है। अच्छे-अच्छे विद्वानो को भी कभी-कभी सभ्य समाज मे केवल इसलिए यथोचित सम्मान नही मिलता, कि वे व्यवहार कुशल नहीं होते। यहा पर मैं सक्षेप मे कुछ ऐसे उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ जिनसे मनुष्य की व्यावहारिक अयोग्यता प्रकट होती है और जिनके कारण समाज मे अप्रतिष्ठा के पात्र बनते हैं।

जब मनुष्य यह कहता है कि मैं तो सत्य ही बोलता हू तब उसे 'मुख-दोष" पर भी ध्यान देना आवश्यक है। वह तो कहते हैं कि—

"सत्य ब्रूयात्" सत्य बोले, पर आगे है, 'प्रिय ब्रूयात्" प्रिय बोलें, आगे मनु ने कहा है कि—

"न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्" सत्य बोलने मे यदि वह अप्रिय है तो नही बोलना चाहिए। कितनी व्यावहारिकता पूर्ण बात है।

महाभारत का युद्ध केवल द्रोपदी के मुख दोष का ही तो परिणाम था कि 'अन्धे के अन्धे ही होते हैं। कितना अव्यावहारिक सत्य है।

सापो के मुख मे यदि विष न होता, तो सम्भवत उन्हे लोग प्यार से पालते व कण्ठहार बना लेते। बहुत से मनुष्या के सम्बन्ध मे यह कहा जा सकता है कि यदि उनमे मुख-दोष न हो, तो वे सदा ही सबप्रिय हो सकते हैं।

वाणी के भी नाना भेद हैं। वाचालपना—व्यक्ति का अधिक बोलना भी उनके लिए सकट पैदा कर देता है तथा इससे बड़प्पन सिद्ध नही होता, अनावश्यक बोलना, दूसरे के लिए सिरदर्द बन जाता है। युक्ति युक्त बात समय के अनुसार कही जाय। बातूनी व्यक्ति का विश्वास भी नही किया जाता है। मनुष्य अपनी वाचालता से अपने व्यक्तित्व को बहुत ही हलका बना देता है। अत: मनुष्य मे अधिक बोलना भी व्यावहारिक दोष माना गया है।

दुर्मुखता—भी बड़ा दोष है ? कटुभाषिता, कुतर्क, परनिन्दा, प्रतिकूल-वादता, मिथ्यादोषारोपण, तुच्छ बातो को लेकर उछलकूद मचाना, लड़ाई झगड़े करना। धृष्टता से झूठ बोलना, सभ्य पुरुषो का अपमान करना आदि इसके अन्तर्गत आ सकते हैं। इन सब बातो से मनुष्य की दुर्जनता प्रकट होती है। दुर्वचन, मृदुभाषी न होकर व्यक्ति लोकप्रिय नही हो सकता। मिथ्या लाञ्छन और निन्दा से बोलने वालो के भीतर की गन्दगी का ही पता चलता है। कबीर के शब्दों मे—

> एक निन्दक के सीस पर कोटि पाप का भार।

वह दूसरो के पापो का बोझ अपने सिर पर लिए घूमता है। लोक मे अनादर ही पाता है।

अपनी दुर्मुखता से चारो ओर एक प्रतिकूल वातावरण बनाता है। ऐसे ऐसे वातावरण से पारस्परिक सद्व्यवहार नष्ट हो जाते हैं। कठोर वाक्यो और अनुचित बातो से उसके निकटतम व्यक्ति भी उससे दूर रहना पसन्द करते हैं। परिणामत

> जीभ तो कहि भीतर गई जूता खाय कपाल।

व्यावहारिकता मे मुखदोष भी गिरावट लाने मे एक दोष है। इसके अतिरिक्त भी अनेक दोष होते हैं जैसे—

वचने का दरिद्रता—बोलने मे क्या कजूसी थोड़ा बोलो सही बोलो उचित समय पर सही बोलने में चूक जाना, सोचते ही रहना, अनावश्यक मौन।

शुष्क और सारहीन वचन बोलना, मिथ्या आश्वासन देना, वादा करके पूरा न करना, अनावश्यक सारहीन बोलना, असामयिक प्रलाप, मिथ्या आश्वासन देना बदल जाना, चाटुकारिता, मिथ्या स्तुति, हा मे हा मिलाना, थोड़ी बात को बड़ी बनाना बात-बात मे सिद्धान्त डालना, हठ दुराग्रह पक्षपात करना, अनुचित आलोचना करना।

मनुष्य के व्यक्तित्व और व्यावहारिक जीवन पर इस प्रकार के दोषो का बुरा प्रभाव पड़ता है। इनसे बचकर चलने वाला इन्सान अवश्य ही सफलता की ओर अग्रसर होता है।

सामाजिक जीवन मे व्यक्ति का व्यावहारिक न होने से कितनी हानि होती है। हमारे कार्यों मे व्यावहारिक ज्ञान की कमी से कितनी गिरावट आ सकती है। आप कितने भी विद्वान या शक्तिशाली क्यो न हो, सद्-व्यवहार के बिना हमारी सफलता असदिग्ध है जीवन का व्यावहारिक पक्ष साफ सबल होना ही चाहिए।

आर्य समाज के प्रचार-प्रसार मे व्यावहारिक पक्ष पर हमे अवश्य ही ध्यान देना चाहिये। जो दोष ऊपर गिनाये हैं वह यदि हमारे प्रचारक मे हैं-- व्यवहार मे निपुण नही हैं तो हम जीवन मे अधूरे हैं।

हमारा व्यवहार पक्ष सही होना चाहिए। ●

आर्य समाज का राष्ट्रीय स्वरूप फिर उभरा

—अक्षदत्त स्नातक

आर्थिक राजनैतिक और अन्तर्राष्ट्रीय विषयो पर हमारे देश मे राजनैतिक पार्टिया व्यापक राष्ट्रीय हित मे नही, अपितु सकीर्ण दलगत दृष्टि से विचार निर्णय और कारंवाई करती रही है। आर्य समाज सदैव अपने सकीर्ण दृष्टि से नही अपितु व्यापक दृष्टि से विचार, निर्णय और कारंवाई करता है। आर्य समाज मे भिन्न-भिन्न राजनैतिक दलो के सदस्य अवश्य हैं, परन्तु वे सदैव सकीर्ण दलगत भावनाओ से ऊपर उठकर कार्य करते हैं।

इसी भावना का एक बार फिर प्रदर्शन १५ मई १९८८ को भारत की राजधानी मे देखने को मिला। जबकि हजारा आर्य समाज के कार्यकर्ताओ ने पड़ौसी परन्तु शत्रु देश पाकिस्तान के विरुद्ध भारत मे अलगाववादियो और आतकवादियो को समर्थन देने की कारंवाई पर अपना रोष प्रकट किया। पिछले ५ वर्षों से देश और पजाब मे जो नृशस हत्याकाड हो रहे हैं और जिसकी चरम प्रणिति स्वर्णमन्दिर मे हाल की पुलिस कार्यवाही के रूप मे हुई। उसका वास्तविक समाधान पजाब के आतकवादियो के समर्थक पाकिस्तान के प्रति अपना आक्रोश प्रकट करने के सिवाय कुछ नहीं बचा था।

हमारे देश के नेता और राजनैतिक दल इस सच्चाई को कभी भी नही पहचान सके या यू कहिए कि देश के पाकिस्तान समर्थक भारतीय नागरिको के वोटो को बटोरने के ख्याल से पाकिस्तान के विरुद्ध कोई विरोध प्रदर्शन नही किया। अन्य किसी हिन्दू सिख और सम्प्रदाय के सगठन ने, बौद्धिक व्यक्तियो ने छात्र और महिला सगठनो ने भी इस दिशा मे कोई साहस नही दिखाया। पाक दूतावास पर उस दिन जो प्रचण्ड प्रदर्शन आर्य समाज की ओर से हुआ उसकी सराहना और समर्थन देश के सभी वर्गों ने किया। सामूहिक विषयो पर जनमत को जगाना केवल आर्य समाज के कार्य क्षेत्र मे आता है। यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि शासक या विरोधी दलो के राजनैतिक आर्य समाज कार्यकर्ताओ ने इस ज्वलन्त प्रश्न पर अपने सगठन और व्यापक राष्ट्रीयता का पूरा प्रदर्शन किया।

आपरेशन ब्लैक थंडर

—प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष, हरयाणा रक्षावाहिनी

पुलिस तथा अर्धसैनिक बलो ने आखिर स्वर्णमंदिर को आतकवादियो से खाली करवा ही लिया, इसके लिये वे बधाई के पात्र हैं। कुछ खतरनाक आतकवादी मरे हैं और कुछ ने आत्म समर्पण किया है। कुछ लडाकुओ ने साईनाईड की गोलिया खाकर आत्महत्या भी की है। अनुमान लगाया गया है कि १० प्रतिशत के लगभग आतकवादी मारे या पकडे गये हैं। परन्तु जो बाहर रह गये है अन्धाधुन्ध बेगुनाहो का खून करने मे और अधिक तेजी से लग गये है। अब दूसरे गुरुद्वारो मे शायद आतकवादी नही मिल पायेगे। वे खिसक गये होगे। हो सकता है उनके कुछ शस्त्र और कागजात मिल जाये यह भी तुरन्त कार्यवाही करने से ही सम्भव हो सकेगा। एक ही स्थान पर अड्डा बनाकर बैठना आतकवादियो को महगा पडा है। वे सैकडो की सख्या मे एक जगह ही घेरा डालकर पकड लिये गये या गोलीबारी मे मारे गये। गुरिल्ला युद्ध करने वाले लोग अपने आक्रमणो के तौर-तरीके बदलते रहते है। अभी उनके पास पैसा और हथियार काफी मात्रा मे है और पाकिस्तान मे से अभी उनका आना रुका नहीं है। भारत और पाकिस्तान के सीमा सुरक्षा बलो की एक साथ गश्त लगाने का फैसला हमारे हक मे नही पडेगा, उसका उल्टा प्रभाव भी हो सकता है। भारत की ओर से न तो घुसपैठिये पाकिस्तान मे जाते है और न ही सीमाओ पर कमाने मे लगे भारतीय तस्कर पाकिस्तान मे पैसा या हथियार भेजते हैं यह काम तो पाकिस्तानी घुसपैठिये उनके और हमारे तस्कर मिलकर भारत के अन्दर ही आतकवादियो के लिये हथियार और पैसा भेजते है। भारत और पाक ने सुरक्षा बलो की एक साथ गश्त के कारण तो हमारी सीमा सुरक्षा बलो की गतिविधियो का पता पाकिस्तान वालो को लग जायेगा। इस अवस्था मे हथियारो तथा अन्य साधनो की तस्करी शायद और सरल हो जाये। भारतीय सीमा सुरक्षा बल के अधिकारियो ने ऐसी आशका प्रकट भी की है।

पाकिस्तान की नीयत ठीक नही है, वे जिन बातो को इन्कार कर सकते हैं वह कर देते मे और जहा अकाट्य प्रमाणो के रहते इन्कार करना कठिन हो जाये तो चुप्पी साध लेते है। गृहसचिवो की बात का अभी तक कोई ठोस परिणाम नही निकला है। केवल मीठी-मीठी बातो से काम नही चलेगा, कडवी बाते भी भारत को कहनी पडेगी और जरूरत पडने पर आखे लाल भी करनी पडेगी और फिर बाज न आये तो बदले म जो काम करना पडे वह भी कहना ही नही करना भी होगा।

जो तथाकथित नरम दल के अकाली सविधान की परिधि मे बात करने की कहते हैं, उनमें न तो आतकवादियो के सामने खडा होने का साहस है और न ही उनकी कोई विश्वसनीयता रह गई है। वे आतकवादियों की आड मे अनुचित मागे मनवाकर अपने जीवित रहने का बन्दोबस्त करना चाहते हैं। आतकवादियो ने सब गुरुद्वारो उनसे छीन लिए और अपवित्र तथा गुरुद्रोही कार्यक्रमो मे लगे हुए उन लोगो को तो कुछ कह नहीं सकते, सरकार जो गुरुद्वारो की मर्यादा की पुनर्स्थापना करने मे लगी है उससे ही दो-दो हाथ करना चाहते हैं। बादल स्वर्ण मन्दिर की ओर चलने लगे उन्हें गिरफ्तार कर लिया, तो बरनाला भी शहीदो के नाम लिखवाने के लिये ३०० साथियो को लेकर वहीं सब कुछ करने लगे। ये लोग अनुचित मांगे रखने मे आतकवादियो से कम नहीं हैं।

सतलुज-यमुना लिंक नहर

अकाली नेता लिंक नहर को दोबारा मिट्टी से भरने की बात कहते रहे, अब आतकवादियो ने उस नहर पर काम करने वाले मजदूरो को मार कर भगाने की ठान ली। मजदूर काम करके अपने परिवार का पेट पालने के लिए सैकडा हजारो किलोमीटर दूर चलकर आता है, मरने के लिए तो नहीं आता। आतकवादी नही, बादल के अनुयाई अकाली अबतक नहर दो बार तुडवा चुके हैं, और इनके काम मे भी आतकवादियो से मिले हुए हो तो कोई आश्चर्य की बात नही है। पजाब के राज्यपाल और उनके सलाहकारो तथा गृहमत्रालय को यह बात क्यो नहीं सूझी, कि लिंक नहर पर छेड़छाड़ हो सकती है। जो आश्वासन वे आज मजदूरो को दे रहे हैं, उन्होने मजदूरो की सुरक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं किया। मजदूरो के मन मे बचानी बात के भरोसा कैसे पैदा हो सकता था। इस नहर पर बनने वाले पुलों आदि का काम सेना को सौंपना पड़ेगा, और नहर को पक्का करने का काम भी सुरक्षा के पूरे प्रबन्धो के साथ करवाना पडेगा।

पाकिस्तान और उसके आकाओ के द्वारा प्रेरित और पोषित गुरिल्ला युद्ध को जीतने के लिए भारत को अपनी सीमाओ के भीतर ही कई लडाईया लडनी पडेगी। स्वर्ण मन्दिर क्षेत्र की लडाई हमने जीती है, परन्तु अभी तो कई लडाईया अलग अलग क्षेत्रो मे लडनी पडेगी। लिंक नहर के मोर्चे पर हमने मार खाई और हमको धक्का लगा है। जो लडाई सुरक्षा-बलो के बूते की है वह उनके द्वारा लडी जाये और जो उनके बूते की नहीं है वह सेना द्वारा। विभिन्न क्षेत्रो की कई छोटी बडी लडाईया जीत कर ही हम शत्रुओ द्वारा छेडे गये गुरिल्ला युद्ध को जीत सकेगे।

एक बात समझ लेने की है कि यह लडाई बहुत लम्बी हो चली है, यह जितनी और लम्बी होने दी जाएगी उसका लाभ शत्रु को मिलेगा। अब शत्रु के हथकडो की जानकारी हमको पूरी तरह हो चुकी है उस जानकारी के प्रकाश मे विस्तृत योजना बनाकर पूरी शक्ति के साथ हर क्षेत्र मे शत्रु की कमर तोडकर गुरिल्ला युद्ध को कुचलकर शीघ्र समाप्त करनी चाहिए।

संस्कृत को जन-जन तक पहुंचाने का बीड़ा

हैदराबाद, २७ मई (जनसत्ता)। सस्कृत को जन जन तक पहुँचाने के लिए हिन्दू सेवा प्रतिष्ठान के सस्कृत विभाग ने कोई कोर कसर नही छोडी है। इसे यहा केवल शिविरो मे ही नही सिखाया जाता, सस्कृत मे नुक्कड़ नाटको और हरिकथाओ के जरिये लोकप्रिय बनाया जा रहा है।

इतना ही नही बगलूर की सिटी बसो मे तो प्रशिक्षित शिक्षा सहयात्रियो से बातचीत तक सस्कृत मे करते हैं। ताकि बाकी यात्रियो का ध्यान सहज ही सस्कृत की ओर आकर्षित हो और उनमे अपनी इस प्राचीन भाषा के प्रति ललक पैदा हो।

अपने इसी उद्देश्य को पाने के लिए हिन्दू सेवा प्रतिष्ठान के सस्कृत विभाग ने सबसे पहले दस दिन का एक कोर्स शुरू किया। जिसमे 'सस्कृत बोलना सीखिये' कार्यक्रम के तहत एक शिविर लगाया जाता है। यह शिविर लगाया जाता है। यह शिविर सी एम कृष्ण शास्त्री चलाते है।

इस शिविर मे सस्कृत सीखने आए युवको को देखकर यह नही लगता कि सस्कृत मोटी-मोटी पोथियो मे दफन हो गई है। बल्कि यह लगने लगा है कि यहा यह भाषा घरो, स्कूलो और गलियो तक मे जीवंत हो उठी है।

३२ वर्षीय कृष्ण शास्त्री सस्कृत भाषा प्रचार समिति के आमन्त्रण पर इन दिनों यहा आए है। यह समिति २१ मई के सस्कृत [illegible] के लिए दस दिन का यह कोर्स चला रही है।

श्री शास्त्री को किसी बात का जरा भी गुमान नहीं है, कि वे बहुत से शिष्यों को सस्कृत सीखा रहे है। सस्कृत सीखने आए छात्रो के साथ उनका मधुर सवाद बना हुआ है। व इन छात्रो के साथ केवल सस्कृत साहित्य पर ही नहीं, आधुनिक विषयो भारतीय कारो की टेस्ट क्रिकेट या सोमन [illegible] के अभियान पर भी बतियाते है।

हिन्दू सेवा प्रतिष्ठान के सस्कृत विभाग ने पिछले सात सालों मे विभिन्न राज्यो मे तीन हजार से भी ज्यादा दस दिनों का सस्कृत सीखने के लिए कार्यक्रम चलाया है। इससे २४ हजार से भी ज्यादा लोगों में यह विश्वास जागा कि वे बिना किसी कठिनाई के इस प्राचीन भाषा को सीख सकते हैं।

सस्कृत विभाग ने इसके अलावा ऐसे ५०० घरों सस्कृत विद्यादान किया है जिसमे परिवार का हर सदस्य केवल सस्कृत [illegible] [illegible]

(शेष पृष्ठ १० पर)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति से संस्कृत बहिष्कृत क्यों ?

स्वामी [illegible]ानन्द सरस्वती वैदिक प्रवक्ता बाजना, मथुरा

विश्व में प्रचलित अंग्रेजी, उर्दू, अरबी, फारसी आदि एक मात्र सांकेतिक शब्दो (अक्षरो) पर आधारित है। इनकी लिपि उच्चारण, लेखन, बोधन आदि प्रारूपण एक मात्र 'संस्कृत भाषा' के ही स्वरो एव व्यजनो पर ही आधारित है। यदि इन भाषाओ से सस्कृत के स्वर एव व्यजनो को निकाल लिया जाय तो इन भाषाओ का परिकल्पित मठ स्वयमेव भूमिसात हो जाता है। इन विकृत पगु पराश्रित भाषाओ का दुरभिमान कितना उचित है ? ये तो इनके पिछलग्गुओ की बुद्धि पराकाष्ठा है। इन भाषाओ को महत्वपूर्ण समझने वाले कितने बुद्धिमान हैं ? एव विज्ञान तथा सत्य निष्ठा के प्रति कितने सतर्क हैं ? भारत की भारतीयता चू कि एक मात्र सस्कृत भाषा मे ही सन्निहित है—इस दृष्टि से भी ये कितने भारतीयता के पुजारी हैं—इसको समझना बहुत आवश्यक है। यदि ये भारत की प्राचीनता सस्कृति वाहक वैज्ञानिक निधि सस्कृत भाषा का विरोध एव उर्दू, अरबी का समर्थन व माग करते हैं तो इनकी साम्प्रदायिक, अराष्ट्रीय मनोवृत्ति नहीं तो और क्या है ? ये भी सम्भव है कि इनकी मागो के पीछे पृथकता वादी विदेशी षडयन्त्रो की प्रेरणा भी हो।

जो व्यक्ति भारतीयता रक्षा की दुहाई दे रहे हैं—वे ही सस्कृत भाषा को शिक्षा अनुसूची से बहिष्कृत भी कर रहे हैं। क्या वास्तव मे इनकी आस्था-निष्ठा भारतीयता के प्रति समर्पित है ? वे भूल जाते हैं कि भारत की प्राचीनतम सस्कृति-सभ्यता एक मात्र सस्कृत भाषी साहित्य मे ही सुरक्षित है—अंग्रेजी व उर्दू मे नहीं। अग्रेजी, उर्दू, अरबी, फारसी, रूसी आदि सभी भाषाऐ उस काल की देन हैं कि जब विश्व मे वैज्ञानिक 'सस्कृत भाषा' का प्रचार प्रसार शिक्षा क्षेत्र से लुप्त हो चुका था। 'सस्कृत भाषा' जो भारत की आत्मा है यदि ये अमूल्य धरोहर भारत से लुप्त हो गयी तो भारत का प्राचीनतम अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है। विश्वमें 'भाषा-विज्ञान' सम्बन्धी जब भी चेतना जागृत होगी—उक्त दशा मे भी विश्व के 'भाषा-विज्ञान' ऐसे स्वरो एव अक्षरो की खोज अवश्य करेंगे कि जो सृष्टि काल से आज तक स्वाभाविक रूप से मनुष्यो से उच्चारित होते रहे हैं। वे ही अक्षर सस्कृत मे आज भी प्रयुक्त होते हैं। साथ ही दृष्टव्य है कि नवजात (शिशु भी रोना, हसना एक मात्र सस्कृत स्वरो एव व्यजनो मे करता है। इस सूक्ष्म 'भाषा-विज्ञान' को समझना भी आवश्यक है।

इसी प्रकार से विश्व की सभी ध्वनिया भी सस्कृत-भाषा' मे प्रकट होती हैं—अन्य भाषाओ मे नहीं। सस्कृत भाषा यदि भारतीय शिक्षा क्षेत्र से बहिष्कृत कर दी जाती है तो भारत की सस्कृति-सभ्यता का सर्वथा लोप भी हो जाता है। इसके साथ ही भारत की प्राचीनतम वैज्ञानिक भाषा 'सस्कृत' रूपी निधि का कभी न कभी विदेशी करण अवश्य हो जायगा। अर्थात कोई भी देश इस संस्कृत भाषा को अपने देश की प्राचीनतम निधि सिद्ध करने में अग्रणी बन सकता है। क्यों कि इस उत्कृष्टतम वैज्ञानिक भाषा के माध्यम से प्रत्येक देश गौरवान्वित होना चाहेगा। जैसा कि जर्मन देश अप्रत्यक्ष रूप से सस्कृत भाषा का एव वैदिक साहित्य का उद्गम क्षेत्र एव विश्व की उत्कृष्टतम जाति 'आर्य' को अपनी प्राचीनता से जोड़ रहे है।

भारत की प्राचीनतम सस्कृति वाहक सस्कृत का विदेशी करण हो जाने से वैदिक सस्कृति साहित्य का भी विदेशी करण हो जायेगा। भारतीयो का प्राचीनतम गौरव विदेशियो के चगुल मे समा जायेगा। तब हम भारतीय सर्व गौरव सस्कृत-भाषा साहित्य को भारतीय निधि भी न कह सकेंगे। जर्मन, ब्रिटेन, फ्रास, अमरीका आदि इस ओर प्रयत्नशील हैं। वे अपने यहां सस्कृत विकास कर रहे है। जब कि भारत सरकार सस्कृति का खोटहित अपमान जनक बहिष्कार करना गौरव मानती है (जयपुरका पाक्षिक-पत्र लोक-शिक्षक तथा आर्य मित्र लखनऊ दिनाक १६-८-८८)। सस्कृत के विदेशी करण में सरकार स्वय योगदान दे रही है। भारतीयता के आरक्षत्व रक्षा का अर्थ संस्कृत एव उसकी सस्कृति की सेवा करना ही है।

जो व्यक्ति भारतीय सस्कृति का विकास एव उसकी प्राचीनता उर्दू, अंग्रेजी व अरबी के सयोग से मानते हैं वस्तुत उन्होंने भारत के प्राचीनतम साहित्य के दर्शन ही नही किये। यदि भारतीय प्राचीनता को दिग्दर्शित करने वाले साहित्य का दर्शन तथकथित शिक्षाविदो ने किया होता तो भारतीय सस्कृति निधि सस्कृत भाषा को बहिष्कृत न करते। आश्चर्य है कि विवेक शून्य शिक्षा शास्त्री एव राजनेता तथा प्रशासन भारत की गौरव प्रेरक प्राचीन निधि सस्कृत का बहिष्कार कर रहे है। यदि सस्कृत भाषा मे किंचित अवैज्ञानिक अनुपयुक्तता का आभास ही हुआ था, तो इस दृष्टि से राष्ट्रीय स्तर के भाषा वैज्ञानिको की एक शीर्षस्थ सभा का आयोजन किया जाता उसमे ही सस्कृत हिन्दी उर्दू, अग्रेजी आदि की वैज्ञानिक प्रारूपण का विश्लेषण होना चाहिए। तदोपरान्त ही निष्कासन करना चाहिए था। यदि सस्कृत भाषा मे किंचित अवैज्ञानिकता स्वरमाधुर्यता अक्षरा एव स्वरा का अभाव था तो राष्ट्रीय स्तर से ही निर्णायक होना चाहिए। मात्र साम्प्रदायिक तत्वो को प्रसन्न करने के लिए राष्ट्रीय निधि सस्कृत भाषा के साथ निन्दनीय अनैतिक खिलवाड करना एक मात्र गद्दारी ही है।

क्योकि भाषा विज्ञान की दृष्टि से उर्दू, अग्रेजी आदि भाषाये सर्वथा अनुपयोगी है। ये तो मात्र विदेशी दासता की ही सूचक हैं। भारतीयता की दृष्टि से फलक हैं।

भारतीय शिक्षाविदो की विवेक शून्य ऐसी मान्यता कि जिस विषय मे विदेशीपन की छाप विदेशियो द्वारा न लगायी जाय उस साहित्य व मान्यता को स्वीकार करना अनुचित है। 'ऐसी मान्यता भारतीयो के लिए अत्याधिक निराशा जनक एव उदासीनता ही है। राष्ट्र के शिक्षाविदो को प्रत्येक निर्णय भारतीयता की दृष्टि से लेना ही ये शब्द हैं। क्योकि विदेशो मे ऐसी किसी भी मान्यता को अपने शिक्षा क्षेत्र मे माध्य नही समझा जाता कि जिस पर विदेशीपन की छाप हो। भारत मे आज भी शिक्षा नीति निर्धारको ने भारत को स्थायी रूप से दासत्व पाश मे बाधने के लिए निश्चित किया था। वर्तमान ब्रिटिश शिक्षा के प्रारूपक 'टी बी मेकाले' ने भारत मे शिक्षा निदेशक नियुक्त होने के बाद एव अपने भारतीय प्रवास से लौटकर ब्रिटिश ससद मे सन् १९३० मे निम्न वक्तव्य दिया था—'यदि ब्रिटिश राज्य' को भारत मे अपने व्यापार दोहन के साथ 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' को औपनिवेशीय शासन का प्रतिनिधि बनाया है तो इसके लिए सुदृढ स्थायी आधार बनाना होगा। भारत मे प्रचलित 'वैदिक सस्कृत साहित्य' जो वहा शिक्षा का व्यापक आधार है—को उखाड फैंकना होगा। अन्यथा यह 'सस्कृत साहित्य' स्वादेशाभिमान बढा कर देगा ।

ब्रिटिश कम्पनी यहा अधिक दिन टिक न सकेगी। औपनिवेशीय स्थापना स्वप्न रह जायेगी। दुर्भाग्य से यदि इस भारतीयता प्रेरक सस्कृत साहित्य ने भारतीयो ने स्वदेशाभिमान जगा दिया तो ब्रिटिश जन जीवित स्वदेश लौट सकेंगे इसमे सन्देह है। अत प्रत्येक दशा मे वैदिक सस्कृत साहित्य भारतीया के माध्य मे हटाना आवश्यक है। ये सस्कृत भाषी साहित्य ईसाई समुदाय के लिए भी आक्रोश का कारण बन सकता है।'

ब्रिटिश शासको ने भारतीयो की मानसिकता का पश्चिमी करण करने के लिए ही सस्कृत भाषी वैदिक साहित्य को शिक्षा क्षेत्र से बहिष्कृत रखा था। साथ ही उन्होने भारतीयता विरोधी इस प्रकार का साहित्य भी लिख-वाया एव उसी को भारतीयो पर लम्बे समय तक आरोपित रखा। भारत मे शिक्षको की दृष्टि से अधिकाश शिक्षक जर्मन, फ्रास एव ब्रिटेन के ही व्यक्तियो को नियुक्त किया गया। ये वे लोग थे जो निर्धारित ब्रिटिश षडयन्त्रो के रूप मे भारतीयता से घृणा करते थे एव उनका प्रयत्न था कि भारत सदैव के लिए भारतीयता से वचित हो जाये। इसी दृष्टि से लाहौर तथा बनारस के महाविद्यालयो मे 'पुलनर' तथा गिरफत' जैसे मतान्ध ईसाइयो को नियुक्त किया गया। ये विदेशी व्यक्ति भारतीय छात्रो को इस प्रकार के विदेशी साहित्य को पढाते थे कि जिससे भारतीय स्वय अपनी भारतीयता से घृणा करने लगें।

साथ ही वे अपने को भारतीयता कहने मे हीनता अनुभव करें। ये साहित्य 'आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय' मे बैठकर एव वहा से प्रेषित करके विश्व के अनेक ईसाई पादरियो द्वारा सस्कृत साहित्य के रूप मे लिखा जाता

था। वो ही साहित्य आज भी भारतीय विश्वविद्यालयो मे प्रमुख सस्कृत भाषा पठन-पाठन सामिग्री के स्थान पर स्थित है। जिनमे प्रमुख विदेशी ग्रन्थ (१) वाट कैन टीच अस इण्डिया (२) वैदिक रीडर फार स्टूडेण्ट (३) वैदिक ग्रामर (४) वैदिक मैथोलोजी (५) वैदिक इण्डेक्स (६) कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया आदि।

भारतीय शिक्षा विदो की मान्यता आज भी पूर्ववत ही बनी हुई है यही कारण है कि भारतीयो को आज तक राष्ट्रीय स्वतन्त्रता प्राप्त नही हो सकी वर्तमान स्वतन्त्रता एकमात्र राजनैतिक व पशुवत शारीरिक दृष्टि से ही स्वतन्त्रता है। दुर्भाग्य से यदि सस्कृत भाषा का निष्कासन राष्ट्रीय शिक्षा नीति से हो जाता है तो भारतीय सर्वथा अन्ध कूप मे गिर जायेंगे। अपनी अन्तर्राष्ट्रीयता उत्कृष्टता की आशा भी खो देंगे। दुर्भाग्य से दि २१ अगस्त १९८७ लोकसभा मे गृहमन्त्री ने साम्प्रदायिकता निवारक विधेयक प्रस्तुत करते हुए 'पी एन हक्सर समिति' का सरकारी प्रस्ताव कि जिसमे १२ खण्ड हैं उसके छटवे प्रस्ताव मे कहा गया है कि—'उत्तर भारत मे त्रिभाषा सूत्र (उर्दू, अ ग्रेजी तब हिन्दी) को कठोरता के साथ लागू किया जाय।'

ताकि उर्दू भाषियो को अल्पसख्यक मुस्लिमो को प्रसन्न किया जा सके। क्या ऐसा ही कठोर पन अहिन्दी भाषी राज्यो मे सस्कृत एव हिन्दी के लिए अनुचित है ? सविधान की राज्य भाषा अनुसूचित सख्या आठ के विरुद्ध एक नयी सम्प्रदायिक लहर उत्पन्न नही होगी ? हिन्दी भाषी क्षेत्र का अल्पसख्यक समुदाय-८६ राष्ट्रीय हिन्दुओ से अधिक महत्वपूर्ण है ? सस्कृत भाषा मे ऐसा कौनसा दोष है कि जिसे पढना अल्पसख्यक वर्ग साम्प्रदायिकता समझता है। तथा पाकिस्तान की निर्मात्री उर्दू को अब भी भारत मे महत्व-पूर्ण समझा जाता है। क्या ही अच्छा होता कि भारतीय स्वतन्त्रता के साथ ही सस्कृत भाषा पूर्ण ऐतिहासिक निधि के रूप मे अनिवार्य शिक्षा अ ग के रूप मे स्वीकार कर लिया जाता है। साथ ही सभी प्रादेशिक भाषाओ को देवनागरी लिपि मे व्यवस्थित करके पढाते।

जैसा कि पडौसी देश नेपाल मे लगभग नौ भाषाये प्रचलित हैं। सभी की लिपि देवनागरी मे व्यवस्थित करके भाषायी समस्या का समाधान कर लिया गया है। सस्कृत भाषा के द्वारा प्रेरित लिपि 'देवनागरी' ही एक मात्र ऐसी है जिसमे विश्व की सभी भाषाओ को लिपि बद्ध किया जा सकता है ये विशेषताये विश्व की किसी भी अन्य भाषा मे नही है।

भारत के मुस्लिम समान रूप से उर्दू की माग कर ही नही सकते क्यो कि उनकी भाषाए प्रादेशिक रूप मे बटी हुई है। उदाहरणार्थ बिहार का मुस्लिम मगधी, भोजपुरी, अवधि आदि बोलता है। बगाली मुसलमान बगला बोलता है। असाम का मुसलमान असमिया बोलता है। उडीसा का मुसलमान उडिया बोलता है। कश्मीर का मुसलमान डोगरी ही बोलता है। इसी प्रकार उत्तरी भारत का मुस्लिम ब्रजभाषा, बुन्देलखण्डी, रुहेलखण्डी, मेरठिया आदि मे। हरियाणा का, पजाब का, इस प्रकार अपनी क्षेत्रीय भाषाओ को बोलता है। दक्षिण भारत मे मुस्लिम इसी प्रकार क्षेत्रीय भाषाओ से बधे हुए है। मात्र २ प्रतिशत साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के पाक प्रेरित मुस्लिमो के द्वारा यदि उर्दू की माग उठायी जाती है तो वैज्ञानिक दृष्टि के अतिरिक्त इनके अान्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्रो को समझना भी अनिवार्य है।

भारत का मुस्लिम चाहे वो असमी, केरली, बगाली व लक्षद्वीप का हो सभी को समान रूप से उर्दू भाषी सिद्ध करना कहा की समझदारी है ? आज भारत मे ऐसे लोग ही छाये हुए है जो साम्प्रदायिक एव पृथकतावादी तत्वो को प्रसन्न करने हेतु उर्दू अ ग्रेजी की आड मे सरक्षण दे रहे हैं। जो लोग दक्षिण भारत मे हिन्दी विरोधी लहरो का नेतृत्व कर रहे हैं वे ही अब उत्तर भारत मे सस्कृत भाषा विरुद्ध उर्दू एव अ ग्रेजी को पदासीन करा रहे हैं। ये कहते है कि 'हिन्दी किसी पर थोपी नही जायेगी।" अर्थात् अ ग्रेजी के साथ ही अब उर्दू भी थोपी जायेगी। ऐसा ही इन्होने शिक्षक प्रशिक्षण शिवरो का आयोजन करके उर्दू के अनिवार्य आरोपण का षडयन्त्र गुप्त रूप से प्रारम्भ किया है।

शिक्षको को बाध्य किया जा रहा है कि वे अनिच्छा के उपरान्त भी सस्कृत-विरुद्ध 'उर्दू' प्रत्येक छात्र को पढाये। चाहे उस क्षेत्र मे एक भी अल्प सख्यक मुस्लिम न हो। सभी को समान रूप से इस विदेशी भाषा के द्वारा आक्रान्त किया जाय। उर्दू शब्द का अर्थ ही आक्रामक सेना व फौज होता है। जिसका सम्बन्ध तुर्की से था। अब यही उर्दू भाषा अरब एव पाकिस्तान का सैन्य प्रतिनिधित्व कर रही है। अ ग्रेजी भी एक मात्र यूरोपीय सभ्यता वाहक है। यदि अ ग्रेजी उर्दू को और उसके साहित्य का अवलोकन निष्पक्ष रूप से किया जाय तो उसमे भारतीयता की एक भी बूद सम्भव नही हैं। अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्रो को यदि देखा जाय तो सन १९५३ ई० मे मास फरवरी 'अमरीकन आफ कास्टिय' के 'खतरे की घण्टी' नामक कार्यक्रम मे अमरीकी जनता के नाम एक उद्बोधन 'बिली ग्राहम' नामक ईसाई पादरी ने प्रसारित किया—

'Hour of decision—The hoary hindu rlligion aust go-

अर्थात् प्राचीन (भारतीय) हिन्दू धर्म शीघ्र नष्ट होना चाहिए।' यदि यह बोधन भारतीय आर्य धर्म नष्ट करने हेतु धन सग्रह का था। इस अपील से पूर्व ब्रिटेन, फ्रान्स, अमेरिका की विधिवत दिनांक ७-२-१९५३ को गुप्त मीटिंग भी हुई। जिसमे उक्त निर्णय किया (शेष विस्तृत पढे—नसबन्दी से राष्ट्र हत्या) गया था।

भारतीयता की दृष्टि से उर्दू, अ ग्रेजी की विकृत, विक्षिप्त मानसिकता प्रेरित, मदाध, साम्प्रदायिकता के लिए भारत माता की आत्मा देव वाणी 'सस्कृत' की बलि देना राष्ट्र घात करना है। यदि साम्प्रदायिक तत्व विदेशी प्रेरित से भारतीयता की सम्वाहक एव धारक सस्कृत की बलि लेने मे सफल हो गये। तो भारत का अस्तित्व स्वयमेव नष्ट हो जायेगा। सृष्टि काल से ही यदि भारत विश्व मे 'विश्व गुरु' उपाधि से विभूषित था तो देव वाणी सस्कृत ही इसका आधार है। भारतीयो के लिए आज भी गौरव की विषय है कि हमारी ही सस्कृत भाषा विश्व मे 'विश्व भाषा जननी' के रूप मे सम्मानित है। जब कि अ ग्रेजी, अरबी, पारसी, उर्दू ने भारतीयता को कलकित ही किया है। जो व्यक्ति भारत मे उर्दू एव अ ग्रेजी की मान्यता बनाये रखना चाहते है ये वस्तुत. भारत मे दासता के अवशेषो को सुरक्षित रखना गौरव मानते हैं। एव भारतीयता को तिरोहित करना चाहते हैं। ऐसे अराष्ट्रीय तत्वो के विरुद्ध आन्दोलनो की आवश्यकता है ताकि इन्हे भूमिसात।

यह सुशील मुनि कौन हैं—इन्हें किसने भिजवाया है ?

लगता है कि हम पढ़े-लिखे हिन्दुस्तानियो मे सोचने समझने और सवाल करने की क्षमता शायद खत्म हो गई है। क्योंकि अगर ऐसा न होता तो पिछले तकरीबन डेढ़ साल से जिस तरह पजाब की समस्या के सिलसिले मे बार-बार मुनि सुशील कुमार के रोल का जिक्र आता है। हम कम से कम यह सवाल तो जरूर पूछते कि आखिर यह मुनि है कौन ? इनका सम्बन्ध ऐसे कौन से सम्प्रदाय से है जिसने इन्हे इतना महत्व दिया है और उनकी शख्सियत आखिर इतनी महत्त्वपूर्ण क्यो और कैसे है कि आज उन्ही की सलाह पर केन्द्रीय सरकार पजाब समस्या के समाधान के लिये एक के बाद दूसरे कदम उठाती चली जाती है और बाद मे कहा जाता है कि यह कदम गलत था ?

यह मुनि सुशील कुमार जिनका कभी भी कोई खास चर्चा आज से डेढ साल पहले किसी से नही सुना था। हालत यह है कि खुद उनके अपने जैन सम्प्रदाय मे न उन्हे कोई महान नेता मानता है और न ही गुरू। मैंने जैन सम्प्रदाय के बहुत से लोगो से बात की है और उन्होने अपनी यह राय दी। फिर क्या वजह है कि जिस व्यक्ति का कभी किसी ने किसी भी सिलसिले मे, किसी भी कार्य क्षेत्र मे, चाहे वह सामाजिक हो, राजनैतिक, सास्कृतिक या धार्मिक-किसी बड़े या छोटे काम का कभी कोई चर्चा नही सुना और एक दिन यही सुनने मे आया कि मुनि सुशील कुमार केन्द्रीय सरकार का दूत बनकर सलाहकार की हैसियत से अमृतसर से दिल्ली, दिल्ली से अमृतसर चण्डीगढ और हिन्दुस्तान के दूसरे बड़े शहरो मे पजाब की बीमारी को ठीक करने की कोशिश करने वाले मशहूर डाक्टर के रूप मे घूमते रहते हैं और हिन्दुस्तान से बाहर इग्लैंड, अमेरिका और कैनेडा मे भी उनका बार-बार आना-जाना लगा रहता है।

न्यूजरसी में आश्रम

हम केवल यह जानते हैं कि वह एक ऐसे धार्मिक मुनि हैं जिनका अपना एक आश्रम अमेरिका मे न्यूजरसी मे मौजूद है। इसीलिये उनका एक पैर अमेरिका मे रहता है दूसरा लदन में तीसरा दिल्ली मे और चौथा अमृतसर मे।

हममे से क्या कभी किसी ने यह सवाल किया है कि आखिर न्यूजरसी अमरीका में बने मुनि के इस आश्रम को कौन और कैसे चलाता है ? अन पढ से अनपढ व्यक्ति भी यह जानते हैं जब भारत मे ही इस तरह के आश्रमो को चलाना काफी महगा सौदा है तो अमेरिका मे तो यह सौदा और भी महगा होगा। हमे यह जानने का पूरा हक है कि न्यूजरसी के इस मुनि आश्रम का सारा खर्च कैसे चलता है उनके कितने अनुयायी हैं ?

हम यह भी जानना चाहेगे कि आखिर मुनि सुशील कुमार मे कौन सी अनोखी राजनीतिक समझ-बूझ और दूरदर्शिता है। जिससे हमारे प्रधान-मन्त्री और सारी केन्द्रीय सरकार गहरे रूप से इतनी प्रभावित हो चुकी है कि मुनि जी के कहने पर एक के बाद दूसरे ऐसे महत्वपूर्ण राजनैतिक कदम उठाये जा रहे हैं। जिनका असर पजाब समस्या और प्रतिक्रिया के रूप में सारे हिन्दुस्तान पर पड़ रहा है।

खतरनाक सलाहों का सिलसिला

यह अजीब मजाक है, कि मुनि जी केन्द्रीय सरकार को सलाह देते हैं कि आप अमुक पाच ग्रन्थियो को रिहा कर दीजिए तो पजाब मे आतकवाद कम हो जाएगा, हत्याओ का सिलसिला बढता जा रहा है फिर मुनि जी अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर में आकर कुछ लोगो से बातचीत करते है और अब वापस आकर सलाह देते हैं कि पजाब के विषय मे नया फार्मूला तैयार होना चाहिए और पजाब को कश्मीर की तरह एक विशेष दर्जा देने की बात सोची जानी चाहिए।

मेरा मकसद सिर्फ यह कहने का है कि लोकतन्त्र मे हमारी चुनी हुई सरकार जिस तरह किसी एक ग्रुप या व्यक्ति को यह इजाजत दे दे कि वह सलाहकार और दूत के रूप मे एक राजनैतिक समस्या को सुलझाने का काम करने लगे तो हमे उससे यह जानने का पूरा हक है कि आखिर यह व्यक्ति है कौन ? इसे इतना महत्व क्यो और कैसे दिया जा रहा है ? अगर मुनि सुशील कुमार की हर सलाह गलत साबित होने की बजाय ठीक ही साबित होती तो मैं तब भी यही सवाल पूछती कि आखिर यह मुनि हैं कौन ही मे यही मुनि जी बैंकाक मे खालिस्तान के समर्थको जिसमे स्वय को 'खालि-स्तान के समर्थको जिसमे स्वय को 'खालिस्तान' का प्रेसीडेन्ट कहने वाले डा० जगजीत सिह चौहान भी शामिल थे, से एक लम्बी बातचीत की। इससे पहले बाहर इग्लैंड मे खालिस्तान के समर्थक विभिन्न दलो से बात-चीत कर चुके थे। हाल ही मे मैं जब खुद लन्दन मे थी तो मुझे यह तमाम जानकारी हासिल हुई थी।

मुनि सुशील कुमार के विषय मे हमे पूरी जानकारी चाहिए और सर-कार इनके नये फार्मूले अपनाने और लागू करने से पहले अगर ऐसा न किया तो यह भारतीय जनता के प्रति विश्वास घात होगा लेकिन अजीब बात यह है कि न ही जनता ने और न ही किसी विरोधी दल ने यह सवाल पूछा है कि आखिर यह मुनि सुशील कुमार कहा से भिजवाये गये हैं और क्यो ?

(प्रेस एशिया इटरनेशनल)

अन्धी गलियों का चक्रव्यूह खालिस्तान (७)

डा० सुरेन्द्रसिंह कादियान एम०ए०, पी०एच०डी०

नानक नाम चढ़दी कला

विश्व रंग मंच पर धर्म का आविर्भाव कब और कैसे हुआ सर्व सम्मति से किसी निष्कर्ष पर पहुंचना कठिन है किन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि सृष्टि रचना के समय से अध्यात्म आत्मा का शाश्वत रस रहा है। हर युग की आत्मा इस अमृत की खोजमें अनुसंधानरत रही है। हर कौम और देश में समय-समय पर ऐसे प्रतिभाशाली, मेधावी उदीयमान, शलाका पुरुष जन्म लेते रहे हैं जिन्होंने अध्यात्म की रस सरिता को प्रवहमान रखा है, कभी सूखने नहीं दिया। इस प्रयास में सैकड़ो मजहब, सम्प्रदाय और पंथ अस्तित्व मे आए। भले ही इन सबका मूल स्वर एक था, प्रयोजन भी एक ही था किन्तु उनका बाह्य स्वरूप युगानुकूल परिवर्तनशील रहा। इस कृत्रिम भेद में ही मनुष्य की आस्था प्रायः उलझती रही है और उसके दुष्परिणामों से मानवता सिहरती रही है। सिख धर्म आजकल इसीलिए सुर्खियो मे है। सन्त शिरोमणि गुरु नानक ने जिस धर्म को अमन की नींव पर स्थापित किया उस नींव के पत्थरों को उनके हिंसक अनुयायी आज उखाड़ रहे हैं और राजनीतिक स्वार्थों के लिए उन पत्थरों को सरे बाजार नीलाम कर रहे हैं। स्थिति इतनी बदतर हो चुकी है कि सुरजीतसिंह बरनाला के शब्दो में सरदार को गद्दार माना जाने लगा है। आखिर ऐसी नौबत क्यों आई ?

पन्थ का राजनीति में हस्तक्षेप

मजहब अथवा पन्थ की लगाम जब-जब राजनीति के हाथ मे आई है तब तब मजहब या पन्थ की ऐसी ही दुर्दशा होती रही है क्योंकि इन दोनो की प्रवृत्ति कभी समान नहीं रही लक्ष्य भले ही समान रहा हो। ईसाइयत और इस्लाम का रक्त-रंजित इतिहास इसका साक्षी है। बौद्ध धर्म और पौराणिक धर्म में जो दीर्घकालिक प्रतिस्पर्धा, वैमनस्य और संघर्ष चला उसकी पृष्ठभूमि में भी राजनीति कष्टदायक, राष्ट्रघाती और धर्महता काण्ड की पुनरावृत्ति आज पंजाब में हो रही है। पन्थ के नाम पर सिखो ने अलगाव का परचम फहरा कर अपनी अलग पहचान घोषित की, अलग जाति घोषित की, अलग धर्म घोषित किया, अलग संस्कृति घोषित की, अलग भाषा घोषित की, अलग प्रान्त घोषित किया और अब अलग निशान अलग विधान अलग प्रधान चाहते हैं। प्रचारित तो यह किया जा रहा है कि कुछ सिरफिरे ही खालिस्तान की मांग उठा रहे हैं लेकिन इन सिरफिरो को पन्थ पूरी शरण ही नहीं दे रहा बल्कि उन्हे प्रोत्साहित भी कर रहा है। खालिस्तान के संघर्ष में जो सिख मारे जा रहे हैं वे पंथ की दृष्टि में निर्दोष और शहीद हैं। इन तथाकथित शहीदों के परिवारों को पन्थ आर्थिक सहायता दे रहा है। जेलो मे बन्द अपराधियो के प्रति भी वह पूरी सहानुभूति प्रदर्शित कर रहा है। खालिस्तानियो के विरुद्ध यदि कोई सिख राजनयिक कठोर कदम उठाता है तो पन्थ उसके विरुद्ध हुक्मनामा जारी करता है तथा दण्डित करता है लेकिन निरपराध औरतों, बच्चो, बुजुर्गों तथा बुद्धिजीवियो को यदि कोई खालिस्तानी मार देता है तो पंथ कोई प्रतिक्रिया नही दिखाता। ऐसे निरंकुश और निष्ठुर पन्थ को किसी सन्त ने स्थापित किया होगा, सहज में आज विश्वास नही आता सिख पन्थ के मूल्य आज लड़खड़ा रहे हैं, धराशायी हो रहे हैं और अतीत मे जो उपलब्धियां इस पन्थ की रहीं वे धूलधूसरित हो रही हैं। समझ नही आता कि ऐसा करके सिख अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं या सर्वनाश का पथ निर्मित कर रहे हैं ? हिन्दू सिख अलगाव और मुस्लिम सिख एकता की गूंज भी इस संघर्ष में सुनाई पड़ रही है जो इस निष्कर्ष पर पहुंचाती है कि सिख अपनी मूलधारा से कट रहेहैं। इस स्थितिमें सिखधर्म को उसके सही परिप्रेक्ष्य तथा सन्दर्भ मे व्याख्यात करने की जितनी आवश्यकता आज अनुभव की जा रही है उतनी पहले कभी नहीं की गई।

सिख पन्थ का आविर्भाव

पूर्व प्रचलित मजहब जब अव्यवहार्य विचारो, निरर्थक रीति-रिवाजों, विनाश कारी रूढ़ियो, अन्धविश्वास और वाकप्रपञ्च के कुहासे से इतने आच्छादित हो उठते हैं कि उनका मूल स्वरूप ही ढक जाता है तो कोई न कोई महान् आत्मा अपने तप आत्म बल, विवेक और आध्यात्मिक प्रज्ञा से उस स्थिति पर विजय प्राप्त करने को लालायित हो उठती है। उसका प्रयास धर्म के मूल स्वरूप की पुनर्व्याख्या करना, उसमें नव स्फूर्ति एवं ओज उत्पन्न करना और उसे जन ग्राह्य बनाने का होता है। वैदिक ऋषियो की निष्कलुष सूक्तियां, उपनिषदकारो की विचक्षण रहस्यवादिता, बौद्धों का अद्भुत मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और आचार्य शंकर का विमुग्धकारी दर्शन इसी यात्रा के विविध पड़ाव हैं, मील पत्थर हैं, प्रकाश स्तम्भ हैं। इस प्रसंग में डा० एस० राधाकृष्णन के विचार द्रष्टव्य हैं –

"जब भी धर्म ने एक जड़ मतवाद का रूप धारण करने की प्रवृत्ति दिखाई तो अनेक आध्यात्मिक पुनरुत्थान और दार्शनिक प्रतिक्रियाएं उत्पन्न हुईं और उपलब्ध विश्वास कसौटी पर कसे गए, असत्य का खण्डन कर सत्य की संस्थापना की गई। हम बराबर देखेंगे कि जब जब परम्परागत विश्वास, काल-परिवर्तन के कारण अपर्याप्त हो जाते असत्य सिद्ध होते हैं और युग उनसे ऊब जाता है तो बुद्ध या महावीर, व्यास या शंकर जैसे युगपुरुष की चेतना आध्यात्मिक जीवन की गहराइयो मे हलचल उत्पन्न करती हुई जन-मानस पर छा जाती है। भारतीय विचारधारा के इतिहास मे निःसन्देह ये बड़े महत्वपूर्ण क्षण रहे हैं, आन्तरिक कसौटी और अन्तर्दृष्टि के क्षण, जब कि आत्मा की पुकार पर मनुष्य का मन एक नए युग में पग रखता है और एक नए साहसिक कार्य पर चल पड़ता है। दर्शन के सत्य और जन-साधारण के दैनिक जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध ही धर्म को सदा सजीव और वास्तविक बनाता है।

नानक दर्शन

इसी दार्शनिक और धार्मिक प्रक्रिया के अन्तर्गत पंजाब में सिख धर्म का आविर्भाव हुआ। इस धर्म के संस्थापक नानक का जन्म उस समय हुआ जब बाह्य आक्रमणों के कारण पंजाब क्षत-विक्षत था, उसका क्षात्र तेज बुरी तरह आहत हो चुका था,स्वाभिमान विदेशियों के पांव तले कुचला जा रहा था, धर्म का ह्रास, सत्य का विनाश और न्याय का विघटन हो रहा था, मानवता विदेशी आक्रान्ताओं के शिकंजे में फंसी दम तोड़ रही थी। विदेशी आक्रमणों की अनवरत शृंखला के कारण कृषि व्यापार, उद्योग चौपट हो गए थे। धर्म के नाम पर जो कुछ प्रचलित था वह रूढ़ि, अन्धविश्वास और वाक्-प्रपञ्च ही अधिक था। युग की इन चुनौतियों का सामना करने और शाश्वत वाणी एवं चमत्कारी कृत्यों से इतिहास को नया मोड़ देने के लिए ही नानक का अवतरण पंजाब में हुआ। उनका आगमन पंजाब के इतिहास की युगान्तरकारी घटना थी क्योंकि उन्होंने पंजाब के आहत जन मानस को दिलासा ही नहीं दी बल्कि उसे जीवन्त सन्देश देकर इस योग्य भी बनाया कि वह लौकिक आपदाओं को निर्भय होकर सह सके। विषमताओं से जर्जर हो चुके पंजाब को पुनर्जीवित करने के लिए नानक ने अध्यात्म की संजीवनी पिलाई तथा शोषित जन की अन्तर्दृष्टि एवं आत्म-बल प्रदान किया। नानक की सबसे महत्वपूर्ण देन यह रही कि उन्होंने धर्म को वाग्जाल-वाद से मुक्ति दिलाकर जन सामान्य में प्रतिष्ठित किया, उसे वाग्विलास का नहीं जीवन का विषय बनाया। पंजाब के घायल स्वाभिमान को उन्होंने बल प्रदान किया। पंजाब मे व्याप्त निराशा, कायरता को दूर करने का उन्होंने अहर्निश प्रयास किया। ईश वन्दना, साम्प्रदायिक सद्भावना, सदाचार, लोक कल्याण की भावना, प्रेम और अहिंसा-यही था नानक का शाश्वत सन्देश जिसने पंजाब का काया-कल्प कर दिया। (क्रमशः)

राष्ट्र-कल्याण व उत्थान बिना गौवध-बन्दी असम्भव

श्री रणवीरचन्द्र कपोल, हैदराबाद

आज जो यह विनाश के बादल चारो ओर उमण्ड रहे हैं बरस रहे हैं और वज्रपात बरसाते आ रहे हैं, इसमें आश्चर्य की कोई बात नही है। कर्म की गति जानने वाले इसके मूल कारण को जानते हैं, क्योंकि कारण के बिना कार्य नही होता। विषपान चाहे कोई जान-बूझकर करे अथवा अनजाने में उसका फल तो अवश्य होता है। पुण्य और पाप की परिभाषा, मीमासा में गौवध से बड़ा जघन्य पाप कर्म और अग्निहोत्र यज्ञ से बड़ा पावन पुण्यकर्म ससार में दूसरा कोई नही है। ससार में व्यष्टि और समष्टि दोनो रूप में कर्म का फल मिलता है। यह ससार कर्म भूमि है, कुरुक्षेत्र है।

आज इस घोर तमोगुणी-रजोगुणी विनाशकारी वायुमण्डल में सब प्रकार के कुकर्मों अर्थात् कुविचारो कुपदार्थों और कुशब्दो की तीनो प्रकार की घोर दुर्गन्धी भरी हुई है और सुगन्धी की सतोगुण की, मात्रा इसमे नहीं है। दुर्गन्धी, प्रकृति अथवा भौतिकवाद का प्रतिनिधित्व करती है इसमें तमस हैं अज्ञान-अन्धकार हैं, मृत्यु हैं और सुगन्धी आध्यात्मिकवाद का प्रतिनिधित्व करती है, इसमें प्राण है, प्रकाश है, जीवन है। महान पराक्रमकारी गोघृत द्वारा किये अग्निहोत्र यज्ञ की थोड़ी सी सुगन्धी बहुत बड़ी दुर्गन्ध को समाप्त करने में समर्थ होती है।

और ऐसे इस विकृत विनाशकारी वायुमण्डल में इन निर्दोष निष्पाप गो आदि पशुओ के नित्य घोर वध का कलिष्ट आर्तनाद पाहिमाम, पहिमाम पुकारता हुआ इस कुत्सित पिशाच ससार के सब सर्वनाशका सतत् आवाहन करता हुआ, कालको भयकरतर से भयकरतम में नित्य परिणत करता जा रहा है। पाप की प्रबलता में अब यहा (पाक बगला आदि सहित) समूचे भारत में यह सारे प्रकृतिक प्रकोप, दुर्दैव अधिकाधिक वर्तमान होते जायगे और यह सब प्रकार के विद्रोह विप्लव भी साथ-साथ भड़क उठगे। सेना में भी विद्रोह जागेगा और भारी अराजकता फैलेगी। सर्वत्र लूटमार और अग्निकांड होगे और घर-घर के आगे रक्त धारा बहेगी। तब विश्व-युद्ध अग्नि मे यह गो हत्यारा अनाथ ससार जल मरेगा। पश्चात जब गाय के परम पवित्र विषनाशक गोबर मूत्र के बिना, बम्बो द्वारा दग्ध भूखण्ड एव परम विषनाशक गोघृत के यज्ञो बिना घोर विकृत विष-भरा वायुमण्डल किमपि कदापि न सुधर पायगे, यह अनार्य ससार इस गाय की महति महिमा को जानेगा।

वेदाचार्यों ने इस गाय को अग्नि-पशु यज्ञ स्वरूपा, सम्पत्तियो की खान और पूज्यनीया अघन्या इत्यादि कहकर पुकारा है। इस गाय की मात्रा अर्थात् तुलना परिमाण और मूल्य मे ससार की कोई वस्तु कोई पदार्थ नहीं आता। इसका मूल्य आकना इसका अपमान और इसको पांव से छूना पाप अपराध माना गया है। राष्ट्र के इस परमधन, गौधन के यथावत रक्षण-सम्वर्धन का उत्तरदायित्व शासन पर सदा रहता है। ससार में मनुष्य अधिक होवें तो ससार नरक बनेगा और यदि अधिक होगी तो ससार स्वर्ग बनेगा। गोघृत के यज्ञो से वायु मण्डल सतोगुण प्रधान पराक्रमकारी बन जाता है। सर्वत्र समयानुकूल वृष्टि होती है और अन्नधन, विवेक और विज्ञान प्रकाश को प्राप्त होते हैं, और ऐसा सुसमय आ जाता है कि एक ओर नित्य सुख-सम्पत्ति की वर्षा होती है और दूसरी ओर स्वर्ग की हवायें चलती हैं। धर्म अर्थ काम और मोक्ष चारो फलों की सिद्धि हो जाती है। बड़ा ही अपार वर्णन है इस गोमहिमा का।

भारत में स्वतन्त्रता सग्राम के तत्काल भड़काव का कारण वस्तुतः यह गौवध ही था। कांग्रेस के अधिवेशनों में गौरक्षा-सम्मेलन अनिवार्य रूप से होता था और उसमें अपनी व्यथा और विवशता पर आंसू बहाते हुए पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति में ही इसका निर्वाण निराकर्ण सब मानते थे। लोकमान्य तिलक ने ऊगली उठा कर कहा था कि स्वतन्त्रता मिलते ही हम पांच मिनट के अन्दर एक कलम की नौक से इस गोवध को बन्द कर दगे। परन्तु इस अभिशाप भरी स्वतन्त्रता के आने पर यहां नितात विपरीत हुआ। परतन्त्रता काल में गोमास का निर्यात यहा नहीं हुआ था। स्वतन्त्रता आने पर देश के मनोनीत नेता प० जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधान-मन्त्री बने। वे गोधन से सम्बधित भारत के अत्यन्त विज्ञान वैभव भरे अतीतकाल से नितान्त अनभिज्ञ थे, और गोमास भक्षक योरप-वालो को ही इस विज्ञान के ज्ञाता, आविष्कारक मानते थे। अत उन्होंने निःशक बनकर, गोमास के अति निर्यात तथा यहां गोमास भक्षण के अनर्गल प्रचार द्वारा इस गौवध को उग्र रूप प्रदान कर दिया। और तब यहा अति घोर–पापम् अमगलम् विनाशम् का आरोपण प्रतिपादन हो गया। पश्चात् लाल बहादुर शास्त्री जी ने भी इस दिशा में उदासिनता ही दिखाई। इसके पश्चात् महा-मनीषा इन्दिरा गाधी ने भी तत्कालीन छिड़े गोरक्षा आन्दोलन को गृहमन्त्री द्वारा आश्वासन दिलाकर, रक्तपात के मध्य बलात दबा दिया। फिर धर्म की दाग देने वाली जनता पार्टी आई तो उसने भी इस गौवध को मान्यता ही दी और चोर चोरे मोसेरे भाई वाली बात सिद्ध कर दी। इस प्रकार यह गौवध यहा निरन्तर चलता बढता चला गया। यह गौवध ही निश्चय आज इस सारी विपत्ति-विनाश और भावी महाविनाश का मूल कारण तथा हेतु है, और शेष तो सब निमित्त कारण हैं। इन सब विद्रोह विपल्वो मे विदेशी हाथ भी निश्चय काम कर रहा है। अब ये सूखा बढ तूफान महा-मारी रोग सब आदि सब अत्याधिक बढगे और अन्न का आयात भी नही हो पायेगा।

और अन्त मे अब स्वामी दयानन्द के शिष्य रूपी आर्य समाज से सम्बोधित हो नम्र निवेदन करता हूँ कि दयानन्द के छेड़ गोरक्षा-आन्दोलन को पुन सचालन कर अपनी कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दें। समय तो बहुत निकल गया, पर चलो जब जागे तभी सवेरा। दयानन्द ऋषि थे, त्रिकाल द्रष्टा थे, उन्होंने अपनी प्रज्ञा-बुद्धि से देख लिया था कि गौवध के पातकी वायुमण्डल मे वेद प्रचार का प्रसार प्रतिपादन भली प्रकार नही हो पा रहा है तब उन्होने उस (सूक्ष्म से) गौवध के प्रति बड़ा सफल गोरक्षा आन्दोलन छेड़ा था। वे दो करोड़ प्रमुख व्यक्तियों के हस्ताक्षरों से युक्त आवेदन-पत्र लेकर स्वय महारानी विक्टोरिया के समक्ष जाना चाहते थे। अब शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को अपने इस उत्तर-दायित्व को, परम कर्त्तव्य को निभाने, बिना विलम्ब आगे आना चाहिए। यदि सरकार से भेट वार्ता द्वारा बात न बने तो अविलम्ब योजनाबद्ध गोरक्षा-आन्दोलन का भीषण शखनाद कर देना चाहिए। यह गोरक्षा का शखनाद धर्म का नाद है। यह नाद अन्य सब स्वार्थ स्वर भरे अधार्मिक नादों (आन्दोलनों) के मध्य बड़ा विचित्र कार्य करेगा। चाहे कल प्रलय आती है अथवा हजार वर्ष पश्चात् धीर जन, धर्मं जन, कर्त्तव्य पथ पर चलने से एक क्षण भी पग पीछे नहीं धरते।

आर्य समाज क्या मानता है

आर्य जगत के समाचार

आर्य वीर दल मराठवाड़ा का उपव्यायाम शिक्षक शिविर सम्पन्न

आर्य वीर दल मराठवाडा (महाराष्ट्र) द्वारा दिनाक २ से १४ मई, १९८८ तक किल्ले धारूर, जिला बीड मे आयोजित शिविर का दीक्षान्त समारोह १४ मई को सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता डा० बगे परली बैजनाथ ने की। इस अवसर पर १० आर्य वीरो को उप व्यायाम शिक्षक, १२ शाखा नायक और २८ आर्यवीर की उपाधि से विभूषित किये गए। शिविर की सुव्यवस्था मे डा० धर्मपाल जी तोष्णीवाल, प्रमोद अप्पा शेटे मण्डलपति, श्री जितेन्द्र प्रधान शिक्षक, नगर नायक श्री तोष्णीवाल एव अन्य आर्यवीरो का बहुत योगदान रहा। दीपावली के अवकाशो मे ११ से २० नवम्बर तक उदगीर मे शिक्षक शिविर लगाने की घोषणा की गई। इस शिविर मे प्रशिक्षण डा० देवव्रत आचार्य उप प्रधान सञ्चालक की अध्यक्षता मे दिया गया। शिविर का उद्घाटन प्रान्तीय सचालक डा० तानाजी राव द्वारा ध्वजारोहण के साथ किया गया।

मन्त्री—आर्यवीर दल महाराष्ट्र

डा० भवानीलाल भारतीय का सम्मान

स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली के सम्पादक डा० भवानीलाल भारतीय का ग्रन्थावली के प्रकाशक मेसर्स गोविन्दराम [illegible] दिल्ली के स्वामी श्री विजय कुमार ने १२००० की नकद राशि भेंट [illegible] सम्मान किया। भेंट रूप मे प्रदत्त यह राशि गत ११ मई को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने [illegible] डा० भारतीय जी को अर्पित की। इस अवसर पर श्री विजय कुमार जी, सभा मन्त्री श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री तथा उपमन्त्री प० पृथ्वीराज जी शास्त्री भी उपस्थित थे। स्वामी जी ने डा० भारतीय जी की साहित्य सेवा की भूरि भूरि प्रशसा की तथा उन्हे अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

संस्कृत का बीड़ा

(पृष्ठ ४ का शेष)

प्रदर्शन के लिए ऐसे पोस्टर भी छपवाता है जिनमे कम से कम १४ वाक्य सस्कृत म होते हैं। ये पोस्टर एक हफ्ताबाद दूसरी जगह (स्कूलो) मे प्रदर्शन के लिए रखे जाते हैं। सस्कृत विभाग ने सस्कृत को लोकप्रिय बनाने के लिए कोई कसर नही छोडी है।

सस्कृत को लोकप्रिय बनाने की दिशा मे कर्नाटक राज्य के मट्टूर गाव को चुना। यह गाव शिमोगा के नजदीक है। इस गाव की आबादी मे से ३० फीसदी लोग अब सस्कृत मे ही वार्तालाप करते हैं।

सस्कृत को लोकप्रिय बनाने के कार्यक्रमो के तहत ही इस भाषा को अब सिटी बसो मे यात्रियो के बीच बोलचाल की भाषा बनाने का अभियान भी छिडा हुआ है।

इस काम मे सस्कृत अध्यापको को लगाया गया है। दो प्रशिक्षित सस्कृत शिक्षक किसी एक तयशुदा दिन बगलूर की सिटी बसो मे सवार होकर आपस मे ही जोर जोर से सस्कृत में बातचीत शुरू कर देते हैं। इनमें से एक शिक्षक ठसाठस भरी बस के बारे मे अपनी प्रतिक्रिया सस्कृत मे इस तरह देता है— महायान समृद्धा' (बस खचाखच भरी है।) इस पर दूसरा शिक्षक आगे बढने के लिए कहता है—'अग्रे गच्छतु। इन दोनो के बीच सवाद जारी रहता है। जैसे एक शिक्षक पूछता है— केदावा निर्गच्छति ? (यह बस कितने बजे चलती है)। इन दोनो शिक्षको के सवाद के बस के बाकी यात्रियो मे से एक उत्सुकता जागती है। इस तरह कुछेक घन्टे के सफर मे ही य शिक्षक सस्कृत भाषा को जन-जन तक पहुँचाने का अभियान चलाते हैं।

सस्कृत विभाग ने आम लागो मे इस भाषा के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए सरल सस्कृत मे नुक्कड नाटकों, ड्रामो और हरिकथाओ का भी आयोजन किया है।

—जनसत्ता से साभार २७-५-८८

योग और हठयोग की सिद्धियां

वेदपथिक पं० धर्मवीर आर्य व्याख्यान भूषण

(१) योग और हठयोग की सिद्धियो से समृद्ध होने के लिए ईश्वर चिन्तन मे मन लगाओ।

(२) योग की सिद्धियो से समृद्ध हो जाने पर मोक्ष सुख का परम आनद योगियो को प्राप्त होने लग जाता है।

(३) हठयोग की सिद्धियों से समृद्ध हो जाने पर विश्व की काया पलट देने की क्षमता योगियो को अवधूतो को और महात्माओ महर्षिओं को प्राप्त हो जाती है।

(४) योग की सिद्धियो से समृद्ध हो जाने पर मनुष्य का मन विशुद्ध हो जाता है।

(५) हठयोग की सिद्धियो को प्राप्त कर लेने पर आत्म-बल, सकल्प-और मनोबल का स्वामी मनुष्य बन जाता है।

(६) हठयोग और योग कर्मयोग को करने वाले महात्मा बन त्रिकाल-दर्शी बन जाते हैं। यह भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास बोल रहा है।

(७) योग मे मन लगाने के लिए साधको को ओ३म् नाम का और गायत्री महामत्र का जप करते रहना चाहिए।

(८) मनोवाछित फलो की प्राप्ति के लिए योग और कर्मयोग की सिद्धियो को प्राप्त करो।

(९) योगी जन प्रति पल प्रमुदित रहने का अपना सहज स्वभाव बना लेते हैं।

(१०) कर्मयोगियो और हठयोगियो, महात्माओ और महर्षियो के दर्शन मात्र से पापी भी पवित्रात्मा बन जाते हैं। यह महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र कह रहा है।

(११) हठयोगियो का जीवन सयम, सदाचार के साचे मे ढल जाता है।

(१२) महात्मा और महर्षि जन पराई स्त्रियो को माता, बहिन और पुत्री की दिव्य दृष्टि से देखने का अपना अलौकिक स्वभाव बना लेते हैं।

(१३) महर्षियो का जीवन दिव्य दर्शनीय, पूज्यनीय और अभिनन्दनीय अनुकरणीय बन जाता है।

(१४) महात्मा और कर्मयोगी महर्षि जन मृत्यु के भय से मुक्त हो जाते हैं।

(१५) परोपकाराय सत विभूत्य" महर्षियो और महात्माओ का जीवन परोपकार के लिए विश्व हित के लिए सहर्ष समर्पित हो जाता है।

ऊपर दिनांक २४-४-८८ आर०एस० मगलम टाऊन के समीप कावनकाट्टूं ग्राम में शुद्धि के समय वस्त्र देते हुए।
नीचे टाऊन के समीप कोवनकोट्टूं ग्राम में शुद्धि सस्कार

प्रवेश सूचना

१—अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टकारा राजकोट-३६३६५० में नये विद्यार्थियो का प्रवेश आरम्भ। प्रवेश की अन्तिम तिथि १ जुलाई १९८८ है। आवेदन १५ जून तक स्थानीय आर्यसमाज द्वारा अपना परिचय पत्र साथ लगा कर भेज।

२—इस विद्यालय का उद्देश्य योग्य चरित्रवान समर्पित उपदेशक उपलब्ध कराना है।

३—विद्यालय का पाठ्यक्रम चार वर्ष का है। विद्यार्थियो को इस काल में ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ सस्कृत, दर्शन, उपनिषद, वेदादि साहित्य में अधिक से अधिक योग्य बनाने का प्रयत्न किया जाता है।

४—प्रवेश के लिये कम से दशम् श्रेणी सस्कृत के साथ उत्तीर्ण होना आवश्यक है। आयु १७ से २२ वर्ष तक और अविवाहित

५—विद्यार्थियो के आवास भोजन, शिक्षा आदि का सम्पूर्ण व्यय टकारा ट्रस्ट करेगा।

रामनाथ सहगल
मन्त्री

विदेशी ईसाई मिशनरियों पर कड़ी नजर रखने के आदेश

नई दिल्ली २१ मई केन्द्रीय गृहमन्त्रालय ने राज्यो को परिपत्र भेजकर विदेशी धर्म प्रचारको की गतिविधियो पर सख्त नजर रखने का निर्देश दिया है।

गृहमन्त्रालय ने देश के सीमावर्ती क्षत्रो में ईसाई पादरियो की देशद्रोही गतिविधियो में वृद्धि पर गहरी चिन्ता व्यक्त की है।

गुप्तचर सूत्रो के अनुसार विदेशी पादरी विशेष रूप से असम नागालैण्ड, मिजोरम, त्रिपुरा अर्थात् पूर्वोत्तर भारत मे ईसाई जन सख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। १९७१ से १९८१ तक की अवधि में असम में १३४ मणिपुर में ३०८ त्रिपुरा में १९८ और नागालैण्ड मे ईसाई १४२ प्रतिशत बढ हैं।

यदि सरकारी आकडो को ही सही मान लिया जाए तो भी १९६१ में देश में १९१५ विदेशी पादरी थे जिनकी सख्या बढकर १९८५ मे ३४१६ हो गई इसी तरह इन पादरियो को ईसाईयत के प्रचार एव प्रसार के लिए प्राप्त होने वाली धनराशि में भी वृद्धि हुई है।

१९६१ में ईसाई पादरियों को विदेशो से १६१ करोड रुपए प्राप्त हुए थे जो कि १९८७ मे बढकर ४७३ करोड रु हुच गए। सरकारी सूत्रो के अनुसार विभिन्न राज्य सरकारो ने ६ विदेशी ईसाई पादरियो को देशद्रोही गतिविधियो के लए भारतसे निकालने की गृहमन्त्रालय से सिफारिश की थी। पिछले वर्ष एक सयुक्त सचिव को रातोरात गृहमन्त्रालय से हटाकर जबरन छुट्टी पर भेज दिया गया क्योंकि उसने छह विदेशी ईसाई पादरियो को मध्य प्रदेश और बिहार से निकाले जाने के आदेश की पुष्टि कर दी थी। इन पादरियो के हाथ इतने लम्बे हैं कि इनके निष्कासन की फाईल अभी तक दबी पडी हैं। (पजाब केसरी २४-५-८८ से साभार)

आर्य विदुषी की विदेश यात्रा

स्त्री आर्य समाज वैदिक आश्रम अलीगढ की मन्त्रिणी श्रीमती डा० जानकी देवीधीर (पूर्व रीडर अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय) अमरिका कनाडा एव इगलैण्ड आदि देशो मे वैदिक धर्म की व्यक्तिगत प्रचार यात्रा पर गत सप्ताह गई हैं। वे दो महीना तक इन देशो के विभिन्न नगरो मे अपने शिष्यो सम्बन्धियो और परिचितो से सम्पर्क के साथ-साथ वैदिक विचार गोष्ठियो मे अपने व्याख्यान देगी व यज्ञायोजन मे भी भाग लेगी।

—हरप्रसाद आर्य दादा जी
प्रधान आर्य समाज वैदिक आश्रम अलीगढ

उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज जिला हरदोई उ० प्र० का वार्षिकोत्सव २२ से २८ मई १९८८ ई० तक बडी धूमधाम से मनाया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक प० ब्रह्मानन्दाय जी ने वानप्रस्थ आश्रम मे प्रवेश किया। प० केशव देव शास्त्री महोपदेशक सभा उ प्र ने दीक्षा दी। हजारो की सख्या मे प्रतिदिन लोग सुनने को आते रहे। आर्य समाज का काफी प्रभाव पडा।

—सुरेशचन्द्र आर्य प्रधान

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (५-६-१९८८) बिना टिकट भेजने का लाइसंस न० U ६३
R N 626/57 Licensed to post without prepay ment License No U 93 Post in D P S O on 3-6-1988

श्री लीलाधर गुप्ता का निधन

आर्य समाज पहासू के सक्रिय सभासद श्री लीलाधर गुप्ता का निधन १६ ५ ८८ को हो गया है समाज के कार्यों मे लगनशील दयालु व्यक्ति थे। सगठन की भावना से व्यक्तियो को प्रेरित करते रहते थे।

समाज मे १८ ५ ८८ की साधारण सभा की बैठक मे स्व० श्री लीलाधर गुप्ता के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए श्री महीपाल सिंह एल० टी० श्री भवरपाल सिंह श्री सोहनपाल शर्मा और प्रधान श्री सोहनपाल सिंह ने आर्य समाज का अपूरणीय क्षति कहा। इनके भाई श्री रमेशचन्द गोविल ने उनकी अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से ही किया और आर्य समाज की यज्ञशाला निर्माण हेतु दस हजार के इन्दिरा विकास पत्र खरीदकर दिए जो पाच वर्ष मे २० हजार रुपए हो जायेंगे। उपस्थित सभी सदस्यो ने ईश्वर से प्रार्थना की कि उनकी आत्मा को सदगति मिले और परिवार एव सभी सम्बन्धियो को साहस धैर्य प्रदान करे। ईश्वर की ऐसा ही इच्छा थी।

मन्त्री सन्तोष कुमार गुप्ता

शोक समाचार

दि० १९ ५ ८८ को प्रातः ६॥ बजे पूज्य स्वामी शम्भू जी महाराज के दि० १६ ५ ८८ के दिन आकस्मिक एव दुखद अवसान के उपलक्ष्य मे आर्य समाज शिवानन्दनगर (अमराईवाडी) के तत्वावधान मे शोक सभा सम्पन्न हुई। इस निर्वाणोत्सव मे अमराई वाडी विस्तार के श्रीमान सुखलाल जी आदि गणमान्य लोगो ने भाग लिया। दिवगत आत्मा की सदगति के लिए वेद मन्त्रों का पाठ हुआ तथा महिलाओ द्वारा भजन प्रार्थना का सुमधुर गान हुआ। अत्यन्त श्रद्धापूर्ण वातावरण मे यह निर्वाणोत्सव शान्ति पाठ के साथ समाप्त हुआ।

—कमलाप्रसाद आर्य प्रधान

... आर्य वीर दल, जीन्द

के तत्वावधान ... आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर ६ जून सोमवार से १५ जून बुधवार १९८८ तक स्थान—राजकीय प्राथमिक पाठशाला जीन्द शहर (नजदीक पुराना डाकघर/एस० डी० हाई स्कूल) मे लगाया जा रहा है।

सूचना

विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि कई व्यक्ति भारत मे नेपाल आर्य समाज के लिए गैर तरीके से पैसा चन्दा प्राप्तकर रहे है कृपया उन व्यक्तियो को ही नेपाल आर्य समाज के लिए चन्दा दिया करें जिनके पास नेपाल आर्य समाज केन्द्रीय कार्यालय काठमाण्डो या सार्वदेशिक सभा का पत्र हो।

यदि किसी ने धोखे से चन्दा वसूल किया हो तो रसीद की प्रतिलिपि के साथ चन्दा उठाने वाले का नाम नेपाल आर्य समाज केन्द्रीय कार्यालय, वेद विद्याश्रम वनकाली काठमाडो नेपाल को भेजें।

—प्रकाशचन्द सुवेदी, महासचिव

चुनाव समाचार

आर्य समाज सिलीगुडी श्री रतीराम प्रधान श्री सर्वेश्वर झा मन्त्री श्री सुभाष चन्द नकपुरिया कोषाध्यक्ष चुने गये।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] वर्ष २३ अङ्क २४] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र ज्येष्ठ शु० १३ स० २०४५ रविवार १२ जून १९८८ | दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

'दक्षिण भारत में आर्यसमाज के बढ़ते कदम

धर्मरक्षा महाभियान की भारी उपलब्धि

आज से आठ वर्ष पूर्व दक्षिण भारत के मदुराई से ६० किलो-मीटर दक्षिण से मीनाक्षीपुरम गाव में हरिजनो के सामूहिक इस्लामी करण की घटना ने पूरे देश को झकझोर दिया था। इस घटना पर सबसे पहले आवाज आर्यसमाज ने उठाई थी और यह आवाज बढते-बढते एक आन्दोलन के रूप मे सारे ससार में फैल गई थी।

सार्वदेशिक सभा ने धर्मरक्षा महाभियान आन्दोलन का सूत्रपात करके पूरे देशवासियो को अरब पैट्रोडालर के बल पर हरिजनो के इस्लामीकरण की घटना से अवगत कराया और मीनाक्षीपुरम् में ऐतिहासिक आर्य महासम्मेलन करके इस्लाम में दीक्षित लोगों को पुन वैदिक धर्म मे वापस लाकर दक्षिण भारत को महर्षि दयानन्द के जयघोषों से गु जायमान कर दिया। सार्वदेशिक सभा ने मदुराई को दक्षिण भारत के लिए प्रचार का केन्द्र बनाया। मीनाक्षीपुरम मे एक बडा भारी भूखण्ड खरीद कर वहा दयानन्द वैदिक विद्यालय और यज्ञशाला का निर्माण कराया गया। मदुराई केन्द्र का सचालन आयसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री एम० नारायण स्वामी(वानप्रस्थ) को सौपा गया, जो हिन्दी, अग्र जी सस्कृत तथा दक्षिण भारतीय भाषाओ के ज्ञाता है।

सार्वदेशिक सभा द्वारा अब तक कई लाख रुपया दक्षिण भारत मे वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में खर्च किया जा चुका है। आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश और आर्यसमाज मद्रास का भी सहयोग सभा को बराबर प्राप्त रहा है।

सार्वदेशिक सभा ने अभी हाल ही में २० हजार रुपया मीनाक्षी-पुरम् के विद्यालय के मरम्मत हेतु भेजा है।

श्री एम० नारायण स्वामी ने पूरे तमिलनाडु में अनेक कार्य-कर्त्ताओ की नियुक्ति करके क्षेत्रीय आधार पर आर्यसमाज के प्रचार प्रसार व शुद्धि के कार्यक्रम को तेजी से आगे बढाया है। अब तक उनके प्रयत्नो से कई हजार लोगो की शुद्धि हो चुकी है।

अभी मई मास मे मदुराई मे ६ और टूटीकोरिन मे २४ ईसाइयो की शुद्धि उनके द्वारा हुई है। इस समय मीनाक्षीपुरम में श्री अनन्तराम सेगन, कन्याकुमारी में श्री द्र०थम, रामानाथपुरम् में श्री नागराजन, प-माकु डी (एमनेश्वरम) में श्री राजाराम आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता के रूप मे काय में लगे हुए हैं। अब तक दक्षिण भारत मे अनेक स्थानो पर आर्य समाजो की स्थापना हो चुकी है।

आशा है २०वी सदी के अन्त तक दक्षिण भारत में सैकडो आर्य समाज स्थापित हो जायेंगी।

धर्मरक्षा महाभियान के प्रणता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान सावदेशिक सभा, वरिष्ठ उपप्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश और डा० अमरेश आर्य अन्य आर्य नेताओ के साथ कई बार दक्षिण भारत का प्रचार दौरा कर चुके हैं। ●

आचार्य रामानन्द शास्त्री का निधन

बिहार सभा का एक स्तम्भ ढह गया

आय जगत् के प्रसिद्ध विद्वान आचाय रामानन्द शास्त्री का २ जून १९८८ को उनके गाव में हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया निधन के समाचार से आयजगत् को गहरा आघात पहुँचा है। आचाय जी सावदेशिक सभा के साथ वर्षों से सम्बद्ध रहे और वे धर्माय सभा के धर्माधिकारी के पद पर भी रह चुके थे। वे सस्कृत फारसी हिन्दी व भोजपुरी भाषा के प्रकाण्ड विद्वान थे। मारीशस सम्मेलन मे मारीशस का जनता ने उनके भाषण को बहुत पसन्द किया था। पिछले दिनो ही उनका सावजनिक अभिनन्दन समारोह आर्यसमाजो की ओर से किया गयाथा। जीवन के अन्तिम समय से पूव प्रति-निधि सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री के साथ उन्होने बिहार के अनेक क्षेत्रो का दौरा भी किया था। वहा से जब वे अपने गाव पहुँचे तो वे फिर हमेशा के लिए आय जगत से अलग हो गय।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने इस महान विद्वान के देहावसान पर गहरा दुःख प्रकट किया। उन्होने पूरे आय जगत् की ओर से दिवगत आत्मा की सद्गति की प्राथना करते हुए शोक सतप्त परिवार के प्रति इस महान वियोग पर हार्दिक सवेदनाए व्यक्त की।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

नारायण गढ़ में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन

शोभायात्रा का अनुपम दृश्य

१५१ तोरन द्वार बनाकर आर्य नेताओं का भव्य स्वागत

नारायणगढ ५ जून।

रतलाम से १२० किलोमीटर की दूरी पर नारायणगढ (जि० म दसौर) मे मध्य भारतीय आय प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रान्तीय आय महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। हजारो आय वीरो ने बड उत्साह भरे वाता वरण मे शहीद मेघराज की याद मे उक्त सम्मेलन मे भाग लिया

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

अकाल तख्त के मलवे में डेढ़ सौ कंकाल निकलने की सम्भावना

श्री उज्जवलसिंह सैनी का कथन

अमृतसर ६ जून। प्राप्त समाचार के अनुसार अकाल तख्त के मलवे मे से करीब १५० शव निकलने की सम्भावना है। एक अन्य उच्च पुलिस अधिकारी का कहना है कि स्वर्ण मन्दिर में आपरेशन ब्लैक थंडर के दौरान मन्दिर परिसर में पड़े अकाल तख्त के मलवे से अनेक कंकाल मिले हैं।

आतंकवादियो से पूछताछ के दौरान जो रहस्योद्घाटन किया है वे चौका देने वाला है और अगर यह रहस्योद्घाटन सही है तो इस मलवे में डेढ सौ से अधिक लाशें निकलनी चाहिये।

जनवरी १९८६ में अकाल तख्त की कार सेवा की आड़ में भिण्डरावाले की संस्था दमदमी टकसाल के जरिए स्वर्ण मन्दिर पर कब्जा होने के तुरन्त बाद ही आतंकवादियो ने परिक्रमा के कमरो में निर्दोष लोगो की हत्याओ का सिलसिला शुरू कर दिया था।

पहले लाशों को परिसर में बहने वाले गटर में फैंक दिया जाता था।

महानिरीक्षक श्री के. पी. एस. गिल ने २५ के करीब लाशें निकाली थी।

आतंकवादियो से पूछताछ के दौरान रोंगटे खड़े कर देने वाला एक तथ्य सामने आया है वो यह कि एक आतंकवादी महिला निछत्तर कौर ने कम से कम दो दर्जन महिलाओ को घोर अमानवीय यातनायें देने के बाद मार डाला। इन सभी महिलाओ की लाशो को भी मलबे ने दबा दिया गया।

समाज सुधार

हमारे {गीत तो गाओ, बड़ा आनन्द आयेगा।
ये वैदिक धर्म अपनाओ, बड़ा आनन्द आयेगा॥
बनाया है शिवालय जो, जलाते दीप नित उसमें।
जहाँ रहते हो दिन और रात, अंधेरा छा रहा उसमे॥
कलह निज घर का मिटाओ ॥ १ ॥ बड़ा···

बनाये अपने मन्दिर मे, सुगन्धी ही सुगन्धी है।
मगर भगवान के मन्दिर में, दुर्गन्धी-दुर्गन्धी है॥
ये मादक द्रव्य विसराओ ॥ २ ॥ बड़ा···

नही खाती कभी मूरत, उसे जाते खिलाने को।
अनेको तड़पने मानव, भटकते दाने-दाने को॥
भोग भूखो को दिलवाओ ॥ ३ ॥ बड़ा···

मूरतो के लिए ऊंची, इमारत हैं खड़ीं देखी।
गरीबो के गुज्जर करने को, टूटी झोपड़ी देखी॥
बेहोशो होश मे आओ ॥ ४ । बड़ा···

मजाने जै ... ओ यदि, निज घर सजाओगे।
सदाचारी ... स्वसन्तानें बनाओगे॥
सदा सतसग मे आओ ॥ ५ ॥ बड़ा···

मुसलमां और ईसाई, दिनों दिन बढ़ते जाते हैं।
धर्म निरपेक्षवादी, होसिला इनका बढ़ाते हैं॥

—अयोध्या प्रसाद बेधड़क, आर्योपदेशक

नागालैण्ड, मिजोलैण्ड, गोरखालैण्ड !!! और अब डांगलैण्ड

महाराष्ट्र राज्य के नासिक जिले में कलवण तथा बागलाण पेठ तालुका व यहां के वनवासी भाग के संलग्न ही गुजरात का पूरा डांग जिला है। इस परिसर में क्रिश्चन मिशनरी तथा द्रव्य पर कार्य कर रहे क्रिश्चिन पंथ प्रचारक अपना कार्य यहां पर बड़े जोरो से कर रहे हैं। यहां के अशिक्षित तथा आर्थिक दृष्टिकोण से दूरबल वनवासी इनके प्रचार से क्रिश्चन होते जा रहे है।

महाराष्ट्र व गुजरात के समुद्री तट से लेकर अरुणाचल प्रदेश में इन क्रिश्चनों ने अपनी धर्मान्तिरण की कार्यवाही गत २० सालो से अधिक तेज कर दी है। केन्द्र शासन भी इनके (क्रिश्चनो के) अन्तिम उद्देश्य को नजर अंदाज करके इन्हे प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सहायता करते रहे है।

ईसाई भी इनकी जरूरतें पूरी करके इन्हें ईसाई बना लेते हैं। इस पूरे क्षेत्र को ईसाई बनाने हेतु अमेरिका ने इसे खरीद सा लिया है। इस लिए एक सस्था की स्थापना भी की गयी है। एक कनेडीयन दाम्पती करोड़ों रुपये खर्च करके लोगो का धर्मान्तिरण करने मे जुटे हुए हैं। वे लोग इसे 'डांगलैण्ड' कहते हैं।

एक तालुका के लिए वेतन पर धर्म प्रचारक रखे गये है। ये प्रचारक छोटे छोटे कबिले के मुखियां को घूस लालच देकर ईसाई बनाते है। बाद मे पूरा कबीला ईसाई बन जाता है।

धर्मान्तिरण की संख्या पर इन्हें अधिक पैसे बक्शीश दिये जाते हैं। इन सभी प्रचारकों की बैठक सटाणा ग्राम में नियमित रूप से होती है। इस बैठक में धर्मान्तिरण के बारे मे चर्चा होती है एवं योजना बनाई जाती है।

यहां के ईसाइ प्रचारक लोगो के अज्ञान का लाभ उठाते हैं। अस्वस्थ पीड़ित व्यक्ति को दवा देकर ठीक किया जाता है पर इन रोगियों को बताया जाता है कि इन्हे प्रभु यीशू ने ठीक कराया है। लोग इस पर विश्वास रखते हैं। फिर उन्हें आसानी से ईसाई बनाया जाता है।

इसी कारण यहां के वासी अपनी पूर्व सस्कृति, उपासना पद्धति यहां तक के अपने राष्ट्र एव राष्ट्र का इतिहास तक भूल चुके हैं। गत २५ दिसम्बर को यहां के हर एक ईसाई व्यक्ति को केनडा से एक पत्र मिला है जिसमें लिखा है यहा के कार्य को देखते हुए अमरीका ने यहां १५० ईसाई धर्मशाला खोलने के लिये चन्दा देने का निश्चय किया है तथा हर एक को उसके कार्य के लिए १०००/- रुपये देने का निर्णय लिया है। केनडा के चर्च आफ नार्थ इण्डिया ने यह प्रचार का कार्य हाथ मे लिया है। ईसा के चित्र वाली बड़ी बडी तसवीरे यहा हर जगह चिपके हुए दिखाई देते है। गुजराती मे भी बहुत ईसाई साहित्य यहां प्रचारित है।

यहा के प्रत्येक घर मे कुछ अमूलाग्र बदल सा छाया हुआ है। घर-घर मे से ईसा के अतिरिक्त अन्य सभी महापुरुषो अथवा देवी देवताओं की तसवीरे लोगो ने घर से निकाल बाहर कर दी हैं।

लोग विवाह अन्य सस्कार आदि सभी संस्कार ईसाई पन्थ के अनुसार करते है। रविवार गुरुवार तथा विशेष पर्व सब ईसाई मत के अनुसार मनाए जाते है। नागालैण्ड, मिजोलैण्ड, गोरखालैण्ड के बाद यदि पृथक डांगलैण्ड की मांग की गई तो कोई आश्चर्य नही होगा।

आर्य महासम्मेलन

(पृष्ठ १ का शेष)

दिल्ली से सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, हैदराबाद से डा० अमरेश आर्य, प्रान्तीय सभा के प्रधान श्री गांधी, पं० राजगुरु शर्मा, श्री जगदीशप्रसाद वैदिक व श्री यशपाल आर्य आदि अनेक सन्यासी महानुभावों एवं भजनोपदेशकों ने वहां पधारकर सम्मेलन की शोभा बढ़ाई। ५ जून को सायंकाल शोभा यात्रा में हजारों आर्य वीरों ने भाग लिया। नगरवासियों ने १५१ तोरण द्वार बनाकर आर्य नेताओं का अभूतपूर्व स्वागत किया।

सम्पादकीय

आत्मवंचना क्या है

अपने को क्यों धोखा दे रहे हो

मनुष्य की सदा यह दुर्बलता रही है कि वह अपनों को ससार मे सबसे बड़ा उच्चादर्श वाला मानता है साथ ही कि मैं निर्दोष हूँ और अन्य लोगो मे कोई न कोई दोष अवश्य है एक मात्र मैं ही सच्चा हू मुझमे ही बुद्धि अधिक है शेष मानव मूर्ख हैं जो कुछ मैं समझता हूँ वही प्रमाण है अन्य नहीं। यह सब मन के धोखे हैं, आज इस प्रकार के व्यक्ति है जो इस बात के शिकार हैं। उन्हे अपनी अयोग्यता का ध्यान नही।

किसी धर्म गुरु की भाति ऐसे व्यक्ति सदा-उपहास के पात्र ही बनते हैं। जो अपनी कमजोरियो पर ध्यान नही देते हैं।

किसी ज्ञान दुर्विदग्ध को देखिये, ज्ञान दुर्विदग्ध वह है जो अल्पज्ञ होकर अपने को सर्वज्ञ मान लेता है। ऐसा व्यक्ति अपने मे अनेक गुणो को और दूसरो मे नाना दोषो की कल्पना करके स्वय बहुत चतुर बनने की चेष्टा करता है। वस्तुत ऐसा व्यक्ति दुनिया को अपने को ही ठगता है। इसे ही आत्मवचना कहते हैं।

परिणामत जो बिच्छु काटने पर झाड़ने का मन्त्र नही जानता, परन्तु साँप के पिटारे मे हाथ देता है। ऐसा व्यक्ति अपने से वो ठगा जाता है। हम अपने अभिमान मे दूसरो को बुरा-भला कहकर बदनाम करते है क्या कभी उन्होने अपने गले हाथ डालकर देखा है कि श्रीमान आप कितने पानी मे हैं।

मैं एक ऐसे मूर्ख नही महामूर्ख को जानता हू जो दर्जा चार तक पढा है और अपने को आचार्य लिखकर स्वामी दयानन्द की कोटि मे मानता है, सुन्दर वस्त्र पहनकर, योग का ढोंग रचकर योगी राज का परम पद प्राप्त कर सब पर गलत प्रभाव जमाता है लेकिन कितने दिन ? यह जोकर का अभिनय कितने दिन तक चलेगा। जो जानते हैं वह ऐसे व्यक्ति का उपहास करते हैं।

परन्तु कोई बार ऐसे मूर्ख, अपनी मूर्खता को समझना तक नही है लेखन—भाषण मे भी अपनी मूर्खता को छिपाकर ऐसा व्यक्ति नही जान पाता। पढे लिखे व्यक्ति की भाषा बोल चाल-लेखनादि मे शिष्ट आचार मय होगी। लेकिन मूर्ख अपनी अशिष्टता की भाषा को ही पाण्डित्य समझता है।

यहा भी दोष हमारा है कि ऐसे महामूर्ख को बढावा गलत भी हमी लोगो ने दिया है। आज वह व्यक्ति जोश के साथ होश खो बैठा है। थोडे दिन ऐसा व्यक्ति प्रतिष्ठा पाता है पर व्यक्ति की पहचान पर मनोवाञ्छित प्रतिष्ठा व सफलता नही मिलती है। धोती की ताक मे वह अपनी लगोटी भी गवा देता।

आत्मवचना का कटु अनुभव एक नकली धोखेबाज नेता से मिला "जिसकी रस्सी जल गई पर ऐंठन बाकी हैं" इसी को दम्भ कहते है। अर्थात् जो व्यक्ति जैसा न हो वैसा अभियान और विज्ञापन करना। जा व्यक्ति अज्ञानता मे जैसा न हो वैसा दिखाना है वह अपने साथ पूर्ण विश्वासघात करते है।

कुछ व्यक्तियो की नकली दूकानदारी कुछ ही देर चलती है, जो व्यक्ति स्वय चोर बेईमान, दूसरो के आश्रित रहकर अपने को समर्थ मान लेते है उन-कूप मण्डूको क्या कहा जाय, सीमित क्षेत्र म ही फूले नही समाते हैं। सहायकों के सहारे पर ताकत अधिक देर तक नही टिकती है। उन गेहेशूरो को देखिये जो अपनी पढी-लिखी बीबी पर मूर्खता की ताकत को प्रकट करते हैं, उनकी तुलना कुत्ते से की जा सकती है।

कुत्ता गाव का शेर "ग्रामसिंह' कहलाता है क्योकि वहा पर उसका सामना करने वाला कौन है ? भोग की शाला का पशु अपने गोष्ठ मे ही शक्ति प्रदर्शन करता है। बौना-आदमी उच्चता की बात करे, यही है आत्म-बञ्चना !

ऐसा व्यक्ति अपने से अतिरिक्त पौरुष वाले व्यक्ति को भी वैसा ही मानकर चलता है। बुरा व्यक्ति हर जगह बुराई ही देखेगा, "पीलिया का मरीज सब वस्तु पीली ही देखेगा।'

अपनी अपूर्णता से अनभिज्ञ होने के कारण ऐसे लोग आपे से बाहर होकर सज्जन, प्रतिष्ठित व्यक्तियो के साथ अनुचित व्यवहार करते हैं, मूर्ख जो ठहरा। वह अपनी मूर्खता को समझेगा ही नहीं।

हर प्रकार के ज्ञान के साथ अपनी मूर्खता का ज्ञान भी आवश्यक है। अपनी वास्तविक स्थिति से परिचित होकर ही उस प्रकार का आचरण करना चाहिए। इससे नाना प्रकार की भविष्य की भावी असफलताओ का भय नष्ट हो जाता है।

परन्तु मूर्ख मे यदि समझ आ जाय तभी तो ज्ञान काम देगा। मूर्ख अपनी भी नाक कटेगा और पडोसियो को भी चौपट करेगा।

मूर्ख को यदि समझाया जाय तो भी वह असन्तोष प्रकट करेगा। उसे इतना तीव्र ज्वर है, भोजन रुचेगा ही नही।

दुर्जन व्यक्ति को सदाचार की परिभाषा आयेगी ही नहीं। अगर उप-देश सुनाया भी जाय तो वह न सुनकर—

सिच्छक हौं सिगरे जग को तिय, ताको कहा अब देती है सिच्छा।

सुदामा तो सरल चित्त स्वभाव वाले सज्जन ब्राह्मण थे पर उन्हे भी अपनी स्त्री की शिक्षा अप्रिय ही लगी।

अपने को ऐसे रखिये जैसे तोलकर बोला जाय। झूठा अभियान अपने को ही खा जायेगा।

●

सात्विक भोजन ही करें

मनुष्य का भोजन क्या हो ? उसे क्या खाना चाहिए और क्या नहीं।

यह सवाल आदिकाल से अनन्त काल तक चलता रहेगा। दिन मे हर एक व्यक्ति, हर एक गृहिणी सोचती है कि उसे आज क्या खाना है ? उसे आज क्या भोजन बनाना है ? वे चुनाव करते हैं, अपनी मन स्थिति धनस्थिति, स्वास्थ्य, मौसम और उपलब्धि के आधार पर। भोजन के चुनाव मे मन स्थिति निर्भर करती है—जाति, धर्म, शिक्षा, समुदाय, परिवार, परवरिश और सस्कार पर।

सस्कारो से भारत भूमि मे मानव-सभ्यता के अनुरूप सात्विक भोजन को सर्वदा, सर्वदृष्टि से श्रेष्ठ और उपयुक्त माना है। सात्विक भोजन शुद्ध शाकाहारी वैष्णव होता है। उससे शरीर पर तो अनुकूल असर पडता ही है, मन विचार और आचरण पर भी वाछित सही असर पडता है। राजसिक और तामसिक भोजन शरीर और विचार दोनो ही दृष्टि से असगत है। जो लोग कभी कभार इस तरह के भोजन के आदी हो जाते हैं, उन्हे भी अपने कल्याण के लिए अन्तत ऐसा भोजन छोडना चाहिए अन्यथा उनकी शारीरिक दुर्गति होती है। शाकाहारी वैष्णव भोजन में भी प्याज, लहसुन, अधिक स्वाद या मिर्च मसाले वाली चीज राजसिक और तामसिक भोजन के अग हैं। अत जब वैष्णव भोजन पदार्थों में से भी सात्विकता के लिए बहुत से पदार्थ मना हो तो मास, मछली, अण्डा इत्यादि प्राणी जन्य पदार्थ और मदिरा कैसे सभ्य, सस्कृत व्यक्ति का भोजन बन सकता है। अत हमें अपने मन, विचार, शरीर स्वास्थ्य धर्म, सभ्यता और सस्कृति, जाति और परिवार की रक्षा के लिए हमें स्वय हमारे स्वजन परिजन और मित्र जन को शाकाहारी और सात्विक वैष्णव भोजन ही करना चाहिए। मास, मछली, मदिरा, अण्डे से बनी वस्तुओ का उपयोग जान-अनजान में नहीं करना चाहिए। आधुनिकता, फैशन, प्रोग्रेसिव इत्यादि भ्रान्तिवश भी इन वस्तुओ के उपयोग में नही फसना चाहिए। सभ्यता, विकास और ऊचाई इन पदार्थों के उपयोग में नही, इन्हें छोडने में है। शर्म आनी ही चाहिए तो मासाहारी और मदिरा पान करने वालों को, न कि शाकाहारी या सात्विक व्यक्ति को। ऐसे लोगो की मडली में घिर

(शेष पृष्ठ १० पर)

एक चेतावनी

आर्यो ! "आर्यावर्त" बनाने का समय आ गया ।

श्री भोलानाथ दिलावरी, अमृतसर

यदि अब भी आपने आलस्य प्रमाद न छोडा, तो देश के टुकडे-टुकडे हो जायेंगे। मलेच्छ शक्तियां इसे टुकडे करने में बुरी तरह सक्रिय हैं।

आओ ! आर्यावर्त—"हिन्दू राष्ट्र का मिल, बीजारोपण करे। महर्षि का यही परम लक्ष्य था।

करीब १५० वर्ष पूर्व महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती से जब पूछा गया कि हमारे देश एव जाति का पूर्ण कल्याण कब होगा। उत्तर मे मन्त्र द्रष्टा ऋषि ने स्पष्ट शब्दो में कहा कि जब तक आर्य सन्तान हिन्दू में धर्म प्रेम एक भाषा एक भावना, जागृत नही होती, तब तक देश जाति पूर्ण उत्थान-कल्याण न होगा।

भारत की वर्तमान स्थिति को तनिक देखो किस प्रकार अल्प-सख्यक जातियां समूचे देश को पूरी शक्ति के साथ साम्प्रदायिकता फैलाने, देश टुकडे-टुकडे करने में सक्रिय हैं, विदेशी शक्तियो से सहायता ले रही हैं, षडयन्त्र रच रही हैं। काश्मीर, उत्तरप्रदेश, केरल आदि मे मुसलमान, पजाब में सिख, पूर्वोत्त क्षेत्रों में नागालैण्ड, मीजोराम, मेघालय, त्रिपुरा, आदि मे ईसाई। इधर हम आर्य सन्तान हिन्दू हैं, जिनका वस्तुत यह आदिकाल से देश हैं, चेतना हीन से सब कुछ देख रहे हैं। हमारी सख्या कोई ६० करोड से कम नहीं। और यह अल्पसख्यक डेढ दो या ३-४ करोड से अधिक नही। परन्तु हम एकता के पाठ को भूलाकर, अपनी ही अज्ञानता से अपने ही देश को एक नए "सैक्यूलर" (धर्मनिर्पेक्षता) के रोग में ग्रसित कर, इसे एक 'सराय" बना डाला है।

इन अल्प सख्यको के हौसले हमने ही इतने बढा दिये हैं कि यह हमारी बहु सख्यको की मान्यताओ को पैरो तले रौंद रहे हैं। गौ वध जारी है। भगवान् राम, भगवान् कृष्ण जिनके इद गिर्द हमारी आर्य सस्कृति घूमती है, के जन्म स्थानो पर भी हमारा अधिकार नही। हमारे ही समक्ष हमारे पिछडे वर्ग हरिजनो को यह मुसलमान ईसाई बनाने के लिए असख्य धन-पट्रो डालर व्यय कर हमें शक्तिहीन बनाने में रात दिन लगे हुए हैं। यदि अब भी हमने होश न सम्भाली अपनी आर्य चेतना जागृत न की, तो आने वाला समय हमारे लिए बडा भयानक रूप धारण कर लेगा, ऐसा निश्चित दिखाई पड रहा है।

महर्षि दयानन्द इस सब स्थिति को भाप चुके थे। वह आयु भर इस स्थिति से दु खी बेचैन रहे। रातो जागा किये। प्रयत्नशील रहे कि कैसे आर्य सन्तान हिन्दु में आर्य-चेतना, जागृत की जावे। इसी के लिए जिये और मरे। मरने से पूर्व हम आर्य समाजियो पर यह जिम्मेदारी डाल गए। इसी अर्थ महात्मा हसराज जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जाति में नव-जीवन आर्य चेतना जगाने हेतु स्कूल कालिज खोले, जिसके फलस्वरूप ही हम आज डेढ, दो करोड हो गए हैं। परन्तु अब जब कि यह सस्थाए खूब बढकर फल फूल रही हैं, अपने ध्येय से विचलित हो, भटक गई हैं। यह अपनी भावी-पीढी को पूर्ण रुपेन आर्य बनाने के लिए स्थापित की गई थी। अब कि स्थिति यहा तक आ गई है कि इन सस्थाओ में इस ओर कोई ध्यान नही दिया जा रहा। हो भी कैसे, जब कि इनके शिक्षक प्राय अनार्य हैं। इस स्पष्ट वादिता के लिए मे क्षमा चाहूगा और साथ ही इन सस्थाओं, को अविलम्ब ठीक मार्ग पर लाने के लिए इनके कर्णधारों से अपील करूगा। हमारी इन सस्थाओ ने स्वय को धोखा देने के लिए केवल कभी कभी हवन, कुछ मन्त्रो को रटाने को ही धर्म शिक्षा समझ रखा है। जब तक अपने पूर्वजो का गौरवमय जीवन उत्पादक इतिहास, सस्कृति के उज्ज्वल पक्ष हमें अपने बच्चो के हृदयगम न करायगे उनमें अपने धर्म, सस्कृति के प्रति उत्कट प्रेम प्यार कैसे बन पाएगा। कहना होगा कि हमें अपने बच्चो को ऐसे सस्कार नित्य प्रति देने होंगे। अपनी इन शिक्षण संस्थाओं के स्वय निरीक्षणार्थ, कि वह कहा खडे हैं सकेत मात्र कहना चाहूंगा कि क्या हमारा प्रत्येक बच्चा वीर बलिदानी, हकीकतराय, शहीद प० लेखराम शहीद स्वामी श्रद्धानन्द, महर्षि के तप त्याग के प्रसग, भगवान् राम-कृष्ण के वीरता के प्रसग जानता है आदि आदि ? क्या हमारे बच्चे जानते हैं कि हमारा देश अतीत में आर्यावर्त के नाम से ससार भर में विख्यात था ? और कि यहा क्या, ससार भर में आर्यो का चक्रवर्ती राज्य था ? सब ज्ञान, विज्ञान हम आर्यो ने ही समस्त ससार को दिए थे ? ऐसा अब सब ससार के इतिहासकारों, पुरातत्व वेताओ एव विज्ञानियो ने प्रमाणित कर दिया है। इस सम्बन्ध में मैंने बहुत से तथ्य एव इतिहासकारों पुरातत्व वेताओं की सम्मतियों का सकलन भी किया है। जो फिर कभी समय आने पर सर्वविदित कराऊ गा। (क्रमश)

क्या ऋषि सन्तान आर्य भूल गए

महर्षि की तड़प मनोवेदना हार्दिक परम लक्ष्य आर्य सन्तान हिन्दू को जागृत कर, अपने को सच्चे अर्थों में 'आर्यावर्त' बनाना हम आर्यों का कर्तव्य

[श्री भोलानाथ दिलावरी प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर]

मैं प्रस्तुत लेख में समस्त आर्यसमाज का ध्यान महर्षि की उत्कट तड़प, परम लक्ष्य, जिससे वह सारा जीवन उत्पीडित रहे। हर प्रकार के कष्ट सहे यहा तक कि अपना पद मुक्ती की इच्छा को धक्का दे, त्याग दिया। उनकी इस तड़प लक्ष्य का यथार्थ चित्रण करने हेतु उनके जीवन काल के एक दो प्रसंग पाठको के समक्ष जीवन गाथा मे से, यहा उद्धृत करना चाहूँगा, इस आशा और विश्वास के साथ कि वह अपने आलस्य-प्रमाद को छोड इस ओर ध्यान ही नही वरन् उद्यम-पुरुषार्थ करने मे तत्पर हो जायेंगे। उनके जीवन के सम्बन्धि प्रसग 'श्री मद्दयानन्द प्रकाश' से अक्षरश प्रस्तुत हैं —

'एक रात का वर्णन है कि महाराज आधी रात के समय जाग पड़े और उठकर इधर उधर करवटें लगाने लगे। उनके पाव की आहट सुनकर एक कर्मचारी की भी आख खुल गई। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि स्वामी जी किसी व्याकुलता और घबराहट मे घूम रहे हैं। उसने विनय की, भगवान्! यदि कोई वेदना है तो आज्ञा कीजिये। सेवक औपचोपचार करने के लिए उपस्थित हैं, यदि आदेश हो तो वैद्य को भी बुला लाऊ।'

उस समय, स्वामी जी ने सुदीर्घ सास लेकर कहा, 'भाई! यह बड़े वेग से बढती हुई वेदना, आपके औषधोपचार से शमन होने वाली नही है। यह वेदना भारत के परिश्रमी लोगो को दुर्दशा के चिन्तन मे अभी उत्पन्न हुई है। ईसाई लोग कोल-भील आदि भारतवासियो को ईसाई बनाने के लिए अपनी कल्पनाओ के ताने-बाने तन रहे हैं। रुपया भी पानी की तरह बहाने को कटिबद्ध हैं। परन्तु इधर आर्य जाति के पुरोहित हैं, जो कुम्भकर्ण की नींद पड़े सोते हैं। उनके कानो पर जू तक नही रेंगती। मे अब यह चाहता हूँ कि राजो-महाराजो को सन्मार्ग लाकर सुधार करे। आर्य जाति को, एक उद्देश्य रूपी सुदृढ़ सूत्र मे आबद्ध करू।'

'पण्डया जी! कोई देश, जनशून्य नहीं हो जाया करता। लोग तो बने ही रहा करते हैं। परन्तु धर्म-गुरुओ और सामाजिक नेताओ की असावधानी, प्रमाद और आलस्य से भावना, भाव और भाषा आदि एकता के चिन्ह बदल जाते हैं। जाति के आचार-विचार परिवर्तित हो जाते हैं। रहने सहने के ढगो मे भेद आ जाता है। ठीक ऐसा समय अब इस देश पर उपस्थित है। यदि सभाला न गया तो आर्य जाति परिवर्तन के चचल चक्र पर अतिशय उतावली से, अपने पूर्व पवित्र शरीर को परिवर्तित कर डालेगी। इसके पिछले प्रभाव के कारण करोडो मनुष्य मुसलमान बन गए। अब प्रति दिन सैकडो ईसाई बनते चले जा रहे हैं। ऐसे समय मे तो, अपने सधर्म बन्धुओ को कड़े हाथ से उनकी चोटिया पकड कर भी जगाना होगा। यह मुझे कटु कर्तव्य, मैं कोई अपने स्वार्थ के लिए तो पालन नही कर रहा हूँ। मुझे तो इसके कारण अवहेलना, निन्दा, कुवचन, ईट पत्थर और विष ही स्थान स्थान पर मिलता है। परन्तु बन्धु वात्सल्य की भावना मुझे विपत्तियो के विकट और जटिल जाल मे भी समाज सुधार के लिए प्रोत्साहत कर रही है।'

उपरोक्त प्रसगो से स्पष्ट हो जाता है कि महाराज का लक्ष्य आर्यत्व को पूर्ण रूपेण जागृत कर फिर से अपने देश को सच्चा 'आर्यावर्त' बनाना था। अस्तत. 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' वेदाज्ञा अनुसार पूर्व काल को भान्ति चक्रवर्ती आर्य राज्य की स्थापना करना था। ताकि ससारभर मे सुख शान्ति मूर्तिमान हो सके। भूलना न होगा कि महर्षि ने अपनी मानस सन्तान 'आर्यसमाज' का निर्माण इसी उद्देश्य से ही तो किया था। इस सम्बन्ध मे उनकी जीवनी 'श्रीमद्दयानन्द प्रकाश' मे उनके यह शब्द मिलते हैं।

'मुझे एक भी सुपात्र-सुयोग्य शिष्य नहीं मिल सका। अब तो मेरे शिष्य सभी 'आर्यसमाजी' हैं। वह ही मेरे विश्वास और भरोसे के भव्य भवन हैं। उन्ही के पुरुषार्थ पर मेरे कार्यों की पूर्ति और मनोरथो की सफलता अवलम्बित है।'

क्या सब आर्यसमाजी विशेष रूप से आर्यसमाज के करणधार इस ओर अपने कर्तव्य पूर्णार्थ कटिबद्ध होगे, और ऋषि के विश्वास और भरोसे पर पूरा उतरेगे?

आर्य बन्धुओ! आर्य सन्तान-हिन्दुओ की वर्तमान दशा आपसे छिपी नही। हम सख्या की दृष्टि से तो बड़े भारी हैं जिसने ५५-६० करोड। परन्तु हैं चेतना हीन। हम अनेक मत मतान्तरो के झाड जगल मे उलझे हुए, आर्य चेतना विहीन हुए है। कहने को हम बहुसख्यक हैं। परन्तु हमारे अधिकार अल्पसख्यक कहलाने वालो मे बाटे जा रहे हैं। फलत समूचे राष्ट्र मे हमारा जीना दूभर हो रहा है। हमारी मान्यताओ की यह अल्पसख्यक पैरो तले रौंद रहे हैं। गोवध अभी तक जारी है। यहा तक कि हमारे पूज्य देव श्री राम, श्री कृष्ण, जिनके इर्द गिर्द हमारी सस्कृति घूमती है, के जन्म स्थानो पर भी हमारा अधिकार नही। देश को विभाजन टुकड़े टुकड़े करने के प्रयत्न करीब २ हर प्रदेशमे चल रहे हैं। दिन प्रतिदिन स्थिति बिगडती ही जारही है। पजाब मे क्या कुछ नही हो रहा। रोज हत्याए हो रही हैं। स्थिति विस्फोटक बन चुकी है। हिन्दू गाव के गाव खाली कर भाग रहे हैं।

इस सब स्थिति के वास्तव मे देखा जावे, तो हम हिन्दू ही जिम्मेदार हैं, हमने एकता के सूत्रो को भुला रखा है। महर्षि, देश-राष्ट्र को सशक्त, समृद्ध बनाने का नुसखा स्वय बतलाते हैं।

'पण्डया जी के पूछने पर कि भारत का पूर्ण हित एव जातीय उन्नति कब होगी तो महर्षि स्पष्ट शब्दो मे बतलाते हैं। जब तक एक धर्म, एक भाषा एक लक्ष्य न होगा, भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर कार्य होगा। इसका विस्तार करते हुए महर्षि ने कहा। सब उन्नतियो का केन्द्र स्थान एक्य है। जहाँ भाषा, भाव, और भावना मे एकता आ जावे वहा सारे सुख वैभव एक एक करके प्रवेश करने लग जाते हैं।

यह एकता कैसे सिद्ध हो ?

महर्षि त्रिकाल दर्शी थे। एक युग पुरुष जिनके सार का कोई अन्य यहा पुरुष गत ४५ हजार वर्षों मे उत्पन्न नही हुआ। हमे उनके बतलाए उपचार के क्रियान्वयन न हेतु पूरी शक्ति से जुट जाना होगा। तभी हमारा देश फिर से आर्यावर्त बन सकेगा। इस अर्थ हिन्दू मात्र को मत मतान्तरो के झाड जगल से निकालेने का प्रयत्न और सच्ची आर्य चेतना ला एक रूपता लानी होगी।

इसके लिए प्राचीन युग पुरुषो जैसे श्री रामचन्द्र श्री कृष्णचन्द्र आदि के सच्चे आर्य रूप काटि-दर्शन सर्वसाधारण हिन्दू-मात्र को दर्शाना होगा। यह दोनो महापुरुष ऐसे हैं जिनके इर्द गिर्द आर्य सस्कृति घूमती है। प्रत्येक हिन्दू इनकी पूजा करता है। मेरे इस सुझाव का समर्थन, वर्तमान रामायण धारावाही देखने मे हिन्दू मात्र की जोरदार रुचि से स्पष्ट है। इनके जीवन के ऐसे पक्षो को, जिनसे फिर से आर्य सन्तान हिन्दू मात्र मे फिर से आर्य-गौरव की भावना प्रज्वलित हो सके, सर्वत्र आर्य सस्कृति आर्य मूल्यो का प्रचलन हो सके, सच्चे अर्थो मे आर्य राज्य स्थापित हो सके, यह देश फिर से आर्यावर्त बन सके, लाना होगा। साथ ही वेदादि सत शास्त्रो, आर्य ग्रन्थों उपनिषदो गीता आदि का खूब प्रवचन, प्रचार-प्रसार करना होगा। विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि जब तक आने वाली पीढी अपने बच्चो को नियमित प्रभावी ढग से सस्कारित करने के उद्योग न होंगे—कुछ भी प्रगति न होगी। इस अर्थ मे हमे अपनी शैक्षिक सस्थाओ मे विशेष रुचि पुरुषार्थ करना होगा।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

अन्धी गलियों का चक्रव्यूह खालिस्तान (८)

डा० सुरेन्द्रसिंह कादियान एम०ए०, पी०एच०डी०

गुरु नानक ने अफलातून, बेकन, डेकार्ट,गजाली, शंकर, दयानन्द, सांकृत्यायन की भांति भारत के सुदूरवर्ती भागों और विश्व के अनेक देशों (लंका, चीन; तिब्बत, अफगानिस्तान, रूस, ईराक, तुर्किस्तान, सऊदी अरब) में लगभग २५ वर्ष तक यात्राएं कीं जिनका उद्देश्य विभिन्न महात्माओं, सन्तों और विद्वानों के साथ धर्म चर्चा करना, विभिन्न समाजों और धर्मों का अध्ययन करना विज्ञ जनों की पवित्र वाणी का संग्रह करना, धर्म के सच्चे रूप से जनमानस को अवगत कराना और पंजाब का शेष भारत से सामंजस्य स्थापित करना था। इन विश्वव्यापी यात्राओं ने गुरु नानक को विशाल, उदार एवं समन्वित दृष्टिकोण प्रदान किया। नीर क्षीर विवेक से उन्होंने जहां भी सत्य, शिव और सुन्दर का साक्षात्कार किया उसे बिना किसी पूर्वाग्रह के सच्चे मन से ग्रहण कर लिया। तात्कालिक युग में विस्तृत यात्राएं करना सुगम नहीं था। वे यात्राएं जहां उनके जीवन, धैर्य और साहस की परिचायक हैं वहां धर्म और अध्यात्म के प्रति उनकी जिज्ञासा पर भी प्रकाश डालती हैं। इन यात्राओं में नानक ने हृदयंगम किया कि ईश्वरीय चिन्तन पर किसी व्यक्ति, सम्प्रदाय अथवा वर्ग विशेष का अधिकार नहीं होता और उसे किसी क्षेत्र या भाषा विशेष के चौखटे में जड़कर नहीं रखा जा सकता। ईश्वर की भांति ही अध्यात्म भी सर्वव्यापी होता है।

प्रायः यह कहा जाता रहा है कि गुरु नानक अशिक्षित (अक्षर ज्ञान से रहित), थे। कथन नानक सम्पर्क में रहने वाले शिष्यों तथा उनका जीवन वृत्तान्त लिखने वाले पुराने लेखकों और सिख धर्म को आलोचक दृष्टि से देखने वाले आर्य समाजी प्रचारकों व लेखकों का रहा है। आधुनिक खोज हमें इस निष्कर्ष पर ले जाती हैं कि गुरु नानक भले ही शंकर, कुमारिल और दयानन्द की भांति दिग्गज आचार्य न रहे हों लेकिन व अक्षर ज्ञान में कोरे नहीं थे। फारसी के एक हस्तलिखित लेख के अनुसार उनका पहला अध्यापक एक मौलवी था। सियारु मुताखरीन' के अनुसार किसी सैय्यद हसन ने नानक को पढ़ाया। इसी पुस्तक का कथन है कि इस्लाम की सब से प्रामाणिक पुस्तकें उन्होंने पढ़ी थीं। मैल्कम ने लिखा है कि जरत मुसलमानों में यह विश्वास है कि उन्हें हर कला और ज्ञान विज्ञान में खिजर ने निष्णात बनाया था। कतिधर्म की न मान्यता है कि नानक ने कुरआन आदि का ही नहीं हिन्दू शास्त्रों का भी तलस्पर्शी अध्ययन किया था। डा०शेरसिंह का मत है कि गुरु नानक ने हिन्दी, संस्कृत या फारसी आदि की प्रारम्भिक शिक्षा तो अपने गांव के मौलवियों एव पण्डितों से ग्रहण की और फिर सन्तों, महापुरुषों तथा फकीरों की सगति से उन्होंने वेदों, शास्त्रों, पुराणों एवं कुरआन आदि की गम्भीरता को समझा। नानक की हस्तलिपि न होने के अभाव में इस सम्बन्ध में किसी अन्तिम निष्कर्ष पर पहुंचना भले ही कठिन हो लेकिन इस बात के पुष्ट प्रमाण हैं कि उनका तत्व-चिन्तन ज्ञान-गरिमा, तार्किक शक्ति और नीर-क्षीर विवेक विलक्षण था। इसी के बल पर उन्होंने अपने समय के आचार्यों, मठाधीशों, मौलवियों और योगियों से उनके गढ़ पर पहुंचकर टक्कर ली तथा जनमानस को रूढ़ियों, अन्धविश्वासों और कुरीतियों से मुक्ति दिलाई गुरुनानक की वाणी का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उस पर अध्यात्म और भक्ति का भले ही गहरा रंग चढा हुआ हो किन्तु भाषा-सौष्ठव की दृष्टि से उनकी रचनाएं तात्कालिक सन्तों की कोटि में ही परिगणित हैं न कि उद्भट् विद्वानों की कोटि में वस्तुतः विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने महात्मा जरदुश्त के बारे में जो टिप्पणी की थी वही गुरु नानक पर भी सटीक बैठती है" वह सत्य जिससे उनका मन परिपूर्ण था, उन्होंने किसी पुस्तक अथवा किसी अध्यापक से नहीं लिया था और न ही प्राचीन रूढ़ियों पर चलकर उस सत्य की प्राप्ति की थी। वह तो कहीं प्रारम्भ में एक सर्व जीवन ज्योति के रूप में उन्हें प्राप्त हुआ जैसे कहीं उनके आन्तरिक निजत्व और बाह्य सर्वज्ञ तथा सर्वव्यापक निजत्व की एक रूपता से उत्पन्न हुआ।"

गुरु नानक भले ही विदेश यात्रा पर गए हों लेकिन भारतीय परिवेश से वे अपने को मुक्त नहीं रख सके। उनकी आत्मा अपनी मातृभूमि से जुड़ी रही और इस देश की माटी से ही उनकी आत्मीयता बनी रही। विदेश में उन्हें वह प्राप्त नहीं हुआ जो भारत में उन्हें मिला अथवा मिल सकता था। काशी से उन्होंने कबीर रविदास रामानन्द, सैन और पीपा भक्त की वाणी, नदिया से भक्त जयदेव की वाणी, वाराणसी से भक्त नामदेव तथा त्रिलोचन की वाणी का संग्रह किया जो बाद में 'गुरु ग्रन्थ साहब' में संकलित हुई हैं। यह सम्प्रदाय निरपेक्ष दृष्टिकोण सिख धर्म को मौलिक देन रही है जिससे धर्मनिरपेक्षतावादी प्रवृत्ति को बल मिला आगे चलकर अन्य गैर सिक्ख विद्वानों व सन्तों की वाणी भी 'गुरु ग्रन्थ साहब' में प्रतिष्ठित हुई। सिख धर्म के इस उदार दृष्टिकोण ने प्रत्येक सम्प्रदाय और विविध जातियों तथा वर्गों को आकर्षित किया। शताब्दियों से अस्पृश्य समझे जाने वाले लोगों को भी सिख धर्म ने उदारता से अपनाया। धर्म के नाम पर पलने वाली निष्ठुरता और निरंकुशता के दूह पर सिख धर्म ने निर्णायक प्रहार किया। पाखण्ड पर प्रभावी विजय यात्रा का श्रीगणेश सिख धर्म ने ही किया। रूढ़ियों के प्रतिमानों और अन्धविश्वास के किलों में बारूद लगाने का सफल आयोजन भी उसने किया। विकृत एवं रुग्ण मानसिकता से छुटकारा दिलाने का श्रेय सिख धर्म को ही जाता है। किन्तु वर्तमान सन्दर्भ में सिख धर्म की ये उपलब्धियां कपूर बनकर किसी अज्ञात दिशा में विलीन होती जा रही हैं। हमें ईमानदारी से उन कारणों का पता लगाना होगा जिनके फलस्वरूप सिख धर्म साम्प्रदायिक मनोवृत्ति की अग्नि शिखाओं में झुलसने लगा है, राष्ट्रीय मूल्यों को चुनौती देने लगा है, सामाजिक एकता और सौहार्द की परम्परा को झुठलाने लगा है, अपने इतिहास और संस्कृति से विद्रोह करने लगा है तथा इन सबसे बढ़कर नानक नाम चढ़दी कला को ढहदियां कला में बदलने लगा है।

सिख धर्म की गलत व्याख्या

जिन विषमताओं के कारण आज सिख धर्म अग्नि परीक्षा से गुजरने पर बाध्य हो रहा है उसका एकमात्र कारण सिख धर्म की मनमानी और गलत व्याख्या करना रहा है। ऐसा सिख विद्वानों द्वारा ही नहीं मुस्लिम और अंग्रेज विद्वानों द्वारा भी हुआ है और निर्विवाद रूप से एक गहरी और सोची समझी साजिश के अन्तर्गत हुआ है। सिखों को मूलधारा से काटने का यह घिनौना षड्यन्त्र ब्रिटिश काल में शुरु हुआ था और स्यात् इसीलिए खालिस्तान के समर्थकों को साम्राज्यवादी शक्तियों का वरद हस्त आज प्राप्त हो रहा है। इस षड्यन्त्र के कारण ही सिखों में अलग पहचान की सोच पैदा हुई जो धीरे-धीरे विकसित होकर आज विकराल रूप धारण कर बैठी है।

(क्रमशः)

मुनिवर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

—श्री दीनानाथ सिद्धांतालंकार

श्रेष्ठ पुरुषो की सगति ससार मे क्या कुछ नही कर सकती ? कवि के शब्दो मे सत्सगति से बुद्धि के दोष दूर होते हैं। वाणी मे सत्य स्थान पाता है। सम्मान और उन्नति प्राप्त होती है। पाप दूर होता है। चित्त प्रसन्न होता है और दिशाओ मे कीर्ति का प्रसार होता है। सत्सगति गुणो की खान है। गोस्वामी तुलसी के शब्दो मे —

एक घडी आधी घडी आधी से भी आध।
तुलसी सगति साधु की, हरै कोटि अपराध ॥

आर्य समाज के मनीषी, उत्कृष्ट विद्वान और साधु स्वभाव प० गुरुदत्त जी का जीवन उपर्युक्त कवि वचनो का साक्षात् पूर्ण रूप है। एक दिव्य और अनुपम ज्योति युक्त जीवन का कुछ समय का सम्पर्क किसी नास्तिक और अविश्वासी की कितनी काया पलट कर सकता है, इसका प्रेरक आदर्श पडित गुरुदत्त ने अपने स्वरूप को वर्षों की जीवन यात्रा से समुपस्थित किया है।

अत्यन्त मेधावी छात्र

गुरुदत्त ने पजाब विश्वविद्यालय से विज्ञान मे एम० ए० सर्वोच्च अको से पास किया था। वह शिक्षा काल मे तीव्र मेधावी छात्र थे। कहते हैं कि इन्होने उस समय विज्ञान मे जितने ऊचे अक प्राप्त किये थे, उतने अक अब तक किसी ने प्राप्त नही किये थे और बाद मे भी कई वर्षों तक कोई छात्र प्राप्त नहीं कर सका था। गुरुदत्त के हाथ मे अचानक कही से महर्षि दयानन्द कृत "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" पुस्तक आ गयी। उसे पढ आप अपने जन्म स्थान मुलतान की आर्य समाज के सम्पर्क मे आये और उसके सभासद् बन गये। पजाब विश्वविद्यालय लाहौर, से अपनी शिक्षा समाप्त कर वही गवर्नमेट कालेज मे आप विज्ञान के अध्यापक बन गये। इन्हे पढने विशेषत पश्चिमी विद्वानो के दर्शन और विज्ञान सम्बन्धी ग्रन्थ पढने, का बडा शौक था। आर्य समाज के सदस्य होते हुए भी गुरुदत्त के मस्तिष्क पर नास्तिकता के विचार कब्जा किये हुए थे।

ऋषि दयानन्द के मृत्यु-दृश्य से नास्तिक कट्टर आस्तिक बन गया

इन्ही दिनो अजमेर मे ऋषि दयानन्द के गम्भीर रूप से रोगी होने का समाचार सारे देश मे फैल गया। सर्वत्र आर्य सदस्य और ऋषि के भक्त और शिष्य गण चिन्तित हो गये। आर्य समाज, बच्छोवाली, लाहौर ने जिसके गुरुदत्त जो सदस्य थे, ऋषि की सेवा और उनके दर्शन करने के लिए अपनी समाज के दो प्रतिनिधि भेजने का निश्चय किया। एक प० गुरुदत्त जी और दूसरे लाला जीवनदास जी। महर्षि की दशा अत्यन्त चिन्तनीय थी। उस समय लाला जीवनदास जी ने महर्षि पूछा—"महाराज, इस समय आप कहा हैं ?" ऋषिवर ने उत्तर दिया—"ईश्वरेच्छा मे।" "शाम को ५।। बजे स्वामी जी की हालत निराशाजनक हो गयी। वह भी समझ गये थे कि अब उनका अन्तकाल समीप आ रहा है। पर वह महामानव तीक्ष्ण विष के प्रभाव से उत्पन्न भयकर कष्ट के समय भी सर्वथा शान्त और प्रसन्न मुद्रा मे था।

"तेरी इच्छा पूर्ण हो—ऋषि के अन्तिम शब्द"

ऋषि की आज्ञा के अनुसार सब आर्य जन और भक्तजन उनके पलग के पीछे खडे कर दिये गये। सामने कोई नही था। चारो ओर के द्वार खोल दिये गये और ऊपर छत के दो रोशनदान भी खोल दिये गये। स्वामी जी जब यह पूछने पर कि आज कौन सा पक्ष क्या तिथि और क्या वार है,किसी ने उत्तर दिया कि कृष्ण पक्ष का अन्तिम दिवस अमावस्या और मगलवार, दीपावली त्यौहार की रात्रि है। स्वामी जी उस समय अपने बिस्तर पर योगासन मे बैठ गये प्रार्थना मन्त्रो का सस्वर पाठ किया, गायत्री मन्त्र का जाप करने लगे फिर नेत्र खोल शान्त मुद्रा मे कहने लगे।

हे दयामय ! हे सर्वशक्तिमन् ईश्वर ! तेरी यही इच्छा है ! तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा ! तूने अच्छी लीला की।"

बस, इतना कहते ही स्वामी जी ने पहले सीधे लेटे, फिर स्वय करवट बदल एक प्रकार से श्वास को रोककर फिर एक बार ही उसे निकाल दिया। बस, ऋषि की जीवन लीला समाप्त हो गयी

प० गुरुदत्त इस सारे दृश्य को बडी तन्मयता और उत्सुकता के साथ देख रहे थे। उनके नास्तिक मन पर इसका अत्यन्त गहरा और अकृत्रिम प्रभाव पडा। विज्ञान के चक्को ने जिस हृदय को ईश्वर से पराड्मुख कर दिया था, वह इस चमत्कारिक और दिव्य दृश्य को देख एकदम बदल गया। एक दृढ आस्तिक कितनी शान्ति के साथ अपने प्राण छोड सकता है, यह अपनी आखो से देख गुरुदत्त के जीवन मे एक प्रबल क्रान्ति आ गयी और अब वह अविचल ईश्वर भक्त और प्रभुनिष्ट बन गया।

डी. ए. वी. कालेज की स्थापना में तल्लीन

गुरुदत्त जब लाहौर पहुँचे, तब उनका जीवन एकदम बदला हुआ था। अब उनके सम्पूर्ण जीवन का प्रत्येक क्षण ऋषि दयानन्द की शिक्षाओ और आर्य समाज की सेवा मे अर्पित था। लाहौर के तत्कालीन आर्य नेताओ ने महर्षि दयानन्द की स्मृति मे एक शिक्षण सस्था स्थापित करने का निश्चय किया, क्योकि उस समय पजाब मे शिक्षण कार्य विदेशी सरकार और ईसाइयो के हाथ मे ही था। सस्था का नाम डी० ए० वी० कालेज रखने का निर्णय किया गया। इसके उद्देश्यो मे वेद और वैदिक साहित्य तथा सस्कृत पढाने पर विशेष बल दिया गया था। प गुरुदत्त जी इस कालेज के कर्णधारो मे प्रमुख थे। धन सग्रह करने और आर्य समाज के उत्सवो पर इस सस्था के लिए अपील करने का काम आपके जिम्मे था।

वेद प्रचार में जुट गये

पर जिस समय कालेज की स्थापना हुई, उस समय वेद, वैदिक साहित्य और सस्कृति के पढाने की कोई समुचित व्यवस्था नही की गई। इसके विपरीत अग्रेजी शिक्षा पर अधिक बल था। आर्य समाज के अधिकाश सदस्य इस व्यवस्था के विरुद्ध थे। प गुरुदत्त जी इस दल के प्रमुख नेता थे। यद्यपि पडित जी डी ए वी कालेज की प्रबन्ध समिति के प्रमुख सदस्य थे, पर उन्होने उसमे सक्रिय भाग लेना छोड दिया। अब पडित जी की सारी शक्ति वेद प्रचार, आर्ष पद्धति से सस्कृत प्रचार और वेद के वैज्ञानिक अर्थ करने पर केन्द्रित हो गयी। स्वास्थ्य की तनिक भी परवाह न करते हुए वह दिन रात लम्बी लम्बी प्रचार यात्राए करन लगे।

उनमे आर्ष पद्धति से सस्कृत पढाने का इतना उत्साह था कि उन्होने लाहौर मे एक अष्टाध्यायी कक्षा खोल दी। उनके उत्साह के फलस्वरूप कई वृद्ध पुरुष हाथ मे अष्टाध्यायी लिये नियमित रूप से इस कक्षा के छात्र बन गए।

पंडित जी के साहित्य से विदेशों में हलचल

वैदिक शब्दो की वैज्ञानिक व्याख्या पर आपने एक कोष तैयार किया जो इग्लैड के "आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय" की पाठ्य पुस्तका मे शामिल किया गया। कुछ उपनिषदो का भी आपने अग्रेजी मे अनुवाद किया। आपकी प्रसिद्ध और सर्वथा मौलिक ढग से लिखी गई पुस्तक 'टर्मिनालाजी आफ दि वेदाज' है जिसने ब्रिटेन और जर्मनी के कई यूरोपीय वेद भाष्यकारो को चकित कर दिया। इसी प्रसग मे जुलाई १८८९ से पडित जी ने अग्रेजी मे "वैदिक मैगजीन" नाम का मासिक पत्र प्रकाशित करना आरम्भ किया। अभी तक आर्य समाज का इस प्रकार का सिद्धात पोषक और अनुसधानात्मक कोई मासिक पत्र नही था। इसमे प्रकाशित पडित जी के खोजपूर्ण लेख न केवल भारत किन्तु यूरोप के सस्कृतज्ञ विद्वान भी बहुत पसन्द करते थे। पडित जी का चिन्तन एकदम मौलिक और अनूठा होता था। इन लेखो से प्रभावित हो ब्रिटेन के प्रमुख स्वतन्त्र विचारक श्री ब्रैडला विशेष रूप से पडित जी से मिलने लदन से भारत आये। बम्बई आने पर जब उसे पता चला कि ऐसे उत्कृष्ट विचारक और लेखक का स्वर्गवास हो गया है। तब

वह अत्यन्त निराश हुए और समय पर भारत न पहुँचने के हेतु घोर प्रायश्चित और सताप करने लगे। पण्डित जी द्वारा किया गया दो उपनिषदों का अनुवाद उनकी मृत्यु के पश्चात् अमेरिका "विश्व धर्म सम्मेलन" के अवसर के लिए भेजा गया। वहाँ के विद्वान उससे इतने प्रभावित हुए कि एक अमेरिकी प्रकाशक द्वारा यह अनुवाद तत्काल प्रकाशित किया गया। इस प्रकार पडित जी की तीव्र प्रतिभा और कुशाग्र बुद्धि का इतनी छोटी आयु मे ही भारत और विदेशो के विद्वानो पर गहरा प्रभाव पडा।

अद्वैतवादी गुरु को शिष्य ने द्वैतवादी बना दिया

उन दिनो श्री स्वामी अच्युतानन्द जी महाराज उपनिषदो के विशेष विद्वान और प्रमुख सन्यासी थे। वे कट्टर अद्वैतवादी थे। उनकी शिष्य मडली काफी बडी थी। प० गुरुदत्त जी उनसे उपनिषदें पढा करते थे। पर पण्डित जी की मेधा और इनके स्पष्ट, ठोस, तथा गम्भीर चिन्तन का भी स्वामी जी पर इतना गहरा प्रभाव पडा कि वे शिष्य के अनुयायी होकर वेद के सिद्धान्त अनुसार द्वैतवादी हो गये। शिष्य द्वारा गुरु की इस प्रकार बौद्धिक पराजय के उदाहरण इतिहास मे कम ही मिलते हैं। बाद मे, यही स्वामी अच्युतानन्द जी महाराज आर्य समाज के शिरोमणि सन्यासी और आदरणीय विद्वान के रूप से पूजनीय माने जाने लगे थे। प्रमुख दार्शनिक विद्वान् स्वामी महानन्द जी से भी पण्डित गुरुदत्त वैदिक शास्त्र पढा करते थे। वहा भी पडित जी की तीव्र बुद्धि ने चमत्कार किया। स्वामी जी शीघ्र ही आर्य समाज के प्रमुख विद्वान माने जाने लगे।

क्या आर्य भूल गए ?

(पृष्ठ १ का शेष)

हमारे साधन

मैं ऊपर महर्षि के अपने शब्दो मे बतला आया हू कि उनके हृदय मे सम्पूर्ण आर्य सन्तान हिन्दू मात्रको जागृत करने की कितनी पीडा-वेदना थी। और इसी लक्ष्य की पूणार्थ की उन्होने 'आर्यसमाज' सृजन किया, और इसे अपना उत्तराधिकारी बना, इसी पर पूर्ण विश्वास भरोसा रखा था कि वह ही इसे सारी जाती मे आर्य-चेतना जगा कर देश को सच्चे अर्थों मे आर्यावर्त बना—आर्य राज्य की स्थापना करेगी।

बडे सौभाग्य की बात है कि इस समय 'आर्यसमाज' एक बडी शक्तिशाली हर दृष्टि से समृद्ध सस्था है। इसका सक्षेप मे दिग्दर्शन कराना चाहूँगा। इसकी सर्वोपरि सस्था सार्वदेशिक आर्य सभा है। इसके अधीन सम्पूर्ण राष्ट्र के प्रदेशो मे आर्य प्रादेशिक सभाए हैं। जिनकी सख्या करीब २०-२२ है। इन समाजो के अधीन भारत एव विदेशो में करीब ५००० आर्यसमाजें हैं। शिक्षण सस्थाओ मे प्रमुख डी० ए० वी० स्कूल एव कालेज हैं। जिनकी सख्या करीब ४-५०० के करीब हैं। आर्य गुरुकुल भी करीब एक सौ हैं। इनके अतिरिक्त आर्यसमाजो से सम्बन्धित अनेक विद्यालय लडके लडकियो के भी हैं। इन सब आर्य शिक्षण सस्थाओ मे लाखो बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। परन्तु इस सबके होते हुए दुर्भाग्य की बात यह है कि हम इन लाखो बच्चो को आर्य सस्कृति के परवाने बना नही पा रहे। यदि हम हमारी यह शैक्षिक सस्थाए बच्चो को आर्य सस्कार देने मे दृढ-सकल्प हो जावें, तो कोई कारण नही, कि अगले २०-२५ वर्षों मे ही ४-५ करोड उग्र आर्य न बना पावे। फिर कैसे एक ऐसा वातावरण न बन सकेगा, जिससे समूचा देश कुछ की काल मे स्वयमेव सही अर्थ मे 'आर्यावर्त' न बन पावे।

हम मे विद्वानो, तपस्वियो, त्यागियो, धर्म-वीरो, लेखकों, कवियो का कमी नही। कमी है तो केवर मिल कर लक्ष्य प्राप्त करने की दृढ भावना और इसे प्राप्त करने के पुरुषार्थ की।

गत वर्ष कुछ बुद्धि बुद्धिजीवियो के उद्योग से एक गोष्ठी २० २६ अप्रैल १९८७ को देहली मे, इस सम्बन्ध मे हुई थी। परन्तु उसमे क्या हुआ। आर्य जगत् को कोई पता नही मैंने इसमे भी अपने विचार भेजे थे।

ऋषि भक्त आर्यो ? उठो हिम्मत बाधो, ऋषि के प्रति अपने दायित्व को समझो। ऋषि ऋण से उऋण होने एव हमारे प्रति उनके विश्वास, भरोसे को सत्य सिद्ध करके दिखा दो।

"गुरुदित्ता से गुरुदत्त"

पडित गुरुदत्त का जन्म २६ अप्रैल १८६४ को मुलतान मे हुआ था। पिता का नाम राधाकिशन सरदाना था। इनका बाल्य नाम मूला था। छोटी आयु से ही यह बालक तीक्ष्ण बुद्धि और वैराग्य प्रवृत्ति का था। १२ वर्ष की आयु मे अपने पिता के साथ वे हरिद्वार गये। वहाँ कुल-पुरोहित ने इनका नाम गुरुदित्ता रख दिया। जिस समय यह बालक ज्ञान सम्पन्न हुआ, तब इसने स्वय ही अपना नाम 'गुरुदित्ता' से 'गुरुदत्त' सशोधित कर लिया, इनकी स्मरण शक्ति इतनी तेज थी कि जो चीज एक बार सुन व पढ लेते, तत्काल इनके स्मृति पट पर अ कित हो जाती। बचपन मे इनकी शारीरिक शक्ति बडी अच्छी थी और आप नित्य प्रति व्यायाम और प्राणायाम के अभ्यासी थे।

स्वयं ही संस्कृत पढ़ने का निश्चय

मुलतान आर्य समाज के साथ सम्पर्क होने और ऋषि दयानन्द के कुछ ग्रन्थ देखने पर आपके हृदय मे सस्कृत पढने का शौक पैदा हुआ। आपने आर्य समाज के मन्त्री से बलपूर्वक कहा, "आप मेरे लिए अष्टाध्यायी और वेदो के पढने का प्रबन्ध करें, अन्यथा वेद ईश्वरीय ज्ञान है, यह घोषणा और प्रचार करना बन्द कर दें।" समाज की ओर से इस युवा छात्र को सस्कृत पढाने के लिए एक पण्डित जी की व्यवस्था की गयी, पर वह इस कुशाग्र व प्रतिभाशाली छात्र को सन्तुष्ट न कर सका। तब आपने स्वय ही अपने परिश्रम से सस्कृत पढने का निश्चय किया। उनके इस श्रम ने तत्काल अपना फल दिखाया।

क्षय रोग का आक्रमण : मांस-अंडा लेने से सर्वथा इन्कार

पण्डित गुरुदत्त कहा करते थे कि "मैं अपने आचार्य ऋषि दयानन्द का जीवन लिख रहा हू।" जब कुछ मित्र पूछते कि, "आप कहां लिख रहे हैं" तब वे उत्तर देते हैं कि अपने जीवन मे उसे क्रियात्मक रूप मे लिख रहा हू।" सचमुच अजमेर से विशुद्ध आस्तिक और ईश्वरविश्वासी बन जबसे पडितजी घर वापस आये, उन्होने वैदिक धर्म के प्रचार और ऋषि-ऋण से मुक्त होने के लिए वाणी और लेखनी से अनवरत परिश्रम करना आरम्भ कर दिया। अपनी शक्ति कही अधिक वे दिन-रात प्रचार की भाग-दौड मे लगे रहते। फलत उन्हे क्षयरोग ने दबोच लिया। डाक्टरी, यूनानी, आयुर्वेदिक सभी इलाज किये गये। चिकित्सक उन्हें बार-बार कहते "अण्डे और मास का शोरबा लेने से क्षय रोग दूर हो सकता है।" पर पण्डित जी अपने सिद्धात से तिल-भर भी विचलित नहीं हुए। वह सदा यही कहते कि क्या अण्डे और मास के भक्षण से मैं सदा के लिए अमर हो जाऊगा। जब इस मानव देह का अन्त अवश्य है, तब मैं अपने सिद्धात की हत्या क्यो करू ?" आज अनेक परिवारो मे मास भक्षण का द्रुतगति से प्रचार हो रहा है। अ डा तो आलू का स्थान ले रहा है। ऐसे व्यक्तियो को प डित गुरुदत्त जी की सिद्धान्त दृढता से शिक्षा लेनी चाहिए।

२६ वर्ष की आयु में स्वर्गवास

इस भयकर क्षयरोग से आर्य समाज के इस देदीप्यमान नक्षत्र का लगभग २६ वर्ष की आयु मे ही १६ मार्च १८८६ को प्रातः ७ बजे के लगभग लाहौर मे स्वर्गवास हो गया।

पण्डित जी ने अपने जीवन के अल्पकाल मे ही आर्य समाज की जो ठोस और स्थायी सेवा की, वह इतिहास मे सदा अक्षुण्ण और स्मरणीय रहेगी।

ऐसे ही धर्मवीरो के लिए हिन्दी के प्राचीन कवि दीनदयाल गिरि ने ठीक ही कहा है—

पैहो कीरनि जगत मे, पीछे धरो न पाव।
आर्य कुल के तिलक हैं, महासमस्या ठाव॥
महा समस्या ठाव, चलैं सर कुन्त कृपाने।
रहे वीर जन गाजि, पीर उर मे नहिं जाने॥
बरनै दीनदयाल, हरखि जो डेग चलंतो।
ह्वै हो जीते जसो, मरे सुरलोकहि पहो॥

क्या भारत में आर्य बाहर से आये ?

—काशीनाथ मण्डल स्नातक (सम्मान) अमनी पहाड़पुर

हर मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह असत्य को त्यागकर सत्य को ग्रहण करे, अंधकार से प्रकाश में आवे तथा असगत बातो को त्यागने मे सतत प्रयत्नशील रहे। "मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना." रहते हुए भी सब इन बातो से सहमत हैं कि सत्य को पूर्वाग्रह द्वारा दबाया नही जा सकता। अगर दबा भी दिया जाय तो परिणाम दु खदायी होगा। इसी सन्दर्भ मे उल्लेखित करना है कि किस तरह अन्याय को प्रश्रय दिया जाता है।

निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, बिहार द्वारा स्वीकृत पाठ्य पुस्तक "विश्व इतिहास प्रवेशिका" खण्ड-१, जो नवम् वर्ग के लिए पठनीय है, पुस्तक की पृष्ठ सख्या—१८ मे लिखा गया है कि "ईसा पूर्व दूसरे सहस्त्राब्द मे कभी आर्यों का प्रवेश इस देश मे हुआ।" लेखक की ये पक्तिया वास्तव मे चौकाने वाली है। जबकि समय-समय पर अनेक विद्वानो ने सैकडो प्रमाणो द्वारा इस निष्कर्ष को सही करार दे चुका है कि "आर्य बाहर से नही आए हैं।"

वेदो मे 'आर्य' शब्द का अर्थ होता है—सभ्य, श्रेष्ठ एव सुशिक्षित। अत श्रेष्ठ पुरुषो को ही 'आर्य' कहा जाता है तो क्या ईसा के ढाई हजार वर्ष पहले भारत मे श्रेष्ठ पुरुष नही थे? रामायण और महाभारत आदि ग्रन्थो मे "हे आर्य पुत्र राम। "हे आर्य शिरोमणि" आदि वाक्यो का प्रयोग देखा जाता है। श्रीराम, श्रीकृष्ण तथा अर्जुन आर्यावर्त (भारत) के ही मूल निवासी थे। क्या वे आज से चार हजार वर्ष पूर्व पहले विदेश से भारत आये थे? नही। श्रीकृष्ण जी का जन्म हुए लगभग साढ़े पाच हजार वर्ष हुए। उनके जन्मकाल में महाभारत की रचना हुई थी। इन बातो को हम कैसे इन्कार कर सकते हैं।

प० गुरुदत्त जी ने कहा है—आज इतिहासकार अग्रेजो के झूठे पत्तल चाटकर इतिहास लिख रहे हैं। वे वेद, शास्त्र उपनिषद्, आदि को उठाकर ताक पर रख देते हैं। मैं ऐसे इतिहास को सप्रमाण गलत कहता हू। अत किसी ने ठीक ही कहा है—

"अन्धा चकाचौंध का मारा।
क्या जाने इतिहास बेचारा॥

आर्य" बाहर से नही आए हैं इसको पुष्टि मे श्री जयशकर 'प्रसाद' ने 'भारत वर्ष" कविता मे लिख चुके हैं—

'यवन को दिया दया का ज्ञान, चीन को मिली धर्म की दृष्टि।
मिला था स्वर्ण-भूमि को रत्न, शील की सिंहल को भी सृष्टि॥
किसी को हमने छीना नही, प्रकृति का रहा पालन यही।
हमारी जन्मभूमि थी यही, कहीं से हम आये थे नही॥
वही है रक्त, वही है देह, वही साहस, वैसा ही ज्ञान।
वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य-सतान॥'

"आर्य" शब्द अपने मे गौरवमय अर्थ सजोए हुए है, जिसका मनन कर अपने को हम धन्य समझते हैं। लेकिन पाश्चात्य विद्वानो ने 'आर्य' शब्द का अर्थ 'यायावर', 'लुटेरा' तथा 'विदेशी' दर्शाकर हमे नीच एव घृणित प्रमाण करने का जी-तोड परिश्रम किया है। उन्नीसवी शताब्दी के महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार 'आर्य' वह मननशील मनुष्य है, जो परम आस्तिक हो, वेद विरुद्ध कोई भी आचरण नही करता हो, सभी प्रकार के अ धविश्वासो एव असत् आचरणो से ऊपर उठा हो, अपनी शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ सारे ससार के सर्वाधिक कल्याण के लिए कृतसकल्प रहना हो, सर्वहितकारी नियमो के पालन मे सदा सयमित रहता हो और जो हमेशा सत्य के पक्षधर हों, उसे प्रकाशित करने वाला हो और उसकी रक्षा के लिए अपने प्राणो की भी आहुति दे सकता हो।

अब जरा हम महाभारत और रामायण के आगे वेद के पन्ने उलटें। ऋग्वेद के मण्डल-१, सूक्त-५१, मन्त्र-८ मे देखा जाता है—

वि जानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया
शासदव्रतान् ॥ उत शूद्रे उतार्ये ॥

इसका तात्पर्य है कि श्रेष्ठो का नाम आर्य, विद्वान् देव और दुष्टो को दस्यु अर्थात् डाकू, मूर्ख नाम होने से आर्य और दस्यु दो नाम हुए। द्विज विद्वानो का नाम आर्य और मूर्खों का नाम शूद्र और अनार्य अर्थात् अनाडी नाम हुआ।

इस बात से कोई इन्कार नही कर सकते कि भारत का आदि नाम आर्यावर्त ही है और आर्यावर्त्त का भौगोलिक सीमा ज्ञात करने हेतु 'मनुस्मृति' के पन्ने उलटे तो—

"आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्य्यावर्त्तं विदुर्बुधा ॥१॥
सरस्वती दृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्।
त देवनिर्मित देशमार्यावर्त्तं प्रचक्षते ॥२॥ (मनुस्मृति १। २)

अर्थात् उत्तर मे हिमालय, दक्षिण मे विन्ध्याचल पूर्व और पश्चिम मे समुद्र ॥१॥ और सरस्वती पश्चिम मे अटक नदी, पूर्व मे दृषद्वती जो नेपाल के पूर्व भाग पहाड से निकल के बगाल के आसाम के पूर्व और ब्रह्मा के पश्चिम ओर होकर दक्षिण के समुद्र मे मिलती है जिसको ब्रह्मपुत्र कहते हैं और जो उत्तर के पहाडो से निकलके दक्षिण के समुद्र की खाडी मे अटक मिली है। हिमालय के मध्यरेखा से दक्षिण पहाडो के होते हुए रामेश्वर पर्यन्त विन्ध्याचल के भीतर जितने देश हैं उन सबको आर्यावर्त्त इसलिए कहते हैं कि यह आर्यावर्त्त देश अर्थात् विद्वानो ने बसाया एव आर्यजनो के निवास करने से आर्यावर्त कहा गया। इसके पूर्व इस देश का कोई भी नाम नही था और न कोई आर्यों के पूर्व इस देश मे बसते थे।

जबकि वेदो, उपनिषदो और शास्त्रो मे ऐसे कहे जाते हैं तो दूसरे विदेशियो की कपोलकल्पित बातो को बुद्धिमान् लोग तथा सभ्यजन कभी नही मान सकते हैं। सस्कृत अति प्राचीन तथा सभी भाषाओ की जननी है। सभी प्राचीन ग्रन्थ एव इतिहास सस्कृत मे लिखे गए हैं। किन्तु किसी सस्कृत ग्रन्थ मे या इतिहास मे लिखे नही मिलते हैं कि आर्य लोग बाहर से आये। पुन विदेशियो के लेख तथा पाश्चात्य सभ्यता से ग्रसित मस्तिष्क वाले इतिहासकारो की उक्तियो को हम कैसे सही स्वीकार करे। भूतपूर्व राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' जी आर्यो को सामने रखकर अतीत की तुलना वर्तमान से करते थे, तो वर्तमान की तुलना मे भूत का पालडा भारी हो जाता था, वे आर्यों की कृति के लिए हु कार कर उठते थे। कारण, यह आर्यावर्त ही है जिसके बारे मे कहा गया है—

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन।
स्व स्व चरित्र शिक्षरेण पृथिव्या सर्वमानवा.॥"

अग्रेजो के समय की शिक्षा "फूट डालो और राज करो" की नीति पर आधारित थी। आज हमे सोचना है कि हमारी शिक्षा नीति किस बात पर आधारित हैं। अभी श्रीलका मे वहा के तमिल और मूलनिवासियो के बीच, असम मे असमियो तथा बगलादेशियो के बीच, पजाब मे पजाबी और हिन्दुओ के बीच झगडा है। बिहार मे 'झारखण्ड राज्य' तथा पश्चिम बगाल मे 'गोरखालैण्ड' की समस्या है। हमे डर है कि देश मे 'आर्य लैण्ड' और 'अनार्य लैण्ड' की समस्या खडी न हो जाय। कारण, जब लोग जान जाएगे कि आर्य लोग विदेशी हैं, तब अनार्य लोग उन्हे विदेश जाने को विवश करेंगे।

अत: मुझे सभी विद्वानो तथा बिहार सरकार के शिक्षा विभाग से अनुरोध है कि वे पाठ्य पुस्तक से इस बात को हमेशा के लिए मिटा दें कि "आर्य बाहर से आए हैं।" अन्यथा, आने वाला कल हमारी गलतियो को कभी क्षमा नही करेगा एव भविष्य मे परिणाम दु खदायी होगा।

आर्य जगत के समाचार

शुद्धि समाचार

१५ मई ८८ को बेतिया निवासी एव आर्य युवक परिषद के कार्यकर्ता सरोज कुमार बर्णवाल २२ वर्ष श्री महेन्द्र प्रसाद बर्णवाल का विवाह ईसाई लडकी सुश्री प्रिसिला म्युनी ठाकुर २० वर्ष से आर्यसमाज मन्दिर मे वैदिक रीति से पुरोहित श्रीरामचन्द्र जी द्वारा सम्पन्न हुआ।

विवाह के पूर्व सुश्री प्रिसिला म्युनी ठाकुर की शुद्धि कर नया नाम प्रियम शीला ठाकुर रखा गया विवाह क दौरान आर्य समाज के सदस्य, कार्यकर्ता एव विश्व हिन्दू परिषद के अधिकारियो के साथ सैकडो लोग उपस्थित थे, लडकी के पिता श्री म्युनी जोसेफ ठाकुर एव उनकी पत्नी ने कन्यादान दिये।

—नन्दलाल आर्य, कार्यकर्ता
सदस्य बेतिया,

विशाल युवक निर्माण शिविर व योग साधना शिविर

हिमालय की सुरम्य घाटियो के बीच, मालनी नदी के तट पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, दिल्ली के तत्वावधान मे वीर भरत की जन्मस्थली व महर्षि कण्व की तपोभूमि मे १८ जून से २६ जून ८८ तक गुरुकुल कण्वाश्रम कोटद्वार पौडी गढवाल मे स्वामी जीवनानन्द जी के सरक्षण मे तथा स्वामी जगदीश्वरानन्द जी की अध्यक्षता मे विशाल युवक निर्माण शिविर व योग साधना शिविर लगाया जा रहा है।

—राकेश राज, उपमन्त्री
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद

सात्विक भोजन

(पृष्ठ ३ का शेष)

जाने पर होस्टल, रेस्टोरेन्ट, मीटिंग, विदेश भ्रमण, शादी-विवाह आदि प्रसगो पर आप और अपने बच्चो को भटक जाने से रोकिये और याद रखिये स्वय को रोकने वाला ही सम्मान पाने वाला है, बहाव में बहने वाला नही।

विज्ञान के, डाक्टरो ने अब यह तथ्य भी स्वीकृत एव प्रमाणित किया है कि मनुष्य की शरीर रचना शाकाहारी भोजन के ही अनुरूप है, न कि मासाहारी भोजन के। शाकाहारी भोजन-तत्त्व अण्डे और मास से ज्यादा ताकतवर और स्वास्थ्यवर्धक होते हैं। मासाहारी लोग ज्यादा अस्वस्थ और अधिक किस्म की बीमारियों से ग्रस्त होते हैं। अत इस वहम मे कि मास, मछली, अण्डा स्वास्थ्यवर्धक और अधिक बलप्रद हैं, इनका सेवन नहीं करना चाहिए।

यदि आप शाकाहारी हैं, तो शाकाहारी बने रहें। आप अपने बच्चो एव मित्रो को शाकाहारी बनाये रखे। यदि आप मासाहारी हैं तो आप शाकाहारी बनकर देखें। आप कुछ ही समय में शान्ति और तन्दरुस्ती महसूस करेगे और फिर स्वय मांसाहार छोड देगे, औरों को छुडायेंगे। सिर्फ एक बार एक महीने, एक वर्ष बदलकर देखिये। यदि आप सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक कार्यकर्त्ता हैं तो शाकाहार के प्रचार प्रसार और मासाहारी प्रवृत्तियो को रोकथाम के लिए लोगो मे काम करे।

याद रखिये अगर आपकी पीढी ने इस ओर कुछ नही किया तो शाकाहारी सस्कृति की आपकी पीढी आखिरी पीढी होगी और इतिहास, धर्म, सभ्यता सब आपको धर्म एव सस्कृति की रक्षा न करवाने के लिए दोषी ठहरायेंगे। जैन एव वैष्णव धर्म की अपनी अमूल्य, अमिट पहचान और विश्व के सभी धर्मों के आधारभूत तत्वों को छोड चुकेंगे।

दयानन्द शोधपीठ द्वारा प्रतिवर्ष एक विशिष्ट प्रकाशन होगा

स्थानीय दयानन्द कालेज अजमेर मे राजस्थान सरकार द्वारा सस्थापित दयानन्द शोधपीठ को अधिक सक्रिय एव गतिशील बनाने के लिये आर्यसमाज भवन मे रविवार दि० २२ मई, ८८ को पीठ के निदेशक श्री दत्तात्रेय आर्य की अध्यक्षता मे विशेष बैठक सम्पन्न हुई जिसमे डा० बाबूराम शास्त्री, श्री ठाकुर प्रेमसिह, श्री डा० दिनेशसिह, श्री कृष्णराव वाल्के, प्रो० बुद्धिप्रकाश आर्य, डा० कृष्णपालसिह, डा० देव शर्मा वेदालकार, आचार्य गोविन्दसिह एव श्री रासासिह ने भाग लिया।

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि शोधपीठ की ओर से प्रतिवर्ष एक प्रामाणिक प्रकाशन किया जाय। इसी सदर्भ मे राष्ट्रीय एव भावात्मक एकता तथा सर्वधर्म समभाव को दृष्टिगत रखकर शाश्वत वैदिक धर्म विषय पर विद्वानो से शीघ्र ही पुस्तक तैयार करवा कर प्रकाशन कराया जायेगा। जिसमे वैदिक धर्म के शाश्वत मानवीय एव एकात्मक मूल्यो की सपुष्टि करने वाले ईसाई इस्लाम, पारसी, सिख, बौद्ध, जैन, यहूदी आदि धर्मों के तत्सम्बन्धी तथ्य उल्लेखित होगे। —रासासिह मन्त्री

गुरुकुल वृन्दावन में प्रवेश

गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन की शिक्षा बी० ए० के स्तर तक का प्रवेश १ मई ८८ से शुरु है और जौलाई मे भी रहेगा। नियमित दैनिक, दिनचर्या उत्तम सादा भोजन, सादगी रहन सहन उच्चतर शैक्षिक व्यवस्था के लिए ८वी कक्षा तक के लिए प्रवेश हेतु पधारें। —अधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन

ग्राम चौसाला में अन्त्येष्टि सस्कार

ग्राम चौसाला मे प्रोफेसर वासुदेवराव का कालमेघ साहब माजी कुलगुरु नागपुर विद्यापीठ तथा अध्यक्ष शिवाजी शिक्षण सस्था अमरावती इनके पिताजी मोतीराम जी कालमेघ का अन्त्येष्टि सस्कार दि० ८ ४-८८ को वैदिक रीति से अपार जनसमूह की उपस्थिति मे रामभाऊ बोबरे जी के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ।

पंजाब के हिन्दू पीड़ितों के लिए सहायता

दान-सूची

क्रमांक	दानियो के नाम	दानियो का पता	रुपये पै०
(१)	मसर्स इ डस्ट्रीयल सेल्स सेन्टर	राणीगज सिकन्दराबाद	५१)
(२)	पी एस राव	शामलाल बिल्डिंग हैद्राबाद	२२)
(३)	एन कृष्ण (वाचमैन)	शामलाल बिल्डिंग हैद्राबाद	२१)
(४)	टी० रघुराज सिंह	विघ्यानगर हैद्राबाद	२१)
(५)	आर भूपति	राणीग ज सिकन्दराबाद	२१)
(६)	एस सगय्या एण्ड सन्स	राणीग ज सिकन्दराबाद	२१)
(७)	एल बलराम एण्ड सन्स	राणीग ज सिकन्दराबाद	२१)
(८)	मैसर्स महालक्ष्मी स्टील	राणीग ज सिकन्दराबाद	२१)
(९)	श्री लक्ष्मी रेन्ज आयंन्स्	राणीगंज सिकन्द्राबाद	२१)
(१०)	दीन बन्धु त्रिपाठी	राणीग ज सिकन्द्राबाद	२१)
(११)	किर्तीमार्केटींग	शामलाल बिल्डिंग हैद्राबाद	१६)
(१२)	पी शकरराव	शामलाल बिल्डिंग हैद्राबाद	११)
(१३)	टी गोबिंद रामसिग	शामलाल बिल्डिंग हैद्राबाद	११)
(१४)	महेशकुमार इलैक्ट्रीकल्स	शामलाल बिल्डिंग हैद्राबाद	११)
(१५)	एम श्रीनिवास	शामलाल बिल्डिंग हैद्राबाद	११)
(१६)	एम परमधामा	शामलाल बिल्डिंग हैद्राबाद	११)
(१७)	श्री बालाजी सीमेंट	शामलाल बिल्डिंग हैद्राबाद	११)
(१८)	पूजा कटपीस सेन्टर	शामलाल बिल्डिंग हैद्राबाद	११)
(१९)	राघवेन्द्र मेडीकल एण्ड जनरलस्टोर्स	शामलाल बिल्डिंग हैद्राबाद	११)
(२०)	डा० सी बी दयानन्द	शामलाल बिल्डिंग हैद्राबाद	११)
(२१)	साईनाथ मेडीकल एण्ड जनरल स्टोर्स	शामनाथ बिल्डिंग हैदराबाद	१०)
(२२)	श्री नारायना	शाम्लाल बिल्डिंग हैद्राबाद	१०)
(२३)	श्रीमती सद्धिना	शामलाल बिल्डिंग हैद्राबाद	१०)
(२४)	पी गौरी शकर	रानीगज सिकन्दराबाद	१०)
(२५)	एच विट्ठल	रानीग ज सिकन्दराबाद	१०)
(२६)	एम ए सतार	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	०६)
(२७)	सन्तोष किराना स्टोर्स	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	०५)
(२८)	के प्रताप	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(२९)	जार्ज सायकील टैक्सी	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(३०)	सन्तोष कुमार जनरल स्टोर्स	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(३१)	के राधाकृष्णन्न	शामलाल बिल्डिंग हैदर बाद	५)
(३२)	ए के नारायन	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(३३)	रवीन्द्र (चन्द्र फोटो स्टुडियो)	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(३४)	के नरसिंग राव	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(३५)	ह सी टाक्वर	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(३६)	साबर पान शाप	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(३७)	सधा पान शाप	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(३८)	जे शामराव	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(३९)	ए एस रेड्डी	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(४०)	हरी दास	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(४१)	अशोक	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(४२)	श्री लक्ष्मी	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(४३)	के मलीकार्जुन राव	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(४४)	एस रामजी राव	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(४५)	शीव टाईप इन्स्टीटयूट	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(४६)	जे मीरआल्ली	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(४७)	ए. अनजय्या	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(४८)	एस सनजीवा राव	शामलाल बिल्डिंग हैदराबाद	५)
(४९)	जी. वेकन्ना	रानीगंज सिकन्दराबाद	५)

दान प्राप्त कर्ता कुमारी टी० आनन्द पूर्णादेवी एव मेरे भ्राता टी० अमरराव सिंह १-११-२४२/बी-१४, शामलाल बस्ती, बेगमपेठ हैदराबाद ५०००१६,

सूचना

सभी आय जगत के आर्य जना को विदित हो कि स्वामी ब्रह्मानन्द 'वेद भिक्षु जी ने आर्य सभासदो चन्दौसी के आग्रह पर अपना स्थाई आवास आर्य समाज चन्दौसी जि० मुरादाबाद (उ० प्र०) पिन० २०२४१२ पर बना लिया है।

जिज्ञासु जना से अनुरोध है कि उनसे पत्राचार एव रोचक वेद प्रवचनो के लिये दिये गये पते पर ही सम्पर्क करें। —रामकुमार शर्मा

मन्त्री आर्य समाज चन्दौसी
जि० मुरादाबाद (उ० प्र०)
पिन० २०२४१२

प्रवेश सूचना

एकान्त शान्त, वैदिक वानप्रस्थ आश्रम एव साधु साधना, वेद प्रचार मण्डल कादी खेडा व जागाहेडी, जि मु नगर उ प्र मे स्वाध्याय प्रेमी, कर्मठ आर्य समाजी कार्यकर्ताओ के लिए २ वर्ष का पाठ्यक्रम प्रारम्भ हो रह है। २ वर्ष के पाठ्यक्रम मे, वैदिक कर्मकाण्ड अष्टाग योग एव साधना वैदिक सिद्धान्ता का पूर्ण ज्ञान, प्रामाणिक विद्वाना के सानिध्य मे कराया जायगा। इस प्रशिक्षण मे ग्रहस्थ की जिम्मेदारी से निवृत वानप्रस्थी आर्य उपदेशक बनने के इच्छुक व्यक्तिया को ही अवसर प्रदान किया जायगा। दशवी कक्षा अथवा तत समक्ष योग्यता होनी चाहिये। दाखला ३० जून स १९८८ तक ही हागे। पहली जौलाई से पाठ्यक्रम प्रारम्भ हो जाएगा। १००) रु० दाखला फीस होगी। आवास व भोजन अन्य सुविधा आश्रम की ओर से रहेगी, जानकारी हेतु आश्रम मे आकर स्वामी अमृतानन्द जी से मिले।

—स्वामी अमृतानन्द सरस्वती

आचार्य एवं भजनोपदेशक की आवश्यकता

(१) दयानन्द मठ चम्बा (हि० प्र०) मे ग्राम प्रचार के लिए एक योग्य भजनोपदेशक की आवश्यकता है। इच्छुक सज्जन अपनी योग्यता, आयु, अनुभव वेतन सम्बन्धी जानकारी तुरन्त निम्न पते पर दे।

(२) मठ द्वारा सचालित दयानन्द सस्कृत महाविद्यालय के लिए एक योग्य आचार्य की आवश्यकता है। जो गुरुकुलीय पद्धति मे रह सके एव छात्रा वैदिक विचार दे सके, वही आवेदन करे। भोजन, आवास नि शुल्क होगा। योग्यता, अनुभव, वेतन आदि के सम्बन्ध मे तुरन्त जानकारी दे। जुलाई मास मे नियुक्ति की जानी है। हि० प्र० के शास्त्री पाठ्यक्रम को पढाने की पूर्ण योग्यता होनी आवश्यक है। व्याकरणाचार्य को अधिमान दिया जाएगा।

—आचार्य महावीरसिंह एम० ए०
प्रबन्धक, दयानन्द मठ चम्बा-१७६३१० (हि० प्र०)

धर्मोपदेशक की आवश्यकता

वैदिक सिद्धान्तो का ज्ञाता, अच्छा स्वाध्याय शील, अच्छा वक्ता, उपदेश जो ग्रामो नगरो मे सभी जगह वैदिक धर्म प्रचार कर सके ऐसे उपदेशक की आवश्यकता है। मासिक दक्षिणा सात सौ से एक हजार रुपय तक योग्यतानुसार समर्पित होगी।

पत्र व्यवहार निम्न पते पर कीजिये।

सोमानन्द मन्त्री, वैदिक यति मण्डल
मुख्य कार्यालय दयानन्द मठ दीना नगर
जिला गुरदासपुर (पजाब)

प्रचारक चाहिए

आवश्यकता है एक सुयोग्य प्रचारक की, जिसे वेद, कुरान, बाइबिल, का सामान्य ज्ञान हो और परावर्तन कार्य मे रुचि रखता हो, मानदेय योग्यतानुसार, सम्पर्क करें।

—गगादेव शर्मा
एच-६६ साऊथ एक्सटेन्सन
पार्ट-१ नई दिल्ली-४९

R N 626/57 Licensed to post without prepay ment License No U 93 Post in D P.S O on 10-6 1988

स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन पाकर सभा को दान भी दवें

सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे १९३८ ३९ मे चलाये गये सत्याग्रह को स्वतन्त्रता संग्राम का अंग मानने के बाद सौ से ज्यादा व्यक्ति केन्द्र से और ३०० से ज्यादा राज्यो से पेंशन पाने लगे हैं।

यह सर्वथा आर्योचित कार्य है कि ऐसे व्यक्ति सभाको अन्य भाई बहनों की सहायतार्थ २५० रु० एकमुश्त सार्वदेशिक की आजीवन सदस्यता के रूप मे शीघ्र स्वयमेव भेजें।

हाल मे सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ऐसे प्रत्येक पेंशनर को बधाई भेजी है और कम से कम २५०) रु० इस निमित्त भेजने के लिये निवेदन किया है। यह काम हम सबको अवश्य करना चाहिये।

मैंने अपनी ओर से यह राशि सभाको भेज दी है। मेरे मित्र श्री नरदेव स्नातक अध्यक्ष हैदराबाद आर्यसमाज स्वतन्त्रता सेनानी समिति एवं पूर्व सांसद ने भी शीघ्र राशि भेजने का वायदा किया है। शायद भेज भी दिया है। अन्य मित्रो से भी यही अनुरोध है।

अगले वर्ष सत्याग्रह की स्वर्ण जयन्ती होगी

—ब्रह्मदत्त स्नातक

आर्य छात्र-छात्राओं का एतिहासिक दौरा

आर्य बाल गृह पटौदी हाउस दरियागंज के ५० छात्रो का भ्रमण कार्यक्रम इस ग्रीष्मावकाश में दि० २० ५ ८८ से ४ ६ ८८ तक स्वामी कान्तीवेश जी के ओ३म् के झण्डे तले वैदिक ज्ञान एवं आर्य समाज के प्रचार मे निरंतर डटे रहे जो कि श्री रामसिंह राणा सहायक प्रबन्धक श्री रामदुलारे ताहगर श्री त्रिपाठी जी संरक्षक द्वय के नेतृत्व में कसौली हिमाचल प्रदेश के भ्रमण कार्यक्रम पर गये।

इस संस्था के अधिष्ठाता श्री हमीरसिंह रघुवंशी ने बताया कि हमारी आर्य कन्या सदन की ५० कन्याएं भ्रमण हेतु १५ दिवस के लिए नैनीताल के दौरे पर जा रही हैं।

—हमीरसिंह प्रबन्धक

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि० सहारनपुर (उ० प्र०)

साव ... ावदेशिक पत्र का ब ... का कष्ट कर। जि

मनिऑ ... न० कूपन पर ग्राहक संख्या लिखना न भूलें। चैक अथवा ड्राफ्ट सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से बनवा कर भेजें व्यक्तिगत नाम से न भेजें। पत्र व्यवहार करते समय अपना पूरा पता साफ २ अक्षरो से ग्राहक संख्या सहित लिखें जिससे कि उचित कार्यवाही की जा सके। कुछ पत्र इस प्रकार के आते हैं कि शुल्क भेजना बन्द किया जाय और पता लिखा नही होता इस प्रकार के पत्रो का क्या जवाब दिया जा सकता है। इसी प्रकार मनिआर्डर कूपन पर सारी कहानी लिख देते हैं परन्तु ग्राहक संख्या नही लिखते जिससे शुल्क जमा करने मे परेशानी होती है। अतः सभी से विनम्र प्रार्थना है कि भविष्य मे इस ओर ध्यान देने का कष्ट करें।

नोट —बार २ वार्षिक शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिए एक बार २५०) रुपए भेज कर सार्वदेशिक पत्र के आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

व्यवस्थापक सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] वर्ष २३ अङ्क २५]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
ज्येष्ठ शु० ५ सं० २०४५ रविवार १९ जून १९८८

दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष : २७४७७१
वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

बावरी मस्जिद पर शिया संगठन द्वारा शाहबुद्दीन की आलोचना

लखनऊ १० जून १९८८

अखिल भारतीय शिया कान्फ्रेंस के महा सचिव ने सुझाव दिया है कि बावरी मस्जिद राम जन्म भूमि विवाद को अन्तिम रूप से हल करने के लिए प्रधान मन्त्री, श्री राजीव गान्धी हिन्दू सस्थाओं के प्रतिनिधियों तथा शिया मुस्लिम सम्प्रदाय के नेताओं से बातचीत करें। यह इसलिये आवश्यक है क्योंकि—सुन्नी-मुस्लिम नेता स्वार्थ के कारण इस मामले में मुसलमानों को हिन्दुओं के खिलाफ भड़का रहे हैं। विशेष रूप से शाहबुद्दीन का नाम लेते हुए उन्होंने कहा कि इन लोगों को बावरी मस्जिद के मामले में बोलने का कोई अधिकार ही नहीं है, क्योंकि यह एक शिया मस्जिद है और इस विषय पर केवल शिया ही बातचीत कर सकते हैं।

बावरी मस्जिद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की चर्चा करते हुए श्री रिजवी ने बताया कि इसको मुगल बादशाह बाबर के स्थानीय प्रशासक मीर मोहम्मद बकी इस्पानी ने बनवाया था।

इस मस्जिद के प्रबन्ध के लिए उसने एक वक्फ की स्थापना भी की जिसके नियमानुसार केवल उसके ही वंशधर मस्जिद के मुतबल्ली (प्रबन्धकर्ता) हो सकते है। मीर बकी ने मस्जिद का खर्च चलाने के लिए तीन गांव की जागीर भी मस्जिद के नाम कर दी थी। शाहनवां गांव (फैजाबाद) की बासीस एकड़ जमीन अभी तक मस्जिद के आधीन है।

इस मस्जिद के वर्तमान मुतबल्ली श्री जावेद हुसैन हैं जिनकी उम्र इस समय १० वर्ष की है। वे अपने पूर्वज तथा मस्जिद के निर्माता मीर बकी के मजार के पास ही शाहनवां गांव में रहते हैं। वहां एक इमामबाडा भी बना हुआ है। जावेद ने ही इस मस्जिद में, जो शियाओं की है सुन्नी हुसैन मुसलमानों को भी नमाज पढ़ने की इजाजत दी थी। अतः इस मस्जिद के मामले में केवल वे ही कोई फैसला कर सकते हैं।

श्री रिजवी ने बताया कि शिया धार्मिक कानून के अनुसार इस मस्जिद को हटाकर दूसरी जगह स्थापित किया जा सकता है। मीर बकी के वर्तमान वंशधरों ने इच्छा प्रकट की है कि बावरी मस्जिद को अयोध्या से हटाकर शाहनवा गांव में स्थापितकर दिया जाये जहां उनके पूर्वज चिर-निद्रामें सोये हुएहैं। इससे एक लाभ तो यह होगा कि इस मस्जिद में नियमित नमाज अदा की जा सकेगी और दूसरे राम-जन्मभूमि उसके वास्तविक हकदारों को मिल जायेगी। इस प्रकार हिन्दू-मुसलमानो के बीच वर्षों से चला आ रहा यह झगड़ा हमेशा के लिए समाप्त हो जायेगा। ✕

पंजाब के हिन्दू विस्थापितों के हितों के लिए सभा-प्रधान उपराज्यपाल से मिले

पंजाब के विस्थापित हिन्दुओं के सम्बन्ध में देहली के उपराज्यपाल से भेंट करने के पश्चात् स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा प्रो० बलराज मधोक का सयुक्त वक्तव्य —

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और प्रोफेसर बलराज मधोक ने देहली के उपराज्यपाल, श्री हरि किशनलाल कपूर से पंजाब से भागकर आये हिन्दुओं की समस्याओं के सम्बन्ध में बातचीत की। उन्होंने उपराज्यपाल से अनुरोध किया कि जब तक पंजाब में शान्ति स्थापित नहीं होती और यह लोग अपने-अपने घरों को वापिस नहीं लौट जाते तब तक उन्हें यहां सब प्रकार की सुविधायें प्रदान की जावें।

इस सम्बन्ध में उपराज्यपाल ने सूचित किया कि आतंकवादियों से प्रभावित गांवों से भागकर आये हिन्दुओं के लिये पंजाब के अन्दर ही कई कैम्प खोल दिये हैं और उनको वापिस लौटने के लिये प्रोत्साहित करने के लिये कई आकर्षक सुविधायें देने के प्रस्ताव रखे हैं। अतः दिल्ली प्रशासन चाहता है कि यह लोग पंजाब लौट आवें। फिर भी जब तक ये लोग यहां हैं तब तक उन्हें आवास और भोजन आदि की सुविधायें देने के प्रयत्न किये जायेंगे।

शीघ्र ही पंजाब सरकार अपने कुछ उच्चाधिकारियों को देहली भेजेगी जो विस्थापितो को यह बतायेंगे कि पंजाब सरकार ने वहां ही उनके पुनर्वास के लिये क्या-क्या कदम उठाये हैं। आशा है कि यह अधिकारी विस्थापितों को समझाकर उनका भय निवारण करने में सफल हो सकेंगे। ●

आर्यसमाज दीवानहाल का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

दिनांक १२ जून आर्यसमाज दीवानहाल का वार्षिक अधिवेशन स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। चुनाव सर्वसम्मति से हुआ श्री सूर्यदेव जी प्रधान एवं श्री मूलचन्द जी मन्त्री निर्वाचित हुए अन्तरंग एवं कार्यकारिणी के गठन का अधिकार श्री मंत्री, प्रधान को दिया गया।

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

गुरुकुल होशंगाबाद और नारायणगढ़ आर्य महासम्मेलनों में क्या देखा ?

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती—

२६ मई १९८८ को सायंकाल डीलक्स द्वारा दिल्ली से चलकर २७ मई को प्रात: जब होशंगाबाद रेलवे स्टेशन पर पहुँचा तो स्टेशन पर भारी सख्या मे आर्यजन, गुरुकुल के ब्रह्मचारी और आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश के प्रधान श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव गणमान्य कार्यकर्ता और नगर के प्रतिष्ठित जनो के दर्शन करने का सौभाग्य मिला।

गुरुकुल होशंगाबाद जो कुछ समय से प्रायः बन्द होने की स्थिति मे था-माता कौशल्यादेवी जी के प्रबन्ध सभालने पर फिर अपने पुराने गौरव को प्राप्त कर रहा है। गुरुकुल का हीरक जयन्ती महोत्सव बड़ा ही प्रभावशाली था। हजारो की संख्या मे स्त्री-पुरुष, बालक और युवक बड़ी श्रद्धा के साथ यज्ञस्थली के चारो ओर उपस्थिति होकर वैदिक धर्म की पुरातन संस्कृति और मन्त्रोचार से प्रभावित हो रहे थे। हीरक जयन्ती समारोह का पंडाल हर समय हजारो श्रद्धालुओं से भरा रहता था। आर्य समाज की विचारधारा से जनसमूह बड़ा ही प्रभावित रहा। सायंकाल नर्मदा के तट पर विशाल जन सभा मे नगर की सभी सार्वजनिक संस्थाओं ने स्वागत कार्यक्रम में भाग लिया और रात के ११ बजे तक वैदिक धर्म और आर्य समाज की विचार-धारा के उपदेशो को ध्यान पूर्वक सुना।

उत्सव मे आर्यवीर दल के सैनिकों का कार्यक्रम भी बड़ा प्रभावोत्पादक था। सैकडो आयवीरों को गणवेश में देखकर आर्य जनता प्रसन्नता व उत्साह से जयजयकार कर रही थी। यह सब सफलता प्रान्तीय सभा के कर्मठ अधिकारियो तथा प्रान्त के आर्य समाजियों के आपसी सद्‌भाव एवं प्रेम पूर्वक कार्य करने का परिणाम था।

शहीद मेघराज की स्मृति में आर्य महासम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत की ओर से नारायणगढ मे शहीद मेघराज की स्मृति मे आयोजित आर्य महा सम्मेलन मे भाग लेने के लिए ३ जून को सायकाल दिल्ली से रतलाम के लिए प्रस्थान किया। ४ जून को प्रात. ५ बजे रतलाम रेलवे स्टेशन पर श्री जगदीश प्रसाद वैदिक तथा रतलाम आर्य समाज के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। हमें रेलवे स्टेशन पर रेलवे की मज्दूर यूनियन के कार्यालय में भी ले जाया गया। मुझे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि रतलाम में मजदूर यूनियन के कार्यकर्ता ही आर्य आर्यसमाज के अधिकारी है और वे सब बड़ी निष्ठा से वैदिक धर्म के प्रचार कार्य मे लगे हुए है। स्नानादि के उपरान्त हम एक जीप गाड़ी से नारायण-गढ की ओर चल दिए हमारे साथ श्री वैदिक जी तथा अन्य कार्यकर्ता रतलाम से मन्दसौर होते हुए दोपहर १२ बजे नारायणगढ़ पहुँच गए। रतलाम से नारायणगढ़ १२५ किलोमीटर की दूरी पर है।

नारायणगढ़ एक छोटा सा कस्बा है और जनसख्या लगभग १० हजार है। आज से ५० वर्ष पूर्व आय समाज नारायणगढ़ के कार्यकर्ता श्री मेघराज को हरिजनो के मन्दिर में प्रवेश कराने के अपराध में रामनवमी के दिन कुलहाड़ीं और छुरो से छलनी करके शहीद कर दिया था। राममक्तों ने शबरी के वशजों को मन्दिर मे प्रवेश कराने के बदले आर्य वीर मेघराज को यह सजा दी थी।

उसी शहीद मेघराज की पवित्र स्मृति में आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत के अधिकारियो ने इस सम्मेलन का आयोजन करके आर्य जनता में जागृति का शखनाद किया। ५०० गणवेशधारी आर्य वीर फरसे, तलवारें, और अन्य शस्त्रो से सुसज्जित थे, ओ३म् पताका फहरा रही थी। पडाल और यज्ञशाला हजारो श्रद्धालुओ से भरे रहते थे। इस महासम्मेलन में युवको माताओ और बहनो ने भारी संख्या में भाग लिया।

अभूतपूर्व शोभायात्रा

५ जून सायकाल ४ बजे नारायणगढ़ तथा आस पास एवं प्रान्त के पधारे हुए १५ हजार के लगभग युवको, देवियों तथा आर्य जनों ने बड़े शान्त और संगठित वातावरण मे शोभायात्रा निकाली। ढोल बाजे, घोड़े, जीपें तथा स्कूटरो पर सैकड़ों आर्य वीर ओ३म् पताका लिए चल रहे थे।

नगरवासियो ने शोभा यात्रा का जो स्वागत किया, वह अभूतपूर्व था। हमारी खुली जीप में डा० अमरेश, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत के प्रधान श्री इन्द्रप्रकाश गांधी, प० राजगुरु शर्मा, श्री जगदीश प्रसाद और श्री यशपाल आर्य मेरे साथ थे। लगभग १५१ तोरणद्वार बनाये गये थे। प्रत्येक तोरणद्वार पर बहनों ने नारियल के साथ १०-१० रुपये के नोट देकर तिलक लगाये।

नारायण गढ़ से चलकर रात को ३ बजे रतलाम पहुँचे। रतलाम से फ्रेन्टियर मेल से प्रात: ७ बजे चलकर ६ जून को सायंकाल ७ बजे दिल्ली पहुँचा।

पाकिस्तान और बंगलादेश
भारत को इस्लाम का घेरा

बंगला देश का सविधान इस्लामी शरीयत का पाबन्द है। यद्यपि पाकिस्तान एक मुस्लिम देश और इस्लामी शरीयत का पाबन्द है। यद्यपि पाकिस्तान का निर्माण हो जाने पर कायदे आजम मुहमदअली जिन्नाह ने संविधान निर्माण करने वाली असैम्बली के समक्ष भाषण देते हुए कहा था कि अब आप लोग आजाद हैं। आप पाकिस्तान में स्वतन्त्र रूप से मस्जिदों और मन्दिरों मे जा सकते हैं। आपका अपना धर्म, अपना विचार अथवा बिरादरी चाहे कुछ भी हो सरकार को इससे कोई सम्बन्ध नहीं। हम ऐसे समय मे काम शुरू कर रहे हैं जबकि सरकार धर्म, जात और बिरादरी में कोई भेदभाव नही करेगी। सबको बराबरी का अधिकार प्राप्त होगा।

किन्तु पाकिस्तान मे जनरल अयूबखा और याहयाखां दोनों फौजी जनरल थे। इन्होने पाकिस्तान में प्रजातन्त्र को पनपने नही दिया और तानाशाही का शासन देश को दिया। जनरल जिया उलहक ने भी फौज द्वारा ही सत्ता संभाली तो उन्होने भी कट्टर इस्लामी हकूमत की बुनियाद को पक्का करना आरम्भ कर दिया है। पाकिस्तान की जनता को फौजी शासन तथा ताना-शाह शासको से कभी मुक्ति मिल सकेगी, कहना कठिन है।

इधर बंगला देश का सविधान भी इस्लामी गणतन्त्र का रूप ले रहा है।

पाकिस्तान और बगलादेश मे हिन्दुओ के साथ जो व्यवहार हो रहा है, उसकी चर्चा करने मात्र से रोगटे खड़े हो जाते है।

भारत में भी १० करोड मुस्लिम भाई बहिन रहते है उनके नेता सैयद शाहबुद्दीन और जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी के कट्टर इस्लामी विचारो से भी देशवासी परिचित हैं। अब बाहर के फौजी शासन और अन्दर के साम्प्रदायिक नेताओ के इशारो पर चलने वाले मुस्लिम समुदाय की गतिविधियो से भारत सरकार तथा देश की राष्ट्रवादी जनता को और अधिक जागरूक रहने की आवश्यकता है।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

प्रो० वेद व्यास आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान निर्वाचित

दिल्ली २९ मई।

आर्य समाज मन्दिर मार्ग में प्रात: १० बजे गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक श्री क्षितीश वेदालकार के ओजस्वी भाषण के अनन्तर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन हुआ। ३०० प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया सभा मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने वार्षिक रिपोर्ट सुनाई।

तदन्तर आगामी वर्ष के लिए प्रसिद्ध अधिवक्ता प्रो० वेद व्यास जी सर्वसम्मति से प्रधान चुने गये। सभा का कार्य बड़े उल्लास और प्रेम के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

सम्पादकीय

क्या राजार्य सभा बने ?

आर्यसमाज को आज आवश्यकता है, एक ऐसे व्यक्तित्व की, जो वस्तुत स्वय सक्षम व्यक्तित्व वाला हो। व्यक्तित्व की पूर्ति मे कितने तत्वो की आवश्यकता होती है, जिससे व्यक्ति पूर्ण मनुष्यत्व को प्राप्त होता है। उस व्यक्ति के व्यक्तित्व पर ही किसी सस्था का जन्म होता है और उसके पीछे चलने वाले लाखों कदम होते हैं। प्राचीन काल में अनेक दिग्विजय करने वाले लोक नायक हो चुके हैं। जिनकी हम समय समय पर बडाई के पुल बांधा करते हैं। तब हम ऐसे थे, आज ऐसे नही ?

सस्था धार्मिक हो या राजनीतिक, उसके सस्थापक मे वह तप, त्याग होना चाहिए, जिसके बल पर किसी सस्था को जन्म दिया जाय, आर्यसमाज के मच पर समय समय पर यह आवाज सदा उठती रही है कि आर्य समाज का राजनीतिक मंच होना चाहिए। सस्था को जन्म देने के लिए महा० बुद्ध महावीर स्वामी, शकर-दयानन्द गाधी जैसे व्यक्तित्व होना चाहिए।

एक व्यक्ति वामन होकर भी अपने व्यक्तित्व से, शक्ति के प्रभाव से विराट हो सकता है। कृष्ण के विराट रूप का यही रहस्य है। उसका स्वरूप उसके शरीर से कही अधिक विशाल और व्यापक है। अपने क्षेत्र को विस्तृत बनाकर ससार को अपने भीतर व बाहर छाया की भाति रख सकता है। एक व्यक्ति अपने आप मे एक सस्था बन सकता है। लोक की सद्भावनाओ को अपनी ओर आकर्षित कर अपने को शक्ति का केन्द्र बना सकता है। परन्तु वह शक्ति आज हमारे मे दृष्टि गोचर नही हो पा रही है। कहने मात्र मे हर बात पर दयानन्द की दुहाई देने से काम नहीं चलेगा। उस जैसा त्याग-तप व बलिदान के भावो से भरा व्यक्तित्व चाहिए।

स्वामी दयानन्द हमारे लिए इतना कार्य छोड गए हैं, उसे ही हम पूरा नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि कार्य एक व्यक्तित्व ने दिया था पर उसे पूरा करने वाला व्यक्तित्व हममें नही है केवल यह कहने मात्र से कि दयानन्द ने ऐसा कहा था।

जिधर से सूर्य उदय होता है उसी को हम पूरब दिशा मानते हैं तेजस्वी पुरुष के सम्बन्ध में भी यही बात चरितार्थ होती है। केवल गाल बजाने या लेख लिखने मात्र से सस्थायें नहीं चला करती हैं।

आर्य समाज का प्रादुर्भाव उन परिस्थितियो में हुआ, जिसे केवल ऋषि जैसा व्यक्तित्व ही झेल सका था। आज हम एक भी व्यक्ति ऐसा नही पैदा कर सके हैं जो स्वामी दयानन्द के छठे समुल्लास पर राजनीति की पृष्ठ भूमि तैयार कर सके।

एक निर्बल व्यक्ति प्रबल शक्ति उत्पन्न कर सकता है यथा ह० मुहम्मद के द्वारा एक ऐसी शक्ति का जन्म हुआ, ईसा का नाम भी उसी कोटि मे आता है और स्वामी दयानन्द का नाम भी। जो इनके नामो से महान बन गई। इस्लाम, ईसाईयत, आर्य समाज एक शक्ति के उदाहरण हैं। एक व्यक्ति किस प्रकार अपने से बडी शक्तियो का निर्माण व सगठन कर सकता है।

श्रेष्ठ पुरुषों के चरित्र से यही शिक्षा मिलती है मनुष्य तुच्छ जीव नहीं है उसके भीतर भगवान का तेज, सृष्टि का तत्व, सिद्धि का स्रोत रहता है। जैसा वैसा चाहे अपने को बना सकता है जितना ऊंचा उठना चाहे उठ सकता है प्रत्येक अवस्था और प्रत्येक दिशा मे उन्नति कर सकता है।

परिस्थितियों से उलझो तो सही

सामाजिक क्षेत्र की भांति राजनीति के क्षेत्र मे छठा समुल्लास पढ़ लेने से राजनीति नहीं आ जाती है [illegible] राजनीति के [illegible] परिस्थितियों में राजनीति की बात कही [illegible] है। आर्यसमाज इतना बिखरा है [illegible] करती पड रही है। [illegible] कोई भी हैं, जो हिन्दू समाज ही इतना बिखरा हुआ है कि यहीं किसी के साथ चलने को तैयार नहीं, फिर कैसे राजनीति का मच बनाया जा सकता है।

आर्य समाजी ही परस्पर इतने उलझे हुए हैं जो एक दूसरे के साथ चलने को तैयार नही। परस्पर के मतभेद इतने अधिक हैं कि आर्य समाज का सगठन स्वय चरमरा रहा है। देश-जाति-समाज की फूट इतनी भयकर है जिसे सम्हाले बिना किसी सस्था को जन्म देना और फिर उसे चलाना एक महान कार्य है।

विगत ५० वर्षों से यह आवाज उठाई जा रही है कि आर्य समाज को राजार्य सभा का गठन करके एक पृथक शक्ति के रूप मे आना चाहिए। विचार यह करना है कि क्या इतनी राजनीति की पार्टियो के बीच हमारी दूकान चल सकेगी। कोई ऐसा व्यक्तित्व है जो राजार्य सभा को जन्म देकर व सक्षम बनाकर एक शक्ति सम्पन्न सस्था का निर्माण किया जाय। इस शक्ति के बन जाने पर इसकी सदस्यता पर प्रश्न चिन्ह लगेगा कि इसमे हमारे सदस्य कौन हो। एक तो वैसे भी कम हैं फिर राजनीतिक पार्टी बन जाने पर क्या सरकारी सर्विस वाला व्यक्ति हमारा सदस्य बन पायेगा। किसी भी आन्दोलन का विशेष गतिविधियो पर सी० आई० डी० की इन्क्वायरी चालू हो जायगी। वह क्यो सदस्य बनेगा। इस प्रकार फूट मे फूट के बीज पैदा होगे। तब सस्था कैसे चलेगी।

अत किसी सस्था के जन्म देने से पूर्व उसके पूर्वापर भी विचार करना जरूरी है। जब तब महान व्यक्तित्व सामने न हो तब तक किसी भी काम को करने मे सफलता नही मिलेगी। लघुता त्याग कर महत्ता प्राप्त करने मे ही किसी कार्य की सफलता सन्निहित है। किसी भी योजना को सिद्ध करने से पूर्व अपनी योग्यता क्षमता, शिथिलता व उसके कारणो पर गम्भीरता पूर्वक विचार कर लेना चाहिए। परिस्थितियो को समझे बिना यदि किसी काम मे हाथ डाला गया, तो वैसा ही हाल होगा, जैसा कि आज की राजनीतिक सस्थाओ का हो रहा है। सघठनात्मक न होकर विघटनकारी ही है। जब तक इन झाड-झंकाडो को काटा न जाय, नई खेती नही पैदा की जा सकती है।

जाति उत्थान के लिए–एक प्रयास

–पृथ्वीराज शास्त्री–

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ से जुडे हुए मुझे और मेरी धर्मपत्नी को लगभग १५ वर्ष से अधिक का समय व्यतीत हो गया है। हम दोनो को सघ मे लाने का श्रेय स्व० श्री ओमप्रकाश जी त्यागी का सच्चा स्नेह और हमसे उनकी अभिन्नता थी। हमारे हृदयो मे जाति के पिछडे वर्ग के प्रति सहानुभूति का बीज उन्ही ने बोया था। उन्ही की सगति का फल था कि हमे पिछडे वर्ग के लोगो की उन्नति के लिये तडप होने लगी। श्री त्यागी जी से धीरे-धीरे समीपता बढती गई और वह सघ का उत्तरदायित्व मुझ पर डालते रहे। उनके स्नेह और सहानुभूति पूर्ण आदेशो मे, मैं किसी प्रकार की ननुनच नही करता था। उनका आदेश था कि सेवा का सच्चा लाभ इसी में है कि जाति से ये उपेक्षित लोग जिन्हे आदिवासी या पिछडे वर्ग की सज्ञा दी जाती है, इन्हे ऊपर उठाया जाय। इनके मन मे बसी हीन भावना को नष्ट किया जाय और अपने मूल धर्म मे स्थिर रहने की प्रेरणा देकर इन्हे ईसाइयों के प्रलोभनो, छलो और कपटो से अवगत कराया जाय तो इन्हे बचाया जा सकता है।

नागालैण्ड और आसाम में हम दोनो (पति-पत्नी) ने अपने व्यवहार और सम्पर्क से उन लोगो मे सध्या, यज्ञ, दैनिक कर्मों के प्रति उत्साह भाव जब भरा तो उनको वैदिक धर्म मे आस्था होने लगी। स्नेहपूर्ण व्यवहार से उनमे डाले गए धार्मिक सस्कार बडे लाभकारी सिद्ध हुए। सभवत. बोकाजान में हम दोनों के लगभग छ मास रहने का फल था कि वे लोग हमारी सब बात मानने लगे। बोकाजान के विद्यालय का निर्माण कार्य जिन छ मासो मे चलता रहा, हमारा धर्म प्रचार कार्य भी सफलता पूर्वक चलता रहा। नागा और आसामी बन्धु हमारी धार्मिक बातो मे रुचि लेने लगे।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

क्या ईसा ने जापान में शादी रचाई था?

जापान के उत्तर पूर्व में रहने वाला एक किसान ईसा मसीह का वंशज है या फिर ऐसा इस गांव के रहने वाले कहते हैं कि यहां प्रचलित दंतकथा के अनुसार जब रोमनों ने ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाने की कोशिश की तो वह बचकर शिगो आ गए। यहां १०६ साल की उम्र में उनकी मृत्यु हुई। उन्होने एक जापानी महिला से शादी की थी और उनकी तीन पुत्रियां थी।

एक बार दंतकथा बन जाने के बाद शिगो गांव के साथ कुछ और जुड गई। यहां के निवासी सदियो से कुछ ऐसे रीति-रिवाजों का पालन कर रहे हैं जो बाकी जापान के लिए अपरिचित हैं। हाल में जन्म लिए बच्चे को जो कपडे पहनाए जाते हैं उनमें 'डेविड का तारा' कढा होता है। लगभग दस साल पहले तक नये जन्मे बच्चे के माथे पर काली स्याही से 'क्रास' बनाया जाता था।

गांव वाले कुछ ऐसे शब्दो का उपयोग करते हैं जिन्हें अन्य लोग नही जानते। मसलन, वे पिता के लिए "आपा" और मां के लिए "आया" शब्दो का प्रयोग करते हैं और मानते हैं कि ये इस भाषा के हैं जो ईसा बोलते थे।

ईसा से सम्बन्धित जापानी दन्तकथाए और धर्मग्रन्थो में काफी मतभेद है। धर्मग्रन्थों में कहा गया है कि ईसा ने कोई चमत्कार नहीं किया। जब कि शिगो के शिमोताची दाना का कहना है कि ढेर सारे अच्छे काम किए। एक स्थानीय दन्तकथा के अनुसार ईसा एक बार गांव वालों को भूखमरी से बचाने के लिए काफी दूर की यात्रा की और उन्हें भोजन उपलब्ध कराया।

हर साल बसन्त के मौसम में शिगो गांव 'क्राइस्ट-उत्सव' मनाता है। इसमें शितो धर्म के पुजारी ईसा की धरती की पूजा करते है। उत्सव मे स्त्रियां ईसा और हम्मीरी टीले के चारो ओर नृत्य करती है और न समझ में आने वाली भाषा में कुछ गाती है। गांव वाले मानते हैं कि ये शब्द उस भाषा के हैं जिसे ईसा प्रयोग करते थे।

इस टीले की खुदाई करके तहखाना खोजने की कोशिश कभी नही की गई। गांव के एक अधिकारी नागोनो का कहना था उस भय से टीले की खुदाई नही की जाती कि क्राइस्ट प्रतिशोध स्वरूप सावागुची परिवार को बरबाद कर देंगे। शिमोची दाना का कहा है, "हम ईसा को भगवान नही मानते। हम बस यह पक्का कर लेना चाहते हैं कि ईसा की धरती है।

जापानी दैतक कथाओ में ईसा के जिक्र की बात १९११में सामने आई। दक्षिण के एक परिवार ने खोज की कि उसके अभिलेखागार में प्राचीन पत्रो का एक ऐसा सेर है जिससे सिद्ध होता है कि शिगो ईसा का अन्तिम निवास स्थान था।

शमोतोचे दाना ने बताया कि प्राचीन अभिलेखों के अब नकल भर बचे हैं। गाव के अधिकारी बताते हैं कि शिमोतीची अकेला ऐसा जीवित व्यक्ति है जिसने असली अभिलेख देखे थे।

अभिलेखों की नकल शिगो के ग्रामीण कार्यालय में रखी है। एक जापानी जानकार का कहना है कि ईसा के पुत्रियां थी। उन्होने आगे कहा कि ईसा दो बार जापान आए। पहली बार २१ वर्ष की उम्र में वह धर्मशास्त्रों का अध्ययन करने आए थे और मध्य जापान के "माउट फ्यूजी" में तपस्वी जीवन बिताना सूली पर चढाने की धमकी मिलने पर वे बच निकले, लेकिन उनके भाई इस्कीरी को उनकी जगह सूली पर चढा दिया गया। (न्यूज टाइम्स से साभार)

सोवियत संघ में पाकिस्तानी राजदूत को विरोधपत्र

मास्को, सोवियतसंघ में पाकिस्तान के राजदूत शाहिद मुहम्मद अमीन को विदेश मन्त्रालय में तलब करके उन्हें एक विरोधी पत्र दिया गया है जिसमें पाकिस्तान से अफगान विद्रोहियों को हथियारों की आपूर्ति बन्द करने के लिए तत्काल कार्रवाई करने तथा जनेवा समझौते के प्रावधानों का कड़ाई से पालन करने की मांग की गई है।

ए०पी०एन० के अनुसार विरोध पत्र में कहा गया कि अफगान विद्रोहियो को पाकिस्तान के मिनकाब शादी कोटला पारचिनार टेरीमिगल और चमान शस्त्रागारों से हथियार दिए जाते हैं।

विरोध पत्र में यह भी कहा गया है कि तथाकथित इस्लामी रेजिमेंट का अड्डा अभी भी पाकिस्तान में है जो अफगानिस्तान में विद्रोही कार्रवाई मे मदद करता है।

विरोध पत्र के अनुसार अमरीकी फासीसी और पाकिस्तानी प्रशिक्षक सशस्त्र विद्रोहियो को प्रशिक्षण देते पाकिस्तान ने आशा व्यक्त की कि विरोध पत्र यथाशीघ्र पाकिस्तानी नेतृत्व तक पहुंचा दिया जायेगा।

एक प्रयास

(पृष्ठ ३ का शेष)

हमारे कहे अनुसार ठीक समय पर सध्या यज्ञ भी करने लगे। आसाम और नागालैण्ड मे तो भाषा की समस्या भी है फिर भी हमारे द्वारा उत्साह देने पर उन लोगो का उत्साह बना रहा।

मध्य प्रदेश मे तो कोई भी सेवा कार्य करना चाहे तो भाषा की समस्या बिल्कुल नहीं है। ये लोग हिन्दी भाषी हैं। उनमे गरीबी अत्यधिक है, जिसका लाभ लेकर ईसाई उनका धर्म परिवर्तन करने मे सफल हो जाते हैं। उनका हमारे प्रति स्नेह और विश्वास तभी बन सकता है, जब हम लोग उनकी समस्याओ के प्रति जागरूक रहें। मध्य प्रदेश मे सेवा कार्य करते हुए केवल मात्र श्री रामकृष्ण बजाज और स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के द्वारा चलाये जा रहे दो तीन सेवा केन्द्र देखने मे आए जिनमे उत्साह और प्रेरणा नहीं थी। मेरी धर्म पत्नी एक बार इस क्षेत्र मे अकेली गई। क्योंकि उन्होने उन केन्द्रो को सहायता करने का वचन किया था। उन्होने अनुभव किया कि केवल मात्र अन्न और वस्त्र की सहायता से ये हमारे अपने नही बन सकेंगे। इनमे कुछ विचार भी दिया जाना चाहिए। वहा से लौटने पर यह निर्णय करके आई थो कि भील युवक यदि हमारे विचारो और सस्कारो से किसी तरह प्रभावित हो जाय तो वही लोग अपने गाव मे बालवाडियो के रूप मे इन लोगो को अपने धर्म मे रहने और ईसाइयो के चगुल से बचने की प्रेरणा दे सकते हैं। इसी विचार के आधार पर श्री रामकृष्ण जी बजाज की सहायता से प्रतिवर्ष पिछले ४ वर्षों से १० अथवा १५ भील युवक और युवतिया आर्य समाज रानीबाग अपने यहा एक अथवा डेढ मास के लिए निमन्त्रित करता है। वहा की देवियां उनके भोजन आदि की समस्या का हल करती हैं। किसी पर बोझा नही डाला जाता है। अनेक परिवार अत्यन्त श्रद्धा व सेवा से उनको अपने घरो मे ले जाकर आतिथ्य करते हैं। इस कार्य से उनके हृदयो मे हिन्दू जाति के प्रति उत्साह और स्नेह और आत्मविश्वास बढता है, हीन भावना दूर होती है। इसी डेढ मास मे आर्य समाज मे उनका क्षण-क्षण सदुपयोग कराया जाता है। व्यायाम द्वारा, सध्या-यज्ञ के अभ्यास द्वारा आर्य जाति के तथा आर्य समाज के विचारो के प्रसार द्वारा वे यह अनुभव करने लगते हैं कि उनका सम्बन्ध एक बडी ऊंची जाति से हैं। वे हीन नही हैं। उन बच्चो को अक्षर ज्ञान, धर्मज्ञान और वैदिक कर्मकाण्ड का सरल और प्रभावी परिचय दिया जाता है। इस वर्ष भी उसी शृंखला मे १८-२० भील छात्र यहा आये हुए हैं जो बडे परिश्रम के साथ प्राथमिक धर्म शिक्षा और दैनिक कर्म का अभ्यास कर रहे हैं। १२ जून को उन्हे यज्ञोपवीत देकर उनके शिविर का समापन किया जायगा। इस प्रकार इन्ही लडको द्वारा अपने अपने ग्राम मे बालवाडिया चलाई जाती हैं और इसी योजना से आज मध्य प्रदेश मे संघ द्वारा लगभग २० बालवाडियां चल रही हैं। मैंने आर्य भाइयो के सामने धर्म प्रचार का एक सतोगुणी प्रयास जिसमे कोई छल-कपट और हेरफेर नही केवलमात्र साधना है, प्रस्तुत किया। इन सभी आर्य समाजो अथवा कम से कम समृद्ध आर्य समाजे ऐसा करें तो मुझे निश्चय है कि थोडे ही समय मे मध्य प्रदेश और आसाम क्षेत्र मे ईसाइयत की बढती बाढ को रोका जा सकता है। निश्चय ही हमारा सेवा कार्य पिछडे वर्ग के लिए स्नेह और आत्मविश्वास का संबल है जिसके द्वारा हम जाति को लाभ दे सकते हैं।

महाराजाधिराज जोधपुर 'सर' प्रतापसिंह ने कैसे आर्यसमाज संस्थापक स्वा. दयानन्द सरस्वती को गुरु स्वीकार किया?

लेखक - आचार्य दत्तात्रेय आर्य

यह लेख सर प्रतापसिंह की उस अप्राप्त जीवनी पर आधारित है जो उनके समकालीन और स्वामी जी के भक्त रावराजा रघुनाथ सिंह के सुपुत्र तथा मेरे मित्र ठाकुर प्रेमसिंह, सेवा निवृत आर० ए० एस० की कृपा से मुझे पढ़ने को मिली। द० आर्य

सर प्रतापसिंह की जीवन-गाथा के अंग्रेज लेखक आर० बी० वानवर्ट उनकी धार्मिक विचारधारा को उनके शब्दो में प्रकट करते हैं—

"ये मेरे व्यक्तिगत विचार हैं जिनके लिये मैं स्वयं उत्तरदायी हूं।"

"प्रारम्भ से ही धर्म सम्बन्धी विषयों को सावधानी से पढ़ते (बदलते) रहने की मेरी आदत रही है। बाल्यकाल में मैं अपना पर्याप्त समय रूढ़िवादी परम्परा में पूजापाठ में बिताया करता था। मैं रामायण, गीता और भागवत के पाठ सुना करता था, लेकिन इनमे किसी से मेरी आत्मा को सुख नहीं मिला क्योंकि कहानियों और नीति कथाओ के अतिरिक्त उनमे बहुत कम सार था। इतिहास बताता है कि हिन्दुओं मे मूर्तिपूजा और पुराण का प्रचलन बहुत थोड़े समय से हुआ। लगभग उन दिनो मे जिसे सचमुच "अन्धकार युग" कहा जा सकता है। उस काल में हिन्दुओं ने अपने यथार्थ धर्म ग्रन्थो वेदों एवं विशुद्ध शास्त्रों का अध्ययन छोड़ दिया था। और अज्ञान में पड़कर, अपने प्राचीन व विशुद्ध धर्म में बहुत सी काल्पनिक धारणाओं तथा शाश्वत पूर्व रीति-रिवाजों का समावेश कर लिया था। परिणाम स्वरूप हिन्दू धर्म आज तक असंगत कल्पनाओं का संग्रह व अन्धविश्वासों का बण्डल समझा जाता हैं, और इसकी असारता हास्य का विषय बन गई है।

हिन्दू धर्म पर अनास्था के कारण

"किन्तु इस परवर्ती कलेवर वृद्धि से विशुद्ध, हमारा सत्यधर्म, जिसकी शिक्षा केवल वेदों में दी गई है, किसी विचार शील व्यक्ति का अनुमोदन प्राप्त करने में पीछे नहीं रहते। गम्भीर अध्ययन और अनुसंधान के बाद पश्चिम के दार्शनिकों तथा विद्वानों ने इस तथ्य को प्रमाणित किया है कि हिन्दुओं के प्राचीन धर्मग्रन्थ—वेदों तथा उपनिषदो में उत्तम कोटि का ज्ञान भरा पड़ा है, जो द्वारा सम्मान करने के योग्य है। यथार्थरूप में हिन्दू धर्म की वर्तमान स्थिति कुछ ऐसी है कि कोई शिक्षित व्यक्ति उसकी महत्ता पर विश्वास नहीं कर सकता और न ही इसका प्रामाण्य स्वीकार कर सकता है। बहुत काल तक मैंने अपने विश्वास को इस धर्म में केन्द्रित रखा किन्तु अन्ततोगत्वा यह मुझे ऐसी भूल प्रतीत हुई जिसे छोड़ना ही श्रेयस्कर था। सावधानी से परीक्षण करने पर यह स्पष्ट हो जाएगा कि इस विशुद्ध वैदिक धर्म को भ्रष्ट करने वाले परकालीन ब्राह्मण ही थे।

"श्रद्धा-भक्ति के लबादे में वे अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए तथा बुरे रीति-रिवाजों के निगूहित दुरितों को प्रचलित करने के लिए शास्त्रो में वे स्वकल्पना प्रसूत नये-नये अंशों के पैबन्द लगाते रहे। इस प्रकार हमारा प्राचीन धर्म अब इस अवस्था में है कि इसके बहुत से अंश अवश्य त्याग देने चाहिए।

कुरान और बाईबिल से निराशा

अतः इसे छोड़कर बाद में मैंने मुस्लिम धर्म ग्रंथों का परीक्षण किया और कुरान के बहुत से अंशों को कण्ठस्थ किया। यही नहीं मैंने कुछ कट्टरपंथी मुसलमानों की संगति की ताकि उनके व्यावहारिक जीवन का कुछ प्रभाव मुझ पर पड़े किन्तु उनका सम्प्रदाय भी मुझे सन्तुष्ट न कर सका।'

"अपने लक्ष्य में अग्रसर होते हुए मैंने बाइबिल भी खोली, निश्चित ही, इसकी कहानियों और नीति-कथाओं ने मेरी कल्पना को प्रभावित किया, किन्तु मेरे चित्त या दिमाग पर इसका ऐसा प्रभाव नहीं हुआ कि मैं इसे ईश्वर का शब्द मान सकता और जीसस का ईश्वर-पुत्र होना, उनका एक कन्या (मरियम) से जन्म लेना आदि ऐसी बातें थी जिनका मतलब मेरी समझ के परे था।"

"थोड़े समय में किसी भी धर्म ने मुझे सन्तुष्ट नही किया जिनका मैंने अध्ययन किया। मेरा विचार है—कि धर्म का सम्बन्ध शरीर से बहुत कम आत्मा से अधिक है किन्तु मतों के साधारणीकरण ने विश्वास की आधारशिला उन वस्तुओं पर रखी है जो श्रद्धा और मूर्त विषयक हैं और अच्छाई या बुराई की प्राप्ति के साधन रूप में उसी वर्ग की वस्तुओं की संस्तुति की है। किन्तु सच्ची धार्मिकता सत्य सिद्धान्तो, सदाचार और पवित्र आत्मा में निहित है।"

वेद और स्वामी दयानन्द का प्रभाव

"जब मेरा मन इन सन्देहो और अनिश्चयों से उद्विग्न था मुझ एक बार एक टांग टूट जाने के कारण जयपुर में दो माह के लिए अपने बिस्तर पर बंधना पड़ा। उस समय वेदो को सुनने और उनमे क्या है ? इसे जानने की इच्छा जाग्रत हुई। तदनुसार, समय बिताने के साधन रूप में तथा अपने हृदय के अन्तर्द्वन्द्व को दूर करने की आशा में मैंने वेदो के मन्त्रों का पाठ और उनकी व्याख्या सुनना और उन पर ध्यान पूर्वक विचार करना प्रारम्भ कर दिया। मैं सम्पूर्ण वेदों को पढ़ लेने या उनमें किसी रूप में पारंगत होने का दावा नहीं करता किन्तु उनसे, निश्चित रूप में, मेरे क्लांत हृदय पर बड़ा सुखद प्रभाव पड़ा इसलिए अन्ततोगत्वा मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि आर्यो के प्राचीनतम और प्रतिष्ठित धर्म ग्रंथ वेदों में धर्म के सम्बन्ध में वास्तविक सत्य सर्वांशरूपेण अन्तर्निहित हैं। दूसरे सभी धर्म ग्रन्थों में अच्छाई बुराई, सच-झूठ, संशयास्पद-रूप में मिश्रित हैं।" इसके कुछ समय बाद, जब मैं जोधपुर में था। स्वामी दयानन्द सरस्वती वहाँ आए और मुझसे मिलने की इच्छा प्रकट की। मैं भी उनसे मिलने को उत्सुक था, मैंने उनकी बड़ी प्रशंसा सुनी थी, अतः मैं अपने बड़े भाई महाराजा यशवन्त सिंह के साथ उनसे मिलने गया। थोड़े वार्तालाप के बाद ही हम दोनों को उनके बड़प्पन का विश्वास हो गया।

ऋषि दयानन्द का भव्य व्यक्तित्व

आकृत्या निस्सन्देह वे प्राचीन ऋषियों की भांति थे, उनकी वाणी सिंह के गर्जन सदृश थी। ब्रह्मचर्य का तेज उनकी आंखों से दमकता था। अब तो सम्पूर्ण विश्व उनकी विस्तृत विद्या और महान व्यक्तित्व से परिचित हो चुका है। मेरे विचार से यह भारत के लिए गौरव की बात है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती उसे दीर्घ सुप्तता की प्रगाढ़ निद्रा से उद्बुद्ध करने के लिए प्रकट हुए। वे भारत मां के महानतम और सच्चे से सच्चे शुभचिन्तक थे जिन्होने जीवनभर केवल उसी के लिए कार्य किया।"

आर्य समाज से आशाएं

"मैं उनका अत्यधिक सम्मान करता हूं, वस्तुतः मै उन्हें अपना गुरू मानता हूं, क्योकि उन्होने मुझे बहुत सी अच्छी चीजें पढ़ाई। बाद में उन्होने "आर्य समाज" नामक एक संगठन की स्थापना की, मै इसमें सम्मिलित हुआ, जोधपुर मे एक समाज की स्थापना की। मेरा विश्वास है कि यह समाज भारत की उन्नति के लिए एक शक्तिशाली उपाय के रूप में काम करेगा। इसके द्वारा बहुत कम समय मे जो काम हुए है और जो सुधार हुआ है, उनसे आशा लगी है कि भारत को, उसकी वर्तमान अधोगति से उबारने के लिए इसका महत्तम योगदान होगा।"

"स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाएं हम दोनों भाइयों के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुई।"

मांस भक्षण पर मतभेद

सर प्रतापसिंह और उनके बड़े भाई महाराजा यशवन्त सिंह, जो उस समय जोधपुर रियासत के शासक थे, को यह सन्देश था कि एक क्षत्रिय

होने के कारण, मांसेट एव मास भक्षण की परम्परा वाले क्या वे आर्यसमाज के सदस्य हो सकते हैं। जैसा कि सर प्रतापसिंह ने स्वय स्पष्ट किया है कि यद्यपि स्वामी जी मास भक्षण के पक्षधर नहीं थे किन्तु उन्हे उन लोगो के आर्य समाज मे सम्मिलित होने मे कोई एतराज नही था।

इसमे सन्देह नही कि "सर" प्रतापसिंह स्वय इस विचारधारा के थे कि बहादुर और युद्ध प्रिय जातिया शाकाहारी नही। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम सस्करण के कुछ विवादास्पद अ शो का उद्धरण देते हुए, जो कि स्वामी जी अनुमति के बिना, प्रक्षिप्त कर लिए गये थे, उन्होने तो यहा तक कहा कि जैनमत के (अहिंसा) के सिद्धात ने भारतवासियो को कमजोर और आत्महीन बना दिया। 'सर' प्रताप सिंह इस तथ्य की पुष्टि करते हैं "भारत की वर्तमान परिस्थितियो मे दयानन्द इसके सहयोगी समर्थक नही हो सकते। फिर भी उन्होने उदयपुर के महाराणा को परोपकारिणी का अध्यक्ष (प्रधान) नियुक्त किया तथा महाराजा यशवन्त सिंह एव स्वय (सर प्रतापसिंह) आर्य समाज के सदस्य बन गए।

महात्मा हंसराज को श्रद्धांजलि

डी० ए० वी० आन्दोलन के सचालक दिवगत महात्मा ह सराज को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए सर प्रतापसिंह कहते हैं कि—

'जो कार्य स्वामी जी के द्वारा आरम्भ किया गया था, उनकी मृत्यु के बाद उसे (कम से कम उसकी शिक्षा और धर्मोपदेश का अ ग) दयानन्द-एग्लो-वैदिक कालिज लाहौर के आचार्य लाला हसराज बी ए ने अपने हाथो मे लिया और सभी इसे भली भाति जानते हैं कि वे इसे किस प्रकार अब तक वहन करते रहे हैं। स्वामी जी की स्मृति में २० वर्ष तक लाहौर मे एक कालिज स्थापित किया गया, अप्रैल १९०५ मे उसकी इमारत का शिलान्यास करने का सौभाग्य मुझे मिला, लगभग २० वर्षों तक लाला ह सराज बिना किसी वेतन के इस कालेज की सेवा करते रहे, और यह सर्वविदित है कि इसकी सेवा के लिए उन्होने अपना जीवन अर्पित कर दिया। यह प्रसन्नता का विषय है कि उनके बहुत से शिष्य उनके पुनीत मार्ग का अनुसरण करने को तत्पर है। तीरा से लौटते हुए मैंने प्रथम बार कालिज को देखा था, पुन १९०५ मे शिलान्यास के समय इसका सावधानी से निरीक्षण किया।

मेरी दृष्टि मे हिन्दुओ के शैक्षणिक विकास के लिए भारत मे यह एक विशिष्ट सस्था है और इससे और अधिक की आशा की जा सकती है।

जीवन गाथा लेखक निम्नलिखित निष्कर्षों के साथ सर प्रतापसिंह के "धार्मिक विचारो के इस अध्याय का उपसहार करता है —

'सन् १९१६ मे 'सर' प्रताप सिंह ने इन विचारो को प्रकट किया, इसमे आश्चर्य नहीं कि उन्होने खुले मस्तिष्क से परिश्रम पूर्वक धर्म के उस स्वरूप की खोज की हो जो उनकी आत्मा को शान्ति दिला सके।'

"आर्य समाज के प्रति उनका त्याग उन लोगो के प्रति उनकी अव्यभिचरित भक्ति का ज्वलन्त दृष्टान्त है जिनसे कभी उन्होने भिन्नता की थी। राजनीतिक क्रिया-कलाप, जिनमें कि समाज के कुछ सदस्य सलग्न थे—उनको घृणा स्पद लगते थे और किसी भी रूप मे वे उनका समर्थन करने वाले अन्तिम व्यक्ति होते किन्तु साथ ही किसी भी मूल्य पर वे उस समाज से सम्बन्ध विच्छेद करना नही चाहते थे जिसके धार्मिक पक्ष से उन्हे पूर्ण सहानुभूति थी।"

'जीवन-गाथा' लेखक के द्वारा उल्लेखित एक महत्वपूर्ण घटना

सर प्रतापसिंह के जीवन में घटित एक महत्वपूर्ण घटना से यह प्रकट होता है कि वे उस समय प्रचलित जाति सर्वोकार्य (कास्ट टैबूज) से सम्बद्ध स्वामी दयानन्द के विचारो से किस सीमा तक प्रभावित थे। सन् १८९७ मे जोधपुर मे एक अग्रेज थे डी कैंडेल (सैनिक) टाईफाइड से मर गया। वहा केवल तीन अ ग्रेज और थे जो अर्थी को उठा सकते थे क्योकि कोई सवर्ण हिन्दू जनाजे को नही छू सकता था, इस व्यतिक्रम मे सैनिक के निराश पिता जी०टी० कैंडेल बी० सी० ने 'सर' प्रताप सिंह को सुझाव दिया कि वे एक भगी को बुला ले क्योकि उसकी कोई जाति नही जिससे छूत होने का डर हो। किन्तु लोगो के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब अर्थी उठाने वालो मे चतुर्थ सर प्रताप स्वय बन गये। पर जब महाराजा को जातिच्युत करने वाली इस अनहोनी पर कुछ ब्राह्मण भयाक्रान्त हुए तो "सर" प्रतापसिंह ने उन्हे यह कहते हुए डांट लगाई कि ब्राह्मण और राजपूत सभी उसी मिट्टी मे मिल जायेंगे और सभी सहृदय जनो की जाति एक है।

'सर' हैनरी न्यूबोल्ट ने अपने "बाल्ड आफ सर-प्रतापसिंह"—मे इस घटना का सुन्दर वर्णन किया है।

क्या आर्य समाज भी बह गया है ?

[श्री कर्णनारायण कपूर दिल्ली-५]

१—कई मननशील आर्य समाजियो के मन्त्रो मे धीमी सी आवाज आती है कि असत्य सभ्यता को प्रचण्ड लहर मे आर्य समाज भी बह गया है। वे इस आवाज को दबाने का प्रयत्न करना चाहते हैं किन्तु वह असमर्थ रहते हैं। यह लहर दूर पूर्व जापान तक भी पहुँच गई है जो कि स्वतन्त्रा तथा अपनी सस्कृति का मद है।

२—स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश (पृ० २६५) मे लिखा है कि धर्म के बिगाड के मूल महाभारत युद्ध के पूर्व एक सहस्र वर्ष से प्रवृत्त हुए थे। क्योकि उस समय मे ऋषि मुनि भी थे तथापि कुछ कुछ आलस्य, प्रमाद ईर्ष्या, द्वेष के अकुर उगे थे। वे बढते बढते वृद्ध हो गए। जब सच्चा उपदेश न रहा तथा आर्य्यावर्त मे अविद्या फैल कर आपस मे लडने झगडने लगे।

३—पिछले तीन सहस्र वर्षों मे ससार मे बडे बडे सुधारक पैदा हुए—मूसा, ईसा, मुहम्मद, महावीर, बुद्ध, शकराचार्य, नानक, राममोहन राय, विवेकानन्द, दयानन्द उन्होने धर्म प्रवचनो द्वारा ससार का उद्धार करने का भरसक प्रयत्न किया किन्तु आजकल की स्थिति पूर्व से बहुत अधिक शोचनीय हो गई है। स्वामी दयानन्द का समय हिन्दू धर्म के यदि पचास मत होंगे तो अब वे बढ कर सौ के लगभग हो गए होगे। जनता अज्ञान तथा अन्धकार के गर्त मे पडी हुई है।

४—ऐसी स्थिति मे पाश्चात्य सभ्यता का वैभव, विलास, धनका प्रभाव कैसे रुक सकता है। जब तक भारत परतन्त्र था तो भारतवासियो मे धर्म, कर्म, देश प्रेम, सेवा भाव, निस्पृहता सादगी, सदाचार आदि गुण थे किन्तु दु ख की बात है कि इन चालीस वर्षों के स्वतन्त्रा मे जनता ने अपना चरित्र खो दिया है कि प्रत्येक व्यक्ति से धन कमाने और विलासता का जीवन व्यतीत करने की होड लगी हुई है।

५—आर्य समाज अपने आपको हिन्दू धर्म का तथा देश का प्रहरी कहता है। जितनी उन्नति आर्य समाज ने स्वतन्त्रा के ४० वर्षों पूर्व मे की थी उतना ही पतन उसने स्वतन्त्रा के चालीस वर्षों के पश्चात कर डाला है। आर्यसमाज के पास वेद के विद्वान नहीं हैं—सस्कृत जानने वाले अध्यापक शास्त्री आदि तो हैं जिनकी वेदो मे गति बहुत कम है। लेखक ने एक विद्वान से कहा कि वह पांच दस वैदिक विद्वानो के नाम तो बता दे। उत्तर मिला—कोई वेद विद्वान हो तो बताऊ।

अब आर्य समाज के नेताओ को भी देख लीजिये। उनको वेदो का ज्ञान नहीं है, वह अपने पदो पर चिपटे रहने का पूरा प्रयत्न करते हैं—समाज का उद्धार व कल्याण उनके लिये सोपा है। अपनी मान प्रतिष्ठा गौरव तथा स्वाभिमान ही उनका ध्येय है।

स्वामी दयानन्द ने सहशिक्षा का विरोध किया किन्तु आर्य समाज इसका पूर्ण समर्थक है। इस शिक्षा का दूषित परिणाम यह हुआ कि स्त्रिया सेवाकार्य नौकरी कर रही हैं जिसका परिणाम गृहस्थ जीवन का विघटन हो गया है।

कितने आर्य समाजी हैं जो —

(क) काला धन नही कमाते।

(ख) आय कर की चोरी नही करते।

(ग) सत्याचार करते हैं और असत्य नहीं बालते हैं।

(ग) राज्य व समाज के नियमो का पालन करते हैं।

(घ) राज्य या समाज के विचारो का पालन करते हैं।

(च) घूस नहीं लेते न देते।

(छ) अपने कर्त्तव्यों का ठीक ठीक पालन करते हैं।

(ज) दीनो दु खियो की सेवा करते हैं।

(झ) टैलीवीजन नहीं देखते तथा विलासता का जीवन नही व्यतीत करते।

(ञ) भारतीय सस्कृति का आचरण करते हैं।

एक आर्य समाजी ने कह दिया कि आर्यसमाज तो सन्ध्या हवन कम्पनी बन कर रह गया है। आजकल कई स्त्रिया बाल कटवाना, विदेशी पहनावा पहनने, शृगार करने, मद्यपीने और नाच आदि मे अपना गौरव समझती है। कोई सीमा नहीं रही।

विश्वधर्म

१—ईश्वर एक है मानवता एक है और मानव धर्म भी एक है। धर्म के बिना कोई मानव समाज व कोई विवेकशील व्यक्ति नही रहा है और न रह सकता है। क्योकि धर्म ही विवेकी व्यक्ति का पथ प्रदर्शक हो सकता है और उसे बता सकता है कि उसे क्या करना चाहिये। धर्म ही मानव समाज का मुख्य चालक यन्त्र तथा हृदय है। जिसके बिना वह जीवित नही रह सकता जैसे कि हृदय के बिना मनुष्य नही जीवित रह सकता (टालस्टायकृत वट इज रीलिजन) धर्म ही मनुष्य और जीवन के स्रोत (ईश्वर) का सम्बन्ध है और मनुष्य जीवन के लक्ष्य को दर्शाता है और उस लक्ष्य की पूर्ति के निमित्त आचार के नियम बताता है अत धर्म मनुष्य और ईश्वर और मनुष्य और मनुष्य मे कडी है।

मनु महाराज के अनुसार सदाचार है परम धर्म है। जीवन का लक्ष यह है कि उसे अच्छा प्रकार व्यतीत किया जावे (टालस्टाय)। और यह लक्ष्य सर्वकालिक सर्वभौमिक और सर्वगत नियमो को पालन करने से हो सकता है। जो जात पात धर्म देश के बन्धनो के भेद भाव को छोड कर मनुष्य मात्र के कल्याण कारक हो।

२—स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन मे प्रयत्न किया था कि सब धर्मों के आचार्य इकट्ठे होकर एक ऐसे विश्व धर्म की स्थापना करे जब सब मत मतान्तरो को मान्य हो किन्तु उनका प्रयास निष्फल रहा।

३—विश्व धर्म के निम्न सिद्धान्त है। जो कि किसी भी प्रचलित मत के विरुद्ध नही है। ऐसा धर्म भारत का राज्य धर्म होने योग्य है —]

(क) यह विश्व एक अद्भुत शक्ति द्वारा रचा गया। जिसको हिन्दू परमात्मा अथवा परमेश्वर कहते हैं, ईसाई गाड कहते हैं मुसलमान अल्लाह कहते हैं, सिख ओमकार कहते हैं और नास्तिक प्रकृति कहते हैं, इस विश्व का पालन भी वह शक्ति कर रही है।

(ख) प्रत्येक प्राणी मे आत्मा होती है जो अपने अच्छे व बुरे कर्मों के फल अवश्यमेव भी आते हैं।

(ग) प्रत्येक आत्मा अच्छे कर्मों के द्वारा और बुर कर्मों को त्याग कर अपना उद्धार कर सकता है।

(घ) आत्मा के उद्धार और पवित्र जीवन व्यतीत करने के लिये निम्न मार्ग प्रदर्शक नियम हैं :—

१—सत्य बोलना और असत्य का त्याग करना।

२—व्यवहार में सत्य शीलता।

३—सत्य साधनो और परिश्रम से धन कमाना।

४—किसी के धन का लालच न करना।

५—किसी प्राणी की हिंसा न करना और न हो उसको क्लेश देना।

६—क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष का त्याग करना।

७—शुभ विचार करना।

८—माता पिता गुरुजनो तथा वृद्धो का आदर तथा सेवा करना।

९—दीन दु खी तथा निर्धन की सहायता करना।

१०—बुराई करने वाले को क्षमा करना।

११—दूसरो के प्रति ऐसा व्यवहार करो जैसा तुम अपने प्रति करवाना चाहते हो।

१२—सादा जीवन तथा उच्च विचार जीवन का लक्ष हो।

१३—ईश्वर का धन्यवाद करो। जिसने निरोगता तथा मन को शान्ति प्रदान की हुई है। (शेष पृष्ठ ८ पर)

सत्यमेव जयते

प्रो० कृष्णलाल मल्हा

चन्द्र टरै सूरज टरै, टरै जगत व्यौहार,
पै दृढ श्री हरिश्चन्द्र को, टरै न सत्य विचार।

सत्य-असत्य के संघर्ष मे विजय आखिर सत्य की होती है। यह तथ्य राजा हरिश्चन्द्र तथा अनेक महापुरुषो की जीवन कथा से सिद्ध है। महाराजा अशोक ने भी इसी सिद्धान्त का प्रचार किया और उनके स्तम्भो पर ये शब्द अंकित हैं। 'सत्यमेव जयते' यही हमारा राष्ट्रीय उद्‌घोष भी है।

सत्य के मार्ग पर चलने वाले साधक को कई प्रकार के कष्ट सहने पडते हैं। उसे कडी परीक्षाओ से गुजरना होता है। गुरु तेगबहादुर, ऋषि दयानन्द और कई सन्तो का इस बात का प्रमाण है।

सत्य क्या है ? इसकी व्याख्या ऋषियो ने विविध रूपो मे प्रस्तुत की है। महात्मा गाधी के अनुसार सत्य ही ईश्वर है। सत्य का दार्शनिक, चितन, मनन और प्रचार विद्वानो द्वारा पहले ही पर्याप्त हो चुका है। विचारणीय प्रश्न यह है कि आज के वातावरण मे किसी प्रकार हमारा जीवन सत्य पर आधारित हो।

सत्य व्यवहार मे कमी के कारण जनमानस मे व्याप्त गहरी निराशा सहज ही मे अनुभव की जा सकती है। आज का साधारण व्यक्ति महसूस करता है कि झूठ का सर्वत्र बोलबाला है। झूठ के बिना आज की जीवन यात्रा चल नही सकती। सत्य बोलने वाले दुखी हैं और झूठ से ही बहुत काम सिद्ध होते हैं।

ये बाते आम सुनने मे आती हैं। यह भी झूठ नही कि सत्य के मार्ग पर चलने वाले को कई बार हानि उठानी पडती है। परन्तु प्रश्न सांसारिक लाभ-हानि या दुख-सुख का नही है, मूल बात यह है कि किस प्रकार हमारा मानसिक और आध्यात्मिक विकास हो ? यह तो अनुभव से सिद्ध है कि चिंतन करने, सत्य बोलने और सत्य कर्म करने से मनुष्य को शान्ति मिलती है। वह आध्यात्मिक पथ पर तीव्रता से अग्रसर होता है।

धर्म की कई बातो को लेकर भले ही लोगो मे मतभेद हो लेकिन जहा तक सत्य आचरण व्यवहार का सम्बन्ध है, सभी साधु, सन्त, फकीर और धर्म संस्थापक एक ही राय रखते हैं। ऋषि दयानन्द ने ठीक कहा—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। साधक को आत्म-निरीक्षण द्वारा सदैव ध्यान रखना चाहिए कि वह कहीं सत्य मार्ग से तो भटक नहीं गया।

कर्तव्य और कर्म की दृष्टि से सत्य के रूप भिन्न २ हो सकते हैं या उनमे विरोध भी हो सकता है। उदाहरण-सन्यासी के लिए हिंसा वर्जित है और सिपाही के लिए हिंसा त्याज्य नही बल्कि उसके कर्तव्य का एक अंग है। परन्तु परम सत्य वह है जिसे पाने के लिए सन्यासी और सिपाही दोनो अपने कर्तव्य का पालन कर हैं।

निष्काम कर्मयोग द्वारा ही मनुष्य परमसत्य परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। प्राकृतिक गुणो द्वारा कई प्रकार के गुण दोष उत्पन्न होते हैं। दृश्यमान जगत इन्ही गुण दोषो के द्वन्द्वो से रचित है परन्तु सब द्वन्द्वो से परे एक सत्य है जो परम, दिव्य और अन्तिम है और उसी सत्य के विषय मे यह पुरातन कथन है—'सत्यमेव जयते।'

वैदिक लाइट के ग्राहक बनिये

वैदिक धर्म एवं संस्कृति के ज्ञानवर्धन के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी मासिक पत्रिका "वैदिक लाइट" पढिये। वार्षिक शुल्क, डाक व्यय सहित, भारत में ३०), विदेशों मे हवाई डाक से १२०) तथा समुद्री डाक से ८०) मात्र।

कृपया सम्पर्क करें—
सम्पादक वैदिक लाइट"
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "दयानन्द भवन"
३/५ आसफअली रोड, नई दिल्ली-२

सरकार आतंकवाद से पंजाब को बचायें

नई दिल्ली। पंजाब मे आतंकवाद की चिंगारी सुलगती रही तो पंजाब भी जलकर खाक हो जायेगा, यदि सरकार ने स्थिति के बिगडने से शीघ्र न रोका। पाक सरकार देश के टुकडे करना चाहती है, सरकार पाकिस्तान से कडाई से पेश आये। ये शब्द दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने केन्द्रीय आर्य युवक परिषद द्वारा आयोजित त्रिनगर की एक जनसभा मे कहे। आर्य नेता ने भारत-पाक सीमा पर १५ किलोमीटर चौडी सुरक्षा पट्टी बनाने का भी सुझाव दिया। आर्य सन्यासी स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती व डा० शिव कुमार शास्त्री ने कहा—पंजाब को विशेष दर्जा न दिया जाये। ये भारतीय जनमानस व संविधान की भावनाओ के विरुद्ध है।

—चन्द्रमोहन आर्य, प्रेस सचिव

स्वधर्म

(पृष्ठ ७ का शेष)

१४—अपने कर्तव्य का पालन तत्परता और ईमानदारी से करना।
१५—मधुर भाषण करना।
१६—व्यभिचार मत करो।

४—ऊपर लिखित विश्व धर्म के सिद्धान्त इतने सरल तथा सुबोध हैं कि इनके पालन करने मे किसी गुरु व आचार्य की आवश्यकता नही रहती। स्मरण रखना होगा कोई भी व्यक्ति चाहे वह कितना भी महान हो तुमको अंगुली से पकड कर तुम्हारे इष्टदेव तक नहीं पहुँचा सकता भले वह किसी चमत्कार द्वारा तुम्हारे मन व बुद्धि को मोहित कर लेने। ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग तुमने अकेले ही चलना होगा और अपने सामर्थ से। अपने पर विश्वास रखो, ईश्वर अवश्य तुम्हारी रक्षा तथा सहायता करेगा। भूल जाओ कि ईश्वर पूजा ही केवल धर्म है। मानव सेवा ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।
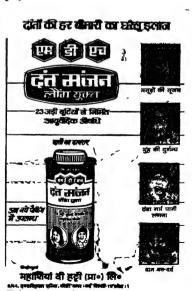
बंगाल व बिहार में वेद प्रचार का उद्घोष

वैदिक मन्दिर एवं वैदिक पाठशाला की स्थापना

महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने ४ अगस्त सन् १८७५ को पूना में व्याख्यान देते समय कहा था कि आर्य धर्म की उन्नति के लिए मुझ जैसे बहुत से उपदेशक आपके देश में होने चाहिए। ऐसा काम अकेला आदमी भली प्रकार नहीं कर सकता। – (उपदेश मञ्जरी)

महर्षि के इन वाक्यो से प्रेरित होकर गंगा तट ब्रजघाट (जि० गाजियाबाद उ० प्र०) मे ३१ मार्च सन् १९८५ को महर्षि दयानन्द वेदोपदेशक विद्यालय की स्थापना की गयी थी। अनेको संघर्षों एवं अभावो के वातावरण मे भी यह संस्था निरन्तर बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश तथा देश के अन्य प्रान्तों के विद्यार्थियों को सर्वथा नि.शुल्क शिक्षण देकर वेदोपदेशक बना रही है।

संस्था ने बगाल प्रान्त मालदा जिले के दो युवक ब्र० सुभाष आर्य एवं ब्र० रमेशचन्द्र आर्य को १ सेंट माइक (लाउडस्पीकर) प्रचार हेतु औषधियां वितरण के लिए तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी द्वारा प्रदत्त साहित्य (ट्रैक्ट) वितरण के लिए देकर १७ मार्च को बंगाल एवं बिहार प्रान्त में भेजा। पं० बालदिवाकर हंस की प्रेरणा से हमें विशेष बल मिला। इन दोनों युवकों ने अदम्य उत्साह और कर्मठता से प्रचार साहित्य और औषधि वितरण कर जनता में नवचेतना तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रति अगाढ़ आस्था उत्पन्न की। वहां की जनता ने प्रभावित होकर बंगाल बिहार की सीमा पर स्थित मनिहारी टोला नामक नगर मे गंगा तट पर १३ बीघा भूमि वेद प्रचार, वेद मन्दिर के लिए प्रदान की। जनता इतनी प्रभावित है कि हम अल्पावधि में कई गांवो के लोगो ने मिल कर भूमि का मिट्टी से भराव, कुछ भवन निर्माण तथा तख्त, मेज, कुर्सी बेंच आदि बनवा कर दिए।

१९ एवं २० मई १९८८ को अत्यन्त सादे एवं सात्विक वातावरण में श्री स्वामी वेदव्रतानन्द सरस्वती महाराजा कुलपति महर्षि दयानन्द वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट (गा० बा़द) के कर कमलो के द्वारा उद्घाटन समारोह आरम्भ हुआ। समारोह में बगाल बिहार के गणमान्य आर्य पुरुष श्री सरजू प्रसाद जी, बृजविहारी रामलखन जी श्री वीरेन्द्र जी और सभी सम्प्रदायों और संस्थानो के स्त्री-पुरुषों तथा बच्चो ने बड़े उत्साह से पर्याप्त सख्या में भाग लिया।

वैदिक घोष एवं महर्षि दयानन्द की जय के तुमुल उद्घोष से आकाश गू ज उठा। यह दृश्य बड़ा मनोहारी एवं प्रभावोत्पादक था।

पूज्या स्वामी जी महाराज ने अपने उद्घोष में कहा था कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। महर्षि दयानन्द ने आजीवन संकटो को सहते हुए वेद सन्देश दिया। चाहे कितने ही मतमतान्तर, सम्प्रदाय, गुरु क्यो न बढ़ जायें लेकिन जब तक वेद प्रचार नही होगा जब तक विश्व मे शाश्वत शान्ति नहीं होगी। इसलिए आज के इस युग मे आवश्यकता है, वेद का सन्देश घर-घर मे सुनाया जाये। यह तभी सम्भव होगा जब कि हमारे पास वेद के समर्पणशील उद्भट विद्वान हों जो जीवन भर संघर्षों मे रह कर भी वेद प्रचार करते रहे। इस संस्था की स्थापना का उद्देश्य आर्ष साहित्य एवं सिद्धान्तों का प्रशिक्षण देकर उपदेशक बनाकर वैदिक धर्म प्रचार करना है।

इस पवित्र कार्य में कठिनाइया अवश्य आयेंगी लेकिन हम आजीवन इस कार्य को अविचल भावसे करते रहेंगे। उपस्थित जन समूह ने स्वामीजी के विचारों से सहमति व्यक्त करते हुए पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। समारोह के अन्त में वेद मन्दिर के व्यवस्थापक श्री ब्र० सुभाष ने सभी को धन्यवाद दिया।

इस समय इस वेद मन्दिर वैदिक पाठशाला में २० विद्यार्थी स्थानीय वैदिक सिद्धान्तो का ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। आर्य वीर दल की शाखा, प्रारम्भ, सत्संग सन्ध्या हवन, साहित्य तथा औषधि वितरण नित्य चल रहा है।

यह संस्था महर्षि दयानन्द वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट गाजियाबाद (उ० प्र०) के कुशल नेतृत्व एवं शाखा रूप में प्रगतिशील हैं। सभी आर्यों तथा वेद भक्तों से प्रार्थना है कि तन-मन-धन से सहायता देकर वैदिक धर्म प्रचार के इस पावन कार्य में सहयोग दीजिये और पुण्य लाभ प्रदान करें।

निवेदक :
ब्र० सुभाष आर्य

व्यवस्थापक :
स्वामी वेदानन्द वैदिक वेद मन्दिर
ब्रज घाट (उ०प्र०)

डा० अम्बेडकर की पत्नी के खिलाफ मुकदमा दायर

एटा ६ जून एक साधू द्वारा स्व० भीमराव अम्बेडकर की पत्नी श्रीमती सविता अम्बेडकर तथा दैनिक आज, आगरा के सम्पादक शशि शेखर के विरुद्ध साम्प्रदायिक तनाव पैदा करने तथा हिन्दू भावनाओं को चोट पहुंचाने आदि के सम्बन्ध में मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी एस०के० न्यायालय में हाल ही में मुकदमा दायर किया गया है।

श्री शिवानन्द सरस्वती जमाई बाबा ने दायर किये गये मुकदमें में लिखा है कि हिन्दू धर्म में उनकी आस्था है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम एवं जगत् जननी माता सीता तथा योगी राजकृष्ण व राधा उनके आराध्य देव है। ११ मई ८८ के दैनिक आज, आगरा के अंक में अभियुक्त सविता अम्बेडकर का बयान पढ़ा जिसमें उन्होंने राम को शराब पीने वाला, औरतखोर, सीता पर अत्याचार करने वाला कहा है।

इसी प्रकार भगवान् कृष्ण के लिये भी अपशब्दों का प्रयोग किया है।

स्वामी जी ने दावा में लिखा है कि यह वक्तव्य जानबूझकर हिन्दू धर्म के अनुयायियों को धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिये दिया गया है। अभियुक्त नम्बर दो शशि शेखर ने जानबूझकर छापा है। इससे करोड़ों हिन्दू धर्म प्रेमियों की भावना को ठेस पहुंची है।

उन्होंने न्यायालय से आग्रह किया है कि वे दोनों अभियुक्तों को न्यायालय में तलब करके उनको दण्डित करे।

संस्कृत के विकास में सभी राज्य शामिल

नई दिल्ली। मानव संसाधन मंत्री पी०वी० नरसिंह राव ने कहा कि संस्कृत भाषा के विकास में भारत के प्रत्येक राज्य का योगदान रहा है जिस कारण यह सबकी अमूल्य निधि है। श्री राव आज यहां राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के प्रकाशनों का विमोचन करते हुए बोल रहे थे।

उन्होंने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के प्रकाशन कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए यह भी कहा कि संस्कृत का प्रचार-प्रसार तेजी से होना चाहिए। समारोह में संस्थान के निदेशक डा० मण्डल मिश्र ने संस्थान राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्कृत के विकास के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

बरायत में वीरों का हिजड़ों जैसा कार्य

जहां 'नाच' 'रंडी' का अब कम हुआ है, यह काम युवकों ने अपना लिया है।
आगे 'बरायत' के ये नाचते हैं, महा अपना गौरव वहां आंकते हैं॥
सन्मुख बड़ों के 'कमर' का चलाना, महा 'बेहयाई' यह करके दिखाना।
रसिक इनके इन पर निछावर हैं करते, खूब बाजे वालो की जेबो को भरते॥
न जिसने कभी 'दान' पैसा दिया है, यहां 'दान' में 'कर्ण' शर्मा दिया है।
है दस-दस के नोटों को 'वर' पर घुमाता, बाजेवाले को देने को है यह बुलाता॥
'नोट' देकर बड़ा यह मगन होरहा है, 'दान' फूटी मे वृथा ही 'धन' खो रहा है॥

—रामचन्द्र आर्य पुरोहित पनवाड़ी बदायू (उ० प्र०)

आर्य जगत के समाचार

सी० आर० शर्मा कुलपति गुरुकुल कांगड़ी का संवेदना पत्र श्रीमती सत्यवती शास्त्रवाले अपने गुणों से सदैव स्मरण की जाती रहेंगी

आदरणीया बहिन श्रीमती सत्यवती शास्त्रवाले के दिवंगत होने के समाचार से आघात पहुँचा। आर्यसमाज, नारी जागरण लोकसेवा तथा आर्य संस्कृति के प्रचार प्रसार मे सतत प्रवृत्त वह दिव्य महिला अपने गुणों से सदैव स्मरण की जाती रहेगी। १९६७ के गो रक्षा आन्दोलन मे वह सोत्साह जेल गई। बाढ पीड़ितो की सहायता के लिए उन्होंने पुष्कल धनराशि एकत्र की और श्री लाला जी को वितरणार्थ समर्पित की। लाला जी के सक्रिय जीवन की वह अदम्य ऊर्जा रही। आर्य समाज गोहाटी मे आर्य स्पेशल ट्रेन के यात्रियो के स्वागतार्थ जो सभा आयोजित हुई थी, उसमें सत्यवती जी की भूमिका भुलाये नहीं भूलती। स्वाभिमान और त्याग उनकी नसो मे कूट कूट कर भरा था। दयालुता उदारता तथा निर्भीकता की वह जीती जागती मूर्ति थीं। बहन सत्यवती जी के निधन से अपूरणीय क्षति हुई है। इस शोकपूर्ण अवसर पर मैं स्वयं की ओर से और कुलवासियों की ओर से हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हू तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—आर० सी० शर्मा

वैदिक महोत्सव सम्पन्न

सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रथम महोत्सव दिनाक ४, ५ एव ६ अप्रैल को सालमारी (कटिहार) के राजस्थान भवन (धर्मशाला) मे स्वामी गोपाल नन्द जी के सहयोग से सम्पन्न हुआ। समारोह मे प० गगाधर जी शास्त्री एवं श्री ब्रह्मचारी व्यासनन्दन शास्त्री वैदिक थे। भजनोपदेशक श्री ठाकुर महावीरसिंह (पटना) एव तबला वादक श्री रामप्रसाद जी थे। यह कार्यक्रम महोत्सव के रूप मे बड़ा ही प्रभावकारी रहा। मारवाड़ी समाज के लोग इससे अधिक लाभान्वित हुए वहा की जनता मे वैदिक धर्म व आर्य समाज के प्रति नयी जागृति आयी।

विवाह संस्कार सम्पन्न

दिनाक ९-५-८८ को श्री मोहितलाल यादव, स्वतन्त्रता सेनानी की प्रथम पौत्री एव श्री कृष्ण कुमार उर्फ कुमार साहब की पुत्री का विवाह सस्कार पोठिया बाजार मे वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। विवाह के श्री सत्यनारायण व्रत कथा आर्य पद्धति के अनुसार सम्पन्न हुई। कथावाचक ब्रह्मचारी जी थे।

शान्ति यज्ञ सम्पन्न

दिनाक ११-४-८८ को श्री विवेकानन्दसिंह रूपौली (पूर्णिया) की पूज्या माता के दिवगत आत्मा की शान्ति हेतु शान्तियज्ञ वैदिक रीत्यानुसार हुआ। तदुपरान्त रात्रिकालीन प्रवचन भी हुआ।

आर्य विद्वान का निधन

आर्य समाज के प्रख्यात विद्वान, वक्ता तथा विचारक आचार्य पण्डित रामानन्द शास्त्री (७४) का हृदयगति रुक जाने के कारण २ जून, ८८ को उनके घर पर देहान्त हो गया। वे गत वर्षों से बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना के तत्वावधान मे निरन्तर प्रचार कार्य मे सलग्न थे। कई सामाजिक तथा शैक्षिक संस्थाओंके संचालक तथा मार्गदर्शनमे प्रमुख सहयोग प्राप्त होता रहा। वे बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व मन्त्री तथा उपप्रधान रहे तथा सम्प्रति सरक्षक थे। सार्वदेशिक सभा की अन्तरग सभा से उनका वर्षों से सम्बन्ध बना रहा तथा वे अभी भी अन्तरग सदस्य थे। सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के कई वर्षों तक मन्त्री रहकर इन्होंने विवादास्पद विषयो के महत्वपूर्ण निर्णय भी दिया थे। कईबार विख्यात विपक्षी विद्वानो को शास्त्रार्थ मे पराजित किया था। उनके द्वारा लिखित कई सैद्धान्तिक पुस्तकें लोकप्रिय बनी हुई है। आपके निधन से बिहार का आर्य ससार सूना दिखलाई पड रहा है।

—रामाज्ञा वैरागी, मन्त्री-सभा

दुःखद शोक

सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री सदानन्द आर्य की पूज्यनीय दादी जी श्रीमती मनभरी देवी के निधन पर सार्वदेशिक सभा की ओर से शोक सतप्त परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना और दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना। प्रधान-मन्त्री सार्वदेशिक सभा

शोक समाचार

आर्य समाज बेतिया के प्रधान श्री रामखेलावनजी के अनुज श्री द्वारिका जी के पत्नी की हत्या १५ मई को अपराधियो ने डकैती डाल हत्या कर दी वे ६० वर्ष की थी जिसका दाहसंस्कार १६ मई को श्री सूर्यदेव प्रसाद आर्य, मन्त्री आर्य समाज द्वारा सम्पन्न किया गया, १६ मई को हवन यज्ञ, शान्ति यज्ञ हुआ।

—नन्दलाल आर्य

आर्य समाज राजनगर के कोषाध्यक्ष रविन्द्र आत्रेय की ईमानदारी अनुकरणीय

गाजियाबाद २८ मई (नि० स०) स्थानीय स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर के कर्मचारियो की ईमानदारी उस समय देखने को मिली जब कि बैंक के हैड कैशियर श्री रविन्द्र आत्रेय को अकेले में बैंक के लाकर रूम मे छोटा टीन का बाक्स प्राप्त हुआ जिसमे सोने के कुछ आभूषण भरे थे। वह बाक्स गलती से एक ग्राहक लाकर के बाहर के बाहर ही रह गया था। श्री आत्रेय ने तुरन्त बैंक मैनेजर और अन्य अधिकारियो को लाकर रूप मे बुलाकर उस तथ्य से अवगत कराया।

उस दिन लाकर खोलने वाले सभी ग्राहको से सम्पर्क करके तथा पूरी जाच पड़ताल के पश्चात आभूषणो का वह बाक्स उसके सही मालिक राजनगर निवासी श्री जे० सी० मिश्र को सौंप दिया।

श्री रविन्द्र आत्रेय आर्य समाज राजनगर, गाजियाबाद के कोषाध्यक्ष हैं और श्री श्रद्धानन्द, मन्त्री आर्य समाज अनाज मण्डी साहदरा के सुपुत्र हैं।

उत्तराञ्चल में राष्ट्र व धर्म-रक्षा अभियान यात्रा

गत लगभग पाच वर्षों से वैदिक संस्थान नजीबाबाद ने भारतीय उत्तराञ्चल गढ़वाल अञ्चल में आराष्ट्रीय ईसाई प्रचार-निरोध तथा आर्य-समाजो की स्थापना के लिये राष्ट्र व धर्म-रक्षा अभियान चला रक्खा है।

इस अभियान द्वारा सर्वाधिक कार्य साहित्य वितरण का किया जा रहा है। समय-समय पर इसके लिए उत्तराञ्चल मे वैदिक संस्थान नजीबाबाद के अध्यक्ष स्वा.श्री वेदमुनि जी परिव्राजक स्वय प्रचार यात्रायें करते हैं। उनकी इन यात्राओ मे कभी-कभी भजनोपदेशक भी साथ होते हैं।

इस बार प्रथम यात्रा १ मई को प्रारम्भ होकर २० मई को समाप्त हुई इस यात्रा के मुख्य कार्य सार्वजनिक सभाओ तथा कालिजो मे व्याख्यान, साहित्य वितरण तथा दीवारो पर प्रचार पोस्टरो का लगाया जाना रहा। अभियान यात्रा के मुख्य पड़ाव आमबीखाल, हिण्डोलाखाल रोडधार, टिहरी, उत्तरकाशी तथा भटवाड़ी नगर रहे।

दूसरी यात्रा ६ जून को कोटद्वार से आरम्भ होकर दुगड्डा, डाडामण्डि, लैन्सडौन, सतपुली, पौड़ी, श्रीनगर तथा रुद्रप्रयाग की रहेगी और तीसरी यात्रा ऋषिकेश, नरेन्द्रनगर, चम्बा, टिहरी, देवप्रयाग होकर हरिद्वार मे समाप्त होगी।

—मनोज कुमार, व्यवस्थापक

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य स्त्री समाज अमरोहा का वार्षिकोत्सव दिनांक १-२ जून ८८ को आर्य समाज मन्दिर की पुण्य भूमि मे समारोह पूर्वक मनाया गया।

श्री स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती के सारगर्भित प्रवचन हुए तथा योगेश्वरदत्त आर्य भजनोपदेशक के मधुर भजनों का जनता ने रसास्वादन किया। स्त्री समाज की अध्यक्षा श्रीमती वेदवती जी ने विद्वानों प्रचारकों तथा आगन्तुक जनता का धन्यवाद किया।

—आर्य समाज अमरोहा, (मुरादाबाद)

मीनाक्षीपुरम आर्य समाज के अधिकारी अनन्तरामसेशन तथा सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प० वन्देमारम रामचन्द्र राव, एम० नारायण स्वामी।

आर्य समाज जवाहर नगर (लालकुर्ती मेरठ) स्थापना शताब्दी मना रही है

सभी आर्य बन्धुओं को सूचित करते हुए हर्ष है कि आर्य समाज जवाहर नगर (लालकुर्ती), मेरठ उ० प्र० की स्थापना का सौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में एक भव्य शताब्दी समारोह का आयोजन दिनांक १४ १५ व १६ अक्टूबर १९८८ को किया जा रहा है। इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है। जिन बन्धुओं के पास आर्यसमाज लालकुर्ती से सम्बन्धित प्रेरक प्रसंग, संस्मरण या लेख आदि उपलब्ध हों वे उस सामग्री को मन्त्री, आर्य समाज लालकुर्ती, मेरठ कैन्ट उ० प्र० को भेजने की कृपा करें ताकि उसे स्मारिका में सम्मिलित किया जा सके।

शोक समाचार

आर्य समाज पाली के प्रधान, एक सेवाभावी एवं उन्नतिशील विचारक आत्माराम जी आर्य का स्वर्गवास ३-६-८८ को सायंकाल हो गया।

४ ६ ८८ को उनका पार्थिव शरीर वैदिक रीति से अग्नि को समर्पित किया उनके पुत्र श्री मोहनलाल ने अग्नि दी।

श्री आत्माराम पिछले चार वर्षों से आर्य समाज के प्रधान थे। सिंधी समाज पाली में भी आपका बड़ा नाम था। एक ईमानदार शुद्ध तेल के व्यापारी के रूप में अपने आसवास के इलाके में प्रसिद्धी प्राप्त आर्य बन्धु हमसे बिछड़ गया।

—घनश्याम आर्य, कृते मन्त्री

प्रवेश आरम्भ

वैदिक संस्कृत महाविद्यालय गुरुकुल रामलिंग येडशी धाराशिव (महाराष्ट्र) में दिनांक ५ जून से नूतन छात्रों के लिए प्रवेश प्रारम्भ है।

निसर्ग के रमणीय वातावरण में यह संस्था स्थित है। यहां पर प्रथमा (छठी) से शास्त्री (बी० ए०) तक सभी विषयों (वेद दर्शन, संस्कृत, हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, गणित, इतिहास आदि) की शिक्षा दी जाती है।

यह गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरयाणा) से सम्बन्धित है। प्रवेश पाने की अन्तिम तिथि १५ ७ ८८ तक है। प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी सम्पर्क करें।

नियम—प्रवेशार्थी शारीरिक दृष्टी सुदृढ होने के साथ कक्षा पांचवी उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

—प्रधानाध्यापक

गुरुकुल रामलिंग येडशी (महाराष्ट्र) ४१३४४५

दयानन्द बाल मन्दिर पिथौरागढ़

सीमान्त जनपद पिथौरागढ म ३१ अक्तूबर १९८२ को स्थापित प्रथम आर्यसमाज के अन्तर्गत ८ जुलाई १९८६ को 'दयानन्द बाल मन्दिर' की स्थापना १२००) मासिक किराये के भवन म की गई। १९८८ के जून मे कक्षा ४ तक १८० से अधिक बाल निम्नांकित शिक्षण मण्डल द्वारा शिक्षा-संस्कार पा रहे हैं —

लक्ष्मणसिंह खोलिया एम० ए० बी० एड० (प्रधानाचार्य) माधवानन्द जोशी साहित्याचार्य, गंगादत्त जोशी एम० ए० (प्रबन्धक), रेखा जोशी एम० एससी० सी० एड० बीना जोशी एम० ए० बी० एड०, परमेश्वरी शर्मा एम० ए० बी० एड०, रमन सेठी एम० ए० बी० एड०, नीरू पाण्डे एम०ए० पी० एच० डी (अध्यक्ष) एवं उर्मिला (आया)।

बच्चों का गणवेश नीला सफेद परिधान है। बाल मन्दिर में नित्य प्रार्थना में विश्वानि देव के ८ मन्त्र के साथ राष्ट्रीय प्रार्थना होती है। हर शनिवार को हवन यज्ञ होता है। —गुरकुलानन्द सरस्वती

श्री सन्तराम बी० ए० दिवंगत

हिन्दी जगत के मूर्धन्य विद्वान के अवसान से भारी क्षति

हिन्दी जगत के जाने माने सुप्रसिद्ध विद्वान श्री सन्तराम बी० ए० के निधन से जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति असम्भव है। उन्होंने १०० से अधिक पुस्तकें लिखीं—जात पात तोड़ कर मण्डल के नेता सुप्रसिद्ध समाज सुधारक शतायु श्री सन्तराम बी० ए० ने जीवन पर्यन्त हिन्दी जगत की जो सेवा की है उसे भुलाया नहीं जा सकता। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया।

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१९-६-१९८८) बिना टिकट भेजने का लाइसंस न० U ९३
R N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No U 93 Post in D P S.O on 17-6-1988

मारीशस में श्री तिलकप्रसाद कालीचरन का निधन

विगत शनिवार ता० २१ मई को मारिशस के आयजगत क एक महान नेता श्री तिलक प्रसाद कालीचरण जी का देहान्त ७१ वर्ष की अवस्था मे हो गया। आपका अन्तिम सस्कार आर्य सभा के ७ पण्डितो ने मिल कर किया। जन समुदाय की सख्या भारी थी। मोरिशस सरकार के अनेक मन्त्री गण अनेक डाक्टर, बैरिस्टर, जज समाज मन्त्री, पत्रकार आदि और भारत से विराजे हुए प्रचारक डा० वेदीराम शर्मा भी उपस्थित थे। श्री कालीचरल जी के निधन से एक सप्ताह पूर्व डा० वेदीराम शर्मा ने उनके साथ भेटवार्ता की थी। दोना ननाम्रा मे सामाजिक व्यवस्थाम्रा पर विचार विनिमय किया था।

कालीचरण जी का जन्म ३ अगस्त १९०९ को पाम्प्लेमूल गाव मे हुआ था और वही की सरकारी पाठशाला म आपकी प्राथमिक पढाई हुई थी। माध्यमिक पढाई राजधानी के कालेज मे हुई थी। आप उत्साह के साथ अध्यापन का काय करने की इच्छा रखते थे पर जब आपको मालूम हुआ कि धर्म परिवतन के साथ नाम भी परिवर्तित करना होगा तो आप उस ओर से उदास हो गय, फिर आपने डाक विभाग मे कार्य करना प्रारम्भ किया इस विभाग मे आप सन १९६१ मे जनरल पोस्टमास्टर जैसी सर्वोच्च जगह पर आसिन हुए थे और बहुत ही ईमानदारी के साथ आप इस कार्य मे लगे रहे थे।

आप आय सभा मोरीशस के मन्त्री सन १९७२ मे थे। उसी वर्ष मोरीशस मे आर्य महासम्मेलन किया गया था। दक्षिण अफ्रिका से १०० यात्री और भारत से अकबर जहाज द्वारा ५०० यात्री आए थे। और अन्य देशो से भी दर्जनो यात्री पधारे थे। सब के लिए उचित व्यवस्था करना आपका श्री मोहनलाल मोहित जी का काय था। इस महान सामाजिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय कार्य म आर्य जगत को भारी सफलता प्राप्त हुई

१२४३७—श्री कुलपति महोदय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कांगड़ी, हरिद्वार (उ० प्र०)

र्यं वैद्यनाथ ादि पधारे थे। श्री गूरजी की अध्यक्षता मे राजधानी पोट लुई मे आर्य भवन के साथ ही यह सम्मेलन सम्पन्न हुआ था। श्री कालीचरन जी ने सब कार्यों मे दक्षता दिखाई थी। ५० वर्षो तक आपने सामाजिक कार्यो मे श्री मोहनलाल मोहित जी आर्य रत्न, ओ० बी० ई० को पूरा सहयोग प्रदान किया था, गत बीस वर्षो तक गयासिह अनाथाल के आप मैनेजर रह चुके थे। आप सिद्धहस्त लेखक थे। गुप्त नाम से आप अग्रेजी, फ्रेंच तथा हिन्दी भाषाओ मे यहा के पत्रो पर लेख दिया करते थे। आपके लेख समाजिक, सास्कृतिक और राष्ट्रीय जागरण पर होते थे। आप अच्छे वक्ता थे। दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए और दुखी परिवार के शान्ती के लिए हम ईश्वर से प्राथंना करते हैं।

प्रचार शिविर

गगा दशहरा के पवित्र पर्व पर दिनाक २४-५-८८ बुधवार को गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ की ओर से एक विशाल वेद प्रचार शिविर गेस्ट हाउस भोला भाल मेरठ मे लगाया गया।

—इन्द्रराज, मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम
सार्वदेशिक
साप्ताहिक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८]
वर्ष २३ अङ्क २६]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
आषाढ कृ० १५ स० २०४५ रविवार २६ जून १९८८

दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक अधिवेशन दिल्ली में सम्पन्न

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सर्वसम्मति से अध्यक्ष घोषित

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री महामन्त्री तथा श्री ओम्प्रकाश गोयल कोषाध्यक्ष चुने गये

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री

श्री ओम्प्रकाश गोयल कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आम सभा की मीटिंग, आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली में १८ १९ जून, १९८८ को सम्पन्न हुई। इसमें देश के विभिन्न भागो से आए हुए लगभग १५० प्रतिनिधियो ने भाग लिया। एक प्रतिनिधि श्री राजबाबू पाण्डे नेपाल से भी आए थे।

सर्व प्रथम सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने सभा के विगत तीन वर्षों की कार्यवाही पर रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसके बाद श्री भगवानदेव शर्मा के उस पत्र को पढकर सुनाया गया, जिसमे उन्होने सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा अन्य पदाधिकारियों के ऊपर लगाएगए अनर्गल आरोपो के लिए खेद व्यक्त किया था। अपने इस पत्र में श्रीशर्मा ने स्वीकार किया है कि जो आरोप उन्होने सभा-प्रधान आदि के विरुद्ध लगाए थे वे जाच करने पर निराधार पाए गए। शर्मा जी ने यह भी सूचित किया कि उन्होने जो कुछ किया वह भ्रान्ति के कारण किया था। इस सूचना के आधार पर सभा ने एक जाच समिति का गठन किया जो यह पता लगाए कि इस षडयन्त्र के पीछे कौन-कौन से व्यक्ति हैं। सभा ने एक प्रस्ताव द्वारा श्री भगवानदेव शर्मा के आर्यसमाज से निष्कासन की अवधि आजीवन निष्कासन से घटाकर केवल चार वर्ष के लिए निष्कासन तक सीमित कर दी। इसके अतिरिक्त श्री वी० किशनलाल से गुरुकुल घटकेश्वर ट्रस्ट के हिसाब-किताब की जाच हेतु एक समिति का गठन किया गया जो शीघ्र ही जाच का कार्य करेगी।

इसके पश्चात् सार्वदेशिक सभा के लिए चुनावहुआ जिसमें स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को सर्वसम्मति से अगले सत्र के लिए सभा प्रधान घोषित किया गया और साथ-साथ उन्हे अन्तरग सभा के गठन का भी पूर्ण अधिकार दिया गया। तदनुसार स्वामी जी ने निम्न पदाधिकारियों को नामांकित किया।

१—प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव	वरिष्ठ उपप्रधान
२—प्रो० शेरसिंह	उपप्रधान
३—श्री सत्यानन्द मुञ्जाल	,,
४—प० वासुदेव शर्मा	,,
५—प० राजगुरु शर्मा	,,
६—श्री छोटूसिंह एडवोकेट	,,
७—महाशय धर्मपाल	,,

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक सभा का निर्वाचन

(पृष्ठ १ का शेष)

८—महात्मा आर्यभिक्षु जी	उपप्रधान
९—पं० सच्चिदानन्द शास्त्री	मन्त्री
१०—श्री पृथ्वीराज शास्त्री	उपमन्त्री
११—डा० धर्मपाल	"
१२—श्री मनमोहन तिवारी	"
१३—कैप्टन देवरत्न आर्य	"
१४—श्री ऋषिपालसिंह एडवोकेट	"
१५— " ओम्प्रकाश गोयल	कोषाध्यक्ष
१६— " जयनारायण अरुण	पुस्तकाध्यक्ष

अन्तरंग सदस्य

१८—स्वामी ओमानन्द सरस्वती	१९—श्री अश्विनीकुमार एडवोकेट
२०—श्री कृष्णलाल	२१—" रामचन्द्रराव कल्याणी
२२—" भूपनारायण शास्त्री	२३—स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती
२४—" दौलतराम चड्ढा	२५—श्री बटुकृष्ण वर्म्मन
२६—" रमेशचन्द्र श्रीवास्तव	२७—डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री
२८—" इन्द्रप्रकाश गांधी	२९—श्री जगदीशप्रसाद वैदिक
३०—" मंगलसेन चोपड़ा	३१—राजा मधुसूदन लाल पित्ती
३२—पं० इन्द्रराज	३३—श्री सूर्यदेव
३४—डा० महेश विद्यालंकार	३५—प्रो० योगेन्द्र नारायण

निम्नलिखित उपसमितियों का भी गठन किया गया—

१—धर्मार्य सभा : सर्वश्री पं० वाचस्पति शास्त्री धर्माधिकारी, सत्यानन्द वेदवागीश, महेश विद्यालंकार, श्यामनन्दन शास्त्री, पं० क्षितोश वेदालंकार, पं० उमाकान्त उपाध्याय, पं० शिवकुमार शास्त्री, पं० काशीनाथ शास्त्री और डा० रणजीतसिंह (सदस्य)

२—गौरक्षा समिति : सर्वश्री राजगुरु शर्मा (संयोजक), सेवाराम महाशय धर्मपाल आर्य, भगवतीप्रसाद गुप्त, मांगेराम हरिश्चन्द्र गुरुजी, लाला इन्द्रनारायण जी, श्रीमती सन्तोष कुमारी कपूर, पं० विश्वम्भर प्रसाद शर्मा तथा चौधरी लक्ष्मीचन्द्र।

३—विद्यार्य सभा : सर्वश्री डा० रणजीतसिंह जी (संयोजक) पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, इन्द्रप्रकाश गांधी, आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री, पुरुषोत्तमलाल शास्त्री तथा सूर्यदेव (दिल्ली) सदस्य

४—विदेश प्रचार समिति (भारत में) : (संयोजक), पं० सत्यदेव भारद्वाज, सर्वश्री प्रो० शेरसिंह जी, रामाज्ञा वैरागी, कैप्टन देवरत्न आर्य, डा० धर्मपाल, रामचन्द्रराव वन्देमातरम्, रत्नप्रकाश गुप्ता, भगवानसिंह मधुसूदनलाल पित्ती (सदस्य)।

५—देशान्तर प्रचार समिति : पं० सत्यपाल वेदशिरोमणि, श्री एस. एन. भारद्वाज, पं० धर्मजित जिज्ञासु

६—दयानन्द सेवा सदन : पं० सच्चिदानन्द शास्त्री (संयोजक) सदस्य : सर्वश्री ओम्प्रकाश गोयल, पं० पृथ्वीराज शास्त्री, सीताराम आर्य, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, वेदव्रत महत्ता गौरीशंकर कौशल, द्वारिकाप्रसाद ओज और मंगलसेन चोपड़ा।

(७) जन सम्पर्क एवं प्रचार : (सं०)—श्री वेदव्रत शर्मा, श्री विमलकान्त शर्मा, डा० धर्मपाल, श्री लक्ष्मीचन्द और रामशरणदास आर्य

(८) आर्य नगर गाजियाबाद—श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्री ओमप्रकाश गोयल, कैप्टन देवरत्न आर्य, श्री इन्द्रराज। पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, डा० धर्मपाल (संयोजक) श्री पृथ्वीराज शास्त्री, महाशय धर्मपाल, श्री बालदिवाकर हंस, श्री राजगुरु शर्मा, श्री जगदीश प्रसाद वैदिक तथा चौ० लक्ष्मीचन्द (सदस्य)

(९) सार्वदेशिक आर्य वीर दल—पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री ओमप्रकाश गोयल, श्री सूर्यदेव, श्री बालदिवाकर हंस (प्रधान संचालक) डा० देवव्रत (उप प्रधान संचालक)

प्रतिष्ठित : श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती (हरियाणा), श्री सुखदेव आर्य (जोधपुर) श्री गौरीशंकर कौशल (भोपाल), डा० धर्मपाल (दिल्ली), श्री सत्यदेव भारद्वाज (दिल्ली) डा० ज्ञानप्रकाश (दिल्ली प्रदेश), आचार्य धर्मपाल शास्त्री (उ० प्र०) श्री बालकृष्ण आर्य (विन्दकी), श्री प्रवधविहारी खन्ना (बनारस), श्री उम्मेदसिंह शर्मा (कैथल), श्री बाबूलाल आर्य (म. प्र.) श्री सत्यवीर एम० ए० (राज), श्री ऋषिपाल सिंह (पंजाब), श्री रामाज्ञा वैरागी (बिहार), श्री सोमनाथ आर्य (बंगाल), श्री शशांक आर्य (गुजरात), स्वामी सुमेधानन्द (हि० प्र०), सूबेदार वेंकटेश (आ० प्र०), डा० नारायण दास (आसाम), कैप्टन देवरत्न आर्य (बम्बई), आचार्य ताना जी (महाराष्ट्र), डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू-काश्मीर)

इसके उपरान्त निम्न प्रस्ताव पारित किए गए

प्रस्ताव स० १

धर्म निरपेक्ष भारत मुस्लिम देशों के घेरे में :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी की इस आशंका से सहमत है कि यदि अफगानिस्तान एक कट्टरतावादी इस्लामी राज्य बन जाता है तो यह भारत के लिए एक बहुत बड़ा खतरा बन जायगा। इस समय की स्थिति के अनुसार भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है जो दो कट्टरवादी मुस्लिम देश पाकिस्तान और बंगलादेश से घिरा हुआ है। दोनो ही देशो के राष्ट्रपति फौजी शासक हैं। देश की सीमाओं के अन्दर भी मुस्लिम और सिख धार्मिक कट्टरतावादियों के रूप मे विघटनवादी तत्व इतने बढ़ चुके हैं कि अब उनसे देश की एकता और अखण्डता को खतरा पैदा हो गया। सार्वदेशिक सभा का मत है कि इस समय देश में एक गम्भीर स्थिति पैदा हो गई है, जिस पर यदि समय रहते काबू नहीं पाया गया तो वह देश के लिए घातक सिद्ध होगी। इसके निराकरण के लिए इस समय केवल दो ही विकल्प है—

(१) धर्म निरपेक्षता को समाप्त कर देश को हिन्दू राज्य घोषित किया जाय।

अथवा

(२) देश के अन्दर और बाहर धार्मिक कट्टरतावाद के खिलाफ लड़ाई लड़ी जाय।

दूसरा विकल्प स्पष्टतः हमारी ताकत के बाहर है। अतः सब स्थिति को ध्यान मे रखते हुए यही उचित है कि हम अपने आपको हिन्दू राज्य घोषित करें और उसे मुस्लिम कट्टरतावाद में बह जाने से रोकें।

प्रस्ताव स० २ :—एक दूसरे प्रस्ताव के द्वारा यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक राज्य में सभायें आयोजित की जावें, और निम्न कार्यवाही हेतु प्रस्ताव पारित किए जायें :

१—अंग्रेजी हटाओ, हिन्दी-सस्कृत बचाओ

२—गोवंश की रक्षा करो

३—दहेज विरोध अभियान शुरू किया जाय

यह भी निर्णय लिया गया कि राज्यों के सम्मेलनों के बाद सब समस्याओं पर विचार करने के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन दिल्ली में आयोजित किया जाय।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

तीन पाश और उनसे मुक्ति

श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री, काव्य-व्याकरण तीर्थ

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ॥

ऋग्० म० १ । सू० २४ । म० १५

आजीगर्ति शुनःशेप आदि ऋषि, वरुण देवता, गायत्री छन्द।

अन्वय—हे आदित्य वरुण उत्तम पाश, उत् श्रथाय, अधम पाशम्, अव-श्रथाय, मध्यम पाश विश्रथाय। अथ तव व्रते अनागस अदितये स्याम ॥

शब्दार्थ—हे आदित्य, प्रकाशस्वरूप मर्यादापालक प्रभो (वरुण) स्वीकार करने योग्य, चुनाव करने योग्य, हम सासारिक जन तीन स्थानो पर पाशो से जकड़े पड़े हैं। अत तुझसे विनय है कि "उत्तम पाश" उत्तम पाश को "उत् श्रथाय" ऊपर से ढीला करके खोल दे, "मध्यम पास" बीच के पाश को "विश्रथाय" विशेष रूप से ढीला करके खोल दे, "अथ" इसके अनन्तर अर्थात् पाशों से छूटकर "तव व्रते" तेरे व्रत मे बधकर, आरूढ होकर 'अनागस, दोषरहित होकर, "अदितये" विनाशरहित सुख के अर्थात् मोक्ष के अधिकारी "स्याम" होवें।

व्याख्या—वेद के वरुण शब्द की कथाए ऐतरेय ब्राह्मण से लेकर महा-भारत पर्यन्त साहित्य मे उलझी हुई और बिखरी पड़ी हैं। उन सब गुत्थियो को सुलझा कर वेद के आशय तक पहुँचना अत्यन्त दुरूह कार्य था। पाश्चात्य विद्वानो ने तो यह नारा ही लगा दिया है कि वदिक काल के लोग नर बलि दिया करते थे। इस सूक्त तक इतना सुधार होगया था कि अजीगर्त के शुन-शेप को तीन स्थानो से बाधकर फिर प्रार्थना करने पर पाशमुक्त कर के एक नाटक का रूप दे दिया।

किन्तु मेरे पास उस सब का सविस्तार विवेचन करने के लिए न समय है और न स्थान। मैं तो ऋषि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित मार्ग का सहारा लेकर अपने पाठको को सार तक पहुँचाना उचित समझता हू। ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास मे वरुण शब्द की व्युत्पत्ति 'वृणोति भक्तान व्रियते वा भक्तै" कर के सब झझट काट दिए। अर्थात् उस प्रभु को वरुण इसलिए कहा जाता है कि उसके स्वरूप को समझ कर ससार के समस्त प्रलो-भनो को तृणवत् त्याग कर उसे वरण करता है। उसे चुनता है। उदाहरण के लिए नचिकेता का यमाचार्य को यह उत्तर कि 'तवैव वाहा तव नृत्यगीते' कि ससार के ठाठ-बाट, घोड़े और नाचगीत तुझे मुबारक रहे। मुझे तो उसे बतायें जिसे जान कर मृत्यु से निर्भय होजाऊ। यहा यह स्पष्ट है कि एक भक्त प्रभु का वरण करता है। इसी प्रकार भगवान भी भक्त के शुद्ध आचार-विचार को देख कर भक्त को चुनता है। 'यमेवैष वृणुते तेन लभ्य' अर्थात् प्रभु जिसका स्वय वरण करते हैं वही उसे प्राप्त कर सकता है। हे प्रभो मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मैं उत्तम, मध्यम और अधम पाशो से बधा पड़ा हू कृपा कर मुझे इनसे छुड़ा। प्रश्न होता है पाश तो पाश ही है उसमे उत्तम मध्यम और अधम का विभाग करने की क्या आवश्यकता? इसका उत्तर यह है कि यहा शरीर की ज्ञानेन्द्रियो और कर्मेन्द्रियो के अशुभ मार्ग मे प्रवृत्त होने के परिणाम स्वरूप जो बाधा उत्पन्न होती है उसे हो शरीर से उपमित कर के उत्तम, मध्यम और अधम नाम दे दिए गए हैं। हमारे शरीर का शिरोभाग उत्तमाग कहलाता है। इसका उत्तमाग नाम इसलिए है क्योकि यह ज्ञानेन्द्रियो का केन्द्र है। पांच में से चार ज्ञानेन्द्रिया, कान, आख, नाक और रसना ये स्थायी रूप से यहा रहती हैं। पाचवी ज्ञानेन्द्रिय त्वचा सारे शरीर पर है और यहा भी है। अत. ज्ञानेन्द्रियो की अशुभ प्रेरणा के परिणामस्वरूप आचरित निषिद्ध कर्म उत्तम पाश कहलावेंगे। उत्तम पाशसे छूटने की प्रार्थना का आशय हुआ "भद्र कर्णेभि शृणुयाम देवा. भद्र पश्येमाक्षभिर्यजत्रा.' अर्थात् मेरी कान नाक, जीभ और त्वचा इन्द्रियां ऐसे मार्ग पर चलें, जिस पर चलकर मैं अपना और दूसरो का कल्याण कर सकू। मैं पशुता का मार्ग छोड़कर विवेक से काम लूं क्योकि पशुता के रहते हुए तो पाश से कोई छुड़ा ही नहीं सकता। अत. पहली प्रार्थना हुई है कि मैं उत्तर पाश अर्थात् ज्ञानेन्द्रियो की दुष्प्रवृत्तियो से छूटू।

अब आया मध्यम पाश। मानव शरीर के मध्य भाग मे पेट और जननेन्द्रिया हैं। पेट-प्रतिनिधित्व करता है, अर्थ का, जननेन्द्रिय प्रतिनिधित्व करती है काम का। इस आधार पर दूसरी प्रार्थना का आशय हुआ कि मे धर्मा-नुसार ही अर्थ सचय करू और मर्यादा में रहकर ही ससार के भोगो को भोगू ये दोना ही बन्धन बहुत जटिल और भयकर हैं। ससार से सौ मे से ७५ मनुष्य इन्ही बन्धनो मे जकड़े पड़े हैं। इसलिए बन्धन से छूटने की प्रार्थना "विश्रथाय" मे 'वि' उपसर्ग का विशेष महत्व है। अर्थात् कमर मे बधी हुई रस्सी जब तक पर्याप्त ढीली नही होगी जब तक न वह ऊपर की ओर आ सकेगी और न नीचे की ओर खिसक सकेगी। मनु ने भी कहा है कि "अर्थ कामेष्वसक्ताना धर्मज्ञान विधीयते है।" धर्म ज्ञान ० अधिकारी ही वे हे जो अर्थ और काम के अर्थात् मध्यम पाश से मुक्त हैं।

इसके बाद तीसरा नम्बर अधम पाश का है। हमारे शरीर मे अधम भाग पैर कहलाते हैं। वे अधम इसलिए है कि इनमे ज्ञान की आभा बहुत न्यून है। यहा ज्ञान का साधन केवल त्वचा है जितने भाग पर केवल चमड़ा लिपटा हुआ है उतनी शैत्य, उष्णता की जानकारी दे देता है। इस प्रकार अधम पाश का आश्रय यह हुआ कि बिना जान भी जो पाप कर्म किए जाते हैं फल तो उनका भी दु ख ही होता है। एक बालक बिना जाने अगारे को हाथ पर रख ले तो क्या अग्नि यह समझकर कि यह बालक है बिना जाने मुझे उठा रहा है, उसे क्षमा कर देगा? नही। ठीक उसी प्रकार अधम पाश से भी छूटना आवश्यक है। विद्या प्राप्त करना मानव जीवन का लक्ष्य है। विद्ययाऽमृतम-श्नुते" अमृत प्राप्ति तो विद्या से ही होगी। हा एक बात अवश्य है कि पहले के दो पाशो की अपेक्षा इस अधम पास से छूटना सरल है। क्योकि ये उल्टे काम तभी तक हो रहे हैं जब तक जानकारी नही मिली। ज्ञान होते ही उनके छोड़ने मे कोई कठिनाई नहीं हैं। क्योकि यहा आसक्ति नही है। दूसरे पाशो मे बुराई की आसक्ति कठिनाई पैदा करती है। यह आधा मन्त्र हो गया।

अब मन्त्र के उत्तरार्ध मे पाश से छूट कर क्या करना है? इसका निर्देश है तो भक्त कहता है पाशो से छूटकर मैं व्रत में बधू ताकि अनागस पाप का एक-एक धब्बा धुल जाय और जब मैं निष्पाप हो जाऊ गा तभी तेरे आनन्द का अधिकारी बनू गा।

यहा भी एक छोटी-सी विचारणीय गुत्थी है। पाश भी बन्धन है और व्रत भी बन्धन है। फिर यहा पाश से छूटने की प्रार्थना की गयी है—यह क्यो? इसका रहस्य यह है कि पशुता और अज्ञान मे आकर जो काम किये गए है उनका दु ख स्वरूप फल अवश्य भोक्तव्य है। कष्टनिवृत्ति के लिए उन्हे छोड़ना अनिवार्य हैं। किन्तु व्रत वे उत्तम कर्तव्य बन्धन हैं। जो विचारपूर्वक मैंने अपनी और समाज की उन्नति के लिए स्वय अपने ऊपर लिये हैं। पाश मे सर्वथा पराधीनता है और व्रत मे पराधीनता मे भी स्वाधीनता सुरक्षित है। मैं जब तक उचित समझता हूँ तब तक व्रत को रखता हू और जब आवश्यकता नही सम-झता छोड़ देता हूँ। इसलिए दु सस्कारो से छुट्टी पाने के लिए व्रत धारण आवश्यक है। इस प्रकार सार यह निकला कि प्रत्येक इन्द्रिय का वासना से प्रेरित प्रयोग दाश है और उसका परिणाम दु ख है। इसी प्रकार दूसरी दिशा मे प्रत्येक इन्द्रिय का विवेकपूर्वक प्रयोग व्रत है जो जोवन का उच्चतम धरातल पर स्थापित कर के मोक्षपद का अधिकारी बनाता है।

'अंग्रेजी हटाओ' का मतलब

डा० वेदप्रताप वैदिक

अंग्रेजी हटाओ का मतलब यह कतई नहीं है कि हमें अंग्रेजी से नफरत है। किसी भी भाषा या साहित्य से कोई मूर्ख ही नफरत कर सकता है। यदि कोई स्वेच्छा से अंग्रेजी या दुनिया की अन्य भाषाएं पढ़ना चाहे, उनके माध्यम से ज्ञान का दोहन करना चाहे तो हमें प्रसन्नता ही होगी। लेकिन आपत्ति तब उपस्थित होती है जब ज्ञान के एक साधन को रुतबे का, विशेषाधिकार का, शोषण का हथियार बना लिया जाए।

अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन अंग्रेजी का नहीं, बल्कि उसके रुतबे का, विशेषाधिकार का, उसकी शोषणकारी प्रवृत्ति का विरोधी है। इसलिए हमने कहा—"अंग्रेजी हटाओ"। हमने यह कभी नहीं कहा कि "अंग्रेजी मिटाओ"।

अब सवाल यह है कि अंग्रेजी कहा से हटे, न्यायालय से हटे, राज-काज से हटे, कारखानों से हटे, फौज से हटे, हस्पताल से हटे, पाठशाला-प्रयोगशाला से हटे, घर-द्वार-बाजार से हटे। हट कर कहां जाए? पुस्तकालयों में जाए, विदेशी भाषा-शिक्षण संस्थानों में जाए। वहां भी सारा जगह घेरकर पसरे नहीं। दुनिया की अन्य भाषाओं के लिए थोड़ी-थोड़ी जगह खाली करे। हटना उसे सभी जगह से पड़ेगा। कहीं से थोड़ा, कहीं से ज्यादा।

लुधियाना के कुछ प्राध्यापक बन्धुओं ने मुझसे कहा कि अंग्रेजी हटाओ' में से निषेधात्मकता की गन्ध आती है। यह 'निगेटिव' नारा है। मैंने पूछा, अहिंसा क्या है, अस्तेय क्या है, अपरिग्रह क्या है, अद्वैत क्या ये सब निषेध के सिद्धान्त नहीं हैं? महात्मा गांधी का 'असहयोग' क्या था? इन्दिरा गांधी का 'गरीबी हटाओ' क्या था? वह नारा निषेधात्मक ही नहीं था, बल्कि 'अंग्रेजी हटाओ' की भौंडी-सी नकल भी था (क्योंकि गरीबी तो मिटाई जानी चाहिए)।

निषेध से डरिए मत। सृष्टि के नियम को समझिए। बिना ध्वंस के निर्माण नहीं हो सकता। छोटा-सा मकान भी बनाना हो तो नींव खोदनी पड़ती है। जो खुदाई के डर से नींव नहीं डालता, उसके मकान का अन्जाम क्या होगा? वही होगा जो पिछले चालीस वर्षों में हिन्दी का हुआ। हिन्दी वाले लोग अंग्रेजी को हटाये बिना हिन्दी को लाना चाहते थे। नतीजा क्या हुआ? अंग्रेजी अपने स्थान पर जमी रही और हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में एक नकली लड़ाई चल पड़ी।

अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन इस नकली लड़ाई का विरोध करता है। वह समस्त भारतीय भाषाओं को अंग्रेजी के वर्चस्व के विरुद्ध एक सशक्त चट्टान की तरह खड़ा करना चाहता है। जब तक अंग्रेजी नहीं हटती, भारतीय भाषाएं एक नहीं होंगी।

हिन्दी लादने का विरोध

अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन और हिन्दी चलाओ आन्दोलन में भी बुनियादी फर्क है। हिन्दी आन्दोलन वाले लोग चाहते हैं कि अंग्रेजी का स्थान हिन्दी ले ले! उन्हें इस बात की चिन्ता नहीं है कि अंग्रेजी की तरह हिन्दी भी शोषण का, विशेषाधिकार का और रुतबे का हथियार बन सकती है। अगर हिन्दी के आने का नतीजा यह हो कि अन्य भाषावालों के लिए नौकरियों का, अवसरों का, आगे बढ़ने का मार्ग दुर्गम हो जाए तो फिर हिन्दी को लाने से फायदा क्या हुआ? वह भी अंग्रेजी की तरह देश में गैर-बराबरी को बढ़ाएगी। फर्क इतना होगा कि आज अंग्रेजी के कारण जहां दो प्रतिशत लोग सारे देश को रौंद रहे हैं, वहां ४० प्रतिशत लोग बाकी ६० प्रतिशत लोगों के साथ अन्याय करेंगे। हम हर अन्याय के विरुद्ध लड़ना चाहते हैं, चाहे वह छोटा हो या बड़ा। मैं नहीं चाहता कि मेरी मातृभाषा वही घिनौना कार्य करे जो कि अंग्रेजी कर रही है। इसीलिए हम सारे देश में हिन्दी को थोपने के विरोधी हैं।

इसका मतलब यह नहीं है कि हमने सारे देश को जोड़ने वाली भाषा के सवाल पर विचार नहीं किया है। सारे देश को जोड़ने वाली भाषा कोई भी भारतीय भाषा हो सकती है। लेकिन इस काम के लिए हिन्दी सबसे अधिक अनुकूल भाषा होगी क्योंकि किसी भी एक भाषा की तुलना में इसके बोलने वाले सबसे ज्यादा है, इसकी लिपि—देवनागरी—सरल और वैज्ञानिक है तथा यह भाषा भारत के सबसे बड़े इलाके में बोली जाती है। जहां तक हिन्दी देश की सारी भाषाओं को जोड़ती है, वहां तक हिन्दी को लाने में हमें कोई एतराज नहीं है। लेकिन हिन्दी अन्य भाषाओं का हक मारे, यह उचित नहीं है।

हर प्रदेश में उस प्रदेश की भाषा पूरी तरह से चलनी चाहिए। केन्द्र में भी प्रदेशों से आने वाले लोगों को अपनी-अपनी भाषा के जरिए नौकरी पाने, संसद में बोलने, न्याय पाने और शिक्षा पाने का पूरा अधिकार होना चाहिए। उन्नति के अवसरों में हिन्दी को आड़े नहीं आना चाहिए। हिन्दी काम केवल विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच सम्पर्क स्थापित करना है। केन्द्रीय सरकार और केन्द्रीय संस्थानों का अपने तईं सारा काम-काज केवल हिन्दी में चल सकता है, चलना चाहिए। लेकिन प्रदेशों से उनकी भाषा में आने वाले पत्रों को केन्द्र के द्वारा न केवल स्वीकार किया जाना चाहिए बल्कि उन्हीं की भाषा में उन पत्रों का जवाब दिया जाना चाहिए। किसी व्यक्ति संस्था या प्रादेशिक सरकार को इसलिए घाटे में नहीं रखा जाना चाहिए कि वह हिन्दी में प्रवीण नहीं है।

इस कार्य को कम खर्चीला और सुगम बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हर सरकारी विभाग के साथ कुछ अनुवादक संलग्न कर दिए जाए। ऐसे अनुवादक भी हो सकते हैं, जो कि तीन-तीन, चार-चार, पांच-पांच भाषाएं एक साथ जानते हों। इन अनुवादकों पर होने वाला खर्च अनिवार्य अंग्रेजी को चलाए रखने के लिए होने वाले खर्च से निश्चित रूप से कम होगा।

सोवियत संघ और यूरोप के उन देशों में जहां अनेक भाषाएं बोली जाती हैं, वहां ऐसा ही किया जाता है। कोई भी देश अनुवाद के खर्चे के डर से किसी विदेशी भाषा को अपने आप पर नहीं लादता देशी भाषाओं की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एक होने के कारण उनमें परस्पर अनुवाद करना इतना सरल होता है कि कुछ ही वर्षों में बहुत से लोग अपने आप कई भाषाएं सीख जाते हैं और फिर अनुवादकों की जरूरत नहीं रहती, जैसा कि स्विटजरलैंड और यूगोस्लाविया में हुआ है।

इस बात पर यह आपत्ति की जा सकती है कि सरकार अपना समय राज-काज में लगाए या वह इन भाषाओं के चक्कर में पड़ जाए। मैं पूछता हूं कि अगर जनता से सीधे उसकी जुबान में उसका दुःख दर्द नहीं सुनोगे और सीधे उसकी जुबान में उसकी समस्याओं का समाधान नहीं दोगे तो अच्छा और सच्चा राज-काज कैसे चलाओगे? नकली समस्याओं और उनके नकली समाधानों का राज-काज तो इस देश में पिछले चालीस साल से चल ही रहा है।

अगर आप देश के एक औसत आदमी को यह विश्वास दिलायेंगे कि बड़े से बड़े स्तर पर भी उसकी भाषा को नीचा नहीं देखना पड़ेगा तो काम-चलाऊ हिन्दी सीखने में उसे जरा भी एतराज नहीं होगा। आज दक्षिण का आदमी हिन्दी का विरोध क्यों करता है?

(शेष पृष्ठ ६ पर)

मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषोवेद शिक्षा विषय

श्री कुन्दनलाल आर्य, कलकत्ता

गुरोः प्रेतस्य शिष्यस्तु पितृमेधं समाचरन्।
प्रेतहारैः समं तत्र दशरात्रेण शुद्धयति॥
मनु० अ० ५ श्लोक० ६५॥

अर्थ—जब गुरु का प्राणान्त हो, तब मृतक शरीर जिसका नाम 'प्रेत' है उसका दाह करने हारा शिष्य प्रेतहार अर्थात् मृतक को उठाने वालों के साथ दशवें दिन शुद्ध होता है। और जब उस शरीर का दाह हो चुका तब उसका नाम "भूत" होता है अर्थात् वह अमुकनामा पुरुष था। जितने उत्पन्न हो वर्तमान में आ के न रहें, वे भूतस्थ होने से उनका नाम भूत है। ऐसा ब्रह्मा से लेके आज पर्यन्त के विद्वानों का सिद्धान्त है। परन्तु जिसको शंका, कुसंग कुसंस्कार होता है, उसको भय और शंकारूप भूत, प्रेत, शाकिनी, डाकिनी आदि अनेक भ्रमजाल दुःखदायक होते हैं।

देखो! जब कोई प्राणी मरता है तब उसका जीव पाप, पुण्य के वश, होकर परमेश्वर की व्यवस्था से सुख-दुख के फल भोगने के अर्थ जन्मान्तर धारण करता है (क्या इस अविनाशी परमेश्वर की व्यवस्था का कोई भी नाश कर सकता है? अज्ञानी लोग वैद्यक शास्त्र वा पदार्थ विद्या के पढ़ने, सुनने और विचार से रहित होकर सन्निपातज्वरादि शारीरिक और उन्मादादि मानस रोगों का नाम भूत प्रेतादि धरते हैं। उनका औषध सेवन और पथ्यादि उचित व्यवहार न करके उन धूर्त, पाखण्डी महामूर्ख अनाचारी, स्वार्थी, भंगी, चमार, शूद्र, म्लेच्छादि पर भी विश्वासी होकर अनेक प्रकार के ढोंग, छल कपट और उच्छिष्ट भोजन, डोरा, धागा आदि मिथ्या मन्त्र-यन्त्र बांधते बंधवाते फिरते हैं। अपने धन का नाश, सन्तान आदि की दुर्दशा और रोगों को बढ़ाकर दुःख देते फिरते हैं।

जब आंख के अन्धे और गांठ के पूरे उन कुबुद्धि पापी स्वार्थियों के पास जाकर पूछते हैं कि—'महाराज! इस लड़का, लड़की, स्त्री और पुरुष को न जाने क्या हो गया है?' तब वे बोलते हैं कि "इसके शरीर में बड़ा भूत, प्रेत, भैरव, शीतला आदि देवी आ गई है, जब तक तुम इसका उपाय न करोगे तब तक ये न छूटेंगे और प्राण भी ले लेंगे। जो तुम मलीदा या इतनी भेंट दो तो हम मन्त्र जप पुरश्चरण से झाड़ के इनको निकाल दें। तब वे अन्ध और उनके सम्बन्धी बोलते हैं कि महाराज! चाहे हमारा सर्वस्व जाओ परन्तु इनको अच्छा कर दीजिये।" तब तो उनकी बन पड़ती है। वे धूर्त कहते हैं अच्छा लाओ इतनी सामग्री इतनी दक्षिणा देवता को भेंट और ग्रहदान कराओ। झांझ, मृदंग, ढोल थाली लेके उसके सामने बजाते गाते और उनमें एक पाखण्डी उन्मत्त होके नाच कूद के कहता है मैं इसका प्राण ही ले लूंगा।" तब वे अंधे उस भंगी चमार आदि नीच के पगों में पड़ के कहते हैं आप चाहें सो लीजिये, इसको बचाइये।" तब वह धूर्त बोलता है, मैं हनुमान हूं, लाओ पक्की मिठाई, तेल, सिन्दूर, सवा मन रोट और लाल लंगोट "मैं देवी वा भैरव हूं, लाओ पांच बोतल, बीस मुर्गी पांच बकरे, मिठाई और वस्त्र।" जब वह कहते हैं कि 'जो चाहो सो लो" तब तो वह पागल बहुत नाचने कूदने लगता है। परन्तु जो कोई बुद्धिमान् उनकी भेंट पांच जूता, दण्डा या चपेटा, लात मारे तो उसके हनुमान्, देवी और भैरव झट प्रसन्न होकर भाग जाते हैं, क्योंकि वह उनका केवल धनादि हरण करने का, प्रयोजनार्थ ढोंग है।

और जब किसी ग्रहग्रस्त, ग्रहरूप, ज्योतिर्विदाभास के पास जाके वे कहते हैं—हे महाराज! इसको क्या है? तब वे कहते हैं कि इस पर सूर्यादि क्रूर ग्रह चढ़े हैं। जो तुम इनकी शान्ति, पाठ पूजा, दान कराओ तो इसको सुख हो जाय, नहीं तो बहुत पीड़ित होकर मर जाय तो भी आश्चर्य नहीं।

उत्तर—कहिये ज्योतिर्वित्। जैसी यह पृथिवी जड़ है वैसे ही सूर्यादि लोक हैं। वे ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ भी नहीं कर सकते, क्या ये चेतन हैं, जो क्रोधित होके दुःख और शान्त होके सुख दे सकें?

प्रश्न क्या जो यह संसार में राजा प्रजा सुखी दुःखी हो रहे हैं, यह ग्रहों का फल नहीं है?

उत्तर—नहीं, ये सब पाप पुण्यों के फल हैं।

प्रश्न—तो क्या ज्योतिशास्त्र झूठा है?

उत्तर—नहीं, जो उसमें अंक, बीज, रेखागणित विद्या है, वह सब सच्ची, जो फल की लीला है, वह झूठी है।

प्रश्न—क्या जो यह जन्मपत्र है सो निष्फल है?

उत्तर—हां, वह जन्मपत्र नहीं किन्तु उसका नाम "शोकपत्र" रखना चाहिए। क्योंकि जब सन्तान का जन्म होता है, तब सबको आनन्द होता है। परन्तु वह आनन्द तब तक होता है कि जब तक जन्म पत्र बनके ग्रहों का फल न सुनें। जब पुरोहित जन्मपत्र बनाने को कहता है तब उसके माता, पिता पुरोहित से कहते हैं महाराज! आप बहुत अच्छा जन्म पत्र बनाइये" जो धनाढ्य हो तो बहुत सी लाल-पीली रेखाओं से चित्र विचित्र और निर्धन हो तो साधारण रीति से जन्म पत्र बनाके सुनाने को आता है। तब उसके मां बाप ज्योतिषी जी के सामने बैठ के कहते हैं, इसका जन्म पत्र अच्छा तो है? 'ज्योतिषी कहता है" जो है सो सुना देता है, इसके जन्मग्रह बहुत अच्छे और मित्रग्रह भी बहुत अच्छे हैं, जिनका फल धनाढ्य और प्रतिष्ठावान् जिस सभा में जा बैठेगा तो सबके ऊपर इसका तेज पड़ेगा, शरीर से आरोग्य और राज्यमानी होगा। इत्यादि बात सुनके पिता आदि बोलते हैं "वाह वाह ज्योतिषी जी! आप बहुत अच्छे हो।" ज्योतिषी जी समझते हैं इन बातों से कार्य सिद्ध नहीं होता तब ज्योतिषी बोलता है कि "ये ग्रह तो बहुत अच्छे हैं परन्तु ये ग्रह क्रूर हैं। अर्थात् फलाने फलाने ग्रह के योग से ८वें वर्ष में इसका मृत्यु योग है।" इसको सुनके माता पितादि पुत्र के जन्म के आनन्द को छोड़ के शोकसागर में डूब कर ज्योतिष जी से कहते हैं कि 'महाराज जी! अब हम क्या करें? "तब ज्योतिषी जी कहते हैं" उपाय करो। "गृहस्थ पूछे" क्या उपाय करें? ज्योतिषी जी प्रस्ताव करने लगते हैं कि ऐसा ऐसा दान करो, ग्रह के मन्त्र का जप कराओ और नित्य ब्राह्मणों को भोजन कराओगे तो अनुमान है कि नवग्रहों के विघ्न हट जायेंगे।" अनुमान शब्द इसलिये है कि जो मर जायेगा तो कहेंगे हम क्या करें, परमेश्वर के ऊपर कोई नहीं है, हमने तो बहुत सा यत्न किया और तुमने कराया उसके कर्म ऐसे ही थे। और जो बच जाय तो कहते हैं कि देखो, हमारे मन्त्र, देखो, हमारे मन्त्र, देवता और ब्राह्मणों की कैसी शक्ति तुम्हारे लड़के को बचा दिया। यहां यह बात होनी चाहिये कि जो इनके जप पाठ से कुछ न हो तो दूने तिगुने रुपये उन धूर्तों से ले लेने चाहिये और बच जाय तो भी ले लेने चाहिये। क्योंकि जैसे ज्योतिषियों ने कहा कि 'इनके कर्म और परमेश्वर के नियम तोड़ने का सामर्थ्य किसी का नहीं, वैसे गृहस्थ भी कहे कि वह अपने कर्म और परमेश्वर के नियम से बचा है, तुम्हारे करने से नहीं।" और तीसरे गुरु आदि भी पुण्य दान करा के आप ले लेते हैं तो उनको भी वही उत्तर देना, जो ज्योतिषियों को दिया था।

हे वीरो ! तनिक सोचो तो सही

अब देश 'नचकैया' पैदा करेगा।
कौन देश जाती की रक्षा करेगा ?
कौन वीर 'बादल' और 'पत्ता' बनेगा ?
कौन अरमान 'बिस्मिल' के पूरे करेगा ?
'मान' 'प्रताप' की कौन धारणा करेगा ?
'शिव शौर्य्य' कौन मन मे भरेगा ?
कौन साहस 'ऊधमसिंह' का अपनायेगा ?
'देश-बैरी' से बदला कौन लायगा ?
स्वप्न 'सावर' का अब कौन पूरा करेगा ?
कौन वीर 'वैरागी' 'बन्दा' बनेगा ?
तेरा राज्य लेने को शत्रु अड़े हैं।
कई 'षडयन्त्र उन्होने रचे अब बड़े हैं॥
तेरे 'लाल ललनो को वे लूटते हैं।
जिनके शिखा सूत्र सब छूटते हैं॥
तुझे नष्ट करने को वे धन लगावें।
दिये तेरे 'धन' से तुझी को पिटावें॥
आज 'गुण्डो' ने 'जाती' को है रौंद डाला।
'बहिन बेटी' की इज्जत पर 'डाका' है डाला॥
ये 'निर्दोष-निर्धन' का है खून' करते।
न अपने 'कुकर्मों' से बिल्कुले हैं डरते॥
'दीन-रक्षा' पर तेरा न कुछ ध्यान है।
तुझे नाचने पर ही अभिमान है॥
तुझे नष्ट करने को शत्रू खड़े हैं।
तेरे देश खण्डन' को वे सब अड़े हैं॥
नही 'पुण्य-भूमि' इसे मानते हैं।
नही पितृ भूमि' कभी मानते हैं॥
'विदेशो' से 'लौ' वे लगाये हुए है।
उन्ही की सदा जय मनाये हुए है॥
कई योजनायें इन्होने बनाई।
जो है देश भर मे गई अब चलाई॥
जो 'हरिजन' हैं पिछड़े 'वर्ग' के कहाते।
जिन्हे अब तलक तुम रहे थे सताते॥
उन्हे 'देश द्रोही' ये बहका रहे हैं।
तेरे पैर तुझ से कटे जा रहे है॥
घृणा के ये 'भाव' उनमे हैं भरते।
उन्हे देश-जाती का शत्रु है करते॥
है चहुँ ओर से देश सकट मे आया।
कुछ ध्यान तुमने इधर न लगाया॥
तेरी 'वीरता' नाच मे जा रही है।
यह करतूत 'जाती को शर्मा रही है॥
तुम्हे शोभा यह काम देता नही है।
'वीरो' का यह काम होता नही है॥
तुम 'राम-कृष्ण' की सन्तान हो।
तुम्हे 'वीर-कर्मों' पर अभिमान हो॥
यह 'गीदड़' की करतुत को त्याग कर।
हे वीर ! सिंहो का तू 'नाद' कर॥
तेरी गर्ज' से 'गुण्डे' दहलायेंगे।
'स्वप्न' मे न 'गुण्डागीरी' लायेंगे॥
जो हैं 'देश-द्रोही' उन्हे शुद्ध' कर।
'आर्यत्व' के 'भाव' उनमे तू भर॥
जो 'हरिजन' हैं भाई उन्हे प्यार कर।
जो 'अधिकार' उनके स्वीकार कर॥
इन्हीं शुभ विचारा का प्रसार कर।
'कठिन कार्य यह है स्वीकार कर।
तभी 'वीर' 'जाति' का कहलायगा।
तू अमर' 'देश जाती' मे हो जायगा॥
अब 'नाचने' से शर्म खाओ तुम।
न हिजड़ो' का यह काम' दिखलाओ तुम॥

—रामचन्द्र आर्य पुरोहित पनबाड़ी बदायू (उ० प्र०)

लालमणि

—श्रीनिवास आर्य, आर्यसमाज भरवारी (इलाहाबाद)

(१) थाली का एक दाना

भोजन कर चुकने के बाद, थाली मे पड़ा एक दाना बोल उठा— "मैने क्या बिगाड़ा है ? जो आपने मुझे स्वीकार नही किया !

मनुष्य—"बिगाड़ा तो कुछ नही, परन्तु एक दाना मेरे लिए क्या है !"

दाना—थाली मे आये सभी दाने बराबर थे। एकको स्वीकार न करना, हमारी जाति का अपमान है। थाली के बाहर गिरे दाने को—ठीक है—स्वीकार न करें। बहुत से जीव मेरे ग्राहक हैं—मैं उन्हे सुख पहुँचाऊ या—आशीर्वाद पाऊ गा।

भोज प्राण है ! अन्न का अनादर न करें। थाली या पत्तल मे उतना ही भोजन ले, जितना आप ग्रहण कर सकते हैं।

(२) नकल और अकल

परीक्षा मे नकल कर पास होना—अकल को ताला लगाना है ! भावी पीढ़ी को अकल की सीढ़ी पर चढ़ने से रोकना है।

अकल (सुबुद्धि) द्वारा विद्या बढ़ाइये ! सकल ससार मे मानवता की शिक्षा फैलाइए !!

(३) प्रातः काल

कितना सुहावना—अनोखा काल ! सरस्वती की अमृत वर्षा ! जो प्रात जागते नही, ब्रह्म को याद नही करते—वे ब्रह्म (ईश्वर-विद्या-स्वास्थ्य) की प्राप्ति से वंचित रहते हैं।

सूर्योदय से चार घड़ी (४×२४=९६ घण्टा ३८ मिनट) पहले उठिये ! दो घड़ी—ब्राह्मकाल, दो घड़ी—उषाकाल (आकाश मे सूर्य की लाली) और सूर्योदय के पश्चात् प्रात. काल का आनन्द लेते हुए प्रति दिन सब की उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए !

(४) अण्डा और झण्डा

सभी जानते हैं कि हनुमान जी अण्डा नही खाते थे। उनके शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बल का झण्डा ऊंचा था।

शाकाहार भोजन अपनाइये ! सदाबहार जीवन पाइये !!

—गुरुकुलानन्द सरस्वती

शतायु पार करके सन्तराम बी. ए. दिशाबोध दे गए

—अक्षयदत्त स्नातक सी० ४ बी-३३२ बी जनकपुरी, नई दिल्ली-५८

कर्मणा वर्ण के प्रतिपादक

आज विश्व मे दक्षिण अफ्रीका के रंगभेद के विरुद्ध भारत ने मुहिम चला रखी है। गुट निरपेक्ष देशो के अलावा साम्यवादी, समाजवादी, पूंजीवादी, इस्लामी, एव लोकतांत्रिक देश इस महारोग को दूर करने के लिए उस देश के विरुद्ध आर्थिक, राजनयिक और सामरिक रणनीति को अपना रहे हैं। लेखक ने उस देश मे हाल मे जाकर अश्वेतो के प्रति चले आ रहे प्रतिबन्धो को निकट से देखा है और अब तो हमारे देश मे सरकारी व स्वतन्त्र सचार साधन उसका जोरो से पर्दाफाश कर रहे हैं।

परन्तु आज अपने देश मे जन्मना जातीय आधार पर जिस प्रकार राजनीति और समाज की सरचना हो रही है, जिस प्रकार हिन्दू समाज से बाहर मुसलमानो और ईसाई वर्गों मे भी राजनैतिक वर्गीकरण जोरो से हुआ है और हो रहा है, राजनैतिक दल उसको जोरो से हवा दे रहे है। बहुजन समाज रिपब्लिकन पार्टी पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित एव जनजातियो, धर्मो, आदि मच तब तक बने नही थे इस जातीय समस्या का समाधान अब से ७५ साल पहले जिस व्यक्ति ने खोजा था, जिसने उसे जीवन दर्शन और साहित्य का जामा पहनाया, वह१०८वर्ष की आयु पूरी करके मई के अन्तिम सप्ताह मे राष्ट्र को एक दिशा बोध देकर चले गये। उसके दरवाजे पर शायद मौत लगातार पिछले अनेक सालो से दस्तक दे रही थी।

मैं पिछले दिनो पहली बार उनके दर्शन करने दिल्ली स्थित उनकी पुत्री के निवास स्थान पर गया था, उनको अब लगभग दिखाई नही देता था। स्मरण शक्ति बड़ी मुश्किल से काम देती। वे चल फिर भी नही सकते थे मेरा परिचय देने पर मुझे एक प्रेमी के रूप मे अपनी शुभकामनाओ और आर्शीर्वादो की वर्षा उन्होने की और उनके मुख से बारम्बार ये दो शेर निकलते रहे थे—

> ये दुनिया चन्द रोजा है, यहा रहना नही दायम।
> बहारें फिर भी आयेगी, लेकिन हम तुम जुदा होगे॥
> खुदा मालूम दुनिया जलवा गाहे नाज है किसकी।
> हजारो उठ गये, लेकिन वही रौनक है महफिल की॥

यह जानकर सुखद आश्चर्य होता है कि सन्तराम ने अपने जीवन के प्रथम २१ वर्षों तक हिन्दी को नागरी रूप मे देखा या पहचाना तक न था। वे उर्दू और फारसी के विख्यात लेखक थे। हिन्दी लेखन व अध्ययन की प्रेरणा उनको महर्षि दयानन्द के जीवन व आर्य समाज की शिक्षाओ से मिली थी। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा अपने प्रिय सद्धर्म प्रचारक नामक समाचार पत्र को सहसा उर्दू से हिन्दी मे रूपान्तरित होने पर सन्तराम बी० ए० ने हिन्दी पढ़ना और लिखना शुरू किया था। उनके जीवन काल मे कुल मिलाकर लगभग १०० रचनायें सन्तराम बी० ए० की प्रकाशित हुई। उनकी सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हमारा समाज' है जिसमे जातपात और सामाजिक आर्थिक विषमताओ के विरुद्ध अनेक संगत और शास्त्रीय प्रमाणो के द्वारा कुठाराघात किया था। बीसवीं शताब्दी के द्वितीय दशक से लगाकर अब तक उनकी लेखनी चलती रही। वे निरन्तर हिन्दी सेवी और रचना धर्मी रूप में हमारे सामने आते रहे। छोटी-बड़ी सभी कोटि की पत्र-पत्रिकाओ मे ६०० के लगभग उनके लेख प्रकाशित हुए।

साहित्य और वाङ्मय समानार्थक शब्द होते हुए भी सम्पूर्ण वाङ्मय साहित्य की कोटि मे नही आता। वाक्य रसात्मक काव्य की परिभाषा के अनुसार भावनापूर्ण रचनाओ मे यह गुण उल्लेखनीय रूप से पाया जाता है। सन १९१४ मे सन्तराम जी ने पंजाब से उषा और १९३३ मे 'युगान्तर' नामक पत्रिकाए शुरू की थी, जो अल्पजीवी रही। सन १९५२ मे वे होशियार पुर की "विश्व ज्योति" पत्रिका के सह सम्पादक बने। यह कार्य अपने स्वास्थ्यक्षीण होने से पूर्व तक उन्होने अनवरत किया। जात-पात तोड़क मडल की ओर से उन्होने हिन्दी और उर्दू दोनो भाषाओ मे क्रान्ति और युगान्तर पत्रो का सम्पादन व सचालन वे करते रहे। उनकी भाषा व शैली दोनों अनूठी और चुस्त रही है। पंजाबी क्षेत्र मे हिन्दी की सहायता, पजाब मे हिन्दी का मूलोच्छेदन काशमीर और हिन्दू जैसे ज्वलन्त प्रश्नो पर उन्होने पारदर्शी लेख लिखे। उनकी लगभग १०० प्रकाशित पुस्तके हो चुकी और हजारो लेखो की सरचना के माध्यम से राष्ट्र उनकी साहित्य साधना और हिन्दी सेवा को कभी भुला नही सकेगा।

वर्ण व्यवस्था बनाम जात-पात तोड़क मंडल

श्री सन्तराम बी० ए० की आज के समाज को इस दृष्टि से एक महत्वपूर्ण देन यह कही जायेगी कि उन्होने जात-पात सूचक उपनाम अपने नाम के साथ न जोड़कर उपाधि को उसका स्थान दिया, यद्यपि शिक्षा की उपाधि नाम के साथ जोड़ने पर होने वाले मति विभ्रम को भी सर्वथा नकारा नहीं जा सकता (उदाहरण के लिए एम० ए० होने के कारण मैं अपने वर्तमान उपनाम को रूढ अर्थ मे मानता हूँ), पर इससे सन्तराम जी के क्रान्तिकारी दृष्टिकोण को अस्वीकार नही किया जा सकता जो उनके समग्र जीवन और कार्यों की धुरी कहा। यहा हम सन्तराम जी की अप्रतिम हिन्दी सेवा और साहित्य सरचना के अन्तिम ध्येय उन्ही के शब्दो मे रखते हैं। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) के अबोहर अधिवेशन (१९४२) मे स्वागताध्यक्ष के रूप मे, तब उन्होने कहा था—

(शेष पृष्ठ १० पर)

ग्रन्थी वालयों का चक्रव्यूह खालिस्तान (६)

डा० सुरेन्द्रसिंह कादियाण एम०ए०, पी०एच०डी०

कौन नही जानता कि भारतीय जनमानस ने गुरुनानक को मुक्ति का मसीहा मानकर सिर आखो पर बैठाया, हिन्दुओं ने ही सर्वाधिक रूप में उनके सन्देश को आत्मसात किया लेकिन गुरुनानक को हिन्दुत्व के रक्षक के रूप में व्याख्यात करना आधुनिक सिख विद्वान अपना अपमान समझते हैं। उनका प्रयास नानक को हिन्दुत्व का विरोधी सिद्ध करने का है और अपने मत की पुष्टि मे मुस्लिम और यूरोपियन विद्वानों के उद्धरण बडे ही आत्मविश्वास से दिए जाते हैं। सिख धर्म की जो बाते हिन्दू धर्म से से साम्य दर्शाती हैं उन्हे या तो उपेक्षित रखा जाता है अथवा उनको मनमानी गलत व्याख्या की जाती है। एक दो उदाहरणो से ही यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सिख मानसिकता इस षडयन्त्र फस चुकी है। जब सिख मनीषी इस षडयन्त्र का सहज में शिकार होते देखे गए हैं तो आम सिख को उससे कैसे बचाया जा सकता है? डा० शेरसिंह, एम०ए०, पी०एच०डी० सिख धर्म के अधिकारी विद्वान् माने गए हैं। उन्होंने अपनी पुस्तक 'गुरुमत दर्शन' को इसी उद्देश्य से लिखा है कि सिख धर्म को हिन्दुत्व से पूरी तरह मुक्त करके प्रस्तुत किया जाए। एक स्थान पर वे मुहसन फानी का उद्धरण देते हैं कि—

"सिख हिन्दू मन्त्रो का पाठ नहीं करते, उनके मन्दिरों की पूजा प्रतिष्ठा नही करते और न ही उनके अवतारो को मानते हैं। हिन्दू सस्कृत को देववाणी जानकर बडी उच्च पदवी देते हैं परन्तु सिखों के लिए यह साधारण भाषाओ की भान्ति है तथा कोई विशेषता नही रखती। हिन्दुओ के धार्मिक सस्कार सिखों में नही हैं। सिखों के लिए खाने-पीने तथा पहरावे का कोई प्रतिबन्ध नही है। जब एक प्रतापमल नामक समझदार हिन्दू ने देखा कि उसका पुत्र मुसलमान धर्म अपनाने लगा है तो उसने अपने पुत्र से कहा कि तू मुसलमान क्यो बनता है? यदि तू खाने-पीने की स्वतन्त्रता चाहता है तो गुरु का सिख क्यो नही बन जाता? फिर जो मन मे आए खाना-पीना।

इस तरह के ऊल जलूल उद्धरणो से सिख विद्वान् तो बहक ही रहे हैं अपने साथ साथ सामान्य और नेक सिखो को भी दिग्भ्रमित कर रहे हैं। मुहसन फानी ने उक्त पंक्तियो में हिन्दुत्व को न समझने की अपनी अज्ञानता का ही परिचय दिया है लेकिन उन सिख विद्वानो के सम्बन्ध में क्या कहा जाए जो नाखून और मास के रिश्ते को जानते समझते हुए भी एक के बिना दूसरे का अस्तित्व स्वीकार कर रहे हैं। हिन्दुत्व एक विशाल और व्यापक जीवन दर्शन है जिसमें भारत के समस्त ऋषि-मुनियो सन्तों महात्माओ योगी-ध्यानियों और आचार्यो-विद्वानों का चिन्तन समाविष्ट है। एक ही सत्य को भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणो से हृदयगम और आत्मसात करने की उदात्त परम्परा भारतीय चिन्तन, प्रज्ञा तथा मनीषा की मौलिक देन रही है। सुतरा भारत को विभिन्न धर्मों की जननी कहलाने का श्रेय मिलता रहा है। यहा जन्मे धर्म नहीं बल्कि विदेशों में पनपे धर्म भी भारतीय चिन्तको और मनीषियो को समान रूप से आकृष्ट करते रहे हैं। इस्लाम और ईसाइयत को मानने वाले जितने भी धर्मावलम्बी भारत मे हैं उनमे से अधिकाशत हिन्दूमूल के ही लोग हैं। आज भी हिन्दूओ का ही धर्म परिवर्तन सर्वाधिक हो रहा है। सिख भी मूलत: हिन्दुओ के धर्म परिवर्तन का ही परिणाम हैं। सिखो में अ-हिन्दू अश बिल्कुल है ही नही। हिन्दुओं की इस उदारता को राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए सर्वप्रथम बौद्ध धर्म ने भुनाया, फिर इस्लाम और ईसाइयत ने इस घिनौनी प्रवृत्ति का परिचय दिया और आज सिख धर्म ऐसा ही विश्वासघात का खेल दिखा रहा है। हिन्दू का दृष्टिकोण प्रलगाव का नहीं मिलाप का रहा और वह इतना उदार है कि हिन्दुत्व में मुहम्मद व ईसा के साथ-साथ इस्लाम व ईसाइयत को भी स्वीकार करने को तैयार है। इसका कारण यह रहा है कि हिन्दुओं ने पूजा पद्धतियो, उपासना स्थलों, धार्मिक ग्रन्थों, जातियो, क्षेत्रो और भाषाओ आदि को कभी धर्म माना ही नही। उनकी दृष्टि में वे सनातन और शाश्वत नियम ही धर्म हैं जिनसे मानवता का पथ प्रशस्त होता है। इन नियमो की अवहेलना कोई धर्म आज तक न कर सका है और न कर सकेगा। ये नियम वेदो में सर्वप्रथम व्याख्यात हुए थे और न कर सकेगा। ये नियम वेदो में सर्वप्रथम व्याख्यात हुए थे और हर मजहब, पथ सम्प्रदाय का आधार यही हैं। इन नियमों के बिना कोई धर्म वास्तव में धर्म रह ही नहीं सकता। ससार का कोई भी मजहब वास्तव में मौलिक है ही नही और यदि कोई मौलिकता है तो वह पूजा पद्धति की भिन्नता है उपासना स्थल की भिन्नता है, धर्म ग्रन्थ की भिन्नता है, क्षेत्र की भिन्नता है, भाषा की भिन्नता है या जाति विशेष की भिन्नता है लेकिन ये सब बातें धर्म की विधायक इकाईयां नही हैं। मुहसन फानी या उनसे प्रभावित विद्वानों की बुद्धि में यह बात रही होती तो वे सिख धर्म को हिन्दुत्व से बाहर न मानते।

अग्रेजी को लेकर ईसाई, उर्दू को लेकर मुसलमान, पजाबी को लेकर सिख सस्कृत को लेकर आर्यसमाजी, बृज या अवधी को लेकर पौराणिक, पाली को लेकर बौद्ध और प्राकृत को लेकर जैनी यदि किसी भाषा को उठाते हैं तो वे धर्म की नहीं राजनीति की भाषा बोल रहे होते हैं। हर मजहब स्वय को खुदाई मजहब मानता है लेकिन दूसरी भाषाओ से यदि वह परहेज रखेगा तो खुदाई कैसे रह सकता है? खुदाई बनने के लिए तो उसे हर भाषा में अपने को प्रस्तुत करना होगा। धार्मिक क्षेत्र में मौलिकता भाषा की नही विचारो की समझी जाती है किन्तु विचारों विचारो की मौलिकता वास्तव मे होती नही इसलिए भाषा को ही किसी मजहब की मौलिकता प्रचारित किया जाता है और इस तरह धर्म भटकाव पैदा करता है, अलग पहचान विकसित करता है। माना कि मुहसन फानी के शब्दों में सिख हिन्दुओं की तरह सस्कृत को देववाणी नहीं मानते लेकिन क्या यह भी सत्य है कि पजाबी सस्कृत शब्दावली से कतई शून्य है? पजाबी के नब्बे प्रतिशत शब्द सस्कृत भाषा के हैं और आधुनिक खोज इस निष्कर्ष पर पहुच रही है कि पजाबी का जन्म सस्कृत मे ही हुआ है। लेकिन जो मस्तिष्क इतना कुण्ठित हो चुका हो कि सिखो की पैदायश हिन्दुओं से न मानता हो उसे कैसे समझाया जा सकता है कि पजाबी सस्कृत का ही अपभ्रंश अथवा विकृत रूप है भले ही पजाबी का बाह्य रूप (लिपि) सस्कृत से भिन्न है लेकिन उसकी आत्मा (शब्द भण्डार) तो सस्कृत से भिन्न नहीं। सिक्खो को यदि सस्कृत से परहेज होता तो गुरु गोविन्दसिंह अपनी कतिपय रचनाए इस भाषा में क्यो करते और क्यो अपने शिष्यो (निर्मलों) को काशी भेजते? सस्कृत में चूकि भारत का समूचा चिन्तन प्रस्तुत होता रहा है इसलिए यह केवल हिन्दू के लिए नहीं बल्कि समूचे भारत के लिए देववाणी है और इस पर प्रत्येक भारतीय को गर्वानुभूति होनी चाहिए। गुरु नानक ने सस्कृत की नहीं बल्कि ब्राह्मणो के इस सकीर्ण दृष्टिकोण की निन्दा की थी कि धर्म का प्रस्तुतीकरण केवल सस्कृत मे ही प्रामाणिक रूप से हो सकता है। निन्दा का दूसरा कारण यह था कि धर्म पर सस्कृत ज्ञाताओं का ही एकाधिकार हो चुका था और वह जन साधारण से निरन्तर कटता जा रहा था। कोई भी भाषा सकीर्ण नहीं होती सकीर्ण होता है वह दृष्टिकोण जो भाषा को किसी धर्म, क्षेत्र जाति या राजनीति से जोड़ता है।

(समाप्त)

अंग्रेजी हटाओ

(पृष्ठ ४ का शेष)

सिर्फ इसलिए कि उसे डर है कि उसकी नौकरियां चली जाएंगी। वह अवसरों की दौड़ में पिछड़ जाएगा। हिन्दी आन्दोलन ने 'हिन्दी' 'हिन्दी' चिल्लाकर इस डर को बढ़ाया है। इस डर को पुख्ता तौर पर खत्म किया जाना चाहिए। यह डर तभी खत्म होगा जब कि अंग्रेजी हटेगी। अंग्रेजी हटेगी तो उत्तर भारत के लोग दक्षिण की भाषाएं सीखेंगे। अंग्रेजी रहती है तो उत्तर भारत के लोग सोचते हैं कि तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम सीखकर क्या करेंगे? अंग्रेजी मे ही बात कर लेंगे। इसी प्रकार दक्षिण वाले भी सोचते है। जब अंग्रेजी मे काम चलता है तो हिन्दी क्यो सीखे? इस प्रकार अंग्रेजी की कृपा से उत्तर-दक्षिण के बीच सच्चा मेल-मिलाप ही नही होता।

अंग्रेजी के जरिये जो नकली मेल-मिलाप होता है, वह भी कितने लोगो का? २ प्रतिशत लोगो का भी नही। इन्ही २ प्रतिशत लोगो का काम चल रहा है। बाकी ९८ प्रतिशत लोगा का काम ठप्प है। उनके जीवन मे अंधेरा ही अंधेरा है। अंधेरे वाले लोगो मे दक्षिण और उत्तर की सभी साधारण जनता शामिल है। अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन देश के करोड़ो लोगो को अंधेरे से उजाले की ओर ले जाना चाहता है। वह उत्तर और दक्षिण मे, पूरब और पश्चिम मे कोई भेद नहीं करता। उसके लिए सारे देश की गरीब, ग्रामीण, दमित, पीड़ित, विपन्न जनता एक है। वह इस सामान्य जनता की भाषाओ को आगे लाना चाहता है और एक छोटे-से छोटे आदमी के दिल मे भी यह अहसास पैदा करना चाहता है कि वह अपनी भाषाके जरिए बड़े-से-बड़े पद पर पहुँच सकता है।

मानव मात्र की मुक्ति

इसी आधार पर मै कहता हूँ कि अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन मनुष्यमात्र की मुक्ति का आन्दोलन है। पृथ्वी के किसी भी हिस्से पर यदि किसी भी मनुष्य की आत्माभिव्यक्ति का गला घोटा गया तो अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन चुप नही बैठेगा। इसीलिये इस आन्दोलन ने तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान मे बांग्ला का, श्रीलंका मे सिंहली और तमिल का, अफगानिस्तान मे पश्तो और फारसी का, तन्जानिया मे स्वाहिली का और उगन्डे मे गोरानी भाषा का सदा समर्थन किया है।

हमने यह कभी नही कहा कि हम इंग्लैण्ड से अंग्रेजी हटाना चाहते हैं लेकिन हम यह जरूर चाहते हैं कि वहा वेल्श और आयरिश लोगो को अपनी भाषाओ का प्रयोग करने दिया जाए। हम यह भी नही चाहते कि अमरीका से अंग्रेजी हटे लेकिन हम यह अवश्य चाहते है कि प्यूरटोरिक और इतालवी लोगो पर अंग्रेजी थोपी नही जाए। यह संयोग की बात है कि हिन्दुस्तान मे अंग्रेजी एक दमनकारी भूमिका अदा कर रही है। उसके स्थान पर फ्रासीसी, फारसी, हिस्पानी, डच आदि कोई भी भाषा हो सकती थी। जो भी होती, हम उसका उतना ही डटकर विरोध करते, जितना कि अंग्रेजी का कर रहे हैं।

दूसरे शब्दो मे, अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन का लक्ष्य किसी भाषा-विशेष के विरुद्ध हाथ धोकर पीछे पड जाना नही है बल्कि उस दमनकारी प्रवृत्ति का विरोध करना है जिसके कारण एक छोटा सा तबका अपने स्वार्थो के लिए करोड़ो लोगो के हितो को हानि पहुँचाता है और इस निकृष्ट कर्म को करने के लिए भाषा को एक हथियार के रूप मे इस्तेमाल करता है।

अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन किसी राजनैतिक दल-विशेष का आन्दोलन नहीं है। इसमे सभी दलो, सभी तबको, सभी विचारो, सभी उपासना पद्धतियो, सभी प्रान्तो और सभी भाषाओ के लोगो का स्वागत है। इसके द्वार सभी के लिये खुले हैं। जो चाहे सो आय। ×

पं० वीरभद्रराव वन्देमातरम दिवंगत

आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता तथा सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान पण्डित वन्देमातरम् रामचन्द्रराव के बड़े भ्राता प० वीरभद्रराव वन्देमातरम् का हैदराबाद मे मस्तिष्क के आपरेशन के पश्चात् १४ जून को रात्रि ११-३० बजे देहान्त हो गया। बहुत दिनो से उनका इलाज सुविज्ञ डाक्टरो के द्वारा किया जा रहा था। किन्तु वह बचाये न जा सके।

वह हिन्दी, संस्कृत, तेलगू और अंग्रेजी के उच्चकोटि के विद्वान थे। स्व० प० विनायकराव जी के वह अनन्य भक्त थे और आजीवन ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करते हुए उन्ही के निवास स्थान पर जीवन पर्यन्त रहे। कई वर्षों से वह गुरुकुल घटकेश्वर के ट्रस्टी और प्रबन्धक भी थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे उनके निधन के समाचार को सुनकर एक शोक सभा का आयोजन किया गया। सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने पण्डित वीरभद्रराव को आर्य समाज और देश का एक महान सैनिक बताते हुए उनके द्वारा की गई सेवाओ के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। शोक सभा मे दिवगत आत्मा की सद्गति के लिये प्रार्थना और शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की गई। शोक सभा मे कार्यकर्ताओ के अतिरिक्त सभा मन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री प० पृथ्वीराज शास्त्री, डा० आनन्दप्रकाश उपमन्त्री (सभा) तथा अन्य अनेक लोग उपस्थित थे।

—प्रचार भाग

शुद्धि समारोह

आर्य समाज, आर्य नगर, ज्वालापुर हरिद्वार, (भारत) के पदाधिकारियो एव सदस्यो के सौजन्य से आर्य समाज के प्राङ्गण मे २४-५-८८ को श्री मनवर हुसैन पुत्र श्री युसुफ, कौमगाडा सुन्नत जमात निवासी बुड्ढा खेडा सहारनपुर, उ० प्र०, पूर्व महाराणा प्रताप वंशीय को इस्लाम से पुन. वैदिक धर्म मे दीक्षित किया गया।

इनका नवीन नाम श्री अमरलाल आर्य रखा गया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री प० रामप्रसाद वेदालंकार आचार्य एव उपकुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार थे।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य सन्यासी विद्वान विदुषियो एव अन्य नरनारियो ने पुष्प वर्षा करके हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की तथा श्री अमरलाल आर्य जी को विभिन्न रूपो मे आशीर्वाद प्रदान किया। —मन्त्री

—आर्य समाज पुराना हस्पताल जम्मू मे मुसलमान स्त्री जैनब बीबी को शुद्ध करके उसका नाम रामप्यारी रखा गया तथा उसका विवाह एक राजपूत से करा दिया गया। चित्र मे खडे डा० योगेन्द्र कुमार जी जैनब बीबी को शुद्ध करके उसका विवाह सम्पन्न करा रहे है।

योगेन्द्र कुमार, प्रधान
आ० प्र० सभा जम्मू काश्मीर

हरिजनों को हिन्दुओं से लड़ाना चाहते थे अंग्रेज

अंग्रेजो ने 'फूट डालो और राज करो' नीति के तहत हरिजनों के मूर्धन्य नेता डा० भीमराव अम्बेडकरको अपने जालमे फासकर हरिजनो को हिन्दुओ से भिडाने का हर सभव प्रयास किया लेकिन महात्मा गांधी के सुचक नीति के कारण उनकी यह नीति नाकामयाब रही। यह रहस्योद्घाटन सीमात गाधी खान अब्दुल गफ्फार खान के पुत्र और नेशनल आवामी पार्टी के अध्यक्ष अब्दुल वली खा ने अपनी पुस्तक 'फैक्टस आर फैक्टस द अनटोल स्टोरी आफ इण्डियन मे किया है।

श्री वली खा ने लिखा है कि अग्रेज काग्रेस के खिलाफ मुसलमानो को इस्तेमाल करना चाहते थे। दूसरी ओर हिन्दुओ को जाति के आधार पर बाँटने के लिए हरिजनो की भावनाओं को उभारना चाहते थे। अग्रेज समझते थे कि हिन्दू शक्ति को तोडने का यह अचूक तरीका है।

श्री वली खा ने आगे लिखते हैं कि गाधी जी ने अग्रेजो के खेल को कामयाब नही होने दिया। गाधी जी ने हरिजनो के अधिकारो की रक्षा करने और उन्हे समाज मे 'सम्मान जनक स्थान दिलाने के लिए आमरण अनशन" शुरू कर दिया। इस तरह डा० अम्बेडकर दुविधा मे फस गए।

पुस्तक के अनुसार ऐसे मे यदि डा० अम्बेडकर अग्रेजो का साथ देते तो उन्हें गाधी जी की मृत्यु के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता और यदि वे गाधी जी के साथ वक्तव्य देते तो उन्हें ब्रिटिश समर्थन से हाथ धोना पडता।

श्री वली खा ने लिखा है कि अन्तत गाधी जी का अनशन रग लाया और देशव्यापी जनमत के दबाव मे आकर डा० अम्बेडकर को गाधी जी के रास्ते का राही बनने के लिए विवश होना पडा। गाधीवादी रास्ते से समाज मे हरिजनो को उनकी सही जगह मिलने की आशा बलवती हुई।

हरिजनो और गांधी जी के बीच पुणे मे समझौता हुआ जिसमे हरिजनो की ओर से डा० अम्बेडकर ने हस्ताक्षर किए। इस तरह हरिजनो का समथन जब अग्रेजो को नही मिल पाया तो उनकी आशा मुसलमानो पर टिकी। पुस्तक मे लिखा गया है कि हिन्दुओ ने डा० अम्बेडकर से कहा कि वास्तव मे वे हरिजनो की भलाई के लिए उत्सुक हैं तो उन्हे गाधी जी का पूरी तरह साथ देना चाहिए।

डा० अम्बेडकर के पास इसके सिवा और कोई विकल्प नही बचा कि वे गाधी जी का ही साथ दें। इस तरह गाधी जी ने अपना आमरण अनशन पुण समझौते पर हस्ताक्षर होने के बाद समाप्त कर दिया।

वृष्टि यज्ञ : कुछ सच्चाई

५ जून सम्पादकीय में यज्ञ से वर्षा की वैज्ञानिक कसौटी पर व्यक्त विचार पढ़े। साथ ही यज्ञ की असफलता का समाचार।

आश्चर्य है कि इतने प्रमुख राष्ट्रीय दैनिक मे यज्ञ की समाप्ति के ४ दिन बाद भी सही समाचार नहीं पहुचा। मैं मथुरा का निवासी हू। पाठकों के लिए सच्चाई बताता हू।

यज्ञ की पूर्णाहुति ३१ मई की शाम के स्थान पर १ जून की सुबह की गई थी। उसी दिन दोपहर बाद ३ बजे आकाश में बादल छा गए लेकिन वे डढ दो घण्टे में गायब हो गए। परन्तु दुबारा साढे सात बजे शाम को फिर से बादल घिर आए और बिजली तथा तेज हवाओं के साथ ८ ११ से लगभग आधा घण्टा तेज वर्षा हुई। यह समाचार अगले दिन (२ जून) को स्थानीय पत्रो दैनिक आज और जागरण आदि से प्रकाशितहुआ। अगले दिनही इण्डियन पोस्ट तथा अन्य समाचार पत्रो के प्रतिनिधि आए और श्री हरप्रसाद शर्मा का साक्षात्कार लिया। यह वर्षा आगरा और मथुरा जनपद के अन्य स्थानो मे भी हुई। इन सभी बातों की तहकीकात मौसम विभाग और अन्य लोगों से की जा सकती है।

यज्ञ से वर्षा के वैज्ञानिक कारणो और प्रकारों का पता तो बाद में चलेगा लेकिन यज्ञ एक अन्य नागरिक की दृष्टि मे सफल ही रहा।

—रामकृष्ण गौतम एडवोकेट,
११६, नगला पाइसा, मथुरा

(हिन्दुस्तान १६-६ ८८)

सन्तराम बी०ए०

(पृष्ठ ७ का शेष)

साहित्यिक का जो अर्थ आज कल लिया जाता है, उस अर्थ में मैं साहित्यिक नहीं हू। मेरा कार्य क्षेत्र अधिकतर समाज सुधार है'

हिन्दी के प्रख्यात निबन्धकार डा० रामचरण महेन्द्र ने अपने संस्मरणो मे ३० साल पहले सन्तराम जी से हुई भेंटवार्ता के दौरान उनके द्वारा रचित साहित्य के मूल स्वर और उद्देश्य के सम्बन्ध मे कुछ प्रश्न किये थे, और तब उनको यह उत्तर मिला मैं मूलत विचारक हूं। नैतिक श्रेष्ठता, चरित्र निर्माण, समाज से गन्दगी दूर करना, अनीति अत्याचार तथा अन्याय के विरुद्ध आवाज ऊ ची करना ही मेरा उद्देश्य रहा है।

'मेरे साहित्य मे शोषितो के प्रति सहानुभूति और समाज सुधार की यह भावना सर्वत्र फैली हुई है। यदि आप लोक कल्याण को साहित्य का ध्येय मानते हैं तो मैं ये देखता हू कि धीरे धीरे जातीयता के बन्धन ढीले होते जा रहे हैं ?

प्राचीन प्रख्यात साहित्य दर्पणकार विश्वनाथ काव्य साहित्य के जिन मूल उद्देश्यो को अपने ग्रन्थ मे—

काव्य यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये ।
सद्य पर निर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे ॥

कहकर वर्णन किया है उनकी रचनाओ मे समवेत रूप मे मुखर हो उठे हैं। सक्षेप मे सन्तराम एक युगद्रष्टा और युग निर्माता साहित्यकार होने के अतिरिक्त एक ऐसे एकनिष्ट प्रोपेगेंडिस्ट (प्रचारक) जिन्होंने सर्वात्मना सारे जीवन अपने ध्येय के प्रचार को अपने व्यवहार, लेखनी व भाषणो से मूर्तरूप दिया।

प्रारम्भिक युग के प्रति जातिवादी डा० अम्बेडकर से भिन्न मार्ग के युगद्रष्टा थे जिन्होने जन्मगत जातिप्रथा पर कुठाराघात करके भी हिन्दू धर्म को एक सुदृढ रूप एव शक्ति प्रदान की थी। जिस युग तक डा० भीमराव अम्बेडकर ने अपना पृथक राजनीतिक सामाजिक धार्मिक मच खडा नहीं किया था, वे लाहौर आर्य समाज के उत्सव पर आयोजित जात पांत तोडक मडल की अध्यक्षता करने पहुँचे थे, पर मुद्रित अपना भाषण बिना पढ़ें वे लौट गये थे। अपनी कल्पना को साकार करने के लिए अविभाजित पजाब मे सहकारिता के आधार पर मजहब व जन्मजाति से पृथक एक कृषि फार्म का सचालन किया था। उनके इस काम को तब सराहना नही मिली।

किसी कवि की सूक्ति है—

स जातो येन जातेन याति वश समुन्नतिम्

यानी पूरी एक पीढी जिसकी प्रेरणा से आगे बढ़ी और आगे बढ़ रही है उसका जन्म सफल है। इस कसौटी पर सन्तराम बी० ए० खरे उतरते हैं नाम के साथ जन्म जाति या जन्मस्थान या व्यवसाय या वश गोत्र की परम्परा नयी पीढी मे भूतकाल से ज्यादा ही अब दिखाई देती है। उस परम्परा को तोडने के लिए ही युवा सन्तराम ने १९०९ मे बी० ए० की डिग्री को उपनाम के रूप मे जोड लिया। समवत उन्ही का अनुकरण बाद मे गुरुकुल के प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति, डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, चन्द्रगुप्त विद्यालकार ने शिक्षा की उपाधि को नाम के साथ जोडकर शुरू किया था। भारत के स्वर्गीय प्रधान मन्त्री लालबहादुर शास्त्री ने सन्तराम बी०ए० का मार्ग अपनाया। उपाधि अर्जित किये बिना ही अब तो उनकी पत्नी व पुत्रो के नामों के साथ शास्त्री उपनाम जुड़ चुका है।

आर्यसमाज दीवानहाल का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

आर्यसमाज की भावी योजनाओं के लिए साढ़े तीन लाख रुपये खर्च किये जायेंगे।

दिल्ली १२ जून रविवार। आर्यसमाज दीवान हाल का वार्षिक अधिवेशन एवं निर्वाचन सम्पन्न हुआ। सद्भावना एवं शान्तिमय वातावरण में सम्पन्न हुए इस निर्वाचन में श्री सूर्यदेव जी प्रधान एवं श्री मूलचन्दगुप्त को मन्त्री सर्वसम्मति से निर्वाचित किया गया।

इस अवसर पर स्वामी आनन्दबोध ने कहा--आर्यसमाज में और अधिक गति देने के लिए हमें योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना चाहिए। इस समय सभी अन्तरंग सदस्यों को नवीन सदस्य बनाओ अभियान चलाना चाहिए साथ ही सभी सदस्य अपने परिवार को भी लेकर साप्ताहिक सत्संग में उपस्थित होने चाहिएं। उन्होंने नवनिर्वाचित अधिकारियों से आग्रह पूर्वक कहा—ग्रामीण क्षेत्रों में आर्यसमाज के प्रचार को बढ़ायें। समाज के कार्यक्रमों में क्रान्तिकारी परिवर्तन करने चाहिएं जिससे सत्संग के प्रति श्रद्धा एवं आकर्षण बढ़े।

आर्यसमाज दीवानहाल के मन्त्री श्री मूलचन्द गुप्त ने बताया पिछले वर्ष एक लाख रुपया ग्राम प्रचार, वेद प्रचार, गुरुकुल एवं स्कूल सहायता पर खर्च किया गया। ११ शुद्धि संस्कार हुए ४१ अन्तंजातीय विवाह हुए तथा असमाजिक तत्वों के चुंगुल से कन्याओं को मुक्त कराकर सरक्षण दिया गया। इस कार्य में श्री उधौदास आर्य का उल्लेखनीय योगदान रहा। श्री गुप्त ने बताया भावी योजनाओं में, ग्राम वेद प्रचार, राहत एवं सहायता कार्य, वेद प्रचार आर्यसमाज मोर सराय का नवभवन निर्माण आदि के लिए साढ़े तीन लाख रुपये खर्च करने का प्रावधान है। पंजाब के आतंकवाद से पीड़ित जनों के लिए भी २५ हजार रुपये की राशि निश्चित की गयी है जिसे आवश्यकता अनुसार बढ़ाया दिया सकता है।

उल्लेखनीय हैं पंजाब से आये १४ परिवारों को अभी हाल में दिल्ली में पुर्नस्थापित किया गया है कुछ परिवार अभी भी दीवान-हाल में ठहरे हैं।

वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर कर्मठ एवं श्रद्धावान आर्य नेता, श्री वटेश्वर दयाल जी ने २० हजार रुपये स्थिर निधि के रूप में यज्ञार्थ खर्च करने के लिए दिये। इससे पूर्व भी उन्होंने ५ हजार रुपये की राशि दी थी जो १६६० तक ४० हजार रुपये होकर मिलेंगे। दूसरी राशि भी अब ४० हजार हो जायेगी, कुल मिलाकर ८० हजार रुपये की स्थिर निधि से यज्ञ के निमित्त व्यय करने का प्रावधान रखा गया है। इस अवसर पर श्री वटेश्वर दयाल ने स्वामी आनन्दबोध को चैक भेंट किया। सभी सदस्यों ने श्री वटेश्वर दयाल के सात्विक दान की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

शुद्धि उपरान्त पुनर्विवाह

आर्य समाज सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम रामघाट मार्ग अलीगढ़ द्वारा दिनांक ५-६-८८ को श्री हरप्रसाद आर्य 'दादाजी' प्रधान की अध्यक्षता में, परित्यक्ता ३८ वर्षीय (महिमा) मुस्लिम महिला एवं उसके दो बच्चे, तथा उसकी २२ वर्षीय भतीजी को प० उदयवीर शास्त्री आर्य पुरोहित द्वारा शुद्ध कर वैदिक धर्म की दीक्षा दी गई। शुद्धि के उपरान्त क्रमश: गंगादेवी, सुरेशचन्द्र व पवन कुमार तथा सुनीता नाम रखा गया। साथ ही गंगादेवी का श्री श्यामलाल के साथ पुनर्विवाह सम्पन्न किया गया। इस कार्य में श्री उपेन्द्र कुमार एडवोकेट का योगदान सराहनीय रहा।

—रामदीन आर्य, मन्त्री

पं० वन्देमातरम् वीरभद्रराव का निधन

आर्य जगत् को बड़े दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) के वन्देमातरम् बन्धुओं में ज्येष्ठ, श्री वीरभद्रराव का दिनांक १४ जून १६८८ को ७८ वर्ष की आयु में निधन हो गया। दिनांक १५ जून १६८८ को उनका अन्तिम संस्कार किया गया, जिसमें आन्ध्र प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष श्री जी० नारायणराव तथा अनेक मित्र और शुभचिन्तक बड़ी संख्या मे सम्मिलित हुए।

श्री वीरभद्रराव एक सुप्रसिद्ध कर्मठ स्वतन्त्रता सेनानी थे। उनके तथा उनके अनुज श्री रामचन्द्रराव के बारे मे बोलते हुए सन १६४७-४८ में हैदराबाद स्थित भारत के प्रतिनिधि, श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ने दिनाक १७ सितम्बर १६४८ को पुलिस कार्यवाही की सफलता पूर्वक समाप्ति पर कहा था :—

'मुझे आश्चर्य है कि वन्देमातरम् बन्धु श्री वीरभद्रराव और रामचन्द्रराव अपने कार्य की सफल परिणति को देखने के लिये जीवित किस प्रकार बच गये।

श्री वीरभद्रराव स्नातक परीक्षा पास करने के बाद सन १६३६ मे पुलिस सब-इन्सपेक्टर के पद के लिये चुन लिये गये थे, लेकिन बाद में आर्य समाज से सम्बन्धित होने के कारण उन्हे इस पद से हटा दिया गया। वे बहु-भाषा-विद थे। तेलुगू, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत भाषाओ पर उनका समान अधिकार था। काश्मीर और भारत पर चीनी-आक्रमण के सम्बन्ध मे तेलुगू और अंग्रेजी मे लिखी उनकी पुस्तकें बहुत प्रशंसित एवं प्रचारित हुईं।

श्री वीरभद्रराव एक अच्छे खिलाडी थे। घुड़सवारी का भी उन्हे शौक था। पुलिस सब-इन्सपेक्टर के प्रशिक्षण काल मे वे घुड़सवारी प्रतियोगिता में सर्व प्रथम आये। भोसले मिलिटरी स्कूल मे उन्होंने जो प्रशिक्षण प्राप्त किया वह तत्कालीन हैदराबाद रियासत मे सरकारी तन्त्र के विरुद्ध सुरक्षा दल के गठन मे बहुत सहायक सिद्ध हुआ।

श्री वीरभद्रराव को हठ योग में बहुत रुचि थी। इसी कारण उन्होंने ब्रह्मचारी-पूर्ण जीवन को अपनाया। उन्होने विवाह नही किया। वीर सावरकर के समय में उन्होने आर्य समाज तथा हिन्दू महासभा के एक नेता के रूप मे जो कार्य किया वह स्मरणीय रहेगा।

उनका अन्त भी योग क्रिया के कारण ही हुआ। शरीर के प्राणो को ब्रह्म-रन्ध्र मे चढ़ाते समय उनके स्नायु मण्डल मे आघात पहुँचा। मस्तिष्क मे खून के कण जम गये थे। जिसके लिये दो बार आपरेशन भी किया गया, किन्तु सफलता नही मिली।

रजि० नं० डी० (डी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२६-६ १९८८) बिना टिकट भेजने का लाइसंस नं० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepay ment License No U 93 Post in D P S O on 24-6 1988

आर्य सभा मोरिशस का निर्वाचन

आर्य सभा मोरिशस की कार्यकारिणी समिति का गठन सन १९८८-८९ के लिए निम्न प्रकार हुआ है —

१	श्री मोहनलाल मोहित जी ओ बी ई	आर्य रत्न रीडर और सलाहकार
२	डा० रुद्रसेन निऊर जी	प्रधान
३	श्री यशकरण मोहित जी	उपप्रधान
४	माननीय राजनारायण गति जी	उपप्रधान
५	श्री मूलशंकर रामधनी जी एम बी ई एम ए डी पी एच	मन्त्री
६	श्री सत्यदेव प्रीतम जी बी ए	उपमन्त्री
६	श्रीमती धनवन्ती रामचरण जी	उपमन्त्री
८	श्री चन्द्रामणी रामधनी जी एम बी ई	कोषाध्यक्ष
९	श्री विद्यानन्द देवकरण जी	उपकोषाध्यक्ष
१०	श्री शीतलप्रसाद प्रोयाडा जी	उपकोषाध्यक्ष
११	श्री जयचन्द लालबिहारी जी एम एड	पुस्तकाध्यक्ष
१२	श्री श्रद्धानन्द रामखेलावन जी	सदस्य
१३	श्री सन्तोष जगरनाथ जी	
१४	श्री केशवदत्त चिंतामणि जी	
१५	श्री राजेन्द्र प्रसाद रामजी जी	
१६	श्री प्रमहंस श्रीकिसुन जी	
१७	श्री सुधीरचन्द्र कहाई जी	
१८	डा० हरिदत्त धूरा जी	

—मूलशंकर रामधनी
सभा मन्त्री

गुरुकुल आश्रम ब्रह्म

वानप्रस्थ

कार्तिक पूर्णिमा २०२९ विक्रमी का ... टूर मार्ग पर भुगी के पास संस्थापित गुरुकुल आश्रम की स्थापना ... है। गुरुकुल आश्रम में सरस्वती शिशु मन्दिर दयानन्द बाल मन्दिर आदि के संस्कारी बालकों को गुरुकुल कांगड़ी के पाठयक्रम के अनुसार नि शुल्क शिक्षण के साथ भोजन वस्त्रादि की सुविधा रहेगी।

—स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती (कन्दाहारी)
आर्य समाज पिथौरागढ़ (उत्तर प्रदेश)

शोक सन्देश

रायपुर निवासी गिरधारीलाल आर्य के तृतीय सुपुत्र चि० ... आयु का मोटर दुर्घटना में निर्मल के पास (जि० आदिलाबाद आ० प्र०) दिनांक १० ६ ८८ को देहान्त हो गया। इनका पार्थिव शरीर जीप द्वारा रायपुर लाया गया। वेद मन्त्रों का उच्चारण करते हुये श्मशान घाट ले जाया गया। शव यात्रा में शहर के अन्य लोगों के अलावा आर्य समाज के सभी पदाधिकारी उपस्थित थे। अन्तिम संस्कार किया गया। ततपश्चात साय ५ बजे इनके निवास स्थान पर स्वामी सुदानन्द जी के नेतृत्व में यज्ञ हुआ। दिवगत आत्मा की शान्ती के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई।

—गिरधारीलाल आर्य

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] वर्ष २३ अङ्क २७] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र आषाढ़ कृ० ४ स० २०४५ रविवार ३ जुलाई १९८८ | दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ के वक्तव्य का सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा कड़ा विरोध

दिल्ली २४ जून। पिछले दिनो जयपुर मे पुरी के शकराचार्य स्वामी निरजनदेव तीर्थ द्वारा हरिजनो के मन्दिर प्रवेश पर कडी आपत्ति उठाई गई थी। इस पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा—शकराचार्य का वक्तव्य जन्मगत वर्णव्यवस्था की रूढिवादी कुप्रथाओ का परिणाम है, जिसके कारण भारत को हजारो वर्षों तक गुलाम रहना पडा। उनका वक्तव्य भारत के सविधान की भी अवमानना करता है, अत भारत सरकार को उनके विरुद्ध कडी कार्रवाई करनी चाहिए।

स्वामी आनन्दबोध जी ने कहा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जन्मगत वर्णव्यवस्था के कुपरिणामो से बचने के लिए ही आज से सवा सौ साल पहले गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर वर्ण व्यवस्था के सिद्धान्त का उद्घोष किया था जिसके परिणाम स्वरूप आर्य समाज ने हजारो हरिजनो को गुरुकुलो मे वेद व वैदिक ग्रन्थो का अध्ययन कराकर आर्यसमाज मन्दिरो मे पुरोहित का पद देकर सम्मानित किया। आज पूरे आर्य जगत् मे हजारो आर्य समाजी पुरोहित हरिजन ही हैं।

उन्होने कहा जब राष्ट्रपिता महात्मा गाधी को कुछ हरिजनो को मुसलमान बनाये जाने के षडयन्त्र का पता चला तो गाधी जी ने आमरण अनशन किया था, जिस पर रुष्ट होकर मौलाना मुहम्मद अली ने कहा था कि गन्दा से गन्दा मुसलमान भी गाधी से अच्छा है क्योकि वह कुरान रसूल को मानता है। श कराचार्य जी ने इस बात का भी ध्यान नही रखा।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि शूद्र शब्द अस्पृश्यता का नही अपितु सेवाधर्म का द्योतक है। आर्य समाज श कराचाय की हिन्दू जाति को विघटित और कमजोर करने की कार्रवाई का कडा विरोध करता है। उन्होने हिन्दू समुदाय के समस्त मण्डलेश्वरो, सनातन धर्म सभाओ और आर्य समाज तथा अन्य सस्थाओ से अपील की है कि सब मिलकर श कराचार्य के उक्त वक्तव्य का कडा विरोध करे और हिन्दू जाति को छुआछूत के भेदभाव की खाई मे पुन गिरने से बचावे।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

शंकराचार्य के वक्तव्य की सनातनी नेताओं ने निंदा की

नई दिल्ली २६ जून। सनातन धर्म जगत के चार नेताओ ने पुरी के श कराचार्य श्री निरन्जन देव तीर्थ के हरिजनो पर देवदर्शन प्रतिबन्ध सम्बन्धित वक्तव्य की तीखी आलोचना करते हुए कहा है कि हरिजन भी उसी प्रकार सम्मानित हिन्दू है जिस प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य। उन्हे भी देवदर्शन का उतना ही अधिकार है जितना किसी अन्य को।

सनातन धर्म के इन नेताओ ने आर्य नेता स्वामी अग्निवेश से शकराचार्य के वक्तव्य की आड मे राजनीति न करने का अनुरोध करते हुए चेतावनी दी है कि यदि उन्होने सनातन धर्म या मन्दिरो से कोई अभद्र व्यवहार किया तो उन्हे करारा जबाव दिया जायेगा।

सनातन धर्म महासभा (पजाब) के महामन्त्री श्री गिरधारी लाल गोस्वामी सनातन धर्म महासभा के सभापति श्री प्रेमचन्द गुप्ता, श्रीमती कमला बक्शी और प० बालकृष्ण शर्मा ने आज कहा कि हरिजनो को देवदशन से वचित करना देश की एकता और अखण्डता को नष्ट करना है।

श्री गुप्ता न कहा कि उनकी जानकारी के अनुसार दश मे किसी भी मन्दिर मे हरिजन प्रवेश का निषेध नही है। उन्होने जनता से अपील की कि अगर कही ऐसा हो तो वे इसकी जानकारी श्री श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पजाब) भूपेन्द्र भवन, पहाडगज दिल्ली को दे। ऐसा पाए जाने पर वे डा० गोस्वामी सहित हरिजन बन्धुओ को लेकर देवदशन को मन्दिर प्रवेश करेंगे।

उन्हाने कहा कि स्वामी अग्निवेश ने अगर राजस्थान के नाथद्वारा मदिर मे अपनी राजनीति खेलनी चाही तो उसके बुरे परिणाम होगे। उन्होन कहा कि सनातन धम का एक प्रतिनिधि मडल इस सम्बन्ध म केन्द्र सरकार से भेट करेगा। उन्होने कहा कि जरूरत पडने पर वे लोग स्वय नाथद्वारा जायेगे लेकिन सनातन धर्म से कोई खिलवाड बर्दाश्त नही करेंगे।

इन नेताओ ने दिल्ली के प्राचीन मन्दिरो का प्रबन्धक धार्मिक न्याय के अन्तर्गत लाने के सम्बन्ध मे महानगर परिषद् द्वारा पारित प्रस्ताव का स्वागत किया है। उन्होने सरकार से इस प्रस्ताव को कानूनी रूप देने के लिये शीघ्र कार्यवाही करने की माग की है।

गिरजाघर से आर्य मन्दिर : महात्मा गांधी और मदर टेरेसा

पिछले दिनो शिवरात्रि के अवसर पर प्रसिद्ध ईसाई प्रचारिका जब गुजरात के सूरतनगर मे पहुँची तो उन्हे पता चला कि आर्य समाज मन्दिर, सूरत पहले एक गिरजाघर था। धर्म निर्पेक्ष भारत सरकार द्वारा सम्मानित मदर टेरेसा अपने मन म एक दर्द लिए अपने गणमान्य सहयोगियो के साथ आर्यसमाज मन्दिर म गई और उसे अन्दर और बाहर से बडी उत्सुकता से देखा। इसके बाद

(शेष पृष्ठ २ पर)

सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन पर सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को श्री रामनाथ सहगल मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा द्वारा

पूर्ण सहयोग का आश्वासन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन पर आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को अपने २१.६.८८ के पत्र द्वारा बधाई देते हुए लिखा है कि— आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में हमारे जो कार्यालय है आर्य प्रादेशिक सभा हिन्दी साप्ताहिक आर्य जगत महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भारतीय हिन्दू सभा ट्रस्ट वेद प्रतिष्ठान आदि की ओर से पूरा पूरा सहयोग रहेगा।

—सम्पादक

बधाई

नव भारत टाइम्स दिनांक २० जून ८८ में समाचार पढ़कर अति प्रसन्नता हुई कि आप आगामी ३ वर्षों के लिए पुनः सर्व सम्मति से प्रधान निर्वाचित हुए है। यह भी जानकारी हुई कि आप प्रायः प्रथम आर्य समाजी हैं जो पिछले १६ वर्ष से लगातार सार्वदेशिक आ० प्र० सभा के प्रधान पद पर है।

आपको बहुत बधाई।

—प्रो० रत्नसिंह गाजियाबाद

गिरजाघर से आर्य मन्दिर

(पृष्ठ १ का शेष)

उन्होंने आर्यसमाज सूरत के अधिकारियों को बुलवाया और बड़ी गम्भीरता से कहा कि इस समाज मन्दिर से पहले यह चर्च था और मेरी इच्छा है कि यह अब भी चर्च ही रहना चाहिए। उन्हों ने गम्भीर होकर यह भी कहा है कि आर्यसमाज के अधिकारी जितना मूल्य मांगे मैं उतना रुपया देने को तैयार हूँ। इस पर आर्यसमाज सूरत के प्रधान श्री मंगलसेन चोपड़ा ने उन्हें जवाब दिया कि आर्य समाज का पवित्र मन्दिर बिकाऊ माल नहीं है। यह उत्तर सुनकर मदर टेरसा एक टीस लेकर वहां से वापस चली गई।

वस्तुतः सन् १९१६ में इस चर्च को आर्यसमाज सूरत के अधिकारियों ने ईसाइयों से (६००० ००) छः हजार रुपए में खरीदा था और उसी गिरजाघर में पवित्र मन्त्रोचरण के साथ यज्ञ करके उसे आर्यसमाज मन्दिर का रूप दिया गया था।

२ जनवरी १९१६ को महात्मा गांधी ने बड़ी श्रद्धा के साथ आर्यसमाज मन्दिर का उद्घाटन किया था। अंग्रेजी राज्य में चर्च बिकने पर आर्य मन्दिर का उद्घाटन करते हुए गांधी जी बड़ी प्रसन्न मुद्रा में थे। पूज्य पं० रामचन्द्र देहलवी भी इस उद्घाटन समारोह में सम्मिलित हुए थे। सूरत आर्य समाज मन्दिर के मुख्य सत्संग भवन में आज भी २ जनवरी सन् १९१६ का वह चित्र लगा है जिसमें महात्मा गांधी पूज्य पं० रामचन्द्र देहलवी के साथ बैठे हुए है।

आर्यसमाज को ही यह गौरव प्राप्त है कि गोराशाही अंग्रेजों की छत्रछाया में विदेशी शासन के ठीक नाक नीचे गिरजाघर को छः हजार रुपए में खरीदकर आर्यसमाज मन्दिर का रूप दिया गया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा प्रधान

इस्लाम के नाम पर सजा का विरोध

नई दिल्ली २३ जून। पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल जिया ने अपने देश में कुरान के अन्तर्गत सजा का जो विधयक लागू किया है उसके अन्तर्गत कुरान में दी गई सजा को पाकिस्तान जैसे देश में लागू करना व्यावहारिक नहीं होगा।

हाल में कराची में पाकिस्तान के न्यायविदों की एक बैठक में सर्वसम्मति से यह मत उभरकर सामने आया। पाकिस्तान का अंग्रेजी दैनिक डान में प्रकाशित खबर के अनुसार इस संगोष्ठी में अधिकतर वक्ताओं का यह मत था कि इस हुदूद अध्यादेश (यानि इस्लाम के अन्तर्गत सजाएं) को रद्द कर दिया जाना चाहिए।

इस संगोष्ठी में उस समय थोड़ा रोष उत्पन्न हो गया जब हाईकोर्ट के भूतपूर्व न्यायाधीश जहूरुल हक ने जिना अध्यादेश के तहत अविवाहित लोगों की व्यभिचार के लिए कोड़ों से पिटाई और व्यभिचारियों का पत्थर से मार मार कर मृत्यु दण्ड देने की सजा की वकालत की। जैसा कि इस्लाम में कहा गया है। बाद में महिला आन्दोलनकारियों ने उनका घेराव किया।

श्री हक ने यद्यपि सजा के तौर पर शरीर के अंग काट दिये जाने और कोड़ा से पीटने जैसी सजाओं की सिफारिश की जैसा कि सऊदी अरब में प्रचलित है लेकिन साथ ही यह भी स्वीकार किया कि हुदूद अध्यादेश विचार विमर्श के बाद पारित किया जाना चाहिये था न कि एक अध्यादेश के माध्यम से।

पाकिस्तानी महिला वकील संगठन की अध्यक्ष बेगम रशीदा पटेल ने खेद व्यक्त करते हुए कहा कि इस अध्यादेश में कई कमजोरियां हैं जिन्हें सुधारना मुश्किल है इसलिये इसे रद्द ही कर दिया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा बलात्कार जैसे मामलों में औरत की गवाही को न माना जाना एक चिंताजनक बात है क्योंकि इस तरह तो बिना किसी मुकदमे वगैरह के डर के कोई भी आदमी किसी भी जगह जाकर मनमानी कर सकता है।

बेगम पटेल ने एक अवयस्क लड़की जहान मिना का उदाहरण देते हुए कहा उसे बलात्कार के बाद दोषी ठहराया गया और जेल की सजा हुई। इस तरह यह कानून गरीबी और अवयस्कों को भी नहीं बख्शता।

पाकिस्तान मानवाधिकार संगठन के उपाध्यक्ष श्री सबीहुद्दीन अहमद ने संगोष्ठी में पढ़ी गई अपनी रिपोर्ट में कहा बहुत सी औरतें सिर्फ इस कानून की वजह से जेलों में सड़ रही है। जिना अध्यादेश सन्देह पर गिरफ्तारी बदनामी और गैर जमानती गिरफ्तारियों को तो बढ़ावा देगा ही इसमें इस्तगासा को अभियोग साबित करने की बजाय अभियोगी पक्ष को ही अपने निर्दोष होने को सिद्ध करना पड़ता।

उन्होंने कहा पुरुष प्रधान समाज में इस अध्यादेश से आदमियों के हाथ और मजबूत होंगे और औरतों को न्याय की इज्जत किये बिना सजा दी जाएगी।

प्रमुख वकील अब्दुल वहीद सिद्दीकी का कहना था कि इस्लामी कानूनों की गलत व्याख्या से महिलाओं के अधिकार को आघात पहुँचेगा। उन्होंने इस सम्बन्ध में एक घटना की चर्चा करते हुए कहा कि लरकाना (सिंध) में कार में जा रही चार औरतों को डकैतों ने लूट लिया और जब उन्होंने इसकी पुलिस में शिकायत दर्ज की तो उन पर जिना अध्यादेश के तहत आरोप लगाए गए।

एक अन्य वकील कमील शेख ने कहा १९८२ में पाकिस्तान की जेलों में जहां सिर्फ ७० महिलाएं थी १९८७ में अकेले मुल्तान (पंजाब) जेल में उनकी संख्या बढ़कर १८० थी।

कुमारी अफरोज हक ने कहा पाकिस्तान में ऐसी स्थितियां नहीं है जो जिना अध्यादेश को लागू करने को न्यायसंगत बताए। उन्होंने आधुनिक समय के अनुसार कुरान और सुन्ना की व्याख्या करने का आह्वान किया।

१९७५ से लागू किए गये हुदूद अध्यादेश की एडवोकेट नसीर मक्सूद ने कटुर बताते हुए कहा कि यह कैसा कानून है जिसमें बलात्कार की शिकार

(शेष पृष्ठ १२ पर)

ऋषि दयानन्द के ये सरकारी जीवन-चरित (२)

—प्रो० भवानीलाल भारतीय

अपने विगत लेख में हम भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मन्त्रालय के अन्तर्गत कार्यरत प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित ऋषि दयानन्द के जीवनचरित की आलोचना कर चुके हैं। नेशनल बुक ट्रस्ट ने प्रो० बी० के० सिंह से लिखवा कर स्वामी दयानन्द का एक जीवन चरित १९७० में छपाया था। ये वही बी०के० सिंह हैं जिन्होंने इलस्ट्रेटेड वीकली में एक लेख छपवाकर यह सिद्ध किया था कि स्वामी जी को विष नहीं दिया गया और उनकी मृत्यु अधिक आम खाने के कारण उत्पन्न अतिसार रोग से हुई थी। ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित उक्त जीवन चरित का द्वितीय संशोधित संस्करण १९८५ ई० में छपा है। आगे हम इस पुस्तक की समालोचना करेंगे।

यदि धनपति पाण्डेय लिखित स्वामी जी की जीवनी तथ्यों की भूलों से भरी है तो श्री सिंह के द्वारा लिखित जीवनचरित में स्वामी जी के जीवन एवं व्यक्तित्व तथा विचारों की विवेचना में अनेक त्रुटियां परिलक्षित होती हैं। हम यहां कुछ ऐसे ही प्रसंगों की पृथक् बिन्दुओं में विवेचना करेंगे।

१—लेखक के अनुसार बाल्यकाल में मूलशंकर को वैदिक संहिताओं को पढ़ने के लिये तो प्रोत्साहित किया गया किन्तु उपनिषदों तथा गीता के अध्ययन के लिए उन्हें निरुत्साहित किया गया। इसी प्रकार पूर्व मीमांसा को छोड़कर अवशिष्ट दर्शनों को पढ़ने की भी उन्हें प्रेरणा नहीं मिली। फलत (लेखक की दृष्टि में) वे संस्कृत के कालजयी ग्रन्थों के प्रति उपेक्षा ही धारण किये रहे। पृ० १२

समीक्षा—लेखक की यह धारणा पूर्णतया गलत है। स्वामी जी को उपनिषदों के अध्ययन का पूरा अवसर मिला था। सत्यार्थप्रकाश के प्रथम संस्करण में तो उन्होंने ईश्वर की विवेचना के प्रसंग में सैकड़ों उपनिषद् वचन उद्धृत किये हैं। पूर्व मीमांसा की ही भांति अवशिष्ट वैदिक दर्शनों का उनका अध्ययन भी सांगोपांग था। गीता की तो उन्होंने विस्तृत कथा आगरा में श्रोतृ समुदाय के सम्मुख प्रस्तुत की थी।

२—लेखक के अनुसार दयानन्द का साक्षात्कार हिन्दू धर्म के कुछ घृणोत्पादक पक्षों से ही हुआ था इसलिये वे इस धर्म की उन बातों के प्रति आंखें मूंदे ही रहे जो अद्वितीय हैं। लेखक की दृष्टि में हिन्दू धर्म की वे विशेषतायें हैं समझौता और सामंजस्य की भावना, सहिष्णुता और धैर्य शीलता। पृ० २१

समीक्षा—लेखक ने स्वामी दयानन्द की खण्डनात्मक प्रवृत्ति को लक्ष्य में रखकर ही उक्त बातें लिखी हैं। अधिक विस्तार में न जाकर यही लिखना पर्याप्त है कि निश्चय ही दयानन्द ने धर्म के नाम पर प्रचलित आडम्बरों, ढोंग, पाखण्ड और अन्धविश्वासों के प्रति न तो सहिष्णुता दिखाई और न उनसे कोई समझौता ही किया। दयानन्द की इस प्रवृत्ति को हम दूषण नहीं अपितु भूषण ही मानते हैं।

३—पृष्ठ ३२ पर लेखक ने सांख्य कारिका को कपिल कृत बताया है। यह तथ्य की भूल है। सांख्य कारिका के रचयिता ईश्वर कृष्ण हैं। कपिल ने सांख्य सूत्रों का प्रणयन किया था।

४—लेखक दयानन्द के मानसिक धरातल में निम्न दोषों की स्थिति मानता है। उसके अनुसार स्वामी दयानन्द में लचकीलेपन का अभाव था, वे अत्यधिक पवित्रतावादी (puritan) थे, पुराणपन्थी थे, उनमें कठोरता तथा हठ की प्रवृत्ति (Obduracy) थी। ये सारी बातें उनके विचारों से प्रतिबिम्बित होती हैं। पृ० ४०

समीक्षा—स्वामी दयानन्द पर उक्त आक्षेप प्रायः वे ही लोग लगाते हैं जो उनके व्यक्तित्व और विचारों की वास्तविकता से अपरिचित हैं। यह ठीक है कि स्वामी जी अनम्य थे। उनमें लचकीलापन नहीं था, क्योंकि वे असत्य, अन्याय और अधर्म से समझौता करने के लिये कभी तैयार नहीं होते थे। वे पवित्रतावादी भी थे क्योंकि पौराणिक युग के अपवित्र क्रियाकलापों से हिन्दुओं को दूर कर वे उन्हें वैदिक पवित्रतावाद के निकट लाना चाहते थे। वे इस अर्थ में पुराणपन्थी भी थे क्योंकि उनके विचार में वर्तमान हिन्दू धर्म को अत्यन्त प्राचीन वेदों की ओर उन्मुख किया जाना चाहिए तथा सत्य पर डटे रहने के लिए यदि उन पर हठीला रवैया अख्त्यार करने का आरोप लगाया जाता है तो इस पर भी हम कोई टिप्पणी नहीं करेंगे।

५—लेखक की धारणा है कि विरजानन्द द्वारा प्रदत्त शिक्षा का ही यह परिणाम था कि स्वामी दयानन्द मध्यकालीन सन्तों (कबीर, दादू, नानक, रविदास आदि) की विचारधारा को न तो समझ ही सके और न उनकी प्रशंसा ही कर सके। इसी प्रकार वे ईसा और मुहम्मद की शिक्षाओं का भी सही मूल्यांकन नहीं कर सके। पृ० ४०

समीक्षा—हमारा निवेदन है कि स्वामी दयानन्द ने मध्यकालीन सन्तों या ईसा तथा मुहम्मद की शिक्षाओं के बारे में जो धारणा बनाई उससे स्वामी विरजानन्द द्वारा प्रदत्त उपदेशों का कोई लेना देना नहीं है। स्वामी दयानन्द तो बड़ी सीधी सी बात कहते हैं कि वेद के धर्म से इतर मत-मतांतरों में यदि सचाई का कोई अंश है तो वह वेद से ही अनुप्रमाणित तथा प्रेरित है। अर्थात् सन्तों के मत तथा ईसाइयत और इस्लाम में जो कुछ ग्रहणीय है वह वेदानुकूल होने से उन्हें भी स्वीकार्य है। इससे भिन्न इन मतों और सम्प्रदायों की जो कुछ बाह्याडम्बर पूर्ण बातें या आचार विचार हैं, उन्हें लेने या उनकी प्रशंसा करने में वे कोई औचित्य नहीं देखते। मोटे तौर पर स्वामी दयानन्द का कहना है कि वैदिक धर्म की सार्वभौम और सार्वजनीन शिक्षायें ही सन्तों तथा अन्य मतों में भी क्वचित् कथंचित् वर्णित हैं, किन्तु इन मतों में प्रचलित बाह्याचार को स्वीकार करना उनके लिये कठिन है। (क्रमशः)

आर्यो ! "आर्यावर्त" बनाने का समय आ गया

(गतांक से आगे)

आर्य राज्य आर्यावर्त का बीजारोपन

सर्वप्रथम हमें हिन्दुमात्र, विशेष रूप से भावी पीढी के मन, मस्तिष्क मे इस तथ्य की जानकारी हर प्रभाव ढग से बैठानी होगी और साथ ही उनके हृदय में दृढ सकल्प इसके प्राप्त्यार्थ उत्पन्न करना होगा। इस हेतु मैंने एक 'प्रार्थना' का सयोजन किया है। इसे प्रतिदिन प्रात स्कूलो मे बुलवाना चाहिए। इसे सत्सगो में भी सब मिलकर श्रद्धापूर्वक बोला करें। इस प्रार्थना का स्पष्ट लक्ष्य आने वाली एव वर्तमान आर्य जनता मे, देश को सच्चे अर्थों में "आर्यवर्त"—आर्य राज्य बनाने की भावना का बीजारोपन करना है। यदि इस कार्य को पूरी ईमानदारी से किया जावेगा तो बड़ा दूर रस फल मिलना निश्चित है। अपने धर्म सस्कृति के प्रति प्रेम श्रद्धा, बढ़ेगी।

ध्यान रहे इस प्रार्थना के प्रारूप में इसे और प्रभावी बनाने के लिए उचित परिवर्तन किया जा सकता है। विद्वान् एव कवि महानुभाव इस पर मनन करेंगे, ऐसी मुझे पूर्ण आशा-विश्वास है।

आर्यों चेतो/आलस्य-प्रमाद को त्यागो ऋषि के लक्ष्य आर्य राज्य बनाने का दृढ सकल्प ले, कार्य क्षेत्र में छलांग लगा दो।

प्रार्थना का "सम्पूर्ण" एवं "सारांश" प्रारूप

यह प्रार्थना, प्रत्येक आर्य समाज के सत्सग में, सब उपस्थित स्त्री पुरुष समूचे सम्मिलित रूप में एक साथ बोल कर करे। हिन्दू आर्य स्कूलो में भी नित्य अनिवार्य रूप से प्रार्थना समय बुलवाए।

प्रार्थना—हे परम पिता परमात्मन् ! हम आर्य आपकी अमर सन्तान हैं। सृष्टि के आदि मे, दो अरब वर्ष पूर्व, आपने हमें पवित्र वेद ज्ञान चार महर्षियो,द्वारा प्रदान किया एव ब्रह्मादि मन्त्र द्रष्टा ब्रह्म ऋषियो की परम्परा,पवित्र सत्य-सनातन आर्य-धर्म के प्रचारार्थ चलाई।

प्रभु जी ! आपने ही इस सत्य सनातन वेद-धर्म के प्रचारार्थ महाप्रतापी चक्रवर्ती महाराजो की आदि मनु महाराज, श्री भागीरथ, श्री रघु, श्रीरामचन्द्र श्री कृष्णचन्द्र द्वारा चलाई। इन्होने "कृण्वन्तोविश्वार्यम्" आपकी आज्ञा के पालनार्थ भूमण्डल पर "चक्रवर्ती आर्य राज्य" स्थापित किया। जो निरन्तर, सतयुग, त्रेता द्वापर, युग पर्यन्त निर्बाध चलता आया।

परन्तु शोक इस कलियुग के प्रारम्भ में ही अपने चक्रवर्ती राज्य के मद में चूर हम आलस्यप्रमाद में घिर अपने आर्यत्व को भूल बैठे। फलस्वरूप हम आर्यों के चक्रवर्ती राज्य की इतिश्री हो गई। हमारा वेद ज्ञान लुप्त हो गया। हम अवैदिक मत-मतान्तरो मे बुरी तरह उलझ गए। मलेच्छो अनार्यो का राज्य हो गया। आर्य सस्कृति, ज्ञान, का स्रोत अमूल्य साहित्य, पूर्णतया नष्ट भ्रष्ट हो गया। बलात् धर्म परिवर्तन होने लगा। यहा तक कि हमें यह भी ज्ञान न रहा कि हम "आर्य" आपकी अमर सन्तान हैं।

ऐसे घोर दुस्काल में, प्रभु जी, आपने हम आर्यो की यह दुर्दशा देख, फिर से "वेद-धर्म" जगाने हेतु महर्षि दयानन्द को भेजा। इस महामानव ने फिर से लाखो वर्षों से लुप्त 'वेदो' को बडे परिश्रम से फिर से झाड पूछ कर हमारे समक्ष रखा। आपकी आज्ञा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की याद दिलाई। शुद्ध वैदोक्त आर्य-धर्म के रक्षार्थ एव प्रचार हेतु 'आर्यसमाज' का निर्माण किया।

हे सर्वशक्तिमान परमपिता ! हम आर्य आज यह प्रतिज्ञा लेते हैं। हम सच्चे अर्थों में आर्य बनेंगे। वेद-वेदागो,ऋषि ग्रन्थों में वर्णित सत्य सनातन आर्य धर्म पर प्राणपन से चलेंगे। अन्यो को प्रेरित करेंगे। फिर से अपने देश को सच्चे अर्थ में "आर्यावर्त" बना "आर्य राज्य" स्थापित करेंगे। सब आर्य सन्तान हिन्दू मात्र को जागृत करेंगे। वेद ज्ञान आर्य सस्कृति को ससार में फैला देंगे।

प्रभु जी ! हमें शक्ति दो, इस लक्ष्य की पूर्ति अर्थ प्राणपन से जुट जावें और मार्ग में आई हर चुनौती का अपना सर्वस्व बलिदान देकर दृढता से मुकाबला कर सके।

संक्षिप्त सारांश प्रार्थना

प्रार्थना का सक्षिप्त सारांश रूप भी दे रहा हूं। प्रार्थना चाहे जैसी भी हो—जिन शब्दों मे हो, निम्न साराश का समावेश अवश्य होना चाहिए अथवा इसे ही बोले बुलवा ले—

हे परमपिता ! आपकी महान् कृपा से हमें आर्य कुल मे जन्म मिला। इस नाते आपने हमें सत्य सनातन वेद ज्ञान का अधिकारी बनाया। हम प्रतिज्ञा लेते हैं—

१—हम सच्चे अर्थों मे आर्य बनेंगे। सब आर्य सन्तान हिन्दू मात्र को जागृत कर सत्य सनातन आर्य धर्म पर चलने को प्रेरित करेंगे।

२—आपकी आज्ञा (कृण्वन्तो विश्वमार्यम्) का तन मन धन से पालन करेंगे। अपने राष्ट्र को फिर से आर्यावर्त बना, स्वच्छ आर्य राज्य स्थापित करेंगे।

३—समस्त ससार में वेद ज्ञान, आर्य सस्कृति फैला भूमडल पर पूर्व काल की भांति चक्रवर्ती आर्य राज्य स्थापित करने की ओर अग्रसर होंगे। प्रभो, हमें इन लक्ष्यो की पूर्ति के लिए शक्ति दो। हम आपको विश्वास दिलाते हैं, प्रतिज्ञा लेते हैं, हम हर चुनौती का अपना सर्वस्व बलिदान कर दृढता से मुकाबला करेंगे।

—भोलानाथ दिलावरी

अंग्रेजी क्यों हटायें ?

—डा० वेदप्रताप वैदिक

भारत से अंग्रेजी को हटाने का औचित्य सिद्ध करने के लिए यह आवश्यक है कि उन तर्कों की चीर-फाड़ की जाये जो अंग्रेजी को बनाये रखने के पक्ष मे दिये जाते हैं।

विश्व भाषा होने का भ्रम

यह कहा जाता है कि यदि हिन्दुस्तान से अंग्रेजी चली गई तो सारी दुनिया से भारत का सम्पर्क टूट जाएगा। अंग्रेजी ऐसी खिड़की है जिससे झाककर भारत दुनिया की तरफ देखता है। अंग्रेजी विश्व भाषा है। अंग्रेजी को हटाने वाले लोग भारत को एक सकुचित देश बना देंगे, एक बन्द देश बना देंगे।

इस प्रकार का तर्क वही लोग देते हैं, जिन्होंने इंग्लैण्ड और अमरीका के अलावा कोई देश देखा तक नही है या अपने जीवन मे अंग्रेजी के अलावा कोई भी अन्य विदेशी भाषा पढी तक नही है। बेचारे कुए के मेढक की दुनिया आखिर कितनी बडी होगी ? कुए से बाहर निकले तो दुनिया का कुछ पता भी चले। हिन्दुस्तान का एक औसत पढा लिखा आदमी अंग्रेजी तालीम की देन है। पिछले दो सौ साल से वह अंग्रेजी के कुए मे पडा-पडा टर्रा रहा है। उसे पता नही कि इस कुए के बाहर फ्रासीसी, जर्मन, रूसी, चीनी, हिस्पानी, जापानी और फारसी आदि भाषाओ की एक समृद्ध और रग बिरगी दुनिया भी बसी हुई है।

अंग्रेजी के प्रति एकागी प्रेम का परिणाम यह हुआ कि भारत अपने पुराने मालिक इंगलैंड से और उसके नए उत्तराधिकारी अमरीका से (एक पिछलग्गू की हैसियत मे) काफी अच्छी तरह से जुड गया लेकिन बाकी दुनिया से उसके सीधे रिश्ते कायम नही हो पाये। अंग्रेजो के कुछ पुराने गुलाम देशो जैसे पाकिस्तान, बर्मा, लका, घाना आदि तथा जहा अंग्रेज जाकर बस गये, ऐसे देशो जैसे अमरीका, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि को छोडकर दुनिया के किसी भी देश मे अंग्रेजी का इस्तेमाल नही होता। और पुराने गुलाम देशो मे भी अंग्रेजी का इस्तेमाल सिर्फ नौकरशाह और अंग्रेजी तालीमयाफ्ता लोग करते हैं। उनकी सख्या प्राय २ प्रतिशत से भी कम होती है। ऐसी स्थिति मे अंग्रेजी को विश्व भाषा कहना तथ्यो को झुठलाना है।

अंग्रेजी को विश्व भाषा मान लेने का दुष्परिणाम यह हुआ कि दुनिया के हर देश के साथ हम अंग्रेजी मे व्यवहार करते हैं, चाहे उसकी भाषा जर्मन हो, रूसी हो, चीनी हो या फारसी ! हर रोग का हमारे पास एक ही इलाज है, जमालगोटा ! इसी का नतीजा है कि श्रीमती विजयलक्ष्मी पडित जब राजदूत का पद ग्रहण करने रूस गई तो उनके अंग्रेजी मे लिखे परिचय पत्र को स्तालिन ने उठाकर फेंक दिया और पूछा कि क्या आपकी अपनी कोई भाषा नही ? इसी का परिणाम है कि जिन देशो मे हमारे राजदूतो को नियुक्त किया जाता है, वे उन देशों की भाषा नही सीखते और अंग्रेजी मे काम चलाने की असफल कोशिश करते रहते है। उस देश के राजनीतिज्ञ क्या सोचते हैं, उस देश की जनता का विचार-प्रवाह किधर जा रहा है, उस देश के अखबार क्या लिख रहे हैं, यह हमारे राजदूतो को तभी पता चल सकता है और जल्दी और ठीक ठीक पता चल सकता है जबकि वे स्थानीय भाषाए जानते हो।

होता यह है कि या तो वे दुभाषियो के जरिये सूचनाए और गुप्त जानकारिया इकट्ठी करते हैं या तब तक हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं जब तक कि लन्दन और न्यूयार्क के अंग्रेजी अखबार उन्हे पढने को न मिले। घटनाए हगेरी और चेकोस्लावाकिया मे घटे, उनकी आख के सामने घटें और बुदापेस्त और प्राहा मे बैठे हमारे राजदूत उन घटनाओ पर तब तक अपनी रपट नई दिल्ली नही भेजे जब तक कि उन्हे 'लन्दनिया' विवरण प्राप्त नही हो तो इससे बढकर विडम्बना क्या होगी ? ऐसा इसलिए होता है कि वे भाषायी तौर पर अपाहिज है। वे अंग्रेजी की बैसाखी के सहारे चलते हैं। नकली बैसाखिया असली पैरो से भी अधिक प्यारी हो गई हैं। जो कौम बैसाखियो पर चलती है, वह हजार साल की यात्रा के बावजूद भी स्वय को उसी स्थान पर खडा हुआ पाती है, जहा से उसने पहला कदम उठाया था।

अंग्रेजी को विश्व भाषा मानने के भ्रम के कारण हमारे देश के बौद्धिको को दुनिया में क्या चल रहा है, इसका पता बहुत देर से चलता है। और कभी-कभी गलत ढग से पता चलता है। उसका कारण हमारा अंग्रेजी पर निर्भर रहना है। लातीनी अमरीका मे यदि कोई क्राति होती है तो उसे हम बोलिविया या क्यूबा से निकलने वाले हिस्पानी अखबारो के द्वारा नही जानते बल्कि अंग्रेजी भाषा के विदेशी समाचार-पत्रो और पत्रिकाओ के द्वारा जानते हैं। जब तक अंग्रेजी अखबार उन घटनाओ की रपट नही छापे, हम अज्ञान मे रहने के लिए विवश हैं, क्योकि अंग्रेजी के चक्कर मे हिन्दुस्तान का आदमी हिस्पानी या गोरानी भाषा तो सीखता नही है। इसके अलावा विदेश का अंग्रेजी अखबार जब लातीनी अमरीका या किसी अन्य देश की खबर छापता है तो उसे अपने देश के हित के मुताबिक तोडता-मरोडता है।

चीन के बारे मे हमारे देश मे बहुत सी गलतफहमिया क्यो फैली ? इसी कारण कि हम चीनी अखबार और पत्रिकाएं तो पढते नही, हा, चीन के बारे मे लन्दन और न्यूयार्क के अखबार जो कुछ छापते हैं, उसे हम ज्यो का त्यो निगल जाते हैं। अंग्रेजी के एकाधिकार के कारण सारी दुनिया को हमे अमरीका या ब्रिटिश चश्मा चढाकर देखना पडता है। हमारी अपनी स्वतन्त्र और निष्पक्ष राय किसी भी मामले पर बन नही पाती। जब दुनिया के देशो के बारे मे मिलने वाली हमारी मूलभूत सूचनाए ही रगी पुती होती हैं तो हम एक साफ-सुथरी विदेशी नीति कैसे बना सकते है ?

अंग्रेजी को विश्व भाषा मानने का एक नतीजा यह भी होता है कि हम यह समझने लगते हैं कि दुनिया का सारा ज्ञान अंग्रेजी मे है जबकि कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनमे दुनिया की अन्य भाषाओ मे अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं, अनुसधान हुए हैं। हम उन सबसे या तो वचित रह जाते है या उन्हे अंग्रेजी अनुवाद के जरिये ही पढते हैं। आज विज्ञान की जितनी पुस्तकें रूसी भाषा मे हैं दुनिया की किसी भाषा मे नही है। जर्मन भाषा मे जितने ऊचे स्तर के दार्शनिक हुए हैं—कान्ट, हीगल, मार्क्स जैसे—अंग्रेजी भाषा मे नही हुए। दुनिया के बडे बडे अखबार जापानी और रूसी भाषा मे निकलते हैं—असाई शिम्बून और प्रावदा, न कि अंग्रेजी मे। कला सगीत, चित्रकारी, पुरातत्व आदि विषयो पर आज भी फ्रासीसी भाषा मे जितना गहन और प्रचुर साहित्य उपलब्ध है, उसकी तुलना में अंग्रेजी साहित्य पासग के बराबर भी नही है।

दुनिया के इतिहास को सबसे अधिक प्रभावित करने वाली पुस्तकें—वेद, बाइबिल, कुरान, धम्मपद, जिन्दावेस्ता, दास कापीटल आदि—भी अंग्रेजी मे नही लिखी गई। लेकिन जिन लोगो के दिमाग पर अंग्रेजी का भूत सवार है, उनके लिए ये सारे तथ्य निरर्थक हैं। उनको खेत और खलिहान मे कोई फर्क नही पडता। उनके लिए चर्चिल अगर अंग्रेज था तो नेपोलियन भी अंग्रेज ही होगा। ग्लेडस्टोन अगर अंग्रेजी बोलता था तो लेनिन भी अंग्रेजी ही बोलता होगा। जान स्टुअर्ट मिल अगर अंग्रेजी मे लिखता था तो प्लेटो और अरस्तु भी अंग्रेजी मे ही लिखते होगे। दुनिया का सारा ज्ञान, साहस, शौर्य, प्रतिभा सब कुछ अंग्रेजी मे है, ऐसा सोचने वाला दिमाग एक छोटा और सकुचित दिमाग है। वह विश्व स्तर पर सोचने वाला दिमाग बन ही नही सकता।

जो विश्व के साथ खुला सम्पर्क रखना चाहता है, उस दिमाग की सिर्फ एक खिडकी ही खुली नही होगी, सिर्फ अंग्रेजी वाली खिडकी। अंग्रेजी वाली खिडकी खुली रहे, इसमे हमे कोई आपत्ति नही है। लेकिन क्या एक अच्छे मकान मे सिर्फ एक ही खिडकी होती है ? मकान वह अच्छा होता है जिसमे कई खिडकिया हो। चारो तरफ से खुली हवाए आयें। अगर एक खिडकी से बदबू आ रही हो तो दूसरी खिडकी भी खोली जा सके। लेकिन हिन्दुस्तान की भाषा के भवन मे हमारे समझदार शासको ने सिर्फ एक ही खिडकी बनाई है। उस खिडकी से अच्छा दृश्य दिखता हो या बुरा, सुगन्ध आती हो या दुर्गन्ध, उसे हमे खोले रखनी पड़ेगी।

(क्रमशः)

तेरह सौ वर्ष पूर्व वराहमिहिर द्वारा रचित

बृहत्संहिता की सहायता से

सौराष्ट्र के सूखाग्रस्त क्षेत्र को जलस्रोत प्राप्त

ईसा की छठी सदी की वराहमिहिर रचित बृहत्संहिता हस्तलिखित ग्रन्थ के आधार पर तिरुपति वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय के भूगर्भवेत्ता प्रो० ई० एo बी० प्रसाद ने कुछ पेडो, बल्मीको पहाडी टीलो और वनस्पतियो वनस्पतियो की जडो की तह मे जाकर जलस्रोत ढूढ निकाले हैं।

चार महीने पहले गुजरात राज्य जलापूर्ति बोर्ड ने उनसे भयकर सूखे से प्रभावित जामनगर जिले मे जलस्रोत ढूढने का अनुरोध किया। उन्होने उस क्षेत्र के वनस्पतियो का का सर्वेक्षण कर कम्बालिया गाव मे एक खजूर के वृक्ष को बरगद के पेड मे लिपटा पाया। उन्होने उस बरगद के पेड के उत्तर मे १० फुट की दूरी पर कुए की खुदाई की जिससे २००० गैलन प्रति घण्टे जल निकलने गया।

इसी तरह हरिपार गाव मे उन्होने एक बाबी के टीले के पास की वनस्पतियो का निरीक्षण किया और उससे दस फुट उत्तर मे कुए की खुदाई की जिससे ३००० गैलन प्रति घण्टे जल निकल रहा है।

दस दिन मे डा० प्रसाद ने २१ कुए ३० गावो मे खुदवाकर जल निकाला। इस क्षेत्र को राज्य के वैज्ञानिक तथा इजीनियरो ने बिल्कुल जल स्रोत रहित क्षेत्र घोषित कर रखा था।

इस कार्य के लिए आधुनिक वैज्ञानिको को अत्यन्त खर्चीले देशी विदेशी यन्त्रो के प्रशिक्षित तकनीशियन तथा एतदर्थ आवश्यक उपग्रह से खीचे गये चित्रो की आवश्यकता तथा पर्याप्त समय लगता। प्रशासनिक ढाचे तथा अनेक विभागो, ठेकेदारो को काम और धन मिलता।

डा० प्रसाद इस कार्य के लिए वराहमिहिर लिखित बृहत्संहिता मे दी गई सूची की वनस्पतियो भूतल के सतह पर उभरे बाम्बियो तथा वृक्षो की जडो तथा तनो के अध्ययन पर निर्भर है। वराहमिहिर का मत है कि जहां कहीं भी बाम्बी टीले के रूप मे उभरती हैं उसके नीचे जलस्रोत होता ही है। उन्होने ऐसे एक दर्जन पशुओ, कोई विभिन्न पेड पौधों तथा (Phreatotype) जैसे महत्वपूर्ण वनस्पतियो की जडो का उल्लेख किया है जो जलस्रोत की दिशा मे फैलते और बढते जाते हैं।

जैव सूचको (Bio indicators) के अध्ययन के साथ वे पेड-पौधों की टहनियो, जोडो की गाठो और उनके मोडों की परख करते हुए असाधारण रूप से मिले जुले वृक्ष तथा परस्पर जुडे हुए ताड वृक्ष की एक से अधिक चोटिया, काटेदार वृक्षो का काटा रहित होना आदि वराहमिहिर के अनुसार ऐसे इलाके में जलस्रोत का सूचक है।

डा० प्रसाद के अनुसार बृहत्संहिता मे जलस्रोतो को पाने के लिए बहुत ही स्पष्ट उल्लेख है कि किस क्षेत्र के किस वृक्ष, बाम्बी टीले की किस दिशा मे कितनी गहरी खुदाई से जल मिलेगा। जबकि इस पर बहुत मामूली खर्च आता है।

(साभार—दैनिक इण्डियन एक्सप्रेस)

बेनजीर को भारतीय हस्तक्षेप की आशंका

न्यूयार्क २१ जून (यून्यू) पाकिस्तान की विपक्षी नेता बेनजीर भुट्टो ने चेतावनी दी है कि यदि जनरल जियाउलहक ने अन्तरराष्ट्रीय देखरेख मे पाकिस्तान मे चुनाव नही करवाए तो इससे उत्पन्न स्थिति से निबटने के लिए ईरान या भारत से हस्तक्षेप हो सकता है।

न्यूयार्क टाइम्स मे प्रकाशित एक रपट मे श्रीमती भुट्टो के हवाले से कहा गया है कि बिना चुनाव कराए किसी प्रशासन का बना रहना जनता द्वारा गैर कानूनी समझा जाएगा तथा पडोसी देश इसे खतरनाक समझेंगे। श्रीमती भुट्टो ने अमेरिका से आग्रह किया कि पाकिस्तान में जनतन्त्र स्थापना मे मदद करें।

(नवभारत टाईम्स से साभार)
दिनाक २२/६/८४

"केरल के हिन्दी प्रचारकों"

का सम्मान

२५ मई १९८८ को केरल हिन्दी प्रचार सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसर मे आयोजित समारोह मे केरल के दस ऐसे हिन्दी प्रचारको को सम्मानित किया गया, जिन्होंने स्वतन्त्रता सग्राम के दौरान 'हिन्दी प्रचारक' का जीवन-व्रत अपनाया था और जो वर्तमान मे आर्थिक सकट से ग्रस्त हैं। ७० वर्ष से अधिक आयु वाले ये प्रचारक है—डा० पी० के० केशवन नायर, के० एम० गौरी अम्मा, वी० के० गोपालन नायर, एम० कृष्णन नायर, एन० पी० चन्द्रशेखरन नायर, एम० सुकुमार, के० पी० पद्मनाभन नायर, एम तकम्मा मालिक, के० एन० गोविन्दन नायर तथा के० पी० अगस्टिन।

डा० पी० के० केशवन नायर दक्षिण भारत मे हिन्दी प्रचार के लिए महात्मा गाधी द्वारा भेजे गये प० हृषिकेश शर्मा के शिष्य हैं। इनमे कई ऐसे हैं जिन्होने खादी प्रचार, हरिजनोद्धार, विदेशी वस्त्र बहिष्कार, मद्यवर्जन जैसे अन्य रचनात्मक कायक्रमो मे भी भाग लिया था, यद्यपि गाधी जी का कहना था कि हिन्दी प्रचारक जेल नहीं जाये, तो भी इनमे कुछ एक तो जेल भी गये।

इस अवसर पर स्वागत भाषण मे सभा के मन्त्री एम० के० वेलायुधन नायर ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि ऐसे अनेक हिन्दी प्रचारक हैं जिन्होने हिन्दी प्रचार के लिए बहुत कष्ट सहा है और अब बडा आर्थिक सकट भोग रहे हैं।

समारोह का उद्घाटन करते हुए केरल के शिक्षा मन्त्री के चन्द्रशेखरन ने बताया कि केरल सरकार की नीति मलयालम को प्रथम, हिन्दी को द्वितीय और अग्रेजी को तृतीय स्थान देन की है।

सम्मान-समर्पण करते हुए केरल के विधान-सभाध्यक्ष वर्कला राधाकृष्णन ने कहा कि हिन्दी प्रचार स्वतन्त्रता सग्राम का एक सशक्त अस्त्र था जिसका आविष्कार महात्मा गाधी ने किया था।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए विख्यात गाधीवादी विचारक एव गाधीग्राम विश्वविद्यालय, मदुरै के भूतपूर्व कुलपति डा० जी० रामचन्द्रन ने ने अनुरोध किया कि सकटग्रस्त हिन्दी प्रचारको की सहायता करने मे सरकार केरल हिन्दी प्रचार सभा की भरसक सहायता करे।

निर्वाचन

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर का वार्षिक चुनाव २६ मई ८८ को सम्पन्न हुआ। सर्वसम्मति से डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री जी सभा-प्रधान चुने गये। शेष कार्यकारिणी चुनने का अधिकार भी सर्वसम्मति से शास्त्री जी को दिया गया। उन्होंने श्री चन्द्रप्रकाश जी को मन्त्री तथा श्री देवराज सेठी जी को कोषाध्यक्ष चुना।

"की मेरे क़त्ल के बाद उसने जफ़ा से तौबा" हाय इस ज़ूद पशेमां का पशेमां होना !

पिछले कुछ दिनों से प्रमुख खालिस्तानी आतंकवादियों मे किसी कदर पश्चाताप की भावना जागृत हो रही है। इनमे से कइयों ने माना है कि वे जो कुछ करते रहे हैं उस पर लज्जित हैं और यह भी मान रहे हैं कि खालिस्तान एक स्वप्निल विचार है। इसके निर्माण होने का कोई प्रश्न ही नहीं, लेकिन चू कि किसी नासमझी के कारण इन्होने अपने आपको इस आग मे झोक दिया, इसलिए अब इससे निकलना कठिन हो रहा है। ऐसा सोचने वालो मे से नवीनतम है नरवीरसिंह। यह पैंटा का साथी था और किसी समय वह भी खालिस्तान का दम भरता था किन्तु पिछले दिनो इसे परिस्थितियो ने विवश कर दिया और इसे भी कई दूसरो के साथ दरबार साहिब मे अपने आपको पुलिस के हवाले करना पड़ा। इस प्रकार इसने अपनी जान बचाई, लेकिन यह कहना समय से पहले की बात है कि यह क़ानून की पकड़ से भी बच जायेगा।

कोई समय था जब नरवीरसिंह प्रत्येक उस व्यक्ति को अपना शत्रु मानता था जो खालिस्तान की तनिक सी भी आलोचना करता था। लेकिन आज वह स्वयं कहता है कि वह खालिस्तान के [illegible] है। बटाला केन्द्रीय जेल मे एक समाचार पत्र के रिपोर्टर से बातें करते हुए उसने कहा "मैंने बड़ी गलती की जो यह सब कुछ करता रहा।" आज से कुछ दिन पहले वह प्रत्येक को यह ही कहता था कि जिस किसी ने खालिस्तान का विरोध किया इसके सारे खानदान का सत्यानाश कर के रख दिया जायेगा। लेकिन आज वह जेल मे भीगी बिल्ली की तरह बैठा हुआ अपने पुराने दिनो की याद करके लज्जित हो रहा है। इसने यहा तक कह दिया कि खालिस्तान मागने वाले नवयुवको मे से ९० प्रतिशत चरित्र हीन है और दरिन्दे हैं। वे साधारण अपराध करने वालो से बढ़ कर नहीं है। अगर वे एक सौ वर्षों तक भी संघर्ष करते रहे तो भी वे खालिस्तान प्राप्त नहीं कर सकते। जब उससे प्रश्न किया गया कि उसने विद्रोह का झण्डा क्यो ऊंचा किया तो उसने उत्तर दिया कि इसका विचार न था कि सरकार इसके विरुद्ध कोई कार्यवाही करेगी। इसने यह भी कहा कि किसी समय वह खालिस्तान का सरगर्म समर्थक था, लेकिन आज वह यह अनुभव करता है कि यह सब निरर्थक है। कोई समय था किन्तु आज वह यह कहता है कि वह कुछ हत्यारो के हाथ मे एक निर्जीव मोहरा बन कर रह गया था। एक समय वह दमदमी टकसाल का प्रधान भी था। उसने बताया कि दरबार साहिब के अन्दर आतंक और बेबसी का आलम था और प्रयास करने के बावजूद इससे छुटकारा न पा सका। स्थिति तो यह थी कि दरबार साहिब में कोई व्यक्ति किसी पुलिस के सिपाही के पक्ष मे एक शब्द भी मुंह से निकाल देता तो उसकी खैर न थी। इस परिस्थितियो मे वह कुछ न कर सकता था और इसने कहा कि वह ऐसे लोगो मे फंसा पड़ा हुआ था जिन्होने दर्जनों निर्दोषो की हत्या की हुई थी। यह इनके व्यवहार के बारे मे कुछ बात करता भी इसे कह दिया जाता कि वह [illegible] काम [illegible]।

नरवीरसिंह १७ मई को घुटने टालने वाले आतंकवादियों के अन्तिम दस्ते मे था। इसे यह ही अपने साथियो को हरमन्दर साहिब के अन्दर ले गया था ताकि यहा से सिक्योरिटी फोर्स से लोहा ले। यह इस दिन से दो दिन बाद की घटना है जब सुरजीतसिंह पैन्टा ने अपने आपको पुलिस के सुपुर्द किया था।

नरवीर ने बताया कि वह कई हत्याकाण्डो की घटनाओ पर सहमति प्रकट करने के लिये उत्तरदायी है। प्रतिदिन जो हत्याएं [illegible] इसका [illegible] था। दरबार साहिब के अन्दर जो लोगो पर अत्याचार हो रहे थे इनका भी इसे पता था। इसका कहना है कि इस प्रकार कोई ८० लोगो की हत्या की गई और इसने सैंकड़ो पत्र रुपयो की मांग भेजे। ऐसे पत्रो के द्वारा इसने कोई ३५ लाख रुपया इकट्ठा किया था। इसमे से इसने २ लाख रुपया गुरदासपुर जिले के दौलतपुर गाव मे अपने मकान मे संगमरमर लगवाने पर खर्च किया।

जब इससे पूछा गया कि वह यह सब कुछ कैसे करता रहा तो उसने उत्तर दिया कि वह जागीरसिंह का नायब था। यह कितना ठीक है या गलत है इसकी पुष्टि नहीं हो सकती, क्योंकि जागीरसिंह पुलिस की मुठभेड़ मे मारा जा चुका है।

इसे परिक्रमा मे छिपने के प्रयास मे पुलिस के एक जवान की गोली लगी थी। पुलिस का कहना है कि नरवीरसिंह को इस बात पर बड़ा ही दुःख है कि वह हरमन्दर मे घुस गया। जब पुलिस ने इसे गिरफ्तार किया तो वह इसके बाद कई घण्टे तक रोता रहा—और अपने आपको हरमन्दर साहिब के अपमान के लिये दोषी बताता रहा।

वैसे तो नरवीरसिंह पंथिक कमेटी का प्रवक्ता था और इस हैसियत से इसने दरबार साहिब के गिर्द के कमरा नं० १४ से कई वक्तव्य और धमकी भरे पत्र लिखे और न जाने कितनो को हत्या की धमकियां दी। जिनमे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गान्धी भी सम्मिलित हैं। सच्चाई यह है कि वह पंथिक कमेटी के पांच सदस्यो मे से केवल दो को ही मिला था। वह भी एक साधारण सी भेंट थी। यह तब की बात है जब भिंडरावाला टाइगर्स फोर्स के मुखिया गुरबचनसिंह मनोचहल और वासनसिंह से मिला था।

वास्तव मे इसे पंथिक कमेटी का सम्पद प्रवक्ता कहना भी ठीक न हो क्योंकि वह अपनी मनमानी अधिक करता था।

चूनाचे जब इसने जागीरसिंह के साथ मिल कर खालिस्तान का मानचित्र प्रकाशित किया था जिसमे इन्होने नर्मदा नदी के उत्तर का सारा क्षेत्र खालिस्तान मे सम्मिलित कर लिया था तो मनोचहल ने इसे खूब लताड़ा था। मनोचहल ने इसे भाड़ कर एक भारी पत्र भी भेजा था जिसमे इसकी जल्दबाजी की निन्दा की गई थी। इसने बताया कि यह मानचित्र इसने दरबार साहिब के समीप एक दुकान से खरीदा था।

इस पर इसने पैंसिल से चिह्न लगाये और इसकी कई कापियां करके समाचार पत्रो को भेज दी और दरबार साहिब की दीवारो पर चिपका दी। इसमे उत्तरी भारत के सब नगरो के नाम बदल दिये गये थे। चण्डीगढ़ को सत्वन्त नगर का नाम दिया गया था और दिल्ली के हवाई अड्डे को "बेअन्त हवाई अड्डा" कहा गया था। नरवीर ने अपनी चालाकी और होशियारी से दरबार साहिब के अन्दर का कन्ट्रोल अपने हाथ मे ले लिया था और अपना प्रभुत्व जमाने के लिये समाचार पत्रो के नाम खूब वक्तव्य जारी करना प्रारम्भ कर दिये थे। केवल यह ही नहीं।

पुलिस का कहना है कि दरबार साहिब मे स्थित सारे बड़े आतंकवादी दलो के प्रेसनोटो मे इसने अपनी खूब धनराशि रखी हुई थी और यह ही कारण है कि यह आतंकवादियो के ऊपर के लोगो से मिलने जाने लगा।

(वीर अर्जुन १६ ६ ८८ के साभार)

आर्यसमाज की गतिविधियां

भिवानी में आर्य प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य वीर दल भिवानी के तत्वावधान मे गाव नीमकी धानी मे दिनाक १६ ५ ८८ से २२ ५ ८८ तक आर्य प्रशिक्षण शिविर चलाया गया। इस शिविर मे ८५ प्रशिक्षणार्थियो ने भाग लिया। शिविर का सचालन डा० राजपाल ने किया। सर्व श्री रामानन्द मदनलाल व रामफल शिक्षको ने विभिन्न विषयो जैसे व्यायाम, आसन, दण्ड बैठक, लाठी कराटे मे प्रशिक्षणार्थियो को प्रशिक्षण दिया। श्री के के आलान

मुख्य अतिथियो ने अपने सन्देश में इच्छा व्यक्त की कि आर्य वीर दल द्वारा ऐसी ही अन्य शिविरों का आयोजन भी किया जावे। जिससे अधिक से अधिक नवयुवक लाभान्वित हो सके।

—रामलाल आर्य मण्डलपति
आर्य वीर दल, भिवानी

गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार में प्रवेश सूचना

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के अनुसार आश्रम प्रणाली के आधार पर सचालित गुरुकुल कागडी विद्यालय मे ६ ११ वर्ष आयु के छात्रो के प्रवेश के लिये आवेदन पत्र आमन्त्रित हैं। विद्यालय मे सस्कृत व्याकरण तथा धर्मशिक्षा आदि प्राच्य विषयो के साथ ही अग्रेजी, विज्ञान आदि आधुनिक विषयो के स्तरीय अध्यापन का प्रबन्ध है। भोजन चिकित्सा, आवास, क्रिया आदि पर होने वाला व्यय ही छात्रो से लिया जाता है। शिक्षा का प्रबन्ध सर्वथा नि शुल्क है।

पाच रुपया मनीआर्डर भेजकर नियमावली एव प्रवेश पत्र प्राप्त करें। प्रवेश नये शिक्षासत्र। जुलाई १९८८ से आरम्भ है। तथा विद्यालय ८ जुलाई १९८८ से नियमित रूप से खुलेगा।

—आचार्य एव मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कागडी हरिद्वार

नव विवाहिता की आत्म हत्या ससुराल वालों को मंहगी पड़ी कानपुर में देवीदास आर्य का फैसला

कानपुर। यहा गोविन्द नगर ब्लाक नं० १ (नौ) मे एक किरान व गल्ला व्यापारी किसनलाल को २१ वर्षीय नव विवाहित पत्नी श्रीमती सुनीता ने छत के पखे मे अपने दुपट्टे से फासी लगा कर आत्म हत्या कर ली। यह आत्म हत्या आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य के हस्तक्षेप के कारण ससुराल वालो को महगी पडी।

किसनलाल का विवाह तीन माह पहले आगरा निवासी श्री गोविन्दराम की पुत्री सुनीता से हुआ था। ऐसा ज्ञात हुआ है कि सास की तानाबाजी से तग आकर बहू ने आत्म हत्या जैसा भयानक कदम उठा लिया। मायके वालो के पहुँचने पर सिटी मजिस्टेट के समक्ष पचनामा व पोस्टमार्टम कराया गया। मायके वालो से पुलिस मे कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं करायी। मगर आर्य समाजी नेता व नारी सेवा सस्थान के अध्यक्ष श्री देवीदास आर्य को मध्यस्थ बना कर ससुराल व ला ने उत्पन्न हुये तनाव का निर्णय कराया। श्री आर्य ने निणय अनुसार मायके वालो को सगाई से लेकर आज तक का व्यय व दहेज के सामान सहित लगभग एक लाख रुपये दिलाये। ससुराल वालो पर जुर्माना भी किया गया।

श्री आर्य को मध्यस्थ नियुक्त करने से पूर्व कन्या पक्ष ने वर पक्ष द्वारा श्मशान ले जा रही अर्थी को मार्ग मे रोक लिया था। इस पर दोनो पक्षो मे मार पीट भी हो गयी थी। तब दोनों पक्षों ने श्री देवीदास आर्य को मध्यस्थ नियुक्त किया। श्री आर्य ने बताया कि कन्या पक्ष की पुलिस मे रिपोर्ट नहीं करना चाहते थे क्योकि उनको वरपक्ष के प्रभावशाली होने के कारण पुलिस पर विश्वास नही था।

श्याम प्रकाश, मन्त्री
केन्द्रीय आर्य सभा, कानपुर

शिविर का आयोजन

आर्य समाज मण्डया के मन्त्री श्री लक्ष्मीनारायण आर्यन ने जानकारी दी कि युवको मे चरित्र विकास तथा राष्ट्रीय एव सास्कृतिक चेतना जागृत करने हेतु "आर्य वीर दल" का एक शिविर मण्डया मे दिनाक २१ जून १९८८ से ३० जून १९८८ तक आयोजित किया जा रहा है।

इच्छुक नवयुवक मन्त्री आर्य समाज मण्डया से सम्पर्क स्थापित कर शिविर मे भाग ले सकते हैं। शिविर में ठहरने एव भोजनादि की व्यवस्था नि शुल्क रहेगी।

—लक्ष्मीनारायण

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस, जि० अलीगढ़, उ० प्र०

१ जुलाई १९८८ से नया वर्ष। शिशु कक्षा से बी०ए० स्तर एव आचार्य तक की नि शुल्क शिक्षा। गुरुकुल पद्धति पर नि शुल्क छात्रावास। सबका सीधा-सादा एकसा रहन सहन, कड़ा अनुशासन, वाव नगर से दूर, स्वास्थ्यप्रद जलवायु। सामान्य विषयो के अतिरिक्त धर्म, सगीत, नैतिकता, गृहकार्यों की भी अनिवार्य शिक्षा देशी घी दूध नाश्ता सहित भोजन शुल्क १३०) रु० मात्र।

नियमावली मगवायें।

—मुख्याधिष्ठाता

महर्षि दयानन्द विद्यामन्दिर मीनाक्षीपुरम् एवं नारायण स्वामी विद्यालय के छात्रा के मध्य

शुद्धिकरण एवं शुभ विवाह

आर्य समाज किशनगंज (मिल एरिया) महर्षि के मार्ग पर चलते हुए रविवार दिनांक ५ ८८ को एक ईसाई युवक जसफीन घरेसिया शमाल का वैदिक पद्धति अनुसार भारी पब्लिक के सामने शुद्धिकरण किया गया। कुमारी जासफीन घरेसिया शमाल का आर्य नाम ज्योति रखा गया है।

कुमारी ज्योति आर्या का शुभ विवाह भी बिना दहेज के श्री सतनामसिंह सुपुत्र श्री करतारा राम पंजाब निवासी के साथ श्री जे पी पाठक के पुरोहितत्व में सम्पन्न हुआ।

—डा० एस एस कामरा

पुस्तक समीक्षा

नाम पुस्तक—एकता का शंखनाद
लेखक—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु मूल्य—६) रुपये
पृष्ठ सं० ६८+८ ७६
प्रकाशक—मधुर प्रकाशन २८०४ गली आर्यसमाज बाजार सीताराम दिल्ली ६

प्रस्तुत पुस्तक मेरे सामने है। पुस्तक का आवरण विशेष आकर्षण बन पड़ा है। कागज भी उत्तम है। छपाई भी सुन्दर है।

पुस्तक में महर्षि दयानन्द के ऐक्यवाद पर बल दिया गया है। वास्तव में मानवीय व राष्ट्रीय एकता की दुहाई तो सब देते हैं परन्तु दुहाई देना और मानव को एकता के सूत्र में पिरोने में बहुत अन्तर है। महर्षि ने आर्य जाति व समस्त मानव समाज की एकता के लिए जो दिव्य दर्शन दिया और जो प्रयास किया उसको रोचक शैली में बड़े मनन एवं चिन्तन के साथ लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक में वर्णन किया है। यह लघु पुस्तिका में गागर में सागर भर दिया है। यह पुस्तक अत्यन्त लोकप्रिय बनेगी। इस पुस्तक में १३ अध्याय हैं। १—बताए तुम्हें हम दयानन्द क्या थे? २—ईश्वर एक है। ३—भगवान के भेजे हुए। ४—नरक और स्वर्ग। ५—शास्त्रों में ऐक्यवाद ६—धर्म की कसौटी। ७—वेद ही क्यों? ८—अस्पृश्यता मन्ज व्यवस्था। ९—सगुण तथा निर्गुण। १०—मुक्ति सोपान? तीर्थ। ११—व्यवहार में ऐक्यवाद। १२—ऐक्यवाद का दिव्य दर्शन १३—ऋषि का ऐक्यवाद व आशावाद। इन १३ अध्यायों में महर्षि के ऐक्यवादी दर्शन—मानवीय एकता के लिये ऋषि की देन पर ठोस एवं सप्रमाण प्रकाश डाला गया है।

पुस्तक पठनीय, वितरण करने योग्य है। इसका आर्य जगत् में विशेष प्रचार एवं प्रसार होना चाहिये। —सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाज अल्मोड़ा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न
ब्रह्मचारी विश्वपाल जयन्त 'आधुनिक भीम, भारत' का अद्भुत शक्ति-प्रदर्शन

आर्य समाज अल्मोड़ा का ८४वां वार्षिकोत्सव ३ ४ ५ जून १९८८ को सम्पन्न हुआ। उत्सव में डा० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या श्री विक्रमसिंह शास्त्रार्थ महारथी तथा ब्रह्मचारी विश्वपाल जयन्त आधुनिक भीम के विविध विषयों पर हुए प्रवचनों से श्रोताओं ने लाभ उठाया।

—डा० जयदत्त उप्रेती शास्त्री मन्त्री

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में दयानन्द-पीठ की स्थापना

दिनांक १६ ६ ८८ के पत्र द्वारा प्राप्त सूचना के अनुसार हरयाणा सरकार कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में दयानन्द पीठ को जारी रखने पर सहमत हो गयी है तथा इसके लिए सरकार द्वारा वित्तीय अनुदान भी देने की घोषणा की गयी है। आर्य बन्धुओं को याद होगा कि कुछ समय पूर्व मिली सूचना के अनुसार कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में दयानन्द पीठ को बन्द करने का प्रस्ताव था। जिसके विरुद्ध सार्वदेशिक सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने हरयाणा सरकार को एक कड़ा पत्र लिखा। प्रसन्नता की बात है कि इस विरोध के परिणाम स्वरूप राज्य सरकार ने दयानन्द पीठ को जारी रखने का निर्णय लिया है। इसके लिए हम आर्य जगत की ओर से हरयाणा सरकार को धन्यवाद देते हैं।

—सम्पादक

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस (अलीगढ़)

महिला अभ्यर्थी चाहिये —

व्याकरणाचार्य (सम्पूर्णानन्द संस्कृत महाविद्यालय वाराणसी) वेतन सवर्गीय विद्यालय के अनुसार। हिन्दी (एम० ए० बी० एड०) संगीत गायन (संगीत प्रभाकर) नर्सरी ट्रेंड अध्यापिकायें नर्स। चिकित्सका। व्यायाम शिक्षिका (प्रौढ़ अवस्था) लिपिक (पुरुष)। आश्रमाध्यक्षा आश्रम सेविका। वेतन योग्यतानुसार। आवेदन पत्र शीघ्र भेजें।

—मुख्याधिष्ठाता

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस (अलीगढ़) में नवीन प्रवेश प्रारम्भ

शिशु कक्षा से बी ए स्तर एवं आचार्य तक की कन्याओं की निःशुल्क शिक्षा। गुरुकुल पद्धति पर निःशुल्क छात्रावास। सबका सीधा सादा एक सा रहन सहन कड़ा अनुशासन। ग्राम नगर से दूर स्वास्थ्यप्रद जलवायु। सामान्य विषयों के अतिरिक्त धर्म, नैतिकता, गृहकार्यों की भी अनिवार्य शिक्षा। देशी घी दूध, जलपान सहित भोजनशुल्क १३०) रुपये नियमावली मंगवावें।

—मुख्याधिष्ठात्री

पजाब से हिंदुओ का पलायन

वोट क्लब पर धरना आर्य समाज द्वारा सहायता जारी

न उ म व थ न्न ि आर न ा ा ा ा ा र ह
यह ल ा व म या मे प ग न आर्य पि कम्प म समय गुजार
र है—

समस पून अनक विस्थ न ा म क ा म म ना सहायता दा गई है

इन दिनो फिर बनी सख्या म अनेक हिन्दू परिवार दिल्ली की आर्य समाजो म ठहराये गये। आर्य समाज दीवानहाल म भी कई परिवारो के भोजन आदि का प्रबन्ध किया जा रहा है—

सार्वदेशिक सभा की तरफ से वोट क्लब पर धरना देने वाले विस्थापितो के लिए आटा दाल चीनी घी आदि की सहायता भेजी जा रही है।

सूरत मे दो नगर वधुए कुल वधू बनी

आर्य समाज सूरत (गुजरात) के प्रधान श्री मगलसेन चोपडा तथा आर्य समाज के कार्यकर्ताओ के अत्यन्त परिश्रम एव प्रयत्न से पुलिस कमिश्नर श्री पी० के० बंसल आदि महानुभावो के सहयोग से समाज द्वारा तिरस्कृत वेश्यावृति व्यापार मे फसी हुई दो नगर वधुओ को मुक्त कराकर कुल वधु बनाने का सराहनीय कार्य किया गया। आर्य समाज मदिर सूरत मे वेद मन्त्रो के उच्चारण के साथ प्रतिष्ठित आर्य घरानो के युवको से २३ ५ ८८ को उनका पाणिग्रहण सस्कार कराया गया।

सजा का विरोध
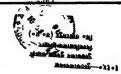
(पृष्ठ ९ का शेष)

लडकी को यह सिद्ध करना पडता है कि वह उसकी मर्जी से नही हुआ। अगर वह इसे साबित करने मे असमर्थ होती है तो उसे कोडो की सजा दी जाती है जैसा कि दृष्टिहीन साफिया बीबी के मामले मे हुआ।

उन्होने कहा अगर कोई औरत तलाक के लिए आवेदन करती है और वह किसी ऐसे घर मे रहती है जहा उसका कोई खूनका रिश्तेदार नही रहता तो उसके पति के कहने पर उसके खिलाफ जिना अध्यादेश के तहत कार्यवाई की जा सकती है। इसी तरह अगर किसी पति ने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया है लेकिन तलाक का दर्ज नही कराया है और अगर पत्नी कानून की अनदेखी करते हुए दूसरी शादी कर ल तो उसके खिलाफ बाद मे पति जिना अध्यादेश के तहत आरोप भी लगा सकता है।

पाकिस्तान अकादमी के अध्यक्ष न्यायविद अबरार हसन ने कहा यह कानून औरतो और महिलाओ के बीच भेदभाव करता है। इसलिए इसे रद्द किया जाना चाहिए।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली में मु द्रत तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र।

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २३ अङ्क २८] | आषाढ़ कृ० १ सं० २०४५ रविवार १० जुलाई १९८८ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

शंकराचार्य का वक्तव्य दूर के षड़यंत्र का संकेत

शंकराचार्य पद से विमुक्ति आवश्यक

हरिजन राष्ट्र के शिल्पी और हिन्दू जाति के अभिन्न अंग हैं

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा छुआ-छूत विरोधी जन सभा में हरिजनों के अधिकारों की रक्षा का आश्वासन

३ जुलाई आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा छुआछूत विरोधी एक जन सभा का आयोजन नई दिल्ली के सप्रू हाउस मे किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि पिछले दिनो पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ को सती प्रथा के समर्थन मे वक्तव्य देने पर पूरी हिन्दू जाति का कोप भाजन बनना पडा था। आशा थी कि वह राष्ट्रीय एकता व अखण्डता का ध्यान रखते हुए भविष्य मे अपने वक्तव्यो पर ध्यान रखेगे।

किन्तु आश्चर्य है कि उन्होने जयपुर मे हरिजनो के मन्दिर मे प्रवेश करने का कडा विरोध करके पुन एक नए विवाद को खडा कर दिया है। जो व्यक्ति देश काल और परिस्थितियो का ध्यान न रखकर घिसीपिटी रूढिवादिता का शिकार हो उसे ऐसे उच्च धार्मिक पद पर आसीन नही होना चाहिए। स्वामी निरंजनदेव का वक्तव्य समूच हिन्दू जाति को विघटित करके इस देश को पुन गुलामी की ओर धकेलने का एक भयंकर षडयन्त्र है जिसके दूरगामी परिणाम समूची हिन्दू जाति तथा राष्ट्र के लिए अहितकारी सिद्ध होगे।

स्वामी जी ने कहा छुआ छूत ऊंच नीच और सामाजिक अव्यवस्थाओ के इन्ही कारणो से भारत दशाब्दियो तक गुलाम रहा। इस देश को बहुत बडे संघर्षो बलिदानो और त्याग से आजादी मिली है। जिसमे हमने ऊंच नीच विहीन सामाजिक व्यवस्था और एकता के स्वरूप की कल्पना की थी। किन्तु शंकराचार्य जैसे धर्मान्ध लोगो ने हिन्दू जाति को अमृत देने की बजाय विष दे दिया है जो इस समाज को भस्मसात करके तोड सकता है कमजोर बना सकता है यहा तक कि हिन्दू जाति को अल्पसंख्यक भी बना सकता है। अत हिन्दू समुदाय को शंकराचार्य का सार्वजनिक रूप से बहिष्कार कर देना चाहिए। तीनो शंकराचार्यो से हमारी अपील है कि वह निरंजनदेव तीर्थ को धर्माचार्य के पद से विमुक्त करके किसी विवेकशील और विद्वान व्यक्ति को उस पर आसीन करावे।

श्री सीताराम केसरी श्री सन्तोष मोहनदेव स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रो० शेरसिंह श्री मोहनलाल पीपल श्री राजेश्वर आदि दिखाई दे रहे है।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती अच्छी तरह जानते थे कि यदि किसी तरह हरिजन सामाजिक उत्पीडना से इस्लाम और ईसाई मत मे चले गये तो हिन्दू जाति का

(शेष पृष्ठ २ पर)

हरिजन राष्ट्र के अभिन्न अंग

(शेष पृष्ठ १ का शेष)

अस्तित्व और इसकी प्राचीन वैदिक सभ्यताका भी अन्त होजाएगा। क्योकि किसी भी जाति की सभ्यता व संस्कृति उसके सुदृढ संगठन पर ही बनती और सुरक्षित रहती है। इसी लिए उन्होने हरिजनो को वेद पढने, जनेऊ पहनने और यज्ञ करने का पूर्ण अधिकार दिया था। आर्यसमाजो मे आज बडी संख्या मे हरिजन विद्वान संस्कार कराते है।

हरिजनो की रक्षा उनको सामाजिक न्याय दिलाने, मन्दिरो मे प्रवेश कराने मे आर्य समाज के कई आर्य वीरो को अपना बलिदान भी करना पडा है। इस देश के हरिजन भाइयो को इस बात का विश्वास रखना चाहिए कि उनके पीछे आर्यसमाज की एक बहुत बडी शक्ति उनकी रक्षा मे खडी है। अपने अधिकारो के लिए उन्हे संघर्ष करना चाहिए। जो भी व्यक्ति उनके हितो तथा अधिकारो की अवहेलना करने का किसी भी प्रकार से दोषी पाया गया तो आर्य समाज ऐसे व्यक्तियो को कभी क्षमा नही करेगा।

सरकार मौलिक अधिकारों की रक्षा करेगी

केन्द्रीय राज्य गृह मन्त्री श्री सन्तोष मोहन देव ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित अस्पृश्यता निवारण सम्मेलन मे बोलते हुए कहा कि भारत सरकार छुआ-छूत उन्मूलन के लिए संविधान प्रदत्त मौलिक अधिकारो की रक्षा करेगी। हरिजन हमारे उन्नति और प्रगति के साथी हैं सरकार छुआ-छूत को बढावा देने, सती प्रथा को महिमामण्डित करने जैसे किसी भी प्रयास को सहन नही करेगी। महिलाओ को भी संविधान मे बराबर का अधिकार है। विधवा दाह एक जघन्य अपराध है उन्होने इन सामाजिक विषमताओ को दूर करने के लिए जागरण की अपील की।

शंकराचार्य को महत्त्व देना गलत

कांग्रेस के कोषाध्यक्ष श्री सीताराम केसरी ने कहा कि शंकराचार्य को कौन जानता है? उन्होने एक छोटी सी बात करके हरिजनो मे बचैनी पैदा कर दी है। उन्हे पता होना चाहिए कि १९२६ मे दलित संघ की स्थापना हुई थी। अंग्रेज विभाजन के रूप मे हरिजनो को भी अलग राज्य देकर भारत को तोडना चाहते थे। लेकिन उनकी कोशिश नाकाम हुई और दलितसंघ ने सर्वसम्मति से इस प्रस्ताव का कडा विरोध किया। इससे पूर्व १९३० मे छुआ-छूत विरोधी एक बैठक मे प्रस्ताव हुआ था कि सब लोग हरिजनो के हाथ का पानी पिए। जिन लोगो ने उनके हाथ का पानी पिया वे सब पक्के आर्य समाजी बनकर सामाजिक कुरीतियो के उन्मूलन मे जुट गये। शंकराचार्य का वक्तव्य ध्यान देने योग्य नही है निकृष्ट लोगो के गलत प्रचार से ही इस प्रकार की बात सामने आती है।

हरिजन शिल्पी हैं अछूत नहीं

इस अवसर पर भूतपूर्व संसद सदस्य मोहनलाल पीपल ने कहा कि हरिजन भारत के शिल्पी है। मन्दिर हो या भवन सारा निर्माण कार्य उनके ही हाथो से होता है। भगवान की मूर्तियां भी उनके हाथो से ढाली जाती है। किन्तु आश्चर्य है कि निर्माण पूरा हो जाने के बाद उन्हे मन्दिर मे जाने अथवा मन्दिर को छूने से दूर रखा जाता है। उन्होने मांग की कि चारो शंकराचार्यो मे चारो वर्णो का एक-एक शंकराचार्य नियुक्त होना चाहिए। यही अस्पृश्यता निवारण है कि उत्तम उपाय है। आर्यसमाज द्वारा किये जा रहे प्रयत्नो के लिए हरिजन समाज उसका आभारी है।

इस अवसर पर गृहराज्यमन्त्री सन्तोष मोहन, श्री सीताराम केसरी, पूर्व सांसद श्री मोहनलाल पीपल, अन्तर्राष्ट्रीय सनातन धर्म सभा के अध्यक्ष श्री रमाकान्त गोस्वामी प्रो० शेरसिंह डा० वाचस्पति उपाध्याय, डा० धर्मपाल, श्री राजेश्वर आदि अनेक नेताओ ने अपने-अपने विचार रखे। ●

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन दिनांक १९-६-८८ में शुद्धि कार्य हेतु

दानदाताओं का वचनदान

(१) श्री दरबारी लाल जी, डी ए वी कमेटी, नई दिल्ली	२१०००)
(२) श्री भगवती प्रसाद गुप्त, आर्य प्रति० सभा बम्बई	१००००)
(३) श्री सत्यानन्द मुंजाल, लुधियाना (पंजाब)	५००१)
(४) आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली	५००१)
(५) आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	५००१)
(६) आर्य समाज सदर बाजार दिल्ली	५००१)
(७) आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत	५००१)
(८) आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश	५००१)
(९) आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल	५०००)
(१०) श्री भूपनारायण शास्त्री, पटना	४०००)
(११) महाशय चुन्नीलाल ट्रस्ट, दिल्ली	३००१)
(१२) श्री मांगेराम गुप्ता आर्य, दिल्ली	११००)
(१३) महात्मा आर्य भिक्षु, ज्वालापुर	+ ११००)
(१४) आर्य समाज पुरानी मण्डी, जम्मू	११००)
(१५) आर्य समाज पुराना अस्पताल, जम्मू	११००)
(१६) दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल	११००)
(१७) आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार	११००)
(१८) डा० जगन्नाथ, दिल्ली	+ ११०१)
(१९) श्री द्वारिका प्रसाद भोज, बिहार	११००)
(२०) आर्य समाज दादर	१००१)
(२१) श्री कृष्णलाल जी, शिमला	१००१)
(२२) आर्य कुमार जामनगर	१०००)
(२३) आर्य समाज लोवर बाजार शिमला	१००१)
(२४) आर्य समाज अण्डा होशियार पुर (जालन्धर)	१००१)
(२५) श्री इन्द्रप्रकाश गांधी, इन्दौर	१००१)
(२६) श्री ओमप्रकाश आर्य, दिल्ली	५०१)
(२७) आर्य समाज सुभाष नगर दिल्ली	५०१)
(२८) सेठ योगेन्द्रपाल जालन्धर	५०१)
(२९) श्री धर्मवीर खन्ना जामनगर	५०१)
(३०) आर्यसमाज सेक्टर-२२ चन्डीगढ (पंजाब)	हर माह ५००)

हैदराबाद सत्याग्रह सम्मान पेंशन

हैदराबाद सत्याग्रहियों की चौथी सूची जिन्हें भारत सरकार ने सम्मान पेन्शन देनी स्वीकार की है।

नं० ८८—श्रीमती पातो देवी	भटिण्डा
८९—श्री बृद्धि चन्द्र	भीलवाडा
९०—श्री परियाल सिंह	हिसार
९१—श्री भवानी शंकर गणेश	मन्दसौर
९२—श्री शिव नारायण	मन्दसौर
९३—श्री साहिब राम सागर	भरतपुर
९४—श्री प्रभु दयाल	जींद
९५—श्री विश्वनाथ गडेरे	पूना
९६—श्री ब्रह्मदत्त (भारत भूषण)	दिल्ली
९७—श्री दामोदर दास	बुल्ढाना
९८—श्री बालप्पा लाटूर	(एम० एस०)
९९—श्री राजेश्वर राव	हैदराबाद
१००—श्री भालचन्द्र रंगनाथ कुलकर्णी	बम्बई
१०१—श्री राम प्रकाश शर्मा	दिल्ली
१०२—श्री दिगम्बर राव	उस्मानाबाद
१०३—श्री महादेव	सोलापुर
१०४—श्री जीवनदास	लुधियाना
१०५—श्री कृष्ण गोपाल खाटपाण्डे	पूना

टिप्पणी—इससे पूर्व ८७ सत्याग्रहियो की सूची पिछले तीन किस्तो मे सार्वदेशिक साप्ताहिक मे प्रकाशित की जा चुकी है।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
चेयरमैन, स्क्रीनिंग कमेटी

सम्पादकीय

विवेकशील बनो !

कोई भी व्यक्ति जब तक जीवन के यथार्थ स्वरूप से अपरिचित रहता है तब तक भांति-भांति की अनिष्ट शंकायें उसे दिन रात सताती रहती हैं। सोते को जगाया जा सकता है किन्तु जो जाग रहा हो, उसे जगायेगा कौन ? ऐसे व्यक्ति को अपने जीवन के विषय में सोचने का समय नहीं। परन्तु दूसरे के दोषो को अवलोकन करने से ही अवसर नहीं मिलता। इस प्रकार की चिन्ताओं के रहते सदा अनिष्ट करने की ही सोचता रहता है। ऐसा व्यक्ति कभी कर्त्तव्य कर्म में भी हाथ नहीं लगाता है।

वही व्यक्ति जब जीवन के तत्व को समझ लेता है फिर उसे जीवन में भय की क्या आशंकायें हैं उन्हें स्मरण कर वह व्यक्ति स्वय तो मरेगा ही, पर दूसरे को भी मारने पर तुल जायेगा। ज्ञान के विकास से भय का विनाश किस प्रकार होता है। आज ज्ञान के विकास हेतु' हमारा योग उनका योगा''यह योग और योगा ने चौपट कर रखा है हमारा योग तत्व परमात्मा चिन्तन में है और उनका योगा-भोग मय चिन्तन से युक्त है।

आज, भारत में ऐसे 'योगा और भोगा" उत्पन्न हो गये हैं जिन्हें न योग का ज्ञान और न भोग का ज्ञान ही है। परन्तु योग का ज्ञान आवश्यक है। ज्ञान मे एक दैवी शक्ति है।

ऋषियों ने उसे ब्रह्मस्वरूप माना है। उसके आगे भय के भूत ठहर नहीं सकते हैं। इससे बुद्धि की शुद्धि और वृद्धि होती है। मनुष्य को ज्ञानी होना चाहिये। मानव का चिन्तन एकांगी नहीं अपितु चतुर्मुखी प्रवृत्ति वाला होना चाहिये।

लेकिन जब विवेक ही भ्रष्ट हो, तो ज्ञान क्या करेगा। उसकी बुद्धि सदा भ्रमित व्याकुल बनी रहती है।

ज्ञान के अनेक भेद हैं। यहां इतना ही लिखना पर्याप्त है कि प्रत्येक व्यक्ति को आत्म ज्ञान व्यवहारिक-ज्ञान अवश्य ही प्राप्त करना चाहिये। प्रत्येक ज्ञान-तत्व सदुपयोग से सार्थक होता है।

ज्ञान का सदुपयोग प्राचीन ऋषियो के मतानुसार—

तस्मादात्म सुख प्रेप्सुरिष्टानिष्ट न चिन्तयेत्।
चिन्तयेच्चेत्तदा चिन्त्यो मोक्षोपायों न चेतर ॥

अर्थात्—आत्म सुख की इच्छा वाला पुरुष किसी का अहितकारी चिन्तन न करे। यदि कुछ सोचना ही है तो बन्धन से छूटने का चिन्तन करे और यही ज्ञान का प्रयोजन है। ज्ञान की सहायता से मानव को चैतन्य, प्रत्युत्पन्नमति, मर्मज्ञ, विवेकी, कार्य कुशल, होना चाहिये।

विवेक भ्रष्टाना—

मनुष्य का स्वार्थ ही विवेक को पतन की ओर ले जाता है, पतन के मूल में स्वार्थ परायणता निहित रहती है। गम्भीरता पूर्वक विचार करें तो स्वार्थजन्य भावनाओं के कारण ही मनुष्य का जीवन दुखालु हो जाता है। शरीर-सम्पत्ति और ऐन्द्रिय सुखों का लोभ, अत्यधिक आसक्ति उसके नाश का कारण बनती है।

आर्यसमाज के क्रिया-कलापों का ही चिन्तन करे, दूसरो पर उगली न उठावे, तो हम अपने को विवेक से शून्य पाते हैं। अच्छे या बुरे का ज्ञान न कर उसकी अच्छाइयां भी बुराइयों में दीखने लगती हैं।

सार्वदेशिक सभाके माननीय प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के विपरीत कितना कीचड उछाला गया। पर स्वामी जी गम्भीर धीर रहकर शान्त बने रहे। त्यागी या निष्काम करने वाला किसी से डरता नहीं क्योंकि ऐसे व्यक्ति को न तो मोह है अपना या किसी पराये व्यक्ति का। त्यागी व्यक्ति सदा ही निर्भय होता है। उसके मन में पद-प्रभुत्व, धन वैभव की तृष्णा भी नहीं रहती है। साथ ही ऐसा व्यक्ति किसी व्यक्ति की प्रसन्नता अप्रसन्नता की भी चिन्ता नही करता है।

आज ऐसे व्यक्तित्व वाले सन्यासी पर कुछ व्यक्तियो ने कीचड उछाला। सारे देश में आर्यसमाज की छवि को दूषित किया।

निरीहाणमीशस्तृणमिव तिरस्कार विषय" मुद्राराक्षस—

जिसके मन में कोई लालसा नहीं, वह भय से या लोभ मोह के वश से किसी का मुंह क्यो ताकेगा। ऐसा व्यक्ति सदा ही पूजनीय होगा।

परिणामत विगत दो बृहद अधिवेशनो में माननीय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये। इस बार चन्द लोगो ने जो वातावरण दूषित किया, उसके परिणाम स्वरूप आज स्वामी जी की छवि धूमिल होने के बजाय उनके जीवन में निखार आया और इस बार भी वह सर्वसम्मति से सार्वदेशिक सभा के प्रधान निर्वाचित हुए।

आत्म क्षुद्रता भी पतन का कारण है ?

जिस प्रकार मन का बहुत बढ़ना और बहकना बुरा है उसी प्रकार मन का छोटा होना और गिरना भी बुरा है। बहुत से लोग स्वय अपने विषय मे ही अच्छे विचार नहीं रखते। वे सदा इस प्रकार से सोचते हैं

मुझमे कोई विशेष गुण नही है दूसरे लोग मुझसे हर बात मे अच्छे और किसी न किसी बात मे बढे चढे हैं। दूसरे लोग लाख रुपये के आदमी हैं उनके आगे मैं दो कौडी का भी नही हू। बडे आदमियो के आगे मेरे जैसे नगण्य को कौन पूछेगा मेरी हस्ती ही क्या है। इत्यादि।

दूसरो से अपनी तुलना करके ऐसे लोग अपने को सवथा अयोग्य और तुच्छ मान लेते हे साथ ही प्रत्येक अवसर पर अपनी असमर्थता एव नीचता का ही अनुभव करते है। यही आत्मक्षुद्रता है। इसी को हम मन का छोटा होना कहते है।

मन की दुबलता के कारण बहुत से लोग समर्थ होकर भी किसी प्रकार का उत्तरदायित्व नही लेना चाहते हैं। क्योकि उनका मन पहले से ही जबाव देकर भाग खडा हुआ है कि मैं किसा काम का नही हू बहुतायत लोग किसी भी नए काम मे हाथ लगाना नही चाहते और इस आशका मे दबकर ही बैठे रहते हैं। कि कही पकड न लिए जायें। किसी भी प्रकार के सघर्ष से वे अतिदूर ही भागते हैं। कितने ही लोग सावजनिक कार्यों से इसलिए तटस्थ रहने हैं कि उनकी दृष्टि मे वहा एक नही अनेक धुरन्धर मिलते हैं जिनके आगे मूर्ख बनने का भय रहता है। क्षुद्रता से लज्जा के समुद्र मे डूबकर मर जाना पडगा।

मन की निर्बलता और कायरता के कारण मनुष्य को इस प्रकार डूबना व उतरना पडता है। और साधारण आलोचना से भी अन्दर ही अन्दर चूर होता रहता है।

शिथिल पडे रहना, बडे लोगो से द्वेष करना, धमकी देना, पर निन्दा कर, दूसरो के आश्रित या सहानुभूति पर जीवित रहना, ये सब मनुष्य की आत्मक्षुद्रता के लक्षण हैं। अपनी दुर्बलताओ को छिपाने के लिए ही लोग बने बने घूमते हैं। मानसिक दीनता का प्रभाव मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व और व्यवहार पर पडता है।

इससे आत्म सम्मान नष्ट होता है। जो व्यक्ति अपने को तुच्छ या अयोग्य मान लेता है वह व्यक्ति स्वय अपने से घृणा करने लगता है। इस प्रकार अपनी ही दुर्भावना से मनुष्य अपने लिए एक विषय वातावरण बना लेता है।

अपने गुणो को न पहचानना वास्तव मे एक महादुर्गुण है। किसी एक व्यक्ति के रूप मे भगवान सारे दोषो का कोष नही भर देता। कुछ न कुछ विशेषता प्रत्यक व्यक्ति के रूप में होती है। उससे परिचित होना चाहिए, प्रत्येक मनुष्य को यह समझना चाहिए कि मैंने अपने को जितना नगण्य समझ रखा है। वस्तुत उतना नगण्य नही हू। मुझमे कुछ योग्यता भी हैं। जिसके

(शेष पृष्ठ १० पर)

क्या सरकार अग्निवेश को नाथद्वारा आने देगी ?

जयपुर २७ जून। सरकार समाज सुधारक कानूनों को कितना लागू करना चाहती है। इसका पता एक बार फिर १० जुलाई को स्वामी अग्निवेश की पदयात्रा से चल जाएगा। आर्य समाजी नेता स्वामी अग्निवेश छुआछूत के खिलाफ उदयपुर जिले के नाथद्वारा मन्दिर की तरफ १० जुलाई को पदयात्रा करेंगे।

राजनैतिक हलको मे पूछा जा रहा है कि क्या सरकार स्वामी अग्निवेश की 'नाथद्वारा पदयात्रा को भी पहले दिसम्बर की दिवराला की सती विरोधी पदयात्रा की तरह रोक देगी।

सरकारी सूत्रो का कहना है कि हालात के मुताबिक कार्रवाई होगी। लेकिन प्रक्षको के मुताबिक 'मार्च रोकने के लिए कट्टरपंथी लोगो का लगातार दबाव पड रहा है और अधिकारी उससे झुक भी सकते हैं।

स्वामी अग्निवेश ने पुरी के शकराचार्य स्वामी निरजनदेव तीर्थ के २२ जून के जयपुर मे दिए गए बयान के बाद नाथद्वारा के लिए सन्यासियो और हरिजनो के साथ 'मार्च करने की घोषणा की है। स्वामी निरजनदेव तीर्थ ने जयपुर मे प्रस कान्फ्रेंस मे कहा था कि हरिजनो को मन्दिर मे जाने की कोई जरूरत नही है। शकराचार्य ने यह बयान नाथद्वारा मन्दिर मे हरिजनो के घुसने पर लगी पाबदी के जवाब मे दिया था। प्रस कान्फ्रेस मे शकराचार्य ने हरिजनो और ब्राह्मणो की बराबरी की बात पर एतराज और सती विरोधी विचारो के लिए आर्यसमाज की भी आलोचना की थी। इस बयान से शकराचार्य और उनके कुछ सती समर्थक अनुयायी उल्टे फस गए है। हरिजन विरोधी विचारो और अपनी राजनैतिक महत्वाकाक्षाओ के चलते शकराचार्य का समर्थन तो दूर चारो तरफ से उनकी तीखी आलोचना हो रही है। राजस्थान प्रदेश काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अशोक गहलौत,जनता पार्टी के नेता मणिकचन्द सुराना, भाकपा के सचिव रतिराम यादव और कई महिला सगठन और ट्रेड यूनियन के नेताओ ने शकराचाय की खिचाई की है।

शकराचाय के भाजे बृजमोहन दवे के मुताबिक शकराचाय न तो जमाने को ही पीछे ढकेल दिया। यह भी गौरतलब है कि श्री दवे और शकराचार्य के कई रिश्तेदारो ने स्वामी अग्निवेश के दिवराला मार्च का समथन किया था।

इका माकपा के राष्ट्रीय नेता और दूसरी इकाइयो ने भी शकराचाय के बयान का जोरदार विरोध किया है। आर्यसमाज और हरिजनसगठन ने दयानन्द सरस्वती और भीमराव अम्बेडकर के खिलाफ की गई टिप्पणियो का बहुत बुरा माना है।

गौरतलब है पिछले साल काग्रेस समर्पित हरिजन सेवा समाज के कार्यकर्त्ताओ ने नाथद्वारा मन्दिर के लिए एक पदयात्रा की योजना बनाई थी। बाद मे मुख्यमन्त्री हरिदेव जोशी ने दगा दे दिया और पूरा कार्यक्रम बुरी तरह टूट गया। इस कार्यक्रम के विरोधियो ने राजस्थान और गुजरात के काग्रेसी नेताओ की पिटाई भी कर दी थी।

पिछले साल सितम्बर मे बहुजन समाज पार्टी ने भी पूरे राज्य मे छुआछूत विरोधी मार्च किया था और घोषणा की थी कि कार्यकर्त्ता मन्दिर मे भी घुसगे। लेकिन ऐन वक्त पर तनाव इतना बढ गया कि बीएसपी कायकर्ताओ ने मन्दिर मे जाने का कार्यक्रम टाल दिया। और काशीराम ने नाथद्वारा मन्दिर पर कार्यकर्ताओ को सम्बोधित करने का भी कायक्रम रद्द कर दिया था।

इस दौरान राजस्थान के आर्यसमाज और दूसरे सामाजिक सगठनो ने नाथद्वारा मन्दिर जाने की तैयारियां शुरू कर दी हैं। राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष छोटूसिंह ने अलवर मे कहा कि राज्य के कई हिस्सो के आर्य समाजी इस 'मार्च' में भाग लेंगे।

इस मार्च मे छोटूसिंह के आने से सरकार दिक्कत में पड़ जाएगी। क्योंकि वे काग्रेस (इ) के प्रमुख नेता और विधायक भी रह चुके हैं। महिला सगठनो की संयोजिका हेमलता प्रभु ने कहा कि वे लोग, महिलाओ और मानवता पर पुरी के शकराचार्य के हमले के खिलाफ एक कार्यक्रम बनायेंगी।

(जनसत्ता २७ जून १९८८ से साभार)

सिख लड़कियों से अभद्र व्यवहार

अधिक से अधिक पढ़े-लिखे और समझदार सिख यह समझ रहे हैं कि आतकवादी तो शायद इन्हे खालिस्तान न दिला सके किन्तु पाकिस्तान अवश्य इन्हे यह प्राप्त करने मे सहायता कर सकेगा क्योंकि पाकिस्तानी मुसलमानो के दिलो मे सिखो के लिये अगाध प्रेम और श्रद्धा है। कोई मुसलमान ऐसा नही निकला जिसने अपनी जबान से एक शब्द भी निकाला हो जिससे यह प्रकट हुआ कि इसे पुराने मुस्लिम शासको के सिखो से किये गये व्यवहार पर लज्जा हो। किन्तु सैकडो सिख है जो अपने गुरुओ की मुस्लिम जनून के कदमो पर कुर्बानी और बलिदान को तोड-मरोड कर पेश कर रहे हैं। हम यह समझते थे कि हमारे काग्रेसी सूरमा ही इतिहास को घड रहे हैं लेकिन ये खालिस्तान समर्थक सिख तो अपने धर्म ग्रन्थो को भी झुठला कर पाकिस्तान के मुसलमानो से घी शक्कर हो रह हैं। बहरहाल इन मुसलमानो ने सिखो के प्रति अपनी भावनाओ को कभी छिपा कर नही रखा और पग-पग पर यह बता दिया है कि ये सिखो को खालिस्तान का झासा देकर इनका क्या लाभ उठाना चाहते है। इग्लैंड के नगर बर्मिघम का समाचार है कि वहा सिखो और मुसलमानो के धडे एक दूसरे की गर्दन पर सवार होने के लिये अपने-अपने दस्ते तैयार कर रहे हैं। इसका कारण यह है कि सिखो ने यह समझा कि ये खालिस्तान समर्थक पाकिस्तानी मुसलमान दिल से इनसे सहानुभूति रखते है। चुनाचे इन पाकिस्तानी मुसलमानो को अपने घरो मे बुलाना प्रारम्भ कर दिया और वास्तव मे अपना रिश्तेदार बना लिया। किन्तु कुछ दिन के बाद इन्हे यह दिखाई दिया कि पाकिस्तान नवयुवक जो खालिस्तान के प्रश्न पर इनकी सहायता करने का बहाना बनाकर इनके घरो म घुस आये है। इनकी लडकियो को अपने पारम्परिक ढग से प्रयोग करना प्रारम्भ हो गये है। इस पर इन खालिस्तान समर्थक सिखो को होश आया कि किस प्रकार वे मूर्ख बनाये गये हैं। चुनाचे अब दोनो मे तू-तू मैं-मैं प्रारम्भ हो गई है। किसी मुसलमान ने किसी सिख को अपने घरो मे न आने दिया और यह कह दिया कि इनके घरो मे पर्दा है। लेकिन स्वय आसानी से सिखो के घरो मे घुस गये। नवीन समाचार यह है कि दोनो धडो मे टकराव की कई घटनाए हो चुकी हैं और पुलिस दोनो सम्प्रदायो के वयोवृद्ध लोगो को इकट्ठा करके समझौता कराने का प्रयास कर रही है।

—नरेन्द्र

ऋषि दयानन्द के ये सरकारी जीवन-चरित (३)

—प्रो० भवानीलाल भारतीय

६ लेखक के अनुसार स्वामीजी ने रघुवश, किरातार्जुनीय और रामचरितमानस के अध्ययन को अनुचित कहा, वैशेषिक, साख्य तथा वेदान्त दर्शन की आलोचना की, मनुस्मृतियो और पुराणो का उपहास किया तथा भगवद्गीता और श्वेताश्वतरोपनिषद् की उपेक्षा की। पृ० ४०

समीक्षा—उपर्युक्त कथन लेखक के दयानन्द विषयक अज्ञान का ही परिचायक है। स्वामी दयानन्द धर्म वेत्ता, धर्मोपदेशक तथा धर्म के अनुशास्ता थे। वे साहित्य, अलकार या काव्य का पाठ्यक्रम बनाने के लिये नही बैठे थे। इसलिये यदि उन्होने कालिदास या भारवि के काव्यो की उपेक्षा की तो इसमे कोई आश्चर्य नही। वेदो के अध्ययन की सस्तुति करने वाला रामचरितमानस के बारे मे भला कैसे प्रशस्तिमूलक आग्रह व्यक्त करता। स्वामी जी ने वैशेषिक, साख्य और वेदान्त को तो आर्ष दर्शन माना है। उनकी आलोचना का तो सवाल ही नही है। डा० सिह को शायद पता नही कि श्री महाराज को वैशेषिक दर्शन से विशेष अनुरक्ति थी। अद्वैतवाद के खण्डन को यदि वे वेदान्त का खण्डन मानते हो तो यह उनकी ही भूल है। मनुस्मृति से भिन्न स्मृतियो और अठारह पुराणो मे तो कुछ श्लाघनीय हैं ही नही, अत उनका उपहास किया जाना ठीक ही था। स्वामी जी ने गीता और श्वेताश्वर उपनिषद् की कही भी उपेक्षा नही की। उनके द्वारा प्रतिपादित त्रैतवाद दर्शन का तो सर्वाधिक सशक्त उल्लेख श्वेताश्वर उपनिषद् मे ही मिलता है। गीता के अनेक श्लोक महाराज ने प्रमाण रूप मे स्व० ग्रन्थो मे उद्धृत किये है।

७ लेखक को इस बात का बडा गिला है कि स्वामी दयानन्द सिद्धान्त कौमुदी का तिरस्कार किया और अष्टाध्यायी विधि से सस्कृत के पठन-पाठन पर बल दिया। उनकी धारणा है कि ऐसा उन्होने अपने गुरु दण्डी विरजानन्द के विचारो के प्रति अत्यन्त अनुरुरक्त होने के कारण ही किया। उनका यह भी कथन है कि अच्छा होता यदि दयानन्द सिद्धान्त कौमुदी का विरोध करने से बाज आते क्योकि कौमुदी की प्रक्रिया को अपनाने से ही सस्कृत भाषा का सुगम रीति से बोध हो सकता है। पृ० ४०-४१

समीक्षा—लेखक के उपर्युक्त पर विस्तारपूर्वक टिप्पणी करना अनावश्यक है। सस्कृत व्याकरण के अध्येता इस बात को जानते है कि अष्टाध्यायी क्रम से व्याकरण का बोध सुगम रीति से होता है जब कि कौमुदी की प्रक्रिया से जटिलता तथा दुर्बोध पैदा होता है। प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु ने अष्टाध्यायी पद्धति की सफलता और समीचीनता को व्यावहारिक दृष्टान्तो से सिद्ध कर दिया है।

८. पृष्ठ ४६ पर चक्राकित वैष्णावो को वल्लभाचार्य के मत की एक शाखा कहा गया है। यह तथ्य की भूल है। चक्राकितो का सम्बन्ध रामानुजाचार्य के श्री सम्प्रदाय से है, वल्लभाचार्य के पुष्टि मत से नही।

९. स्वामी दयानन्द द्वारा वेदो को जर्मनी से मगाये जाने की लोक प्रचलित किंवदन्ती को लेखक ने भी पृष्ठ ४७ पर उद्धृत किया है। सत्य यह है कि स्वामीजी ने मैक्समूलर सम्पादित ऋग्वेद सहिता के सस्करण को आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से मगाया था। ऋग्वेद का सम्पादन प्रो० मैक्समूलर ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आर्थिक अनुदान से किया था। यह पुस्तक आज भी अजमेर मे परोपकारिणी सभा के पुस्तकालय मे मौजूद है।

१०. लेखक कहता है कि स्वामी दयानन्द ने मूर्तिपूजा का खण्डन मुख्यतः इसी आधार पर किया क्योंकि इसके लिये वेद की अनुज्ञा नही है, किन्तु लेखक तो ऐसे मामलो मे आत्मा की आवाज को ही महत्व देता है। फिर वह यह भी कहता है कि स्वामी दयानन्द कृत मूर्तिपूजा की आलोचना इस आचार के पीछे विद्यमान आदर्श या भावना की उपेक्षा करती है। पृ० ४६

समीक्षा—हमारा निवेदन है कि भारतीय धर्म प्रणाली मे वेदाज्ञा को ही धर्माधर्म के विवेचन मे सर्वोच्च मान्यता प्राप्त है। अत दयानन्द ने मूर्तिपूजा को वेदविरुद्ध होने के कारण अनुचित त्याज्य कहा था। धार्मिक मामलो म आत्मा की आवाज का कोई अधिक महत्व नही है। हा मनु ने धर्म का निश्चय कराने म श्रुति, स्मृति और महापुरुषो द्वारा अनुष्ठित आचार के पश्चात् 'स्वस्य च प्रियमात्मन' को स्थान दिया है। मूर्तिपूजा के विधान के पीछे कोई आदर्श या उच्च भावना है, स्वामी दयानन्द ऐसा नही मानते। मूर्तिपूजा के समर्थन मे ऐसे आदर्शों की कल्पना उन लोगो ने की है जो हिन्दू धर्म मे प्रचलित प्रत्येक अन्ध-विश्वास की औचित्य सिद्धि के लिए उधार खाये रहते है। यथा थियोसोफिस्ट तथा स्वामी विवेकानन्द जैसे लोग। स्वामी दयानन्द ने तो मूर्तिपूजा की हानियो को विस्तार से वर्णित किया ही है।

११ लेखक का यह कथन भी इतिहास विरुद्ध है कि स्वामी दयानन्द को वेदो पर भाष्य लिखने की प्रेरणा मिर्जापुर मे ईसाई पादरी आर०सी० मेथर ने दी। (पृ० ३२) पादरी मेथर से स्वामी जी का एतद् विषयक वार्तालाप तो हुआ था, किन्तु वेदो पर भाष्य लिखने की प्रेरणा उन्हे रा ब गोपालरावहरि देशमुख ने बम्बई मे दी थी। (द्रष्टव्य ऋषि दयानन्द के भक्त, प्रशसक और सत्सगी ले. डा० भवानीलाल भारतीय)

१२ साख्य दर्शन अनीश्वरवादी, है या ईश्वरवादी, इस प्रसग की चर्चा करते हुए दयानन्द का यह जीवनी लेखक कहता है कि स्वामी जी की षड्दर्शनो के सिद्धान्तो की जानकारी सतही तथा छिछली ही थी। उसका दुस्साहस देखिये, वह इसके लिये अग्रेजी के (पल्लवग्राही पाण्डित्य) शब्द का प्रयोग करता है। ए हिस्ट्री आफ इण्डिया के लेखक रूसदेशीय विद्याविद् जी बोनगार्ड लेविन को उद्धृत करता हुआ लेखक लिखता है कि यह एक स्वीकृत तथ्य है कि षड्दर्शनो मे परस्पर अत्यन्त विरोध है तथा साख्य दर्शन जैन, बौद्ध और चार्वाक आदि नास्तिक मतो के तुल्य अनीश्वरवादी है। पृ० ५५

समीक्षा—हमारा निश्चित मत है कि डा० बी के सिंह दर्शनो के विद्वान् नही है अत स्वामी दयानन्द के दर्शन विषयक मत पर टिप्पणी करने के वे अधिकारी नही हैं। स्वामी दयानन्द को षड्दर्शनो का गम्भीर, तलस्पर्शी तथा गूढ ज्ञान था, यह तो उनके ग्रन्थो और जीवन प्रसगो से ही सिद्ध होता है। फिर उसे छिछला या सतही कहना साहसिकता ही पराकाष्ठा है। साख्य को अनीश्वरवादी कहना भी उनका दुराग्रह ही है। प. आर्यमुनि, प बुद्धदेव मीरपुरी तथा प. उदयवीर शास्त्री आदि विद्वानो ने इस विषय पर बहुत विस्तार से लिखा है। यहा इस प्रसग को अधिक विस्तार देना सम्भव नही है।

१३. एक अन्य तथ्य विषयक भूल (पृ. ६०) 'सत्यार्थप्रकाश के प्रथम सस्करण का मुद्रित आकार १००० पृष्ठो मे है' स्पष्ट ही यह गलत है। प्रथम सस्करण के समस्त पृष्ठो की सख्या ४०७ है।

(क्रमशः)

अंग्रेजी क्यों हटायें ?

—डा० वेदप्रताप वैदिक

(गतांक से आगे)

मजबूरी इतनी ही नहीं है, इससे भी ज्यादा है। इस भवन में न केवल एक ही खिड़की है बल्कि कोई दरवाजा भी नहीं है। बिना दरवाजे के मकान में कोई सभ्य आदमी कैसे रह सकता है ? वह मकान भी क्या मकान है, जिसमें आने-जाने के लिये बन्दरों की तरह खिड़की से कूदना-फांदना पड़े। लेकिन हमारे शासकों ने सारे हिन्दुस्तान को पिछले चालीस साल में बन्दरी सभ्यता में ढालने का प्रयत्न किया है। केवल अंग्रेजी के जरिये ही हम दुनिया को जान सकते हैं, केवल अंग्रेजी के जरिये ही भारत में कोई ऊंचा पद प्राप्त कर सकते हैं। अपनी भाषा के दरवाजे से हम न तो दुनिया तक जा सकते हैं और न ही अपने देश की ऊंची मंजिलों पर पहुंच सकते हैं। ऊंची मंजिलों पर पहुंचना तो दूर रहा, इस देश मे हिन्दी का टाइपिस्ट बनने के लिये भी अंग्रेजी जानना जरूरी है।

एक खिड़की वाले मकान, मकान क्या कोठरी, इस एक खिड़की वाली कोठरी मे पनपी हुई बन्दरी सभ्यता के कारण देश का प्रमुख बौद्धिक वर्ग नकलची बन गया है। उसकी धारणाएं, उसके अभिमत, उसकी विश्व-दृष्टि पश्चिमी साहित्य निर्धारित करता है। उसका अपना मौलिक चिन्तन कुंठित हो गया है, उसकी सृजन शक्ति को लकवा मार गया है। यदि पश्चिमी विशेषज्ञ भारत को 'पिछड़ा' राष्ट्र कहते हैं तो हमारे विशेषज्ञ भी तोते की तरह उसी बात को दोहराते हैं। आजकल अमरीकी विशेषज्ञों ने भारत को 'नया राज्य' कहना शुरू किया है। उनकी देखा-देखी भारतीय नकलची विद्वान भी भारत को 'नया राज्य' कहने लगे हैं। उन्हे क्या यह पता नहीं है कि जब पृथ्वी पर अमरीका नाम की कोई चीज नही थी और लन्दन में जंगली कबीले जानवरो की तरह मार-धाड़ करते घूमते थे, उस समय भी याने आज से लगभग २ हजार साल पहले भी भारत में विक्रमादित्य की शानदार राज्य-व्यवस्था चल रही थी और चाणक्य जैसे महान राजनीतिज्ञ ने राज्य-व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए 'अर्थशास्त्र' नामक अद्वितीय ग्रन्थ की रचना की थी ?

यह सब जानते हुए भी हमारे विद्वानो को दर्शन मे, इतिहास में, अर्थशास्त्र में, राजनीति शास्त्र में पश्चिमी शब्द-रचना को स्वीकार करना ही पड़ता है, क्योंकि उनका सारा चिन्तन और चिन्तन को निर्मित करने वाली अधिकांश सूचनाएं पश्चिम से आती हैं, सिर्फ अंग्रेजी वाले देशों से आती हैं। यह नही हो सकता कि वे अंग्रेजी चिन्तन-पद्धति को स्वीकार करें और उससे निकले हुए कुछ खतरनाक शब्दो या खतरनाक धारणाओ को मानने से इन्कार कर दें। जो गुड़ खाता है, उसे गुलगुले खाने ही पड़ेंगे।

हिन्दुस्तानी बुद्धिजीवी अगर अंग्रेजी को गुड़ की तरह खाये तो शायद उसे वह पचा भी ले, लेकिन उसे वह अफीम की तरह खाता है। अफीम उसके लिए ब्रह्म है। सार्वभौम सत्य है। एकोऽहं द्वितीयो नास्ति ! दूसरा सब कुछ मिथ्या है। इसका नतीजा यह होता है कि वह आलसी और कामचोर बन जाता है। वह हमेशा दूसरे के बनाए धुरों और सूत्रो पर अपना जीवन चलाना चाहता है। वह पिछलग्गू बन जाता है। अपना मार्ग स्वयं नहीं खोजना चाहता। अपना दीपक स्वयं नहीं बनना चाहता। उसकी सृजनशील, आलोचनात्मक बुद्धि निष्क्रिय हो जाती है। वह दुनिया की विभिन्न भाषाओ और साहित्यो से सामग्री का आकलन करके, उसमें से दाने और भूसे को अलग-अलग करने की क्षमता नहीं रखता। उसका क्षीर-नीर विवेक समाप्त हो जाता है। इसीलिये पिछले दो सौ सालों से हमारे विश्वविद्यालयों मे अंग्रेजी का घोटा लगाया जाने के बावजूद भी आज तक कोई शेक्सपियर, कोई मिल्टन या कोई वर्डसवर्थ पैदा नहीं हुआ। शेक्सपियर को तो जाने ही दीजिये, वह तो ५००० साल भी घोटा लगाते रहें तो पैदा नहीं हो सकता। शेक्सपियर या तुलसीदास या सूर या कालिदास जैसे गुलाब अपनी जमीन, अपनी आबो-हवा, अपनी भाषा में ही खिलते हैं।

वहां, जिसे आप 'विश्व-भाषा' समझते हैं, उसमें क्लर्क खूब पैदा किये जा सकते हैं जो बहुत दम मारने पर 'कान्वेन्ट' का मुलम्मा चढ़वाकर जी हुजूर अफसर बन जाते हैं। अगर भारत के बुद्धिजीवी अंग्रेजी को एक दबदबेदार विश्व-भाषा मानकर उसके बोझ के नीचे नहीं दबते और उसे अन्य विदेशी भाषाओं के समान एक उपयोगी विदेशी भाषा मानकर सीखते तो शायद भारत का अधिक भला होता।

राष्ट्रीय एकता और अंग्रेजी

कुछ लोग यह कहते हुए भी पाये गये हैं कि अंग्रेजी के कारण सारा भारत एक हुआ। यदि आप अंग्रेजी को हटा देंगे तो भारत के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।

ऐसी बेहूदा बात वे ही कह सकते हैं जिन्हें या तो भारत के इतिहास का ज्ञान नहीं है या जो तथ्यों को जानते हुए भी गफलत में पड़े हुए हैं। क्या अंग्रेजों के आने के पहले यह देश एक नहीं था ? क्या हजारों साल पहले कश्मीर के लोग रामेश्वरम् नहीं जाते थे और केरल व मद्रास के लोग बदरीनाथ और पुरी नहीं जाते थे ? क्या उत्तर और दक्षिण के इन लोगों को अंग्रेजी ने जोड़ रखा था ? केरल में पैदा होने वाले आद्य शंकराचार्य ने चारों दिशाओं में जो धर्म-प्रचार किया, क्या उसकी भाषा अंग्रेजी थी ? भारत के दिग्-दिगन्तों में गूंजने वाली शिव-पार्वती की प्रेम कथाएं क्या अंग्रेजी में लिखी गई थी ? अंग्रेजी परस्त लोगों के पास इन सवालों का कोई जवाब नहीं है।

हां, वे यह कह सकते हैं कि अंग्रेज ने सारे भारत में रेल बिछाई, सड़कें बनाईं, डाक-तार व्यवस्था फैलाई और इस सारे तन्त्र को जोड़ा अंग्रेजी भाषा ने। लेकिन हमें कोई यह बताये कि अंग्रेज ने रेल की पटरी क्यों डाली ? सड़क क्यों बनाई ? डाक-तार क्यों चलाये ? अगर इन सवालों का ठीक जवाब मिल जाए तो 'एकता की कड़ी' अंग्रेजी का रहस्य अपने आप खुल जाएगा।

जब मैं ८-१० वर्ष का था तो अपने रिश्तेदारों से मिलने के लिये अपनी दादी के साथ आगर जाया करता था। आगर उज्जैन के पास एक छोटा-सा गांव है। खिलौनानुमा छोटी रेल में बैठने में मुझे बड़ा मजा आता था लेकिन मैं हमेशा सोचता था कि आगर जैसे छोटे से स्थान के लिए अंग्रेजो ने रेल क्यों बनाई ? उसका राज काफी दिनों बाद खुला।

मालूम पड़ा कि आगर में अंग्रेजों की छावनी रहती थी, जहां-जहां अंग्रेजों ने अपनी फौजे टिका रखी थी, चाहे वह आगर हो, महू हो, अम्बाला हो या नीमच, सभी स्थानो पर रेलो और सड़कों का जाल बिछाया गया। उन स्थानों पर भी रेल और सड़के ले जाई गईं, जहां खदानें थीं, जहां से ब्रिटेन के कारखानों को कच्चा माल मिलता था। रेलें और सड़कें इसलिये नहीं बिछाई गईं थी कि अंग्रेज हिन्दुस्तानियों को एक-दूसरे के नजदीक लाना चाहता था बल्कि इसलिये बिछाई गईं थीं कि फौजों के शीघ्र आवागमन के द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध उठने वाली आवाजों का गला तुरन्त घोटा जा सके तथा मेनचेस्टर, लंकाशायर और बरमिंघम के कारखानों की मशीनें हिन्दुस्तान के कच्चे सामान को पचाकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद की श्री-समृद्धि को कायम रख सकें। अपने साम्राज्य की हिफाजत और खुशहाली के लिए अंग्रेज ने जो तन्त्र खड़ा किया था, उसे चलाने के लिए एक प्रशासन की जरूरत थी। प्रशासन के लिए एक जोड़ने वाली भाषा चाहिये थी। वह काम किया अंग्रेजों ने।

अंग्रेजी ने हुक्मरानो को जोड़ा, शासकों को जोड़ा, साम्राज्य के नुमाइन्दों को जोड़ा। अंग्रेजी ने जनता को कभी नहीं जोड़ा, देश को कभी नहीं जोड़ा। देश की जनता के लिये, साधारण जनता के लिये तो आज भी अंग्रेजी एक अजनबी भाषा है। पहलगांव की गलियों में घूमने वाला कुली और कन्याकुमारी की धर्मशाला का चपरासी एक ही भाषा बोलता है लेकिन वह अंग्रेजी नहीं है, निश्चित रूप से नहीं है। जब लार्ड मेकाले ने भारत में अंग्रेजी की अनिवार्य शिक्षा की वकालत की तो उनका लक्ष्य हिन्दुस्तान में एकता फैलाना नहीं था बल्कि नौकरों और क्लर्कों की ऐसी फौज खड़ी करना था जिसके कंधे ब्रिटिश साम्राज्य के सुदृढ़ स्तम्भ बन सकें। इन नौकरों, अफसरों, क्लर्कों और फौजी हुक्मरानों की एकता को अगर देश की एकता कहा जा सके तो निश्चय ही अंग्रेजी ने देश की [illegible] की है।

(क्रमशः)

समर्पण का सुमन

आचार्य सोमव्रत विद्यालंकार एम. ए.,
[डी॰ २९, रत्नाविहार, दयानन्द नगर, गाजियाबाद, उ. प्र.]

न तस्य मायया च न रिपुरीशीत मर्त्यः ।
यो अग्नये ददाश हव्यदातये ॥
[सामवेद मन्त्र १०४]

चौपाई

जो नर दिव्य प्रदाता के हित । करता अपना सब कुछ अर्पित ॥
शत्रु अहित कुछ ना कर पाता । चाहे कुछ भी छल अपनाता ॥

पदार्थ—[य] जो [मर्त्य] मानव [हव्य-दातये] पावन पदार्थ के दाता [अग्नये] प्रभु के लिये [ददाश] "सर्वस्व" समर्पित कर देता है [तस्य] उस समर्पित भक्त का [रिपु] शत्रु [मायया चन] छल द्वारा भी [न] नहीं [ईशीत] 'उस पर" शासन कर सकता है।

भावार्थ—जो मानव पावन पदार्थ के दाता प्रभु के लिये अपना सर्वस्व समर्पित कर देता है, उस समर्पित भक्त का शत्रु छल-द्वारा भी उस पर शासन नहीं कर सकता है।

संकेत—१ प्रभु हव्य-दाता है। आहुति के योग्य पावन पदार्थ का नाम हव्य है। प्रभु तो पावन पदार्थों का दाता है। मानव प्रभु का पुत्र है, इसलिये मानव भी प्रभु परमपिता के दिव्य दान का अनुकरण करे। इसी अनुकरण-शीलता में उसका पुत्रत्व निहित है। सच्चा प्रभु-भक्त वही है, जो अपना सब कुछ अग्नि-स्वरूप भगवान् के लिये हृदय से समर्पित कर देता है। सच्चा ईश्वर भक्त का हर कार्य प्रभु-प्राप्ति के लिये होता है, इसलिये उसके जीवन का हर क्षण समर्पण-सुमन की तरह महकता रहता है। २. समर्पण साधना का प्राण है। जिस मानव के जीवन में समर्पण की मधुर-वीणा गूंज रही है, उस समर्पित भक्त को मोह-लोभ रूप भयानक शत्रु उसके ऊपर शासन नहीं कर पाते, क्योंकि उसके ऊपर तो हरपल प्रभु-भक्ति का कृपाकवच संरक्षक बनकर खड़ा रहता है। वे शत्रु तो उसी को परेशान करते हैं, जो भगवान् का बनकर संसार में नहीं रहता है। भौतिक अग्नि जिस प्रकार सांसारिक पदार्थों को भस्म कर देती है, उसी प्रकार अग्नि-स्वरूप प्रभु की भक्ति अग्नि भी भक्त के मनोजगत के विकार-मय शत्रु का नामोनिशान मिटा देती है। आप प्रभु के लिये सर्वस्व समर्पण करके तो देखिये, तब आपको अनुभव होगा कि समर्पण महा-सुख है, परमानन्द है, परमशान्ति का दाता है। समर्पण का वैभव तो वर्णन की सीमा से बाहर है।

शिक्षा—मानव हरपल सकल दोष-निवारक पावन पदार्थ-दाता दिव्य-ज्योतिर्मय प्रभु के लिये समर्पित होकर जिये, ताकि उस पर काम-क्रोध-मोह-लोभ रूप शत्रु शासन नहीं कर सके।

प्रश्न—उत्तर

दाता कैसा प्रभु पदार्थ का ? पावन वस्तु-प्रदाता।
अर्पित नर का क्या करता है ? संरक्षक बन जाता।
दुष्ट-गण किससे डरता है ? जो प्रभु को अपनाता।
छल कपट उसके ऊपर फिर, शासन ना करपाता ॥

भाव—अनुरंजन

मैंने बेमतलब दिया दोष तुमको।
यह न दिया और न क्यों मुझको ॥
मनुज-तन यह उत्तम जो तूने दिया है।
खुशी के सुमन से भर दिया है ॥
भला क्या यह कम जो दिया तूने मुझको।
मैंने बेमतलब दिया दोष तुमको ॥
वस्तु तुम्हारी तुम्हीं इनके दाता।
तुम्हें देने में क्या है मेरा जाता ॥
सुझाओ सुपथ तुम दया करके इसको।
मैंने बेमतलब दिया दोष तुमको ॥
जगत की सभी ठोकरें "सोम" खाकर।
निराशाकी अग्नि में खुद को जलाकर ॥
हुआ मन है आहत सहारा दो मुझको।
मैंने बेमतलब दिया दोष तुमको ॥

उद्‌बोधन

मन ! प्रभु-अर्पित हुये बिनारे, कहां सुखों का नाम ?
चाहे कितना संग्रह कर ले, जगती का सुख-धाम ॥
नहीं बचा पायेगा तुमको, कोई ज्ञान-शिखर भी।
डूबेगी नौका तट पर ही, होगा तू बदनाम ॥
राग-द्वेष का मन में मेला, हरपल लगा हुआ है।
नाश सुनिश्चित बिलकुल तेरा, प्रभु का दामन थाम ॥
अगर न होना चाहे आहत, दुनियावी-चोटों से।
शरण गहो प्रभुवर की तुम मन ! हो करके निष्काम ॥

पाक जेलों में सड़ रहे भारतीय नागरिक

पाकिस्तानी जेलों मे अभी भी सैकडो भारतीय नागरिक नारकीय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। ऐसे कई नागरिक अमानवीय यातनाए झेलते-झेलते मर खप गए हैं। बहुत से जेलो की दीवारो से सिर पटक पटक कर अपना दिमाकी सन्तुलन खो बैठे है। इस बात की जानकारी उन बदनसीब भारतीयो ने दी है, जो हाल ही मे पाकिस्तान की जेलो म कई सालो की कैद काट रहे भारत लौटे है।

२६ सितम्बर १९७५ की बात है पजाब के जिला फिरोजपुर के सरहदी गाव सलेमपुरा के एक जे बी टी अध्यापक रमेशसिंह दत्ता जो फाजिल्का तहसील के ममदोट ब्लाक के सरकारी मिडल स्कूल (गाव मल्लूवाला) मे पढाते थे, सुबह सवेरे शौच के लिये खेतो मे गये, मगर हल्का-हल्का अधरा होने के कारण गलती से सरहद पार कर गये और उन पाकिस्तनी रजरो के काबू आ गये जो कुछ ही पल पहले वहा से गायब हुए तस्करो को खोज रहे थे। वह दत्ता को हथकडी पहना कर और आखो पर पट्टी बाधकर जीप मे डालकर ले गये। जहा जाकर पट्टी खोली गई, वह लाहौर का पूछताछ केन्द्र था। यहा कुछ दिनो के भीतर ही दत्ता साहिब को इस बात का पता चल गया किसी निर्दोष का किस तरह गुमराह बना लिया जाता है। रमेश को लाहौर केन्द्रीय जेल मे रखने के बाद जिला दडाधिकारी कसूर के समक्ष उन पर मुकदमा चलाया गया। उन्हे तीन महीने की सजा सुनाई गई मगर उनके विपरीत उन्हें चार साल तक मुलतान जेल मे बन्द रखा गया। मुलतान के जिलाधीश ने भी पूरी जाच पडताल के बाद दत्ता को रिहा करने की सिफारिश की, मगर उसका कोई असर नही हुआ। हैरत तो इस बात की है कि वह लगभग ९ साल तक भारत लौटने के लिये अपनी बारी की प्रतीक्षा करते रहे। अन्त मे १३ साल बाद उनकी वापसी सम्भव हो सकी। दत्ता जब घर लौटे तो उनका हुलिया देखकर स्वय उनकी मा ने उन्हे पहचानने मे देरी की।

दत्ता ने अपनी राम कहानी सुनाते हुए बताया कि कैसे उसे बर्फ पर लिटा कर पीटा जाता रहा। टार्चर सैल मे करट के झटके दिये गये और घण्टो उल्टा लटकाया गया। उसके बाद सालो तक सुबह एक कप चाय दोपहर को दो रोटिया और शाम को एक रोटी किसी गली सडी दाल या सब्जी के साथ दी गई।

मुलतान जेल म बिताये दिनो को याद करके दत्ता आज भी सिहर उठते हैं। उन्होने बताया कि 'वहा मुझे एक कोठरी मे बन्द कर दिया जाता सर्दी के दिनो मे न पेट भर खाना मिलता न तन ढापने को कोई गर्म कपडा, मैं सारी-सारी रात ठिठुरता रहता।

दत्ता बताते है कि वहा पर जब भारतीय कैदियो पर कोडे बरसाये जाते हैं तब उनके मु ह के आगे लाऊडस्पीकर का माइक रख दिया जाता है। ताकि उसकी चिल्लाहट सुनकर बाकी कैदी दहल जाये।

जम्मू नगर का वासी रोशनलाल जला जो लम्बी कैद और यातनाओ के कारण अपनी उम्र से कही अधिक बूढा दिखने लगा है, बताता है कि उसे सियाल कोट के फील्ड इंटैरोगेशन सेंटर, स्पेशल ब्रांच किला लाहौर और फैडरल इंटैरोगेशन सेंटर रावलपिंडी मे रखा गया। उसके अनुसार इस समय मोटे तौर पर १६० के करीब भारतीय मियावाली जेल में बन्दी हैं। १०० के लगभग मुलतान जेल और १५० के करीब कोच सैन्ट्रल जेल लाहौर मे हैं।

रोशन लाल जला को मार्च १९७२ मे जासूसी के आरोप मे गिरफ्तार किया गया था। पूरी आस-उम्मीद छोड चुकी उसकी मा और पत्नी को दस बरस पहले एक कश्मीरी मुसलमान ने उसके पाकिस्तान की जेल मे होने की सूचना दी थी। वह १६ साल बाद रिहा हुआ। इस बीच कई कुछ घट गया। उसकी घरवाली दिमाग की रसोली के कारण स्वर्ग सिधार गई। उसका एक बरस का बेटा बढकर युवक बन गया। बेचारी बूढी मा ने पौत्र की उम्मीद पर उम्र काट ली।

फिरोजपुर के क्षेत्र का लक्ष्मणसिंह जिससे गुप्तचर विभाग मुहम्मद बशीर मलिक के नाम के तहत जासूसी करवाता था और जो १९७४ मे पाकिस्तान की पुलिस के काबू आ गया था, ने भी पाकिस्तानी जेलो मे भारतीय के साथ हो रहे अन्याय के दु ख गिनाये हैं। वह जिला होशियारपुर के गाव नगल चोरा के कश्मीर सिंह सुपुत्र सरदार सिंह, गुरदासपुर के गाव भाडा के रूपलाल सपुत्र चरणदास और जम्मू के मदन लाल सुपुत्र प्रभातराय का भी जिक्र करता है, जो उसके साथ ही जेल मे अमानवीय पीडा झेल रहे थे। उसने बताया कि रूपलाल लगभग पागल हो चुका है।

—उज्जवलसिंह सैनी

(सान्ध वीर अर्जुन २८-६-८८ से)

वैदिक लाइट के ग्राहक बनिये

वैदिक धम एव सस्कृनि के ज्ञानवर्धन के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित अ ग्रेजी मासिक पत्रिका 'वैदिक लाइट" पढ़िये। वार्षिक शुल्क, डाक व्यय सहित, भारत मे ३०), विदेशों मे हवाई डाक से १५०) तथा समुद्री डाक से ८०) मात्र।

कृपया सम्पर्क करें —

सम्पादक वैदिक लाइट"

[illegible]

१/२ आसफअली रोड, नई दिल्ली-२

आर्यों के आवश्यक कर्म

ले०—महात्मा हंसराज

प्रथम आवश्यक बात : अपने आपको मत छुपाओ

आर्यसमाज की उन्नति के लिये पहली बात यह होनी चाहिये कि हर आर्य समाजी अपने आपको स्वयं आर्यसमाजी घोषित करे। कहीं भी अपने आर्यत्व को छुपाने का प्रयत्न न करे। किसी भी प्रलोभन, भय अथवा डर के कारण अपने आर्यपन को तिलांजलि देना, आर्य समाज के लिये अत्यन्त घातक है। संसार में जितने भी मत हैं, सब में भली प्रकार यह बात पाई जाती है, जैसा कि हजरत ईसा ने कहा है, "जो संसार में मुझसे इन्कार करेगा, मैं प्रलय के दिन उससे इन्कार करूंगा। इसका भाव यह है कि जो व्यक्ति ईसा का चेला होकर भय के कारण यह प्रकट करेगा कि मैं ईसाई नहीं हूं, तो प्रलय के दिन जब खुदा का दरबार लगेगा, तो ईसा कहता है कि मैं उस दिन खुदा के सामने साक्षी देते समय इस तथ्य से इन्कार कर दूंगा कि यह ईसाई है। इस प्रकार वह नरक में भेजा जायेगा। इसी प्रकार मुसलमानों में भी अपने मत के सम्बन्ध में कठोर आज्ञा पाई जाती है। मुसलमानों में सम्भवत सब कुकर्मों का प्रायश्चित्त सम्भव है, सब पाप क्षमा हो सकते हैं, परन्तु जो खुदा तथा उसके रसूल से इन्कार करे, वह कदापि क्षमा नहीं किया जा सकता। वह अवश्यमेव नरक की ज्वाला में जलता है।

आर्य समाजियों को अपने दैनिक जीवन में किन बातों पर आचरण करना चाहिए—इसका बड़ा मार्मिक वर्णन महात्मा जी ने इस लेख में किया है। प्रत्येक आर्य को इस लेख को न केवल पढ़ना चाहिये, प्रत्युत इस पर आचरण भी करना चाहिए।

बौद्धों में भी यह रीति थी कि जब कोई नया व्यक्ति मत स्वीकार करता था तो उसे सब लोगों के सम्मुख इन तीन बातों की घोषणा करनी पड़ती थी—

(१) मैं बुद्ध की शरण में जाता हूं। (२) मैं धर्म की शरण में जाता हूं। (३) मैं संघ की शरण में जाता हूं। इस प्रकार उससे सार्वजनिक स्वीकृति ली जाती थी कि वह बहुमत में प्रविष्ट हो गया है।

सिक्खों में भी गुरु गोबिन्द सिंह ने सिखों के लिए प्रत्यक्ष चिन्ह नियत किये, यद्यपि तब सिखों के लिए बड़ा विकट समय था। जैसे सर्प के मारने वालों को पुरस्कार प्राप्त होता है इसी प्रकार मुगल शासकों के काल में जो व्यक्ति सिख का सिर लावे, शासन की ओर से उसे पुरस्कृत किया जाता था। इस प्रकार सिख गाजर-मूली की भांति काटे जाते थे। इतनी यातनाओं के होते हुए भी गुरु ने सिखों के लिये अपने बाह्य धार्मिक चिन्ह नियत करने आवश्यक समझे। वैदिक धर्म ने भी इस बात की कि अमुक व्यक्ति वैदिक धर्मी है, चिन्ह नियत किये हैं—एक, शिखा रखना प्रत्येक वैदिक धर्मी के लिये, चाहे वह किसी भी वर्ण का हो, आवश्यक है। दूसरा चिन्ह जो वैदिक धर्मियों के लिए नियत है, वह यज्ञोपवीत है। इसके अतिरिक्त तीसरा चिन्ह जो कि आर्यों के लिए नियत है, वह प्राचीन ऋषि-मुनियों की अभिवादन की विधि, एक शब्द अर्थात् "नमस्ते" है।

अत. सब मतों में यह शिक्षा दी गई है कि वे अपने धर्म अथवा विश्वास को कतई न छुपावें, प्रत्युत विपत्ती के समय सब छाती तानकर अपने मत को प्रकट करें। जिस प्रकार यह बात अन्य मतों के लिए आवश्यक है वैसे ही आर्य समाजियों के लिये भी आवश्यक है, जो व्यक्ति हृदय से तो आर्यसमाजी है परन्तु किसी दबाव के कारण आर्य समाजी होने से इंकार करता है वह आर्य समाज की घोर हानि पहुँचाता है। ऐसे लोगों ने सचमुच आर्य समाज को बहुत हानि पहुँचाई है। अत ऐ आर्य भाइयो ! तुम कभी अपने आपको मत छुपाओ। जहां भी तुम्हें अवसर प्राप्त हो तुम अपने आपको प्रसिद्ध करो कि मैं आर्यसमाजी हूं। अपने घर पर कहो कि मैं आर्य समाजी हूं। अपने पिता से, अपनी माता से, सगे सम्बन्धियों से, जहां तुम कार्य करते हो वहां अपने सहयोगियों से, अपने मित्रों से और यदि अवसर प्राप्त हो तो अपने अधिकारियों से, कह दो कि मैं आर्य समाजी हूं। तुम जहां जाओ, अपने आर्यपन को मत छुपाओ। सार्वजनिक रूप से कहो कि मैं आर्य समाजी हूं। स्मरण रखो कि जो व्यक्ति तनिक भय से अपने आर्य समाजी होने से इन्कार कर देता है वह आर्य समाज के लिये कलंक है। तथा वह आर्यसमाज की कुछ सेवा भी नहीं कर सकता। (क्रमश)

चरित्र हीनता का परिणाम

सनी और शिखा की मां गिरफ्तार

नई दिल्ली २६ जून। शिखा और सनी की मां इन्दु अरोड़ा को आज तीसरे पहर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उस पर अपने प्रेमी अजीत सेठ के साथ अपने बच्चों की हत्या की साजिश में शरीक होने का आरोप है। उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया है। ६ वर्ष के सनी और तीन वर्ष की शिखा को अजीत ने शुक्रवार की दोपहर पूसा के पास एक पार्क में बांधकर जला दिया था। दोनों बच्चे बुरी तरह झुलस गये थे। शिखा ने उसके दो घण्टे बाद दम तोड़ दिया था और सनी की मौत चौबीस घण्टे बाद हुई। इन्दुअरोड़ा ने आज इन्द्रपुरी थाने में पूछताछके दौरान अपना जुर्म कबूल कर लिया। उसने अपने प्रेमी अजीत सेठ के साथ मिलकर बच्चों के कत्ल की साजिश को बड़ा सफाई के साथ अंजाम दिया।

कत्ल से एक दिन पहले अजीत और इन्दु चोरी छिपे मिले व पूरी योजना को आखिरी रूप दिया। इन्दु ने ही अपने प्रेमी को बच्चों के उनके टीचर के यहां से लौटने का समय बताया, ताकि उनका अपहरण करने में आसानी हो।

कत्ल के दिन तीन बरस की शिखा पहली बार स्कूल गई थी। पुलिस के मुताबिक इन्दु ने ही उसे जानबूझ कर सनी के साथ भेजा था, ताकि एक ही झटके में दोनों बच्चों से छुटकारा पाकर उसके प्यार की राह आसान हो जाए।

शुक्रवार को दिन में करीब ग्यारह बजकर पांच मिनट पर दोनों बच्चे स्कूल से बाहर आए। वहां उनका रिक्शावाला और मोटर साईकिल पर सवार अजीत उनके इन्तजार में थे।

अजीत ने जैसे ही बच्चों को मोटर साईकल पर बिठाया रिक्शावाले ने एतराज किया। लेकिन उसे एक रुपए का नोट थमाकर अजीत ने चलता कर दिया।

पूरी सफाई से इस योजना पर अमल करने के बावजूद इन्दु एक जगह मात खा गई और पुलिस ने उसी बिना पर उसे धर लिया। इन्दु करीब साढ़े ग्यारह बजे स्कूल पहुँची और उनकी टीचर श्रीमती बाली से बच्चों के घर न पहुँचने के बारे में पूछताछ की। श्रीमती बाली ने उसे बताया कि बच्चों को तो कोई आदमी मोटर साइकिल पर बिठाकर ले गया। इन्दु के परेशान होने पर बाली ने उसे पुलिस को सूचना देने का सुझाव दिया। इसके बावजूद इन्दु ने पुलिस को इत्तला नहीं की और बस इसी सुराग के बूते आज पुलिस ने उससे सब कुछ उगलवा लिया।

पुलिस को इत्तिला देने के बजाय इन्दु अपनी सास के घर चली गई और वहां उसने रोना-धोना शुरू कर दिया।

आर्यसमाज की गतिविधियां

आर्य वीर दल का शिविर खण्डवा (म. प्र.)

आर्य समाज खण्डवा के प्रधान श्री भावजीभाई मानुसानी, उपप्रधान श्री कृष्णलाल आर्य एवं मन्त्री श्री लक्ष्मीनारायण जादव ने एक संयुक्त बयान मे बताया कि जून मास की २१ से ३० जून १९८८ तक आर्य समाज खण्डवा के तत्वावधान मे "आर्य वीर दल" का एक शिविर सम्पन्न हुआ जिसमे नवयुवको मे राष्ट्रीयता एवं सांस्कृतिक चेतना जाग्रत करने हेतु प्रयास किया। इस शिविर मे मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र के करीब १०० विद्यार्थियो ने भाग लिया शिविर मे भाग लेने वाले नवयुवको के लिए भोजनादि की व्यवस्था नि शुल्क आर्य समाज खण्डवा के द्वारा की गई।

भावजीभाई मानुसानी, प्रधान
आर्य समाज, शिवाजी चौक
(खण्डवा म० प्र०)

आर्य वीर दल का सम्मेलन समाप्त

आर्य वीर दल के सभागीय अधिष्ठाता श्री चम्पालाल अरोडा (एडवोकेट) ने एक भेंट मे बताया कि आगर क्षेत्र का एक दिवसीय आर्य वीर सम्मेलन दिनाक १४ ६ ८८ को केवडा-स्वामी आगर मे सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन मे आगर क्षेत्र के ग्रामीण अ चल के करीब ५० ग्रामो के ५०० आर्य वीरो ने भाग लिया।

नागराज जादव
तहसील मण्डल पति
आर्य वीर दल आगर (मालवा)
जिला शाजापुर (म० प्र०)

आवश्यक सूचना

आर्य बन्धुओ व माताओ
विगत आठ वर्षों मे (वैदिक धर्म मे दीक्षित होने के पश्चात) आप सब ने मुझे असीम स्नेह दिया और सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी के आशीर्वाद से मैं आर्य समाज का प्रचार प्रसार करता रहा, अब पूज्य स्वामी जी के आशीर्वाद से मैंने अपना भवन खरीद लिया है अत अब आप सब की कृपा से वेद प्रचार हेतु वार्षिक उत्सव या अन्य कार्यक्रमो हेतु या मेरे साहित्य को प्राप्त करने हेतु केवल निम्न पते पर ही सम्पर्क कर। कष्ट के लिये क्षमा।

—डा० आनन्द सुमन (वैदिक प्रवक्ता)
४०-बी० सेवक आश्रम रोड
देहरादून-२४८००१

आत्म क्षुद्रता

(पृष्ठ ३ का शेष)

आधार पर मैं कुछ कार्य ससार मे कर सकता हूं मैं निर्बल व निस्सहाय नहीं हूं। इस प्रकार गिरे हुए मन को गिरने न देकर उठाना चाहिये। मनोबल की दृढता से समस्त गुण स्वय प्रकट और विकसित हो जाते हैं।

महाभारत मे कर्ण का यही हाल हुआ, उसे युद्ध मे इतना धिक्कारा गया कि उसका मनोबल टूट गया। इतना बड़ा महारथी भी यदि मनोबल के गिरने से हतोत्साहित हो सकता है तो साधारण व्यक्ति की बात ही क्या है। मनोबल के क्षीण हो जाने से सहज गुण भी दबे पड़े रहते हैं। मन को छोटा और कमजोर न होने दें।

मन एव मनुष्याणा कारण बन्ध मोक्षयो

मन ही मनुष्य के बन्धन और मुक्ति का कारण है। इसलिए अपने मे कभी आत्मक्षुद्रता नही आने देनी चाहिये। ऐसे अनेको उदाहरण हैं कि जिन व्यक्तियो को प्रोत्साहित किया गया वह आगे चलकर राष्ट्र उन्नायक बने।

यज्ञशाला का उद्घाटन

आर्य समाज जोडासदन पूर्वी चम्पारण (बिहार) के यज्ञशाला का शिलान्यास श्री रामचन्द्रसिंह 'क्रान्तिकारी" (नेपाल) के पौरोहित्य मे श्री गुलिसिंह "संरक्षक" के करकमलो द्वारा शिलान्यास का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमे स्थानीय आर्य समाज के सभी सदस्यगण, मन्त्री एव प्रधान उपस्थित थे।

—मन्त्री आर्य समाज जोडासदन

शोक समाचार

—मुझे यह सूचित करते हुए अत्यन्त हार्दिक दु ख है कि स्थानीय बिन्दकी के आर्य समाज एव दयानन्द इण्टर महाविद्यालय के सस्थापक एव अध्यक्ष श्री बाबूलाल जी आर्य का ७५ वर्ष की आयु मे कुछ ही दिनों की अस्वस्थता के उपरान्त दिनाक १६-६-८८ को हृदयाघात से स्वर्गवास हो गया।

दिनाक १७-६-८८ को उनके पार्थिव शरीर का अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक विधि से दयानन्द महाविद्यालय, अजमेर के वेद-आचार्य श्री प० देवशर्मा जी के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ।

दिनाक १९-६-८८ को प्रात. ८ बजे से उनकी दिवगत आत्मा की चिरशान्ति सद्गति हेतु "शान्ति यज्ञ' का आयोजन किया गया।

—स्नातक देवव्रत शर्मा

—दिनाक १२-६-८८ को आर्य समाज मधुकर (देवघर) में भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री उमाकान्त मोदी जी की माता का देहान्त हो गया है।

अत शोक सतप्त परिवार के प्रति सवेदना और दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई।

—नसीबलाल मन्त्री

—प० गम्भीर राई आर्य के पिता जी श्री जे० बी० राई ८५ वर्ष की आयु में एक ही दिन की बीमारी से दिनाक २२-५-८८ को स्वर्ग सिधार गए। वे अपने पीछे एकपत्नी चारपुत्र ७ पुत्री और पोते पोतिया छोड गए।

हम उनकी आत्मा के लिये प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

—इन्दिरा

—भूतपूर्व उपप्रधान आर्य समाज वरगल और स्वातन्त्र्य समर सेनानी, गिरयाजीपेठ वरगल के एकलौता पुत्र अमृत कृष्ण आर्य का ३१वीं वर्ष की आयु मे आकस्मिक निधन २१-२-१९८८ को हो गया और पत्नी श्रीमती ईश्वरम्मा जी का निधन ६०वीं वर्ष मे १-६-१९८८ को हो गया। २ ६-१९८८ को वृहत यज्ञ प्रार्थना हुई। पुराने आर्य महानुभाव तथा प्रतिष्ठित सज्जनों ने भाग लिया।

माता सत्यवती दिवालयमगान् मुक्त्वा तनूं भौतिकीम्

—आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री, दर्शनवाचस्पति

आर्या सत्यपरायणा शुचि रुचिर्धर्मव्रता विश्रुता,
या सामाजिक-कार्य-कर्तृ-महिला नामग्रणी सात्विकी।
दिल्ल्यामार्य समाज गौरव गुण ग्रामभिरामा रमा,
माता सत्यवती दिवालयमगान् मुक्त्वा तनूं भौतिकीम् ॥१॥
प्रेमाङ्के समलालयत् सुत सुतान् वात्सल्य मूर्ति सती,
काठिन्ये कुलसङ्कटे धृतिशिला धैर्यं ददानाऽनिशम्।
बालान् सा रुदती विहाय सहसा यातु सुपर्वालयम्,
सुस्निग्धाऽपिच निष्ठुरेव जननी निर्मोह माधिश्रिये ॥२॥
यत्प्राणेश्वर निष्ठुर व्रत यति दुःसह्यपीडा कुलाम्,
रोगाक्रान्त शरीर यष्टिमपि ता वैच्छन् मुहुर्वीक्षितुम्।
कि-त्वेषा पतिभक्ति गौरववती ध्याय-त्यजस्र पतिम्,
नानन्द समनुभ्यताऽपि विकला त्वानन्दबोध सति ॥३॥
हि-द्यान्दोलन धेनुरक्षण सुकृत् सत्याग्रहे निग्रहे,
काराऽऽवास मवाप्य हृष्ट मनसा दुःख विषेहे चिरम्।
तस्यै निर्जरकेतन प्रतिगतायै सद्गति प्रार्थये,
तद्विच्छेदज दुःखवह्नि विधुराव बन्धून समा श्वासयत् ॥४॥

अर्थ—सत्य परायण, पवित्र रुचिमति, धर्मव्रत सामाजिक कार्यकर्त्री महिलाओ मे प्रसिद्ध अग्रणी, सतोगुण वृत्तिवाली, दिल्ली मे आर्यसमाज की गौरव वती गुणग्राम विभूषित आर्य नारी माता सत्यवती देवी अपने नश्वर भौतिक शरीर को छोडकर दिवगति को प्राप्त हो गई ॥१॥

वात्सल्य की साक्षात् मूर्ति सती साध्वी माता सत्यवती ने अपनी निर्मल गोद मे अपने पुत्र पुत्रियो को बडे स्नेह से पाला। बडी से बडी कठिनाई और कुल के सकट मे चरित्र की अडिग शिला बनकर जो निरन्तर धैर्य बधाती थी। अति स्नेह से परिपूर्ण हृदय वाली होकर भी उस मा ने रोते हुए अपने बालको को छोडकर आज निष्ठुर बनकर स्वर्ग जान के लिए निर्मोहभाव का आश्रय ले लिया ॥२॥

जिस निष्ठुर प्राणेश्वर के निर्मम सन्यास व्रत न असह्य पीडा से व्याकुल, भीषण रोगाक्रान्त शरीर यष्टि का दर्शन करन की भी अभिलाषा नही की। किन्तु भारतीय ललनाओ की परम्परा की प्रतीक भूत पति की भक्ति से गौरववती माता सत्यवती निरन्तर पति का ही ध्यान करती रही। आनन्द-बोध के होते हुए भी जिसे प्रस्थान काल मे आनन्द की अनुभूति भी न हो सकी ॥३॥

हिन्दी आन्दोलन और गोरक्षा के सुकृत सत्याग्रह मे निगृहीत (गिरफ्तार) कारावास मे रहकर भी प्रसन्न मन से दुःखो का चिरकाल सहन किया। ऐसी माता का वियोग वह्नि से सन्तप्त बन्धु-बान्धवो को धीरज बधाता हुआ मैं स्वर्गगत उस आत्मा के लिए प्रभु से सद्गति की प्रार्थना करता हूँ ॥४॥

आर्य वीरों से प्रभावित मायकल जौन डिसूजा अरुणकुमार बने

श्री अरुण कुमार

दिनाक २२-५-८८ रविवार को आर्य वीर दल के शिविर मे दल शिक्षक श्रीसुरेन्द्रसिह आजाद ने एक वर्षीय नवयुवक श्री माइकल जान डिसूजा का शुद्धि सस्कार किया और उसे वैदिक धर्म मे दीक्षित करते हुये उसका नाम अरुणकुमार आर्य रखा।

यह युवक आर्य वीर दल के शिक्षण से प्रभावित होकर शिविर मे प्रविष्ठ हुआ तथा स्वात्म प्रेरणा के फलस्वरूप वैदिक धर्म की ओर आकर्षित हुआ उसकी लिखित प्रार्थना पर उसे वैदिक धर्म मे दीक्षित किया गया। आगन्तुक श्री अरुणकुमार आर्य ने प्रतिज्ञा ली कि वह जीवन भर सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करता रहेगा। और आर्य वीर दल का कार्य करता रहेगा।

—ओम्प्रकाश आर्य मन्त्री

नई दिल्ली ३ जुलाई १९८७

श्रीमद् दयानन्दोपदेशक महाविद्यालय शादीपुर यमुनानगर में प्रवेश

स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती की पुण्य भूमि वैदिक साधन आश्रम' यमुना नगर मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रयत्नो से पुन त्यागी, तपस्वी, सदाचारी, कमठ प्रचारक, प्रबुद्ध शिक्षा शास्त्री तैयार करने के लिए सिद्धान्त शिरोमणि तथा शास्त्री की मान्यता प्राप्त उपाधि का प्रवेश १५ जुलाई तक किया जा रहा है। इच्छुक प्रवेशार्थी निकट भविष्य मे शीघ्र पत्राचार एव साक्षात्कार से प्रवेश प्राप्त करे। यहा पठन-पाठन के साथ भोजन व आवास व्यवस्था सर्वथा नि शुल्क रहेगी। प्रारम्भ मे केवल मात्र २००) रुपये प्रवेश शुल्क होगा। १६ वर्ष मे अधिक, अविवाहित और दसवी पास छात्रो को ही प्रवेश दिया जायेगा। अतः अनुकूल वस्त्र एव बर्तन भी साथ लाए।

प्रबन्धक —श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री
श्रीमद् दयानन्दोपदेशक
महा-विद्यालय, शादीपुर
यमुनानगर (हरि०)

प्रवेश सूचना

नि शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय, अयोध्या फैजाबाद का शिक्षा सत्र ८ जुलाई से प्रारम्भ हो रहा है। नैतिक शारीरिक एव सामाजिक विकास हेतु अपने बालको का प्रवेश कराकर लाभान्वित हो। सम्प्रति प्रथमा से आचार्य पर्यन्त पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था है। सम्प्रति प्रवेश शुल्क ३२५) है। दूसरे मास से भोजन शुल्क ८०) मात्र है।

—प्राचार्य

देहरादून में वानप्रस्थाश्रम का शिलान्यास

देहरादून, २५ जून। किशनपुर मे वानप्रस्थाश्रम के भवन का शिलान्यास श्री रामकृष्ण मिशन आश्रम देहरादून के अध्यक्ष स्वामी क्षमानन्द जी के कर-कमलो से हुआ। भवन के लिए लगभग दो बीघे भूमि आर्य दानवीर डा० वेद प्रकाश गुप्त ने प्रदान की है और इस योजना के प्रेरणा-स्रोत पुराने आर्य समाजी ८४ वर्षीय प गोपालसिह जी है।

इस अवसर देहरादून के अतिरिक्त दिल्ली तथा अन्य नगरो से पधारे हुए कई आर्य कार्यकर्ता तथा नगर के गण्य मान्य व्यक्ति उपस्थित थे। प वेदश्रवा जी ने यज्ञ कराया। आश्रम के लिए प्रस्तावित भूमि के निकट ही डा वेदप्रकाश गुप्त द्वारा निर्मित भवन मे 'मानव-कल्याण केन्द्र' का उद्घाटन जनपद के प्रसिद्ध समाज-सेवी तथा जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान प देवदत्त बाली के कर कमलो से कराया गया।

—नैनसुख वर्मा

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१०-७-१९८८) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepay ment License No U 93 Post in D P S O on 8 7 1988

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का नैमित्तिक अधिवेशन

दिनाक १८ जून १९८८
स्थान आर्य समाज मन्दिर दीवानहाल दिल्ली
समय सायकाल ४ बजे

उपनियम के धारा ४ (क) का सशोधन निम्न प्रकार हुआ

अब तक प्रचलित नियम

जिसका नाम किसी आर्य समाज मे सदाचार पूवक दो वष तक अ कित रहा हो और वह अपनी आय का शताश मासिक वा वार्षिक अथवा २५०) वार्षिक वा अधिक धन समाज को देता रहा हो और जिसकी उपस्थिति साप्ताहिक स सगो म कम से कम २५ प्रतिशत तक हो तो वह आय समासद् माना जा सकता है।

सशोधित नियम

जिसका नाम किसी आय समाज मे सदाचार पूवक दो वष तक अ कित रहा हो और वह अपनी आय का शताश वार्षिक १०००) रुपया वा अधिक या कम से कम ५) रुपया मासिक समाज को देता रहा हो और जिसकी उपस्थिति साप्ताहिक स सगो मे कम से कम २५ प्रतिशत तक हो वह आय सभासद् माना जा सकता है।

टिप्पणि समस्त आय जगत् मे प्रचलित उपनियम जो सावदेशिक सभा के नमित्तिक अधिवेशनो द्वारा १९७५ और १९७१ मे सशोधित हुए थे उन सब मे उपरोक्त नया सशोधन त काल लागू समझा जावे।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान
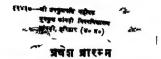
प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) उ० प्र० १ जुलाई १९८८ से हमे यह सूचित करते हुए हष है कि गत वर्षो मे इस गुरुकुल को शिक्षा पद्धति से प्रभावित होकर विभि न आय समाजो सामाजिक एव धार्मिक सस्थाओ सस्कृत प्रमी महानुभावो ने अपने बालको को अधिकाधिक सख्या मे गुरुकुल मे प्रविष्ट कराया। इस दिशा मे गुरुकुल के स्नातको का योगदान भी प्रशसनीय रहा है।

इस वष १ जलाई ८८ से गुरुकुल मे प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। प्रवेश की अ तिम तिथि १५ अगस्त है।

डा० प्रशस्यमित्र शास्त्री पुरस्कृत

आ य समाज के प्रसिद्ध विद्वान महोपदेशक और रायबरेली फीरोज गाधी महाविद्यालय मे सस्कृत प्राध्यापक डा० प्रशस्य मित्र शास्त्री को उनकी अभिनव सस्कृत ललित रचना हास विलास पर १९८६ ई० का ५०००) रुपये का विशेष पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह पुरस्कार उ० प्र० सस्कृत अकादमी द्वारा दिया गया जिसे शास्त्री जी ने ४ जून को त्रिमूर्ति भवन दिल्ली के विशेष समारोह मे माननीय उपराष्ट्रपति डा० शकरदयाल शर्मा के कर कमलो से प्राप्त किया।

—डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री अमेठी

सार्वदेशिक प्रस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८} वर्ष २३ अङ्क २६] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र आषाढ शु० ३ स० २०४५ रविवार १७ जुलाई १९८८ | दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

पद यात्रा में शामिल हरिजनों को प्रवेश करने दें

राजस्थान के मुख्यमन्त्री से आग्रह

स्वामी अग्निवेश की नाथद्वारा मन्दिर के लिए पदयात्रा शुरु

उदयपुर १० जुलाई। उत्सुकता तथा तनाव के बीच आर्यसमाजी नेता स्वामी अग्निवेश हरिजनों के एक जत्थे को साथ लेकर आज यहा से नाथद्वारा की पदयात्रा पर रवाना हो गए।

आर्यसमाज द्वारा जाति तोडो यज्ञ पूरा करने के साथ ही प्रात ग्यारह बजे यह पदयात्रा प्रारम्भ हुई। पदयात्रियो मे पूरा उत्साह देखा गया। पदयात्री विभिन्न प्रकार के नारे तथा "मैं हरिजन हूँ" की तख्तिया लटकाए हुए थे।

प्रमुख लोगो मे हरिजन प्रवेश अभियान सघर्ष समितिके सयोजक सत्यव्रत सामवेदी और राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटूसिह आदि शामिल हैं। महिलाओ का नेतृत्व श्रीमती मृदुला सामवेदी कर रही थी। पदयात्रा म ३०० से अधिक महिलाए आर्य समाजी, हरिजन और दलित वर्ग के लोग शामिल थे। यह जत्था यहा के प्रमुख बाजारो मे होते हुए नाथद्वारा की ओर बढा।

स्वामी अग्निवेश की पदयात्रा के दौरान पुलिस का व्यापक बन्दोबस्त था। आर्य समाज मन्दिर से शुरू हुई इस पदयात्रा मे सबसे आगे पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी पैदल चल रहे थे जिसके बाद एक जीप थी। जीप मे एक झण्डा लगा हुआ था, जिसमे 'ओ३म्' शब्द अकित किया हुआ था। जीप मे बैठे कुछ व्यक्ति गीत गा रहे थे। जीप के पीछे केसरिया कपडे पहने स्वामी अग्निवेश पैदल चल रहे थे। उनके साथ स्थानीय आर्य समाज के कार्यकर्ता भी थे।

इस पदयात्रा के दौरान उदयपुर शहर मे कही किसी प्रकार की गडबडी या घटना नही हुई। पदयात्रा शुरू होने से पूर्व स्वामी अग्निवेश ने कहा कि हमारा उद्देश्य सविधान के अनुसार हरिजनो और दलित वर्ग के लोगो को ऊचा उठाना है तथा जातिवाद और छुआछूत को जड से मिटाना है। उन्होने कहा कि हम किसी भी सम्प्रदाय और धर्म के विरोधी नही हैं। सभी धर्मो का सम्मान करते हुए राष्ट्र की एकता और अखडता को बनाए रखते हुए नया भारत बनाना चाहते हैं।

उन्होंने कहा कि हम डा० अम्बेडकर, महात्मा गाधी, भगवान् बुद्ध और अनेक स्वतन्त्रता सेनानियो से प्रेरणा लेकर ही जातिवाद के खिलाफ अभियान में कदम बढा रहे हैं। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री इन्दौर के श्री जगदीश प्रसाद वैदिक, दिल्ली के श्री कैलाश सत्यार्थी, जाति तोडो यज्ञ के ब्रह्मा प्रसिद्ध हरिजन नेता चिन्तामणि आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए और पदयात्रा मे शामिल हुए। पदयात्री १२ जुलाई को प्रात नाथद्वारा मन्दिर मे प्रवेश करगे।

स्वामी अग्निवेश और उनके साथी रात्रि विश्राम के लिए आज मौनहास गाव रुके। पदयात्री अब तक करीब दस किलोमीटर यात्रा कर चुके है। पदयात्रा कल सुबह फिर शुरु होगी। पुलिस ने बताया कि स्वामी अग्निवेश की पदयात्रा के विरोध मे नाथद्वारा के कुछ निवासियो ने पदयात्रा निकालने की योजना बनाई थी, लेकिन उसे स्थगित किया जा रहा है।

श्री छोटूसिह और श्री सामवेदी ने इसे दुर्भाग्यपूर्ण बताया कि पुरी के शकराचार्य के विरुद्ध चलाये गये अभियान को सरकार अपने

(शेष पृष्ठ २ पर)

शंकराचार्य का पुतला जलाया गया

नई दिल्ली, ९ जुलाई। दलित कल्याण सघ एव अखिल भारतीय हिन्दू महा सभा के तत्वावधान मे आज पुरी के शकराचार्य निरजन देव तीर्थ के हरिजन विरोधी वक्तव्य के विरोध मे न केवल प्रदर्शन का आयोजन किया गया, बल्कि उनका पुतला भी जलाया गया।

प्रदर्शन जन्तर मतर से शकराचार्य की अर्थी और पुतले को लेकर शुरू हुआ और राजधानी के व्यस्त इलाको कनाट प्लेस, पचकुइया रोड से गुजरता हुआ मन्दिर मार्ग स्थित हिन्दू महा सभा भवन तक पहुँचा।

प्रदर्शनकारी न केवल नारेबाजी कर रहे थे बल्कि शकराचार्य की काल्पनिक अर्थी को सडको पर घसीटते हुए उस पर जूते व झाडू भी मार रहे थे और उस पर थूक रहे थे।

हिन्दू महासभा के अनेक नेताओ ने दलित सघर्ष समिति को आश्वासन दिया कि शकराचार्य निरजनदेव के विरुद्ध लडी जा रही इस छुआछूत के विरुद्ध की लडाई मे हिन्दू महासभा उनका साथ देगी।

हिन्दू महासभा भवन पर जमकर नारेबाजी और भाषणबाजी हुई जिसके बाद शकराचार्य के पुतले को आग लगायी गयी।

हिन्दू महासभा के अध्यक्ष इन्द्रसेन शर्मा ने भी दलितो की पुकार पर शकराचार्य के पुतले को जूता मारा।

पुलिस द्वारा मार्ग प्रदर्शन के साथ कडे सुरक्षा प्रबन्ध किये गये थे। कई जगह पुलिस ने उत्तेजित प्रदर्शनकारियों को शात करने का भी प्रयास किया।

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन सदस्यों की सूची

१००५६ श्री महेन्द्रसिंह रेस कोर्स कालोनी सिविल लाइन्स बुलन्दशहर
१२८७५ " प्रधान जी, आर्य समाज २०७ मीरा इन्क्लेव नई दिल्ली
१२९८१ " एम० कुमार शर्मा, प्रो० इन्जीनियर जमशेदपुर
३८५५ " आचार्य जी गुरुकुल आर्य नगर हिसार
१४२३१ " सरला मेहता एलफा रेडियोज चादनी चौक दिल्ली
१२७२१ " मन्त्री जी आर्य समाज आनन्द बाग दुर्गा कुण्ड वाराणसी
७७३५ " रामगोपाल अग्रवाल खिरनी पोखर मुजफ्फरपुर
१२३५८ " पचानन भोक्ता लेडवा पो० पाथरोल देवघर बिहार
१६७८८ " ब्रह्मदत्त जी स्नातक सी ४ ३३२बी जनकपुरी दिल्ली
१३२८८ " अमरपाल जी डा किशनलाल पाल ५३ दरियागज नई दिल्ली
१४२८६ " वसुदेव जी कुलकर्णी मालगाव वेश मु.पो मिरज जि सागली
१४२९५ " रतनलाल इन्द्राम आर्य डमरोड उदगीर लातूर (महा०)
१३३२४ " चौ० हरनामसिंह पिपरिया होशगाबाद
७४७३ " लक्ष्मण मेहता कुर्नेली बाजार हनुमान नगर शहरसा बिहार
२५६ " मन्त्री जी आर्य समाज नई मण्डी मुजफ्फर नगर (उ०प्र०)
१०५१३ " दत्तात्रेय तिवारी डी-८ ग्रीन पार्क एक्सटेंशन दिल्ली
१४२९४ " इन्द्रजीत शर्मा कल्लोवाली अटारी बाजार जालन्धर शहर
१४३०२ " नारायणदास शीतलदास चावला मेन स्ट्रीट देवलाली कैम्प नासिक (महा०)
००५ " उपप्रधान आर्य समाज बहजोई मुरादाबाद (उ प्र)
१४३०९ " भीकसिंह ५१० श्री रूपसिंह बागोरिया भोपालगढ जोधपुर (राज०)
१४३०७ " सरदारसिंह जी ग्राम शाहपुरगढी नरेला दिल्ली
१४३३६ " हसराज गोपीराम पो० टिब्बा कपूरथला पजाब
१४३३७ " वैद्य धर्मपाल जी खानपुर कला सोनीपत (हरि०)
१३१९० " राजवीर आर्य म० न० ११/२२/६६ नरेन्द्र नगर वारगल
१४३२२ " बलदेव कृष्ण आर्य मुल्तान ट्रेडर्स जी टी रोड करनाल
१४३२३ " दत्तात्रेय परशराम गोलवले कोल्हापुर
१४३१२ " प्रो० योगेन्द्र नारायण, नया टोला दानापुर कैंण्ट पटना
२२३८ " मन्त्री जी आर्य समाज अनाज मण्डी शाहदरा दिल्ली
१४३१६ " वैद्य विद्यारतन जी म० न० ४०० नयाबास दिल्ली
१४३२० " नरदेव स्नातक १२८ कृष्णपुरी मथुरा
१३३१५ " मन्त्री जी आर्य समाज दयापुर पटना
१४३३४ " रामचन्द्र जी फेरूपुर राम खेडा धनपरा सहारनपुर

—व्यवस्थापक

एक आवश्यक सूचना

पजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोध पीठ के अध्यक्ष पद से ३०-४-८८ को औपचारिक रूप से अवकाश ग्रहण करने तथा प्रोफेसर पद पर आगामी तीन वर्षों के लिये पुन नियुक्त हो जाने के कारण मेरा निवास तथा विभाग (कार्यालय) का पता एक जुलाई १९८८ से निम्न प्रकार रहेगा—कृपया निम्न पतो पर ही पत्र व्यवहार करे।

निवास जी-२ पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ ।
विभाग का पता ई-१-११५ पजाब विश्वविद्यालय,
दूरभाष (कार्यालय) विद्यालय, चण्डीगढ ३१४०९

निवेदक
भवानीलाल भारतीय

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल का निर्वाचन

१० जौलाई को दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल का निर्वाचन आर्य समाज किदवई नगर मे सम्पन्न हुआ जिसमे प्रधान श्री रतिराम कटारिया, महामन्त्री श्री रामसरन दास और कोषाध्यक्ष श्री धर्मनारायण चुने गए।

पदयात्रा

(पृष्ठ १ का शेष)

विरुद्ध आन्दोलन मानकर चल रही है। वास्तविकता यह है कि हम सरकार का हाथ मजबूत करने के लिये यह आन्दोलन चला रहे है। हमारे अभियान का उद्देश्य राष्ट्र को जोडना है और विघटनकारी शक्तियो के विरुद्ध जनमानस तैयार करना है।

श्री सामवेदी ने मुख्यमन्त्री से आग्रह किया कि यदि वे १२ जुलाई को नाथद्वारा मन्दिर मे पदयात्रा मे शामिल होने वाले हरिजनो को प्रवेश दिला दे तो आर्यसमाज का कोई कार्यकर्ता नाथद्वारा मन्दिर मे नही जायेगा।

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री छोटूसिह और नाथद्वारा मन्दिर मे हरिजन प्रवेश अभियान के सयोजक सत्यव्रत सामवेदी ने कहा कि उनका मन्दिर प्रवेश आन्दोलन पूरी तरह से "गैर राजनीतिक" है। अगर कोई व्यक्ति इसे राजनीतिक रग देता है तो आर्यसमाज उसकी भर्त्सना करेगा।

उन्होने कहा कि आर्यसमाज शुरू से ही अस्पृश्यता निवारण तथा जाति प्रथा को समाप्त करने के लिए कार्य कर रहा है। नाथद्वारा मे हरिजन प्रवेश का यह आदोलन मे भी इसी की एक कडीहै।

पीपुल्स यूनियन फार सिविल लिबर्टीज एव राजस्थान किसान सगठन ने स्वामी अग्निवेश की सभा मे कल रात कुछ असामाजिक तत्वो द्वारा किये गये हमले की कडी आलोचना की। ●

जयसिंह दलोई का निधन

श्री जयसिंह दलोई का विभाङ्ग, लाङ्ग जनपद अन्तर्गत डिफू शहर असम के एक महान समाज सुधारक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वेद के अनन्य भक्त, हिन्दू सस्कृति के रक्षा के लिए सदा प्रयत्नशील तथा हिन्दू भाइयो को ईसाई बनाने से बचाने मे सर्वदा जागरूक प्रहरि रहे। श्रीमद्भगवतगीता को काव्य भाषा मे अनुवाद करवा कर कवि जाति का महान उपकार किया। डिफु मे दयानन्द सेवाश्रम सघ का स्थापना के साथ डी० ए० वी० स्कूल स्थापना करके हजारो बालक, बालिकाओ को नेत्र प्रदान किये। उन्होने वैदिक सस्कृति के रक्षा के लिए केवल असम प्रान्त के लिए ही नही अपितु सारे देश के लिये उदाहरण पेश किया। उनका वैदिक जगत आभारी है। १२-६-८८ को उनकी मृत्यु की खबर पढकर बडा दुख हुआ इस क्षति की पूर्ति नही की जा सकती। आर्य समाज मन्दिर मे आज सभा मे स्वर्गीय दलोई जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई तथा प्रभु से प्रार्थना की गई कि दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें और हम सबको तथा उनके परिवार को उनके वियोग से जो दु.ख हो रहा है उसे सहन करने की शक्ति दे।

पृथ्वीराज शास्त्री, महामन्त्री
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ दिल्ली

—नरायणदास, प्रधान
असम आर्य प्रतिनिधि सभा

श्री विश्वम्भरनाथ भाटिया को भ्रातृशोक

प्रसिद्ध समाजसेवी, दानवीर, दयानन्द माडल स्कूल विवेक विहार (दिल्ली) के प्रबन्धक, आर्यनेता श्री विश्वम्भरनाथ भाटिया के अनुज अवकाश प्राप्त सेनाधिकारी श्री जगदीशचन्द्र भाटिया का अल्पायु मे ही निधन हो गया है।

३ जुलाई ८८ रविवार को उनके निवास स्थान रोहतक मे श्रद्धाञ्जलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमे उनके परिवार एव इष्ट मित्रो के अतिरिक्त आर्यजन काफी सख्या मे उपस्थित थे। वे अपने पीछे पत्नी के अतिरिक्त ३ सुपुत्र और एक सुपुत्री छोड़ गए हैं।

—डा० शिवकुमार शास्त्री

सम्पादकीय

मनुष्य एक यात्री है

चलते रहना मनुष्य का जीवन धर्म क्यो है इस पर एक अन्य दृष्टि से हम विचार करें कि सासारिक जीवन मनुष्य के लिए क्या है ? किसी शायर के शब्दो मे—

समझे अगर इन्सान तो दिन रात सफर है।

इस अस्थिर और परिवर्तनशील जगत मे मनुष्य एक निश्चित समय के लिए आता है और उसके उपरान्त चला जाता है ससार मे वह ठहरने के लिए नही आता है जीवन कोई पडाव नही है बल्कि एक यात्रा है। जो व्यक्ति इस प्रकार का विश्वास करके सन्तोष कर लेता है कि अब मैं ठिकाने से जम गया हू उसे किसी अच्छी स्थिति मे नही मानना चाहिए। ऐसा व्यक्ति अवनति की ओर जाता हुआ ही समझना चाहिए। गतिशील होना ही जीवन का लक्षण है।

मनुष्य एक यात्री है लोक मार्ग में वह स्वेच्छा से खडा नही रह सकता। उसे या तो आगे बढना चाहिए या पीछे हटना पडेगा। ससार मे उसे कहीं भी ठहरने का स्थान है। कही पर उसे अवकाश का दिन नही है। किसी मार्ग दर्शक या सुयोग की प्रतीक्षा मे उसे अपनी लौकिक यात्रा को स्थगित करने का अधिकार भी नही है।

यदि वह आत्मोन्नति करना चाहता है और कही गन्तव्य मार्ग पर पहुँचना चाहता है तो उसे विघ्न बाधाओ के मध्य मे भी चलना पडेगा, चलते रहना ही लोक पथिक के जीवन का मुख्य उद्देश्य है। वह जब उचित मार्ग पर चलता है तो उसे लोक शक्तियो का साहचर्य सहज रीति से प्राप्त हो जाता है। साधारण यात्रा मे भी लोग एक-दूसरे के साथ शीघ्र ही हिलमिल जाते हैं और एक दूसरे की सहायता करते हैं क्याकि सब स्वभाव से यात्री हैं जीवन यात्री को भी सहायको की कमी नही रहती भूले-भटकने वाले ना पडे रहने वाले ससार मे कष्टो को भोगते ही मिलते हैं वे अपने गन्तव्य स्थान लक्ष्य तक नही पहुँच पाते हैं चलने वाले ही आगे बढे हुए मिलते हैं।

जीवन के स्वरूप को एक प्रकार से और देखिए, उससे भी स्पष्ट हो जायगा कि मनुष्य के लिए चलते रहना क्यो स्वाभाविक एव आवश्यक है। बाहर और भीतर से भौतिक जीवन सघर्षमय है। उसकी उत्पत्ति ही सघर्ष से है।

शरीर विज्ञान विद्वान यह बताते हैं कि जन्म धारण के पूर्व लाखो जीवाणुओ मे प्रतियोगिता होती है उनमे जो सबसे प्रबल और शीघ्रगामी शुक्राणु होता है। वही विजयी होता है इससे यह सिद्ध है कि जीवन स्वभाव से ही एक विजय का आकाक्षी सैनिक है सैनिक का काम मोर्चा पर खडा रहता है। पीठ दिखाना नही है। प्रत्येक क्षेत्र के अग्रसर हाने मे ही सजीवता और सफलता है।

चलते रहना ही जीवन के लिये क्यो उपयोगी है चलते रहने का क्या है चलते रहने का अर्थ केवल टहलना, सैर करना, या दौडना नही है किसी आवारा या लकीर के फकीर को हम प्रगतिशील नहीं मानते, चलता तो तेली का बैल भी है परन्तु उससे उसकी महिमा नही बढती। मनुष्य का चलना विभिन्न प्रकार से होता है।

वह चरण से कम, किन्तु आचरण से अधिक आगे बढता है। शरीर से भी अधिक विचारो से चलता है। इसी को व्यावहारिक भाषा मे चाल-चलन कहते हैं।

मानव जगत मे चलने का अर्थ है विकासोन्मुख होना, तथा उत्तरोत्तर उन्नति के लिए उद्योग करना, अभ्यासमय जीवन बिताना, अपनी शक्तियो का सदुपयोग करना।

जीवन का विकास ही उसकी प्रगति है मानव जीवन का सारा रहस्य उसकी वृद्धि मे है उसे दिन-दिन बढते हुए बडा होना चाहिए। यही जीवन की सद्गति है और सद्गति सत्कृति से मिलती है। तात्पर्य यह है कि कर्म मनुष्य का मुख्य वाहन है उसे कर्मचारी होना चाहिये।

भगवान कृष्ण ने कहा है कि—यदि तु कर्म करना छोड दे तो तेरा शरीर यात्रा भी नही चल सकता।

शरीर यात्रापि च तेन प्रसिद्ध येद कर्मण ॥ गीता

कर्म भ्रष्ट होने से मनुष्य पथभ्रष्ट हो जाता है फिर पतित हो जाता है इससे हमे मानना चाहिए कि मनुष्य के चलने और आगे बढने का प्रधान आधार उसका कर्म है। कर्म के अनुसार ही उसकी गति निर्धारित होती है क्रिया और गति परस्परावलम्बी हैं। कर्ममय समार मे क्रिया से अधिक बलवती कुछ नही है। मनुष्य उसी की सहायता से जीवन के लक्ष्य तक पहुँचता है।

क   न च निष्पन्दता लोके दृष्टेह शवतां विना
स्पन्दाच्च फल सम्प्राप्तिस्तस्मात् दैव निरर्थकम्।

योग वशिष्ठ के तात्पर्य के प्रभाव को स्पष्ट करने म सहायक है।

अर्थात् ससार मे मृत शरीर के शिवाय सभी मे क्रिया दिखाई देती है और उचित क्रिया द्वारा ही फल प्राप्ति होती है अत दैव की कल्पना निरर्थक है।

ख   यो यो यथा प्रयतते म स तत्तत फलैकभाक्।
न तु तूष्णी स्थिते नेह केनचित प्राप्यते फलम् ॥

यहा पर चुपचाप बैठे रहने से कुछ प्राप्त नही होता है। जो जो जैसा यत्न करता है वसा २ ही फल पाता है। सक्षेप मे यही समझना चाहिए कि अविरत परिश्रम ही जीवन है। कर्मण्यता ही जीवन का स्वभाव है। निष्क्रियता मनुष्य की मृत्यु है।

जीवन को विकसित करने के लिए मनुष्य को इसी का आश्रय लेना चाहिए। इसके द्वारा वह ससार के लिए और संसार उसके लिए उपयोगी बन सकता है। केवन शारीरिक श्रम और निरुद्देश्य कोई भी कर्म करने से कर्म का प्रयोजन सार्थक नही होना। उसका अर्थ है सोद्देश्य मनुष्योचित कार्य करना। ऐसा कार्य जो निर्माणात्मक हो, और जीवन की वृद्धि मे सहायक हो कर्म हृदय और बुद्धि से भी होता है और उनके सहयोग से, शारीरिक अग के द्वारा भी। यदि हृदय बैठ जाय अथवा बुद्धि काम न करे, तो मनुष्य का कोई भी कार्य सफल नही हो सकता है।

अतएव मनुष्य के सर्वतोन्मुखी विकास के लिए उसके सभी अगो मे युक्तियुक्त सक्रियता चाहिए। अपने प्रत्येक अग और प्रत्येक स्वाभाविक शक्ति को निश्चित दिशा मे सचालित करना ही जीवन को आगे बढाना है। मनुष्य की ध्येयोन्मुख गति को प्रगति कहते हैं। जीवन जब चलना ही है तो अपने लक्ष्य को पहचान कर पूरी शक्ति के साथ उस ओर बढना चाहिए।

आत्मनं रथिनं विद्धि

—डा० कपिलदेव द्विवेदी
कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर (हरिद्वार)

(१)

ज्ञानरूप सदा सत्यनिष्ठो वशी, सच्चिदानन्द रूपो विभुर्व्यापक ।
गन्धहीनस्तथा स्पर्शहीनो ध्रुवो, नित्यमव्यक्तरूप शिवो भास्वर ॥

अर्थ—वह परमात्मा ज्ञानरूप सदा सत्यनिष्ठ, वशी, सच्चिदानन्दस्वरूप, विभु, व्यापक और स्पर्श से हीन, नित्य, स्थिर, अव्यक्त तेजोमय और कल्याणकारी है।

(२)

रूपहीनस्तथा शब्दहीनो रसाद् विच्युतो भानुकान्तिर्गुणातीतक ।
आदि मध्यान्त हीन सदैवाऽव्ययो, ज्ञान नेत्रेण दृष्ट समुद्धारक ॥

अर्थ—वह रूप रस और शब्द से रहित, सूर्यवत् तेजोमय, त्रिगुणातीत, आदि मध्य और अन्त से रहित तथा अव्यय है। ज्ञानदृष्टि से उसको देखने पर वह मनुष्य का उद्धार करता है।

(३)

आत्म-रूपाऽवबोध प्रियश्चेद् भवेद्, देहमेतद् रथविद्धि भोगात्मकम् ।
बुद्धिमेता प्रिया सारथि भावय, प्रग्रह मानस विद्धि चिन्तापरम् ॥

अर्थ—यदि आत्मज्ञान अभीष्ट हो तो भोग-प्रधान इस शरीर को रथ समझो, बुद्धि को सारथि मानो और चिन्तनशील इस मन को लगाम समझो।

(४)

इन्द्रियाणीह भोगषु सक्तानि ते, वाजिरूपा. सुतीव्रा मनोवाहका ।
विद्धि चाऽऽत्मानमेत रथाधीश्वर, भोक्तृरूपेण व्याप्त मनो धी युतम् ॥

अर्थ—भोगो मे आसक्त और मन को खीचने वालो ये इन्द्रिया तीव्र गामी घोडे है तथा यह आत्मा रथ का स्वामी है। यह आत्मा मन और बुद्धि से मुक्त होकर विषयो के भोक्ता के रूप मे स्थित है।

(५)

य सुधीर्ज्ञान-निष्ठो यतो चेतसा, पुण्यधी पुण्यकर्मा सुवर्त्माऽऽश्रय ।
इन्द्रियाणीह वश्यानि तस्याऽऽत्मन, सारथेर्वाजिन शिक्षिता यादृशा ॥

अर्थ—जो मनुष्य विद्वान ज्ञाननिष्ठ, सयमी, पवित्र बुद्धि वाला, सत्कर्मनिष्ठ और सन्मार्गगामी है, उस मनुष्य की इन्द्रिया वश मे रहती है, जैसे योग्य सारथी के शिक्षित घोडे।

(६)

यस्तु दुष्टात्मधीर्ज्ञान हीनो नर, चेतसा चञ्चल पाप कर्माश्रय ।
इन्द्रियाणा वश प्राप्य लक्ष्य-च्युतो, जन्म बन्ध गतो लोकमापद्यते ॥

अर्थ—जिसकी आत्मा और बुद्धि भ्रष्ट हैं जो ज्ञानहीन है, चचल मन और पापकर्मों मे लिप्त है, वह इन्द्रिया के वश मे आकर लक्ष्यच्युत होकर जन्म के बन्धन मे पडकर इस ससार मे आता है।

(७)

ज्ञानमाश्रित्य यो दान्तस्वान्त सुधी, युक्तचेष्ट शुचि सत्यनिष्ठो वशी ।
पूतधी पूतकर्मा तपोनिष्ठया मुक्तिमासेवते जन्मबन्धात् च्युत ॥

अर्थ—जो ज्ञान का आश्रय लेकर सयमी, विद्वान, नियमित चेष्टा वाला, पवित्र, सत्यनिष्ठ, वशी, पवित्र बुद्धि और कर्म वाला, मनुष्य तपस्या के द्वारा मुक्ति का मार्ग अपनाता है, वह जन्म मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है।

(८)

यस्तु मोह गतो नष्ट-सत्वात्म धी रोग-शोक ग्रहैर्ग्रस्त-धी-मानस ।
पाप कर्माश्रयस्त्यक्त धर्मो ध्रुव मोह बन्ध गतो जन्म बन्ध गत ॥

अर्थ—जो अज्ञानग्रस्त, आत्मा बुद्धि और सात्विक गुणा से रहित रोग-शोक आदि से विकृत मन एव बुद्धि वाला पाप कर्मो मे प्रवृत्त और अधर्मी होता है। वह अज्ञान ग्रस्त होकर जन्म-मरण के बन्धन मे पडता है। ●

षष्टि पूर्ति के अवसर पर--

आर्य समाज के विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय

ले०-डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री

भारतीय नवजागरण मे आर्य समाज तथा उसके सस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती की भूमिका के अधिकारी व्याख्याकार डा० भवानी लाल भारतीय विगत ३८ वर्षों से लेखन कार्य मे सलग्न हैं। उनका जन्म आज से साठ वर्ष पूर्व आषाढ कृष्णा ३ स० १९८५ वि० को राजस्थान के नागौर जनपद के अन्तर्गत परवतसर नामक ग्राम मे एक मध्यवित्त वकील श्री फकीरचन्द माथुर के यहा हुआ। उनकी उच्चतर शिक्षा जोधपुर मे हुई जहा से उन्होने सस्कृत और हिन्दी मे एम० ए० तथा आर्य समाज की सस्कृत साहित्य को देन विषय लेकर पी० एच० डी० की उपाधि ग्रहण की।

अपने दीर्घ कालीन साहित्य सेवा काल मे डा० भारतीय के लगभग ६० छोटे बडे ग्रथ प्रकाशित हुए हैं। धर्मों और धर्माचार्यों का तुलनात्मक अध्ययन उनका अपना विषय है और राजा राममोहन राय तथा स्वामी दयानन्द एव महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द शीर्षक उनके तुलनात्मक अध्ययन विषयक ग्रथ विशिष्ट ख्याति अर्जित कर चुके हैं। आर्य समाजी महापुरुषों के जीवन चरित लेखन मे डा० भारतीय को विशेष सफलता मिली है। उन्होने स्वामी दयानन्द का शोध पूर्ण बृहतकाय जीवन चरित 'नवजागरण के पुरोधा' शीर्षक से लिखा, जो १९८३ में दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित हुआ। मौलिक ग्रन्थ लेखन के अतिरिक्त उन्होंने अग्रेजी तथा गुजराती के अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों का हिन्दी मे अनुवाद भी किया है।

डा० भारतीय की साहित्य साधना को विभिन्न पुरस्कारो द्वारा भूरिश सम्मानित किया है। आर्य समाज के वेद सेवक विद्वान पर उन्हे चौधरी नारायण सिंह पुरस्कार १९७२ में मिला। आर्य समाज उपलब्धियो और भविष्य पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने उन्हे १९७६ मे प० लेखराम पुरस्कार से सम्मानित किया। उनकी दयानन्द और विवेकानन्द तथा श्री कृष्ण चरित पुस्तकें प० गगा प्रसाद उपाध्याय स्मारक साहित्य पुरस्कार से क्रमश १९७६ तथा १९८२ मे पुरस्कृत हो चुकी हैं। सत्यार्थप्रकाश के ११वें समुल्लास पर लिखी गई उनकी व्याख्यात्मक कृति ज्ञानदर्शन को १९७७ मे विद्यावती शारदा पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी ने १९८२ मे उन्हे प० गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से तथा आर्य समाज फुलेरा (राजस्थान) ने १९८८ में महर्षि दयानन्द साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया है।

आर्य समाज का इतिहास और उससे सम्बद्ध महापुरुषो की प्रवृतिया उनके अध्ययन और शोध का प्रमुख विषय हैं। गत वर्ष ही उन्होने ११ खण्डो मे स्वामी श्रद्धानन्द की सम्पूर्ण ग्रन्थावली का सम्पादन किया है जिसे श्री गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली ने प्रकाशित किया है। आर्य समाज के इतिहास का साहित्य विषयक पचम खण्ड उनकी आर्य समाज वाङ्मय विषयक विस्तृत और प्रमाणिक जानकारी का उदाहरण है। स्वामी दयानन्द के जीवन एव व्यक्तित्व पर शोधपरक उनके अनेक ग्रन्थ भारतीय नवजागरण के अध्येताओ के लिए अत्यन्त उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करते हैं। उनका व्यक्तिगत पुस्तकालय आर्य समाज और उसके प्रवर्तक विषयक निन्तान्त दुर्लभ ग्रथो का अनुपम सग्रह है। जिसमे लगभग ५ हजार महत्वपूर्ण कृतियो के अतिरिक्त पुराने पत्र-पत्रिकाओ की सैकडो फाइलें भी सुरक्षित हैं।

आर्य समाजी लखन से निरन्तर जुडे रहने के साथ आप आर्यसमाज के सगठन से भी सम्बद्ध रहे है। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री एव उप प्रधान पदो पर अनेक वर्षो तक रहने के साथ साथ वे आर्य समाज की शिरोमणि सस्था सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि के अन्तरग सभासद तथा उपमन्त्री भी रहे। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के वे प्रतिष्ठित सदस्य निर्वाचित किए गये। लब्धप्रतिष्ठ लेखक होने के साथ साथ वे एक सफल एव प्रभावशाली वक्ता भी हैं। स्वामी दयानन्द के जीवन और व्यक्तित्व का विवेचन करने वाली उनकी प्रभावशाली कथायें देश मे सर्वत्र रुचि से सुनी

(शेष पृष्ठ ९ पर)

ऋषि दयानन्द के ये सरकारी जीवन-चरित (४)

—प्रो० भवानीलाल भारतीय

१४—स्वामी दयानन्द का श्री बी के सिंह लिखित यह जीवन चरित पढने से एक बात स्पष्ट होती है कि लेखक का झुकाव राधा स्वामी मत की ओर है। हमे इससे कोई प्रयोजन नही है कि सिंह किस मत को मानते हैं, किन्तु उनके द्वारा की गई गलत बयानियो की अपेक्षा नहीं की जा सकती। अपनी पुस्तक के पृष्ठ ६३ पर वे लिखते हैं कि राधा स्वामी मत के साहब जी महाराज ने १९५८ मे यथार्थ प्रकाश लिखकर कुछ आर्य समाजियो द्वारा राधा स्वामी मत पर किये गये निम्न कोटि के आक्षेपो को उत्तर दिया। वे साहब जी महाराज द्वारा लिखी गई आर्य समाज की आलोचना को दयानन्द की अपेक्षा अधिक सयत कहते है। उनकी दृष्टि मे दयानन्द द्वारा कबीर की आलोचना करना भी न्यायपूर्ण नही था। वे दयानन्द की मोक्ष और उससे पुनरावर्तन विषयक धारणा के भी आलोचक हैं।

समीक्षा—उक्त प्रसग पर इतना ही लिखना है कि स्वय स्वामी दयानन्द ने तो राधा स्वामी मत के बारे मे कुछ भी नही लिखा। जिस युग मे स्वामी दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश की रचना कर रहे थे उस समय राधा स्वामी मत तो अपनी शैशवावस्था मे ही था अत उस पर कलम उठाने की कोई आवश्यकता ही उन्हे अनुभव नही हुई। बाद मे श्री लक्ष्मण तथा प० बुद्धदेव मीरपुरी आदि आर्य विद्वानो ने राधा स्वामी मत की आलोचना मे अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। स्वामी दयानन्द ने मोक्ष से पुनरावृत्ति के सिद्धान्त को नाना युक्तियो और प्रमाणो के आधार पर प्रस्तुत किया है अत उसके खण्डन का प्रयास निरर्थक ही है।

१५—स्वामी दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका की रचना बम्बई मे नहीं की, जैसा कि लेखक ने पृष्ठ ६४ पर लिखा है। भूमिका का लेखन अयोध्या मे १८७७ ई० मे आरम्भ हुआ था। इसी प्रकार १० अप्रैल १८७५ को आर्य समाज की स्थापना डा० मानेक जी की वाटिका मे हुई थी। ये सज्जन पारसी थे। उनका नाम डा० मानकचन्द नही अपितु मानक जी अदेरजी था।

१६—जीवनी लेखक आर्य समाज के बम्बई मे बनाये गये २८ नियमो मे से उस नियम पर आपत्ति प्रकट करता है जिसमे कहा गया है कि जब विवाह, पुत्र जन्म, महालाभ या कोई समय दान व धन व्यय की हो तो आर्य समाज को दान अवश्य दिया जाए। इस नियम मे "पुत्र जन्म" शब्द पर टिप्पणी करते हुए लेखक कहता है कि अर्थापत्ति से इस नियम से यह निष्कर्ष निकलता है पुत्री के जन्म पर दानादि न दिया जाय, जब कि स्वामी जी की दृष्टि मे पुत्र और पुत्री समान ही हैं। पृ० ६६

समीक्षा—हम लेखक की इस आलोचना को सत्य ही मानते हैं। इस नियम का भाव तो गृहस्थ मे किसी प्रसन्नता के अवसर पर आर्य समाज को दान देने से हैं। पुत्री के जन्म पर भी लोगो को खुशी होती ही है। यहा पुत्र से पुत्री का अर्थ भी लिया जा सकता है।

१७—लेखक के अनुसार पूणे मे स्वामी जी द्वारा प्रदत्त सभी पचास व्याख्यान मराठी अनुवाद के रूप मे उपलब्ध हैं। पृ० ६९, यह कथन भी तथ्य विरुद्ध है। पूणे मे दिए गए व्याख्यानो मे मात्र पन्द्रह व्याख्यान ही उपलब्ध हैं।

१८—लेखक का कथन है कि ऋग्वेद १०।१८।८ तथा १०।४०।२, अथर्ववेद [९।५।२७, २७] तथा तैत्तिरीय सहिता [३।२।४] मे विधवा के पुनर्विवाह की अनुमति रहने पर भी दयानन्द का विधवा विवाह को स्वीकृति न देना उनमे साहस की कमी का परिचायक है। शायद वे हिन्दू समाज की मान्यताओ से भयभीत थे।

समीक्षा—किसी से भयभीत होना तो दयानन्द ने सीखा ही नही था। वे विधवा विवाह की वैदिकता के बारे मे भी आश्वस्त थे और उन्होने अपने पूना के व्याख्यानो मे इसका समर्थन भी किया है। द्रष्टव्य उपदेश मजरी।

१९—बरेली के नगर कोतवाल [स्वामी श्रद्धानन्द के पिता लाला नानकचन्द] को स्वामी जी का दृढ़ अनुयायी बताया है। [पृ० ८२] यह गलत है। लाला नानकचन्द मूर्तिपूजक सनातनी थे किन्तु स्वामी दयानन्द की व्याख्यान सभा मे नियमित रूप से उपस्थित होते थे। उन्होने ही स्वपुत्र मुन्शीराम को महाराज के व्याख्यान सुनने की प्रेरणा दी थी।

द्रष्टव्य- कल्याण मार्ग का पथिक

२०—रमा बाई स्वामी जी के आग्रह वश मेरठ आई थी किन्तु उसे मेरठ की आर्य कन्या पाठशाला मे अध्यापिका के रूप मे नियुक्त नही किया गया था जैसा कि लेखक ने पृष्ठ ८८ पर लिखा है।

२१—पाली मे जोधपुर जाते समय स्वामी दयानन्द ने रोहट नामक ग्राम मे रात्रि निवास किया था न कि रोपड मे, जैसा कि लेखक ने १०१ पृष्ठ पर लिखा है। रोपड तो पजाब मे है।

२२—स्वामी दयानन्द के वेद को परम प्रमाण और ईश्वरीय ज्ञान मानने विषयक विचारो के सम्बन्ध मे लेखक की धारणा है कि शायद स्वामी जी ने यह जानकर कि ईसाई और मुसलमान क्रमश बाइबिल और कुरान को दैवी पुस्तक मानते है तो हिन्दुओ को भी उसी प्रकार वेदो को ईश्वरीय ग्रन्थ मानना चाहिए, आर्य समाज मे वेदो के स्वत प्रमाणत्व का सिद्धान्त प्रचारित किया। पृ० ११३

समीक्षा—लेखक की यह धारणा पूर्णतया भ्रान्त तथा सत्य के विपरीत है। वेदो को अपौरुषेय ज्ञान मानना आर्यो के परम्परा से प्रचलित विश्वास के अनुकूल है। उसका ईसाई और मुसलमानो की दैवी ग्रन्थ विषयक विचारधारा से कोई लेना देना नही है।

२३—लेखक कहता है कि स्वामी दयानन्द अपनी धारणा के प्रतिकूल वेदो मे कोई अन्य बात स्वीकार करने के लिये तैयार नही थे। उदाहरणार्थ, उन्हे स्वामी जी का यह मत अस्वीकार्य है कि आर्य लोग मासाहारी नही थे तथा वे नाना देवी देवताओ के उपासक भी नही थे। [पृ० ११४] लेखक ने यह बात लिख तो दी, किन्तु वेद का कोई ऐसा मन्त्र उद्धृत नही किया जिससे आर्यो का मांसाहारी तथा बहुदेवोपासक होना सिद्ध हो सके। अत प्रमाणाभाव मे उनका यह कथन अमान्य है।

२४—लेखक ने वेदो के सम्बन्ध मे धर्मानन्द कोसम्बी तथा ए एल बाशम जैसे विद्वानो की धारणा तो व्यक्त की जो आर्यो के इस धर्म ग्रन्थ को जगली तथा आदिवासियो के मत विश्वासो का सग्रह मानते हैं तथा वह खुद भी वेदो के आविर्भाव काल को ईसा पूर्व १५०० से पीछे ले जाने के लिये तैयार नहीं है किन्तु उसके ऐसा लिखने मात्र से ही न तो वेद काल अत्यन्त प्राचीनता का प्रत्याख्यान होता है और न वेद जगली जातियो के मत विश्वासो के समूह सिद्ध होते हैं। यदि कोई वेद का प्रामाणिक विद्वान वेदो के सम्बन्ध मे अपने विचार व्यक्त करता तो उस पर गम्भीरता से ऊहापोह करना उचित भी होता, किन्तु हम जानते है कि इस जीवनी के लेखक का वेदों के सम्बन्ध मे ज्ञान बहुत सतही है। उन्होने पाश्चात्य वेदज्ञो की धारणाओ को ही उच्छिष्टभोजी बन कर ग्रहण किया है इसलिये वे यह लिखे गये कि वेदो की प्राचीनता विषयक दयानन्द की धारणा का समर्थन करने के लिए कोई विद्वान तैयार नही है और न ही कोई यह मानता है कि वेदो मे गगा, यमुना आदि नदियो का उल्लेख नही है। डा० सिंह को वेद विषयक भारतीय मान्यता स्वीकार नही है और न वे वेदार्थ की निरुक्त प्रतिपादित प्रणाली को ही जानते है। अन्यथा वे ऐसा नही लिखते।

२५—जैसा कि हम यह लिख चुके हैं प्रस्तुत जीवनी का लेखक राधास्वामी मत का अनुयायी जान पडता है। पृष्ठ ११८ पर उसने पुन साहब जी महाराज द्वारा लिखित यथार्थ प्रकाश (अग्रेजी अनुवाद भाग-१ पृ ६६-७२) का हवाला देकर लिखा है कि उक्त महाराज ने स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित मुक्ति से पुनरावृत्ति की धारणा का खण्डन किया है। वह यह भी दावा करता है कि सम्पूर्ण वैदिक साहित्य मे मुक्ति से पुनरावृत्ति का कही उल्लेख नही है। उसका यह कथन असत्य ही है क्योंकि स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास मे इस विषय की चर्चा करते हुए स्वमत के समर्थन मे अनेक शास्त्रीय प्रमाण दिए हैं। (क्रमश)

अंग्रेजी क्यों हटावें ?

—डा० वेदप्रताप वैदिक

(गतांक से आगे)

इसी अफसरी एकता की मेहरबानी के कारण १८५७ का स्वाधीनता सग्राम विफल हुआ। इसी ५०-६० हजार आदमियो की एकता ने देश के करोडो लोगो को पराधीनता के पाश मे बाधे रखा। इसी एकता ने ब्रिटिश साम्राज्य की घिनौनी हरकतो पर एक मोटा पर्दा डाले रखा। यह वही एकता है, जिसने एक तरफ बनारस के जन-आन्दोलन को लाठियो से दबा दिया तो दूसरी तरफ जलियां वाले बाग की जन-सभा को गोलियो से उडा दिया। बनारस की लाठियो और अमृतसर की गोलियो को एकता के सूत्र मे बाधने वाली भाषा अ ग्रेजी ही थी।

हिन्दुस्तान की आजादी के लिए लडने वाले लोग जब तक अ ग्रेजी के सहारे रहे वे आजादी के खुले गीत गाने के बजाय साम्राज्य की बधी-बधाई विरुदावलियां ही गाते रहे। आजादी का सघर्ष कुछ कुलीन शिक्षितो का बुद्धि विलास बनकर रह गया। गाधी ने इस कुचक्र को तोडा। दयानन्द पहले ही हु कार लगा चुके थे। गाधी ने कांग्रेस को गोष्ठी-कक्षो से खीचकर देश की कोटि-कोटि गरीब, ग्रामीण, दलित जनता के द्वार पर ला खडा किया। देसी भाषाओ मे भाषण होने लगे, कांग्रेस के प्रस्ताव दूर से दूर की झोपडियो मे पहुँचने लगे। जिन अधिवेशनो मे पहुँचने लगे। जिन अधिवेशनो मे पहले हवाइयां उडती थी, उन्हीं मे हजारो लाखो की भीड उमडने लगी। भारतीय भाषाओ ने देश मे स्वाधीनता की शक्तियो को एक किया जबकि अ ग्रेजी ने पराधीनता की शक्तियो को बल प्रदान किया।

अ ग्रजी ने न केवल पराधीनता की शक्तियो को एक किया बल्कि भारतीयो का भारतीयो से भी अलग किया। दो रूपो मे अलग किया। एक तो विभिन्न भाषाओ के बीच जो एक स्वाभाविक सेतु बनना था, उसके स्थान पर अ ग्रेजी एक नकली सम्पर्क भाषा बन गई। अ ग्रेजी की उपस्थिति और उसे प्राप्त राज्याश्रय के कारण भारतीय भाषाओ और प्रादेशिक सस्कृतियो के मध्य जो मुक्त आदान प्रदान होना था, वह रुक गया और उसके स्थान पर एक अत्यन्त अस्वाभाविक प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत बनारस और बगलूर के मध्य जितनी निकटता थी, उससे कहीं अधिक निकटता बनारस और लन्दन के बीच स्थापित हो गई। बनारस से बेगलूर जाने का रास्ता लन्दन से होकर गुजरने लगा। हिन्दी और कन्नड के बीच बाग्ला और तमिल के बीच, मराठी और मलयालम के बीच अ ग्रेजी का दलाल आ खडा हुआ। भारतीय भाषाओ और प्रादेशिक सस्कृतियो का परिचय परस्पर सीधे न होकर अ ग्रेजी के जरिये होने लगा। भारतीय भाषाओ की मूलभूत एकता को अ ग्रेजी ने सम्पर्क के स्तर पर विशृखलित कर दिया। यदि अ ग्रेजी हट जाए तो भारतीय भाषाओ की अलगाव की जिन क्यारियो में अ ग्रेज ने बाधा था, वे सब अपने आप ढह जाएगी। भारतीय ज्ञानपीठ इस दिशा मे काफी उपयोगी काम कर रहा है।

अ ग्रेजी ने जो दूसरा अलगाव पैदा किया, वह और भी अधिक खतरनाक साबित हुआ। वह अलगाव था—जनता और नेता के बीच, राजा और प्रजा के बीच, भद्र-लोक और साधारण जनता के बीच। अ ग्रेजी के द्वारा खोदी गई यह खाई अब तक कायम है, समाजवाद और प्रजातन्त्र के सुकुमार सपने इसमें दफन होते रहेंगे।

समाजवाद में बाधक

अ ग्रजी ने हमारे देश मे गैर बराबरी को बढाया है। मैं यह नहीं कहता कि हमारे देश मे जो आर्थिक असमानता दिखाई पडती है उसका एकमात्र कारण अ ग्रजी है लेकिन यह एक निर्विवाद सत्य है कि गैर बराबरी को कायम रखने और बढाने मे अ ग्रेजी का पूरा पूरा हाथ है।

अ ग्र जी तालीम के जरिये गैर-बराबरी का बीज बचपन मे ही बो दिया जाता है। थोडे से बच्चे 'कान्वेन्ट' मे पढते हैं और बहुत से बच्चे टाटपट्टी पाठशालाओ मे। इसका कारण योग्यता नही है बल्कि बच्चे के माता-पिता की खर्च की हैसियत है। यदि वे ज्यादा खर्च कर सकें, १०० या २०० या ३०० रुपये महीना, तो उनके बच्चे 'उत्कृष्ट' स्कूलों में पढेंगे, अन्यथा देश के शेष बच्चो के लिये 'निकृष्ट' स्कूलो की शिक्षा तो है ही। 'कॉन्वेन्ट' की क्या विशेषता है ? कौन सी 'उत्कृष्टता' या ऊचापन है, इनमे ? 'कान्वेन्ट' मे मे चमक दमक वाली वेश भूषा, आरामदेह मेज-कुर्सी, खेल और मनोरजन के प्रचुर साधन तथा घर से आने-जाने के लिए वाहन की व्यवस्था तो होती ही है लेकिन उसकी अ स्मा है—अ ग्रेजी माध्यम की पढाई। यह अ ग्रेजी माध्यम की पढाई बच्चे को बहुत अधिक प्रवीण बनाती हो, कुशाग्र बुद्धि बनाती हो या उसकी समझ का विस्तार करती हो, ऐसी बात नही है। यह सर्वसम्मत तथ्य है कि विदेशी माध्यम की पढाई बच्चे को रट्टू तोता नकलची और आलसी बनाती है। फिर भी माता-पिता अपने बच्चों को अ ग्रेजी स्कूलो मे भेजने के लिये क्यो लालायित रहते हैं ?

सिर्फ इसीलिये कि अ ग्रेजी एक पुल है, जो शिक्षा को नौकरी से जोडता है। हर माता-पिता चाहते हैं कि हमारा बच्चा इस पुल पर चढ जाए। भारत की हर बडी नौकरी के लिए, पद के लिए, लाभ के लिए, एक सभ्य और सुसस्कृत जीवन बिताने के लिये अ ग्रेजी को अनिवार्य बना दिया गया है। इस अनिवार्यता को सहने के लिये, इस मजबूरी से पार पाने के लिये माता पिता बच्चो को 'कान्वेन्ट' मे भेजते हैं। 'कान्वेन्ट' में अपने बच्चो को कौन भेज सकते हैं ? कितने लोग भेज सकते हैं ? सिर्फ मुट्ठीभर लोग ! यही छोटा सा वर्ग पहले से ही सुविधा सम्पन्न होता है और इसी के उत्तराधिकारी नयी सुविधाओ पर कब्जा कर लेते हैं। टाटपट्टी स्कूलो मे पढे हुए करोडो बच्चो के लिए कोई उम्मीद नही है, उबरने का कोई भरोसा नहीं है, आशा की कोई किरण नही है। सुविधाओ पर, अवसरो पर कब्जा करने की धारावाहिकता पीढी दर-पीढी चलती रहती है। क्या यह समाजवाद का पूर्ण निषेध नही है ?

सुविधाओ और अवसरो की यह लूटपाट भी चलती रहे और जनता के सामने एक मासूम मुखडा भी बना रहे, इस चमत्कार को टिकाए रखने मे अ ग्रेजी स्कूल बडी मदद करते हैं। अ ग्रेजी स्कूल में जाने वाले बच्चो की नसो मे प्रारम्भ से ही गैर-बराबरी का जहर घोला जाता है। वे बच्चे अपने आपको कु वर, राजकु वर समझने लगते हैं और देश के अन्य करोडो बच्चो को हिकारत की नजर से देखते हैं। इसका कारण यह नही है कि वे अधिक बुद्धिमान हैं। जो रटता है, घोटा लगाता है, वह बुद्धिमान कैसे हो सकता है ? अ ग्रेजी स्कूल के लडके अपनी बुद्धि की इस कमी को पूरा करते हैं, नखरीले ताम झाम से जैसे कि बदसूरत औरतें सुन्दर दिखने के लिये सोना लाद लेती हैं और दुर्भाग्य यह है कि अपने समाजवाद मे सोने की कीमत सुन्दरता से अधिक है। नौकरियो मे, भविष्य के अवसरो में बुद्धि की परीक्षा नहीं होती, योग्यता की परीक्षा नहीं होती बल्कि अग्रेजी-ज्ञान की परीक्षा होती है।

हमारी फौज की परीक्षा मे क्या होता है ? अग्रेजी भाषा की अनिवार्य परीक्षा होती है और दूसरे विषयो की भी परीक्षा अग्रेजी माध्यम से होती है। अ ग्रेजी का फौज से क्या लेना देना ? दुनिया के बडे-बडे फौजी जनरल अग्रेजी नही जानते ! चगेजखान, बाबर, नेपोलियन, तात्या टोपे, रोमेल, मार्शल ग्रेचको और जनरल ग्याप जैसे लोगो की फौजी शिक्षा क्या अग्रेजी मे हुई है ? फौज मे तो बहादुरी की, नेतृत्व की, देश-भक्ति की, निशाने बाजी की, शारीरिक क्षमता की और दुश्मन के विरुद्ध उचित रणनीति बनाने की क्षमता की परीक्षा होनी चाहिये। कोई नौजवान इन सब गुणों में निष्णात हो लेकिन यदि अ ग्रेजी नहीं जाने तो फौज का अफसर नहीं बन सकता। वह एक साधारण जवान बनने के लिये अभिशप्त है।

(क्रमश:)

आर्यों के आवश्यक कर्म

ले०—महात्मा हंसराज

(गतांक से आगे)

आर्यों का दूसरा कर्त्तव्य : संध्या प्रार्थना

आर्यों के लिए दूसरी आवश्यक बात सन्ध्या तथा प्रार्थना है। ये दोनो प्रत्येक आर्य समाजी के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। इनसे धार्मिक जीवन मे अत्यन्त लाभ होता है। प्रश्न होगा कि सन्ध्या तथा प्रार्थना से क्या बनता है। वाटरवर्क्स ने, जिसके साथ ही नल लगे हुए हैं जो नगर मे चारो ओर पानी पहुँच ते हैं नगर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जल जाता है। यदि वे नल मार्ग मे कहीं टूट जायें तो क्या होगा ? तुम टूटी को भले ही कितना घुमाओ, जल नही निकलेगा। इसका क्या कारण है ? कारण यह है कि जलाशय से इस टूटी का सम्बन्ध टूट गया है। यही स्थिति तार (टैलीग्राफ) की है। एक व्यक्ति एक स्थान पर बैठा सहस्रो कोस तक समाचार पहुँचाता है। परन्तु यदि मार्ग मे कही तार टूट जाए अथवा समाचार लेने वाले को ही कही दूर बिठा दिया जावे, तो भले ही कितनी शक्ति लगा दो, तार का समाचार नहीं आयेगा। इसका अर्थ भी यही है कि तार अपने स्रोत से दूर हो गया है।

अत जिस प्रकार नल मे जल आने के लिए यह आवश्यक है कि वह जलाशय से जुडा रहे, इसी प्रकार तार के समाचार के लिए यह आवश्यक है कि वह भी अपने स्रोत से जुडा रहे। इसी प्रकार मनुष्य मे बल शक्ति तथा ज्ञान की लहर चलाने तथा उसे प्रवाहित रखने के लिए आवश्यक है कि इनका सम्बन्ध भी सब शक्तियो के भण्डार तथा ज्ञान के स्रोत—परमात्मा से जुडा रहे तथा यह क्रम टूटने न पावे। वेद ने कहा है—

(यजु० १ ९९)

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि

तू तेज है वीर्य का स्रोत हैं तथा बल का भण्डार तू ही है। इस प्रकार जब हम अपने विचारो के द्वारा परमात्मा के साथ अपना सम्बन्ध बनाये रखेंगे, उसके साथ अपना नाता जोड लेंगे तो इसका परिणाम यह होगा कि हममें शक्ति, बल तथा ज्ञान की शक्ति आती रहेगी जो प्रतिक्षण हमे प्रसन्न रखेंगी तथा हमारे प्रफुल्लित होने मे सहायता देंगी। परमेश्वर के साथ ऐसा सम्बन्ध प्रार्थना के द्वारा ही बना रह सकता है प्रार्थना मे इस बात का अवश्य अवश्य ध्यान रखो कि तुम परमात्मा को सर्वत्र व्यापक जानो तथा समझो कि तुम वह तुम्हारी प्रत्येक बात को भली प्रकार से सुन रहा है, जैसा कि सन्ध्या के मन्त्रो मे कहा है—प्राची दिगग्निरधिपति आदि-आदि। हे ईश्वर ! तू पूरब की ओर विद्यमान है, तू पश्चिम की ओर भी है, तू उत्तर की ओर है तथा तू दक्षिण की ओर भी है। तू नीचे विद्यमान है, तथा साथ ही ऊपर भी विद्यमान है। इस प्रकार परमात्मा को सर्वव्यापक जानकर उससे सम्बन्ध जोडो। उस परमात्मा को अनुभव करने का अभ्यास सदा करते रहो ताकि यह क्रम टूट न जावे, प्रत्युत अधिक दृढ होकर तुम्हारे लिए अधिक आनन्द तथा सुख का कारण हो।

प्रार्थना के प्रसंग मे विष मत घोलो

परमात्मा की प्रार्थना करने मे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि ईर्ष्या तथा द्वेष की प्रार्थना कभी स्वीकार नही होती। उदाहरण के लिये यदि एक विद्यार्थी यह प्रार्थना करे कि अमुक विद्यार्थी कक्षा मे मुझसे पीछे (नीचे) रह जावे, तथा मैं उससे ऊपर हो जाऊ, तो यह प्रार्थना पूरी न होगी, अथवा यदि एक व्यक्ति यह प्रार्थना करे कि मेरा शत्रु नष्ट हो जावे, तो ऐसी प्रार्थना भी स्वीकार न होगी, क्योकि परमात्मा के लिए तो दोनो एक जैसे ही हैं। ऐसी प्रार्थनाए करने से स्वय अपनी ही हानि होती है। परमात्मा से किस प्रकार की प्रार्थना करनी चाहिए ? अपने मन की शुद्धि ज्ञान की प्राप्ति, तथा शुभ कामनाओ के लिए ही परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिये।

'सबकी उन्नति के चिन्तक' से उन्नति मागो—प्रार्थना मे एक बात यह भी सम्मिलित कर लेनी चाहिये कि हे परमेश्वर ! आर्य समाज की उन्नति हो वैदिक धर्म का प्रचार हो। इससे आपके देश का भला होगा। यह आर्य समाज परमात्मा की आज्ञा को [illegible] के लिए एक [illegible] (साधन) है। इसकी जितनी उन्नति होगी उतनी ही ससार में ईश्वर की आज्ञा बढेगी अर्थात् ईश्वर की आज्ञा के पालन का भाव बढ़ेगा।

प्रार्थना तथा उपासना के लिये यह बात भी स्मरण करने योग्य है कि प्रार्थना के लिए समय नियत करना चाहिए और उसी नियत समय पर प्रार्थना करनी चाहिए। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारा कोई भी कार्य समय पर नहीं होता। परन्तु जो लोग समय पर सोते हैं समय पर भोजन करते हैं, उन्हे ज्ञात होगा कि जब उनके सोने अथवा खाने का समय होता है, ठीक उसी समय उन्हे निद्रा आने लगती है अथवा पेट मे भूख के कारण बेचैनी होने लगती है। इस प्रकार यदि प्रार्थना के लिये भी समय नियत कर दिया जाए तो इसका परिणाम यह होगा कि उस समय हमे प्रार्थना का ही ध्यान आयेगा तथा इस प्रकार ध्यान परमात्मा मे शीघ्र एकाग्र हो जावेगा। इसके विपरीत यदि समय नियत न किया जावे तो परिणाम यह होगा कि कुछ दिन हमें प्रार्थना का ध्यान ही न रहेगा और इस प्रकार नागा (अवकाश) पड जावेगा इसलिये प्रार्थना मे रुचि भी उत्पन्न न हो सकेगी।

प्रार्थना किस समय करें

ब्राह्मण-ग्रन्थो में लिखा है कि हवन सूर्योदय से पूर्व करना चाहिए। दूसरे स्थान पर लिखा है कि सूर्योदय के पश्चात करना चाहिये और तीसरे स्थान पर यह भी लिखा है कि सूर्योदय के मध्य करना चाहिए। ये तीन विभिन्न सम्मतियाँ ऋषियो ने दी हैं। इनको पढकर प्रश्न उत्पन्न होता है कि तीनो मे से कौन सी सम्मति उचित है ? इसका उत्तर भी ऋषि देते हैं कि प्रार्थना तथा हवन आदि तुम इन समयो मे चाहे किसी समय करो, परन्तु जिस समय करना आरम्भ करो, सदा उसी समय ही किया करो। यदि तुम सूर्योदय से पूर्व प्रार्थना अथवा हवन करते हो तो सदा उसी समय किया करो और यदि पश्चात् या मध्य मे आरम्भ करते हो तो सदा ऐसा ही करते रहो आदि। इसकी भी यही विधि है कि सन्ध्या वा उपासना के लिये समय नियत करना अत्यन्त आवश्यक है और उसी समय प्रार्थना के अतिरिक्त किसी और बात का ध्यान न होना चाहिए।

फिर प्रार्थना वा सन्ध्या तथा प्रेम के साथ करनी चाहिए यह नही कि सन्ध्या करने बैठे तो पाच मिनट मे ही समाप्त कर दी। स्वामी जी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' मे लिखा है कि एक घण्टा प्रात तथा एक घण्टा साय प्रार्थना करनी चाहिए। सन्ध्या करते समय जो शब्द हम मुख से बोलें, उनका हमारे हृदय पर प्रभाव होना चाहिए। जैसे जब हम "भूर्भुव स्व पढ रहे हो तो उस समय हमारे मन मे वैसे ही विचार आने चाहिए। जल्दी जल्दी पाठ कर लेने से सन्ध्या के शब्द का हृदय पर कोई, प्रभाव नहीं होता।

(क्रमश)

आर्यसमाज की गतिविधियां

शुद्धि समाचार

—दिनांक १४ जून १९८८ को ग्राम बहार में यज्ञ किया गया, और उसके पश्चात यवन गूजरो ने अपनी स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया। यह कार्यवाही सेवानन्द सरस्वती महामन्त्री हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति के प्रयत्नो द्वारा की गई और यज्ञोपरान्त उन्हीं द्वारा प्रसाद वितरण कराया तथा बिरादरी मे इज्जत दिलायी गई तथा उनके बच्चो को नि शुल्क गुरुकुल मे प्रवेश कराया गया और ब्र० महासिंह आर्य और गाव के आदमियो ने भाग लिया।

संख्या	पुराना नाम	नया नाम	पिता का नाम	आयु
१	मुल्की	मुलकराज	सुमाना	५६ वर्ष
२	मानी	मानमती	पत्नी मुलकराज	४० वर्ष
३	शान्ति	शान्ति देवी	मुलकराज	१८ वर्ष
४	रामकिशन	रामकिशन	मुलकराज	
५	दनवन्ती	दनवन्तो	मुलकराज	
६	सोनू	सोहनलाल		

—जयसिंह ग्रा० सुताना

—आर्य समाज सुमेरगज जिला बाराबकी उ० प्र० द्वारा शुद्धि संस्कार आर्य समाज सुमेरगज रामसनेही घाट जि० बाराबकी उ० प्र० का उत्सव २ से ४ जून ८८ई०तक बड़े समारोह के साथ मनाया गया आर्यप्रतिनिधि सभा उ० प्र० के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक प० ब्रह्मानन्दार्य वानप्रस्थी तथा श्री नेमप्रकाश धनुर्धर व जयप्रकाश तथा रश्मि प्रभा के भजन और उपदेश हुये। ४ जून को प्रात दो मुसलिम कन्याओ सायरा खातून व शाहजहा बेगम का शुद्धि संस्कार श्री ब्रह्मानन्दार्य वानप्रस्थी द्वारा किया गया उनका विवाह श्री राममनोहर व कौशल्या रातन के साथ सम्पन्न हुआ। उक्त समाज मे प्रतिवर्ष शुद्धि कार्य होता है। सर्वश्री बनारसीलाल, दयाशंकर, मुरलीधर, द्वारिकाप्रसाद, जग नाथ आर्य, माधोप्रसाद, मुन्नूलाल, शिवमगल साहू, कृपाशंकर के अथक परिश्रम से शुद्धि कार्य सम्पन्न हुआ।

—दयाशंकर आर्य, प्रधान
सुमेरगज जिला बाराबकी उ० प्र०

उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बदडीहा घोड़ाबन्धा का १४वां वार्षिक उत्सव दिनांक २८ २९ ३० मई १९८८ को सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर निम्न लिखित उपदेशक एव भजनोपदेशक पधारे—

१ श्री कुंवर महिपालसिंह जी कनौजा उ० प्र०
२ श्री प० महेन्द्रपाल आर्य, भूतपूर्व ईमाम मेरठ कलकत्ता
३ श्री गोविन्द प्रसाद विद्यावारिधि, रांची
४ श्री इन्द्रदेव वर्मा रांची
५. ठाकुर अवधदेव आर्य भजनोपदेशक, बिहार

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ
कोई मासिक शुल्क नहीं

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जिला जालन्धर (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त) मे नये छात्रो का प्रवेश एक जुलाई १९८८ से आरम्भ हो रहा है। सरकारी स्कूलो म पढाए जाने वाले हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान समाज शास्त्र आदि सभी विषयो के साथ संस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढाई जाती है।

प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कक्षा पाच पास होना जरूरी है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिले अथवा लिखे।

—नरेश कुमार शास्त्री एम ए
श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय
करतारपुर, जि० जालन्धर (पंजाब)

पं० [illegible] की [illegible] शान्ति यज्ञ

अल्मोड़ा। आर्य समाज मन्दिर ताडीखेत में १०० से अधिक पुस्तकों के लेखक १०१ वर्षीय वैदिक विद्वान प० सन्तराम बी ए (निधनतिथि ३१ मई १९८८) की दिवगत आत्मा हेतु १५ जून को महात्मा रत्नमुनि की अध्यक्षता में प० प्रेमदेव शर्मा के पौरोहित्य मे शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द कन्दाहारी ने दीर्घायु का रहस्य ब्रह्मचर्य-प्राणायाम शाकाहार बताते हुए दिवगत आत्मा की शान्ति हेतु परमात्मा से प्रार्थना की।

—पूरनचन्द्र पाण्डेय मन्त्री
—डा० हरिगोपाल शास्त्री, प्राचार्य

माता सत्यवती शालवाले शान्ति यज्ञ

पिथौरागढ। आर्य समाज मन्दिर मे १७ जून १९८८ को स्वामी गुरुकुलानन्द कन्दाहारी की अध्यक्षता मे माता सत्यवती शालवाले की दिवगत आत्मा हेतु शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। ज्ञातव्य है कि इनके पतिदेव सन्यासी के रूप मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) राष्ट्र व समाज सेवा मे योगदान दे रहे हैं।

—लक्ष्मीचन्द्र मित्तल, मन्त्री

ब्रह्म-हाला

—राजप्रकाश शर्मा 'सरल' गाजियाबाद

देवानामेतत् परिमूतमनम्यारूढ चरति रोचमानम्।
तस्माज्जात ब्राह्मण ब्रह्मज्येष्ठ देवाश्चसर्वे अमृतेन साकम्॥

अथर्व० ११-५-२३

काव्य वाटिका

तोड जगत के नाते-रिश्ते, यह सबका हो रखवाला।
गली गली मे अलख जगाता, पीलो प्रिय ब्रह्मीहाला॥
क्यो तुम रूठे बोलो साथी, क्यो यह मन झुलसा डाला।
क्यो नयनो मे नीर भरा है क्यो तन अरे ! सुखा डाला॥
क्या तुम ऐसे गुम-सुम बैठे क्यो मन सशय मे डाला।
क्यो चिन्ता करते हो प्यारे, मना रही ब्राह्मी हाला॥
तुम्हे न पाखण्डी बनना है, तुम्हे न खाना भग-गोला।
तुम्हे न ठगना इस दुनिया को, तुम्हे न कहना बम्ब-भोला॥
तुम्हे न जाना हर की पौडी, तुम्हें न जाना मथुरा।
तुम्हे न रामेश्वर जाना है, तुम्हे न जाना है मदुरा॥
तुम्हे न जाना मधुशाला को, जहा मिले विषयी ज्वाला।
तीर्थ तुम्हारा यही है साथी, जहा जिसे ब्राह्मी हाला॥
देखो प्यार भरे शब्दो से, तुम्हे बुलाती ब्रह्म-हाला।
इससे मुह मत मोडो साथी, यह करती जीवन-माला॥
उठो ! जवानी कहती तुमको, नही पाता हीने वाला।
मिलता लक्ष्य उसे ही जग मे, जो दुख मे हसने वाला॥
क्रान्ति-पथिक बन जा कुछ क्षण को, छोड शान्ति पथ की माला।
जिससे जीवन मे गति आये वह धधका दे तू ज्वाला॥
माना यहा क्या करनी है, यह जग दुखो की शाला।
मिला किसी को अमृत है, मिला किसी को विष प्याला॥
जैसी करनी वैसी भरनी, जीवन भेद बता डाला।
बन जाता सत्कर्म क्रिया से, यह जीवन अमृत-प्याला॥
स्वजन किया जमा जी मे, और मन मे विषयो की ज्वाला।
कैसे पार लगेगी नैय्या, पूछ रही ब्राह्मी-हाला॥
मैं उपदेशक नही हूँ मित्रो ! नहि पडित पोथी वाला।
जो मन को भाता है मेरे, मैं उसको कहने वाला॥
जो केवल मदिरा के प्यासे उनसे दूर मेरी शाला।
जो ब्रह्म-हाला के प्यासे हैं, उन्हे बुलाती यह शाला॥
कुछ, को यहा मिलेगा सब कुछ, कुछ के हित रीता प्याला।
यहा पर नखरे नही मिलेगे न यहा साकी बाला॥
यहा तो 'ओ३म्'' नाम ही सब कुछ ''सरल'' बनी यज्ञशाला।
वेद मन्त्र उद्घोषित होते, सुख की ढलती हाला॥

पुस्तक समीक्षा

वेदों में नारी

लेखक—डा० कपिलदेव द्विवेदी, कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर (हरिद्वार) प्रकाशक—विश्वभारती अनुसधान परिषद, ज्ञानपुर (वाराणसी) पृष्ठ सख्या १७४+२४ मूल्य—प्रचार सस्करण १५ ००, सजिल्द २५ ००।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के वेद प्रचार के स्वप्न को साकार करने के लिए डा० कपिलदेव द्विवेदी द्वारा रचित वेदामृतम् ग्रन्थमाला का यह सातवाँ भाग है। इसमे चारो वेदो मे वर्णित नारी के उदात्त जीवन का विशद चित्रण है इसमे चारो वेदो से चुने हुए सौ मन्त्रो के माध्यम से नारी के उत्कृष्ट स्वरूप का वर्णन इस प्रकार से किया गया है कि इसमे क्रमबद्धता और प्रवाह बना हुआ है। प्रत्येक मन्त्र का अन्वय, शब्दार्थ, हिन्दी व अग्रेजी अनुवाद और व्याख्या के रूप मे अनुशीलन लेखक की विद्वत्ता के परिचायक हैं। इस ग्रन्थ मे वैदिक नारी का गौरव, नारी के गुण, नारी के सामाजिक एव धार्मिक अधिकार एव कर्तव्य, नारी के राष्ट्रीय अधिकार और कर्तव्य का विवेचन है। भाषा सरल, सुबोध और सामान्यजन को वेदमन्त्रो का अर्थज्ञान कराने मे सक्षम है। लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक मे सराहनीय प्रयास किया है।

ग्रन्थ के प्रारम्भ मे भूमिका के अन्तर्गत वैदिक वाङ्मय मे नारी के स्वरूप का विस्तृत विवेचन है। ग्रन्थ के अन्त मे नारी से सबद्ध १०० सुभाषित हिन्दी अर्थ सहित दिए गए हैं। ग्रन्थ का मुद्रण सुन्दर है और कवर आकर्षक है। लेखक—डा० द्विवेदी की योजना विषयानुसार ४० भागो मे वेदामृतम् निकालने की है।

सभी आर्यजनो एव वेदप्रेमियो के लिए यह ग्रन्थ अवश्यमेव सग्रहणीय है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

डा० भवानीलाल भारतीय

(पृष्ठ ४ का शेष)

जाती है। काश्मीर से महाराष्ट्र तथा गुजरात से बगाल तक देश के विभिन्न भागो मे भ्रमण कर उन्होने दयानन्द सरस्वती के सदेश को सर्वत्र प्रसारित किया है।

विगत आठ वर्षो से वे पजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोध पीठ के आचार्य और अध्यक्ष के रूप मे कार्यरत रहे। इसी वर्ष उन्होने विश्वविद्यालय औपचारिक सेवा से अवकाश ग्रहण किया किन्तु उनकी शोध विषयक योग्यता को लक्ष्य मे रखकर विश्वविद्यालय ने आगामी तीन वर्षों के लिये उन्हे पुन इस विभाग के पद पर नियुक्त किया है। आर्य समाज विषयक शोध और लेखन कार्य मे सलग्न प्राय सभी स्वदेशी और विदेशी विद्वान उनसे सम्पर्क करते हैं तथा यथोचित परामर्श ग्रहण करते हैं।

आर्य जगत् के समाचार

चुनाव समाचार

आर्य समाज ब्रह्मपुरी घोंडा दिल्ली श्री कल्याणदास प्रधान श्री किशन आर्य मन्त्री श्री पालाराम कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य युवा वेद प्रचार मण्डल कठुआ कालिदास प्रधान हर्षकुमार मन्त्री सुभाषसिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज बीकानेर सच्चिदानन्द एडवोकेट प्रधान सोहनलाल आसेरी मन्त्री उदयशङ्कर व्यास कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज भिलाई नगर (म० प्र०) बलदेव मित्रधीर प्रधान सतीशचन्द छिब्बर मन्त्री खेमचन्द सिसोदिया कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई ओंकारनाथ आर्य प्रधान विश्वभूषण आर्य मन्त्री कस्तूरीलाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

वैदिक विचार भवन सोनपुर उडीसा रामकृष्ण मेहेरे प्रधान शिवप्रसाद पात्र मन्त्री सुशील कुमार कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सीताराम बाजार दिल्ली न्यादरमल गुप्ता प्रधान बाबूराम आर्य मन्त्री अरुण कुमार गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज अमरोहा जयनारायण अरुण प्रधान हरिशचन्द्र आर्य मन्त्री देवकी प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गए।

केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ प० इन्द्रराज प्रधान डा० वेद प्रकाश मन्त्री नन्दलाल पाहवा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज कोसी कला वीरेन्द्र कुमार प्रधान प्रदीप कुमार आर्य मन्त्री रमेशचन्द कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज हीग की मण्डी आगरा किशनलाल गग प्रधान पूरनचन्द आर्य मन्त्री सतीशचन्द कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज मन्दिर शास्त्री नगर बस्ती शेख जालन्धर रामलुभाया नन्दा प्रधान लालचन्दा नन्दा मन्त्री प्रेम भाटिया कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज मधुपुर चन्द्र प्रसाद प्रधान शारदा प्रसाद सिन्हा मन्त्री रामचरित्र यादव कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज थापर नगर मेरठ नन्दलाल पाहवा प्रधान वीरेन्द्र कुमार मन्त्री सुदर्शनलाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

जिला उपसभा गोरखपुर महाशय कल्पनाथ आर्य प्रधान के० एन० सिंह मन्त्री बैजनाथ प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गए।

नगर आर्य समाज अजमेर कविराज धर्मसिंह कोठारी प्रधान डा० दिनेशचन्द शर्मा मन्त्री चन्द्र प्रकाश भटनागर कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज नैनीताल स्वामी गुरुकुलानन्द प्रधान उदयराजसिंह मन्त्री शान्ति प्रसाद गोयल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज देवबन्द सुरेन्द्र कुमार एडवोकेट प्रधान जुगलकिशोर मन्त्री नकुलदेव कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज शोसपुरा ग्वालियर के० पी० गुप्ता एडवोकेट प्रधान दीपचन्द मन्त्री गोपालसिंह वर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज लक्ष्मी नगर त्रिलोकीनाथ प्रधान सुरेन्द्र कुमार मन्त्री अविनाश बबर कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज शकरपुर दिल्ली वेदप्रकाश आर्य प्रधान पतराम त्यागी मन्त्री धर्मेन्द्रदेव कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सुल्तानपुर लोधी पजाब सत्यपाल नरूला प्रधान देवेन्द्र कुमार सेठी मन्त्री चमनलाल सेठी कोषाध्यक्ष चुने गए।

जिला आर्य सभा गुरदासपुर सरक्षक स्वामी सर्वानन्द जी महाराज प्रधान रामकिशन मन्त्री ठाकुर देवेन्द्रसिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज रामसाबाद आगरा रामजीलाल प्रधान सत्यदेव मन्त्री शीतल प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज धूमनगर लाखी गदेवा वृजबिहारी प्रधान विश्वेश्वरी शर्मा मन्त्री ओमप्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गए।

राजीव सरकार पुरी के शंकराचार्य को गिरफ्तार करे या संविधान से छुआछूत कानून को हटाये

इतिहास इस बात का साक्षी है कि हरिजनो पर काफी समय से तथाकथित स्वर्ण जाति के लोगो द्वारा नाना प्रकार के अत्याचार होते रहे हैं। उसी शृखला मे जिस शृखला मे पुरी के तथाकथित शकराचार्य निरजनदेव तीर्थ ने कई अवसरो पर हरिजनो के प्रति अपशब्दो का तथा सती प्रथा का समर्थन किया है जो सविधान तथा वेद विरुद्ध है। उन्होने हरिजनो के मन्दिर प्रवेश पर मनाही करके जहा उनकी आत्माओ को ठेस पहुचाई है, वहा हिन्दू समाज को तोडने का एक गहरा षडयन्त्र रचा है। मैं भारत सरकार से माग करता हूँ कि इस मूर्ख शकराचार्य को तुरन्त गिरफ्तार करके अपनी धर्म निरपेक्षता का परिचय दे अन्यथा हम यह समझेगे कि यह सरकार के इशारे पर ही इस प्रकार घृणा फैलाने के कार्य कर रहा है।

यदि इस शकराचार्य को सरकार ने छुआछूत कानून के अन्तर्गत शीघ्र गिरफ्तार नही किया तो हम प्रबल आन्दोलन करने पर विवश होगे ओर उसकी जिम्मेदारी सरकार पर होगी।

हरिजन भाइयो धर्म परिवर्तन इस बुराई का समाधान नही है बल्कि सगठित होकर स्वामी दयानन्द के मार्ग पर चलकर इस छुआछूत रूपी रावण का वध करने के लिये हमे हर प्रकार के बलिदान के लिये तैयार हो जाना चाहिये।

—मामचन्द रिवारिया

देशभक्त श्री चांदकरण शारदा का जन्म शताब्दी समारोह प्रारम्भ

प्रमुख राष्ट्रभक्त तथा आर्यसमाज के महान् नेता स्व० श्री चादकरण शारदा का जन्म शताब्दी समारोह, उनके जन्म दिन १ जुलाई १९८८ से समारोह पूर्वक अजमेर से प्रारम्भ किया जा चुका है।

राजस्थान केसरी स्व० शारदा का परिवार आर्य समाज की उपलब्धियो और कीर्तिमानो को सदैव योगदान देते रहा है। स्व० चादकरण शारदा सार्वदेशिक सभा के हैदराबाद सत्याग्रह आदोलन के डिक्टेटर रहे थे। उनके नेतृत्व मे सत्याग्रहियो के विशाल जत्थे ने हैदराबाद के लिए बडे उत्साह के साथ कूच किया था। महान् देशभक्त नेता के जन्म शताब्दी समारोह के आयोजन और उसकी सफलता के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा उसके अधिकारियो, कार्यकारिणी सदस्यो तथा प्रतिनिधियो की ओर से हार्दिक शुभ कामनाए।

इसकी गहराई तक जाओ

जो आया जाना पडा उसे, सर्दी, गर्मी बरसात गई।
हर झूठ गया ठोकर खाकर, सच्चाई देकर मात गई॥

यह दुनिया है इसके अन्दर, सुख आते हैं दुख आते हैं।
उस राह जनाजा गया कभी, जिस राह कभी बारात गई॥

नित नया सवेरा आता है, नित नया सवेरा आएगा।
जो आएगी कट जाएगी, जैसी भी आई रात गई॥

जिस पल के अन्दर जिन्दा हो, उस पलको ही भरपूर जियो।
कल कैसा होगा किसे पता, जो बीत गई वह बात गई॥

क्या बात कही है पुरखो ने, इसकी गहराई तक जाओ।
बेशक हाथी तो गई मगर, कुत्ते की जानी बात गई॥

पजाब केसरी २४ जून

—विजय निर्बाध

आचरुकला (बुलन्दशहर) शिविर समापन के अवसर पर सावदशिक आय वीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बाल दिवाकर जी हस दल सैन्किो से अभिवादन स्वीकारत हुए—व्यायाम करते सैनिको की भव्य झाकी दिखाई दे रही है।

ओ समाज के ठेकेदारों !
सत्य धर्म के पहरेदारों ॥ध्रुव॥

[१]

कम तुम्हारा था शिक्षा का।
पर वह बना दिया भिक्षा का॥
जो भी मिला बटोरा उसको।
लटा फसा जाल मे सबको।
घर मदिर हो या गुरुद्वारा।
ओ समाज

[२]

कोई भी हो धम पुजरी।
रखता मन म बात दुधारी॥
कसे बने अनेका पथ।
जाल बुनते बनकर सत॥
ऐसे तत्वा को ललकारो।
ओ समाज

[३]

गाजा भाग चरस पाते है।
ज्ञान भक्ति से जो रीते है॥
अ ध भक्त बन द्वष बढाओ।
छुआ छूत को पनपाते॥
इन पोपो के पाखडो को।
साहस कर अब धुतकारो॥
ओ समाज

—नागराज जादम
आगर (मालवा)

आंचरू कलां (बुलन्दशहर) मे आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

दिनाक १० जून से १६ जून तक आचरु कला इ टर कालेज मे जिला आय प्रतिनिधि सभा (पजीकत) के त वावधान मे जिले का सवप्रथम आय वीर दल शिविर आयोजित किया गया जिसमे सैकडो आ य वीरो ने जिले के कौने २ से आकर प्रशिक्षिन प्राप्त किया। प० उत्तर प्रदेश आय वीर दल सचालक श्री जयनारायण जी आय ने शिविर का उद्घाटन ध्वजारोहण द्वारा किया। सौभाग्य से सावदशिक आय वीर दल के प्रमख सचालक श्री पं० बालदिवाकर हस जी ने भी तीन दिन शिविर मे रहकर आय वीरो को सबोधित किया। आपने आय वीरा को देश बचाने की एक मात्र आशा बताते हुए सगठित होकर आय वीर दल का [illegible] निदश दिया। स्पष्ट किया कि भारत मे केवल मात्र आय समाज और आ य वीर दल ही ऐसे सगठन है जो सावभौम कहलाने के अधिका ी है

निर तर वर्षा के होते हुए भी समापन समारोह मे बडी सख्या मे जिले के गण्यमान्य जन सम्मिलित हुए। श्री सेठ मघान द जी आय [दिल्ली] ने अध्यक्षता की। उत्तर प्रदेश आय वीर दल के सचालक आ चाय धमपाल जी ने दीक्षान्त भाषण दिया तथा आय वीरा को शपथ दिलाई। उत्साह के साथ आगे बढने और शिविरो मे प्राप्त शिक्षाओ एव कार्यो पर दृढता से आचरण करने का निर्देश दिया।

शिविर के मुख्य आयोजक एव सच लक जिला म त्री आचाय धर्मेन्द्र जी शास्त्री थे। श्री चौ० विजयपालसिह श्री शिवध्यानसिह चौहान प्रधानाचाय श्री मनोहरलाल जि दल श्री प्यारेलाल गुप्त श्री च बूलाल आय श्री महेन्द्रपाल जी आदि पूरा समय देकर विशेष सहयोगी रहे।

सभी आय वीरो को प्रमाण पत्र दिये गये विशिष्ट पारितोषिक भी दिए गए। समस्त वातावरण पूण अनुशासित एव आकषक रहा। आय वीरो के प्रदशन से जनता अत्यन्त प्रभावित हुई। शिक्षक वग श्री सत्यव्रत शास्त्री श्री सुनील शास्त्री तथा श्री हरिसिह जी के अथक परिश्रम की मुक्तकण्ठ से प्रशसा हुई।

जनता की आवाज पर अगला शिविर वसहरे के अवसर पर डिबाई मे भी लगाने की घोषणा की गई —धर्मेन्द्र शास्त्री, मन्त्री
जिला आर्य प्रतिनिधि सभा [पजी०] बुलन्दशहर

आर्य वीर दल बम्बई का प्रशिक्षण शिविर

आय वीर दल बम्बई द्वारा आयोजित शिविर का समापन समारोह दिनाक २२ ५ ८८ रविवार को शिविर स्थल रामाश्रम पवई म सचालक केप्टन दवर न जी आय की अध्यक्षता म सम्प न हुआ। मुख्य अतिथि श्री ओकारनाथ जी आय [प्रधान आय प्रतिनिधि सभा बम्बई] ने आय वीरो को प्रमाण पत्र प्रदान किये। विशष अतिथि श्री रामनाथ जी ग्रोवर [आश्रम प्रमुख] ने आय वीर दल का आवश्यक्ता पर जोर दिया और कहा कि आय व र दल ही आय समाज के भविष्य का एक मात्र सहारा है। श्री धमवीर गुलाटी [म त्री आ य प्र सभा बम्बई] त्रिभुवनसिह आय एव बौद्धिकाध्यक्ष प देवव्रत ज शास्त्री ने भी अपने विचारो से आय वीरो को प्रेरणा दी। श्री मेघराज जी गु ता व उनकी धमप नी श्रीमती नारायणी दवी ने शिविर की सु दर व्यवस्था को बनाये रखने मे दिन रात परिश्रम किया। म त्री ओम प्रकाश आय ने आभार प्रदर्शित किया। शिक्षक श्री सुर द्रसिह आजाद ने बडी लगन के साथ बच्चो को शिक्षित किया।

—ओमप्रकाश आय म त्री

कन्या गुरुकुल हरिद्वार

पोस्ट कनखल (जिला सहारनपुर) उ प्र के सुरक्षित छात्रावास उत्तम भोजन व्यवस्था तथा याज्ञिक वातावरण म कक्षा १ स १४वो तक कन्याओ का निश्चित करान के लि ए सम्पक कर प्रवेश प्रारम्भ है।

श्री हषवधन शास्त्री
आयुवद भक्ति आश्रम कनखल (हरिद्वार)

R.N. 626/57 Licensed to post without prepay ment License No U 93 Post in D.P.S.O.on 14-7-1988

चित्रकला प्रतियोगिता

(दिनांक ३१-७-१९८८)

महोदय/महोदया

आपको सहर्ष सूचित किया जाता है कि आर्य कुमार सभा बाजार सीताराम द्वारा युवा वर्ग के कलात्मक-विकास हेतु दिनाक ३१ जुलाई १९८८ को दोपहर १ बजे आर्यसमाज मन्दिर बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६ मे दिल्ली के विभिन्न स्कूलो के छात्र एव छात्राओ की चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया है। आपसे निवेदन है कि कृपया अपने विद्यालय से इच्छुक छात्र/छात्राओ को भेजने की कृपा कर। हम आपके हार्दिक आभारी रहेगे।

नियम

१ प्रतियोगिता मे भाग लेने के लिए अपने नाम के साथ एक रुपया प्रवेश शुल्क जमा करना होगा।

२ प्रतियोगिता दो वर्गों मे विभाजित होगी।

पहला वर्ग १० वर्ष से १४ वर्ष तक
दूसरा वर्ग १५ वर्ष से १८ वर्ष तक

३ इस प्रतियोगिता मे छात्र व छात्राए दोनो भाग ले सकते है।

४ प्रत्येक वर्ग मे प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले प्रतियोगी को आकर्षक पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

५ प्रतियोगियो के लिए कागज सस्था द्वारा उपलब्ध होगा व अन्य आवश्यक सामान अपने साथ लाए।

—मनीष अग्रवाल मन्त्री

शोक समाचार

श्री ओमप्रकाश गुप्ता (स्वामी उत्थान मुनि वानप्रस्थी) जो का स्वर्गवास दिनाक २६-६-१९८८ को हो गया है।

ात

दिनाक . ावजी भाइ मानुशाली एव मन्त्रा क खण्डवा मे अखिल भारतीय स्तर के ... ुल भज्जर हरियाणा से पधारे स्वामी ओमानन्द जी का आयसमाज खण्डवा की काय कारिणी ने उनका हृदय से स्वागत किया बाद श्री कृष्ण लाल आर्य उपप्रधान खण्डवा के पौत्र एव श्री भरतलाल आर्य के पुत्र चि० विशाल के जन्म तिथि समारोह मे पधार कर यजमान को आशीर्वाद देते हुये कहा कि वर्तमान मे सस्कारो की नितान्त आवश्यकता है तभी हमारी सस्कृति बनी रह सकती है।

—मन्त्री

प्रवेश सूचना

मातृमन्दिर कन्या गुरुकुल नई बस्ती रामापुरा वाराणसी की आचार्या सूचित करती हैं कि ग्रीष्मावकाश के पश्चात् आर्ष पाठविधि से अष्टाध्यायी, वेद, सस्कृत गणित विज्ञान सगीत आदि का अध्ययन यथावत् आरम्भ हो गया है। इस वर्ष उपदेशको, समाज सेवियो तथा पजाब के पीडित परिवारो की मेधाविनी पुत्रियो के लिए विशेष सुविधाओ की व्यवस्था की गई है। नये भवन का निर्माण हो चुका है। इच्छुक अभिभावक सम्पर्क कर। वैदिक शोध (पी ए डी) की भी सुविधा है। —डा० पुष्पावती अध्यक्षा

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली मे मुद्रित ... द्वारा ... के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र।

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८९] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २३ अङ्क ३०] आषाढ शु० १० सं० २०४५ रविवार २४ जुलाई १९८८ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

धार्मिक पुनर्जागरण आंदोलन का सूत्रपात करें

हरिजनों को यजमान बनाकर तथा यज्ञोपवीत धारण कराकर यज्ञ कराने का आयोजन

देशभर की आर्य समाजों को ३ सितम्बर १९८८ को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व समता दिवस के रूप में मनाने का आदेश

दिल्ली १७ जौलाई १९८८।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज यहा कहा कि कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर देश के सब आर्यसमाज मन्दिरो मे यज्ञो का आयोजन किया जायेगा जिसमे हरिजन बन्धुओ को यज्ञ की वेदी पर यजमान बनाकर आहुतिया देने को कहा जायेगा ? उन्हें यज्ञोपवीत दिये जायगे और वे अन्य हिन्दू भाइयो की तरह ही मन्त्रोच्चारण करगे।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि हरिजन हिन्दू समाज के अभिन्न अग है। हिन्दू धर्म के सभी रीति-रिवाजो को अपनाने का उन्हे पूर्ण अधिकार है। आर्यसमाज ने हमेशा ही छुआछूत का विरोध किया और एक समतामय समाज की कल्पना की। यह दुःख की बात है कि आज भी कुछ लोग हरिजनो को हिन्दुओ से अलग रखकर हिन्दू समाज मे भेदभाव की दीवार खडी करना चाहते है। हरिजनो को वेद-शास्त्र पढने और मन्दिरो मे जाने का उतना ही अधिकार है जितना अन्य हिन्दुओ को।

स्वामी आनन्दबोध जी ने देशभर की सभी आर्य समाजो को एक परिपत्र भेजकर कहा है कि वे हरिजनो को समाज मे बराबरी का दर्जा देन के लिए धार्मिक पुनर्जागरण आन्दोलन का सूत्रपात कर और आगामी जन्माष्टमी पर्व को समान अधिकार दिवस के रूप मे मनाव।

उन्होने बताया कि दिल्ली मे भी उस दिन एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया जायगा, जिसमे मुख्य अतिथि लोकसभा अध्यक्ष डा० बलराम जाखड होगे। इसके अलावा सभी क्षत्रीय आर्य समाजो मे भी यज्ञ आयोजित किये जायगे। उन्होने कहा कि आजादी के चालीस साल पूरे होने के बाद भी आज हिन्दू समाज को वर्गो और उपजातियो मे विभाजित कर कुछ स्वार्थी तत्व उन्हे अपनी स्वार्थ-सिद्धि का साधन बना रहे है। जब तक हम जन्म-गत जात-पात को अपने दिमाग से नही हटायेगे, यह हिन्दू समाज का कोढ बना ही रहेगा।

ईसाई मिशनरियों द्वारा बौद्ध बच्चों का धर्म परिवर्तन

लद्दाख की हिंसक घटनाओं ने सच्चाई उजागर कर दी

श्रीनगर, १७ जुलाई। सामान्यत शान्तिपूर्ण लद्दाख क्षेत्र मे बौद्ध बच्चो को कथित तौर पर ईसाई बनाये जाने पर हाल मे हुई हिंसा की घटनाओ ने क्षेत्र की खस्ता हालत उजागर कर दी है।

जम्मू-कश्मीर सरकार की यथासमय कारवाई से लामाओ की भूमि पर कोई बडा साम्प्रदायिक सघर्ष नही हो पाया। सरकार ने मिजोरम की 'जोरम इवाजेलिकल फोले शिप' मिशनरी को यहा शिक्षा-दीक्षा के लिए लाये गये ५२ बौद्ध बच्चे, उनके अभिभावको को लौटा दने को कहा।

गडबडी उस समय शुरू हुई जब नवगठित लद्दाख बौद्ध सगठन ने 'बौद्धो को जबरन ईसाई बनाये जाने का आरोप' लगाते हुए क्षेत्र मे आन्दोलन शुरू किया। बौद्ध सगठन के कार्यकताओ ने मिजोरम मिशनरी की गतिविधियो पर प्रतिबन्ध लगाने की माग को लेकर क्षेत्र मे ईसाइयो की अनेक दुकाने बन्द करवा दी और तोडफोड की। सगठन ने आरोप लगाया कि मिशनरी ने बौद्ध समुदाय के कमजोर तबके के लोगो को आर्थिक प्रलोभन दिये ताकि वे अपने बच्चो को ईसाई स्कूलो मे भेजे।

राज्य सरकार ने शुरू मे स्थिति को गम्भीरता से नही लिया और दोनो गुटो से बातचीत द्वारा सुलझाने की अपील की। लेकिन मई के पहल सप्ताह मे एक नव ईसाई प्रेमपाल के निवास पर एक बम विस्फोट होने से स्थिति काबू से बाहर हो गई।

प्रेमपाल ने एक बौद्ध लडकी से शादी की थी जिसे लेकर बौद्ध लोगो मे काफी असन्तोष फैल गया था। पुलिस ने बौद्ध सगठन के कुछ प्रमुख सदस्यो को तत्काल गिरफ्तार किया और शान्ति तथा

(शेष पृष्ठ ९ पर)

बौद्ध बच्चों का धर्म परिवर्तन

(पृष्ठ १ का शेष)

व्यवस्था बनाये रखने के लिये ठोस कदम उठाने का फैसला किया। इस बीच बौद्ध आध्यात्मिक नेता अकुला ने प्रधानमन्त्री राजीव गांधी से मुलाकात कर उन्हें लद्दाख क्षेत्र की स्थिति से अवगत कराया। वह अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य भी है।

जिन ईसाई मिशनरियों ने नगर के बाहरी शोउपुरा इलाके में बौद्ध बच्चों के लिये १९८२ में बाल गृह बनाया था उन्होंने बताया कि बौद्ध संगठन के इस आरोप में कोई सच्चाई नहीं है कि हम बौद्ध बच्चों को जबरन ईसाई बना रहे है। बाल दारुल जल की अधीक्षक सुश्री माविनेई ने कहा कि उनका लक्ष्य अनाथ तथा बेघर बच्चों को आश्रय देना तथा उनकी देखभाल करना है।

सुश्री माविनेयी ने बताया कि बालगृह में रह रहे अधिकतर बच्चे या तो निर्धन परिवारों से है या अनाथ। ये सभी बच्चे चार वर्ष से १२ वर्ष पहले स्थानीय ईसाई स्कूल टिंडेल बिस्को स्कूल में दाखिल कराये गये थे।

उन्होंने दावा किया कि बौद्ध संगठन के सदस्यों ने माता-पिता एवं अभिभावकों पर इस बात के लिये दबाव डाला कि वे अपने बच्चों को बाल गृह से वापस ले लें। अधीक्षक ने बताया कि बाल-गृह राज्य तथा केन्द्रीय गृह मन्त्रालय में पंजीकृत है। बाल गृह का उद्घाटन १९८२ में मुख्यमन्त्री फारूक अब्दुल्ला ने किया था और उन्होंने निर्धन एवं जरूरत मन्द छात्रों को शैक्षणिक सुविधा उपलब्ध कराने के लिए बाल गृह के कार्यों की प्रशंसा की।

वैदिक मिशनरी गुरुकुल वेद मन्दिर में नवीन प्रवेश आरम्भ

१—१३ जून से उपदेश आरम्भ हो चुका है। परीक्षोपरान्त २९ जुलाई गुरु पूर्णिमा को प्रवेश दीक्षा दी जायेगी।

२—गुरुकुल का उद्देश्य ऐसे जीवनदानी एवं समयदानी (शिक्षणोपरान्त कम से कम ५ वर्ष का समय देने वाले) युवा और प्रौढ व्यक्तियों का निर्माण करना है, जिनके अन्तर्हृदय में स्वदेश एवं स्वधर्म के प्रति सच्ची निष्ठा तथा तप त्याग एवं बलिदान की भावना हो।

३—गुरुकुल का पाठ्यक्रम प्रौढों के लिए ३ मास से एक वर्ष तक तथा युवकों के लिए एक वर्ष से चार वर्ष तक का है। इस काल में संस्कृत और वैदिक सिद्धान्तों के शिक्षण के साथ ही विभिन्न मतों का तुलनात्मक अध्ययन तथा कार्यक्षेत्र में कार्य करने का क्रियात्मक प्रशिक्षण भी दिया जायेगा।

४—प्रवेश के लिए कम से कम १०वीं कक्षा (संस्कृत सहित) उत्तीर्ण होना आवश्यक है। इन शिक्षार्थियों के आवास, भोजन, शिक्षा, वस्त्र एवं चिकित्सादि की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से रहेगी।

५—एक वर्ष बाल छात्रों का भी परीक्षण हेतु रहेगा, जिसमें आठवीं कक्षा से छात्र लिये जावेंगे। इनके अभिभावकों को मात्र १३०) रु० मासिक देना होगा।

सम्पर्क करें —
आचार्य प्रेम भिक्षु
वैदिक मिशनरी गुरुकुल, वेदमन्दिर
वृन्दावन मार्ग, मथुरा (यू० पी०)

—श्री रामशरण आर्य कन्या गुरुकुल सिरसागंज (मैनपुर) प्राचीन आश्रम पद्धति अनुसार योग्य अध्यापिकाओं द्वारा व्याकरण दर्शन वेद उपनिषद तथा आधुनिक विषयों के पठन पाठन की समुचित व्यवस्था प्राकृतिक वातावरण योगासनादि की उचित व्यवस्था आवास एवं शिक्षा नि:शुल्क।

शीघ्रता करें स्थान कम है।

विद्याभिक्षु वानप्रस्थी (विद्याराम आर्य)

शुभ कामना व बधाई

एषा नून मुनिवर दयानन्द देवस्य कीर्तें,
शुभ्राशाया सुमधुर फला वल्ली जायतेऽद्य।
सम्पद्येताभिलषित मन कामना सत्कृतार्था,
प्राप्यार्याण प्रतिनिधि सभा सच्चिदानन्द बोधम्॥

मुनिवर देवदयानन्द की कीर्तिमयी उज्जवल आशा की वल्लरी सुमधुर फलवती हो रही है। और समस्त आर्यो की प्रतिनिधि सभा पद सत् चित आनन्दबोध को प्राप्त करके कृतार्थ एवं पूर्ण मनोरथ वाली हो जावे।

—आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री

प्रवेश-सूचना

—"गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर" का नवीन शैक्षिक सत्र ८ जुलाई से प्रारम्भ होने जा रहा है। प्राचीन आश्रम पद्धति के अनुसार ज्ञान-चरित्र से समन्वित तथा व्यक्तित्व के सर्वाङ्गीण विकास पर बल देने वाली यह संस्था उ० उ० शासन से प्रथम श्रेणी में वर्गीकृत एवं आर्थिक सहायता प्राप्त है।

यहां 'बेसिक शिक्षा परिषद' से सम्बन्धित प्रारम्भिक कक्षाओं (१ से ५ तक) तथा संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से प्रथमा (षष्ठ) से आचार्य (एम ए) पर्यन्त अध्ययन एवं परीक्षाओं की सुव्यवस्था है।

प्राचार्य गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर
तिलहर, शाहजहापुर

—आर्य समाज द्वारा संचालित विद्यालयों में योग्य धर्मशिक्षक तथा आर्य प्रतिनिधि सभाओं में योग्य उपदेशक एवं पुरोहितों के अभाव को दूर करने के लिये दयानन्द वैदिक संन्यास आश्रम गाजियाबाद में एक महत्वपूर्ण निर्णय लेकर, धर्मशिक्षक उपदेशक एवं पुरोहित प्रशिक्षण विद्यालय पृथक् संस्था के रूप में चलाने का निश्चय किया है। जिसमें (क) पाठ्यक्रम अवधि दो वर्ष, (ख) प्रशिक्षण नि:शुल्क, (ग) संख्या सीमित होगी।

प्रवेशार्थी के लिये निम्न योग्यताएं होनी चाहिए —

(१) शैक्षिणिक योग्यता—विशारद/मध्यमा/इण्टर संस्कृत विषय सहित
(२) अवस्था—न्यूनतम १२ वर्ष तथा अविवाहित
(३) आचार विचार—निष्ठावान् आर्य (आर्यसमाज द्वारा प्रमाणित)

सफल छात्रों (स्नातकों) को आर्य संस्थाओं में, धर्मशिक्षक उपदेशक व पुरोहित पद पर नियुक्त कराया जाएगा किंतु उनका निष्ठावान् होना आवश्यक है।

प्रवेशार्थी स्वहस्त लिखित अपने आवेदन पत्र १५ अगस्त १९८८ तक आचार्य के नाम भेज दें। २० अगस्त मध्याह्नोत्तर २ बजे उक्त आश्रम में साक्षात्कार के द्वारा योग्य छात्रों का चयन होगा। १ सितम्बर से विधिवत् कक्षाएं आरम्भ हो जाएगी।

आवास, भोजन, वस्त्र तथा पुस्तकें सब आश्रम की ओर से नि:शुल्क होगा। केवल १००) रु० प्रवेश के समय में देने अनिवार्य होंगे। बिस्तरा और बर्तन साथ लाने होंगे।

—स्वामी प्रेमानन्द

—गुरुकुल महाविद्यालय, शुक्रताल में १० जुलाई से प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है। यह संस्था गंगा के सुरम्य तट पर स्थित है।

विशेषतायें —

१—शिक्षण पाठ्यक्रम के साथ-साथ यहां यौगिक क्रियाएं, आसन, व्यायाम तथा धार्मिक शिक्षा का भी उत्तम प्रबन्ध है।
२—शिक्षा एवं आवास की नि:शुल्क व्यवस्था है।
३—मध्यमा व शास्त्री के योग्यतम छात्रों को ५० रुपए मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।
४—यहां के आचार्यवृन्द योग्य व कुशल अनुभवी है।

प्रधानाचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय, शुक्रताल मुजफ्फरनगर

दूरदर्शन के सीरियल 'अमीर खुसरो' को बन्द करने की मांग

आर्य लोगों को भी आक्रमणकारी सिद्ध करना बहुमत का अपमान

दिल्ली १३ जुलाई। २८ जून, १९८८ को दूरदर्शन द्वारा प्रसारित धारावाहिक सीरियल "अमीर खुसरो" के माध्यम से आर्यों को मुसलमानो के समकक्ष रखकर यह सिद्ध करने की चेष्टा की गई है कि वे भी देश मे बाहर से आने वाले आक्रमणकारी ही थे, जो यहा आकर उसी प्रकार बस गए जैसे अन्य मुस्लिम आक्रमणकारी। इसलिए आर्यों को विशेष स्थान देना और केवल मुसलमानो को ही आक्रमणकारी ठहराना उचित नहीं है।

इस धारावाहिक के द्वारा इस प्रकार की बेतुकी कहानियाँ सुनाकर [अग्रेजो के लिखे गए भारतीय इतिहास की पुष्टि करने का प्रयत्न किया गया है, और आजकल के छोटे बालको को अपने देश के वास्तविक इतिहास से गुमराह करने की चेष्टा की गयी है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने भारत सरकार से मांग की है कि इस भ्रामक धारावाहिक को तुरन्त बन्द किया जाय। उन्होने कहा कि इस धारावाहिक मे भारत के इतिहास को तोड मरोडकर गलत ढग से पेश किया जा रहा है। यह बडे दुख की बात है कि हमारी सरकार अल्पसख्यको के तुष्टिकरण की नीति के कारण आततायी मुस्लिम आक्रमको को भी आर्य जाति के बराबर तोलने का प्रयत्न कर रही है। यह हमारी भारतीय सस्कृति पर सीधा कुठाराघात है।

स्वामी जी ने कहा कि भारत का सबसे पहला आक्रमणकारी मुहम्मद-बिन-कासिम था जिसने सन ७१२ ईसवी मे इस देश पर हमला किया था। इस्लाम की आयु इस समय १५०० वर्ष है और ईसाई धर्म लगभग २००० वर्ष पुराना है। इनकी तुलना मे महाभारत ५००० वर्ष और रामायण लगभग ८ लाख वर्ष प्राचीन है। इनमे आर्यों के धर्मग्रन्थ वेद का उल्लेख है जो विश्व के पुस्तकालय की प्राचीनतम पुस्तक है। वेदो की सरचना भारतीय ऋषियो (आर्यों) ने इसी भारतभूमि पर मानव सृष्टि के आदिकाल मे ही की थी। इन सब तत्थो की जानकारी होते हुए भी, अग्रेजी द्वारा लिखे गए झूठे और मनघडन्त इतिहास के तर्कों का सहारा लेकर दूरदर्शन के अधिकारी हमारे देश की नई-पीढी के दिल और दिमाग को विकृत करके उन्हे कहा ले जाना चाहते है? इस प्रकार की झूठी कहानियो से इतिहास नही बदले जा सकते और न ही साम्प्रदायिक सद्‌भावनायें पैदा की जा सकती हैं।

स्वामी जी ने बताया कि वे शीघ्र ही इस सम्बन्ध मे सूचना और प्रसारण मन्त्री से मिलकर इस धारावाहिक को तुरन्त बन्द कराने की माग करेंगे।

(प्रचार विभाग)

आर्य भारत के मूल निवासी थे

"आर्य कालासागर से आए थे" इस शिर्षक से एक समाचार नवभारत टाइम्स मे २६ अप्रैल के अक मे छपा था। इस समाचार का सप्रमाण खण्डन करता हुआ यह आचार्य ब्रह्मानन्द द्विवेदी का लेख पढिए।

वेद मे आए आर्य और दस्यु शब्द जातिवाचक नही, बल्कि गुणवाचक है। इनके मूलार्थ को न जानकर या जानबूझकर पाश्चात्य विद्वानो ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि आर्य लोग भारत के मूल निवासी नही है। कुछ तर्क व साक्ष्य ऐसे हैं, जो सिद्ध करते हैं कि आर्य भारत के मूल निवासी रहे।

१—वैदिक साहित्य प्राचीनतम साहित्य है। यदि आर्य भारत के अतिरिक्त कही से भी आए तो वहा उनका साहित्य क्यो नही प्राप्त है।

२—ऋग्वेद मे प्राप्त भौगोलिक सकेत यह बताते हैं कि आर्य मूलत पजाब के आसपास के रहने वाले थे।

३—एक देश का परित्याग कर अन्यत्र जाने पर भी शताब्दियो तक मूल स्थान की स्मृति रहती है। परन्तु वैदिक आर्यों का अपने मूल स्थान की स्मृति नही है। सदा से ही इसी देश को अपना समझते आए हैं।

४ यूरोप के किसी भी भाषा मे आर्य शब्द का कोई विकृत रूप देखने मे नहीं आया। यदि भारत के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं स्थान आर्यों का होता तो आर्य से मिलता जुलता कोई शब्द अवश्य होता।

५—सस्कृत सभी भारतीय भाषाओ की जननी कही गई हैं। दक्षिण भारत की भाषाओ मे ७५ से ८५ प्रतिशत शब्द सस्कृत के हैं। यदि सस्कृत बाहर से यहा बसने वालो आर्य) की भाषा होती, तो उनके आने से बहुत पहले बसे हुए यहा के मूल निवासियों की भाषा मे उपयुक्त प्रतिशत शब्द कहा से आ गए?

६—कुछ वर्ष पूर्व यूनेस्को के तत्वावधान मे होने वाली गोष्ठी मे भारत सरकार का प्रतिनिधित्व करने वाला सात सदस्यीय दल ने एक मत से आर्यों के ईराण से आकर भारत मे बसने की मान्यता का प्रतिवाद किया था।

७—सर्व प्रथम महर्षि दयानन्द ने इस भ्रमात्मक विषय के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होने घोषणा की किसी भी सस्कृत ग्रन्थ या इतिहास मे नही लिखा है कि आर्य लोग ईरान से आए और यहा के मुलवासियो से लड कर स्थापित हुए। पुन विदेशियो का लेख माननीय कैसे हो सकता है?

८—पाश्चात्य विद्वान म्यूर ने कहा है यह निश्चित है कि किसी भी सस्कृत ग्रन्थ मे चाहे वह कितना ही पुराना क्यो न हो, आर्यों के विदेश मूलक होने का उल्लेख नही मिलता। ऋग्वेद मे जिन दास दस्यु एव असुर जैसे नागी का उल्लेख है, वे अनार्य मूलक अर्थात् आदिम जातियो के लिए प्रयुक्त किए गए हैं। इस प्रकार कोई प्रमाण तथा सकेत उपलब्ध नही हैं। देखे (ओरिजिनल सस्कृत टेक्स्ट वाल्यूम द्वितीय म्यूर)

९—विश्वविद्यालय इतिहासविद एलफिन्सटन के कथनानुसार मनु स्मृति, न वेदो मे या अन्य प्राचीन किसी ग्रन्थो मे (भारत आने से पूर्व) आर्यो के भारत से बाहर अन्य किसी देशमें रहने का उल्लेख नही है। (देखे हिस्ट्री आफ इण्डिया वाल्यूम प्रथम-एलफिस्टन)

१०—टी० ब्यूरो जैसे पुरातत्ववेत्ता जो विश्वविख्यात हैं। उन्होंने लिखा है कि आर्यो के भारत पर आक्रमण की मान्यता का न कोई प्रमाण है और न इसे पुरातत्व की सहायता से सिद्ध किया जा सकता है। (देख—'द अर्ली आर्यन्स' कल्चरल हिस्ट्री आफ इण्डिया मे प्रकाशित सम्पादक ए.एल. बैशम प्रकाशक—क्लारन्डन प्रेस आक्सफर्ड १९७५)

आश्चर्य की बात यह है कि कुछ भारतीय विद्वानो का मत है कि आर्य उत्तरी ध्रुव से ईरान से भारत पहुचे। परन्तु ईरान के स्कूलो मे पढाया जाता है कि आर्य भारत से आकर ईरान मे बस गए।

उपयुक्त तर्क मे तथ्यो के अनुसार इतिहास का सत्य रूप स्पष्ट होना चाहिए। अन्यथा भारत क्या था, क्या है, कैसा होगा, यह एक प्रश्न बनना रहेगा। (नवभारत टाइम्स २३-५-८८)

अरब जाकर बहुत दुःखी होते हैं हाजी

नई दिल्ली, १३ जून। भारतीय हज यात्रियो को खर्च से कम विदेशी मुद्रा मिल पाती है जिससे अपने देश वापस आने पर उनके पास इतना पैसा भी नही रह पाता कि वे अपने घर सही सलामत पहुँच पाए। केन्द्रीय हज कमेटी बम्बई द्वारा भी मक्का और मदीना में भारतीय हज यात्रियो के लिए ठहरने की सही व्यवस्था नहीं की जाती जिससे हज यात्रियो को परेशानिया होती है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार एक हज यात्री के साढे चौदह हजार रुपये देने पर ४१०० रियाल का चैक मिलता है। इसमे से ५४६ ५० रियाल जदाह मुसाफिर खाना मीना और अराफात मुसाफिर खाना चार्ज तथा जदाह एयरपोर्ट से मक्का तक के बस किराए मे खर्च हो जाता है। इस प्रकार हज यात्री पर मक्का पहुँचने पर ३५५३ ५० रियाल बच पाते हैं। केन्द्रीय हज कमेटी ने मक्का मे हरम शरीफ से ढाई कि० मी० दूर हज जगह पर १० हजार हाजियो को ठहरने का प्रबन्ध किया है। यहा करीब ३५ दिन रुकना पडता है इसके लिए केन्द्रीय हज कमेटी ७५० रियाल ले लेती है। लेकिन यह स्थान हरम शरीफ से इतनी दूर है कि हाजियो को काफी परेशानी होती है। यदि हाजी यहा रुकने के अलावा अपना प्रबन्ध स्वय करना चाहता है तो उसे १२०० रियाल मे जगह मिल पाती है जिसमे वह सिर्फ सो भर सकता है और अपना सामान रख सकता है। कुछ लोग यह पैसा बचाने के लिए फुटपाथो का भी सहारा लेते हैं लेकिन इस बार भारतीय केन्द्रीय हज कमेटी ने एक और निर्देश दिए थे कि उनसे यही पर रुकने का १५० रियाल ले लिया जाए। इसका हज यात्रियो ने विरोध किया है।

बताया जाता है कि मक्का से मदीना जाने के लिए प्रति हाजी ७० रियाल बतौर टैक्स देना पडता है और मदीना मे १०० रियाल और ले लिए जाते हैं जिनका कोई लेखा नही होता। इसके अतिरिक्त मदीना मे रुकने के लिए ५ दिन के २५० रियाल देने पडते है। मदीना मे कुर्बानी के लिए ३०० रियाल खर्च हो जाते हैं। मक्का और मदीना म इस दौरान जो खाने का खर्चा आता है वह ७०० रियाल प्रति हाजी होता है। मजे की बात यह है कि वहा टैक्सी वाले कम से कम १० रियाल किराया लेते हैं चाहे कितनी ही कम दूरी पर जाना हो। इस प्रकार लगभग २०० रियाल वहा घूमन पर ही खर्च हो जाते हैं। मक्का से मदीना का बस किराया १२५ रियाल प्रति हाजी पडता है। इसके अलावा लगभग १०० रियाल पानी पीने का खर्चा होता है।

जब हाजी स्वदेश लौटने को तैयार होता है तो उसके पास हजार रियाल भी नही बच पाते। इनमे से भी अभी उन्हे यहा अपने सम्बन्धियो को तब रुक बतौर कम से कम दो दो खजूरे बाटने होते हैं और खजूरे की कीमत वहा १८ रियाल प्रति किलो है। २४ रियाल प्रति किलो सामान का किराया लगता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि हज यात्री जब स्वदेश लौटता है तो उसका जेब खाली हो जाती है। यह मुख्य कारण है कि उन्हें भारत सरकार द्वारा खर्चे से कम विदेशी मुद्रा मिल पाती है जिसमे वे परेशान रहते हैं। यहाँ लौटने पर वे मुश्किल से अपने घर पहुँच पाते हैं।

आतंकवादियों की बढ़ती हिंसा और आत्मसमर्पण की पेशकश

प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष

हरयाणा रक्षा वाहिनी, दयानन्द मठ, रोहतक

हरयाणा मे पिछले नौ दस महीनो मे दरियापुर अम्बाला, शाहबाद, पानीपत काड तो हो ही चुके थे, आप्रेशन ब्लैक थडर के बाद दो खतरनाक बम विस्फोट कुरुक्षेत्र और पेहवा मे हुए। इन घटनाओं से जो चिन्ता और मुस्तैदी हरयाणा के प्रशासन मे आनी चाहिये थी, यह मानना पडेगा कि वह अभी तक भी नही आई है। चौ. देवीलाल जब तक बादल से पल्ला नही छोडेगे तब तक आतकवाद से निपटने के लिए जो इच्छा शक्ति, मुस्तैदी और मजबूती चाहिये, उसके दर्शन कठिन हैं। यह मानना पडेगा कि हरयाणा मे वे निर्विवाद, हत्याकाण्ड होने का एक कारण यह भी है कि आतकवादियो के दिलो मे हरयाणा प्रशासन का दबदबा और दहशत कम हो गई है। गन्दे हिंसक और समाज विरोधी तत्व उसी दहशत और दबदबे से ही काबू मे रखते हैं। वह दबदबा कम हो जाये तो शान्ति और व्यवस्था डागमगा जाती है। एक तथ्य और है जिसे आखो से ओझल नही करना चाहिए, और वह यह कि हरयाणा के ऐसे लोग मौजूद हैं जो आतकवादियो को सूचना और शरण देने वाले हैं ऐसे तत्वो को खोजकर उनको मजबूत हाथो से कुचलना होगा।

स्वर्ण मन्दिर के घेरे के बाद आतकवादियो के आत्मसमर्पण की घटना से परिस्थितियो मे परिवर्तन ही नही, एक नया मोड भी आया है। आतकवादियो ने जहा एक ओर हिंसात्मक कार्यवाहियो को बढाया है, हरयाणा, पजाब और दिल्ली मे खतरनाक बम विस्फोट हुए है, वहा पजाब के पुलिस अधिकारियो के पास आत्मसमर्पण क लिए दुर्दात माने जाने वाले आतकवादियो तक के पत्र भी आने लगे है। जान बख्शने पर वे आत्मसमर्पण को तैयार है। इनमे कितना धोखा है और कितनी सच्चाई है इसका निर्णय तो खुफिया एजन्सिया ही लगा सकगी। यह भी हो सकता है कि हिंसात्मक घटनाओ को अधिक जानलेवा बनाकर, आतकवादी अपनी शर्तों पर आत्म समर्पण के लिए तैयारी कर रहे हो ऐसी अवस्था मे सरकार को भी आतकवादियो के दमन की अपनी गतिविधियों को और अधिक प्रभावशाली और बनाना चाहिये ताकि आत्मसमर्पण के अलावा और कोई चारा आतकवादियो के लिए न रहे और जो भी हो वह उनकी शर्तों पर होने की बजाये सरकार की शर्तों पर हो।

साहित्य समीक्षा

स्मृतियों में राजनीति और अर्थशास्त्र

लेखिका—डा० प्रतिभा आर्य प्रकाशक—विश्वभारती अनुसंधान परिषद, ज्ञानपुर (वाराणसी) पृष्ठ संख्या २७९ मूल्य रु० ७५ ०० ।

भारतीय सस्कृति में स्मृतियो को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। इस शोध ग्रन्थ में लेखिका ने स्मृतियो मे राजनीति और अर्थशास्त्र के प्रत्येक विषय पर प्रकाश डाला है। इस ग्रन्थ मे राजनीति के सिद्धान्त, राज्य और राजा के कर्तव्य शासन व्यवस्था, न्याय-व्यवस्था, अर्थ का स्वरूप, अर्थशास्त्रीय सिद्धान्त अर्थशास्त्र के विभिन्न तत्त्वो पर प्रकाश डालने के साथ-साथ उत्तराधिकार के सामान्य सिद्धान्त पर भी प्रकाश डाला है। यह पुस्तक लेखिका ने काफी श्रम से लिखी। स्मृतियों में राजनीति और अर्थशास्त्र जैसे जटिल विषय की खोज करके उसे सरल भाषा मे प्रस्तुत करने के लिए वह धन्यवाद की पात्र हैं।

इस पुस्तक मे कागज छपाई आकर्षक हैं। यह पुस्तक प्रत्येक परिवार में रखने योग्य एव संग्रहणीय है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सपादक

अंग्रेजी क्यों हटायें ?

—डा० वेदप्रताप वैदिक

(गतांक से आगे)

यह कहने की जरूरत नही है कि एक साधारण जवान और फौज के अफसरों के बीच असमानता की पाताल-जितनी गहरीं खाई होती है। यह असमानता उपरोक्त अन्याय की खाज में कोढ़ का काम करती है। क्योंकि अफसरों के पद, जिन पर जवानों की तुलना में १०० से लेकर १००० गुना तक ज्यादा खर्च किया जाता है, केवल उसी वर्ग के लिए आरक्षित हो जाते हैं, जो 'कान्वेन्ट' में पढ़ा हो, जो अंग्रेजी फर्राटे से बोलता हो या अपने पुराने मालिकों की हूबहू नकल करने में निष्णात हो। जो गरीबों के लड़के हैं, वे 'डिफेन्स एकेडेमी' की परीक्षा में बैठने का साहस भी नही कर सकते। योग्यता एक छोटे से वर्ग की बपौती बनकर रह जाती है। यही वर्ग है। जो सारे देश पर छाया हुआ है। यह समाजवाद कैसे ला सकता है ?

एक समतामूलक समाज के निर्माण करने वाले लोगों का जनता से कुछ तो सीधा रिश्ता होना चाहिए। लेकिन जो शासकगण हैं, शासकगण से मेरा मतलब उन सब लोगों से है, जो सम्पन्न हैं, उच्च वर्ण के हैं, शहरों में रहते हैं, नीति बनाते हैं, वे जनता से बिल्कुल दूर जा पड़ते हैं। जब वे बच्चे होते हैं तो अलग-थलग स्कूल में पढ़ते हैं और जब उनके बच्चें हो जाते है तो वे भी इन्ही स्कूलों मे पढ़ते हैं। इस वर्ग को क्या मालूम कि टाटपट्टी स्कूलों की टपकती हुई छत के नीचे बैठने का मतलब क्या होता है ? ये क्या जाने कि पेशाव की बदबू और कक्षा की पढ़ाई में क्या रिश्ता है ? इस वर्ग का बच्चा घर आकर अपने पिताजी से यह शिकायत क्योंकर करेगा कि कुछ सौ रुपट्टी पाने वाला मास्टर अपनी झुंझलाहट हम पर निकालता है।

हमारे देश के नीति-निर्माता वर्ग को इन सब परिस्थितियों को भोगना ही नही पड़ता, इसीलिए चुनिंदा स्कूलों पर करोड़ों रुपये खर्च किए जाते हैं और करोड़ों बच्चे जिन पाठशालाओं में पढ़ते हैं, वे अनवरत उपेक्षा की शिकार बनी रहती है। जिस दिन देश में 'कान्वेन्ट' नही होगा और शासक वर्ग का बच्चा भी टाटपट्टी स्कूल में पढ़ेगा और घर आकर स्कूल के अन्धेरे की, बदबू की, पिटाई की चर्चा करेगा, उसी दिन देश की शिक्षा का नक्शा बदल जाएगा। जिस दिन रेल की द्वितीय श्रेणी में मन्त्री धक्के खाएगा, अफसर को पाखाने के पास खड़े होकर रात काटनी पड़ेगी और नेता को दरवाजे में लटकते हुए सफर करना पड़ेगा, उसी दिन हिन्दुस्तान की रेलों को सुधारने के लिए सही चिन्तन प्रारम्भ होगा। उसी दिन समाजवाद नारा नही रहेगा, सच्चाई बन जाएगा।

लेकिन जब तक देश में अनिवार्य अंग्रेजी चलेगी—शिक्षा में, न्याय में, नौकरी में, चिकित्सा में, फौज में—समाजवाद आ नहीं सकता। अंग्रेजी शिक्षा बचपन से ही बच्चों मे गैर-बराबरी और पाखण्ड की भावना को जन्म देती है। आप उत्पादन और वितरण की प्रणाली में जब में तब तक सुधार नहीं कर सकते, जब तक देश के बच्चों में बचपन से ही समता मूलक मनोभूमि तैयार नहीं हो। ये अंग्रेजी स्कूल समाजवाद की इस प्रथम आवश्यकता की जड़ों में निरन्तर मट्ठा डालने का प्रयत्न करते रहते हैं।

आधुनिकता और अंग्रेजी पर्यायवाची नहीं

कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि यदि अंग्रेजी हट गई तो देश के आधुनिकीकरण मे बाधा पहुंचेगी। आज देश में जो भी आधुनिकता दिखाई पड़ती है, वह अंग्रेजी के कारण ही है।

ऐसी धारणा इसलिए बन गई है कि बहुत से लोगों ने आधुनिकता का ठीक-ठीक मतलब आज तक नही समझा है। वे अंग्रेजीकरण को, पश्चिमीकरण को ही आधुनिकीकरण है क्या ? अगर इस शब्द पर नजर डाली जाए तो काफी हद तक अर्थ स्पष्ट हो जाता है। जो अधुनातन है, बिल्कुल नया है, वह आधुनिक है। अंग्रेजी के 'माडर्नाइजेशन' शब्द की जो लेटिन धातु है, उसका अर्थ है—"बिल्कुल अभी'। याने जो अभी-अभी सामने आया है ताजा है, पुराना नही है, वह आधुनिक है।

ये तो हुआ शाब्दिक अर्थ। लेकिन वास्तव में आधुनिकता का मतलब होना चाहिए—प्रकृति पर मनुष्य की विजय, सत्ता के विरुद्ध स्वतन्त्रता का अभ्युदय, अन्धविश्वास के विरुद्ध तर्क का प्रतिष्ठापन और सामान्य दक्षता की अभिवृद्धि। क्योंकि ये सब बाते मनुष्य के सुदीर्घ इतिहास में प्राचीन काल के बजाय दो-तीन सौ वर्षो में विशेष रूप से उभरी हैं, अतः इन्हें ही आधुनिक मूल्य किसी भी जाति या भाषा या देश की बपौती नही है।

यह संयोग की बात है कि इनमें से कुछ मूल्य पहले यूरोप में प्रतिष्ठापित हुए। शायद इसीलिए लोगों को भ्रम हो जाता है और वे यूरोप की नकल को आधुनिकीकरण मानने लगते हैं। यूरोप की हर चीज आधुनिक नही है। यदि हर चीज को आधुनिक मानेंगे तो फासीवाद, नाजीवाद, साम्यवादी अधिनायकवाद जैसी निहायत जंगली और आदिम चीजों को भी आधुनिक और ग्राह्य मानना पड़ेगा।

खैर, हम बात कर रहे थे, भाषा और आधुनिकता के बारे में। यूरोप में जब पुनर्जागरण प्रारम्भ हुआ, जब आधुनिकता ने यूरोप के द्वार खटखटाये तो सबसे पहला धक्का लगा, लेटिन के एकछत्र साम्राज्य को। एक साम्राज्यवादी भाषा के एकाधिकार को चुनौती दी स्थानीय भाषाओं ने। जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी, डच, चेक, स्लोवाक आदि भाषाओं के जरिये राष्ट्रों ने अपने स्वतन्त्र अस्तित्व की अभिव्यक्ति की। खुद लन्दन की स्थिति क्या थी ? अदालत का काम, राज और बड़े बड़े बौद्धिकों का लेखन लेटिन में चलता था। अगर कोई वकील अदालत मे अंग्रेजी में बहस करता तो उस पर जुर्माना हो जाता था। अगर कोई लेखक लेटिन में नही लिखता था दूसरे दर्जे का बौद्धिक समझा जाता था। अंग्रेजी को गंवारों की भाषा माना जाता था। लेकिन ज्यों-ज्यों आधुनिकता की चेतना बढी, जनता ने अपनी-अपनी भाषाओं के लिए जमकर संघर्ष छेड़ा। उनको परवान चढ़ाया। अपनी भाषा का, स्वभाषा का समुत्कर्ष आधुनिकता का एक अनिवार्य अंग है। शायद अधकचरे अंग्रेजीदा लोगो को इन तथ्यों का पता नही है, वरना वे भारत जैसे देश मे अंग्रेजी को थोपने की बात नही करते। वे स्वयं इतिहास से कुछ सबक लेने को तैयार क्यो नही है।

किसी भी राष्ट्र पर एक विदेशी भाषा को थोपना आधुनिकता के मूलभूत सिद्धान्तों के विरुद्ध है। आपको एक ठोस उदाहरण देता हूँ। आप एक आधुनिक राज्य किसे कहेंगे ? एक आधुनिक राज्य तो वही होगा जिसमें जनता राज-काज मे पूरी तरह भाग ले। इसके विपरीत एक सामतवादी, दकियानूसी, पोगापंथी राज्य कैसा होगा ? ऐसा होगा जिसमें 'कोऊ नृप होय हमे का हानि।' जनता को नीति-निर्माण से कुछ लेना-देना नही। राजा की इच्छा ही कानून है या जैसा कि फ्रांस का लुई चौदहवां कहा करता था, "मैं ही राज्य हूँ।" यह है—१७ वी शताब्दी की बात। बिल्कुल भी आधुनिक नहीं।

(क्रमशः)

आर्यों के आवश्यक कर्म

ले०—महात्मा हंसराज

(गतांक से आगे)

तीसरी आवश्यक बात : स्वाध्याय

तीसरी बात जो आर्यसमाज के जीवन के लिए आवश्यक है वह "स्वाध्याय" है। शास्त्रो मे स्वाध्याय की इतनी महिमा है कि अन्य किसी विषय को इतना महत्व नही दिया गया। "सत्यार्थप्रकाश" मे स्थान-स्थान पर इसकी पुष्टि की गई है कि स्वाध्याय करो। एक बार इस बात को बारह बार दोहराया है। जब ब्रह्मचारी विद्या समाप्त करके आचार्य से विदा होता है तो उस समय भी, जबकि ब्रह्मचारी सब कुछ जानता है, फिर भी आचार्य उसे यह शिक्षा अवश्य देता है कि स्वाध्याय से विमुख मत रहना स्वाध्याय मे प्रमाद मत करना। इस प्रकार स्वाध्याय आर्यों के लिये बड़ा आवश्यक है,

स्वाध्याय का शुद्ध अर्थ

खेद है कि आजकल लोगो ने स्वाध्याय के अशुद्ध अर्थ के लिए हैं। कोई व्यक्ति सारा दिन उपन्यास पढ़ता रहता है कि उसने स्वाध्याय कर लिया। कोई व्यक्ति कोई अग्रेजी पुस्तक पढ़कर यह समझ लेता है कि उसने स्वाध्याय कर लिया। कोई और नैतिक पुस्तक पढ़कर ही स्वाध्याय समाप्त कर लेता है। इसमे से अश्लील उपन्यासो का अध्ययन कतई स्वाध्याय नही है, और अन्य पुस्तको को पढ़ना भी अत्यन्त निम्न स्तर का स्वाध्याय है। शास्त्रो मे लिखा है कि "स्वाध्याय परमेश्वर की वाणी के पाठ को कहते हैं।' अत प्रत्येक आर्य समाजी को अपने घर मे वेदा के ग्रन्थ रखने चाहिये तथा वे अल्मारियो मे बन्द न रहें, अपितु उसका पाठ भी होना चाहिये। जिन लोगो का इतना सौभाग्य नही है कि वे वेद भाष्य उपलब्ध हैं। वे स्वामी जी के आर्य भाषा के वेद भाष्यका ही स्वाध्याय करें। स्वाध्याय मे यह आवश्यक नही कि एक दिन मे दस दस, पन्द्रह पन्द्रह मन्त्रो को पढ डाला जाये, तथा उनको समझा न जावे, प्रस्तुत एक मन्त्र पढा जावे तथा उनका अर्थ जानने का यत्न किया जाये। इस प्रकार उसे समझा जावे, फिर उसको अपने जीवन मे ढलाया जाये, तब जाकर स्वाध्याय मे पूरा लाभ होगा। केवल पाठ मात्र से इतना लाभ न होगा।

दूसरी कोटि का स्वाध्याय ऋषि कृत ग्रन्थो का पठन पाठन है, परन्तु अश्लील उपन्यासो का पढ़ना अत्यन्त बुरा है। विशेष रूप से विद्यार्थियो को इससे बचना चाहिये। विद्यार्थियो के लिए ऐसे उपन्यासो का पढ़ना विष जैसा प्रभाव रखता है। इसलिए ब्रह्मचारियो को इस प्रकार की पुस्तको से बचना चाहिए।

चौथी आवश्यकता प्रातः सत्संग

आर्यों के लिये चौथी आवश्यक बात सत्सग है। ईसाई लोग अपने चर्च मे जाकर सत्सग करते हैं। मुसलमान भी मस्जिद मे जाकर इकट्ठे नमाज पढ़ते हैं। ऋषि दयानन्द ने भी सत्सग पर बड़ा बल दिया है। यह जो आर्यसमाज की साप्ताहिक बैठक है, इसमे हम सम्मिलित होकर दूसरे बुजुर्गों के उपदेश सुनते हैं। परस्पर मेल-मिलाप से हमारा ज्ञान बढ़ता है। परस्पर सहायता की इच्छा उत्पन्न होती है। ससार में कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं जो यह कहते हैं कि सत्सग की क्या आवश्यकता है, मनुष्य अपनी उन्नति स्वय कर सकता है। यदि कोई ऐसा व्यक्ति है तो मैं उसे मनुष्य न समझूगा। मैं समझूगा कि वह कोई देवता अथवा ऋषि है। कारण, मनुष्य तो कम से कम एक दूसरे की सहायता के बिना निर्वाह नहीं कर सकता। हम बात-बात पर दूसरो की सहायता पर निर्भर हैं। हमारा वस्त्र आदि सब कुछ दूसरों की सहायता से तैयार होता है। फिर हम कैसे कह सकते हैं कि हम दूसरो की सहायता पर निर्भर नही हैं?

सत्संग के सम्बन्ध में एक आवश्यक निर्देश

सत्सग के सम्बन्ध मे हमारा यह विचार होना चाहिये कि हमारी सगति अच्छे से अच्छे व्यक्तियो के साथ हो। मित्रता बनाते समय प्रत्येक आर्य भाई को इस बात का विचार रखना चाहिए कि उसकी मित्रमण्डली मे अधिक सख्या आर्य समाजियो की ही हो। कल्पना करो कि दो आर्य समाजियो मे मित्रता है, जिनमे से दूसरे के चार मित्र ऐसे हैं जो आर्यसमाजी नही हैं। अब जिसके चार मित्र आयसमाजी नहीं है और एक आर्यसमाजी है, उसके विचार में परिवर्तन का आना आवश्यक है। इसलिये ऐसे व्यक्तियो से मित्रता पैदा करनी चाहिए जो कि आर्यसमाजी हो तथा अन्य लोगो को आर्यसमाजी विचार का बना लेना चाहिये। हमे सदा आर्यों से ही सम्बन्ध स्थापित करने चाहिये तथा धन-सम्पदा एव प्रतिष्ठा का विचार कम करना चाहिये।

नाता किन से जोड़े

आजकल क्या देखने मे आता है कि बिरादरियो के बन्धन मे जकड़े हुए आर्यसमाजी अपनी पुत्रियां ऐसे घरो मे दे देते हैं, जहा कि पति आर्यसमाजी नहीं होता। परिणाम यह होता है कि वे स्वय भी कष्ट उठाते हैं, कन्या के लिये भी कष्ट का कारण बनते हे। तथा आर्यसमाज के लिये भी इससे बुरे परिणाम निकलते हैं। अत अपने नाते सम्बन्धो तथा वैवाहिक सम्बन्धो मे आर्यसमाज का ही अधिक विचार रखना चाहिये। अन्य बिरादरियो तथा धन सम्पदा का कम विचार रखना चाहिये।

पांचवीं आवश्यक बात : संग्राम

पाचवी बात प्रत्येक आर्य समाजी के लिए जो है, वह सग्राम है। सग्राम का अर्थ लडाई। परन्तु क्या लडाई का अर्थ एक दूसरे की पगड़िया उतारना है। क्या यह लडाई उचित है? मेरा भाव इस लडाई से नही है। मेरा तात्पर्य यह है कि प्रत्येक मनुष्य के मन मे भले या बुरे दो प्रकार के विचार उत्पन्न होते हैं भले से भले मनुष्य मे भी यदि वह देवता या ऋषि नहीं है कभी न कभी बुरा विचार आ ही जाता है। तथा बुरे से बुरे मनुष्य मे भी, जो विषयो की गहरी दलदल में फसा है, उसमे भी कभी कभी पवित्र विचार आ जाते हैं। अन्तर केवल इतना है कि श्रेष्ठ मनुष्य मे बुरे विचार कम आते है और बुरे मनुष्यो मे श्रेष्ठ विचारो की न्यूनता होती है। ये शुभ अशुभ विचार मानव जीवन मे सग्राम करते रहते हैं। हमारा कर्तव्य यह है कि हम श्रेष्ठ विचार को बढ़ाते जावें तथा बुरे विचारो को कम करने का यत्न करें। इसका नाम सग्राम है। प्रत्यक व्यक्ति को चाहिये कि वह सग्राम मे प्रविष्ट हो। यह नित्य अपने विचारो को शुद्ध रखने का प्रयत्न करे तथा बुरे विचारो को निकालने का प्रयत्न करे।

छठी आवश्यक बात : समीक्षा

आर्यसमाज के लिये छठी आवश्यक बात समीक्षा है, अर्थात इस बात का पता बताया कि हमने कहा तक उन्नति की है, किस स्तर तक हम धार्मिक जीवन मे आगे बढ़े हैं, हमारे धार्मिक जीवन मे क्या परिवर्तन आया है। इसलिए आवश्यक है कि यदि हम प्रयत्न करते जावे, परन्तु हमे यह ज्ञात न हो कि हमने यहा तक उन्नति की है, तो हमे इससे लाभ नहीं पहुँच सकता। अत सदा अपना एक उद्देश्य नियत करके उसकी ओर बढ़ना चाहिये।

ये बातें हैं जिन पर एक-एक करके आर्यसमाजियो को आचरण करना चाहिये। इस पर आचरण करन से उसकी दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति होगी तथा आर्य समाज एव वैदिक धर्म का बोलबाला होगा। ●

ऋषि दयानन्द के ये सरकारी जीवन-चरित (४)

—प्रो० भवानीलाल भारतीय

२६ लेखक का यह कथन (पृ० ११६) अत्यन्त हास्यास्पद है कि स्वामी दयानन्द निरूपित वैदिक धर्म मे भक्ति के लिये कोई गु जाइश नहीं है। शायद लेखक भक्ति का अर्थ सूर, तुलसी, मीरा जैसे साकारवादी वैष्णव भक्तो द्वारा स्वीकार की गई भक्ति से ही लेता है। तभी तो उसे यह लिखने का साहस हुआ कि

यदि लेखक स्वामी दयानन्द के आर्याभिविनय तथा उपासना प्रतिपादन पञ्चमहायज्ञविधि आदि ग्र थो को ध्यान पूवक पढता तो उसे यह भ्रम नही होता। उसने यह भी गलत धारणा बना ली कि शायद मूर्तिपूजा और भक्ति मार्ग का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध होने के कारण ही स्वामी जी ने भक्ति का विरोध किया। यह विचार भी पूर्णतया गलत है। स्वामी जी ने स्वय ग्रन्थो मे भक्ति और उपासना दोनो शब्दो का प्रयोग किया है। मूर्ति-पूजा तो सच्ची ईश्वर भक्ति मे बाधक ही है। वह मनुष्य को जडपूजा के लिये प्रेरित करती है। यह तो सत्य है कि स्वामी दयानन्द ने नरसी मेहता, मीराबाई, सूरदास, तुलसीदास आदि साकारवादी भक्तो के गीतो के प्रति कोई अनुराग प्रकट नहीं किया। कारण स्पष्ट था। इन भक्तो की विचार धारा पुराण प्रोक्त मत का ही अनुकरण करती है और स्वामी दयानन्द पुराणों की शिक्षा को सब प्रकार से वेद विरुद्ध तथा हानिकारक मानते हैं।

२७ लेखक के विचारानुसार (पृ० १२१) स्वामी जी के अधिकाश विचार यथा, वेदो को ईश्वर प्रोक्त मानना समस्त धार्मिक मामलो मे एक ही पुस्तक वेद को अन्तिम प्रमाण तथा अधिकृत स्वीकार करना तथा मूर्ति-पूजा और अवतार आदि का घोर खण्डन करना ईसाइयत तथा इस्लाम द्वारा हिन्दू धर्म को दी गई चुनौतियो का प्रतिकार करने के लिये ही स्वीकार किये गये थे।

समीक्षा—जिस व्यक्ति ने स्वामी जी के जीवन व्यक्तित्व तथा विचारो का मौलिक रूप से अध्ययन न किया हो, वही ऐसी बात कह सकता है। स्वामी दयानन्द की विचारधारा को ईसाइयत और इस्लाम की आक्रामक चुनौतियो के प्रतिकार रूप मे स्वीकृत मानना उस महापुरुष के, चिन्तन की मौलिकता के साथ अन्याय करना है। इस पर विस्तार से अन्यत्र विचार किया जा सकता है।

२८ पृष्ठ १२१ पर लेखक ने पुन इस बात पर दु ख प्रकट किया है कि स्वामी दयानन्द ने उस भक्ति को कोई महत्व नही दिया जिसका उल्लेख योग सूत्रो मे मिलता है। लेखक को इस बात का पता नही कि योगदर्शन मे ईश्वर प्रणिधान तथा प्रणव के जप की तो चर्चा है किन्तु उसमे 'भक्ति शब्द का कहीं भी उल्लेख नही है। वह यह तो जानता भी नही कि स्वामी दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के उपासना प्रकरण मे योग सूत्रो को ही भूरिश उधृत किया है। उनका यह पश्चाताप निरर्थक ही है कि दयानन्द ने मध्यकालीन भक्तो के कृतित्व की सराहना नही की। वेदाधारित उपासना प्रणाली को पुनरुज्जीवित करने वाला दयानन्द भला पौराणिक साकारवादी भक्ति और भक्तो का गुणगान कैसे करता ?

२९ लेखक ने इस बात पर भी खेद प्रकट किया है कि मूर्तिपूजा का तिरस्कार तो स्वामी जी ने किया किन्तु अधिक व्ययसाध्य यज्ञ की प्रणाली को पुनरुज्जीवित किया। उसके विचार से धनी लोग ही यज्ञ करने में समर्थ होते हैं और यज्ञ करना गरीबो के लिये सम्भव नहीं है।

समीक्षा—स्वामी दयानन्द यज्ञ को अधिक खर्चीला बनाने के पक्षपाती कभी नहीं रहे। उनके विधानानुसार प्रात और साय किये जाने वाले अग्निहोत्र में केवल १६-१६ आहुतियां ही डाली जाती हैं। अत गरीब और अमीर सभी यह कर सकते हैं। लेखक ने यहां लिखा है कि गौतम बुद्ध भी यज्ञों के विरुद्ध थे। किन्तु वह शायद यह भी जानता है कि बुद्ध और दयानन्द की विचारधारा मे रात दिन का अन्तर है। दयानन्द वेद के प्रति अद्वितीय निष्ठा रखते हैं जब कि बुद्ध वेद के विरोधी थे।

३० लेखक स्वामीजी को सुझाव देता सा लिखता है कि यदि उन्होने सभी लोगों पर हिन्दू धर्म से सघर्ष करने का नीति नहीं अपनाई होती और सनातनी धर्म को चुनौती नहीं दी होती तो वे हिन्दू धर्म की अधिक सेवा कर सकते और उन्हे शिक्षित लोगो का अधिक सहयोग मिलता। (पृ १२२)

समीक्षा—लेखक का यह सुझाव स्वामी जी शायद ही स्वीकार करते क्योंकि वह जानता ही नहीं कि स्वामी जी किस धातु के बने थे। इसका अधिक विस्तार हम क्या करें ? स्वामी जी समझौतावादी नहीं थे।

३१ लेख पुन इस बात का खेद प्रकट करता है कि स्वामी जी ने मूर्तिपूजा का केवल इसीलिये विरोध किया क्योकि उसके लिये वेद मे आज्ञा नही है। उसके अनुसार यदि दयानन्द ने यथार्थवादी रवैया अपनाया होता तो वह इस प्रथा का विरोध नहीं करता जो सन्तो और भक्तो द्वारा अपनाई गई तथा जो हिन्दू धर्म का अनिवार्य अ ग बन गई थी। (पृ० १२२)

समीक्षा—लेखक यह क्यो भूलता है कि स्वामी दयानन्द के लिये वेद ही धार्मिक मामलो मे सर्वोपरिप्रमाण हैं। कोई कुप्रथा चाहे धर्म का अ ग ही बन जाये या सन्तो और भक्तो द्वारा स्वीकार की गई हो उसे दयानन्द प्रशस्त नही मानते।

३२ लेखक के मतानुसार मूर्तिपूजा हिन्दू धम का अनिवार्य अ ग बन चुकी है और कई हिन्दू इसे पापो से त्राण पाने का सबसे सरल उपाय मानते हैं। लेखक के अनुसार अधिक अच्छा होता यदि स्वामी जी मूर्तिपूजा के विधान मे आई बुराइयो के निराकरण के लिये कोई उपाय सुझाते न कि उसे जड से ही समाप्त करने की बात करते। (पृ० १२२)

समीक्षा—न तो मूर्तिपूजा आर्य धर्म का अनिवार्य अ ग है और न इसका आचरण करने से पाप ही छूटते हैं। दयानन्द रोग का आधा उपचार करने के विरुद्ध थे। वे मूर्तिपूजा को समाज के शरीर का एक भयकर विषेला व्रण मानते थे। अत उसमें व्याप्त बुराइयो का निराकरण करने की अपेक्षा वे उसे पूर्णतया समाप्त कर देना ही श्रेयस्कर समझते थे। इस प्रसग मे लेखक ने जो जर्मन दार्शनिक नीत्शे का उद्धरण दिया है वह कोई अच्छा उद्धरण नही है। इसमे तो धर्माधारित समाज मे पापो के अस्तित्व को अनिवार्य कहा है तथा पुजारियो द्वारा किये जाने वाले पापो का भी समथन किया गया है।

३३ लेखक को इस बात पर भी आपत्ति है कि स्वामी जी ने धार्मिक मामलो मे केवल वैदिक सहिताओ को ही अन्तिम प्रमाण माना और वेदागो और उपनिषदो को गौण स्थान दिया। एकविदेशी लेखक को उद्धृत कर वह कहता है कि कर्म और पुनर्जन्म के जिन सिद्धान्तो पर स्वामी दयानन्द जोर देते हैं वे तो सहिताओ मे हैं ही नही। इसके दर्शन तो हमें सर्वप्रथम उपनिषदो मे ही होते हैं। (पृ० १२३)

समीक्षा—लेखक का उपर्युक्त आक्षेप भी औचित्य से रहित है। वेद की सहिताओ को चरम सीमा घोषित तक करने मे सभी प्राचीन धर्माचार्य एक मत हैं। वेदागो और उपनिषदो को स्वामी जी वही महत्व देते हैं जो उनका प्राप्य है। वे कर्म और पुर्नजन्म को भी वेदो से सिद्ध मानते हैं। विदेशी लेखक के कथन का कोई मूल्य नहीं है।

३४ लेखक ने इस बात पर खेद प्रकट किया है कि स्वामी दयानन्द ने कठोर खण्डन मण्डन का मार्ग अपना कर अपने आलोचकों की सख्या मे ही वृद्धि की तथा अपने समर्थको को कम किया। इसके पश्चात् लेखक आज के युग का प्रचलित राग "अनेकता में एकता।"

गाने लगता है और इस नारे को भारतीय सस्कृति का प्रमुख तत्त्व बताता है। उसके अनुसार दृष्टिकोण, कार्य पद्धति, विचारो और भावो मे एकता न तो सम्भव है और न उचित। (पृ० १२५)

समीक्षा—दयानन्द कृत खण्डन उनके जीवन मूल्यों को नियन्त्रित करने वाले कुछ सिद्धान्तो पर आधारित था। उन्हें इस बात की तो चिन्ता भी ही नही कि अपने निर्धारित मार्ग पर चलने से उनके आलोचक बढते हैं या समर्थक कम होते हैं। वे तो "एकला चलो रे" को मानते थे और न्याय्यात् पथ प्रविचलन्ति पद न धीरा के अनुयायी थे। अनेकता मे एकता का नारा सर्वथा झूठा है। जहा अनेकता होगी वहा एकता सर्वथा स्वप्न ही रहेगा। दयानन्द तो राष्ट्र के समस्त नागरिको को एक ही भाव और विचारसूत्र मे बधा देखना चाहते थे।

३५ लेखक के अनुसार यदि परिणाम को ही अपने कार्यों की श्रेष्ठता की कसौटी माना जाय तब तो दयानन्द अपने लक्ष्य की पूर्ति मे बुरी तरह

वे असफल हुए हैं क्योंकि वे (१) न तो सर्वधर्म ... कर पाये (२) न मूर्तिपूजा और जाति प्रथा को ही समाप्तकर सके और (३) न वेद को ही हिन्दुओं के एक मात्र मान्य ग्रन्थ के रूप में स्वीकार करा पाये। (पृ १२५)

समीक्षा—निवेदन है कि महापुरुष और स्वप्नद्रष्टा इस बात की परवाह नही करते कि उनके अनुयायियो ने उनकी बातो को माना है या नहीं। उनका काम संसार को धर्म के मार्ग पर चलाने के लिये प्रेरित करने का है। यदि दयानन्द की बातो को हिन्दू धर्म के अनुयायियो ने स्वीकार नही किया तो यह हिन्दुओ का ही दुर्भाग्य है और इसीलिये इस धर्म के अनुयायी पदे पदे तिरस्कार लाञ्छना अपमान और उत्पीडन के शिकार हो रहे हैं। हम अपने विश्वास को पुन दोहराना चाहते हैं कि जब तक हिन्दू समाज दयानन्द निर्दिष्ट सिद्धान्तो को स्वीकार नही करेगा उसका भविष्य अंधकार मे ही रहेगा।

३६ लेखक कहता है कि दयानन्द ने उपनिषदो और षड्दर्शनो मे विवेचित अध्यात्मवाद को गौण स्थान दिया तथा गीता में वर्णित भक्तिवाद एवं पुराणो और महाकाव्यो मे अभिव्यक्त भक्ति महत्त्व नही दिया अत उनके ये मन्तव्य भी स्वीकार नही हुए। (पृ० १२५)

समीक्षा—उक्त आक्षेप के उत्तर में हम कहना चाहेगे कि स्वामी जी ने उपनिषद् और दर्शनो तथा गीता वर्णित अध्यात्म तत्त्व को उतना ही महत्त्व दिया जिसके वे अधिकारी थे। पुराणो और महाकाव्यो के प्रति उनकी धारणा भी सब विदित हैं। अत लेखक का उक्त प्रकार से खेद करना व्यर्थ है।

३७ लेखक ने स्वामी दयानन्द द्वारा आर्यसमाज की स्थापना को पहले से ही विभाजित हिन्दू समाज को और अधिक विभाजित करने का प्रयास कहा है और आर्यसमाज की वर्तमान निष्क्रियता तथा अकर्मण्यता पर खेद प्रकट किया है। (पृ० १२६)

समीक्षा—उत्तर मे निवेदन है कि स्वामी जी ने आर्यसमाज की स्थापना वैदिक धर्म और संस्कृति के प्रचारार्थ एक सशक्त आन्दोलन के रूप मे की थी। हिन्दू समाज को विभाजित करने का दायित्व तो विभिन्न सम्प्रदायो पर जाता है। जहा तक आर्यसमाज का वर्तमान शोचनीय दशा का लेखक ने जो उल्लेख किया है उससे असहमत होने का भी कोई कारण नही है।

३८ लेखक ने राधास्वामी मत को इस प्रसंग मे पुन स्मरण किया है। उसने राधास्वामी सत्संग द्वारा प्रकाशित एक स्मारिका को उद्धृत करते हुए सत्यार्थप्रकाश मे इस सम्प्रदाय की आलोचना न किये जाने का एक कल्पित कारण उल्लिखित किया है। स्मारिका के अनुसार स्वामी दयानन्द ने १८७२ मे आगरा मे राधास्वामी मत के संस्थापक स्वामी जी महाराज (शिवदयालसिंह) से भेंट ही नही की अपितु इस मत की दीक्षा भी ग्रहण की। तत्पश्चात् उन्होने उक्त स्वामी जी महाराज से हिन्दू धर्म का ईसाई मुसलमानो से रक्षा करने हेतु कार्य करने की आज्ञा मागी। स्मारिका लेखक की मान्यता है कि स्वामी दयानन्द का राधास्वामी मत के प्रति इसी आस्था ने उन्हे इस सम्प्रदाय की आलोचना से विरत रक्खा। कहना यही होगा कि यह सारा प्रसंग ही राधास्वामियो द्वारा कल्पित किया गया है और इसमे सत्य का स्वल्पांश भी नही है। जैसा कि हम पहले ही लिख चुके हैं स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश मे जो राधास्वामी मत की आलोचना नही की उसका एक मात्र कारण यही था कि उस समय तो यह मत स्थापित हुआ ही था और इसका कुछ अधिक प्रचार भी नही था। इसलिये स्वामीजी ने इसके मन्तव्यों की टीका लिखने का विचार ही नही किया। लेखक ने भी स्मारिका के इस उल्लेख को अविश्वसनीय माना है। हम लेखक के निम्न निष्कर्ष से पूर्णतया सहमत हैं—

३९ लेखक ने इस बात पर दुःख प्रकट किया है कि स्वामी दयानन्द ने अविवेक पूर्वक इस्लाम और ईसाइयत की अच्छाइयो की भी उपेक्षा की है, माना इन मतो में कुछ भी अच्छा या ग्रहणीय नही है। (पृ० १२७)

समीक्षा—लेखक का यह कथन दोष पूर्ण है क्योंकि स्वामीजी ने इस्लाम और ईसाइयत की अच्छाइयों को भी वेदानुकूल होने से ग्राह्य माना है।

४० लेखक स्वामी दयानन्द पर वेदो के प्रति अत्यधिक पूर्वाग्रह ग्रस्त होने का आरोप लगाते हुए लिखता है कि इसी पक्षपात पूर्ण दृष्टि के कारण उन्होंने वेदों में विद्यमान आचार विरुद्ध सिद्धांतो और आचरणों, पुराण कथाओ तथा जादू टोना आदि का सर्वथा उपेक्षा ही कर दी है। (पृ० १२७)

समीक्षा—लेखक यदि वेदो मे पाये जानेवाले सदाचार विरोधी आचार, विचार, कल्पित उपाख्यानो तथा जादू टोने का पुष्टि में कोई प्रमाण पेश करता तो उस पर विचार किया जा सकता था। वेदो पर इस प्रकार के मिथ्यादोषारोपण करने की परम्परा पाश्चात्य विद्वानो ने प्रचलित की थी और श्री सिंह जैसे अनुकरण प्रिय लोग बिना विचार किए ही इनको पुनरावृत्ति करते रहते हैं।

४१ स्वामी दयानन्द द्वारा राष्ट्रीय एकता के लिए किए गए स्वामीजी के प्रयत्नो के असफल हो जाने का कारण बताते हुए लेखक उन्हे त्रुटिपूर्ण ढंग से कल्पित अधूरे मन से किया गया अव्यावहारिक तथा असम्भव को प्राप्त करने के इच्छुक कहा है। (पृ० १४६)

समीक्षा—लेखक के मूल्यांकन को ही हम एकतापूर्ण तथा पक्षपात मुक्त क्यो न मान लें गनीमत यह है कि उसने स्वामी जी के राष्ट्रीय एकता विषयक प्रयत्नो को महत्वपूर्ण तो माना ही है।

४२ लेखक की असावधानी से कभी कभी विनायक बनाते बनाते बन्दर बन जाता है (पृ० १५३) पर उसने स्वामी जी के आहार (भोजन) का उल्लेख करते हुए लिखा उनका भोजन सादा और पौष्टिक होता था। यहा तक तो ठीक, परन्तु आगे लेखक ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा स्वामीजी की निन्दा मे १८६९ मे लिखित एक पुस्तिका 'दूषणमालिका' के हवाले से उन्हे लड्डू और गुलाबजामुन जैसी मिठाइयो का शौकीन बताया है। हमे इस कथन की सचाई की गवेषणा मे कोई रुचि नही है। किन्तु अच्छा होता यदि लेखक यह भी लिख देता कि स्वामी दयानन्द ने अवधूतावस्था मे गंगातट पर भ्रमण करते समय भोजनादि के प्रति पूर्णतया उपेक्षा वृत्ति धारण कर रक्खी थी।

तो यह है सरकारी जीवनी लेखक का कमाल। हम मानते हैं कि स्वामी दयानन्द के मत से किसी की सर्वांश मे सहमति हो यह आवश्यक नही है, किन्तु किसी महापुरुष के विचारो का मूल्यांकन करते समय उसके प्रति पक्षपात रहित एवं युक्ति संगत दृष्टिकोण अपनाया जाना आवश्यक है।

भारत पर आर्यों के आक्रमण की कहानी जर्मन में गढ़ी गई

–डा० रामविलास शर्मा से सुरेश शर्मा की भेंटवार्ता–

इन दिनो आप क्या लिख रहे है ?

एक किताब इतिहास और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद पर काम शुरू किया था। पुस्तक मे यूनान और भारत के दार्शनिक विकास और उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि पर लिखने की योजना थी। क्योकि बहुत से लोग समझते हैं कि यूनान का समाज दास प्रथा पर आधारित था और अधिक प्रगतिशील था। दूसरी तरफ उनका विश्वास है कि भारत का समाज जातिप्रथा पर आधारित और प्रतिक्रियावादी था। इस सिलसिले मे अध्ययन के लिए मैं बनारस गया और वहा मैंने यूनानी समाज के बारे मे सामग्री इकट्ठी की। इस सामग्री का साराश यह है कि ईरान, मिस्र और यूनान समेत सारे भूमध्य सागर के क्षेत्र मे जाति प्रथा फैली हुई थी। यह हालत प्लेटो और अरस्तू के समय मे थी और इसी समय के लिए लोग समझते हैं कि वहां केवल दास प्रथा थी।

इसी वजह से उन्होने भारत पर आर्यो के आक्रमण की कहानी गढी। यह काम मुख्यत जर्मनी मे हुआ। उन्होने ध्वनि तन्त्र के ऐसे नियम बनाए जिससे सस्कृत, लैटिन, ग्रीक आदि के सम्बन्धो की व्याख्या की जा सके।

यह झूठ विद्वानो के दिमाग मे घर कर गया है। आर्य लोगो के ईरान से भारत आने के बारे मे एक छोटा सा सवाल है कि ईरान मे तो आर्य सिंधु को हिन्दू और असुर को अहुर कहते थे। लेकिन भारत आकर वे हिन्दू को सिन्धु और असुर को अहुर कैसे कहने लगे। और ऋग्वेद मे असुर और सिंधु है, अहुर और हिन्दू नही।

इसके बाद मैं ऋग्वेद पढने लगा और इस नतीजे पर पहुँचा कि भारत और यूनान के दर्शन का विवेचन ऋग्वेद को छोडकर नही किया जा सकना। मैंने यह भी अनुभव किया कि ऋग्वेद मे बहुत ऊचे दर्जे का दार्शनिक काव्य है बिना इसके भारतीय साहित्य के विकास का विवेचन नही किया जा सकता। फिर मैं अथर्ववेद पढन लगा। मैंने अनुभव किया कि ऋग्वेद और अथर्ववेद अनेक जनपदो की सस्कृतियो का सगम है। अधिकाश विद्वान वैदिक समाज को एक रूप समाज मानकर उसका विवेचन करते हैं। यह सही नही है। वैदिक भाषा अन्तरजनपदीय भाषा है।

भारत मे जो लोग वेदो को धर्म ग्रन्थ मानकर उसकी पूजा करते हैं वे वैदिक भाषा और साहित्य की विकास परम्परा को अस्वीकार करते है।

ऋग्वेद का अधिक भाग कर्मकाड के लिये नही रचा गया। वास्तव मे वह कर्मकाड का विरोधी है। अधिकाश भारतीय और पाश्चात्य विद्वान कर्मकाड को ध्यान मे रखकर ऋग्वेद और अथर्ववेद की व्याख्या करते हैं। युधिष्ठिर मीमासक ने इस बात को अच्छी तरह पहचाना है कि कर्मकाडी पडितो ने वैदिक ऋचाओ का कैसा दुरुपयोग किया है।

इसके विपरीत मुझे महाभारत, सस्कृत के अनेक कवि, अपने तुलसीदास और निराला याद आए और मुझे ऐसा लगा कि वैदिक साहित्य की मूल धारा जीवन की स्वीकृति की धारा है। वह ससार के मिथ्या होने का प्रचार नहीं करती। वह मनुष्य के सामाजिक जीवन बिताने पर बहुत जोर देती है। फिर मेरे मन मे एक पुस्तक को लेकर रूप रेखा बनीं 'भारतीय साहित्य और दार्शनिक यथार्थवाद।

इस पुस्तक का स्वरूप क्या होगा ?

इसमें मैं साहित्य के अलावा भाषा विज्ञान, शरीर विज्ञान के तीन आचार्यों के बारे मे लिखना चाहता हू। वे तीन आचार्य हैं. पाणिनि, चरक और कौटिल्य। पिछले डेढ सौ साल मे इस बात का खूब प्रचार किया गया कि भारत आध्यात्मवादी देश है और यथार्थ जीवन उसके लिए महत्वहीन था। किन्तु यथार्थ जीवन पर ध्यान दिये बिना पाणिनि चरक और कौटिल्य की व्याख्या नही की जा सकती।

ऋग्वेद की रचना किन लोगो ने की ?

ऋग्वेद से पहले और काव्य अवश्य रचा गया होगा। इसके प्रमाण ऋग्वेद मे हैं। कवि अकसर कहते हैं कि अमुक देवता के लिए पहले भी काव्य रचा गया अब मै नया काव्य रच रहा हूँ। अर्थात ऋग्वेद के कवि अपने प्राचीन काल के प्रति बेहद सचेत हैं। ये दार्शनिक कवि हैं। यहा दर्शन को काव्य से अलग नही कर सकते। जो कवि है, वह ज्ञानी है। जो ज्ञानी है वह कवि है। ऋषि और कवि मे कोई अन्तर नही। लेकिन ये कवि ऐसे हैं जो भाषाई तत्वो के प्रति बहुत सचेत हैं। कही कही शब्द क्रीडा करते हैं। छन्दो के प्रयोग करते है और बहुत बाद के योगियो की तरह उलटबासी भी कहते हैं। (क्रमश)

लक्ष्मी आश्रम कौसानी में विवाह संस्कार

अल्मोडा। लक्ष्मी आश्रम कौसानी मे सामनाभट्ट—हंसराज पाण्डे विवाह संस्कार १ जुलाई १९८८ को रिटायर्ड जज कामतानाथ गुप्त की अध्यक्षता मे राधाबहन के संयोजन मे स्वामी गुरुकुलानन्द कच्छवाहा जी के पौरोहित्य मे हुआ। यह हर्ष की बात है कि दिन मे दो घण्टे मे सम्पन्न होने वाले विवाह संस्कार की ओर आकर्षण बढ़ रहा है। —लक्ष्मीचन्द्र बित्तल, मन्त्री आर्यसमाज पिथौरागढ़

शोक समाचार

—आर्यसमाज सीपड़ बेलथरा रोड, बलिया के सदस्य एवं भूतपूर्व मन्त्री श्री गुलाबचन्द्र जी का स्वर्गवास ता० ३१-६-८८ रविवार को उनके निवास स्थान पर लम्बी बीमारी के बाद हो गया। उन्होंने जीवन भर आर्य समाज के लिए तन मन धन दिया ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति एवं परिवार को सकुशल रखे यही हम लोगो की प्रार्थना है। —मन्त्री

सती प्रथा के विरुद्ध सख्ती की मांग

सती प्रथा वेद विरुद्ध है

राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पन्नाचन्द जैन ने आज सती प्रथा की कड़े शब्दों में निन्दा करते हुए विरोध किया।

आर्य समाज मन्दिर सान्ताक्रुज में आयोजित एक सभा में आपने कहा कि वेदों में सती प्रथा का कहीं भी उल्लेख नहीं है और उसे धार्मिक नहीं माना जा सकता।

आपने कहा कि राजपूतों में जौहर के द्वारा जीवन के त्यागने की घटनाओं के पीछे पति के पीछे जल मरने की भावना न होकर अपने चरित्र की रक्षा करना होता था। उसमें और सती में बड़ा फर्क है।

ऋग्वेद में जिस ऋचा पर सती को धार्मिक बनाया जाता है उसके अग्र शब्द को कट्टर पन्थियों ने अग्ने बनाकर स्त्रियों को जलाना धार्मिक मान लिया जो सरासर अनुचित है। आपने दिवराला जैसी घटनाएं न हों इसके लिए सख्त से सख्त कदम उठाने पर जोर दिया। सती प्रथा का प्रारम्भ १६ वीं सदी से हुआ। राजस्थान में इस का अधिक प्रसार हुआ। १७ वीं सदी में सवाई मानसिंह ने जो जयपुर के महाराज थे उन्होंने कानून निकाला कि कोई भी स्त्री अपने पति की चिता के साथ नहीं जलेगी। मुगल शासक ने भी इसका विरोध किया था। अकबर को जब यह मालूम हुआ कि जोधपुर की एक रानी सती होना चाहती है तो वे स्वयं वहां गये और उसे रोका। अतः इतिहास सती प्रथा के विरोध से भरा पड़ा है। राजा राममोहन राय के बड़े भाई की मृत्यु के पश्चात् उनकी भाभी को जिन्दा जला दिया गया इसे देखकर उनके मन में इस प्रथा के विरुद्ध विरक्ति हो गई। १८२९ में उन्होंने अंग्रेज सरकार से अनुरोध कर इसका कानून बनवाया तब भी अनेक पण्डितों ने इसका विरोध किया। १८० पण्डितों ने इस पर हस्ताक्षर किये थे।

जुलाई १९३२ में प्रीवी काउंसिल ने सती प्रथा को अवैध करार दिया अतः इसके विरोध का अधिकार किसी को भी नहीं यहां तक की सुप्रिम कोर्ट को भी नहीं। केवल सुप्रीम कोर्ट में इस पर फिर विचार ही किया जा सकता है।

१९५० में भारत ने अपना नया संविधान बनाया उसकी धारा २५, २६ में यह कहा कि धर्म के सम्बन्ध में प्रत्येक नागरिक स्वतन्त्र है किन्तु धर्म का तरीका लोक व्यवहार सदाचार व स्वास्थ्य के विरुद्ध है तो मान्य नहीं होगा। एक्ट २६ में भी प्रत्येक संस्था धर्म में स्वतन्त्र है यदि वह लोकाचार व्यवहार व स्वास्थ्य के लिए हानि कारक नहीं हो।

सती प्रथा को प्रथा नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह लगातार अपनाया नहीं जाता था न ही प्रत्येक व्यक्ति इसे अपनाता है अतः इसे प्रथा नहीं मान सकते। इसलिए सती प्रथा धार्मिक प्रथा नहीं है। अधार्मिक है अनुचित है। धारा ५१ में नागरिक के कर्तव्य बताये हैं—महिलाओं की इज्जत, सुरक्षा उसकी देखभाल आदमी का कर्तव्य है मैंने सती होना सुना है लेकिन यह कभी नहीं सुना कि कोई आदमी सती हुआ क्या यह प्रथा मात्र नारी पर लागू होती है।

अतः मानवीय मूल्यों को प्रतिस्थापित मानते हुए इस प्रथा को खत्म करना होगा। भारतीय संविधान में लिंग भेद मानना अवैध है इसलिए सती प्रथा अवैध है। अतः राजस्थान कोर्ट ने इसके विरुद्ध जो कानून पास किया वह उचित है।

२२१ में कहा गया है कि जीने का अधिकार सबको है। आत्म हत्या का नहीं। सती होना अवैध है किन्तु सती के कारण गौरवान्वित करना भी गलत है उसे भी सजा दी जानी चाहिये।

इस अवसर पर श्री ओंकारनाथ जी आर्य ने श्री पन्नाचन्द जी जैन का स्वागत किया तथा महामन्त्री श्री विमल स्वरूप सूद ने माननीय न्यायाधीश महोदय को वैदिक साहित्य भेन्ट करते हुए उनका स्वागत किया तथा इस सभा का संयोजन किया।

इस अवसर पर कैप्टिन देवरत्न आर्य सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री चुने जाने पर स्वागत किया गया श्री देवरत्न जी आर्य समाज सान्ताक्रुज के भी उपप्रधान हैं।

न्यायाधीश पन्नाचन्द जैन बम्बई महानगरी में लायन्स क्लब विलेपार्ले के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों के शपथ विधि समारोह की अध्यक्षता करने हेतु पधारे थे।

उन्होंने लायन्स क्लब के नये अध्यक्ष कैप्टिन देवरत्न आर्य एवं अन्य पदाधिकारियों को शपथ दिलाने के बाद अपने अध्यक्षीय भाषण में लायन्स क्लब को नेत्रदान आन्दोलन को तेज करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा विश्व में चार करोड़ व्यक्ति नेत्रहीन हैं जिसमें एक करोड़ व्यक्ति केवल भारतवर्ष में हैं अतः आपको इस सामाजिक अभाव को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये।

उन्होंने श्री चमड़िया जी को वरिष्ठ उपप्रधान श्री निलावट को मन्त्री एवं श्री दीनदयाल अग्रवाल को कोषाध्यक्ष के पद की शपथ दिलाई।

कैप्टिन देवरत्न आर्य ने अध्यक्ष पद ग्रहण कर अपने भाषण में कहा—लायन्स क्लब का प्रारम्भ गरीब एवं निर्धन वर्ग की सेवाओं के उद्देश्य को लेकर हुआ था मेरे नेतृत्व में यह क्लब उसी मार्ग पर अग्रसर होगा।

उन्होंने कहा कि आज लायन्स क्लब में पांच सितारा होटलों की संस्कृति पनप रहा है। मैं अपने क्लब को इस संस्कृति से दूर रखकर सेवा एवं मानवता संस्कृति की ओर ले जाने का प्रयत्न करूंगा।

उन्होंने सदस्यों से कहा कि आप क्लब की सभाओं में पांच सितारा होटलों में जो खर्च करते हैं कम से कम उतना ही धन जन सेवा एवं मानवीय सेवाओं के लिए भी व्यय करें।

आमतौर पर लायन्स क्लब की बैठकों में अंग्रेजी भाषा का बोलबाला होता है। परन्तु यह कार्यक्रम हिन्दी भाषा में हुआ और कार्यक्रम का शुभारम्भ वन्देमातरम् के पाठ से हुआ।

इस अवसर पर सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं इकनामिक ट्रान्सपोर्ट आर्गनाइजेशन के प्रबन्ध निदेशक श्री सत्यप्रकाश जी आर्य ने कैप्टिन देवरत्न आर्य की सेवाओं की भूरि भूरि प्रशंसा की एवं कहा कि कैप्टिन आर्य की प्रेरणा से मैं बम्बई के माण्डप उपनगर में बनने वाले डी० ए० वी० कालेज भवन के लिए ५१ लाख रुपये दान की घोषणा करता हूं।

—देवराज आर्य

राष्ट्रभृत महायज्ञ एवं वेदकथा

(सोमवार २५ जुलाई से रविवार ३१ जुलाई १९८८ तक)

प्रातः —६ से ८ राष्ट्रभृत महायज्ञ एवं प्रवचन
स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

रात्रि —८ से १० भजन पं० श्याम सुन्दर वेदालंकार
गुलाबसिंह राघव

प्रवचन —स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

स्थान —शहीद ऊधमसिंह कम्बोज धर्मशाला
ए० ई० ब्लाक शालीमार बाग दिल्ली ५२

पंजि० न० डी० (सी०) १७ ... साप्ताहिक (२४-७-१९८८) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० ...
R N 626/57 License to post ... prepay ment License No U 93 Post at D P S O on 21-7-1988

वेद प्रचार की महत्ता योजना

आय जगत् का सर्वोच्च उद्देश्य वेद ... हमारी योजना है कि एक विशिष्ट वेदभाष्य हो जिसमें ... मन्त्र मे निहित ज्ञान विज्ञान राजनीति अध्यात्म आयुर्वेद ... भाषाथ पदाथ आधार पर विस्तृत व्याख्या हो। इस ... पाच हजार रुपये का एक तथा दूसरा तीन हजार का एक ... पुरस्कार उस श्रेष्ठ रचना पर सावजनिक रूप से भेंट किया जाय जो उपनिषद् बाल्मीकि रामायण भागवत महाभारत आदि के अन्तगत गाथाओ मे वज्ञानिक स्वरूप प्रस्तुत ... विदेशी जा भी रास्नीय स्तर की सस्थाय इस योजना का स्थाई रूप से सचालन कर उत्तरदायि व ले सक। वे हमसे शीघ्र ही सम्पक स्थापित करने का कृपा कर जिससे उ हे इस योजना का प्रारूप भेजा जा सके।

पता—आचाय निर्विकार गुप्त ५६ द्वारकापुरी मुजफ्फर नगर (उ प्र०) पिन २५१००१

पु सवन सस्कार सम्पन्न

दिनाक १६ जन ८८ को कुदरा (रोहतास) बाजार स्थित आय समाज के सभासदो के बीच उनके सहयोग से आयसमाज कानपुर गया के म त्री श्री रामदेव आय ने सपत्नीक पु सवन सस्कार सम्पन्न जिसमे नगर के सम्भ्रात परिवार व आय युवक भी उपस्थित हुए।

—रामदेव आय

वैदिक विवाह सस्कार

१—१ ७ ८८ दिन शुक्रवार को नवादा जिले के रजौली ग्राम मे कट्टर आयसमाजी डा० देवेन्द्रप्रसाद आय की सुपुत्री मृदुला आर्या का विवाह सस्कार डा० देवेन्द्रकुमार स यार्थी के आचाय व मे सम्प न हुआ।

१२४१७—श्री उपकुलपति महोदय
गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय
कांगड़ी, हरिद्वार (उ० प्र०)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि संवत् १९७२९४९०८९] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २३ अङ्क ३१] श्रावण कृ० ३ सं० २०४५ रविवार ३१ जुलाई १९८८ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

वेदों का ज्ञान जन-जन तक पहुंचायें

उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा का उद्बोधन

दिल्ली २० जुलाई ८८।

उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा ने उपराष्ट्रपति भवन मे आयोजित एक समारोह मे 'सामवेद' के उर्दू और हिन्दी अनुवाद का विमोचन करते हुए कहा कि वेद भारतीय सस्कृति की अमूल्य निधि है। इनके ही कारण विश्व-बिरादरी मे हमारा सिर ऊचा है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि वेद शाश्वत हैं और विश्व की अनेक आधुनिक समस्याओ का निदान इनमे निहित है। उन्होने वेदो मे समाहित वैज्ञानिक जानकारी और ज्ञान को अधिक से अधिक लोगो तक पहुचाने पर बल दिया।

समारोह मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रो० वेदव्यास, श्री सूर्यदेव जी तथा रामनाथ सहगल भी उपस्थित थे। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उपराष्ट्रपति का स्वागत करते हुए वेदो की अपौरुषेयता तथा आर्यसमाज द्वारा चारो वेदो का हिन्दी अनुवाद तथा वैदिक विचार प्रसार की चर्चा की। उन्होने पण्डित आशुराम जी द्वारा वेदो का उर्दू अनुवाद करके वेदो के ज्ञान को उर्दू-भाषी जनता तक पहुचाने की प्रशसा की।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि यूरोपीय देशो मे भी आर्यसमाज का प्रचार एव प्रसार हो रहा है जो एक अच्छी बात है। स्वदेश मे भी महर्षि दयानन्द कृत वेद-भाष्य के आधार पर कुछ चुने हुए आवश्यक वेद-मन्त्रो को छोटी-छोटी पुस्तकाओ के रूप मे स्कूली बच्चो के लिये प्रकाशित करना भी जरूरी है।

उपराष्ट्रपति जी ने प० आशुराम जी के प्रयास की प्रशसा करते हुए देश की प्रबुद्ध जनता और सरकार से इस विषय मे सहयोग की आकाक्षा व्यक्त की। अन्त मे श्री नवीन सूरी ने सबका धन्यवाद किया। (प्रचार विभाग)

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का शताब्दी समारोह तथा सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन

आगामी ३०-३१ दिसम्बर तथा १ जनवरी १९८९ अलवर में

दिल्ली २२ जौलाई।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री छोटूसिंह एडवोकेट ने महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश भवर, वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री सत्यव्रत सामवेदी तथा श्री बालदिवाकर हस के साथ आज सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा सभामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री से आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के शताब्दी समारोह की तिथियो पर विचार विमर्श करते हुए इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन का सुझाव दिया।

विचार विमर्श के पश्चात् आगामी ३०-३१ दिसम्बर १९८८ और १ जनवरी १९८९ की तिथियो मे शताब्दी समारोह और सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन अलवर मे करने का निश्चय किया गया।

श्री छोटूसिंह ने बताया कि प्रतिनिधि सभा की ओर से सम्मेलन की तैयारिया प्रारम्भ हो चुकी है। राजस्थान के प्रतिनिधि मण्डल ने उक्त सम्मेलनो की सफलता के लिए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान डा० धर्मपाल, प० क्षितीशकुमार वेदालकार तथा श्री ओमप्रकाश गोयल आदि कई आर्य नेताओ से भी सम्पर्क किया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने सम्मेलन की सफलता की कामना करते हुए सार्वदेशिक सभा की ओर से हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया। ●

सबूत के अभाव में दोहरे हत्याकांड के अभियुक्त बरी : जज पुलिस पर बरसे

चार हिन्दू युवक बरी

नई दिल्ली २२ जुलाई। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश पी० आर ठाकुर ने राजधानी मे हुए एक दोहरे हत्याकाड के चार अभियुक्तो को सबूत के अभाव मे बरी करते हुए दिल्ली पुलिस के खिलाफ कडी टिप्पणी की है। अभियोजन पक्ष के अनुसार अभियुक्तो ने नौ जुलाई १९८८ को दक्षिण दिल्ली मे जामिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के बाहर दिन दहाडे छुरा घोप कर दो छात्रो की हत्या कर दी थी और एक अन्य को घायल कर दिया था। मृतको के नाम इमामुद्दीन (२२ वर्ष) और महताब अहमद (२२) थे। घायल हुए छात्र का नाम आबिद अख्तर है।

बरी किए गए अभियुक्तो के नाम न्यू रोहतक रोड का व्यवसायी अनिल कुमार (२१), [illegible] निवासी छात्र अनिलकुमार (२७), सदर बाजार निवासी छात्र [illegible] (२२) और [illegible] का ठेकेदार [illegible] (२८) है। बताया जाता है कि हत्या का कारण इमामुद्दीन, महताब और आबिद द्वारा अभियुक्त अनिलकुमार की

(शेष पृष्ठ २ पर)

'दयानन्द' दयावान देव तू महान है

ममता की मूर्ति महा ऋषि दयानन्द धन्य
चमका तुम्हीं से आर्य धर्म का विधान है।
करुणा के कुसुम से पल में महक उठा
शुष्क-सी मनुजता का प्रेम उद्यान है।
गूंज रही अवनी पै तेरी जय-जय कार
तना हर ओर तव कीर्ति का वितान है।
विश्व करता तेरा गुण गान हर पल
दयानन्द दयावान देव तू महान है।
धधक रहा था विश्व ज्वालमेदनुजता की
भूतल भी भयभीत डोला बार-बार था।
तुमने ही सरसाई सरस स्नेह सुधा
अवनी पे देश की बहाया रसधार था।
धर्म की प्रखर ज्योति-रश्मियां बिखेर दिया
मुंह को छिपाये दूर भगा अंधकार था।
राष्ट्र-धर्म के समान तेरा था अटूट, धन्य
कण-कण से अगाध स्नेह और प्यार था।
गहन तिमिर से घिरे हुए मनुज प्राण
उलझी सी दीख रही आज स्वास डोर है।
त्राहि-त्राहि मची हुई अवनी पे हर ओर
छायी दुःख द्वन्द की घटा भी घनघोर है।
'लूट' फूंक 'अन्याय' 'दमन' कुनीति-चक्र
हत्या और हनन का हर ओर जोर-शोर है।
चकित थकित प्राण हो रहे विकल आज
आर्य-धर्म नाव चली पतन की ओर है।

—जलाल अहमद खाँ तनवीर'
जयसुखपुर, पोस्ट-मवई, जिला बाराबंकी, (उ० प्र०)

चार अभियुक्त बरी

पृष्ठ १ का शेष

बहन के साथ इस घटना के एक दिन पूर्व की गई छेड़खानी थी।

न्यायाधीश ने कल सुनाए गए फैसले मे चारों अभियुक्तो को बरी करते हुए कहा कि हमारी न्यायिक व्यवस्था साक्ष्य पर आधारित है और जहा तक आपराधिक व्यवस्था का सम्बन्ध है नियम यह है कि साक्ष्य नही तो अपराध सिद्ध नही हो सकता। लेकिन न्यायधीश ने कहा कि साक्ष्यो के अभाव के लिए स्वय अभियोजन पक्ष जिम्मेदार है क्योकि उसने इस मामले के दो प्रमुख चश्मदीद गवाहो को न्यायलय मे पेश ही नही किया। इनमे से एक बहादुर सिंह उस टैक्सी का चालक था जिससे अभियुक्त और उनके दो अन्य साथी घटनास्थल पर आए थे। दूसरी चश्मदीद गवाह जावेद अली खान था। अभियोजन पक्ष के अनुसार टैक्सी चालक अपने देश नेपाल लौट गया है और जावेद का कोई पता नही चल सका इसलिए उन्हे न्यायालय मे पेश नही किया जा सका। न्यायालय मे पेश किया गया एकमात्र चश्मदीद गवाह जफर आलम अभियोजन पक्ष को दिए अपने बयान से बाद मे मुकर गया। न्यायाधीश ने इस मामले की जाच करने वाले सब इन्स्पेक्टर भवर सिंह को नकारा पुलिस अधिकारी बताते हुए कहा कि उन्होने न्यायालय के सम्मुख शपथ लेने के बावजूद बेसिर पैर के ऐसे बयान दिए जिससे अभियोजन पक्ष की स्थिति कमजोर पड़ गई। न्यायाधीश ने श्रीनिवासपुरी के थानाधिकारी की भी आलोचना करते हुए कहा कि उन्होने घटना के तत्काल बाद अभियुक्तों को गिरफ्तार तो कर लिया पर जाच की जिम्मेदारी स्वयं नही सम्भाली।

—२१-७-७७ पजाब केसरी से साभार

सामाजिक कलंक-अस्पृश्यता-धोया जा सकता है!

स्वामी गुरुकुलानन्द कन्दाहारी

'विजानी हि आर्यान्ये च दस्यव' (ऋग्वेद १-५१-८) के अनुसार सज्जन-सदाचारी-सुकर्मी मानव, आर्य है और इसके विपरीत दुर्जन-दुराचारी-कुकर्मी मानव, दस्यु हैं। आर्यमानव सेवाकर्म वाले हैं। आर्यों (हिन्दुओ) में चार-वर्ण (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र) गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित 'वर्णव्यवस्था' सरिता का बहता स्वच्छ-पानी है तथा जन्ममूलक वर्णव्यवस्था ताल का रुका दूषित पानी है।

सवर्ण-अवर्ण

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य कृत।
ऊरू तदस्य यद्वैश्य पद्भ्यांशूद्रोऽअजायत॥

(यजुर्वेद ३१-११)

अर्थात् राष्ट्र-समाज रूपी शरीर मे मुख के समान—ब्राह्मण (शिक्षक—आचार्य, वैज्ञानिक, चिकित्सक, अभियन्ता आदि अज्ञानहर्ता), बाहू के समान—क्षत्रिय (रक्षक—सैनिक पुलिस आदि अन्यायहर्ता), उदर के समान—वैश्य (पोषक—कृषक, व्यापारी शिल्पकार आदि अभावहर्ता) तथा पैर के समान—शूद्र (श्रमिक—सेवक, पाचक, स्वच्छक आदि श्रमकर्ता) चार वर्ण हैं। ये चारो वर्ण—सवर्ण हैं क्योकि इन्होने जीवनयापन हेतु इष्टसेवा का वरण (चुनाव) करके गुण-कर्म स्वभाव के अनुसार वर्ण' अपनाया है। सवर्ण मानव 'छूत' हैं।

दस्युमानव अवर्ण' हैं, क्योकि इन्होने समाजसेवा हेतु किसी वर्ण का वरण नहीं किया है। और ये तब तक 'अछूत' (छूत छूते हुये, समाज से बहिष्कृत) हैं जब तक इनका आचार- व्यवहार सुधर न जाय।

वर्ण का वरण

वर्ण जन्म से नही, अपितु गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित है तथा परिवर्तनशील है।

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च॥

(मनुस्मृति १०-६५)

अर्थात् शूद्र ब्राह्मण और ब्राह्मण, शूद्र हो जाता है। क्षत्रिय व वैश्य की सन्तानो के भी वर्ण बदल जाते हैं। विभिन्न वर्णों में एक समान-गोत्र का मिलना सिद्ध करता है कि एक ही ऋषि की सन्तानो ने समय-समय पर स्वेच्छा से अपनी आजीविका हेतु अलग अलग वर्णोंका वरण (चुनाव) किया।

हरिवंश पुराण-३१ के अनुसार भार्गववंश मे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारो ही वर्ण हुये। कूर्मपुराण १९ के अनुसार वत्सर के दो पुत्र—नैध्रुव और रैभ्य हुये। रैभ्य के श्रेष्ठ वेद पारगत पुत्र ने शूद्रवर्ण को चुना।

वर्णव्यवस्था का व्यावहारिक समाधान

सनातन वैदिक (हिन्दू) धर्म के तत्वज्ञान की श्रेष्ठता प्रसिद्ध है। धर्म समानता का अवसर देता है। चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्म विभागशः (गीता ४-१३) के अनुसार गुण कर्म पर आधारित समाजसेवा हेतु चार वर्ण हैं।

गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार तथाकथित अन्तर्जातीय या अन्तर्प्रादेशिक या अन्तर्राष्ट्रीय विवाह के अन्तर्गत वर वधू को किसी एक वर्ण के चुनाव की मान्यता मिलनी चाहिये।

वर्णव्यवस्था को व्यावहारिक रूप देने हेतु—धर्मार्यसभा-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, गुरुकुल विश्वविद्यालय, धर्मसभा विश्व हिन्दू परिषद् आदि संस्थाओ को इच्छुक व्यक्ति से आवेदनपत्र प्राप्त कर 'वर्ण-निर्धारण' का दायित्व अपने हाथ मे लेना चाहिये। समाज मे समानता-दक्षता-उत्साह हेतु स्वेच्छा वर्ण के वरण (चुनाव) की खुली छूट गुण-कर्म स्वभाव पर आधारित होनी ही चाहि`

सम्पादकीय

सृष्टि का आदर्श क्या है ?

संसार कर्म चक्र है, यह चक्र चलता ही रहता है जगत का अर्थ ही है गतिशील आगे बढ़ना वाला। विश्व विख्यात एक चेतना शक्ति उसको चलाती है। भगवान कृष्ण ने गीता मे स्पष्ट कहा है कि—

ईश्वर. सर्व भूताना हृद्देशे अर्जुन तिष्ठिति ।
भ्रामयन् सर्व भूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥

सृष्टि के भिन्न भिन्न अंगो मे एक ही आध्यात्मिक प्राण शक्ति है। उसी की प्रेरणा से सम्पूर्ण प्रकृति अपनी लोक शक्तियो के साथ एक निश्चित योजना के अनुसार प्रत्येक क्षण नव जीवन का निर्माण करती हुई आगे बढती दिखाई देती है। प्रकृति मे कहीं आलस्य नहीं है। वह नित्य नवीन होती रहती है। प्रकृति के विकास नियम मे हस्तक्षेप नही हो सकता।

भगवान की यह कार्यकारिणी शक्ति न तो स्वय बैठना जानती है और न अपने किसी अंग को बैठने देना चाहती है। यह ईश्वरीय विधान है अतर्क्य और यथार्थ है। प्रकृति की इस आन्तरिक चेष्टा का अनुभव प्रत्येक व्यक्ति स्वय कर सकता है। किसी की प्रतीक्षा मे आपको जब व्यर्थ बैठना पडता है या चुपचाप खडे रहना पडता है। तब आप ऊमने लगते हैं। उस समय उठकर टहलने या अंगडाइया लेने से अंग सचालन से मन हलका हो जाता है। शरीर को सुख मिलता है। इससे स्पष्ट है कि अन्त प्रकृति चाहती है कि जीवन मे जडता न उत्पन्न हो।

प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तु ने ठीक ही कहा था कि सक्रियता ही जीवन है।

प्रख्यात जर्मन विद्वान गेटे ने प्रकृति की इस मूल प्रवृत्ति को लक्ष्य करके कहा था कि प्रकृति अपनी प्रगति और विकास क्रम मे रुकना नही जानती और प्रत्येक निष्क्रिय निरर्थक वस्तु को हठ पूर्वक नष्ट कर देती है।

प्रकृति चाहती है कि सब स्वय चले और उसके कायक्रम को निर्विघ्न चलने दें। बढो अथवा मिट्टी मे मिलो यही प्रकृति का कर्म सिद्धात है। पेड जब तक प्रकृति के साथ सयुक्त होकर बढना है तब तक प्रकृति का एक-एक तत्व उसका पोषण करता है। और जब उसका विकास रुक जाता है तो वही प्रकृति धीरे-धीरे उसे नष्ट कर देनी है। मानव जीवन का भी यही हाल है, जब तक उसमे आगे बढने की क्षमता होती है तब तक उसकी स्वाभाविक शक्तियो के साथ प्रकृति की समस्त शक्तिया उसके विकास मे सहयोग देती हैं और जब उसमे शिथिलता आ जाती है तो प्रकृति ससार से उसका अस्तित्व मिटाने के लिए तुल जाती है। वह निश्चेष्ट और निर्जीव पर दया नही करती है। किसी आलसी को स्वस्थता प्रसन्नता और शान्ति नही मिलती। इससे प्रकट होता है कि उत्तरोत्तर विकासशील होना ही प्राकृतिक जीवन का आदर्श है।

प्रकृति के साथ असहयोग करना वस्तुत आत्मद्रोह है। इसके नियम के विरुद्ध अपने को बाधकर कोई जीवन का सच्चा लाभ नही पा सकता है। मनुष्य का कल्याण इसी मे है कि वह लोक प्रकृति के साथ अपनी अन्त प्रकृति का सयोग स्थापित करें यही योग है यही नव जीवन दायक और सर्वसिद्धिप्रदायक है सयोग स्थापित करने का अर्थ है गतिशील बने रहना—

प्रकृति मे अपने जीवन का स्वर मिलाकर रहने मे हमे इसलिए आध्यात्मिक सुख मिलता है कि उससे हमारा जीवन विकसित और पुष्ट होता है। प्रकृति का विधान वृद्धि और विकास है और जिन भावो अनुभूतियो और विचारो से हमे आनन्द मिलता है वह इसी वृद्धि और विकास की सहायक है।

प्रकृति के वृद्धि और विकास के नियम से परिचित होने पर किसी को यह समझने मे कठिनाई नही होती है। कि प्रगतिशीलता जीवन के लिए आवश्यक है उसे जीवन का मुख्य धर्म ही मानना चाहिए।

आभार

मेरी पूज्या माता श्रीमती सत्यवती शालवाले के निधन पर देश-विदेश से अनेक आर्य जनो, माताओ बहनो, आर्य समाजो, आर्य प्रतिनिधि सभाओ तथा हमारे परिजनो, ने इस दु खद घडी मे पत्र, तार तथा प्रस्तावो द्वारा अपनी सम्वेदना हमे तथा सार्वदेशिक सभा के द्वारा भेजी है उन सबके लिए मैं तथा मेरा परिवार हार्दिक आभार प्रकट करता है। आप सबकी सहानुभूति से हमे धैर्य प्राप्त हुआ है।

भवदीय

—ओकारनाथ शालवाले

म० आर्य भिक्षु जी द्वारा दो लाख रुपये का सात्विक दान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान निर्वाचित उपप्रधान श्री म० आर्य भिक्षु जी (पूर्व नाम श्री राम जी प्रसाद गुप्त) मुगलसराय बाराणसी उ० प्र० के मूल निवासी है।

आजकल आप वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर हरिद्वार मे वानप्रस्थ लेकर अपनी धर्मपत्नि के साथ आश्रम मर्यादा का पालन करते हुए सम्पूर्ण भारतवर्ष मे महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आदर्शों व सिद्धान्तो का प्रचार व प्रसार करते है।

आप जितने कर्म निष्ठ हैं आपकी धर्मपत्नि उससे भी आगे चार पग धर्म परायणा हैं। इनके परम सहयोग से ही म० आर्य भिक्षु जी आज महात्मा पद को गौरवान्वित किये हुए हैं। साथ ही आपकी उदारता का ही यह परिणाम है कि म० आर्य भिक्षु जी समय २ पर यत्र-तत्र जो दान राशि वितरित करते रहते है—

वह आपकी श्रीमति जी के उदारता स्वभाव का ही सवस्व त्याग-यज्ञ है। आर्य भिक्षु जी उ० प्र० सभा के कोषाध्यक्ष व उप मन्त्री पद पर वर्षों तक अधिकारी रूप म कायरत रहे हैं ?

म० जी स्व० प० अखिलानन्द जी झरिया वालो के परम शिष्य है जीवन का यह परम पद की ओर बढना उस तपस्वी के आशीर्वाद की ही परिणाम है।

सार्वदेशिक सभा की ओर से हम उनके (पति पत्नि) के दीर्घायुष्य की कामना करते हैं कि वह स्वस्थ प्रसन्न मन होकर हमारे मध्य हमारा मार्ग दर्शन करते रहें।

—सम्पादक

महात्मा आर्य भिक्षु और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लीलावती गुप्त।

पाक 'बम' का भारत करारा जवाब देगा

प्रधानमन्त्री की विदेश यात्रा से वापसी पर घोषणा

नई दिल्ली, २० जुलाई प्रधानमन्त्री राजीव गांधी ने आज यहा कहा कि पाकिस्तान के परमाणु बम बना लेने की स्थिति मे भारत उसकी पूरी क्षमता से जवाब देगा।

चार देशो की यात्रा से स्वदेश वापसी पर हवाई अड्डे पर एक सवाददाता सम्मेलन मे यह पूछे जाने पर कि पाकिस्तान के परमाणु बम के जवाब मे हम बम क्यो नही बनाते, श्री गांधी ने कहा 'तैयारी हो रही है देख लेगे।'

पाक बम के बारे मे बार-बार बयान देने के सम्बन्ध मे एक सवाल पर श्री गाधी ने कहा 'मैं केवल सच बोलता हू।'

श्री गाधी ने इससे पूर्व विमान मे सवाददाताओ से बातचीत करते हुए कहा यदि अमरीका चाहे तो वह पाकिस्तान के व परमाणु कार्यक्रम को चौबीस घटे के अन्दर रोक सकता है।

उन्होने कहा कि दरअसल केवल अमेरिका ही पाकिस्तान पर इस सम्बन्ध मे रोक लगा सकता है।

श्री गाधी ने चीन की प्रस्तावित यात्रा के बारे मे पूछे जाने पर कहा यह यात्रा मैंने सिद्धातत स्वीकार कर ली है अभी इसकी तारीख तय की जानी है।

चीन के साथ सीमा विवाद पर प्रधानमन्त्री ने कहा सीमा विवाद के तत्काल हल की बात यथार्थपरक नही होगी। इससे ऐतिहासिक कारण है और मै नही समझता कि इसका जल्दबाजी मे कोई हल निकल सकता है। इसमे समय लगेगा।

प्रधानमन्त्री राजीव गांधी ने कहा कि चीन के साथ सम्बन्ध सुधारने की दिशा मे बहुत कुछ किया जाना है। हमने व्यापार जैसे क्षेत्रो मे पहल की है।

श्री गाधी ने चार देशो की अपनी यात्रा को सफल बताया और कहा कि यह तीन दृष्टियो मे कामयाब रही।

इस दौरान उन्होने चारो देशो जाडन टर्की युगोस्लाविया और स्पेन के नेताओ के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क किया उनमे ताजा अन्तर्राष्ट्रीय सबधो के बारे मे चर्चा की और द्विपक्षीय आर्थिक तथा राजनीतिक मसलो पर विचार विमर्श किया।

उन्होने कहा कि हमारी बातचीत का एक मुद्दा यह था कि अब सोवियत सघ और अमरिका आपसी समस्याओ से निपटने मे क्या रवैया अख्तियार करते है।

दर्शनानन्द--ग्रन्थ माला प्रथम पुष्प

न्यायदर्शनम् (हिन्दी भाष्य सहित)

डिमाई अठपेजी, पृष्ठ २०४, मूल्य १५ रु०

प्रकाशक—गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के सस्थापक तार्किक शिरोमणि स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती का सम्पूर्ण साहित्य 'दर्शनानन्द ग्रथमाला' के अन्तर्गत गुरुकुल के द्वारा प्रकाशित करने की विशाल योजना है। स्वामी जी ने लगभग ३०० ग्रन्थ दर्शन, धर्म, उपनिषद्, स्मृति एव सैद्धातिक विषयो पर लिखे हैं। सर्वप्रथम स्वामी जी के दर्शनो के भाष्य प्रकाशित किये जा रहे हैं। प्रथम पुष्प 'न्याय दर्शनम्' छप गया है। इसमे गम्भीर दार्शनिक मन्त्रो को बहुत सरल हिन्दी मे समझाया गया है। सभी साहित्य प्रेमी इसके द्वारा प्राचीन ऋषियो के गहन ज्ञान का लाभ उठा सकते हैं। यह ग्रथ सभी पुस्तकालयो एव साहित्य प्रेमियो के लिए उपादेय है।

द्वितीय एव तृतीय पुष्प के रूप मे "वैशेषिक दर्शनम्" और 'साख्यदर्शनम्" प्रकाशनाधीन है। —प्रधानाचार्य

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, (सहारनपुर)

प्राप्ति स्थान — सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

सार्वदेशिक सभा द्वारा आचार्य विशुद्धानन्द जी सम्मानित

महर्षि दयानन्दकृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के आलोचक श्री स्वामी करपात्री द्वारा लिखित पुस्तक "वेदार्थ पारिजात" का सटीक उत्तर आचार्य विशुद्धानन्द जी ने "वेदार्थ कल्पद्रुम" लिखकर दिया है। इस सराहनीय कार्य के लिए आचार्य जी का सार्वजनिक अभिनन्दन सार्वदेशिक सभा ने अपने साधारण अधिवेशन मे दिनाक १९-६-८८ को दीवान हाल दिल्ली मे किया। सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने इस पुस्तक लेखन के लिए आचार्य प्रवर की भूरि-भूरि प्रशसा की और उन्हे अपने कर कमलो से शाल भेंट किया। इस अवसर पर श्री सच्चिदानन्द शास्त्री सभा मन्त्री ने आचार्य जी का माल्यार्पण एव ११०००) रुपयो की धनराशि से सम्मान किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० द्वारा पं० शिवकुमार शास्त्री का अभिनन्दन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के साधारण अधिवेशन के अवसर पर आर्य समाज मन्दिर दीवानहाल, दिल्ली मे उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्य जगत के सुप्रसिद्ध व्याख्याता, मनीषी विद्वान एव पूर्व ससद सदस्य प० शिवकुमार शास्त्री का भावभीना अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी ने आर्य समाज के प्रति की गई सेवाओ के लिए शास्त्री जी की भूरि-भूरि प्रशसा की और कहा कि ऐसे मूर्धन्य मनीषी पर आर्य समाज को सदैव गर्व रहा है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उन्हे एक कुशल एव कर्मठ व्यक्तित्व वाले समर्पित कार्यकर्त्ता के रूप मे उनकी सेवाओ की सराहना करते हुए उन्हे अपना आशीर्वाद प्रदान किया और उनके यशस्वी शतायु जीवन की कामना की। आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने प्रदेशीय आर्य जनता की ओर से उन्हे भावभरे श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश की आर्य जनता एव प्रतिनिधि सभा उनके द्वारा की गई सेवाओ का कभी विस्मरण न कर सकेगी। प्रदेश की आर्य जनता को उनके पावन सहयोग एवं आशीर्वाद की सदैव कामना है। इस अवसर पर प्रदेशीय प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री प० इन्द्रराज जी ने उन्हे श्रद्धासमर्पित ५००१) की राशि भेंट कर सम्मानित किया। इससे प्रेरणा लेकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने ५१००), आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा ने ६१००) तथा श्री प० राजगुरु जी आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने १०१) की सम्मानित राशि उन्हें भेंट की। 'सार्वदेशिक' उनके इस अभिनन्दन पर उन्हे बधाई देता है और प्रभु से उनके यशस्वी जीवन की कामना करता है।

सार्वदेशिक सभा का नया प्रकाशन

आत्मा का स्वरूप

श्री कर्मनारायण कपूरा द्वारा आटोबायोग्राफी आफ ए सोल का हिन्दी अनुवाद "आत्मा का स्वरूप" नामक पुस्तक के रूपमे सभा द्वारा प्रकाशित किया जा चुका है। प्रस्तुत पुस्तक मे जीवात्मा के स्वरूप पर विशद विवेचन किया गया है। मृत्यु क्या है? मृत्यु के समय जीव की क्या स्थिति होती है? और किस प्रकार जीवन धारण करता।

विद्वान लेखक ने इस बात का भी रहस्योद्घाटन किया है कि वृक्षो से जीवात्मा पीपल के पेड मे जाता है, उसके बाद मानव शरीर मे प्रवेश करता है।

पुस्तक का मूल्य मात्र ३-५० रुपए है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-२

वैज्ञानिक हिन्दू परम्पराओं की आलोचना

दफनाना दाहसंस्कार से अधिक देश भक्तिपूर्ण है, कहां तक सत्य है ?

--डा० सत्यवीर त्यागी--

पच्चीस जून के पंजाब केसरी में खुशवन्त सिंह का स्तम्भ 'ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर' छपा है। खुशवन्त सिंह एक ख्याति पत्रकार हैं, लेकिन उन्हें यह गलतफहमी कैसे हो गयी कि वे ही सर्वज्ञ हैं, यह एक आश्चर्य का विषय है। सरदार जी यदा कदा उन बातों के बारे में बोलते रहते हैं जिनके बारे में उन्हें जरा भी जानकारी नहीं है।

उक्त लेख में उन्होंने हिन्दू परम्परा पर इस प्रकार का आक्रमण किया है कि जिसकी किसी प्रबुद्ध विचार वाले से तो क्या साधारण ज्ञान रखने वाले सड़क छाप आदमी से भी अपेक्षा नहीं की जा सकती है।

खुशवन्त सिंह जी ने उक्त लेख में कहा है कि हिन्दुओं को अपने शव जलाने नहीं चाहिए क्योंकि इससे करोड़ों टन लकड़ियां प्रतिवर्ष नष्ट हो जाती हैं और इस तरह वनों का विनाश होता है। वृक्षारोपण के सन्दर्भ में कही गयी इस बात में खुशवंत सिंह ने यह भी कहा है कि हिन्दुओं को शव दफनाने चाहिए और चार-पांच साल बाद शवस्थलों पर ट्रैक्टरों द्वारा भूमि को समतल कर फलदार पेड़ लगा देने चाहिए। खुशवन्त सिंह कहते हैं कि हिन्दू धर्मग्रन्थों में कहीं भी शवों को जलाने के निर्देश नहीं दिए गए हैं और दफनाना दाह संस्कार से अधिक देशभक्तिपूर्ण है। आश्चर्य है कि खुशवन्त सिंह स्वयं को हिन्दू धर्म-शास्त्रों का ज्ञाता कैसे मानने लगे? यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के मन्त्र पन्द्रह में मे उद्धृत है

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्॥ यजु० ४०। १५

यजुर्वेद के छठे अध्याय का इक्कीसवां मन्त्र है

दिवं ते धूमो गच्छतु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण।

यजुर्वेद ६। २१।

अथर्ववेद के अठारहवें काण्ड में सूक्त तीन के ७१वें मन्त्र में है

शरीरमस्य सं दहाथैनं धेहि सुकृतामु लोके॥ अथर्व० १८। ३। ७१

उक्त वेद के प्रमाणों से स्पष्ट है कि मृत शरीर का दाह कर्म करना ही अभीष्ठ है, ऐसा करना सुकृत कर्म माना है, और दाह कर्म न करना अर्थात् शरीर की भस्मी न बनाना सुकृत कर्म नहीं कहा है। गरुड़ पुराण में भी दाह संस्कार के स्पष्ट निर्देश हैं। जैन समाज में तो यहां तक कहा गया है कि मृत शरीर को ६ घंटों के अन्दर अन्दर ही दाह-संस्कार करना अति आवश्यक है।

अतः हिन्दू धर्मग्रन्थों में शव का दाह संस्कार करने के स्पष्ट निर्देश हैं। खुशवन्त सिंह जी को चाहिए कि वे इन धर्मग्रन्थों को पढ़ें। शव दहन के बारे हमारे शास्त्रों का कथन यों ही अकारण नहीं है बल्कि दूसरे इसके पीछे वैज्ञानिक, और व्यावहारिक कारण भी हैं। रोगग्रस्त अथवा किसी भी प्रकार से मृत देह में तुरन्त हानिकारक जीवाणु पनपने लगते हैं। प्राणी की जीवन शक्ति ही वह कारण होती है जो देह में किसी विषाणु रोग को पनपने से रोकती है। यह जीव शक्ति सतत् उत्पन्न होते रहने वाले इन विषाणुओं से युद्ध कर उन्हें समाप्त करती है। किन्तु प्राणी के मृत्यु के तुरन्त बाद जीव-शक्ति समाप्त हो जाती है और हानिकारक जीवाणुओं की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। इसलिए इस देह का किसी न किसी रूप (नष्ट करना) उन्मूलन आवश्यक हो जाता है। अब इस बात को उन्मूलित करने की दो ही विधियां सुरक्षित विधियां बचती हैं। पहली यह कि इसे भूमि में दफना दिया जाए जबकि दूसरी विधि यह है कि इसे अग्नि को समर्पित कर दिया जाए।

शव को दफनाने में दो व्यावहारिक कठिनाइयां हैं। पहली यह कि इस प्रकार से शवों को दफनाने में भरपूर उपजाऊ भूमि का दुरुपयोग होता है। जिस भूमि को विकास करने एवं खाद्यान्न उपजाने के काम में लाया जा सकता था उसे इन्सानों के आराम पर सुरक्षित करना पड़ता है। और दूसरे यह कि शवों की उचित देखभाल न की जाए तो जंगली जानवर या देह-अस्थियों का व्यापार करने वाले लोग इन शवों को निकाल कर ले जाते हैं। पिछले वर्षों ऐसी कई घटनाएं समाचार पत्रों द्वारा प्रकाश में आई भी हैं जब कब्रों से शवों की चोरी कर उनके अस्थि ढांचों को विदेशों में बेचा गया है। इसके अतिरिक्त तान्त्रिकों द्वारा इन शवों पर तांत्रिक प्रयोग भी किये जाते हैं और आध्यात्मिक तथा आत्मिक दृष्टि से यह प्रक्रिया मृतात्मा के लिए हानिकारक है।

इसके विपरीत वैदिक धर्मग्रंथों में शव-दहन का जो विधान है, वह हर दृष्टि से वैज्ञानिक और व्यावहारिक है। शव को दहन करने से विषाणुओं के फैलने की सम्भावना तो समाप्त हो ही जाती है इसके किसी और दुरुपयोग की भी सम्भावना समाप्त हो जाती है। इसके साथ ही इस धरती की एक इंच भूमि का भी मानव-देह के लिए दुरुपयोग नहीं होता बल्कि शव की बची भस्मी धरती को उपजाऊ बनाने में अन्तिम सार्थकता ही व्यक्त करती है।

खुशवन्त सिंह के अनुसार जहां तक कुछ लकड़ियों के जलने का प्रश्न है, उसके बारे में तो इतना ही कहा जा सकता है कि वे ऊर्जा के नए साधनों से परिचित ही होंगे। ऊर्जा के स्रोत विद्युत वायु विद्युत, तरल गैस और न जाने कितने रूपों में विकसित हो चुके हैं। ऐसी हालत में खुशवन्त सिंह ने शव दहन के लिए धन लकड़ी जलाने की जो चिन्ता व्यक्त की, वह कितनी सार्थक है? लकड़ी ऊर्जा बचाने के लिए शव दहन के लिए विद्युत दाहयन्त्रों का भी तो प्रयोग किया जाने लगा है।

खुशवंत सिंह से चन्द सवाल हैं—जब जून १९८४ में 'ब्लू स्टार आपरेशन" में मारे गए सिख आतंकवादियों के शवों को जलाया गया था तब खुशवंत सिंह ने यह उपदेश क्यों नहीं दिया था? हाल ही में "ब्लैक थंडर आपरेशन में मारे गए उग्रवादियों के शवों को दफनाने की सलाह भी खुशवंत सिंह ने क्यों नहीं दी?

खुशवंत सिंह बताएं कि सिख अपने शवों को क्या दफनाते हैं? सिक्ख पहचान बनाए रखने वाले खुशवन्त सिंह ने कभी सिक्ख पंथ के प्रमुखों को यह सलाह क्यों नहीं दी कि वे शवों को दफनाना शुरू कर दें। हम तो सिक्खों को हिन्दुओं से अलग मानते ही नहीं हैं क्योंकि संविधान की धारा पच्चीसवीं में सिक्खों को हिन्दू माना गया है परन्तु खुशवंत सिंह के आचरण से साफ लगता है कि वे अपने आपको हिन्दुओं से अलग मानते हैं। यदि ऐसा न होता तो हिन्दुओं का या उनके धर्मग्रंथों का नाम लिए बिना वे शवों को न जलाने की बात कह सकते थे। परन्तु उन्होंने तो हिन्दू धर्मग्रंथों के बारे में ही अनभिज्ञता प्रकट कर दी है।

यदि खुशवंत सिंह को सिक्खों से प्रेम है तो सिक्खों के विरुद्ध वक्तव्य क्यों दे रहे हैं? क्या सिक्ख धर्म में किसी शव को दफनाया जाता है? क्या गुरु ग्रंथ साहब में दफनाने की बात कही गयी है? और यह तो साफ जाहिर है कि खुशवंत सिंह अपने स्वार्थ के लिए सिख पहचान की बात करते रहे हैं। उन्होंने ब्लूस्टार आपरेशन के बाद इसीलिए पदमश्री की उपाधि भी लौटा दी थी। क्यों कि वे अपने को सिक्ख नेता बताना चाहते हैं जबकि इसके पूर्व आतंकवादियों द्वारा हजारों लोगों की हत्याओं पर पदमश्री लौटाना उन्होंने उचित नहीं समझा था। लगता है खुशवंत सिंह अपनी सुविधानुसार जब और जैसे चाहें धर्म को ओढ़ व बिछा लेना पसन्द करते हैं।

यदि सचमुच हिन्दू और सिक्ख धर्म के अनुसार खुशवन्त सिंह शव दहन के विरुद्ध हैं तो दाढ़ी मुंडाकर मुल्ला क्यों नहीं बन जाते? उन्हें उस मुस्लिम या ईसाई धर्म को स्वीकार कर लेना चाहिए जिसमें कि शवों को दफनाने की परम्परा है और अगर उन्हें उसमें (मुस्लिम धर्म) भी बुराई दिखाई देती है तो वे अपनी दाढ़ी मुंडवाकर स्वयं को धर्म विहीन घोषित करके नये

(शेष पृष्ठ ६ पर)

हम और हमारी समस्यायें

इन्द्रराज, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

शकराचाय श्रीयुत निरञ्जनदेव तीर्थ एव श्री माधवाश्रम शुकदेव जी महाराज के वक्तव्य पढने पर बडा खेद होता है कि जब आज हिन्दू पजाब मे मारा जा रहा है। देश के पूर्वाञ्चल प्रदेश मे हिन्दू भारी सख्या मे धम परिवतन कर चुका है। मीनाक्षीपुरम और रामनाथपुरम मे बडे पैमाने पर धम परिवतन का षडयन्त्र किया गया। दारजीलिंग मे गोरखा लैण्ड को लेकर भयकर हिंसा हो रही है। जब भारत को अमेरिका के इशारे पर पाकिस्तान की फौजो ने घेर रखा है। एक तरफ चीन भारत को समाप्त करने का षडयन्त्र कर रहा है। भारत के अन्दर ईसाई पादरी बड सक्रिय हैं तथा पाकिस्तान की ओर से भारत के इस्लामीकरण के षडयन्त्र चल रहे है। अमेरीका भारत को तोडने का भरसक प्रयत्न कर रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति मे वेद जर से आए हुए २ माने हुए विद्वान गलत प्रथाओ का प्रछन्नरूप से समर्थन, बाल विवाह समर्थन और आर्य समाज की वेद सम्बन्धी मान्यताओ पर आक्रमण जैसी बातो का प्रदर्शन करके हिन्दू सगठन मे विघटन की स्थिति को पैदा कर रहे हैं। छूआछात ऊचनीच की भावना, जातिपाति आदि के आधार पर घृणा के प्रचलन के विरुद्ध यज्ञ मे विचार करके हिन्दू जाति को समानता, सद्भावना सगठन और प्रम का एक सन्देश और आदेश देना चाहिए था। वहा हिन्दू जाति के प्रहरी आर्य समाज को ही एक विशेष केन्द्र बिन्दू बना कर उसकी मान्यताओ को झुटलाने का प्रयास करना हिन्दू जाति की हत्या करना जैसा है। हर निष्पक्ष हिन्दू इस बात को स्वीकार करता है कि यदि स्वामी दयानन्द न होते तो आज यज्ञोपवीत और चोटी भी दिखाई न देनी और भारत मे कुछ और ही होता।

स्वामी दयानन्द जी ने चार वद माने है जो कि प्राचीन काल से ह ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद के नाम से सवसम्मत एव निर्विवाद रूपसे माने गए हैं परन्तु वेदोकी सख्या ११३१ बताना कितना हास्यास्पद है। शास्त्रो मे ता 'अनन्ता वै वेदा 'अद इतन्त है लिखा मिलता है। इसका क्या अर्थ करेंगे ? क्या ११३१ वेदो को दिखा सकेंगे ? वेदा के व्याख्यान ग्रन्थो को वेद मानना कितना विचित्र है। इस विषय मे यह तो बहुत शास्त्राथ हो चुके है। और वेदो का विषय निर्विवाद रूप स स्पष्ट है कि वद चार है। इन चा वेदो मे स्त्री के सती होने की बात कही भी नही लिखी है। इस विषय मे शास्त्राथ का चैलज करना हिन्दुओ मे एक तनाव और विघटन पैदा करना है। यदि कोई मन्त्र सती होने की बात कहता हुआ किसी विद्वान का दृष्टिगोचर हो तो उसका समाचार पत्रो के माध्यम से उल्लेख कीजिए। उसका उत्तर दिया जाएगा और जनता मध्यस्थ के रूप मे अपने आप समझ जाएगी कि सत्य क्या है ? सती होकर जलना या जलाना अमानवीय वेद विरुद्ध और धम विरुद्ध है। जिस ऋग्वेद मे माधवाश्रम जी सती प्रथा के समथन की बात कहते हैं उसको उद्धृत करना उपयुक्त होगा। मन्त्र निम्नलिखित है —

> इमा नारीरविधवा सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सविशन्तु।
> अनश्रवोऽनमीवा सुरत्ना आ रोहन्तुजनयो योनिमग्रे॥

इस मन्त्र का अथ सायणाचार्य के अनुसार निम्नलिखित है —

जीवद्भर्तृका शोभनपतिका इमा नार्य सवतऽञ्जनसाधनेन घृतेन अक्तनेत्रा सत्य स्वगृहान् प्रविशन्तु। अरुदत्य मानसदुख वर्जिता शोभन धन सहिता जनयन्त्यपत्य भार्या। ता सर्वेषा प्रथमत एव गृह आगच्छन्तु।

अर्थात्—जीवित पति वाली सधवा सुपत्निया सभी प्रकार की स्त्रियोचित अञ्जन आदि प्रसाधनो से अलकृत होकर अपने घरो मे प्रवेश करें। वे मानस दुखो से रहित हो, अश्रुपात न करें, सुन्दर धनो से युक्त होकर सुसन्तान उत्पन्न करें तथा सब से पहले ही अपने घरो मे आए।

इस मन्त्र को शकराचार्य जी सती प्रथा के समर्थन में प्रस्तुत करते हैं। सायणाचार्य के इस प्रामाणिक भाष्य मे विधवा की तो चर्चा ही नहीं है। इस मन्त्र मे पद है 'अविधवा. (नारी अविधवा =नारीविधवा) आश्चर्य है कि इतना स्पष्ट मन्त्र होते हुए और आचार्य सायण का उक्त अथ होते हुए भी मध्यकाल के पण्डितो और शकराचार्य जी ने इस मन्त्र का अर्थ "विधवा स्त्री के लिए अग्नि मे जल जाना' कैसे किया। कुछ लोगो का यह कहना है कि मन्त्र के अन्तिम पद मे अग्ने के स्थान पर अग्ने शब्द है। इस फेर बदल से भी अग्ने का अर्थ सस्कृत व्याकरण के अनुसार हे अग्ने होगा। अग्नि मे जलना कदापि नहीं हो सकता अग्नि शब्द का सप्तमी विभक्ति मे अग्नौ रूप बनता है अग्ने' नही।

वैदिक धर्म मे जैसे स्त्री के लिए पतिव्रत धर्म है वैसे ही समान रूप से पुरुषो के लिए पत्नीव्रत धर्म है। इसमे मर्यादापुरुषोतम राम का विमल चरित्र साक्षी है। क्या वेदो मे पुरुष के सती होने का भी विधान है ? क्या वेद शास्त्रो मे ऐसा लिखा हुआ है कि पति चाहे जो करे परन्तु स्त्री को नहीं करना चाहिए। व्रत की बात तो दोनो के लिए एक समान है। इसलिए केवल स्त्री का वेद शास्त्रो से सती होने का समर्थन धम विरुद्ध, न्याय विरुद्ध, बुद्धि विरुद्ध अमानवीय और पूर्णतया पक्षपातपूर्ण है।

इस युग मे शकराचाय जी का बाल विवाह को ठीक बताना भी अस्वाभाविक आयुर्वेद के विरुद्ध अनुचित, वेद विरुद्ध और हिन्दू धम के पतन का बहुत बडा कारण है। अब बड विश्वास से कह सकता हूँ कि ऋग्वेद के किसी मन्त्र मे सती होने का विधान नही है। यह तो जगद्गुरु जी भी जानते हैं कि चारो वेदो मे सती प्रथा को कोई स्थान नही है। इस कमजोरी को बचाने के लिए वे वेदो ११३१ सख्या पर आ जाते हैं। यह बडा दुखद है।

यह समय इन बातो का नही है यदि हम इन्ही बातो मे उलझे रहे तो विदेशी षडयन्त्र के हम शिकार हो जाएगे। इस समय सारी शक्ति इस बात पर लगानी चाहिए कि ऐसी छोटी सी समान सहिता बनाई जाए जिस पर हिन्दू मात्र चल परस्पर प्रम कर तथा हिन्दुओ की रक्षा हो। इस समय हिन्दूका अस्तित्व खतरे म है। इसको किसी प्रकार से बचाना आवश्यक है।

आर्य समाज हिन्दू, मुसलमान, ईसाई के लिए समान कानून का समर्थक है। इसमे परिवार नियोजन भी अपने आप ही आ जाता है। परिवार नियोजन केवल हिन्दुओ के लिए ही नही अपितु सब के लिए अनिवार्य होना बहुत आवश्यक है। विदेशो की ओर से भारत को तोडने का भरपूर प्रयत्न चल रहा है। बाहर से नशे की गोलियो का युवा पीढी मे खुलकर प्रयोग, मद्यपान एव मांसाहार का प्रचार गोहत्या, अश्लील साहित्य जुए का राज्य की लाट्रियो के रूप मे बहुतायत से प्रचलन सनेमा जगत् मे नग्नता हत्या, हिंसा और बलात्कार का प्रदशन, दहेज हत्याए और आत्म हत्याए इस समय हिन्दू धम और भारत के पतन का कारण है।

अत आर्य समाज मेरठ शहर का अनुरोध है कि आपस मे टकरा कर शक्ति नष्ट न करे अपितु भारत को ईसाईकरण और इस्लामीकरण एव नास्तिकता से बचाने के उपायो पर विचार करें। इसमें आर्य समाजी भी हृदय से सहयोग करने का प्रयास करेगा। यदि इन सामयिक बातो की उपेक्षा की गई तो न हिन्दू रहेगा न कोई गुरु और न ही कोई जगद्गुरु।

अंग्रेजी क्यों हटायें ?

—डा० वेदप्रताप वैदिक

(गतांक से आगे)

यही बात भारत की संसद में आज भी देखी जा सकती है। ५०० समस्तसदस्यों में से ४०० से भी ज्यादा गूंगे-बहरों की तरह सदन में बैठे रहते हैं। बहस मे भाग नहीं लेते। सिर्फ हाथ उठा देते हैं। ऐसा क्यों होता है ? क्या वे बोलना नहीं जानते ? क्या वे राजनीति नहीं समझते ? क्या वे अपनी जनता का प्रतिनिधित्व नही करना चाहते ? नहीं नहीं, चाहते हुए भी वे बोल नही पाते, क्योंकि वे अंग्रेजी नही जानते। अंग्रेजी में बोलना प्रतिष्ठा की बात है। जो अंग्रेजी में बोलता है, उसकी सुनी जाती है।

प्रकाशवीर शास्त्री, राममनोहर लोहिया, अटलबिहारी वाजपेयी और मधुलिमये तो अपवाद हैं, ये नयी लीक खींचने वाले लोग रहे हैं। लेकिन जो अंग्रेजी भी नही जानते और हिन्दी भी नहीं जानते और वे क्या करें ? जिन करोड़ो लोगों का वे प्रतिनिधित्व करते हैं, उनका नीति-निर्माण मे कोई हाथ नही है, जैसे पुराने जमाने में राजा का दरबार कुछ 'रत्नों' की सलाह पर चलता था चाहे वे नौ रतन हों, चौदह रतन हों या चौबीस रतन, वैसे ही आज जो अंग्रेजी बोलने वाला रतन है, उसकी बहस से हिन्दुस्तान की संसद चलती है। क्या इसे आप एक आधुनिक संसद कहेंगे ? क्या यह एक आधुनिक राज्य है ? क्या यह लोकतन्त्र है ? यदि नहीं तो यह अंग्रेजी की मेहरबानी है।

दूसरा उदाहरण लीजिये। हमारे देश की नीतियां अंग्रेजी में बनती हैं। नेतृत्व के शिखर से लुढ़कती हुई नीतियां जनता के पाताल तक पहुँचते-पहुँचते या तो नदारद हो जाती हैं या वे अपना रूप खो देती हैं। हमारी पंचवर्षीय योजनाओं को या विदेश नीति के वक्तव्यो को हिन्दुस्तान की औसत जनता का कितना बड़ा भाग समझ पाता है ? इसके विपरीत अंग्रेजी में बनी इन नीतियो को अमरीका और इंग्लैंड का हर गड्ढे खोदने वाला मजदूर भी समझ सकता है। क्या यह हिन्दुस्तान के आम आदमी के साथ छल नही है कि ताश के सारे पत्ते आप विदेशियों के सामने तो पसार देते है और हमारे देश की जनता से, जिसके खून पसीने की कमाई से योजनाएं चलती हैं, छिपाने की कोशिश करते हैं। जब तक नीतियो को जनता अच्छी तरह समझेगी नही, वह सहयोग किस आधार पर करेगी ?

और इसके विपरीत जनता क्या चाहती है, यह भी तो शासको को ठीक-ठीक पता चलना चाहिए। शासक लोक-भाषाओ की पुस्तकें नहीं पढ़ते, अखबार नही पढ़ते। यदि आप यह जानना चाहे कि भारतीय जनता की आकांक्षाओ का प्रतिनिधित्व कौन से अखबार करते है तो लोकभाषा के और अंग्रेजी के अखबारों के 'सम्पादक के नाम पत्र' स्तम्भों को उठाकर देखिए। अंग्रेजी अखबार जबकि बुद्धि-विलास की नकली बहसें चलाते हैं, हिन्दी और लोकभाषाओ के अखबार एक औसत आदमी के दुःख-दर्द की करुण-गाथा पेश करते हैं। कुर्सी पर बैठे नेता को इस करुण-गाथा से कोई मतलब नही है, क्योंकि उसके लिए तो सच्चा जनमत अंग्रेजी अखबारो मे प्रगट होता है। इसका नतीजा क्या होता है ? जनता और नेता के बीच संप्रेषण नहीं होना और संप्रेषण, दोतरफा संप्रेषण आधुनिकता की पहली शर्त है।

दक्षता, आधुनिक समाज-व्यवस्था का एक अनिवार्य लक्षण है। याने कम समय में अधिक से अधिक काम करना और व्यवस्थित तरीके से करना। लेकिन अंग्रेजी की अनिवार्य शिक्षा ने करोड़ों बच्चों को दिमागी तौर पर अपाहिज बना दिया है। अंग्रेजी को रटने के चक्कर में बच्चे दूसरे विषयों की पढ़ाई पर भी ध्यान नहीं दे पाते। न वे अंग्रेजी अच्छी सीख पाते हैं और न ही दूसरे विषय ! न खुदा ही मिला, न विसाले सनम ! जब फेल होते हैं तो सबसे ज्यादा अंग्रेजी में फेल होते हैं। अगर एक बच्चा एक हफ्ते में ५ घण्टे अंग्रेजी पढ़ने के लिए लगाता है तो हिसाब लगाइये कि वह १० साल में कुल कितने घण्टे खर्च करेगा और देश के लाखों बच्चे क्या अपने जीवन के करोड़ों बहुमूल्य घण्टे अनिवार्य अंग्रेजी को सीखने में बर्बाद नहीं कर देते ?

१० साल तक अनिवार्य अंग्रेजी का घोटा लगवाकर देश के करोड़ों घंटे बर्बाद करने के बजाय बड़े होने पर इन्हीं बच्चों को एक या दो माह में गहन प्रशिक्षण के द्वारा कोई भी विदेशी भाषा सिखायी जा सकती है। पूना के मैक्समूलर संस्थान में आजकल डेढ़ माह में काफी अच्छी जर्मन सिखायी जाती है। यह है, आधुनिकता ! कम समय में अधिक काम ! मैंने स्वयं तीन मास की साधारण पढ़ाई में रूसी और पन्द्रह दिन के प्रशिक्षण में फारसी सीख ली।

इसके अलावा, करोड़ों बच्चों को एक विदेशी भाषा सीखने की क्या जरूरत है ? मुश्किल से हजार में से एक छात्र विदेश जाता है या शोध करता है और जो विदेश जाते हैं, वे सब इंग्लैंड और अमरीका ही नही जाते, दूसरे देशों में भी जाते हैं, जहां अंग्रेजी नहीं चलती। कुछेक हजार लोगों की विदेशी भाषा की जरूरतों को पूरा करने के लिये करोड़ों लोगों पर अंग्रेजी थोप देना वैसा ही है जैसे कि दो आदमियों की रोटी बनाने के लिये दस मन आटा गूंध लेना ! मैं चाहता हूं कि दो आदमियों की रोटी के लिए कम आटा गुंधे और बढ़िया गुंधे। घास नहीं काटी जाए। अर्थात् विदेशी भाषाओं को थोक में पढ़ाने के बजाय, उत्कृष्ट कोटि के संस्थानों मे नवीनतम विधियों के द्वारा उन्हीं को पढाया जाए, जिन्हें उनकी जरूरत है। यह हुई आधुनिक दृष्टि ! दुनियां के आधुनिक राष्ट्रो मे यही हो रहा है। लेकिन आधुनिकता के नाम पर हमारे देश में उल्टी गंगा बह रही है।

जापान का उदाहरण हमारे सामने है। आधुनिकीकरण और औद्योगीकरण पहले शुरू हुआ भारत में। जापान में बाद में हुआ। लेकिन आज जापान भारत से मीलों आगे है। जापान ने पश्चिम के अनुभव का लाभ अवश्य उठाया लेकिन उसने अपनी भाषा को नही छोड़ा। अपने लाखों वैज्ञानिको, किसानो, मजदूरों को उसने अपनी ही भाषा मे सारा ज्ञान उपलब्ध कराया। कुछ चतुर अनुवादको को तैयार करके उनसे हर विदेशी भाषा के ज्ञान का जापानी मे अनुवाद करवा लिया। अगर भारत की तरह जापान भी अपने नागरिको पर अनिवार्य जर्मन या अंग्रेजी थोप देता तो आज जापान इतना आगे नही बढ़ पाता। वैज्ञानिकों की जो शक्ति प्रयोगो मे लगी, वह एक विदेशी भाषा को रटने मे खर्च हो जाती, जैसा कि भारत मे हुआ। दूसरे शब्दो मे अंग्रेजी की अनिवार्यता ने भारत में आधुनिकता की गति को धीमा किया। (समाप्त)

भारत पर आर्यों के आक्रमण की कहानी जर्मन में गढ़ी गई

–डा० रामविलास शर्मा से सुरेश शर्मा की भेंटवार्ता–

(गतांक से आगे)

लेकिन वैदिक रहस्यवाद और प्रार्थनाएं क्या जीवन से पलायन नहीं हैं ?

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में कहा है कि ऋग्वेद का ऋषि प्रार्थना नहीं करता । वह किसी देव के गुण बताता है तो उसका आशय यह होता है कि ऐसे गुण मुझ मे भी हो । वास्तव मे प्रार्थना की जरूरत तब पड़ती है जब समाज मे वर्ग भेद बढ़ जाता है । मनुष्य अपने को असहाय पाता है । ऋग्वेद का कवि असहाय नहीं है । वह जितनी सहायता देवता से लेना चाहता है उतनी उसे भी देने को तैयार होता है । यह सहायता केवल कवि के रूप मे नही होती बल्कि काव्य शक्ति के रूप मे होती है । वह अपनी काव्य शक्ति से देवता को शक्तिशाली बनाता है । ऋग्वेद, अथर्ववेद, महाभारत, वाल्मीकि रामायण इन सब मे भारतीय मनुष्य तनकर खड़ा होता है । उसने किसी देवता के आगे सिर झुकाना नही सीखा । देवता वास्तव मे प्राकृतिक शक्तियां हैं और ये शक्तियां मनुष्य के भीतर भी हैं । वैदिक प्रतीकवाद का रहस्य यह है कि कवि निरन्तर बाहर और भीतर की शक्तियो मे तालमेल स्थापित करता है । इसलिये पलायन का प्रश्न ही नही उठता ।

ऋग्वेद की रचना का सामाजिक परिवेश क्या था ?

ऋग्वेद मे जिस समाज का प्रतिबिंब है वह कबीलो या गणो का समाज नही है । यह जनपदो का समाज है । इसमें कृषि तन्त्र का विकास हुआ है और विनिमय का भी विकास हुआ । वर्ग भेद उत्पन्न हो रहा है । किन्तु उसने विषम रूप धारण नही किया । यह अभ्युदयशील सामन्ती समाज है । यहां सामन्ती समाज का अर्थ छोटे पैमाने के उत्पादन का समाज है । ऋग्वेद मे जो उदात्त आशावादी स्वर है उसका भौतिक कारण है उत्पादन का अपेक्षाकृत विकास किन्तु वर्ग वैषम्य का अभाव ।

हिन्दी की उत्पत्ति के बारे मे बताया जाता है कि वैदिक संस्कृत से लौकिक संस्कृत फिर प्राकृत के बाद अपभ्रंश और उससे हिन्दी तथा दूसरी भारतीय भाषाएं विकसित हुई हैं । हिन्दी के उत्स का यह क्रम ठीक है ?

बिल्कुल बकवास है । हिन्दी का एक उत्स नही है । अनेक प्राचीन गण समाजो की भाषाएं इसका उत्स है । हिन्दी ही नहीं वैदिक भाषा भी अनेक स्रोतो से समृद्ध हुई है । एक उदाहरण यह है कि वैदिक भाषा और बाद की संस्कृत दोनो मे 'रावण' या 'ब्राह्मण' वाले 'ण' की भरमार है । किन्तु संस्कृत मे एक भी सर्वनाम ऐसा नही जिसमे इस ध्वनि का व्यवहार होता हो । जैसे 'न' यानि 'हमरा' । यहां 'न' है 'ण' नही है । संस्कृत मे क्रियाओ की संख्या बहुत बड़ी है । उनमे बहुत खोजने पर ही 'ण' ध्वनि का व्यवहार मिलता है । जैसे ग । संस्कृत की क्रियाओ मे ण् की इतनी कमी क्यो है ? सर्वनामो मे उसका अभाव क्यो है ? इसकी वजह है कि वैदिक भाषा मूल रूप मे दंत्य 'न' वाली भाषा है । उसका मूर्धन्य व्यवहार बाद मे हुआ है । वैदिक भाषा से ही उसके प्राग्वैदिक स्रोत का पता चल जाता है । ब्रज से लेकर मिथिला तक अपनी जनपदीय भाषाओ को देखें । कोई ण का उच्चारण करता है ? जो क्षेत्र आज भी दंत्य 'न' प्रधान है वही हिन्दी भाषा का आदि क्षेत्र भी है ।

आधुनिक भाषा विज्ञानी भारत के पुरोहितो का अनुसरण करता है । पुरोहितो के लिये संस्कृत सब भाषाओ की जननी है । आधुनिक भाषा विज्ञानियों के लिये संस्कृत सब आर्य भाषाओ की जननी है । इसी तरह वह द्रविड भाषा की कल्पना करता है और कहता है कि उससे सब द्रविड भाषाएं निकलती हैं । लेकिन लिंग सम्बन्धी व्यवहार में तमिल हिन्दी के समान है और मलयालम के समान । क्यो ?

साबित किया जाता है कि आर्य बाहर से आए और उन्होंने भारत को नई सभ्यता दी । आप क्या सोचते हैं ?

आर्य नाम का कोई समाज नहीं था । इस नाम की कोई नस्ल नही थी । नस्ल के आधार पर कहीं भी किसी समाज का गठन नहीं हुआ । नस्ल की कल्पना १९वी सदी मे यूरोप के लोगो ने की । संस्कृत व्याकरण की सहायता से जब देखा कि लैटिन ग्रीक जर्मन आदि भाषाओ मे बहुत समानता है तो उन्होंने कल्पना कर ली कि ये सब किसी आदि भाषा की शाखाएं हैं । इस आदि भाषा को बोलने वाले एक नस्ल के लोग थे और भारत मे रहते थे ।

१९वी सदी के मध्य तक भारत मे बाहर से आने वाले आर्यों की कल्पना लोकप्रिय नही हुई थी । इसीलिये मार्क्स ने १८५३ ई में भारत के बारे मे लिखा था कि वह देश यूरोप की भाषाओ और धर्मों का स्रोत है । १९ वीं सदी के उत्तरार्द्ध मे ब्रिटिश साम्राज्य के सुदृढ़ होने और यूरोप की अन्य जातियो के प्रसार के साथ विद्वानो को लगा कि भारत को अपनी भाषाओ का स्रोत कहना उनके लिये अपमान की बात है । जिनको उन्होंने गुलाम बनाया है उनके बाप दादो को अपनी भाषाओ का जनक कहना सम्मान विरुद्ध है ।

आपके कविता संग्रह 'रूप तरंग' का दूसरा संस्करण छपने वाला है । आप उसकी लम्बी भूमिका लिख रहे हैं । इतने बरस बाद दूसरे संस्करण मे लम्बी भूमिका की जरूरत क्यो पड़ी ?

लम्बी भूमिका मेरी कविताओ के लिए आवश्यक नही है । लेकिन उस समय की दूसरी कविताओ को समझने के लिए मुझे यह भूमिका आवश्यक लगी । रूप तरंग की सबसे पुरानी कविता सन २९ की है । उसकी एक पंक्ति है 'साम्य समझ असीम विषमता दूर हो ।' 'मेरठ षड्यन्त्र' के समय झांसी मे साम्यवाद की चर्चा होने लगी थी । मैं झांसी मे पढ़ता था । कभी-कभी रेल मजदूर की सभाओ मे भाषण सुनने जाया करता था । उस दौर की झलक इस कविता मे है ।

इसके अलावा क्रान्तिकारियो के बारे मे मैं बहुत सी बातें सुना करता था । चन्द्रशेखर आजाद के सहयोगी वैशम्पायन इंटर मे मेरे सहपाठी थे । भूमिका लिखते समय मुझे लगा कि क्रान्तिकारियो की परम्परा का जो प्रभाव हमारे साहित्यकारो पर रहा है उसकी उपेक्षा की गई है । कांग्रेस के जन्म के समय से ही सशस्त्र क्रान्ति का विकल्प यहां के लोगो के सामने रहा है । रजनी पाम दत्त ने इसका विवरण दिया है कि अंग्रेजो ने अपने गुप्तचरो से किस तरह दूर-दूर के प्रदेशो मे शस्त्र संग्रह के बारे सूचनाएं प्राप्त की थी और उन्होंने कांग्रेस को जन्म देने पर विचार किया था ।

रजनीपाम दत्त से बहुत पहले यह रहस्य अनेक हिन्दी लेखको को भी मालूम था । १८८८ के आस पास बालकृष्ण भट्ट ने 'हिन्दी-प्रदीप' मे लिखा था कि कांग्रेस का जन्म हो गया है और अब अंग्रेजो की फौज पर निर्भर रहने की जरूरत न होगी । भट्ट जी खुदीराम बोस के प्रशंसक थे ।

एक सभा मे उन्होंने खुलकर खुदीराम बोस की शहादत को याद किया था और उसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें कालेज की नौकरी छोड़नी पड़ी । खुदीराम बोस के प्रशंसक प्रेमचन्द भी थे । अमृतराय ने लिखा है कि उनकी शहादत के बाद प्रेमचन्द खुदीराम का चित्र खरीद लाये थे और अपने कमरे मे टांग दिया था । प्रेमाश्रम के मनोहर की वीरता की तारीफ भाषीकासी कादिर करता है । स्वभावतः प्रेमचन्द बोल्शेविक क्रांति से भी प्रभावित थे । रामचन्द्र शुक्ल चन्द्रशेखर आजाद की भेंट का विवरण शुक्ल जी के बेटे ने लिखा था । निराला जी के एक गुरु राधा मोहन गोकुल जी भी थे । वे स्वयं क्रान्तिकारी थे । तथा आजाद और शिव वर्मा के दोस्त भी थे । १९२७ मे उनकी पुस्तक 'कम्युनिज्म क्या है' छपी थी । निराला जी के 'बादल राग' से लेकर 'नये पत्ते' की रचनाओ तक जिसने उनको क्रांतिकारी चेतना का एक स्रोत राधा मोहन गोकुल जी है । निराला ने सन ३४ मे 'प्रेमी' और

(शेष पृष्ठ ६ पर)

हज यात्रियों पर सख्त पाबन्दी लगाई है सऊदी अरब सरकार ने

सऊदी अरब सरकार ने दुनिया भर के हज यात्रियो पर सख्त पाबन्दी लगा दी है, जिसके कारण इस वर्ष हज पर आने वालो को भारी परेशानी उठानी पड़ेगी।

सेंट्रल हज कमेटी बम्बई के सूत्रो के अनुमार सऊदी अरब सरकार ने यह कदम, हज के दौरान किसी भी तरह के प्रदर्शन को रोकने के लिए उठाया है। सऊदी सरकार को आशका है कि अमेरिकी नौसेना द्वारा ईरानी नागरिक जहाज मार गिराने के बाद हज यात्रा के दौरान प्रदर्शन हो सकते हैं।

पता लगा है कि सऊदी सरकार न हज यात्रियो को भी अलग अलग स्थानो पर ही रोक दिया है। सरकार ने हज के दौरान हिंसा या गड़बड़ी को रोकने अमेरिका से सुरक्षा बल मागे हैं। अमेरिका हज के लिए सुरक्षा सहायता देने के लिए तैयार हो गया है। इसका पहला सुरक्षा दस्ता कल शाम तक मक्का पहुँच जायेगा।

इधर सऊदी अरब सरकार ने हज करने वालो को कड़े निर्देश किये कि जहा उनके रहन की व्यवस्था की गयी है वे वही रह अन्यथा उन्हे गिरफ्तार कर लिया जायेगा। पटरी पर सोने वाले हज यात्रियो पर भी यह नियम लागू होगा।

सेंट्रल हज कमेटी सूत्रो का कहना है कि अरब सरकार चार से पाच लोगो को भी राजनीतिक स्तर की बातचीत करने पर गिरफ्तार कर लेगी और जत्था मे किसी को भी हज पर नही आने दिया जायेगा। होटलो तथा चाय की दूकानो पर राजनीति की बातचीत करने वालो को भी गिरफ्तार कर लिया जायेगा।

ज्ञातव्य है कि गत वर्ष ईरानी हज यात्रिया द्वारा किये गये हिंसात्मक प्रदर्शन के दौरान चार सौ से अधिक हज यात्री मार गय थे जिनमे अधिकाश ईरानवासी थे। इसीलिए इस वष उचित कदम उठाये गय है।

दिल्ली स्टेट हज कमेटी सूत्रा का कहना है कि सऊदी दूतावास उत्तरी भारत के हज यात्रियो को बीजा देन मे आनाकानी कर रहा है।

हज कमेटी के एक पदाधिकारी का आरोप है कि सऊदी सरकार नही चाहती कि भारत से इस वर्ष पूरी सख्या मे हज यात्री हज के लिए आये। दूतावास मे अब तक २ हजार ५ सौ पासपोर्टो पर बीजा नही लगाया गया है। इसके अतिरिक्त करीब ५०० पासपोट एतराज लगा कर दिये गये ह। इनमे से अधिकाश उत्तर प्रदेश से आने हज यात्री ह।

उक्त अधिकारी का आरोप है कि सऊदी एयर लाइस भी अपनी सरकार के इशारे पर हज यात्रियो को परशान कर रहा है।

उल्लेखनीय है कि चार उड़ान पहले ही रद्द कर दी गयी हैं जो उड़ाने अभी मन्जूर की गयी है वे दिल्ली हज कमेटी तथा हज यात्रिया के लिए सरदर्द बन चुकी है, इस वर्ष अनुमान है कि यदि सऊदी एयर लाइन्स, भारत सरकार तथा सेंट्रल हज कमेटी ने इस ओर ध्यान नही दिया तो काफी सख्या मे हज करने वाले वचित रह जायगे।

१० जुलाई १९८८ वीर अर्जुन

आर्यों के आक्रमण की कहानी

(पृष्ठ ८ का शेष)

'चतुरी चमार' कहानिया लिखीं। यहा से हिन्दी मे नये यथार्थवाद का विकास हुआ।

सन ३८ मे पत ने 'रूपाभ' निकाला। उन्होने मध्य वर्ग, श्रमिक वर्ग और मार्क्स पर कविताए लिखी। यह दृष्टिकोण मार्क्सवाद के नजदीक था गाधीवाद के नही।

उस समय के जो प्रगतिशील पत्र थे उन सब मे अज्ञेय की रचनाए छपती थी। तार सप्तक के बाद ४५ ४६ मे उनकी रचनाए नया साहित्य मे छपी थी।

'तार सप्तक के कवियो की सामान्य भूमि थी गाधीवाद की अस्व कृति जो नया रास्ता था वह मार्क्सवाद का। जून ४७ के हस मे भारत भूषण अग्रवाल न अज्ञेय की एक भेंटवार्ता प्रकाशित कराई जिसमे अज्ञेय न खुद को द्वद्वात्मक भौतिकवाद का समर्थन कहा था। तार सप्तक की यह वाम पन्थी राजनीतिक पृष्ठभूमि सामान्य पाठको की नजरो से ओझल रही है। तार सप्तक के अनेक कवि कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य रह है या उससे सहानुभूति रखते थे।

सन ४७ मे अग्रेजा से समझौता करने के लिये काग्रसी नेताओ ने जब कम्युनिस्ट विरोधी अभियान शुरू किया तो अज्ञेय ने सारा इतिहास उलट कर तार सप्तक को प्रयोगवाद से जोड़ दिया।

इन सब बाता का विवेचन करना जरूरी था। इसलिय मैं यह भूमिका लिखन लगा। आज की परिस्थिति म उस पुरान इतिहास को जानना जरूरी है। यह स्पष्ट ही है।

हिन्दूपरम्पराओ को आलोचना

(पृष्ठ ५ का शेष)

आदर्श की स्थापना क्या नहीं कर देते ? साम्यवादिया की तरह घोषित कर द कि मेरा कोई धर्म नही है और मैं सिख पथ को तिलांजलि दे रहा हूँ।

परन्तु खुशवन्त सिंह का सिद्धात है कि धम के आवरण से पूरा पूरा लाभ उठाया जाए और जहा जब लाभ नही दिखाई दे तो तथाकथित आधुनिकता का लबादा ओढकर स्वय को प्रगतिशील घोषित कर दिया जाए। लेकिन इस झोक मे खुशवन्तसिंह को इतना तो ध्यान रखना चाहिए कि वे अनर्गल प्रलाप तो नही कर रहे।

प्रगतिशीलता दिखाने की झोक में वे धर्म की वैज्ञानिक मान्यताओ का खण्डन करने स पहले तोल लिया करें कि वे स्वय ही दोहरे आवरण का शिकार तो नही हो रहे हैं।

मर्यादाहीन प्रलाप से कोई व्यक्ति महान चिंतक होने का दावा नहीं कर सकता, व्यथ विवादो को जन्म देकर चर्चित बनने से इतिहास पुरुष नही बना जा सकता। खुशवत सिंह को समझना चाहिए कि महान चितको की श्रेणी मे प्रतिष्ठापित होने के लिए बुद्धि के दरवाजे खोलकर समाज को निर्णायक दिशा देने वाले विचार देने जरूरी होते है।

आर्य जगत् के समाचार

आर्य वीर दल कैथल

दिनाक ६ ७ ८८ को साय ८ बजे आर्य वीर दल कार्यालय मे श्री उमेद जी शर्मा की अध्यक्षता मे, मण्डलपति श्री हरिराम जी करडे वाले ने निम्न नियुक्तिया की।

मन्त्री—श्री युद्धेन्द्र कुमार भून

कोषाध्यक्ष—श्री अमरनाथ जी आर्य

नगर नायक—श्री बृजमोहन जी आर्य

शाखा नायक—श्री जगदीशचन्द्र जी, श्री लक्ष्मणदास जी आर्य

बालशाखा नायक—श्री धीरज कुमार जी आर्य

सरक्षक—श्री अमरसिंह जी शोरेवाले, श्री बाबूराम जी गुप्ता
श्री मदनगोपाल जी वर्मा, श्री इकबालचन्द जी
आचार्य देवव्रत जी, कुरुक्षेत्र

मन्त्री आर्य वीर दल, क्योडक गेट,
कैथल हरियाणा

शुभविवाह सम्पन्न

दिनाक २९ ७ ८८ उत्तोस जून को मेरी सुपुत्री विमला देवी का शुभ पाणिग्रहण सस्कार मेरे निवास पाली हरदोई मे प० आर्येन्दु चन्द्र वेदाचार्य गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर तिलहर के पौरोहित्य मे शाहाबाद निवासी चि० चन्द्रप्रकाश गुप्त के साथ वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ उपस्थित भद्र पुरुषो ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए नवदम्पति को आशीर्वाद प्रदान किया। —रामगोपाल गुप्ता मन्त्री

आर्य समाज पाली हरदोई (उ० प्र०)

आर्य समाज सगौल का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सगौल (पटना) का ८८वां वार्षिकोत्सव १० से १२ जून ८८ तक धूमधाम से मनाया गया। इस शुभ अवसर पर श्री प० रामचन्द्र शास्त्री, मधुपुर (देवघर) श्री प० महावीर प्रसाद आर्य दार्शनिक, चतरा (हजारा) श्रीमती विद्यावती देवी मोनपुरा (पटना) श्री प० शिववीर आर्य ब्यापुर (पटना) श्री सत्यप्रकाश आर्य ब्यापुर (पटना) आदि विद्वानो का समधुर भजन एव उपदेश हुआ। लगभग पच्चीस वर्षों के बाद श्री प० शिवधर आर्य जी के प्रयास एव परिश्रम से यह वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ।

केदार आर्य, मन्त्री

शुभ विवाह

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान स्वर्गीय आचार्य ईश्वरदत्त जी मेधावी की पौत्री सौ० अ जना सुपुत्री श्री मेधामुनि जी डिप्टी रजिस्ट्रार जोधपुर विश्व विद्यालय जोधपुर का पाणिग्रहण सस्कार श्री ठाकुर जागेश्वरसिंह जी दिल्ली निवासी केसुपुत्र श्री राजेन्द्र सिंह के साथ दिनाक २४ जून १९८८ को डी० डी० ए० कम्युनिटी हाल बी ब्लाक न्यू मोती नगर नई दिल्ली १५ पर वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। इस वैदिक व्यवस्था अनुसार सम्यक विवाह मे दोनो पक्ष के गणमान्य व्यक्ति सम्मिलित हुए तथा वर वधू को शुभाशीर्वाद प्रदान किया।

यज्ञ के निमित्त दान

श्री बटेश्वर दयाल जी

आर्य समाज दीवान हाल के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर कर्मठ एवं श्रद्धावान आर्य नेता श्री बटेश्वर दयाल जी ने २० हजार रुपये स्थिर निधि के रूप मे यज्ञार्थ खर्च करने के लिए दान दिए। इससे पूर्व भी उन्होने ५ हजार रुपये की राशि दी थी जो १९९० तक ४० हजार रुपये होकर मिलेंगे।

दूसरी राशि भी जब ४० हजार हो जायेंगे। कुल मिला कर ८० हजार रुपये की स्थिर निधि से यज्ञ के निमित्त व्यय करने का प्रावधान है।

प्रसिद्ध उद्योगपति हीरोसाइकिल के मालिक श्री सत्यानन्द मुंजाल सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान निर्वाचित

बम्बई के यशस्वी आर्य नेता कैप्टन देवरत्न आर्य सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री निर्वाचित

मधुर आर्य डायरी १९८९ तथा आदर्श डायरी १९८९

१९८९ की दोनो प्रकार की डायरिया ३१ अगस्त ८८ तक छपकर तैयार हो जायेंगी। इच्छुक व्यक्ति तुरन्त चौथाई धन अग्रिम भेजकर अपनी डायरिया सुरक्षित करावें। दस प्रति से कम आदेश स्वीकृत न होगा।

मधुर आर्य डायरी ८९ एक प्रति दस रुपये।

१० प्रति डायरी ७०) रुपये, २० प्रति डायरी १३०) रुपये।

५० प्रति डायरी ३००) रुपये, १००) प्रति डायरी ५००) रुपये।

डाक व्यय, पैकिंग सब अलग होगा।

आदर्श डायरी ८९ एक प्रति बीस रुपये।

१० प्रति डायरी १४०) रुपये, २० प्रति डायरी २६०) रुपये।

५० प्रति डायरी ६००) रुपये, १०० प्रति डायरी १०००) रुपये।

डाक-व्यय, पैकिंग सब अलग होगा।

मधुर-लोक

आर्य समाज मन्दिर, २८०४ बाजार सीताराम,
दिल्ली-११०००६

वधू चाहिए

आर्य परिवार का एक स्वस्थ लम्बा कद सनाढ्य ब्राह्मण कौशल्य गोत्री नवयुवक २७ मैट्रिक एम ए एल एल बी (कम्प्यूटर कोर्स मे अध्ययनरत) २८ वर्षीय ज्येष्ठ भ्राता मयपत्नी डाक्टर विदेश मे सरकारी सेवारत (दोनो डाक्टर है) के योग्य सुन्दर, सुशील गृहकार्य मे दक्ष, स्नातकोत्तर ब्राह्मण परिवार की कन्या (स्वस्थ) चाहिए। गुरुकुल स्नातिका और आर्य परिवार को प्राथमिकता दहेज नही।

—जगदीश प्रसाद शर्मा
८/२३ राजेन्द्र नगर
सेक्टर तीन
साहिबाबाद पिन २०१००५
जिला गाजियाबाद (उ० प्र०)

श्रीमती सत्यदेव (दक्षिण अफ्रीका) का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका से प्राप्त सूचना के अनुसार आर्य सरक्षण गृह, डरबन के सस्थापक, स्वर्गीय डी जी सत्यदेव की धर्मपत्नी तथा श्री आमन सत्यदेव की माता, श्रीमती डी जी सत्यदेव का हाल मे ही निधन हो गया। उनकी अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति से १६ जुलाई १९८८ को सम्पन्न हुई। शोक सन्तप्त परिवार को आर्य जगत की हार्दिक सान्त्वनायें।

—सम्पादक

प्रवेश सूचना

गुरुकुल वैदिक सस्कृत महाविद्यालय सिराथू इलाहाबाद (उ० प्र०) के नवीन सत्र का प्रवेश मास जुलाई से प्रारम्भ है। गुरुकुल मे प्रथमा से लेकर आचार्य पर्यन्त कक्षाओ को पढाने की सुविधा है। विशेष जानकारी के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करे।

—डा० रमामित्र शास्त्री
गुरुकुल वैदिक सस्कृत महाविद्यालय
सिराथू इलाहाबाद (उ० प्र०)

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज महरामऊ उन्नाव का वार्षिकोत्सव दिनाक १३-५-८८ से १५-५-८८ ई० तक सम्पन्न हुआ जिसमे आर्य जगत के अनेक विद्वान भजनोपदेशक पधारे। प० कुशराम आर्य का मैजिक लालटेन का प्रदर्शन हुआ। १५ मई को चि० सत्यपाल आर्य आत्मज आचार्य शिवदास शास्त्री मन्त्री जिला सभा का मुण्डन सस्कार श्री रविशकर शर्मा प्रधान जिला सभा के पौरोहित्य मे वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

—शिवदास शास्त्री

छात्रवृत्तियां

श्री बजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से चालू सत्र के लिये गुरुकुलो, स्कूलो, महाविद्यालयो, व्यावसायिक प्रशिक्षणालयो के सुयोग्य और सुपात्र विद्यार्थियो को और स्नातकोत्तर व स्पर्धात्मक परीक्षाओ के परीक्षार्थियो/परीक्षार्थिनियो को छात्रवृत्तिया देने का कार्यक्रम शुरू हो गया है। इस छात्रवृत्तियो से लाभ उठाने के इच्छुको को चाहिए कि ट्रस्ट से नियत आवेदन फार्म को मगवा कर शीघ्र ही भर कर निम्नलिखित को भेज दें।

सत्यदेव, आदरी सचिव
श्री बजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट
सी ३२ अमर कालोनी, नई दिल्ली ११००२४

ग्रामीण सेवा शिविर

आर्य समाज खण्डवा के प्रधान भावजी भाई एव मन्त्री लक्ष्मीनारायण भार्गव ने बताया कि आर्य वीर दल शिविर खण्डवा के आर्य वीरो ने श्री भार्गव मन्त्री जी के साथ ग्राम भण्डारिया म ग्रामीण सेवा के अन्तर्गत ग्राम की सडकें एव नाली साफ की उसके बाद ग्राम के लगभग एक सौ बच्चो एव बूढे बीमारो का इलाज भी किया, ग्रामवासियो न इनके कार्य की भूरि-भूरि सराहना की।

—कृष्णलाल मन्त्री

शोक समाचार

आर्यसमाज अल्मोड़ा के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष श्री प्यारेलाल साह जी का एक मास की अस्वस्थता के अनन्तर दिनांक -७-८८ ई० ७५ वर्ष की आयु मे निधन हो गया। दिनांक को उनका अन्तिम सम्कार वैदिक विधि से किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज, अल्मोडा ने अपने एक अभिन्न सहयोगी के वियुक्त होने पर शोकोद्गार व्यक्त करते हुए और आर्यसमाज के प्रति की गई उनकी सेवाओ की प्रशसा करते हुए उनकी आत्मा की शान्ति तथा परिजनो के प्रति धैर्य धारण के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

स्वर्गीय श्री प्यारेलाल जी आजीवन अविवाहित रहे। सन् सन् १९३९ ई० के हैदराबाद आय सत्याग्रह मे वे अल्मोडा से चले चार युवको के जत्थे के अन्यतम सदस्य थे और उन्होने हैदराबाद रियासत के भीतर सत्याग्रह मे भाग लेकर अढाई मास तक जेल की सजा पायी। उनके स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी पशन के कागजात केन्द्रीय तथा उत्तर प्रदेश सरकार के पास विचाराधीन पड़े है।

नामकरण संस्कार

१—२८-६-८८ दिन बुधवार को नवादा जिले के रजौली ग्राम मे आर्यसमाज के कर्मठ सदस्य श्री डा० वासुदेव नारायण के पौत्र का नामकरण डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ बच्चे का नाम दीपोकर रक्खा गया।

२—२८-६-८८ दिन बुधवार को नवादा जिले के रजौली ग्राम मे आर्यसमाज के कर्मठ सदस्य श्री प्रभाकर आर्य के सुपुत्र का नामकरण डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी के आचायत्व मे हुआ बच्चे का नाम नीलोकार रखा गया।

कांशीराम से सावधान

सहारनपुर, २० जुलाई। मुजफराबाद विकास खण्ड अन्तर्गत स्थित ग्राम धोला कुआं मे अखिल भारत जन जाति परिषद की जिला इकाई द्वारा हरिजन बस्ती मे एक सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता हजारीलाल द्वारा की गई। इस सभा मे बोलते हुए हरिजन नेता फूलचन्द केसला ने हरिजनो को बी एस पी और उसके नेता कांशीराम से सावधान रहने की सलाह दी। उनके अनुसार सदियो से शोषित और पीडित निर्बल एव कमजोर वर्गो को, अनुसूचित एव पिछडी जातियो को कांग्रेस पार्टी ने बराबरी का अधिकार दिलाने का लगातार प्रयास किया। परन्तु विदेशी शक्तियो से प्राप्त सहायता के बल पर कांशीराम देश के हरिजनो एव पिछड़े वर्गो को बरगलाने का प्रयास कर रहे है। साम्प्रदायिक भेदभाव उत्पन्न कर सामाजिक विषमता को कम करने की जगह कांशीराम बढाना चाहते है। जिससे अन्ततोगत्वा हरिजन एव पिछड़े समाज को ही हानि उठानी पड़ेगी।

संस्कार सम्पन्न

दिनांक १५ ५ ८८ को इटौंदी में जाकर श्री शिवमुनी आर्य जिनको अतर्वर्ष शुद्ध किया गया था आर्य उनके छोटे बच्चे श्री ओमप्रकाश आर्य का अन्नप्राशन्न सस्कार के साथ शिवमुनी आर्य के माता श्री परचेतुया जोसैफ को शुद्ध कर श्रीमती जन ओमनी देवी आर्या नाम रखा गया। यह शुद्धि सस्कार एवं अन्नप्राशन्न सस्कार पं० कैदारनाथ आर्य के पौरोहित्य मे शुद्ध कर वैदिक धर्म की दीक्षा मैत्री जी ने दी। अब उनका पूरा परिवार वैदिक धर्म में दीक्षित हो गया।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

मृ ॰ ॰ न्त १९ ॰ ५९ ८६]
वर्ष २३ अङ्क ॰]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
श्रावण कृ॰ १० स॰ २०४५ रविवार ७ अगस्त १९८८

दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

आर्यसमाजको बदनामकरनेके लिए झूठाप्रचार

आर्य जनता सावधान

२३ जुलाई १९८८ के सान्ध्य वीर अर्जुन और २४ जुलाई के दैनिक प्रताप तथा वीर अर्जुन मे मोटे शीर्षक देकर एक मन घडन्त समाचार छापा गया।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी में गबन

स्वामी आनन्द बोध से पूछताछ करने कानपुर की पुलिस दो घण्टे तक सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे स्वामी जी से पूछताछ करती रही—वस्तुस्थिति कुछ और है कानपुर पुलिस ने उस दिन श्री वीरेन्द्र से जरूर पूछताछ की जिसे उपरोक्त समाचार के अन्त म स्वीकार किया गया है।

स्वामी जी ने स्पष्ट कहा कि सभा मे न कोई पुलिस अधिकारी आया और न ही उनसे कोई बातचीत हुई है। पता चला है कि इस मनघडन्त समाचार को प्रकाशित कराने मे श्री वीरेन्द्र का हाथ है। वीर अर्जुन कार्यालय ने इस तथ्य का स्वीकार किया है। इस घोर पाप पूर्ण और झूठे तथा मनघडन्त समाचार को छपवाकर जो लोग आर्यसमाज की छवि को धूमिल करना चाहते है, जल्दी ही ऐसे लोगो की शरारतो का भडाफोड होगा।

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कानपुर पुलिस से भी माग की है कि इस झूठे और मनघडन्त दुष्प्रचार पर अपनी स्थिति स्पष्ट कर।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

फिजी में हिन्दुओं को जबरन ईसाई बनाने का मुद्दा संयुक्त राष्ट्र में उठाने की मांग

नई दिल्ली, १ अगस्त। राज्यसभा मे आज माग की गई कि भारत सरकार फिजी मे हिन्दुओ को जबरन ईसाई बनाने तथा उनके साथ जातिगत भेदभाव का मामला सयुक्त राष्ट्र मे उठाए।

निर्दलीय श्री कृष्णकुमार बिडला ने आज सदन मे विशेष उल्लेख करते हुए कहा कि फिजी की राबुका सरकार द्वारा बनाये जा रहे नये सविधान के तहत वह ईसाई धर्म वाला देश हो जायेगा जब कि वहा सबसे बडा समुदाय (४८ प्रतिशत) हिन्दुओ का है।

उन्होने कहा, हिन्दुओ का जबदस्ती धर्म परिवर्तन किये जाने से उनका अस्तित्व ही खतर मे पड गया है। श्री बिडला ने कहा कि सरकार को यह मामला सयुक्त राष्ट्र मे उठाने के साथ ही इसे राजनीतिक स्तर पर सुलझाने की कोशिश करनी चाहिये।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी दिनांक ३-९-८८ को समता दिवस के रूप में मनायें

हरिजनों को यज्ञोपवीत धारण कराकर यज्ञ करायें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने समस्त आर्य समाजो आर्य सस्थाओ तथा आर्य शिक्षण सस्थाओ को निर्देश दिया है कि ३ सितम्बर १९८८ श्रीकृष्ण जन्माष्टी के दिन अपने यहा यज्ञ का आयोजन कर तथा हरिजन भाइयो को यजमान बनाय। उन्ही के हाथ से प्रसाद वितरण कराकर उन्हे समता का दर्जा द।

—सभा मन्त्री

शिरोमणी कमेटी दरबार साहब के अपमान के लिए जिम्मेदार है

भाई मोहनसिंह का आरोप

अमृतसर ३१ जुलाई।

अकाल तख्त के वर्तमान जत्थेदार श्री मोहनसिह ने कहा कि शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्ध कमेटी की कार्यकारणी ने नजर बन्द ग्रन्थी जसवीरसिह रोड और अन्य लोगो के स्थान पर नियुक्ति के लिये किसी भी हैड ग्रन्थी से विचार नही किया।

भाई मोहनसिह ने सवाददाता को बताया कि जब शिरोमणी कमेटी द्वारा नियुक्त जत्थेदार हरचरण सिह की जगह वर्तमान जत्थेदार को नियुक्त किया गया तो उन्हे आश्चर्य हुआ।

हरचरणसिह नजरबन्द है उन्होने कहा कि मुझे वर्तमान पद पर बने रहने की कोई इच्छा नही और रोड तथा अन्य ग्रन्थियो की रिहाई के पश्चात् इस पद को छोडने मे उन्हे कोई आपत्ति नही होगी भाई मोहनसिह ने आगे कहा कि दरबार साहब के अपमान के लिए वे जिम्मेदार नही इस अपमान जनक स्थिति के लिए गुरुद्वारा प्रबन्ध कमेटी ही जिम्मेदार है।

नेपाल में पांच ईसाई पादरी गिरफ्तार

काठमाण्डू, १ अगस्त। नेपाल के सिकोरुनपुर जिलेमे ईसाई धर्म का प्रचार करने वाले पाच ईसाई पादरियो को गिरफ्तार कर लिया गया है।

सरकारी समाचार पत्र दी राईजिग स्टार ने लिखा है कि इनके घरो की तलाशी ली गई इनके घरो से ईसाई धर्म की अनेक पुस्तक और पोस्टरो पर कब्जा कर लिया है। स्मरणीय है कि नेपाल राष्ट्र मे धर्म परिवर्तन पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनंदबोध सरस्वती पर झूठे आक्षेप

दिल्ली २ अगस्त।

सभा प्रधान स्वामी आन दबोध सरस्वती ने आज बताया कि कुछ लोग अपनी पुरानी आदत से मजबूर होकर आय समाज की धवल कांति को धूमिल करने के लिए झूठा प्रचार करके वैदिक धम की पुनीत आस्थाओं से जनता का ध्यान हटाकर अपनी दूषित प्रवृति का प्रदशन कर रहे है

स्वामी जी ने कहा कि २३ जौलाई के वीर अजु न और २४ जुलाई के दैनिक प्रताप तथा वीर अजु न मे एक अत्य त भ्रामक निन्दनीय तथा मन गढ त समाचार मोटे अक्षरो मे छापकर और उसकी सैकडो प्रतिया खरीदकर दूर दूर तक आय जना को भेजी गई। इस समाचार द्वारा प्रच रित किया गया कि २२ जौलाई को सावदेशिक सभा के कार्यालय मे कानपुर पुलिस आई और दो घण्टे तक स्वामी आन दबोध से पूछताछ करती रहा।

हम डके की चोट से घोषणा करते हैं कि सभा कार्यालय मे कोई पुलिस अधिकारी नही आया। न ही किसी ने हमसे कुछ पूछा। इस सम्ब ध म हमने उत्तर प्रदेश पुलिस अधिकारियो से स्पष्टीकरण मागा है।

इस समाचार को आधार बनाकर ३१ जौलाई के आय मर्यादा मे श्री वीर द्र ने एक अग्रलेख लिखा है। स्वामी जी ने कहा कि इस झूठ प्रोपेगण्डा काड की पूरी जाच कराई जा रही है और सार्वदेशिक सभा की आगामी अतर ग सभा विचार करके निणय किया जायेगा।

वीर अजु न कार्यालय से आय प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अधिकारियो को विश्वस्त सूत्रो से पता चला है कि उस दिन श्री वीरे द्र दिल्ली मे थे और इस झूठ सम चार को उ होने ही कई बार फर बदल करके प्रकाशित कराया। यह भी पता चला है कि उत्तरप्रदेश पुलिस ने श्री वीरे द्र से पूछ ताछ की थी क्योकि श्री विजयपाल वर्मा द्वारा २७ ६ ७८ को जो एफ आई आर ज्वालापुर थाने मे लिखाई गई थी उसमे डा० हरिप्रकाश के साथ श्री वीरे द्र का भी नाम है। अत अपना पाप छुपाने के लिए श्री वीरे द्र ने वह झूठा समाच र प्रकाशित करने के लिए पत्र सम्पादक को मजबूर किया सत्यमेव जयते। जल्दी ही वस्तुस्थिति सामने आयगी और जिन लोगो को आज तक गलतो करने के ब वजूद नजरअ दाज किया अब उ ह कोई और अवसर नही दिया जायेगा

—सच्चिदान द शास्त्री
म त्री सभा

श्री पं. मनमोहन जी तिवारी
एक व्यक्तित्व

लखनऊ मे हि दुत्व की रक्षा हेतु समर्पित व्यक्ति स्व० प० रास बिहारी तिवारी जी के नाम से भली भाति परिचित हैं आपके बिना हि दू अपने को असहाय अनुभव किया करता था। अ पने लखनऊ म डी० ए० व ० कालिज की स्थापना की जो आज डिग्री कालिज के रूप मे चल रहा है

आपके चार पुत्र थे इनमे श्री प मृत्युन्जय जी तिवारी ये आप म मा नीय व प्रतिभा थी जो आपक पू य पिताजी म थी। पर तु असमय म काल कवलित हो जान स आपका व्यक्ति व अधरा ही रह गय आप जनता की सेवा के साथ अपने शिक्षा सस्थानो का भी सचालन किया और उ० प्र० आय प्रतिनिधि सभ क सभा उपम त्र पद पर आसीन रहे।

आपके देहावसान होन पर द्वितीय भ्राता श्री प० च द्रदत्त तिवारी उत्तर प्रदेश आ० प्र०नि० सभा के चार वष तक म त्री रह और अ यमनदाज म डी ए वी कालिज शिक्षा सस्थानो का सचालन किया। आपके बाद—

श्री प० मनमोहन जी तिवारी ने अपनी परम्परा का निवाह किया अ पने डी ए०व ० डिग्री क निज इण्टर कालिज बालिका विद्यालय वा विद्या मन्दिर जो बाबा जी व पिताजी द्वारा स चालित थे उनका सचालन बडी सफलता क साथ किया है। आज भी आप इनके प्रब धक हैं।

आय समाज क प्रदशीय नेतृत्व न इस उभरते नवयुवक को परखा और उत्तर प्रदेश की दो हजार आय समाजो का कायभार (म त्री पद) क रूप म सोप दिया पहले उपम त्री भी ह और आजकल ४ वष स म त्री पद पर काय कर रहे है अ य मित्र साप्ताहिक का सम्पादन भी आपके द्वारा बड सफलता से किया जा रहा है।

भारी भरकम शरीर लम्बा कद स्वस्थ सुथरा गोल चेहरा धवल वस्त्रो मे अच्छा निखरा हुआ व्यक्तित्व आज उत्तर प्रदेश को मिला है।

शिक्षा से स्नातक (बी ए) तिवारी (ब्राह्मण) परिवार मे २७ जून १९४६ को ज मे श्री मनमोहन जी न किस नक्षत्र मे ज म लिया। उसके अनुसार सक्टो से उलझना और आगे बढकर यशस्वी बनना जीवन का लक्ष्य बन गया है। राजकीय सीमा मे भी अनेक सस्थाओ से जुड हुए है।

आजकल आपके उभर व्यक्ति व को देखकर ही सावदेशिक आय प्रति निधि सभा दिल्ली मे श्री स्वामी आन दबोध सरस्वती ने आपको उपम त्री पद पर निर्वाचित किया है।

निर्भीक होते हुए भी आपके चेहरे पर क्रोध नाममात्र को भी प्रकट नही होता है परिवार मे हो या बाहर आपके सरल स्वभाव मे सदाबहार ही स्पष्ट झलक दिखाई देती है।

द्वार पर दो चार महमान प्रतिदिन रहते ही है उनके अ तिथ्य स कार म कभी कमी नही होती है—आपके स्वभावानुरूप आपकी धमपत्नी श्रीमती पुष्पा एम ए भी अपने पति क अनुरूप ही मिनी है। तिवारी जी से चाहे भूलचूक हो जाय पर तु पुष्पा जी कभी भी अपने से असावधानी नही होने देती घर का काम हो या बाहर का व्यावसायिक काम।

परम्परा मे आज भी मनमोहन जी ने अपने बाबा श्री प० रासबिहारी तिवारी के यशस्वी नाम मे यश के चार चाद लग ये हैं। सावदेशिक सभा की ओर से उनके यशस्वी जीवन के लिए अनेक अनेक शुभकामनाय हैं। वह और अधिक काय करके आगे बढ।

—सम्पादक

व्रत से सत्य

व्रताचरण करना चाहिए। व्रत वेद ने कहा—

व्रत कृणुत-व्रत कृणुत। यजु. अ. ४ म ११। व्रत करो निश्चय से व्रत करो क्योकि व्रत का लाभ व्रतेन दीक्षामाप्नोति यजु० अ. १९ म ३०

व्रत से दीक्षा की प्राप्ति होती है अर्थात आध्यात्मिक क्षेत्र मे प्रवेश करने का अधिकारी बन जाता है इस प्रकार व्रतानुष्ठान कर से दीक्षा प्राप्त होने पर दक्षिणा-वृद्धि उन्नति समृद्धि का साधन प्राप्त होता है और उस समृद्धि से श्रद्धा की जागृति होती है तथा श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति हो जाती है।

जीवन मे सत्य की उपलब्धि सत्य की दर्शन ही वास्तविकता है। सत्य से विपरीत अवास्तविकता है अत: सत्य का अनुसरणकर्ता सत्य स्वरूप ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।

श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति करो।

व्रतेन दीक्षिमाप्नोति दीक्षायाप्नोती दक्षिणाम।
दक्षिणा श्रद्धामाप्यति श्रद्धाया सत्य माप्यते ॥
यजु० १९। ३०

(व्रतेन दीक्षाम आपन्नोति) व्रत से दीक्षा को प्राप्त होता है और दीक्षाया दक्षिणाम आप्राति) दीक्षा से दक्षिणा को प्राप्त करता है।

(दक्षिणाम श्रद्धाम् आपोन्नति दक्षिणा) से श्रद्धा को प्राप्त है और (श्रद्धाया सत्य माप्यते) श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है।

मन्त्र मे बतलाया गया है कि मनुष्य व्रत के द्वारा दीक्षा अर्थात उत्तम अधिकार को प्राप्त होता है और अधिकारी होकर दक्षिणा अर्थात फल को प्राप्त होता है तथा फलवत होकर श्रद्धावान होता है और श्रद्धालु होकर सत्य को प्राप्त कर लिया करता है सच्चाई तक पहुँचने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य उसके लिए सर्वप्रथम व्रत ले अर्थात प्रतिज्ञा करे कि मुझे सत्य को प्राप्त करना है और मैं उसे ही प्राप्त करूगा। इस प्रकार व्रत को ग्रहण तदानुसार आचरण करताहै वह दीक्षित अर्थात् सत्य प्राप्ति का उत्तराधिकारी बनता है जब सारी विघ्न बाधाओ को दूर करता हुआ सत्य पथ पर आगे बढ़ता ही चला जाता है तो उसे उसकी दक्षिणा फल सुयश के रूप मे प्राप्त होने लगता है जो कि उसमे सच्चाई के लिए दृढ़ विश्वास श्रद्धा को उत्पन्न कर देते और अन्त मे वह इसी श्रद्धा से सत्य को प्राप्त करता है श्रद्धा का अर्थ है कि (श्रतसत्यम भ्रादधाति इति श्रद्ध जो सत्य को प्राप्त करावे वह श्रद्धा हैं सत्य की महिमा का वर्णन करते हुए शास्त्रो मे कहा गया है मन सत्येन शुद्धति। मन सत्य से पवित्र होता है नही सत्यता प्रमो धर्म। सत्य से बढ़कर और कोई धर्म नही सत्यम ही परमबलम् सत्य ही परमबल है।

मौनात् सत्य विशिष्यते मौन की अपेक्षा सत्य श्रेष्ठ है।

सत्येन लभ्यस्तपसाह्येष आत्मा। सत्यरूपी तनश्रण से यह आत्मा परमात्मा को प्राप्त होता है। तत्सत्य प्रतिष्ठितम वह ब्रह्म सत्य मे प्रतिष्ठित है (इसलिए सत्य को प्राप्त करने और सत्य धारण करने ही से ब्रह्म को प्राप्त कर सकते हैं। और इसका परिणाम यह हुआ कि सत्य से विमुख होना ईश्वर से विमुख होना है इसलिए सत्य की इतनी महिमा वैदिक साहित्य मे गान की गई है।

यजुर्वेद मे आता है अश्रद्धामनृते उदधच्छद्ध सत्ये प्रजापति सत्य मे श्रद्धा और अनृत अश्रद्धा को रखा अर्थात मनुष्य को चाहिए कि सत्य श्रद्धा रखे और झूठ मे अश्रद्धा करे इस प्रकार जो सत्य मे श्रद्धा करता है और व्यवहार मे उसका ही प्रयोग करता है उसमे अपूर्व शक्ति आ जाती है और वह जीवन के सन्मार्ग पर बढ़ता हुआ सत्य के निधान ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है। अन्त मे हमे वेद के आदेशानुसार सत्य के लिए व्रत लेना चाहिए।

(अग्ने व्रतपते व्रत चरिष्यामी तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहम नृतात् सत्यम् मुपेमि ॥यजु० १०-४

व्रते पालक स्वामी मैं व्रत का आचरण करने लगा हूँ मुझे शक्ति दो कि मैं अपने व्रत का पालन कर सकू मेरा व्रत यह है कि मैं असत्य मार्ग को छोड़कर सत्य को ग्रहण करता हू। हे ईश्वर मैं व्रत करता हू कि झूठ को छोड़कर सच की खोज करूगा प्रभु मेरी सहायता कीजिये। ससार मे अनेक प्रकार के व्रत पाये जाते है कोई एक दिन उपवास करता है कोई एक मास का कोई इससे भी अधिक परन्तु यह व्रत नही है खाना न खाने का नाम व्रत नही व्रत एक मानसि सकल्प का है ऐसा सकल्प कि असत्य का त्याग करने और सत्य को ग्रहण करने सदा सर्वथा उद्यत रहे 'वेद की यह आज्ञा है और आर्य समाज के ४ नियम मे इसी व्रत को दुहराया गया है इस एक व्रत के प्रयास मे अन्य सब छोटे बडे व्रत अच्छे काम आ जाते हैं और सत्य की प्राप्ति हो जाने पर मनुष्य के सब अन्धकार अन्धविश्वास कुसस्कार सब नष्ट हो जाते हैं- छल, कपट, लोभ मोह, द्वेष छेद सारे ही दुंगुण दूर भाग जाते हैं नही (सत्यात परमोधर्मः) अर्थात सच मे बढकर कोई पुण्य नही और यह बात ठीकहै जो झूठ से बढकर कोई बुरीचीज नही इसलिए वेद मन्त्र का मुख्य उपदेश यह है कि सत्य को खोजो सत्य को बोलो और सत्य निष्ठा होकर जीवन व्यतीत करो यह नियम आर्य समाज की शोभा है जो बात सत्य प्रत्यक्षादि प्रमाणो से सिद्ध युक्तियुक्त सृष्टिकर्म से अविरुद्ध और शुद्ध आत्मानुकूल हो उसे ग्रहण करने के लिए और इससे विपरीत को छोड़ने के लिए सदा तैयार रहना चाहिए। आर्य को सत्य का अन्वेषक होना चाहिये। और जब उसे पता लग जाए कि कोई बात असत्य है तो उसे उसी समय छोड देना चाहिए क्योकि आचरण के बिना ज्ञान किसी काम का नही किसी वस्तु का ज्ञान मात्र चरित्र निर्माण के सहायक नहीं हो सकता। रावण वेदो का बहुत बड़ा विद्वान था परन्तु आचरण न करने के कारण वह राक्षस कहलाया अत. प्रत्येक आर्य का यह कर्तव्य है कि वह सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोडने मे तत्पर रहे। सत्य जहा से प्राप्त हो वहीं से ले लेना चाहिये। मनु महाराज का आदेश है।

विषदप्यमृत ग्राह्य बालापि सुभाषितम। २-२३९
अमित्रादपि सद्वृतम मध्यादपि कान्चनम ॥

विष से अमृत और बालक से भी उत्तम वचन ले लेना चाहिए शत्रु से भी सदाचार सीखना और अपवित्र स्थान से भी स्वर्ण ले लेना चाहिए कहने का तात्पर्य यह है कि सत्य के ग्रहण करने मे हठ और दुराग्रह कदापि न करना चाहिए। ऋषि दयानन्द सत्य के अनन्यतम प्रेमी थे। वे अपने समस्त जीवन मे सत्य अन्वेषण करते रहे आर्य समाज मे प्रविष्ट होने वाले प्रत्येक नर नारी को सत्य को अपनाने की शिक्षा दी। क्योकि सत्य ही परम बलम सत्य सबसे बडा बल है। वेदो और उपनिषदो मे ईश्वर को सत्य कहा गया है (सत्यम) सत और यम तीन अक्षरो के योग से बना है स जीव को कहते है। त ब्रह्माण्ड को और यम शासक का नाम है इस प्रकार सत्यम ईश्वर का नाम है क्योकि वह जीव और जगत दोनो को शासन मे रखता है फिर ऐसे प्रभु को किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं इसका उत्तर है तत् सत्ये प्रतिष्ठितम हम वह ब्रह्म सत्य प्रतिष्ठित है सन्त तुलसीदास ने भी कहा है—

(शेष पृष्ठ ९ पर)

वैदिक गूढ़ प्रश्नावली

[कर्मनारायण कपूर दिल्ली]

१ प्रश्न—हम जीवो को कौन बार-बार जन्म देता है ?

उत्तर—वह परमेश्वर ही हमे पुन पुन माता-पिता के दर्शन कराता है। (ऋग० १, २४ १, २)

२. प्रश्न—कौन मरणधर्मा प्राणी परमानन्द के सुखको प्राप्त करने मे समर्थ है ?

उत्तर—कोई भी नही। (वही १ ३०-२०)

३ प्रश्न—त्रिवृत रथ के तीन चक्र कहा लगे हुए है जो तीन बन्धन दण्ड हैं वे कहा लगे हुए योग शक्ति का कब सञ्चालन होता है ?

उत्तर—यह प्रश्न जानने योग्य हैं। (वही १-३४ ६)

४ प्रश्न—हे जीवात्मा तेरा कौन बन्धु है, तेरा रक्षक कौन है और तू कौन है ?

उत्तर—परमेश्वर के सिवाय इस जीव का कोई बन्धु, दाता रक्षक तथा आश्रय नही है। (वही १ ७५ ३, ४)

५ प्रश्न—हे परमेश्वर ! आपकी कथा उपासना करू, कौन-सी स्तुति अति सुखकारिणी है ? किस मन से अपने को आपके अर्पण करू और कौन से ज्ञान और कर्म से आपको प्राप्त करू ?

उत्तर—इन सबका उत्तर है विद्वानो के सत्सग से प्राप्त हो सकता है। (वही १ ७६ १ ३)

६ प्रश्न—हम किस प्रकार परमेश्वर की आत्म समर्पण करें और कौन से वाणी बोले ?

उत्तर—नमस्कारो द्वारा। (वही १ ७७ १, २)

७ प्रश्न—पूर्व ऋषियो से प्राप्त वेद का सत्य ज्ञान कहा है और नये ज्ञान को कौन जानता है ? ऋत कहा है अनृत कहा है ? परमेश्वर का साक्षात दर्शन या ज्ञान कैसे प्राप्त हो सकता है ? कठिनता से चिन्तन होने वाले परमेश्वर को किस मार्ग से प्राप्त करे ? (वही १ १०५ ४, ५, ६)

उत्तर—इन प्रश्नो का उत्तर जानने योग्य है।

८ प्रश्न—इस पृथिवी का परला छोर कहा है वेद वाणी का सर्वोत्कृष्ट परमाश्रय कौन है ?

उत्तर—यह वेदि पृथिवी का परला छोर है। ज्ञानवान प्रभु ही वेद वाणी का परम रक्षक है। (वही १ १६४ ३४ ३५)

९ प्रश्न—जो आज नहीं, कल भी नहीं जो अद्भुत है उसको कौन जानता है ?

उत्तर—कोई नहीं जान सकता है। (वही १ १७०-१)

१० प्रश्न—प्राय लोग पूछा करते हैं कि ईश्वर कहा है, कई कहते हैं कि वह भयानक काल है और कुछ लोग कहते हैं कि परमेश्वर की सर्वेश्वरसर्वान परमेश्वर ही है। कोई सत्ता नही।

११ प्रश्न—वह प्रभु किसकी उपासना को प्रेम से युक्त होकर स्वीकार करता है ? वह कौन-सा पुरुष है जो उस परमेश्वर्य पद को चाहता है ? (वही ५-१२-३)

उत्तर—ऐसा कोई ही विरला है। (वही ८-६४ ८)

१२ प्रश्न—हे देह बन्धन से छुड़ाने वाले प्रभो ? आप कहा हैं ? आप कहां गये हैं ? तेरे लिये मेरा मन बहुत बहुत स्थानो को जाता है।

उत्तर—वह प्रभु सर्वत्र व्यापक है। (वही ८ १ ७)

१३ प्रश्न—किस प्रकार सुख से मनन करने योग्य नाम का हम मनन करे। हमे कौन सुखी करता है ? हमारा कौनसा देव है जो कल्याण करता है ?

उत्तर—इनका उत्तर विद्वान ही दे सकते हैं। (वही १० ६४-१)

१४. प्रश्न—जीव (कुमार) को कौन पैदा करता है ? इस देह को कौन चलाता है ? कौन हमें इसका ज्ञान देवे।

उत्तर—जिस प्रकार यह जगत व्यक्त होता है उसी प्रकार वह कुमार भी पैदा होता है। (वही १०-१३६ ५, ६)

१५ प्रश्न—हे पुरुष ! कौन तुझको कार्यों में प्रेरित करता है।

उत्तर—वह परमेश्वर तुझे कार्यों मे प्रेरित करता है।

प्रश्न—परमेश्वर किस प्रयोजन के लिये तुझको कार्यों में नियुक्त करता है ?

उत्तर—वह उत्तम-२ कार्य करने के लिये नियुक्त करता है। (यजु० १ ६)

१६ प्रश्न—हे पुरुष ! तुझको कौन कर्म बन्धन के दुःख से मुक्त करता है ?

उत्तर—वह परमेश्वर तुझको कर्म बन्धन से मुक्त करता है।

१७ प्रश्न—वह परमेश्वर किस लिये कर्म बन्धन से मुक्त करता है।

उत्तर—तुझे मोक्ष प्राप्ति के लिये मुक्त करता है। (वही २ २३)

१८. प्रश्न—सृष्टि के उत्पन्न होने से पूर्व कौनसा आश्रय था ? जगत बनाने के लिये कौनसा मूल तत्व था ? और वह किस दिशा मे था ?

उत्तर—विश्वकर्मा ईश्वर सबको आच्छादित किये हुए था। (वही १७-१८)

१९ प्रश्न—किसकी कल्पना करनी चाहिए ? वह कौन-सा मूल स्काम (तना) है जिससे द्यौ और पृथिवी को घड़ कर बनाया गया है ?

उत्तर—मनीषी पुरुष ही इसका उत्तर दे सकते हैं। (वही १७-२०)

१९ प्रश्न—कौन अकेला विचरता है ? कौन पुन पुन पैदा होता है ? शीतल का क्या उपाय है ? क्या बीजने के लिये क्या बड़ा भारी खेत है ?

उत्तर—सूर्य अकेला विचरता है। चन्द्र पुन पुन पैदा होता है। अग्नि शीत को नाश करने का उपाय है। यह भूमि ही बीज बोने के लिये बड़ा खेत है। (वही २३-९, १०)

२० प्र०—पूर्व चित्ति क्या है ? सबसे बड़ा बल किसका है ? पिलिप्पिला क्या है ? और पिशङ्गिला क्या है ?

उ०—द्यौ ही पूर्वचित्ति है। अग्नि सब का भस्म करने वाला ही बड़ा बल है। भूमि पिलिप्पिला (सबसे अधिक शोभा वाली) है। रात्री ही पिशङ्गिला है—सब रूपो को निगल जाने वाली है। (वही २३-१२)

२१ प्र०—परमेश्वर किन पदार्थो के बीच मे प्रविष्ट है और कौन-कौन और कितने तत्व उस पुरुष के आश्रय पर विद्यमान है ?

उ०—पाचो प्राणी क भीतर आत्मा प्रविष्ट है, और वह पाचो प्राण परमेश्वर से ओतप्रोत है। (वही २३-५१-५२)

२२ प्र०—इस उत्पन्न जगत के आश्रय को कौन जानता है, आकाश भूमि और अन्तरिक्ष को कौन जानता है, महान सूर्य के जन्म स्थान को कौन जानता है, और कौन जानता है कि चन्द्रमा कहा से पैदा हुआ ?

उ०—ये सब परमात्मा से उत्पन्न हुए हैं। (वही २३-३९-६०)

२३ प्र०—इस ससार को कौन भली प्रकार जान सकता है ? और कौन उसकी विवेचना कर सकता है ?

उ०—मेधा से सम्पन्न ब्रह्म ज्ञानी ?

२४ प्र०—जीव और ब्रह्म दोनो कहा से आविर्भूत हुए ? उनमें कौन सा सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है ? किस लोक से यह दोनो प्रकट हुए ?

उ०—यह दोनो बच्चो के समान 'सलिल' (सर्वव्यापक पदार्थ) से प्रकट हुए।

२५ प्र०—जब सबसे प्रथम प्रकृति के अव्यक्त रूप से व्यक्त-सा उत्पन्न हुआ तब उसके देखने वाला साक्षी कौन था ? शरीर को किस अशरीरी ने धारण किया ? शरीर प्राण रुधिर आदि

(शेष पृष्ठ १० पर)

गो दूध को अधिक भाव क्यों ?

गो दूध सोना है--भैंस दूध चांदी है

— राधाकृष्ण बजाज —

स्वराज्य के बाद भैंस दूध का उपयोग बढता ही जा रहा है। सरकारी बिन सरकारी डेरियो ने फेट परसेंट पर दूध के भाव तय किये। इस कारण ७ परसेंट फैट के भैंस दूध को ३॥ रु० भाव मिला तो ४ परसेंट फैट के गो दूध को केवल २ रुपया ही मिला। गोदूध का इतना कम भाव मिलने के कारण ग्वाला ने गाय पालन छोडकर भैंस रखना शुरू किया।

सवाल है कि गाढे भैंस दूध के मुकाबले पतले गौ दूध को अधिक भाव क्यो दिया जाय ? भैंस का दूध सफेद होता है इसलिये इसे चादी सा और गोदूध पीला होता है इसलिये उसे सोने सा कहते है। गौ दूध सचमुच सोना होता है क्या ? यह परखना आवश्यक है। पशु के गुण दोषो का असर उसके दूध पर होता है। अत गाय भैंस के गुण दोष जानने की कोशिश करें।

(१) तीन दिन का गाय का बछडा उछलता हुआ चलता है और भैंस का पाडा तीस दिन का भी नही उछल सकता। कोई भी व्यक्ति अपने बालक को पाडा बनाना नही चाहेगा।

(२) बीस भैंसो के बीच मे पाड को छोडा जाय तो सीधा अपनी मा के पास नही पहुँचेगा। ५० गायो के बीच बछडा छोडा जाय तो सीधा अपनी मा के पास पहुँचेगा। उसमे दूर से अपनी मा को पहचाने की बुद्धि है पाड मे वह भी नही।

(३) गाय और बछडो के नाम रखे जा सकते हैं। वे पचासो बछडो के बीच अपना नाम पहचानकर बुलाने से आते हैं। लेकिन भैंस और पाड मे अपने नाम को पहचानने की अकल नही।

(४) राजस्थान के बीकानेर बाडमेर जैसलमेर जिला मे एक गाय के गले मे घण्टी बाध देते हैं। हर ग्वाले का गाय घण्टी वाली के साथ ही ८ १० मील घूमकर नियत समय पर वापस घर आ जाता है। एक भी गाय कम नही होती और न बढती है। केवल १० भैंसो को घण्टा बांधकर छोडेगे तो भी एक साथ नही आयगी इधर उधर भटकेगी। न समय का ज्ञान न स्थान का ज्ञान न समूह का ज्ञान न अनुशासन ही है।

(५) गोमूत्र महान औषधि है। आयुर्वेद मे पचासो बीमारियो गोमूत्र से दूर की जाती है। आस्ट्रेलिया मे फसल पर गोमूत्र स्प्रे करके कीट नाशक दवा का काम लेते हैं।

(६) भारत की ७५ प्रतिशत खेती आज भी बैल जोत रहे हैं। बैलो से खेती उत्तम जोती जा सकती है उतनी भैंसे से नहीं। भैंसे की गाडी माले मे फस जाय तो भैंसे बैठ जायगे। बैल की गाडी फस जाय तो बैल निकाल ले जायेंगे।

(७) देसी गाय का दूध अधिक स्वास्थ्यप्रद होता है क्योकि वह कडी धूप बर्दाश्त कर सकती है। सूरज की किरण सहन करने से दूध नीरोग होता है। भैंस तथा संकर गाय कडी धूप सहन नही कर सकती।

(८) भैंस आदि अन्य प्राणियो का दूध गोदूध से भिन्न पडता है। भैंस के घी के कण कडे होते हैं आसानी से पचते नहीं। इसलिये बाहर निकल जाते हैं। भैंस के दूध को गरम करने से विटामिन्स नष्ट हो जाते हैं। गोदूध के विटामिन्स गरम करने से नष्ट नहीं होते। गोदूध मे पीला पदार्थ रहता है उसका नाम क्युरोटिन है, यह आंखो की ज्योति बढाता है। गाय के एक सेर घी से जितना फायदा होगा उतना भैंस के पाच सेर घी से भी नही होगा।

(९) इन्टर नेशनल कार्डियोलाजी कान्फ्रेंस के अध्यक्ष कार्डियोलाजिस्ट डा० शान्तिलाल शाह थे। उन्होने कहा है कि भैंस के दूध में सायपेनफेट होती है वह नसो मे जम जाती है। फरी फ्री हुई नस हार्ट अटेक की ओर ले जाती है। हृदय रोगियो के लिए गोदूध ही उत्तम हैं।

(१०) दुनिया के सभी विकसित देशो में गाय का ही दूध पिया जाता है। जैसे अमेरिका इग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस, रशिया, चीन आदि देशो मे गाय का ही दूध पीते हैं। भैंस रखते ही नही। १५० साल के अंग्रजी राज मे हजारो गाय और साड विदेशो मे ले गये लेकिन भैंस एक भी नही ले गये। भैंस को केवल अजायबघर मे रखते हैं।

(११) भैंस पाड के मुकाबले बैल खेती जोतने मे अधिक सक्षम है। भैंस दूध के मुकाबले गाय का दूध अधिक बलबुद्धि स्फूर्ति देने वाला है। भैंस गोबर के मुकाबले गाय के गोबर का खाद अधिक टिकाऊ है। गोमूत्र तो औषधि है ही। सब तरह से भारत के लिए गाय बैल जीवनदाता है।

देश जागृत हो रहा है। गोरक्षा की सही कीमत समझने लगा है गाय को बढावा देने के लिये आतुर है। अत आवश्यक है कि भैंस दूध के मुकाबले गो दूध को अधिक भाव दिया जाय। याने भैंस दूध के भाव घटाकर उसे गोदूध के भाव दिये जाव। गोदूध के भाव बढाकर उसे भैंस दूध के भाव दिये जाव। याने भैंस दूध को ४) रुपया और गोदूध को ५ रुपया लीटर भाव दिया जाय। इस सुझाव से भैंस दूध से गोदूध को सवाया भाव देने की माग है। जबकि भैंस दूध को बढावा देने के लिए पिछले ४० साल से सरकारी बिन सरकारी डेरियो मे गोदूध के मुकाबले भैंस दूध को डेवढा पौने दो गुना भाव दे रहे हैं।

गोसेवा महाभियान यात्रा मे गोदूध का उपयोग बढाना और गोदूध को भैंस दूध से एक रुपया लीटर अधिक भाव देने का ही प्रचार किया जा रहा है। हमारा विश्वास है कि जनता मे गोदूध की मांग बढेगी और गोदूध को भैंस दूध से अधिक भाव मिलेगा तो करोडो गायो का पालन संवर्धन स्वयं किसान ही करेगा।

मथुरा में वैदिक वृष्टि यज्ञ

[श्री [illegible] मन्त्री वृष्टि विज्ञान मण्डल, मथुरा]

इस वर्ष की सबसे महत्वपूर्ण घटना आर्य समाज तिलकद्वार मथुरा के वृष्टि विज्ञान मण्डल द्वारा सफलतापूर्वक सम्पन्न वृष्टि यज्ञ परीक्षण है। यह यज्ञ केन्द्रीय सरकार के विज्ञान एवं तकनीकी मन्त्रालय के सहयोग से भारतीय मौसम विज्ञान द्वारा निर्धारित तिथियों २९ से ३१ मई तक पूर्ण वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ था।

भारतीय मौसम विभाग ने अपने स्रोतों एवं साधनों से प्राप्त जानकारी के आधार पर घोषणा की थी कि मई मास के अन्तिम सप्ताह में वर्षा होने की सम्भावना एक प्रतिशत भी नहीं है। अतः वृष्टि विज्ञान मण्डल ने इस चुनौती को स्वीकार कर इन्हीं तिथियों का चयन किया।

मण्डल के अध्यक्ष विद्वान आचार्य हरप्रसाद जी इस यज्ञ के ब्रह्मा एवं अधिष्ठाता थे। यज्ञ के लिए शुद्ध एक क्विन्टल घी करनाल (हरियाणा) के राजकीय डेरी फार्म से मंगवाया गया था। सामग्री और साकल्य अधिकांश दिल्ली एवं मथुरा से क्रय किये गये। उनका शास्त्रीय विधि से संस्कार कराने के उपरान्त उन्हें प्रयोग में लाया गया।

याज्ञिकों एवं वेद पाठियों में प्रमुख डा० रमाशंकर शिरोमणि गुरुकुल के स्नातक तथा कर्मकाण्डी हैं। अन्य याज्ञिकों में ४ नैपाल के थे। यज्ञ के स्वागताध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र जी अग्रवाल एडवोकेट प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एवं समाज के अग्रगण्य थे। समाज के मन्त्री श्री मुंशी नत्थीलाल जी [illegible]० आशाराम जी, श्री बेनीप्रसाद तिवारी, चौधरी राजेन्द्रसिंह एवं [illegible]ष्णगोपाल जी का सक्रिय सहयोग रहा।

यह पहला अवसर है कि केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त वैज्ञानिक [illegible]कनीकी विशेषज्ञ मौसम विशेषज्ञ यहां अपने साधनों एवं उपकरणों के [illegible]थ पधारे थे। एक विस्तृत प्रयोगशाला आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज के भवनों में स्थापित की गयी थी। चार वैज्ञानिक प्रत्येक क्षण [illegible]स प्रयोगशाला में उपस्थित रहते थे। वर्षा एवं बादलों के विशेषज्ञ [illegible]रदार गुरमुखसिंह स्वयं प्रयोगशाला का कार्य देख रहे थे। प्रत्येक [illegible]दिन विभिन्न रूपों से घृत एवं सामग्री के वैज्ञानिक विश्लेषण होते थे।

सरकार की ओर से भेजे गये वैज्ञानिकों में प्रमुख डा० राजेन्द्र गुहा [illegible]कलकत्ता प्रो० आनन्द कुमार बड़ौदा कु० विभा गुप्त वर्मा डा० सेमन [illegible]ना डा० दत्ता डाइरेक्टर श्री चटर्जी एस० एस० ओ० विज्ञान एवं [illegible]कनीकी मन्त्रालय, रुड़की इञ्जीनियरिंग विश्व विद्यालय, पन्तनगर [illegible]विश्व विद्यालय आई आई० टी० दिल्ली तथा युवा वैज्ञानिक परिषद् [illegible] दस सदस्य उपस्थित रहे।

देश के प्रमुखतम पत्र साइंस टोकसी के श्री नरेश मेहरोत्रा [illegible] [illegible]वेक्रम शाई वकील विशेष प्रतिनिधि अभियान, बम्बई डा० रामचन्द्रन [illegible]विशेष प्रतिनिधि हिन्दू मद्रास कु० गार्गी परसाई हिन्दुस्तान टाइम्स [illegible]ी मोहन स्वरूप भाटिया—आज के अतिरिक्त दैनिक जागरण, अमर [illegible]उजाला पंजाब केसरी नव भारत टाइम्स हिन्दुस्तान ट्रिब्यून के [illegible]तिनिधियों के अतिरिक्त पी० टी० आई० की टीम एवं आकाशवाणी [illegible] सदस्य पधारे थे।

दूरदर्शन वालों ने इस यज्ञ के एक [illegible] का प्रसारण एवं प्रदर्शन अच्छे रूप में किया था। आर्य समाज के वरिष्ठतम नेता स्वामी आनन्द बोध सरस्वती तथा आगरा अलीगढ़ दिल्ली आदि के आर्य समाजी भी उपस्थित थे।

यज्ञ की पूर्णाहुति १ जून को प्रातः १० १/२ बजे हो सकी थी तथा उसी दिन ७४० पर तीव्र वर्षा हुई। मथुरा, आगरा अलीगढ़ के क्षेत्रों के अतिरिक्त वर्षा का प्रभाव दिल्ली तक रहा। मौसम वैज्ञानिक ३० मई तक वर्षा की सम्भावना से इन्कार करते रहे थे। उनका [illegible] था कि यदि यज्ञ समाप्ति के बाद ४८ घण्टों में वर्षा होती है तो आप की सफलता मानी जायेगी।

कुछ आर्य समाज के विरोधी अनीश्वरवादी तथा कम्यूनिष्ट विचार धारा वाले समाचार पत्रों ने यज्ञ के विरुद्ध समाचार प्रकाशित किए हैं। अतः वैज्ञानिकों का एक दल पुनः सत्य की जांच करने आया। उसने रिपोर्ट दी है कि मथुरा आगरा भरतपुर (राजस्थान) तथा अलीगढ़ एवं हरियाणा के कुछ भागों में वर्षा का अच्छा प्रभाव पड़ा है।

यह यज्ञ एक परीक्षण था जिसमें वृष्टियज्ञ की वैज्ञानिकता प्रमाणित हो चुकी है। आर्य समाज के बड़े स्तर पर इस कार्यक्रम को अपनाना चाहिए। वृष्टि विज्ञान मण्डल प्रत्येक प्रकार सहयोग देगा।

विदेश प्रचार

पंडित काशीनाथ एक व्यतित्व

आर्यन वैदिक पाठशाला का नामकरण

लेखक—पण्डित धर्मवीर धूरा शास्त्री ओ० बी० ई०
मन्त्री उपदेशक मण्डल मोरिशस

रविवार ता० ५ जून को मोरिशस आर्य सभा के प्रधान डाक्टर रुद्रसेन निहर जी की अध्यक्षता मे एक भारी भीड के समक्ष, मोरिशस के प्रधान मन्त्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ जी की धर्मपत्नी श्रीमती सरोजनी जगन्नाथ जी ने अपने करकमलो द्वारा आर्यन वैदिक पाठशाला का नाम प० काशीनाथ किश्टो नाम से नामकरण करते समय वेद मन्त्रो के बाद (चादर को हटाकर) अनावरण किया।

सन १९११ मे यहा पर महात्मा गांधी जी के आग्रह से स्व० डाक्टर मणिलाल जी ४ वर्षों तक सामाजिक कार्य करने के बाद जब भारत लौटने लगे तो नौजवान काशीनाथ को उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भारत लाहौर के डी० ए० वी० कालेज साथ ले गये, वहा पर महात्मा हंसराज जी से तथा अन्य आर्य समाजी विद्वानो से इनका परिचय करवाया, वहां पर ४ १ वर्षों तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात आप स्वदेश लौटे और आर्य समाज के कार्यों मे पूरा सहयोग प्रदान करने लगे, फिर आप मोरिशस के आर्य वीर तथा आर्य पत्रिका साप्ताहिक हिन्दी पत्रो के सम्पादक वर्षों तक रहे। आपके काल मे इन साप्ताहिक पत्रो ने सम्पादन का कार्य किया था। दर्जनो नये लेखको और कवियो को पैदा करने मे इन दो पत्रो ने ठोस कार्य किया। आर्य समाज के कार्यों मे रोडा रखने वालो से भी लोहा लिया।

शिक्षा मन्त्री श्री आरमुगम परसुरामेन जी ने अपने जोशिले भाषण के दौरान कहा कि, किश्टो नाम बगाल प्रान्त के भारतीय नामो से मिलता जुलता है। यहा पर नाव को किश्ती कहा जाता है, किश्ती से किश्टो नाम पड़ा होगा। क्योंकि आपके पिता जी भारत के बगाल प्रान्त से मोरिशस पधारे थे।

श्रीमती सरोजनी जगन्नाथ जी के सम्बन्ध मे इस पाठशाला के मैनेजर तथा वाक्वा आर्य समाज के मन्त्री श्री रामखुमण गोवरधन जी ने कहा कि सरोजनी जी वर्षों पूर्व इस पाठशाला मे पढती थी। सरकारी अध्यापिका बनी और हाल मे इस पाठशाला की मुख्य अध्यापिका के रूप मे काम करती थी और इन दिनो में आप शिक्षा मिनिस्ट्री मे इन्सपेक्टर का कार्य करती है। इस पाठशाला के प्रति आपकी कृपा हमेशा से रहती आई है। बहन सरोजनी जी ने कहा कि प० काशीनाथ जैसे लोगों के जीवन मे उच्च भावना रखने वाले लोग उनसे बहुत प्रेरणा प्राप्त करते थे। आज भी वैसी ही प्रेरणा हमे लेनी है।

प० काशीनाथ जी की पुत्री जो इग्लैण्ड से उच्च शिक्षा प्राप्त करके यहाँ लौट आई है। वे अब हमारे शिक्षा संस्थान मे उच्च स्थान पर कार्यरत है। आपने इस नामकरण के लिए सब के प्रति आभार प्रकट करते हुए आर्य सभा, शिक्षा मन्त्रालय आदि को धन्यवाद समर्पण किया साथ साथ ५ हजार रुपये दान में दिये।

मौके पर आर्य सभा उप मन्त्री श्री सत्यदेव प्रियतम जी ने अपने भाषण के दौरान इस पाठशाला के सम्बन्ध मे एक प्रकार से इतिहास पेश किया। साथ इस पाठशाला मे उपमुख्य अध्यापक के रूप मे कार्य कर चुके है और इन दिनो मे आप आर्य सभा मोरिशस के साप्ताहिक आर्योदय पत्र के उप सम्पादक हैं।

मौके पर भारत नई देहली से पधारे हुए आचार्य वेद जी ने वेद मन्त्र पद का इस विधि को करवाने मे अपना सहयोग प्रदान किया। आप हाल में दक्षिण अफ्रिका आर्य समाज मे प्रचार कार्य के लिए गये थे। अन्त में सब का जलपान से सत्कार किया गया था। आरम्भ में यज्ञ किया गया था। इस सभा में प्रति सप्ताह ८-१० बच्चे यज्ञ किया करते है। डाक्टर जी अनेक शिक्षार्थों के आर्य समाजी मन्त्री जब मोरिशस के इस प्रान्त मे आते हैं तो रविवारो को वाक्वा आर्य समाज मे यज्ञ के मौके पर जरूर पधारते हैं। भाग भी लेते हैं, क्योंकि इसी पाठशाला के एक कमरे मे यहा पर यज्ञ किया जाता है। यह कमरा इस कार्य के लिए सुरक्षित है।

पाठशाला तीन मजिला है। सन १९१७ मे इसमे १२ विद्यार्थी पढते थे। जिनमे अब श्री लोलो सुमेरी जी जीवित हैं। इस पाठशाला के प्रागन मे हमारे अनेक सन्यासियो के कार्यक्रम हो पाये है। जैसे स्वामी ध्रुवानन्दजी स्वामी अभेदानन्द जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी आदि। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मे भूतपूर्व मन्त्री स्व० ओमप्रकाश त्यागी जी सन १९७२ मे अपनी मोरिशस यात्रा के दौरान प्राथमिक इस पाठशाला मे विराजे थे। इन दिनो इस प्राथमिक पाठशाला १,२०० विद्यार्थी पढते हैं। यहाँ पर हिन्दी, उर्दू, तामिल, तेलेगू, मराठी, अग्रेजी और फ्रेन्च भाषाए प्रतिदिन पढाई जाती हैं। मुख्य अध्यापक श्री गणेश जी मराठी भाषी हैं। पर अग्रेजी, फ्रेन्च भाषाओं के माध्यम से अपनी अध्यापन ट्रेनिंग पाई हैं। गत दो महीनो से आपकी बदली शिक्षा मिनिस्ट्री द्वारा यहा पर हुई है। प्लेन-विलयेम्स प्रान्त के लिए यह पाठशाला आर्य समाज का अखाड़ा है। स्व० प० काशीनाथ किश्टो जी की १०४वी जयन्ती ४ जून को हुई थी। इस बात की चर्चा उनकी पुत्री मोक्षदा जी ने की। आर्य सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री मोहनलाल मोहित जी आर्य रत्न गत मास एक वृहद् कार्यक्रम मे विराजे थे। आजकल विदेश यात्रा पर हैं।

हर रविवार को यहा पर सस्कृत साहित्य का पठन पाठन होता है। ❖

प्राणों की प्यासी सिगरेट

मेलबार्न, २६ जुलाई। आस्ट्रेलिया मे प्रतिवर्ष धूम्रपान से सम्बन्धित के कारण २३ हजार लोगो की मृत्यु हो जाती है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य अनुसधानकर्ताओ के अनुसार नौ हजार व्यक्तियो की हृदय की रक्तवाहिकाओ के खराब हो जाने से तथा ६ हजार की मुह, गले तथा गुर्दे का कैसर हो जाने से मृत्यु हो जाती है। इसके अलावा तीन हजार लोग के फेफडे खराब होने,दो हजार लोग दौरा पडने तथा दो हजार लोग धमनियो की अन्य बीमारियो से मर जाते हैं।

लगभग ६० पुरुषो की मृत्यु इसलिये हुई क्योकि उनकी माता धूम्रपान करती थी, जिसके परिणामस्वरूप कम वजन के बच्चे पैदा हुये।

सिगरेट से लगी आगों से २ व्यक्ति जल गये।

सान्ध्य वीर अर्जुन २७ ७ ८८

दस दिन में संस्कृत सीखिये

लखनऊ, २६ जुलाई। सस्कृत का पठन-पाठन कठिन नहीं है। आप चाहें तो दस दिन मे सस्कृत सीख सकते हैं। वह भी प्रतिदिन मात्र दो घटे का समय निकलकर।

बोलचाल की भाषा मे सस्कृत सिखाने का यह कार्य लोकभाषा प्रचार समिति जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) के शिक्षक पिछले कई वर्षों से कर रहे हैं जो अब तक हजारो लोगो को कठिन लगने वाली सस्कृत सहज ही सिखा चुके हैं। उत्तर प्रदेश में सस्कृत सिखाने का कार्य २१ जुलाई को गुरुपूर्णिमा के दिन लखनऊ मे शुरू किया जायेगा जो २८ अगस्त को श्रावणी तक जारी रहेगा।

सस्कृत को लोकप्रिय बनाने का यह अभियान अखिल भारतीय सस्कृत महासभा ने शुरू किया है। लखनऊ में दस सत्र पूरे होने के बाद कानपुर मथुरा व वृन्दावन मे नि शुल्क सस्कृत शिक्षा का महाभियान शुरू किया जायेगा।

सस्कृत को सरल व सुगम बनाने के लिए अंग्रेजी व अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दो को आत्मसात किया गया है आप चाहे व्यवसायी, मजदूर, किसान, डाक्टर या इजीनियर हो, बस आपके चाहने भर की देर है। आप आसानी से सस्कृत सीख सकते हैं।

अखिल भारतीय सस्कृत महासभा के एक प्रवक्ता ने बताया कि हर वर्ष श्रावणी (२८ अगस्त) को संस्कृत दिवस के रूप में मनाया जाता था पर इस बार इसे संस्कृत रक्षा दिवस के रूप में मनाया जायेगा।

ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों से केन्द्र सरकार परेशान

देश के विभिन्न भागो मे यद्यपि ईसाई मिशनरियो द्वारा धर्म परिवर्तन करने के समाचार प्राप्त होते ही रहते हैं परन्तु देश के पूर्वी भागों में मिशनरियो के कार्य विस्तार की गति को ध्यान में रखते हुए केन्द्र सरकार का गृह मन्त्रालय काफी चिंतित हो गया है।

लद्दाख मे ईसाई मिशनरियो द्वारा धर्म परिवर्तन का मामला सामने आ ही चुका है। परन्तु अरुणाचल प्रदेश मे उनके विस्तार की गति को ध्यान म रखते हुए यह स्पष्ट हो चुका है कि ईसाई मिशनरियो पर नजर रखनी नितात जरूरी हो गई है।

अरुणाचल प्रदेश की राज्य सरकार ने केन्द्र को सूचित किया है कि राज्य मे ईसाई धर्म का प्रसार करने के लिए ईसाई मिशनरियो ने ग्रामीण क्षेत्रो मे अपने पाव सुदृढ कर लिये है।

यह सूचित किया गया है कि १० वर्ष पूर्व राज्य मे केवल ५००० ही ईसाई थे लेकिन इस समय ८५ लाख की आबादी मे ईसाईयो की सख्या ६०,००० तक पहुंच चुकी है जो कि चिंता का विषय है।

राज्य सरकार ने केन्द्र को बताया है ईसाई धम के प्रसार के कारण वहा चिंताजनक स्थिति पैदा हो गई है। यद्यपि अरुणाचल प्रदेश मे स्वतन्त्र धर्म कानून १९७८ लागू है और इसका उद्देश्य प्रत्येक को अपने धम को बनाय रखना तथा ईसाई धर्म को स्वीकार करने से रोकना है। परन्तु चुपके चुपके ईसाई मिशनरियो ने अपना खेल खेले।

इसके अलावा कानून के अन्तर्गत नई ईसाई मिशनरियो के प्रवेश पर पाबन्दी है और राज्य सरकार की ओर से हर सभव प्रयास किये जाते रहे कि नई ईसाई सगठनो का राज्य म प्रवेश नहीं होने पाये परन्तु राज्य सर इस अचम्भे मे है कि ऐसे कौन से साधन हैं जिनके कारण बड पैमाने पर लोग ईसाई बनाए जा रहे हैं।

ज्ञात हुआ है कि जो भी ईसाई मिशनरी अरुणाचल मे प्रवेश पाना चाहे, वह सबसे पहले असम स मा पर अपनी गतिविधिया शुरू करती है और उसके उपरात इन क्षेत्रो मे अस्पतालो, स्कूलो तथा चर्चों की स्थापना का काम शुरू किया जाता है।

डिब्रूगढ़ के ईसाई मिशनरी के प्रमुख ब्रिटिश फादर मालव प्राम्बल का कथन है कि हमे अरुणाचल मे प्रवेश करने की जरूरत ही नहीं, हमे सीमा पर ही अपने काम को बढाना है और स्वाभाविक है कि अरुणाचल की जनता सीमा पर पहुँचकर हमारी सेवाए स्वीकार करे।

बताया जाता है कि असम, उत्तर लखीमपुर जिला के पास पडने वाले सुबनसीरी जिला की कुल आबादी ७० हजार है जिनमे ३० हजार लोगो ने अपना धम परिवर्तन करके ईसाई बने है। ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि अगले दस वर्षों मे राज्य की कुल आबादी का ७० प्रतिशत भाग ईसाई बन जायेगा।

ईसाई मिशनरियो के कार्य कर्ताओ ने स्पष्ट बताया कि इन क्षेत्रो की गरीबी को ध्यान मे रखते हुए तथा राज्य सरकारो द्वारा इन क्षेत्रो के विकास के प्रति उदासीन रवैया अपनाए जाने के कारण लोग हमारी सेवाए स्वीकार कर रहे है। एक अन्य कारण जो कि ईसाई धर्म के विस्तार तथा प्रसार का बना है वह है कि १२० प्रकार की वन जातियो का धर्म दोनियो पोलो है जिसके अन्तर्गत सूर्य और चन्द्रमा की पूजा की जाती है।

इस पूजा पर काफी धन खर्च किया हो जाता है परन्तु साथ ही पशु बलि का भी सिलसिला है। ऐसा माना गया है कि प्रत्येक वनजाति वर्ष के दौरान इस पूजा पद्धति पर अनुमानत १५००० रुपया की धनराशि खर्च करती है। ईसाई मिशनरियो ने इसे फिजूलखर्ची बताते हुए अपनी प्रभावशाली दलीलो के जरिये इन्हे धम परिवर्तन करने के लिये प्रभावित किया।

ईसाई धर्म के बढते चरण ने अरुणाचल हिन्दुओ और ईसाइयो मे भी तनावपूर्ण वातावरण बन गया है रामकृष्ण मिशन तथा विवेकानन्द सस्थाओ ने इन क्षेत्रो मे अपनी शैक्षणिक सस्थाए स्थापित की हैं लेकिन खतरा इस बात का है कि ईसाई मिशनरियो की सेवाओ के सामने रामकृष्ण मिशन सस्था फीकी पड जाती है। लेकिन रामकृष्ण मिशन के कार्यकर्ताओ ने स्पष्ट किया है कि अगर राज्य सरकार ने कोई ठोस उपाय नहीं करते तो एक भारी खतरा पैदा हो जाये।।

विश्व के विद्वानो उपदेशको और प्रचारकों की सेवा में आवश्यक सुझाव

—श्री धर्मवीर वेदपथिक

(१) समस्त वैदिक विद्वानो, उपदेशको, पुरोहितो और प्रचारकों की सेवा मे विनम्र निवेदन और आवश्यक सुझाव है कि सभी खादी की धोती और कुर्ता का परिधान करें।

(२) समस्त धर्मोपदेश जन नित्य, यज्ञ, प्रार्थना, स्वाध्याय और सत्सग की वैदिक परिपाटी को चलाने का प्रबल प्रयास करें।

(३) विवाह आदि सस्कारो मे खडे होकर भोजन न करके बैठकर भोजन किया करें।

(४) शिखा सूत्र को धारण करें।

(५) भारतीय सस्कृति की रक्षा के लिए भारतीय रहन-सहन को अपनायें।

(६) राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रयोग करें।

(७) अपने गले मे पीला दुपट्टा धारण करें।

(८) महात्मा बुद्ध और महाराजा अशोक के अनुचरो के समान आज वैदिक धर्म के प्रबल प्रचार के लिए लाखो वैदिक मिशनरी उपदेशको की आवश्यकता आर्य समाज को है।

(९) सभी उपदेशको वैदिक विद्वानों तथा प्रचारको के घरो में ओ३म् नाम की पावन पताका होनी चाहिए।

(११) विश्व की समस्त प्रमुख राष्ट्र भाषाओं में वेदो का शास्त्रो का तथा महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थों का अनुवाद और प्रकाशन का कार्य सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रारम्भ किया जावे।

लालमणि

परमपिता की सन्तान

हमे सभी के साथ प्रेम व सद्व्यवहार करना चाहिए। ससार मे कौन किससे कब बिछुड जाय—पता नहीं! ईर्ष्या द्वेष से बचें। आमवतावादी बने। आतकवादी न बनें।

हम सब परमपिता परमात्मा की सन्तान हैं। आपस मे सब भाई-भाई!

छोड़िये व्यसन, बचाइये धन

शराबी ने कहा—'शराब एक टानिक है। दिमाग को कुछ समय के लिए टनक बनाती है, परन्तु शरीर को कमजोर!"

शराब का अर्थ है—शरारत कराने वाला आब (पानी)। शराबी का मन—कुमन होने के कारण—तन को पतन की ओर ले जाता है। शराबी धन से निर्धन हो जाता है।

सुरापान का, है इतिहास, तन-मन-धन का होता नाश।

मुखद्वार

शरीर के नौ द्वारो मे मुख मुखद्वार है। मुख प्रमुख भूमिका निभाता है। मुखद्वार से स्वादिष्ट भोजन पहुँचकर तन-मन को बलवान बनाता है। मन को सुमन बनाये। मुख से भजन गायें। मनन-चिन्तन के बाद बोली गई वाणी—रामबाण है। देववाणी सबको आनन्द देती है। वाणी के बाण से किसी को दुख न देवें। बोलिये सत्यप्रिय वाणी—मन को प्रसन्न करने वाली, सबको प्रसन्न करने वाली!

—श्रीनिवास आर्य, (इलाहाबाद)

वृत से सत्य

(पृष्ठ ५ का शेष)

साँच बराबर तप नही झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय साँच है, ताके हृदय प्रभु आप ॥
अश्वमेधसहस्रं च सत्यं च तुलया धृतम्।
अश्वमेधसहस्राद्धि सत्यमेव विशिष्यते ॥
फल रक्खा रहस्तो अशामच रखा सत्य तुला लिया।
होता है भार अधिक सत का यह मर्म शास्त्र ने खोल दिया।
सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयात्वम् ॥
योगदर्शन साधनापद सूत्र ३६'
सत धर्म मे दृढ हो निर्भय निशक रहो सदा।
सब कर्म हो जाये सफल पाओ सकल सुख सर्वदा
दृढ सत्य सम ससार मे कोई न उत्तम कार्य है
जो सत्य को धारण कर वह पूर्ण पता मर्म है"
हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥१५॥ ईशोपनिषद

सत्य का मुख स्वर्ण के पात्र से ढका हुआ है प्रभु उस सत्य धर्म के दिखाई देने के लिए तू उस आवरण को हटा दें।

ममता ने सत्य छिपाया।
अब मन मल पाप हटाये।
सत्य यथार्थ प्रकाश दिखलावें।

सत्य का आस्वादन

१ मिथ्या और अनित्य पदार्थों को सत्य समझने के भ्रम से ही मनुष्य दु खमय जीवन भोगता है।

२ देखो जो मनुष्य भ्रमात्मक भावो से मुक्त है और जिसकी दृष्टि स्वच्छ है उसके लिये दु ख और अन्धकार का अन्त हो जाता है और आनन्द उसे प्राप्त होता है।

३ जिसने अनिश्चित बातो से अपने को मुक्त कर लिया है और जिसने सत्य को पा लिया है उसके लिये स्वर्ग पृथ्वी से भी अधिक समीप है।

४ मनुष्य जैसी उच्च योनि को प्राप्त कर लेने से भी कोई लाभ नही अगर आत्मा ने सत्य का आस्वादन नहीं किया।

५ कोई भी बात हो उसमे सत्य को झूठ से पृथक कर देना ही।

६ मेधा का कर्तव्य है वह पुरुष धन्य है जिसने गम्भीरता पूर्वक स्वाध्याय किया है और सत्य को पा लिया है वह ऐसे रास्ते से चलेगा जिससे फिर उसे दुनिया मे आना न पडे।

७ निसन्देह जिन लोगों ने ध्यान और धारणा के द्वारा सत्य को पा लिया उन्हें और भावी जन्मों का ख्याल करने की जरूरत नहीं है।

८ जन्मो-की जननी अविद्या से छुटकारा पाने और सच्चिदानन्द को प्राप्त करने की चेष्टा करना ही बुद्धिमानी है अथवा जिन्होंने विमर्श और मनन के द्वारा सत्य को पा लिया है उनके लिये पुन जन्म नहीं है।

९ देखो जो पुरुष मुक्ति को जानता है और सब मोह के जीतने का प्रयत्न करता है भविष्य मे आने वाले सब दु ख उससे दूर हो जाते हैं।

१० कामक्रोध और मोह ज्यो ज्यो मनुष्य को छोडते जाते हैं दु ख भी उनका अनुसरण करके धीरे धीरे नष्ट हो जाते हैं। सत्य ही सर्वोपरि है सत्य ही जीवन की सफलता है।

सच्चाई ही हर मनुष्य का धर्म है।

सच्चाई कभी भी खत्म नही हो सकती है।

(सत्य प्र०) तथा सत्याचरण का ठीक ठीक फल यह है कि जब मनुष्य निश्चय करके केवल सत्य ही मानता बोलता और करता है तब वह और जो जो योग्य काम करता और करना चाहता है वे सब सफल हो जाते हैं।

—रामदयाल आर्य
जोधपुर (राजस्थान)

पुस्तक समीक्षा

सामवेद सुभाषितावली

लेखक-डा० कपिलदेव द्विवेदी
कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

प्रकाशक—विश्वभारती अनुसधान परिषद, ज्ञानपुर (वाराणसी)
काउन अठपेजी, पृष्ठ सख्या -१६०+८
मूल्य—प्रचार सस्करण १५) रुपए, सजिल्द -२५) रुपए

वेद विश्व को ज्ञान देने वाले और विश्व सस्कृति के आधार स्तम्भ हैं। वेद मानव मात्र के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। प्रत्येक ग्रन्थ के सुभाषित उसके प्राण और सार होते हैं। डा० द्विवेदी ने चारो वेदो के सुभाषितो का विषयानुसार और अकारादि क्रम से सकलन किया है। साथ ही प्रत्येक सुभाषित का हिन्दी मे अर्थ दिया गया है। इसी क्रम मे यह सामवेद सुभाषितावली ग्रन्थ प्रस्तुत हैं। इसमे सामवेद से १७६८ सुभाषित हिन्दी अर्थ सहित दिए गये है। समस्त सुभाषितो को १४ शीर्षको मे बाटा गया है। यज्ञ और धर्म, विविध देवता, आचार शिक्षा, नीतिशिक्षा, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्रीय, समाज शास्त्रीय, राष्ट्रीय एव विश्वकल्याण, दार्शनिक, आयुर्वेद, भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, प्राणि विज्ञान, मनोविज्ञान, वेद, भाषा विज्ञान, सगीत, ज्योतिष आदि।

इसमें सैकड़ों सुभाषित शास्त्रीय और व्यावहारिक दृष्टि से अत्यन्त उपादेय हैं। इन्हे दैनिक उपयोग के लिए कण्ठस्थ किया जा सकता है।

पुस्तक की छपाई, कागज और कवर आदि उत्तम एव आकर्षक हैं। यह पुस्तक प्रत्येक पुस्तकालय और आर्य परिवार के लिए सग्रहणीय है।

—श्री सच्चिदानन्द शास्त्री

क्या सच्चाई के दिन लद गये

क्या हम बीसवी शताब्दी आधुनिक एटम युग के इन्सान होने के नाते आत्मगौरव का अनुभव कर सकते हैं लेकिन मैं तो इससे नितान्त लज्जा का अनुभव करता हू। प्राय कहते हैं कि हमारे बाप दादा के जमाने की दकियानूसी बाते इस दौर मे नहीं रहीं और हमने पहले की अपेक्षा अधिक उन्नति कर ली है एव पिछली सदी से कही आगे बढ गये हैं, लेकिन हमने उन्नति नही की है केवल बदले हैं, और वह भी सिर्फ बुराइयो की दिशा मे जब हमारी पुरानी पीढी खत्म हो जायेगी और अपने साथ सयम सत्यवादिता व सच्चरित्रता आदि के महान गुण सहज हर ले जायेगी तो हमारी दुनिया का रूप क्या होगा? ईमानदारी बहुत तेजी से हमारे जीवन से लुप्त होती जा रही है प्रतिदिन होने वाले गबन, अनाचार, छल कपट से पूर्ण काडो पर हमारी दृष्टि जाती है। तो उनमे बहुत-सी घटनाओ का सम्बन्ध तो ऐसे नेताओ समाज एव उद्योग के प्रमुख व्यक्तियो से होता है जिन्होने धर्म व सत्यता का लबादा ओढ रखा है।

देश को २१वी सदी मे उछाल कर ले जाने वाले दावेदारो क्या हमने सत्युग के बाद ऐसी प्रगति की है जो सत्य पर आधारित हो, शायद नही तो फिर हमने प्रगति नहीं घोर अवनति की है।

—जमालुद्दीन खान, बुलन्द शहर

प्रवेश सूचना

श्री रामशरण आर्य कन्या गुरुकुल सिरसागज मैनपुरी (उ० प्र०) का नये सत्र का प्रवेश आरम्भ है। प्राचीन आश्रम पद्धति के अनुसार योग्य अध्यापिकाओ द्वारा व्याकरण दर्शन वेद उपनिषद तथा आधुनिक विषयो के पठन पाठन की समुचित व्यवस्था है। प्राकृतिक वातावरण भोजनासनादि की उचित व्यवस्था आवास एव शिक्षा निःशुल्क है।

—विद्याभिक्षु वानप्रस्थ

वैदिक गूढ़ प्रश्नावली

(पृष्ठ ४ का शेष)

सघात का आत्मा कहां स्थित था ? सबसे प्रथम को किसी विद्वान से पूछा ? (वही १-१-४ ऋ० १-१६४-४)

उ०—इन प्रश्नो का उत्तर कोई नहीं दे सकता क्योकि यह सृष्टि और मनुष्य उत्पत्ति के पूर्व के समय के सम्बन्ध में है।

२६. प्र०—कौन ठीक जान सकता है कि यह सृष्टि कहां से उत्पन्न हुई, किस मूल कारण से और क्यों उत्पन्न हुई ?

उ०—विद्वान तो सृष्टि के बनने के पश्चात ही उत्पन्न हुए अतः वह इस रहस्य को कोई नही खोल सकता है।

(ऋ० १०-१२९-६-६)

२७. प्र०—किसी देव ने इस शरीर में भिन्न-भिन्न अंगों, मास रुधिर आदि को बनाया।

उ०—उस परमात्मा ने ही बनाया। वह ही प्राण स्वरूप होकर स्वयं समस्त देहो को गति दे रहा है।

(अथर्व० १०-२ १ ता० २६)

२८. प्र०—वायु क्यो नही चैन पाता ? मन क्यों नही एक स्थान पर स्थित रहता है ? (अथर्व० १०-७-३७)

उ०—विद्वानों द्वारा गवेषणीय है। सम्भवतः यह उनके नैसर्गिक गुण है।

२९. प्र०—इन्द्र, सोम, अग्नि, त्वष्टा और धाता किससे उत्पन्न हुए ?

उ०—इन्द्र इन्द्र से, सोम सोम से, अग्नि अग्नि से, त्वष्टा त्वष्टा से और धाता से उत्पन्न हुए। अर्थात इन सबका पूर्व रूप भी वही था।

३०. प्र०—हे ईश्वर ! जिज्ञासु पुरुष तेरी स्तुति क्यों करते है ? कौन तेरी क्या अर्चना करता है ? हे ईश्वर तू स्मरण करने वाले की पुकार को तू कब सुनता है ? और स्तुति करने वाले को तू कब प्राप्त होता है ? (वही २०-५०-२)

उ०—यह रहस्य कोई नही जान सकता।

३१. प्र०—प्राणदड मे से कर्ता को कौन उखाड़ता है अर्थात मुक्त करता है ? भीतरी नाद को कौन बजाता है ? जो बजाता है वह कैसे बजाता है ? यदि आत्मा की चित्ति शक्ति बजाती है तो वह कहां बजाता है ? (वही २०-१३२-८, ९, १०, ११)

उ०—यह प्रश्न रहस्यमय है। इनका उत्तर जानना कठिन है।

३२. प्र०—हे इन्द्र ! कहा रहते हो और कहां गति करते हो।

(साम० २७१ ऋ० ८-१-७)

उ०—अज्ञात है।

३३. प्र०—हे वरण योग्य ईश्वर ! किस वाणी से आपकी स्तुति करू ? किस मन से अपने को आपके समर्पण करूं और किस-किस समय यह नमस्कार करू ?

(सामवेद १३० ऋ० ८-८४-४, ५)

उ०—मन ही बता सकता है।

३४. प्र०—ससार को रुलाने वाले देह धारियो मे प्रकट प्राण कौन है ?

(वही ४३३ ऋ० ७-५६-१)

उ०—जानने योग्य है।

वर-वधू चाहिए

भारतीय सिविल सर्विस एलायड ग्रुप 'ए' के बिहार वासी कुशवाहा तीन आफिसरो, (१) मनोज कृष्ण कस्टम एण्ड एकसाईज, (२) देवेन्द्र कुमारसिंह, इन्कमटैक्स एव (३) महेन्द्र प्र० मेहता, रेलवे के लिए गोरी, सुन्दर ५' २" लम्बी एवं उन्नत शिक्षा प्राप्त मौर्य, सैनी, कछवाहा, शाक्य, काछी, कुशवाहा कन्या की आवश्यकता है तथा कुशवाहा सुश्री सुनीता प्रसाद इण्डियन फौरेस्ट सर्विस आफिसर के लिए सुयोग्य एवं सुशिक्षित वर की आवश्यकता है। सम्पर्क करे :

पं० बनारसीसिंह 'विजयी', संचालक
विवाह सूचना केन्द्र, वैदिकाश्रम, शिवाजी पथ,
बारपुर, पटना-८००००१

नेपाल के प्रचारक रामचन्द्रसिंह क्रान्तिकारी द्वारा कार्यक्रम सम्पन्न

(रामचन्द्रसिंह क्रान्तिकारी नेपाल)

२२-६-८८ को जितपुर पूर्वी चम्पारण में विवाह सम्पन्न हुआ।

२४-६-८८ को गोविन्दापुर पूर्वी चम्पारण में विवाह सम्पन्न हुआ।

२६-६-८८ को हौड़ा दानों में पूर्वी चम्पारण में विवाह सम्पन्न हुआ।

२९-६-८८ को सियौली में पश्चिमी चम्पारणमे शिलान्यास सम्पन्न हुआ।

३०-६-८८ को जगदीशपुर में पश्चिमी चम्पारण मे विवाह सम्पन्न हुआ।

१-७-८८ को जगदीशपुर के मन्त्री जी के घर विशेष यज्ञ हुआ। बहुत जवानो को वैदिक धर्म प्रचार के लिए तैयार किए।

३-७-८८ को लक्ष्मीपुर पूर्वी चम्पारण मे यज्ञशालाका शिला न्यास हुआ।

मन्त्री, चम्पारण जिला

१—आर्य समाज मोतीहारी का वार्षिकोत्सव

६, ७, ८ एवं ९ मई को सोल्लास सम्पन्न हुआ, इसमे स्थानीय उपदेशको के अलावा स्वामी ब्रह्मानन्द जी नैष्ठिक देहरादून डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा राजबाला आर्या हरियाणा तथा प० ओमप्रकाश शास्त्री हरियाणा पं० ब्रजकान्त कुमार शास्त्री अमेठी का भाषण एवं भजनोपदेश हुए।

२—आर्य समाज पमेढ़ा का तृतीय वार्षिकोत्सव

२५, २६, एव २७ मई को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा, डा० सत्यव्रत वानप्रस्थ समस्तीपुर, प० हरिप्रसाद शास्त्री जहानाबाद, श्री रामनारायण आर्य समस्तीपुर, श्री दयानन्द सत्यार्थी समस्तीपुर, श्रीमती धर्मशीला देवी मुजफ्फरपुर के भजनोपदेश हुए।

३—आर्य समाज पटोरी समस्तीपुर का वार्षिकोत्सव

२, ३ एव ४ जून को सम्पन्न हुआ। इसमे डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा, प० हरिप्रसाद जी शास्त्री जहानाबाद, डा० सत्यव्रत वानप्रस्थी समस्तीपुर एवं श्री शिवचन्द्र आर्य भजन मण्डली चकलाल शाही ने भाग लिया। सभा प्रधान का भी भाषण हुआ।

४—आर्य समाज मुंगेर का वार्षिकोत्सव

६, ७, ८ एव ९ जून को सम्पन्न हुआ। इसमे डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा, श्री नवल किशोर शास्त्री समस्तीपुर, श्री चक्रदत्त शर्मा मुंगेर आदि ने भाग लिया।

५—आर्य समाज पकाकी (पटना) का द्वितीय वार्षिकोत्सव

९, १० एव ११ जून को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा, डा० सत्यव्रत वानप्रस्थी, श्री दयानन्द सत्यार्थी समस्तीपुर ने भाग लिया।

६—आर्यसमाज विष्णुपुर बैंती, पो० का झा, पुर्णिया का प्रथम वार्षिकोत्सव

२४ एव २५ जून को मनाया गया। जिसमे डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा, सत्यप्रकाश व्यास, नन्दन शास्त्री 'वैदिक' ने भाग लिया।

शुद्धि कार्य हेतु अपील

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने जहा मानव मात्र को प्रभु की पवित्र वाणी पढने का अधिकार दिया, स्त्री जाति का उद्धार किया, गौरक्षा का प्रचार किया, वहा ईसाई मुसलमान आदि के लिए हजारो वर्षो से वैदिक धर्म का द्वार शुद्धि द्वारा फिर से खोलकर एक अद्भुत कार्य किया, स्वय अपने कर कमलो से एक यवन को शुद्धकर मुन्शी अलखधारी नाम दिया। हिन्दुत्व पर आक्षेप करने वाले मौलवी पादरियो से ऐसे-ऐसे प्रश्न किये कि उन्हे लेने के देने पड गए। अनेक विधर्मी वेद निन्दक वेद के प्रशसक बन गए। भारतीयो का आत्म गौरव जाग उठा।

महर्षि के इस शुद्धि आन्दोलन को अमर शहीद प० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द आदि ने अपने बलिदान से सीचा, लाखो बिछडो को वैदिक धर्म मे दीक्षित किया। यदि आर्य समाज इसी प्रकार शुद्धि आन्दोलन को चलाता रहता और हिन्दू जगत् इसका साथ देता तो देश को विभाजन का हृदय विदारक दु.ख न देखना पडता और न ही आज फिर वह स्थिति दोबारा उत्पन्न होती। आज विदेशी ताकते, कही नागालैण्ड, कही झारखण्ड, कही खालिस्तान का नारा देकर भारत के भाग्य को कलकित न कर रही होती। आज अपने अपनो के खून से हाथ धोना चाहते हैं इन समस्याओ का इलाज है—शुद्धि (अपने प्राचीन धर्म की शरण)

आज देश का हरेक प्रबुद्ध नागरिक हृदय से शुद्धि का समर्थक है। समस्त पौराणिक आचार्यो ने भी इसे मान्यता प्रदान कर उत्तम कार्य किया है। पर 'बिल्ली के गले मे घण्टी कौन बाधे' इसे सभी जानते हैं कि यह कार्य केवल आर्यसमाज ही कर सकता है। और करता आया है।

इसी पुनीत परम्परा को कायम रखने के लिए 'वैदिक यति मण्डल'' के निर्देश पर सार्वदेशिक आर्य प्रनिनिधि सभा की देखरेख मे १९८० से उडीसा मध्य प्रदेश मे हमने शुद्धि आन्दोलन चला रखा है और यह कार्य निरन्तर आपके सहयोग से बढ रहा है। अब तक १० हजार से भी अधिक ईसाई वैदिक धर्म की शरण मे आ चुके हैं। जैसे-जैसे शुद्धि का कार्यक्रम बढता जा रहा है, निरन्तर लोगो का आग्रह भी बढता जा रहा है अत इस वर्ष एक विशाल आयोजन शुद्धि समारोह का हम करना च हत ह। इसके लिए १९ जून को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर श्री पृथ्वीराज शास्त्री का यह प्रस्ताव सर्वसम्मति के साथ स्वीकार हुआ कि 'शुद्धि का चक्र एक बार पुन. तीव्र गति स चलाया जाए। जैसे-जैसे २ फरवरी १९८३ को पोपपाल के आगमन पर शुद्धि का भव्य आयोजन गुरुकुल आमसेना मे हुआ था। इस बार ५ हजार से अधिक ईसाई भाइयो को शुद्ध करने का एक अभूतपूर्व कार्यक्रम कर एक नया इतिहास बनाना चाहते है। पू० स्वामी आनन्दबोध जी ने इसे युग युग की माग बतलाया। पूज्य स्वामी ओमानन्द जी ने इसे अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द के युग का आगमन बतलाया। इस अवसर पर अनेक प्रतिनिधि सभाओ के प्रधान व आर्यसमाज के आर्य नेता उपस्थित थे। सभी ने इसमे पूर्ण सहयोग की घोषणा की। जो 'सार्वदेशिक साप्ताहिक' मे छप चुकी है।

उपरोक्त प्रस्ताव के अनुसार सार्वदेशिक आर्य प्रनिनिधि सभा के अध्यक्ष पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी की अध्यक्षता मे नवम्बर के अन्तिम सप्ताह मे एक भव्य आयोजन 'वनवासी आर्य महासम्मेलन'' के रूप मे मनाया जायेगा, इसमे पाच हजार से अधिक बिछडे ईसाई बन्धु वैदिक धर्म मे प्रवेश लेगे। इस अवसर पर अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर नवीन आगत बन्धुओ का स्वागत कर उनका उत्साह बढावे। अपने पधारने की स्वीकृति एव सख्या पहले सूचित कर सके तो व्यवस्था मे सुविधा होगी। आर्य समाज के मूर्धन्य साधु सन्यासी, विद्वान पदाधिकारी इस अवसर पर पधार कर अपना आशीर्वाद देगे।

यह हमारा सौभाग्य है कि जहा हमे तपोमूर्ति वैदिक यति-मण्डल के अध्यक्ष पू० स्वामी सर्वानन्द जी आदि वैदिक यति मण्डल के सदस्यो एव सार्वदेशिक सभा का आशीर्वाद प्राप्त है। वहा डी० ए० वी० ट्रस्ट एव प्रादेशिक आर्य प्रनिनिधि सभा की ओर से श्री दरबारी लाल तथा रामनाथ जी सहगल ने भी पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया है। तथा समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओ के प्रधानो ने भी इसमे रुचि लेकर हमारा उत्साह बढाया है। यह स्नेह सहानुभूति ही हमारी शक्ति और सहारा है जो हमे कार्य करने के लिए निरन्तर प्रेरित करता है।

परन्तु यह कार्य अति कठिन परिश्रम एव व्यय साध्य है, जो आप सभी के स्नेह एव सहयोग से पूर्ण होगा। लगभग १५ हजार व्यक्ति इस आयोजन मे भाग लेगे। अत चार लाख से अधिक रुपया इस पर खर्च आयेगा। यदि देश भक्त जिनके हृदय मे देश की अखण्डता एव स्वतन्त्रता की रक्षा की पीडा है। आशा है वे इस कार्यक्रम मे स्वय तथा अपने स्नेही इष्टमित्रो, सगठनो द्वारा सहयोग देकर पुण्य के भागी बनेंगे।

पजाब मे इस कार्यक्रम मे यति मण्डल के विशिष्ट सदस्य श्री महात्मा प्रेमप्रकाश जी तथा दिल्ली मे श्री प० पृथ्वीराज जी शास्त्री एव उनकी धर्मपत्नी प्राणपण से लगे हुए हैं। इन्ही की प्रेरणा पर यह आयोजन हो रहा है। दिल्ली वासी भाई-बहन अन्न एव वस्त्र आर्य समाज रानी बाग को भेजे। अपने चैक या ड्राफ्ट स्टेट बैंक या सैन्ट्रल बैंक खरियार रोड के गुरुकुल आश्रम आमसेना या उत्कल आर्य प्रनिनिधि सभा के नाम से भेजे। (इन्कमटेक्स की छुट है)।

—स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती
गुरुकुल आमसेना

धारावाहिक सीरियल अमीर खुसरो का विरोध

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला मण्डल की बैठक मे प्रत्येक बुधवार को दिखाये जा रहे धारावाहिक 'अमीर खुसरो'' की कडे शब्दो मे भर्त्सना की गई। इस धारावाहिक मे सत्यता को छिपा कर इतिहास के साथ क्रूर मजाक किया गया है। मन घडन्त बाते जिनका इतिहास से दूर का भी सबध नही है, उन बातो को इस धारावाहिक के माध्यम से दिखाया जा रहा है। जिससे साम्प्रदायिकता को भी बल मिल रहा है तथा आर्यो (हिन्दुओ) के हृदयो को ठेस लग रही है।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए मडल अध्यक्षा श्रीमती शकुन्तला आर्या ने कहा कि यह सर्वविदित है कि हिन्दुओ पर जज्जिया लगाने वाली, हिन्दुओ के हजारो मन्दिरो को तोडने वाला, तलवार के बल पर बलात् धर्म परिवर्तन कराने वाला अन्धविश्वासी और इतिहास का सबसे क्रूर बादशाह औरंगजेब था। जिसे इस धारावाहिक द्वारा सभी धर्मो का आदर करने वाला और राष्ट्र भक्त दिखाया गया है। इसके साथ ही आर्यो को यवनो के स्तर पर रख कर यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि आर्य भी विदेशी आक्रामक थे दूरदर्शन का यह धारावाहिक सीरियल हमारी सस्कृति पर सीधा कुठाराघात है।

बैठक मे एक प्रस्ताव के माध्यम से सूचना और प्रसारण मन्त्री और दूरदर्शन के महानिर्देशक से बल पूर्वक अनुरोध किया गया कि ऐसा सीरियल जिसमे इतिहास की धज्जिया उडाई जा रही हो उस पर तुरन्त रोक लगा कर देश की नई पीढी को भटकने से रोका जाए।

—कृष्णा ठुकराल, मन्त्री

कृतज्ञता ज्ञापन

सभी आर्य भाई बहिनो का हार्दिक ध यवाद

वृत— मसाने (prostate) मे रसौली फलने से मुझे छ मास से भयकर पीन्ा थी।

आल इण्डिया मे ... ल्ली कपूर नर्सिंग होम नरेला दिल्ली तीन म य डाक्टरों के इलाज मे रहने पर भी निदान के ठाक न होने के कारण सब प्रयत्न असफल हो रहे।

अप्रल का श्रीनगर आया और आने ही यहा के शेर ए कश्मीर मडाकल हस्पताल मे दाखिल हो गया। ० निदान मे लगे रसौली है ऐमा निदान किया। ९ ५ ८८ को एक घण्टा लगा कर आपरेशन कर न्यिा जा सफल रहा। अब मे अपन घर आ गया ह। और प्रतिदिन स्व स य लाभ कर रहा हूँ। अभी समय लगेगा ीक हान म।

दश की अनेक आय समा ा न तथा सक ा ह आय भ ई बहिनो ने अपनी ओर स शुभकामना स देश भज ह। मै उनका हदय स आभारी हूँ।

कवल शुभाशीर्वाद का इच्छुक
नेत्रपाल शास्त्री
पुरो त आय समाज
हजूरीबाग श्रीनगर कश्मीर

श्री विजय कुमार जी स्वास्थ्य प्राप्ति की ओर

आय साहि य के प्रमुख प्रकाशक श्री विजय कुमार जी को ११ जुलाई को हाट अटैक हो गया था। उ ह त काल मूलच द अस्पताल मे दाखिल कर दिया गया था। अब वे धीरे २ स्वस्थ होत जा रहे हैं। इस ब च म उनके नाम लिखे व्यक्तिगत पत्रो के उत्तर दने मे अपने को असमथ पाते है इसलिए कृप लु पाठक उनके उत्तर न पाने पर उ हे क्षमा प्रार्थी म न आशा है अगले एक सप्ताह मे वे स्वस्थ होकर घर पहुँच जायगे

सभी आय ७ ७ मला देवो शास्त्री धमपत्नी १ ५ वद्यनाथ शास्त्री ने अपना स्थायी निवास बडौदा से फरीदाबाद कर लिया ह उनका स्थायी प ा श्रीमती उर्मिला देवी शास्त्री धमप नी स्व० अ च य वैद्यनाथ शास्त्री मकान न० ६४ सेक्टर १६ वद्यनाथ धाम फर द बाद (हरियाण) है —सपादक

कानपुर म तान युवतियां वैश्यालय से बरामद

क नपु । ना ी सेवा सस्थान व के द्रीय आय सभा प्रधान श्री देवादास आय ने यहा मूलगज व यालय स दो अपहृत युवतिया की बरामद कर उनके सरक्षको को दिया। इनमे एक लडकी १७ वर्षीय कु० साता नपाली है। दूसरी कु० साजदा (१५ वर्षीय) चौबीस परगना (प० बगाल) की है। इन दोनो को धोखा देकर अपहृत कर वश्यालय मे बेच गये थे। जहा इनसे अवध ध धा करा कर हजारो रुपऐ पैदा किये। इन युवतियो ने बताया उनसे मशीन की भाति दिन रात पेशा कराया जाता था।

श्री आय ने बेनाझाबर मुहल्ले की एक १७ वर्षीय अपहृत युवती कु० स या को कनलगज पुलिस की सहायता से शरफुद्दीन के कब्जे से बरामद किया। मगर अपराधी भागने मे सफल हो गया। अपराधी सध्या के भाई को मित्र बना हुआ था।

—वदना कापूर म त्री
नारी सेवा सस्थान कानपुर

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८९ | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २३ अंक २७ | श्रावण शु० ९ सं० २०४५ रविवार १४ अगस्त १९८८ | वार्षिक मूल्य २१) एक प्रति ६० पैसे

सट-पटाहट नहीं सत्य का प्रकाश

४ और ५ अगस्त १९८८ के वीर अर्जुन व प्रताप में श्री वीरेन्द्र ने यह सट-पटाहट क्यों ? शीर्षक से २३ और २४ जुलाई के प्रताप व वीर अर्जुन में प्रकाशित मिथ्या समाचार के विषय मे सफाई दी है। क्योंकि समाचार बार-बार उन्ही के कहने पर सम्पादक द्वारा प्रकाशित किया गया था। उसकी जिम्मेदारी से बचना उनके लिए सम्भव नहीं था। क्योंकि ४ अगस्त के—सट पटाहट वाले वक्तव्य मे भी उन्होंने स्वीकार किया है।

उत्तर प्रदेश सरकार के सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग के प्रमुख अधिकारी श्री रामलाल श्रीवास्तव ने अपने ४ अगस्त के पत्र में प्रताप व वीर अर्जुन के सम्पादक के नाम प्रकाशित समाचार की पोल खोल दी है।

उनका कहना है कि आपके दैनिक २४ जुलाई ८८ के अंक में प्रकाशित समाचार मे गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार से सम्बन्धित जांच में लगे हुए आर्थिक अपराध संगठन उत्तर प्रदेश के मुख्य अधिकारियों का उल्लेख किया गया है। इस समाचार मे कुछ भ्रामक तथ्य प्रकाशित हुए हैं जैसे—आर्थिक अपराध संगठन पुलिस महानिदेशक का जांच के सम्बन्ध मे दिल्ली जाना।

जो सर्वथा तथ्य रहित है। क्योंकि—

१—आर्थिक अपराध संगठन उत्तर प्रदेश म पुलिस महानिदेशक का कोई पद नहीं है।

२—इसी प्रकार कहा गया है कि आर्थिक अपराध अनुसन्धान विभाग उ० प्रदेश के अधिकारी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती से पूछताछ करने के लिए सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में गए और वहां लगभग २ घण्टे तक स्वामी जी से पूछताछ करते रहे।

यह भी सर्वथा तथ्यों से परे है।

क्योंकि —

१—आर्थिक अपराध संगठन उ०प्र० के अधिकारी जांच के सम्बन्ध में दिल्ली गए थे। सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे वे गए ही नहीं।

श्री वीरेन्द्र जी आपने स्वीकार किया है कि पुलिस आपके पास आई थी और पूछताछ करती रही।

मैं आपको याद कराना चाहता हूँ कि सन् १९७५ में जब श्री विजयपालसिंह वर्मा ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय पर कब्जा कर लिया था उस समय आपने एक विशेष पत्र डा० हरिप्रकाश को भेजकर कहा था—

"विश्वविद्यालय व गुरुकुल कांगड़ी हमारे हाथ से निकल गए हैं अगर फार्मेसी भी निकल गई तो हम कहीं के नहीं रहेंगे इसलिए आप जो भी सम्भव हो करें आपको पूरे

आरक्षा महाभियान के अन्तरगत दक्षिण भारत में आर्य समाज का शुद्धि कार्य

महात्मा नारायण स्वामी का उत्साही कार्य

तमिलनाडू में मदुरै आर्य समाज के कर्मठ एवं उत्साही कार्यकर्ता श्री महात्मा नारायण स्वामी जी ने जुलाई १९८८ मास मे ५१ ईसाइयों को शुद्ध करके वैदिक (हिन्दू) धर्म में दीक्षित किया। उन्हें यज्ञोपवीत धारण कराकर उनके हिन्दू नाम रख दिये गये। शुद्धि समारोह के अवसर पर नवदीक्षित व्यक्तियों को वैदिक धर्म के सिद्धांतों से भी अवगत कराया गया जिसके अनुसार मानव मानव में कोई भेद नहीं है।

अधिकार दिया जाता है।"

उन्हीं दिनों गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के तथाकथित कुलपति श्री विजयपालसिंह वर्मा ने ज्वालापुर थाने में क्र० २२६ एफ० आई० आर० नं० ११० दर्ज कराई थी। उसी एफ० आई० आर० में ४ महानुभावों पर फार्मेसी मे गबन करने का कल्पित आरोप लगाया गया था। उनके नाम निम्न प्रकार हैं :

१—डा० हरिप्रकाश २—आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद

३—श्री वीरेन्द्र ४—श्री वेद प्रकाश गोयल

उपरोक्त श्री विजयपालसिंह वर्मा की शिकायत पर ही पुलिस पूछताछ कर रही है। मैं उस समय फार्मेसी के किसी पद पर नहीं था। इसलिए इस मामले मे मेरी चर्चा करना सर्वथा सत्य से परे है।

उत्तर प्रदेश के सूचना एवं जन सम्पर्क अधिकारी ने उस सूचना को तथ्य रहित कहा है जिसमें सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में २ घण्टे तक स्वामी आनन्दबोध से पूछताछ की चर्चा आपने की है। इसलिए आप इस झूठी खबर के छपने और सट-पटाहट क्यों ? लेख लिखने के जिम्मेदार हैं। आप उससे बच नहीं सकते। आपने २८ जुलाई को कानपुर से मुझे तार प्राप्त होने की बात दावे से प्रकाशित कराई थी, मैं यह भी स्पष्ट कर देता हूँ कि मेरे पास कोई तार नहीं आया। आपको यह भी स्पष्ट कर देता हूँ कि श्री विजयपालसिंह वर्मा ने १९७५ में जो एफ० आई० आर० दर्ज कराई थी उसमें २७ आक्षेप लगाये थे जिनमे से २३ आक्षेपों को अपराध संगठन ने असत्य पाया था। शेष ४ आरोपों की जांच के सिलसिले मे ही वे दिल्ली आए थे इसीलिए आपसे पूछताछ की गई थी।

मेरी आपको नेक सलाह है कि इस प्रकार की तोड़फोड़ की राजनीति को छोड़कर आप अपनी योग्यता व क्षमता को गुरुकुल कांगड़ी तथा आर्य समाज के निर्माण में लगाएं। यदि आप ऐसा कर सकें, तो आर्यसमाज व परमात्मा का आशीर्वाद आपके साथ रहेगा।

—आनन्दबोध सरस्वती

प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

आर्यसमाज के ब्रह्मर्षि-राजनीति के राजर्षि अमेठी के
राजा रणञ्जयसिंह जी का देहावसान

आर्य जगत में यह अति दुःख के साथ पढ़ा व सुना जायगा कि धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्र का महान योद्धा आज हमारे मध्य से विदा लेकर ब्रह्म लीन हो गया। वह ८७ वर्ष की आयु के थे ! शरीर से भारी, खद्दर की स्वच्छ धवल वेशभूषा, सिर पर गोल टोपी, जवाहरकट पहने, सरल हंसमुख स्वभाव वाले अमेठी उ० प्र० के राजर्षि तथा धार्मिक जगत में महर्षि दयानन्द के विचारों से प्रभावित होकर आर्य समाज के लिए आपका जीवन समर्पित था।

भारत के पांच सौ पैंसठ राजाओ में अमेठी एक छोटी सी रियासत है स्वामी दयानन्द की सिंह गर्जना ने इस सोते सिंह को जगा दिया। आपके पिताजी दयानन्द और स्वामी दयानन्द से प्रभावित होकर स्वयं और अपने दोनो पुत्रो को भी ऐसी शिक्षा दी कि वह भी सदा के लिए कट्टर दयानन्दी बन गए।

मैं अमेठी वेद प्रचार सप्ताह पर प्रचारार्थ राजासाहब के आदेश पर वहां गया था, मैंने देखा राजा साहब के पूज्य पिताजी प्रवचन सुनने हेतु महल की बुर्जी मे आकर कुर्सी पर बैठकर सुना करते थे। उम्र सम्भवत १ सौ वर्ष के लगभग थी। पिता जब घर और पुत्र रणञ्जयसिंह जी व्याख्यान मे उपस्थित रहते थे। सात दिन तक प्रात. व शाम को भजन प्रवचन होते थे।

मन और मस्तिष्क से मैं किस तरह कहूं कि वह प्रथम महर्षि थे या पहले राजर्षि। जीवन का हर पहलू प्रथम ही दिखाई देता था। आर्यसमाजी होने की कट्टरता, ऋषि की वैदिक भक्ति को देखकर उन्हें आध्यात्मिकता की महर्षि की। परन्तु आश्चर्य के पालने से सांसारिक राजमहल में पले-फूले और ऐश्वर्य को भोगा। विधान सभा से लोकसभा तक राजनीति के राजर्षि माने जाते थे।

जीवन का आदर्श—महलों में रहने वाले सादा आदि सीधी सरल व्यक्तित्व के व्यक्ति ने राजकुमार से राजा तक बनने में निश्छल, निष्कपट स्वभाव से उनमें जरा भी अभिमान नहीं था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति पर सारी जमीन, जायदाद, और मकान सब जनता की सेवा मे सौप दिये। इसका प्रभाव था कि जब राजा साहब मार्गों में जनता के बीच निकलते थे सीधे-सादे ग्रामीण दौड़ो और खड़े होकर हाथ जोड़कर राजा साहब का आशीर्वाद प्राप्त करते थे। राजा जी झुककर उनका स्नेह-पूर्ण आशीर्वाद देते थे। दुःखी जनता के वह उनके दुःखदर्द सुनकर दूर किया करते थे।

शिक्षा क्षेत्र में—जहां आप स्वयं विद्वान वक्ता कवि थे वहीं पर आपने आजादी की प्राप्ति पर अपने क्षेत्र अमेठी में अपने भ्राता रणवीरसिंह (कालिज) महाविद्यालय खोला। राजमहल सहित अब इन्टर कालिज स्थापित कर बहुत बड़ी सम्पत्ति जनता हेतु अर्पित कर दी। अमेठी में वह "मदन-सदन" के नाम से भी जानी जाती है। प्रिय भाई का मदन जो उपनाम था इसी से वह पुकारे जाते थे। मदन जी युवा अवस्था मे स्वर्ग सिधार गये।

मकानो का बन्टन, डाकघर, कन्याविद्यालय अस्पताल आदि देकर जनता को लाभ दिया। लाख-लाख आबाल, वृद्ध उनकी जय-जयकार करते हैं।

राजा साहब की शादी हुई, परन्तु उनके कोई सन्तान न थी, रानी साहिबा का देहावसान ८-१० वर्ष पूर्व ही हो चुका था। सन्तान की चिन्ता तो नहीं थी पर वृद्धावस्था की लाठी बनना और सम्पत्ति का सदुपयोग, इस धारणा ने अपने निकट सम्बन्ध से राजकुमार संजयसिंह को पुत्र रूप में स्वीकार किया। अब वे राजा साहब के पूर्ण उत्तराधिकार प्राप्त राज्यपद पातशाही पर सुशोभित होंगे।

आर्य समाज में—स्वभाव से आर्य होकर उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्षों तक प्रधान पद पर सुशोभित रहे। सभापति समारोह पर वह समय

राजा रणञ्जयसिंह

नहीं था कि सभा भवन पर आकर दर्शन न दें। सबसे मिलकर प्रसन्न होते थे। अन्तिम सभाध्यक्ष बनने पर आप बदायूं पधारे वहां स्वागत कक्ष मे पैर फिसल जाने पर आपकी कमर की हड्डी टूट गई। काफी समय स्वास्थ्य लाभ के उपरान्त ठीक हुए। परन्तु कार्य करने में और भागदौड़ करने में समर्थ न हो सके।

शास्त्र शक्ति और शस्त्र शक्ति के पुरोधा के साथ आप क्रीडांगन के भी खिलाड़ी थे, टेनिस खेलने के शौकीन थे। युवावस्था में व्यायाम तथा कसरतें में भी रुचि रखते थे। राजा साहब का कहना था कि मेरा अतीत विलक्षण रहा है—उसका विवेचन करते हुए बताया कि एक समय था कि सारी स्टेट अवैदिक रूढ़ियो मे जकड़ी हुई थी।

१ मेरे राज घराने अमेठी में ही दशहरे पर बकरों का काटा जाना पुण्य माना जाता था यह आर्य समाज की ही प्रेरणा थी कि आज से ५० वर्ष पूर्व मेरे अनुज राजकुमार रणवीरसिंह ने "अज रक्षिणी सभा" की स्थापना की थी और पशुबलि को बन्द कराया था।

२ उस समय प्रान्त मे काम काज की भाषा "उर्दू" का बोलबाला था ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश से प्रेरणा लेकर हमने "उर्दू उन्मूलन सभा" का निर्माण किया। फिर हिन्दी का प्रचार-प्रसार प्रारम्भ किया।

३ आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आजीवन सदस्य थे।

कवि हृदय—लेख-भाषण माला के साथ २ आप कवि हृदय भी थे समय २ पर गीति-काव्य रचकर जनता का ज्ञानवर्धन भी किया करते थे। आज उनके अभाव मे (वियोग जन्य स्थिति मे) इस स्थान की पूर्ति कर पाना असम्भव ही है। समय की गति बड़ी तेज है आते जाते देर नहीं लगती।

प्रिय भाई संजयसिंह जी राजा साहब के सामने ही अपने पैरों पर खड़े हो गये और राजा जी से बहुत कुछ सीखा भी। जिसका कि वह आज लाभ उठा रहे हैं।

प्रभु उन्हें शक्ति दें कि वह और उन्नति करें साथ ही इस अभाव की पूर्ति करने में और भी सक्षम हो।

सारा आर्य जगत आपके इस वियोग जन्य घड़ी में आपके दुःख का भागीदार है। साथ ही राजा साहब को सद्गति प्राप्त हो।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

भगवानदेव शर्मा के तीन पत्र : आर्यजन गम्भीरता पूर्वक विचारें

एक तथाकथित आचार्य भगवानदेव नामक व्यक्ति कुछ समय से "योग मन्दिर" मासिक पत्रिका के द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा उसके अधिकारी प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती के विपरीत अनर्गल प्रलाप करता आ रहा, जिसे सार्वदेशिक सभा ने बड़ी गम्भीरता से लिया और अविलम्ब उचित कार्यवाही की गई। सभा ने इस व्यक्ति को आर्यसमाज से निष्कासित कर दिया है।

इस व्यक्ति ने १९७९ मे भी इसी प्रकार का प्रचार कर आर्य समाज की छवि को धूमिल किया था। सभा द्वारा सख्त कार्यवाही करने पर इस व्यक्ति ने १९७९ मे क्षमा याचना की थी और क्षमा दान दिया गया था। इस वर्ष १९८८ मे दोबारा फिर इसी प्रकार का दुष्प्रचार किया और आर्यसमाज की छवि को धूमिल करने का प्रयत्न किया। सभा ने १८ जून ८८ की अन्तरग मे आर्य समाज से ५ वर्ष के लिये फिर निष्कासित कर दिया।

उस समय जो कार्यवाही हुई उस पर भगवानदेव शर्मा ने जो खेद प्रकट किया था वह पत्र सभा प्रकाशित कर रही है।

आर्य जन विचारे कि वस्तु स्थिति क्या है। ऐसे व्यक्ति का चरित्र ही क्या है?

(तीसरा पत्र पृष्ठ ११ पर देखें)

श्री प्रधान जी
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली
सादर नमस्ते।

निवेदन है कि सभा प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले के संबंध में मेरे द्वारा सभा के विगत निर्वाचन से पूर्व जो प्रचार किया गया था तथा कुछ पत्रों में लेख दिये गए थे। यदि मेरे उस कार्य से आर्य समाज के संगठन को क्षति पहुंची है तो उसका मुझे हार्दिक खेद है।

मैं विश्वास दिलाता हूँ कि भविष्य में ऐसी गलती नहीं होगी।

दि० 28-7-1979

भगवानदेव
भगवानदेव शर्मा

सेवा मे,

श्री स्वामीआनन्दबोध जी सरस्वती
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110002

विषय: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली की अंतरंग सभा दिनांक 24-1-88 के प्रस्ताव सं० 8 पर पुनर्विचार एवं वापस लेने हेतु

सादर नमस्ते।

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा ने जो प्रस्ताव दिनांक 24-1-88 को सं० 8 के अन्तर्गत मेरे संबंध मे पारित किया था, उससे उत्तेजित होकर मैंने सार्वदेशिक सभा और उसके अधिकारियों के बारे मे कुछ लेख लिखे थे। बाद मे मैंने उनकी छानबीन की तो वो बिल्कुल गलत साबित हुए। यह सब भ्रान्ति से हो गया। इससे आर्य समाज के कार्य को काफी धक्का लगा। आपको और आर्य समाज को इन लेखों से बड़ा कष्ट हुआ है। मुझे इसके लिये हार्दिक खेद है। मै सार्वदेशिक सभा को मानता हु और आगे भी उसके अनुशासन मे रहकर कार्य करता रहूंगा। इसलिए प्रार्थना है कि प्रस्ताव सं० 8 दिनांक 24-1-88 को वापस लेने की कृपा करें।

भवदीय
भगवानदेव 11/6/88
(भगवानदेव शर्मा) भू०पू० संसद सदस्य
ब्लाक 19- 1008, लोधी कालोनी
नई दिल्ली-110003

दिनांक: 11-6-88

१८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द ने भाग लिया था

उपरोक्त सदभ (विषय के बारे मे बहुत से आर्य विद्वान लेखको का मत है कि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने सन १८५७ ई० के स्वतन्त्रता सग्राम मे भाग लिया और कुछ एक का मत है कि नहीं लिया। यदि वे उप रोक्त सग्राम मे भाग लेते तो वे इतने दिनो तक अपने आप को छुपा कर नही रख सकते जैसा कि उनसे कलकत्ता निवास के समय वायसराय लार्ड नोर्थ ब्रुक महोदय के यह कहने पर कि स्वामी जी आप और प्रार्थनाओ के साथ ईश्वर से यह प्रार्थना भी किया करें कि भारत में हमारा राज्य निष्कंटक बना रहे तो उन्होंने वायसराय से कहा था कि मैं तो परमपिता परमात्मा से नित्य प्रति यह प्रार्थना करता हूं कि आपका राज्य भारत से शीघ्रातिशीघ्र समाप्त हो। यदि स्वामी जी ने वायसराय को उस समय निर्भीकता के साथ उपरोक्त शब्द कहे तो वे अपने आप को इतने दिनो तक छिपा कर क्यो रखते कि उस समय किसी भी व्यक्ति की स्वतन्त्रता का नाम लेने की भी हिम्मत नहीं पडती थी। पर यह नहीं मालूम कि उपरोक्त महानुभावों मे से किस का मत सही है। लेकिन मुझे चौ० हरीशचन्द्र वकील गगानगर की जीवनी एक मे से एक लेख मिला है जो निम्न प्रकार है।

लेख

एक बार महा पडित राहुल साकृतयायन ने लिखा था कि महाभारत के पश्चात भारत वर्ष में महात्मा बुद्ध और स्वामी दयानन्द दो महापुरुष पैदा हुए हैं। ऋषि दयानन्द का जन्म १८२४ ई० मे हुआ था। गदर के समय पूर्ण युवा थे। गदर अथवा १८५७ को स्वतन्त्रता की लडाई के मुख्य सचालक धोंडूपन्त नाना जी से उन्होंने बिठूर मे मुलाकात भी की थी। नानाजी के महल के पास उनके सुरम्य उद्यान मे एक गुरुकुल चलता था। उस गुरुकुल के मुख्य विद्यार्थी स्वय नानासाहब छबीली बाई जो पीछे झांसी की महारानी बनी तात्या टोपे आदि थे। इस गुरुकुल के सचालक थे द्वितीय बाजीराव पेशवा, नाना साहब के पिता।

पेशवा बाजीराव से अग्रेजो ने छलपूर्वक पूना का मराठी राज्य छीन लिया था और आठ लाख सालाना की पेन्शन पर महाराष्ट्र से दूर कानपुर के पास बिठूर मे उन्हे रख दिया था। उनकी साध अपने खोये हुए राज्य को पुनः वापस लेने की थी। वे अग्रेजों से बदला लेना चाहते थे। वे यह भी सोचते थे कि यदि उनके जीवन काल में उनका इरादा पूरा न हुआ तो भी अग्रेजो को भारत से निकालने की उत्कट भावना का अन्त न हो इस-लिए अपने दत्तक पुत्र और आश्रित मराठा परिवारो के होनहार बच्चो के लिए वे एक छोटा सा गुरुकुल चलाते थे। जिसमे महाभारत, गीता दुर्गा महात्म्य आदि की धार्मिक एव वीरता पूर्ण कथाओं का श्रवण और पठन होता था तथा मुग्दर गदा का आदि से व्यायाम कराया जाता था। इसके अलावा शस्त्र सचालन और घुडसवारी का प्रशिक्षण भी दिया जाता था। गुजराती साधु ऋषि दयानन्द को मराठा ब्राह्मण का यह प्रयास अच्छा लगा और उसने भी हृदय मे दृढ प्रतिज्ञा भारत को विदेशी सत्ता से मुक्त कराने की लेली। ऋषि दयानन्द ने अमृत साहब के सचालित किए हुए सन १८५७ के विद्रोह को विफल होते हुए भी देखा था। उन्होंने यह भी देखा था कि बादशाह बहादुर शाह, मुल्ला अहमदुल्ला, नाना साहब, राणा भाईर सिंह और कुवरसिंह के विद्रोह के दिनों में हिन्दू मुस्लिम एकता बनाए रखने के प्रयत्नों अग्रेजो द्वारा बहकाए हुए दिल्ली के मुल्लाओ तथा मुस्लिम अनुयायो ने किस भांति विफल कर दिए थे।

ऋषि दयानन्द तथ्यों से आख मिचोनी करने वाले मानव नहीं थे, उन्होंने जान लिया कि असगठित हिन्दू समाज सदा पद दलित रहेगा। भारत मे अनेको सम्प्रदाय हैं जिनकी अलग अलग पूजा विधियां हैं अलग-अलग देवी देवता हैं अलग अलग उनकी धर्म पुस्तकें हैं। उन्होंने एक रूप रेखा अपने दिमाग मे तैयार की। वह यह कि सारे भारतवासियो का एक धर्म हो, एक पुस्तक हो, एक समाज हो और सबका एक ही धर्म वेद प्रति पादित धर्म (वैदिक धर्म) ही हो सकता है। वेद ही धर्म पुस्तक हो सकती है। ईश्वर ही एक आराध्य देव हो सकता है। सबको एक ही जाति आर्य जाति ही कहला सकती है। सब एक ही समाज आर्य समाज मे गठित हो सकते हैं। (३) इसी हेतु उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की और आर्य समाज सारे भारत मे फैलती गयी। इसका जितना ही विरोध हुआ उतना ही प्रचार और प्रसार भी हुआ। स्वामी दयानन्द और उनके अनुयायियो के तर्कों के सामने, मौलवी, मुल्ला पडित पाद और पादरी सभी घबरा उठे। कुछ कम बुद्धि के लोग कहने लगे आर्यसमाजी जादूगर होते हैं इनसे बचना चाहिए। उपरोक्त लेख से स्पष्ट विदित होता है कि श्री स्वामी जी महाराज ने सन १८५७ के स्वतन्त्रता सग्राम मे अवश्य भाग लिया है। आगे आर्य विद्वत मंडल से भी निवेदन है कि आप भी मेरे इस परिश्रम पर विचार कर लिखें।

—यादराम आर्य, पिलानी, जि० झुन्झनु (राज०)

स्वतन्त्रता सेनानियों को विधवाओं की प्रधानमन्त्री से प्रार्थना

नई दिल्ली,

भारत सरकार ने स्वतन्त्रता की ४०वीं वर्ष गांठ के उपलक्ष्य में स्वतन्त्रता सेनानियो को एक वर्ष के लिये पुन फस्ट क्लास अथवा वातानु-कूलित द्वितीय श्रेणी मे नि शुल्क भ्रमण कर देश को राष्ट्रीयता का उद्बोधन करने का सुअवसर प्रदान किया है।

खेद है कि स्वतन्त्रता सेनानियो की विधवाओ को इस सुविधा से वचित रखा गया है। प्रधानमन्त्री नारी जाति के समानाधिकार के पुष्ठ पोषक हैं अत मेरा उनसे हार्दिक अनुरोध है कि वह तुरन्त स्वतन्त्रता सेनानियो की विधवाओं को यह सुविधा दिलाकर अपने उच्चस्तरीय कर्तव्य का पालन कर। इससे अनेक अनाश्रित महिलाए उन्हें अपना आशीर्वाद देगी।

यशोदा कुमारी
धर्मपत्नी स्व० श्री प० प्रकाशवीर शास्त्री
भू०पू० एम०पी० २३ साकेत नई दिल्ली

भारत व विश्व के सम्पूर्ण हिन्दू परिस्थिति जन्य चुनौती को स्वीकार करें वरना....

—डा० एस. एस. निवालकर वशिष्ठ, एम. डी.

भारत के वर्तमान सामाजिक, धार्मिक व राजनीति के त्रुटिजन्य नीति अपनाने से उत्पन्न पजाब समस्या, साम्प्रदायिक समस्याए, भ्रष्टाचार, राज्य कर्मचारियों मे नैतिकता का अभाव, बलात्कार, वर्तमान छात्र छात्राओ में नैतिकता व चरित्र का अभाव, मुद्रास्फिति के कारण बढती महगाई, राजनेताओं में पदलोलुपता, स्वार्थान्धता, राष्ट्र व स्वदेश के प्रति सिर्फ दिखावा व आचरण राष्ट्रहित, देशहित व बहुसख्यक जनता हित के बिल्कुल विरुद्ध आदि अगणित समस्याओं द्वारा भयानक परिस्थिति का विचार करने पर ऐसा भास होता है कि कहीं १९२४ ईसवी जैसी परिस्थिति के कारण जगतोद्धारक के जन्मदाता श्री स्वामी विरजानन्द जी को चिंता थी कि इस विषम परिस्थिति को कौन उबारेगा ? यदि वेदो का ज्ञान लोप हो जायेगा तो ससार का क्या होगा। इसी चिन्ता में अकेला सन्यासी मथुरा के एक कोने में एक आश्रम की फिक्र किए एक छोटी सी संस्कृत पाठशाला चला रहा था।

तात्पर्य यह कि इस समय की समस्याए व परिस्थिति उपरोक्त चिंता के समतुल्य हिन्दू धर्म के सजग प्रहरी नेताओं के दिमाग मे यह शका उत्पन्न कर रही है कि आज के भारत की समस्याए व परिस्थितिया हिन्दू धर्म को विनाश के कगार पर तो नहीं ले जायेंगी ?

वैदिक धर्म का नाश तो असभव है, लेकिन इसका मतलब तो नही कि हिन्दू कटता जाए, मरता जाए, पाकिस्तान व बगलादेश भारत का ही भाग मुस्लिमस्तान बन गया, उसी प्रकार बचा हुआ भारत भी मुस्लिमग्रस्त होकर इस्लामी शासक बनने की परिस्थितिया उत्पन्न होने पर भी सर्व विश्व के हिन्दूजन हाथ पर हाथ धरे बैठकर अन्धविश्वासी सोमनाथ के मन्दिर को मौ० गजनवी द्वारा लुटते देखते रहे, उसी प्रकार चुप्पी साधे बैठे रहना जैसे सोमनाथ के मन्दिर वालों को महगा पडा, उसी प्रकार अब भी यदि भारत की हिन्दू जनता व विश्व के हिन्दू जन चुप्पी साधे बैठे रहेगे तो भविष्य मे बहुत बडा सकट भारत व सर्व हिन्दू जनता पर आने की सम्भावना है इसमे कोई शक नहीं इसे कभी न भूलें।

इस वर्तमान परिस्थिति को पूर्ण रूपेण समग्र हिन्दू नेतागण, सर्वसन्यासी महन्त, हिन्दू उद्योगपति व देश के सजग प्रहरी नेतागण व विश्व के सर्वहिन्दू जनता विचारकर सगठित होने की समय की चुनौती को स्वीकार करना पडेगा।

यदि समय की विषमताओं को ना समझकर चुनौती नहीं स्वीकार करते तो सर्व हिन्दू कत्लेआम, बलात्कार आगजनी, अत्याचार, मेहनत की गाढी कमाई की लूट आदि सन १९४७ मे पाकिस्तान द्वारा हिन्दुओ पर सरेआम जो बीती उसकी पुनरावृत्ति होगी उसी पतन के लिए तैयार हो जाये।

क्योकि इतिहास साक्षी है लम्बे ७०० वर्ष के मुसलमान शासन मे हर सम्भव उपायो द्वारा हिन्दू धर्म को नष्ट करने का प्रयत्न रहा। हिन्दू कटता रहा, हिन्दू समाज घटता रहा, इसी कारण भारत के कई भागों मे हिन्दू अल्पसख्यक होने के कारण भारत का ही अंग पाकिस्तान व बगलादेश बनकर आज भारत के कट्टर शत्रु बने बैठे हैं। पाकिस्तान वर्षों से भारत पर भी दुष्ट नजरें से देख रहा है।

कश्मीर भी कभी हिन्दू बाहुल्य देश था जो अब हिन्दुओं द्वारा त्रुटिपूर्ण नीति अपनाने के कारण अब वहा भी हिन्दू अल्पसख्यक हो गए हैं।

सदियों से परतन्त्र रहा भारत बडे मुश्किल से अनगिनत बलिदानो के बाद विदेशी से मुक्त हुआ फिर भी हिन्दुओ पर अधिक प्रहार होने लगे, भारत के नेताओ द्वारा अल्पसख्यकों के तुष्टीकरण नीति अपनाने से हिन्दू अल्पसख्यक होते जा रहे हैं, हिन्दुओ के लिए सतती निग्रह और मुसलमानों और ईसाइयों को बच्चे पैदा करने की खुली छूट मिलने जनगणना के अनुसार आकडे से यह तो स्पष्ट है हिन्दुओ की सख्या घटती रही और मुसलमानों व ईसाइयों की सख्या बढती रही तो बिना युद्ध के ही मतदानाधिकार के कारण भारत परतन्त्र हो जाएगा कुछ वोटो की अधिकता ही परतन्त्रता के लिए पर्याप्त है।

कश्मीर के लिए अलग विधान धारा ३७० और कश्मीर से बहुसख्या में हिन्दुओ का निष्कासन होकर भारत मे जान बचाकर आना यह किस बात का द्योतक है, निश्चय ही भविष्य के सकट की ओर इशारा है।

जम्मू, लद्दाख, कश्मीर, पाकिस्तान बगलादेश से जान बचाकर हिन्दुओ का आना व मुसलमानो का घोसपैठ व इस प्रकार भारत मे लाखों की सख्या में आकर बसना; इस प्रकार मुसलमानो की सख्या मे भारत में लाखो की सख्या मे वृद्धि होना तथा मेरठ कानपुर, मुरादाबाद, लखनऊ अलीगढ, मलियाना, हैदराबाद आदि स्थानों मे हिन्दुओ पर आक्रमण, दगेफसाद क्या सूचित कर रहे हैं, इस तरह हिन्दू कब तक मरते रहेगे ? हिन्दुओ के सतति निग्रह और मुसलमानो को कानूनन चार पत्नियो की छूट के कारण हिन्दू अपने ही देश में अल्पसख्यक हो जायेंगे और भारत का शासन प्रजातन्त्र प्रणाली द्वारा अपने आप बिना युद्ध के ही मुस्लिम राष्ट्र होकर रह जायेगा।

इस समय परिस्थिति की माग है कि सारे भारत का हिन्दू समाज व व विश्व का प्रत्येक हिन्दू सगठित हो एकत्रित होकर विचार कर समय की चुनौती को स्वीकार करे व सक्रियता से राजनीति मे आर्य समाज भाग लेकर भारत को प्रबल शक्तिशाली देश के रूप में दुनिया के सामने खडा करें इस कार्य के लिए आर्य समाज को आगे आना होगा, क्योंकि आर्य समाज ही इस कार्य को कर सकता है, दूसरे किसी हिन्दू संस्था के बस का रोग नहीं।

मेरा तात्पर्य यह नहीं कि आर्य समाज के नाम से राजनीति में भाग लें, उद्देश्य यह है कि जैसे राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ के द्वारा जैसे अलग जनसघ नामक राजनीतिक संस्था की स्थापना कर राजनीति में प्रवेश किया उसी प्रकार सार्वदेशिक सभा द्वारा आर्य समाज की एक अलग राजनीतिक पार्टी स्थापित कर उसका योग्य आकर्षक नाम रखकर उसके द्वारा इनडाइरेक्ट राजनीति मे अवश्य प्रवेश करे व उसका सचालन सार्वदेशिक सभा के धर्मार्य सभा व रक्षार्य सभा द्वारा सचालित करना होगा, तभी तो कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का आर्यों का वेद सकल्प पूरा होगा।

इसी उद्देश्य से तो जगतोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने क्रांतिकारी पुस्तक सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास मे पृथ्वी के उत्पन्न होने से लेकर कृष्णकाल द्वापर युग तक आर्यों के चक्रवर्ती राज्य के इतिहास के साक्षी देते हुए लिखने का क्या कारण था ? क्योकि भारत की जनता व आर्यजन अपनी प्रमाद को त्यागकर पुनरपि विश्व मे आर्यों का चक्रवर्ती राज्य स्थापित कर वेदो के कृण्वन्तो विश्वमार्यम् सकल्प को पूरा करे।

समय रहते आर्य समाज के सभी आर्य सन्यासीगण व देश के सजग प्रहरी आर्य नेतागण विचार मंथन करें समय की चुनौती स्वीकार कर उपरोक्त विचार कर सगठित होकर निर्णय लेकर अमर सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास को लिखने के महर्षि के उद्देश्य को साकार रूप प्रदान करें अन्यथा भारत के पदलोलुप नेताओं द्वारा अल्प सख्यको की तुष्टीकरण नीति वोटो को अपनाने हेतु कुर्सी के लालच मे हिन्दू बहुसख्यको की उपेक्षा कर रहे हैं जिसके कारण हिन्दू अल्पसख्यक होकर ऐसे विषम परिस्थितियो में पहुंचेंगे जहा से वापिस लौटना असम्भव होगा।

इस कार्य मे सार्वदेशिक सभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक सघ, विश्व हिन्दू परिषद, हिन्दू मच, हिन्दू महासभा आदि संस्थाओं द्वारा प्रयत्न कर कार्यान्वित करे तो अधिक उपयुक्त होगा वरना हिन्दुओं की सर्वनाश का भविष्य निकट समझो।

सब धर्मों का एक उपास्यदेव ओ३म् ही है

श्री भंवरलाल शर्मा आर्य जोधपुर

सर्वभौम वैदिक धर्म की मान्यता है कि उस जगत नियन्ता प्रभु का नाम ओ३म् ही है। और वेदो में भी ओ३म् स्मरण की आज्ञा दी हुई है। और ससार के सभी धर्माचार्य भी इससे सहमत हैं। जैसे इस्लाम मे ओ३म् को एमिन के नाम से याद करते हैं क्योकि अरबी मे भी उसी नाम को ऐसा ही कहा जाता है लेकिन किसी न किसी रूप मे ओ३म् को ही मानते हैं और ईसाई भी इसी प्रकार उनको किसी नाम से याद करते हैं। परवरदिगार से याद करते हैं लेकिन आखरी नाम ओ३म् को ही याद करते हैं। आज विश्व मे विशेष ३ धर्म ही बडे २ माने जाते हैं सो इस नाम से। सो इस नाम से सब एक मत है। अब देखि ये प्रभु को जो दूसरे नाम से पुकारते हैं वो सभी नाम गुण वाचक हैं जैसे हमारा नाम विष्णु है तो हमारे परिवार वाले हमको कोई भाई कहेगा कोई पिताजी कहेगा कोई काकाजी कहेगा कोई नानाजी कहेगा कोई जैसा सम्बन्ध होगा वैसा ही कहेगा। लेकिन वास्तविक नाम तो विष्णु ही है। इसीलिये दूसरे सभी नाम गौण हैं। सही नाम ओ३म् ही है। देखिये इसका एक चमत्कार भी है। जैसे अपने भोजन किया तो डकार आई तो आपके मुह से ओ३म् का ही नाम निकलेगा। दूसरा अल्ला खुदा ईसा नहीं निकलेगा क्योकि वो अवास्तविक नाम है। जो पार्टी व सप्रदाय के डर से असली नाम नही लेना चाहते तो भी अपने आप नाम निकल जायेगा। ईश्वर के नाम मे यही चमत्कार है। नास्तिक के मुख से भी ओ३म् शब्द निकलेगा। कई ऐसे घोर नास्तिक हैं जो प्रभु का नाम लेना पसन्द ही नहीं करते नाम लेना ही नही चाहते जैसे हमारे राजस्थान की कई स्त्रिया पति का नाम लेने मे सकोच करती हैं पति का नाम लेना नही चाहती लेकिन मन मे तो पति का नाम जानती ही हैं कि मेरे पतिदेव का अमुक नाम है इसी तरह नास्तिक भी मन मे जानते तो है परन्तु मुख से कहते नहीं। लेकिन वास्तविक तो जानते ही हैं। और समय समय पर पौराणिको ने अपने मन माने नाम लोगो को बहकाने के लिये अपनी मान्यता को बढाने के लिये कोई राम नाम कोई शिव शिव कोई पार्वतीदेवी कोई भैरव भोपा रामदेव बाबा सतीमाता राधाकृष्ण सन्तोषी मा का जप करने का उपदेश दे रखा है इससे वास्तविकता से अलग होकर अनेक कष्ट उठाते हैं गुरू तो अन्धा है कि चेलो को भी अन्धा उपदेश देकर खड्डे मे गिरने की शिक्षा देते हैं। इससे आप तो बरबाद होते ही हैं और दूसरो को भी करते हैं इससे लाभ के बजाय हानि ही है।

शास्त्र मे कहा कि —

अपुज्या यत्र पुज्यन्ते पुज्य पूजा व्यवित क्रम।
तत्र त्रीणी प्रवर्तते दुर्भिक्षं मरणं भयंम्॥

जिस देश जाति मे न पूजने वाले की पूजा होती है और विद्वानो की पूजा नही होती जहा मूर्तिपूजा होती है वहा दुर्भिक्ष पडकर महामारी पडकर मरना पडता है। इसलिये ईश्वर का सही नाम ओ३म् है इन पोपो की बाते न मानकर मनुष्य जन्म सफल बनाना चाहिये। अपना जन्म सफल बनाने के लिये ओ३म् का ही ध्यान करना उचित है। यही वेदो की आज्ञा है इस बात पर ससार के सभी महापुरुषो का एक ही मत है कि प्रभु एक है और उनका नाम ओ३म् है उसी का स्मरण करना चाहिये।

अब परमेश्वर की स्तुति एव प्रार्थना की विशेष जानकारी जानने के लिये (महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती) कृत सत्यार्थ प्रकाश का सातवा समुल्लास और (आर्याभिविनय) ग्रन्थ देखना चाहिए स्तुति तथा प्रार्थना करते २ जब उपासक का मन ईश्वर के प्रेम मे सराबोर हो जाये और उसे तन्मयता की स्थिति पैदा हो जाये वह ध्यान मे इतना मग्न हो जाये कि उसे अपने और परमात्मा के अन्दर एकात्मता अनुभव होने लगे तो उसे उपासना (उप = निकटतम-आसन = बैठना) परमात्मा के निकट की अनुभूति करना कहते हैं। जितनी भी देर उपासक भगवान के ध्यान मे मग्न रह सकें रहने का यत्न व अभ्यास करे। उपासना से अन्दर परमात्मा के गुण शान्ति दया स्वच्छता, पवित्रता, कमण्यता, बल, उत्साह, ज्ञान, तथा बुद्धि का सचार होता है। उसका मनोबल बढता है। उसके जीवन मे सौमन्यता आती है। उस दिशा मे उपासक भगवान से जो भी उचित याचना या प्रार्थना करता है इसमे उसे सफलता मिलती है उसके अन्दर अभिमान का भाव नष्ट हो जाता है। भगवान सर्वव्यापक होने से मानव के हृदय मे भी वर्तमान रहते हैं। मनुष्य अज्ञानतावश परमेश्वर को अपने से दूर समझ कर कोई आकाश मे कोई पाताल मे कोई विष्णुलोक कोई शिवलोक या कोई चौथे आसमान कोई सातवे आसमान पर मानकर बैठा है। यदि परमात्मा दूर होता तो भक्त का उसका नित्य मिलना प्रार्थना की आवाज घण्टा घडियाल पूजा की आवाज तक पहुँचना सम्भावना होगी। मस्जिदो गिरजाघरो अर्जा देना मूर्तिपूजा सब बेकार होगी। पूजा आरती वगैरा भी उस तक नही पहुँचेगी अगर परमात्मा सर्वव्यापक माना जायेगा, जैसा कि वो वास्तव मे है भी तो उपासक की अन्तरात्मा की आवाज परमात्मा जानेगा और उपासक अनेक अपने नेत्र परमात्मा को मानने के अज्ञान को त्याग कर तन्मन होकर प्रभू से व्यावा-वस्थित होकर मिलेगा, निकटता प्राप्त करेगा तो अपना कल्याण भी कर सकेगा। आत्मा और परमात्मा दोनो मे व्यापक व्याप्य सम्बन्ध है दोनो मे दोनो की दूरी नही है। दूरी है सिर्फ अज्ञान की। अगर भक्त ये अनुभव करेगा कि वह हमारे भीतर है, तो व्यापक है तो उसे मठ मन्दिर, काशी काबा अनेक तीर्थों मे भटकना नही पडेगा, जब भी चाहे जहा भी चाहे ईश्वर का ध्यान किया जा सकेगा भक्त के अन्तकरण की बात भगवान जानेगा और अन्तकरण के माध्यम से भक्त परमात्मा का सन्देश सुनेगा। अगर अन्तकरण मलीन है तो उनके सन्देश को नहीं सुनेगा इसलिये परमात्मा की भक्ति के पहले अन्तकरण शुद्ध कर लेना आवश्यक है लोग कहते हैं कि प्रार्थना से कोई लाभ नही होता वास्तव मे प्रकार का प्रभाव गलत होता है तो फायदा हो नही सकता तो फिर उपासना को दोष देना व्यर्थ है। पहले पहले अपना प्रकार ठीक कर लेना चाहिये इसी प्रकार से शुद्ध मन से ओ३म् का जाप किया हुआ कभी निष्फल नही जाता उपरोक्त वैदिक सत्य सनातन धर्म इसकी पुष्टी करता है ये तो एक वैदिक धर्म सभी पुष्प की सुगन्ध है जिससे मधुर २ सुगन्ध से पाप और दुख की दुर्गन्ध मिट जाती है अतः सभी धर्मावलम्बिया को वैदिक विचारधारा को अपना कर अपना जीवन सफल बनाना चाहिये।

संस्कृत का पुनरुद्धार : महर्षि दयानन्द का महान संकल्प

–डा० प्रशांत वेदालंकार–

संस्कृत के विरोध में सबसे बड़ा तर्क यह दिया जाता है कि यह एक अप्रचलित भाषा है और आज इसका कुछ भी महत्व नहीं है। इसी कारण ही भाषा सूत्र और नई शिक्षा नीति से संस्कृत के महत्व को न समझने के हैं। दयानन्द का मत था कि संस्कृत का महत्व अनेक दृष्टियों से है, विशेष रूप से इसमें विद्यमान आध्यात्मिक विद्या से सुख लाभ लेने के लिए इसका अध्ययन आवश्यक है। स्वामी विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत दयानन्द सर्वप्रथम आगरा पहुँचे। वहां सुन्दर लाल उनके शिष्य बने। एक दिन आदित्यवार के दिन सुन्दरलाल जी ने स्वामी से निवेदन किया कि सस्कृत भाषा तो मृत मानी जाती है, कही व्यवहार में नही आती तो आपने इस पर इतना परिश्रम क्यों किया? स्वामी जी ने उत्तर दिया—इससे अपना परलोक सुधारेंगे। स्पष्टतः दयानन्द का संकेत संस्कृत में विद्यमान अध्यात्म-विद्या की ओर था।

किन्तु दयानन्द संस्कृत का महत्व केवल उसमें विद्यमान अध्यात्म विद्या के ही कारण नहीं मानते थे। उनके मत में अनेक भौतिक विज्ञानों से भी संस्कृत का महत्व किसी भाषा से कम नहीं है। विशेष रूप से प्राचीन भारत के ज्ञान के किसी भी क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए संस्कृत का अध्ययन आवश्यक है। इसके लिए दयानन्द ने दाराशिकोह का उदाहरण दिया है। दाराशिकोह का यह निश्चय था कि जैसी पूरी विद्या संस्कृत में है वैसी किसी भाषा में नही है। वे उपनिषदो के भाषान्तर मे लिखते है कि मैंने अरबी आदि बहुत सी भाषा पढ़ी परन्तु मेरे मन का सन्देह छूटकर आनन्द न हुआ, जब संस्कृत पढी और सुनी तब निःसन्देह मुझको बड़ा आनन्द हुआ है। (सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास, पृ० २७६)

इसके अतिरिक्त भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से संस्कृत का महत्व संसार की प्रत्येक भाषा के लिए है। अलीगढ़ में मुसलमान से बातचीत के समय दयानन्द ने कहा कि संस्कृत भाषा एक स्वाभाविक और ईश्वरप्रदत्त भाषा है। इसके स्वरों को लीजिये, इनकी ध्वनि सब देशों में पाई जाती है। सब प्रचलित भाषाओं में इसी की अक्षरमाला नैसर्गिक है। छोटा-सा बच्चा भी अ, इ, उ का उच्चारण बिना सिखाये करने लग जाता है। क् ख्, आदि व्यंजनों का उच्चारण भी ऐसा ही सुगम और स्वाभाविक है। जो भाषा स्वाभाविक अक्षरों की ध्वनि से बनी है, वही भाषा स्वाभाविक और आदिम होनी चाहिए। ईश्वरीय आदेश उसी भाषा मे होने उचित है।

६ सितम्बर १८७२ को आगरा ही के तत्कालीन मजिस्ट्रेट जिला मिस्टर एच० डब्ल्यू० अलेक्जेण्डर से स्वामी जी का मिलना हुआ। स्वामी जी ने उनसे संस्कृत भाषा में सम्भाषण किया, जिसे रजनी बाबू अनुवाद करके समझाते थे। मजिस्ट्रेट स्वामी जी के कथन को बहुत ध्यान से सुनता था। उसने स्वामी-जी से संस्कृत बोलने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि भारत वर्ष मे द्राविड़ प्रभृति अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। तब मैं किस भाषा में बोलूं? इसके अतिरिक्त संस्कृत सारे हिन्दुओ की भाषा है और समस्त भाषाओं का मूल है। अतः संस्कृत बोलना ही अच्छा है।

संस्कृत का प्रचार

दयानन्द ने संस्कृत भाषा के उक्त महत्व के कारण उसका प्रचार व प्रसार करना अपना एक कर्त्तव्य निश्चित किया था। दयानन्द संस्कृत की कितनी आवश्यकता अनुभव करते थे, यह उनके एक विज्ञापन से पता चलता है। दयानन्द ने लिखा—आर्यावर्त देश का राजा अगरेज बहादुर से यह मेरा विज्ञापन है कि संस्कृत विद्या की ऋषि-मुनियों की रीति से प्रवृत्ति करायें। इससे राजा और प्रजा को अनन्त सुख-लाभ होगा। और जितने आर्यावर्तवासी सज्जन लोग हैं, उनसे भी मेरा यही कहना है कि इससे इस सनातन संस्कृत विद्या का उद्धार अवश्य करें। इससे अत्यन्त आनन्द होगा। और जो यह संस्कृत विद्या लुप्त हो जायेगी तो सब मनुष्यों की बहुत हानि होगी। इसमें कुछ सन्देह नहीं।

दयानन्द जहाँ भी जाते वहीं संस्कृत का प्रचार करते और स्वय लोगों को संस्कृत सिखाते। आगरा में दयानन्द ने संस्कृत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यदि कोई अन्य पुरुष भी स्वकल्याण करना चाहे तो सहायता देने के लिए उद्यत हूँ। उन्हीं की प्रेरणा से पं० सुन्दरलाल जी और बालमुकन्द जी ने ३वी अष्टाध्यायी का अध्ययन आरम्भ किया था। लाहौर में उन्होंने सस्कृत के महत्व पर प्रकाश डाला तो प्रायः सभी सभासद संस्कृत पढ़ने लग गये थे। स्वामी जी के पास भी बहुत से लोग अध्ययन करने थे। उनके सारगर्भित उपदेशो को सुनकर अनेक लोगों के हृदय में संस्कृत भाषा सीखने के लिए उत्साह उत्पन्न हुआ। दयानन्द को जब भी अवसर मिला उन्होने स्वयं अनेक लोगों को संस्कृत पढ़ानी आरम्भ कर दी।

महर्षि दयानन्द ने जहां कुछ व्यक्तियों को संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा दी, वहां पाठशाला आदि खोलकर भी संस्कृत का विकास किया।

सन १८७८ में अपने एक विज्ञापन में उन्होंने लिखा कि जैसा आर्यावर्तवासी आर्य लोग आर्य समाजों के सभासद् करते और कराना चाहते हैं कि सस्कृत विद्या के जानने वाले स्वदेशियों की बढ़ती के अभिलाषी, परोपकारक और निष्कपट होकर सबको सत्य विद्या देने की इच्छा युक्त धार्मिक विद्वानो की उपदेशक मण्डली और वेदादिसत्य शास्त्रो के पढ़ने के लिये पाठशाला खोलना चाहते हैं।

१६ मार्च १८७९ को दीनापुर (दानापुर) के आर्य समाज के मन्त्री को लिखा कि मुझे यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप आर्य सस्कृति पाठशाला खोलने का यत्न कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द के ही प्रयत्नो से फरुखाबाद में पाठशाला आरम्भ हुई थी, उसमें भी दयानन्द सस्कृत की शिक्षा पर ही विशेष बल देना चाहते थे। २३ मई १८८१ को सेठ निर्भराम जी को एक पत्र में उन्होंने लिखा—आप लोगो की पाठशाला में आर्य भाषा संस्कृत का प्रचार बहुत कम और अन्य भाषा अंग्रेजी व उर्दू, फारसी अधिक पढ़ाई जाती है। इससे वह अभीष्ट जिसके लिए शाला खोली गई है, सिद्ध होता नही दीखता वरन आपका यह हजारों मुद्रा और व्यय संस्कृत की ओर से निष्फल होता भासता है। हमने कभी परीक्षा के कागजात और आज तक की परीक्षा का फल कुछ नहीं देखा। आप लोग देखते है कि बहुत काल से आर्यावर्त में संस्कृत का अभाव हो रहा है। वरन सस्कृत रूपी मातृभाषा की जगह अंग्रेजी लोगो की मातृभाषा हो चली है। अंग्रेजी का प्रचार तो जगह-जगह सम्राट की ओर से जिनकी यह मातृभाषा है, भली प्रकार हो रहा है। अब इसकी वृद्धि में हम तुम को इतनी आवश्यकता नही दीखती और न सम्राट कुछ कर सकते है। हा, हमारी अति प्राचीन मातृभाषा सस्कृत जिसका सहायक वर्तमान में कोई नही है। यही व्यवस्था देखकर सस्कृत के प्रचारार्थ आप लोगों ने यह पाठशाला स्थापित की है। तो यह भी उचित कर्तव्य अवश्य है कि सदैव पूर्व इष्ट की सिद्धि पर दृष्टि रखी जावे।

१२ मई १८८१ का लाला कालीचरण जी ने रामचरण जी को लिखा—इस (फरुखाबाद की] पाठशाला मे अधिक करके संस्कृत की उन्नति पर ध्यान रहना चाहिये। कुछ दिनो के बाद उन्होने फरुखाबाद पाठशाला के लिए दुर्गाप्रसाद जी को फिर लिखा—जहां तक बन सके पाठशाला के उद्देश्य पर कि संस्कृत की उन्नति होनी चाहिए, सो इसका अच्छी प्रकार ध्यान रहे। १७ जून १८८१ को दुर्गाप्रसाद जी को फिर लिखा—पाठशाला में संस्कृत का काम ठीक-ठाक होना चाहिए जैसे मिशन स्कूलों में लड़के अपनी अन्य स्वार्थ-सिद्धि के लिए बाइबिल सुन लेते हैं, और कुछ ध्यान नहीं देते वैसे जो संस्कृत सुन लिया तो क्या लाभ होगा? इस पाठशाला में मुख्य संस्कृत जो मातृभाषा है, उसको ही वृद्धि देनी चाहिए। फारसी का होना

(शेष पृष्ठ ६ पर)

संस्कृत का पुनरुद्धार

(पृष्ठ ५ का शेष)

कुछ आवश्यक नही। केवल संस्कृत और अंग्रेजी दो ही का पठन-पाठन होना अवश्य है।

दिसम्बर १८८२ को बाबू दुर्गाप्रसाद जी को पत्र लिखकर पूछा कि पाठशाला मे संस्कृत पढकर कितने विद्यार्थी समर्थ हुए, अथवा अंग्रेजी फारसी मे ही व्यर्थ धन जाता है, सो लिखो, जो व्यर्थ ही हो तो क्यों पाठशाला रखी जाए। २५ अप्रैल १८८३ को लिखा—इससे विदित होता है कि तुम्हारी पाठशाला मे अलिफ, बे, और कैट, रैट की भरमार है जो कि आर्यसमाजियो का विशेष कर्तव्य नही।

इन सब पत्रो से महर्षि की संस्कृत प्रचार की ललक सूचित होती है। कलकत्ते मे प्रसन्नकुमार ठाकुर ने मूला जोड मे एक संस्कृत कालेज स्थापित किया था। स्वामी जी वहा जाकर प्रस्ताव किया कि केवल इसका नाम ही संस्कृत न हो, प्रत्युत इसमे संस्कृत की शिक्षा भी होनी चाहिए।

उन्होने भारतीय ही नही वरन विदेशियों को भी संस्कृत सीखने की प्रेरणा दी। २६ मार्च १८७९ के एक पत्र मे उन्होने लिखा—अमरीका वालो से अति प्रेम से हमारा नमस्कार कहना और उनसे कुशलता पूछना कि लाहौर आदि के समाज मे आप लोगो के लिए तैयारी कर चुके है। वहां कब तक जावेंगे और उन्होने संस्कृत पढना आरम्भ किया है या नही ? ३० जून १८७९ को श्याम जी कृष्ण वर्मा को आक्सफोर्ड मे दयानन्द ने पत्र लिखा और पूछा—संस्कृत विद्या का वहा कैसा प्रचार है ? और आर्यसमाजो के बाबत वे लोग क्या कहते हैं ? ८ अक्तूबर १८८० को एच० पी० मैडम ब्लैवत्स्की को उन्होने लिखा—प्रथम संस्कृत पढने, शिक्षा लेने, सोसायटी को आर्य समाज की शाखा करार देने आदि के लिए लिखा था, और वे चिटिठ्या छप के सर्वत्र प्रसिद्ध भी हैं। और जो मैने वहा पत्र भेज थे उनकी नकल भी मेरे पास उपस्थित है।

दयानन्द की निश्चित मान्यता थी कि भारत विश्व को संस्कृत मे संस्कृत मे निहित ज्ञान के रूप मे बहुत कुछ दे सकता है। सत्यार्थ प्रकाश मे वे लिखते हैं कि जितनी विद्या भूगोल मे फैली है वह सब आर्यावर्त देश से मिस्र वालो, उनसे यूनानी उनसे रोम और उनसे यूरोप देश मे उनसे अमेरिका आदि देशो में फैली है। अब तक जितना प्रचार संस्कृत विद्या का आर्यावर्त देश मे हैं उतना अन्य किसी देश में नही। जो लोग कहते है कि जर्मनी देश मे संस्कृत विद्या का बहुत प्रचार है और जितनी संस्कृत मोक्ष मूलर (मैक्स मूलर) साहब पढे हैं उतनी कोई नही पढा। यह बात मात्र कहने की है क्योकि यस्मिनदेशे द्रुमोनास्ति तत्रएरण्डोपि द्रुमायते अर्थात जिस देश मे कोई वृक्ष नही होता उस देश मे एरण्ड ही को बडा वृक्ष मान लेते हैं। वैसे ही यूरोप देश मे संस्कृत विद्या का प्रचार न होने से जर्मन लोगो और मोक्षमूलर साहब ने थोडा सा पढा, वही उस देश के लिए अधिक है। परन्तु आर्यावर्त देश की ओर देखें तो उनकी बहुत न्यून गणना है, क्योकि मैंने जर्मनी देश निवासी एक प्रिन्सिपल के पत्र से जाना कि जर्मनी देश मे संस्कृत चिट्ठी का अर्थ करने वाले भी बहुत कम हैं (सत्यप्रकाश, एकादश समुल्लास, पृ० २७५,२७६) आदि लिखकर दयानन्द ने वस्तुत उन लोगो से सावधान करने की कोशिश की जिन्होंने सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान का ठेकेदार मान लिया था और यहां तक कि संस्कृत में भी अपने को जर्मनी से पिछडा हुआ मानने लगे थे। आज भी यह दुर्भाग्य की बात हैं कि किसी विदेशी विश्वविद्यालय से प्राप्त संस्कृत उपाधि को भारतीय विश्वविद्यालयों की तुलना में अधिक महत्व दिया जाता है। किसी विदेशी विद्वान द्वारा संस्कृत विषय पर विदेशी भाषा मे लिखी पुस्तक को अधिक महत्व दिया जाता है। दयानन्द ने इस कुवृति से बचने के लिए आज से सौ वर्ष पूर्व ही सावधान किया था। वे लिखते हैं कि मोक्षमूलर साहब के संस्कृत साहित्य और थोडी सी वेद की व्याख्या देखकर मुझको विदित होता है कि मोक्षमूलर साहब ने इधर उधर आर्यावर्तीय लोगो द्वारा की हुई टीका देखकर कुछ-कुछ यथा तथा लिखा है। जैसा कि 'युञ्जन्ति ब्रह्मरुषं चरन्त परितस्थुष। रोचन्ते रोचना दिवि' इस मन्त्र का अर्थ घोडा किया है', इससे तो सायणाचार्य ने सूर्य अर्थ किया है सो अच्छा है। परन्तु इसका ठीक अर्थ परमात्मा है, सो मेरी बनाई ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे देख लीजिये। उसमे इस मन्त्र का अर्थ यथार्थ किया है, इतने से जान लीजिये कि जर्मनी देश और मोक्ष मूलर साहब मे संस्कृत विद्या का कितना पाण्डित्य है। (सत्यार्थप्रकाश, एकादश समुल्लास, पृ० २७६) वस्तुत पश्चिमी ज्ञान की और अधभक्ति यहां तक कि संस्कृत और वैदिक ज्ञान के विषय मे भी उन्ही लोगो को प्रमाण मानने की गलत प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए दयानन्द को ये सब स्पष्ट बातें लिखनी पडी थी।

संस्कृत का स्वरूप (सरल संस्कृत का प्रयोग)

दयानन्द का मत था कि प्रयोग मे अत्यन्त सरल संस्कृत आनी चाहिए। संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित होते हुए भी जन सामान्य तक अपने विचार पहुँचाने के लिए वे स्वयं अत्यन्त सरल संस्कृत का प्रयोग किया करते थे। यह उल्लेखनीय है कि सन १८७२ से पहले वे संस्कृत मे ही भाषण किया करते थे। पर उनकी संस्कृत समझने मे किसी को कठिनाई नही होती थी।

सन १८७२ मे कलकत्ता मे श्री केशव चन्द्र सेन ने अपने आवास पर स्वामी जी का व्याख्यान कराना निश्चित किया। अंग्रेजी और बंगला में विज्ञापन बांटे गए। नियत समय पर सहस्रो नर-नारी एकत्रित हो गए। उस समय कलकत्ते के गणमान्य सज्जन प्राय सभी वहां उपस्थित थे। यद्यपि व्याख्यान संस्कृत भाषा मे था परन्तु दयानन्द की कथन शैली इतनी सरल थी कि उनका कथन सर्वसाधारण की समझ मे भी आ जाता था।

सन १८७४ मे भरुच मे वकील जेठमल जी ने दयानन्द से कहा-आपकी संस्कृत अति सुगम होती है। पण्डितो जैसी जटिल भाषा मैंने आपसे नहीं सुनी। दूसरे जब आप पण्डितो से शास्त्रार्थ करते हैं तब भी उनका मुख आप केवल युक्तियो और प्रमाणो से ही बन्द कर देते हैं। पण्डित लोगो को एक-एक शब्द पर ही सारा सारा दिन बिता देते है। वैसा आप भी क्यो नही करते हैं ? दयानन्द ने उत्तर दिया—मैं सुगम संस्कृत इसलिए बोलता हूँ कि सुनने वालो को समझने मे सुगमता हो। मेरा उद्देश्य जनता को समझाना है, न कि अपना पाण्डित्य छाटना परन्तु यह भी निश्चय रखिए कि सुगम भाषा बोलने की रीति किसी भाषा के अल्पज्ञान से नही प्राप्त हुआ करती। सच तो यह है कि भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लेने पर ही व्यक्ति सरल भाषा बोल सकता है।

अहमदाबाद में तो एक शास्त्री ने यहा तक कह दिया—महात्मा जी, केवल भवति बचनि मात्र से काम नही चलेगा। आज आपको दक्षिण पण्डितो से पाला पडा है। कोई शास्त्रीय महत्व दिखाना होगा। प्रतिपक्षियो की प्रेरणा पर अपनी प्रकृति के प्रतिकूल होते हुए भी दयानन्द ने अप्रसिद्ध शब्द-पूर्ण समास बहुल और अनेकार्थ-बोधक ऐसी जटिल संस्कृत बोलनी आरम्भ की कि प्रतिवादी देखते रह गए। वे दयानन्द की धारा प्रवाह संस्कृत के वाक्यो को समझ न सके। इस प्रकार स्पष्ट है कि कठिन संस्कृत बोल सकने पर भी दयानन्द सरल संस्कृत का ही व्यवहार जनतामान्य के लिए आवश्यक समझते थे।

१५ सितम्बर १८७३ को दयानन्द कलकत्ता गये। उनकी संस्कृत के सम्बन्ध मे पताका पत्रिका के सम्पादक ने लिखा था—[illegible] स्वामी जी की वक्तृता सुनी तो हमने एक नवीन बात देखी कि संस्कृत भाषा में ऐसी सरल और मधुर वक्तृता हो सकती है। वह ऐसी सरलतम संस्कृत में व्याख्यान देने लगे कि संस्कृत से जो महामूर्ख है वह भी उनके व्याख्यान को समझने लगा। इसी प्रकार लिखा था—वह एक दिग्गज पण्डित हैं। यह हिन्दू शास्त्र विशारद है। संस्कृत भाषा इनके आयत्ताधीन हो विशेषकर इनकी संस्कृत भाषा इतनी प्राञ्जलता, श्रुतिमधुर और सरल है कि संस्कृत से अनभिज्ञ पुरुष भी उसे अनायास बहुत कुछ समझ सकते हैं।

दयानन्द ने २० अगस्त १८७६ को वेद भाष्य बनाना आरम्भ किया। तब उनके एक विज्ञापन से यह भी प्रकट होता है कि वे सरल भाषा के पक्ष

(शेष पृष्ठ ९ पर)

हरिजन मन्दिर प्रवेश की घोषणाएं असत्य निकली

दलितों के लिये स्वामी आनन्दबोध की अपील

नाथद्वारा मन्दिर मे हरिजनो के प्रवेश के सम्बन्ध मे की गई सभी घोषणाए लगभग असत्य ही निकली जयपुर मे शकराचार्य ने घोषणा की थी कि—"मन्दिरो मे हरिजनों का प्रवेश वर्जित है।' इसके विरोध मे स्वामी अग्निवेश ने जब आनन्दोलन किया तब शकराचार्य ने पुन वक्तव्य दिया कि— 'मैंने तो स्वय कहा था कि— "ईश्वर को हरिजन सबसे अधिक प्यारे है, वे तो स्वय चलकर हरिजनो के पास आवगे अत हरिजनो को मन्दिर मे जाने की आवश्यकता नही है। उनके इस वक्तव्य से जहा पहली घोषणा असत्य निकली, वहा दूसरी घोषणा भी भ्रामक एव असत्य है, क्योकि जब परमात्मा सर्वत्र व्यापक है तो वह चलकर कहा से आवेगा ?

२—राजस्थान के मुख्यमन्त्री तथा मन्दिर के प्रबन्धक की ओर से की गई यह घोषणा कि हरिजन. के मन्दिर प्रवेश पर कोई रोक नही, असत्य ही निकली क्योकि उन्हे मन्दिर मे जाने से पूर्व ही स्वामी अग्निवेश के साथ गिरफ्तार कर लिया।

३—पदयात्रा में हजारो व्यक्तियो भूतपूर्व न्यायाधीश गुमानमल लोढा, कृष्ण अय्यर, प्रेकाश अम्बेडकर, आय नेता स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती तथा शत प्रतिशत आर्य समाजो के सम्मिलित होने की घोषणा भी असत्य निकली क्योकि उक्त महानुभावो मे से एक भी नही आया, राजस्थान की लगभग ३०० आर्य समाजो मे से १० तथा जिस आर्य समाज उदयपुर से पद यात्रा निकली वह आर्य समाज भी सम्मिलित नही हुई। समाचारो के अनुसार १२ या ६ हरिजन तथा अन्य ७० पदयात्री ही थे।

४—इस प्रकार जहा उक्त घोषणाए असत्य निकली वहा विरोधियो ने इतना भयकर रूप धारण किया कि तीन दिन तक नाथद्वारा नगर बन्द रहा हजारो व्यक्तियो ने पदयात्रियो को मार्ग मे रोका, काले झण्डे दिखाये, पत्थर वर्षा की स्वामी अग्निवेश के पुतले जलाये। पदयात्रियो पर घातक प्रहार करने के लिये घर घर मे पत्थर व तेजाब की बोतल एकत्रित की गई। धारा १४४ तथा अस्पृश्यता निवारक कानून का उल्लघन करने वालो के विरुद्ध कडी कार्यवाही करने की सरकार की घोषणाए भी असत्य निकली। इन उपद्रवकारी, पोगा पथियो के सन्मुख सरकार उसी प्रकार अकर्मण्य निर्जीव सिद्ध हुई जिस प्रकार दिवराला ग्राम मे नारी दहन काड मे हुई थी।

५—यह स्पष्ट करना भी आवश्यक है कि मूर्तिपूजा एव उसके दर्शनार्थ आय समाजी होने के नाते स्वामी अग्निवेश की पदयात्रा न तो वैदिक सिद्धान्त य आर्य समाज की मान्यता के अनुसार ही थी और न इसके लिये आर्य समाज के प्रान्तीय व सार्वदेशिक सगठन का ही कोई निश्चय था। आर्यसमाज ने सगठित रूप से निर्णय लेकर जब भी आन्दोलन किया, उसे सफलता मिली है। हैदराबाद के सत्याग्रह मे १६ हजार व्यक्ति जेलो मे गये तथा २४ व्यक्तियो का बलिदान देकर उसने सरकार पर अभूतपूर्व विजय प्राप्त की थी। दलित (हरिजन) उद्धार के लिये भी कांग्रेस से पहले आर्य समाज ने महान् आन्दोलन व बलिदान किये हैं। आर्य समाज के सभासद, अधिकारी व पुरोहित तक दलित वर्ग के है, जो आर्य समाज मन्दिर में ईश्वर प्रार्थना, हवन तथा प्रीतिभोज मे सम्मिलित होते हैं। आगामी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को देशभर की आर्य समाजो से इसी प्रकार के विशाल आयोजन करने के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की ओर से अपील की गई है।

६—हरिजनो के लिए समान अधिकार, समान व्यवहार व उनमें उसमें संस्कार डाल कर श्रेष्ठ (आर्य) बनाने का यही उपाय है, न कि वोटो के लिये एक पृथक् वर्ग (हरिजन) बनाये रखना, मन्दिर प्रवेश रोक करें अपमानित किया जाता है जहा परमात्मा की बनाई, परमात्मा से व्याप्त सच्ची मानव मूर्ति के प्रति घृणा हो वह स्थान घृणा का है प्रवेश योग्य नही। यह तो महन्त व पुजारियो की अपार आय, व्यवसाय व भोग विलास के स्थान है जिन अरबों रुपया व्यय हो रहा है जो कि देश, धर्म की उन्नति धर्म प्रचार, आर्य जाति की रक्षा, बेरोजगारी व गरीबी पर व्यय होना चाहिये था।

७—परमात्मा सर्वत्र सब प्राणियो मे है उसका स्मरण व उपासना सवत्र एकान्त में की जा सकती है भीड भरे मन्दिरो म नही जैसा कि परमात्मा ने वेद मन्त्र द्वारा बताया कि— ईशावा-स्यमिद सर्वम् तथा गीता श्रीकृष्ण ने कहा कि— ईश्वर सर्व-भूताना हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति " और कवि ने कहा कि— ज्यो तिल माहि तेल है ज्यो चकमक मे आग। तेरा प्रभु तो मैं बता कहा रहा तू भाग। उपरोक्त प्रभु की उपासना व धर्म त्याग कर यह कहना विवेक सगत नही कि हम ईसाई व मुसलमान बन जायगे, क्या वहा मूर्त्ति के दर्शन मिल सकेगे ?

८—मन्दिर प्रवेश के लिये पुन परस्पर सघर्ष का मार्ग न अपना कर छुआ छूत के विचार प्रचार व सद्भावना पूर्वक मिटाना उचित रहेगा। अन्यथा देश व जाति मे विघटन की आशका है। वैसे ही देश अनेक समस्याओ, विपदाओ, अराजकता, भ्रष्टाचार, सामाजिक कुरीतियो अन्ध विश्वासो तथा अश्लील साहित्य सिनेमा टी०वी० आदि के द्वारा अश्लील, हिसक व चरित्रनाशक प्रचार से ग्रस्त है, इनके द्वारा वैदिक धर्म, भारतीय सभ्यता सस्कृति पर भी भीषण प्रहार हो रहा है उसे दृढता पूर्वक रोकना सबका तथा विशेषत आर्यसमाज का परम कर्त्तव्य है क्योकि महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना इसी कार्य के लिये की थी।

—भवतीप्रसाद

संस्कृत का पुनरुद्धार

(पृष्ठ ६ का शेष)

म थे। उस विज्ञापन मे उन्होंने लिखा—यह भाष्य स स्कृत और आर्यभाषा जो कि काशी प्रयाग आदि मध्य देश की है इन दोना भाषाओ में बनाया जाता है। इसमे स स्कृत भाषा भी सुगम रीति लिखी जाती है। और वैसी आर्यभाषा भी सुगम रीति की लिखी जाती है। सस्कृत ऐसी सरल है कि जिसको साधारण सस्कृत को पढने वाला भी वेदो का अर्थ समझ ले तथा भाषा को पढने वाला भी सहज मे समझ लेगा। इससे दयानन्द का सरल भाषा रखने का उद्देश्य और अधिक प्रकट हो जाता है।

स्वामी जी ने अपने परम शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा को सस्कृत मे एक पत्र लिखा। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने वह चिटठी प्रो० मोनियार विलियम्स को दिखाई जिसकी सरल, सुबोध और ललित सस्कृत को देखकर वह इतने मोहित हुए कि उन्होने उसका अंग्रेजी अनुवाद एथिनियम नाम के पत्र के २३ अक्तूबर सन् १८८० के अक मे प्रकाशित कराया और उस चिट्ठी को आदर्श मानते हुए लिखा कि सस्कृत भाषा अभी तक आर्यावर्त के पत्र-व्यव-हार और दैनिक बोलचाल की भाषा है। ऐसी दशा में जो लोग यह कहते हैं कि सस्कृत भाषा अप्रयुक्त और अवनत दशा में है वह भूल करते है।

महर्षि दयानन्द के सस्कृत सम्बन्धी विचारों को जानने के बाद हम यह कह सकते हैं कि हमें विशेषत उनके अनुयायियों को राष्ट्र में संस्कृत भाषा के प्रचार और प्रसार को अपना एक मुख्य काय समझना चाहिए। आर्य-समाज को इसके लिए अनेक रचनात्मक आन्दोलन चलाने होंगे। इस समय देश मे जितने भी सस्कृत की उच्च उपाधि प्राप्त नवयुवक और नवयुवतिया हैं उनके लिए कार्य की एक सशक्त योजना बनानी होगी। साथ ही भारत सरकार की नयी शिक्षा नीति मे सस्कृत को स्थान दिलाने के लिए हमे कुछ आन्दोलन भी चलाने होंगे।

वह तप: प्यारा स्वदेश

कीर्ति जिसकी गा रहा, सम्पूर्ण यह संसार है।
　ध्रुव सत्य सा है धर्म जो, उसका यही आधार है॥
ईश नियमों की यहां, होती नहीं अवहेलना।
　जानते हैं पुत्र जिसके, सुख सदन, दुख झेलना॥
भिक्षु-सा जीवन बिताते, हैं अशोकों से नरेश।
　अखिल भू के भाग्य सा है, वह तप: प्यारा स्वदेश॥
मन-वचन से, कर्म से है, प्रभु-भजन में लीन जो।
　मोह माया मुक्ति पा, रहते सदा स्वाधीन जो॥
थी गिरा अमृतमयी ही अनृत न वे जानते थे।
　इसलिए स्वर्गिक पदों को, वे सदा पहचानते थे॥
है उन्हीं वर पुंगवों का, भरत भू यह शुचि प्रदेश।
　ज्ञान का भण्डार सा है वह तप प्यारा स्वदेश॥
ऋषि दयानन्द से महा-नर, हैं हुए शुचि-ज्ञान दायक।
　भर्तृहरि-मनु से हुए हैं, उत्तमोत्तम विधि विधायक॥
व्यास से कविवर जहा थे, भरत से थे भ्रातृ-सेवक।
　राष्ट्र के नेता महा थे, पृथु से दाशरथि तक।
ज्योति है बिखरा रहा भू पर, भरत भू का दिनेश।
　वीरता प्रतिमूर्ति सा है, वह तप प्यारा स्वदेश॥
पूज्यन्ते यत्र नार्यास्तु, रमन्ते तत्र देवता।
　देश जो इस मन्त्र को, चिरकाल से है धारता।
दिव्य बल से पूर्ण थी, वे नारियां जिस देश की।
　धारती प्रतिशब्द थीं, पतिदेव के आदेश की॥
अत्रि अनुसुइया-सुमित्रा सीता सावित्री का देश।
　धन्य इनसे हो गया है, वह तप प्यारा॥
राष्ट्र रक्षा के लिए रहती, सदा अविराम तत्पर।
　पदमिनी सी नारियां, जलतीं जहां अंगार पर॥
खड्ग लेकर हाथ में समराग्नि में वे कूदतीं।
　लक्ष्मी बाई जहाँ पर, रण का फूंकती॥
वीरांगनाओं का यही वह, प्राण प्रिय प्यारा स्वदेश।
　भूमि का वीरत्व सा है, वह तप प्यारा स्वदेश॥
वेद-विद्या-पठन पाठन, ब्राह्मणों का कार्य था।
　वैश्य-शूद्रों क्षत्रियों को, वेद-पथ अपनाये था॥
आबाल-वृद्ध कर्त्तव्य को ही, उच्च सबसे मानते थे।
　स्वार्थ तज परमार्थ करना, धर्म अपना जानते थे॥
कर्म-गुण ही वर्ण का था, दिव्य सा आधार वेश।
　सौम्यता के ज्ञान सा है, वह तप प्यारा स्वदेश॥

—राधेश्याम आर्य (एडवोकेट)

दयानन्द मठ चम्बा द्वारा वेद प्रचार

दयानन्द मठ चम्बा (हि० प्र०) द्वारा समय २ पर ग्रामों में वेद प्रचार के अनेक आयोजन किए जाते हैं। इस समय प्रथम जुलाई से नवम्बर मास तक पांच मास का वेद प्रचार का शानदार अभियान प्रारम्भ कर दिया गया है। हमारा विशेष ध्यान ग्रामों एवं विद्यालयों पर है। कुछ ग्रामों को आदर्श ग्राम बनाने का हम विशेष यत्न कर रहे हैं। वेद प्रचार के साथ २ नि:शुल्क औषधि भी दे रहे हैं।

इस वेद प्रचार के प्रथम चरण में गाजियाबाद के उत्साही नवयुवक प्रचारक श्री आशाराम आर्य एवं उनके साथी श्री प्यारेलाल आर्य इस समय बड़े उत्साह से वेद प्रचार में लगे हुए हैं। मैं सब जगह स्वयं उनके साथ जा रहा हूं। बहुत प्रभावशाली प्रचार हो रहा है। अगस्त एवं सितम्बर मास में आर्य प्रतिनिधि सभा हि० प्र० ने प्रचारक श्री प० हरिश्चन्द्र जी की सेवायें ली गई हैं। अक्टूबर में बिजनौर के श्री प० दिलेराम जी सेवायें ली गई हैं। चम्बा के ग्रामों में इस प्रचार कार्यक्रम की बहुत सराहना की जा रही है।

—सुमेधानन्द
दयानन्द मठ चम्बा (हि० प्र०)

प्रवेश सूचना

प्रथम अक्टूबर हैदराबाद दक्षिण राजधानी में लगभग १५-२० वर्षों से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के उद्देश्यों को लक्ष्य में रख कर उसकी पूर्ति के लिए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के निमित्त उपदेशकों को तैयार करने के लिए दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय की स्थापना की गयी है। इसमें सिद्धान्तालंकार तीनवर्षीय पाठ्यक्रम रहेगा। यह पाठ्यक्रम हिन्दी में पढ़ाया जायेगा। विद्यार्थियों को विद्यालय में रह कर अध्ययन करना अनिवार्य है। विद्यार्थियों को सिद्धान्त अलंकार उत्तीर्ण होने के उपरान्त 'सिद्धान्त अलंकार' की उपाधि दी जायेगी। यदि वह विद्यार्थी वैदिक धर्म के प्रचार के कार्य में योग्य होने पर उन्हें मासिक ५००) रु० से ८००) रु० तक योग्यता के अनुसार वेतन देकर विद्यालय की ओर से प्रचार का काम करवाया जायेगा। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी को प्रति मास व्यक्तिगत व्यय करने के लिए २५) रुपये अलग से दिये जायेंगे।

उपरोक्त पाठ्यक्रम में प्रवेश पाने के लिए विद्यार्थी की योग्यता दसवीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त योग्यता दसवीं से अधिक उपाधि रखने वालों को प्राथमिकता दी जायेगी। तथा दसवीं कक्षा के समान उपाधि वाले अन्य भाषाओं से उत्तीर्ण विद्यार्थियों को भी प्रवेश मिल सकता है।

के० सीतय्या गुप्त
अध्यक्ष

भगवानदेव शर्मा का तीसरा पत्र

आचार्य भगवानदेव

सम्पादक

योग मन्दिर

19/1008 LODHI Colony
NEW DELHI 110003

२ पार्क एवेन्यू महारानी बाग
दिनांक 3/11-- '78
नई दिल्ली-११००६५

प्रिय भाई श्री अश्विनीकुमार जी;

ओम् नमस्ते।

आप लोगों के लिए लड़ाई लड़ी - आप लोगों का काम होगया। मुझे इस बात की खुशी है।

अब मेरे नियम विरुद्ध मामला खड़ा किया है। कुछ कागजात भेज रहा हूं। देखकर उचित करें। यहां आने पर मिला करें। शेष शुभ।

सब प्रेमियों का ओम् नमस्ते कहें।

योग्य सेवा - आपका

भगवानदेव

राजा रणञ्जयसिंह दिवंगत

(पृष्ठ २ का शेष)

राजनीति में—अंग्रेजी हुकूमत में आपकी स्टेट अंग्रेजों के विद्रोही मानी जाती रही है अंग्रेजों के साथ विद्रोह भी किया उसका दुष्परिणाम भी राज्य को भुगतना पड़ा।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद आप कई बार विधान सभा के सदस्य बने और लोक सभा के सदस्य भी निर्वाचित हुए। आप अन्त में शान्त हो बैठे जब कि आपके पुत्र श्री सञ्जयसिंह ने राजनीति में अपना स्थान सुरक्षित कर लिया वे काफी समय से विधान सभा के सदस्य और प्रांत में मन्त्री बने।

राजा रणञ्जयसिंह का अन्तिम संस्कार हुआ

वाराणसी ५ अगस्त। जनमोर्चा नेता डा० सञ्जयसिंह के पिता रणञ्जय सिंह का आज यहां मणिकर्णिका घाट पर पूरे राजकीय सम्मान के साथ दाह-संस्कार कर दिया गया। इस मौके पर जनमोर्चा नेता, विश्वविद्यालय; प्रधानमन्त्री राजीव गांधी के प्रतिनिधि केन्द्रीय सतीश शर्मा उत्तर प्रदेश के वाद मन्त्री हुकमसिंह और बड़ी संख्या में अधिकारी और राजनैतिक कार्य कर्ता मौजूद थे। अमेठी के पूर्व शासक रणञ्जयसिंह का कल अमेठी में निधन हो गया था।

शव लेकर उनके बेटे उत्तर प्रदेश के पूर्वमन्त्री मन्त्री और [illegible] जनमोर्चा के संयोजक सञ्जयसिंह वाराणसी पहुंचे।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री नारायणदत्त तिवारी ने रणञ्जयसिंह के निधन पर गहरा दुःख जाहिर किया है। लखनऊ में जारी अपने शोक सन्देश में मुख्यमन्त्री ने कहा कि रणञ्जयसिंह एक वयोवृद्ध सांसद सामाजिक और राजनैतिक कार्यकर्ता थे। उन्होंने शिक्षा के प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। श्री तिवारी ने कहा कि श्री सिंह के निधन से हमारे सार्वजनिक जीवन को भारी नुकसान पहुंचा है।

प्रधानमन्त्री राजीव गांधी ने अमेठी के पूर्व राजा रणञ्जयसिंह की मौत पर गहरा शोक जाहिर किया। श्री गांधी ने शोक सन्देश में कहा कि रणञ्जय सिंह शालीनता व सद्भाव के प्रतिमूर्ति थे। वे कमजोर और पद दलित वर्गों की मदद के लिए सदैव तत्पर रहते थे। उन्होंने कहा कि राजा रणञ्जयसिंह विद्वान पुरुष थे और जो भी उनके सम्पर्क में आया वह उनकी विद्वता और प्रतिभा से प्रभावित हुआ।

राजा रणञ्जयसिंह की अपनी कोई औलाद न थी इसलिए उन्होंने सञ्जय सिंह को गोद लिया था। राजा की शिक्षा कोल्विन ताल्लुकेदार विश्वविद्यालय वाराणसी से उन्होंने बी० ए० किया था। भूदान आन्दोलन में उन्होंने तीन हजार एकड़ जमीन दान में दे दी थी।

हिन्दी और संस्कृत के विद्वान राजा रणञ्जयसिंह ने कई स्कूल और कालेज खुलवाए थे। उन्होंने अमेठी में खेलकूद को भी खूब प्रोत्साहन दिया था। राजा ने अपने राजनैतिक जीवन की शुरुआत जनसंघ से शुरू की थी। बाद में वे कांग्रेस में शामिल हो गये थे।

पंजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१४ ८ १९८८) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No.U 93 Post in D P.S O.on 12-8-1988

आर्य नगर गाजियाबाद में आर्यसमाज मन्दिर

गाजियाबाद ७ अगस्त। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के सान्निध्य में आज आर्य केन्द्रीय सभा के अधिकारियों की एक विशेष बैठक हुई जिसमें गाजियाबाद नगर के अनेक गणमान्य आर्य बन्धु उपस्थित थे। इस अवसर पर सा० आ० प्र० सभा के मुख्य [illegible] श्री सच्चिदानन्द शास्त्री भी उपस्थित थे। आर्य केन्द्रीय सभा के अधिकारियों [illegible] स्वामी जी से अनुरोध किया कि आर्य नगर में आर्य समाज मन्दिर के निर्माण [illegible] हेतु एक प्लाट नि:शुल्क दिया जावे। आर्य बन्धुओं के इस अनुरोध को स्वीकार करते हुए सार्वदेशिक सभा की ओर से ४१७ वर्ग गज [illegible] नि:शुल्क देने का निश्चय किया गया। इस अवसर पर [illegible] बन्धुओं से मन्दिर भवन के निर्माण के लिए दान की अपील की। इसके परिणाम स्वरूप आर्य केन्द्रीय सभा के अधिकारियों ने उसी समय लगभग ५०,०००) के दान दाताओं द्वारा दिए गए आश्वासनों की घोषणा की।

हमें आशा है कि आर्य नगर में आर्य समाज मन्दिर के निर्माण का कार्य शीघ्र ही शुरू हो जायगा। आर्य केन्द्रीय सभा के अधिकारियों ने इस सम्पूर्ण कार्य को पूरा करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया है।

—सम्पादक

प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा हरितृतीया पर्व और वेद प्रचार दिवस सम्पन्न

परम्परा की भांति इस वर्ष भी (तीज) हरितृतीया पर्व दिनांक १ ८ ८८ मंगलवार लोधी गार्डन में मनाया गया।

प्रातः ११ ०० से सायं ५ ३० तक लोधी गार्डन में मनाया गया।

२—वेद प्रचार दिवस पर मन्त्र प्रतियोगिता यजुर्वेद के ३१वें अध्याय की प्रतियोगिता आयोजित हुई दिल्ली के सभी क्षेत्रों से आर्य [illegible] और [illegible] ने भाग लिया।

—प्रकाश आर्या

शुद्धि के लिए वचन दान

सार्वदेशिक [illegible] के १८ १९ जून के साधारण अधिवेशन में अनेक महानुभावों ने अपनी/समाज/प्रतिनिधि सभा/की ओर से उड़ीसा में शुद्धि कार्य के लिए वचन दान की घोषणा की थी। सभी की सूची से धनराशि सभा में तुरन्त भिजवाने के लिए अपील पत्र जारी किए गए हैं। अभी तक श्री मानेराम गुप्ता दिल्ली महात्मा आर्य भिक्षु (ज्वालापुर) श्री कृष्णलाल (शिमला) और आर्य [illegible] से क्रमशः प्रत्येक से [illegible] की राशियाँ प्राप्त हो चुकी हैं।

सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री

योग साधना शिविर सम्पन्न

म० नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला जिला नैनीताल में दि० २७ जून से १ जुलाई तक समारोह पूर्वक मनाया इस शिविर में [illegible], राजस्थान उत्तर प्रदेश, दिल्ली के आये हुये बन्धुओं ने भाग लिया यह शिविर स्वामी [illegible] की [illegible] में सम्पन्न हुआ। इसके अतिरिक्त [illegible], स्वामी [illegible], स्वामी [illegible], स्वामी [illegible] आदि की उपस्थिति हुए [illegible] दूसरा शिविर दि० १९ सितम्बर से २५ सितम्बर तक होगा [illegible]

—[illegible]

वेद प्रचार मण्डल दिल्ली ५

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

ट सम्वत १९७ ६४९०८]	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र	दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष ३४७७१
वर्ष २३ अङ्क २४]	श्रावण शु० स० २०४५ रविवार अगस्त १९८८	वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

पाकिस्तान ने आतंकवादियों की मदद बन्द न की तो पछताना पड़ेगा : राजीव

नई दिल्ली १५ अगस्त प्रधानमन्त्री राजीव गांधी ने स्पष्ट रूप मे पाकिस्तान को चेतावनी दी है कि वह पंजाब मे आतंकवादियो की मदद न करे और न ही भारत को ऐसी कोई भी कार्रवाई करने पर मजबूर करे जिससे बाद मे उसे पछताना पड़े।

आज यहा ऐतिहासिक लालकिले की प्राचीर से श्री गांधी स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्र को सम्बोधन कर रहे थे। उन्होंने पंजाब की वर्तमान स्थिति का वर्णन कर कहा कि आपरेशन ब्लैक थंडर के बाद वहा हालात सुधरे हैं फिर भी हम जैसा चाहते थे वैसी स्थिति अभी नही हो पाई है। उन्होंने कहा सरकार की मजबूती के साथ साथ आज पंजाब का हर व्यक्ति आतंकवाद का मुकाबला कर रहा है। श्री गांधी ने पड़ोसी देश पाकिस्तान की ओर बिना नाम लिए संकेत कर कहा कि वह पंजाब मे आतंकवादियो की मदद करने से बाज आए अन्यथा उसे पछताना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि हमारी सैन्य शक्ति पहले की अपेक्षा बढी और मजबूत हुई है। पंजाब मे सेना ने मजबूती और अनुशासन से कार्रवाई की है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि आतंकवादियो ने पंजाब मे पवित्र स्थली पर जो कुछ किया सम्भवत अब ऐसा नही होगा।

कुर्बानी देने को तैयार

नई दिल्ली १ अगस्त। प्रधानमन्त्री राजीव गांधी ने आज यहा कहा कि देश को महान बनाने और इस गुलामी से पहले जैसा गौरव दिलाने के लिए कोई भी कुर्बानी और बलिदान देने को तैयार है।

श्री गांधी ने स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश के लिए गांधी जी ने कुर्बानी दी नेहरू ने कुर्बानी दी और इन्दिरा जी ने बलिदान दिया व भी आज यहा कुर्बानी देने के लिए तैयार हे। प्रधानमन्त्री ने कहा कि मेरे कन्धे पर भारत की जो विरासत है वह गांधी जी नेहरू जी और इंदिरा जी की विरासत है। उसे आगे बढाना है उनके विचारो को आगे बढाना है। उन्होंने कहा कि आज देश के सामने जो समस्याए और प्रश्न हैं उनके जवाब हम इतिहास मे नही मिलेगे। उनका जवाब हमे ही देना है। इसके लिए यदि कुर्बानी की भी जरूरत पड़े तो वह हम देगे।

हिन्दू विधवा को मृत पति के साथ जलाना पाप

(शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द)

नई दिल्ली १४ अगस्त।

द्वारका पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य श्री स्वरूपानन्द सरस्वती ने आज यहा एक भेंट वार्ता मे कहा कि हिन्दू धर्म के अनुसार किसी विधवा को जबरदस्ती जलाना पाप है। उन्होंने सती शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि सती शब्द का बिल्कुल गलत अर्थ लगाया गया है यह परम्परा ज्ञान नही है। शंकराचार्य ने कहा कि सही रास्ते पर चलने वाली सच्चरित्र महिला सती है और इस तरह की महिला को चिता पर जलकर यह साबित करने की आवश्यकता नही है कि वह सती है। उन्होंने कहा कि वास्तव मे जो महिला गर्भवती है या जिसके बच्चे बड़े है वैसी महिला को चिता पर जलने के बजाय अपने बच्चो की देखभाल करनी चाहिये। शंकराचार्य ने कहा कि प्रत्येक महिला को शिक्षा की ऊंचाइयो तक पहुंचना चाहिये। उन्होंने धर्म की शिक्षा दिये जाने की भी वकालत की।

अन्तरंग बैठक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की आपात् बैठक दिनांक १ ८ ८ को आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली मे सभा प्रधान जी ने बुलाई है।

—सभामन्त्री

गुरुकुल कालवा के ब्रह्मचारियो ने कसाईयो के शिकंजे से ७० गायें छुड़ाई

१ जुलाई १९८८ आज तड़के गुरुकुल कालवा के आचार्य श्री बलदेव जी ने यहा से चार किलो मीटर दूर बिटाणी गाव मे कसाईयो के द्वारा हत्या के लिए ले जाई जा रही सत्तर ७० गायों को बड़े साहस के साथ छुड़ाया।

प्रात ा ीन दिनचर्या मे तल्लीन पूरे गुरुकुल मे स समय खलबली

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा मिलाप सन्देश का स्वागत

आर्य जनता से सहयोग की अपील

दिल्ली १० अगस्त। सावदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने हमारे सवाददाता से एक भेट वार्ता मे बताया कि वतमान काल मे देश धर्म और समाज की रक्षा के लिए समाचार पत्रो की भूमिका का नकारा नही जा सकता। स्वामीजी ने कहा शहीद धर्मवीर प० लेखराम ने मरने से पूर्व वसीयत मे कहा था कि आर्य समाज मे लेख का काय जारी रहना चाहिए।

[illegible] आज सिनेमा दूरदर्शन आदि से जिस प्रकार [illegible] किया जा रहा है ऐसी विषम अवस्था मे [illegible] एक एन धार्मिक तथा सामाजिक [illegible] पत्र [illegible]

[illegible] विचारधारा [illegible] मिलाप स[न्देश] [illegible] पूरा कर दिया है हम यह [illegible] प्रसन्नता हो रहा है कि मिलाप सन्देश के प्रथम पृष्ठ पर गायत्री मन्त्र तथा सम्पादकीय लेख के ऊपर [illegible] वेद मन्त्र की भूमिका मे पूज्य लाला खुशहालचन्द (महात्मा आनन्द स्वामी जी) के पौत्र चिरजीव नवीन सूरी ने अपने देश माता पूवज तथा आर्य समाज के प्रखर नेता के चरण चिह्नो पर चलकर मिलाप सदेश को महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज तथा उनके गुरु स्वामी योगेन्द्रानन्द जी की विचारधारा को प्रति [illegible] लेखनी [illegible] करके अपने पारिवारिक कर्तव्य को पूरा किया है।

हम प्रिय नवीन सूरी को प्यार भरा आशीर्वाद देकर आर्य जनता से अनुरोध करते है कि मिलाप सन्देश को अधिक से अधिक अपना कर प० लेखराम की वसीयत को पूरा करे।

श्रावणी पर्व (रक्षा-बन्धन)

मत्र सज्जनो को यह सूचना देते हुए प्रसन्नता है कि आपका प्रिय रक्षा बन्धन (श्रावणी) पूर्णिमा के दिन ७ अगस्त [illegible] का प्रातः ६ बजे से १२ बजे तक अत्यन्त रोचक ढग से गुरुकुल भज्जर मे प्रतिवर्ष की भाति मनाया जा रहा है।

वर्ष भर मे एक बार आने वाले इस पर्व पर इष्ट मित्रो सहित भारी संख्या मे पहुचकर अपनी प्राचीन [illegible] का परिचय दीजिये

इस अवसर पर आप ब्रह्मचारियो की [illegible] स्वय समार का [illegible] करने वाले साथियो की वानप्रस्थ और संन्यास म [illegible]

आप अपने [illegible] के लिए भी इस दिन हवन कुण्ड मे स्वय अपने [illegible] मे आहुति [illegible] और ऐसी प्रतिज्ञाये कीजिये जिनका पालन आप तथा आपके बच्चो को और आपके आस पास पडोस का [illegible] बचा सके।

प्रिय मित्रो इस अवसर पर पुराने यज्ञोपवीत बदलकर नवीन धारण किए जाते है और जिनके पास जनेऊ नही है वह दिए भी जाते है। जनेऊ [illegible] का अधिकार मनुष्य मात्र का है। इसलिए सभी बहन भाई [illegible] नर नारी अवश्य ही इस पुण्य कर्म के भागी बनिये।

दूर के सज्जन [illegible] अगस्त शुक्रवार को ही सायकाल तक गुरुकुल मे पहुचने की कृपा करे।

आइये! समय न चूकिये गुरुकुल आपका स्वागत करता है।

वैद्य बलवन्तसिह प्रधान   स्वामी ओमानन्द सरस्वती आचार्य

दैनिक प्रताप एव वीर अर्जुन के भ्रामक समाचार पर उत्तर प्रदेश सूचना एव जनसंपर्क विभाग का स्पष्टीकरण

नदलाल श्रीवास्तव   सूचना एव जन सम्पर्क विभाग
सूचना अधिकारी   उत्तर प्रदेश लखनऊ
दिनाक ४ अगस्त १९

प्रिय महोदय

आपके दैनिक समाचार पत्र प्रताप [illegible] दिनाक ४ ७ ८ [illegible] म प्रकाशित समाचार [illegible] के सम्बन्ध मे जाच [illegible] आर्थिक [illegible] प्रकाशित हुए [illegible] आर्थिक [illegible] संगठन [illegible] हो नहीं है

(२) इसी प्रकार कहा गया है कि आर्थिक अपराध अनुसधान विभाग उत्तर प्रदेश के अधिकारी सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध से पूछताछ करने के लिए सावदेशिक सभा के कार्यालय मे गए और वहा लगभग दो घण्टे स्वामी जी से पूछताछ करते रहे यह भी नया से परे है क्योकि आर्थिक अपराध संगठन के अधिकारी जो जाच के सम्बन्ध मे दिल्ली गए थे सावदशिक सभा के कार्यालय मे गए ही नही और न वहा किसी से उन्होंने पूछताछ की।

(३) गुरुकुल कागडी फार्मेसी हरिद्वार के सम्बन्ध मे लगाए गए कुछ [illegible] के सम्बन्ध मे आर्थिक अपराध संगठन उत्तर प्रदेश के अधिकारी दिनाक २२ ७ ८८ को दिल्ली मे थे और उन्होने गुरुकुल कागडी फार्मेसी के भूतपूर्व व्यवसायाध्यक्ष डा० हरिप्रकाश तथा कुछ अन्य लोगो से आरोपो के सम्बन्ध मे कुछ जानकारी प्राप्त की थी क्योकि आरोप मुख्यत डा० हरिप्रकाश के विरुद्ध लगाये हैं।

आपसे अनुरोध है कि आप अपने [दैनिक] पत्र मे [उक्त] तथ्यो को प्रकाशित करने की कृपा करे जिससे कि पूव प्रकाशित एतत्सम्बन्धी समाचार के कारण [उत्]पन्न हुई भ्रान्ति दूर हो सके। सुविधा हेतु उर्दू मे भी सामग्री सलग्न है।

भवदीय
नदलाल श्रीवास्तव

श्री के० नरेन्द्र
सम्पादक
दैनिक प्रताप [illegible] प्रताप भवन
बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली १० ०२

ब्रह्मचारियो ने ७० गाये छुड़ाई

(पृष्ठ १ का शेष)

भवी जब बिटाणा गाव मे एक आदमी यह सूचना लेकर हाफता हुआ आया कि गाय ले जाने वाले कसाई पूरे दलबल के साथ हैं और गाव वाले गाय छुडाने मे असफल हो गये है।

श्री [illegible] जी ने यह सुनते ही गुरुकुल के सभी ब्रह्मचारियो को साथ लेकर घटना स्थल की ओर दौड लगाई कठोर सघर्ष के बाद कसाई सहित गायो को घेर कर कानवा लाया गया यथोचित दण्ड के लिए कसाइयो को पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया।

वस्तुस्थिति को समझकर पि[नगवां] के गोभक्त थानेदार श्री अतरसिह जी ने कसाईयो की खूब मरम्मत की। अनाथ गायो की सुरक्षा का भार श्री आचार्य जी ने खुद लिया।

जब तक जिम्मेदार व्यक्ति तथा समाज के कर्णधार गौमाता की रक्षा के लिए ऐसे साहसिक कदम नही उठाते तब तक गोपालकृष्ण की भारत भूमि से गोहत्या का कलक दूर नही होगा।

—अखिलेश्वर (वैदिक प्रवक्ता)
उपाचार्य गुरुकुल कालवा

वेदों के आविर्भाव में दार्शनिक पृष्ठभूमि

आर्य रत्न, आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री दर्शन वाचस्पति

वेदो का कब आविर्भाव हुआ यह हमारा विवेच्य विषय यहा नही है, क्योकि वेदो पर आस्था रखने वाले आर्यजन इसे अनादि मानते है। फिर जो अनादि है, उसके आविर्भाव की बात करना भी विरोधाभास है, वस्तुत विरोध नही। कारण यह है कि जबसे इस जीवात्मा को यह ईश्वरीय ज्ञान मिला, तब से वेदज्ञान का प्रकट होना अभिमत है।

अच्छा, तो यह प्रकट-ज्ञान का अधिकरण जीवात्मा है या परमात्मा? इस विवेचन मे वेद ज्ञान का प्रथम अधिकरण तो परमात्मा ही है, क्योकि यह उसका स्वाभाविक ज्ञान है जो कि परमात्मा का गुण भी है, यहा गुणी और गुण का आधार और आधेय सम्बन्ध कहने की अपेक्षा समवाय सम्बन्ध कहना ही अधिक ठीक है। आधार और आधेय सम्बन्ध मे तो गुणी और गुण का ही नही, प्रत्युत द्रव्य और द्रव्यान्तर का भी सम्बन्ध हो सकता है जो कि अनित्य भी होता है। अत समवाय सम्बन्ध कहना ही अतिव्याप्ति दोष से शून्य होगा इसीलिये वैशेषिक दर्शन मे द्रव्य का लक्षण क्रियागुणवत्—समवायकारणमिति-द्रव्यलक्षणम् कहा है।

शङ्का—इस प्रकट हुए वेदज्ञान का अधिकरण जीवात्मा तो हो नही सकता, क्योकि परमात्मा ही इसको धारण करता है। वही उसका नित्य आधार है यद्यपि जीवात्मा भी नित्य है, पर वह अपने स्वाभाविक ज्ञान और इन्द्रिय-जन्य ज्ञान का ही समवाय सम्बन्ध से अधिकरण हो सकता है, न कि विषयिता सम्बन्ध से नैमित्तिक ईश्वरीय ज्ञान का।

समाधान—यह किसी शास्त्र का सिद्धान्त नही है कि किसी नैमित्तिक गुण ज्ञान का आधार अन्य चेतन नही हो सकता। यदि यह कहा जाये कि ईश्वरीय ज्ञान का जब ईश्वर से नित्य सम्बन्ध है, तो अन्य चेतन ही कैसे उसका आधार बन सकेगा क्योकि नित्य गुण पृथक् नही हो सकता। पर भाई, नित्य ईश्वर के साथ-साथ उसका गुण ज्ञान भी तो सूक्ष्मतर और व्यापक है, जो जीवात्मा मे व्याप्त रहता है। जीवात्मा ज्ञानकृत् सान्निध्य से उस ज्ञान को भी ग्रहण कर लेता है। पर वह ज्ञान जीवात्मा का ज्ञान न होकर ईश्वरीय ज्ञान ही कहलायेगा।

वेदान्तदर्शन के "शास्त्रयोनित्वात्" इस सूत्र पर भाष्य करते हुए शकराचार्य लिखते है कि "महत ऋग्वेदादे शास्त्रस्य नेक विद्यास्थानोपबृ हितस्य प्रदीपवत् सवार्थावद्योतिन सर्वज्ञकल्पस्य योनि कारण ब्रह्म" अर्थात् अनेक विद्यास्थानो से उपकृत, दीपक के समान ऋग्वेदादि शास्त्र का कारण ब्रह्म है। अब यहा यह विचारणीय है कि समवायिकारण अर्थात् उपादान,असमवायी तथा निमित्त इन कारणो मे से वेदज्ञान का ईश्वर कौन सा कारण है?

कतिपय विद्वानो ने वेदज्ञान के प्रति ईश्वर की उपादानता स्वीकार की है जो आपातत ठीक प्रतीत होती है, क्योकि "यत्समवेत-कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकरणम्' अर्थात् जिसे लेकर कार्य उत्पन्न हो उसे समवायि या उपादानकारण कहते है, जैसे घट के मृत्तिका। इस प्रकार ईश्वरीय ज्ञान गुण को लेकर ही वेद बना, यह स्पष्ट है। यदि कोई शका करे कि गुणी ईश्वर मे उसका गुण ज्ञान पृथक् नही हो सकता, ऐसा मानने पर भी यदि ज्ञान गुण के साथ गुणी ईश्वर भी रहे, तो कोई सिद्धान्त हानि प्रतीत नही होती, जैसे प्रकृतिसे बने जगत् मे परिणाम व विकार देखे जाते है, तो प्रकृति को परिणामिनी मानतेहै। इस प्रकार ईश्वरीय ज्ञान मे तो कभी विकार भी नही आता क्योकि उसका उपादान कारण ईश्वर और उसके गुण भी अधिकारी व अपरिणामी है। तथा 'जन्माद्यस्य यत" और "शास्त्रयोनित्वात्' पञ्चम्यन्त होने से इसी उपादान कारण की ओर सकेत भी कर रहे है।

प्रश्न—एक बात विचारणीय है, कि उपादान कारणभूत ईश्वर से यह वेदज्ञान स्वय उत्पन्न होता है, अथवा ईश्वर उसे उत्पन्न भी करता है?

उत्तर—अरे भाई यह नियम तो स्थूल कार्यरूप को प्राप्त होने वाले उपादानो के साथ घटित होता है, सूक्ष्म (निरवयव) कार्य के साथ नही, जब कि वेदज्ञान तो सूक्ष्म ही है।

पर उक्त कथन विवेचन की कसौटी पर खरा नही उतरता उसमे निम्न कारण है—

सख्या १—अभिन्ननिमित्तोपादान कारण का कोई दृष्टान्त नही है। अत ब्रह्म को वेदज्ञान का कारण मानना तर्कसगत नही। उपादान कारण सदा दूसरे के अधीन होता है जब कि ब्रह्म किसी के अधीन न होकर स्वाधीन है।

सख्या २— स्वस्कन्धारोहणवत् आत्माश्रयी दोष भी इस पक्ष मे उत्पन्न होगा अर्थात् इस प्रकार स्वय की उपादान करके ईश्वर स्वय ही वेदज्ञान करने के लिए निमित्त कारण भी बनेगा।

सख्या ३—सिद्धान्तमुक्तावली कारिका १८ मे लिखा है"आभ्या पर तृतीय स्यात् अर्थात् समवायिकरणासमवायिकारणाभ्याम् पर भिन्न कारण तृतीय निमित्तकारणमित्यथ। इससे ज्ञान होता है कि निमित्त कारण उक्त दोनो कारणो से भिन्न ही होना चाहिये।

सख्या ४—उपादान कारण सदा परतन्त्र और परिणामी होताहै जब कि निमित्त कारण स्वतन्त्र अपरिणामी होता है तथा उपादान कारण के गुण सदा कार्य मे आया करते है।

सख्या ५—यह भी नियम है, कि द्रव्य से द्रव्य और गुण से गुण उत्पन्न होता है। यहा पर ब्रह्म और उसके ज्ञान मे कार्य कारण सम्बन्ध नही हो सकता। इसके अर्थ यह कदापि न समझ जाये कि परमात्मा जीवात्मा को दिये हुये या प्रकाशित ज्ञान के प्रति निमित्त कारण भी नही हो सकता।

सख्या ६—वेद ईश्वर का ज्ञान रूप गुण है व निरवयव है जब कि उपादान कारण सावयव होता है तथा वेद को कार्य भी नही कह सकते, क्योकि सत्कार्यवाद पक्ष मे भी उद्भूत कार्य का विलय कारण मे मानना पडेगा जो यहा घटित नही होता। इस विषय को कुछ गहराई मे समझिये, जब मुक्ति से आने वाले अग्न्यादि जीवात्मा पूर्व सस्कारो से रहित थे और उनका आत्मा पूर्ण निर्मल व अन्त करण तेजस तथा उन जीवो के अन्त करण स्वाभाविक ज्ञान, जिसको नैमित्तिक ज्ञान से युक्त होना था वे ईश्वर की ज्ञान-कृत् अत्यन्त समीपता से चेतन होने के कारण ज्ञान के ग्राहकता गुण से युक्त थे, चेतन होने से वे अन्त करण से सक्रिय अर्थात् ईप्सा (रिसीविंग) गुण से परिपूर्ण थे, अत ईश्वरीय ज्ञान वेद का प्रकाश या आविर्भाव होना सहज था, अर्थात् ईश्वर ने उनकी आत्मा मे ज्ञान का उपदेश किया।

प्रश्न—जब ईश्वर का ज्ञान अखण्ड होता है,तो ईश्वर का सारा ज्ञान अग्न्यादि मे होना सम्भव नही था फिर उन्हे यह खण्ड या अश रूप मे कैसे प्राप्त हुआ?

उत्तर—जिस प्रकार किसी बैटरी मे विद्युत्सक्रमण (चार्ज) किया जाता है, तो अपनी सामर्थ्य के अनुरूप विद्युत् उसमे समा जाती है, इसका यह अर्थ कदापि नही कि उस विद्युत के खण्ड हो गये। मुक्ति के प्राप्तियोग्य ज्ञान सृष्टि के आदि मे प्राप्त कर लिया गया, उसके अवान्तर समस्त अन्य ज्ञान इसी मे समाहित हुए। इस प्रकार वेद ज्ञान के प्रति ईश्वर निमित्त कारण ही है। न कि उपादान कारण।

(क्रमश

संसद में हिन्दी में बोलने का डर

— विष्णु नागर —

नई दिल्ली, १० अगस्त। राज्यसभा मे कल दिल्ली विश्वविद्यालय (सशोधन) विधेयक पर चर्चा के दौरान उस समय दिलचस्प स्थिति पैदा हुई जब बिहार से चुनी गई कांग्रेस की श्रीमती प्रतिभासिह अग्रेजी बोलने लगी। बिहार से ही लोकदल के श्री राम अवधेशसिह ने इसका विरोध किया और वे अकेले सदन से बहिर्गमन कर गए। श्री सिह का कहना था कि श्रीमती सिह हिन्दी भाषी प्रदेश बिहार से हैं। उन्हे हिन्दी मे ही बोलना चाहिए। बिहार के सब प्रतिनिधि इसी भाषा मे जनता से वोट मागते हैं।

लेकिन श्रीमती सिह जो अग्रेजी मे नोटस बनाकर लाई थी, उन्होने हिन्दी मे बोलने से इनकार कर दिया। वह कहती हैं कि वह हिन्दी मे बोल सकती हैं, मगर अग्रेजी मे ही बोलेगी क्योकि बिहार के लोगो के बारे मे यह धारणा है कि उनकी अग्रेजी अच्छी नही होती। उनका कहना था कि खुद उनकी अग्रेजी बहुत अच्छी है यह उनका दावा नही है लेकिन बिहार के लोगो के बारे मे इस आम धारणा को तोडने के लिए वे अग्रेजी मे ही बोलेगी। उन्होने श्री राम अवधेश सिह से भी कहा कि वे स्वय भी अग्रेजी मे बोले।

राज्यसभा मे श्रीमती प्रतिभा सिह अकेली ऐसी नही है जो हिन्दी भाषी होकर अग्रेजी मे बोलना पसन्द करती है। अनेक सासद है जो कभी हिन्दी बोलना पसन्द ही नही करते। जैसे भारतीय जनता पार्टी के श्री जसवन्त सिह, जनता पार्टी के श्री कमल मुरारका तथा श्री यशवन्त सिन्हा, काग्रेस के श्री विश्वबन्धु गुप्ता, श्री पवन कुमार बसल, श्री कपिल वर्मा, श्री मदन भाटिया, श्री अरुणसिह, श्री आनन्द शर्मा श्री वीरभद्र प्रतापसिह तथा निर्दलीय श्री कृष्ण कुमार बिडला। श्री पशुपतिनाथ शुक्ल जैसे सासद कभी-कभी हिन्दी मे बोलने की कृपा कर देत है। इसके अलावा श्री सुरेश पचौरी और श्री सत्यप्रकाश मालवीय जैसे सासद भी हैं जिन्हे अग्रेजी मे भाषण करने की कला भूल जाने का खतरा लगा करता है इसलिए व कभी-कभी अग्रेजी मे भी बोलते हैं।

लोकसभा मे भी हिन्दी प्रदेशो से स आए अग्रेजी भाषी सासदो की कमी नही है। श्री अजय मुश्रान, बलिराम भगत श्री सलीम शेरवानी तथा जनमोर्चा नेता श्री विश्वनाथ प्रतापसिह ऐसी कुछ नामो मे है। कई हिन्दी-भाषी मन्त्री भी इस सूची मे आते है। जैसे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी, वाणिज्य मन्त्री श्री दिनेशसिह, रक्षामन्त्री श्री कृष्णचन्द पन्त पर्यावरण मन्त्री श्री जियाऊरहमान असारी, ससदीय कार्य मन्त्री श्री हरिकिशनलाल भगत विशेष राज्य मन्त्री, श्री नवटरसिह एव श्री के के तिवारी, विधि राज्यमन्त्री, श्री हसराज भारद्वाज, रेल राज्यमन्त्री, श्री माधवराव सिंधिया, जल भूतल परिवहनमन्त्री श्री राजेश पायलट आदि। गृहमन्त्री श्री बूटासिह का पजाबी भाषी होते हुए भी, अग्रेजी के अलावा हिन्दी बोलन मे शर्म महसूस नही होती। एकाध बार टोके जाने पर उन्हाने कहा कि हिन्दी राष्ट्रभाषा है। मै उसी मे बोलूगा। इनके अलावा श्री गाधी की टीम मे जो अन्य मन्त्री हैं उनमे भी मोतीलाल वोरा और उनकी सहायिका सुश्री सरोज खापर्डे अग्रेजी बोलने का अभ्यास करते रहते हैं। श्री भजनलाल जैसे मजबूर लोग ही 'मातृभाषा' बोलने की तकलीफ गवारा करत हैं।

लेकिन दोनो सदनों मे गैर हिन्दी भाषी प्रदेशो मे आए ऐसी अनेक हैं लगातार या कभी-कभी हिन्दी म बोलते हैं। राज्य म जनता पार्टी के श्री श्री बापू कालदाते भाजपा के श्री प्रमोद महाजन (महाराष्ट्र) तथा शकरसिह बघेला (गुजरात) और तेलुगू देशम के श्री वी सत्यनारायण रेड्डी (आध्र) ऐसे सासद है। श्री कालदाते ने तो हिन्दी के अलावा किसी और भाषा मे न बोलने की प्रतिज्ञा ले रखी है। वह कहते है कि उनकी हिन्दी जितनी टूटी-फूटी है, उतनी ही अग्रेजी भी। लेकिन वे हिन्दी मे ही बोलना पसन्द करत है। श्री महाजन तथा श्री अश्विनी कुमार भी हमेशा हिन्दी मे बोलते हैं—मराठी और गुजराती के पुट के साथ। लोकसभा मे तेलुगू देशम के नेता श्री माधव रेड्डी श्री वी तुलसीराम (आध्र) काग्रेस की श्रीमती ममता बनर्जी (पश्चिमी बगाल) भी हिन्दी मे बोलती हैं।

इस सवाददाता ने कुछ समय पहले राज्यसभा के कुछ उत्तर भारतीय सासदो से टेलीफोन पर बात करके जानना चाहा था कि वे अगरेजी मे हमेशा क्यों बोलते हैं। लेकिन उनकी सफाई जानने से पहले तेलुगू देशम के श्री वी सत्यनारायण रेड्डी का स्पष्टीकरण जान लें कि क्यो वे यदाकदा राज्यसभा में हिन्दी बोलते हैं और क्यो कुछ हिन्दी भाषी सासद अग्रेजी बोलते हैं। वह कहते हैं 'मैं अहिन्दी भाषी होते हुए भी हिन्दी मे इसलिए बोलता हूं कि अग्रेजी को हतोत्साहित किया जाए। आजादी के बाद भारतीय भाषाओ की जो उन्नति होनी चाहिए थी, वह नही हुई। अगर अब भी न हुई तो कब होगी।

मैं हमेशा अग्रेजी मे बोलने वाले हिन्दी भाषी सासदों से कहता रहता हू कि वे हिन्दी मे बोलें। लेकिन वे कहते हैं कि हिन्दी मे बोलने से लोग हमे बुद्धू समझते हैं। मैं कहता हूं कि ऐसा समझते हैं तो समझने दो, मगर अपनी बात अपनी भाषा मे कहो। वे कहते हैं कि हिन्दी मे बोलने से पत्रकार हमारे भाषण को अपने अखबार मे नही छापते। मै कहता हूं कि अव्वल तो ऐसा नही है और अगर वास्तव मे ऐसा है भी तो हमारी बात अखबार मे आए, इसकी इतनी चिन्ता क्यो? अखबार वाले अपने हिसाब से जो महत्व-पूर्ण समझते है, वह छापते हैं। उन्हे उनका काम करने दो। हमे अपनी बात सरकार तक पहुँचानी है ताकि वह अपनी नीतियो पर विचार-पुनर्विचार करे।'

'हम जब वोट जनता से जनता की भाषा मे मागते हैं तो यहा जनता की भाषा क्यों नही बोलते? कभी-कभी तो लगता है, हम हिन्दुस्तानी ही नही, इगलिस्तान की ससद मे बैठे हैं।'

'लेकिन मैं मानता हू कि कुछ दिक्कते हैं। मैंने हिन्दी भाषी सासदो को अपने हाथ मे अग्रेजी की कार्यसूची लेते देखा तो मैंने पूछा कि ऐसा क्यो? उन्होने कहा कि अग्रेजी से जो अनुवाद हिन्दी मे होता है वह इतना कठिन होता है कि समझ मे नही आता। बात ठीक है। गाधी, लोहिया, जयप्रकाश ठीक ही कहते थे कि बात सरल भाषा मे होनी चाहिए।'

अब आनन्द शर्मा। उन्हाने कहा कि अग्रेजी वह इसलिए बोलते हैं कि दक्षिण के लोग उनकी बात को बेहतर ढग से समझ सकें। लेकिन यह पूछने पर कि जब ससद मे साथ साथ अनुवाद की व्यवस्था है तब दक्षिण भारतीयो को अग्रेजी मे अपनी बात समझाने की आतुरता क्यो, तो श्री शर्मा ने कहा 'प्रवाह अग्रेजी मे अधिक आता है। अग्रेजी बोलना सहज लगता है। इसका एक कारण यह भी है कि तमाम पुस्तकें, दस्तावेज और अन्य पठन सामग्री अग्रेजी मे सहज सुलभ है। लेकिन आपने इस महत्वपूर्ण बात की ओर ध्यान दिलाया है इसलिए अब हिन्दी मे भी बोलूगा।'

काग्रेस के ही श्री पवन कुमार बसल कहते हैं कि वे अग्रेजी मे ज्यादा बोलते हैं लेकिन समर्थन हिन्दी का ही करते हैं। वे तो देश से अग्रेजी को हटाने के पक्ष मे हैं। लेकिन अग्रेजी इसलिए बोलते हैं कि अपने को अच्छी तरह अभिव्यक्त कर सके। उन्हें भाषा के मामले मे ससद मे होने वाले झगडे पसन्द नही।

उन्ही की पार्टी के श्री पशुपतिनाथ सुकुल कहते हैं. अनायास ही बहुत सी बाते अगरेजी मे बोलने म आ जाती हैं। इसका कारण तो यह है कि १३ वर्ष तक अखिल भारतीय स्तर पर ट्रेड यूनियन से जुडा रहा। दक्षिण भारत मे जाने पर अग्रेजी बोलनी पडती थी इसलिए अग्रेजी बोलने का अभ्यास हो गया। इसका कारण अग्रेजी मे एम० ए० करना रहा। तीसरा कारण यह है कि अभी हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली पुष्ट नही है। शब्द ढूढने पडते है। याद नही आते। चौथा कारण यह है कि मैं अग्रेजी-हिन्दी की खिचडी नही बनाना चाहता। वैसे मै प्रेमी हिन्दी का ही हूं। हिन्दी के विरोध मे द्रमुक सासद श्री माहिला मारन निजी विधेयक लए थे तो मैं हिन्दी के पक्ष मे ही बोला था।

काग्रेस के ही श्री वीरभद्र प्रताप सिह भी कहते हैं कि वह खिचडी बनाने के पक्ष मे नही, इसलिए अगरेजी मे बोलते हैं। वह कहते हैं. 'एक कारण यह भी है कि मेरी शिक्षा-दीक्षा उर्दू मे हुई। और मैं अक्सर कानूनी विषयो पर बोलता हू। कानून मे अगरेजी के समानार्थक उर्दू शब्द तो मुझे मिल जाते। अभी हिन्दी के ये शब्द सीख रहा हूं। फिर हिन्दी के साथ

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्यसमाज और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

—डा० घनपति पाण्डेय, भागलपुर

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के जन्म और विकास में जिन दो संस्थाओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है वे हैं आर्य समाज और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस। पहली संस्था की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने १८७५ ई० में की थी और दूसरी संस्था की स्थापना आक्टेवियस ह्यूम ने १८८५ ई० में की थी। स्पष्ट है कि आर्य समाज की स्थापना के ठीक एक दशक बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई थी यद्यपि दोनों संस्थाओं ने पवित्र उद्देश्य रखते हुए तन-मन-धन से भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन की आग को तीव्र तथा प्रखर किया और अन्ततोगत्वा कांग्रेस के नेतृत्व में देश में स्वतन्त्रता का नया विहान आया, किन्तु निष्पक्ष इतिहासकार इस तथ्य को अक्षरशः स्वीकार करेगा कि आन्दोलन को गतिशील बनाने में कांग्रेस की अपेक्षा आर्य समाज ने अधिक भूमिका निभाई, अधिक महत्त्वपूर्ण देन से उसे अनुप्राणित किया। यद्यपि आर्य समाज ने खुलकर राजनीतिक संगठन का रूप धारण न किया, किन्तु उसने कांग्रेस जैसी राष्ट्रव्यापी और राष्ट्रवादी राजनैतिक संस्था के निर्माण की पृष्ठभूमि का काम किया और कांग्रेस के नेतृत्व में चलने वाले राष्ट्रीय आन्दोलन के मार्ग को प्रशस्त किया।

—उद्देश्य, कार्यक्षेत्र और कार्यक्रम के बिन्दुओं पर आर्य समाज कांग्रेस की तुलना में अधिक व्यापक तथा उपयोगी सिद्ध हुआ। आर्य समाज ने मौलिक रूप में देश में संघर्ष का अखाड़ा तैयार किया। उसने भारत में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध शंखनाद करके एक ऐसे नवीन समाज के निर्माण का आन्दोलन चलाया जिसमें अमीर-गरीब ऊंच-नीच, ब्राह्मण-शूद्र सभी समान धरातल पर खड़े हो गए। उसने भारतीय धर्म की रक्षा के लिए दुर्भेद्य कवच का निर्माण किया जिसे इस्लाम और ईसाई धर्म के तीक्ष्ण बाण बिंध न सके। स्वधर्म, स्वभाषा और भारतीय साहित्य के गौरव की याद दिलाकर समस्त आर्यावर्त में सांस्कृतिक एकता का ताना बाना बुना। आर्य समाज की सामाजिक समानता, धार्मिक सरलता एवं सांस्कृतिक एकता की कसौटियों पर उतरा राजनीतिक जागरण मन और मस्तिष्क की रागात्मक और बौद्धिक प्रवृत्तियों को कुरेद डाला। आन्दोलनकारी आर्य समाज के द्वार की धूलि का तिलक लगाकर संघर्ष के अखाड़े में पिल पड़े। स्वतन्त्रता की गेंद आर्य समाज ने ही उछाली, कांग्रेस ने भले ही गोल कर दिया।

—पंजाब केसरी लाला लाजपत राय देश में सम्पूजित सर्वमान्य नेता थे। वे आर्य समाज के प्रबल स्तम्भ तो थे ही, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भी सक्रिय कार्यकर्ता थे। उन्होंने दोनों संस्थाओं की सदस्यता ग्रहण की थी। अगर आर्य समाज उनका शरीर था तो कांग्रेस उनकी आत्मा थी। दोनों संस्थाओं में उनकी असीम श्रद्धा और अटूट भक्ति थी। इस नेता ने भी कांग्रेस की तुलना में आर्य समाज को अधिक उपयोगी, अधिक संगठित, अधिक कारगर और अधिक व्यापक माना है। उन्होंने स्पष्ट रूप से इन दोनों संस्थाओं की तुलनात्मक समीक्षा की (देखें 'द हिन्दुस्तान, ९ अक्तूबर १६०८ अथवा पंजाब नेटिव न्यूजपेपर्स पर रिपोर्ट, द्वितीय भाग, जून दिसम्बर १६०८, पृ० ६२०-२१) और कहा कि आर्य समाज का क्षेत्र कांग्रेस के क्षेत्र से अधिक विस्तृत है और इसलिए आर्य समाज में रहकर कोई भी व्यक्ति (एक कांग्रेसी से) अधिक सेवा कार्य कर सकता है। अतः सच्चे देशभक्त को आर्य समाज में रहकर सेवा करनी चाहिए।' उन्होंने आगे लिखा कि दोनों संस्थाओं के उद्देश्यों और कार्यक्रमों में जमीन-आसमान का फर्क है। 'कांग्रेस सरकार से केवल अधिकारों की मांग करती है जबकि आर्य समाज नागरिकों को कर्त्तव्य का पाठ पढ़ाता है। कर्त्तव्य अधिकार से अधिक श्रेय और प्रेय होता है। कर्त्तव्य शील व्यक्ति अपने अधिकारों को स्वयं पहचान लेता है और तब वह उसके लिए संघर्ष तक कर सकता है।' 'कांग्रेस भारतीयों को राजनीतिक विषयों से सम्बन्धित ज्ञान की जानकारी कराती थी जबकि आर्य समाज उन्हें अधिकार पाने के लायक बनाता था।' 'कांग्रेस सरकार में दोष ढूंढती थी वहां आर्य समाज व्यक्ति व्यक्ति में दोष ढूंढता था।' व्यक्ति अपने दोषों को दूर कर सरकार को अच्छा बना सकता था।' 'कांग्रेस ने जहां सरकार को उदार बनने का परामर्श दिया, आर्य समाज ने वहां व्यक्ति के चरित्र को तराशा।' 'कांग्रेस शासक और शासित दोनों के पारस्परिक व्यवहार में परिवर्तन लाकर उसमें मधुरिमा भरना चाहती थी, आर्य समाज व्यक्ति की प्रगति चाहता था और इसके लिए प्रारूप और परियोजना का निर्माण करता था।' 'कांग्रेस का एक ही ध्येय था। स्वतन्त्रता की प्राप्ति करना, आर्य समाज का उद्देश्य था व्यक्ति को यह बताना कि वह स्वतन्त्र पैदा हुआ है और उसे 'स्वराज तथा 'स्वतन्त्रता' का सही अर्थ समझना चाहिए।'

कथित सन्दर्भ के आलोक में यह बात आसानी से समझी जा सकती है कि कांग्रेस के लोकप्रिय कार्यक्रमों एवं आन्दोलनों का पृष्ठाधार आर्य समाज ही था और आर्य समाज विभिन्न बिन्दुओं पर जनमानस को क्रान्तिकारी बनाने को स्वतन्त्र था। इसके उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों में नैतिकता थी, खुलापन था।

—अस्तित्व में आने के उपरांत कांग्रेस के रंगमंच से जो भी कार्यक्रम बने और उद्देश्य निर्धारित हुए, वे वस्तुतः आर्य समाज से अनुप्राणित थे। यहां हम ऐसे तीन बिन्दुओं का विवेचन करेंगे जिन्हें कांग्रेस ने आर्य समाज से ही अनुप्राणित होकर अपने आंदोलन का मुद्दा बनाया।

आर्य समाज ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 'स्वराज' शब्द दिया। क्रान्तिदूत महर्षि दयानन्द ने एक महान राजनीतिक विचारक की तरह 'स्वराज' और 'सुराज' शब्दों की व्याख्या की और स्वराज को सुराज से बेहतर बतलाया। स्मरण रहे कि यह तुलना, यह व्याख्या तब की गई थी जब कांग्रेस की बुनियाद नहीं पड़ी थी। दयानन्द के इस विचार को जन मानस तक पहुँचाने के लिए आर्य समाजियों ने आन्दोलन का भी सूत्रपात किया। डी० ए० वी० कालेज, लाहौर के एक आर्यसमाजी छात्र ने मई ६, १६०७ के आर्य गजट' (लाहौर) में लिखा. 'स्वतन्त्रता त्याग से मिलती है और त्याग की भावना से ही देश और धर्म प्रगति करते हैं।' लुधियाना के एक चिकित्सक हरिनाथ मुखर्जी ने 'स्वदेशी धर्म' की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि 'देश के लोगों को स्वराज हासिल करने के लिए प्रयास करना चाहिए।' महात्मा हंसराज ने दयानन्द की शहादत की याद दिलायी और कहा कि लोगों को अपने देश तथा धर्म के लिए (दयानन्द की तरह) शहीद हो जाना चाहिए (देखें होम पालिटिकल डिपार्टमेंट प्रोसिडिंग्स, पार्ट-बी, अगस्त, १६०७ संख्या १३५ ४५)। सियालकोट के रामचन्द, होशियारपुर के देवीचन्द, लाहौर के प्रो० रोशनलाल मूलचन्द, लाहौर के अधिवक्ता राय

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाज और कांग्रेस

(पृष्ठ ५ का शेष)

आदि अनेक आर्यसमाजियो ने स्वतन्त्रता का प्रचार तब किया था जब दादा-भाई नौरोजी ने इसे ऐलान नही किया था। कांग्रेस के आन्दोलन के पूर्व ही आर्य समाजियो ने स्वराज, स्वदेशी वस्तुओ के प्रयोग, बलिदान आदि की भावना को जन-जन तक पहुँचा दिया था। आर्य समाज का यह स्वराज १९०६-०७ मे दादाभाई नौरोजी के कण्ठ से पहली बार निकला और कांग्रेस के उग्रवादी नेता तथा राष्ट्रीय आदोलन के युधिष्ठिर बाल गगाधर लोकमान्य तिलक ने नारा दिया—'स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।' उन्नायक दयानन्द ने स्वतन्त्रता का बीज बोया, कांग्रेस ने उसे पाल-पोसकर बडा किया और भारतीय फल चखे। निश्चित रूप से कांग्रेस के राजनीतिक पृष्ठाधार आर्य समाज के राजनीतिक विचार ही बने।

कांग्रेस ने आर्य समाज के सामाजिक कार्यक्रमो को अपनाया। सच पूछा जाय तो इन्ही कार्यक्रमो के कारण कांग्रेस भारत के सुदूर कोने मे बसे गावो के लोगो की कांग्रेस बन सकी। सामाजिक सुधार के तत्वो को अपनाकर ही कांग्रेस का आन्दोलन जन-आन्दोलन का रूप ग्रहण किया और कांग्रेस को अपने उद्देश्यो तथा विकास मे सफलता मिली। आर्य समाज जन कल्याण के लिए बना था और जन-कल्याण तभी हो सकता था जब जन समुदाय को विकृत करने वाले तत्वो का विनाश कर दिया जाता। देश की सामाजिक एकता को जाति भेद विनष्ट कर रहा था। अस्पृश्यता की समस्या देश के समाज को खण्ड खण्ड कर रही थी और अछूत कहे जाने वाले लोग इस्लाम और क्रिश्चियनटी को स्वीकार कर अभारतीय होते जा रहे थे। बाल-विवाह और विधवा समस्या अन्य सामाजिक कुरीतिया थी। महिलाओ की दयनीय स्थिति के कारण आधा आदोलन समाप्त हो गया था। आर्य समाज ने इन सारी समस्याओ को दूर कर एक नवीन समाज की पुनर्रचना के लिए आन्दोलन प्रारम्भ किया। जातिवाद की कटु आलोचना की गयी, शुद्धि आन्दोलन का सूत्रपात किया गया, विधवाओ के जीवन मे चार चाद लगाने के लिए अनेकानेक आश्रम खोले गए, राष्ट्रीय शिक्षा, स्वभाषा और आर्य धर्म का प्रचार-प्रसार किया गया। इस प्रकार सामाजिक एकता की पृष्ठभूमि का निर्माण कर राष्ट्रीय भावना के निःसरण का मार्ग बनाया गया। आर्यसमाज के नेताओ की यह यथार्थ धारणा थी कि सामाजिक सुधार के बिना राजनीतिक जागरण सम्भव नही है। राजनीतिक जागरण के बिना स्वतन्त्रता के लिए सघर्ष नही किया जा सकता है और सघर्ष के बिना स्वराज अप्राप्य है।

अपने सस्थापन के साथ ही कांग्रेस ने सामाजिक रचना के इन तत्वो के महत्व को समझा और अपने कार्यक्रमो मे सामाजिक उत्थान के बिन्दुओ को समाहित किया। कांग्रेस ने अपने सारे अधिवेशनो (१८८५ १९१५ तक के) मे सामाजिक तत्वो पर वाद-विवाद की। १९२० के बाद तो महात्मा गाधी ने सामाजिक प्रगति के लिए खुलकर काम करना प्रारम्भ किया। कांग्रेस के अन्तिम चरण मे ही यह मत प्रचारित किया कि नव भारत के निर्माण हेतु प्रत्येक दिशा मे प्रगति का द्वार खोलना आवश्यक है। जब तक भारत का आध्यात्मिक नैतिक, सामाजिक, औद्योगिक एव राजनीतिक विकास नही होगा तब तक उसका उत्थान नही हो सकता। डब्ल्यु० सी० बनर्जी, आनन्द चार्लू बदरुद्दीन तैयबजी, अलफोड वेब रहीमतुल्ला सयानी, दादाभाई नौरोजी आदि सभी के सभी कांग्रेस के अध्यक्ष सामाजिक सुधार के कार्यक्रमो के पक्ष मे सम्भाषण किए और इस प्रकार उन्होने दयानन्द सरस्वती, महात्मा हसराज पण्डित लेखराम, लाला लाजपतराय आदि के विचारो का प्रतिनिधित्व किया।

अन्त मे हम यह कहने मे तनिक भी नही सकुचित कि आर्य समाज के नेता और सदस्य प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप मे कांग्रेस के सदस्य बने और उसके आन्दोलन को सफल बनाने मे शहीद तक हुए। लाला लाजपत राय की सेवाओ से कांग्रेस को जनप्रिय बनने मे सहयोग मिला। स्वामी श्रद्धानन्द की अमूल्य देन को कांग्रेस किस प्रकार भूल सकती है? हमारा यहा उद्देश्य कांग्रेस मे शामिल हुए आर्य समाजी नेताओ के कार्यो का उल्लेख करना नही है। हम इतने से ही सन्तुष्ट है कि अनेक आर्य समाजी नेताओ के सहयोग कांग्रेस को मिले और कांग्रेस सशक्त हो चली।

दहेज

लाखो घर बरबाद हो गए इस दहेज की बोली मे।
अर्थी चढी हजारो कन्या बैठ न पाई डोली मे॥
कितनो ने अपनी कन्या के पीले हाथ कराने मे।
कहा २ मस्तक टेके, आता शर्म बताने मे॥
गिरवी पडे है घर दुकान सब गहने खेत छुडा नही पाए।
रहन-सहन गिर गया हमारा क्या २ व्यथा सुनाए।
लडके वालो अब समझो अपने लडको की शादी मे।
वर्ना ऐसाही होगा सोचो तुम्हारी लडकीकी शादी मे।
लडके वाले रहते है धन-दहेज की आशा मे॥
हार गए नेता समझाकर मानवता की भाषा मे॥
कथन हमारा सत्य ही मानो रहे न पैसा झोली मे।
अर्थी चढी हजारो कन्या बैठ पाई डोली मे॥
लाखो घर बरबाद हो गए इस दहेज की बोली मे॥

—गगाशरण आर्य
शाहबाद मोहम्मदपुर

नाथद्वारा मन्दिर एवं हरिजन प्रवेश

लेखक--डा० योगेन्द्र कुमार

(प्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर)

नाथद्वारा मन्दिर हल्दी घाटी के मैदान मे जहा महाराणा का अकबर की सेना के साथ युद्ध हुआ है उसी के समीप स्थित है। इस मन्दिर का भी एक इतिहास है। सर्वप्रथम इस मन्दिर का निर्माण गोवर्धन पर्वत पर हुआ था। इसके सर्वप्रथम संस्थापक श्री बल्लभाचार्य जी हैं। बल्लभाचार्य ने ही कृष्ण सम्प्रदाय को जन्म दिया था। इन्होने ही कृष्ण के आठ सखाओ की कल्पना करके अष्ट छाप या पुष्टि मार्ग की स्थापना की थी। दार्शनिक दृष्टि से श्री बल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैत की स्थापना की थी। गीता पर इन्होने श्रीभाष्य नाम से भाष्य लिखा था जो अधूरा है।

नाथद्वारा मन्दिर मे श्री कृष्ण की मूर्ति है। गोवर्धन पर्वत से यह मूर्ति उदयपुर के समीप स्थापित की गई थी। विधर्मियो के आक्रमण से बचाने के लिये ऐसा किया गया था। उदयपुर मे इसे सरक्षण की अधिक आशा थी हल्दी घाटी के युद्ध के समय मे भी इस मन्दिर को कोई क्षति नही पहुँचाई गई थी।

कुछ वर्ष पहले राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा मे जब उदयपुर मे शताब्दी आयोजित की थी तब मैं इस नाथद्वारा मन्दिर को देखने के लिये गया था। उस समय मैंने वहा के एक पुजारी से बातचीत के समय यह पूछा कि क्या इस मन्दिर मे हरिजन भी प्रवेश कर सकता है ? उस समय उसने उत्तर दिया था कि धोखे से चाहे कोई भी इस मन्दिर मे प्रवेश कर लेवे किन्तु यदि कोई यह कह कर इसमे प्रवेश करेगा कि मैं हरिजन हू तो हम उसको सिर तोड देंगे। इससे मुझे पता चला कि उस मन्दिर मे हरिजन प्रवेश निषिद्ध है। पुरी के शकराचार्य निरजनदेव को पता नही ऐसा ब्यान देने की क्या आवश्यकता पडी थी। वस्तुत यह शकराचार्य रूढीवादी पौराणिक, राष्ट्र विरोधी हटी एव अव्यवहारिक है। कभी कहता है कि बाल विवाह होना चाहिए। कभी, कहता है वेद मे सती प्रथा है, कभी कहता है कि जाति जन्म से ही है। आर० एस० एस० को तो इन्होने लिखा था कि ये हिन्दू ही नही है। जम्मू मे एकबार शकराचार्य ने हरिजन स्नेह सम्मेलन मे हरिजनो के हाथ का लड्डू भी नही खाया था वह किसी अन्य को दे दिया था। इस ढाग का जनता पर बुरा असर पडा था।

बात यह है कि शकराचार्य हो या बल्लभाचार्य इनके मत और दर्शन अयथार्थवादी तथा अव्यवहारिक है इनके अनुयायी मानते कुछ है और करते उसके विपरीत है - अर्थात् हाथी के दात खान के और दिखान के और हैं।

शकराचार्य के अद्वैतवाद मे सबको ब्रह्म का स्वरूप माना जाता है। फिर ब्राह्मण और हरिजन म दीवार क्यो ? जब ये दोनो ही ब्रह्म है तो ब्रह्म से घृणा क्यो करता है। इनके पास कोई जबाब ही नही है। यह एक विचित्र विडम्बना है कि जितने भी अद्वैत दर्शन है चाहे वह शिवाद्वैत है चाहे शकर-अद्वैत है या शुद्धाद्वैत सभी मे सब को एक ब्रह्म का रूप माना गया है। परन्तु व्यवहार मे जितनी घृणा छोटी जातियो से ये लोग करते हैं उतनी अन्य नही इससे ही इनके दर्शन का तथा इनके अनुयायियो का खोखलापन मालूम हो जाता है। ये दर्शन के नाम पर कल्पना और व्यवहार मे ढोग और धोखा अपना रहे हैं। बल्लभाचार्य से नाथद्वारा मन्दिर बना बाद इसके पुन विट्ठलनाथ ने इनकी महन्ती की कुल परम्परा से इसके महन्त बनते चले आ रहे हैं। श्री बल्लभाचार्य तो माया की भी आवश्यकता नहीं मानते। ये शकर के अद्वैत से एक कदम और आगे है उनकी मान्यता है कि ब्रह्म को माया की कोई आवश्यकता नही, वह स्वय ससार के रूप मे विद्यमान है वह सृष्टि का स्वय उपादान कारण है और स्वय निमित्त-कारण भी सृष्टि ब्रह्म का कार्य है। अर्थात् सब कुछ ब्रह्म का ही रूप है। जब इनकी ऐसी मान्यता है तो हरिजन ब्रह्म के रूप क्यो नही ?

वस्तुत गीता मे कहा है कि —

विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणि गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिता समदर्शिनाः ॥

अर्थात् विद्या पढे हुए ब्रह्म मे, गौ और हाथी मे कुत्ते और चाण्डाल में पण्डित समदर्शी हो जाता है अर्थात् सब मे एक जैसी आत्मा आत्माओ के के दर्शन करने लगता है। इसका अर्थापत्ति से दूसरा अर्थ यह भी निकलता है कि जो पण्डित या ज्ञानी नहीं है वह मूर्ख कोटि मे आता है और वह इस प्रकार के भेद भाव घृणा, नीच ऊच के चक्कर न पडा ही रहता है। इस दृष्टि से शकराचार्य और बल्लभाचार्य के शिष्य मूर्ख परम्परा मे ही चल रहे हैं।

यही मूर्खता शकराचार्य पद को लजाने वाले निरजनदेव तीर्थ ने भी अपना रखी है वे अभी तक सब को अपने सिद्धान्त के अनुसार ब्रह्म नहीं मानते। महान अविद्या मे पडे हुए हैं। अविद्या के अन्धकार मे पडे हुए और स्वय को पण्डित मानने वाले ऐसे ही है जैसे कोई अन्धा अन्धे को रास्ता दिखाने का दु साहस करता है।

पुस्तक समीक्षा

अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन

लेखक—डा० कपिलदेव द्विवेदी,

कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

प्रकाशक—विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्, ज्ञानपुर (वाराणसी)

डिमाई--अठपेजी, पृष्ठ सख्या--५१२+१६

मूल्य—१२५) रुपए

वेद मानव जाति के लिए प्रकाशस्तम्भ हैं। वेदो का ज्ञान मानव संस्कृति की आधार शिला है। वेदो मे अनन्त ज्ञान निहित है। वेदो के अध्ययन से अनन्त ज्ञान और विज्ञान का स्रोत ज्ञात होता है। प्रस्तुत शोध-ग्रन्थ मे डा० द्विवेदी ने अथर्ववेद का सागोपाग विवेचन, विश्लेषण और समीक्षण किया है। प्रयत्न किया है कि अथर्ववेद से सम्बद्ध कोई तत्व छूटने न पावे। इसमे वेदो का महत्व, अथर्ववेद का महत्व और उससे सम्बद्ध साहित्य, भौगोलिक स्थिति, सामाजिक जीवन, आर्थिक स्थिति, शिक्षा और विविध विद्याए, ज्योतिष, विज्ञान, आयुर्वेद, धर्म, सस्कार, आचार शिक्षा, नीति शिक्षा, अभिचार कर्म दर्शन, ब्रह्म, त्रैतवाद, मनोविज्ञान, राजनीति और शासन प्रणाली आदि शीर्षको के अन्तर्गत समस्त सामग्री दी गई है, उपनिषदो और दर्शनो मे वर्णित अध्यात्म की आधारशिला अथर्ववेद है। आयुर्वेद का आदिस्रोत अथर्ववेद को ही माना गया है। इस सर्वांगीण विवेचन के लिए लेखक धन्यवाद के पात्र हैं।

पुस्तक का कागज, छपाई और कवर- उत्तम एव आकर्षक हैं। यह पुस्तक प्रत्येक पुस्तकालय और आर्य परिवार के लिए सग्रहणीय है।

—श्री सच्चिदानन्द शास्त्री

मुक्ति के क्या-क्या साधन हैं

सत्यार्थ प्रकाश से

विशेष उपाय ये हैं —जो मुक्ति चाहे वह 'जीवनमुक्त" अर्थात् जिन मिथ्याभाषणादि पाप कर्मों का फल दुःख है, उनको छोड सुखरूप फल को देने वाले सत्यभाषणादि धर्माचरण अवश्य करे। जो कोई दुःख को छुडाना और सुखको प्राप्त होना चाहे, वह अधर्म को छोड धर्म अवश्य करे। क्योकि दुःख का पापाचरण और सुख का धर्माचरण का मूल कारण है।

प्रथमसाधन—सत्पुरुषो के सगसे "विवेक" अर्थात् सत्य-असत्य, धर्म अधर्म कर्त्तव्य अकर्त्तव्य का निश्चय अवश्य करे, पृथक पृथक जाने और शरीर अर्थात् जीव पचकोषा का विवेचन करे। 'एक अन्नमय" जो त्वचा से लेकर अस्थिपर्यन्त का समुदाय पृथिवीमय है। दूसरा—"प्राणमय" जिसमे 'प्राण" अर्थात् जो भीतर से बाहर जाता 'अपान" जो बाहर से भीतर आता, समान जो नाभिस्थ होकर सर्वत्र शरीर से रस पहुँचाता, 'उदान' जिससे कण्ठस्थ अन्न पान खेचा जाता और बल-पराक्रम होता है, 'व्यान' जिससे सब शरीर मे चेष्टा आदि कर्म जीवन/करता है। तीसरा—"मनोमय' जिसमे मन के साथ अहकार, वाक्, पाद, पाणि, पायु और उपस्थ पाच कर्म इन्द्रिया हैं। चौथा—"विज्ञानमय" जिसमे बुद्धि, चित्त, श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा और नासिका ये पाच ज्ञान इन्द्रिया जिनसे जीव ज्ञानादि व्यवहार करता है। पाचवा—आनन्दमय कोश जिसमे प्रीति-प्रसन्नता, न्यून आनन्द अधिकानन्द आनन्द और आधार कारणरूप प्रकृति है। ये पाच 'कोष" कहाते हैं। इन्ही से जीव सब, प्रकार के कर्म, उपासना और ज्ञानादि व्यवहारा को करता है तीन अवस्था—एक "जागृत" दूसरी स्वप्न और तीसरी सुषुप्त अवस्था कहाते है। तीन शरीर हैं— 'एक स्थूल" जो यह दीखता है। दूसरा पाच प्राण पाच ज्ञानेन्द्रिय, पाच सूक्ष्म भूत और मन तथा बुद्धि इन सत्तरह तत्वो का समुदाय सूक्ष्मशरीर कहाता है। यह सूक्ष्म शरीर जन्म मरणादि मे भी जीव के साथ रहता है। इसके दो भेद हैं—एक भौतिक अर्थात् जो सूक्ष्म भूतो के अशो से बना है। दूसरा "स्वाभाविक' जो जीव के स्वाभाविक गुण रूप हैं। यह दूसरा "अभौतिक" शरीर मुक्ति मे रहता है। इसी से जीव मुक्ति मे सुख को भोगता है। तीसरा कारण—जिसमे सुषुप्ति अर्थात् गाढ निद्रा होती है, वह प्रकृति रूप होने से सर्वत्र विभु और सब जीवो के लिए एक है। चौथा शरीर वह कहाता है—जिसमे समाधि से परमात्मा के आनन्दस्वरूप मे मग्न जीव होते हैं। इसी समाधि सस्कारजन्य शुद्ध शरीर का पराक्रम मुक्ति मे भी यथावत् सहायक रहता है। इन सब कोष, अवस्थाओ से जीव पृथक है, क्योकि यह सब को विदित है कि अवस्थाओ से जीव पृथक है। क्योंकि जब मृत्यु होता है तब सब कोई कहते हैं कि जीव निकल गया। यही जीव सब प्रेरक, सबका धर्ता, साक्षी, कर्त्ता, भोगता कहाता है। जो कोई ऐसा कहे कि जीव कर्त्ता भोक्ता नही तो उसको जानो कि वह अज्ञानी, अविवेकी है। क्योकि बिना जीव के जो ये सब जड पदार्थ हैं, इनको सुख-दुःख का भोग वा पाप पुण्य कर्तृत्व कभी नही हो सकता। हा, इनके सम्बन्ध से जीव पाप-पुण्या का कर्त्ता और सुख-दुःखो का भोक्ता है। जब इन्द्रिया और आत्मा मन के साथ सयुक्त होकर प्राणो को प्रेरणा करके अच्छे व बुरे कर्मों में लगाता है तभी वह बहिर्मुख हो जाता है, उसी समय भीतर से आनन्द, उत्साह, निर्भयता और बुरे कर्मो मे, भय शका, लज्जा उत्पन्न होती हो, वह अन्तर्यामी परमात्मा की शिक्षा है। जो कोई इस शिक्षा के अनुकूल वर्त्तता है, वही मुक्तिजन्य सुख को प्राप्त होता है। और जो विपरीत वर्त्तता है वह बन्धजन्य दुःख भोगता है।

—पुष्करलाल आर्य, आर्य निवास,
१०७ हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी (हरियाणा)

आर्य प्रतिनिधि सभा यू० के० और लन्दन आर्य समाज के प्रधान श्री एस० एन० भारद्वाज अस्वस्थ

लन्दन आर्य समाज के प्रधान श्री सुरेन्द्रनाथ जी भारद्वाज की अस्वस्थता का समाचार सार्वदेशिक सभा को उनके निम्न पत्र से मालूम हुआ है, सार्वदेशिक सभा तथा पूरा आर्य जगत् उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता है—श्री भारद्वाज जी का पत्र निम्न प्रकार है —

परम आदरणीय श्री स्वामी जी,

सादर नमस्ते।

आर्य समाज के उज्ज्वल इतिहास मे जिन अमर नेताओ ने आर्य समाज का ओजस्वी नेतृत्व किया है आप उसी अद्वितीय परम्परा मे आते है। निरन्तर सक्रिय रूप मे निर्भय और निष्ठापूर्ण ईश्वरीय कार्य को करते जाना महाकर्मयोगी से ही सम्भव हुआ करता है। हमारा देश और राष्ट्र जिस विकट और भयानक समय से गुजर रहा है ऐसे हालात मे आपका नेतृत्व हम सब के लिए एक बडा वरदान है।

कई महीनो से आपके साथ पत्र व्यवहार बन्द रहा है। इसका कारण मेरी अस्वस्थता रहा है। चार मई को मैं लन्दन के अस्पताल मे दाखिल हुआ। अनेको प्रकार के एक्सरे और अन्य प्रकार के परीक्षणो के बाद डाक्टरो का निर्णय था कि मेरे पेट की बडी अन्तडी मे २ रसोली है। १८ मई को आपरेशन करके बडी अंतडी का एक काफी सा हिस्सा काट दिया। आपरेशन बडा था अस्पताल मे एक महीना तीन दिन रखा गया। कुछ दिन पहले घर वापस आया हूँ। १३ स्टोन से ९ स्टोन वजन रह गया आज १० स्टोन हो गया है। कुछ महीने घर मे आराम करने के बाद बाहर घूमना फिरना सभव हो सकेगा। यह तो अपनी बात हुई।

सार्वदेशिक साप्ताहिक मे एक शोक दायक समाचार पढा। हमारे आर्य जगत् की एक प्रमुख कार्यकर्त्री श्रीमती सत्यवती शालवाले का निधन आर्य समाज के आन्दोलन की एक बडा क्षति है। आर्य समाज के कई आन्दोलनो और सत्याग्रहो मे स्वर्गीया बहिन जी श्रीमती सत्यवती शालवाले ने भाग लिया। अनेको आर्य बन्धुओ के लिए उनकी तपस्या प्रेरणादायक रहती आई है। ईश्वर से प्रार्थना है कि ऐसी महिलाए हमारे देश में जन्म लेती रहे। आर्य समाज लन्दन और आर्य प्रतिनिधि सभा यू० के० की ओर से मैं माननीया बहिन जी की स्मृति मे अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ। परमपिता परमात्मा उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके परिवार को शान्ति और धैर्य दे जिससे वे सभी इस शोक और व्यथा को सहन कर सके। श्री ओकारनाथ, उनकी बहनो और अन्य सभी निकट सम्बन्धी वर्ग के लिए हमारी सहानुभूति और सवेदना पहुँचाने की कृपा करे।

—सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज
आर्य समाज लन्दन
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा यू के

आर्य भारत के मूल निवासी थे

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ० प्र०)

२४ जौलाई के सार्वदेशिक के अंक में उपयुक्त शीर्षक पृष्ठ ३ पर एक लेख श्री आचार्य ब्रह्मानन्द द्विवेदी का प्रकाशित हुआ है। इस लेख में २६ अप्रैल के नव भारत टाइम्स दैनिक में छपे आर्य काला सागर से आये थे शीर्षक वाले लेख का खण्डन किया गया है। परन्तु विचित्र बात यह है कि लेखक महोदय उपयुक्त विचार का खण्डन करते करते स्वयं भी अन्य दो भ्रान्तियों की स्थापना कर बैठे हैं।

मुझे इस बात से बड़ा कष्ट होता है कि जब किसी भ्रान्त मान्यता का खण्डन करते-करते लेखक उस सन्दर्भ में अन्य भ्रान्त विचारों की स्थापना कर बैठता है। इससे भी बढ़कर मानसिक पीड़ा तब होती है जब ऐसा लेख किसी आर्य पत्र में प्रकाशित होता है और भी आर्यों की शिरोमणि सभा के मुख पत्र में छपे यह तो अतीव कष्ट दायक होता है।

किसी भ्रान्त मान्यता का खण्डन करते समय लेखक को यह ध्यान रखना चाहिये कि कहीं वह स्वयं तो किसी भ्रान्ति में नहीं फंसा है अथवा किसी अन्य लेखक के जिस उद्धरण को वह अपने पक्ष में प्रस्तुत कर रहा है उसमें कुछ ऐसा तो नहीं है जो उद्धरित होकर लेखक के दृष्टिकोण के विपरीत प्रभाव डाले। आर्य पत्रों के सम्पादकों से मेरा नम्र निवेदन है कि वह तो ऐसे लेख को संशोधित कर प्रकाशित करें या कम से कम लेख के भ्रान्त विचारों पर अपनी असहमति की टिप्पणी उस लेख के साथ ही अवश्य प्रकाशित करा दिया करें।

उपयुक्त लेख में लिखा गया कि ऋग्वेद प्राप्त भौगोलिक संकेत यह बताते हैं कि आर्य मूलतः पंजाब के आसपास के रहने वाले थे। श्री द्विवेदी जी आर्यों के विदेश से आने का खण्डन करते करते ऋग्वेद को भूगोल का पुस्तक या कम से कम ऋग्वेद में भौगोलिक वर्णन सिद्ध कर बैठे।

मेरा यह सुनिश्चित विचार है कि न तो वेद भौगोलिक ग्रन्थ हैं और न उनमें कहीं किसी स्थान का भौगोलिक वर्णन ही है। ऋग्वेद तो वेद का ज्ञान-काण्ड है उस ज्ञान का काण्ड जिसका सम्बन्ध शाश्वत सिद्धान्तों से है किसी स्थान विशेष अथवा व्यक्ति विशेष से नहीं।

दूसरी भ्रान्ति इस लेख में यह है कि ऋग्वेद में जिन दास दस्यु एवं असुर जैसे नामों का उल्लेख है वे अनार्य मूलक अर्थात् आदिम जातियों के लिये प्रयुक्त किये गये हैं। भले ही द्विवेदी जी ने यह उद्धरण पाश्चात्य विद्वान म्यूर द्वारा लिखित 'ओरिजिनल संस्कृत टैक्स्ट' वाल्यूम द्वितीय से दिया है किन्तु यह वेदों में इतिहास तो सिद्ध करता है। किसी जाति का उल्लेख तो मानवी इतिहास होता है और यह वर्णन है आदिम जातियों के इतिहास का जो यह सिद्ध करता है कि वेदों की उत्पत्ति से पहले भी संसार बसा हुआ था।

एक प्रश्न यह है कि प्रस्तुत उपयुक्त सन्दर्भ में आदिम जातियों से भारत की वह जाति मानी जाय जो आजकल आदिवासियों के नाम से जानी जाती हैं अथवा संसार में विविध स्थानों और देशों में बसे हुए लोग ?

जैसे भी माना जाय अनेक दशा में आर्यों और उनके मान्य अपौरुषेय धर्मग्रन्थ वेद से पहले अन्य जातियों के भूतल पर निवास की मान्यता मिलती है जब कि वैदिक दृष्टिकोण से यह नितान्त भ्रान्त तथा मिथ्या मान्यता है। आशा है पाठकगण के मन में उक्त लेख को पढ़कर जो भ्रान्ति हुई है उनपर इन पंक्तियों में उनकी समीक्षा पढ़कर वह दूर हो जायेगी तथा उक्त लेख के लेखक श्री ब्रह्मानन्द जी द्विवेदी भी अपने उक्त लेख के इन दोनों सन्दर्भों पर पुनर्विचार कर सत्य को स्वीकार करेंगे। अलमति विस्तरेण।

स्व० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री के प्रति मारीशस सभा की श्रद्धांजलि

आर्य सभा मोरिशस के तत्वावधान में आयोजित यह महती सर्वसाधारण सभा विश्वविख्यात आर्य विद्वान आचार्य श्री वैद्यनाथ जी शास्त्री के असामयिक निधन पर सम्वेदना प्रकट करती है।

यह सभा दुःख से यह अनुभव करती है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत चल रहे वैदिक अनुसन्धान कार्य को आचार्य जी जिस व्यवस्थित ढंग से चला रहे थे उनके चल बसने से बड़ी भारी क्षति पहुँची है। आर्य जगत को भी क्षति हुई है। किन्तु संसार भर के वैदिक ज्ञान के मुमुक्षुओं को भी वैदिक अमृत पान से वञ्चित होना पड़ेगा।

आचार्य जी सच्चे वेदज्ञ थे। विभिन्न धर्मों के ज्ञान भण्डार थे। सार्वदेशिक सभा के धर्माधिकारी पद पर आसीन रहते हुए वे विश्व भर के मानवों की शंकाओं आपत्तियों और विसंगतियों का प्रामाणिक समाधान प्रस्तुत करने की क्षमता से भरपूर थे। आज का संसार धर्म के नाम पर जिस प्रकार की विसंगतियां और खिलवाड़ उत्पन्न कर रहा है उसका प्रत्यक्ष प्रमाण vedc age जैसी पुस्तकें और अन्य लोगों द्वारा वेद के नाम पर अनर्गल लिखी पुस्तकें हैं। यह आचार्य जी का ही कार्य था कि उन्होंने वैदिक युग और आदि मानव जैसी पुस्तकें और शोध प्रबन्ध लिखकर उनका मुंह तोड़ उत्तर दिया है। उनके इस प्रकार चले जाने से इस अभाव की पूर्ति नहीं हो सकेगी।

अतः हम सभी मोरिशस निवासी परमेश्वर से उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं तथा आर्य जनों को उनके अधूरे छोड़े कार्यों को पूरा करने की शक्ति प्राप्त हो ऐसी कामना करते हैं। दुःखी स्वजनों परिजनों को इस दुःखद अभाव को सहन करने की शक्ति भी प्राप्त हो ऐसी विनती करते हैं।

ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति

हरियाणा आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीर दल हरियाणा के तत्वावधान मे इस बार ग्रीष्म अवकाश मे अनेको शिविरो का आयोजन किया गया। इन शिविरो में भाग लेने वाले सैकड़ो नौजवानो को आर्य विचारो, वैदिक संस्कृति तथा वैदिक सिद्धान्तो से अवगत कराया गया तथा उन्हे आसन प्राणायाम लाठी, भाला तथा योगिक क्रियाओ का प्रशिक्षण दिया गया। इस वर्ष निम्नलिखित शिविर हरियाणा भर मे लगाए गए।

(१) आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर नौमड़ी वाली (भिवानी)

१५ मई से २२ मई तक राजकीय स्कूल नौमड़ी वाली मे जिला भिवानी की ओर से शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमे ८५ आर्य वीरो ने भाग लिया। इस शिविरमे श्री रामलाल आर्य,श्री शेरसिंह आर्य तथा शिक्षक रामपालआर्य ने कठिन परिश्रम से आर्य वीरो को प्रशिक्षण दिया। समापन समारोह मे उपायुक्त भिवानी ने पधार कर आर्य वीरो को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

(२) प्रशिक्षण शिविर भाण्डवा (भिवानी)

श्री धर्मपाल वीर के संयोजन मे २३ से ३० मई तक आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे ७० के लगभग आर्य वीरो ने भाग लिया। प्रो०ओमकुमार जी तथा रामफल शिक्षक ने आर्य वीरो को प्रशिक्षण दिया। आस पास के गावो से भी काफी लोगो ने पधार कर आर्य वीरो का प्रदर्शन देखा। शिविर के द्वारा इस क्षेत्र मे काफी प्रभाव पड़ा।

(३) प्रशिक्षण शिविर करनाल

१ जून से ५ जून तक आर्य वीर दल करनाल के मण्डलपति श्री जगदीश मघोक की अध्यक्षता मे डी ए वी स्कूल मे शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे ५५ आर्य वीरो ने भाग लिया। शिविर मे समस्त आर्य समाजो का विशेष मार्गदान प्राप्त हुआ। इसे सफल करने के लिए श्री गोपाल जी शिव कुमार जी मगला तथा कोषाध्यक्ष गुप्ता जी ने विशेष उत्साह से कार्य किया समापन समारोह मे श्री नरदेव जी शास्त्री श्री उमेदसिंह शर्मा, वेद प्रकाश आर्य तथा धर्मदेव विद्यार्थी ने आर्य वीरो को सम्बोधित किया।

(४) प्रशिक्षण शिविर पलवल

६ जून से १२ जून तक दयानन्द उच्च विद्यालय पलवल मे श्री हरीचन्द जी आर्य की अध्यक्षता मे प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इस शिविर मे श्री मनोहरलाल जी आनन्द अजीत कुमार आर्य, सत्यपाल आर्य हुकमसिंह आर्य ने आर्य वीरो को बौद्धिक एव शारीरिक प्रशिक्षण दिया। ११ जून को विशाल शोभा यात्रा भी पलवल शहर में निकाली गई। शिविर का समापन समारोह मे हरियाणा सरकार के मन्त्री श्री सुमन्त कल्याण भी पधारे और आर्य वीरो को राष्ट्ररक्षा हेतु प्रेरित किया। इस शिविर में ४५ आर्य वीरो ने भाग लिया। शिविर को सफल करने मे श्री किशनलाल जी,श्री मगला जी प्रधान विद्यालय, श्री जगबीर जी मन्त्री आर्य समाज ने विशेष योगदान दिया।

(५) प्रशिक्षण शिविर जीन्द

आर्य वीर दल जीन्द के उत्साही कार्यकर्ताओ तथा आर्य समाजो के सहयोग से ६ जून से १५ जून तक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इस शिविर मे १०१ आर्य वीरो ने भाग लिया जो जीन्द जिले के आसपास के क्षेत्रा से पधारे। शिविर मे वैदिक विद्वानो द्वारा आर्य वीरो को बौद्धिक विचार दिये गए। इस शिविर में स्वामी रुद्रदेव, उमेदसिंह शर्मा, वेद प्रकाश आर्य, धर्मदेव विद्यार्थी प्रो० ओम कुमार इत्यादि महानुभाव ने पधार कर आर्य वीरदल की आवश्यकता पर बल दिया। नेशनल चैम्पियन श्री जोरावर सिंह ताराचन्द रामफल, हुकमसिंह ने आर्य वीरो को शारीरिक प्रशिक्षण दिया। १४ जून को आर्य वीरो का विशाल प्रदर्शन जीन्द के प्रमुख बाजारो मे किया गया। यह शिविर इतना सफल रहा कि सारे जीन्द जिले मे इसकी चर्चा रही।

(६) प्रशिक्षण शिविरसोहना

२६ जून से ३ जुलाई तक दयानन्द पाठशाला सोहना मे मेवात मण्डल के उत्साह तथा आर्य समाज सोहना के सहयोग से प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमे ४० आर्य वीरो ने भाग लिया जो जो गुड़गावा, नगीना, बसई, फिरोजपुर झिरका इत्यादि स्थानो से पधारे थे। आर्य वीरो को बौद्धिक देने हेतु स्वामी प्रेमानन्द जी, स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती, प० जय प्रकाश आर्य, ओम प्रकाश कालडा तथा वेद प्रकाश आर्य प्रान्तीय मन्त्री पधारे। समापन समारोह मे मेवात मण्डल के सक्रिय कार्यकर्ताओ ने भाग लिया। शारीरिक प्रशिक्षण श्री सत्यपाल आर्य, श्री हुकमसिंह, श्री धर्मवीर आर्य तथा अनिल आर्य ने प्रदान किया।

(७) प्रशिक्षण शिविर नरवाना

आर्य समाज नरवाना के पुरुषार्थ से आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर २६ जून से ३ जुलाई तक सम्पन्न हुआ। जिसमे लगभग ६० आर्य वीरो ने प्रशिक्षण प्राप्त किया डा० आचार्य देवव्रतजी, सुरेशकुमार जी तथा शिक्षक ताराचन्द ने आर्य वीरो को प्रशिक्षण दिया। श्री धर्मदेव जी विद्यार्थी, उमेदसिंह शर्मा, आचार्य विजयपाल तथा अन्य विद्वानो ने आर्य वीरो को वैदिक विचार दिये। समापन समारोह मे आर्य वीरो का प्रदर्शन देखने योग्य था। जिसका आम जनता पर काफी प्रभाव पड़ा। आर्य समाज के समस्त अधिकारी इस शिविर की सफलता के लिए सप्ताह भर जुटे रहे।

(८) शिक्षक प्रशिक्षण शिविर गुरुकुल झज्जर (रोहतक)

पिछले वर्षों की भाति इस वर्ष भी सार्वदेशिक की ओर से शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर मे भारत वर्ष के समस्त प्रान्तो से आर्य वीरो ने भाग लिया। हरियाणा की ओर से भी १५ आर्य वीरो ने इस शिविर मे गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया। यह शिविर आचार्य डा० देवव्रत जी की देखरेख मे सफल हुआ। इस शिविर मे समस्त प्रान्तो के अनेको अधिकारियो ने पधार कर आर्य वीरो को अपने विचार दिये। स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा स्वामी योगानन्द ब्रह्मचारी अखीलेश्वर, उमेदसिंह शर्मा, वेद प्रकाश आर्य, सत्यवीर शास्त्री प० जयनारायण जी ने भाग लेकर आर्य वीरो का मार्ग दर्शन किया। इस शिविर मे आर्य वीर दल हरियाणा की ओर से लगभग १०००) रु० की राशि सहायता दी गई। इस शिविर मे अनेको शिक्षक तैयार किए।

नोट—शिविर मे प्रत्येक आर्य वीर से पाच रुपये पंजीकृत शुल्क लिया गया तथा वर्ष १९८८ के लिए उनका नाम पंजीकरण किया गया।

शिविर मे सहयोग देन हेतु समस्त अधिकारी कार्यकर्ताओ आर्य वीर दल तथा समस्त आर्य समाजो तथा आर्य संस्थाओ का धन्यवाद। आशा है भविष्य मे भी इसी प्रकार योगदान प्राप्त होता रहेगा।

वेदप्रकाश आर्य प्रान्तीय मन्त्री
आर्य वीर दल हरियाणा
मुख्य कार्यालय आर्य समाज शिवाजी कालोनी रोहतक

संसद में हिन्दी

(पृष्ठ ४ का शेष)

समस्या यह भी है कि इसमे कोई एक स्थिर मानक शब्द उपलब्ध नही है। दो-दो, तीन-तीन हैं। इसलिए अंग्रेजी मे बोलता हूँ। हालांकि जिन्होंने हिन्दी मे मुझे सुना है, वे कहते हैं कि मैं अपने को हिन्दी मे बेहतर ढंग से व्यक्त कर सकता हूँ। फिर एक कारण यह भी है कि संसद मे मैं अपने प्रदेश या गाव के लोगो से बोलता नहीं हूँ। पूरे राष्ट्र से बात कर रहा होता हूँ। इसलिए अंग्रेजी बोलता हूँ। वैसे भी भाषा के बारे मे हमे उदार होना चाहिए।

पाठक तय करे कि ये अंग्रेजी में क्यो बोलते है ? क्या इसलिये, जैसा कि श्री रेड्डी कहते हैं, 'बुद्धू' न दिखे ? क्या इसलिए कि जैसा कि श्रीमती प्रतिभा सिंह कहती हैं, यह दिखाना जरूरी है कि हिन्दी भाषी अंग्रेजी बहुत अच्छी बोलते है। क्या इसलिए कि दक्षिण भारत के सांसद, हिन्दी भाषियो की बात को अच्छी तरह समझ सकें, जैसा कि श्री आनन्द शर्मा कहते हैं ? क्या इसलिए कि हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली की स्थिति दयनीय है, जैसा कि श्री मुकुल कहते हैं और क्या इसलिए कि सासद राष्ट्र से बोलते है, जैसा कि श्री वीरभद्रप्रताप सिंह कहते है। या यह हम सब अंग्रेजी पढ़े लिखे हिन्दी भाषियो की कोई हीनता ग्रंथि है जो 'बुद्धू' समझ लिये जाने से हमेशा डरते है ? (नवभारत टाइम्स ११-८-८८)

आर्य विद्वान श्री श्यामनन्दन शास्त्री को भारी आघात

एक दुर्घटना मे पत्नी व पुत्र की मृत्यु

पटना मे आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के अधिकारी तथा प्रमुख वैदिक विद्वान प० श्यामनन्दन शास्त्री की धर्मपत्नी तथा पुत्र की एक दुर्घटना के बाद मृत्यु हो गई है।

सार्वदेशिक सभा को मिली सूचना के अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री, मन्त्री श्री रामाज्ञा वैरागी, श्री श्यामनन्दन शास्त्री उनकी पत्नी तथा पुत्र और श्री योगेन्द्र नारायण शास्त्री तथा उनकी पत्नी तथा कुछ अन्य लाहरगा से वापस पटना जा रहे थे। रास्ते मे उतराई पर इनकी गाडी ग्गर व हो गई। उस समय उसमे ११ लोग थे। ४ लोग बाहर थे और शेष अन्दर। ड्राइवर ने ज्यो ही गाडी ठीक कर दी थी उसी समय एक ब्रेक ... ट्रक से इसमे टक या और भयंकर दुर्घटना हो गई। श्री श्यामनन्द शास्त्री के २२ वर्षीय युवा बेटे ने तु ... दम तोड दिया। श्री योगेन्द्र नारायण शास्त्री की पत्नी को भी चोट आई है उनका उपचार चल रहा है। श्यामनन्दन शास्त्री की पत्नी को भी चोट था किन्तु पुत्र वियोग के सदमे को बर्दाश्त कर सकी और वह भी दिवंगत हो गई।

सार्वदेशिक सभा तथा आर्य जगत को इस दुर्घटना से गहरा दुःख हुआ है। दिवंगतो की आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हुए हम सब श्री श्यामनन्दन शास्त्री व उनके परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करते है।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान सार्वदेशिक सभा

गऊ से भरे हुए सात ट्रक पकड़ गए

यमुनानगर डाक से।

देश मे गोवंश के सम्बन्ध मे भारी चिंता व्यक्त करते हुए श्री शिवप्रताप सिंह बजाज ने बताया हरियाणा उत्तर प्रदेश बार्डर (यमुनानगर) पर गऊ से भरे सात ट्रक हत्यारो सहित पकड गए। ट्रको मे बुरी तरह से गऊओ को को ठूँसा हुआ था। जिन्हे सदर थाना मे लाया गया।

भारी वर्षा के होते हुए श्री ... ने पकडी हुई गऊओ की सेवा की।

ये स्मरणीय है कि उत्तर प्रदेश मे गोवंश पशुओ का व्यापार जोरो पर है। कई झूठे बहाने बनाकर गाय बछड, बैल पजाब से हरियाणा के रास्ते होकर यू० पी० लाए जाते है। स्मगलरो और बूचडो ने कई गुप्त रास्ते बना रखें है जहा से वे चुपचाप गोवंश को हत्या के लिए ले जाते है।

चारो वेदो का पारायण

बुद्धवार, ३१ अगस्त १९८८ प्रात काल से प्रारम्भ होकर ११ सितम्बर रविवार तक होगा। यह चतुर्वेद पारायण यज्ञ श्री लक्ष्मपति जी शास्त्री की अध्यक्षता मे होगा।

पूज्यपाद श्री स्वामी प्रभु आश्रित जी महाराज के लिखित उपदेश तथा स्वामी जीवनानन्द जी व अन्य विद्वानो व विदुषी बहिनो के भजन व उपदेश साय ३ ३० से ५ बजे तक हुआ करेगे। स्थान ८ श्रीराम रोड अलीपुर रोड दिल्ली मे। कार्यक्रम वेदपाठ नित्य प्रति प्रात ८ से साय ५ बजे तक होगा। पूर्ण आहुति यज्ञ द्वारा ११ सितम्बर प्रात ६ से ११ ३० बजे तक होगी। ऋषि लगर १२ बजे।

—श्री लोकनाथ

शोक समाचार

आर्य समाज पानीपत के आधार स्तम्भ श्री लाला दलीपसिंह जी आर्य के निधन ने समस्त आर्य जगत मे रिक्तता पैदा कर दी है। विधि की विडम्बना ही है कि २६ जुलाई १९८८ की काल रात्री को पट्टी कल्याणा के पास कार दुर्घटना श्री लाला जी, उनके सुपुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार जी, निकटस्थ सम्बन्धी श्री रमेश कुमार जी तथा कार ड्राइवर को मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु से आज पूरा नगर स्तब्ध है।

श्री लाला जी पक्के वैदिक धर्मी तथा नैष्ठिक आर्य समाजी थे। उनका पूरा जीवन आर्य विद्वानो तथा समाज को समर्पित था।

भूल सुधार

१० ... के अक में दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री लखीराम कटारिया के स्थान पर रतिराम कटारिया छप गया था, इसका खेद है।

—सम्पादक

यति मण्डल का सम्मेलन

वैदिक यति मण्डल के समस्त आदरणीय सदस्यो की सेवा मे सूचनार्थ निवेदन है कि वैदिक यति मडल का सम्मेलन दिनाक १७ ८ सितम्बर १९८८ । वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्य नगर रोहतक मे ... ने का निर्णय हुआ है। प्रथम बैठक १७ सितम्बर प्रात ... बजे होगी अत निश्चित समय पर पधारने की कृपा कीजिये।

—सामानन्द मन्त्री वैदिक यति मण्डल

श्री रणजीतसिंह स्मारक आचार्यकुल लोवा कला का २७वा जन्ममहोत्सव

... रणजीत ... आचार्यकुल कन्या महा विद्यालय) ... का ... महोत्सव ... अगस्त १९८८ ई० शनिवार श्रावणी पर्व पर बडी धूमधाम से मनाया जायगा। उत्सव मे बड बडे सन्यासी महात्मा विद्वान् तथा भजनो पदेशक पधारेगे।

भवन का उद्घाटन

आर्यसमाज, सुन्दर विहार, नई दिल्ली-११००४१ के नव निर्मित भवन का उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान स्वामी आनन्दबोधजी सरस्वती के कर कमलो द्वारा रविवार दिनाक २१ अगस्त १९८८ को प्रात ११ बजे होगा।

—सत्यदेव गुप्त मन्त्री

प्रभात आश्रम मे प्रवेश बन्द

अनेक अभिभावको का छात्र प्रवेश के सम्बन्ध मे पत्र आता रहता है तथा कई अभिभावक तो छात्रो को साथ लेकर उपस्थित हो जाते है। इस समय स्थान पूर्ण हो चुका है, अत अभिभावको से निवेदन है कि वे इस वर्ष प्रवेश के सम्बन्ध मे कोई कष्ट न उठाये। अगले वर्ष अप्रैल मे प्रवेश तिथि की जानकारी प्राप्त करने का कष्ट करे।

—प्रभातआश्रम मेरठ

पुनः वैदिक संस्कृति की दुन्दुभि बजाने योग्य प्रचार हेतु आधुनिक भीम ब्रा० विश्वपाल जयन्त का द्वितीय विश्व भ्रमण

ब्र० विश्वपाल जयन्त आधुनिक भीम ३ अगस्त १९८८ को अनेक देशो के विशेष निमन्त्रण पर विश्वयात्रा पर गये है (इन्दिरा गांधी एयर पोर्ट से) दिल्ली से ५ अगस्त को प्रात ७ ३० बजे वायुयान द्वारा बम्बई को प्रस्थान, वहा से लन्दन इग्लैण्ड पश्चिमी जर्मनी स्विटजरलैण्ड, फ्रास इटली, अमेरिका कनाडा जापान आदि आदि देशो मे कार्यक्रम हेतु गये।

लद्दाख मे धर्म परिवर्तन की बात गलत

पिछले दिनो विभिन्न समाचार पत्रो मे यह समाचार प्रकाशित हुआ था कि लद्दाख मे ईसाइयो ने बडी सख्या मे लद्दाखी बच्चो को ईसाई बना दिया है। सार्वदेशिक सभा ने अपने साधनो से इस मामले की जाच कराई तो पता चला है कि ईसाइयो ने लद्दाखी बच्चो को शिक्षा और पोषण देने के लिए ईसाई बनने की शर्त रखी थी। इसपर पर्याप्त हलचल हुई और विधि स्वरूप उन्होने सभी बच्चो को उनके अभिभावको को लौटा दिया है। बच्चे ईसाई नही बने।

प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा

महाशय खुशहालचन्द का निधन

हमारे परम पूज्यनीय महाशय खुशहालचन्द जी आर्य १०३ वर्ष की आयु सम्पन्न करके १५-७ ८८ को प्रभु चरणो मे निवास कर गये है।

—रणबीर भाटिया

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष ०४७ १
वर्ष २३ अङ्क २/] भाद्रपद ७० स० २०४५ रविवार अगस्त १९८८ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

दक्षिण भारत में आर्यसमाज के मदुराई केन्द्र को सशक्त करने का जोरदार प्रयत्न

वेदामृत

घर को स्वर्ग बनावें

यत्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति,
विहाय रोगं तन्वः स्वायाः ।
अश्लोणा अङ्गैरह्रुताः स्वर्गे
तत्र पश्येम पितरौ च पुत्रान् ॥
अथर्व० ६-१२०- ॥

हिन्दी अर्थ—जहा शुद्ध हृदय वाले और पवित्रात्मा लोग अपने शरीर के रोगों को छोड़कर आनन्द से रहते है ऐसे स्वर्ग-तुल्य घर म हम स्वय अगो से अविकृत और अकुटिल रहते हुए अपने माता-पिता और पुत्रो को देखें।

घर सभी सुविधाओं से युक्त हों

इमे गृहा मयोभुव ऊर्जस्वन्तः पयस्वन्तः । पूर्णा वामेन तिष्ठन्तः,ते नो जानन्त्वायतः॥
अथर्व० ७-६०-२॥

हिन्दी अर्थ—ये घर सुखदायी है, अन्नादि से युक्त है ओर दूध आदि से सम्पन्न है। सभी अभीष्ट पदार्थों से परिपूर्ण रहते हुए, प्रवासादि से लौटने पर हमको जाने। —डा० कपिलदेव द्विवेदी

सम्पादक—
सच्चिदानन्द शास्त्री

मदुराई में भूमि क्रय कर ली गई

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा का निर्णय

भवन निर्माण के लिए मदुराई स्थित दिल्ली होटल के मालिक द्वारा एक लाख रुपए की आहुति

धन संग्रह का अभियान प्रारम्भ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की २१ अगस्त को दिल्ली मे सम्पन्न हुई अन्तरग बैठक मे सर्वसम्मति से यह निर्णय हुआ कि दक्षिण भारत मे आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए मदुराई केन्द्र को सशक्त किया जाये।

सभा की ओर से दक्षिण भारत के लिए प्रचार सयोजक श्री एम० नारायण स्वामी ने रिपोर्ट दी है, कि मदुराई स्थित दिल्ली होटल के मालिक ने अपने परिवारो की ओर से मदुराई मे आर्य समाज मन्दिर के भूमि क्रय करने एव भवन बनाने के निमित्त एक लाख रुपए का दान दिया है। इसके अतिरिक्त अन्य लोगो से भी धन सग्रह का प्रयास जारी है। श्री नारायण स्वामी का लक्ष्य दक्षिण भारत से लगभग ३ लाख रुपए की राशि सग्रह करने का है।

सार्वदेशिक सभा ने मीनाक्षीपुरम सम्मेलन के पश्चात् दक्षिण भारत मे प्रचार कार्य को तेज करने की जो योजना बनाई थी वह बारबार प्रगति पर है, मीनाक्षीपुरम, मदुराई तथा तमिलनाडू के कई जिलो मे वैदिक धर्म का व्यापक प्रचार हुआ है। सभा कई हजार रुपये मासिक इस कार्य पर व्यय कर रही है। सार्वदेशिक सभा की अन्तरग सभा मे मदुराई मे भवन निर्माण के उपरोक्त पुनीत कार्य को सम्पन्न करने के लिए कई महानुभावो ने अपने वचन दान की घोषणा की है, जिसकी अनुमानित राशि लगभग एक लाख रुपये है। आर्य समाज मन्दिर के निर्माण आदि के लिए नक्शा भी पास किया जा चुका है।

इस कार्य के लिए जिन लोगो ने दान की घोषणा की है, उसकी सूची अलग से प्रकाशित की जाएगी। आर्य जनता से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य के लिए अपना सहयोग—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के नाम मनीआर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेज।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

वेद विहित और विहीन भारत की दशा

श्री जीवानन्द नैनवाल एम.ए., बी.एड. आर्यसमाज अल्मोड़ा

इतिहास के अवलोकन से ज्ञात पड़ता है कि भारतीय संस्कृति ने ही विश्व की अन्य संस्कृतियों को अनुप्राणित किया था। इसका कारण साफ और स्पष्ट है कि ईश्वरीय ज्ञान वेद की अजस्रधारा का स्रोत यहीं से प्रभावित हुआ। ज्ञान का नाम लेते ही हमारा ध्यान ऋग्वेद के के नासदीय सूक्त पर पहुँचता है। जिसमे कवियो के कवि ने अपनी कविता मे सृष्टि के उत्पत्ति का अद्भुद वर्णन किया है। जिससे आगे आज के विज्ञान गर्वित मानव की भी पहुँच नही है। भाषा, भाव, शैली और स्वरा इन सभी मे ऋग्वेद का यह सूक्त निराला ही ठहरता है। सत्-असत्, तेज-तम, आदि-अन्त, और स्वधा-प्रगति की जैसी शृंखलामयी विश्व सृष्टा ने इसमे की है। वैसी किसी भी विश्व साहित्य मे उपलब्ध नही होती है।

सभी ज्ञानो के मूल वेद ही तो हैं। तभी तो वैदिक कालीन भारत की पूर्णतया और पल्वित इतिहास गौरवमयी और महिमामंडित रूप मे वर्णित मिलता है। वैदिक कालीन इतिहास और स्वत. प्रमाण वेद के अध्ययन से पता चलता है कि जन्म देने वाली और मनुष्य की प्रथम माता का का स्थान सर्वोपरि था। आज के विकासयुग मे होने वाले दिवराला जैसे सतीकाण्ड तब होना और सुनना तो दूर इस प्रकार के कुकृत्य को जानते भी नही थे। वेद मे स्त्री को ब्रह्म संज्ञा दी गयी है। स्त्रियो को अनपढ और परदे के पीछे रहने की तो कल्पना आर्ष ग्रन्थो मे कही भी दृष्टिगोचर नही होती। वैदिक कालीन स्त्रियो की दशा निम्न मन्त्र से स्पष्ट हो जाती है —

इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिते सरस्वती महि विश्रुति।
एता तेऽघ्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृतम्ब्रूतात्॥ यजु० ८। ४३॥

"अर्थात् स्तुतियोग्य, रमणीय, स्वीकार करने योग्य, कमनीय, श्रेष्ठ शील से प्रकाशमान् चन्द्र के समान आह्लादकारणीय, अविनाशिनी, अखण्ड चरित्र विज्ञान से युक्त विदुषी, पूजनीय, विविध गुणो से प्रसिद्ध, विविध विद्याओ मे कुशल, तिरस्कार करने के अयोग्य, तेरे ये नाम है। उक्त गुणो के लिए हमे उत्तम उपदेश किया कर। अर्थात् उक्त गुणो से युक्त स्त्री अपने पति तथा अन्य सभी स्त्रियो को यथायोग्य उक्त कर्म सिखलाये जिसमे किसी तरह के अधर्म की ओर प्रवृत्त न हो।"

महाभारत युद्ध के पश्चात शनै शनै वेद ग्रन्थो के अध्ययन और अध्यापन और अनुशीलन मे काफी कमी आयी है। तत्कालीन राजा भोग-विलास मे ही लिप्यायमान रहने लगे या इस प्रकार जाने कि ११वी शदी मे जब बाह्य आक्रन्ताओ ने भारत मे अनेक आक्रमण किये और भारत गुलामी की जंजीरो मे जकडा चला गया तो इसका सबसे अधिक प्रभाव नारी समुदाय पर पडा। नारी को मात्र भोग विलास की वस्तु समझा जाने लगा तथा उत्पीडन और अत्याचारो के द्वारा उन्हे आवश्यकता से अधिक दबाया जाने लगा। अत्याचार की प्रबलता के कारण ही नारी को क्रूर नग्न नृत्य करके उसे अबला संज्ञा प्रदान कर दी। लेकिन आज जब विज्ञान अपने उन्नति के चरम शिखर पर पहुँच चुका है तब भी विज्ञापनो मे नारी को चित्रित करके वस्तुओ के प्रचारार्थ नग्नता के साथ प्रदर्शित किया जा रहा है। वेदाध्ययन से रहित इस भारतीय समाज में नारी के प्रति सभ्य कहने वाले समाज के महानुभाव, जो सारा विश्व जान और पहचान रहा है। यदि सभी अक्षरबोध और विदुषी मातायें संगठित और वेदो की ओर मुडकर अध्ययन करके प्रचार प्रसार करें तो नारी समाज का प्रथम उद्धारक स्वामी दयानन्द के सपनो का भारत पुन जीवित हो उठेगा और माताओ की स्थिति सुदृढ और ब्रह्मानन्द वाला हो जायगी।

वैदिक कालीन भारतीय समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र इन चार भागो मे विभक्त था। यजुर्वेद के मन्त्र ३१/११ के अनुसार ब्राह्मण इस विराट पुरुष का मुख स्थानीय, क्षत्रिय बाहु समान है जो वैश्य है वे देह के मध्य पेट के समान और शूद्र पैरो के समान है —यथा

ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य कृत.।
उरुतदस्य यद्वैश्य. पदभ्या शूद्रोऽजायत॥

लेकिन वर्तमान भारतीय समाज हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख व ईसाई इन चार स्तम्भो के ऊपर टिका हुआ है। ये चारो अपने अपने सम्प्रदाय मे दूसरे सम्प्रदायो के लोगो को तोडने व जोडने की भरपूर कोशिशे कर रहे है। इन सबके कारण साम्प्रदायिक दंगे और आतंकवादी दंगे के विभिषिकाओ के बीच मे जलते हुए भारत को कौन नही देख रहा है। जिस देश मे अहिंसा की पूजा होती थी आज उसी देश को हिंसा का क्रीडा स्थल बनाया जा रहा है। सम्प्रदाय और जातिवाद के चक्कर मे निर्दोष और निरीह लोगो के प्राण जा रहे हैं। इसका कारण सिर्फ एक ही है वेदादि ग्रन्थो का अनुशीलन व पठन-पाठन का न होना, तथा अपनी संस्कृति को भूलते जाना। ईश्वर के विषय मे भ्रान्ति का होना, एक दूसरे मे सन्देह का होना। इन सब कारणो से मानव का दानव बनना जारी है। आगे अभी कब तक होता है देखना है। किसी शायर ने कहा है कि मानव निम्न बात को भूल चुका है और दानव बनता जा रहा है यथा —

गुलशने हस्ती मे इक रंगो का आलम आम था।
पहले सिर्फ एक कौम थी इन्सान जिसका नाम था॥

वैदिक कालीन वर्णव्यवस्था जो ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र के रूप मे टिकी थी। आज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र शब्द का अर्थ भी दिशाहीन हो चुका है। आज अपने को पूर्ण विकसित और शिक्षित कहने वाला समाज वास्तविकता से काफी दूर होता चला जा रहा है। जिस देश मे शूद्रो की कमी हो जाती है वह देश और समाज पनप नही सकता। कालान्तर मे अवनति के गर्त मे गिर ही जाता है। यदि मनुष्य पर पैर न हो तो वह अपना सर्वांगीण विकास तो छोडो एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से हिलडुल भी नही सकता है। इसी प्रकार किसी भी समाज की उन्नति मे शूद्र का बडा भारी महत्व है। सभी प्रकार के शिल्प आदि कार्यो मे शूद्र की दक्षता होती है। उसी की कर्मठता और एकाग्रता से ही शिल्प का विकास हो सकता है। शूद्र तिरस्कार योग्य नही बल्कि पूज्य होता है—

वैदिक धर्म के अनुसार मनुष्य को अत्यधिक मूल्यवान माना गया है। मनुष्य जीवन को उन्नत बनाने के लिए वेद मे अनेको स्थानो पर निर्देश दिये गये है। बाबा तुलसीदास ने ठीक ही तो सरल शब्दो मे कहा है— 'बडे भाग मानुष तन पावा।" तो इतने मूल्यवान मनुष्य जीवन को भोग-विलास मे बिता देना कहा की समझदारी है। इसलिए वेद मे आश्रम व्यवस्था की दी गयी है। आश्रम चार होते हैं। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ,

(शेष पृष्ठ ११ पर)

श्रावणी-उपाकर्म से कृष्ण जन्माष्टमी तक

वेद प्रचार सप्ताह धूमधाम से मनायें

हैदराबाद-सत्याग्रह बलिदान दिवस भी मनाये

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आयजन आर्य समाज मन्दिरो मे तथा अन्यत्र मुहल्लो मे वेद प्रचार सप्ताह का कार्यक्रम सम्पन्न करे।

श्रावणी उपाकर्म रक्षाबन्धन का व्रत लेकर यज्ञोपवीत परिवर्तित करे और वैदिक स्वाध्याय की परम्परा को प्रगतिशील बनाये। आर्य पर्वपद्धति के अनुसार यज्ञ के बाद उपाकर्म की महत्ता श्रावण नक्षत्र से ही क्यो? व्याख्यान भजन आदि के द्वारा समाज मे संगठन पर विचार करे।

छुआछूत के भूत को भगाकर अछूतोद्धार का कार्य करे। अछूतो को यज्ञोपवीत का व्रत (संकल्प) दिलाकर ही यज्ञोपवीत दे। प्रीतिभोज का आयोजन भी करे।

सवर्णों मे भी यज्ञोपवीत धारण करने की रुचि उत्पन्न कर वेद ज्ञान के प्रति श्रद्धा पैदा करे। आज समस्त हिन्दू अपने कर्मकाण्डो व पर्वों से दूर हटकर अन्धश्रद्धा मे भटक रहा है। इसका विधिवत परिचय करायें।

इसी के साथ—योग राज भगवान कृष्णचन्द्र जी महाराज के जीवन पर दृष्टिपात कर उनके आदर्श व महत्ता का सही रूप मे जन-जन तक पहुँचाये।

शहीदो की याद मे—हैदराबाद सत्याग्रह के अमर शहीदो को भी श्रावण शुक्ला पूर्णमासी के दिन स्मरण कर उन्हे भी श्रद्धा के सुमन भेंट करे।

जनरल जिया का निधन

जनरल जिया साहब अब न रहे। हवाई दुर्घटना मे अमेरिकी राजदूत मिस्टर राफल, पाँच पाकिस्तानी जनरल, पांच ब्रिगेडियर, एक अमेरिकन जनरल और अन्य मिलिटरीतज्ञो के साथ अल्लाह को प्यारे हो गए। जन्म लेना ही इस बात का प्रमाण है कि एक न एक दिन मृत्यु उसे अपना ग्रास बना लेगी। यह प्रकृति का नियम और ईश्वर का विधान है।

परन्तु जिन परिस्थितियो मे उक्त जनरल जिया और उनके साथ सी० १३० यान मे प्रयाण करने वाले अन्य साथी मृत्यु के हवाले हो गए, विचारणीय विषय है।

मानव सोचता है कुछ ! और होता है कुछ।

"पाकिस्तान के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री भुट्टो जिन्हे जनरल जिया के हुकुम से सूली पर चढाया गया अपने कार्य काल मे यह कहते हुए नही थकते थे कि भारत के साथ उनका युद्ध हजार वर्ष तक चलता रहेगा। जिस देश के लिए वे उपरोक्त रीति से गरजते थे, उसी देश वासियो ने उन्हे सूली पर चढा दिया।

जनरल जिया साहब भुट्टो साहब की इहलीला समाप्त कराकर अबाध गति से पाकिस्तान पर ११ वर्ष तक नेतृत्व चलाते रहे, परन्तु विधि के एक झटके के साथ खेल समाप्त हो गया। उनके निधन पर शोक व्यक्त करते हुए विश्व के कई नेताओ ने उनकी भूरि भूरि प्रशसा की है। इन सब नेताओ के बयानो का सार यह था कि जनरल जिया एक सफल नियता थे। चतुर राजनीतिज्ञ थे। परन्तु पाकिस्तान की आम जनता की दृष्टि मे वे क्या थे ? उस देश मे सरकार विरोधी आन्दोलन जो होते रहे हैं, उनसे स्पष्ट होता है।

निम्न बातो की ओर ध्यान देना जरूरी है

—कहा जाता है कि जनरल जिया भावलपुर गए थे अमरीका से प्राप्त नए किस्म के रण गाडियो (टैंक्स) की परफारमैंस को देखने।

—जिया साहब का उद्देश्य सिर्फ इतना ही था। यदि कोई ऐसे कहे और दुनिया वाला से इस कथन की सच्चाई पर विश्वास करने की अपेक्षा करे तो मेरे विचार मे उनका यह प्रयत्न दुनिया वाला की आखो मे धूल झोकने के सदृश होगा।

—कोई राजनीतिक दृष्टि से अप्रबुद्ध व्यक्ति उक्त कथन को सच मान भी ले, हमारी समझ मे बात नही आती क्योकि अमेरिकी राजदूत और अमेरिकी जनरल जिया के साथ भावलपुर गए थे। क्या कोई पिकनिक पार्टी का आयोजन था ? अथवा दुनिया के किसी अजोबा के प्रदर्शन का आयोजन था।

—जनरल जिया एक प्रैक्टिकल राजनीति थे। वह इस बात को समझते थे कि अमेरिकी सहयोग और मिलटरी सहयोग के बिना पाकिस्तान जिन्दा नही रह सकता। इस तथ्य को लार्ड माउण्ट बेटन बहुत ही पहले स्पष्ट शब्दो मे अपने जीवन काल मे कहते आए हैं। इसी चीज को हम पाकिस्तान के निर्माण काल से आज तक प्रत्यक्ष देखते आ रहे हैं।

—अमरीका यह जानता है कि पश्चिम एशिया मोर्चे पर उसके लिए जिया से बढकर कोई अन्य सहयोगी नही मिल सकता है। प्रजातन्त्रीय भारत उनके हाथ का अथवा अन्य किसी देश के हाथ का कभी कठपुतली नहीं बन सकता है। जिया जैसे सैनिक तानाशाह द्वारा प्रशासित पाकिस्तान ही इस क्षेत्र मे अमेरिकी महत्वाकाक्षाओ को पूर्ण करने के लिए अनुकूल पड सकता है। राष्ट्रपति रेगन इस तथ्य को भलीभांति जानता है।

पाकिस्तान और अमेरिका के बीच के गठबन्धन का अन्य कोई कारण नही हो सकता।

जिया के साथ अमेरिका राजदूत राफल का भावलपुर जाने के पीछे हमारे विचार मे एक मकसद था। अफगान सम्बन्धी जिनोवा समझोते के पश्चात से अमेरिका इस प्रयत्न में लगा है कि अफगानिस्तान मे एक कठपुतली सरकार जो पश्चिम एशिया क्षेत्र मे उनके हितों की रक्षा कर सके।

अमेरिका चाहता है कि अफगानी मुजाहिदो को पाकिस्तान द्वारा हथियार देकर अपने मकसद को पूरा कर ले। इसी आशय से अमेरिका ने वर्तमान पाकिस्तानी शासको को यह चेतावनी दी है कि कहीं ऐसा न हो कि उनके इस कार्य मे किसी प्रकार के विरोधाभास का आश्रय ले।

मेरा विचार यह नही है कि अमेरिकी राजदूत राफल का जिया के साथ भावलपुर जाना सिर्फ इसी मकसद के लिए था। यदि यह मकसद था तो रणगाडिया (टैंक्स) की कर्तबगिरी अफगानी हमले के लिए कैसे उपयोगी हो सकती है। क्योकि रणगाडी मैदानी युद्धो के लिए कारगर साबित हो सकती है। भावलपुर से भारत के राजस्थानी क्षेत्र के मैदानो मे काम आ सकते हैं।

हमारा यह निश्चित मत है कि जनरल जिया अपने अमरिकी बडे भाई, को साथ लेकर भारत पर आक्रमण करने की तैयारी की योजना बनाने गए थे।

किन्तु मानव सोचता कुछ है और अपने मन के साहचर्य मे बडे बडे महल बनाता है। परन्तु अन्ततोगत्वा हम इस निष्कर्ष पर विवश हो जाते है कि ईश्वर इच्छा सबसे बलवान होती है। ईश्वर इच्छा बलीयसि।

—वन्देमातरम रामचन्द्रराव
वरिष्ठ उपप्रधान, सार्वदेशिक सभा

सम्पादक कश्मीर में

आर्य समाज हजूरी बाग श्रीनगर के उत्सव पर गया था तब यह बात सामने आई कि 'मुस्लिम युनाइटड फ्रट के चार विधान सभा के सदस्या ने कश्मीर विधान सभा मे एक प्रस्ताव पेश किया।

चू कि मास की कीमत दिनो दिन बढती रही है और कई जगह वह मिल भी नही रहा है। अत गाय और भैंस के मास के बेचने की अनुमति दी जाय।

मुख्य मन्त्री श्री फारूख अब्दुल्ला ने इसका विरोध किया और कहा कि जम्मू व कश्मीर मे अल्प सख्यको की भावनाओ का सम्मान करते हुए 'गाय व भैंस को मारने और उनका मास बेचने की आज्ञा नही प्रदान की जा सकती। इस पर वे चारो सदस्य विधान सभा से बहिर्गमन कर गए।

मुख्य मन्त्री ने विधान सभा मे गाय तथा भैंस के विषय मे जो उचित पग उठाया। वह वस्तुत समय और जनभावना को देखते हुए सही निर्णय लिया है।

गो सेवा के सम्बन्ध मे राष्ट्रपिता म० गाधी ने एक अवसर पर कहा था—गो रक्षा के जिस आदर्श की हिन्दू समुदाय और चिन्तको ने जो कल्पना की है वह अन्ध श्रद्धालु की कल्पना से बिलकुल अलग है और जीव दया तथा अर्थशास्त्र की अपेक्षा विशाल है जम्मू कश्मीर की विधान सभा मे मुसलमान सदस्या का बहुमत है श्री फारुख अब्दुल्ला चाहते तो उनकी मदद से वह प्रस्ताव पारित करा सकते थे। थोडे से गौभक्त उसका विरोध करते परन्तु बहुमत की आवाज उसे पारित कर लेती। लेकिन इस विषय मे मुख्य मन्त्री ने दूरदर्शिता का परिचय दिया तथा इस प्रस्ताव को पारित नही होने दिया। इस घटना से फारूख ने सारे देश के हिन्दू सम्प्रदाय का दिल जीत लिया।

गौ हत्या राष्ट्र मे अति महत्वपूर्ण विषय है हिन्दू और चाहे किसी पर हाय तोबा न करे पर गाय की हत्या पर वह सारे देश मे एक बडा बावेला खडा करते।

हमारे पूर्वजो ने गोशालाओ की स्थापना बडे ही सोच-विचार से की थी पर हमारा दुर्भाग्य है कि हम इस गो जैसे महत्वपूर्ण प्रश्न से अपने उद्देश्य की पूर्ति नही कर पा रहे हैं।

मुख्यमन्त्री श्री फारूख से ?

इससे जम्मू कश्मीर को लाभ ही होगा। काश ! जम्मू-कश्मीर प्रदेश मे गो-सम्वर्धन केन्द्र खोले जायें, तो जहा प्रदेश की जनता को शुद्ध-दूध की प्राप्ति होगी, उससे एक ओर आर्थिक दृष्टि से लाभ भी होगा और गोबर से गैस प्लान्ट लग सकेंगे। गाय के मूत्र का बीमारियो मे भी लाभ पहुँचाया जा सकता है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

देश-विदेश के आर्य समाजों एवं प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं को नेपाल आर्यसमाज का खुला-पत्र

विषयः—नेपाल में आर्य महा सम्मेलन के आयोजन के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपरोक्त सम्बन्ध मे आपका पूर्ण पता न होने के कारण यह समाचार पत्र के माध्यम से नेपाल आर्यसमाज के समस्त पदाधिकारी एव सदस्यगण की ओर से यह पत्र आपकी सेवा मे भेजा जा रहा है। नेपाल राष्ट्र मे आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार करने के जुल्म मे आचार्य शुक्रराज शास्त्री को फासी दी हुई घटना आप सबको विदित ही होगी। आज से चार वर्ष पहले नेपाल का प्रमुख औद्योगिक नगर विराटनगर मे प्रथम आर्य महा सम्मेलन पर पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा दिये गये भाषणसे नेपाल सरकार ने प्रभावित होकर वैद्यानिक मान्यता का रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र नेपाल आर्यसाज को प्रदान किया। अब यहा आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार स्वतन्त्र रूप से कर सकते हैं, नेपाल की राजधानी काठमाण्डो मे सार्वदेशिक सभा द्वारा लिया गया किराया के मकान मे केन्द्रीय कार्यालय का विधिवत सचालन हो रहा है। हाल ही मे सार्वदेशिक सभा के अन्तरग सभा ने निश्चय किया कि सभी प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाये प्रान्तीय आर्य महा सम्मेलन का आयोजन करे अत नेपाल आर्य समाज के कार्यकारिणी समिनि ने निश्चय किया है कि आगामी जनवरी १९८९ को अमर शहीद शुक्रराज शास्त्री के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य मे नेपाल की राजधानी काठमाण्डो मे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जाय। हम लोगो ने कई बार काठमाण्डो मे आर्य महासम्मेलन करने की आवाज उठाई परन्तु अर्थाभाव एव सस्था रजिस्टड न होने के कारण आयोजन न कर सके परन्तु अब सस्था रजिस्टर्ड है और आप सबका सहयोग रहा तो अवश्य ही हम सफल होगे। अत काठमाण्डो मे मम्मेलन के आयोजन पर आप सभी अपनी-अपनी प्रतिक्रिया एव आपकी समाज या सभा उक्त सम्मेलन मे किस प्रकार की सहयोग कर सकेगी, शीघ्र ही पत्रद्वारा सूचित कर।

सहयोग आपका और कार्य हमारा

आपका सुझाव युक्त पत्र मिलने के पश्चात ही हम अगली कार्यवाही शुरू करेगे। अत शीघ्र ही आपकी ओर से मार्ग दर्शन भरा पत्र हमे मिलेगा इसी आशा एव विश्वास के साथ।

प्रकाशचन्द्र सुवेदी, महा-सचिव
नेपाल आर्यसमाज केन्द्रीय, कार्यालय
वेद विद्याश्रम (गौशाला) वनकाली, काठमाण्डो नेपाल

सम्पादक कश्मीर में

(पृष्ठ ३ का शेष)

देश का दुर्भाग्य है कि केन्द्रीय सरकार को इस ओर जैसा ध्यान देना चाहिए था वह नहीं किया।

साधारण जनता की मानसिकता और धनाभाव के कारण हम उद्देश्यो की पूर्ति नहीं कर पा रहे हैं। पर सरकार इसमें समर्थ हैं उसके पास साधन हैं। प्रत्येक जिला स्तर पर सरकारी फार्म हैं वहीं पर गो-सेवा केन्द्र भी खोले जा सकते हैं। गो रक्षा व गोदुग्ध सम्वर्धन और लोगो को काम भी दिया जा सकता है। आर्थिक दृष्टि से भी सरकार इससे लाभान्वित हो सकती है।

हमारे देश मे अनादि काल से गौ का पूजन और उसमे मातृत्व की भावना जो बनी है पर कोरी भावना से ही काम नहीं चलेगा।

प्राचीन काल से इस गो सेवा की भावना मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गोशाला से जो हमारे उद्देश्य की पूर्ति होगी वह है—

(१) नकारा गौओ की सेवा कर पालना।

(२) दुग्ध उत्पादन बढाना साथ ही उसके मल-मूत्र से अर्थ की प्राप्ति करना।

(३) मरने पर उसके चमडे व हड्डी से भी अर्थ लाभ होगा। ऊर्जा के साथ उत्पादन भी बढेगा।

महाभारत मे सहदेव ने कहा था कि—

इन्द्र प्रस्थ के चालीस कोस के क्षेत्र मे जितनी गाये रहती हैं उनकी पूरी जानकारी मुझे है मैं बता सकता हू कि क्या खाना देने से रोग नही होता है और किन उपायो से गायो की वृद्धि हो सकती है उत्तम लक्षणो वाले ऐसे बैलो की भी मुझे पहचान है जिनका मूत्र सूघने मात्र से वन्ध्या स्त्री गर्भवती हो सकती है। (महाभारत विराट पर्व अ० १)

भारत की अध्यात्म दर्शन क विषय मे जो विश्व को देने हैं वह असाधारण है भारत की दो विशेष देन अद्वितीय है—एक निरामिष भोजन, दूसरा गाय की पूजा—

कश्मीर के मुख्यमन्त्री फारुख अब्दुल्ला की दूरदर्शिता और विवेक का उदाहरण सभी प्रान्तीय सरकारा तथा केन्द्रीय सरकार के लिए भी अनुकरणीय है।

उन्होंन गोवध की अनुमति नही दी। जो भी सरकार अपनी प्रजा की भावनाओ का सम्मान करके राज्य प्रबन्ध चलाती है। वह सदा सर्वदा सुखी व लाभ मे रहती है। क्योंकि लाग उसकी भावनाओ का सम्मान करते हैं। क्योंकि वह लोगो की भावनाओ का आदर करतीहै। —सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक सभा का नया प्रकाशन

आत्मा का स्वरूप

श्री कर्मनारायण कपूरा द्वारा आटोबायोग्राफो आफ ए सोल का हिन्दी अनुवाद"आत्मा का स्वरूप"नामक पुस्तक के रूपमें सभा द्वारा प्रकाशित किया जा चुका है। प्रस्तुत पुस्तक मे जीवात्मा के स्वरूप पर विशद विवेचन किया गया है। मृत्यु क्या है? मृत्यु के समय जीव की क्या स्थिति होनी है? और किस प्रकार जीवन धारण करता।

विद्वान लेखक ने इस बात का भी रहस्योद्घाटन किया है कि वृक्षो से जीवात्मा पीपल के पेड मे जाता है, उसके बाद मानव शरीर मे प्रवेश करता है।

पुस्तक का मूल्य मात्र ३-५० रुपए है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-२

मन्त्रों में ग्वङ् चिन्हों का स्वरूप और उच्चारण

—आचार्य धर्मवीर विद्यालंकार, धर्म-विज्ञान मुनि

आर्य समाज के क्षेत्र मे ग्वङ् के उच्चारण मे मतभेद चल रहा है। सामान्यतया इनका उच्चारण ग्वङ् या गुङ्" रूप मे किया जाता है। कुछ मान्य विद्वानो ने प्रातिशाख्य आदि ग्रन्थो के अध्ययन के अनन्तर यह मत प्रगट किया है कि इनका "ग्वङ् या गुङ्" रूप से उच्चारण नही करना चाहिए।

इस विषय पर विचार करने से पूर्व, वर्णो अर्थात् स्वर व्यजनो के स्वरूप और उच्चारण के सामान्य नियमो पर पहले ध्यान देकर समझना आवश्यक है।

वर्णो के अनेक भेद हैं। प्रथम, स्वर और व्यजन रूप से दो भेद हैं व्यजन के पुन. अनेक भेद हैं —५ वर्ग अन्तस्थ और ऊष्म। ये सभी निरनुनासिक एव सानुनासिक रूप मे भी विभक्त है। प्रत्येक वर्ग का पाचवा वर्ण सानुनासिक (अर्थात् नासिका से बोले जाने वाला) तथा प्रथम चार निरनुनासिक हैं।

सन्धि नियम—सन्धि नियमो मे, पूर्वपद के अन्त मे अनुस्वार होने पर, परपद के आदि मे व्यजन होने पर, अनुस्वार का रूप बदल जाता है। अर्थात् परवर्ती पद के आदि वर्ण का सवर्णीय सानुनासिक वर्ण हो जाता है। जैसे—

कथ+करोति (क वर्ग)=कथङ्करोति—क वर्ग का सानुनासिक 'ङ्' हुआ।
कथ+चलति (चवर्ग)=कथञ्चलति—च वर्ग का „ 'ञ्' „
कथ+टकार (ट वर्ग)=कथण्टकार —ट वर्ग का „ "ण" „
कथ+धारयति (तवर्ग)=कथन्धारयति --त वर्ग का „ "न्" „
कथ+पचति (प वर्ग)=कथम्पचति —प वर्ग का „ 'म् „
कथ+याति)अन्तस्थ=कथय्याति) अन्तस्थ „ य् „
कथ+लावण्य) =कथल्लावण्य) „ ल „
कथ+वहति) =कथव्वहति) „ वँ „

इसके लिए महर्षि पाणिनी की अष्टाध्यायी का सूत्र है—

"अनुस्वारस्य ययि पर सवर्णम्"

परन्तु रफ और ऊष्मो का सवर्ण नही होना। अष्टाध्यायी पर महाभाष्य लिखने वाले महर्षि पतञ्जलि ने इस कमी को निम्न प्रकार पूर्ण किया :—

"रेफोष्माण्यम् सवर्ण्य न सन्ति।"

अर्थात अनुस्वार से परे पद का आदि वर्ण र् श् ष् स् ह् होगे, तो उनका सवर्ण तो है नही, अत वह अनुस्वार ही रहेगा।

परन्तु शुक्ल यजुर्वेद मे ऐसी अवस्था मे अनुस्वार को ग्वङ् या गुङ् होता है। ग्वङ् ह्रस्व है। उसके उच्चारण मे आधी मात्रा से कम समय लगता है तथा गुङ् दीर्घ हैं। इसके उच्चारण मे आधी मात्रा से कुछ अधिक समय लगता है। इसके लिए नियामक सूत्र है—

(१) 'ह्रस्वात्परो दीर्घ ।'

अर्थ—ह्रस्व से उत्तर ग्वङ् का दीर्घ उच्चारण होता है। उदाहरण—"स गुङ् सूवे या···"।

(२) 'दीर्घात्परो ह्रस्व. '

अर्थ—दीर्घ से परे अनुस्वार या ग्वङ् का ह्रस्व उच्चारण होता है। जैसे—'धान्मो वात. पवता ꣳ।'

इस प्रकार ग्वङ् चिह्न ह्रस्व और गुङ् चिह्न दीर्घ के द्योतक हैं।

इस प्रकार ग्वङ् / गुङ् का स्वरूप स्पष्ट हुआ। ये अनुस्वार के ही रूप है जो रेफ और ऊष्म (श् ष् स् ह्) के कारण होते हैं। ये मात्र शुक्ल यजुर्वेद मे ही पाए जाते हैं। ग्वङ् / गुङ् के स्वरूप के विषय मे विद्वानो का मतभेद नही है। मतभेद है उच्चारण मे। कुछ विद्वान पूर्वाभ्यास और परम्परा के कारण इनका उच्चारण 'ग्वङ / गुङ्" करते हैं और नवीन विद्वान् इनका उच्चारण अनुस्वार ही करने लगे है।

वर्णो के नाम और उच्चारण अलग अलग होते हैं।

नाम—प्रत्येक वर्ण के पीछे 'कार" शब्द जोडने से उस वर्ण का नाम बनता है। जैसे—अकार, ककार मकार, वकार आदि। जब किसी एक वर्ण के विषय मे कुछ कहना होता है, तब उसे नाम से पुकारा जाता है। र को रेफ, य् र् ल् व को अन्तस्थ और श् ष् स् ह् को ऊष्म नाम से पुकारते हैं।

क से म तक के वर्ण, पाच वर्गों मे विभक्त है। और अलग-अलग नाम से पुकारे जाते है। जैसे क वर्ग का अर्थ है—क् ख् ग् घ् ङ्। त वर्ग से—त् थ् द् ध् न् आदि। ङ् ञ् ण् न् म् को सानुनासिक करते हैं।

उच्चारण—सभी वर्णो का उच्चारण मुख के विशेष स्थान से और विशेष प्रयत्न से होता है। ये स्थान हैं :—कण्ठ, तालु, मूर्धा, ओष्ठ और दन्त। तीन वर्ण एक साथ दो स्थानो से उच्चारित होते है—जैसे वकार दन्त और ओष्ठ से, ए, ऐ कण्ठ और तालु से, तथा ओ, औ—कण्ठ और ओष्ठ से। अनुस्वार मात्र नासिका से।

प्रयत्न—इसके साथ ही आभ्यन्तर और बाह्य प्रयत्न भी होते है। क से म तक का प्रयत्न स्पर्श, य् र ल् व् ईत् स्पर्श, श् ष् स् ह् ईषद्विवृत अथवा विवृत, सभी स्वर विवृत तथा अकार का संवृत प्रयत्न भी होता है।

बाह्य प्रयत्न के भेद घोष एव अघोष तथा महाप्राण एव अल्प प्राण के रूप मे होते हैं।

ꣳ का नाम ग्वङ्/गुङ्" है। प्रथम ह्रस्व तथा दूसरा दीर्घ। इनका उच्चारण स्थान हैं मूर्धा। जिह्वा का पृष्ठ भाग, कण्ठ के समीप मूर्धा मे स्पर्श करते हुए अनुस्वार सदृश उच्चारण का प्रयत्न करना होता है। यह उच्चारण असाधारण रूप से कठिन हैं। जैसे मूर्धन्य 'ष्' का उच्चारण जिह्वा के अग्रभाग को मूर्धा मे स्पर्श से होता है। मूर्धन्य ष का उच्चारण कठिन है यह सर्वविदित है। मूर्धन्य अनुस्वार ꣳ का उच्चारण तो लगभग असम्भव ही है। परिणाम स्वरूप अनेको अभिज्ञ एव अधीन व्यक्ति भी इसका शुद्ध उच्चारण करने मे असमर्थ है। आदरणीय युधिष्ठिर जी मीमासक एव याज्ञवल्कीय शिक्षा के व्याख्याता मान्यवर अमरनाथ शास्त्री का भी यही मन्तव्य है।

ऐसी अवस्था मे प्रश्न होता है कि गुङ् ꣳ का उच्चारण किस प्रकार किया जाय। विशेषकर अनधीत एव अनभिज्ञ, सामान्य, भक्त, श्रद्धालु दैनिक सध्या हवन करने वाले व्यक्ति के लिए।

ꣳ का उच्चारण अति दुष्कर होने से सामान्यतया इसके नाम "ग्वङ्/गुङ्" को ही बोल लिया जाता है।

नवीन विद्वानो का मत है कि "ग्वङ्/गुङ्" तो उनका नाम है। उच्चारण इससे भिन्न है। नाम पुकारना समीचीन नही। अनुस्वार ही पढा जाय।

प्रश्न पुन उत्पन्न होता है कि अनुस्वार भी इसका उच्चारण नही। क्योकि अब यह अनुस्वार न रहकर ग्वङ् गुङ रूप धारण कर चुका है।

साथ ही अनुस्वार उच्चारण करने पर ग्वङ् गुङ् का अपना अस्तित्व सर्वथा लुप्त हो जायगा। वैदिक व्याकरण तथा वाङ्मय मे ग्वङ् गुङ का अपना जो कुछ भी महत्व है वह समाप्त हो जायेगा। जैसे मूर्धन्य ष् का उच्चारण कठिन होने से सामान्य जन इसका तालव्य रूप मे उच्चारण कर देते हैं और मूर्धन्य ष् को निरर्थक, भाररूप समझते हैं। विद्वान जन अनभिज्ञो को बारम्बार स्मरण कराते रहते हैं, तभी मूर्धन्य ष् का अस्तित्व विद्यमान है। इसी प्रकार ग्वङ्-गुङ का उच्चारण अनुस्वार (ं) हो गया, और इनके शुद्ध उच्चारण को बताना समाप्त हो गया तो इनका सर्वथा लोप

(शेष पृष्ठ ८ पर)

वेदों के आविर्भाव में दार्शनिक पृष्ठभूमि

आर्य रत्न, आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री दर्शन वाचस्पति

(गताक से आगे)

जैसे कोई भी अध्यापक जब विद्यार्थी को पाठ पढाता है तो विद्यार्थी के अन्त करण मे पहुचे हुए ज्ञान के प्रति अध्यापक और उसका ज्ञान उपादान कारण नही होता, प्रत्युत निमित्त कारण होता है। इसलिए महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादि—भाष्य भूमिका मे स्पष्ट लिखा है, कि वेदो का उत्पत्ति का प्रकाश ईश्वर करता है।

सख्या २—वेदोपदेश के बिना ज्ञान सम्भव नही। इससे भी प्रतीत होता है, कि परमात्मा और जीवात्मा मे उपदेशक और उपदेश सम्बन्ध था, तथा ईश्वर का उपदेश आत्मा मे अनुप्रविष्ट हो गया।

प्रसग वश इस प्रश्न पर भी विचार किया जा रहा है, कि ईश्वर ने जीवो को यह उपदेश दिया ही क्यो ? इसका महर्षि व्यास ने समाधान किया है कि वह ईश्वर स्वभावत करुणाशील है, इस पर कतिपय लोगो ने यह आक्षेप किया है कि फिर तो ईश्वर करुणा के पराधीन हो गया परन्तु ऐसी बात नही। पराधीन शब्द मे पर शब्द ही इसका विरोध कर रहा है, क्योकि करुणा परमेश्वर की अपनी है, अत वह सर्वथा स्वाधीन है तथा वेद ज्ञान तद्विद्यामय होने से नित्य है। ऊपर कहे गये वेदान्त के जन्मादि दोनो सूत्रो मे उपादानता का कोई सकेत नही, पचमी तो निमित्त कारण से भी होती है।

इस पर कोई कह सकता है कि ऊपर अधिकतर युक्तिवाद पर ही वेद ज्ञान के प्रति उपादानत्व का खण्डन किया गया है, किसी शास्त्र के प्रमाण को उद्धृत नही किया गया, ऐसा नही समझना चाहिये, ऊपर का समस्त तर्क वा युक्तिविन्यास पूर्णतया शास्त्रो पर आधारित है। साख्यदर्शन मे ईश्वर मे सन्निधान मात्र से उपादान प्रकृति से सृष्टिरचना बनाई गई है। वही पर यह भी शका उठती है कि सन्निधान मात्र से सृष्टि तो बन सकती है पर वेदोपदेश सामीप्य—मात्र से नही हो सकता- इसमे प्रयत्न भी अपेक्षित है। इसका समाधान साख्यशास्त्र मे इस प्रकार है—सिद्धरूप बोद्धत्वात वाक्यार्थोपदेश), (१/६८) अर्थात् परमेश्वर सिद्धरूप हे । सिद्ध की समस्त शक्तिया स्वाभाविक होनी है तथा परमेश्वर बोद्धा (ज्ञानी) चेतन है। चुम्बक मणि के सदृश जड नही है। वह व्यापक ऋषियो के निर्मल हृदयो मे भी था, तो उसके सन्निधान मात्र से ही वेद-प्रकाश हो सकता था, फलत हो भी गया । और "अन्त करणस्य तदुज्ज्वलितत्वाल लौहवदधिष्ठात्वम्' अर्थात् जीवात्माओ के अन्त-करण स्वय जड होते हुए भी पुरुष के सन्निधान से उज्ज्वलित हो जाते है। वह पुरुष अन्त करण का अधिष्ठाता है। अत अन्त करण मे सकल्पादि होना भी अनिवार्य है। जैसे लोहा स्वरूप से चमकीला और दाहकता कुछ भी नही है, परन्तु अग्नि के पास होने से उसमे भी चमक और दाहकता आ जाती है। इस प्रकार ज्ञान की धारकता जीवात्मा मे स्वाभाविक रूप मे रहनी हे, वह वेदज्ञान को भी ग्रहण करता है, जैसे सूर्य के प्रकाश गुण को नेत्र स्वत उपयोग मे ले आता है, उसी प्रकार ईश्वर के ज्ञान गुण को निर्मल बुद्धि स्वत धारण कर लेती है। बस यही वेदाविर्भावहै। अतएव ऋषि दयानन्द ने' सत्यार्थ प्रकाश म स्पष्ट लिखा ह कि 'परमेश्वर सृष्टि के आरम्भ मे उत्पन्न हुये अग्नि आदि ऋषियो का गुरु अर्थात् पढाने हारा है।'

यह भी निश्चित जानना चाहिये,कि बिना निमित्ति के नैमित्तिक अर्थ की सिद्धि कभी नही होती। अत वेद का ईश्वर उपादान कारण कदापि नही हो सकता। यदि होता, तो महर्षि दयानन्द वेद को ईश्वर का "गुणमात्र न लिखकर ईश्वर-स्वरूप द्रव्यगुणमय ही लिखते, तथा आगे वेद को "ईश्वरोक्त" भी लिखा है। जैसे अस्मदादि स्ववचनों के प्रति उपादान कारण नही, प्रत्युत निमित्त कारण हैं, उसी प्रकार वेदो के प्रति ईश्वर भी निमित्त कारण है, उसी प्रकार वेदो के प्रति ईश्वर भी निमित्त कारण है।

शका—इसी सन्दर्भ मे कुछ और विस्तार पूर्वक विचार कीजिए, कि वेद ज्ञान गुण है और गुणी परमात्मा है, दर्शनो मे स्वगुण के प्रति गुणी का समवाय कारण माना जाता है। इस प्रकार तो वेद ज्ञान के प्रति ईश्वर को समवायिकरण (उपादान) मानने मे भी यही भूल है जो द्रव्य जन्य है तथा वह "क्षण द्रव्य, निर्गुण निष्क्रियच तिष्ठति' अर्थात् प्रथम क्षण मे द्रव्य निर्गुण और निष्क्रिय रहता है, द्वितीय क्षण मे गुणयुक्त होता है। समाधान—पर यह सिद्धान्त समस्त सयोगजन्य द्रव्यो मे ही घटित होता है, जैसे उत्पन्न घट प्रथम क्षण मे रूपादि से रहित ही होगा, क्योकि इसका निमित्त कारण कुम्भकार उपादान कारण मिट्टी और कपालद्वयसयोग असमवायिकारण है। परन्तु परमेश्वर जन्य नही है तथा न उसका अन्य कोई कारण ही है। ईश्वर तथा तत्स्वरूप ज्ञानादि गुण भी नित्य शाश्वत सदा से अनादि है अत वह स्वगुण ज्ञान के प्रति उपादान कारण नही हो सकता।

इसके साथ यह भी समझना चाहिये कि जिस प्रकार छ इन्द्रियार्थ लौकिक सन्निकर्ष हे उसी प्रकार—

'अलौकिकस्तु व्यापारस्त्रिविध सप्रकीर्तित ।
सामान्यलक्षणो ज्ञान लक्षणो योगजस्तथा।"

इन तीन अलौकिक सन्निकर्षो मे से "योगज सन्निकर्ष से भूत, भविष्य, सूक्ष्म, विप्रकृष्ट विप्रकृष्ट, सभी वस्तुओ के साथ अलौकिक इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष हो जाता है। वह भी "युक्त और युजान' दो प्रकार का है । "युक्तयोगी को सर्वदा भाता रहता है और "युजान योगी" को चिन्तन करने से अर्थ का भान होता है तथा यह भी स्वत सिद्ध है कि मुक्ति से आये सर्वश्रेष्ठ अग्नि, वायु आदि ऋषि स्वत सिद्ध, निर्मलान्त करण, आत्मसाक्षात्कारी थे, जिन्हे आत्मस्थ परमेश्वर के वेदज्ञान का 'युक्त' होने से ज्ञान हो गया।

एक तर्क और भी है, कि जो सिमवायकारण होना है वह परिणामी अवश्य होता हे तथा वह वस्तु जो उपादान कारण बनी है, वस्तु अनेक भी होनी चाहिये।

परन्तु "एकमेव ब्रह्म द्वितीय नास्ति" मे ब्रह्म उपादान कारण नही, प्रत्युत निमित्त कारण ह। जिस प्रकार नेत्र ज्ञानेन्द्रिय सूर्य के प्रकाश को प्राप्त कर अपना कार्य चलाती है उसी प्रकार वेदरूपी सूर्य से ज्ञान के प्रकाश को जीवात्मा की निर्मल बुद्धि रूपी आख ने प्राप्त कर अपने मोक्ष साधनो को सम्पन्न किया था।

जिस प्रकार घट के नष्ट होने पर घट जाति मे घट शब्द प्रयोज्य रहता है और प्रयोजक कुम्भकार के ज्ञान मे भी रहता है।

उसी प्रकार वेदज्ञान सर्वज्ञ, ज्ञानाधिष्ठान ईश्वर मे यौगिकार्थ रूप मे नित्य वर्तमान रहता ह।

"तद् वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्" वेद ईश्वर वचन है, अत उसका प्रामाण्य है किसी वचन का वक्ता कभी भी उपादान कारण नही होता, प्रत्युत निमित्त कारण होता है, और "निःश्वसिता वेदा" इससे भी उक्त सिद्धान्त की पुष्टि होती है।

पत्र पत्रिकाएं और धर्म-प्रचार–

आर्य समाज का प्रचार कैसे बढ़े ?

–डा० भवानीलाल भारतीय

आर्य समाज अपने शैशवकाल से ही पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अपनी विचारधारा का प्रचार कर रहा है। स्वामी दयानन्द ने फर्रुखाबाद से "भारत सुदशा प्रवर्तक" नामक मासिक पत्र के प्रकाशन की प्रेरणा दी। वैदिक-यन्त्रालय के प्रथम व्यवस्थापक मुंशी बख्तावर सिंह ने "आर्य दर्पण" का प्रकाशन भी महर्षि के जीवन काल मे ही किया था। तब से लेकर एक शताब्दी का समय हुआ, आर्यसमाज ने पत्र-पत्रिकाओं को महर्षि के स्वप्नो की पूर्ति का एक सशक्त माध्यम स्वीकार किया है। आर्य समाज ने हिन्दी जगत को समर्पित व्यक्तित्व वाले, उच्चकोटि के आदर्श पत्रकारो की एक जीवन परम्परा ही प्रदान की है। सम्पादकाचार्य प० रुद्रदत्त शर्मा, प० पद्म सिंह शर्मा, डा० हरिशंकर शर्मा, डा० हरिशंकर शर्मा, प० इन्द्र विद्या-वाचस्पति आदि तो आर्य समाज के वे गण्यमान्य पत्रकार हैं जिन्होने अपना समस्त जीवन ही इस कार्य हेतु समर्पित कर दिया था।

खेद है कि आज आर्यसमाज के पत्रो की स्थिति न तो सुखद है और न सन्तोषप्रद। सख्यात्मक दृष्टि से उन्हे सन्तोषप्रद नही कहा जा सकता। न तो ये पत्र आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी है और न रोचक, उपयोगी अथवा प्रेरणास्पद सामग्री का ही प्रकाशन होता है। अधिकाश पत्र-पत्रिकायें सभा सस्थाओ के मुखपत्र (गजट) ही होते हैं जिनमे सामयिक अधिकारियों के सस्तवन प्रशस्ति पाठ के अतिरिक्त और कुछ नही होता। इन पत्रो की ग्राहक सख्या इतनी न्यून होती है कि ये आजीवन घाटे मे ही चलते है। जहा आर्य समाज के पत्रो की यह स्थिति है वहा अन्य धर्म एव मत सम्प्रदायो के पत्र अत्यन्त सुव्यवस्थित तथा आकर्षक ढग से प्रकाशित होकर लाखो पाठको तक अपनी विचारधारा का प्रसार करते हैं। क्या इसे अस्वीकार किया जा सकता है कि गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र "कल्याण" के लाखो ग्राहक है तथा वह अपने साधारण एव विशेषाको के माध्यम से पुराण-प्रतिपादित धर्म का व्यापक प्रचार कर रहा है। "पांचजन्य राष्ट्र-धर्म तथा 'आर्गेनाइजर' आदि पत्र भी राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के विचारो का देश व्यापी प्रचार करने के उत्कृष्ट माध्यम है।

आर्य समाज भी अपने पत्रो को महर्षि के सदेश का उद्घोषक एव प्रचारक बनाकर वैदिक विचारधारा को विश्व व्याप्ति प्रदान करे, एतदर्थ हमें निम्न सुझावो पर ध्यान देना होगा—

(१) आर्य समाज का एक प्रभावशाली दैनिक पत्र हो जो सामान्य समाचारो के साथ साथ आर्य समाज के दृष्टिकोण को भी जनता तक पहुँचाये।

(२) हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा मे भी एक उच्चकोटि का मासिक पत्र प्रकाशित किया जाय जो आर्य समाज के वेद विषयक दृष्टिकोण को अंग्रेजी भाषा पाठको तक पहुँचाने मे समर्थ हो।

(३) सस्कृत के विद्वत्मण्डल तथा गीर्वाण वाणी के प्रेमी पाठको के लिए सस्कृत भाषा मे एक साहित्यिक विचार प्रधान पत्रिका का प्रकाशन भी आवश्यक है।

(४) विभिन्न प्रान्तीय भाषाओ मे भी आर्य समाज की विचारधारा का वहन करने वाले साप्ताहिक एव मासिक पत्र प्रकाशित हो, जिनमे वेद-व्याख्या, सिद्धान्त चर्चा, नारी ससार, बाल जगत् श ा समाधान आदि के विविध उपयोगी एव रोचक स्तम्भ रहे।

पुस्तकालय और विचार क्रान्ति

आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द ने अपनी सस्था को बौद्धिक धरातल पर प्रतिष्ठित किया था। उनकी यह हार्दिक कामना रही कि आर्य समाज का प्रत्येक सभासद प्रबुद्ध अभिरुचि सम्पन्न, विचारशील, मनस्वी तथा मेधावी हो। इसी दृष्टि से उन्होने आर्य समाज के विधान मे एक पुस्तकाध्यक्ष का पद भी रखा जो प्रत्येक आर्य समाज मे पुस्तकालय का सचालन करता है। आर्य समाज की पुरानी पीढी के व्यक्ति अत्यधिक स्वाध्याय शील तथा शास्त्रीय अध्ययन में रुचि लेने वाले होते थे। वस्तुतः किसी भी अन्य धार्मिक या राजनैतिक सभा में पुस्तकाध्यक्ष जैसा न तो कोई पद और न वहा पुस्तकालयो की व्यवस्था का ही विधान है। मेरे अपने पुस्तकालय मे स्वामी दयानन्द विषयक एक हजार से अधिक ग्रन्थ सगृहीत हैं जिनमे से अनेक दुर्लभ तथा अप्राप्य हैं।

आर्यसमाज की कार्य प्रणाली मे स्वाध्याय को सबल प्रदान करने वाले पुस्तकालयो की सुरक्षा और सचालन का प्रावधान रखा गया है, किन्तु यह अनुभव कर पीडा भी होती है कि आज आर्यसमाजो के पुस्तकालय और और पुस्तकाध्यक्ष सर्वाधिक उपेक्षा तथा अवगणना के शिकार हो रहे है। चुनावो की दलबन्दी के फलस्वरूप चाहे किसी अपने समर्थक को पुस्तकाध्यक्ष के पद पर आसीन कर दिया जाय परन्तु निर्वाचन के पश्चात यह कभी अपेक्षा नहीं रखी जाती कि पुस्तकाध्यक्ष अपने कर्तव्य पालन मे कितनी तत्परता तथा दक्षता प्रदर्शित कर रहा है। यद्यपि विभिन्न आर्य समाजो के प्राचीन पुस्तकालयो मे सहस्रो की सख्या मे दुर्लभ, प्राचीन एव अलभ्य ग्रन्थ रत्न पडे पडे सड रहे है अथवा दीमको के आहार बन रहे है परन्तु न तो उन्हे पाठको के लिए ही सुलभ बनाया जाता है और न अनुसधान एव शोध

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज का प्रचार

(पृष्ठ ७ का शेष)

के क्षेत्र मे कार्य करने वाले विद्वान ही उनका उपयोग ले पाते हैं।

अत आवश्यक है कि केन्द्रीय एव प्रान्तीय राजधानियो मे आर्य समाज के विशाल ग्रथालय रहे। इन पुस्तकालयो की देखरेख ऐसे अध्ययन शील जानते हो। पुस्तकालयों के साथ-साथ अध्ययन प्रिय छात्रो तथा शोधविद्वानो के निवास की व्यवस्था भी रहे, जहा पर्याप्त समय तक ठहर कर अपना अध्ययन कार्य कर सके। समाजो के वार्षिक बजट मे नई पुस्तको के क्रय हेतु पर्याप्त राशि का प्रावधान होना चाहिए। प्रत्येक आर्य समाज के ग्रन्थालय मे वेद, उपनिषद स्मृति, दर्शन, वेदांग, दयानन्द वाड्मय तथा अन्य उपउपयोगी ग्रन्थ प्रचुर सख्या मे रहने चाहिए। पुस्तकालया के अन्तर्गत पुस्तक-विक्रय विभाग भी रहे जिनमे नवीन प्रकाशित पुस्तको को आर्य समाजेतर पाठको तक पहुँचाने की व्यवस्था हो।

आर्य समाज की विभिन्न प्रवृतियो तथा उपलब्धियो पर आज स्वदेश तथा विदेशी विश्वविद्यालयो मे जो बहुविध अनुसधान कार्य हो रहे हैं, तथा प्रतिवर्ष अनेक विदेशी विद्वान भारत मे आकर आर्य समाज विषयक साहित्य का अनुसधान करते हैं उनकी सुविधा के लिए आर्यसमाज ने सम्बन्धित समग्र प्रकाशित साहित्य की एक विशाल सूची (Biblidgrophy) तैयार कराकर उसे प्रकाशित किया जाना चाहिए। इस ग्रथ सूची मे समस्त ग्रन्थो को विषयानुसार वर्गीकृत किया जाय तथा यथासम्भव लेखक प्रकाशक, प्रकाशन काल तथा सस्करण का भी उल्लेख रहे। इसी प्रकार आर्य समाज के साहित्य का इतिहास भी तैयार किया जाना चाहिए तथा विभिन्न भाषाओ मे लेखन कार्य करने वाले दिवगत एव विद्वान आर्य लेखको का विवरण एकत्रित किया जाना भी आवश्यक है।

आर्यसमाज को अपनी युवा शक्ति को सगठित कर उनके समक्ष किसानो मजदूरो आदिवासियो, वन वासियो तथा पिछडे वर्ग के लोगो के उत्थान के कार्यक्रमो को प्रस्तुत करना होगा। इसके लिए आवश्यक है कि वर्ष मे एकाधिक बार राष्ट्रीय सेवा सगठन की ही भाति ग्रामो और पिछडे इलाको मे शिविर आयोजित किये जाये तथा युवको को भारत के कोटि-कोटि पीडित शोषित तथा अभाव ग्रस्त लोगो की सेवा का अवसर प्रदान किया जाय।

आज भारत के हिन्दू समाज के समक्ष उपस्थित सामाजिक चुनौतिया अ ... हैं। ... प्रकरण को लेकर उभरे विवाद मे कट्टरपथी मु ... विदा ... तक रहा है कि भले ही उनके मज़हब मे तलाक शुदा ... गुजारे की व्यवस्था को लेकर की गई व्यवस्थाओ की आलोचना की जाये किन्तु किसी मुसलमान युवती को दहेज न लाने के कारण, वैसी अमानवीय यातनाओ का शिकार होना पडा है जैसी नव विवाहिता हिन्दू युवतिया को सहनी पडनी हैं। बात कटु होने पर भी सत्य है। आज हमारे समाज मे जैसा दिखावा, फिजूलखर्ची, धन का अपव्यय, वैभव का नग्न प्रदर्शन हो रहा है, उसे देखते हुए यह कहना पडेगा कि यदि आर्य युवको की स गठित शक्ति इन बुराइयो पर तत्काल नियन्त्रण नही करती तो हमारे समाज का भविष्य अधकार पूर्ण ही है।

हमे आर्य युवको को इस बात के लिए तैयार करना होगा कि वे सामाजिक कुप्रथाओ, दहेज, जात पात के बन्धनो तथा अन्य कुरीतियो को दूर करने के लिए पूर्ण तत्पर हो जाये। विवाह जैसे सामाजिक समारोहो मे सादगी परिवार मे नारी मर्यादा और गौरव की पुन स्थापना तथा बढती हुई कामुकता, विलास वृत्ति तथा उद्दाम शृगारिकता के विरोध मे आवाज उठाने के लिये हमे युवा शक्ति को प्रेरित करना होगा।

आर्य समाज की शिक्षण संस्थाएं

यह सब कुछ तभी सम्भव हो सकेगा यदि हम बालको एव किशोरो को उनके अध्ययन काल मे ही सदाचारी, देशभक्त तथा नैतिक मूल्यो के प्रति ईमानदारी से रहने की शिक्षा दे सके। इसी सन्दर्भ मे हमे आर्य समाज के व्यापक शिक्षा कार्यक्रमो की समीक्षा करनी चाहिए और यह देखना चाहिए कि ... १०० वर्ष पूर्व आरम्भ की गई हमारी शिक्षा विषयक योजनाये कहा तक सफल हुई है, और यदि उनमे कुछ न्यूनता रही है तो उसके क्या कारण हैं?

मन्त्रों में ख्ड् चिह्नों का स्वरूप

(पृष्ठ ५ का शेष)

होना स्वाभाविक परिणाम होगा। विद्वज्जनो को ऐसा अभिप्रेत कदापि नही।

दुष्ट शब्द—जब ख्ड्-गुड का उच्चारण अनुस्वार होगा, तब यह वर्ण महर्षि पतजलि की दृष्टि मे "दुष्ट" होकर यजमान का मनोरथ सिद्ध न कर पाएगा। कभी कभी तो यजमान का नाश ही कर देता है। दुष्ट" शब्द की विवेचना मे महर्षि पतजलि का निम्न श्लोक द्रष्टव्य है—

"दुष्ट शब्द स्वरतो वर्णतो वा, मिथ्या प्रयुक्त. न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमान हिनस्ति, यथेन्द्रशत्रु स्वरतोऽपराधात्।"

अभिप्राय यह है कि साधारणतया शब्द मे वर्ण के कारण दोष होता है। जैसे प्रजा को परजा, सर्वस्व को सरवस उच्चारण करना। महाभाष्यकार का कथन है कि अगर वर्ण और उसका उच्चारण दोनो शुद्ध हो, मात्र स्वर (उदात्त अनुदात्त, स्वरित) की दृष्टि से दोष हो जाय अर्थात् उच्च स्वर के स्थान पर निम्न स्वर और निम्न स्वर के स्थान पर उच्च स्वर का प्रयोग हो जाय, वह भी शब्द का मिथ्या प्रयोग होता है। तब शब्द अपना अभिमत अर्थ नही कह पाता। कभी कभी यह दुष्ट शब्द वज्र बन यजमान को मार डालता है। जैसे कि "इन्द्र शत्रु" शब्द का वर्ण और उच्चारण दोनो शुद्ध होने पर, मात्र स्वरदोष से राक्षस स्वय मर गए। जबकि उनके यज्ञ का उद्देश्य इन्द्र को मारना था।

अत ख्ड् गुड् का अनुस्वार उच्चारण मिथ्या प्रयोग है। परन्तु "ख्ड्-गुड्" कहना सदोष नही। कारण कि उसका अशुद्ध उच्चारण न करके उनके नाम "ख्ड्-गुड्" का उच्चारण करके उनकी उपस्थिति=अस्तित्व का बोध कराया गया है।

उपसहार—अत विशुद्ध अभिमत यह है

(क) प्रथम ख्ड् का, स्थान और प्रयत्न की दृष्टि से, शुद्ध उच्चारण किया जाय।

(ख) अगर शुद्ध उच्चारण करना कठिन एव सदोष है, तब उनके नाम "ख्ड्-गुड्" का ही उच्चारण करना समीचीन है।

इससे ख्ड् का अस्तित्व बना रहेगा और पुरातन वैदिक परम्परा भी बनी रहेगी।

यह भी महत्वपूर्ण तथ्य द्रष्टव्य है कि महर्षि दयानन्द महाराज के व्याख्यानो अथवा लेखो मे कही भी ख्ड् के स्थान पर, अनुस्वार (ं) उच्चारण का समर्थन नहीं मिलता। उनके परम शिष्यो—विशेषकर स्वामी श्रद्धानन्द जी—द्वारा भी ख्ड् के स्थान पर अनुस्वार (ं) के उच्चारण का समर्थन नही मिलता। गुरुकुलो मे यही पाठ कराया जाता रहा।

मांस निर्यात को प्रोत्साहन की नीति घातक

स्टेट बैंक आफ इण्डिया, बम्बई के महाप्रबन्धक सुलेमान राज के नाम पत्र

प्रिय श्री राज जी,

फाइनेंस एक्सप्रेस के २३ जुलाई के प्रकाशन मे एक समाचार पढकर बडा आश्चर्य हुआ कि भारतीय स्टेट बैंक इस बात के लिए बढावा देगी कि देश से मास का निर्यात ७५ करोड रुपये से बढाकर एक हजार करोड रुपये सालाना कर दिया जाये।

आप जानते है कि मास का निर्यात अधिकतर अरब देशो को किया जाता है। जिन्हे गाय का मास ही अधिक पसन्द है। मुझे पता नही कि एक हजार करोड के मूल्य के मास के लिए कितनी गाय, भैंस, व बछडे काटे जायगे, लेकिन यह सख्या करोडो नही तो कम से कम लाखो मे तो होगी ही।

आपने एक सरल सी बात सोच ली कि देश की विदेशी मुद्रा की आवश्यकता है, इसलिए मास के निर्यात को बढावा मिलना चाहिए, लेकिन क्या आपने सोचा कि यह किसका मास होगा और क्या उस पशुधन से देश को कई गुना अधिक आमदनी नही मिल सकती है। कुछ समय से मेरा सम्पर्क श्री एन०डी० पाढरीपाडे, कुमारप्पा गो गोवरधन केन्द्र, पुसद (महाराष्ट्र) से हुआ है जो कि पिछले २५ वर्षों से गाय के गोबर पर अनुसधान कर रहे है और उन्होने हिसाब लगाया है कि जितना गोधन हमारे पास मे है और केवल रात्रि का गोबर इकट्ठा करे तो इसकी मात्रा ४० करोड तक होगी।

"नैडेप विधि" से यदि खाद बनाते हैं तो एक किलो गाय के गोबर से ४० किलो खाद मिलती है और इस विधि के लिए यदि हम १० करोड टन गोबर का व्यवहार करे तो साढे तीन सौ—चार सौ करोड टन सेन्द्रीय खाद मिलेगी। इस खाद की कीमत यदि २५-३० पैसे प्रति किलो भी जोडी जाये तो इससे गाव वालो को करीब एक लाख करोड,रुपये की खाद उपलब्ध होगी। वैसे तो इस खाद के बनाने मे कोई बाहर का सामान नही चाहिये, पर यदि अपनी मजदूरी, कूडा-करकट आदि का भी दाम छोडे तो भी ५०-६० हजार करोड का लाभ ग्रामवासियो को होगा। जो मजदूरी आदि के पैसे निकाले वे अलग। नैफेप काक ने गोबर का ऋतुराज प्लास्टर, धूपबत्ती, अगरबत्ती, अगराज (साबुन आदि भी बनाये है और इन विधियो से देश को करीब २ लाख करोड का उत्पादन मिल सकता है।

गाय के और कितने लाभ है इसका आर्थिक मूल्याकन करना बहुत कठिन है लेकिन एक छोटा सा उदाहरण मैने केवल गोबर के व्यवहार का दिया है और इसके पश्चात् भी करीव १० करोड टन गोबर बचा रहेगा,जो उपले तथा अन्य व्यवहार के लिए होगा। अत आपसे अनुरोध है कि इस विषय को सकीर्ण दृष्टि से न देखे, बल्कि एक व्यापक रूप से विचार कर, ताकि देश की आर्थिक दशा सुधरे, गाव को उन्नति हो न कि बिगडे। मुझे आशा है कि इस विषय पर पूरी जानकारी लेने के पश्चात् ही आप कोई आगे कार्य करेगे, अन्यथा यह देश के लिए बहुत बडा दुर्भाग्य होगा और जिसके जिम्मेदार आप और आपके बैंक होगे।

—लक्ष्मीनारायण मोदी,
राष्ट्रनिर्माण विचार समिति सी-१८,
पम्पोस ऐनक्लेव, नई दिल्ली-११००४८

वधु चाहिये ?

कान्य कुब्ज ब्राह्मण ३८ वर्षीय कालेज क्लर्क बी०ए० हेतु वधु चाहिये। कार्यरत को वरीयता विधवा परित्यक्ता स्वीकार्य लिखे —सम्पादक लोकवाणी गोविन्दनगर, कानपुर। (उ०प्र०)

स्वाधीनता-दिवसः

(१)
स्वाधीनता-दिन स्याद्,
जनता-हिताय नित्यम्।
सुख गोरवाभिवृद्धि,
लोक श्रयेदजस्रम् ॥स्वा०॥

(२)
वीरै स्व-रक्त-दानै
धीरै स्व देह-दानै।
शक्तै स्व-देश-भक्तै,
लब्ध स्वराज्यमेतत् ॥ स्व०

(३)
आत्माहुति प्रदत्ता,
यै राष्ट्र-धर्म-हेतो।
स्वार्थं विहाय सर्वे,
ते देव-तुल्य-वन्द्या ॥ स्व०

(४)
राष्ट्राय गौरव स्यात्,
तेषा स्वदेश-भक्ति।
स्वार्थार्पणेन सर्वे
स्युर्देशभक्ति-युक्ता ॥ स्वा०

(५)
भागीरथ श्रमेण,
स्वाधीनतेयमाप्ता।
रक्ष्या च पोषणीया,
निज-जीवनार्पणेन ॥ स्वा०

(६)
देशा समेऽपि लोके,
स्वातन्त्र्य-लाभ-तुष्टा।
रक्षति रक्तदानै,
स्वातन्त्र्यमेव नित्यम् ॥ स्वा०

(७)
स्वार्थ विहाय गर्ह्य
रक्षन्तु देशभक्ता।
शक्ता विरक्त-भावा
स्वातन्त्र्यमेव शश्वत् ॥ स्व०

(८)
स्वाधीनना सुखानाम्,
मूल गुणोच्चयानाम्।
शक्तधृतश्च शान्ते
मानस्य गौरवम्य ॥ स्वा०

(९)
राष्ट्र - प्रकर्ष - हेतु,
पतिताऽर्ति-नाश हेतु।
हीनाऽर्त-शोक-त्राता,
धान्यादि वृद्धि हेतु ॥

(१०)
धन-धान्य-शान्ति-तुष्टा,
वस्त्रान्न-वास-हृष्टा।
पुष्टाश्च भारतीया,
स्युर्देशप्रेम-पूता ॥ स्वा०

—डा० कपिलदेव द्विवेदी, ज्वालापुर, हरिद्वार

आर्य जगत् के समाचार

प्रान्तीय आर्य महिला सभा का विदेश मन्त्री को पत्र

सम्माननीय श्री पी० वी० नरसिंहराव
केन्द्रीय विदेश मन्त्री
भारत सरकार
६ मोतीलाल नेहरू मार्ग
नई दिल्ली-११०००१
माननीय महोदय

सादर नमस्ते।

प्रभु कृपा से आप स्वस्थ एवं प्रसन्नचित होंगे।

कुवेत म्यूनिसिपल बोर्ड के क्षेत्र मे किसी भी व्यक्ति का दाह संस्कार नही किया जाता, क्योकि यह इस्लामी कानून के विरुद्ध है। कुवेत की सरकार ने सन १९७८ तक दाह संस्कार की अनुमति दी हुई थी, इसके पश्चात १९८६ तक भी मानवीय आधारो पर तदर्थ रूप से दाह संस्कार करने की अनुमति दी जाती रही है। भारतीय मूलके व्यक्तियो द्वारा भारतीय दूतावास के माध्यम से इस प्रश्न को कई बार उठाया गया कि पूर्ववत् दाह संस्कार की अनुमति वहा पर दी जाये। परन्तु पिछले दिनो दाह संस्कार प्रबन्ध विभाग के अधीक्षक युसुफ रशीद अमदा ने स्पष्ट किया कि हमने १९८६ से दाह संस्कार की अनुमति देना बिल्कुल बन्द कर दिया है और उन्होने यह भी बताया कि सुलईबख्त श्मशान स्थान को विकास की दृष्टि से दूसरे स्थान पर ले जाया जा रहा है। श्री अमदा ने यह भी कहा कि उन भारतीयो के लिए जो मृत शरीरो को अपने देश मे ले जाने की सामर्थ्य नही रखते, उनके लिए निशुल्क दफनाने की व्यवस्था कर दी गयी है।

उपयुक्त आदेश कुवेत मे रहने वाले भारतीयो की धार्मिक-भावनाओ के साथ खिलवाड है। हिन्दू अपने मृतको का दाह संस्कार करते हैं, उनको दफनाने के लिए बाध्य नही किया जाना चाहिए।

आपसे विनम्र निवेदन है कि आप कुवेत सरकार से इस सम्बन्ध मे बातचीत करे तथा वहा की सरकार को भारतीयो को अपने धार्मिक रीति रिवाजो के अनुसार सब प्रकार की सुविधाए देने के लिए बाध्य करे। आप इस विषय को, यदि आवश्यक समझें तो, अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग मे भी उठाने की कृपा करें।

कृपया की गयी कार्यवाही से सभा को सूचित करें।

धन्यवाद,

—प्रकाश आर्या, मन्त्री
महिला सभा

आर्य समाज हजूरी बाग श्रीनगर (काशमीर) का उत्सव सम्पन्न

श्री नगर। आर्य समाज हजूरी बाग का नया भवन लगभग बन कर तैयार है। सभी अधिकारी वर्ग तथा श्री नेत्रपाल जी शास्त्री और आर्य-जगत बधाई के पात्र है। जिनके सहयोग से चार वर्ष पूर्व उग्रवादियो द्वारा जलाकर नष्ट करने के बाद अब पुनः बन कर तैयार है।

आर्य समाज का भवन तथा कन्या विद्यालय का भवन भी बन कर तैयार है।

आर्य समाज का उत्सव चार वर्ष के बाद उत्साहपूर्ण वातावरण मे १२ से १४ तक किया गया। सामवेद पारायण यज्ञ भी हुआ।

प्रात. ७॥ से १० बजे तक यज्ञ श्री योगेन्द्र कुमार शास्त्री व श्री ओंकार मिश्र प्रणव की अध्यक्षता में हुआ और फिर प० महेशचन्द्र जी व श्री हितकर जी के भजन हुए।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री विशेष आमन्त्रित व्यक्ति थे। यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ प्रीतिभोज भी हुआ। जिसमे आबाल वृद्ध सम्मिलित हुए

आर्य समाज रैनावाड़ी (श्री नगर) का भी उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज रैनावाडी श्री नगर का उत्सव भी १५-१६ अगस्त को सम्पन्न हुआ, जिसमे प्रात: यज्ञ-भजन प्रवचन तथा साय ५ से ८ तक भजन व व्याख्यान हुए। श्री सच्चिदानन्द शास्त्री सभा-मन्त्री, ओंकार मिश्र प्रणव योगेन्द्र कुमार शास्त्री प्रधान जम्मू सभी तथा महेशचन्द्र संगीत रत्न व हितकर जी के व्याख्यान व भजन हुए।

—नेत्रपाल शास्त्री, आ० स० हजूरी बाग

आर्यसमाज सुरसा हरदोई में यजुर्वेद पारायण-यज्ञ

आर्यसमाज सुरसा हरदोई मे श्री प० शिव शर्मा मिश्र द्वारा २४ से २७ जून तक आचार्य श्री प० श्यामनाथ शास्त्री की अध्यक्षता मे यजुर्वेद पारायण-यज्ञ सम्पन्न हुआ।

चि० अज्ञेय-विज्ञेय का मुण्डन संस्कार भी किया गया।

—अनिल प्रकाश मिश्र

शतपथ निरुक्त सरल हिन्दी में

स्वाध्यायशील आर्य बन्धुओ को यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् श्री आचार्य वीरेन्द्र मुनि शास्त्री काव्यतीर्थ एम०ए० अध्यक्ष विश्ववेद परिषद् सम्पादक वेद ज्योति पाक्षिक लखनऊ ने ऋग्वेदीय शतपथ ब्राह्मण के १-२ काण्डो और वेदाग निघण्टु निरुक्त सम्पूर्ण का बडी सरल और सुबोध हिन्दी भाषा मे अनुवाद किया है। इस श्रमसाध्य कार्य की पूर्ति करके जहा श्री आचार्य जी ने हिन्दी की बहुत बडी सेवा की है, वहा वैदिक साहित्य का अनुशीलन करने वाले बन्धुओ के मार्ग की बहुत बडी बाधा को दूर कर दिया है।

मेरा वैदिक साहित्य मे रुचि रखने वाले बन्धुओ से अनुरोध है कि वे इन ग्रन्थो का स्वाध्याय करके अपनी ज्ञान-पिपासा को शान्त करे और मान्य आचार्य जी के श्रम को भी सफल करे। आर्यसमाजो के अधिकारियो को भी मेरा परामर्श है कि अपने पुस्तकालयो के लिए इन ग्रन्थो को क्रय करके रखे। आर्यसमाज मन्दिरो का गौरव उतना भव्य भवनो मे नही है जितना कि विशाल पुस्तकालयो से है। नये साहित्य को अवश्य क्रय करके रखना चाहिए और नवीन ग्रन्थो की सूचना पुस्तकाध्यक्ष को सत्संग की पर अवश्य देनी चाहिए।

मूल्य—निरुक्त सम्पूर्ण ३० रुपये शतपथ (काण्ड १-२) २० रुपये

पुस्तक प्राप्ति का स्थान—
सी ८१७, महानगर, लखनऊ (उ० प्र०)

—शिवकुमार शास्त्री
एम ८७ साकेत नई दिल्ली-१७

अध्यापको की आवश्यकता

गुरुकुल आर्य नगर, हिसार (हरयाणा) मे एक ऐसे संस्कृत अध्यापक की आवश्यकता है कि जो विश्वविद्यालय गुरुकुल कागडी के पाठ्यक्रमानुसार नवमी तथा दशमी कक्षाओ को एवं शास्त्री कक्षाओ को पढाने मे समर्थ हो।

एक ऐसे विज्ञानाध्यापक की भी आवश्यकता है कि जो नवमी तथा दशमी कक्षाओ को विज्ञान एवं गणित दक्षतापूर्वक पढा सके।

वेतनादि का निर्णय गुरुकुल नियमानुसार साक्षात्कार के समय ही किया जायेगा। प्रार्थी महानुभाव निम्न पते पर पत्र व्यवहार करे अथवा मिले। गुरुकुल हिसार शहर से ५ किलोमीटर की दूरी पर बालसमन्द रोड के निकट एक नहर के किनारे स्थित है।

आचार्य
गुरुकुल आर्य नगर, पो० आर्य नगर
जिला—हिसार (हरयाणा) १२५००१

वेद विहित भारत

(पृष्ठ २ का शेष)

वानप्रस्थ और स दास। यदि प्रथम आश्रम का उचित रूप से सब से पालन न किया गया तो सारा जीवन बाझिल और निस्सार हो जाता है ब्रह्मचय आश्रम की दृढता से ही शेष तीन आश्रमा का विकास व पालन चित रूप से हो सकता है। लेकिन वतमान भारत मे तो विशेषकर स्वत त्रता के बाद तो आश्रम व्यवस्था समाप्त हो चकी है। आज क शिक्षित युवक युवतिया तो ब्रह्मचय गहस्थ वानप्रस्थ और स यास इन शब्दा मे भी कम हा परिचित है। व्यक्ति समाज व राष्ट का उत्थान करने वाला ब्रह्मचय आश्रम तो नाम मात्र को शेष रह गया है। आज का मानव गहस्थ मे पदा होकर गहस्थ मे ग्रस्त होकर यह लीला समाप्त कर दता है सभी आश्रमा का पोषक गहस्थ आश्रम दु खो का मूल बन कर रह गया है। शेष दो आश्रमा की चर्चा करना व्यथ जान पडती है। आज की सहशिक्षा के कारण समाज मे एक विषाक्त और भयावह वातावरण फलता जा रहा है ब्रह्मचयण कन्या युवान विन्दते पतिम्। वाली वदोक्ति कही भी दृष्टिगोचर नही होती है। आश्रम व्यवस्था की इसी अवहेलना के कारण मानव नाना दु खा मे फसता जा रहा है। मानव को शाति और सुख तब तक प्राप्त नही हो सकता जब तक वह पुन वदानुसार काय म सलग्न न हा जाय आज जो विश्व शाति की बात कहा जा रही है विश्व शा ति तो क्या व्यक्ति शा ति प्राप्त करना भी कठिन है।

अमृतमयी शब्द शक्ति स सम्प न सभी भाषाओ का जननी देवभाषा सस्कृत भाष वैदिक काल मे और उसके बाद भी कितनी प्रभाव व प्रवाह मयी थी यह तत्कालीन साहित्य के अवलोकन मात्र से ही म लूम हा जाता है। सभी भाषाओ की अलकाररूप मे जो सस्कृत भाषा अलकृत था महान कविया दाशनिको लेखका व चि तका की कलम से इस भाषा का चमत्कार चमत्कृत हुआ है। विश्व के श्रेष्ठ साहि य का सृजन भी इसी भाषा मे हुआ है। इस भाषा के प्रशस्ति के विषय मे भतृ हरि जी ने निम्न श्लोक रच डाला —

> केयूराणि न भूषय ति पुरुष हारा न च द्रो ज्वला।
> न स्नान न विलेपन न कुसुम नालड्कृता मूद्धजा ॥
> वाण्येका समलङ्करोति पुरुष या सम्कृता धायते।
> क्षिय त खलु भूषणानि सतत वाग्भूषण भूषणम् ॥ (नीतिशतक)

मुगल आक्रा ताओ ने पता नहा आर्यो की भूषण रूप इस भाषा को अत्यधिक निरादर दृष्टि से देखा। इ होने अनेक दुलभ पुस्तका तक को नष्ट कर डाला। सस्कृति को नष्ट करके ये दुष्ट आय जाति मे सास्कृतिक गुलामी लाना चाहत थे। जिससे आय जाति सदा के लिए समाप्त हो जाती। लेकिन ऐसा करन मे य समथ न हो सके। आज सुनने मे आ रहा है सस्कृत मर चुकी है। सस्कृत मृत भाषा है हि दी और अ ग्रजा के बीच द्वन्द्व चला हुआ है। अधिक से अधिक भाषाओ का ज्ञान रखना बहुत अच्छी बात है। लेकिन सस्कृत जिसमे भारतीय सस्कृति के प्राण निवास करते है उसे त्यागने और तिरस्कृत करने का औचि य हा नही जान पडता। आज भाषा सम्बन्धी विवाद सारे देश मे याप्त है। हमार अ ग्र जी दा और पश्चिमी सभ्यता म पले शिक्षाविद् महोदय इस भाषा का विद्यालयो स पत्ता काटने की घात लगाय बठे है। जितना उनस हो पाया है उन्होने क र दिखा दिया है। नई शिक्षा नाति के तहत नवोदय विद्यालया स म स्कृत पूरी तरह हटा दी गया है कितनी विडम्बना का बात है। इन विद्यालय मे भ्रष्टाचार कितना याप्त है यह देखने की बात है

उक्त एक आर मह वपूण त य की ओ देख रहे है राजनीति जिससे इस समय सम्पूण राष्ट त्रस्त और भय व शोकाकुल हे। यदि वदिक कालीन राजनीति पर सिंहावलोकन कर तो दृष्टिपथ म समृद्धि गौरव सुख शाति और विश्वशा ति की तस्वीर मस्तिष्क पटल म आ ती है। वदिक काल मे राजा प्रजा व्यक्ति समाज पिता पुत्र भाई बहिन क बाच मे जो सम वय था अब कहा ? उस समय किसी प्रकार का भय लोगो म नहीं था। महाराजा अश्वपति के शब्दो म —

> न म स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यप।
> नानाहिताग्निर्ना विद्वान नस्वैरी स्वैरिणिकुत ॥

लेकिन आज की राजनीति ... विप ... चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति उससे प ... ... नाण्डव न प्रस्तुत किया है ... जानत ... मर म न क ... कहलाने वाले भारत आज न क्या ... ... वि ... क ... क नीचे न पूरा तरह ... चुका है प्रत्येक काय नय ... वम ... रा का घान स बच निकलना कठिन ... ... वीर पुरुष सत्याग्रहिय का ... न ... का ... म ... सक ... प ... वि ... म ... ना ... कि ... य ... आयामा का भारत अवश्य वि व सि मार हा सकता है।

व कि कान न मा त ना अपन वि व म शा ति और सभ्यता का श्रेष्ठ उदाह ण था आज वहा इन्डिया बन कर दिन पर दिन पतन की ओर बढता जा रह है। इस ... ... स निकाल कर वेदा की स गुनआयमान करके पुन भारत बनाया जा सकता है इस काय के लिए सभी आर्यो को सगठित होकर काय करना होगा। निराशा के बादल हटाने होगे। ताकि भारत एक बार फिर से अपने को विश्वगुरु के पद पर आसीन कर सके। इसके लिए सभी क्षेत्रो मे हमे दिन रात मेहनत करनी होगी। अ त म निम्न शब्दो मे अपनी बात समाप्त करता हू —

> दाता पुकार मेरी सदीप्ति को जिला दे।
> बुझती हुई शिखा को सजीवनी पिला दे॥
> प्यारे स्वदेश के हित अगार मागता हूँ।
> चढ्ती जवानिय का शृगार मागता हूँ॥

आर्य वीर दल जनपद मेरठ का विभिन्न चरित्र निर्माणार्थ दौरा

श्री व ... प्रधान सचालक सार्वदेशिक आय वीर दल दिल्ली एव आ ... पाल (आचाय गुरुकुल ततारपुर) सचालक आय वीर दल ... प्र० के तूफान दौरा का ४ अगस्त मे १९ अगस्त तक।

काय-क्रम

श्री गाधी स्मारक इण्टर कालिज आई०टी०आई० व डिग्री पतला (गाजियाबाद) आयसमाज धालडी महर्षि दयान द इन्टर कालिज गोवि दपुरी मोदीनगर। श्रामती सुशीला दवी वनस्थली बालिका इ र कालिज प तापुर। गदाना (मोदीनगर)। गुरुकुल सर्वोदय इण्टर कालिज पाचली। किसान इ टर कालिज महि उद्दीनपुर। श्री अचरजलाल जी बजाज मोदीनगर। हायर सैके डी स्कूल रजपुरा। मुशी ब ... सिंह लिसाडी गेट मेरठ। इण्टर कालिज जालनी। इ ... कालिज ढिकानी ... गाव (मेरठ)। आयसमाज अग्रवाल म ... ... ।

मास्टर ... सिह जिला अध्यक्ष
आय वीर दल जनपद मेरठ

प० आशुराम जी द्वारा सामवेद का उर्दू भाष्य उपराष्टपति श्री शकरदयाल शर्मा को भेट करते हुए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

[illegible]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व में

आर्य समाज का प्रतिनिधि मण्डल बिहार के भूकम्प पीड़ितों के मध्य

दिल्ली ७ अगस्त ८[illegible]

२१ अगस्त ८८ को बिहार मे आये भूकम्प से पीडित लोगो की सहायता के लिये आर्य समाज का प्रतिनिधि मण्डल बिहार के लिये रवाना हो गये। वहा वह बिहार राज्य के प्रधान व मन्त्री को साथ लेकर भूकम्प पीडित क्षेत्र मे पहुंच गये है।

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आह्वान दिया है कि प्रत्येक देशवासी का मानवता के नाते कर्त्तव्य है कि इस प्राकृतिक प्रकोप से पीडित लोगो की तन, मन और धन से सहायता करे।

उन्होने आर्यसमाज की सभी संस्थाओ और आर्यसमाज मन्दिरो से सम्बद्ध सभी लोगो से प्रार्थना की कि भूकम्प पीडितो की सहायता के लिये वे अन्न खाद्यान्न तथा अन्य आवश्यक वस्तुये भेजने की व्यवस्था करें। उन्होने घोषणा की कि आर्यसमाज द्वारा बिहार के भूकम्प पीडित क्षेत्रो मे राहत शिविर खोले जा रहे है।

सभा-प्रधान जी ने अपने सन्देश मे कहा कि बिहार के नेपाल तराई के क्षेत्र देखकर बडा ही दुःख हुआ। वहा की दयनीय दशा का वर्णन नहीं किया जा सकता है। यह प्रकृति का प्रकोप असहनीय है।

आर्य वीर दल के स्वयं सेवक भी वहा जा रहे है।

सच्चिदानन्द शास्त्री

सभा मन्त्री

वेदामृत

हमारी कामनायें पूर्ण हो

इड एह्यदित काम्या एत।
मयि व कामधरण भूयात॥

[illegible]॥

हिन्दी अर्थ—[illegible]

तुम मुझे प्राप्त हो। हे [illegible] [illegible] तुम [illegible] प्राप्त हो। हे [illegible] पदार्थो तुम मुझे प्राप्त हो। तुम्हारा अभीष्ट पदार्थो का रखना मुझ मे हो अर्थात सारे अभीष्ट पदार्थ मुझे दो।

शुभ कामनाए [illegible]

यास्ते शिवास्तन्व काम भद्रा,
याभि सत्य भवति यद् वृणीषे।
ताभि त्वमस्मा [illegible],
अन्यत्र पापीरप वेशया धिय।

अथर्व० ९ २ २५॥

हिन्दी अर्थ—हे कामदेव [illegible] जो शुभ और कल्याणकारी [illegible] (स्वरूप) है उनसे जिनका स्वीकार करते हो वहा शुभ होता है। उन शुभ शरीरो से हमारे अन्दर प्रवेश कीजिए। अशुभ बुद्धियो या विचारो को हमसे दूर रखिए।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सम्पादक—
सच्चिदानन्द शास्त्री

श्रावणी पर्व

आर्यों के सामाजिक और वैयक्तिक जीवन में पर्वों का सदा से महत्व रहा है। धरा पर सभी मानव जातियां किसी न किसी प्रकार का पर्व मनाती रही हैं।

पर्व शब्द का अर्थ पूरक भी है और ग्रंथि भी है। यह जहां आनन्द से पूर्ति करता है वहां ग्रंथि रूप से धारक भी है ईख के रस के दृश्य का ग्रंथि सुरक्षित रखती है और बांस आदि की दृढ़ता को उनकी गांठ सुरक्षित रखता है। इसी प्रकार शरीर की स्थिति शरीर की ग्रंथियों द्वारा सुरक्षित है।

श्रावणी पर्व आर्यों के प्रसिद्ध पर्वों में से एक महान पर्व है और यह वैदिक पर्व भी है। इसका सीधा सम्बन्ध वेद के अध्यापन और अध्ययन करने वालों से है।

गृह्य सूत्रों के अनुसार इस पर्व का सम्बन्ध वेद और वैदिकों से दिखलाया गया है। यह पर्व जहां पर्व है वहां यह गृह्यकर्म भी है गृह्यसूत्रों के अनुसार श्रवणाकर्म भी इसी अवसर पर होता है और उपाकर्म वेदाध्ययन का प्रारम्भ होता है। चार मास वर्षा के होते हैं इसमें निरन्तर वेदाध्ययन चलता रहता है फिर पौष में आकर उत्सर्ग किया जाता है। इसी आधार को लेकर आर्य समाज ने वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन इस अवसर पर किया है। वेद के अध्ययन के मार्ग को आचार्य दयानन्द ने प्रशस्त किया। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम घर घर जाकर वेद के प्रचार को बढ़ावें।

श्रावणी नाम इस पर्व का क्यों है?

इसका उत्तर है कि श्रवण नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा को यह पर्व होता है। इसी से यह श्रावणी है। श्रावणी पूर्णिमा के आधार पर ही इस मास का नाम भी श्रावण मास है। इस श्रावणी को भी विधि है। और वह गृह्य सूत्रों व हमारी पर्व पद्धति में लिखी है जो प्रत्येक आर्य और आर्य समाज को करनी चाहिए।

यह सब होने पर भी श्रावणी के स्वरूप में अनभिज्ञता पाई जाती है। उसके शुद्ध स्वरूप को समझने का प्रयास करना चाहिए। रक्षाबन्धन का सामाजिक कृत्य भी इसी दिन पड़ता है पर यह प्रथा इस पर्व का कारण नहीं है।

श्रावणी और स्वाध्याय

वेदाध्ययन ही इस पर्व से सीधा सम्बन्ध है इसका सुगम उपाय यह है वेद दिन सन्ध्योपासना का स्वाध्याय जीवन का एक अंग होना चाहिए। आर्यों के जीवन का स्वाध्याय एक अंग है। स्वाध्याय से प्रमाद का निषेध है।

स्वाध्याय का ज्ञान के परिवर्धन में बहुत बड़ा महत्व है शतपथ में (११ ५ ७ १) स्वाध्याय की प्रशंसा करते हुए लिखा है। कि स्वाध्याय करने वाला सुख की नींद सोता है। युक्तमना होता है अपना परम चिकित्सक होता है। उसमें इन्द्रियों का संयम और एकात्मकता आती है। और प्रज्ञा की वृद्धि होती है। यहां पर ब्राह्मण ग्रंथ का प्रत्येक शब्द महत्व से भरा हुआ है। पुनः उसी ब्राह्मण में ११ ५ ७ १० में कहा है—कि स्वाध्याय न करने वाला अब्राह्मण हो जाता है। वेद का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना परम धर्म मानना चाहिए।

ब्राह्मण ग्रन्थ स्वाध्याय को अन्य ग्रन्थों की भांति एक व्रत बतलाया है। शतपथ में स्वाध्याय को ब्रह्मयज्ञ कहा है।

यज्ञ की वाणी जुहू है मन उपभृत है चक्षु ध्रुवा है और मेधा स्रुवा है। सत्य इसका अवभृथ है। इस प्रकार शास्त्रों में स्वाध्याय की महिमा गाई गई है। ऋग्वेद में मण्डूक सूक्त में वर्णन है—वर्षा काल में मेंढक बोलते हैं एक की बोली को दूसरा दोहराता है यह उपमा वेदपाठी ब्राह्मणों की दी गई है वस्तुतः वेद का मण्डूक शब्द और यह उपमा निदर्शन का महत्व लिए है। इस वर्षा ऋतु में वेदपाठी मण्डूक की वाणी और मानसून मेघस्थ गर्जन और कब हो सकता है। इस समय वेदज्ञ के मुख से निकली वेदवाणी मानसून की गड़गड़ाहट से निकली मध्यमा वाणी मेंढक की निकली अव्यक्त वाणी परा पश्यन्ती मध्यमा और वैखरी के अनिरुक्त रूप का प्रतीक है। इस वर्षा ऋतु में सबका समन्वय हो जाता है। अतः स्वाध्याय की प्रवृत्ति को प्रत्येक आर्य को बढ़ाना चाहिए।

यज्ञोपवीत और श्रावणी

श्रावणी के साथ नए यज्ञोपवीत धारण और पुराने के छोड़ने की भी प्रथा है इसका भी प्रधान कारण है। गृह्य सूत्रों में विभिन्न कर्मों के समय विभिन्न प्रकार से यज्ञोपवीत धारण करने का परिपाटी है। निवीति उपवीति प्राचीनावीति आदि संज्ञाएं इसी आधार पर है। प्रत्येक प्रधान यज्ञ याग आदि कर्मों के समय नया यज्ञोपवीत धारण किया जावे। उसी आधार की पोषिका यह श्रावणी पर्व पर यज्ञोपवीत बदलने की प्रथा है। यज्ञोपवीत का आर्यों के संस्कार और कर्मकाण्ड में बड़ा ही महत्व है।

यज्ञोपवीत के तीन धागे गले में पड़ते हैं वह मातृ ऋण पितृ ऋण देवऋण आदि कर्तव्यों से अपने को बंधा हुआ समझने लगता है। यहां उपनयन यज्ञोपवीत व्रत आदि पद इस सम्बन्ध में विशेष महत्व के हैं। आचार्य कुल में विद्यार्थी लाया जाता है। इस क्रम पूर्वक कि यह उपनयन है। यज्ञ आदि उत्तम कर्मों के लिए विद्यार्थी इससे प्रतिज्ञात और अधिकृत होता है। इससे अनुशासन और व्रतों के पालन की प्रतिज्ञा में बद्ध होता है। अतः यह व्रतबन्ध है वेदों में भी इसका पल्लवन किया गया है।

जो तन्तु यज्ञोपवीत तन्तु यज्ञ का प्रसाधक है और विद्वानों में आतत है उसको हम धारण करें। ऋग्वेद के १० ५७ २ मन्त्र में कहा गया है यद्यपि इस मन्त्र में बहुत से तथ्य छिपे हुए हैं।

पावमानी

१—जिस पवित्र कर्म (स्वाध्याय) से विद्वान अपने को सदा पवित्र करते हैं उस अनन्त धारा वाले स्वाध्याय कर्म में पावमानी ऋचायें हमें पवित्र करें। साम उत्तर० १० ८ ५

२—पावमानी ऋचा कल्याण की देने वाली है उनके स्वाध्याय से मनुष्य आनन्द को प्राप्त होते हैं। साथ ही मोक्ष को प्राप्त होते हैं। साम उत्तर १० ८ ६

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

जन्म दिन मनाइये

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग

व्रज के कन्हैया का गीता रचैया का, गुण गान गाइये।
भादों बदी अष्टमी को पद्म जन्माष्टमी को जन्म दिन मनाइये॥
मुरली बजैया से दाऊ जी के भैया से, शिक्षा शुभ पाइये।
योगी महान से, वेदों के विद्वान से, जीवन बनाइये।
रुक्मणि पति को योगीराज यति को, कलंक न लगाइये।
वृषभान की दुलारी को, राधा सुकुमारी को पत्नी न बनाइये॥
गोकुल के गोपाल को, यशोदा के लाल को, दोष न लगाइये।
कंसासुर को मारने अविद्या असुर को तीर ज्ञान के चलाइये॥
परस्पर द्वेष दूर कर दो क्लेश वंशी प्रेम की बजाइये।
ज्योति ज्ञान की जलाओ सत्य रास्ता बताओ रूढ़िवाद को मिटाइये।
ऐसा मिला स्वर ताल आय रक्त उबाल गीत क्रान्ति के गाइये।
आलस को त्याग, लगा पाखण्डों में आग मिल राष्ट्र को बचाइये॥
बनो सदाचारी भक्त कृष्ण के पुजारी शुद्ध आचरण बनाइये।
मोहन मुरारी का मन भावन [illegible] जन्म दिन मनाइये॥

सम्पादकीय

लोकतन्त्र के नाम पर

भारतीय संविधान निर्माताओं ने लोकतन्त्र का ढाचा बनाया। इसी से लोकतन्त्रीय देश कहलाता है। लोकतन्त्र के नाम पर सभी नागरिको को कुछ मूल अधिकार प्राप्त कराए गए हैं।

जिनमे से प्रमुखता दी गई है—जैसे समता के अधिकार भाषण आदि की छूट? स्वतन्त्रता पूर्वक विचरण, व जीवनीय आधार आदि? भारतीय संविधान के अनुच्छेद १९ द्वारा दी गई स्वतन्त्रता भाषण तथा अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता है इसी के साथ प्रेस व लेखनादि भी है। इस अनुच्छेद के अनुसार भारतीय नागरिक को अपने विचार व्यक्त करने का अधिकार प्राप्त है। इन अधिकारो का उपयोग करने वाला व्यक्ति या संस्था उसी सीमा तक स्वतन्त्र है। जब तक भारत की एकता अखण्डता पर आच नही आती है। साम्प्रदायिक भाषण न हो और पारस्परिक सम्बन्धो पर भी किसी प्रकार की रुकावट न पैदा हो। कानून की सीमाओ को लाघ कर इन व्यवस्थाओ का प्रयोग नही कर सकता है। परन्तु आपातकाल मे इन पर अकुश लगाकर रोके भी जा सकते हैं।

किन्तु हमारा संविधान व्यवहार मे कुछ और ही है—समता और भाषण के नाम पर न जाने कितने देश द्रोहियो को विदेशो मे जाकर साम्प्रदायिकता के विष बोने का ज्वर चढा हुआ है। अब्दुल्ला बुखारी और शहाबुद्दीन जैसे न जाने कितने जहरीले तत्व हैं जो देश मे मन्दिर, मस्जिद के नाम पर साम्प्रदायिकता के बीज बो रहे हैं।

आज उग्रवादी तत्वो द्वारा राजनैतिक स्वार्थ पूर्ति हेतु सन्त, शहीद की उपाधि प्रदान की जाती है। आज देश मे लोकतन्त्र का नाम लेकर कही—मिजोरम की पृथक माग है तो दार्जिलिंग या खालिस्तान की माग रहे हैं। देश विभाजन की पुरानी माग पुन दोहराई जा रही हैं। लेकिन लोकतन्त्रीय सरकार व्यवस्था के नाम पर उस पर कोई असर नही होता है। आखिर ऐसा क्यो? यह प्रश्न है?

उत्तर मे सरकार का निकम्मापन तथा तुष्टीकरण की नीति तथा अपने कुछ राजनैतिक स्वार्थ, कुर्सी का प्रलोभन, यह वह तत्व है जो विद्रोहियो के विपरीत नही बोलने देता। किन्तु जो मुह खोलता है उसे निकालकर बाहर किया जाता है। पर ऐसा कम?

पर बुखारी व शहाबुद्दीन जैसे मलीदा मार रहे है उनसे यह नही पूछा जाता कि आखिरकार वे वातावरण क्या खराब कर रहे हैं। मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति से ही इतना भय है लेकिन यह भय हिन्दू मुसलमान का उत्पन्न न करके प्रेम के वातावरण मे सास ले विदेशो को छोड भी दे, तो घर के अन्दर अलगाववाद की माग करते है। विदेशो मे बैठे सिक्खो द्वारा खालिस्तान की माग को भुला भी दे। तो जो भारत मे नजरबन्द कितने उग्रवादी तत्व हैं जो स्पष्ट खालिस्तान की माग पर साम्प्रदायिक भाषण देकर वातावरण को दूषित करते हैं।

यहा तक है कि पजाब तक को पृथक कर विशेष राज्य का दर्जा दिया जाय। किन्तु पजाब की लडाई विशेष राज्य का दर्जा देने मात्र से समाप्त नही होती। किन्तु नींव तो उसी दिन पड गई जिस दिन स्वर्ण मन्दिर मे सुरक्षा बलो ने प्रवेश किया, तब खालिस्तान का समर्थन किया था तो और क्यो न माँग करे।

सरकार के झूठे वायदे व्यर्थ जा चुके है ब्लैक थन्डर की सम्पूर्ण विजय के बाद उग्रवादियो ने और अधिक हमले किये हैं। सरकार के झूठे दावे कि हमने उग्रवादियो को बेनकाब कर दिया है। वायद खोखले सिद्ध हुए है। किन्तु वास्तविकता है कि उग्रवादी केसो मे साक्षी मिलने का अभाव मे उन्हे मुक्त किया जा रहा है। सरकार लोकतन्त्र की दुहाई देती है। अगर लोकतन्त्र यह नही कहता कि उग्रवादियो को सरे आम गोली मार दो। पर इससे यह होगा कि उग्रवाद के नाम पर लोकतन्त्र का यह भी कहना है कि निर्दोषो के खून से आतकवादी रक्तरंजित खूनी होली न खेलें। क्योंकि न जाने इस हत्याकाड से कितनी मा की गोदे सूनी हो जायेगी। बहनो के माग का सिन्दूर पोंछा जा चुका है। बच्चे अनाथ हो गये हैं। परन्तु यह सब विद्रोही निर्दोषो को निशाना बनाकर क्या लोकतन्त्र की हत्या नहीं की जा रही है सरकार क्यो नही समझने की कोशिश करती? आखिर मे दिया गया न्याय अन्याय पर ही टिकता है।

पाश्चात्य देशो द्वारा दी गई सुरक्षा की भी नकल होनी चाहिए। परन्तु साम्प्रदायिक समस्या का हल गोलिया नहीं है फिर भी पाक की शह पर देश मे शान्ति भग करने वालो से सरकार गोलियो से क्यो नहीं निपटती है।

राजनीति की समस्या उसका समाधान करना होगा। उग्रवादियो से नही बल्कि उनसे जो भारत सरकार की मदद करने मे सहयोग करे। अधिकार और स्वतन्त्रता सिद्धात का विषय न रहकर व्यावहारिक होने चाहिए। प्रजातन्त्र के नाम पर देश विभाजन के षडयन्त्र को कुचलना होगा।

लोकतन्त्र की कोरी बाते देश को २१ वी सदी की ओर कदापि नही ले जा सकती है। लोकतन्त्र को कानून के पालने से ही लोक बचाया जा सकता है।

समानता के अधिकार—आज बहुमत के नाम को कुचला जा रहा है और अल्प सख्यक समुदाय बहुमत पर हावी हो रहा है। लोकतन्त्र मे बहुमत का शासन और उसके द्वारा अल्प संख्यको की सुरक्षा की गारन्टी।

योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन से शिक्षा

पाच हजार वर्ष पूर्व जब भारत का नेतृत्व योगीराज कृष्णचन्द्र जी महाराज के हाथ मे था। उन्होने देश का नेता होते हुए देशवासियो की सभी क्लासो के साथ वह व्यवहार किया। जो आज कल के ससार के लिये अनुकरणीय है। उनके क्रियात्मिक जीवन पर हम तीन तरह मे दृष्टि पात कर सकते है।

१—शारीरिक तौर पर वह इतने शक्तिशाली थे कि उनकी शक्ति का लोहा भीष्मपितामह जैसे ब्रह्मचारी बलशाली भी मानते थे शिशुपाल ने जब पाण्डवो की सभा मे उनका अपमान करना चाहा और इसी उद्देश्य से मुकाबिले के लिये ललकारा, तो उन्होने बिना किसी अगर मगर किये शिशुपाल का प्राणान्त कर दिया।

२—आध्यात्मिक तौर पर वह इतना ऊचा स्थान रखते थे कि आज भी विश्व की समस्त बौद्धिक सभ्य जातिया गीता मे दी हुई शिक्षा के सम्मुख नतमस्तक है।

नैपोलियन और नेल्सन बनने की इच्छा कही नही देखी जाती। परन्तु कृष्ण बनने की इच्छा प्राय सभी मनुष्यो मे पाई जाती है।

३—सामाजिक उन्नति का तो उन्होने इतना उत्तम उपदेश दिया कि यदि हम उसे अपनाय तो हमारा भविष्य उज्ज्वल हो सकता है। हम उनके जीवन के सम्बन्ध मे कुछ बात स्पष्ट करता हूँ।

(क) उनके विचार मे सामाजिक उन्नति के लिये प्रत्येक व्यक्ति के लिए अच्छा होना आवश्यक था। इसी से उनका विश्वास था कि माता-पिता का कर्तव्य है कि तैयारी करके सन्तान पैदा करे। उन्होने इसकी क्रियात्मक शिक्षा दी। कि रुक्मिणी से विवाह करके जब दोनो मे सन्तान पैदा करने की इच्छा पैदा की। तो दोनो ने सन्तान पैदा करन की तैयारी की। वह तैयारी यह थी कि वह १२ वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया। तब एक पुत्र उत्पन्न किया। माता पिता को इस पर गर्व था।

(ख) जाति मे जो निर्धन व्यक्ति हो, उनसे कैसा व्यवहार करना चाहिए उनकी वह शिक्षा, जो उन्होने सुदामा जैसे निर्धन के साथ किया। यदि आज दुनिया के धनवान अपना ऐसा व्यवहार बना ले। तो श्रमिक और पूजीपति का विवाद समाप्त हो सकता है।

(ग) सामाजिक उन्नति के लिए आवश्यक है कि मनुष्य समाज के स्वार्थ के सामने अपने स्वार्थ को तुच्छ-हेय समझे। कृष्ण ने जब यह समझा कि

[शेष पृष्ठ ९ पर]

योगेश्वर श्रीकृष्ण

डा० शिवकुमार शास्त्री
(महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य)

गोपाल सहस्र नाम की पुस्तक मे योगीराज कृष्ण जी महाराज को चोरो और बदमाशो का सरताज कहा गया है—

"चोर जार शिरोमणी।"

भक्त शिरोमणी सूरदास के शब्दो मे—बातन मुरझ रसिका मोरी। रसिक शिरोमणी कृष्ण ने बातो ही बातो मे भोली-भाली राधा को फुसला लिया।

नीवी ललिन गही जदुराई।

जबहि सरोज धरयो श्रीफल पर तब यशुमति तह आई॥

नीवी कहते है 'नाडे' को और श्रीफल का अर्थ है 'स्तन' इससे अधिक स्पष्ट अर्थ करने की मैं आवश्यकता नही समझता।

मतिराम, बिहारी, देव, विद्यापति आदि की तो चर्चा ही छोड दीजिए। इन कवियो ने श्रीकृष्ण की वो छीछलेदर की है, क्या किसी जनसामान्य की भी वैसी होगी?

भागवतपुराण, सूरदास और रीतिकाल के कवियो ने कृष्ण जी महाराज का जो चित्र उपस्थित किया है, उसे पढकर और सुनकर माथा शर्म से झुक जाता है।

बारह वर्ष की कठोर तपस्या के पश्चात् प्रद्युम्न हुआ। श्रीकृष्ण को इस सन्तान पर इतना गर्व था कि वे उसे मे सुत" कहा करते थे। क्या ऐसा तपस्वी और सदाचारी व्यक्ति गोपियो के पीछे भाग सकता है? चोर और लम्पट हो सकता है?

भगवान् कृष्ण एक आदर्श महामानव और नेता थे। वे जानते थे कि—"यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतेरे जना। जैसा बडे लोग आचरण करते हैं, वैसा ही अनुकरण उनके अनुयायी भी किया करते है।

आज राधा के बिना कृष्ण की कल्पना भी नही हो सकती, परन्तु पुराणो के अनुसार भी राधा कृष्ण की पत्नी नही मामी थी। मामी का स्थान मातृवत् होता है। परन्तु तथाकथित कृष्ण भक्तो ने कृष्ण को राधा के साथ निम्न स्तर का उपहास करते हुए चित्रित किया है। महाभारत मे भगवान कृष्ण का जीवन अनेक पक्षो मे चित्रित हुआ है परन्तु उसमे कही भी राधा के नाम की गन्ध भी नही है।

योगीराज कृष्ण का हमारे इतिहास मे उल्लेखनीय नाम है। आज राम और कृष्ण के बिना हमारी सस्कृति अधूरी है। वे दोनो व्यक्तित्व युगपुरुष थे। अपने-अपने समय मे दोनो ने वैदिक सस्कृति की रक्षा के लिए सर्वस्व होम दिया।

शुक्राचार्य अपने नीतिसार नामक ग्रन्थ मे लिखते है—

"न कूटनीतिरभवत् श्री कृष्ण सदृशो नृप।' आज तक भूमडल पर कृष्ण के समान कोई राजनीतिज्ञ नही हुआ।

पाण्डवो का सम्पूर्ण राजनीति चक्र कृष्ण जी के हाथ मे था। उन्ही की कूटनीति से भीष्मपितामह, गुरु द्रोणाचार्य जयद्रथ, कर्ण, दुर्योधन आदि का वध सम्भव हुआ। यदि कृष्ण जी महाराज पाण्डवो की ओर न होते तो महाभारत का रूप कुछ और ही होता।

श्रीकृष्ण आदर्श मित्र थे। उन्होने जहा सुदामा के साथ मित्रता का आदर्श निभाया वहा अर्जुन के लिए भी मित्र के रूप मे काम आए। अर्जुन के सम्बन्ध मे श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा था—"मासान्युत्कृत्य दास्यामि फाल्गुनाथे महीपते। यदि आवश्यकता हुई तो मैं अर्जुन के लिए अपना मास भी काट कर दे सकता हूँ।

निर्भीकता की प्रतिमूर्ति कृष्ण जी महाराज ने कौरवो की सभा मे चारो ओर शत्रुओ स घिरे रहने पर भी कडक कर कहा—

"दुर्योधन! लाक्षागृह तुमने बनवाया था। भीम को विष तुमने दिया था। जुए का खेल तुमने रचाया था। भरी सभा मे द्रौपदी का अपमान तुमने किया फिर भी अपने को निर्दोष सिद्ध करने मे लगे हो। निश्चय ही तुम्हारी जीवन लीला समाप्त हो चुकी है। सन्धि अच्छी थी तू उसे ठुकरा रहा है।"

कृष्ण जी महाराज ने बडी-बडी लडाइया लडाई परन्तु किसी लोभ-लालच के वशीभूत नही अपितु अन्याय का सामना करने के लिए। उन्होने जो भी देश जीता उसे अपने आधीन करने की कभी चेष्टा नही की और न ही अपने किसी सम्बन्धी को उसका लाभ पहुचाया।

श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन नैतिकता के आधार पर प्राणि मात्र का सुख चिन्तन करते हुए व्यतीत हुआ। जीवन पर्यन्त कृष्ण जी महाराज ने विश्व कल्याण किया।

सन्ध्या और हवन श्रीकृष्ण के जीवन के महत्वपूर्ण अंग थे। जिस समय पाण्डो के दूत बनकर वे दुर्योधन के पास जा रहे थे रास्ते मे सूर्यास्त के समय उन्होने रथ रुकवा कर सन्ध्या की—

"अवतीर्य रथात् तूर्णं कृत्वा शौच यथाविधि।
रथमोचनमादिश्य सन्ध्यामुपविवेश ह।"

यह योगीराज कृष्ण का सच्चा स्वरूप। आर्य जगत् उन्हे सदाचारी और सयमी मानता है, अन्य लोग लम्पट तथा धूर्त। आर्य जगत् उन्हे योगी मानता है, तो कुछ लोग भोगी।

आज की इन विषम परिस्थितियो मे भगवान् कृष्ण को स्मरण कर हम अपने कर्त्तव्य का पालन कर सकते है।

कृष्ण जी महाराज ने कहा था—"स्वधर्मे निधन श्रेय परधर्मो भयावह' स्वधर्म का अर्थ है अपन कतव्य का पालन करने हुए यदि प्राणो की आहुति भी देनी पडे तो श्रेयस्कर है।

योगीराज की गीता कर्त्तव्य का ही पाठ पढा रही है। प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी लोकमान्य तिलक ने कहा था—

'अपहाय निज कर्म कृष्ण कृष्णेति वादिन।
ते हरेद्वेषिण पापा धर्मार्थ जन्म यद्धरे॥"

जो कतव्य से तो पराङ्मुख रहते है और कृष्ण के नाम की माला जपते है, वे कृष्ण के सबसे बड दुश्मन और पापी हैं। क्योकि कृष्ण का जन्म धर्म की स्थापना के लिए हुआ था।

जो भगवान कृष्ण के नाम की माला तो जपते हैं, बडे-बडे मन्दिर और मूर्तिया बनवाते है, कीर्तन करते हैं परन्तु अपने चरित्र को नही सुधारते वे केवल मात्र भाण्ड के समान ही हैं।

योगीराज कृष्ण का एक नाम है गोपाल। हम जय गोपाल-जय गोपाल करने वाले इस ओर कभी ध्यान नही देते कि गोपाल के देश मे सूर्य निकलने से पहले हजारो गौवो को कत्ल कर दिया जाता है।

आज देश को मुरलीधर कृष्ण की नही चक्रधर कृष्ण की आवश्यकता है। आज हमे रासलीला वाले कृष्ण का अनुयायी नही अन्याय का विरोध करने वाले कृष्ण का अनुयायी बनना होगा।

चित्र एक माध्यम है उसके द्वारा हमे वैसा बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

महाभारत काल मे तो एक द्रौपदी का चीरहरण हुआ था, आज नारी जाति के सम्मान का दम भरने वाले हमारे देश मे अनेक द्रौपदियो का सरे आम चीरहरण ही नही शरीर नीलाम होता है।

आज हम इस देश मे ही नही, जब सारे विश्व मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व धूमधाम से मना रहे हैं तो हमे इस बात की प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम उस युगपुरुष के सच्चे अनुयायी बन कर देश मे व्याप्त अन्याय के विरुद्ध सतत सघर्ष करते हुए अपने कर्तव्य का पालन करगे। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के शब्दो मे—

"श्रीकृष्ण चन्द्र का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम हैं। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषो के सदृश है, जिसमे कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त कुछ भी बुरा काम किया हो ऐसा नही लिखा।"

स्वाध्यायात् मा प्रमदः

—नरेश कुमार शास्त्री, एम. ए., करतारपुर

व्याकरण के अनुसार "स्वाध्याय" शब्द की निष्पत्ति दो प्रकार से होगी सु+आङ+अधि+इङ् अध्ययने+घञ्=स्वाध्यायः। इस प्रकार स्वाध्याय का अर्थ होगा उत्तमता से किसी भी ग्रंथ का आद्योपान्त सर्वाङ्गत अध्ययन करना अर्थात् ऐसा अध्ययन करना जिससे ग्रन्थ का वर्ण्य विषय अध्येता को अच्छी प्रकार हृदयगम हो जाए उसके आशय का बोध उसे अच्छी तरह हो जाए। दूसरी निष्पत्ति "सु" के स्थान पर "स्व" पद रखने पर होगी। स्व+अध्याय. (स्वय कृत अध्ययन स्वाध्याय.) इसके अनुसार स्वाध्याय पद का अर्थ होगा "स्वय अध्ययन करना" (Self study) बिना गुरु या शिक्षक की सहायता के ऋषिकृत वेदानुकूल ग्रन्थो का चिन्तन व मनन करना दोनो निष्पत्तियो मे सार एक ही है अध्ययन करना क्योकि गुरु के द्वारा पढाये जाने पर भी शिष्य के आत्मचिन्तन द्वारा ही पठित विषय का गहनतत्व हृदयगम हो सकेगा। एक तीसरी व्युत्पत्ति भी है 'स्वेन स्वस्य कृत अध्ययन'- "आत्मना आत्मन कृत अध्ययन स्वाध्याय" इसका अर्थ होगा अपने द्वारा अपना अध्ययन अर्थात् आत्म चिन्तन करना।

यहा एक बात और ध्यातव्य है, वह यह है कि स्वाध्याय का सम्बन्ध मुख्यतया पढे लिखे व्यक्ति से ही है। अध्ययन का आरम्भ अक्षर ज्ञान से ही होता है और वह अक्षर ज्ञान उसे गुरुमुख से ही प्राप्त होता है। यदि कोई मनुष्य घर पर ही माता-पिता आदि से भी अक्षर ज्ञान कर घर मे ही अपना सम्पूर्ण अध्ययन करता है विद्यालय-गुरुकुलादियो मे प्रवेश नही लेता तो वे माता-पिता आदि ही उसके गुरु हुए। प्राचीन काल मे सामान्यतया गुरुकुलो ऋषि आश्रमो मे ही शिक्षा दी जाया करती थी और विद्या प्राप्ति के पश्चात आचार्य अपने शिष्य को जो उपदेश देते थे उसमे स्वाध्याय पर विशेष बल दिया करते थे। इसका उदाहरण तैत्तिरीयोपनिषद् मे बहुत सुन्दर मिलता है—

"वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति। सत्य वद। धर्म चर। स्वाध्यायान्मा प्रमद। स्वाध्याय प्रवचनाभ्या मा प्रमदितव्यम्।

तै० उ०--शिक्षावल्ली-अनु० ११-१

इस उपदेश मे "स्वाध्याय" शब्द का दो बार पाठ कर उस पर विशेष बल दिया गया है कि यथेष्ट विचरो परन्तु स्वाध्याय और प्रवचन (अध्ययन-अध्यापन) मे कभी प्रमाद मत करो। कुछ और हो या न हो परन्तु स्वाध्याय और प्रवचन अवश्य हो परन्तु आज इसके विपरीत है हर कार्य के लिए घण्टो समय बर्बाद कर दिया जाता है परन्तु स्वाध्याय के लिए समय नही।

आज की भाति प्राचीन काल से भी शिक्षणालयो में अनध्याय = अवकाश होता था परन्तु स्वाध्याय के लिए कोई छुट्टी नही होती थी। यहा तक कि काम्य-कर्मो के त्याग करने वाले सन्यासियो के लिए भी स्वाध्याय को आवश्यक बताया गया है—"स्वाध्याये नास्त्यनध्यायो ब्रह्मसत्र हि तत् स्मृतम्" ॥ मनु० २-१०६ ॥ स्वाध्याय मे कोई अवकाश नही क्योकि इसे ब्रह्मसत्र = ब्रह्मयज्ञ कहा गया है। आपस्करगृह्य सूत्र मे भी स्वाध्याय को ब्रह्मयज्ञ कहा गया है (ब्रह्मयज्ञो ह वा एष यत् स्वाध्याय .- आप० गृ०सू० १-४ १२-१)।

तैत्तिरीयोपनिषद-शिक्षावल्ली नवम अनुवाक मे आया है--ऋत च स्वाध्याय प्रवचने च प्रजातिश्च स्वाध्याय प्रवचने च। अर्थात् "ऋत" का पालन करे परन्तु स्वाध्याय और प्रवचन को न भूले "सत्य" का पालन करे परन्तु स्वाध्याय और को न त्यागे। तप करे परन्तु स्वाध्याय और प्रवचन भी अवश्य करे। शम-दम-अग्न्याधान अग्निहोत्र-अतिथि सेवा मनुष्यसेवा प्रजापालन- सन्तानोत्पत्ति पुत्र-पौत्र का लालन पालन-सभी कुछ करे परन्तु स्वाध्याय और प्रवचन का कभी त्याग न करे।

भगवान् पतञ्जलि ने भी योग के यम नियम आदि आठ अगो मे नियम का व्याख्यान करते हुए स्वाध्याय को महत्वपूर्ण माना है। शौच सन्तोष-तप स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधानानि नियमा (यो द २-३२)। अविद्या, अस्मिता, राग-द्वेष, अभिनिवेश इन पच क्लेशो के निवारण के भी भगवान पतजलि ने 'तप स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधानानि क्रियायोग.' (यो द २-१) सूत्र मे स्वाध्याय के महत्व का प्रकट किया है।

किमधिक वेद उपनिषद् ब्राह्मण स्मृति आदि सर्वत्र स्वाध्याय के महत्व को दर्शाया गया है।

यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि जब तक मनुष्य उच्चकोटि के ज्ञानवर्धक वेदादि सद्ग्रन्थो का गम्भीरता पूर्वक चिन्तन करता रहेगा और प्राप्त तथ्यो का प्रवचन अध्यापन द्वारा अन्यो मे प्रकाश कराता रहेगा इस स्वाध्याय का इस आत्म चिन्तन का उसके आचरण पर और उसके व्यवहार पर भी गहरा प्रभाव पडेगा। स्वाध्याय करने का सबसे बडा लाभ है कि स्वाध्याय शील व्यक्ति की प्रवृति अन्तर्मुखी हो जाती है मन एकाग्र होता है, ईश्वर प्रणिधान मे सहायता मिलती है।

शतपथ ब्राह्मण मे स्वाध्याय की विशेष महिमा दर्शायी गयी है। शतपथ ब्राह्मण ११-४-१ मे शतपथकार स्वाध्याय के सोलह लाभ बताते हैं—

१—युक्तमना भवति—स्वाध्याय से मनुष्य समाहित चित वाला हो जाता है उसका चित्त एकाग्र होता है।

२—अपराधीनो (भवति)—स्वाध्याय से मनुष्य पराधीन-परमुखापेक्षी नही रहता क्याकि आत्मचिन्तन से उसे बोध हो जाता है कि मैं चेतन तत्व "आत्मा" हूँ जो नित्य है मैं नश्वर शरीर नही हूँ--फिर क्या किसी की अधीनता स्वीकार करू। वह केवल कर्तव्य पालन करेगा।

३—अहरहरर्थान साधयते—वह दिन प्रतिदिन आर्थिक दृष्टि से तथा अन्तर्दृष्टि से सम्पन्न होता है। क्योकि उसका विवेक सामर्थ्य बढ जाता है।

४—सुख स्वपिति—स्वाध्यायशील व्यक्ति बाह्यवृत्तियो के अन्तर्मुखी हो जाने से सुख की नीद सोता है।

५—परम चिकित्सक आत्मनो भवति एव स्वस्थात्मनश्च—स्वाध्यायशील अपनी आत्मा का परमचिकित्सक हो जाता है क्योकि स्वाध्याय के आत्म-चिन्तन से वह मानसिक रूपण समुद्र हो जाता है और मोहादि से पीडित नही होता। इस प्रकार वह स्वस्थ आत्मा वाला हो जाता है।

६—इन्द्रियसयम (भवति)—स्वाध्याय से मनुष्य स्वभावत इन्द्रिय निग्रह करने मे सक्षम हो जाता है। गीता मे कहा है "वशेहि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता"। सयमेन्द्रियाणि स्थितप्रज्ञ होता है।

७—एकारामता (भवति)—स्वाध्यायशील व्यक्ति एक अद्वितीय परमात्मा मे रमण करने लगता है उसे सदैव परमानन्द की अनुभूति होने लगती है। उसे ससार के अन्य सब भौतिक सुख उस परमानन्द के सामने तुच्छ जाने पडते हैं।

८—प्रज्ञावृद्धि. (भवति)—स्वाध्याय से मनुष्य प्रज्ञावृद्ध हो जाता है उसे अपने भूत-वर्तमान और भविष्यत् पर तात्विक विचार का सामर्थ्य प्राप्त होता है। उस दूरदर्शिता का गुण आ जाता है।

इस प्रकार "वर्द्धमाना प्रज्ञा चतुरो धर्मान् ब्राह्मणम् अभिनिष्पादयति" यह बढी हुई प्रज्ञा उस स्वाध्यायशील मनुष्य को निम्नोक्त चार धर्म प्राप्त करा देती है।

९—ब्राह्मणायम् (अभिनिष्पादयति)—स्वाध्यायशील मनुष्य शूद्रत्व से निकलकर ब्राह्मण्य को प्राप्त होता है। वह अज्ञान से ज्ञान की ओर, अविद्या से विद्या की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, भौतिकता से अध्यात्म की ओर निरन्तर अग्रसर होता है और अन्तत वह सब वर्णो का शिरोमणि अग्रगण्य पूज्य हो जाता है।

१०—प्रतिरूपचर्याम (अभिनिष्पादयति)—स्वाध्यायशील मनुष्य स्वाध्याय द्वारा प्राप्त ज्ञान के अनुरूप जब अपना आचरण करने लगता है तो लोग उसे आदर्श मानकर उसका अनुकरण करते है। उसका आचरण समाज मे, राष्ट्र मे, व्यक्ति-व्यक्ति मे प्रतिभासित होने लगता है। वह सबका आदर्श बन जाता है। यह तभी सम्भव है जब हमारा स्वाध्याय ही हमारा जीवन बन जायेगा।

११—यश (अभिनिष्पादयति)—स्वाध्याय से मनुष्य यशस्वी होता है। आप महापुरुषो के चरित्रो का अध्ययन कीजिए। उनका स्वाध्याय ही जब

(शेष पृष्ठ १० पर)

भारत में धर्म निरपेक्षनीति का अनौचित्य

श्री रामप्रकाश शर्मा "सरस" गाज़ियाबाद

यह तो आप जानते ही हैं कि संसार की संस्कृतियां, रीति और नीतियां समय के चक्र के साथ ही घूमती हैं परन्तु अपनी अध्यात्म संस्कृति के पितामहों, ऋषियों और मुनियों के विचारों को अध्यात्म शक्ति स्रोतों के साथ बहना पड़ता है।

जब युधिष्ठिर जी ने श्री भीष्म पितामह से पूछा कि "कालो वा कारण राज्ञो राजा वा काल कारणम्" क्या समय राजा का निर्माण करता है या राजा अपनी इच्छा से समय को मोड़ने की शक्ति रखता है ? तब श्री भीष्म पितामह बोले —"इति ते संशयो माभूत राजा कालस्य कारणम्" आपको इस विषय में जरा भी सन्देह नहीं होना चाहिए वास्तव में राजा के अन्दर ऐसी शक्तियां हैं कि वह समय के उल्टे प्रभाव को अपनी शक्ति से बदल सकता है इसी सिद्धान्त के अनुसार अपने समयों में श्री राम, श्री कृष्ण महात्मा बुद्ध स्वामी शंकर, और महर्षि दयानन्द आदि ने समय के चक्र को बलात् परिवर्तित किया है।

परन्तु दुःख है कि हमारी सरकार अन्य देशों की दशा का दर्पण देखकर अपना मुंह भी उन्हीं जैसा बना रही है। यह देश भारत धर्म प्रधान रहा इस देश के कण-कण में धार्मिकता का गुण सन्निहित है।

वैशेषिक दर्शन कार कहते हैं कि—"यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धि स धर्मः" अर्थात् जिससे मानव मात्र या प्राणी मात्र का अभ्युदय हो और मुक्ति की प्राप्ति हो वह धर्म है।

विचार करिये कि अपने देश की उन्नति के जिन नियमों का पालन हमारी सरकार कर रही है क्या वे उक्त लक्षण के अनुसार धर्म के अन्दर नहीं आते ?

और यदि धर्म निरपेक्ष का अर्थ किसी भी धर्म में हस्तक्षेप न करना है तो फिर यह आपको अवश्य सोचना पड़ेगा कि हमारी सरकार ने यह भारी भूल नहीं की हुई है कि अपने देश की परम्परा के विरुद्ध दूसरे देशों की देखा देखी भ्रम पूर्ण आदर्श से रहित भी आदर्श के नाम पर नासमझी का वज्र प्रहार कर रहा है।

यदि धर्म निरपेक्ष का अर्थ साम्प्रदायिकता के पक्षपात से ऊपर उठना है तब तो धर्म की पावन परम्परा पर साम्प्रदायिकता का थूक फेंकना कितनी बुद्धिमत्ता का काम है यह भी सोच कर देख लीजिए।

यदि और सच कहा जाए तो सरकार की इसी नीति के कारण आज हमारे ही आश्रय में फूलने-फलने वाले कुछ मुसलमान तो आज भी मुस्लिम-लीग का संगठन करते हुए भारत में चुप छिपा कर पाकिस्तान का बीज बो रहे हैं। और कुछ ने यहां तक सफलता प्राप्त कर ली कि बलात् आपके ही उत्तर प्रदेश की विधान सभा में उर्दू की अनिवार्यता प्रयुक्त करने का बिल तक पास करा लिया है।

इसी नीति के कारण चुपचाप भारत के अनेक टुकड़ों को पाकिस्तान बनाने के लिए आज तेजी से षड़यन्त्र पनप रहा है हमारी सरकार हिन्दुओं को सीमित परिवार बनाने पर बल दे रही है और दूसरी तरफ मुसलमान अपनी आबादी का प्रतिशत बढ़ाने के लिए अपने मजहब का फतवा दे रहे हैं कि नसबन्दी करवाना हमारी संस्कृति के प्रतिकूल है इस नीति का भविष्य में क्या दुष्परिणाम होगा यह विचारणीय है।

इसी नीति के कारण भारत की आर्थिक स्थिति की रीढ़ गोहत्या निषेध कानून विचाराधीन आज भी पड़ा सड़ रहा है इसी कारण पंजाब के हिन्दी आन्दोलन की अग्नि में न जाने कितने निर्दोष शरीर समा गये।

भारत की सीमाओं पर इसी कारण आज ईसाई पिछड़ी जातियां को सैकड़ों हजारों में नहीं [illegible] में ईसाई बनाकर एक अलग [illegible] की मांग का सुन्दर स्वप्न सजा रहे हैं।

पाकिस्तान के द्वारा प्रतिदिन अनेकानेक फूट का बीज बोया जा रहा है जिसके परिणाम स्वरूप हजारों लाखों को निर्दोष मौत के घाट उतरना पड़ रहा है चाहे वह मौत का ताण्डव पंजाब मुरादाबाद अलीगढ़ [illegible] रठ कहीं भी हो इसके मूल में पाकिस्तान की भूमिका रहती है इसकी जड़ में इसी नीति का विष घुल रहा है।

क्या २५ करोड़ रुपया महात्मा गांधी जी के द्वारा समस्त भारतीयों की छाती पर मूंग दलने के लिए इसी कारण पाकिस्तान को नहीं दिया है ?

दक्षिण भारत में क्या बहुत से हिन्दुओं के नगर के नगर ईसाई मिशनरी के जाल में फंस कर हिन्दुत्व के संगठन में विघटन करने के लिए नहीं तड़फ रहा है ?

बंगाल और काश्मीर की उपेक्षा जो हिन्दुत्व के प्रति बनी हुई है क्या यह राष्ट्र की नींव को खोखला करने के लिए इसी कारण पुष्ट नहीं हो रही ?

जनसंघ के महान नेता श्री श्यामा प्रसाद मुकर्जी को काश्मीर में शेख अब्दुल्ला के द्वारा क्या इसी कारण विष देकर मौत के घाट नहीं उतार दिया ?

हमारा देश आजादी के ४१ वीं वर्ष गांठ पूरे कर चुका है लेकिन देश की भावी पीढ़ी को सजग बनाने वाला शिक्षा का स्रोत अब भी सत्व हीन स्थिति में सिसक सिसक कर तिलमिला रहा है कि वह आज सरकार की धर्म निरपेक्ष नीति के कारण असंख्यों सम्प्रदायों के हस्त पाशों में जकड़ा होने से प्रगति की दिशा में बढ़ने से विवश है आज भी शिक्षा में कोट पैन्ट नेकटाई फ्रोम पाउडर बूट लिपिस्टिक नेल्स कलर बारीक साड़ियों का परिधान कृत्रिम श्रृंगार से सज्जित अध्यापक इसलिए अबाध गति से बढ़ रहा है कि सरकार देश को गहरे गर्त्त में डालने के लिए कटिबद्ध स्वच्छन्द शिक्षा संस्थाओं को इसी धर्म निरपेक्षता के कारण कुछ भी कहने में अपने को नपुंसक पा रही है। शिक्षा क्षेत्र में वैदिक पद्धति के द्वारा भारतीयता का पावन पाठ पढ़ाने के लिए महर्षि दयानन्द ने गुरुकुलीय शिक्षा पर फिर से बल दिया।

जो अपनी गरीबी के अंत [illegible] अलापते-अलापते अस्त हुए सूर्य के समान रह गये भारत के शहीदों ने इसी परम्परा में मातृ भूमि की शक्ति का पाठ पढ़कर अपने आपको इसे मुक्त कराने के लिए हंसते २ सौंप दिया दूसरी ओर डी ए वी के जन्म दाता महात्मा हंसराज ने इसी संस्कृति को बढ़ाने के लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया भारतीयों की आंखें इन डी ए वी संस्थाओं की ओर लग गई हैं कि हमारी वैदिक संस्कृति को जीवित रखने वाली संस्थाएं कार्यरत हैं किन्तु अब यह सभी मिशनरी के साथ हाथ से हाथ मिला कर ही नहीं अपितु अपनी आचार संहिता को

[शेष पृष्ठ १० पर]

खा जाने के लिए उन्हें जिन्दा पकाया जाता है

-एंड्रयू बोल्सन-

आगामी सितम्बर मे कोरिया की राजधानी सिग्रोल मे, दुनिया भर के ग्रोलम्पिक खिलाडी एकत्र होने वाले हैं। उनसे अपील की जा रही है कि कोरिया मे पशुओ के साथ जो घोर बर्बरता का व्यवहार होता है, उसका वे जमकर विरोध कर।

सिग्रोल के रेस्तराओ मे, कोरिया की परम्परागत बानगियो के रूप मे रोज ही, कुत्त बिल्यिो का मास परोसा जाता है। इन कुत्ते-बिल्लियो को जिस बेरहमी से हलाल किया जाता है, उसका तो वर्णन ही रोंगटे खडे हो जाए। पशुग्रो के प्रति दया भाव रखते आन्दोलनकारियो ने विश्व के सभी महानुभावो का ध्यान इस ओर खीचना चाहा है। इग्लैड के आदोलनकारी इस दिशा मे सर्वाधिक कार्य कर रहे हैं। अपनी ग्रपील को बल देने के लिए उन्होने कई कई तस्वीरे प्रकाशित की है, जिनमे दुकानो और रेस्तराग्रो के बाहर कोरिया की सडको पर,लोहे के मैले पिंजरो मे कुत्ते-बिल्लिया बुरी तरह ठुसे दिखाए गए हैं। मौसम चाहे कितना ही बुरा हो, ये प्राणी उन्ही पिजरो मे ठुसे रह कर ग्रपनी दर्दनाक मौत का इन्तजार करते है। इन्हें ग्रक्सर धीरे-धीरे गला घोट कर जान से मारा जाता है। कुछ कोरियन बानगिया ऐसी हैं, जिन्हे तैयार करने के लिए कुत्ते-बिल्लियो को जिन्दा ही पकाया जाता है।

डेली थाम्पसन ग्रौर फातिमा ह्वाटब्रेड जैसी प्रसिद्ध ग्रोलिम्पिक खिलाडियो को कोरिया की इस बबरता के खिलाफ बोलने के लिए तैयार किया गया है। ग्रोलिम्पिक गोल्ड-मेडलिस्ट स्टीव ग्रावेट को एक फोटोग्राफ दिखाया गया जिसमे एक कुत्त का गला,पूरी बेरहमी से, धीमे-धीमे घोटा जा रहा था, ताकि अधमरा करने के बाद उसे कडाह के खोलते सूप मे फका जा सके। स्टोव ने घबराकर आखे बन्द कर ली ग्रौर फोटोग्राफ को नजदीक रखी ग्रगीठीमे फक दिया।

सितम्बर मे आयोजित सिओल ग्रोलिम्पिक मे, इग्लेड के खिलाडियो के ग्रलावा, कम से कम ५००० ब्रिटिश दर्शक भी, कोरिया की राजधानी मे जा पहुचगे। इन सभी को सावधान किया जा रहा है कि 'कोरिया की परम उत्तजक बानगियो' के विज्ञापनो से वे प्रभावित न हो, क्योकि कुत्तो ग्रौर बिल्लियो के मास का वणन वहा इन्ही शब्दो मे होता है।

काम जल्दी निपटाने के लिए चार-चार, पाच-पाच कुत्तो के गले मे एक ही फदा डाल कर उसे धीरे-धीरे कसा जाताहै। चीखते-तडफते कुत्तो को इसी दौर मे, डण्डा ग्रौर छडो से, बुरी तरह पीटा भी जाता है ताकि उनका मास 'कोमल हो जाए।

कोरिया के लोगो को विश्वास है कि कुत्ते का मास खाने से मनुष्य की काम-शक्ति बढती है। गर्मी के दिनो मे तो कुत्ते के मास का यह 'सु-प्रभाव' ग्रौर भी अधिक हो जाता है। तपेदिक के मरीजो को कुत्ते का मास ग्रत्यन्त उत्साह से खिलाया जाना है, औषधि-भोजन के रूप मे

शराब का लालच

सिग्रोल ग्रोलिम्पिक मे खेलने के लिए ग्राए या उन खेलो को देखने के लिये पहुचे लोगो को एक विशिष्ट कोरियन शराब पीने का लालच भी हो सकता ह—'डाग-मीट वाइन। चावल से तैयार किया गया विशिष्ट द्रव्य एक बडे से कडाह म खोलता रहता है। इस खौलते द्रव्य मे जिन्दा कुत्ते फक दिय जाते है। कोरिया के नीम-हकीमो का कहना है कि इस प्रकार जो शराब तैयार होती है, उसे पीकर मनुष्य की सेहत अच्छी हो जाती है। नीम-हकीमो का दावा ह कि कुत्तो को जिन्दा पकाने पर शराब मे 'सही कसावट' ग्राती ह।

मसालेदार शोरबे के खौलते कडाहा मे बिल्लियो को जिन्दा फेक कर पकाया जाता है। इस शोरबे मे पका बिल्ली का मास खाने से या शोरबे को पीने से गठिया ठीक हो जाता है, ऐसा दावा कोरिया के नीम-हकीम करते है। जनता भी इस दावे को शत-प्रतिशत सही मानती है।

डब्लू एस पी ए (वर्ल्ड सोसायटी फार द प्रोटेक्शन आफ एनिमल्स) ने पशुओ की इन बर्बर हत्याग्रो को रोकने के लिए कमर कसी है। लन्दन मे इसके क्षेत्रीय निदेशक के रूप मे विक्टर वाट किन्स कार्य करते है। उनके शब्द है, "दक्षिण कोरिया की जनता को समझाने के लिए हम एडी-चोटी का जोर लगा चुके है, मगर वे सुनने को तैयार ही नहीहैं। उनका तर्कहै कि यह तो उनकी सस्कृति और परम्परा का एक अविभाज्य ग्रग है। इसीलिए ग्रब हम सिओल मे खेलने जा रहे हर खिलाडी से निवेदन कर कर रहे है कि वहा वे इस बर्बरता के खिलाफ आवाज उठाय।'

डब्लू एस पी ए के जिन खोज कर्ताओ ने दक्षिण कोरिया मे भटक कर इस सदर्भ मे जानकारिया इकट्ठी की है) वे अपने नाम गुप्त ही रखना चाहते है। उनमे से एक ने कहा, "नाम बता देने पर तो कभी भी हमारी हत्या हो सकती है। परम्परा और सस्कृति के नाम पर, दरअसल, यह सब केवल एक व्यापार है—जबरदस्त व्यापार। ने व्यापारी चुटकियो मे, किराए के हत्यारे हमारे पीछे लगा सकते है।

सुप्रसिद्ध "नम्डेमम मार्केट मे कुत्तो का मास बेचने वाली दुकानो की क्या हालत है, उस खोजकर्ता ने इन शब्दो मे बताया, "ये दुकाने अक्सर नुक्कडो को घेरे रहती है। उनके सामने रखे पिंजरो की

(शेष पृष्ठ ८ पर)

जिन्दा पकाया जाता है

(पृष्ठ ७ का शेष)

लम्बाई-चौड़ाई के दो फुट से ज्यादा नहीं होती। इतनी कम लम्बाई चौड़ाई के ऊंचे पिंजड़ो मे लगभग २० कुत्तों और १० बिल्लियो को ठूसा हुआ देखा जा सकता है। वे जरा भी हिल नहीं पाते। पिंजरो के सामने ही, लकडी के स्टैण्ड बना कर, हलाल किए जा चुके कुत्ते बेचने के लिए रखे जाते हैं। समूचा कुत्ता नही, केवल उसके मास का टुकडा ही कोई अगर खरीदना चाहे तो हुको से लटकते टुकडो मे से वह चुनाव कर सकता है। जमीन पर रखी बाल्टियो मे से भी टुकडे उठा कर देखे-परखे जा सकते हैं।"

"इन दुकानो का निरीक्षण करने के लिए मैं जब भी अधिक समय तक खडा रहा, दुकानदारो को फौरन मुझ पर सन्देह हो गया। एक दुकानदार ने जरा नर्वस होकर मेरे सामने स्वीकार किया कि अपने धन्धे को वह अच्छा तो नही मानता, लेकिन इसमे कमाई अच्छी हो जाती है। "कुत्ते का मास खाने मे बुराई ही क्या है? हा, अच्छाईया अनेक हैं।" दुकानदार ने मुझ से बहस भी करनी चाही।

"जूग आग मार्केट मे मैंने लगभग ४० छोटे छोटे पिंजरे देखे। हर पिंजरे मे दो विशाल कुत्ते ठूसे हुए कराह रहे थे। दुकानदार ने मेरे साथ खुलकर बात-चीत की। कुत्तो का मास खाना कितना लाभप्रद है उसने मुझे यकीन दिलाना चाहा। कुत्ते का मास पकाने तरह-तरह की तकनीक उसने बयान कर डाली। तकनीक बदलते ही मास के गुण किस प्रकार बदल जाते हैं, उसने बड़े विस्तार से बताया। पिंजरो मे से कुत्तो को वह पिछली टाग पकडकर, झटके के साथ, बाहर निकालता था। एक बार भी ऐसा नही लगा कि उसे अहसास भी है कि कुत्तो मे जान है।"

रपट के अनुसार

पोक्याग पर्वत की तराई मे देहात के एक बाजार का निरीक्षण किया गया। हलाल किए हुए कुत्ते, धातु के बड-बडे कडाहो मे ढेर लगाकर रखे थे। नजदीक ही बैठे पाच मजदूर आनन्दपूर्वक कुत्ते का मास खा रहे थे। उन्होने दावा किया कि वे तो बचपन से ही ऐसा कर रहे है। आज जो उनकी सेहत इतनी अच्छी है, उसका राज यही है।

क्वाग-जू हवाई-अड्डे से बाहर निकलते ही, १०० गज के फासले कुत्तो की बिक्री शुरू हो जाती है। सैलानी अपना मनपसन्द कुत्ता कटवा सकते हैं या जिन्दा पकवा सकते हैं। वही-का-वही।

वाटकिन्स का कहा है, "मासाहार की भी एक तहजीब होती है। कोई जानवर अगर कत्ल होने के लिए है, तो इसका अर्थ यह तो नही कि उसे आप किसी भी घटिया तरीके से रखना शुरू कर दे या कत्ल करते वक्त इतना भी ध्यान न रखे कि वह कम से कम कष्ट पाए।"

"सामाजिक और राजनीतिक, हर स्तर पर हमने प्रयास कर देख लिया है। कही कोई फर्क नही पड रहा। इसीलिए अब हम उस देश मे जाने वालो से ही सीधी अपील कर रहे हैं, जो ओलिम्पिक खेलो की वजह से वहा जाने वाले हैं, उनसे तो विशेष दबाव के साथ कहा जा रहा है कि संस्कृति और परम्परा के नाम पर जीने जा रहे बर्बरता के इस नग्न नाच की कड़े शब्दो मे निन्दा कर।

"एमेच्योर एथलेटिक्स एसोसिएशन ने विक्टर वाटकिन्स के आंदोलन को पूरा समर्थन प्रदान कर दिया है, लेकिन ब्रिटिश ओलिम्पिक एसोसिएशन ने कहा है कि हम किसी विवाद मे उलझना नही चाहते।

खेल की दुनिया के कई सितारे वाटकिन्स को लेकर अपना समर्थन दे रहे हैं। तैराकी की चैम्पियन कैरार स्टैवली ने, जो ब्रिटिश ओलिम्पिक वीमेन्स टीम की कप्तान है, कहा है, "यह बेहद वीभत्स है। किसी के भी दिल मे अगर थोडी सी भी दया है, तो वह ऐसे रिवाज को किसी सूरत मे नही सह सकता। यह बात मैं केवल अपनी ओर से कह रही हूँ।

चार सौ मीटर की दौड की स्टार क्रिस अकाबूसी ने कहा, "वहा जानवरो के साथ कितना भयानक बरताव किया जा रहा है, सुनकर मैं हक्की-बक्की रह गई हूँ। अगर आप मे मनुष्यता का थोडा भी अंश है, तो आप ऐसी परम्परा की हिमायत कदापि नही कर सकते।"

डब्लू एस पी ए के विक्टर वाटकिन्स ने अपील करते हुए कहा है, "कुत्ते-बिल्लियो के साथ वहा जो बेरहमी बरती जा रही है, उससे यदि आप इसी तरह असहमत हैं, जिस तरह हम, तो अपने अपने देश के दक्षिण कोरियाई राजदूत को इस बारे मे अपने विरोध-पत्र समय-समय पर जरूर देते रहे। (शब्द सिंडीकेट)

(पंजाब केसरी, नई दिल्ली २८-७-८८ से साभार)

पाकिस्तानी हमला रोकने के लिए भारत पन्द्रह लाख की स्थायी सेना बनाए : हरबख्शसिंह

पाकिस्तान के विरुद्ध १९६५ के युद्ध के हीरो लैफ्टीनेंट जनरल हरबख्श सिंह ने सुझाव दिया है कि भारत को १५ लाख की एक स्थायी सेना खडी करनी चाहिए ताकि पाकिस्तान को हमेशा के लिए इस देश पर हमला करने से रोका जा सके। भारत के पास १० लाख से कम की सेना है, जब कि पाकिस्तान के पास ५ लाख और चीन के पास ३० से ४० लाख की सेना है। रिटायर्ड जनरल का कहना है कि सेना मे मानव-शक्ति भारत की सब से बडी पूजी है, अत भारत को इसका लाभ उठाना चाहिए और पाकिस्तान के अत्याधुनिक हथियारो का मुकाबला करना चाहिए। उन्होने कहा कि बन्दूक से भी ज्यादा महत्व इसको चलाने वाले का है। हमे अपने सम्भावित शत्रु के साथ सैनिक शक्ति का सन्तुलन हथियारो की होड द्वारा नही बल्कि किसी अन्य तरीके से कायम करना चाहिए और यह अन्य तरीका हमारे पास है, जो हमारी मानवशक्ति है।

जनरल हरबख्शसिंह के ख्याल मे मशीनरी से ज्यादा विश्वसनीय मनुष्य है। हमारा आदर्श पश्चिमी सेनाए नही, चीनी सेना होनी चाहिए। उनका कहना है कि देश अनावश्यक रूप से विकसित देशो मे अत्याधुनिक हथियारो पर निर्भर करता है तथा इसके लिए विदेशी विनिमय मे भुगतान करता है, जोकि हमारे आर्थिक विकास के लिए हानिकारक है। उनका कहना है कि अत्याधुनिक हथियारो तथा उपकरणो के लिए विदेशी विनिमय मे भुगतान से कई समस्याए पैदा होती हैं जो कि हमारे सामने आ रही है।

जबकि हरबख्शसिंह कहते हैं कि एक औसत भारतीय या पाकिस्तानी सैनिक को एक अत्याधुनिक हथियार या कम्प्यूटरीकृत गन चलाने पर लगा देने का कोई लाभ नहीं होगा इससे हानि हो सकती है।

अपनी दलील पर जोर देते हुए जनरल हरबख्शसिंह कहते हैं कि १९६५ के युद्ध मे पाकिस्तानी सैनिक पैटन टैको और टैक रोधक प्रक्षेपास्त्रो के इस्तेमाल मे पूणतया विफल रहे, क्योकि यह उनके लिए बहुत अधिक पेचीदा थे। जनरल हरबख्शसिंह ने यह भी कहा है कि सेना को सीमा की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार बनाया जाना चाहिए तथा सीमा सुरक्षाबल का नया नाम बार्डर स्काउट्स' रखकर इसको स्थानीय सैनिक यूनिटो के सचालनात्मक तथा प्रशासनिक नियन्त्रण मे दे दिया जाना चाहिए।

उन्होने सुझाव दिया है कि सीमा सुरक्षाबल के मुख्यालय और इसके प्रशासनिक सस्थानो को समाप्त कर दिया जाए। जनरल हरबख्शसिंह का कहना है कि यद्यपि मेरा अनुभव केवल स्थल सेना तक सीमित है, मैं महसूस करता हूँ कि यह सिद्धान्त नौसेना और वायुसेना पर भी लागू किया जा सकता है। मेरे ख्याल में यह सिद्धान्त सभी राष्ट्र पर लागू होता है। उदाहरण के तौर पर वियतनाम में अमरीकियो के अनुभव और नाटो और वारसा सन्धियो के मध्य सख्या की प्रतिकूल बराबरी, पूर्वी सीमा पर चीनी व रूसी सेनाओ की सख्या तथा हाल ही मे ईरान व इराक के युद्ध को ले लिया जाए, जिसमें ईरान को एकमात्र लाभ उसकी बडी मानव शक्ति का है। ●

योगीराज श्रीकृष्ण

(पृष्ठ ३ का शेष)

उन्हें देश का चक्रवर्ती राज्य स्थापित करना चाहिए, तो इसके लिए उन्होने विचार भी नही किया कि विश्व का राजा मुझे बनना चाहिए। यदि वह ऐसा करते तो वह इसके लिए उपयुक्त ही थे। परन्तु इससे वह जो उदाहरण प्रस्तुत करना चाहते थे न ही बन सकती थी। इसलिए उन्होने जो किया। उसका उदाहरण विश्व मे नही मिल सकता।

(च) गृह-कलह से देश की शक्ति का नाश नही करना चाहिए। इसके लिए उनका जीवन शिक्षा प्रद है। उन्होने जरासन्ध से युद्ध नही किया। उन्हें मथुरा छोडकर द्वारिका जाना पडा। इसे स्वीकार किया परन्तु गृह-कलह मे नही उलझे। जरासन्ध के राज्य को देश के चक्रवर्ती राज्य के अधीन होना चाहिए। इसके लिए उन्होने इतनी बुद्धिमत्ता से काम लिया कि सिवाय जरासन्ध के एक आदमी की जान हानि नहीं होने दी उनका राज्य अधीनता मे आ गया।

५—अत्याचार और धीगामस्ती सहना पाप है। कृष्ण के जीवन का यह चरित्र था उन्होने कस का वध इसी पाप से बचने के लिए किया। सक्षेप मे यदि उनके जीवन को किसी भी दृष्टि से देखें, तो वह आज भी अच्छी से से अच्छी और ऊची से ऊची शिक्षा हमको दे सकता है।

अत भगवान श्री कृष्ण के जन्म दिवस को मनाते हुए उनके जीवन से कोई शिक्षा लेने का यत्न करें।

राजा रणञ्जयसिंह को श्रद्धांजलि

७ अगस्त दिल्ली, राजर्षि रणञ्जय सिंह के देहावसान पर उनकी स्मृति मे आर्य समाज दीवान हाल मे श्रद्धाजलि सभा हुई। जिसकी अध्यक्षता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री, दिल्ली प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी और आर्य समाज दीवान हाल के मन्त्री श्री मूलचन्द गुप्त ने श्रद्धाजलि अर्पित की। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा राजा रणञ्जय-सिंह आर्य समाज के मन्तव्य को जीवन मे अपनाने वाले महान ऋषि भक्त एव मनस्वी कवि थे। उन्होने जीवन पर्यन्त लोकोपकार व जन सेवा की। वे आर्य समाज के विशिष्ट पदो पर कार्यरत रहे। उनके देहावसान से आर्य जगत की महती क्षति हुई है।

—मन्त्री, आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली

—काशी, आर्य समाज बुलानाला, वाराणसी की अन्तरग सभा की बैठक श्री कैलाश नाथ सिंह की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भू० पू० प्रधान एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ नेता राजा रणजय सिंह के निधन पर शोक प्रकट किया गया। सर्वश्री देवराज आर्य गगा प्रसाद आर्य, रामजी आर्य, डा० पुष्पावती आचार्या रामधन सिंह और प्रकाश नारायण शास्त्री ने राजा साहब को कट्टर आर्य समाजी देश भक्त और महर्षि दयानन्द का सच्चा शिष्य बतलाया। दो मिनट का मौन धारण कर श्री सिंह जी की आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई। काशी आर्य समाज की ओर से उनके शव पर श्री कैलाश नाथ सिंह एव श्री देवराज आर्य न माल्यार्पण किया एव शव यात्रा मे सम्मिलित हुए।

—मन्त्री, काशी आर्यसमाज, बुलानाला, वाराणसी

शुद्धि समाचार

शमीम अहमद—शैलेन्द्रसिंह बने

युवा आर्य नेता डा आनन्दसुमन (वैदिक प्रवक्ता) साहित्य एव विचारो से प्रभावित होकर विकास नगर (देहरादून) के आश्रम पद्धति कालेज कालसी के अग्रेजी प्रोफेसर श्री शमीम अहमद एम० ए० बी० एड० के आर्य समाज मन्दिर विकास नगर मे वैदिक धर्म की दीक्षा गृहण की—उनका नया नाम शैलेन्द्रसिंह रखा गया।

डा आनन्द सुमन ने उन्हें साहित्य वस्त्र एव वैदिक धर्म उपदेश दिया।

स्वाध्यायात् मा प्रमदः

(पृष्ठ ५ का शेष)

उनका आचरण बन गया तो उन्हें संसार ने आदर्श पुरुष के रूप में स्वीकार कर उनकी कीर्ति को चहुँ ओर प्रकीर्ण किया। उनका यह यश ही उन्हें अमरत्व पद दे गया।

१२—लोकमुक्ति (अभिनिष्पादयति)—स्वाध्यायशील मनुष्य को लोक सिद्धि अर्थात् लोकेषणा पर विजयप्राप्त हो जाती है। लोकेषणा ही सब पापों का मूल है। अपनी प्रसिद्धि के लिए मनुष्य कई एक अनैतिक कार्य करता असत्यभाषण करता है। उसके मन वचन कर्म में सर्वत्र भिन्नता होती है। स्वाध्यायशील व्यक्ति का यश तो चतुर्दिक फैलता ही है पुनरपि वह प्रशंसा पाने के लिए व्यग्र नहीं रहता। उसका लोक-परिपाक हो जाता है। उसका इहलोक और परलोक दोनों सिद्ध हो जाते हैं। वह अपने प्रशंसकों की भीड़ देखने का उत्सुक नहीं होता अपितु उसके प्रशंसक स्वतः उसकी ओर खिंचे चले आते हैं।

वह गुणानुरक्त लोक समाज स्वाध्यायशील के लिए क्या करता है ? इस विषय में शतपथकार लिखते हैं—"लोक पच्यमान चतुर्भि धर्मं ब्राह्मण भुनक्ति-अर्चया च, दानेन च, अजेयतया च, अवध्यतया च" परिपक्व समाज अर्चा दान, अजेयता, अवध्यता इन चार धर्मों के द्वारा स्वाध्यायशील ब्राह्मण का सेवन करता है।

१३—अर्चया (ब्राह्मण भुनक्ति)—परिपक्व समाज श्रद्धायुक्त होकर, प्रणामपूर्वक उस स्वाध्यायशील ब्राह्मण के समीप जाकर सेवा सत्कार कर अपनी शंकाओं का समाधान करते हैं। इस प्रकार स्वाध्याय से मनुष्य को समाज सेवा सत्कार प्राप्त होता है।

१४—दानेन (ब्राह्मण भुनक्ति)—वह श्रद्धायुक्त समाज स्वाध्यायशील मनुष्य की आवश्यकताओं के लिए हाथ नहीं फैलाना पड़ता। सेवक जन तन-मन-धन से उसका सत्कार करते हैं। इस प्रकार स्वाध्याय का यह भी एक लाभ है कि उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति दान द्वारा अनायास होती रहती है।

१५—अजेयतया (ब्राह्मण भुनक्ति)—वह गुणानुरक्त समाज स्वाध्यायशील मनुष्य को अजेय मानकर उसका सेवन करता है। यही कारण है कि तपस्वी साधु महात्माओं जिन्होंने स्वाध्याय-श्रम में ही अपने जीवन को तपा दिया है उनके समक्ष जाकर स्वयं को तुच्छ अनुभव करते हैं। अतः स्वाध्याय का यह भी एक लाभ है कि इससे मनुष्य अजेय कोटि में आ जाता है।

१६—अवध्यतया (ब्राह्मण भुनक्ति)—शतपथकार स्वाध्याय का यह अन्तिम फल बतलाते हैं कि स्वाध्यायशील के गुण पर अनुरक्त हुआ समाज स्वतः ही उसकी रक्षा में सदैव तत्पर रहने लगता है। वे उसे अहिंस्य समझ कर उसकी रक्षा को अपना कर्त्तव्य समझने लगते हैं। स्वाध्यायशील मनुष्य सब की भलाई चाहता है—ईर्ष्या-द्वेष और वैरभाव से मुक्त होता है। जब वह स्वयं ही किसी का शत्रु नहीं तो उसका शत्रु कौन होगा ? इस प्रकार स्वाध्याय का यह भी लाभ होता है कि स्वाध्याय से मनुष्य अहिंस्य न मारने योग्य बन जाता है और समाज स्वयं उसकी रक्षा का उत्तरदायित्व स्वीकार करता है।

उक्त सोलह लाभ स्वाध्याय के प्रति मनुष्य को प्रवृत्त करने के लिए प्रलोभन मात्र नहीं है अपितु वह वास्तविकता है जिसका अनुभव केवल स्वाध्याय करके ही किया जा सकता है।

अतः यदि आप ईश्वर में अपने मन को लगाना चाहते हैं—सुख की नींद सोना चाहते हैं, परमानन्द की अनुभूति चाहते हैं तो आज ही स्वाध्याय में लग जाइये। फिर देखिये स्वाध्याय के चमत्कारों को, कि किस प्रकार आपको उक्त लाभ प्राप्त होते हैं।

भारत में धर्म निरपेक्षता

[पृष्ठ ६ का शेष]

तिलांजलि देकर लार्ड मैकाले को यह जोर-जोर से कह-कर बता रही हैं कि हम भी अब तुम्हारे ही स्वप्न को यहाँ की भोली जनता के वन्दनीय महा-पुरुषों के नाम पर अत्यन्त दृढ़ता से पूरा कर रहे हैं हमें अब क्षमा करके भारतीय समझकर अपमानित न करना।

अपनी ही संस्कृति के पोषक अपने ही देश में इसी नीति के कारण अपनी अध्यात्म विद्या के रक्षक संस्कृत के धुरन्धर विद्वान भी न्यूनतम मासिक वृत्ति तक ही सीमित हैं क्योंकि वे भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए नियुक्त हैं ऐसा करके उन्हें अपने पावन विचारों का प्रायश्चित करने के लिए दण्डित किया जा रहा है।

और दूसरी तरफ भारत की नैय्या को मझधार में डुबाने वाली अंग्रेजी के पृष्ठ पोषक विद्वान चाहे वे कम शिक्षित, आचार विचार ही क्यों न हो वे संस्कृत और संस्कृति निष्ठ मनीषियों से ज्येष्ठ ही रहेंगे यही कारण —

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानाम् च विमानना।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्ष मरणं भयम्॥

सो आप आज देख लीजिये देश में प्रतिवर्ष दुर्भिक्ष अतिवृष्टि, सूखा, अकाल मृत्युयें और पारस्परिक चोर डाकुओं तथा मुनाफा खोरों का भय बढ़ ही रहा है। इसी के पीछे छात्रों की अनुशासन हीनता फूल और फल रही है। इसी के पीछे अध्यापकों का अपमान गर्व से अपना सर उठाये इतरा रहा है। इसी के पीछे बेचारी अध्यात्म विद्या अपने अतीत का सिर पकड़ कर रो रही है। और देश भक्ति की शिक्षा भुगार की तरफ तरसों में डूबी जा रही है। आज अंग्रेजी का मोह न छूट कर हिन्दी और संस्कृत का मोह छूट रहा है हिन्दी और संस्कृत के विज्ञ व्यक्ति अज्ञ के समान जाने जा रहे हैं हिन्दी और संस्कृत के नाम पर होने वाली बैठकें अंग्रेजी के वातावरण में सम्पन्न होती हैं देश के नायक अंग्रेजी में अपना सन्देश देकर अपनी मानसिक दासता का संकेत दे रहे हैं। दूसरी तरफ बेचारी सादगी भुगार के सामने शर्म से सिर छिपाये भागी जा रही है सत्य व्यवहार का पद-पद पर गला घुट रहा है तो भ्रष्टाचार शिष्टाचार के स्थान पर खिल खिलाकर हंस रहा है। ईमानदारी का पातिव्रत्यधर्म भंग किया जा रहा है अहिंसा का मुंह उतर गया है और हिंसा मुंह फाड़े हुए दरवाजे पर खड़ी हुई है भारत के असंख्य नवयुवक और नवयुवतियां के पावन चरित्र की होली खेलने वाला चलचित्र सिनेमा व्यवसाय इसलिए नहीं रोका जा सकता क्योंकि अपनी सरकार धर्म निरपेक्ष है।

भारत में उपद्रव मचाने वाले मुस्लिम लीगियों को सरकार पाकिस्तान इसलिए नहीं भेज सकती कि उसकी धर्म निरपेक्ष नीति में बट्टा न लग जावे तब तो शायद नौकरी न मिलने के कारण दर दर भटकने वाले बेकारों की समस्या भी आरक्षित वर्ग विशेष का नाम लेकर अन्दर से साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दे रही है।

भारत के कोने कोने में चुनाव की क्रिया साम्प्रदायिकता के नाम पर सम्पन्न की जाती है इसी के अन्तर्गत नौकरियां, पदोन्नति और अनेकानेक लाभ इसी बहाने दिये जा रहे हैं कहने को हमारी सरकार धर्म निरपेक्ष है।

आश्चर्य है कि हमारी सरकार गोपालन की जगह मुर्गीपालन को बढ़ावा दे सकती है। शुद्ध घी के उत्पादन के स्थान पर डालडा को प्रोत्साहन दे सकती है। प्रत्येक लिए बहु उपयोगी आयुर्वेदिक औषधालयों के स्थान पर विदेश से आने वाली करोड़ों रुपयों की बहुमूल्य डाक्टरी की दवाईयां मगाने का वरदान दे सकती हैं।

तब बताइए भारत की प्राचीन सभ्यता और आदर्श परम्परा किसके द्वार पर जाकर अपने जीने की भीख मांगें ?

आर्य जगत् के समाचार

श्री पूनमचन्द्र जी आर्य का निधन

श्री पूनमचन्द्र जी आर्य जो कि परोपकारिणी तथा अजमेर के उपप्रधान थे, का गत ३१ जुलाई को बम्बई मे केन्सर की बीमारी के पश्चात् निधन हो गया, उनके निधन के साथ ही आर्य समाज के एक कर्मठ कार्यकर्ता हमारे बीच से उठ गए।

श्री पूनमचन्द्र जी का जन्म २१ जुलाई १९२१ को हरियाणा के भिवानी शहर मे हुआ था, अपने शैशव से ही वे सुधारवादी प्रकृति के थे। बचपन से ही आर्य समाज से उनका अटूट सम्बन्ध था, प्रारम्भ मे उनका कार्यक्षेत्र कलकत्ता मे ही था, लेकिन तदन्तर उनकी प्रतिष्ठा अधिकारी और कार्यकर्ता के रूप मे अखिल भारतीय स्तर पर स्वीकारी गयी।

१९४० मे वे कलकत्ता आर्य समाज के सम्पर्क मे आए, तब से अब तक वे सदस्य के रूप मे चलते आ रहे थे, कई बार वहा पर मन्त्री एव प्रधान के पद पर निर्विरोध निर्वाचित होते रहे। उनकी एक विशेषता यह थी कि चाहे वे पदाधिकारी के पद पर न हो, तब भी उसी निष्ठा और लगन से कार्य करते रहे जैसे कि कोई पदाधिकारी होने पर करता है। कलकत्ता आर्य समाज के निर्माण मे वह रात दिन जुटकर तन्मयता से काम किया करते थे।

कलकत्ता आर्य समाज ने जब गोरक्षा और हिन्दी आन्दोलन चला रखा था तो इसमे उनका बडा योगदान रहा।

—गजानन्द आर्य
मन्त्री—परोपकारिणी सभा अजमेर

—आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता, आर्य समाज कलकत्ता, के भूतपूर्व प्रधान, आर्य समाज कलकत्ता स्थापना शताब्दी वर्ष के महामन्त्री श्री पूनमचन्द आर्य का असामयिक निधन ३१ जुलाई १९८८ रविवार को बम्बई मे हो गया। श्री पूनमचन्द आर्य का कार्यक्षेत्र कलकत्ता था। वे बीसो वर्षो से आर्य समाज कलकत्ता, आर्य समाज रिलीफ सोसायटी, वैदिक अनुसधान ट्रस्ट, गोरक्षा सघ इत्यादि के सक्रिय कार्यकर्ता थे। इधर कुछ वर्षो से इनका कार्यक्षेत्र अखिल भारतीय स्तर हो गया था। अजमेर मे १९८३ मे मनायी जाने वाली ऋषि निर्वाण शताब्दी मे आपकी भूमिका महत्वपूर्ण थी। आप परोपकारिणी सभा अजमेर के उपप्रधान भी थे।

इनके निधन का समाचार सुनकर समस्त आर्यजन शोकाकुल हो गए। उन्हे श्रद्धाञ्जलि देने के लिए आर्य समाज कलकत्ता की [illegible] आर्य समाजो एव सस्थाओ की ओरसे एक श्रद्धाञ्जलि सभा रविवार दिनाक [illegible] ८८ को प्रात १० ३० बजे आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता आर्य समाज कलकत्ता के भूतपूर्व प्रधान श्री कलियाराम गुप्त, मन्त्री श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल आर्य समाज बडा बाजार के प्रधान श्री चाद रतन दमानी, भूतपूर्व मन्त्री श्री खुशहालचन्द आर्य एव श्री अमीलाल आर्य समाज मध्य कलकत्ता के प्रधान श्री बनारसीदास अरोडा, आर्य स्त्रीसमाज मध्य कलकत्ता की प्रधाना श्रीमती प्रेमलता सहगल, आर्य समाज हवडा से श्री केशरदेव धीमान, आर्य समाज खिदिरपुर से प्रधान श्री जनकलाल आर्य, आर्य समाज मल्लिक बाजार से श्री रामलखन गुप्त आर्य समाज चन्द्रीपुर से श्री अमल कान्ति दत्त, आर्य कन्या महाविद्यालय के मन्त्री श्री सुखदेव शर्मा, रघुमल आर्य विद्यालय प्राथमिक के मन्त्री श्री लक्ष्मणसिंह, आर्य युवा जन की ओर से श्री अशोक कुमारसिंह, प्रो० उमाकान्त उपाध्याय, श्रीमती सुनीति शर्मा, प० सत्य नारायण शर्मा, श्री फूलचन्द जी देवरालिया प्रभृति दिवगत नेता के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

—सुरेन्द्र, मन्त्री

—विश्वभारती अनुसन्धान परिषद, ज्ञानपुर (वाराणसी) से पदाधिकारियो एव सदस्यो की एक शोक सभा परिषद के उपाध्यक्ष एव आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता एव अनन्य सेवक श्री पूनमचन्द आर्य के निधन पर हुई। परिषद के निदेशक एव गुरुकुल महाविद्यालय के कुलपति डा० कपिलदेव द्विवेदी ने श्री पूनमचन्द जी के जीवन और सेवाओ पर प्रकाश डालते हुए आर्यसमाज के लिए एक अपूरणीय क्षति बताया।

इस अवसर पर इलाहाबाद विश्व विद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डा० बाबूराम सक्सेना तथा राजा रणजयसिंह के निधन पर भी शोक व्यक्त किया गया। डा० भारतेन्दु द्विवेदी, श्रीमती सविता, श्रीमती प्रतिभा आर्य, श्री आर्येन्दु एव डा० विभु मिश्र ने दिवगत लोगो को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। अन्त मे २ मिनट का मौन रखा गया।

—डा० भारतेन्दु द्विवेदी, अध्यक्ष

योगी गुणों की खान थे

वेद मर्यादा के रक्षक, श्रीकृष्ण भगवान थे।
ज्ञान के भण्डार थे, योगी गुणो की खान थे॥
जेल मे पैदा हुए, जीवन मे पाए कष्ट थे।
गोप थे उनके सखा, वे गोपियो के प्राण थे॥१॥
अत्याचारी कस के, जुलमो से प्रजा थी दुखी।
मार डाला था कुकर्मी, वे बडे बलवान थे॥२॥
छयासी राजाओ को डाला जरासध ने जेल मे।
भीम पर मरवा दिया था, नीति मे प्रधान थे॥३॥
गालिया शिशुपाल ने, निन्यानवे दी सब सही।
सौ वही सिर को उडाया, देख सब हैरान थे॥४॥
विश्व का ना नाश हो, बनदूत हस्तिनापुर गए।
दुर्योधन को खूब समझाया, दिए व्याख्यान थे॥५॥
समझाने से जब न समझे, शकुनी दुर्योधन कर्ण।
युद्ध महाभारत हुआ मारे गए शैतान थे॥६॥
धर्म की खातिर सदा, दुष्टो से वे लडते रहे।
ब्रह्मचारी, व्रतधारी, वे जगत की शान थे॥७॥
बात उनकी मानकर, रहते सभी "निर्भय" सुखी।
धर्म के ये देवता थे, सत्य के वरदान थे॥८॥

—प० नन्दलाल "निर्भय" भजनोपदेशक
ग्राम० पो० बहीन (फरीदाबाद)

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन के निर्णय के अनुसार सभा के सभी प्रतिनिधियो को सूचित किया जाता है कि जिन प्रतिनिधियो ने सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र का आजीवन सदस्यता शुल्क अभी तक नही भिजवाया है वह २५०) रुपये दो सौ पचास रुपये भिजवा कर अपना नाम आजीवन सदस्यता मे पजीकृत करावे।

सभा प्रधान

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८९] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २३ अङ्क ३७] भाद्रपद कृ० १५ सं० २०४५ रविवार ११ सितम्बर १९८८ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

केन्द्रीयमंत्री श्रीयोगेन्द्र मकवाना के साथ सैकड़ों हरिजन युवकों ने यज्ञोपवीत धारण किये

देशभर में समता दिवस का शानदार कार्य-क्रम सम्पन्न

दिल्ली ३ सितम्बर

आयसमाज दावानहाल म आयोजित ममता दिवस समारोह म प० महेन्द्र कुमार शास्त्री ने केन्द्रीय म त्री श्री यागे द्र मकवाना एव सकडो हरिजन युवको को यज्ञापवीत धारण कराये।

केन्द्रीय इस्पात और खान म त्री श्री योग द्र मकवाना न कहा है कि योगिराज श्री कृष्ण का जीवन हम एकता और समता का स देश देता है। हि दू जाति म व्याप्त कुरीतियो तथा बुराईयो को दूर करने के लिए आयसमाज द्वारा किया जा रहा प्रय न सराह नीय है। हरिजनो को समाज म गौरव पूण स्थान दिलान के लिए समता दिवस ममारोह का कायक्रम इसी का प्रतीक ह।

समारोह के अध्यक्ष स्वामी अ न दबोध सरस्वती ने कहा कि योगीराज श्री कृष्ण जहा अ ध्यात्मिक स त थ। वहा वे प्रखर समाज सुधारक भी थे। हि दू जाति अपनी प्राचीन सास्कृतिक सम्पदा के बल पर विदेशी आक्रा ताओ के अनक उपहापोहो के बावजद आज भी ससठित और समृद्ध है।

उ होने कहा कि आज सभी आय समाजो म हरिजनो को हिन्दू जाति मे पूरा सम्मान व स्थान दिलाने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर समता अधिकार दिवस का आयोजन किया गया है। हरिजनो के म दिर मे प्रवेश पर रूढिवादी और सकीण मनोवृत्ति के लोगो न आपत्तिय करके हि दू जाति का कमजोर और विघटित करन का दुस्साहस किया है। कि तु आयसमाज के म दिर सबके लिए समान रूप से खुले हुए है।

आय समाज के गुरुकुल व शिक्षण सस्थाए भी उनके लिए समान रूप मे खुली हुई है। सकडो हरिजन आयसमाज मन्दिरो मे पुरोहित के काय पर लगे हुए है।

समता दिवस पर आयोजित काय म मे के द्रीय म त्री श्री योगे द्र मकवाना स्वामी आनन्दबोध सरस्वती श्री शिवकुमार शास्त्री श्री महे द्र कुमार शास्त्री श्री सूर्यदेव आदि दिखाई दे रहे है।

आयसमाज कम के आधार पर वण व्यवस्था को मानते हुए हरिजनो का हिन्दू जाति का आधार स्तम्भ मानता ह।

स्वामीजी ने कहा कि १९८२ मे मीनाक्षीपुरम गाव के सभी हरिजनो का इस्लामीकरण किया गया था आय समाज ने पुन सबको शुद्ध किया और हिन्दू जाति मे वापस लाने का महान् काय किया। उसके प्रयत्न बराबर जारी है।

श्री स्वामी जी न कहा कि आज हम सब सकल्प करते हैं कि इस देश म जात पात और छुआछूत के लिए कोइ स्थान नही है हम सब एक है और

(शेप पृष्ठ प

सम्पादक — सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय

कैसा अहंकार छोड़ो भी?

आज मानव स्वभाव से क्रूर दृष्टिगत हो रहा है। परन्तु कहता है वह कि पहले अच्छा था अब बुरा हो रहा है। परन्तु जो बात कहनी है वह आज भी बुरी है और पहले भी बुरी थी।

व्यावहारिक सरसता यह है कि मनुष्य वचन कर्म से किसी प्रकार की कटुता न उत्पन्न करे। बातचीत में या लिखित रूप में किसी प्रकार की कटुता न उत्पन्न करें इस प्रकार से किया गया व्यवहार अनुचित है।

महाभारत में कहा है कि मर्मभेदी वचन मन का बुढ़ापा है वाक्शल्य मनसोजरा मनुष्य को ज्वालामुखी न बनकर सौम्य बनना चाहिए। पर निन्दा और आत्म प्रशंसा से जितना बचा जाय बचना चाहिए।

व्यास के मत से विद्वान को उचित है कि वह किसी की निन्दा न कर और अपनी प्रशंसा का डंका न पीटे। इन बातों के त्यागे बिना मनुष्य किसी भी गुणवान की महत्ता प्रकाशित नहीं होती देखी गई है।

अकुर्वन कस्य चिन्निन्दा आत्म पूजामवर्णयन।
न कश्चिद् गुण सम्पन्न प्रकाशो भुवि दृश्यते। वन पर्व

कौटिल्य का कहना है कि सभा में मित्र की कभी निन्दा न करे ससदि मित्र न परिक्रोशेत। वाणी की तीक्ष्णता मित्र का भी शत्रु बना देती है।

शुभ कामना और शुभ भावना से व्यञ्जित होने पर अधिक प्रभाव शालिता हो जाती है। हृदय की मिठास मीठी हंसी मलो व्यक्त होना है।

बोलने में ही नहीं किन्तु लिखने में भी सावता और सरसता ध्यान रखना आवश्यक है। किसी व्यक्ति के कठोर व्यवहार से कठोरता के साथ उत्तर देने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हमने अपने भ्र कोप कहकर या लिखकर निकाल दिया वह काम तो हो गया। उसे लिखकर भेजने या कहकर देने से कोई लाभ नहीं दूसरा क भ क्षप स अपन को स्वयं दूषित बना लेना मूर्खता है। धम्मपद में है कि कटुता को मधुरता से जीतना चाहिए [illegible] व्यवहार से सरसता उत्पन्न करने के अनेक उपाय हैं कौटिल्य ने सूचना [illegible] एक यह भी लक्षण लिखा है कि किसी बात को भला [illegible] भ्रान [illegible] ना [illegible] चाहिए न कभी सिकोड़ना तमचा मारना [illegible] है। [illegible] वह [illegible] के सा [illegible] व्यवहार करें उसे [illegible] पूर्ण [illegible] प्रकार [illegible] हो जाता है। [illegible] के साथ [illegible] नहीं छोटा के [illegible] के साथ विशेष रूप से नम्रता के व्यवहार करना चाहिए।

[illegible] किसी बात के लिए [illegible] न करके [illegible] करना चाहिए कौटिल्य का यह आदेश सदा [illegible] है [illegible] विद्वान [illegible] मति के अतिक्रमण न करो। सबके सम्मान का ध्यान रखना [illegible] है। वचन व्यवहार [illegible] सरसता [illegible] जीवन को सफल बनाने में बहुत सहायक होता है सरलता का अर्थ है [illegible] से मुँह न मोड़कर सच्चाई को स्वीकार करना है [illegible]

[illegible] सज्जनों की बात सीधी सादी होती है। वचन वक्रता कुटिलता और छद्म सज्जनों के लक्षण हैं।

यथा सम्भव अपने [illegible] को सरल स्पष्ट रखें इससे भ्रम [illegible] सन्देह मिट [illegible] है मनुष्य परस्पर निकट हो जाते हैं।

मनु ने कहा है कि आयु क्रिया धन विद्या और कुल इनके अनुरूप वेश वचन बुद्धि रखना [illegible] संसार में मनुष्य रहे। सदैव यह ध्यान रहे कि कुछ न कुछ [illegible] से ही शिष्टाचार सम्पन्न होता है सभ्यता का रक्षा तथा सद्व्यवहार की सफलता के लिए अहंकार और स्वार्थ जन्य वासनाओं का बलिदान करना जहाँ कर्तव्य है वहां लोक रंजन का भी यही उपाय है।

श्रावणी उपाकर्म पर्व एवं प० जियालाल जन्म समारोह पूर्वक सम्पन्न

स्थानीय आर्य समाज भवन केसरगंज में श्रावणी उपाकर्म पर्व एवं कर्मवीर प० जियालाल जन्म जयन्ती समारोह दयानन्द कालेज में संस्कृत विभागाध्यक्ष डा देव शर्मा वेदालंकार की अध्यक्षता में मनाया गया इस अवसर पर प्रारम्भ में एक बृहद यज्ञ एवं यज्ञोपवीत कार्यक्रम भी हुआ। इस अवसर पर श्रावणी की महत्ता पर डा बाबूराम जी शास्त्री तथा डा कृष्ण पाल सिंह ने विस्तार से प्रकाश डाला।

आर्य समाज अजमेर के प्रधान श्री दत्तात्रय जी आर्य तथा डा दिनेश सिंह ने कर्मवीर पंडित जियालाल जी के अछूतोद्धार उन्मूलन क्रान्तिकारी कार्य तथा उनके द्वारा की गई महान सेवाओं की प्रशंसा करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर श्री वेदरत्न जी आर्य श्री जागेश्वर जी निगम श्री रामचन्द्र जी आर्य तथा दयानन्द बालसदन की बालिकाओं के मधुरगान तथा कविताएं हुईं।

—मन्त्री रासासिंह

हरियाणा आर्य वीर महा-सम्मेलन

आर्य वीर दल हरियाणा प्रान्त का प्रान्तीय महा सम्मेलन १ तथा २ अक्तूबर को हरियाणा के प्रसिद्ध नगर हिसार में मनाया जायगा। इस समारोह में समस्त हरियाणा के आर्य वीर भाग लेंगे। १ अक्तूबर को विशाल शोभा यात्रा निक [illegible] के प्रसिद्ध संन्यासी विद्वानों तथा उपदेशकों को आमन्त्रित किया गया है। महासम्मेलन में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन समाज सुधार सम्मेलन तथा वेद सम्मेलन का भी आयोजन किया जायेगा इस सम्मेलन का मुख्य कार्य आर्य वीरों का व्यायाम प्रदर्शन होगा

वेद प्रकाश आर्य सचिव प्रान्तीय आर्य वीर दल हरियाणा

शुभ समाचार

सार्वदेशिक के ग्राहक बनाने का अभियान प्रारम्भ हो चुका है इस पत्र के हमारे प्रतिनिधि श्री धना [illegible] जहां कहीं पधारें [illegible] आजीवन अथवा वार्षिक शुल्क देकर [illegible] पत्र के लिए विज्ञापन संग्रह का भी अधिकार दिया गया है। मन्त्री सभा

कटक दूरदर्शन से वेद प्रचार

१५ [illegible] को [illegible] कटक दूरदर्शन [illegible] के माननीय वरिष्ठ विद्वान [illegible] उड़ीसा सरकार के मुख्यमन्त्री आचार्य प्रियव्रत [illegible] की बड़ी गम्भीरता से [illegible] विचार [illegible]

योगेन्द्र कुमार उपाध्याय

विदेश यात्रा

डा० प्रभुनारायण विद्यार्थी उपनिदेशक प्रशासकीय प्रशिक्षण संस्थान रांची तथा उपप्रधान रांची आर्य समाज और प्रो० लक्ष्मीभूषण प्रभात ग्राम्यांचल बिहार ग्रामीण विकास संस्थान रांची कोलम्बो योजना तहत प्रशिक्षण प्रबन्ध प्रशिक्षण हेतु दिनांक १ ९ ८८ को दिल्ली से ब्रिटिश एयरवेज के द्वारा इंग्लैण्ड प्रस्थान कर गए हैं।

वे [illegible] ५ सितम्बर से १६ दिसम्बर १९८८ तक [illegible] कालेज आफ हायर एजुकेशन में प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे।

समता दिवस

(पृष्ठ १ का शेष)

योगीराज श्री कृष्ण तथा मर्यादा पुरुषोत्तम राम के वंशज हैं। इस अवसर पर सनातन धर्म सभा के प्रमुख विद्वान रमाकान्त गोस्वामी प्रसिद्ध विद्वान् डा० वाचस्पति उपाध्याय प० शिवकुमार शास्त्री और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल और मन्त्री श्री सूर्यदेव ने भी अपने विचार प्रकट किए।

आर्यसमाज का बिहार में सहायता कार्य शुरू

भूकम्प तथा बाढ़ पीड़ित सहायता समिति का गठन

दिल खोलकर दान दें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती अपना ५ दिन का बिहार का दौरा समाप्त करके गत ३१ अगस्त, १९८८ को सायकाल देहली वापिस आ गये।

अपनी यात्रा के अनुभवो पर बोलते हुए उन्होंने बताया कि उत्तरी बिहार मे भूकम्प और बाढ पीडित क्षेत्रो की स्थिति बहुत ही शोचनीय है। वहा जान माल की बहुत क्षति हुई है। हजारो लोग बेघर हो गये है। बहुत से लोग घायल अवस्था मे अस्पतालो मे पडे हैं वहा उनकी चिकित्सा का पर्याप्त प्रबन्ध नही है। स्वामी जी ने स्वय दरभगा, मुगेर तथा अन्य शहरो के अस्पतालो का निरीक्षण किया। बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, मन्त्री तथा अन्य पदाधिकारी भी उनके साथ थे। जिन क्षेत्रो मे पहले भूकम्प आया था वे अब बाढ की लपेट मे आ गये हैं। ग्रामीण इलाको मे स्थिति और भी अधिक खराब है।

स्वामी जी ने बताया कि इस समय चलाये जा रहे सहायता कार्य पर्याप्त नहीं हैं। अत आर्य समाज की ओर से पटना मे "भूकम्प तथा बाढ पीडित सहायता समिति" का गठन किया गया है। तथा क्षतिग्रस्त क्षेत्रो मे राहत कैम्प खोले गय है। स्वामी जी ने जनता से अपील करते हुए कहा कि वे इस कार्य के लिये दिल खोलकर सहायता करे और अपना धन सार्वदेशिक सभा के द्वारा भेजे।

सहायता समिति—

(१) श्री प्रेमनाथ ग्रोवर—एस० चाद एण्ड कम्पनी प्रधान खजानी रोड पटना
(२) श्री योगेन्द्र नारायण ग्राम नयाटोला, पो० दानापुर कैन्ट पटना मन्त्री
(३) श्री रामचन्द्र प्रसाद—फैंसी स्टोर मछुआटोली कोषाध्यक्ष पटना
(४) श्री भूपनारायण शास्त्री—प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा सदस्य बिहार नयाटोला पटना
(५) श्री रामाज्ञा बैरागी—मन्त्री आर्य प्र० नि० सभा बिहार पटना सदस्य
(६) प० वासुदेव शर्मा—झाऊगज पटना सिटी सदस्य
(७) श्री अजय कुमार—प्राचार्य दयानन्द विद्यालय मीठापुर पटना सदस्य
(८) सुश्री माधुरी मिश्रा—आचार्या दयानन्द कन्या विद्यालय, मीठापुर पटना सदस्य

—पृथ्वीराज शास्त्री
उपमन्त्री सभा

दानी जनों बिहार तड़प रहा है

विपत्ति मे पडे हुए मनुष्यों के दुःख को दूर करना ही दानी सज्जनो की सम्पत्ति का फल है। भारतीय इतिहास मे ऐसे अनक उदाहरण मिलते हैं।

कालिदास के शब्दो में—

आपन्नार्ति प्रशमनफला सम्पदो ह्युत्तमानाम् ॥ मेघदूत

दान परोपकार हमारी सस्कृति और सभ्यता के विशेष अग हैं वेद का आदेश है—'शतहस्त समाहर सहस्राहस्त सकिर' ऋग्वेद—

अर्थात् सैकडो हाथो से एकत्रित करो और सहस्रो हाथो से वितरित करो। प्राचीन काल मे श्रेष्ठ पुरुष वही माने जाते थे जो अपने पास से पर्याप्त राशि अतिथियो, पीडितो, गरीबो मे बाटने का सुअवसर देखा करते थे। मेरे द्वार पर पंडित आवे पर उनके लिये मुझे किसी से मागना, न पडे।

शास्त्रकारो के मतानुसार शत्रु भी द्वार पर आये तो उसे भी निराश न लौटना पडे। शत्रु की बात तो जाने दीजिये हिन्दू शास्त्रों के अनुसार मरे हुओ को भी पिण्डदान तर्पण किया जाता है जो हिन्दू इतना उदार है कि वह मरो को भी देता है तो वह जीवितो को क्यो न देगा।

दान की प्रवृत्ति के प्रोत्साहन के लिये ही सम्भवत प्राचीन मनोवैज्ञानिको ने इस दान धर्म की व्यवस्था बाधी है।

दान ही के लिये बडे २ यज्ञ किये जाते है शास्त्रो ने यज्ञ शेष अन्न को ही अमृत माना है जो दूसरा पीडा को हरकर उसे तृप्त करता है उसे अमृताशी कहते हैं।

जिस रामराज्य को हम आदर्श राज्य मानते हैं उसमे यह विशेषता थी कि 'दान करो और स्वय भोगो' यह उपदेश निरन्तर चला आ रहा है—

दान को ही धर्म कहा गया है उसी का नाम पुण्य है दान का महत्व दानी की सामाजिक प्रतिष्ठा से जाना जा सकता है।

"दक्षिणावन्तो अमृत भजन्ते' दिदानी जन अमृत पद को पाते हैं।

समय समय २ पर मानव पर दैविक-प्रकोप आते हैं आज भी बिहार मे दैवी प्रकोप के भूकम्प से लाखों इन्सान पीडित हुआ है उसके दुःख मे हम भागीदार है उसे सभी प्रकार से मदद देकर उसे सुखी बनावें। उसी का जीवन सफल माना है जो कष्ट आन पर परोपकार मे प्रवृत्त हो जाय।

बिहार मे सार्वदेशिक सभा ने भूकम्प पीडितो की मदद हेतु सहायता शिविर खोलकर आर्य जनता से उनकी सहायतार्थ धन भेजने की अपील की है धन, वस्त्र सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के नाम से भेजकर पुण्य के भागी बन।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

आर्य महिला सभा दिल्ली का मध्य अधिवेशन

बिहार के भूकम्प एवं बाढ पीड़ितो की सहायतार्थ धन एकत्र करने का संकल्प

दिल्ली ५ सितम्बर

आर्य समाज पजाबी बाग मे दिल्ली प्रान्तीय आर्य महिला सभा का अधिवेशन माता सरला मेहता एव बहिन प्रकाश आर्या के सान्निध्य मे बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बिहार के भूकम्प एव बाढ पीडितो की सहायतार्थ सार्वदेशिक सभा द्वारा खोले गये सहायता कोष की चर्चा की। इस पर माता सरला मेहता ने ११००) का चैक आर्य महिला सभा की ओर से भट किया। उनकी अपील पर दिल्ली की सभी आर्य महिला समाजो की ओर से बडी मात्रा मे धन एकत्र करने का अभियान प्रारम्भ किया गया।

स्वामी जी ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि "दिल्ली की माताओ और बहिनो ने हर सकट के समय आर्यसमाज की बडी सेवा की है। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनके सघटन को और शक्ति प्रदान करे।"

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

भारतीय राजनीति में :—

सात्विक उग्रवाद के संस्थापक महर्षि दयानन्द

श्री मनुदेव "अभय", विद्यावाचस्पति

भारतीय पुनर्जागरण के मुख्य दो चरण हैं—उदारवादी चरण एवं सात्विक उग्रवादी चरण। इन दोनों प्रकार के चरणों में भारत के समाज एवं राजनीति में पुनर्जागरण अथवा पुनर्क्रांति हुई। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द उग्रवादी चरण के अग्रणी माने जाते है। उदारवादी परम्परा क्या थी और उसे भारतीयों ने क्यों न स्वीकार किया, इस पर तनिक विचार लेना आवश्यक है। ऐसा करने पर ही महर्षि दयानन्द का उग्रवादी चरण का ठीक-ठीक मूल्यांकन हो सकेगा।

उदारवाद के सिद्धान्तानुसार इसके प्रवर्तक और समर्थक तत्कालीन पाश्चात्य शिक्षा की उपज थे। यद्यपि उनका उद्देश्य भारत मे आधुनिकवाद की भावना का संचार करना अवश्य था, परन्तु उनके विचार तथा कार्य पश्चिम से प्रेरित थे। वे अंग्रेजी राज्य के कल्याणकारी स्वरूप में विश्वास तथा ब्रिटेन के साथ स्थायी राजनीतिक सम्बन्ध बनाये रखने मे इच्छुक रहते थे। उदारवादी अंग्रेजी शासन के प्रति निष्ठा और एकमात्र संवैधानिक आन्दोलन के साधनों पर ही निर्भर रहने में विश्वास करते थे। उदारवादी अंग्रेजी शासन के प्रति निष्ठा और एकमात्र संवैधानिक आन्दोलन के साधनो पर ही निर्भर रहने मे विश्वास करते थे। उनके मन-मस्तिष्कों पर बर्क, मिल, मैकाले, ग्लैस्टोन, हरबर्ट स्पेन्सर तथा अन्य अंग्रेज उदारवादियो की विचारधारा छाई हुई थी। इतना ही नही। इन्ही भारतीय उदारवादियो मे पश्चिमी संस्कृति के प्रति प्रेम तथा प्रेरणा एवं मार्गदर्शन ग्रहण करने की इच्छा रहती थी। भारतीय राजनीति मे ये नेतागण नागरिक स्वतन्त्रता, जातीय समानता तथा सुशासन की अपनी मागो को सम्मेलनो मे प्रस्ताव पारित कर अपने कर्तव्य की इति श्री ही मान लेते थे। वे अपनी बातो को मनवाने मे अंग्रेजी को उनकी प्रतिज्ञाओ तथा वचनों के ऊपर आश्रित रहने मे ही कल्याण समझते थे।

इन सारे तथ्यो के विपरीत ये उदारवादी प्राचीन भारतीय संस्कृति एव उसकी सम्पदा की गम्भीरता को न तो समझ सके और न उन्होने उसका मूल्याकन ही किया। वे तो पाश्चात्य शिक्षा तथा सभ्यता के महत्व तथा महत्ता पर अधिक बल देते थे। वे भारत का आधुनिकीकरण करने, पश्चिमी सस्थाओं की स्थापना करते तथा पश्चिमी शिक्षा और उद्योग को लाने को इच्छुक रहते थे। वे भारत का कल्याण सर्वोत्तम पश्चिमी आदर्शों के पूर्णरूपेण आत्मज्ञान मे ही देखते थे। इतना ही नही, वे धर्म को अन्धविश्वास समझकर उसका तिरस्कार करने लगे। वे भारत के वास्तविक मानस तथा आत्मा को नही देख सके। यही कारण था कि बंगाल मे राजा राममोहनराय, दक्षिण तथा पश्चिम में महादेव गोविन्द रानाडे,बहरामजी मालाबरी तथा अन्य समाकालीन महापुरुषों द्वारा चलाये गये सामाजिक तथा धार्मिक सुधार आन्दोलन बहुत अधिक लोकप्रिय न हो पाए और सर्व साधारण तक नही पहुंच सके। इन्ही सब कारणों से भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन की गतिविधिया धीमी पड़ गई और देश को ठीक मार्ग दर्शन प्राप्त न हो सका।

कहा जाता है कि क्रिया के साथ-साथ प्रतिक्रिया का भी जन्म होने लगता है। उदारवाद ज्यो-ज्यों पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति का समर्थन तथा अंग्रेजो की निष्ठा के विचार फैला रहा था ठीक उसी समय इसके विपरीत भारतीय चिन्तकगण भारतीय संस्कृति की आत्मा एवं दर्शन के अनुरूप इस देश को स्वतन्त्रता की ओर ले चलने का प्रयास करने लगे। भारतीय इतिहासकारों ने इसी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित स्वतन्त्रता आन्दोलन को। ऐसे भयंकर निराशावादी वातावरण में भारत को एक नवीन पद्धति और नवीन राजनीतिक और सास्कृतिक दर्शन की आवश्यकता थी। इस आवश्यकता की पूर्ति सात्विक उग्रवादियों ने की। भारत में सात्विक उग्रवादियों द्वारा आधुनिकीकरण का जो प्रयास किया गया उसके अग्रणी महर्षि दयानन्द थे। उन्होंने उग्रवादी एवं तेज विचार धारा के अनुरूप पाश्चात्य सभ्यता तथा संस्कृति को तिरस्कृत करते हुए भारत के प्राचीन मूल्यों पर बल दिया। इसे ही उग्रवाद या नवीन राष्ट्रवाद की धारा कहा जाता है।

स्मरण रहे, यह नवीन आन्दोलन अनरोद्धार मात्र न था, अपितु उसे भावी प्रगति एवं स्वतन्त्रता संग्राम का आधार बनाया जा सकता था। अतीत का ज्ञान, जिस पर महर्षि दयानन्द का सर्वाधिक बल था। प्रत्येक राष्ट्र के लिये नितान्त आवश्यक है, जो कि प्रगति करना चाहता है। प्रगति का भवन अतीत की मजबूत बुनियादों पर ही खड़ा किया जा सकता है। महर्षि दयानन्द ने अपनी दूरदृष्टि रख अपनी समकालीन परिस्थितियों के प्रकाश मे हृदय मे जाति के नये अभिमान को उत्पन्न करना था, जिसमे देश मे एक नवीन राष्ट्रीय भावना की प्रामाणिक अभिव्यक्ति दी। उन्होने प्रेरणा दी हम स्वयं अपने अतीत की महानता को पुनः प्राप्त कर सकते थे।

जिन्होने महर्षि दयानन्द का जीवन-दर्शन का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया है, वे भली भाति जानते हैं कि महर्षि दयानन्द पूर्णतः भारतीय थे। उन्होंने भारत की प्रगति के लिये पश्चिम के ज्ञान-विज्ञान अस्वीकार किया। उन्होंने स्पष्ट घोषणा की "भारत के वेद, संस्कृति शिक्षा, भाषा आदि अपने आप मे सम्पन्न है और उनके सहयोग से देश का उत्थान सम्भव है।" उन्होंने प्राचीन भारत की महानता की पुष्टि के लिये वेद को सर्वोच्च बताया। वैदिक मार्ग का ग्रहण भारत के उत्थान की कुंजी है। क्योंकि वैदिक ज्ञान की पुरातन सहिताओं में स्वयं ईश्वर की ही वाणी निहित है। उनकी इस आस्था के सम्बन्ध मे योगिराज अरविन्द घोष ने ठीक ही लिखा है—"वेदं की व्याख्या चाहे कुछ भी क्यों न हो, उसकी सच्ची कुंजी को सर्वप्रथम खोजने का सम्मान दयानन्द को दिया जायेगा। अंगो के अज्ञान और अविद्या के आवरण को चीर कर उनकी दृष्टि सत्य तक जा पहुंची और वह तत्व पर जा टिकी। उन्होने उस द्वार की कुंजी खोज निकाली है जिसको काल-गति ने बन्द कर दिया था"

उन्होंने युरोप की तुलना में भारतीय संस्कृति को श्रेष्ठतर बतलाया। भारत की संस्कृति में देश की महानता तथा स्वावलम्बन

(शेष पृष्ठ ९ पर)

यज्ञ और वृष्टि

स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती भोलाझाल मेरठ

आर्य जगत् के सुपरिचित सन्यासी श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज विज्ञान के एक योग्य विद्यार्थी के साथ २ योग्य अध्यापक भी रह चुके हैं। ८० वर्ष की आयु में भी आप अहर्निश आर्य सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार मे लगे रहते हैं। विज्ञान के विद्यार्थी होने के कारण आप प्रत्येक वस्तु को स्थूल रूप से अर्थात् भौतिक दृष्टि से देखने के अभ्यासी हैं। अनेक विषयो पर कुछ नये चिन्तन देने के विचार से आप कहीं २ ऋषि दयानन्द की मान्यताओ से भी बहुत दूर निकल जाते हैं किन्तु जनता के समक्ष यह रखने का प्रयास करते हैं कि मैंने ही ऋषि दयानन्द को ठीक प्रकार से समझा है।

अस्तु। अनेक बार बहुत से मित्रो ने मुझे श्री स्वामी जी के मन्तव्य के बारे बताया तथा उत्तर देने के लिये कहा किन्तु मैंने इस ओर कुछ ध्यान नही दिया। अभी आर्य समाज की अनेक पत्र पत्रिकाओ मे यज्ञ और वृष्टि शीर्षक से स्वामी जी का लेख प्रकाशित हुआ है। जिसमे श्री स्वामी जी ने यज्ञ से वृष्टि नही होती है यह सिद्ध करने का असफल प्रयास किया है। वैसे तो यह विषय वृहद् है और भी अनेक परीक्षणो की अपेक्षा रखता है किन्तु श्री स्वामी जी ने ऋषि दयानन्द जी को परम प्रमाण मान कर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि यज्ञ से वृष्टि नही होती है और भी भौतिक विज्ञान से सबन्धित अनेक प्रमाण दिये हैं। उनकी प्रामाणिकता के बारे मे तो स्वय स्वामी जी महाराज साक्षी हैं। मैं तो लोगो को भ्रान्ति निवारणार्थ केवल ऋषि दयानन्द जी के ही प्रमाण दूगा। जहा उन्होने स्पष्ट लिखा है कि यज्ञ से वर्षा होती है।

जिससे सर्वसामान्य जनता भ्रम मे न पड जाये और स्वामी सत्यप्रकाश जी की भाति यज्ञ से वृष्टि होने को अन्ध विश्वास या पाखण्ड न समझें। ये प्रमाण यजुर्वेद के निम्नलिखित हैं—

१—स्त्रीपुरुषौ स्वयवर विवाहाति प्रेरणा परस्पर प्राणप्रियाचरण शास्त्र श्रावण औषध्यादि सेवन कृत्वा यज्ञाद्वृष्टिञ्च कारयेताम्।

स्त्री पुरुषो को चाहिये कि स्वयवर विवाह करके अति प्रेम के साथ आपस मे प्राण के समान प्रियाचरण, शास्त्रो को सुनना औषधि आदि का और यज्ञ के अनुष्ठान से वर्षा करावें।

(यजुर्वेद भाष्य का अध्याय १४ मन्त्र ६ मे भावार्थ)

२—यथा सुसेविता गावो दुग्धादि दानेन सर्वान् सन्तोषयन्तितथैव मेघासञ्चिता इष्टका वृष्टिहेतुका भूत्वा वृष्टयादि द्वारा सर्वानानन्दयन्ति।

(यजुर्वेद भाष्य अध्याय १७ मन्त्र २ मे भावार्थ)

इन दोनों प्रमाण से सिद्ध होता है कि ऋषि दयानन्द जी यज्ञ से वृष्टि होने को मानते थे और उनकी यज्ञ से वृष्टि होती है इसमे आस्था भी थी।

हा, स्वामी सत्यप्रकाश जी की नहीं है जैसा वे स्वय लिखते है मेरी वृष्टि-यज्ञ मे आस्था नही है।' श्री सत्यप्रकाश जी महाराज की वृष्टि यज्ञ मे आस्था नहीं है, यह उनका विचार स्वातन्त्र्य है। अनेक लोग ससार मे ऐसे हैं जिनकी ईश्वर एव धर्म तथा वेद में भी आस्था नहीं है किन्तु उन्हे अपने विचारो को अन्य के ऊपर लपेट कर अशुद्ध व्याख्या करने का अधिकार नहीं है। कम से कम ऋषि दयानन्द जी महाराज को लपेट कर आर्य लोगो को भ्रान्त करने का प्रयास तो श्री स्वामी जी जैसे महापुरुष को शोभा नही देता।

स्वामी जी ने एक और बात महर्षि दयानन्द जी के सिर पर थोपने का निरर्थक प्रयास किया है वह यह कि यज्ञ से फसल (कृषि) पर कोई अच्छा प्रभाव नही पडता अर्थात् यज्ञ से अच्छी फसल नहीं की जा सकती और स्वामी जी ने सस्कार विधि की नवशस्येष्टि और सहेष्टि के उल्लेख की चर्चा की और अपने स्वभाव के अनुसार यह अर्थ निकाल लिया कि अच्छी फसलों के उत्पन्न करने मे यज्ञ का कोई योगदान नहीं, मुझे इस पक्ति से बडा आश्चर्य हुआ कि स्वामी जी जैसा विज्ञान का विद्यार्थी जो समाचार पत्र भी पढता है विशेष कर भौतिक विज्ञान के समाचारो को। वह सुप्रसिद्ध हिन्दी मासिक पत्रिका नवनीत के १९८१ के जनवरी अक के विज्ञान वार्ता स्तम्भ मे छपे हुए अमरीका मे स्वामी बसन्त पराजपे द्वारा सस्थापित अग्नि होत्र विश्व विद्यालय द्वारा स्वामी के समाचारो को पढना कैसे भूल गये। जिसमे विश्व विद्यालय के वैज्ञानिको द्वारा परीक्षण किये गये तथा उन परीक्षणो का निष्कर्ष निकला कि विशेष द्रव्यो के सम्मिश्रण से यज्ञ करने पर फसल चौगुनी बढती है और सस्वर मन्त्रो का प्रभाव भी फसलो पर आश्चर्य जनक होता है। स्वामी सत्यप्रकाश जी उस समाचार को पढ और और बैठ कर यज्ञ के प्रभावो का परीक्षण कर तब स्वय ही उन्हे ज्ञान हो जाएगा और ऋषि दयानन्द की गूढ बातो के रहस्य का पता लगेगा। मैं स्वामी जी को प्रभात आश्रम मे आमन्त्रित करता हू वे प्राय एक वर्ष तक रहें विविध परीक्षणो द्वारा उनका अन्ध विश्वास स्वय दूर हो जाएगा और वे यज्ञ के विविध महत्वो को समझ सकेगे। हस्तामलकवत् सब प्रत्यक्ष हो जाएगा। पुन निवेदन है पहले किसी वस्तु का परीक्षण कीजिए तब उसके अनुकूल या प्रतिकूल कहिए। मैं आशा करता हू कि श्री स्वामी सत्य प्रकाश जी महाराज प्रमाणो व बातो को ध्यान से पढेगे और आर्य जनता को भ्रान्त करने की सहज कृपा नही करेंगे।

आर्यसमाज जातिवाद को बढ़ावा न दें

(नागराज आदम आगर मालवा)

आर्यसमाज एक ऐसी अन्तर राष्ट्रीय एवं इस देश की प्राचीनतम सस्था है जो उस समय से लेकर आज वर्तमान मे भी मानव जाति मात्र मे धार्मिक, सामाजिक एव आध्यात्मिक उन्नति के विषयो मे आर्यसमाज का नाम हमेशा से ही ठोस प्रमाण के रूप में आता रहा है।

आर्यसमाज के सस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने "सत्यार्थ प्रकाश" मे कार्य विभाजन के आधार पर चार वर्ण दर्शाए है। वह ये हैं—ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शूद्र, ये चार वर्ण पाये जाते हैं। यह वर्ण विभाजन छुआछूत को मान्यता देकर नही किया गया है। उन्होने बताया कि मनुष्य किसी भी वर्ण का क्यो न हो, चाहे वह शुद्ध ही हो। अगर वह वैदिक कर्मयोग्य स्वच्छ चरित्रवान है तो वह वेद का पठन-पाठन यज्ञ मे आहुति देना व स्वय ब्राह्मण की भाति मन्त्रोच्चारण कर यज्ञ सम्पन्न करवा सकता है।

मनुष्य अपने कर्म से ही योग्य विद्वान या अयोग्य बनता है,न कि अपने वर्ण से। कोई व्यक्ति ब्राह्मण वर्ण का है और उसका चरित्र (कर्म) शुद्ध के कर्म से भी भ्रष्ट है तो, वह ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी नही है। क्योकि आयसमाज ने मनुष्य की जाति को कभी भी प्रधानता नही दी हैं। प्रधानता मात्र मनुष्य के कर्म को ही दी है। वह किसी भी वर्ण का क्यो न हो।

आर्य समाज ने मात्र एक ही जाति की उपमा दी है और वह है मानव जाति उस जाति का धर्म है "आर्य" एव उसका देश है आर्यावर्त। इस जाति को धार्मिक चेतना देने वाला मुख्य ग्रन्थ है वेद। आर्यसमाज ने इसके अलावा किसी भी जातिवाद को, छुआछूट को, भेदभाव को, अनेकानेक धर्मों को, आदि किसी को, भी मान्यता नही है। जब कि इस कोढ को तो मिटाया है।

फिर आज उन लोगो को अलग मानकर हरिजन जाति की उपमा दी जा रही है जिसने एक जाति से दूसरी जाति को कभी स्वीकार नही किया है। कोई और यह बात कर वहा तक तो ठीक है, परन्तु आर्यसमाज के द्वारा हरिजन कहकर उनके मन मे आत्मग्लानि उत्पन्न करने वाली बात है। इस तरह उच्च वग के लोग अपने को कोई उच्च जाति का बतलाकर हरिजना के पास बैठने मे कतरायगे।

यह तो पूरी तरह प्रयास कर जातिवाद का भूत जगाया जा रहा है। परन्तु हरिजन तो आर्य (हिन्दू) है। वे किस दिन हमारे साथ यज्ञ मे नही थे। किस दिन अपने को हरिजन मानकर आर्यो के साथ बठकर यज्ञोपवित धारण नही किया।

जो कि आज उन्हे विशेष तौर पर यज्ञो पवित धारण करवाई जा रही है। आर्यसमाज मानव मात्र की एक ही जाति मे गणना करता है। वर्तमान मे जो बवण्डर रचे जा रहे है, इससे यह सिद्ध होता है कि हरिजन भूतकाल मानव ही नही थे। जिन्हे आज पहली बार मानव जानी मे प्रवेश दिलाने हेतु यज्ञ की आहुति दिलवाकर एव यज्ञोपवित धारण करवाई जा रही है।

दूसरी बात यह है कि हरिजन बेचारे कभी मन्दिर मे तो गये ही नही, कभी नाथद्वारा मे गये, न कभी द्वारिका मे गये, न कभी जगन्नाथपुरी मे गये। उनको तो पहली बार भगवान के मन्दिर मे दर्शन हेतु जाने का स्वर्ण अवसर मिला है इसके पश्चात् जगन्नाथपुरी आदि मन्दिरो मे प्रवेश करने का अवसर उन्हें सम्भवत मिल जायेगा।

स्वामी अग्निवेश जी ने ही उन्हे हरिजन मानकर उनको पहली बार मन्दिर के द्वार के दर्शन नसीब कराए है। बेचारे उन हरिजनो का क्या हुआ होगा जो अग्निवेश जी के आने से पूर्व ही स्वर्ग पधार चुके होंगे। उनका तो कोई भगवान होगा न कोई मन्दिर होगा। बिना भगवान के ही अपना जीवन व्यतीत कर लिया और लावारिस जैसे चले भी गये। सौभाग्य इन हरिजनो का है जिन्हे स्वामी अग्निवेश जी का मार्गदर्शन मिल रहा है।

तीसरी बात है कि आर्य समाज याने निराकार ब्रह्म के उपासक, जो किसी मूर्ति को मानते हैं न किसी मन्दिर को। आर्यसमाज का सिद्धान्त है कि ईश्वर निराकार है उसका कोई आकार नही है। जिस ईश्वर का आकार है वह ईश्वर नही हो सकता। जिसका आकार है वह एक देशीय है अगर एक देशीय है तो वह सर्वव्यापी नही है। ईश्वर सर्वव्यापी है सर्वदेशीय है। कण-कण मे व्याप्त है।

यह कौन से वेद का मन्त्र है।

अत अन्त मे मैं यह कहना चाहूँगा कि वर्तमान मे कौन से आर्य समाज का उदय हुआ है, जो हमारे वेद ग्रन्थ आदि कहते हैं कि ईश्वर निराकार है औ हम कहते हैं कि ईश्वर साकार है। आर्य समाज किसी भी जाति को मानने को तैयार नही है। फिर भी हम अनेक जातियो को जन्म दे रहे है।

हिन्दी साहित्य को आर्य समाज की देन

—वीरेन्द्र प्रसाद सिंह गुरुकुल महाविद्यालय बैद्यनाथ धाम (देवघर)

साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। परिस्थितिया, प्रवृत्तिया और परिवर्तन का सीधा असर उस युग के साहित्य में देखा जा सकता है। साहित्य से समाज प्रभावित होता है और समाज से साहित्य। शासन चाहे लूई का हो या जार का, साहित्य के बनते ही परिवर्तन का पट पलटता है और साहित्यकार चाहे मार्क्स हो या प्रेमचन्द, उसके साहित्य का विषय समाज के अनुरूप बनता है और राजा विक्रमादित्य के बदले होरी को अपना नायक चुनता है।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल पर भी परिस्थितियो का पूरा प्रभाव पड़ा। फलस्वरूप उसका रूप पूर्ववर्ती कालो के साहित्य से कई बातो मे भिन्न हो गया। अग्रेजी साम्राज्य की स्थापना १८५७ की विफलता, भारत मे विक्टोरिया शासन की प्रतिष्ठा, काग्रेस की स्थापना, स्वतन्त्रता सग्राम आन्दोलन, बग-भग कानून, मार्लोमिन्टो सुधार, ईसाई धर्म का बढ़ता प्रभाव, रौलेट एक्ट, जालियावाला बाग काड, दोनो विश्वयुद्ध और मुस्लिम लीग की स्थापना आदि इस युग के साहित्य की पृष्ठभूमि तैयार कर रहे थे। फलस्वरूप तत्कालीन समस्याओ से जुड़े साहित्य की रचना होने लगी तथा साहित्य मे गद्य का विकास होने लगा जो जीवन के यथार्थ चित्रण के सशक्त माध्यम के रूप मे प्रतिष्ठित हो रहा था।

इस युग के राजनीतिक आन्दोलन को चारित्रिक दृढ़ता और अगाध विश्वास की भावना की जरूरत थी, जिसे तत्कालीन धार्मिक आन्दोलन तथा सामाजिक क्रान्ति ने पूरा किया। इन आन्दोलनो मे ब्रह्म समाज, आर्यसमाज, थियोसोफिकल सोसायटी, रामकृष्ण मिशन आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा। आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ईसाई धर्म के प्रचार की प्रतिक्रिया मे की। सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र मे उनका व्यक्तित्व उतना ही क्रान्तिकारी था जितना कि राजनीति क्षेत्र मे तिलक का। स्वामी जी के दो कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है--राष्ट्रीयता का सचार और राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार। काग्रेस की राजनीतिक आन्दोलन की सफलता का बहुत कुछ श्रेय स्वामी जी द्वारा तैयार किए कर्मठ एव त्यागी देशभक्तो को है। प्राचीन संस्कृति का पुनरुत्थान, वेदो के प्रति श्रद्धा एव जागरण, शिक्षण सस्थाओ के निर्माण द्वारा शिक्षा का प्रचार, नारी एव निम्न वर्गों को समाज मे उचित स्थान दिलाना एव प्राचीन रूढ़ियो एव अन्धविश्वासो का परित्याग इन सब कार्यों के लिए भारतीय जनता हमेशा आर्य समाज और स्वामी जी का ऋणी रहेगा।

हिन्दी साहित्य के प्राचीन कालो मे विशेष रूप से काव्य की प्रधानता थी। किन्तु बदलती हुई परिस्थिति और मोड़ लाती मानसिकता को हिन्दी की गद्य शैली ही केवल सतुष्ट कर सकती थी। अत फोर्ट विलियम कालेज के तत्वावधान में गद्य की पुस्तके तैयार कराने की व्यवस्था की गई। जान गिलक्राइस्ट जो वहा के हिन्दी-उर्दू विभाग के अध्यक्ष थे, ने लल्लूलाल और सदल मिश्र को यह भार दिया। सदा सुखलाल तथा इन्शा अल्ला खा इसी समय स्वतन्त्र रूप से हिन्दी गद्य का निर्माण कर रहे थे। अत इस दिशा मे इन चारो महानुभावो का प्रयास स्तुत्य है।

इसी समय सितारे हिन्द और राजा लक्ष्मण सिंह मे एक विवाद उठ खड़ा हुआ। सितारे हिन्द हिन्दी में देवनागरी लिपि मे ही अरबी-फारसी के शब्दो का प्रयोग चाहते थे जबकि राजा लक्ष्मणसिंह हिन्दी और उर्दू दोनो को अलग-अलग मानते थे। वे हिन्दी गद्य में उर्दू की जगह सस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग चाहते थे। आर्य समाज ने राजा लक्ष्मणसिंह की बातों का समर्थन करते हुए हिन्दी साहित्य की सक्रिय सेवा शुरू की।

'हिन्दी साहित्य की रूपरेखा' की भूमिका मे मण्डल जी ने लिखा है—"गुजरात के दो महापुरुषो स्वामी दयानन्द और राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने के लिए अथक प्रयास किए।' बात अक्षरस सही है। स्वामी जी गुजरात के थे जहा की भाषा गुजराती है। दूसरी बात कि स्वामी जी सस्कृत के निष्णात पडित थे, लेकिन उन्होंने सस्कृत और गुजराती की जगह अपने मतो के प्रचार के लिए हिन्दी भाषा को अपनाया जिससे हिन्दी भाषा के प्रचार और प्रसार को काफी बल मिला। स्वामी जी पहले सस्कृत मे व्याख्यान देते थे। एक बार जब वे धर्म प्रचार के लिए कलकत्ता गए तो वहा प्रसिद्ध समाज सुधारक केशवचन्द्र सेन ने उन्हे हिन्दी मे व्याख्यान देने का सुझाव दिया। उन्होंने इस सुझाव का स्वागत किया और तबसे हिन्दी आर्य समाज के प्रचार एव प्रसार का सशक्त माध्यम बन गया। उन्होंने हिन्दुस्तान को आर्यावर्त तथा हिन्दी को आर्य भाषा का नाम दिया तथा इस भाषा को पढ़ना प्रत्येक आर्यों का कर्तव्य बताया।

आर्य समाज की स्थापना का एक उद्देश्य सनातन धर्म के आडम्बरो को दूर करना भी था। फलत स्वामी जी को जीवन भर सनातनी पडितो से लड़ना पड़ा। जिसके कारण उन्हे काफी शास्त्रार्थ करना पड़ा। स्वामी जी की आलोचना मे खण्डनात्मकता की प्रवृत्ति अधिक थी अत शास्त्रार्थ के दौरान उत्तर-प्रत्युत्तर, कटाक्ष एव व्यग काफी मात्रा मे होते थे जिसकी सामयिक पत्रो मे भरमार रहती थी और हिन्दी का गद्य साहित्य इन नवीन शक्तियो से सम्पन्न होने जा रहा था।

आर्य समाज ने जीवन के हरेक क्षेत्र धर्म, समाज, शिक्षा एव साहित्य मे क्रान्ति की। फलस्वरूप धर्म और समाज मे प्रचलित रूढ़ियो, अन्धविश्वासो और पाखण्डो का खण्डन हुआ और धर्म तथा सदाचार का शुद्ध रूप समाज मे प्रचलित हुआ। इससे समाज में एक नयी लहर और बौद्धिक चेतना की नयी उद्दीप्ति आयी जिसका प्रभाव भाषा और साहित्य पर पड़ना स्वाभाविक था। बौद्धिक चेतना के फलस्वरूप लोगो मे विचार-विमर्श, चिन्तन-मनन एव तर्क-वितर्क की प्रवृत्ति का जन्म हुआ। जिसकी अभिव्यक्ति गद्य के माध्यम से ही सभव था। अत बौद्धिक चेतना के कारण भी हिन्दी साहित्य का विकास हुआ। यह स्पष्ट है कि आर्य समाज का आन्दोलन नही वरन बौद्धिक आन्दोलन था। अत उसके नेताओ द्वारा अत्यन्त सशक्त गद्य का प्रयोग हुआ।

हिन्दी की व्यापकता को देखते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" की रचना हिन्दी मे की। आगे चलकर आर्य समाज ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ शास्त्रार्थों प्रवचनो, उपदेशो, जीवन-चरितों निबन्धो आदि के रूप मे विशाल साहित्य प्रस्तुत कर इसने साहित्य की हर विधा को समुन्नत बनाया। पजाब आर्य समाज का मुख्य केन्द्र था किन्तु वहा हिन्दी की स्थिति बड़ी दयनीय थी। पजाबी साहित्य मे लिखित साहित्य न होने के और मुसलमानो के अधिक सम्पर्क मे रहने के कारण पजाब की लिखने पढ़ने की भाषा उर्दू ही रही थी लेकिन आर्य समाज ने अपने ठोस प्रचार के द्वारा पजाब मे हिन्दी को लोकप्रिय बना दिया। डा० शिवकुमार शर्मा के शब्दो मे 'पजाब मे हिन्दी प्रचार का प्राय समूचा श्रेय आर्य समाज को ही है।" आगे चलकर गुरुकुलो की स्थापना करके आर्य समाज ने जिस तरह से शिक्षा देना शुरू किया उससे हिन्दी साहित्य को विकसित होने मे काफी साहयता मिली।

पडित श्रद्धाराम जी अपने समय के कट्टर आर्य समाजी हिन्दू सस्कृति के पूर्ण पक्षपाती, हिन्दी के सच्चे हितैषी एव सिद्धहस्त लेखक थे। धर्म, अध्यात्म, आत्मकथा, उपन्यास तथा पद्य अर्थात् साहित्य की तत्कालीन प्रचलित हर विधा पर उन्होंने सफलता पूर्वक अपनी लेखनी घुमायी। 'सत्यामृत-प्रवाह' तत्वदीप' 'धर्मशिक्षा' 'सतोपदेश' 'आत्मचिकित्सा' आदि उनकी कालजयी रचना है। जिस दिन उनकी मृत्यु हुई थी उस दिन उनके मुह से सहसा निकला कि "भारत में भाषा के लेखक दो हैं—एक काशी में और दूसरा पजाब मे। 'परन्तु आज एक ही रह जाएगा।' काशी के लेखक से उनका तात्पर्य भारतेन्दु से था।

इस तरह हम देखते हैं कि समाज मे बौद्धिक चेतना लाकर एव हिन्दी गद्य की विभिन्न विधाओ एवं उसके विभिन्न माध्यमो को अपने प्रचार का साधन बनाकर उन्होने हिन्दी गद्य-साहित्य की उत्पत्ति मे पर्याप्त सहयोग किया। उसने सस्कृत की तत्सम शब्दावली को अपनाकर खड़ी बोली के शब्द भडार को सम्पन्न किया तथा तर्कपूर्ण शैली का विकास करके उसे बौद्धिक विवेचन के उपयुक्त भी बनाया। अस्तु हिन्दी को लोकप्रिय एव सम्पन्न बनाने मे आर्य समाज के महत्वपूर्ण योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

..र सप्ताह पर

..रकार के कर्मचारियों से ६० करोड़ हिन्दुओ की मांगें

१ भारत राष्ट्र को हिन्दू राष्ट्र घोषित करो ।

२. राष्ट्र भाषा हिन्दी को विश्व की सम्पर्क भाषा बनाओ ।

३ अ ग्रेजी उन्मूलन करो ।

४. गौ हत्या का पाप समाप्त करो ।

५ शराब सर्वनाश का मूल है अत शराब के ठेको को बन्द करो ।

६ भारत की निर्धन जनता को गाधी जी का नाम लेनेवालो शराब पिलाकर लूटना बन्द करो ।

७ सिगरेट, तम्बाकू, अफीम, भाग, चरस, बीडी, गाजा आदि मादक द्रव्यो को बन्द करो ।

८ भारतवर्ष देश मे मुसलमानो की नागरिकता समाप्त करो।

९ ईसाई और मुसलमान यह दोनो भारत माता की गुप्त हत्या करने वाले हैं अत इनसे सावधान रहो ।

१० हिन्दी की और हिन्दू हितो की हत्या मत करो ।

११ अश्लील फिल्म बनाने वालो को तथा सेन्सर बोर्ड के अधिकारियो को मौत की सजा की घोषणा करो ।

१२ भारतवर्ष देश धर्म प्रधान हैं अतः इस देश को धर्म प्रधान घोषित करो । धर्म निरपेक्ष करना पागलपन है ।

१३ भारतीय सभ्यता को अपनाओ ।

१४ विदेशी सभ्यता का बहिष्कार करो ।

१५ गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही विश्व मे धर्म राज्य और रामराज्य स्थापित होगा अत गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को प्रधानता दो ।

१६ समस्त विद्यालयो मे हिन्दी और सस्कृत का पढना अनिवार्य घोषित करो ।

१७ उग्रवाद और आतकवाद को समाप्त करने के लिए देशके दुश्मनो को मौत की सजा घोषित करो ।

१८ भारतीय रहन-सहन का और खादी की धोती और साडी को महत्व दो ।

१९ भारत के कर्णधारो उठो जागो भारत का चमन लुट रहा है भारतीय सस्कृति मिट रही है ।

२० अ ग्रेजी की लानत से और अ ग्रेजी के जहर को बचाओ यह भारतमाता की पुकार है ।

२१. आकाशवाणी और दूरदर्शन पर विश्व शान्ति के लिए नित्य वेदो का शास्त्रो का तथा गीता और रामायण और महाभारत के अतीत गौरव का प्रचार करो ।

२२ वेद ही विश्व शान्ति के अनुपम आधार हैं । धर्म अर्थ, काम और मोक्ष सुखो की सिद्धि के लिए वेद प्रचार मे जुट जाओ ।

२३. सती कुप्रथा का समर्थन करने वाले । हरिजन बन्धुओ को मन्दिरो मे प्रवेश करने से रोकने वाला धर्म धूर्त पाखण्डी देशद्रोही निरजन देव पुरी के शकराचार्य की सजा भारत सरकार देकर अपने कर्तव्य का पालन करे ।

वेद पथिक धर्मवीर आर्य

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन के निर्णय के अनुसार सभा के सभी प्रतिनिधियो को सूचित किया जाता है कि जिन प्रतिनिधिया न सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र का आजीवन सदस्यता शुल्क अभी तक नही भिजवाया है वह २५०) रुपये दो सौ पचास रुपये भिजवा कर अपना नाम आजीवन सदस्यता मे पजीकृत करावें ।

सभा प्रधान

प्रान्तीय आर्य महिला सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन सम्पन्न

प्रान्तीय आर्य महिला सभा का साधारण सभा अधिवेशन आर्य समाज मन्दिर दीवान हॉल मे सम्पन्न हुआ, जिसमे सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित किये गये—

(१) हरिजनो तथा सती प्रथा के सम्बन्ध मे पुरी के शकराचार्य स्वामी निरजन देव तीर्थ द्वारा दिये गये असवैधानिक वक्तव्य के लिए सरकार से मांग की गयी कि शकराचार्य के विरुद्ध कडी कार्यवाही की जाये । हरिजनो के मन्दिर प्रवेश सती प्रथा तथा आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध मे पुरी के शकराचार्य स्वामी निरजनदेव तीर्थ के वक्तव्य की प्रान्तीय आर्य महिला सभा घोर निन्दा एव भर्त्सना करती है । उनका वक्तव्य राष्ट्रघाती एव असवैधानिक है । हरिजनो के मन्दिर प्रवेश की अनुमति न देना देश को तोडने का एक षडयन्त्र है । शकराचार्य के विरुद्ध शीघ्र एव कठोर कार्यवाही के लिए यह सभा साग्रह अनुरोध करती है ।

(२) यह सभा सूचना एव प्रसारण मन्त्री श्री हरकृष्ण लाल भगत से अनुरोध करती है कि वे दूरदर्शन एव आकाशवाणी पर अमीर खुसरो जैसे दिखाये जाने वाले सीरियल को तुरन्त बन्द करायें, क्योकि ऐसे सीरियलो को दिखाने से साम्प्रदायिक सद्भाव बढना नही है, बल्कि इतिहास को तोड मरोडकर पेश करने से जनता मे रोष फैलता है । आर्यों को विदेशी और बर्बर तथा महमूद गजनवी की भाति विदेशी आक्रान्ता बताने की यह सभा घोर निन्दा करती है ।

(३) पजाब से आतकवाद को समाप्त करने के लिए वहा पर तुरन्त सैनिक शासन लागू किया जाये तथा पाकिस्तान सीमा के साथ-साथ सुरक्षा पट्टा बनाई जाये । सभा भारत सरकार एव दिल्ली प्रशासन से यह भी माग करती है कि पजाब से आतकवाद के डर से पलायन कर आये हिन्दू परिवारो की तुरन्त रोटी, रोजी और आवास की व्यवस्था करें या उन्हें आवास के अतिरिक्त अन्तिरम राहत के रूप मे १०००) रुपये प्रति परिवार प्रतिमाह दिया जाये । दिल्ली की स्त्री आर्य समाजो द्वारा बोट क्लब पर पजाब विस्थापितो की लगातार सहायता किय जाने की भी प्रशसा की गयी ।

(४) दिल्ली प्रशासन द्वारा तम्बाकू, सिगरेट को प्रोत्साहन देने वाले एव नशीले पदार्थों के सम्बन्ध मे दिये जाने वाले विज्ञापनो की रोक का भी सभा स्वागत करती है और इस सुन्दर कार्य के लिए भूतपूर्व उपराज्यपाल श्री हरकिशन लाल कपूर और कार्यकारी पार्षद श्री बसीलाल चौहान को धन्यवाद करती है ।

(५) कुवैत मे अन्तिम स स्कार पर प्रतिबन्ध लगाये जाने के लिए केन्द्रीय विदेश मन्त्री को पत्र लिखा जाये कि वे कुवैत सरकार से बात कर इस प्रतिबन्ध को हटवायें ।

—प्रकाश आर्या महामन्त्री

पुण्य लोक राजा रणंजयसिंह के पावन संस्मरण

—डा० भवानीलाल भारतीय

अमेठी के राजा रणजयसिंह के निधन (५ अगस्त) के साथ ही आर्य समाज में पुराने लगनशील तथा निष्ठावान पुरुषो की एक परम्परा ही समाप्त हो गई। स्व० राजा साहब के पितामह राजा माधवसिंह स्वामी दयानन्द के समकालीन थे और श्री महाराज की पाचवी काशी यात्रा के समय उनसे भेंट करने आये थे। यह भी स्मरणीय है कि काशी के दुर्गाकाण्ड स्थित जिस आनन्द बाग मे स्वामी दयानन्द ने विशुद्धानन्दादि पौराणिक विद्वानो से मूर्तिपूजा की वैदिकता अथवा अवैदिकता पर अपना प्रसिद्ध शास्त्रार्थ किया था, वह अमेठी के उक्त राजा का ही था। कालान्तर मे १९७६ ई मे इसी स्थान पर राजा रणजयसिंह जी ने एक प्रस्तर शिलालेख निम्न श्लोको से युक्त वहा स्थापित कराया था। यह शिलारोपण महात्मा आनन्द स्वामी जी के द्वारा सम्पन्न हुआ था। शिलालेख पर निम्न श्लोक है—

शास्त्रद्वन्द्वाक चन्द्राब्दे वैक्रमे कार्तिके सिते।
भौमे भास्वत्तिथौ दिव्ये मूर्तिपूजा विनिर्णये॥
अमेठ्यानन्द बागेऽस्मिन काशिराज समापतौ।
जनौघे विपुले चात्र प्रहृत श्रुति तत्पर।
विशुद्धानन्दसुप्रज्ञ बालशास्त्र्यादिभिर्बुधै।
शास्त्रार्थमकरोत् साक दयानन्दो यतिमहान॥
भगवान बक्सभूपाल वचनात्तत्सुतस्सुधी।
अलेखयच्छिलालेख दानी राजा रणजय॥

अर्थात् १९२६ वि कार्तिक शुक्ला १२ मगलवार को अमेठी राजा के आनन्दबाग मे काशीराज के सभापतित्व मे विपुल जनसमुदाय के समक्ष जो मूर्तिपूजा के निर्णय हेतु शास्त्रार्थ हुआ उसमे एक ओर महान यति दयानन्द तो दूसरी ओर विशुद्धानन्द, बालशास्त्री आदि पण्डित थे।

इस शास्त्रार्थ की स्मृति के रूप मे राजा भगवान बक्स की आज्ञा से उनके विद्वान और दानी पुत्र राजा रणजयसिंह ने यह शिलालेख स्थापित लगाने के लिए प्रो महेशप्रसाद (अरबी फारसी के प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) ने प्रेरित किया था। प्रो० महेशप्रसाद का यह एक सुन्दर विचार था कि स्वामी दयानन्द ने भारत देश से जिन जिन स्थानो, ग्रामो, नगरो आदि को अपने पाद रोपण द्वारा पवित्र किया है वहा सवत्र ऐसे शिला-लेख लगा दिये जाये, जहा स्वामी जी के उक्त स्थान पर आगमन और प्रत्यागमन की तिथियो का भी उल्लेख रह।

राजा रणजयसिंह की सम्पूर्ण शिक्षा दीक्षा वैदिक विचारधारा के अनुकूल हुई। उनके बडे भ्राता युवराज रणवीरसिंह प्रतिभा मे कही अधिक बढे चढे थे किन्तु विधाता ने उन्हे मात्र २१ वर्ष की ही आयु दी थी। किन्तु इस अल्पायु मे हा युवराज महोदय ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे अपनी कुशलता का परिचय दिया। कहना नही होगा कि राजा रणजयसिंह ने भी अपने अग्रज के आदर्शों का पूर्ण तत्परता स पालन किया। उन्होने भारत के स्वाधीनता आन्दोलन मे अनेक बार भाग लिया और देश की आजादी के लिए बड से बड बलिदान किये। यद्यपि दश क स्वतन्त्र हो जाने तथा जमीदारी उ मूलन कानून के पास हा जान क क रण राजा णजयसिंह अमेठी के वैध शासक पद पर नहीं रहे, किन्तु वे अपनी निकटवर्ती जनता मे अत्यधिक लोकप्रिय रहे। अमठी तथा उसक समीपवर्ती लोग उन्हे पर्याप्त सम्मान देते थे। कांग्रेस के साथ उनके पुराने सम्बन्ध रहे। विशेषत नेहरू परिवार से तो उनके सम्बन्ध बहुत ही निकटता के थे। प० मोतीलाल नेहरू तो अमेठी रियासत के कानूनी परामर्शदाता ही थे। प० जवाहरलाल नेहरू तथा स्व श्रीमती इन्दिरा गाधी भी रणजयसिंह का अत्यधिक सम्मान करती थी। १९८० मे स्व० सजयगाधी और उनकी मृत्यु के पश्चात श्री राजीव गाधी ने लोकसभा की सदस्यता का चुनाव अमेठी से ही लडा था। विशुद्ध खादी की स्वदेशी वेषभूषा, निरामिष और सादा भोजन, त्याग, तप युक्त निराडम्बर जीवन, यही राजा रणजयसिंह की जीवन पद्धति थे।

वे आर्य समाज और स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त थे। उन्होने एक सहृदय कवि का हृदय पाया था। उनकी काव्य रचनायें विभिन्न आर्य पत्रो मे यदा कदा प्रकाशित होती रही। राजा रणजयसिंह अभिनन्दन ग्रन्थ के द्वारा स्वर्गीय महापुरुष के जीवन एव विविध लोक कल्याणकारी कार्यकलापो का अच्छा परिचय मिलता है। वे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान तथा सार्वदेशिक सभा के आजीवन सदस्य भी थे। उन्होने स्वनगर अमेठी में शिक्षा की उन्नति के लिए महत् उद्योग किया तथा एक इण्टरमीजियेट तथा दूसरा स्नातकोत्तर कालेज स्थापित किया। उनका पूर्वजो का निवास अमेठी के निकटवर्ती रामनगर स्थित भूपति भवन सामन्ती जीवन और मध्यकालीन आभिजात्य सस्कृति का एक जीवित प्रतीक है, जिसमे एक विशाल पुस्तकालय के अतिरिक्त अन्य अनेक पुरातात्विक वस्तुओ तथा दुर्लभ चित्रो का विशाल सग्रह है।

इन पक्तियो के लेखक का स्व० राजा साहब से अत्यन्त सौहार्द पूर्ण सम्बन्ध रहा। अजमेर, दिल्ली तथा लखनऊ मे उनके दर्शन करने का सौभाग्य कई बार प्राप्त हुआ। वे मेरे द्वारा सम्पादित परोपकारी पत्र के नियमित पाठक थे और समय समय पर अनेक सुझाव भी देते रहते थे।

१९८६ मे जब लखनऊ मे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का स्थापना समारोह मनाया गया तो एक बार पुन राजा सहाब के दर्शन करने का अवसर मिला। इस बार तो उनकी मोटर मे बैठ बैठे ही बहुत देर तक बातचीत होती रही। उन्होने आगामी मई मास मे मुझे अमेठी की रणवीर रणजय स्नातकोत्तर कालेज मे वार्षिक दीक्षान्त भाषण देने के लिए आमंत्रित किया। तदनुसार मैं ९ मई १९८६ को अमेठी गया। दूसरे दिन प्रात काल आर्य समाज अमेठी मे राजा साहब की अध्यक्षता मे मेरा भाषण हुआ, मध्यान्होत्तर कालेज मे दीक्षान्त भाषण। इस समारोह की अध्यक्षता अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० ए सी बनर्जी ने की थी। इस अवसर पर राजा साहब के पुत्र डा० सजयसिंह भी उपस्थित थे, जो उस समय उत्तर प्रदेश के परिवहन मन्त्री थे। इससे पहले १९८३ मे स्वामी दयानन्द की निर्वाण शताब्दी के अवसर पर राजा साहब ने वेद सम्मेलन का उद्घाटन किया। मैं इस सम्मेलन का सयोजक था।

गत वर्ष से श्री वी पी सिंह के कांग्रेस से पृथक होने तथा वित्त मन्त्री पद से त्याग पत्र देने के कारण देश मे जो राजनैतिक भूचाल आया, यद्यपि उससे स्वर्गीय राजा सहाब का कोई विशेष सम्बन्ध नही था किन्तु उनके पुत्र डा० सजयसिंह द्वारा कांग्रेस को छोडना शासक दल के कतिपय सकीर्ण

(शेष पृष्ठ १० पर)

सात्विक उग्रवाद

(पृष्ठ ४ का शेष)

के विचार थे। भारतीय सस्कृति की यही विशेषता है कि वह देश को चारो ओर से एक सूत्र बाधे रख सकती है। इसकी विशेषता के सम्बन्ध मे रालिसन्स ने यह स्वीकार किया है कि तीसरी शताब्दी ई०पू० मे भारत की सस्कृति की धाक थी। यह देश यूनान, रोम तथा अन्य एशियाई एव युरोपीय देश का गुरू था। अत भारत मे यूरोप की सस्कृति की आवश्यकता नही थी।

म० दयानन्द ने भारत से राष्ट्रवादी चेतना के फैलाव के लिये हिन्दी भाषा को आवश्यक माना, अग्रेजी भाषा को नही। उन्होंने अपनी अनुपम कृति "सत्यार्थ प्रकाश की रचना हिन्दी मे की। वेदो के जिस ज्ञान पर अब तक पुरोहित वर्ग का एकाधिपत्य रहा था, उसे हिन्दी मे उपलब्ध बनाकर उन्होने भारत की राजनीति मे एक महत्वपूर्ण शक्ति को मुक्त किया।

वे सच्चे अर्थों में विशुद्ध भारतीय दृष्टि से भारत के उत्थान के सम्बन्ध में चिन्तन करते थे। महर्षि दयानन्द की भारतीयता, सग्राम की पृष्ठभूमि रही है। उसी पर हमारा स्वतन्त्र राष्ट्र गौरव से अपना मस्तक ऊ चा किये खडा है और सदैव खडा रहेगा।

-प्रशस्तिसप्तकम्

न्तर्न आसीत्, नासीत् काचित् पुरा वेद-विद्या ।
वेद-विद्या-प्रकाशाय, मिथ्या-मृतकश्राद्ध चैव विनाशाय ॥
प्रति गुर्जरे जन्म लेभे तदानीम् । वन्दे कविम् श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीम् ॥१॥

यदा भारतभूमौ बहुरूपा ईश्वरस्य, मिथ्या-मान्यता समाजे गर्जन्निस्म ।
वेद-धर्म प्रचाराय सर्वतो सुधाराय, आगतो महर्षि पञ्चयज्ञो प्रसाराय ॥
पाञ्चजन्य महाशङ्खम् दध्मे तदानीम् । वन्दे कविम् श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीम् । २॥

शत वर्षाणि पूर्व आदित्य तेजोधारी, महायोगी महर्षि, दयानन्द ब्रह्मचारी ।
पाखण्ड-खण्डनाय अखण्ड भारतखण्डे, स्वधर्म-स्वभाषा स्वराज्याय कृते ॥
आर्यसमाजस्य स्थापनामकरोत् तदानीम् । वन्दे कविम् श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीम् ।३

सत्य-प्रकाशाय असत्य-विनाशाय, पाखण्ड-मत-खण्डन खण्डनाय ।
रचितो 'सत्यार्थप्रकाशो कृतिरमरा, इय कृति जगती महती प्रसिद्धा ॥
आर्यभाषा प्रचारायाकाक्षा ऋषिम् । वन्दे कविम् श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीम् ।।४

देश-धर्म-जाति-सरक्षकृते, विषपान मुहूर्तेन ओजकृतम् ।
स्वातन्त्र्य समरे 'दस्स बाबा' नामधेयम्, सूत्रधारवत् तु कृत रणसञ्चालनम् ॥
न कदापि कृतज्ञोऽभवाम तदानीम् । वन्दे कविम् श्रीमद्दयानद सरस्वतीम् ॥५॥

स्त्री-शूद्रत्व खलु जातिर्यदा, दीनतामापिता दीनता आपिता ।
स्त्रीशूद्रौनाधीयाताम्' प्रति, खण्डनादसम वेदध्वनिकृत' ॥
नारी गोरक्षा तु अकरोत् तदानीम् । वन्दे कविम् श्रीमद्दयानन्द सरस्वतीम् ॥६

बहु-बाल वृद्ध विवाहादि कारणै, देशस्य विधवा क्रन्दन्ति सदैव ।
सर्वतो सुधाराय असतो प्रनष्टाय, 'आर्यसमाज' सस्था महर्षिणा कृता ॥
अयम् आर्यसमाज सुशोभते इदानीम् । वन्दे कविम् श्रीमद्दयानन्द सरस्वतीम् ॥६

रचयिता—ब्रह्मचारी व्यास नन्दन शास्त्रिण
वैदिक, विद्यारत्न, एम ए (स०) पूर्णिया(बिहार)

आर्यों की उन्नति के कुछ उपाय

आज जो स्थिति है, उस स्थिति को देखने पर हम पाते हैं कि दिनो दिन हमारी स्थिति धूमिल होती जा रही है। स्वामी दयानन्द के समय के कुछ समय पश्चात् तक आर्यों ने अच्छी प्रगति की परन्तु अब हम प्रगति नही कर पा रहे हैं। मेरे विचार मे निम्न मतो पर विचार करके यदि उन पर आचरण किया जाय तो अच्छी प्रगति होगी।

(१) विवाह—विवाह के लिए हम जन्मना जाति पर न जाकर कर्मणा जाति से सम्पर्क कर आचरण करें। जब कन्याका विवाह करे को अन्य दहेज के साथ ही वेद का एक सेट भी दे तथा विवाह से पूर्व यज्ञोपवीत अवश्य कराये। दहेज की माग न करे।

(२) सस्ता साहित्य—प्रचार हेतु सस्ता साहित्य उपलब्ध कराया जाय। आज भारत मे वेद एक ऐसा धर्मग्रन्थ है, जिसकी कीमत हर धर्म की पुस्तक से अधिक है। फलत. सब आर्यों के घर मे भी वेद नही हैं।

(३) स्वाध्याय—आज आर्यों मे स्वाध्याय की प्रवृत्ति कम होती जा रही है। फलत अपने परिवार और पडोस भी वैदिक सिद्धान्त का नही बन पाता। जबकि शास्त्र का आदेश है 'स्वाध्यायान्मा प्रमद'। स्वामी दयानन्द ने भी कहा है वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(४) परीक्षाये—आर्य लोगो को वैदिक सिद्धान्त के प्रचार हेतु नि.शुल्क धार्मिक परीक्षाओ का आयोजन करना चाहिए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक बार इनका आयोजन किया भी था। परन्तु पता नही किन कारणो से स्थगित कर दिया है।

(५) श्रेष्ठ जीवन—आर्यो को अपना जीवन श्रेष्ठ रखना चाहिए। वेद ने कहा है—'अग्निनाग्नि समिध्यते' जो स्वय प्रकाशित होगा वही प्रकाश फैला सकता है। अत अपने जीवन को द्रुतगतिसे वेदानुकूल बनाना चाहिए।

—श्रीकृष्ण एम एम ए, नैनीताल

राजा रणञ्जयसिह

(पृष्ठ ६ का शेष)

स्वार्थ लिप्त लोगो को अच्छा नही लगा। उन्होने अपनी कुण्ठा को तुष्ट करने के लिए राजा रणञ्जयसिह तथा उनके राजवश पर अनुचित प्रहार किये। काग्रेस के एक महामन्त्री ने तो उन्हे सामन्तवाद की उपज, अग्रेजो का पिठ्ठू तक कहने मे सकोच नही किया। ऐसे निर्मूल आक्षेप करने वाले ने यह नही सोचा कि अमेठी का राजपरिवार सदा से ही राष्ट्रीय विचार धारा का ध्वजवाहक रहा है और प० नेहरू तथा इन्दिरा गाधी जैसे मनस्वी लोगो ने राजा साहब की विशुद्ध देशभक्ति तथा उनके राष्ट्रप्रेम की सदा ही सराहना की है। राजनीतिक स्वार्थ मनुष्य को किस प्रकार दिग्भ्रम बना देता है, यह प्रसग उसका एक अच्छा उदाहरण है।

गत वर्ष मई मे अमेठी प्रवास मे मैंने भूपति भवन जाकर राजा साहब से भेट करने का अपूर्व अवसर प्राप्त किया। उस समय उनके निजी कक्ष मे अपने मित्र डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री की उपस्थिति मे राजा साहब ने अपने सुदीर्घ जीवन के अनेक रोचक सम्मरण हमे सुनाये। उनसे हुई यह मुलाकात मेरे जीवन की एक मूल्यवान निधि बन गई है। यहा यह स्मरणीय है कि अमेठी मैं ही हिन्दी क प्रसिद्ध सूफी कवि मलिक मोहम्मद जायसी का समाधि स्थल भी है। यही वह प्रसिद्ध अवधी कवि था, जिसने हिन्दुओ मे प्रचलित पद्मिनी और राजा रतनसैन की प्रेम कथा को हिन्दुओ की ही बोली अवधी मे शताब्दियो पूर्व दोहा-चौपाई शैली मे लिखा था। इसी काव्य के बारे मे स्व० प० रामचन्द्र शुक्ल को यह कहना पडा था कि उन्होने जिस मुसलमान के घर म पदमावत की पोथी देखी, उसे साम्प्रदायिक दुराग्रह और सकीर्णता से दूर पाया। राजा साहब ने रामनगर स्थित महाकवि जायसी के विशाल समाधि-स्थल पर एक भव्य द्वार बनवाया है तथा उस पर पदमावत की वे पक्तिया अकित करवाई है जिनमे कवि ने चारों वेदो को ईश्वरीय ज्ञान कहकर सम्बोधित किया है।

स्वर्गीय राजा साहब की आयु लगभग ८७ वर्ष की थी। उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नही था किन्तु उनकी जीवनशक्ति प्रबल थी। वे आर्य समाज के पुरातन इतिहास के मर्मज्ञ तथा अनेक प्रकार की जानकारियो के विश्व-कोष तुल्य थे। वे अपने जन्म दिवस पर प्रतिवर्ष एक विशाल कवि सम्मेलन आयोजित कराते थे। उनके यहा विद्वानो, पण्डितो, सहृदय कवियों रसिक व्यक्तियो का सदा से ही सम्मान और सत्कार होता रहा। हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के पद पर पूर्ण गौरव के साथ प्रतिष्ठित देखना उनका एक सुखद स्वप्न था। काशी मे स्वामी दयानन्द की शास्त्रार्थ स्थली पर निर्मित स्मारक की व्यवस्था के लिए निर्मित ट्रस्ट के वे सदस्य थे। स्वामी दयानन्द के प्रति अनन्य आस्थावान राजा रणञ्जयसिह जी का निधन न केवल आर्य समाज की, अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र की एक अपूरणीय क्षति है।

आर्य जगत् के समाचार

खेद प्रकट

पिछले दिनो आर्य समाज के प्रमुख वैदिक विद्वान श्री श्यामनन्दन शास्त्री (पटना) की धर्मपत्नी और पुत्र के दिवगत होने का समाचार पटना से प्राप्त गलत सूचनाओ के आधार पर सार्वदेशिक साप्ताहिक दिनाक २१-८-८८ मे प्रकाशित हुआ था।

सचाई यह है कि उक्त दुर्घटना मे आचाय जी का युवा पुत्र दिवगत हो गये थे, और उनकी धर्मपत्नी जिनको कुछ चोटे आयी थी वह उपचार के बाद ठीक हो गयी है।

हमे पूर्व प्रकाशित समाचार पर खेद है हम सब श्रीमती शास्त्री जी के दीर्घ जीवन की कामना करते हैं।

—सम्पादक

तिलक प्रेरणा के स्रोत थे

श्री डी सी. चन्देल

महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति खण्डवाके द्वारा तिलक पुण्य तिथि मनाई गई, कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि श्री डी सी चन्देल ने सम्बोधित करते हुए कहा कि तिलक एक चतुरहस्त पत्रकार महान समाज सुधारक तथा विशाल व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे इस अवसर पर प्रो तरुण कुमार नागढा जो ने कहा कि बच्चो को तिलक जी से प्रेरणा लेनी चाहिए ताकि उनमे अच्छे सस्कारो का विकास हो सके शिक्षिका सुधा सोनी व प्रभा मालवीया, ज्योति सरमण्डल ने अपने विचार प्रस्तुत किय इस कार्यक्रम का सचालन मन्त्री श्री कैलाशचन्द्र पालीवाल ने किया।

स्मृतियों में प्रचीन भारतीय अर्थव्यवस्था पर पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त

डा० प्रभुनारायण विद्यार्थी उपनिदशक प्रशासकीय प्रशिक्षण स थान, राची एव उपप्रधान, राची आर्य समाज को स्मृतियो म प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था शोध प्रबन्ध पर राची विश्वविद्यालय द्वारा पी० एच० डी० की उपाधि प्रदान की गई।

आर्य विद्वान का जन्म भूमि में स्वागत

आर्य विद्वान प० ब्रह्मप्रकाश जी शास्त्र विद्यावाचस्पति का आर्यसमाज छपरोली म आर्य समाज क प्रधान श्री धर्मपाल जी आय तथ श्री महकसिह जी आर्य तथा सभी सदस्या की ओर से म य स्वागत किया गया। प्रधान जी द्वारा स्वागत करत हुए कहा [illegible] हमारे [illegible] कि श्री शास्त्री जी की जन्मभूमि छपरो [illegible] है।

श्री शास्त्री ने अपने हृदय के [illegible] कहा कि वेदप्रचार का कार्य पूरे क्षेत्र तथा प्रदेश मे फैलाते हुए महिलाओ तथा हरिजनो के उत्थान तथा उद्धार मे आर्य समाज को पूर वेग स क्रियात्मक रूप देना होगा।

मन्त्री आय समाज छपरौली, (मेरठ)

शोक समाचार

आर्य समाज गगापुर की यह साधारण सभा आर्य समाज के भूतपूर्व प्रधान श्री लक्ष्मीचन्द जी गोयल (देवी स्टोर वाले) के निधन पर शोक करती है। और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि दिवगत प्रकट आत्मा को शान्ति प्रदान करे एव शोक सतप्त परिवार को इस दुख को सहन करने के लिये साहस व धैर्य प्रदान कर।

मन्त्री आर्य समाज गगापुर सिटी

स्वर्गीय खुशवन्त राय जी सूद को श्रद्धांजलियां भेंट करने के लिए शोक सभा

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार की ओर से रविवार २१-८-८८ को प्रात ८ से ६ ३० बजे तक एक शोक सभा का आयोजन किया गया, इस शोक सभा मे स्व० श्री खुशवन्त राय जी सूद जिनकी आयु ६० वर्ष थी, और उनका अकस्मात निधन १६-८-८८ को हो गया उन्ह विभिन्न आर्य नेताओ द्वारा भावभीनी श्रद्धाजलि भेट की गई। आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की ओर से आर्य समाज के वरिष्ठ नेता श्री रणवीर जी भाटिया स्त्री समाज की ओर से बहन जनक रानी, आर्य युवक सभा पजाब की ओर से श्री रोशनलाल जी शर्मा, आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार की ओर से डा० एस वी वागिया, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर स दीवान राजेन्द्र जी जिला आर्य सभा लुधियाना की ओर से श्री अयोध्या प्रकाश जी मलहोत्रा क अतिरिक्त सर्वश्री ज्ञानी गुरदियाल सिह आर्य, मगलसेन जी बधवा सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री ज्ञान प्रकाश जी श्रवण कुमार जी आर्य न भी श्री सूद जी का श्रद्धाजलि भेट की। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान श्री नरेन्द्र सिह जी भल्ला कोषाध्यक्ष श्री श्री बलदेवराज जी सेठी, वैद्य वेणी प्रसाद जी मन्त्री आर्य समाज सिविल लाइन्स, लुधियाना एव बहुत स आर्य समाज के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

आर्य वीर दल हिन्दी सप्ताह मनाएगा

पलवल। सार्वदेशिक आर्य वीर दल की स्थानीय इकाई द्वारा आगामी ८ से १४ सितम्बर तक हिन्दी सप्ताह मनाया जाएगा। इसके अन्तर्गत विचार गोष्ठिया, कवि गोष्ठिया व हिन्दी सम्मेलन आयोजित किए जाएग।

१४ सितम्बर को दल द्वारा हिन्दी दिवस, कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा जिसम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री मुख्य व क्ता होग।

विवाह संस्कार

(१) दिनाक २४ - ८८ ० आर्य समाज रजौली के मन्त्री श्री रामप्यार प्र० जी [illegible] का विवाह सस्कार वदिक रीति अनुसार आ० स० रजौली आय पुरोहित श्री प कृष्णदयाल जी के आचार्यत्व म सुसम्पन्न हुआ।

नामकरण संस्कार

(२) दिनाक २४-६-८८ को आर्य समाज रजौली के वरिष्ठ सदस्य श्री डा वासुदेव नारायण जी क पुत्र श्री प्रभाकर प्र जी के दोनो पुत्रो का नामकरण सस्कार वैदिकरीति स डा देवेन्द्र कुमार जी सत्यार्थी से कराया। स्थान य श्रोताओ पर विशेष प्रभाव रहा।

विवाह संस्कार

(३) दिनाक १-७-८८ को डा देवन्द्र प्र जी आर्य रजौली के प्रथम पुत्र सुश्री मृदुला आर्या का पाणीग्रहण सस्कार श्री मुकेश कुमार एम एस सी के साथ श्री डा देवेन्द्र कुमार जी सत्यार्थी क द्वारा सम्पन्न हुआ।

(४) दिनाक ६-७-८८ को साहनी ग्राम जिला नालन्दा (विवाह) के अन्तर्गत आ स रजौली के सहमन्त्री श्री रामेश्वर प्र. जी के द्वितीय पुत्र श्री गोपाल प्र जी को काम का शुभ विवाह सुश्री आयुष्यमती कुमारी ममता के साथ आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान श्री डा. देवेन्द्र कुमार जी सत्यार्थीके द्वारा सम्पन्नहुआ। इस अवसर पर आर्यसमाजके गणमान्य नागरिको ने वर वधुओ को आशीर्वाद दिया।

—रामेश्वर प्रसाद सभा-मन्त्री

निर्वाचन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश का वार्षिक निर्वाचन आर्य नेता श्री रामनाथ सहगल की अध्यक्षता मे आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग मे हुआ। जिससे सन १९८८-८९ के निम्नलिखित अधिकारी निर्वाचित हुए।

दिनाक २१ ८ ८८

१ श्री अनिल आर्य अध्यक्ष २ श्री अजय सहगल कार्यकर्ता अध्यक्ष ३ विश्वनाथ उपाध्यक्ष ४ श्री चन्द्रमोहन आर्य महामन्त्री ५ श्री राजेशराज मन्त्री ६ श्री रणवीरसिंह आर्य मन्त्र ७ श्री विरेन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष ८ श्री रमेश प्रचार मन्त्री ९ श्री धर्मपाल आर्य कार्यालय मन्त्री चुने गए।

—सन श कमार

अन्तरराष्ट्रीय दयानन्द वेद प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित द्वितीय वेद गोष्ठी

दिनाक १ ७ अक्टूबर १९८८ को आर्य समाज सक्टर १९ चण्डीगढ म द्वितीय वेद गोष्ठी का आयोजन किया गया है इस सगोष्ठी मे उत्तर क्षेत्र के वैदिक विद्वान भाग लेगे तथा वेद का सार्वभौम (सम्प्रदाय निरपेक्ष) स्वरूप विषय पर अपने शोध पत्र पढ़ेगे गोष्ठी मे भाग लेने वाले विद्वानो से निवेदन है कि व गोष्ठी की निश्चित तिथि से १५ दिन पूर्व अपने आने की सूचना देने की कृपा करे ताकि उनके भोजन एव आवास की समुचित व्यवस्था की जा सके। निबन्धवाचक अपने निबन्धो को लिखित रूप मे ही प्रस्तुत करेगे।

—भ० नीलाम्बर म य
स्थानीय सयोजक

गुरुकुल
दिसम्बर, १०१२०—
उदयराम हरि — गुरुकुल कांगडी मे
ब्रह्म० को श्री — विश्वविद्यालय हरिद्वार
(नामाद) जो — १/० सहारनपुर (उ० प्र०)
पुत्र राजपाल
निर्माण मे कार्यरत हरिजन श्रमिको ने भी भण्डारे मे भाग लिया। आश्रम मे भण्डारा देखकर हरिजन परिवार बहुत प्रसन्न था

—इन्द्रराज मन्त्री
गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी)
भोलाझाल मेरठ

प० काशीनाथ शास्त्री का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० व विदर्भ के वेद प्रचार अधिष्ठाता व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की धर्मार्य सभा के सदस्य वैदिक धर्म पर किये जाने वाले आक्षेपो के सटिक उत्तरदाता श्री प काशीनाथ जी शास्त्री का निधन उनके निवास श्री ओमप्रकाश वर्मा सेक्युरिटी पेपर मिल टाइप III क्वा० न० ६ होशगाबाद म हो गया दिनाक ५ ८ ८८ को म ा क र जघट प ण्म य लाया व आर्ष गुरुकुल होशगाबाद के ब्रह्मचारियो की उपस्थिति मे आचार्य अमृतलाल शर्मा व ब्र० नन्दकिशोर के आचार्यत्व म पूर्ण वैदिक रीति से अन्त्येष्टि सस्कार सम्पन्न हुआ। शोक म ट परिवार को आर्य जगत का हार्दिक सान्त्वनाय।

—आचार्य अमृतलाल शर्मा
आर्ष गुरुकुल होशगाबाद (म प्र)

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८९] मार्वदेशिक आ १ प्रानिधि मभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वष २३ अङ्क ३८] भाद्रपद ग्रु० स० २०४५ रविवार मितम्बर १९८८ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

जिन्ना की अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी गलती?

हैरानी होती है जब स्वर्गीय मुहम्मद अली जिन्ना के आखरी दिनो की कहानी आखो के सामने से गुजरती है। ये इतनी ददनाक और काबल बयान है कि पहली बार जब इसे पढा तो यही ध्यान आया कि किसा ने यू ही किसी से अपनी दुश्मनी निकाली है। परन्तु यह इतनी बार प्रकाशित हो चुकी है कि अब इस पर विश्वास करना ही पडता है। विश्वास तो हो गया पर तु जिन लोगो ने पाकिस्तान के बानी से इसका जिन्दगी के आखिरी दिनो म यह स्लक किया है इनकी मनोवृत्ति पर आश्चय होता है। लकिन यह रयाल आता है कि इन लोगो का सदियो पुराना इतिहास यह साबित करता है कि लाग व्यक्तिगत लाभ की खातिर यह बात करने का तयार हो जान है—अगर बटा बाप को कत्ल कर सकता था और भाई भाई को अधा कर सकता था तो एक राजनतिक व्यक्ति न मरते हुए अपन नेता का बचाने का बजाए मरने दिया तो इसम कौन सी हैरानी की बात है—

यह बात पहले प्रकाशित हो चुकी है कि मिस्टर जिन्ना को कसर की बीमारी था और विभाजन से पूव भी बम्बई के पारसी डाक्टर को इसका पता था कहा जाता है कि अगर यह बात दूसरे भारतीय नेताओ को बता दता तो यह मुमकिन ह कि विभाजन रोका ज ता वह जिन्ना से चन्द दिन और बात करन रहते और इस तरह भारत सरकार को देश के विभाजन और पाकिस्तान की स्थापना भा रहमत गवारा न करनी पडती जो होना था हो गया। जिन्ना की मस्त बीमारी का पता ससार को पाकिस्तान की स्थापना के चन्द दिन बाद जाकर पता चला।

जानकार लोगो का कहना है कि जिन्ना ने अपने जीवन क अन्तिम दिनो मे शारीरिक कष्ट को तो सहन किया था परन्तु इसस कही अधिक उनको सहन न होने वाली बात उनके साथ उन लोगो का व्यवहार था जिन्हे इसने एक नया देश लेकर दिया था खासकर के पहले प्रधानमन्त्री नवाब जादा लियाकत अली खा का—जब मिस्टर जिन्ना बीमार हुए तो इन्हे पहाडी इलाके पर भेज दिया गया और इनकी दखभाल के लिए कनल इलाहीबख्श को मुकर्रर किया गया डाक्टर बख्श का कहना है कि मिस्टर जिन्ना को सबसे ज्यादा दुख लियाकत अली खा क कमीनेपन पर हुआ। मि० जिन्ना ने कनल इलाहीबख्श को कहा कि मैने पाकिस्तान बना कर अपनी जिदगी की सबसे बडी भूल की और मुमकिन होता तो इस वक्त दिल्ली जाकर जवाहरलाल से कहत कि पुरानी भूलो और गलतिया को भूल जाओ और एक बार फिर से इकटठे हो जाए कनल बख्श ने यह सब कुछ सूबा सरहद के साबिक वजीर ए तालीम मुहम्मद याहाया खा को बताया जिन्होने यह सब कुछ एक मजमून में प्रकाशित कर दिया।

कनल बख्श का कहना है कि इन्होने भी मिस्टर जिन्ना की जिदगी के आखिरी दिनो की बाबत एक किताब लिखी थी लेकिन आपने जान-बूझकर इसमें कायदे आजम जिन्ना की जिन्दगी के अन्तिम दिनो के इस अफसोस नाक घटना की वणन नही किया था। आपको डर था कि या तो लोग आपके टुकड-टुकड कर देते और या फिर इन लोगो की बोटी बाटी कर देते जिन्होने कायदे आजम से एसा स्लूक किया था और जो इसकी मौत के जिम्मेदार थे।

कनल इलाहीबख्श ने कायदे आजम की मौत के बारे साल बाद लाहोर के डाक्टर अस्पताल मे कायदे आजम की मौत के पहले के हालात मि० याहीया खा को बताए। आपने बताया कि जब जयारत मे कायद आजम की दवाईया खत्म हो जाती तो इनकी जगह नई दवाईया न पहुचती।

(क्रमश)

बिहार के भूकम्प तथा बाढ़ पीड़ित क्षेत्रो में सहायता समिति का प्रशंसनीय कार्य

सस्थाए एव दानी महानुभाव दिल खोलकर सहायता करें

मै पिछले दिनो बिहार के भूकम्प तथा बाढ पीडित क्षेत्रो के दौरे पर गया था। लगभग वहा ४ दिन तक विभिन्न क्षेत्रो का निरीक्षण किया। पीडितो की सहायता के लिए विभिन्न क्षेत्रो मे आयसमाज की ओर से कम्प लगा दिये गयेहैं। यह सब काय भूकम्प तथा बाढ सहायता समिति पटना के द्वारा सावदेशिक सभा के निर्देश पर हो रहा है। सहायता समिति के प्रधान श्री प्रेमनाथ ग्रोवर मन्त्री प्रो० योगेन्द्रनारायण और कोषाध्यक्ष श्री रामचन्द्र प्रसाद हैं। इसके अतिरिक्त आय प्रतिनिधि सभा बिहार के वरिष्ठ पदाधिकारी तथा प्रमुख शिक्षा शास्त्री भी इनमे सम्मिलित हैं। सहायता समिति की ओर से दरभगा मुगेर मधुबन क्षेत्रो मे सहायता काय प्रारम्भ कर दिये है। चावल वितरण का काय वहा प्रारम्भ है। अब तक सावदशिक सभा की ओर से वहा हजारो रुपया भेजा जा चुका है।

सभी आय समाजो दानी महानुभावो व्यापारिक प्रतिष्ठानो और धार्मिक सगठनो से अनुरोध करता हूँ कि वे इस मानव पीडित सहायता के काय मे अपना अमूल्य सहयोग सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के नाम महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली २ के पते पर भिजवाने का कष्ट करें।

आनन्दबोध सरस्वती
सभा प्रधान

केन्द्रीय सूचना प्रसारण मन्त्री श्री एच. के. एल. भगत से सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की भेंट

दूर दर्शन पर महाभारत तथा रामायण सीरियल के लव-कुश काण्ड के प्रसारण समय में परिवर्तन की मांग

प्रातः काल दूर दर्शन पर वेद मन्त्रों के पाठ का अनुरोध

दिल्ली ११ सितम्बर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती आज केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मन्त्री श्री एच के एल भगत से मिले और उन्हे एक ज्ञापन देते हुए माग की कि :—

१—दूर दर्शन पर आगामी कुछ महीनो के बाद प्रसारित होने वाले महाभारत और रामायण के अवशिष्ट भाग-लवकुश-काण्ड का प्रसारण प्रात ११ बजे से १ बजे के मध्य अथवा सायकाल ७ बजे किया जावे। क्योकि इससे पूर्व लोगो को अपने दैनिक कार्यक्रमो मे रुकावट पैदा होती है।

२—प्रातःकाल मानव जीवन के उत्थान तथा चरित्र निर्माण के सोपान वेद के ८ मन्त्रो का पाठ यथा-विश्वानी देव सवितर्दुरितानी परासुव का प्रसारण अवश्य किया जावे और अग्रेजी के कार्यक्रम को सीमित किया जावे।

विस्तृत चर्चा के दौरान मन्त्री महोदय ने स्वामी जी को आश्वासन दिया कि वह उनकी मागो पर उचित रूप से विचार करेगे।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री

बिहार भूकम्प पीड़ित सहायता कोष की दान सूची

१—डा० शिवकुमार मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा सग्रहीत	२६००)
२—डा० धर्मपाल प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा सग्रहीत	२५००)
३—प्रान्तीय आर्य महिला सभा नई दिल्ली	११००)
४—आर्य समाज अलवर द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान	१०००)
५—डा० कुमारी मीरा बी गगवानी द्वारा एस राम किशन ३/२१८ एस बी रोड माटुगा बम्बई	१०००)
६—श्री अभ्युदयगान दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद	६७७)
७—श्रीमती यशोदा देवी १८/४५ त्रिलोकपुरी दिल्ली	५०१)
८—श्री मा. लेखराम जी मण्डाला जिला महेन्द्रगढ हरियाणा	५००)
९—श्री सनीश नागपाल १०५८/५ इन्द्रायणी को ग्रुप हाऊसिग सोसायटी देवलाली	५००)
१०—आर्य समाज सुभाषनगर साकेत फैजाबाद	२५१)
११—आर्य समाज गया बिहार	२५१)
१२—अमरनाथ खन्ना सक्टर १५-ए फरीदाबाद	१०१)
१३—आर्य समाज ताजगज आगरा	१०१)
१४—त्रिलोकीनाथ भट्टी आगरा	१०१)
१५—वेद प्रकाश आर्य मन्त्री आर्य समाज औरैय्या इटावा	१०१)
१६—माडूराम जी अध्यक्ष आर्य समाज पगागपुरा महेन्द्रगढ हरियाणा	१००)
१७—भगवत सरण रस्तोगी आर्य समाज बदायू (उ० प्र०)	१००)
१८—उमाशकर आर्य जौरी बुजुर्ग झासी	५१)
१९—काशीराम २१/२५ पजाबी बाग नई दिल्ली	२५)
२०—श्री पूर्णचन्द जी वैदिक	२१)
२१—रघुवीर सिह प्रधान आर्य सभा जसवतपुर मैनपुरी	२०)
२२—आर्य समाज कादिर गज नवादा बिहार	१०)

सभी दानदाताओ का धन्यवाद।

मदुराई आर्य समाज निर्माण हेतु दान

१—हरिनगर शुगर मिल्स लि० बम्बई द्वारा राजा मधुसूदन लाल व नारायण दास पित्ती	२५,०००)
२—सभा प्रधान जी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुदत्त भवन जालन्धर	५००१)
३—लक्ष्मीदेवी कृष्णलाल आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट हरिपुर सुन्दर नगर हि प्र	५०००)
४—डा० कुमारी मीरा बी गगवानी द्वारा एस रामकिशन ३/२१८ एस बी रोड माटुगा बम्बई	५००)

सभी दानदाताओ का धन्यवाद।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक का भूकम्प एवं बाढ़ पीड़ितों के सेवार्थ बिहार प्रस्थान

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान महोदय के निर्देशानुसार सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बाल-दिवाकर हस भूकम्प एव बाढ़ से पीड़ित बिहार के आइयो की सेवा के लिए पटना (बिहार) प्रस्थान कर गये

श्री हस पीडित क्षेत्रो मे चल रहे सेवा कार्यो का निरीक्षण करके उन्हे सुदूरपूर्व क्षेत्रो तक अपनी सेवाए देने के लिए सक्रिय होकर प्रेरित करेगे। वे अपने साथ सभा द्वारा प्रदत्त धन राशि और कपडे आदि भी ले जा रहे है। बिहार क्षेत्रीय आर्य वीर दल के सैनिक प्रधान सचालक जी के साथ सवा केन्द्रो पर साथ रहकर सेवा करेगे। —प्रचार विभाग, सभा

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन के निर्णय के अनुसार सभा के सभी प्रतिनिधियो को सूचित किया जाता है कि जिन प्रतिनिधियो ने सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र का आजीवन सदस्यता शुल्क अभी तक नही भिजवाया है वह २५०) रुपये दो सौ पचास रुपये भिजवा कर अपना नाम आजीवन सदस्यता मे पजीकृत करावे। —सभा प्रधान

आर्यसमाज अलवर में समता दिवस सम्पन्न

दिनाक ३ सितम्बर १९८८ को वैदिक विद्या मन्दिर स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर मे कृष्ण जन्माष्टमी पर्व को समता दिवस के रूप मे मनाया गया जिसमे १००० की सख्या मे अलवर के नागरिको ने भाग लिया विधिवत् यज्ञ के पश्चात् ५१ पिछडी व हरिजन जाति के महिला व पुरुषो ने यज्ञोपवित धारण किये तथा उन्होने माम व मदिरा का परित्याग करने का सकल्प लिया। स्वतन्त्रता सनानी एव भूतपूर्व विधायक श्री छोटूसिह एडवोकेट प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान ने इस समारोह की अध्यक्षता की। उन्होने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि किसी देश व समाज का विकास उस समाज के पिछडे वर्ग को समाज मे उच्च व समान अधिकार दिये बगैर सम्भव नही है। हमारे पिछडे कहलाने वाले वर्ग को वेद के अनुसार वो ही सम्मान प्राप्त है जो उच्च वर्ग को। आर्य समाज सदैव से जाति-पाति की विषमताओ को दूर करने के लिए प्रयत्न करती रही है उसी क्रम मे आज का आयोजन भी एक कडी है।

समारोह को विराट हिन्दू समाज के सचिव श्री चिन्तामणी जी ने मुख्य अतिथि के रूप मे सम्बोधित किया। अन्य वक्ताओ मे श्री गोकलचन्द जाटव भूतपूर्व विधायक, श्री डालचन्द आर्य, श्री मा० गुलजारीलाल माथुर, श्रीमति कमला शर्मा व श्री विद्यासागर शास्त्री थे। यज्ञोपवीत धारण करने वालो मे श्री सुमेर सिह चाव-रिया व उनकी धर्मपत्नी, मा० प्रभु दयाल जाटव, श्री डालचन्द आर्य प्रमुख थे।

—प्रदीप आर्य मन्त्री

सम्पादकीय

१४ सितम्बर संकल्प दिवस ?

लिपि देवनागरी और भाषा आर्य भाषा है

—स्वामी दयानन्द

भाषा की एकता राष्ट्र के लिए संजीवनी बूटी है। यह सिंहनाद भी उस राष्ट्ररक्षक ने हिमालय की चोटी से ललकार कर दिया था। संस्कृत के विद्वान और गुजराती मातृ भाषा वाले उस राष्ट्रभक्त ने अपने जीवन में आर्य भाषा हिन्दी को सीखकर अपने विचार मौखिक व लिखित रूप में भारतीय जन मानस को दिए साथ ही ग्रन्थों को लिखकर भी दिया।

क्योंकि जब वे प्रचार कार्य करते हुए देश के विशाल प्रांगण में घूमे। तो उन्हें विश्वास हो गया कि भारत की राष्ट्रभाषा समूचे देश को एकता के सूत्र में बाँधने में सक्षम हिन्दी ही हो सकती है। उन्होंने यह घोषणा ब्रिटिश साम्राज्य शाही के आतंक काल में का थी।

स्वतन्त्र भारत का संविधान बनाने वालों ने महर्षि दयानन्द की घोषणा स्वीकार कर भारत की राजभाषा हिन्दी को यह गौरवमय स्थान प्रदान किया पर जिन लोगों के हाथ में शासन की बागडोर आई। वे या तो स्वयं अंग्रेजी के भक्त थे या वे सत्ता पर अधिकार जमाये रखने के उद्देश्य से भाषा वाद के बवन्डरों के आगे झुकते रहे।

परिणाम भयावह सिद्ध हुआ ? पंजाब, नागालैण्ड, केरल आदि छोटे-छोटे सीमा प्रान्त बन गए। जहां भाषावाद और सम्प्रदायवाद के संयुक्त मोर्चे ने राष्ट्र को चुनौतियां देनी प्रारम्भ कर दी।

बात सीधी व सरल थी राष्ट्र की भाषा के रूप में हिन्दी का बोलबाला हो और हर प्रान्त में अपनी स्थानीय भाषा पनपे। पर स्वार्थी राजनीतिक नेताओं ने गुलामी के दिनों की भाषा अंग्रेजी को सह-राजभाषा बनाकर हिन्दी के ऊपर लादे रखा और प्रान्तीय भाषाओं की हिन्दी से लड़ाई करवा दी।

राष्ट्रीय एकता को जितना आघात इस भावना से पहुँचा। सम्भवत और किसी से नहीं ?

आज भारत में हिन्दी के शिक्षा संस्थान तथा राष्ट्रभाषा के हिन्दी प्रचार क्षेत्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग वर्धा राष्ट्रभाषा समिति कर रही है। इनके प्रचार कार्य में पूर्ण सहयोग देकर राष्ट्र भाषा को व्यापक भाषा बनाने का संकल्प लें।

निजी व्यवहार से लेकर सार्वजनिक क्षेत्र तक का कार्य हिन्दी राष्ट्र भाषा में करें।

आज घर की चार दीवारी के बाहर भी हिन्दी के प्रचार प्रसार में आर्य समाज की विशेष भूमिका रही है। लेकिन विश्व भाषा के रूप में प्रतिष्ठित कराने के लिए सर्वप्रथम देश की एकमात्र सम्पर्क भाषा बनाने का जी तोड़ कार्य करना होगा।

क्रान्ति के वे दिन-जब आर्य समाजी पत्रकार पकड़े गए

—शिवकुमार गोयल, पिलखुवा (उ० प्र०)

स्वाधीनता संग्राम के दौरान हिन्दी के अनेक पत्रकारों, साहित्यकारों तथा कवियों ने अपनी लेखनी के माध्यम से जनता में राष्ट्रीय भावनाएं पैदा कर निर्भीकता का परिचय दिया था। वीर सावरकर, पं० माखनलाल चतुर्वेदी, पं० सुन्दरलाल आदि से लेकर आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन तक ऐसे अनेक साहित्य सेवी और पत्रकार हुए हैं जिन्हें अंग्रेजों के खिलाफ लिखने के कारण जेलों की यातनाएं सहन करनी पड़ीं। जेलों की अमानवीय यातनाएं भी उन्हें अपने पथ से विचलित नहीं कर पाईं।

सन १९४२ के आंदोलन का दौर दारा उन दिनों पूरे यौवन पर था। लाहौर से महाशय खुशहालचन्द खरसन्द (जो बाद में विख्यात आर्य सन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती के नाम से जाने गये।) दैनिक 'मिलाप" का प्रकाशन करते थे। "मिलाप" के हिन्दी संस्करण के सम्पादक उन दिनों श्री लेखराम थे तथा उप-सम्पादक थे आचार्य क्षेमचन्द्र-सुमन।

सुमन जी गुरुकुल महाविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त लाहौर गये तो वे प्रकाशन संस्थान "हिन्दी भवन" का साहित्यिक कार्य देखने के उद्देश्य से किन्तु वहां वे पत्रकारिता की ओर उन्मुख हुए। श्री लेखराम ने उन्हें शाम का समय निकालकर हिन्दी दैनिक 'मिलाप" के सम्पादकीय विभाग में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। वे पत्रकारिता के साथ-साथ देशभक्ति पूर्ण कविताएं भी लिखते थे। कुछ ही समय में सुमन जी लाहौर के देशभक्त युवकों में लोकप्रिय हो गए। "मिलाप' के हिन्दी संस्करण के सम्पादक श्री लेखराम लाहौर में मेलाराम रोड स्थित जिस बड़े मकान में रहते थे वह अविवाहित युवा पत्रकारों और साहित्यकारों का निवास बनता गया। एक प्रकार से वह राष्ट्रीयता की भावना रखने वाले देशभक्त सेनानियों का अड्डा सा बन गया था। सुमन जी भी उसी मकान में रहने लगे थे।

हिन्दू विश्वविद्यालय अड्डा बन गया

उधर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय १९४२ के राष्ट्रीय का प्रमुख केन्द्र बन चुका था। वहां के छात्र ही नहीं, शिक्षक भी स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय हो उठे थे। डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन (जो बाद में राष्ट्रपति बने) इन दिनों हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति थे। उन्होंने बहुत कोशिश की कि विश्वविद्यालय आंदोलन से दूर रहे किन्तु जब वे सफल नहीं हुए तो उन्होंने यूनिवर्सिटी को सेना के हवाले कर दिया। अब तो आन्दोलन से जुड़े शिक्षकों और छात्रों की धरपकड़ शुरू हो गई। अनेक के वारन्ट निकाल दिये गये।

हिन्दू विश्वविद्यालय के मेडिसिन विभाग के प्रोफेसर डा० के एन. गैरोला तथा प्रो राधेश्याम गिरफ्तारी से बचने के लिये भेष बदलकर अनेक छात्रों को लेकर लाहौर तक पहुँचने में सफल हो गये। इन छात्रों में श्री भगवत दयाल शर्मा (जो आगे चलकर हरियाणा के मुख्यमन्त्री बने) जिला मेरठ के संस्कृत छात्र केवलानन्द अज्ञेय तथा युवा पत्रकार नरेन्द्र मालवीय भी थे। गवर्नमेंट संस्कृत कालेज के छात्र केवलानन्द अज्ञेय बौद्ध भिक्षु के कपड़ेपहनकर "आचार्य दीपकर" के नाम से लाहौर तक पहुँचे थे। उनकी एक टांग बेकार थी, अत सबसे ज्यादा पहचाने जाने का खतरा उन्हें ही था।

लाहौर में छुपते हुए नरेन्द्र मालवीय उन्हें देखते ही पहचान गये तथा उन्हें भी लेखराम जी के मकान में ले आये। प्रसिद्ध पत्रकार श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति जी के पुत्र जयन्त 'रामनाथ' के नाम से तथा दैनिक "सैनिक" (आगरा) के सम्पादक श्रीराम पालीवाल "रमेश" के छद्म नाम से लाहौर में ही राष्ट्रीय गतिविधियों में संलग्न थे।

सम्पादक के घर—फरारों का अड्डा

लेखराम जी का निवास स्थान राष्ट्रीय जन-जागृति अभियान में गुप्त रूप से सक्रिय था। आचार्य दीपकर एक टांग बेकार होने के कारण पकड़े जाने की आशंका से दिनभर वहीं रहकर गुप्त पत्रक तथा क्रांतिकारी साहित्य तैयार करने में लगे रहते थे। एक दिन वे किसी काम से मुलतान जाने के लिए रेलवे स्टेशन पहुँचे लाहौर से जाने वाली ट्रेन छूट गई इसलिए वे वापस लौट रहे थे कि सी आई डी इन्सपेक्टर महाराजकृष्ण कौल की निगाह उन पर पड़ गई। वे 'टांग" को देखकर पहचान गए तथा पीछा करते हुए मकान तक जा पहुँचे। उन्होंने पुलिस को साथ लेकर छापा मारा और आचार्य दीपकर सोते हुए पकड़े लिए गए। अब तो वह रहस्यमय मकान सी आई डी. तथा पुलिस की निगाह में आ ही गया।

प्रख्यात उर्दू पत्रकार श्री जमनादास अख्तर उन दिनों "मिलाप" के

[शेष पृष्ठ १० पर]

हिन्दी और हम

लेखक—डा० रवीन्द्र अग्निहोत्री
जी/२१, मेकर कुन्दन सिको कुञ्ज, सान्ताक्रूज
(पश्चिम) बम्बई-४०००५६

हिन्दी आज भारत संघ की राजभाषा है, पर उसे इस स्थान तक पहुचाने मे महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की जो भूमिका रही है उसकी प्राय उपेक्षा कर दी जाती है। राजनीति के खिलाडी केवल इतना ही प्रचारित करते हैं कि देश मे हिन्दी का प्रचार करने के लिए महात्मा गाधी ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति वर्धा आदि की स्थापना की और हिन्दी प्रचार को राष्ट्रीय महत्त्व का विषय मानते हुए उसे स्वतन्त्रता आन्दोलन से जोड दिया। कुछ लोग इसमे यह जोडना नही भूलते कि जिस प्रकार बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए सम्राट् अशोक ने अपने भाई और बहन को लका भेजा, उसी प्रकार हिन्दी प्रचार के लिए महात्मा गाधी ने अपने पुत्र को मद्रास भेजा। निस्सन्देह, राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने हिन्दी प्रचार के लिए जो कुछ किया, वह सर्वथा प्रशसनीय है, आज के दक्षिण भारत मे हिन्दी का प्रचार करने मे तो उनकी भूमिका और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है तथापि हमे यह स्वीकार करना होगा कि हिन्दी प्रचार के लिए किए गए समस्त प्रयासो का वह पर्याय नही है। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी को जो राष्ट्रभाषा के रूप मे हिन्दी को अपनाने के लिए जो पृष्ठभूमि मिली उसका निर्माण करने मे राष्ट्र पितामह दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित सस्था आर्यसमाज ने जो योगदान किया है उसे भुलाया नही जा सकता।

यह सर्वविदित है कि महर्षि दयानन्द जन्म से गुजराती भाषी थे और विद्या प्राप्ति के लिए उन्होने सस्कृत का विधिवत् गहन अध्ययन किया। यही कारण था कि वे अपने व्याख्यान और लेख आदि मे सस्कृत का ही प्रयोग करते थे। वह युग ही ऐसा था जब विद्वानो की भाषा सस्कृत ही थी। यद्यपि अग्रेजी शासन अपनी जड जमाने का प्रयास कर रहा था, यूरोपीय जातियो के सम्पर्क मे आने पर आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से भी हमारा परिचय हुआ था, अग्रेजी शिक्षा के कुछ केन्द्र भी बनने लगे थे और कुछ प्रबुद्ध भारतीय उस ओर आकृष्ट भी हो रहे थे, पर इस सबके बावजूद परम्परा से सस्कृत को अक्षुण्ण गौरव प्राप्त था। भारतीय विद्वानो की भाषा सस्कृत ही थी। दार्शनिक चर्चाए और अकेडमिक चर्चाए सस्कृत मे ही होती थी। महर्षि उस भाषा के निष्णात विद्वान् थे और बडी सहजता के साथ ललित शैली मे सस्कृत मे सभाषण करते थे। यह भी सत्य है कि उस समय सस्कृत आम जनता की भाषा नही थी, जब कि महर्षि दयानन्द भारतीय समाज की जिन कुरीतियो, रूढियो अन्धविश्वासो को दूर करना चाहते थे, वे समाज के गिने-चुने लोगो को ही प्रभावित करने से दूर नहीं हो सकती थी, विशेष रूप से तब जब उन रूढियो आदि का सम्बन्ध उन लोगों की जीविका से जुडा हुआ था जिन्हें आम जनता सस्कृत का जानकार मानती थी। इस-लिए महर्षि व्याख्यान देते समय अपने साथ अनुवादक रखते थे जो उनकी बात सामान्य व्यक्ति को समझा सकें। अनुवादकों की इस बैसाखी के सहारे ही भारतीय जनमानस मे चेतना और जागृति उत्पन्न करने का प्रयास करते हुए जब वे कलकत्ता पहुचे तब उनकी भेंट उस युग के एक दूसरे विद्वान् नेता और समाज सुधारक आचार्य केशवचन्द्र सेन से हुई। आचार्य सेन सस्कृत के भी अच्छे जानकार थे, पर उन्होने आम जनता से सम्पर्क करने के लिए महर्षि को सुझाव दिया कि अनुवादको की बैसाखी छोडकर अपने पैरो पर खडे हो। आचार्य केशवचन्द्र सेन का मानना था कि भारतीय समाज का सुधार करने, भारत की एकता को पुष्ट करने और भारत को स्वाधीन बनाने के लिए हमे किसी ऐसी भारतीय भाषा को ही अन्तर-प्रान्तीय प्रयोग की भाषा बनाना चाहिए जो आम जनता की भाषा हो, और वे हिन्दी को ही इस पद की अधिकारिणी मानते थे। इसीलिए उन्होने सन् १८७५ मे अपने पत्र "सुलभ-समाचार" में बगला में लिखे लेख में लिखा,—"अभी कितनी ही भाषाए भारत में प्रचलित हैं। उनमें हिन्दी भाषा ही सर्वत्र प्रचलित है। इसी हिन्दी को यदि भारत की एकमात्र भाषा स्वीकार कर लिया जाए तो सहज ही यह (अर्थात् समाज का सुधार, एकता और देश की स्वाधीनता) सम्पन्न हो सकती है।" यही कारण था कि जब बगला भाषी आचार्य केशवचन्द्र सेन की गुजराती-भाषी, सस्कृत के उद्‌भट विद्वान् स्वामी दयानन्द से भेंट हुई तो उन्होने सुझाव दिया कि यदि आप पूरे भारत को अपनी बात सुनाना चाहते है तो हिन्दी सीखिए क्योकि हिन्दी ही ऐसी भाषा है जिसे भारत का सर्वसाधारण व्यक्ति समझता है।' सत्य के ग्रहण करने और असत्य को त्यागने को सर्वदा उद्यत रहने का उपदेश देने वाले महर्षि ने इस सुझाव को आभार सहित स्वीकार किया। ४८ वर्ष की आयु मे हिन्दी सीखी और उसी मे व्याख्यान देने का अभ्यास किया। "सत्यार्थप्रकाश" जैसा विशाल और गम्भीर विषय का ग्रन्थ हिन्दी मे ही लिखा। इसी ग्रन्थ के दूसरे समुल्लास मे बच्चो की शिक्षा के प्रसग मे यह भी लिखा कि बच्चो को पहले देवनागरी अक्षरो का अभ्यास कराए और फिर अन्य देशीय भाषाओ के अक्षरो को भी।

महर्षि ने हिन्दी को आर्य भाषा का नाम दिया और उसका प्रचार-प्रसार करना उनके जीवन का तथा समाज सुधार के लिए शुरु किए गए आन्दोलन का एक भाग ही बन गया। उत्तराधिकार में यही आदोलन आर्यसमाज को मिला और उसने भी हिन्दी प्रचार को अपने कार्यक्रम का एक अग बनाया।

यह ध्यान देने योग्य है कि महात्मा मुशीराम के रूप मे जब स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल कागडी की स्थापना की तो उन्होने गुरुकुल मे शिक्षा का माध्यम हिन्दी को ही बनाया। वहा प्राचीन वाङ्मय तो हिन्दी के माध्यम से पढाया ही जाता था, आधुनिक विज्ञान, गणित, पाश्चात्य दर्शन आदि विषय भी हिन्दी मे ही पढाने की व्यवस्था थी। जब सन् १९०७ मे गुरुकुल मे महा-विद्यालय विभाग खुला तो उसमे भी माध्यम हिन्दी ही रखा गया। यह वह समय था जब हिन्दी मे उच्च शिक्षा देना सर्वथा असम्भव माना जाता था, पर गुरुकुल ने इस कार्य रूप मे इतनी अच्छी तरह परिणत करके दिखा दिया कि विदेशी विद्वान् और अग्रेजी के समर्थक देशी विद्वान् सभी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। इस सम्बन्ध मे मैं दो उदाहरण प्रस्तुत करना चाहूँगा। पहला उदाहरण है कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग के अध्यक्ष डा० सेडलर का जो सन् १९१८ मे सर आशुतोष मुकर्जी के साथ गुरुकुल पधारे। गुरुकुल का निरीक्षण करने के बाद उन्होंने अपने पत्र मे गुरुकुल की प्रशसा करते हुए लिखा, "मैं समझता हूँ कि जिस शिक्षाविधि मे मातृभाषा को प्रथम और सबसे प्रमुख स्थान दिया जाए वहीं यह सम्भव है कि मन का स्वतन्त्र विकास होकर मानसिक वृत्तियों और भावों पर प्रभुत्व प्राप्त हो सके।" दूसरा उदाहरण है उस युग के एक प्रसिद्ध विद्वान् शिक्षा-शास्त्री श्री निवास शास्त्री का, जो उच्च शिक्षा के माध्यम के रूप में अग्रेजी के कट्टर समर्थक थे, पर गुरु-कुल का अवलोकन करने के बाद उन्होंने लिखा, "मेरा अपना विचार यह रहा है कि विद्यालय स्तर पर शिक्षा का माध्यम भार-तीय भाषाए ही रहनी चाहिए परन्तु महाविद्यालय स्तर पर पढाई अग्रेजी के माध्यम से ही होनी चाहिए, पर अब गुरुकुल को देखकर मैं अपने इस विचार से पर हट रहा हूँ।"

यो तो आज भी कुछ लोग यह आरोप लगाते हैं कि हिन्दी मे विभिन्न विषयो की उच्च स्तर की पुस्तके ही उपलब्ध नही है, और जानकार लोग जानते हैं कि इस आरोप के मूल मे वास्तविकता कम, अज्ञानता अधिक और कभी-कभी दुर्भावना भी काम कर रही होती

(शेष पृष्ठ ६ पर)

भारतीयता अक्षुण्ण है संस्कृत भाषा से

—कल्पताथ शास्त्री—

सदियो पुराने इतिहास को सजोने वाले इस देश को जिन तत्वो ने सास्कृतिक और भावात्मक एकता के सूत्र मे बांधकर आज तक एक राष्ट्र के रूप मे जीव त रखा है उनमे सस्कृत भाषा प्रमुख है। भावा मक एकता के कारको मे सस्कृति की भूमिका बहुत महत्वपूण होती है जिसके धम एव भाषा प्रमुख अ ग हैं। यद्यपि धम का नाम लेना आज के परिवेश मे निरापद नही है अत उससे चाहे हम कतराए कि तु यह स्पष्ट है कि एक धम तथा एक भाषा देश के निवासियो को जोडने का बहुत बडा कारक होती है। इस देश म विभि न भाषा भाषियो और विभि न धर्मावलम्बियो को भी एक सास्कृतिक इतिहास ने जोड रखा है। ऐसे अनेक कारको मे कलाए तथा सगीत भी आते है जिनका नाम राष्ट्रीय एकता के कारको मे गिनाना चाहे अब तक फैशन मे नही आया हो। उस धमनिरपेक्ष सस्कृति की जिसमे राष्ट्र धम कलाए और भाषाए आती हैं सस्कृत भाषा सदियो से एकमात्र वाहक रही है। इस दृष्टि से, इसकी भूमिका राष्ट्रीय एकता के सूत्रा मे मूध य है। इसके कुछ आधार तो बहुत जाने पहचाने हो गये है किन्तु कुछ अब भी विवेचन की अपेक्षा रखत हैं।

भाषायी एकता

यह आश्चय जनक तथ्य है कि इस देश की विभि न भाषाओ मे (केवल एक या दो अपवादो को छोडकर) वणमाला शब्दावली तथा व्याकरण स रचना मे एक आधारभूत समानता पाई जाती है चाहे इन भाषाओ को आज हम आय या द्रविड आदि विभि न भाषा समूहो मे रखने लगे हो। यह क्या आश्चयजनक नही कि समस्त भारतीय भाषाओ की जिनमे बगला मराठी आदि आय भाषाए भी हैं और तमिल तेलगू आदि द्रविड भाषाए भी वण माला और वर्गों का क्रम बिलकुल एक सा है। स्वर और व्यजन, क वग च वग आदि का विभाजन बिलकुल समान है। वण क्रम की यह समानता अन्य विभेदो के बीच एकता की आधारभूत कडी है। यह एकता चाहे सस्कृत एव अन्य आय भाषाओ की उद्गम स्रोत किसी अ य भारोपीय मूल भाषा के कारण हो किन्तु इसका बहुत बडा आधार यह रहा कि पाणिनी ने अपने व्याकरण मे वणमाला के जो महेश्वर सूत्र आधार भूत माने पाणिनीय व्याकरण की सवमा यता के कारण इस देश की समस्त भाषाओ ने उन्ही सूत्रो के क्रम को अपनाया। यही कारण है कि आज यदि वण क्रम सस्कृत के अनुसार रखा जाए तो समस्त भारतीय भाषाओ मे वह समान रूप से सुविधा जनक रहेगा। वस्तुत भारत मे प्रचलित अनेक भाषा विभाषाओ के बीच एक सुसस्कृत सम्पक भाषा की स्थापना के लक्ष्य से ही पाणिनी ने इसका व्याकरण बनाया और यह सस्कृत भाषा देश की सम्पक भाषा बनी।

यह तो सवविदित है ही कि सस्कृत की शब्दावली समस्त आय भाषाओ मे विपुल परिमाण मे पहुँची है और घुलमिल गई है। मोटे अनुमान से कन्नड और तेलगु मे ८० प्रतिशत मलयालम मे ७० प्रतिशत और तमिल मे ६० प्रतिशत शब्दावली सस्कृत मूल की है। आज राजनैतिक कारणो से तमिल मे से सस्कृत मूल के शब्दो का बहिष्कार चाहे हो रहा हो किन्तु शेष सभी भाषाओ मे यह शब्दावली इतनी व्यापक है कि उन भाषाओ मे सास्कृतिक एकत्व का स्पष्ट आभास होने लगता है। जिस प्रकार राम कथा पाण्डव कथा तथा महावीर, बुद्ध आदि महापुरुषो के प्रति श्रद्धा सारे देश को एक सास्कृतिक भाव भूमि पर ला खडा करती है उसी प्रकार सस्कृत की यह शब्दावली सब भाषाओ को एक र ग देती है। सस्कृत के शब्दो मे सारे देश वासियो के नामकरण सदियो से होते रहे हैं। बगाल मे बगला बोलने वालो के नाम धूर्जटी प्रमथ विधुशेखर आदि उडिया बोलने वालो के नाम का कालिन्दीचरण आदि तमिल बोलने वालो के पाथसारथी कोदण्डपाणि आदि और मराठी बोलने वालो के पाडुरग गोविंद मुकुन्द आदि समस्त सस्कृत के होते रहे हैं। धम तथा सम्प्रदाय उनका कोई भी हो चाहे वे सस्कृत जानते हों या नहीं, सस्कृत के सुललित शब्दो में नामकरण उनका अवश्य होता रहा है।

जिस प्रकार भाषाओ के साहित्य मे राम, कृष्ण, रावण अर्जुन आदि की पुरा कथाओ ने समस्त भाषाओ के कवियो को समान उपमान और प्रति म न दिये हैं उसी प्रकार सस्कत के काव्य शास्त्र ने समस्त भाषाओ को रस और अलकार दिये हैं। सस्कत का छन्द शास्त्र सब भाषाओ मे समान रूप से लोकप्रिय है। इसका प्रमुख कारण तो सस्कत भाषा का सावदशिक और सावकालिक काव्य की और शास्त्र की भाषा होना था कि तु इसके कारण अन्य भारतीय भाषाओ ने भी सस्कत का काव्य शास्त्र और छन्द शास्त्र इतने स्नेह से अपनाया कि मराठी से लेकर मलयालम तक के काव्यो मे सस्कृत के वसन्त तिलका शिखरिणी आदि छन्द लिखे जाने लगे। सस्कत के देश भर मे प्रसार के कारण उसका अन्य भाषाओ से सम्पक इतना घनिष्ठ हो गया कि जिस प्रकार उसके शब्द अन्य भाषाओ मे घुलमिल गये उसी प्रकार उसकी अभिव्यक्ति भी इस तरह आत्मसात हो गई कि एक परम्परा यह भी चल निकली कि दक्षिणी की भाषाओ मे काव्य रचना करने वाला एक ही छन्द मे मलयालम और सस्कत साथ साथ लिखने लगा। जिस प्रकार गद्य और पद्य को मिलाकर चम्पू काव्य (दक्षिण की भाषाओ मे तुलाल) लिखे जाते

(शेष पृष्ठ ६ पर)

प्रांतीयता और क्षत्रीयता सस्कृत से एकदम दूर रही। सदियो से हम मम्मट और कल्हण जैसे कश्मीरियो जगन्नाथ जैसे दक्षिणियो भट्टोजि दीक्षित जैसे मराठियो जयदेव जैसे बगालियो को मूध य सस्कृत आचाय के रूप मे पढते आ रहे हैं सारा देश उनके प्रति श्रद्धानत है। यह कभी किसी ने नही सोचा कि वे किस प्रात के थे। कालीदास का तो आज तक यह पता नही कि वे कहा के थे। पूरे देश के होने की भावना इसी भाषा की देन है। जिस प्रकार गीता को चाणक्य के अथ शास्त्र को या शकराचाय के स्तोत्रो को किसी प्रात के साथ नही जोडा जा सकता उसी प्रकार इस भाषा को किसी प्रात की नही माना जा सकता।

भारतीयता अक्षुण्ण है

(पृष्ठ ५ का शेष)

थे, उसी तरह तेलगू, कन्नड या मलयालम की कविता मे सस्कृत कविता मिलाकर काव्य लिखे जाने लगे थे। इस प्रकार के मेल को मणिप्रवाल शैली कहा जाता था। सभी भाषाओ को स्नेह की भागीरथी में नहलाकर एक धारा मे जोडने वाली इस भाषा ने भावात्मक एकता के सूत्र मे इन सब काव्यो के पाठको को किस प्रकार बाधा यह इससे स्पष्ट हो जाएगा।

ऐतिहासिक प्रवाह

चाहे किन्ही कारणो से ऐसा हुआ हो सस्कृत को अमर भाषा और सार्वकालिक तथा सार्वदेशिक भाषा माना जाने लगा। इसी कारण समस्त देश मे यह परम्परा सुविदित हो गई थी कि धर्म और दर्शन के शास्त्रीय ग्रथ सस्कृत मे विशेषक सस्कृत पद्यो मे लिखे जाते थे। महावीर और बुद्ध ने चाहे उपदेश लोक भाषाओ मे दिये हो किन्तु उनके भी दर्शन ग्रन्थ विद्वानो द्वारा इसलिए स स्कृत मे लिखे गए कि उन्हे सार्वकालिकता, सार्वदेशिकता एव शास्त्रीयता प्राप्त हो। जैन दर्शन के मूर्धन्य ग्रन्थ बहुत बडी मात्रा मे स स्कृत मे लिखे गये। उमास्वाति का तत्वार्थ सूत्र जैसे शास्त्रीय जैन ग्रन्थ स स्कृत मे ही मिलते हैं। बौद्ध दार्शनिको ने भी (जैसे असग, वसुबधु चन्द्रकीर्ति) शास्त्रीय दर्शन ग्रन्थ स स्कृत मे लिखे। उनके ललित-बिस्तर जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ केवल स स्कृत मे ही मिले है। समस्त राजवशो ने अपना इतिहास स स्कृत मे लिखाया, चाहे वे कश्मीर के हो जिन्होने राज तरगिणी जैसे ऐतिहासिक काव्य लिखा या मेवाडी हो जिन्होने राज प्रशस्ति जैसे काव्य शिलालेख के रूप मे खुदाई शिलालेखो और प्राचीन अभिलेखो की भाषा का अशोक के बाद प्रमुखत स स्कृत मे होना तो सुविदित है ही, बडे दुरस्त राजवशो मे पत्राचार भी सस्कृत मे होता था। शिवाजी और मिर्जा राजा जयसिह क्रमश मराठी और राजस्थानी भाषी थे। वे आपस मे किस प्रकार पत्राचार करते ? या तो फारसी मे या सस्कृत मे।

स्पष्ट है कि जिस विषय पर इन्होने पत्र लिखे वह गोपनीय था तो उन्होने सस्कृत को चुना। सम्पर्क भाषा की यह भूमिका सस्कृत को सहज ही मिल गई थी। नैषध चरित के लेखक श्री हर्ष ने लिखा है कि दमयन्ती-स्वयवर मे विभिन्न प्राता के राजा एकत्र हुए जिनकी भाषाए अलग अलग थी। तब उन्होने आपस मे सस्कृत भाषा मे बातचीत की। 'अन्योन्य-भाषा-अनवबोध भीत सस्कृत्रिमभिर्व्यवहार वत्सु'। सम्पर्क भाषा की इस सहज भूमिका ने सस्कृत को सारे देश मे शास्त्रार्थ की भाषा भी बना दिया था, धर्म की भाषा और सस्कृति की भाषा भी बना दिया था। आज तक पूरे देश मे पुरोहित समस्त धार्मिक कार्यों में इसी भाषा मे सकल्प करवाते हैं। इस भाषा के मन्त्रो और स्तोत्रो के प्रति सबकी समान निष्ठा है। यह ज्योतिष की भाषा तो है ही, सही मायनो मे पुस्तकालय भाषा को इसने सदियो तक भूमिका निभाई थी। आयुर्वेद, तन्त्र मन्त्र सबके ग्रन्थ इसी मे लिखे जाते थे।

धर्म निरपेक्ष भाषा

उपर्युक्त विवरण का आशय यह नही कि धर्म की भाषा होने के कारण यह हिन्दुओ या सनातनियो की भाषा मान ली गई थी। यह तो सच है कि सनातन धर्म और आर्य समाज जैसी परम्पराओ में इस भाषा का पूर्ण प्रयोग रहा किन्तु यह उन्ही तक सीमित नही रही। बौद्धो, जैनो, सिक्खो ने ही नहीं अनुशीलन किया कि इन सभी धर्मों में सैकडो स स्कृत विद्वान हुए जिन्होंने अनेक ग्रन्थ संस्कृत में लिखे। इसकी यह धर्म निरपेक्ष भूमिका भी अपने आप में अद्भुत है। चूंकि इस अमर भाषा में लिखा कोई भी सम्प्रदाय का इतिहास अमर हो जायेगा ऐसी धारणा थी इसलिये मुगल बादशाहो ने भी स स्कृत विद्वानो को अपने दरबारो मे रखा और अपनी कीर्ति स स्कृत में निबद्ध करवाई। अकबर के समय में अल्लोपनिषद लिखी गई जिस पर इस्लाम धर्म और कुरान की शैली का स्पष्ट प्रभाव है। उधर दाराशिकोह जैसे शहजादो ने और अब्दुर्रहीम खानखाना जैसे सामन्तो ने इसका गहन अध्ययन किया। वेदो, उपनिषदो, गीता आदि का अपनी-अपनी भाषाओ मे अनुवाद किया और करवाया। खानखाना स स्कृत के बहुत अच्छे कवि थे। मुसलमानो ने भी उपनिषदो और दर्शन की भाषा होने के नाते इसका इतना उन्होने खेटकौतुकम्, द्वय स्त्रिशद्योगावलि जैसे ज्योतिष ग्रन्थ तो स स्कृत मे लिखे ही हैं, गगा की स्तुति मे गगाष्टक इतना अच्छा लिखा है कि वह स स्कृत स्तोत्रो की परम्परा का उत्कृष्ट रत्न बन गया है। कश्मीर मे जैनुल आबदीन (१४वी सदी) जैसे अनेक संस्कृत प्रेमी शासक हुए हैं। रुद्र कवि ने खानखाना चरित चम्पू स स्कृत में इसलिए लिखा था (१६०९ ई) कि खान-खाना को महापुरुषों की श्रेणी में पूरा देश गिनने लगे। आज भी गुलाम दस्तगीर जैसे मुसलमान धर्म गुरु मौजूद हैं जो स स्कृत के अच्छे विद्वान हैं और स स्कृत मे ही बोलते हैं। यह धर्म निरपेक्ष एकता की भाषा और सम्पर्क भाषा की भूमिका इस भाषा ने सदियो से धारण कर रखी हैं।

प्रातीयता और क्षेत्रीयता स स्कृत से एकदम दूर रही। सदियो से हम मम्मट और कल्हण जैसे कश्मीरियो, जगन्नाथ जैसे दक्षिणियों, भट्टोजि दीक्षित जैसे मराठियो, जयदेव जैसे बगालियो को मूर्धन्य स स्कृत आचार्य के रूप में पढते आ रहे हैं, सारा देश उनके प्रति श्रद्धानत है। यह कभी किसी ने नहीं सोचा कि वे किस प्रात के थे। कालीदास का तो आज तक यह पता नहीं कि वे कहा के थे। पूरे देश के होने की भावना इसी भाषा की देन है। जिस प्रकार गीता को चाणक्य के अर्थ शास्त्र को या शकराचार्य के स्तोत्रो को किसी प्रात के साथ नही जोडा जा सकता उसी प्रकार इस भाषा को किसी प्रात की नही माना जा सकता। इसके शास्त्र भारत की सभी लिपियों मे लिखे गये हैं, भाषा स स्कृत ही रही है जिस प्रकार इसने प्रातो और शताब्दियो के कालखण्डो की सीमा का अतिक्रमण कर लिया उसी प्रकार धर्म की सीमाओ को भी यह लाघ गई थी। सही अर्थों मे पूरे देश की राष्ट्रीयता और सास्कृतिक एकता की, सारे भारत की भावनात्मक इकाई की यह प्रतिनिधि भाषा बन गई और आज भी है। यही कारण है कि चाहे हिन्दी जैसी भाषाओ तक के बारे मे किसी प्रात मे कुछ विवाद हो किन्तु स स्कृत के नाम पर कभी कोई विवाद नही रहा। राजनीति की दूषित दुर्गन्ध अब वहा भी अपनी सडाध फैलाने लगे तो यह देश का सबसे बडा दुर्भाग्य होगा।

परमात्मा का वैदिक स्वरूप क ख

—उर्मिला देवी धर्मपत्नी स्व० वैद्यनाथ शास्त्री—

मेरे परमपिता परमात्मदेव ने इस सृष्टि को बहुत सुन्दर बनाया है। जिज्ञासु नर-नारी अपनी ज्ञान पीपासा बुझाने के लिए एकत्रित हुए हैं। चाहते हैं कि किसी आत्मवेत्ता ज्ञानी से ज्ञान विषयक वेद विषयक चर्चा करे। सायंकालीन समय है। धीमा २ आह्लादक पवन प्रवाहित हो रहा है। आदित्य का अस्ताचल को जाना निशा के प्रारम्भ मे शशांक की आंख मचौली खेलना सन्धिवेला प्रभु भक्तो को उपासना का सन्देशा दे रही है। उपास्य देव के उपासक नर नारी सन्ध्या उपासना के पश्चात् आत्मवेत्ता से प्रश्न करते हैं कि कस्मै देवाय हविषा विधेम इस ३३ करोड देवी-देवताओ मे से कौनसे देवता की उपासना करे।

उत्तर — त्रयस्त्रिंशता' (यजु० १४-३१) वेदो मे प्रमाण है इसकी व्याख्या शतपथ मे भी की है।

तैंतीस देव अर्थात पृथिवी, जल, अग्नि वायु आकाश चन्द्रमा सूर्य और, नक्षत्र सब सृष्टि के निवास स्थान होने से आठ वसु। प्राण, अपान, व्यान, समान, नाग, कूर्म कृकल, देवदत्त, धनञ्जय और जीवात्मा ये ग्यारह रुद्र इसलिए कहाते है कि जब शरीर को छोडते हैं। तब रोदन करवाने वाले होते हैं। संवत्सर के बारह महीने बारह आदित्य हैं ये सब की आयु को लेते जाते है, बिजली का नाम इन्द्र इसलिए है कि परमैश्वर्यवान है यज्ञ को प्रजापति कहने का तात्पर्य यह है कि जिससे वायु वृष्टि जल औषधि की शुद्धि, विद्वानो का सत्कार मे प्रयोग किया जाता है और उनके भिन्न २ अर्थ भी होते हैं क का अर्थ संस्कृत मे जलादि होता है। कहार शब्द इसी से बना है जिसका अर्थ है क=जल=हार उसके लाने हारा अर्थात् पानी लाने वाला। ख का अर्थ संस्कृत मे इन्द्रिय और छिद्र है। संस्कृत साहित्य मे ये दोनो अन्य अर्थों मे भी प्रयुक्त होते हैं। लोक और संस्कृत भाषा में इनक जहा प्रयोग भिन्न अर्थों मे पाया जाता है। वहा वेद और वैदिक ग्रन्थो मे नही इनका प्रयोग देखा जाता है। लोक मे इनका प्रयोग साधारण बातो के बतलाने मे ही है वहा वेद मे इनके प्रयोग मे यह विशेषता देखी जाती हे ये दोनो विशेष भावको बतलाते हैं। यजुर्वेद ४०-१६ मे 'ओ३म् खं ब्रह्म' प्रयुक्त हुआ है। वहा परब्रह्म को ख कहा गया है। इसी प्रकार कस्मै देवाय काम त्वा' तथा अन्य कई वेद मन्त्रो मे क का भी प्रयोग पाया जाता है। क का प्रयोग वेद और अन्य वैदिक ग्रन्थो मे जल, प्रजापति और सुख वा सुख स्वरूप अर्थ मे हुआ है। परमेश्वर को क इसलिए कहा है वह सुखस्वरूप है। शतपथ ब्राह्मण ६ ४-३ ४ मे "प्रजापति को क कहा गया है यास्क ने 'क कमनो वा क्रमणो वा सुखो वा' इत्यादि वाक्य से सुख स्वरूप और प्रजापति अर्थों को दर्शाया है। जब ब्रह्म को कहा जाता तो उसका प्रयोग सुखस्वरूप के भाव को लेकर हुआ समझना चाहिए परमेश्वर क है और ख भी है। क जहा परमेश्वर की सुखस्वरूप होन को बताता है। वहा ख उसकी सर्वव्यापकता को प्रकट करता है। ब्रह्म आनन्दमय और सर्वव्यापक है अत उसे क और ख कहा गया है। इसमे एक रोचक वर्णन उपनिषद् मे पाया जाता है। छान्दोग्य उपनिषद् ४।१०।५ मे ब्रह्मचारी उपकोशल को अग्नियो ने उपदेश दिया है। अग्नियो ने अपनी मूक भाषा मे उपकोशल को यह प्रकट किया प्राण ब्रह्म है क ब्रह्म ख भी ब्रह्म है और नाना प्रकार की शिल्प विद्या से प्रजा का पालन होता है ये तैंतीस पूर्वोक्त देव कहाते हैं। इनका स्वामी सब से बडा होने से परमात्मा चौंतीसवां उपास्यदेव है शतपथ के चौदहवे काण्ड मे स्पष्ट लिखा है। इसी प्रकार अन्यत्र भी लिखा है जो ये इन शास्त्रो को देखते तो वेदो मे अनेक ईश्वरकृप भ्रमजाल मे गिरकर क्यो बहकते। सत्यार्थ प्रकाश में गुरुवर्य दयानन्द ने वर्णन किया हैं।

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम् कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।

सब मे व्यापक, शीघ्रकारी अनन्त, बलवान्, शुद्ध सर्वज्ञ, अन्तर्यामी, सर्वोपरि विराज्यमान, सनातन स्वयं सिद्ध, परमेश्वर, अनन्या सब जगत् का पालन करने वाला वह निराकार ही उपास्य देव है अन्य कोई नही, उसी को हम लोग इष्टदेव तथा पालक मानें अन्य को नही। पुन कस्मै देवाय किस परमेश्वर की उपासना करे यह प्रश्न ही नहीं उठता।

अब वैदिक क ख की ओर ध्यान दीजिए —लोक मे जब कभी यह कहा जाता है कि यह इस विषय का क ख भी नही जानता इसका तात्पय यह निकलता है वह इस विषय में कुछ नही जानता। पुन नम्रता से किसी ने कहा है कि भाई मुझे तो इस विषय का क ख ही मालूम है अर्थात् प्रारम्भिक ज्ञान ही है। पहले वाक्य मे क ख नकारात्मक अथ मे है अर्थात् लौकिक मे क ख का ऐसा व्यवहार होता है। संस्कृत के कोषो मे क ख के भिन्न अर्थ दिए गए हैं। संस्कृत भाषा मे यह बडा भारी सौंदर्य है उसमे वर्णो को भी पद के रूप मे उपकोशल ने यह उत्तर दिया प्राण ब्रह्म है यह मे जानता हू परन्तु क और ख ब्रह्म है यह मैं नही जानता। अग्नियो ने कहा जो क है वही ख है दोनो का ब्रह्म अथ होन से दोना एक ही हैं। इनमे कोई भद नही। इस उपदेश मे यह साफ प्रकट है क ख परमेश्वर के नाम हैं। वह भी दो गुणा के कारण हैं मनुष्य को चाहिए उनके दोनो गुणो पर विचार करे। उसे क ख समझकर उपासना करे। जो मनुष्य इस भाव को समझकर उस प्रभु की भक्ति करता है वही वास्तव मे क ख जानने वाला समझा जाता है। वैदिक क ख को जानना वास्तव मे परमेश्वर के स्वरूप को जानना है। इसलिए वैदिक साहित्य मे क ख का इतना विस्तार से वर्णन किया है।

पूर्वोक्त प्रमाणो मे वैदिक ग्रन्थो में इनका वर्णन है प्रकट हो जायगा। इसके अतिरिक्त अनेक ग्रन्थो में इनका उल्लेख पाया जाता है। व्याकरण के ऋषि पाणिनि ने की अष्टाध्यायी मे भी सूत्र बनाया है 'कस्येत्' सूत्र की रचना की एव महाभाष्यकार ने भी भाव का ग्रहण पूरे तरीके पर किया 'काय हवि' प्रयोग से इस विचार की पुष्टि भी हो जाती है।

इस लेख मे परम पूज्यपाद आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री के लेख से सहायता ली है। गुरुवर्य दयानन्द के अनन्य भक्त सिद्धान्त के साथ और सत्य के पुजारी अपनी ऊहा शक्ति से चारो वेदो के मन्त्रो के अर्थों मे चार चाद लगाने वाले भगवान दयानन्द के मन्त्रो के अर्थों की प्रणाली मे अटूट श्रद्धा रखने वाले आचार्य जी का सारा साहित्य मौलिक अपनी ऊहाशक्ति का स्वय प्रमाण है लगभग ६० पुस्तक उस ज्ञाननिधि ने लिखी है। यावद्चन्द्र दिवाकरौ तक अमर यश के भागी हे। इस पारसमणि जीवन साथी के साथ से यदि कुछ पाया है तो भगवन शेष जीवन उन्ही की तरह शुद्ध निर्मल आर्य समाज की सेवा करते हुए अपने गुरुवर्य दयानन्द के यथाशक्ति वेद प्रचार करते हुए बीत जाए यही उनके चरणों मे नम्र श्रद्धाञ्जलि है।

छुआछूत भारतीय ईसाइयों और मुसलमानों में भी है

—श्री [illegible]—

अस्पृश्यता पाप है, और हिन्दू समाज के लिए अभिशाप भी, हिन्दू समाज की इस कमजोरी का लाभ उठाकर ही ईसाई तथा मुसलमान संस्थाओ द्वारा हरिजन तथा अन्य पिछडे वर्ग के लोगो का धर्मान्तरण किया जाता है, उन्हे बहकाया जाता है कि "तुम कैसे हिन्दू हो, हिन्दू तो तुम्हारे साथ भोजन नही करते, कुए से पानी नही भरने देते, ईसाई या मुस्लिम समाज मे छुआछूत जैसी कोई चीज नही है, तुम्हे हिन्दू धर्म को छोडकर ईसाई या मुसलमान धर्म स्वीकार करने से सामाजिक न्याय प्राप्त होगा"—परन्तु वास्तव मे यह एक धोखा है।

ईसाई भारतवर्ष मे सम्पूर्ण जनसंख्या का २.२६ प्रतिशत है, जिसमे से दो तिहाई लोग केरल, तमिलनाडु, आन्ध्र-प्रदेश मे हैं, हरिजन-ईसाई आन्ध्रप्रदेश मे ४२ प्रतिशत, तमिलनाडु मे ६० प्रतिशत, केरल मे १५ प्रतिशत है और शेष भारत मे जन-जाति को छोडकर अधिकतर ईसाई हरिजन-ईसाई है, परन्तु धर्मान्तरण के ३०० वर्ष बाद भी छुआछूत की प्रथा भारतीय ईसाईयो मे प्रचलित है, अनेक स्थानो पर हरिजन ईसाई के लिए पृथक् गिरजाघर, पृथक् शमशान भूमि और गिरिजाघरो मे पृथक् बैठने की व्यवस्था है तथा उन्हे समाज मे सम्मान भी प्राप्त नही होता, तिरुचि (तामिलनाडु) मे सवर्ण ईसाई तथा हरिजन ईसाई के लिए श्मशान भूमि के बीच मे दीवार बनाई गई है ताकि दोनो के मुर्दे अलग-अलग गाडे जा सके, एक बार कुछ हरिजन ईसाई तरुणो ने उस दीवार को गिरा दिया तो उन्हे दण्डित भी किया गया, आदि द्रविड क्रिश्चियन एसोसियेशन ने इस घटना पर असन्तोष प्रकट करते हुए कहा कि, "कीडे-मकोडे भी हरिजन तथा गैर-हरिजनो के शवो को एक ही समझते हैं, यहा तो मुर्दों को भी जीवित प्राणियो की तरह अलग माना जाता है।"

एशियन क्रिश्चियन कान्फ्रेंस, बैंगलोर-१९८१ मे दलित शोषित ईसाई समाज की ओर से इस प्रकार के भेद-भाव की शिकायत की गई थी, श्री के० सी० एलेक्जेन्डर ने अपनी पुस्तक "केरल के गिरजाघरो मे जातिवाद की समस्या" मे इस प्रकार के कई उदाहरण भी दिये हैं।

केरल मे सीरियन ईसाई उच्च वर्ग से आए हैं और बुलाया ईसाई जो निम्न वर्ग से आए हैं, इनके लिए अलग-अलग पूजा स्थल है और एक चर्च का पुजारी दूसरी चर्च मे नही जा सकता है इसी प्रकार का भेद-भाव आन्ध्रदेश के चर्च मे भी है श्री पी० ई० विजयम (भारतीय हरिजन ईसाई एसोसियेशन से सम्बन्धित) ने पोप जानपाल द्वितीय के भारत आगमन पर प्रार्थना की थी कि वे भारतवर्ष के गिरजाघरो मे छुआछूत तथा सामाजिक भेदभाव दूर करने का प्रयास करे।

उन्होने बताया कि भारत मे सामाजिक भेद-भाव के कारण हरिजन ईसाइयो की स्थिति बहुत खराब है, वे राजनीति, उच्च शिक्षा, नौकरी, सामाजिक व आर्थिक जीवन मे हिन्दू हरिजनो से भी अधिक पिछडे हुए है, इस प्रकार का भेद-भाव कैथोलिक चर्चों मे मद्रास, पाडिचेरी, बगलोर, मदुराई आदि स्थानो पर तो है ही, प्रोटेस्टेन्ट चर्च भी इस कुरीति से बच नही सके हैं।

अपने देश मे कैथोलिक कार्डिनल, आर्चबिशप बिशप आदि लगभग १३० है जिनमे एक भी हरिजन ईसाई नही है, इसी प्रकार ६५ हजार धर्म प्रचारक व सिस्टर हैं जिनमे ३५० ही हरिजन हैं, केरल मे प्रोटेस्टेन्ट गिरजाघर जाति के आधार पर बने हैं। सम्पूर्ण केरल मे ४१२ गिरजाघरों मे हरिजन प्रोटेस्टेन्ट गिरजाघर है, ईसाई धर्म के बारे मे प्रचार किया जाता है कि ईसाई जाति पाति को नही मानता, परन्तु भारत मे जाति प्रथा ईसाइयो मे अभी तक प्रचलित है, वे अपने नाम के आगे जाति सूचक शब्द लगते हैं—जैसे रेड्डी, जोसेफ रेड्डी, नायडू मेरी नायडू आदि आदि ईसाइयो की जाति का उल्लेख शिक्षा संस्थाओ और सरकारी रिकार्डों मे भी रखा जाता है, हरिजन मोहल्लो मे हिन्दू हरिजन व ईसाई हरिजन साथ साथ रहते हैं, अत उनमे सामाजिक घृणा व भेदभाव बना हुआ है, विवाह के समय भी हरिजन तथा गैर हरिजन का भेदभाव देखा जाता है, ऐसे अनेक उदाहरण सामने आये है, जब सवर्ण ईसाई लडका हरिजन लडकी से विवाह करना चाहता है तो उसके मा-बाप केवल इस कारण विरोध करते हैं कि वह हरिजन ईसाई है अत भारत मे चर्च छुआछूत तथा सामाजिक असमानता के भेदभाव से परे नही है और समानता का ढोल पीटना एक धोखा ही है, सामाजिक समानता का दावा करने वाला इस्लाम भी जाति-भेद से ग्रस्त है, उनमे भी जाति भेद पूर्व जाति भेद समाज के आधार चले आ रहे हैं, हिन्दू समाज मे कर्म के आधार पर जो जातिया बना रखी है, वे ही जातिया मुसलमान बनने पर भी चली आ रही हैं, जैसे मल्लाह, भिश्ती, धोबी, दर्जी, मनिहार, लुहार, रगरेज, हज्जाम आदि, इसी प्रकार मुसलमानो मे राजपूत, अफगान, बलूच, तुर्क, पठान, मुगल, जाट, पजाबी आदि भेदभाव प्रचलित हैं, भारतीय मुसलमानो मे लगभग ७० प्रकार के मुसलमान हैं, इनमे से अनेक अपने को दूसरो से उच्च मानते है, इनमे अनेक भेदभाव विद्यमान है और एक-दूसरे के साथ रोटी-बेटी का व्यवहार नही करते हैं।

डाक्टर अम्बेडकर ने स्पष्ट कहा था कि धर्म बदलने से सामान्याय व सामाजिक एकरूपता नही मिल सकती। अत उन्होने इतना अत्याचार व अन्याय सहते हुए भी ईसाई व इस्लाम स्वीकार न करके भारत निष्ठ बौद्धमत स्वीकार किया। उन्होने कहा था कि धर्मान्तरण से भारत के दलितो का अराष्ट्रीयकरण हो जाएगा। आज भी तथाकथित हरिजन व दलित समुदाय के नेताओ को इस वास्तविकता का ज्ञान होना चाहिए धर्मान्तरण को रोक कर डाक्टर अम्बेडकर द्वारा बताए गये मार्ग पर चलना चाहिये। इसी मे अपनी जाति व राष्ट्र का भला है, हिन्दू समाज भी जितनी जल्दी अपनी मानसिकता बदल सकेगा। उतना ही राष्ट्र हित मे है। उपेक्षा, घृणा व सामाजिक भेदभाव की दीवार हटाकर प्रेम व विश्वास निर्माण करना हिन्दू समाज के नेताओ, विचारको व साधुओ का कर्तव्य है। (गोकुल जुलाई १९८८ से साभार)

हिन्दी और हम

(पृष्ठ ४ का शेष)

है, पर उस युग मे जब गुरुकुल ने अपने यहा हिन्दी को सभी विषयो का माध्यम बनाया तब हिन्दी मे पुस्तके उपलब्ध ही नही थी। आज शायद बहुत कम लोगो को पता हो कि गुरुकुल के शिक्षकों ने ही पहले पहल इस क्षेत्र मे काम किया था और गुरुकुल से अनेक उच्चकोटि के ग्रन्थ प्रकाशित हुए । प्रो० महेश चरणसिह की "हिन्दी केमेस्ट्री", प्रो० विनायक गणेश साठे का "विकासवाद", प्रो० गोवर्धन की "भौतिकी और रसायन", प्रो० रामशरण-दास सक्सेना का "गुणात्मक विश्लेषण" प्रो० महेश चरण सिह का "वनस्पति शास्त्र", प्रो० प्राणनाथ का "अर्थ-शास्त्र" "राष्ट्रीय आय-व्यय शास्त्र", और "राजनीनि शास्त्र" प्रो० बालकृष्ण का "अर्थ-शास्त्र" और "राजनीति शास्त्र", प्रो० सुधाकर का "मनोविज्ञान" आदि ग्रन्थ हिन्दी मे अपने-अपने विषय के पहले ग्रन्थ हैं। यदि यह कहा जाए कि हिन्दी मे वैज्ञानिक ग्रन्थ लिखने की परम्परा गुरुकुल से शुरू होती है, तो गलत नहीं होगा। केवल वैज्ञानिक ग्रन्थ ही नही, अन्य विषयो के मौलिक ग्रन्थ भी गुरुकुल में ही तैयार किए गए। प्रो० रामदेव ने भारतीय इतिहास के सम्बन्ध मे मौलिक अनुसन्धान कर अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ "भारतवर्ष का इतिहास" लिखा। स्वय महात्मा मुन्शीराम जी ने भी विभिन्न धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन पर मौलिक ग्रन्थ लिखे। बाद मे डा० भगवानदास ने जब "फडामेटल युनिटी आफ आल रिलीजन" लिखा तब महात्मा मुन्शीराम जी के ग्रन्थो मे उन्होने भरपूर सहायता ली। यह तो केवल प्रारम्भिक युग की बात है। गुरुकुल कागडी ने ही बाद मे अपने स्नातको के बारे मे अध्ययन करके बताया कि आज हर तीन स्नातको मे से एक "प्रतिष्ठित लेखक" है। यहा "प्रतिष्ठित" से आशय है, ऐसा लेखक जिसके ग्रन्थो को सरकार और या विभिन्न प्रसिद्ध सस्थाओ ने पुरस्कृत किया है।

यह तो केवल आर्य समाज के सरक्षण मे पलने वाली एक सस्था की उपलब्धियो की बानगी मात्र है। आर्य समाज के सरक्षण मे अन्य भी अनेक सस्थाए पली हैं, पल रही हैं, उनकी भी उपलब्धिया हैं। हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओ का अपना एक अलग ही इतिहास है और एक इतिहास कलम के उन सिपाहियो का भी है जो आर्य समाज की प्रेरणा से हिन्दी की ओर आकृष्ट हुए, हिन्दी के लेखक बने और हिन्दी की सेवा की। एक उदाहरण स्वय मेरे पिता जी का है। इन्होने इस शताब्दी के प्रारम्भ मे लन्दन से एम डी किया था, और टी बी सेनिटोरियम के चीफ मेडिकल अफसर रहे। टी बी की हवन द्वारा चिकित्सा के आविष्कार की प्रेरणा उन्हे "सत्यार्थ प्रकाश" से मिली और जब अपने इस अनुसन्धान पर उन्होने सन् १९४७ मे पुस्तक लिखी तो आधुनिक "मेडिकल" भाषा का प्रयोग हुए उसे "यज्ञ ट्रीटमेंट" जैसा कोई नाम देने के बजाय "यज्ञ चिकित्सा" का नाम दिया, "मेडिकल साइस" जैसे विषय की पुस्तक हिन्दी में ही लिखी और पुस्तक "आचार्य दयानन्द" को समर्पित की। पुस्तक को सरकार एवम् अन्य अनेक सस्थाओ ने तो पुरस्कृत किया ही पर इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण था उनका यह विचार कि हिन्दी मे ऐसे ग्रन्थ भी होने चाहिए जिन्हे पढने के लिए ही लोग हिन्दी सीखे।

इस तथ्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती कि आज ये सब इतिहास की बातें हैं। समाज को दिशा देने में इतिहास की अपनी एक विशिष्ट भूमिका होती है। वह हमें प्रेरणा दे सकता है पर हमारे कर्मों का विकल्प नहीं बन सकता। बैंक बैलेंस बन सकता है पर दैनिक आय का पर्याय नही बन सकता। स्वाधीन भारत के संविधान में जब हिन्दी को भारत की राजभाषा स्वीकार किया गया तब वह महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के आन्दोलन की भी विजय थी, संविधान के इस निर्देश का अनुपालन जिस ढग से होना चाहिए था वह अभी तक नही हुआ है। अत. राष्ट्रभाषा के रूप मे हिन्दी प्रचार की आवश्यकता आज पहले से किसी कदर कम नही, बल्कि अधिक ही है।

यह आश्चर्यजनक हो सकता है, दुखद हो सकता है, पर है सत्य कि अंग्रेजी का वर्चस्व विदेशी शासनकाल की तुलना मे आज कहीं ज्यादा बढ़ा है। अब केवल उच्च शिक्षा ही नही, प्राइमरी और यहा तक कि नर्सरी शिक्षा अंग्रेजी माध्यम देने वाली दुकानें आज शहरो से बढते हुए कस्बो और देहातो में भी खुल गई हैं और उनका माल खरीदने मे लोग गर्व का अनुभव करने लगे हैं। विशिष्ट अवसरो पर अंग्रेजी में छपे हुए "शुभ कामना पत्र" भेजने का एक नया व्यापार फल-फूल रहा है। अब तो विवाह आदि के निमन्त्रण पत्रो तक में अंग्रेजी का प्रवेश हो चुका है। नमस्ते, नमस्कार, प्रणाम आदि अभिवादन के दकियानूसी ढग माने जाने लगे हैं। गुड मार्निग, गुड ईवनिंग, गुड नाइट से शुरू हुआ सफर "हाय" "बाइ" तक आ पहुँचा है। बस स्टाप से लेकर दफ्तर तक अंग्रेजी मे बात करना शिक्षित होने की निशानी बनती जा रही है। हिन्दी मे पूछे गए प्रश्न का उत्तर हिन्दी जानने वाले मन्त्री महोदय अंग्रेजी मे देने मे शान समझते है। लोग भूलने जा रहे हैं कि किसी देश के भिन्न भाषा भाषी लोग परस्पर व्यवहार म, सडक से लेकर ससद तक मे जिस भाषा का प्रयोग करते हैं वही राष्ट्रभाषा कहलाती है। इस प्रकार सामाजिक जीवन के जिन मचो पर हिन्दी पदासीन हो चुकी थी वहा से भी उसे अपदस्थ करने का अंग्रेजी षड्यन्त्र चल रहा है, और सरकार, अफसरो एव व्यापारी वर्ग की मिली भगत से सफल होता जा रहा है। अत आज हिन्दी प्रचार से जुडी सभी सस्थाओं पर यह गुरु पर दायित्व आ गया है कि वे राष्ट्रीय महत्व के इस प्रश्न को राष्ट्रीय स्तर पर हल करने के लिए अपनी शक्ति को राष्ट्र व्यापी बनाए और ऐसे वातावरण का निर्माण करे जो वास्तव मे राष्ट्रीय हो, राष्ट्रीय भाव से भरा हो, और जिसमे राष्ट्रभाषा के लिए राष्ट्रीय गौरव का स्थान हो।

क्रान्ति के वे दिन

[पृष्ठ १ का शेष]

उर्दू संस्करण मे काम करते थे। बाद मे उन्होंने रहस्योद्घाटन किया कि उर्दू संस्करण के प्रधान सम्पादक चौ० बोरीशंकर सागर की सी०आई०डी० से साठगांठ थी। मुखबिर के रूप मे उन्होंने ही श्री लेखराम के निवासस्थान के अड्डे का पता दिया था। बाद में पुलिस ने २२ मार्च १९४३ को छापा-मार कर श्री लेखराम तथा क्षेमचन्द्र को भी गिरफ्तार कर लिया। उन दोनो पर आपत्तिजनक लेखन कार्य करने तथा काशी और बिहार के फरार युवको को संरक्षण देकर साजिश में शामिल होने का आरोप लगाया गया।

श्री क्षेमचन्द्र सुमन को अनारकली थाने की हवालात मे पूरे दो माह तक रखा गया जबकि लेखराम जी को एक सप्ताह बाद ही पुलिस अल्पाय से गई। दो माह बाद सुमन जी को फिरोजपुर जेल भेज दिया गया। उस जेल मे श्री गोपीनाथ अमन, डा० युद्धवीर सिंह, यूपजान, मीर मुस्ताक अहमद, बीजू पटनायक, नन्दकिशोर निगम जैसे वरिष्ठ नेता बन्दी थे। सुमन जी ने जेल मे ही "बन्दी के गान" तथा "कारा" काव्य लिखे।

गांव में नजरबन्द

२३ अगस्त १९४४ को सुमन जी को पंजाब की सीमा से निष्कासित करने का आदेश दिया गया। उन्हें पांच सशस्त्र सिपाहियों के साथ "भटिण्डा एक्सप्रेस' रेलगाड़ी से रवाना कर दिया गया। उन्हें सरकार ने उनके निवास स्थान बाबूगढ़ (जिला गाजियाबाद) मे नजरबन्द रखने का आदेश दिया गया।

सी आई, डी इन्सपेक्टर सीताराम शर्मा उन्हें दिल्ली से साथ लेकर बाबूगढ़ के लिए रवाना हुए। हापुड़ के रेलवे प्लेटफार्म पर सुमन जी के कोई परिचित मिल गये। वे पुलिस की आंख बचाकर उनके साथ गायब हो गए। अब तो सी आई डी इंसपेक्टर तथा पुलिस वालों को पसीना आ गया। वे रातभर उन्हें तलाश करते रहे। बाद मे पता चला कि वे बाबूगढ़ पहुँच गये हैं।

सुमन जी २५ अगस्त १९४४ से १७ मई १९४५ तक दस महीने अपने घर में नजरबन्द रहे। केवलानन्द अब तक आचार्य दीपकर बन चुके थे तथा वे अपने बागपत तहसील के ग्राम कुरली मे नजरबन्द रखे गये। बाद में देश स्वाधीन होने पर यही आचार्य दीपकर कम्युनिस्ट पार्टी के विधायक चुने गये। आज भी श्री सुमन जी तथा आचार्य दीपकर अपने-अपने क्षेत्र मे सक्रिय हैं।

धूम्रपान करने पर चार साल की सजा

नई दिल्ली, १२ अगस्त। धूम्र-पान पर प्रतिबन्ध लगे और इसका और इसका उल्लंघन करने वाले को चार साल के कारावास या एक हजार रुपये के जुर्माने से दण्डित किया जाए। यह प्रस्ताव आज कांग्रेस सांसद श्री एस जगन्नाथु ने लोकसभा में किया।

श्री जगन्नाथु ने इसके लिये दो निजी विधेयक पेश किए हैं। ये विधेयक हैं धूम्रपान प्रतिबन्ध विधेयक १९८८ और नशाबन्दी विधेयक १९८८।

इन विधेयकों में धूम्रपान करने वाले को एक हजार रुपये के जुर्माने या चार साल के कारावास या दोनो दण्डित करने का प्रस्ताव है। मद्य-पान की दशा मे तीन साल का कारावास एक हजार रुपये जुर्माना किया जाएगा।

डा० मोहनलाल सिंघल—शान्तियज्ञ

पिथौरागढ़। 'आर्यसमाज दया-नन्द बाल मन्दिर मे ६ अगस्त को डा० मोहनलाल सिंघल-शान्तियज्ञ हुआ। डा० सिंघल जी ने ३० जुलाई १९८८ को वरिष्ठ चिकित्सा अधीक्षक के रूप में जिला चिकित्सालय का कार्यभार ग्रहण किया था और ४ अगस्त १९८८ को दिल के दौरा से चल बसे।

स्वामी मुकुन्दानन्द फलाहारी ने दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा परिजनो के धैर्य हेतु परमात्मा से प्रार्थना की। —मन्त्री

आर्य जगत् के समाचार

जन्माष्टमी पर्व एवं वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज महराजपुर जिला छतरपुर म प्र मे दि० ३ ९ ८८ को जन्माष्टमी पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रात. ७-३० बजे पर्व के उपलक्ष्य मे नगर कीर्तन (जुलूस) निकाला गया जो भजन कीर्तन के साथ नगर के भिन्न भिन्न मोहल्लो से होता हुआ १०-३० बजे समाज मन्दिर मे समाप्त हुआ।

सायकाल ६ ३० बजे से पर्व पद्धति अनुसार बृहद यज्ञ प्रार्थना के पश्चात योगेश्वर श्री कृष्ण के जीवन पर (महाभारत के कृष्ण और पुराणो के कृष्ण) इस विषय पर समाज के पुरोहित प० सुखराम आर्य सि० शास्त्री ने सारगर्भित एव ओजस्वी भाषण दिया, श्रोताओ पर अच्छा प्रभाव पडा प्रसाद वितरण एव शान्ति पाठ के पश्चात कार्यक्रम समाप्त हुआ।

सम्मान समारोह एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी

रविवार ३-९-८८ के प्रात ९ बजे आर्य समाज कलकत्ता मे आयोजित यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई और प्रात १०बजे श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व बडे धूमधाम से मनाया गया। रघुमल आर्य विद्यालय महर्षि दयानन्द कन्या विद्यालय एव आर्य कन्या महाविद्यालय के छात्र एव छात्राओ द्वारा इस सन्दर्भ मे कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान प० शान्तिप्रकाश शास्त्रार्थ महारथी एव प० रुद्रदत्त शास्त्री को प्रत्येक पाच-पाच रुपए विद्वान सहायता के रूप मे प्रदान किया गया। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री गजानन्द आर्य एव आर्य समाज बडा बाजार के पूर्व प्रधान श्री फलचन्द उपस्थित थे तथा समारोह की अध्यक्षता कर रहे आर्य समाज कलकत्ता के पूर्व प्रधान श्री सीताराम आर्य। इसी अवसर पर आर्य समाज कलकत्ता के प्रधान श्री हलियाराम गुप्त द्वारा रघुमल आर्य विद्यालय के अध्यापको को सम्मानित किया गया। —राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल, मन्त्री

आर्य समाज ताजगंज आगरा का वेदप्रचार एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह सम्पन्न

यह कार्यक्रम बुधवार, ३१ अगस्त प्रात से आरम्भ होकर रविवार ३ सितम्बर १९८८ प्रात तक समारोहपूर्ण ढग से मनाया गया।

यज्ञ—श्री भूपेन्द्र शास्त्री, स्नातक दयानन्द मठ दीनानगर मे ब्रह्मा के रूप मे यजुर्वेद का यज्ञ सम्पन्न कराया।

धर्मोपदेश—अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के आर्य विद्वान एव विचारक श्री प्रेमचन्द जी श्रीधर एम ए एम फिल दिल्ली के वेदो पर अत्यन्त मार्मिक एव दार्शनिक व्याख्यान हुए तथा योगिराज श्री कृष्ण के जीवन पर उन्होने बड रोचक ढग से प्रकाश डाला। जिससे अनेक महिला श्रोता मन्त्र मुग्ध हो गये। —त्रिलोकी नाथ भट, प्रधान

जबलपुर आर्य समाज, नैपियर टाऊन (दयानन्द भवन) द्वारा "समानाधिकार दिवस" आयोजित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के निर्णयानुसार जन्माष्टमी उत्सव के अनुक्रम मे आर्य समाज एव महिला समाज नैपियर टाऊन, आर्य समाज गोरखपुर, आर्यसमाज गजीपुरा के सामूहिक तत्वाधान मे दिनाक ४ सितम्बर, १९८८ को समानाधिकार दिवस का आयोजन दयानन्द भवन नैपियर टाऊन, जबलपुर मे आयोजित किया गया।

सर्व प्रथम प्रात ७ बजे वैदिक यज्ञ प्रारम्भ होने पर उपस्थित हरिजन भाईयो को यज्ञोपवीत धारण कराया गया एव दो हरिजन कुटुम्ब के यजमान आसन पर रहते हुए यज्ञ सम्पन्न हुआ।

इसके बाद ८ ३० बजे प्रात डाक्टर श्री अजय ग्रोवर के कर कमलो द्वारा वैदिक ध्वज फहराया गया। तत्पश्चात् श्री भगवतीधर वाजपेयी, भू०पू०सम्पादक दैनिक युगधर्म जबलपुर के मुख्य आतिथ्य मे तथा श्री सोहनलाल अग्रवाल एडवोकेट की अध्यक्षता मे सभा का आयोजन हुआ।

समानाधिकार दिवस

नई दिल्ली। आर्यसमाज लाजपतनगर की ओर से रविवार ४-९-८८ को समान अधिकार दिवस व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह बडी धूमधाम से मनाया गया। डा० महेश विद्यालकार ने योगेश्वर श्रीकृष्ण जी के विलक्षण व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान चुनौतियो मे उनके दिखाए प्रशस्त मार्ग पर चलने का आह्वान किया। श्री नरेन्द्र अवस्थी पत्रकार ने योगेश्वर श्री कृष्ण जी को सामाजिक समता का प्रायोगिक प्रणेता बताया।

समता दिवस

रविवार ४ सितम्बर १९८८ को आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के तत्वावधान मे। मुन्शी पदरुद्दीन लेन कलकत्ता मे समता दिवस का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री गजानन्द आर्य ने की प्रधान अतिथि श्री फूलचन्द्र आर्य तथा वक्तागण सर्वश्री उमाकान्त उपाध्याय, सवश्वर गोस्वामी प्रभृति थे सयोजक श्रीराम जी चतुर्वेदी थे तथा प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वटू कृष्ण वर्मन श्री खुशहाल चन्द्र आर्य विशेष रूप से वेदो के समता सिद्धान्त के प्रचार मे सक्रिय थे। इसी कडी मे महु जाति सदन के सेमिनार हाल (सालान) मे श्री लोकनाथ चौधरी के सयोजकत्व मे श्री फूलचन्द्र आर्य की अध्यक्षता मे समता के प्रचार हेतु समता दिवस का आयोजन किया गया।

आर्यसमाज कलकत्ता में समता दिवस

श्रावणी पर्व एव वेद सप्ताह के अवसर पर आर्य समाज मन्दिर १९ विधान सरणी मे प्रात काल ७ से ९ बजे तक यजुर्वेद पारायण बृहदयज्ञ का आयोजन श्रावणी दिनाक २७-८-८८ से श्री कृष्ण जन्माष्टमी ४-९-८८ तक किया गया इस महायज्ञ के ब्रह्मा थे श्री प० उमाकान्त उपाध्याय एव वेदपाठी विद्वान श्री प० रामनरेश शास्त्री श्री प० प्रियदर्शन सिद्धान्त भूषण श्री प०श्रीकान्त उपाध्याय श्री प० आत्मानन्द शास्त्री एव प० शिवनन्दन प्रसाद वैदिक। प्रति दिन साय ७ से ९ बजे तक वेद कथा का आयोजन किया जिसमे श्रीमती सुनीति शर्मा द्वारा वेद मन्त्रो पर आधारित स्वनिर्मित भजनो के अतिरिक्त श्री प० रुद्रदत्त शास्त्री (देहरादून) द्वारा वेदो की महत्ता सृष्टि की उत्पत्ति आदि विषय पर तथा प० शान्तिप्रकाश शास्त्रार्थ महारथी द्वारा शास्त्रार्थों के सम्बन्ध मे सुन्दर व्याख्यान हुए।

— राजेन्द्रप्रसाद गायकवाड मन्त्री

यज्ञ से वृष्टि

आर्य समाज की अनेक पत्र पत्रिकाओं मे यज्ञ और वृष्टि शीर्षक से स्वामी सत्य प्रकाश का लेख प्रकाशित हुआ है जिससे स्वामी जी ने यज्ञ से वृष्टि नही होती है यह सिद्ध करने का प्रयास किया है। वैसे तो यह विषय वृहद है और अब भी अनेक परीक्षणो की अपेक्षा रखता है किन्तु स्वामी जी ने ऋषि दयानन्द को परम प्रमाण मानकर तथा और भी भौतिक विज्ञान से सम्बन्धित अनेक प्रमाण देकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि यज्ञ से वृष्टि नही होती। मै तो भ्रान्ति निवारणार्थ केवल ऋषि दयानन्द के ही प्रमाण दूंगा जहा उन्होने स्पष्ट लिखा है कि यज्ञ से वृष्टि होती है। वो प्रमाण निम्नलिखित है—

स्त्री पुरुषौ स्वयं वरं विधायातिप्रेम्णा परस्परं प्राणप्रियाचरणं शास्त्र श्रवणमोषध्यादि सेवनं कृत्वा यज्ञानुष्ठानेन वृष्टिं कारयेताम्

स्त्री पुरुषो को चाहिए कि स्वयंवर विवाह करके अतिप्रेम के साथ आपस मे प्राण के समान प्रियाचरण शास्त्रो का सुनने औषध्यादि का सेवन और यज्ञ के अनुष्ठान वर्षा करावे।

(यजु० भाष्य अध्याय १४ मन्त्र ८ मे भावार्थ)

यथा सुसेविता गावो दुग्धादि दानेन सर्वान् सन्तोषयन्ति तथैव वेद्या सचिता इष्टका वृष्टि हेतुका भूत्वा वृष्टि आदि द्वारा सर्वानानन्दयन्ति।

जैसे अच्छे प्रकार सेवन की हुई गौ दुग्धादि के दान से सबको प्रसन्न करती है वैसे ही वेदी मे चयन की हुई ईंट वर्षा का हेतु होके वर्षादि के द्वारा सबको सुखी करती है। (यजु० भा० अ० १७ मन्त्र २ भावार्थ)

इन दोनो प्रमाणो से यह सिद्ध होता है कि ऋषि दयानन्द यज्ञ से वृष्टि होने को मानते थे।

एक और बात—स्वामी जी संस्कार विधि मे संवत्सरेष्टि एवं नव सस्येष्टि के उल्लेख की चर्चा की और अपने स्वभाव के अनुसार यह अर्थ निकाल लिया कि अच्छी फसल उत्पन्न करने मे यज्ञ का कोई स्थान नही।

मुझे इस पवित्र ... था। मैं स्वामी जी का ध्यान प्रसिद्ध हिन्दी मासिक पत्रिका ... के विज्ञान वार्ता मे छपे हुए ... अग्निहोत्र विश्व-विद्यालय ... वैज्ञानिको के परीक्षण ... करने से फसल ... पर आश्चर्यजनक होता ...

मै स्वामी जी को प्रमा... आर्य और एक वर्ष तक रह विविध परीक्षणो ... को समझ सकेगे।

—स्वामी विवेकानन्द सरस्वती गुरुकुल प्रभात आश्रम ... टीकरी मेरठ

देहरादून मे वेदप्रचार की धूम

देहरादून २६ अगस्त। जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के मार्गदर्शन मे न्यू फौरेस्ट कालोनी में वेद प्रचार पक्ष का आयोजन डा० रामसिंह बेदी के संयोजकत्व मे किया गया जिसका समापन रविवार २१ अगस्त को जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० देवदत्त बाली के वेद-प्रवचन से हुआ। इस पक्ष मे मुख्य प्रवचनकर्ता प० देवदत्त ही रहे। मास्टर दलीप सिंह जी श्री नैनसुख वर्मा और श्री कैलाशचन्द्र ने भी प्रवचन किया। जहा श्री हीरालाल वर्मा तथा श्रीमती बेगी के भजन होते रहे। पौरोहित्य कार्य को ... शर्मा ने सम्भाल।

—प्रधान आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला देहरादून

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्व ९ ८४ मा दशिक म प्र नि मभा का मुन पत्र १६ ४३३१
वष २३ अङ्क भाद्रपद शु० सं० २०४५ रविव सिन वर १९८८ वार्षिक २५) एक प्रति ६ पस

पंजाब में निर्दोषों की हत्याओं का क्रम जारी

पंजाब के भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री हिताभिलाषी की निर्मम हत्या

चण्डीगढ़ १९ सितम्बर।

आतकवादियो ने यहा भारतीय जनता पार्टी का पजाब शाखा के अध्यक्ष श्री हिताभिलाषी और उनके कार चालक का दिन दहाड उस समय हत्या कर दी जब वह पार्टी कार्यालय से लाट रह थे।

आतकवादियो ने यहा सक्टर ग्यारह के भी वाल रहदा बाजार के निकट श्री हिताभिलाषी पर ए०के० ४७ वाली राइफलो से बेतहाशा गोलिया चलाई। इस गोली बारी म उनके अगरक्षक सहित दो अन्य व्यक्ति घायल हो गय। वारदात के बाद आतकवादी अपना सफेद मारुति वन मे भाग गय। अगरक्षक व चालक को मृत घोषित कर दिया गया। गुरदासपुर जिले के एक भा ज पा के कायकर्ता जो साथ मे बठ थे वे गम्भीर रूप से घायल हो गय। व हस्पताल म भर्ती है।

गोलियो का आवाज सुनकर दुकानदार और रहने वाल इधर उधर भाग खड हुए बाद म भयभीत होकर अपनी दुकान बद करके चल गय। इस हत्याकाण्ड के विरोध म नगर के अधिकाश बाजार दिन म बन्द हो गय।

चडीगढ म आतकवादियो की गोलियो का शिकार बनने वाल श्री हिताभिलाषा भा ज पा क दूसर वरिष्ठ नेता है। प्रदेश उपाध्यक्ष श्री खुशीराम और श्री हरबसलाल खन्ना की भी आतकवादियो ने पजाब म हत्या की थी।

पजाब भा ज पा अध्यक्ष श्री हिताभिलाषी की आतकवादियो द्वारा हत्या के विरोध मे विभिन्न राजनैतिक तथा सामाजिक सगठनो ने कल पजाब बद का आह्वान किया है। ●

श्री देवीदास आर्य का नागरिक अभिनन्दन

कानपुर की सभी सामाजिक सस्थाओ के द्वारा प्रसिद्ध नारी उद्धारक एव समाज सेवक श्री देवीदास आर्य की प्रशसा

कानपुर १ सितम्बर।

सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री देवीदास आर्य का नागरिक अभिनन्दन कानपुर की स नार्ि क म ा ी ओर स किया गया जिसम अ प न्द प सनातन धम सभा ने भाग नि ा र्ण प के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री ज्ञानी

(शेष पृष्ठ ११ पर)

दिल्ली आर्य महिला सभा की ओर से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को ५५००) रुपय का चक एव प्रचुर मात्रा म वस्त्र प्रदान करते हुए दिखाई दे रही है श्रीमती सरला मेहता श्रीमती प्रकाश आर्या आदि।

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यसमाज में घुसपैठिए

—डा० पुष्पावती आचार्या, वाराणसी

ज्यो-ज्यो आर्यसमाज की कलेवर वृद्धि हो रही है, त्यो-त्यो इसमें गति शैथिल्य आ रहा है जो कि सबकी चिन्ता का विषय बना हुआ है। इसका मुख्य कारण है आर्य समाज के हरे-भरे क्षेत्र मे घुसपैठिएरूपी चालाक शृगाल घुस गए हैं। जो इसकी हरियाली को निर्वाध रूप से चर रहे हैं। ये घुसपैठिए दो प्रकार के हैं (१) राजनीतिक महत्वाकाक्षी व्यक्ति (२) धन लोलुप गृध्र। राजनीतिक व्यक्ति येन केन प्रकारेण आर्य समाज के पदाधिकारी बन जाते हैं और अपने राजनीतिक स्वार्थो की पूर्ति मे आर्य समाज की धन व जनशक्ति का उपयोग करते हैं। अनेक उदाहरणो से विभिन्न दलो से सम्बद्ध राजनीतिक कार्यकर्ता टकराते रहते हैं। इनकी टक्कर मे आर्यसमाज का रचनात्मक कार्यक्रम चूर-चूर हो रहा है। दलगत स्वार्थसिद्धि की चिता मे न तो इन्हें वेद प्रचार, वैदिक शोध, आर्य संस्थाओ की प्रगति व आर्य जनो की कठिनाइयो का ध्यान है, न ही आर्य समाज की उन्नति का विचार। इस प्रकार आर्य समाज का रचनात्मक कार्यक्रम अनदेखा, व अछूता हो रहा है। एक प्रकार से आर्य समाज इन दलीय राजनीतिक महत्वाकांक्षियो की स्वार्थ सिद्धि का अखाड़ा बन कर रह गया। वर्तमान काल मे आर्य समाज मे पल्लवित गुट की विष बेल भी इन राजनीतिक घुसपैठियो का कार्य है। एक कार्य यह भी होता कि ये निष्ठावान आर्यों को चुन चुन कर बाहर निकालते हैं। ये यदि कुछ करना भी चाहते हैं, तो उन्हें करते नही। यदि किसी प्रकार वे कुछ रचनात्मक कार्यक्रम भी करते हैं तो उन्हे लाञ्छित करते हैं और ऐसी परिस्थितिया उत्पन्न कर देते हैं कि या तो उन्हे सत्प्रयासो को विवश स्थगित करना पड़ता है अथवा वे आर्यसमाज को छोड़ ही बैठते हैं। ऐसी दशा मे आर्यसमाज मे गतिरोध व आन्तरिक टूटन न हो तो क्या हो ? यह आन्तरिक टूटन आर्यसमाज मे कैंसर की तरह क्षयकारक रही है।

यही कारण है कि आज आर्यसमाज शक्ति सम्बद्ध होते हुए भी प्रभावहीन बना है, धन व श्रम का अपरिमित व्यय करके भी वेद प्रचार क्षेत्र मे निरुत्साह बना है।

ऐसी ही कुछ स्थिति धन लोलुप घुसपैठिये हैं। वे भी किसी प्रकार आर्यसमाज के उत्तरदायी को हथिया लेते हैं और आर्य समाज की धन-सपत्ति का शोषण करते हैं। आवश्यकता पड़ने पर ये अत्यन्त घृणित हथकण्डे भी अपनाते हैं जिनसे आर्य समाज की बदनामी होती है। निष्ठावान आर्यों के निष्कासन की प्रक्रिया इनके द्वारा भी जारी है। इन घुसपैठियो की काली करतूतो का कुफल आर्य समाज को भोगना पड़ रहा है। आर्यसमाज का शकट ऋषि दयानन्द के उद्देश्यो से दूर दूर चला जा रहा है। और ये घुसपैठिये चैन की बंसी बजा रहे हैं, आर्य समाज की बर्बादी के दृश्य को देखकर सन्तोष की सास ले रहे हैं।

आर्यसमाज की भावी प्रगति के लिए इन घुसपैठियो से आर्य समाज की शुद्धि करना परमावश्यक है। यह हो कैसे ? इसके लिए आर्य समाज के कर्णधार दिशा निर्देशन करेगे।

'खालिस्तान' समर्थकों का राष्ट्रपति के विरुद्ध प्रदर्शन

एम्सटर्डम, १३ सितम्बर 'खालिस्तान' समर्थको तथा कट्टरपंथी मुसलमानो ने यहा शाही महल के निकट डेम स्क्वेयर पर प्रदर्शन किया। राष्ट्रपति आर वेंकटरामन शाही महल मे ठहरे हुये हैं। इन मुट्ठीभर प्रदर्शनकारियो ने 'हमे खालिस्तान चाहिये', तथा 'हमे आजाद कश्मीर चाहिये' के नारे लगाये। पुलिस ने कहा कि 'खालिस्तानी' प्रदर्शन का आयोजन इ टरनेशनल सिख यूथ फैडरेशन की स्थानीय शाखा ने किया।

सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रधान संचालक श्री बालदिवाकर हंस भूकम्प तथा बाढ़पीड़ित क्षेत्रों के दौरे पर

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती द्वारा गत माह बिहार के भूकम्प तथा बाढ पीड़ित क्षेत्रो का दौरा किया गया था, उन्होने पटना मे एक सहायता समिति का गठन किया था। समिति की ओर से विभिन्न क्षेत्रो मे जो सेवा सहायता कार्य चल रहा है, उनका जायजा लेने के लिए कल १५ सितम्बर १९८८ को सार्वदेशिक सभा की ओर से श्री बालदिवाकर हस को वस्त्रो तथा धन के साथ पटना भेजा गया है। समिति सुचारू रूप से कार्य कर रही है। इस पुनीत कार्य मे सभी आर्य समाजो व धनी महानुभावो का सहयोग अपेक्षित है।

भूकम्प एवं बाढ़ पीड़ित सहायता समिति पटना की रिपोर्ट

सहायता समिति के कार्यकर्ता श्री अजयकुमार आचार्य दयानन्द विद्यालय मीठापुर, पटना ने अपने १४-९-८८ के पत्र के द्वारा सूचित किया है कि गत ८-९-८८ को सहायता समिति के प्रधान श्री प्रेमनाथ ग्रोवर के साथ श्री रामाज्ञा बैरागी, श्री योगेन्द्र नारायण एव श्री रामानन्द जी मुगेर-जमालपुर के भूकम्प पीड़ितो की सहायतार्थ वहा गए थे। १६-९-८८ को दरभगा एव मधुबनी के लिए सहायता दल सहायता सामग्री का वितरण करने जायेगा। आर्य समाज मुजफ्फरपुर की ओर से इसी क्षेत्र मे सहायता सामग्री का वितरण किया जायेगा। १९ जून को समिति की बैठक होगी, उसमे अब तक सम्पादित कार्यों का आकलन किया जायगा। हम आपको पुन विश्वास दिलाते हैं कि आपके आशीर्वाद से आपके निर्देशानुसार बिहार के भूकम्प एव बाढ पीड़ित क्षेत्रो मे सार्वदेशिक सभा द्वारा गठित सहायता समिति सुचारु रूप से कार्य कर रही है और आर्य समाज का अनुकूल प्रभाव पड रहा है।

सच्चिदानन्द शास्त्री, सभा मन्त्री

अकाली उग्रवादियों को स्वर्ण मन्दिर परिसर में आने का निमन्त्रण दे रहे है : भाटिया

अमृतसर, १३ सितम्बर। इ का सासद श्री रघुनन्दन लाल भाटिया ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के महासचिव श्री मनजीत सिंह कलकत्ता के इस वक्तव्य पर आश्चर्य प्रकट किया है कि सरकार ने स्वर्ण मन्दिर परिसर का प्रबन्ध शिरोमणि कमेटी को नही सौपा है।

उन्होने कहा कि ऐसे बयान देकर मनजीतसिंह कलकत्ता उग्रवादियो को परिसर मे आने का निमन्त्रण दे रहे ताकि उनके आगमन पर फिर पुराने ढग से सरकार को ही बदनाम किया जा सके लेकिन केन्द्र है सरकार कभी ऐसा नही होने देगी। उन्होने कहा कि अकालियो की इस दोहरी नीति ने धर्म और राजनीति का इकट्ठा नारा लगाकर अपनी कुर्सियो की खातिर एक धार्मिक सस्था को राजनीति का अखाड़ा बना दियाहै जिसमे अकालीदल सिंह साहिबान का दगल करवा रहे हैं। श्री कलकत्ता के उस बयान से यह साबित होता है कि वह आत कवादियो के डर से सहम कर यह कह रहे हैं कि परिसर अभी कमेटी के कब्जे मे नही है। यदि अकाली कमेटी मे अपना अस्तित्व कायम रखना चाहते है तो उनका फर्ज है वह अपनी जान देकर भी दरबार साहिब की पवित्र मर्यादा की रक्षा करें। यदि अकाली सच्चे सिख हैं तो उन्ह गुरु अर्जुन देव की तरह कौम की रक्षा और धार्मिक स्थानो की पवित्रता की सुरक्षा के लिये शहीदी देनी होगी। कुर्सी के लालच और समाचारपत्रो मे सुर्खिया छपवाने से मर्यादा कायम नहीं होती।

उन्होंने कहा कि ब्लैक थडर आपरेशन के बाद सरकार ने पवित्र हरिमन्दिर साहिब को उग्रवादियो से मुक्त करवाकर परिसर शिरोमणि कमेटी के हवाले कर दिया है। अब कमेटी की जिम्मेदारी है कि वह राजनीति का सावण देखती है या पवित्र मर्यादा बहाल करने को अमली रूप देती है।

वैज्ञानिक तथ्यों के बारे में वेद महत्त्वपूर्ण प्रमाण

जवाहरलाल कौल

भरतपुर, १२ सितम्बर। राजस्थान के भौतिक शास्त्री डा० मनोहरलाल गुप्त ने दावा किया है कि वेदो मे चन्द्रमा के जन्म का जो विशद वर्णन है उसकी जानकारी आजतक विश्व के वैज्ञानिकों के पास भी नहीं है। मैक्सिको की बरमूदा खाडी से चन्द्रमा पृथ्वी से टूट कर अन्तरिक्ष मे चला गया था। जिसका प्रमाण आज भी इस खाडी मे एक विशाल लौह स्तम्भ के रूप मे मौजूद है।

वेद विज्ञान शोध सस्थान की ओर से भरतपुर मे १० और ११ सितम्बर को हुए एक सेमिनार मे कई वैज्ञानिकों ने दावा किया कि वेदो में न सिर्फ ऐसे वैज्ञानिक तथ्य भरे पडे हैं जिनकी खोज भौतिक वैज्ञानिको ने हाल ही के सालो मे की है बल्कि ऐसे भी वैज्ञानिक तथ्य हैं जो अभी भी आधुनिक विज्ञान की समझ से परे है।

डाक्टर मनोहरलाल गुप्त के अनुसार वेदो में मानव इतिहास नहीं है। क्योकि इनका मुख्य विषय ब्रह्माण्ड की सृष्टि की सैद्धान्तिक व्याख्या करना ही है। वैदिक ऋषियो ने अपनी अलौकिक दृष्टि से सुदूर अतीत की घटनाओ को देखा इसलिए वेदो में विज्ञान के सभी मौलिक सिद्धान्तो का समावेश है। इसके अनुसार अब तक के अनेक वैदिक तथ्य सही साबित हुए हैं। और इसीलिए आधुनिक वैज्ञानिको का उन दावो को भी गम्भीरता से लेना चाहिए जो आज तक उपलब्ध वैज्ञानिक जानकारियो से मेल नहीं खाते। उनका विश्वास है कि अन्त मे यह वैदिक दावे भी आधुनिक वैज्ञानिक कसौटियो पर खरे उतरेंगे।

डाक्टर गुप्त का कहना है कि वैदिक मन्त्रो मे चन्द्रमा के जन्म का जो रोमाञ्चकारी वर्णन है उससे कई तरह की वैज्ञानिक गुत्थिया सुलझ जाती है जिनको आज तक भौतिक वैज्ञानिक और खगोलशास्त्री तर्कसगत लगभग नहीं कर पाए है। जब पृथ्वी अभी तप्त था तो सूर्य के आकर्षण से उसका एक बडा हिस्सा टूट कर अलग हो गया। इतने बडे अंश के अचानक निकल जाने से दो महत्वपूर्ण बाते हुई। झटके की वजह से पृथ्वी अपनी धुरी पर झुक गई। और जिस स्थान से चन्द्रमा पृथ्वी से अलग हुआ वहां एक बडी खाई बन गई। जिसकी गहराई पृथ्वी के मध्य स्थल तक थी जहा पिघला हुआ धातु का भण्डार होता है। यह धातु एक विशाल स्तम्भ की तरह ऊपर उठी। यही वजह है कि मैक्सिको के पास बरमूदा खाडी मे आज भी विमान और समुद्री जहाज क्षतिग्रस्त होते रहते हैं। लोहे के भण्डार के चुम्बकीय बल से उनका सन्तुलन बिगड जाता है। डाक्टर गुप्त के अनुसार आज तक वैज्ञानिक यह नहीं बता पाए थे कि पृथ्वी अपनी धुरी पर साढे तेईस अंश क्या झुकी हुई है और बरमूदा खाडी के विचित्र व्यवहार का रहस्य क्या है।

मनोहरलाल गुप्त ने वैदिक मन्त्रो की व्याख्या करके यह भी दिखाया है कि वेदो मे सौर मण्डल के सभी ग्रहो और उनके चन्द्रमाओ की कहानी ही वैदिक ऋषियो ने नहीं कही है, बल्कि हमारी आकाश गगा और अन्य आकाश गगाओ का भी सटीक वर्णन है। इस सिलसिले मे उनका दावा है कि वेदो मे कुछ ऐसे भी तथ्य दिए हैं जो खगोल शास्त्र की जानकारी मे नहीं हैं। लेकिन यदि अनुसन्धान किया जाए तो वे सत्य साबित हो जाएगे। उनके अनुसार चौबीस ऐसे तत्त्व हैं जिन्हे यदि आधुनिक वैज्ञानिक मार्गदर्शक मान लें तो अनेक प्रचलित वाद कपोल-कल्पित साबित हो जाएगे और सृष्टि की सही कहानी मनुष्य के सामने आ जाएगी।

जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति और व्यवसाय से इंजीनियर डाक्टर सुरेशचन्द्र गोयल ने अपने पर्चे मे दावा किया कि वैदिक ऋषियों ने हजारो साल पहले आधुनिक भौतिकी के वे सिद्धान्त खोज निकाले थे जिसे आज विज्ञान की रीढ माना जाता है। इस सिलसिले मे आईसटीन का प्रसिद्ध सूत्र महत्वपूर्ण है जिससे ऊर्जा और पुंज आपस मे परिवर्तनीय हैं। आदित्य के आठ पुत्रो के माध्यम से इस सिद्धान्त को प्रतिपादित किया गया है। आदित्य अविनाशी ऊर्जा का प्रतीक है। आठवा पुत्र आदित्य से पैदा हुआ था लेकिन आदित्य स्वय भी अपने पुत्र का ही पुत्र था। यानी ऊर्जा पुंज से पैदा होती है और पुंज ऊर्जा से। डाक्टर गोयल का कहना है कि वैदिक ऋषि अनन्त अथवा सनातन के उस सिद्धान्त को पहचान चुके थे जिसकी ओर अब कुछ भौतिक शास्त्री बढ रहे हैं। गणित शास्त्री कैंटर की इनफीनिटी की व्याख्या और क्वाटम सिद्धान्त ऐसे ही प्रयास है। वैदिक ऋषियो की इस धारणा को ईशावास्य उपनिषदो के इस सूत्र से स्पष्ट किया गया है 'पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेव वशिष्यते (पूर्ण को पूर्ण से निकालने पर भी पूर्ण ही बचता है)।

डाक्टर गोयल ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि हिलिओ सेंटर सिद्धान्त और गुरुत्वाकर्षण का वेदो मे साफ उल्लेख है। फिर भी अब तक हम उन्हे कापरनिकस और न्यूटन के नाम से जोडते हैं। इस सिलसिले मे उन्होने भौतिकी के नवीनतम सिद्धान्त सुपरस्ट्रिंग सिद्धातकी चर्चा की जिसमे धागे की लघु कम्पनो से ब्रह्माड की प्रक्रिया को समझने की कोशिश की गई है। वैदिक ऋषि जब मन्त्रो के उच्चारण मे शब्द पर विशेष ध्यान देते रहे हैं तो वे ध्वनि के स्वाभाविक कम्पन की ओर ही इशारा करते थे। यह साबित हो गया है कि परमाणु के भीतर भी लगातार एक नाद होता रहता है। और इसी नाद की भूमिका परमाणु के विलय और विखण्डन में महत्वपूर्ण है। वैदिक ऋषि भी मानते थे कि सृष्टि का मूल कारण शब्द या ध्वनि है।

वेदो म आधुनिक विज्ञान की खोज मे वैज्ञानिक मापदण्डो के इस्तेमाल का यह शायद पहला सार्वजनिक प्रयास है। जयपुर के गणित प्राध्यापक और समाज सेवी डाक्टर पेडेकर ने जनसत्ता को बताया कि वेदो और प्राचीन भारतीय सस्कृति का अध्ययन देश के विभिन्न क्षेत्रो मे बहुत से लोग कर रहे है। लेकिन दुर्भाग्य से सभी शोधकर्ताओ मे कोई तालमेल नहीं है। अगर यह स्थापित किया गया तो कोई वजह नहीं कि हम निर्विवाद रूप से साबित कर सकें कि वेद वास्तव मे आर्ष वचन हैं और सभी भौतिक नियमो को समझने की एकमात्र खान हैं। (जनसत्ता १३-९-८८)

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन के निर्णय के अनुसार सभा के सभी प्रतिनिधियों को सूचित किया जाता है कि जिन प्रतिनिधियो ने सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र का आजीवन सदस्यता शुल्क अभी तक नहीं भिजवाया है वह २५०) रुपये दो सौ पचास रुपये भिजवा कर अपना नाम आजीवन सदस्यता मे पंजीकृत करायें। —सभा मन्त्री

जिन्ना की अपनी जिन्दगी की सबसे बड़ी गलती ?

(गताक से आगे)

कई-कई बार तो इनके लिए एक-एक सप्ताह या दस-दस दिन का इन्तजार करना पडता। कर्नल इलाहीबख्श तार भेजते और टेलीफोन करते परन्तु कोई इनकी परवाह न करता इसलिए आपको सख्त दिक्कत होती। पर आप क्या कर सकते थे। अनेक बार आपने सोचा कि आप खुद दवाईया खरीद लाय परन्तु कायदेआजम की हालत ऐसी न थी कि इन्हे अकेला छोडा जाए। इससे मुझ बडी सख्त परेशानी हो रही थी इसलिए कि मै डरता था कि अगर मि० जिन्ना को कुछ हो गया तो पाकिस्तान के लोगो को क्या बताऊ गा क्या पाकिस्तान के लोग यह मान लगे कि मैने पूरी ईमानदारी से अपनी ड्यूटी निभाई और इन्हे बचाने के लिए जो कुछ मुमकिन था किया।

इस पर कर्नल महोदय ने बताया कि इन हालातो मे मैंने एक फाईल बनाई इसमे जितनी तार भेजता इनकी नकल और रसीद रखता। यह सब इसलिए किया गया क्योकि बाद मे अगर कोई मुझे दोषी करार दे तो मैं अपनी सफाई तो पेश कर सकू। मैंने पाकिस्तान की सरकार को यह भी लिखा कि इस समय कायदे आजम की जो हालत है इसमे मुझ एक सहायक की जरूरत है। आखिरकार डाक्टर रियाज अली शाह को मेरी मदद के लिए भेजा गया। हक यह है कि मुझ किसी डाक्टर की इतनी जरूरत न थी लेकिन मैं अपने साथ एक गवाह रखना चाहता था कि अगर बाद मे मुझ पर लापरवाही का कोई दोष लगे तो मैं अपनी सफाई मे किसी को तो पेश कर सकू।

अत इस सावधानी की आवश्यकता न पडी क्योकि मि० जिन्ना के दम तोडने के बाद किसी ने मुझ पूछा ही नही कि किस हालत मे इनकी मौत हुई और न ही किसी ने यह जानने की कोशिश की कि जयारत जैसे अनुपयुक्त स्थान पर कायदेआजम पर क्या बीती और न ही किसी ने यह जानने की आवश्यकता समझी कि ऐसा स्थान कायदे आजम के लिए क्यो चुना।

कर्नल बख्श ने यह भी बताया कि इन दिनो मे जब नवाबजादा लियाकत अली खा मि० जिन्ना को मिलने आए तो क्या हुआ। आपने बताया कि मैंने नवाब साहिब का स्वागत किया और उन्हे जिन्ना के कमरे मे ले गया। लियाकत अली जिस दरवाजे से घुसे उधर कायदे आजम का सर था इस पर मैं आपके पाऊ के पास आकर खडा हो गया। लियाकत अली ने जिन्ना को सलाम किया लेकिन जिन्ना ने कोई उत्तर न दिया इस पर लियाकत अली साहब ने मुझसे पूछा कि कायदे आजम का क्या हाल है इस पर मिस्टर जिन्ना आग बबूला होकर चिल्ला उठे तुम समझने लग गए हो कि तुम बहुत बड़े आदमी हो। दरअसल तुम कुछ भी नही मैंने तुम्हे पाकिस्तान का वजीरे आजम बनाया है तुम समझते हो तुमने पाकिस्तान बनाया है तुमने नही मैने ही इसे बनाया है। लेकिन अब मुझ पूरा विश्वास हो गया है कि मैंने अपनी जिन्दगी की सबसे बडी गलती की।

आज यदि मुझे मौका मिले तो मैं दिल्ली जाकर जवाहरलाल से कहूँ कि भूत की भूलो तथा गलतियो को भूल जाए और फिर से दोस्त बन जाए। इसके बाद कायदेआजम ने अपना हाथ उठाया ऐसा लगा कि आप जैसे लियाकत अली से चले जाने का इशारा कर रहे थे इस समय कायदेआजम काप रहे थे इनका रग बिस्तर की चादर की तरफ सफेद हो गया था। इस पर मैं परेशान हो गया मैंने लियाकतअली के कन्धे पर हाथ रखकर इशारा किया कि वह कमरे से बाहर चले जाए लियाकतअली बाहर कमरे मे चले गए।

इसके बाद वह बाहर बरामदे मे आ गए और वहा कहकहा कर हसने लगे और जोरदार आवाज मे कहने लगे कि इस बूढ़े ने अपनी हिमाकत को महसूस किया है इस पर मैं फिर अन्दर भागता हुआ आया। मि० जिन्ना की आख बन्द थी वह एक दम से थके हुए लगते थे इनकी बहन फातिमा इनके पलग के समीप खडी थी इस पर आप बोल उठी कि लियाकत यह देखने आया था कि इसके भाई का क्या हाल है और वह कितने दिन और जीवित रह सकता है। कर्नल बख्श ने कराची के हवाई अड्डे पर जिन्ना की कहानी भी प्रकाशित की आपने बताया जो एम्बूलैन्स कार भेजी गई वह पुराना कबाडा था रास्ते मे वह खराब हो गई।

हम सडक पर एक घण्टा तक इन्तजार करना पडा। इस समय दोपहर के चार बजे थे और गर्मी इतनी ज्यादा थी कि हमे जिन्ना के स्ट्रेचर को कार से बाहर निकाल सडक पर रख देना पडा ताकि इन्हे कुछ हवा तो मिले। आपने इनके सर पर चादर कर दी ताकि सूय इनके चेहरे पर न पड़ आखिरकार जो दूसरी ऐम्बूलैन्स आई वह भी पहले की तरह पुरानी थी लेकिन हम किसी तरह घर तो पहुच यह है सलूक पाकिस्तान के बानी मि० जिन्ना से उसकी जिन्दगी के अन्तिम दिनो मे इन लोगो का जो इसकी वफादारी का दम भरते थे। इससे आम पाकिस्तानी के चरित्र का अन्दाजा किया जा सकता है।

—के० नरेन्द्र प्रताप

पंजाब केशरी श्री लाला लाजपतराय

मधुर शास्त्री

क्या हुआ मर मिट गये अपने वतन के वास्ते।
बुलबुले कुरबान होती है चमन के वास्ते॥

महर्षि दयानन्द के परम भक्त, आर्य समाज के कर्मठ एव साहसी नेता लाला लाजपतराय का जन्म पजाब के लुधियाना जनपद के अन्तर्गत हुआ था। इनके पिता का नाम श्री राधा था जो इस्लाम धर्म से प्रभावित होकर एक दिन अपने श्रेष्ठ हिन्दू धर्म को छोड कर मुस्लिम धर्म स्वीकार करने के लिए सपत्नीक अपने बच्चे लेकर घर से निकल पडे पत्नी के बहुत समझाने पर भी वे अपने विचार पर दृढ रहे, पर रास्ते मे यही छोटा-सा बच्चा काफी तेज आवाज मे रोने तथा बिलखने लगा। बच्चे की पीडा से परेशान होकर इन्हे घर वापस लौट आना पडा और उस दिन वह समय टल गया और कुछ समय के पश्चात यही बालक अपनी प्रखर बुद्धि से जल्दी ही शिक्षा को ग्रहण करते हुए २० वर्ष की अवस्था मे वकालत पास कर आर्य समाज का पक्का सेवक बन गया और दृढता से आर्य समाज के काय को आगे बढाते हुए क्रान्तिकारी कदम अ ग्रेजी शासन काल मे जो उठाया उससे अ ग्रेजी सरकार बौखला उठी और उसका सिहासन हिल उठा और अ ग्रेज सरकार लाला जी से चिन्तित होने लगी। सर्वप्रथम लाला जी ने ही अ ग्रेज सरकार के खिलाफ यह आवाज उठाई कि स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। अ ग्रेजो से भीख मागने की वस्तु नहीं है। साथ ही राष्ट्र को आजाद कराने के लिए दृढ सकल्प किया। और देश-विदेश मे घूमकर समाजवादी ब्रिटिश सरकार का जोरदार भावो मे विरोध करना शुरू कर दिया। इन्ही दिनो लाला जी के विचारो ने अपने दो अन्य महारथी क्रान्तिकारी साथी को मिलाया श्री बालगगाधर तिलक और विपिन चन्द्रपाल अब इन तीनो ने मिलकर भारतीय जनता के सामने अपने प्रभाव स्वदेश प्रेमी भारत को स्वतन्त्र कराने मे प्रभावशाली भाषण देकर जनता को अ ग्रेजी सरकार के खिलाफ क्रान्ति के लिए तैयार कर दिया। भारतीय जनता के प्रति अपनी गुलामी की बेडियो को तोडने का साहस अपने नेता मे पाकर रग २ मे उमड पडा और लाल, बाल पाल के जोरदार नारे लगाने शुरू कर दिये। और इसी समय पजाब मे किसान आन्दोलन शुरू हुआ और लाला जी इस आन्दोलन के प्रमुख नेता थे। अ ग्रज सरकार से यह सहन न हो सका और लाला जी के कुछ अन्य साथियो को ब्रिटिश सरकार ने गिरफ्तार करके जेल मे भेज दिया। अपने नेता को जेल की दीवारो के अन्दर बन्द हो जाने पर भारतीय जनता का खून खोल उठा। और किसान आन्दोलन और जोरो से शुरू हो गया। अ ग्रज सरकार ने लाला जी को गिरफ्तार कर बडी भूल की सोचकर लाला जी को जेल से मुक्त कर दिया। तत्पश्चात् लाला जी ने देश का दौरा किया और स्थान २ पर ओजस्वी भाषण देकर जनता को अ ग्रेजो के खिलाफ क्रान्ति के लिये तैयार किया।

लाला जी ने अपने जीवन मे महर्षि दयानन्द के नाम को स्थाई रखने के लिए मे प० गुरुदत्त विद्यार्थी और महात्मा हसराज के साथ मिलकर दयानन्द वैदिक स्कूल की लाहौर में स्थापना की जो आगे चल कर डी ए वी कालेज के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके बाद इस पजाब केसरी अखिल भारतीय अछूतोद्धार कमेटी की स्थापना कर लगभग १ करोड लोगों को आर्य धर्म मे शामिल किया और मुसलमान बनने से भी बचाया। साथ ही अन्य मुसलमानो को आर्य जाति मे दीक्षित किया। तथा अनाथ उद्धार विधवा विवाह आदि महान कार्य किए जिनके लिए राष्ट्र सदैव २ के लिए ऋणी रहेगा।

इसके पश्चात् ही लाला जी ने देश मे क्रान्ति पैदा करने के लिए दि पीपुल' 'यग इण्डिया वन्दे मातरम् आदि पत्रो को सचालित कर राष्ट्र को जगाने का महान काय किया। इन्ही दिनों लाला जी एव मदन-मोहन मालवीय एव अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अछूतोद्धार शुद्धि सगठन कार्य देश में फैला कर हिन्दू जाति का महान कल्याण किया।

लाला जी ने देश को स्वतन्त्र कराने के लिए प० मोतीलाल नेहरू एव देशबन्धु चितरञ्जनदास के साथ मिल कर स्वराज्य पार्टी की स्थापना की, प० नेहरू से मत भेद हो जाने के कारण एव देश को आजाद कराने के लिए पुन स्वतन्त्र राज्य पार्टी की स्थापना कर देश की आजादी के लिए अपने कार्य क्षेत्र एव समाज शक्ति को बढाकर अपना बुद्धि कुशलता का परिचय दिया।

सन १९२७ में वायसराय लार्ड ने भारतीय विधान कमीशन की नियुक्ति की घोषणा की जिसका कार्य यह था कि भारतीय राजनैतिक शक्ति की ब्रिटिश सरकार द्वारा जाच की जाए। और इस सभा का साईमन कमीशन बनाया गया। यह कमीशन साईमन कमीशन के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जो सन् १९२८ में भारत आया और हमारे भारत मे काले झण्डो से इसका विरोध किया गया। जगह २ इनके विरोध मे जलूस निकालने गए। और साईमन कमीशन वापिस जाओ' के नारो से भारत का स्थान २ गूज गया। यही कमीशन ३० अक्तूबर सन १९२८ मे आर्य समाज की राजधानी लाहौर मे आने वाला था तो जनता अपने लोकप्रिय नेता एव आर्य समाजी लाला जी को इस कमीशन के विरोध मे जलूस निकालने तथा काले झण्डो आदि से नेतृत्व करने के लिए चुना। और इन्हीं के नेतृत्व में साईमन कमीशन का काले झण्डे से स्वागत करते हुए एक विशाल जलूस निकाला जिसमे वापस जाओ 'गो बैक' के नारे लगाते हुए आगे बढ रहे थे। इतने मे ही पुलिस कर्मचारियो ने बढते हुए लाला जी तथा अन्य जनता के ऊपर लाठियो का प्रहार करना प्रारम्भ कर दिया और उनके ऊपर सैकडो लाठियां बरस गयी। यह व्यवहार बडी निर्दयता से किया गया। अत इस लाठी चार्ज मे लाला जी को बडी गहरी चोट आयी। और घायल होकर लाला जी वही गिर पडे। इतने में सरदार भगतसिंह और सुखदेव यह दोनो युवक जो वहीं उपस्थित थे, लाला जी को अपने हाथो पर उठाकर अस्पताल में भर्ती कराया। लाहौर निवासी जनता अपने प्यारे देश भक्त नेता को घायल जान कर क्रोधित होती हुई अस्पताल मे देखने के लिए चारो तरफ से एक हो गयी। पर डाक्टरो ने लाला जी से मिलने को मना कर दिया तब लाला जी होस्पिटल से बाहर निकल कर जनता को दर्शन देते हुए जो शब्द कहे वह भारतीय इतिहास के पन्नो पर स्वर्णाक्षरो मे लिखने के योग्य है। लाला जी ने कहा आज मेरे ऊपर किए गये लाठी प्रहार से लहू की एक २ बूद ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील बनेगी।

उस समय जनता में इतना क्रोध था कि यदि लाला जी जरा भी इशारा कर देते तो लाहौर की धरती लहू लुहान हो जाती। पर लाला जी ने ऐसा कदम उठाना उचित न समझा। और १७ दिन के पश्चात् लाला जी ने अपना शरीर त्याग दिया। इस प्रकार लाला जी हमारे देश को आजाद कराने के लिए व आर्य समाज के नियमो का पालन करते हुए देश मे हिन्दू जाति के लिए महान कार्य करते हुए अपने प्राणो की आहुति देकर सदा-सदा के लिए विदा हो गए।

महाभारत के आधार पर आर्य नारी का यशोगीत

—आचार्य सत्यव्रत शास्त्री, रामपुर

महाभारत आदि पर्व अध्याय ७४

"भार्यां पति सम्प्रविश्य स यस्माज्जायते पुन ।
जायायास्तद्धि जायात्वं पौराणा कवयो विदु ॥३७॥

प्राचीन कवियो का कथन है कि क्योकि पति स्वय वीर्य द्वारा गर्भ रूप मे स्व पत्नी मे प्रविष्ट होकर पुन पुत्र-पुत्री के रूप मे जन्म लेता है अत पति के ही पुनर्जन्म लेने के कारण पत्नी को "जाया" कहा जाता है।

सा भार्या या गृहे दक्षा सा भार्या या प्रजावती ।
सा भार्या या पतिप्राणा सा भार्या या पतिव्रता ॥४१॥

जो गृह कार्यों मे प्रवीण हो, कुशल हो, जो सन्तति उत्पन्न करने मे समर्थ हो, अर्थात वन्ध्या न हो—जो स्व पति को प्राण-सम प्रिया हो, जो सदा पति के व्रत की अनुगामिनी हो वही भार्या है।

भार्यात्व के लिए ये उपरि निर्दिष्ट चारो बातें आवश्यक हैं, किन्तु प्रसगत पतिव्रता का भावार्थ क्या है इसे समझना आवश्यक है—पति के निर्धारित कर्तव्य रूप व्रत का सदा पालन करने वाली ही पति व्रता कहाती है। 'अथर्ववेद का० १४ सू १ म ४२

"पत्यु रनुव्रता भूत्वा स न ह्यस्वामृताय कम्।

पति के अनुकूल होकर उसके व्रत का पालन करना यह पतिव्रता शब्द का भाव है परन्तु जिस पत्नी के पति का कोई अपना निर्धारित व्रत न हो उसकी पत्नी अनु व्रता या पति-व्रता कैसे हो सकती है अत स्त्री के पति-व्रता होने से पूर्व प्रत्येक पतिदेव को विवाह से पूर्व कोई व्रत ग्रहण करना चाहिए व्रत की दीक्षा लेकर व्रती बनना चाहिए। उसी अवस्था मे अर्थात् पति के स्वीकृत व्रत का ही पालन करने वाली पत्नी पति-व्रता या अनु-व्रता बन सकती है। आज की अन्ध परम्परा मे पति स्वय कोई व्रत नही ग्रहण करना चाहते व्रती नही बनना चाहते तब स्त्री पतिव्रता कैसे बन सकती है।

अर्धं भार्या मनुष्यस्य भार्या श्रेष्ठतम सखा ।
भार्या मूल त्रिवर्गस्य भार्या मूल तरिष्यत ॥४२॥

भार्या मनुष्य का आधा अग है इसी से इसे अर्धाङ्गिनी कहा है। भार्या पुरुष का सबसे श्रेष्ठ हितकारी नि स्वार्थ सखा है साथी है, भार्या ही धर्म, अर्थ, काम इस त्रि वर्ग की प्राप्ति का प्रधान कारण है, और भार्या ही ससार रूपी सागर से पार कराने का साधन है। "भर्तु भोग्या भार्या

"भार्या वन्त क्रियावन्त स भार्या गृहमेधिन ।
भार्यावन्त प्रमोदन्ते भार्यावन्त श्रियान्विता ॥४३॥

भार्या वाले पुरुष ही समस्त क्रियाओ के करने वाले हैं, सभार्या पुरुष ही घर मे निवास करने के अधिकारी हैं वे ही पुरुष गृहमेधी कहाते हैं।

"गृहिणी गृह मुच्यते" इस सम्बन्ध मे पूर्व प्रसग मे अधिक स्पष्ट किया जा चुका है। जिनकी भार्या हैं वे ही पुरुष अपना समय आमोद प्रमोद मे प्रसन्नता से व्यतीत करते हैं भार्या वाले ही व्यक्ति श्रीमान कहाते हैं उन्हीं के पास श्री, शोभा, कान्ति, लक्ष्मी का सदा वास रहता है स्त्री को साक्षात लक्ष्मी कहा है।

"सखाय प्रविविक्तेषु भवन्त्येता प्रियवदा ।
पितरो धर्म कार्येषु भवन्त्यार्तस्य मातर ॥४४॥

प्रिय-मधुर भाषिणी नारियां ही एकान्त मे सत्-परामर्श देने वाली सच्ची सखी हैं मित्र के समान हैं। भार्या ही धर्म कार्यों मे हितैषी पिता के समान मार्ग दर्शिका है, दु ख पीडा कष्ट के समय भार्या ही मातृ सम नि स्वार्थ स्नेह करती है। अपना सर्वस्व अर्पण करके भी पति का जीवन चाहती है।

"कान्तारेष्वपि विश्रामो जनस्याऽध्वनिकस्य च ।
य सदार स विश्वास्य तस्माद् दारा परागति ॥४५॥

कण्टकाकीर्ण जटिल मार्गो मे भी पथिक के समान पति के लिए भार्या ही विश्राम देने वाली है वही उसको सान्त्वना शान्ति, धैर्य प्रदान करती है। जिसकी भार्या है उसी का सर्वसाधारण जन विश्वास करते हैं अत भार्या ही मनुष्य की परम गति है जीवनाधार है।

ससरन्तमपि प्रेत विषमेष्वेकपातिनम् ।
भार्यैवाऽन्वेति भर्तार सतत या पतिव्रता ॥४६॥

ससार से पत्नी जीवन यात्रा को समाप्त करने पर अर्थात् देहावसान हो जाने पर ऐसे विषम एव दु खद समय मे भी केवल पति परायणा साध्वी भार्या ही साथ देती है वही उसका उन कष्टो से आपत्तियो से उद्धार करती है।

प्रथम सस्थिता भार्या पति प्रेत्य प्रतीक्षते ।
पूर्व मृत च भर्तार पश्चात् साध्व्यनु गच्छति ॥४७॥

पत्नी के प्रथम परलोक सिधारने पर अर्थात् कथचित पति से पूर्व पत्नी का देहावसान हो जाने पर वह पति के निमित्त मार्ग खोजती रहती है कि मेरे पतिदेव कब इस मार्ग का अनुसरण करें। और यदि दैव वशात् पतिदेव स्व-पत्नी मे पूर्व अपना शरीर छोड दें तब साध्वी पतिव्रता सती भार्या पति के मार्ग का ही अनुगमन करती है उसके साथ अपना भी शरीर छोड देती है।

सु सरब्धोऽपि रामाणा न कुर्यादप्रिय नर ।
रति प्रीतिं च धर्मं च तास्वायत्तमवेक्ष्यहि ॥५२॥

अत्यन्त क्रुद्ध होने पर भी पति को पत्नी का अप्रिय आचरण-कार्य-व्यवहार कदापि नहीं करना चाहिए। क्योकि रति-प्रेम अनुराग और धर्म आदि कार्य मे सब भार्या के हो अधीन हैं अत यथाशक्ति स्त्री को सदा प्रसन्न रखना चाहिए।

आत्मनो जन्मन क्षेत्र पुण्य रामा सनातनम् ।
ऋषीणामपि का शक्ति स्रष्टु रामामृते प्रजा ॥५३॥

अत नारियां ही आत्मा के जन्म का सनातन परम प्राचीन पवित्र क्षेत्र-भूमि हैं उन्हीं के द्वारा प्रजा उत्पन्न होती है। ऋषि महर्षियो की भी ऐसी शक्ति नहीं जो कि बिना स्त्री के प्रजा उत्पन्न कर सकें ? अत गृहस्थ धर्म मे स्त्री का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है।

"प्रतिपद्य यदा सूनु र्धरणी रेणु गुण्ठित. ।
पितुराश्लिष्यतेऽङ्गानि किम स्त्यभ्यधिक तत. ॥५४॥

जिस समय पुत्र या पुत्री धरती की धूल मे लेटकर धूलि धूसरित होकर अपने पिता माता के गले मे आकर चिपटता है उनका आलिंगन करता है उस समय पिता माता को उससे बढकर और क्या सुख प्राप्त हो सकता है। अत. इन सब उपर्युक्त उद्धरणो से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि आर्य नारी का प्राचीन परम्परा मे कितना विस्तृत यशोगान किया गया है।

"नास्ति भार्या समो बन्धु. नास्ति भार्या समागति ।
नास्ति भार्या समोलोके सहायो धर्म सग्रहे। आदि १४१-१६

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य नारी का आदर्श

(पृष्ठ ७ का शेष)

स्त्री के समान संसार में कोई दूसरा बन्धु नहीं, संसार में इधर उधर भटकने वाले मनुष्य के लिए स्त्री के समान और कोई गति नहीं को आधार नहीं जो सान्त्वना दे सके, और न धर्म-संग्रह में अर्थात् धार्मिक पुण्य कार्यों मे स्त्री के सिवाय कोई संसार मे दूसरा सहायक है।

भार्या मूल गृहस्थस्य भार्या मूल सुखस्य च ।
भार्या धर्म फलावाप्तौ भार्या सन्तान वर्द्धये ॥
अनुकूला न वाग् दुष्टा दक्षा साध्वी पतिव्रता ।
एभिरेव गुणैर्युक्ता श्री रेव स्त्री न संशय ॥
"पृथिव्या यानि तीर्थानि सती पादेषु तान्यपि ।
तेजश्च सर्व देवाना मुनीनां च सतीषु च ॥

समस्त गृहस्थ का सुख का धर्म कर्म की फल प्राप्ति का और सन्तति वृद्धि का प्रधान हेतु स्त्री ही है। अनुकूल आचरण वाली मधुर भाषिणी, सदाचारिणी, व्यवहार, कुशल पतिव्रता स्त्री साक्षात लक्ष्मी का ही स्वरूप है। समस्त पृथिवी मे जितने भी तीर्थ है, सम्पूर्ण देवताओं का और मुनियो का सारा तेज वर्चस्व एकमात्र सती साध्वी पतिपरायणा स्त्री मे ही है उससे बढकर तीर्थ और कुछ नहीं।

'अनुकूल कलत्रो य तस्य स्वर्गमिहैव हि ।
प्रतिकूल कलत्रस्य नरको नात्र संशय ॥ दक्ष संहिता
गृहवास सुखार्थाय पत्नी मूल गृहे सुखम् ।
रक्त एको विरक्तोऽन्य स्तस्मात् कष्टतरनु किम् ॥

"स्वर्गेऽपि दुलर्भ ह्येतद् अननुगामि परस्परेम् स्वर्ग और नरक सुख-दुःख या उसकी प्राप्ति अनुकूल प्रतिकूल स्त्री में है। इसके सिवाय स्वर्ग-नरक और कोई पृथक वस्तु नहीं हैं। घर मे रहना सुख के लिए है और वह सुख स्त्री के अधीन है। यदि दोनो पति पत्नियो मे एक रागी हो और दूसरा राग रहित हो जिसमे प्रेम न हो—तो इससे बढकर और कष्ट क्या हो सकता है। यदि परस्पर पति पत्नी अनुकूल आचरण वाले नहीं हैं एक दूसरे के सहयोगी सहायक पूरक नहीं तो स्वर्ग भी दुःखदायक है।

१—नद्यश्च नार्यश्च सदृक् प्रभावा ।
तुल्यानि कूलानि कुलानि तासाम् ।
तोयैश्च दोषैश्च निपातयन्ति, ।
नद्यो हि कूलानि कुलानि नार्य ॥

भावार्थ—नदी और नारियों का एकसा ही स्वभाव है, क्योंकि उन दोनो के कूल और कुल प्राय समान ही होते हैं। नदिया जल के प्रबल वेग के कारण अपने दाए और बाए तटो की कुलो को गिरा डालती हैं वे टूट जाते हैं और जल प्रवाह भयकर उत्पात खड़ा कर देता है। इसी प्रकार नारिया भी अपने पितृ कुल और पति कुलो को वशो को अपने दोषो के कारण पतित कर देती हैं उभय भ्रष्ट हो जाती है। अत सदा नदी को अपने कूल की और नारी को अपने कुल की वश की सदा रक्षा करनी चाहिए। दोनो का ही संरक्षण अभीष्ट है।

वन पर्व में यक्ष-युधिष्ठिर के प्रश्नोत्तर में "नारी का महत्व"

यक्ष का प्रश्न— किं स्विदात्मा मनुष्यस्य किं स्वि दैव कृत सखा ।
उपजीव्य हि किं चास्य किं स्विदस्य परायणम् ॥

मनुष्य का आत्मा क्या है, उसका दैव के द्वारा प्राप्त हुआ, सखा मित्र क्या है, वह किसके आधार पर जीता है उसका आश्रय क्या है, अर्थात परम गति क्या है।

युधिष्ठिर का उत्तर— पुत्र आत्मा मनुष्यस्य भार्या दैव कृत सखा ।
उप जीव्य च पर्जन्यो दान मस्य परायणम् ॥

मनुष्य का आत्मा उसका अपना पुत्र है' आत्मा वै पुत्र नामासि स जीव शरद शतम्' आत्मा वै जायते पुत्र" उसका दैव द्वारा प्राप्त सखा, मित्र, साथी सहयोगी उसकी अपनी भार्या है वही उसका नि स्वार्थ भाव से पालन पोषण करती है। मनुष्य का आधार जिसके द्वारा वह जीवन धारण करता है फलता फूलता है पर्जन्य है मेघ है उसी के द्वारा जल-वृष्टि से भूमि सस्य श्यामला होती है अन्न उपजाती है।

मनुष्य को ससार सागर से पार उतारने वाला साधन क्या है इसके उत्तर मे युधिष्ठिर ने दान को ही सर्व श्रेष्ठ परायण तारक बताया है इस सन्दर्भ मे केवल प्रासगिक कथन इतना ही है' भार्या दैवकृत सखा' इसी अश से तात्पर्य है मनुष्य सच्चा सखा मित्र भी उसकी अपनी स्त्री है।

'साध्वीना तु स्थिताना तु शीले सत्ये श्रुते स्थिते ।
स्त्रीणा पवित्र परम पतिरेको विशिष्यते ॥ वा० रामा० २।३१।२४

शील स्वभाव, सत्याचरण में रत शास्त्र मर्यादा मे स्थित साध्वी पतिव्रता पतिपारायणा स्त्रियो के लिए एक मात्र पति ही परम पवित्र आराध्य देव है।

यज्ञ और वृष्टि

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष
वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ० प्र०)

७ अगस्त के 'आर्य मर्यादा" साप्ताहिक मे श्री स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती आचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल(मेरठ) कालेख "वृष्टि और यज्ञ ' शीर्षक से छपा है। उन्होने अपने इस लेख मे श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी के "यज्ञ और वृष्टि" शीर्षक लेख की समीक्षा की है। उन्होने लिखा है कि "श्री स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द को परम प्रमाण मानकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि यज्ञ से वृष्टि नही होती।" इस विषय मे श्री स्वामी विवेकानन्द जी ने महर्षि दयानन्द जी के यजुर्वेद भाष्य से अध्याय १४ के आठवे मन्त्र तथा अध्याय १७ के दूसरे मन्त्र का भावार्थ प्रस्तुत कर ऋषिवर तथा दयानन्द तथा वेद की मान्यता और निर्देश की यज्ञ द्वारा वृष्टि की पुष्टि कर दी है। स्वामी जी ने उनके इन शब्दो को भी उद्धृत किया है जिनमे उन्होने यह कहा है कि "मेरी वृष्टि यज्ञ मे आस्था नही है।"

मैने एक लेख स्वामी सत्यप्रकाश जी के विषयमे पहले भी लिखा था, जो अनेक आर्य पत्रो मे छप चुका है। उस लेख मे मैंने उनके विषयमे चर्चा की थी कि वह यह कहतेहैं कि"मै सब बातो मे स्वामी दयानन्द के साथ नही बधा हूँ।" क्योकि वह महर्षि दयानन्द के साथ नही बधे, यही कारण है कि उनकी वेद के वर्षा-विज्ञान में आस्था नही है, क्योकि यह तो ऋषिवर दयानन्द की मान्यता है कि वेद अपौरुषेय तथा ईश्वरीय ज्ञान है और वेद मे वृष्टि-विज्ञान यज्ञ-विज्ञान के रूप मे वर्णित है और स्वामी सत्यप्रकाश जी ऋषि दयानन्द के साथ नही बन्धे अतएव उनकी आस्था यज्ञ द्वारा वृष्टि मे कैसे हो सकती है ?

स्वामी विवेकानन्द जी ने अपने लेख मे यह भी लिखा है कि उनका यह भी विचार है कि "यज्ञ से फसल कृषि पर कोई अच्छा प्रभाव नही पडता अर्थात् यज्ञसे अच्छी फसल नही की जा सकती।' इन विचारो को पढकर तो मैं इस परिणाम पर पहुचा कि जिस व्यक्ति को महान् वैज्ञानिक सन्यासी कहकर आर्य समाज के क्षेत्रो मे प्रतिष्ठा प्रदान की जा रही है, भले ही उन्होने डिग्री विज्ञान की ली हो किन्तु उनका मस्तिष्क वैज्ञानिकता से नितान्त दूर है। परीक्षाय देना तो कला है, पुस्तको के आधार पर परीक्षाये दी जा सकती है, उपाधिया भी प्राप्त की जा सकती है किन्तु मस्तिष्क का वैज्ञानिक होना अलग बात है। मुझे ऐसे प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थियो का पता है जिन्हे अथक परिश्रम करने पर भी कभी प्रथम श्रेणी प्राप्त नही हुई और ऐसे विद्यार्थियो को भली भाति जानता हूँ जो परीक्षाकाल मे नीद भर सोये तथा सिनेमा देखते फिरे और पूरे सत्र भी विहगम दृष्टि से ही पुस्तक देखी किन्तु फिर भी विशेष योग्यता और प्रथम श्रेणी प्राप्त करते रहे।

साधारण बुद्धि का व्यक्ति भी जानता है कि कीट गन्दगी और सडन मे पैदा होते और पलते हैं किन्तु सुगन्धि से भाग जाते तथा नष्ट हो जाते है। वैदिक सस्था नजीबाबाद द्वारा प्रकाशित "हवन-यज्ञ और विज्ञान" नामक पुस्तक मे मैने अपना नवम्बर, १९८३ का अनुभव लिखा है। मेरा जन्म कृषक परिवार मे हुआ है। मुझे पता है कि खेतो मे खडी फसल की पत्तिया पर यदि राख डाल दी जाती है तो उनमे लगे कीट नष्ट हो जाते है तथा भविष्य मे उन पर कीट उत्पन्न नही होते। यदि राख न डाल जाय तो वह कीट खडी फसल की पत्तिया खा-खा कर ही फसल को नष्ट कर देते हैं। यदि वह राख सुगन्धित पदार्थो को जलाकर तैयार की गयी हो तो आश्चर्यजनक लाभदायक सिद्ध हो। जब मकान मे उत्पन्न हुए कीटो को हवन सामग्री जलाकर नष्ट किया जा सकता है तो फसल मे लगे कीटो को भी नष्ट किया जा सकता है, जैसा कि हमने "हवन-यज्ञ और विज्ञान" नामक पुस्तक मे लिखाहै कि केवल सूखी सामग्री जलाने से ही उससे उत्पन्न सुगन्धित धुए से कमरे मे अकस्मात् उत्पन्न होकर प्रगट होने वाले सहस्त्रो कीट पटापट पृथिवी पर गिर कर मर गये। अब फसल के कीटो को मारकर यज्ञ फसल की पैदावार को बढा और स्वास्थ्यकर बना सकता है तो यज्ञ धूम्र के के सुगन्धित परमाणु फसल के पौधो को अधिक फूलने-फलने के योग्य बनाकर निश्चित रूप से पैदावार की अभिवृद्धि कर सकते है।

अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन स्थित अग्निहोत्री यूनिवर्सिटी ' ने जो परिणाम यज्ञ के कृषि पर प्रभाव के परिणामो से ज्ञात किये है, उन पर अब तक पाच परिपत्र भी प्रकाशित कर दिये है। "लश्कर का कूच हो गया, मगर बावली अभी खूटे ही गाढ रही है।" एक ओर तो कृषि पर यज्ञ के प्रभावो से सम्बद्ध परिपत्र प्रकाशित हो रहे है किन्तु दूसरी ओर हमारे महान् विज्ञानवेत्ता श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी की परीक्षणशाला यह सिद्ध करने मे लगे है कि "यज्ञ का कृषि पर कोई अच्छा प्रभाव नही पडता।" मेरा नम्र निवेदनयह है कि जिन्हे खेती की लेशमात्र भी जानकारी नही और जिन्होने कोई परीक्षण भी कृषि तथा यज्ञ विषय पर नही किया है और जो इस विषय को समझने की सूझ-बूझ भी नही रखते, वह ऐसी बातें कहकर उपहास का कारण न बने और आर्य पत्र-पत्रिकायें तथा आर्य समाज के उत्तरदायी व्यक्ति ऐसी नितान्त साधारण सूझ-बूझ के व्यक्तियो को मिथ्या तथा अनर्गल प्रोत्साहित करके शिक्षित और विचारक जनों की दृष्टि मे आर्य समाज जैसी महत्त्वपूर्ण, उच्च बौद्धिक स्तरीय तथा सर्वथा वैज्ञानिक व मनोवैज्ञानिक विचारधारा रखने वाली संस्था को भी उपहासास्पद बनायें। न्यूनातिन्यून मेरे जैसे सरोपा आर्य समाजी को इससे बडा कष्ट होता है। मेरा घर-परिवार, धन-सम्पत्ति जो कुछ भी है यहा तक कि जीवन और मरण भी आर्य समाज ही है, आर्य समाज के लिये ही है।

आर्य समाज मे एक अन्य प्रोफेसर श्री रामप्रकाश जी एम ए भी है। उन्होने भी एक "हवन-यज्ञ और विज्ञान नामक पुस्तक लिखी है, जो सन् १९८३ मे प्रकाशित हुई थी। जिन दिनो वह चण्डीगढ विश्वविद्यालय मे कैमिस्ट्री की प्रयोगशाला मे अनुसन्धानात्मक परीक्षण कर रहे थे, उन दिनो उन्होने जो परीक्षण करके अनुभव प्राप्त किए, वह उनकी उस पुस्तक मे वर्णित है। विज्ञान, वैदिक यज्ञ-विज्ञान तथा यज्ञ वृष्टि विषय की ज्ञातव्यता के लिये जिज्ञासु पाठक जन को उस पुस्तक को ध्यानपूर्वक पढना चाहिये। हा, स्वामी सत्यप्रकाश जी के पढने की वह पुस्तक नही है क्योकि वह तो वैज्ञानिक ही नही अपितु स्वय सिद्ध सम्पूर्ण विद्या विज्ञान निष्णात् वेदज्ञ है यद्यपि उनके समय-समय पर व्यक्त विचारो से यह स्पष्ट प्रमाणित है कि वह वेद को अनर्गलताओ का पिटारा और जगद्गुरु महर्षि स्वामी दयानन्द जी को भ्रान्त सिद्ध करने के लिये सन्नद्ध है और ऐसा सिद्ध करने का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने देना चाहते। इसका कारण यह है कि उन्हे आर्य समाज के नेताओ ने इतना अधिक उछाला है कि जिसके वह लेशमात्र भी अधिकारी नही है।

श्री स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने अपने लेख मे उन्हे यह सम्मति दी है कि वह "बैठकर यज्ञ के प्रभावो का परीक्षण करे।" जो स्वयसिद्ध और स्वत प्रमाण सम्पूर्ण विद्या-विज्ञान निष्णात वेदज्ञ हो, उसे परीक्षण की आवश्यकता नही। वह तो जो कुछ बोल दे, जो कुछ लिख दे, वह सब वेद की ऋचाये है।

एक डाक्टर किसी रोगी को देखने गया। जब उसने रोगी के सर पर हाथ रक्खा तो रोगी के घरवालो मे से किसी ने कहा कि

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य जगत् के समाचार

आर्य समाज भुवनेश्वर में श्रावणी उपाक्रम

३ ९ ८८। इस वर्ष आर्य समाज भुवनेश्वर मे श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर स्वतन्त्र कार्यक्रमो का आयोजन किया गया। "वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी" विषय पर स्कूल के छात्रो की लिखित प्रतियोगिता तथा 'क्या भारत मे आर्य विदेशी हैं ?' विषय पर कालेज के विद्यार्थियो की भाषण प्रतियोगिता आयोजित हुई। जिसमे भुवनेश्वर के सभी स्कूल कालेजो के विद्यार्थियो ने बडे उत्साह से भाग लिया। पहले से उडिया मे लिखित पुस्तकें उन्हे आर्य समाज की ओर से नि शुल्क पहुँचाई गई थी।

श्रावणी के उपलक्ष्य मे पारित वेदसप्ताह मे श्री आचार्य प्रियव्रतदास ने अथर्ववेद पर व्याख्यान दिया, प० कृष्ण देव जी शास्त्री ने सस्वर वेदपाठ किया। तथा श्री योगेन्द्र कुमार जी ने यज्ञपरिचालना की। आर्य समाज के स्थानीय सदस्यो ने भी विभिन्न वैदिक विषयों पर अपना-अपना व्याख्यान दिया। श्री प्रियव्रतदास द्वारा लिखित एव आकाशवाणी कटक केन्द्र से स्वीकृत भजन भी सगीतज्ञो ने प्रस्तुत किये। —योगेन्द्र कुमार

समानता दिवस

दिनाक ३-९-८८ को आर्य समाज मन्दिर हिसार मे जन्माष्टमी पर समानता दिवस मनाया गया जिसकी अध्यक्षता सभा के प्रधान श्री चन्दुलाल जी ने की। वक्ताओ मे श्री सत्यप्रिय जी शास्त्री, आचार्य दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार श्री अमरसिंह जी महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने कृष्ण जी के बिगडे हुए स्वरूप को निखारते हुए योगी महान राजनीतिक बताया और पिछडे वर्ग को उठाने मे आर्य समाज व ऋषि दयानन्द के एहसान बताए।

—सीताराम आर्य, मन्त्री आर्य समाज हिसार

यज्ञ और वृष्टि

[पृष्ठ ९ का शेष]

डाक्टर नाडी सर मे नही हाथ मे होती है। यह सुनकर डाक्टर जी बिगडकर बोले, तुम मूर्ख हो। हम क्वालीफाइड डाक्टर है, जहा हम हाथ रख द वही नाडी हो जाती है। श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी भी आजकल आर्य समाजियो के महान वैज्ञानिक सन्यासी हैं, वह जो कुछ भी कह द, सब विज्ञान सिद्ध है और वेद मे जिस वैज्ञानिकता का वर्णन है तथा महर्षि दयानन्द ने जिसका प्रतिपादन, समर्थन और विवेचन किया है, वह सब कपोल कल्पना, मिथ्या अनर्गल और भ्रान्त हैं।

जिस व्यक्ति ने विज्ञान के नाम पर आज तक न कोई परीक्षण किया हो तथा न लौह की एक कील तक भी बनाई हो, विज्ञान के क्षेत्र मे उसकी कही भी गिनती नही हो सकती। एम एस सी करके किसी विद्यालय मे नौकरी करते हुए साइस का पाठ घर पर पढकर अगले दिन छात्रो के सामने उसे भाषण मे वर्णन कर देना या नोटबुक मे से विद्यार्थी जीवन की लिखी हुई टिप्पणिया विद्यार्थियो की कापियो मे लिखा देना वैज्ञानिकता का परिचायक नही है। एक और कैमिस्ट्री के प्रोफेसर से हमारा वार्त्तालाप हुआ था। पहले तो वह हठपूर्वक अपनी बात पर अडे रहे किन्तु बाद मे ऋषिवर दयानन्द सरस्वती के 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य को त्यागने" के सूत्र का उन्होने यथार्थ रूपेण परिपालन किया। अगले लेख मे पाठको की जानकारी के लिये रुचिकर वार्तालाप प्रस्तुत करू गा।

पुस्तक समीक्षा

नाम पुस्तक—जीवन सौरभ

लेखक—श्री सत्यानन्द आर्य

प्रकाशक—गजानन्द आर्य, विचार प्रकाशन, "सुक्षिति"
१९, बल्लीग ज, सर्कुलर रोड, कलकत्ता-१९

मूल्य—दस रुपये (प्रथम सस्करण-अप्रैल १९८८)

भारत मे अनेक प्रतिभाशाली विचारक और दार्शनिक हुए, जिनके विचारो और जीवन के प्रेरक प्रसगो से हमे प्रेरणा मिलती है। ऐसे अनेको महान व्यक्तियो, साधु सन्तो दार्शनिको आदि के जीवन से जुडे हुए प्रसगो को जन साधारण तक पहुँचाना आज की एक बडी आवश्यकता थी विद्वान लेखक ने इन्हे पुस्तक का रूप देकर इस बडी आवश्यकता की पूर्ति की है। यह पुस्तक हमारे स्कूलो के छात्रों का मार्ग दर्शन करेगी। अतः इसे उनके पाठ्यक्रम मे सम्मिलित करना उनके चरित्र निर्माण मे उपयोगी सिद्ध होगा।

दिल्ली के कार्यकारी पार्षद श्री कुलानन्द भारतीय ने ७ सितम्बर १९८८ को एक सादे समारोह मे इस पुस्तक का विमोचन किया।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

[२]

नाम पुस्तक—माण्डवी महाशया

लेखक—स्वामी ओ३म् प्रेमी चतुर्थाश्रमी
गुरुकुल होशगाबाद (म० प्र०)

प्रकाशक—ब्रह्मज्ञान प्रकाशन मैन रोड
होशगाबाद (म प्र)

मूल्य—पन्द्रह रुपये मात्र

रामायण महाकाव्य के सभी पात्रों को लेकर अनेक कवि-मनीषियो ने काव्य रचना की है। तुलसीदास जी ने अपने "राम चरित मानस" मे राम की सहयोगिनी सीता का चरित्र चित्रण तो विशद रूप से किया है, किन्तु अन्य सभी पात्रो के साथ वे अधिक न्याय नही कर पाए यद्यपि परोक्ष रूप से सम्पूर्ण कथानक मे उनका योगदान भी कम नही था। महाकाव्य की इन्ही उपेक्षिता नारियों के त्याग और कर्तव्य परायणता से प्रेरित होकर आधुनिक काल मे महाकवि मैथिली शरण गुप्त ने लक्ष्मण की भार्या 'उर्मिला' को लेकर 'साकेत' की रचना की। किन्तु भरत-पत्नी माण्डवी और शत्रुघ्न-पत्नी श्रुतिकीर्ति को अभी तक किसी ने वाणी प्रदान नही की थी।

विद्वान लेखक कवि ने अपनी काव्य रचना के माध्यम से इतिहास की इसी कमी को दूर करने का सफल प्रयास किया है।

श्री ओ३म् प्रेमी जी ने अपने स्वाध्याय के आधार पर वेद मन्त्रो तथा शास्त्र-वचनो से प्राप्त उपदेशो और शिक्षाओ को भी प्रश्नोत्तर के रूप मे माण्डवी, श्रुतिकीर्ति आदि अन्य पात्रों के साथ सम्बद्ध कर दिया है, जो आजकल के युवक युवतियो का मार्ग दर्शन करने मे सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

पुस्तक पठनीय है। स्वर्गीय महात्मा अमर स्वामी जी महाराज ने भी इसकी प्रशसा की है। आशा है आर्य जन पढकर इसका लाभ उठावेंगे।

—सम्पादक

आर्य समाज भैरोपुर की स्थापना

उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जनपद में बिरनो प्रखण्ड के अन्तर्गत भैरोपुर ग्राम मे दिनाक ६ सितम्बर १९८८ दिन मगलवार को नालन्दा (बिहार) से पधारे आर्य विद्वान डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी की उपस्थिति मे नवीन आर्य समाज की स्थापना की गयी दिनाक ५ सितम्बर सोमवार को रात्रि मे श्री सत्यार्थी जी का प्रवचन ग्रामीणो के बीच मे हुआ इस कार्यक्रम के सयोजक दुल्लहपुर, (गाजीपुर) के डा० डी सी सरकार थे। ६ सितम्बर को प्रातः युवको का यज्ञोपवीत सस्कार श्री सत्यार्थी जी के द्वारा सम्पन्न हुआ।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा आर्य जीवन ज्योति विद्या मन्दिर का शिलान्यास

दि० १६ ६ ८८ को पश्चिम विहार दिल्ली मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य जीवन ज्योति विद्या मंदिर का शिलान्यास किया। श्रीमती प्रकाश आर्या के विशेष प्रयास के बाद ये भूमि डी डी ए से प्राप्त की गयी थी।

लंदन के एक दानी महानुभाव ने इस भवन के निर्माण हेतु दस लाख रुपए की राशी प्रदान की है। इस विद्यामंदिर के भवन निर्माण में दिल्ली की समस्त आर्य समाज एवं आर्य संस्थाएं सहयोग प्रदान कर रही है। इस अवसर पर यज्ञ का कार्य श्री हरिदत्त शास्त्री एवं श्री यशपाल सुधांशु ने करवाया।

आवश्यक सूचना

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान और सार्वदेशिक सभा के वैदिक अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष स्व० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री की विदुषी पत्नी श्रीमती निर्मला शास्त्री धर्म प्रचार हेतु आर्य समाज को अपनी सेवाएं दे रही हैं। वर्तमान समय में उनका पता—मकान नं० ६४ सेक्टर १६ फरीदाबाद (हरियाणा है) आर्य समाज तथा स्त्री आर्य समाज उनकी सेवाओं का लाभ उठा सकती हैं।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

चारों वेदों का पारायण यज्ञ सम्पन्न

८ आराम रोड दिल्ली मे दिनांक १ अगस्त से ११ सितम्बर तक चल रहे यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। श्री लखपति शास्त्री की अध्यक्षता में यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी जीवनानन्द व स्वामी प्रभु आश्रित जी महाराज के लिखित उपदेश एवं अन्य आर्य बन्धु भाईयों के भजन व उपदेश हुए। यज्ञ की पूर्णाहुति के दिन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों पर प्रकाश डाला। वर्तमान समय में आर्यों को कर्तव्य के प्रति सचेत किया।

स्पष्टीकरण

पाठकों को अफसोस के साथ सूचित किया जाता है कि दि० १ ८ ८८ के अंक मे जर्मई से शुद्धिकरण का जो समाचार दिया गया था वह असत्य एवं निराधार है। किसी आचरण हीन व्यक्ति ने जमई आर्य समाज प्रधान के नाम से गलत समाचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया। वास्तव मे शुद्धिकरण नहीं हुई थी।

(मजीवन म. आर्य समाज जमई प्रधान

देवीदास आर्य का अभिनन्दन

(पृष्ठ १ का शेष)

जलसिंह एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती भी उपस्थित थे।

श्री आर्य ने अपने जीवन को खतरे में डालकर तीन हजार महिलाओं एवं लड़कियों को वेश्यालयों एवं बदमाशों के चंगुल से छुड़ाकर उन्हें समाज मे प्रतिष्ठित जीवन प्रदान किया।

श्री ज्ञानी जैलसिंह ने कहा कि श्री देवीदास जी का जीवन त्याग एवं बलिदान से परिपूर्ण है। उन्होंने अपने जीवन में अनेक महिलाओं को बचाया है। आर्यसमाज ने ऐसे अनेकों लाल पैदा किये है जिन्होंने समाज जाति एवं धर्म की रक्षा की है।

ज्ञानी जी ने युवकों को आह्वान करते हुए कहा कि उन्हें श्री आर्य के जीवन से प्रेरणा लेकर सामाजिक सुधार के कार्य करने चाहिए। श्री देवीदास ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मेरी मां ने मेरा नाम देवीदास इसीलिए रखा था कि मैं देवियों की सेवा कर सकूं।

पुस्तक सूचना

"निर्णय के तट पर" (प्राचीन शास्त्रार्थों का संग्रह) छपकर सभी ग्राहकों को भिजवा दिया गया है जो एक सप्ताह के अन्दर सबको मिल जायगा इस ग्रन्थ के भाग प्रकाशित हो चुके है। चौथे भाग के लिए प्रकाशक से सम्पर्क स्थापित करें।

प्रबन्धक अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
१०५८ विवेकानन्द नगर गाजियाबाद (उ० प्र०)

योग साधना शिविर

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला नैनीताल में २३ सितम्बर ६ सितम्बर तक शिविर लगेगा आवास तथा भोजन निःशुल्क होगा। शिविर में सम्मिलित होने वालों का स्वागत है।

स्वामी सामानन्द वेद प्रचारक मण्डल
६०/१३ रामजस रोड नई दिल्ली ५

आवश्यकता

संस्कृत एवं वेद के विद्वान तथा एक सुयोग्य एवं अनुभवी आर्य पुरोहित की आवश्यकता है। संस्कार कराने के साथ साथ संस्कृत भाषा बोलने एवं सिखाने में सक्षम विद्वान को प्रमुखता दी जायेगी। निःशुल्क आवास के साथ आकर्षक वेतन दिया जायेगा पूर्ण विवरण के साथ लिखें।

—प्रताप कण्डेलवाल मन्त्री
आर्यसमाज आदर्शनगर जयपुर ४ राजस्थान

आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा (दक्षिण अफ्रीका) के लिये एक वैदिक विद्वान की आवश्यकता है जो निष्ठापूर्वक वहां वेद प्रचार का कार्य कर सकें। उसके लिये निम्न योग्यताये अपेक्षित हैं।

१—वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान
२—हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में लिखने तथा बोलने की प्रवीणता
३—संस्कारों के निष्पादन तथा यज्ञ का अनुभव
४—संस्कृत भाषा का सम्यक ज्ञान

आवश्यक गुरुकुल के स्नातक अथवा किसी अन्य विश्व विद्यालय से तुल्य योग्यता प्राप्त व्यक्ति प्राथमिकता प्राप्त होंगे। वेतन आपसी बातचीत से तय किया जायेगा। चयन आवेदक को दक्षिण अफ्रीका में ३ वर्ष के अनुबन्ध पर कार्य करना होगा। आवेदक प्रमाणपत्रों सहित अपना आवेदनपत्र मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा (दक्षिण अफ्रीका) पोस्ट बाक्स नम्बर (दक्षिण अफ्रीका) के पते पर भेजें। पता अंग्रेजी में लिखें।

संस्कृत सीखने का अनुपम साधन

एकलव्य संस्कृत माला

००० वाक्यों के सरल प्रयोग द्वारा मास मे लिखना व बोलना सीखें।

मूल्य ०० रुपये। श्रावणी से विजयदशमी तक १२.००

सरल शब्द रूपावली धातु रूपावली। रघुवंश कुमार सम्भव ४ नीति शतक के अत्यन्त सरल अनुवाद भी रियायती मूल्य पर उपलब्ध।

प्रकाशक	प्राप्ति स्थान
वैदिक संगम	**गोविन्दराम हासानन्द**
४१ दादर डिपार्टमेंट स्टोर्स,	४४०८ नई सड़क
एम सी जावले मार्ग	देहली ११०००६
दादर, बम्बई ४०००२८	

समता दिवस पर सैकडो ने यज्ञोपवीत धारण किये

बम्बई सितम्बर आय समाज माटु गा ने कृष्ण जन्माष्टमी पर समता दिवस मनाया इस मौके पर सैकडो हरिजनो ने यज्ञोपवीत धारण किये।

समाज की ओर से एक सप्ताह का वेद प्रचार सप्ताह के तौर पर मनाया गया। आखिरी दिन ओम प्रकाश शास्त्री ने वैदिक विधि से पूरा किया और यज्ञोपवीत बाटे। समाज के अध्यक्ष भगवती प्रसाद गुप्त अतिथियो का स्वागत किया। श्री दयानन्द बाल विद्यालय के प्रिंसिपल एस एन सिंह ने समता दिवस और आज के समय मे उनकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

आर्य समाज मलाही मे वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

चम्पारण जिला आर्य सभा के तत्वावधान मे वेद प्रचार सप्ताह २६ अगस्त श्रावणी पूर्णिमा से ३ सितम्बर कृष्ण जन्माष्टमी तक पारिवारिक यज्ञ एव वेद कथा के साथ बहुत ही आनन्दपूर्ण ढग से सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन ७ रोज तक प्रात विभिन्न परिवारो मे यज्ञ एव सायकाल आर्य समाज मन्दिर मलाही के प्रागण मे वेदकथा होती थी। जिसमे श्री दयानन्द सत्यार्थी भजनोपदेशक प्रतिनिधि सभा पटना एव चम्पारण जिला आर्य सभा के अवैतनिक उपदेशक श्री रामचन्द्र जी कन्निकारी (नेपाल) एव ध्रुवप्रसाद जी आदि भजनोपदेशको के भजन एव उपदेश होते थे।

—बी० के० शर्मा मन्त्री

चौथा ऐतिहासिक आर्य महासम्मेलन

श्री स्वामी श्रद्धानन्द आश्रम सफीदा जिला जीन्द मे १ २ अक्टूबर १९८८ शनि रविवार को प्रान्तीय स्तर पर मनाया जा रहा है। इस अवसर पर उच्चकोटि के स्वामी तपस्वी सन्यासी महात्मा विद्वान धार्मिक आर्य नेता तथा राजनैतिक नेता उपस्थित होकर वर्तमान समस्याओ के सन्दर्भ मे अपने अमूल्य विचार देंगे।

दिवस

दिनाक ३ ९ ८८ शनिवार को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर समान अधिकार दिवस समारोह मनाया गया। उक्त तिथि को इधर के कुछ सज्जन तथा हरिजन बन्धु भी उपस्थित थे। सन्ध्या एव हवनोपरान्त ओ३म् ध्वजारोहण हुआ।

—ध्रुव नारायण आर्य मन्त्री

समता दिवस

आर्य समाज राजगाव मे श्रावणी पर्व से लेकर जन्माष्टमी पर्व तक वेद प्रचार कार्यक्रम रखा गया था जिसमे प्रतिदिन अलग अलग घर मे सत्सग हुआ और एक दिन हरिजनो के मुहल्ले मे उनके साथ सत्सग हुआ।

—प्रहलाद प्रसाद आर्य

समता दिवस

आर्य समाज मरचना मे श्री स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे समता दिवस सम्पन्न हुआ जिसमे हरिजनो का यज्ञोपवीत धारण कराये।

आर्य समाज महुआ खेडा नैनीताल मे समता दिवस के अवसर पर बीस हरिजनो को यज्ञोपवीत धारण कराये और सत्यार्थ प्रकाश की पुस्तक भेंट की।

—श्री कृष्ण आर्य मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८९] वर्ष २३ अङ्क ४०]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
आश्विन कृ० ८ स० २०४५ रविवार ० अक्तूबर १९८८

दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

महान् दानवीर स्व० लाला दीवानचन्द के जन्मदिन पर हरिजनों के साथ सहभोज

आर्य समाज दीवान हाल में समारोह

दिल्ली, २५ सितम्बर । दिल्ली की प्रमुख आर्यसमाज दीवान हाल के निर्माता स्वर्गीय लाला दीवानचन्द का १०४वा जन्म दिवस, समारोह आर्य नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। समारोह के अन्त मे हरिजनो के साथ सहभोज का आयोजन किया गया जिसमे बडी सख्या मे हरिजनो व अन्य लोगो ने उपस्थित होकर समानता तथा छुआ-छूत विहीन आदर्श सामाजिक जीवन का परिचय दिया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि आर्य समाज ने अनेक दानवीर देशभक्त और क्रान्तिकारी नेताओ को जन्म दिया है, जिन्होने अपना सवस्व देश धम, समाज तथा राष्ट्र के लिए लगा दिया था। महर्षि दयानन्द ने पाच हजार वर्ष से प्रसुप्त भारतीय जन मानस को जागते रहने का आह्वान किया था। आर्य जाति को अविद्या, अभाव और अन्धकार के विरुद्ध खडा करके देश मे अपनी राजसत्ता, स्वभाषा, स्वधम तथा स्वदश का नारा लगाया जिस आर्यसमाज के कायकर्ताओ ने अनेक बलिदान देकर उस महान उद्देश्य की पूर्ति की।

उन्होने कहा कि स्व० लाला दीवानचन्द एक ऐसे दानवीर थे जिन्होने अपना सर्वस्व आर्य समाज और मानव जाति की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। उन्होने अपने ठेकेदारी के जीवन से जो कुछ कमाया वह सब समाज को न्योछावर कर दिया। उन्होने ही आर्यसमाज दीवान हाल मन्दिर का निर्माण कराया तथा आय समाज हनुमान रोड के निर्माण मे ५०हजार रुपए दिये। औचन्दी अस्पताल, लाला दीवानचन्द हा०से० स्कूल सतभ्रावा कन्या उ०मा० विद्यालय, लाला दीवानचन्द ट्रस्ट और सतभ्रावा ट्रस्ट आदि सब सस्थाए खडी की जो अनाथो,विधवाओ, असहायो तथा निर्धन छात्र-छात्राओ की सहायता मे लगी हुई हैं।

आर्य समाज दीवान हाल के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा—लाला दीवानचन्द ने दिल्ली मे आर्य समाज की नीव ही पक्की नही की अपितु इसे इतनी शक्ति दी, सिसे आर्य समाज के आन्दोलनो, सेवा सहायता कार्यक्रमो, मानव समाज की सेवा के प्रति उसने अनेक कीर्तिमान भी स्थापित किए।

इस अवसर पर आर्य समाज के वयोवृद्ध विद्वान् भूतपूर्व ससद सदस्य प० शिवकुमार शास्त्री का आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की ओर से सम्मान किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान डा० धर्मपाल ने सम्मान स्वरूप पाच हजार की राशि भट की।

बिहार भूकम्प एवं बाढ़ पीड़ित सहायता समिति द्वारा जमालपुर, मुंगेर, मुंगियाचक्र, हसनपुर में वस्त्र-धन एवं अन्न का वितरण

सार्वदेशिक सभा मे प्राप्त सूचना के अनुसार श्री योगेन्द्र नारायण मन्त्री तथा प्रेमनाथ ग्रोवर प्रधान बिहार भूकम्प एव बाढ पीडित समिति ने दिनाक २४-९-८८ को जमालपुर मु गेर, मुंगिया चक्र, हसनपुर एव रागा टोला आदि स्थानो का दौरा किया वहा पर लोगो को वस्त्र, धन एव अन्न की सहायता प्रदान की।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बाल दिवाकर हस भी दरभगा, मधुबनी आदि स्थानो पर राहत कार्यो का निरीक्षण कर रहे है, उनका जमालपुर तथा मु गेर जाने का भी प्रोग्राम है।

—सभा-मन्त्री

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

बिहार भूकम्प तथा बाढ़ पीड़ित सहायता समिति द्वारा प्रभावित क्षेत्रों में व्यापक कार्यक्रम एवं राहत कार्य जारी है

बालदिवाकर हंस प्रभावित क्षेत्रों में

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को समिति की रिपोर्ट

पटना। पिछले कई दिनो से सहायता समिति की ओर बिहार के बाढ तथा भूकम्प प्रभावित क्षेत्रो मे पीडित लोगो की अनेक प्रकार से सेवा की गई है। समिति के प्रधान श्री प्रमनाथ ग्रोवर सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हस तथा समिति के अन्य लोगा ने हरिहर पट्टी, कबीलपुर, बहादुरपुर, गोविन्दपुर, मोहम्मदपुर, हुसैनाबाद सहित सुदूर ग्रामीण क्षेत्रो मे पुरुषा, महिलाओ और बच्चो के बीच वस्त्र, साडी, चावल, दाल तथा नमक का वितरण किया। इन क्षेत्रो मे १७-१८ सितम्बर को यह कार्यक्रम दूसरी बार किया गया है। श्री बालदिवाकर हस के नेतृत्व मे एक दल भारी मात्रा मे चावल तथा नकदी लेकर मधुबनी मे भेजा गया है। २२ सितम्बर को एक दल दुबारा मु गेर गया और वहा सहायता स्वरूप वस्त्र तथा अन्न का वितरण किया गया। समिति के प्रधान श्री ग्रोवर के नेतृत्व मे एक दल हसनपुर मे नाकाटोला में चावल, दिया सलाई तथा नमक का वितरण करने गया हुआ है। स्वामी जी, आप हमारे साथ जिन क्षेत्रो मे गए थे, वहा वहा जाकर हम लोगो ने सहायता कार्य किए है। अब बाढ प्रभावित क्षेत्रो मे जाना है। श्री बालदिवाकर हस भी इन्ही क्षेत्रो मे विशेष रूप से सेवा सहायता काय म लगे हुए हैं।

हम सब लोग आर्य समाज के पुनीत सेवा कार्य मे लगे हुए हैं। हमारी प्रार्थना है कि आर्य जनता धार्मिक तथा समृद्ध महानुभाव इस समायता कार्य मे अपने सहयोग की आहुति देकर यश के भागी बने।

—योगेन्द्र नारायण

मन्त्री—बाढ एव भूकम्प पीडित सहायता समिति, पटना

बिहार भूकम्प एवं बाढ़-पीड़ित सहायता-समिति पटना को प्राप्त धन राशि की सूची

भूकम्प एव बाढ पीडित सहायता समिति, पटना को विभिन्न सस्थाओ एव प्रमुख आर्य सदस्यो से निम्न सहायता राशि प्राप्त हुई हैं —

१—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली	१५००० ००
२—दयानन्द विद्यालय मीठापुर	२००० ००
३—दयानन्द कन्या विद्यालय मीठापुर	२००० ००
४—डी० ए० वी० हाई स्कूल धनबाद	२००० ००
५—आर्य कन्या विद्यालय बाकीपुर	१००० ००
६—श्री प्रेमनाथ ग्रोवर	५५१ ००
७—श्री महेन्द्र प्रताप नारग	५०० ००
८—श्री रामचन्द्र प्रसाद	२५१ ००
९—श्री प्रो० योगेन्द्र नारायण	१५१ ००
१०—श्री प्रो० श्यामनन्दन शास्त्री	१०१ ००
११—श्री भूपनारायण शास्त्री	१०२ ००
१२—श्री अजय कुमार आचार्य	१०५ ००
१३—सुश्री माधुरी मिश्रा	१०१ ००
१४—श्री प० वासुदेव शर्मा	५१ ००
१५—श्री रामाज्ञा वैरागी	५१ ००
१६—श्रीमती वीणा गुप्ता	५१ ००
१७—श्री दामोदर आर्य पत्रकार	५१ ००
१८—श्रीमती आशा सहाय	२५ ००
१९—प० सर्वेन्द्र शास्त्री	२५ ००
२०—योगेन्द्रप्रसादसिंह	२५.००

—योगेन्द्र नारायण

प्रो० शेरसिंह गुरुकुल के कुलाधिपति

नई दिल्ली १७ सितम्बर।

गुरुकुल कांगडी विश्व विद्यालय हरिद्वार की चयन बैठक मे प्रो शेरसिह को कुलाधिपति चुना गया।

प्रो० सिंह १९५६ से सामाजिक धार्मिक साहित्यिक जीवन से सक्रिय रूप से जुडे हुए हैं। और प्रतापसिंह कैरो मन्त्रिमण्डल मे वे पजाब के उपमुख्य मन्त्री रहे। अनेक वर्षों तक केन्द्र सरकार के मन्त्रालयो मे वे विभिन्न पदो पर रहे और हिन्दी के प्रश्न पर अपनी नौकरी से त्याग पत्र दे दिया था।

सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन सदस्यो की सूची

१ जुलाई ८८ से ३१ अगस्त ८८ तक

ग्राहक सख्या — नाम तथा पता

१४३४०—श्री साहिबराम सागर, राधारमन मंदिर के पास भरतपुर (राज)
१४३४१— ,, अतरसिह त्यागी, ग्रा पो सेकडा म न ८६, वार्ड न ३ मेरठ
१०४५७— ,, मन्त्री जी आर्यसमाज बगार स्यू डौडियाल स्यू बैंजरा गढवाल
१४३४५— ,, भारतभूषण जी, ८२८ ऋषि नगर आर्य समाज मार्ग शकूरबस्ती दिल्ली
१४३४७— ,, वेकट राव, गोविन्दराव आर्य जानापुर बसव कल्याण बीदर
१२६८६— , धर्मवीर आर्य, झण्डाधारी, सराय रुहेला दिल्ली
१४४९८— , राजेन्द्र सम्मा जी, होम काडवार मदनूर निजामाबाद (आ प्र)
१०७५८— , उत्तमचन्द शरर म०न० ३०/८ कलन्दर चौक पानीपत (हरि)
१४५१८— , बसीटा सिह त्यागी पुत्र श्री गगासहाय ग्रा पो बडकली मुजफ्फर नगर
०९८— ,, वासुदेव जी शर्मा, झाऊगज पटना सिटी ४
१४१०५— ,, दामोदर दास रावत द्वारा आर्यसमाज मलकापुर जि बुलढाना
९२१— ,, मन्त्री जी, आर्य समाज शाहजहापुर यज्ञशाला भवन शाहजहापुर
१४१२०— , रामसिह पुत्र स्व० रघुवर सिह ग्राम सादतपुर आर पी भट्टा क० दिल्ली
१४५३८— ,, प्रेमचन्द गगवार मु० कायम खा फर्रुखाबाद (उ प्र)
१२६१८— ,, ज्ञानचन्द शर्मा, भापडोदा जि० राहतक (हरि०)
३७८२— ,, डा० एम एस निम्बालकर, कगावल नगर रोड दिल्ली
१४५५७— , प्रकाश चन्द्र मिश्र, एड० गोशपुरा माला वाली गली, ग्वालियर (म० प्र०)
१४५४६— ,, प० क्षितीश जी वेदालकार ८१ गुलमोहर पार्क न० दिल्ली
१४५५८— ,, गीता देवी, पत्नी तुलसी चन्द्र चाव बावडी केसरगज अजमेर
१४५६०— ,, धर्मभानु विद्या प्रभाकर गुरुकुल भैसवाल सोनीपत
१४५६९— ,, कृष्ण गोपाल घालीडे, शिवाजी नगर पुणे (महा०)
६९२६— ,, कृष्ण लाल आर्य, हरिपुर सुन्दर नगर (हि० प्र०)
३५८०— , विजयकुमार अरुण कुमार जान्स्टन गज इलाहाबाद (उ० प्र०)
१४५३९— , सजयकुमार चतुर्वेदी, पटवन गली कायम ग ज फर्रुखाबाद
१४५८५— ,, मागीलाल जी, कम्बल वाल हैन्डलूम स्टोर हिन्डौन सिटी
३१०४— ,, मन्त्री जी आर्य समाज गाधीधाम कच्छ गुजरात

सम्पादकीय

आर्यसमाज का विराट रूप

राजा बलि से एक भूल हुई थी वे वामन के विराट रूप को नही पहचान सके। संसार मे बहुत से लोगो को इस प्रकार का धोखा होता है वे कितनी ही विशेष बातो को साधारण या उपेक्षणीय बनाकर बाते किया करते हैं और अपने विराट रूप को भी वामन बनाकर बात स्पष्ट करते हैं। यह समझ की भूल है।

आर्यसमाज की शक्ति वामन की तरह विराट है वामन मे विराट बिन्दु मे सिन्धु और क्षण मे युग, समाया रहता है।

कोई भी तत्व या वस्तु केवल ऊपर से छोटी बात होती है पर वह तुच्छ नही हो सकती है।

हमारे अपने सुलझे हुए व्यक्ति भी जब आर्यसमाज के रूप को विराट से वामन बनाकर चर्चा करते हैं—तो लगता है कि दिये तले ही अन्धेरा है। ऋषि ने उस जड के अधेरे को ही दूर करना था।

विशाल हिन्दू आर्यों मे विशेष गुणो के होते हुए भी जो कुछ दोष समा गये थे उन्हे ही दूर करना था। उन दोषो को दूर कर मैदान से भागना नही था। महत्ता इस बात म है कि—

पराई आग मे जलकर गरीबो की दवा होना।

मनुष्य के स्वभाव मे, चरित्र बात व्यवहार आदि मे किसी भी प्रकार की त्रुटि उपेक्षणीय तो नही है। परन्तु हमारी घर की साधारण सी आलोचना पूरे आय समाज का भुगतनी पडती है।

समझ की थोडी सी भूल बडे-बड भ्रम और अनर्थ पैदा कर देती है मन मे एक छोटा सा सन्देह भी चिरकाल से चले आ रहे प्रेम तथा विश्वास को भी जड से उखाड देता है।

विचारो की थोडी भी सकीर्णता या तुच्छता अच्छे भले मानवो को भी छोटी तबियत का व्यक्ति बना देती है। एक दुर्गुण सौ-सद्गुणो को ढक देता है। परस्पर की चर्चा मे एक दूसरे के विषय मे यह कहा जाता है यदि उसमे वह दोष न होता तो वह कुछ का कुछ होता। इसमे सच्चाई है एक दोष से भी मनुष्य का व्यक्तित्व छोटा हो जाता है हमारे कथनानुसार आर्य समाज के बढते कदमो की चर्चा न करके सौ वर्ष के काम की नेकनामी को केवल एक बदनामी की बात कहकर मटियामेट कर देते हैं। इस एक असावधानी से अच्छे होते हुए काम भी बिगडने मे आ जाते है। परिणामत —

छोटी सी खासी तपेदिक का रूप ले लेती है। मामूली सी हसी झगडे की जड बन जाती है।

उस छिद्र को सोचिये जिसके कारण किसी सुपात्र की उपयोगिता कम या नष्ट हो जाती है।

मनुष्य को दोषज्ञ होना चाहिये। दोषज्ञ होने का अर्थ पर छिद्रा होना नही है परछिद्रान्वेषण म तो सभी प्रवीण होते है परन्तु दोषज्ञ वह है जो अपने दोषो का भी जानकार हो। सच्चा ज्ञानी वह जो आत्मज्ञानी हो। दूसरो की पीठ तो हर कोई देख लेता है लेकिन स्वय अपनी पीठ आसानी से नही देख पाता है उसे देखना भी आवश्यक है।

कितनी ही ऐसी साधारण प्रतीत होने वाली बात हैं जिनसे मनुष्य की अभद्रता, अदूरदर्शिता और अयोग्य प्रमाणित होती है। एक छोटे से धब्बे से किसी चित्र की शोभा नष्ट हो जाती है। उसी प्रकार एक कलक के लगने स मानव तथा समाज के चरित्र की महिमा भी घटती है। एक अग की दुर्बलता का प्रभाव सम्पूर्ण जीवन पर पडता है।

१—जहा चर्चा चलती है तो असाधारण व्यक्ति भी कह उठता है कि अब आर्यसमाज मे सन्यासियों की कमी हो गई है—मैंने तुरन्त कागज कलम ली और लगा सन्यासियो की गणना करने।

आप आश्चर्य करेगे कि पचास से ऊपर इस समय वह पढा लिखा सन्यासी, युवा, वृद्ध विद्यमान है जो निरन्तर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार मे युद्धरत हैं। और सैकडो ऐसे साधु-सन्यासी है जो पढे लिखे तो कम हैं पर पढो से अधिक प्रचार-कार्य अपने-अपने क्षेत्रो मे करते हैं—पूरी सन्यासी मण्डल के नाम लिख—तो मे स्वय हत प्रभ था कि इतने होने पर भी यह कहना कि आज सन्यासी नही बन रहे हैं।

२—फिर मैंने महोपदेशको की सूची बनाई उनमे लगभग एक सौ से ऊपर पढा-लिखा विद्वान, गृहस्थी और वानप्रस्थी भी उसी प्रकार युद्धरत है इनकी गणना करने के बाद मैने—

३—पुरोहित वर्ग, नई युवा पीढी पर दृष्टिपात किया—तो मारे देश को छोड दे। अकेले दिल्ली राजधानी म दो सौ से ऊपर सस्कृतज्ञ युवको की टोली सस्कारो के साथ साथ प्रचार प्रसार मे लगे है। फिर गिनती की प्रकाशको की—

४—सस्था या सस्थान के रूप मे प्रकाशको की सख्या २६ छत्रीस लिखी जो स्वतन्त्र लेखक व प्रकाशक है उन्हे छोडकर। मे समझता हूँ कि यह उपरोक्त गणना असन्तोष का कारण नही है।

अकेले सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा लाखो रुपया का साहित्य प्रकाशित कराती है जो पहले की अपेक्षा आज अति स्त य तथा सराहनीय पग है।

मैन कहा—आत्महीनता साधारण हो सकती है परन्तु उसका परिणाम साधारण नहीहोगा। अत अपन वामनरूप को पहिचानो।

आर्यसमाज के संन्यासी

चिरकाल से मेरी इच्छा थी कि स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज द्वारा सस्थापित समपण शोध सस्थान साहिबाबाद (गाजियाबाद) जाकर उस सस्था को देखू जिसे स्वामी जी ने अपने पूज्य गुरुवर स्वामी समपणानन्द जी (श्री प० बुद्धदेव विद्यालकार) के साहित्य को प्रकाशित करने के लिए स्थापित किया है। उसके कई कारण थे—कुछ लोगो ने मुझे बताया था कि स्वामी दीक्षानन्द जी लाखो रुपया की सम्पत्ति बनाई है और साहिबाबाद म एक बडी आलीशान कोठी मे रहते है। इसलिए मेरी जिज्ञासा थी कि स्वय जाकर देखू। अत गत मास एक परिचित सज्जन को साथ लेकर मैं साहिबाबाद गया।

—समपण शोध सस्थान तक पहुँचने मे काफी समय लग गया। कई लोगो से पूछने पर हम लोग ग न्तव्य स्थान पर पहुँच गए। स्वामी दीक्षानन्द जी अपनी प्रसन्न मुद्रा मे अपना सब काम छोडकर हम बड प्रेम से मिले। मुख्य द्वार से अन्दर जात ही सवप्रथम भव्य यज्ञशाला को देखकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई। यज्ञशाला मे शुद्धता एव सुप्रबन्ध से प्रतीत होता था कि किसी प्राचीन काल के किसी वैदिक विद्वान की पूजा स्थली है।

—अन्दर जाने पर स्वामी जी के साहित्य की अलमारिया और पुस्तको के रखरखाव की सुन्दर शैली देखकर बडा प्रभावित हुआ।

—समय थोडा होने के कारण स्वामी जी ने शोध सस्थान द्वारा जो अनुपम साहित्य प्रकाशित किया है उसे देखकर यह अनुमान करना कठिन है कि किसी एक व्यक्ति के परिश्रम एव साधना का इतना वृहद् परिणाम हो सकता है। महर्षि दयानन्द द्वारा अनुमोदित वैदिक सिद्धातो की उन कठिन समस्याओ का जो श्रम साध्य एव योग्यतापूर्ण समाधान किया गया है वह आने वाली पीढी के वैदिक विद्वानो के लिये मार्ग दर्शन करेगा।

—गुरू पूजा एव पितृऋण चुकाने का जो अनोखा मार्ग स्वामी दीक्षानन्द जी ने अपनाया है वह आर्य समाज के लिये बड ही गौरव की बात है। आश्रम की व्यवस्था प्रबन्ध एव सफाई देखकर प्रत्येक आगन्तुक का प्रभावित होना स्वाभाविक है।

समर्पण शोध सस्थान ने इतने बडे और छोटे ग्रन्थो को प्रकाशित करने

(शेष पृष्ठ ६ पर)

संहिता भाग ही वेद अथवा ब्राह्मण भी ?

—देवेन्द्र कुमार रावत माटा बावा कोटा (राजस्थान)

यह सुनिश्चित है कि प्राचीन काल मे वेद और ब्राह्मण दोनो को पृथक-पृथक माना जाता था। ब्राह्मणग्रन्थ वेदो के व्याख्यान ग्रन्थ थे। परन्तु काल के प्रभाव से ब्राह्मणग्रन्थ भी 'वेद' शब्द के अन्तर्गत ही गिने जाने लगे। शताब्दिया व्यतीत हो गई परन्तु किसी सस्कृत या मनीषी ने इधर ध्यान न दिया। आधुनिक काल मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस तथ्य पर गहराई से विचार कर अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया और उद्घोषणा की कि केवल सहिता भाग ही वेद है। ब्राह्मणग्रन्थो मे वेदो का व्याख्यान है। वेदो के अभिप्राय को समझने के लिए ब्राह्मणग्रन्थो का महत्व अपरिहार्य है।

वेदो के भाष्य के सम्बन्ध मे सायण का नाम सर्वाधिक लोकप्रिय है पौर्वात्य एव पाश्चात्य विद्वानो द्वारा वेदो की जितनी व्याख्या आजतक हुई है उन सब मे सायणभाष्य से ही मार्ग निदेशन प्राप्त किया गया है। अत. सायण और स्वामी दयानन्द के वेद सम्बन्धी मन्तव्यो को प्रस्तुत करते हुए उक्त बिन्दु पर विचार विमर्श कर रहे है।

आचार्य सायण और दयानन्द दोनो ने ही वेद को ईश्वरीय ज्ञान के रूप मे स्वीकार किया है। सायण ने अपनी ऋग्वेदभाष्यभूमिका मे लिखा है—

तस्मात सहस्रशीर्षा पुरुष इत्युक्तात्परमेश्वराज्जमीयात पुजनीयात् सर्वहुत. सर्वं हूयमानात् यद्यपीन्द्रादयस्तत्र तत्र हूयन्ते तथापि परमेश्वरस्यैवेन्द्रादिरुपेणाव स्थानादविरोध।

यस्य नि श्वसितम् वेदा यो वेदेभ्योऽखिलम् जगत्।
निर्ममे तमहवन्दे विद्यातीर्थमहेश्वरम्।

स्वामी दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका मे लिखा—

तस्माद यज्ञात् सच्चिदानन्दादिलक्षणात्पूर्णात् सर्वहुतात् सर्वपूज्यात् सर्वोपास्यात् सर्वशक्तिमत परब्रह्मण ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेदश्च चत्वारो वेदास्तनैव प्रकाशिता इतिवेद्यम्।

उक्त दोना कथनो से यह सिद्ध है कि दोना मनीषी वेद को ईश्वर से प्रादुर्भूत स्वीकार करते है इसी प्रकार वेद के नित्यत्व, अनित्यत्व पौरषेयत्व, अपौरुषेयत्व तथा स्वत प्रमाण एव परः प्रमाणादि सिद्धान्तो मे सहमति है। परन्तु वेद के लक्षण के विषय दोनो विद्वान पृथक मार्ग के पथिक है। सायण के अनुसार वेद का लक्षण है—मन्त्रब्राह्मणात्मकस्य तावदद्दुष्टलक्षणम्। अतएव आपस्तबो यज्ञपरिभाषायामेवाह। मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्।

अर्थात मन्त्र भाग एव ब्राह्मण भाग दोनो की वेद सज्ञा है। परन्तु स्वामी दयानन्द का दृष्टिकोण बिल्कुल पृथक है—

अथ कोऽयम् वेदोनाम ? मन्त्र भाग सहिते त्याह।

अर्थात मन्त्रभाग अर्थात ऋग यजु० साम० और अथर्व० सहिताऐ ही वेद है। ब्राह्मणग्रन्थ वेद नही हो सकते क्योकि ब्राह्मणो की रचना ऋषियो द्वारा हुई है। जबकि वेद की उत्पत्ति के लिए ईश्वर अनिवार्य शर्त है।

वस्तुत. यह विवाद आपस्तम्ब यज्ञ परिभाषा मे 'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्' इस वचन के कारण उत्पन्न हुआ। परन्तु हम विचार करे यदि वेद' शब्द से मन्त्र और ब्राह्मणग्रन्थ दोनो का ग्रहण करते हैं तो दोनो की उत्पत्ति एक साथ माननी होगी। क्योकि वेद नामक राशि ईश्वर से एक समय मे उत्पन्न हुई पृथक पृथक नही परन्तु हम देखते हैं कि वेद राशि सृष्टि के आदि मे ईश्वर से प्रादुर्भूत हुई। जब कि ब्राह्मणग्रन्थो की रचना बाद मे ऋषियो द्वारा हुई। अत ब्राह्मणग्रन्थो का सृष्टि के आदि मे उत्पन्न न होने तथा ईश्वर द्वारा प्रादुर्भूत न होने से ब्राह्मण 'वेद सज्ञा' के अधिकारी नही हैं।

अब 'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्' इस यज्ञ परिभाषा पर विचार करते हैं—वेदो मे यज्ञ को महाकर्म स्वीकार किया गया है विद्वानो ने यज्ञ मे होने वाली प्रक्रियाओ के साथ विभिन्न मन्त्रो को जोडा। यह कार्य विनियोग कहलाया। विद्वानो ने यज्ञ कार्य की सिद्धि के लिए तीन प्रकार के विज्ञान का प्रणयन किया (१) मन्त्र (२) कल्प (३) ब्राह्मण। मन्त्र—वेदो के मन्त्र होते हैं। कल्प का कार्य मन्त्रो का अर्थ जानकर यज्ञ कार्यों में उनका विनियोग करना था। ब्राह्मण का कार्य यज्ञ के गुणो पर प्रकाश डालकर लोगो के मन मे यज्ञ के प्रति श्रद्धा पैदा करना था। इस प्रकार इन शब्दो के पारिभाषिक अर्थ हमारे सामने प्रगट होते हैं।

इस प्रकार यदि ब्राह्मण को ब्राह्मण को ब्राह्मणग्रन्थ न मानकर एक विज्ञान के रूप मे स्वीकार करे तो यज्ञ परिभाषा की सगति लग जाती है तथा वेद की दोनो शर्तें (१) वेद की ईश्वर से उत्पत्ति (२) मन्त्र एव ब्राह्मण की एक साथ उत्पत्ति का निर्वाह हो जाता है क्योकि मन्त्र मे ब्राह्मण विज्ञान शब्द और अर्थ की भाति अपृथक है।

सायण के पूर्ववर्ती विद्वान कुमारिल, शबर, तथा मेधातिथि आदि विद्वानो ने भी मन्त्र एव ब्राह्मण दोनो को वेद माना है। परन्तु प्रतीत होता कि इन विद्वानो ने भी इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार नही किया। स्वय ब्राह्मणग्रन्थकार ब्राह्मणो को वेद नही मानते। शतपथ ब्राह्मण मे एक स्थान पर कहा है—तप से तीन वेद उत्पन्न हुए। अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद, सूर्य से सामवेद यहां पर ब्राह्मण शब्द का नाम तक नही।

'तेभ्यस्तप्तेभ्यस्त्रयवेदा अजायन्ताग्ने ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेद सूर्यात सामवेद.'—शतपथ

'सोऽग्नेरेवर्चोऽसृजत् वायोर्यजूष्यादित्यात सामानि। स एताम् त्रयी विद्यामभ्यतपत्' ।—कौषीतकी ब्राह्मण ६।१०

'अग्नेऋचो वायोर्यजूंषि सामान्यादित्यात्' छान्दोग्य उपनिषद

प्रजापतिर्वा इमान त्रीन् वेदानसृजत्। तेभ्यो भूर्भुव स्वरित्यक्षरन् भूरित्यृग्भ्योऽक्षरत्। भुवरिति यजुर्भ्योऽक्षरत्। स्वरिति सामभ्योऽक्षरत षड्विंशब्राह्मण ६।५।७

अग्निवायु रविभ्यस्तु त्रय ब्रह्म सनातनम्।
दुदोह यज्ञ सिद्धयर्थमृग्यजु सामलक्षणम्। मनुस्मृति १।२३

इन सभी वाक्यो मे ऋक् यजु साम को ही वेद कहा है। ब्राह्मण शब्द का तो उल्लेख तक नही अत सहिता ही वेद है।

शतपथ ब्राह्मण मे 'इषेत्वोर्जेत्वति०' यह वेद मन्त्र देकर उसकी व्याख्या की है परन्तु सहिताओ मे कही भी ब्राह्मण वचन उद्धृत नही किया गया है अत ब्राह्मण वेद व्याख्यान है वद नही।

सहिता भाग के लक्षण ब्राह्मण भाग पर नही घटते। जैसे वैदिक सूक्तो की प्रत्येक ऋचा मे ऋषि, देवता, छन्द, स्वर, अनुक्रमणी तथा द्रष्टा ऋषि का वर्णन है। इसके विपरीत ब्राह्मणग्रन्थो मे, ऋषि, देवता छन्द, स्वर, तथा अनुक्रमणी का अभाव है। अत ब्राह्मणग्रन्थ वेद नही हो सकते।

प्रत्येक मन्त्र उदात्त, अनुदात्त और स्वरित स्वरो से युक्त है परन्तु ब्राह्मणग्रन्थो मे य चिन्ह नही है।

वैदिक मन्त्रो की रक्षा के लिए पाठ, पदपाठ, जटपाठ, घनपाठ आदि का विधान है ब्राह्मणग्रन्थो मे इसका भी अभाव है।

प्रत्येक वेद का ब्राह्मणग्रन्थ है जैसे—

ऋग्वेद का ऐतरेय ब्राह्मण
यजु० का शतपथ ब्राह्मण
अथर्व० का—गोपथ ब्राह्मण

अत ब्राह्मण वेद से पृथक सिद्ध होते हैं।

ब्राह्मणग्रन्थ कारो के नाम उपलब्ध होते हैं परन्तु वेदो कर्ता का नाम उपलब्ध नही है। मन्त्रो के द्रष्टा ऋषियो के नाम अवश्य हैं।

वेद अर्थात सहिता भाग मे अनित्य इतिहास नही है परन्तु ब्राह्मणग्रन्थो मे अनित्य इतिहास है। शतपथ—विदेह के राजा जनक का श्वेतकेतु आदि के साथ जाने का उल्लेख है। इसी ब्राह्मण मे अरुणि, सत्ययज्ञ, पौलुषि, जाबाल, बुडिल, कैकेय एव अश्वपति राजा का वर्णन है। इसी मे वाजसनेय, बुक, वार्ष्ण, प्रिय जानश्रुतेय और बुडिल, आश्वतराश्वि का वर्णन है।

उपरोक्त प्रमाणो से वेद एव ब्राह्मण के मध्य अन्तर स्पष्टतया प्रतीत होता है। यदि ब्राह्मण भी वेद होते तो सहिता भागों के लक्षण ब्राह्मणग्रन्थो पर भी घटते। परन्तु ऐसा नहीं है। ब्राह्मणग्रन्थ वेद नहीं हैं। इस प्रकार स्वामी दयानन्द का यह कथन कि सहिता भाग ही वेद है, पूर्ण सत्य है।

संस्कृत के साथ हो संस्कृति की भी उपेक्षा

नन्द कौशिक मधुराज

नई शिक्षा नीति मे संस्कृत का दर्जा घटाए जाने पर काफी हल्ला मचाया जा चुका है। अखबारो और पत्र पत्रिकाओ में लेख और टिप्पणिया छप चुकी हैं। संस्कृत का महत्व समझने वालो की तरफ से सरकार को ज्ञापन दिए जा चुके हैं। सार्वजनिक मन्चो से चेतावनी भरे भाषण हो चुके हैं। नेताओं को संस्कृत के साथ हुए इस अन्याय की जानकारी देने के लिए सभी सभंव उपाय किए जा चुके हैं। लेकिन ऐसा लगता है कि सरकार और उनके शिक्षातन्त्र के कान पर जू तक नही रेंगी। अगले महीने माध्यमिक कक्षाओ का जो नया सिलेबस आने वाला है उसमे संस्कृत उपेक्षणीय ही रहेगी।

भारत मे संस्कृत का महत्व समझाना पड़े यह अपने आप मे आश्चर्य की बात है। ऐसा शायद ही कोई भारतीय हो जिसने जाने या अनजाने संस्कृत से आमना-सामना न किया हो। हमारी शिक्षा नीति बनाने वाले नेताओं और शिक्षा शास्त्रियो के जीवन मे अनेक ऐसे मौके आए होगे जब संस्कृत के बिना उनका काम मुश्किल से चला होगा। हमारे राष्ट्रगान से लगा कर नीति वाक्यों तक सब तरफ संस्कृत फैली हुई है। संस्कृत की उपेक्षा न व्यक्तिगत जीवन मे की जा सकती है न सामाजिक जीवन मे और न राजनैतिक जीवन मे। इसके बाद भी शिक्षा नीति बनाने वाले लोग संस्कृत की उपेक्षा करने मे सफल हो पा रहे हैं तो इसके दो ही कारण हो सकते हैं। एक प्रमाद और दूसरा हमारी संस्कृति की वाहक इस भाषा के खिलाफ निहित स्वार्थी तत्वा का कोई षडयन्त्र।

आमतौर पर माना जाता है कि आधुनिक प्रौद्योगिकी की चकाचौंध के कारण हमारे नेताओ को अंग्रेजी के अलावा कुछ दिखाई नही देता। लेकिन आधुनिकी प्रौद्योगिकी के सबसे बड़े हिमायतियो ने ही कम्प्यूटर की भाषा तैयार करने के लिए संस्कृत के पंडितो को याद किया है। दुनिया के बड़े-बड़े विशेषज्ञ मानने लगे है कि पाणिनी के सूत्र ऐसी सीधी और सरल भाषा तैयार करने मे चमत्कारिक महत्व रखते हैं जो कम्प्यूटर की कार्यक्षमता बढा सकें और नए-नए क्षेत्र मे उसकी गति का विस्तार कर सके। यह समझ मे नही आता कि यही लोग संस्कृत के महत्व को शिक्षा के क्षेत्र मे कैसे भूल जाते हैं।

कई लोगो को संस्कृत की इस उपेक्षा मे विधर्मी षडयन्त्र भी नजर आ रहा है। हमारी आज की सरकार पर कई तरह के विदेशी और विधर्मी प्रभाव हैं। ये निहित स्वार्थी तत्व देश के लोगो को अपनी संस्कृति से काटने के लिए संस्कृत की उपेक्षा करवाना चाहते हैं। लगता है इसका सरकार और शिक्षा तन्त्र पर असर बढता जा रहा है और वे अपने उद्देश्यो मे सफल होते चले जा रहे हैं। संस्कृत की उपेक्षा का फैसला उन दिनो लिया गया था जब नरसिंहराव मानव संसाधन मन्त्रालय संभाले हुए थे। नरसिंहराव को तो भारतीय संस्कृति का हिमायती माना जाता है। अगर उन्ही के काल मे संस्कृत की उपेक्षा का फैसला लिया जा सकता है तो यह समझ मे आ जाना चाहिए कि संस्कृत विरोधी निहित स्वार्थी तत्व कितना असर बना चुके है।

शिक्षा तन्त्र जिन लोगो के हाथो मे है उन्होने शिक्षा को मात्र एक भाषा समझने की भूल की है। संस्कृत उस अर्थ मे भाषा नही है जिस अर्थ मे हिन्दी या बांग्ला या तमिल हैं। संस्कृत किसी जाति या क्षेत्र के लोगो के दैनिक व्यवहार की भाषा नही है। उसकी स्थिति और महत्व दूसरी तरह का है। वह हमारी संस्कृति की वाहक भाषा है। जब तक हमारे समाज मे संस्कृत जानने समझने वाले पर्याप्त लोग नही होगे हमे अपनी मान्यताएं और अपने बुनियादी विचार समझ मे नही आयेंगे। व्यवहार में कभी कभी शब्दो और संज्ञाओ का अर्थ बिगड़ जाता है। इसे ठीक से समझने और शुद्ध बनाए रखने के लिए उस भाषा की परम्परा का ज्ञान होना जरूरी होता है। इस अर्थ मे देश की सभी भाषाओं की परम्परा संस्कृत से जुड़ी हुई है। हम कोई भी भारतीय भाषा ठीक से नहीं समझ सकते जब तक उसकी इस परम्परा को न पहचानते हो।

सबसे बडी बात तो यह है कि हर भारतीय अपने जीवन मे अनेक तरह के संस्कारो को निभाने के लिए कर्तव्य से बंधा हुआ है। इन संस्कारो का ज्ञान तो संस्कृत के बिना नहीं हो सकता। शिशु के पैदा होने से लेकर मनुष्य के मृत्यु के जितने भी संस्कार होते हैं वे संस्कृत भाषा से चाहे जुड़े हो या न जुड़े हो लेकिन संस्कृत परम्परा से जरूर जुड़े होगे। आमतौर पर तो संस्कारो की भाषा संस्कृत ही है पर जहा संस्कृत नही है वहा भी दूसरी किसी भारतीय भाषा मे किए जाने वाले संस्कार संस्कृत का ही संस्कार लिए हुए होते हैं। संस्कृत की शिक्षा को चौपट करके हम अपने संस्कारो की कैसे रक्षा कर सकते हैं ?

हर भारतीय अपने जीवन मे जिस धर्म और नैतिक मन्यताओ से संचालित होता है उनका ज्ञान हमे संस्कृत के सहारे ही मिल सकता है। अगर हम संस्कृत न जानते हो तो हमे यह ही समझ मे नही आएगा कि सत्य का अर्थ क्या है। फिर हम सत्य ही परमेश्वर है जैसे विधि वाक्यो को कैसे समझ पायेंगे ? सरकार तमसो मा ज्योतिर्गमय जैसे विधि वाक्यो का इस्तेमाल करती है। क्या इनका अर्थ बिना संस्कृत को समझे जाना जा सकता है ? और तो और अहिंसा और शांति जैसे शब्दो का गहरा अर्थ भी हमे बिना संस्कृत के ज्ञान के नही मिल सकता। यह सोचना गलत है कि संस्कृत की शिक्षा ऊंची कक्षाओं मे दी जा सकती है और स्कूलो मे संस्कृत पढने की कोई जरूरत नही है। संस्कृत तो हमारे आनुष्ठानिक जीवन मे महत्व रखती है इसलिए बच्चो मे उसका अभ्यास डालना जरूरी है। संस्कृत भाषा के गुण और उच्चारण का तब तक ज्ञान नही हो सकता जब तक बचपन से ही इस भाषा का परिचय कराना न लगा जाए।

इसलिए संस्कृत का महत्व कम करके हम समाज की सांस्कृतिक धारा को ही अवरुद्ध किए दे रहे है। हमे अभी यह समझ मे नही आ रहा कि संस्कृत हमारे नैतिक जीवन की रीढ है। इस रीढ को तोड कर हम हिंसा होड और लोभ की प्रवृत्तियो को ही बढा सकते हैं। किसी भी समाज को चलाने के लिए भौतिक साधनो से अधिक नैतिक बल की जरूरत होती है। जब भौतिक साधन बढ रहे हो तब तो नैतिक बल की और भी ज्यादा जरूरत होती है क्योंकि नैतिक संबल के बिना हम अपनी भौतिक को कल्याणकारी नही बना पाते। बल्कि वह उन्नति हम मे राग द्वेष और मोह ईर्ष्या जैसी प्रवृत्तिया पैदा करने लगती है। अतः अभी समय है अगर हमारी सरकार व शिक्षा शास्त्री समय पर चेत जाए तो वे इस बहुत बड़ी भूल को सुधार कर संस्कृत को उसकी जगह दिलवा सकते है।

विज्ञान को वेदों की कसौटी पर खरा उतरना होगा

—जवाहरलाल कौल—

आदिकाल से ही भारत मे वेदो को पूर्णज्ञान का स्रोत माना जाता रहा है। लेकिन आधुनिक विज्ञान और पश्चिमी सभ्यता के उदय के बाद इस मान्यता को शंका की नजर से देखा जाने लगा है। यह कैसे मुमकिन है कि बिना किसी वैज्ञानिक जानकारी, विधियो और उपकरणो के वैदिक ऋषि भौतिक विश्व के ऐसे नियमो और सिद्धातो का विकास कर सकते थे जिनकी जानकारी पिछले कई सौ सालो मे ही लाखो वैज्ञानिको के अथक प्रयास और हजारो प्रयोगशालाओ के जरिए मिल पाई है? इसलिए सबसे पहले इस सवाल का जवाब देना होगा कि क्या उपकरणो और प्रयोगशालाओं के बिना आधी और अति प्राचीन प्रक्रियाओ और सिद्धातो की जानकारी मिल सकती है?

प्रोफेसर बेवरिज का कहना है कि 'विज्ञान मे आज जटिल उपकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। लेकिन कभी-कभी मैं सोचता हूं कि हम इस तथ्य को भूल जाते हैं कि अनुसधान के लिये सबसे कुशल यन्त्र तो व्यक्ति का मन ही होना चाहिए।' वास्तव मे वैदिक ऋषियो ने प्रकृति की जिस मूल अवस्था का वर्णन किया है वहा तक तो स्थूल यन्त्र पहुंच ही नहीं सकते थे। स्थूल यन्त्र सिर्फ भौतिक अवस्था के वैषम्य को ही नाप सकते हैं, चाहे वह किसी प्रकार की रासायनिक प्रक्रिया हो या सूक्ष्म परमाणवीय प्रक्रिया। लेकिन साम्यावस्था को नापना यन्त्रो की क्षमता से बाहर है। इसलिये भारतीय दर्शन में मन, चित्त और चेतन का विशद अध्ययन किया गया है। गौतम के न्याय सूत्र का विषय ही मानव मन है। पश्चिम मे आधुनिक भौतिकी के सबसे बडे वैज्ञानिक आइस्टाइन ने भी ऊर्जा और पुंज का विलक्षण सिद्धात प्रयोगशाला के यन्त्रो मे परीक्षण करके नही विकसित किया था।

हाल ही भरतपुर मे आयोजित एक गोष्ठी मे कई भारतीय वैज्ञानिको ने इस बात पर विचार किया कि आधुनिक वैज्ञानिक जानकारी के प्रकाश मे वेदो मे व्याप्त ज्ञान कहा तक वैज्ञानिक कहा जा सकता है। भरतपुर के ही एक भौतिक शास्त्री डा० मनोहरलाल गुप्त और जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति डा० गोयल का मानना है कि भौतिक जगत को सचालित करने वाले सभी सिद्धात वेदो में हैं। डाक्टर गुप्त तो यहा तक दावा करते हैं कि इनमें ऐसे सिद्धात भी है जिनकी खोज अभी तक विज्ञान नहीं कर पाया है। लेकिन गोष्ठी मे किये गये दावों को समझने से पहले हमें भौतिक जगत के बारे मे भारतीय ऋषियो और वैदिक दार्शनिकों की मूल मान्यताओ को समझना होगा। इसके लिए डा० गोयल के ही एक भाषण का सहारा लिया जा सकता है जो उन्होंने अप्रैल १९७७ मे श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय के भारतीय अनुसधान संस्थान में दिया था।

साख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति पच तत्वो से बनती है, जो साम्यावस्था और अविशेष स्थिति मे तीन गुणो सत्व, रजस और तमस के सतुलन मे होते हैं। रजस ऊर्जा, तमस पुंज और सत्व शुद्ध और जागृत विवेक होता है। ऊर्जा मे परिमाण (क्वाटम) और विस्तार होता है और उसका काम बाधाओ को हटाना और क्रिया करना होता है। इसलिए ऊर्जा गतिज (काइनटिक) होती है। इस ब्रह्मांड की सृष्टि से पहले गुणो मे एक सतुलन की अवस्था बनी हुई थी, जिसे साख्य प्रकृति कहता है। बाद मे जब प्रकृति में असतुलन पैदा हुआ तो विभिन्न परिमाणो मे गुणो के मिश्रण से विविधता आ गई। गुणो के लगातार मिलने और अलग होने से परिमित और भौतिक जगत का विकास हुआ।

डाक्टर वी एन सील के शब्दों में, "भौतिक जगत की विकास प्रक्रिया मे साम्यावस्था से वैषम्य, अविशेष से विशेष, अयुतसिद्ध (असम्यक) से युतसिद्ध मे आने का क्रम है। विकास क्रम अंशो से पूर्ण की यात्रा नही है न पूर्ण से अंशो की यात्रा है, बल्कि कम वैषम्य से अधिक वैषम्य की ओर विकास है।" न्याय वैशेषिक दर्शन के अनुसार भौतिक तत्व परमाणुओ से बना है, जिसका पुंज, भार सख्या, गति आदि गुण होते हैं। सृष्टि के आरम्भ मे परमाणु स्वतन्त्र अवस्था मे नही रह सकते। दो, तीन, चार, पाच अणु मिलकर बडे कण (त्रियाणुक-चतुराणुक) बनाते हैं। परमाणुओ के भीतर लगातार एक कंपन रहता है।

भौतिक जगत की इस मूल अवधारणा को नजर मे रखकर गोष्ठी मे व्यक्त डाक्टर गोयल का यह विचार है कि वैदिक ऋषि शब्द को जगत का कारक मानते थे। इस सिलसिले मे उन्होंने न्यूजर्सी के इस्टीट्यूट आफ एडवास स्टडी के वैज्ञानिक एडवर्ड विट्टन के 'स्ट्रिगवाद' का जिक्र किया है। जिसमे ब्रह्मांड की रचना प्रसिद्ध बिलियार्ड गेंद सिद्धात पर आधारित नही है। बल्कि कंपनयुक्त तन्तुओ की तरह है जिनमे अब तक मान्य चार बलो— गुरुत्वाकर्षण, विद्युत-चुम्बकीय, परमाणु को जोडने वाले 'सुदृढ बल' और विघटन के 'कमजोर बल' के अलावा भी कई बल लिपटे रहते हैं। दरअसल धागो के इस सिद्धात का महत्व उनके कम्पन मे है। कंपन वास्तव मे अनन्त ऊर्जा का प्रतीक है। परमाणु के भीतर भी कंपन होता रहता है जिसकी वजह से ही वे विशेष व्यवहार करते हैं।

वैदिक ऋषियों ने जब शब्द (ध्वनि) को मूल कारक माना तो उनका अर्थ भी कंपन से था, क्योंकि ध्वनि कंपन ही है। शब्द को सही रूप मे साधने से ही 'शब्दातीत' को जाना जा सकता है। शब्द या वाक् की चार अवस्थाओ परा, पश्यंति, मध्यमा और वैखरी से गुजरने पर ही शुद्ध शब्द या ऊर्जा को पाया जा सकता है। शब्द क्योंकि ऊर्जा का ही रूप है इसलिये इस बात से हैरान होने की आवश्यकता नही कि वैदिक ऋषियो के लिये शब्द या मन्त्रोच्चारण से अग्नि प्रज्वलित करना सभव था।

इस सिलसिले मे डाक्टर गोयल की यह भी मान्यता है कि वैदिक ऋषियो को इस बात की पूरी जानकारी थी कि ऊर्जा पुंज में बदल सकती है और पुंज को ऊर्जा में परिवर्तित किया जा सकता है। यही आइंस्टाइन के प्रसिद्ध सूत्र का सार है। प्रमाण स्वरूप डाक्टर गोयल ने ऋग्वेद के इस मन्त्र को प्रस्तुत किया—'अदितेर्दक्षो अजायत दक्षाद्वदिति परि' (दक्ष अदिति से पैदा हुआ था और अदिति दक्ष की सन्तान था)। यानि ऊर्जा और पुंज एक दूसरे मे परिवर्तनीय हैं। अदिति के आठ पुत्र ऊर्जा के प्रतीक हैं जो आधुनिक विज्ञान के मूल कणो के समान ही हैं।

डाक्टर मनोहरलाल गुप्त का विषय ब्रह्मांड की उत्पत्ति था। उनका मानना है कि वेदो ने सिर्फ सौरमडल की कहानी नहीं कही है बल्कि हमारी और दूसरी आकाश गगाओ की पर्याप्त जानकारी दी है। वेदो ने सूर्य के ग्रहो और उनके चन्द्रमाओ के जन्म के बारे मे ही नहीं कहा है, बल्कि प्रत्येक चन्द्रमा की विवेचना भी की है। वेदो के अनुसार चन्द्रमा ग्रहों के पुत्र हैं या दत्तक पुत्र हैं। क्योंकि कुछ चन्द्रमा सीधे ग्रहो से निकले लेकिन कुछ को इन ग्रहो ने पडोसी ग्रहो से अपनी परिधि में खींच लिया। इसीलिये वे असली

पुत्र नहीं हैं। विज्ञान पूरी तरह से यह नहीं बता पाया है कि ग्रहो के कौन से चन्द्रमा उनसे जन्मे हैं और किन्हे अपने प्रबल आकर्षण से अन्तरिक्ष से अपनी ओर खींच लिया। हमारे चन्द्रमा को वेदो ने पृथ्वी पुत्र माना है जिसका पिता सूर्य है। सूर्य के आकर्षण से पृथ्वी का एक बडा भाग टूट कर अन्तरिक्ष मे चला गया। यह घटना उस समय हुई होगी जब पृथ्वी गर्म थी और उसका ठोस कवच पतला था। चन्द्रमा अपनी वर्तमान परिधि मे दो चरणो मे गया। पहले चरण मे वह पृथ्वी के कुछ हजार मील ऊपर चक्कर लगाने लगा। लेकिन बाद मे उसमे अचानक विस्फोट हुआ जिससे वह और दूर जाकर स्थिर हो गया। डाक्टर गुप्त के अनुसार आरम्भिक अवस्था मे चन्द्रमा भी अर्ध तरल और पोली अवस्था मे रहा होगा जिसके अन्दर भारी मात्रा में गैसें भरी थी। इन्ही गैसो के अचानक आग आने की वजह से जेट प्रक्रिया से वह एक राकेट की तरह पहली परिधि से भाग कर और दूर जा पहुँचा।

डाक्टर गुप्त का अन्दाजा है कि चन्द्रमा पृथ्वी से उसी स्थान से अलग हुआ जहा आज मेक्सिको की खाडी है इस धारणा के पीछे प्रसिद्ध बरमूडा त्रिकोण का विचित्र व्यवहार है। इस खाडी में सदियो से जहाजो और विमानो का सन्तुलन बिगडता रहा है। यह मुमकिन है कि पृथ्वी का एक बडा हिस्सा कटकर अलग हो गया तो पृथ्वी का मध्य भाग (कोर) खुल गया हो और अन्दर का धातु मिश्रित लावा बाहर फूट कर आया हो। यही धातु भंडार मैक्सिको खाडी मे अपने असाधारण चुम्बकीय आकर्षण से जहाजो का सतुलन बिगडता है। यह अनुमान सही हो या न हो लेकिन डाक्टर गुप्त का यह कथन महत्वपूर्ण है कि पृथ्वी के चन्द्रमा से अलग होने से जो झटका लगा उसी से पृथ्वी अपनी धुरी पर साढे तेईस अश झुक गई। उनका कहना है कि वेदो मे माना गया है कि पृथ्वी तब सूर्य की परिक्रमा तीन सौ साठ दिनो मे पूरी करती थी। इसलिए साफ है कि इस झुकाव के बाद ही उसकी गति धीमी हुई और अब ३६५ दिनो मे एक चक्कर लगा रही है।

उनके अनुसार वेद मानते हैं कि हमारे चन्द्रमा और दूसरे चन्द्रमाओ के साथ ही हजारो और पिंड भी निकले जिन्हे हम उल्काएं कहते हैं। वैदिक ऋषि ऐसे पिंडो को चन्द्रमा नही मानते जिनमे कुछ विशेष गुण न हो। चन्द्रमा मे तीन तरह की गतिया होनी चाहिए। वह ग्रह की परिक्रमा करे ग्रह के साथ सूर्य की परिक्रमा करे और अपनी धुरी पर भी घूमे। जिसमे ये तीन गुण न हो वह आकार मे बडा होने पर भी वैदिक ऋषियो के अनुसार 'चन्द्रमा' है।

आधुनिक विज्ञान और वैदिक ज्ञान मे कुछ भेद भी हैं। उदाहरण के लिये आधुनिक वैज्ञानिक मानते हैं कि आकाश गगाए निरन्तर बाहर की ओर भाग रही हैं। इसका प्रमाण यह दिया जा रहा है कि आकाश गगा के सूर्यों से जो प्रकाश हम तक पहुँचता है वह लाल रंग का होता है। जो प्रकाश पिंड उल्टी दिशा मे तेज गति से भाग रहा हो उससे निकलने वाली किरणो का रंग बदल सकता है। लेकिन वैदिक धारणा है कि आकाश गगा का केन्द्र भाग नहीं रहा है स्थिर है। वहा से अगर सामान्य प्रकाश हम तक नहीं पहुँचता तो सिर्फ इसलिए कि हमारे सौर मडल और आकाश गगा के केन्द्र के बीच आयनीकृत गैसो के घने पुञ्ज हैं। जो प्रकाश उनसे छन कर आता है उसमे विकार पैदा होते हैं।

इसी प्रकार कुछ मतभेद आकाश गगा मे तारा समूहो के बारे में हैं। वेदो के अनुसार इन तारा समूहो की सख्या १०४ है जबकि अभी तक विज्ञान सिर्फ ८८ समूहो का पता लगा पाया है।

पृथ्वी पर जीवन के विकास और मानव की उत्पत्ति के बारे में भी वैदिक मान्यता उपलब्ध वैज्ञानिक जानकारी से भिन्न है। अब तक मनुष्य के जो जीवाश्म मिले हैं वे पचास-साठ हजार साल से ज्यादा पुराने नहीं हैं। लेकिन अगर पूर्व मानव को भी गिनें तो भी दो तीन लाख साल से अधिक नही होते। लेकिन मनुस्मृति ने जीवन चक्र को चार करोड वर्ष से भी ज्यादा बताया है। मनुस्मृति की गणना कहा तक सही है यह कहना मुश्किल है लेकिन इतने बडे अन्तर का तार्किक समाधान वेद प्रस्तुत करते हैं। वेदो के अनुसार सूर्य की भी अपनी ऋतुएं होती हैं। सूर्य की ग्रीष्म ऋतु मे उसका ताप सामान्य से काफी बढ़ जाता है। अनुमान लगाया गया है कि सूर्य के इस मौसम मे पृथ्वी पर सामान्य तापमान ८५ अंश सेंटीग्रेड तक पहुँच सकता है ऐसी अवस्था मे पृथ्वी पर किसी प्रकार का जीवन संभव नहीं है। सूर्य के शरद ऋतु मे तापमान सामान्य से काफी नीचे गिर जाता है जिससे पृथ्वी भी काफी ठंडी हो जाती है। इसलिए पृथ्वी पर जीवन की सभावना सूर्य की अन्य दो ऋतुओ मे ही हो सकती है। इन्हें सौर बसन्त जीवन प्रक्रिया की शुरुआत है। जहा तक सूर्य का सम्बन्ध है वेदो के अनुसार उसकी आयु सौ वर्ष है। यानि सौ बार ऋतुओ का चक्र पूरा होने पर ही सूर्य का अवसान होता है। इस बीच ग्रहो और अन्य आकाशी पिंडों मे भयकर बिखराव आता रहता है लेकिन अपनी प्रतीकात्मक भाषा मे वेद कहते हैं कि ब्रह्मा ने सूर्य को वरदान दिया था कि मैं तुम्हे सौ वर्ष के लिये इस विघ्न से मुक्त करता हू। इस मान्यता के अनुसार सूर्य चौबीस अरब वर्ष तक ऊर्जा का स्रोत बना रहेगा।

डा० मनोहर लाल गुप्त की मान्यता है कि वेदो का विषय इस ब्रह्माण्ड की सृष्टि का वर्णन है और क्योंकि ब्रह्माण्ड की सृष्टि और सचालन मे आधुनिक विज्ञान के सभी मूल सिद्धात निहित हैं इसलिये अनेक स्थानों पर वेदो मे इन सिद्धातो की ओर साफ तौर पर इशारा किया गया है। जिन वैज्ञानिक सिद्धातो को आज हम कुछ पश्चिमी वैज्ञानिको के नाम के साथ जानते हैं वे हजारो सालो से हम भारतीयो के इस महान ग्रन्थ मे मौजूद हैं। इसलिये जरूरी है कि हम इस खजाने का विधिवत अध्ययन करें। मगर उसके लिये पहले हमे इस हीन ग्रन्थि से छुटकारा पाना होगा कि हमारे पूर्वज किसी भी क्षेत्र मे आधुनिक पाश्चात्य विज्ञान से उन्नीस थे।

(१९ ९ ८८ जनसत्ता से साभार)

हवन-यज्ञ और विज्ञान

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

८ या ६ वर्ष पहले की बात है, आर्यसमाज मेरठ सदर मे मेरा वेद प्रवचन कार्यक्रम चल रहा था। एक दिन अपने रात्री कालीन प्रवचन मे मैंने यज्ञ के द्वारा वायु-शोधन होकर रोग निवारक तथा स्वास्थ्य-वर्द्धक पर्यावरण बन जाने की बात कही। अगले दिन रात्री के प्रवचन से पूर्व एक सज्जन मेरे पास आये और गत रात्री के प्रवचन की पर्यावरण के शुद्ध होने वाली चर्चा की ओर मेरा ध्यान दिलाते हुए बोले "यज्ञ से दुर्गन्धी का नाश नही होता।' मैंने कहा "होता है।" वह तीव्र होकर बोले "नही होता।" मैंने पुन कहा "होता है श्रीमान् जी।" तीसरी बार वह और भी कडकर बोले "नही होता।"

अब की बार जब मैंने उन्हें पहला वाला ही उत्तर दिया किन्तु स्वर मेरा कुछ कडा हो चुका था तो वह बोले कि "सुगन्धि तो फैलती है किन्तु दुर्गन्धि का नाश नही होता।" तब मैंने पूछा कि "दुर्गन्धी का नाश क्यो नही होता।" तो वह बोले "दुर्गन्धि और सुगन्धि के परमाणु अलग-अलग होते हैं। अत हवन से सुगन्धि का प्रसारण हो जाता है किन्तु क्योकि दुर्गन्धि के परमाणु तो आकाश मे बने ही रहते है, इस कारण से दुर्गन्धि नष्ट नही हो पाती।

इतने वार्तालाप के पश्चात् मैंने उनसे परिचय पूछा तो उन्होने यह बतलाया कि "मैं यही मेरठ कालिज मे कैमिस्ट्री पढाता था।" बाद मे मुझ जानकारी हुई कि वह डी०एन० डिग्री कालिज के कैमिस्ट्री के अवकाश प्राप्त प्रवक्ता श्री गोयल जी है। मैने कहा 'अच्छा तो आप मैकाले के शिकार है।" इस पर उनका मुखमण्डल तमतमा गया किन्तु वह कुछ कह नही सके।

जब उन्होने अपने को कैमिस्ट्री का प्रोफेसर बता दिया तो मैने भी उनसे उसी स्तर पर वार्तालाप करना पसन्द किया और उनसे कैमिस्ट्री का ही यह प्रश्न पूछ लिया कि "परमाणु द्रव्य है या गुण?" वह इस प्रश्न का कोई उत्तर नही दे सके। मैंने उनसे दूसरा फिर यही प्रश्न किया 'प्रोफेसर साहब बताइये तो परमाणु द्रव्य है अच्छा यह बताइये कि "गन्ध द्रव्य है अथवा गुण" वह तब भी चुप रहे। इस प्रश्न को भी पूर्व प्रश्न की भांति मैंने फिर दोहराया किन्तु उन्होने फिर भी नही दिया।

जब मै प्रश्न उनसे कर रहा था तब आर्यसमाज के मन्त्री श्री शान्तिप्रकाश जी मित्तल वहा आ चुके थे और बडी रुचि ले रहे थे, मेरे इन प्रश्नो मे तथा साथ ही कभी मेरे और कभी प्रोफेसर गोयल जी के मुखमण्डल की ओर देख लेते थे। उन्हे निरुत्तर देखकर मुझे सूझा कि उदाहरण से अपनी बात इनके सम्मुख रखनी चाहिये। यह विचार कर मैंने उनसे निवेदन किया कि "मेरी बात समझने मे आपको परेशानी हुई है इसलिये अब मैं एक उदाहरण देता हूँ किन्तु उससे पहले यह जानना चाहूँगा कि आपने गणित तो पढा ही होगा। उन्होने इसे स्वीकार किया तो फिर मैंने यह पूछा कि "गणित के अन्तर्गत सम्पत्ति के बटवारे के प्रश्न भी हल किये ही होग' उन्होने यह भी स्वीकारा। इसके पश्चात् मैने यह प्रश्न किया कि 'सम्पत्ति के बटवारे के प्रश्न को हल करते समय प्रश्न हल करने वाले के पास क्या सचमुच कोई सम्पत्ति होती है?' तब उन्होने नकार करते हुए यह कहा कि "केवल कल्पना कर ली जाती है कि मान लिया सम्पत्ति एक है।' तब लगते हाथो यह भी पूछ लिया कि फिर इनका प्रश्न ठीक ठीक हल हो जाता है?' वह बोले हा यदि हल करने वाले ने भाग-गुणा आदि ठीक-ठीक लगा लिया होता है तो उत्तर बिल्कुल ठीक आता है।"

अब मैंने उन्हे अपनी बात समझाने के लिये उनसे उनके क्षेत्र के ही भोजन का उदाहरण देते हुए कहा "कल्पना कीजिये कि आपने कल उडद की धुली दाल और बासमती के चावल खाये थे। दाल शुद्ध गाय के घृत से हीग व जीरे का छौंक लगाकर तैयार की गयी थी। चावलो पर ऊपर से भी गोघृत लगा दिया गया था, फुलका कासे के कटोरे मे पिघले हुए गोघृत मे डुबा था और साथ मे एक कटोरी मे बूरा रखा था तथा उसमे भी गोघृत पडा हुआ था। यह सब पदार्थ सुगन्धित ही थे, दुर्गन्धित तो इनमे से कोई पदार्थ था ही नहीं।' उन्होंने स्वीकार किया कि "सब सुगन्धित थे, कोई दुर्गन्धित नही था।" साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि "दुर्गन्धित होते तो खाते ही क्यो?" मैंने पूछा आज प्रात काल जब शौचालय मे गये, पेट से सुगन्धि निकली या दुर्गन्धि? कल आपने खाये थे सुगन्धित पदार्थ आज प्रात मलद्वार से निकला दुर्गन्धियुक्त मल। इसका स्पष्ट ही यह अर्थ है कि परमाणु न सुगन्धि के होते है और न दुर्गन्धि के। वह तो सुगन्धि और दुर्गन्धि को परिस्थिति के अनुसार कहिये अथवा अवसर के अनुसार ससर्ग से ग्रहण कर लेते हैं और परमाणु द्रव्य है तथा गन्ध गुण है, नैमित्तिक गुण—जो निमित्त से, कारण बन जाने या उपस्थित हो जाने पर ग्रहण और पृथक् किया जाता है, स्वाभाविक गुण होता अर्थात् परमाणु सुगन्धि और दुर्गन्धि के हुआ करते तो अपने उस स्वाभाविक गुण को छोड नही सकते थे।

तीन-चार दिन पश्चात् प्रो० गोयल एक अन्य प्रोफेसर को साथ लेकर आये और बताया कि "आप आजकल मेरे स्थान पर नियुक्त है। अभी पिछले तीन वर्ष जर्मन रहकर आये है। वहा अनुसन्धानात्मक कार्य हेतु गये थे। आपके अनुसन्धान का विषय सूर्य की किरणो की आकाश मण्डल मे गति तथा आकाश-मण्डल और भूमण्डल पर उनका प्रभाव है।" फिर कहने लगे कि 'मैंने आपके विषय मे इनसे चर्चा की तो यह आपसे वार्तालाप करने आये है।" सामान्य वार्तालाप के पश्चात् मैंने नवागन्तुक महोदय से कहा "पूछिये, आप क्या पूछना चाहते है? मै जानता होऊ गा तो अवश्य बताऊ गा।' प्रसग मे मैंने उनसे उनके अनुसन्धान का आधार पूछा तो उन्होने अथर्ववेद बताया।

उन्होने मुझसे दो प्रश्न किये। एक तो यह कि "क्या कही वेद मे हीलियम गैस का वर्णन है?" और दूसरा "विश्व की बढती हुई जनसख्या की दृष्टि से खाद्य समस्या का हल?" हीलियम गैस के विषय मे मैंने एक-वाक्य बताया—"शकमय धूम सूर्यमारात्" यह श्वेत धूम्र सूर्य को चारो ओर से घेरे हुए हैं। उन्होने इसे विज्ञान सम्मत बताया और तुरन्त अपनी स्मृति-पजिका मे लिख लिया। मैंने कहा न तो "मुझे पूरा मन्त्र स्मरण है न इस मन्त्र का पता ही मेरी स्मृति मे है। यह परिश्रम आपको करना पडेगा, देख लीजिये, यथा सम्भव ऋग्वेद या अथर्ववेद मे मिलेगा।" उन्होने कहा "मैं खोज लू गा।'

उनके दूसरे प्रश्न के उत्तर मे मैंने उन्हे ऋग्वेद २।१३।६ तथा ऋग्वेद ३।४४।३ यह दो मन्त्र अपनी स्मृति-पजिका मे से लिखा दिये, जिनमे सूर्य मे खाद्य सामग्री का भण्डार बताया गया है तथा सूर्य, पृथिवी और अन्तरिक्ष के द्वारा उनकी उपलब्धि का वर्णन है। वह इस सबसे बडे सन्तुष्ट हुए और कहने लगे कि "मैं कभी-कभी कोई प्रश्न सामने आने पर आपसे पत्र-व्यवहार की अनुमति चाहूँगा।' मैंने कहा "मै सदैव इस सेवा के लिये तैयार रहूँगा किन्तु विज्ञान मेरा विषय नही है। हा, वेदाध्ययन करते समय कोई मन्त्र अथवा सूक्त इस प्रकार का सामने आता है तो उस पर स्व-शक्त्या मनन कर तत्सम्बन्धी अन्य सामग्री भी खोजकर उसे अपनी स्मृति-पजिका मे लिख लेता हूँ।

प्रिय पाठकगण! श्रीयुत प्रोफेसर गोयल जी जैसा मैंने अपने पूर्व लेख "यज्ञ और वृष्टि" मे लिखा है, सचमुच ऋषिवर दयानन्द के "सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोडने मे" के सूत्र के अनुयायी सिद्ध हुए किन्तु स्वनामधन्य विश्व प्रसिद्ध विज्ञानाचार्य श्री सत्यप्रकाश जी ऐसे नही हैं क्योकि वह सब बातो मे स्वामी दयानन्द के साथ नही बधे है।

आर्य जगत् के समाचार

वेदप्रचार दिवस धूमधाम के साथ सम्पन्न

नई दिल्ली।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा के तत्वावधान मे आयोजित वेद-प्रचार दिवस स्त्री आर्यसमाज पजाबी बाग के प्रागण मे श्रीमती सुशीला आनन्द की अध्यक्षता मे धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ और नवयुवतियो के अभिनन्दन के साथ प्रारम्भ हुआ। आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्रनगर की छात्राओ ने वेदपाठ और सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल की छात्राओ द्वारा ध्वजगीत प्रस्तुत किया गया। यजुर्वेद के ३१व अध्याय के मन्त्रो की प्रतियोगिताओ मे बहनो से बहुसख्या मे भाग लिया। इसमे प्रथम स्थान का कीर्तिमान माडल टाऊन की बहन सरस्वती जी ने प्राप्त किया। श्रीमती कमला कपूर पजाबी बाग ने द्वितीय स्थान और बहन विमला नारायणा विहार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सभी मन्त्र प्रतियोगिताओ मे भाग लेने वाली बहनो को वैदिक साहित्य से सम्मानित किया गया। निर्णायक श्रीमती ऊषा शास्त्री, शकुन्तला दीक्षित, प्रकाशवती बुग्गा और प्रेमशील महेन्द्रू ने बडी सूझबूझ से निर्णय दिया। विशेषतया शकुन्तला दीक्षित जी ने वेदपाठ करने की पद्धति के मौलिक सिद्धान्तो पर प्रकाश डाला और बहनो को प्रेरणा दी कि हमे वेदभाष्य भूमिका के आधार पर वेदपाठ करना और समझना चाहिए।

वेद सम्मेलन का उद्घाटन श्रीमती ऊषा शास्त्री ने किया और ओजस्वी शब्दो मे बहनो को प्रेरणा दी कि वेद सप्ताह मनाने का महत्व तभी सार्थक होगा। यदि वेद की मान्यताओ के अनुरुप हम आर्य बहने अपने घर परिवार और समाज का निर्माण करे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बिहार के भूकम्प एव बाढ पीडितो की सहायतार्थ सार्वदेशिक सभा द्वारा खोलेगये सहायता कोष की चर्चा की। इस पर माता सरला मेहताजी ने ११००)रुपये का चैक आर्य महिला सभा की ओर से भेंट किया। उनकी अपील पर दिल्ली की सभी आर्य महिला समाजों की ओर से बडी मात्रा मे धन एकत्र करने का अभियान प्रारम्भ किया गया। स्वामी जी ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि "दिल्ली की माताओ और बहिनो ने हर सकट के समय मे आर्य समाज की बडी सेवा की है।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा भूकम्प पीडितो एव बाढ पीडितो की सहायतार्थ प्रारम्भ किये गये अभियान के अन्तर्गत १७ सितम्बर १९८८ को प्रान्तीय आर्य महिला सभा ने ५५००) रुपये की राशि का चैक और भारी मात्रा मे वस्त्र सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती को उनके कार्यालय मे जाकर दिये गये। —प्रकाश आर्या महामन्त्रिणी

दिल्ली मे शतायु श्री काशीराम जी बावला का भव्य स्वागत व सम्मान

दिल्ली, १८ सितम्बर को आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता जिन्होने अपनी आयु के १०० वर्ष पूरे कर लिए हैं। श्री काशीराम जी बावला का आर्य समाज १५ हनुमान रोड नई दिल्ली में आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के तत्वावधान मे दिल्ली तथा पजाब के आर्य भाईयो तथा बहनो ने भव्य स्वागत किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की गत अन्तरग सभा मे निश्चय किया था कि लुधियाना निवासी श्री काशीराम बावला जी जो आजकल दिल्ली मे अपने सपुत्र के पास रह रहे है। जिन्होने अपने जीवन का बहुत सा भाग आर्य समाज की सेवा मे लगा दिया हैं। और जो अब १०० वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके है। उनका सभा की ओर से सम्मान किया जाये।

सम्मान समारोह की अध्यक्षता श्रद्धेय स्वामी आनन्दबोध जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने करनी थी परन्तु उन्हे अचानक कानपुर जाना पड गया। इसलिए उन्होने समारोह से पूर्व अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि श्री काशीराम जी बावला ने आर्य समाज की जो सेवा की है वह भुलाई नही जा सकती। आर्य समाज को ऐसे कार्यकर्ताओ की आवश्यकता है। अपनी ओर से एक फूलो की माला सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी को सोंपते हुए उन्होंने कहा कि श्री काशीराम जी बावला अभी नही आ सके हैं और मुझे हवाई जहाज से कानपुर जाना हैं इसलिए आप यह माला मेरी ओर से श्री बावला जी को भेंट कर दें।

श्री प० सत्यदेव भारद्वाज ने सम्मान समारोह की अध्यक्षता की इस अवसर पर अनेक आर्य नेता उपस्थित थे। सर्वश्री प० शिवकुमार शास्त्री, डा० धर्मपाल जी, सोमनाथ जी मरवाह एडवोकेट, नवनीतलाल जी एडवोकेट, प० सत्यदेव जी भारद्वाज, राममूर्ति जी कैला, सूर्यदेव जी, डा० शिवकुमार शास्त्री रामलाल मलिक। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा की महामन्त्री श्रीमती कमला आर्या ने एक शाल भेंट की और आर्य प्रतिनिधि के के कोषाध्यक्ष श्री हरबस लाल जी शर्मा ने एक प्रशस्ति पत्र तथा पीत वस्त्र भेंट किये। सभी वक्ताओ ने बावला की भूरि भूरि प्रशसा की। अन्त मे श्री बावला जी ने सभी आर्य बहनो भाइयो का आभार प्रकट किया।

आर्यसमाज शिवानन्द नगर हेतु दान की अपील

आर्य समाज शिवानन्द नगर गरीब मजदूरो व पिछड़े लोगो मे कार्य कर रहा है। प्रौढ शिक्षा, बालवाडी, वाचनालय, पुस्तकालय, हवनादि का कार्य बडे ही उत्साह पूर्वक हो रहा है।

समाज का अपना मन्दिर न होने से काफी कुछ कठिनाई उठानी पडती है। देश विदेश की सभी आर्य समाजो तथा आर्य भाई बहनो से विनम्र निवेदन है कि वे यथा श्रद्धा दान दे। जिससे समाज अपना भवन बना सके।

प्रधान, कमल प्रसाद आर्य
१४/३०६ शिवानन्द नगर, अमराईवाडी, अहमदाबाद २३

आर्यसमाज के संन्यासी

(पृष्ठ ३ का शेष)

का सराहनीय कार्य किया है। उस उच्चकोटि के साहित्य भण्डार का पूर्ण रूप से उल्लेख करना तो कठिन है।

परन्तु मैं उन निन्दक महानुभावो से निवेदन करना अपना कर्तव्य मानता हूँ जो बार-बार रट लगाकर कागज और कलम का दुरुपयोग करते है—आर्य समाज कुछ नही कर रहा है—। आर्य समाज मर रहा है। ऐसे लोग स्वय कुछ नही करते केवल काम करने वालो की झूठी आलोचना करके ही आर्य जनता का मनोबल गिराने मे अपनी सेवा की दुहाई देते रहते हैं।

वे लोग कभी साहिबाबाद जाकर देखें कि एक सन्यासी ने अपना जीवन लगाकर किस प्रकार अपने गुरुदेव पडित बुद्धदेव विद्यालकार की मूक भावनाओ को मूर्त रूप देकर आर्य जगत मे उच्चकोटि के वैदिक साहित्य का प्रकाशन कर महर्षि दयानन्द के सिद्धातो को विद्वतजनो तक ले जाने का कठिन मार्ग प्रशस्त किया है।

दि० २३ सितम्बर १९८८ —स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

आर्यसमाज की गतिविधियां

हरिजन दम्पत्तियों ने सवर्णों के साथ यज्ञ में आहुतियां दीं

बैतूल। आर्य समाज बैतूल द्वारा श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर हरिजन समान अधिकार दिवस मनाया गया। इस आयोजन मे हरिजन दम्पत्तियो ने जिले के सवर्णनागरिको तथा उच्चाधिकारियो के साथ एक ही आसन पर बैठकर यज्ञ की आहुतियां दी।

इस वैदिक कर्मकाण्ड को सम्पन्न कराते हुए जिला वेद प्रचार अधिष्ठाता विजय आर्य 'स्नेही' ने कहा कि इस यज्ञ का आयोजन मानव समाज मे भ्रष्टाचार तथा सामाजिक कुरीतियो का उन्मूलन करने तथा समता एव सद्भाव बढाने के लिये किया गया है। श्री स्नेही ने कहा कि अहिंसा एव चरित्र निर्माण के लिए यह बहुत आवश्यक है कि अश्लील साहित्य एव पोस्टरो, चलचित्रो एव दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले अश्लील विज्ञापनो से बचा जाये। उन्होने कहा कि मनुष्य अपने जन्म अथवा ऐश्वर्य से नही, अपितु अपने कर्मों से महान होता है। जिला सत्र न्यायाधीश श्री चावला ने आर्य समाज द्वारा किये गये इस आयोजन की सराहना की और आशा व्यक्त की कि आर्य समाज सामाजिक एकता की भावना को प्रोत्साहित करने वाले इस प्रकार के आयोजन आगे भी करता रहेगा। जिलाधीश श्री होशियार सिह ने भी इस आयोजन की प्रशंसा की और कहा कि इस प्रकार के आयोजनो से समाज की रूढियां नष्ट होंगी। इस आयोजन मे सूचना प्रकाशन अधिकारी श्री सुनील कमल तथा अन्य अधिकारियो ने भाग लिया। पुलिस अधीक्षक श्री पिप्पल, सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट श्री प्रदीप खरे, नेहरू युवक केन्द्र के श्री मगल प्रसाद अग्रवाल, श्री सन्तकुमार आर्य, श्री सत्यानन्द आसेरकर, श्री गर्ग आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये तथा यज्ञ मे आहुतियां दी।

कार्यक्रम का सचालन आर्य समाज के अध्यक्ष श्री सन्तकुमार आर्य ने किया तथा अध्यक्षता श्री ऋषि कुमार शास्त्री ने की तथा श्री शिवपाल सिंह राजपूत ने आभार प्रदर्शन किया।

नवीन आर्यसमाज की स्थापना

लखनऊ मे इन्दिरानगर तथा गोमतीनगर के मध्यवर्ती क्षेत्र मे कुछ लोगो के प्रयास से "आर्य समाज हरीनगर जुगौली' के नाम से एक नवीन आर्य समाज की स्थापना हुई है। इस समाज का पहला साधारण अधिवेशन प्रख्यात आर्य विद्वान डा० वेदप्रकाश की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ, जिसमे वर्ष १९८८-८९ के लिए सर्व-सम्मति से निम्नाकित कार्य समिति पदाधिकारी चुने गये—

प्रधान श्रीमती सरला आर्या, उपप्रधान श्री ओकार सहाय, मन्त्री शिवप्रसाद आर्य, उपमन्त्री श्री दिनेश कुमार तथा कु० प्रतिमा, कोषाध्यक्ष श्री दयाशकर पुस्तकाध्यक्ष श्री अमित वीर, प्रचारमन्त्री श्री राममूर्ति आर्य, निरीक्षक श्री अजयकुमार।

इसके साथ ही निम्नलिखित को अन्तरग सभा का सदस्य चुना गया—डा० वेदप्रकाश, श्री विजय कुमार, श्रीमती अमरासी देवी, श्रीमती बीना श्रीवास्तव एव श्रीमती मन्जूसिह। —मन्त्री

आर्य समाज बागपत में समता दिवस व वेद प्रचार सप्ताह सोल्लास सम्पन्न

बागपत। आर्य समाज बागपत मे ३ सितम्बर को जन्माष्टमी पर विशाल यज्ञ के साथ समता दिवस मनाया गया। आर्य नेता मा० मुरारी लाल आर्य वि० शास्त्री ने श्रीकृष्ण और वेदो पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। वेद प्रचार मे उन्होने बताया कि वेद अपौरुषेय हैं वेदो मे हिंसा नही है उनका लिखा आर्य साहित्य तथा श्री जयप्रकाश उपप्रधान के सौजन्य से स्वामी जी का आकर्षक कलैण्डर जनता मे वितरित किया। समतादिवस पर सहभोज का आयोजन रखा गया जिसमे सभी वर्ग के लोगो ने भाग लिया। समाज के प्रधान मा० महादेव त्यागी ने सभी का आभार व्यक्त किया। समारोह का सचालन समाज के मन्त्री मा० सत्यप्रकाश गौड ने किया।

—मन्त्री, आर्य समाज बागपत (मेरठ)

उर में वैदिक भाव संजोलो

नमस्ते जी, नमस्ते जी।
बडे प्रेम से मिलकर बोलो, करो नमस्ते जी॥
अभिवादन का शब्द यही है, महर्षि की बात सही है।
ज्ञान तुला पर इसको तोलो, करो नमस्ते जी॥
चारो वेदो मे यह आया, ऋषियो-मुनियो ने अपनाया।
अपने हृदय सभी टटोलो, करो नमस्ते जी॥
देखो तुम गीता-रामायण, सभी शास्त्रो मे है वर्णन।
उठो महाभारत को खोलो, करो नमस्ते जी॥
आपस मे जब मिलो परस्पर, करो नमस्ते हाथ जोडकर।
बातो मे मिश्री सी घोलो, करो नमस्ते जी॥
राम-कृष्ण ने इसको माना, भाव नमस्ते का था जाना।
वेदामृत से मन को धोलो, करो नमस्ते जी॥
जीवन श्रेष्ठ बनाना है तो, स्वर्ग घरो मे लाना है तो।
उर मे वैदिक भाव सजोलो, करो नमस्ते जी॥
ऋषियो की सतानो जागो, द्वेष-भाव घृणा को त्यागो।
निर्भय इधर-उधर मत डोलो, करो नमस्ते जी॥

—नन्दलाल 'निर्भय' भजनोपदेशक
ग्राम पो० बहीन, जिला फरीदाबाद

पता परिवर्तन की सूचना

आर्य जनता को सूचित किया जा रहा है कि मेरा पूर्व पता अब परिवर्तित हो गया है। स्थायी रूप से अब मेरे घर का पता निम्नाकित है। कृपया पत्र-व्यवहार करते समय ध्यान रखे।

डा० वेदप्रकाश आचार्य एम ए, पी एच डी 'वेद निकेतन'
२२, हरीनगर, पो० रामसागर मिश्रनगर, लखनऊ-२२६०१६
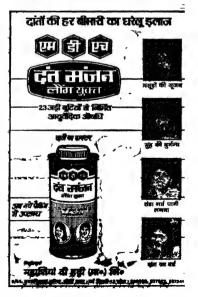
दक्षिण भारत में आर्य समाज द्वारा हरिजनों की सहायता

दक्षिण भारत मे आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री एम० नारायण स्वामी से प्राप्त सूचना के अनुसार जुलाई १९८८ मे 'कीलई कुडामनूर' ग्राम मे ४४ हरिजनो के घरो को लूटा और जलाया गया था। आठ व्यक्तियो की हत्या भी की गयी थी।

इस घटना के सन्दर्भ मे श्री एम० नारायण स्वामी ने दिनाक ९-९-८८ को रामानन्द जिले के कलेक्टर से मिलकर प्रभावित हरिजनो को राज्य सरकार की ओर से समुचित सहायता देने का अनुरोध किया। मृतक व्यक्तियो के व परिवारो को बीमा कम्पनी के द्वारा भी तीन-तीन हजार रुपया दिलाए जाने की माग की। कलेक्टर ने इसके लिये उपयुक्त कार्यवाही करने का वचन दिया। श्री नारायण स्वामी ने कलेक्टर को बताया कि यदि दुर्घटना से प्रभावित व्यक्तियो को तुरन्त सहायता न दी गयी तो ईसाई और मुस्लिम सम्प्रदायवादी स्थिति का नाजायज लाभ उठाकर उनका धर्म-परिवर्तन करने का प्रयत्न करेगे। ईसाई मिशनरी इसके लिये सक्रिय भी हो चुके है।

श्री नारायण स्वामी व्यक्तिगत रूप से इन हरिजनो से भी मिले और उन्हे आर्य समाज के द्वारा हर प्रकार की सहायता का आश्वासन दिया।

उत्सव

आर्य समाज बिजनौर वार्षिकोत्सव दिनाक, ८ से ११ सितम्बर, ८८ को बडी धूम-धाम से मनाया गया। ८ सितम्बर, ८८ को प्रात १० बजे विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। इस अवसर पर गोरक्षा सम्मेलन आर्य युवक सम्मेलन मद्य-निषेध सम्मेलन, जाति भेद-निवारक सम्मेलन पत्रकार सम्मेलन तथा राष्ट्रीय रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता सभा प्रधान प० इन्द्रराज जी ने की। इस अवसर पर महात्मा आर्य भिक्षु जी, वैदिक विद्वान डा० आनन्द सुमन, प्रो० दिनेशचन्द्र त्यागी, प० विद्यारत्न आर्य, डा ओमदत्त शास्त्री, श्री हरिश्चन्द्र आर्य प० रामचन्द्र शर्मा भजनोपदेशक, गीतकार, राकेश आर्य, योगेशचन्द्र आर्य के विचारो एव सगीत से जनता का ज्ञानवर्धन हुआ। सम्मेलन का सयोजन आर्योपप्रतिनिधि सभा बिजनौर गढवाल के प्रधान श्री जयनारायण अरुण ने किया।

वेदप्रचार सप्ताह

ऋग्वेदीय यज्ञ का आयोजन २७ अगस्त से ३ सितम्बर तक किया गया। २७-२८ अगस्त को वेद कथा का शुभारम्भ श्री यशपाल सुधाशु एम ए सम्पादक आर्य सन्देश ने किया।

इसके पश्चात २९ अगस्त से ३ सितम्बर तक प्रोफेसर रतनसिह एम ए ने वेद कथा प्रस्तुत की १० यजमानो ने भाग लिया।

—न्यादरमल गुप्ता, प्रधान

श्रावणी वेद सप्ताह सम्पन्न

प्रति वर्षानुरूप इस वर्ष, आर्य समाज मोगरगा (तहसील औसा, जिला लातूर) महाराष्ट्र मे (दिनाक २१ से २७ अगस्त तक) श्री इन्द्रजीत गिरी आर्य के पुरोहित्य मे श्रावणी वेद सप्ताह मनाया गया।

श्री सन्त रावसाहब सिन्दे के वक्तव्य म पूर्णाहुति समारोह सम्पन्न हुआ।

—व्यकटराव शामराव मुखे

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज २२ सैक्टर चण्डीगढ मे श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन) के पुनीत पर्व पर दिनाक २२ ८ ८८ से दिनाक २८-८-८८ रविवार तक वेद सप्ताह बडे उत्साह के साथ मनाया गया, जिसमे श्री निरञ्जनदेव जी वेदतीर्थ के बडे ओजस्वी व्याख्यान हुए। श्री दुमोदरदास जी आर्य तूफान, श्री श्रीराम आर्य भजनोपदेशक के सामयिक भजन हुए।

—नरेन्द्रनाथ तहसीलदार, उपप्रधान

आर्य समाज (रानी बाग) शकूर बस्ती दिल्ली का वार्षिक चुनाव

१—प्रधान श्री ओ३म् प्रकाश जी मनचन्दा
२—उपप्रधान श्री कुलभूषण जी आर्य,
३— ,, श्री प्रभुदयाल जी भाटिया,
४— ,, श्री अमरसिंह जी चौधरी,
५—मन्त्री श्री मूलशकर जी शास्त्री,
६—उपमन्त्री श्री जगमोहन जी गुप्ता
७—प्रचार मन्त्री श्री वीरेन्द्र जी आर्य,
८—कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण कुमार जी साहनी,
९—उपकोषाध्यक्ष श्री ओ३म् प्रकाश जी कालडा,
१०—भण्डारी श्री रामलाल जी आहूजा,
११—पुस्तकाध्यक्ष श्री मेहरचन्द जी सेतिया,
१२—यज्ञ सयोजक श्री वेदपाल जी चावला,
१३—प्रतिष्ठित सदस्य श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री,
१४— , श्री दसौन्दीराम जी आर्य,
१५—लेखा निरीक्षक श्री तेजभान जी मदान,

नोट —चुनाव सम्पन्न होने के पश्चात श्री ओमप्रकाश जी मनचन्दा ने बिहार भूकम्प पीडितो की सहायतार्थ २१००) रुपये का चैक सार्वदेशिक सभा के लिए सभा के उपमन्त्री श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री को भेंट किया।

—मूलशकर शास्त्री, मन्त्री

पंजि० नं० डी० (सी०) १७० सार्वदेशिक साप्ताहिक (२-१०-१९८८) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No U 93 Post in D.P.S.O.on 29-9-1988

आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी का निर्वाचन

आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी की आम सभा १८ जून ८८ को पंडित विष्णुदेव मैमोरियल सेकण्डरी स्कूल, लानका में हुई। वर्ष ८८ ८९ के लिये पदाधिकारियों का चुनाव निम्न प्रकार हुआ—

सरक्षक देवेन्द्र पथिक प्रधान श्री सुरेन्द्र प्रसाद उपप्रधान श्री राम बरन तथा श्री शारदानन्द महामन्त्री श्री भुवनदत्त उपमन्त्री श्री शशिकांत लखन हीरा प्रसाद और हरेन्द्र सुन्दर, कोषाध्यक्ष श्री जयनारायण जोखन तथा सहायक कोषाध्यक्ष-श्री हेमेश प्रताप और पुस्तकाध्यक्ष- श्री शान्ति सरोज और श्री कमलेश कुमार।

समता दिवस

आर्यसमाज खडकी (औरंगाबाद)

दि० ३ ६ १९८८ श्रावण पक्ष अष्टमी को आर्यसमाज के महर्षि दयानन्द भवन में सायं ४ बजे बृहद यज्ञ प्रारम्भ हुआ जिसमें श्री टिकाराम डोकराजे फुलवाड परिवार के सदस्यों को यज्ञोपवीत देकर बृहद यज्ञ श्री प० नरदेवजी स्नेही ने सम्पन्न करवाया।

श्री श्यामलाल आर्य ने योगेश्वर श्री कृष्ण जी के जीवन पर सुमधुर भजन प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के प्रमुख वक्ता गुरुकुल कांगडी के स्नातक मा० श्री भगत सिंह जी राजुरकर विद्यालंकार भूतपूर्व उप कुलपति मराठवाडा विद्यापीठ का स्वागत आर्यसमाज के उप मंत्री नरेन्द्र सिंह चौहान ने किया दयाराम बसैये ने कार्यक्रम संचालन किया। श्री राजुरकरजी ने श्रीमद् भगवत गीता व अछुतोद्धार के विषय में सविस्तर प्रवचन किया जिसमें अर्जुन ने युद्ध से पूर्व जो भय श्रीकृष्ण के सम्मुख रखा था की युद्ध के बाद राष्ट्र की क्या दशा होगी व वर्ण संकरता को बढावा मिलेगा व वर्णव्यवस्था बिगडगी वही दशा हम देख रहे है।

—मन्त्री आर्यसमाज

दश भर में गोरक्षा एवं गोपालन ... निकली १२ वर्षीय पदयात्री दल गांधी जयन्ती २ अक्टूबर १९८८ को ... गांव जिला-सगारेडी से आन्ध्र प्रदेश में प्रवेश कर रहा है। एक वर्ष से पदयात्री कर्नाटक राज्य में प्रचार कार्य कर रहे थे।

उल्लेखनीय है कि उक्त पदयात्रा १८ १ ८१ को उत्तर प्रदेश के देहरादून जिले से प्रारम्भ हुई। अब तक उत्तरप्रदेश हिमाचल प्रदेश, पंजाब हरियाणा दिल्ली, मध्यप्रदेश राजस्थान गुजरात महाराष्ट्र, गोवा कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु व पांडिचेरी राज्यों की पदयात्रा कर चुके हैं ४४ हजार कि मी. की पदयात्रा हो चुकी है। १९९२ तक यह पदयात्रा चलेगी।

इस पदयात्रा को उत्तर प्रदेश के पौढी गढवाल जिले के नवयुवक श्री प्रकाश चन्द जोशी एवं कर्नाटक के वयोवृद्ध श्री सिद्धराम गुरु जी ने शुरू किया है एक उत्तर के एक दक्षिण भाषा भी अलग, खान पान भी अलग फिर भी प्रभु कृपा से ७ वर्ष पूरे करके अब आठवें साल में चल रहे हैं। लक्ष्य एक ही गोहत्या बन्दी के लिए जनता जाग्रत हो इसके लिये हर पडाव पर स्कूल कालेज में सभा रात में जाहिर सभा एवं सिनेमा स्लाइड शो दिखाते हैं। स्लाइड शो में गोरक्षा का पूरा इतिहास बताते हैं।

—प्रकाशचन्द जोशी, संयोजक

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा ... शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८९] वर्ष २३ अङ्क ४१] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र आश्विन कृ० १४ स० २०४५ रविवार ९ अक्तूबर १९८८ | दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१ ...(.५ २५) एक प्रति ६० पैसे

फिजी की नई सरकार द्वारा हिन्दुओं को ईसाई बनाने का कुचक्र : लोकतंत्र की हत्या

भारत सरकार से हस्तक्षेप की मांग

दिल्ली ३ अक्तूबर।

कर्नल राबुका ने फिजी मे सैनिक आधार पर नई सरकार का गठन करके सविधान मे साम्प्रदायिक आधार पर अनेक परिवर्तन किए हैं जिनमे भारतीय मूल के बहुसख्यक जनसमुदाय को ईसाई बनाने का कुचक्र चलाया गया है।

उक्त घटना पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बताया कि फिजी मे भारतीय मूल के ६ लाख ५० हजार लोग रहते है जो फिजी की जनसख्या के अनुपात से बहुसख्यक हैं। किन्तु कर्नल राबुका ने नए सविधान मे साम्प्रदायिक विष घोलकर यह घोषणा की है कि फिजी मे यदि भारतीयो को रहना है तो ईसाई बनकर ही रहना होगा।

स्वामी जी ने कहा कि आज के युग मे तानाशाही नही चल सकती है, क्योकि भारतीय लोगो से ही फिजी का विकास हुआ है। उन्होने अपना खून-पसीना बहाकर वहा भूमि सुधार, खेती-बाडी, व्यापार तथा उद्योग धधो आदि सब पर अपनी कडी मेहनत की जबरदस्त छाप छोडी है।

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने फिजी के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सर्व प्रथम १५ मई १८७९ को लियोनी-दास नामक पानी के जहाज से अग्रेजी सरकार ने ४६३ भारतीय मजदूरो को फिजी मे उतारा था। उस समय यहा किसी प्रकार का विकास नही था और न सडक व खेती-बाडी का ही प्रबन्ध था। उद्योग धन्धो की तो चर्चा करना भी व्यर्थ है। इसके बाद भारी सख्या मे लोग वहा गए और उस छोटे से देश को समृद्धि की ऊचाइयो तक पहुचा दिया।

आर्य समाज ने फिजी म हिन्दी और भारतीय भाषाओ का जोरदार प्रचार किया। कई समाज मन्दिर व स्कूल खोले गए। हिन्दू जनता ने भी अपने अनेक मन्दिर व धर्म स्थानो की स्थापना की। कर्नल राबुका के सत्ता सभालने से पूर्व भी पिछली सरकार ने भारतीय लोगो को उनकी जनसख्या के आधार पर पूर्ण अधिकार दे रखे थे। किन्तु राबुका की सैनिक सरकार ने पदभार सम्भालने के पश्चात् सविधान मे आमूलचूल परिवर्तन करके भारतीय मूल के लोगो को सब प्रकार की सुविधाओ से वचित करने का षडयन्त्र रचा और बहुसख्यक भारतीय समुदायको ईसाई बनाने का आदेश दिया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने यह रहस्योद्घाटन किया कि फिजी की पूर्व सरकार मे ३ हजार फौजी जवान थे जो अब बढाकर ५ हजार कर दिए गए हैं। उन्होंने यह भी बताया कि पिछले दिनों कुछ हिन्दू युवको को लेकर वह प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी के निजी सलाहकार श्री आनन्द शर्मा से मिले थे।

स्वामी जी ने भारत सरकार से माग की है कि—

१—भारतीय मूल के निवासियो के धर्म की रक्षा के लिए फिजी सरकार पर तुरन्त दबाव डाला जावे। तथा,

२—फिजी के इस साम्प्रदायिक षडयन्त्र के मामले को सुरक्षा परिषद मे उठाया जाय।

श्री स्वामी जी ने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी व गृहमन्त्री श्री बूटासिह को भी विशेष पत्र लिखकर भारतीय मूल के लोगो के धर्म की रक्षा के लिए तुरन्त उचित कार्रवाई करने का अनुरोध किया है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री, सभा-मन्त्री

बिहार के भूकम्प व बाढ़ पीड़ित क्षेत्रो मे सार्वदेशिक सभा की ओर से अन्न-वस्त्र आदि वितरित करते हुए कार्य कर्त्ताओ के साथ श्री बालदिवाकर हस

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यसमाज द्वारा बाढ़ पीड़ितों की सेवा का कार्य प्रारम्भ

पीड़ित गाँवो में चावल, कपड़े, नमक, दियासलाई आदि बांटे गये

दरभगा —सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली ने श्री प्रमनाथ जी ग्रोवर की अध्यक्षता मे जो भूकम्प एव बाढ पीडित समिति स्थापित की थी उसने पीडित क्षत्रो मे सेवा काय प्रारम्भकर दिया है। स्वय सेवक चावल कपड नमक दियासलाई आदि आवश्यक वस्तुए पीडितो की आवश्यकता नुसार बाट रहे है। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री पण्डित बाल दिवाकर हस ने दिल्ली से पधार कर सेवा कार्यों मे विशेष गति प्रदान कर दी है डी ए वी स्कूल मीठापुर पटना से श्री कृष्ण प्रसाद दरभगा बाढ पीडित गावो मे सेवा करने के लिए श्री हस के साथ गये दरभगा क्षत्र मे बाढ का विशष प्रभाव हुआ है और वही गाव मे नावा द्वारा ही जाना सभव होता है। गनोली तेलिया पोखरा बस्ती मोनीहारी घोसी नयाटोला माहनपुर बनवा शोभि कोयलाघाट चमडदाना आदि अनेक गावो मे निधन (विधवा) वृद्धो और अपग बाढ एव भूकम्प पीडित लोगो मे सहायता बाटी गयी।

आर्य समाज डी ए वी सस्थान राची के डायरेक्टर एव डी ए वी पब्लिक स्कूल के अध्यापक मिस्टर लाल ने भी दरभगा पहुँचकर आर्य समाज लहेरिया सराय मे सहायता कैम्प खोलकर सेवा काय प्रारम्भ कर दिया है।

श्री हस ने दरभगा से मतीहारी जाने वाली सडक की दुदशा को देखकर आश्चय प्रकट करते हुए बिहार राज्य के लोक निर्माण विभाग की भत्सना की और कहा कि यह सडक अनेक स्थानो पर बाढ से कट गयी है बाढ का पानी भरा हुआ है अभी तक कटे हुए स्थानो पर सीमेट के बड बड पाइप डालकर सडक को चलने के लायक नही बनाया गया है।

इन कटावो मे भरे हुए पानी मे स गुजरने के समय महिलाओ को भारी कठिनाई हो रही है। पचासो ग्रामीण लोगो ने श्री हस का घेराव करके प्राथना की वह सरकार पर अपने प्रभाव का उपयोगकर तुरन्त कटे हुए स्थानो पर पाइप डालकर सडक को चलने योग्य बनाने की व्यवस्था करवाए।

दरभगा राहत केन्द्र से इस समय तक दस हजार पीडित व्यक्तियो को राहत पहुँचाई जा चुकी है।

आर्य समाज दरभगा का पूरा भवन भूकम्प स फट चुका है। नही कहा जा सकता है कि वह कब गिर पड तब भी वही से यह राहत सेवा कम्प अपना सेवाए पिछल बीस दिना से चालू किए हुए है।

आर्य समाज वदिक आश्रम अलीगढ की महिला एव पुरुष समाज ने भी श्र देवदत्त भा का सहायता राशि लेकर सेवाथ दरभगा भेजा है

मुगेर जमालपुर मे भी इसी तरह राहत काय सचालित कर दिया गया है उसक द्वारा अभी तक पन्द्रह सौ लोगो को सहायता दी जा चुकी है और सेवा काय शुरू है।

—अजय कुमार प्राचाय
दयानन्द विद्यालय मीठापुर पटना
सदस्य—भूकम्प पीडित सहायता शिविर प्रतिनिधि सभा द्वारा सचालित

हरियाणा में आर्य समाज की लहर

सफीदो मे आर्य सम्मेलन हजारो आर्य जनो ने नशाबन्दी की प्रतिज्ञा की

सफीदो १ अक्टूबर।

आर्य सन्यासियो तथा युवा ब्रह्मचारियो ने आज सफीदो मे प्रात कालीन महायज्ञ मे भाग लिया आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री मूलचन्द जन मन्त्री हरियाणा राज्य तथा स्वामी ज्ञान दबोध सरस्वती ने हरियाणा के आर्य जनो को सम्बोधित करत हुय कहा कि जब तक देश के युवक ऊचे आदश और ब्रह्मचय का पालन नही करगे। देश मे किसी प्रकार की उन्नति होना असम्भव है।

स्वामी जी ने हरियाणा मे शराब की खपत पर चिन्ता व्यक्त की और आर्य जनो को शराब बन्दी आन्दोलन तज करने की प्ररणा दी।

उन्होने फिजिकी रबुका सरकार द्वारा वहा के भारतीय मूल के निवासियो को ईसाई बनाने के कुचक्र की घोर निन्दा की। स्वामी जी ने कहा कि इस प्रश्न पर आर्य समाज को विश्वव्यापी अभियान चलाना पडगा।

बिहार भूकम्प एव बाढ सहायता हेतु दान

१ आर्य समाज मन्दिर महर्षि दयानन्द मार्ग कांकरिया रोड अहमदाबाद (गुजरात)	११४)
२—लक्ष्मीदेवी कृष्णलाल आर्य चैरीटेबल ट्रस्ट जी ४ निजामुद्दीन नई दिल्ली	५०)
३ नवीन गोयल ९१ स्टेट बक कालोनी जी टी रोड दिल्ली	९२)
४ आर्य समाज स्वरूप नगर कानपुर	१२००)
५ [illegible] स्टोर ४ /६७ स्वदेशी बाजार जनरलगंज, कानपुर	१०२)
६—मन्त्री आर्य समाज नानपारा बहराइच	५१)
७—छकरलाल देवतराम ना बणगढ़ मन्दसौर	५०)
८—छकरलाल २१ राजेन्द्र मलिक स्ट्रीट कलकत्ता	५०)
९—दाऊलाल द्वारा सग्रहित इलाहाबाद	४१)
१०—श्री मानसग सब भाई द्वारा सगृहित	४७)
११—सेवान द आमाश्रित तिलहर	६५)
१२—श्री के सी गुप्ता जयपुर	५१)
१३—श्री छोतरमल आर्य समाज गेसाली अलवर	५१)
१४—श्रीमती लीलावती पुत्राथ द धर्मार्थ ट्रस्ट	५०००)
प्रणपुर कांगडा (हि० प्र०)	५००)
१५—श्रीमती धनदेवी सोना [illegible] वानप्रस्थ आश्रम कुटी न० ९९१ ज्वालापुर	५००)
१६—आर्य समाज मवाना मरठ	५००)
१७—आर्य समाज जामनगर (गुजरात)	५००)
१८—आर्य समाज ननीताल	५००)
१९—आर्य समाज शिवाजी कालोनी रोहतक	१५००)
२०—मथुरादास नन्द हमीरपुर	१००)
२१—दयानन्द कन्या विद्यालय मीठापुर पटना	५८)
२२—आर्य समाज रानाबाग करबस्ता दिल्ली	१००)
२३—मगल [illegible]	९१)

(शेष पृष्ठ ११ पर)

दरभगा (बिहार) के भूकम्प व बाढ पीडित क्षेत्रो मे सहायता सामग्री वितरित करते हुए कार्यकर्ताओ के साथ श्री प० बालदिवाकर हस।

सम्पादकीय

गुणैर्विहीना: बहु जल्पयन्ति

अपने गुणो को न पहचानना यह भी एक महादुर्गुण है किसी को यह समझना ही न चाहिए कि ससार मे मैं ही विशेष व्यक्ति हू शेष सब बेकार हैं।

चित्त की दुर्बलता के कारण बहुत से लोग समर्थ होकर भी किसी प्रकार उत्तरदायित्व न लेकर अनुत्तरदायित्व पूर्ण अनर्गल बोलते रहते हैं। या आत्म-क्षुद्रता के भाव इतने आ चुके हैं। कि मैं तो बेकार हूँ मुझमे कोई विशेष गुण नही हैं। अपने मे या अपने समाज मे हीनता के तत्वो को देखना, मानव मन की दुर्बलता है।

शिथिल पड़े रहना, बड़े लोगो से द्वेष करना, दूसरो को दबाने की चेष्टा करना, धमकी, पर निन्दा करना, तथा दूसरा की दया पर जीवित रहना ये सब मनुष्य की आत्मक्षुद्रता के लक्षण है।

आज आर्य समाज के सामने नाना चुनौतिया हैं यदि हम उनसे बचकर चलेगे तो समाज जिन्दा नही रहेगा। अपनी दुर्बलताओ को छिपाने के लिए ही लोग या तो बचकर चलेंगे या दूसरा को किसी उपाय से दबाने की चेष्टा करेंगे। मानसिक दीनता का प्रभाव मानव के सम्पूर्ण व्यक्तित्व और व्यवहार पर पड़ता है। आर्य समाज इन सघर्षो से सदा ही जूझता रहा है और आज भी सघर्षरत हैं।

समय समय पर आत्मगौरव को नष्ट करने वाले तत्व उभरकर आते है उनका प्रतिरोध भी होता रहता है। जो व्यक्ति अपने को महान मानकर चलता है और अपनी दुर्बलताओ को नही देखता है वह व्यक्ति कायर और कुत्सित है। तीन-चार वर्षों में आर्यसमाज पजाब समस्या, सूखा राहत कार्य भूकम्प, बिहार पीड़ित समस्याओ ने समाज को अति दुर्बल किया है।

स्वय अपने को अयोग्य मानने वाले व्यक्ति को यह समझना चाहिये कि हमारे अन्दर ही सारे दोष नही है, कुछ विशेषताये भी हैं—ससार को मेरी आवश्यकता है मेरे पास भी गुणो की कुछ पूजी है।

जिस प्रकार मन का बहुत बहकना व बढ़ना बुरा है। उसी प्रकार मन का बहुत बढना भी बुरा है उसी प्रकार मन को छोटा करना व गिराना भी बुरा है।

समाज मे गिरावट कहीं बाहर से नही आती है हमारी दुर्बल तत्व ही हमारी गिरावट के कारण हैं।

आत्म क्षुद्रता के कारण-२

हम क्या हैं—और क्या करते हैं इसका भी मा दण्ड रखना चाहिए। हीन भावना के विपरीत कुछ करते है इसकी चर्चा न करना तथा प्रत्येक अवसर पर दूसरो से अपनी तुलना करना, अपने मुह से ही अयोग्य व क्षुद्र मानना भी अनुचित हैं। हमे यह भाव अन्यो से कम अपनो से अधिक सुनने को मिलते हैं।

आज ऐसे व्यक्तियो की कमी नही हैं जो दूसरी पर कीचड़ उछालते हैं पर स्वय को नही देखते हैं कुछ व्यावहारिक दोष है जिन पर विचार करना चाहिए। मैं पीछे लिख चुका हूँ कि मनुष्य की बहुत कुछ सफलता पने सद्व्यवहार पर और विफलता दुर्व्यवहार पर अवलम्ब रहती है। अच्छे-२ विद्वानो को भी कभी-कभी सभ्य समाज मे इसलिए यथोचित सम्मान नहीं मिलता है कि वे व्यवहार दक्ष नही होते हैं। जिनके कारण समाज में उनकी अप्रतिष्ठा होती है। अपने को बड़ा और विद्वान् कहना, अपने मुह मियाँ पिट्ठू बनना है।

हमारे समाज में कुछ दुर्मुख तत्व है जिनका केवल काम ही दूसरो को बुरा कहना ही है पर स्वय कोई करना भी नही है। जब हम यह कहते हैं कि तुम कुछ नहीं करते, तो देखो आप क्या कर रहे हो।

"[illegible] कही की भाव बखान" ऐसे चरित्र हीन व्यक्ति उन तत्वों के विपरीत कीचड़ उछाल रहे हैं जिनका अपना कोई चरित्र नही है सदाचारी को व्यभिचारी कहना, निर्लेप को चोर कहना यह हमारा स्वभाव बन गया है। कहने वाले कौन हैं ?

वही हैं जो स्वय चोर हैं, व्यभिचारी हैं, समाज मे भ्रष्ट भी हैं, दुर्मुख वही हैं। कुछ ऐसे तत्व भी है जो रगे सियार हैं, कपड़े रगकर आचार-विचारो से हीन हैं और पण्डित मान्य अपने को समझते है। ऐसे तत्वो को प्रतिकूल वादिता, मिथ्या दोषारोपण, तुच्छ बातों को लेकर उछल कूद मचाना और धमकियां देना, धृष्टता पूर्ण झूठ बोलना, सभ्य पुरुषो का अपमान करना दुर्मुखता के अन्तर्गत आते हैं। इन बातो से मनुष्य की दुर्जनता प्रकट होती है मिथ्या लाछन व निन्दा से बोलने वाले के भीतर की गन्दगी का पता चलता है।

कबीर ने ठीक ही कहा है—

"एक निन्दक सीस पर कोटि पाप का भार"

निन्दक स्वय महापापी जैसा लगता है। वह पापो का गट्ठर स्वय सिर पर लिए घूमता है। उनके द्वारा समाज मे दुर्भावना का प्रचार ही होता है। ऐसे तत्व ओछे तत्व अपने ओछेपन का विज्ञापन स्वय करते हैं—किसी परिवार के बुजुर्ग ने व्यभिचार किया, पाप छिपाए जब न छिपा, तो ब्याह कर लिया। एक पत्नि घर मे हैं फिर सदाचार कहा रहा। उसी जगह सदाचारी जी सदाचार का ढिंढोरा पीट रहे है अरे कीचड़ मत उछालो, अपने दोषो को दूर करने का प्रयास करो, फिर समाज के दोषो को देखो।

किसी के कर्कश वाक्यो को कहने से सुननें वालो को तो कष्ट होता हीं है परन्तु कहने वाले की कुटिलता का भी ज्ञान होता है।

मै समझता हू हीन भावना का फैलाना स्वयं को पापी बनाना है समाज मे इससे वातावरण दूषित होगा और परस्पर मे तनाव पैदा होगा। तभी हिंसा का जन्म क्रोध से पैदा होगा।

मनुष्य के व्यक्तित्व और व्यावहारिक जीवन पर इस प्रकार का बुरा प्रभाव पड़ता है ऐसे तत्व इनसे बचकर चले अन्यथा यह कहावत ऐसे तत्वों पर गठित होता है कि—गुणों से ही व्यक्ति अति अपलाप करते हैं।

दुखी प्राणियों की सेवा करना, सच्ची ईश्वर पूजा है

—स्वामी आनन्दबोध

नई दिल्ली, २८ सितम्बर। आज देश मे अनेक स्थानो पर भूकम्प और बाढ़ के कारण मनुष्य और पशु असहाय एव दुखी अवस्था मे है। उनकी सेवा करना हमारा परम धर्म है। बिहार के भूकम्प पीड़ितो के लिये आर्य समाज की ओर से सहायता शिविर लगाया हुआ है। जिसमे देशभर के लोगो ने धन, अन्न और वस्त्र भेजे है। अब भी हमे इनकी निरन्तर आवश्यकता है। प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली की बहनो ने मुझे यह धन-राशि और वस्त्र देकर प्राणी मात्र के कल्याण के लिये एक बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। भगवान कृष्ण ने गीता मे कहा कि न मुझे स्वर्ग की कामना है और न हो समृद्धि और ऐश्वर्य की। हमे तो दुखी और सतप्त प्राणियो की सहायता मे जुट जाना चाहिए।

यह उद्गार प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा आयोजित समारोह मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहे। इससे पूर्व वेद सम्मेलन मे श्रीमती सरला मेहता, श्री उषा शास्त्री, श्रीमती शशी प्रभा, श्रीमती कौशल्या मलिक और श्रीमती सुशीला आनन्द वेदो के आधार पर मानवता के कल्याण के कार्य करने की प्रेरणा दी।

प्रान्तीय महिला सभा के करोल बाग मण्डल की ओर से स्वामी जी महाराज को ५१००) रुपय की धनराशि तथा २५०० कपड़े भूकम्प एव बाढ पीड़िता की सहायनार्थ भेंट किये गये। श्रीमती प्रकाश आर्या ने सभी उपस्थित बहनो का सहयोग के लिये धन्यवाद किया।

शाहजहां ने न लाल किला बनवाया था न ताजमहल

बम्बई, २१ सितम्बर। अमेरिका के पुरातत्वेत्ता मारविन मिल्स ने कहा है कि दिल्ली का लालकिला मुगल बादशाह शाहजहां ने नहीं बनवाया था। वह उनके शासन में आने से पहले ही मौजूद था।

मिल्स ने अपनी यह धारणा लालकिले मे रंगमहल की लकड़ी के परीक्षण के आधार पर बताई है। उन्होंने कहा कि रंगमहल की लडकी को पिछले साल उन्होंने बीटा एनलिटिकल इनकारेरिटड, एलोरिड के पास कार्बन परीक्षण के लिए भेजा था। इस परीक्षण से पता चला है कि वह लडकी १४६० ई० के आसपास की है। उसमे ६० साल का समय पहले या बाद मे जोडा जा सकता है। कहा जाता है कि शाहजहा ने लालकिला १६४८ मे पूरा करवाया। परीक्षण के नतीजों के अनुसार इस समय मे दो सौ साल अन्तर आ जाता है।

परीक्षण के नतीजों की एक प्रति मिल्स ने इंस्टीट्यूट फार ओरिएंटल स्टडी थाने के निदेशक डा० विजय बेडकर को भेज दी है।

इससे पहले मिल्स आगरा के ताजमहल के लिए भी कह चुके हैं कि वह शाहजहां ने अपनी बेगम मुमताज याद मे नही बनवाया था बल्कि वह तो उनसे पहले ही वहां मौजूद था।।

मिल्स ने अपना यह फैसला चार साल पहले सुनाया था। अब जबकि लालकिले के बारे में भी उनकी यही धारणा पुख्ता होती जा रही है उन्होने भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण से अपील की है कि वह भारत स्थित तमाम मध्यकालीन ऐतिहासिक इमारतो को पुरातात्विक परीक्षण के लिए खोले।

लालकिले के शाहजहा से पहले का होने की जानकारी एक कलाचित्र से भी मिलती है यह चित्र आक्सफोर्ड की बेदलियन लाइब्रेरी मे रखा हुआ है। चित्र बादशाह सम्राट किले के दीवाने-ए-आम मे पर्शिया के राजदूत का स्वागत कर रहे हैं। यह चित्र १६२८ ई० का है। लालकिला मे पुरातत्व विभाग की ओर से जो सूचना पट लगाया गया है उसमे कहा गया है कि शाहजहा ने अपनी नई राजधानी शाहजहानाबाद मे यह किला अपने रहने के लिए बनवाया था। इसे पूरा बनने मे नौ साल (१५३६-१८४८ ई०) का समय लगा था।

इंस्टीट्यूट आफ ओरिएंटल स्टडी के निदेशक डा० विजय बेडकर का मानना है कि लालकिला पहले किसी हिन्दू राजा का राजमहल था। अपनी मान्यता के पक्ष मे किले के 'खास महल' में बने सूर्य के चिन्ह, उसमे लिखा 'ओम' कलश मे से निकलता हुआ कमल, हाथियों का स्वागत करती तलवारे आदि चिन्हों का हवाला देते है। उसके अनुसार ये सभी हिन्दू राजाओं के धार्मिक चिन्ह थे। इनसे कई खोजकर्ताओं की यह अवधारणा पुष्ट होती है कि लालकिला पहले किसी हिन्दू राजा का 'लालकोट' था।

लाहौर के लालकिला के शीशमहल मे से भगवान कृष्ण पर करीब १२ कलाचित्र मिले थे। अभी तक यह किला भी शाहजहां की ओर से ही बनवाया हुआ माना जाता है।

डा० बेडकर ने कहा कि शाहजहा की सभी ऐतिहासिक इमारतों का कार्बन और थर्मोल्यूमिनेसेस परीक्षण करवाया जाना चाहिए। इन परीक्षणो के नतीजों को विदेशों की दो ख्यातिप्राप्त प्रयोगशालाओं द्वारा पुष्टि कराई जानी चाहिए।

आठ सौ पाकिस्तानी लड़कियों को कोड़े लगेंगे

नई दिल्ली, २३ सितम्बर। पाकिस्तान के जेलखानों में लगभग आठ सौ ऐसी लड़कियां बन्द है जिन्हें बदकारी के आरोप में कैद की सजा बुनतने के लिये मजबूर किया जाएगा और इन्हें कोड़े लगाए जाएंगे। उनका अपराध यह है कि उन्होंने मां-बाप की इच्छा के विरुद्ध अपनी इच्छा से विवाह कर लिया है। मां-बाप ने उनके खिलाफ झूठे आरोपों के आधार पर पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई और पुलिस ने इन्हें हुदूद अध्यादेश के अधीन गिरफ्तार कर लिया। लाहौर में प्रकाशित होने वाले दैनिक नेशन ने लिखा है कि इलाके के मौलवियों ने इन लडकियों को दोषी ठहराया है। इसलिए इन्हे जेलों में बन्द कर दिया गया है। इसी दैनिक ने लिखा है कि जब ऐसी लडकियों को जेलों मे बन्द किया जाता है तो इन्हे आतंक का निशान बनाया जाता है और जेल के अधिकारी उन से बलात्कार भी करते हैं।

कराची मे सुल्तानाबाद की बस्ती में रहने वाले कबायलियों के एक जिरगे ने दो प्रेमियों को कबायली परम्परा का उल्लंघन करने पर गोलियों से उड़ा देने की सजा देने का फैसला किया है। यह कबायली पाकिस्तान सरकार के कानूनो को नही मानते। वे कबायली इलाके की परम्परा के अनुसार अपने जिरगों मे मुकदमों का फैसला करते है। हुआ यह कि एक युवक वकील आफरीदी एक लडकी नियाज मारु के साथ भाग गया। दोनों आपस मे प्रेम करते थे। इस घटना पर पुलिस मे रिपोर्ट दर्ज नही कराई गई बल्कि जिरगा बुलाया गया। फैसला किया गया कि लडके का पिता दोनों का पता करे। इसके बाद वह अपने बेटे को गोलियो का निशान बना दे और लड़की का पिता अपनी बेटी को मौत के घाट उतार दे। यदि लड़के का पिता दोनो को बरामद न कर सके तो उस पर चार लाख रुपये जुर्माना किया जाएगा। —जमना दास अख्तर

आतंकवादियो ने जिया को पंथ का रक्षक बताया

नई दिल्ली, २१ सितम्बर। पाकिस्तान समाचार पत्र दैनिक नवा-ए-वक्त (लाहौर) ने पजाब के आतंकवादियों का एक बयान प्रकाशित किया जिसमे जरनल जिया को पथ का रक्षक करार दिया गया है।

यह बयान खालिस्तान लिबरेशन फोर्स, बब्बर खालसा और खालिस्तान कमांडो फोर्स के स्वयंभू करनैलो गुरबन्द सिंह, सुखदेव सिंह और गुरतेज सिंह ने जारी किया है। उन्होंने कहा कि जरनल जिया ने सिख पंथ पर जो एहसान किया है, हम उसे भुला नहीं सकते। संसार भर के सिख स्वर्गीय जिया के लिये अपने दिलों में गहरी श्रद्धा रखते है। सिखों की निगाह में जनरल जिया की वही पोजीशन है जो हजरत बुधु शाह की है। उन्होंने अपने शासनकाल में पाकिस्तान मे तमाम गुरुद्वारो के दरवाजों सिखों के लिये खोल दिये थे। तीस वर्षों के बाद उन्होने इन तमाम गुरुद्वारो की सेवा सिखों के हवाले कर दी थी। इसलिये तमाम दुनिया के गुरुद्वारों में जनरल जिया की आत्मा आत्मा की शान्ति के लिये अखंडपाठ रखे गये और अरदास की गयी।

नवा-ए-वक्त ने लिखा है कि भाई जसबीर सिंह के साप्ताहिक आवाज-कौम लन्दन, देश परदेस और नावे के 'सिख जगत'-तथा अमेरिका से खालिस्तानियों के प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र 'वर्ल्ड सिख न्यूज' ने जरनल जिया के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने

सत्यार्थप्रकाश का महत्त्वपूर्ण दर्शन : अष्टम समुल्लास

श्री स्व० किशोरीलाल शास्त्री

मार्क्सवाद यह मानता है कि प्रकृति मे निरन्तर द्वन्द्व चलता रहता है। सतत् गतिशील है प्रकृति। कभी नितान्त विराम नही होता। विकास और ह्रास का क्रम सतत चालू है, परन्तु प्रकृत्ति के विकास मे गति, गति मे एक नियन्त्रण पाया जाता है तो यह बिना चेतन सत्ता की व्याप्ति के नहीं हो सकता। एक ही क्यारी मे लगा हुआ मिर्च का पौधा चरपराहट खीच रहा है नीबू का वृक्ष खटास, आम्र का मिठास खीच रहा है। ईख का पौधा मीठापन ले रहा है। गुलाब अपनी सुगन्ध और रग ले रहा है, गेदा अपना रग और सुगन्ध ले रहा है। पत्थर पडे है उनमे कोई गति नही, जल मे, वायु मे गति हो रही है, तीव्र और धीमी-धीमी। अत हम वैदिक लोग एक सर्वव्यापिनी ज्ञानमयी चेतना सत्ता को और मानते हैं। "जन्माद्यस्य यत' वेदान्त १/२ इस ससार को इस विकसित रूप मे लाने वाली, स्थिर रखने वाली और फिर विकीर्ण कर देने वाली और सत्ता ब्रह्म है, इस पर अधिक अध्ययन के लिए मार्क्सवाद और राम राज्य तथा वैदिक सम्पत्ति पुस्तके देखो।

सृष्टि रचना के विषय मे प्रश्न किया गया है कि वैदिक ग्रन्थो मे, सृष्टि रचना के विषय मे मतभेद है। तैत्तिरीयोपनिषद् मे आत्मा आकाशादि क्रम से, छादोग्य मे अग्न्यादि, ऐतरेय मे जलादि क्रम से सृष्टि हुई। वेदो मे कही पुरुष कही हिरण्यगर्भ आदि से मीमासा मे वैशेषिक मे काल, न्याय मे परमाणु, योग मे पुरुषार्थ, साख्य मे प्रकृति और वेदान्त ब्रह्म से सृष्टि मानी है। इस पर स्वामी जी लिखते है —

"इनमे सब सच्चे है, कोई झूठा नही। झूठा वह है जो विपरीत समझता है क्योकि परमेश्वर निमित्त और प्रकृति जगत् का उपादान कारण है। जब महा प्रलय होता है उसके पश्चात् आकाशादि क्रम अर्थात् जब आकाश और वायु का प्रलय नही होता और अग्न्यादि का होता है तो अग्न्यादि क्रम से और जब विद्युत् अग्न्यादि का भी नाश नही होता, तब जल क्रम से सृष्टि होती है अर्थात् जिस-जिस प्रलय मे जहा-जहा तक प्रलय होता है वहा से सृष्टि की उत्पत्ति होती है पुरुष और हिरण्यगर्भादि प्रथम समुल्लास मे लिख ही आये हैं वे सब नाम परमेश्वर के हैं। परन्तु विरोध उसको कहते हैं कि एक कार्य मे एक ही विषय पर विरुद्ध वाद होवे, छह शास्त्रो मे अविरोध देखो इस प्रकार है—

मीमासा मे ऐसा कोई भी कार्य जगत् मे नही होता कि जिसके करने मे कर्मचेष्टा न की जाये। वैशेषिक मे कर्म बिना किये कार्य बनेगा ही नहीं, न्याय मे उपादान कारण न होने से कुछ भी नही बन सकता, योग मे विद्या, ज्ञान, विचार न किया जाये तो भी नही बन सकता। साख्य मे तत्त्वो का मेल न होने से नही बन सकता और वेदान्त मे बनाने वाला न बनावे तो कोई भी पदार्थ उत्पन्न न हो सके। इसीलिये सृष्टि ६ कारणो से बनती है, उन छ कारणो मे एक-एक की व्याख्या छ शास्त्रो मे है।

यहा स्वामी जी ने दर्शनो मे मतैक्य प्रतिपादित किया है। स्वामी जी का प्रयत्न आर्य जनो म मतविरोध को दूर करना है। पण्डित लोग स्वामी जी की इस शुभेच्छा को न समझ सके और अब भी नही समझ रहे हैं। स्वामी जी पुराणो की भी समन्वयात्मक सगति लगाते किन्तु पुराणो मे ऐसा सम्भव न था और यह वैष्णवादि सम्प्रदाय स्वामी जी के विरोध में ही लगे रहे। वेद शास्त्र, ब्राह्मण-ग्रन्थ, सूत्रादि दर्शन, इन पर स्वामी जी की अपार आस्था थी। वे आर्ष साहित्य के महत्व के प्रतिपादक थे, आर्ष-ग्रन्थों का यथाशक्ति समर्थन करते रहे।

जो कोई कारण के बिना सृष्टि मानता है, वह कुछ भी नही जनता जब सृष्टि का समय आता है, तब परमात्मा उन परम सूक्ष्म पदार्थो को एकत्रित करता है। उनकी प्रथम अवस्था मे जो परम-सूक्ष्म प्रकृति रूप कारण से कुछ स्थूल होता है उसका नाम महतत्व और जो उससे कुछ स्थूल होता है उसका नाम अहकार और अहकार से भिन्न-भिन्न पाच सूक्ष्म भूत श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, प्राण, पाच ज्ञानेन्द्रिया वाक् हस्त, पाद उपस्थ और गुदा ये पाच कर्मेन्द्रिया है और ग्यारहवा मन कुछ स्थूल उत्पन्न होता है। जो उन पचतन्मात्राओ से अनेक स्थूलावस्थाओं को प्राप्त होते हुए क्रम से पाच स्थूल भूत जिनको हम प्रत्यक्ष देखते है, उत्पन्न होते है। उनसे नाना प्रकार की औषधिया वृक्ष आदि उनसे अन्न, अन्न से वीर्य, और वीर्य से शरीर होता है परन्तु आदि सृष्टि मैथुनी नही होती।"

स्वामी जी ने कितना सुन्दर बुद्धियुक्त सृष्टि क्रम लिखा है जो दर्शनो और उपनिषदो मे है, और जिसके मूल बीज वेदो मे है। आगे ऋषि दयानन्द ने शरीर रचना और सृष्टि रचना कलात्मक कृतियो का वर्णन करके सिद्धान्त निकाला है कि ऐसी विचित्र और उपयोगी रचना करने वाला कोई ज्ञान युक्त तत्त्व अवश्य होना चाहिये और वही हमारा ब्रह्म ह जैसा वेदान्त दर्शन मे कहा है —

रचनानुपपत्तेश्चानुमानम्।"

प्रकृति ही सृष्टिकर्त्री है यह अनुमान ठीक नही। क्योकि जड प्रकृति रचना नही कर सकती। मुसलमान, ईसाई भी ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता मानते हैं किन्तु उनके ग्रन्थो मे ऐसा दार्शनिक वर्णन सृष्टि रचना का नही मिलता, क्योकि पैलस्टायन और अरब दोनो देश दर्शन ज्ञान से रहित थे। ईसाई और मुसलमान विद्वानो ने दर्शन ज्ञान की शिक्षा यूनान से ली है।

ईसाई और मुसलमान दोनो ही मतो मे प्रकृति और जीव की मान्यता नही है। प्रकृति और जीव दोनो को ईश्वर ने बनाया है ऐसा ये लोग मानते है। काहे से बनाया? इस प्रश्न के उत्तर मे इनका कथन है—अभाव से, भाव रूप म ईश्वर इन्हे ले आया। अभाव से भाव कभी हो नही सकता। बाइबिल मे माना है कि आदि सृष्टि मे जल था और ईश्वर का आत्मा जलो पर डोलता था। जल भी ईश्वर ने अभाव से उत्पन्न किये। यह बाइबिल मे कही नही है। जल और ईश्वर का आत्मा थे। यह विचार बाइबिल मे वेद से गये है।

कुरान शरीफ मे भी "अललमाए अर्श, खुदा का पानियो पर था इसी मन्त्र के भाव है। अभाव से भाव हुआ या भाव से भाव' इस पर कुरान शरीफ को यह आयत विचारणीय है—

"व खल्कुल लाहो समावाते बल अर्जाबिल हाक्कि।
सू० ४५। आ० २२॥

खुदा ने जमीन आसमान की रचना हक से की, बस यह हक क्या था, हमारे दर्शनो के अनुसार था सत्'। 'सत्' और हक्' के अर्थ भी एक ही है और वह हक कुछ भी हो, कुछ या तो अवश्य। भाव रूप ही था, फिर अभाव से सृष्टि हुई ऐसा अर्थ क्यो माना जाय गम्भीर विचारो के बाद सब ही ईश्वर वादियो का मत एक हो सकता है। आगे एक प्रश्न है कि मनुष्य की सृष्टि प्रथम हुई वा पृथिव्यादि की? क्योकि पृथिव्यादि के बिना मनुष्य की स्थिति और पालन नही हो सकता। पृथिवी आदि से तात्पर्य है कि पृथिवी जल, जल जीव आदि के पश्चात्, मनुष्य उत्पन्न हुए। जल, नभचर, पशु पक्षी आदि के पश्चात् मानव सृष्टि हुई। (क्रमश)

कब और क्यों ? ऋषि दयानन्द का जन्म-दिन

—ह० आदित्यपाल सिंह आर्य

महर्षि दयानन्द के जन्म के सम्बन्ध मे उक्त लेख के विषय मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि यदि समस्त आर्य जगत् स्वामी दयानन्द का जन्म १२ फरवरी सन् १८२५ ई० (फाल्गुन कृष्णा १० सवत १८८१) जो तिथि सार्वदेशिक सभा की धमार्य सभा ने स्वीकृत की है। उसे स्वीकार कर तो हम उस दिन का राजकीय अवकाश घोषित कराने का प्रयत्न करे। सभा प्रधान ने इस सम्बन्ध में शीघ्र ही आय जगत् के विद्वानो की एक बैठक बुलाने का निर्णय किया है। जिससे महर्षि दयानन्द के जन्म पर समस्त आर्य जगत् का एक मत हो।

ऋषि दयानन्द को जन्म तिथि विषय मे निणय करते समय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की धर्माय सभा के सम्मुख २३ जुलाई १९६० को जो विभिन्न जन्म तिथिया आई थी वे इस प्रकार थी—

[अ] प० भीमसेन शास्त्री [कोटा] फाल्गुण कृष्ण १० शनिवार, सवत् १८८१ वि. [१२ फरवरी १८२५ ई]

[ब] प० इन्द्रदेव जी [पीलीभीत—फाल्गुण शुक्ल २, शनिवार, सवत् १८८१ वि० [१९ फरवरी १८२५ ई.]

[स] प० अखिलानन्द शर्मा कविरत्न—[भाद्रपद शुक्ल ६, गुरुवार सवत् १८८१ वि०।

[द] श्री जगदीश सिंह गहलौत—१० फरवरी १९२५ ई०

[य] प० भगवदत्त रिसर्चस्कालर—आश्विन कृष्ण ७ बुद्धवार सवत् १८८१ वि० [१५ सितम्बर १८२४ ई०)

धर्मार्य सभा ने प० भीमसेन शास्त्री वाली तिथि को मान्यता प्रदान की और इसे सार्वदेशिक की अन्तरग सभा की २ अप्रैल १९६७ की बैठक से स्वीकार कर लिया गया। १४ दिसम्बर १९८८ को बैठक मे इसकी दुबारा पुष्टि की गई।

सार्वदेशिक सभा की इस मान्यता के पीछे ऋषि दयानन्द की आत्मकथा का यह उल्लेख है—'सवत १८८१ के वर्ष मे मेरा जन्म हुआ था। फिर माता पिता ने मुझे बुलाकर विवाह की तैयारी कर दी। तब तक इक्कीसवा वर्ष भी पूरा हो गया। जब मैंने निश्चित जाना कि अब विवाह किये बिना कदाचित न छोडगे फिर चुप-चुप स० १९०३ वर्ष मे घर छोडके सन्ध्या के समय भाग उठा। इसके अतिरिक्त पूना प्रवचन का यह वाक्य ध्यान मे रखा गया होगा— एक महीने के भीतर विवाह की तैयारी हो गई।'

इन उल्लेखो से अनुमान लगाया गया कि सवत समाप्ति से कुछ दिन पूर्व ही ऋषि दयानन्द का जन्म हुआ होगा ताकि जब उन्होने घर छोडा तब २२ वें वर्ष मे सवत १९०३ आ जाय। फिर विचार किया गया कि ऋषि का बचपन का नाम 'मूलशकर" था इसलिये वे मूल नक्षत्र में पैदा हुए होगे। इसलिए उस वर्ष के पचाग के अनुसार एक ऐसी तिथि खोज ली गई जिस दिन जन्म होने पर मूल नक्षत्र पडता हो। ऐसी तिथि १२ फरवरी १८२५ को पड रही थी, इसलिए १२ फरवरी वाली तिथि फाल्गुन कृष्ण १० को ही मान्यता प्रदान कर दी गई।

अब देखिये—घर छोडकर ऋषि दयानन्द पहले दिन ४ कोस और दूसरे दिन १५ कोस चले और फिर सायला शहर मे पहुँच गये। वहां कुछ दिन रहकर कोट—कागड [अहमदाबाद के निकट] पहुँचे जहा से वे कार्तिकी (पूर्णिमा) के मेले मे सिद्धपुर पहुँच गए। यहाँ वे पिता जी द्वारा पकडे गए। इस प्रकार यह सारा विवरण ७ ८ महीनो मे खीचकर सवथा अस्वाभाविक हो जाता है। दूसरी ओर ऋषि की आत्मकथा मे यह भी उल्लेख आता है कि 'इस प्रकार चौदहवें वर्ष की अवस्था के आरम्भ तक यजुर्वेद की सहिता सम्पूर्ण और कुछ अन्य वेदा का भी पाठ पूरा हो गया था—जब शिवरात्रि आई तब १३ त्रयोदशी के दिन ' जिससे फाल्गुण कृष्ण १० स० १८९४ वि तक उनकी १३ वर्ष की आयु पूर्ण होकर वे चौदहवे वर्ष मे पदार्पण करते हैं और फाल्गुण कृष्ण स १८९४ वि० शुक्रवार (२३ फरवरी १८३८) को शिवरात्रि का व्रत रखने के लिय उसका माहात्म्य सुनते हैं। तब क्या मध्यवर्ती इन्हीं तीन दिनों के लिए ऋषि दयानन्द ने 'चौदहवें वर्ष की अवस्था के आरम्भ तक" शब्दो का प्रयोग किया है ? यह विचारणीय है। क्योकि इस अवस्था मे तो यह लिखाना अधिक सटीक होता कि 'तेरहवें वर्ष की अवस्था पूर्ण होने तक यजुर्वेद की सहिता सम्पूर्ण और कुछ अन्य वेदो का भी पाठ पूरा हो गया था।'

इस प्रकार उक्त जन्म तिथि सर्वथा अस्वाभाविक और त्रुटिपूर्ण सिद्ध हो जाती है। वसे इसका कोई ऐतिहासिक आधार भी नही है।

दूसरी ओर भाद्रपद शुक्ल २ स० १८८१ वि० (२ सितम्बर १८२४ ई०) की तिथि का ऐतिहासिक आधार है—

(१) ऋ० दयानन्द ने ३१ अगस्त १८७९ (भाद्रपद शुक्ल ४) के पत्र मे मुशी समर्थदान को बरेली से लिखा—'हमारा शरीर बहुत दिनो से बीमार है, अति दुर्बल हो गया है। सो तुम जाकर अमरीका वालों से कहना कि और कुछ न समझें। हमारा शरीर दो दिन से कुछ अच्छा है। जो ऐसा ही रहेगा तो हम उनके पत्रो का उत्तर शीघ्र भेजेंगे और अपने जन्म से लेकर दिन चर्या अभी कुछ सक्षेप से देवनागरी और अ ग्रेजी मे करवाकर हम हम उनके पास भेज देंगे।"

छ दिन बाद ऋषि ने २७ अगस्त १८७९ (भाद्रपद शुक्ल ११ को अपने जन्म दिन के दूसरे दिन (क्योकि भाद्रपद शुक्ल २ एव १० की तिथिया एक ही दिन २६ अगस्त को पडी थी) को पुन बरेली से ही मुशी समर्थदान को लिखा— करनैल साहब ने हमको लिखा था कि आप अपना जन्म चरित्र लिखा दीजिए। प्रथम तो हमारा शरीर अच्छा नही रहा इस कारण से नही भेज सके। अब दो चार दिन से कुछ अच्छा है सो आज तुम्हारे इस पत्र क साथ जन्म चरित्र लिखाकर भेजते हैं। (क्रमश)

वेदों में पुरुषार्थ प्रेरक यथार्थवाद

श्रीराम वशिष्ठ आर्य

वेदो का पुरुषार्थ चार प्रकार से विदित होता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इन सब मे प्रथम स्थान धर्म को दिया है। धर्म अग्रगण्य है हि। भारतीय सस्कृति और पाश्चात्य सस्कृति इनमे यह भेद स्पष्ट है कि अपने सर्वश्रेष्ठ सस्कृती मे धर्म और मोक्ष पर लक्ष केन्द्रित किया है, धर्म प्रत्याभूत है और मोक्ष इप्सित साध्य भी ध्येय है। पाश्चात्य सस्कृती मे अर्थ और काम इन्हीं को प्राधान्य दिया है, यह मूलभूत फरक है। इसे और विस्तारित किया जा सकता है।

इनके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी पुरुषार्थ वर्णित है। (१) अप्राप्य वस्तु की प्राप्ति करना (२) प्राप्ती के पश्चात उसका सवर्धन करना (३) इसका रक्षण करना (४) उसका सत्य काय म विनियोग करना। इन चार बातो के सिवा अपने कार्यों मे दूसरा कुछ रहता नही। यह सब बातें वेदो से ही जानी जाती है। सृष्टि उत्पत्ति अन्तर जो अमैथुनी मनुष्य रचना सर्वप्रथम निर्माण हुई, उस समय उन मानवो को जो ईश्वरीय ज्ञान महामहिम महर्षि अग्नि, वायु आदित्य और अगिरा इन चार ऋषियो द्वारा प्राप्त हुआ, वह ही, वेदज्ञान है।

साप्रत विज्ञान चर्चा सर्वत्र सुनने मे आती हैं। विज्ञान ने भौतिक प्राप्ति की, उससे जो सुखोपभोग के साहित्यो के वर्णन सुरसगीत्या लाभकारी होते है, परन्तु विज्ञान शब्द का अर्थ वि+ज्ञान=विशेषज्ञान जैसा होता है वैसे ही वि=विपरीत ज्ञान ऐसा भी होता है। एक व्यक्ति किसी गाव मे बीमार पडा, उसके बीमारी का निदान गाव के डाक्टर ने किया, कुछ औषधी दी। उसके बीमारी की रोद भी कर दी, और औषधो की सूची भी लिख रखी, किन्तु रुग्ण को लाभ पहुँचा नही। उसे बेचेनी की अनुभूति प्रतीत हुई। इसी कारण से वह स्मरण जिले के शहर मे आकर, वहा डाक्टर से सपर्क किया। डाक्टर ने निदान किया, वह पूर्व निदान जैसा ही था, किन्तु कुछ प्रगत औषधी दी गई। एक मास उन औषधियो का सेवन रुग्ण ने किया, फिर भी अपेक्षाकृत लाभ नही पहुँचा। अतएव वह रुग्ण बम्बई गया, वहा सूक्ष्म तथा विशेषज्ञ डाक्टर से सपर्क किया, उसने भी निदान किया वह पूर्व के दोनो डाक्टर जैसा ही रहा किन्तु अति प्रगत औषधी दी गई। रुग्ण उसे लेता रहा। इस उदाहरण से आपके ध्यान मे आया होगा कि रोग एक ही है, परन्तु वैज्ञानिक प्रगति अनुसार अलग-अलग औषधिया दी गई। इससे स्पष्ट होता है कि जो बदलता है सो विज्ञान और बदलता नहीं सो ज्ञान है। धर्म का शाश्वत सत्य जो हमे वेदो से प्राप्त हुआ है, वह बदलता नहीं, वह ऋत है। ऋत का अर्थ है अपरिवर्तनीय ईश्वरीय ज्ञान। इस ऋत से जो वेदो मे पुरुषार्थ पाये जाते है वे सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग पर्यन्त ठीक वैसे ही अमल में है। इसी हद तथा प्रेरक पुरुषार्थ की शक्ति आज भी विद्यमान है। वेदों मे पुरुषार्थ प्रेरक विषय और प्रसग जगह-जगह पाये है, तो भी मनुष्य ने मनुष्य से मानवता से वर्तन करना यह मानव धर्म=मानवता 'मनुर्भव' का प्रेरक यथार्थवाद देश, काल, स्थिति की मर्यादाओ को लाघकर आज भी सार्वदेशिक, सार्वकालिक और सार्वभौमिक ज्ञात होता है और सभी मनुष्यो को एक समान प्रतीत होता है इसी में वेदो का वेदत्व है।

ऋग्वेद १०। ३४। १३ मे मनुष्य के लिये पाच आदेश दिये हैं। कहा है कि हे मानव ! तु (१) जुआ मत खेल (२) कृषि कार्य अर्थात व्यवसाय कर (३) उससे प्राप्त सपत्ति पर ही सतोषी बन, समाधान मान (४) गौओ का पालन कर और (५) पति के लिये एक पत्नी के लिये पातिव्रत्य धारण कर, यह पाच आदेश मनुष्य जीवन को ऊचा उठाने मे प्रेरक और यथार्थ है ऐसा कोई भी सूज्ञ जान सकता है।

ऊपरी आदेश व्यतिरिक्त मनुष्य ने जीवन में छह शत्रु दुर्गुणो से सावधान रहना चाहिए। यह अथर्व ७।४।२२ मे प्रतिपादित है, वह छ दुर्गुण इस प्रकार है (१) मनुष्य ने उल्लू जैसा आचरण तथा मूर्खता का व्यवहार नहीं करना चाहिये। उल्लू को सूर्यप्रकाश, जो सारे प्राणियो का जीवन है, सर्वस्व है, उसको यह तिमिर या दण्ड ही है ऐसा जानिये। (२) भेडिये जैसी क्रूरता धारण न करें (३) 'स्वानहसि न के,' स्वान आपस मे झगडते है और दूसरो के सामने दुम हिलाते हैं चाटुकारिता करते हैं। (४) चिडियों जैसी कामवासना नहीं रखनी चाहिये (५) गरुड पक्षी के समान घमड, अह भाव नहीं रखना चाहिये। प्रत्येक के सम्बन्ध मे विस्तार से लिख सकते हैं। ऊपर निर्दिष्ट आदेश और उपदेशानुसार वेद वह मानव जाती का उत्कृष्ट सविधान ही सिद्ध होता है, इस ईश्वर-प्रणित सविधान को न कोई पुष्टि की या सशोधन की आवश्यकता

'वेद व नारी' वदो मे स्त्री जाती के लिये बहुत ही आदरभाव दर्शाया है। माता, कन्या पत्नी और बहन यह महिलाओ के चार रूप हैं। भीष्माचार्यजी ने महाभारत मे कहा है 'न मातु पर दैवतम्। माता के सम्बन्ध मे शतपथ ब्राह्मण ने लिखा है। मातृमान पुरुषो वेद।' देखिये १० अध्यापको से एक आचार्य श्रेष्ठ, १०० आचार्यो से १ पिता श्रेष्ठ और १००० पिताओ ने १० माता श्रेष्ठ हैं। पति शब्द में न मिला के पत्नी शब्द सिद्ध होता है। न यह अक्षर यज्ञ के लिये प्रयुक्त हैं। महर्षि पाणिनी कहते हैं— 'पत्युर्नो यज्ञ सयोगे।' पति का यज्ञ कौन है ? परिवार रूपी यज्ञ की पूर्णता तथा सार्थकता केवल पत्नी द्वारा ही सिद्ध हो सकती है। इसी महिला जाती को वेद पढने का अधिकार है। वेदो मे स्त्री को इले, हव्ये रन्ते कहा है। हे नारी तू इला याने स्तुति योग्य है कारण तु जन्मदात्री है तू हव्या है माने पूजा योग्य है। कारण तू ही बालको पर सुसस्कार करती है। तू रन्ते अर्थात पत्नी रूप में पुरुष का मन आकर्षित करने वाली है, और आनन्द देनेवाली है। इससे स्पष्ट है कि वेदो मे स्त्री-जाती को महनीय स्थान प्रदान किया है जो केवल प्रेरक यथार्थवाद ही है। सम्बोधन—आज हम सभा सम्मेलन मे—मेरे प्रिय बन्धु, 'प्रिय मित्रों, प्रिय सज्जनो आदि सबोधन सुनते हैं। पाश्चात्य राष्ट्रा मे लेडीज एन्ड जटलमेन ऐसा सबोधन है। स्वामी विवेकानन्द जी ने शिकेगो अमेरिका मे विश्वधर्म परिषद मे ब्रदर्स एन्ड सिस्टर्स' ऐसा सबोधित करते ही सभा मे प्रचण्ड तालियो की कहकहाहट गुज उठी, जिसमे भारतीय धर्म का आदर प्रकट हुआ परन्तु इस सम्बन्ध मे वेद क्या कहते हैं—इससे भी एक पद आगे ऋ० १०। १३। १ मे सम्बोधन है—शृण्वन्तु विश्वे विश्वे अमृतस्य पुत्रा. 'आहुवा। कितना समष्टीपूर्ण सबोधन है, इसे कोई भी आज या भविष्य मे भी अस्वीकार नही कर सकता। सारे ससार के अमृत पुत्रो, यह सबोधन माने अतुलनीय यथार्थवाद।

आज सारे ससार मे जातीयवाद, सम्प्रदायवाद, वर्णवाद, साम्यवाद, पूंजीवाद, समाजवाद, भाषावाद, प्रातवाद ऐसे अनेको वाद विद्यमान हैं। इन वादो से कोई भी मार्ग निकलना सभव नहीं। जैसे प्रश्न की गुत्थी सुलझाने का यत्न किया जाता है, जैसे जैसे गुत्थी और दृढ होती जा रही है यह मह और आप प्रत्य ही अनुभव कर रहे है। ऊपर निर्दिष्ट सब वादो का एक ही रामबाण उपाय है,

[शेष पृष्ठ ९ पर]

मुक्ति के क्या-क्या साधन हैं ?

सत्यार्थप्रकाश से :

कुछ साधन तो प्रथम लिख आए हैं परन्तु विशेष उपाय ये हैं— जो मुक्ति चाहे व "जीवनमुक्त" अर्थात् जिन मिथ्याभाषणादि पाप कर्मों का फल दुख है उनको छोड़ सुख रूप फल को देने वाले सत्य-भाषणादि धर्माचरण अवश्य करे। जो कोई दुःख को छुड़ाना और सुख को प्राप्त होना चाहे, वह अधर्म को छोड़ धर्म अवश्य करे। क्योंकि दुःख का पापाचरण और सुख का धर्माचरण मूल कारण है।

(प्रथम साधन)—सत्पुरुषों के संग से "विवेक" अर्थात् सत्यासत्य, धर्माधर्म, कर्त्तव्या-कर्त्तव्य का निश्चय अवश्य करें, पृथक्-पृथक् जान और शरीर' अर्थात् जीव पंचकोशों का विवेचन कर एक— "अन्नमय" त्वचा से लेकर अस्थि-पर्यन्त का समुदाय पृथ्वीमय है। दूसरा—"प्राणमय" जिसमे "प्राण" अर्थात् जो भीतर से बाहर जाता, 'अपान' जो बाहर से भीतर जाता, 'समान' जो नाभिस्थ होकर सर्वत्र शरीर में रस पहुंचाता, उदान जिससे कण्ठस्थ अन्न-पान खेंचा और बल-पराक्रम होता है 'व्यान' जिससे सब शरीर में चेष्टा आदि कर्म जीव करता है। तीसरा—'मनोमय' जिसमे मन के साथ अहंकार, वाक्, पाद, पाणि, वायु और उपस्थ पाच कर्म इन्द्रिया है। चौथा—विज्ञानमय जिसमें बुद्धि, चित्त, श्रोत्र, त्वचा, नेत्र जिह्वा और नासिका ये पाच इन्द्रिया, जिनसे जीव ज्ञानादि व्यवहार करता है। पाचवा—आनन्दमयकोश जिसमें प्रीति-प्रसन्नता न्यून आनन्द अधिकानन्द आनन्द और आधार कारण रूप प्रकृति है। ये पांच कोष कहाते हैं। इन्हीं से जपी जीव सब प्रकार के कर्म, उपासना और ज्ञानादि व्यवहारों को करता है।

तीन अवस्था—एक 'जागृत' दूसरी 'स्वप्न' और तीसरी सुषुप्ति अवस्था कहाती हैं। तीन शरीर हैं—एक 'स्थूल' जो यह दीखता है। दूसरा पाच प्राण, पाच ज्ञानेन्द्रिय, पांच सूक्ष्म-भूत और मन तथा बुद्धि इन सतरह तत्वों का समुदाय सूक्ष्म शरीर कहाता है। यह सूक्ष्म शरीर जन्ममरणादि में भी जीव के साथ रहता है। दूसरा 'स्वाभाविक' जो जीव के स्वाभाविक गुण रूप हैं यह दूसरा "अभौतिक" शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में भी सुख को भोगता है। तीसरा कारण—जिसमें सुषुप्ति अर्थात् गाढ़ निद्रा होती है। वह प्रकृतिरूप होने से सर्वत्र विभु और सब जीवों के लिए एक है। चौथी 'तुरीय' शरीर वह कहाता है—जिसमें समाधि से परमात्मा के आनन्दस्वरूप में मग्न जीव होते हैं। इसी समाधि संस्कार में भी यथावत् सहायक रहता है।

इन सब कोष, अवस्थाओं से जीव पृथक् है, क्योंकि यह सबको विदित है कि अवस्थाओं से जीव पृथक् है। क्योंकि जब मृत्यु होती है तब सब कोई हैं कि जीव निकल गया। यही—जीव सबका प्रेरक सबका धर्ता,साक्षी,कर्त्ता,भोक्ता कहाता है। कोई ऐसा कहे कि जीव कर्त्ता, भोक्ता नही तो उसको जाने कि वह अज्ञानी, अविवेकी है। क्योंकि बिना जीव के जो ये सब जड पदार्थ हैं, इनको सुख-दुःख का भोग वा पाप-पुण्य-कर्तृत्व कभी नही हो सकता। हां, इनके सम्बन्ध से जीव पाप-पुण्यों का कर्त्ता और सुख-दुःखो का भोक्ता है। जब इन्द्रिया अर्थों मे, मन इन्द्रियों और आत्मा मन के साथ संयुक्त होकर प्राणों की प्रेरणा करके अच्छे वा बुरे कर्मों में लगाता है। तभी वह बहिर्मुख हो जाता है। उसी समय भीतर अनन्त उत्साह, निर्भयता और बुरे कर्मों में, भय शंका, लज्जा उत्पन्न होती है, वह अन्तर्यामी परमात्मा की शिक्षा है। जो कोई इस शिक्षा के अनुकूल वर्त्तता है, वही मुक्ति जन्य सुखों को प्राप्त होता है और जो विपरीत वर्त्तता है, वह बन्धजन्य दुःख भोगता है।

पुष्करलाल आर्य, आर्य निवास,
१०७, हाउसिग बोर्ड भिवानी (हरियाणा)

वेदो में पुरुषार्थ

(पृष्ठ ७ का शेष)

यह है वेदवाद। वेदो में जातीवाद नही, सम्प्रदायवाद नही, वर्णवाद नही, भाषावाद नही, प्रांतवाद नही या अन्य कोई वाद नहीं किन्तु समस्त मानव जाती के सुखसमृद्धी और कल्याण, जिन सहज मार्गों मे साध्य हो सकता है वही एकमात्र मार्ग बताया है। वेदो से पुरुष को ऋतुमय कहा है—हे पुरुष ! तू कर्मशील है। मेधा आशासत। तू मेधा बुद्धि की माग कर। श्रमेण तपसा सृष्टा=तू तप त्याग का जीवन निर्माण कर। अज्येष्ठासो अकनिष्ठासो एते ते स भ्रातशे=तुममे कोई ज्येष्ठ, कनिष्ठ नही पर भाई भाई है। आयुयज्ञन कल्पताम् तेरा जीवन यज्ञमय बने। मित्रस्य अह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समिक्षे=तू सब प्राणिमात्र को मित्र की भावना से देख। शतहस्त समाहर, सहस्र हस्त सकिर=तू सैकडो हाथो से धनाजन कर परन्तु हजार हाथो से वितरण कर। वय राष्ट्रे जागृयाम=तू राष्ट्र के लिये जागृत रह। प्रभुवायस्व=तू बलवान बन। केवलाघो भवति केवलादि=अकेला खाने वाला पाप खाता है। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्=सब मनुष्यो को श्रेष्ठ बनावे। इनके अतिरिक्त दुनिया मे हम किस तरह जीवन व्यतीत करे, इसका महामन्त्र यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के प्रथम मन्त्र मे बताया है—ईशावास्य इद सर्व, यत् किञ्च जगत्या जगत् तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध कस्यस्वित् धनम् ॥ इससे बढ़कर शाश्वत पुरुषार्थ, शाश्वत प्रेरणा और शाश्वत यथार्थवाद कौनसा हो सकता है ?

विज्ञान युग के आज के समाज मे अज्ञानता, अन्धश्रद्धा, अन्धविश्वास से नरबली जैसी मानवता के कलक की घटनाये और बलात्कार जैसे कुकृत्य सतत हो रहे हैं। ढोगी शिक्षणपद्धति से स्पृश्यास्पृश्यविचार, पाखण्ड, गुरुडम बढ रहा है। इसका एक अर्थ यह है कि मनुष्य समाज वैदिक ज्ञान से दूर जा रहा है। यथार्थ दर्शनम् इति ज्ञानम्—यही सत्य और ऋत ज्ञान, ऋषीमुनियो ने जीवन भर की तपस्या से हम तक पहुँचाया है इसी मे मानव जाती का कल्याण है।

आज राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को सुसज्ज रहना है—वेद कहता है—असवा सन्ति नो गृहे—हमारे घरो मे तलवारे हो। हरीवान दधे हस्तयों वज्रमायसम्=पुरुष हाथो मे खड्ग धारण कर। इसी को नेशन इन आमर्स कहते है। भ्रष्टाचार दुराचार न पनपे इसलिये यज्ञमय जीवन पद्धती का अवलब करे। न स्तेय अदमि की बैठक भावना न होवे आचारो परमोधर्म नुसार आचरण कर यही वेदो का शिक्षा है।

आज सपूर्ण विश्व मे दूषित पर्यावरणरूपी महा राक्षस, मानव जाती को निगलने मुह फाडकर बैठा है। अभी अन्न प्रदूषण जल प्रदूषण वायु प्रदूषण, ध्वनी प्रदूषण और विचार प्रदूषण यह प्रश्न मानव निर्मित विज्ञान का फल ही तो है। इनमे से स्थानिक प्रशासन से अन्न, जल ध्वनी, प्रदूषणो पर काबू पाया है, परन्तु वायु प्रदूषण और विचार प्रदूषण बाबत वैज्ञानिको की शक्ति ढिली पडी है। यज्ञ यह वायु प्रदूषण रोकने का महामार्ग है। भोपाल कार्बाईड गस रिसनने कुछही मिनिटो मे हजारो निष्पाप लोगोके प्राण पखेरु उडाकर दिये किन्तु वहाके दो परिवार सुखरूप बच गये। श्री एल एस कुशवाह अध्यापक की धर्मपत्नी २६ वर्षीय त्रिवेणीदेवी को रात्री १॥ बजे वमन होने लगा। बाहर सबलोग रास्तो मिले उधर बडी तेज गतीसे आत्मरक्षा के लिये दौडे जा रहे थे। इसका कारण ज्ञात होते ही श्री कुशवाह जी ने अग्निहोत्र (होम हवन) प्रारम्भ किया। केवल २० मिनिट मे सारा परिवार स्वस्थ्य बना रहा। इसी प्रकार रेल्वे स्टेशन क्षेत्र में जहा बहुत अधिक सख्या मे लोग मृत्यु का ग्रास बने, उसी क्षेत्र में श्री एम एल. राठोड ३२ वर्षीय अपनी पत्नी, माता और ४ बच्चो सहित रहते थे। उन्होने त्वरीत अग्निहोत्र प्रारम्भ किया और सर्व परिवार बच गया। श्री राठोड गत ५ वर्षो से अग्निहोत्र करते रहे थे। वायु प्रदूषण के रामबाण उपाय का उदाहरण इससे बढ़कर और कौनसा हो सकता है ? अमेरिका मे वाशिंग्टन नगर में अग्निहोत्र विश्वविद्यालय और [illegible] के मेडीशन मे क्षत्र म अग्नि मदिर बने हैं पोलंड म १७ जगह अग्निहोत्र हो रहा है और २०० वैज्ञानिक उसपर ससोधन कर रहे हैं। पश्चिम जर्मनी मे अग्निहोत्र अत्यन्त लोकप्रिय बना है। और अग्निहोत्र की राख से पाक तथा फलफूलो मे वृद्धि पायी गयी है।

अब रहा विचार प्रदूषण जो सारे प्रदूषणो मे महत्वपूर्ण है। उच्च श्रेष्ठ विचारो की शिक्षा वेद देता है जो ऊपर की पक्ति मे स्पष्ट हो चुका है। जीवन के सर्वस्पर्शी क्षत्र मे वैदिक आर्ष साहित्य से वैचारिक क्रांति लायी जा सकती है जिससे मनुष्य देवता पिता और ऋषि बनता है मनुष्य जीवन सुवर्णमय होता है। यह अवगत हस्तगत करने के लिये वेदो के पुरुषार्थ प्रेरक यथार्थवाद के सिवा अन्य मार्ग नही इसलिय उत्तिष्टन, जाग्रत, इति शम्।

जियाहुलहक

(पृष्ठ ४ का शेष)

के लिये विशेष अक प्रकाशित किये है। लाहौर मे पाकिस्तान सरकार के नौकर ज्ञानी हरि सिह ने गुरुद्वारा डेरा साहिब मे २४ सितम्बर को जनरल जिया की याद मे अखडपाठ का भोग डाला। इसमे बब्बर खालसा और अन्य आतकवादी गुटो के नेताओ ने अपने भाषणो मे भारत को तरह-तरह की धमकिया दी और यहा तक कहा कि हम पाकिस्तान की रक्षा के लिये किसी भी युद्ध मे हिस्सा लेने के लिये तैयार है।

वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता

दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय अजमेर मे राज्य सरकार तथा विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत दयानन्द शोध पीठ की ओर से एक ऐसे अधिकृत ग्रन्थ का प्रकाशन करने का निश्चय किया गया है जिसमे वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता सिद्ध की जा सके। इस दृष्टि से ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म और आर्य समाज के सिद्धातो का समर्थन करने वाले उन सब उद्धरणो विचारों और मान्यताओ का समावेश किया जायेगा जो अन्य धर्मो की धार्मिक पुस्तको और उनके अनुयायी विद्वानो द्वारा लिखी गई है। उदाहरण के लिये एकेश्वरवाद के समर्थन और मूर्तिपूजा के विरुद्ध इस्लाम विरुद्ध कबीर तथा नानक और तेरापथी जैन सम्प्रदाय की मान्यताय। इसी प्रकार जात-पांत छुआछूत के विरुद्ध तथा सामाजिक एकता और सेवा के सम्बन्ध मे उपरोक्त तथा ईसाई धर्म के विचारो का समावेश करने की योजना है। ग्रन्थ मे प्रकाशित किये जाने वाले विद्वतापूर्ण निबन्धो और लेखो के लिये उचित पारितोषिक और पारिश्रमिक देने का भी निश्चय किया गया है। जो विद्वान इस कार्य मे सहयोग दे सक वे कृपया श्री दत्तात्रय आर्य, निदेशक, दयानन्द शोधपीठ दयानन्द कालेज, अजमेर से सम्पर्क करने का कष्ट कर।

—रासासिह मन्त्री

आर्य जगत् के समाचार

रामगढ़ आश्रम के लिए दान

महात्मा नारायण स्वामी के १९४७ मे स्वर्ग सिधारने के पश्चात् रामगढ आश्रम की अवस्था शोचनीय हो गई। ४ कमरे नष्ट हो गए। तमाम आश्रम जीर्ण अवस्था मे है। इसके जीर्ण उद्धार के लिए महात्मा नारायण स्वामी आश्रम जीर्णउद्धार कमेटी स्थापित करके रामगढ तल्ला मे, बडौदा बैंक मे खाता खोल दिया है। वर्ष मे तीन योग साधना शिविरो का कार्यक्रम बनाया गया है।

सब आर्य बन्धुओ का कर्त्तव्य है कि महात्मा नारायण स्वामी जी के इस आश्रम की सुध ल। इसके जीर्णोद्धार के लिए सहयोग प्रदान कर।

स्वामी सोमानन्द
वेद प्रचारक मण्डल ६०/१३ रामजस रोड,
करौल बाग, नई दिल्ली-५

डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल बृज बिहार गाजियाबाद मे भवन निर्माण-प्रारम्भ

२४ सितम्बर गाजियाबाद, डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल बृज-बिहार मे भवन निर्माण का कार्य डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्ती समिति के सगठन सचिव श्री दरबारीलाल जी की अध्यक्षता मे वैदिक यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ।

धर्म शिक्षक श्री करुणाकर शर्मा ने आगन्तुक अतिथियो का स्वागत करते हुए प्रधानाचार्य श्री वाई०पी० वर्मा जी के नेतृत्व विश्वास व्यक्त किया तथा विद्यालय के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

इस अवसर पर डी ए वी के अनेक उच्चाधिकारी, प्रधानाचार्य तथा गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। प्रधानाचार्य श्री वाई पी वर्मा ने उपस्थित लोगो को बताया कि विद्यालय के निर्माण मे लगभग एक करोड रु० व्यय होगा। कार्य को प्रारम्भ करने हेतु बी ई एल गाजियाबाद ने २५ लाख रु० का ऋण दिया है।

यज्ञ के उपरान्त आगन्तुक अतिथियों ने विद्यालय की दैनिक गतिविधियो का निरीक्षण किया तथा पाच मास की अल्पावधि मे बैंड सगीत नृत्य, योग, शिल्प कला आदि मे विद्यालय की विशिष्ट उपलब्धियों की सराहना की। श्री दरबारीलाल जी ने पूर्ण विश्वास से कहा कि प्रिंसिपल वर्मा तथा मैनेजर श्री बी०बी० गवखड के कुशल निर्देशन में यह विद्यालय शीघ्र ही शिक्षा के क्षेत्र में एक विशेष स्थान प्राप्त कर लेगा व डी ए वी की अन्य आदर्श सस्थाओ के अनुरूप कार्य करेगा।

आंखो का २०वां मुफ्त आप्रेशन कैम्प

पलवल। श्री मूलचन्द सबदेवा, प्रधान आर्य बाल गृह, पलवल द्वारा आखो का मुफ्त आपरेशन कैम्प १-१०-८८ से ९-१०-८८ तक आर्य बाल गृह, न्यू कालोनी, पलवल मे लगाया जा रहा है। आपरेशन २ अक्तूबर को श्री मुलतान सेवा समिति धर्मार्थ दवाखाना दिल्ली के चीफ सर्जन डा० बी०एन० खन्ना करेगे, भोजन, फल, दूधादि की व्यवस्था शिविर की ओर से नि शुल्क रहेगी।

—अजीतकुमार आर्य मन्त्री
आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर, पलवल
फरीदाबाद)

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की ओर से वीर पर्व समारोह

विजयदशमी पर्व पर—प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा सचालित आर्य वीर दल की ओर से आगामी २० अक्तूबर १९८८ को आर्य समाज हनुमानरोड नई दिल्ली म वीर पर्व समारोह का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम प्रात ९ बजे ध्वजारोहण से प्रारम्भ होगा। इस समारोह मे प्रमुख आर्य नेता, विद्वान और प्रान्तीय आर्य महिला सभा के अधिकारी गण बडी संख्या मे भाग लगे। निकटवर्ती आर्य जनो से निवेदन है कि भारी सख्या मे कार्यक्रम मे पधार कर इसे सफल बनाव।

—प्रियतमदास रसवन्त अधिष्ठाता

दान सूची

(पृष्ठ २ का शेष)

२४—मोला किराना स्टोर अम्बाला २१)
२५—बाल किशन शर्मा कैलीफोरनिया (यू एस ए) ६७०)
२६—लाला जयचन्द आय दनकौर ३१)
२७—मन्त्री आय समाज बडौत १००)
२८—डा नारायणदास गोहाटी १५०)
२९—मन्त्री आय समाज लोहरदगा राची १२६)
३०—राज आभूषण भण्डार आगरा २१)
३१—आय समाज किरन गाडन नई दिल्ली ५००)
३२—मन्त्री आय समाज राजनगर गाजियाबाद २५०)
३३—प्रभुआश्रित सत्सग मण्डल अग्निहोत्री धर्माथ टस्ट प्रयाग निकेतन दिल्ली १०००)
३४—रणजीत कुमार जी इसगाव आदिलाबाद ५०)
३५—श्री इन्द्रदेव बुल दशहर ११)
३६—श्रीमती आशा शर्मा कलकत्ता १००)
३७—पुष्करदेव जी वानप्रस्थी शाजापुर २०)
३८—आय समाज अमरोहा मुरादाबाद २५१)
३९—ओकारनाथ एण्ड सन्स बरेली ७२५)
४०—आय समाज पिम्परी पुणे महाराष्ट १०००)
४१—श्री भगवानदास जी भोजवानी पिम्परी पुणे २००)
४२—मित्र वर्मा आय करोटी १०)
४३—मदन मोहन सामदेव आय शाहजहापुर २५)
४४—श्री भोलानाथ आय गिरियम १५)
४५—श्री रामेश्वर दयाल ड० खेमराज १०१)
४६—श्री गणेश प्रसाद उन्नाव ५१)
४७—श्री श्रीराम वशिष्ठ खामगाव २०)
४८—श्री सवाराम द्वारा श्री बेतीराम रिवाल ३०)
४९—आय समाज सिरसा इलाहाबाद ६००)
५०—आय वद प्रचार मण्डल मेवात फिरोपुर झिरका १०००)
५१—राममुरली शर्मा कैलीफोरनिया २७५)
५२—श्रीमती विमला शर्मा कैलीफोरनिया १६०२)
५३—आय समाज हल्द्वानी नैनीताल ५०)
५४—मन्त्री जी आय समाज महुआ खेडा २५१)
५५—मन्त्री जी आय समाज पथोट २१)
५६—प्रधान जी आय समाज अहमदाबाद १)
५७—श्री गम्भीरसिंह जी आय हसनपुर मुरादाबाद ९५)
५८—कण्टो मेण्ट आय समाज सदर बाजार लखनऊ १४०)
५९—प्रान्तीय आय महिला सभा दिल्ली ५१००)
६०—अग्निहोत्री धर्माथ टस्ट दिल्ली १०००)
६१—श्री शम्भूदयाल दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद ८४९)
६२—महिला आय समाज नगर गाजियाबाद १०१)
६३—सन्तोष रानी ईस्ट पटेल नगर नई दिल्ली १०००)
६४—आय समाज नेपियर ह उन बटार रोड जबलपुर १५००)
६५—श्रीमती विद्यावती महिला आय समाज सदर बाजार लखनऊ १००)
६६—मन्त्री आय समाज नरकटियागज चम्पारण १००)
६७—श्री रामचन्द्रराम मुरार जौनपुर २०)
६८—राजकिशोर उदयपुर पलामू १०)
६९—स्वतन्त्रलता शर्मा वेन्सन रोड बगलौर ५०)
७०—तेजनारायण कपूर मो० खजाना पो० बिलग्राम १२५)
७१—आदित्य प्रकाश गुप्त मन्त्री हरदोई आय समाज खेडा अफगान सहारनपुर १५)
७२—श्रीमती माधुरी गुप्त मुरादाबाद ५१)

श्रीमती चादरानी अरोडा एव उनके स्व० पति मनोहरलाल जी अरोडा

श्रीमती चादरानी दिल्ली की प्रमुख समाज सेविका है दीन-दुखियो तथा कमजोर वग की सेवा सहायता के काय मे सदैव आगे रहती है। अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के लिए इनका बहुत बडा सहयोग रहा है। अभी हाल ही म दयानन्द सेवाश्रम सघ के काय के लिए अपने स्व० पति की स्मृति म पाच हजार रुपए की एक स्थिर निधि श्रीमती चादरानी अरोडा एव स्व० श्री मनोहरलाल अरोडा स्थिर निधि के नाम से स्थापित की है।

उत्सव

आय समाज हनुमान रोड नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव २८ अक्तूबर से २९ अक्तूबर १९ तक मनाया जायगा इसमे प्रतिदिन प्रात ऋग्वेद पारायण महायज्ञ और साय ७ ३० बजे से ९ बजे तक मनोहर भजन तथा कथा होगी। यज्ञ की पूर्ण आहुति ३१ अक्तूबर ७८ का प्रात ८ बजे होगा। इसके पश्चात वदिक धम प्रचार और सामाजिक समस्याओ पर विचार करने के लिए सम्मेलन होगे। अन्त म ऋषि लगर का आयोजन होगा।

—के०एल० भाटिया मन्त्री

—गुरुकुल वदिक म कन महाविद्यालय सिरसा इलाहाबाद का ३०वा वार्षिकोत्सव ७ ८ ९ अक्तूबर १९ को समारोह मनाया जायगा जिसम आय जगत के ख्याति प्राप्त विद्वान महात्मा आय भजनोपदेशक एव नेतागण पधारेगे। इस अवसर पर नवीन प्रविष्ट छात्रो का यज्ञोपवीत सस्कार होगा।

महर्षि दयानन्द आय विद्यालय मठपारा दुग का वार्षिकोत्सव श्री गुलाबचन्द जी बमल वद प्रचार अधिष्ठाता आय प्रतिनिधि सभा म० प्र० व विदभ की अध्यक्षता म दिनाक ९ को बडे हर्ष और नाम के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि सभा प्रधान श्री लगरचन्द्र जी श्रीवास्तव उपप्रधान श्री माहनलाल गप्ता भिलाई एव श्री राजाराम तिवारी छिन्दवाडा उपस्थित थे।

७३—लाला जयकृष्णराम ज ९ [illegible] १०००)
७४—श्री जुगतराम आय छतकापुर जिला रामपुर ५०)
७५—आय समाज सिल गडो [illegible] ५००)
७६—मन्त्री आय समाज शक्तिनगर मिर्जापुर ५१)
७७—सीताराम जी आय पकर कला टशरथपुर १००)
७८—डा० [illegible]मेश्वर प्रसाद मित्तल [illegible]पुर ५१)
७९—प्रधान जी आय समाज बागपत मेरठ ५१)
८०—आय समाज सदर बाजार झासी १००)

तपोवन का वृहद् यज्ञ तथा साधना शिविर १० अक्तूबर से

देहरादून १ ... साधन आश्रम तपोवन ने बताया है कि आगामी ... योग साधना शिविर सोमवार दिनाक १०अक्तूबर ... और पूर्णाहुति रविवार दिनाक १८ अक्तूबर को होगी।

इस अवसर पर पूज्य महात्मा दयानन्द जी के अतिरिक्त दिल्ली से प० पृथ्वीराज शास्त्री के पधारने की भी पूर्ण आशा है जिनके वेद प्रवचन सप्ताह भर चलेंगे। —देवदत्त बाली मन्त्री

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज नया नगल का २८वा वार्षिक महोत्सव ३ अक्तूबर १९८ से ९ अक्तूबर १९८ को सम्पन्न होगा इस अवसर पर आमन्त्रित विद्वानो मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान स्वामी निगमानन्द जी पचकूला डाक्टर विक्रमकुमार चण्डीगढ प सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली श्री कृष्णलाल जी आर्य प्रधान हिमाचल प्रतिनिधि सभा तथा भजनोपदेशक श्री ... राम जी मलाहर अपने ज्ञानवर्धक प्रवचनो और मनोहर भजनो से आप सब को आनन्दित करने के लिए पधार रहे है

आर्य समाज नकुड (सहारनपुर) का ५८वा वार्षिकोत्सव

आर्य समाज नकुड (सहारनपुर) का ५८वा वार्षिकोत्सव दिनाक २६ २७ २८ अक्टूबर १९८८ को मनाया जा रहा है। जिसमे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान डा० भवानीलाल जी भारतीय (पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ) आचार्य वीरेन्द्र रत्नेश (मेरठ) श्री सहदेवसिंह (मेरठ) व श्री रमेशचन्द जी निश्चित पधार रहे है। —भूपेन्द्र कुमार गोयल मन्त्री

श्रीमती चन्द्रकला देवी का निधन

शाहदरा ... आर्य समाज की प्रमुख कार्यकर्ता श्रीमती चन्द्रकला दे... निवास स्थान पर ९० वर्ष की आयु में ... मे सक्रिय भाग लेती ... शाहदरा ... एक हजार ... पिता और स...

समाज को उनके ... दिवगत आत्मा को शान्ति तथा उनके परिवार को ...

—मन्त्री शाहदरा

शोक सभा

आर्य समाज महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति स्थल आनन्दबाग दुर्गाकुण्ड वाराणसी के सदस्यो ने आर्य समाज के पूर्व अध्यक्ष तथा अमेठी के पूर्व नरेश महाराजा रणजय सिंह के निधन का समाचार पाकर दिनाक ७ ८ १९८८ को साप्ताहिक सत्सग के बाद शोक सभा मनाई।

सदस्यो ने उनके जीवन एव कार्यों पर भी प्रकाश डाला। अन्त मे दो मिनट मौन होकर दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करने हेतु एव उनके शोक सतप्त परिवार के सदस्यो को शान्ति प्रदान करने हेतु परमात्मा से प्रार्थना की गई।

—मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस ... दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८९ | मार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य पत्र | दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २३ अङ्क ४२] | आश्विन शु ५ स० २०४५ रविवार १६ अक्तूबर १९८८ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

फजी के संविधान में पुनर्विचार करने की घोषणा

भारत के विदेशमंत्री श्री नरसिंहाराव ने सुरक्षा परिषद् में इस विषय को प्रभावशाली ढंग से उठाया

हमने गत सप्ताह सार्वदेशिक साप्ताहिक के प्रथम पृष्ठ पर फीजी की नई सरकार द्वारा हिन्दुओ को ईसाई बनाने के शीर्षक से सभा-प्रधान जी का वक्तव्य प्रकाशित किया था।

इससे कई दिन पूव सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी एव गृहमन्त्री श्री बूटासिह को इस विषय को सुरक्षा परिषद् मे उठाने के लिए पत्र लिखकर निवेदन किया था।

भारत के विदेशमन्त्री श्री नरसिन्हा राव ने इस विषय को सुरक्षा परिषद् मे उठाकर भारतीय मूल के हिन्दुओ के मनोबल को ऊचा किया है।

श्री नरसिन्हा राव ने सुरक्षा परिषद् मे अपना २२ पृष्ठ का वक्तव्य हिन्दी मे पढा जिससे हमारी हिन्दी भाषा का राष्ट्रीय गौरव बढा है।

फीजी की नई सरकार ने श्री नरसिन्हा राव के वक्तव्य के तुरन्त बाद उस काले कानून पर विचार करने हेतु एक उच्च समिति का गठन किया है जिसमे भारतीय मूल के पाच सदस्यो को मनोनीत किया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने भारतीय मूल के हिन्दुओ के प्रति आवाज उठाई थी, जिसके परिणाम स्वरूप हमारे विदेश मन्त्री श्री नरसिहा राव ने उस मामले को सुरक्षा परिषद् मे रखा।

भारत सरकार की इस सामयिक कार्यवाही से फिजी के भारतीयों का मनोबल बढा है। उसके लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी एव विदेशमन्त्री श्री निरसिन्हा राव का आभार प्रकट करती है।

कुवैत में हिन्दुओं के मृतक-दाह संस्कार पर पाबन्दी

सार्वदेशिक सभा द्वारा आंदोलन का प्रस्ताव

दिल्ली ६ अक्तूबर।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कुवैत सरकार द्वारा हिन्दुओ के मृतक दाह-सस्कार पर पाबन्दी लगाने के आदेश की कडी निन्दा की है। उन्होने भारत के राष्ट्रवादी मुस्लिम बन्धुओ से जिन्हे इस देश मे सब प्रकार के धार्मिक अधिकार प्राप्त है, अपील की है कि वे भी इस मामले मे हमारी सहायता कर। उन्होने भारत सरकार से भी अनुरोध किया है कि भारत के बहुसख्यक समुदाय के धार्मिक अधिकारो की रक्षा हेतु कुवैत सरकार से इस अधार्मिक एव अन्यायपूर्ण आदेश को वापस लेने का अनुरोध करे।

स्वामी जी ने देश की सभी हिन्दू सस्थाओ से इस तानाशाही आदेश को निरस्त कराने के लिए एकजुट होकर देशव्यापी आदोलन मे सहायता करने का आह्वान किया। उन्होने बताया कि आगामी १६ अक्तूबर १९८८ को अखिल भारतीय आदोलन का सूत्रपात किया जाएगा। सार्वदेशिक सभा इस मामले पर गम्भीरता से विचार कर रही है कि विदेशो मे भारतीय मूल के लोगो के धार्मिक अधिकारो की रक्षा के लिए क्या उपाय किए जाये? जल्दी ही आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओ का एक विशेष सम्मेलन बुलाकर भावी कार्यक्रम निर्धारित किया जायेगा।

पृथ्वीराज शास्त्री
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

बिहार भूकम्प सहायता कोष

महिला आर्यसमाज गाजियाबाद की ओर से ८००१) रुपये एवं प्रचुर मात्रा में वस्त्र एवं अन्न का दान

गाजियाबाद ७ अक्तूबर,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को नगर महिला आर्यसमाज की महिलाओ ने घर-घर जाकर सग्रहित किया हुआ ८००१) रुपया एव प्रचुर मात्रा मे वस्त्र आदि दान मे दिये। श्री जनार्दन भिक्षु ने तीसरी किश्त के रूप में ४५०) रुपये दिये यह दान श्री शम्भूदयाल सन्यास आश्रम गाजिया-

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

राष्ट्र को उन्नत करो

राम हम में ही हुआ था कृष्ण भी सचमुच हमारा,
बुद्ध भी जिसने धरा प्रेम अमृत उतारा।
सत्य लंका-युद्ध में भी जीत का इतिहास अपना,
अन्तत: है पुण्य विजयी—था न यह विश्वास सपना।
हर्ष के भी राज्य की कवि-कविदो ने कीर्ति गाई,
वीर विक्रम ने शकों से मुक्ति भारत को दिलाई।
धैर्य साहस वीरता के खोलते दिन-रात खाते,
मान पर राणा मिटे वे आन भारत की बढ़ाते।
फिर शिवाजी ने अकेले ही अनूठे शौर्य द्वारा,
पंक में आकण्ठ डूबी जाति को श्रम से उबारा।
हम उठे सबसे तनिक पर तख्त दिल्ली का न डोला,
क्रान्ति का ही एक दिन बस झुक गया चुपचाप डोला।
वीर हैं हम वैरियों से किन्तु क्यों पिटते रहे हैं,
क्या सच है जो सिमिटते और मिटते ही रहे हैं।
पद-दलित हमको सिकन्दर ने किया था—सोच लें हम,
वीर राजा था—चलो वह मान आंसू पोंछ लें हम।
राज हम पर तो लुटेरे और डाकू कर चुके हैं,
शक-कुषाणों के पगों पर सिर न क्या अपने झुके हैं।
मार हूणों ने हमें दी लूट अरबों ने मचाई,
की हमारी गजनवी ने और गौरी ने धुनाई।
साक्ष्य बाबर से बहादुरशाह तक के सिलसिले का,
आगरा-दिल्ली कहीं भी खोज लो निश्चित मिलेगा।
याद कर होती न क्या है आज नीचे शर्म की भी
रह चुके हैं हम रिआया एक बनिया-फर्म की भी।
फिर ब्रितानी ताज नीचे एक लम्बा वक्त बीता,
कर लिये हम कायरा न व्यर्थ ही ? वेद गीता।
उस समय नरवीर लज्जा पददलित मां की बचाने,
कुछ निकल आये कृपा से ईश की निज वक्ष ताने।
तातिया नाना व झांसी की जगद् विख्यात रानी,
छा गये स्वाधीनता के युद्ध में बन आग-पानी।
छोड़ शाश्वत कीर्ति जग में स्वर्ग वह पौढ़ी सिधारी,
प्राणदानी आगये मैदान में फिर क्रान्तिकारी।
झेल दुस्सह यातनाएं सैंकड़ों ने ही जवानी,
राष्ट्र को करते समर्पित रक्त की अपनी कहानी।
वीर अगणित धीर अगणित और अगणित सन्त-स्वामी,
चढ़ गये बलिवेदिका पर तब कहीं छूटी गुलामी।
आज जब कुछ बन-संवर हम विश्व के सम्मुख खड़े हैं,
तो हमारे ही हमें पथ से हटाने को अड़े हैं।
मक्खा की निशिदिन चतुर्दिक् आह ! होली जल रही है,
मौत की अविरल निरीहों से ठिठोली चल रही है।
हो रहा यह क्या हमारी नियति क्या बस दासता है,
जानते क्या वे नहीं हैं यह पतन का रास्ता है।
फूट ने ही तो हमें वे बन्धुओ, दुर्दिन दिखाये
क्या हजारों साल काले चार दशकों में भुलाये।
उस तरफ है बम-धमाके बीज नफरत के इधर हैं,
बहा सत्य के समर्थक द्वेष की थामें डगर हैं।
आज बाबर की चलाई राह चलकर आज के भी,
मानते हैं, हैं विरोधी हन्त ? आर्य समाज के भी।
मन्दिरों पर मस्जिदें तो हो गई स्वीकार उनको,
धर्म भाई किन्तु हरिजन दीखते हैं भार उनको।
आज तो आजाद बने कौन कल की जानता है,
क्या ठिकाना हर तरफ यदि व्याप्त यह अज्ञानता है।
हो न यह, रह जाय हमको मातृभूमि पुकारती ही,
और डूबे आग में हे राम, पावन भारती ही।
जो अनागत कष्ट का सदुपाय कर लेता प्रथम ही,
वह पड़ा करता किसी भी आपदा में बहुत कम ही।
एकता से कौन बढ़कर विश्व में सदुपाय होगा,
सगठित जो कौम उसने कौन वह सुख जो न भोगा।
इसलिये मनु-वंशजो, अब भित्ति भेदों की मिटाकर,
राष्ट्रको उन्नत करो रख एक गति मति एकही स्वर।

धर्मवीर शास्त्री
BI/४१ पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६३

सहायता कोष

(पृष्ठ १ का शेष)

बाद मे इस अवसर पर सर्वप्रथम यज्ञ का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता स्वामी प्रेमानन्द जी ने की।

८००१) की दान राशि मे श्री एस० चन्दरा जी की ओर से १०००) रुपये दिये गये। इस अवसर पर श्री एस० चन्दरा ने व्यग करते हुए कहा—"जब महात्मा गाधी आजादी के लिये धन सग्रहहेतु गाजियाबाद आये थे तो उस समय मैंने ५००)रुपये दान मे दिये थे। परन्तु गाधी जी की फटकार के बाद मैंने उन्हे भी एक हजार रुपया दान मे दिया। इसी प्रकार चौधरी चरणसिंह जब एक बार धन सग्रह हेतु गाजियाबाद आये तो उन्हे भी मैंने ५००) रुपये दान दिये परन्तु जब चौधरी ने झिडका तब मैंने उन्हे भी एक हजार रुपया दान दिया। इस प्रकार आज मैंने पहले इस दान की राशि मे १००) रुपये का ही सहयोग दिया था, परन्तु स्वामी जी की झिडकने के बाद इसे १०००) रुपया कर दिया। यह सस्मरण स्वय चन्दरा जी ने सुनाया। इस अवसर पर स्वामी जी के अतिरिक्त श्रीमती सरला मेहता एव प्रकाश आर्या, भी उपस्थित थी। स्वामी जी ने सभी आर्य सभासदो से अपील की कि वे आर्यसमाज के काम को बड़ी श्रद्धा एव लगन के साथ मिल-जुलकर करे। आपसी मतभेदो को दूर करके सब मिलकर कार्य करें जिससे आर्यसमाज के कार्य मे निरन्तर प्रगति हो।

कन्नोज की दो अपहृत युवतियां बरामद
अपहरकर्ता फरार

कानपुर। केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान तथा सुप्रसिद्ध आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने अपने दो सहयोगियो श्री भगवानदास आर्य व श्री सीताराम आर्य की सहायता से कन्नोज से अपहृत दो युवतियो को हरजेन्दर नगर क्षेत्र से बरामद कर थाना चकेरी के सुपुर्द कर दिया। ज्ञातव्य है कि इन युवतियो मे एक १५ वर्षीया हिन्दू कु० सुमन तथा दूसरी १२ वर्षीया कु० राजबाला जबानी बेगम है। इन दोनो लडकियो को कोई युवक बरगला कर कानपुर लाकर तथा पकडे जाने के भय से युवतियो को हरजेन्द्र नगर मे छोडकर भाग गया। इस घटना की सूचना पाने पर श्री आर्य को दी जिस पर श्री आर्य ने दोनो बालिकाओ को थाना चकेरी के सुपुर्द कर दिया। पुलिस के पूछने पर उन्होने अपने को अनाथ व सगी बहनें बताया परन्तु जब थानाध्यक्ष चकेरी श्री हरिशकर शुक्ल व श्री देवीदास आर्य को विश्वास नही आया तब उन्होने अपने सहयोगियो श्री भगवानदास आर्य व सीताराम आर्य सहित पुलिस फोर्स को मय बालिकाओ के कन्नोज भेजा तो सत्य पता लगा कि न तो वे अनाथ थी न ही वे सगी बहनें थी। उनके अभिभावक और पुलिस काफी परेशान थी, वे उनको पाकर काफी प्रसन्न हुए।

कन्नोज पुलिस अपहरणकर्ता जिसकी फोटो लडकियो के जेब से बरामद हुई है, उसकी तलाश कर रही है तथा इस सन्दर्भ मे अपहृत बालिकाओ व उनके अभिभावको से पूछताछ जारी है।

मन्त्री, केन्द्रीय आर्य सभा, कानपुर

फिजी के मूल भारतीयों को ईसाई बनाने के कुचक्र का पर्दाफाश

सभा प्रधान का प्रधान मंत्री को पत्र

सेवा मे,

श्री राजीव गांधी जी   दिनाक ३०-९ ८८

प्रधान मन्त्री भारत सरकार

नई दिल्ली

सादर नमस्ते ।

आपकी सेवा में निवेदन है कि फिजी मे कर्नल राबुका ने सत्ता समालने के साथ ही साम्प्रदायिक आधार पर संविधान मे परिवर्तन करके भारतीय मूल के निवासियो को ईसाई बनाने का कुचक्र चलाया है। फिजी मे भारतीय मूल के लगभग ६ लाख ५० हजार लोग रहते हैं जो कि फिजी की जनसख्या के अनुपात मे बहुसख्यक है ।

इतिहास बताता है कि १५ मई १८७१ को लियोनीदास नामक पानी के जहाज से ४६३ भारतीय मजदूरो को फिजी मे उतारा गया था। इन्होंने ही वहा अपना खून पसीना बहाकर भूमि सुधार, खेती बाडी, व्यापार आदि द्वारा इस छोटे से देश को विकास की ऊंचाइयो तक पहुँचाया ।

पिछली सरकार ने भारतीय मूल के लोगो को सब प्रकार की सुविधाए दी हुई थी किन्तु नई सरकार का कहना है कि यदि भारतीय को वहा रहना है तो ईसाई बनकर रहना होगा। उक्त कुचक्र से वहा के भारतीय लोगो के सामने बडी भयकर कठिनाई उपस्थित हो गई है ।

अत आप से तथा भारत सरकार से हमारी माग है—

(१) श्री राबूका तथा उनकी सरकार पर भारतीय मूल के निवासियो के धर्म की रक्षा के लिए दबाव डाला जावे ।

(२) भारत सरकार फिजी मे साम्प्रदायिक षडयन्त्र के इस मामले को सुरक्षा परिषद् मे उठावे ।

आशा है आप इस गम्भीर समस्या के प्रति भारत सरकार के दृष्टिकोण को स्पष्ट करेंगे ।

हार्दिक शुभकामनाओ सहित,

सेवा मे,   भवदीय

श्री राजीवगाधी जी   स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

प्रधानमन्त्री भारत सरकार, नई दिल्ली   प्रधान

फिजी में जातीय भेदभाव किया जा रहा है : राव

सयुक्त राष्ट्र ४ अक्तूबर। सयुक्त राष्ट्र दक्षिण अफ्रीका से रगभेद समाप्त करने के प्रयास कर रहा है। फिजी मे जातीय भेदभाव को बढावा देने के प्रयास चल रहे हैं ।

यह चेतावनी भारत के विदेश मन्त्री पी वी नरसिंहाराव ने आज यहा सयुक्त राष्ट्र महासभा के ४३ वे वार्षिक अधिवेशन मे दी। उन्होने कहा कि फिजी मे इस तरह के प्रयासो के स्पष्ट सकेत मिल रहे हैं ।

श्री राव ने इस बात पर दुख व्यक्त करते हुए कहा कि उनके प्रतिनिधिमडल ने गत वर्ष विश्व समुदाय का आग्रह किया था कि फिजी मे स्पष्ट रूप से जातीय भेदभाव है। उन्होने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय को जातीय भेदभाव का विरोध करना चाहिये चाहे वह कैसी भी हो ।

श्री राव ने आशा व्यक्त की अन्तर्राष्ट्रीय जनमत से फिजी मे विश्वास सद्भाव और सहमतिकी भावनाके बहाल करने मे मदद मिलेगी जो आजादी के बाद से ही फिजी में थी। उन्होने कहा कि सयुक्त राष्ट्र के एक सदस्य तथा इसके उपनिवेशवाद विरोधी समिति के एक सदस्य के रूप मे भारत फिजी की आजादी की लडाई मे आगे था। उन्होने कहा कि हम लोगो के लिये यह बडे दुख की बात है कि फिजी की स्थिति पिछले एक वर्ष मे खासी बिगड गयी हैं ।

उन्होने कहा कि इसके स्पष्ट सकेत है कि फिजी मे जातीय भेदभाव को बढावा दिया जा रहा है। श्री राव ने कहा कि हम समझते हैं कि सविधान मसौदे को अन्तिम रूप देने के पहले विभिन्न समुदायो के साथ बातचीत की जानी चाहिये। उन्होने कहा कि इस प्रक्रिया से सभी वर्ग के लोग खुल कर के भाग ले सकेगे ।

श्री राव ने कहा कि एक समय था कि लोग चाहते थे कि सारा ससार फिजी जैसा हो। फिजी के जातीय सद्भाव शाति को विश्व मे आदर्श माना था। उन्होने आशा व्यक्त की कि फिजी को शीघ्र ही पहले जैसी स्थिति वापस आ जायेगी ।

सयुक्त राष्ट्र ४ अक्टूबर। श्री राव ने अफगानिस्तान से सम्बन्धित जेनेवा समझौते को पूरी ईमानदारी से लागू करने का आह्वान किया है ।

उन्होने कहा कि जेनेवा समझौते को पूरी तरह लागू किया जाना चाहिये जिससे कि उस क्षेत्र मे अत्याधुनिक हथियार जुटाने के अप्रत्यक्ष कारणो को खत्म किया जा सकें। उन्होने कहा हम जेनेवा समझौते के उलघन के बारे मे मिल रही रिपोर्टों से बहुत चिन्तित है ।

श्री राव ने किसी देश का नाम स्पष्ट रूप से नही लिया लेकिन उनका इशारा निश्चित तौर से पाकिस्तान की ओर था जिसे पिछले आठ वर्ष से अफगानिस्तान मे सोवियत सैनिको के प्रवेश के बाद से अमरीका ने करोडो डालर की सैन्य सामग्री और अन्य सहायता दी है ।

आर्य सत्याग्रह हैदराबाद की सलाहकार समिति का कार्यकाल ३१ दिसम्बर १९८८ तक बढ़ा

भारत सरकार ने हैदराबाद सत्याग्रह की गैर सरकारी स्क्रीनिंग कमेटी का कार्यकाल ३१ सितम्बर १९८८ तक बढा दिया है।

आगामी २६ २७ और २८ अक्टूबर ८८ को आर्य समाज दीवानहाल, दिल्ली मे समिति की बैठकें होंगी ।

अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

सदस्य श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम

" प्रो० शेरसिंह

" बाबू सोमनाथ मरवाह एडवोकेट

" रामचन्द्रराव कल्याणी

" चौ० रणबीरसिंह भूतपूर्व सासद

" प० शिवकुमार शास्त्री भूतपूर्व सासद

सभा मन्त्री

ब्रह्मलोक-मोक्षधाम

कर्मनारायण कपूर

(६ए/३१ W E A करोल बाग दिल्ली ५)

१—ऋग्वेद (१० १२२ ३) मे सात लोको का वर्णन हुआ है जिसमे अमर आत्मा व्यापता है—सप्त धर्मानि परियन्नमर्त्यो भू भुव स्व मह जन तप सत्यम् सात लोक हैं (सुबाला उ १० १) ऋग्वेद (१० ९०-३) के अनुसार उत्पन्न हुआ ससार एक परमेश्वर का एक पाद (अश) है। उसका परमेश्वर के तीन पाद (चरण अथवा अश) उसका अमृत प्रकाशमय स्वरूप है—पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतदिवि ।

आत्मा समस्त देहो मे रहता हुआ अपने को पवित्र करता हुआ कान्ति युक्त होकर वहा जाता है जहा मुक्तात्माए रहती हैं —

विश्वा रूपाण्याविशन्पुनानो याति हर्यत ।

यत्रामृताम आसत ॥ (ऋ० ९ १५ ४)

परमेश्वर मे विद्वान अमृत मोक्ष सुख को प्राप्त करते हुए ससार के सुख दुख से पृथक तीसरे स्थान (मोक्ष धाम) मे स्वच्छन्द विचरते है —

यत्र देवाऽअमृत मानशानास्तृतीये धामनन्नध्यैरयन्त । (यजु० ३२ १०)

२—वेदो उपनिषदो तथा गीता मे मोक्षधाम अथवा ब्रह्मलोक का उल्लेख निम्न प्रकार से हुआ है —

(क) यत्र ज्योतिरजस्र यस्मिलोके स्वर्हितम ।

तस्मिन्मा धेहि पवमानामृते लोके अक्षित इन्द्रयिन्दो परिस्रुव ।

(ऋ० ९ ११३ ७)

अर्थात्—हे पवित्रकारक प्रभो ! जहा सदा प्रकाश रहता है, जिस लोक मे सदैव सुख रहता है उस मृत्युरहित विनाशरहित लोक मे मुझे रखा है। दयामय प्रभो ! इस आत्मा के लिये सुखो की वर्षा कर।

(ख) यत्रानुकाम चरण त्रिनाक त्रिदिवे दिव ।

लोका यत्र ज्योतिष्मन्तस्तत्र माममृत कृधोन्द्रादेन्दो परिस्रव ॥

(९ ११३ ९)

अर्थात—जहा कामनानुसारे विचरण हो जहा तीनो प्रकार के सुख तथा तीनो प्रकार के प्रकाश हो, जहा जीवगण आत्म ज्योति से युक्त हो वहा मुझे अमर कीजिये। हे दयामय ईश्वर मेरी आत्मा पर सुख की वर्षा करो।

(ग) यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुद, प्रमुद आसते। कामस्य यत्राप्ता कामास्तत्र माममृत कृधोन्द्रायेन्दो परिस्रव। (ऋ० ९ ११३ ११)

अर्थात—जहा आनन्द, प्रमोद मोह हर्ष हो जहा जीव की सब कामनाए पूर्ण हो जाती हो उस लोक मे मुझे अमर कीजिये।

(घ) स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ता पावमानी द्विजानाम् आयु प्राण प्रजा पशु कीर्ति द्रविण ब्रह्मवर्चसम। मह्य दत्वा व्रजत ब्रह्म लोकम। (अथव० १९ ७१ १)

अर्थात—द्विजो को पवित्र करने वाली सब वरो को देने वाली सत्यज्ञान देने वाली वेदमाता आयु प्राण प्रजा पशु कीर्ति, द्रविण तथा ब्रह्मतेज देकर मुझे ब्रह्म लोक मे पहुँचावे।

(च) एतदालम्बन श्रेष्ठमेतदालम्बन परम् ।

एतदालम्बन ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते ॥ (कटो० ३ २-१-१७)

अर्थात—ओ३म् ही सब सब से श्रेष्ठ सहारा है, यही सबसे अन्तिम सहारा है। इस सहारे को जानकर मनुष्य ब्रह्मलोक मे महान हो जाता है।

(छ) ते ब्रह्मलोके परान्तकाले परामृता परिमुच्यन्ति सर्वे।

(मु० उ ३ २ ६)

अर्थात—वे सब मोक्ष को प्राप्त हुए परान्त काल के पश्चात ब्रह्मलोक से परिमुक्त होते हैं।

(ज) एष वा पुण्य सुकृती ब्रह्मलोक । (मु० उ० १-२-६)

अर्थात—यह ब्रह्मलोक पुण्य और अच्छे कर्मो के करने वाला का है।

(झ) ए एते ब्रह्मलोक त वा एत देवा आत्मानमुपासते।

(छा० उ० ८-१२-६)

अर्थात—यह दब—मुक्त आत्माए—ब्रह्मलोक मे ईश्वर की उपासना करती हैं।

(त) अपहृत पाप्मा ह्येष ब्रह्म लोक । (छा० उ० ८-४ १)

अर्थात—ब्रह्मलोक पाप से रहित है।

(थ) सकृद्विभातो ह्येष ब्रह्मलोक । (छा० उ० ८ ४ २)

अर्थात—इस ब्रह्मलोक में सदा प्रकाश ही प्रकाश रहता है।

(द) न तत्र सूर्यो भाती न चन्द्र तारक नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्नि ।

तमेवभान्तमनुभाति सर्व तस्यभासा सर्वमिद विभाति ।

(कठ० उ० २ १५)

अर्थात—ब्रह्मलोक मे सूर्य, चन्द्र तारागण विद्युत अग्नि का प्रकाश नहीं होता, ब्रह्म की ज्योति से सब कुछ प्रकाशित रहता है।

(ध) आ ब्रह्म भुवनाल्लोका पुनरावर्तिनोऽर्जुन। (गीता ८ १६)

अर्थात—हे अर्जुन ब्रह्मलोक तक जितने लोकहैं वहासे लौटना होता है।

(भ) तेत भुक्त्वा स्वर्गलोक विशाल ।

क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोक विशन्ति । (गीता ९ २१)

अर्थात—वे विशाल स्वर्गलोक के भोगो को भोग कर पुण्यो के क्षीण होने पर मर्त्य लोक मे आते हैं।

३—इस सदर्भ मे प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या मोक्ष धाम अर्थात ब्रह्म लोक कोई स्थान विशेष है जहां मुक्तात्माए ब्रह्मानन्द का स्वादन करती हैं। पूर्व वर्णित वेद मन्त्रो तथा श्लोको मे जो शब्द—यत्र, तत्र लोक प्रयुक्त हुए हैं वह इस बात का सकेत करते हैं कि मोक्ष धाम ससार के सुख दुख से पृथक तीसरा स्थान है। अपरच यद्यपि ईश्वर सर्वव्यापक तथा आनन्दमय है फिर भी सारा ब्रह्माण्ड आनन्द से परिपूर्ण नही है। कई लोक आनन्द रहित हैं। मुक्त जीव तो आनन्दमय स्थान मे बसना चाहता है और रहता है। वह एकदेशी है—सर्वव्यापक नहीं है। छान्दोग्य उपनिषद अष्टम प्रपाठक (चौथा खण्ड) के अनुसार सब लोको में ब्रह्मलोक पृथक लोक (स्थान) है। अमृत और मर्त्य लोक मे आत्मा पुल के समान है जो दोनो लोको को धारण करने वाला है।

कई विद्वानो की धारणा है कि "पूर्ण आत्मज्ञान जब और जहा होगा उसी क्षण मे और उसी स्थान पर मोक्ष धरा हुआ है। क्योकि मोक्ष तो आत्मा की मूल शुद्धावस्था है वह कुछ निराली स्वतन्त्र वस्तु का स्थल नही" (गीता रहस्य पृ० २४९)। धारणा असत्य है क्योकि आत्मज्ञान हो जाने पर भी ज्ञानी तुरन्त ही कर्म फल तथा शरीर के बन्धन से नही छूट जाता है। उसे मृत्यु पयन्त अपने कर्मो के शुभाशुभ कर्मो को भोगना ही होता है। महात्मा बुद्ध को ज्ञान होने के पश्चात मृत्यु पर्यन्त अनेको सुख दुख भोगने पडे।

राष्ट्रीय एकता और अखंडता का संकल्प दिवस विजयादशमी

—रघुवीर शरण आर्य विश्वसेवक विश्व कल्याण शोध संगम, नरायन टोला बहजोई मुरादाबाद (उ० प्र०)

समस्त भूमण्डल मे भारतवर्ष ही एक ऐसा भूखण्ड है, जहा वर्षा की ऋतु अन्य ऋतुओं से पृथक होती है। अन्य देशो मे सर्दी और गर्मी की ऋतुओं मे ही समय समय पर वर्षा होती रहती है। किन्तु भारतवर्ष में चातुर्मास्य मे ही वर्षा का प्राचुर्य रहता है। इस ऋतु मे ताल तलय्या जल से परिपूर्ण हो जाती है, नदियो मे बाढ़ आ जाती है आने जाने के मार्ग कीचड़ और जल से भरे रहने के कारण यातायात में कठिनाई आ जाती है।

प्राचीन भारत वर्ष मे सड़को और राजमार्गों की अधिकता न थी, वर्षाकाल यात्राए बिल्कुल ही बन्द रहती थी। राजाओ की विजययात्रा वर्षा के चातुर्मास्य मे रुक जाती थी। वर्षा की समाप्ति पर जब शरद ऋतु का प्रवेश होता था,तो ये अवरुद्ध यात्राए पुन प्रारम्भ होती थी। अथर्ववेद काण्ड ३ सूक्त १९ मन्त्र १ से ८ तक तथा अथर्ववेद काण्ड ११ मन्त्र १ से ३ तक मे इस पर्व पर की जाने वाली यज्ञ प्रार्थना, कार्यविधि का विस्तृत वर्णन किया गया है।

एषा महमायुधा स स्याम्येषा राष्ट्र सुवीर वर्धयामि।
एषा क्षत्रमजरमस्तु जिष्णवेषा चित विश्वेऽवन्तु देवा ॥

अथर्ववेद का० ३ सूक्त १९ मन्त्र ५

मैं इन वीरो के हथियारो को जोडता हू। इनके साहसी वीरा वाले राज्य को बढाता हूँ। इनका क्षत्रिय पन अमर और विजयी होवे। सब दिव्य गुण इनके चित को तृप्त करे।

प्रेता जयता नर उग्रा व सन्तु बाहव।
तीक्ष्णेषवोऽबल धन्वनो हतोग्रायुधा अबलानुग्रबाहव ॥

अथर्ववेद ३। १९। ७

हे नरो ! धावा करो जीता तुम्हारी भुजाये प्रचण्ड हो। हे तीखे बाण वाले, हे सुदृढ हथियारो वाले, हे बल शाली भुजाओ वाले, निर्बल धनुष वाले पापो से निबलात्मा बने शत्रुओ को मारो।

उत्तिष्ठत मारमेधा आदान सदानाम्याम्।
अमित्राणा सेना अभिधत्तमर्बुदे ॥

अथर्ववेद ११। ३

हे शूर सेनापति राजन और प्रजागण। तुम दोनो खडे हो जाओ, पकड़ने और बाधने के यन्त्रो से युद्ध आरम्भ करो और शत्रुओ की सेनाओ को बांध लो।

वाल्मीकीय रामायण किष्किन्धा काड सर्ग ३०। ६० के अनुसार वर्षा ऋतु के समाप्त होने पर श्री राम ने लक्ष्मण जी को सीता जी की खोज के लिए सुग्रीव जी को प्रेरित करने पम्पापुर भेजते हुए कहा, कि तुम सुग्रीव जी को मेरा यह सन्देश कहना—

अन्योन्यबद्ध वैराणा जिगीषूणा नृपात्मज।
उद्योग समयः सौम्य पार्थिवानामुपस्थितः ॥

हे नृपात्मज ! परस्पर वैरबद्ध जय के अभिलाषी राजाओ के उद्योग का समय उपस्थित हुआ है।

इसकी पुष्टि मे श्री मीर जी ने अपनी दशहरा कविता में लिखा है—

था यही दिन जब यहा श्री राम ने दल साजकर)
फिरि प्रवर्षण से चढाई की थी लंका राज पर ॥

महाभारत काल तक विजयादशमी के दिन यज्ञशाला के द्वार देश मे सुसज्जित सशस्त्र चतुरङ्गिणी (अश्व, हाथी, रथ, तथा पैदल) सेना को क्रमबद्ध खडा करके उनकी आरती की जाती थी। स्वस्तिवाचन और शान्तिवाचन पूर्वक बृहद्होम होता था। क्षात्र धर्म के वर्णन परक मन्त्रो के पाठ के बाद आहुतिया दी जाती थी।

कविकुल गुरु महाकवि कालिदास जी ने अपने रघुवंश महाकाव्य में सूर्यवंशी महाराज रघु की नीराजना विधि (आरती) का वर्णन किया है—

तस्मै सम्यग्हुतो वह्निर्वाजिनीराजनाविधौ।
प्रदक्षिणार्चिर्व्याजेन हस्तेनेव जयं ददौ ॥

(रघुवंश सर्ग ४। २५)

महाराज रघु जो अश्वादि की नीराजना विधि कर रहे थे, उसमें भले प्रकार होम की हुई अग्नि की ज्वाला दक्षिण ओर को बल खाकर लपट ले रही थी, प्रज्जवलित हो रही थी, उसमे कविकुल गुरु उत्प्रेक्षा करते हैं कि मानो वह अपने दाहिने हाथ से रघु को जय प्रदान कर रही थी।

नीराजना का अनुष्ठान भावी विजय यात्रा के लिए शुभसूचक माना जाता था। वैश्य या अन्य व्यवसायी भी इसी प्रकार अपने वाहनो, उपकरणो को सुसज्जित और परिमार्जित कर यज्ञशालाओ मे क्रमबद्ध उपस्थित करके नीराजना का अनुष्ठान पूर्वान्ह मे करते हुए राज्य या ग्राम सीमोल्लघन करते थे।

भविष्योत्तर पुराण मे विजयादशमी के दिन शत्रु का पुतला बनाकर उसके हृदय क्षेत्र को बाण से बेधन का विधान लिखा है।

विजयादशमी राष्ट्रीय एकता और अखडता को सुदृढ करने हेतु सुरक्षा करने हेतु, सकल्प करने का दिवस है। चारो वर्णों की एकात्मता ही अष्टभुजी दुर्गा का रूप है। इसलिए चाहे युद्ध की परिस्थिति हो या न हो, हम किसी भी कार्य मे लगे हो राष्ट्र उन्नति एव सुरक्षा की भावना उत्पन्न होना परम आवश्यक है।

मातृभूमि के सम्मान और अस्तित्व की रक्षा के बिना हमारा कोई अस्तित्व नही हो सकता। हमे अपने क्षुद्र स्वार्थो की पूर्ति को त्यागकर मातृभूमि के प्रति समर्पण का भाव रखते हुए मनुष्य बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

विश्व कल्याण के लिए जाति, पथ, प्रान्त, भाषा, देश, सागर की मानवकृत सीमाओ को तोडते हुए दुष्टो को दड देने दिलाने और साधुजनो की सुरक्षा का प्रबन्ध करते हुए 'वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना के विकास हेतु प्रयत्नशील रहना चाहिए। महापुरुषो की चित्र पूजा के स्थान पर उनकी चरित्रगत विशेषताओ को ग्रहण करके जीवन मे उतारने का प्रयत्न करते रहने पर ही मानव काया की सार्थकता है।

कब और क्यों ? ऋषि दयानन्द का जन्म-दिन (२)

—डा० आदित्यपाल सिंह आर्य

इन उल्लेखों से सिद्ध होता है कि ऋषि दयानन्द की अपनी आत्मकथा के सम्बन्ध में जो अवधारणा "दिनचर्या" के रूप में छः दिन पूर्व में थी, वह छः दिन बाद "जन्म-चरित्र" के रूप में इस लिए बदल गई क्योंकि वह उन्होंने अपने जन्म-दिन पर छः पृष्ठों में लिखाकर दूसरे दिन भेजी थी। इससे ऋषि दयानन्द ने एक प्रकार से परोक्ष रूप से अपनी जन्म-तिथि का स्वयं ही निर्देश कर दिया है।

(२) पं० अखिलानन्द शर्मा कवि रत्न के पिता पं० टीकाराम शर्मा ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त और शिष्य थे। हो सकता है कि ऋषि ने स्वयं ही किसी प्रसंग में अपनी जन्म तिथि प. टीकाराम शर्मा को विदित हुई हो जिसका उल्लेख उन्होंने अपने प्रसिद्ध "दयानन्द दिग्विजय" काव्य ग्रन्थ में इस प्रकार किया है—

मासि भाद्रपदे पक्षे सिते वारे बृहस्पतेः ।
नवम्यां मध्यमायाते भास्करेऽपि विहायस ॥
नक्षत्रेति शुभे योगेऽति प्रीतिवर्धने ।
चन्द्राष्ट वसुराकेश योजनाल्लब्ध भावने ॥
विक्रमादित्य नृपतेर्वत्सरे जगतां गुरुः ।
निर्गत्य जननी कुक्षेरागतो जगतीतले ॥

(३) पं० केशवराम विष्णु राम पण्ड्या ऋषि दयानन्द के समकालीन गुजराती भक्त सज्जन थे। उन्होने ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र लिखा था जो आर्य समाज गणेशगंज, लखनऊ में रखा है। इसमे ऋषि दयानन्द की जन्म तिथि भाद्रपद शुक्ल ९, गुरुवार सवत् १८८१ वि० ही दी हुई है। इसे ऋषि के पत्रो के अन्वेषक स्व० मामराज सिंह जी ने देखा था।

(४) ऋषि दयानन्द का अगला जन्मदिन भाद्रपद शुक्ल ९, सवत् १८८२ वि० [२० सितम्बर १८२५] को मनाया गया था इस अवसर पर ११६) रु० का उपहार उनके पिता जी के पास मोरवीनगर के सेठ सुन्दर जी शिवजी ने टंकारा में भेजा था। इसका विवरण उनके कागजो मे भाद्रपद शुक्ल १४ को लिखा गया है जिन्हें स्व० पं० श्री कृष्ण शर्मा, आर्योपदेशक (राजकोट) ने देखा था। इससे भाद्रपद शुक्ल ९ की जन्मतिथि की पुष्टि होती है। पं० श्री कृष्ण शर्मा के अनुसार इस दिन बुद्धवार था जबकि गणना करने पर मंगलवार आता है। ऐसा इसलिए है कि उनके अनुसार ऋषि का जन्म ब्राह्म मुहूर्त मे ३-३० बजे हुआ था और तिथि सूर्योदय से सूर्योदय तक रहती है। अतः २१ सितम्बर १८२५ (बुधवार) को सूर्योदय तक भाद्रपद शुक्ल ९ की ही तिथि रही।

(५) ऋषि दयानन्द के निन्दक जैनी जियालाल ने भी अपनी पुस्तक में भाद्रपद शुक्ल ९, संवत् १८८१ वि० की तिथि ही उनके जन्म के रूप में दी है। इसी प्रकार श्री टहलराम गिरधारी दास ने भी अपनी पुस्तक 'विश्वास-घात' में ऋषि दयानन्द की यही जन्म तिथि दी है और लिखा है कि "जन्म-पत्र के अनुसार स्वामी दयानन्द का जन्म भाद्रपद शुक्ल ९, गुरुवार मध्यान्ह काल संवत् १८८१ वि० तदनुसार शाकः सवत् १७४६ अर्थात् ईसवी सन १८२४ में हुआ था जिसे सब आर्यसमाजियों ने माना है।"

(६) ऋषि दयानन्द ने २७ जून १८८० को फर्रुखाबाद में 'वेदविद्या' विषय अन्तिम व्याख्यान दिया। अपने भाषण के अन्त में उन्होने वेदभाष्य के कार्य के शीघ्र सम्पादन के लिए प्रबन्ध करने को कहा। इस पर मुंशी हरनारायण ने निवेदन किया कि 'अब स्वामी जी की अवस्था ५६ वर्ष की है। शरीर अनित्य है, इसलिये स्वामी जी ने जो ऋग्वेद यजुर्वेद का भाष्यारम्भ किया है, उसको पूर्ण कराने हेतु तत्काल आर्थिक प्रबन्ध करना चाहिए।" फलस्वरूप १३५० रुपये जमा हो गये। अब यदि ऋषि का जन्म १२ फरवरी १८२५ को हुआ था तो जन्मतिथि से साढ़े चार माह बाद उनकी आयु ५५ वर्ष बताई जानी चाहिए थी, लेकिन ५६ वर्ष इसलिए बताई गई क्योंकि वह भाद्रपद शुक्ल ९, संवत् १८८१ वि० की दृष्टि से मात्र सवा दो माह ही कम थी। उल्लेखनीय है कि यह कथन ऋषि की उपस्थिति में ही किया गया था, अतः उपेक्षणीय नही है। इस प्रकार इस जन्म दिन की ऐतिहासिकता प्रमाणित हो जाती है।

अब घटनाक्रम पर भी एक दृष्टिपात कर लिया जाय—

(१) ऋषि की १३ वर्ष की आयु ९ सितम्बर १८३७ (भाद्रपद शुक्ल ९) को पूरी हो गई और १४ चौदहवें वर्ष की अवस्था के आरम्भ तक अर्थात भाद्रपद शुक्ल ९ से फाल्गुन कृष्ण १३ तक के साढ़े पांच महीनों में यजुर्वेद संहिता सम्पूर्ण और कुछ अन्य वेदों का पाठ पूरा हो गया था। फिर साढ़े तेरह वर्ष की अवस्था में शिवरात्रि का व्रत फाल्गुन कृष्ण १४ १८९४ वि० (२४ फरवरी १८३८ ई०) को रखा। इस प्रकार उनका पूर्वोक्त उल्लेख सार्थक होता है।

(२) २१ वर्ष की अवस्था भाद्रपद शुक्ल ९, संवत् १९०२ वि० (११ सितम्बर १८४५ ई०) को पूरी हो गई। इससे पूर्व विवाह की तैयारी एक माह में कभी जून-जुलाई १८४५ तक हो गई थी किन्तु "अज्ञात जीवनी" के अनुसार उन्होंने लड़की को देखकर इस प्रसग को इस बार भी टलवा दिया था और यह विचारकर कि आगे भी विवाह के लिये आग्रह होगा ही, उन्होने आश्विन माह के कृष्ण पक्ष (सितम्बर १८४५ के उत्तरार्ध) में गृह त्याग कर दिया। गृह त्याग के ३-४ दिन बाद ही वे सायला पहुँच गये और लगभग एक माह तक वहा रहे। बाद में कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष में कोठ कांगड़ पहुँचे जहा उनकी जान पहचान वाला एक बैरागी मिला। वहां से वे कार्तिक पूर्णिमा पर सिद्धपुर में लगने वाले मेले मे पहुँच गये जो १४ नवबर १८४५ (शुक्रवार) को था। उधर उस बैरागी से सूचना पाकर उनके पिता जी भी सिपाहियों सहित उन्हें पकड़ने के लिये सिद्धपुर के मेले में गृह त्याग से दो माह के भीतर ही पहुँच गए। इस प्रसग मे पूना-प्रवचन में जो कोठ कांगड में तीन माह रहने का उल्लेख है, वह वस्तुतः व्यासाश्रम का है, ऐसा हमने अपने द्वारा सम्पादित ऋषि दयानन्द के "अपना जन्म-चरित्र" में सिद्ध किया है। विस्तार भय से उसका विवरण यहां दे पाना सम्भव नही है। इस प्रकार ऋषि दयानन्द ने गृहत्याग संवत् १९०२ मे किया था, १९०३ वि० मे नही, जैसा कि स्वामी सत्यानन्द आदि ने स्वीकार किया है और आर्य समाज विधानसरणी, कलकत्ता में शिलालेख लगा है। इस तिथि मे २२ वर्ष जोड़ देने की वजह से ही स० १९०३ आ गया था, जबकि २२ वें वर्ष में भी सं० वहीं रहना था जो २१ वर्ष की आयु पूर्ण होने के दिन था। इस तिथि से ऋषि के जीवन की अन्य घटनाओ की भी सगति बैठ जाती है जो उनकी आत्मकथा, पूना प्रवचन और अज्ञात जीवनी में वर्णित है। विस्तारभय से इनका भी विवरण देना यहा सम्भव नहीं है।

इस प्रकार यह सुनिश्चित हो जाता है कि ऋषि दयानन्द का जन्म भाद्रपद शुक्ल ९, सं० १८८१ वि० गुरुवार दि० २ सितम्बर १८२४ ई० को ही हुआ था।

इस बार वह दिवस २० सितम्बर १९८८ को पड़ा। इसी तारीख को राजौरी गार्डन के वेदसंस्थान में ऋषि का जन्म दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया है। गत दो वर्षों से वेद सस्थान में भाद्रपद शुक्ला ९ को ही यह दिवस मनाने की परिपाटी चल रही है।

सत्यार्थप्रकाश का महत्त्वपूर्ण दर्शन : अष्टम समुल्लास

श्री स्व० बिहारीलाल शास्त्री

(गताक से आगे)

प्र०—सृष्टि के आदि मे एक मनुष्य हुआ वा अनेक ?

उत्तर—अनेक, क्योकि वेद कहता है।

'साध्या ऋषयश्च ये' साध्य और ऋषि उत्पन्न हुए। शतपथ ब्राह्मण कहता है "ततो मनुष्या अजायन्त" फिर मनुष्य हुए। मुस्लिम विद्वान भी, अब आदम को जाति वाचक शब्द मानने लगे हैं। ईसाई अभी एक ही आदम और हव्वा का होना मानते हैं मार्कण्डेय पुराण भी, अनेक मनुष्य प्रारम्भ मे हुए ऐसा ही लिखता है देखो।—

ब्रह्मण सृजत पूर्वं सत्याभिध्यायिनस्तथा।
मिथुनाना सहस्र तु, मुखात् सोऽप्यासृजत् मुने ॥
(मार्कण्डेय पुराण अ० ४६ पूरा पढिए।)

सहस्र मनुष्य हृदय से, सहस्र उरु से, सहस्र पावो से, पहले सत्व गुण से फिर सत्व रज से, फिर तम से अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रादि सृष्टि से ही सहस्रो उत्पन्न किए और ये सब वृक्षो के आश्रित रहते थे, फल, शहद खाते और वृक्षो के छाल से बने अर्थात् वल्कल वस्त्र पहनते थे, फिर इनमे ईर्ष्या द्वेष और सग्रह की प्रवृत्ति बढी तभी सघर्ष मे वे वृक्ष नष्ट हो गए, और फिर खेती और पशुपालन मनुष्य की जीविका बन। मनुष्य बन-मानुष था और सहस्रो वर्षो मे मनुष्य बना, और अब से १५ सहस्र वर्ष पहले मनुष्य इस रूप मे आया है। आदि ये सब मनुष्यो की हड्डिया मिलने पर कल्पनाए की गई हैं। (देखो श्री राहुल जी लिखित मध्य एशिया का इतिहास भाग प्रथम) ये सारी गढन्ते और कल्पनाए उपहास के योग्य हैं, वेद, शास्त्र पुराण आदि निश्चित रूप से बात कहते है। और ये बाते बुद्धि विरुद्ध भी नहीं हैं। भाषा भी मनुष्य को ईश्वर ने ही दी है। बाजो की ध्वनि, काका और कोयल के अनुकरण से मनुष्या ने सहस्रो वर्षो मे भाषा सीखी ये गप्पे पत्थरो से मारने लायक है। ऐसी ऐसी कल्पनाओ को जो निरे वहम हैं। ये डाक्टरेट पास विद्वान नई खोज करते हैं। यह खोज नही हैं इनकी खोपडी की उपज हैं, हमारे सामने योगिजनो के अनुभूत शास्त्र हैं। जो कहते हैं—

यो ब्रह्मणे प्रथमो गा अविन्दत। (ऋक् १।१०।१०५)
बृहस्पते प्रथम वाचो, अग्रे यत् प्रैरत नामधेय दधाना।
(ऋक् १०।७१।१)

हमारे इस सिद्धान्त का समर्थन बाइबिल और कुरान करते हैं। सैकडो अनुभव और परीक्षण करते हैं। अनेक सम्राटो ने परीक्षण किए, बहुत छोटे छोटे बच्चो को सबसे अलग रखकर पाला, पोषा और उनके सेवको से कह दिया कि कभी भी उनके सामने कोई शब्द न बोले। परिणाम यह हुआ कि बडे होने पर भी वे बालक गूगो जैसे ही थे। अक्षरमयी वाणी प्रभु की देन है।

वैदिक धर्म मे सृष्टि को प्रवाह से अनादि माना गया है वही श्री स्वामी जी ने माना है और जब उनसे यह प्रश्न किया गया कि ईश्वर ने किसी को पशु पक्षी, किसी को बुद्धिमान, किसी को मूर्ख क्यो बनाया ? आदि सृष्टि मे ही यह भेद क्यो किया ? तो स्वामी जी ने उत्तर दिया कि उनके इस सृष्टि से पहले की सृष्टि के कर्मानुसार जन्म दिए हैं।

सृष्टि चक्र चलता ही रहता है। आगे जब मनुष्य सृष्टि के विषय मे स्थान का प्रश्न हुआ है तो श्री स्वामी जी ने त्रिविष्टप (तिब्बत) में आदि मानवी सृष्टि मानी है। सृष्टि कहा हुई। इस विषय पर अनेक मत हैं किन्तु बहुमत इस पक्ष मे कि सृष्टि (मानव) हिमालय पर हुई। वैदिक सम्पत्ति के लेखक श्री रघुनन्दन शर्मा और "मार्क्सवाद तथा रामराज्य" के लेखक श्री करपात्री जी ने भी यही लिखा है कि मनुष्य की सृष्टि हिमालय पर हुई। और महाभारत मे भी यही लिखा है।

हिमालयाभिधानोऽयं ख्यातो लोकेषु पावनः।
अर्द्धयोजनविस्तार, पञ्चयोजनमायत: ॥
परिमीजनयोर्मध्ये मेरुरुत्तम पर्वत ।
तत. सर्वा समुत्पन्ना वृत्तयो द्विजसत्तम।
ऐरावती वितस्ता च विशाला देविका कुहू।
प्रसूतिर्यत विप्राणा श्रूयते भरतर्षभ ॥

जब से ये बात अच्छी तरह सिद्ध हो गई कि "भारतीय आर्यों के किसी प्राचीन ग्रन्थ से, उनकी किसी कथन कहानी से, और उनकी किसी भी बात से यह नही पाया जाता कि वे किसी गैर देस से आए ? तब से अब विद्वानो का रुख इस ओर फिरा है कि आर्य जाति भारत कश्मीर अथवा हिमालय के ही आस पास कही उत्पन्न हुई। आर्यो की प्रसिद्ध ईरानी शाखा के प्रसिद्ध विद्वान बम्बई निवासी मि० खुरशेद जी रुस्तम जी ने "ज्ञान प्रसारक मण्डली' की प्रेरणा से फ्राम जी कावस जी इन्स्टीटयूट हाल बम्बई मे एक व्याख्यान का विषय था 'मनुष्यो का मूल जन्म स्थान कहा था ?' यह व्याख्यान पुस्तकाकार छप गया है। यहाँ उसका आवश्यक अश उद्धृत करते हैं। आप कहते हैं कि 'जहा से सारी मनुष्य जाति ससार मे फैली है उस मूल स्थान का पता हिन्दुओ, पारसियो यहूदियो और क्रिश्चियनो की धर्म पुस्तको से इस प्रकार लगना है कि वह स्थान कही मध्य एशिया मे था, योरुप निवासियो की दन्त कथाओ मे वर्णन है कि जहा आदि सृष्टि हुई वहा १० महीने सर्दी और दो महीने गर्मी रहती है। माउण्ट स्टुअर्ट, एलफिन्टन और बरनस आदि मुसाफिरो ने मध्य एशिया की मुसाफिरी करके बतलाया है कि हिन्दुकुश पहाडो पर १० महीने की सर्दी और २ महीने की गर्मी होती है। इससे ज्ञात होता है कि पारसी पुस्तको मे लिखा हुआ 'ईरान वेज, नामक मूल स्थान, जो ३७० से ४० अक्षाश उत्तर तथा ८६० से ९० रेखाश पूर्व मे है, नि सन्देह मूल स्थान है। क्योकि वह स्थान बहुत ऊचाई पर है उसके ऊपर से चारो ओर नदिया बहती हैं। इस स्थान के ईशान कोण मे 'बलूतीग' तथा 'मूमाताग' पहाड है। ये पहाड अलबुर्ज' के नाम से पारसियो की धर्म-पुस्तको, और अन्य इतिहासो मे लिखे है। 'बलूतीग' से 'अमू' अथवा 'आक्सस' और जेरु गार्टस' नाम की नदिया 'अरत सरोवर मे होकर बहती हैं। इसी पहाड मे से 'इण्डस' अथवा सिन्धु' नदी दक्षिण की ओर बहती है इसी ओर के पहाडो मे से निकलकर बडी बडी नदियो पूर्व की ओर चीन मे और उत्तर की ओर साइबेरिया मे भी बहती हैं। ऐसे रम्य और शान्त स्थान मे पैदा हुए अपने को आर्य कहते थे और उस स्थान को स्वर्ग कहते थे।

इस व्याख्यान मे समस्त मनुष्य जाति के पूर्वजो के उत्पत्ति स्थान का वर्णन करते हुए पारसियो के मूल स्थान 'ईरान वेज' का वर्णन किया गया है और बतलाया गया हैं कि वह हिन्दुकुश पहाड ही है। हिन्दुकुश काबुल के ऊपर हिमालय रेंज मे स्थित है। इस तरह सच्चे आर्यो की प्रधान ईरानी शाखा ने भी हिमालय का ही इशारा किया है। भारत के आधुनिक विद्वान पूना निवासी नाना पावगी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "आर्यावर्तातील आर्याची जन्मभूमि" नामक ग्रन्थ मे लिखा है कि हिमालय ही हमारे और हमारे देवताओ का आदि कालिक जन्म स्थान है। 'या प्रमाणो सदरी न मुद केलेल्या सर्व प्रमाणावरून हा हिमाचल आमचें केवल निवासस्थान नही, तरतो अनादिकाला पासून आम च्या देवादिकाची ही जन्म भूमि होऊन राहिला आहे, असे वाचकाच्या लक्षात सहजी येईल। आर्यावर्तातील आर्यांची जन्मभूमि, पृ० २७२।"

इसी तरह बगाल के प्रसिद्ध विद्वान श्री अविनाशचन्द्र दास अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'ऋग्वेदिक इण्डिया' मे लिखते हैं कि वेदो मे जो उत्तर की ओर के नक्षत्रो का वर्णन है, उससे ज्ञात होता है कि वैदिक ऋषियो ने उन्हें काश्मीर और हिमालय के ऊचे पहाडो पर से देखा था।"

On the other hand, if it refers to the Constellaution of brsa Major which is the most Prominent in the Northern Parts of India, and particularly in the high table land of North Kashmir and the Peaks of the Himalaya from which the vedic lord may have made his deservation, it is nos unnatural for him to describe it is Placed high above the horizan Regvedic India. P 376

यहा हमने आर्यों की दोनो शाखाओ के विद्वानो की रायो का आदि मूल स्थान हिमालय ही बतलाते हैं। (वैदिक सम्पत्ति से)

(क्रमशः)

बिदर का काण्ड

कर्नाटक राज्य के उत्तर सीमा पर स्थित बिदर, एक जिला मुख्यालय है जो किसी समय अविभक्त हैदराबाद रियासत का एक विशेष भाग था।

निजाम के शासन काल मे यहा एक हवाई अड्डा भी था जहा पर अन्तर्राष्ट्रीय तस्कर, सिडनी काटन निजाम की सेना के लिये हवाई जहाज द्वारा भयानक हथियार चोरी से लाया करता था। मुझे याद है कि बिदर के उस प्रशिक्षण केन्द्र का जहां निजाम के तोपखाने के लोग एक चेकोस्लोवाक विशेषज्ञ से हवाई जहाज गिराने वाली तोप चलाने का प्रशिक्षण किया करते थे। इस तोप को सिडनी काटन ही हवाई जहाज द्वारा लाया था।

बिदर, मुसलमानो के लिये बिदर शरीफ हैं। हिन्दुओ के लिये प्रसिद्ध नृसिंह मन्दिर का स्थान है। इस मन्दिर की विशेषता यह है कि पानी के मार्ग से ही वहा पहुँचा जा सकता है। और पूजा स्थान भूगर्भ मे स्थित है। यहा गुरु नानक गुरुद्वार सिखो का प्रमुख तीर्थ स्थान भी है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के चालीस वर्ष बाद भी, कुछ नयी इमारतो के अतिरिक्त बिदर की स्थिति मे किसी प्रकार का सुधार नहीं आया है। अविभक्त हैदराबाद रियासत से पृथक होकर कर्नाटक मे मिलाए गए सभी प्रान्तो का यही हाल है।

१४ सितम्बर १९८८ की रात, बिदर मे एक दगा शुरु हुआ। कहते हैं कि वह एक साम्प्रदायिक दगा था। ६ सिख विद्यार्थी मरे और करोडो रुपयो की सम्पत्ति नष्ट हुई।

निष्पक्ष जाच के बाद हर सोचने वाला व्यक्ति इस निष्कर्ष पर पहुँचेगा कि दगा साम्प्रदायिक नही था।

बिदर का गुरु नानक गुरुद्वारा, आज का बनाया गया एक नया पुण्य क्षेत्र नही है। सिख सदा से यहा रहते आए हैं। एक लाख की आबादी मे सिखो की सख्या दो सहस्र से अधिक नही है। हिन्दू और मुसलमानो के बीच इतनी अल्प सख्या मे सिख समुदाय निर्भय और नि सकोच होकर शान्तिपूर्ण जीवन यापन करता आया है। १४ सितम्बर १९८८ के दगे के तह मे उन सिख विद्यार्थियो का गलत व्यवहार है जो दिल्ली और पजाब से आये हैं और स्थानीय गुरु नानक इन्जिनियरिंग कालेज मे शिक्षा पा रहे हैं। इस तथ्य को जानने के लिये उन भोलीभाली लडकियो से पूछताछ करें जो उन विद्यार्थियो के जुल्मो के शिकार हुई हैं। बिदर के मूल निवासी अपनी बहू बेटियो पर होने वाले जुल्मो को देखते हुए अपनी असहाय स्थिति पर रोने लगे थे।

इसी क्षुब्ध वातावरण मे गणपति का पर्व दिन आया। परिपाटी के अनुसार लोगों ने पर्व दिन को सामूहिक रूप से मनाने का निश्चय किया। राष्ट्रीय सगठन के इस त्योहार के लिये चन्दा वसूल किया जा रहा था। सभी चन्दा देने लगे थे। बाहर से आये हुए कुछ सिखो ने बातें न सिर्फ इसका विरोध किया अपितु हिन्दू देवी-देवताओं के बारे मे भी गलत-सलत बातें कहीं। इतने से सन्तुष्ट न होकर इन लोगों ने गैर सिख बस्तियो पर हमला किया।

बिदर के इस दगे को एक विशेषता यह है कि हिन्दू मुसलिम दोनो ने ही मिलकर उन हमलावरों से अपना बचाव किया।

हमारी जाच मे इस बात का भी पता लगा है कि सिखों और अन्य कुछ लोगो मे मैडिकल कालेज खोलने के सिलसिले मे जो होड लगी है, वह बिदर मे व्याप्त क्षुब्ध वातातरण का एक मुख्य कारण है। बिदर मे गुरु नानक इन्जिनियरिंग कालेज के छात्रो की कुल सख्या में ४० प्रतिशत वे छात्र हैं जो दिल्ली और पजाब से आये हैं, स्थानीय विद्यार्थियो मे इस बात का भी रोष है कि प्रवेश के लिये वे "कैपीटेशन फीस" नही दे सकते इसलिये उनका प्रवेश पाना भी मुश्किल है। उनका कहना है कि बाहर से आये हुए छात्र बिदर मे दिल्ली और पजाब की हवा फैला रहे हैं। हो सकता है कि इस प्रचार मे कुछ तथ्य हो। परन्तु हमारे सविधान मे ऐसा कानून नहीं है कि दिल्ली और पजाब के लोग पढ़ने के लिये दक्षिण में नहीं आवें। यदि ऐसा होता तो वह भारत की अखण्डता के लिये एक घातक बात हो जाती। हम स्थानीय छात्रो के इस प्रचार का खण्डन करते हैं। कालेज चलाने वालो से हमारी यह प्रार्थना है कि उपरोक्त तथ्य के बारे में सहानुभूतिपूर्ण विचार करें और कोई सही उपाय सोचें।

हम बिदर से हुए काण्ड की निन्दा करते हैं और सरकार से प्रार्थना करते हैं कि ऐसी घटनाओ को रोकने के लिये कोई कारगर उपाय करें।

प्रचार विभाग

प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव

ईमानदार आर्य संवाहक का अभिनन्दन

आर्य समाज, मोगरगा, जिला लातूर (महाराष्ट्र) ने सूचित किया है कि एक सम्मानित सदस्य श्री सुभाष मल्हारी यवते ने, जो उस्मानाबाद डिवीजन के अन्तर्गत राज्य परिवहन मे सवाहक (कन्डक्टर) का कार्य करते हैं, अपनी अपूर्व ईमानदारी का परिचय देकर समस्त आर्य जगत का गौरव बढाया है। दिनाक ३ मई, १९८८ को परडा से औरगाबाद जाती हुई बस मे एक यात्री अपना बैग उसी मे भूल गया। बैग मे ५२,०००) रुपये के नोटो के बन्डल थे। श्री यवते ने बिना किसी लोभ का प्रदर्शन करते हुए वह बैग औरगाबाद के राज्य परिवहन प्रमुख को सौप दिया। यदि वे चाहते तो बड़ी आसानी से यह रुपये वे अपने पास रख सकते थे। लेकिन उन्होने ऐसा नही किया।

इस ईमानदारी के कारण श्री यवते की सब जगह प्रशसा हो रही है। उन्होने बडे गर्व से कहा कि उनके अन्दर ईमानदारी की भावना 'आर्यसमाज' की ही देन है, जिसके लिये वे आर्य समाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती के आजन्म ऋणी रहेगे।

आर्य समाज की उपलब्धियां लाला दीवानचन्द के जन्म दिन पर भव्य आयोजन

दिल्ली २५ सितम्बर।

राजधानी दिल्ली के भव्य आर्य समाज मन्दिर दीवानहाल के निर्माता स्वर्गीय लाला दीवानचन्द का १०४वां जन्म दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियो तथा हरिजनो ने भी बडी सख्या मे भाग लिया। सामूहिक भोज के अवसर पर प्रसिद्ध आर्य नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि आर्य समाज ने अनेक दानवीर और क्रान्तिकारी नेताओ को जन्म दिया है जिन्होने अपना सर्वस्व देश-धर्म, समाज तथा राष्ट्र के लिए लगा दिया था। महर्षि दयानन्द ने पाच हजार वर्ष से प्रसुप्त भारतीय जनमानस को जागते रहने का आह्वान किया था।

स्वामी जी ने कहा प्राचीन वेद विद्या की पुर्नस्थापना, आर्य जाति को अवेध अभाव और अन्धकार के विरुद्ध खडा करना तथा अपने देशमे अपनी राजसत्ता, स्वभाषा, स्वधर्म तथा स्वदेश का जो नारा स्वामी दयानन्द ने दिया था, आर्य समाज के कार्यकर्ताओ ने अनेक बलिदान देकर उस महान उद्देश्य की पूर्ति की है।

हरिजन समस्या, स्वदेशी आन्दोलन, हैदराबाद सत्याग्रह, गोरक्षा आन्दोलन, हिन्दी रक्षा आन्दोलन तथा विधर्मियो को पुन वैदिक धर्म की दीक्षा देने का महान उत्तरदायित्व लाला दीवानचन्द जैसे अनेकों आर्य वीरो ने निभाकर महर्षि दयानन्द के महान सुधार आदोलनो मे आहुतियां देकर अपने कर्तव्य का पालन किया है।

मन्त्री—आर्य समाज दीवानहाल, दिल्ली

शोक समाचार

—रविवार दिनाक ७ ८ १९८८ प्रात १० ३० बजे स्थानीय आर्य समाज मन्दिर मे कायकारिणी के प्रधान श्री पन्नालाल सिंह के सभापतित्व में आर्य समाज कलकत्ता के भूतपूर्व मन्त्री पुनम चन्द जी आर्य के आकस्मिक देहात के कारण एक शोक सभा का आयोजन किया गया एव दिवगत आत्मा की शाति के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई, साथ ही साथ शोक सतप्त परिवार के प्रति सवेदना प्रकट की गई।

मन्त्री बालेश्वर पोद्दार

—आर्य समाज प्राचीन मन्दिर के वयोवृद्ध सदस्य श्री सुक्कीसिंह का स्वर्गवास हो गया कसोदा आर्य समाज के कार्यो मे उनका हमेशा योगदान रहता था। वो अपने पीछे सुयोग्य पुत्र श्री मूलसिंह को छोड गये हैं। जो आर्य समाज का कार्य लगन से कर रहे हैं। ३१ अगस्त को एक विशाल यज्ञ व बिरादरी को प्रीतिभोज उनके पुत्र ने कराया। आर्य समाज को दानादि देकर उपकृत हुए। —मन्त्री

—मेरी माता जी जो ९५ साल की थी का ६ ९ ८८ एकादशी को निधन हो गया है भगवान से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शाति प्रदान करे। —धमप्रकाश गग प्रधान आ स भिझरना, मु० नगर

—प० चम्पारण। अमोलवा बेलवा मे दि० २२ ८ ८८ को श्री महन्थ राय आर्य की माता का शान्ति यज्ञ रामच द्र सिंह क्रान्तिकारी के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बहुत धूमधाम से प्रचार प्रसार का कार्यक्रम किया गया। क्रातिकारी जी के ओजस्वी वाणी ने कितने नए आर्य समाजो को गठित करने मे भी सहयोग दिया। —मन्त्री

—आर्य समाज भटौली (बदायू) के मन्त्री श्री हरिशकर आर्य के एक मात्र सुपुत्र कौशल किशोर का दिनाक ४ ९ ८८ को आकस्मिक निधन हो गया। उन्हे लम्बे समय से दिल और दिमाग के दौरे पड रहे थे। उनकी आयु २८ वर्ष थी। परमात्मा दिवगत आत्मा की शाति तथा शोक सतप्त परिवार को धैय धारण करन की शक्ति प्रदान करे।

—नौबतराम आर्य

—आर्य समाज असुरन रेलवे कालोनी गोरखपुर के अन्तरग सभा की विशेष बैठक दिनाक २८ ८ ८८ को सायकाल ६ बजे प्रधान श्री जवाहरलाल शर्मा की अध्यक्षता मे हुई जिसमे गोरखपुर नगर के प्रतिष्ठित एव अग्रणी आर्य समाजी नेता श्री कन्हैयालाल जी आर्य के निधन पर शोक व्यक्त किया गया। दिवगत आत्मा की शान्ति के लिये प्राथना के बाद शोक सतप्त परिवार के प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट की गयी।

मन्त्री सन्तप्रसाद शर्मा

—आर्य समाज एव दयानन्द इन्टर कालेज (फतेहपुर) के सस्थापक एव अध्यक्ष श्री बाबूलाल जी आर्य का ७५ वर्ष की आयु मे १६ जून १९८८ को देहान्त हो गया। उनकी दिवगत आत्मा हेतु १२ जुलाई १९८८ को दयानन्द बाल मन्दिर पिथौरागढ मे शान्तियज्ञ सम्पन्न हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द कन्दाहारी ने परिजनो के धैर्य हेतु परमात्मा से प्रार्थना की।

स्वा० गुरुकुलानन्द सरस्वती कन्दाहारी

—अलीगढ। आर्य समाज सासनी द्वार के रविवारीय साप्ताहिक सत्सग दि० २५ ९ ८८ मे उपस्थित हम सभी आर्य व युवो को आपकी पूज्या माता, कर्मठ आर्य कार्यकर्त्री व आर्य सभासद श्रीमती कमलावती देवी का दिनाक १९ ९ ८८ दिन सोमवार को ७८ वर्ष की आयु मे निधन हो जाने का दुखद समाचार सुन महान दु ख हुआ आपने अपने पीछे भरा पूरा सम्पन्न परिवार छोडा है।

अत, हम सभी आर्य बन्धु दिवगत आत्मा के प्रति १ मिनट का मौन धारण कर अपनी शोक श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि परमात्मा आपके पूज्य पिता शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य एव सान्त्वना प्रदान करे।

—जयनारायण शर्मा

—आर्य समाज सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम रग्घाट मार्ग अलीगढ की दिनाक २५ ९ ८८ की साप्ताहिक सत्सग सभा आर्य समाज सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम के प्रधान श्री हरप्रसाद आर्य (दादा जी) की धर्मपत्नी श्रीमती कमलावती का दिनाक १९ ९ ८८ को असामयिक निधन हो जाने पर अत्यधिक शोक प्रकट करती है और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि मृतका की आत्मा को शान्ति व समस्त परिवार जनो को धैर्य प्रदान करे।

गायत्री मन्त्र के जाप के साथ सभा द्वारा एक मिनट का मौन रखकर उपरोक्त प्रस्ताव पारित किया गया है। मन्त्री रामदीन आर्य

—१९३२ से लेकर आज तक इस कुल की श्री वृद्धि मे मन वाणी और कर्म से सतत सहयोग देने वाले क्षत्रिय कुलभूषण राजर्षि महाराज श्री राजा रणञ्जय सिंह जी। अमेठी सुल्तानपुर के पचभौतिक चिर वियोग से यह कुल और कुलवासी एव अन्तर गीगण सभी शोकाकुल हैं।

दिवगत आत्मा की सद्गति एव शोक सन्तप्त अमेठी राजपरिवार के प्रति सहभागी यह कुल जगन्नियन्त परमपिता परमेश्वर से धैर्य प्रदान के लिये प्राथना करता है। तथा ३ त्रिदिवसीय शोक मनाता है।

वसुमित्र चतुर्वेदी (कुलपति) एव कुल स्वामी

वेदप्रचार सप्ताह एवं समता दिवस पूरे देश में उत्साहपूर्वक मनाया गया

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देश पर सम्पूर्ण देश मे समस्त आर्य समाजो एव आर्य शिक्षण सस्थाओ ने "समता दिवस का आयोजन कृष्ण जन्माष्टमी के दिन आर्य समाजो मे यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमे हरिजन बन्धुओ को यज्ञोपवीत प्रदान कर यज्ञ सम्पन्न कराये तथा प्रीति भोजो का आयोजन किया गया। उक्त आर्य समाजो एव आर्य सस्थाओ की सूची निम्न प्रकार है। जिन्होने समता दिवस मनाया है।

आर्यसमाज शालीमार बाग दिल्ली, आर्यसमाज रामनाथपुर गुडगावा, आर्यसमाज मठपारा, आर्यसमाज मधुपुर बिहार, आर्य समाज फगवाडा जिला कपूरथला पजाब, आर्यसमाज धमौल, आर्यसमाज डाक पत्थर देहरादून, आर्यसमाज जवाहरलाल रोड (धरनी पोखर) मुजफ्फरपुर, आर्यसमाज दयानन्द मार्ग बीकानेर, आर्यसमाज रजपुरा जिला बदायू, आर्यसमाज टकारा, आर्यसमाज बाकनेर दिल्ली, आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी गढ़वाल, आर्य समाज झालरा पाटा जिला झालावाड,(राज०) आर्यसमाज दानापुर कैन्ट पटना, नगर महिला आर्यसमाज वायर गज गाजियाबाद आर्यसमाज शाहजहापुर (उ०प्र०), आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल-४२ शकर घोषलेन कलकत्ता-६

आर्यसमाज शान्ता क्रूज बम्बई, आर्यसमाज गगापुर सिटी (राज०) आर्यसमाज केहर वाला जिला श्री गगानगर, आर्यसमाज बगरहा समस्तीपुर आर्यसमाज काचरापाडा, आर्यसमाज असुरन कालोनी गोरखपुर, आर्यसमाज मवाना मेरठ, आर्यसमाज चन्दोसी मुरादाबाद, आर्यसमाज स्टेशनरोड मुरादाबाद आर्यसमाज हिवर खेड रूपराव जिला अकोला महाराष्ट्र। आर्यसमाज गया बिहार, आर्यसमाज पूजला नयापुरा जोधपुर (राज०) आर्यसमाज सदरपुर मुरादाबाद आर्यसमाज गुलबर्गा, आर्यसमाज आगरा नगर, आर्य समाज विवेक विहार दिल्ली, आर्यसमाज खड्डा देवरिया आर्यसमाज उभानी बदायू, आर्यसमाज नगर उटारी, आर्य केन्द्रीय सभा गुडगावा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली, आर्यसमाज अमरोहा।

—दिनाक ३-९-८८ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एव बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा पटना के निर्देशानुसार आर्यसमाज जमालपुर (मुगेर) मे हरिजनो के सम्मान मे "समता-दिवस का आयोजन किया गया। स्थानीय हरिजनो के बीच सभा हुई। यह सभा बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा पटना के उपमन्त्री श्री शिवशकर प्रसाद की अध्यक्षता मे हुई। समारोह को प्रो० महेन्द्र प्रसाद यादव, प्रेमनाथ पाण्डेय एव डा० रामचन्द्र आर्य ने सम्बोधित किया।

—नगर आर्यसमाज रकाबगज लखनऊ के तत्वावधान मे तारीख ३ सितम्बर को श्रीकृष्ण जन्मोत्सव को समता दिवस के रूप म मनाया गया सैकडो हरिजन बन्धुओ व पिछड़े वर्ग के लोगो ने वृहद यज्ञ मे भाग लिया करीब ५० लोगो का यज्ञोपवीत सस्कार करके जनेऊ धारण कराया गया इस समारोह के विशेष अतिथि श्री कन्हैयालाल जी बाल्मीकि विधान सभा सदस्य व श्रीमति शिवदालक बाल्मीकि ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमे समता व भाई चारे व प्रेम से आपस मे रहना चाहिए।

—यज्ञदत्त शास्त्री

सामवेद पारायण यज्ञ एवं वेद प्रचार

ग्राम वर्धा जिला विदिशा (म०प्र०) मे दि० ८-९-८८ से ११-९-८८ तक सामवेद पारायण यज्ञ एव वेदप्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसके सयोजक एव यज्ञ के ब्रह्मा श्री ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ विदिशा रहे। श्री विजयसिंह जी "विजय" उपदेशक मध्य भारतीय प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रवचन एव भजनोपदेश दि० १५-९-८८ से १६-९-८८ तक हुये। यज्ञ एव उपदेशो का जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा। —मन्त्री आर्यसमाज वर्धा, जिला विदिशा

मुरादाबाद मे वेदप्रचार जन जागरण सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज गज स्टेशन रोड, मुरादाबाद मे २६ अगस्त से १ सितम्बर तक सायकाल वेद प्रचार सप्ताह एव जन जागरण सप्ताह सोल्लास मनाया गया इस अवसर पर बिहार राज्य (नालन्दा) के डा० देवेन्द्रकुमार सत्यार्थी जी के गवेषण पूर्ण प्रवचन का आयोजन किया गया प्रवचन का विषय था "भारत की आजादी के निर्माण मे क्रान्तिकारियों का कितना योगदान।

आर्य समाज बक्सर (बिहार राज्य) में वेद प्रचार सप्ताह

दिनाक ५ सितम्बर से ११ सितम्बर तक आर्य समाज बक्सर ने बड़े धूमधाम से वेदप्रचार सप्ताह मनाया इस अवसर पर बाबा बिहारी जी वानप्रस्थी, डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी (नालन्दा) एव श्री रामप्रसाद पाण्डेय वाराणसी के प्रवचन एव भजन होते रहे सत्यार्थी जी द्वारा आर्य समाज के क्रान्तिकारी इतिहास का बड़ा प्रभावशाली पुरोग्राम हुआ। —देवकीनन्दन गुप्ता मन्त्री

आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटावा)

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध आर्ष गुरुकुल कटरा का सप्तम वार्षिकोत्सव २७ अक्तूबर से ३० अक्तूबर १९८८ तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। आर्य जगत् के प्रसिद्ध सन्यासी, विद्वान तथा भजनोपदेशक इस अवसर पर पधार रहे हैं। समस्त धार्मिक जनो तथा दानी महानुभावो से इस समारोह मे पधारने की प्रार्थना की जाती है।

गुरुकुल के लिए एक यज्ञशाला, लगभग ५० छात्रो के लिए छात्रावास, एक भोजनालय तथा एक विद्यालय भवन के निर्माण की अत्यन्त आवश्यकता है। निवेदन है कि इस गुरुकुल को अधिक से अधिक सहयोग प्रदान कर। दान आयकर की धारा ८० जी० के अन्तर्गत आयकर से मुक्त होगा।

स्वामी सेवानन्द मेधार्थी　　आचार्य रामदेव शर्मा
कुलपति　　प्रधानाचार्य

शोकसमाचार

— जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर की अत्यावश्यक बैठक दि० २८.८.८८ को सायकाल ७ बजे श्री कल्पनाथ सिंह प्रवक्ता गणित एव वरिष्ठ उपप्रधान जिला सभा के निवास स्थान गोरखपुर उत्तरी मे हुई जिसमे गोरखपुर नगर के प्रतिष्ठित एव अग्रणी नेता श्री कन्हैयालाल आर्य के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया। दिवगत आत्मा की शांति प्रार्थना के बाद उनके शोक सतप्त परिवार के प्रति सहानुभूति प्रकट की गयी। सभा की अध्यक्षता जिला सभा के प्रधान श्री पं० द्विजराज शर्मा ने किया।

आवश्यक सूचना

परोपकारिणी यज्ञ समिति से सम्बन्धित सभी सहयोगी ध्यान द कि समिति का कार्यालय पुण्डरीक विहार स्थानान्तरित हो गया है। भविष्य मे पत्र-व्यवहार या समिति के महामन्त्री जी से सम्पर्क के लिए पता नोट कर।

वर्तमान कार्यालय　श्री के० के० अग्रवालार्य (कमल किशोर आर्य)
महामन्त्री परोपकारिणी यज्ञ समिति, दिल्ली
ए-५४ पुण्डरीक विहार, समक्ष डी-ब्लाक,
सरस्वती विहार, दिल्ली-३४

आर्य जगत् के समाचार

वाल्मीकि का नाम लेना मात्र अपर्याप्त
आर्य विद्वान का हरिजन समाज में भाषण

देहरादून। २ अक्तूबर को महात्मा गान्धी तथा स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुरशास्त्री की जन्म-जयन्ती मनानेके लिये मोहल्ला चकरयुवाला की हरिजन बस्ती मे अ० भा० वाल्मीकि विकास सभा के तत्वावधान मे आयोजित समारोह के सभापति-पद से भाषण करते हुए जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान प० देवदत्त बाली ने गान्धी जी द्वारा किए गए दलितोद्धार कार्य की सराहना करते हुए कहा कि इस सामाजिक क्रान्ति के लिए आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मूल मन्त्र प्रदान किया था।

वाल्मीकि भाइयो से आपने विशेष रूपसे कहा कि महान ऋषि वाल्मीकि का नाम अपने साथ जोड लेने मात्र से उनका कल्याण होने वाला नही है जब तक कि वे उस महर्षि के बताए पवित्र जीवन को अपने आचरण का अ ग नहीं बनाते। इसके लिए अपने जीवनो को पवित्र, निर्व्यसन और उदार बनाना पडेगा। आपने कहा कि महर्षि वाल्मीकि के बताये आर्य जीवन की झाकी उनकी कृति 'रामायण'' मे देखनी चाहिए।

आपने प्रस्ताव किया कि यदि आगामी वालमीकि-जयन्ती पर रामायण के उपदेशको को यह समाज सुनना चाहे तो आर्य समाज देहरादून की ओर से कथा की व्यवस्था कर दी जाएगी।

—देवदत्त बाली

प्रधान, जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा उ०प्र०

आर्य माता की पुण्य तिथि

अमरोहा ३०-९-८८ को आर्य समाज मन्दिर में विद्यालय के सस्थापक प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार जी आर्य की पूज्य माता श्रीमती दुलारी जी की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य मे दयानन्द बाल मन्दिर मे आयोजित कार्यक्रम मे विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया। एक बच्चे ने माता जी के जीवन के सम्बन्ध मे अपने विचार रखते हुए बताया कि वह अत्यन्त दयालु तथा पूर्ण देशभक्त, सत्यभाषिणी तथा दानशील नारी थी। उन्होने आर्य समाज द्वारा चलाये गये। १९५७ मे चलाये गये हिन्दी रक्षा आन्दोलन मे बढ-चढ कर भाग लिया। अस्वस्थ होते हुए भी धन एकत्रित कर समय-समय पर नेताओ को भेट किया। तथा अपने लेखो और जोशीली कविताओ के माध्यम से हिन्दी रक्षा आन्दोलन के समर्थन मे जन भावना जागृत की। भूखे व नगे को देख कर वह दुखी हो जाती थी और अपनी सामर्थ से कही अधिक बढ़कर उनके लिए जो कुछ भी हो सका किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री खेमचन्द्र आर्य जी ने पूजनीय माता जी के पद चिन्हो का अनुसरण करने का सन्देश दिया। श्री वीरेन्द्र कुमार जी आर्य ने ३१ स्टील क बर्तन एव ४७४ रु० पुरस्कार तथा दान मे दिये। बडे पुत्र श्री धर्मेन्द्र कुमार जी आर्य ने विद्यालय को ५०१ रुपया प्रदान किया।

—मृदुला आर्या

वन महोत्सव व स्वतन्त्रता दिवस समारोह सम्पन्न

आज एस एम आर्य पब्लिक स्कूल, पजाबी बाग के प्रागण मे ४१वा स्वतन्त्रता दिवस समारोह बडी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर श्री महेन्द्रसिंह साथी, दिल्ली के महापौर, मुख्य अतिथि तथा अध्यक्ष कौंसलर श्री रोशनलाल आहूजा थे। इस अवसर पर विज्ञ न तथा सुपा की प्रदर्शनी भी आयोजित की गई, जिसका उद्घाटन शिक्षा अधिकारी श्री डी डी डोभाल जी ने किया।

इस अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए मुख्य अतिथि श्री महेन्द्रसिह साथी ने बच्चो व अध्यापिकाओं को राष्ट्र भक्ति व राष्ट्रीय एकता के भव्य कार्यक्रम करने पर बधाई देते हुए उनसे स्वतन्त्रता सेनानियो द्वारा राष्ट्र के लिए किए गए बलिदानो व देश की सास्कृतिक व भावनात्मक एकता के लिए युवा पीढ़ी को अवगत कराने की दिशा मे प्रयास करने का आवाहन किया।

सर्वात्मना समर्पित
आर्य नेता स्वामी आनन्दबोध
सरस्वती की प्रशस्ति में

देश जाति, धर्म को ज्ञान जो उभार सके।
सत्य मे वही एक ऊषा प्रबोध है॥
मानवता को मानवीय सूत्र मे पिरो सके।
वही महामानव है उसी को सुबोध है॥
जाति पाति भेद, भाव विद्रोह बढाते जो।
ऐसा राष्ट्र द्वेषी आचार्य भी अबोध है॥
प्रबोध सुबोध से अबोध जो मिटाता बढे।
ऐसा व्यक्तित्व मात्र आनन्दबोध है॥

समर्पण कर्ता

रामप्रकाश शर्मा 'सरस' गाजियाबाद

श्री दरबारीलाल जी एवं श्री प्रिन्सिपल मदनलाल सेखड़ी पंजाब यूनिवर्सिटी के फैलो में विजयी

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री दरबारीलाल जी कार्यकर्ता प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव सगठन सचिव डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति और प्रिन्सिपल मदनलाल सेखडी, उपसगठन सचिव, डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति दोनो पजाब यूनिवर्सिटी के सैनेट चुनाव जो कि रविवार दिनाक १८ ९-८८ को हुआ था, मे निर्वाचित हो गए है।

आर्य सम्मेलन

दिनाक ४, ५ ६ नवम्बर १९८८ को गुडगावा मे आर्य सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। जिनकी अध्यक्षता सुप्रसिद्ध सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज करेगे। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासी, विद्वान एव भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—रामचन्द्र आर्य, स्वागत मन्त्री

वेद प्रचार सप्ताह

—बिसवां (सीतापुर) आर्य समाज बिसवा ने विश्व की आर्य समाजो द्वारा मनाये जाने वाले वेद प्रचार सप्ताह को वेद प्रचार मास मे परिणित श्रावणी से भाद्रपद पूर्णिमा तक बडे ही व्यस्त कार्य-क्रमो मे मनाया। २७ अगस्त से २ सितम्बर तक प्रतिदिन आर्य समाज की यज्ञशाला मे प्रात ७ से ६ तक यज्ञ, भजन एव वेद-पाठ किया गया। इससे आगे २५ सितम्बर तक आर्य समाज के कार्य कर्ता आर्य समाज भवन से बाहर निकलकर दूर-दूर पिछडे क्षेत्रो मे गए, एव वेद प्रचारार्थ, वैदिक मन्त्रो से यज्ञ वैदिक साहित्य की बिक्री, आर्य समाज के नवीन सदस्यो का निर्माण एव वेद मन्त्रो की सरल बोध-गम्य भाषा मे व्याख्याए प्रस्तुत किये। इस मध्य हरिजनो के परिवारो को प्रमुखता दी गई। उनके सहयोग से वैदिक यज्ञ किए गए एव उन्हे वेद का अधिकारी बताते हुए वैदिक साहित्य तथा सस्कृति की ओर प्रेरित किया गया। —मन्त्री

—दि० २७-८-८८ को प्रात ८ बजे दयानन्द आश्रम मे श्रावणी उपाकर्म व हैदराबाद बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। जिसमे प्रथम आर्य पर्व पद्धति के अनुसार विशेष यज्ञ व उसी मे हरिजन बन्धुओं के साथ सबने नवीन यज्ञोपवीत धारण किये। आज क पर्व पर विद्वानो के भाषण व भजन हुए तत्पश्चात हैदराबाद सत्याग्रह के शहीदो को विनम्र श्रद्धाजलि दी गई व हैदराबाद सत्याग्रही श्री बशीलाल जी स्वतन्त्रता सेनानी ने अपनी जेल यात्रा सस्मरण सुनाए, प्रसाद वितरण के बाद आज की कार्यवाही सानन्द समाप्त हुई।

—दिनाक २५ सितम्बर को प्रात [illegible] में वेद मन्त्रो का सस्वर पाठ मे स्वाहा की [illegible] (उ० प्र०) [illegible] अन्त मे पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। यज्ञ के ब्रह्मा प्रो० कमवार [illegible] दिनाक १८ से २५ सितम्बर तक प्रतिदिन के यज्ञ के यजमानो को आशीर्वाद प्रदान किया इस अवसर पर आर्य समाज श्रीगंगानगर द्वारा इसी नगर के तीन श्रेष्ठ आर्य भाषी कार्यकर्ताओ को प्रशस्ति पत्र व कृतज्ञता प्रतीक प्रदान कर एव दुशाला ओढाकर नागरिक अभिनन्दन किया गया। यह सार्वजनिक अभिनन्दन चौ० नारायणराम, श्रीमती बहन परमेश्वरी देवी तथा प० अग्रसैन जी का किया गया। समारोह के पश्चात सैकडो नर-नारियो ने ऋषि लगर मे भोजन किया। —मन्त्री आर्य समाज

—दिनाक १० से १२-९-८८ के पूर्वान्ह समय तक वैदिक प्रचार कार्य-क्रम आर्य समाज मानपुरा (प्राथमिक विद्यालय मानपुरा के प्रागण) मे उत्साह पूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ जिसमे सर्वश्री डा० सत्यव्रत वानप्रस्थी, देव-व्रत वानप्रस्थी प० नवल किशोर शास्त्री, दयानन्द सत्यार्थी, श्रीमती धर्मशीला देवी, मोहन प्रसाद सिंह, रामसखा आर्य एव कमिल कुमार शर्मा ने पूर्ण सहयोग प्रदान किया। प्रचार कार्य से स्थानीय जनता पर अच्छा प्रभाव पडा। —सीताराम आर्य, मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली, मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८९] वर्ष २३ अंक ३६ | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
आश्विन शु० १३ सं० २०४५ रविवार २३ अक्तूबर १९८८ | वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

धर्मान्तरण की समस्या का समाधान–

सीतापुर सरगुजा (मध्यप्रदेश) में २६, २७, २८ नवम्बर को

वनवासी आर्य महासम्मेलन की जोरदार तैयारी

हजारों वनवासी भाग लेंगे

वनवासी बन्धुओ की जागृति एव धर्मान्तरण की सुरक्षा करने हेतु एक महान यज्ञ एव आर्य महासम्मेलन दिनाक २६, २७, २८ नवम्बर १९८८ का आयोजन सीतापुर सरगुजा मे किया जा रहा है।

इस सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी करेगे। पिछडे वर्ग के वनवासी बन्धुओ का यह महासम्मेलन सरगुजा क्षेत्र मे धर्मान्तरण की देश घातक समस्या का बेजोड जबाव होगा—

महासम्मेलन की तैयारिया बडे उत्साह वर्धक वातावरण मे की जा रही है।

देश के अन्य क्षेत्रो से भी हजारो आर्य जन इस महान समागम मे भाग लेगे।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री

पृथ्वीराज शास्त्री
उपमन्त्री

देश में महिलाएं भी मादक द्रव्यों के चंगुल में

समाज के बुद्धिजीवी एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन के अवसर पर केन्द्रीय मंत्री श्रीमती राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी के उद्गार

नई दिल्ली, १२ अक्टूबर। केन्द्रीय कल्याण राज्य मन्त्री श्रीमती राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी ने इस बात पर जोर दिया है कि देश मे मादक पदार्थों के प्रयोग की आदत बढ़ती जा रही है। वह आज शाम कान्स्टीटयूशन क्लब मे कालीचरण गौतम के काव्य सग्रह "नशा ही मृत्यु' के विमोचन समारोह मे बोल रही थी"।

उन्होंने कहा कि स्वतन्त्रता से पहले गाधी जी ने वर्षों तक नशाबन्दी के लिये आन्दोलन किया था जिनमे महिलाओ ने भी शराब की दुकानो के सामने धरने दिये थे। परन्तु खेद का बात है कि अब महिलाओं मे भी शराब, सिगरेट और नशे की गोलिया खान की आदत पड रही है। उन्होने सुझाव दिया कि नशाबन्दी का प्रचार करन क लिए गाव गाव मे नौटकी, कथा, यात्रा आदि माध्यमा स काम लिया जाना चाहिए।

समारोह के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने विधान मे नशाबन्दी के प्रावधान का जिक्र करते हुए कहा कि सरकार और उसके कर्मचारी इस नियम की खुल्लम-खुल्ला अवहेलना कर रहे हैं। उन्होने बताया कि अभी हाल ही मे जब राष्ट्रपति श्री आर वेकटरामन विदेश यात्रा पर गये थे तो उन्होने इस बात पर जोर दिया था कि उनके साथ जाने वाले अधिकारियो मे से कोई भी शराब पीने वाला नही होना चाहिए। परन्तु उनके साथ गये ६० कर्मचारियो व पत्रकारो मे से अधिकतम शराब पीने वाले थे यही नहीं बल्कि ये लोग राष्ट्रपति के सो जाने के उपरान्त जहाज मे ही बोतलें खोल लेते थे।

स्वामी आनन्दबोध ने विशेषतम आर्य समाज से अनुरोध किया कि वह नशाबन्दी आन्दोलन को जन आदोलन बनाये चाहे इसके लिए सरकार से ही क्यो न टक्कर लेनी पडे। उन्होने श्री कालीचरण की यह कविता सग्रह लिखने व प्रकाशित करने के लिए प्रशसा की।

इस अवसर पर बोलते हुए प्रो० बुद्ध प्रिय मौर्य ने जो विशिष्ट अतिथि थे कहा कि नशाबन्दी, कानून बनाकर नही लागू की जा सकती इसके लिये जनता मे जागृति लाना आवश्यक है।

यह समारोह अखिल भारतीय समाज उत्थान समिति की ओर से आयोजित किया गया था। समिति के सचिव श्री रमेशचन्द शास्त्री ने श्री कालीचरण गौतम का अभिनन्दन करते हुए बताया कि श्री गौतम ने गत तीन वर्ष से ही लिखना शुरू किया है परन्तु इतने समय मे ही १६ किताबे लिख चुके हैं।

दिल्ली प्रशासन के कार्यकारी पार्षद चौ० प्रेमसिंह ने बताया कि वे गत ३० वर्षों से चुनाव लड रहे हैं और जीतते रहे हैं परन्तु उन्होने किसी शराब पीने वाले कार्यकर्ता को पास तक फटकने नही दिया और न ही अपने

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

बिहार भूकम्प एवं बाढ़ पीड़ित सहायता कोष में दान

रविप्रकाश गुप्त आर्य मु० पो० सदरुद्दीन नगर नहटौर बिजनौर	१००)
आर्य समाज रानी बाग शकूरबस्ती दिल्ली-३४	११०००)
आर्य वीरदल हरियाणा	११००)
आर्य समाज हिसार	११००)
चौ० धनसिंह जी, हिसार	१००)
श्री उद्धवराव गंगाराम आर्य, कंधार जि. नान्देड़	११)
श्री हरिनारायण शेलके, ग्राम निम्बेड, बाजार (महा०)	११)
„ बाबूलालआर्य 'आनन्द' प्रा०सचालक आर्यवीर दल विदिशा म प्र	१०१)
श्री भागवत मारोती महाजन, नान्देड	२५)
आर्य समाज शिवपुर जानसठ रोड खतौली मु नगर	१००)
आर्य समाज ग्रा० मि० मुरादनगर गाजियाबाद	१०१)
श्री शान्ति प्रकाश जी प्रेम पचपुरी गढ़वाल	२११)
पार्वती देवी, एल आई जी फ्लैट्स ५६/ई हरीनगर नई दिल्ली	१११)
श्रीमती कमला भाटिया, शाहजीवन अपार्टमेंट बंगलौर	२००)
आर्य समाज रामपुरा कोटा	१०००)
आर्य समाज गुमानपुरा कोटा (राज०)	१०००)
आर्य समाज भीमगंज मंडी, कोटा	५०१)
आर्य समाज विज्ञान नगर, कोटा	१०१)
आर्य समाज झालरा पाटन (राज०)	१५१)
आर्य समाज रावत भाटा (राज०)	१०१)
आर्य समाज रेलवे कालोनी कोटा	२५१)
ईश्वर लाल मटाड स्ट्रीट रोड यादगिरी कर्नाटक	१००१)
बृजलाल भुटियानी, ४४ माडल कालोनी यमुनानगर	२५)
आर्य समाज माडल बस्ती नई दिल्ली	११००)
आर्य समाज फजलपुर बिनौली मेरठ (उ प्र)	११०)
आर्य समाज नगर डटारी पलामू बिहार	१०१)
श्रीमती उमा कालिया नायर चूना भट्टी यमुना नगर अम्बाला	३१)
श्री मन्त्री जी आर्य समाज छीपा बड़ौद कोटा (राज०)	५००)
श्रीमती सत्या आर्या गाजियाबाद	५०)
राजरानी महिला सत्संग गाजियाबाद	५०)
डा० हर्ष वर्धन मित्तल „	५०)
आर्य समाज माडल टाऊन अम्बाला सिटी	१००)
आर्य महिला समाज गाजियाबाद	८००१)
शम्भू दयाल, वैदिक संन्यास आश्रम गाजियाबाद	४५०)
आर्य समाज आनन्द नगर राजपुरा टाऊन शिप पंजाब	१४००)
आर्य समाज किरावली आगरा	३२१)
किशन दास रामरखी सेठी फाउन्डेशन राजौरी गार्डन नई दिल्ली	१०००)
माता कौशल्या देवी आर्य समाज „	५०)
प० जयानन्द जी पुरोहित आर्य समाज नया नागल	१०)
श्री सूर्यप्रकाश तारादेवी आर्य धर्मार्थट्रस्ट रामपुर कुम्भी जि खीरी	२०)
मन्त्री जी आर्य समाज बिसवा जौनपुर	५१)
श्री सत्यप्रकाश गुप्त मक्खनपुर मैनपुरी (उ० प्र०)	५१)
कन्या गुरुकुल हाथरस अलीगढ़	११००)
आर्य समाज पकरी कला पो० दशरथपुर वाराणसी	१७५)
श्रीमद्दई राम ब्रह्मचारी बबेरू जि० बांदा	११)
श्री मोहनलाल आर्य पो० मुसेरियान सदर बाजार मथुरा	११)
श्री खूबीराम ७६ स्टेट बैंक कालोनी जी टी रोड दिल्ली	५०)
श्री रामेश्वर चौधरी आर्य, ग्रा पो निहिया चौरस्ता भोजपुर	५१)
श्री जयराम सिंह आर्य ग्राम दौका डा० अहमदगढ़ जि बुलन्दशहर	१०)
श्री रंगैय्याह चम्पापेठ रंगारेड्डी हैदराबाद	१०१)
आर्य समाज रेलवे कालोनी रतलाम	१०१)

आ विजय दशमी गई

बीत गे दस इन्द्रियां दुर्भावना मन में न लावें।
आ विजय दशमी गई अब कौनसा रावण जलायें॥

हो चुके लाखों वर्ष अब जानकी रावण चुराई।
कर क्षमा अब तक न पाया लोक रावण की बुराई॥
आज तक पुतला बना प्रतिवर्ष उसको फूंकते हैं।
नाम पर लंकेश के धिक्कारते हैं थूकते हैं॥

पर न कितने मनुज मृग मारीच बन चले चलायें।
आ विजय दशमी गई अब कौनसा रावण जलायें॥१॥

प्रेम करने को सिया से याचना करता रहा वह।
पर अनिच्छा को समझ मन में सदा डरता रहा वह॥
आज रावण से अधिक दुर्जन जगत् में घूमते हैं।
बल सहित कामान्ध बन जो वासना को चूमते हैं॥

शील हरने की अहो वे जानते कितनी कलायें।
आ विजय दशमी गई अब कौनसा रावण जलायें॥२॥

रोज सड़कों पार्कों में जाल जिनके घूमते हैं।
दिन दहाड़े लाज सनिपो की धरा पर लूटते हैं॥
राम लक्ष्मण के सभी आदर्श खोते जा रहे हैं।
छल कपट आडम्बरों के बीज बोते जा रहे हैं॥

रामलीला के बने बजरंग अब सीता चलाय।
आ विजय दशमी गई अब कौनसा रावण जलायें॥३॥

राम के हम भक्त फिर भी काम रावण से बुरे हैं।
गा रहे अश्लीलता के राग कितने बेसुरे हैं॥
आर्य (हिन्दू) जाति किस ओर को तू जा रही है।
राम के पावन चरित पर कालिमा क्यों ला रही है॥

आज अपने आपका हम पाप का रावण जलायें।
आ विजय दशमी गई अब कौनसा रावण जलायें॥४॥

सत्यव्रत चौहान सिद्धान्त शास्त्री
पुडरी मैनपुरी, उ० प्र०

श्रीमती वाजपेयी के उद्गार

(पृष्ठ १ का शेष)

क्षेत्र में आज तक कोई शराब की दुकान खोलने दी।

श्री कालीचरण ने जो स्वयं दिल्ली प्रशासन में प्रति निदेशक है, सरकार की दोगली नीतियों पर दुःख प्रकट करते हुए कहा कि प्रशासन ही का एक विभाग शराब के लाइसेंस जारी करता है और दूसरा विभाग नशाबन्दी प्रचार प्रसार करने के लिए लाखों रुपया खर्च कर रहा है।

समारोह के संयोजक सतीश बत्रा थे। डा० नारायण दत्त पालीवाल ने श्री गौतम के काव्य संग्रह 'नशा ही मौत' के प्रकाशन के लिए ५००० रु० अनुदान राशि दी थी। डा० पालीवाल हिन्दी अकादमी के सचिव हैं।

रामकिशोर जी मिश्र रतलाम	२१)
काशीराम जी रतलाम	२१)
आर्य समाज पीपाड़ नगर जोधपुर (राज०)	१६०)
आर्य समाज बाद गांव गोरखपुर	१०)

(क्रमश.)

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

अफसर शाही क्या यह सच है ?

टोली राष्ट्रपति की : मामला तस्करी का

लेखक—अनिल नरेन्द्र

अंग्रेजी के साप्ताहिक संडे आब्जर्वर के ताजा अंक मे राष्ट्रपति वेंकटरमन की हाल की विदेशयात्रा से सम्बन्धित एक चौंकाने वाली रिपोर्ट छपी है। रिपोर्ट कुछ इस प्रकार है। राष्ट्रपति वेंकटरमन २३ सितम्बर को एयर इण्डिया के हर्षवर्धन विमान पर विदेश यात्रा से लौटे। इतने बड़े विमान में केवल ६० व्यक्ति बैठे थे जब कि विमान में ३५० से ज्यादा यात्री आ सकते है। राष्ट्रपति महोदय और उनकी पार्टी द्वारा वापस लाये गये विदेशी सामान ने कस्टम अधिकारियों को चौंका दिया।

जब राष्ट्रपति का विमान एम्सटरडम से उड़ा तो विमान पर एक शानदार म्यूजिक सिस्टम लाकर रखा गया। फिनलैंड चूंकि बहुत महंगा देश है और खरीददारी महंगी है इसलिए यहां पर कोई विशेष खरीद-फरोख्त नही हुई। पर जैसे ही पार्टी साइप्रस पहुंची तो विदेशी सामान देखकर सारी पार्टी बोखला गई। साइप्रस में जो भी मिला सब खरीद लिया गया। वी०सी० आर०, टाइप राइटर, इलैक्ट्रोनिक यन्त्र सब कुछ खरीदा गया। विमान पर मौजूद पुलिस अधिकारी खड़े रहे और मूक दर्शक बनकर सब देखते रहे। एक अनुमान है कि साइप्रस से पार्टी ने लगभग २० वी.सी. आर. खरीदे होंगे। पुलिस अधिकारियो की हिम्मत नही पड़ी कि वह एक अपशब्द कह सकें आखिर यह वी.वी.आई.पी. उड़ान थी। सबसे ज्यादा तमाशा तो चैकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग में हुआ। यहा तो अधिकारी गण जो भी मिला उस पर टूट पड़े। कट ग्लास, कपड़े अन्य सामान जो भी हाथ आया खरीद लिया गया। राष्ट्रपति की टोली के आदमी जिसमें सेना के अधिकारी भी शामिल थे ने खुले आम विदेशी मुद्रा बेची और चैकोस्लोवाकिया की मुद्रा मे बदली। सबसे ज्यादा अफसोस की बात यह है कि यह सारा ड्रामा चैकोस्लोवाकिया के गुप्त पुलिस अधिकारी देख रहे थे, नोट कर रहे थे, पर भारत के राष्ट्रपति की टोली का मामला था इसलिए चुप्पी साध गए।

हांलाकि राष्ट्रपति वैंकटरमन ने अपनी विदेश यात्राओं में कुछ सख्त नियम बनाये हुए हैं उदाहरण विमान पर शराब नहीं परोसी जाएगी पर साथ गए अधिकारियों ने इस नियम का खुलेआम उल्लंघन किया। जब राष्ट्रपति अपने कक्ष में सोने चले जाते तो यह अधिकारी शराब की बोतलें खुलवा देते। शराब पीने का पता नहीं चले इसलिए सौंप थोक के भाव खाई जाती ताकि अगर कही राष्ट्रपति गलती से उन्हें उस समय बुला लें तो शराब की बदबू न आए।

राष्ट्रपति स्वयं साधारण व्यक्ति हैं। पर उनके साथ गए अधिकारियों ने तो कमाल ही कर दिया। क्या प्रभाव पड़ा होगा विदेशों में जहां इन लोगों ने यह बेहूदा हरकतें करी। मामले की जांच होनी चाहिए और आईदा के लिए सख्त नियम बनने चाहिए। राष्ट्रपति भारत के सर्वोच्च व्यक्ति हैं और अगर देश के सबसे ऊंचे पद पर बैठे व्यक्ति के साथ गए लोग ऐसे देश व विदेशों में कानून का उल्लंघन करेंगे तो इससे देशवासियों पर क्या असर पड़ेगा। "संडे आब्जर्वर" की इस रिपोर्ट मे कितनी सच्चाई है यह तो एक निष्पक्ष जांच ही बता सकती है या फिर वह अधिकारी जो साथ गए थे या फिर वह पुलिस अधिकारी जो विमान पर उस समय मौजूद थे जब यह खरीदा हुआ सामान विमान में रखा जा रहा था। यहां यह भी प्रश्न उठता है कि जब राष्ट्रपति की टोली दिल्ली के पालम हवाई अड्डे पर उतरी तो क्या कस्टम अधिकारियों ने इनकी जांच नहीं करी। नियम यह कहतेहैं कि राष्ट्रपति के व्यक्तिगत सामान को छोड़कर बाकी सबका सामान चैक होना चाहिए। अगर कस्टम वालों ने डर के मारे सामान चैक नही किया तो उन्होंने अच्छा नही किया। अगर वह उसी समय तलाशी ले लेते तो इनको रंगे हाथो पकड़ लेते। जुर्माना या कस्टम ड्यूटी कितनी लगानी है यह सब फिर आसानी से तय हो जाता। अगर कस्टम अधिकारी उसी समय यह कर लेते तो राष्ट्रपति महोदय तो स्वयं अपनी आंखों से अपने साथ गए अधिकारियो की करतूतें देख लेते। अब अगर राष्ट्रपति भवन से एक-आध दिन मे इस खबर का खण्डन हो जाता है तो मामला समाप्त हो जाएगा। दुर्भाग्य है पर है सच्चाई कि राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री के साथ गए इन वीवी.आई.पी. का कभी-कभी नाजायज फायदा उठाते हैं। यह प्रधानमन्त्री और राष्ट्रपति को देखना है कि उनकी टोली में गए लोग देश का कोई कानून इतनी आसानी से न तोड सकें।

(वीर अर्जुन २२-१०-८८ से साभार)

बिहार के भूकम्प एवं बाढ़ पीड़ित भाई शरद ऋतु से डरे हुए हैं

उन्हें कम्बलों की सख्त जरूरत है दानी महानुभाव ध्यान दें

पटना। आर्यसमाज दरभंगा, मधुबनी मुंगेर के अनेक गांवों में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री पं० बालदिवाकर हंस और दयानन्द स्कूल के श्री कृष्णप्रसाद तथा बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामाज्ञा वैरागी श्रीमती विद्यावती एवं मन्त्री बिहार बाढ़ एवं भूकम्प समिति, ने सैकड़ों गावों मे जाकर बाढ़ पीड़ितों को चावल, कपडे, नई धोतियां, आवश्यक वस्तुएं बांटी।

पीड़ित लोग आर्य समाज की इस सहायता का जहा गुणगान कर रहे थे। वहां बिहार सरकार की ओर से बरती जा रहा उपेक्षा पर रोष भी प्रकट कर रहे थे।

श्री हंस ने एक संवाददाता से वार्ता करते हुए कहा कि शरद ऋतु से बिहार के भूकम्प एवं बाढ़ पीड़ित डरे हुए हैं। नगी जमीन, वह भी गीली जिनका शयन स्थल है। उन भाइयों को चटाइयों और कम्बलों की भारी जरूरत है। आपने सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती से अनुरोध किया है कि वह दिल्ली के दानी महानुभावो से कम्बलों का दान करने की प्रेरणा करें। अन्यथा भूकम्प एवं बाढ़ पीड़ित सर्दी के दिनों में बीमार हो होकर मरेंगे।

प्रधान संचालक ने बिहार सरकार से भी अनुरोध किया कि गावों में यथाशीघ्र झोंपड़ों के लिये गरीबों को आर्थिक सहायता दें। अन्यथा सर्दी के दिनों में अनचाही मृत्यु के ताण्डव देखने को मिलेंगे।

महात्मा गांधी और ईसाई मिशनरी

लेखक—डा० कमल किशोर गोयनका

पोप जान पाल (द्वितीय) दो वर्ष पहले भारत आए थे। भारत की अतिथि स्वागत की परम्परानुसार हमने उनका स्वागत भी किया। परन्तु उनसे तथा ईसाई मिशनरियो से हमारा आग्रह है कि वे महात्मा गाधी के इन विचारो को भी ध्यान मे रखे। ईसाई मिशनरियो ने जिस प्रकार हिन्दुओ को ईसाई बनाने का प्रयत्न किया है और जो अब भी चल रहा है, वह निश्चय ही हम सभी के लिए घोर चिन्ता की बात है। महात्मा गाधी ने भी ईसाई मिशनरियो के धर्मान्तरण के प्रति घोर चिन्ता व्यक्त की है तथा उनके अमानवीय, अधार्मिक तथा असहिष्णुतापूर्ण क्रिया कलापो और दया सेवा के द्वारा हिन्दुओ के धर्म-परिवर्तन की कटु आलोचना की है। यहा महात्मा गाधी के कुछ विचारो को प्रस्तुत किया गया है जिससे राष्ट्रपिता के विचारो को सामने रखकर ईसाई मिशनरी आत्मालोचन करे और केवल मानव-सेवा तक स्वय को सीमित रखे। महात्मा गाधी के इन विचारो से हम समझ सकते हैं कि उन्होने ईसाई मिशनरियो द्वारा किए जाने वाले धर्मान्तरण को कितनी गम्भीरता से लिया था और उनसे दुष्प्रवृत्तिया छोड़ने का आह्वान किया था। महात्मा गाधी के लेखो से कुछ उद्धरण नीचे दिए जा रहे हैं —

मेरा हिन्दू धर्म सर्वग्राही है। वह मुसलमान विरोधी, ईसाई विरोधी या किसी भी अन्य धर्म का विरोधी नही है बल्कि वह मुसलमान पक्षी, ईसाई-पक्षी और ससार के हर अन्य जीवित धर्म के पक्ष मे है। मेरे लिए हिन्दू धर्म उसी मूल तने की एक शाखा है जिसकी जड़ और जिसके गुणो का अन्दाजा हमे केवल विभिन्न शाखाओ के एक साथ होने पर उनके सामूहिक बल और गुण से होता है। यदि मैं हिन्दू शाखा को जिस पर मैं टिका हू और जो मेरा पोषण करती है, फिक्र करता हू, तो मैं निश्चय ही उसकी बहुत अन्य शाखाओ की भी फिक्र करता हूं। यदि हिन्दू शाखा विषाक्त हो जाती है, तो दूसरी शाखाओ मे भी विष फैल सकता है। यदि वह शाखा सूखने लगती है, तो उसके सूखने से मूल तना भी कमजोर होगा ही।

('बाम्बे क्रानिकल'' २सम्बर १९३२)

यह (हिन्दू धर्म) न केवल पृथ्वी के चारा कोना के पैगम्बरो को शिक्षाओ के प्रति सहिष्णु है, बल्कि उन्हे आत्मसात् भी करता है।

(४ नवम्बर ६९३२)

हिन्दुत्व के द्वारा मै ईसाई, इस्लाम और कई दूसरे धर्मों से प्रेम करता हू। यह छीन लिया जाय तो मेरे पास रह ही क्या जाता है।

(जवाहरलाल नेहरू को लिखे, पत्र से, २ मई १९३३)

ईसा मसीह ही जन्मना ईश्वर के पुत्र नहीं

इस वचन (सेंट जान ३ १६) को मैं अक्षरश सत्य नही मानता कि केवल ईसा मसीह ही जन्मना ईश्वर के पुत्र हैं। ईश्वर किसी एक का ही पिता नहीं हो सकता और न यह हो सकता है कि देवत्व का आरोप मैं केवल ईसा मे ही करू। उनमे भी वैसा ही देवत्व है जैसा कृष्ण या राम, मुहम्मद या जरतुश्त मे है। इसी प्रकार, जैसे मैं वेदो'' या ''कुरान'' के प्रत्येक शब्द को दिव्य नहीं मानता वैसे ही 'बाईबल'' के भी हर शब्द को दिव्य नहीं मानता। हा इन ग्रन्थो का सार अवश्य ही दिव्य है, लेकिन अगर इनके वचनो को अलग-अलग देखता हू तो उनमे बहुत से वचन ऐसे निकल आते हैं जिनमे मुझे कुछ भी दिव्य दिखाई नही देता। 'बाईबिल'' भी उसी तरह एक धर्म-ग्रन्थ है जिस तरह 'गीता' और 'रामायण''।

इसीलिए मेरे मन म ऐसा कोई खयाल नही है कि मैं आपको ईसाई धर्म से विमुख करके हिन्दू बना लू और अगर आप मुझे ईसाई बनाने की सोचे तो यह बात भी मुझे अच्छी नही लगेगी। मै आपके इस दावे का भी विरोध करूंगा कि एक मात्र सच्चा धर्म ईसाई धर्म ही है। यह बात जरूर है कि यह भी एक अच्छा और उदात्त धर्म है और मनुष्य को नैतिक रूप से ऊपर उठाने मे अन्य धर्मों के साथ-साथ इसने भी योगदान किया है, लेकिन अभी इसे इससे भी बड़ा योग देना है। किसी धर्म के इतिहास में २००० वर्ष का काल तो कुछ होता ही नही है। आज तो व्याकुल मानवता के सामने ईसाई धर्म दूषित रूप में ही पेश किया जा रहा है। जरा सोचिये तो कि बड़े पादरी ईसाई-धर्म के नाम पर हत्या और रक्तपात का समर्थन करें, यह कैसी बात है।

(''हरिजन'', ६ मार्च, १९३७)

ईसाई मिशनरी

ईसाई मिशनरियो से मेरा झगडा इस बात पर है कि वे समझते हैं ईसाई धर्म के अलावा और कोई धर्म सच्चा नही है।

(२५ फरवरी, १९३९)

मनुष्यो के माध्यम से कराये जाने वाले धर्म परिवर्तन मे मैं विश्वास नही करता। दूसरो को अपने धर्म मे लाने का उनका (मिशनरियो का) प्रयास कोरा दम्भ ही है। ईश्वर के पास पहुंचने के ईश्वर के तई तो उतने ही मार्ग हैं जितने कि ससार मे मानव प्राणी है।

(एक अमेरिका मिशनरी से भेंटवार्ता मे, १० अप्रैल, १९३४)

मिशनरियो ने 'जैसा देश, वैसा भेष'' वाली कहावत नही सीखी है। वे अपने दैनिक जीवन मे हर बात मे पश्चिम का ही अनुकरण करते हैं और यह भूल जाते हैं कि वस्त्र तथा भोजन और जीवन-चर्या जलवायु और आसपास के वातावरण के अनुरूप होनी चाहिए और इसलिए उनमे तदनुसार परिवर्तन करना जरूरी है। दिल जीतने के लिए झुकना होता है, जो उन्होने नही किया है। फलत. पारस्परिक अविश्वास की खाई बनी हुई है और चिकित्सा के क्षेत्र मे काम करने वाले मिशनरिया और यही कार्य करने वाले भारतीयो मे सहज सम्पर्क नही है।

(मिशनरी डा० चेस्टरमैन से, ''हरिजन'' २५ फरवरी १९३९)

धर्मान्तरण असहिष्णुता—जो एक प्रकार प्रकार की हिंसा है।

यह मानना कि आपका धर्म दूसरे धर्मों से श्रेष्ठ है, और दूसरो से अपना धर्म छोड़कर आपके धम मे आ जाने के लिए कहना न्याय सगत है यह असहिष्णुता की पराकाष्ठा हैं और असहिष्णुता एक प्रकार की हिसा है। (हिन्दुस्तान टाइम्स'', ५ मई, १९३८'')

विकृति तो चर्च म है

विकृति तो चर्च मे है जिसका यह खयाल है कि कुछ ऐसे लोग है जिनमे कुछ चीजो की कमी है और वे चीजे आप उन्हे जरूर देगे, चाहे उन्हे उनकी जरूरत हो या न हो। अगर आप अपने मरीजो से सिर्फ यह कहे कि 'मैंने तुम्ह जो दवा दी उसका तुमने सेवन किया है। ईश्वर की कृपा है कि उसने तुम्ह चगा कर दिया, अब यहा न आना'' तो आपने अपना फर्ज अदा कर दिया, लेकिन इसके साथ अगर आप यह भी कहती ह कि कितना अच्छा होता, अगर ईसाई धर्म मे आपको वैसी ही श्रद्धा होती, जैसी कि मे ी है तो आप अपनी औषधिया निष्काम भाव से नही देती।

(महिला ईसाई मिशनरियो से बातचीत मे 'हरिजन'' १८ जुलाई, १९३६)

मन से दुराव निकाले

आप लोग (मिशनरी) यह भूल जावे कि हम धर्मशून्य नास्तिकको के देश म आये है, और ऐसा विचार रखे कि ये लोग भी हमारी ही तरह ईश्वर की खोज मे हैं आज यह महसूस करे कि हम इन लोगो के नही जा रहे है, पर आपके पास सांसारिक सुख सम्पत्ति का जो अच्छा खजाना है उसमे आप इन्हे भी हिस्सा देगे। तब आप अपने मन मे कोई दुराव रखे बगैर अपना काम करेंगे, और इस तरह आपके पास जो आध्यात्मिक धन होगा, उनमे भी आप इन लोगों को हिस्सा देगे। आपके मन मे ऐसा दुराव है, इसी बात की जानकारी आपके और मेरे बीच भेद की दीवार खड़ी करती है।

(महिला ईसाई मिशनरियो से ''हरिजन'', १८ जुलाई १९३६)

(क्रमशः)

हम कौन थे....?

—वंशीधर आर्य, आर्यसमाज जयनगर (बिहार)

मैथिली शरण गुप्त का दर्द "भारत भारती" मे उभर कर आया है कि हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होगे ? अभी पढा था ? आज से पच्चीसो वर्ष पूर्व । परन्तु क्या वह दर्द सिर्फ गुप्त जी का दर्द है, मेरा है, आपका है ? नही, सारे भारतवासियो या यो कहे कि सारे विश्व के आर्यों का दर्द हैं । हम आर्य थे और आर्यावर्त हमारा देश था । जिसका क्षेत्र उत्तर मे (तिब्बत को छोड कर) चीन, दक्षिण मे भारत महासागर, पूर्व मे प्रशान्त महासागर और पश्चिम मे अफ्रीका महादेश था । कुल मिलाकर आज के मानचित्र के अनुसार न्यूगीनी फिलीपीन, जावा, सुमात्रा, बोर्नियो सिंगापुर, मलाया, वियतनाम, लाओस, कम्बोडिया, थाइलैण्ड (श्याम) वर्मा, बगलादेश, भुटान, नेपाल, श्रीलका, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, तिर्यम्बक (तिब्बत) ईरान, ईराक, टर्की, सीरीया, लेबनान, ईसराइल, मालद्वीप, अरब जगत आदि । यही मेरी भारत माता थी । परन्तु धीरे-धीरे हम आर्य विलासिता की ओर बढते गए और एक से दूसरा, दूसरे से तीसरा राज्य बनता गया । आज भी अरब, ईरान इराक आर्य शब्द का ही अपभ्रश मात्र है । कुछ पहले तक मेरा जावा, सुमात्रा, बोर्नियो था वह हिन्देशिया अब इन्डोनेशिया, मलाया अब मलेशिया, श्याम अब थाइलैण्ड, अनाम और कम्बोडिया भी बदलकर लाओस कम्पुचिया, वियतनाम आदि हो गया है । हर प्रदेश, हर राज्य आज कट कट कर एक राष्ट्र हो रहा है, और हो गया । यहा तक कि कनिष्क के शासन काल का प्रदेश काबुल, कधार, ताशकन्द और तेहरान का भाग भी हमारे देश से अलग हो गया । यह सिर्फ आर्यो की अकर्मणयता अथवा फुट, आपसी सघर्ष के कारण वह श्रीलका को तथा ब्रह्मदेश को अलग करके अलग राष्ट्र बना दिया । जो भी बचा उसे १९४७ के समय बाटकर बहुराष्ट्रवादी बना दिया । कल तक मैं जिस भूगोल मे भारत का मानचित्र देखा और पढा था, वह अग्रेजो की चालबाजी से मुस्लिमो की जिद से अथवा काग्रेस की कमजोरी से बट गया । वह द्विराष्ट्रवाद नही बल्कि (१) भारत (२) पाकिस्तान जिससे टूटकर बाद मे (३) नेपाल (४) भूटान (५) बगला देश और (६) मालद्वीप बना ।

जो सदियो से दुश्मन बना चीन था, वह मुख मे राम बगल मे छुरी लेकर भारत आया और हिन्दी चीनी भाई-भाई कहवाकर स्वतन्त्र राष्ट्र तिर्यम्बक (तिब्बत) जो कभी मेरा अग था । उसे चीनी नेताओ को हम उपहार मे देकर धन्य हो गए । परन्तु वह चीनी नेता इतने पर सन्तोष करने वाले न थे । वे काश्मीर के उत्तरी-पूर्वी भाग लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश के भाग को अधीन मे कर लिए अभी भी अधिकार करने की तैयारी मे है । इधर काश्मीर का भाग पाकिस्तान ले चुका है और जो बचा है, उसे ले लेना चाहता है । जबकि फारुख राजीव की गठजोड सरकार जम्मू काश्मीर मे चल रही है । हर समय किसी भी अवसर पर जैसे १५ अगस्त पर काश्मीर मे पाकिस्तानी झण्डा लहराया गया और तिरगा झण्डा का अपमान किया गया । फिर आतकवादियो से साठ-गाठ कर 'खालिस्तान' बनाने की तैयारी कर रहा है । इतने मे सन्तोष नही मादक द्रव्य की कालाबाजारी, पाकिस्तानी हिन्दुओ का अपमान, मन्दिरो मे गोमास फेंककर, स्त्रियो का शीलभग करके अथवा विवाह करके, धर्म परिवर्तन करके हिन्दुओ को समाप्त कर रहा है ।

यही रवैया इधर बगला देश का है और दोनो ओर से मुस्लिम की आबादी छुप छुपकर भारत आ रहा है । वोट लोलुप सरकार मुस्लिमो को परिवार नियोजन मे छूट दे रखा है । उन मुस्लिमो का कहना है—हम पाच हमारे पच्चीस । जबकि सरकार हिन्दुओ को दूसरे विवाह की अनुमति न देता हो, तब भी मुस्लिम चार-चार पत्नी रखता है । हमारे तीर्थो मे सरकारी नियन्त्रण और धीरे धीरे वह नियन्त्रण कसता जा रहा है । जबकि मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारा आदि पर कोई नियन्त्रण नही । वाह रे हमारे हिन्दू और बाहरी हमारी धर्म निरपेक्ष सरकार । पूर्व मे ईसाइयो की बढती आबादी, पूर्व मध्य मे ईसाई द्वारा धर्म परिवर्तन, दक्षिण मे मुस्लिम धर्म परिवर्तन उत्तर मे मुस्लिम धर्म परिवर्तन मध्य मे ईसाई द्वारा धर्म परिवर्तन । पता नही कि सारे देश मे मुस्लिमो और ईसाइयो द्वारा तहलका मचा हुआ है । फिर भी न हिन्दू चेतते हैं और न कोई सस्था । जिस प्रकार भारत कट छट रहा है और जो भी बचा है उसमे धर्म परिवर्तन हो रहा है । वह दिन दूर नही जब अपने घर मे ही हम हिन्दू (आर्य) अल्पसख्यक हो जायेंगे और वह दिन दूर नही जब हम हिन्दू (आर्य) का नाम शब्दकोष से समाप्त हो जाएगा ।

ऐसा भी हिन्दू है जो चोटी, यज्ञोपवीत रखने पर लज्जा का अनुभव कर रहा है । धोती कुर्ता पहनना पसन्द नही कर रहा है और मुस्लिम पद्धति से मुछ के दोनो ओर बाल लम्बा रखकर बीच का भाग छोटा करा है अथवा मुण्डन आदि मे भी चोटी, मुछ न रखकर मस्तक के सारे बालो को कटवाकर अग्रेज बन रहा है । १९४७ के पहले हमारी सरकार गोरी थी, इसके बाद काले अग्रेज की सरकार चल रही है और सारे हिन्दू अग्रेजी पढकर पश्चिमी सभ्यता मे रगकर वेशभूषा अपनाकर अग्रेज बन रहा है मैं अग्रेजी का दुश्मन नही हूँ मगर राष्ट्रभाषा का अवमानना हो रहा है । यह बर्दाश्त से बाहर है । मैं यह चाहता हू कि राष्ट्र का कार्य हिन्दी (सस्कृत जन्य) भाषा मे हो । विदेश का कार्य विदेशी भाषा मे । जब जिस देश मे जाना हो, उस देश की भाषा मे वहा पर बाते हो । परन्तु अपने देश मे हिन्दी, बगला, कन्नड, तमिल तेलगु आदि भाषाए ही मान्य हो । राष्ट्र की भाषा हिन्दी के सिवाय और कोई न हो । सहायक भाषा प्रादेशिक भाषा हो ।

अत भाषा सस्कृति और राष्ट्र के मामले मे जब तक हिन्दू सचेत न होगे तो धीरे-धीरे वे क्षीण होते जायेगे । ऐ हिन्दुओ ! अब भी चेतो । आलस्य छोडो और कर्त्तव्य पथ पर चलो । बाहर की ओर देखो । जापान गिर कर उठा । कोरिया टुकडा होकर सम्भल गया । वियतनाम अलग होकर मिला । इसराइल प्रखर राष्ट्र बना । जर्मनी खण्डित होने पर भी धाक जमाया और जो तुम सारे ससार के गुरु थे, सारे ससार पर शासन था । तुम कमजार बनकर दूसरे की राह देख रहे हो । अमेरिका जो पाताल लोक था यूरोप जो विहवावलपुर था, जो चीन कर (टैक्स) देता था । आज तुम उनकी ओर आशा की दृष्टि से देख रहे हो । धिक्कार है तुम्हे ! तुम राम-कृष्ण भी सभी को भूल बैठे हो । याद करो और चेतो ।

अन्त मे मेरी प्रार्थना आर्य समाज, विश्व हिन्दू परिषद, हिन्दू यूनानी, शिव सेना, बजरग दल, राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ आदि हिन्दू सस्थाओ से है कि अभी भी स्वार्थ की भावना त्याग कर परमार्थ मे लग जाय । जिससे हिन्दुओ का कल्याण हो सकगा । जब तक हिन्दू बहुसख्यक है, तब तक काग्रेस है, कम्युनिष्ट है । हिन्दू अल्पसख्यक होते ही ये सब समाप्त हो जायेगे । जैसे पाकिस्तान और बगलादेश मे ।

एक बात और आर्य (हिन्दू) बन्धु न चेते तो चारो ओर की ईसाइयत और इस्लामियत की लहरो से चूर-चूर हो जायेगे और चुल्लु भर (भारत महासागर) जल में डूब मरने के सिवाय कुछ शेष न रहेगा ।

पुस्तक पर रोक को अदालत में चुनौती

श्री सलमान रुश्दी की पुस्तक पर रोक

नई दिल्ली ८ अक्तूबर। भारतीय मूल के ब्रिटिश उपन्यासकार श्री सलमान रुश्दी के उपन्यास 'द सेटेनिक वर्सेज' पर सरकार द्वारा घोषित प्रतिबन्ध को अगले सप्ताह देश के वरिष्ठ लेखको और नागरिको की ओर से उच्चतम न्यायालय मे चुनौती दी जाएगी।

ज्ञात हुआ है कि उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ वकील श्री सोराबजी इस सम्बन्ध मे एक रिट याचिका दायर करेगे। इसके लिए उन्होने बिना फीस लिए यह मामला अदालत मे पेश करने के लिए स्वय को प्रस्तुत किया है। सम्भव वे अभिव्यक्ति की स्वतत्रता के हनन को अपनी याचिका का मुख्य आधार बनाए।

श्री रुश्दी ने कल एक समाचार एजेसी को टेलीफोन पर दिए साक्षात्कार मे एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि उनका इरादा न इस्लाम पर आक्षेप करने का था और न ही उन्होने ऐसा किया है। उन्होने जनता पार्टी के सासद सैयद शहाबुद्दीन के इस कथन का खण्डन भी किया है कि उपन्यास मे कही भी हजरत मोहम्मद की पत्नियो को वेश्या कहा गया है। उन्होने दोहराया है कि यह किताब इस्लाम पर पाच वर्ष तक किए काम का परिणाम है। यह एक बहुत ही गम्भीर पुस्तक है। श्री रुश्दी के इस स्पष्टीकरण से स्थिति और भी स्पष्ट हो गई है। इससे रिट याचिका का आधार और मजबूत हो गया बताते हैं। लेकिन श्री सोराबजी इस मामले को अदालत तक ले जाने से पहले श्री रुश्दी के उपन्यास के कथित 'आपत्तिजनक" अशो को पढ लेना चाहते है। मगर कानूनी प्रतिबन्ध के कारण श्री सोराबजी को यह उपन्यास मिलने मे कठिनाई हो रही बताते है।

उधर कुछ विधि विशेषज्ञो का कहना है कि भारत सरकार ने सीमा शुल्क कानून की धारा ११ के अन्तर्गत इस उपन्यास पर जो प्रतिबन्ध लगाया है, वह बहुत प्रभावी साबित नही होगा। यह धारा किसी पुस्तक के आयात और निर्यात पर रोक लगाती है। लेकिन पहले से आयातित पुस्तक की बिक्री को रोकना इस धारा अन्तर्गत सम्भव नहीं है। इसका अर्थ है कि उपन्यास की आयातित प्रतिया बेचने से दुकानदारो को रोका नही जा सकता। इसके अलावा पुस्तक को भारत म प्रकाशित और वितरित करने का अधिकार भी उक्त प्रतिबन्ध और विनरित करने का अधिकार भी उक्त प्रतिबन्ध के अन्तर्गत छीना नही जा सकता। दिल्ली उच्च-न्यायालय के वकील श्री अरविन्द जैन के इस मत से दिल्ली बार कौसिल के मानद सचिव तथा सीमा शुल्क मामलो के प्रसिद्ध वकील श्री सतीश चन्द्र अग्रवाल सहमत हैं।

विधि विशेषज्ञो के अनुसार सरकार अगर सचमुच यह मानती है, जैसा कि उसने अपने प्रेस वक्तव्य मे कहा है, कि इस पुस्तक के कारण एक धार्मिक समूह की भावनाओ पर चोट पहुचती है तो उसे इस स्थिति से निबटने के लिए भारतीय अपराध सहिता की धारा २७५-ए के अन्तर्गत अलग से एक और नोटिस जारी करना होगा।

यह धारा किसी भी भारतीय नागरिक को किसी अन्य भारतीय नागरिक की धार्मिक भावनाओ पर जोर 'जानबूझकर' और 'दुर्भावपूर्ण' ढग से चोट पहुचाने पर रोक लगाती है। अगर किसी व्यक्ति पर यह आरोप सिद्ध हो जाता है तो उसे तीन वर्ष का कारावास तथा जुर्माना दोनो हो सकता है। इसमे पुस्तक के प्रकाशन और वितरण पर रोक की पूरी व्यवस्था है।

लेकिन इसमे कठिनाई यह है कि यह धारा प्रतिबन्ध के कारण बताने को सरकार को विवश करती है। पटना उच्च न्यायालय ने १९८५ मे नन्दकिशोरसिंह केस मे कारण बताना 'बाध्यकारी' बताया था। कारण की पुष्टि मे उसे प्रमाण भी देनें होगे। अन्यथा प्रतिबन्ध का आदेश प्रभावी नही होगा।

इसके बाद भी आवश्यक नही है कि सरकार के प्रतिबन्धात्मक आदेश की पुष्टि न्यायालय कर दे। इस मामले मे इलाहाबाद उच्च न्यायालय की १९७१ की नजीर है। तब ललाई सिह के मामले मे न्यायालय ने बाबा साहेब आम्बेडकर के लेखो के एक सप्ताह पर जो 'सम्मान के लिए धर्म परिवर्तन करे'। शीर्षक से प्रकाशित हुआ था, प्रतिबन्ध लगाने से इनकार कर दिया था। न्यायालय का स्पष्ट मत था कि धर्मग्रन्थो की 'सतुलित भाषा' मे 'विवेकपूर्ण' आलोचना धारा २७५-ए के अन्तर्गत अपराध नहो है। उसने इस पुस्तक के आपत्तिजनक अशो को हटाने से भी इस आधार पर इनकार कर दिया था कि पूरी किताब पढने और उसके घोषित उद्देश्य को सामने रखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि पुस्तक मे कुछ ऐसा नही है जो प्रशासन के योग्य न हो।

विधि विशेषज्ञो का कहना है कि इस आधार पर श्री रुश्दी के उपन्यास पर भी प्रतिबन्ध हट सकता है। सरकार के लिए सबसे पहले यह सिद्ध करना आसान नही होगा कि पुस्तक मे मुस्लिम धर्म की आलोचना है। अगर यह सिद्ध हो भी गया तो रुश्दी के इस उपन्यास की भाषा को जिसका नाम ब्रिटेन के सर्वोच्च साहित्यिक 'बुकर पुरस्कार' के लिए प्रस्तावित है 'असन्तुलित' और 'अविवेकपूर्ण' कहना असम्भव होगा। स्वय सरकार की प्रेस विज्ञप्ति मे स्पष्ट किया गया है कि यह प्रतिबन्ध लेखक या पुस्तक 'साहित्यक श्रेष्ठता' पर टिप्पणी नही है।

श्री अरविन्द जैन का कहना है कि सरकार पूरी पुस्तक को प्रतिबन्धित नही कर सकती है। अगर न्यायालय यह आपत्ति स्वीकार कर लेता है तो सम्भव है कि लेखक अपनी पुस्तक की लाखो लोगो तक पहुचाने के लिए उन अशो को हटाना मजूर कर ले।

(नवभारत ९-१०-८८ से साभार)

संक्षिप्त विवरण

विश्व भ्रमण की २०वीं यात्रा

—मोहनलाल मोहित ओ.बी.ई., आर्य रत्न— की यात्रा का वर्णन

दिनाक २७ मई १९८८ शुक्रवार ८ बजे रात को विमान से सिंगापुर चला। मेरे सहयोग के लिए साथ मे लघु प्रिय पुत्र श्री सुभाषचन्द जी मोहित भी चले। प्रात साढे ७ बजे हम सिंगापुर एयर पोर्ट आ गए।

आमेन रोड के आश्रम भवन मे निवास किया। दिनाक रविवार २९ मई को प्रात आर्य समाज मन्दिर मे गया और आचार्य जी से मिला। फिर सभासद गण और अधिकारी भी आ गये। यज्ञ शुरू हुआ। यज्ञ के बाद भजन सकीर्तन हुआ। फिर मेरा प्रवचन भी हुआ।

सिगापुर का लघु प्रदेश सुन्दर सुहावन समुद्र तट पर है, यह विश्व प्रसिद्ध व्यापार केन्द्र है। २२६००० जन प्रदेश है। उनमे केवल १ लाख भारतीय हैं। भारतीयो मे तमिल, पजाबी, बिहार और उत्तर प्रदेश के भी कुछ लोग है। आर्य समाज मन्दिर केवल एक ही है।

सोमवार ता० ३० मई को बुद्ध जन्म दिवस के उपलक्ष मे सार्वजनिक छुट्टी रही। ९ बजे दिवस मे चिडिया बाग गये देखा--सुना था, "विपिन--विहग विचित्र बहुरगा" यहा प्रत्यक्ष देखा। यह जन सघन प्रदेश समृद्धशाली है। यहा स्वच्छता का बडा ध्यान रखा जाता है। अजायब घर भी देखा, छप्पर छाछर और खेती के व्यवसाय का पुराना रूप--भारत ही जैसा देखा। बुधवार दिनाक १ जून १९८८ को हवाई जहाज से चीन देश गये। उसकी राजधानी पेंकिग नगर बडा विशाल एव सुन्दर है। जग प्रसिद्ध चीन की 'बडी दीवार' देखी, विभिन्न प्रदेशो के यात्रीगण बडी सख्या मे आते-जाते रहे। वहा बडे भोजनालय का भी प्रबन्ध है। हमने साग-सब्जी के भोजन का प्रबन्ध अलग से करवाया। मार्ग के पहाडी प्रदेश मे चीन के पुराने देव-स्थान तीर्थ भी देख लिया।

शनिवार दिनाक ४ जून को सायकाल ५ बजे हवाई जहाज से हम पेंकिग से तोकियो एअरपोर्ट आ गये, फिर बस द्वारा लगभग ६० मील दूर तोकियो राजधानी मे निवास के लिये आ गये। तोकियो नगर बडा विशाल, जनसघन व नयनाभिराम है। परन्तु तोकियो का होटल निवास और भोजन खर्च अमेरिका से दुगुना है।

मगलवार दिनाक ७ जून को ७ बजे सायकाल रात के जहाज से चला, ३ बजे रात सान फ्रासिसको एअरपोर्ट आ गया, यहा मध्य दिवस १२ बज गया था। यह पाताल प्रदेश है। अगवानी के लिए श्री डा० रमेश जी आ गये थे। अपनी मोटर द्वारा घर ले गये और वहा अतिथि--रूप निवास किया। बुधवार दिनाक ९ को गया था। दोपहर के भोजन के बाद विश्राम किया।

सायकाल मे श्री प० उर्प बुड्ढा जी, जो ध्यान योग का प्रशिक्षण छात्रो को देते है, से टेलीफोन पर बातचीत हुई कि आगामी १९८८ अप्रैल मास मे नई दिल्ली मे आर्यसमाज मन्दिर मे हम मिलेंगे, विशेष विचार विनिमय के लिए। उन्होने पत्राचार के लिए अपना पता भी दिया।

केलिफोर्निया आर्य समाज के पुरोहित श्री प० सत्यपाल जी से भी बात-चीत फोन पर ही हुई।

अमेरिका का भू क्षेत्र भारत से तीन गुना बडा है, परन्तु जनसख्या भारत की एक तिहाई है।

सान फ्रान्सिसको विश्व प्रसिद्ध नगर है। नगर की प्राकृतिक देन अनुपम है। नगर निर्माण समुद्रतट पर छोटे छोटे अनेक पहाडियो पर अनेक गलियो से विभाजित होकर प्रमुख राजमार्ग से मिलते हैं।

दस-बीस मजिलो के सुविशाल कलापूर्ण, भव्य भवनो का नवनिर्माण और लघु पुष्प बाग--सुसज्जित गलियो और प्रमुख राजमार्ग का प्रशान्त समुद्र तट "नयनाभिराम देखते बने न -जात बखानी।"

दिनाक १०-६-८८ शुक्रवार को प्रात. ८ बजे सन फ्रान्सिसको एअरपोर्ट

से हवाई जहाज चला, ६ घण्टो मे हम वाशिगटन आ गए, होटल मे आकर निवास किया। दिनाक ११, शनिवार को दोपहर बाद टुरिस्ट मोटर द्वारा वन बाग के दर्शनीय स्थाना को देखने चले। नदी का बडा पाट, चौडाई के सेतु को पार कर देखा कि वन बाग नदी तट से लगकर दूर तक फैला है, वन बाग सैकडो बीघे भूक्षेत्र मे फैला है। दर्शनीय स्थान अनेक है, विश्व महायुद्ध के रणविजेता वीरो के लोह चित्र दर्शनीय है। साथ ही क्रिश्चियन समाधि चित्र सहस्रो की सख्या मे वन बाग मे भरे पडे है। सायकाल अनेक मित्रो से टेलिफोन द्वारा परिचय और समाचार प्राप्त किया। साथ ही न्यू-योर्क मे मोरिशस के दूतालय को वहा अपने आगमन की सूचना भी दे दी।

रविवार दिनाक १२ जून को प्रात ८ बजे विमान से न्यूयार्क चला। ९ बजे ही आ गया। न्यूयोर्क विश्व प्रसिद्ध जन-सघन विशाल नगर है। अपने निवास स्थान से मोरिशस दूतालय को अपने आगमन की सूचना दी। उत्तर मिला कि विदेश मन्त्री सर सत्यकाम बुलेल मिलने की प्रतीक्षा मे हैं। कार्यालय के मन्त्री श्री रामलगन जी अगवानी के लिए आकर मिले और ले गय। वहा जाकर विदेश मन्त्री श्री बुलेल जी मिले। साथ मे श्री प्रीतम जी भी थे। अपनी यात्रा का उद्देश्य बता दिया, तो उन्होन सुनाया कि आगामी मगलवार दिनाक १४-६ ८८ को उनकी मीटिंग मे आने की सूचना दी है, मैंने सहर्ष स्वीकार किया।

सोमवार दिनाक १३-६ ८८ को दिवस मे १० बज आर्य समाज के पण्डित जिज्ञासु आचार्य न्यूयार्क से आकर हम से मिले। आप भारतीय वेष मे ही २० लाख लोगो के बीच धोती धारण कर प्रचार यात्रा तथा सरकार सेवा मे भी कार्य करते हैं। पडित जी कर्मनिष्ठ आर्य हैं। आप के तप-त्याग का प्रतीक न्यूयार्क का आर्य समाज मन्दिर है।

मगलवार दिनाक १४-६ ८८ को विदेश मन्त्रालय के रामलगन जी आकर साथ ले गए।

विश्व प्रसिद्ध 'यूनाइटेड नेशन, यहा विश्व के बुद्धिविशारदो का शुभा-गमन विचार-विमर्श के लिए होता रहता है। ठीक ११ बजे दिवस मे मान-नीय विदेशमन्त्री सर सत्यकाम बुलेल जी का भाषण हुआ। स्थानीय लोग भी थे। भवन के हरे आगन मे चित्र लिये। श्री रामलगन जी न्यूयार्क मे मोरिशस दूतालय के मन्त्री हैं, आप अतिथि प्रिय सुयोग्य व्यक्ति हैं।

बुधवार १५-६-८८ को हवाई जहाज से हम लन्दन चले और ७ घण्ट मे लन्दन एअरपोर्ट पर आ गये। अगवानी के लिये श्री मणि रामधनी जी आ गये थे, अपनी मोटर से निज घर ले गये। यहा प्रात काल गुरुवार दि०

(शेष पृष्ठ ९ पर)

व्रत का फल

(प० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा)

अग्ने व्रतपते व्रत चरिष्यामि तच्छकेय त न्मे राध्यताम्
इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि ॥ यजुर्वेद अध्याय १ । म त्र ५ ।

इस म त्र का अभिप्राय यह है कि सब मनुष्य लोग ईश्वर के सहाय की इच्छा कर क्योकि उसके सहाय के बिना धर्म का पूर्ण ज्ञान और उसका अनुष्ठान पूरा कभी नही हो सकता । हे सत्यपते परमेश्वर ! (व्रतम्) मैं जिस सत्यधर्म का अनुष्ठान करना चाहता हू उसकी सिद्धि आपकी कृपा से ही हो सकती है इसी म त्र का अर्थ शतपथ ब्राह्मण मे भी लिखा है कि— सत्यमेव देवा अनृत मनुष्या । एतद्ध वै देवव्रत चरति तत्सत्यम् । काण्ड १ । अध्याय १ । जो मनुष्य सत्य के आचरण रूप व्रत को करते हैं वे देव कहाते हैं और जो असत्य का आचरण करते हैं उसको मनुष्य कहते हैं । इससे मै उस सत्यव्रत का आचरण करना चाहता हू । (तच्छकेयम्) मुझ पर ऐसी कृपा कीजिये कि जिससे मैं सत्यधर्म का अनुष्ठान पूरा कर सकू (त न्मे राध्यताम्) उस अनुष्ठान की सिद्धि करने वाले एक आप ही हो । सो कृपा से स यरूप धर्म के अनुष्ठान को सदा के लिये सिद्धि कीजिये । (इदमहमनृतात्स यमुपैमि) सो यह व्रत है कि जिसको मैं निश्चय से चाहता हूँ । उन सब असत्य कामो से छूट के स य के आचरण करने मे सदा दृढ रहूँ ।

पर तु मनुष्य को यह करना उचित है कि ईश्वर ने मनुष्यो मे जितना सामर्थ्य रखा है उतना पुरुषार्थ अवश्य कर । उसके उपरा त ईश्वर के सह य की इच्छा करनी चाहिये क्योकि मनुष्यो मे सामर्थ्य रखने का ईश्वर का यही प्रयोजन है कि मनुष्यो को अपने पुरुषार्थ से ही स य का आचरण अवश्य करना चाहिये । जैसे कोई मनुष्य आख वाले पुरुष को ही किसी चीज को दिखला सकता है अ ध का नही इसी रीति से जो मनुष्य स य भाव पुरुषार्थ से धर्म को करना चाहता है उस पर ईश्वर भी कृपा करता है अ य पर नही । क्योकि ईश्वर ने धर्म को करने के लिये बुद्धि आदि बढने के साधन जीव के साथ रखे है जब जीव उनसे पूर्ण पुरुषार्थ करता है तब परमेश्वर भी अपने सब सामर्थ्य से उस पर कृपा करता है अ य पर नही । क्योकि सब जीव कर्म करने मे स्वाधीन और पापो के फल भोगने मे कुछ पराधीन भी है ।

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

इस म त्र का अभिप्राय यह है कि—जब मनुष्य धर्म को जानने की इच्छा करता है तभी सत्य को जानता है । उसी सत्य मे श्रद्धा करनी चाहिये अस य मे कभी नही

(व्रतेन द क्षामाप्नोति) जो मनुष्य सत्य के आचरण को दृढता से करता है तब वह दीक्षा अर्थात उत्तम अधिकार के फल को प्राप्त करता है (दीक्षामाप्नोति दक्षिणाम्) जब मनुष्य उत्तम गुणो से युक्त होता है तब सब लोग सब प्रकार से उसका स कार करते हैं । क्योकि धर्म आदि शुभगुणो से ही उस दक्षिणा को मनु य प्राप्त होता है, अ यथा नहीं । (दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति) जब ब्रह्मचर्य आदि सत्यव्रतो से अपना और दूसरे मनुष्यो का अ य त स कार होना है तब उमी मे दृढ विश्वास होता है । क्योकि सत्यधर्म का आचरण ही मनुष्यो का स कार कराने वाला है । (श्रद्धया सत्यमाप्यते) फिर स य के आचरण मे जितना जितनी अधिक श्रद्धा बढती जाती है उतना उतना ही मनुष्य लोग व्यवहार और परमार्थ के सुख को प्राप्त होते जाते हैं अधर्माचरण से नही । इससे क्या सिद्ध हुआ कि स य की प्राप्ति के लिये सब दिन श्रद्धा और उत्साह आदि पुरुषार्थ को मनुष्य लोग बढाते ही जाय जिससे स यधर्म की यथावत् प्राप्ति हो ।

मानवता का बिगुल बजाओ

आज धरिणी पर फैली है दानवता की निर्मम बेल ।
असुर हृत्तिया निर्भय होकर खेला रही हैं अपना खेल ।
हाहाकार मचा है चहुँदिशि उठती करुण पुकार हैं ।
आती हैं अब दसो दिशाओ से कैसी चीत्कार है ।
बढता है पाखण्ड अभय हो बढता अनाचार अन्याय ।
मिलता नही धरा पर हमको आज कही भी सच्चा न्याय ।
जिसके लिए दयानन्द ऋषि ने आर्य समाज किया स्थापित ।
वह उद्देश्य न पूरा अब तक हो पाया जो था वाछित ।
उठो सपूतो ! करो प्रतिज्ञा ऋषि का कार्य करेगे पूरा ।
अर्पित कर दगे सवस्व लक्ष्य पर जो है अभी अधूरा ।
वेद ध्वजा लेकर हाथो मे आ गे हम बढत जायगे ।
आर्य बनगे स्वय सभी हम जगती आर्य बनाए गे ।
मानवता की ज्योति पुण्यतम पुन जगेगी धरनी पर ।
प्राप्त कर अमरत्व सभी नर वेदऽमृत पावन पीकर ।
उठो आर्यो ! आगे बढ कर दानवता से टकराओ ।
मानवता की विजय पताका भूमण्डल पर लहराओ ॥

—राधश्याम आर्य

उत्सव समाचार

—सार्व. सभा व आ. प्र. सभा के आदेशानुसार दि० ३-९-८८ को श्री म. द स. शिक्षण केन्द्र के प्रांगण मे समारोह पूर्वक मनाया गया विशेष यज्ञ मे आसनो पर हरिजन बन्धुओ को बिठाया गया व अतीव श्रद्धा से यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के बाद सभा मे डा मदनमोहन जी जावालिया प्रधान जि० उ. प्र सभा भीलवाडा का समता दिवस व योगीराज श्री कृष्णचन्द्र जी के जीवन पर प्रभावशाली भाषण हुआ व इसी विषय पर श्री भवरलाल भ्रमर का कविता पाठ हुआ आज के पर्व पर विशेष अतिथि वक्ता के रूप आमन्त्रित राम स्नेही सम्प्रदाय के सन्त श्री निश्छल राम जी महाराज ने योगीराज के जीवन पर विशद प्रकाश डालते हुए दैनिक जीवन मे सत्य सेवा व प्राणिमात्र से स्नेहपूर्ण व्यवहार अपनाने की प्रेरणा दी व छुआछूत मिटाने हेतु सर्व साधारण को प्रेरित किया।

—दिनाक २८-८-८८ को आर्य समाज लोहरदगा मे वेद सप्ताह अन्तर्गत श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व को धूमधाम से मनाया इस अवसर पर हरिजनो को यज्ञ सम्मिलित किया गया।

—अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा के तत्वावधान मे दि० ९-१०-८८ रविवार साय ३-३० बजे एक आवश्यक बैठक आर्य समाज मन्दिर करौल बाग दिल्ली मे श्री रामनाथ सहगल की अध्यक्षता मे हुई। इस अवसर पर सभी हिन्दू संस्थाओ ने भाग लिया।

(१) जिसमे कुवैत की मुस्लिम सरकार ने वहा के हिन्दुओ को मृतक शव जलाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। इस विषय पर विचार किया गया।

(२) उच्च कोटि के विद्वान आर्य जगत के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालकार का ७३ वे जन्म दिवस पर समस्त आर्य समाजो की ओर से नागरिक अभिनन्दन भी किया।

(पृष्ठ ७ का शेष)

मोहनलाल मोहित का यात्रा

१६-६-८८ शुरू हो गया। मणि जी की पत्नी, बच्चे सबसे मिला, सब सकुशल हैं।

शुक्रवार ता० १७-६-८८ को प्रिय पोता वीरेन्द्र मोहित आकर मिला, गत वर्ष से वह लन्दन मे प्रशिक्षण पा रहा है। जलपान के बाद लन्दन का Madame Tussaud and planetarium जाकर देखा, यहा ब्रिटिश राष्ट्र मण्डल से सम्बन्धित सब देशो के राजनेताओ, देश भक्तो के चित्र कुशलता पूर्वक सुरक्षित है। भारत के राष्ट्र पिता पूज्य महात्मा गाधी तथा मोरिशस के वर्तमान प्रधान मन्त्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ जी के भी सजीव चित्र हैं।

रविवार दिनाक १९-६-८८ को दिवस दोपहर बाद ढाई बजे लन्दन के आर्य समाज मन्दिर गये, मन्दिर सुन्दर और विशाल है। मन्दिर के आचार्य श्री आज्ञामित्र जी से मिला वे भारत से आए। वहा दो वर्ष बिता दिये हैं। ठीक ढाई बजे यज्ञ-हवन शुरू हुआ फिर सम्मिलित सकीर्तन हुआ। बाद मे अनेक महिलाओ का भजन-कीर्तन हुआ। अन्त मे आधा घण्टा मेरे प्रवचन के लिए मिला। आर्य नर-नारी, युवक युवतिया और बालक-बालिकाए भी थी। उन लोगो का उत्साह देख बडी प्रसन्नता हुई। लन्दन के आर्य समाज के ट्रस्टी कय स्थिर निधि मे १०,००० रुपये के दान का वचन मैंने दिया, शर्त यह कि वार्षिक ब्याज से प्रत्येक वर्ष वैदिक साहित्य खरीद कर जनसाधारण को दिया जाय। भवन एव सत्सग का चित्र भी लिया गया।

कुछ मोरिशस वासी भी वर्षों पूर्व वहा बसे है। व आकर मिले। सभी सकुशल हैं।

गुरुवार दिनाक २३-६-८८ को प्रातः ८ बजे विमान से फ्रास चले। ११ बजे फ्रांस एअर पोर्ट आ गये। श्री A. Sof Saify Avyary अगवानी के लिए आ गये थे। फ्रास मे हम उनके अतिथि रहे। वे गुजरात, भारत के निवासी हैं। वे बड़े सम्पन्न हैं, साथ ही सज्जन भी। फ्रास मे बड़ा व्यापार है। फ्रान्स जैसे विशाल एव सुन्दर देश की ओर छोर का परिभ्रमण अपनी मोटर द्वारा कराया।

—आर्य समाज पूर्वी चम्पारण में दि० ६ से ९ सितम्बर तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। जिसमे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान प० सत्यव्रत वानप्रस्थ वैदिक प्रवक्ता (समस्तीपुर) एव श्री दयानन्द सत्यार्थी आर्य भजनोपदेशक विहार राज्य सभा पटना ने सभा को सफल बनाया एव देश की अखण्डता तथा हिन्दुत्व की रक्षा पर प्रवचन एव भजन हुआ।

—दि० २७-८-८८ शनिवार को श्रावणी उपाकर्म के शुभ अवसर पर आर्य समाज महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय डालटनगज पलामू विहार मे नया यज्ञोपवीत धारण देवयज्ञ वेदप्रवचन एव भजन आदि कार्य व सोल्लास सम्पन्न हुआ। रामदेव प्र शास्त्री प्रधानाचार्य

—दिनाक १६ से २० अगस्त १९८८ तक आर्य समाज जलालाबाद शाहजहापुर (उ० प्र०) मे पूज्यपाद "स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती वेद भिक्षु" आर्य समाज चन्दौसी मुरादाबाद (उ प्र) २०२४१२ के द्वारा वेदकथा धूमधाम से सम्पन्न हुई पर्याप्त श्रद्धालुओ ने वेदामृतपान किया पारिवारिक यज्ञ भी हुए। श्री प्रहलाद जी आर्य (हरिजन) के गृह पर भी पारिवारिक यज्ञ एव सहभोज का आयोजन किया गया स्वामी जी ने हरिजनो को हमारे समाज से काटने का भण्डाफोड किया अच्छी संख्या मे हरिजन उपस्थित थे।

—रमेशचन्द्र मन्त्री

वैदिक संस्थान नजीबाबाद द्वारा उत्तरांचल में राष्ट्र और धर्म रक्षा अभियान

वैदिक सस्थान नजीबाबाद द्वारा संचालित राष्ट्र और धर्मरक्षा अभियान के अन्तर्गत आर्य जगत के सुप्रसिद्ध सन्यासी श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष वैदिक सस्थान नजीबाबाद गत मास मे टिहरी तथा उत्तरकाशी जनपदो मे प्रचार यात्रा पर गये थे और अब जनपद पौडी (गढवाल) की यात्रा पर गये हैं।

स्वामी जी की इस यात्रा के पडाव निम्न प्रकार रहें। ३-४ अक्टूबर सतपुली, ५-६ अक्टूबर पौडी, ७-८ अक्टूबर रुद्रप्रयाग, मे वापसी में पुन ९ अक्टूबर को पौडी, १०-११ अक्टूबर को लैन्सडोन, १२-१३ अक्टूबर को दुगड्डा, १४-१५ अक्टूबर को कोटा मण्डी, १६ अक्टूबर को द्वार, १७ अक्टूबर देवरामपुर, १८ को वापस नजीबाबाद लौट आए।

इस यात्रा मे बिना मूल्य वितरण के लिए सत्यार्थ प्रकाश, वर्ण जन्म से नही अपितु गुण कर्म से, हिन्दू नहीं आर्य आर्यसमाज क्या है ? शराब बन्दी क्यो आवश्यक है ? आदि पुस्तको के अतिरिक्त दीवारो पर लगाये जाने के लिये महर्षि मनु, महर्षि दयानन्द, "महात्मा बुद्ध तथा महात्मा गाधी के विचारो वाले जन्म जातीयता तथा छुआछूत विरोधी बड़े-बड़े प्रचार-पोस्टर भी स्वामी जी के साथ थे।

—मेघराज आर्य, मन्त्री
वैदिक सस्थान नजीबाबाद

आर्य जगत् के समाचार

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार (बाल बाजार) लुधियाना का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार का वार्षिक उत्सव दिनाक २५-९-८८ से रविवार से आरम्भ होकर २-१०-८८ रविवार तक सम्पन्न हुआ जिसमे सामवेद का परायण यज्ञ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा डा० शिवकुमार शास्त्री मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली थे। इन्ही के द्वारा रात्रि को वेद कथा का आयोजन किया गया श्री वेदव्यास जी द्वारा मधुर भजन हुए। इन आठ दिनो मे लगभग ६० यज्ञमान बनाये गये। दिनाक २५-९-८८ को वेद सम्मेलन किया गया जिसमे रामप्यारेलाल श्री ज्ञानप्रकाश श्री रणवीर जी डा० बालकृष्ण शास्त्री एम ए आदि ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर विभिन्न परिवारो मे पारिवारिक सत्सगो का आयोजन किया गया जिससे जनता पर अच्छा प्रभाव पडा।

दिनाक १-१०-८८ को महिला सम्मेलन रखा गया जिसकी अध्यक्षता श्रीमती कमला जी आर्या महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने की इस अवसर पर अनेको आर्य बहनो ने अपने विचार रखे।

दिनाक २-१०-८८ को राष्ट्रीय रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता डा० शिवकुमार शास्त्री ने की श्री नरेन्द्रसिह जी भल्ला श्री ज्ञानी गुरुदयालसिह जी मदनमोहन चड्ढा, बलदेवराज आर्य रणवीरसिह भाटिया श्री सत्यपाल पथिक आदि ने अपने विचार राष्ट्रीय रक्षा के सन्दर्भ मे रखे।

—रोशनलाल शर्मा मन्त्री आर्यसमाज

श्री विश्वपाल जयन्त की विदेश यात्रा

आजकल श्री विश्वपाल जयन्त वेद प्रचार हेतु विदेश यात्रा पर गये हुए है। अब आप कनाडा पहुच गये है। आगे आप गयाना सुरीनाम, जापान, इगलैण्ड आदि देशो मे जायेगे जहा वैदिक धर्म एव योग का प्रचार करगे।　—सम्पादक

उत्सव सम्पन्न

श्रद्धानन्द भवन आर्यसमाज चिचोली जिला बैतूल का उत्सव दिनाक १६-१०-८८ से २०-१० ८८ तक सम्पन्न हुआ जिसमे स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी दिव्यानन्द, श्री ओम्प्रकाश जी वर्मा महेन्द्र सिह, श्री सत्यपाल सुरेन्द्रपाल आदि ने भाग लिया।

—सुधीर जायसवाल मन्त्री आर्यसमाज

वधु चाहिए

राजपूत परिवार के २९ वर्षीय १६३ से० मी० इकहरा बदन, हिन्दी भाषी, गुजरात मे बसे, प्रतिष्ठित ट्रान्सपोर्ट कम्पनी मे ब्रान्च इन्चार्ज के पद पर कार्यरत के लिए सुन्दर, सुशील, पढी लिखी, शाकाहारी कन्या चाहिए।

सम्पर्क करे —श्री ध्यानपालसिह आर्य, 'आर्य सदन' सोमेश्वर स्ट्रीट राजकोट ३६०००६ (गुजरात)।

वधु चाहिए

२३/१८० एम कोम एल एल बी. स्वस्थ सुन्दर, सम्मानित एव अत्यन्त सम्पन्न व्यापारिक, शाकाहारी आर्य समाजी यादव परिवार के युवक के लिये, सुशील-शिक्षित सुन्दर स्वजातीय सम्पन्न घराने की आर्य-समाजी परिवार की कन्या चाहिये प्रथम ही फोटो व पूर्ण विवरण के साथ लिखे।

केवल उत्तम चयन के लिये विज्ञापित।

प्रबन्धक सार्वदेशिक साप्ताहिक
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली। पिन-११०००२

हरिजन समस्या

क्यो इनको ही हरिजन कहते, क्या सब मे हरि नही है बसते ?
हिन्दू मुसलिम सिख ईसाई, हिल मिलकर भारत में रहते ॥१॥
गिरिजाघर मे सब जा सकते, मस्जिद मे सिजदा कर सकते।
क्या खूबी हिन्दू मन्दिर मे, सब हैं वहा नही जा सकते ॥२॥
क्या ईश्वर केवल मूर्ति मे, क्या वह मन्दिर के बन्धन मे ?
ईश्वर तो सर्वव्यापक है, सब उसको क्यो पूज न सकते ?३?
सब जीवो से प्रेम करो यदि, सचमुच हरिको पा जाओ तुम।
श्रीकृष्ण करें व्यास हैं गाते, ईश्वर सब भूतो मे बसते।४॥
प्रभु को यदि तुम देख नपाए, अपने हृदय के अन्तर मे।
तो फिर तुम यह निश्चय जानो, मिल न सकेगा कही जगत में।५॥
धनी लोग मन्दिर बनवाते पर न स्वय पूजने जाते।
पैसे देकर रखे पुजारी, जिनकी हरि से कभी न यारी ॥६॥
पैसो के वे चाकर बनते, भक्ति नही चाकरी करते।
बडा चढावा ले बडे पुजारी, छोटो की होती है ख्वारी ॥७॥
धनी तुरन्त दर्शन पा जाते, निर्धन खडे पक्ति लगाते।
भक्तो का तो ढोग है प्यारे, केवल वहा धनी हैं पुजते ॥८॥
एक ओर वेदान्त बरवाने, सब कुछ को वे ईश्वर माने।
फिर क्यो छुआछूत मे मानें, सबको एक समान न जाने ॥९॥
हरिजन गिरिजन नही है कोम, हरि को भजे सो हरि का होय।
छुआछूत को शीघ्र मिटाओ, सबमे प्रभु, प्रभु मे सब पाओ ॥१०॥

—गगाप्रसाद विद्यार्थी एम ए एम फिल
१७५ जयनगर जबलपुर-२

आर्यसमाज रेलवेकालोनी समस्तीपुर का उत्सव

आर्यसमाज रेलवे कालोनी समस्तीपुर का उत्सव दिनाक ३०-११-८८ से दिनाक ४-१२-८८ तक मनाया जायेगा जिसमे स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती के आने की स्वीकृति हो चुकी है। इस अवसर पर अनेक भजनोपदेशक एव नेता पधार रहे हैं।
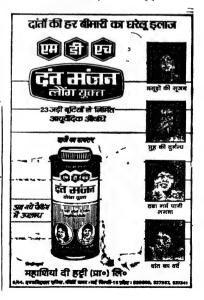
मिथार (मधुबनी) बिहार के खादी भण्डार स्थित केन्द्र से श्री बालदिवाकर हंस प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल, अन्न वस्त्रादि का वितरण करा रहे हैं।

श्री यशपाल शर्मा (होडल) तुरन्त घर लौटें

२२ मई से श्री यशपाल शर्मा सपुत्र स्व० प० भूदत्त शर्मा होडल (हरियाणा) घर नहीं लौट हैं। जिन्हे उनका पता हो निम्न पते पर सूचना द। यदि यशपाल शर्मा पढ़ तो तुरन्त घर चले आए। कोई कुछ नही कहेगा। घर पर उनकी माता जी एव पत्नी परेशान है।

देवशर्मा शास्त्री
ज० ६३८ जहांगीरपुरी (दिल्ली ३३)

श्री रामाज्ञा वैरागी मन्त्री बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा आवश्यक वस्तुए बाढ एवं भूकम्प पीडितो म वितरण कर रहे ह श्री हंस वितरण लेखक को निर्देश देते हुए।

व द्वारा श्री बालदिवाकर हंस और कृष्णप्रसाद बाढ पीडित क्षेत्र बिहार के मनिहारी और बस्ती गाव की ओर जा रहे है।

बिहार के दरभंगा आर्य समाज स्थित केन्द्र से सार्वदेशिक सभा की ओर से पीडित निर्वाहार्थ अन्न वस्त्र दियासलाई आदि वितरित किये जा रहे हैं।

मुगेर (बिहार) मे सेवा सहायता कार्य

श्रीमती विजयावती आर्या मन्त्री आर्य महिला समाज मुगेर ५ १० ८८ का पत्र सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी के

पूज्य स्वामी जी सादर नमस्ते। हम लोग कुशल से है। म १४ ९ ८८ का भेजा हुआ आपको मिला होगा। दूसरे बार बाद फिर लिख रही हूँ। मैं मुगेर मे आर्य महिला समाज पद पर कार्यरत हू। इसी सौभाग्यवश आपके बिहार आर्य के भूकम्प एव बाढ पीडित सहायता समिति के अधिकारी श्री श्री रामाज्ञा वैरागी जी, श्री योगेन्द्र नारायण जी श्री रामानन्द प्रसाद जी मुगेर के दौरे पर दो बार आए और १६ ९ ८८ को और २३ ९ ८८ को। और मुझे भूकम्प पीडितो को चावल कपडा आदि बाटने का काम सौपा। आपका भेजा चावल-कपडा भूकम्प पीडितो मे बाटने का कार्य मैं कर रही हूँ। अभी तक कई क्विटल चावल व वस्त्र आदि सैकडो लोगो बाटा गया है। सूची सलग्न है। लोगो ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी को धन्यवाद प्रकट किया है।

—विजयावती आर्या
मन्त्री आर्य महिला समाज मुगेर

आर्य समाज ऋषि कुंज (पक्का का बाग) जालन्धर का १९८८-८९ का निर्वाचन सम्पन्न

प्रधान चौ० ऋषिपालसिंह एडवोकेट, मन्त्री श्री लालचन्द मेहरा एडवोकेट कोषाध्यक्ष, राजपाल मित्तल एडवोकेट सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

...से सहायता-समिति द्वारा ...का वितरण

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हस एव सभा मन्त्री रामाज्ञा वैरागी १०० जोड़े धोती एव अन्य वस्त्रो के साथ ९ हजार नगद रुपये लेकर रसुवनी जिले कुमारपुर ग्राम के लिए प्रस्थान कर गये। श्री हस एव वैरागी की कुमारपुर ग्राम मे इन वस्त्रो का वितरण किया। मकान मरम्मत के लिए नगद राशि भी दी। यह निर्णय भूकम्प एव बाढ पीडित सहायता समिति की बैठक मे लिया गया। बैठक की अध्यक्षता श्री बालदिवाकर हस जी ने की। समिति के मन्त्री श्री योगेन्द्र नारायण पुन ७ अक्टूबर को वस्त्र एव अन्न लेकर मुगेर प्रस्थान किया। श्री बालदिवाकर एव वैरागी जी ६ अक्टूबर को कुमारपुर में वितरण कार्य समाप्त कर पटना लौट आये।

—प्रो० योगेन्द्र नारायण मन्त्री

दिल्ली के स्थानीय विक्रेता :—

(१) मै० इन्द्रप्रस्थ आयुर्वेदिक स्टोर, ३७७ चावडी चौक, (२) मै० गोपाल स्टोर १७१४ गुरुद्वारा रोड कोटला मुबारकपुर नई दिल्ली (३) मै० गोपाल कृष्ण भजनामल चड्ढा, मेन बाजार पहाडगज (४) मै० शर्मा आयुर्वेदिक फार्मेसी गडोदिया रोड, आनन्द पर्वत (५) मै० प्रभात कैमिकल क०, गली बताशा, खारी बावली (६) मै० ईश्वर ... (७) ... शास्त्री, ... (८) दि सुपर बाजार, कनाट सर्कस, (९) श्री वैद्य ... १४-शकर मार्किट, दिल्ली।

शाखा कार्यालय :—
६३, गली राजा केदार नाथ चावडी बाजार, दिल्ली
फोन नं० २६१८७१

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ
चावडी बाजार, दिल्ली-११०००६

टेलीफोन : २६१८३८ 'अमर'—बैशाख'२०४५

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८९] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २३ अंक ४४] कार्तिक कृ० ६ स० २०४५ रविवार ३० अक्तूबर १९८८ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

फादर-कुन्नुकल के आदेश पर संस्कृत हटाई गई

संस्कृत भाषा पर सरकारी कुठाराघात

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा संस्कृत के लिए देशव्यापी आन्दोलन का उद्घोष

३० अक्तूबर को संस्कृत रक्षा समिति की आपात बैठक

दिल्ली २२ अक्तूबर १९८८

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प० विमलदेव भारद्वाज और पण्डित रामरत्न शास्त्री ने आज एक सयुक्त वक्तव्य मे कहा कि सैन्ट्रल बोर्ड आफ सैकण्डरी एजूकेशन १७ बी० इन्द्रप्रस्थ स्टेट नई दिल्ली-२ के चेयरमैन, फादर कुन्नुकल ने दिनाक १६-९-८८ के आदेशानुसार सस्कृत भाषा को त्रिभाषा सूत्र से निकाल देने का आर्डर दिया है जो कि सारे देश मे लागू होगा।

सयुक्त वक्तव्य मे कहा गया है देव वाणी सस्कृत ही ऐसी भाषा है जो उत्तर से लेकर दक्षिण तथा पूर्व से लेकर पश्चिम तक समूचे देश मे कर्मकाण्ड और सस्कार के लिए बहुसख्यको की मान्य भाषा है, जो सास्कृतिक व धार्मिक सूत्र मे समूचे बहुसख्यक समाज को पिरोये हुए है। इस अन्याय पूर्ण आदेश के द्वारा देश की इस प्राचीनतम भाषा सस्कृत को पाठ्यक्रम से हटाना देश की बहुसख्यक जनता पर कुठाराघात है।

स्वामी जी ने कहा आज से एक वर्ष पूर्व सस्कृत के विद्वानो का एक शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी और तत्कालीन मानव ससाधन विकास मन्त्री श्री नरसिंह राव से मिला था। उस समय श्री नरसिंह राव ने आश्वासन दिया था कि सस्कृत भाषा के विषय मे देश भर के विद्वानो से विचार विमर्श करने के पश्चात् अन्तिम निर्णय "आप लोगो की इच्छानुसार" ही किया जायेगा।

अत बिना किसी प्रकार का विचार विमर्श किए, केन्द्रीय शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष—फादर कुन्नुकल ने अपने इस दुर्भाग्यपूर्ण आदेश को जारी करके देशभर के सस्कृत विद्वानो तथा भारत के बहुसख्यक समाज को भारी ठेस पहुचाई है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने चेतावनी देते हुए कहा कि सस्कृत भाषा के प्रति इस अपमानपूर्ण निर्णय के विरुद्ध आर्यसमाज देशव्यापी आन्दोलन करेगा और बड़े से बडा बलिदान भी यदि देना पडे, तो वह तैयार है। उन्होने देशभर की समस्त आर्य समाजों सस्कृत सगठनो तथा समस्त हिन्दू सगठनो से इस अन्याय के प्रतिकार के लिए हर प्रकार से तैयार रहने की अपील की।

वक्तव्य में कहा गया है कि एक तरफ तो हमारी सरकार सस्कृत के विकास पर लाखो रुपया खर्च कर रही है, दूसरी ओर इस प्रकार के दुर्भाग्यपूर्ण आदेश जारी करवाकर हमारी धार्मिक भावनाओ के साथ खिलवाड कर रही है। केन्द्रीय सेकण्डरी बोर्ड के स्कूलो मे छठी कक्षा से बारहवी कक्षा तक के छात्रो को अग्रेजी तथा हिन्दी के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रीय भाषाओ मे से किसी एक भाषा को पढने का अधिकार दिया गया है जिसमे सस्कृत भी सम्मिलित है। पन्द्रह भारतीय भाषाओ मे सस्कृत का ११वा स्थान है। अत सस्कृत का पाठ्यक्रम से हटाया जाना सविधान की सूची मे दी गई सुविधा का भी स्पष्ट उल्लघन तथा देश के सविधान का अपमान है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा—जल्दी ही सस्कृत रक्षा समिति की बैठक बुलाकर इस तानाशाही आदेश को रद्द कराने के लिए सगठित मोर्चा बनाया जायेगा, इससे पूर्व सस्कृत रक्षा समिति का एक शिष्टमण्डल जल्दी ही प्रधानमन्त्री तथा केन्द्रीय मानव ससाधन विकास मन्त्री से मिलकर इस विषय मे अन्तिम निर्णय करेगा।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

बिहार भूकम्प एव बाढ सहायता हेतु सभाप्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को अन्न की बोरियां एव वस्त्र प्रदान करते हुए श्रीमती सरला मेहता एव प्रकाश आर्या दिखाई दे रही है।

सम्पादकीय

हम बहुसंख्यक हैं यही तो दोष है ?

धर्म के नाम पर बहुसख्यक तथा अल्पसख्यक स्वरूप देना ही आज देश में साम्प्रदायिकता को जन्म देकर बढ़ावा देना है। जो स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात समाप्त होना चाहिए था। विदेशो में अल्पसख्यक समुदाय को बहुमत का सरक्षण मिलता है और अल्पसख्यक शान्त प्रसन्न मन उस देश मे रहते हैं परन्तु भारत में इससे विपरीत दिखा है।

जब तक हम भारत मे हिन्दू-मुसलमान सिख-ईसाई समझते रहेगे तब तक देश में भावात्मक एकता उत्पन्न नहीं हो सकेगी। जिसकी कि आज नितान्त आवश्यकता है।

धर्म के नाम पर बहुसख्यक और अल्पसख्यक का परिणाम यह है कि स्थान-स्थान पर साम्प्रदायिकता सिर उठा रही हैं और दगे फसाद और फिर देश के विभाजन की रूप रेखा सामने आ रही हैं। ६-७ सौ साल का धर्म सघर्ष की राजनीति मे धर्म का विष वमन ही रहा है और हिन्दू समाज का विकृतीकरण करके मुस्लिम ईसाई करण को जन्म दिया गया। इन्सान का धर्म परिवर्तन ही देश की सम्पत्ति का विभाजन रूप बना है। आज राम-जन्म-भूमि और बाबरी मस्जिद का जो विवाद चला है उसका विकृत स्वरूप मानवीकरण के साथ ही हुआ है हिन्दू बदला, राष्ट्रीयता बदली फिर सम्पत्ति का धार्मिक स्वरूप मन्दिर से मस्जिद में बदला। तत्पश्चात साम्प्रदायवाद का बोलबाला हुआ। पाकिस्तान का विभाजन धर्म के नाम पर ही हुआ और आज खालिस्तान, नागालैण्ड मे ईसाइस्तान की माग है। हमने प्रारम्भ मे ही भूल की थी—कि आजादी की प्राप्ति के साथ ही बहुमत के स्वरूप को स्वीकार कर उनके अधिकार बहुमत मे ही रहने देते और अल्पसख्यको को सरक्षण प्रदान कर उन्हे उनका अधिकार मात्र देते तो आज भारत मे सम्प्रदायवाद के नाम पर खून खराबा नही होता।

जब तक देश मे जातिवाद के नाम पर धर्मनिरपेक्षता की ओट मे साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन देते रहेगे। तब तक देश मे साम्प्रदायवाद को बढावा मिलगा और परस्पर मे मनमुटाव भी बढता रहेगा।

देश का विभाजन हुआ तो हमने भाई-भाई का नारा जोरो पर दिया। एक तरफ भाई चारे का उद्घोष दूसरी ओर धर्म के नाम पर खून की होली खेली जा रही थी। धर्म के नाम पर अल्पसख्यक समुदायो ने जो मागा, वह सीमा से हटकर उन्हे दिया गया।

परिणामत पहले पाकिस्तान के नाम पर निरपराधो का (बहुमत का) खून बहाया गया। अब नागालैण्ड तथा खालिस्तान व झारखण्ड और पुन मिनी पाकिस्तान की माग जोरो पर है।

व्यावहारिक रूप देने क लिए हमारे नेताओ ने जो भूल की उसका आधार था अग्रेज सरकार जो कम्युनल एवार्ड के नाम पर देश की साम्प्रदायिक समस्या का समाधान उपस्थित किया वह पूर्णत मुसलमानो के पक्ष म था। हिन्दू सिख दोनों इसके विपरीत थे काग्रेस भी इसके विरुद्ध थी। किन्तु महात्मा गाधी मुसलमानो को असन्तुष्ट नही करना चाहते थे परिणामत काग्रेस पार्टी से भी प्रस्ताव पास करा दिया गया।

इसका परिणाम यह हुआ कि पडित मदन मोहन मालवीय लाला लाजपतराय, मि० अण जैसे हिन्दू नेता कांग्रेस से अलग हो गए। उस समय की काग्रेस ने इनका अलग होना तो स्वीकार किया। किन्तु मुसलमानो को नाराज करने को तत्पर न हुए। वही स्थिति आज भी स्वतन्त्र भारत मे है। साम्प्रदायिकता क आगे पदे-पदे पर [illegible] के साथ विद्यमान हैं।

जब तक धर्म के नाम विभाजन होता रहेगा तब तक धर्म के नाम पर बहुसख्यक और अल्पसख्यक बनते रहेंगे और देश मे शान्ति भी नही हो सकेगी।

आज इस सम्प्रदायवाद की आग से बचने हेतु एक नारा यह भी दिया जा रहा है कि धर्म को राजनीति से अलग रखा जाय। पर क्या इसका यह समाधान सही है इसके समभाव का रूप निखार ले सकेगा।

आज अलीगढ, मुजफ्फरनगर, जमशेदपुर में जो दगे हो रहे हैं क्या यह धर्म के नाम पर सम्प्रदायवाद को बढावा देना नही हैं। यदि सरकार ने अपनी नीति मे परिवर्तन नही किया तो देश का विभाजन होगा और समाज मे विकृति आयेगी।

किसी तत्व के पृथक करने से प्रस्ताव पर प्रभाव नहीं पड़ेगा देश को यदि आग से बचाना है तो धधकती ज्वालाओ पर शीतल जल का छिड़काव करना पड़ेगा। धर्म व नीति के नाम पर उसके अनुसार ही नीति का भी परिवर्तन करना पड़ेगा।

मानसिकता बदलनी है तो अलगाव से दूर हटो

मुझे स्मरण है कि हरिद्वार मे हरि के पैडी पर हरिजन स्नान के लिए नही जा सकता था तब भी देश मे आर्य समाज का अछूतोद्धार का नारा बुलन्दी पर था पर हमारी बात का प्रभाव तो देर मे पडा—और महामना मालवीय जी ने जब अग्रणी होकर यह मार्ग प्रशस्त किया कि हिन्दू मात्र हरि की पैडी पर स्नान कर सकता है। इसे हिन्दुओ ने स्वीकार किया और पैडी पर हरिजन ने भी स्नान किया।

बगाल मे विभाजन के समय पर हिन्दुओं का अच्छा खासा वर्ग मुसलमान बना। उस समय भी आर्य समाज मे उन्हे वापस लेने के लिए अस्पृश्यता को दूर कर गले लगाओ। परन्तु हिन्दू समाज के कठमुल्लाओ ने हमारी नहीं सुनी। हा जिस समय महामना मालवीय ने कुछ पण्डितो को बगाल भेजकर वापस लेने के लिए आर्य समाज का हाथ बटाने मे जयघोष किया। तो हिन्दू बिरादरिया उन्हे लेने को तैयार हो गई और यहा तक कहा कि यदि हवन न कर सके तो राम नाम बोलकर या गगा जल के छींटे लगाकर भाइयो को गले लगाओ। मालवीय जी की बात का प्रभाव हुआ।

इतने काल के अन्तराल में स्वामी करपात्री जी जैसे और निरञ्जन देव तीर्थ जैसो ने वही घिसा-पिटा नारा दिया कि हरिजन-मन्दिर में प्रवेश नहीं कर सकेंगे। आर्य समाज ने इसका भी विरोध कर उन्हें अधिकार दिलाने का नारा दिया।

प्रश्न है कि मूर्ति को मानने और न मानने का। कि आज स्वामी अग्निवेश मन्दिर मे प्रवेश हेतु आर्य समाज का नारा क्यो बुलन्द कर रहे हैं। प्रश्न हमारे मानने का नही है। समाज मे जीने और जीने के अधिकार का प्रश्न उजागर करना है।

हम मूर्ति को स्थापत्य कला के रूप मे ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि ही मानते हैं दूसरा क्या मानता है यह नही ? आज कानून का बड़ा महत्व है। जो लोग यह कहते है मानसिकता बदलो। उनसे प्रश्न है कि क्या चुनाव के समय उन्ही हरिजनो के पास बैठना, खाना, पीना सोना क्यो उचित माना।

नारी के भ्रूण की हत्या समाज मे पाप मानी है पर आज कानून के द्वारा धर्म का रूप दे दिया है। कुछ काम धर्म से भी होते हैं और कुछ कानून से भी।

अत मानसिकता बदलने मे जहा धर्म अपेक्षित है वहा प्रशासन का भी अपना स्थान है।

आज यदि निरञ्जन देव तीर्थ ने कहा कि २१ वी सदी मे आज भी हरिजनो को मन्दिर मे जाकर देव दर्शन करन का अधिकार नही है।

भारतीय सविधान म छुआछूत विरोधी व्यवस्थाओ को पूर्ण सरक्षण सवैधानिक प्राप्त है अस्पृश्य वग के उद्धार व उत्थान को भी अनेक योजनाओ के साथ स्थान दिया है। पर इतना होने पर भी महामना मालवीय जी तथा सवैधानिक व्यवस्थाओ पर कुठाराघात हो रहा हो, तब यह धर्म धुरीण कहते हैं कहा गया आर्य समाज ?

स्वामी अग्निवेश ने आर्य समाज के नाम पर अछूतोद्धार का नारा दिया। जहाँ स्वामी दयानन्द ने प्रत्येक धर्म को प्रभु के आदेश का अधिकार

(शेष पृष्ठ ११ पर)

स्वामी दयानन्द के शिष्य गोविन्द गुरु ने भीलों को हवन करना सिखाया : १५हजार भीलों का बलिदान

—सहदेव स्नातक, भारतीय सूचना सेवा (रिटा.) सी-४ बी—३३२ बी, जनकपुरी, नई दिल्ली-५८

हम इस तथ्य से अनभिज्ञ है कि देश के जगलो, पहाडो और दुर्गम स्थानों मे बसे लगभग ६ करोड की जनसख्या वाले जनजाति समाज मे भी धार्मिक व राजनीतिक पुनरुत्थान की धाराए बडे प्रबल रूप से जनमी, फैली और अपना सहज परिणाम छोडकर विलीन हो गयीं।

चार-पाच सौ के लगभग देश की जनजातियो मे राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात मे बसने वाले भील एक प्रमुख जनजाति है। इस भील क्षेत्र की बजारा उप-जनजाति मे १९ वी शताब्दी के उत्तरार्ध मे एक ऐसा चमत्कारी पुरुष जनमा जिसने जन जातियो मे समाज सुधार का प्रचंड आन्दोलन छोडकर हजारो भीलो का शराब पीना लूटमार करना और अन्य कुटेवो को छुडवा दिया। इसके साथ ही उसने मिलजुल आपस मे मिलजुल कर झगडे निपटाने तथा राजाओ और जागीरदारो को बेगार न देने का भी प्रचार किया। इस असाधारण व्यक्ति का नाम है गोविन्द गुरु। राजस्थान के डू गरपुर के बासीया गाव मे उनका जन्म १८५८ को एक बजारा परिवार मे हुआ था। बचपन से ही गोविन्द कुशाग्र बुद्धि थे। गोविन्द ने गाव के पुरोहित से कुछ अक्षर ज्ञान प्राप्त किया। उनमे बचपन से ही सात्विक सस्कार थे। बचपन से मास, मदिरा से दूर रहते, नित्य स्नान करके भगवान की पूजा अर्चना करते थे।

स्वामी दयानन्द से भेंट

कहा जाता है कि सन १८८०-८१ मे स्वामी दयानन्द सरस्वती कई महीनो तक राजस्थान मे रहे। जब वह अजमेर होते हुए उदयपुर पहुंचे तो गोविन्द गुरु ने उनसे भेंट की और कुछ समय तक वे स्वामी जी के सान्निध्य मे रहे। गोविन्द गुरु की अवस्था तब केवल २३ वर्ष की थी। किन्तु उनको तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियो, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र के अध पतन और अपने वनवासी समाज की कुरीतियो व दुर्व्यसनो का अच्छा ज्ञान था। इस कारण ही वे स्वामी दयानन्द के बारे मे जानते थे और उनसे मिलने और प्रेरणा तथा आशीर्वाद लेने उनके पास गए। अपने वनवासी समाज को सुधारने और सस्कारित करने के उपायो को उनसे सीखा। बाद मे उनका "धूणी" मे घी और नारियल की आहुति देना, एक प्रकार से स्वामी जी द्वारा प्रचारित अग्निहोत्र या हवन का जनजातीय सस्करण है।

स्वामी दयानन्द से अपनी भेंट के कुछ दिन बाद ही गोविन्द गुरु ने सम्प सभा नामक सभा की स्थापना की जिसका उद्देश्य जनजातीय समाज मे शिक्षा, एकता, बन्धुत्व और सगठन का प्रचार करना, अन्धविश्वासों और कुरीतियों को दूर करना और साथ ही बेगार जैसी अन्यायपूर्ण और घृणित प्रथा का विरोध करना था।

गोविन्द गुरु की सभा के धार्मिक-सामाजिक आन्दोलन के उद्देश्य इस प्रकार थे—

१—शराब मत पियो और मास मत खाओ।

२—चोरी, डाका, लूटमार मत करो।

३—मेहनत से काम करो, खेती मजदूरी करके अपना व परिवार का जीवन बिताओ।

४—गांव-गाव में पाठशालाएं खोलकर बच्चो व बडो में ज्ञान का प्रकाश फैलाओ।

५—भगवान मे आस्था रखो। रोज स्नान और हवन करो। नारियल की आहुति दो अगर पूरी विधि से हवन सब न कर सको तो भी कम से कम गोबर के कडे पर कुछ बूदे घी की डालकर हवन का नियम निभाओ।

६—अपने बच्चों को सस्कारित करो। गाव-गाव घर-घर कीर्तन व्याख्यान करो।

७—अदालतो मे मत जाओ और अपने झगडो को झगडे में गाव की पचायत के फैसले को सर्वोपरि मानो।

८—सेठों के पिट्ठू राजा, जागीरदार या सरकारी अधिकारी को बेगार मत दो। अन्याय का सामना बहादुरी से करो।

९—स्वदेशी वस्तुओ का उपयोग करो। देश के बाहर बनी किसी वस्तु का उपयोग मत करो। यद्यपि यह सारी बाते बडी निर्दोष थी। किन्तु सामन्तवादी रजवाडो को इनमे खतरे की गन्ध आने लगी। गोविन्द गुरु पाठशालाए खुलवाते थे और रियासतो की पुलिस और राज कर्मचारी स्कूल बन्द करवाते थे और बच्चो तथा अध्यापको को मार-पीट कर भगा देते थे। गोविन्द गुरु की सभा भील व गरासिया आदि जनजातियो के गावो मे शराबबन्दी कराती थी और पुलिस उन्हे शराब पीने को मजबूर करती थी। गोविन्द गुरु के भक्तो ने बेगार देना बन्द कर दिया तब तो राजाओ और जागीरदारो के उन पर अत्याचार और भी बढ गए। सैकडो भीलो को मरवा डाला गया। कोडे लगवाए गए और सभाए बन्द करने के लिए तरह तरह की पीडाए दी गयी। राजाओ ने अग्रेज रेजिडेंट के पास शिकायतें भेजनी शुरु की। अग्रेज सरकार पहले ही कहा चाहती थी कि देश मे कहीं भी, कोई जागृति या सुधार हो। अब तो रियासतो की शिकायत पर और इन्ही के कन्धो पर बन्दूक रखकर गोविन्द गुरु के क्रान्तिकारी आदोलनो को दबाने की उसे सुविधा और बहाना मिल गया था। रेजिडेंट को इस बेबुनियाद शिकायत के लिए एक थोडा सा आधार मिल गया। हुआ यह कि गुजरात राज्य के सन्तराम पुर जिले का थानेदार बहुत अत्याचारी था और वह आदिवासियो की बहू-बेटियो पर बुरी नजर रखता था और जब जहा जिसको उठवा लिया करता था। उसकी करतूतो से क्रुद्ध होकर एक भील ने उसकी हत्या कर दी। पास मे ही मानगढ की एक पहाडी है। इस पहाडी पर सन १९०३ से प्रति वर्ष माघ पूर्णिमा के दिन गोविन्द गुरु के अनुयायी मेले के रूप मे इकट्ठे होते थे और विशाल धूनी में घी और नारियल चढाते थे। दिसम्बर सन १९०८ मे यह माघ पूर्णिमा आने ही वाली थी और पहाड़ी पर भीलो का जमघट होने लगा था।

जलियाँ वाला बाग से भी हिंसा पूर्ण

उधर श्रद्धालु भील अपने हाथो मे नारियल और घी के कटोरे लिए पहाडी पर चढते चले आ रहे थे। स्त्रिया, बच्चे, बूढे, युवतिया सभी इस जन समुद्र में गाते बजाते शामिल थे। पुरुषो के कन्धो पर उनके धनुष बाण सुशोभित थे। गोविन्द गुरु पूर्ण भक्ति भाव से अपनी प्रज्वलित धूनी को देख रहे थे। सैनिको ने पहाडी को घेर लिया और बिना कोई सूचना या चेतावनी दिए अपनी बन्दूको के घोड़े दबा दिए। धूनी में घी और नारियल चढाने के लिए उठे हाथ अचानक निर्जीव होकर गिर गए। अनुमान है कि इस राक्षसी नर सहार मे १५ हजार भील मारे गए। गोविन्द गुरु को थानेदार की हत्या के आरोप मे फांसी की सजा सुनाई गई। प्रिवी कौंसिल मे अपील करने पर फांसी की सजा दस वर्ष के कारावास में बदल दी गयी। प्रथम महायुद्ध जीतने की खुशी मे अग्रेज सरकार द्वारा गोविन्द गुरु समय से कुछ पूर्व जेल से छूट गए। अपना अन्तिम समय गोविन्दगुरु ने गुजरात के कम्बोई नामक गांव मे खेती बाडी करके जैसे तैसे पेट भर के बिताया। कम्बोई में उनकी समाधि बनी हुई है जहा उनके नाम से आज भी मेला लगता है।

भूल सुधार

सार्वदेशिक के अङ्क ४२ दिनाक २३ अक्तूबर १९८८ के पृष्ठ सख्या दो पर "बिहार भूकम्प एव बाढ पीडित सहायता कोष" मे दूसरी पक्ति पर आर्य समाज रानीबाग शकूर बस्ती दिल्ली के नाम ११०००) की राशि गलती से छप गई है, यह धनराशि 'धर्मरक्षा महाभियान" के लिये दान दी गई है। कृपया शुद्ध करके पढे। असुविधा के लिये खेद है।

—सम्पादक

आर्यसमाज कानपुर में शुद्धि वैदिक धर्ममें प्रवेश

परवीन श्रीमती परवीन श्री वास्तव बनी

शाहदरा २१ अक्तूबर। अदालती मंजूरी के बावजूद अन्तर धार्मिक विवाह के बाद परवीन जहां और राजेश को परवीन के घर और समाज वालों का गुस्सा झेलना पड़ रहा है। दोनों मामलों में फर्क सिर्फ इतना है कि राजरानी शादी के बाद भी राजरानी रही लेकिन परवीन जहां परवीन श्रीवास्तव बन गई।

परवीन और राजेश ने पिछले महीने की पांच तारीख को कानपुर के आर्यसमाज मन्दिर मे अग्नि के फेरे लिए थे। उनके पास इसका प्रमाण पत्र भी मौजूद है। इनकी शादी को आज अदालत ने भी मंजूरी दे दी।

मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट सूरजभान के सामने आज शाहदरा जिला अदालत के बन्द कमरे में परवीन ने कहा—"भगवान को साक्षी मानकर यह बयान देती हूँ कि मैं अब परवीन जहां नही बल्कि श्रीमती परवीन श्रीवास्तव हूँ। मैंने पूरे मन से हिन्दू धर्म अंगीकार करके राजेश कुमार श्रीवास्तव से विवाह किया है।" उसका बयान करीब पौन घण्टे तक कमलबन्द हुआ।

त्रिलोकपुरी के एनएससी पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल परवीन जहां और राजेश श्रीवास्तव का पांच सितम्बर को कानपुर के आर्यसमाज मन्दिर में विवाह हुआ। परवीन का कहना है कि विवाह के बाद से उसके मायके वाले और उनके समर्थक उसे और राजेश को जान से मारने की धमकी दे रहे हैं। उसके स्कूल के वरिष्ठ अध्यापक विकास राय और सहेली बेबी को भी परेशान किया जा रहा है। परवीन ने बताया कि त्रिलोकपुरी के अवैध धन्धेबाज चुन्नू उर्फ इसरार खां, मुहम्मद नईस और एक महिला परवीन मैसी ने उसके भाई हबीब को पुलिस और अदालत में जाने को मजबूर किया है। परवीन के मुताबिक तीन बीवियों का अधेड़ पति चुन्नू उससे शादी करना चाहता था। उसकी दो पत्नियां मुसलमान हैं और तीसरी २४ साल की निशा हिन्दू है। कुछ महीने पहले उसने निशा को तलाक भी दे दिया है। दाने-दाने को मोहताज वह अपने छोटे से बच्चे के साथ दर-दर भटक रही है।

परवीन का कहना है कि बहुविवाह और तलाक जैसी कुरीतियों से बचने के लिए उसने अपने पंसदीदा युवक राजेश से शादी की है। इस तरह की पीड़ित महिलाओं को राहत दिलाने के लिए जेहाद छेड़ने की प्रतिज्ञा भी परवीन कर चुकी हैं।

राजेश कुमार श्रीवास्तव का कहना है कि उनके परिवार वालों को भी धमकियां दी जा रही हैं। परिवार के लोग विवाह को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। इसके बावजूद मजबूरी मे एक सामाजिक संस्था के संरक्षण में रहना पड़ रहा है।

रावण का इतिहास

रामलीलाएं एवं रावण

रावण का इतिहास आरम्भ करने से पूर्व इन तथ्यों का संकेत देना आवश्यक है कि हजारों वर्षों से बेचारे रावण से अन्याय किया जा रहा है जो कि उसके पुतले पर गधे का सर लगाकर प्रतिवर्ष जलाया जाता है। जो वेदों का प्रकांड पंडित था, कुलीन ब्राह्मण एवं परम शिवभक्त था जिसने कामी इन्द्र का मानमर्दन किया, जिसे राम ने पूज्य एवं महात्मा कहा वह त्रिलोक विजेता रावण ऐसे व्यवहार के योग्य नहीं है।

सीताहरण को छोड़कर शायद उसके जीवन की चादर अति उज्जवल थी। उसके नाना गुणों पर हम आगे चलकर प्रकाश डालेंगे। रामलीलाएं आयोजित करने वालों को राम से इतना प्यार नही जितना चौधराहट तथा अर्थलाभ से है। रावण से लेकर अब तक कई विदेशियों ने हम पर भयंकर अत्याचार किए, मुसलमान शासकों ने नृशंसता की सीमाएं लांघ दीं परन्तु किसी ने उनकी लीलाएं शुरु नहीं कीं, ना ही उनके पुतले जले।

हिन्दुओं की धारणा है कि मरने के बाद शत्रु को भी क्षमा कर देना चाहिए। फिर आर्य रावण के प्रति दुराग्रह क्यों?

रावण का यही दोष था कि उसने अपनी उदारता वश युद्ध हार दिया था। कवि, साहित्यकार, इतिहासकार, भी हारने वाले का साथ नही देते, परन्तु राम ने रावण की मृत्यु पर विभीषण से कहा—

मरणान्तानि वैराणि, निवृत्तं न प्रयोजनम्।
क्रियतामस्य संस्कारं, ममाप्येष यथा तव॥

हे विभीषण मृत्यु के पश्चात् वैर नहीं रहता भाई का अन्तिम सस्कार करो यह जैसे तेरा वैसे मेरा भी भाई है।

अतः रामलीला मे रावण आदि का दहन बन्द करना चाहिए। वास्तव में रामरावण युद्ध वैष्णव शैव कलह का परिणाम था, जो अब निरर्थक होकर रह गया है। रावण, राक्षस जाति, वानर जाति एवं रामायण कालीन कुछ पात्रों के साथ अनेक भ्रान्तियां, विसंगतियां जुड़ गई हैं, जिनका निराकरण करना जरूरी है।

—विमलदेव भारद्वाज, दिल्ली

युवकों से 'राम' बनकर सामाजिक बुराइयों रूपी रावण का वध करने का आह्वान

नई दिल्ली २० अक्तूबर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज यहां कहा कि हमारे देश में जगह-जगह सामाजिक बुराइयों रूपी रावण पैदा हो रहे हैं और युवकों को राम बनकर इन बुराइयों का वध करना है।

युवकों को लक्ष्मण के समान उज्ज्वल चरित्र द्वारा आदर्श स्थापित कर राष्ट्र निर्माण में योगदान देना है। वह विजयदशमी पर आयोजित 'वीर पर्व' पुरस्कार वितरण समारोह में संचालकपद से बोल रहे थे। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल आर्य ने आर्य वीर दल की प्रगति का उल्लेख करते हुए आर्य वीरों को राष्ट्र का कर्णधार बताया तथा उन्हें वैदिक मान्यताओं का प्रचार व प्रसार करने का आह्वान किया। सभा महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने अध्यक्षीय भाषण में आर्य वीरों को देश की आन व शान का प्रतीक बताते हुए कहा कि शारीरिक उन्नति के साथ-साथ उन्हें विद्या अध्ययन में भी अग्रणी रहना चाहिए।

चार वेद ही क्यों ?

(पं० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा)

प्रश्न—वेदों के चार विभाग क्यों किए हैं ?

उत्तर—भिन्न-भिन्न विद्या जानने के लिए। अर्थात् जो तीन प्रकार की गान विद्या है, एक तो यह कि—उदात्त और षड्जादि स्वरों का उच्चारण ऐसी शीघ्रता से करना, जैसा कि ऋग्वेद के स्वरों का उच्चारण द्रुत अर्थात शीघ्रवृत्ति में होता है। दूसरी-मध्यमवृत्ति जैसे कि यजुर्वेद के स्वरों का उच्चारण ऋग्वेद के मन्त्रो से दूने काल मे होता है। तीसरी- विलम्बित वृत्ति है, जिसमें प्रथमवृत्ति से तिगुना काल लगता है, जैसा कि सामवेद के स्वरो के उच्चारण वा गान मे। फिर उन्हीं तीनो वृत्तियो के मिलाने से अथर्ववेद का भी उच्चारण होता है। परन्तु इसका द्रुतवृत्ति मे उच्चारण अधिक होता है, इसलिए वेदो के चार विभाग हुए हैं। तथा कहीं कहीं एक मन्त्र का चारो वेदो मे पाठ करने का यही प्रयोजन है कि वह पूर्वोक्त चारो प्रकार की गान विद्या मे गाया जावे। तथा प्रकरण भेद से कुछ कुछ अर्थ भेद भी होता है, इसलिए कितने ही मन्त्रो का पाठ चारो वेदो मे किया जाता है ऐसे ही 'ऋग्भिस्तुवन्ति यजुर्भिर्यजन्ति, सामभिर्गायन्ति' ऋग्वेद मे सब पदार्थों के गुणो का प्रकाश किया है, जिससे उनमें प्रीति बढ़कर उपकार लेने का ज्ञान प्राप्त हो सके। क्योंकि बिना प्रत्यक्ष ज्ञान के संस्कार और प्रवृत्ति का प्रारम्भ नहीं हो सकता, और प्रारम्भ के बिना यह मनुष्य जन्म व्यर्थ ही चला जाता है। इसलिए ऋग्वेद की गणना प्रथम ही की है।

तथा यजुर्वेद मे क्रिया काण्ड का विधान लिखा है सो ज्ञान के पश्चात ही कर्ता की प्रवृत्ति यथावत् हो सकती है। क्योंकि जैसा ऋग्वेद मे गुणो का कथन किया है, वैसा ही यजुर्वेद मे अनेक विद्याओ के ठीक ठीक विचार करने से संसार म व्यवहारी पदार्थों से उपयोग सिद्ध करना होता है। जिनसे लोगों को नाना प्रकार का सुख मिले। क्योंकि जब तक कोई क्रिया विधि-पूर्वक न की जाय, तब तक उसका अच्छी प्रकार भेद नहीं खुल सकता। इसलिए जैसा कुछ जानना वा कहना वैसा ही करना चाहिए, तभी ज्ञान का फल और ज्ञान की शोभा होती है। तथा यह भी जानना अवश्य है कि जगत का उपकार मुख्य करके दो ही प्रकार का होता है एक आत्मा और दूसरा शरीर का। अर्थात् विद्यादान से आत्मा और श्रेष्ठ नियमो से उत्तम पदार्थो की प्राप्ति करके शरीर का उपकार होता है। इसलिए ईश्वर ने ऋग्वेदादि का उपदेश किया है कि जिनसे मनुष्य लोग ज्ञान और क्रिया काण्ड को पूर्ण रीति से जान लेवें। तथा सामवेद से ज्ञान और आनन्द की उन्नति और अथर्ववेद से सर्वसंशयो की निवृत्ति होती है, इसलिए इनके चार विभाग किए हैं।

प्रश्न—प्रथम ऋग्, दूसरा यजु तीसरा साम और अथर्ववेद इस क्रम से चार वेद क्यो गिने हैं ?

उत्तर—जब तक गुण और गुणी का ज्ञान मनुष्य को नहीं होता तब पर्यन्त उनमे प्रीति से प्रवृत्ति नही हो सकती, और इसके बिना शुद्ध क्रियादि के अभाव से मनुष्यो को सुख भी नही हो सकता था, इसलिए वेदो के चार विभाग किए हैं कि जिससे प्रवृत्ति हो सके। क्योंकि जैसे इस गुणज्ञान विद्या को जानने से पहले ऋग्वेद की गणना योग्य है वैसे ही पदार्थो के गुणज्ञान के अनन्तर क्रियारूप उपकार करके सब जगत का अच्छी प्रकार से हित भी सिद्ध हो सके इस विद्या को जनाने के लिए यजुर्वेद की गिनती दूसरी बार की है। ऐसे ही ज्ञान कर्म और उपासना काण्ड की वृद्धि वा फल कितना और कहा तक होना चाहिए, इसका विधान सामवेद में लिखा है इसलिए उसको तीसरा गिना है। ऐसे ही तीन वेदो मे जो जो विद्या है, उन सबके शेष भाग की पूर्ति विधान, सब विद्याओ की रक्षा और संशय निवृत्ति के के लिए अथर्ववेद को चौथा गिना है।

सो गुणज्ञान, क्रियाज्ञान इनकी उन्नति तथा रक्षा को पूर्वा पर क्रम से जान लेना। अर्थात् ज्ञानकाण्ड के लिए ऋग्वेद, क्रियाकाण्ड के लिए यजुर्वेद, इनकी उन्नति के लिए सामवेद और शेष अन्य रक्षाओ के प्रकाश करने के लिए अथर्ववेद की प्रथम, दूसरी, तीसरी और चौथी करके संख्या बाधी है। क्योंकि (ऋच स्तुतौ) (यज देवपूजा संगतिकरण दानेषु) (षो अन्तकर्मणि) और (साम सान्त्वप्रयोगे) (थर्वतिश्चरतिकर्मा तत्प्रतिषेध) इन अर्थों के विद्यमान होने से चार वेदो अर्थात् ऋग यजु साम और अथर्व की ये चार संज्ञा रखी हैं। तथा अथर्ववेद का प्रकाश ईश्वर ने इसलिए किया है कि जिससे तीनों वेदो की अनेक विद्याओ के सब विघ्नो का निवारण और उनकी गणना अच्छी प्रकार से हो सके।

स्वामी श्री आनन्द बोध का

स्वामी श्री आनन्दबोध का पथ अनुगमन करो।
सार्वदेशिक, पढो बुद्धि का विकसित चमन करो॥

वायु प्रदूषण बढ़ता जाता पर्यावरण बना,
घुट घुट कर मरने का जग मे वातावरण बना,
सुधी सैनिको युग प्रहरी प्राणवान स्वर खोल,
ओम पताका थाम हाथ मे वेद ऋचायें बोल,

हवन यज्ञ से वायु प्रदूषण का विष शमन करो।
सार्वदेशिक पढो ॥

देशकाल मे सीमाओ की दूरी दूर हुई,
खुलकर आज खेलने की मधू की दूर हुई
पर मन इतना बना हुआ-क्यो मानव काम्यमीत,
क्षण क्षण क्षरण हो जग मे जीवन का संगीत,

उमड़ा ज्वार वासना का संयम से दमन करो।
सार्वदेशिक पढो ॥

तार-तार मे तार लगाकर फैलाया फैलाव,
प्रलय काल कोले को ले आया यह बारूदी सैलाव
अणुबम्बो की विभीषिका मे भरा युद्ध उन्माद,
हरी भरी इस वसुन्धरा को कर देंगे बर्बाद,

करके फिर इकबात्म शख ध्वनि जग में अमृत करो।
सार्वदेशिक पढो बुद्धि का विकसित चमन करो॥

—सत्यव्रत चौहान सिद्धान्त शास्त्री
मन्त्री आर्य समाज पुछवी मैनपुरी, उ प्र

महात्मा गांधी और ईसाई मिशनरी (२)

लेखक—डा० कमल किशोर गोयनका

धर्मान्तरण ईसाई धर्म को नीचे गिराता है।

सर्वथा अज्ञ और भोले-भाले लोगों के सामने उनका धर्म बदलने की बात करना मुझे बहुत बुरा लगता है। अगर कोई मुझसे ऐसी बात करे और वास्तव में मुझसे ऐसी बात की भी जाती रही है तो इसे शायद मैं किस तरह ठीक मान लूं। कारण वे अपनी बात मुझ से तर्क पूर्वक कह सकते हैं, मैं अपनी बात उनसे तर्क पूर्वक कह सकता हू, लेकिन हरिजनो से ऐसी चर्चा चलाना मुझे निश्चय ही बहुत बुरा लगता है। अगर कोई ईसाई किसी हरिजन के पास जाकर कहे कि केवल ईसा मसीह ही जन्मना ईश्वर के पुत्र थे तो वह उसे विस्फारित नेत्रो से देखता ही रह जाएगा। और वह उससे इतना ही नहीं कहता, ऊपर से तरह तरह के प्रलोभन भी देता है। यह बात ईसाई धर्म को नीचे गिराती है।

(डा० क्रेन से बातचीत मे "हरिजन" ६ मार्च, १९३७)

सामूहिक धर्म परिवर्तन खोटे सिक्के

अगर कोई आदमी डर से, और जबरदस्ती से, भूख से या कुछ रुपए पसे के लालच मे आकर दूसरे धर्म मे चला जाता है तो उसे हृदय परिवर्तन का नाम नहीं दिया जा सकता।

हम सामूहिक धर्म परिवर्तन के जिन प्रसंगो के विषय मे इधर दो वर्ष से सुनते आ रहे हैं उनमें से अधिकतर तो मेरे विचार मे खोटे सिक्के हैं। सच्चा धर्म परिवर्तन हृदय से होता है, किसी अजनबी आदमी की प्रेरणा से नही, बल्कि ईश्वर की प्रेरणा से होता है।

(हरिजन, २५ सितम्बर, १९३७)

हरिजनो का धर्मान्तरण सन्देह और कटुता पैदा करेगा

मेरी समझ मे नही आता कि हरिजन यदि उस धर्म (ईसाई धर्म) मे चले जाते हैं तो उससे उन मिशनों को क्या लाभ होता है और उन हरिजनो को कहां तक सच्चे रूप मे धर्मान्तरित व्यक्ति कहा जा सकता था। मै यह जानता हूं कि धर्म-परिवर्तन की इस तरह की कोशिशें समाज को भ्रष्ट करती हैं, सन्देह और कटुता पैदा करती हैं और समाज बहुमुखी की प्रगति को रोकती हैं। यदि ईसाई मिशन बेहतर बरताव के बदले मे तथाकथित धर्मपरिवर्तन की इच्छा न करकें, हरिजनो का बोझ हलका करने मे हरिजन सेवको के साथ सहयोग करें, तो उनकी सहायता का स्वागत होगा और समाज के विकास की गति तेज होगी। ("हरिजन", १ मई, १९३७)

धर्म-परिवर्तन कब और क्यो ?

धर्म परिवर्तन के बारे में यह नहीं कहना चाहता हूं कि यह कभी उचित हो ही नही सकता। हमें दूसरो को अपने धर्म बदलने के लिए निमन्त्रण नही देना चाहिए। मेरा धर्म सच्चा है, और दूसरे सब झूठे हैं, इस तरह की जो मान्यता इन निमन्त्रणो के पीछे रहती है, उसे मैं दोषपूर्ण मानता हू, लेकिन जहा जबरदस्ती से या गलतफहमी से किसी ने अपना धर्म छोड दिया हो, वहा उस मनुष्य को अपनी गलती सुधारने मे यानी अपने असली धर्म मे जाने मे बाधा नहीं होनी चाहिए। इसे धर्म-परिवर्तन नहीं कहा जा सकता। मुझे अपना धर्म झूठा लगे तो मुझे उसका त्याग करना चाहिए। दूसरे धर्म में जो कुछ अच्छा लगे, उसे मैं अपने धर्म में ले सकता हूं, लेना चाहिए। मेरा धर्म अपूर्ण लगे तो उसे पूर्ण बनाना मेरा फर्ज है। उसमे दोष दिखाई दे तो उन्हे दूर करना भी फर्ज है।

(प्रेमा बहन कटक को लिखे पत्र से, २२ अप्रैल, १९३२)

मिशनरी लौट जाओ

यदि वे (मिशनरी) केवल शिक्षा, गरीबो की डाक्टरी सेवा और ऐसे ही मानव दया के कामो तक सीमित रहने की बजाय, अपने इन कामो के उपयोग धर्म-परिवर्तन के लिए करेंगे तो मैं अवश्य ही यह चाहूंगा कि वे चले जायें। भारतवासी जिस महान धर्म मे आस्था रखते हैं, वे निश्चय ही उनके लिए पर्याप्त है। भारत को एक धर्म से दूसरे धर्म मे परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं है।

जो भारतवर्ष का धर्म-परिवर्तन करना चाहते हैं, उनसे यही कहा जा सकता है कि हकीम जी पहले अपना इलाज कीजिए न।

(यंग इण्डिया, २३ अप्रैल, १९३१)

दयानन्द के दीप की ज्योति जलाओ

सत्य-सुवासित पंथ गहो, जगदीश्वर से निज नेह लगाओ।
पाकर पावन सिद्धि-सुअवसर हाथ से न मन मीत गंवाओ।
है दिनमान सा उज्ज्वल 'भारत,राष्ट्र' का गान सुकण्ठ से गाओ।
मेटना है कलि कालिमा तो, दयानन्द के दीप की ज्योति जलाओ।

निज धर्म की वाटिका आर्य सपूतो, उठो श्रम से गुलजार करो,
दु:ख द्वन्द का अन्त करो, दयानन्द की ज्योति-शिखा का प्रसार करो।
नही क्लेश रहे अवशेष कही, शुचि सौरभ का अभिसार करो,
'छल' के छुआछूत की कालिमा को, पिछड़े जन का उद्धार करो।

देख पराई व्यथा विहसे, उमड़ी नहि नैनन अश्रु की धार है।
प्रेम की बाह मे जो भर के करता न दुखी मन का अभिसार है,
लाज को लूट रहा बहू बेटियो की, उन पर करे नित्य प्रहार है,
ऐसे कपूत का दो गला घोट, रहा जिसको जननी से न प्यार है।

कहलाता वहा सदाचारी सदा, करता न दुखी मन प्राण किसी के।
फल पाता रहा है सदा जग मे हर प्राणी यहा अपनी करनी के।
जन सेवा की भावना है जिनमे बस जाते वही मन मे सभी के,
दुखिया के दु:खो को विलोकते ही दु:खी हो सुत धन्य है वे जननी के।

—जमाल अहमद खां 'तनवीर' मवई बाराबकी (उ०प्र०)

आर्य वीर दल सम्मेलन द्वारा हिन्दी दिवस पर उद्बोधन

१४ सितम्बर को जन-जागरण अभियान प्रारम्भ

१४ सितम्बर १९४९ भारतीय इतिहास की एक गौरवपूर्ण तिथि है। इसी दिन स्वतन्त्र भारत की संविधान सभा ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा और देवनागरी को राष्ट्रलिपि घोषित किया था। किन्तु यह हिन्दी का कम और देश का अधिक दुर्भाग्य है कि अंग्रेजी दासता से मुक्त कराने का आश्वासन मूर्त्त रूप धारण न कर सका। स्वाधीनता प्राप्ति के ४१ वर्ष बाद भी हम अपनी एक सम्पर्क भाषा तक विकसित कर पाने में असमर्थ रहे है और आज भी उसी विदेशी भाषा के दास बने हुए है। एक स्वाधीन देश का इससे बडा अपमान और क्या हो सकता है।

लगभग १२ वर्ष पूर्व राजभाषा विभाग की भी स्थापना की गयी जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को प्रगति, स्वरूप निर्धारण सम्बन्धित आदेशों के पालन का दायित्व सौपा गया। यों तो हमारे सामने राजभाषा अधिनियम १९६३, उसके बाद १९६५ और १९६७ में हुए दो महत्वपूर्ण संशोधन थे। लेकिन अधिनियमों के साथ ही जो नियम बनने चाहिए थे वह अभी तक नही बने जिसे कारण वस्तु स्थिति अस्पष्ट बनी रही बहुत दिनों तक यही पता न चल सका कि राजभाषा हिन्दी का ज्ञान आवश्यक है या वैकल्पिक। उच्चतम न्यायालय के निर्णयानुसार हिन्दी का पठन-पाठन वैकल्पिक न होकर आवश्यक है। संविधान सभा द्वारा अनुमोदित संविधान के हिन्दी पाठ पर, जिस पर २४ जनवरी १९५० को सभी सदस्यों ने हस्ताक्षर किये, आज संदेह पैदा किया जा रहा है, कुछ लोग हिन्दी के साम्राज्यवाद का अथवा लोगों पर अनचाहे हिन्दी लादने का हौआ खड़ा कर रहे हैं। हम स्वयं हिन्दी को किसी पर लादे जाने के प्रबल विरोधी हैं किन्तु हम विरोध की आड़ में एक बहुत ही अल्पसंख्यक वर्ग की भाषा अंग्रेजी को भी सम्पूर्ण देश पर लादे जाने के पक्ष में नहो है।

हर देश की अपनी एक अलग भाषा होती है जो उसकी संस्कृति की भी वाहक होती है। कैसी विडम्बना है कि देश के अधिसंख्य लोग जिस हिन्दी को बोलते व समझते हैं आज वह वास्तविक राजभाषा होने की अधिकारिणी नहीं। क्या यह कुचक्र उतना ही गम्भीर नहीं है जितना मैकाले द्वारा अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनवाकर हमको अपनी ही संस्कृति से काटने के लिए रचा गया था। दुःख की बात यह है कि कुचक्र में स्वयं हिन्दी समर्थक भी निजी स्वार्थों से सम्मिलित होते जा रहे हैं, हिन्दी के समारोहो में अंग्रेजी बोलते हैं जब कि विदेशी अतिथि हिन्दी का उपयोग करते है। अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूलो मे प्रवेश दिलाकर गौरवान्वित होते हैं, पारिवारिक समारोहो के निमन्त्रण-पत्र आदि हिन्दी में छपवाने में हीनता का अनुभव करते हैं, यत्र तत्र अपने हस्ताक्षर तक अंग्रेजी में करते हैं। हिन्दी दिवस पर हमें इन सब बातों पर गम्भीरता से विचार करना होगा हिन्दी लिखते समय हिन्दी लिखने का प्रयास करें, न तो संस्कृत और न देवनागरी लिपि मे अंग्रेजी ही। यह ठीक नहीं कि हमसंस्कृत के दुरूह पदो की लड़ी पिरो दें या अंग्रेजी मूल का अटपटा अनुवाद मात्र करें। इसलिए हिन्दी का वाक्य विन्यास उसको प्रकृति के अनुसार ही होना चाहिए।

प्राचीनकाल से ही हिन्दी को सन्तों का आशीर्वाद, जन नायकों का बल और जनता का समर्थन प्राप्त होता रहा है। महात्मागांधी और महर्षि दयानन्द ने जो गुजरात क्षेत्र के थे, उसकी राष्ट्रीयता का अनुभव किया और प्रचार-प्रसार में पूरी शक्ति लगाई थी।

हमारा विश्वास है कि निकट भविष्य मे हिन्दी स्वयं को विशेष सक्षम बनाकर न केवल ७० करोड़ मनुष्यो की गौरवशालिनी सम्पन्न राष्ट्रभाषा होगी वरन विश्व की भाषाओ मे भी सर्वोच्च स्थान प्राप्त करेगी।

इसलिये आईये। राष्ट्रभाषा हिन्दी की उन्नति हेतु हिन्दी की उन्नति हेतु हिन्दी दिवस के शुभावसर पर प्रतिज्ञा करें कि—

१—हम अपना प्रतिदिन का कार्य मातृभाषा अथवा राष्ट्रभाषा हिन्दी मे ही करेंगे।

२—हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त गौरवशालिनी भाषा बनायेंगे।

३—राष्ट्रभाषा हिन्दी और देवनागरी लिपिका सन्देश घर-घर पहुचाकर राष्ट्रीय एकता की भावना को बलवती करेंगे।

४—राष्ट्रभाषा हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओ के विकास को एक दूसरे का पूरक मानकर दोनो का विकास करेंगे।

५—एक हृदय हो भारतजननी के मूलमन्त्र को राष्ट्रभाषा के प्रचार द्वारा सफल बनायेंगे। जय हिन्दी ' जय नागरी

—श्री सत्यदेव आजाद

कर्नाटक राज्य में पशुओं का आधुनिक कत्लखाना खोलने की घोर निन्दा

अजमेर दिनांक २८ सितम्बर स्थानीय तथा गच्छ संघ के उपाध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार मोहनराज भण्डारी ने अपने एक वक्तव्य मे निम्न उद्गार प्रगट करते हुए कहा कि यद्यपि भारत के संविधान के अनुसार पशुधन देश का बहुत ही महत्वपूर्ण धन है, फिर भी पता नही केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारें संविधान की खुली आम उपेक्षा ही नही कर धज्जिया उड़ा रही हैं। आये दिन नये-नये कत्लखाने स्थापित करने की ओर कदम बढ़ाकर अहिंसा प्रधान भारत को सरकार कहां ले जाना चाहती है?

श्रीमान् वरिष्ठ पत्रकार भण्डारी दैनिक नवज्योति के समाचार सम्पादक है आपने अपने वक्तव्य मे आगे कहा कि कर्नाटक सरकार के अन्तर्गत चल रहे बैंगलौर एनीमल फूड कार्पोरेशन लिमिटेड द्वारा एक आधुनिक विशाल पैमाने पर कत्लखाना ६८ एकड़ जमीन पर छ. करोड़ की लागत से बनाने की भव्य योजना है। बताया जाता है कि इस आधुनिक कत्लखाने मे भारत की प्राणाधार गौमाता, बैल, बछडे, भेड़-बकरिया, सूअर आदि बारह लाख मूक पशुओं को प्रतिवर्ष काटा जायेगा।

श्री भण्डारी ने उक्त योजना की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि पहले हमने पेड़ों की कटाई कर वर्षा को खोया, वैदिक यज्ञों की उपेक्षाकर बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, डीजल आदि की जहरीली धुआं उडाकर वायु में प्रदुषण को बढ़ाया, अब हम जाने-अनजाने क्षणिक आर्थिक लाभ के लिये महत्वपूर्ण पशुधन से हाथ धोने जा रहे हैं। अत: राष्ट्र हितैषियों का परम कर्तव्य एवं प्रथम धर्म है कि सरकार की ऐसी आत्मघाती विनाशकारी योजना का संगठित रूप से कड़ा विरोध किया जाये। भारत की सभी धार्मिक संस्थायें विशेषतया आर्यसमाज, विश्व हिन्दू परिषद व जीव दया मण्डल आदि सभी अहिंसावादी संस्थाओं का अपने-अपने क्षेत्र से कर्नाटक सरकार एवं केन्द्रीय सरकार को उपरोक्त कत्लखाना निर्माण योजना का सख्त विरोध करना चाहिए तथा आवश्यकता पड़ने पर सत्याग्रह भी करना चाहिये।

अन्त में श्री भण्डारी ने कहा कि कर्नाटक सरकार को संविधान और जन-भावनाओ का आदर करते हुए कत्लखाना स्थापित करने की उपरोक्त योजनाओं को तुरन्त रद्द कर देना चाहिये।

—कश्यप वैदिक सत्संग आश्रम आनासागर कृष्णगंज, अजमेर

आर्य जगत् के समाचार

संस्कार सम्पन्न

प० श्री निम्बाद्री जी उपाध्याय के पुरोहितत्व में श्रीमती भारती विश्व-वर आर्य के सुपुत्र का 'अर्जुन' नामकरण संस्कार वैदिक पद्धति से सम्पन्न हुआ आय बन्धु मित्रो ने बालक को आशीर्वाद दिया।

चिलुका मल्लय्या आर्य, निजामाबाद

—दिनाक २५ ९-८८ दिन रविवार भाद्रपद पूर्णिमा को प्रात ९ बजे रजौली आर्य समाज के उपप्रधान श्री धर्मदेव प्रकाश आर्य के प्रथम दौहित्री (नाती) का नामकरण एवं चूडाकरण संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमे उपस्थित नर नारियो ने इस रीति की काफी प्रशंसा की।

नपत्री (नाती) का शुभ नाम "अभिसेक" रखा गया। इस संस्कार का सम्पादन आर्यसमाज रजौली के पुरोहित पण्डित कृष्ण दयाल जी ने किया। इन्होंने इस संस्कार के उद्देश्यो को बहुत ही सुन्दर ढंग से समझाया। जिसे सुनकर उपस्थित जनता बडी प्रभावितहुई।

—रामप्यारे प्रसाद, मन्त्री, नवादा (बिहार)

—मुरारी आर्यसमाज (नालन्दा) के कोषाध्यक्ष श्री विनोदकुमार आय के द्वितीय सुपुत्र का जातकर्म संस्कार डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी के आचार्यत्व मे दिनाक २८ ७-८८ दिन रविवार को सम्पन्न हुआ।

—शिवबालक सिंह आर्य मन्त्री

—आर्य समाज समरूर (पंजाब) के मन्त्री एव पुस्तकाध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद, आय के सुपुत्र का नामकरण संस्कार, बालक के प्रथम जन्मदिन आषाढ कृष्ण चतुर्थी, वि स २०४५ रविवार दिनाक ३ ७ १९८८ को आर्य समाज के प्रागण में महात्मा प्रेमप्रकाश वानप्रस्थी पुरी के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। बालक का नाम 'मनीष आर्य' घोषित हुआ।

—सत्येन्द्र गुप्ता, प्रचार मन्त्री

आर्यसमाज कलकत्ता का इतिहास (बंग संस्करण) का विमोचन

रविवार दिनाक २७ अगस्त १९८८ को आर्य समाज कलकत्ता के शत-वार्षिकी इतिहास के बंग संस्करण का विमोचन प्रख्यात संसद सदस्य तथा सुप्रसिद्ध आनन्द बाजार पत्रिका के सम्पादक माननीय चपला कान्त भट्टाचार्य की अध्यक्षता मे उनके द्वारा ही सम्पन्न हुआ। इतिहास के मूल लेखक प० उमाकान्त उपाध्याय एव बंग संस्करण के अनुवादक प० प्रियदर्शन सिद्धान्त भूषण हैं।

योग साधना शिविर

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ तल्ला नैनीताल का शिविर २३ ९ ८८ से २९ ९ ८८ तक अत्यन्त उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। शिविर महात्मा भजनानन्द की अध्यक्षता मे चला। भोजन तथा निवास की व्यवस्था रामेश्वर (यज्ञ मुनि) वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर वालो की थी शिविर मे बहुत से सन्यासी वानप्रस्थी ब्रह्मचारी पधारे साथ ही उन्होंने आश्रम के निर्माण के लिए दान भी दिया।

—सीतानन्द, वेदप्रचारक मन्डल दिल्ली ४

चम्पारण में संस्कार प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

चम्पारण जिला आर्य सभा के तत्वावधान में आर्य समाज जगदीशपुर (प० चम्पारण) मे संस्कार प्रशिक्षण शिविर का आयोजन १९ से २७ अगस्त तक किया गया था। जिसमे जिला के विभिन्न स्थानो से २० प्रशिक्षणार्थी सम्मिलित हुए थे। प्रशिक्षणार्थियो के भोजन जलपान का सम्पूर्ण प्रबन्ध आर्य समाज जगदीशपुर द्वारा हुआ था। श्रावणी पूर्णिमा २७ अगस्त को शिविर का समापन हुआ एव स्वामी मंगलानन्द सरस्वती के करकमलो द्वारा प्रशिक्षणार्थियो को संस्कार शास्त्री का प्रमाण पत्र वितरित किया गया।

—बी० के० शास्त्री, मन्त्री

वेद मन्दिर मथुरा मे आयोजित प्रौढ़ वैदिक मिशनरी एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री आचार्य प्रेमभिक्षु जी के आचार्यत्व एवं श्री श्याम सुन्दर जी आर्य की अध्यक्षता मे वेदमन्दिर वृन्दावन मार्ग मथुरा में सफलतापूर्वक यह शिविर सम्पन्न हो गया। इस आयोजन में योग साधना जपविधि का अनुष्ठान एव सिद्धान्त प्रशिक्षण आचार्य जी द्वारा योगासन श्री श्याम सुन्दर जी आर्य एव श्री हरिभाऊ जी आर्य द्वारा सम्पन्न हुआ। श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी 'वेदभिक्षु' के प्रेरक वेदोपदेश तथा श्री कृष्णकान्त जी के सामयिक सन्देश के अतिरिक्त वैदिक मूर्धन्य श्री स्वामी ओमानन्द जी, श्री आचार्य आर्य नरेश श्री कु० जोरावरसिंह जी आर्य तथा मान्या प्रभावती जी स्नातिका ने अपना प्रेरक मार्ग दर्शन दिया।

वेद मन्दिर मथुरा

उत्सव समाचार

महिला आर्य समाज का ३६ वां वार्षिकोत्सव १३ १४ व १५ अक्तूबर ८८ बृहस्पतिवार शुक्र व शनिवार को आर्य समाज स्टेशन रोड, मुरादाबाद के प्रागण मे मनाया जा रहा है, इसमें श्री डा० आर्य भिक्षु जी, डा० वाचस्पति उपाध्याय, श्रीमती प्रभावती गुप्त संसद सदस्य, सुश्री कुसुमलता तथा योगेशदत्त आर्य गीतकार पधार रहे हैं। —मन्त्री

—रविवार ३० अक्टूबर १९८८ को सैन्ट्रल पार्क निर्माण विहार मे प्रात ८ बजे से दोपहर १ बजे तक बडे समारोह पूर्वक मनाया जायगा जिसमे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व अन्य आर्य नेता विद्वान सन्यासी पधारेगे। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान पंडित यशपाल सुधांशु जी द्वारा सामवेद महायज्ञ एव प्रभावशाली वेद प्रवचन २४ से २९ अक्टूबर तक प्रात ७ ३० से ९ ३० बजे तक सामवेद महायज्ञ होगा जिसके ब्रह्मा प० यशपाल सुधांशु होंगे। यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार ३० अक्टूबर को प्रात १० बजे होगी।

क्या आर्य भारत में बाहर से आये थे ?

लेखक—परीक्षित प्रेमी, साहित्यालंकार, अमरपुर गोड्डा

शताधिक वर्षों से पौर्वात्य तथा पाश्चात्य विद्वानो मे "आर्य समस्या" पर विवाद होता चला आ रहा है और वे इसका निर्णय करने मे लगे रहे हैं, कि भारत में आर्य कब कहा से और कैसे आए तथा भारत के किस भू-भाग में सबसे पहले उनका प्रवेश हुआ। कुछ विद्वानो ने "आर्य" शब्द का अर्थ 'विदेशी", 'अजनबी" तथा घुमक्कड कबिलो के रूप मे किया है। इस प्रकार आर्य शब्द का अर्थ तथा आर्यों के मूल आवास-स्थान का प्रश्न आज तक विवाद का विषय बना हुआ है।

"आर्य" शब्द अपने आप मे असीम, अनुपम और अद्भुत अर्थ सजोए हुए है। इसका उच्चारण करते ही, "आर्यव्रता विसृजन्तो अधिक्षमि।" (ऋग्वेद १०-६५-११) की एक विराट् झलक सामने आ जाती है। अर्थात् "आर्य" वे हैं, जो भूमि पर सत्य अहिंसा, पवित्रता, परोपकारादि व्रतो को विशेष रूप से धारण करते हैं। "आर्य" शब्द 'ऋ' धातु से निष्पन्न होता है जिसका अर्थ 'गति प्रापणयो' है, अर्थात् गति ज्ञान, गमन प्राप्ति करने और प्राप्त करने वाले को "आर्य" कहते हैं। इस तात्पर्य के अनुसार आर्य वे हैं जो ज्ञान सम्पन्न हैं, जो सन्मार्ग की ओर सदा गति करने वाले पुरुषार्थी है और जो ईश्वर तथा परमानन्द को प्राप्त करते और एतदर्थ प्रयत्नशील होते हैं। इसी भाव को लेकर सस्कृत शब्द कल्पद्रुमव वाच-स्पत्यबृहदभिधानादि कोष ग्रन्थो मे "आर्य" शब्द के निम्नलिखित अर्थ पाये जाते हैं—

"आर्य पूज्य, श्रेष्ठ, धार्मिक, धर्मशील, मान्य, उदारचरित, शातचित, न्यायपथावलम्बी, सतत कर्त्तव्यकर्मानुष्ठाता, यथा कर्त्तव्यमाचरन्कार्यम्, अकर्त्तव्यमनाचरन तिष्ठति प्रकृति प्रकृताचारे, सतु आर्य इति स्मृत.॥

महाभारत मे आर्य के विषय मे निम्नलिखित श्लोक पाए जाते हैं जो इस प्रकरण मे विशेष उल्लेखनीय है.—

"न वैरमुद्दीपयति प्रशान्त न दर्पमारोहति नास्तमेति।
न दुर्गतोऽस्मीति करोत्यकार्यं, तमार्यशील परमाहुरार्या ॥
न स्वे सुखे वै कुरुते प्रहर्षं, नान्यस्य दु.खे भवति प्रहृष्ट.।
दत्वा न पश्चात् कुरुतेऽनुताप, सकथ्यते सत्पुरुषार्यशील ॥

महर्षि वेदव्यास ने कहा है.—

ज्ञानी तुष्टश्च दान्तश्च सत्यवादीजितेन्द्रिय।
दाता दयालुर्नम्रश्च स्यादार्यो ह्यष्टभिर्गुणै ॥

पुन महर्षि यास्काचार्य ने निरुक्त ६-२६ मे आर्य शब्द का अर्थ किया है—"आर्य ईश्वरपुत्र" स्वामी अर्थ मे व्युत्पन्न 'आर्य शब्द' ईश्वर का भी वाचक है। वैदिक ग्रन्थ निघण्टु २ २२ मे आर्य स्वामिवाचकयों पुन। ऋग्वेद ९ ६३ मे कहा है —

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥"

निष्कर्षत यह कहा जा सकता है कि 'आर्य' शब्द विदेशी नही है और न अजनबी ही है। आर्य शब्द मे 'ऋ' धातु है जो श्रेष्ठार्थक तथा गत्यार्थक दोनो हैं। आर्य यायावर या घुमक्कड कबीला नहीं है। वेद तथा वैदिक साहित्य के अनुसार ये शब्द गुणवाचक हैं जातिवाचक नहीं। वेद तथा वैदिक ग्रन्थो के इस मर्म को न समझने के कारण आधुनिक, पौर्वात्य तथा पाश्चात्य विद्वानो ने आर्यों को एक विशेष घुमक्कड जाति तथा विदेशी होने की जो अन्तिम प्रामाणिकता की मुहर लगायी, वह पूर्वाग्रह ग्रसित कहा जा सकता है। आर्य शब्द वेदो मे अनेकबार आया है कि न वेदो या वैदिक ग्रन्थ मे यह कही भी नहीं कहा गया है कि आर्यगण विदेशी तथा यायावर जाति हैं। आधुनिक पुरातात्विक स्रोतो से प्राप्य सामग्री से यह स्पष्ट नहीं होता है कि 'आर्य' अन्य देशो से आकर भारत में आवासित हुए। इस सम्बन्ध में मेगास्थनीज (३०४ ईसा-पूर्व) ने लिखा है .— (क्रमश.)

नेपाल में आर्य समाज के बढ़ते कदम

भू० पू० अंचलाधीश (कमिश्नर) अध्यक्ष बने

काठमाण्डो। नेपाल देश मे आर्य समाज का व्यापक और सगठनात्मक प्रचार प्रसार को तीव्रता के साथ बढ़ाने के उद्देश्य से नयी कार्यकारिणी का गठन किया गया। दिनांक १६-८-८८ को काठमाण्डो मे चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमे अध्यक्ष श्री टेक बहादुर राणाजी भू० पू० अंचलाधीश को सर्वसम्मति से चुना गया। उपाध्यक्ष प्रसिद्ध उद्योगपति शकरलाल केडीया तथा श्री तिलक बहादुर कार्की श्री ओमप्रकाश मोर एव वरिष्ठ पत्रकार श्री गोकुलप्रसाद पोखरेल आदि को उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया। महासचिव (सुपरीटेन्डेन्ट आफ पुलिस) एस० पी० श्री प्रचण्ड प्रकाशराय माझी चुने गये। सहसचिव श्री राजबाबु पांडे चुने गये कोषाध्यक्ष श्री बी० एस० शर्मा चुने गये प्रचार सचिव पर शिक्षा मन्त्रालय के शिवभक्त शर्मा चुने गये, सदस्य ईश्वरी थापामाई श्री मणिहर्ष ज्योति, श्री जीवन पिया, श्री केशव प्रसाद थापकोटा श्री हिरण्य प्रसाद शर्मा श्रीहरि अधिकारी, श्री पूर्ण भण्डारी आदि मनोनीत हुए।

योगधाम आर्य नगर, ज्वालापुर (हरिद्वार) द्वारा ध्यान योग शिविर

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी योगधाम में स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता और महामहिम श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी योगी सस्थापक योगधाम के सानिध्य में रविवार कार्तिक कृष्णा स० २०४५ वि० तदनुसार ३० अक्टूबर १९८८ ई० से रविवार कार्तिक कृष्ण पक्ष तदनुसार ६ नवम्बर तक ध्यान योग तथा प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमे आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान आदि अष्टांगयोग का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा यमनियमादि का ज्ञान भी कराया जायेगा।

ब्रह्मानन्द, सोमानन्द
रणजित मुनि, वेदमुनि

आर्य समाज की गतिविधियां

शंकराचार्य देश को दिग्भ्रमित कर रहे हैं

२० सितम्बर, वाराणसी। पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजन देव तीर्थ सती प्रथा को शास्त्र सम्मत और धर्मानुकूल बताकर न केवल वैदिक धर्म और भारतीय संस्कृति की तौहीन कर रहे हैं बल्कि भारतीय समाज को घसीट कर अन्धकारपूर्ण मध्ययुग में ले जाने का कुचक्र कर रहे हैं। धर्म और शास्त्रों को तोड़ मरोड़कर गलत व्याख्या करना स्वामी जी की पुरानी आदत है।

आर्य समाज आनन्दबाग परिसर में वैदिक विद्वानों की बैठक में उपर्युक्त विचार व्यक्त किए गए। विद्वत्जनों ने कहा कि राम, कृष्ण, गौतम, चाणक्य आदि युगपुरुषों ने कभी भी समाज और धर्म व्यवस्था को जर्जर करने वाली प्रवृत्तियों और प्रथाओं को मान्यता नहीं दी। इन कुप्रथाओं की वकालत के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम राम और योगिराज कृष्ण को कटघरे में खड़ा करना स्वामी जी की बुद्धि के दिवालियेपन का द्योतक है। प्रत्येक धार्मिक व्यक्ति और विशेषकर महिलाओं को ऐसे अन्धविश्वासी और ढोंगपन्थी सन्यासी का सामाजिक बहिष्कार करना चाहिए। वे देश को दिग्भ्रमित कर रहे हैं।

बैठक श्री सत्यप्रियव्रत वानप्रस्थी की अध्यक्षता में हुई जिसमें सर्वश्री हरिहर पाण्डेय विश्वमित्र शास्त्री, डा० शम्भुनाथ शास्त्री आदि वक्ताओं ने सतीप्रथा को धर्मविरोधी, समाज विरोधी और संविधान विरोधी कृत्य बतलाया और इसे रोकने के लिए सतीप्रथा विरोधी विधेयक को अनिवार्य और उचित बताया।　　—मन्त्री

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर गोहाटी

आर्य समाज मन्दिर गौहाटी द्वारा आयोजित आर्य वीर तथा आर्य वीरांगनाओं के शिविर का उद्घाटन श्री प्रेमचन्द जी जोशी की अध्यक्षता में हुआ आपने इसकी आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला इसमें सारे आसाम प्रान्त से आर्य वीर तथा आर्य वीरांगनायें आई हुई थी मुख्य शिक्षक श्री सत्यसिंह जी चौहान थे जो कि सार्वदेशिक आर्यवीर दल के अध्यक्ष श्री की अँगरक्षक के नाते थे। चौबीसों घंटे आर्य वीर तथा वीरांगनाएं शिविर में ही रहती थीं। खान-पीने तथा आवास की व्यवस्था निःशुल्क थी। आर्य वीरों तथा वीरांगनाओं को प्रमाण पत्र दिये गए तथा कुछ विशिष्ट पारितोषिक भी दिये गये।

इसमें डी. ए. वी. स्कूल के मन्त्री श्री [illegible] शर्मा तथा अध्यापिकाओं ने पूर्ण सहयोग दिया।　　डा० नारायण दास प्रधान

धर्म योग शिविर सम्पन्न

नेपाल आर्य समाज तथा धार्मिक पुस्तकालय के संयुक्त आयोजन लगभग ४० दिन तक काठमान्डौ में उक्त शिविर का समापन समारोह पर भू.पू. प्रधान मन्त्री लोकेन्द्र बहादुर चन्द ने ७० प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। समारोह की अध्यक्षता माननीय गृहमन्त्री श्री निरंजन थापा ने की। उन्होंने प्रकट किया कि योग से शरीर की शुद्धि के साथ चित्त को एकाग्र किया जाता है। शिविर में प्रशिक्षण ब्रह्मचारी धर्मपाल योगाचार्य ने दिया इस अवसर पर भू.पू. शिक्षा मन्त्री एवं वरिष्ठ राजनैतिक एवं पत्रकारों ने भाग लिया।

आर्यसमाज वैदिक विचार मंच की तरफ से योग प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज वैदिक विचार मंच ने सोनपुर उड़ीसा में १ से ७ सितम्बर तक एक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। आर्य समाज के केवल १२ युवा वर्गों [illegible] उत्सव बड़ धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ५३ व्यक्तियों ने भाग लिया था। योगाचार्य डा० स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती और ब्रह्मचारी मानभजन ने योग सिखाए थे।

—आर्यकुमार रामकृष्ण मेहेर, प्रधान आ. स. सोनपुर

मुस्लिम देशों में दाह संस्कार की अनुमति न देने पर रोष

कुवैत तथा पश्चिमी एशिया के अनेक मुस्लिम देशों में हिन्दुओं को अपने मृतकों पर दाह संस्कार की अनुमति न देने पर यहां आर्य-समाज मन्दिर करोलबाग में हुई सभा में गहरा रोष व्यक्त किया गया। इस सभा की अध्यक्षता दिल्ली के प्रसिद्ध समाजसेवी श्री रामनाथ सहगल ने की।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य समाज लीग के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि भारतवर्ष के मुस्लिम भाइयों को चाहिए कि वे इन देशों की सरकारों पर नैतिक दबाव डालें कि इस्लाम के नाम पर भारतवासी हिन्दुओं की भावनाओं से न खेलें। उन्होंने आशा व्यक्त की कि धर्म निरपेक्षता की वकालत करने वाले शाहबुद्दीन जैसे लोग इस दिशा में पहल करेंगे। उन्होंने भारत सरकार से भी इस मामले में तुरन्त कदम उठाने को कहा।

पूर्व सांसद और इतिहासज्ञ बलराज मधोक ने इन अरब देशोंकी सरकारों के इस व्यवहार को अत्यन्त खेदजनक बताया और कहा कि भारत सरकार का इस घटना पर अपनी नाराजगी जाहिर करनी चाहिए। उन्होंने चेतावनी दी कि भारत के हिन्दुओं की भावनाओं के साथ खिलवाड़ न की जाए। यदि हमारी सरकार सख्त रवैया अपनाए तो उन देशों की इस प्रकार की मानव के मौलिक अधिकार हनन करने वाली नीतियों को बन्द किया जा सकता है। उन्होंने इस सिलसिले में हिन्दुओं को अपने राजनैतिक अधिकारों के प्रति सचेत होने की बात भी कहीं।

इस सभा में दिल्ली के आर्य समाजी तथा विभिन्न सनातन धर्म सभाओं और अन्य धार्मिक संगठनों के हजारों लोग उपस्थित थे।

सांसद श्री रामचन्द्र विकल तथा पत्रकार [illegible] ने भी पश्चिमी एशिया के इन मुस्लिम देशों की सरकारों के इस कदम पर खेद व्यक्त करते हुए इस कदम को तुरन्त वापस लिए जाने की मांग की।

आर्य वीर (स्वयं सेवक) दल की स्थापना

धर्मयोग शिविर के समापन के अवसर पर नेपाल आर्य समाज के अध्यक्ष टेक बहादुर रानमाझी के संरक्षण में काठमाण्डौ में एक आर्य वीर वीरदल (स्वयं सेवक) दल की स्थापना की।

सर्वश्री प्रकाशचन्द्र दुबेदी अध्यक्ष अच्युत राज गौतम उपाध्यक्ष, विनोद आचार्य महासचिव, सरोज मान श्रेष्ठ कोषाध्यक्ष, अजय थापा प्रचार सचिव।

अखिल भारतीय संस्कृत रक्षा समिति की आवश्यक बैठक ३० अक्टूबर ८८ को होगी

अखिल भारतीय संस्कृत रक्षा समिति के सभी सदस्यों तथा अन्य संस्कृत प्रेमी विद्वानों को सूचित किया जाता है कि देववाणी संस्कृत को सैन्ट्रल बोर्ड आफ सैकण्डरी एजूकेशन, दिल्ली के चेयरमैन फादर कुन्नूकल ने त्रिभाषा सूत्र से निकाल देने का आदेश दिया है। यह आदेश सारे देश पर लागू होगा।

अतः उपरोक्त आदेश को निरस्त कराने तथा संस्कृत की रक्षार्थ भावी कार्यक्रम का निर्धारण करने हेतु आगामी ३० अक्टूबर (रविवार) १९८८ को सायंकाल ३ बजे से आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल, दिल्ली मे एक आवश्यक बैठक होगी। समिति के सदस्य तथा संस्कृत प्रेमी विद्वान इस बैठक में अवश्य पधारने की कृपा करे।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती	विमलदेव भारद्वाज	रामरतन शास्त्री
प्रधान	संयोजक	संयोजक

उत्सव

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज रोहतास नगर का वार्षिकोत्सव दिनांक ३१-१० ८८ से ६-११ ८८ तक बडी धूमधाम से मनाया जायगा। जिसमे आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान प० यशपाल जी सुधांशु एम ए वेद कथा रखेगे तथा आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री प० आशानन्द जी तथा श्री विद्यासागर जी रहेजा व श्रीमती सुषमा सिक्का जी के मधुर भजन होंगे। —सुशील कुमार आर्य, मन्त्री

—दिनांक २७ ६-८८ को आर्य समाज मदुराई मे यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमे हरिजनो को यज्ञोपवीत प्रदान किये गये श्रावणी के विषय मे लोगो को उसका महत्व बताया गया। श्री एम भारती को यजमान बनाया गया। इस अवसर पर श्री भारती जी, श्री सी के नरसिंहा चारी अध्यक्ष आर एस एस नगर शाखा मदुरै श्री मासलामणी, एम एस राममूर्ति ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

मानसिकता बदलनी है

(पृष्ठ २ का शेष)

दिया है उसका पालन कराना उसे अधिकार दिलाना भी प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है।

दिल्ली का शिव मन्दिर आन्दोलन भी एक उदाहरण है। आर्य समाज के उन्नेता शास्त्रार्थ महारथी उस आन्दोलन के सूत्रधार थे। काश ! आज के कलम के धनी और मुह के बाचक उस समय होते तो सम्भवतः उन नेताओ का मध ही बन्द कर देते।

एक तरफ यह कहा जाता है कि समाज ने कुछ किया नही दूसरी ओर कहा जाता है अग्निवेश ने जहा अन्धविश्वास पर डटे उन मूर्धन्य शिरोमणियो को झकझोरा वहा साधारण जन मानस को श्रद्धा मे बाधने का भी मार्ग दर्शन किया।

धार्मिक दृष्टि का जो अमर सन्देश वेद दर्शन देते हो उसमे किसी को छोटा-बडा, छूत-अछूत मानने का अवकाश कहा ?

आधुनिक युग मे दयानन्द और महात्मा गाधी के देश मे अस्पृश्यता को शास्त्र दृष्टि बताने वाले तत्व मूर्खो की दुनिया मे ही रहते है।

हरिजनो का देवदर्शन धार्मिक दृष्टि से तथा कानून की परिधि से जुडा है। आज हरिजनो को वह शिक्षा दी जाय जिसमे वह अस्पृश्य रह ही न जाये। क्योंकि अछूतोद्धार या अस्पृश्यता निवारण का प्रश्न हरिजनो, स्वच्छता पवित्रता व बौद्धिक विकास से सम्बन्धित है मूलभूत सिद्धांत या रोग का निवारण कोई नही कर रहा है।

छुआछूत मनुष्य से न होकर उसकी गन्दगी से है उससे ही परहेज है उसे दूर कर दिया जाय। तो नफरत की दीवार हट सकती है। फिर ईट पत्थर के मन्दिर से दूर न रखकर मन के मन्दिर मे बसाया जा सकता है।

अतः अग्निवेश जी का आन्दोलन व्यक्तिगत न होकर विशुद्ध समाज सुधार का ही अंग है।

वनवासी आर्य महासम्मेलन की जोरदार तैयारियां

आर्य समाज वनवासियों की प्रगति तथा विकास के लिए कार्यक्रमों का निर्धारण करेगा

दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय से जारी एक प्रेस विज्ञप्ति मे बताया गया कि आर्य समाज वनवासी क्षेत्रो में, वनवासी बन्धुओ के सामाजिक जीवन स्तर, उनकी गरीबी, तथा लोभ, लालच मे विधर्मियो द्वारा किए जा रहे उनके धर्मान्तरण का गम्भीरता से अध्ययन कर रहा है। इसी उद्देश्य से आगामी २६, २७ और २८ नवम्बर ८८ को जि० सरगुजा (म० प्र०) मे विशाल स्तर पर वनवासी आर्य महासम्मेलन किया जा रहा है, जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती करेंगे। इस सम्मेलन मे देश भर के आर्य नेता तथा विद्वान पधार रहे है। वनवासी क्षेत्रो मे यह अपने ढग का पहला सम्मेलन होगा जिसमे कई हजार वनवासी भाग लेगे।

—पृथ्वीराज शास्त्री
उप मन्त्री-सभा

चुनाव समाचार

आर्य समाज ग्राम टीला शहबाजपुर गाजियाबाद सूरजमल आर्य प्रधान, हरकेशसिंह आर्य मन्त्री, रामचन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज नागौर (राज्य) भगवती प्रसाद जी प्रधान, महेन्द्र कुमार मन्त्री, आशाराम सोनी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज काकडवाडी विट्ठल भाई पटेल मार्ग बम्बई दयाशंकर शर्मा प्रधान, करसनदास राणा मन्त्री, राजेन्द्रनाथ पांडे कोषाध्यक्ष चुने गए।

महिला आर्य समाज चौक बाजार बुलन्दशहर (उ० प्र०) डा० सत्यवती आर्या प्रधान, सावित्रीदेवी मन्त्री, अंगूरीदेवी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज ऋषि कुंज पक्काबाग जालन्धर पजाब चौ० ऋषिपालसिंह एडवोकेट प्रधान, लालचन्द मेहरा एडवोकेट मन्त्री, राजपाल मित्तल एडवोकेट कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज बगलौर प्रकाशानन्द आर्य प्रधान, एल०आर० वई मन्त्री, सुगनचन्द गर्ग कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज रामपुरा कोटा (राज०) कृष्ण जी साधक प्रधान, भगवती प्रसाद श्याम मन्त्री, कल्याणमल मित्तल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य प्रतिनिधि सभा जिला मेरठ माधवसिंह जी प्रधान प० इन्द्रराज मन्त्री, ओमप्रकाश जौहरी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज टकारा अमृतलाल मेघजी प्रधान, एस० मुखराय मन्त्री भगवान जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज रजौली डा० बुद्धदेव आर्य प्रधान, डा० रामप्यारे प्रसाद मन्त्री, देवजी भीमाजी कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज हल्द्वानी नैनीताल डा अमृतलाल विनायक प्रधान, प्रेमलाल जी खण्डेलवाल मन्त्री, पृथ्वीराज कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज राजौरी गार्डन दिल्ली ठकराम सेठी प्रधान, नन्दकिशोर भाटिया मन्त्री, श्रीमती सत्यामगल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर ब्र० देवेन्द्र स्वरूप जी प्रधान, डा० विजयपाल शास्त्री मन्त्री, भरत किशोर भारतीया कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज कोलवनी बलदेव राम प्रधान पद्मानन्द राम मन्त्री, जागीरथ राम कोषाध्यक्ष चुने गए।

लता-खुशहाल विवाह

अल्मोड़ा। आर्य समाज मन्दिर ताडीखेत मे कु० लता (पुत्री हरिश्चन्द्रजी पांडे नैनीताल) का ब्राह्मविवाह ब० खुशहाल (पुत्र हीरासिंह जी रावत नैनीताल) के साथ २९ जुलाई १९८८ को प० प्रेमदेव शर्मा के पौरोहित्य अनुप रावत जी की अध्यक्षता मे हुआ। डा० पूरन पांडे ने वर-वधू को वैदिक उपदेश व साहित्य दिया।

गुण-कर्म स्वभाव के आधार पर वर को स्वामी गुरुकुलानन्द फलाहारी ने पांडे की उपाधि से अलंकृत किया। यह हर्ष की बात है कि अब दहेज रहित विवाह गुण-कर्म स्वभाव के आधार पर होने लगे हैं। विवाह किसी भी रविवार को सम्पन्न हो सकता है।

गुरुकुलानन्द सरस्वती, (फलाहारी)

शुद्धि समाचार

दिनाक ५-९-८८ को आर्य समाज २२ सैक्टर चण्डीगढ के प्रागण मे श्री डाक्टर इन्द्रराज शर्मा प्रधान आर्य समाज की अध्यक्षता मे ५ सज्जनो ईसाई परिवारको शुद्ध करके आर्य हिन्दू परिवार मे सम्मिलित किया गया।

शुद्धि समाचार

सार्वजनिक आर्य समाज के अधिकारी एव सदस्यों के उपस्थिति में एक ईसाई अविवाहित नारीको वैदिक धर्मकी दीक्षा देकर शुद्धि संस्कार द्वारा गत ता० १५ सितम्बर, १९८८ को ग्रहण कराया गया। उसका नाम सुजना केप्पा सठिक रखा गया। वैदिक साहित्य तथा वैदिक धर्म का उपदेश श्री ठाकुर प्रसाद गुप्त, उपप्रधान, आर्य समाज ने दिया। —मन्त्री

प्रचार एवं संस्कार

दिनाक ११-८-८८ दिन गुरुवार को आर्य समाज पोठिया के व्यवस्थापक श्री कालीचरण आर्य के कनिष्ठ नवजात सुपुत्र का 'जातकर्म संस्कार' श्री प० ब्रह्मचारी व्यास नन्दन शास्त्री वैदिक' विद्यारत्न, एम० ए० के पौरोहित्य मे वैदिक रीत्यानुसार बड़े ही धूमधाम से सुसम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर आर्य समाज के सदस्यो पदाधिकारियो एव श्रद्धालु माता-बहनो ने उस पुत्र को आशीर्वाद दिया।

२—दिनाक २१-८-८८ से २२-८-८८ एव २३-८-८८ को श्री महादेव आर्य, [illegible] आर्य समाज पोठिया के प्रांगण में तथा श्री कालीचरण आर्य, व्यवस्थापक के प्रांगण में त्रिदिवसीय वैदिक धर्म प्रचार-कार्यक्रम चला। इस अवसर पर आर्य सिद्धान्तो के ज्ञाता एव वैदिक प्रवक्ता श्री ब्रह्मचारी व्यास नन्दन शास्त्री वैदिक एम० ए० तथा श्री अशोक विक्रम थापा (नेपाल) के जोरदार प्रवचन हुए। प्रवचनोपरान्त शंका-समाधान भी हुए।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित [illegible] शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत १९७२९४९०८९] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २१ अङ्क ४] कार्तिक कृ० १२ स० २०४५ रविवार ६ नवम्बर १९८८ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

संस्कृत के विषय में सरकार १५ नवम्बर ८८ तक अपना स्पष्टीकरण देवे

सस्कृत रक्षा समिति की एक विशेष बैठक ३०-१०-८८ को आर्य समाज दीवान हाल, दिल्ली मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे हुई, जिसमे स्पष्ट किया गया कि यह बैठक सरकार की नई भाषा नीति मे सस्कृत की उपेक्षा पर घोर विरोध करती है, जिसके द्वारा देश की एकता मे सहायक सस्कृत भाषा को उसके स्थान से पददलित किया जा रहा है। ऐसा करके सरकार निम्न तथ्यो की उपेक्षा कर रही है—

१—सस्कृत भारतीय भाषाओ की जननी है।
२—सविधान मे सस्कृत को एक विशेष स्थान प्राप्त है, जिसमे सस्कृत की शब्दावली से ही हिन्दी के विकास का प्रावधान है अब सस्कृत को उससे भी वचित किया जा रहा है।

समिति सरकार के २४ १०-८८ के प्रेस नोट को सस्कृत प्रेमियो के गले मे उतारने के लिए एक मीठा जहर मानती है, क्योकि इससे सस्कृत और हिन्दी दोनो को धक्का लगा है। सरकार एक तरफ कहती है कि सस्कृत भाषा हमारी सास्कृतिक बपौती है, किन्तु दूसरी ओर उसको उपेक्षित करने के लिए इस प्रकार के हथकण्डे अपना कर जनता को धोखा दे रही है।

सरकारी प्रेस नोट के अनुसार सस्कृत का ए कोर्स मे हिन्दी के साथ मिला दिया गया है और हिन्दी के १०० नम्बर मे २० नम्बर कम करके सस्कृत के लिए रखे गए है। इस प्रकार सस्कृत के साथ-साथ हिन्दी का भी कमजोर किया जा रहा है। जो विद्यार्थी ए-कोर्स नही लेते व अतिरिक्त भाषा के रूप मे सस्कृत को पढ सकते है, किन्तु तीसरी भाषा के रूप मे नही।

सरकारी अधिकारी सस्कृत के उज्जवल भविष्य की चर्चा करते हुए जनता की आखो मे धुल झोक रहे हैं कि नई नीति के अनुसार सस्कृत भाषा के सीखने पर विद्यार्थी अधिक ध्यान देगे और १९८९ मे उनकी सख्या २९००० से बढकर १४३००० हो जायगी।

यह समिति सरकार की सस्कृत के सम्बन्ध मे नई नीति पर चर्चा करने को तैयार है और माग करती है कि इस नीति को इस समय स्थगित कर दिया जाये। समिति का निश्चित मत है कि इससे स्थिति बडी विषम बन जायेगी और देश की जनता इसे कदापि स्वीकार नही करेगी। समिति सरकार से अनुरोध करती है कि वह इस विषय मे १५ नवम्बर तक स्थिति स्पष्ट करे। उसके बाद समिति को सीधी कार्रवाई करने पर विवश होना पडेगा।

—प्रचार विभाग

भारत सरकार ने फीजी के साथ व्यापार सम्बन्ध तोड़ दिये

विदेश मन्त्रालय का स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नाम पत्र

फिजी मे कर्नल राबुका ने सत्ता सम्भालने के साथ ही सम्प्रदायिक आधार पर सविधान मे परिवर्तन करके भारतीय मूल निवासियो को जिनकी सख्या लगभग ६॥ लाख है, और जनसख्या के अनुपात मे बहुसख्यक है को धमकी दी थी कि यदि भारतीयो को वहा रहना है तो ईसाई बनकर रहना होगा।

राबुका सरकार की इन नीतियो का सार्वदेशिक सभा की ओर से कडा विरोध किया गया था। सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने ३०-९-८८ को इस विषय मे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी, विदेश मन्त्री श्री नरसिह राव को जो पत्र लिखा था उनका जो उत्तर विदेश मन्त्रालय से स्वामी जी के नाम प्राप्त हुआ है वह अविकल रूप से निम्न प्रकार है—

—सम्पादक

स० S/४११/२/८८

भारत सरकार
विदेश मन्त्रालय, नई दिल्ली

सेवा मे,
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-११०००२

प्रिय महोदय,

विदेश मन्त्री को सम्बोधित आपका ३०-९-८८ का पत्र मिला जिसमे फिजी मे भारतीय मूल के लोगो के जबर्दस्ती धर्म परिवर्तन के बारे मे अपनी आशका व्यक्त की है। शायद यह आशका कुछ समाचार पत्रो की खबरो और जनरल राबुका के बारे मे 'नो अदर

(शेष पृष्ठ ४ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का शताब्दी समारोह तथा महासम्मेलन की जोरदार तैयारियां

आगामी ३०-३१ दिसम्बर १९८८ और १ जनवरी १९८९ को अलवर मे होने वाले राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी समारोह एव आर्य महासम्मेलन की तैयारिया जोरो पर चल रही है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अध्यक्ष श्री छोटूसिह एडवोकेट मन्त्री श्री ओमप्रकाश भवर तथा वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री सत्यव्रत सामवेदी ने राजस्थान के अजमेर ब्यावर, भरतपुर, अलवर, सीकर आदि अनेक जिलो का दौरा किया। सर्वत्र आर्य समाजो एव आर्य जनता की ओर से इनका पूरा सम्मान किया गया और शताब्दी समारोह और आर्य महासम्मेलन के लिए धनराशिया भेंट की गई।

समारोह के मुख्य आकर्षण

१—सम्मेलन मे मारीशस के प्रधानमन्त्री डा० जगन्नाथ अनिरुद्ध तथा नेपाल नरेश को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया है।

२—आर्य समाज के उच्चकोटि के सन्यासी, विद्वान एव उपदेशक बडी सख्या मे भाग ले रहे है।

३—अनेक राजनेता भी इसमे सम्मिलित होगे।

कार्यक्रम

१—सम्मेलन मे देश के समस्त आर्य समाजो के प्रधान एव मन्त्रियो का एक सम्मेलन होगा। जिसमे आगामी ५ वर्ष के लिए आर्य समाज के भावी कार्यक्रम के लिए योजना तैयार की जावेगी।

२—सरकार की मौजूदा शिक्षा नीति तथा सस्कृत रक्षा पर विचार आर्य समाज की शिक्षण सस्थाओ को अन्य अल्पसख्यक सस्थाओ की तरह सरकारी लाभ दिलाने का प्रयत्न, आर्य विचारधारा के नवयुवको से शिक्षण सस्थाओ तथा अन्य सस्थानो से सम्पर्क करके सगठन बनाना तथा नारी समता और दलितोद्धार के क्षेत्र मे तेजी लाने के विभिन्न कार्यक्रमो पर विचार होगा।

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत अब तक अलवर महासम्मेलन सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह और महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन हो चुके हैं। प्रतिनिधि सभा राजस्थान के इस शताब्दी समारोह के आयोजन से देश तथा विदेश मे महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढाने मे तेज गति आवेगी।

राजस्थान सभा का कार्यालय जयपुर स्थित निजी भवन आदर्श नगर राजापार्क मे स्थापित हो गया है। सभा भवन निर्माणाधीन है।

यह सम्मेलन वैदिक विद्यामन्दिर स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर के प्रागण मे सम्पन्न होगा। अलवर, दिल्ली व जयपुर के मध्य छोटी रेल लाइन पर स्थित है, जहा के लिए दोनो जगहो से रेल तथा बस जाती रहती हैं। अधिक से अधिक सख्या मे आर्य नर-नारियो को उपस्थित होकर अपनी सगठन शक्ति का प्रदर्शन करना तथा आज के युग मे देश व जाति के समक्ष है उनके समाधान के लिए प्रेरणा लेकर जाय। युवक वर्ग से भी विशेष रूप से आग्रह है कि सम्मेलन मे भाग लेकर इसे सफल बनाय। भारत के समस्त आर्य समाजो व प्रतिनिधि सभाओ को सूचित किया जाता है कि वे इन तिथियो को खाली रख और अलवर पधारे।

शताब्दी समारोह समिति की सदस्यता

५ हजार रुपये देने वाले	सरक्षक
२५०० रुपये देने वाले	विशिष्ट सदस्य
११०० रुपये देने वाले	माननीय सदस्य

धन सग्रह के लिए रसीद बुके छपवाई गई हैं। देश भर के धार्मिक तथा दानी महानुभाव तथा आर्य समाज उपरोक्त समारोह की सफलता के लिए तन-मन और धन से सहयोग करे।

धनराशि चैक व बैंक ड्राफ्ट आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान स्वागत समिति के नाम बनाकर वैदिक विद्या मन्दिर, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर (राज०) के पते पर भेजे।

निवेदक

छोटूसिह एडवोकेट	ओमप्रकाश भवर	सत्यव्रत सामवेदी
प्रधान	मन्त्री	वेद प्रचार अधिष्ठाता

विदेश मन्त्रालय का पत्र

(पृष्ठ १ का शेष)

वे" शीर्षक से प्रकाशित पुस्तक से उत्पन्न हुई है। इस पुस्तक मे फिजी को एक ईसाई राष्ट्र घोषित करने और फिजी मे भारतीयो का धर्म बदलकर उन्हे ईसाई बनाने सम्बन्धी आकाक्षा का उल्लेख है। लेकिन ये उनके व्यक्तिगत विचार हैं और हमने अभी तक ऐसा कोई प्रमाण नही देखा है जिससे यह पता चलता हो कि भारतीयो को जबर्दस्ती ईसाई बनाने की कोई घटना हुई है।

२—आपको मालूम होगा कि फिजी का एक नया सविधान बनाया जा रहा है। अन्तरिम सरकार ने एक फिजी सविधान जाच और सलाहकार समिति नियुक्त की है। भारत सरकार ने कई अवसरो पर यह आशा व्यक्त कि है कि फिजी मे सभी वर्गो के लोगो को भावी सवैधानिक व्यवस्था के बारे मे विचार विमर्श मे स्वतन्त्र रूप से भाग लेने की अनुमति दी जाएगी।

३—भारत सरकार ने बार-बार उन प्रयत्नो की निन्दा की है जो फिजी मे जातीय भेदभाव को सस्थागत बनाने के लिए किए जा रहे है। यह सरकारी प्रवक्ता द्वारा और सयुक्त राष्ट्र सगठन जैसे बहुउद्देश्यी मचो के माध्यम से कहा गया है। भारत फिजी के राष्ट्रमडल से निष्कासन मे सहायक था। हमने फिजी के साथ व्यापार सम्बन्ध भी तोड दिए है।' भारत सरकार फिजी मे जातीय भेद भाव मूलक नीतियो के विरुद्ध समूचे विश्व मे जनमत तैयार करना जारी रखेगी।

भवदीय
नीलम देव
उपसचिव (दक्षिण)

सम्पादकीय

वन्दौं गुरुपद-कमल परगा

हमारे शास्त्रो में—गुरु को गुरुदेव के रूप में सम्बोधित किया गया है। भारतीय जनमानस मे ऐसी धारणा है कि बिना गुरु के जीव का उद्धार या अन्धकार से प्रकाश नहीं मिलता है। परमात्मा की प्राप्ति का या उसके दर्शन का माध्यम भी गुरु ही माना गया है। यह मानव भावना की परम्परा आज भी प्रचलित है इसी मान्यता से हम लोग ज्ञान देने वाले को गुरु का पद-प्रदान करते हैं।

भारतीय वैदिक वाङ्मय की पुनीत परम्परा मे गुरु शब्द का पद-स्थान सर्वोपरि माना जाता रहा है। यह इसका उपासना और मान्यता है जिस पर सभी दर्शन-आस्तिक रूप से एक मत हैं।

यद्यपि हमारे हिन्दू-समाज मे ईश्वर के नाम की मान्यता द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत दर्शनो मे मतैक्य नही है। परन्तु गुरु की मान्यता पर सब एक हैं।

स्कन्द पुराण में "गुरु गीता" तथा 'गुरु का साक्षात ब्रह्म" का वाक्य मानते है। यहा गुरु की महिमा का वर्णन है।

शूद्र से द्विज बनने की प्रक्रिया भी गुरु से ही प्रारम्भ होती है। यज्ञोपवीत देकर वेदारम्भ सस्कार मे गायत्री मन्त्र से गुरु कान मे इसका महत्त्व दर्शाता है। शिष्य सदा सर्वदा अपने गुरु के समक्ष श्रद्धावनत रहा है।

गुरु को शिष्य के अज्ञान को समाप्त करके सन्मार्ग का दर्शन कराये। "गरति-अज्ञानम्' वह गुरु कहलाता है। शास्त्रा मे गुरु शब्द के अनेकों अर्थ हैं। उनमें एक अर्थ इस प्रकार है कि—

'गुरु" नाम अन्धकार तथा-रु-प्रकाश॥ जो अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाये। वह गुरु कहाता है। अज्ञान के भयानक अन्धकार को अपने अध्यात्मिक तथा ईश्वरीय उपदेश देकर उसे नष्ट करना गुरु का उत्तर-दायित्व पूर्ण कार्य है। प्रमाणत.—

> गु-शब्दस्त्वन्धकारः रु-शब्दस्तन्निरोधक।
> अन्धकार निरोधत्वात् गुरुरित्यभिधीयते॥

शिष्य परम्परा मे विश्वास है कि हमारे जीवन मे पग-पग पर अन्धकार ही अन्धकार है, अज्ञान का पर्दा है जैसे-मोह-भ्रम-लोभ क्रोध-दुराचार आदि को गुरु ज्ञान की अन्जन-शलाका से दूर भगा देता है।

> अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
> चक्षुरुन्मीलित येन तस्मै श्री गुरवे नम॥

इसलिये महाभारत मे विजय यात्रा के पूर्व अर्जुन श्रीकृष्ण के शरणागत हो गया।"शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्' हे कृष्ण मेरी कृपणता (अज्ञानता) को दूर कर दो अपना शिष्य बनाकर सत्य का मार्ग दिखाओ। अज्ञानता ही कृपणता है।

जैसे ब्रह्मा—अपने बुद्धि योग से ससार की सृष्टि करता है तथा उसे सृष्टिकर्ता माना गया है। उसी प्रकार गुरु भी जिज्ञासु-साधक की सृष्टि करता है। वह जीवात्मा को सामान्यजगत्व से ऊपर उठाकर चेतना की धराभूमि की ओर उन्मुख कर देता है।

उसमे सत्य-असत्य, नित्य अनित्य का विश्लेषण कर सत् की ओर प्रवृत्त करता है। और साधक मे अत करण की शुद्धि तथा विवेक का नवजीवन सचार करता है। जिससे साधक की अधोन्मुखी वृत्ति ऊर्ध्वमुखी हो जाती है। तथा साधक इसी निर्माण कला से ही गुरु के ब्रह्मपद का अधिकारी हो जाता है। अतः गुरु में समन्वय इस प्रकार किया है।

> गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वर.॥

यहा पर साधक सृजन को ब्रह्म-भाव तथा गुणा की व्यापक होकर सुरक्षा से विष्णु भाव, देहाभिमानको नष्ट करन स शिवत्व भाव दर्शाता है। गुरु भी ठीक विष्णु के समान ही शिष्य का सरक्षण करते हैं। साधक के साधनापथ मे जो भी बाधायें आती हैं उन सबका निवारण करते हुए गुरु उसे साध्ययात्रा मे गतिशील करते हैं। महेश्वर के सृष्टि का सहारक मानते हैं जबतक अवगुणो व दोषो का सहार न हो जय, तबतक सद्गुणो का निर्माण नही हो सकता है। गुरुदेव भी यही कर्तव्य निभाते हैं—

आत्मा-परमात्मा की अभिन्नता एकता एव अखण्डता का भान करा देने की सामर्थ्य रखते हैं। गुरु ही साधक की समस्त क्षणभगुर लौकिक भावनाओ से वासनाओ भगवत प्राप्ति विरोधी विकारो का सहार कर उसे जरा व्याधि से मुक्तकर देते हैं।

गुरु ही शिष्य को अमरता का उपदेश देता है। वस्तुत, गुरु देहमात्र ही नही है वह ज्ञान के भरीपन में सब से बड़ा होने से ब्रह्म का पद प्राप्त व्यक्ति है। गुरु एक प्रकाशमय तत्व है जो अपने शिष्य को प्रत्यक्ष या परोक्ष मे मार्ग दर्शन कराता रहता है।

वशिष्ठ के शिष्य राम, सन्दीपन के शिष्य कृष्ण, परशुराम के कर्ण, द्रोणाचार्य के एकलव्य, धौम्य के आरुणी, चाणक्य के चन्द्रगुप्त, समर्थ रामदास के शिवाजी महाराज, गुरु विरजानन्द के स्वामी दयानन्द, रामकृष्ण परमहंस के स्वामी विवेकानन्द आदि की यशोगाथा प्रसिद्ध है।

आज गुरु शिष्य परम्परा का दिव्य स्वरूप धूमिल पड़ता नजर आ रहा है। देश-जाति-समाज चाहे रसातल मे चला जाय परन्तु वर्तमान गुरुजनो को अपनी दिव्य परम्परा की रक्षा के औचित्य की किंचित्-मात्र भी चिन्ता नही है। कर्मवाद की अपेक्षा भाग्यवाद पर अधिक उपदेश देते है।

पहले के शिष्य किकर्त्तव्य विमूढ होते थे तो गुरुजन उनको कर्त्तव्य निष्ठा का ज्ञान देते थे अब गुरु ही किकर्त्तव्य विमूढ हो गये है तो ज्ञान का उपदेश कौन करे।

विदेशी दासना काल मे जब से गुरु के कुल या ऋषियो के कुल की परम्परा ही समाप्त हो गई और आधुनिक विदेशी शिक्षा का समय प्रारम्भ हुआ। शिक्षा के मानदण्ड का अभाव व छात्रो मे गुरुभाव बिलकुल समाप्त हो गया। शिक्षा गुरु केवल टीचर-मास्टर नाम तक सीमित रह गया। आज राजनीतिक गुरु बन गये। राजनीतिक गुरु तो प्रकाश को भी अन्धकार मे बदल देते हैं। इसलिये गुरु शब्द कनफुकवा मन्त्र देने वालो से बदनाम हो गया—नाना प्रचलित शब्द यथा गुरु घण्टाल, बड़े गुरु हो, वाहरे गुरु, समाज मे पैदा हो गये।

फिर भी भारतीय सस्कृति मे गुरुदेव नाम का आज भी अपनी मान्यता रखता है। पर आवश्यकता इस बात की है कि गुरुजन जनता को सही गुरुपद की गरिमा का महत्त्व समझाये।

भारतीय सस्कृति को स्थापित रखने के लिये अटूट श्रद्धा, ऋषि परम्परा पर रख। अपनी सास्कृतिक सम्पदाको सुरक्षित रखने के लिये। अयोध्यासिंह उपाध्याय के शब्दो मे कैसा गुरु चाहिये, आखो को दे खोल भरम का पर्दा टाले, जी का सारा मैल कान को फूक निकाले, गुरु चाहिये हमे ठीक पारस के ऐसा, जो लोहे को कसकर मिटा दे सोना कर डाले।

हम उन गुरुओ के कृतज्ञ है जिन्होंने अपनी तपस्या-साधना एव विद्या द्वारा युग युगो से बनाये रखा तथा वेद-वेदागादि शिक्षा सदुपदेश द्वारा मानव को बनाये रखने मे अभूतपूर्व योगदान दिया है। इसी से भारत विश्व मे जगद्-गुरु कहा व माना जाता रहा हैं।

ऐसे गुरु चरणो मे जिन्होंने गुरु-पद की गरिमा रखी है।

उन्हे शत-शत् प्रणाम।

संस्कृत पर संकट

—कमला रत्नम्—

अपनी अमरीका यात्रा के दौरान वहा के प्रसिद्ध हारवर्ड विश्वविद्यालय मे मैंने देखा कि सस्कृत भाषा, भारतीय सस्कृति और धर्म का एक बहुत बड़ा विभाग है और यहा कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। वैदिक और लौकिक साहित्य के अलग-अलग प्रोफेसर हैं और निकटवर्ती एम आई टी (तकनीक शास्त्र और प्रविधि का विश्वविद्यालय सस्थान) के अभियान्त्रिकी के विद्यार्थी भी सस्कृत पढ रहे हैं। स्नातक कक्षाओ के प्रथम वर्ष मे इस साल ४५ छात्र हैं, जिनमे दो-चार भारतीयो को छोडकर सब विदेशी मूल के हैं। कम्प्यूटर पर भी देवनागरी लिपि और पाणिनीय वर्णमाला के प्रयोग चल रहे हैं। यही स्थिति अमरिका के अधिकाश विश्वविद्यालयो की है जिन सब मे सस्कृत भाषा को स्थान दिया गया है।

पश्चिम के इस परिप्रेक्ष्य मे भारत की क्या दशा है। लगभग दो वर्ष पूर्व दिल्ली के मानव-ससाधन-विकास मन्त्रालय के शिक्षा विभाग ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाई जिसके अन्तर्गत सस्कृत को त्रिभाषा सूत्र से बाहर कर दिया गया। सरकार ने प्रत्येक जिले मे नवोदय विद्यालय खोलने का सकल्प किया जिनमे मुख्यतया ग्रामीण बच्चो को व्यवसायोन्मुख शिक्षा देने की बात कही गयी। सरकार की विनाशकारी अतिव्ययशीलता और अनुपम अकर्मण्यता के कारण यह तथा कथित शुभ सकल्प पूरा नहीं हुआ। शिक्षा विभाग मे सदैव पैसो का अकाल पडा रहता है और आज का समाचार है कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण परिषद का मूल्यवान पुस्तकालय जलकर राख हो गया है और अब सरकार शिक्षा के अपने मसूबो के लिए जनता पर अतिरिक्त टैक्स लगाना चाहती है। जो भी हो, सस्कृत को पाठ्यक्रम मे से निकालने के विरुद्ध दिल्ली और देश के अन्य भागो मे व्यापक विरोध हुआ। यह कहा गया था कि सस्कृत के स्थान पर एक आधुनिक भाषा पढाई जाएगी। परन्तु आधुनिक भाषा की परिभाषा नहीं दी गई और सस्कृत को मनमाने ढग से अप्रचलित भाषा मान लिया गया। फलस्वरूप जनसभाए की गई, प्रस्ताव पारित हुए, भाषण हुए, लेख लिखे गये। अखिल भारतीय सस्कृत रक्षा समिति की स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की प्रेरणा और अध्यक्षता मे स्थापना की गई। लखनऊ से दिल्ली तक सस्कृतानुरागियो ने पदयात्रा भी की। सस्कृत रक्षा समिति का शिष्टमडल मई ८७ मे तत्कालीन मानव ससाधन विकास मन्त्री पी वी नरसिंहराव से भी मिला। ज्ञापन दिये गए, बहस भी हुई। सस्कृत भाषा से विज्ञान को जो प्रगति आज भी मिल सकती है, उसे बताने के लिए प्रधानमन्त्री राजीव गाधी को जो स्वय विमान चालक रहे हैं, 'विमानशास्त्र' नामक ग्रन्थ सस्कृत मे भेंट किया गया। प्रधानमन्त्री ने उत्तर दिया, हम देखेंगे।' नरसिंहराव से बडी कठिनाई से हैदराबाद के वन्देमातरम रामचन्द्र राव के प्रयत्नो से भेट हुई। हमे आश्वासन दिया गया कि सस्कृत को पाठ्यक्रम से नही हटाया जायेगा और १९६८ मे माध्यमिक पाठयक्रम मे सस्कृत का जो स्थान था उसमे लेशमात्र भी परिवर्तन नहीं होगा। मन्त्री महोदय के शब्द हैं, १९६८ की शिक्षा नीति मे यदि एक कौमा भी बदला गया तो बिना आपको बताये, आपकी सम्मति के ऐसा नही होगा।' यह भी कहा गया कि हम भारत के लिए सस्कृत का महत्व जानते हैं। हम इसको जन-जन के जीवन का अग बनाकर इसे पहले से अधिक मजबूत करना चाहते हैं। परन्तु आज साल भर से अधिक बीत गया, नरसिंहराव सस्कृत-हनन के पुरस्कार स्वरूप पदोन्नत होकर चले गए और अब इस अभागे देश की शिक्षा का भार दूसरे हाथो पर आ गया और आज तक शिक्षा-विभाग ने रक्षा समिति से कोई सम्पर्क नही किया है।

त्रिभाषा फार्मूला

इस सब का परिणाम क्या हुआ? दिनाक १६-९-८८ को सेंट्रल बोर्ड आफ सेकेंडरी एजुकेशन, दिल्ली के चेयरमैन पादरी कुन्नीवल ने भारत के सभी माध्यमिक स्कूलो को एक आर्डर' भेजा है, जिसमें कहा गया है कि ये स्कूल अब त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत सस्कृत पढाना बन्द कर दे। अगर कोई विद्यार्थी सस्कृत पढना चाहता है तो वह हिन्दी-ए (उच्च हिन्दी) के कोर्स के अन्तर्गत पढ सकता है, अन्यथा एक स्वतन्त्र विषय के रूप मे पढ सकता है। सस्कृत को वैकल्पिक विषय न बनाकर, अलग स्वतन्त्र विषय बनाकर, यदि यह सूचना सही है, सरकार लोगो की आखो मे धूल झोकना चाहती है। कौन विद्यार्थी चाहेगा कि तीन भाषाओ के स्थान पर चार भाषाओ को पढकर अपने सिर का बोझ बढाए अथवा सस्कृत को अलग विषय के रूप मे लेकर अन्य किसी उपयोगी विषय जसे गणित, कामर्स या अर्थशास्त्र आदि को छोड दे? सस्कृत लेकर चार भाषाओ और तीन लिपियो का बोझ तो तो उसे जबरन अपने सिर पर लादना पडेगा। त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत पटरानी अग्रेजी, और झूठी राजभाषा हिन्दी तो हैं ही, तीसरी भाषा के रूप मे किसी दक्षिण भारतीय भाषा को रखा गया है। ठीक है दक्षिण के विद्यार्थी तो अतिरिक्त दक्षिण भाषा सीखकर लाभान्वित हो सकते हैं, परन्तु उत्तर भारत के छात्र दक्षिण भारतीय भाषा सीखकर क्या करेंगे? उनके लिये तो कोई उत्तर भारतीय भाषा जैसे पजाबी, बगाली अथवा समान लिपि वाली मराठी अथवा गुजराती अधिक आसान और उपयोगी रहती। परन्तु उपयोगिता हमारी सरकार की शिक्षा-नीति का अग नही है, बच्चो पर काम का कितना बोझ पडता है इसकी भी उन्हे चिंता नहीं है। वे केवल ऐसी बाते करना चाहते हैं, ऐसी नीतिया बनाना चाहते हैं जो कागज पर अच्छी लगें, जिनसे जनता भुलावे मे आ जावे और जिनसे उनके वोटो की खेती दिन-दूनी रात चौगुनी बढे। वास्तव मे अग्रेजी को वैकल्पिक विषय बनाना चाहिए। यदि अग्रेजी वास्तव मे उपयोगी है तो छात्र उसे किसी भी दशा मे पढेंगे चाहे वैकल्पिक भाषा अथवा स्वतन्त्र विषय। असल मे जो काम सस्कृत के साथ किया गया है, वह अग्रेजी के साथ होना चाहिये।

सरकार दिन रात राष्ट्रीय एकता का रोना रोती रहती है। परन्तु जब काम करने का समय आता है तब सरकार उसके विपरीत आचरण करती है। यह सर्व विदित है कि भारत को हिमालय से कन्याकुमारी और कच्छ से काम रूप तक जोडने का काम अनादि काल से सस्कृत करती आई है और आज भी कर रही है। भारतीय सस्कृति की पहचान और सवाहक सस्कृत भाषा है भारत की सहस्राधिक बोलियो और भाषाओ मे प्रत्येक मे सस्कृत शब्द आचार-विचार तत्सम या तद्भव रूप मे विद्यमान हैं। इसी के बल पर एक भाग मे चलकर व्यक्ति दूसरे भाग की क्षेत्रीय भाषा दो तीन माह के भीतर आसानी से सीख लेता है। परन्तु सरकार इस तथ्य को देखना नही चाहती। आज हमारे शासक वर्ग का मुख्य उद्देश्य है सत्ता मे बने रहना और इस महालक्ष्य की सिद्धि अग्रेजी भाषा से हो रही है। जब देश का शासन, प्रशिक्षण, व्यवसाय आदि सभी प्रभावी काम अग्रेजी मे होंगे तो देश की ९० प्रतिशत से अधिक जनता उनको नहीं समझेगी, उनके भले-बुरे परिणामो से अनभिज्ञ रहेगी।

सरकार की चिन्ता सस्कृत को हटाकर विलुप्त कर देने की है क्योंकि एक बार साधारण भारतीय अपनी अस्मिता की मूल प्रेरक सस्कृत भाषा और उसके वरदानो को भूल गया तो वह सारी जिंदगी अग्रेजी से जूझता रहेगा, पाश्चात्य अग्रेजी सभ्यता और सस्कृति को अपना लक्ष्य मानेगा और उसी की प्राप्ति मे लगा रहेगा। अपने ही देश के गौरव और समृद्धि से विमुख, देशप्रेम-विहीन, स्वभाषा विहीन करोडो भूखी और त्रस्त जनता पर विदेशी भाषा के सहारे शासन करना आसान है और यह शासन इसी प्रक्रिया से अनन्त काल तक चल सकता है। कुछ समय पूर्व यही बात प्रधानमन्त्री ने अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान हारवर्ड विश्व विद्यालय मे भाषण करते समय कही थी। प्रधान मन्त्री ने डके की चोट पर कहा, निरक्षरता स्वय लोकतन्त्र मे बाधक नहीं है। साक्षरता दृष्टि को सकुचित बनाती है।' देश को इक्कीसवी सदी मे ले जाने का अद्भुत तर्क है।

मान्यता समाप्ति का खतरा

सेंट्रल बोर्ड के 'हिटलरी आर्डर' को यदि पूरी ताकत से लागू किया गया तो सरकारी, अर्धसरकारी और सहायता प्राप्त विद्यालय तो इसे मानने को

(शेष पृष्ठ १० पर)

वृक्षों में जीव और हिंसा : एक विवेचन

डा० सत्यव्रत राजेश, प्राध्यापक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वृक्षों में जीवविषयक मान्यता आर्यसमाज के प्रारम्भिक विद्वानों में भी विवाद का विषय रही है। कुछ विद्वान् वृक्षों में जीव मानते थे, जिनमें पं० गणपति शर्मा आदि विद्वान् मुख्य थे तथा कुछ विद्वान वृक्षों में जीव नहीं मानते थे, जिनमें स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता हैं। आजकल भी विद्वानों में इस विषय पर मतैक्य नहीं मिलता। वृक्षों में जीव न मानने वालों का प्रबल तर्क यह है कि यदि वृक्ष-वनस्पति आदि में जीव माना जाए तो एक व्यक्ति गाजर-मूली उखाड़कर खाता है तथा दूसरा व्यक्ति गाय-बकरे आदि को मारकर खाता है तब दोनों में अन्तर क्या रहा ? हमारा भी वृक्ष से तात्पर्य वृक्ष-औषधि-वनस्पति-लता-वल्लरी आदि सबसे ही है, केवल वृक्ष से ही नहीं।

यह प्रश्न बड़ी गरिमा रखता है तथा समाधान चाहता है। इस गहन गुत्थी को सुलझाए बिना हम भी कन्दादि उखाड़कर खाने पर उसी कोटि में आ जाते हैं जिस कोटि में वधिक या व्याध। इस गुत्थी के समाधान की ओर बढ़ने से पूर्व हमें यह देखना है कि वृक्षों में जीव विषय मे वेद, उपनिषद, स्मृतिदर्शन आदि ग्रन्थ क्या मान्यता रखते हैं। सर्वप्रथम वेद को ही लें—

वेद की मान्यता

वृक्षादि में जीव की सत्ता के विषय में अथर्ववेद कहता है—

इदं जनासो विदथ महद् ब्रह्म वदिष्यति ।
न तत् पृथिव्यां नो दिवि येन प्राणन्ति वीरुध.[1] ॥

अर्थात् हे मनुष्यो! इस बात को तुम जानते हो कि वह पूजनीय ब्रह्मज्ञानी परब्रह्म का कथन करेगा जो ब्रह्म न केवल पृथिवी अथवा द्युलोक में ही है अपितु सर्वत्र है तथा जिसके नियमानुसार ये लता (आदि) प्राण लेते हैं।

इस मन्त्र के अन्त में स्पष्ट कहा है कि जिससे ये लताएं प्राण लेती हैं। प्राणन क्रिया का आधार आत्मा ही है। प्रायः अन्दर से स्वतः बढ़ने वाली वस्तुएं आत्मा की ही प्रतीति कराती है। औषधि, वनस्पति, वृक्ष, लता आदि सब अन्दर से बढ़ने हैं, अतः इनमें आत्मा को मानना ही होगा। आचार्य सायण ने भी इस मन्त्र में 'प्राणन्ति' का अर्थ 'जीवन्ति' ही किया है। एक अन्य मन्त्र में भी औषधि को जीवन देने वाली, रहने वाली बतलाया है[2]। उस मन्त्र में आए 'जीवन्तीम्' पद का अर्थ क्षेमकरण दास त्रिवेदी ने "जीव रखने वाली" किया है।

उपर्युक्त दोनों में औषधि को प्राण लेने वाली तथा जीवित रहने वाली कहा है। प्राण तथा जीव का सम्बन्ध आत्मा से ही है, जड़ प्रकृतिमें तो जीवन तथा प्राणन क्रिया का प्रश्न ही नहीं उठता। पृथिवी, जल आदि न तो श्वास लेते है और न प्रश्वास छोड़ते हैं, किन्तु वृक्षादि श्वास के रूप मे कार्बन लेते तथा प्रश्वास के रूप में ओषजन छोड़ते हैं, यह सर्वविदित ही है। अत. वेद के अनुसार वृक्षादि में आत्मा हैं।

उपनिषद् मान्यता

उपनिषद् भी वेद के इस सिद्धान्त की पुष्टि करती हैं। कठोपनिषद् में यम 'मरने पर कोई तत्व शेष रहता है अथवा नहीं' नचिकेता के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हैं कि—"हे नचिकेता! मुझे प्रसन्नता है कि मैं तुझे इस शाश्वत गुप्तज्ञान को बताऊंगा कि मरकर आत्मा का क्या होता है? अपने ज्ञान तथा कर्म के अनुसार कुछ आत्मा तो शरीर धारण करने के लिये (मनुष्यादि) योनि को प्राप्त होते हैं तथा कुछ जीव मानवादि से भिन्न स्थावर अर्थात् वृक्षादि योनि को प्राप्त कर लेते हैं[3]। भाव यह है कि जीवों को ज्ञान तथा कर्म के आधार पर योनि मिलती है। वह योनि जंगम=मनुष्य-पशु-पक्षी-सरी-सृप-कीट-पतंग आदि भी हो सकती है तथा स्थावर=लता, वृक्ष, वनस्पति, कन्द-मूल आदि भी। इस उपनिषद वाक्य से ब्रह्मकुमारियों की वह मान्यता भी खण्डित हो जाती है जिसके अनुसार वे मानव को कैसा भी कर्म करने पर मनुष्य की ही योनि मिलने की बात करते हैं।

छान्दोग्य उपनिषद् में भी वृक्षादि में आत्मा की सत्ता को स्वीकार किया गया है। आरुणि उद्दालक ऋषि अपने पुत्र श्वेतकेतु को आत्मा के विषय में बतलाते हुए कहते हैं कि—'हे प्रिय ! जो व्यक्ति इस महान् वृक्ष की जड़ में चोट करे तो वह जीता हुआ रस गिराए, जो मध्यभाग में चोट करे तो वह जीता हुआ रिसता रहे तथा जो अग्रभाग में चोट करे तो भी वह जीता हुआ सुवित होता रहे, पर सूखे वा मरे नहीं. क्योंकि यह वह वृक्ष जीवन तथा आत्मा से परिपूर्ण है। इसमें जीवन-प्राण भी है तथा आत्मा भी, इसी कारण यह पानी पीता हुआ हर्ष से रहता है। इस वृक्ष की एक शाखा को जब जीव छोड़ देता है तो वह सूख जाती है, दूसरी को छोड़ देता है तो वह सूख जाती है, तीसरी को छोड़ देता है तो वह सूख जाती है और यदि जीव समस्त वृक्ष को छोड़ देता है तो सारा वृक्ष सूख जाता है[4]। इससे अधिक वृक्षादि में आत्मा की सत्ता का स्पष्ट उल्लेख क्या होगा ?

मनु की सम्मति

मनुस्मृति मे भी मनु महाराज वृक्षों मे आत्मा की सत्ता का प्रतिपादन करते है। कर्मानुसार जीवों को किस-किस प्रकार की योनियां प्राप्त होती हैं, उनका उल्लेख करते हुए वे कहते है—प्राणी कर्मानुसार किन-किन योनियों में जन्म लेते है, वह सब मैं बताऊंगा वहां जीव की उद्भिज योनि में उन्होंने बीज तथा गांव में उगने वाले सब स्थावर, पकने पर समाप्त हो जाने वाली औषधियां, बिना फूल के फल लगने वाली गूलर आदि वनस्पति, फूल-फल लगाकर झड़ जाने पर भी स्थिर रहने वाले वृक्ष, गुच्छे गुल्मयुक्त लता-वल्लरी को गिनाया है[5]। अन्यत्र भी मनु ने स्थावर को जीव का शरीर मानते हुए लिखा है—'शरीर सम्बन्धी दोषयुक्त कर्मों से मनुष्य स्थावर की योनि पाता है[6]। (क्रमश.)

---

१. अथर्व १।३२।१

२. जीवला नघारिषा जीवन्तीमोषधीमहम् ॥ अथर्व ८।७।६

३. हन्त त इदं प्रवक्ष्यामि गुह्यं ब्रह्म सनातनम् ।
यथा च मरणं प्राप्य आत्मा भवति गौतम ॥
योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः ।
स्थाणुमन्येऽनु संयन्ति यथा कर्म यथा श्रुतम् ॥ कठउ० २।५।६-७

४. अस्य सोम्य महतोवृक्षस्य यो मूलेऽभ्याहन्याज्जीवन् स्रवेद्योऽग्रे हन्याज्जीवन् स्रवेत् । स एष जीवेनात्मनानु प्रभूतः पेपीयमानो मोदमानस्तिष्ठति । अस्य यदेकां शाखा जीवोजहात्यथ सा शुष्यति, द्वितीया जहात्यथ सा शुष्यति, तृतीया जहात्यथ सा शुष्यति, सर्वं जहाति सर्वः शुष्यति ॥ छां० उ० ६।११।१।२

५. येषां तु यादृशंकर्म भूतानामिहकीर्तितम् । तत्तथा वोऽभिधास्यामि क्रमयोगं च जन्मनि ॥ उद्भिजाः स्थावराः सर्वे बीजकाण्डप्ररोहिणः औषधयः फलपाकान्ता बहुपुष्पफलोपगाः ॥ अपुष्पाः फलवन्तो ये ते वनस्पतयः स्मृताः । पुष्पिणः फलिनश्चैव वृक्षास्तूभयाः स्मृताः ॥ गुच्छगुल्मं तु विविधं तथैव तृणजातयः । बीजकाण्डरुहाण्येव प्रताना वल्लय एव च ॥ मनु० १।४२,४६-४८

६. शरीरजैः कर्मदोषैर्याति स्थावरता नरः ॥ वही १२।९

क्या आर्य भारत में बाहर से आए थे ? (२)

—परीक्षित प्रेमी, साहित्यालंकार, अमरपुर, गोड्डा

भारत विराट् देश है। यहा का एक भी व्यक्ति मूलत विदेशी वंशोत्पन्न नही हैं। यहा न तो किसी विदेशी का उपनिवेश है और न भारत ने ही किसी बाहर के देश मे उपनिवेश स्थापित किया। सभी भारत के आदिम निवासियो (आर्य) के वंशधर हैं।" यदि आर्य बाहर से आये होते तो मेगस्थनीज ने कही इस बात की चर्चा की होती। इसके अतिरिक्त रामायण, पुराण, महाभारत तथा अन्य किसी भी प्राचीन ग्रंथो मे ऐसा उल्लेख कही नही मिलता है, कि आर्य अन्य देशो से आकर भारत मे आवासित हुए।

आर्यों का आदि जन्म स्थान एव निवास स्थान तथा मूल राज्य को आर्यावर्त कहत हैं। और आर्यावर्त विश्व सभ्यता का उद्गम है। आर्यावर्त की संस्कृति, धर्म एव दर्शन को प्रेरित एव प्रभावित किया है। इसका निर्माण देव, आर्य विद्वान एव श्रेष्ठजनो न मिलकर किया है। इसकी सीमा के सम्बन्ध है महर्षि मनु महाराज ने मनुस्मृति' मे स्पष्ट लिखा है —

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादा समुद्रात्तु पश्चिमात।
तयोरेवान्तर गिर्योरार्य्यावर्त विदुर्बुधा ॥

(मनु० अ० २, श्लोक २२)।

सरस्वती दृषद्वत्योर्देवन द्योर्यन्तरम्।
त देव निमित देशमार्यवर्त्त प्रचक्षते ॥

(मनु० अ० २ श्लोक १७)

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी आर्यावर्त की सीमा बाधी है, जो निम्नलिखित है—"आर्यावर्त देश इस भूमि का नाम इसलिए है कि इसमे आदि सृष्टि से आर्य लोग निवास करते हैं परन्तु इसकी सीमा अवधि उत्तर म हिमालय, दक्षिण मे विन्ध्याचल, पश्चिम मे और पूर्व मे ब्रह्मपुत्र नदी है। इन चारो के बीच जितना बडा भूभाग है, उसको आर्यावत कहत ह और जो इसमे वास करते रहे हैं उनको आर्य कहते हैं।"

(सत्यार्थप्रकाश स्वमतव्यामतव्य प्रकाश)

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ सुमन शर्मा ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "प्राचीन भारतीय राजवंश" मे लिखा है—"उत्तर मे हिमालय, दक्षिण म विन्ध्याचल, पूर्व और पश्चिम में समुद्र तथा सरस्वती नदी (कश्मीर मे) पश्चिम मे अटक नदी पूर्व मे दृषवती जो कि पूवभाग पहाड से निकलकर बगाल असम के पूर्व और बर्मा के पश्चिम की ओर होकर दक्षिण के समुद्र मे मिली है जिसको ब्रह्मपुत्र कहते हैं। हिमालय की मध्यरेखा से दक्षिण और पहाडो के भीतर रामेश्वर पर्यन्त विन्ध्याचल के भीतर जितने स्थान है उन सब को आर्यावत कहते हैं। (प्राचीन भारतीय राजवंश पृ० ५)

उपरिचर्चित आर्यावर्त की यह परिभाषा यथार्थ तथा पूर्णरूपण तर्क सम्मत है। इस परिभाषा ने गागर मे सागर भर दिया है। समय के उतार-चढावो के बावजूद इसका मौलिक स्वरूप सदा जीवन्त रहा है। हमारे प्राचीन महर्षियो ने आर्यावर्त की सीमा को अनुशासित, परिनिष्ठित एव रेखांकित कर इसकी अपरिवर्तन शीलता को प्रतिष्ठा दी है। इस प्रकार आर्यावर्त मे विदेशी लोग आकर शिक्षा ग्रहण करते थे। इस सम्बन्ध मे महर्षि मनु महाराज ने लिखा है—

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन।

स्व स्व चरित्र शिक्षरेण पृथिव्या सर्वमानवा ॥ (मनु० २।२०)

इससे स्पष्ट होता है कि अति प्राचीन काल मे आर्यावर्त देश हर क्षेत्र मे महान और सर्वसम्पन्न था और यह उदात्त गुणों से ओत-प्रोत और उदभाषित था। चीनीज परिव्राजक एव ग्रीक यात्री ने भी इसकी महिमा का गुण-गान किया है। प्राचीन और आर्वाचीन भारतीय साहित्य मे भी इसकी महिमा गायी गयी है।

आर्यों का आदि जन्मस्थान कहा था ? इस विषय मे प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानो मे गहरा मतभेद है। यदि आर्यों को विदेशी मान लिया जाए, तो उसका आदि देश कौन सा था ? तथा वे भारत में कब, कहा और किस मार्गसे प्रवेश किए ? वेद तथा वेदोत्तर वाङ्मय में इस सम्बन्ध में क्या प्रमाण है ? यदि आर्य भारत मे अन्य देशा से आये थे तो वेद तथा वेदोत्तर वाङ्मय मे उन स्थानो के नाम क्यो नही मिलते अथवा आर्य उन देशो की याद क्यो नही करते जहा से चलकर वे भारत आए थे ? क्योकि किसी जाति के मूल निवास स्थान का उस जाति की सस्कृति सभ्यता, धर्म, दर्शन पर गहरा प्रभाव पडता है। वदा म यह सकेत कही भी प्राप्त नही होता है कि आय विदेशी थे अथवा आय भारत मे बाहर से आए थे। ऋग्वेद (तथा वेदोत्तर ग्रन्था) मे वर्णित भौगोलिक स्थिति पूर्णत भारत की स्थिति से साम्य रखती है। वेदो मे वर्णित अन्न भी भारतीय अन्न है।"

(प्राचीन भारतीय समाज पृ० ७६)

पाश्चात्य विचारधारा के कुछ विद्वानो ने इन देशो को आर्यों का मूल देश माना है पी० गाइल्स ने कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया" मे 'हगरी' को आर्यों का मूल स्थान माना है, क्योकि यहा के प्राचीन निवासी ऐसे पशु-पक्षी एव आहार से परिचित थे, जो केवल सम-शीतोष्ण प्रदेश मे ही प्राप्य थे।" जर्मन विद्वान पेंका ने प्रमाणित किया है कि आर्यों का उद्गम स्थान जर्मनी का कुछ भाग एव स्कैण्डिनेविया देश था। पेंका ने यह मत, कुछ ध्वसावशेषो (पात्रो पर प्राप्त ज्यामितिक रेखाचित्र) एव भाषा साम्य के आधार पर प्रतिपादित किया है। मनीषी मैक्समूलर ने आर्यों का मूल निवास स्थान ईरान देश को सिद्ध किया है। इन्होने अपना मत प्रतिपादन करने के लिए अवेस्ता एव वैदिक भाषा साम्य का तर्क प्रस्तुत किया है। साथ ही उन्होने शिलालेखो (ईरान मे प्राप्त) पर उत्कीर्ण हिन्दू देवो के नामो को भी आधार माना है। एडवर्ड मेयर के अनुसार आर्य मूलत पामीर प्रदेश के निवासी थे। किन्तु पी० गाइल्स ने लिखा है कि पामीर एकदम उजड़ प्रदेश था और उस प्रदेश मे आर्यों द्वारा वर्णित वस्तुओ का अभाव मिलता है। ब्रेण्डेस्टोन ने पशु साम्य के आधार पर प्रमाणित किया है कि आर्य मूलत किरगीज स्तेपी (रूस) के वासी थे। महान भारतीय चितक स्व० प० लोकमान्य बालगगाधर तिलक ने आर्कटिक होम इन द वेदाज' में प्रमाणित किया है कि आर्यों का मूल गृह आर्कटिक प्रदेश था। इस धारणा के मूल मे यह तथ्य निहित है कि आर्यों का लम्बे रात दिनो का ज्ञान था और केवल आर्कटिक प्रदेश मे ही लम्बी रात और दिन होत हैं। तिलक ने आर्यों के पलायन का कारण तुषार-पात माना है और पाश्चात्य विद्वान पोकार्नो एवं नेहरिंग ने प्राप्त ताम्र पत्र (३००० वर्ष ईसा पूर्व) के आधार पर रूस के स्तेपी मैदान को आर्यों का आदि देश माना है, परन्तु पी० गाइल्स के मतानुसार आर्य साहित्य मे वर्णित वस्तुओं का इस प्रदेश में अभाव था। अत यहे

तर्क बेबुनियाद सिद्ध होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि आर्यों के मूल स्थान के सम्बन्ध में इन विद्वानों में भी मतैक्य नहीं है।

भारतीय विचारधारा के प्रतिपादक इतिहासकारों तथा प्रजातीय विज्ञान के पैरोकारों ने भारतीय विचारधारा के अनुसार भारत को ही आर्यों के मूल गृह जन्मस्थान माना है। इस विचारधारा के प्रतिपादकों में डी०एस०बी० त्रिवेदी एस० डी० कल्ला डा० अविनाश चन्द्र दास, महामहोपाध्याय सर गंगानाथ झा, डी० एस० त्रिपाठी तथा माननीय सम्पूर्णानन्द प्रभृति विद्वानों का नाम उल्लेखनीय है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि आर्य भारत के मूल निवासी हैं। पाश्चात्य विद्वान एलफिन्सटन ने History of India में कहा है कि आर्य भारत के आदिम निवासी हैं। इन्होंने यह भी लिखा कि मैगस्थनीज ने यह कहीं भी उल्लेख नहीं किया है कि आर्य विदेशी थे। यदि आर्य बाहर से आए होते तो वे अवश्य कहीं न कहीं इसका उल्लेख किया होता। बौद्ध साहित्य भी इस सम्बन्ध में चुप है। पुनः पाश्चात्य मनीषी म्यूर ने लिखा है कि किसी भी प्राचीन ग्रन्थ में ऐसा उल्लेख नहीं मिलता है कि आर्य बाहर से आकर भारत में बसे। (Muirs's Sontkrit Text Book Vol II P 323)

आर्यों को भारती भी कहते हैं— भारती यत्र संतति"। (विष्णु पुराण २-३-१) श्री पंडित मोहन लाल महतो 'वियोगी ने आर्य जीवन दर्शन' ग्रन्थ में लिखा है कि आर्य विदेशी नहीं है। यह वैदिक देवभाषा धातु प्रत्यय से (ऋ+ण्यत्) निष्पन्न शब्द है जिसका अर्थ धार्मिक, श्रेष्ठ कुलोत्पन्न, पूज्य श्रेष्ठ, उदारचरित आदि—"सदाचारेणैव नराणामार्यत्वम्' है। (आर्य जीवन दर्शन पृ० ६) गुजरात के श्रीयुत नाना पावगी ने Aryavartic Home द्वारा 'आर्यावर्त' को ही आर्यों का आदि भूमि सिद्ध किया है।

"इन्स्टीटयूट फार द री राइटिंग इण्डियन हिस्ट्री' के अध्यक्ष श्री पी० एन० ओक ने प्रमाणित किया है कि आर्य मूलत भारतीय थे तथा वे बाहर से नहीं आए थे। (पी० एन० ओक—सम ब्लन्डर्स आव इण्डियन हिस्टारिकल रिसर्च)। अक्षर विज्ञान के सम्पादक स्व० रघुनन्दन शर्मा ने भी लिखा है—

आर्यों ने अपने इतिहास में कहीं नहीं लिखा है कि वे कहीं बाहर से आए। (वैदिक स० ३४१)। सुमन शर्मा ने लिखा है—आर्यों का साम्राज्य शाकद्वीप (वर्तमान ईरान पर्शिया) तक था। भारतीय साहित्य में आर्यों के विदेशगमन और विदेशगमन से पुनरागमन की चर्चा है। प्राचीन इतिहास से पता चलता है कि भारतीय आर्य वैदिक शिक्षा देने के लिए विदेशों में जाया करते थे। महर्षि पुलस्त्य धर्म प्रचार करने के लिए आस्ट्रिलिया गए और महर्षि वेदव्यास अमेरिका और बलख को गए।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आर्य लोग भारत के मूल निवासी हैं आर्यों का आदि जन्मस्थान भारत ही है। आदिकाल से लेकर आज तक संसार में इस प्रकार का कोई प्राचीन अथवा अर्वाचीन इतिहास उपलब्ध नहीं है जिसमें लिखा हो कि आर्य लोग भारत में कहीं बाहर से आए। इसके विपरीत प्राचीनतम इतिहास में वर्णन है कि फारस अरब, मेसोपोटामिया, जुडिया, बेबिलोन, काल्डिया और फिनीशिया में आर्य ही निवास कर रहे हैं। आर्यों को विदेशी सिद्ध करने वाले पाश्चात्य विद्वानों का विचार आनुमानिक ज्ञान पर आधारित है। यदि पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार आर्य लोग विदेशी थे तो अनार्यों की भाषा में आर्यवर्त और भारतवर्ष का दूसरा नाम क्या था? इस प्रश्न का उत्तर देने में पाश्चात्य विद्वान बिल्कुल अक्षम हैं। अब यह सर्वतोभावेन सिद्ध हो जाता है कि वास्तव में आर्य ही यहां के मूल निवासी हैं जिनकी हम सभी संतान हैं। वे यहीं से आस्ट्रेलिया अमेरिका सीरिया मिस्र ग्रीस, चीन मिस्र पेलिस्टाइन, मलय सुमात्रा और अन्य द्विपपुञ्जों में जाकर वैदिक संस्कृति, धर्म दर्शन का प्रचार प्रसार करते रहे। विश्व में इनका अवशेष भी पर्याप्त मात्रा में मिलता है। वेद में कहा गया है—'अहं भूमिमददामार्याय' (श्रुति) आर्यों ने अपने सम्पूर्ण उदात्त गुणों से उदभावित कर अपनी भावनात्मक श्रद्धा के आधार पर इस पवित्र भूभाग का 'आर्यावर्त' नाम दिया। यही कारण है कि वेदकाल से लेकर आजतक अनेकानेक प्रचण्ड घात प्रतिघात के बावजूद जीवित बने रहकर वे सभी अपनी विराट आन्तरिक शक्ति का प्रमाण प्रस्तुत करते रहे हैं, जिसका अपना अक्षुण्ण महत्व है।

नमन तुम्हें है मेरा

राम! धन्य हो तुमने फूंकी, सारी दानव वृत्ति भगाई।
धरती के कण कण में तुमने! अभिनव जागृत ज्योति जगाई॥
तुमने दिया, अवनि अम्बर को नूतन शुभ्र सवेरा।
नमन् तुम्हें है मेरा॥

विप्र धेनु सुर सन्तों को दे करके निर्भयता अनुदान।
मानवता की रक्षा करके बने अप्रतिम तथा महान॥
तोड़ दिया तुमने महिमण्डल, पर दानवता का दृढ़ घेरा।
नमन तुम्हें है मेरा॥

सत्य धर्म की ध्वजा धरा पर तुमने लहराया मर्यादित।
मिटा दिया सारी धरती का अनाचार अन्याय असित॥
उत्तम उच्चाचरण तुम्हें देख, भगा अज्ञान अंधेरा।
नमन् तुम्हें है मेरा॥

—राधेश्याम आर्य

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज अमरोहा वीरेन्द्र कुमार आर्य प्रधान, रामानन्द जी मन्त्री, धर्मेन्द्र कुमार कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज वार्ड १७ गोविन्द नगर कानपुर रामकृष्ण आर्य प्रधान, श्याम प्रकाश मन्त्री, अरुण कुमार कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज काचरापाडा पन्नालालसिंह प्रधान, चन्द्रदेवसिंह आर्य मन्त्री, उपेन्द्रनाथ कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज ३४२ गोरखपुर जबलपुर प्रफुल डाबर प्रधान, डा० केशव प्रसाद मन्त्री, रमेश कुमार कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज उदयपुर जयसिंह जी मेहता प्रधान, हरिनारायण शर्मा मन्त्री, पन्नालाल जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज मन्दिर मस्जिद मोठ फकीरचन्द प्रधान, सत्यपाल सैनी मन्त्री, प्यारेसिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज चिरनी पोखर मुजफ्फरपुर पन्नालाल प्रधान, ओमप्रकाश मन्त्री, हरिहर प्रसाद साहु कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज ठिंगरी पुष्पादेवी प्रधान, सुनील कुमार मन्त्री, योगेन्द्रपाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज लल्लापुरा बनारस कमलाकान्त जी प्रधान, रामगोपाल आर्य मन्त्री, बुद्धदेव कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सत्संग भूपालपुर धर्मचन्द तम्बर प्रधान, मूलाराम मन्त्री, बी० यादव कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज लगौल पटना रामलखन प्रसाद प्रधान, केश्वर आर्य मन्त्री, भोला प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य कुमार सभा किंग्जवे कैम्प दिल्ली गुलशन मलिक प्रधान, गिरीचन्द्र मन्त्री, देवेन्द्र गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य पुरा वेद प्रचार मण्डल कठुआ स्वतन्त्र रानी प्रधान, हर्षकुमार मन्त्री, सुभाषसिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज ब्रह्मपुरी घोंडा दिल्ली कल्याणदास प्रधान, किशन आर्य मन्त्री पालाराम आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज बीकानेर सच्चिदानन्द एडवोकेट प्रधान, सोहनलाल आसेरी मन्त्री, उदयशंकर व्यास कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज नया बाजार लश्कर भारत भूषण त्यागी प्रधान, मदनमुरारी मन्त्री, अभिमन्यु कुमार भुल्लर कोषाध्यक्ष चुन गए।

आर्य समाज मन्दिर मसूदा अजमेर जवाहरलाल दवल प्रधान, मूलचन्द मन्त्री, किरणराव कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज लोहरदगा सुरजन ठाकुर प्रधान, नवलकिशोर मन्त्री, रामकिशन जयसवाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज खडकवासला दीवानचन्द प्रधान, शान्तिप्रकाश मन्त्री, मनीराम कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज हावडा केशवदेव जी निगम प्रधान, पुरुषोत्तमलाल सराफ मन्त्री, आनन्द कुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सरस्वती विहार दिल्ली कुंवर दयानन्द वर्मा, प्रधान, श्यामलाल मन्त्री, कृष्णदेव कोषाध्यक्ष चुने गए।

महर्षि दयानन्द गुरुकुल कृष्णपुर फर्रुखाबाद ब्र० मनुदेव आर्य प्रधान, विजयपाल आर्य मन्त्री, अशोक कुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज शाहपुर रामस्वरूप वेदी प्रधान, अम्बालाल आर्य मन्त्री, सत्यनारायण कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज पानीपत बाबूराम मित्तल प्रधान, राममोहनराय एडवोकेट म राजकुमार लोहिया ने कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला अलवर विद्यासागर शास्त्री प्रधान, महात्मा जगदीश आर्य मन्त्री, हवेन्द्रदेव आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज हैदरनगर पलामू बिहार गिरजाप्रसाद वैसवार प्रधान, जमनाप्रसाद आर्य मन्त्री, प्रदीपकुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज बरकौवा शिवकुमार जी प्रधान, शिवनन्दन आर्य मन्त्री, यदुनन्दन कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्योपप्रतिनिधि सभा वाराणसी अवधबिहारी खन्ना प्रधान, दीपनारायण मन्त्री, सत्यप्रकाश कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज किरल गार्डन दिल्ली चौधरी अमरजीत प्रधान, सतीशकुमार मन्त्री, जसवन्त महाजन कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज मधुपुर बिहार तारकेश्वर कुंवर प्रधान नसीबलाल मन्त्री, चन्द्रप्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज आदर्शनगर जयपुर ज्ञानेन्द्र आर्य प्रधान, बाबूलाल शर्मा मन्त्री, बलदेवराज आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य वीर दल गुरुकुल करतारपुर राजेश कुमार शास्त्री प्रधान, देशबन्धु शास्त्री मन्त्री, राजेश कुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

उपप्रतिनिधि सभा फरुर्खाबाद आचार्य चन्द्रदेव प्रधान प० विद्यासागर आर्य मन्त्री, लालताप्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज सासनी अलीगढ राजेन्द्र कुमार प्रधान, जयनारायण मन्त्री, शिवलाल गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गये।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर जगदीश प्रसाद प्रधान, आचार्य धर्मेन्द्र शास्त्री मन्त्री, महेन्द्रपालसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज अर्बन स्टेट सैक्टर ७ गुडगावा रामदास सेवक प्रधान, सोमदत्त आर्य मन्त्री, वासदेव कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज नया बास दिल्ली ओमप्रकाश जी प्रधान; धर्मपालजी मन्त्री, राजेन्द्रनाथ कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज बागपत जि० मेरठ (उ० प्र०) मा० ब्रह्मदेव त्यागी प्रधान, मा० सत्यप्रकाश गौड मन्त्री, राजपालसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज तिलक नगर दिल्ली वीरभान जी वीर प्रधान, अरुणकुमार समरवाल मन्त्री, हरदेव ग्रोवर कोषाध्यक्ष चुने गये।

स्वामी दयानन्द और १८५७

–डा० भवानीलाल भारतीय–

१४ अगस्त के सार्वदेशिक में पिलानी के श्री यादराम आर्य का एक लेख "१८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द ने भाग लिया था।" शीर्षक छपा है। इसमें उन्होंने महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने लेख के आधार जो बातें प्रस्तुत की हैं मैं उन्हें बिन्दुसार लिख रहा हूँ। पाठक इसे पढ़कर स्वयं निष्कर्ष निकाल लें क्योंकि राहुल जी के इन कथनों से लेख के शीर्षक की पुष्टि होती है या नहीं। राहुल जी का कथन निम्न प्रकार है—

१. स्वामी दयानन्द का जन्म १८२४ में हुआ।
२. गदर के समय वे पूर्ण युवा थे।
३. नाना साहब से उनकी भेंट बिठूर मे हुई थी।
४. नाना साहब के महल के समीप एक गुरुकुल था।
५. उस गुरुकुल में नाना साहब, तांत्या टोपे तथा रानी लक्ष्मीबाई आदि विद्यार्थी रूप में रह रहे थे।
६. पेशवा बाजीराव अंग्रेजों से अपना खोया राज्य वापस लेना चाहते थे।
७. ऋषि दयानन्द को पेशवा का यह प्रयास अच्छा लगा था।
८. स्वामी दयानन्द ने भी भारत को विदेशी सत्ता से मुक्त कराने की प्रतिज्ञा की थी।
९. स्वामी जी ने १८५७ के विद्रोह को विफल होते हुए देखा।
१०. उन्होंने यह भी देखा कि १८५७ में किये गये हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रयासों को दिल्ली के मुल्लाओं ने किस प्रकार विफल कर दिया है।
११. ऋषि दयानन्द सच्चाई से मुंह मोड़ने वाले नही थे।
१२. उनकी धारणा बनी कि नाना सम्प्रदायों मे विभक्त, विभिन्न पूजापद्धतियों को स्वीकार करने वाला हिन्दू समाज सदा पददलित ही रहेगा।
१३. उन्होंने समस्त भारतवासियो को एक सूत्र में करने के लिए एक ईश्वर, एक शास्त्र वेद तथा आर्य जाति का नारा दिया।
१४. इसी हेतु उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की।
१५. स्वामी दयानन्द के तर्कों के समक्ष मुल्ला-मौलवी, पण्डित और पादरी सभी मौन हो गये।

राहुल जी के लेख का यही सारांश है जो उपर्युक्त १५ बिन्दुओं मे श्रेणी बद्ध किया गया है। अब पाठक स्वयं सोचें कि इसमे क्या स्वामी जी १८५७ के काण्ड में लिप्त होने की कोई ध्वनि निकलती है। श्री यादराम ने तो इससे यही निष्कर्ष निकाला है कि स्वामी जी ने १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम मे अवश्य भाग लिया था। किन्तु उक्त १५ बिन्दुओं से तो इस कथन की पुष्टि नही होती। तथापि श्री यादराम के हम आभारी है क्योंकि उन्होंने आर्य विद्वत् मण्डल से आलोच्य विषय पर आगे सोचने के लिये कहा है। यहां मैं श्री आर्य से यह निवेदन कर दूं कि स्वामी दयानन्द की कलकत्ता में तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड नार्थब्रुक से तथाकथित भेंट अभी इतिहास से पुष्ट नहीं हो पाई है। अम्बाला के स्वामी अलखधारी द्वारा फैलाया यह प्रवाद यद्यपि लोगों की जबान और वाणी पर तो चढ़ गया है किन्तु उसकी सत्यता का अनुसंधान करने का साहस किसी माई के लाल ने अभी तक नही दिखाया है। हम उस दिन की प्रतीक्षा में हैं जब कि आर्यसमाज के इतिसकार उक्त घटना की पुष्टि भारतीय गवर्नर जनरलों के पुराने अभिलेखों तथा दिल्ली एवं लंदन स्थित पुरातत्वक सामग्री के आधार पर करेंगे। मेरा अपना इन समस्याओं पर कोई पूर्वाग्रहपूर्ण दृष्टिकोण नहीं है। प्रमाणाधारित और प्रमाणपुष्ट तथ्यों को स्वीकार करने में कोई संकोच होना भी नहीं चाहिए।

यज्ञ, वर्षा और विज्ञान

विज्ञान के आविर्भाव के पहले यज्ञों का वर्षा से पुराना सम्बन्ध था। आज सवाल दो है। क्या यज्ञ से खुश होकर इन्द्र और वरुण जैसे देवता धरती पर बरसने के लिए बादल भेज देते है? क्या यज्ञ में डाली जाने वाली गुग्गुल, चन्दन जैसी सामग्री वातावरण में घुलकर बरसने लायक बादलों का निर्माण कर सकती है? यदि बिना प्रमाण आप 'हा' कहें तो जाहिर है कि आप अन्धविश्वासी हैं। लेकिन यदि विश्वास को प्रमाण का जामा पहनाने का प्रयास हो तो ठीक इसी इरादे से भारत के विज्ञान और तकनीकी विभाग ने मथुरा में एक यज्ञ का विधिवत् प्रयोग करने का फैसला किया था ताकि जाना जा सके कि क्या वाकई यज्ञ मे आहूत सामग्री के कारण पर्यावरण में बादलों के निर्माण की प्रक्रिया शुरु होती है।

विज्ञान और तकनीकी विभाग ने अपने विरोधियों को यह कहकर समझाना चाहा है कि हमारा दिमाग खुला है। हम उस मसले की समूची छानबीन करना चाहते हैं, जो छानबीन की पात्रता रखता है। देश के कुछ बड़े वैज्ञानिकों ने इस फैसले का अनुमोदन किया है जाहिर है कि बिना पड़ताल के किसी वैज्ञानिक कहे जाने वाले दावे को नकारना भी एक उल्टा अन्धविश्वास होगा। प्रस्तावित यज्ञ के लिए सरकार धार्मिक संयोजकों को दस हजार रुपए दिया था और कह रही है कि इस अंशदान को यज्ञ का समर्थन मानने के बजाय परीक्षा हेतु विभाग का योगदान ही मानना चाहिए। याज्ञिकों का दावा है कि आहुति के रूप मे गुग्गुल, चन्दन की लकड़ी आदि जो भी सामग्री डालते है, वह अन्तरिक्ष में जाकर अपने गुणों का दस या बाह गुना प्रभाव पैदा करती है जिससे बरसने लायक या बारह गुना प्रभाव पैदा करती है जिससे बरसने लायक बादल बनते हैं। हो सकता है यह गलत हो, पर सन्देह के निराकरण या विश्वास की पुष्टि के लिए वैज्ञानिक परीक्षण के अलावा और क्या रास्ता है? यदि कोई योगी कहे कि वह पानी पर चल सकता है तो हम सिवाय इसके और क्या कर सकते हैं कि चलकर दिखाओ। आज तक तो कोई यह काम कर नहीं पायाहै।

यज्ञ ही क्यों, यज्ञों में उच्चरित मन्त्रों के बारे में भी कई तरह के दावे किए जाते हैं। क्या विज्ञान और तकनीकी विभाग हर दावों के वैज्ञानिक परीक्षण का तरीका ढूंढेगा? एक सवाल और है। एक हजार वैज्ञानिक प्रयोगों के बाद भी यज्ञ में विश्वास करने वाले क्या अपने विश्वास को त्यागने के लिए तैयार होगे? जाहिर है, वे नहीं होंगे। विज्ञान और उसकी प्रयोग विधियों का अपर्याप्त बतायेंगे। चित और पट दोनों को अपनी जीत का चिह्न मानने वाले यज्ञ—भक्तों के लिए विज्ञान का कोई अर्थ ही नहीं है। वर्षा नही हुई, तो वे कहेंगे कि यज्ञ से पर्यावरण में शुद्धि तो होती ही हैं। आप पुनः परीक्षा कीजिए और पुनः आपके निष्कर्षों को गलत बता देंगे। ऐसा रोतला खेल विज्ञान में नही चल सकता।

—नवभारत टाइम्स बम्बई ५-५-८८

संस्कृत पर संकट

(पृष्ठ ४ का शेष)

विवश हो ही जायेंगे, उन अच्छे और विवेकशील स्वतन्त्र विद्यालयो पर भी असर पडेगा जो बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। बोर्ड यह कहकर कि तुमने 'आर्डर' का पालन नहीं किया, उनकी मान्यता खत्म कर सकता है। यह जग जाहिर है कि पश्चिमी विद्वानो, वैज्ञानिकों और साहित्यकारों ने संस्कृत-ज्ञान से बहुत लाभ उठाया है और उन्नति की है। गेटे, शोपेन हावर, शिलर, इलियट, एमर्सन जैसे वैज्ञानिक संस्कृत के विद्वान रहे हैं। आज अमेरिका के वैज्ञानिक संस्थानो मे लाखों की संख्या में भारतीय वैज्ञानिक काम कर रहे हैं और ऊचे पदो पर हैं। भारत में इनके साथ अन्याय हुआ, इन्हें इनकी योग्यता के अनुसार काम नही मिला, जीवन-आवास की सुविधाए नही मिली, इसीलिये ये देश छोडकर चले गये। ११ अक्तूबर ८८ को बगलूर मे अन्तरिक्ष वैज्ञानिक सम्मेलन मे (अन्तराष्ट्रीय एस्ट्रोनौटिकल फेडरेशन) इटली के प्रोफेसर राबेतो पिनोती ने अपने शोधपत्र मे कहा कि महाभारत और रामायण मे वर्णित विमान कल्पना की उडाने नही है। उन्होंने संस्कृत ग्रन्थ 'वैमानिक शास्त्र' से बीसियो उद्धरण देते हुए बताया कि इस शास्त्र मे जो तकनीकी जानकारी दी गई है वह आज कल की वैमानिक उडानो की तकनीक के ही समान है और उससे सम्बन्धित हैं। उन्होने कहा कि प्राचीन ग्रन्थो मे जिन चालक-युक्त आकाशयानो पर चढ़कर देवता तथा अन्य योद्धा-गण युद्ध करते थे वे आजकल के जेट विमानो की पद्धति पर चलते थे।

वैमानिक शास्त्र में अनेक वर्णन इतने विस्तृत हैं और तकनीकि जानकारी से इतने पूर्ण है कि उन्हे मात्र मिथ्या कल्पना कहकर छोड देना हमारी आज की सभ्यता के लिए घातक हो सकता है। प्राचीन विमानो को चलाने की ३२ कु जिया थी जिनमे से कुछ की तुलना आधुनिक राडार, सौर्य ऊर्जा और फोटो पद्धति से की जा सकती है। इन विमानो को विशेष सोमक, शोण्डलिक और मौत्विंक धातुओं से बनाया जाता था जो सूर्य की गरमी को अपने भीतर निरुद्ध रख सकती थी। डा० पिनोत्ती ने बताया कि संस्कृत के एक अन्य प्राचीन, ग्रथ 'समरागण सूत्रधार' मे २३० श्लोक हैं जिनमे विमान सरचना के सिद्धात स्पष्ट किये गए हैं और युद्ध और शाति के समय उनके प्रयोग की विधिया बताई गई हैं। ये विमान 'नक्षत्र मडल' और 'सूर्य मडल' तक की यात्रा कर सकते थे। वैमानिक शास्त्र के अनुसार डा० पिनोत्ती ने 'त्रिपुर' और 'शकुन' विमानों के निर्माण का वैज्ञानिक विवरण दिया और कहा कि ये विमान हमे आधुनिक राकेट और अन्तरिक्ष शटलो की याद दिलाते हैं। उन्होने अपने शोध पत्र को समाप्त करते हुए कहा कि भारतीय वैज्ञानिको को इस दिशा मे आगे खोज करनी चाहिए क्योकि इसके परिणाम स्वरूप हम एक अत्यन्त प्राचीन ऐसी सभ्यता को जान सकते हैं जो आज की तुलना मे कही अधिक विकसित थी। प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक डा० जार्ज सुदर्शन भी इसी दिशा मे खोज कर रहे हैं उन्होने वेद और आधुनिक भौतिक विज्ञान को अपने अनुसधान का विषय बनाया है।

आज भारत को यदि नकल करनी ही है, तो पश्चिम के इन पश्चिमी विद्वानो का अनुकरण करे और कम से कम इस बहुमूल्य धरोहर को नष्ट या विलुप्त होने से बचा लें जिसके बल पर यह सब जानकारी मिल सकती है और हमारा सिर आज भी सभ्य देशों मे ऊचा रह सकता है। गीता मे कहा गया है 'आत्मानम् आत्मना उद्धरेत्। न एन अवसादयेत' अपनी आत्मा को आत्मा के ही बल से उद्धार करो, इसे निर्जीव न होने दो। उपनिषद ने कहा 'नायमात्मा बलहीनेन लभ्य.' बल और पुरुषार्थ विहीनो को इस आत्मा का लाभ नही मिलता। संस्कृत भाषा हमारी आत्मा है इसे खोकर हम मात्र चलती फिरती काठ की गुडिया हो जायेंगे।

(दैनिक हिन्दुस्तान २५ १०-८८ से साभार)

भूल सुधार

सार्वदेशिक साप्ताहिक" के अङ्क ४१ दिनाक ९ अक्तूबर १९८८ के अङ्क म पेज संख्या ११ पर विहार भूकम्प राहत कोष की दान सूची मे ५५व नम्बर पर, मन्त्री जी, पथ्रोट के नाम भूल से २१ रुपये छप गया है इन्होने २५१ रुपये की राशि भेजी थी कृपया इसे सुधार कर पढे। असुविधा के लिये खेद है। —सम्पादक

ऋषि निर्वाणोत्सव

१ नवम्बर ८८, बुधवार प्रात. ८ से १२ तक रामलीला मैदान में होगा।

अध्यक्ष—प्रो० शेरसिंह कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी होंगे।

वक्ता हैं—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम्, आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन', डा० वेदप्रताप 'वैदिक', डा० रमाकान्त गोस्वामी, प्रो० रत्नसिंह, श्रीमती सभा शास्त्री।

इस श्रद्धाञ्जलि सभा में आप सब सपरिवार एव इष्टमित्रो सहित सादर आमन्त्रित हैं।

महाशय धर्मपाल — प्रधान
डा० शिवकुमार शास्त्री — महामन्त्री

आर्य युवा सम्मेलन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान मे प्रान्तीय आर्य युवा महासम्मेलन रविवार २० नवम्बर १९८८, दोपहर २ से ५ बजे तक।

स्थान—आर्य समाज [अनारकली] मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे होगा।

अजमेर में वेद गोष्ठी

अन्तराष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ के तत्वावधान मे चतुर्थ वेद गोष्ठी का आयोजन अजमेर मे १२ नवम्बर को किया जा रहा है। परोपकारिणी सभा के ऋषि मेले के अवसर पर यह सगोष्ठी ऋषि उद्यान मे दिन में होगी। "महर्षि दयानन्द और उनकी भाष्यशैली इस सगोष्ठी का विषय रखा गया है, इसके सयोजक प्रो० धर्मवीर है। राजस्थान के उच्च कोटि के विद्वानो को तो इसमे आमन्त्रित किया ही गया है साथ ही भारतवर्ष के अन्य स्थानो से भी विद्वानो के इसमे भाग लेने की सम्भावना है, इससे पूर्व तीन वेद गोष्ठिया क्रमश दिल्ली, बम्बई और चण्डीगढ मे आयोजित की गई थी जो कि काफी सफल रही।

प्रो० शेरसिंह, प्रधान — सत्यानन्द आर्य, मन्त्री

सत्यार्थप्रकाश गोष्ठी

सत्यार्थप्रकाश के कतिपय विवेच्य एव शकास्पद स्थानो पर विचार करने हेतु १५ नवम्बर १९८८, मगलवार को श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली मे प्रात ९ से साय ७ बजे तक होगी।

डा० शिवकुमार शास्त्री

आर्य वीर सैनिक प्रदर्शन में भाग लें

आर्य समाज रोहताश नगर (शिवाजी पार्क) यमुना पार के वार्षिकोत्सव में आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में आर्य वीर दल के सैनिक सेवा कार्य करेंगे और दिनाक ५-११-८८ को प्रात अपना प्रदर्शन करेंगे।

जन साधारण को इस प्रदर्शन में भाग लेने के लिये आमन्त्रित किया जाता है।

मण्डलपति — हरिसिंह आर्य
रूपचन्द नागर — व्यायाम शिक्षक

बिहार के बाढ़ पीड़ितों के लिए दान की सूची

आर्य वीर दल कनावनी-फर्रुखाबाद द्वारा

		रुपये	कपड़े
१	श्री रूपचन्द नागर जी	१५१)	२०
२	श्री नौबतसिंह प्रधान जी	१०१)	—
३	श्री श्रीचन्द जी	५१)	११
४	श्री गुरदयाल प्रधान	५१)	—
५	श्री चतरसिंह	५१)	३०
६	श्री अगतसिंह	३१)	१०
७	श्री खजानसिंह	२५)	—
८	श्री चरनसिंह	२१)	१५
९	श्री गोविन्दसिंह	२२)	७
१०	श्री चन्द्रपाल	२१)	१४
११	श्री कुलीराम	२१)	६
१२.	श्री हुस्नसिंह	२०)	२
१३	श्री दीपचन्द	१५)	१०
१४	श्री बाबूलाल	११)	९
१५,	श्री लीलेसिंह	११)	६
१६	श्री धर्मी	११)	५
१७	श्री झूमसिंह	११)	५
१७	श्री रामजीलाल	११)	६
१९	श्री चन्दी महेन्द्र	११)	४
२०	श्री तुलसी हारे	१३)	१०
२१	श्री देवीसिंह	११)	—
२२	श्री विशम्बरसिंह	११)	९
२३	श्री त्रिलोकचन्द्र	११)	—
२४	श्री रामचरण	११)	५
२५	श्री दयाराम	११)	—
१६	श्री रतनपाल नन्नू	११)	—
२७	श्री जबरसिंह	११)	८
२८	श्री जसवन्तसिंह	११)	८
२९	श्री वोदेराम	११)	३
३०	श्री श्यामलाल भावता	११)	—
३१	श्री रूमालसिंह	१०)	६
३१	श्री उदयराम	१०)	८
३३	श्री भीमसिंह	१०)	७
३४	श्री प्रसादीराम	१०)	१५
३५	श्री भगवतसिंह	१०)	—
३६	श्री भूलेराम	१०)	७
३७	श्री झन्डवासिंह	१०)	५
३८	श्री प्रेमसिंह	१०)	[illegible]
३९	श्री रायसिंह	१०)	—
४०	श्री सतु	५)	—
४१	श्री धर्मी कन्नी	५)	६
४२	श्री ईश्वर	५)	—
४३	श्री धर्मवीर	५)	—
४४	श्री मव सिंह	५)	—
४५	श्री जगमाल	५)	४
४६	श्री ब्रह्मानन्द	५)	१
४७	श्री भूपसिंह	५)	६
४८	श्री जगन्न	५)	२
४९	श्री खेमचन्द	५)	४
५०	श्री सतीश कुमार	५)	४
५१	श्री कमलेश	५)	१
५२	श्री हेतराम	५)	४
५३	श्री [illegible]सालसिंह	४)५०	—
५४	श्री सूरजसिंह	५)	५
५५	डा० शिवानी वाले	४)	—
५६	श्री फत्तूनसिंह	२)	—
५७	श्री भूलसिंह	२)	२
५८	श्री भगवानसिंह	२)	—
५९	श्री अर्जुनसिंह	२)	—
६०	श्री खेमराज	२१)	६
६१	श्री रतनसिंह	११)	६
६२	श्री म वरसिंह	१०)	—
६३	श्री स्व० मानसिंह	—	३
६४	श्री राजवीर	—	७
६४.	श्री रामचन्द	—	३
६६	श्री लाला	—	२
६७	श्री दय मलाल	—	४
६८	श्री मुर्नस	—	१

—रूपचन्द नागर
मण्डलपति—यमुनोहीडन
मध्य क्षेत्र

उत्सव

—आर्य समाज मीरजापुर नगर का वार्षिकोत्सव इस वर्ष १८,१९,२० नवम्बर ८८ (शुक्र० शनि० रवि०) को आर्य समाज, मन्दिर मे मनाया जा रहा है।

—मन्त्री

—आर्य समाज तिगाव, फरीदाबाद के निकटवर्ती ग्राम तिगाव का वार्षिकोत्सव दिनाक १९ व २० नवम्बर १९८८ को महर्षि दयानन्द विद्या मन्दिर के परिसर मे बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है।

—राजेन्द्र प्रसाद

—आर्य समाज आबूरोड एव श्री वैदिक कन्या सीनीयर डायर सैकण्डरी विद्यालय आबूरोड का वार्षिक उत्सव दिनाक २६ नवम्बर ८८ से २८ नवम्बर ८८ तक मनाया जा रहा है। इस समारोह का उद्घाटन राजस्थान के महामहिम राज्यपाल माननीय श्री सुखदेव प्रसाद जी दिनाक २६ नवम्बर ८८ को प्रात ९ बजे करगे इसी दिन मध्याह्न के २ बजे से ४ बजे तक आर्य समाज के कार्यकर्ताओ का सम्मेलन होगा जिसमे राजस्थान प्रात के अधिक से अधिक कार्यकर्ता पधारेगे।

प्रधान आर्य समाज आबूरोड

असम आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन

असम आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक निर्वाचन २ १० ८८ को आर्य-समाज मन्दिर गुहाटी मे सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्न लिखित पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान श्री नारायणदास जी, उपप्रधान श्री पवन मित्तल जी
महामन्त्री श्री अरुण आर्य जी मन्त्री श्री अशोक आर्य जी
मन्त्री श्री जगदीशसिंह जी कोषाध्यक्ष हसराज आर्य

नोट —इसके अतिरिक्त १० सदस्यो की कार्यकारिणी समिति बनायी गयी।

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज मगरूर निरजनदास गुप्ता प्रधान, राजेन्द्रप्रसाद म० शिवराम जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज सैक्टर २२ए चण्डीगढ़ डा० इन्द्रराज शर्मा प्रधान प्रेम मनचन्दा मन्त्री, वेदप्रकाश महाजन कोषाध्यक्ष चुन गये।

आर्य समाज पुरैना गुसाईं मुकुन्द मणि मिश्र प्रधान केशवप्रसाद म० सुरेश प्रसाद कोषाध्यक्ष चुन गये।

आर्य समाज गया बिहार श्रीमती शान्तिदेवी प्रधान, जगदम्बा० मुन्शीप्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज जीन्द सुरेन्द्रसिंह एडवोकेट प्रधान, तेलूराम मन्त्री, बलवन्तराय कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज नरकटिया गज सुरशचन्द आर्य प्रधान वशिष्ठ प्रसाद आर्य मन्त्री, ललिता प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज नजीबाबाद चन्द्रप्रकाश आर्य प्रधान सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल मन्त्री, विजय कुमार बन्सल कोषाध्यक्ष चुने गय।

आर्य कन्या कालेज नजीबाबाद रामकुमार अग्रवाल प्रधान मनेजर शान्तिकुमार मन्त्री, विजय कुमार बन्सल चुने गये।

आर्य समाज बालोतरा रामलाल आय प्रधान, ब्रजमनोहर पिथानी मन्त्री भगवानदास कोषाध्यक्ष चौहान चुने गय।

आर्य समाज पालीडीहि जि० रायगढ़ (म० प्र०) धनेश्वर आर्य प्रधान, पीताम्बर मन्त्री, रामशकर कोषाध्यक्ष चुने गये।

सीताराम जी प्रधान, गये। ज्ञानकर शिक्षाध्यक्ष मन्त्री चैनसिंह

राजीव गार्डन जन कल्याण नियां प्रधान, अतरसिंह सैन मन्त्री, धर्मवीरसिंह कोषाध्यक्ष चुने गय।

आर्य समाज नैनीताल सेवाराम प्रधान, केदारसिंह मन्त्री धनीराम कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज आसनसोल भुवनाथ प्रसाद प्रधान, रामसागरसिंह मन्त्री, विजय कुमार खेतान कोषाध्यक्ष चुन गय।

आर्योपप्रतिनिधि सभा बिजनौर का निर्वाचन

बिजनौर। आर्योपप्रतिनि सभा बिजनौर का वार्षिक निर्वाचन आर्यसमाज बिजनौर के वेदमन्दिर मे सभा प्रधान श्री जयनारायण अरुण की अध्यक्ष मे सम्पन्न हुआ जिसमे सवसम्मति से श्री जयनारायण अरुण को जिलाध्यक्ष, श्री सुरेन्द्रसिंह को जिला मन्त्री श्री प्रयागदत्त शर्मा को कोषाध्यक्ष तथा श्री राकेश शर्मा को वेदप्रचार अधिष्ठाता निर्वाचित किया गया। अधिवेशन म अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किए गए। —प्रधान

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८९] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २३ अंक ४८] कार्तिक शु० ४ [सं० २०४५ रविवार १३ नवम्बर १९८८ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

जामियामिलिया के प्रश्न पर सरकार को चेतावनी

शिक्षण संस्थाओं को जातीय रूप प्रदान करने का विरोध

दिल्ली ४ नवम्बर।

जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय को मुस्लिम स्वरूप प्रदान करने के लिए वहाँ के छात्र एवं अध्यापक गण जिस प्रकार का आंदोलन कर रहे हैं, उसके बारे सार्वदेशिक सभा ने सरकार को चेतावनी दी है कि वह इस साम्प्रदायिक माग के आगे न झुके अन्यथा इसकी ऐसी प्रतिक्रिया होगी, जिसे सभालना सरकार की शक्ति मे नही होगा।

सार्व सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने एक वक्तव्य मे कहा कि सरकार अलीगढ़ विश्वविद्यालय को मुस्लिम रूप प्रदान करके पहले ही भारी भूल कर चुकी है। उसे प्रतिवर्ष करोड़ो रुपए का सरकार अनुदान देती है जो धन मुख्यत. हिन्दू करदाताओ से प्राप्त होता है। जामिया मिलिया को मुस्लिम रूप देने से सरकार स्वय राजधानी मे साम्प्रदायिक सघर्ष व तनाव को निमन्त्रण देगी। सरकार जब धर्म निरपेक्ष की बात करती है, ऐसी स्थिति मे शिक्षण सस्थाओ को जातीय स्वरूप प्रदान करना छात्रो के मन मे साम्प्रदायिकता के बीज बोना है। देश मे विभिन्न वर्गों के यथा-वैश्य जाट जैन खत्री, अग्रवाल, आर्य आदि सैकडो नामो से शिक्षण सस्थाये चल रही है। यदि ये सब अपने स्वरूप की माग करेंगे तो देश मे शिक्षण सस्थाओ का राष्ट्रीय रूप क्या रहेगा।

श्री स्वामी जी ने स्मरण दिलाया कि बाबर ने १५ वी सदी मे भारत पर आक्रमण कर मुगल राज्य स्थापित किया था। वह निश्चित रूप से एक विदशी आक्रमणकारी था। बाबर ने हमारे देश मे एक विदेशी शासन की नीव डाली हमारी यह पराजय हमारे इतिहास का लज्जाजनक अध्याय है। पर जामिया मिलिया न अलीगढ़ से भी आगे बढकर बाबर का ५०० वा जन्म दिन मनाया और उसकी भारत विजय पर शताब्दी मनाकर गुणगान किया। तब श्री हिदायतुल्ला उसके कुलाधिपति थे। यदि कोई आज महमूद के गुण गाये तो उसे क्या कहा जायेगा। जिससे हम अपमानित हुए हो उसे क्या इस रूप मे याद करना उचित है। जब बिना मुस्लिम स्वरूप के जामिया का यह हाल है तब मुस्लिम स्वरूप बनने पर वह साम्प्रदायिकता का गढ बनेगा। इसमे कोई सन्देह नही। —प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा

नयी शिक्षानीति में सरकार द्वारा संस्कृत की अवमानना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा मानव ससाधन विकास मन्त्री श्री पी० शिवशकर को लिखे गये पत्र की प्रतिलिपि —

माननीय श्री शिवशकर जी,

सादर नमस्ते !

आपका १० अक्तूबर १९८८ का पत्र मिला। एतदर्थ अनेक धन्यवाद ! सस्कृत भाषा को शिक्षा पद्धति से निष्कासित करने के सम्बन्ध मे मेरी आशकाये निर्मूल नही है। मैं बडे दुःख से ऐसा कह रहा हूँ।

संस्कृत का स्थान

आपके पत्र मे दो बातो पर बल दिया गया है —

"केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने भाषाओ के अध्यापन के लिए जो व्यवस्था की है, वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत त्रिभाषासूत्र के अनुरूप है और उसे ससद का अनुमोदन प्राप्त है।"

दूसरी—

"क्योकि सस्कृत भारतीय भाषाओ की मूलाधार है, स्कूलो मे उसके अध्ययन से विद्यार्थियो को अन्य भारतीय भाषाओ को अच्छी तरह सीखने मे सहायता मिलेगी।"

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष भी सस्कृत को हमारी सास्कृतिक विरासत का स्रोत मानते है।

हमारे सविधान की धारा ३५१ मे यह निर्देश दिया गया है कि जहा भी आवश्यक हो, राजभाषा हिन्दी के विकास और सवर्धन के लिए मुख्यत सस्कृत से ही शब्दावली का चयन किया जाय। साथ ही साथ इस बात से भी इन्कार नही किया जा सकता कि अनादि काल से सस्कृत भाषा ने देश की एकता और अखण्डता बनाने रखने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

नई शिक्षा नीति

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष ने जो नई शिक्षा पद्धति को प्रचारित किया है, उसके अनुसार, हमारी सम्मति मे, सस्कृत भाषा को पठनीय क्षेत्र मे से लगभग निष्कासित ही कर दिया गया है।

सविधान के आठवे अनुच्छेद मे सस्कृत को उस सूची मे सम्मिलित किया गया है जिन्हे स्वय हमारे प्रधानमन्त्री भारत की प्रमुख भाषाय मानते है। इस सूची मे दी गई सभी भाषाओ को "पठनीय क्षेत्र' म भी शामिल किया गया है, सिवाय सस्कृत के, जो इस स्थिति मे केवल हिन्दी के साथ ही जोडी जाने वाली भाषा के रूप मे ही रह जाती है। यह विचारणीय है कि कितनी शिक्षा-सस्थाये हिन्दी (अध्ययन क्रम (अ)) को प्रथम भारतीय भाषा के रूप मे

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

भूमिगत सत्याग्रहियों को पेंशन देने की मांग

पं० रामचन्द्र राव वन्देमातरम् तथा सभा प्रधान, संतोष मोहन देव से मिले ।

सेवा मे

श्री सतोष मोहनदेव जी
गृह राज्यमन्त्री, भारत सरकार
नई दिल्ली

विषय हैदराबाद आर्य सत्याग्रह १९३८-३९ सम्मान पेंशन

माननीय श्री मोहनदेव जी,

सप्रेम नमस्ते !

हमे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप हैदराबाद आर्य सत्याग्रह की पृष्ठभूमि को सन १९३८-३९ मे निजामशाही के विरुद्ध सफलता पूर्वक चलाया गया था, उसके वास्तविक परिपेक्ष्य मे समझने का प्रयत्न कर रहे हैं। हमने आपके मन्त्रालय के सम्बन्धित विभाग को उन व्यक्तियो के बारे में जानकारी भेज दी है, जिन्होने इस आन्दोलन को चलाया था और उसकी रणनीति तैयार की थी। इस कार्य मे आर्य समाज के स्वय सेवको को जिन प्रान्तो मे कठिनाइयो और खतरो का सामना करना पडा था, उनका विवरण भी इस पत्र मे दे दिया गया है। इस सम्बन्ध मे मैं आर्य सत्याग्रह सचालन समिति द्वारा पारित प्रस्तावो के कुछ मुख्य अश नीचे उद्धृत करता हू।

'सत्याग्रहियो को दो भागो मे विभक्त किया जाएगा।"

प्रथम वर्ग—के सत्याग्रही सत्याग्रह करेंगे और गिरफ्तारी देंगे।

द्वितीय वर्ग—इस वर्ग मे मुख्यत हैदराबाद स्टेट के निवासी होंगे जो जेल से बाहर रहकर सुरक्षा दलो को सगठित करेंगे और सत्याग्रह की व्यवस्था का काम अपने हाथ मे लेंगे तथा स्वयसेवको को भेजने का प्रबन्ध करे। लगभग बीस हजार आर्य समाजियो ने इस सत्याग्रह मे भाग लेते हुए गिरफ्तारी दी थी। इनमे बहुतो को जेल मे यातनायें दी गई। परिणाम स्वरूप कई सत्याग्रहियो की मृत्यु भी हो गई। जिन लोगो ने जेल से बाहर रहकर इस सत्याग्रह का सचालन किया था उनको भी बहुत कष्ट उठाने पडे। बहुत से लोग मारे गए और बहुत से स्थायी रूप से विकलाग हो गए। अब लगभग आधी शताब्दी के बाद हम उन स्वय सेवको के पूर्व चरित्र पर विचार करना चाहते हैं जिनके नाम आपके कार्यालय के लेख प्रमाणो मे अकित हैं।

इस समय लगभग दो हजार से कुछ ऊपर की सख्या मे उन आर्य सत्याग्रहियो अथवा उनकी विधवाओ ने सम्मान पेंशन के लिए आवेदन पत्र दिए हैं जिन्होने हैदराबाद सत्याग्रह मे भाग लिया था। इनमे लगभग ३०० ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होने गिरफ्तारी तो नही दी लेकिन भूमिगत रहकर कार्य करते हुए बहुत कष्ट सहे।

गृह मन्त्रालय के पत्र सख्या १५०२। ७६। एफ एफ (१) दिनाक १५ मार्च १९७५ के परिच्छेद (ई) में कहा गया है—

"स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन" योजना के अन्तर्गत वे लोग भी पेंशन पाने के अधिकारी होंगे जिन्होने ६ महीने से अधिक समय तक भूमिगत रहकर कार्य किया हो।"

हम यह समझने मे असमर्थ है कि सरकार उन आर्य सत्याग्रहियो के मामले पर क्यो विचार नही कर रहा है जिन्होने भूमिगत रहकर इस सत्याग्रह के लिए काम किया है और जो इस विषय मे सरकार द्वारा लगायी गई सभी शर्तो को पूरा करते हैं।

हमारा निवेदन है कि आप अपने मन्त्रालय के सम्बन्धित अधिकारियो को निर्देश जारी करे कि वे भूमिगत "हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियो के मामलो पर विचार करके उन्हे भी पेंशन की स्वीकृति प्रदान करे। न्याय की दृष्टि से उन्होने भी गिरफ्तारी देने वाले सत्याग्रहियो के समान ही कष्ट उठाये थे।

भवदीय
(स्वामी आनन्दबोध सरस्वती)
अध्यक्ष
गैर सरकारी स्क्रीनिंग कमेटी
आर्य सत्याग्रह सम्मान पेंशन

नया शिक्षानीति

(पृष्ठ १ का शेष)

अपनायगी। कम से कम दक्षिण भारत मे तो इसका प्रश्न ही नही उठना।

सस्कृत को अब अन्य विदेशी भाषाओ यथा फ्रेंच जर्मन, अरबी, फारसी आदि के समकक्ष रख दिया गया है। अब इसे केवल एक भाषा के रूप मे पढा जा सकता है। किसी भी विद्यार्थी के पास न तो इतना धैर्य और न इतनी शक्ति होगी कि वह सस्कृत को एक अतिरिक्त भाषा के रूप मे पढेगा।

हमारी समझ मे यह बात नहीं आती कि केवल सस्कृत को ही क्यो अतिरिक्त भाषा के स्थान पर रखा गया है, जब कि अनुच्छेद आठ में वर्णित सभी भाषाओं को उच्चतर स्थान दिया गया है, जिन्हे तीसरी भाषा के रूप मे, अथवा उन क्षेत्रों मे जहा की बहुसख्या वह भाषा बोलती हो, प्रथम भाषा के रूप में भी पढा जा सकता है।

इस प्रकार का भेदभाव क्यो है ? जब कि स्वय हमारे प्रधानमन्त्री भी इस बात को स्वीकार करते है कि सविधान के अनुच्छेद आठ मे वर्णित सभी भाषाय देश की प्रमुख भाषाय हैं और सबको समान रूप से मान्यता दी जानी चाहिए।

उपरोक्त सदभ मे हम आपसे निवेदन करते है कि यह मामला [illegible] स्थिति मे पहुच, इससे पूर्व नई शिक्षा पद्धति का पुनरावलोकन किया जाय और सस्कृत के सम्बन्ध मे उचित निणय लिया जाय।

भवदीय
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान-सभा

सम्पादकीय

गुरू का निर्वाण दिन है ?

वस्तुत. गुरु का आदेश ही पालन करना एक दिव्य सन्देश है गुरु विरजानन्द के द्वार पर बैठकर दयानन्द साधक ने अपने मस्तिष्क के बन्द कपाट खोले, और दिव्य ज्ञान प्राप्त किया।

गुरू ने विदा होते हुए शिष्य से पूछा कहा जा रहे हो, शिष्य का उत्तर था गुरु द्वार से जा रहा हू कहा जाऊगा क्या पता। गुरू ने कहा था जाग्रो वेदो का प्रकाश लुप्त हो रहा है उसे प्रकाशित करो। दयानन्द ने तथास्तु कहकर आदेश पालन हेतु जीवन को आहुत किया।

आज निर्वाण दिवस है—

दयानन्द के अनुयायियो तुमसे विदा होकर दयानन्द ने अपनी इच्छा अपने अनुयायियो पर छोडी। क्या हम उसका निर्वहन करेगे।

गुरु का आदेश सर्वोपरि होता है प्रकाश ज्ञान का ही पर्याय वाचक है दीपावली वास्तव मे ज्ञान दीप जलाने का पर्व है हम अपनी सास्कृतिक परम्परा को भूलकर भोगवादी सस्कृति की चकाचोंध मे पड गए हैं साथ ही धन की प्रतिष्ठा आज बढ गई है। जिस दयानन्द ने गुरु से सरस्वती की उपासना की वह सरस्वती आज किसी कोने मे पडी सिसक रही है।

गुरू के कुल के स्नातको से—

आप जब गुरू के द्वार से शिक्षा प्राप्त करके चले थे तब आपको भी गुरुओ ने कुछ प्रतिज्ञाए कराई थीं क्या आप उन्हे भूल गये। यदि हा तो गुरुवर दयानन्द की अन्तिम इच्छा की पूर्ति हेतु अब कमर कसकर खडे हो जाओ। जो भी स्नातक जहा है जिस स्थिति मे है दयानन्द के मिशन का सिपाही बनकर उनकी इच्छाओ की पूर्ति हेतु वैदिक धर्म की दुन्दुभि बजायें। ऋषि तो गए पर अपने से लाख-लाख दीप जलाकर गए उनका काम है हर गली कूचे मे प्रकाश पैदा करे।

दीवाली का उद्दश्य क्या है ?

अधिकतर पाठ्य पुस्तको मे पढने को मिलता है कि इस दिवस पर राम को राजगद्दी मिली, उस समय पर घर-घर दिए जलाए गए।

आज घर-घर चिराग जलाए जाने का कैसा सपना था फिर आज किस प्रकार का दिया जला है। आजादी को सजोए ४१ वर्षों के बाद भी आज गहरी उदासी के साथ सोचने को बाध्य हूँ। जिस के राम आज के दिन अयोध्या मे आए हो, वे मेरे राम आज भी निर्वासित ही है। तब यह खुशी की दीपमाला मनाई गई होगी, पर आज खुशी की दीपावली कहा ?

यह लक्ष्मी पूजन नही भौतिक लक्ष्मी का अति गन्दा अश्लील प्रदर्शन है या यह नर पिशाचो के रक्त से खेलने का हिसा पर्व हैं। मन बरबस कह उठता है कि आँज के दिन मन से अशुभ वासना को मन निकालो।

एक ओर राज मद दूसरी ओर लक्ष्मी वालो का मद। अर, इन्हे लक्ष्मी के मद मे चूर होने दो, जैसे मगन हैं उन्हे वैसे ही मगन रहने दो। गरीब की झोपडी मे दिया तो टिमटिमायेगा। पर आधे पेट रहे गरीब के घर दिया जलने पर अधेरा ही रहेगा। आज जिस परिस्थिति मे हम हैं उसे क्या नाम दिया जाय, समझ मे नही आता है। गाव-गाव बिजली पहुँच गई है तो विद्युतदीपमय प्रकाश कहे पर विडम्बना यह है कि कब फसली प्रकाश चला जाय, पूर्व सूचना दिए बिना ही, इस पर कोई बस नही ?

बाजार मे सारा माल नकली किस पर विश्वास किया जाय। अपने आचार मे हम धर्म निरपेक्ष भी नही, अजीबोगरीब हमारा नमूना हैं हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सभी नमूने सैक्युलर हैं हमारे बाजार मे दिवाली पर भी हर चीज भी सैक्युलर है।

नकली रोशनी, नकली आवाज, नकली मन, तो दीवाली एक विज्ञापन मात्र हैं सब माल बासी है।

दीपावली की अमावस्या को मनुष्य के हाथ अन्धकार से लडाई लड रहे हैं। उसके द्वारा रचे गए दीपक, उसके द्वारा उपजाए गए तेल, इसके साधन बन सकते हैं।

सौन्दर्य और श्री की ऐसी उपासना जिसके साथ पुरुषार्थ की शर्त नही जुडी अमावस्या रात्रि के चेहरे के साथ खप नही पाती। इस पावन पर्व मे हमारे कर्मों की फसल का तेज ही रूपमयी ज्योति बनकर जलता है अन्धकार से जूझते हुए मनुष्य कृत मिट्टी के दीपों से हमारा एक भावात्मक सम्बन्ध है क्योकि ये हमारी मृन्मयी धरती के है। यह सम्बन्ध आकाश से झरती ज्योत्स्ना या तारा मण्डल से सम्भव नही है। वस्तुत जब हमारे कर्म से उपलब्ध दीपक धरती पर प्रतिष्ठित होकर जलने लगते है तब देवताओ द्वारा आलोकित आसमान का तारामण्डल फीका पड जाता है। अन्धकार मे विचरण करने वाले विषधर मनुष्यकृत प्रकाश की इस महिमा के सामने लज्जा से मुह छिपा लेत हैं। फिर सारी अशुभ शक्तिया नतमस्तक होकर हार मान लेनी है।

दीवाली इस गौरव बोध का पर्व है। यह बात अलग है कि कुछ कुटिल धूर्तों ने इस पावन रात्रि को पक्षरात्रि और द्यूतरात्रि मे बदल दिया है जिस परिवेश मे लक्ष्मी का पूजन नही किन्तु अपहरण ही होता है। इस अपहरण लीला की कीमत समाज को किसी भी क्षण चुकानी ही पडती है।

तात्पर्य यह है कि आज दीपावली पर लक्ष्मी सही वह है जो शील और मर्यादा को रखते हुए उपलब्ध की जाए और चोरी बेईमानी मर्यादाहीन आचरण द्वारा नही बल्कि पुरुषार्थ के पथ से उपलब्ध की जाय।

सारी बातो का भाव यह हुआ कि 'श्री' अर्थात सुख सौभाग्य और सम्पत्ति देह की रक्षा करते है हमारा मर्यादा बोध दीपावली शील की यह लक्ष्मी उपासना हल सरशाश्रित कर्मयोग पुरुषार्थ से जोडती है परन्तु आज पूर्णिमा की लक्ष्मी पूजा मे नकली साधनो से ही मनानी है। दीवाली उस नकली सामान को बेचने का विज्ञापन मात्र है ज्ञान के प्रकाश को फैलाने का दीवाली उत्सव नही रही। उत्सव मे उल्लास होता है उल्लास मे होश रहता है इसी को मधुवन मानो और इस पवित्र मन से, स्वच्छ आचरण से विनम्र-भाव लक्ष्मी का आवाहन करो।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य का यह देश आर्यावर्त कहलाया गया।
ऋषि तुम्हारा देश भारत वर्ष कहलाया गया।
विश्व मानवता सिमटकर गोद तेरी मे बसी,
यह देश तेरा विश्व का उत्कर्ष कहलाया गया।
आर्य बनकर फिर बनाओ देश आर्यावर्त यह।
त्याग तप से फिर जगाओ देश आर्यावर्त यह।
ऋषिभूमि के ऋषिपुत्र जागो हाथमे लेकर मशाल
तुम उठाओ तुम जगाओ फिर से आर्यावर्त यह।
छोटे बडे का भेद होना आर्य की सीमा नही है।
जाति वर्ग भेद करना आर्य ने सीखा नही है।
आर्य तो आर्य हैं फिर भेद की क्या बात है
आर्य बनने के लिए बन्धन नही सीमा नही है।
आर्य पुत्र तुम जागो देश को फिर से जगाओ।
आर्य पुत्र तुम उठो देश को फिर से उठाओ।
ऋषि भूमि होती जा रही तन मन व्यथित,
तुम 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' फिर से गुजाओ।

—दीन मुहम्मद 'दीन', जिला परिषद इण्टर कालेज
जागीर मैनपुरी (उ० प्र०)

'तुम्हें प्रणाम'

मानवता के रहे हितैषी, शिक्षा के तुम रहे प्रसारक।
जन सेवा के लिए समर्पित—दीनो दलितो के उद्धारक॥
तुम थे वैदिक धर्म प्रणेता, वेदो के अनुकूल चले।
त्याग सदाशयता प्रतीक थे, नही कभी पथ पर फिसले॥
कर्म किए तुमने जीवन भर, प्रतिफल रहित सदा निष्काम।
ऋषिवर दयानन्द सेनानी वीर 'रणञ्जय' तुम्हे प्रणाम॥

—राधेश्याम 'आर्य' एडवोकेट

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" कैसे हो ?

श्री जगदीश विद्यार्थी उपदेशक विद्यालय टंकारा

आज से लगभग पौने दो सौ वर्ष पहले इस आर्यावर्त भूमि में एक सपूत उत्पन्न हुआ था जिसने वेद के इस मन्त्रांश को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया आजीवन परतन्त्रता तथा अज्ञान के विरुद्ध संघर्ष करता रहा मृत प्राय पराधीन रहने के अभ्यस्त आर्य जाति को उसे उसके उज्ज्वल अतीत को याद दिलाकर सहस्रों वर्षों की घोर निद्रा को तोडकर चेतन किया। गैरों पर सियार शासन कर रहे हैं इसका ज्ञान कराया स्वाधीनता का सर्वप्रथम नाद गुंजाया परोक्ष और प्रत्यक्ष रूप से सतत स्वतन्त्रता के लिए लडता तथा लडवाता रहा एवं क्रान्ति का अग्रदूत कहलाया। आज भारत की स्वाधीनता का मूल श्रेय यदि किसी को जाता है तो वह है स्वामी दयानन्द और उनके शिष्य तथा भक्तों को। एक सच्चा सन्त होने के नाते एक ओर जहां भारत की स्वाधीनता के लिए प्रयत्नशील थे वहीं दूसरी ओर सम्पूर्ण विश्व को अज्ञानता की पराधीनता से मुक्त कराने के लिए उद्यमशील थे। वेदों का शुद्ध वैज्ञानिक भाष्य कर सबकी आंख खोल दिये। लेखन भाषण तथा शास्त्रार्थ के द्वारा प्रचार प्रसार करते रहे। और लोगों को बताये कि यदि संसार को सुखी बनाना चाहते हो तो वैदिक पद्धति के अनुसार जीवन जीने का पाठ पढ़ाना होगा। और यह पाठ तब पढ़ा सकोगे जब पूर्वकाल की भांति चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य स्थापित कराओगे इसके लिए वे सतत प्रयत्न भी करते रहे। राजा के अनुसार प्रजा होती है अत वे विभिन्न राजाओं के पास जाते रहे और उन्हें शिक्षा तथा उपदेश देते रहे। अपने ग्रन्थों में सर्वत्र चक्रवर्ती राज्य की ईश्वर से प्रार्थना कर [illegible] को इसके लिए प्रेरित किया। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में लिखते हैं कि मनुष्य को दो [illegible] के लिए प्रवृत्त होना चाहिए। [illegible] है स्वस्थ शरीर से लेकर चक्रवर्ती राज्य तक प्राप्त करना यह संकल्प अभी जन्म ही लिया था कि इसका जनक दानवता का शिकार हो गया। और स्वप्न अधूरे रह गये।

आज महर्षि को निर्वाण प्राप्त किये १०५ वर्ष [illegible] हैं। [illegible] हम कितनी प्रगति किये हैं सो दुनियां के सामने है क्या आर्य [illegible] नहीं बढ़ [illegible]। [illegible] यह नहीं देख रहे हैं? [illegible] प्रकाशन व प्रचार हो [illegible] हैं यह विस्मृत है [illegible] देख रहे हैं [illegible] समस्याएं [illegible] हैं? [illegible] तथा समा[illegible] ?

आज [illegible] सिद्धान्त [illegible] में बंट गये। [illegible] चक्र शुरू हो गया। एक बना धाम पार्टी और दूसरी बनी मांस पार्टी। वर्षों हांके और उन्नति किये उनका और [illegible] प्रशाखाएं फली और बनी गुरुकुल पार्टी तथा डी० ए० वी० पार्टी और प्रगति का यह दौरा वहीं नहीं रुका इस प्रगति के जमाने में दो और पार्टियां बनी। [illegible] एक वाले कहते हैं आर्य समाज को राजनीति में [illegible] चाहिए और दूसरे कहते हैं कि कतई नहीं लेना चाहिए [illegible] अपने पक्ष की पुष्टि में दलील देते हैं [illegible] अपनी [illegible] को दयानन्द के अनुकूल और अपने को सच्चा दयानन्दी [illegible] हैं दयानन्द के सिद्धान्त को दाव पर लगा कर [illegible] विवाद तथा मनमुटाव [illegible] की ओट में अपना [illegible] को प्रस्तुत करते हैं परन्तु [illegible] के विचारों का [illegible] समझने वाला निःस्वार्थ पक्षपात [illegible] विवेकी मनुष्य [illegible] है कि दयानन्द राजनीति में [illegible] के प्रबल समर्थक थे। नहीं तो वे सदा चक्रवर्ती राज्य की प्रार्थना [illegible] ?

सत्यार्थ प्रकाश का पूरा छठा समुल्लास क्यों व्यर्थ लिखते ? ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में वेदों में राजनीति विद्या सिद्ध कर वेदों को दूषित क्यों करते ? प्रार्थना की पुस्तक आर्याभिविनय में भी यह लिखते हैं कि क्या आवश्यकता थी ? पठन पाठन विधि में धनुर्वेद की शिक्षा प्रत्येक विद्यार्थी के लिए वाञ्छनीय कदापि न बताते। उनका यह पूर्ण विश्वास था कि एक राजा यदि धार्मिक और चरित्रवान हो जाता है तो सारी प्रजा तद्वत् हो जाती है और राजा उन्हें आत्मवत् बनाता है। यही कारण है कि वे तत्कालीन राजाओं से अधिक सम्पर्क रखते थे [illegible] उनके कर्तव्यों के विषय उपदेश स्वयं जाकर और पत्र व्यवहार के द्वारा देते रहते थे। इस प्रकार के उनके उपदेशों और कार्यों को देखकर किसी को रञ्चमात्र भी यह सन्देह नहीं रहता कि हम सब का अब राजनीति में कूद पड़ना चाहिए। जो सज्जन राजनीति को गन्दी कहकर घृणा करते हैं। वे यह उत्तर देने का कष्ट करें कि उसे साफ करने के लिए कहां से फरिश्ते आएंगे। जिनके हाथ में कीचड़ लगा है उनसे तो साफ होगा नहीं फिर क्या उसी गन्दगी में हम पलते रहें। यदि उसी में रहना पसन्द करते हैं तो हमारी स्वच्छता कहां रह पायेगी ? और क्या अपने हाथ में गन्दगी लगने के डर से आर्य अपने स्थान को बिना साफ किए रहेंगे ? तब तो कीचड़ और भी विस्तार से लग जाएगा। अतः आर्यो ! यदि [illegible] जाना चाहते हो तो आओ ! हम सभी देश और विदेश के आर्यगण मिलकर इस गन्दी राजनीति को साफ करें सभी अपने अपने क्षेत्र से चुनावों में भाग लेकर अधिक से अधिक आर्य सांसद बनें जिससे क्रमशः आर्य राज्य स्थापित करने में सफल हों। भगवान हम सब को सद्बुद्धि दे।

निर्भय वैदिक नाद बजादो

बलिदानों का विमल [illegible] है आर्य वीरो कदम बढ़ाओ।
वेद पढ़ो और [illegible] पढ़ाओ अपना जीवन सफल बनाओ ॥

था जब [illegible] में हमारा जुल्म यहां होते थे भारी।
जाति पांति [illegible] छुआ छूत की फैली थी घातक बीमारी ॥

पाखण्डों का जोर [illegible] था [illegible] हुए थे सब नर नारी।
वैदिक पथ से [illegible] ईश [illegible] की ये जनता सारी।

पैगम्बर को भूल गए थे अवतारों का आंधी आई।
दिन पर दिन बढ़ते जाते थे सुनो नास्तिक यवन ईसाई।

[illegible] सूरज निकल धरा पर आया।
महर्षि दयानन्द [illegible] सोया कुल संसार जगाया ॥

विघ्न और बाधाओं से वह हमारा स्वामी ना दहलाया।
विष के प्याले पी पीकर के जग को वेदामृत पिलाया।

कर्म प्रधान जगत में [illegible] सारी दुनिया को समझाया।
शूद्र जन्म से कर्मों से द्विज [illegible] वैदिक ज्ञान सिखाया ॥

विद्यालय गुरुकुल [illegible] सेवा का पाठ पढ़ाया।
नारी का सम्मान [illegible] आजादी का बिगुल बजाया ॥

सच तो ये है प्यारा स्वामी अमर नहीं धरती पर आता।
वैदिक पथ का सच्चा राही [illegible] नहीं ढूंढ़े पाता ॥

सच्ची श्रद्धांजलि यही है जग में वैदिक नाद गुंजादो
[illegible] का स्वप्न उसे साकार करादो ॥

—पं० नन्दलाल 'निर्भय' भजनोपदेशक
ग्राम पो० [illegible] जिला फरीदाबाद

वृक्षों में जीव और हिंसा : एक विवेचन (२)

डा० सत्यव्रत राजेश, प्राध्यापक गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वेदान्तदर्शन की एतद्विषयक मान्यता

वेदान्तदर्शन के शाकरभाष्य मे भी जीवो का, चावल जौ, औषधि, वनस्पति तिल तथा उडद के रूप मे जन्म लेने का उल्लेख है[1]। आगे अन्य जीवो से अधिष्ठित व्रीहि यवादि मे अनुशयी—अनुशय—कर्म वाले जीवो का सम्बन्ध बतलाया है[2]। इस सूत्र मे 'अन्याधिष्ठितेषु' पद स्पष्ट कर रहा है कि व्रीहि यवादि अन्य जीवो से अधिष्ठित होते है, अर्थात् अन्य जीव व्रीहि यव आदि के उसी प्रकार अधिष्ठाता = अभिमानी जीव हैं जैसे कि हम अपने शरीर के अधिष्ठाता हैं।[3]

वृक्षों में जीवविषयक शंकराचार्य का मत

दार्शनिक शिरोमणि, अपनी प्रतिभा से बौद्धो को परास्त कर वैदिकमत सस्थापक तथा परिस्थितिवश जीव ब्रह्म की एकता के प्रतिपादक शकराचार्य ने भी वृक्षो मे जीव को माना है। वे लिखते हैं—वृक्षो के रस स्रवण आदि चिह्नो से उनका जीववाला होना सिद्ध है। दृष्टान्त तथा श्रुति से भी स्थावर चतन है। बौद्ध तथा कणाद के अनुयायी जो स्थावरो को अचेतन मानतेहै उनकी मान्यता सार रहित है[4]।

हमारा यहा जीवो की वृक्षो मे विद्यमानता दिखाना ही प्रयोजन है, जिससे शकराचार्य भी सहमत हैं, शेष मान्यता पर आगे विचार करेंगे।

वृक्षादि में जीव और महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द वेदो के परम विद्वान् तथा योगी हुए हैं। उनकी मान्यताए वेदो पर आधारित हैं। ये भी वृक्षादि मे जीव को मानते है। सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास मे उनके द्वारा किये गए प्रश्न से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वे वृक्षादि मे जीव की सत्ता स्वीकार करते हैं। प्रश्न यह है—'ईश्वर ने किन्ही जीवो को मनुष्य-जन्म, किन्ही को सिह आदि क्रूर जन्म किन्ही को हरिण गाय आदि पशु, किन्ही को वृक्षादि कृमि कीट पतग आदि जन्म दिये है। यहा उन्होने वृक्ष आदि को जीव का शरीर बतलाया है। आगे नवम समुल्लास मे मनु के एक श्लोक[5] को उद्धृत करके उसका अर्थ करते हुए लिखा है—'जो नर शरीर से चोरी परस्त्रीगमन श्रेष्ठो को मारने आदि दुष्ट कर्म करता है, उसको वृक्षादि स्थावर का जन्म मिलता है[6]।

वृक्षों मे जीव और हिंसा : एक उलझा प्रश्न

वेद से लेकर महर्षि दयानन्द तक के ग्रन्थो से यह सिद्ध हो जाने पर कि 'वृक्षादि मे जीव है', यह प्रश्न उपस्थित होता है कि जब वृक्षादि मे जीव है तब इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख तथा दुख आत्मा के लक्षण[7] होने से उनके उखाडने-काटने आदि से उनको दुख होने से हिंसा-दोष भी हमे लगाना चाहिए। अन्यथा गाय, भैंस, भेड, बकरी, मुर्गी, मछली, टिड्डी आदि के मारने आदि में भी पाप न लगना चाहिए, क्योकि जब जीवयुक्त पशु पक्षी आदि के मारने आदि मे भी पाप माना जाता है तब जीवयुक्त गाजर-मूली आदि के उखाडने-काटने आदि मे भी हिंसा का दोष लगना चाहिए। आप स्वय गाजर-मूली आदि खाते है तथा हमारे पशु-पक्षी आदि मारने मे पाप बतलाते हो, यह दुहरी नीति कैसी? यदि यह पाप कर्म है तो दोनो पापी है और यदि आपको गाजर आदि उखाडने-काटने मे पाप नही है तो हम भी बकरी आदि के मारने मे दोष क्यो?

पाप-पुण्य का सम्बन्ध

यह उभरा प्रश्न हमे गम्भीरता पूर्वक सोचने पर विवश करता है। इसका समाधान हुए बिना हम भी बकरी मारने वालो की भाति हिंसा-दोष से नही बच सकते। सर्वप्रथम हमे यह विवेचन करना होगा कि पाप पुण्य का सम्बन्ध है किससे? क्योकि आत्मा तो अमर है। उसके मरने का तो प्रश्न ही नही उठता। पुन आत्मा के न मरने पर भी पाप लगने अथवा न लगने का कारण क्या है? इस विषय मे न्यायदर्शन मे विचार किया गया है। वहा आत्मा को शरीर आदि से पृथक् बताते हुए इस विषय मे यह तर्क दिया है कि—"मृत शरीर के जलाने पर पाप नही लगता तथा जीवित शरीर के जलने पर पाप लगता है। यह इस बात का प्रमाण है कि आत्मा शरीर से पृथक् है। उसे ही सुख दुख की अनुभूति होती है। चूकि अब वह शरीर मे नही रहा, अत मृत शरीर को जलाने मे भी पाप नही लगता[8]। आगे प्रतिपक्षी की ओर से तर्क देते है कि जब आप आत्मा को नित्य मानते हो और यह मान्यता रखते हो कि आत्मा कभी मरती नही तब जीवित व्यक्ति के शरीर को जला देने पर भी पाप नही लगना चाहिए क्योकि आत्मा तो मरी ही नही, फिर पाप-पुण्य कैसा?[9] इस प्रश्न का जो उत्तर दर्शनकार ने दिया है वह हमारे विषय मे सीधा सम्बन्ध रखता है, जो इस प्रकार है "हम नित्य-आत्मा के वध का हिंसा नही कह रहे अपितु जीवित व्यक्ति के जलने पर उसके शरीर मे जो उपघातपीडा-विकलता, बेचैनी, तडपन होती है वह हिंसा है। जो जीवित व्यक्ति के जलाने पर तो होती है किन्तु मृतक के जलाने पर नही होती। अत जीवित को जलाना पाप है मृतक को जलाना नही[10]।

इससे स्पष्ट है कि इन्द्रियो तथा शरीर को दी जाने वाली पीडा ही पाप का कारण है, चाहे वह अज्ञानवश हो या स्वार्थवश। यहा यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि किसी के रोग निवारण के प्रयत्न मे रोगी के मरने पर अथवा अपराधी को यथापराध दण्ड देने मे की जाने वाली हिंसा, हिंसा नही मानी जाती। क्योकि समाजतन्त्र को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिये तथा अपराध की प्रवृत्ति रोकने के लिए की गई दण्ड व्यवस्था न्यायाधीश को दोषी नही बनाती। यही व्यवस्था शत्रु को युद्ध मे मारने पर भी लागू होतीहै। अत पाप का कारण स्वार्थ या अज्ञानवश किसी को पहुचाई जाने वाली पीडा है।

---

१ त इह व्रीहियवा ओषधिवनस्पतयस्तिलमाषा इति जायन्ते ॥ ब्रह्मसूत्रशाकरभाष्य ३।१।२४

२ अन्याधिष्ठितेषु पूर्ववदभिलापात् ॥ वेदान्त द० ३।१।२४

३ द्र०—गणपति शर्मा, स्वामी दर्शनानन्द से वृक्षो मे जीव विषयक शास्त्रार्थ।

४ वृक्षस्य रसस्रवणादि लिङ्गाज्जीवतत्व दृष्टान्त श्रुतेश्च चेतनावन्त स्थावरा इति बौद्ध काणादमतमचेतना स्थावरा इत्येतदसारमिति दर्शितभवति ॥ छा उ ६।११।१ २

५. मनु० १२।९

६ स०प्र० समु० ९

७ इच्छाद्वेष प्रयत्न सुख-दुख ज्ञानान्यात्मनो लिङ्गम् ॥ न्याय द० १।१।१०

८. शरीरदाहे पातकाभावात् ॥ न्याय द० ३।१।४

९. तदभाव सात्मक प्रदाहेऽपि तन्नित्यत्वात् ॥ वही, ३।१।५

१० न, कार्याश्रयकर्तृवधात् ॥ वही, ३।१।६

अभयं नो अस्तु

—देवेन्द्र कुमार आर्य समाज, रावत भाटा वाया कोटा राजस्थान

जीवन एक सुखद वरदान है, यदि हमने निर्भय होकर जीना सीख लिया। जीवन एक अभिशाप है यदि मनुष्य भयभीत है। भय एक ऐसा राक्षस है जो हमको रात दिन सताया करता है। विचित्रता तो यह है कि इस राक्षस को जन्म भी हमी देते हैं तथा अपनी कृति से स्वय ही भयभीत भी होते हैं। इसमे दोष स्वय हमारा ही है तथा इसके पजे से छूटने के लिए हम स्वय ही अपने सहायक हो सकते हैं। उद्धरेत आत्मना आत्मानम्'। अन्य कोई हमारी सहायता नहीं कर सकता।

भय निराकार होता है परन्तु वह साकार की तरह हमको पीडित करता है। वह अस्तित्व हीन तथा काल्पनिक है परन्तु वह हमे वास्तविक सा प्रतीत होता है। वह शक्ति विहीन है परन्तु हमे अधिक शक्तिशाली सा प्रतीत होकर पीडा देता है। वह हमारी समस्त रचनात्मक शक्तियो को सत्वविहीन कर देता है। हमारी मानसिक स्थिति को डावाडोल बनाकर अनिर्णय परक स्थिति मे पटक देता है। सृष्टि की सर्वोत्तम रचना एव ईश्वरीय वरदानो का स्वामी मानव भय के सामने दुर्बल होकर गिडगिडाने लगता है। मनुष्य अभी असफल नही हुआ कि असफलता का भय उसे कम्पित कर देता है। रोग आने से पूर्व ही रोग का भय मनुष्य को अपने चगुल मे फसाकर उसको बीमार बना देता है। वह निर्धन नहीं हुआ परन्तु निर्धनता का भय उसके मस्तिष्क को असतुलित कर देता है। नाश, दुर्घटना, असफलता अकाल एव भूख का विचार मन मे आते ही मनुष्य का पसीना छूट जाता है। बुद्धि कुण्ठित हो जाती है विचार शक्ति शून्य हो जाती है और प्रभु की सर्वश्रेष्ठ रचना मानव दर दर ठोकरे खाने के मार्ग पर चल पडता है, ऐसा है भय का भूत।

मानव जीवन सुख एव समृद्धि को प्राप्त हो इस उद्देश्य को ध्यान मे रखकर वेद मन्त्रो मे भी कामना की गई है कि समस्त दिशाये एव सभी प्राणी हमारे लिए भय रहित हो अर्थात हम हर परिस्थिति मे निर्भय बने।

अभय न करत्यन्तरिक्षमभय द्यावा पृथिवी उभे इमे।
अभय पश्चादभयम् पुरस्तादुत्तराद धरादभय नो अस्तु॥

अथर्व० १९। १५। ५

हमारे लिए अन्तरिक्ष लोक, द्युलोक, एव पृथिवी लोक निर्भयता प्रदान करे। पीछे, आगे, ऊपर और नीचे सर्वत्र निर्भयता हो।

अन्तरिक्ष द्यौ पृथ्वी प्रमुदित, हमको अभय बनावे।
प्रभु के पद पर यज्ञ कर्म के, फल परमार्थ चढाव॥

वर्जिल नामक विद्वान का कथन है—भय अधोगति को प्राप्त मन का सकेत है। हमारी असफलता के मूल मे भय ही होता है। प्राचीन काल मे रोमन लोगो पर भय का इतना दुष्प्रभाव था कि उन्होने भय का मन्दिर ही बना डाला। यद्यपि हम भूत प्रेतो मे विश्वास नही करते परन्तु वास्तविकता यह है कि हमने किसी न किसी तरह के भय को पाल रखा है। अधिकाश लोग अन्धविश्वास व अपशकुनो के चक्कर मे फसे रहते है और जीवन भर उन्ही का भार ढोया करते हैं। यदि बिल्ली रास्ता काट जाय तो हमारी शुभ यात्रा पर आपत्ति का पहाड टूटा समझो, कोई छीक दे तो कार्य का प्रारम्भ ही शकास्पद हो जाता है। खाली घडे सामने आ जावें तो सारा दिन मनहूसियत से कटेगा, और तो और देवता के भय के कारण लोग मगलवार या बुध को दाढी नही बनवाते, क्या पता देवता किस विपत्ति मे फसा दे। भय के ही विभिन्न रूप हैं जो शिक्षित समुदाय मे भी फैले हुए हैं।

सभ्य कहलाने वाले देश भी अन्धविश्वासो से मुक्त नहीं है यूरोप के लोग शुक्रवार के दिन कोई कार्य प्रारम्भ नही करते, उस दिन १३ तारीख हो तो और भी मुसीबत। ये लोग होटल के १३ नम्बर के कमरे मे नही ठहरते इसलिए होटल मालिको ने १३ नम्बर का कमरा ही गायब कर दिया है। जीने के नीचे गुजरना भी ये लोग अच्छा नही समझते।

भय का कारण अज्ञान है। भय हमे इसलिए सताता है कि हम अपनी आन्तरिक शक्तियो के प्रति जागरुक नहीं होते। हम पता ही नहीं कि हम स्वय क्या हैं? हममे कौन सी दैवी शक्ति छुपी है। हमारी ज्ञान न्यूनता ही इसके लिए उत्तरदायी है। यदि कुछ ज्ञान होता भी है तो शक्तियो के बोझे से अज्ञ का। हमारे अन्दर शक्ति और सामर्थ्य का जो विशाल भडार है उसे हम बहुत कम ही जानते हैं।

गगा एक विशाल नदी है परन्तु उसकी विशालता एव पवित्रता गगोत्री से जुडे रहने पर ही सभव है। अपने मुख्य स्रोत से गगा जहा अलग हुई, उसकी विशालता एव पावनता दोनो ही खतरे मे पड जायेंगी बिल्कुल यही स्थिति मानवीय समाज की है।

हम ईश्वर की कृति हैं कर्ता एव कृति का सम्बन्ध अविच्छेद्य है, जब कर्ता निर्भय, निराकार एव अजस्र शक्ति का स्रोत है तो हमारे लिए भय का स्थान कहा! हमारे मन मे भय का प्रवेश तभी होता है जब हम स्वय को उस अपूर्व शक्ति भण्डार से पृथक कर लेते हैं, अपने को निराश्रित एव अकेला अनुभव करते है और समझ बैठते है कि सृष्टिकर्त्ता ने हमे अकेले ही पृथ्वी पर सकटो से सघर्ष करने के लिए छोड दिया है। इसके विपरीत हम अपनी धारणा को बदलकर अपना सम्बन्ध उस महान पिता से जोड दें तो असफलता एव भय की सत्ता का अस्तित्व ही समाप्त समझो।

ईश्वर विश्वास से जुडी महर्षि दयानन्द की निर्भीकता हमारे लिए अनुकरणीय है। अपने अनुगामियो के कथन का प्रत्युत्तर देते हुए उन्होने कहा था—एक ईश्वर है और एक मैं हूँ। दूसरा कौन है? यदि जोधपुर के लोग मेरी अगुलियो की बत्ती बनाकर भी जलायेंगे तो भी मैं सत्य ही कहूगा। उनकी निर्भीकता की दाद भारत के जगी लार्ड रोबर्ट को भी देनी पडी थी, जब उन्ही की उपस्थिति मे स्वामी जी ने ईसाई धर्म का खूब खण्डन किया था।

हम तरह तरह के अभावो के कारण भयभीत रहते है, निर्धनता का अनुभव करते हैं, बीमारी की आशका हम को सताती रहती है परन्तु हमे यह मालूम नही कि हमारा वास्तविक रूप तो स्वस्थ रहना है। हम उस महान ज्वाला के स्फुलिंग है जो ससार को प्रकाशित करती है। यदि हम अन्धकार की ओर से अपना मुह घुमाकर सूर्य की ओर कर दे अर्थात शक्ति के अनुपम भण्डार से अपना सम्बन्ध जोड दे, तो हम निर्धनता की खिल्ली उडाने मे समर्थ हो सकते हैं। यदि हम अपने मन के द्वारो को केवल सफलता एव उत्साह के लिए खुले रहने दें, निराशापूर्ण विचारो को प्रविष्ट होने की अनुमति ही न दें तो हमारी असीम हो जाती है यदि एक बार उस अक्षय भण्डार से हमारा सम्बन्ध जुड जाय तो फिर कैसा भय? कैसा अभाव। तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्य पन्था विद्यतेऽयनाय।

महर्षि का मिशन

—श्री भगवती प्रसाद गुप्त, बम्बई—

(आपने यह भाषण दीवाली पर्व के उपलक्ष्य में गत वर्ष मारीशस रेडियो से प्रसारित किया। हमें विलम्ब से प्राप्त हुआ परन्तु आर्य समाज के मिशन को संक्षेप मे प्रस्तुत करने से पठनीय व विचारणीय है। —सम्पादक

आर्य समाजी लोग दीपावली को ज्योति पर्व के रूप मे मनाते हैं क्योंकि यह महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण दिवस भी है, जिन्होने वेद ज्ञान-ज्योति जो अनेकानेक अनार्ष ग्रन्थो के नीचे दब कर ढक गई थी उसे उलट कर सर्वोपरि स्थान पर पुनर्प्रतिष्ठापित किया। देशी एवं विदेशी विद्वानो ने वेदो के गलत अर्थ समझने के कारण उन्हें उपेक्षित कर दिया था तथा भेड़ चराने वाले गड़रियो के गीतो से अधिक उनका मूल्य नहीं समझा था। अपने उद्गम स्थान आर्यावर्त देश में ही वे लुप्त प्राय: हो गए थे। महर्षि ने जर्मन देश से उनकी प्रतियां मंगवाईं तथा निरुक्त एवं निघण्टु के आधार पर उनके ठीक-ठीक अर्थ कर संसार के विद्वानो के समक्ष रखकर सिद्ध किया कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है तथा ईश्वर प्रदत्त निभ्रान्त ज्ञान है जिसे परमपिता परमात्मा ने अपनी अमर प्रजा के कल्याणार्थ सृष्टि के आदि में उत्पन्न अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा नाम के चार पवित्रतम जीवों [ऋषियों] की आत्माओं में चारों वेदो का प्रकाश किया। उनसे ब्रह्मा ने चारों वेद पढ़े तत्पश्चात अन्यों को पढ़ाया। इस प्रकार गुरु-शिष्य परम्परा से वेद ज्ञान ज्योति का प्रसार होता गया। योग-दर्शन के सूत्र के अनुसार "स ऐष पूर्वेषामपि गुरु:" परमात्मा ही आदि गुरु है। महर्षि अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे लिखते हैं कि—

भारत का प्राचीन नाम 'आर्यावर्त' था और यही आर्यों का आदि देश है। इसे आर्यों ने ही सर्वप्रथम बसाया था। आर्य लोग बाहर किसी देश से यहां नहीं आये। सृष्टि के आदि से महाभारत पर्यन्त जो लगभग २ अरब वर्ष का समय होता है, विश्व में आर्यो का चक्रवर्ती राज्य रहा है। महाराज युधिष्ठिर जी के राजसूय यज्ञ में विश्व के सभी राजा उनकी आज्ञानुसार पधारे थे। आर्यावत देश ही से विद्या का प्रसार अन्य देशो में हुआ है। भारत से मिश्र, फिर यूनान फिर रोम और रोम से यूरोप अमेरिका आदि देशो में महाभारत पर्यन्त देश में वेद मत के अतिरिक्त कोई मत नहीं था। वेदोक्त सब बाते विद्या के अविरुद्ध हैं। आर्य लोग वेदों के अनुसार ही आचरण करते थे। महाभारत के एक हजार वर्ष पूर्व से आर्यों में वेदों की उपेक्षा प्रारम्भ हो गई थी, जो महाभारत काल में अत्यन्त बढ़ गई, परिणाम स्वरूप महाभारत युद्ध हुआ। महर्षि भारत मे विदेशी राज्य होने का कारण बताते हुए लिखते है—

"आपस की फूट मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना-पढ़ाना, बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, अर्थात् (लड़की की इच्छा के विरुद्ध माता पिता की इच्छा से विवाह), विषयासक्ति, मिथ्या भाषणादि कुलक्षण, वेद विद्या का अप्रचार, आदि कुकर्म है। जब आपस मे भाई-भाई लड़ते है तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।

महर्षि ने देश की दुर्दशा का निदान कर आर्यो [हिन्दुओ] एवं समस्त मानव समाज की अवस्था सुधारने के लिए अपने अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" के प्रथम १० समु० में वेदानुसार आर्यो के व्यवहार कर्तव्य व धर्म अर्थात (कोड आफ कन्डक्ट) का विवरण लिखा तथा ११ वें से १४ वें समु० में देश विदेश में फैले मतमतान्तरों की रचनात्मक आलोचना की और कहा कि मनुष्यो का धर्म एक होता है अलग-अलग नहीं होते। जैसा कि आजकल समझा जाता है और वह 'वैदिक धर्म" है जो अभ्युदय (भौ० उन्नति) एवं नि:श्रेयस (आत्मिक उन्नति) दोनों की उन्नतियों का साधन है।

वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए सन् १८७५ ई० में (भारतीय कांग्रेस की स्थापना से १० वर्ष पूर्व) "आर्य समाज" की स्थापना की, जिसका उद्देश्य संसार का उपकार करना (अर्थात् शारीरिक--आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना) निश्चय किया। आर्य समाज के १० नियम निर्धारित किये जो सभी प्रकार की उन्नति के अचूक साधन हैं। वेदो के ज्ञान के लिये वेदों के पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने को सब आर्यो का परम धर्म निश्चित किया) तथा समाज के सभी वर्गों की उन्नति के लिए ९ वें नियम में कहा है कि "प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिये।" साथ-साथ १० वे नियम मे लिखा कि "सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम मे सब स्वतन्त्र रहे।" अज्ञानता एव निरक्षरता को दूर करने के लिए ८ वे नियम मे "सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तने का आदेश दिया है।"

देश को पराधीनता से मुक्ति के लिए देश वासियो मे जागृति लाने के लिए सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा "कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं होता।" परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक-पृथक शिक्षा, अलग व्यवहार का छूटना अति दुष्कर है, बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।

अत: महर्षि ने देशवासियो में एकता लाने, हिन्दी को स्व-भाषा कहकर राष्ट्र भाषा का दर्जा देने का सुझाव दिया। गुजराती होते हुए भी अपना समस्त साहित्य हिन्दी भाषा मे लिखा समान शिक्षा पद्धति चालू करने के लिए गुरुकुल पद्धति की नींव डाली तथा वेद, शास्त्रो व स्मृतियो के अनुसार व्यवहार करने तथा समाज में प्रवृत्त कुरीतियो व वेद विरुद्ध मान्यताओ को छोड़ने के लिए आदेश दिया। ऋषि का प्रयास स्वराज्य के बीज रूप में सफलता की ओर बढ़ने लगा एक राष्ट्रपिता स्व० महात्मा गांधी जी ने ऋषि से प्रेरणा प्राप्त कर स्वराज्य आंदोलन को अपने अहिंसात्मक आंदोलन से सींचकर पुष्पित एवं फलित किया। आर्य समाजी बन्धुओ ने पूर्णरूपेण आंदोलन मे भाग ले उसे सफल बनाया। इतिहास साक्षी है कि आंदोलन में भाग लेने वाले ८० प्रतिशत आर्य समाजी ही थे।

स्वर्ग समान मौरीशस देश इसकी स्वतन्त्रता मे भी आर्य समाज का प्रमुख हाथ रहा है। इसीलिए सार्वदेशिक आर्य प्र० सभा ने भारत के अलावा विश्व के अन्य देशों की तरह यहा महासम्मेलन कर मौरीशस के राष्ट्रपिता स्व० डा० शिवसागर रामगुलाम जी का सार्वजनिक अभिनन्दन यहा गत १८ सितम्बर ८७ को उनके जन्म दिवस के अवसर पर उनकी सुखद स्मृति को चिरस्थायी रखने के लिए किया मौरीशस शासनके द्वारा गाव-२ मे अस्पताल खोलना उनकी भावना के अनुकूल एव उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि देना है। महर्षि ने आर्य समाज के उद्देश्यानुकूल आचरण को देशोन्नति का सर्वोत्तम साधन कहा है। अत. मेरी सभी देशवासियो से प्रार्थना है कि वह आर्य समाज को तन, मन और धन से सहयोग दें जिससे सबकी उन्नति और सुख-वृद्धि होगी यही ऋषि के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सर्वे भव तु सुखिन: सर्वेसन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुख भाग् भवेत्॥

पूर्णिमा का चन्द्र दयानन्द

(१)

पूर्णिमा के चन्द्र दयानन्द परम प्रकाश पसारा।
आर्यावर्त मे आवरण छाया अविद्या घोर अंधारा॥
तारे अनन्त रहे टमटमाते मन्द तेज सो चमके।
जिसमे उल्लू भूप घूमते समझ सत्ता निज दमके॥

(२)

कर नही पाता परम उजाला क्षणिक भाव से बन्ध।
ऐसे ही सब पोप पन्थ मे रहा भाव मे गन्ध॥
अपना अपना रहा प्रकाशित तेज तोर ले अपना।
हुआ नही प्रकाश भेद मत देखा दुख का सपना॥

(३)

आए भर प्रकाश आलौकिक देव दयानन्द स्वामी।
किया प्रकाश जगत मे जाहिर वेद-ज्ञान सुखधामी॥
नही लोकेषण नही अपना मत नही जिसमे प्रलोभन
नही किसी से द्वेष भावना नहीं था मन क्षोभण।

(४)

एक ही सत्य पुरातन पावन वैदिक धर्म बताया।
भूले थे सद-वेद मार्ग को महर्षि मार्ग दिखाया॥
स्वार्थवादी बनकर जग मे जगत गुरु बन बैठा।
मानव सभी ईश्वर का सुत है द्वेष दृष्टि ले ऐंठा।

(५)

ऐसा जग मे जगत गुरु है भेद भावना रखते।
ठुकराते हैं छुआछूत कर वेद ज्ञान नहीं लखते।
वह अपनी गरुडमता लेके अपनी धाक जमाई।
लिखा वेद मे वेद न पढते ऐसी बात बताई॥

(६)

अविद्या तम अन्धकार फैलाया जिसमे भटक गए थे
वेद ज्ञान प्रकाश न पाया भूला भटक गए थे।
आया ले प्रकाश दयानन्द सबको सूझ पडा थी
भागा तमभा दुखद यामनी बिच म जाय खडी थी॥

(७)

नरे मब अन्तरिक्ष को आगे जो चमके पन्थवानी
टम टमात गौरव भरते पूरे थे परमावी।
अरे दयानन्द न आते तो क्या ? भारत मे होता
कौन ? जगाते वैदिक विद्या मानव रहते सोता।

(८)

परम प्रकाश वेद का पाया गई अविद्या सारी
ज्योत्सना घर घर व्यापी, लग रही सबको प्यारी।
पूर्णिमा के चन्द्र दयानन्द वेद प्रकाश दिखाया
स्वच्छता सारी मेट अविद्या कवि धनसार बनाया॥

—कवि कस्तूर चन्द घनसार
कवि कुटीर पीपाड शहर (राज०)

आर्य वीर ऋषि दयानन्द

परहित का पाकर ताप प्रखर विषपान किया होकर निडर।
फिर भी कण्टक दुर्गम पथ से अनेको जीवन किए अग्रसर॥
मन मे आशा का दर्प लिए बढते ही रहे किंचित न रुके।
विकराल विषम विपदाओ से लडते ही रहे विचलित न हुए॥
विकसाए मानव हृत कलिका बनकर सुरभित ज्ञान समीर।
थकित प्रपीडित तृप्त हृदयो की हरली कसक वेदना पीर॥
सोए हुए ये गहन निद्रा वश ले गए वेद सरिता तीर।
वेदामृत का पान कराके मुक्त करा गए आर्य वीर॥

—सोमदत्त शर्मा (एम ए रिसर्च स्कालर)
हिन्दी स्कूल नाटिंघम इंगलैंड

परोपकारी ऋषि दयानन्द

आघात हुए कितने ऋषि पर सब सह गये हंस हंस कर।
दयानन्द के उपकारो को हम याद करगे जीवन भर॥

घनघोर निशा बीहड जगल काटों से भरा पथ सारा।
था हिंसक पशुओ का विहार नभ बीच न था कोई तारा॥
फिर भी आलोकित करते रहे जैसे जग को करता दिनकर।
दयानन्द के उपकारो को

जब भटके थे वेद मार्ग से ठोकर खा खा गिर जाते
रोते थे भोले भाले जन रजनीचर खुशी मनाते॥
गिरतो को उठाते रहे सभाल बन करके हितैषी करुणाकर।
दयानन्द के उपकारो को

—आदर्श कुमारी शर्मा
(एम ए आई जी डी बोम्बे) नाटिंघम इंगलैंड

आर्य जगत् के समाचार

राजस्थान के लोकप्रिय नगर अलवर में आर्य महासम्मेलन होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने, नयी पीढ़ी को, आर्य वीर दल द्वारा अग्रसर करने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया। आप भी अलवर पधारिए

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के लोकप्रिय प्रधान श्री छोटूसिंह एडवोकेट ने सभा के शताब्दी समारोह के साथ २ आर्य महा सम्मेलन आयोजित कर एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया कि अलवर नगर राजस्थान विश्व के लोगो का लोकप्रिय मेजबान है और रहेगा।

इस अवसर पर देश विदेश के अनेकानेक संन्यासी महात्मा विद्वान, उपदेशक गण, विदुषी सन्नारियां उपस्थित होंगी वहां देश विदेश के प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ भी इस समारोह मे सम्मिलित होने को उत्सुक हैं। वे भी भारी संख्या मे वहां पहुँचेंगे।

यह अपने ढंग का अनुपम समारोह होगा। लाखो की संख्या मे युवक युवतियां सार्वदेशिक आर्य वीर दल के तत्वावधान मे इस समारोह मे भाग लेकर गौरवान्वित होंगे। आने वाले समय के ये ही लोग युवाशक्ति के रूप मे आर्य जगत के कर्णधार सिद्ध हो इसके लिए युवक सम्मेलन की भी तैयारियां प्रारम्भ हो चुकी हैं। इसको सफल बनाने के लिए राजस्थान आर्य वीर दल के संचालक श्री सत्यव्रत एम० ए० व्यायामाचार्य और श्री सुखदेव जी आर्य (जोधपुर) अधिष्ठाता आर्य वीर दल राजस्थान प्राणपण से जुटे हैं और इस समय राजस्थान का दौरा कर रहे हैं।

संक्षेप मे यह महासम्मेलन अलवर की जनता के अपूर्व सहयोग की नई कहानी कहेगा। आप सभी से कहें कि ३० दिसम्बर ८८ को अलवर चलो! अलवर चलो!! वहां आपको मानवीय पक्ष मे संवाद आत्मबोध होगा और जिससे देश की जनता भावात्मक एकता के लिए संगठित होगा।

—बालदिवाकर हंस

प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल, नई दिल्ली

जम्मू में [illegible] पीड़ितों के लिए सहायता केन्द्र खोला गया है

आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible] जम्मू [illegible] पीड़ित [illegible] के लिए सहायता केन्द्र खोल रखा है। पहले [illegible] बाढ़ पीड़ित ३०० परिवार [illegible] चावल [illegible] दल [illegible] ने स्वयं जाकर विभाजित किया। [illegible] जाकर स्वयं दिया। [illegible] बढ़ गई सभा उनका प्रबन्ध कर रही है।

—योगेन्द्र कुमार

[illegible] खून [illegible] से [illegible] है

मास्को २४ अक्टूबर। रूसी वैज्ञानिकों ने एक शोध करके यह पता लगाया है कि [illegible] के [illegible] रहने वाले याकूत लोगो का खून का ग्रुप वही है जो उत्तरी [illegible] मे रहने वाले हिन्दुओं का है। हिन्दुओं के शरीर मे भी एच० एल० ए० बी ७० आक्सीजन खून प्रवाह होता है और याकूतों के शरीर मे भी।

यह आश्चर्य चकित करने वाला तथ्य उजागर हुआ जब वैज्ञानिकों ने याकूतों के मूल वंश की उत्पत्ति का पता लगाने के लिये प्रयोग किये।

शक्ल सूरत से याकूत मंगोलियाई लगते हैं। उनकी भाषा तुर्क सम्प्रदाय से मिलती जुलती है तथा संस्कृति आर्यों के निकटतम है।

[नवभारत २५-१०-८८ से साभार]

वैदिक धर्म प्रचार योजना

प्राचीन समय मे हमारा आर्यावर्त देश विश्व गुरु संसार सम्राट स्वर्ण-निधि एवं भूस्वर्ग कहलाता था। कारण कि परम पावन वेद का सर्वत्र प्रचार-प्रसार होने से यहां के निवासियों का धर्म सदाचार सादगी, त्याग, तपस्या और ब्रह्मचर्य आदि उत्तम व्रतों से युक्त जीवन था किन्तु वेद के अप्रचार से कालान्तर मे पारस्परिक वैमनस्य के कारण विदेशी यवन ईसाइयों का प्रवेश होने से देश की दुर्दशा हुई पूर्वजों के अथक प्रयास से आज हम स्वतन्त्र हैं और देश में स्वराज्य है परन्तु सुराज्य नहीं। क्योंकि आज देश मे राष्ट्र स्वामिका धर्मनिरपेक्ष शासन पद्धति प्रचलित होने से जन समुदाय मानवता के शत्रु अज्ञान अन्याय और अभाव मे सन्त्रस्त है। मानव मात्र को धर्म सापेक्षता का पवित्र पाठ पढ़ाते हुए देश मे सुराज्य स्थापन तथा लोगो को अज्ञान अन्याय और अभाव से मुक्ति दिलाने हेतु आर्य समाज सतत प्रयत्नशील है। क्योंकि "संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

पुरे ग्रामे हि गोशाला यज्ञशाला तथैव च।
मल्लशाला तु सर्वत्र धर्मशाला च भूयशः॥

वेदाक्त पावन उद्घोष कृण्वन्तो विश्वमार्यम् को चरितार्थ करने हेतु आर्य उप प्रतिनिधि सभा फर्रुखाबाद की ओर से जनपद मे व्यापक धर्म प्रचार योजना का निर्माण किया गया है। जिसका छः अक्तूबर ८८ से शुभारम्भ हो चुका है। इस योजना मे आर्य जगत के आर्य विद्वान संन्यासी श्री स्वामी प्रज्ञानन्द जी सिद्धान्ती [अलीगढ] श्री प० हरिशंकर जी आर्य एम ए [हरदोई] पंडित राजकुमार जी आर्य भजनोपदेशक श्री प० केशवदेव जी आर्य [फर्रुखाबाद] श्री प० अभयदेव जी शास्त्री [एटा] श्री प० सत्य प्रकाश जी आर्य [बाराबंकी] तथा श्रीमती मनोरमा देवी जी आर्या (अलीगढ) आदि उपदेशक जनपद फर्रुखाबाद के कोने कोने मे जाकर लोगो को वेद की मान्यताओ से अवगत करा सत्य सनातन वैदिक धर्म की ओर आकृष्ट करेंगे। आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री इस दिशा मे विशेष रुचि ले रहे है।

—विद्यासागर आर्य महामन्त्री

दर्शन एवं योग विद्यालय

(द्वितीय सत्र की प्रवेश सूचना)

वैदिक दर्शन के अध्ययन एवं क्रिया [illegible] के [illegible] युवक प्रवेशार्थ आमन्त्रित है। [illegible] श्रेणी के समकक्ष [illegible] जो कि [illegible] अच्छा प्रकार से पढ़ लिख [illegible] जाए।

भोजन [illegible] वस्त्र पुस्तकादि सम [illegible] विद्यालय [illegible] से होगी। प्रवेशार्थी के [illegible] है कि वह पूर्ण [illegible] भावना से युक्त [illegible] रखने वाला हो। [illegible] नियम [illegible] में श्रद्धा रखने वाला [illegible] भव से वैदिक धर्म [illegible] प्रचार प्रसार करने [illegible] रखता हो।

तीन मास [illegible] बौद्धिक, आध्यात्मिक [illegible] परीक्षण में उत्तीर्ण होने वाले ब्रह्मचारी को ही विद्यालय में स्थायी प्रवेश दिया जायगा अन्यों को नहीं। इस सत्र में यथा सम्भव [illegible] वैशेषिक न्याय वेदान्त तथा मीमांसा दर्शनों में से अधिकतम दर्शनों को पढ़ाने का प्रयास किया जायगा।

इच्छुक नवयुवक निम्न पते पर शीघ्र ही पत्र-व्यवहार करें। स्थान सीमित संख्या में हैं।

पता—स्वामी सत्यपति, दर्शन एवं योग विद्यालय आर्य वन विकास क्षेत्र रोजड़ पो० सागपुर जि० साबरकांठा गुजरात पिन ३८३३०७

स्मरण रहे—हमने अपने संस्थान के पूर्व नाम "दर्शन एवं योग प्रशिक्षण शिविर" को परिवर्तित करके 'दर्शन एवं योग विद्यालय' रख लिया है।

आर्य समाज 'पंखा रोड' 'सी' ब्लाक सी-३ पार्क जनकपुरी, नई दिल्ली द्वारा

बिहार बाढ़ पीड़ित कोष में दान सूची

क्र०	नाम	दान धनराशि रु०
१	डा० ए० सी० खोसला	५१)
२	श्री वृजलाल हुरनेजा	११)
३	,, गोपाल कृष्ण	५)
४	,, देवीदास खन्ना	११)
५	,, सुरेन्दर कुमार	११)
६	श्रीमती भागवन्ती कालरा	२०)
७	श्री शिव कुमार मदान	११)
८	,, के० सी० सूद	५१)
९	,, नेबराम सलूजा	२१)
१०	,, डी० आर० पाठक	२१)
११	,, अरोड़ा	११)
१२	,, नरेन्द्र छाबड़ा	१०)
१३	एस० बी० सूरी	१०)
१४	,, आर० के० कपूर	१०)
१५	एच० बी० नागपाल	३०)
१६	,, श्रीमती प्रकाशदेवी	५०)
१७	श्री श्याम सुन्दर	५०)
१८	,, आर० सी० सहगल	२५)
१९	,, के० एल० अग्रवाल	१०१)
२०	,, एच० आर० मिनोचा	३०)
२१	,, एच० एल० खेड़ा	२०)
२२	,, जी० आर० दुग्गल	५१)
२३	,, लालचन्द आर्य	२१)
२४	,, एच० के० एल० गुलाटी	२१)
२५	[illegible]	१०)
[illegible]	[illegible]	१०)

कुल योग रु० ७०३

वेद वेदांग पुरस्कार एवं वेदोपदेश पुरस्कार १९८९

आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा आगामी जनवरी मास १९८९ में निम्न पुरस्कारो से विद्वानो को सम्मानित किया जायेगा।

(१) वेद वेदांग पुरस्कार—जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त वेद वेदांगो का अनुसंधान एवं ग्रन्थ लिखे हों—उन्हें वेद वेदांग पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा। जिसकी पुरस्कार राशि २१०००) होगी।

(२) वेदोपदेशक पुरस्कार—वेद वेदांगो के अनुसंधान कर्ताओ के अतिरिक्त जिस विद्वान ने आर्य समाज के उपदेशक भजनोपदेशक अथवा कार्यकर्ता के रूप में ही जीवन पर्यन्त सेवा की हो—पुरस्कार की राशि ११ हजार रुपये होगी।

उपरोक्त पुरस्कार राशि के अतिरिक्त पुरस्कृत किये जाने वाले विद्वान को अभिनन्दन पत्र शाल एवं रजत ट्राफी से भी सम्मानित किया जाएगा।

उपरोक्त पुरस्कार हेतु आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई-५४ योग्य विद्वानो के प्रस्ताव को आमन्त्रित करती है। जो आर्य पुरुष किसी विद्वान के नाम प ेषन पुरस्कार हेतु प्रस्तावित करना चाहते हैं वे विद्वानो के जीवन परिच ाय एवं लिखे गये ग्र थ की सूची आदि सहित विस्तृत पत्र दिनांक १० नवम्बर ८८ तक भज न दी ह ा रें।

जो विद्वान अपने नाम का स्वयं प्रस्ताव करेंगे वे अयोग्य माने जायेंगे।

—विमल स्वरूप सूद महामन्त्री

आर्यवीर महा सम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न

रोहतक। आर्य वीर दल हरियाणा का १२ वां प्रान्तीय महासम्मेलन १, २ अक्तूबर को हिसार में प० सत्यदेव जी भारद्वाज (नैरोबी) की अध्यक्षता में अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

शनिवार १ अक्टूबर को स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा ने ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम का आरम्भ किया। स्वामी जी ने आर्य वीरो को सामाजिक कार्यों में जुटने का आवाहन करते हुए हरियाणा प्रान्त में आए बाढ़ पीडितो की सहायता कार्य करने का निर्देश दिया। स्वामी जी को ११००) रु० की राशि भूकम्प पीडितो की सहायतार्थ आर्य वीर दल की ओर से संचालक श्री उमेदसिंह शर्मा ने भेंट की। आर्य समाज नागोरी गेट हिसार के प्रधान तथा सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष म ला र न्द ी जी आर्य ने स्वामी जी को सम्मान जैं प्रार ो राशि ।८ की।

नगर में विशाल शोभा यात्रा का संचालन श्री राजकुमार आर्य, सत्यवीर तथा संजय कुमार के सहयोग से हजारो आर्य वीरो, आर्य संस्थाओ के बच्चो ने बाजारों में प्रदर्शन किया।

रात्रि को आर्य वीर सम्मेलन स्वामी ओमानन्द की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें प्रो० उत्तम चन्द शरर, प्रो० रतन सिंह शास्त्री तथा प० जय प्रकाश आर्य आदि ने आर्य वीरो को सम्बोधित किया। स्वामी ओमानन्द जी ने युवको को आन्दोलन हाथ में लेने का आवाहन किया और अपने सहयोग का आश्वासन दिया।

मनोज सलूजा उत्साही आर्य युवक

पिथौरागढ। आर्य समाज पिथौरागढ के सदस्य ब्र० मनोज सलूजा १९८८ में छात्रसंघ महाविद्यालय के महासचिव के पद पर निर्वाचित हुए हैं। मनोज जी व्यसनरहित आकांक्षी युवक हैं तथा अज्ञान, अन्याय, अभाव के प्रति जागरूक रहते हैं। आर्य समाज के उन्नयन में उनसे बडी आशाएं हैं।

—गुरुकुलानन्द सरस्वती

वनवासी आर्य महासम्मेलन एवं यजुर्वेद-पारायण महायज्ञ

२६, २७ और २८ नवम्बर सीतापुर (सरगुजा) म०प्र०

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

हमारे पूवजो ने बड बड बलिदान और सघर्षो से आजादी प्राप्त की थी किन्तु आज विदेशी शक्तिया पुन इस देश को खण्डित करके पराधीन करना चाहता हैं। देश भर मे कहीं आय द्रविड कहीं सवण और हरिजन नो कही आदिवासी व वनवासी आदि का भेद पैदा करके विशेषकर हरिजनो और वनवासियो को हिन्दू समाज से अलग करने की चेष्टा की जा रही है। मध्यप्रदेश उडीसा तथा महाराष्ट्र का काफी क्षत्र इस समय ईसाई मिशनरियो की चपेट मे है जहा उन्होने लोभ लालच और भय से वनवासियो का बडी सख्या मे ईसाईकरण किया है।

आगामी २६ २७ और २८ नवम्बर ८८ को सीतापुर जिला सरगुजा मे ३ दिवसीय आय सम्मेलन का आयोजन सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आन दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे आयोजित होगा। इस सम्मेलन मे उक्त मूलभूत समस्याओ पर गम्भीरता से विचार किया जायेगा। २७ नवम्बर को विशाल यज्ञ कायक्रम होगा और हजारो की सख्या मे पथविचलित लोग पुन वैदिक धम को स्वीकार करेंगे। इस कायक्रम मे देश के अनेक उच्चकोटि के स यासी विद्वान तथा उपदेशक और दानी आय महानभाव पधारगे।

यज्ञ का शुभारम्भ २४ नवम्बर को और पूर्णाहुति २८ नवम्बर को होगी।

कौशल्या देवी — अध्यक्ष स्वागत समिति
धर्मानन्द सरस्वती — सयोजक

नोट—रायगढ स्टेशन से अम्बिकापुर जाने वाली बस सीतापुर होकर जाती है। रायगढ से सीतापुर १३० किलोमीटर दूर है वहीं हाई स्कूल के पास कायक्रम होगा।

दयानन्द और दीपावली

शिव शकर तुम बने काल के विषधर प्याले पीकर।
हो गये अमर ऋषिराज सुधा सुपान करा को दकर।।
महाव्रती सन्यासी यतिवर ब्रह्मचय व्रत धारी।
नष्ठिक निमम सिंह पुरुष थे योद्धा परमोदारी।।
सत्य ज्ञान के हेतु धरा पर तुम्हें अवतीण हुए थे।
गो माता विधवा अनाथ के हत तुम्हीं न म थे।।
अश्रुपात कर उठे नयन विलखाता दख जननि की।
दलितो के उद्धारे हेतु तुम करुणा अमिट भरे थे।।
वेद ज्ञान की अमर ज्योति भी जगती मे फलाई।
ओ३म् ध्वजा ले अखिल विश्व को सच्ची राह दिखाई।।
कष्ट कठोर सहे ऋषि तुमने जग को जीवन दान दिया है
पीकर काल कूट विष प्याले सत को ही सम्मान दिया है।।
दयानन्द आन द प्रपूरित हृदय विशाल तुम्हारा।
हे प्रकाश के ज्योति स्तम्भ सुरसौरभित सुयश तुम्हारा।।
युग स्वनाम धन्य दयानन्द! तुम युग के सृष्टा थे।
पाखण्डो से पीडित जग के श्रेय माग द्रष्टा थे।।
अज्ञान अविद्या अन्धकार मे ज्ञान भानु बनकर तुम प्रकटे।
स्वतन्त्रता पोषक स्वराज्य के मन्त्र प्रदाता तुम प्रकटे।।
दीपावलि के दिव्य दीप आत्म ज्योति से चले जलाकर।
वसुधा को अभिसचित कर वैदिक ज्ञान सुधा से।।
ऋषिवर! तुम को शत शत प्रणाम भावा भरे सुमन से।
भरत-भूमि के भव्य भाल पर, भानु भास्वरित जैसे।।

—वेदप्रकाश वैदिक मैनपुरी (उ० प्र०)

नेपाल आय समाज के प्रधान श्री टकबहादुर राय माझी को सावदेशिक सभा कार्यालय मे स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती वेदभाष्य भट कर रहे हे साथ मे खड श्री तिलक बहादुर कीर्ति तथा माता योगमाया जी

गुरु विरजानन्द निर्वाण दिवस सम्पन्न

आय समाज मठपारा दुग म वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री गुलाबचन्द जी बसल की अध्यक्षता मे गुरु विरजान द निर्वाण दिवस मनाया गया प्रात ८ बजे से ६ बजे तक सामूहिक हवन हुआ। तत्पश्चात सभा कक्ष मे महर्षि दयानन्द आय विद्यालय के छात्रा द्वारा भाषण व भजन हुए। आय वीर दल के शिक्ष श्री अनिल आय श्री शशिभूषण महन्ती श्रीमती विमला श्रीवास्तव ने गुरु विरजानन्द जी को अपने शब्दो म श्रद्धाजलि अर्पित की। आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रमेशच द जी श्रीवास्तव ने स्वामी दयानन्द जी को का गुरु भक्ति क बारे मे प्रकाश डाला एवम् गुरु विरजान द जी को अपने शब्दो मे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। अन्त मे आय प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री गुलाबचन्द जी बसल गुरु विरजानन्द जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला व उन्होने गुरु और शिष्य के बीच की अटूट श्रद्धा की महानता बतायी।

—उपम त्री

साधना शिविर

महा० नारायण स्वामी आश्रम रामगढ तल्ला जिला नैनीताल मे दिनाक २३ ६ ८८ से २६ ९ ८८ तक योग साधना शिविर सम्पन्न हुआ जिसमे जगह जगहके अनेक साधको तथा माताओं ने भाग लिय और स्थानीय साधको ने भी पूण उत्साह से शिविर लाभ उठाया। यह शिविर पिछले दो वर्षो से लगाया जा रहा है जिसमे लगभग सभी प्रान्तो से साधक लोग पधार कर शिविर का लाभ उठाते हैं। योग शिविर म स्वामी भजनानन्द जी ने आसन प्राणायाम तथा ध्यान आदि का प्रशिक्षण दिया। जिससे बहुत से साधको को विशेष लाभ पहुँचा। महात्मा नारायण स्वामी आश्रम मे कुछ भवन क्षतिग्रस्त हो चुके है इसलिए हमारे नगर वासियो को अधिक से अधिक दान देकर आश्रम की सहायता कर। अभी वहाँ पर भोजन व बिस्तरो की भी कमी है, यह स्थान योग साधना के लिए उत्तम स्थान है एकान्त व सुनसान जगह पर जहा किसी भी प्रकार का शोर नहीं होता है। ऐसा स्थान स्वामी जी की देन है।

—महेशच द पाण्डे आय प्रधान

पता परिवर्तन की सूचना

समस्त आय सज्जनो को विज्ञप्ति हो कि मेरा पता बदल गया है अत आगे से कृपया निम्न पते से ही सम्पक कर।

डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी आर्योपदेशक
दयानन्द सेवाश्रम मुसाढी
पो० मुसाढी, जिला नालन्दा बिहार राज्य
पिन ८०१३०४

R N 626/57 Licensed to post without prepay ment ... II 93 Post in D P S O on 10-11-1988

ऐतिहासिक नगरी गया मे वेद प्रचार की धूम

दिनांक २०-२१-२२ अक्तूबर १९८८ ई० को बिहार राज्य अन्तर्गत महान ऐतिहासिक नगरी गया के अन्दर आर्यसमाज पुराना गोदाम के उत्सव पर आर्य जगत के महान विद्वानों के द्वारा वैदिक धर्म प्रचार का आयोजन बड़े धूम धाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भगवान् बुद्ध की तपोभूमि में वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन और संस्कृत भाषा सम्मेलन आयोजित किये गये। इस अवसर पर आर्य जगत के मुख्य विद्वान पं० सत्यदेव शास्त्री (वाराणसी) श्री वागेश आर्य (गाजीपुर) डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी (नालन्दा) श्री प्रमानन्द दान (खगड़िया) श्री मन्गल पाल आर्य (कलकत्ता) श्री शिवधर आर्य (दानापुर) श्री भिखर आर्य (डहरा) प्रभृति विद्वानों के कार्यक्रम होते रहे।

—रामकुमार आर्य

शोक समाचार

—परमेश्वर के अटल नियमानुसार मेरे पूज्य ससुरजी श्रीमान कशीनाथ जी शास्त्री वेद प्रचार अधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० व विदर्भ तथा सदस्य धर्माय सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का शरीरान्त दिनांक ४-८-८८ गुरुवार को हो गया है।

—एच० पी० वर्मा

—आर्य समाज दिउनी सिपुरा के मन्त्री सुरेन्द्रपालसिंह आर्य की धर्मपत्नी आशादेवी आर्य का दिनांक ७-१०-८८ को स्वर्गवास प्रातः बजे हो गया।

—रामभरोसे लाल आर्य

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन

आर्य समाज भुवनेश्वर का एकादश वार्षिक महोत्सव से १ मई तक समारोह के साथ सम्पन्न हुआ इस अवसर पर आर्य समाज के उद्भट विद्वान श्री भवानीलाल भारतीय के प्रेरणा प्रद प्रवचन तीनों दिन हुए।

इसी शुभ अवसर पर उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन एवं निर्वाचन अत्यन्त उत्साहमय वातावरण मे सम्पन्न हुआ। आगामी वर्षों के लिये सर्वसम्मति से निम्न अधिकारी निर्वाचित हुए।

१—प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी गुरुकुल आमसेना
२—उपप्रधान श्री इं० अ० प्रियव्रतदास जी भुवनेश्वर
३—मन्त्री श्री विशिकेशन शास्त्री साहित्याचार्य माण्डोसिल
४—उपमन्त्री श्री ब्रजबन्धु पण्डा पुरी
५—कोषाध्यक्ष श्री गोपालदास रावल सम्बलपुर

इनके अतिरिक्त नौ जिलो से नौ अन्तरंग सदस्य भी निर्वाचित हुए। जो अपने ८ जिलो मे आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिये यत्न करेंगे।
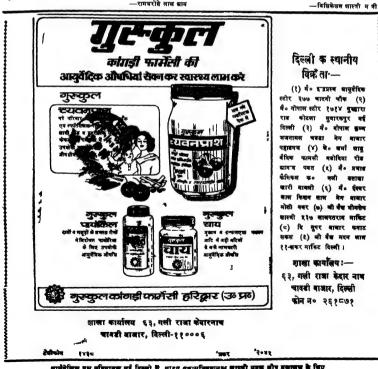
—विशिकेशन शास्त्री मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली से प्रकाशित।

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८९] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २३ अङ्क ४७] कार्तिक शु० १२ स० २०४५ रविवार २० नवम्बर १९८८ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे

संस्कृतके मामलेमें आर्यसमाजके शिष्टमंडल की मानव संसाधन मन्त्रीश्री पी० शिवशंकर से भेंट

सरकार संस्कृत के मामले पर पुनर्विचार करेगी

दिल्ली ११ नवम्बर १९८८

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा वरिष्ठ उप प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने कल १० नवम्बर १९८८ को मानव ससाधन विकासमन्त्री श्री पी० शिवशकर से भट वार्ता मे केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोड के अध्यक्ष द्वारा नई शिक्षा पद्धति पर जारी किए गए परिपत्र पर चर्चा की। बोर्ड के इस परिपत्र के अनुसार सस्कृत भाषा को अन्य विदेशी भाषाओ यथा जर्मन फ्रैंच, अरबी फारसी आदि के समकक्ष रखा गया है तथा उसे अनिवार्य भाषा के रूप मे अध्ययन के लिए स्कूलो के हिन्दी पाठ्यक्रम (अ) के साथ जोडा गया है।

मन्त्री महोदय ने इस अवसर पर पहले उस पृष्ठभूमि की चर्चा की जिसके आधार पर शिक्षा पद्धति के नये स्वरूप को सूचित किया गया है। इस भट वार्ता के समय केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोड के अध्यक्ष भी उपस्थित थे।

बातचीत के परिणाम स्वरूप मन्त्री महोदय ने इस बात को स्वीकार किया कि सस्कृत को अन्य विदेशी भाषाओ के साथ एकसम करने से जनता मे रोष पैदा हुआ है वह अकारण नही है। सस्कृत सभी भारतीय भाषाओ की जननी है। उन्होने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोड के अध्यक्ष का निर्देश दिया कि इस दोषपूण स्थिति को शीघ्र दूर किया जाय। आयसमाज के नेताओ ने वातचीत के समय यह प्रश्न भी उठाया कि सस्कृत भाषा के साथ यह भेदभाव क्या बरता जा रहा ह जब कि सविधान के अनुच्छेद आठ मे दी गई प्रमुख भारतीय भाषाओ की सूची मे उसका स्थान भी है। हिन्दी को प्रथम भाषा के रूप मे पढने वाले विद्यार्थियो की तरह अन्य भारतीय भाषाओ को प्रथम भाषा के रूप मे पढने वाले विद्यार्थियो के पाठक्रम मे भी सस्कृत को क्यो सम्मिलित नही किया गया है?

वार्तालाप क अन्त मे मन्त्री महोदय ने शिष्टमण्डल को आश्वासन दिया कि सस्कृत के मामले पर वे सब दृष्टिकोण से पुन विचार करगे।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

श्री योगेन्द्र नारायण मन्त्री एव दाहिनी ओर अध्यक्ष श्री प्रेमनाथ ग्रोवर, बिहार राज्य भूकम्प एव बाढ पीडित समिति पटना तथा मध्य मे श्री प० बालदिवाकर हस प्रधान सचालक आर्य वीर दल नई दिल्ली। पीडित क्षेत्र सेवा काय से लौटकर पटना मे इकटठे हुए।

भारतीय संघ में खालिस्तान बनना पंजाब की समस्या का समाधान

राम जेठमलानी का प्रस्ताव : राष्ट्रीय भावना पर प्रहार

दिल्ली ७ नवम्बर १९८८

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और हैदराबाद के आर्य नेता प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् ने एक सयुक्त प्रैस वक्तव्य मे श्री जेठमलानी द्वारा चण्डीगढ के सेमिनार मे पजाब समस्या के हल के लिए भारतीय सघ मे खालिस्तान के निर्माण के सुझाव पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि जेठमलानी का यह सुझाव अप्रत्यक्ष रूप से उग्रवादियो, आतकवादियो और हत्यारो का समर्थन है। इससे धार्मिक कट्टरतावादी ताकतो और अलगाववादी प्रवृत्तियो को प्रोत्साहन मिलता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

दान सूची

बिहार भूकम्प एवं बाढ़ पीड़ित सहायतार्थ

१६-१०-८८ से ३१-१०-१९८८ तक

१—मन्त्रिणी जी स्त्री आर्य समाज मोगा (पंजाब)	११००)
२—सत्यानन्द जी मुंजाल हीरो साइकिल्स लुधियाना	१०००)
३—मुरारीलाल जी २/३६ राजनगर गाजियाबाद	२००)
४—नावल्टी प्रोसेज स्टूडियो खम्बाटा लेन बम्बई	२००)
५—रामाश्रम ट्रस्ट बम्बई	१०००)
६—प्रधानाचार्य डी ए वी हायर सेकेन्डरी स्कूल मद्रास	९६३८)२५
७—प्रेसीडेन्ट आर्य समाज सेन्ट्रल मद्रास	१०,०००)
८—जयप्रकाश वैद्य मन्त्री आर्य समाज बरहन (आगरा)	२००)
९—तेजलाल लिलहारे पर्सनल हिन्दुस्तान कापर लि० बालाघाट	१३८)
१०—मन्त्री जी आर्य समाज गोसपुरा न० १ ग्वालियर	१००)
११—मन्त्री जी आर्य समाज मन्दिर डा० राजेन्द्र प्रसाद मार्ग जालना ३	१०००)
११—शंकरराव गणपतराव मेश्राम निमखेड बाजार अंजनगाव अमरावती	११)
१३—आर्य समाज पखा रोड सी ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली	७०३)
१४—आर्य वीर दल कनावनी गाजियाबाद	१००१)५०
१५—मै० मोहनलाल श्री नारायण मीना बाजार बेतिया (प० चम्पारण)	१००)
१६—भागवत सरन रस्तोगी अखिल फार्मेस्यूटिकल्स कानसैन रोड बदायू	५०)
१७—शंकरलाल दौलतराम नारायणगढ	५०)
१८—गणपतसिंह म० न० ५५६/३ बसई रोड गुडगाव हरि०	२१)
१९—मन्त्री जी आर्य समाज बिमस गान्धी नगर यवतमाल	१०१)
२० —आर्य समाज दरियागंज दिल्ली	५००)
२१—एच सी चराईपाल वरिष्ठ उपप्रधान आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद	२३१)
२२—रघुवीरसिंह प्रधान आर्य समाज जगतपुर जि० मैनपुरी	२०)
२३—गुप्तदान द्वारा श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य अमरोहा	१०००)
२४—वीरेन्द्र कुमार आर्य अमरोहा	१००)
२५—डा० उर्मिला अग्रवाल आर्य समाज अमरोहा	५००)
२६—सुशीला देवी भाटिया महेश नगर	१०००)

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश हैदराबाद के मन्त्री जी ने निम्नलिखित महानुभावों से/आर्य समाजों से भूकम्प पीड़ित सहायता के लिए धन प्राप्त किया जो सभा को प्राप्त हुआ है।

१	आर्य समाज जडचारला	६००)
२.	आर्य समाज निजामाबाद	२५१)
३	आर्य समाज जहीराबाद	१३०)
४	श्री नारायण लिंगा रेड्डी	२५)
५	श्री प० कृष्णदत्त जी	२५)

भारतीय संघ

(पृष्ठ १ का शेष)

वक्तव्य मे कहा गया है कि जेठमलानी की सहानुभूति सदैव ऐसे तत्वो के साथ रही है जो इस देश को कमजोर करना चाहते है। धर्मान्तरण रोक सम्बन्धी —न श्री ओमप्रकाश त्यागी के बिल का उन्होने ही विरोध किया था और आज वह श्रीमती इन्दिरागांधी के हत्यारो को बचाने के लिए येन केन प्रकारेण दिन रात लगे हुए है। उनका प्रस्ताव अत्यन्त विस्फोटक और देश की राष्ट्रीय भावनाओ पर प्रत्यक्ष प्रहार है। —प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा

दान उन संस्थाओं को दें, जिनसे आप हिसाब मांग सकें

— सूर्य देव —

आर्यसमाज माडल टाऊन दिल्ली के समारोह मे ३० अक्तूबर को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्य देव जी ने कहा कि आज चारो ओर नई नई संस्थाए खोली जा रही हैं तथा नये नये ट्रस्टो का निर्माण किया जा रहा है। यह संस्थायें व्यक्तिगत संस्थाये हैं। इनका हिसाब किताब देखने वाला भी कोई नही है। दिल्ली मे कई ट्रस्टो की सम्पत्ति नष्ट हो गयी है। ये संस्थाए और ट्रस्ट साहित्य प्रकाशन के नाम पर, सूखे के नाम पर, बाढ के नाम पर अथवा भूकम्प के नाम पर और कभी कभी नई आर्यसमाजे शुरू करने के नाम पर दान मांगते रहते हैं। ये किसी भी धन-राशि का हिसाब भी जनता को नही देते। आर्यसमाज माडल टाऊन के भाईयो ने गत वर्ष सूखा पीडितो के लिए १३ हजार रुपये का गेहू दिया था। इसका हिसाब आपके सामने है। सार्वदेशिक सभा की ओर से धर्मरक्षा महाभियान, साहित्य प्रकाशन तथा सामाजिक कुरीतियो के निवारण तथा भूकम्प बाढ पीडितो की सहायतार्थ कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमो के लिए आर्य जनता से आर्थिक सहयोग मिलता है इसका हिसाब रखा जाता है तथा प्रतिवर्ष चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट से लेखा निरीक्षण कराया जाता है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का हिसाब मांगने का देखने का आप सभी को अधिकार है। श्री सूर्य देव ने अन्त मे पुन अनुरोध किया कि आप अपना सात्विक दान केवल उन्ही संस्थाओ के माध्यम से दे जिनके ऊपर आपका नियन्त्रण हो, जिन पर आपको विश्वास हो कि इनके माध्यम मे दिया हुआ दान सही उद्देश्यो के लिए व्यय किया जाए और जिनसे आप हिसाब मांग सकें।

नेपाल आर्य समाज केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति

क्र स	नाम	पद	फोन न०
१	श्री टेक बहादुर रायमाझी	अध्यक्ष	४–१३४३९
२	,, तिलक बहादुर कार्की	उपाध्यक्ष	४ १३६४१
३	,, शंकर लाल केडीया		२ -२४७५०
४	,, ओम प्रकाश मोर	,,	२- १५५७०
५	,, गोकुल प्रसाद पोखरेल		४–१३१२६
६	,, बद्री प्रसाद पहाडी	,,	
७	,, अखण्ड प्रकाश रायमाझी	महासचिव	४–१३७६२
८	,, राजबाबु पाण्ड	सह-सचिव	४–१४६३६
९	,, बि एल शर्मा	कोषाध्यक्ष	२–२४९००
१०	,, शिवमऊ शर्मा	सह कोषाध्यक्ष	२–१५३७७
११	,, ईश्वरी चापागाई	प्रचार-सचिव	२–२४९५०
१२	,, मणिहर्ष ज्योति	कार्यकारिणी सदस्य	२–२५४९०
१३.	,, जावन पिया	,,	२–२७३८५
१४	,, केशव प्रसाद सापकोटा	,,	४–११११
१५	,, हिरण्य प्रसाद शर्मा	,,	४–१५१३१
१६	,, हरि अधिकारी	,,	४–१५१३१
१७.	,, पूर्ण भण्डारी 'बन्धन'	,,	४–१२५१६
१८	श्रीमती करण खेतान	,,	४ १३०४४
१९	श्रीमती गंगा राणा		४–१४२८२
२०	श्रीमती रजनी राणा	,,	२–१५९७५
२१	श्रीमती दुर्गा गुरूड०	,,	४–१३०६४
२२	,, नूर प्रताप राणा	,,	४–१६२८२
२३	,, गोकर्ण देव पाण्डे	,,	९-२११२१
२४	,, ऋद्धी बहादुर कार्की		
२५	,, ओम प्रकाश अग्रवाल	,,	४-१०/९४
२६	,, गणेश वज्र लामा	,,	४–१२६०८

इनके अलावा साधारण सदस्यो की संख्या २० है।

योगमन्दिर में लगाए गए आक्षेप ठीक नहीं

विश्व आर्य सम्मेलन की योजना सार्वदेशिक सभा के विरुद्ध

सोमनाथ मरवाह की घोषणा

पिछले काफी समय से मै यह देख रहा हूँ कि कुछ विरोधी तत्वो ने जिनकी प्रवृत्तिया सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के पक्ष मे नही है सभा के नेतृत्व के खिलाफ एक अभियान चला रखा है। मैं उनके इस काय की भ सना करता हू क्योकि यह सभा के हित मे नही है। योग मन्दिर मे लगाये सभी आक्षेप ठीक नही हैं।

इस समय आवश्यकता इस बात की है कि सभी लोग जो साव दशिक सभा को सुदृढ रूप से प्रगति के रास्ते पर चलते देखना चाहते हैं मिलकर महर्षि दयान द के आ दोलन को सफलता के शिखर तक पहुचाने का प्रय न करे। महर्षि ने सत्याथ प्रकाश के रूप मे आज से १०० से अधिक वष पूव हमे एक घोषणा पत्र दिया था जिसमे उनके आ दालन का उद्देश्य भी दिया हुआ था।

मै समस्त आय समाजियो से आग्रह करता हू कि वे आय नेताओ का चरित्र हनन करना छोड़कर आयसमाज के प्रति अपनी सच्ची निष्ठा और प्रम से काय करत हुए महर्षि दयान द के आदोलन को सफल बनाने का प्रयत्न कर एक सच्च और अनुशासित आय समाजी होने के नाते मै—विश्व आय महासम्मेलन की योजना का अनुमोदन नही करता हू क्योकि प्रकारा तर से यह सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा का विरोधी काय होगा।

दिनाक (हस्ताक्षर)
११ ११ १९८८ सोमनाथ मरवाह

दीपावलि पव के साथ महर्षि दयानन्द का

निर्वाण उत्सव सम्पन्न

रामलीला मैदान मे यज्ञ और श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम के द्वारा ध्वजारोहण के साथ प्रारम्भ

दिल्ली। महर्षि दयान द निर्वाण पव पर यज्ञ के पश्चात् श्री प० रामच द्रराव व देमातरम ने ध्वजारोहण का काय सम्प नकर अपने उद्बोधन भाषण मे आय जगत को दिशा बोध दिया। जिसमे आय समाज के विगत कार्यों की चर्चा करते हुए भावी कायक्रम पर आर्यों को आगे बढाने के लिये प्ररणा दी।

प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता मे सभा की कायवाही प्रारम्भ हुई इस अवसर पर के द्रीय रक्षा म त्री श्र कृष्णच द्र प त ने महर्षि को अपना भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। आपने कहा कि महर्षि दयान द ऐसे युग पुरुष थे जि होने न केवल स्वतन्त्रता आ दोलन हेतु नई दिशा दी। नारी उत्थान गिरे हुए समाज को उठाने मे और कुरीतियो के खिलाफ अद्वितीय काय किया जिससे समाज व राष्ट्र मे आ म विश्वास की भावना पदा की देश मे वतमान स्थिति की भी चर्चा की और सरकार को उसके लिये सजग व सचेष्ट बताया।

श्री स्वामी आन दबोध सरस्वती ने श्री प त जी का हार्दिक स्वागत करते हुए कहा कि आपके द्वारा किये देश काल के आधार पर रक्षा काय समय पर स्मरण किये जाते रहेंगे। आपके सबल हाथो से भारत आज विश्व की महान शक्ति बन कर सामने आया है हमे देश की अखण्डता को हर कीमत पर सुरक्षित रखना है। प्राप्त आजादी की सुरक्षा ही स्वामी जी के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

प० हरिशरण जी सिद्धान्तालकार का अभिनन्दन

इस शुभावसर पर प्रसिद्ध सस्कृत विद्वान प हरिशरणजी सिद्धा तालकार का अभिनन्दन भी किया गया। आप गुरुकुल कागडी के पुरातन पीढी के स्नातक हैं।

व्याकरण के प्रमुख विद्वान ८७ वर्षीय श्री हरिश ण सिद्धा तालकार को समारोह के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने थैली भेंट की।

प० हरिशरण सिद्धा तालकार पिछले ५० वष से वेदा पर अनुस धान कार्य कर रहे हैं। उ होने चारो वेदो तथा उपनिषदो का भाष्य भी किया है। उनके भाष्य की विशेषता है कि यह सामा य लोगो की समझ म आने वाला तथा व्याक ण सम्मत है।

इस अवसर पर श्री हरिशरण ने श्रोताओ से आग्रह किया कि मानव जाति की इस अमू य निधि की रक्षा करने के लिए इसका नियमित पाठ कर। उ होने अपना यह अनुभव भी श्रोताओ को बताया कि बारबार वेद के मूल पाठ करने से इसके अथ अपने आप स्पष्ट होने लगते हैं। समारोह के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे स्वामी दयानन्द का विश्व कमयोगी बताते हुए उनके माग का अनुसरण करने का आह्व न किया।

बिहार के भूकम्प तथा बाढ़ पीड़ितो में कम्बल तथा गरम कपडो के वितरण के लिए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और श्री बालदिवाकर हस पुनः बिहार के दौरे पर

सावदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आन दबोध सरस्वती और आय वीर दल के प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हस को साथ लेकर पुन बिहार के भूकम्प तथा बाढ प डित क्षत्रो के दौरे पर रवाना हो गए है। वहा भारी मात्रा म गरम कम्बल और गम कपडो का जरूरत मन्दो मे सर्दी स बचाव के लिए वितरण किया जायगा।

श्री बालदिवाकर हस जब बिह र दौरे से लौटे तो उ हाने सभा प्रधान जा से अनुरोध किया कि वहा पीडित लोगो को सर्दी से बचाने के लिए कम्बलो की तुर त व्यवस्था कराने की आवश्यकता है। सभा द्वारा तुर त इस विषय मे ध्यान दिया गया। लगभग कई हजार कम्बल व वस्त्र पीडित लोगो मे बटवाने के लिए बिहार भूकम्प तथा बाढ पीडित सहायता समिति की ओर से प्रब ध किया जा रहा है। कम्बल व व त्र पटना भेजे जा चुके हैं

सच्चिदानन्द शास्त्री, मन्त्री

भारतीय मास ! नाम और काम !

—वंशीधर आर्य, मन्त्री आर्य समाज, ग्राम-पो०-जयनगर, मंडल-हजारीबाग, बिहार

यू तो हमारे ऋषियो (पूर्वजो) ने मास गणना और समय अथवा दिन गणना बहुत सोच समझकर बनाए। इसी गणना को करीब-करीब आज भी सारे विश्व के विज्ञानवेत्ता भी मानते हैं। जैसे—३६० दिन का वर्ष, फिर चार वर्षो मे एक मल मास लगाकर ३६५ दिन के लगभग। पूर्ण चन्द्रमा का उदय पूर्णमासी और पूर्ण चन्द्रमा का लोप अमावस्या। आज भी किसी सम्वत चाहे ईसा का हो हजरत का हो ऐसा मानने की परम्परा नही है। और विषयान्तर न होकर मैं पूर्व ऋषिकृत मासिक नामो का उल्लेख करता हूँ। यह हमारे मासो का नाम नक्षत्रो के नाम पर आश्रित है। जैसे—(१) चित्रा से चैत्र, (२) विशाखा से वैसाख, (३) ज्येष्ठा से ज्येष्ठ, (४) उ० षाढ, पु० षाढ से आषाढ़ (५) श्रवणा से श्रावण (६) भद्रा से भाद्र (भादो), (७) अश्विनी से आश्विन, (८) कृतिका से कार्तिक, (९) मृगशिरा से मार्गशीर्ष (अगहन) (१०) पुष्या से पौष (११) मघा से माघ, (१२) उ. फाल्गुनी, पु. फाल्गुनी से फाल्गुन का महीना होता है।

(१) चैत्र—समाप्त वर्ष का कृष्ण पक्ष एव आने वाला वर्ष मे शुक्ल पक्ष होता है। अतः चैत्र को आगे और पीछे दोनो ओर दो नेत्र है। यह चेतावनी देता है कि जिस प्रकार मैं कृष्ण पक्ष (काले कारनामो) को छोडकर शुक्ल पक्ष (उच्च विचार) को ग्रहण करता हूँ। उसी प्रकार हे मानवो ! मेरे जैसा विचार को अपनाओ और अपना चरित्र रूपी चित्र को सुशोभित करो अवगुणो को छोडकर गुण ग्राही बनो।

(२) वैसाख—वि-साख=विशाल+साख (विश्वास)। सम्पन्न होना और बसन्त के यौवन भार से लद जाना। ईश्वर ने बसन्त ऋतु मे हर वृक्ष को फल, फूल, नए-नए कोमल पत्तो से भर देता है। परन्तु फल फूल (धन) से वह इठलाता नही, बल्कि वह झुक जाता है। वह कहता है कि हे मानवो ! धन पाकर मुझ जैसा झुकना सीखो। धन पाकर इठलाना बन्द करो।

(३) ज्येष्ठ—जेठ=बडा। ग्रीष्म काल का महीना। साल मे सबसे बडा दिन। दिन का बडा होने से गरमी प्रचण्ड रूप से होती है। सारा पृथ्वी जल उठता है और भीषण गरमी समुद्र मे भी पडता है, जिससे भाप बनकर बादल बनते है और पर्वतो से टकराकर जल बरसाते है। अगर दिन छोटे होते तो गरमी भीषण नही होता और वर्षा नही होती। यही है पौराणिक गप समुद्र मथन की ओर लक्ष्मी (धन) की प्राप्ति थी।

(४) आषाढ—आशा लगाना अर्थात् वर्षा की शुरूआत। किसानो को इसी महीने से खेती का कार्य शुरु हो जाता है।

(५) श्रावण—सुनना। रिमझिम-२ बुन्दो को सुनना। बादलो के गजन को सुनना। खेत रोपते हुए नारियो का उल्लासपूर्ण गान को सुनना और खेत का काम समाप्त हो जाने पर वेद का पढना, पढाना और सुनना-सुनाना हम आर्यों का परम धर्म है। परन्तु आज हम सावन भर दाढी बढाकर गगा मे डुबकी लगाकर "कावरियां" बन गगाजल लेकर शकर (पत्थर) पर जल उडेल रहे हैं और अपनी मूर्खता प्रकट कर रहे हैं। हम आर्य अकर्मण्य हो हो गए है और ईश्वर प्राप्ति के नाम पर वेद विमुख होकर पत्थर मुख हो गए हैं।

(६) भाद्र—भद्र = श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान। क्योकि वेद का पढना पढाना, सुनना-सुनाना चलता है। अत हे भाइयो ! ईश्वर कृत वेद को समझते हुए उत्तम कर्मो के द्वारा ईश्वर की प्राप्ति करो। इस पुण्य महीना मे सभी कामो को छोडकर वेद ज्ञान की भण्डार को देखो, समझो और जानो। घर से बाहर मत जावे। देहातो मे किवदन्ती है कि भादो के महीना मे घर से बाहर न जाय। यही एकमात्र कारण है।

(७) आश्विन—ईश्वर का नाम और जो वेद (आसन लगाकर) पढ़ते हो, वह समाप्त होने का और होने से पूर्णाहुति करे। इसी पूर्णाहुति मे शक्ति प्रदर्शन (विजयादशमी) पर्व मनाया गया। यह कोरा गप है कि विजयादशमी के दिन रावण मारा गया। पर यह सम्भव है कि राम द्वारा रावण वध के लिए लका प्रस्थान किए थे।

(८) कृतिका—कर्तव्य की समाप्ति। यानि सभी आर्यों का इस मास में वेद पढ़ना समाप्त हो जाता है और किसी का दो-चार आठ रोज आगे पीछे समाप्त होता है तो वह यज्ञ का आशीर्वाद कोई राजा हो, सेठ हो साहूकार हो, किसान हो या कोई कुछ भी हो। पूर्णाहुति मे किसी के द्वारा दीपावली किसी के द्वारा अन्नकुट, गोपाष्टमी, किसी के द्वारा छठव्रत तथा आदित्यवार व्रत आदि व्रतो का सिलसिला चला। ये व्रत वेद परायण व्रत है अन्य और कुछ नही। इसी वजह से इस चार मास को धार्मिक मास कहा जाता है। अन्धश्रद्धा वश वेद ज्ञान छोडकर पर्वमान में समय बिता रहे हैं, या अज्ञानता का द्योतक है।

(९) मार्गशीर्ष—श्रेष्ठ मार्ग का अर्थ है कि अच्छे कर्मों को करो और बुरे से बचो। इसी माह को "अगहन" भी कहते हैं अर्थात् आगे होकर हवन करना, अर्पण करना। कहने का अर्थ यह है कि जो आपके पास मेहनत का पैसा अथवा खेती बारी का अन्न हो उसका छठा भाग के द्वारा हवन यज्ञ करें। वह यज्ञ सामूहिक यज्ञ हो। वैसे तो हम मानव को दैनिक साप्ताहिक, मासिक यज्ञ करना चाहिए, जो संध्या हवन के नाम से जाना जाता है।

(१०) पौष—पोषण करने वाले (यज्ञ) द्वारा सारे दूषित वायु को पवित्र बना कर पोषण करें, अर्थात् यज्ञ बहुत मात्रा मे करें।

(११) माघ—मघा। सद्बुद्धि द्वारा धन एकत्र करके उस धन का भोग करना और त्याग (दान) करते हुए विलासिता से दूर रहकर भोग करना और बसन्त रूपी ऐश्वर्य की सूचना भी देता है कि बसन्त आ रहा है।

(१२) फाल्गुन—फल+गुण = फल की आशा छोडकर गुण का ग्रहण करना। फल-फूल से लदने की तैयारी मे प्रकृति द्वारा हवा के झोके के साथ पत्तों को तोडना, फल लगना आदि।

नोट—यही है हमारे पूर्वज ऋषि मुनियो के द्वारा मास का नाम और काम।

बाढ़ पीड़ित क्षेत्र के सम्बन्ध में आर्य समाज की ओर से की गयी शिकायत को दूर करने का मुख्यमंत्री द्वारा आश्वासन

पिछले दिनो बिहार के भूकम्प तथा बाढ़ पीड़ित क्षेत्रो मे आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे सेवा सहायता के केन्द्रो के निरीक्षण के लिए सार्वदेशिक सभा की ओर से सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बाल-दिवाकर हस को बिहार भेजा गया था। श्री हस जी लगभग एक मास तक बिहार के अनेक प्रभावित क्षेत्रो मे गाव-गाव जाकर आर्य समाज के कार्यकर्ताओ के साथ पीडितो को वस्त्र, अन्न तथा अन्य आवश्यक सामान बटवाते रहे।

श्री हस जी ने वहा दरभगा से मनिहारी तक जाने वाली सडक जो कि बाढ से पूरी तरह कट चुकी थी और कई गावो को आने जाने के मार्ग बन्द होने और वहा की माताओ और बहिनो के बेआबरू होने की स्थिति की शिकायत से मुख्यमन्त्री श्री भगवत झा आजाद को लिखी थी और उनसे अनुरोध किया गया था कि इस सडक की तुरन्त मरम्मत की जाए। मुख्य मन्त्री ने अपने २९ अक्तूबर ८८ के पत्र द्वारा श्री हस जी को सूचित किया है कि उनकी शिकायत पर तुरन्त उचित कार्यवाई करने का आदेश पथ निर्माण विभाग बिहार को दे दिया गया है।

संस्कृत तथा संस्कृति आगे बढ़ने को प्रेरित करती है

श्री लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

यह उचित ही है कि डा० इन्द्रचन्द्र शास्त्री के प्रति जिन्होंने जीवनभर क्षण-क्षण, तिल-तिल अपने परिश्रम, अपनी मेधा, अपनी निष्ठा से भाषा को, विचार को, साहित्य को समाज को सम्पन्न किया, हम श्रद्धाजलि व्यक्त करें, उनके पुण्य स्मरण को भारतीय एकता के साथ जोड़ें और यह आशा करे कि दिल्ली की संस्कृत अकादमी और दूसरे उपक्रम इस बात मे प्रयत्नशील रहेगे कि जिस व्यक्ति के पुण्य स्मरण के लिए, उनकी जयन्ती मनाई गई उनका समूचा साहित्य प्रकाशित करने का काम हाथ मे लिया जाए। मैं शास्त्री जी से आज से तीन दशक से भी अधिक पहले मिला था और तब से मेरा सम्पर्क उनसे रहा। उनका लिखा हुआ बहुत कुछ मैंने पढ़ा है। वे केवल संस्कृत भाषा के ही नही, पाली और प्राकृत के भी प्रकाड विद्वान थे और समूची भारतीय संस्कृति के प्रवाह की निरन्तरता को अपने साहित्य में समेटे हुए थे। वे सामाजिक न्याय के लिए नए दृष्टिकोण के लिए, जीवन के सामने मनुष्य का दर्शन रखने के लिए हमेशा प्रतिबद्ध थे। यह प्रतिबद्धता थी जो उनके साहित्य मे चार चाद लगा देती थी।

उन्होंने बहुत कुछ लिखा है। उनके समूचे साहित्य को ठीक तरह से प्रकाशित करने के कार्यक्रम से ही हम उन्हे सच्ची श्रद्धाजलि दे सकते हैं। उन्होंने जीवनभर कठिनाइया झेली, किन्तु उन दिक्कतो से अप्रतिहत, अपराभूत रहकर सघर्ष किया और उस सघर्ष मे समर्पण, की भावना से, अपने आपको उत्सर्ग करते हुए इतना कुछ समाज के लिए, साहित्य के लिए परम्परा के लिए, अध्येताओ के लिए दिया कि जिसको सजोना हमारा कर्त्तव्य है।

मेरे गुरु—कानून मे भी और सास्कृतिक रूप से भी—कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने यह अनुभव किया था कि अगर कोई शक्ति हमे जोड़ने में सबसे ज्यादा समर्थ है, तो वह है भारतीय विद्या की मंजूषा है संस्कृत भाषा।

मैं इस वर्ष कुछ अर्से पहले बाल्टिक समुद्र के किनारे लिथुएनिया एव लाटविया गणतन्त्र के अचल मे था। वहा के कई विद्वान, कवि, भाषाविद् मुझसे मिलने आए। वहा के मुख्य न्यायाधीश भी उस सभा मे सम्मिलित हुए थे जिसमे मुझे विशेष रूप से बुलाया गया था। उन्होंने कहा कि मुझे इस बात की खुशी है कि उस देश का एक नागरिक हमारे बीच मे है जिसकी भाषा संस्कृत है, क्योंकि संस्कृत भाषा ही लिथुएनिया की भाषा का स्रोत और उद्‌गम है।

श्री बलराम जाखड़ ने ठीक ही कहा है कि यह भाषा (संस्कृत) पुरातनपन्थी भाषा नही है। यह भाषा नए को जोड़ने के लिए और केवल पुराने को अपनाने के लिए भी नही है। यह बात तो कालिदास ने बहुत पहले कह दी थी। 'मालविकाग्निमित्र' लिखते हुए उन्होंने कहा पुराणमित्येव न हि साधु सर्वम्।

पुराने और नए मे प्रश्न होता है विवेक का। अक्सर हमारे देश मे इस विवेक पर एक प्रश्नचिह्न लग जाता है। तब मन को पीड़ा होती है। एक घटना का उल्लेख करके इस बात को आगे बढाना चाहता हूँ। बहुत पहले १९६२ मे, मैं लोकसभा का सदस्य चुना गया निर्दलीय किसी पार्टी का नही। लोकसभा के सदस्य को शपथ लेनी पड़ती है। मैंने शपथ लेने से पहले श्री एम एन कौल को जो उस समय हमारे सचिव थे, चिट्ठी लिखी कि मैं शपथ संस्कृत में ही लूंगा, न अंग्रेजी मे, न हिन्दी मे न किसी और भाषा मे। तो उन्होंने सावैधानिक प्रतिज्ञा का संस्कृत रूपान्तर ढूंढना शुरू कर दिया। मैंने अपनी शपथ भाषा संस्कृत मे ली।

यह बात बड़ी खबर बन गई। दो प्रश्न थे जो मेरे मित्रो ने मुझसे पूछे—जो विवेक पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं। उन्होंने कहा, तुमने संस्कृत भाषा में शपथ क्यो ली ? यह तो तुम्हारी मातृभाषा नही है। उसका उत्तर मैंने दिया कि यह तो माता की भी माता है। उन्होंने फिर पूछा कि यह भाषा तो धार्मिक अनुष्ठान की है—संस्कृत मे आपने शपथ क्यो ली ?

मैंने कहा, दो बात हैं। एक तो बरसो तक सविधान की अध्ययन करने के बाद मैंने यह पाया कि जो सविधान और कानून जीवन से पृथक् हो जाता है वह जीवत नही रहता, निष्प्राण हो जाता है। वह दिशा नही दे सकता। वह कोरा शाब्दिक हो जाता है। दूसरा यह कि शपथ भी मूलत एक धार्मिक और नैतिक अनुष्ठान ही तो है। मैंने यह भी कहा कि संस्कृत मे प्रतिज्ञा मुझे मेरे लिए कुछ अधिक वजनदार लगती है।

इसी प्रसग मे एक और चर्चा करू क्योंकि धर्म को संस्कृत के साथ जोड़कर इसके बहिष्कार का षडयन्त्र काफी पुराना हो चला है। हमारे यहा वर्षो से धर्मनिरपेक्षता एक शब्द चल पड़ा है। अब तो सविधान के नए अनुवाद मे इस भूल को सुधार लिया गया है। अब शब्द धर्मनिरपेक्षता नही रहा। बरसो तक मैंने इस बात के लिए प्रयत्न किया कि इस शब्द को सविधान से निकाल दिया जाए। ये शब्द हैं ही नही उचित। सेक्यूलर शब्द के लिए अब जो शब्द मान्य हुआ है और नए अनुवाद मे बदल गया है, वह है सम्प्रदाय-निरपेक्ष। हमारा सविधान है, धर्मविमुख नही।

धर्म का एक तत्व होता है कानून। और सविधान जो कानून से निरपेक्ष होता है वह कुछ भी नही। धर्म का अर्थ और परिभाषा होती है मर्यादा के बिना सविधान अकल्पनीय है। जो लोग हमारी मनीषा से परिचित होना चाहते हैं भारतीय एकता से परिचित होना चाहते हैं, भारतीय दर्शन और सवेदना से परिचित होना चाहते हैं, भारतीय जड़ो तक पहुचना चाहते हैं, मानवीय अस्मिता की जो पयाणगीति भारतीय प्रवाह एव परम्परा मे हैं, उसे हृदयगम करना चाहते हैं और जो चाहते हैं कि इस देश का अतीत उसके भविष्य की नीव बन जाए, वे अपने हृदय मे संस्कृत को लेकर कोई प्रश्नचिह्न खड़ा होने द तो वज्रपात सा हो जाता है।

मैं नही मानता कि केन्द्रीय सरकार या अन्य सरकारे संस्कृत के लिए वह सब कुछ कर रही हैं जो उनके लिए कर्तव्य है। मैं नही मानता कि अभी तक जो कुछ हुआ है वह सब काफी है मेरा यह विनम्र अनुरोध है कि सन्तोष से न बैठ, इस देश मे यह सन्तोष हमारा बड़ा भारी दुश्मन बन जाता है। हमारा भूगोल हमे पाठ देता रहा है। हमारा इतिहास हमको आज भी पाठ पढा रहा है। तरह-तरह के सम्प्रदाय हमे बाट रहे हैं। हमारी भाषाए हमे बाट रही हैं। किन्तु एक जोड़ने की संस्कृति भी है, एक शैली है, एक सोच है जो जोड़ने मे सक्षम है। उस विरासत को अगर नमन करके, उसके प्रति निष्ठा रखते हुए हम एक बार फिर इस अभियान मे नए स्वर से समवेत रूप से श्रम करें तो कोई कारण नही कि संस्कृत भाषा को उसका उचित स्थान न मिले।

प्रो० दौलतसिंह कोठारी दुनिया के बहुत बड़े शिक्षाशास्त्री हैं। वे आज हमारे बीच मे है। वे आज हमारे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलपति है। उनसे मैं इस बात का निवेदन करना चाहता हूँ कि इंग्लैड मे पिछले १५-२० वर्ष से अभियान चला है है क्लासिकल एजूकेशन का। क्लासिकल एजूकेशन के बारे मे धीरे-धीरे उपेक्षाभाव आ गया था। उसके कारण अब वहा यह मान्यता है कि संस्कृति का भविष्य खतरे मे पड़ा हुआ है। हमारे देश मे क्लासिकल एजूकेशन के पुराने नए क्षितिज और सीमान्त फिर से जाग, उद्‌बुद्ध-प्रबुद्ध हो, यह अनिवार्य है। अन्यथा थोथी,

(शेष पृष्ठ ८ पर)

महर्षि दयानन्द के विचार

संग्रहकर्त्ता—प्रतापसिंह "आर्य" बिलासपुर (हि० प्र०)

१ ईश्वर उपासना—मनुष्यो के योग्य है कि परमेश्वर की ही स्तुति, प्रार्थना, उपासना करें उससे भिन्न की कभी न करें।

२ धर्म-अधर्म—जो ईश्वर की आज्ञा है वही धर्म और इसके जो विरुद्ध है वही अधर्म है।

३ कर्म फल—जो जैसा करता है वह वैसा फल पाता है।

४ ग्रहो से सुख दु ख नही—जो ससार मे राजा प्रजा सुखी दु खी हो रहे हैं यह ग्रहो का फल नहीं अपितु कर्मों का फल है।

५ ज्योतिष शास्त्र | ज्योतिष शास्त्र झूठा नही, जो उसमे अक, बीज, रेखागणित विद्या है वह सब सच्ची है, जो फल की लीला है वह सब झूठी है।

६ कृपालु ईश्वर—जैसे पिता अपनी सतानो पर सदा कृपालु होकर उनकी उन्नति चाहता है। वैसे ही परमेश्वर सब जीवो की उन्नति चाहता है।

७ मगलाचरण—जो न्याय पक्षपात रहित, सत्य वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा है उसी का यथावत् सर्वत्र और सदा आचरण करना ही 'मगलाचरण' कहाता है।

८ उत्तम शिक्षक—वस्तु जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है।

९ माता पिता का कर्त्तव्य—बालको को माता पिता सदा उत्तम शिक्षा करें। जिससे सन्तान सभ्य हो, और किसी अग से कोई कुचेष्टा न करने पावें।

१० वीर्य रक्षा—देखो जिसके शरीर मे वीर्य सुरक्षित रहता है। तब उसके आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढकर बहुत सुख की प्राप्ति होती है।

११ जिसके शरीर में वीर्य नही होता वह नपु सक, महा कुलक्षणी, रोगी होता है। वह दुर्बल, निस्तेज, निर्बुद्धि, उत्साह साहस धैर्य, बल पराक्रम आदि गुणो से रहित होकर नष्ट हो जाता है।

१२ सन्तान का ताडना—उन्ही की सन्तान विद्वान, सभ्य और सुशिक्षित होती है जो पढाने मे सन्तानो का लाडन कभी नही करते। किन्तु ताडना ही करते हैं। माता-पिता और अध्यापक लोग ईर्ष्या द्वेष से ताडना न करें, किन्तु ऊपर से भय प्रदान और भीतर से कृपा दृष्टि रखे।

१३ हवन यज्ञ—जब तक होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त रोगो से रहित और सुखो से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जावे।

१४ ब्रह्मचर्य—जो मनुष्य इस ब्रह्मचर्य को प्राप्त होकर लोप नही करते वे सब प्रकार के रोगो से रहित होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

१५ वेद का अधिकार सबको—जैसे परमात्मा ने पृथ्वी जल, अग्नि, वायु, चन्द्र और अन्नादि पदार्थ सबके लिये बनाये हैं वैसे ही वेद भी सबके लिए बनाये हैं वैसे हो वेद भी सबके लिये प्रकाशित किये हैं।

१६ उत्तमदान—सब दानो मे वेद विद्या का दान अति श्रेष्ठ है।

१७ पुरुषार्थ—जो ईश्वर के भरोसे आलसी बनकर बैठे रहते हैं वे महामूर्ख हैं क्योंकि परमेश्वर की पुरुषार्थ करने की आज्ञा है उसको जो कोई तोडेगा वह सुख कभी न पावेगा।

१८ जैसे पुरुषार्थ करते हुए पुरुष का सहाय दूसरा भी करता है, वैसे धर्म से पुरुषार्थी पुरुष का सहाय ईश्वर भी करता है।

१९ स्वराज्य—कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम है। प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियो का राज्य पूर्ण सुखदायक नही है।

२० बन्ध मोक्ष—पवित्र कर्म, पवित्रोपासना और पवित्र ज्ञान ही से मुक्ति और अपवित्र मिथ्या भाषणादि कर्म, पाषाण मूर्ति आदि की उपासना और मिथ्या ज्ञान से जन्म, बन्ध होता है।

२१ नमस्ते—ये बात सदा ध्यान मे रखनी चाहिए कि 'पूजा' का अर्थ सत्कार है और दिन रात मे जब-जब प्रथम मिले वा पृथक् हो तब-तब प्रीति पूर्वक 'नमस्ते' एक दूसरे से कहे।

२२ गृहस्थ—जितना कुछ व्यवहार ससार मे है उसका आधार गृहस्थ आश्रम है। जो यह गृहस्थ आश्रम न होता तो सन्तानोत्पत्ति न होने से ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम कहां से हो सकते। जो कोई गहस्थ की निन्दा करता है वही निन्दनीय है और जो प्रशसा करता है वह प्रशंसनीय है।

२३ देव पूजा—माता पिता, आचार्य और अतिथि की सेवा करना देव पूजा कहाता है।

२४ ग्रह पूजा निषेध—जो धनाढ्य, दरिद्र, प्रजा, राजा, रंक होते हैं वे अपने कर्मों से होते है ग्रहो से नही।

२५ नरक स्वर्ग—दु ख का नाम नरक और सुख का नाम स्वर्ग है।

वृक्षों में जीव और हिंसा : एक विवेचन (३)

डा० सत्यव्रत राजेश, प्राध्यापक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वृक्षों तथा पशु आदि में रचना भेद

अब विवेचनीय प्रश्न यह है कि वृक्षादि मे स्थित अभिमानी जीवो को पीडा का अनुभव होता है अथवा नही ? यदि उनको पीडा होती है तो उनके उखाडने-काटने पर हम पाप से नही बच सकेंगे। वस्तुत पशु आदि तथा वृक्षादि मे स्थिति भिन्न है। क्योकि गाय आदि को पीडा होना तो प्रत्यक्ष है, उसमे तो किसी को सशय ही नही। उन्हे तो हमारी ही भाति सुख-दु ख की अनुभूति होती है। किन्तु वृक्षादि स्थावरो की स्थिति इससे भिन्न है, उन्हे हमारी भाति सुख-दु ख का अनुभव नही होता। इस विषय मे महर्षि दयानन्द के विचार बहुत स्पष्ट तथा मार्गदर्शक है। सत्यार्थप्रकाश के द्वादश समुल्लास मे जैनियो के वायुकाय जीवो की हिंसा बचाने के लिये उनके द्वारा मुख पर पट्टी बाधने की समीक्षा करते हुए वे लिखते हैं—"देखो, पीडा उसी जीव को पहुचती है जिसकी वृत्ति सब अवयवो के साथ विद्यमान हो।' इसमे प्रमाण—

पञ्चावयवयोगात् सुखसवित्ति ॥[१] यह साख्यशास्त्र का सूत्र है।

जब पाचो ज्ञानेद्रियो का पाचो विषयो के साथ सम्बन्ध होता है तभी सुख वा दु ख की प्राप्ति जीव को होती है। जैसे बधिर को गाली प्रदान, अन्धे को रूप वा आगे से सर्प व्याघ्रादि भयदायक जीवो का चला जाना, शून्यबहिरी वाले को स्पश, पिन्नस रोग वाले को गन्ध और शून्य जिह्वा वाले को रस प्राप्त नही हो सकता, इसी प्रकार उन जीवो की भी व्यवस्था है।

देखो, जब मनुष्य का जीव सुषुप्ति दशा मे रहता है तब उसको सुख वा दु ख की प्राप्ति कुछ भी नही होती। क्योकि वह शरीर के भीतर तो है परन्तु उसका बाहर के अवयवो के साथ उस समय सम्बन्ध न रहने से सुख दु ख की प्राप्ति नही कर सकता।

और जैसे वैद्य वा आजकल के डाक्टर लोग नशा की वस्तु खिला वा सु घा कर रोगी पुरुष के शरीर के अवयवो को काटते व चीरते हैं, उनको उस समय कुछ भी दु ख विदित नही होता वैसे वायुकाय अथवा अन्य स्थावर शरीर वाले जीवो को सुख व दु ख प्राप्त कभी नही हो सकता।

जैसे मूर्च्छित प्राणी सुख-दु ख को प्राप्त नही कर सकता, वैसे वायुकायादि के जीव भी अत्यन्त मूर्च्छित होने से सुख-दु ख को प्राप्त नही हो सकते। फिर उनको पीडा से बचाने की बात सिद्ध कैसे हो सकती है।[२] ?

महर्षि दयानन्द का इस विषय में स्पष्ट मत है कि वायुकायादि जीव हो या वृक्ष आदि स्थावर के जीव सब अत्यन्त मूर्च्छित अवस्था मे हैं। इन्हे सुख-दु ख का लेश भी नही होता अत इनके उखाडने-काटने मे पाप भी नही लगता।

महर्षि दयानन्द का यह मत वेदसम्मत है —

महर्षि दयानन्द ने जहा साख्य दर्शन का प्रमाण देकर यह सिद्ध किया है कि ज्ञानेन्द्रियो के अभाव मे जीव उस उस इन्द्रिय से होने वाले सुख-दु ख की अनुभूति नही कर सकता वहा उन्होने वृक्षादि में स्थित जीव को अत्यन्त मूर्च्छित अवस्था मे बतलाया है। यह उनकी कल्पना ही नही है अपितु वेद मे भी ऐसा ही लिखा है। वहा वृक्षो को 'ऊर्ध्वस्वप्न' अर्थात् स्वप्न से ऊपर बतलाया गया है[३]। स्वप्नावस्था से ऊपर सुषुप्ति ही होती है। अत वेदानुसार भी वृक्ष सुषुप्ति अवस्था मे हैं, अत उनके उखाडने काटने आदि मे पाप नही लगता। वेद ने पशुओ का दूध तथा औषधियो के खाने का भी आदेश दिया है[४]। जब कि पशु जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति इन तीनो अवस्थाओ को प्राप्त होते हैं तथा मारने-काटने या घाव करने पर उन्हे दु ख की अनुभूति होती है, अत उनके मारने आदि मे पाप लगता है। कुछ लोग यह भी प्रश्न करते है कि यदि किसी को मूर्छित करके मार लिया जाए तब तो उसके मारने मे भी पाप नही होना चाहिए क्योकि उसे भी दु ख की अनुभूति नहीं होगी। किन्तु प्रश्न यह है कि क्या परमेश्वर ने किसी को स्वभाव से ही मूर्छिता-वस्था में उत्पन्न किया है अथवा उसकी वह अवस्था कृत्रिम बनाई गई है ? यह ऐसे ही है जैसे एक व्यक्ति को प्रभु ने उसके कर्मों के कारण दरिद्र बनाया हो तथा दूसरे को किसी ने उसका सर्वस्व अपहरण करके दरिद्र बना दिया हो तथा फिर वह तुलना की जाए कि जब एक को प्रभु ने दरिद्र बनाया है तब दूसरे को हमने दरिद्र बना दिया तो हमे पाप कैसा ? इसी प्रकार जिसे परमात्मा ने स्वभाव से अत्यन्त मूर्च्छित अवस्था वाला बनाया है उसी के काटने आदि मे पाप न लगेगा किन्तु जिसे आपने मूर्च्छित किया है उसके मारने मे दोष अवश्य लगेगा, क्योकि आप परमेश्वर की व्यवस्था मे अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए दखल दे रहे है। परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लघन पुण्य कैसे हो जाएगा ? वह तो पाप ही रहेगा। अत उस व्यवस्था का तोडने वाला पापी अवश्य होगा।

उपर्युक्त समस्या का एक अन्य प्रकार से समाधान

इस बात को एक अन्य प्रकार से भी समझाया जा सकता है। हमे जीवित रहने तथा कार्य करने के लिये पाच कोशो की अपेक्षा है, जो इस प्रकार हैं—

(१) अन्नमयकोश— यह त्वचा से लेकर अस्थिपर्यन्त का समुच्चय पृथिवीमय है।

(२) प्राणमयकोश—इसके अन्तर्गत प्राण, अपान, समान, उदान तथा व्यान आदि प्राण के भेद आते हैं। वह यह कोश जीवन मे सहायक है।

(३) मनोमय कोश—यह मन, अहकार तथा वाणी पैर, हाथ एव मलमूत्रन्द्रिय, इन पाच कर्मेन्द्रियो का समुदाय है।

(४) विज्ञानमय कोश—इसमे बुद्धि, चित्त तथा कान त्वचा, नेत्र, जिह्वा और नासिका, ये पाच ज्ञानेन्द्रिया आती हैं। इसी से जीव ज्ञानादि व्यवहार करता है।

(५) आनन्दमयकोश—इसमे प्रीति, प्रसन्नता तथा न्यून या अधिक आनन्द की प्रतीति होती है[५]।

इन पाच कोशो मे से ज्ञान आदि का व्यवहार, चाहे वह सुखात्मक, तब तक जीव नही कर सकता जब तक उसे विज्ञानमय कोश न मिले। महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थप्रकाश के नवम समुल्लास मे कोशो का स्पष्टीकरण करते हुए, विज्ञानमय कोश का स्वरूप बतलाकर आगे लिखते हैं कि— इसी से जीव ज्ञानादि व्यवहार करता है।' अर्थात् इस कोश के बिना जीव ज्ञानादि व्यवहार करने मे सर्वथा असमर्थ है। यदि किसी समय सुषुप्ति अथवा मूर्च्छा के कारण जीव का यह कोश कार्य नहीं करता तो उस जीव को उस समय सुख या दु ख की अनुभूति नही हो सकती।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

१ साख्य द० ५।२७

२. सत्यार्थ प्रकाश समु० १२, पृ० ७०८-७०१

३ अस्वप्नवृक्षा ऊर्ध्वस्वप्ना ॥ अथर्व ६।४४।१

४ पयः पशूना रसमोषधीना बृहस्पति सविता मे नियच्छवात् ॥ अथर्व० १९।३१।५

५ इसकी व्याख्या के लिये सत्यार्थप्रकाश का नवम समुल्लास देखें।

वृक्षों में जीव

(पृष्ठ ७ का शेष)

परमपिता परमेश्वर दयालु तथा न्यायकारी है। वह सर्वज्ञ है, अत जानते हैं कि वृक्षादि के बिना मनुष्य आदि प्राणियो का जीवन भी नही चल सकता। अत ईश्वर ने ऐसी व्यवस्था बनाई है कि जिससे हम कन्द मूल आदि को खाकर जीवनयापन भी कर सके तथा उन्हे किसी प्रकार दु ख भी न हो। उन्हें दु ख न होने से व्यक्ति को उनके उखाडने-काटने आदि में पाप भी न लगे। क्योकि पाप-पुण्य का सम्बन्ध किसी को दु ख-सुख होने से है, जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं।

यह व्यवस्था इस प्रकार है कि पाचो कोशो मे से वृक्षादि के अन्नमय एव प्राणमय कोशो को विकसित किया गया है। अन्य कोशो के विकसित न होने से इन्हें सुख या दु ख की अनुभूति नहीं होती। क्योकि हम पहले ही बतला आए हैं कि सुख-दु ख का अनुभव बिना विज्ञानमय कोश के जीव नही कर सकता। वैसे निष्प्रयोजन वृक्षादि के काटने से समाज की पर्यावरणदूषण रूप हानि होने से व्यक्ति पाप का भागी बनने से बच नहीं सकता।

इस प्रकार मानव, पशु-पक्षी आदि मे विज्ञानमय कोश के विकसित होने से उन्हे मारने पर उन्हे दु ख होता है तथा मारने वाले को पाप लगता है। यहा यह भी स्मरणीय है कि आनन्दमय कोश पशुओ का भी विकसित नही है। अत वे ऐन्द्रिक सुखो को प्राप्त कर सकते हैं, समाधिजन्य आनन्द को नही। यह विभेदकरेखा मानव तथा पशु के बीच सदा रहेगी। मानवयोनि की श्रेष्ठता है भी इसी आनन्द की प्राप्ति करने मे। वृक्षादि मे केवल अन्नमय और प्राणमय कोशो का विकास होने से उन्हे सुख-दु ख की अनुभूति नही होती, अत इनके उखाडने काटने तथा खाने मे पाप भी नही लगता। अण्डे के गर्भरूप होने तथा मलिन स्थान से उत्पन्न होने से वह भी खाद्य नही हो सकता।

इस समस्त विवेचन से पाठक समझ गए होंगे कि क्यो पशु आदि के मारने मे व्यक्ति पाप का भागी बनता है तथा क्यो वृक्षादि के आवश्यकतानुसार उखाडने काटने आदि से पाप से नही लगता। अत हमे पशु, पक्षी, मछली, अण्डा आदि के भक्षणरूप पाप स बचकर, शाक, पात, कन्द, मूल, फल, फूल आदि को ही अपने भोजन का अग बनाना चाहिये तथा मासादि भक्षण त्यागकर पाप एव रोग से अपनी रक्षा करनी चाहिये। (समाप्त)

संस्कृत तथा संस्कृति

(पृष्ठ ५ का शेष)

ओढी हुई कृत्रिम एव सतही आधुनिकता एक बोझ बन जाएगी। क्लासिकल शिक्षा के लिए, सस्कृत की शिक्षा के लिए हम सब स्वर उठाए यही मेरा अनुरोध और प्रतिवेदन है।

इन शब्दो के साथ एक बार इस आयोजन के लिए फिर मैं दिल्ली सस्कृत अकादमी को बधाई देता हूँ और डा० इन्द्रचन्द्र शास्त्री की पुण्यस्मृति के प्रति श्रद्धाजलि। आशा करता हूँ कि यह स्तुत्य किन्तु विनम्र प्रयास महाप्रयास का रूप लेगा और देश के मानस पर इस बात का असर होगा कि सस्कृत व सस्कृति हमे अतीत से जोडती जरूर है किन्तु आगे बढने से रोकती नही है, बल्कि आगे बढने के लिए वास्तविक सच्ची ठोस प्रेरणा देती है।

नोट—दिल्ली सस्कृत अकादमी द्वारा पिछले दिनो आयोजित 'डा० इन्द्रचन्द्र शास्त्री ७६वी जयन्ती समारोह मे लेखक द्वारा दिए गए भाषण का यह किंचित् सक्षिप्त रूप है। उस समारोह मे लोकसभा ॰॰ क्ष तथा सस्कृत विद्वान डा० बलराम जाखड तथा विख्यात शिक्षाविद प्रो० दौलतसिह कोठारी भी उपस्थित थे।

(७ ११-८८ के नवभारत टाइम्स से साभार)

चौथी सूची

सत्याग्रही जिन्हें केन्द्रीय सरकार की पेंशन स्वीकार हुई है
(आर्य समाज सत्याग्रह हैदराबाद १९३८-३९)

नाम तथा पूरा पता (सत्याग्रही)

१ श्रीमती प्रेमवती पत्नी स्व० मुक्तराम प्रेम सदन होडल तहसील पलवल जिला फरीदाबाद, हरियाणा।

२ श्री आत्माराम जी पुत्र श्री प्रसादीलाल मोहल्ला बाईसी होडल जिला फरीदाबाद, हरियाणा।

३ श्री इन्द्रसेन जी पुत्र श्री बदलूराम ५/३१४ इन्द्रा कालोनी सोनीपत, हरियाणा।

४ श्री कपिलदेव शास्त्री पुत्र श्री बलरामदास शांति निकेतन नागपुर वाराणसी, उ० प्र०।

५ श्री भीमराव पुत्र श्री मामाजी वैदिक साधनाश्रम तपोवन देहरादून, उ० प्र०।

६ श्री नरेन्द्र कुमार शास्त्री पुत्र श्री दयासहाय हस्तिनापुर रोड मवाना, जि० मेरठ।

७ श्रीमती प्रेमवती धर्मपत्नी स्व० हरिपाल मकान न० १४६/बी २१ मो० चाहशीरी, बिजनौर उ० प्र०।

८ श्री सुरेशचन्द्र पुत्र श्री लक्ष्मी नारायण निवासी गुप्त आयुर्वेदिक प्रयोगशाला लोहर बाजार हाथरस, अलीगढ़।

९ श्री नारायण अम्बादास बोल्डेव स्थान मुरुम जि० उस्मानाबाद, महाराष्ट्र।

१० श्रीमती शांतिदेवी पत्नी स्व० हरीशचन्द्र मकान न० २५५ माडल टाउन दिल्ली रोड रोहतक, हरियाणा।

११. श्री धर्मेन्द्र शास्त्री पुत्र स्व० दुर्जनसिंह ग्राम व पोस्ट हीरावली वाया नगीना जिला बिजनौर उ० प्र०।

१२ श्री मनोहर गोविन्द राजनेकर पुत्र श्री गोविन्द राजनेकर मकान न० ८३ कछियाना गढाफाटक जबलपुर, म० प्र०।

१३ रमाशकर पुत्र श्री चतराम होडल फरीदाबाद, हरियाणा।

१४ श्रीमती प्रकाशवती पत्नी स्व० देवदत्त मकान न० १८१, गली न० ६ लाइन बाजार, फरीदकोट (पंजाब)।

विचारों का स्वागत

आन्ध्र प्रदेश में आने के बाद पता चला कि निजाम के समय में गोहत्या तो नहीं होती थी पर अब तो खूब हो रही और कहने के लिए भी खूब की जाती है। पदयात्रा के बीच सगारेड्डी जिला मेठक के नगरपालिका के चेयरमैन श्री पी० प्रभाकर ने जनसभा मे कहा आज के बाद स्थानीय कतलखाने में कम से गाय-बैल की हत्या नही होने देंगे और हर शनिवार को मास की दुकानो को बन्द रखेंगे।

इसी प्रकार जोगीपेठ तहसील के मेम्बर पचायत चेयरमैन को पी० शिवचन्द्र की शाम की जनसभा मे गोहत्या करने वालो को कठिन शिक्षा (दण्ड) देंगे कोई भी कसाई गोहत्या करने की हिम्मत न करें। यदि किसी ने किया तो उसका लाइसेन्स रद्द कर दिया जायेगा। पदयात्री दल के आगमन सूचना पर सरपच जी ने सब मांस की दुकानो को बन्द करवा दिया था।

आन्ध्र प्रदेश की सबसे प्रसिद्ध और बडी गौशाला गोपालधाम निजामाबाद मे है यहां के व्यवस्थापक श्री चन्द्रिका प्रसाद जी शर्मा ने कहा हम लोग केवल दूध वाली गायो को रखते हैं अब हम बाजार मे बिकने वाली बूढ़ी सूखी अपग गायो को ५० रु० से २०० रु० तक देकर खरीद लेंगे, गौशाला में रखेंगे। अभी ७०० गोधन गौशाला में है। गौशाला के पास ही ओ३म् द्वार है वह निजामाबाद आर्य समाज के प्रधान श्री दयाराम जी आर्य ने बनाया अभी इनकी उम्र ९० वर्ष है। इन्होंने कहा श्री शर्मा जी ने गौशाला को स्वर्ग बना दिया। प्रचारक कार्यकर्ताओं की कमी है यदि गाव गांव जाकर लोगो में प्रचार किया जाय, तो जनता अवश्य ही अपना कर्तव्य को निभायेगी।

—प्रकाशचन्द्र जोशी

आर्य जगत् के समाचार

विजय दशमी पर्व

आर्य वीरो का महान पर्व विजया दशमी आर्य वीर दल टकारा मे बडी धूम-धाम से मनाया। प्रातःकाल प्रभात फेरी निकाली गई, जिसमे टकारा की कुञ्ज-गलियो को अमृत वेला में प्रभुभजन व वैदिक ध्वनि से गुंजित किया।

बालक मूलशंकर ने जहा गोते लगाये थे, उस प्रेमी नदी के पावन जल मे टकारा के युवको की ओपन टकारा तैराकी प्रतियोगिता रखी गई। सैंकडो दर्शको की उपस्थिति ने प्रातियोगियो का उत्साह बढ़ाया। विजेता युवको को पुलिस सब इन्सपेक्टर श्री चौधरी जी ने ओ३म् ध्वज अर्पित कर विजेता घोषित किये। —आर्य समाज टकारा (गुजरात)

—आर्य समाज भिलाई के तत्वावधान मे दिनाक २०-१०-८८ को विजय दशमी पर्व सभी आर्य नगर नारियो बाल एव वृद्धो द्वारा सम्मिलित रूप से मनाया गया। यज्ञादि का कार्यक्रम प० जयदेवजी शास्त्री के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। श्रीमती विजयरानी चौहान एव श्री इन्द्रकुमार जी चौहान द्वारा एव पर मधुर भजनो की की अमृत वर्षा की गई। इस पर्व पर श्रीराम के आदर्श जीवन पर बोलते हुए श्री विश्वनाथ जी शास्त्री ने बताया कि यह सृष्टि "सत-रज-तम" इन तीन तत्वो से निर्मित है।

—सतीशचन्द्र मन्त्री, आर्य समाज भिलाई

—भागलपुर जिले के नाथ नगर आर्य समाज ने विजया दशमी के शुभवसर पर स्थानीय मनसा कामना मेले के अन्दर आर्य समाज नाथ नगर को भूमि मे वैदिक धर्म का दो दिवसीय प्रचार कार्यक्रम रखा।

—नरेन्द्र नारायण वर्मा, मन्त्री

—आर्य समाज जमालपुर के तत्वावधान मे विजय दशमी महोत्सव के शुभवसर पर सदर बाजार जमालपुर मे श्री रामस्वरूप जी के निवास स्थान पर ११-१०-८८ तक सामवेद प्रयाय यज्ञ एव वेद प्रचार किया गया। आर्य-समाज जमालपुर के मन्त्री श्री जगदीश प्रसाद आर्य, पडित सन्तलाल जी, श्री हरसहाय जी, श्री प्रयाग नारायण जी, श्री त्रिलोकीनाथ जी एव आर्य-समाज जमालपुर के प्रधान, श्री केशवलाल जी का महत्वपूर्ण सहयोग रहा।
—मन्त्री, आर्य समाज, जमालपुर

वेद प्रचार पद यात्रा

४ अक्टूबर से एक वेद प्रचार पद यात्रा स्वामी प्रेमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे तहसील पानीपत के ग्रामीण क्षेत्र मे निकाली गई वानप्रस्थी महावीर चन्द्रमुनि जी, ब० ओमस्वरूप, ब० जितेन्द्र, श्री धर्मवीर धर्मी भजनोपदेशक गाजियाबाद व प० तेजपाल जी की भजन मण्डली ने भाग लिया। १५ अक्टूबर तक आटा, डिकाडला, जौरासी, समालखा, मनाना, करहंस, माछरौली, भटीपुर, बिहोली तथा मदाना खाण्डा सोनीपत (बस द्वारा) पहुँचे। गाव-गाव मे दोनो समय सामूहिक यज्ञ किये सैकडो ने यज्ञोपवीत धारण कर शराब तम्बाकू, अण्डे, गाली चोरी आदि बुराइयो को तिलाञ्जली दी। —धनंजय कुलपति

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक वृहत अधिवेशन नालन्दा मे २४, २५ सितम्बर को सम्पन्न हुआ। जिसमे प्रदेशके कोने कोने से आए। ६० प्रतिनिधियो ने भाग लिया। निर्वाचन सोहार्दपूर्ण ढग से निर्विरोध सम्पन्न हुआ। निर्वाचन के दूसरे दिन निवर्तमान महामन्त्री श्री यशपाल आर्य का नागरिक अभिनन्दन किया गया। जिसमे मुख्य अतिथि प्रसिद्ध विद्वान प० राजगुरु शर्मा तथा अध्यक्षता सभा के प्रधान ने की। वर्ष १९८८-८९ के लिए निर्वाचन इस प्रकार इस प्रकार सम्पन्न हुआ। प्रधान इन्द्रप्रकाश गाधी शिवपुरी, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य एडवोकेट महूँ उपाध्याय सर्वश्री परमारसिह ग्वालियर, यशपाल आर्य गुना, गौरीशंकर कौशल भोपाल, सेवाराम पटेल नागदा किशोरीलाल गोयल इन्दौर, ओमप्रकाश आर्य नारायणगढ मन्दसौर उपमन्त्री सर्वश्री रामलाल खन्ना मुरार, ओमप्रकाश रोहले अशोकनगर, बूदीराम सुमन भोपाल, नरेन्द्र देवडा नागदा, अजयकुमार शेण्डो राऊ इन्दौर, जगदीश प्रसाद ऐरन नीमच, कोषाध्यक्ष लखवीरसिंह राणा शिवपुरी।

—सिद्धानन्दन पाण्डे, कार्यालय मन्त्री

उत्सव समाचार

—चम्पारन जिला आर्य सभा तत्वावधान मे वेद कथा ५ से ७ अक्टूबर ८८ तक पारिवारिक यज्ञ के साथ बहुत ही सुन्दर ढग से सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन प्रात काल मे यज्ञ, अपराह्न एव रात्रि मे वेद कथा एव विभिन्न सम्मेलन आर्य समाज मन्दिर केसरिया के प्रागण मे होती थी। ६-१० ८८ को अपराह्न मे आर्य बाल विकास विद्यालय एव आर्य कन्या उच्च विद्यालय केसरिया के छात्र-छात्राओ द्वारा रगारग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। वेद, गौरक्षा, राष्ट्ररक्षा, राष्ट्रभाषा एव महिला सम्मेलन भी सम्पन्न हुआ। जिसमें विद्वानो ने भाग लेकर सभा को सम्बोधित किया।

—रामचरण आर्य

—आर्य समाज मीरपुर [तहसील रेवाडी] द्वारा आयोजित यजुर्वेद परायण महायज्ञ २१-१०-८८ से ५ ११-८८ तक हुआ। नित्यप्रति प्रातः ७ बजे से १० बजे तक और साय ३ बजे से ५ बजे तक यज्ञ हुआ और रात्रि मे ८ बजे से १० बजे तक भजनोपदेश होगे।

—श्री मुन्शीराम, मन्त्री

—आर्य समाज मन्दिर कुन्डा, प्रतापगढ [उ० प्र०] का वार्षिकोत्सव १४ ११-८८ को सम्पन्न हुआ। जिसमे स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती]मथुरा] प० महेन्द्रपाल आर्य [पूर्व इमाम] कलकत्ता, श्री वेगराज [गाजियाबाद] वीरेन्द्र आर्य गाजीपुर एव श्रीमती रश्मि प्रभा शास्त्री [लखनऊ] पधारे। —मन्त्री

—आर्य समाज सत्तारपुर जिला खगडिया [बिहार] मे दि० ११ ११-८८ से २१-११-८८ तक वैदिक यज्ञ एव विराट धार्मिक सम्मेलन होगा। जिसमें आर्यजगत के विद्वान आ देवेन्द्र सत्यार्थी नालदा, सत्यव्रत वानप्रस्थ समस्तीपुर, प० महेन्द्रपाल आर्य [पूर्व इमाम] कलकत्ता, जोरावरसिंह, प्रभावती आदि विद्वान पधार रहे हैं।

—१६ अक्टूबर से १८ अक्टूबर, ८८ तक आर्य समाज शाहजहापुर के आर्य महिला डिग्री कालेज सदर बाजार मे चल रहे वार्षिकोत्सव मे स्वामी ब्रह्मानन्द, वेदभिक्षु, प० जयप्रकाश आर्य तथा आचार्या सावित्री देवी ने विभिन्न वेद विषयों तथा शुद्धि आदि पर व्याख्यान दिये व प० वेदपाल और कृपालसिंह ने अपने मनोहर भजनो से सब का मन हर लिया।

—मन्त्री

संस्कृत के पृष्ठपोषक—

लाला लाजपतराय

—ब्रह्मदत्त स्नातक

अध्यात्म, दर्शन और वेदो के सम्बन्ध में लाला जी ने बड़े प्रामाणिक ग्रन्थ लिखे हैं, परन्तु उसकी प्रामाणिकता को उन्होने संस्कृत ग्रंथो के अनुवादो से ग्रहण किया था। वस्तुत पंजाब मे जब पहले डी० ए० वी० कालेज की स्थापना हुई तो उसके प्रमुख संस्थापकों और संचालको मे लाला जी थे। संस्था के जन्म से साथ उसके नाम पर मतभेद शुरू हो गए थे। एक वर्ग का कहना था कि आर्य समाज के विस्तार के उद्देश्य से स्थापित इस संस्था मे दयानन्द के नाम के साथ वैदिक शब्द न जोड़कर एंग्लो-वैदिक विशेषण देने से वेद अथवा संस्कृत को पीछे धकेल दिया गया है। ऐसे लोगो की आपत्तियो को बढ़ता देखकर बाद मे मिडिल कक्षा तक संस्कृत व्याकरण की की अष्टाध्यायी अनिवार्य कर दी गई। इस विवाद मे लालाजी ने संस्कृत की जोरदार पैरवी की थी। 'दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज मे तालीम संस्कृत पर एक मुख्तसिर नजर' नामक एक उर्दू के ट्रैक्ट मे लाला जी ने तब लिखा था—

' उन्होने (स्वामी दयानन्द ने) सब कुछ महज संस्कृत के तुफैल (कृपा) से हासिल किया था। उनकी फाजिलाना (विद्वतापूर्ण) तहरीरो और तकरीको (लेख और भाषणो) से जाहिर हो चुका था कि संस्कृत के जखीरो (खजाने) मे किसी किस्म की विद्या की कमी नही है फक्त दर्याफ्त (खोजबीन) और मेहनत की कमी है, फिर बावजूद इस वाकफियत के उनकी यादगार को ऐंग्लो वैदिक कालेज के नाम से क्यो नामजद किया गया? इसकी वजूहात साफ था। अव्वल यह कि स्वामी जी की मन्शा को उन लोगो ने पहचाना था जिनकी आख अंग्रेजी तालीम की रोशनी ने खोल दी थी। संस्कृत के बहुत से फाजिल मुल्क मे मौजूद थे, मगर बहुतो ने स्वामी जी के फतवे की कदर नही की और न कोई उनका मोतकिद (विश्वासी) हुआ बल्कि उन लोगो के हाथ से उनको ये दिक्कते और मुखालफित उठानी पडी जो हिन्दुस्तान की मजहबी तवारीख (इतिहास) मे अपने आप ही यादगार रहेगी। (देखो इन्द्र विद्यावाचस्पति कृत आर्य समाज का इतिहास पृष्ठ २०५ भाग २)

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए महात्मा पार्टी के दूसरे वर्ग ने गुरुकुलो की स्थपना की थी जहा संस्कृत और हिन्दी को प्रमुखता दी गई। सन १९०० मे उर्दू मे लिखी योगिराज महात्मा श्रीकृष्ण का जीवन चरित्र नामक पुस्तक की प्रस्तावना मे लाला जी ने स्पष्ट लिखा है कि भगवद्गीता के श्लोको के लिए मिसेज एनी बीसेंट के भाष्य स (अंग्रेजी मे) मैंने लाभ उठाया है परन्तु हर एक श्लोक के भाष्य को (मूल) असल पुस्तक से मिला है। यहा यह स्पष्ट नही है कि लाला जी ने मूल पुस्तक का यथार्थ स्वय कैसे पाया?

शोक समाचार

—आपको बड दुख के साथ सूचित किया जाता है कि श्रीमती विद्यावती जी [धर्मपत्नी श्री शिवराजसिंह शास्त्री] का निधन २१ ९ ८८ को हो गया है।

पुत्र सुभाष चौहान सी० ए०
,, अशोक चौहान सी० ए०

—अत्यन्त वेदनापूर्ण दुखित हृदय से सूचित किया जाता है कि आपके एक नियमित ग्राहक न० ७७१३ श्री मोतीलाल जी आर्य भारद्वाज का निधन ८५ वर्ष की अवस्था में उनके निवास स्थान भारद्वाज भवन ए/४३९ मे हो गया जो यमुना कोलोनी, रामबाग आगरा मे है। वे अत्यन्त पुराने राजस्थानी धर्मोपदेशक थे जिन्होने 'लाडनू' आर्यसमाज के निर्माण के लिए अपना तन, मन, धन सब अर्पित कर दिया।

—श्रीमती राजकुमारी

वैदिक दीप!

(१)

आलौकिक रूप कभी देखते दिवाली तैने।
दिव्य रूप दिखा गये, दयानन्द अन्त मे॥
वही है प्रकाश आज प्रकाशित रहा जिससे।
मूल से अन्धेरा भगा, चला है दिगान्त मे॥

दिवाली आई है निज, प्रकाश दिखाने हेतु।
रहा है प्रकाश तेरा, केवल सिमान्त मे॥
आलौकिक ज्योति आगे, लौकिक प्रकाश कैसा।
ऋषी दिव्य दीप पाया, सत्य वेद पन्थ मे॥

(२)

वैदिक विचार बिना ज्ञान का प्रकाश बिन।
सत्यार्थ किये बिना, कैसे? तम दूर हो॥
अन्धेरे मे बैठे उल्लू प्रकाश समझ रहा।
सूर्य नही देखा कभी तम भरपूर हो॥

रह गये भ्रम बीचे, माण-माण गुरुडम।
अन्धेरे को जनाया, प्रकाश सोई कूरहो।
खोल-खोल पोल ढोल बजाते पाखण्डी पण्डा॥
दयानन्द बता गये, दिव्य निज नूर हो॥

(३)

घर-घर दिय दीप, दिवाली प्रकाश रहा।
घर-घर वेद ज्ञान, दिवाली मनाते थे॥
दूर-दूर चले गये, प्रकाश न पाय कुछ।
गुरुडम चला सब, पाखण्ड रचाते थे॥

ऋषि-मुनि रहे नहीं, वैदिक सुचेता-वेता।
गौरव-गरिमा आर्यवर्त ये कहाते थे॥
गुरु विरजानन्द-दण्डी, वेद-वेता सन्यासी था।
एक ही दीपक आर्यवर्त्त मे दिखाते थे॥

(४)

आई अन्धकार की थी, सीमा दयानन्द आया।
विरजानन्द सीचा दीप वैदिक जगाय के॥
होते न ब्रह्मचारी दण्डी, मथुरा मे दिव्य दीप।
जाते न दयानन्द कब प्रकाश मे आयके॥

होता न प्रकाश आज, आती न दिवाली अन्धी।
पाते न प्रकाश प्रिय, तमसा हटायके॥
प्रकाश मे आये सब, सोता था भारत सब।
दयानन्द दिव्य दीप रहा सत पायके॥

—कवि कस्तूरचन्द 'घनसार'
कवि कुटीर, पीपाड शहर, (राज)

महान शोक

आर्य जगत को दुख के साथ यह समाचार दिया जाता है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान पद्मभूषण डा० दु.खनराम जी (पटना) की धर्मपत्नी श्रीमती रामप्यारी देवी का ९ नवम्बर ८८ को निधन हो गया है।

इस महान वियोग पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने एक शोक सन्देश में गहरा दुख प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हुए माननीय डाक्टर साहब और उनके परिवार के प्रति आर्य जगत की ओर से हार्दिक संवेदना प्रकट की।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री

आर्यसमाज की गतिविधियां

वैदिक धर्म में प्रवेश

दिनांक २३-१०-८८ को (रविवार) माकनेर, तहसील मलकापुर जिला बुलडाणा निवासी श्री इमामखा हुसेनखा सद्गृहस्थ ने अपनी स्वेच्छा से वैदिक विधीनुसार यज्ञोपवीत धारण करके विधीवत वृहद्यज्ञ द्वारा वैदिकधर्म मे प्रवेश किया।

वे कहते हैं कि मैं बचपन से ही सत्य की खोज में था। सत्य की खोज करते हुए मेरा यह दृढ विश्वास हुआ कि वैदिक धर्म ही सत्य है। ऐसा श्री इमामखा (ईश्वरानन्द) इन्होंने सभा को सबोधित करते हुए स्वय प्रेरणा से कहा।

इस समय इनकी पत्नी ४ पुत्र और २ पुत्रियो का शुद्धिकरण करके उनके नाम निम्नांकित रखे गये।

	पूर्वाश्रम का नाम		शुद्धि के पश्चात का नाम
१	इमामखा हुसेनखा		श्री ईश्वरानन्द
२	फातुबी	(पत्नी)	सौ० मालति
३	अयुब	(पुत्र)	ओमप्रकाश
४	फिरोज	„	फूलचन्द
५	युनुस	„	योगानन्द
६	पप्पू	„	परमानन्द
७	कु० आयशा	(पुत्री)	कु० उषा
८	कु० मलिका	„	कु० मैनावती

इस कार्यक्रम का पौरोहित्य खामगाव आर्य समाज के पुरोहित श्री मि० ना० सूर्यवंशी (आर्य) गुरुजी ने किया। अध्यक्ष खामगाव आर्य समाज के कार्यकारी अध्यक्ष श्री यशपालजी जानवाणी थे।

उमाली आर्य समाज के प्रधान श्री सुपडाजी श्रीयुत धारण तथा मन्त्री श्री पुरुषोत्तम दामचन्द धोरण इन्होंने इस कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस कार्यक्रम मे श्री नथूराम जी जानवाणी नादुरा श्री बनारे गुरुजी माजी सरपंच माकनेर, श्री राजाराम पंढरी एकडे गुरुजी खामगाव मलकापुर आर्य समाज के श्री चवरे तथा श्री शालिग्राम जी सातव और अन्य ग्रामस्थ सज्जनो की उपस्थिति मे यह शुद्धिकरण समारोह सम्पन्न हुआ। श्री ईश्वरानन्द के हस्ते महाप्रसाद वितरण करके शान्तिपाठ के पश्चात समारोह समाप्त हुआ।

डी० ए० वी० शताब्दी वर्ष मे प्रतिभावान छात्र सम्मान समारोह सम्पन्न

अजमेर डा० ए० बी० उ० मा० विद्यालय के इस स्थापना शताब्दी वर्ष मे प्रतिभावान छात्र सम्मान समारोह एवं योग्यता के आधार पर गठित छात्र कल्याण परिषद का उद्घाटन एवं शपथ ग्रहण समारोह माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राज० के चेयरमैन श्री जे एम. श्रीवास्तव की अध्यक्षता, अतिरिक्त जिलाधीश निकाय श्री ए के सिंह के मुख्य आतिथि एवं श्री सी आर चौधरी नगर दण्डनायक के विशिष्ट आतिथ्य में समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बोर्ड की परीक्षाओ में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण रहे ८८ छात्रो को माल्यार्पण पुरस्कार एवं प्रशंसा पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया तथा शिक्षा बोर्ड के चेयरमेन श्रीवास्तव ने छात्र कल्याण परिषद के छात्रो को कर्तव्य पालन की शपथ ग्रहण कराई एवं श्री सिंह एवं श्री चौधरी ने दीप जलाकर परिषद के कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

राष्ट्र निर्माण के लिए स्वामी दयानन्द के उपदेशों पर चलना होगा

आर्य समाज नकुड (सहारनपुर) के ५८ वें वार्षिकोत्सव पर भाषण देते हुए पंजाब विश्वविद्यालय का दयानन्द पीठ के अध्यक्ष डा० भवानीलाल जी भारतीय ने अपने भाषण मे आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द के जीवन और विचारो का विस्तार पूर्वक विश्लेषण किया, उन्होंने शोधपूर्ण प्रवचनो मे ऋषि दयानन्द की स्वदेश भाक्ति, राष्ट्रीयता तथा देश की स्वाधीनता संग्राम मे आर्यसमाज की भूमिका की विस्तृत चर्चा की।

—भूपेन्द्र कुमार गोयल, मन्त्री

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थादला (झाबुआ म० प्र०) श्री हरिचन्द जी ए[illegible] कमरा की नीम का उद्घाटन करते हुए पास मे श्री परमानन्द जी सोलं[illegible] अध्यक्ष श्री रामकृष्ण बजाज सचिव महर्षि दयानन्द तथा अन्य सदस्य खड़े

भवन निर्माण हेतु सात्विक दान

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थादला (झाबुआ) म० प्र० को भवन निर्माण के लिये एक कमरा बनाने हेतु श्री हरिचन्द जसूमल साहश्तिानी दाहोद जि० पचमहाल गुजरात द्वारा २५०००) देने की घोषणा की है जिसमे से ४०००) रु० कार्य प्रारम्भ करने हेतु दे दिये है। संस्था ने इस शुभ कार्य के लिये उनको बहुत २ धन्यवाद दिया है जिन्होंने इस आदिवासी क्षेत्र मे २० वर्षो से कार्यरत संस्था का भवन निर्माण की बहुत बडी आवश्यकता थी और भविष्य मे भी और कमरे बनाने की आवश्यकता है। क्योंकि म० प्र० शासन इस आदिवासी क्षेत्र मे अशासकीय संस्थाओ को प्रवृत्तियां संचालन हेतु तथा आश्रम मे वृद्धि हेतु अनुदान का सहयोग देती है।

अन्य दानियों से भी प्रार्थना है कि वे इस शुभ कार्य हेतु निर्माण कार्य मे सहयोग करे। ताकि आश्रम का विस्तार किया जा सके।

रामकृष्ण सचिव महर्षि दयानन्द सेवाश्रम (झाबुआ)

उत्सव

वैदिक योगाश्रम (गुरुकुल) शुकताल का २४ वां वार्षिक महोत्सव आश्रम के विशाल प्रांगण मे कार्तिक शुक्ला द्वादशी से पूर्णिमा तक तदनुसार २० से २३ नवम्बर १९८८ तक भारी धूमधाम के साथ मनाया जायगा।

स्वामी आनन्दवेश (बलदेव नैष्ठिक) प्रबन्धक

वैदिक ज्ञान मेला

महिला आर्य समाज उन्नाव के तत्वावधान मे गतवर्षो की भांति इस वर्ष भी दिनांक २१ नवम्बर से २४ नवम्बर १९८८ तक आर्य समाज मन्दिर के प्रांगण मे वैदिक ज्ञान मेला का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान व भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—प्रवेश तुली

उत्सव सम्पन्न

श्रद्धानन्द आर्य समाज चिचोली का वार्षिकोत्सव दिनांक १६ १० ८८ से २० १० ८८ तक विजयादशमी के पावन पर्व पर बहुत ही धूमधाम के साथ मनाया गया जिसमे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान (१) स्वामी ओमानन्द सरस्वती दिल्ली, (२) स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती भिलाई (३) प० महेन्द्र पाल आर्य (४) सत्यपाल "सरल" देहरादून (५) प० सुरेन्द्रपाल नागपुर आदि विद्वान पधारे थे। कार्यक्रम का समापन स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती द्वारा किया गया है।

—मन्त्री

गुरुकुल आश्रम बिठूर 'कानपुर' मे वानप्रस्थ संस्कार

कानपुर। गुरुकुल आश्रम बिठूर मे नेहरू जयन्ती १४ नवम्बर १९८८ को रतनमुनि जी की अध्यक्षता मे प्रात ६ से ११ तक स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती द्वारा वानप्रस्थ व सन्यास की दीक्षा दी गयी। उक्त अवसर पर गृहस्थो को पुत्ररत्न औषधि भी दी गयी।

—गुरुकलानन्द सरस्वती

R N. 626/57 Licensed to post without prepayment License ... 10-11-1988

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का निर्वाचन

(१९८८-८९)

प्रधान—महाशय धर्मपाल

उपप्रधान—श्री सूर्यदेव, श्री सरदारीलाल वर्मा, श्री सच्चिदानन्द आर्य
श्री विश्वम्भरनाथ भाटिया

महामन्त्री—डा० शिवकुमार शास्त्री

मन्त्री—श्री रामशरणदास आर्य, श्री ओमप्रकाश आर्य
डा० रघुनन्दन वेदालंकार, श्री विमल कान्त शर्मा
श्री राजेन्द्रपाल गुप्त, श्रीमती कृष्णा चड्ढा

कोषाध्यक्ष—श्री ओम्प्रकाश कपूर

—महाशय धर्मपाल

तेलंगाना आर्य समाज गोरक्षा के लिए आगे

१२ वर्षीय अखिल भारत गोरक्षा प्रचार पदयात्री दल ने जब आन्ध्र प्रदेश मे प्रवेश किया तो जाहिराबाद आर्य समाज जिला मेढक सगारेड्डी आर्य समाज, जोगीपेठ आर्य समाज फिर निजामाबाद जिले के निटतम आर्य समाज बिचकुन्दर आर्य समाज बासवाड़ा आर्य समाज वरनी मे महिला आर्य समाज निजामाबाद आर्य समाज कामारेड्डी आर्य समाज, इन सभी आर्य समाज मंदिरो के प्रधान मन्त्री एवं प्रचारक और सदस्यो ने बड़े उत्साह से यात्री दल का स्वागत सत्कार और सभा की व्यवस्था की सभी समाजो ने यात्री दल के खर्च के लिए ५०० रुपये की धनराशि दान मे दी। जोगीपेठ आर्यसमाज के अध्यक्ष श्री अ गप्पा जी गुप्ता ... को कुछ कपड़ा भी दान में दिया। क्योंकि यात्रा का सारा खर्च ... पर कठमूर गुरुकुल के आचार्य ... (... रुपये) दान

... भी मदद करते है ... प्रदेश मे सो रहे है ... स्वभाव ही है तो पूज्यपाद ... ... है उसका दर्शन हमे हो रहा है। ऐसे मनिषि को बारम्बार ।

अभी हम करीमनगर वारगल नलगोंडा जिला से होकर नवम्बर आखिरी म घटकेश्वर गुरुकुलसे हैदराबाद शहर मे प्रवेश करेंगे ८ दिन शहर म फिर रगारेड्डी महबूब नगर होकर आगे जायगे। —प्रकाशचन्द्र जोशी

शोक समाचार

—हमें आपको यह समाचार देते समय अपार दुख हो रहा है कि सामाजिक धार्मिक कर्मठ कार्यकर्ता एवं स्वयसेवी पूज्यनीय लाला रामावतार जी आर्य सपुत्र स्वर्गीय सेठ रामचन्द्र जी गुप्ता का आकस्मिक निधन १२ १० ८८ को हो गया है। —सुरेन्द्र कुमार आर्य

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८९] वर्ष २१ अङ्क ४८]
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
मा० शीर्ष कृ० १२ स० २०४५ रविवार २७ नवम्बर १९८८
दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष : २७४७७१
वार्षिक शुल्क २५) एक प्रति ६० पैसे

सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन करने का अधिकार केवल सार्वदेशिक सभा को है

आर्यजनता द्वारा विश्व आर्यसम्मेलन के आयोजनकी कड़ी निंदा

लखनऊ १२-१३ नवम्बर। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का वार्षिक अधिवेशन डी०ए०वी० कालेज लखनऊ के प्रागण मे विशाल पाडाल मे सम्पन्न हुआ। जिसमे उत्तर प्रदेश स्थित आर्य समाजो के हजारो प्रतिनिधियो ने भाग लिया। इस अवसर पर आगामी वर्ष के लिए प० इन्द्रराज, प्रधान और श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री सर्वसम्मति से चुने गए। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार के मन्त्री श्री बलदेवसिह आर्य और सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी भी विशेष अतिथि के रूप मे उपस्थित थे।

अधिवेशन मे श्री जयनारायण अरुण ने प्रस्ताव रखा कि इस समय आर्य समाज के सगठन मे कुछ स्वार्थी तत्व आर्य समाज के नाम का दुरुपयोग कर रहे है और व्यक्तिगत रूप से अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अथवा विश्व आर्य सम्मेलन के नाम से जनता से धन एकत्र करने की अपील कर रहे हैं। यह अधिवेशन आर्य जनता से जोरदार रूप से आह्वान करता है कि इस प्रकार के सम्मेलन करने का अधिकार केवल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को ही है अन्य किसी को नही। यह अधिवेशन आर्य जनता से अपील करता है कि आर्य समाज से निष्कासित तथा सगठन विरोधी लोगो को उनके व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए न तो धन दे और न किसी प्रकार का सहयोग दे।

उक्त प्रस्ताव का श्री मनमोहन तिवारी ने अनुमोदन किया और करतल ध्वनि से सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करते हुए सार्वदेशिक सभा से माग की गई कि सार्वदेशिक सभा, सगठन विरोधी लोगों के इस कुचक्र से आर्य जनता को आगाह कर।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि आगामी ३०-३१ दिसम्बर और १ जनवरी १९८९ को अलवर मे आर्य महासम्मेलन की तैयारिया जोरो पर चल रही है। इसलिए आर्य जनो को अलवर सम्मेलन के लिए अपना पूरा सहयोग सार्वदेशिक सभा को करना चाहिए।

—मनमोहन तिवारी
आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ (उ० प्र०)

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का शताब्दी समारोह

आर्य समाज के लिए नया दिशा निर्देश जारी होगा :

भावी कार्यक्रम के लिए समस्त आर्य समाजों के प्रधान व मंत्रियों का वृहद सम्मेलन

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह आगामी ३०-३१ दिसम्बर १९८८ और १ जनवरी १९८९ को अलवर मे आयोजित हो रहा है। इस अवसर पर आर्य महासम्मेलन का भी आयोजन होगा। इस समारोह मे भारत तथा विदेशो से बडी सख्या मे आर्य जन, सन्त, विद्वान व नेतागण भाग लेगे।

आज की बदलती हुई परिस्थितियो मे यह आवश्यक हो गया है कि आर्य समाज की ओर सेइन विषम परिस्थितियो के निराकरण के लिए कोई ठोस कार्यक्रम तैयार किया जावे।

शताब्दी समारोह समिति की ओर से आगामी ३१ दिसम्बर १९८८ को सायकाल ३ बजे से भारत तथा विदेशो के समस्त आर्य समाजो के प्रधान व मन्त्रियो का एक वृहद् सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है, जिसमे आर्य जगत् को नया दिशा निर्देश जारी किया जायगा।

मैं समस्त आर्यसमाजो के प्रधान व मन्त्री महानुभावो से निवेदन करता हूँ कि वह उक्त सम्मेलन अलवर मे अवश्य पधारने का कष्ट करें।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

राष्ट्र को आन्तरिक शक्तियो से खतरा है

कानपुर। आर्य समाज, स्त्री आर्य समाज गोविन्द नगर एव आर्य कन्या इण्टर कालेज, के त्रिदिवसीय स युक्त वार्षिकोत्सव के अवसर पर केन्द्रीय आर्य सभा के तत्वावधान मे आर्य समाज हाल गोविन्द नगर मे राष्ट्र रक्षा सम्मेलन किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने की तथा मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि इस देश को विदेशी ताकतो की अपेक्षा आन्तरिक शक्तियो से अधिक खतरा है। देश की आन्तरिक विघटनकारी शक्तिया वर्ग, भाषा जाति क्षेत्र, सम्प्रदाय पर तुली है। राष्ट्र की रक्षा के लिए आवश्यक है कि एक समान नागरिक स हिता, एक समान शिक्षा सम्पूर्ण देश मे लागू की जाये। अध्यक्ष श्री देवीदास आर्य ने सरकार की,तुष्टीकरण की नीति की आलोचना करते हुए माग की कि काश्मीर को विशेष दर्जा देने सम्बन्धी धारा ३६० समाप्त की जाये। तथा धर्म की एक मानक परिभाषा निर्धारित की जाये ताकि विभिन्न मत-मतान्तरो व सम्प्रदायो के आपसी विवाद समाप्त हो सके। उन्होने कहा कि हिन्दी को अपना मान्य स्थल देने से राष्ट्र रक्षा मे सहयोग मिल सकता है। वक्ताओ मे सर्वश्री सत्यदेव शास्त्री (वाराणसी), ओकार मित्र 'प्रणव महेश चन्द्र (अलीगढ), आचार्य रमेशचन्द्र, डा० शान्तादेव बाला (लखनऊ), सोहनलाल पथिक (पलवल) एव देवीदास आर्य ने अपने विचार व्यक्त किये।

मन्त्री—केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर

उत्सव

—आर्य समाज बैतूल का वार्षिक उत्सव वेद मन्दिर बैतूल मे २१-२२ अक्टूबर के प्रथम चरण मे श्री जैन्द्रव आर्य की अध्यक्षता मे कार्यक्रम प्रारम हुआ तथा दूसरे चरण की अध्यक्षता श्री बलवन्त खुराना ने की।

अपन उद्बोधन मे परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, दिल्ली ने पुरातात्विक खोजों तथा मानव जीवन को रामकृष्ण और महाभारत व रामायण से प्रभावित करने वाले विचारो का विश्लेषण करते हुए प्रतिपादित किया कि आर्य समाज का शारीरिक, सामाजिक और धार्मिक उन्नति मे महान योगदान है।

—आर्य समाज जगपुरा मोगल का वार्षिक उत्सव २२ से ३० अक्टूबर १९८८ तक बहुत धूमधाम से मनाया गया।

२२ अक्टूबर दोपहर २ बजे से भव्य शोभायात्रा मोगल और जगपुरा के बाजारो से होती हुई जगपुरा मे समाप्त हुई।

२३ से २९ अक्टूबर तक रात्रि ८ बजे से ९ बजे आचार्य श्री पुरुषोत्तम जी शर्मा, एम ए की वेद कथा हुई।

२९ अक्टूबर—मध्यान्ह २ से ५ बजे तक

स्वर्गीया श्रीमती सत्यप्रिया जन्म उत्सव समारोह (धर्म पत्नी श्री नवनीत लाल जी) के उपलक्ष्य मे आर्य पाठशाला के विद्यार्थियो की प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता श्री आचार्य विद्यारत्न जी एम ए की अध्यक्षता मे हुई।

—आर्य समाज, बहराइच का ८७ वा वार्षिकोत्सव दिनाक २४ २५, २६, व २७ नवम्बर १९८८ ई० को स्थान—घण्टाघर पार्क, बहराइच मे होगा।

निर्वाण दिवस

आज आर्य समाज हिसार महर्षि निर्वाण दिवस (दयानन्द बलिदान दिवस) अपनी शिक्षण सस्था आर्य कन्या पाठशाला मे बडी धूम-धाम से मनाया। जिसके मुख्य वक्ता थे, प्रो० ओमकुमार आर्य, किसान कालेज जीन्द। आर्य जी ने जब अपने भाषण मे देश और मानवता के प्रति ऋषि के अहसान बताए उसके बदले मे जनता ने ऋषि को दिया १७ बार जहर, ईट, पत्थर और गालिया। उस समय बहुत से पुरुषो और महिलाओ की आखो मे पानी भर आया। उनका भाषण बडा ही मार्मिक था।

—मन्त्री, सीताराम आर्य

भाषण-प्रतियोगिता

बुधवार, दीपावली (दि० ९-११-८८) के दिन आर्य समाज, अल्मोडा में महर्षि दयानन्द सरस्वती के १०६ वें निर्वाण तिथि के उपलक्ष्य मे एक भाषण-प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसका विषय था "स्वतन्त्र भारत की राष्ट्रीय सम्पर्क भाषा स स्कृत-हिन्दी होनी चाहिए, दासता-सूचक विदेशी भाषा अ ग्रेजी नही" इस प्रतियोगिता मे स्थानीय विभिन्न विद्यालयो के १७ विद्यार्थियो ने भाग लिया। कु० श्रद्धा जोशी, कु० शीपा पाण्डे तथा कु० दीपा मठपाल ने सर्वोच्च अ क प्राप्त कर विशेष पुरस्कार प्राप्त किया। सभी प्रतियोगियो को प्रमाण पत्र तथा श्रेष्ठ साहित्य से सम्मानित किया गया। श्रोताओ ने प्रतियोगिता के विषय और प्रतियोगियो के उत्साह तथा वक्तृत्व की भूरि-भूरि प्रशसा की।

—डा० जयदत्त शास्त्री
मन्त्री-आर्य समाज अल्मोडा

आर्य समाज कैसर बाग लखनऊ

आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव बडी धूम धाम और हर्षोल्लास से २८, २९ और ३० अक्तूबर १९८८ ई० को मनाया गया। प्रत्येक दिवस प्रात यज्ञ-भजन और उपदेश से कार्य प्रारम्भ होता था। प्रथम दिन मध्यान्ह काल विद्वानो ने अपने विचार प्रकट करते हुए सुस्पष्ट किया कि देश की अखण्डता एव एकता की सुरक्षा वैदिक नैतिकता पर सुस्थिर होगी।

दूसरे दिन महिला सम्मेलन मे विदुषी महिलाओ ने बहुसख्या मे भाग लिया उन्होने समाज मे व्यापक कुरीतियो की चर्चा की। निष्कर्ष यह था कि महिलाओ का निर्माण वैदिक सस्कारो के अन्तगत हो सकता है।

अन्तिम दिन मध्यान्ह काल विद्यार्थी सम्मेलन का आयोजन था। इसमे नगर तथा अन्य जनपदो की शैक्षिक स स्थाओ के विद्यार्थियो ने सोत्साह भाग लिया। इसमे 'स स्कृत शिक्षा की अनिवार्यता" बारहवी कक्षा के विद्यार्थियो के लिए तथा 'देश की अखण्डता' और एकता की आधार शिला वेद है' उच्चतर विद्यार्थियो के लिए निर्धारित किया गया था। विद्यार्थियो ने सबल शब्दो मे अपने भावोद्गार किया कि देश को शक्तिशाली, अखण्ड और एकता के सूत्र मे बाधने का मुख्य साधन स स्कृत शिक्षा की अनिवार्यता और वेद की सदशिक्षा पालन है।

—मन्त्री आर्य समाज

उत्सव सूचना

आर्यसमाज छावनी, भोजूबीर वाराणसी का ६४ वा उत्सव दिनाक २४ से २७ नवम्बर तक ससमारोह मनाया जा रहा है। जिसमे 'आर्यवीर दल' युवा सगठन के उद्घाटन का विशेष कार्यक्रम है।

—मन्त्री-गुरुप्रसाद

शुभ विवाह सम्पन्न

ज्ञानपुर (वाराणसी) विश्वभारती अनुसधान परिषद के निदेशक एव गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) के 'कुलपति डा० कपिलदेव द्विवेदी के सुपुत्र श्री धर्मेन्दु द्विवेदी का शुभविवाह स्व० श्री चैतन्य कुमार अदालिया की सुपुत्री कुमारी जयश्री के साथ होशगाबाद (म० प्र०) मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नगर के वरिष्ठ अधिकारी एव गणमान्य व्यक्ति अतिथियो ने नवदम्पती को आशीर्वाद दिया। यह विवाह बिना दहेज लिए सम्पन्न हुआ जो एक आदर्श है।

—(आर्येन्दु द्विवेदी), प्रचार मन्त्री

सीतापुर (सरगुजा) में २६, २७, २८ नवम्बर को वनवासी आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन

समारोह की सफलता हेतु क्षेत्रीय अधिकारियों की दुर्ग में बैठक सम्पन्न

दिनांक ३० अक्तूबर १९८८ को तुलाराम आर्य कन्या उ० मा० विद्यालय दुर्ग में छत्तीसगढ़ से पधारे आर्य कार्यकर्ताओं एवं सभाधिकारियों की एक संयुक्त बैठक सभा प्रधान श्री रमेशचन्द्र जी की अध्यक्षता में हुई। बैठक में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती जी विशेष रूप से पधारे थे।

सभा प्रधान श्री रमेशचन्द्र जी के अनुरोध पर श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने बताया कि आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के निर्देशन पर सीतापुर (सरगुजा) में दिनांक २६ से २८ नवम्बर ८८ तक वनवासी आर्य महासम्मेलन का आयोजन मध्य प्रदेश तथा विदर्भ की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के संयुक्त तत्वावधान में मनाया जा रहा है। समारोह की अध्यक्षता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करेंगे। वैदिक यति मण्डल के अध्यक्ष स्वामी सर्वानन्द जी, ओमानन्द जी महात्मा आर्यप्रकाश जी म० दयानन्द जी, प० पृथ्वीराज शास्त्री प० राजगुरु शर्मा आदि विद्वानों ने सम्मेलन में पधारना स्वीकार कर लिया है।

इस अवसर पर २४ से २८ नवम्बर ८८ तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। दिनांक २७ नवम्बर ८८ को एक विशाल शुद्धि समारोह आयोजित है जिसमें हमारे बिछुड़े भाइयों से पुनर्मिलन होगा। स्वामी धर्मानन्द जी ने बताया कि सुव्यवस्था हेतु वे स्वयं १५ नवम्बर से स्थायी रूप से सीतापुर में आकर कार्य भार सम्हालेंगे।

सभा प्रधान श्री रमेशचन्द्र जी ने कहा कि बाहर से पधारने वाले प्रतिनिधियों के आवासादि की सुन्दर व्यवस्था की जावे। आपने स्वामी धर्मानन्दजी से पूछा कि वे हमारी सभा से क्या अपेक्षा रखते हैं?

सभा मन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री तथा वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री गुलाबचन्द बन्सल ने कहा कि हमें यह मालूम होना चाहिए कि समारोह का बजट कितना है कितनी राशि प्राप्त हो गई है और कितने धन की आवश्यकता है। कार्यक्रम की रूपरेखा पहले ही निश्चित की जानी चाहिए।

स्वामी धर्मानन्द जी ने कहा कि मध्य प्रदेश व विदर्भ की प्रतिनिधि सभा भोजन व्यय का पूर्ण उत्तरदायित्व वहन कर शेष समस्त प्रचार आवासादि के व्यय की व्यवस्था कर ली जावेगी।

अन्त में प्रधान जी ने समस्त उपस्थित अधिकारियों तथा सदस्यों की सम्मति जानने के पश्चात भोजन व्यय का उत्तरदायित्व सभा की ओर से उठाना स्वीकार किया। इसकी व्यवस्था हेतु छत्तीसगढ़ अंचल से अन्न तथा धन संग्रह अभियान तत्काल चलाने का निश्चय हुआ जिसका सभी ने स्वागत किया तथा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

सभा की ओर से भजनोपदेशक वेदपाल आर्य, श्री ज्ञानप्रकाश शर्मा, श्री बालकृष्ण शर्मा सेवकराम आर्य को दीपावली के तुरन्त बाद सम्मेलन कार्यार्थ भेजने का अनुरोध किया गया। —रमेशचन्द श्रीवास्तव

संस्कृत को नष्ट करने का षडयन्त्र कौन कर रहा है?

संस्कृत भाषा को केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा स्कूलों के पाठ्यक्रम से हटाकर लोगों के मन में एक जटिल परिस्थिति पैदा कर दी गई है।

भारत सरकार के संस्कृत कमीशन ने किसी भी एक क्लासिकल भाषा के अनिवार्य अध्ययन की सिफारिश की थी। त्रिभाषा सूत्र भारत सरकार ने स्वीकार किया था। हिन्दी के विरोधियों की संतुष्टि के लिए ही भारत सरकार ने त्रिभाषा फार्मूला माना था। इससे समस्या और बढ़ गई हिंदी भाषी लोगों ने अपने बच्चों को संस्कृत पढ़ाना पसन्द किया। अचानक कुछ राजनैतिक प्रभाव बढ़ने के कारण दक्षिण में भी हिन्दी पढ़ाने पर जोर दिया गया जिसकी वजह से भाषा विवाद बढ़ता गया।

दक्षिण में विशेषकर तमिलनाडु में सरकारी स्कूलों में द्विभाषा फार्मूला हिन्दी और संस्कृत को निकालने के लिए बनाया गया। वहां त्रिभाषा फार्मूला लागू ही नहीं हुआ। तमिलनाडु में कुछ लोगों ने प्रान्तीय भेदभाव शुरू करके केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त स्कूलों में संस्कृत को रखा।

अब केन्द्रीय शिक्षा बोर्ड द्वारा संस्कृत को हटाने का निर्णय करने पर विद्यालयों ने संस्कृत के हमारे अध्यापकों की सेवा समाप्ति के नोटिस दिए हैं। केवल २० प्रतिशत अंक संस्कृत के लिए निर्धारित होने के कारण केवल पार्टटाईम शिक्षक से ही काम चल जाएगा। पाठ्यक्रम में ८० प्रतिशत हिन्दी के कारण छात्रों को पास होने के लिए संस्कृत की आवश्यकता कम होती है।

तमिलनाडु के अभी हाल ही के दौरे में प्रधानमंत्री श्री गांधी ने कहा कि [illegible] के [illegible] शासन से भारतीय संस्कृति एवं पद्धति का हनन हुआ है। [illegible] है। प्रधानमन्त्री के इस विचार से स्पष्ट हो जाता है कि केन्द्रीय बोर्ड द्वारा लिया निर्णय उचित नहीं है।

[illegible] अक्तूबर १९८८ को केन्द्रीय माध्यमिक बोर्ड द्वारा यह निर्णय लिया गया। उत्तर भारत के लिए तमिल और तेलगू को सौ अंक दिये गये हैं जबकि संस्कृत को सिर्फ बीस। इससे संस्कृत बिल्कुल समाप्त हो जाएगी। प्राइवेट स्कूलों में तो संस्कृत बिल्कुल ही हटा दी जाएगी। संस्कृत विद्यापीठ से निकलने वाले योग्य छात्रों के लिए भी रोजगार बन्द हो जाएगा।

तमिलनाडु में विश्व हिन्दू परिषद इस मसले पर नया राजनैतिक मोड़ देने के लिए प्रयत्नशील है। इसलिए सरकार को बुद्धिमानी से संस्कृत अरबी फारसी और क्लासिकल तमिल जैसी भाषाओं की रक्षा के लिए बुद्धिजीवियों के साथ पुनर्विचार करना चाहिए और संस्कृत को सारे देश में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं के समकक्ष दर्जा दिया जाना चाहिए जिससे इतने बड़े ज्ञान की धरोहर नष्ट होने से बच सके।

—डा० सी० आर० स्वामीनाथन
भारत सरकार के पूर्व शिक्षा सलाहकार नई दिल्ली

बेटे की बलि देने का उसे कोई पछतावा नहीं

नरसिंहपुर (म प्र) १७ नवम्बर। जमुना प्रसाद नहीं मानता कि उसने कोई पाप किया है। उसे अपने किये का कोई पछतावा नहीं है। दीवाली की रात को उसने अपने सात साल के बेटे की बलि इस उम्मीद में दे दी थी कि काली माता उसे दर्शन देगी।

जमुना प्रसाद अभी नरसिंह पुर की जेल में है। शुक्रवार को यह संवाद दाता जब उससे जेल में मिला तो उसके चेहरे पर हल्की सी उदासि जरूर थी पर अफसोस नहीं था। गाढ़े रंग की बनियान पहने हुए दुबला-पतला जमुना प्रसाद बहुत ही विनम्रता से पेश आ रहा था। पहले दो बार उससे मिलने की कोशिश की गई थी पर उसने मिलने से इंकार कर दिया। इस बीच संवाददाता को उसके मामा मिल गये। वह उनके साथ जमुना से मिला और तभी उसने कुछ सवालों के जवाब दिये।

उससे पूछा गया— अपने ही बेटे का सिर उड़ाते हुए अन्तिम क्षणों में भी क्या आपका दिल नहीं कांपा।

जमुना का जवाब था—'मैंने काली माता से वादा किया था कि मैं उन्हें अपने बेटे का सिर चढ़ाऊंगा। दो बार मैं अपनी कोशिश में नाकाम हो गया। इससे मेरा मन अपराध भावना से भर गया। इसीलिए तीसरी बार मैंने अपना काम कर डाला।

'क्या उसने (बच्चे ने) प्रतिरोध किया ?

थोड़ा सा। आंखों में आंसू भरते हुए जमुना प्रसाद बोला—वह कह रहा था—पापा मुझे बलि मत चढ़ाओ। पर मैंने उसे अपने घुटने के नीचे दबाया और गर्दन काट दी। वह वहीं खत्म हो गया।

'क्या आपको अपने किये का कोई पछतावा नहीं है ?

माता ने यही विधान किया था। मैं उस पर पछतावा कैसे कर सकता हूँ।'

'पर वह तुम्हारा इकलौता बेटा था।

अगर माता की इच्छा हुई तो मेरे और बेटे हो जाएंगे।

क्या तुम्हे माता के दर्शन हुए ?

नहीं। नर्मदा घाट पर जहां मैंने पूजा की थी और बलि दी थी एक घंटा इंतजार किया। फिर ऋषि कुमार की कुटिया में एक नोट लिखकर घर चला आया। घर वालों को इसके बारे में अगले दिन सुबह बताया। सुनते ही मेरी पत्नी शांति पागल हो गई। मेरे मामा परमानन्द ने पुलिस में रपट दर्ज करा दी।

'शांति का क्या हुआ ? उसकी देखभाल कौन कर रहा है ?'

वह मेरे माता पिता के पास है। मेरी एक नन्हीं बच्ची है। मेरे पिता कोटवार हैं।

जमुना प्रसाद को अभी भी उम्मीद है कि काली माता उसे दर्शन देगी।

हैरानी की बात यह है कि दीपावली वाली रात जमुना प्रसाद के अपने गांव से ४५ किलोमीटर दूर बेरमा गांव में दीपा मन्दिर जाने पर किसी ने उसे रोका नहीं। बताया जाता है कि बेरमा रवाना होने से पहले जमुना प्रसाद ने ऋषि कुमार को नए कपड़े भेंट किये। बेरमा में दीपा मन्दिर में पूजा करने के बाद वह अपने बेटे को लेकर जमुना घाट पर गया। वहीं काली माता की एक फोटो और प्लास्टर आफ पेरिस की बनी एक मूर्ति रखी फिर से पूजा की और इसके बाद अपने बेटे की बलि दे दी।

जमुना प्रसाद ने इस बात से इन्कार किया कि इस काम के लिए किसी ने उसे खजाना देने का वायदा किया था। शुरू में ऐसी खबरें मिली थी। उसने बताया कि माता के दर्शन करने की तीव्र इच्छा ने ही उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया।

करेली थाना के पुलिस इंस्पेक्टर सुरेन्द्र गुप्ता ने बताया कि मामला सुनते ही पहले तो वे जमुना प्रसाद के प्रति गुस्से व आवेश से भर उठे। पर बाद में उसे गिरफ्तार करने के लिए गये तो देखा कि जमुना प्रसाद ने कोई प्रतिरोध नहीं किया है। वह चुपचाप थाने चलने के लिए तैयार हो गया।

घटि के [illegible] जनता की ओर से [illegible] को [illegible] पुलिस ने [illegible] की [illegible] तस्वीरें [illegible] गई थी। तस्वीरें [illegible] स्थानीय फोटो ग्राफर ने ली थीं।

जिला पुलिस अधीक्षक [illegible] ने बताया कि तस्वीरें पुलिस के अपने रिकार्ड के लिये खिचाई थी। सार्वजनिक करने के लिए नहीं। पर फोटोग्राफर ने इसी बीच कुछ स्थानीय अखबार वालों को फोटो की प्रतियां बेच दीं।

श्री चोव के अनुसार सारा मामला महज हत्या का है और ऐसे कई सबूत हैं जिनके आधार पर अपराधी को ऐसी सजा दिलाई जा सकती है जो दूसरों के लिये उदाहरण बन सके।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि हत्या का कारण पिछड़ापन व गरीबी मानकर किसी को छोड़ा नहीं जा सकता। अपराध तो अपराध ही है। जमुना प्रसाद थोड़ा बहुत पढ़ा हुआ है और ट्रैक्टर चलाता है। गांव वालों के अनुसार घोर अन्धविश्वास के कारण ही उसने यह काम किया।

जमुना प्रसाद की पत्नी शांति व पिता दौलत प्रसाद से मिलने की कोशिशें नाकाम रहीं। इन दोनों ने ही किसी बाहरी व्यक्ति से मिलने से इंकार कर दिया।

—चन्द्रकान्त नायडु

कड़वी वाणी

कुण्डलियां

(१)

बोलो प्रिय मीठे वचन, कटुक वचन को छोड़।
क्रोधादि इस बीज को, दीजे पकड़ मरोड़॥
दीजे पकड़ मरोड़ जमीं पर फेंक गिराओ।
नहीं भूल कर इस मलेच्छ को कण्ठ लगाओ॥
घृणा द्वेष को त्याग जगत में विषय घोलो।
वशीकरण एक मन्त्र हमेशा मीठे बोलो॥

(२)

कागा के कटु बोल से तिरस्कार अपमान।
कोयल मीठे बोल से पाती है सन्मान॥
पाती है सन्मान आम अति लगता प्यारा।
मधुर वचन का वचन बहावे अमृत धारा॥
कटुक वचन दे तोड़ प्रेम का पल में धागा।
इसे आरा जोग भगाया कागा कागा॥

(३)

मिलो मिलाओ प्रेम से कहो न कड़वी बात।
मिलती कड़वी बात से थप्पड़ घूंसा लात॥
थप्पड़ घूंसा लात आग तन में लग जाती।
निर्बल को भी कड़वी भाषा नहीं सुहाती॥
इसीलिए प्रिय ! मानव औषधि प्रेम की लाओ।
करो प्रेम से बात, परस्पर मिलो मिलाओ॥

(४)

कड़वी वाणी से तुरन्त बने जगत में बात।
एक कौशल की कुहुक और एक मुर्गे की बांग॥
एक मुर्गे की बांग, प्यार सब में [illegible]।
गधे, स्यार, की वाणी, नहीं किसी को भावें॥
कहे 'स्वरूपानन्द' दुखी होवे सब प्राणी।
कहता कोई यह बात, किसी से कड़वी वाणी॥

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य सज्जनों को सूचित किया जाता है कि अपने उत्सव तथा अन्य आयोजन सफल बनाने हेतु सेवा का अवसर प्रदान करें।

सूचना इस पते पर पत्रव्यवहार करें।—

—रामचन्द्र शास्त्री, आर्योपदेशक
देवानन्द प्रचार सेवा कार्यालय, [illegible]
पो० [illegible] जि० बिजनौर (उ० प्र०)

संस्कृत की उपेक्षा से उभरते राष्ट्रीय प्रश्न

—मोहन कृष्ण—

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा त्रिभाषा फार्मूले से संस्कृत को हटाने के जो आदेश जारी किये गये है उससे एक बार फिर देश की मुख्य शिक्षा धारा में संस्कृत का संकट गहराया है। तमिलनाडु के संस्कृत विशेषज्ञो ने भारत सरकार को ज्ञापन देते हुए कहा है कि इस दुर्भाग्यपूर्ण फैसले से तमिलवासियों का राष्ट्र की मुख्यधारा से सम्पर्क टूट जाएगा और देश मे क्षेत्रीयवाद की राजनीति हावी होगी। काशी कामकोटि पीठ के शंकराचार्य ने मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के पास शिक्षाविदो का शिष्टमंडल भेज कर सन १९५६ में प्रो सुनीति कुमार चटर्जी के नेतृत्व मे गठित 'संस्कृत कमीशन' की सिफारिशो के अनुरूप संस्कृत शिक्षा नीतियो को लागू करने की मांग की है। उधर आर्य समाज के वरिष्ठ नेताओ ने स्कूली शिक्षा मे संस्कृत की उपेक्षा पर रोष प्रकट करते हुए नए त्रिभाषा फार्मूले को मीठे जहर की गोली की संज्ञा प्रदान की है।

वस्तुत स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद शिक्षा नीति मे जब भी परिवर्तन किए गए संस्कृत भाषा का अस्तित्व सदैव डगमगाता आया है। पिछले दो वर्षो से नई शिक्षा नीति मे संस्कृत की उपेक्षा का मसला एक ज्वलन्त राष्ट्रीय प्रश्न बनकर उभरा है। 'संस्कृत रक्षा समिति' के एक शिष्टमडल को मानव संसाधन विकास मन्त्री श्री नरसिंह राव ने यह आश्वासन भी दिया था कि त्रिभाषा फार्मूले के अन्तर्गत संस्कृत को १९६८ मे जो स्थान प्राप्त था उसमे कोई परिवर्तन नहीं किया जायेगा। परन्तु वास्तविकता यह है कि त्रिभाषा फार्मूले का अब नया संस्करण जारी हो चुका है जिसके तहत आधुनिक भारतीय भाषा के रूप मे अब संस्कृत के पठन पाठन पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है तथा इसे 'क्लासिकल' भाषा का दर्जा देकर त्रिभाषा फार्मूले से बाहर कर दिया गया है।

मानव संसाधन विकास मन्त्रालय का भाषा प्रोन्नति कार्यक्रम नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत भाषाओ के जो चार वर्ग स्वीकार कर चुका है वे इस प्रकार है—(१) हिन्दी (२) आधुनिक भारतीय भाषाए (३) अंग्रेजी और विदेशी भाषाए तथा (४) संस्कृत अरबी तथा फारसी। इन चार वर्गों मे से प्रथम तीन वर्गों की भाषाओं को नए त्रिभाषा फार्मूले मे स्थान प्राप्त है तथा संस्कृत को 'क्लासिकल' का दर्जा दे दिया गया है जिसके कारण उसे एक आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में अब नहीं पढ़ा जा सकेगा।

१९८७ तक संस्कृत एक आधुनिक भारतीय भाषा थी और १९८८ में एकाएक 'क्लासिकल' भाषा क्यो हो जाना पड़ा इसका विश्लेषण तो देश के भाषाशास्त्री ही करेंगे किन्तु विधि शास्त्रियो की दृष्टि से यह 'क्लासिकलीकरण' का गणित संस्कृत के उन नागरिक अधिकारो मे अंकुश लगाता है जो उसे भारतीय संविधान में प्रदान किये हैं। परन्तु आज मुख्य समस्या यह है कि संस्कृत के इन संवैधानिक अधिकारो की रक्षा कौन करेगा?

त्रिभाषा फार्मूले के माध्यम से भाषाई समस्याओ के साथ छेड़छाड़ करने तथा संस्कृत को हतोत्साहित करने के प्रयत्नो से राष्ट्रीय धरातल पर अनेक अहम प्रश्न उभर आए हैं। इनमे एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि लोकतान्त्रिक तथा समाजवादी शिक्षा व्यवस्था मे भाषाओं का वर्गीकरण और राष्ट्रीय अपेक्षाओ से शिक्षा प्रणाली में उनके पठन पाठन की वरीयता को निश्चित करने की लोकतान्त्रिक पद्धति कौन सी है? क्या भारतीय संसद ने इसका निर्धारण किया है या फिर देश के विभिन्न भाषाओ के भाषाविद इसका निर्णय लेते हैं? आज यह भी विचारणीय प्रश्न बन गया है कि ब्रिटिश कालीन उपनिवेशवादी शिक्षा मूल्यो के हाथो भारत का भविष्य सुरक्षित है या स्वदेशी शिक्षा मूल्यो के परिप्रेक्ष्य मे शिक्षा प्रणाली को भारत की सामासिक संस्कृति के साथ जोड़ा जाए?

एक ओर हम न तो हिन्दी को पूर्णत शिक्षा का माध्यम बना सके है और न ही उच्चस्तरीय कमीशनो की परीक्षाओ में इसे मान्यता दे सके हैं। उधर भारती संविधान की मूल आकांक्षाओं के अनुरूप संस्कृत की प्रमुखता से हिन्दी को भारत की सामासिक संस्कृति का जो विकास करना था उसको

१९८७ तक संस्कृत एक आधुनिक भारतीय भाषा थी और १९८८ में उसे एकाएक 'क्लासिकल' भाषा क्यो हो जाना पड़ा इसका विश्लेषण तो देश के भाषाशास्त्री ही करे गे किन्तु विधिशास्त्रियो की दृष्टि से यह 'क्लासिकलीकरण' का गणित संस्कृत के उन नागरिक अधिकारो पर अंकुश लगाता है जो उसे भारतीय संविधान ने प्रदान किए हैं। परन्तु आज मुख्य समस्या यह है कि संस्कृत के इन संवैधानिक अधिकारो की रक्षा कौन करेगा?

रोकने मे भाषाई फार्मूले ऐसी रणनीति बनाते आए हैं जिससे भारतीयो पर अंग्रेजी का वर्चस्व छाया रहे और संस्कृत तथा सभी आधुनिक भारतीय भाषाए क्षेत्रीय वाद से आपस मे लड़ती भिड़ती रहे। शिक्षा नियोजको के द्वारा हिन्दी के साथ बीस नम्बरी संस्कृत फार्मूला इसका ताजा उदाहरण है।

आज देश के सभी संस्कृतज्ञ इस बात से चिन्तित हैं कि पिछले पाच हजार वर्षो से संस्कृत और उसकी बौद्धिक उपलब्धियो का जो विश्व कीर्तिमान अर्जित किया गया उसका पठन पाठन केवल बीस नम्बरो मे कैसे संभव होगा? वस्तुत भारत वर्ष के सन्दर्भ में शिक्षा प्रणाली द्वारा संस्कृत को महत्व देने या न देने का मामला मात्र एक भाषाई मामला नही है अपितु देश की पाच हजार वर्षीय संस्कृति और सभ्यता को सम्मानित या अपमानित करने के समाज शास्त्रीय पहलू से जुड़ा हुआ है। पिछली अनेक शताब्दियो मे संस्कृत को राजबल से कुचलने के जो अनेक प्रयास हुए हैं उनसे संस्कृत तो नष्ट नही हो सकी किन्तु उसके बौद्धिक एव शिक्षा शास्त्रीय दिशाओ के विकास को भारी आघात पहुँचा है। क्या भारत के शिक्षाशास्त्रियो ने इस ओर कोई राष्ट्रीय नीति तय की है?

आधुनिक भारत की शिक्षा प्रणाली मे संस्कृत का होना कितना आवश्यक है इसके बारे मे गाधी जी की राय है कि 'जहा तक भारत का सम्बन्ध है, यह बात किसी और प्राचीन भाषा की अपेक्षा संस्कृत के पक्ष मे अधिक सत्य है तथा प्रत्येक राष्ट्रवादी को इसका अध्ययन करना चाहिए, क्योकि इससे प्रान्तीय भाषाओ का अध्ययन अन्य उपायो की अपेक्षा सुगमतर होता है।' भारत की शिक्षा प्रणाली मे संस्कृत द्वारा सास्कृतिक धरोहर की रक्षा कैसे सम्भव है इस पर गाधी जी कहते हैं 'संस्कृत वह भाषा है जिसमें हमारे पूर्वज सोचते और लिखते थे। किसी हिन्दू बालक या बालिका को संस्कृत के प्राथमिक ज्ञान से हीन नही रहना चाहिए यदि उसे अपने धर्म की आत्मा का सहज बोध पाना है।'

इसी सन्दर्भ मे स्वतन्त्रता आंदोलन से जुड़े प्रमुख विचारक सर मिर्जा इसमाईल के विचारो को भी हम नही भुला सकते जो उन्होने १९४० मे वीर भद्रप्पा संस्कृत वेद पाठशाला की रजत जयन्ती के अवसर पर बंगलूर मे दिये थे—'संस्कृत का अध्ययन बुद्धि विलास से बढ़कर ही कोई वस्तु है। इतिहास के अध्यवसायी विद्यार्थी के सम्बन्ध मे तो, जो भारत के अतीत की महत्ता को समझना चाहता है, मुझे सन्देह है यदि वह संस्कृत के बिना सचमुच काम चला सकता है।' क्योकि भारत की प्राचीन सभ्यता का सार ही संस्कृत साहित्य है और इसमे हिन्दू धर्म का सारत्व प्रतिष्ठित है। यद्यपि हिन्दू धर्म तथा संस्कृत विद्या का परस्पर सहयोग है तथापि यह भाषा तथा इसका साहित्य स्वय जो आकर्षण रखता है वह भौगोलिक और धार्मिक सीमाओ को पार कर जाता है।

भारत सरकार सिद्धान्त रूप से संस्कृत शिक्षा का औचित्य स्वीकार कर चुकी है किन्तु देश की मुख्य शिक्षाधारा मे उसके महत्व को नकारती है। सरकार ने संस्कृत की प्रोन्नति के लिए 'राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान' की स्थापना की है। देशभर मे विद्यापीठो, पाठशालाओ, संस्कृत अकादमियो को खोला है किन्तु स्कूली पाठ्यक्रम से उसे बाहर कर दिया है। मानव संसाधन विकास मन्त्रालय की यह आत्मविरोधी संस्कृत नीति क्लासिकल युग के महाराज मनु के मानव धर्मशास्त्र की नारी-आचार संहिता से मेल खाती लगती है जिसके अन्तर्गत नारी जगत को प्रसन्न करने के लिए उन्हे देवता के पद पर

(शेष पृष्ठ ८ पर)

रावण का इतिहास

राक्षस-प्रकरण

ब्रह्मा जी ने हिमालय पर्वत पर मानस-सृष्टि के रूप मे कुछ पुत्रो का सृजन किया—वे स्रष्टा प्रजापति से बोले विभो हमे कोई कार्य बताइए।

ब्रह्मा जी ने कहा—देखो ! दो कार्य हैं, एक यज्ञ दूसरा रक्षा। बोलो तुम में से कौन क्या करेगा ?

कुछ ने कहा—"वय यक्षाम" हम यज्ञ करेगे।

कुछ ने कहा—"वय रक्षाम" हम रक्षा करेंगे।

इस पर सृष्टा ने व्यवस्था दी कि यज्ञ करने वाले 'यक्ष' एव रक्षा करने वाले "राक्षस" कहलायेंगे।

> यक्षाम इति यैरुक्त, यक्षा एव भवन्तु ते।
> रक्षाम इति यैरुक्त, राक्षसास्ते भवन्तु वै ॥

उक्त से ज्ञात होता है कि राक्षस आदि सज्ञाए कर्तव्य मूलक थी। राक्षस कोई भिन्न जाति नहीं थी। रावण का भाई कुबेर यक्ष था एव स्वय वह राक्षस ही कहलाया। विभीषण राम भक्त एव रावण द्रोही होने पर भी राक्षस कहलाया। राक्षस शब्द बुराई का प्रतीक नही था। सस्कृत व्याकरण मे राक्षस का अर्थ रक्षा करने वाला है।

- यदि राक्षस शब्द का अर्थ बुरा होता तो उसके पक्ष वाले उसे राक्षस क्यो पुकारते।
- मौर्य काल मे सम्राट नन्द के मन्त्री सुबुद्धि शर्मा को राक्षस की उपाधि दी गई थी। (देखो मुद्राराक्षस)
- राक्षस सुन्द की पत्नी तारका यक्षी थी।
- विश्रवण मुनि की २ पत्निया राक्षसी थी।
- पाडव भीम की पत्नी हिडिम्बा राक्षसी थी।
- राक्षसो के घरो मे वेदपाठ, वैष्णव माहेश्वर आदि यज्ञ होते थे। (बाल्मीकि रामायण)
- रावण आदि ऋषियो की सन्तान थे। ब्राह्मण परम्परा के अनुसार यज्ञ करते थे एव शैव थे।
- राक्षसो के वैदिक सोलह सस्कार होते थे।
- रावण का पितृकुल आर्य था एव मातृकुल मे सूर्य की पुत्री एव दौहित्री ब्याही थी। रावण की नानी वसुमती एक गन्धर्व की पुत्री थी।
- असुर वर्ग को "पूर्वदेवा" कहते हैं।
- रावण सार्थक आर्य था—उसने सीता को अपने महल मे नही 'अग्नि मन्दिर" में रखा और उसके पास जब भी गया दिन मे, अपनी पत्नियो एव नौकर-चाकरों के साथ गया। उसने सीता से कभी कोई अशिष्ट व्यवहार नहीं किया।

रावण समर्थ था और राम भक्तों की दृष्टि में बुरा भी, परन्तु उसने प्रतिशोध मे जलते हुए भी) मनुष्यता को नही छोड़ा। सीता जी पर कोई बल प्रयोग नही किया। इसमे उसकी महानता प्रकट होती है। अन्यथा इतिहास कुछ और होता।

- राक्षस वैदिक धर्मी थे। समय समय पर शुक्राचार्य आदि ब्राह्मण उनके यज्ञ कराते थे। हनुमान जी जब लका मे गए तो उन्होने घर घर मे ब्रह्मघोष सुने।
- लका में देवी देवताओ के मन्दिर थे। राक्षस आस्तिक थे एव वैदिक मन्त्रो से पूजा करते थे।
- राक्षसों का रूप मनुष्यो जैसा ही था। रावण तथा मन्दोदरी अनुपम तेज एव सौन्दर्य के स्वामी थे।
- अशोक वाटिका मे रावण का दिव्य तेज देखकर हनुमान बरबस कह उठा—

"अहो रूपम् ! अहो धैर्यम् ! अहो सत्वम् ! अहो द्युतिः अहो ! राक्षस राजस्य, सर्व लक्षण युक्तता"।

- राक्षस सम्मुख थे, सभ्य थे, सुन्दर थे, रावण को देखकर मय दानव कहता है, हे राक्षस अप्सरा "हेमामालिनी" की कोख से जन्मी मेरी पुत्री मन्दोदरी का पाणिग्रहण करो।

यदि रावण दसमुख वाला ऊबड़-खाबड़ आकृति वाला होता तो कैसे एक पिता अपनी सुन्दरी पुत्री को भाड़ में झोंक देता।

रामलीलाओ मे प्रदर्शित लम्बे दातों एव सीगो वाले राक्षस सफेद झूठ एव मूर्खता की उपज हैं तथा भारतीय इतिहास का मजाक हैं।

- कुम्भकर्ण के विषय में कहा जाता है कि वह छः मास तक सोता था। उसे जगाने के लिए ढोल नगाड़े पीटे जाते थे हजारो कर्मचारी उसे मूसल गदाए मारते थे। (कल्याण)

ये विवरण भाग भवानी का प्रभाव प्रकट करते हैं। वस्तुत कुम्भकर्ण योगनिद्रा में लीन रहता था। वह धर्मात्मा था। रावण के सीताहरण करने पर उसने भाई को समझाया भी नियति कुछ और थी। अनुशासन वश छोटे भाई को बड़े भाई के लिए बलि होना पड़ा।

- कुछ ब्राह्मण भी रावण के विरुद्ध थे यथा वशिष्ठ विश्वामित्र एव अगस्त्य। रावण भगवान् परशुराम एव शकर का भक्त था एव कथित ऋषि क्षत्रिय रजवाड़ो के प्रति झुके हुए थे। ब्राह्मणो के परस्पर विद्वेष ने ही रावण का पराभव किया। ऋषि अगस्त्य की दी गई शक्ति के बिना रावण-वध असम्भव था।

—विमलदेव भारद्वाज हिन्दुमहासभा, भवन मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली

हवन : भारतीय संस्कृति का आधारभूत तत्व

—वेदज्ञ आर्य—
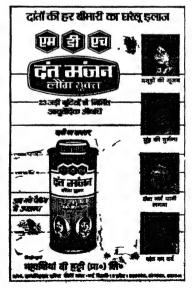
दूर से अथवा समीप से यदि वेदमन्त्रो की पवित्र ध्वनि सुनाई पड जाए अग्नि मे जलती हुई घृत सामग्री की विशेष सुगन्धि वायु-मण्डल में लहराने लग जाए और रात-दिन के सन्धिकाल अर्थात् साय एव प्रात काल के शान्त वातावरण मे घरो की सुगन्धि सासो के समान मण्डलाकार धु आ उठता हुआ दिखाई पड जाए तो समझ लेना चाहिए कि हवन या यज्ञ का अनुष्ठान हो रहा है। हवन भारतीय सस्कृति की परम्परागत देव-पूजा की एक विशिष्ट पद्धति है। सस्कृत भाषा मे हवन के लिए यज्ञ याग सत्र, स्तोम, होम, अध्वर, इष्टि, मेध, मख, क्रतु अग्निहोत्र आदि अनेक शब्दो का प्रयोग होता है। यद्यपि इनके अर्थ में थोडा-बहुत अन्तर अवश्य है तथापि ये सब हवन के ही पर्यायवाची शब्द है। वेद मन्त्रो के उच्चारण से प्रज्वलित अग्नि की पूजा और घृत-सामग्री आदि द्रव्यो की समर्पण-विधि का दूसरा नाम ही हवन है। आर्य जाति के समान ही ईरान की प्राचीन जाति मे भी अग्नि पूजा की विधि है। वैदिक ऋषियो के द्वारा सम्पन्न यज्ञो के सदृश प्राचीन ईरानियो कर्म यहा भी अग्निहोत्र के छोटे बडे आयोजन हुआ करते थे। भारत मे बसे हुए पारसियो मे हवन करने तथा यज्ञोपवीत धारण करने की विधि अब भी चली आ रही है। ईरान की प्राचीन भाषा जिन्द अवेस्ता मे यज्ञ के लिए 'यस्न', हवन के लिए 'सवन' और इष्टि के लिए 'इष्टि' शब्द का ही प्रयोग होता है। आश्चर्य की बात है कि अवेस्ता की छन्दोमयी गाथाओ मे वैदिक मन्त्रो की प्रतिच्छाया पूर्णतया लक्षित होती है। यहा तक कि कुछ वर्णों के परिवर्तन-मात्र से गाथाओ के प्राय वैदिक छन्द—जैसे पढे जाते हैं। वास्तविकता यह है कि हवन अथवा अग्नि-पूजन का क्रम आर्य ईरानियों अथवा हिन्दू पारसियो मे अनादि काल से चला आ रहा है। इन दोनो जातियो मे यज्ञ-सम्बन्धी सिद्धान्तो का मूल रूप सन्निहित है।

हवन और यज्ञ का शाब्दिक अर्थ

हवन का मौलिक अर्थ है—आह्वान करना अर्थात् बुलाना। अग्नि को प्रज्वलित करके वेदमन्त्रो के गायन से देवताओ को बुलाया जाता है। देव या देवता दिव्य शक्तियो अथवा प्रकृति की महत्वपूर्ण शक्तियो के प्रतीक हैं। हवन मे दिव्य शक्तियो का सकल्प करके श्रद्धापूर्वक आहुतिया डाली जाती हैं। इन दिव्य शक्तियो मे ससार की सर्वप्रथम शक्ति अग्नि है। विश्व के प्राय सभी विद्वान यह मानते हैं कि ससार की प्राचीनतम पुस्तक ऋग्वेद है। ऋग्वेद का यह प्रथम मन्त्र अग्नि-स्तुति का ही प्रमुख प्रमाण है—

अग्निमीळे पुरोहित यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतार रत्नधातमम् ॥

वैदिक ऋषियों ने अग्नि को एक ऐसी दिव्य शक्ति माना है जो उसमे डाली हुई आहुतियो के दव्यांशो को विविध देवताओ को पहुचा देती है। सम्भवत यही कारण है कि सस्कृत भाषा मे उसे हव्यवाहन भी कहा जाता है। हवन की अपेक्षा यज्ञ शब्द का अर्थ अत्यन्त व्यापक है। उसका मूल अर्थ है—देव-पूजा, सगतिकरण और दान देवपूजा का जहा तक व्यावहारिक पक्ष है, वहा अपने से बडो की अर्थात् देवतुल्य व्यक्तियो अथवा दिव्य शक्तियो की पूजा करना यज्ञ है। अपने बराबर वालो या समान स्तर के व्यक्तियो के साथ सगति करना यज्ञ कहलाता है। अपने से छोटे अथवा असमर्थ व्यक्तियो को विद्यादान और वित्तदान देकर उनकी सहायता करना ही यज्ञ का अन्तर्निहित अभिप्राय है। यज्ञ का यह अन्तिम अर्थ सामाजिक पक्ष को पुष्ट करता है। उसमे व्यष्टि की अपेक्षा समष्टि की कल्याण भावना अधिक है। यज्ञ क उपर्युक्त अर्थ एक अन्य प्रकार से भी विवृत किए जा सकते हैं। तदनुसार देवपूजा का अर्थ है—पारिवारिक या गृहस्थ-जीवन मे पति-पत्नी का एक दूसरे को दिव्य मानकर आदर करना। सगतिकरण का अभिप्राय है—एक दूसरे को भली-भाति समझ कर पारस्परिक सामजस्य या एकात्मभाव स्थापित करना। दानमे जहा एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना झलकती है वहा अपनी सन्तान की उन्नति और प्रगति के लिए समय, शक्ति तथा सम्पदा का त्याग करना अन्तर्निहित है। इसी प्रकार आध्यात्मिक पक्ष मे सर्वशक्तिमान ब्रह्म की उपासना करना उसके साथ तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित करना और अन्त मे अपने आपको उसी मे उत्सृष्ट कर देना भी यज्ञ है।

अग्नि का उद्भव और व्यापक रूप

धर्म-शास्त्रो मे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सृष्टि का निरूपण करते हुए जिन मूल तत्वो का उल्लेख किया गया है उनमे अग्नि तत्व की गणना सर्वप्रथम की गई है। अनुस्मृति मे बताया गया है कि ब्रह्मा ने यज्ञ की सिद्धि क लिए अग्नि, वायु और सूर्य से क्रमश ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद का सनातन या शाश्वतकालीन दोहन किया है।

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रय ब्रह्म सनातनम्।
दुदोह यज्ञसिद्धयर्थमृग्यजु सामलक्षणम् ॥

इस श्लोक मे जिस बात पर अधिक बल दिया गया है वह सिद्धि है। दूसरे शब्दो मे यह कहा जाएगा कि यज्ञ के अनुष्ठान के लिए तीनो वेदो का सृजन हुआ है। इससे सिद्ध है कि यज्ञ को आदिकाल से ही सर्वाधिक महत्व प्राप्त हुआ है। सृष्टि के उपर्युक्त मूल तत्वो मे देवत्व या दिव्य शक्ति की शाश्वत सत्ता की कल्पना अनादिकाल से ही चली आ रही है। निरुक्त के रचयिता यास्काचार्य ने देवताओ की सख्या कुल तीन बतलाकर उनका स्थान-निर्देश भी कर दिया है—"तिस्र एव देवता भवन्ति। अग्नि भूस्थानो वायुर्वा इन्द्रो वा अन्तरिक्षस्थान। सूर्य द्युस्थान।' इससे अग्नि की दैवी शक्तियो मे प्राथमिकता सिद्ध तो है परन्तु इसकी सत्ता वायु और सूर्य मे भी व्याप्त है। वह वायु मे विद्युदग्नि अर्थात् मेघवर्ती बिजली के रूप मे विद्यमान रहती है और सूर्य मे वह सौराग्नि अथवा सौर मण्डलीय ऊर्जा के नाम से विख्यात है। अग्नि, वायु और सूर्य तीनो क्रमश पृथ्वी लोक) अन्तरिक्ष लोक और द्युलोक के देवता हैं। इन्ही देवताओ अथवा देवाग्नियो से वेदत्रयी की सरचना हुई है। ऋग्वेद का सृजन पार्थिव अग्नि के आधार पर, यजुर्वेद का अन्तरिक्षीय अग्नि के आधार पर और सामवेद का सौराग्नि के आधार पर हुआ है। वस्तुत तीनो वेदो का यज्ञ-सम्बन्धी विषय अग्नि-तत्व के व्यापक रूप से जुडा हुआ है।

उपर्युक्त तीनो देवताओ और तीनो वेदो का विवेचन ब्रह्माण्ड के सृष्टि-तत्वो के आधार पर ही हुआ है, किन्तु पार्थिव अग्नि के अविष्कार की कथा इससे भिन्न है। ऋग्वेद के अन्यतम मन्त्र में बताया गया है कि अथर्वा नामक ऋषि ने विश्व के मूर्धन्य-रूप पुष्कर नामक सूर्य के ताप से अरणि का मथन करके अग्नि का आविष्कार किया है—

त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमथत।
मूर्ध्नो विश्वस्य वाघत ॥

अरणि अर्थात् शमीवृक्ष की लकडी के सघर्ष से जिस अग्नि का आविष्कार हुआ, वह निस्सदेह पार्थिव अग्नि है, परन्तु उसमें सौराग्नि की आशिक सत्ता भी अन्तर्निहित है। वास्तव मे अग्नि और उससे अनुष्ठीयमान यज्ञ दोनो शब्दो का वैदिक युग मे इतना अधिक अन्तर्भाव हो गया है कि वे एक दूसरे के द्योतक बन गए। ऐसा ही एक प्रसग ऋग्वेद में आता है कि देवताओ ने यज्ञ से यज्ञ का यजन किया और इस प्रकार के यज्ञो को धर्म के प्राथमिक कृत्य माना है।

(क्रमश)

सफल ध्यान के चार सोपान

डा० भारतभूषण साधक
पातञ्जली योग केन्द्र कृष्णा नगर गोहाटी

पूर्णत सुखी जीवन यापन करने के लिये आवश्यक है कि मनुष्य ध्यान को अपने जीवन का आवश्यक अग बना लें, कुछ प्रयोगो द्वारा इस तथ्य का प्रतिपादन हो चुका है कि मानव के मानसिक स्वास्थ्य के लिये ध्यान एक शक्तिशाली क्रिया है।

ध्यान अथात मन को शांति प्रदान करता है ध्यान की प्रक्रिया के पूर्व कुछ शर्तों की पूर्ति आवश्यक है यह शर्तें योग के आवश्यक अग हैं।

भोजन के पूर्व भूख का अनुभव करते हैं अत भोजन के लिये "भूख" आवश्यक है, इसी प्रकार सोने पूर्व थकान आवश्यक है। ठीक इसी प्रकार ध्यान के लिये भी ध्यान के पूर्व कुछ बाते आवश्यक हैं। ध्यान की सम्पूर्ण क्रिया एक कला है।

ध्यान एक विज्ञान है। ध्यान के पूर्व कुछ क्रियायें आवश्यक हैं। जैसे आसन और प्राणायाम।

मुद्रा, बंध आदि क्रिया सहित किये गये। आसन, प्राणाय से ग्रन्थियो की गुप्त क्रियायें व्यवस्थित एव सुचारू होती है। तथा आध्यात्मिक चेतना का विकास होता है। अब मैं कुछ ऐसे अभ्यासों का वर्णन करूगा जो ध्यान के लिये आवश्यक है।

सफल ध्यान के लिये चार मुख्य बाते

१ आध्यात्मिक श्वसन
२ आध्यात्मिक स्थान
३ आध्यात्मिक ध्वनि
४ आध्यात्मिक स्वरूप

१. **आध्यात्मिक "श्वसन"** की क्रिया उस स्वाभाविक श्वसन क्रिया से प्रारम्भ होती है जिस विधि के द्वारा आप अभी श्वास ले रहे हैं। आगे की स्थिति मे श्वास अपेक्षाकृत गहरी एव लम्बी हो जाती है। श्वसन की इस क्रियायें चौबीस घण्टे मे २१६०० श्वसन प्रश्वसन क्रिया होती है चाहे आप उस ओर सचेत रहे या न रहे।

आपको केवल श्वसन के प्रति सचेत रहना है कि आप श्वसन क्रिया कर रहे हैं।

चेतना का अभ्यास स्वाभाविक श्वसन पर किया जावे। इसके पश्चात "उज्जायी प्राणायाम" नामक श्वसन विधि का उपयोग किया जावे।

उज्जायी प्राणायाम का अभ्यास हलके खराटे लेने की आवाज के साथ किया जाता है। पच्चीस या तीस बार इस श्वसन के बाद ध्यान करने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है।

उज्जयी कुछ समय तक प्रारम्भ रहती है पश्चात् उसमे विराम आ जाता है। प्राणायाम मे रुकावट न आने दीजिये अपना नियन्त्रण रखिये। इस बिन्दु पर सचेतनता आवश्यक है। पश्चात् यही क्रिया आप मेरु दण्ड या आध्यात्मिक स्थान मे करेंगे जो हमें द्वितीय सोपान पर पहुँचा देता है।

२. **आध्यात्मिक स्थान**—योग मे मेरु दण्ड को ऊची चेतना का वाहन माना जाता है, जिसमे हम अपनी चेतना को ऊपर नीचे लाते और ले जाते है। चेतना को ऊपर ले जाते हुए चढते हैं और नीचे लाते हुए उतरते हैं।

इस उतार चढाव से श्वसन ध्वनि उत्पन्न होती है। "मूल आधार चक्र से लेकर सहस्र आज्ञा चक्र' तक मेरु दण्ड मे सुषुम्ना मार्ग प्रवज्लन उच्छ्वसन क्रिया के लिये आध्यात्मिक स्थान है।

३. **आध्यात्मिक ध्वनि**—को मन्त्र कहते हैं। अब आप श्वास के साथ "ओ३म्' का मन्त्र जोड सकते है प्रारम्भ में पौरुष के द्वारा या प्रयास से हम चेतना पूर्वक म त्र का मानसिक उच्चारण करते है। इस लगातार प्रयास के बाद म त्रोच्चारण स्वत हो जाता है। यह आध्यात्मिक ध्वनि है, जो आपके आध्यात्मिक विधान का एक अ ग है। यह आपके इसने अनुकूल है कि भगवान हो आप मन्त्र का पुनरावृत्ति करते है। यह आप से कभी अलग नहीं होगा।

व्यक्ति को बिछड़े हुये प्रिय जन की या प्रिय खिलौने की बालक को जिस प्रकार स्वत याद आती है ठीक वैसी ही स्थिति रहती है, इसे अजपा जाप भी कहते है।

श्वास लेने के साथ २ मन्त्र पर आवश्यकता रखिये। इस प्रकार तीस चालीस बार श्वसन किया करिये। आप अनुभव करेंगे कि श्वसन में विशेष ध्वनि पैदा होती है—इसे सावधानी पूर्वक सुनिये। उसकी तरगो से ध्वनि उत्पन्न होती है।

'यह ध्वनि चेतन से स्वत. उत्पन्न मन्त्र है।"

श्वास छोडन के समय भी ध्वनि पर एकाग्रता करिये। प्रच्छ्वास तथा श्वास के सग दो विभिन्न ध्वनिया का अनुभव होता है यह दो ध्वनिया 'सोहं" की है। श्वास लेते समय सो एव छोडते समय की ध्वनि होती है। "सोह" आपको श्वसन चेतना की विचार जागरूकता है।

४. **आध्यात्मिक स्वरूप**—संस्कृति मे आध्यामिक रूप को "इष्ट देव" कहते हैं। इष्ट अर्थात् इच्छित-देवता का अर्थ है दिव्य चेतना।"

"चेतन की पकड के लिये किसी प्रतीक पर एकाग्रता अनिवार्य है।" या मानसिक आध्यात्मिक या सूक्ष्म हो सकता है।

अब आप ध्यान का तीसरा सोपान भली भाति पूर्ण कर लेते हैं। तब आपका मन बिल्कुल शात तथा सकल्प विकल्प रहित हो जाता है। तब आप आँखें बन्द करके अपने ललाट पर चन्द्र आकाश की धारणा कीजिय। अर्थात् अपने ललाट पर 'ओ३म् ख ब्रह्म" परमात्मा आकाश के समान है, ललाट पर उस आकाश को देखते जावें जो आखें बन्द करने पर दीखता है। इसको जागरूकता पूर्वक देखते रहे तथा अपने श्वसन पर भी नियन्त्रण रखें। समय आवेगा जब आपके सामने ललाट वाला आकाश प्रकाश से भर जावेगा यह सौम्य प्रकाश होगा, जो कि आनन्द देने वाला होगा।

इसी स्थिति मे जितनी देर आप बैठ सकते हैं—बैठे रहिये।

यदि अपना कोई गुरु हो उस पर श्रद्धा हो तो चौथे चरण में गुरु के स्वरूप पर भी ध्यान किया जा सकता है जो कि बहुत लाभदायी सिद्ध हो सकता है—ध्यान की पूर्णता पर गुरु भी लुप्त हो जाता है और आप "आत्म स्वरूप की स्थिति" अपने आप मे अनुभव करते हैं।

मेरे अनुभव में सफल ध्यान के लिये उपरोक्त चार सोपानों के अनुसार अभ्यास करने से अवश्य सफलता मिलती है।

ओ३म् आनन्द, ओ३म् आनन्द, ओ३म् आनन्द।

संस्कृत की उपेक्षा

(पृष्ठ ९ का शेष)

आसीन तो कर दिया गया किन्तु बहुत क्रूरता से उनके शिक्षा प्राप्ति आदि मौलिक अधिकारो पर भी अ कुश लगा दिया गया।

आज संस्कृत की दशा कालिदास युग के नारी मूल्यो से उत्पीडित उस तपोवन पोषिता शकुन्तला जैसी दयनीय बन गई है जिसके साथ दुष्यन्त्री राजतन्त्र अपना प्रेम सम्बन्ध तो स्थापित कर लेता है किन्तु दुर्वासा ऋषि के शाप से अभिशप्त मैकाले तन्त्र उसकी चरित्रता पर सन्देह करके उसे अपमानित करने मे लगा हुआ है। अपनी सामयिक प्रतिष्ठा के लिए शकुन्तला की भाति स स्कृत को अपनी चरित्रता का प्रमाण देने का अवसर आ गया है। स स्कृत पर स कट की इन्हीं शोचनीय परिस्थितियो मे राज पुरोहितो का एक वर्ग शकुन्तला रूपी स स्कृत को अपना आश्रय देने की अनुकम्पा प्रकट कर चुका है किन्तु शकुन्तला की भाति स स्कृत भारत भूमि के उदर मे समा जाना चाहती है। क्या कोई शक्ति स स्कृत की रक्षा करेगी ? या ट्रैजेडी में आस्था रखने वाले पाश्चात्य म ट्य समीक्षको की वह इच्छा पूरी होगी जिसके अनुसार वे पाचवे अ क में ही शकुन्तला की मृत्यु की सभावनाए करते हुए उसे विश्व की सर्वोत्कृष्ट ट्रैजेडी के रूप मे देखना चाहते हैं ? परन्तु भारतीय परिवेश दु खान्त के लिए कोई अवकाश नहीं है। स स्कृत का भविष्य कैसा होगा इसका अनुमान लगाने के लिए आज नए सिरे से कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् को पढ़ने की आवश्यकता आ गई है।

(८-११-८८ के नवभारत टाइम्स से साभार)

महान् देशभक्त लाला लाजपत राय

–रघुनन्दन पराशर, जैतो–

१७ नवम्बर को पजाब केसरी लाला लाजपतराय का बलिदान दिवस है। लाला लाजपतराय की गणना भारत के महान् स्वतन्त्रता सेनानियो में होती है। वह काग्र स के उच्चकोटि के नेता, प्रसिद्ध नीतिज्ञ, ओजस्वी वक्ता, अच्छे सगनकर्ता, मशहूर वकील और समाजसुधारक थे।

महाराजा रणजीतसिह के बाद लाला ,लाजपनराय को ही शेर-ए-पजाब का खिताब दिया गया था। लाला जी का जन्म २८ जनवरी १८६५ मे गाव ढुडिके मे एक गरीब अध्यापक लाला राधा कृष्ण के घर श्रीमती गुलाब देवी की कोख से हुआ।

उन्होने प्रारम्भिक शिक्षा अपने घर मे ही पिता से प्राप्त की। जनवरी १८८१ मे मैट्रिक पास करके सरकारी कालेज लाहौर मे दाखिला ले लिया तथा यहा से मुख्तयारी पास कर ली। इसके बाद उन्होने ला-कालेज लाहौर मे ही दाखिला ले लिया और वकालत भी पास कर ली। उन्होने रोहतक मे वकालत शुरु की तथा १८८६ मे हिसार चले गये। यहा उन्होने लगभग दस वर्ष तक वकालत की और फिर लाहौर चले आये। १८९२ मे लाला जी ने लाहौर हाईकोर्ट मे वकालत शुरू कर दी। यहा उनकी वकालत थोडे ही समय मे चमक उठी तथा उनकी गणना सुविख्यात वकीलो मे होने लगी।

लाला जी मे राष्ट्रीयता की भावना बचपन से ही कूट कूट कर भरी थी। वे प्रारम्भ से ही स्वतन्त्रता आन्दोलन मे सक्रिय रूप से भाग लिया करते थे जिसके फलस्वरूप उन्हे कई बार जेल यात्रा भी करनी पडी।

वह हमेशा दूसरो की सेवा करने को तत्पर रहते थे। जब १९०५ मे कागडा मे भयानक भूकम्प आया तो हजारो लोग इससे प्रभावित हुए। जब इस बात का लाला जी को पता चला तो वे अपने साथियो सहित वहा पहुच गये और उन्होने पीडितो की तन, मन, धन से दिन रात सेवा की। उन्होने प्रदेश मे घूमकर घर-घर जाकर पीडितो के लिए धन इकट्ठा किया और भोजन वस्त्र दवाईया व आश्रम की व्यवस्था का प्रबन्ध किया। उन्होने बीमार व्यक्तियो तथा अनाथ बच्चो के लिए अस्पताल की भी स्थापना की।

इन्ही दिनो देश भर मे काग्र स का आन्दोलन भी जोर पकडने लगा था। लाला जी भी इलाहाबाद के काग्र स अधिवेशन मे सम्मिलित हुए। सन् १९०५ ई० मे इ गलैंड की ससद का निर्वाचन होने वाला था। काग्र स पार्टी ने विचार किया कि भारत के हित के लिए निर्वाचन के समय एक शिष्टमडल इ गलैंड भेजा जाए।

जो शिष्टमडल इ गलैंड भेजा गया, उसका नेतृत्व लाला जी ने ही किया था।

सन् १९२८ मे ब्रिटिश सरकार ने भारतीयो की समस्याओ को जानने के लिए एक कमीशन भारत भेजा जो 'साईमन कमीशन' के नाम से विख्यात है। भारतीयो ने इस कमीशन का विरोध करने का निर्णय किया।

जब यह कमीशन देश के अन्य भागो में घूमता हुआ ३० अक्तूबर १९२८ को लाहौर पहुचने वाला था, अन्य स्थानो की भाति यहा भी कमीशन को भारी सख्या मे काली झडिया दिखाने का प्रोग्राम था। सरकार को जब इस तैयारी के बारे मे पता चला तो उसने इसे रोकने के लिए सख्त प्रबन्ध के साथ-साथ नगर मे धारा १४४ लागू कर दी ताकि लोग इकट्ठे न हो सकें, परन्तु फिर भी लाला जी के नेतृत्व में लोगो ने काली झडिया हाथो मे लेकर इस कमीशन के विरुद्ध जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियो ने साईमन कमीशन वापिस जाओ "साईमन गो बैक' तथा "वन्देमातरम् वन्देमातरम्' के नारे लगा कर आकाश गु जा दिया। इससे शासन बौखला उठा और उसने प्रदर्शनकारियो पर लाठीचार्ज का आदेश दिया। इसमे औरते, वृद्ध, जवान व बच्चे सख्त जख्मी हो गये जिसमे लाला जी ने अपने भाषण मे कहा 'मेरे शरीर पर पडी लाठी का एक-एक प्रहार अग्र जो साम्राज्य के कफन की कील बनेगा।' लाला जी पर लाठिया पडने के कारण छाती मे जख्म हो गये जिसके कारण उन्हे सास लेते समय रुकावट महसूस होने लगी और स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता ही गया। परन्तु फिर भी वह दिन-रात देश की सेवा मे जुटे रहे अन्त मे जनता के लिए लडते हुए कौम का यह महान् नेता १७ नवम्बर१९२८ को हमसे हमेशा के लिए बिछुड गया।

महात्मा गाधी ने लाला जी के बारे मे कहा था, "लाला लाजपतराय अपने आप मे एक सस्था थे। अपने यौवन काल से ही उन्होने देशभक्ति को अपना कर्मक्षेत्र बना लिया था। उनकी राष्ट्रीयता अन्तर्राष्ट्रीयता से परिपूर्ण थी। उनकी सेवाए विविध थी।'

भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू ने लाला जी के बारे म कहा था, "लाला जी न केवल महान शक्तिवान और राष्ट्रवादी थे, बल्कि इस धरती के महान् सपूत थे।"

शहीद-ए-आजम भगतसिह ने लाला जी के बारे में कहा था, "वह हमारा पिता था, हम उनके हाथो जन्मे, पले, उनसे पढे, एक पुत्र और पिता मे बहुत सारे भेद भाव हो सकते है परन्तु हमारे पिता की कोई दूसरा आकर इस तरह इज्जत खराब करे और उसको इस तरह मारे दे, यह सहन नही कर सकते।'

गीत

सुख शाति मे हम तुमको बुलाते,
मगर तुम न आते य दु ख हो रहा है।
सदा सत्य मार्ग पर चलना सिखाते
तुम चल न पाते ये दु ख होरहा है ॥टेक॥

नेकी करोगे तो सुख मिलेगा, बदले बदी के बडा दु ख मिलेगा।
अन्जाम पर तुम नही ध्यान लाते, बहुत दु ख उठाते ये दु ख हो रहा है ॥१॥
तज वस्तु अच्छी बुरी खा रहे हो, अन्धे मास मदिरा मे डूबे जा रहे हो।
पशुओ के गल पै कटारा चलाते, रहम नही लाते य दु ख हो रहा है ॥२॥
जैसे तुम्हे अपने बच्चे पियारे, तैसे ही पशु पक्षी जीव जन्तु सारे।
निज पर दु खो मे भेद ही दिखाते पाप क्यो कमाते य दु ख हो रहा है ॥३॥
अच्छी कथाए सुनते नही हो सुगन्धी के फूलो को चुनते नहीं हो।
सत्सग को तज सिनेमा को जाते, पतित हुए जाते य दु ख हो रहा है ॥४॥
कहा है तुम्हारी पुरानी अदाए धर्म कर्म वाली शुभ कामनाए।
'अयोध्या सदा अच्छे गीत गाते सिखाते लिखाते य दु ख हो रहा है ॥५॥

—प० अयोध्या प्रसाद 'बेधडक' आर्योपदेशक
वेद भवन ग्राम-बहादुर गढी पो० पिलखना, जि०-अलीगढ

आर्य जगत् के समाचार

शोक सम्वेदना

बहराइच। ९ अक्टूबर, ८८ को आर्य समाज मन्दिर मे साप्ताहिक अधिवेशन पश्चात् आयोजित शोक सभा में आर्य समाज, बहराइच के उप-प्रधान एव किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय मे शिक्षा सकाय के रीडर प्रेमचन्द्र गुप्त की पूजनीया माता श्रीमती सरस्वती देवी के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करते हुये प्रभु से दिवगत आत्मा की शांति और शोक सतप्त परिवार को धैर्य एव सहन शक्ति प्रदानार्थ प्रार्थना की गयी।

श्रीमती सरस्वती देवीका निधन ११ सितम्बर, ८८ को घोसियाना, बस्ती मे सभी परिवार जनो की उपस्थिति में हुआ। आप ८८ वर्षीय धर्मनिष्ठ आर्य महिला थीं।

—चतरसिंह मन्त्री
आर्य समाज, बहराइच

पूज्य महात्मा नारायण स्वामी को श्रद्धांजलि

अलीगढ़ ८, नवम्बर। स्थानीय प्रोमियर नगर कोलोनी स्थित डा० मगाराम के निवास स्थान पर एक आवश्यक बैठक डा आर के पाराशर की अध्यक्षता मे हुई जिसमे आर्य समाज के मूर्धन्य सन्यासी पूज्यपाद महात्मा नारायण स्वामी की आकस्मिक मृत्यु पर गहरा दुःख प्रकट किया गया।

बैठक मे कहा कि महात्मा नारायण स्वामी क्रान्तिकारी एक उच्चकोटि के आप सन्यासी थे। वे आजन्म ब्रह्मचारी रहे तथा उनका शरीर बज्रवत था। वे भारतीय सेना मे कैप्टिन थे तथा ३० वर्ष की युवावस्था मे वे आर्य सन्यासी बन गये।

स्वामी जी की स्मृति के अक्षुण्य बनाने तथा उनके धार्मिक और राष्ट्रीय विचारो को प्रचारित प्रसारित करने के लिए 'वैदिक शोध सस्थान' का नाम परिवर्तित कर 'महात्मा नारायण स्वामी वैदिक शोध सस्थान' कर दिया गया है। जिसके तत्वावधान मे स्वामी जी के जीवन और कृतित्व पर एक पुस्तक को ६ माह के अन्दर प्रकाशित किया जायेगा। जिन लोगो को स्वामी जी के बारे मे कोई वृतान्त ज्ञात हो वे अपने नाम से लिखित रूप मे उक्त शोध सस्थान को प्रेषित कर द।

—गगाराम

मेहसी मे शान्ति यज्ञ सम्पन्न

दिनाक १८ १० ८८ को आर्य समाज मेहसी (पूर्वी चम्पारण) के उपप्रधान श्री राधाकिशन जी जो कि एक माह से पक्षाघात रोग से पीडित थे। उनका देहावसान हो गया। वैदिक रीत्यानुसार उनका अन्त्येष्ठी सस्कार एव तीन दिन तक शान्ति यज्ञ किया गया। जिसमें मेहसी आर्य समाज के सदस्या के अतिरिक्त नगर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। यज्ञ के बाद उपस्थित व्यक्तियो मे अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

—मन्त्री चम्पारण आर्यसमाज

हरिजन उद्धार असली रूप में

शुरमामराम हरिजन ग्राम बण्डरा का घर एक माह पहले आग से जल गया था उसके पास इस समय कुछ भी नही बचा था। उसने अपनी लडकी सुरेशदेवी जिसकी उम्र १८ वर्ष की है इसको शादी अशोक कुमार, सुपुत्र गोपीराम ग्राम अडवार निवासी के साथ ११ ९-८८ (सोमवार) के दिन नियत कर रखी थी। इस दु खद स्थिति मे बण्डरा निवासियो ने सभी श्री सरपच रिपुदामनसिंह व प्रीतसिंह नम्बरदार की अगुवाई मे अपने ऊपर लिया और शादी पूर्ण वैदिक रीति से दयानन्द मठ बण्डरा मे मठ के औषधालय इन्चार्ज डाक्टर योगिराज ने पुरोहित पद को सुशोभित किया।

एक सौ से ऊपर नर-नारियां उपस्थित थे। जिनका भोजन, मिष्ठान व चाय से सत्कार हुआ। इस विवाह सस्कार का हरिजन जाती पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा। सभी जातियों के लोग सम्मिलित थे। शादी सादा ढग से हुई व समानता अधिकार का सही दृश्य यहाँ पर देखने को मिला।

—सुबोधानन्द स्वामी

शोक समाचार

आर्य समाज भाण्डुप (बम्बई) के वयोवृद्ध सदस्य श्री रघुनाथ वर्मा का आकस्मिक स्वर्गवास दिनाक २९-१०-८८ को हो गया। आप वर्षों तक समाज के पदाधिकारी रहे और आर्य समाज की बडी सेवा की है। आपने अपने पीछे भरापूरा सम्पन्न परिवार छोडा है।

आर्य समाज भाण्डुप मे दिनाक २५ १०८८ को सायकाल ४ बजे एक शोकसभा का आयोजन किया गया, जिसमें बम्बई की समस्त समाजो की तरफ से दिवगत आत्मा की सद्गति एव शान्ति के लिए प्रार्थना के साथ शोक सन्तप्त परिवार के प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट की गई।

—त्रिभुवनसिंह आर्य

दीपावली मेला

आर्य कुमार सभा बाजार सीताराम, देहली द्वारा ६ नवम्बर १९८८ को एक "दीपावली मेले" का आयोजन दोपहर १२ बजे से ८ बजे तक पचायती धर्मशाला, गली बेरी वाली, कूचा पातीराम, बाजार सीताम मे किया गया है।

दिपावली पर्व तथा निर्वाण दिवस

आर्य समाज निमखेड बाजार (महाराष्ट्र) मे दिपावली पर्व तथा निर्वाण दिवस बडी धूमधाम के साथ मनाया गया सवेरे प्रभात फेरी निकली उसके बाद यज्ञ का आयोजन किया गया समाज मन्दिर मे यज्ञ का पौरोहित्य टकरा उपदेशक महाविद्यालय के आचार्य अरुण कुमार जी जी ने स्वीकारा तथा समापन प्राध्यापक गोपाल जी विद्यावाचस्पति आर्ष महाविद्यालय हिसार ने किया दोनो विद्वानो ने दिपावली पर्व तथा ऋषि निर्वाण के विषय पर अपने २ विचार प्रस्तुत किये।

उत्सव

आर्य समाज आजमगढ का वार्षिक उत्सव ८ से ११ दिसम्बर तक होना निश्चित है। यदि न निकला हो तो इसे स्थान देने की कृपा करें। पुस्तक विक्रेताओ को सूचना मिलने पर वह साहित्य लेकर पधारने की कृपा करें।

—मन्त्री, आर्य समाज

शुद्धि संस्कार

आर्य समाज मेरठ शहर मे जयन्त कुमार की पादरी शास्त्री नगर मेरठ वर्ष का शुद्धि सस्कार श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के द्वारा दि० २८ १० ८८ को सायकाल सम्पन्न हुआ। श्री इन्द्रराज जी ने जयन्त कुमार आर्य का वैदिक धर्म मे स्वागत करते हुए वैदिक धर्म की विशेषताओ एव यज्ञोपवीत के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री सभा प्रधान जी ने यह आशा व्यक्त की कि धम परिवर्तन के नाम पर जो देश में राष्ट्र परिवर्तन और विघटन की प्रवृत्तिया गुप्त रूप से इस देश की स्वतन्त्रता, अखण्डता और प्रभुसत्ता को खतरे मे डालने वाली है। जिसके लिए अथाह धन राशि ईसाई और इसलामी देशों से भारत में आ रही है, हम सब इस नवयुवक के द्वारा पर्दाफाश होने पर प्रभावी ढग से अपनी संस्कृति और देश की रक्षा कर सकेंगे।

श्री जयन्त कुमार जी आर्य ने भी, धर्म सस्कृति और देश की रक्षा का प्रण लेते हुए अपना सर्वस्व बलिदान करने की घोषणा की।

इन्द्रराज, मन्त्री-आर्य स मेरठ शहर

महर्षि वाल्मीकि जन्म दिवस समारोह

महर्षि वाल्मीकि का जन्म दिन दि० २८-१०-८८ को रात्रि के ७॥ बजे से आर्य समाज मन्दिर स्वामी पाडा मेरठ में समारोह पूर्वक मनाया गया जिसमे हिन्दुओ के हर वर्ग ने भाग लिया। इस समारोह के अध्यक्ष श्री मानसिंह जी वर्मा पूर्व परिवहन मन्त्री एव पूर्व सांसद थे। श्री कैलाश जी आर्य इसके सयोजक थे। सर्वश्री [illegible] जी, श्री [illegible] जी, श्री [illegible] जी, श्री [illegible] ने मधुर सगीत के द्वारा महर्षि वाल्मीकि को श्रद्धा सुमन समर्पित किये।

आर्यसमाज की गतिविधियां

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की सूचना

दिनांक २-१२-१९८८ शुक्रवार को साय ३ बजे राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा एव शताब्दी समारोह स्वागत समिति के सदस्यो की एक सम्मिलित बैठक आर्यसमाज आदर्श नगर, जयपुर मे होगी। आपकी उपस्थिति अनिवार्य रूप से सादर प्रार्थनीय है।

विचारणीय विषय —

१—पिछली अन्तरग सभा की कार्यवाही की सपुष्टि
२—स्वागत समिति तथा उपसमितियो का गठन
३—शताब्दी समारोह की गतिविधिया का ब्यौरा
४—अन्य विषय प्रधान जी की आज्ञा से

नोट —चू कि स्वागत समिति की पूरी रसीद बुके कार्यालय मे प्राप्त नही हो सकी है इसलिए जिन लोगो को रसोद बुक दी गई हैं वे कृपया सदस्यो को इस मीटिंग मे आने की सूचना अवश्य दे दें। ताकि वे इस स्वागत समिति के निर्माण मे अपना सहयोग प्रदान कर सकें।

—ओमप्रकाश कवर, मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

५२वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर चूना मण्डो, पहाड गज नई दिल्ली का ५२वा वार्षिकोत्सव दिनाक २४ नवम्बर से ४ दिसम्बर १९८८ रविवार तक होगा।

आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा का सप्तम वार्षिकोत्सव सम्पन्न

उत्तर प्रदेश के इटावा जिले मे स्थित आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा का सप्तम वार्षिकोत्सव बडे ही धूम धाम से २७, २८ २९ एव ३० अक्तूबर८८ को मनाया गया।

इस अवसर पर स्वामी वेदानन्द जी दण्डी, गुरुकुल एटा, प्रो० प्रभुदयाल जी वान प्रस्थी, गुडगावा हरियाणा डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा विहार पधारकर विभिन्न सम्मेलना मे जनता का मार्ग दर्शन किया श्री मुलायम सिंह यादव भू पू. मन्त्री उत्तर प्रदेश ने गुरुकुल को सहायता का वचन दिया इस अवसर पर श्री रामदयाल आर्य न वानप्रस्थ आश्रम मे प्रवेश किया।

श्रावणी पर्व से दीपावली तक सतत् वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

श्रावणी पर्व दिनाक २७ ८-१९८८ से आरम्भ होकर वेद प्रचार सप्ताह दीपावली दिनाक ९-११ ८८ तक ७५ दिन सतत् वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसके अतिरिक्त वेद प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र मे जैसे कालमुखी, शेखपुरा, गुडी, बोरखडा कला हसूद, आरूद, रूस्तमपुर, कुमठी, बोरगाव बुजुर्ग मण्डारिया टाकलीकला बडगाव गूजर आदि और भी कई ग्रामा मे धूमधाम स वद प्रकार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सर्वश्री नामदेव शास्त्री, प्रचारक आर्य प्रतिनिधि सभा नागपुर, स्वामी सर्वानन्द जी महाराज नीमच, ज्ञानप्रकाश जी शर्मा, उपदेशक मुरादाबाद, ब्रह्मानन्दजी आजाद बम्बई, प्रज्ञाचक्षु ब्रह्मचारी अशोक कुमार, श्री रामेश्वर जो शर्मा वर्द्धमान (बगाल) वाले विद्वानो का सहयाग सराहनीय रहा।

—लक्ष्मी नारायण मार्गव, मन्त्री आर्य समाज, खण्डवा

२६ वां कच्चाहार दिवस सम्पन्न

पिथौरागढ। २८ अक्टूबर (करवाचौथ) १९८८ को २६ वे कच्चाहार दिवस पर ५४ वे वर्ष मे प्रवेश करते हुए स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी (सस्थापक गुरुकुल आश्रम ब्रह्मावर्त बिठूर, कानपुर) न शरीरान्त होने पर नेत्र बैंक को नेत्रदान तथा मेडिकल कालेज को शवदान की इच्छा दुहराते हुए निम्नाकित सकल्प लिए—(१) दा स अधिक गुरुकुलो की स्थापना (२) सौ से अधिक जनो को वानप्रस्थ व सन्यास की दीक्षा (३) पाच यज्ञ- सोलह सस्कार प्रचार (४) शाकाहार प्रचार (५) भारत की एकता, अखण्डता, सम्पन्नता अभियान।

—लक्ष्मीचन्द्र मित्तल (मन्त्री आ स पिथौरागढ, उ प्र

उत्सव समाचार

—आर्य समाज उदयपुर का शताब्दी समारोह दिनाक २२-१०-८८ को आर्य समाज मन्दिर मे बडी धूम-धाम से मनाया गया।

इस समारोह के अन्तिम दिन वयोवृद्ध आर्य सभासदो तथा हैदराबाद सत्याग्रहियो को उनका आर्य समाज उदयपुर के सरक्षक दानवीर श्री हनुमान प्रसाद जी चौधरी द्वारा अभिनन्दन किया गया व आदरणीय चौधरी साहब ने इस अवसर पर आर्य समाज को भवन विस्तार के लिये २२०००) रुपये का सात्विक दान दिया।

इस अवसर पर श्री डा० चन्द्रप्रकाश जी सुपुत्र स्व० डा० बख्तावरलाल ने अपने पिता जी की स्मृति मे एक कक्ष बनाने की आधार शिला रखी।

—नगर आर्यसमाज रकाबगज लखनऊ मे दिनाक ६-११ ८८ को प्रात: कालीन यज्ञ का आयोजन किया गया तदुपरान्त भाई परमानन्दजी क्रान्तिकारी के जन्म दिवस पर अनेक विद्वानो न पधार श्रद्धाजलि अर्पित की श्री शास्त्री जी ने उनका जीवन परिचय बताते हुए कहा कि भाईजी ने शिक्षा के माध्यम से क्रान्ति का बिगुल बजाया था तथा मातृभाषा को प्रधानता प्रदान की। यदि हम लोग भाई जी के पद चिन्हो पर चल ना हमारे देश की सभी समस्याओ का समाधान सम्भव हो सकता है यह हमे उनके जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए। —यज्ञदत्त शास्त्री

—आर्य समाज खण्डवा के प्रधान भाव जो भाई भानुशाली एव मन्त्री लक्ष्मी नारायण भार्गव ने जानकारी दी कि दिनाक ९-११-८८को आर्यसमाज मे ऋषि निर्वाण दिवस एव दीपावली पर्व धूम धाम से मनाया गया, श्री भार्गव एव श्री डी० सी० चन्देल साहब न ऋषि के जीवन पर प्रकाश डाला श्री नारायण सहाय जी न पद्धति का अध्ययन किया तथा कन्हैयालालजी खण्डेलवाल ने प्रचार की गति और तेज करन पर जोर दिया।

—लक्ष्मी नारायण मार्गव, मन्त्री आर्य समाज खण्डवा

बागपत। ९-११-८८ यहा आर्य समाज मन्दिर मे मा० ब्रह्मदेव त्यागी की अध्यक्षता मे ऋषि निर्वाण दिवस व दीपावली का कार्यक्रम मनाया गया। यज्ञ के पश्चात आर्य नेता मा० मुरारीलाल गर्ग ने स्वामी दयानन्द के कार्यों, आदर्शो का विस्तृत रूप से उल्लेख किया तथा ऋषि दयानन्द को युग प्रवर्तक की सज्ञा दी।

सामवेद परायण यज्ञ एवं वेद प्रचार

ग्राम- आर्य समाज पाटम, पो० पाटम जिला मुगेर (बिहार) मे दि० १६ से २० १० ८८ तक ५ रोज तक सामवेद पारायण यज्ञ एव वेदप्रचार का कार्यक्रम बडे ही हर्षोल्लास के साथ प्रात काल ८ से १० तक और साय काल ३ से ४ बजे तक प्रतिदिन हुआ करता था। यज्ञ के ब्रह्मा श्रीमान प० केदार प्रसाद आर्य थे। —मन्त्री

श्रीमती इन्दिरा गाधी की चौथी पुण्य तिथि पर 'राष्ट्रीय एकता दिवस'

रायगढ । दिनाक ३१ अक्टूबर १९८८ दिन सोमवार को प्रात ८ ३० बजे स्थानीय दयानन्द एंग्लो वैदिक कान्वेंट स्कूल रायगढ (म० प्र०) म श्रीमती इन्दिरा गाधी की चौथी पुण्य तिथि के अवसर पर राष्ट्रीय एकता एव अखण्डता दिवस परम आदरणीय श्री प० सुखराम जी शर्मा सिद्धा त शास्त्री जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर श्रीमती इन्दिरा गाधी को शाला परिवार द्वारा दो मिनिट का मौन धारण कर श्रद्धाजलि अर्पित की गई ।

वेद प्रचार की धूम

आय उप प्रतिनिधि सभा फरुखाबाद के अ तगत सञ्चालित वैदिक प्रचार मण्डल के उपदेशक सवश्री स्वामी प्रज्ञान द सिद्धा ती (अलीगढ) प० खेमच द आय (लखनऊ) देवे द्र कुमार आय (मथुरा) हरिशकर आय (हरदोई) प० राजकुमार आय (फरुखाबाद) मित्रपाल आय (बुल दशहर) प० महेन्द्रपाल आय (कलकत्ता) आदि द्वारा गत अक्तूबर मास मे जनपद फरुखाबाद के न० दभू जोगपुर नवावगज न० विनायक खिलवारा नह रोसा श्रीचकपुर कम्पुरवत्त हरपालपुर बथुआ अमैयापुर अमृतपुर आदि ग्रामो मे आयसमाज के विकासाथ सत्य सनातन वैदिक धम का प्रचार प्रसार किया गया ।

—म त्री विद्यासागर आय
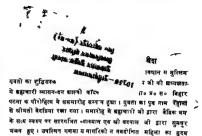
वेश

...विधान म मुस्लिम युवती का शुद्धिसस्कार ... न जी की अध्यक्षता मे ब्रह्मचारी व्यासनन्दन शास्त्री वदिक ... ०० प्र० स० बिहार पटना क पौरोहित्य मे ससमारोह सम्पन्न हुआ । युवती का पूव नाम रैहाना से श्रीमती वेदप्रिया रखा गया । समारोह मे ब्रह्मचारी जी द्वारा वैदिक धम के सत्य स्वरूप पर सारगर्भित व्याख्यान एव श्री वेदपाल जी द्वारा सुमधुर भजन हुए । उपस्थित गणमा य नागरिको न नवदीक्षित महिला का हृदय से अभिन दन किया ।

हीरक जयन्ती समारोह

मिरसाग्ज आयसमाज की हीरक जय ती १७ १८ १९, एव २० नवम्बर १९८८ को धूम धाम क साथ मनाई गई है । हीरक जय ती समारोह का उद्घाटन माननीय पूज्यपाद स्वामी आन दबोध जी सरस्वती महाराज द्वारा किया गया । सावदेशिक सभा के प्रधान श्री आन दबोध जी सरस्वती के स थ वहा क महाम त्री श्री सच्चिदान द जी पधारे ।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली से मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत १६० ८४६०८६] पार्वदेशिक आ प्रतिनिधि सभा का मुख्य पत्र दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २१ अंक ५०] मा०]ा ~ सं० २०४५ रविवार १८ दिसम्बर १९८८ वार्षिक मूल्य २५) एक प्रति ६० पैसे
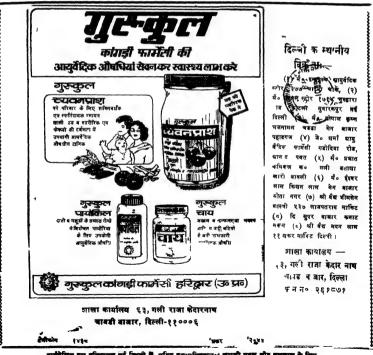
६००० ईसाइयों का स्वेच्छा से वैदिक धर्म में प्रवेश

आर्यसमाज के इतिहास में धार्मिक जागरण का नया अध्याय

वनवासी आर्य महासम्मेलन में विदेशी पादरियो के देश से निष्कासन की जोदार मांग

गत २६, ७ और २८ नवम्बर को सरगुजा (म प्र०) के सीतापुर नामक स्थान मे वनवासी आय महासम्मेलन सफलता पूवक सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता सावदशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने की। २ नवम्बर को विशाल शोभा यात्रा मे लगभग ४० हजार वनवासी युवको के पारम्परिक लोकनृत्य सगीत तथा वदिक धम के जयजयकार से सारा वनवासी क्षेत्र गूज उठा था। रायगढ से पत्थलगाव मानापुर तक के लम्बे बीहड मार्गों तथा पगडडिया पर वनवासी स्त्री पुरुषो द्वारा स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा अन्य आय नेताओ का जोरदार स्वागत किया गया। रात्रि के अधकार मे भी सडक के दोनो ओर वनवासी आग का प्रकाश करके आय समाज के धार्मिक नेताओ के स्वागत म खडे रहे। वनवासी बहुल इस क्षत्र मे इससे पूव ऐसा कायक्रम पहले कभी नही हुआ ऐसा वनवासी जनता का कहना था।

सीतापुर मे एक विशाल यज्ञकुण्ड के चारो ओर २ अन्य यज्ञ कुण्डो की व्यवस्था की गई थी। ऋषि मुनियो की प्राचीन परम्परानुसार यजुर्वेद पारायण यज्ञ के कार्यक्रम की व्यवस्था इतनी सुन्दर और मनोहारी लग रही थी कि सब आनन्द विभोर होकर गद-गद हो गए। वैदिक मन्त्रो के साथ वनवासियो ने बडी श्रद्धा के साथ यज्ञोपवीत ग्रहण किए। इस यज्ञ अनुष्ठान से धार्मिक जागरण की एक ऐसी लहर पैदा हुई कि हजारो की सख्या मे वनवासी आर्य नर नारी जो कभी ईसाइयो के लोभ लालच अथवा अशिक्षा के कारण ईसाई बन गए थे स्वेच्छा से वैदिक धम ग्रहण करने के लिए आतुर थ। पुर्नमिलन के लिए उनका ताता लगते जाता था, जब कि आय समाज के पण्डित तथा कार्यकर्त्ता प्रात से सायकाल तक थक जाते थे।

छ हजार वनवासी वैदिक धर्म मे प्रविष्ट

तीन दिनो के लगातार कायक्रम मे पहले दिन १७००, दूसरे दिन तीन हजार सात सौ और तीसरे दिन ५०० लोगो को ही वैदिक धम मे वापस लिया जा सका जब कि सैकडो लोगो को निराश होकर वापस लौटना पडा और आगे होने वाले समारोह तक प्रतीक्षा करनी पडगी। आय समाज के इतिहास मे धार्मिक जागरण की यह क्रान्ति पहले कभी नही देखी गई थी। यद्यपि १९८२ मे मीनाक्षीपुरम् मे बलात् मुसलमान बनाए हरिजनो की धमरक्षा महाभियान के अन्तगत शुद्धि की गई थी। इसके अतिरिक्त उडीसा तथा मध्य प्रदेश मे भी कई क्षेत्रो मे शुद्धि के काय होते रहे थे। किन्तु इस समारोह मे राष्ट्रीय एकता अखण्डता और हमारी प्राचीन वैदिक सस्कृति की रक्षा के लिए समर्पित भावना का जो उत्साह था वह पहले कभी नही देखा गया था।

(शेष पृष्ठ २ पर)

बालको नगर मे आर्य समाज मन्दिर का शिलान्यास

कोरवा बालको नगर (म० प्र०) मे २१ नवम्बर ८८ को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के कर कमलो से आयसमाज मन्दिर का शिलान्यास बड उत्साह पूवक किया गया।

श्री राजगुरु शर्मा ने यज्ञ की पूर्णाहुति कराई और श्री पृथ्वीराज शास्त्री का वैदिक प्रवचन हुआ।

२७ यज्ञ कुण्डो पर हजारो वनवासी बन्धु शुद्ध होते हुए। आर्य वनवासी बन्धुओ को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती आशीर्वाद देते हुए।

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

आवश्यकता है इतिहास को सही लिखने की

भारतीय इतिहास का पुनर्लेखन व अन्वेषणो की अति आवश्यकता है। आगल महाप्रभुओ ने अपनी षडयन्त्र पूर्ण लार्ड मैकाले की योजना के अन्तर्गत ऐसे समय मे भारत का इतिहास लिखना आरम्भ किया। जबकि भारत देश अपने विगत के गौरव एव प्राचीनतम इतिहास को अन्धकार पूर्ण अज्ञानमय बना चुका था। अग्रेजो ने अपने मिथ्याज्ञान के द्वारा उस मिथ्या ज्ञान पर और मिट्टी डाली। यह भी सत्य है कि यह मिथ्याज्ञान भारत मे अति प्राचीन काल से चला आ रहा था।

नवजागरण वेला मे इतिहास का पुनर्लेखन आजादी से पूर्व भी किया गया। प० भगवत दत्त जी का भारतवर्ष का इतिहास "१९४० में बडे प्रयास से प्रकाशित हुआ।" इस प्रकार के विद्वान लेखक कितने थे जिन्होने अपने अतीत के उज्ज्वल इतिहास को साफ-सुथरा व सही दिखाया। इसकी विपरीत दास्यभाव युक्त काले भारतीयो ने इतिहास मे अति मिथ्यावादो से युक्त दिखा रखी है। इससे निकालना स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे महान तपस्वियो का ही काम था इन्होने बुद्धि के कपाट खोले और अपनी विगत भूलो का स्मरण कराया। इस तथ्य को प्राय आज का विद्वान समझ रहा है और विचार मन्थन मे लगा हुआ है।

आगल प्रभुओ का षडयन्त्र मैकाले योजना के अन्तर्गत ऐसे समय मे इतिहास लिखना प्रारम्भ किया, जब भारतीय अपनी मानसिकता खो चुका था। विदेशी शासको द्वारा भारतीय भेदभाव मूलक तत्वो यथा--जातिवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद और अज्ञानवाद का लाभ उठाया। अग्रेजो ने आर्य-अनार्य या आर्य दस्यु, आर्य द्रविड समस्या उत्पन्न करके यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि भारत देश सदा से ही विदेशी शक्तियो का उपनिवेश रहा है।

यहा की जातिया मूल निवासी न होकर बाहर से आकर बसे और विदेशियो का शासन रहा है जो न्यायपूर्ण है।

अग्रेजो ने भारतीय एकता के घटनाक्रमो का अपने इतिहास के ग्रन्थो का उल्लेख नही किया है। उन्होने भारतीय महापुरुषो के नामो को ऐतिहासिक महापुरुष ही नहीं माना है इनके नामो को विकृत कर इनकी ऐतिहासिकता की पूर्णतया उपेक्षा ही की है। आर्यों के मूल ज्ञान के तत्व वेद विश्व सस्कृति के आधारभूत है उसका उद्गम एक काल्पनिक व बाह्य माना है। पाश्चात्य विद्वानो ने वैदिक विद्या या ज्ञान विज्ञान को विदेशी मूल का सिद्ध करने का प्रयास किया है।

पाश्चात्यो का षडयन्त्र और मिथ्या ज्ञान स्वाभाविक ही था। भारतीय इतिहास की विकृतिया के कारणो का अवलोकन करना है। विकृति के कारणो के साथ साथ मुख्य-२ परिस्थितियो का भी ज्ञान हो जाएगा।

प्राचीन इतिहास की विकृति के कारण नवीन नही हैं इसकी विकृति के कारण अति प्राचीन हैं।

पाश्चात्य षडयन्त्र

प्रायश-ससार मे यह नियम रहा है कि विजेता विजित की परम्परा और गौरव को या तो पूर्णत नष्ट कर देता है या उसमे तोड-मरोड करता है। भारतीय ग्रन्थो मे देवासुर-सग्राम से लिया जा सकता है। प्राचीन-सस्कृति व सभ्यता का देवो के समान व उससे भी बढकर थी। यथा वेदो का विस्तार देवो की अपेक्षा असुरो मे अधिक ही था।

देव पुरोहित बृहस्पति के पुत्र कच ने असुर गुरु शुक्राचार्य से अमृत सञ्जीवनी विद्या सीखी थी इन्ही असुरो की सस्कृति का देवो ने नाश किया। आदि वर्तमान भारतीय इतिहास की पुस्तके अपार मिथ्या कथोपकथनो से भरे पडे हैं। प्राचीन राजभवनो को यवन-आक्रान्ताओ ने किस प्रकार स्व-निर्मित घोषित किया है कुतुबमीनार, ताजमहल आदि को स्वय निर्मित करने

... इस भाषा ... पटकर ... पर प्रहार कर सके। ... आर्यो की कला अग्रेज बनाए ... सके।

मैक्समूलर ने 'स... साहित्य का इतिहास' इसलिए नही लिखा कि इसमे कुछ विशेषता है किन्तु इसलिए लिखा है कि भारतीयो की कमजोर नस को पकड कर उस पर कठोर प्रहार किया जा सके। केवल अपने निहित स्वार्थो के कारण अग्रेजो ने ही नही यवन काल मे भी भारी हानि हमारी परम्पराओ को पहुँचाया था।

उनका ज्ञान केवल एक अबोध बालक के समान ही था। अत स्वामी दयानन्द ने मैक्समूलर जैसे व्यक्ति को "एरण्डोऽपि द्रुमायते" बडा वृक्ष न होने पर पपोते का पेड ही बडा वृक्ष माना जायगा। यही मान्यता जर्मनी मे मैक्समूलर जैसे सस्कृत के विद्वान की थी।

प्रारम्भ मे पाश्चात्य सस्कृत अध्येता कुछ निष्पक्ष थे परन्तु मैकाले के सत्ता पक्ष के प्रभाव से उन्होने सत्य सनातन धर्म के मूल तत्वो को त्याग कर षडयन्त्र रचने का अनुसधान किया साथ ही उन्ही मिथ्या मतवादो का परिपक्व भी किया। जो आज तक विश्व मे फैले हुए हैं।

(पृष्ठ १ का शेष)

वनवासी आर्य महासम्मेलन : विदेशी पादरियों को देश से बाहर करने की जोरदार मांग

आर्य समाज के सर्वोच्च नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने शुद्ध हुए लोगो को आशीर्वाद हुए आर्य समाज द्वारा उनके उत्थान के लिए सहयोग देने का आश्वासन दिया। स्वामी जी ने कहा—यह सम्मेलन राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और प्रभु सम्पन्नता की कडियो को मजबूत करेगा। उन्होने भारत सरकार तथा मध्यप्रदेश सरकार से वनवासियो के आर्थिक, सामाजिक और सास्कृतिक उत्थान के लिए कार्यक्रम चलाने की माग की। स्वामी जी ने घोषणा की कि आर्यसमाज मध्य प्रदेश तथा उडीसा के अनेक गावो मे बाल विद्या-मन्दिर, प्रौढ शिक्षा केन्द्र तथा दयानन्द सेवाश्रम सघ की स्थापना करने के कार्यक्रम को सर्वोच्च प्राथमिकता देगा। सम्मेलन मे सर्व सम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया कि विदेशी पादरियो को तुरन्त देश से बाहर निकाल दिया जाय, क्योकि उनका लक्ष्य धार्मिक जागरण नही अपितु राजनीतिक चालाकी है।

इस कार्यक्रम मे दिल्ली तथा देश के अन्य प्रान्तो से प्रमुख आर्य बन्धु व बहने उपस्थित थी। इस आयोजन के लिए उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती का बडा त्याग और परिश्रम रहा है। समारोह को सफलता प्रदान करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभाओ, आर्य जनो, आर्य सस्थाओ तथा दिल्ली की धार्मिक बहनो और आर्य समाजो ने जो सहयोग सार्वदेशिक सभा तथा स्वामी धर्मानन्द जी को दिया, उसके लिए उन सबका भी अभिनन्दन किया जाना है।

उक्त सम्मेलन मे माता कौशल्यादेवी (सम्मेलन की सयोजक), अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के महामन्त्री श्री पृथ्वीराज शास्त्री और श्रीमती प्रेमलता खन्ना, परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश के प्रधान श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव, प० विशिकेशन शास्त्री, महात्मा प्रेमप्रकाश जी, प० सुरेन्द्रपाल आर्य, प० ज्ञानप्रकाश शर्मा, श्री मोहनलाल गुप्ता, आचार्य वामदेव, श्री वेदव्रत महत्ता तथा श्री तनेजा आदि कई महानुभाव व बहिन यथा समय समारोह स्थल पहुच चुके थे। गुरुकुल आमसेना के ब्रह्मचारियो का प्रयत्न भी सराहनीय रहा।

समारोह २६ नवम्बर को स्वामी ओमानन्द जी द्वारा ओमध्वज के उत्तोलन से प्रारम्भ होकर २८ नवम्बर तक शान्ति व उत्साह पूर्वक चलता रहा। —सच्चिदानन्द शास्त्री, सभा-मन्त्री

अरब वेदों के विद्वान्–

लाबी द्वारा वेदों का गुणगान

सा० मार्मिक के सौजन्य से

अक्षताब के पुत्र और तुर्फा के पौत्र लाबी नामक अरबी कवि ने जो मुहम्मद साहेब के जन्म के लगभग २४०० वर्ष पूव विद्यमान था वेदो का गुणगान निम्नलिखित अरबी भाषा की कविता मे किया जिसे महत्वपूर्ण होने के कारण हम अग्र जी और हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित करना इस प्रकरण मे आवश्यक समझते है । इससे यह भी स्पष्टतया ज्ञान होता है कि ईस्वीसन् के लगभग १७०० वर्ष पूव भी सेमेटिक लोगो मे वेदो के प्रति कितना उत्तम भाव था। यह कविता हारुन रशीद के राजदरबार कवि अरमाई मलेकुस शरा द्वारा सगृहीत सीरुल उकूल नामक (अब बेरट पब्लिशिंग कम्पनी बेरट पैलस्टाइन् द्वारा प्रकाशित तथा हाजी हमजा शिराजी ऐण्ड को पब्लिशर्स बुक सेलर्स बन्दर रोड बम्बई से उपलब्ध) पुस्तक के पृ० ११८ पर आती है जो निम्नलिखित है —

१—अया मुबारकल अज योशेय्ये नुहामिनल हिन्दे फारादकल्लाहो मैय्योनज्जेला जिक्रतुन् ।

२—वहल तजल्लेयतुन् ऐनाने सहबी अरबातुन् हाजही युनज्जेल रसूलो जिक्रतान मिनल हिन्दतुन् ।

३—यकलुनल्लाह या अहलल अर्जे आलमीन कुल्लहुम् फत्तबिऊ जिक्रतुल वेद हक्कन् मालम् युनज्जेलहुन् ।

४—वहोवालम् उस साम युजर मिनल्लहे तनूजीलन् फ ऐनमा या अखेयो मुत्तबे अन् यो बशरेयो नजातुन् ।

५—व असनैने हुमा ऋक व अनर नासहीन क अखूवतुन् व अस्नान अला ऊदन् वहोव मशअरतुन् ।

भाषानुवाद—

१—ऐ हिन्दुस्तान की धन्य भूमे ! तू आदर करने योग्य है क्योकि तुझ मे ही ईश्वर ने अपने सत्य ज्ञान का प्रकाश किया है ।

२—ईश्वरीयज्ञानरूप ये चारो पुस्तक (वेद) हमार मानसिक नेत्रो को किस आकषक और शीतल उषा की ज्योति को देते हैं ! परमेश्वर ने हिन्दुस्तान म अपने पैगम्बरो अर्थात् ऋषियो के हृदयो मे इन चारो (वेदो) का प्रकाश किया।

३—और वह पृथिवी पर रहने वाली सब जातियो को उपदेश देता है कि मैने वेदो म जिस ज्ञान का प्रकाशित किया है उसका तुम अपने जीवनो म क्रियान्वित करो उसके अनुसार आचरण करो। निश्चय से परमेश्वर ने ही वेदो का ज्ञान दिया है ।

४—साम और यजुर वे खजाने (कोष) है जिन्हे परमेश्वर ने दिया है। ऐ मेरे भाइयो ! इनका तुम आदर करो क्योकि वे हमे मुक्ति का शुभ समाचार देते हैं।

५—इन चार म से शेष दो ऋक और अनर (अथव) हमे विश्व-भ्रातृत्व का पाठ पढाते है। ये दो ज्योति स्तम्भ है जो हमे उस लक्ष्य (विश्वभ्रातृत्व) की ओर अपना मुह मोडने की चेतावनी देते है ।

अरब देशीय कवि लाबी द्वारा वेदो के प्रति समर्पित यह श्रद्धाजलि स्वर्णाक्षरो मे लिखने योग्य है ।

क्या मारीशस के प्रधान मन्त्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ जी को हत्या एक आर्य समाज मन्दिर में हो जाती ?

ले०—पण्डित धर्मवीर घूरा, मन्त्री उपदेशक मण्डल आर्य सभा मारीशस, अध्यक्ष

रविवार ता० ६ नवम्बर १९८६ ई० को प्रेल्क रोश हिल आर्य समाज के आय समाज मन्दिर की ६१ वी वर्षगांठ मनाई जा रही थी। पोर्ट लुई से १० किलोमीटर की दूरी पर ऐसा सामूहिक कार्य किया जा रहा था। यज्ञ के बाद मारीशस के प्रधान मन्त्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ जी ने माल्य अध्यक्ष पद को सम्भाला माननीय राजनारायण गती जी ने प्रधान आसन, आर्य सभा मारीशस के अन्तरङ्ग सदस्य श्री सन्तोष जगन्नाथ जी उप प्रधान और उपमन्त्री श्री सत्यदेव प्रियतम जी बी० ए० मन्त्री का कार्य खूबी के साथ सम्भाल रहे थे।

माननीय रा० गती जी के भाषण के बाद हमने श्री शम्भू को मारीशस के प्रधानमन्त्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ जी के कान के पास पिस्तोल की नली दबाकर कहते सुना कि—कोई हिले नहीं इस पिस्तोल में ६ गोलियां हैं। इतना ही सुनकर उस आर्य समाज मन्दिर में सन्नाटा छा चुका था, भय का वातावरण हो चला था। सब अतिथि जन मंच के साथ प्रधान मन्त्री जी और गोली थामे हुए व्यक्ति को टकटकी लगाए देखने लगे। सर जगन्नाथ जी शान्त बैठ रहे और वे शान्त चित्त ही रहे। कुछ ही क्षण में हमने देखा कि एक व्यक्ति दबे पाव आकर पीछे से श्री शम्भू का हाथ जकड़ कर पकड़ लिया। काफी शक्ति और तेजी के साथ उस समाज के एक कर्मठ सेवक श्री सुग्रीव केदार जी ने अपना हाथ फैलाए पीछे से उस व्यक्ति का हाथ पकड़ लिया अर्थात ऐसा उत्साहपूर्ण कार्य पलक मारते किया।

प्रधान मन्त्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ जी वीर भवन मे उठकर चले आए। पुलिस ने और प्रधानमन्त्री जी के अंगरक्षको ने अपनी जिम्मेवारी को बहुत होशियारी के साथ सम्भाला। अर्थात् उस आदमी को नाकाम कर दिया। पिस्तौल उसके हाथ से छीन लिया। वहा के एक नौजवान ने भी इस कार्य में हाथ बटाया। ईश्वर की असीम कृपा है कि गोलियां चलने पर भी किसी की हत्या नहीं हुई। पर दुःख की बात है कि एक अंगरक्षक श्री प० बालाइदो जी के हाथ मे चोट लगने पर खून गिरने लगा और मेरे कपड़े पर खून का धब्बा आ पड़ा।

मौरीशस के प्रधानमन्त्री जी ने उस समय बहुत साहस के साथ योग्यता पूर्ण पग उठाए। तब मैंने उनसे कहा—भैया जी अब घर जाइयेगा और आराम कीजिएगा। बहन सरोजनी जगन्नाथ जी भी अन्य बहनो के मध्य मे बैठकर उस उत्सव की शोभा बढ़ा रही थी। वे भी बहुत चिन्तित हो चली थी। उस घटना के बाद उनकी मोटर के पास जाकर मैंने उन्हें सान्त्वना दी थी। उनकी आंखो मे आंसू भर आए थे। बहन सरोजनी जी की आंखो मे आंसू भर आए थे। बहन सरोजनी जी शिक्षा कला एवं सांस्कृतिक मन्त्रालय मे स्कूल इन्सपेक्टर के रूप मे मारीशस में काम करती हैं, मैं भी इसी मन्त्रालय मे पाठशालाओ का निरीक्षण करता हूं। आप अंग्रेजी फ्रेंच विभाग मे लगी हैं और मैं हिन्दी विभाग मे। हमारा आफिस एक ही है इस दृष्टि से आप से हमेशा मिलने का शुभावसर मिला करता है।

यदि श्री स० फौद्दार जी नहीं होते तो शायद दशा बहुत शोचनीय हो जाता। सब कुछ थोड़ा शान्त हो जाने पर मैंने उनसे बातें की और पूछा कि—

प्रश्न—आप क्या काम करते हैं

उत्तर—मैं अब कोई काम नहीं करता हूं क्योंकि मैंने पेन्शन ले ली है।

प्रश्न—पहले आप कौन सा काम करते थे ?

उत्तर—पहले मैं कैद विभाग मे पुलिस के सिपाही के समान काम करता था।

गोलियां चलने पर वे भयभीत हुए थे पर अपने कर्तव्य से हटे नहीं ? ऐसा उन्होंने मुझे सुनाया था।

मैंने इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए उन्हें बधाई दी और धन्यवाद भी किया। फिर और लोग पास में चले आए और सबसे घुल मिल कर वे बातें करने लगे।

मौरिशस ६२० वर्ग मील का टापू हिन्द महासागर मे स्थित है। प्रवासी भारतीयो का आगमन यहां पर सन १८३४ मे दास प्रथा के अन्तगत हुआ था। किसी एक महापुरुष ने कहा था कि, वे ऋषि-मुनियो की सन्तानें विद्वान, साहसी, शिल्पी और उच्चकोटि के कलाकार थे। उन्हें इस टापू मे बहुत कष्ट झेलना पड़ा था। गोरो ने उन्हें कोड़ो से मारा था। सारा दिन काम करने के बाद उन्हें आधा पेट खाना मिलता था। कभी कभी खाली पेट सोते थे। उन्हें इतना दुःख दिया जाता था कि कभी कभी एक दो भारतीय पहाड़ो पर से कूद कर अपनी हत्या कर लिया करते थे। दयनीय स्थिति थी उन पूर्वजो की। सारा दिन परिश्रम करने के बाद वे अपनी सस्कृति पर चांदनी रातो मे विचार विनिमय किया करते थे।

मारीशस मे भारत के विद्वान जन सन्यासी गण आकर हमारे पूर्वजो मार्ग दर्शन किया करते थे। सन १९०१ मे यहां पर महात्मा गांधी जी पधारे थे। राजधानी पोर्टलुई मे उनका शानदार स्वागत किया गया था। वे यहां के गवरनर जनरल श्री कृष्ण जी के पास एक दो रात रहे थे। दोनो विद्वानो मे भारी घनिष्टता हो गई थी। यहा वे १७ दिनो तक रहे।

गांधी जी मारीशस छोड़ने से पूर्व प्रवासी भारतीयो को यह सीख दे गये कि—(१) शिक्षा को अपनाये (२) एकता मे रहे (३) राजनीति में सक्रिय रहे।

उस महान राजनीतिज्ञ की बातो को प्रवासी भारतीयो ने सुना। प्रगति होने लगी। आर्य समाज के एक विद्वान डा० मणिलाल मगनलाल जी गांधी जी की प्रेरणा पर यहा पधारे और आर्य समाज की बात उन्होंने यहां पर १९०७ तक की थी। स्थापना और रजिस्ट्री १९१० मे हो पाई। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी सन १९१६ मे पधारे थे। उनसे भी पूर्वजो को बहुत प्रेरणा मिली थी। परिश्रम करते करते आज इस टापू मे आर्य समाज की ४३५ शाखाएं हैं। प्रेस और अनाथालय भी हैं।

यहां पर सन १९४२ मे भव्य चुनाव हुआ। आर्य समाज के सहयोग से डा० शिवसागर रामगुलाम जी की पार्टी की जीत हो पाई। वे मारीशस के प्रथम प्रधान मन्त्री बने। उनके बाद गत ४ वर्षो से सर अनिरुद्ध जगन्नाथ जी इस टापू के प्रधान मन्त्री बनाये गये हैं। क्योंकि गत दो चुनावो मे आप की पार्टी की जीत हुई थी।

गत १३ नवम्बर को तामाक रिव्येर द आंगी आर्य समाज के ६५ व वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर सर अनिरुद्ध जगन्नाथ जी ने कहा था कि खुशी की बात है कि आर्य समाज इस देश के कोने कोने मे पाठशाला चला रहा है।

नोट—जिस शाम मारीशस के प्रधान मन्त्री जी के विरोध मे ऐसी असभ्य और दर्दनाक कार्यवाही की गई थी उसी शाम और दूसरे दिन तक अनेक वक्तो में रेडियो स्टेशनो द्वारा और मारीशस के कुछ पत्रकारो द्वारा यह गलत समाचार प्रसारित किया गया था कि श्री शम्भू जी एक पण्डित पुरोहित हैं और उस उत्सव मे यज्ञ कर रहे थे। पर रात को यहा के टेलिविजन पर आर्य सभा के उपप्रधान माननीय राजनारायण गती जी ने कहा कि वे आर्य सभा के पण्डित पुरोहित कभी भी नहीं रहे हैं।

उसी रात ८ बजे आर्य सभा मारीशस के प्रधान डा० [illegible] जी ने (आप के भाई दिल्ली मे मारीशस के राजदूत हैं) और उपमन्त्री श्री सत्य देव प्रियतम जी ने प्रधानमन्त्री जी के निवास स्थान पर जाकर दुःख प्रगट किया और बहुत कुछ सान्त्वना दी। शम्भू जी के बारे में भी [illegible] समझाई।

समान नागरिक संहिता

आचार्य रामकिशोर शर्मा आचार्य, श्री राधाकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय खुर्जा (उ०प्र०)

किसी भी राष्ट्र के सर्वतोमुखी विकास हेतु वहा समान नागरिक संहिता का क्रियान्वयन अत्यावश्यक है। इसके बिना सम्पूर्ण देश-वासियो मे पारस्परिक पवित्र सौहार्द, सहयोग की भावना तथा राष्ट्र के प्रति समर्पणभाव का सृजन कदापि सम्भव नही है। वर्गवाद तथा उसी की कल्याण कामना की सकुचित प्रवृति राष्ट्र की एकता, अखण्डता तथा समृद्धि के लिए अभिशाप बन जाती है। "अपनी-अपनी ढपली और अपना-अपना राग" किसी राष्ट्र का न कभी कल्याण कर सका है और न कर सकेगा। परमपिता परमात्मा ने इसीलिये सृष्टि के प्रारम्भ मे "सगच्छध्व" इत्यादि पवित्र वेदमन्त्रो द्वारा सबको साथ-साथ चलने तथा प्रेमपूर्वक वचन बोलने का उपदेश दिया। "सघ शक्ति" इत्यादि सूक्ति द्वारा बोधित "सगठन मे शक्ति है" का आधार भी समान आचार तथा विचार है। जिसका उद्भव "समान नागरिक सहिता" के बिना सम्भव नही। जिन देशो ने इस तथ्य को समझ लिया है उन्होने अभूतपूर्व उन्नति की है, यह कौन नही जानता। शताब्दियो की परतन्त्रता के पश्चात् भारत माता के असख्य सपूतो के बलिदान के फलस्वरूप अपना देश स्वतन्त्र हुआ। दुर्भाग्यवश विभाजित भारत को स्वतन्त्रता मिल सकी। मात्र देश को छोडकर सस्कृति, सभ्यता तथा भाषा की दृष्टि से यहा के बहुसख्यक हिन्दुओ से हमारा कोई साझा नही है, अत हमारा देश भी पृथक् होना चाहिए इस भावना वाले वर्ग विशेष के कारण ही देश का विभाजन हुआ था। इस भावना का जन्म "फूट डालो और राज्य करो" की नीति निर्माता अग्रेजो द्वारा धर्मानुसार निर्मित वैयक्तिक विधियो के कारण हुआ। परमात्मा की पूजा पद्धति के पृथक्-पृथक् होने पर भी राष्ट्रीय सामान्य जीवन पद्धति मे किसी प्रकार का भेदभाव न होना ही सुख और शान्ति का प्रशस्त पथ है। भावावेश मे तत्कालीन कतिपय नेता इस शाश्वत सत्य को न समझ सके। इस नासमझी के कारण ही साढे सात लाख व्यक्तियो की हत्या हुई तथा डेढ करोड व्यक्ति बेघर हो गये। कुछ समय पश्चात् वहा के प्रमुख नेताओ को भी अपनी भूल की अनुभूति हुई। गत वर्ष भारत आये "जिये सिन्ध" आन्दोलन के प्रवर्त्तक श्री गुलाम मुर्तजा सैय्यद ने उक्त तथ्य को स्वीकार किया। उनके पुत्र तथा पाकिस्तानी असेम्बली के सदस्य श्री इमदाद मुहम्मद ने तो स्पष्ट कहा कि भारत का बटवारा बुजुर्गों की एक राजनैतिक भूल थी। इसकी पुनरावृत्ति न हो एतदर्थ राष्ट्रीय जीवन मे वैयक्तिक विधि (पर्सनल ला) का ममापन परमावश्यक है।

बहुसख्यक और अल्पसख्यक के नाम पर परस्पर सौहार्द के स्थान पर सन्देह,साम्प्रदायिक उपद्रव,विदेशी घुसपैठियो का सरक्षण, राष्ट्रीय कल्याण योजनाओ का विरोध, महिलाओ का शोषण, अल्पसख्यक आयोग का गठन, विशेष सुविधाओ की आकाक्षा, पृथक् पहचान रखने की आतुरता, अन्य देशो का जिन्दाबाद, अपने देश की पराजय तथा अन्य देश की विजय पर हर्षोभिव्यक्ति आदि रोग उक्त व्यवस्था के अभाव के ही परिणाम है। अन्य अनेक देशो मे भी विभिन्न वर्गो के व्यक्ति निवास करते है। राष्ट्रीय योजनाओ मे सभी का समान योगदान रहता है। कही भी धर्म बाधक नही बनता। किसी भी वर्ग विशेष हेतु विशेषाधिकार प्रदान करना राष्ट्र की एकता तथा अखण्डता के लिए अत्यन्त घातक है। उक्त रोगो से मुक्ति हेतु अपने देश के राष्ट्रवादी मनीषी जब कभी समान नागरिक सहिता की उपादेयता का प्रतिपादन करते है, तभी तथाकथित कट्टरपन्थी मुस्लिम नेना ही प्रबल विरोध करते हुए दृष्टिगोचर होते है। ससद मे १९८६ के बजट अधिवेशन मे तत्कालीन राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिह जी ने समान नागरिक कानून बनाने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। तदनुसार ही श्री प्रधानमन्त्री जी ने उक्त कानून का प्रारूप शीघ्रातिशीघ्र तैयार करने का निर्देश विधि मन्त्रालय को दिया था। साथ ही सभी दलो एव विद्वानो से व्यापक विचार विमर्श करने का परामर्श भी दिया था। मुस्लिम लीग के महासचिव तथा सासद श्री गुलाम महमूद बनातवाला ने यदि सरकार ने इस ओर कदम बढाया तो देशव्यापी आन्दोलन होगा, यह घोषणा तत्काल ही कर दी। पुर्तगाल मे पुर्तगाली सिविल कोड के समर्थक तथा मुस्लिम वैयक्तिक विधि के विरोधियों का कथन है कि उक्त विधि महिलाओ पर जुल्म करने की छूट देती है। इससे गोवा अब तक की भाति बचा रहना चाहिए। इस विषय मे श्री शाहिद रहीम ने 'समान नागरिक सहिता की आवश्यकता" शीर्षक अपने लेख मे विस्तारपूर्वक विचार किया है।

अनेको अन्य देशो मे भी मुसलमान रह रहे है, किन्तु वहा इस प्रकार की विशेष स्थिति नही है। रूस मे भी सभी के समान मुसलमानो का भी एक से अधिक विवाह निषिद्ध है। चीन मे भी एक से अधिक विवाह,सामूहिक हजयात्रा, विदेशो से धन का लाना निषिद्ध है। धर्म को व्यक्तिगत आचरण माना है। राष्ट्रीय कार्यो मे धर्म का प्रतिरोध सर्वथा वर्जित है। यहा भी अलगाव की समाप्ति तथा समरसना के लिए उक्त सहिता अनिवार्य है।

इस देश मे हिन्दू मुसलमान, ईसाई, पारसी आदि कहे जाने वाले अनेक मानव समुदाय शताब्दियो से इसी प्रकार रह रहे हैं। यहा जितने भी हैं प्राय उन सभी का जन्म यहा हुआ है। भारत भूमि हमारी माता है। हम सब इसकी सन्तान हैं। यह हमारे लिए स्वर्ग स भी महान् है। यदि यहा अन्न आदि उपयोगी पदार्थ पुष्कल मात्रा मे उत्पन्न होते है, जो उनसे हम सभी समान रूप से लाभान्वित होते है। यदि अनिवृष्टि आदि द्वारा देश सकटग्रस्त हो जाता है, तो उसकी अनुभूति हम सभी को समान रूप मे ही होनी ह। विषम स्थिति मे हम सब स्वदेश वासी ही परस्पर सहयोग कर सकते हैं। बाहर का कोई भी अपने किसी काम नही आ पाता। हम सब भाई-भाई हैं। सबको यही जीना और मरना है। फिर राष्ट्रीय विकास योजनाओ को सफल बनाने मे समान सहयोग का अभाव क्यो? यदि जनसख्या की अभिवृद्धि के कारण देश मे अन्न का सकट ह तो सभी वर्गो को परिवार सीमित कर उसे दूर करना चाहिए। यदि मजहब के नाम पर वर्ग विशेष चार (४) विवाह और दर्जनो बच्चे पैदा करता रहा तो अन्य वर्गों द्वारा किये गये

प्रयास का भी सुखद परिणाम सम्भव नही है। जब अन्य अनेक देशो में यह स्थिति मान्य नही तो फिर यहा इसे मानकर सकट मोल लेने का औचित्य समझ से परे है। कहीं के भी किसी भी धर्म के अनुयायी होने पर भी सभी को अपने देश की संस्कृति सभ्यता तथा भाषा के प्रति,पूर्ण रूप से समर्पित होना चाहिए। इस विषय मे भारत मे मुस्लिम देश तुर्की के राजदूत श्री यलीम एराल्प का यह कथन अनुकरणीय है, कि हमें मजहब ने नही राष्ट्रवाद ने प्रगति का रास्ता दिखाया है। तुर्की मे मजहब का क्या स्थान है इस प्रश्न के उत्तर मे उन्होने कहा कि मजहब नितान्त निजी वस्तु है, सिर्फ ईश्वर और व्यक्ति के बीच। शासन सभी लोगो के प्रति समान रूपेण कानूनी दृष्टि अपनाता है। तुर्की का धर्म निरपेक्ष शासन सार्वभौम नैतिक सिद्धान्तो पर चलता है। हमारा मजहब इस्लाम है, सस्कृति तुर्की है, राष्ट्रवाद हमारे विकास का आधार है। श्री कमाल पाशा ने कुरान का तुर्की भाषा मे अनुवाद कराया, अरबी पढने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। पुरानी रूढियो और कट्टर पंथियो से तुर्की को मुक्त कर दिया।

श्री यलीम एराल्प ने बताया कि श्री कमाल पाशा ने मजहब के आधार पर सब विशेषाधिकार समाप्त कर दिये। महिलाओ को पर्दे वाली वेशभूषा प्रतिबन्धित कर दी। मजहबी कायदे को शादिया कानूनी तौर पर अमान्य घोषित कर दीं। शादी को कानूनी नियमो के अनुसार पजीकृत कराना आवश्यक है। तलाक का कानून बदल दिया अब कोई तीन बार तलाक कहकर पत्नी को नही छोड सकता। श्रीमती एराल्प ने कहा कि पहले महिलाये काफी पिछडी हुई थी, पर अब तो क्रान्ति के फलस्वरूप विशिष्ट पदो पर कार्यरत हैं। हम मुस्लिम होने के नाते ईद मनाते हैं, उसके साथ ही तुर्की के परम्परागत वे त्यौहार भी मनाते हैं जिनका इस्लाम से कोई सम्बन्ध नही। हम मजहब से अधिक राष्ट्र को मानते हैं। हम पहले तुर्की हैं बाद मे कुछ और। उनकी माता जी ने कहा कि हम कुरान को निजी आध्यात्मिक लाभ के लिए मानते हैं। शासन व अन्य काम-काज के लिए नही। अन्य देशो मे इस्लाम के साथ साथ अरबी सस्कृति भी अपनाई गई कि तु हमने उसे अस्वीकार कर दिया। मारीशस शासन द्वारा १० नवम्बर १९८७ को पृथक् मुस्लिम रिलिजियम मैरिजएक्ट (मुस्लिम मजहबी विवाह विधि) एक विधेयक द्वारा समाप्त कर दिया गया। तक सगत समुचित उत्तरो द्वारा विधेयक का विरोध करने वाल विपक्षी राजनैतिक नेताओ का मुख बन्द कर दिया। इस निर्णय से भारत के कट्टरपन्थी मुस्लिम नेताओ और सगठनो मे खलबली मच गई है। इन्हे भय है कि यहा के प्रगतिशील राष्ट्रवादी मुस्लिम महानुभाव भी कही इसी मार्ग पर चलने को प्रोत्साहित न हो जायें। जब अनेक मुस्लिम राष्ट्रो मे भी मुस्लिम व्यक्तिगत विधियों मे समयोचित परिवर्तन समय-समय पर किये गये हैं तब फिर भारत मे मुस्लिम व्यक्तिगत विधि के उन अशो में जिनके कारण राष्ट्रीय योजनाओ मे बाधा पड रही है परिवर्तन क्यों नही किया जा सकता। विरोध किये जाने पर भी हिन्दुओ के विवाह आदि व्यक्तिगत विधियों मे शासन द्वारा परिवर्तन किये गये।

हिन्दू धर्मस्व आयोग द्वारा पूव स्थिति मे हस्तक्षेप किया गया है। अब समय आ गया है कि राष्ट्र के हित मे बाधक किसी भी वर्ग की व्यक्तिगत विधि मे यथोचित सुधार करने मे किसी भी प्रकार का सकोच न किया जाये। सभी वर्गों के साथ समव्यवहार हो तभी राष्ट्र सशक्त एव समृद्ध बन सकेगा।

अपने देश के सविधान मे अल्प सख्यको के लिए कुछ विशेष अधिकार सुरक्षित किये गये हैं। जिनका लाभ उन्हे प्रारम्भ से ही मिल रहा है। सविधान में अल्प सख्यको की कोई परिभाषा नही की गई है। शासन तथा राजनैतिक दल भी इस विषय में प्राय सकोच ही करते रहे हैं। सामान्यत जिनकी सख्या बहुत है वे बहुसंख्यक तथा जिनकी कम है वे अल्पसख्यक यह अर्थ सवमत होता है। कहीं भी बहुसख्यक-अल्पसख्यको के साथ अन्याय न करे, एतदर्थ प्रत्येक राष्ट्र मे व्यवस्था आवश्यक है। मानवता की दृष्टि से इस व्यवस्था का सम्मान होना ही चाहिए। होना भी यदि निष्पक्ष भाव से इसका क्रियान्वयन किया जाये। विशेषाधिकार रक्षा की दृष्टि से है, इसलिए पीडित वर्ग के हितार्थ उसका प्रयोग होना चाहिए। केरल राज्य शिक्षा सम्बन्धी बिल १९५७ के सम्बन्ध मे सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि 'माइनोरिटीज' शब्द की व्याख्या भारत के सविधान मे नहीहै। यह फैसला भी दिया था कि ५० प्रतिशत से कम सख्या वाली जाति को अल्पसख्यक माना जाय। यह भी स्पष्टीकरण किया कि यदि कोई राज्य विधान सभा इस विषय मे विधेयक बनाय तो ५० प्रतिशत राज्य की सम्पूर्ण जनसख्या के सदर्भ मे होगा केन्द्रीय ससद विधेयक बनायेगी जो सम्पूर्ण देश की जनसख्या की दृष्टि से बनाये। व्यवस्था की दृष्टि से प्रदेश बनाये गये हैं। अत वहा की जनसख्या के आधार पर ही अल्पसख्यक जाति का निर्णय होना चाहिए। किन्तु देश के राजनैतिक दल आज तक सुप्रीम कोर्ट के इस न्याय सगत निर्णय का सब सम्मति से स्वागत नही कर सके। सम्प्रदाय के आधार पर अल्पसख्यक माने जाने से सविधान की भावना का भी आदर नही हो पाता तथा देश की धम निरपेक्षता पर भी प्रश्न चिह्न लग जाता है। अपने देश के जम्मू काश्मीर, लक्षद्वीप, मिजोरम नागालैण्ड, मेघालय तथा पजाब मे अल्पसंख्यक कहे जाने वालो से हिन्दू कम हैं, इसीलिए यदा कदा हिन्दुओं के पूजा स्थलो को नष्ट-भ्रष्ट किया जाता है,धार्मिक ग्रन्थो का अपमान किया जाता है, धार्मिक क्रिया कलापो मे बाधाय डाली जाती हैं, मकान और दुकानो को लूट लिया जाता है। महिलाओ के साथ दुर्व्यवहार करके जाति को अपमानित किया जाता है। उक्त प्रदेशो मे अल्पसख्यक तथा पीडित हिन्दू आज भी विशेषाधिकार से वचित है, बहुसख्यक सशक्त सत्तारूढ होने पर भी अन्य वर्ग सभी सुविधाये प्राप्त कर रहे हैं। क्या यह सविधान का मजाक नही है? प्राय ऐसा मान लिया गया है कि इस देश के किसी भी प्रदेश मे कमजोर तथा पीछे होने पर भी हिन्दू मात्र सुविधा का पात्र नही है इस स्थिति ने ही हिन्दू समुदाय के ही वग विशेषो को अपने को अल्पसख्यक घोषित करने को प्रेरित किया। आज भी यह भावना पनप रही है। इस दिशा मे शीघ्र प्रयत्न न किया गया तो अलगाव की यह भावना राष्ट्र के अस्तित्व को सकट मे डाल देगी।

यह सब देखते हुए भी जनता पार्टी के शासनकालमे अल्पसख्यक आयोग की स्थापना कर दी गई, उसके बाद के शासन ने भी इसे उसी रूप मे स्वीकार कर लिया। वास्तविकता तो यह है कि इस देश मे धार्मिक आधार पर अल्पसख्यक वर्ग के निर्धारण तथा तदर्थ आयोग गठित करने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। यदि भारत मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान की भाति हिन्दू राष्ट्र घोषित होता और यदि हिन्दू बहुसख्यक होने के कारण अहिन्दुओं से वैसा अन्याय करता जैसा कतिपय मुस्लिम देशो मे मुस्लिम भिन्न व्यक्तियो से किया जाता है तो अल्प सख्यको के भय को दूर करने हेतु उनकी रक्षा का दायित्व सविधान को लना चाहिए था किन्तु भारत धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है। यहा धम के आधार पर वर्गीकरण सविधान का अपमान है। जिस देश मे राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यपाल विधान सभाध्यक्षादि अति विशिष्ट पदो पर मुस्लिम महानुभाव विराजमान रहे तथा हैं, मन्त्री, सासद तथा विधायक अनेक मुसलमान हैं। प्राय सभी ने उक्त पद हिन्दू समर्थन से प्राप्त किये हैं तो उस देश मे उनके लिए विशेष सुविधाओ तथा अल्पसख्यक आयोग का क्या औचित्य है, यह सभी वर्ग के राष्ट्रवादियो को मननीय है। विशेष

(शेष पृष्ठ ८ पर)

श्रेष्ठ वैदिक धर्म

(पं० धर्मदेव 'मनीषी' वेदमार्तण्ड, गुरुकुल कालवा)

स्वर्गीय माननीय श्री महात्मा नारायण स्वामी जी ने आर्य समाज क्या है ? "नामक पुस्तक के पृष्ठ २१ पर अरबी इतिहास—"मालेल तथा नहिल" के आधार पर लिखा है कि "मुक्त जिला (मौत जिला) नामक एक फिरका या मजहब ऐसा था जो यह मानता था कि परमात्मा जो कुछ भी करता है वह सब कुछ अपनी मर्यादा (अपनी सीमा) में करता है।" अर्थात् ईश्वर की रचना भी अपनी मर्यादा मे ही होती है उनका कोई काम मर्यादा से बाहर नहीं होता।

इस फिरके या मजहब के विपरीत एक दूसरा फिरका—अश अरी" नाम का था जो यह मानता था कि 'ईश्वर सर्वशक्तिमान है वह अच्छा बुरा जो भी चाहे सब कुछ ही कर सकता है।" बस इतनी सी बात पर उनका विरोध बढ गया और अश अरी फिरके मजहब वालो ने उन कई हजार मौत जिलो को मार डाला। कारण यही था कि वे लोग उनके मत या मजहब को नहीं मानते थे। तथा ईसाई मजहबी इतिहास में भी यह लिखा मिलता है कि आयरलैंड में पोप का धर्म छोड देने पर रोमन कैथोलिक मतवादी ईसाइयो ने दूसरे प्रोटेस्टेण्ट मतवादियो को १६७१ से १८०८ तक ३४१०२१ मनुष्यो को मार डाला और ३२००० को तो जिन्दा ही आग में जला दिया था और ३१२४५३ मनुष्यो को घोर कष्ट व दुःख दिये गये थे। इन मारे गये आग में जलाये गये और दुःखी किये गये मनुष्यो का तो कोई भी अपराध न था। वे निरपराध मनुष्य केवल इसीलिये मारे गये थे कि वे रोमन कैथोलिक मत को न मानकर प्रोटेस्टेण्ट मत को मानने वाले थे।

यही क्या धर्म के नाम पर तो बहुत बडे २ अत्याचार और पापाचार होते रहे हैं। कृत्रिम—असत्य एव मनघडन्त कल्पित देवी देवताओ की मूर्तियां बनाकर धर्म के नाम पर न जाने कितने कितने कुकर्म होते रहे हैं। कही उन पर मद्य मास चढाये जाते हैं, कही मूक भेड बकरी आदि पशुओं को खुले आम बलिदान के रूप में मारा जा रहा है, कही देवदासिया चढाई जाती रही है। यहा धर्म के नाम पर अन्ध विश्वासी लोग अपनी कन्याओं को देवदासी के रूप मे भेंट या दान करते रहे हैं। और उनके साथ पुजारियो की जो रास लीलायें होती थीं उनसे तो कलकत्ते का वेश्यालय और देहली का पुराना चावडी बाजार भी लज्जित हो जाता रहा है। व्यभिचार, जुआ खेलना आदि कोई भी दुष्कर्म व अकतव्यकर्म ऐसा बचा हुआ दृष्टिगत नहीं होता जो कि इन मजहबी विषलताओ के कुञ्जो मे न पनपता रहा हो ? कि बहुना लेखेन ? अत धर्म का चोगा पहनाये हुये इन खूनी मजहबो को तो मानव-जीवन के ससार से शीघ्रातिशीघ्र हो निश्शेष कर देना चाहिये जिससे मानव समाज भावी ईर्षाद्वेषाग्नि से अपने जीवन की रक्षा करते हुये सुख शान्ति का श्वास ले सके। इन विषाक्त मजहबी विषलताओं को सहसा उखाडकर भारत भूमि से बाहर फेंक देना ही चाहिये। और शीघ्रातिशीघ्र धर्म नाम श्रेष्ठ गुणो की शिक्षा का प्रचार प्रारम्भ कर देना चाहिये। जिससे मानव समाज और विशेषत विद्यार्थी जीवन का चारित्रिक निर्माण हो सके।

वास्तव मे सत्य यही है कि धर्म रूप श्रेष्ठ गुणो के धारण करने से मनुष्य का प्रत्येक प्रकार से अभ्युत्थान और भला हो जाता है। किन्तु धर्मको त्यागने वाला मनुष्य नष्ट हो जाता है ऐसा मनुस्मृति का लेख है—

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षत।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत॥

(मनु० ८। १५)

जो मनुष्य श्रेष्ठ गुण रूप अपने कर्तव्य रूप धर्म की रक्षा करता है तो धर्म रूप वे श्रेष्ठ गुण ही उस धर्म पालक की भी रक्षा करते हैं। अत. कही मारा हुआ अथवा त्यागा हुआ वह धर्म कभी तुमको मार न दे, इस भय से तुम अपने धर्म का कभी त्याग न करो। प्रत्युत मनसा वाचा कर्मणा अति श्रद्धा और प्रेम के साथ अपने श्रेष्ठ कर्तव्य रूप धर्म का अवश्यमेव पालन करते रहो क्योकि धम का बडा महत्व होता है। लिखा है कि—

यतो धर्मस्ततो जय:

ज्योतिषी लोग जब किसी की जन्म पत्री बनाते हैं तो उसमे शुभ तथा अशुभ ग्रहो का फल भी बता देते हैं और सबके अन्त में लिख देते हैं—

धर्मेण हन्यते शत्रु धर्मेण हन्यते ग्रह।
धर्मेण हन्यते व्याधि. यतो धर्मस्ततो जय॥

अर्थात् चाहे कितना भी अधिक क्रूर से भी क्रूर ग्रह क्यो न हो किन्तु जो व्यक्ति धर्म का पालन करता है वह धर्म के प्रभाव से ही अपने शत्रु को भी नष्ट कर देता है और कोई क्रूर खोटा ग्रह भी उसका कुछ भी बिगाड नहीं सकता है।

धर्मात्मा व्यक्ति के सब रोग शोक शत्रु तथा अनिष्ट कारक ग्रह आदि सब नष्ट हो जाते हैं और उसका सर्वत्र विजय ही होता रहता है। जब धर्म का इतना बडा महत्व है तब उसको छोड देना अथवा उससे विमुख या निरपेक्ष हो जाना तो अपनी मौत को स्वय निमन्त्रण देना ही हो सकता है। साराश यह है कि धर्म उन सत्य एव श्रेष्ठ गुणो का ही नाम है जिनके द्वारा मनुष्य के चारित्रिक जीवन का निर्माण होता है। किन्तु जब से मत-मतान्तर या मजहब ससार मे प्रचलित हुये हैं तब से मानव समाज छिन्न-भिन्न अवस्था हो गया है। इन मजहबो ने मानव समाजको ईर्षा द्वेष की अग्निसे दग्ध कर डाला। इन कुमतो और मजहबो का भूत और वर्तमान इतिहास मानव समाज के रक्त की स्याही से अन्याय, अत्याचार, कत्ले आम के जुल्मो की खूनी तलवार की लेखनी (कलम) से लिखा पडा हुआ है। अत. एक मात्र वैदिक धर्म ही सर्वश्रेष्ठ है।

समान नागरिक संहिता

(पृष्ठ ६ का शेष)

का अर्थ भेद है, यदि किसी वर्ग विशेष को विशेष प्रश्रय दिया जाता है, तो उसे सामान्य स्थिति से पृथक् किया जाता है, यह स्पष्ट है। सत्ता लोलुप राजनीतिज्ञो ने अल्पसख्यक की परम्परा डाल दी है। प्राय सभी दल उन्हे प्रसन्न करने मे प्रयत्नशील दिखाई देते हैं। उत्तर प्रदेश अल्पसख्यक आयोग ने उर्दू के विकास की सिफारिश की है। क्या उर्दू मुसलमानो की भाषा है, क्या अपने प्रदेश तथा अन्य प्रदेशो के सभी मुसलमान उर्दू जानते हैं। जिस उर्दू की कट्टरता ने पाकिस्तान का विभाजन करा दिया, उससे भारत का क्या भला होगा, यह विचार करना आवश्यक है। विपक्ष के नेता श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने घोषणा की है, कि उनकी पार्टी सत्ता मे आने पर अल्पसख्यक आयोग को सवैधानिक आकार प्रदान करेगी। इन सभी को देश के सास्कृतिक स्वरूप की नही, कुर्सी मात्र की चिन्ता है। इस स्वार्थपरता ने ही कट्टरपन्थियो को प्रोत्साहित किया है। श्री सूर्य कान्त बाली ने "अल्पसख्यक आयोग-भडकाते हैं हिन्दू प्रतिक्रियावाद" शीर्षक लेख मे इस सम्बन्ध मे विस्तारपूर्वक चर्चा की है।

कट्टरपन्थी मुस्लिम नेता राजनीतिज्ञो की यथार्थ स्थिति को समझते हैं, इसलिए यथा समय अपनी आकाक्षा की पूर्ति हेतु जोर-जोर से प्रयास करने लगते हैं। १७ अक्तूबर ८८ के नवभारत टाइम्स मे श्री शाहिद रहीम ने उर्दू अखबार शीर्षक अपने लेख मे इस ओर सकेत किया है। अखबारे नौ ने अपने (१४ से २०) अक्तूबर के अक मे बिहार की भाति उत्तर प्रदेश मे भी उर्दू को द्वितीय राज-भाषा बनाने हेतु मुख्यमन्त्री श्री तिवारी जी से अपनी रीति से आग्रह किया है। शायर मलिक जादा मजूर ने ३ अगस्त ८८ को श्री तिवारी को पत्र लिखकर अपने प्रतिनिधि मण्डल से वार्ता करने का निवेदन किया। उत्तर न आने पर द्वितीय पत्र १८ अगस्त को लिखा जिसके उत्तर मे श्री तिवारी जी के सचिव श्री जोशी ने समयाभाव के कारण वार्ता सम्भव नही इस आशय का पत्र भेजा। नई दुनिया (७ से १३) अक्तूबर को दिये अपने साक्षात्कार मे बिहार के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री जगन्नाथ मिश्र ने प्रधानमन्त्री को परामर्श दिया है, कि यदि काग्रेस को मुसलमानों का विश्वास प्राप्त करना है तो अल्पसख्यक आयोग की रिपोर्ट पर तत्काल कार्यवाही करनी चाहिए। श्री मिश्र जी जिस मार्ग पर चलकर मुख्यमन्त्री नही रह पाये उसी मार्ग पर चलने का आग्रह श्री प्रधानमन्त्री जी से किस उद्देश्य से कर रहे हैं यह नही समझ सकते हैं। किसी भी कारण से सीमा से अधिक सुविधा देने का ही यह परिणाम है कि राष्ट्रीयता के स्थान पर फिरका परस्ती पनप रही है। धर्म निरपेक्ष होने पर भी यहा मुस्लिम महिला विधेयक आदि बनाकर धर्म विशेष को प्रोत्साहित किया जा रहा है। उक्त विधेयक का विरोध अनेक मुस्लिम बुद्धिजीवियो ने किया। एक मुस्लिम मन्त्री ने त्यागपत्र तक दे दिया। फिर भी शासन कट्टरपन्थियों के समक्ष झुक गया।

श्री रुश्दी की पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगाकर शासन ने फिर अपनी पूर्व प्रवृत्ति का परिचय दिया है। कुवैत आदि मुस्लिम देशों मे हिन्दुओ को मृतको का दाह सस्कार करने तथा धार्मिक ग्रन्थ पढने की भी छूट नही है। शासन तथा कट्टर पन्थियो ने उन देशो से ऐसा न करने का अनुरोध नही किया। सिक्याग प्रान्त मे चीन शासन तथा मारीशस शासन का अनुगमन यहा भी होना चाहिए। यदि ध्यान न दिया गया तो सविधान का धर्म निरपेक्ष स्वरूप सुरक्षित नही रह सकेगा।

अत अपनी सस्कृति सभ्यता भाषा तथा राष्ट्रीय अस्तित्व की रक्षार्थ धारा ३० और ३७० समाप्त कर समान नागरिक सहिता सभी वर्गों के लिए अनिवार्य कर देनी चाहिए।

आर्यसमाज द्वारा भूकम्प एवं बाढ़ पीड़ितों में कम्बल वितरण

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा धनियों से सहायता की अपील

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा की भूकम्प एवं बाढ़ पीड़ित समिति द्वारा महीनों कपड़ा, खाद्यान्नादि वितरण होने के पश्चात पुन सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती और सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री प० बालदिवाकर हंस नई दिल्ली से पटना पधारे। स्टेशन पर बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री सभामन्त्री जी रामाज्ञा बैरागी ने अपने सहयोगियों के साथ स्टेशन पर अपने नेताओं का भव्य स्वागत किया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती एवं स्थानीय सहयोगियों के साथ दरभंगा रवाना हो गये। स्वामी आनन्दबोध ने आर्यसमाज दरभंगा और आर्यसमाज लहेरिया सराय में क्रमश भूकम्प एवं बाढ़ पीड़ित भाईयों के सहायतार्थ दो वितरण केन्द्रों का उद्घाटन किया।

स्वामी जी ने धनी समाज से अपील करते हुए उनसे अनुरोध किया कि शरदऋतु आने से पीड़ित भाईयों के रक्षार्थ कम्बलों के वितरणार्थ उन्हें अपने पवित्र कमाई को लगाने के लिए खुले दिलसे आगे आना चाहिए। यज्ञानुष्ठान के बाद पीड़ित भाई बहनों में कम्बलों का वितरण कार्य हुआ। यह कार्य अभी जारी रहेगा'

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री प० बालदिवाकर हंस, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री रामाज्ञा बैरागी, सभा के उपप्रधान श्री धर्मदेव आर्य मुंगेर जिले में महिलाओं, विकलांग और रोगियों में स्थानीय महिला आर्यसमाज की मन्त्रिणी श्रीमती विद्यावती जी आर्या, श्री शिवशंकर प्रसाद के सहयोग से कम्बलों का वितरण किया गया। इस सहायता कार्य की प्रशंसा की जा रही है।

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
नया टोला, पटना-४

राम के गुण हम धारें

श्री राम थे वास्तव में भारत की शान।
मानवता के पुंज थे, वे थे पुरुष महान॥

वे थे पुरुष महान, चरित्र उज्ज्वल के स्वामी।
वेदों के मर्मज्ञ, बहादुर नेता नामी॥

सदा जिन्होंने मात, पिता की आज्ञा पाली।
धर्म समझ कर नष्ट किए थे नीच कुचाली॥

देश, धर्म हित सदा, राम ने युद्ध मचाया।
बाली, रावण, कुम्भकरण को मार मिटाया॥

परनारी को सदा, उन्होंने माता माना।
पर धन को था, देव पुरुष ने मिट्टी जाना॥

छुआ छात अरु जाति, पाति का भेद मिटाया।
भिलनी और निषाद, राज को था अपनाया॥

कभी राम ने झूठ, नहीं जीवन में बोला।
पर निन्दा के लिए, कभी भी मुख ना खोला॥

प्रजा के हित, महापुरुष ने विपदा झेली।
दानव दल के सुनो, लहू से होली खेली॥

श्री राम से आज, नहीं भारत में नेता।
फिरें हजारों बने, आज ही वीर विजेता॥

भला इसी में सभी, राम के गुण हम धारें।
"निर्भय" होकर दुष्ट दुष्टों को मारें॥

—पंडित नन्दलाल "निर्भय" भजनोपदेशक
ग्राम पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद (हरि०)

प्रभु प्रार्थना

(१)

हे प्रभुजी, राखो शरण, हम है दास तुम्हारे।
हम बिलख रहे हैं नाथ अब तुम्हारे द्वारे॥
प्रभु तुम हो प्राणाधार, तुम ही हो सर्वाधार।
बीच भवर मे फस गये, प्रभु अब करो किनारे॥
हम पर अति सकट छाये, हम तुम्हारे आसरे।
सकट से हमे उबारो, प्रभु तुम पालन हारे॥
"ब्रह्मानन्द' के तुम ही प्रभु हो एकमात्र सहारे।
अब उद्धार करो प्रभुजी, तुम हो सर्वस्व हमारे॥
हे प्रभुजी, राखो शरण, हम है दास तुम्हारे॥

(२)

हे प्रभुजी, अब सुनलो विनती हमारी।
मानव दानव बन रहा, प्रभु कैसी माया तुम्हारी॥
नित गौवे पर छुरी चल रही, प्रभु क्यो उन्हे बिसारी।
वे हुए खून के प्यासे, कैसी विडम्बना हमारी।
देश को खण्डित कर रहे, वो देश के साथ गद्दारी।
अपने हो रहे पराये, प्रभु की लीला है न्यारी॥
दहेज द्वारा अति शोषित आज हो रही है नारी।
त्राहि-त्राहि मच रही अब विश्व मे अशान्ति है भारी॥
'ब्रह्मानन्द' व्यथित हो रहा, विकट समस्या है सारी।
अशान्ति को दूर करके, हरो प्रभु विपदा हमारी॥
हे प्रभु जी अब सुनलो विनती हमारी॥

—ब्रह्मानन्द जिज्ञासु, अतरदह मुजफ्फरनगर

उद्बोधन

अब तो बन्धु होश मे आओ॥

ऐसा हन्त समय है आया
अपना ही बन रहा पराया
चल रही विदेशियो की माया,
यह रहस्य सबको समुझाओ॥ अब०

काश्मीर का उड़ा रग है;
हुआ सुबद पजाब तग है,
कहो कहा पर ठीक ढग है,
इस सकट को दूर भगाओ॥ अब०

आत्म सस्कृति भी विपन्न है,
निज भाषा सकटापन्न है,
ढग देखि सभ्यता सन्न है,
स्थिति में परिवर्तन लाओ॥ अब०

भेद नीति का है यह नर्तन,
इसने किया देश का कर्तन,
इसका अब तो पुनरावर्तन;
करके बन्द एकता लाओ॥ अब०

—आचार्य रामकिशोर शर्मा
श्री राधाकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय खुरजा

आर्यसमाज की गतिविधियां

मेला गढ़ मुक्तेश्वर वेद प्रचार शिविर

दिनांक १९ से २३ नवम्बर, १९८८ तक मनाया गया

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जिला मेरठ एव जिला गाजियाबाद की ओर से मेला गढ मुक्तेश्वर सन्तर न०-७ मे इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के निर्देशन मे एक विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर के सयोजक थे डा० जयवीरसिंह जी, मन्त्री जिला सभा गाजियाबाद। पाच दिन निरन्तर प्रात और सायकाल गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) डा० भोलाझाल के ब्रह्मचारियो द्वारा वेद पाठ हुआ तथा विशेष यज्ञ सम्पन्न करवाया गया।

इस अवसर पर श्री निरजनदेव तीर्थी के उपदेश तथा श्री शोभाराम जी प्रेमी, श्री हरस्वरूप जी, श्री मनवीर जी, श्री कर्णसिंह जी, श्री तेजपालसिंह जी, श्रीमती आथा जी आदि के भजन हुए। श्री जयनतकुमार (पूर्व पादरी) ने भी भारतवर्ष मे ईसाई षडयन्त्रो का भाण्डाफोड किया।

आर्य समाज तिलकनगर के समाचार

आर्यसमाज तिलकनगर पश्चिमी दिल्ली मे अपनी एक पहचान रखती हैं। इसकी भिन्न भिन्न गतिविधिया दयानन्द आदर्श विद्यालय दैनिक एव साप्ताहिक सत्सग, विवाह, परिवारिक सत्सग, सभाए अति प्रभावशाली तथा रोचक होते है।

इस समाज मे १४-११-८८ से २०-११-८८ तक वेदकथा सप्ताह' मनाया गया। हमारी शिरोमणि सभा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि के प्रमुख विद्वान महात्मा रामकिशोर जी वैद्य द्वारा रात्रि को कथा और उससे पूर्व श्री वेदव्यास जी के भजनोपदेश मनोरञ्जक रहे।

उत्सव

आर्य समाज सल्लापुरा, वाराणसी का ५३ वा वार्षिकोत्सव तिथि मिति मार्गशीर्ष शुक्ल २ सवत् २०४५ वि० तदनुसार दि० ८ दिसम्बर गुरुवार से ११ दिसम्बर ८८ रविवार तक स्थान विक्रोकर कार्यालय का प्रागण, चेतगज वाराणसी मे होगा।

—रामगोपाल आर्य मन्त्री

स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों का सम्मान समारोह सम्पन्न

ग्वालियर २४ नवम्बर। स्वतन्त्रता सग्राम सेनानियो का सम्मेलन व सम्मान समारोह २१ नवम्बर को श्री रामदेव शर्मा महामन्त्री, स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी सघ ग्वालियर के निवास रामनगर मुरार में श्री ब्रह्मदत्त स्नातक पूर्व का० सचिव सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली के मुख्य आतिथ्य एव श्री यशवन्त सिंह कुशवाह पूर्व मन्त्री म० प्र० की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उक्त अवसर पर २५ स्वतन्त्रता सेनानियो का सम्मान श्री रामदेव शर्मा द्वारा खादी की तौलिया श्री फल देकर किया गया।

सम्मेलन को सर्वश्री रामचन्द्र सबटे, बालकृष्ण शर्मा, यशवन्त सिंह कुशवाहा श्यामलाल साहू (टीकमगढ) लीलाधर बाजपेई द्वारा सम्बोधित किया गया। वक्ताओ ने स्वतन्त्रता आन्दोलन की गतिविधियो एव जेल जीवन के रोमाचकारी सस्मरण सुनाते हुए युवा पीढी से अपील की वह देश की एकता व अखण्डता को बनाए रखने हेतु सघर्षशील रहे।

मुख्य अतिथि श्री ब्रह्मदत्त स्नातक (नई दिल्ली) ने अपने प्रेरक भाषण में स्वतन्त्रता सेनानियो से अपील की कि व आज भी देश मे व्याप्त भ्रष्टाचार व आर्थिक शोषण के विरुद्ध सघर्षरत रहें। उन्होने पटियाला धौलपुर व हैदराबाद रियासतो में आर्य समाज के सत्याग्रहो का उल्लेख किया। समारोह का सचालन राजेन्द्र सहाय पूर्वमन्त्री म० भा० आर्य प्रतिनिधि सभा ने किया। उक्त अवसर पर सहभोज भी हुआ।

वेद प्रचार की धूम

आर्य समाज मालवीय नगर नई दिल्ली मे दिनाक २१-१० ८८ से ६-११ ८८ तक वेद कथा व ऋग्वेदीय यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमे आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पडित नन्दलाल निर्भय के मधुर भजन व स्वामी ध्यानानन्द सरस्वती के प्रवचन होते रहे। जनता ने निर्भय जी के भजनो को बहुत ज्यादा पसन्द किया। नवयुवको पर अच्छा प्रभाव पडा।

दिनाक ६ ११ ८८ को 'महर्षि के उपकार' विषय पर सम्मेलन हुआ। जनता को श्री नन्दलाल निर्भय, श्री अर्जुन देव, श्री यशपाल शास्त्री व स्वामी ध्यानानन्द जी ने सम्बोधित किया एव वैदिक पथ पर चलने की प्रेरणा दी।

—देवराज जुनेजा
मन्त्री आर्य समाज मालवीय नगर

स्वामी विद्यानन्द "विदेह" जन्म दिवस सप्ताह में वैदिक-योग साधना शिविर

नई दिल्ली, २० नवम्बर ८८। ब्रह्मलीन पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी 'विदेह' के जन्मदिवस के शुभवसर पर वेद सस्थान सी २२, राजौरी गार्डन मे एक सप्ताह व्यापी वैदिक योग साधना शिविर १४ नवम्बर से प्रारम्भ होकर २० नवम्बर को सम्पन्न हुआ। इस शिविर के आचार्य स्वामी वेदबोध जी थे।

समापन समारोह मे यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त सभा भजन, सगीत एव श्रीमती कृष्णा मल्होत्रा द्वारा प्रार्थना से प्रारम्भ हुई। शिविरार्थियो के प्रतिनिधियो के रूप मे तीन महानुभावो के शिविर के अनुभवों पर व्याख्यान हुए।

—मोहन लाल आर्य

उत्सव

—आर्य समाज बागपत (मेरठ) का वार्षिक महोत्सव दिनाक ९-१०-११ दिसम्बर १९८८, दिन शुक्रवार, शनिवार, रविवार स्थान आर्य समाज मन्दिर बागपत मे मनाया जायगा।

(१) पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, (२) श्री बालदिवाकर हस, (३) स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज, (४) स्वामी विवेकानन्द जी (प्रभात आश्रम), (५) प० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ, (६) श्री सच्चिदानन्द शास्त्री (मन्त्री सार्वदेशिक सभा दिल्ली), (७) श्री माधवसिंह जी, (८) प्रसिद्ध भजनोपदेशक नरदेव आर्य, (९) श्री हरिहर स्नेही कवि आदि आर्य नेता पधार रहे हैं।

वनवासी आर्य महासम्मेलन : ... झांकियां

१ ग्राम व... मई ... यज्ञ ... आगमन का मनोहारी दृश्य

२—मुख्य यज्ञ मण्डप के सामने ... पर एक साथ मन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञोपवीत धारण करने की प्राचीन प्रक्रिया का अनुशीलन

३—आर्य पंडितों द्वारा मन्त्रोच्चारण का मधुर ध्वनि से समूचे सीतापुर का वातावरण पवित्र हो उठा

४—२६ नवम्बर को विशाल शोभा यात्रा में ४० हजार वनवासी युवकों का नृत्य गान तथा वैदिक धर्म की जय जयकार

५—आर्य समाज के इतिहास में सामूहिक पुनर्मिलन शुद्धि संस्कार से राष्ट्र व्यापी नूतन उत्साह।

६—सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का सघन भव्य स्वागत तथा वनवासी सम्मेलन में ५६०० ईसाइयों का सामूहिक शुद्धि संस्कार।

७—देशद्रोही एवं राष्ट्र की अखण्डता को नष्ट करने वाले विदेशी पादरियों को देश से निकालने की जोरदार मांग।

८—श्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती तथा गुरुकुल आमसेना के ब्रह्मचारियों की कार्यक्षमता एवं अनुशासनबद्ध कार्यक्रम के प्रति आर्य जनता में नया उत्साह।

९—राष्ट्रीय एकता अखण्डता तथा प्रभुसत्ता की सम्पन्नता के प्रति की गई प्रतिज्ञा से नई आशा का संचार।

१०—बिलासपुर से रायगढ़—पत्थलगांव एवं सीतापुर तक दुर्गम पहाड़ियों एवं पगडंडियों तथा सड़कों पर रात्रि के अन्धकार में अग्नि प्रज्वलित करके वनवासी स्त्री पुरुषों द्वारा स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा पं० पृथ्वीराज शास्त्री का भावभीना स्वागत।

११—स्वामी ओमानन्द सरस्वती द्वारा ओ३म पताका का उत्तोलन हजारों उपस्थित नर नारियों द्वारा वैदिक धर्म की जय जयकार तथा करतल ध्वनि से वातावरण उत्तेजित।

१२—आर्य समाज बालकोनगर का वार्षिक उत्सव-स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा आर्य समाज मन्दिर का शिलान्यास तथा यजुर्वेद पारायण यज्ञ कार्यक्रम।

चित्र में दिखाई दे रहे हैं श्री पृथ्वीराज शास्त्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती स्वामी ओमानन्द जी श्री विशिकेशन शास्त्री।

शुद्धि के अवसर पर ध्वजारोहण का दृश्य

आर्य वनवासी बन्धु यज्ञोपवीत धारण करते हुए।

गोस्वामी गिरधारीलाल के निधन से हिन्दू समुदाय को गहरी क्षति

दिल्ली २ दिसम्बर।

गोस्वामी गिरधारीलाल जी के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि उनकी मृत्यु से समस्त हिन्दू समाज की गहरी क्षति हुई है।

गोस्वामी जी महामना मदनमोहन मालवीय एवं गोस्वामी गणेशदत्त के पदचिन्हों पर चलते हुए सनातन जगत के सुधार कार्यों में सदा अग्रसर रहते थे हिन्दू समाज में छूआ छूत ऊंच नीच तथा अन्य प्रकार के भेदभाव की प्रवृत्ति से और बुराइयां आगई थीं गोस्वामीजी ने जीवन पर्यन्त उन्हें दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने हरिजनों के लिए हिन्दू मन्दिरों के दरवाजे खोल दिए थे। वे सुधारवादी कार्यों में आर्य समाज के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने में गौरव अनुभव करते थे।

आर्य जगत् उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए परमपिता से प्रार्थना करता है कि शोक संतप्त परिवार को धैर्य और दिवंगत की आत्मा को सद्गति प्रदान करे

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सार्वदेशिक सभा दिल्ली

स्व० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री का जन्म दिवस

फरीदाबाद। १२ दिसम्बर १९८८ को श्रद्धेय आचार्य श्री पं० वैद्यनाथ शास्त्री का जन्मदिवस प्रातः १० बजे फरीदाबाद १६ सेक्टर मकान नं० ६४ में मनाया जायगा। आर्य जन प्रातः १० बजे अवश्य पहुंचें।

—उर्मिला देवी शास्त्री

राज० न० डी० (सी०) १७० सार्वदेशिक साप्ताहिक (११ ? १९८८) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९१
R N 626/57 Licensed to post without prepay ment License No U 93 Post in D P S O.on 9 12 1988

अफ्रीका के अश्वेत वैदिक उपदेशक भारत मे

नइ दिल्ली। प श्चिम उत्तरी अफ्रीका के घनी देश की राजधानी अकरा वदिक मिशन के म त्र पण्डित का म अ क ह म स की यात्रा पर भ रत न आए ह। वे प्रथम अश्वेत व्यक्ति है जो १९ ६ मे वदिक धम का ओर आकृष्ट हुए थे। व अपन सहयोगियो क साथ वह वदिक धम मिशन का चालन कर रह है भारत म वे महर्षि दयान द जीवन म सम्बधित न अ य सस्थाओ व आ य समाज म जाए गे औ प ण्डत ब्रह्मदत्त से शिक्षण भी प्रा त क ग अपन देशवासिय क ब च अपनतवी न समझ जाय अन नाम नही बदला है व डरबन द अफ्रीका म स्वामी सत्यप्रक श जा व प० ब्रह्मदत्त स्नातक के साथ का य कर चके है

अ तरराष्ट्रीय वेदपा० नई दिल्ला ने उनकी सा । यात्रा का प्रब ध नथा य की व्यवस्था की है। अकरा स्थित भारतीय उ चायोग २ वर्षों स उनको वीसा (प्रवेश पत्र) नही द रहा था तब सावदेशिक सभा के प्रध न स्वामी आन दबोध के विदेश म त्रालय को लिखन पर उ हे आन की अनुमति मिला।

—ब्रह्मदत्त स्नातक
सी ४ बी ३ २ बी जनकपुरी दिल्ली
सम्वाददाता (भारत सरकार)
फोन ५६४७५२

ृ मे

ान छात्राओ ने

महान लिया। इस समार ह क अध्यक्षता श्री इन्द्रराज जा प्रधान आय प्रतिनिधि सभा उ०प्र० न की तथा मु य अतिथि के रूप मे उपनिदेशक सूचना विभ ग श्री नवीन च द जी ने भाग लिया।

पुरस्कार वितरण हिन्दी भवन के अध्यक्ष श्री सु दरलाल जी जन की प्रेरणा से समारोह के अध्यक्ष एव मुख्य अतिथि ने पुरस्कार वितरण किए। चल वजयन्ती बी० क० महेश्वरी कन्या स्कूल ने जीती। अपने अपने वग मे प्रथम स्थान रीता शमा (हरिवश राय बच्चन) म न क्षी शर्मा (नीरज) को मिला। शा ता स्मारक कन्या इण्टर कालेज का छात्रा प्रीति (रामधारी सिह दिनकर) तथा उपमा (सुभद्राकुमारी चौहान) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक मण्डल मे श्रीमता लाज महत्ता श्री डा० सुरेशचन्द्र व मनोजकुमार शामिल थे। श्री विष्ण खन्न ने सफल स योजन किया। श्री गजाधर जी तिवारी म त्री ने हि दी भवन म सबका अभिन दन किया। मुख्य अतिथि श्री नवीनच द जी ने अपने उद्बोधन मे बच्चो म कविता के माध्यम से राष्ट्र प्र म भरने की प्रेरणा की

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित ... शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८९] वर्ष २१ अंक ५१] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य पत्र मा० माघ शु० १० सं० २०४५ रविवार १८ दिसम्बर १९८८ | दयानन्दाब्द १६४ दूरभाष २७४७७१ वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ५० पैसे

पत्रकार खुशवन्त सिंह क्या कहते हैं ?

धर्मनिरपेक्ष दल पंजाब मसले का हल

जालन्धर ११ दिसम्बर। जाने-माने पत्रकार खुशवन्तसिह ने पजाब समस्या के समाधान के लिए राज्य मे पजाबियो के एक नये धर्मनिरपेक्ष दल के गठन का सुझाव दिया है। उन्होने कहा कि नये सन्दर्भो मे यह जरूरी भी है क्योकि काग्रेस (इ) अकाली दल और भारतीय जनता पार्टी समस्या का समाधान ढूढने मे असमर्थ है।

श्री खुशवन्तसिह आज यहा शहीद परिवारकोष द्वारा आयोजित समारोहमे बोल रहेथे। यह कोष हिन्दसमाचार पत्र समूह केसम्पादक स्वर्गीय रमेशचन्द्र ने आतकवाद परिवारो के शिकार की सहायता के लिए १९८३ मे कायम किया था। उन्होने कहा कि नयी पार्टी मे राज्य के हिन्दुओ और सिखो को बराबर प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए। श्री सिंह ने इस अवसर पर ८९ परिवारो को कोष की इक्कीसवी किश्त के ५.८० लाख रुपए वितरित किये।

श्री खुशवन्त सिंह ने कहा, 'पजाब के लोग आधे सिख और आधे हिन्दू हैं इसलिए उनमे फूट नही डाली जासकती। उन्होने कहा कि दिल्ली मे १९८४ के दगो से यह साबित हो गया। उन्होंने कहा, हम खालिस्तान कदापि नही बनने देगे क्योकि इससे सिख समुदाय और पजाब दोनो ही खत्म हो जायगे।

पजाब समस्या के लिए काग्रेस (इ) और अकाली दल दोनो को दोषी ठहराते हुए श्री खुशवन्तसिह ने अकालियो पर आरोप लगाया कि वे अपने अविवेकपूर्ण कार्यो से सिख समुदाय के नुकसान मे लगे है। श्री खुशवन्तसिह ने कोष के लिए पाच हजार रुपए का दान भी दिया।

आर्य महासम्मेलन अलवर

आर्य महासम्मेलन अलवर का उद्घाटन ३० दिसम्बर १९८८ को प्रात १०॥ बजे लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड करेगे। शताब्दी समारोह की तैयारी बड उत्साह पूवक की जा रही है।

बाबरी मस्जिद विवाद शांति से सुलझ जाए

शहाबुद्दीन को केन्द्र की पहल मंजूर

लखनऊ, ११ दिसम्बर। बाबरी मस्जिद सघर्ष समिति (शहाबुद्दीन गुट) राम जन्मभूमि के मसले पर केन्द्र के किसी भी आम राय के फैसले को मानने को तैयार है। यह फैसला आज उत्तर प्रदेश बाबरी मस्जिद सघर्ष समिति की पहली बैठक मे किया गया। दूसरी तरफ शहाबुद्दीन विरोधी धडा २२ दिसम्बर को प्रधानमन्त्री निवास पर धरना देने पर आमादा है। इस सिलसिले मे आल इण्डिया बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी की २१ दिसम्बर को दिल्ली म बैठक होगी।

सैयद शहाबुद्दीन बाबरी मस्जिद का शान्ति पूर्ण हल चाहते है। पूरे धैर्य के साथ मामले को सुलटाने मे उन्हे सरकार की नीति और इरादे मे कोई खोट नही नजर आता है। फौरन आर-पार का फैसला चाहने वाले गरम लोगो की बाबत उन्होने कहा कि चालीस साल इन्तजार करने के बाद चार महीने सरकार को दिए जा सकते है। जब हमे यह भरोसा हो जाएगा कि सरकार मामले को सुलटाने मे नाकारा साबित हो रही है तब हम लोकतान्त्रिक और शान्ति पूर्ण आन्दोलन का रास्ना फिर अख्त्यार करगे। हमने अभी आदोलन के रास्ते खोल रख है।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का भारी जलूस २५ दिसम्बर को श्रद्धानन्द बलिदान भवन से प्रारम्भ होगा। खारी बावली नया बास, लालकुआ, चावडी बाजार, नई सडक घण्टाघर चादनी चौक, दरीबा कला होता हुआ आर्यो का यह जलूस लालकिला मैदान मे सार्वजनिक सभा के रूप को धारण करेगा।

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक सभा की स्वीकृति के बिना महासम्मेलन अवैधानिक

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा का निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का शताब्दी समारोह तथा आर्य महासम्मेलन दिनाक ३०, ३१ दिसम्बर ८८ व १ जनवरी १९८९ को बडे धूमधाम से अलवर (राजस्थान) मे मनाया जा रहा है हमारा समस्त आर्यजगत से विनम्र निवेदन है कि इस समारोह मे सम्मिलित होकर तन मन धन से सहयोग देकर सम्मेलन को सफल बनावे। हमारी यह निश्चित मान्यता है कि कोई भी आर्य सम्मेलन चाहे वह किसी भी स्तर का हो हमारी शिरोमणि सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अनुशासन एव तत्वाधान मे ही होना चाहिए इसके विपरीत यदि कोई भी आर्य सम्मेलन होता है तो वह आर्य जगत के स गठन के हित मे नही है एव ऐसा कोई भी सम्मेलन सम्पूर्ण आर्यजनो को अमान्य भी होना चाहिए।

छोटू सिंह — प्रधान
ओमप्रकाश कवर — मन्त्री

महान नेता स्वामी श्रद्धानन्द

अनमोलछन्द

जो मानव ससार मे करते है शुभ काम।
कर जाते है वे अमर अपना जग मे नाम॥
अपना जग मे नाम, धन्य है उनका जीवन।
गाते हैं यश गान, प्रेम से उनका सज्जन॥

स्वामी श्रद्धानन्द, वास्तव मे थे नेता।
मानवता के पुज, बहादुर वीर विजेता॥
देश, धर्म हित सदा, जिन्होने विपदा, झेली।
वैरी दल के सुनो, लहू से होली खेली॥

माना उनकी बात, छोडदो मदिरा पीना।
तुम मर्दों की तरह, जगत मे सीखो जीना॥
छाडो खाना मास, महा मानव कहलाओ।
करो सदा शुभ कर्म, अमर जग मे हो जाओ॥

प्यारे भारतवर्ष मे, था अग्रेजी राज।
होत थे भारी जुलम, था सब दुखी समाज॥
था सब दुखी समाज, तभी श्रद्धानन्द आए।
विपदाओ से कभी, नही स्वामी दहलाए॥

आजादी का बिगुल, बजाया देश जगाया।
काप उठे अग्रेज, वेद का नाद बजाया॥
अबला, दीन, अनाथ, जनो के बने सहारे।
हुए वीर बलिदान, धर्म पर नेता प्यारे॥

अगर यहा आते नही, स्वामी श्रद्धानन्द।
गाए जाते अब नही, सामवेद के छन्द॥
सामवद के छन्द, नही पढते नर, नारी।
विद्या पढती नही, कभी ललनाए प्यारी॥

विधवाओ का अरुण, क्रन्दन रहता जारी।
ठग जाती यहा, रोज अनगिनती नारी॥
ऋषियो की सन्तान, विश्व मे नजर न आती।
सिर पर चोटी नही, कही ढू डे से पाती॥
स्वामी श्रद्धानन्द का मानो सब अहसान।
वेदा के पथ पर चलो, होगा तब कल्याण॥

—प० नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक
ग्राम पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बालदिवाकर हस और बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री रामाज्ञा वैरागी ने दरभगा, मधुबनी और मु गेर जिलो के ग्रामीण क्षेत्रो मे कपडे, चावल और कम्बल बाटे। लगभग १ मास इन क्षेत्रो की निरन्तर सेवा कर दिल्ली लौट आये।

तख्त केशगढ़ साहब के जत्थेदार ग्रन्थी बलवान सिंह की हत्या

चण्डीगढ ६ दिसम्बर पजाब मे आतकवादियो ने तख्त केशगढ साहब के जत्थेदार बलबीर सिंह को रोपड जिले के अगराली गाव के पास गोरिदाकरली रोड पर गोली मारकर हत्या कर दी। जत्थेदार बलबीर सिंह पाच मुख्य सिख ग्रथियो म से एक थे। आतकवादियो के हमले मे जत्थेदार बलबीर सिंह का ड्राइवर तथा अगरक्षक घायल हो गए।

जत्थेदार बलबीर सिंह अपनी कार से जगराव (लुधियाना जिला) से आनन्दपुर साहिब (रोपड जिला) आ रहे थे। रास्ते मे आतकवादियो ने एक गन्ने के खेत से उनकी कार पर गोलिया चलाई। एक गोली उनके सिर पर लगी जिससे उनकी घटना स्थल पर ही मौत हो गई गोलिया चलने से उनका ड्राइवर कार पर नियन्त्रण खो बैठा और कार एक पेड से जा टकराई जिसस डाइवर तथा अगरक्षक घायल हो गए।

आर्य युवा क्रान्तिकारी सभा का गठन

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के रूप मे एक दिवसीय समारोह दि० ९-११ ८८ दिन बुधवार का नौव गढो मु गर (बिहार) मे उत्साहित युवका द्वारा आर्य युवा क्रातिकारी सभा' सभा का गठन किया गया। महर्षि दयानन्द द्वारा राष्ट्र कल्याण की योजना एव उनके द्वारा प्रतिपादित वैदिक आदर्शो पर प्रकाश डालते हुए युवको को कर्म पथ की ओर उत्प्रेरित किया गया तथा नि स्वार्थ भाव म आगे बढन का सकल्प लिया है। समारोह का उद्घाटन श्रीमती ललितादेवी जी आर्या एम ए उपप्रधान आर्य समाज भागलपुर द्वारा सम्पन्न किया गया।

—वीरेन्द्र कुमार आर्य

सार्वदेशिक सभा द्वारा भूकम्प तथा बाढ़ पीड़ित-सेवा सहायता कार्यक्रम सफल

हंस और वैरागी दरभंगा मधुबनी और मुंगेर के ग्रामों में सेवार्थ पहुंचे

सर्वत्र आर्य समाज की जय-जयकार

पिछले दिनो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हस १८ नवम्बर को दिल्ली से पटना पहुचे। वहा से आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार तथा बाढ तथा भूकम्प पीडित सहायता समिति के अधिकारियो के साथ दरभगा व लहेरिया सराय को प्रस्थान किया। श्री स्वामी जी ने दरभगा यज्ञ मे सम्मिलित होकर कहा कि यज्ञ-सुखी, स्वस्थ तथा दीर्घ जीवन का आधार और हमारी प्राचीन ऋषि निर्मित प्रणाली है। स्वामी जी ने वहा यज्ञ के पश्चात् सैकडो भूकम्प पीडितो मे अन्न तथा वस्त्र का वितरण किया।

लहेरिया सराय मे स्वामी जी ने ध्वजारोहण करते हुए कहा कि ओ३म् ध्वज का रग प्रकाश, त्याग तथा परोपकार का सन्देश देता है। यही आर्य समाज के कार्यक्रमो का आधार है। यहा पर स्वामी जी ने दूर देहातो से आये हुए असहाय तथा विकलाग व जरूरतमद लोगो के बीच अन्न तथा वस्त्रो का वितरण किया। अन्यत्र व्यस्तता के कारण स्वामी जी को तुरन्त दिल्ली लौटना पडा आगे अन्य क्षेत्रो मे सहायता वितरण कार्य के लिए श्री बाल दिवाकर हस और आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के मन्त्री श्री रामाज्ञा वैरागी जी को आदेश दे गए थे। लहेरिया सराय मे स्वामी जी का जोरदार स्वागत तथा अभिनन्दन हुआ। आर्य समाज की जयजयकार से आकाश गू ज उठा।

१५ दिनो तक निरन्तर सहायता वितरण का कार्य चला

सभामन्त्री श्री रामाज्ञा वैरागी और श्री बाल दिवाकर हस लगातार १५ दिनो तक सुदूर गावो मे जाकर असहाय और पीडित लोगो के बीच अन्न, वस्त्र तथा कम्बलो का वितरण करते रहे— इन दोनो ने ग्राम बहादुरपुर, कविलपुर, गनौली, वन्ती, मनिहारी, शिवदाहा, बेऊटी, सेलहवा, रिबा, पैगम्बरपुर, नरमा, नवादा, मिल्कीचक, मैरापट्टी, वाजिदपुर, केरवागाढी, उधोपट्टी, वागला तथा सोल आदि मे घर-घर पहुचकर निर्धन व असहाय परिवारो की सूची बनाकर वितरण का शानदार कार्य किया।

इसके पश्चात् आप लोगो ने मधुवनी तथा रजौली के ग्रामो मे जाकर कम्बलो का वितरण किया। जब कम्बल वितरित किए गए तो लोग प्रसन्नता से उछल पडे। वहा से जमालपुर तथा मु गेर मे वितरण कार्य के लिए श्रीमती विजयावती आर्या के भवन को केन्द्र बनाया गया। वहा भी कम्बलो तथा वस्त्रो का वितरण किया। इस सम्पूर्ण क्षेत्र मे आर्य समाज का नाम जनता की जिह्वा पर मुखरित हो उठा है क्योकि सुदूर एव दुर्गम स्थानो मे आर्य समाज के पूर्व किसी भी सामाजिक सगठन ने झोपडियो मे जाकर जनता के दुख-दर्द को जानने का प्रयत्न नही किया।

उक्त दोनो महानुभावो के साथ बिहार सभा के सहमन्त्री शिवशकर प्रसाद, श्री रामचन्द्र आर्य तथा श्रीमती विजयावती का पूरा सहयोग रहा। वितरण कार्य करके श्री हस जी और श्री वैरागी जी बिहार से सीधे दिल्ली पहुच चुके है वहा सहायता कार्यक्रम की अगली योजना पर स्वामी जी से विचार विमर्श करगे।

बिहार भूकम्प तथा बाढ पीडित
सहायता समिति

स्वतन्त्रता सग्राम के अमर सेनानी, महान् राष्ट्र भक्त, एकता के प्रतीक, गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक, आर्य जगत् के महान् संन्यासी

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

जगदीशप्रसाद एरन आर्य एम.ए बी.टी. नीमच

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बचपन का नाम मु शीराम था। आपका जन्म जालन्धर जिले के तलवन ग्राम की पवित्र भूमि मे हुआ था। फाल्गुन कृष्ण १३ सवत् १८१३ को यह पुण्य नक्षत्र लाला नानकचन्द जी के घर उदय हुआ। आपके पिताजी सयुक्त प्रान्त मे पुलिस के अधिकारी थे। मु शीराम जी अपने चारो भाइयो मे सबसे छोटे थे।

मु शीराम जी की माता जी बडी धर्म परायण व ईश्वर भक्त थी माता पिता की धार्मिक वृत्ति का मु शीराम पर असर तो पड़ा किन्तु नगर कोतवाल के पुत्र होने से कुछ स्वेच्छाचारी हो गये व कुसग मे फस गय। कई प्रकार के दुर्व्यसन आपको लग गये। शरीर रोगी हो गया। किन्तु जब लखनऊ म महर्षि दयानन्द के प्रवचन सुने तो जीवन ही बदल गया।

१८५७ के स्वतन्त्रता सग्राम मे पजाब की सेना ने अग्रेजो का साथ दिया था तब से अग्रेजी साम्राज्य को यह विश्वास हो गया कि पजाब की भूमि मे वातावरण अग्रेजो के अनुकूल है, इसलिये वहा अग्रेजी हुकूमत के बीज बोये जाने का षडयन्त्र रचा गया किन्तु महर्षि दयानन्द की क्रान्तिकारी विचार धारा के सम्पर्क मे आकर दो तेजस्वी राष्ट्र पुरुषो लाला लाजपतराय व स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन अग्रेजी राज्य को नष्ट करने के लक्ष्य पर केन्द्रित हो गया। स्वामी श्रद्धानन्द की शक्ति अग्रेजियत नष्ट करने मे लग गई।

स्वामी जी जानते थे कि विदेशी शासन से अधिक विदेशी भाषा विदेशी सस्कृति और सामाजिक कुरीतिया अहितकर है। उस समय विदेशी शिक्षा दीक्षा पजाब के युवको को न केवल सस्कार हीन व चरित्र हीन बना रही थी अपितु देशद्रोही भी बना रही थी। स्वामी जी ने अपने तप, त्याग व कर्मठ व्यक्तित्व से उस विषैली आधी का मु ह मोड दिया।

आप कार्य क्षेत्र मे उतर पडे। आपने ही सबसे पहले पजाबियो

(शेष पृष्ठ ४ पर)

पंडित जवाहरलाल नेहरू की पुस्तक डिस्कवरी आफ इंडिया में आर्यों के प्रति गलत धारणा उत्पन्न की है

बम्बई, ४ दिसम्बर। कुछ विद्वानो की राय है कि टीवी सीरियल भारत की खोज' से इस गलत फहमी को हवा मिलती है कि आर्य हमलावर के रूप मे भारत आए थे और उन्होंने सिंधु घाटी की सभ्यता को बरबाद कर दिया था।

ठाणे के 'इन्स्टीटयूट आफ ओरियंटल लर्निंग' के निदेशक डा० विजय वेडेकर ने कहा है कि आर्यों के भारत पर हमले की परिकल्पना के पीछे कोई वैज्ञानिक मानवशास्त्रीय या पुरातत्व शास्त्रीय आधार नहीं है।

डा० वेडेकर के अनुसार वेदो से लेकर १७वीं सदी तक के भारतीय साहित्य मे आर्य शब्द का न तो जाति के रूप मे प्रयोग हुआ है और न ही इस प्रकार के किसी हमले का ही जिक्र है। 'आर्य' शब्द का प्रयोग श्रेष्ठ और सभ्य व्यक्ति के लिए किया गया है। 'इ साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' में भी आर्य शब्द का अर्थ 'श्रेष्ठ' दिया गया है। इ साइक्लोपीडिया अमेरिकाना' के अनुसार भाषा वैज्ञानिक मैक्समूलर ने भारतीय-यूरोपीय' भाषा परिवार 'आर्य का नाम दिया था। इतिहासकार जीवन कुलकर्णी ने बताया है कि मैक्समूलर ने ही बाद में १८६१ में भाषा विज्ञान पर एक भाषण के दौरान एक जाति विशेष को 'आर्य नाम से पुकारा। मैक्समूलर की इस गलती को उनके समकालीन इसाक टेलर ने १८९२ मे छपी 'आर्यों का मूल स्रोत नामक पुस्तक मे सुधारा।

ब्रिटिश और अमेरिकी विशेषज्ञो के अनुसार फ्रांसिसी लेखक काउन्ट जोसेफ आर्थर डी गोबेनेऊ ने पहली बार १८५४ में अपनी किताब मे 'आर्य' शब्द को एक जाति का अर्थ दिया। उन्होने दावा किया कि श्वेत जाति सभी जातियो मे श्रेष्ठ है और आर्य श्वेतो मे भी श्रेष्ठ हैं। १९२९ के बाद मानव-शास्त्रियो ने इस धारणा का खण्डन किया पर हिटलर ने इसे बहुत कट्टरता से अपनाया। यही धारणा अनार्यों और यहूदियो को मिटाने की नाजी नीति का आधार बनी।

डा० वेडेकर के विश्लेषण के अनुसार श्वेत जाति की श्रेष्ठता के मिथक का प्रभाव विलियम जोंस, कोलब्रुक और विल्सन जैसे भारत विदो पर भी पड़ा। इसी कारण इन लोगो ने वेदो, भारतीय काव्यों, दर्शन, गणित और चिकित्सा के विकास का श्रेय आर्यों को दे दिया। डा० वेडेकर के अनुसार आर्यों के बारे मे पंडित नेहरू की अवधारणा पश्चिमी चिंतन पर आधारित थी।

ऋग्वेद मे अश्वमेध यज्ञ का जिक्र आने और आर्य सेनाओ मे घोडो की मौजूदगी के कारण पश्चिमी भारतविद इस नतीजे पर पहुँच गये कि ऋग्वेद काल से भारत मे आर्य रहे होंगे। यह सिंधु घाटी की सभ्यता के बाद का युग था। पर जेपी जोशी के नेतृत्व मे हुई खुदाई मे मिली घोडो की हड्डियो व उनकी कार्बन डेटिंग से पता लगता है कि घोडे ईसा से २३१५ साल पहले भारत मे मौजूद थे। यह खुदाई कच्छ में हडप्पा सभ्यता वाली जगह पर हुई थी। यह रपट १९७० के दशक मे छपी किताब 'भारतीय पुरातत्व-शास्त्र एक समीक्षा' मे प्रकाशित हुई थी।

डा० आरके मुखर्जी ने अपनी किताब 'हिन्दू सभ्यता' मे लिखा है कि उत्तर-पश्चिमी या भारत के बाहर किसी आर्य आक्रमण की भारतीय परम्परा को जानकारी नहीं है। दरअसल, उत्तरी पश्चिमी सीमा से आर्य यहा से बाहर जरूर गये थे। एक पश्चिमी विद्वान और गुरनी ने आर्यों के एक कबीले के पश्चिम की तरफ जाने की बात लिखी है। इस कबीले के पास घोड़ पालने और उनकी नस्ल सुधारने का विशेष ज्ञान था।

डा० वेडेकर ने नेहरू की लेखन प्रतिभा का लोहा जरूर माना है, पर यह भी कहा है कि डिस्कवरी आफ इंडिया' को ज्यादा से ज्यादा पश्चिमी इतिहासकारो के नतीजों के आधार पर तैयार किया गया विवरण ही माना जा सकता है। इसलिये 'भारत की खोज' सीरियल भारत के आधिकारिक इतिहास के रूप मे नहीं पेश किया जाना चाहिए। डा० वेडेकर ने सीरियल मे आर्यों के फूहड़ चित्रण पर भी एतराज किया है। सीरियल मे आर्यों के सिंधु घाटी की शांति प्रेमी जनता के जीवन में दखल देने वाले लडको के किनारे घेरे रहने वाले लोगो के रूप में दिखाया गया है।

आर्यसमाज द्वारा सहायता

(पृष्ठ ३ का शेष)

मे हिन्दी के प्रति प्रेम जाग्रत किया व बहुचर्चित 'सद्धर्म प्रचारक' समाचार पत्र को उर्दू से हिन्दी मे कराया। पजाब को अ ग्रेजी या अन्य किसी विदेशी भाषा से मुक्त कराने का काम सर्व प्रथम आपने किया। पजाब की प्रत्येक प्रगति के प्रेरणा स्रोत स्वामी जी थे। वे सत्य के निर्भीक सेनानी थे। जिन आदर्शों की प्राप्ति को उन्होने जीवन का लक्ष्य बनाया उन्हे प्राप्त करने के लिये जीवन का सब कुछ लूटा दिया। वीर योद्धा की तरह वे सग्राम मे कूद पडे और सर्वस्व की आहुति देकर सत्य की रक्षा की।

कार्य क्षेत्र बदलते रहे, किन्तु आपकी समर्पण भावना अपरिवतन शील रही। सामाजिक क्षेत्र मे जाति पाति के विरुद्ध आवाज बुलन्द की तो सबसे पहले अपने सब लडके, लडकियो के विवाह जाति-पाति के बन्धन तोडकर योग्यतानुसार गुण कर्मानुसार किया। आपका विश्वास था कि उसके बिना हिन्दू समाज स्वस्थ नही हो सकता न राष्ट्रीय एकता की इमारत खडी हो सकती है घने जगल मे गुरुकुल की कुटिया बनाई तो सबसे पहले अपने पुत्रो को उसके अर्पित किया, स्वतन्त्रता सग्राम का नेतृत्व किया तो दिल्ली के चादनी चौक मे फिरगियो के सामने सीना खोल दिया। हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए कदम बढाया तो जामा मस्जिद के मच पर खडे होकर वेद मन्त्रो के घोष के बाद नमाज के लिए एकत्र हुए मुसलमानो को राष्ट्रीय एकता का सन्देश दिया और ईद के दिन हिन्दुओ को भी उदार होने की प्रेरणा देते हुए कहा कि तुम्हारा धर्म प्रेम और उदारता की शिक्षा देता है। छोटी-छोटी बातो पर हठ करना कायरता है।

आप शुद्धि सभा के प्रधान थे। रात दिन राष्ट्र व समाज सेवा मे लगे रहते थे। ऐसे स्वतन्त्रता सग्राम के कर्णधार, महान् समाज सुधारक व राष्ट्र भक्त को एक धर्मान्ध नर पिशाच ने २३ दिसम्बर १९२६ को पिस्तौल से गोली मार दी और यह देव पुरुष हमारे बीच से उठ गया।

आपको श्रद्धाञ्जलि देत समय महात्मा गाधी ने कहा था "वे वीरता तथा साहस के मूर्त रूप थे। वे वीर सैनिक थे। वे वीर के समान जिये और वीर के समान मरे, उनकी मृत्यु से भारत माता ने एक सच्चा सपूत व रत्न खो दिया।"

यजुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ

श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय ११९ गौतमनगर नई दिल्ली-४९ मे यजुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ दिनाक २७ नवम्बर रविवार से १८ दिसम्बर रविवार १९८८ तक सम्पन्न होगा। जिसमे निम्न महानुभाव पधार रहे हैं। ब्रह्मा श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ध्वजारोहण चौ० दलीपसिंह जी प्रधान वेदविद्यालय मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल जी आर्य, डा० इन्द्रनारायण जी हाथी दात वाले, चौ० मामचन्द तवर श्री रामचन्द्रजी विकल (सदस्य राज्य सभा) आशीर्वाद एव प्रवचन श्री डा० सत्यकेतु जी विद्यालकार, श्री प०- क्षितीश जी वेदालकार

हेय-प्रेय से श्रेय के पथ दृष्टा स्वामी श्रद्धानन्द

देवनारायण भारद्वाज, एफ-४२ मानसरोवर कालोनी रामघाट मार्ग, अलीगढ़

भारत के समृद्ध प्रान्त पंजाब के जनपद जालन्धर के पूर्वी कोने पर शतद्रुज नदी के किनारे स्थित उपनगर तलवन मे फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी स० १९१३ वि को श्री नानक चन्द के घर जन्मे शिशु का राशि नाम पाधाजी ने बृहस्पति रखा किन्तु जीवन मे वह मुन्शीराम नाम से परिचित हुआ।

मुन्शीराम के परदादा सुखानन्द यथा नाम तथा गुण सुख और आनन्द की मूर्ति थे। इनके दादा गुलाबराय सदैव हरिभक्ति मे लीन रहते थे और और कपूरथला मे रानी हीरा देवी के मुख्तारकार थे। इन्होंने महाराजा नौनिहाल सिंह के शासनारूढ होने पर उनके द्वारा दिए गये प्रलोभनो को ठुकराते हुए रानी साहिबा के साथ जालन्धर जाना स्वीकार किया। इसी निर्भय वीर ईश्वर भक्त के छ पुत्रो मे मुन्शीराम के पिता गुलाबराय सब से बड़े थे, जिन्होंने चौदह वर्ष की आयु मे ही शिवपूजा अपने दादा सुखानन्द से सीख ली थी जो जीवन भर चलती रही। ऐसी प्रतिष्ठा, निष्ठा, श्रेष्ठता की पैतृक परम्परा मे मुन्शीराम का अवतरण हुआ था।

मुशीराम के पिता नानक चन्द ने कपूरथला के वजीर से कहा सुनी हो जाने पर थानेदारी को त्याग दिया। स्यालकोट मे ठगी, डकैती विभाग के कोषाधिकारी का पद अपने अग्रेज अधिकारी को खरी खरी सुनाकर छोड दिया। अमृतसर की तहसील के मुहासिब बने किन्तु घूस की दुर्गति देखकर वहा भी नही टिक पाये। अन्त मे लाहौर मे चौकीदारो के बख्शी नियत हुए और पुन अग्रेजी शासन की सेवा मे आ गए और निरन्तर अपने पद मे पदोन्नति पाते हुए वरिष्ठ पुलिस अधिकारी बन कर हिसार, मेरठ, बरेली, बदायू, काशी-बादा, मिर्जापुर, मथुरा, खुर्जा आदि आदि स्थानो पर स्थानान्तरित होते रहे। इन्ही के साथ मुशी राम भी स्थान स्थान की हवा खाते रहे।

मिर्जापुर में मुंशीराम ने अपने पिता के अर्दली सार्जेन्ट जोखू मिसिर (मिश्र) की लीला देखी। देवी पर जो बकरे चढते उनमे से सात के सिर मिसिर जी को पेट पूजा के लिए भेंट मे आते। सात बकरो के सिर, कण्डे की आग, मिट्टी की हडिया, नमक हल्दी सभी इन्हे बिना मूल्य मिल जाता था—हा पाव भर आटा मोल लेना पडता था। जोखू मिसिर जितने लम्बे उतने ही चौडे थे सभी आहार का सफाया कर थाली पोछकर और कुल्ला कर तोंद पर हाथ फिरा दिया करते थे। एक दिन हडिया पकते-पकते पिताजी का नौकर चिमटे से चिलम मे इनके चूल्हे से आग धर लाया। मिसिर जी आग बबूला हो गए और पिताजी के कारण पूछने पर बताया "अरे सरकार! हम आपन धरम कबहूँ नाही छोडा, अरे झूठ बुआला, जुआ खेला, गांजा का दम लगाया, दारू चढावा, रिश्वत लिहा, चोरी दगाबाजी कहा—कौन फन फरेब बाटे जौन हम नाही किहा—मुल सरकार। आपन धरम नाही छोडा।" यह देख सुन पिताजी तो मुस्काते हुए चले गये किन्तु मुन्शीराम खूब हसते रहे और धर्म के इस विरोधाभास पर विचारशील हुए।

इनके पिताजी पुन. काशी आ गए। पौष स० १९३० वि० मे मुशीराम का प्रवेश क्वींस कालिज मे हुआ। कालेज के प्रिंसिपल ग्रिफिथ साहब ने बाल्मीक रामायण तथा वेद-मन्त्रो का अनुवाद अग्रेजी मे किया था। कुछ जय नारायण कालिज मे बीता, शेष ज्येष्ठ मास स० १९३४ तक सारा समय क्वीस कालिज मे ही पढते रहे। विद्वत्‌ दल जिसकी छाया मे मुशीराम ने काशी के साढे तीन वर्ष व्यतीत किए थे—शुष्क पुस्तक पाठ के अतिरिक्त एक भी शिक्षा जीवन-सुधार के लिए नही प्राप्त कर सके। इनका स्वभाव "गगा गए गगा दास-यमुना गए- यमुना दास" का काशी मे बन गया। यहीं पर इन्हें उपन्यास पढने--और लिखने का व्यसन बन गया।

पिताजी के बलिया चले जाने के बाद भी मुंशीराम का काशी आना-जाना बना रहता था। यहाँ पर बह्म विद्या-अभ्यास प्राप्त किया वहा पाप सागर मे गोते भी खाए। ये अखाडे मे जाते और गगा स्नान भी नियमित करते। गगा का किनारा आठ बाढ़ से हिल गया था और गुफा सी बन गई थी। इसमे एक नगा साधु रहता था। नियम से प्रथम प्राप्त भोजन को दिन मे एक ही बार करता था। अस्तु सैकडो स्त्री पुरुष उत्तम से उत्तम भोजन उसको भेंट करते। मुन्शीराम ने वहा टहलते हुए गुफा पर एक स्त्री की चीख सुनी, दौड कर देखा तो वही नगा बाबा एक स्त्री को गुफा के अन्दर खीच रहा था और वह विरोध स्वरूप चीख रही थी। अन्दर का पिशाच बडा बलिष्ठ और कामान्ध था। अन्य व्यक्तियो की सहायता से स्त्री को बचाया और घर पहुँचाया। लौटकर देखा तो उस पिशाच को जूतो की मार पड रही था।

काशी में अंग्रेजी उपन्यास मद्यपान और मैथिल ब्राह्मण के साथ जुए के फड पर भी पहुँच गए--मुन्शीराम। इनके पिताजी की शिक्षा थी कि जब जीत हो तो उठ खडे हो। एक रात्रि दो सौ रुपए हार गए, जैसे ही चार रुपए से कुछ अधिक जीते कि उठ खडे हुए। जुए के गिरे हुए साथियो की गन्दी बोल चाल से इन्हे उसी रात्रि घृणा हो गई और एक दम इससे किनारा कर लिया।

पौष १९३२ वि० के अन्त मे दूर तक टहलते हुए मुन्शीराम विश्वनाथ जी के मन्दिर पर पहुँच गए। पहरे वालो ने इनको दर्शनार्थ भीतर जाने से रोक दिया। पूछने पर पता चला कि रीवा की रानी दर्शन कर रही हैं, उनके चले जाने पर द्वार खुलेगा। पिता की अर्दली मे रह चुके सिपाही ने इनको खिसियाना देखकर मौढे पर बैठा तो लिया किन्तु इनके मन मे मूर्ति पूजा के प्रति वितृष्णा हो गई और पहरदार के बुलाये जाने के बाद भी ये बिना दर्शन किये घर वापस आ गये। रात भी जगते बीती और मन मे ऊहा पोह चलती रही हिन्दू मूर्तिपूजा के प्रति ईसाईयो की दलीले भी स्मरण हुई।

मुन्शीराम को मूर्ति पूजा से घृणा ही गई। प्रोटेस्टेन्ट ईसाइयो की दलीलें भी अधकचरी मालूम हुई, किन्तु रोमन कैथोलिक पादरी कैथोलिक पादरी की बातो मे अधिक विनयशीलता, शान्ति एव सहिष्णुता मिली। इनकी धार्मिक संस्थाओ एव प्रार्थना सभाओ का मुन्शीराम पर विशेष प्रभाव हुआ और एक फादर लीफ से इतने मोहित हुए कि रोमन कैथोलिक विधि से बपतिस्मा लेने को तैयार हो गए। एक ही मित्र को इनका यह निश्चय ज्ञात हुआ किन्तु उसने भी नही रोका। मुन्शीराम ने बपतिस्मा की तिथि तय करने के लिए फादर लीफ से भेंट हेतु उनके कमरे का पर्दा उठाया तो फादर वहा नही थे, किन्तु कोई दूसरा पादरी एक ब्रह्मचर्य वस्त्र धारिणी नन के साथ घृणित दशा मे मिले और मुन्शीराम उल्टे पैर लौट आये--फिर वहा जाने का नाम नही लिया।

दुलहडी के दिन सायकाल इनको सूझी कि गुण्डे का रूप धारण करना चाहिए। ऊचा तक धोती पहनी दुपट्टा डाल, सिर की चोटी खडी बाध, नगे सिर कमर मे छुरी लटका हाथ मे डण्डा लिए चार साथी एक-एक इक्के पर दो-दो बैठ चल दिए। भीड मे जा घुसे, मारपीट की। पुलिस के आने पर चुपचाप भाग आए। पुन गुण्डे का रूप न धारण करने का प्रण किया, किन्तु दो दिन बाद ही कुछ और सूझी। बनारस मे होली के पीछे आने वाले मगल को बुढवा मगल कहते थे। उस रात से बृहस्पतिवार की रात्रि तक गगा में नौकायें छूटी रहती थी। उन्ही मे रण्डी-लौण्डो के नाच तमाशे होते थे। तमाशा देखने को सहयोगी के साथ एक नाव सजाली और बृहस्पतिवार को बुढवा मगल की समाप्ति पर भग पीने का अभ्यास सारी मित्र मण्डली को हो गया।

मुन्शीराम के पिता का स्थानान्तरण बलिया से जब मथुरा हुआ तब ये लगभग २१ वर्ष के नवयुवक थे। मथुरा वृन्दावन के मन्दिरो की खूब सैर की द्वारिकाधीश की मूर्ति मथुरा मे लाने वाले सेठ लक्ष्मीचन्द के पुत्र राजा लक्ष्मणदास सी० एस० आई० ने इनको खूब सैर कराई। अषाढ की दोपहरी उन्ही की खसकी टटियो और पखो वाले कमरो मे व्यतीत करते थे। नास्तिक होते हुए भी मुन्शीराम मन्दिरों मे जाकर मूर्ति को नमन कर लेते थे, पर मन्दिर मे ही पुजारियो के सामने ही उनके कुकर्मों की समालोचना भी देते थे। मथुरा मे इनके पिताजी ने चौबो के ब्रह्मभोज कराने की सोची। चौबे जी बोले "यजमान मन के दस निमन्त्रित किये जावे या मन के चार।"

थे क्या तोल मे चार-चार और दस-दस सेर के चौबे होते हैं। यहाँ तात्पर्य यह है कि मन भर उत्तम भोज्य पदार्थ दस बाँट कर खायें या चार ही चट कर जायें।

छोटा-मोटा-खोटा-लगोटा नाम के चार चौबे एक सातौन और छटांक-छटांक (५६ ग्राम) भर भांग भेजकर आमन्त्रित किये गये। चारो ने विश्राम घाट पर भाग का घोटा लगाकर गोली बांधकर कण्ठ के नीचे कर ली और लीला गान करते इनके डेरे पर आ गये। चरण पखार कर आसन दिया गया, यहा भी डेढ पाव मग बादाम-दूध के साथ द्वारिकाधीश को भोग लगा कर पी गये। कटोरी भर इन्हे भी मिली जो इनके पिताजी, पाचक, कहार, अर्दली आदि ने बाट ली। ग्यारह बजे भोजन तैयार हुआ। चौबे जी आज भोग तैयार है कहकर सूचित किया गया। चौबे जी की आंखें बन्द हैं। बोले यजमान आसन पर ले चलो हाथ पकड कर आसन पर बैठाया गया। पहले डेढ़-डेढ सेर लच्छेदार मलाई अन्दर कर गये तब आखें खुली और भाग आरम्भ हुई। दो-दो सेर पेडे उन पर भाजी पकौडी के साथ तीस-तीस पूडी की तह फिर खुर्चन, की पर्तं चढ़ाई और इतनी पूडी और खा गए। इसके बाद हलुआ और अन्त मे मलाई से पूर्ण आहुति हुई। हाथ धुलाकर उन दिनो एक-एक रुपया दक्षिणा मे दी गई। चौबे जी अभी खड़े ही रहे जब छटाक छटाक भर भग दी गई तभी वे वहा से हिले। इतना भारी भक्ष्य भोगकर पिताजी को भ्रम था कि कहीं इनके पेट न फट जायें।

पिताजी क्षत्रिय के लिये मास भक्षण स्वाभाविक मानते थे, सो मुन्शीराम बाल्यावस्था से ही मासाहारी थे। एक दिन स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर सत्यार्थ प्रकाश हाथ मे लिया—किन्तु सायकाल दिए जाने वाले व्याख्यान की तैयारी करने लगे, तीसरे पहर कानून की पढाई करते रहे, जिसके बाद सत्यार्थ प्रकाश की बारी आई। दशम समुल्लास मे भक्ष्याभक्ष्य के विषय को पढा। तब तक भोजन का समय आ गया। विचारो मे निमग्न हाथ पाव धोकर रसोई मे जा बैठे। थाली मे मांस के कटोरे को देखकर ऐसी घृणा हुई कि कासे के कटोरे को उठाकर दीवार मे मार दिया। कटोरे के टुकडे टुकडे हो गए। मुन्शीराम के साथी घबडा उठे कि कहीं टकोरे मे सनकी तो नहीं थी, लगे पाचक को डांटने इन्होने सबको उसे डाटने से रोक दिया। उन्होंने कहा कि एक आर्य के मत मे मास भक्षण भी महापाप है, और सदैव के लिए उसे छोड दिया और दूसरे दिन स ही निरामिष भोजियो की सख्या बढने लगी।

मुन्शीराम सदैव आर्य समाज एव धर्म प्रचार की धुन मे व्यस्त रहने लगे। जालन्धर-लखन के अतिरिक्त अन्य नगरो मे भी डौडी पिटवा कर श्रोताओ को एकत्र कर धर्मोपदेश देना प्रारम्भ कर दिया। जहा आवश्यक हुआ डटकर शास्त्रार्थ भी किए और उत्सव सत्सग भी कराए। कन्या विद्यालय जालन्धर की स्थापना की, बैशाख १९४७ वि० को सद्धर्म प्रचारक पत्र का प्रथम अ क प्रकाशित करके प्रचार को नई दिशा दी और आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब बनाई, जिसके निश्चय के अनुसार सन १९०२ मे अथक परिश्रम करके गुरुकुल की स्थापना की। अपने दोनो पुत्र हरिश्चन्द्र और इन्द्र को गुरुकुल मे प्रवेश कराया। वकालत को छोडकर गुरुकुल को अपना जीवन अर्पण कर दिया। आपके अनेकानेक महान त्याग के कारण जनता ने इन्हें महात्मा कहना आरम्भ कर दिया। महात्मा मुन्शीराम ने अपने पुत्र-पुत्रियो के विवाह भी जाति बन्धन को तोडकर किए और अपने सम्बन्धियो द्वारा किये गये बहिष्कार से भयभीत भी नहीं हुए थे।

महात्मा मुन्शीराम ने १५ वर्ष तक गुरुकुल की सेवा की और उसे विशाल राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान कर दिया। १९७४ वि० मे आपने सन्यास ले लिया और महात्मा मुन्शीराम से स्वामी श्रद्धानन्द कहलाने लगे। आपने अपनी सारी सम्पत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम कर दी। अब भारत की राजधानी देहली मे अपना आसन जमाया। भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस मे गांधी जी के परिचय के कारण आ गये। भारत की स्वतन्त्रता के लिए सघर्ष-रत हो गए। रोलेट ऐक्ट के विरोध मे मार्च १९१९ ई० को देहली मे एक जुलुस निकाला गया, जिसका नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द ने किया। ७४० सहस्र व्यक्तियो का जुलुस जब चादनी चौक के घटाघर पर पहुँचा, तो अग्रेजों के गोरखे सिपाही अपनी सगीन मशीनगनों के साथ आगे बढ़े तो स्वामी जी दौडकर उनके सामने आ गए और अपनी छाती तानकर गर्जना के साथ बोले "निर्दोष जनता पर गोली चलाने से पहले मेरी छाती में सगीन भोक दो" यह सुनकर सभी गोरखे लौट गए और आपकी वीरता की धाक सम्पूर्ण भारत मे जम गई। हिन्दू-मुसलमान एकता के पक्ष धर बनकर स्वामी जी ने जामा मस्जिद के मच से वेदवाणी को गु जरित किया। स्वामी जी शुद्धि आन्दोलन द्वारा बिछुडे मुसलमान भाइयों को पुन स्वधर्म मे मिलाने के लिए कृत सकल्प रहते थे।

सन १९१९ को ही अ ग्रेजो ने अमृतसर के जलियां वाले बाग मे सामूहिक नर स हार करके भारत की आत्मा को झकझोर दिया था। अग्नि पुत्र स्वामी श्रद्धानन्द ने घर घर जाकर परिवारो मे धैर्य धारण कराने का यत्न किया। इसी वर्ष अमृतसर में काग्रेस का अखिल भारतीय अधिवेशन हुआ। ऐसे अवसर पर किसका साहस था जो अमृतसर अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनने को तैयार होता। स्वामी जी ने इस कर्तव्य का न केवल पालन ही किया, प्रत्युत कीर्तिमान स्थापित किया और काग्रेस के इतिहास मे यह सर्व-प्रथम हिन्दी भाषण था जो स्वामी जी ने ही दिया था। सन्यासी श्रद्धानन्द ने ही मिस्टर गांधी को महात्मा गाधी के रूप मे प्रचलित किया।

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन का १० दिसम्बर १९२२ ई० का दिन स्मरणीय बन गया, जब उन्होने अमृतसर मे अकालतख्त से भाषण दिया और सिखो के साथ गिरफ्तार होकर मियावाली जेल मे कारावास का दण्ड भोगा। हिन्दू मुस्लिम सिख आदि सभी स्वामी जी को प्रिय थे। स्वामी जी ने अछूतोद्धार तथा दलितोद्धार के लिये भी अथक प्रयत्न किया। काग्रेस मच से स्वामी जी के यह शब्द अमर हो गए "आज से करोडो दलित हमारे अछूत नही रहे अपितु हमारे भाई बहिन हैं।" स्वतन्त्रता प्राप्ति के युद्ध मे वे हमारे कन्धे से कन्धा जोडेंगे और हम सब एक दूसरे का हाथ पकडे हुए अपने जातीय उद्देश्य को पूरा करेंगे। महात्मा गाधी ने स्वामी जी के भाषण की के भाषण की सराहना करते हुए—भाषण को उच्चता पवित्रता-गम्भीरता और सच्चाई का नमूना कहा था।

देश में महात्मा गाधी के उपरान्त स्वामी श्रद्धानन्द की सर्वप्रियता उल्लेखनीय है। प० मदनमोहन मालवीय, लाला लाजपतराय, प० जवाहरलाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल, चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, डा० राजेन्द्र प्रसाद, श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन श्रीमती सरोजिनी नायडू, हकीम अजमल खा डा० अंसारी और सी० एफ० एन्ड्रूज आदि तत्कालीन सभी नेतागण स्वामी जी को पूज्य भाव से मानते थे। कितने लोग जानते हैं कि प० मोती लाल नेहरू और मुन्शीराम स्वामी श्रद्धानन्द इलाहबाद मे सहपाठी थे। भारतीय स स्कृति के जागरूक प्रहरी राष्ट्रीय एकता-अखण्डता के पुजारी स्वामी श्रद्धानन्द को अ ग्रेज शासको ने कभी सहन नहीं किया और इन्होने स्वामी जी के विरुद्ध साम्प्रदायिक तत्वो को भडकाया यही साम्प्रदायिकता स्वामी जी की नृशस हत्या का कारण बनी। वर्षों की तपस्चर्या, अथक परिश्रम पूर्ण सेवा ने स्वामी जी अस्वस्थ कर दिया था, वे २३ दिसम्बर १९२६ ई० रो रुग्ण शैय्या पर विश्राम कर रहे थे और छल से घुस गए एक धर्मान्ध हत्यारे अब्दुल रशीद ने स्वामी जी को गोलियों का निशाना बना दिया। स्वामी जी के इस बलिदान का समाचार सुनकर सम्पूर्ण भारत कराह उठा, और देश-धर्म की वेदी पर ये अद्भुत आहुति स्वाहा हो गई।

महात्मा मुंशीराम (श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द)

आचार्य धर्मवीर विद्यालंकार (पीलीभीत)

श्री विद्यानिधि जी सिद्धान्तालकार विद्वान व्यक्ति हैं। आजकल वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर में रह रहे हैं। चारो वेदो के व्याख्याता के रूप मे प्रसिद्ध हैं। चतुर्वेद-पारायण यज्ञ कराने मे निष्णात हैं। वेद-मन्त्रो का स्पष्ट, शुद्ध, सम्यक् उच्चारण करने मे पटु हैं। साथ ही निर्भय होकर वन्य, हिंस्र पशुओ के जीवन का अध्ययन करते रहे हैं। वन्य जीवन के सम्बन्ध में उनकी सात पुस्तकें आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुई हैं। इन पुस्तको द्वारा वे प्रशसनीय प्रसिद्धि पा चुके हैं।

श्री विद्यानिधि जी सिद्धान्तालकार इस समय ८७ बसन्त बिता चुके हैं। गुरुकुल कागडी मे सन १९०७ मे प्रविष्ट हुए और सन १९२१ मे स्नातक हुए। अपने परम श्रद्धेय आचार्य का स्मरण कर वे भाव विभोर हो जाते हैं।

अपने गुरुकुल प्रवेश की घटना उन्हे आज भी ऐसे स्मरण है, जैसे कि कल की बात हो। उनके पितुश्री और मातुश्री उन्हे प्रवेश हेतु गुरुकुल कागडी लाए थे। आयु थी लगभग ६ वर्ष। मा अपने हृदय के टुकडे को प्रसन्नता से कैसे अलग कर सकती है। पितुश्री बालक के भावी जीवन को दृष्टि मे रखकर उसके निर्माण का सद्भावपूर्वक सत्प्रयत्न करता है। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु तप तो करना ही होगा। माता ने प्यारसे कह दिया "रात्रि भोजन उपरान्त दूध पीकर आ जाना।" बालक वासुदेव (उनके घर का नाम वासुदेव था) ने रात्रि भोजनोपरात दूध पीकर रोना आरम्भ कर दिया। "अम्मा ने कहा था, दूध पीकर आ जाना।" माता पिता तो दिन मे ही जा चुके थे। स्नेहसिक्त अधिष्ठाता महोदय ने बालक को बहलाने का भरपूर प्रयत्न किया। दूसरे सहपाठी ब्रह्मचारियो ने भी प्रलोभन दिए। पर बालक वासुदेव ने जो रट लगाई—"अम्मी ने कहा था, दूध पीकर आ जाना"—सो वह बन्द नही हुई। वह रुदन सुन आचार्य महात्मा मुंशीराम भी आ गए। बालक को गोद मे उठाया। पुचकारा। ममता से दुलारा। पर बालक अपनी रट से अविचिलित रहा। महात्मा जी अपनी कुटिया मे गए। एक सन्तरा लाए। छील २ कर बालक को खिलाया। वात्सल्य परिपूर्ण आचार्य ही ऐसा कर सकता है। श्री निधि जी अपना परम सौभाग्य मानते हैं जो कि उन्हे महात्मा जी की गोद मे बैठने का पुण्य अवसर मिला। श्री निधिजी ने आगे बताया कि महात्माजी को सन्तरा बहुत प्रिय था। महात्मा जी ब्रह्मचारियो से कहा करते थे कि जब प्यास लगे, तो सतरे का रस पिया करो। उनके आचार्यत्व काल मे ब्रह्मचारियो को सतरा आदि अनेक फल प्रचुर-मात्रा में मिला करते थे।

ब्रह्मचारियो को अधिक से अधिक दूध अपने हाथ से पिलाने का चाव महात्मा जी को था। ब्रह्मचारिया को दिन मे तीन बार प्रात, मध्यान एव रात्रि दूध पीने को मिलता था। प्रात काल प्रातराश के समय वे स्वयं दूध वितरण करते थे। एक कटोरा (लगभग १॥ पाव का) दूध पीने के बाद दूसरा कटोरा भरकर दूध पीने पर ही महात्मा जी को सन्तोष होता था। क्योकि महात्मा जी स्वय ही दूध बाटते थे अत सबका ध्यान करते थे। इस कारण सभी को दूसरा कटोरा दूध पीना ही पडता था। अगर कोई ब्रह्मचारी दूसरा कटोरा दूध न पिए तो उसे डाक्टर के पास इलाज के लिए भेजा जाता था। डाक्टर की कडवी दवाई से बचने के लिए ब्रह्मचारी को दूध पीना ही पडता था। जो ब्रह्मचारी दो कटोरे से भी अधिक दूध पीते थे, उन्हे दूध पिलाकर आचार्य (महात्मा) जी को परम सन्तोष होता था। महात्मा जी का विशेष आग्रह रहता था कि सभी ब्रह्मचारियो को बलवान, हृष्ट एव पुष्ट बनना चाहिए। बिना पूरी मात्रा मे दूध पिए, अन्न एव फल खाए, यह कैसे सम्भव होगा, ऐसे बारम्बार बताते रहते और प्रोत्साहित करते रहते थे। विजया-दशमी के दिनो मे "लका विजय" खेल के बाद, मिठाई देते भरे कनस्तर लूटने का भी खेल खिलाया जाता था। दिवाली आदि प्रत्येक त्योहार पर ब्रह्मचारिया को पौष्टिक भोजन, मिठाई, फल आदि खिलाने मे महात्मा जी को आत्म सतोष होता था।

ब्रह्मचारियो को बलवान और विद्वान बनाने मे प्रयत्नशील महात्मा जी, उन्हे 'वीर" बहादुर बनने के लिए भी उत्साहित किया करते थे। एक बार तीन ब्रह्मचारियो ने देशबन्धु, कृष्णस्वरूप, परमानन्द को जगल मे ६ डाकू मिल गए। ब्रह्मचारियो का उन डाकुओ के साथ कडा सघर्ष हुआ। बन्दूकधारी डाकुओ को भगाकर जब वे गुरुकुल पहुँचे, तो चर्चा का विषय बने। महात्मा जी को भी समाचार मिला। वे उन तीनो ब्रह्मचारियो के पास आए। सारा विवरण सकौतुक एव सहर्ष सुना महात्मा जी ने उन्हे डाटा-फटकारा नही। उत्साहित करते हुए बोले "अच्छा, तो तुम उन्हे पकड न ला सके।" अर्थात् इतना काम अभी और करना था। जब कि ब्रह्मचारी पकड कर इसलिए नही लाए थे कि कही गुरु जी नाराज न हो।

उन दिनो गुरुकुल कागडी के चारो ओर घना जगल था। उसके निवासी हिंसक वन्य प्राणी घूमते घूमते गुरुकुल परिसर मे भी आ जाते थे। एक बार रात्रि के दो बजे एक बघेरा (गुलदार) गुरुकुल में आ गया। तीन चार ब्रह्मचारियो ने उसका पीछा किया। बघेरा भी अपनी जान खतरे मे समझ भागा। वह महात्मा जी कुटिया (बगले) के चारो ओर लुका-छिपी करता चक्कर लगाने लगा। ब्रह्मचारी भी उसके पीछे पीछे महात्मा जी की कुटिया के चारो ओर, उसका पीछा करते, दौडने लगे। महात्मा जी जग गए। कडक कर आवाज दी—'कौन है ?" ब्रह्मचारी रुके। महात्मा जी बाहिर आए। यह जानकर कि ब्रह्मचारी बघेरे का पीछा कर रहे हैं। वे भी उनके साथ आगे आगे चल पडे। बघेरा तब तक गगा की धार के दूसरे किनारे के पास पहुँच चुका था। जबतक महात्मा जी और ब्रह्मचारी गगा के किनारे पहुँचे तो बघेरा पार जा चुका था। महात्मा जी ने पूछा—"ब्रह्मचारियों, अब क्या इरादा है ?" उन्होने स्वय यह नही कहा कि अब उसका पीछा करना व्यर्थ है। चलो, आश्रम चलें। ना ही उन्होने डाटा कि रात्रि में जगली 'हिंसक' पशुओ का पीछा करना ठीक नही होता। इससे ब्रह्मचारियो के साहस मे कमी आती। वे तो ब्रह्मचारियो की वीरता-साहस को चुनौती देकर बढाते थे। ब्रह्मचारी स्वय ही उनके साथ आश्रम मे वापिस आ गए।

एक अन्य दिवस एक बघेरा महात्मा जी की कुटिया के अन्दर ही आ गया। महात्मा जी कुर्सी पर बैठे थे। सामने मेज थी। कुछ लिखने का कार्य चल रहा था। जगह तग थी। महात्माजी एकदम उठ नही सकते थे। हुआ यह कि बघेरे ने द्वार पर पडी चिक एक तरफ की और अन्दर आकर महात्मा जी के सामने खडा हो गया। दोनो ने एक दूसरे को भरपूर देखा। महात्मा जी ने एक छोटी रद्दी कागजो वाली टोकरी, मेज के नीचे से निकाल कर उसके ऊपर "छू ....." बोलते हुए फैंकी। बघेरा, चिक हटाकर भाग गया। दो तीन मिनट मे ही सब हो गया।

इस घटना का समाचार गुरुकुल मे तुरन्त फैल गया। महात्मा जी की कुटिया पर धीरे २ सभी इकट्ठे होने लगे और घटना जानने लगे। महात्मा

जी मुस्कुराते हुए बता रहे थे। उनके चेहरे पर भय का कोई चिह्न नहीं था। सब को भययुक्त करते हुए शान्तभाव से बताते रहे। तब भी निधिजी विनोद प्रिय बालक थे। उन्होंने अत्यन्त गम्भीर स्वर मे कहा—महात्माजी, बघेरा आपसे शिकायत करने आया था।"

सभी ने आश्चर्य एव क्रोध से ब्रह्मचारी निधि की ओर देखा। मानों डाट रहे हो—"क्या यह मजाक का समय है ?" परन्तु ब्रह्मचारी निधि स्थिर, शान्त खडा रहा।

महात्मा जी ने पूछा—"क्या शिकायत करने आया था ?"

ब्रह्मचारी निधि ने कहा—'वह यह शिकायत कर रहा था कि ब्रह्मचारियो ने झोपडियो के लिए जगल की सारी घास कटवा ली है। अब वह कहा छिपे ?"

महात्मा जी ने ब्र० निधि के उत्तर को मजाक समझ, टाला नहीं। गम्भीरता से लिया। तत्काल त त्कालीन मुख्याधिष्ठाता श्री नन्दलाल जी को आदेश दिया कि अब जगलकी घास कटवाई न जाय। वीरता एव निर्भीकता के साथ साथ यह थी महात्मा जी के हृदय की उन वन्य हिंस्र पशुओं के प्रति, असीम करुणा।

श्री निधि जी ने बताया कि एक बार, ब्रिटिश प्रधानमन्त्री रेम्जे मैकडानल्ड गुरुकुल कागडी पधारे। उनका स्वागत मुख्य द्वार पर किया गया। गुरुकुल के सभी अध्यापक कार्यकर्ता एव ब्रह्मचारी द्वार के दोनो ओर पक्ति बद्ध खडे थे। श्री मैकडानल्ड हाथी से उतरे। महात्मा जी ने उनकी अगवानी की। उन्हे गुरुकुल मे अपने साथ २ ले आए। महात्मा जी का व्यक्तित्व, ब्रह्मचारियो दृष्टिमे विश्व मे सर्वोत्कृष्ट था। श्री रेम्जे मैकडानल्ड को ब्रह्मचारियो ने हाथी के ऊपर जब देखा, तो लगा कि वह व्यक्तित्व भी उत्कृष्ट है। फिर जब श्री रेम्जे हाथी से उतरे दोनो ने परस्पर अभिवादन किया, तब भी महात्मा जी का ही व्यक्तित्व अधिक भव्य था। बाद मे ब्रिटिश प्रधान मन्त्री ने लन्दन जाकर वहा के प्रमुख समाचार पत्र 'टाइम्स" मे गुरुकुल यात्रा का विस्तृत विवरण छपवाया। गुरुकुल के शान्त निर्मल वातावरण से वे अत्यधिक प्रभावित हुए थे। सायकालीन यज्ञकुण्ड की अग्नि की लपलपाती ज्वालाओ से ब्रह्मचारियो के शरीर की छायाए दिवार पर नाचती सी ऐसी मनोहारिणी प्रतीत हो रही थी, मानो स्वर्ग से पृथ्वी पर उतर कर अप्सराए नृत्य कर रही हो। उसी लेख मे आगे जो लिखा उससे स्पष्ट होता है कि वे महात्मा जी के व्यक्तित्व से कितने अधिक प्रभावित हुए थे। वे लिखते हैं—"अगर आप आज के युग मे पूज्य एव पवित्र क्राइस्ट के दर्शन करना चाहते हैं, तो भारत के, गुरुकुल कांगडी हरिद्वार मे, हिमालय की शात एव रमणीक तलहटी मे गगा की पवित्र धाराओ के मध्य, सघन वनो की छाया मे हिंसक वन्य जन्तुओ के मध्य, थोडे से शिष्यो का प्राचीन तपस्वी भावी ऋषियो के रूप मे निर्माण कर रहे, महात्मा मुशीराम से मिलिये। आपकी आत्मा अद्भुत पवित्रता से आनन्दित होगी।

महात्मा मुशीराम जी का सदा यह प्रयत्न रहता था कि गुरुकुल के वातावरण मे सहृदयता, सौमनस्यता बनी रहे। ब्रह्मचारियो मे या गुरुवर्ग मे अन्य कार्यकर्ताओ मे ईर्ष्या-विद्वेष न फैले।

उन दिनो गुरुकुल मे एक व्यायामशिक्षक गतका चलाना सिखाया करते थे। एक दूसरे शिक्षक भी गतका-लाठी चलाना अच्छा जानते थे। वे २८ ३० वर्ष के युवक थे। जब व्यायामशिक्षक खेल के मैदान मे ब्रह्मचारियो को गतका चलाना सिखाते, तभी वे नवयुवक शिक्षक आते, घृणा एव अपमान भरी दृष्टि से देखते और दो तीन अपमानजनक शब्द बोलते। मैदान नदी तट पर था। ऊपर किनारे पर महात्मा जी की कुटिया थी। महात्मा जी भी प्रतिदिन ब्रह्मचारियो का व्यायाम देखते। युवकशिक्षक के व्यवहार से दु खी होते।

एक दिन व्यायाम-शिक्षक ने ब्रह्मचारियो की, गतका-लाठी चलाने की परीक्षा ली। ब्र० निधि उन्हे श्रेष्ठ लगा। दूसरे दिन खेल के मैदान मे जब युवक-शिक्षक आए और उन्होने प्रतिदिन की भाति दुर्व्यवहार किया, तो ब्रा० निधि का उनसे मुकाबला करा दिया। ब्र० निधि ने दो चार बचाव किये, दो चार प्रहार इधर उधर किए। फिर एक ऐसा प्रहार किया कि युवक शिक्षक महोदय के हाथ की अगुलियो गतका न पकड सकी। गतका भूमि पर गिर पडा। शिक्षक महोदय अपना हाथ मलते हुए चले गए। उनका हाथ कई दिनो तक दुखता रहा। महात्मा जी भी प्रतिदिन की भाति आज भी अपनी कुटिया से बाहिर खडे देख रहे थे। न वे पहले कुछ बोले थे, न ही आज कुछ बोले। उनके चेहरे पर सन्तोष की रेखाए देखी जा सकती थीं।

अन्त मे निधि जी ने उपसहार करते हुए कहा—"ऐसे माता पिता के स्वाभाविक वात्सल्य से परिपूर्ण हृदय वाले, हम सब के हित उन्नति की चिन्ता मे सतत कार्यरत, परम आस्तिक एव विद्वान आचार्य के पवित्र चरणो मे विद्या मधु का पान करते हुए, तपस्वी जीवन की शिक्षा ग्रहण करते हुए हमारे वे दिन परम सौभाग्य के रहे।

आपने आचार्य के प्रति निम्न कवित्त श्रद्धाजलि,रूपमे उन्होंने रचा है —

पावन पादुका चरु वर्ण गुरु हस्त मे दक्षिण दण्ड विराजै।
भाल विशाल प्रभा भरे नैन, अवन्य दयावन आनन साजै॥
मूरति यह मन मेरे सदा, शुभ श्री गुरु,श्रद्धानन्द की साजै॥१॥
आश्रम रम्य बना बन मे, फिर सूने हिमाचल भाग बसाए।
स्वग नदी के मनोहर तीर पै, ओ३म् के अम्बर झण्डे उडाए॥
चातक भूख मिटाई दै जीवन जीवन देकर प्यास बुझाई।
ऐसी दया दिखलाएगा कौन, जो श्रद्धानन्द ने जैसी दिखाई॥२॥

स्वतन्त्रता सेनानी सूबेदार आर्य का जीवन चरित्र

जिला मैनपुरी एव कस्बा बेवर की जनता स्व० ब्योहरे बच्चनलाल के उदार स्वभाव के कारण बडा प्यार करती थी। उन्होने कन्याओ की शिक्षा के लिए जिला परिषद् को अपनी ५०,०००) रु० की भूमि दान मे दे दी थी। तथा आर्य समाज को भूमि खरीदने मे काफी योगदान व रुपया दिया था, आप सदैव आर्य समाज व कांग्रेस के सदस्यो की सहायता करते तथा बेवर मे आर्य समाज के प्राण थे। आपके पुत्र सूबेदार आर्य आर्यमित्र व सार्वदेशिक पत्र के आजीवन सदस्य है।

आपके पाच लडके थे छोटा लडका रामेश्वर दयाल आर्य राजस्थान मे असिस्टेण्ट इजीनियर है। जिसने वही पर कई आर्य समाजें बनवा दी हैं। तथा राजस्थान की आर्य प्रतिनिधि सभा मे सक्रिय भाग लेते हैं।

आपके तृतीय पुत्र सूबेदार आर्य का जन्म कस्बा बेवर मैनपुरी मे हुआ था आपने १९३८ ई० से आर्य समाज के कार्य मे १७ वर्ष की उम्र से कार्य आरम्भ किया। सन १९३९ मे हैदराबाद सत्याग्रह मे काम किया। परन्तु नवाब से सुलह हो जाने पर देहली रुके रहे। आप आर्य साहित्य शाला के मैनेजर रहे। जिसमे सस्कृत के साथ हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाए तथा हिन्दी विशेष योग्यता व आकाशवियत पढायी जाती थी। आपने स्वय भी हिन्दी, उर्दू व अग्रेजी मिडिल कर हिन्दी विशेष योग्यता साहित्य भूषण वैद्य विशारद तथा सि० वाचस्पति की परीक्षा पास की, आपने अपनी पिता की सहमति से। कांग्रेस कमेटी के कार्यालय के लिए मकान नि शुल्क दिया तथा आपके मकान पर ही आर्य समाज का साप्ताहिक अधिवेशन वर्षों तक होता रहा, आप आर्य समाज बेवर के कभी प्रधान, कभी मन्त्री बराबर बनते रहे, जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा मैनपुरी के मन्त्री व प्रधान पद पर भी सुचारु रूप से कार्य किया। आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग सदस्य व कई वर्ष निरीक्षक रहे। सभी जगह लगन से कार्य किया। सन १९४२ के कांग्रेस आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया और जेल गये। तब से बराबर वर्षों तक कांग्रेस का कार्य किया। आप वर्षों तक बराबर मण्डल कांग्रेस के प्रधान व मन्त्री रहे जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य व मन्त्री रहे तथा उत्तरप्रदेश कांग्रेस के भी अन्तरग सदस्य रहे। सन १९६९ मे कांग्रेस के विघटन के बाद सडीकेट के कांग्रेस मे मन्त्री व प्रधान व जिला कांग्रेस मन्त्री व सूबे कांग्रेस के सदस्य रहे। बाद मे जनता पार्टी मे जिला के मन्त्री व सूबा के सदस्य रहे। सहकारिता मे आपको विशेष रुचि थी। आप सहकारी समिति क्षेत्रीय समिति सहकारी सघ, सहकारी क्रयविक्रय समिति के वर्षों डायरेक्टर रहे। उत्तर प्रदेशीय सहकारी बैंक के सदस्य व डायरेक्टर रहे, तथा सहकारी गृहनिर्माण समिति के अब तक मन्त्री हैं। आपने अपने पदो पर रहकर जनता को काफी लाभ पहुँचाया। आप घर पर आयुर्वेद की देशी दवाओ का नि शुल्क वितरण तथा लागत मात्र पर देते हैं। आपकी दवा रोगियो को काफी लाभान्वित करती है व जिससे आपकी काफी ख्याति है।

सन १९७२ से सरकार ने स्वतन्त्रता सेनानियो को पेंशन की सुविधा दी है वह आपको प्राप्त है। वैसे घर पर साहूकारी का कार्य होता रहा। आपके पांच पुत्र है। तथा दो भाई स्वर्गवासी हो गये हैं। वह दोनो आर्य समाजी व कांग्रेस मे कार्य करते थे। एक भाई जिला उद्यान अधिकारी पद से रिटायर होकर सन८४ मे घर आ गये वही घर का कार्यभार देखते हैं। छोटे भाई असिस्टेन्ट-इजीनियर राजस्थान मे हैं। आप आर्यसमाज के सम्मेलनो मे अपने जिला से जरूर जाते हैं। तथा जिला में प्रचार में सक्रिय सहयोग देते हैं। स्वतन्त्रता सेनानी के सभी सम्मेलनों में बडी उत्सुकता से भाग लेते हैं। और जिला स्वतन्त्रता सेनानी समिति के मन्त्री व प्रान्तीय स्वतन्त्रता सेनानी समिति के अन्तरंग सदस्य हैं। आपका अधिकतर समय प्रचार मे तथा जनता के कार्यों मे बीतता है। तथा अब स्वतन्त्रता सेनानी समिति के कार्य-[illegible] हैं।

हम ऐसे कर्मठ सूबेदार आर्य के यशस्वी जीवन के लिए प्रभु से शुभ-कामनाएं मागते हैं कि वह जनता की सेवा में आगे बढने की शक्ति प्रदान करें।

—हीरालाल दीक्षित स्वतन्त्रता सेनानी
राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित बेवर (मैनपुरी)

उत्सव

—जमालपुर गोगरी गोशाला का ७५वा वार्षिकोत्सव गोगरी जमालपुर जि० खगडिया (बिहार) स्थानीय गोशाला के ७५वे वार्षिकोत्सव पर १७, १८ १९ नवम्बर ८८ को एक भव्य मेले का आयोजन स्थानीय गोशाला के प्रागण मे किया गया इस अवसर पर वैदिक प्रवक्ता सर्वश्री डा० सत्यव्रत वानप्रस्थ समस्तीपुर, आचार्य प्रेमानन्द शास्त्री गोगरी जमालपुर, डा० देवेन्द्र कुमार जी सत्यार्थी नालन्दा, दयानन्द सत्यार्थी, पटना ए० कौशल किशोर जी खगडिया के प्रोग्राम होते रहे।

—गणेश ठाकुर, गोशाला मन्त्री

—आर्य समाज इन्दौर जनपद बुलन्दशहर का वार्षिक महोत्सव दिनाक १२-१३-१४ नवम्बर सन १९८८ ई० तदनुसार कार्तिक सुदी तीज चौथ पचमी सवत् २०४५ वि० दिन शनिवार रविवार सोमवार को बडे धूमधाम से मनाया गया। इस समाज उत्सव मे यज्ञ के समय कु० सन्तोष कुवर, कु० आशा कुवर, कु० रूपवती, कु० रजनी, कु० वेदवती, कु० गुड्डी, कु० कमलेश, कु० शशि कु० चन्द्रकला, कु० गीतेश, कन्याओ का तथा रघुराजसिंह, सुरेन्द्रसिंह, चरनसिंह, गुरुदत्त शर्मा, राधेश्याम, [illegible]सिंह, चन्द्रपालसिंह, रामवीरसिंह सत्यवीरसिंह, डा० महिपालसिंह और श्रीमती कृष्णा कुवर श्रीमती महादेवी का यज्ञोपवीत सस्कार हुआ।

—डा० चन्द्रपालसिंह

—आर्य समाज दरियागज २ अन्सारी रोड नई दिल्ली-२ का २८ वा वार्षिकोत्सव बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। उत्सव में समाज सुधार सम्मेलन, राष्ट्रीय एकता सम्मेलन एव वेद सम्मेलन का आयोजन किया गया। समाज सुधार सम्मेलन के मुख्य अतिथि स्वामी दिव्यानन्दजी सरस्वती अध्यक्ष अन्तर्राष्ट्रीय विरजन मण्डल थे। जिन्होने व्यक्ति के सुधार से समाज सुधार होगा आदि बाते कही। वेद सम्मेलन की अध्यक्षता डा० धर्मपाल जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि दिल्ली ने की। डाक्टर साहब ने बताया कि वेद की प्रति हर घर मे होनी चाहिए। जिससे आगामी पीढी वेद के सम्बन्ध मे जान सके। वेद पढना मानव मात्र का कर्तव्य है। श्री प्रेमचन्द श्रीधर, महात्मा देवेश भिक्षु जी, आदि प्रमुख वक्ता थे। उत्सव पहले १४ नवम्बर से १८ नवम्बर तक वेद कथा श्री पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती ने की।

—बी० बी० सिंघल, प्रधान

आलोचना चक्र का आयोजन

आर्य समाज, सत्सग सभा सघम सोनपुर की तरफ से आलोचना चक्र आर्य समाज, सत्सग सभा सघम ने सोनपुर उडीसा मे दिनांक १४ नवम्बर को एक आलोचना चक्र का आयोजन किया। जिसमे शीर्षक था "आदित्य ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द और ओम" अध्यापक श्री गोरांग चरण पाठक ने अध्यक्षता की और गुरुकुल बोलाश्रम, नृसिंहनाथ के सस्थापक ओम महर्षि स्वामी व्रतानन्द आजाद, वैदिक विचार मंच सोनपुर के मुख्याधिष्ठाता गुरुवर्य कुमार श्री [illegible] दाश, श्री केदारनाथ दाश, श्री [illegible] मिश्र, श्री [illegible] मेहेर तथा श्री [illegible] मेहेर ने आलोचना में भाग लिया।

—केदारनाथ मिश्र, मन्त्री

स्वाध्याय योग्य पुस्तकें

महात्मा आनन्द स्वामी

- मानव और मानवता २५)
- तत्वज्ञान १५)
- प्रभु मिलन की राह १५)
- घोर घने जगल मे १५)
- प्रभु-दर्शन १२)
- दो रास्ते १२)
- यह धन किसका है १२)
- उपनिषदो का सन्देश १२)
- बोध-कथाए १२)
- दुनिया मे रहना किस तरह ७)
- मानव-जीवन-गाथा ६)
- प्रभु-भक्ति ५)
- महामन्त्र ५)
- एक ही रास्ता ५)
- भक्त और भगवान ५)
- आनन्द गायत्री-कथा ४)
- शकर और दयानन्द ४)
- सुखी गृहस्थ ३)१०
- सत्यनारायण कथा ३)
- Anand Gayatri Discourses १०)
- The Only Way 12)
- महात्मा आनन्द स्वामी जीवनी उर्दू (रणवीर) १०)

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

- सत्य की खोज ५०)
- ब्रह्मचर्य सन्देश १५)

महर्षि दयानन्द सरस्वती

- पचमहायज्ञविधि ३)
- व्यवहार भानु २)५०
- आर्याद्देश्यरत्नमाला ७५ पैसे
- स्वमन्तव्यामन्तव्या प्रकाश ७५ पैसे

डा. भवानीलाल भारतीय

- श्रीकृष्ण चरित २५)
- श्यामजी कृष्ण वर्मा २४)
- आर्यसमाज विषयक साहित्य परिचय २५)

स्वामी श्रद्धानन्द

- कल्याण मार्ग का पथिक ६०)
- स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (ग्यारह खण्ड) ६६०)

By Swami Satya Prakash Sarasvati

- प्राचीन भारत वैज्ञानिक कर्णधार ३२५)
- Founders of Scient India Ancient India Two Volumes ५००)
- Coinage in Ancient India Two Volumes ६००)
- Critical Study of Brahman gupta and his works ३५०)
- Geomatry in Ancient India ३५०)
- God and His Divine Love ५)
- The Critical and Cultura Study of Satapath Brahman ७००)

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

- वेद-मीमासा ५०)
- मैं ब्रह्म हूं ४)

स्वामी जगदीश्वरानन्द

- महाभारत् (तीन खण्ड) ६००)
- वाल्मीकि रामायण १००)
- षड्दर्शनम् १००)
- चाणक्यनीति दर्पण ५०)
- भर्तृहरिशतकम् १५)
- विदुर नीति २०)
- प्रार्थना लोक २५)
- प्रार्थना प्रकाश ४)
- प्रभात वन्दन ४)
- ब्रह्मचर्य गौरव ८)
- विद्यार्थियो की दिनचर्या ८)
- मर्यादा पुरुषोत्त राम १०)
- दिव्य दयानन्द ८)
- कुछ करो कुछ बनो १०)
- आदर्श परिवार १०)
- वैदिक उदात्त भावनाए १०)
- दयानन्द सूक्ति और सुभाषित २५)
- वैदिक विवाह पद्धति ४)
- ऋग्वेद सूक्तिसुधा २५)
- यजुर्वेद सूक्तिसुधा १२)
- अथर्ववेद सूक्तिसुधा १५)
- सामवेद सूक्तिसुधा १२)
- ऋग्वेद शतकम् ६)
- यजुर्वेद शतकम् ६)
- सामवेद शतकम् ६)
- अथर्ववेद शतकम् ६)
- भक्ति सगीत शतकम् ३)

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय

- शतपथ ब्राह्मण (तीन खण्ड) १८००)
- जीवात्मा २५)
- मुक्ति से पुनरावृत्ति ३)

प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु सम्पादित

- महात्मा हसराज ग्रन्थावली चार खण्ड २४०)
- महात्मा हसराज—जीवनी ६०)

पं० चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण

- महाभारत सूक्तिसुधा ४०)

डा० प्रशान्त वेदालंकार

- धर्म का स्वरूप ३५)

स्वामी वेदानन्द सरस्वती

- ऋषि बोध कथा १०)

सुरेशचन्द्र वेदालंकार

- महकते फूल १०)
- ईश्वर का स्वरूप १५)

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

- दयानन्द प्रकाश ३५)

पं० मदनमोहन विद्यासागर

- सस्कार समुच्चय ८५)
- सत्यार्थ सरस्वती २५)
- ईश्वर प्रत्यक्ष ६)

ओमप्रकाश त्यागी

- वैदिक धर्म का सक्षिप्त परिचय ६)

प्रो० नित्यानन्द पटेल

- पूर्व और पश्चिम ३५)
- सन्ध्या विनय ८)
- आत्म विकास की राहे ५०)

पं० नरेन्द्र

- हैदराबाद के आर्यों की साधना व सघर्ष ६)

प्रो० रामविचार एम ए०

- आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो ४)

प्रो० ओमप्रकाश वेदालंकार

- वैदिक पचायतन पूजा ३५)

प्रो० विष्णुदयाल (मारीशस)

- महर्षि का सच्चा स्वरूप ४)

म० नारायण स्वामी

- विद्यार्थी जीवन रहस्य २)५०
- प्राणायाम विधि २)

पं० शिवपूजनसिंह कुशवाहा

- हनुमान का वास्तविक स्वरूप ५)

पं० राजनाथ पाण्डेय

- वेद का राष्ट्रगान १)
- त्रिकाल-जयी १०)

मनोहर विद्यालंकार

- सरस्वती वन्दना ५)

कवि कस्तूरचन्द

- ओकार एव गायत्री शतकम् ३)

कर्मकाण्ड की पुस्तकें

- आर्य सत्सग गुटका १)५०
- पचयज्ञ प्रकाशिका ४)
- वैदिक सन्ध्या ७५ पैसे
- सत्सग गुटका (छोटा साइज) १)
- सत्सग मजरी ६)
- Vedic Prayer ३)

घर का वैद्य

लेखक : सुनील शर्मा

- घर का वैद्य प्याज ३)५०
- ,, लहसुन ३)५०
- ,, गन्ना ३)५०
- नीम ३)५०
- मिर्च ३)५०
- तुलसी ३)५०
- ,, आवला ३)५०
- ,, नीबू ३)५०
- पीपल ३)५०
- ,, आक ३)५०
- ,, गाजर ३)५०
- ,, मूली ३)५०
- ,, अदरक ३)५०
- ,, हल्दी ३)५०
- ,, बरगद ३)५०
- ,, दूध घी ३)५०
- ,, दही-मट्ठा ३)५०
- ,, हीग ३)५०
- ,, नमक ३)५०
- ,, बेल ३)५०
- ,, शहद ३)५०
- ,, फिटकरी ३)५०
- ,, साग-सब्जी ३)५०
- ,, अनाज ३)५०
- ,, फल-फूल ३)५०

बाल-साहित्य

- बाल शिक्षा ले० दर्शनानन्द १)
- वैदिक शिष्टाचार २)

त्रिलोकचन्द विशारद कृत

- महर्षि दयानन्द २)५०
- स्वामी श्रद्धानन्द २)५०
- गुरु विरजानन्द २)५०
- पडित लेखराम २)५०
- स्वामी दर्शनानन्द १)५०
- पडित गुरुदत्त १)५०

सत्यभूषण वेदालंकार एम.ए.

- नैतिक शिक्षा प्रथम ७५ पैसे
- नैतिक शिक्षा द्वितीय ७५ पैसे
- नैतिक शिक्षा तृतीय २)
- नैतिक शिक्षा चतुर्थ २)
- नैतिक शिक्षा पचम २)
- नैतिक शिक्षा षष्ठ २)५०
- नैतिक शिक्षा सप्तम २)५०
- नैतिक शिक्षा अष्टम २)५०
- नैतिक शिक्षा नवम ३)
- नैतिक शिक्षा दशम ३)

बाल-साहित्य

शिवकुमार गोयल

- क्रान्तिकारी सावरकर (पुरस्कृत) ६)
- नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ६)
- बाल-गगाधर तिलक ८)

राजेन्द्र शर्मा

- चन्द्रशेखर आजाद ६)
- भगतसिंह ६)

डा० मनोहरलाल

- राजा भोज की कहानिया ६)
- खलील जिब्रान की कहानिया ६)
- शेखसादी की कहानिया ६)
- महात्मा गाधी की कहानिया ६)
- स्वामी दयानन्द की कहानिया ६)

चिरंजीत

- छोटे बच्चो के नाटक ८)
- बडे बच्चो के नाटक ८)
- मुनिया भेटो बान्नी (कविता मे) ८)
- राजा-रानी की कहानी (कविता मे) ८)

सन्तराम वत्स्य

- भीष्म पितामह ६)
- वीर अर्जुन ६)
- महाबली भीम ६)
- विज्ञान के खेल ६)
- विज्ञान के पहिए ६)
- लोक व्यवहार १०)
- अच्छा नागरिक ८)
- मेरा देश है यह (पुरस्कृत) ६)
- ज्ञान की कहानिया (पुरस्कृत) ६)
- रामकृष्ण परमहस की कहानिया ६)
- स्वेट मार्डन की कहानिया ६)

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली-६

आर्य समाज फिरोजपुर छावनीजी टी रोड की ओर से विश्व शान्ति यज्ञ

एकता शाति और आध्यात्मिक उन्नति के लिए आय समाज मंदिर जी टी रोड फिरोजपुर छावनी (पजाब) के त वावधान मे दिनाक २१ १० १९८८ से ६ ११ १९८८ एक सप्ताह तक आय समाज मंदिर मे विश्व शाति सामवेद पारायण यज्ञ हुआ। सामवेद के म त्रो द्वारा वदिक यज्ञ सम्प न कराने हेतु आय जगत के अतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वदिक विद्वान श्री प० राजगुरु जी शर्मा ने जो कि इटर नशनल आर्यन लीग के उपप्रधान शिक्षा शास्त्री आयुवदज्ञ तथा यज्ञ कम काण्ड के ममज्ञ हैं इस यज्ञ के ब्रह्मा पद को सुशोभित किया।

दिनाक १ १० १९८८ को साय महिल सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता श्री पडित राजगुरु जी शर्मा ने की। सवप्रथम सामवेद के मन्त्रो से यज्ञ किया। सम्मेलन का सचालन श्रीमती [illegible] प्राचार्या डी ए वी गर्ल्ज हा स स्कूल फिरोजपुर छावनी ने किया। [illegible] श्रीमती आशा राय प्रचार्या डी ए वी कालेज फार वुमन श्रीमती [illegible] आया आदि कई विदुषी महिलाओ ने अपने विचार प्रस्तुत किय।

शनिवार दिनाक ५ ११ १९८८ रात्रि को युवक सम्मेलन हुआ इस सम्मेलन का सचालन श्री देवराज दत्ता ने किया। अध्यक्षता प० राजगुरुजी शर्मा की रही। गायत्री मन्त्र से सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। इसमे श्री मनमोहन पडित दिवाकर भारती श्री विजय आन द जी आदि युवको ने अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होने कहा कि युवको को अगर सही काम करने को मिलते रहें तो वे गलत माग की ओर कभी अग्रसर हो हा नहीं सकते क्योकि खाली दिमाग तो शतान का घर होता है।

गया (बिहार) के मुश डा मेला मे वेद प्रचार दिनाक २३ २४ २५ एव २ नवम्बर को गया जिला आय सभा के तत्वावधान म वैदिक धम प्रचार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सवश्री डा० देवेन्द्र कुमार जी माल दा भिखारसिह भजनोपदेशक भोजपुर तथा सत्यप्रकाश आय भजनोपदेशक मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश) के कायक्रम होत रहे

शोक समाचार

१५ नवम्बर सन ८८ की रात को वेद प्रकाश आय (पुस्तकाध्यक्ष) आय समाज स्टेशन रोड बिन्दकी के परमपूज्य पिता श्री रणधीर जी नम्बरदार जो कि नगर बिन्दकी के सम्भ्रान्त व्यक्तियो मे गिने जाते थे इस इस ससार से चल बसे।

आय समाज स्टेशन रोड बि दका ईश्वर से प्रार्थना करता है उनकी आत्मा को शाति मिले और मानव योनि मे जन्म मिले। तथा समस्त परिवार को कष्ट सहन करने क्षमता दे।

—[illegible] आय मन्त्री

सार्वदेशिक प्रस दरियागंज नई दिल्ली से मुद्रित [illegible] मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

मटि मब १६ ९
वष ३ अक ५।

सार्वदेशिक आ। प्रा नि स
पौ स० २०४५ रविवार ४ दिसम्बर १९

सृष्टि संवत १६७२ दयानन्दाब्द १६४
... मूल्य ... प्रति ६० पैसे

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिल्ली में होगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा का निर्णय

सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन, विश्व आर्य महासम्मेलन अथवा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन करने का अधिकार केवल सार्वदेशिक सभा को है अन्यो को नहीं।

सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा की १८ अप्रैल ८८ की अ तरग सभा मे सवसम्मति से निणय लिया गया था कि सभा की ओर स एक अन्तर्राष्टीय आय महासम्मेलन का आयोजन किया जाये। उसमे यह भी निणय हुआ था कि पहले आय महासम्मेलन प्रातीय स्तर पर प्रा तीय सभाए आयोजित र नसके ब द अ नर्राष्टीय आय महासम्मेलन सावदेशिक सभ । । मे दिल्ली मे किया जाये।

आय जनता को सूचित किया जाता इसी प्रस्ताव के आधार पर गत २६ २७ और २८ नवम्बर को मध्यप्रदेश के सीतापुर नामक स्थान मे वनवासी आय महासम्मेलन हुआ था जिसमे लग भग ६ हजार ईसाइयो की शुद्धि की गई थी। आगामी ३० ३१ दिसम्बर और १ जनवरी १९८९ को अलवर म राजस्थान सभा की ओर म आय महासम्मेलन का आयोजन हो रहा है। इसी प्रकार अन्य प्रान्तीय सभाए भी कायक्रम की तैयारियो मे लगी हुई है।

सावदेशिक सभा मे अनेक लोगो की शिकायत मिल रही है कि कुछ सगठन विरोधी तत्व विश्व आय महासम्मेलन के नाम पर विज्ञप्तिया प्रचा रहे है और धन सग्रह के प्रयास मे लग हुए है।

य जनता को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त आय म न करने का अधिकार केवल सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा का ही है अ य किसी को नही। आयजन ऐसे लोगो को न तो धन द और न किसा प्र । सहयोग करे। सावदेशिक सभा अ तर्राष्टीय आय महासम्मेल आयोजन की तिथियो का शीघ्र निणय लेकर घोषणा करेगी।

पृथ्वीराज शास्त्री
सभा मन्त्री

दिल्ली म आयोजित कथाकथित विश्व आर्य सम्मेलन से जनता साव । रहे

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के वृहदधिवेशन में सर्वसम्मत प्रस्ताव

लखनऊ १२ १ नवम्बर। आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का व र्षिक अधिवेशन डी०ए वी कालेज लखनऊ क प्रा ण मे विशाल प न्डाल म हुआ। जिसमे उत्तर प्र स्थित आय समाजो के हजा । प्रतिनिधियो ने भाग लिया। इस अवसर पर आगामी वष क लिए १० इ द्रराज प्रधान औ ीमन ोहन तिवारी मन्त्री सवसम्मति स चुने गए। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार के मन्त्री श्री बलदेवसिह आय और सावदेशिक सभा क प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी भी विशेष अतिथि क रूप म उपस्थित थ।

अधिवेशन मे श्री जयनारायण अरुण ने प्रस्ताव रखा कि इस समय आयसमाज के सगठन मे कुछ स्वार्थी तत्व आयसमाज के नाम का दुरुपयोग कर रहे है और व्यक्तिगत रूप से अ तर्राष्टीय आय महासम्मेलन अथवा विश्व आय सम्मेलन के नाम से जनता से धन एकत्र करन की अपील कर रह है। यह अधिवेशन आय जनता से जोरदार रूप से आह्वान करता है कि इस प्रकार के सम्मेलन क ने का अधिकार केवल सावदेशिक आ य प्रतिनिधि सभा को ही है अन्य

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

शिवकाशी में हरिजनों का धर्मान्तरण नहीं होगा आर्यसमाज द्वारा सम्पर्क विशेष

पिछले दिनो समाचार पत्रो मे यह रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी कि शिवाकाशी जिले म ० हरिजन अपने परिवार सहित धर्म परिवर्तन करने वाले है। इस पर हमने अपने दक्षिण भारत प्रचार केन्द्र मदुराई के सयोजक श्री एम० नारायण स्वामी से हरिजनो से सम्पर्क करने और उनके नेता श्री पी०एस० राजू से बात-चीत करने को कहा था।

श्री एम० नारायण स्वामी ने रिपोर्ट दी है कि श्री पी०एस० राजू वहा कई लोगो को सरकारी ऋण दिलाते है और लोगो के छोटे झगडो का निपटारा भी करते है। उनका स्वय का अपना बगला है और एक लिथो प्रेस चलाते हैं। लगभग ३०० हरिजन जो कि पराया जाति के है उन पर श्री राजू का विशेष प्रभाव है। इस जाच कार्य मे हमारे अन्य कार्यकर्त्ता श्री कृष्णन जी का भी विशेष सहयोग रहा है। श्री राजू ने धर्म परिवर्तन का विचार त्याग दिया है। उन्होने श्री एम० नारायण स्वामी को जो पत्र लिखा है, उसका हिन्दी अनुवाद निम्न प्रकार है—

श्री एम० नारायण स्वामी दिनाक ७-१२-८८
सयोजक दक्षिण भारत आर्य समाज, मदुराई
प्रिय महोदय

मुझे आपसे मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई। हमे छुआछूत के भेद भाव से मुक्त कराने की कृपा करे। हमे इस भेदभाव से उठाने के लिए जागृति दीजिए ताकि धार्मिक और जात पात की बुराई दूर हो सके। मुझे आशा है आप दक्षिण भारत मे हमारे लोगो को हिन्दू समाज मे उचित स्थान दिलाने के लिए पूरा सहयोग और प्रयत्न करेगे। परमात्मा आपको इसमे हर प्रकार का सहयोग और आशीर्वाद प्रदान करे।

ह० एस० पी० राजू
स्टेट प्रेजीडेण्ट, ह्यूमन राइटस् मोवमैण्ट
हुसैन कालोनी, शिवकाशी, तमिलनाडू

आर्य सम्मेलन

(पृष्ठ १ का शेष)

किसी को नही। यह अधिवेशन आर्य जनता से अपील करता है कि आर्य समाज से निष्कासित तथा सगठन विरोधी लोगो को उनके व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए न तो धन दे और न किसी प्रकार का सहयोग दे।

उक्त प्रस्ताव का श्री मनमोहन तिवारी ने अनुमोदन किया और करतल ध्वनि से सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करते हुए सार्वदेशिक सभा से माग की गई कि सार्वदेशिक सभा, सगठन विरोधी लोगो के इस कुचक्र से आर्य जनता को आगाह करे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि आगामी ३०-३१ दिसम्बर और १ जनवरी १६८६ को अलवर मे आर्य महासम्मेलन की तैयारिया जोरो पर चल रही है। इसलिए आर्य जनो को अलवर सम्मेलन के लिए अपना पूरा सहयोग सार्वदेशिक सभा को करना चाहिए।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०
लखनऊ।

परीक्षा हिन्दी में क्यों नहीं जाखड़ ने सरकार को लताड़ा

नई दिल्ली, १५ दिसम्बर। लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ ने केन्द्रीय लोकसेवा आयोग की परीक्षाओ मे हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओ की परीक्षाओ का माध्यम नही बनाये जाने पर सरकार को फटकार लगाई।

शून्यकाल के दौरान श्री बालकवि वैरागी द्वारा यह मामला उठाये जाने पर श्री जाखड ने कहा कि कोई हिन्दी भाषा को कैसे बन्द कर सकता है। डा० जाखड ने शिक्षा मन्त्रालय को निर्देश दिया कि वह इस बारे मे उन्हे सूचित करे। उन्होने श्री वैरागी को आश्वासन दिया कि वह खुद इस मुद्दे के हल के लिये पहल करेगे।

डा० जाखड ने कहा कि यह मुद्दा पहले भी सदन मे उठाया जा चुका है और वह इस बारे मे किसी भी ढिलाई को बर्दाश्त नहीं कर सकते।

(मिलाप सन्देश १६ दिसम्बर)

तीन साल का बालक तीन भाषायें जानता है

भुवनेश्वर १५ दिसम्बर दूर दूर के लोग कटक जिला के कालिगा गाव मे इस तीन वर्ष के बच्चे को देखने आ रहे है। इस गाव मे बच्चे को देखने वालो की भीड निरन्तर बढती जा रही है।

यह तीन साल का बालक हिन्दी अग्रेजी और उडिया लिख सकता है। और तीनो भाषाओ मे बातचीत भी कर सकता है। दैनिक उडीसा अखबार समाज के अनुसार एक किसान के बच्चे ने अपनी बेमिसाल योग्यता की वजय से तहलका मचा दिया है। इस क्षेत्र के चार पुलिस अफसरो ने इस बच्चे को परखने की कोशिश की और उसे खरा पाया। यह बच्चा उडीया, हिन्दी, अग्रेजी अच्छी तरह जानता है और कई बीमारियो का इलाज भी बतलाता है। सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्रिका के सवाददाता ने इसे पुनर्जन्म का एक जीता जागता प्रमाण बताया है।

(दैनिक प्रताप १६ दिसम्बर ८८)

आर्य प्रतिनिधि महाराष्ट्र की ओर से राष्ट्रीय समस्याओ पर राष्ट्रपति श्री आर०वेंकटरमन को ज्ञापन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा ने पिछले दिनो राष्ट्रकी अनेक समस्याओ पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया और सम्बद्ध विषयो पर प्रस्ताव पारित करके मुख्य बिन्दुओ पर विचार करने के लिए राष्ट्रपति तथा अन्य नेताओ को भेजा उनके अनुसार—

१—भारत के हर नागरिक का जीवन हमारा आदर्श वैदिक जीवन होना चाहिए न कि पाश्चात्यवाद।

२—वेद ईश्वरीय वाणी है, यह मानवता, त्याग, तपस्या और मोक्ष की शिक्षा देती है।

३—सस्कृत भारतीय भाषाओकी जननी है इसकी उपेक्षा नहीकी जानी चाहिए और उसे प्रथम श्रेणी की भाषा बनाकर लागू किया जाना चाहिए।

४—चरित्रहीनता का मूल कारण आहार की अपवित्रता है। यह सब जीव हत्या का कारण है। अत अभक्ष्य आहार से दूर रहना चाहिए।

५—गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को प्रोत्साहन देना चाहिए और सहशिक्षा प्रणाली समाप्त की जानी चाहिए।

६—धर्मनिरपेक्षा का नाम—सम्प्रदाय निरपेक्ष किया जाना उचित है।

—दौलतराम चड्ढा
प्रधान महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

सम्पादकीय

सम्प्रदाय निरपेक्ष दृष्टि में दो तत्व

मृत्यु जीवनका अन्त करने के लिये कोई बहाना ढूंढती है स्वामी श्रद्धानन्द के लिये उसने जो बहाना ढूंढा उससे उसने निश्चय ही उनको अमर शहीदके पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। किन्तु उसके लिये एक धर्मान्ध मुस्लिम अब्दुल रशीद को अपना निमित्त बनाकर उसने उनके साथ सबसे बडा अन्याय किया। परन्तु यहा भी एक रहस्य था पर उस पर किसी की दृष्टि नही जा सकती।

स्वामी जी की मृत्यु से ठीक एक मास पूर्व उन्हे निमोनिया का असर हो गया था। सम्भवत. अपनी मृत्यु का अनुभव इस बीमारी के समय उन्हे हो चुका हो। डा० अन्सारी १६११ से उनके निजी डाक्टर थे। इस बीमारी मे भी उन्होने मृत्यु के मुख से उन्हे बचा लिया था और पूर्ण स्वस्थ होने का आश्वासन भी दे चुके थे। इस आश्वासन के दूसरे ही दिन स्वामी जी की मृत्यु का वारन्ट अब्दुल रशीद के रूप मे मिला।

मृत्यु ने डा० अन्सारी और अब्दुल रशीद के रूप मे। इस प्रकार मानव के दो रूप उपस्थित किये हैं। एक वह था जिसने स्वामी जी को मृत्यु से छुडाने का अथक प्रयास किया। साथ ही दूसरा वह था जिसने उनको मृत्यु के मुंह मे पहुँचा दिया।

दोनो मुसलमान थे एक रक्षक के रूप मे दूसरा भक्षक के रूप मे। मानव के हृदय मे मानवता, उदारता, सहृदयता, सहानुभूति ममता का जो रूप रहता है, उसके प्रतीक थे डा० अन्सारी। वे मानवतावादी और सम्प्रदायवाद से ऊपर उठकर आदर्श मानव थे।

अब्दुल रशीद प्रतीक था उस धर्मान्धता के अन्धकार का, जिसमें मानव अपनी मानवता खोकर घोर अनर्थ करने पर उद्यत हो जाता है।

साधारण मनुष्य की दृष्टि इस घटना पर नही जा पाती। उसने इस घटना को जिस सकीर्ण-साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से देखा उसका मैल उसने स्वामी श्रद्धानन्द पर भी चढा दिया।

स्वामी जी आर्य समाज के ही नेता नही थे अपितु, राष्ट्रीय स्तर के भी वह नेता थे।

स्वामी जी कांग्रेस से पृथक होकर अपने को शुद्धि आन्दोलन तथा समाज के सगठन व दलितोद्धार के कार्य पर जिस प्रकार लगाया उससे भी इस भ्रम को प्रश्रय मिला। स्वामी जी का कांग्रेस से अलग अपने को इन आन्दोलनो में लगाना भी एक ऐसी घटना है। जिसकी वास्तविकता से कम व्यक्ति परिचित हैं।

स्वामी जी धार्मिक एव सामाजिक दृष्टि से चतुर्मुखी क्रान्ति को मानते थे अपने व्यक्तिगत जीवन मे भी क्रान्ति को उपासना की थी। पुरानी सामाजिक रूढियों, धार्मिक अन्ध विश्वासो को जडमूलसे नष्ट करने प्रयास किया। गान्धी जी ने १६३१ में हरिजनों को हिन्दुओं को पृथक करने की।

अंग्रेज राजनीतिज्ञो की जिस चेष्टा के विरुद्ध आमरण अनशन किया था उसको स्वामी जी ने १६१६ में अनुभव किया था चेतावनी स्वरूप प्रस्ताव किया था कि अछूतोद्धार को कार्यक्रम में मिलाकर घरों में निजी नौकरी में हरिजनो को रखें, पर वह प्रस्ताव माना नहीं गया। परिणामत. मुसलमान हिन्दू का आधा बटवारा चाहते थे। मुहम्मद अली ने कनाडा मे अपने भाषण देते हुए हरिजनो को बांटने की बात खुलकर कही थी, ईसाई इस पर अपना एकाधिकार समझते थे। स्वामी जी ने तभी कांग्रेस को त्याग दिया।

शुद्धि आन्दोलन नया नहीं था १६०५ में मलकाना राजपूत व गूजर अपनी बिरादरी में आने को उद्यत थे।

अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष पद से भाषण मे कहा था कि ब्रह्मचर्य प्रधान शिक्षा प्रणाली, राष्ट्रीय चरित्र निर्माण हेतु अनुरोध किया था ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा, छुआछूत का निवारण विधवा उद्धार व पुनर्विवाह आदि रचनात्मक कार्य हिन्दू समाज की बचाव के मूल तत्व माने थे।

शकराचार्य प० गिरधार शर्मा आदि सनातन धर्मी मठाधीशो ने स्वामी जी पर यह आक्षेप किया था कि स्वामी जी प्रच्छन्न रूप से हिन्दुओ में आर्य समाजी पना थोपकर आर्य समाजी बनाना चाहते हैं।

अपने ही घर मे वर्णाश्रम सघ जैसे लोग स्वामी जी का खुलकर विरोध कर रहे थे। विधवा विवाह पर महामना मालवीय जी ने भी कम की थी व स्वामी जी ने समय को भाप लिया और विरोध बढने नही दिया। अन्त मे हिन्दू सभा से भी त्याग पत्र दिया।

इस प्रकार स्वामी जी कोरी साम्प्रदायिक नीति के सर्वथा विरोधी थे। उनके दलितोद्धार शुद्धिकार्य मे मुस्लिम विरोधी साम्प्रदायिकता लेशमात्र भी नही थी।

अपने बलिदान से पूर्व गोहाटी कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष को जो सन्देश दिया था उसमे भी 'हिन्दू-मुस्लिम एकता पर ही भारत माता की मुक्ति निर्भर है यह कोरा सन्देश ही नही था। मुसलमानो के विषय मे उन्होने लिखा था 'हिन्दू मुसलमानो को मैं केवल यह सलाह देना चाहता हू कि सगठित और शक्ति सम्पन्न समाज का असगठित और कमजोर समाज पर अत्याचार करना वैसा ही पाप है जैसा कमजोर और कायर पर होता है अत हिन्दुओ को शक्ति सम्पन्न और सगठित होने मे विघ्न मत डालो। यदि तुम हिन्दू समाज को मिटा सकते तो मैं कुछ नहीं कहता क्यो कि मानव समाज का यह दुर्भाग्य है कि इस वसुन्धरा का भोग वीर ही करते रहे हैं। यदि हिन्दू समाज को नष्ट नही किया जा सकता है तो उसको दृढ व सगठित होने दो। जिससे वह भारतीय राष्ट्र के राजनीतिक अभ्युदय मे मुसलमानो के गले का भार न होकर शक्ति का पुंज साबित हो सके।

नि सन्देह वह हिन्दू समाज को सुदृढ शक्ति सम्पन्न बनाना चाहते थे। इसी से समाज सुधार के रचनात्मक कार्य को अपना महान व्रत बनाया। कांग्रेस और हिन्दू महासभा दोनो के सामने अपना कार्यक्रम उपस्थित किया। परन्तु दोनो से ही उन्हे निराश होना पडा था।

मुस्लिम विद्वेष के रूप मे साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से उनके इन प्रयत्नो को देखना न केवल उनके साथ अपितु इतिहास के साथ भी अन्याय करना है।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

डा० शिवकुमार शास्त्री (महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य)

विशाल शरीर में विशाल आत्मा स्वामी श्रद्धानन्द इस सत्य के मूर्तिमान स्वरूप थे। गांधी जी ने मतभेद के बावजूद अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा था—

भय के सामने उन्होंने कभी सिर नहीं झुकाया। उनसे बढ़कर बहादुर मैंने संसार में दूसरा आदमी नहीं देखा। मरने का डर उन्हें नहीं था, क्योंकि वे सच्चे आस्तिक, ईश्वरवादी आदमी थे। मैं साक्षी हूं कि देश के लिए अपना शरीर कुर्बान करने की उन्होंने प्रतिज्ञा ली थी। वे अनाथ बन्धु थे। अछूतों के लिए जितना उन्होंने किया, उससे अधिक हिन्दुस्तान में दूसरे किसी ने नहीं किया। वे कर्मवीर थे, वाक्शूर नहीं। वे वीर के समान जिए और वीर के समान मरे।

पं० जवाहरलाल नेहरू अनेक व्यक्तियों के तीव्र आलोचक रहे हैं, परन्तु स्वामी जी के लिए उन्होंने लिखा—

स्वामी श्रद्धानन्द में निडरता की मात्रा आश्चर्यजनक थी। लम्बा कद, भव्य मूर्ति, सन्यासी वेश, बहुत उमर हो जाने पर भी बिल्कुल सीधी कमर, त्योरियों पर आने वाली चिड़चिड़ाहट या गुस्से की छाया का गुजरना—मैं इस तस्वीर को कैसे भूल सकता हूं। अक्सर वह मेरी आंखों के सामने आ जाती है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का सारा जीवन मानो इस मूल्यांकन की सही व्याख्या है। सामन्ती युग में उनके पिता पुलिस अधिकारी थे, अत प्रारम्भिक जीवन में उन्हें वे सारी भोग्य सामग्री प्राप्त थी जो किसी राजा और रईस को होती हैं। मांस मदिरा और नारी उनसे कुछ भी नहीं छूटा। वे अपने को कट्टर नास्तिक भी मानने लगे थे, परन्तु बरेली में स्वामी दयानन्द जी महाराज का साक्षात्कार एवं तर्कनाशक्ति ने उनकी काया पलट दी। लाहौर आर्य समाज का सदस्य बनने पर उनके जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। महर्षि द्वारा स्थापित आर्यसमाज को पुष्पित और पल्लवित करने में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का सबसे अधिक योगदान रहा। उन्होंने स्वाहा, इदन्न मम को मूर्तरूप देकर गुरुकुल की स्थापना की और सबसे पहले अपने जिगर के टुकड़ों—हरीश और इन्द्र—को प्रविष्ट किया।

विदेशी शासन से आर्थिक सहायता लिए बिना और सरकार से अपनी परीक्षाओं की मान्यता दिलाए बिना मातृभाषा द्वारा शिक्षित-दीक्षित गुरुकुल कांगड़ी ने जिन स्नातकों को जीवन क्षेत्र में उतारा वे सर्वत्र सफल रहे। तत्कालीन कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग के प्रधान श्री सैडलर ने स्वीकार किया—

मातृभाषा द्वारा ऊंची शिक्षा देने के परीक्षण में गुरुकुल को अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई।

१८ वर्ष तक गुरुकुल के आचार्य पद पर सुशोभित रह कर जहां एक ओर उन्होंने ब्रह्मचर्य प्रधान राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार किया, वहां अनेक विदेशियों को भी आकर्षित किया। बहुत से व्यक्ति वहां हिन्दी पढ़ने आए तो बहुत से यह जानने के लिए भी आए कि यहां विदेशी शासन को उखाड़ने का कौन सा षड्यन्त्र चल रहा है।

महात्मा गांधी ने जिस समय असहयोग आन्दोलन का सूत्रपात किया, उस समय स्वामी जी उनके साथ आ गए। ३० मार्च १९१९ को दिल्ली में पूर्ण हड़ताल रही। इसी जुलूस का नेतृत्व करते हुए स्वामी जी ने सिपाहियों की संगीनों के समक्ष छाती तान कर कहा था—

लो मैं खड़ा हूँ, गोली मारो।

४ अप्रैल १९१९ को उन्होंने दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर पर खड़े होकर विशाल जनसमूह को सच्ची साम्प्रदायिकता का उपदेश देते हुए देश की स्वतन्त्रता के लिए सर्वस्व बलिदान कर देने की प्रेरणा दी थी। इस उपदेश का प्रारम्भ उन्होंने—

ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अधाते सुम्नमीमहे॥

इस वेदमन्त्र से किया था और समाप्ति ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः से की थी।

स्वामी श्रद्धानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने १९१९ में अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के रूप में राष्ट्रीय महासभा मंच पर हिन्दी में स्वागत भाषण दिया। महात्मा गांधी ने उनके भाषण के सम्बन्ध में लिखा था—

स्वागत समिति के अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी का भाषण उच्चता, पवित्रता, गम्भीरता और सच्चाई का नमूना था। वक्ता के व्यक्तित्व की छाप उसमें आदि से अन्त तक लगी हुई थी। मनुष्यमात्र के प्रति उसमें सद्भावना प्रकट की गई थी।

स्वामी जी का मानना था कि सामाजिक ढांचे को सुदृढ करने के लिए छुआछूत की भावना को समूल नष्ट करना होगा। अस्पृश्यता निवारण के लिए उन्होंने दलितोद्धार सभा की स्थापना की।

२३ दिसम्बर १९२६ को राष्ट्रीय एकता और सद्भावना का पैरोकार एक धर्मान्ध मुसलमान की गोली का शिकार बना। उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर महात्मा गांधी के मुख से सहसा निकला था—

शानदार जीवन का शानदार अन्त

आज हम जब स्वामी जी का ६२वां शहीदी दिवस मना रहे हैं, हमें प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अक्षुण्ण रखते हुए छुआछूत की भावना को समूल नष्ट करने का भरसक प्रयास करेंगे। ●

संघ लोकसेवा आयोग से अंग्रेजी हटाने के लिए सांसदों का प्रधानमंत्री को ज्ञापन

नई दिल्ली १५ दिसम्बर संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने की मांगको लेकर सत्तापक्ष और विपक्ष के करीब १५० सांसदों की ओर से आज प्रधानमन्त्री राजीव गांधी को एक ज्ञापन दिया गया।

इन सांसदों की ओर से ऐसे संसद सदस्य सर्वश्री बाल कवि बैरागी और नरेशचन्द्र चतुर्वेदी तथा तेलगू देशम के श्री वी० तुलसीराम ने यह ज्ञापन श्री गांधी को दिया।

संघ लोकसेवा आयोग की परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने की मांग को लेकर अखिल भारतीय भाषा संगठन के संयोजक पुष्पेन्द्र चौहान अपने साथियों के साथ १६ अगस्त से सत्याग्रह कर रहे हैं।

ज्ञापन के अनुसार लोक सेवा आयोग द्वारा ली जाने वाली ११ प्रतियोगी परीक्षाओं में से १० परीक्षाएं सिर्फ अंग्रेजी में होती हैं। हालांकि दो प्रतिशत से कम प्रत्याशी ही अंग्रेजी भली भांति जानते हैं और शेष ९८ प्रतिशत को अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान नहीं है। इस प्रकार अधिकांश नौकरियां अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान रखने वाले प्रत्याशियों को ही मिल जाती हैं।

ज्ञापन में प्रधानमन्त्री से अनुरोध किया गया कि देश में विभिन्न भाषाई क्षेत्रों के युवकों को रोजगार के समान अवसर प्रदान करने के लिए इन १० परीक्षाओं से भाषा सम्बन्धी व्यवधान दूर किया जाये। इसके साथ ही सभी मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं में आयोजित की परीक्षाएं और साक्षात्कार कराने का निर्देश दिया जाये। (दैनिक वीर अर्जुन १६ दिसम्बर १९८८)

हमारा वैदिक धर्म

(पं० धर्मदेव "मनीष" वेदमार्तण्ड, गुरुकुल कालवा)

सार्व-भौम के स्वरूप का दर्शन धर्मात्मा जनों की इस प्रार्थना में चमक रहा है। वह वेदमन्त्र इस प्रकार है:—

दृते दृ्ंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे, मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।
यजुर्वेद अध्याय ३६। मन्त्र १८॥

हे दृते। सर्वरक्षण परमेश्वर! आप (मा) मेरी (दृ्ंह) भली भांति रक्षा कीजिये। (सर्वाणि) सब (भूतानि) पशु, पक्षी, मनुष्यादि तथा सब जीव जन्तु (मा) मुझको (मित्रस्य) मित्रता की (चुक्षुषा) दृष्टि से ही (समीक्षान्ताम्) भली भांति सदैव देखते रहें। और (अहम्) मैं भी (सर्वाणि भूतानि) सब ही भूत प्राणियों को (मित्रम्य) मित्रता की (चक्षुषा) दृष्टि से ही (समीक्षे) सदा भली भांति देखता रहूँ। और (मित्रस्य) मित्रता की (चक्षुषा) आंख से ही (समीक्षामहे) हम सब एक दूसरे को सदैव देखते रहे। आप हमारी इस प्रार्थना को सदैव पूर्ण करते रहिये।

इस मन्त्र में मित्र शब्द है। इस मित्र शब्द का अर्थ है—मित्= दुःख। त्र=बचाना रक्षा करना। अर्थात् जो कोई दुःख वा कष्द से बचाने वाला होता है उसको मित्र कहते हैं। परमात्मा हमको दुःखों से बचाता है अतः वह हमारा मित्र भी है माता-पिता, भाई, बहिन, पति, पत्नी, पुत्र, पुत्री, पौत्र, चाचा, ताऊ आदि सम्बन्धी एक दूसरे की यथोचित रक्षा करते हैं अतः सब आपस में एक दूसरे के लिये मित्र हैं। सूर्य, चन्द्र, प्रकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, उद्भिज, वृक्ष लता आदि वनस्पति अन्न फल मूल खाद्यादि पदार्थ हमारे जीवन की रक्षा करते हैं, अतः ये सब पदार्थ हमारे मित्र हैं। तथा पशु, गधा, घोड़ा, गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट, हाथी तथा अनेकशः पक्षी आदि जीव-जन्तु अपने-अपने गुणों से हमारे जीवन की रक्षा में सहयोगी होते हैं अतः इन सबको भी मित्र कह सकते हैं। इस प्रकार इस मित्र शब्द का अर्थ रक्षापरक है और अतिविस्तृत सार्व-भौमिक ही अर्थ है। जब इस धर्म के आदेशानुसार सब ही प्राणी और विशेषतः मनुष्य आपस में एक दूसरे को मित्र भाव से देखेंगे, मित्र-भाव से ही एक दूसरे के साथ बर्ताव करेंगे तो फिर शत्रु वा दुश्मन कौन होगा? जब किसी के नेत्रों में शत्रुता का भाव ही न होगा तो संसार मे शत्रु वा दुश्मन कहां मिलेगा? कहीं नहीं अर्थात् जिन मनुष्यों के अन्त.करण और मस्तिष्क मे यह धर्म जम गया है कि—सब मेरे मित्र ही है—तो वह व्यक्ति किसी दूसरे के लिये अमित्रता अथवा शत्रुता की भावना भी अपने मन में कैसे ला सकता है? ऐसे व्यक्ति के नेत्रों पर तो मित्रता का ऐसा सुन्दर सुदृढ़ ऐनक चढ़ जाता है कि फिर उसे इस ससार मे जड़ चेतन कोई भी वस्तु हो—सब सदैव मित्र ही मित्र दीखते हैं।

इसी भावना का नाम सार्वभौम धर्म है। भला ऐसा धर्म कही इन मत-मतान्तरों और मजहबों मे कभी मिल सकता है? नही और कभी नही। इम सार्वभौम धर्म की सिद्धयर्थ ही वेद मे कहा है कि—

संगच्छध्वं सवदध्व स वो मनासि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे स जानाना उपासते॥
ऋग्० १०।१६१।२॥

सब मनुष्य शुभ चाल-चलन वाले हो। सम्=अच्छा सुन्दर सत्य और मधुर भाषण किया करे। सबके मन पवित्र हो, ज्ञानवान् हों और सबका जीवन देवताओं के समान उत्तम तथा पूर्ण सुखी हो।

प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजो की भांति तुम, कर्तव्य के मानी बनो।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि॥
(ऋग् १०।१६१।३)

ईश्वर उपदेश देते हैं—आर्य मनुष्यो! तुम्हारे मन विचार चित्त-चिन्तन आदि आपस में शुद्ध पवित्र तथा समान हों और एक दूसरे के विरुद्ध कभी न हों।

हों विचार समान सबके, चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर, योग्य पा सब नेक हों॥

जब मनुष्यो को ऐसी उत्तम धार्मिक शिक्षा दी जायेगी। तब आपस में मित्रता होगी। प्रेमभाव होगा प्रीति होगी और सुख-दुःख में सब एक दूसरे के साथी ही होगे। तब कोई किसी का शत्रु नही रहेगा चहु ओर सर्वत्र आनन्द की मधुर बंशी ही बजती हुई सुनाई देगी। महामुनि कणाद जी ने भी ऐसा ही धर्म का लक्षण किया है—

"यतोऽभ्युदयो निःश्रेयसः सिद्धिः स धर्मः॥
(वैशेषिक दर्शन १।२)

अर्थात् जिन श्रेष्ठ गुणों से मनुष्य अपनी लौकिक उन्नति-धन दौलत-ऐश्वर्य, चक्रवर्ति राज्य तक को भी प्राप्त कर सके तथा अन्त में ईश्वर के दर्शन करके मोक्ष-मुक्ति को भी पा सके। उन्ही श्रेष्ठ गुण और उत्तम कर्मों का नाम ही धर्म है। ऐसा धर्म मनुष्य मात्र के लिये ही परिपालनीय और कल्याणकारी है। भला कौन बुद्धिमान् मनुष्य होगा जो इन श्रेष्ठ गुण गरिमा जन्य श्रेष्ठ कर्मों का विरोध करेगा? अर्थात् जिस श्रेष्ठ गुण कर्म, स्वभाव से युक्त होकर जीवन को उत्तम बनाया जा सकता है उसका ही नाम धर्म है। यह धर्म शब्द "धृञ धारणे" धातु से बनता है। जिसका शब्दार्थ ही होता है कि—"जो धारण किया जाये उसको धर्म कहते हैं अथवा जो श्रेष्ठ गुण धारण करने योग्य होते हैं उनका ही नाम धर्म है। यथा—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीविद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥
मनु० ६। ९२॥

अर्थात् भूख प्यास-सुख दुःख में धैर्य रखना। शान्त तथा क्षमा-वान् होना, दम-मन को वश मे रखना, चोरी का त्याग, शरीर और इन्द्रियो को पवित्र रखना अथवा विषय वासना से रोकना, अपनी बुद्धि को शुद्ध पवित्र रखकर, विद्या पढना-पढ़ाना और सदैव सत्य को ही धारण करना तथा क्रोधादि दुर्गुणों से बचकर सदैव शान्त मस्तिष्क बना रहना। इत्यदि गुणो का नाम ही धर्म है और महाराज मनु जी के उक्त कहे गये धर्म के ये श्रेष्ठ गुण ही धारण करने के योग्य हैं। इनके विपरीत जो दुर्गण हैं उनको कदापि धारण न करना चाहिये।

नीरोगता और निर्धनता पर बिस्मिल के विचार

श्री सुनील कुमार जी, कलकत्ता

"देश अंग्रेजो के अधीन था, देश को स्वाधीन करने के लिये जब अमर शहीदो ने हसते-हसते फासी के फन्दे चूमे, तब देश अंग्रेजों के बन्धन से मुक्त हुआ। उन अमर शहीदो मे सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर 'आजाद' तथा रामप्रसाद 'बिस्मिल' का नाम उल्लेखनीय हैं। यह सुनकर ही हृदय मे खुशियो की हिलोर उठने लगती हैं, तथा सोचने को बाध्य होना पडता है कि कैसे होते थे वे लोग जिन्होने देश के लिये क्या नही किया ?'

रामप्रसाद 'बिस्मिल' क्रान्तिकारी थे, साथ ही वे अपूर्व चिन्तक भी थे। उनका अटूट विश्वास था कि देश की आजादी केवल अंग्रेजो के चले जाने से नही आर्थिक और सामाजिक विषमता को दूर करने से सफलीभूत होगी। उनका गहन चिन्तन था कि इन विषमताओ को दूर करने के लिये देश का भोगी नही योगी की आवश्यकता है, अर्थात् नीरोग व्यक्ति ही समाज मे बहुमुखी क्रान्ति ला सकता है। प० रामप्रसाद बिस्मिल युवको को निर्देश करते हुए कहते हैं कि "प्रात काल सूर्योदय होने से एक घण्टा पहले शय्या त्यागकर शौचादि से निवृत होकर व्यायाम कर या वायु सेवनार्थ मैदान मे जाय।' इतना ही नही उनका यह भी विचार था कि शरीर को स्वस्थ रखने के लिये व्यायाम की तरह नियमित स्नान, भोजन (उत्तेजना रहित) की आवश्यकता है।

अपनी आत्मकथा मे वे आगे लिखते है सब व्यायामो मे दण्ड बैठक सर्वोत्तम व्यायाम है। जहा जी चाहा व्यायाम कर लिय। यदि हो सके तो प्रोफेसर राममूर्ति की विधि से दण्ड बैठक कर। थोडे ही समय मे पर्याप्त परिश्रम हो जाता है। दण्ड बैठक के अलावा शीर्षासन और पद्मासन का भी अभ्यास करना चाहिये और अपने कमरे मे वीरो और महात्माओ के चित्र रखने चाहिये।

नीरोग व्यक्ति ही शिक्षित होकर बुद्धिमान नागरिक बन सकता है तथा उनका हर एक कदम समाज में फैले गैर बराबरी, भूखमरी, बेरोजगारी तथा कुरीतियो को दूर करने मे कामयाब हो सकता है।

जिनके दिल और दिमाग मे देशोद्धार के दृढ विचार पैदा हो, उन्हे चाहिये देश के ८० फीसदी लोग जो गावो में बसते हैं, तथा अज्ञान, अन्याय और आभाव के शिकजे से फसे हुये हैं। खासकर गावो के पिछड किसानो का समुदाय तथा अछूत वर्ग जो आज भी असहाय बनकर भाग्य के भरोसे बैठे हुये हैं—को सगठित करे उनके उचित हक का उन्हे बोध करायें एव भूस्वामियो के अत्याचारों से उन्हें बचाये।

वे ग्राम्य जीवन के पक्षपाती थे। उनके अनुसार जो लोग बेरोजगारी के भीषण चक्की मे पिस रहे हैं—उन्हे बढई, लुहार गिरी, दर्जी का काम, धोबी का काम, जूते बनाना, कपडा बुनना, मकान बनाना इत्यादि सीखना चाहिये। आज जो लोग पशुपालन से दूर हटते जा रहे है तथा शहरो की ओर पलायन कर रहे हैं तथा उन्हे पशुधन की कीमत जाननी चाहिये। देशोपकार के इच्छुक सज्जनो को विद्यालय के अतिरिक्त शिल्प कला कौशल एव उद्योग पीठो की स्थापना करना चाहिये। आज से ६१ वर्ष पूर्व व्यक्त किये गये उनके ये विचार आज भी उतने ही प्रासगिक हैं। जितने उस समय थे फिर भी क्या हम उन उन शहीदो क प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर चुके हैं? महासभाओ के आयोजिन के पहले तोरणद्वार बनाने वाले, शहीद सहायता समिति के नाम पर रुपये इकटठे करने वालो से तथा बिस्मिल जिन्दाबाद करने वालो से मैं पूछता हूँ कि क्या कारण है कि आज के ४१ वर्ष बाद भी देश मे फैले भ्रष्टाचार गैर बराबरी भूखमरी, बेरोजगारी कुरीतियों व अछूत वर्ग के प्रति दूषित भावनाओ का दूर करने मे कामयाब नही हो सके है।

महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य का महत्त्व

आचार्य सत्यव्रत राजेश, प्रा० गुरुकुल कांगड़ी वि०वि० हरिद्वार)

महर्षि दयानन्द से पूर्व भी अनेक भाष्यकार हुए हैं। जिनमे सायणाचार्य, उद्गीथ, वेकट माधव, उवट तथा महीधर मुख्य हैं। सायणाचार्य ने तो ऋग्वेद सम्पूर्ण यजुर्वेद की काण्व तथा तैत्तिरीय शाखा, सामवेद तथा अथर्ववेद पर भाष्य लिखा है। सामवेद के तथा अथर्ववेद पर भाष्य लिखा है। अथर्ववेद के कुछ सूक्तो पर उनका भाष्य नही मिलता, शेष सब पर उनका विद्वत्तापूर्ण भाष्य है। उवट तथा महीधर दोनो आचार्यो ने मूल यजुर्वेद, जिसे माध्यन्दिन शाखा भी कहते है, का पूर्ण भाष्य किया है। अन्य आचार्यो ने वेद के कुछ भागो पर भाष्य किया है। ये सब आचार्य विद्वान् थे, इनकी विद्वत्ता मे कोई न्यूनता न थी। इन्हे अविद्वान् कहने वाले इनकी विद्या का अवमूल्यन करते हैं। किन्तु इतने विद्वान् होने पर भी इनका वेद के गौरव की रक्षा न कर सका तथा अनेक स्थलो पर उनके वेद-भाष्य से वेदो का महत्त्व सुधीजनो की दृष्टि मे घटा है, यह मानना ही पड़ेगा। इसका कारण क्या है इस पर थोडा विचार करना उपयुक्त होगा।

हम जो भाषा बोलते हैं उसके मुख्य तत्त्व तीन है। शब्द अर्थ तथा भाव। शब्द वह है जिसका हम उच्चारण करते हैं। अर्थ लोक व्यवहार तथा शब्दकोश आदि की सहायता से जाना जाता है तथा भाव वह कहलाता है जिस प्रयोजन के लिये हम शब्द का प्रयोग करते हैं।

इनमे भाव ही मुख्य है। क्योकि लक्षण तथा व्यजना वृत्तियो मे अर्थ गौण हो जाता है। जैसे रिक्शा, इधर आ, कहने से रिक्शा, जो जड है उसे सुनाना या बुलाना व्यक्ति का प्रयोजन नही है अपितु रिक्शा वाले को रिक्शा लेकर आना प्रयोजन है। इसी प्रकार कजूस को 'आप तो दानी कर्ण हैं' कहना उसे कर्ण जैसा दानी बताना नही अपितु उसके कृपणत्व का प्रदर्शन करना है। वस्तुत शब्द शरीर है, अर्थ है प्राण तथा भाव है उसकी आत्मा।

शब्द भी तीन प्रकार के होते हैं—लौकिक, साहित्यिक तथा वैदिक। लौकिक शब्दो का जन-सामान्य व्यवहार करता है तथा उसके अर्थ तथा भावो को भी जानता है। उदाहरणार्थ यात्रा से लौटने पर जब बच्चे कहते हैं कि हमारी यात्रा बडी अच्छी रही, हम रास्ते मे खूब खाते पीते गए तो सुनने वाले उस खाने पीने का अर्थ फल चाट आदि जानते है। इसी प्रकार जब कोई अपनी पुत्री के विवाह के विषय मे कहता है कि लडकी के अधिक पढे होने एव वर के उससे कम पढा लिखा होने पर भी विवाह इसलिये कर दिया कि परिवार खाता-पीता है तब श्रोता ने खाने पीने का अर्थ धन-धान्य से सम्पन्न होना समझ लिया है एव जब कोई यह कहता है कि मैंने अपनी कन्या उस परिवार मे इसलिये नही ब्याही क्योकि सारा परिवार खाने-पीने वाला है तब भी यह समझने मे श्रोता को देर न लगी कि वे लोग मासाहारी तथा शराबी है। इस भाति हमने देखा कि लौकिक भाषा के शब्द, अर्थ तथा भाव जन सामान्य प्रयोग करता तथा समझ लेता है।

इसके विपरीत साहित्यिक शब्द अर्थ तथा भावो को समझने मे जन-सामान्य सक्षम नही होता अत उसे समझने मे आचार्यो की बुद्धि कृतकार्य हुआ करती है। उदाहरणार्थ—

> केशव पतित दृष्ट्वा द्रोणो हर्षमुपागत ।
> रुदन्ति कौरवा सर्वे हा केशव कथगत ॥

इसका सामान्य अर्थ होगा कि कृष्ण को गिरा देखकर द्रोण हर्ष को प्राप्त हुए तथा सारे कौरव हाय कृष्ण हाय कृष्ण कह कर रोने लगे। किन्तु कृष्ण ने जब युद्ध करने से ही निषेध कर दिया था तब उनको गिरा देखकर द्रोण का प्रसन्न होना कैसे युक्त माना जा सकता है और कृष्ण के गिरने पर कौरवो का रोना तो सर्वथा असम्भव ही लगता है। अत ऐसे स्थलो पर सामान्य जनो की बुद्धि इस उलझन का समाधान नही कर सकती यहा आचार्यो की प्रज्ञा उलझन को सुलझाती है। जैसे कि उपर्युक्त श्लोक का अर्थ आचार्य इस प्रकार करते हैं—के जल मे शवम्—लाश को पतित पडा दृष्ट्वा—देखकर द्रोण —पक्षी हर्षम् उपागत —प्रसन्न हुए किन्तु सर्वे कौरवा —समस्त गीदड रुदन्ति—रोने लगते है कि हा केशव केशव कथगत —हाय पानी मे पडी लाश वहा कैसे पहुच गई।

गुत्थी सुलझ गई, लाश जल मे पडी है तो पक्षी उसके ऊपर बैठ बैठ कर मास खायेगे तथा वहा कुत्ते गीदड आदि भी नही पहुचेंगे अत पक्षी प्रसन्न है। उधर गीदड भी जगल की नदी मे लाश को खाना चाहते हैं किन्तु वे विवश हैं क्योकि जल मे घुसकर लाश को कैसे खाय अत वे रोते हैं।

यह तो हुई लौकिक तथा वैदिक शब्दो की बात, अब वैदिक शब्दो को लीजिये। वैदिक शब्दो की उलझन आचार्यों की बुद्धि भी नही सुलझा सकती। उसके लिए ऋषियो की ऋतम्भरा प्रज्ञा कृतकार्य हुआ करती है। उदाहरणार्थ (यजु० २३,२०) मन्त्र का पूर्वार्ध ले, जो इस प्रकार है—"ता उभौ चतुर पद स प्रसारयाव ।"

जिसका शब्दार्थ है कि वे दोनो चारो पैरो को अच्छी प्रकार फैलावे। वे दोनो कौन है और उनके चार पैर कैसे हैं, यह बात सामान्य व्यक्ति की समझ से बाहर है। क्योकि मनुष्य के तो दो ही पैर होते हैं। वह चौपाया तो नही जो चारो पैरो को फैलाए। यदि दो व्यक्ति मिलकर अपने दो-दो पैरो को फैलाये तो प्रश्न होगा कि वे ऐसा किस लिये करे। क्योकि पैर फैलाकर बैठना समाज में सभ्य कोटि मे नही आता। अत वेद का यह मन्त्राश एक गुत्थी ही बना रहा, उसका समाधान न हो सका। गुत्थी सुलझती न देखकर हम आचार्यो के पास जाते है। उवट महीधर आदि आचार्य बतलाते है कि यह एक अश्लील वर्णन है जिसमे अश्वमेध याग के समय अश्व के साथ राजमहिषी के विशेष प्रकार से लेटने का उल्लेख है इस अर्थ से भी पाठक का समाधान न हुआ अपितु दो समस्याए उसके सामने और खडी हो गई। पहली यह कि क्या परमात्मा ने वेदो मे अश्लीलता का उल्लेख किया है? सन्तानोत्पत्ति के लिए स्त्री-पुरुषो का मिलना तो स्वाभाविक तथा सार्थक है किन्तु मानवी का अश्व के साथ शान्त पापम्। दूसरी शका यह उत्पन्न हुई कि घोडा चतुष्पद प्राणी है तथा मानव द्विपद। अत दोनो के छ पैर हुए तथा मन्त्र मे लिखा है कि वे दोनो चारो पैरो को फैलाए। अत या तो आचार्यो की व्याख्या मे कही भूल है या मन्त्र का वह आशय न जो आचार्यो ने समझा हो।

मन्त्र के रहस्योद्घाटन मे आचार्यो को भी समर्थ न पाकर हम ऋषियो की शरण मे आए। पूर्व ऋषि हमारे सम्मुख नही हैं। हम उन्हे नमन करते है—"ऋषिभ्य पूर्वजेभ्य ।" किन्तु इस काल के एक महर्षि का वेदभाष्य हमारे सम्मुख हैं, वे हैं महर्षि दयानन्द सरस्वती। जब हम उनका वेदभाष्य पढते है तो शकाओ का समाधान हो जाता है। पहले हमारी शका थी कि मन्त्र मे वर्णित 'वे दोनो' कौन है। वे कहते है—राजा तथा प्रजा के लोग। फिर हम देखते हैं कि "चारो पैर" कौन-कौन हैं? वे लिखते है कि "धर्म अर

(शेष पृष्ठ ८ पर)

एक कर्मयोगी श्री क्षितीश वेदालंकार

एक सम्मानित व्यक्तित्व

समस्त आर्य जगत श्री क्षितीश जी के महान व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित ही नहीं अपितु उनका ऋणी है।

आपको गुरुकुलकांगड़ी के अमूल्य रत्नों में तथा सम्पादक वर्गों में शिरोमणि रूप मे गिना जाता है।

आपने भारत माता के मस्तक पर हिन्दी की बिन्दी चमकती रहे इसके लिए "हिन्दी आन्दोलन" मे भी अपने उत्साह, भारतीयता के प्रति अनुपम अनुराग का परिचय दिया।

आपने अपना जीवन उस युवावस्था में अर्पित किया जब प्रत्येक नौजवान पढ़-लिखकर अच्छी नौकरियो, उद्योग धन्धो से धन कमाने की दौड मे सम्मिलित होकर धनिक बनना चाहता है।

आप भारत की जनता को वैचारिक शक्ति और सन्देश देने के लिए पत्रकारिता के क्षेत्र मे कूद पड़े। आपने राष्ट्रीय समाचार पत्रो का अद्वितीय कुशलता से सम्पादन किया। आज भी वह समाचार पत्र आपका अक्षुण आशीष पाकर अपनी तत्कालीन लोक प्रियता से वैसे ही लोक प्रिय बने हुए हैं।

आज आपके बहु अनुभूत कर कमलो में आर्य जगत साप्ताहिक जो आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धक समिति नई दिल्ली का मुख्य पत्र है। आप उसका वर्षों से सम्पादन कर रहे हैं।

"आर्य जगत मे ही नहीं अपितु भारत व अन्य देशो के सभ्य शिक्षित समाज मे लोक प्रिय हो रहा है।

बहुधा समाचार पत्र से सम्पादक के नाम को जाना जाता है किन्तु यहा इसका विलोम दृष्टिगोचर होता है यहा स्वनाम धन्य सम्पादक के नाम से समाचार पत्र को जाना जा रहा है।

आपकी लेखनी ने अनेक पुस्तको का सृजनकर विचारोकी अमूल्य सम्पति देश को समर्पित कर चुके हैं और कर रहें है। जिनका सिंहावलोकन करके बुद्धिजन इस ज्ञान गरिष्ठ मनीषी के हृदय दर्शन कर धर्म में समर्पित हो सकेंगे।

आप अपने जीवन के ७३ वर्ष ऋषि दयानन्द के मिशन के प्रचार में, तथा भारत माता को सुदृढ करने हेतु अर्पित कर चुके हैं।

आपके यशस्वी और दीर्घ जीवन के लिए आपको यत्र-तत्र अभिनन्दित किया गया है। हम सार्वदेशिक सभा के पारिवारिक जन भी आपका अभिनन्दन करते हैं और प्रभु से दीर्घायुष्य की कामना करते हैं कि आपका जीवन हमारे लिए प्रेरणाप्रद एव कल्याणकारी सिद्ध हो।

महर्षि का वेदभाष्य

(पृष्ठ ७ का शेष)

काम तथा मोक्ष। हम सोचते थे कि चाहे राजा तथा प्रजा के लोग ही हों किन्तु पैर तो सबके दो ही होते हैं, फिर 'चारों पैरो को फैलावे," इस वाक्य की संगति कैसे लगेगी ? महर्षि दयानन्द के अनुसार ये वे पैर नही हैं जिन्हें पृथिवी पर रखकर चलते हैं अपितु मानव जीवन की प्रगति करने वाले धर्म अर्थ काम तथा मोक्ष रूपी पैर हैं।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य को पढने से इस मन्त्राश का भाव निकला कि विश्व के सब मानव, चाहे वे राजा या राज पुरुष हो अथवा प्रजा के लोग हो, उनका कर्त्तव्य है कि जिस प्रयोजन के लिये उन्हे मनुष्य शरीर मिला है उस प्रयोजन को सिद्ध कर। मानव जीवन का उद्देश्य पुरुषार्थ चतुष्टय को प्राप्त करना है जो धर्म अर्थ काम तथा मोक्ष हैं। पुरुष कहाना तभी सार्थक माना जा सकता है जब मानव पुरुषार्थ को प्राप्त कर ले। अन्यथा उसका पुरुष जन्म व्यर्थ है तथा पुरुष कहाना निरर्थक। इस अर्थ से यह भी ध्वनि निकलती है कि जैसे पशु के चार पैरो मे से एक के खराब होने से वह अपग माना जाता है ऐसे ही इन चारो मे से किसी एक के न होने से मानव जीवन अपूर्ण है।

यह है महर्षि के वेदभाष्य की विशिष्टता तथा महत्त्व वह न आता तो कौन देता हमे वेददधि से ऐसे महत्त्वपूर्ण मोती निकालकर देव दयानन्द, तू धन्य है और महत्त्वशाली है तेरा वेदभाष्य। ●

दो सौ परिवार वैदिक धर्म में दीक्षित

टेम्भुसोडा दिनाक १४ ११ ८८

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ नागपुर की ओर से टेम्भुसोडा जिला अमरावतीमे आदिवासी सहायता शिविर का आयोजन सत्यवीर शास्त्री मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ के तत्वावधान मे किया गया था। मुसलमान ईसाईयों से मुकाबला करने के सिलसिले में इस विभाग में आर्यों का यह प्रथम प्रयास था। फिर भी दो सौ व्यक्ति परिवार यज्ञ में पधारे थे। उनको उनकी स्वेच्छानुसार कुमकुम तिलक लगाकर यज्ञोपवीत देकर यज्ञ के सामने वैदिक धर्म की दीक्षा प० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री एव ब्र० गोपाल आर्य हरियाणा की उपस्थिति में दी गई। भूतपूर्व विधायक श्री मामराव वाणेसवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न विचार सभा में श्री सत्यवीर शास्त्री, श्री शम्भूदयाल व्यास श्री अशोक पवार आदि विद्वानो के ईसाई मुसलमान बनने से पैदा होने वाली विपत्तियो पर प्रकाश डाला गया।

श्री सत्यवीर शास्त्री श्री लालचन्द नरपा जी श्री चमनादास जी आर्य श्री शम्भूजी वडके इनके द्वारा १०५ धोतिया १६१ साडिया ५०० पेंट एव १००० छोटे बच्चो को कपडे बाटे गए। दो हजार व्यक्तियो ने सामुहिक भोजन किया। श्री सत्यवीर शास्त्री बुद्धदेव जी हुवाली भाष्कर हरने सजमा पाटील मोहनलाल अग्रवाल और सिन्धी समाज अमरावती का अपूर्व सहयोग रहा।

—सत्यवीर शास्त्री मन्त्री

स्वाध्याय योग्य पुस्तकें

महात्मा आनन्द स्वामी

- मानव और मानवता २५)
- तत्त्वज्ञान १५)
- प्रभु मिलन की राह १५)
- घोर घने जंगल में १५)
- प्रभु-दर्शन १२)
- दो रास्ते १२)
- यह धन किसका है १२)
- उपनिषदों का सन्देश १२)
- बोध-कथाएं १२)
- दुनिया में रहना किस तरह ७)
- मानव-जीवन-गाथा ६)
- प्रभु-भक्ति ५)
- महामन्त्र ५)
- एक ही रास्ता ५)
- भक्त और भगवान ५)
- आनन्द गायत्री-कथा ४)
- शंकर और दयानन्द ४)
- सुखी गृहस्थ ३)१०
- सत्यनारायण कथा ३)
- Anand Gayatri Discourses १०)
- The Only Way 12)
- महात्मा आनन्द स्वामी जीवनी उर्दू (रणवीर) १०)

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

- सत्य की खोज ५०)
- ब्रह्मचर्य सन्देश १५)

महर्षि दयानन्द सरस्वती

- पञ्चमहायज्ञविधि ३)
- व्यवहार भानु २)५०
- आर्योद्देश्यरत्नमाला ७५ पैसे
- स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश ७५ पैसे

डा. भवानीलाल भारतीय

- श्रीकृष्ण चरित २५)
- श्यामजी कृष्ण वर्मा २४)
- आर्यसमाज विषयक साहित्य परिचय २५)

स्वामी श्रद्धानन्द

- कल्याण मार्ग का पथिक ६०)
- स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (ग्यारह खण्ड) ६६०)

By Swami Satya Prakash Sarasvati

- प्राचीन भारत वैज्ञानिक कर्णधार १२५)
- Founders of Scient India Ancient India Two Volumes ५००)
- Coinage in Ancient India Two Volumes ६००)
- Critical Study of Brahman gupta and his works १५०)
- Geomatry in Ancient India १५०)
- God and His Divine Love ५)
- The Critical and Cultural Study of Satapath Brahman ७००)

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

- वेद-मीमांसा ५०)
- मैं कहा हूं ४)

स्वामी जगदीश्वरानन्द

- महाभारत (तीन खण्ड) ६००)
- वाल्मीकि रामायण १००)
- षड्दर्शनम् १००)
- चाणक्यनीति दर्पण ५०)
- भर्तृहरिशतकम् १५)
- विदुर नीति २०)
- प्रार्थना लोक २५)
- प्रार्थना प्रकाश ४)
- प्रभात वन्दन ४)
- ब्रह्मचर्य गौरव ८)
- विद्यार्थियों की दिनचर्या ८)
- मर्यादा पुरुषोत्तम राम १०)
- दिव्य दयानन्द ८)
- कुछ करो कुछ बनो १०)
- आदर्श परिवार १०)
- वैदिक उदात्त भावनाएं १०)
- दयानन्द सूक्ति और सुभाषित २५)
- वैदिक विवाह पद्धति ४)
- ऋग्वेद सूक्तिसुधा २५)
- यजुर्वेद सूक्तिसुधा १२)
- अथर्ववेद सूक्तिसुधा १५)
- सामवेद सूक्तिसुधा १२)
- ऋग्वेद शतकम् ६)
- यजुर्वेद शतकम् ६)
- सामवेद शतकम् ६)
- अथर्ववेद शतकम् ६)
- भक्ति संगीत शतकम् ३)

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय

- शतपथ ब्राह्मण (तीन खण्ड) १८००)
- जीवात्मा २५)
- मुक्ति से पुनरावृत्ति ३)

प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु सम्पादित

- महात्मा हंसराज ग्रन्थावली चार खण्ड २४०)
- महात्मा हंसराज—जीवनी ६०)

पं० चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण

- महाभारत सूक्तिसुधा ४०)

डा० प्रशान्त वेदालंकार

- धर्म का स्वरूप ३५)

स्वामी वेदानन्द सरस्वती

- ऋषि बोध कथा १०)

सुरेशचन्द्र वेदालंकार

- महकते फूल १०)
- ईश्वर का स्वरूप १५)

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

- दयानन्द प्रकाश ३५)

पं० मदनमोहन विद्यासागर

- संस्कार समुच्चय ४५)
- सत्यार्थ सरस्वती २५)
- ईश्वर प्रत्यक्ष ६)

ओमप्रकाश त्यागी

- वैदिक धर्म का संक्षिप्त परिचय ६)

प्रो० नित्यानन्द पटेल

- पूर्व और पश्चिम ३५)
- सन्ध्या विनय ८)
- आत्म विकास की राहें ५०)

पं० नरेन्द्र

- हैदराबाद के आर्यों की साधना व संघर्ष ६)

प्रो० रामविचार एम ए०

- आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो ४)

प्रो० ओमप्रकाश वेदालंकार

- वैदिक पंचायतन पूजा ३५)

प्रो० विष्णुदयाल (मारीशस)

- महर्षि का सच्चा स्वरूप ४)

म० नारायण स्वामी

- विद्यार्थी जीवन रहस्य २)५०
- प्राणायाम विधि २)

पं० शिवपूजनसिंह कुशवाहा

- हनुमान का वास्तविक स्वरूप ५)

पं० राजनाथ पाण्डेय

- वेद का राष्ट्रगान १)
- त्रिकाल जयी १०)

मनोहर विद्यालंकार

- सरस्वती वन्दना ५)

कवि कस्तूरचन्द

- ओंकार एवं गायत्री शतकम् ३)

कर्मकाण्ड की पुस्तकें

- आर्य सत्संग गुटका १)५०
- पंचयज्ञ प्रकाशिका ४)
- वैदिक सन्ध्या ७५ पैसे
- सत्संग गुटका (छोटा साइज) १)
- सत्संग मंजरी ६)
- Vedic Prayer ३)

घर का वैद्य

लेखक : सुनील शर्मा

- घर का वैद्य प्याज ३)५०
- „ शहतूत ३)५०
- „ गन्ना ३)५०
- „ नीम ३)५०
- „ सिरस ३)५०
- „ तुलसी ३)५०
- „ आंवला ३)५०
- „ नींबू ३)५०
- „ पीपल ३)५०
- „ आक ३)५०
- „ गाजर ३)५०
- „ मूली ३)५०
- „ अदरक ३)५०
- „ हल्दी ३)५०
- „ बरगद ३)५०
- „ दूध-घी ३)५०
- „ दही-मट्ठा ३)५०
- „ हींग ३)५०
- „ नमक ३)५०
- „ बेल ३)५०
- „ शहद ३)५०
- „ फिटकरी ३)५०
- „ शाक-सब्जी ३)५०
- „ अनाज ३)५०
- „ फल-फूल ३)५०

बाल-साहित्य

- बाल शिक्षा वै० दर्शनानन्द १)
- वदिक शिष्टाचार ६)

त्रिलोकचन्द विशारद कृत

- महर्षि दयानन्द २)५०
- स्वामी श्रद्धानन्द २)५०
- गुरु विरजानन्द २)५०
- पंडित लेखराम २)५०
- स्वामी दर्शनानन्द १)५०
- पंडित गुरुदत्त १)५०

सत्यभूषण वेदालंकार एम.ए.

- नैतिक शिक्षा प्रथम ७५ पैसे
- नैतिक शिक्षा द्वितीय ७५ पैसे
- नैतिक शिक्षा तृतीय २)
- नैतिक शिक्षा चतुर्थ २)
- नैतिक शिक्षा पंचम २)
- नैतिक शिक्षा षष्ठ २)५०
- नैतिक शिक्षा सप्तम २)५०
- नैतिक शिक्षा अष्टम २)५०
- नैतिक शिक्षा नवम ३)
- नैतिक शिक्षा दशम ३)

बाल-साहित्य

शिवकुमार गोयल

- क्रान्तिकारी सावरकर (पुरस्कृत) ६)
- नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ६)
- बाल-गंगाधर तिलक ८)

राजेन्द्र शर्मा

- चन्द्रशेखर आजाद ६)
- भगतसिंह ६)

डा० मनोहरलाल

- राजा भोज की कहानियां ६)
- अकबर बीरबल की कहानियां ६)
- शेखचिल्ली की कहानियां ६)
- महात्मा गांधी की कहानियां ६)
- स्वामी दयानन्द की कहानियां ६)

चिरंजीत

- छोटे बच्चों के नाटक ८)
- बड़े बच्चों के नाटक ८)
- मुनिया मेरी रानी (कविता में) ८)
- राजा-रानी की कहानी (कविता में) ८)

सन्तराम वत्स्य

- भीष्म पितामह ६)
- वीर अर्जुन ६)
- महाबली भीम ६)
- विज्ञान के खेल ६)
- विज्ञान के पहिए ६)
- लोक व्यवहार १०)
- अच्छा नागरिक ८)
- मेरा देश है यह (पुरस्कृत) ६)
- ग्राम की कहानियां (पुरस्कृत) ६)
- रामकृष्ण परमहंस की कहानियां ६)
- स्वेट मार्डेन की कहानियां ६)

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली-६

आर्य बाल गृह के बच्चे राष्ट्रपति से मिले उनके साथ हमीरसिंह रघुवंशी दिखाई दे रहे है।

राष्ट्रपति ने निराश्रित बच्चों को आशीर्वाद दिया

नई दिल्ली ९ नवम्बर ८८ आर्य अनाथालय के अधिष्ठाता श्री हमीरसिंह रघुवंशी के नेतृत्व मे आर्य बाल गृह आर्य कन्या सदन पटौदी हाउस दरियागंज नथा चन्द्रआर्य विद्या मंदिर, चन्द्रआश्रम गृह ईस्ट आफ कैलाश के अनेको छात्र छात्राओ ने दिवाली पर राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरमन को राष्ट्रपति भवन जाकर बधाई दी।

राष्ट्रपति जी ने इन बच्चो मे काफी समय दिया, उनकी रुचिया, रहन-सहन, शिक्षा दीक्षा आदि की जानकारी प्राप्त की और इन बच्चो को भावात्मक स्नेह तथा आशीर्वाद के बाद अनेको तरह के फल एव मिठाईया के डिब्बे तथा पैंसिल वितरित कर राष्ट्रपति जी ने इनके उज्जवल भविष्य कामना की।

अधिष्ठाता श्री एच एस रघुवंशी ने सन १९१८ से अभी तक संस्था के निमाण मे कार्यरत रहे संचालको का पूर्ण विवरण देते हुए जन मन्त्री चौधरी दम्पति के चित्र की प्रति भेट की और बताया कि उनकी कार्य कुशलता एव अथक परिश्रम से ही इस पौधे को सिंचित कर आज यह वटवृक्ष दिवाली के दिये की तरह ही चहुंओर प्रकाश फैला रहा है।

—हमीरसिंह रघुवंशी
अधिष्ठाता

श्रद्धांजलि समर्पण

अत्यन्त शोकाकुल हृदय से आपको सूचित करते हुए महान कष्ट हो रहा है कि हमारे पूज्य पिताजी श्री मूलचन्द शास्त्री स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी जी का आकस्मिक निधन दिनाक २-१२-८८ को हृदयगति रुक जाने के का कारण हो गया है। —मास्टर देवशर्मा

६१० नेताजी भवन, ग्राम दरियाना जि० गाजियाबाद

आर्य-डायरी १९८९

प्रकाशित हो गई है। बड़े आकार की एक पृष्ठ मे एक तारीख तथा भारत मे चलने वाली तिथिया तथा पर्व दिये गये हैं स्वस्तिवाचन, शान्ति-प्रकरणम्, दैनिक यज्ञ, विशेष यज्ञ के मन्त्र, सन्ध्या, आर्य समाज के नियम व भजन आदि दिये गये है। एक डायरी दस रुपया, पाच डायरी चालीस रुपये। रुपया अग्रिम भेजें।

ऋषिराज कलेन्डर

प्रत्येक वर्ष की तरह प्रकाशित किया है। १२ पृष्ठो मे स्वामी जी के १२ चित्र, पर्वों के ५६ चित्र आदि दिये है। एक कलेन्डर एक रुपया, पाच कलेन्डर चार रुपया, दस कलेन्डर छः रुपया सौ कलेन्डर चालीस रुपया। रुपया अग्रिम भेजें। हवन समग्री ४) किलो।

वेद प्रचारक मण्डल

६०/१३ रामजस रोड, करौल बाग) नई दिल्ली-५

यज्ञशाला निर्माणार्थ गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद)

अनुकरणीय दान

दानेन तुल्यो निधिरस्ति नान्य दान के समान अन्य कोई खजाना नही है।

नव पून युग प्रवतक महर्षि प्रवर दव दयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा निर्दिष्ट विशुद्धार्ष पाठविधि के आधार पर सञ्चालित तथा सात्विक दान पर ही आश्रित आर्ष प्रिय महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर पत्रालय-मञ्झना जनपद फर्रुखाबाद (उ० प्र०) को जहा अन्य आवश्यकताए है वहा यज्ञशाला का निर्माण भी एक महती आवश्यकता थी। आश्रमस्थ ब्रह्मचारी बरामद आदि म बठकर ही दैनिक यज्ञ का सम्पादन करते है।

एतदर्थ लोकोज्ज्वल राष्ट्रभक्त, श्रेष्ठोप्रवर उदारमना, दानवीर महाशय श्रीयुत देवीदयाल जी आर्य (रोशनाबाद-फर्रुखाबाद) ने गुरुकुलीय इतिहास म स्वर्णाक्षरो मे स्व नामाङ्कन करते हुए गुरुकुल के कुलपति श्री आचार्य चन्द्रदेव जी शास्त्री ... दिनो इस पावमानी यज्ञशाला के निर्माण का सुवचन दिया इसलि ... शुभस्य शीघ्रम्" इस लोकोक्ति का आचरण कर उन्होने ७ नवम्बर १ ... को स्वय के कर कमला द्वारा यज्ञशाला का महर्ष शिलान्यास किया और यह समुदघोष किया कि गुरुकुल के अग्रिम वार्षिक महोत्सव (२५, २६, २७ फरवरी १९८९) का पुनीत महायज्ञ इस नियाणाधीन यज्ञशाला के पावन प्राङ्गण मे ही होगा। इस प्रकार दानवीर महाशय श्री देवीदयाल जी आर्य ने गुरुकुल की आवश्यकता पूर्ति म प्रशंसनीय सहयोग कर समस्त आश्रमवासियो को कृत कृत्य किया है।

आशा है अन्य आर्य जन यज्ञप्रिय महामना महाशय जी म प्रेरणा पाकर वृहद्छात्रावास, विद्यालय भवन पुस्तकालय कक्ष, अतिथि सदन भोजनालय आदि गुरुकुलीय आवश्यकताओ को पूर्ण करके कृतकारी होग।

—डा० शिवरामसिंह आर्य, मन्त्री

शोक सम्वेदना समाचार

— फगवाड़ा गत ६ दिसम्बर रात्रि साढ़े आठ बजे के लगभग तलवंडी कला गाव मे पंजाबी फिल्मो के निर्माता निर्देशक व नायक वीरेन्द्र की गलिया मार कर हत्या कर दी गई। पंजाबी समाचार पर यह घातक हमला अधिक आतवादियो न उस समय किया जब वह भूतपूर्व मन्त्री दलीपसिंह तलवंडी के घर पर जागते जमीन फिल्म की शूटिंग कर रहे थे।

श्री वीरेन्द्र स्थानीय आर्य समाज व आर्य हाई स्कूल के संस्थापक प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता स्वर्गीय हकीम गुरुदास के सुपुत्र, आर्य हाई स्कूल फगवाड़ा के मैनेजर हकीम सत्यपाल के छोटे भाई व प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता धर्मेन्द्र के ममेरे भाई थे। —डा० यश चोपड़ा

—दिनाक २१ ११ ८८ आर्य समाज खण्डवा मे एक शोक सभा सम्पन्न हुई जिसमे श्री बाबूलाल जी सोनी एक सामाजिक कार्यकर्त्ता, श्री श्यामलाल जी पालीवाल खण्डवा गुरुकुल फर्रुखाबाद के संचालक माननीय जुगनूलाल जी मित्र एवं आर्य समाज खण्डवा के पूर्व प्रधान श्री रामचन्द्र आर्य के पौत्र प्रिय अभय का अल्प आयु मे ऊपर से फिसल जाने के कारण हुये आकस्मिक निधन पर श्री माव जी भाई भानुशाली प्रधान, बाबूलाल चौधरी उपप्रधान लक्ष्मी नारायण भार्गव मन्त्री, श्री कन्हैयालाल एवं श्री डी० सी० चन्देल साहब सहित अन्य लोगो ने मृत आत्मा की शान्ति के लिये ईश्वर से प्रार्थना कर अश्रुपूरित श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

—लक्ष्मी नारायण भार्गव, मन्त्री

आर्य कन्या चाहिए

पी आर. भोजक ब्राह्मण प्रतिष्ठित गुजराती, टेक्नीकल बुक लेखक पब्लिसर आर्य परिवार के स्वस्थ, निर्व्यसनी, स्मार्ट, चुस्त शाकाहारी, बी काम और कई प्राप्त उच्च टक्निकल शिक्षाए प्राप्त आयु २८ वर्ष ५ फीट ६ इंच अपना स्वतन्त्र व्यवसाय, युवक हेतु गुरुकुल शिक्षा आर्य परिवार की सुशील संस्कारी सुन्दर कन्या चाहिये। पूरे कद का रंगीन फोटो भेजें। दहेज-जाति बन्धन नही विज्ञप्ति पसन्दगी हेतु है। लिखे आर बी भोजक १५-ए करुणा सोसायटी डाकघर के पास नया वाडज, अहमदाबाद-३८००१३ (गुजरात)